धर्म्मपुस्तक

अर्थात्

पुराना और नया धर्म्म नियम

जो

इबरी और यूनानी भाषा से हिन्दी में किया गया ।

THE

HOLY BIBLE

CONTAINING THE

OLD AND NEW TESTAMENTS

IN THE

HINDI LANGUAGE.

TRANSLATED OUT OF THE ORIGINAL TONGUES.

ALLAHABAD:
PRINTED FOR THE NORTH INDIA AUXILIARY BIBLE SOCIETY,
AT THE ALLAHABAD MISSION PRESS.

1892.

1st Edition.] [*5000 Copies.*

पुराने और नये धर्म्म नियम

की पुस्तकों के नाम

और

उन का सूचीपत्र और पर्व्वों की संख्या।

पुराने नियम की पुस्तकें।

नये नियम की पुस्तकें।

उत्पत्ति की पुस्तक ।

पहिला पर्ब्ब ।

१ आरंभ में ईश्वर ने आकाश और पृथिवी को सिरजा । २ और पृथिवी बेडौल और सूनी थी और गहिराव पर अंधियारा था और ईश्वर का आत्मा जल के ऊपर डोलता था ॥

३ और ईश्वर ने कहा कि उंजियाला होवे और उंजियाला हो गया । ४ और ईश्वर ने उंजियाले को देखा कि अच्छा है और ईश्वर ने उंजियाले को अंधियारे से बिभाग किया । ५ और ईश्वर ने उंजियाले को दिन और अंधियारे को रात कहा और सांझ और बिहान पहिला दिन हुआ ॥

६ और ईश्वर ने कहा कि पानियों के मध्य में आकाश होवे और पानियों को पानियों से बिभाग करे । ७ तब ईश्वर ने आकाश को बनाया और आकाश के नीचे के पानियों को आकाश के ऊपर के पानियों से बिभाग किया और ऐसा हो गया । ८ और ईश्वर ने आकाश को स्वर्ग कहा और सांझ और बिहान दूसरा दिन हुआ ॥

९ और ईश्वर ने कहा कि स्वर्ग के तले के पानी एकही स्थान में एकट्ठे होवें और सूखी दिखाई देवे और ऐसा हो गया । १० और ईश्वर ने सूखी को भूमि कहा और एकट्ठे किये गये पानियों को समुद्र कहा और ईश्वर ने देखा कि अच्छा है । ११ और ईश्वर ने कहा कि भूमि घास को और सागपात को जिन में बीज होवें और फलवंत पेड़ को जो अपनी अपनी भांति के समान फलें जिन के बीज भूमि पर उन में होवें उगावे और ऐसा हो गया । १२ और भूमि ने घास और सागपात को अपनी अपनी भांति के समान जिन में बीज होवें और फलवंत पेड़ को जिस का बीज उस में होवे उस की भांति के समान उगाया और ईश्वर ने देखा कि अच्छा है । १३ और सांझ और बिहान तीसरा दिन हुआ ॥

१४ और ईश्वर ने कहा कि दिन और रात में बिभाग करने को स्वर्ग के आकाश में ज्योति होवें और वे चिन्हों और ऋतुन और दिनों और बर्षों के कारण होवें । १५ और वे पृथिवी को उंजियाली करने को स्वर्ग के आकाश में ज्योति के लिये होवें और ऐसा हो गया । १६ और ईश्वर ने दो बड़ी ज्योति बनाईं एक बड़ी ज्योति दिन पर प्रभुता के लिये और उस्से छोटी ज्योति रात पर प्रभुता के लिये और तारों को भी । १७ और ईश्वर ने उन्हें स्वर्ग के आकाश में रक्खा कि पृथिवी पर उंजियाला करें । १८ और दिन पर और रात पर प्रभुता करें और उंजियाले को अंधियारे से बिभाग करें और ईश्वर ने देखा कि अच्छा है । १९ और सांझ और बिहान चौथा दिन हुआ ॥

२० और ईश्वर ने कहा कि पानी जीवधारी रेंगवैयों की बहुताई से भर जाय और पक्षी पृथिवी के ऊपर स्वर्ग के आकाश पर उड़ें । २१ सो ईश्वर ने बड़ी बड़ी मछलियों और हर एक रेंगवैये जीवधारी को जिस से पानी भरा है उन की भांति भांति के समान और हर एक पक्षी को उस की भांति के समान बहुताई से उत्पन्न किया और ईश्वर ने देखा कि अच्छा है । २२ और ईश्वर ने उन को आशीस देके कहा कि फलवान होओ और बढ़ो और समुद्रों के पानियों में भर जाओ और पक्षी पृथिवी पर बढ़ें । २३ और सांझ और बिहान पांचवां दिन हुआ ॥

२४ और ईश्वर ने कहा कि पृथिवी हर एक जीवधारी को उस की भांति भांति के समान अर्थात ढोर और रेंगवैये जंतु को और बनैले पशु को उस की भांति के समान उपजावे और ऐसा हो गया । २५ और ईश्वर ने बनैले पशु को उस की भांति के समान और ढोर को उस की भांति के समान और पृथिवी के हर एक रेंगवैये जंतु को उस की भांति के समान बनाया और ईश्वर ने देखा कि अच्छा है ॥

२६ तब ईश्वर ने कहा कि हम आदम को अपने स्वरूप में अपने समान बनावें और वे समुद्र की मछलियों और आकाश के पंछियों और ढोर और सारी पृथिवी पर और पृथिवी पर के हर एक रेंगवैये २७ जंतु पर प्रधान होवें । तब ईश्वर ने आदम को अपने स्वरूप में उत्पन्न किया उस ने उसे ईश्वर के स्वरूप में उत्पन्न किया उस ने उन्हें नर और नारी बनाया । २८ और ईश्वर ने उन्हें आशीस दिया और ईश्वर ने उन्हें कहा कि फलवान होओ और बढ़ो और पृथिवी में भर जाओ और उसे बश में करो और समुद्र की मछलियों और आकाश के पंछियों और पृथिवी के हर एक रेंगवैये जीवधारी पर प्रभुता करो ॥

२९ और ईश्वर ने कहा लो मैं ने हर एक बीजधारी सागपात को जो सारी पृथिवी पर है और हर एक पेड़ को जिस में फल है जो बीज उपजावता है तुम्हें दिया यह ३० तुम्हारे खाने के लिये होगा । और पृथिवी के हर एक पशु को और आकाश के हर एक पंछी को और पृथिवी के हर एक रेंगवैये जीवधारी को हर एक प्रकार की हरियाली भी खाने को दिई और ऐसा ३१ हुआ । फिर परमेश्वर ने हर एक वस्तु पर जिसे उस ने बनाया था दृष्टि किई और देखा कि बहुत अच्छी है और सांझ और बिहान छठवां दिन हुआ ॥

दूसरा पर्व्व ।

१ यों स्वर्ग और पृथिवी और उन की सारी सेना बन गई । २ और ईश्वर ने अपने कार्य्य को जो वह करता था सातवें दिन समाप्त किया और उस ने सातवें दिन में अपने सारे कार्य्य से जो उस ने किया था बिश्राम किया । ३ और ईश्वर ने सातवें दिन को आशीस दिई और उसे पवित्र ठहराया इस कारण कि उसी में उस ने अपने सारे कार्य्य से जो ईश्वर ने उत्पन्न किया और बनाया बिश्राम किया ॥

४ यह स्वर्ग और पृथिवी की उत्पत्ति है जब वे उत्पन्न हुए जिस दिन परमेश्वर ईश्वर ने स्वर्ग और पृथिवी को बनाया । ५ और खेत का कोई सागपात अब लों पृथिवी पर न था और खेत की कोई हरियाली अब लों न उगी थी क्योंकि परमेश्वर ईश्वर ने पृथिवी पर मेंह न बरसाया था और आदम न था कि भूमि की खेती करे । ६ और पृथिवी में कुहासा उठता था और समस्त भूमि को सींचता था ॥

७ तब परमेश्वर ईश्वर ने भूमि की धूल से आदम को बनाया और उस के नथुनों में जीवन का श्वास फूंका और आदम जीवता प्राण हुआ ॥

८ और परमेश्वर ईश्वर ने अदन में पूरब की ओर एक बारी लगाई और उस आदम को जिसे उस ने बनाया था उस में रक्खा । और परमेश्वर ईश्वर ने हर एक पेड़ को जो देखने में सुन्दर और खाने में अच्छा है और उस बारी के मध्य में जीवन का पेड़ और भले बुरे के ज्ञान का पेड़ भूमि से उगाया । १० और उस बारी को सींचने के लिये अदन से एक नदी निकली और वहां से बिभाग होके चार सोहान हुए । ११ पहिली का नाम फैसून जो हवील: की सारी भूमि को घेरती है जहां सोना होता है । १२ और उस भूमि का

सोना चोखा है वहां मोती और बिल्लौर १२ होता है। और दूसरी नदी का नाम जैहून है जो कूश की सारी भूमि को घेरती है। १४ और तीसरी नदी का नाम दिजल: है जो असूर की पूरब ओर जाती है और चौथी नदी फुरात है॥

१५ और परमेश्वर ईश्वर ने उस आदम को लेके अदन की बारी में रक्खा जिसतें उसे सुधारे और उस को रखवाली करे। १६ और परमेश्वर ईश्वर ने आदम को आज्ञा देके कहा कि तू इस बारी के १७ हर एक पेड़ का फल खाया कर। परन्तु भले और बुरे के ज्ञान के पेड़ से मत खाना क्योंकि जिस दिन तू उस्से खायगा तू निश्चय मरेगा॥

१८ और परमेश्वर ईश्वर ने कहा कि आदम को अकेला रहना अच्छा नहीं मैं उस के लिये एक उपकारिणी उस के १९ समान बनाऊंगा। और परमेश्वर ईश्वर भूमि से हर एक बनैले पशु और आकाश के सारे पक्षी बनाकर उन को आदम के पास लाया कि देखे कि उन के क्या क्या नाम रखता है और जो कुछ कि आदम ने हर एक जीते जंतु को कहा २० वही उस का नाम हुआ। और आदम ने हर एक ढोर और आकाश के पक्षी और हर एक बनैले पशु का नाम रक्खा पर आदम के लिये उस के समान कोई उपकारिणी न मिली॥

२१ और परमेश्वर ईश्वर ने आदम को बड़ी नींद में डाला और वह सो गया तब उस ने उस की पसुलियों में से एक निकाली और उस की संती मांस भर २२ दिया। और परमेश्वर ईश्वर ने आदम की उस पसुली से जो उस ने लिई थी एक नारी बनाई और उसे आदम पास २३ लाया। तब आदम बोला यह तो मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे मांस में का मांस है वह नारी कहलायेगी क्योंकि वह नर से निकाली गई। इस लिये २४ मनुष्य अपने माता पिता को छोड़ेगा और अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे एक मांस होंगे। और आदम और उस की २५ पत्नी दोनों के दोनों नग्न थे और लज्जित न थे॥

तीसरा पर्ब्ब।

अब सर्प्प भूमि के हर एक पशु से १ जिसे परमेश्वर ईश्वर ने बनाया था धूर्त्त था और उस ने स्त्री से कहा क्या निश्चय ईश्वर ने कहा है कि तुम इस बारी के हर एक पेड़ से न खाना। और स्त्री ने २ सर्प्प से कहा कि हम तो इस बारी के पेड़ों का फल खाते हैं। परन्तु उस पेड़ ३ का फल जो बारी के बीच में है ईश्वर ने कहा है कि तुम उस्से न खाना और न छूना न हो कि मर जाओ। तब सर्प्प ४ ने स्त्री से कहा कि तुम निश्चय न मरोगे। क्योंकि ईश्वर जानता है कि ५ जिस दिन तुम उस्से खाओगे तुम्हारी आंखें खुल जायेंगी और तुम भले और बुरे की पहिचान में ईश्वर के समान हो जाओगे॥

और जब स्त्री ने देखा कि वह पेड़ ६ खाने में सुस्वाद और दृष्टि में सुन्दर और बुद्धि देने के योग्य है तो उस के फल में से लिया और खाया और अपने पति को भी दिया और उस ने खाया। तब ७ उन दोनों की आंखें खुल गईं और वे जान गये कि हम नंगे हैं सो उन्हों ने गूलर के पत्तों को मिलाके सीआ और अपने लिये ओढ़ना बनाया॥

और दिन के ठंढे में उन्हों ने परमे- ८ श्वर ईश्वर का शब्द जो बारी में चलता था सुना तब आदम और उस की पत्नी ने अपने को परमेश्वर ईश्वर के आगे से बारी के पेड़ों में छिपाया। तब परमेश्वर ९

ईश्वर ने आदम को पुकारा और कहा १० कि तू कहां है। और वह बोला कि मैं ने तेरा शब्द बारी में सुना और डरा क्योंकि मैं नंगा था इस कारण मैं ने अपने ११ को छिपाया। और उस ने कहा कि किस ने तुझे जताया कि तू नंगा है क्या तू ने उस पेड़ से खाया जो मैं ने तुझे खाने से १२ बरजा था। और आदम ने कहा कि इस स्त्री ने जो तू ने मेरे संग रक्खी मुझे उस पेड़ से दिया और मैं ने खाया। १३ तब परमेश्वर ईश्वर ने उस स्त्री से कहा कि यह तू ने क्या किया है और स्त्री बोली कि सर्प ने मुझे बहकाया और मैं ने खाया॥

१४ तब परमेश्वर ईश्वर ने सर्प से कहा कि जो तू ने यह किया है इस कारण तू सारे ढोर और हर एक बन के पशुन से अधिक स्रापित होगा तू अपने पेट के बल चलेगा और अपने जीवन भर धूल १५ खाया करेगा। और मैं तुझ में और स्त्री में और तेरे बंश और उस के बंश में बैर डालूंगा वह तेरे सिर को कुचलेगा और तू उस की एड़ी को काटेगा॥

१६ और उस ने स्त्री को कहा कि मैं तेरी पीड़ा और गर्भधारण को बहुत बढ़ाऊंगा तू पीड़ा से बालक जनेगी और तेरी इच्छा तेरे पति पर होगी और वह तुझ पर प्रभुता करेगा॥

१७ और उस ने आदम से कहा कि तू ने जो अपनी पत्नी का शब्द माना है और जिस पेड़ का मैं ने तुझे खाने से बरजा था तू ने खाया है इस कारण भूमि तेरे लिये स्रापित है अपने जीवन भर तू उस्से पीड़ा के साथ खायगा। १८ और वह कांटे और ऊंटकटारे तेरे लिये उगायेगी और तू खेत का सागपात १९ खायगा। अपने मुंह के पसीने से तू रोटी खायगा जब लों तू भूमि में फिर न मिल जाय क्योंकि तू उस्से निकाला गया इस लिये कि तू धूल है और धूल में फिर जायगा॥

२० और आदम ने अपनी पत्नी का नाम हव्वा रक्खा इस कारण कि वह समस्त २१ जीवतों की माता थी। और परमेश्वर ईश्वर ने आदम और उस की पत्नी के लिये चमड़े के ओढ़ने बनाये और उन्हें पहिनाये॥

२२ और परमेश्वर ईश्वर ने कहा कि देखो आदम भले बुरे के ज्ञान में हम में से एक की नाईं हुआ और अब ऐसा न होवे कि वह अपना हाथ डाले और जीवन के पेड़ में से भी लेकर खावे और २३ अमर हो जाय। इस लिये परमेश्वर ईश्वर ने उस को अदन की बारी से बाहर किया जिसतें वह भूमि की किसनई करे जिस्से वह लिया गया था। २४ सो उस ने आदम को निकाल दिया और अदन की बारी की पूरब और करोबीम ठहराये और चमकते हुए खड्ग को जो चारों ओर घूमता था जिसतें जीवन के पेड़ के मार्ग की रखवाली करें॥

चौथा पर्ब्ब।

१ और आदम ने अपनी पत्नी हव्वा को ग्रहण किया और वह गर्भिणी हुई और उस्से काइन उत्पन्न हुआ और बोली कि मैं ने परमेश्वर से एक पुरुष पाया। २ और फिर वह उस के भाई हाबील को जनी और हाबील भेड़ों का चरवाहा हुआ परन्तु काइन किसनई करता था॥

३ और कितने दिनों के पीछे यों [illegible] कि काइन भूमि के फलों में से परमेश्वर ४ के लिये भेंट लाया। और हाबील भी अपने झुंड में से पहिलौंठी और मोटी मोटी लाया और परमेश्वर ने हाबील का और उस की भेंट का आदर किया। ५ परन्तु काइन का और उस की भेंट का

आदर न किया इस लिये काइन अति कोपित हुआ और अपना मुंह फुलाया। ६ तब परमेश्वर ने काइन से कहा तू क्यों क्रुद्ध है और तेरा मुंह क्यों फूल गया। ७ यदि तू भला करे तो क्या तू ग्राह्य न होगा। और यदि तू भला न करे तो पाप द्वार पर दबकता है और उस की इच्छा तेरी ओर है पर तू उस पर प्रभुता कर॥

८ तब काइन ने अपने भाई हाबील से बातें किईं और यों हुआ कि जब वे खेत में थे तब काइन अपने भाई हाबील ९ पर झपटा और उसे घात किया। तब परमेश्वर ने काइन से कहा तेरा भाई हाबील कहां है और वह बोला मैं नहीं जानता क्या मैं अपने भाई का रखवाल १० हूं। तब उस ने कहा तू ने क्या किया तेरे भाई के लोहू का शब्द भूमि से मुझे ११ पुकारता है। और अब तू पृथिवी से स्रापित है जिस ने तेरे भाई का लोहू तेरे हाथ से लेने को अपना मुंह खोला १२ है। जब तू किसनई करेगा तो वह तेरे बश में न होगी तू पृथिवी पर भगोड़ा १३ और बहेतू रहेगा। तब काइन ने परमेश्वर से कहा कि मेरा दण्ड मेरे १४ सहाव से अधिक है। देख तू ने आज देश में से मुझे खदेड़ दिया है और मैं तेरे आगे से गुप्त होऊंगा और मैं पृथिवी पर भगोड़ा और बहेतू होऊंगा और ऐसा होगा कि जो कोई मुझे पावेगा मार १५ डालेगा। तब परमेश्वर ने उसे कहा इस लिये जो कोई काइन को मार डालेगा तो उस्से सात गुन पलटा लिया जायगा और परमेश्वर ने काइन पर एक चिन्ह रक्खा न हो कि कोई उसे पाके १६ मार डाले। तब काइन परमेश्वर के आगे से निकल गया और अदन की पूरब ओर नूद की भूमि में जा रहा॥

१७ और काइन ने अपनी पत्नी को ग्रहण किया और वह गर्भिणी हुई और उस्से हनूक उत्पन्न हुआ तब उस ने एक नगर बनाया और अपने बेटे हनूक का नाम १८ उस पर रक्खा। और हनूक से ईराद उत्पन्न हुआ और ईराद से महूयाएल और महूयाएल से मतूसाएल और मतूसाएल से लमक उत्पन्न हुआ॥

१९ और लमक ने दो पत्नियां किईं पहिली का नाम अदः और दूसरी का नाम २० जिल्लः था। और अदः से याबल उत्पन्न हुआ जो तंबुओं के निवासियों और ढोर २१ के चरवाहों का पिता था। और उस के भाई का नाम यूबल था वह बीन और बांसली के सारे बजनियों का पिता २२ था। और जिल्लः से भी तूबलकाइन उत्पन्न हुआ जो ठठेरों और लोहारों का शिक्षक था और तूबलकाइन की बहिन २३ नअमः थी। और लमक ने अपनी पत्नियों अदः और जिल्लः से कहा कि हे लमक की पत्नियो मेरा शब्द सुनो और मेरे बचन पर कान धरो क्योंकि मैं ने एक पुरुष को अपने घाव के लिये और एक तरुण को अपने दुःख के लिये मार २४ डाला। यदि काइन सात गुन प्रतिफल लेवे तो लमक सतहत्तर गुन॥

२५ और आदम ने अपनी पत्नी को फिर ग्रहण किया और वह बेटा जनी और उस का नाम सेत रक्खा क्योंकि ईश्वर ने हाबील की संती जिसे काइन ने मार डाला मेरे लिये दूसरा बंश ठहराया। २६ और सेत को भी एक बेटा उत्पन्न हुआ और उस ने उस का नाम अनूस रक्खा उस समय से लोग परमेश्वर का नाम लेने लगे॥

पांचवां पर्व्व।

१ आदम की बंशावली का पत्र यह है जिस दिन में ईश्वर ने आदम को उत्पन्न

किया उस ने उसे ईश्वर के स्वरूप में २ बनाया। उस ने उन्हें नर और नारी बनाया और जिस दिन वे सिरजे गये उस ने उन्हें आशीस दिया और उन का नाम आदम रक्खा॥

३ और एक सौ तीस बरस की बय में आदम से उसी के स्वरूप और रूप में एक बेटा उत्पन्न हुआ और उस का नाम ४ सेत रक्खा। और सेत की उत्पत्ति के पीछे आदम की बय आठ सौ बरस की हुई और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। ५ और आदम की सारी बय नव सौ तीस बरस की हुई और वह मर गया॥

६ और सेत जब एक सौ पांच बरस का हुआ तब उस्से अनूस उत्पन्न हुआ। ७ और अनूस की उत्पत्ति के पीछे सेत आठ सौ सात बरस जीआ और उस्से ८ बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। और सेत की सारी बय नव सौ बारह बरस की हुई और वह मर गया॥

९ और अनूस जब नब्बे बरस का हुआ १० तब उस्से कीनान उत्पन्न हुआ। और कीनान की उत्पत्ति के पीछे अनूस आठ सौ पंद्रह बरस जीआ और उस्से बेटे ११ बेटियां उत्पन्न हुईं। और अनूस की सारी बय नव सौ पांच बरस की हुई और वह मर गया॥

१२ और कीनान सत्तर बरस का हुआ और उस्से महललिएल उत्पन्न हुआ। १३ और महललिएल की उत्पत्ति के पीछे कीनान आठ सौ चालीस बरस जीआ १४ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। और कीनान की सारी बय नव सौ दस बरस की हुई और वह मर गया॥

१५ और महललिएल जब पैंसठ बरस का हुआ तब उस्से यिरद उत्पन्न हुआ। १६ और महललिएल यिरद की उत्पत्ति के पीछे आठ सौ तीस बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। और १७ महललिएल की सारी बय आठ सौ पंचानवे बरस की हुई और वह मर गया॥

अब यिरद एक सौ बासठ बरस का १८ हुआ तब उस्से हनूक उत्पन्न हुआ। और १९ हनूक की उत्पत्ति के पीछे यिरद आठ सौ बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। और यिरद की सारी बय २० नव सौ बासठ बरस की हुई और वह मर गया॥

जब हनूक पैंसठ बरस का हुआ तो २१ उस्से मतूसिलह उत्पन्न हुआ। और हनूक २२ मतूसिलह की उत्पत्ति के पीछे तीन सौ बरस लों ईश्वर के साथ साथ चलता था और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। और हनूक की सारी बय तीन सौ पैंसठ २३ बरस की हुई। और हनूक ईश्वर के २४ साथ साथ चलता था और वह न मिला क्योंकि ईश्वर ने उसे ले लिया॥

और जब मतूसिलह एक सौ सतासी २५ बरस का हुआ तब उस्से लमक उत्पन्न हुआ। और लमक की उत्पत्ति के पीछे २६ मतूसिलह सात सौ बयासी बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। और २७ मतूसिलह की सारी बय नव सौ उनहत्तर बरस की हुई और वह मर गया॥

और लमक जब एक सौ बयासी बरस २८ का हुआ तब उस का एक बेटा उत्पन्न हुआ। और उस ने उस का नाम नूह २९ रक्खा और कहा कि यह हमारे हाथों के परिश्रम और कार्य्य के विषय में जो पृथिवी के कारण से हैं जिस पर परमेश्वर ने स्राप दिया है हमें शान्ति देगा। और नूह की उत्पत्ति के पीछे लमक ३० पांच सौ पंचानवे बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। और लमक ३१ की सारी बय सात सौ सतहत्तर बरस की हुई और वह मर गया॥

३२ और नूह जब पांच सौ बरस का हुआ तब नूह से सिम और हाम याफत उत्पन्न हुए॥

छठवां पर्ब्ब।

१ और यों हुआ कि जब आदमी पृथिवी पर बढ़ने लगे और उन से बेटियां उत्पन्न २ हुईं। तो ईश्वर के पुत्रों ने आदम की पुत्रियों को देखा कि वे सुंदरी हैं और उन में से जिन्हें उन्हों ने चाहा उन्हें ब्याहा॥

३ और परमेश्वर ने कहा कि मेरा आत्मा आदमी में उन के अपराध के कारण सदा लों न्याय न करेगा वह मांस है और उस के दिन एक सौ बीस बरस के होंगे॥

४ और उन दिनों में पृथिवी पर दानव थे और उस के पीछे भी जब ईश्वर के पुत्र आदम की पुत्रियों से मिले तो उन से बालक उत्पन्न हुए जो बलवान हुए जो आगे से नामी थे॥

५ और ईश्वर ने देखा कि आदम की दुष्टता पृथिवी पर बहुत हुई और उन के मन की चिंता और भावना प्रति दिन ६ केवल बुरी होती हैं। तब आदमी को पृथिवी पर उत्पन्न करने से परमेश्वर पछताया और उसे अति शोक हुआ। ७ तब परमेश्वर ने कहा कि आदमी को जिसे मैं ने उत्पन्न किया आदमी से लेके पशु लों और रेंगवैयों को और आकाश के पक्षियों को पृथिवी पर से नष्ट करूंगा क्योंकि उन्हें बनाने से मैं पछताता हूं॥

८ पर नूह ने परमेश्वर की दृष्टि में ९ अनुग्रह पाया। नूह की बंशावली यह है कि नूह अपने समय में धर्मी और सिद्ध पुरुष था नूह ईश्वर के साथ साथ १० चलता था। और नूह से तीन बेटे सिम ११ हाम और याफत उत्पन्न हुए। और पृथिवी ईश्वर के आगे बिगड़ गई थी और पृथिवी अंधेर से भरपूर हुई। और ईश्वर १२ ने पृथिवी पर दृष्टि किई और देखो वह बिगड़ गई थी क्योंकि सारे शरीर ने पृथिवी पर अपनी चाल को बिगाड़ दिया था॥

और ईश्वर ने नूह से कहा कि सारे १३ शरीर का अंत मेरे आगे आ पहुंचा है क्योंकि उन के कारण पृथिवी अंधेर से भर गई है और देख मैं उन्हें पृथिवी समेत नष्ट करूंगा। तू गोफर लकड़ी की १४ अपने लिये एक नाव बना और उस नाव में कोठरियां बना और उस के बाहर भीतर राल लगा। और उसे इस १५ डौल की बना उस नाव की लंबाई तीन सौ हाथ और चौड़ाई पचास हाथ और ऊंचाई तीस हाथ की होवे। उस नाव १६ में एक खिड़की बना और ऊपर ऊपर उसे हाथ भर में समाप्त कर और उस के अलंग में द्वार बना और उस में नीचे की और दूसरी और तीसरी अटारी बना। और देख कि सारे शरीर को जिन में १७ जीवन का श्वास है आकाश के तले से नाश करने को मैं अर्थात् मैं ही बाढ़ के पानी पृथिवी पर लाता हूं और पृथिवी पर हर एक बस्तु नष्ट हो जायगी। परन्तु मैं तुस्से अपनी बाचा स्थिर करूंगा १८ तू नाव में जाना तू और तेरे बेटे और तेरी पत्नी और तेरे बेटों की पत्नियां तेरे साथ। और सारे शरीरों में से जीवता १९ जंतु दो दो अपने साथ नाव में लेना जिसतें वे तेरे साथ जीते रहें वे नर और नारी होवें। पंछी में से उस के भांति २० भांति के और ढोर में से उस के भांति भांति के और पृथिवी के हर एक रेंगवैये में से भांति भांति के हर एक में से दो दो तुझ पास आवें जिसतें जीते रहें। और तू अपने लिये खाने को सब सामग्री २१

शीत और दिन और रात थम न जायेंगे॥

नवां पर्ब्ब

१ और ईश्वर ने नूह को और उस के बेटों को आशीष दिया और उन्हें कहा कि फलो और बढ़ो और पृथिवी को २ भरो। और तुम्हारा डर और तुम्हारा भय पृथिवी के हर एक पशु पर और आकाश के हर एक पंछियों पर उन सभों पर जो पृथिवी पर चलते हैं और समुद्र की सारी मछलियों पर पड़ेगा वे तुम्हारे ३ हाथ में सौंपे गये। हर एक जीता चलता जंतु तुम्हारे भोजन के लिये होगा मैं ने हरी तरकारी के समान सारी बस्तु तुम्हें ४ दिईं। केवल मांस उस के जीव अर्थात् ५ उस के लोहू समेत मत खाना। और केवल तुम्हारे लोहू का तुम्हारे शरीरों के लिये मैं पलटा लेऊंगा हर एक पशु से और आदमी के हाथ से मैं पलटा लेऊंगा मनुष्य के भाई के हाथ से आदमी के ६ प्राण का मैं पलटा लेऊंगा। जो कोई आदमी का लोहू बहावेगा आदमी से उस का लोहू बहाया जायगा क्योंकि ईश्वर के रूप में आदम बनाया गया ७ है। और तुम फलो और बढ़ो और पृथिवी पर बहुताई से जन्मो और उस में बढ़ो॥

८ और ईश्वर ने नूह को और उस के ९ साथ उस के बेटों को कहा। कि देखो मैं अपना नियम स्थिर करता हूं तुम से १० और तुम्हारे बंश से तुम्हारे पीछे। और हर एक जीवते जंतु से जो तुम्हारे संग है क्या पंछी और क्या ढोर और पृथिवी के सारे चौपायों से और सभों से जो नाव से बाहर आते हैं पृथिवी के हर एक ११ पशु लों। और मैं अपना नियम तुम से स्थिर करूंगा और सारे शरीर बाढ़ के पानियों से फिर नष्ट न किये जायेंगे और फिर पृथिवी को नष्ट करने के लिये जलमय न होगा। १२ और ईश्वर ने कहा कि यह उस नियम का चिन्ह है जो मैं अपने और तुम्हारे और हर एक जीवते जंतु के मध्य में जो तुम्हारे संग है परंपरा की पीढ़ी लों बांधता हूं। १३ मैं अपने धनुष को मेघ पर रखता हूं और वह मेरे और पृथिवी के मध्य में नियम का चिन्ह होगा। १४ और जब मैं मेघ को पृथिवी के ऊपर फैलाऊंगा तो धनुष मेघ में दिखाई देगा। १५ और मैं अपने नियम को जो मेरे और तुम्हारे और सारे शरीर के हर एक जीवधारी के मध्य में है स्मरण करूंगा और फिर सारे शरीर को नष्ट करने को जलमय न होगा। १६ और धनुष मेघ में होगा और मैं उसे देखूंगा जिसतें मैं उस सनातन के नियम को जो ईश्वर के और पृथिवी के सारे शरीर के हर एक जीवधारी के मध्य में है स्मरण करूं। १७ और ईश्वर ने नूह से कहा कि जो नियम मैं ने अपने और पृथिवी पर के सारे शरीरों में स्थिर किया है उस का यह चिन्ह है॥

१८ और नूह के बेटे जो नौका से उतरे सिम और हाम और याफत थे और हाम १९ कनआन का पिता था। नूह के यही तीन बेटे थे और उन्हीं से सारी पृथिवी बस गई॥

२० और नूह खेती बारी करने लगा और उस ने एक दाख की बाटिका लगाई। २१ और उस ने उस का रस पीया और उसे अमल हुआ और अपने तंबू में नग्न रहा। २२ और कनआन के पिता हाम ने अपने पिता का नंगापन देखा और बाहर अपने २३ भाइयों को जनाया। तब सिम और याफत ने एक ओढ़ना लिया और अपने दोनों कंधों पर धरा और पीठ के बल जाके अपने पिता का नंगापन ढांपा और

उन के मुंह पीछे थे सो उन्हों ने अपने
२४ पिता का नंगापन न देखा। जब नूह
अपने अमल से जागा तो जो उस के
छोटे बेटे ने उस्से किया था उसे जान
२५ पड़ा। और उस ने कहा कि कनआन
स्रापित होगा वह अपने भाइयों के दासों
२६ का दास होगा। और उस ने कहा कि
सिम का परमेश्वर ईश्वर धन्य होवे और
२७ कनआन उस का दास होगा। ईश्वर
याफत को फैलाये और वह सिम के
तंबुओं में बास करे और कनआन उस
२८ का दास हो। और जलमय के पीछे
२९ नूह साढ़े तीन सौ बरस जीआ। और
नूह की सारी बय नव सौ पचास बरस
की हुई और वह मर गया॥

दसवां पर्व्व।

१ अब नूह के बेटों की बंशावली यही
है सिम हाम और याफत और जलमय
२ के पीछे उन से बेटे उत्पन्न हुए। याफत
के बेटे जुम्र और माजूज और मादी और
यूनान और तूबल और मसक और
३ तीरास। और जुम्र के बेटे अशकनाज
४ और रिफत और तजरम:। और यूनान
के बेटे इलीस: और तरशोश कित्ती और
५ दूदानी। इन्हीं से अन्यदेशियों के टापू
हर एक अपनी अपनी भाषा के और
अपने अपने परिवार के समान अपनी
अपनी जाति में बंट गये॥

६ और हाम के बेटे कूश और मिस्र
७ और फूत और कनआन। और कूश के
बेटे सबा और हवील: और सबत: और
रग़म: और सबतिका और रग़म: के बेटे
सिबा और ददान॥

८ और कूश से निमरूद उत्पन्न हुआ
वह पृथिवी पर एक महाबीर होने लगा।
९ वह ईश्वर के आगे बलवान व्याधा हुआ
इसी लिये कहा जाता है जैसा कि पर-
मेश्वर के आगे निमरूद बलवंत व्याधा।
१० और उस के राज्य का आरंभ बाबुल और
अरक और अक्कद और कलन: सिनआर
११ देश में हुआ। उसी देश में से असूर
निकला और नीनव: और रिहाबात नगर
१२ और कल: बनाये। और नीनव: और
कल: के मध्य में रसन बनाया जो बड़ा
नगर है॥

१३ और मिस्र से लोदी और अनामी और
१४ लिहाबी और नफतूही उत्पन्न हुए। और
फतरूसी और कसलूही जिन से फिलिस्ती
और कफतूरी निकले॥

१५ और कनआन से उस का पहिलौंठा
१६ सैदा और हित्त उत्पन्न हुए। और यबूसी
१७ और अमूरी और जिरजाशी। और हवी
१८ और अरकी और सीनी। और अरवादी
और जमारी और हमाती और उस के
१९ पीछे कनआन के घराने फैल गये। और
कनआन के सिवाने सैदा से जिरार के
मार्ग में उज्ज: लों सदूम और अमुर:
और अदमा और जिबियान और लसअ
२० लों हुए। हाम के बेटे अपने घरानों
और अपनी भाषाओं के समान अपने
देशों और अपने जातिगणों में ये हैं॥

२१ और सिम से भी बालक उत्पन्न हुए
वह सारे इब्र के बंश का पिता था और
२२ याफत उस का बड़ा भाई था। और
सिम के बंश ऐलाम और असूर और
२३ अरफकसद और लूद और अराम थे। और
अराम के बंश ऊज और हूल और जतर
२४ और मश थे। और अरफकसद से सिलह
२५ उत्पन्न हुआ और सिलह से इब्र। और
इब्र से दो बेटे उत्पन्न हुए एक का नाम
फलज था क्योंकि उस के दिनों में पृथिवी
बांटी गई और उस के भाई का नाम
२६ युकतान था। और युकतान से अलमू-
दाद और सलफ और हसरिमौत और
२७ इरख। और हदूराम और ऊजाल और
२८ दिकलह। और ऊबल और अबीमायल

२९ और सिबा। और ओफीर और हवील: और यूबाब उत्पन्न हुए ये सब युक्तान
३० के बेटे थे। और उन के निवास मेसा के मार्ग से जो पूरब के पहाड़ सिफार
३१ लों था। सिम के बेटे अपने घरानों और अपनी भाषाओं के समान अपने अपने देशों और अपने अपने जातिगणों में ये
३२ थे। नूह के बेटों के घराने उन की पीढ़ी और उन के जातिगणों के समान ये हैं और जलमय के पीछे पृथिवी में जातिगण इन्हीं से बांटे गये॥

ग्यारहवां पर्ब्ब।

१ और सारी पृथिवी पर एक ही बोली
२ और एक ही भाषा थी। और ज्यों उन्हों ने पूरब से यात्रा किई तो ऐसा हुआ कि उन्हों ने सिनआर देश में एक चौगान पाया और वहां ठहरे॥

३ तब उन्हों ने आपुस में कहा कि चलो हम ईंट बनावें और आग में पकावें सो उन के लिये ईंट पत्थर की संती और गारा की संती शिलाजतु था।
४ फिर उन्हों ने कहा कि आओ हम एक नगर और एक गुम्मट जिस की चोटी स्वर्ग लों पहुंचे अपने लिये बनावें और अपना नाम करें न हो कि हम सारी
५ पृथिवी पर छिन्न भिन्न हो जायें। तब परमेश्वर उस नगर और उस गुम्मट को जिसे आदम के संतान बनाते थे देखने
६ को उतरा। तब परमेश्वर ने कहा कि देखो लोग एक ही हैं और उन सब की एक ही बोली है अब वे ऐसा ऐसा कुछ करने लगे सो वे जिस पर मन लगावेंगे
७ उस्से अलग न किये जायेंगे। आओ हम उतरें और वहां उन की भाषा का गड़बड़ावें जिसतें एक दूसरे की बोली न
८ समझें। तब परमेश्वर ने उन्हें वहां से सारी पृथिवी पर छिन्न भिन्न किया और वे उस नगर के बनाने से अलग रहे।
इस लिये उस का नाम बाबुल कहावता है क्योंकि परमेश्वर ने वहां सारे जगत की भाषा को गड़बड़ किया और परमेश्वर ने वहां से उन को सारी पृथिवी पर छिन्न भिन्न किया॥

१० सिम की बंशावली यह है कि सिम सौ बरस का होके जलमय के दो बरस पीछे उस्से अरफकसद उत्पन्न हुआ।
११ और अरफकसद की उत्पत्ति के पीछे सिम पांच सौ बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं।
१२ और जब अरफकसद पैंतीस बरस का हुआ तब उस्से सिलह उत्पन्न हुआ।
१३ और सिलह की उत्पत्ति के पीछे अरफकसद चार सौ तीस बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं।
१४ और सिलह जब तीस बरस का हुआ तब उस्से इब्र उत्पन्न हुआ।
१५ और सिलह इब्र की उत्पत्ति के पीछे चार सौ तीस बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं।
१६ और इब्र से चौंतीस बरस की बय में फलज उत्पन्न हुआ।
१७ और फलज की उत्पत्ति के पीछे इब्र चार सौ तीस बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं।
१८ और तीस बरस की बय में फलज से रऊ उत्पन्न हुआ।
१९ और रऊ की उत्पत्ति के पीछे फलज दो सौ नव बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं।
२० और बत्तीस बरस की बय में रऊ से सरूज उत्पन्न हुआ।
२१ और सरूज की उत्पत्ति के पीछे रऊ दो सौ सात बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं।
२२ और सरूज जब तीस बरस का हुआ तब उस्से नहूर उत्पन्न हुआ।
२३ और नहूर की उत्पत्ति के पीछे सरूज दो सौ बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं।
२४ और नहूर जब उंतीस बरस का हुआ तब उस्से तारह उत्पन्न हुआ।
२५ और तारह की उत्पत्ति के पीछे नहूर एक सौ

उंतीस बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां
२६ उत्पन्न हुईं। और तारह जब सत्तर बरस का हुआ तब उस्से अबिराम और नहूर और हारन उत्पन्न हुए॥

२७ और तारह की बंशावली यह है कि तारह से अबिराम और नहूर और हारन उत्पन्न हुए और हारन से लूत उत्पन्न
२८ हुआ। और हारन अपने पिता तारह के आगे अपनी जन्मभूमि अर्थात् कल-
२९ दानियों के ऊर में मर गया। और अबिराम और नहूर ने पत्नियां किईं अबिराम की पत्नी का नाम सरी था और नहूर की पत्नी का नाम मिलकः जो हारन की बेटी थी वही मिलकः और इसकाह का
३० पिता था। परन्तु सरी बांझ थी उस
३१ का कोई संतान न था। और तारह ने अपने बेटे अबिराम को और अपने पोते हारन के बेटे लूत को और अपनी बहू अबिराम की पत्नी सरी को लिया और उन्हें अपने साथ कलदानियों के ऊर से कनआन देश में ले चला और वे हारन
३२ में आये और वहां रहे। और तारह दो सौ पांच बरस का होके हारन में मर गया॥

बारहवां पर्ब्ब।

१ और परमेश्वर ने अबिराम से कहा था कि तू अपने देश और अपने कुनबे से और अपने पिता के घर से उस देश
२ को जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा। और मैं तुस्से एक बड़ी जाति बनाऊंगा और तुझे आशीस देऊंगा और तेरा नाम बड़ा करूंगा और तू एक आशीर्बाद होगा।
३ और जो तुझे आशीस देंगे मैं उन्हें आशीस देऊंगा और जो तुझे धिक्कारेगा मैं उसे धिक्कारूंगा और पृथिवी के सारे घराने तुस्से आशीस पावेंगे॥

४ सो परमेश्वर के कहने के समान अबिराम चला गया और लूत भी उस के संग गया और जब अबिराम हारन से निकला तब वह पचहत्तर बरस
५ का था। फिर अबिराम ने अपनी पत्नी सरी को और अपने भतीजे लूत को और उन की सारी संपत्ति को जो उन्हों ने प्राप्ति किई थी और उन के सारे प्राणियों को जो हारन में मिले थे साथ लिया और कनआन देश को जाने के लिये चल निकले सो वे कनआन देश में आये॥

६ और अबिराम उस देश में होके सिकम के स्थान लों चला गया मोरिः के बलूत लों तब कनआनी उस देश में
७ थे। फिर परमेश्वर ने अबिराम को दर्शन देके कहा कि यह देश मैं तेरे बंश को देऊंगा तब उस ने परमेश्वर के लिये जिस ने उसे दर्शन दिया था वहां एक बेदी बनाई॥

८ फिर वह वहां से बैतएल की पूरब एक पहाड़ की ओर गया और अपना तंबू बैतएल की पच्छिम ओर खड़ा किया और अई पूरब ओर था और वहां उस ने परमेश्वर के लिये एक बेदी बनाई
९ और परमेश्वर का नाम लिया। और अबिराम ने जाते जाते दक्खिन की ओर यात्रा किई॥

१० और उस देश में अकाल पड़ा और अबिराम बास करने के लिये मिस्र को उतर गया क्योंकि उस देश में बड़ा
११ अकाल था। और यों हुआ कि जब वह मिस्र के निकट पहुंचा तब उस ने अपनी पत्नी सरी से कहा कि देख मैं जानता हूं कि तू देखने में सुन्दर स्त्री
१२ है। इस लिये यों होगा कि जब मिस्री तुझे देखें तो वे कहेंगे कि यह उस की पत्नी है और मुझे मार डालेंगे परन्तु
१३ तुझे जीती रक्खेंगे। तू कहियो कि मैं उस की बहिन हूं जिसतें तेरे कारण

मेरा भला होय और मेरा प्राण तेरे हेतु से जीता रहे॥

१४ और जब अबिराम मिस्र में आ पहुंचा तब मिस्रियों ने उस स्त्री को देखा
१५ कि अत्यंत सुन्दरी है। और फिरऊन के अध्यक्षों ने उसे देखा और फिरऊन के आगे उस का सराहना किया सो उस स्त्री को फिरऊन के घर में ले गये।
१६ और उस ने उस के कारण अबिराम का उपकार किया और भेड़ बकरी और बैल और गदहे और दास और दासी और गदहियां और ऊंट उस को मिले।
१७ तब परमेश्वर ने फिरऊन पर और उस के घराने पर अबिराम की पत्नी सरी के
१८ कारण बड़ी बड़ी मरियां डालीं। तब फिरऊन ने अबिराम को बुलाके कहा कि तू ने मुझ्से यह क्या किया तू ने मुझे क्यों न जताया कि वह मेरी पत्नी
१९ है। क्यों कहा कि वह मेरी बहिन है यहां लों कि मैं ने उसे अपनी पत्नी कर लिया होता सो अब देख यह तेरी पत्नी
२० है तू उसे ले और चला जा। तब फिरऊन ने अपने लोगों को उस के विषय में आज्ञा किई और उन्हों ने उसे और उस की पत्नी को उस सब समेत जो उस का था जाने दिया॥

तेरहवां पर्ब्ब।

१ और अबिराम मिस्र से अपनी पत्नी और सारी सामग्री समेत और लूत को अपने संग लिये हुए दक्खिन को चला।
२ और अबिराम ढोर और सोना चांदी
३ में बड़ा धनी था। और वह यात्रा करते दक्खिन से बैतएल लों उसी स्थान को आया जहां आरंभ में उस का तंबू था
४ बैतएल और अई के मध्य में। उस बेदी के स्थान में जिसे उस ने पहिले वहां बनाया था और वहां अबिराम ने परमेश्वर का नाम लिया॥

५ और अबिराम के संगी लूत के भी
६ झुंड और गाय बैल और तंबू थे। और साथ रहने के लिये उस देश में उन की समाई न हुई क्योंकि उन की सामग्री बहुत थी और वे एकट्ठे निवास न कर सके।
७ और अबिराम के ढोर के चरवाहों में और लूत के ढोर के चरवाहों में झगड़ा हुआ और कनआनी और फरिज़ी उस भूमि में रहते थे।
८ तब अबिराम ने लूत से कहा कि मेरे और तेरे बीच और मेरे चरवाहों में और तेरे चरवाहों में झगड़ा न होने पावे क्योंकि हम भाई हैं।
९ क्या सारा देश तेरे आगे नहीं मुझ्से अलग हो जो तू बाईं ओर जाय तो मैं दहिनी ओर जाऊंगा अथवा जो तू दहिनी ओर जाय तो मैं बाईं ओर जाऊंगा॥

१० तब लूत ने अपनी आंख उठाके यर्दन के सारे चौगान को देखा कि ईश्वर के सदूम और अमूरः को नष्ट करने से पहिले वह सर्वत्र अच्छी रीति से सींचा हुआ था परमेश्वर की बारी के समान सुग्र के
११ मार्ग में मिस्र की नाईं था। तब लूत ने यर्दन का सारा चौगान अपने लिये चुना और लूत पूरब की ओर चला और वे एक दूसरे से अलग हुए।
१२ अबिराम कनआन देश में रहा और लूत ने चौगान के नगरों में बास किया और सदूम लों तंबू खड़ा
१३ किया। पर सदूम के लोग परमेश्वर के आगे अत्यंत दुष्ट और पापी थे॥

१४ तब लूत के उस्से अलग होने के पीछे परमेश्वर ने अबिराम से कहा कि अब अपनी आंखें उठा और उस स्थान से जहां तू है उत्तर और दक्खिन और
१५ पूरब और पच्छिम की ओर देख। क्योंकि मैं यह सारा देश जिसे तू देखता है तुझे और तेरे बंश को सदा के लिये
१६ देऊंगा। और मैं तेरे बंश को पृथिवी की धूल के तुल्य करूंगा यहां लों कि

यदि कोई पृथिवी की धूल को गिन सके तो तेरा बंश भी गिना जायगा।
१७ उठके देश की लंबाई और चौड़ाई में होके फिर क्योंकि मैं उसे तुझे देऊंगा।
१८ तब अबिराम ने तंबू उठाया और ममरे के बलूतों में जो हबरून में है आ रहा और वहां परमेश्वर के लिये एक बेदी बनाई॥

चौदहवां पर्ब्ब।

१ और सिनआर के राजा अमराफिल के इल्लासर के राजा अरयूक के ऐलाम के राजा किदरलाउमर के और जातिगणों के राजा तिदआल के दिनों में यों हुआ।
२ कि उन्हों ने सदूम के राजा बरआ से और अमूर: के राजा बिरशअ से अदम: के राजा सिन्निअब से और जिबियान के राजा शिमिबर से और बालिग के राजा
३ से जो सुग्र है संग्राम किया। ये सब सिद्दीम की तराई में जो खारी समुद्र है
४ एकट्ठे हुए। उन्हों ने बारह बरस लों किदरलाउमर की सेवा किई और तेरहवें
५ बरस उस्से फिर गये। और चौदहवें बरस में किदरलाउमर और उस के साथी राजा आये और इसतारात करनैन में रिफाइम को और हाम में जजियों को और सवी करयातैन में ऐमियों को।
६ और उन के सईर पर्बत में हूरियों को फारान के चौगान लों जो बन के पास
७ है मारा। और फिरे और ऐनमिशपात को जो कादिस है फिरे और अमालीक के सारे देश को और अमूरी को भी जो
८ हस्सुनतमर में रहते थे मार लिया। और सदूम का राजा और अमूर: का राजा और अदम: का राजा और जिबियान का राजा और बालिग का राजा जो सुग्र है निकले और सिद्दीम की तराई में उन के संग युद्ध किया। ऐलाम के राजा किदरलाउमर के संग और जातिगणों के राजा तिदआल के संग और सिनआर के राजा अमराफिल और इल्लासर के राजा अरयूक अर्थात् चार राजा पांच के संग।
१० और सिद्दीम की तराई में चहले के गड़हे थे और सदूम और अमूर: के राजा भागे और वहां गिरे और बचे हुए लोग भागके पहाड़ पर
११ गये। और उन्हों ने सदूम और अमूर: की सारी संपत्ति और उन के सारे भोजन
१२ लूट लिये और अपने मार्ग पकड़े। और अबिराम के भतीजे लूत को जो सदूम में रहता था और उस की संपत्ति को लेके चले गये॥

१३ तब किसी ने बचके इब्रानी अबिराम को संदेश दिया और वह इसकाल और अनेर के भाई अमूरी ममरे के बलूतों के नीचे रहता था और वे अबिराम के सहायक थे।
१४ और अबिराम ने अपने भाई के ले जाने की बात सुनके अपने घर के तीन सौ अठारह दासों को लिया और
१५ दान लों उन का पीछा किया। और उस ने और उस के सेवकों ने आप को रात को बिभाग किया और उन्हें मारा और खूब: लों जो दमिश्क की बाईं
१६ ओर है उन्हें रगेदे चले गये। और वह सारी संपत्ति को और अपने भाई लूत को भी और उस की संपत्ति को और स्त्रियों को भी और लोगों को फेर लाया॥

१७ और किदरलाउमर को और उस के संगी राजाओं को मारके फिर आने के पीछे सदूम का राजा उस्से भेंट करने को सवी की तराई लों जो राजा की तराई
१८ है निकला। और सालिम का राजा मलिकिसिदक रोटी और दाखरस लाया और वह अति महान ईश्वर का याजक
१९ था। और उस ने उसे आशीस दिया और बोला कि आकाश और पृथिवी के

प्रभु अति महान सर्व्वशक्तिमान से अबि-
२० राम धन्य होवे। और अति महान सर्व्वशक्तिमान को धन्य जिस ने तेरे बैरियों को तेरे हाथ में सौंप दिया और उस ने सब का दसवां भाग उसे दिया॥
२१ और सदूम के राजा ने अबिराम से कहा कि प्राणियों को मुझे दीजिये और
२२ संपत्ति आप रखिये। तब अबिराम ने सदूम के राजा से कहा कि मैं ने अपना हाथ अति महान सर्व्वशक्तिमान परमेश्वर के आगे जो स्वर्ग और पृथिवी का प्रभु
२३ है उठाया है। कि मैं एक तागे से लेके जूते के बंद लों आप का कुछ न लेऊंगा सो मत कहियो कि मैं ने अबिराम को
२४ धनवान किया। परन्तु केवल वह जो तरुणों ने खाया और उन मनुष्यों के भाग जो मेरे संग अर्थात् अनेर और इसकाल और ममरे के वे अपने भाग लेवें॥

पंदरहवां पर्व्व

१ इन बातों के पीछे परमेश्वर का बचन यह कहते हुए दर्शन में अबिराम पर पहुंचा कि हे अबिराम मत डर मैं तेरी ढाल और तेरा बड़ा प्रतिफल हूं।
२ तब अबिराम ने कहा कि हे प्रभु ईश्वर तू मुझे क्या देगा मैं तो निर्वंश जाता हूं और मेरे घर का भंडारी दमिशकी
३ इलिअजर है। और अबिराम ने कहा कि देख तू ने मुझे कोई वंश न दिया और देख जो मेरे घर में उत्पन्न हुआ
४ वही मेरा अधिकारी है। और देखो परमेश्वर का बचन उस्से यों कहते हुए पहुंचा कि यह तेरा अधिकारी न होगा परन्तु जो तुझी से उत्पन्न होगा सो तेरा
५ अधिकारी होगा। फिर उस ने उसे बाहर ले जाके कहा अब स्वर्ग की ओर देख और जो तारों को तू गिन सके तो उन्हें गिन फिर उस ने उसे कहा कि तेरा वंश ऐसा ही होगा। तब वह परमेश्वर पर
६ बिश्वास लाया और यह उस के लिये धर्म गिना गया॥
७ फिर उस ने उसे कहा कि मैं परमेश्वर हूं जो तुझे यह भूमि अधिकार में देने को कलदानियों के ऊर से निकाल लाया।
८ तब उस ने कहा कि हे प्रभु परमेश्वर मैं क्योंकर जानूं कि मैं उस का अधिकारी
९ होऊंगा। तब उस ने उसे कहा कि तू तीन बरस की एक कलोर और तीन बरस की एक बकरी और तीन बरस का एक मेढ़ा और एक पंडुक और कपोत
१० का एक बच्चा मेरे लिये ले। सो उस ने यह सब अपने लिये लिया और उन्हें मध्य से दो दो भाग किये और हर एक भाग को उस के दूसरे भाग के साम्ने धरा परन्तु पंछियों का भाग न किया।
११ और जब हिंसक पंछी उन लोथों पर उतरे तब अबिराम ने उन्हें हांक दिया।
१२ और सूर्य्य अस्त होते हुए अबिराम पर भारी नींद पड़ी और क्या देखता है कि बड़ा भयंकर अंधकार उस पर पड़ा।
१३ तब उस ने अबिराम को कहा निश्चय जान कि तेरे वंश औरों के देश में परदेशी होंगे और उन की सेवा करेंगे और वे उन्हें
१४ चार सौ बरस लों सतावेंगे। परन्तु जिन की वे सेवा करेंगे मैं उस जाति का भी बिचार करूंगा और वे पीछे बड़ी संपत्ति लेके
१५ निकलेंगे। और तू अपने पितरों में कुशल से जायगा, और बहुत पुरनिया
१६ होके गाड़ा जायगा। परन्तु चौथी पीढ़ी में वे इधर फिर आवेंगे क्योंकि अमूरियों का अधर्म अब लों भरपूर नहीं हुआ।
१७ और जब सूर्य्य अस्त हुआ तो यों हुआ कि अंधियारा हुआ कि देखो एक धूआं उठता भट्ठा और एक आग का दीपक उन टुकड़ों के मध्य में से होके चला
१८ गया। उसी दिन परमेश्वर ने अबिराम

से नियम करके कहा कि मैं ने मिस्र की नदी से फ़ुरात की बड़ी नदी लों यह १९ देश तेरे बंश को दिया है। अर्थात् कैनी २० और कनजी और कदमूनी। और हित्ती २१ और फ़रिज्जी और रिफ़ाइमी। और अमूरी और कनआनी और जिरजाशी और यबूसी का देश॥

सोलहवां पर्व्व

१ अब अबिराम की पत्नी सरी कोई लड़का उस के लिये न जनी और उस की एक मिस्री लौंड़ी थी और उस का नाम २ हाजिर: था। तब सरी ने अबिराम से कहा कि देख परमेश्वर ने मुझे जन्ने से रोका है मैं तेरी बिन्ती करती हूं कि मेरी लौंड़ी पास जाइये क्या जाने मेरा घर उस्से बस जाय और अबिराम ने सरी ३ की बात मानी। सो अबिराम के कनआन देश में दस बरस निवास करने के पीछे उस की पत्नी सरी ने अपनी लौंड़ी मिस्री हाजिर: को लिया और अपने पति अबिराम को उस की पत्नी होने को ४ दिया। और उस ने हाजिर: को ग्रहण किया और वह गर्भिणी हुई और जब उस ने आप को गर्भिणी देखा तो उस की स्वामिनी उस की दृष्टि में निंदित हुई। ५ तब सरी ने अबिराम से कहा कि मेरा दोष आप पर मैं ने अपनी लौंड़ी आप को गोद में दिई और जब उस ने अपने को गर्भिणी देखा तो मैं उस की दृष्टि में निंदित हुई मेरे और आप के बीच ६ परमेश्वर न्याय करे। तब अबिराम ने सरी से कहा कि देख तेरी लौंड़ी तेरे हाथ में है जो तुझे अच्छा लगे सो उस्से कर और जब सरी ने उस्से कठिनता किई तब वह उस के आगे से भाग गई॥

७ और परमेश्वर के दूत ने एक पानी के सोते के पास बन में उस सोते के पास जो सूर के मार्ग में है उसे पाया। ८ और कहा कि हे सरी की लौंड़ी हाजिर: तू कहां से आई है और किधर जायेगी और वह बोली कि मैं अपनी स्वामिनी सरी के आगे से भागती हूं। ९ और परमेश्वर के दूत ने उसे कहा कि अपनी स्वामिनी के पास फिर जा और उस के १० बश में रह। फिर परमेश्वर के दूत ने उसे कहा कि मैं तेरा बंश अत्यंत बढ़ाऊंगा ऐसा कि वह बहुताई के मारे गिना ११ न जायगा। और परमेश्वर के दूत ने उसे कहा कि देख तू गर्भिणी है और एक बेटा जनेगी और उस का नाम इसमअएल रखना क्योंकि परमेश्वर ने तेरा १२ दुःख सुना। और वह एक बनमनुष्य होगा उस का हाथ हर एक मनुष्य के बिरुद्ध और हर एक का हाथ उस के बिरुद्ध होगा और वह अपने सारे भाइयों १३ के साम्ने निवास करेगा। तब उस ने उस परमेश्वर का नाम जिस ने उस्से बातें किईं यों लिया कि हे सर्वशक्तिमान तू मुझे देखता है क्योंकि उस ने कहा कि क्या मैं ने अपने दर्शी का पीछा यहां भी १४ देखा है। इस लिये उस कूएं का नाम मेरे जीवतेदर्शी का कुआ रक्खा देखो वह १५ कादिस और बिरद के मध्य में है। सो हाजिर: अबिराम के लिये एक बेटा जनी और अबिराम ने अपने बेटे का नाम १६ जिसे हाजिर: जनी इसमअएल रक्खा। और जब हाजिर: से अबिराम के लिये इसमअएल उत्पन्न हुआ तब अबिराम छियासी बरस का था॥

सत्रहवां पर्व्व

१ और जब अबिराम निन्नानवे बरस का हुआ तब परमेश्वर ने अबिराम को दर्शन दिया और कहा कि मैं सर्वसामर्थी सर्वशक्तिमान हूं तू मेरे आगे चल और सिद्ध २ हो। और मैं अपने और तेरे मध्य में

अपना नियम बांधूंगा और मैं तुझे अत्यंत ३ बढ़ाऊंगा। तब अबिराम औंधा गिरा और ४ ईश्वर ने उस्से बातें करके कहा। कि मैं जो हूं देख मेरा नियम तेरे संग होगा और तू बहुत से जातिगणों का पिता ५ होगा। और तेरा नाम फिर अबिराम न होगा परन्तु तेरा नाम अबिरहाम होगा क्योंकि मैं ने तुझे बहुत से जाति- ६ गणों का पिता बनाया है। और मैं तुझे अत्यंत फलवान करूंगा और तुस्से जाति-गण बनाऊंगा और राजा तुस्से निकलेंगे। ७ और मैं अपना नियम अपने और तेरे मध्य में और तेरे पीछे तेरे बंश के उन की पीढ़ियों में सदा के लिये एक नियम जो उन के साथ सदा लों रहे ठहराऊंगा कि मैं तेरा और तेरे पीछे तेरे बंश का ईश्वर ८ हूंगा। और मैं तुझे और तेरे पीछे सर्व्वदा अधिकार के लिये तेरे बंश को तेरे टिकाव का देश देऊंगा अर्थात् कनआन का सारा देश और मैं उन का ईश्वर हूंगा॥

९ और ईश्वर ने अबिरहाम से कहा कि तू और तेरे पीछे तेरा बंश उन की १० पीढ़ियों में मेरे नियम को मानें। तुम मेरा नियम जो मुस्से और तुम से और तेरे पीछे तेरे बंश से है जिसे तुम मानोगे सो यह है कि तुम में से हर एक पुरुष ११ का खतनः किया जाय। और तुम अपने शरीर की खलड़ी काटो और वह मेरे और तुम्हारे मध्य में नियम का चिन्ह होगा। १२ और तुम्हारी पीढ़ियों में हर एक आठ दिन के पुरुष का खतनः किया जाय जो घर में उत्पन्न होय अथवा जो किसी परदेशी से जो तेरे बंश का न हो रुपे १३ से मोल लिया जाय। जो तेरे घर में उत्पन्न हुआ हो और जो तेरे रुपे से मोल लिया गया हो अवश्य उस का खतनः किया जाय और मेरा नियम तुम्हारे मांस १४ में सर्व्वदा नियम के लिये होगा। और जो अखतनः बालक जिस की खलड़ी का खतनः न हुआ हो सो प्राणी अपने लोगों से कट जाय कि उस ने मेरा नियम तोड़ा है॥

१५ फिर ईश्वर ने अबिरहाम से कहा तेरी पत्नी सरी जो है तू उसे सरी मत कह परन्तु उस का नाम सरः रख। १६ और मैं उसे आशीस देऊंगा और तुझे एक बेटा उस्से भी देऊंगा निश्चय मैं उसे आशीस देऊंगा और वह जातिगण होगी और लोगों के राजा उस्से होंगे। १७ तब अबिरहाम औंधे मुंह गिरा और हंसा और अपने मन में कहा क्या सौ बरस के बृद्ध से लड़का उत्पन्न होगा और क्या सरः जो नब्बे बरस की है जनेगी। १८ फिर अबिरहाम ने ईश्वर से कहा कि हाय कि इसमअएल तेरे आगे जीता रहे। १९ तब ईश्वर ने कहा कि तेरी पत्नी सरः तेरे लिये निश्चय एक बेटा जनेगी और तू उस का नाम इजहाक रखना और मैं सर्व्वदा नियम के लिये अपना नियम उस्से और उस के पीछे उस के बंश से स्थिर करूंगा। २० और इसमअएल जो है मैं ने उस के बिषय में तेरी सुनी है देख मैं ने उसे आशीस दिया और उसे फलवान करूंगा और उसे अत्यंत बढ़ाऊंगा उस्से बारह अध्यक्ष उत्पन्न होंगे और उसे बड़ी मंडली २१ बनाऊंगा। परन्तु इजहाक के साथ जिसे सरः तेरे लिये दूसरे बरस इसी ठहराये हुए समय में जनेगी मैं अपना नियम स्थिर करूंगा॥

२२ तब उस्से बात करने से रह गया और अबिरहाम के पास से ईश्वर ऊपर जाता २३ रहा। तब अबिरहाम ने अपने बेटे इसमअएल को और सब जो उस के घर में उत्पन्न हुए थे और सब जो उस के रुपे से मोल लिये गये थे अर्थात् अबिरहाम के घराने के हर एक पुरुष

को लेके उसी दिन उन की खलड़ी का खतन: किया जैसा कि ईश्वर ने उसे २४ कहा था। और जब उस की खलड़ी का खतन: हुआ तब अबिरहाम निन्नानवे २५ बरस का था। और जब उस के बेटे इसमअईल की खलड़ी का खतन: हुआ २६ तब वह तेरह बरस का था। उसी दिन अबिरहाम और उस के बेटे इसमअएल २७ का खतन: किया गया। और उस के घराने के सारे पुरुषों का जो घर में उत्पन्न हुए और जो परदेशियों से मोल लिये गये उस के साथ खतन: किये गये॥

अठारहवां पर्ब्ब।

१ फिर परमेश्वर उसे ममरे के बलूतों में दिखाई दिया और वह दिन को घाम के समय में अपने तंबू के द्वार पर बैठा २ था। और उस ने अपनी आंखें उठाईं और देखा और देखो कि तीन मनुष्य उस के पास खड़े हैं और उन्हें देखके वह तंबू के द्वार पर से उन की भेंट को ३ दौड़ा और भूमि लों दंडवत किई। और कहा हे मेरे स्वामी यदि मैं ने अब आप की दृष्टि में अनुग्रह पाया है तो मैं आप की बिन्ती करता हूं कि अपने दास के ४ पास से चले न जाइये। इच्छा होय तो थोड़ा जल लाया जाय और अपने चरण धोइये और पेड़ तले बिश्राम कीजिये। ५ और मैं एक कौर रोटी लाऊं और आप तृप्त हूजिये उस के पीछे आगे बढ़िये क्योंकि आप इसी लिये अपने दास के पास आये हैं तब वे बोले कि जैसा तू ६ ने कहा तैसा कर। और अबिरहाम तंबू में सर: पास उतावली से गया और उसे कहा कि फुरती कर और तीन नपुआ चोखा पिसान लेके गूंध और उस के ७ फुलके पका। और अबिरहाम झुंड की ओर दौड़ा गया और एक अच्छा कोमल बछड़ा लेके दास को दिया उस ने भी उसे सिद्ध करने में चटक किया। और उस ने मक्खन ८ और दूध और वह बछड़ा जो पकाया था लिया और उन के आगे धरा और आप उन के पास पेड़ तले खड़ा रहा और उन्हों ने खाया॥

९ और उन्हों ने उस से पूछा कि तेरी पत्नी सर: कहां है और वह बोला कि देखिये तंबू में है। और उस ने कहा कि १० जीवन के समय के समान निश्चय मैं तुझ पास फिर आऊंगा और देख तेरी पत्नी सर: एक बेटा जनेगी और सर: उस के पीछे तंबू के द्वार पर सुनती थी। ११ और अबिरहाम और सर: बूढ़े और पुरनिये थे और सर: से स्त्री का व्यवहार जाता १२ रहा। और सर: हंसके अपने मन में बोली कि क्या अब मुझे बुढ़ापे में और मेरा स्वामी भी पुरनिया है फिर आनन्द १३ होगा। और परमेश्वर ने अबिरहाम से कहा कि सर: क्यों यह कहके मुसकुराई कि मैं जो बुढ़िया हूं सचमुच बालक १४ जनूंगी? क्या परमेश्वर के लिये कोई बात असाध्य है जीवन के समय के समान मैं ठहराये हुए समय में तुझ पास फिर १५ आऊंगा और सर: को बेटा होगा। और सर: यह कहके मुकर गई कि मैं तो नहीं हंसी क्योंकि वह डर गई थी तब उस ने कहा नहीं परन्तु तू हंसी है॥

१६ और वे मनुष्य वहां से उठके सदूम की ओर देखने लगे और अबिरहाम उन्हें १७ बिदा करने को उन के साथ साथ चला। और परमेश्वर ने कहा कि जो मैं करता हूं सो क्या अबिरहाम से छिपाऊं। १८ अबिरहाम तो निश्चय एक बड़ा और बलवान जाति होगा और पृथिवी के सारे जातिगण उस में आशीष पावेंगे। १९ क्योंकि मैं उसे जानता हूं कि वह अपने पीछे अपने बालकों और अपने घराने को आज्ञा करेगा और वे न्याय और

बिचार करने को परमेश्वर का मार्ग पालन करेंगे जिसतें जो कुछ परमेश्वर ने अबिरहाम के विषय में कहा है सो उस पर पहुंचावे। २० और परमेश्वर ने कहा इस कारण कि सदूम और अमूरः का चिल्लाना बड़ा है और इस कारण कि उन के पाप अत्यंत गाढ़ हुए। २१ मैं उतरूंगा और देखूंगा कि उस के चिल्लाने के समान जो मुझ लों पहुंचो है उन्हों ने पूरा किया है और यदि नहीं तो मैं जानूंगा। २२ और उन मनुष्यों ने वहां से अपने मुंह फेरे और सदूम की ओर गये परन्तु अबिरहाम तब भी परमेश्वर के आगे खड़ा रहा॥

२३ और अबिरहाम पास गया और कहा कि क्या तू दुष्ट के संग धर्म्मी को भी नष्ट करेगा। २४ यदि नगर में पचास धर्म्मी होयं क्या तब भी नष्ट करेगा और उस के पचास धर्म्मियों के लिये जो उस में हैं उस स्थान को न छोड़ेगा। २५ दुष्ट के संग धर्म्मी को मारना ऐसी बात तुस्से परे होय और कि धर्म्मी दुष्ट के समान हो जाय तुस्से दूर होय क्या सारी पृथिवी का न्यायी न्याय न करेगा। २६ और परमेश्वर ने कहा यदि मैं सदूम नगर में पचास धर्म्मी पाऊं तो मैं उन के लिये सारे स्थान को छोड़ देऊंगा। २७ फिर अबिरहाम ने उत्तर देके कहा कि देख मैं ने परमेश्वर के आगे बोलने में ढिठाई किई यद्यपि मैं धूल और राख हूं। २८ यदि पचास धर्म्मियों से पांच घट होवें तो क्या पांच के लिये सारे नगर को नाश करेगा तब उस ने कहा यदि मैं वहां पैंतालीस पाऊं तो नाश न करूंगा। २९ और उस ने उस्से फिर बातें किईं और कहा यदि चालीस वहां पाये जावें तब उस ने कहा मैं चालीस के कारण ऐसा न करूंगा। ३० और उस ने कहा हाय कि प्रभु क्रुद्ध न होवे तो मैं कहूं यदि वहां तीस पाये जायें तब उस ने कहा यदि मैं वहां तीस पाऊं तो ऐसा न करूंगा। ३१ और उस ने कहा कि देख मैं ने प्रभु के आगे बोलने में ढिठाई किई यदि बीस ही वहां पाये जायें तब उस ने कहा मैं बीस के कारण नाश न करूंगा। ३२ फिर उस ने कहा हाय कि प्रभु क्रुद्ध न होवे तो मैं अब की बार फिर कहूं यदि वहां दस ही पाये जावें तब उस ने कहा मैं दस के कारण नाश न करूंगा। ३३ तब परमेश्वर अबिरहाम से बातचीत समाप्त करके चला गया और अबिरहाम अपने स्थान को फिरा॥

उन्नीसवां पर्ब्ब।

१ और सांझ को दो दूत सदूम में आये और लूत सदूम के फाटक पर बैठा था और लूत उन्हें देखकर उन से भेंट करने को उठा और भूमि लों दंडवत किई। २ और कहा हे मेरे स्वामी अपने दास के घर की ओर चलिये और रात भर ठहरिये और अपने चरण धोइये और तड़के उठके अपने मार्ग लीजिये तब उन्हों ने कहा कि नहीं परन्तु हम रात भर सड़क में रहेंगे। ३ पर जब उस ने उन्हें बहुत दबाया तब वे उस की ओर फिरे और उस के घर में आये तब उस ने उन के लिये जेवनार किया और अखमीरी रोटी उन के लिये पकाई और उन्हों ने खाई॥

४ उन के लेटने से आगे नगर के मनुष्यों अर्थात् सदूम के मनुष्यों ने तरुण से बूढ़े लों सब लोगों ने चारों ओर से आके उस घर को घेरा। ५ और लूत को पुकारके कहा कि जो पुरुष तेरे यहां आज रात आये हैं सो कहां हैं हमारे पास उन्हें बाहर ला और हम उन से संगम करें। ६ और लूत द्वार से उन पास बाहर गया ७ और अपने पीछे किवाड़ बंद किया। और

कहा कि हे भाइयो ऐसी दुष्टता न करना। ८ देखो मेरी दो बेटियां हैं जो पुरुष से अज्ञान हैं कहो तो मैं उन्हें तुम्हारे पास बाहर लाऊं और जो तुम्हारी दृष्टि में भला लगे सो उन से करो केवल उन मनुष्यों से कुछ न करो क्योंकि वे इस लिये मेरी छत की छाया तले आये हैं। ९ और उन्हों ने कहा कि हट जा और कहा कि यह एक जन हम्में टिकने को आया सो अब न्यायी होने चाहता है अब हम तेरे साथ उन से अधिक बुराई करेंगे तब वे उस पुरुष पर अर्थात् लूत पर हुल्लड़ करके आये और किवाड़ तोड़ने १० को झपटे। परन्तु उन पुरुषों ने अपने हाथ बढ़ाके लूत को घर में अपने पास खींच लिया और किवाड़ बंद किया। ११ और छोटे से बड़े लों उन मनुष्यों को जो घर के द्वार पर थे अंधापन से मारा यहां लों कि वे द्वार ढूंढ़ते ढूंढ़ते थक गये॥

१२ तब उन पुरुषों ने लूत से कहा कि तेरा कोई और यहां है जमाई अथवा तेरे बेटे अथवा तेरी बेटियां जो कोई इस नगर में तेरा है उन्हें लेकर इस स्थान १३ से निकल जा। क्योंकि हम इस स्थान को नाश करते हैं क्योंकि इन का चिल्लाना परमेश्वर के आगे बड़ा है और परमेश्वर ने हमें इसे नाश करने को भेजा है। १४ तब लूत निकला और अपने जमाइयों से जिन्हों से उस की बेटियां ब्याही थीं बोला और कहा कि उठो इस स्थान से निकलो क्योंकि परमेश्वर इस नगर को नष्ट करता है परन्तु वह अपने जमाइयों की दृष्टि में जैसा कोई ठठेलू दिखाई दिया॥

१५ और जब बिहान हुआ तब दूतों ने लूत को शीघ्र करवाके कहा कि उठ अपनी पत्नी और अपनी दो बेटियां जो यहां हैं ले जा न हो कि तू इस नगर के दंड में भस्म हो जाय। और जब १६ वह बिलंब करता था तब उन पुरुषों ने उस का और उस की पत्नी का और उस की दोनों बेटियों का हाथ पकड़ा क्योंकि परमेश्वर की कृपा उस पर थी और उसे निकालकर नगर के बाहर डाल दिया। और जब उन्हें बाहर निकाला तो कहा १७ कि अपने प्राण के लिये भाग और पीछे मत देखना और सारे चौगान में न ठहरना पहाड़ पर भाग जा न होवे कि तू भस्म होवे। तब लूत ने उन्हें कहा कि हे १८ मेरे प्रभु ऐसा नहीं। देखिये आप के १९ दास ने आप की दृष्टि में अनुग्रह पाया है और तू ने अपनी दया बढ़ाई है जो तू ने मेरे प्राण बचाने में मेरे साथ किई है मैं तो पहाड़ पर नहीं भाग सक्ता न होवे कि कोई बिपत्ति मुझ पर पड़े और मैं मर जाऊं। देखिये कि यह नगर वहां २० भागने को समीप है और वह छोटा है मुझे उधर जाने दीजिये वह क्या छोटा नहीं सो मेरा प्राण बच जायगा। और २१ उस ने उसे कहा कि देख इस बात के बिषय में भी मैं ने तेरे मुंह को ग्रहण किया है कि मैं इस नगर को जिस को तू ने कहा उलट न देऊंगा। शीघ्र कर २२ और उधर भाग क्योंकि जब लों तू वहां न पहुंचे मैं कुछ कर नहीं सक्ता इस लिये उस नगर का नाम सुग्र रक्खा। सूर्य्य पृथिवी पर उदय हुआ था जब लूत २३ सुग्र में पहुंचा॥

तब परमेश्वर ने सदूम और अमूरः २४ पर गंधक और आग परमेश्वर की ओर से स्वर्ग से बरसाया। और उन नगरों २५ को और सारे चौगान को और नगरों के सारे निवासियों को और जो कुछ भूमि पर उगता था उलट दिया। परन्तु उस २६ की पत्नी ने उस के पीछे से फिरके देखा और वह लोन का खंभा बन गई। और २७

अबिरहाम तड़के बिहान को तड़के उस स्थान में जहां वह परमेश्वर के आगे
२८ खड़ा था आ पहुंचा। और उस ने सदूम और अमूर: और चौगान को सारी भूमि पर दृष्टि किई और देखा कि उस भूमि से भट्ठी का सा धुआं उठ रहा है॥

२९ और यों हुआ कि जब ईश्वर ने चौगान के नगरों को नष्ट किया तब ईश्वर ने अबिरहाम को स्मरण किया और उन नगरों को जहां लूत रहता था नष्ट करते हुए लूत को उस बिपत्ति से
३० छुड़ाया। और लूत अपनी बेटियों समेत सुग्र से पहाड़ पर जा रहा क्योंकि वह सुग्र में रहने को डरा तब वह और उस की दो बेटियां एक कंदला में जा रहे।
३१ और पहिलौंठी ने छुटकी से कहा कि हमारा पिता बृद्ध है और पृथिवी पर कोई पुरुष नहीं रहा जो जगत की रीति
३२ के समान हमें ग्रहण करे। आओ हम अपने पिता को दाखरस पिलावें और हम उस के साथ शयन करें कि हम अपने
३३ पिता से बंश जुगावें। तब उन्हों ने उस रात अपने पिता को दाखरस पिलाया और पहिलौंठी गई और अपने पिता के साथ शयन किया और उस ने उस के शयन करते और उठते सुरत न किई।
३४ और जब दूसरा दिन हुआ तब पहिलौंठी ने छुटकी से कहा कि देख मैं ने कल रात अपने पिता के साथ शयन किया हम उसे आज रात भी दाखरस पिलावें और तू जाके उस के साथ शयन कर जिसतें हम अपने पिता का बंश जुगावें।
३५ तब उन्हों ने अपने पिता को उस रात भी दाखरस पिलाया और छुटकी ने उठके उस के साथ शयन किया और उस ने उस के न शयन करते न उठते हुए सुरत
३६ किई। सो लूत की दोनों बेटियां अपने
३७ पिता से गर्भिणी हुई। और पहिलौंठी एक बेटा जनी और उस का नाम मोआब रक्खा वही आज लों मोआबियों का
३८ पिता है। और छुटकी वह भी एक बेटा जनी और उस का नाम बिनअम्मी रक्खा वही आज लों अम्मून के बंश का पिता है॥

बीसवां पर्ब्ब।

१ फिर अबिरहाम ने वहां से दक्खिन के देश की यात्रा किई और कादिस और सूर के बीच ठहरा और जिरार में टिका।
२ और अबिरहाम अपनी पत्नी सर: के बिषय में बोला कि वह मेरी बहिन है सो जिरार के राजा अबिमलिक ने भेजके सर: को ले लिया॥

३ परन्तु रात को ईश्वर ने अबिमलिक पास स्वप्न में आके उसे कहा कि देख तू इस स्त्री के कारण जिसे तू ने लिया है
४ मरेगा क्योंकि वह ब्याही स्त्री है। परन्तु अबिमलिक उस पास न आया था तब उस ने कहा कि हे प्रभु क्या तू धर्मी जाति
५ को भी मार डालेगा। क्या उस ने मुझे नहीं कहा कि वह मेरी बहिन है और वह आपही बोली कि वह मेरा भाई है मैं ने अपने मन की सच्चाई और हाथों
६ की निर्दोषता से यह किया है। तब ईश्वर ने उसे स्वप्न में कहा कि मैं भी जानता हूं कि तू ने अपने मन की सच्चाई से यह किया है और मैं ने भी तुझे मेरे बिरुद्ध पाप करने से रोका इस लिये मैं
७ ने तुझे उसे छूने न दिया। सो अब उस पुरुष की उस की पत्नी फेर दे क्योंकि वह भविष्यद्वक्ता है और वह तेरे लिये प्रार्थना करेगा और तू जीता रहेगा परन्तु यदि तू उसे फेर न देगा तो यह जान कि तू और तेरे सारे जन निश्चय मरेंगे॥

८ तब अबिमलिक ने बिहान को तड़के उठकर अपने सारे सेवकों को बुलाया और ये सारी बातें उन्हें सुनाईं तब वे

९ जन बहुत डर गये। तब अबिमलिक ने अबिरहाम को बुलाया और उसे कहा कि तू ने हम से क्या किया है और मैं ने तेरा क्या अपराध किया कि तू मुझ पर और मेरे राज्य पर एक बड़ा पाप लाया है तू ने मुस्से ऐसे काम किये जिन का १० करना उचित नहीं। और अबिमलिक ने अबिरहाम से कहा कि तू ने क्या देखा ११ जो तू ने यह काम किया है। और अबिरहाम बोला कि मैं ने कहा कि निश्चय ईश्वर का भय इस स्थान में नहीं है और मेरी पत्नी के लिये वे मुझे मार डालेंगे। १२ और वह तो निश्चय मेरी बहिन भी है वह मेरे पिता की पुत्री है परन्तु मेरी माता की पुत्री नहीं सो मेरी पत्नी हो १३ गई। और यों हुआ कि जब ईश्वर ने मेरे पिता के घर से मुझे भ्रमाया तो मैं ने उसे कहा कि मुझ पर तू यही अनुग्रह करियो कि सब स्थान में जहां कहीं हम जायें मेरे विषय में कहियो कि वह मेरा १४ भाई है। तब अबिमलिक ने भेड़ बकरी और गाय बैल और दास और दासियां लेकर अबिरहाम को दिया और उस की १५ पत्नी सर: को भी उसे फेर दिया। फिर अबिमलिक ने कहा कि देख मेरा देश तेरे आगे है जहां तेरी दृष्टि में भावे तहां १६ रह। और सर: से कहा कि देख मैं ने तेरे भाई को सहस्र टुकड़ा चांदी दिई है देख तेरे सारे संगियों के लिये और सभों के लिये वह तेरी आंखों की ओट १७ होगी सो वह यों डपटी गई। तब अबिरहाम ने ईश्वर की प्रार्थना किई और ईश्वर ने अबिमलिक और उस की पत्नी और उस की दासियों को चंगा १८ किया और वे जन्ने लगीं। क्योंकि परमेश्वर ने अबिरहाम की पत्नी सर: के कारण अबिमलिक के सारे कोखों को बंद कर दिया था॥

इक्कीसवां पर्व्व

१ और अपने कहने के समान परमेश्वर ने सर: से भेंट किया और अपने बचन के समान परमेश्वर ने सर: के विषय में २ किया। और सर: गर्भिणी हुई और अबिरहाम के लिये उस के बुढ़ापे में उसी समय में जो ईश्वर ने उसे कहा था एक ३ बेटा जनी। और अबिरहाम ने अपने बेटे का नाम जो उस के लिये उत्पन्न हुआ जिसे सर: उस के लिये जनी थी ४ इजहाक रक्खा। और ईश्वर की आज्ञा के समान अबिरहाम ने आठवें दिन अपने बेटे इजहाक का खतन: किया। ५ जब उस का बेटा इजहाक उस के लिये उत्पन्न हुआ तब अबिरहाम सौ बरस का ६ वृद्ध था। तब सर: बोली कि ईश्वर ने मुझे हंसाया सारे सुनवैये मेरे लिये हंसेंगे। ७ और वह बोली कि कौन अबिरहाम से कहता कि सर: बालक को दूध पिलावेगी क्योंकि उस के बुढ़ापे में मैं बेटा जनी॥

८ और वह लड़का बढ़ा और उस का दूध छुड़ाया गया और इजहाक के दूध छुड़ाने के दिन अबिरहाम ने बड़ी जेवनार किई। और सर: ने मिस्री हाजिर: के बेटे को जिसे वह अबिरहाम के लिये १० जनी थी चिढ़ाते देखा। तब उस ने अबिरहाम से कहा कि आप इस लौंडी को और उस के बेटे को निकाल दीजिये क्योंकि यह लौंडी का बेटा मेरे बेटे इजहाक के साथ अधिकारी न ११ होगा। और अपने बेटे के लिये यह बात अबिरहाम को बड़ी कड़वी लगी। १२ तब ईश्वर ने अबिरहाम से कहा कि लड़के के और तेरी लौंडी के विषय में तुझे कड़वी न लगे सब जो सर: ने तुझे कहा मान ले क्योंकि तेरा वंश इजहाक १३ से गिना जायगा। और मैं उस लौंडी के

बेटे से भी एक जाति बनाऊंगा क्योंकि १४ वह तेरा बंश है। तब अबिरहाम ने बड़े तड़के उठके रोटी और एक पखाल में जल लिया और हाजिर: के कंधे पर धर दिया और लड़के को भी उसे सौंपके उसे बिदा किया॥

और वह चल निकली और बीअर-१५ सबआ के बन में भ्रमती फिरी। और जब पखाल का जल चुक गया तब उस ने उस लड़के को एक झाड़ी के तले डाल १६ दिया। और आप उस के सन्मुख एक तीर के टप्पे पर दूर जा बैठी क्योंकि वह बोली कि मैं इस बालक की मृत्यु को न देखूं और वह उस के सन्मुख १७ बैठके चिल्ला चिल्ला रोई। तब ईश्वर ने उस बालक का शब्द सुना और ईश्वर के दूत ने स्वर्ग में से हाजिर: को पुकारा और उसे कहा कि हे हाजिर: तुझे क्या हुआ मत डर क्योंकि जहां वह बालक है तहां ईश्वर ने उस के शब्द को सुना १८ है। उठ और उस लड़के को उठा उसे अपने हाथ से धर ले कि मैं उस्से १९ एक बड़ी जाति बनाऊंगा। और ईश्वर ने उस की आंखें खोल दिईं तब उस ने पानी का एक कुआ देखा और उस ने जाके उस पखाल को जल से भरा २० और उस लड़के को पिलाया। और ईश्वर उस लड़के के साथ था और वह बढ़ा और बन में रहा किया और धनुषधारी २१ हुआ। और उस ने फारान के बन में निवास किया और उस की माता ने मिस्र देश से उस के लिये एक पत्नी लिई॥

२२ और उस समय में यों हुआ कि अबिमलिक और उस की सेना के प्रधान फीकुल ने अबिरहाम को कहा कि सब कार्य्यों में जो तू करता है ईश्वर तेरे २३ संग है। और अब यहां मुझसे ईश्वर की किरिया खा कि मैं तुझसे और तेरे बंश और संतान से छल न करूंगा उस अनुग्रह के समान जो मैं ने तुझ पर किया है मुझसे और उस भूमि से जिस में तू टिका है करे। तब अबिरहाम बोला २४ कि मैं किरिया खाऊंगा। और अबिरहाम २५ ने पानी के एक कुए के लिये जिसे अबिमलिक के सेवकों ने बरबस्ती से ले लिया था अबिमलिक को डपटा। तब २६ अबिमलिक ने कहा कि मैं नहीं जानता किस ने यह काम किया है और आप ने भी तो मुझसे न कहा और मैं ने भी तो आज ही सुना। और अबिरहाम ने २७ भेड़ और गाय बैल लेके अबिमलिक को दिये और उन दोनों ने नियम बांधा। तब अबिरहाम ने झुंड में से सात मेम्ने २८ अलग रक्खे। और अबिमलिक ने अबि-२९ रहाम से कहा कि आप ने भेड़ के सात मेम्ने क्यों अलग रक्खे हैं। और उस ने ३० कहा इस कारण कि तू उन भेड़ के सात मेम्नों को मेरे हाथ से ले कि वे मेरी साक्षी होवें कि मैं ने यह कुआ खोदा है। इस कारण उस ने उस स्थान का ३१ नाम बीअरसबअ रक्खा क्योंकि उन दोनों ने वहां आपुस में किरिया खाई। सो ३२ उन्हों ने बीअरसबअ में नियम बांधा तब अबिमलिक और उस का प्रधान सेनापति फीकुल उठे और फिलिस्तियों के देश में फिर गये॥

तब उस ने बीअरसबअ में कुंज ३३ लगाया और वहां सनातन के ईश्वर परमेश्वर का नाम लिया। और अबिरहाम ३४ फिलिस्ती के देश में बहुत दिन लों टिका॥

बाईसवां पर्व्व।

और इन बातों के पीछे यों हुआ कि १ ईश्वर ने अबिरहाम की परीक्षा किई और उसे कहा हे अबिरहाम और वह

२ बोला कि देख यहां हूं। और उस ने कहा कि तू अपने बेटे को अपने एकलौते इजहाक को जिसे तू प्यार करता है ले और मोरियाह के देश में जा और वहां पहाड़ों में से एक पहाड़ पर जो मैं तुझे बताऊंगा उसे होम की भेंट
३ के लिये चढ़ा। तब अबिरहाम ने तड़के उठकर अपने गदहे पर काठी बांधी और अपने तरुणों में से दो को और अपने बेटे इजहाक को अपने साथ लिया और होम की भेंट के लिये लकड़ियां चीरीं और उठके उस स्थान को जो ईश्वर ने
४ उसे आज्ञा किई थी चला गया। तीसरे दिन अबिरहाम ने अपनी आंखें ऊपर किईं और उस स्थान को दूर से देखा।
५ तब अबिरहाम ने अपने तरुणों से कहा कि गदहे के साथ यहीं ठहरो और मैं इस लड़के के साथ वहां लों जाता हूं और सेवा करके फिर तुम्हारे पास आ-
६ ऊंगा। तब अबिरहाम ने होम की भेंट की लकड़ियां लेकर अपने बेटे इजहाक पर लादीं और आग और छुरी अपने हाथ
७ में लिईं और दोनों साथ साथ गये। और इजहाक अपने पिता अबिरहाम से बोला कि हे मेरे पिता और वह बोला हे मेरे बेटे मैं यहीं हूं तब उस ने कहा कि देखिये आग और लकड़ियां तो हैं पर होम की भेंट के लिये भेड़ कहां है।
८ और अबिरहाम बोला कि हे मेरे बेटे ईश्वर होम की भेंट के लिये भेड़ आपही सिद्ध करेगा सो वे दोनों साथ साथ चले गये॥

९ और उस स्थान में जहां ईश्वर ने कहा था आये तब अबिरहाम ने वहां एक बेदी बनाई और उन लकड़ियों को वहां चुना और अपने बेटे इजहाक को बांधके उस बेदी में लकड़ियों पर धरा।
१० और अबिरहाम ने छुरी लेके अपने बेटे को घात करने के लिये अपना हाथ बढ़ाया। तब परमेश्वर के दूत ने स्वर्ग
११ पर से उसे पुकारा कि अबिरहाम अबिरहाम और वह बोला यहीं हूं। तब
१२ उस ने कहा कि अपना हाथ लड़के पर मत बढ़ा और उसे कुछ मत कर क्योंकि अब मैं जानता हूं कि तू ईश्वर से डरता है और तू ने अपने बेटे अपने एकलौते को मुझ से न रख छोड़ा। तब अबिरहाम
१३ ने अपनी आंखें ऊपर करके देखा और क्या देखता है कि अपने पीछे एक मेंढ़ा झाड़ी में सींगों से अटका हुआ है तब अबिरहाम ने जाके उस मेंढ़े को लिया और होम की भेंट के लिये अपने बेटे की सन्ती चढ़ाया। और अबिरहाम ने उस स्थान
१४ का यह नाम रक्खा कि परमेश्वर देखेगा जैसा कि आज लों कहा जाता है कि पहाड़ पर परमेश्वर देखा जायगा। फिर
१५ परमेश्वर के दूत ने दोहराके स्वर्ग में से अबिरहाम को पुकारा। और कहा कि
१६ परमेश्वर कहता है कि मैं ने अपनी ही किरिया खाई है इस कारण कि तू ने यह कार्य्य किया और अपने बेटे अपने एकलौते को न रख छोड़ा। कि मैं तुझे
१७ आशीस पर आशीस देऊंगा और आकाश के तारों और समुद्र के तीर के बालू के समान तेरे बंश को बढ़ाऊंगा और तेरे बंश अपने बैरी के फाटक के अधिकारी होंगे। और तेरे बंश में पृथिवी के सारे
१८ जातिगण आशीस पावेंगे इस कारण कि तू ने मेरा शब्द माना है। और अबि-
१९ रहाम अपने तरुणों के पास फिर आया और वे उठके एकट्ठे बीअरसबअ को गये और अबिरहाम बीअरसबअ में रहा॥

२० और इन बातों के पीछे ऐसा हुआ कि अबिरहाम को संदेश पहुंचा कि मिलकः भी तेरे भाई नहूर के लिये बालक जनी।
२१ अर्थात् ऊज उस का पहिलौठा और उस

का भाई बूज और कमूएल अराम का
२२ पिता। और कसद और हजू और फिल्-
२३ दास और इदलाफ और बतूएल। और
बतूएल से रिबकः उत्पन्न हुई मिलकः
अबिरहाम के भाई नहूर के लिये ये आठ
२४ जनी। और उस की मुरैतिन जिस का
नाम रूमह था वह भी तिबख और जहम
और ताहाश और मअकः जनी॥

तेईसवां पर्ब्ब।

१ और सरः की बय एक सौ सताईस
बरस की हुई सरः के जीवन के बरस
२ इतने थे। और सरः करयतअरबअ में जो
कनआन देश में हबरून है मर गई तब
अबिरहाम सरः के लिये बिलाप करने
और रोने को आया॥

३ और अबिरहाम अपने मृतक से उठ
खड़ा हुआ और हित्त के बेटों से यह
४ कहके बोला। कि मैं तुम में परदेशी
और टिकवैया हूं तुम अपने यहां मुझे
एक समाधि का स्थान अधिकार में दो
जिसतें मैं अपने मृतक को अपनी दृष्टि
से गाड़ूं॥

५ और हित्त के संतान ने अबिरहाम
६ को उत्तर देके कहा। कि हे हमारे स्वामी
हमारी सुनिये आप हम्में ईश्वर के अध्यक्ष
हैं सो आप हमारी समाधिन में से चुनके
एक में अपने मृतक को गाड़िये हम्में
कोई अपनी समाधि आप से न रख
छोड़ेगा जिसतें आप अपने मृतक को गाड़ें॥

७ तब अबिरहाम खड़ा हुआ और उस
देश के लोगों अर्थात् हित्त के संतान को
८ प्रणाम किया। और उन से बातचीत
करके कहा कि यदि तुम्हारा मन होवे
कि मैं अपने मृतक को अपनी दृष्टि से
अलग गाड़ूं तो मेरी सुनो और मेरे लिये
सुहर के बेटे इफरून से बिन्ती करो।
९ जिसतें वह मकफीलः की कंदला मुझे
देवे जो उस खेत के सिवाने पर है उस
का पूरा मोल लेके मेरे बश में कर दे
जिसतें मैं तुम्हों में एक समाधि का
अधिकार रक्खूं॥

१० और इफरून हित्त के संतान के मध्य
में बास करता था और इफरून हित्ती ने
हित्त के संतान के और सब के सुन्ने में
जो नगर के फाटक में जाते थे अबि-
११ रहाम को उत्तर में कहा। नहीं मेरे
स्वामी मेरी सुनिये मैं ने यह खेत आप
को दिया है और वह कंदला जो उस में
है आप को दिया है मैं ने अपने लोगों
के बेटों के आगे आप को दिया है अपना
मृतक गाड़िये॥

१२ तब अबिरहाम ने उस देश के लोगों
१३ को प्रणाम किया। और उस देश के लोगों
के सुन्ने में वह इफरून से यों कहके बोला
कि यदि तू देगा तो मेरी सुन ले मैं ने
तुझे उस खेत के लिये रोकड़ दिया है
मुझ्से ले और मैं अपने मृतक को वहां
गाड़ूंगा॥

१४ तब इफरून ने अबिरहाम को उत्तर
१५ देके कहा। मेरे स्वामी मेरी सुनिये उस
भूमि का मोल चार सौ शैकल चांदी है
यह मेरे और आप के आगे क्या बस्तु है
सो आप अपने मृतक को गाड़िये॥

१६ और अबिरहाम ने इफरून की मान
लिई और अबिरहाम ने उस चांदी को
इफरून के लिये तौल दिया जो उस ने
हित्त के बेटों के सुन्ने में कही थी अर्थात्
चार सौ शैकल चांदी जिन का चलन
१७ बैपारियों में था। सो इफरून का खेत
जो मकफीलः में ममरी के आगे है वह
खेत और कंदला जो उस में है और उस
खेत में के सारे पेड़ जो चारों ओर उस
१८ के सिवाने में हैं। हित्त के संतान के
आगे और सभों के आगे जो नगर के
फाटक में से भीतर जाते थे अबिरहाम के
अधिकार के लिये दृढ़ किये गये॥

१९ और इस के पीछे अबिरहाम ने अपनी पत्नी सर: को मकफील: के खेत की कंदला में जो ममरी के आगे है गाड़ा २० वही हबरून कनआन देश में है। और वह खेत और उस में की कंदला हित्त के संतान से अबिरहाम के हाथ में समाधि-स्थान के लिये दृढ़ किये गये॥

चौबीसवां पर्ब्ब।

१ और अबिरहाम वृद्ध और दिनी हुआ और परमेश्वर ने सब बातों में अबिरहाम २ को बर दिया था। और अबिरहाम ने अपने घर के पुराने सेवक को जो उस की सारी संपत्ति का प्रधान था कहा कि अपना हाथ मेरी जांघ तले रख। ३ और मैं तुझ से परमेश्वर स्वर्ग के ईश्वर और पृथिवी के ईश्वर की किरिया लेऊंगा कि तू कनआनियों की लड़कियों में से जिन के मध्य में मैं रहता हूं मेरे बेटे ४ के लिये पत्नी न लेना। परन्तु तू मेरे देश और मेरे कुटुम्ब में जाइयो और मेरे बेटे इजहाक के लिये पत्नी लीजियो॥

५ और उस सेवक ने उसे कहा कि क्या जाने वह स्त्री इस देश में मेरे संग आने को न चाहे तो क्या अवश्य मैं आप के बेटे को उस देश में जहां से आप आये हैं फिर ले जाऊं॥

६ तब अबिरहाम ने उसे कहा चौकस रह तू मेरे बेटे को उधर फिर मत ले ७ जाना। परमेश्वर स्वर्ग का ईश्वर जो मेरे पिता के घर से और मेरी जन्मभूमि से मुझे निकाल लाया और जिस ने मुझे कहा और मुझ से किरिया खाके बोला कि मैं तेरे बंश को यह देश देऊंगा वही तेरे आगे अपना दूत भेजेगा और वहीं ८ से तू मेरे बेटे के लिये पत्नी लेना। और यदि वह स्त्री तेरे साथ आने को न चाहे तो तू मेरी इस किरिया से छूट जायगा केवल मेरे बेटे को उधर फिर मत ले जा। तब उस सेवक ने अपना ९ हाथ अपने स्वामी अबिरहाम की जांघ तले रक्खा और इस बात के विषय में उस के आगे किरिया खाई॥

१० और उस सेवक ने अपने स्वामी के ऊंटों में से दस ऊंट लिये और चल निकला क्योंकि उस के स्वामी की सारी संपत्ति उस के हाथ में थी सो वह उठा और अरामनहरइम में नहूर के नगर को गया। और उस ने अपने ऊंटों को ११ नगर के बाहर पानी के कूए के पास सांझ के समय में जब कि स्त्रियां पानी भरने को बाहर जाती थीं बैठाया॥

१२ और कहा कि हे परमेश्वर मेरे स्वामी अबिरहाम के ईश्वर मैं आप की बिनती करता हूं आज मेरा कार्य्य सिद्ध कीजिये और मेरे स्वामी अबिरहाम पर दया कीजिये। देख मैं पानी के कूए पर १३ खड़ा हूं और नगर के पुरुषों की बेटियां पानी भरने आती हैं। तो ऐसा होवे १४ कि वह कन्या जिसे मैं कहूं कि अपना घड़ा उतार जिसतें मैं पीऊं और वह कहे कि पी और मैं तेरे ऊंटों को भी पिलाऊंगी वही हो जिसे तू ने अपने दास इजहाक के लिये ठहराया है और इसी से मैं जानूंगा कि तू ने मेरे स्वामी पर दया किई है॥

१५ और इतनी बात समाप्त न करते ही ऐसा हुआ कि देखो रिबक: जो अबिरहाम के भाई नहूर की पत्नी मिलक: के बेटे बतूएल से उत्पन्न हुई थी अपना घड़ा अपने कांधे पर धरे हुए बाहर निकली। १६ और वह कन्या बहुत रूपवती और कुमारी थी और उस्से पुरुष अज्ञान था और वह उस कूए पर गई और अपना घड़ा भरके ऊपर आई। तब वह सेवक १७ उस की भेंट को दौड़ा और बोला मैं तेरी बिनती करता हूं अपने घड़े से थोड़ा

१८ पानी पिला । और वह बोली कि पीलिजे मेरे प्रभु और उस ने फुरती करके घड़ा हाथ पर उतारके उसे पिलाया । १९ जब उसे पिला चुकी तो बोली मैं तेरे ऊंटों के लिये भी जब लों वे जल से तृप्त २० हों खींचती जाऊंगी । और उस ने फुरती करके अपना घड़ा कठरे में उंडेला और फिर कुए पर भरने को दौड़ी और उस के २१ सब ऊंटों के लिये खींचा । और वह पुरुष आश्चर्य्य करके देख रहा कि परमेश्वर ने मेरी यात्रा सुफल किई है कि नहीं ॥

२२ और यों हुआ कि जब ऊंट पी चुके तो उस पुरुष ने आधे शैकल भर सोने की एक नथ और दस भर सोने के दो खड़वे उस के हाथों के लिये निकाले । २३ और कहा कि तू किस की बेटी है मुझे बता मैं तेरी बिनती करता हूं क्या तेरे पिता के घर में हमारे लिये रात भर २४ टिकने का स्थान है । और उस ने उसे कहा कि मैं मिलकः के बेटे बतूएल की कन्या हूं जिसे वह नहूर के लिये जनी । २५ और उस ने उसे कहा कि हमारे यहां भूसा चारा भी बहुत है रात भर टिकने २६ का स्थान भी । तब उस पुरुष ने अपना सिर झुकाया और परमेश्वर की दंडवत २७ किई । और कहा कि परमेश्वर मेरे स्वामी अबिरहाम का ईश्वर धन्य है जिस ने मेरे स्वामी को अपनी दया अपनी सच्चाई बिना न छोड़ा मार्ग में परमेश्वर ने मेरे स्वामी के भाइयों के घर की ओर मेरी अगुआई किई ॥

२८ तब वह लड़की दौड़ी और अपनी माता के घर में इन बातों के समान २९ संदेश कहा । और लाबन नाम रिबकः का एक भाई था और लाबन बाहर कुए ३० पर उस मनुष्य कने दौड़ा । और यों हुआ कि जब उस ने वह नथ और खड़वे अपनी बहिन के हाथों में देखे और जब उस ने अपनी बहिन रिबकः से ये बातें कहते सुनी कि इस मनुष्य ने मुझे यों कहा तब वह उस पुरुष पास आया और क्या देखता है कि वह ऊंटों के पास कुए पर खड़ा है । ३१ और कहा कि हे परमेश्वर के आशीषित तू भीतर आ तू किस लिये बाहर खड़ा है क्योंकि मैं ने घर सिद्ध किया है और ऊंटों के लिये स्थान है । ३२ और वह पुरुष घर में आया और उस ने अपने ऊंटों के पलान खोले और ऊंटों के लिये भूसा चारा और उस के और लोगों के जो उस के साथ थे चरण धोने को जल दिया । ३३ और भोजन उस के आगे रक्खा गया पर वह बोला कि जब लों मैं अपना संदेश न पहुंचाऊं मैं न खाऊंगा तब वह बोला कहिये ॥

३४ तब उस ने कहा कि मैं अबिरहाम का सेवक हूं । ३५ और परमेश्वर ने मेरे स्वामी को बहुत सा बर दिया है और वह महान हुआ है और उस ने उसे झुंड और ढोर और सोना चांदी और दास और दासियां और ऊंट और गदहे दिये हैं । ३६ और मेरे स्वामी की पत्नी सरः बुढ़ापे में उस के लिये बेटा जनी और उस ने अपना सब कुछ उसे दिया है । ३७ और मेरे स्वामी ने यह कहके मुझ से किरिया लिई कि तू कनआनियों की बेटियों में से जिन के देश में मैं रहता हूं मेरे बेटे के लिये पत्नी मत लीजियो । ३८ परन्तु मेरे पिता के घराने और मेरे कुटुम्ब में जाइयो और मेरे बेटे के लिये पत्नी लाइयो । ३९ और मैं ने अपने स्वामी से कहा क्या जाने वह स्त्री मेरे साथ न आवे । ४० तब उस ने मुझे कहा कि परमेश्वर जिस के आगे मैं चलता हूं अपना दूत तेरे संग भेजेगा और तेरी यात्रा सुफल करेगा और तू मेरे

कुटुम्ब और मेरे पिता के घराने से मेरे बेटे
४१ के लिये पत्नी लीजियो। और जब तू मेरे
कुटुम्ब में आवे तब तू मेरी किरिया से
बाहर होगा और यदि वे तुझे न देवें तो
तू मेरी किरिया से बाहर हो जायगा।
४२ सो मैं आज के दिन कुए पर आया और
कहा कि हे परमेश्वर मेरे स्वामी अबि-
रहाम के ईश्वर यदि तू अब मेरी यात्रा
४३ सुफल करे। देख मैं जल के कुए पर
खड़ा हूं और यों होगा कि जो कुमारी
जल भरने निकले और मैं उसे कहूं कि
मैं तेरी बिनती करता हूं कि अपने घड़े
४४ से मुझे थोड़ा पानी पिला। और वह मुझे
कहे कि तू भी पी और मैं तेरे ऊंटों के
लिये भी भरूंगी तो वही वह स्त्री होवे
जिसे परमेश्वर ने मेरे स्वामी के बेटे के
४५ लिये ठहराया है। इतनी बात मेरे मन
में समाप्त न होते ही देखो रिबक: अपने
कांधे पर घड़ा लेके बाहर निकली और
वह कुए पर उतरी और खींचा और मैं
४६ ने उसे कहा कि मुझे पिला। तब उस
ने फुरती करके अपना घड़ा उतारा और
बोली कि पी और मैं तेरे ऊंटों को भी
पिलाऊंगी सो मैं ने पिया और उस ने
४७ ऊंटों को भी पिलाया। फिर मैं ने उस्से
पूछा और कहा कि तू किस की बेटी
है और वह बोली कि नहूर के बेटे
बतूएल की लड़की जिसे मिलक: उस के
लिये जनी और मैं ने नथ उस की नाक
में और खड़वे उस के हाथों में डाले।
४८ और मैं ने अपना सिर झुकाया और पर-
मेश्वर की स्तुति किई और अपने स्वामी
अबिरहाम के ईश्वर परमेश्वर का धन्य
माना जिस ने मुझे ठीक मार्ग में मेरी
अगुआई किई कि अपने स्वामी के भाई
४९ की बेटी उस के बेटे के लिये लेऊं। सो
अब यदि तुम कृपा और सच्चाई से मेरे
स्वामी के साथ व्यवहार किया चाहो
तो मुझ से कहो और यदि नहीं तो मुझ
से कहो कि मैं दहिने अथवा बायें हाथ
फिरूं॥

तब लाबन और बतूएल ने उत्तर ५०
दिया और कहा कि यह बात परमेश्वर
की ओर से है हम तुझे बुरा अथवा
भला नहीं कह सक्ते। देख रिबक: तेरे ५१
आगे है इसे ले और जा और जैसा
परमेश्वर ने कहा है वह तेरे स्वामी के
बेटे की पत्नी हो। और ऐसा हुआ कि ५२
जब अबिरहाम के सेवक ने ये बातें
सुनीं तब भूमि लों परमेश्वर के आगे
दंडवत किई। और सेवक ने चांदी ५३
और सोने के गहने और पहिरावा
निकाला और रिबक: को दिया और
उस ने उस के भाई और उस की माता
को भी बहुमूल्य वस्तु दिईं। और उस ५४
उस के साथी मनुष्यों ने खाया
और पीया और रात भर ठहरे और वे
बिहान को उठे और उस ने कहा कि
मुझे मेरे स्वामी पास भेजिये। और उस ५५
के भाई और उस की माता ने कहा कि
कन्या को हमारे संग एक दस दिन रहने
दीजिये उस के पीछे वह जायगी। और ५६
उस ने उन्हें कहा कि मुझे मत रोको
कि परमेश्वर ने मेरी यात्रा सुफल किई
है मुझे बिदा करो कि मैं अपने स्वामी
पास जाऊं। और वे बोले हम उस कन्या ५७
को बुलायें और उसी से पूछें। तब उन्हों ५८
ने रिबक: को बुलाया और उसे कहा
कि तू इस पुरुष के साथ जायगी और
वह बोली कि जाऊंगी। सो उन्हों ने ५९
अपनी बहिन रिबक: और उस की दाई
और अबिरहाम के सेवक और उस के
लोगों को बिदा किया। और उन्हों ने ६०
रिबक: को आशीस दिया और उसे कहा
कि तू हमारी बहिन है करोड़ों की
माता हो और तेरा बंश उन के द्वारों

का जो उस्से बैर रखते हैं अधिकारी होवे॥

६१ और रिबक: और उस की सहेलियां उठीं और ऊंटों पर चढ़के उस मनुष्य के पीछे हुईं और उस सेवक ने रिबक: को लिया और अपना मार्ग पकड़ा।

६२ और इजहाक लहैरोईयतदर्शी के कूए पर मार्ग में आ निकला था क्योंकि वह दक्खिन देश में रहता था।

६३ और इजहाक संध्याकाल को ध्यान करने के लिये खेत को निकला और उस ने अपनी आंखें ऊपर किईं और क्या देखता है कि ऊंट चले आते हैं।

६४ और रिबक: ने अपनी आंखें उठाईं और जब उस ने इजहाक को देखा तो ऊंट पर से उतर पड़ी।

६५ और उस ने सेवक से पूछा कि यह जन जो खेत से हमारी भेंट को चला आता है कौन है और सेवक ने कहा कि वह मेरा स्वामी है और उस ने घूंघट लेके अपने तईं ढांपा।

६६ तब सेवक ने सब कुछ जो उस ने किया था इजहाक से कहा।

६७ और इजहाक उसे अपनी माता सर: के तंबू में लाया और रिबक: को लिया और वह उस की पत्नी हो गई और उस ने उसे प्यार किया और इजहाक ने अपनी माता के मरने के पीछे शान्ति पाई॥

पचीसवां पर्ब्ब।

१ तब अबिरहाम ने एक पत्नी लिई

२ और उस का नाम कतूर: था। और वह उस के लिये जिमरान और युकसान और मिदान और मिदयान और इसबाक और सूख को जनी।

३ और युकसान से सिबा और ददान उत्पन्न हुए और ददान के बेटे असूर और लतूसी और लौमी थे।

४ और मिदयान के बेटे ऐफ: और एफ्र और हनूक और अबिदा और इलदाआ थे ये सब कतूर: के बेटे थे।

५ और अबिरहाम ने अपना सब कुछ इजहाक को दिया।

६ परन्तु उन सरैतिनों के बेटों को जो अबिरहाम की थीं अबिरहाम ने दान दिये और अपने जीते जी उन्हें अपने बेटे इजहाक पास से पूरब देश में भेज दिया॥

७ और अबिरहाम के जीवन के दिन जिन में वह जीता रहा एक सौ पचहत्तर बरस थे।

८ तब अबिरहाम ने अच्छे वृद्ध बय में परिपूर्ण और वृद्ध मनुष्य होके प्राण त्यागा और अपने लोगों में बटोरा गया।

९ और उस के बेटे इजहाक और इसमअएल ने मकफील: की कंदला में हित्ती सुहर के बेटे इफरून के खेत में जो ममरी के आगे है उसे गाड़ा।

१० यही खेत अबिरहाम ने हित्त के बेटों से मोल लिया था अबिरहाम और उस की पत्नी सर: वहां गाड़े गये।

११ और अबिरहाम के मरने के पीछे यों हुआ कि ईश्वर ने उस के बेटे इजहाक को आशीष दिया और इजहाक लहैरोईयत-दर्शी के कूए के पास रहता था॥

१२ और अबिरहाम के बेटे इसमअएल की बंशावली जिसे सर: की लौंडी मिस्री हाजिर: अबिरहाम के लिये जनी थी ये हैं।

१३ और उन की बंशावली की रीति के समान इसमअएल के बेटों के नाम ये हैं इसमअएल का पहिलौंठा नबीत और कीदार और अदबिएल और मिबसाम।

१४ और मिसमाअ और दूम: और मस्सा।

१५ हदर और तैमा इतूर नफीस और किदिम:।

१६ ये इसमअएल के बेटे हैं और उन के नाम उन की बस्तियों और उन की गढ़ियों में ये हैं ये अपने जातिगणों के बारह अध्यक्ष थे।

१७ और इसमअएल के जीवन के बरस एक सौ सैंतीस थे कि उस ने अपना प्राण त्यागा और मर गया और अपने लोगों में बटुर गया।

१८ और वे

हवील: से सूर लों जो असूर के मार्ग में मिस्र के आगे है बसते थे उस ने अपने सारे भाइयों के आगे बास किया ॥

१९ और अबिरहाम के बेटे इजहाक की बंशावली यह है कि अबिरहाम से
२० इजहाक उत्पन्न हुआ । और इजहाक ने चालीस बरस की बय में रिबक: से बिवाह किया वह फद्दानअराम के सुरियानी बतूएल की बेटी और सुरियानी
२१ लाबन की बहिन थी । और इजहाक ने अपनी पत्नी के लिये परमेश्वर से बिनती किई क्योंकि वह बांझ थी और परमेश्वर ने उस की बिनती मानी और उस की पत्नी रिबक: गर्भिणी हुई ।
२२ और उस के पेट में बालक आपुस में केड़ाकेड़ी करने लगे तब उस ने कहा यदि यों तो ऐसी क्यों हूं और वह पर-
२३ मेश्वर से बूझने को गई । तब परमेश्वर ने उसे कहा कि तेरे गर्भ में दो जातिगण हैं और तेरे कोख से दो रीति के लोग अलग होंगे और एक लोग दूसरे लोग से बलवंत होगा और जेष्ठ कनिष्ठ
२४ की सेवा करेगा । और जब उस के जन्ने के दिन पूरे हुए तो देखो कि उस
२५ के गर्भ में यमल थे । सो पहिला ऐसा जैसा रोम का पहिरावा होता है बालों में छिपा हुआ लाल रंग का निकला और उन्हों ने उस का नाम एसौ रक्खा ।
२६ और उस के पीछे उस का भाई निकला और उस का हाथ एसौ की एड़ी से लगा हुआ था और उस का नाम यअकूब रक्खा गया जब वह उन्हें जनी तो इजहाक की बय साठ बरस की थी ॥
२७ और लड़के बढ़े और एसौ चतुर अहेरी और खेत का रहवैया था और यअकूब सूधा मनुष्य तंबू में रहा करता
२८ था । और इजहाक एसौ को प्यार करता था क्योंकि वह उस की अहेर से खाता था परन्तु रिबक: यअकूब को प्यार करती थी । और यअकूब ने लपसी
२९ पकाई और एसौ खेत से आया और वह थक गया था । और एसौ ने यअकूब
३० से कहा मैं तेरी बिनती करता हूं कि इस लाल लाल में से मुझे खिला क्योंकि मैं मूर्छित हूं इस लिये उस का नाम अदूम कहा गया । तब यअकूब ने कहा
३१ कि आज अपना जन्मपद मेरे हाथ बेच । तब एसौ ने कहा देख मैं मरने
३२ पर हूं और इस जन्मपद से मुझे क्या लाभ होगा । तब यअकूब ने कहा कि
३३ आज मुझ से किरिया खा और उस ने उस्से किरिया खाई और अपना जन्मपद यअकूब के हाथ बेचा । तब यअकूब ने
३४ रोटी और मसूर की दाल की लपसी एसौ को दिई और उस ने खाया और पीया और उठके चला गया यों एसौ ने अपने जन्मपद की निन्दा किई ॥

छब्बीसवां पर्ब्ब ।

१ उस देश में पहिले अकाल को छोड़ जो अबिरहाम के दिनों में पड़ा था फिर अकाल पड़ा तब इजहाक अबिमलिक पास जो फिलिस्तियों का राजा था जिरार को गया ॥
२ और परमेश्वर ने उस पर प्रगट होके कहा मिस्र को मत उतर जा जहां मैं तुझे कहूं उस देश में निवास कर । तू
३ इस देश में टिक और मैं तेरे साथ होऊंगा और तुझे आशीस देऊंगा क्योंकि मैं तुझे और तेरे बंश को इन सारे देशों को देऊंगा और मैं उस किरिया को जो मैं ने तेरे पिता अबिरहाम से खाई है पूरी करूंगा । और मैं तेरे बंश को
४ आकाश के तारों की नाईं बढ़ाऊंगा और ये समस्त देश तेरे बंश को देऊंगा और पृथिवी के सारे जातिगण तेरे बंश से आशीस पावेंगे । इस लिये कि अबिरहाम
५

ने मेरे शब्द को माना और मेरी आज्ञाओं और मेरी बातों और मेरी विधिन और मेरी व्यवस्था को पालन किया॥

६ सो इज़हाक जिरार में रहा।
७ और वहां के बासियों ने उस्से उस की पत्नी के विषय में पूछा तब वह बोला कि वह मेरी बहिन है क्योंकि वह उसे अपनी पत्नी कहते हुए डरा न हो कि वहां के लोग रिबक: के लिये उसे मार डालें क्योंकि वह देखने में सुन्दरी थी।
८ और यों हुआ कि जब वह वहां बहुत दिन लों रहा तो फिलिस्तियों के राजा अबिमलिक ने झरोखे से दृष्टि किई और देखा तो क्या देखता है कि इज़हाक अपनी पत्नी रिबक: से कलोल करता
९ है। तब अबिमलिक ने इज़हाक को बुलाके कहा देख वह निश्चय तेरी पत्नी है फिर तू ने क्योंकर कहा कि वह मेरी बहिन है तब इज़हाक ने उस्से कहा इस लिये कि मैं ने कहा न हो कि मैं
१० उस के कारण मारा जाऊं। और अबिमलिक बोला यह क्या है जो तू ने हम से किया है होने ही पर था कि लोगों में से कोई तेरी पत्नी के साथ अकर्म्म करता और तू दोष हम पर लाता।
११ तब अबिमलिक ने अपने सब लोगों को यह आज्ञा किई कि जो कोई इस पुरुष को अथवा उस की पत्नी को छूयेगा निश्चय घात किया जायगा॥

१२ तब इज़हाक ने उस देश में खेती किई और उस बरस सौ गुना प्राप्त किया और परमेश्वर ने उसे आशीस दिया।
१३ और वह मनुष्य बढ़ गया और उस की बढ़ती होती चली जाती थी यहां
१४ लों कि वह अत्यंत बड़ा हो गया। और वह झुंड और ढोर और बहुत से सेवकों का स्वामी हुआ और फिलिस्तियों ने
१५ उस्से डाह किया। और सारे कुए जो उस के पिता के सेवकों ने उस के पिता अबिरहाम के समय में खोदे थे फिलिस्तियों ने ढांप दिये और उन्हें मट्टी से
१६ भर दिये। सो अबिमलिक ने इज़हाक से कहा कि हमारे पास से जा क्योंकि तू हम से अति सामर्थी है॥

१७ और इज़हाक वहां से गया और अपना तंबू जिरार की तराई में खड़ा किया और
१८ वहीं रहा। और इज़हाक ने जल के उन कूओं को जो उन्हों ने उस के पिता अबिरहाम के दिनों में खोदे थे फिर खोदा क्योंकि फिलिस्तियों ने अबिरहाम के मरने के पीछे उन्हें ढांप दिया था और उस ने उन के वही नाम रक्खे जो उस
१९ के पिता ने रक्खे थे। और इज़हाक के सेवकों ने तराई में खोदा और वहां एक कूआ जिस में जल का सोता था पाया
२० और जिरार के चरवाहों ने इज़हाक के चरवाहों से यह कहके झगड़ा किया कि यह जल हमारा है और उन के झगड़ा करने के कारण उस ने उस कूए का नाम
२१ झगड़ा रक्खा। और उन्हों ने दूसरा कूआ खोदा और उस के लिये भी झगड़ा हुआ और उस ने उस का नाम विरोध रक्खा॥

२२ और वह वहां से आगे चला और दूसरा कूआ खोदा और उन्हों ने उस के लिये झगड़ा न किया और उस ने उस का नाम फैलाव रक्खा और उस ने कहा कि अब परमेश्वर ने हम को फैलाया है और हम इस भूमि में फलवंत होंगे॥

२३ और वह वहां से बीअरसबअ को गया।
२४ और परमेश्वर ने उसी रात उसे दर्शन देके कहा कि मैं तेरे पिता अबिरहाम का ईश्वर हूं मत डर क्योंकि मैं तेरे संग हूं और तुझे आशीस देऊंगा और अपने दास अबिरहाम के लिये तेरा बंश बढ़ाऊंगा।
२५ और उस ने वहां एक बेदी बनाई और

परमेश्वर का नाम लिया और वहां अपना तंबू खड़ा किया और इजहाक के सेवकों ने वहां एक कुआ खोदा ॥

२६ तब जिरार से अबिमलिक और एक उस के मित्रों में से अखूजत और उस के सेनापति फीकुल उस पास गये । २७ और इजहाक ने उन्हें कहा कि तुम किस लिये मुझ पास आये हो यद्यपि तुम मुझ से बैर रखते हो और तुम ने मुझे अपने पास से निकाल दिया है । २८ और वे बोले कि देखते हुए हम ने देखा कि परमेश्वर तेरे संग है सो हम ने कहा कि हम और तू आपुस में किरिया खावें और तेरे साथ बाचा बांधें । २९ जैसा हम ने तुझे नहीं छुआ और तुझ से भलाई छोड़ कुछ नहीं किया और तुझे कुशल से भेजा तू भी हमें न सता तू अब परमेश्वर का आशीषित है । ३० और उस ने उन के लिये जेवनार बनाया और उन्हों ने खाया पीया । ३१ और बिहान को तड़के उठे और आपुस में किरिया खाई और इजहाक ने उन्हें बिदा किया और वे उस पास से कुशल से गये । ३२ और उसी दिन यों हुआ कि इजहाक के सेवक आये और अपने खोदे हुए कुए के बिषय में कहा और बोले कि हम ने जल पाया । ३३ सो उस ने उस का नाम सैबअ रक्खा इस लिये उस नगर का नाम आज लों बीअर-सबअ है ॥

३४ और एसौ जब चालीस बरस का हुआ तब उस ने हित्ती बीअरी की बेटी यहूदियत को और हित्ती ऐलून की बेटी ३५ बशामत को पत्नी किया । और वह इजहाक और रिबक: के लिये मन के कड़वाहट का कारण हुई ॥

सत्ताईसवां पर्ब्ब

१ और यों हुआ कि जब इजहाक बूढ़ा हुआ और उस की आंखें धुन्धला गईं ऐसा कि वह देख न सक्ता था तो उस ने अपने जेठे बेटे एसौ को बुलाया और उस्से कहा कि हे मेरे बेटे और वह उस्से बोला देखो यहीं हूं । २ तब उस ने कहा कि देखिये मैं बूढ़ा हूं और मैं अपने मरने का दिन नहीं जान्ता । ३ सो अब तू अपना हथियार अर्थात् अपनी निखंग और अपना धनुष लीजिये और बन को जाइये और मेरे लिये अहेर कर । ४ और मेरी रुचि के समान स्वादित भोजन पकाके मेरे पास ला और मैं खाऊंगा जिसतें अपने मरने के आगे मेरा प्राण तुझे आशीस देवे । ५ और जब इजहाक अपने बेटे एसौ से बातें करता था तब रिबक: ने सुना और जब एसौ बन में गया कि अहेर करे और लाये ॥

६ तब रिबक: ने अपने बेटे यअकूब से कहा कि देख मैं ने तेरे भाई एसौ से तेरे पिता को यह कहते सुना । ७ कि मेरे लिये अहेर का मांस ला और मेरे लिये स्वादित भोजन पका और मैं खाऊंगा और अपने मरने से पहिले परमेश्वर के आगे तुझे आशीस देऊंगा । ८ सो अब हे मेरे बेटे मेरी आज्ञा के समान मेरी बात को मान । ९ अब झुंड में जाइये और वहां से बकरी के दो अच्छे मेम्ने मेरे लिये लीजिये और मैं तेरे पिता की रुचि के समान उन से स्वादित भोजन बनाऊंगी । १० और तू अपने पिता के पास ले जाइयो जिसतें वह खाय और अपने मरने से आगे तुझे आशीस देवे ॥

११ तब यअकूब ने अपनी माता रिबक: से कहा देख मेरा भाई एसौ रोंआर मनुष्य है और मैं चिकना मनुष्य हूं । १२ कदाचित मेरा पिता मुझे टटोले और मैं उस की दृष्टि में निन्दक की नाईं ठहरूं और आशीस नहीं परन्तु अपने ऊपर स्राप लाऊं । १३ तब उस की माता ने उसे कहा

कि तेरा स्राप मुझ पर होवे हे मेरे बेटे तू केवल मेरी बात मान और जाके मेरे १४ लिये ले । सो वह गया और लिया और अपनी माता पास लाया और उस की माता ने उस के पिता की रुचि के समान स्वादित भोजन बनाया ॥

१५ और रिबक: ने घर में से अपने जेठे बेटे एसौ का अच्छा पहिरावा लिया और अपने छोटे बेटे यअकूब को पहिनाया । १६ और बकरी के मेम्नों का चमड़ा उस के हाथों और उस के गले की चिकनाई पर १७ लपेटा । और अपना बनाया हुआ स्वादित भोजन और रोटी अपने बेटे यअकूब के हाथ दिई ॥

१८ और वह अपने पिता के पास जाके बोला हे मेरे पिता और वह बोला मैं १९ यहां हूं तू कौन है हे मेरे बेटे । तब यअकूब अपने पिता से बोला कि मैं आप का पहिलौंठा एसौ हूं आप के कहने के समान मैं ने किया है उठ बैठिये और मेरी अहेर के मांस में से खाइये जिसतें आप का प्राण मुझे आशीस २० देवे । तब इजहाक ने अपने बेटे से कहा कि यह क्योंकर है कि तू ने ऐसा बेग पाया हे मेरे बेटे और वह बोला इस लिये कि परमेश्वर आप का ईश्वर मेरे २१ आगे लाया । तब इजहाक ने यअकूब से कहा कि हे मेरे बेटे मेरे पास आइये जिसतें मैं तुझे टटोलूं कि निश्चय तू २२ मेरा बेटा एसौ है कि नहीं । तब यअकूब अपने पिता इजहाक पास गया और उस ने उसे टटोलके कहा कि शब्द तो यअकूब का शब्द है पर हाथ एसौ २३ के हाथ हैं । और उस ने उसे न पहिचाना इस लिये कि उस के हाथ उस के भाई एसौ के हाथों की नाईं रोंआर थे सो उस ने उसे आशीस दिया । २४ और कहा कि तू मेरा वही बेटा एसौ ही है और वह बोला कि मैं वही हूं । २५ और उस ने कहा कि तू मेरे पास ला कि मैं अपने बेटे की अहेर के मांस से खाऊं जिसतें मेरा प्राण तुझे आशीस दे सो वह उस पास लाया और उस ने खाया और वह उस के लिये दाखरस लाया और उस ने पीया । २६ तब उस के पिता इजहाक ने उसे कहा कि हे मेरे बेटे अब पास आ और मुझे चूम । २७ और वह पास आया और उसे चूमा और उस ने उस के पहिरावा की बास पाई और उसे आशीस दिया और कहा कि देख मेरे बेटे का गंध उस खेत के गंध की नाईं है जिस पर परमेश्वर ने आशीस दिया है । २८ और ईश्वर तुझे आकाश की ओस और पृथिवी की चिकनाई और बहुत से अन्न और दाखरस देवे । २९ लोग तेरी सेवा करें और जातिगण तेरे आगे झुकें तू अपने भाइयों का प्रभु हो और तेरी मा के बेटे तेरे आगे झुकें जो तुझे स्रापे सो स्रापित और जो तुझे आशीर्बाद देवे सो आशीषित होवे ॥

३० और यों हुआ कि ज्योंहीं इजहाक यअकूब को आशीस दे चुका और यअकूब के अपने पिता इजहाक के आगे से बाहर जाते ही उस का भाई एसौ अपनी अहेर से फिरा । ३१ और उस ने भी स्वादित भोजन बनाया और अपने पिता पास लाया और अपने पिता से कहा मेरा पिता उठे और अपने बेटे की अहेर के मांस में से खाये जिसतें आप का प्राण मुझे आशीस देवे । ३२ तब उस के पिता इजहाक ने उसे कहा कि तू कौन है और वह बोला कि मैं आप का बेटा आप का पहिलौंठा एसौ हूं । ३३ तब इजहाक बड़ी कंपकंपी से कांपा और बोला वह तो कौन था और कहां है जो अहेर कर्के मुझ पास अहेर का मांस लाया और मैं

ने सब में से तेरे आने के आगे खाया है और उसे आशीस दिया है हां वह आशीषित होगा । ३४ एसौ अपने पिता की ये बातें सुनके बहुत चिल्लाया और फूट फूटके रोया और अपने पिता से कहा मुझे भी मुझे हे मेरे पिता आशीस दीजिये । ३५ और वह बोला कि तेरा भाई छल से आया और तेरी आशीस ले गया । ३६ तब उस ने कहा क्या उस का नाम ठीक यअकूब नहीं कहावता क्योंकि उस ने दोहराके मुझे अड़ंगा मारा उस ने मेरा जन्मपद ले लिया और देखो अब उस ने मेरी आशीस लिई है और उस ने कहा क्या तू ने मेरे लिये कोई आशीस नहीं रख छोड़ी । ३७ तब इजहाक ने एसौ को उत्तर देके कहा कि देख मैं ने उसे तेरा प्रभु किया और उस के सारे भाइयों को उस की सेवकाई में दिया और अन्न और दाखरस से उस का सहारा किया अब हे मेरे बेटे तेरे लिये मैं क्या करूं । ३८ तब एसौ ने अपने पिता से कहा हे मेरे पिता क्या आप पास एक ही आशीस है हे मेरे पिता मुझे मुझे भी आशीस दीजिये और एसौ चिल्ला चिल्ला रोया । ३९ तब उस के पिता इजहाक ने उत्तर दिया और उस्से कहा कि देख भूमि की चिकनाई और ऊपर से आकाश की ओस में तेरा तंबू होगा । ४० और तू अपने खड्ग से जीयेगा और अपने भाई की सेवा करेगा और यों होगा कि जब तू घूमता फिरता रहेगा तो उस का जूआ अपने कांधे पर से तोड़ फेंकेगा ॥

४१ सो उस आशीस के कारण जिसे उस के पिता ने उसे दिया था एसौ ने यअकूब का बैर रक्खा और एसौ ने अपने मन में कहा कि मेरे पितृशोक के दिन आते हैं और मैं अपने भाई यअकूब को मार डालूंगा । ४२ और रिबक: को उस के जेठे बेटे एसौ की ये बातें कही गईं तब उस ने अपने छुटके बेटे यअकूब को बुला भेजा और उस्से कहा कि देख तेरा भाई एसौ तुझे घात करने को तेरे विषय में अपने को शान्ति देता है । ४३ सो अब हे मेरे बेटे तू मेरा कहा मान और उठ मेरे भाई लाबन पास हरान को भाग जा । ४४ और थोड़े दिन उस के साथ रह जब लों तेरे भाई का कोप जाता रहे । ४५ जब लों तेरे भाई का क्रोध तुझ से न फिरे और जो तू ने उस्से किया है सो भूल जाय तब मैं तुझे वहां से बुला भेजूंगी किस लिये एकही दिन में तुम दोनों को खोऊं ॥

४६ तब रिबक: ने इजहाक से कहा कि मैं हित्त की बेटियों के कारण अपने जीवन से उकता हूं सो यदि यअकूब हित्त की बेटियों में से जैसी इस देश की लड़कियां हैं लेवे तो मेरे जीवन से क्या फल है ॥

पर्ब्ब ।

और इजहाक ने यअकूब को बुलाया और उसे आशीस दिया और उसे आज्ञा दिई और उस्से कहा कि तू कनआनी लड़कियों में से पत्नी न लेना । २ उठ फद्दानअराम में अपने नाना बतूएल के घर जा और वहां से अपने मामू लाबन की लड़कियों में से पत्नी ले । ३ और सर्वसामर्थी सर्वशक्तिमान तुझे आशीस देवे और तुझे फलवान करे और तुझे बढ़ावे जिसतें तू लोगों की मंडली होवे । ४ और अबिरहाम की आशीस तुझे और तेरे संग तेरे बंश को देवे जिसतें तू अपने टिकाव की भूमि को जो ईश्वर ने अबिरहाम को दिई अधिकार में पावे । ५ तब इजहाक ने यअकूब को बिदा किया और वह फद्दानअराम में सुरियानी बतूएल के बेटे लाबन पास गया जो यअकूब और एसौ की माता रिबक: का भाई था ॥

६ और एसौ ने जब देखा कि इजहाक

ने यअकूब को आशीस दिया और उसे फद्दानअराम से पत्नी लेने को वहां भेजा और उस ने उसे आशीस देके और आज्ञा देके कहा कि तू कनआन की लड़कियों
७ में से पत्नी न लेना। और यअकूब ने अपने पिता माता की बात मानी और
८ फद्दानअराम को गया। और एसौ ने यह भी देखा कि कनआनी लड़कियां मेरे
९ पिता की दृष्टि में बुरी हैं। तब एसौ इसमअएल कने गया और अबिरहाम के बेटे इसमअएल की बेटी महलत को जो नबायोत की बहिन थी अपनी पत्नियों में लिया॥

१० और यअकूब बीअरसबअ से निकलके
११ हरान की ओर गया। और एक स्थान में टिका और रात भर रहा क्योंकि सूर्य्य अस्त हुआ था और उस ने उस स्थान के पत्थरों में से लिया और अपना उसीसा किया और वहां सोने को लेट गया।
१२ और उस ने स्वप्न देखा और देखा कि एक सीढ़ी पृथिवी पर धरी है और उस की टोंक स्वर्ग से लगी थी और क्या देखता है कि ईश्वर के दूत उस पर से
१३ चढ़ते उतरते हैं। और देखो कि परमेश्वर उस के ऊपर खड़ा है और बोला कि मैं परमेश्वर तेरे पिता अबिरहाम का ईश्वर और इज़हाक का ईश्वर हूं मैं यह भूमि जिस पर तू लेटा है तुझे और
१४ तेरे बंश को देऊंगा। और तेरे बंश पृथिवी की धूल की नाईं होंगे और तू पश्चिम और पूरब और उत्तर और दक्खिन को फूट निकलेगा और तुझ में और तेरे बंश में पृथिवी के सारे घराने आशीस
१५ पावेंगे। और देख मैं तेरे साथ हूं और सर्व्वत्र जहां कहीं तू जायगा तेरी रखवाली करूंगा और तुझे इस देश में फिर लाऊंगा क्योंकि जब लों मैं तुझ से अपना कहा हुआ पूरा न कर लेऊं तुझे न छोड़ूंगा॥

१६ तब यअकूब अपनी नींद से जागा और कहा कि निश्चय परमेश्वर इस स्थान में है और मैं न जानता था।
१७ तब वह डर गया और बोला कि यह क्या ही भयानक स्थान है ईश्वर के घर को छोड़ यह और कुछ नहीं है और यह
१८ स्वर्ग का फाटक है। और यअकूब बिहान को तड़के उठा और उस पत्थर को जिसे उस ने अपना उसीसा किया था खंभा खड़ा किया और उस पर तेल
१९ ढाला। और उस स्थान का नाम बैतएल रक्खा पर उस्से पहिले उस नगर का
२० नाम लौज़ था। और यअकूब ने मनौती मानी और कहा कि यदि ईश्वर मेरे साथ रहे और मेरे जाने के मार्ग में मेरा रखवाल हो और मुझे खाने को रोटी
२१ और पहिन्ने को कपड़ा देवे। ऐसा कि मैं अपने पिता के घर कुशल से फिर
२२ आऊं तब परमेश्वर मेरा ईश्वर होगा। और यह पत्थर जो मैं ने खंभा सा खड़ा किया ईश्वर का घर होगा और सब में से जो तू मुझे देगा उस्से दसवां भाग अवश्य तुझे देऊंगा॥

उन्तीसवां पर्व्व।

१ तब यअकूब ने अपने पांव उठाये
२ और पूरबी पुत्रों के देश में आया। और उस ने दृष्टि किई और देखा खेत में एक कुआ है और देखो वहां उस के लग भेड़ बकरी के तीन झुंड बैठे हुए हैं क्योंकि वे उसी कुए से झुंडों को पानी पिलाते थे और उस कुए के मुंह पर बड़ा पत्थर
३ धरा था। और वहां सारा झुंड एकट्ठा होता था और वे उस पत्थर को कुए के मुंह पर से ढुलका देते थे और भेड़ बकरियों को पानी पिलाके पत्थर को कुए के मुंह पर उस के स्थान में फिर रखते
४ थे। तब यअकूब ने उन से कहा कि मेरे भाइयो तुम कहां के हो और वे

५ बोले कि हम हरान के हैं। और उस ने उन से कहा क्या तुम नहूर के बेटे लाबन को जानते हो और वे बोले ६ जानते हैं। और उस ने उन से कहा क्या वह कुशल से है और वे बोले कि कुशल से है और देख उस की बेटी राखिल ७ झुंडों के साथ आती है। तब वह बोला देखो दिन अभी बहुत है ढोरों के एकट्ठे करने का समय नहीं तुम झुंडों को पानी ८ पिलाके चराई पर ले जाओ। और वे बोले हम नहीं सक्ते जब लों कि सारे झुंड एकट्ठे न होवें और पत्थर को कुए के मुंह पर से न ढुलकावें तब हम झुंडों को पानी पिलाते हैं॥

९ वह उन से यह कह रहा था कि राखिल अपने पिता के झुंडों को लेके १० आई। क्योंकि वह उन की रखवालनी थी और यों हुआ कि यअकूब अपने मामू लाबन की बेटी राखिल को और अपने मामू लाबन के झुंडों को देखके पास गया और पत्थर को कुए के मुंह पर से ढुलकाया और अपने मामू लाबन के झुंडों ११ को पानी पिलाया। और यअकूब ने राखिल को चूमा और चिल्लाके रोया। १२ और यअकूब ने राखिल से कहा कि मैं तेरे पिता का कुटुम्ब और रिबक़: का बेटा हूं और उस ने दौड़के अपने पिता से कहा। १३ और यों हुआ कि ज्योंही लाबन ने अपने भांजे यअकूब का समाचार सुना तो उस्से मिलने को दौड़ा और उसे गले लगाया और उसे चूमा और उसे अपने घर लाया और उस १४ ने ये सारी बातें लाबन से कहीं। तब लाबन ने उस्से कहा कि निश्चय तू मेरी हड्डी और मेरा मांस है और वह एक मास भर उस के यहां रहा॥

१५ तब लाबन ने यअकूब से कहा कि मेरा भाई होने के कारण क्या तू सेंत से मेरी सेवा करेगा मुझ से कह मैं तुझे क्या देऊं। और लाबन की दो बेटियां १६ थीं जेठी का नाम लियाह और लहुरी का नाम राखिल था। और लियाह की १७ आंखें चुन्धली थीं परन्तु राखिल सुन्दरी और रूपवती थी। और यअकूब राखिल १८ को प्यार करता था और उस ने कहा कि तेरी लहुरी बेटी राखिल के लिये मैं सात बरस तेरी सेवा करूंगा। तब १९ लाबन बोला कि उसे दूसरे को देने से तुझ को देना भला है मेरे साथ रह। और यअकूब ने सात बरस लों राखिल २० के लिये सेवा किई और उस प्रीति के मारे जो वह उस्से रखता था थोड़े दिन की नाईं समझ पड़े॥

और यअकूब ने लाबन से कहा कि २१ मेरी पत्नी मुझे दीजिये क्योंकि मेरे दिन पूरे हुए और मैं उसे ग्रहण करूंगा। तब २२ लाबन ने वहां के सारे मनुष्यों को एकट्ठा करके जेवनार किया। और सांझ को यों २३ हुआ कि वह अपनी बेटी लियाह को उस पास लाया और उस ने उसे ग्रहण किया। और दासी के लिये लाबन ने २४ अपनी दासी जिलफ़: को अपनी बेटी लियाह को दिया। और ऐसा हुआ कि २५ बिहान को क्या देखता है कि लियाह है तब उस ने लाबन को कहा कि आप ने यह मुझ से क्या किया क्या मैं ने आप की सेवा राखिल के लिये नहीं किई सो आप ने किस लिये मुझे छला। तब २६ लाबन ने कहा कि हमारे देश का यह व्यवहार नहीं कि लहुरी को जेठी से पहिले ब्याह देवें। इस का अठवारा पूरा कर २७ और तेरी और भी सात बरस की सेवा के लिये हम इसे भी तुझे देंगे॥

और यअकूब ने ऐसा ही किया और २८ इस का अठवारा पूरा किया तब उस ने अपनी बेटी राखिल को उसे पत्नी होने के निमित्त दिया। और लाबन ने अपनी २९

दासी बिलह: को अपनी बेटी राखिल की दासी होने के लिये दिया। तब ३० यअकूब ने राखिल को भी ग्रहण किया और वह राखिल को लियाह से अधिक प्यार करता था और सात बरस अधिक उस ने उस की सेवा किई॥

३१ और जब परमेश्वर ने देखा कि लियाह घिनित हुई तब उस ने उस का कोख खोला और राखिल बांझ रही।

३२ और लियाह गर्भिणी हुई और बेटा जनी और उस ने उस का नाम रूबिन रक्खा क्योंकि उस ने कहा कि निश्चय परमेश्वर ने मेरे दुःख पर दृष्टि किई है कि अब मेरा पति मुझे प्यार करेगा।

३३ और वह फिर गर्भिणी हुई और बेटा जनी और बोली इस लिये कि परमेश्वर ने मेरा घिनित होना सुनके मुझे इसे भी दिया सो उस ने उस का नाम समऊन

३४ रक्खा। और फिर वह गर्भिणी हुई और बेटा जनी और बोली कि इस बार मेरा पति मुझ से मिल जायगा क्योंकि मैं उस के लिये तीन बेटे जनी इस लिये उस

३५ का नाम लेवी रक्खा गया। और वह फिर गर्भिणी हुई और बेटा जनी और बोली कि अब मैं परमेश्वर की स्तुति करूंगी इस लिये उस ने उस का नाम यहूदाह रक्खा और जन्ने से रह गई॥

तीसवां पर्व्व

१ और जब राखिल ने देखा कि यअकूब का बंश मुझ से नहीं होता तो उस ने अपनी बहिन से डाह किया और यअकूब को कहा कि मुझे बालक दे नहीं तो

२ मैं मर जाऊंगी। तब राखिल पर यअकूब का क्रोध भड़का और उस ने कहा क्या मैं ईश्वर की संती हूं जिस ने तुझे कोख

३ के फल से अलग रक्खा। और वह बोली देख मेरी दासी बिलह: है उसे ग्रहण कर और वह मेरे घुटनों पर जनेगी और मैं भी उस्से बन जाऊंगी। और उस ने ४ उसे अपनी दासी बिलह: को पत्नी के लिये दिया और यअकूब ने उसे ग्रहण किया॥

५ और बिलह: गर्भिणी हुई और यअकूब

६ के लिये बेटा जनी। तब राखिल बोली कि ईश्वर ने मेरा बिचार किया है और मेरा शब्द भी सुना और मुझे एक बेटा दिया इस लिये उस ने उस का नाम दान

७ रक्खा। और राखिल की दासी बिलह: फिर गर्भिणी हुई और यअकूब के लिये

८ दूसरा बेटा जनी। और राखिल बोली कि मैं ने अपनी बहिन से ईश्वरीय मल्लयुद्ध किया और जीता और उस ने उस का नाम नफताली रक्खा॥

९ और जब लियाह ने देखा कि मैं जन्ने से रह गई तो उस ने अपनी दासी जिलफ: को लेके यअकूब को पत्नी के लिये दिया।

१० सो लियाह की दासी जिलफ: भी यअकूब

११ के लिये एक बेटा जनी। तब लियाह बोली कि जथा आती है और उस ने उस

१२ का नाम जद रक्खा। फिर लियाह की दासी जिलफ: यअकूब के लिये एक दूसरा

१३ बेटा जनी। और लियाह बोली कि मैं धन्य हूं क्योंकि पुत्रियां मुझे धन्य कहेंगी और उस ने उस का नाम यशर रक्खा॥

१४ और गेहूं के लवने के समय में रूबिन गया और खेत में दूदाफल पाया और उन्हें अपनी माता लियाह के पास लाया तब राखिल ने लियाह से कहा कि अपने

१५ बेटे का दूदाफल मुझे दे। तब उस ने उस्से कहा क्या यह छोटी बात है जो तू ने मेरे पति को ले लिया और मेरे पुत्र के दूदाफल को भी लिया चाहती है और राखिल बोली इस लिये वह आज रात तेरे बेटे के दूदाफल की संती तेरे साथ

१६ रहेगा। और जब यअकूब सांझ को खेत से आया तब लियाह उसे आगे से मिलने

को गई और कहा कि आज आप को मुझ पास आना होगा क्योंकि निश्चय मैं ने अपने बेटे का दूदाफल देके आप को भाड़े में लिया है सो वह उस रात उस के साथ रहा॥

१७ और ईश्वर ने लियाह की सुनी और वह गर्भिणी हुई और यअकूब के
१८ लिये पांचवां बेटा जनी। और लियाह बोली कि ईश्वर ने मेरी बनी मुझे दिई क्योंकि मैं ने अपने पति को अपनी दासी दिई है और उस ने उस का नाम
१९ इशकार रक्खा। और लियाह फिर गर्भिणी हुई और यअकूब के लिये छठवां
२० बेटा जनी। और बोली कि ईश्वर ने मुझे अच्छा दैजा दिया है अब मेरा पति मेरे संग रहेगा क्योंकि मैं उस के लिये छ: बेटे जनी और उस ने उस का नाम
२१ जबूलून रक्खा। और अंत में वह बेटी जनी और उस का नाम दीनाह रक्खा॥

२२ और ईश्वर ने राखिल को स्मरण किया और ईश्वर ने उस की सुनी और
२३ उस के कोख को खोला। और वह गर्भिणी हुई और बेटा जनी और बोली कि ईश्वर ने मेरी निन्दा दूर किई।
२४ और उस ने उस का नाम यूसुफ रक्खा और बोली कि परमेश्वर मुझे दूसरा बेटा भी देवेगा॥

२५ और जब राखिल से यूसुफ उत्पन्न हुआ तो यों हुआ कि यअकूब ने लाबन से कहा कि मुझे बिदा कीजिये और मैं अपने स्थान और अपने देश को जाऊंगा।
२६ मेरी स्त्रियां और मेरे लड़के जिन के लिये मैं ने आप की सेवा किई है मुझे दीजिये और मैं जाऊंगा क्योंकि आप जानते हैं कि मैं ने आप की कैसी सेवा किई है॥

२७ तब लाबन ने उस्से कहा कि जो मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया है तो रह जा मैं ने देख लिया है कि परमेश्वर ने तेरे कारण से मुझे आशीस दिया है।
२८ और उस ने कहा कि अब तू अपनी बनी मुझ से ठहरा ले और मैं तुझे देऊंगा।
२९ तब उस ने उस्से कहा आप जानते हैं कि मैं ने क्योंकर आप की सेवा किई है और आप के ढोर कैसे मेरे साथ थे।
३० क्योंकि मेरे आने से आगे तेरा थोड़ा सा था पर झुंड के झुंड हो गये हैं और मेरे आने से परमेश्वर ने आप को आशीस दिया है और अब मैं भी अपने घर के लिये कब ठिकाना करूंगा॥

३१ और वह बोला कि मैं तुझे क्या देऊं और यअकूब ने कहा कि आप मुझे कुछ न दीजिये जो आप मेरे लिये ऐसा करेंगे तो मैं आप के झुंड को फिर चराऊंगा
३२ और रखवाली करूंगा। मैं आज आप के सारे झुंड में से चल निकलूंगा और भेड़ों में से सारी फुटफुटियों और चितकबरियों और भूरियों को और बकरियों में से फुटफुटियों और चितकबरियों को अलग करूंगा और मेरी बनी वैसी
३३ होगी। और कल को मेरा धर्म्म मेरा उत्तर देगा जब कि मेरी बनी आप के आगे आवे तो वह जो बकरियों में चितकबरी और फुटफुटिया और भेड़ों में भूरी न हो तो वह मेरे पास चोरी की गिनी जाय॥

३४ तब लाबन बोला देख मैं चाहता हूं कि जैसा तू ने कहा तैसा हो होवे॥

३५ और उस ने उस दिन पट्टेवाले और फुटफुटिया बकरे और सब चितकबरी और फुटफुटिया बकरियां अर्थात हर एक जिस में कुछ उजलाई थी और भेड़ों में से भूरी अलग किई और उन्हें अपने बेटों
३६ के हाथ सौंप दिया। और उस ने अपने और यअकूब के मध्य में तीन दिन की यात्रा का बीच ठहराया और यअकूब

लाबन के उबरे हुए झुंडों को चराया किया॥

३७ और यअकूब ने हरे लुबने और बादाम और अरमन की हरी छड़ियां ले ले उन्हें गंडेदार किया ऐसा कि छड़ियों की
३८ उजलाई प्रगट हुई। और जब झुंड पानी पीने को आते थे तब वह उन छड़ियों को जिन पर गंडे बनाये थे झुंडों के आगे कठरों और नालियों में धरता था कि जब वे सब पीने आवें तो गर्भिणी
३९ होवें। और छड़ियों के आगे झुंड गर्भिणी हुये और झुंड पट्टेवाले और फुटफुटियां
४० और चितकबरे बच्चे जने। और यअकूब ने मेम्नों को अलग किया और झुंड के मुंह को चितकबरों के और भूरों के जो लाबन के झुंड में थे किया और उस ने अपने झुंड को अलग किया और लाबन
४१ के झुंड में न मिलाया। और यों हुआ कि जब पुष्ट ढोर गर्भिणी होते थे तो यअकूब छड़ियों को नालियों में उन के आगे रखता था कि वे उन छड़ियों के
४२ आगे गर्भिणी होवें। पर जब दुर्बल ढोर आते थे वह उन्हें वहां न रखता था सो दुर्बल दुर्बल लाबन के और मोटे
४३ मोटे यअकूब के हुये। और उस पुरुष की अत्यंत बढ़ती हुई और वह बहुत पशु और दास और दासियों और ऊंटों और गदहों का स्वामी हुआ॥

एकतीसवां पर्ब्ब।

१ और उस ने लाबन के बेटों की ये बातें कहते सुना कि यअकूब ने हमारे पिता का सब कुछ ले लिया और हमारे पिता की संपत्ति से यह सब बिभव प्राप्त
२ किया। और यअकूब ने लाबन का रूप देखा और क्या देखता है कि कल परसों की नाईं वह मेरी ओर नहीं है॥

३ और परमेश्वर ने यअकूब से कहा कि तू अपने पितरों और अपने कुटुम्बों के देश को फिर जा और मैं तेरे संग
४ होऊंगा। तब यअकूब ने राखिल और लियाह को अपने झुंड पास खेत में बुला
५ भेजा। और उन्हें कहा कि मैं देखता हूं कि तुम्हारे पिता का रूप आगे की नाईं मेरी ओर नहीं है परन्तु मेरे पिता
६ का ईश्वर मुझ पर प्रगट हुआ। और तुम जानती हो कि मैं ने अपने सारे बल
७ से तुम्हारे पिता की सेवा किई है। और तुम्हारे पिता ने मुझे छला है और दस बार मेरी बनी बदल दिई पर ईश्वर ने
८ मुझे दुःख देने को उसे न छोड़ा। यदि वह यों बोला कि फुटफुटियां तेरी बनी होंगी तो सारे ढोर फुटफुटियां जने और यदि उस ने यों कहा कि पट्टेवाले तेरी बनी में होंगी तो ढोर पट्टेवाले जने।
९ यों ईश्वर ने तुम्हारे पिता के ढोर लिये
१० और मुझे दिये। और यों हुआ कि जब ढोर गर्भिणी होते थे तो मैं ने स्वप्न में अपनी आंख उठाके देखा और क्या देखता हूं कि मेंढ़े जो ढोर पर चढ़ते हैं सो पट्टेवाले और फुटफुटिये और चित-
११ कबरे थे। और ईश्वर के दूत ने स्वप्न में मुझे कहा कि हे यअकूब और मैं
१२ बोला कि यहां हूं। तब उस ने कहा कि अपनी आंखें उठाइये और देख कि सारे मेंढ़े जो भेड़ों पर चढ़ते हैं पट्टेवाले और फुटफुटिये और चितकबरे हैं क्योंकि जो कुछ लाबन ने तुझ से किया मैं ने
१३ सब देखा है। बैतएल का सर्वशक्तिमान जहां तू ने खंभे पर तेल डाला जहां तू ने मेरे लिये मनौती मानी मैं हूं अब उठ इस देश से निकल जा और अपने कुटुम्ब के देश को फिर जा॥

१४ तब राखिल और लियाह ने उत्तर देके उस्से कहा क्या अब लों हमारे पिता के घर में हमारा कुछ भाग अथवा
१५ अधिकार है। क्या हम उस के लेखे

पराये नहीं गिने जाते हैं क्योंकि उस ने तो हमें बेच डाला है और हमारी रोकड़
१६ भी खा बैठा है। परन्तु ईश्वर ने जो धन कि हमारे पिता से लिया और हमें दिया वही हमारा और हमारे बालकों का है सो अब जो कुछ कि ईश्वर ने आप से कहा है सो करिये॥

१७ तब यअकूब ने उठके अपने बेटों और अपनी पत्नियों को ऊंटों पर बैठाया।
१८ और अपने सब चौपाए और अपनी सब सामग्री जो उस ने पाई थी अपनी कमाई के चौपाए जो उस ने फद्दानअराम में पाए थे ले निकला जिसतें कनआन देश में
१९ अपने पिता इज़हाक पास जावे। और लाबन अपने भेड़ों का रोम कतरने को गया और राख़िल ने अपने पिता की
२० मूर्त्तें चुरा लिईं। और यअकूब अरामी लाबन से अचानक चुराके भागा यहां
२१ लों कि वह उस्से न कहिके भागा। सो वह अपना सब कुछ लेके भागा और उठके नदी पार उतर गया और अपना मुंह जिलिअद पहाड़ की ओर किया॥

२२ और यअकूब के भागने का संदेश
२३ लाबन को तीसरे दिन पहुंचा। सो वह अपने भाइयों को अपने संग लेके सात दिन के मार्ग लों उस के पीछे गया और जिलिअद पहाड़ पर उसे जा लिया।
२४ परन्तु ईश्वर अरामी लाबन कने स्वप्न में रात को आया और उस्से कहा कि चौकस रह तू यअकूब को भला बुरा मत कहना।
२५ तब लाबन ने यअकूब को जा लिया और यअकूब ने अपना डेरा पहाड़ पर किया था और लाबन ने अपने भाइयों के साथ जिलिअद पहाड़ पर डेरा खड़ा किया॥

२६ तब लाबन ने यअकूब से कहा कि तू ने क्या किया जो तू एकाएक मुझ से चुरा निकला और मेरी पुत्रियों को खड्ग में की
२७ बंधुआई की नाईं ले चला। तू किस लिये चुपके से भागा और चोरी से मुझ से निकल आया और मुझे नहीं कहा जिसतें मैं तुझे आनंद मंगल ढोल और रागों और बीणा के साथ बिदा करता।
२८ और तू ने मुझे अपने बेटों और अपनी बेटियों को चूमने न दिया अब तू ने
२९ मूर्खता से यह किया है। तुम्हें दुःख देने को मेरे बश में है परन्तु तुम्हारे पिता के ईश्वर ने कल रात मुझे यों कहा कि चौकस रह तू यअकूब को भला बुरा मत
३० कहना। और अब तो तुझे निश्चय जाना है क्योंकि तू अपने पिता के घर का निपट अभिलाषी है तू ने किस लिये मेरे देवों को चुराया है॥

३१ और यअकूब ने उत्तर दिया और लाबन से कहा क्योंकि मैं डरता था क्योंकि मैं ने कहा क्या जाने आप अपनी
३२ पुत्रियां बरबस मुझ से छीन लेंगे। जिस किसी के पास आप अपने देवों को पावें उसे जीता मत छोड़िये हमारे भाइयों के आगे देखे लीजिये कि आप का मेरे पास क्या क्या है और अपना लीजिये क्योंकि यअकूब न जानता था कि राख़िल ने उन्हें चुराया था॥

३३ और लाबन यअकूब के तंबू में गया और लियाह के तंबू में और दोनों दासियों के तंबू में परन्तु न पाया तब वह लियाह के तंबू से बाहर जाके राख़िल के तंबू
३४ में गया। और राख़िल मूर्त्तिन को लेकर ऊंट की पलान में रखके उन पर बैठी थी और लाबन ने सारे तंबू को देख
३५ लिया और न पाया। तब उस ने अपने पिता से कहा कि मेरे प्रभु इस्से अप्रसन्न न होवें कि मैं आप के आगे उठ नहीं सक्ती क्योंकि मुझ पर स्त्रियों की रीति है सो उस ने ढूंढ़ा पर मूर्त्तिन को न पाया॥

३६ और यअकूब क्रुद्ध हुआ और लाबन से बिवाद करके उत्तर दिया और लाबन

को कहा कि मेरा क्या पाप और क्या अपराध है कि आप इस रीति से मेरे पीछे ३७ झपटे। आप ने जो मेरी सारी सामग्री टूंढी आप ने अपने घर की सामग्री से क्या पाई मेरे भाइयों और अपने भाइयों के आगे रखिये जिसतें वे हम दोनों के मध्य ३८ में बिचार करें। यह बीस बरस जो मैं आप के साथ था आप की भेड़ों और बकरियों का गर्भ न गिरा और मैं ने ३९ आप के झुंड के मेंढे नहीं खाये। वह जो फाड़ा गया मैं आप पास न लाया उस की घटी मैं ने उठाई तू ने मेरे हाथ से उसे मांगा जो दिन को अथवा ४० रात को चोरी गया। मेरी यह दशा थी कि दिन को घाम से भस्म हुआ और रात को पाला से और मेरी आंखों से ४१ मेरी नींद जाती रही। यों मुझे आप के घर में बीस बरस बीते मैं ने चौदह बरस आप की दोनों बेटियों के लिये और छः बरस आप के पशु के लिये आप की सेवा किई और आप ने दस बार ४२ मेरी बनी बदल डाली। यदि मेरे पिता का ईश्वर अबिरहाम का ईश्वर और इज़हाक का भय मेरे साथ न होता तो आप निश्चय मुझे अब छूंछे हाथ निकाल देते ईश्वर ने मेरी बिपत्ति और मेरे हाथों के परिश्रम को देखा है और कल रात आप को डांटा॥

४३ तब लाबन ने उत्तर दिया और यअकूब से कहा कि ये बेटियां मेरी बेटियां और ये बालक मेरे बालक और ये चौपाए मेरे चौपाए और सब जो तू देखता है मेरे हैं और आज के दिन अपनी इन बेटियों अथवा इन के लड़कों से जो वे जनी ४४ हैं क्या कर सक्ता हूं। सो अब आ मैं और तू आपुस में एक बाचा बांधें और वही मेरे और तेरे मध्य में साक्षी रहे॥

४५ तब यअकूब ने एक पत्थर लेके खंभा सा खड़ा किया। और यअकूब ने अपने ४६ भाइयों से कहा कि पत्थर एकट्ठा करो तब उन्हों ने पत्थर एकट्ठा करके एक ढेर किया और उन्हों ने उसी ढेर पर खाया। और लाबन ने उस का नाम यग्र- ४७ सहदूता रक्खा परन्तु यअकूब ने उस का नाम जिलिअद रक्खा॥

और लाबन बोला कि यह ढेर आज ४८ के दिन मुझ में और तुझ में साक्षी है इस लिये उस का नाम जिलिअद रक्खा। और मिसपा क्योंकि उस ने कहा कि जब ४९ हम आपुस से अलग होवें तो परमेश्वर मेरे तेरे मध्य में चौकसी करे। जो तू ५० मेरी बेटियों को दुःख देवे अथवा जो तू मेरी बेटियों से अधिक स्त्रियां करे तो हमारे साथ कोई दूसरा नहीं देख ईश्वर मेरे और तेरे मध्य में साक्षी है। और ५१ लाबन ने यअकूब से कहा देख यह ढेर और देख यह खंभा जो मैं ने अपने और आप के मध्य में रक्खा है। यही ढेर ५२ साक्षी और यह खंभा साक्षी है कि मैं इस ढेर से पार तुझे और तू इस ढेर और इस खंभे से पार मुझे दुःख देने को न आवेगा। अबिरहाम का ईश्वर और ५३ नहूर का ईश्वर उन के पिता का ईश्वर हमारे मध्य में बिचार करे और यअकूब ने अपने पिता इज़हाक के भय की किरिया खाई॥

तब यअकूब ने उस पहाड़ पर बलि ५४ चढ़ाया और अपने भाइयों को रोटी खाने को बुलाया और उन्हों ने रोटी खाई और सारी रात पहाड़ पर रहे। और ५५ भोर को तड़के लाबन उठा और अपने बेटों और अपनी बेटियों को चूमा और उन्हें आशीस दिया और लाबन बिदा हुआ और अपने स्थान को फिरा॥

बत्तीसवां पर्ब्ब।

और यअकूब अपने मार्ग चला गया १

२ और ईश्वर के दूत उसे आ मिले। और यअकूब ने उन्हें देखके कहा कि यह ईश्वर की सेना है और उस ने उस स्थान का नाम दो सेना रक्खा॥

३ और यअकूब ने अपने आगे अदूम के देश और शईर की भूमि में अपने भाई ४ एसौ पास दूतों को भेजा। और उस ने यह कहिके उन्हें आज्ञा किई कि मेरे प्रभु एसौ को यों कहियो कि आप का दास यअकूब यों कहता है कि मैं लाबन कने टिका और अब लों वहीं रहा। ५ और मेरे बैल और गदहे झुंड और दास और दासियां हैं और मैं ने अपने प्रभु को कहला भेजा है जिसतें मैं आप की दृष्टि में अनुग्रह पाऊं॥

६ और दूतों ने यअकूब पास फिर आके कहा कि हम आप के भाई एसौ पास गये और वह और उस के साथ चार सौ मनुष्य आप की भेंट को भी आते हैं॥

७ तब यअकूब निपट डर गया और व्याकुल हुआ और उस ने अपने साथ के लोगों और झुंडों और ढोरों और ऊंटों के दो ८ जथा किये। और कहा कि यदि एसौ एक जथा पर आवे और उसे मारे तो दूसरा जथा जो बच रहा है भागेगा। ९ फिर यअकूब ने कहा कि हे मेरे पिता अबिरहाम के ईश्वर और मेरे पिता इजहाक के ईश्वर वह परमेश्वर जिस ने मुझे कहा कि अपने देश और अपने कुनबे में फिर जा और मैं तेरा भला १० करूंगा। मैं तो उन सब दया और उस सब सत्यता से जो तू ने अपने दास के संग किई तुच्छ हूं क्योंकि मैं अपने डंडे से इस यरदन पार गया और अब मैं दो ११ जथा बना हूं। मैं तेरी बिनती करता हूं मुझे मेरे भाई के हाथ अर्थात् एसौ के हाथ से बचा ले क्योंकि मैं उस्से डरता हूं न होवे कि वह आके मुझे और लड़कों को माता समेत मार लेवे। १२ और तू ने कहा कि मैं निश्चय तुझ से भलाई करूंगा और तेरे बंश को समुद्र के बालू की नाईं बनाऊंगा जो बहुताई के मारे गिना नहीं जायगा॥

१३ और वह उस रात वहीं टिका और जो उस के हाथ लगा अपने भाई एसौ १४ की भेंट के लिये लिया। दो सौ बकरियां और बीस बकरे दो सौ भेड़ें और बीस १५ मेंढे। तीस दूधवाली ऊंटनियां उन के बच्चे समेत चालीस गाय और दस बैल १६ बीस गदहियां और दस बच्चे। और उस ने उन्हें अपने सेवकों के हाथ हर जथा को अलग अलग सौंपा और अपने सेवकों को कहा कि मेरे आगे पार उतरो और १७ जथा को जथा से अलग रक्खो। और पहिले को उस ने आज्ञा दिई कि जब मेरा भाई एसौ तुझे मिले और पूछे कि तू किस का है और किधर जाता और १८ ये जो तेरे आगे हैं किस के हैं। तो कहियो कि आप के सेवक यअकूब के हैं यह मेरे प्रभु एसौ के लिये भेंट है और १९ देखिये वह आप भी हमारे पीछे है। और वैसा उस ने दूसरे और तीसरे को और उन सब को जो जथा के पीछे जाते थे यह कहिके आज्ञा किई कि जब तुम एसौ को पाओ तो इस रीति से कहियो। २० और अधिक यह कहियो कि देखिये आप का सेवक यअकूब हमारे पीछे आता है क्योंकि उस ने कहा है कि मैं उस भेंट से जो मुझ से आगे जाती है उस्से मिलाप कर लेऊंगा तब उस का मुंह देखूंगा क्या जाने वह मुझे ग्रहण करे॥

२१ सो वह भेंट उस के आगे आगे पार गई और वह आप उस रात जथा में २२ टिका। और उसी रात उठा और अपनी दो पत्नियों और अपनी दो सहेलियों और अपने ग्यारह बेटों को लेके याब्बक

२३ से पार उतरा। और उस ने उन्हें लेके नाली पार करवाया और अपना सब कुछ पार भेजा॥

२४ और यअकूब अकेला रह गया और वहां पौ फटे लों एक जन उस्से मल्लयुद्ध

२५ करता रहा। और जब उस ने देखा कि वह उस पर प्रबल न हुआ तो उस की जांघ को भीतर से छूआ तब यअकूब के जांघ की नस उस के संग मल्लयुद्ध करने

२६ में चढ़ गई। तब वह बोला कि मुझे जाने दे क्योंकि पौ फटती है और वह बोला कि मैं तुझे जाने न देऊंगा जब

२७ लों तू मुझे आशीस न देवे। तब उस ने उस्से कहा कि तेरा नाम क्या और वह

२८ बोला कि यअकूब। तब उस ने कहा कि तेरा नाम आगे को यअकूब न होगा परन्तु इसराएल क्योंकि तू ने ईश्वर के और मनुष्यों के आगे राजा की नाईं

२९ मल्लयुद्ध किया और जीता। तब यअकूब ने यह कहिके उस्से पूछा कि अपना नाम बताइये और वह बोला कि तू मेरा नाम क्यों पूछता है और उस ने उसे वहां

३० आशीस दिया। और यअकूब ने उस स्थान का नाम फनुएल रक्खा क्योंकि मैं ने ईश्वर को प्रत्यक्ष देखा और मेरा प्राण बचा है

३१ और जब वह फनुएल से पार चला तो सूर्य्य की ज्योति उस पर पड़ी और

३२ वह अपनी जांघ से लंगड़ाता था। इस लिये इसराएल के बंश उस जांघ की नस को जो चढ़ गई थी आज लों नहीं खाते क्योंकि उस ने यअकूब के जांघ की नस को जो चढ़ गई थी छूआ था॥

तेंतीसवां पर्ब्ब

१ और यअकूब ने अपनी आंखें ऊपर उठाईं और क्या देखता है कि एसौ और उस के साथ चार सौ मनुष्य आते हैं तब उस ने लियाह को और राखिल को और दो सहेलियों को लड़के बाले बांट

२ दिये। और उस ने सहेलियों और उन के लड़कों को सब से आगे रक्खा और लियाह और उस के लड़कों को पीछे और राखिल और यूसुफ को सब के पीछे।

३ और वह आप उन के आगे पार उतरा और अपने भाई पास पहुंचते पहुंचते

४ सात बार भूमि लों दण्डवत किई। और एसौ उस्से मिलने को दौड़ा और उसे गले लगाया और उस के गले से लिपटा

५ और उसे चूमा और वे रोये। फिर उस ने अपनी आंखें उठाईं और स्त्रियों को और लड़कों को देखा और कहा कि ये तेरे साथ कौन हैं और वह बोला वह लड़के जो ईश्वर ने अपनी कृपा से आप

६ के सेवक को दिये। तब सहेलियां और उन के लड़के पास आये और दण्डवत

७ किई। और लियाह ने भी अपने लड़के समेत पास आके दण्डवत किई और अंत को यूसुफ और राखिल पास आये

८ और दण्डवत किई। और उस ने कहा कि इस जथा से जो मुझ को मिला तुझे क्या और वह बोला कि अपने प्रभु की

९ दृष्टि में अनुग्रह पाने के लिये। तब एसौ बोला कि हे मेरे भाई मुझ पास बहुत

१० हैं तेरे तेरे ही लिये होवें। तब यअकूब बोला कि मैं आप की बिनती करता हूं यदि मैं ने आप की दृष्टि में अनुग्रह पाया है तो मेरी भेंट मेरे हाथ से ग्रहण कीजिये क्योंकि मैं ने जो आप का मुंह देखा है जानो मैं ने ईश्वर का मुंह देखा

११ और आप मुझ से प्रसन्न हुए। मेरी आशीस को जो आप के आगे लाई गई है ग्रहण कीजिये क्योंकि ईश्वर ने मुझ पर अनुग्रह किया है और इस लिये कि मुझ पास सब कुछ है सो वह यहां लों

१२ गिड़गिड़ाया कि उस ने ले लिया। और कहा कि आओ कूंच करें और चलें और

१३ मैं तेरे आगे आगे चलूंगा। तब उस ने उस से कहा कि मेरे प्रभु जानते हैं कि बालक कोमल हैं और झुंड और ढोर दूध पिलानेवालियां मेरे साथ हैं और जो वे दिन भर हांके जायें तो सारे झुंड मर
१४ जायेंगे। मेरे प्रभु अपने सेवक से पहिले पार जाइये और मैं धीरे धीरे जैसा कि ढोर आगे चलेंगे और बालक सह सकेंगे चलूंगा यहां लों कि शईर को अपने
१५ प्रभु पास आ पहुंचूं। तब एसौ बोला अपने संग के लोगों में से कई एक आप के साथ छोड़ जाऊं और वह बोला कि यह किस लिये मैं अपने प्रभु की दृष्टि में अनुग्रह पाऊं॥
१६ तब एसौ उसी दिन अपने मार्ग पर
१७ शईर को लौटा। और यअकूब चलते चलते सुक्कात को आया और अपने लिये एक घर बनाया और अपने ढोर के लिये पतछप्पर बनाये इसी लिये उस स्थान का नाम सुक्कात हुआ॥
१८ और यअकूब फद्दानअराम से बाहर होके कनआन देश के सालिम के नगर सिकम में आया और नगर के बाहर
१९ अपना तंबू खड़ा किया। और जिस पर उस का तंबू खड़ा था उस ने उस खेत को हमूर के पिता सिकम के सन्तान से
२० सौ टुकड़े रोकड़ पर मोल लिया। और उस ने वहां एक बेदी बनाई और उस का नाम सर्वशक्तिमान इसराएल का ईश्वर रक्खा॥

चौंतीसवां पर्व्व।

१ और लियाह की बेटी दीन: जिसे वह यअकूब के लिये जनी थी उस देश की
२ लड़कियों के देखने को बाहर गई। और जब उस देश के अध्यक्ष हवी हमूर के बेटे सिकम ने उसे देखा तो उसे ले गया और उस्से मिल बैठा और उसे अशुद्ध
३ किया। और उस का मन यअकूब की बेटी दीन: से अटका और उस ने उस लड़की को प्यार किया और उस लड़की
४ के मन को मनाया। और सिकम ने अपने पिता हमूर से कहा कि इस लड़की को मुझे पत्नी होने के निमित्त दिलाइये।
५ और यअकूब ने सुना कि उस ने मेरी बेटी दीन: को अशुद्ध किया और उस के बेटे उस के ढोर के साथ खेत में थे और उन के आने लों यअकूब चुप रहा॥
६ और सिकम का पिता हमूर बातचीत करने को यअकूब पास आया।
७ और सुनते ही यअकूब के बेटे खेत से आ पहुंचे और वे मनुष्य उदास होके बड़े कोपित हुए क्योंकि उस ने इसराएल में अपमान किया कि यअकूब की बेटी के साथ अनुचित रीति से मिल बैठा॥
८ और हमूर ने उन के साथ यों बातचीत किई कि मेरे बेटे सिकम का मन तुम्हारी बेटी से लालसित है सो उसे उस
९ को पत्नी होने के निमित्त दीजिये। और हमारे साथ समधियाना कीजिये अपनी बेटियां हमें दीजिये और हमारी बेटियां
१० आप लीजिये। और तुम हमारे साथ बास करोगे और यह भूमि तुम्हारे आगे होगी उस में रहो और ब्यापार करो
११ और इस में अधिकार प्राप्त करो। और सिकम ने उस के पिता और उस के भाइयों से कहा कि तुम्हारी दृष्टि में मैं अनुग्रह पाऊं और जो कुछ तुम मुझे
१२ कहोगे मैं देऊंगा। जितना दैजा और भेंट चाहो मैं तुम्हारे कहने के समान देऊंगा पर लड़की को मुझे पत्नी होने के निमित्त देओ॥
१३ तब यअकूब के बेटों ने सिकम और उस के पिता हमूर को छल से उत्तर दिया क्योंकि उस ने उन की बहिन दीन:
१४ को अशुद्ध किया था। और उन से कहा

कि हम यह बात नहीं कर सक्के कि एक *अखतन: पुरुष को अपनी बहिन देवें क्योंकि* १५ इस्से हमारी निन्दा होगी। केवल इस में हम तुम्हारी बात मानेंगे यदि तुम हमारे समान होओ कि तुम्हारे हर एक १६ पुरुष का खतन: किया जाय। तब हम अपनी बेटियां तुम्हें देंगे और तुम्हारी बेटियां लेंगे और हम तुम में निवास करेंगे और हम एक लोग हो जायेंगे। १७ परन्तु जो खतन: कराने में तुम हमारी न सुनोगे तो हम अपनी लड़की ले लेंगे और चले जायेंगे॥

१८ और उन की बातें हमूर और हमूर के पुत्र सिकम की दृष्टि में प्रसन्न हुईं। १९ और उस तरुण ने उस बात में अबेर नहीं किया क्योंकि वह यअकूब की बेटी से प्रसन्न था और वह अपने पिता के सारे २० घराने से अधिक कुलीन था। और हमूर और उस का बेटा सिकम अपने नगर के फाटक पर आये और उन्होंने अपने नगर के लोगों से यों बातचीत किई। २१ कि इन मनुष्यों से हम से मेल है सो उन्हें इस देश में रहने देओ और इस में व्यापार करें क्योंकि देखो यह देश उन के लिये बड़ा है सो आओ हम उन की बेटियों को पत्नियों के लिये लेवें और अपनी २२ बेटियां उन्हें देवें। परन्तु हमारे साथ रहने को और एक लोग हो जाने को केवल यह लोग इसी बात से मानेंगे कि खतन: *जैसा उन का किया गया है हम में हर पुरुष खतन: करावे। २३ क्या उन के ढोर और उन की संपत्ति और उन का हर एक चौपाया हमारा न होगा केवल हम उन की मान लेवें २४ और वे हम में निवास करेंगे। और सभों ने जो नगर के फाटक से आते जाते थे हमूर और उस के बेटे सिकम की बात को माना और उस के नगर के फाटक से सब जो बाहर जाते थे उन में से हर *पुरुष ने खतन: करवाया॥*

२५ और तीसरे दिन जब लों वे घाव में पड़े थे यों हुआ कि यअकूब के बेटों में से दीन: के दो भाई समऊन और लावी हर एक ने अपना अपना खड्ग लिया और साहस से नगर पर आ पड़े और सारे पुरुषों को मार डाला। २६ और उन्होंने हमूर और उस के बेटे सिकम को खड्ग की धार से मार डाला और सिकम के घर से दीन: को लेके निकल गये। २७ यअकूब के बेटे जूझे हुओं पर आये और नगर को लूट लिया क्योंकि उन्होंने उन की बहिन को अशुद्ध किया था। २८ उन्होंने उन की भेड़ बकरी और उन की गाय बैल और उन के गदहे और जो कुछ कि नगर में और खेत में था लूट लिया। २९ और उन के सब धन और उन के सारे बालक और उन की पत्नियां और घर में का सब कुछ वे बन्धुआई में लाये और लूट लिया। ३० और यअकूब ने समऊन और लावी से कहा कि तुम ने मुझे दु:ख दिया कि इस भूमि के बासियों में कनआनियों और फरिज्जियों के मध्य में मुझे घिनौना कर दिया और मैं गिनती में थोड़ा हूं और वे मेरे सन्मुख एकट्ठे होंगे और मुझे मार डालेंगे और मैं और मेरा घराना नष्ट होवेगा। ३१ तब वे बोले क्या उचित था कि वह हमारी बहिन के साथ बेश्या की नाईं व्यवहार करे॥

पैंतीसवां पर्ब्ब।

१ और ईश्वर ने यअकूब से कहा कि उठ बैतएल को जा और वहीं रह और उस सर्वशक्तिमान के लिये जिस ने तुझे दर्शन दिया था जब तू अपने भाई एसौ के आगे से भागा था वहां एक बेदी २ बना। तब यअकूब ने अपने घराने से और अपने सब संगियों से कहा कि

ऊपरी देवों को जो तुम में हैं दूर करो और अपने तईं शुद्ध करो और अपने ३ कपड़े बदलो। और आओ हम उठें और बैतएल को जायें और मैं वहां उस सर्ब्बशक्तिमान के लिये बेदी बनाऊंगा जिस ने मेरी सकेती के दिन मुझे उत्तर दिया और जिस मार्ग में मैं चला वह ४ मेरे साथ साथ था। और उन्हों ने सारे ऊपरी देवों को जो उन के हाथों में थे और कुंडल जो उन के कानों में थे को दिये और यअकूब ने उन्हें बलूत पेड़ तले सिकम के लग गाड़ ५ दिया। और उन्हों ने कूच किया और उन के आस पास के नगरों पर ईश्वर का डर पड़ा और उन्हों ने यअकूब के बेटों का पीछा न किया॥

६ सो यअकूब और जितने लोग उस के साथ थे कनआन की भूमि में लैाज को ७ जो बैतएल है आये। और उस ने वहां एक बेदी बनाई और इस लिये कि जब वह अपने भाई के पास से भागा तो वहां उसे ईश्वर दिखाई दिया उस ने उस का नाम बैतएल का सर्ब्बशक्तिमान रक्खा॥

८ और रिबक: की दाई दबूर: मर गई और बैतएल के लग बलूत पेड़ तले गाड़ी गई और उस का नाम रोने का बलूत रक्खा॥

और जब कि यअकूब फद्दानआराम से निकला ईश्वर ने उसे फेर दर्शन दिया १० और उसे आशीस दिया। और ईश्वर ने उस्से कहा कि तेरा नाम यअकूब है तेरा नाम आगे को यअकूब न होगा परन्तु तेरा नाम इसराएल होगा सो उस ११ ने उस का नाम इसराएल रक्खा। फिर ईश्वर ने उस्से कहा कि मैं सर्ब्बशक्तिमान सर्ब्बसामर्थी हूं तू फलवान हो और बढ़ तुझ से एक जातिगण और जातिगण की मंडली होगी और तेरी कटि से राजा निकलेंगे। और यह भूमि जो मैं १२ ने अबिरहाम और इजहाक को दिई है तुझे और तेरे पीछे तेरे बंश को देऊंगा। और ईश्वर उस स्थान से जहां उस ने १३ उस्से बातें किईं यों उस पास से उठ गया। और यअकूब ने उस स्थान में १४ जहां उस ने उस से बातें किईं पत्थर का एक खंभा खड़ा किया और उस पर तपावन तपाया और उस पर तेल डाला। और यअकूब ने उस स्थान का नाम जहां १५ ईश्वर उस्से बोला था बैतएल रक्खा॥

और उन्हों ने बैतएल से कूच किया १६ और वहां से इफरात: बहुत दूर न था और राखिल को पीर लगी और उस पर बड़ी पीड़ा हुई। और उस पीड़ा की १७ दशा में जनाई दाई ने उस्से कहा कि मत डर अबकी भी तेरे बेटा होगा। और यों हुआ कि जब उस का प्राण १८ जाने पर था क्योंकि वह मर ही गई तो उस ने उस का नाम बिनऔनी रक्खा पर उस के पिता ने उस का नाम बिनयमीन रक्खा। सो राखिल मर गई और १९ इफरात: के मार्ग में जो बैतलहम है गाड़ी गई। और यअकूब ने उस के २० समाधि पर एक खंभा खड़ा किया वही खंभा राखिल के समाधि का खंभा आज लों है॥

फिर इसराएल ने कूच किया और २१ अपना तंबू अद्र के गुम्मट के उस पार खड़ा किया। और जब इसराएल उस २२ देश में जा रहा तो यों हुआ कि रूबिन गया और अपने पिता की सुरैतिन के संग अकर्म्म किया और इसराएल ने सुना अब यअकूब के बारह बेटे थे॥

लियाह के बेटे रूबिन यअकूब का २३ पहिलौंठा और समऊन और लावी और यहूदाह और इशकार और जबूलून।

२४ और राखिल के बेटे यूसुफ और बिनय-
२५ मीन। और राखिल की सहेली बिलह:
२६ के बेटे दान और नफताली। और लियाह की सहेली जिलफ: के बेटे जद और यसर यअकूब के बेटे जो फट्टानअराम में उस के लिये उत्पन्न हुए थे हैं॥

२७ और यअकूब अरब: के नगर में जो हबरून है ममरी के बीच अपने पिता इजहाक पास जहां अबिरहाम और इजहाक ने निवास किया था आया।
२८ और इजहाक एक सौ अस्सी बरस का
२९ हुआ। और इजहाक ने प्राण त्यागा और बूढ़ा और दिनों होके अपने लोगों में जा मिला और उस के बेटे एसौ और यअकूब ने उसे गाड़ा॥

छत्तीसवां पर्ब्ब।

१ और एसौ की जो अदूम है बंशावली
२ यह है। एसौ ने कनआन की लड़कियों में से पत्नियां किईं ऐलून हित्ती की बेटी आद: को और अहलिबाम: को जो अनाह की बेटी हवी सबऊन की बेटी
३ थी। और इसमअएल की बेटी बशामत को जो नबायोत की बहिनों में से थी।
४ और एसौ के लिये आद: इलीफज को जनी और बशामत से रऊएल उत्पन्न
५ हुआ। और अहलिबाम: से यऊस और यअलाम और कुरह उत्पन्न हुए ये एसौ के बेटे हैं जो उस के लिये कनआन की भूमि में उत्पन्न हुए॥

६ और एसौ अपनी पत्नियों और अपने बेटों और अपनी बेटियों और अपने घर के हर एक प्राणी और अपने ढोर को और अपने सारे पशु को और अपनी सारी संपत्ति को जो उस ने कनआन देश में प्राप्त किई थी लेके अपने भाई यअकूब पास से परदेश को निकल गया।
७ क्योंकि उन का धन ऐसा बढ़ गया था कि वे एकट्ठे न रह सक्ते थे और उन के पशु के कारण से उन के टिकने की भूमि उन का भार न उठा सक्ती थी।
८ और एसौ जो अदूम है शईर पहाड़ पर जा रहा॥

९ सो एसौ की बंशावली जो शईर पहाड़ के मनुष्यों का पिता है यह है।
१० एसौ के बेटों के नाम यह हैं एसौ की पत्नी आद: का बेटा इलीफज एसौ की
११ पत्नी बशामत का बेटा रऊएल। और इलीफज के बेटे तैमन ओमर सफू और
१२ जअताम और कनज थे। और एसौ के बेटे इलीफज की सहेली तिमनअ थी सो वह इलीफज के लिये अमालीक को जनी एसौ की पत्नी आद: के बेटे ये थे।
१३ और रऊएल के बेटे ये हैं नहत और जरह सम्माह और मिज्ज: ये एसौ की
१४ पत्नी बशामत के बेटे थे। और एसौ की पत्नी सबऊन की बेटी अनाह की बेटी अहलिबाम: के बेटे ये थे और वह एसौ के लिये यऊस और यअलाम और कुरह जनी॥

१५ एसौ के बेटों में जो अध्यक्ष हुए ये हैं एसौ के पहिलौंठे इलीफज के बेटे अध्यक्ष तैमन अध्यक्ष ओमर अध्यक्ष सफू
१६ अध्यक्ष कनज। अध्यक्ष कुरह अध्यक्ष जअताम अध्यक्ष अमालीक अदूम के देश
१७ में ये आद: के बेटे थे। और एसौ के बेटे रऊएल के बेटे ये हैं अध्यक्ष नहत अध्यक्ष जरह अध्यक्ष सम्माह अध्यक्ष मिज्ज: ये अदूम देश में हुए एसौ की पत्नी बशा-
१८ मत के बेटे थे। और एसौ की पत्नी अहलिबाम: के ये बेटे हैं अध्यक्ष यऊस अध्यक्ष यअलाम अध्यक्ष कुरह ये वे अध्यक्ष हैं जो एसौ की पत्नी अनाह की
१९ बेटी अहलिबाम: से थे। सो एसौ के जो अदूम है ये बेटे हैं ये उन के अध्यक्ष हैं॥

२० शईर के बेटे हूरी जो इस भूमि के

बासी थे ये हैं लोतान और सोबल और
२१ सबऊन और अनाह। और दैसून और
असर और दैसान ये हूरियों के अध्यक्ष
हैं और अदूम की भूमि में शईर के बेटे
२२ हैं। और लोतान के सन्तान हूरी और
हैमान और लोतान की बहिन तिमनअ
२३ थी। और सोबल के सन्तान ये हैं अल-
वान और मनहत और ऐबाल सफ़ और
२४ ओनाम। और सबऊन के बेटे ये हैं
ऐयाह और अनाह यह वह अनाह है
जिस ने बन में जब वह अपने पिता
सबऊन के गदहों को चराता था ताल-
२५ कुंड पाये। और अनाह के सन्तान ये हैं
दैसून और अहलिबाम: अनाह की बेटी।
२६ और दैसून के सन्तान हमदान और इश-
२७ बान और यथरान और करान। असर
के सन्तान ये हैं बिलहान और जअवान
२८ और अक़ान। दैसून के सन्तान ये हैं ऊज
२९ और अरान। जो अध्यक्ष हूरियों में के
थे सो ये हैं अध्यक्ष लोतान अध्यक्ष सोबल
३० अध्यक्ष सबऊन अध्यक्ष अनाह। अध्यक्ष
दैसून अध्यक्ष असर अध्यक्ष दैसान ये उन
हूरियों के अध्यक्ष हैं जो शईर की भूमि
में थे॥

३१ और जो राजा अदूम देश पर राज्य
करता था उस्से पहिले कि इसराएल के
बंश का कोई राजा हुआ सो ये हैं।
३२ और बऊर का बेटा बालिग अदूम में
राज्य करता था और उस के नगर का
३३ नाम दिनहब: था। और बालिग मर
गया और जरह के बेटे यूबाब ने जो
बूसर: का था उस की संती राज्य किया।
३४ और यूबाब मर गया और हूशाम ने जो
तमन्नी की भूमि का था उस की संती
३५ राज्य किया। और हूशाम मर गया और
बिदद का बेटा हदद जिस ने मोअब के
चौगान में मिदयान को मारा उस की
संती राज्य किया और उस के नगर का
नाम गवीत था। और हदद मर गया ३६
और मसरीक: के समल: ने उस की संती
राज्य किया। और समल: मर गया और ३७
नदी के लग के रहूबात के साऊल ने
उस की संती राज्य किया। और साऊल ३८
मर गया और अकबूर के बेटे बअलह-
नान ने उस की संती राज्य किया। और ३९
अकबूर का बेटा बअलहनान मर गया
और हदर ने उस की संती राज्य किया
और उस के नगर का नाम फ़ाग़ू था और
उस की पत्नी का नाम मुहैतबिएल था
जो मतरिद की बेटी मेजहब की बेटी थी॥

सो उन के घरानों उन के स्थानों उन ४०
के नाम के समान एसौ के अध्यक्षों के ये
नाम हैं अध्यक्ष तिमन: अध्यक्ष अलियाह
अध्यक्ष यतीत। अध्यक्ष अहलिबाम: ४१
अध्यक्ष ऐलाह अध्यक्ष फ़ैनून। अध्यक्ष ४२
कनज अध्यक्ष तीमान अध्यक्ष मिबसार।
अध्यक्ष मजदिएल अध्यक्ष ईराम ये अपने ४३
अपने स्थान में अपने अपने निवास के
समान अदूम के अध्यक्ष थे जो अदूमियों
का पिता एसौ है॥

सैंतीसवां पर्व्व।

और यअकूब ने कनआन देश में अपने १
पिता के टिकने की भूमि में बास किया।
यअकूब की बंशावली यह है॥ २
यूसफ़ सत्रह बरस का होके अपने
भाइयों के साथ झुंड चराता था और
वह तरुण अपने पिता की पत्नी बिलह:
और जिलफ़: के बेटों के संग था और
यूसुफ़ ने उन के पिता के पास उन के
बुरे कामों का संदेश पहुंचाया। अब ३
इसराएल यूसुफ़ को अपने सारे पुत्रों से
अधिक प्यार करता था क्योंकि वह उस
के बुढ़ापे का बेटा था और उस ने उस के
लिये बहुरंगा का पहिरावा बनाया। जब ४
उस के भाइयों ने देखा कि हमारा पिता
हमारे सब भाइयों से उसे अधिक प्यार

करता है तो उन्हों ने उस्से बैर किया और उस्से कुशल से न कह सक्ते थे॥

५ और यूसुफ ने एक स्वप्न देखा और अपने भाइयों से कहा और उन्हों ने उस्से ६ अधिक बैर रक्खा। और उस ने उन्हें यों कहा कि जो स्वप्न मैं ने देखा है सो ७ सुनिये। क्योंकि देखिये कि हम खेत में गट्ठियां बांधते थे और देखो मेरी गट्ठी उठी और सीधी भी खड़ी हुई और देखो तुम्हारी गट्ठियां आस पास खड़ी हुईं ८ और मेरी गट्ठी को दंडवत किई। तब उस के भाइयों ने उस्से कहा क्या तू सच-मुच हम पर राज्य करेगा अथवा तू हम पर प्रभुता करेगा और उन्हों ने उस के स्वप्नों और उस की बातों के कारण उस्से ९ अधिक बैर किया। फिर उस ने दूसरा स्वप्न देखा और उसे अपने भाइयों से कहा कि देखो मैं ने एक और स्वप्न देखा और देखो सूर्य्य और चन्द्रमा और ग्यारह १० तारे मुझे दंडवत करते थे। और उस ने अपने पिता और भाइयों से बर्णन किया पर उस के पिता ने उसे डपटा और उस्से कहा कि यह क्या स्वप्न है जो तू ने देखा है क्या मैं और तेरी माता और तेरे भाई सचमुच तेरे आगे भूमि पर ११ झुकके तुझे दंडवत करेंगे। और उस के भाइयों ने उस्से डाह किया परन्तु उस के पिता ने उस बात को सोच रक्खा॥

१२ फिर उस के भाई अपने पिता के १३ झुंड चराने सिकम को गये। तब इस-राएल ने यूसुफ से कहा क्या तेरे भाई सिकम में नहीं चराते आ मैं तुझे उन के पास भेजूं और उस ने उस्से कहा कि १४ मैं यहीं हूं। और उस ने उस्से कहा कि जाइये अपने भाइयों की कुशलता और झुंड की कुशलता देख और मुझ पास संदेश ला सो उस ने उसे हबरून की तराई से भेजा और वह सिकम को आया। तब किसी जन ने उसे पाया और १५ देखा वह खेत में भ्रमता था तब उस पुरुष ने उस्से पूछा कि तू क्या ढूंढता है। तब वह बोला मैं अपने भाइयों को ढूंढता १६ हूं मुझे बताइये कि वे कहां चराते हैं। और वह पुरुष बोला वे यहां से चले १७ गये क्योंकि मैं ने उन्हें यह कहते सुना कि आओ दूतैन को जावें तब यूसुफ अपने भाइयों के पीछे चला और उन्हें दूतैन में पाया॥

और ज्योंहीं उन्हों ने उसे दूर से देखा १८ तो अपने पास आने से पहिले उस के मार डालने की जुगत किई। और वे १९ आपुस में बोले देखो यह स्वप्नदर्शी आता है। सो आओ अब हम उसे मार २० डालें और किसी कूए में उसे डाल देवें और कहें कि कोई बनपशु ने उसे भक्षण किया और देखेंगे कि उस के स्वप्नों का क्या होगा। तब रूबिन ने सुनके उसे २१ उन के हाथ से छुड़ाने चाहा और बोला कि हम उसे मार न डालें। और रूबिन २२ ने उन्हें कहा कि लोहू मत बहाओ उसे बन के इस कूए में डाल देओ और उस पर हाथ न डालो जिसतें वह उसे उन के हाथ से छुड़ाके उसे उस के पिता पास फिर पहुंचावे॥

और यों हुआ कि जब यूसुफ अपने २३ भाइयों पास आया तो उन्हों ने उस का बस्त्र यूसुफ से उतार लिया अर्थात वह बहुरंगी बस्त्र जो वह पहिने था। और २४ उन्हों ने उसे लेके उसे उस कूए में डाल दिया और वह कूआ अंधा था उस में कुछ पानी न था। तब वे रोटी खाने २५ बैठे और अपनी आंखें उठाईं और क्या देखते हैं कि इसमअएलियों का एक जथा जिलिअद से सुगंध द्रव्य और बलसाम और मुर ऊंटों पर लादे हुए मिस्र को उतर जाते हैं। और यहूदाह ने अपने भाइयों २६

से कहा क्या लाभ कि हम अपने भाई को मार डालें और उस का लोहू छिपावें।
२७ आओ उसे इसमअएलियों के हाथ बेचें और उस पर अपने हाथ न डालें क्योंकि वह हमारा भाई और हमारा मांस है और उस के भाइयों ने मान लिया।
२८ और जब मिदयानी व्यापारी उधर से जाते थे तो उन्हों ने यूसुफ को उस कूए से बाहर निकालके इसमअएलियों के हाथ बीस टुकड़े चांदी पर बेचा और वे
२९ यूसुफ को मिस्र में लाये। तब रूबिन कूए पर फिर आया और देखो यूसुफ कूए में नहीं है तब उस ने अपने कपड़े फाड़े।
३० और अपने भाइयों के पास फिर आया और कहा कि लड़का तो नहीं अब मैं कहां जाऊं॥
३१ फिर उन्हों ने यूसुफ का पहिरावा लिया और एक बकरी का मेम्ना मारा और उस पहिरावे को उस के लोहू में
३२ चुभोड़ा। और उन्हों ने उस बहुरंगी पहिरावे को भेजा और अपने पिता के पास पहुंचाया और कहा कि हम ने इसे पाया आप पहिचानिये कि यह आप के
३३ बेटे का पहिरावा है कि नहीं। और उस ने उसे पहिचाना और कहा कि यह तो मेरे बेटे का पहिरावा है किसी बनपशु ने उसे खा लिया है यूसुफ निःसन्देह
३४ फाड़ा गया। तब यअकूब ने अपने कपड़े फाड़े और टाट बस्त्र अपनी कटि पर डाला और बहुत दिन लों अपने बेटे के
३५ लिये शोक किया। और उस के सारे बेटे उस की सारी बेटियां उसे शान्ति देने उठीं पर उस ने शान्ति ग्रहण न किई पर बोला कि मैं अपने बेटे के पास रोता हुआ समाधि में उतरूंगा सो उस
३६ का पिता उस के लिये रोया किया। और मिदयानियों ने उसे मिस्र में फिरऊन के एक प्रधान सेनापति फूतिफर के हाथ बेचा॥

अठतीसवां पर्ब्ब।

१ और उस समय में यों हुआ कि यहूदाह अपने भाइयों से अलग होकर हीरः नाम एक अदूलामी के पास गया।
२ और यहूदाह ने वहां एक कनआनी की लड़की को देखा जिस का नाम सूआ था और उस ने उसे लिया और उस के साथ संगाम किया।
३ और वह गर्भिणी हुई और एक बेटा जनी और उस ने उस का नाम एर रक्खा।
४ और वह फिर गर्भिणी हुई और बेटा जनी और उस ने उस का नाम ओनान रक्खा।
५ और वह फिर गर्भिणी हुई और बेटा जनी और उस का नाम सेलः रक्खा और जब वह उसे जनी तो वह कज़ीब में था॥
६ और यहूदाह अपने पहिलौंठे एर के लिये एक स्त्री ब्याह लाया जिस का नाम तमर था।
७ और यहूदाह का पहिलौंठा एर परमेश्वर की दृष्टि में दुष्ट था सो परमेश्वर ने उसे मार डाला।
८ तब यहूदाह ने ओनान को कहा कि अपने भाई की पत्नी पास जा और उस्से ब्याह कर और अपने भाई के लिये बंश चला।
९ और ओनान ने जाना कि यह बंश मेरा न होगा और यों हुआ कि जब वह अपने भाई की पत्नी पास गया तो बीर्य को भूमि पर गिरा दिया न होवे कि उस का भाई उस्से बंश पावे।
१० और उस का वह कार्य्य परमेश्वर की दृष्टि में बुरा था इस
११ लिये उस ने उसे भी मार डाला। तब यहूदाह ने अपनी पतोह तमर को कहा कि अपने पिता के घर में रांड बैठी रह जब लों कि मेरा बेटा सेलः बढ़ जाय क्योंकि उस ने कहा न होवे कि वह भी अपने भाइयों की नाईं मर जाय सो तमर अपने पिता के घर जा रही॥
१२ और बहुत दिन बीते और सूआ की बेटी यहूदाह की पत्नी मर गई और

यहूदाह उस के शोक को भूला तब वह और उस का मित्र अद्लामी हीरः अपनी भेड़ों के रोम कतरने तिमनास को गया।
१३ और तमर से यह कहा गया कि देख तेरा ससुर अपनी भेड़ों के रोम कतरने
१४ तिमनास को जाता है। तब उस ने अपने रंड़साले के कपड़ों को अपने ऊपर से उतार फेंका और घूंघट ओढ़ा और अपने को लपेटा और एनाइम के द्वार में जो तिमनास के मार्ग पर है जा बैठी क्योंकि उस ने देखा था कि सेल: सयाना हुआ और मुझे उस की पत्नी न कर
१५ दिया। जब यहूदाह ने उसे देखा तो समझा कि कोई बेश्या है क्योंकि वह
१६ अपना मुंह छिपाये हुए थी। और मार्ग से उस की ओर फिरा और उस्से कहा कि मुझे अपने पास आने दे क्योंकि न जाना कि वह मेरी पतोह है और वह बोली कि मेरे पास आने में तू मुझे क्या
१७ देगा। तब वह बोला मैं झुंड में से एक मेम्ना भेजूंगा और उस ने कहा कि तू उसे भेजने लों मुझे कुछ बंधक दे।
१८ और वह बोला मैं तुझे क्या बंधक देऊं सो वह बोली अपनी छाप और अपने बिजायठ और अपनी लाठी जो तेरे हाथ में है और उस ने उस को दिया और उस के पास गया और वह उस्से गर्भिणी
१९ हुई। तब वह उठी और चली गई और अपना घूंघट अपने ऊपर से उतार रक्खा और अपने रंड़साले का बस्त्र
२० पहिन लिया। और यहूदाह ने अपने मित्र अद्लामी के हाथ मेम्ना भेजा कि उस स्त्री के हाथ से वह बंधक फेर लेवे
२१ परन्तु उस ने उसे न पाया। तब उस ने उस स्थान के लोगों से पूछा कि जो बेश्या मार्ग में बैठी थी सो कहां है और
२२ वे बोले कि यहां बेश्या न थी। तब वह यहूदाह के पास फिर आया और कहा कि मैं ने उसे नहीं पाया और उस स्थान के लोगों ने भी कहा कि बेश्या
२३ वहां न थी। और यहूदाह बोला कि उसे लेने दे न हो कि हम निन्दित होवें देख मैं ने यह मेम्ना भेजा और तू ने उसे
२४ न पाया। और तीन मास के पीछे यों हुआ कि यहूदाह से कहा गया कि तेरी पतोह तमर ने बेश्याई किई और देख कि उसे छिनाले का गर्भ भी है और यहूदाह बोला कि उसे बाहर लाओ और
२५ वह जला दिई जाय। जब वह निकाली गई तो उस ने अपने ससुर को कहला भेजा कि मुझे उस जन का पेट है जिस की ये बस्तें हैं और कहा कि पहिचानिये यह छाप और बिजायठ और लाठी
२६ किस की है। तब यहूदाह ने पहिचाना और कहा कि वह मुझ से अधिक धर्म्मी है इस लिये कि मैं ने उसे अपने बेटे सेल: को न दिया पर वह आगे को उस्से अज्ञान रहा॥

२७ और उस के जन्ने के समय में यों हुआ कि देखो उस के कोख में यमल थे।
२८ और जब वह पीड़ में हुई तो एक का हाथ निकला और जनाई दाई ने उस के हाथों में नारा बांधके कहा कि यह
२९ पहिले निकला। और यों हुआ कि उस ने अपना हाथ फिर खींच लिया और देखो उस का भाई निकल पड़ा तब वह बोली कि तू ने यह दरार क्यों किया इस लिये उस का नाम फारस
३० हुआ। और उस के पीछे उस का भाई जिस के हाथ में नारा बंधा था निकला और उस का नाम जरह रक्खा॥

उन्तालीसवां पर्व्व।

१ और यूसुफ मिस्र में लाया गया और फूतिफर मिस्री ने जो फिरऊन का एक प्रधान और राजा का सेनापति था उस को इसमअएलियों के हाथ से जो उसे

२ वहां लाये थे मोल लिया। परन्तु परमेश्वर यूसुफ के साथ था और वह भाग्यवान हुआ और वह अपने मिस्री ३ स्वामी के घर में रहा किया। और उस के स्वामी ने यह देखा कि परमेश्वर उस के साथ है और कि परमेश्वर ने उस के सारे कार्य्यों में उसे भाग्यवान किया। ४ और यूसुफ ने उस की दृष्टि में अनुग्रह पाया और उस ने उस की सेवा किई और उस ने उसे अपने घर पर करोड़ा किया और सब जो कुछ कि उस का था ५ उस के हाथ में कर दिया। और यों हुआ कि जब से उस ने उसे अपने घर पर और अपनी सब बस्तुन पर करोड़ा किया तब से परमेश्वर ने उस मिस्री के घर पर यूसुफ के कारण बढ़ती दिई और उस की सारी बस्तुन में जो घर में और खेत में थीं परमेश्वर की ओर से ६ बढ़ती हुई। और उस ने अपना सब कुछ यूसुफ के हाथ में कर दिया और वह रोटी से अधिक जिसे खा लेता था कुछ न जानता था और यूसुफ रूपवान और देखने में सुंदर था॥

७ और इन बातों के पीछे यों हुआ कि उस के स्वामी की पत्नी ने अपनी आंखें यूसुफ पर लगाईं और वह बोली ८ कि मेरे साथ शयन कर। परन्तु उस ने न माना और अपने स्वामी की पत्नी से कहा कि देख मेरा स्वामी अपनी रोटी से अधिक जिसे खा लेता है किसी बस्तु को नहीं जानता और उस ने अपना सब ९ कुछ मेरे हाथ में सौंप दिया। इस घर में मुझ से बड़ा कोई नहीं और उस ने मुझ को छोड़ कोई बस्तु मुझ से अलग नहीं रक्खी क्योंकि तू उस की पत्नी है तो मैं ऐसी महादुष्टता क्यों करूं और १० ईश्वर का अपराधी होऊं। और ऐसा हुआ कि वह यूसुफ को प्रतिदिन कहती रही पर वह उस के साथ शयन करने को अथवा उस के पास रहने को उस की न मानता था। ११ और उस समय के लगभग ऐसा हुआ कि वह अपने कार्य्य के लिये घर में गया और घर के लोगों में से वहां कोई न था। १२ तब उस ने उस का पहिरावा पकड़के कहा कि मेरे साथ शयन कर तब वह अपना पहिरावा उस के हाथ में छोड़कर भागा और बाहर निकल गया। १३ और यों हुआ कि जब उस ने देखा कि वह अपना पहिरावा मेरे हाथ में छोड़ गया और भाग निकला। १४ तो उस ने अपने घर के लोगों को बुलाया और उन से कहा कि देखो वह एक इबरानी को हमारे घर में लाया कि हम से ठठोली करे वह मेरे साथ शयन करने को मेरे पास आया और मैं चिल्ला उठी। १५ और यों हुआ कि जब उस ने सुना कि मैं अपना शब्द उठाके चिल्लाई तो अपना पहिरावा मेरे पास छोड़ भागा और बाहर निकल गया। १६ सो जब लों उस का पति घर में न आया उस ने उस का पहिरावा अपने पास रख छोड़ा। १७ तब उस ने ऐसी ही बातें उस्से कहीं कि यह इबरी दास जो तू ने हम पास ला रक्खा मेरे पास आया कि मुझ से ठट्ठा करे। १८ और जब मैं चिल्ला उठी तो वह अपना पहिरावा मेरे पास छोड़कर बाहर निकल भागा। १९ और यों हुआ कि जब उस के स्वामी ने अपनी पत्नी की बातें सुनीं जो उस ने उस्से कहीं कि तेरे दास ने मुझ से यों किया तो उस का क्रोध भड़का। २० और यूसुफ के स्वामी ने उसे लेके बंदीगृह में जहां राजा के बंधुए बंद थे बंधन में डाला और वह वहां बंदीगृह में था। २१ परन्तु परमेश्वर यूसुफ के साथ था और उस पर कृपा किई और बंदीगृह के प्रधान की उस

२२ पर दयाल किया । और उस बंदीगृह के प्रधान ने बंदीगृह के सारे बंधुओं को यूसुफ के हाथ में सौंपा और जो कुछ वे २३ करते थे उस का कर्त्ता वही था । उस बंदीगृह का प्रधान कार्य्यों से निश्चिंत था इस लिये कि परमेश्वर उस के साथ था और उस के कार्य्यों में जो उस ने किये ईश्वर ने भाग्यवान किया ॥

चालीसवां पर्ब्ब ।

१ और इन बातों के पीछे यों हुआ कि मिस्र के राजा के पियाऊ ने और रसोइया ने अपने प्रभु मिस्र के राजा का अपराध २ किया । और फिरऊन अपने दो प्रधानों पर अर्थात् प्रधान पियाऊ पर और प्रधान ३ रसोइया पर क्रुद्ध हुआ । और उस ने उन्हें पहरुओं के प्रधान के घर में जहां ४ यूसुफ बंद था बंदीगृह में डाला । और पहरुओं के प्रधान ने उन्हें यूसुफ को सौंप दिया और उस ने उन की सेवा किई और वे कितने दिन लों बंद रहे ॥

५ और हर एक ने उन दोनों में से बंदीगृह में अर्थात् मिस्र के राजा के पियाऊ और रसोइया ने एक ही रात एक एक स्वप्न अपने अपने अर्थ के समान देखा । ६ और बिहान को यूसुफ उन पास आया और उन पर दृष्टि किई और देखो वे ७ उदास थे । तब उस ने फिरऊन के प्रधानों से जो उस के साथ उस के प्रभु के घर में बंद थे पूछा कि आज तुम ८ क्यों कुरूप हो? । और वे उस्से बोले कि हम ने स्वप्न देखा है जिस का अर्थ करवैया नहीं तब यूसुफ ने उन्हें कहा क्या अर्थ करना ईश्वर का कार्य्य नहीं मुझ से कहो ॥

९ तब पियाऊओं के प्रधान ने अपना स्वप्न यूसुफ से कहा और उस्से बोला कि अपने स्वप्न में क्या देखता हूं कि एक १० लता मेरे आगे है । और उस लता में तीन डालियां थीं और मानों उस में कलियां निकलीं और उस में फूल लगे और उस के गुच्छों में पक्के दाख निकले । ११ और फिरऊन का कटोरा मेरे हाथ में था और मैं ने दाखों को लेके उन्हें फिरऊन के कटोरे में निचोड़ा और मैं ने उस कटोरे को फिरऊन के हाथ में दिया ।

१२ तब यूसुफ ने उस्से कहा कि इस का यह अर्थ है कि ये तीन डालियां तीन दिन हैं । १३ फिरऊन अब से तीन दिन में तेरा सिर उभाड़ेगा और तुझे अपना पद फिर देगा और तू आगे की नाईं जब तू फिरऊन का पियाऊ था उस के हाथ में फिर कटोरा १४ देगा । परन्तु जब तेरा भला होय तो मुझे स्मरण कीजियो और मुझ पर दयाल हूजियो और फिरऊन से मेरी चर्चा करियो १५ और मुझे इस घर से छुड़वाइयो । क्योंकि निश्चय मैं इबरानियों के देश से चुराया गया था और यहां भी मैं ने ऐसा काम नहीं किया कि वे मुझे इस बंदीगृह में रक्खें ॥

१६ जब रसोइयों के प्रधान ने देखा कि अर्थ अच्छा हुआ तो यूसुफ से कहा कि मैं भी स्वप्न में था और क्या देखता हूं कि मेरे सिर पर श्वेत रोटी की तीन १७ टोकरियां हैं । और ऊपर की टोकरी में फिरऊन के लिये समस्त रीति का भोजन था और पंछी मेरे सिर पर उस टोकरी १८ में से खाते थे । तब यूसुफ ने उत्तर दिया और कहा उस का अर्थ यह है कि ये १९ तीन टोकरियां तीन दिन हैं । फिरऊन अब से तीन दिन में तेरा सिर तेरी देह से अलग करेगा और एक पेड़ पर तुझे टांग देगा और पंछी तेरा मांस नोच नोच खायेंगे ॥

२० और यों हुआ कि तीसरे दिन फिरऊन के जन्मगांठ का दिन था और उस ने अपने सारे सेवकों का नेवता किया और

उस ने अपने सेवकों में पियाउओं के प्रधान और रसोइयों के प्रधान को
२१ उभाड़ा। और उस ने पियाउओं के प्रधान को पियाऊ का पद फिर दिया और उस ने फिरऊन के हाथ में कटोरा
२२ दिया। परन्तु उस ने यूसुफ के अर्थ करने के समान रसोइयों के प्रधान को फांसी
२३ दिई। तथापि पियाउओं के प्रधान ने यूसुफ को स्मरण न किया परन्तु उसे भूल गया॥

एकतालीसवां पर्व्व।

१ फिर दो बरस बीते यों हुआ कि फिरऊन ने स्वप्न देखा और देखो कि
२ आप नदी के तीर पर खड़ा है। और देखो कि नदी से सात सुंदर और मोटी मोटी गायें निकलीं और चराव पर चरने
३ लगीं। और देखो कि उन के पीछे और सात गायें कुरूप और डांगर नदी से निकलीं और नदी के तीर पर उन सात
४ गायों के पास खड़ी हुईं। और उन कुरूप और डांगर गायों ने उन सुंदर और मोटी सात गायों को खा लिया तब
५ फिरऊन जागा। फिर सो गया और दुहराके स्वप्न देखा कि अन्न से भरी हुईं और अच्छी सात बालें एक डांठी में
६ निकलीं। और देखो कि और सात बालें छितरी और पुरबी पवन से मुरझाई हुईं
७ उन के पीछे निकलीं। और वे छितरी सात बालें उन अच्छी भरी हुईं सात बालों को निगल गईं और फिरऊन जागा और देखो कि स्वप्न है॥

८ और बिहान को यों हुआ कि उस का जीव व्याकुल हुआ तब उस ने मिस्र के सारे टोनहों और बुद्धिमानों को बुला भेजा और अपना स्वप्न उन से कहा परन्तु उन में से कोई फिरऊन के स्वप्न का अर्थ न कर सका॥

९ तब प्रधान पियाऊ ने फिरऊन से कहा कि मेरे अपराध आज मुझे चेत
१० आते हैं। फिरऊन अपने दासों पर क्रुद्ध था और मुझे और रसोइयों के प्रधान को बंदीगृह के पहरू के घर में बंद किया
११ था। और एक ही रात हम ने अर्थात् मैं ने और उस ने एक एक स्वप्न देखा हम में से हर एक ने अपने स्वप्न के अर्थ
१२ समान स्वप्न देखा। और एक इबरानी तरुण पहरुओं के प्रधान का सेवक हमारे साथ था और हम ने उस से कहा और उस ने हमारे स्वप्न का अर्थ किया और उस ने हर एक के स्वप्न समान अर्थ
१३ किया। और जैसा उस ने हमारे लिये अर्थ किया तैसा हुआ मुझे आप ने पद फिर दिया और उसे फांसी दिई॥

१४ तब फिरऊन ने यूसुफ को बुलवा भेजा और उन्हों ने उसे बंदीगृह से दौड़ाया और उस ने बाल बनवाया और अपने कपड़े बदल फिरऊन के आगे आया।
१५ तब फिरऊन ने यूसुफ से कहा कि मैं ने एक स्वप्न देखा जिस का अर्थ कोई नहीं कर सक्ता और मैं ने तेरे विषय में सुना है कि तू स्वप्न को समुझके अर्थ कर सक्ता है॥

१६ और यूसुफ ने उत्तर में फिरऊन से कहा कि मुझ से नहीं ईश्वर ही फिरऊन को कुशल का उत्तर देगा॥

१७ तब फिरऊन ने यूसुफ से कहा कि मैं ने स्वप्न देखा कि मैं नदी के तीर पर
१८ खड़ा हूं। और क्या देखता हूं कि मोटी और सुंदर सात गायें नदी से निकलीं
१९ और चराई पर चरने लगीं। और क्या देखता हूं कि उन के पीछे अत्यंत कुरूप और बुरी और डांगर और सात गायें निकलीं ऐसी बुरी जो मैं ने मिस्र के सारे
२० देश में कभी न देखीं। और वे डांगर और कुरूप गायें अगिली मोटी सात
२१ गायों को खा गईं। और जब वे उन के

डहर में पड़ीं तब असूझ न पड़ा कि वे उन्हें खा गईं और वे वैसी ही कुरूप थीं जैसी पहिले थीं तब मैं जागा।
२२ और फिर स्वप्न में देखा कि अच्छी घनी
२३ सात बालें एक डांठी में निकलीं। और क्या देखता हूं कि और सात बालें मुरझाई हुईं और पतली पुरबी पवन से
२४ कुम्हलाई हुईं उन के पीछे उगीं। और उन पतली बालों ने उन अच्छी सात बालों को निगल लिया और मैं ने यह टोनहों से कहा परन्तु कोई अर्थ न कर सका॥
२५ तब यूसुफ ने फिरऊन से कहा कि फिरऊन का स्वप्न एक ही है जो कुछ ईश्वर को करना है सो उस ने फिरऊन
२६ को दिखाया है। वे सात अच्छी गायें सात बरस हैं और वे अच्छी सात बालें
२७ सात बरस हैं स्वप्न एक ही है। और वे डांगर और कुरूप सात गायें जो उन के पीछे निकलीं सात बरस हैं और वे सात छूछी बालें जो पुरबी पवन से कुम्हलाई हुई हैं सो अकाल के सात
२८ बरस हैं। यही बात है जो मैं ने फिरऊन से कही ईश्वर जो कुछ किया चाहता है
२९ फिरऊन को दिखाया। देखिये कि सात बरस लों मिस्र के सारे देश में बड़ी
३० बढ़ती होगी। और उन के पीछे सात बरस का अकाल होगा और मिस्र देश की सारी बढ़ती भुला जायगी और
३१ अकाल देश को नष्ट करेगा। और उस अकाल के मारे वह बढ़ती देश में जानी न जायगी क्योंकि वह बड़ा भारी अकाल
३२ होगा। और फिरऊन पर जो स्वप्न दोहराया गया सो इस लिये है कि वह ईश्वर से ठहराया गया है और ईश्वर
३३ थोड़े दिन में उसे करेगा। सो अब फिरऊन एक चतुर और बुद्धिमान मनुष्य ढूंढ़े और उसे मिस्र देश पर ठहरावे।
३४ फिरऊन यही करे और देश पर करोड़ा ठहरावे और सात बढ़ती के बरसों में मिस्र देश का पांचवां भाग लिया करे।
३५ और वे अवैये अच्छे बरसों का सारा भोजन एकट्ठा करें और फिरऊन के बश में अन्न धर रक्खें और वे अन्न नगरों में
३६ धर रक्खें। और वही भोजन मिस्र के देश में अकाल के अवैये सात बरसों के लिये देश के भंडार के लिये होगा जिसतें अकाल के मारे देश नष्ट न हो॥
३७ तब यह बात फिरऊन की दृष्टि में और उस के सारे सेवकों की दृष्टि में
३८ अच्छी लगी। तब फिरऊन ने अपने सेवकों से कहा क्या हम इस जन के समान पा सक्ते हैं जिस में ईश्वर का
३९ आत्मा है। और फिरऊन ने यूसुफ से कहा जैसा कि ईश्वर ने यह सारी बातें तुझे दिखाई हैं सो तेरे तुल्य बुद्धिमान
४० और चतुर कोई नहीं है। तू मेरे घर का करोड़ा हो और मेरी सारी प्रजा तेरी आज्ञा में होगी केवल सिंहासन पर मैं
४१ तुझ से बड़ा हूंगा। फिर फिरऊन ने यूसुफ से कहा कि देख मैं ने तुझे मिस्र
४२ के सारे देश पर करोड़ा किया। और फिरऊन ने अपनी अंगूठी अपने हाथ से निकालके उसे यूसुफ के हाथ में पहिना दिई और उसे झीना वस्त्र से बिभूषित किया और सोने की सिकरी उस के गले
४३ में डाली। और उस ने उसे अपने दूसरे रथ में चढ़ाया और उस के आगे प्रचारा गया कि सन्मान करो और उस ने उसे मिस्र के सारे देश पर अध्यक्ष किया।
४४ और फिरऊन ने यूसुफ से कहा कि मैं फिरऊन हूं और तुझ विना मिस्र के सारे देश में कोई मनुष्य अपना हाथ पांव न
४५ उठावेगा। और फिरऊन ने यूसुफ का नाम सफनथफानिअख रक्खा और उस ने ओन के नगर के याजक फूतिफरअ की बेटी आसनाथ को उस्से ब्याह दिया॥

और यूसुफ मिस्र देश में सर्ब्बत्र फिरा और जब यूसुफ मिस्र के राजा फिरऊन के आगे खड़ा हुआ तब वह तीस बरस का था और यूसुफ फिरऊन के आगे से निकलके मिस्र के सारे देश में सर्ब्बत्र ४७ फिरा । और बहुती के सात बरसों में ४८ भूमि से मुट्ठी भर भर उत्पन्न हुआ । तब उस ने उन सात बरसों का सारा भोजन जो मिस्र देश में हुआ एकट्ठा किया और भोजन को नगरों में धर रक्खा हर नगर के आस पास के खेतों का अन्न उसी ४९ बस्ती में रक्खा । और यूसुफ ने समुद्र की बालू की नाईं बहुत अन्न बटोरा यहां लों कि गिन्ना छोड़ दिया क्योंकि अगणित था ॥

५० और अकाल के बरसों से आगे यूसुफ के दो बेटे उत्पन्न हुए जो ओन के याजक फूतिफरअ की बेटी आसनाथ उस के ५१ लिये जनी । सो यूसुफ ने पहिले का नाम मुनस्सी रक्खा इस लिये कि उस ने कहा ईश्वर ने मेरा और मेरे पिता के घर का ५२ सब परिश्रम भुलाया । और दूसरे का नाम इफरायम रक्खा इस लिये कि ईश्वर ने मुझे मेरे दुःख के देश में फलवान किया ॥

५३ और मिस्र देश की बहुती के सात ५४ बरस बीत गये । और यूसुफ के कहने के समान अकाल के सात बरस आने लगे और सारे देशों में अकाल पड़ा परन्तु मिस्र के ५५ सारे देश में अन्न था । और जब कि मिस्र के सारे देश भूख से मरने लगे तो लोग रोटी के लिये फिरऊन के आगे चिल्लाये तब फिरऊन ने सारे मिस्रियों से कहा कि यूसुफ पास जाओ और उस का कहा ५६ मानो । और सारी भूमि पर अकाल था और यूसुफ ने खत्ते खोल खोल मिस्रियों के हाथ बेचा और मिस्र के देश में कठिन ५७ अकाल पड़ा था । और सारे देशगण मिस्र में यूसुफ से मोल लेने आये क्योंकि सारे देशों में बड़ा अकाल था ॥

बयालीसवां पर्ब्ब ।

और जब यअकूब ने देखा कि मिस्र १ में अन्न है तब उस ने अपने बेटों से कहा कि क्यों एक एक को ताकते हो । तब २ उस ने कहा देखो मैं सुनता हूं कि मिस्र में अन्न है उधर जाओ और वहां से हमारे लिये मोल लेओ जिसतें हम जीवें और न मरें । सो यूसुफ के दस भाई ३ अन्न मोल लेने को मिस्र में आये । पर ४ यअकूब ने यूसुफ के भाई बिनयमीन को उस के भाइयों के साथ न भेजा क्योंकि उस ने कहा कहीं ऐसा न हो कि उस पर कुछ बिपत्ति पड़े ॥

और इसराएल के बेटे और आने- ५ वालों के साथ मोल लेने आये क्योंकि कनआन देश में अकाल था । और यूसुफ ६ तो देश का अध्यक्ष था और वह देश के सारे लोगों के हाथ बेचा करता था सो यूसुफ के भाई आये और उन्हों ने उस के आगे भूमि लों प्रणाम किया । और यूसुफ ७ ने अपने भाइयों को देखके उन्हें पहिचाना पर उस ने आप को अनपहिचान किया और उन से कठोरता से बोला और उस ने उन्हें पूछा कि तुम कहां से आये हो और वे बोले अन्न लेने को कनआन देश से । यूसुफ ने तो अपने भाइयों ८ को पहिचाना पर उन्हों ने उसे न पहिचाना । और यूसुफ ने उन के विषय के ९ स्वप्नों को जो उस ने देखे थे स्मरण किया और उन्हें कहा कि देश की कुदशा देखने को तुम भेदिये होकर आये हो । तब उन्हों ने उस्से कहा नहीं मेरे प्रभु १० परन्तु आप के सेवक अन्न लेने आये हैं । हम सब एक ही जन के बेटे हैं हम ११ सच्चे हैं आप के सेवक भेदिये नहीं हैं । तब वह उन से बोला कि नहीं परन्तु १२ देश की कुदशा देखने आये हो । तब १३ उन्हों ने कहा कि हम आप के सेवक

बारह भाई कनआन देश में एक ही जन के बेटे हैं और देखिये छुटका आज के दिन हमारे पिता पास है और एक नहीं
१४ है। तब यूसुफ ने उन्हें कहा सोई जो मैं ने तुम्हें कहा कि तुम लोग भेदिये हो।
१५ इसी से तुम जांचे जाओगे फिरऊन के जीवन की किरिया जब लों तुम्हारा छोटा भाई न आवे तुम जाने न पाओगे।
१६ अपना भाई लाने को अपने में से एक को भेजो और तुम बंदीगृह में रहोगे जिसतें तुम्हारी बातें जांची जावें कि तुम सच्चे हो कि नहीं नहीं तो फिरऊन के जीवन की किरिया तुम निश्चय भेदिये
१७ हो। फिर उस ने उन को तीन दिन लों
१८ बंधन में रक्खा। और तीसरे दिन यूसुफ ने उन्हें कहा यों करके जीते रहो मैं
१९ ईश्वर से डरता हूं। जो सच्चे हो तो एक को अपने भाइयों में से बंदीगृह में बंद रहने देओ और तुम अकाल के लिये
२० अपने घर में अन्न ले जाओ। परन्तु अपने छोटे भाई को मुझ पास लाओ सो तुम्हारी बातें ठहर जायेंगी और तुम न मरोगे सो उन्हों ने ऐसा ही किया।
२१ तब उन्हों ने आपुस में कहा कि हम निश्चय अपने भाई के विषय में दोषी हैं क्योंकि जब उस ने हम से बिनती किई और हम ने नहीं सुना हम ने उस के प्राण के कष्ट को देखा इस लिये यह
२२ बिपत्ति हम पर पड़ी है। तब रूबिन ने उत्तर में उन्हें कहा क्या मैं ने तुम्हें नहीं कहा कि इस लड़के के बिरुद्ध पाप न करो और तुम ने न सुना इस लिये देखो उस के लोहू का यही पलटा
२३ है। और वे न जानते थे कि यूसुफ समुझता है क्योंकि उन के मध्य में एक
२४ दोभाषिया था। तब वह उन में से अलग गया और रोया और फिर उन पास आया और उन से बातचीत किई और उन में से समऊन को लेके उन की आंखों के आगे बांधा॥

२५ तब यूसुफ ने उन के बोरों को अन्न से भरने की और हर जन की रोकड़ उस के बोरे में फेरने की और मार्ग के लिये उन्हें भोजन देने की आज्ञा किई और उस ने उन्हें ऐसा ही किया।
२६ और वे अपने गदहों पर अपना अन्न लादके वहां
२७ से चल निकले। और जब उन में से एक ने टिकान में अपने गदहे को दाना घास देने को अपना बोरा खोला तो उस ने अपनी रोकड़ देखी और देखो वह
२८ उस के बोरे के मुंह पर थी। तब उस ने अपने भाइयों से कहा कि मेरी रोकड़ फेरी गई है और देखो कि वह मेरे बोरे में है सो उन के जी में जी न रहा और वे डरके एक दूसरे को कहने लगे कि ईश्वर ने हम से यह क्या किया॥

२९ और वे कनआन देश में अपने पिता यअकूब पास पहुंचे और सब जो उन पर बीता था उस के आगे दोहराया।
३० कि जो पुरुष उस देश का स्वामी है सो हम से कठोरता से बोला और हमें देश का
३१ भेदिया ठहराया। और हम ने उस्से कहा कि हम तो सच्चे हैं हम भेदिये
३२ नहीं हैं। हम बारह भाई एक पिता के बेटे हैं एक नहीं है और सब से छोटा आज अपने पिता के पास कनआन देश
३३ में है। तब उस पुरुष ने अर्थात् उस देश के स्वामी ने हम से कहा इस्से मैं जानूंगा कि सच्चे हो अपना एक भाई मुझ पास छोड़ो और अपने घराने के लिये अकाल
३४ का भोजन ले जाओ। और अपने छुटके भाई को मेरे पास ले आओ तब मैं जानूंगा कि तुम भेदिये नहीं परन्तु तुम सच्चे हो फिर मैं तुम्हारे भाई को तुम्हें सौंपूंगा और तुम देश में ब्यापार कीजियो।
३५ और यों हुआ कि जब उन्हों

ने अपना अपना बोरा छूछा किया तो
देखो कि हर जन की रोकड़ उस के
बोरे में है और जब उन्हों ने और उन
के पिता ने रोकड़ की थैलियां देखीं तो
३६ डर गये। और उन के पिता यअकूब ने
उन्हें कहा कि तुम ने मुझे निःसंतान
किया यूसुफ तो नहीं है और समऊन
नहीं और तुम लोग बिनयमीन को ले
जाने चाहते हो ये सब बातें मुझ से
३७ विरुद्ध हैं। तब रूबिन अपने पिता से
कहके बोला जो मैं उसे आप पास न
लाऊं तो मेरे दोनों बेटों को मार डालियो
उसे मेरे हाथ में सौंपिये और मैं उसे
३८ फिर आप पास पहुंचाऊंगा। और उस
ने कहा मेरा बेटा तुम्हारे संग न जायगा
क्योंकि उस का भाई मर गया है और
वह अकेला रह गया जो जाते जाते
मार्ग में उस पर कुछ बिपत्ति पड़े तो
तुम मेरे पक्के बालों को शोक के साथ
समाधि में उतारोगे॥

तेंतालीसवां पर्व्व।

१ और देश में बड़ा अकाल था।
२ और यों हुआ कि जब वे मिस्र से लाये
हुए अन्न को खा चुके तो उन के पिता
ने उन्हें कहा कि फिर जाओ और हमारे
३ लिये थोड़ा अन्न मोल लेओ। तब यहू-
दाह ने उस्से कहा कि उस पुरुष ने
हमें चिता चिता कहा कि जब लों
तुम्हारा भाई तुम्हारे साथ न हो मेरा
४ मुंह न देखोगे। जो आप हमारे भाई
को हमारे साथ भेजियेगा तो हम जायेंगे
और आप के लिये अन्न मोल लेंगे।
५ परन्तु जो आप न भेजेंगे तो हम न
जायेंगे क्योंकि उस पुरुष ने हम से कहा
कि जब लों तुम्हारा भाई तुम्हारे साथ
६ न हो तुम मेरा मुंह न देखोगे। तब
इसराएल ने कहा कि तुम ने मुझ से क्यों
ऐसा बुरा व्यवहार किया कि उस पुरुष
से कहा कि हमारा और एक भाई है।
७ तब वे बोले कि उस पुरुष ने हमें
सकेती से हमारा और हमारे कुटुम्ब का
समाचार पूछा कि क्या तुम्हारा पिता
अब लों जीता है क्या तुम्हारा और कोई
भाई है सो हम ने इन बातों के व्यवहार
के समान उस्से कहा क्या हम निश्चय
जान सक्ते थे कि वह कहेगा कि अपने
८ भाई को ले आओ। तब यहूदाह ने
अपने पिता इसराएल से कहा कि इस
तरुण को मेरे साथ कर दीजिये और हम
उठ चलेंगे जिसतें हम और आप और
९ हमारे बालक जीवें और न मरें। मैं उस
का बिचवई हूंगा आप मेरे हाथ से उसे
लीजियो जो मैं उसे आप पास न लाऊं
और आप के आगे न धरूं तो आप यह
१० दोष मुझ पर सदा धरिये। क्योंकि जो
हम बिलंब न करते तो निश्चय अब लों
११ दोहराके फिर आये होते। तब उन के
पिता इसराएल ने उन्हें कहा कि जो
अब योंहीं है तो यों करो कि इस देश
के अच्छे से अच्छे फल अपने पात्रों में
रख लेओ और उस पुरुष के लिये भेंट
ले जाओ थोड़ा निर्यास और थोड़ा मधु
कुछ सुगंध द्रव्य और बोल बतम और
१२ बदाम। और दूनी रोकड़ अपने हाथ में
लेओ और वह रोकड़ जो तुम्हारे बोरों
में फेर लाई गई है अपने हाथ में फेर
ले जाओ क्या जाने वह भूल से हुआ
१३ हो। अपने भाई को भी लेओ उठो और
१४ उस पुरुष पास जाओ। और सर्व्वशक्ति-
मान सर्व्वसामर्थी उस पुरुष को तुम पर
दयाल करे जिसतें वह तुम्हारे दूसरे
भाई और बिनयमीन को छोड़ देवे और
जो मैं निर्बंश हुआ तो हुआ॥

१५ तब उन मनुष्यों ने वह भेंट लिया
और दूनी रोकड़ को अपने हाथ में
बिनयमीन समेत लिया और उठे और

मिस्र को उतर चले और यूसुफ के आगे
१६ जा खड़े हुए । जब यूसुफ ने बिनयमीन
को उन के संग देखा तो उस ने अपने
घर के प्रधान को कहा कि इन मनुष्यों
को घर में ले जा और कुछ मारके सिद्ध
कर क्योंकि ये मनुष्य दोपहर को मेरे
१७ संग खायेंगे । सो जैसा कि यूसुफ ने
कहा था उस पुरुष ने वैसा ही किया
और वह उन मनुष्यों को यूसुफ के घर
१८ में लाया । तब वे मनुष्य यूसुफ के घर
में पहुंचाये जाने से डर गये और उन्हों
ने कहा कि उस रोकड़ के कारण जो
पहिले बार हमारे बोरों में फिर गई हम
यहां पहुंचाये गये हैं जिसतें वह हमारे
विरुद्ध एक कारण ढूंढ़े और हम पर
लपके और हमें पकड़के दास बनावे और
१९ हमारे गदहों को छीन लेवे । तब उन्हों
ने यूसुफ के घर के प्रधान पास आके
घर के द्वार पर उस्से बातचीत किई ।
२० और कहा कि महाशय हम निश्चय
२१ पहिले बेर अन्न मोल लेने आये थे । तो
यों हुआ कि जब हम ने टिकाश्रय पर
उतरके अपने बोरों को खोला तो क्या
देखते हैं कि हर जन की रोकड़ उस के
बोरे के मुंह पर है हमारी रोकड़ सब
पूरी थी सो हम उसे अपने हाथ में फिर
२२ लाये हैं । और अन्न लेने को हम और
रोकड़ अपने हाथों में लाये हैं हम नहीं
जानते कि हमारी रोकड़ किस ने हमारे
२३ बोरों में रख दिई । तब उस ने कहा
कि तुम्हारा कुशल होवे मत डरो तुम्हारे
ईश्वर और तुम्हारे पिता के ईश्वर ने
तुम्हारे बोरों में तुम्हें धन दिया है
तुम्हारी रोकड़ मुझे मिल चुकी फिर
वह समऊन को उन पास निकाल
लाया ॥

२४ और उस जन ने उन मनुष्यों को
यूसुफ के घर में लाके पानी दिया और
उन्हों ने अपने चरण धोये और उस ने
उन के गदहों को दाना घास दिया ।
२५ फिर उन्हों ने दोपहर को यूसुफ के आने
पर भेंट सिद्ध किया क्योंकि उन्हों ने
सुना था कि हमें भोजन यहीं खाना
२६ है । और जब यूसुफ घर आया तो वे
अपने हाथ की उस भेंट को भीतर लाये
और उस के आगे भूमि लों दंडवत
२७ किई । और उस ने उन से कुशल क्षेम
पूछा और कहा कि तुम्हारा पिता कुशल
से है वह बृद्ध जिस की चर्चा तुम ने
२८ किई थी अब लों जीता है । और उन्हों
ने उत्तर दिया कि आप का सेवक हमारा
पिता कुशल से है वह अब लों जीता
है फिर उन्हों ने सिर झुकाके दंडवत
२९ किई । फिर उस ने अपनी आंखें उठाईं
और अपनी माता के बेटे अपने भाई
बिनयमीन को देखा और कहा कि
तुम्हारा छुटका भाई जिस की चर्चा
तुम ने मुझ से किई थी यही है फिर
कहा कि हे मेरे बेटे ईश्वर तुझ पर
३० दयाल रहे । तब यूसुफ ने उतावली
किई क्योंकि उस का जी अपने भाई
के लिये भर आया और रोने चाहा
और वह कोठरी में गया और वहां
३१ रोया । फिर उस ने अपना मुंह धोया
और बाहर निकला और आप को रोका
और आज्ञा किई कि भोजन परोसो ।
३२ तब उन्हों ने उस के लिये अलग और
उन के लिये अलग और मिस्रियों के
लिये जो उस के संग खाते थे अलग
परोसा इस लिये कि मिस्री इबरानियों
के संग भोजन नहीं खा सक्ते क्योंकि
३३ वह मिस्रियों के लिये घिन है । और
पहिलौंठा अपनी पहिलौंठाई के और
छुटका अपनी छुटाई के समान वे उस
के आगे बैठ गये तब वे मनुष्य आश्चर्य्य
३४ से एक दूसरे को देखने लगे । और जब

ने अपने आगे से भोजन उन पास भेजा परन्तु बिनयमीन का भोजन हर एक के भोजन से पंचगुण था और उन्हों ने उस के साथ जी भरके पीया ॥

चौतालीसवां पर्व्व ।

१ और उस ने अपने घर के प्रधान को यह कहके आज्ञा किई कि उन मनुष्यों के बोरों को जितना वे ले जा सकें अन्न से भर दे और हर एक जन की रोकड़
२ उस के बोरे के मुंह में डाल दे । और मेरा रूपे का कटोरा छुटके के बोरे के मुंह में उस के अन्न के दाम समेत रख दे सो उस ने यूसुफ की आज्ञा के समान किया ॥

३ ज्योंहीं दिन निकला वे मनुष्य अपने
४ गदहे समेत बिदा किये गये । जब वे नगर से थोड़ी दूर बाहर गये तब यूसुफ ने अपने घर के प्रधान को कहा कि उठ उन मनुष्यों का पीछा कर और जब तू उन्हें जा लेवे तो उन्हें कह कि किस लिये तुम लोगों ने भलाई की संती
५ बुराई किई है । क्या यह वह नहीं जिस में मेरा प्रभु पीता है और जिस को कि वह अवश्य खोज करेगा तुम ने इस में
६ बुरा किया है । और उस ने उन्हें जा
७ लिया और ये बातें उन्हें कहीं । तब उन्हों ने उस्से कहा कि हमारा प्रभु ऐसी बातें क्यों कहता है ईश्वर न करे कि
८ आप के सेवक ऐसा काम करें । देखिये यह रोकड़ जो हम ने अपने थैलों में ऊपर पाई सो हम कनआन देश से आप पास फिर लाये थे सो क्योंकर होगा कि हम ने आप के प्रभु के घर से रूपा
९ अथवा सोना चुराया हो । आप के सेवकों में से जिस के पास निकले वह मार डाला जाय और हम भी अपने प्रभु
१० के दास होंगे । तब उस ने कहा कि तुम्हारी बातों के समान हो जाय जिस के पास वह निकले सो मेरा दास होगा और तुम निर्दोष ठहरोगे । तब हर एक
११ पुरुष ने तुरंत अपना अपना बोरा भूमि पर उतारा और हर एक ने अपना बोरा
१२ खोला । और वह बड़के से आरंभ करके छुटके लों ढूंढ़ने लगा और कटोरा बिनयमीन के थैले में पाया गया ॥

१३ तब उन्हों ने अपने कपड़े फाड़े और हर एक पुरुष ने अपना गदहा लादा
१४ और नगर को फिरा । और यहूदाह और उस के भाई यूसुफ के घर आये क्योंकि वह अब लों वहीं था और वे उस के
१५ आगे भूमि पर गिरे । तब यूसुफ ने उन्हें कहा कि तुम ने यह कैसा काम किया क्या तुम न जानते थे कि मेरे ऐसा पुरुष
१६ अवश्य खोज करेगा । तब यहूदाह बोला कि हम अपने प्रभु से क्या कहें क्या बोलें अथवा क्योंकर अपने को निर्दोष ठहरावें ईश्वर ने आप के सेवकों की बुराई प्रगट किई देखिये कि हम और वह भी जिस पास कटोरा निकला
१७ अपने प्रभु के दास हैं । तब वह बोला ईश्वर न करे कि मैं ऐसा करूं जिस जन के पास कटोरा निकला वही मेरा दास होगा और तुम अपने पिता पास कुशल से जाओ ॥

१८ तब यहूदाह उस पास आके बोला कि हे मेरे प्रभु आप का सेवक अपने प्रभु के कान में एक बात कहने की आज्ञा पावे और अपने सेवक पर आप का कोप भड़कने न पावे क्योंकि आप
१९ फिरऊन के समान हैं । मेरे प्रभु ने अपने सेवकों से यों कहके प्रश्न किया कि
२० तुम्हारा पिता अथवा भाई है । और हम ने अपने प्रभु से कहा कि हमारा एक वृद्ध पिता है और उस का बुढ़ापे का एक छोटा पुत्र है और उस का भाई मर गया और वह अपनी माता का एक ही

रह गया और वह अपने पिता का अति
२१ प्रिय है। तब आप ने अपने सेवकों से
कहा कि उसे मेरे पास लाओ जिसतें
२२ मेरी दृष्टि उस पर पड़े। तब हम ने
अपने प्रभु से कहा कि वह तरुण अपने
पिता को छोड़ नहीं सक्ता क्योंकि जो
वह अपने पिता को छोड़ेगा तो उस का
२३ पिता मर जायगा। फिर आप ने अपने
सेवकों से कहा कि जब लों तुम्हारा
छुटका भाई तुम्हारे साथ न आवे तुम
२४ मेरा मुंह फिर न देखोगे। और यों हुआ
कि जब हम आप के सेवक अपने पिता
पास गये तो हम ने अपने प्रभु की बातें
२५ उस्से कहीं। तब हमारा पिता बोला
फिर जाओ हमारे लिये थोड़ा अन्न मोल
२६ लेओ। तब हम बोले कि हम नहीं जा
सक्ते जो हमारा छुटका भाई हमारे
साथ होवे तो हम जायेंगे क्योंकि जब
लों हमारा छुटका भाई हमारे साथ
न हो हम उस पुरुष का मुंह न
२७ देखने पावेंगे। और आप के सेवक मेरे
पिता ने हमें कहा कि तुम जानते हो
कि मेरी पत्नी मुझ से दो बेटे जनी।
२८ और एक मुझ से अलग हुआ और मैं ने
कहा निश्चय वह फाड़ा गया और मैं ने
२९ उसे अब लों न देखा। अब जो तुम
इसे भी मुझ से अलग करते हो और
इस पर कुछ बिपत्ति पड़े तो तुम मेरे
पक्के बालों को शोक से समाधि में उता-
३० रोगे। अब इस लिये जब मैं आप का
सेवक अपने पिता पास पहुंचूं और वह
तरुण हमारे साथ न हो और इस कारण
से कि उस का जीव इस के जीव से बंधा
३१ है। तो यही होगा कि जब वह देखकर
कि तरुण नहीं है मरही जायगा और
आप के सेवक अपने पिता के पक्के बालों
३२ को शोक से समाधि में उतारेंगे। क्यों-
कि आप के सेवक ने अपने पिता पास
इस तरुण का जिम्मई होके कहा कि
यदि मैं इसे आप पास न पहुंचाऊं तो मैं
सर्व्वदा लों अपने पिता का अपराधी
होंगा। अब मेरी बिनती सुनिये कि आप ३३
का सेवक तरुण की संती अपने प्रभु का
दास होके रहे और तरुण को उस के
भाइयों के संग जाने दीजिये। क्योंकि ३४
जो तरुण मेरे साथ न होवे मैं अपने
पिता पास कैसे जाऊं ऐसा न होवे कि
जो बिपत्ति मेरे पिता पर पड़े मैं उसे
देखूं॥

पैंतालीसवां पर्व्व।

तब यूसुफ उन सब के आगे जो उस
पास खड़े थे अपने को रोक न सका
और चिल्लाया कि हर एक को मुझ पास
से बाहर करो सो जब यूसुफ ने अपने
को अपने भाइयों पर प्रगट किया तब
कोई उस के संग न था। और वह २
चिल्लाके रोया और मिस्रियों और फिरऊन
के घराने ने सुना। और यूसुफ ने अपने ३
भाइयों को कहा कि मैं यूसुफ हूं क्या
मेरा पिता अब लों जीता है तब उस
के भाई उसे उत्तर न दे सके क्योंकि वे
उस के आगे घबरा गये। और यूसुफ ने ४
पने भाइयों से कहा कि मेरे पास आइय
तब वे पास आये और वह बोला मैं
तुम्हारा भाई यूसुफ हूं जिसे तुम ने मिस्र
में बेचा। सो इस लिये कि तुम ने मुझे ५
यहां बेचा उदास न होओ और व्याकुल
मत होओ क्योंकि ईश्वर ने तुम से आगे
मुझे प्राण बचाने को भेजा। क्योंकि दो ६
बरस से भूमि पर अकाल है और अभी
और पांच बरस लों बोना लवना न
होगा। और तुम्हारे बंश को पृथिवी पर ७
रक्षा करने को और बड़े उद्धार से तुम्हारे
प्राण बचाने को ईश्वर ने मुझे तुम्हारे
आगे भेजा। सो अब तुम ने नहीं परन्तु ८
ईश्वर ने मुझे यहां भेजा और उस ने मुझे

फिरऊन के पिता के तुल्य बनाया और
उस के सारे घर का प्रभु और सारे मिस्र
९ देश का अध्यक्ष बनाया। फुरती करो
और मेरे पिता पास जाओ और उस्से
कहियो कि आप का बेटा यूसुफ यों
कहता है कि ईश्वर ने मुझे सारे मिस्र
का स्वामी किया मुझ पास चले आइये
१० ठहरिये मत। और आप जशन की भूमि
में रहियेगा और आप और आप के
लड़के और आप के लड़कों के लड़के
और आप के झुंड और आप के ढोर
और जो कुछ आप का है मेरे पास रहेंगे।
११ और वहां मैं आप का प्रतिपाल करूंगा
क्योंकि अब भी अकाल के पांच बरस
हैं न हो कि आप और आप का घराना
और सब जो आप के हैं कंगाल हो
१२ जायें। और देखो तुम्हारी आंखें और
मेरे भाई बिनयमीन की आंखें देखती हैं
कि मेरा मुंह आप लोगों से बोलता
१३ है। और तुम मेरे पिता से मेरे बिभव
की जो मिस्र में है और सब कुछ कि
जो तुम ने देखा है चर्चा कीजियो और
फुरती करो और मेरे पिता को यहां ले
१४ आओ। और वह अपने भाई बिनयमीन
के गले लगके रोया और बिनयमीन उस
१५ के गले लगके रोया। और उस ने अपने
सब भाइयों को चूमा और उन से मिलके
रोया और उस के पीछे उस के भाइयों
ने उस्से बातें किईं॥

१६ और इस बात की कीर्त्ति फिरऊन
के घर में सुनी गई कि यूसुफ के भाई
आये हैं और उस्से फिरऊन और उस के
१७ सेवक बहुत आनन्दित हुए। और फिर-
ऊन ने यूसुफ से कहा कि अपने भाइयों
से कह कि यह करो अपने पशुन को
लादो और कनआन देश में जा पहुंचो।
१८ और अपने पिता और अपने घरानों को
ले आओ और मुझ पास आओ और मैं
तुम्हें मिस्र देश की अच्छी वस्तें दूंगा
और तुम इस देश का पदारथ खाओगे।
सो अब तुझे यह आज्ञा है यह करो १९
कि मिस्र देश से अपने लड़के बालों और
अपनी पत्नियों के लिये गाड़ियां ले जाओ
और अपने पिता को ले आओ। और अपनी २०
सामग्री की कुछ चिंता न करो क्योंकि
मिस्र देश के सारे पदारथ तुम्हारे हैं॥

और इसराएल के संतानों ने वैसा ही २१
किया और यूसुफ ने फिरऊन के कहे के
समान उन्हें गाड़ियां दिईं और मार्ग के
लिये उन्हें भोजन दिया। और उस ने २२
उन सब में से हर एक को वस्त्र दिये
परन्तु उस ने बिनयमीन को तीन सौ टुकड़े
चांदी और पांच जोड़े वस्त्र दिये। और २३
अपने पिता के लिये इस रीति से भेजा
दस गदहे मिस्र की अच्छी वस्तुन से लदे
हुए और दस गदहियां अनाज और रोटी
और भोजन से लदी हुईं अपने पिता की
यात्रा के लिये। सो उस ने अपने भाइयों २४
को बिदा किया और वे चल निकले तब
उस ने उन्हें कहा कि देखो मार्ग में कहीं
आपुस में बिगड़ो मत॥

और वे मिस्र से सिधारे और अपने २५
पिता यअकूब पास कनआन देश में पहुंचे।
और यह कहके उस्से बोले कि यूसुफ २६
तो अब लों जीता है और वह सारे मिस्र
देश का अध्यक्ष है और उस का मन
सनसना गया क्योंकि उस ने उन की
प्रतीति न किई। और उन्हों ने यूसुफ २७
की कही हुई सारी बातें उस्से दुहराईं
और जब उस ने गाड़ियां जो यूसुफ ने
उसे ले जाने के लिये भेजी थीं देखीं तो
उन के पिता यअकूब का मन जीवन
हुआ। और इसराएल बोला यह बस है २८
कि मेरा बेटा यूसुफ अब लों जीता है
मैं जाऊंगा और अपने मरने से आगे उसे
देखूंगा॥

छियालीसवां पर्ब्ब ।

१ और इसराएल ने अपना सब कुछ लेके यात्रा किई और बीअरसबअ में आके अपने पिता इसहाक के ईश्वर के लिये २ बलिदान चढ़ाया । और ईश्वर ने रात को स्वप्न में इसराएल से बातें करके कहा कि हे यअकूब यअकूब और वह ३ बोला मैं यहां हूं । तब उस ने कहा कि मैं सर्व्वशक्तिमान तेरे पिता का ईश्वर हूं मिस्र में जाते हुए मत डर क्योंकि मैं ४ तुझे वहां बड़ी जाति बनाऊंगा । मैं तेरे साथ मिस्र को जाऊंगा और मैं तुझे भी अवश्य फिर ले आऊंगा और यूसुफ तेरी ५ आंखें मूंदेगा । तब यअकूब बीअरसबअ से उठा और इसराएल के बेटे अपने पिता यअकूब को और अपने लड़कों और अपनी स्त्रियों को गाड़ियों पर जो फिर-ऊन ने उस के पहुंचाने को भेजी थीं ले ६ चले । और उन्हों ने अपना ढोर और अपनी सामग्री जो उन्हों ने कनआन देश में पाई थी ले लिई और यअकूब अपने ७ सारे बंश समेत मिस्र में आया । वह अपने बेटों और बेटों के बेटों और बेटियों और अपने बेटों की बेटियों और अपने सारे बंश को मिस्र में लाया ॥

८ और इसराएल के बेटों के नाम जो मिस्र में आये अर्थात् यअकूब के बेटे ये हैं यअकूब का पहिलौंठा रूबिन । ९ और रूबिन के बेटे हनूक और फलू और १० हसरून और करमी । और समऊन के बेटे यमूएल और यमीन और ओहद और यकीन और सुहर और कनआनी स्त्री ११ का बेटा साऊल । और लावी के बेटे १२ जैरसून किहात और मिरारी । और यहू-दाह के बेटे एर और ओनान और सैल: और फारस और ज़रह परन्तु एर और ओनान कनआन देश में मर गये और फारस के बेटे हसरून और हमूल हुए । १३ और इशकार के बेटे तोलअ और फूव: १४ और यूब और समरून । और ज़बूलून के बेटे सरद और ऐलून और यहलिएल । १५ ये लियाह के बेटे हैं जिन्हें वह फद्दान-अराम में यअकूब के लिये जनी उस के सारे बेटे बेटियां तेंतीस प्राणी उस की १६ बेटी दीन: के संग थे । और जद के बेटे सिफ़यून और हज्जी शूनी और इसबून १७ एरी और अरूदी और अरेली । और यसर के बेटे यिमन: और इसवाह और इसवी और बरीअ: और उन की बहिन सिरह और बरीअ: के बेटे हिब्र और मलकिएल । १८ ये उस ज़िलफ: के बेटे हैं जिसे लाबन ने अपनी बेटी लियाह को दिया था और इन्हें वह यअकूब के लिये जनी अर्थात् सोलह प्राणी । १९ और यअकूब की पत्नी राखिल से यूसुफ और बिनयमीन । २० और मिस्र देश में यूसुफ के लिये मुनस्सी और इफरायम उत्पन्न हुए जिन्हें ओन के अध्यक्ष फूतिफरअ की बेटी आसनाथ २१ जनी । और बिनयमीन के बेटे बालिअ और बकर और असबील जैरा और नअ-मान अखी और रूस मुप्पिम और हुफ़ीम २२ और अरद । इन्हें राखिल यअकूब के २३ लिये जनी सब चौदह प्राणी । और २४ दान का बेटा होशीम । और नफताली के बेटे यहलिएल और जूनी और यिस २५ और सलीम । ये बिलह: के बेटे हैं जिसे लाबन ने अपनी बेटी राखिल को दिया सो ये सब सात प्राणी हैं जिन्हें वह यअकूब के लिये जनी ॥

२६ सारे प्राणी जो यअकूब के साथ मिस्र में आये और उस की कटि से उत्पन्न हुए उन से अधिक जो यअकूब के बेटों की स्त्रियां थीं छियासठ प्राणी थे । २७ और यूसुफ के बेटे जो मिस्र में उत्पन्न हुए दो थे सो सारे प्राणी जो यअकूब के घराने के थे और मिस्र में आये सत्तर थे ॥

२८ और उस ने यहूदाह को अपने आगे आगे अश्न लों अपनी अगुआई करने को यूसुफ कने भेजा और वे अश्न की २९ भूमि में आये। और यूसुफ ने अपना रथ सिद्ध किया और अपने पिता इसराएल से भेंट करने के लिये अश्न को गया और उस पास पहुंचा और उस के गले ३० पर गिरके अबेर लों रोया किया। और इसराएल ने यूसुफ से कहा कि अब मैं मरने को सिद्ध हूं कि मैं ने तेरा मुंह ३१ देखा क्योंकि तू अब भी जीता है। और यूसुफ ने अपने भाइयों और अपने पिता के घराने से कहा कि मैं संदेश देने को फिरऊन पास जाता हूं और उस्से कहता हूं कि मेरे भाई और मेरे पिता का घराना जो कनआन देश में थे मेरे पास आये ३२ हैं। और वे मनुष्य गड़रिये हैं क्योंकि ढोर चराना उन का उद्यम है और वे अपने झुंड और ढोर और सब कुछ जो ३३ उन का है ले आये हैं। और यों होगा कि जब फिरऊन तुम्हें बुलाके तुम्हारा ३४ उद्यम पूछे। तो कहियो कि आप के दास लड़काई से अब लों चरवाही करते रहे हैं क्या हम और क्या हमारे बाप दादे जिसतें तुम लोग अश्न की भूमि में रहो क्योंकि मिस्रियों को हर एक गड़रिये से घिन है॥

सैंतालीसवां पर्ब्ब।

१ तब यूसुफ आया और फिरऊन से कहके बोला कि मेरा पिता और मेरे भाई और उन के झुंड और उन के ढोर और सब जो उन के हैं कनआन देश से निकल आये और देखिये कि अश्न की भूमि में २ हैं। और उस ने अपने भाइयों में से पांच जन लेके उन्हें फिरऊन के आगे किया। ३ और फिरऊन ने उस के भाइयों से कहा कि तुम्हारा उद्यम क्या तब उन्हों ने फिरऊन को कहा कि आप के सेवक क्या हम और क्या हमारे बाप दादे ४ गड़रिये हैं। और उन्हों ने फिरऊन से कहा कि हम इस देश में रहने को आये हैं क्योंकि कनआन देश में अकाल के मारे आप के सेवकों के झुंड के लिये चराई नहीं है सो अब अपने सेवकों को अश्न की भूमि में रहने दीजिये। ५ तब फिरऊन ने यूसुफ से कहा कि तेरा पिता और तेरे भाई तुझ पास आये हैं। ६ मिस्र देश तेरे आगे है अपने पिता और अपने भाइयों को सब से अच्छी भूमि में बसा अश्न की भूमि में रहें और जो तू उन में चालाक मनुष्य जानता है तो उन्हें मेरे ढोरों पर प्रधान कर॥

७ तब यूसुफ अपने पिता यअकूब को भीतर लाया और उसे फिरऊन के आगे खड़ा किया और यअकूब ने फिरऊन को आशीस दिया। ८ और फिरऊन ने यअकूब से पूछा कि तेरे जीवन के बय के बरसों के दिन कितने हैं। ९ तब यअकूब ने फिरऊन से कहा कि मेरी यात्रा के दिनों के बरस एक सौ तीस हैं मेरे जीवन के बरसों के दिन थोड़े और बुरे हुए हैं और मेरे पितरों के जीवन के बरसों के दिनों को जब वे यात्रा करते थे नहीं पहुंचे। १० और यअकूब ने फिरऊन को आशीस दिया और फिरऊन के आगे से बाहर गया॥

११ और यूसुफ ने अपने पिता और भाइयों को मिस्र देश में सब से अच्छी भूमि में रामसीस की भूमि में जैसा फिरऊन ने कहा था रक्खा और अधिकारी किया। १२ और यूसुफ ने अपने पिता और अपने भाइयों और अपने पिता के सारे घराने का उन के लड़के बालों के समान प्रतिपाल किया॥

१३ और सारे देश में रोटी न थी क्योंकि ऐसा बड़ा कठिन अकाल था कि मिस्र देश और कनआन देश अकाल के मारे

१४ जोख लाया था। और यूसुफ ने सारी रोकड़ को जो मिस्र देश और कनआन देश में थी उस अन्न की संती जो लोगों ने मोल लिया बटोरा और यूसुफ उस रोकड़ को फिरऊन के घर में लाया। १५ और जब मिस्र देश और कनआन देश में रोकड़ हो चुकी तो सारे मिस्रियों ने आके यूसुफ से कहा कि हमें रोटी दीजिये कि आप के होते हुए हम क्यों मरें १६ क्योंकि रोकड़ हो चुकी है। तब यूसुफ ने कहा कि जो रोकड़ न होय तो अपने ढोर देओ और मैं तुम्हारे ढोर १७ की संती दूंगा। तब वे अपने ढोर यूसुफ के पास लाये और यूसुफ ने उन्हें घोड़ों और झुंडों और ढोरों के चौपायों और गदहों की संती रोटी दिई और उस ने उन के ढोर की संती उन्हें उस बरस पाला॥

१८ और जब वह बरस बीत गया तब वे दूसरे बरस उस पास आये और उस्से कहा कि हम अपने प्रभु से नहीं छिपावेंगे कि हमारी रोकड़ उठ गई हमारे प्रभु ने हमारे ढोरों के झुंड भी लिये सो हमारे प्रभु की दृष्टि में हमारी देह और १९ भूमि से अधिक कुछ न बचा। हम अपनी भूमि समेत आप की आंखों के आगे क्यों नष्ट होवें हमें और हमारी भूमि को रोटी पर मोल लीजिये और हम अपनी भूमि समेत फिरऊन के दास होंगे और बीज दीजिये जिसतें हम जीवें और न मरें और देश उजड़ न जाय। २० और यूसुफ ने मिस्र की सारी भूमि फिरऊन के लिये मोल लिई क्योंकि मिस्रियों में से हर एक ने अपना अपना खेत बेचा क्योंकि अकाल ने उन्हें निपट बरबस किया था सो वह भूमि फिरऊन २१ की हो गई। और रहे लोग सो उस ने उन्हें नगरों में मिस्र के एक सिवाने से दूसरे सिवाने लों भेजा। उस ने केवल २२ याजकों की भूमि मोल न लिई क्योंकि याजकों ने फिरऊन से एक भाग पाया था और फिरऊन के दिये हुए भाग से खाते थे इस लिये उन्हों ने अपनी भूमि को न बेचा। तब यूसुफ ने लोगों से कहा २३ कि देखो मैं ने आज के दिन तुम्हें और तुम्हारी भूमि को फिरऊन के लिये मोल लिया है यह बीज तुम्हारे लिये है खेत में बोओ। और उस की बढ़ती में २४ ऐसा होगा कि तुम पांचवां भाग फिरऊन को देना और चार भाग खेत के बीज के लिये और तुम्हारे और तुम्हारे घराने के और तुम्हारे बालकों के भोजन के लिये होंगे। तब वे बोले कि आप २५ ने हमारे प्राण बचाये हैं हम अपने प्रभु की दृष्टि में अनुग्रह पावें और हम फिरऊन के दास होंगे। और यूसुफ ने मिस्र २६ देश के लिये आज लों यह व्यवस्था बांधी कि फिरऊन पांचवां भाग पावे परन्तु केवल याजकों की भूमि फिरऊन की न हुई॥

और इसराएल ने मिस्र की भूमि में २७ जशन के देश में निवास किया और वे वहां अधिकारी थे और वे बढ़े और बहुत अधिक हुए। और यअकूब मिस्र देश में २८ सत्रह बरस जीया सो यअकूब के जीवन के बरसों के दिन एक सौ सैंतालीस हुए और इसराएल के मरने का समय आ २९ पहुंचा तब उस ने अपने बेटे यूसुफ को बुलाके कहा कि अब जो मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया है अपना हाथ मेरी जांघ तले रखिये और दया और सच्चाई से मेरे संग व्यवहार कर मुझे मिस्र में मत गाड़ियो। परन्तु मैं अपने पितरों में ३० पड़ रहूंगा और तू मुझे मिस्र से बाहर ले जाइयो और उन के समाधिस्थान में गाड़ियो तब वह बोला कि आप के कहने के समान मैं करूंगा। और उस ३१

ने कहा कि मेरे आगे किरिया खा और उस ने उस के आगे किरिया खाई और इसराएल खाट के सिरहाने पर झुक गया ॥

अठतालीसवां पर्व्व ।

१ और इन बातों के पीछे यों हुआ कि किसी ने यूसुफ से कहा कि देखिये आप का पिता रोगी है तब उस ने अपने दो बेटे मुनस्सी और इफरायम को अपने २ साथ लिया । और यअकूब को संदेश दिया गया कि देख तेरा बेटा यूसुफ तुझ पास आता है और इसराएल खाट पर ३ संभल बैठा । और यअकूब ने यूसुफ से कहा कि सर्व्वशक्तिमान सर्व्वसामर्थी ने कनआन देश के लौज में मुझे दर्शन ४ दिया और मुझे आशीष दिया । और मुझे कहा कि देख मैं तुझे फलवान करूंगा और बढ़ाऊंगा और तुझ से बहुत सी जाति उत्पन्न करूंगा और तेरे पीछे इस देश को तेरे वंश के लिये सर्व्वदा का ५ अधिकार करूंगा । और अब तेरे दो बेटे इफरायम और मुनस्सी जो मिस्र में मेरे आने से आगे तुझ से मिस्र देश में उत्पन्न हुए हैं मेरे हैं रूबिन और समऊन ६ की नाईं वे मेरे होंगे । और तेरा वंश जो उन के पीछे उत्पन्न होगा तेरा होगा और अपने अधिकार में वे अपने भाइयों ७ के नाम पावेंगे । और मैं जो हूं सो जब फद्दान से आया और इफरात: थोड़ी दूर रह गया था तब कनआन देश के मार्ग में राखिल मेरे पास मर गई और मैं ने इफरात: के मार्ग में उसे वहीं गाड़ा वही बैतलहम है ॥

८ तब इसराएल ने यूसुफ के बेटों को ९ देखके कहा ये कौन हैं । और यूसुफ ने अपने पिता से कहा कि ये मेरे बेटे हैं जिन्हें ईश्वर ने मुझे यहां दिया है और वह बोला उन्हें मुझ पास लाइये और १० मैं उन्हें आशीष दूंगा । अब इसराएल की आंखें बुढ़ापे के मारे धुंधली हुई थीं कि वह न देख सका और वह उन्हें उस के पास लाया और उस ने उन्हें चूमा और उन्हें गले लगाया । ११ और इसराएल ने यूसुफ से कहा कि मुझे तो तेरे मुंह देखने की आशा न थी और देख ईश्वर ने तेरा वंश भी मुझे दिखाया । १२ और यूसुफ ने उन्हें अपने घुटनों में से निकाला और अपने को भूमि पर झुकाया । १३ और यूसुफ ने उन दोनों को लिया इफरायम को अपने दहिने हाथ में इसराएल के बाएं हाथ की ओर और मुनस्सी को अपने बाएं हाथ में इसराएल के दहिने हाथ की ओर और उस के पास लाया । १४ तब इसराएल ने अपना दहिना हाथ लंबा किया और इफरायम के सिर पर जो छुटका था रक्खा और अपना बायां हाथ मुनस्सी के सिर पर जान बूझके अपने हाथ को यों रक्खा क्योंकि मुनस्सी पहिलौंठा था ॥

१५ और उस ने यूसुफ को बर दिया और कहा कि वह ईश्वर जिस के आगे मेरे पिता अबिरहाम और इजहाक चलते थे वह ईश्वर जिस ने जीवन भर आज लों मेरी रखवाली किई । १६ वह दूत जिस ने मुझे सारी बुराई से बचाया इन लड़कों को आशीष देवे और मेरा नाम और मेरे पिता अबिरहाम और इजहाक का नाम उन पर होवे और वे पृथिवी पर अत्यन्त बढ़ जावें । १७ और जब यूसुफ ने अपने पिता को अपना दहिना हाथ इफरायम के सिर पर रखते देखा तो उसे बुरा लगा और उस ने अपने पिता का हाथ उठा लिया जिसतें उसे इफरायम के सिर पर से मुनस्सी के सिर पर रखे । १८ और यूसुफ ने अपने पिता से कहा कि हे मेरे पिता ऐसा नहीं क्योंकि यह पहिलौंठा है अपना दहिना हाथ उस के

१९ सिर पर रखिये। पर उस के पिता ने न माना और कहा कि मैं जानता हूं हे मेरे बेटे मैं जानता हूं वह भी एक जातिगण बन जायगा और वह भी बड़ा होगा परन्तु निश्चय उस का छुटका भाई उस्से भी बड़ा होगा और उस के २० वंश भरपूर जातिगण बन जायेंगे। और उस ने उन्हें उस दिन यह कहके आशीस दिया कि इसराएल तेरा नाम लेके यह आशीस देंगे कि ईश्वर तुझे इफरायम और मुनस्सी की नाईं बनावे सो उस ने इफरायम को मुनस्सी से आगे किया॥

२१ और इसराएल ने यूसुफ को कहा कि देख मैं मरता हूं परन्तु ईश्वर तुम्हारे साथ होगा और तुम्हें तुम्हारे पितरों के २२ देश में फिर ले आयगा। और मैं ने तुझे तेरे भाइयों से एक भाग जो मैं ने अमूरियों के हाथ से अपनी तलवार और अपने धनुष से निकाला दिया है॥

उंचासवां पर्व्व

१ और यअकूब ने अपने बेटों को बुलाया और कहा कि एकट्ठे होओ जिसतें जो तुम पर पिछले दिनों में बीतेगा मैं तुम से कहूं॥

२ हे यअकूब के बेटो बटुर आओ और सुनो और अपने पिता इसराएल की ओर कान धरो॥

३ हे रूबिन तू मेरा पहिलौंठा मेरा बूता और मेरे सामर्थ्य का आरंभ महिमा की उत्तमता और पराक्रम की ४ उत्तमता। जल की नाईं अस्थिर तू श्रेष्ठ न होगा इस कारण कि तू अपने पिता की खाट पर चढ़ा तब मेरे बिछौने पर चढ़के उसे अशुद्ध किया॥

५ समऊन और लावी भाई हैं अंधेर के ६ हथियार उन की तलवारें हैं। हे मेरे प्राण तू उन के भेद में मत जा मेरी प्रतिष्ठा तू उन की सभा में मत मिल क्योंकि उन्हों ने अपने क्रोध से एक मनुष्य को घात किया और अपनी ही इच्छा से बैल की खूंच मारी। धिक्कार ७ उन की रिस पर क्योंकि वह प्रचंड था और उन के कोप पर क्योंकि वह क्रूर था मैं उन्हें यअकूब में अलग करूंगा और इसराएल में उन्हें छिन्न भिन्न करूंगा॥

८ यहूदाह तेरे भाई तेरी स्तुति करेंगे तेरा हाथ तेरे बैरियों की गरदन पर होगा तेरे पिता के बंश तेरे आगे दंडवत करेंगे। ९ यहूदाह सिंह का बच्चा मेरे बेटे तू अहेर पर से उठ चला वह सिंह की हां बड़े सिंह की नाईं झुका और बैठा उसे कौन छेड़ेगा। १० यहूदाह से राजदंड अलग न होगा और न व्यवस्थादायक उस के चरणों के मध्य में से जब लों सैला न आवे और जातिगण उस के अधीन होंगे। ११ उस ने अपना गदहा दाख से और अपनी गदही का बच्चा चुने हुए दाख से बांधके अपने कपड़े दाखरस में और अपना पहिरावा दाख के लोहू में धोया। १२ उस की आंखें दाखरस से लाल और उस के दांत दूध से श्वेत होंगे॥

१३ जबूलून समुद्र के घाट पर निवास करेगा और जहाजों के लिये घाट होगा और उस का सिवाना सैदा लों॥

१४ इशकार बली गदहा है जो दो बोझ तले झुका है। १५ और उस ने बिश्राम को देखा कि अच्छा है और भूमि को कि सुदृश्य है और उस ने अपना कांधा बोझ उठाने को झुकाया और कर देने का दास हुआ॥

१६ दान इसराएल की गोष्ठियों में के एक की नाईं अपने लोगों का न्याय करेगा। १७ दान मार्ग का सर्प और पथ का नाग होगा जो घोड़े की नलियों को ऐसा डसेगा कि उस का चढ़वैया पिछाड़ी गिर पड़ेगा॥

१८ हे परमेश्वर मैं ने तेरी मुक्ति की बाट जोही है ॥

१९ एक सेना जद को जीतेगी परन्तु वह अंत को आप जीतेगा ॥

२० यसर की रोटी चिकनी होगी और वह राज्य पदारथ देगा ॥

२१ नफताली एक छोड़ा हुआ हरिन है जो सुबचन कहता है ॥

२२ यूसुफ एक फलमय डाल है वह फलदायक डाल जो सोते के लग है जिस २३ की डालियां भीत पर फैलती हैं । और धनुषधारियों ने उसे निपट सताया और २४ मारा और उस्से डाह रक्खा । और उस का धनुष बल में दृढ़ रहा और उस के हाथों की भुजाओं ने यअकूब के सर्वशक्तिमान के हाथों से बल पाया वहां से गड़रिया इसराएल की चटान है । २५ तेरे पिता का सर्वशक्तिमान तेरी सहायता करेगा और सर्वसामर्थी जो तुझे ऊपर से स्वर्गीय आशीस और नीचे गहिराव की आशीस और स्तनों की और कोख की २६ आशीस देगा । तेरे पिता की आशीस मेरे माता पिता की आशीसों से इतनी अधिक हैं कि सनातन पर्बतों के अंत लों बढ़ गईं ये यूसुफ के सिर पर और उस के सिर के मुकुट पर होंगी जो अपने भाइयों से अलग था ॥

२७ बिनयमीन फड़वैया हुंडार होगा बिहान को अहेर भखेगा और सांझ को लूट बांटेगा ॥

२८ ये सब इसराएल की बारह गोष्ठी हैं और उन के पिता ने उन्हें यह कहके आशीस दिया और अपनी आशीस के २९ समान हर एक को बर दिया । फिर उस ने उन्हें आज्ञा किई और कहा कि मैं अपने लोगों में एकट्ठे होने पर हूं मुझे अपने पितरों में उस कंदला में जो हित्ती ३० इफरून के खेत में है गाड़ियो । उस कंदला में जो मकफीलः के खेत में ममरी के आगे कनआन देश में है जिसे अबिरहाम ने समाधिस्थान के अधिकार के लिये खेत समेत इफरून हित्ती से मोल ३१ लिया था । वहां उन्हों ने अबिरहाम को और उस की पत्नी सरः को गाड़ा वहां उन्हों ने इसहाक को और उस की पत्नी रिबकः को गाड़ा और वहां मैं ने लियाह ३२ को गाड़ा । उन्हों ने वह खेत उस कंदला समेत जो उस में था हित्त के बेटों से मोल लिया ॥

३३ और जब यअकूब अपने बेटों को आज्ञा कर चुका तो उस ने बिछौने पर अपने पांव को समेट लिया और प्राण त्यागा और अपने लोगों में जा मिला ॥

१ पचासवां पर्ब्ब ।

१ तब यूसुफ अपने पिता के मुंह पर गिर पड़ा और उस पर रोया और उसे २ चूमा । तब यूसुफ ने अपने पिता में सुगंध भरने के लिये अपने बैद्य सेवकों को आज्ञा किई और बैद्यों ने इसराएल ३ में सुगंध भरा । और उस के लिये चालीस दिन बीत गये क्योंकि जिस में सुगंध भरा जाता है उतने दिन बीतते हैं और मिसियों ने उस के लिये सत्तर ४ दिन लों बिलाप किया । और जब रोने के दिन उस के लिये बीत गये तो यूसुफ ने फिरऊन के घराने से कहा कि जो मैं ने तुम्हारी दृष्टि में अनुग्रह पाया है तो ५ फिरऊन के कानों में कह दीजिये । कि मेरे पिता ने मुझ से किरिया लिई कि देख मैं मरता हूं तू मुझे मेरी समाधि में जो मैं ने कनआन देश में अपने लिये खोदी है गाड़ियो सो मेरे पिता के गाड़ने को मुझे छुट्टी दीजिये और मैं ६ फिर आऊंगा । और फिरऊन ने कहा कि जा और तुझ से किरिया लेने के समान अपने पिता को गाड़ ॥

७ सो यूसुफ अपने पिता को गाड़ने

गया और फिरऊन के सारे सेवक और उस के घर के प्राचीन और मिस्र देश के ८ सारे प्राचीन उस के संग गये। और यूसुफ का सारा घराना और उस के भाई और उस के पिता का घराना सब उस के संग गये उन्हों ने केवल अपने बालक और झुंड और ढोर जशन की भूमि में ९ छोड़ दिये। और रथ और घोड़चढ़े उस के साथ गये और वह एक अति १० बड़ी सेना थी। और वे अतद के खलिहान पर जो यरदन पार है आये और वहां उन्हों ने अति बड़े बिलाप से बिलाप और उस ने अपने पिता के लिये ११ सात दिन लों शोक किया। जब उस देश के बासी कनआनियों ने अतद के खलिहान का बिलाप देखा तो बोले कि यह मिस्त्रियों के लिये बड़ा बिलाप है इस लिये उस का नाम मिस्त्रियों का बिलाप कहलाया और वह यर्दन के १२ पार है। और उस की आज्ञा के समान १३ उस के बेटों ने उस्से किया। क्योंकि उस के बेटे उसे कनआन देश में ले गये और उसे उस मकफील: के खेत की कंदला में जिसे अबिरहाम ने समाधिस्थान के अधिकार के लिये इफरून हित्ती से ममरी १४ के साम्ने मोल लिया था गाड़ा। और यूसुफ आप और उस के भाई और सब जो उस के साथ उस के पिता को गाड़ने गये थे उस के पिता को गाड़के मिस्र को फिरे॥

१५ और जब यूसुफ के भाइयों ने देखा कि हमारा पिता मर गया तो उन्हों ने कहा क्या जाने यूसुफ हम से बैर करेगा और उस सारी बुराई का जो हम ने उस्से किई है निश्चय पलटा लेगा। १६ तब उन्हों ने यूसुफ को यों कहला भेजा आप के पिता ने मरने से पहिले आज्ञा किई। १७ कि यूसुफ से कहियो कि अपने भाइयों के पाप और उन के अपराध क्षमा कीजिये क्योंकि उन्हों ने तुझ से बुराई किई सो अब अपने पिता के ईश्वर के दासों के पाप क्षमा कीजिये और जब उन्हों ने यह कहा तो यूसुफ रोया। १८ और उस के भाई भी गये और उस के आगे गिर पड़े और उन्हों ने कहा कि देखिये हम आप के सेवक हैं। १९ तब यूसुफ ने उन्हें कहा कि मत डरो कि क्या मैं ईश्वर की संती हूं। २० पर तुम जो हो तुम ने मुझ से बुराई करने की इच्छा किई परन्तु ईश्वर ने उसे भलाई कर दिई कि बहुत से लोगों का प्राण बचावे जैसा कि आज है। २१ सो अब मत डरो मैं तुम्हारा और तुम्हारे बालकों का प्रतिपाल करूंगा और उस ने उन्हें धीरज दिया और उन से शान्ति की बातें कहीं॥

२२ और यूसुफ और उस के पिता के घराने ने मिस्र में निवास किया और यूसुफ एक सौ दस बरस जीया। २३ और यूसुफ ने इफरायम की तीसरी पीढ़ी देखी और मुनस्सी के बेटे मकीर के भी लड़के यूसुफ के घुटनों पर जनाये गये॥

२४ और यूसुफ ने अपने भाइयों से कहा कि मैं मरता हूं और ईश्वर तुम से निश्चय भेंट करेगा और तुम्हें इस देश से बाहर उस देश में जिस के बिषय में उस ने अबिरहाम इज़हाक और यअकूब से किरिया खाई थी ले जायगा। २५ और यूसुफ ने इसराएल के संतानों से यह किरिया लेके कहा कि ईश्वर निश्चय तुम से भेंट करेगा और तुम मेरी हड्डियों को यहां से ले जाइयो। २६ सो यूसुफ एक सौ दस बरस का होके मर गया और उन्हों ने उस में सुगंध भरा और उसे मिस्र में मंजूषा में रक्खा॥

यात्रा की पुस्तक।

पहिला पर्व्व।

१ अब इसराएल के संतानों के नाम ये हैं हर एक जो अपने घराने को लेके २ यअकूब के साथ मिस्र में आया। रूबिन ३ समऊन लावी और यहूदाह। इशकार ४ ज़बूलून और बिनयमीन। दान और ५ नफताली जद और असर। और समस्त प्राणी जो यअकूब की जांघ से उत्पन्न हुए सत्तर प्राणी थे और यूसुफ तो मिस्र ६ में था। और यूसुफ और उस के सारे भाई और वह समस्त पीढ़ी मर गई। ७ परन्तु इसराएल के संतान फलवान हुए और बहुताई से अधिक हुए और बढ़ गये और अत्यंत सामर्थी हुए और देश उन से भर गया॥

८ तब मिस्र में एक नया राजा उठा ९ जो यूसुफ को न जानता था। और उस ने अपने लोगों से कहा कि देखो इसराएल के संतानों के लोग हम से अधिक १० और बलवंत हैं। आओ हम उन से चतुराई से व्यवहार करें न हो कि वे बढ़ जायें और ऐसा होय कि जब युद्ध पड़े तो वे हमारे बैरियों से मिल जावें और हम से लड़ें और देश से निकल ११ जायें। इस लिये उन्हों ने उन पर करोड़ों को बैठाया कि उन्हें अपने बोझों से सतावें और उन्हों ने फिरऊन के लिये भंडार नगरों को अर्थात् पितोम और १२ रामसीस को बनाया। परन्तु ज्यों ज्यों वे उन्हें दुःख देते थे त्यों त्यों वे बढ़ते गये और बहुत हुए और वे इसराएल १३ के संतान के कारण से दुःखी थे। और इसराएल के संतानों से मिस्रियों ने क्लेश १४ से सेवा कराई। और उन्हों ने कठिन सेवा से गारा और ईंट का कार्य्य और खेत की भांति भांति की सेवा कराके उन के जीवन को कड़ुआ कर डाला उन की सारी सेवा जो वे कराते थे क्लेश के साथ थी॥

१५ तब मिस्र के राजा ने इबरानी जनाई दाइयों को जिन में एक का नाम सिफ़रः और दूसरी का नाम फूआः था यों कहा। १६ कि जब इबरानी स्त्री तुम से जनाई दाई का कार्य्य करावें और तुम उन्हें पत्थरों पर देखो यद्यपि पुत्र होय तो उसे मार डालो और यदि पुत्री होय तो १७ जीने दो। परन्तु जनाई दाई ईश्वर से डरती थीं और जैसा कि मिस्र के राजा ने उन्हें आज्ञा किई थी वैसा न किया १८ परन्तु पुत्रों को जीता छोड़ा। फिर मिस्र के राजा ने जनाई दाइयों को बुलवाया और उन्हें कहा कि तुम ने ऐसा क्यों किया और पुत्रों को क्यों जीता छोड़ा। १९ तब जनाई दाइयों ने फिरऊन से कहा इस कारण कि इबरानी स्त्री मिस्र की स्त्रियों के समान नहीं क्योंकि वे फुरतीली हैं और उस्से पहिले कि जनाई दाई उन पास पहुंचे वे जन बैठती हैं। २० इस लिये ईश्वर ने जनाई दाइयों से सुव्यवहार किया और लोग बढ़ गये और २१ अत्यंत बलवंत हुए। और इस कारण कि जनाई दाई ईश्वर से डरती थीं यों हुआ कि उस ने उन को बसाया। २२ और फिरऊन ने अपने समस्त लोगों को आज्ञा किई कि हर एक पुत्र जो उत्पन्न होय तुम उसे नील नदी में डाल देओ और हर एक पुत्री को जीती छोड़ो॥

दूसरा पर्व्व।

१ और लावी के घराने के एक मनुष्य ने आकर लावी की एक पुत्री ग्रहण

२ किई । और वह स्त्री गर्भिणी हुई और बेटा जनी और उस ने उसे सुन्दर देखके ३ तीन मास लों छिपा रक्खा । और जब आगे को उसे छिपा न सकी तो उस ने सरकंडों का एक टोकरा बनाया और उस पर लासा और राल लगाया और उस बालक को उस में रक्खा और उस ने उसे नील नदी के तीर पर झाऊ में रख ४ दिया । और उस की बहिन दूर से खड़ी देखती थी कि उस का क्या होगा ॥

५ तब फिरऊन की पुत्री स्नान करने को नदी पर उतरी और उस की सहेलियां नदी के तीर पर फिरती थीं और उस ने झाऊ के मध्य में टोकरा देखकर अपनी सहेली को भेजा और उसे ले ६ लिया । जब उस ने उसे खोला तो बालक को देखा और देखो कि बालक रोता है और वह उस पर दया करके बोली कि यह किसी इबरानियों के ७ बालकों में से है । तब उस की बहिन ने फिरऊन की पुत्री को कहा क्या मैं जाके इबरानी स्त्रियों में से एक दाई तुझ पास ले आऊं जिसतें वह तेरे लिये ८ इस बालक को दूध पिलावे । और फिरऊन की पुत्री ने उस्से कहा कि जा तब वह कन्या गई और बालक की ९ माता को बुलाया । और फिरऊन की पुत्री ने उस्से कहा कि इस बालक को ले जा और मेरे लिये उसे दूध पिला और मैं तुझे महिनवारी दूंगी और उस स्त्री ने उस लड़के को लिया और उसे १० दूध पिलाया । और जब बालक बढ़ा तब वह उसे फिरऊन की पुत्री पास लाई और वह उस का पुत्र हुआ तब उस ने उस का नाम मूसा रक्खा और कहा कि मैं ने उसे पानी से निकाला ॥

११ और उन दिनों में यों हुआ कि जब मूसा सयाना हुआ तब वह अपने भाइयों पास बाहर गया और उन के बोझों को देखा और अपने भाइयों में से एक इबरानी को देखा कि मिस्री उसे मार १२ रहा है । तब उस ने इधर उधर दृष्टि किई और देखा कि कोई नहीं तब उस ने उस मिस्री को मार डाला और बालू १३ में उसे छिपा दिया । जब वह दूसरे दिन बाहर गया तो देखो कि दो इबरानी आपुस में झगड़ रहे हैं तब उस ने उस अंधेरी को कहा कि तू अपने परोसी को १४ क्यों मारता है । तब उस ने कहा कि किस ने तुझे हम पर अध्यक्ष अथवा न्यायी ठहराया क्या तू चाहता है कि जिस रीति से तू ने मिस्री को मार डाला मुझे भी मार डाले तब मूसा डरा और कहा कि निश्चय यह बात खुल १५ गई । जब फिरऊन ने यह बात सुनी तो चाहा कि मूसा को मार डाले ॥

परन्तु मूसा फिरऊन के आगे से भाग निकला और मिदयान के देश में जा रहा और एक कुए के निकट बैठ गया । १६ और मिदयान के याजक की सात पुत्री थीं और वे आईं और खींचने लगीं और कठरों को भरा कि अपने बाप के झुंड १७ को पानी पिलावें । तब गड़रियों ने आके उन्हें हांक दिया परन्तु मूसा ने खड़े होके उन की सहायता किई और १८ उन के झुंड को पिलाया । और जब वे अपने पिता रऊएल पास आईं तब उस ने कहा कि आज तुम क्योंकर सबेरे १९ फिरीं । और वे बोलीं कि एक मिस्री ने हमें गड़रियों के हाथ से बचाया और हमारे लिये जितना प्रयोजन था पानी २० भरा और झुंड को पिलाया । तब उस ने अपनी पुत्रियों से कहा कि वह कहां है उस मनुष्य को क्यों छोड़ा उसे बुलाओ २१ कि रोटी खावे । तब मूसा उस जन के घर में रहने पर प्रसन्न हुआ और उस ने

२२ अपनी बेटी सफूरः मूसा को दिई। और वह पुत्र जनी और उस ने उस का नाम गेरसुम रक्खा क्योंकि उस ने कहा कि मैं परदेश में परदेशी हूं॥

२३ और कितने दिन के पीछे मिस्र का राजा मर गया और इसराएल के वंश सेवा के कारण आह भरने लगे और रोये और उन का रोना जो उस सेवा के कारण २४ से था ईश्वर लों पहुंचा। और ईश्वर ने उन का कहरना सुना और ईश्वर ने अपनी आज्ञा को जो अबिरहाम इजहाक और यअकूब के साथ किई थी स्मरण २५ किया। और ईश्वर ने इसराएल के संतान पर दृष्टि किई और ईश्वर ने बूझा॥

तीसरा पर्ब्ब।

१ और मूसा अपने ससुर यितरू को जो मिदयान का याजक था भुंड को चराता था तब वह भुंड को बन की पछी ओर ले गया और ईश्वर के पहाड़ होरेब के २ पास आया। तब परमेश्वर का दूत भाड़ी के मध्य में से आग की लौर में उस पर प्रगट हुआ और उस ने दृष्टि किई और देखो कि भाड़ी आग से जलती ३ है और भाड़ी भस्म नहीं होती। तब मूसा ने कहा कि मैं अब एक अलंग फिरूंगा और यह महादर्शन देखूंगा कि ४ वह भाड़ी क्यों नहीं जल जाती। जब परमेश्वर ने देखा कि वह देखने को एक अलंग फिरा तो ईश्वर ने उसे भाड़ी के मध्य में से उसे पुकारके कहा कि हे मूसा हे मूसा तब वह बोला मैं यहां ५ हूं। तब उस ने कहा कि इधर पास मत आ अपने पांवों से जूता उतार क्योंकि यह स्थान जिस पर तू खड़ा है ६ पवित्र भूमि है। और उस ने कहा कि मैं तेरे पिता का ईश्वर अबिरहाम का ईश्वर इजहाक का ईश्वर और का ईश्वर हूं तब मूसा ने अपना मुंह छिपाया क्योंकि वह ईश्वर पर दृष्टि करने से डरा॥

७ और परमेश्वर ने कहा कि मैं ने अपने लोगों के कष्ट को जो मिस्र में हैं निश्चय देखा और उन का चिल्लाना जो उन के करोड़ों के कारण से है सुना क्योंकि मैं उन के दुःखों को जानता ८ हूं। और मैं उतरा हूं कि उन्हें मिस्रियों के हाथ से छुड़ाऊं और उस भूमि से निकालके अच्छी बड़ी भूमि में जहां दूध और मधु बहता है कनआनियों और हित्तियों और अमूरियों और फरिज्जियों और हवियों और यबूसियों के स्थान में ९ लाऊं। और अब देख इसराएल के संतान का चिल्लाना मुझ लों आया और मैं ने उस अंधेर को भी जो मिस्री उन पर १० करते हैं देखा है। सो अब तू आ और मैं तुझे फिरऊन पास भेजूंगा और तू मेरे लोग इसराएल के संतान को मिस्र से निकाल ला॥

११ तब मूसा ने ईश्वर से कहा कि मैं कौन हूं कि फिरऊन पास जाऊं और इसराएल के संतानों को मिस्र से १२ । और वह बोला कि मैं तेरे संग हूंगा और यह तेरे लिये चिन्ह होगा कि मैं ने तुझे भेजा है जब तू उन लोगों को मिस्र से निकाले तो तुम इस पहाड़ पर ईश्वर की सेवा करोगे॥

१३ तब मूसा ने ईश्वर से कहा कि देख जब मैं इसराएल के संतान पास पहुंचूं और उन्हें कहूं कि तुम्हारे पितरों के ईश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है और वे मुझ से कहें कि उस का क्या नाम है तो मैं उन्हें क्या बताऊं॥

१४ तब ईश्वर ने मूसा को कहा कि मैं हूं जो हूं और उस ने कहा कि तू इसराएल के संतान से यों कहियो कि वह जो है उस ने मुझे तुम्हारे पास भेजा

है । और ईश्वर ने मूसा से फिर कहा कि तू इसराएल के संतान से यों कहियो कि परमेश्वर तुम्हारे पितरों के ईश्वर अबिरहाम के ईश्वर इजहाक के ईश्वर और यअकूब के ईश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है सनातन लों मेरा यही नाम है और समस्त पीढ़ियों में यही १५

मेरा स्मरण है । जा और इसराएलियों के प्राचीनों को एकट्ठा कर और उन्हें कह कि परमेश्वर तुम्हारे पितरों का ईश्वर अबिरहाम इजहाक और यअकूब का ईश्वर यों कहता हुआ मुझे दिखाई दिया कि मैं ने निश्चय तुम्हारी सुधि लिई और जो कुछ तुम पर मिस्र में हुआ १६

सो देखा । और मैं ने कहा है कि मैं तुम्हें मिस्रियों के दुःखों से निकालके कनआनियों और हित्तियों और अमूरियों और फरिज्जियों और हवियों और यबूसियों के देश में जहां दूध और मधु बहता है १७

लाऊंगा । और वे तेरा शब्द मानेंगे और तू और इसराएलियों के प्राचीन मिस्र के राजा पास आओगे और उस्से कहोगे कि परमेश्वर इबरानियों के ईश्वर ने हम से भेंट किई और अब हम तेरी बिनती करते हैं कि हमें बन में तीन दिन के मार्ग जाने दे जिसतें हम परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये बलिदान १८

करें । और मैं जानता हूं कि मिस्र का राजा तुम्हें जाने न देगा हां बड़े बल १९

से नहीं । और मैं अपना हाथ बढ़ाऊंगा और अपने समस्त आश्चर्य्यों से जो मैं उन के बीच दिखाऊंगा मिस्रियों को मारूंगा तब उस के पीछे वह तुम्हें जाने २०

देगा । और मैं इन लोगों को मिस्रियों की दृष्टि में अनुग्रह दूंगा और यों होगा कि जब तुम जाओगे तो छूछे न २१

जाओगे । परन्तु हर एक स्त्री अपनी परोसिन से और उस्से जो उस के घर में रहती है रूपे के गहने और सोने के गहने और वस्त्र मांग लेगी और तुम अपने पुत्रों और अपनी पुत्रियों को पहिनाओगे और मिस्रियों को लूटोगे ॥ २२

चौथा पर्व्व

१ तब मूसा ने उत्तर दिया और कहा कि देख वे मेरी प्रतीति न करेंगे और मेरा शब्द न मानेंगे क्योंकि वे कहेंगे कि परमेश्वर तुझ पर प्रगट न हुआ ॥

२ तब परमेश्वर ने उस्से कहा कि तेरे हाथ में यह क्या है और वह बोला कि छड़ी । ३ तब उस ने कहा कि उसे भूमि पर डाल दे और उस ने उसे भूमि पर डाल दिया और वह सर्प्प बन गई और मूसा उस के आगे से भागा । ४ तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अपना हाथ बढ़ा और उस की पूंछ पकड़ ले तब उस ने अपना हाथ बढ़ाया और उसे पकड़ लिया और वह उस के हाथ में छड़ी हो गया । ५ जिसतें वे बिश्वास करें कि परमेश्वर उन के पितरों का ईश्वर अबिरहाम का ईश्वर इजहाक का ईश्वर और यअकूब का ईश्वर तुझ पर प्रगट हुआ ॥

६ तब परमेश्वर ने उस्से कहा कि फिर तू अपना हाथ अपनी गोद में कर और उस ने अपना हाथ अपनी गोद में किया और जब उस ने उसे निकाला तो देखो कि उस का हाथ हिम के समान कोढ़ी था । ७ और उस ने कहा कि अपना हाथ फिर अपनी गोद में कर उस ने फिर अपने हाथ को अपनी गोद में किया और अपनी गोद से उसे निकाला तो देखा कि जैसी उस की सारी देह थी वह वैसा फिर हो गया । ८ और ऐसा होगा कि यदि वे तेरी प्रतीति न करें और पहिले आश्चर्य्य को न मानें तो वे दूसरे आश्चर्य्य के बिश्वासी होंगे । ९ और ऐसा होगा कि यदि वे इन दोनों आश्चर्य्यों पर भी बिश्वास न लावें

और तेरे शब्द के श्रोता न होवें तो तू नील नदी का जल लेके सूखी पर ढालियो और वह जल जो तू नदी से निकालेगा सो सूखी पर लोहू हो जायगा ॥

१० तब मूसा ने परमेश्वर से कहा कि हे मेरे प्रभु मैं सुवक्ता मनुष्य नहीं न तो आगे से और न जब से कि तू ने अपने दास से बातचीत किई परन्तु मैं भारी मुंह और भारी जीभ का हूं ॥

११ तब परमेश्वर ने उस्से कहा कि मनुष्य के मुंह को किस ने बनाया और कौन गूंगा अथवा बहिरा अथवा दर्शी अथवा अंधा बनाता है क्या मैं परमेश्वर १२ नहीं। अब तू जा और मैं तेरे मुंह के साथ हूंगा और जो कुछ तुझे कहना है तुझे सिखाऊंगा ॥

१३ तब उस ने कहा कि हे मेरे प्रभु मैं तेरी बिनती करता हूं कि जिसे चाहे तू उस के हाथ से भेज ॥

१४ तब परमेश्वर का क्रोध मूसा पर भड़का और उस ने कहा कि क्या तेरा भाई हारून लावी नहीं है मैं जानता हूं कि वह सुवक्ता है और देख कि वह भी तेरी भेंट को आता है और तुझे देखके १५ अपने मन में हर्षित होगा। और तू उस्से कहेगा और उस के मुंह में बातें डालेगा और मैं तेरे और उस के मुंह के संग हूंगा और जो कुछ तुम्हें करना है सो तुम्हें १६ सिखाऊंगा। और लोगों पर वह तेरा वक्ता होगा और वह तेरे मुंह की संती होगा और तू उस के लिये ईश्वर के १७ स्थान होगा। और यह छड़ी जिस्से तू लक्षण दिखावेगा अपने हाथ में रखियो॥

१८ तब मूसा अपने ससुर यितर के पास फिर आया और उस्से कहा कि मैं तेरी बिनती करता हूं कि मुझे छुट्टी दे कि मिस्र में अपने भाइयों पास फिर जाऊं और देखूं कि वे अब लों जीते हैं कि नहीं तब यितरू ने मूसा को कहा कि कुशल से जा। १९ तब परमेश्वर ने मिदयान में मूसा को कहा कि मिस्र में फिर जा क्योंकि वे सब मनुष्य जो तेरे प्राण के गाहक थे सो मर गये। २० तब मूसा ने अपनी पत्नी को और अपने पुत्रों को लिया और उन्हें गदहे पर बैठाया और मिस्र देश में फिर आया और मूसा ने ईश्वर की छड़ी अपने हाथ में लिई। २१ और परमेश्वर ने मूसा को कहा कि जब तू मिस्र में फिर जाय तो देख कि सब आश्चर्य्य जो मैं ने तेरे हाथ में रक्खे हैं तू उन्हें फिरऊन के आगे दिखा परन्तु मैं उस के मन को कठोर करूंगा कि वह उन लोगों को जाने न देगा। २२ तब फिरऊन को कहियो कि परमेश्वर ने यों कहा है कि इसराएल मेरा पुत्र मेरा पहिलौंठा है। २३ सो मैं तुझे कहता हूं कि मेरे पुत्र को जाने दे कि वह मेरी सेवा करे और यदि तू उसे रोकेगा तो देख मैं तेरे पहिलौंठे पुत्र को मार डालूंगा ॥

२४ और मार्ग के एक टिकाव में यों हुआ कि परमेश्वर उस्से मिला और चाहा कि उसे मार डाले। २५ तब सफूरः ने एक चोखा पत्थर उठाया और अपने बेटे की खलड़ी काट डाली और उसे उस के पांवों पर फेंका और कहा कि तू निश्चय मेरे लिये रक्तपति है। २६ तब उस ने उसे छोड़ दिया और तब वह बोली कि खतने के कारण तू रक्तपति है ॥

२७ और परमेश्वर ने हारून को कहा कि बन में जाके मूसा से मिल तब वह गया और उस्से ईश्वर के पहाड़ पर मिला और उसे चूमा। २८ और ईश्वर ने जो उसे भेजा था मूसा ने उस की सारी बातें और लक्षण जो उस ने उसे आज्ञा किई थीं हारून से कह सुनाये ॥

२९ तब मूसा और हारून गये और इसराएल के संतानों के प्राचीनों को ३० एकट्ठा किया। और जो सारी बातें परमेश्वर ने मूसा को कही थीं हारून ने कहीं और लोगों के आगे प्रत्यक्ष ३१ लक्षण दिखाये। तब लोग बिश्वास लाये और सुनके कि परमेश्वर ने इसराएल के संतान की सुधि लिई और उन के दुःख पर दृष्टि किई झुके और दंडवत किई॥

पांचवां पर्व्व।

१ और उस के पीछे मूसा और हारून ने आके फिरऊन से कहा कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि मेरे लोगों को जाने दे कि वे अरण्य में मेरे २ लिये पर्व्व करें। तब फिरऊन ने कहा कि परमेश्वर कौन है कि मैं उस के शब्द को मानके इसराएल को जाने दूं मैं परमेश्वर को नहीं जानता और मैं इसराएल को ३ भी जाने न दूंगा। तब उन्हों ने कहा कि इबरानियों के ईश्वर ने हम से भेंट किई है हमें छुट्टी दीजिये कि हम तीन दिन के पथ अरण्य में जायें और परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये बलिदान करें ऐसा न हो कि वह हमें मरी अथवा ४ खड्ग से मारे। तब मिस्र के राजा ने उन्हें कहा कि हे मूसा और हारून तुम लोगों को उन के कार्य्य से क्यों रोकते ५ हो तुम अपने बोझों को जाओ। और फिरऊन ने कहा कि देखो देश के लोग अब बहुत हैं और तुम उन्हें उन के बोझों से रोकते हो॥

६ और उसी दिन फिरऊन ने लोगों के करोड़ों को और अपने अध्यक्षों को ७ आज्ञा किई। कि अब आगे की नाईं उन लोगों को ईंटें बनाने के लिये पुआल मत देओ वे जाके अपने लिये ८ पुआल बटोरें। और आगे की नाईं ईंटें उन से लिया करो उस में से कुछ मत घटाओ क्योंकि वे आलसी हैं इसी लिये वे चिल्ला चिल्लाके कहते हैं हमें जाने देओ कि हम अपने ईश्वर के लिये बलिदान चढ़ावें। ९ उन मनुष्यों का काम बढ़ाया जाय कि वे उस में परिश्रम करें और वृथा बातों की ओर मन न लगावें॥

१० तब लोगों के करोड़े और उन के अध्यक्ष निकले और लोगों से कहा कि फिरऊन यों कहता है कि मैं तुम्हें पुआल न दूंगा। ११ तुम जाओ जहां से मिले तहां से पुआल लाओ तथापि तुम्हारा कार्य्य कुछ न घटेगा। १२ सो लोग मिस्र के सारे देश में छिन्न भिन्न हुए कि पुआल की संती खूंटी एकट्ठी करें। १३ और करोड़ों ने शीघ्रता करके कहा कि जैसा पुआल पाते हुए करते थे वैसा अपने प्रतिदिन के कार्य्यों की गिनती नित्य पूर्ण करो। १४ और इसराएल के संतानों के प्रधान जिन्हें फिरऊन के करोड़ों ने उन पर करोड़े किये थे मारे गये और पूछे गये कि अपनी ठहराई हुई सेवा को जो ईंटें बनाने की है कल और आज आगे की नाईं क्यों नहीं पूरा किया॥

१५ तब इसराएल के संतानों के प्रधान फिरऊन के आगे आके चिल्लाये और कहा कि अपने दासों से ऐसा व्यवहार क्यों करता है। १६ तेरे दासों को पुआल नहीं मिला है और वे हमें कहते हैं कि ईंटें बनाओ और देख कि तेरे सेवकों ने मार खाई है परन्तु अपराध तेरे लोगों का है। १७ तब उस ने कहा कि तुम आलसी हो आलसी हो इस लिये तुम कहते हो कि हमें जाने दे कि परमेश्वर के लिये बलिदान करें। १८ सो अब तुम जाओ काम करो और पुआल तुम को न दिया जायगा तथापि तुम गिनती की ईंटें देओगे। १९ और इस कहने से कि तुम अपनी

प्रतिदिन की ईंटों में से न घटाओगे इसराएल के संतान के प्रधानों ने देखा कि उन की दुर्दशा है॥

२० और वे फिरऊन पास से निकलके मूसा और हारून को जो मार्ग में खड़े

२१ थे मिले। और उन्हें कहा कि परमेश्वर तुम्हें देखे और न्याय करे इस लिये कि तुम ने हमें फिरऊन की और उस के सेवकों की दृष्टि में ऐसा घिनौना किया है कि हमारे मारने के कारण उन के हाथ में खड्ग दिया है॥

२२ तब मूसा परमेश्वर पास फिर गया और कहा कि हे प्रभु तू ने इन लोगों को क्यों क्लेश में डाला और मुझे क्यों भेजा।

२३ इस लिये कि जब से तेरे नाम से मैं फिरऊन को कहने आया उस ने उन लोगों पर बुराई किई और तू ने अपने लोगों को न बचाया॥

छठवां पर्व्व।

१ तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अब तू देखेगा मैं फिरऊन से क्या करूंगा क्योंकि वह बलवंत भुजा से उन्हें जाने देगा और बलवंत भुजा से उन्हें अपने देश से निकालेगा॥

२ और ईश्वर मूसा से कहके बोला कि

३ मैं परमेश्वर हूं। और मैं अबिरहाम इजहाक और यअकूब को सर्वशक्तिमान सर्वसामर्थी के नाम से प्रगट हुआ परन्तु अपने नाम यहोवा से उन पर प्रगट न हुआ।

४ और मैं ने उन के साथ अपना नियम भी बांधा है कि मैं उन को कनआन का देश जो उन के प्रवास का देश है जिस में वे

५ परदेशी थे दूंगा। और मैं ने इसराएल के संतानों का कुढ़ना भी सुना है जिन्हें मिस्री बंधुआई में रखते हैं और अपने

६ नियम को स्मरण किया है। इस लिये तू इसराएल के संतानों से कह कि मैं परमेश्वर हूं और मैं तुम्हें मिस्रियों के बोझों के तले से निकालूंगा और मैं तुम्हें उन की दासता से छुड़ाऊंगा और मैं अपना हाथ बढ़ाके बड़े बड़े न्याय से

७ तुम्हें मोक्ष दूंगा। और तुम्हें अपने लोग बनाऊंगा और मैं तुम्हारा ईश्वर हो जाऊंगा और तुम जानोगे कि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं जो तुम्हें मिस्रियों

८ के बोझों के तले से निकालता हूं। और मैं तुम्हें उस देश में लाऊंगा जिस के विषय में मैं ने अपना हाथ उठाया है कि उसे अबिरहाम इजहाक और यअकूब को दूं और मैं उसे तुम्हारा अधिकार

९ करूंगा परमेश्वर मैं हूं। तब मूसा ने इसराएल के संतानों को यों हीं कहा परन्तु उन्हों ने मन के क्लेश के मारे और परिश्रम के कष्ट से मूसा की न सुनी॥

१० फिर परमेश्वर ने मूसा को कहा।

११ जा और मिस्र के राजा फिरऊन से कह कि इसराएल के संतानों को अपने देश

१२ से जाने दे। तब मूसा ने परमेश्वर के आगे कहा कि देख इसराएल के संतानों ने तो मेरी बात नहीं मानी है तो मैं जो होंठ का अखतनः हूं फिरऊन मेरी

१३ क्योंकर सुनेगा। तब परमेश्वर ने मूसा और हारून को कहा और उन्हें इसराएल के संतान और मिस्र के राजा फिरऊन के विषय में आज्ञा किई कि इसराएल के संतान को मिस्र के देश से बाहर ले जावें॥

१४ उन के पितरों के घराने के प्रधान ये थे इसराएल के पहिलौंठे रूबिन के पुत्र हनूख और पल्लू हजरून और करमी

१५ ये रूबिन के घराने थे। और शमऊन के पुत्र यमुएल और यामीन और ओहाद और याकीन और जोहर और शाऊल कनआनी स्त्री का पुत्र ये शमऊन के घराने थे।

१६ और लावी के पुत्रों के नाम उन की पीढ़ियों के समान ये थे जैरशून और

कोहाथ और मरारी और लावी के जीवन के बरस एक सौ सैंतीस थे। और गेर्शून के पुत्र उन के घराने के समान लबनी और शमई थे। और कोहाथ के पुत्र अमराम और इसहार और हिबरून और उज्जीएल और कोहाथ के जीवन के बरस एक सौ तेंतीस थे। और मरारी के पुत्र महली और मुशी उन की पीढ़ियों के समान लावी के घराने ये थे। और अमराम ने अपने पिता की बहिन युकाबिद से ब्याह किया और वह उस के लिये हारून और मूसा को जनी और अमराम के जीवन के बरस एक सौ सैंतीस थे। और इसहार के पुत्र कूरह और नफग और जकरी थे। और उज्जीएल के पुत्र मीसाएल और इलजाफान और सिथरी थे। और हारून ने नहशन की बहिन अमीनादाब की पुत्री अलीशबा को पत्नी किया और उस्से नादाब और अबीहू इलिअजर और ऐतामार उस के लिये उत्पन्न हुए। और कूरह के पुत्र असीर और इलकाना और अबियासाफ ये कूरह के घराने थे। और हारून के पुत्र इलिअजर ने पुतिएल की पुत्रियों में से पत्नी किई और उस्से उस के लिये फीनीहास उत्पन्न हुआ लावियों के बाप दादों के घरानों में ये प्रधान थे। ये वे हारून और मूसा हैं जिन्हें परमेश्वर ने कहा कि इसराएल के संतानों को उन की सेनाओं की रीति मिस्र के देश से निकाल लाओ। ये वे हैं जिन्हों ने मिस्र के राजा फिरऊन से इसराएल के संतानों को मिस्र से निकाल ले आने को कहा ये वे ही मूसा और हारून हैं॥

(पंक्तियों के पार्श्व में पद-संख्या: १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २५, २६, २७)

२८ और यों हुआ कि जिस दिन परमेश्वर ने मिस्र देश में मूसा को कहा। २९ तब परमेश्वर ने मूसा से कहा और बोला कि मैं परमेश्वर हूं सब जो मैं तुझे कहता हूं मिस्र के राजा फिरऊन से कह। ३० और मूसा ने परमेश्वर के सामे कहा कि देख मैं होंठ का अखतनः हूं और फिरऊन मेरी क्योंकर सुनेगा॥

सातवां पर्व्व।

१ फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि देख मैं ने तुझे फिरऊन के लिये ईश्वर बनाया और तेरा भाई हारून तेरा भविष्यद्वक्ता होगा। २ सब कुछ जो मैं तुझे आज्ञा करूंगा तू कहेगा और तेरा भाई हारून फिरऊन से कहेगा कि इसराएल के संतानों को अपने देश से जाने दे। ३ और मैं फिरऊन के मन को कठोर करूंगा और अपने लक्षण और आश्चर्य्य को मिस्र के देश में अधिक करूंगा। ४ परन्तु फिरऊन तुम्हारी न सुनेगा और मैं अपना हाथ मिस्र पर धरूंगा और अपनी सेनाओं को अर्थात् अपने लोग इसराएल के संतान को बड़े न्याय दिखाके मिस्र देश से निकाल लाऊंगा। ५ और जब मैं मिस्र पर हाथ चलाऊंगा और इसराएल के संतानों को उन में से निकालूंगा तब मिस्री जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूं। ६ और जैसा परमेश्वर ने उन्हें आज्ञा किई मूसा और हारून ने वैसा ही किया। ७ और जिस समय में उन्हों ने फिरऊन से बातचीत किई मूसा अस्सी बरस का और हारून तिरासी बरस का था॥

८ और परमेश्वर ने मूसा और हारून से कहा। ९ कि जब फिरऊन तुम्हें कहे कि अपने लिये आश्चर्य्य दिखाओ तो हारून को कहियो कि अपनी छड़ी ले और फिरऊन के आगे डाल दे वह एक सर्प्प बन जायगी। १० तब मूसा और हारून फिरऊन कने गये और जैसा परमेश्वर ने आज्ञा किई थी उन्हों ने वैसा ही किया और हारून ने अपनी छड़ी फिरऊन के और उस के सेवकों के आगे डाल दिई

११ और वह सर्प्प हो गई । तब फिरऊन ने भी पण्डितों और टोन्हों को बुलवाया सो मिस्र के टोन्हों ने भी अपने टोनों
१२ से ऐसा ही किया । क्योंकि उन में से हर एक ने अपनी अपनी छड़ी डाल दिई और वे सर्प्प हो गईं परन्तु हारून की छड़ी उन की छड़ियों को निंगल
१३ गई । और फिरऊन का मन कठोर रहा और जैसा परमेश्वर ने कहा था उस ने उन की न सुनी ॥

१४ तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि फिरऊन का अंतःकरण कठोर है वह
१५ उन लोगों को जाने नहीं देता । तू बिहान फिरऊन के पास जा देख कि वह जल को ओर जाता है और तू नील नदी के तट पर जिधर से वह आवे उस के सन्मुख खड़ा हूजियो और वह छड़ी जो सर्प्प हुई थी अपने हाथ में
१६ लीजियो । और उस्से कहियो कि परमेश्वर इबरानियों के ईश्वर ने मुझे तेरे पास भेजा है और कहा है कि मेरे लोगों को जाने दे जिसतें वे अरण्य में मेरी सेवा करें और देख कि तू ने अब लों न
१७ सुना । परमेश्वर ने यों कहा है कि इस्से तू जानेगा कि मैं परमेश्वर हूं देख कि मैं यह छड़ी जो मेरे हाथ में है नदी के पानियों पर मारूंगा और वे लोहू हो
१८ जायेंगे । और मछलियां जो नदी में हैं मर जायेंगी और नदी बसाने लगेगी और मिस्र के लोग नदी का पानी पीने को घिन करेंगे ॥

१९ फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि हारून से कह कि अपनी छड़ी ले और अपना हाथ मिस्र के पानियों पर उन की धारों उन की नदियों और उन के कुण्डों और उन के पानियों के हर एक ढोबरों पर बढ़ा कि वे लोहू बन जायें और मिस्र के सारे देश में हर एक काठ और पत्थर के पात्र में लोहू हो जाय ।
२० और जैसा कि परमेश्वर ने आज्ञा किई थी मूसा और हारून ने वैसा ही किया और उस ने छड़ी उठाई और नदी के पानी पर फिरऊन के और उस के सेवकों के साम्ने मारी और नदी के सब पानी
२१ लोहू हो गये । और नदी की मछलियां मर गईं और नदी बसाने लगी और मिस्र के लोग नदी का पानी पी न सके और
२२ मिस्र के सारे देश में लोहू हुआ । तब मिस्र के टोन्हों ने भी अपने टोना से ऐसा ही किया और फिरऊन का मन कठोर रहा और जैसा कि परमेश्वर ने कहा था वैसा उस ने उन की न सुनी ।
२३ तब फिरऊन फिरा और अपने घर को गया और उस ने अपना मन इस बात पर
२४ भी न लगाया । और सारे मिस्रियों ने नदी के आस पास खोदा कि पानी पीवें क्योंकि वे नदी का पानी पी न सके ।
२५ और परमेश्वर के नदी को मारने से पीछे सात दिन बीत गये ॥

आठवां पर्ब्ब ।

१ फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि फिरऊन पास जा और उस्से यह कह कि परमेश्वर यों कहता है कि मेरे लोगों को जाने दे जिसतें वे मेरी सेवा करें ।
२ और यदि तू उन्हें जाने न देगा तो देख मैं तेरे समस्त सिवानों को मेंढुकों से
३ मारूंगा । और नदी बहुताई से मेंढुकों को उत्पन्न करेगी और वे निकलके तेरे घर में और तेरे शयनस्थान में और तेरे बिछौनों पर और तेरे सेवकों के घरों में और तेरी प्रजा पर और तेरी भट्ठियों में और तेरे आटे गूंधने के कठरों में
४ जायेंगे । और मेंढुक तुझ पर और तेरी प्रजा पर और तेरे समस्त सेवकों पर चढ़ेंगे ॥

५ और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि

हारून से कह कि अपनी छड़ी से अपना हाथ धारों पर नदियों पर और कुण्डों पर बढ़ा और मेंढ़ुकों को मिस्र के देश पर चढ़ा । ६ तब हारून ने मिस्र के पानियों पर अपना हाथ बढ़ाया और मेंढ़ुकों ने निकलके मिस्र के देश को ढांप लिया । ७ और टोन्हों ने भी अपने टोनों से ऐसा ही किया और मिस्र के देश पर मेंढ़ुक चढ़ाये ॥

८ तब फिरऊन ने मूसा और हारून को बुलाया और कहा कि परमेश्वर से बिनती करो कि मेंढ़ुकों को मुझ से और मेरी प्रजा से दूर करे और मैं उन लोगों को जाने देऊंगा कि वे परमेश्वर के लिये बलिदान चढ़ावें । ९ और मूसा ने फिरऊन को कहा कि मुझे बतलाइये कि कब मैं तेरे और तेरे सेवकों के और तेरी प्रजा के लिये बिनती करूं कि मेंढ़ुक तुझ से और तेरे घरों से दूर किये जावें और नदी ही में रहें । १० और वह बोला कि कल तब उस ने कहा कि तेरे बचन के अनुसार जिसतें तू जाने कि परमेश्वर हमारे ईश्वर के तुल्य कोई नहीं । ११ और मेंढ़ुक तुझ से और तेरे घरों से और तेरे दासों और तेरी प्रजा से जाते रहेंगे वे केवल नदी में रहेंगे ॥

१२ फिर मूसा और हारून फिरऊन पास से निकल गये और मूसा ने परमेश्वर के आगे मेंढ़ुकों के लिये जो उस ने फिरऊन के कारण भेजे थे प्रार्थना किई । १३ और परमेश्वर ने मूसा की प्रार्थना के अनुसार किया और मेंढ़ुक घरों और गांवों और खेतों में से मर गये । १४ और उन्हों ने उन्हें जहां तहां एकट्ठे कर कर ढेर कर दिये और देश बसाने लगा । १५ जब फिरऊन ने देखा कि सावकाश मिला तो उस ने अपना मन कठोर किया और जैसा परमेश्वर ने कहा था वैसा उन की न सुनी ॥

१६ तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि हारून से कह कि अपनी छड़ी बढ़ा और देश की धूल पर मार जिसतें वह मिस्र के समस्त देश में मच्छड़ बन जायें । १७ और उन्हों ने वैसा ही किया और हारून ने अपना हाथ अपनी छड़ी के साथ बढ़ाया और पृथिवी की धूल को मारा और वहीं मनुष्य पर और पशु पर मच्छड़ बन गये समस्त धूल मिस्र के सारे देश में मच्छड़ बन गये । १८ और टोन्हों ने भी चाहा कि अपने टोनों से मच्छड़ निकालें पर निकाल न सके सो मनुष्य पर और पशु पर मच्छड़ थे । १९ तब टोन्हों ने फिरऊन से कहा कि यह ईश्वर की अंगुली है और फिरऊन का मन कठोर रहा और जैसा परमेश्वर ने कहा था उस ने उन की न सुनी ॥

२० तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि बिहान को उठ और फिरऊन के आगे खड़ा हो देख वह जल पर आता है और तू उस्से कह कि परमेश्वर यों कहता है कि मेरे लोगों को जाने दे कि वे मेरी सेवा करें । २१ क्योंकि यदि तू मेरे लोगों को जाने न देगा तो देख मैं तुझ पर और तेरे सेवकों पर और तेरी प्रजा पर और तेरे घरों में बड़ी बड़ी मक्खी भेजूंगा और मिस्रियों के घर में और समस्त भूमि में जहां जहां वे हैं उन माखियों से भर जायेंगे । २२ और मैं उस दिन जशन की भूमि को जिस में मेरे लोग बास करते हैं अलग करूंगा कि माखी वहां न होवें जिसतें तू जाने कि पृथिवी के मध्य में परमेश्वर मैं हूं । २३ और मैं अपने लोगों में और तेरे लोगों में बिभाग करूंगा और यह आश्चर्य्य कल होगा । २४ तब परमेश्वर ने योंहीं किया और फिरऊन के घर

में और उस के सेवकों के घरों में और मिस्र के समस्त देश में माखी आईं और माखियों के मारे देश नाश हुआ॥

२५ तब फिरऊन ने मूसा और हारून को बुलाया और कहा कि जाओ अपने ईश्वर के लिये देश में बलि चढ़ाओ। २६ और मूसा ने कहा कि यों करना उचित नहीं क्योंकि हम परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये वह बलि चढ़ावेंगे जिस्से मिस्री घिन रखते हैं क्या हम मिस्रियों के घिन का बलि उन की दृष्टि के आगे चढ़ावें २७ और वे हमें पत्थरवाह न करेंगे। हम बन में तीन दिन के पथ में जायेंगे और परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये जैसा वह २८ हमें आज्ञा करेगा बलिदान करेंगे। और फिरऊन बोला कि मैं तुम्हें जाने दूंगा जिसतें तुम परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये बन में बलि चढ़ाओ केवल बहुत दूर मत जाओ मेरे लिये बिनती करो। २९ तब मूसा बोला देख मैं तेरे पास से बाहर जाता हूं और मैं परमेश्वर के आगे बिनती करूंगा कि माखी फिरऊन से उस के सेवकों से और उस की प्रजा से कल जाती रहें परन्तु ऐसा न हो कि फिरऊन फिर छल करके लोगों को परमेश्वर के लिये बलि चढ़ाने को जाने न देवे॥

३० तब मूसा फिरऊन पास से बाहर गया ३१ और परमेश्वर से बिनती किई। और परमेश्वर ने मूसा की बिनती के समान किया और माखियों को फिरऊन से उस के सेवकों से और उस की प्रजा पर से ३२ दूर किया एक भी न रही। तब फिरऊन ने उस बार भी अपना मन कठोर किया और उन लोगों को जाने न दिया॥

नवां पर्ब्ब।

१ तब परमेश्वर ने मूसा को कहा कि फिरऊन पास जा और उस्से कह कि परमेश्वर इबरानियों का ईश्वर यों कहता है कि मेरे लोगों को जाने दे जिसतें वे मेरी सेवा करें। २ क्योंकि यदि तू जाने न देगा और अब को भी उन्हें रोकेगा। ३ तो देख परमेश्वर का हाथ तेरे खेत के पशुन पर घोड़ों पर गदहों पर ऊंटों पर गाय बैलों पर और भेड़ बकरियों पर अत्यंत भारी मरी पड़ेगी। ४ और परमेश्वर इसराएल के और मिस्रियों के पशुन में बिभाग करेगा और उन में से जो इसराएल के संतानों के हैं कोई न मरेगा। ५ और परमेश्वर ने एक समय ठहराया और कहा कि परमेश्वर यह कार्य्य देश में कल करेगा। ६ और दूसरे दिन परमेश्वर ने वैसा ही किया और मिस्र के समस्त पशु मर गये परन्तु इसराएल के संतानों के पशुन में से एक भी न मरा। ७ तब फिरऊन ने भेजा और देखो कि इसराएलियों के पशुन में से एक न मरा और फिरऊन का मन कठोर रहा और उस ने लोगों को जाने न दिया॥

८ और परमेश्वर ने मूसा और हारून से कहा कि भट्ठी में से अपनी मुट्ठी भरके राख लो और मूसा उसे फिरऊन के साम्ने आकाश की ओर उड़ा दे। ९ और वह मिस्र की समस्त भूमि में सूक्ष्म धूल हो जायगी और मिस्र के समस्त देश में मनुष्यों पर और पशुन पर फोड़े और फफोले फूट निकलेंगे। १० और उन्हों ने भट्ठी की राख लिई और फिरऊन के आगे खड़े हुए और मूसा ने उसे स्वर्ग की ओर उड़ाया और मनुष्यों पर और पशुन पर फोड़े और फफोले फूट निकले। ११ और फोड़ों के मारे टोन्हे मूसा के आगे खड़े न रह सके क्योंकि टोन्हों पर और सारे मिस्रियों पर फोड़े थे। १२ और परमेश्वर ने फिरऊन के मन को कठोर कर दिया और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा से कहा था वैसा उस ने उन की बात न मानी॥

१३ फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि कल तड़के उठ और फिरऊन के आगे खड़ा हो और उस्से कह कि परमेश्वर इबरानियों का ईश्वर यों कहता है कि मेरे लोगों को जाने दे कि वे मेरी सेवा १४ करें। क्योंकि मैं अब की अपनी सारी बिपत्ति तेरे मन पर और तेरे सेवकों पर और तेरी प्रजा पर डालूंगा जिसतें तू जाने कि समस्त पृथिवी पर मेरे तुल्य १५ कोई नहीं। क्योंकि अब मैं अपना हाथ बढ़ाऊंगा जिसतें मैं तुझे और तेरी प्रजा को मरी से मारूं और तू पृथिवी पर से १६ नष्ट हो जायगा। और निश्चय मैं ने तुझे इस लिये उठाया है कि अपना पराक्रम तुझ पर दिखाऊं और अपना १७ नाम सारे संसार में प्रगट करूं। अब लों तू मेरे लोगों पर अहंकार करता जाता १८ है जिसतें उन्हें जाने न दे। देख मैं कल इसी समय में अत्यन्त बड़े बड़े ओले बरसाऊंगा जो मिस्र में उस के आरंभ से १९ अब लों न पड़े थे। सो अभी भेज अपने पशु और जो कुछ कि खेत में तेरा है सभों को एकट्ठे कर क्योंकि हर एक मनुष्य पर और पशु पर जो खेत में होगा और घर में लाया न जायगा ओले पड़ेंगे और वे मर जायेंगे॥

२० जो परमेश्वर के बचन से डरता था फिरऊन के सेवकों में से हर एक ने अपने सेवकों को और अपने पशुन को २१ घर में भगाया। और जिस ने परमेश्वर के बचन को न माना उस ने अपने सेवकों और अपने पशुन को खेत में रहने दिया॥

२२ और परमेश्वर ने मूसा को कहा कि अपना हाथ स्वर्ग की ओर बढ़ा जिसतें मिस्र के सारे देश में मनुष्य पर और पशु पर और खेत के हर एक सागपात पर २३ मिस्र देश में ओले पड़ें। और मूसा ने अपनी छड़ी स्वर्ग की ओर बढ़ाई और परमेश्वर ने गर्ज्जन और ओले भेजे और आग भूमि पर चलती थी और ईश्वर ने मिस्र की भूमि पर ओले बरसाये। २४ सो ओले बरसे और ओलों में आग लिपटी हुई इतना अति भारी वहां लों कि मिस्र के समस्त देश में जब से कि वह देश हुआ था ऐसा न पड़ा था। २५ और ओलों ने मिस्र के समस्त देश में क्या मनुष्य को और क्या पशु सब को जो खेत में थे मारा और ओलों ने खेत के सब सागपात को मारा और खेत के २६ सारे वृक्ष को तोड़ डाला। केवल जशन की भूमि में जहां इसराएल के संतान थे ओले न पड़े॥

२७ तब फिरऊन ने भेजा और मूसा और हारून को बुलवाया और उन्हें कहा कि मैं ने इस बार अपराध किया परमेश्वर न्यायी है और मैं और मेरे लोग दुष्ट २८ हैं। परमेश्वर से बिनती करो कि अब आगे को परमेश्वर का शब्द और ओला न हो और मैं तुम्हें जाने दूंगा और आगे २९ न रहोगे। तब मूसा ने उस्से कहा कि मैं नगर से बाहर निकलते हुए परमेश्वर के आगे अपने हाथ फैलाऊंगा गर्ज्ज थम जायेंगे और ओले न बरसेंगे जिसतें तू जाने कि पृथिवी परमेश्वर ही की है। ३० परन्तु मैं जानता हूं कि तू और तेरे सेवक अब भी परमेश्वर ईश्वर से न डरेंगे॥

३१ और सन और जव मारे पड़े क्योंकि जव की बालें आ चुकी थीं और सन ३२ बढ़ चुका था। पर गोहूं और मुंडला गोहूं मारे न पड़े क्योंकि वे बढ़े न थे॥

३३ और मूसा ने फिरऊन पास से नगर के बाहर जाके परमेश्वर के आगे हाथ फैलाये और गर्ज्जना और ओले थम गये ३४ और भूमि पर वृष्टि थम गई। जब फिरऊन ने देखा कि मेंह और ओले

और गर्ज्जना थम गया तो फेर दुष्टता किई और उस ने और उस के सेवकों ने अपना मन कठोर किया। और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा की ओर से कहा था वैसा फिरऊन का अंतःकरण कठोर रहा और उस ने इसराएल के संतानों को जाने न दिया॥

३५

दसवां पर्ब्ब।

१ फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि फिरऊन पास जा क्योंकि मैं ने उस के अंतःकरण को और उस के सेवकों के अंतःकरण को कठोर कर दिया है जिसतें मैं अपने ये लक्षण उन के मध्य २ में प्रगट करूं। और जिसतें तू अपने पुत्र और अपने पौत्र के सुन्ने में वर्णन करे जो जो मैं ने मिस्र में किया और मेरे लक्षण जो मैं ने उन में दिखलाये और तुम जानो कि परमेश्वर मैं ही हूं॥

३ सो मूसा और हारून ने फिरऊन पास आके उस्से कहा कि परमेश्वर इबरानियों का ईश्वर यों कहता है कि कब लों तू मेरे आगे आप को नम्र करने से अलग रहेगा मेरे लोगों को जाने दे कि ४ वे मेरी सेवा करें। क्योंकि यदि तू मेरे लोगों के जाने से नाह करेगा तो देख कल मैं तेरे सिवानों में टिड्डी भेजूंगा। ५ और वे पृथिवी को ढांप लेंगी कि कोई पृथिवी को देख न सकेगा और वे उस बचे हुए को जो ओलों से तेरे लिये बच रहे हैं खा जायेंगी और हर एक वृक्ष को जो तुम्हारे लिये खेत में उगता है ६ चट करेंगी। और वे तेरे घर में और तेरे सेवकों के घर में और समस्त मिस्र के घरों में भर जायेंगी जिन्हें तेरे पितरों ने और तेरे पितरों के पितरों ने जिस दिन से कि वे पृथिवी पर आये आज लों नहीं देखा तब वह फिरा और फिरऊन पास से निकल गया॥

७ तब फिरऊन के सेवकों ने उस्से कहा कि यह पुरुष कब लों हमारे लिये फंदा होगा उन लोगों को जाने दे जिसतें वे परमेश्वर अपने ईश्वर की सेवा करें अब लों तू नहीं जानता कि मिस्र नष्ट हुआ। ८ तब मूसा और हारून फिरऊन पास फिर पहुंचाये गये और उस ने उन्हें कहा कि जाओ परमेश्वर अपने ईश्वर की सेवा करो परन्तु वे कौन से लोग हैं जो ९ जायेंगे। तब मूसा बोला कि हम अपने तरुणों और अपने वृद्ध अपने पुत्रों और अपनी पुत्रियों अपनी भेड़ बकरियों और अपने गाय बैल समेत जायेंगे क्योंकि हमें आवश्यक है कि अपने ईश्वर का पर्ब्ब १० मानें। तब उस ने उन्हें कहा कि परमेश्वर यों ही तुम्हारे संग रहे जो मैं तुम्हें और तुम्हारे बालकों को जाने दूं देखो ११ कि बुराई तुम्हारे आगे है। ऐसा नहीं तुम पुरुषगण जाइयो और परमेश्वर की सेवा करो क्योंकि तुम ने यही चाहा सो वे फिरऊन के आगे से निकाले गये॥

१२ तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अपना हाथ टिड्डी के लिये मिस्र की भूमि पर बढ़ा जिसतें वे मिस्र के देश पर आवें और देश के हर एक सागपात जो ओलों से बच रहा है खा लेवें। १३ सो मूसा ने मिस्र के देश पर अपनी छड़ी बढ़ाई और परमेश्वर ने उस सारे दिन और सारी रात पुरबी पवन चलाई जब बिहान हुआ तो वह पुरबी पवन टिड्डी १४ लाई। और टिड्डी मिस्र के सारे देश पर आईं और मिस्र के समस्त सिवाने पर उतरीं वे अति बहुत थीं उन के आगे ऐसी टिड्डी न आई थीं और न उन के १५ पीछे फिर आवेंगी। क्योंकि उन्हों ने समस्त पृथिवी को छा लिया यहां लों कि देश अंधियारा हो गया और उन्हों ने देश की हर एक हरियाली को और वृक्षों के

फलों को जो ओलों से बच गये थे चाट लिया और मिस्र के समस्त देश में किसी वृक्ष पर अथवा खेत के सागपात में हरियाली न बची॥

१६ तब फिरऊन ने मूसा और हारून को बेग बुलाया और कहा कि मैं परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर का और तुम्हारा अपराधी
१७ हूं। सो अब मैं बिनती करता हूं केवल इस बार मेरा अपराध क्षमा कर और परमेश्वर अपने ईश्वर से बिनती करो कि केवल इसी मरी को मेरे ऊपर से
१८ दूर करे। सो वह फिरऊन के पास से निकल गया और परमेश्वर से बिनती
१९ किई। और परमेश्वर ने बड़ी पछवा भेजी और वह टिड्डों को ले गई और उन्हें लाल समुद्र में डाल दिया और मिस्र के समस्त सिवानों में एक टिड्डी न
२० रही। परन्तु परमेश्वर ने फिरऊन के मन को कठोर कर दिया और उस ने इसराएल के संतान को जाने न दिया॥

२१ फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अपना हाथ स्वर्ग की ओर बढ़ा जिसतें मिस्र के देश पर अंधकार छा जाय ऐसा
२२ अंधकार जो टटोला जावे। तब मूसा ने अपना हाथ स्वर्ग की ओर बढ़ाया और तीन दिन लों सारे मिस्र के देश में
२३ गाढ़ा अंधियारा रहा। उन्हों ने एक दूसरे को न देखा और कोई तीन दिन भर के अपने स्थान से न उठा परन्तु इसराएल के समस्त संतान के लिये उन के निवासों में उंजियाला था॥

२४ तब फिरऊन ने मूसा को बुलाया और कहा कि जाओ परमेश्वर की सेवा करो केवल तुम्हारे झुंड और तुम्हारे ढोर यहीं रहें तुम्हारे बालक भी तुम्हारे संग जावें।
२५ तब मूसा ने कहा कि तुझे आवश्यक है कि हमें बलिदान और चढ़ावे की भेंट देवे जिसतें हम परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे बलि चढ़ावें। और हमारे पशु भी हमारे
२६ संग जायेंगे एक खुर छोड़ा न जायगा क्योंकि हम उन में से परमेश्वर अपने ईश्वर की सेवा के लिये लेंगे और जब लों उधर न जावें हम नहीं जानते कि कौन सी बस्तुन से परमेश्वर की सेवा करें॥

२७ परन्तु परमेश्वर ने फिरऊन के अंतःकरण को कठोर कर दिया और उस ने
२८ उन्हें जाने न दिया। और फिरऊन ने उस्से कहा कि मेरे आगे से जा आप को चौकस रख फिर मेरा मुंह मत देख क्योंकि जिस दिन मेरा मुंह देखेगा तू मर
२९ जायगा। तब मूसा ने कहा कि तू ने अच्छा कहा मैं फिर तेरा मुंह न देखूंगा॥

ग्यारहवां पर्व्व

१ और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि मैं फिरऊन पर और मिस्रियों पर एक मरी और लाऊंगा उस के पीछे वह तुम्हें यहां से जाने देगा जब वह तुम्हें जाने दे तो निश्चय तुम्हें सर्व्वथा यहां से
२ धकियावेगा। सो अब लोगों के कानों कान कह कि हर एक पुरुष अपने परोसी से और हर एक स्त्री अपनी परोसिन से रूपे के और सोने के गहने
३ मांग लेवे। और परमेश्वर ने उन लोगों को मिस्रियों की दृष्टि में प्रतिष्ठा दिई वह जन मूसा भी मिस्र की भूमि में फिरऊन के सेवकों की और लोगों की दृष्टि में महान था॥

४ और मूसा ने कहा कि परमेश्वर यों कहता है कि मैं आधी रात को निकलके
५ मिस्र के बीचोंबीच जाऊंगा। और मिस्र के देश में सारे पहिलौठे फिरऊन के पहिलौठे से लेके जो अपने सिंहासन पर बैठा है उस सहेली के पहिलौठे लों जो चक्की के पीछे है और सारे पशु के
६ पहिलौठे मर जायेंगे। और मिस्र के समस्त देश में ऐसा बड़ा रोना पीटना

होगा जैसा कि कभी न हुआ था न ७ कभी फिर होगा। परन्तु सारे इसराएल के संतान पर एक कूकर भी अपनी जीभ न हिलावेगा न तो मनुष्य पर और न पशु पर जिसतें तुम जाना कि परमेश्वर क्योंकर मिस्रियों में और इसराएलियों में ८ विभाग करता है। और यह तेरे समस्त सेवक मुझ पास आवेंगे और मुझे प्रणाम करके कहेंगे कि तू निकल जा अपने समस्त पश्चाद्गामी समेत और उस के पीछे मैं निकल जाऊंगा और वह फिरऊन के पास से निपट रिसियाके निकल गया॥

९ और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि फिरऊन तुम्हारी न सुनेगा जिसतें मेरे १० आश्चर्य्य मिस्र देश में बढ़ जायें। और मूसा और हारून ने ये सब आश्चर्य्य फिरऊन के आगे दिखाये और परमेश्वर ने फिरऊन के मन को कठोर कर दिया और उस ने अपने देश से इसराएल के संतान को जाने न दिया॥

बारहवां पर्व्व।

तब परमेश्वर ने मिस्र के देश में २ मूसा और हारून को कहा। कि यह मास तुम्हारे लिये मासों का आरंभ होगा यह तुम्हारे बरस का पहिला मास होगा॥

३ इसराएलियों की सारी मंडली से कहो कि इस मास के दसवें में हर एक पुरुष से अपने पितरों के घर के समान एक मेम्ना घर पीछे मेम्ना अपने लिये ४ लेवें। और यदि वह घर मेम्ना के लिये छोटा हो तो वह और उस का परोसी जो उस के घर से लगा हुआ हो प्राणियों की गिनती के समान लेवे तुम एक एक अपने खाने के समान मेम्ने के लिये लेखा ठहराओ॥

५ तुम्हारा मेम्ना निष्खोट होवे पहिले बरस का नरःख भेड़ों से अथवा बकरियों से लीजियो। और तुम उसे मास के ६ चौदहवें दिन लों रख छोड़ियो और इसराएलियों की समस्त मंडली सांझ को उसे मारे॥

और वे लोहू में से लेवें और उन ७ घरों के जहां वे खायेंगे द्वार की दोनों ओर और ऊपर की चौखट पर छापा देवें॥

और वे उसी रात को आग में भुना हुआ उस का मांस और अखमीरी रोटी कड़वी तरकारी के साथ खावें। उसे ९ कच्चा और पानी में उसनके न खावें परन्तु उस के सिर पांव और उझ समेत आग पर भूनके खावें। और उस में से १० बिहान लों कुछ न रहने दीजियो और जो कुछ उस में से बिहान लों रह जायेगा तुम आग से जला दीजियो। और उसे ११ यों खाइयो अपनी कटि बांधे हुए अपनी जूतियां अपने पांवों में पहिने हुए और अपना लठ अपने हाथों में लिये हुए और उसे बेग खा लीजियो वह परमेश्वर का फसह है॥

इस लिये कि मैं आज रात मिस्र के १२ देश में होके निकलूंगा और सब पहिलौठे मनुष्य के और पशुन के जो उस में हैं मारूंगा और मिस्र के समस्त देवताओं पर न्याय करूंगा मैं परमेश्वर हूं। और १३ वह लोहू तुम्हारे घरों पर जहां जहां तुम हो तुम्हारे लिये एक चिन्ह होगा और मैं वह लोहू देखके तुम पर से बीत जाऊंगा और जब मिस्र के देश को मारूंगा तब मरी तुम पर नाश करने को न आवेगी॥

और यह दिन तुम्हारे लिये एक १४ स्मरण के लिये होगा और तुम अपनी समस्त पीढ़ियों के लिये उसे परमेश्वर के लिये पर्व्व रखियो तुम नित्य उस बिधि से पर्व्व रखियो॥

१५ सात दिन लों अखमीरी रोटी खाइयो पहिले ही दिन खमीर अपने घरों से उठा डालियो इस लिये कि जो कोई पहिले दिन से लेके सातवें दिन लों खमीरी रोटी खायगा सो प्राणी १६ *इसराएल से काटा जायगा।* और पहिले दिन पवित्र बुलावा होगा और सातवें दिन तुम्हारे लिये पवित्र बुलावा होगा उन में कोई कार्य्य न किया जायगा केवल भोजन ही का कार्य्य हर एक १७ मनुष्य से किया जाय। और इस अखमीरी रोटी के पर्ब्ब को मानोगे क्योंकि उसी दिन मैं तुम्हारी सेनाओं को मिस्र देश से निकाल लाया हूं इस लिये इस दिन को अपनी पीढ़ियों में बिधि से १८ नित्य मानो। पहिले मास की चौदहवीं तिथि से सांझ को इक्कीसवीं तिथि लों १९ अखमीरी रोटी खाइयो। सात दिन लों तुम्हारे घरों में खमीर न पाया जावे क्योंकि जो कोई खमीरी वस्तु खायेगा वही प्राणी इसराएल की मंडली से काटा जायगा चाहे परदेशी हो चाहे २० देशी। तुम कोई वस्तु खमीरी मत खाइयो तुम अपनी समस्त बस्तियों में अखमीरी रोटी खाइयो॥

२१ तब मूसा ने इसराएल के समस्त प्राचीनों को बुलाया और उन्हें कहा कि अपने अपने घर के समान एक एक मेम्ना २२ लेओ और फसह का मेम्ना मारो। और एक मुट्ठी जूफा लेओ और उसे उस लोहू में जो बासन में है बोरके ऊपर की चौखट के और द्वार की दोनों ओर उस्से छापो और तुम में से कोई बिहान लों अपने घर के द्वार से बाहर न २३ जावे। क्योंकि परमेश्वर मिस्र को मारने के लिये आरपार जायगा और जब वह ऊपर की चौखट पर और द्वार की दोनों ओर लोहू को देखे तब परमेश्वर द्वार पर से बीत जायगा और नाशक तुम्हारे घरों में आने न देगा कि मारे। और अपने और अपने संतानों २४ के लिये बिधि करके इस बचन को नित्य मानियो। और ऐसा होगा कि २५ *जब तुम उस देश में जो परमेश्वर तुम्हें* अपनी बाचा के समान देगा प्रवेश करोगे तब इस सेवा का पालन करियो। और २६ ऐसा होगा कि जब तुम्हारे संतान तुम से कहें कि इस सेवा से तुम्हारा क्या अर्थ है। तब कहियो कि यह परमेश्वर २७ के फसह का बलिदान है जो मिस्र में इसराएल के संतानों के घरों पर से बीत गया जब उस ने मिस्र को मारा और हमारे घरों को बचाया तब लोगों ने सिर झुकाये और प्रणाम किये। और २८ इसराएल के संतान चले गये जैसा कि परमेश्वर ने मूसा और हारून को आज्ञा किई थी उन्हों ने वैसा ही किया॥

और यों हुआ कि परमेश्वर ने आधी २९ रात को मिस्र के देश में सारे पहिलौठे को फिरऊन के पहिलौठे से लेके जो अपने सिंहासन पर बैठता था उस बंधुआ के पहिलौठे लों जो बन्दीगृह में था पशुन के पहिलौठों समेत नाश किये। और रात को फिरऊन उठा वह और ३० उस के सब सेवक और सारे मिस्री उठे और मिस्र में बड़ा बिलाप था क्योंकि कोई घर न रहा जिस में एक न मरा॥

तब उस ने मूसा और हारून को ३१ रात ही को बुलाया और कहा कि उठो मेरे लोगों में से निकल जाओ तुम और इसराएल के संतान जाओ और अपने कहे के समान परमेश्वर की सेवा करो। जैसा तुम ने कहा है अपना झुंड और ३२ ढोर भी लेओ और बिदा होओ और मेरे लिये भी आशीस चाहो॥

और मिस्री उन लोगों पर शीघ्रता ३३

करते थे कि वे मिस्र के देश से बेग निकाले जायें क्योंकि उन्हों ने कहा कि ३४ हम सब मरे । और उन लोगों ने आटा गूंधा हुआ उस्से आगे कि वह खमीर हो गूंधने के कठरे समेत अपने कपड़ों में बांधके अपने कांधों पर उठा लिया । ३५ और इसराएल के संतानों ने मूसा के कहने के समान किया और उन्हों ने मिस्रियों से रूपे के और सोने के गहने ३६ और बस्त्र मांग लिये । और परमेश्वर ने उन लोगों को मिस्रियों की दृष्टि में ऐसा अनुग्रह दिया कि उन्हों ने उन्हें दिया और उन्हों ने मिस्रियों को लूट लिया ॥

३७ और इसराएल के संतान ने रामसीस से सुक्कात लों कूच किया जो बालकों ३८ को छोड़ छः लाख पुरुष थे । और एक मिलीजुली बड़ी मंडली भी और झुंड और बैल और बहुत पशु उन के साथ ३९ गये । और उन्हों ने उस गूंधे हुए आटे के जो वे मिस्र से ले निकले थे अखमीरी फुलके पकाये क्योंकि वह खमीर न हुआ था इस कारण कि वे मिस्र से खदेड़े गये थे और ठहर न सके और अपने लिये कुछ भोजन सिद्ध न किया ॥

४० अब इसराएल के संतानों का निवास जो मिस्र में रहते थे चार सौ तीस बरस था । ४१ और चार सौ तीस बरस के अंत में यों हुआ कि ठीक उसी दिन परमेश्वर की समस्त सेना मिस्र के देश से निकल गई ॥

४२ उन्हें मिस्र के देश से निकाल लाने के कारण वह रात परमेश्वर के लिये पालन करने के योग्य है यह परमेश्वर की वह रात है जिसे चाहिये कि इसराएल के संतान अपनी पीढ़ी पीढ़ी पालन करें ॥

४३ और परमेश्वर ने मूसा और हारून को कहा कि फसह की बिधि यह है कि उस्से कोई परदेशी न खावे । परन्तु ४४ हर एक का मोल लिया हुआ दास जब तू ने उस का खतनः किया तब वह उस्से खावे । बिदेशी और बनिहार सेवक ४५ उस्से न खावें । यह एक ही घर में ४६ खाया जावे उस का मांस कुछ घर से बाहर न निकाला जावे और न उस की हड्डी तोड़ी जावे । इसराएल के संतान ४७ की समस्त मंडली उसे पालन करें । और ४८ जब कोई परदेशी तुम्में बास करे और परमेश्वर के लिये फसह किया चाहे तो उस के सब पुरुष खतनः करावें तब वह उसे पालन करने के लिये समीप आवे और वह ऐसा होगा जैसा कि देश में जन्म पाया हो और कोई अखतनः जन उस्से न खावे । देश के उत्पन्न हुओं ४९ के और देशी और बिदेशी के लिये तुम्हारे मध्य में एक ही ब्यवस्था होगी । और ५० सारे इसराएल के संतानों ने जैसा कि परमेश्वर ने मूसा और हारून को आज्ञा किई वैसा ही किया ॥

५१ और यों हुआ कि ठीक उसी दिन परमेश्वर ने इसराएल के संतानों को उन की सेनाओं के समान मिस्र देश से बाहर निकाला ॥

तेरहवां पर्ब्ब

१ और परमेश्वर ने मूसा से कहा । २ कि सब पहिलौठे मेरे लिये पवित्र कर जो कुछ कि इसराएल के संतानों में गर्भ को खोले क्या मनुष्य और क्या पशु सो मेरा है ॥

३ और मूसा ने लोगों से कहा कि इस दिन को जिस में तुम मिस्र से बाहर आये और बंधुआई के घर से निकले स्मरण करियो क्योंकि परमेश्वर तुम्हें बाहुबल से निकाल लाया और खमीरी रोटी खाई न जावे । ४ तुम आबीब के मास में आज के दिन बाहर निकले ।

५ और यों होगा कि जब परमेश्वर तुझे कनआनियों और हित्तियों और अमूरियों और हवियों और यबूसियों के देश में लावे जिसे उस ने तेरे पितरों से किरिया खाई कि तुझे देगा जहां दूध और मधु बहता है तब तू इस मास में ६ इस सेवा को पालन करियो । सात दिन लों तू अखमीरी रोटी खाइयो और सातवें दिन परमेश्वर के लिये पर्ब्ब ७ होगा । अखमीरी रोटी सात दिन खाई जावे और कोई खमीरी रोटी तुझ पास दिखाई न देवे और न खमीर तेरे समस्त ८ सिवाने में तेरे आगे दिखाई देवे । और तू उसी दिन अपने पुत्र को समझाइयो कि यह इस कारण है कि जब हम मि से बाहर निकले तब परमेश्वर ने हम ९ यह किया । और यह एक लक्षण तुझ पास तेरे हाथ में और तेरी दोनों आंखों के बीच स्मरण के लिये होगा जिसतें परमेश्वर की व्यवस्था तेरे मुंह में हो क्योंकि परमेश्वर तुझे भुजा के बल से १० मिस्र से निकाल लाया । इस लिये तू यह बिधि ठहराये हुए पर्ब्ब के निमित्त बरस बरस पालन करियो ॥

११ और ऐसा होगा कि जब परमेश्वर तुझे कनआनियों के देश में लावे जैसा उस ने तुझ से और तेरे पितरों से किरिया १२ खाई है और उसे तुझे देवे । तब तू परमेश्वर के लिये सभों को जो कि गर्भ को खोलते हैं और पशु के सब पहिलौठों को जो तेरे होंगे अलग कीजियो १३ नर परमेश्वर के होंगे । और गदहे के हर एक पहिलौठे को एक मेम्ना से छुड़ाइयो और यदि तू उसे न छुड़ावे तो उस की गरदन तोड़ दीजियो और अपने संतानों में से मनुष्य के सारे पहिलौठों का छुड़ा लीजियो ॥

१४ और यों होगा कि जब तेरा पुत्र कल को तुझ से पूछे कि यह क्या है तब उस्से कहियो कि परमेश्वर हमें अपनी भुजा के बल से मिस्र से और बंधुआई के घर से निकाल लाया । १५ और यों हुआ कि जब फिरऊन ने हमें कठिनता से छोड़ा तब परमेश्वर ने मिस्र देश में सब पहिलौठे मनुष्य के पहिलौठों से लेके पशुन के पहिलौठों लों मार डाला इस कारण मैं उन सब नरों को जो गर्भ खोलते हैं परमेश्वर के लिये बलि करता हूं परन्तु अपने संतानों के सब पहिलौठों को छुड़ाता हूं । १६ और यह तेरे हाथ में और तेरी आंखों के बीच में एक चिन्हानी होगी क्योंकि परमेश्वर अपने बाहुबल से हमें मिस्र से निकाल लाया ॥

१७ और यों हुआ कि जब फिरऊन ने उन लोगों को जाने दिया तब ईश्वर उन्हें फिलिस्तियों के देश के मार्ग से ले न गया यद्यपि वह समीप था क्योंकि ईश्वर ने कहा कि न हो कि लोग लड़ाई देखके पछतावें और मिस्र को फिर जावें । १८ परन्तु ईश्वर उन लोगों को लाल समुद्र के बन की ओर ले गया और इसराएल के संतान पांती पांती मिस्र के देश से निकले चले गये । १९ और मूसा ने यूसफ की हड्डियां अपने साथ ले लिईं क्योंकि उस ने इसराएल के संतान को किरिया देके कहा था कि निश्चय ईश्वर तुम से भेंट करेगा और तुम यहां से मेरी हड्डियां अपने साथ ले जाइयो ॥

२० फिर वे सुक्कात से चल निकले और बन के छोर पर छावनी किई । २१ और परमेश्वर उन के आगे आगे दिन को मेघ के खंभे में उन्हें मार्ग दिखाने के लिये जाता था और रात को आग के खंभे में होके कि उन्हें प्रकाश करे जिसतें रात दिन चले जावें । २२ वह दिन

में मेघ के खंभे को और रात में आग के खंभे को उन लोगों के आगे से न उठाता था॥

चौदहवां पर्ब्ब

१ और परमेश्वर ने मूसा से कहा
२ कि इसराएल के संतान से कह कि फिरें और फीउलहीरात के आगे मिजदाल और समुद्र के मध्य में छावनी करें तुम बअलसफून के आगे उस के सन्मुख समुद्र के तीर पर डेरा खड़ा करो।
३ क्योंकि फिरऊन इसराएल के संतानों के विषय में कहेगा कि वे इस देश में बझे
४ हैं बन ने उन्हें छेंक लिया है। और मैं फिरऊन के मन को कठोर करूंगा कि वह उन का पीछा करेगा और मैं फिरऊन और उस की समस्त सेना पर प्रतिष्ठित होऊंगा जिसतें मिस्री जानें कि परमेश्वर मैं हूं और उन्हों ने ऐसा ही किया॥
५ और मिस्र के राजा को कहा गया कि लोग भाग गये तब फिरऊन का और उस के सेवकों का मन लोगों के बिरोध में फिर गया और वे बोले कि हम ने यह क्या किया कि इसराएल को
६ अपनी सेवा से जाने दिया। तब उस ने अपना रथ जोता और अपने लोग साथ
७ लिये। और उस ने छः सौ चुने हुए रथ और मिस्र के समस्त रथ साथ लिये और
८ उन सभों पर प्रधान बैठाये। और परमेश्वर ने मिस्र के राजा फिरऊन के मन को कठोर कर दिया और उस ने इसराएल के संतानों का पीछा किया पर इसराएल के संतान हाथ बढ़ाये हुए
९ निकले। परन्तु मिस्री उन का पीछा किये चले गये और फिरऊन के सारे घोड़ों और रथों और उस के घोड़चढ़ों और उस की सेना ने समुद्र के तीर फीउलहीरात के समीप बअलसफून के सन्मुख उन्हें छावनी खड़ी करते जा ही लिया॥

१० जब फिरऊन पास आया तब इसराएल के संतानों ने आंखें ऊपर किईं और मिस्रियों को अपने पीछे आते हुए देखा और अत्यंत डर गये तब इसराएल के संतानों ने परमेश्वर की दोहाई दिई।
११ और मूसा से कहा कि क्या मिस्र में समाधें न थीं कि तू हम मरने के लिये वहां से बन में लाया तू ने हम से यह क्या व्यवहार किया कि हमें मिस्र से
१२ निकाल लाया। क्या यह वही बात नहीं जो हम ने मिस्र में तुझ से कही थी कि हम से हाथ उठा जिसतें हम मिस्रियों की सेवा करें कि हमारे लिये मिस्रियों की सेवा करनी बन में मरने से अच्छी थी॥
१३ तब मूसा ने लोगों को कहा कि मत डरो खड़े रहो और परमेश्वर का मोक्ष देखो जो आज के दिन वह तुम्हें दिखावेगा क्योंकि उन मिस्रियों को जिन्हें तुम आज देखते हो उन्हें फिर कभी न
१४ देखोगे। परमेश्वर तुम्हारे लिये युद्ध करेगा और तुम चुपचाप रहोगे॥
१५ तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि तू क्यों मेरी ओर बिलाप करता है इसराएल के संतान से कह कि वे आगे
१६ बढ़ें। परन्तु तू अपनी छड़ी उठा और समुद्र पर अपना हाथ बढ़ा और उसे दो भाग कर और इसराएल के संतान समुद्र के बीचोंबीच में से सूखी भूमि पर होके
१७ चले जायेंगे। और देख कि मैं मिस्रियों के अंतःकरण को कठोर कर दूंगा और वे उन का पीछा करेंगे और मैं फिरऊन और उस की समस्त सेना उस के रथ और उस के घोड़चढ़ों पर अपनी महिमा
१८ प्रगट करूंगा। और जब मैं फिरऊन उस के रथों और उस के घोड़चढ़ों पर अपनी महिमा प्रगट करूंगा तब मिस्री जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूं॥
१९ और ईश्वर का दूत जो इसराएल

की छावनी के आगे चला जाता था सो फिरा और उन के पीछे चला और मेघ का खंभा उन के सन्मुख से गया २० और उन के पीछे जा ठहरा। और मिस्रियों की छावनी और इसराएल की छावनी के मध्य में आया और वह एक अंधियारा मेघ मिस्रियों के लिये हो गया परन्तु रात को इसराएल को उंजियाला देता था सो रात भर एक दूसरे के पास न आया॥

२१ फिर मूसा ने समुद्र पर अपना हाथ बढ़ाया और परमेश्वर ने बड़ी प्रचंड पुरबी आंधी से रात भर समुद्र को चलाया और समुद्र को सुखा दिया और २२ पानी दो भाग हो गये। और इसराएल के संतान समुद्र के बीच में से सूखे पर होके चले गये और पानी की भीत उन के दहिने और बायें ओर थी॥

२३ और मिस्रियों ने पीछा किया और फिरऊन के सब घोड़े उस के रथ और उस के घोड़चढ़े उन का पीछा किये हुए २४ समुद्र के मध्य लों आये। और यों हुआ कि परमेश्वर ने पिछले पहर उस आग और मेघ के खंभे में से मिस्रियों की सेना पर दृष्टि किई और मिस्रियों २५ की सेना को घबराया। और उन के रथों के पहियों को निकाल डाला कि वे भारी से हांके जाते थे सो मिस्रियों ने कहा कि आओ इसराएलियों के सन्मुख से भागें क्योंकि परमेश्वर उन के लिये २६ मिस्रियों से लड़ता है। और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अपना हाथ समुद्र पर बढ़ा जिसतें पानी मिस्रियों पर उन के रथों और उन के घोड़चढ़ों पर फिर २७ आवे। तब मूसा ने अपना हाथ समुद्र पर बढ़ाया और समुद्र बिहान होते अपनी सामर्थ्य पर फिरा और मिस्री उस के आगे भागे और परमेश्वर ने मिस्रियों को समुद्र में नाश किया। और पानी २८ फिरा और रथों और घोड़चढ़ों फिरऊन की सब सेना को जो उन के पीछे समुद्र के बीच में आई थी छिपा लिया एक भी उन में से न बचा। परन्तु इसराएल के २९ संतान सूखी से समुद्र के बीच में हो चले गये और पानी की भीत उन के बायें और दहिने थी॥

३० सो परमेश्वर ने उस दिन इसराएलियों को मिस्रियों के हाथ से बचाया और इसराएलियों ने मिस्रियों की लोथें समुद्र के तीर पर देखीं। और जो बड़ी भुजा ३१ परमेश्वर ने मिस्रियों पर प्रगट किई इसराएलियों ने देखा और लोग परमेश्वर से डरे तब परमेश्वर पर और उस के दास मूसा पर बिश्वास लाये॥

पंदरहवां पर्व्व।

१ तब मूसा और इसराएल के संतान ने परमेश्वर का धन्यबाद और स्तुति इस रीति से गाया

और कहके बोला कि मैं परमेश्वर का भजन करूंगा क्योंकि वह बड़े बिभव से बिभूषित हुआ उस ने घोड़े को उस के चढ़वैये समेत समुद्र में फेंक दिया है। २ परमेश्वर मेरी सामर्थ्य और गान है और वह मेरी मुक्ति हुआ वह मेरा सर्बशक्तिमान है और मैं उस के लिये निवास सिद्ध करूंगा मेरे पिता का ईश्वर है और मैं उस की महिमा करूंगा। ३ परमेश्वर योद्धा है ४ परमेश्वर उस का नाम है। उस ने फिरऊन के रथों और उस की सेना को समुद्र में डाल दिया है और उस के चुने हुए प्रधान लाल समुद्र में डूबे हैं। ५ गहिरावों ने उन्हें ढांप लिया वे पत्थर के समान गहिरापों में डूब गये। ६ हे परमेश्वर तेरा दहिना हाथ सामर्थ्य में महान हुआ हे परमेश्वर तेरे दहिने हाथ ने बैरी को टुकड़ा टुकड़ा किया। और ७

तू ने अपनी महिमा के महत्त्व से अपने बिरोधियों को उलट डाला तू ने अपने कोप को भेजके उन्हें खूंटी की नाईं
८ भस्म किया। और तेरे नथुनों के श्वास से जल एकट्ठे हुए बाढ़ ढेर होके खड़ी हो गई समुद्र के अंत:करण में गहिराये
९ जम गये। बैरी बोला कि मैं पीछा करूंगा आ ही लूंगा लूट को बांट लूंगा उन से मेरी लालसा सन्तुष्ट होगी मैं अपना खड्ग खींचूंगा मेरा हाथ उन्हें बश में
१० कर लेगा। तू ने अपनी पवन से मारी समुद्र ने उन्हें छिपा लिया वे सीसे
११ की नाईं महाजलों में डूब गये। हे परमेश्वर शक्तिमानों में तेरे तुल्य कौन है पवित्रता में तेरे तुल्य तेजोमय कौन है स्तुति में भयंकर आश्चर्य्यकर्त्ता।
१२ तू ने अपना दहिना हाथ बढ़ाया पृथिवी
१३ उन्हें निगल गई। तू ने अपनी दया से अपने छुड़ाये हुए लोगों की अगुआई किई तू ने अपनी सामर्थ्य से उन्हें अपने पवित्र
१४ निवास लों पहुंचाया। लोग सुनके डरेंगे फिलिस्तिया के निवासियों को भय ने
१५ पकड़ लिया है। तब अदूम के प्रधान बिस्मित हुए मोअब के बलवंतों को थरथराहट पकड़ेगी कनआन के समस्त
१६ बासी गल गये हैं। उन पर भय और डर पड़ेगा तेरी भुजा के महत्त्व से वे पत्थर की नाईं चुप रह जायेंगे जब लों तेरे लोग पार न जावें हे परमेश्वर जब लों तेरे लोग जिन्हें तू ने मोल लिया पार न
१७ जावें। तू उन्हें भीतर लावेगा और अपने अधिकार के पहाड़ पर उस स्थान पर जो हे परमेश्वर तू ने अपने निवास के लिये बनाया है उस पवित्र स्थान पर हे प्रभु जिसे तेरे हाथों ने स्थापा है तू उन्हें
१८ लगावेगा। परमेश्वर सनातन सनातन राज्य करेगा॥

१९ क्योंकि फिरऊन का घोड़ा उस के रथों और उस के घोड़चढ़े समेत समुद्र में पैठा और परमेश्वर ने समुद्र का पानी उन पर पलटाया परन्तु इसराएल के संतान समुद्र के मध्य से सूखे सूखे चले गये॥

२० तब हारून की बहिन मिरयम आगमज्ञानिनी ने ढोल अपने हाथ में लिया और सब स्त्री ढोलों के साथ नाचती
२१ हुईं उस के पीछे चलीं। और मिरयम ने उन्हें उत्तर दिया

कि परमेश्वर का गान करो क्योंकि वह अति महान है उस ने घोड़े को उस के चढ़वैये समेत समुद्र में नष्ट किया॥

२२ और मूसा इसराएल को लाल समुद्र से ले गया और वे सूर के बन में गये और वे तीन दिन लों बन में चले गये
२३ और पानी न पाया। और जब वे मार: में आये तब मार: का पानी पी न सके क्योंकि वह कड़ुआ था इस कारण वह
२४ मार: कहाया। तब लोग यह कहके मूसा के बिरोध में कुड़कुड़ाने लगे कि
२५ हम क्या पीयें। तब उस ने परमेश्वर की दोहाई दिई और परमेश्वर ने उसे एक पेड़ दिखाया जब उस ने उसे पानियों में डाला तब पानी मीठे हो गये वहां उस ने उन के लिये एक बिधि और व्यवस्था बनाई और वहां उस ने उन्हें परखा।
२६ और कहा कि यदि तू परमेश्वर अपने ईश्वर का शब्द ध्यान से सुने और जो उस की दृष्टि में अच्छा है उसे करे और उस की आज्ञाओं पर कान धरे और उस की बिधिन को चेत में रक्खे तो मैं उन रोगों को जो मिस्रियों पर लाया तुझ पर न देऊंगा क्योंकि मैं वह परमेश्वर हूं जो तुझे चंगा करता है॥

२७ तब वे ऐलीम को जहां जल के बारह कुए और खजूर के सत्तर वृक्ष थे आये और उन्हों ने जल के तीर डेरा किया॥

सोलहवां पर्व्व।

१ फिर उन्हों ने ऐलीम से यात्रा किई और इसराएल के संतानों की समस्त मंडली मिस्र देश से निकलने के पीछे दूसरे मास की पंदरहवीं तिथि को सीन के बन में जो ऐलीम और सीना के मध्य में है २ पहुंची। और इसराएल के संतानों की सारी मंडली मूसा और हारून पर बन में ३ कुड़कुड़ाई। और इसराएल के संतानों ने उन्हें कहा कि हाय कि हम परमेश्वर के हाथ से मिस्र के देश में मारे जाते जब हम मांस की हांड़ियों के लग बैठते थे और रोटी मनमनती खाते थे क्योंकि तुम हमें इस बन में निकाल लाये हो जिसतें इस सारी मंडली को भूख से मार डालो॥

४ तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि देख मैं स्वर्ग से तुम्हारे लिये भोजन बरसाऊंगा और लोग प्रतिदिन के प्रयोजन से जाके बटोरेंगे जिसतें मैं उन्हें जांचूं कि वे मेरी व्यवस्था पर चलेंगे अथवा नहीं। ५ और यों होगा कि वे छठवें दिन और दिन से दूना बटोरेंगे और भीतर लाके पकावेंगे॥

६ सो मूसा और हारून ने इसराएल के समस्त संतानों से कहा कि सांझ को तुम जानोगे कि परमेश्वर तुम्हें मिस्र देश ७ से बाहर लाया। और बिहान को परमेश्वर का बिभव देखोगे क्योंकि परमेश्वर के बिरोध में वह तुम्हारा कुड़कुड़ाना सुनता है और हम कौन कि तुम हम पर ८ कुड़कुड़ाते हो। और मूसा ने कहा कि यों होगा कि संध्याकाल को परमेश्वर तुम्हें खाने को मांस और बिहान को रोटी मनमनती देगा क्योंकि तुम्हारा झुंझलाना जो तुम उस पर झुंझलाते हो परमेश्वर सुनता है और हम क्या हैं तुम्हारी झुंझलाहट हम पर नहीं परन्तु ९ परमेश्वर पर है। तब मूसा ने हारून से कहा कि इसराएल के संतान की सारी मंडली से कह कि परमेश्वर के समीप आओ क्योंकि उस ने तुम्हारा कुड़कुड़ाना सुना है॥

१० और यों हुआ कि जब हारून इसराएल के संतान की सारी मंडली को कह रहा था तब उन्हों ने बन की ओर दृष्टि किई और देखो परमेश्वर का बिभव मेघ में प्रगट हुआ। ११ और परमेश्वर ने मूसा से १२ कहा। कि मैं ने इसराएल के संतानों का कुड़कुड़ाना सुना है उन्हें कह कि तुम सांझ को मांस खाओगे और बिहान को रोटी से तृप्त होओगे और तुम जानोगे कि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥

१३ और यों हुआ कि सांझ को बटेरें ऊपर आईं और छावनी को ढांप लिया और बिहान को सेना के आस पास ओस १४ पड़ी। और जब ओस पड़के ऊपर गई तो देखो बन पर छोटी छोटी गोल बस्तु पाला के टुकड़े की नाईं भूमि पर पड़ी १५ है। और इसराएल के संतानों ने देखके आपुस में कहा कि यह क्या है क्योंकि उन्हों ने न जाना कि वह क्या है तब मूसा ने उन्हें कहा कि यह वह रोटी जिसे परमेश्वर ने तुम्हें खाने को दिया १६ है। यह वह बात है जो परमेश्वर ने आज्ञा किई है कि हर एक उस में से अपने खाने के समान *मनुष्य पीछे एक ओमर एकट्ठा करे अपने प्राणियों की गिनती के समान उन के लिये जो उस १७ के तंबू में हैं लेओ। तब इसराएल के संतानों ने यों हीं किया और किसी ने थोड़ा और किसी ने बहुत एकट्ठा किया १८ और जब हर एक ने अपने को ओमर से तौला तो जिस ने बहुत एकट्ठा किया था कुछ अधिक न पाया और उस को जिस ने थोड़ा एकट्ठा किया था कुछ न घटा हर एक ने उन में से अपने खाने

१९ भर बटोरा। और मूसा ने उन से कहा कि कोई उस में से बिहान लों रख न
२० छोड़े। तथापि उन्हों ने मूसा की बात को न माना परन्तु कितनों ने बिहान लों उस में से कुछ रख छोड़ा और उस में कीड़े पड़ गये और बसाने लगा और
२१ मूसा उन पर क्रुद्ध हुआ। और उन में से हर एक ने हर बिहान को अपने खाने के समान बटोरा और जब सूर्य्य की घाम पड़ी तब वह पिघल गया॥
२२ और यों हुआ कि छठवें दिन उन्हों ने दूना भोजन बटोरा जन पीछे दो ओमर और मंडली के समस्त अध्यक्षों ने
२३ आके मूसा को जनाया। तब उस ने उन्हें कहा कि यह वही है जो परमेश्वर ने कहा है कि कल बिश्राम परमेश्वर का पवित्र बिश्राम है तुम्हें जो भूंजना हो सो भूंज लेओ और जो पकाना हो सो पका लेओ और जो बच रहे सो अपने लिये बिहान लों यत्न से रक्खो।
२४ सो जैसा मूसा ने आज्ञा किई थी वैसा उन्हों ने बिहान लों उसे रहने दिया और वह न सड़ा और न उस में
२५ पड़े। और मूसा ने कहा कि उसे आज खाओ क्योंकि आज परमेश्वर का बिश्राम है आज तुम उसे खेत में न पाओगे।
२६ छः दिन लों उसे बटोरो परन्तु सातवां दिन बिश्राम है उस में कुछ न होगा।
२७ और ऐसा हुआ कि कोई कोई उन लोगों में से सातवें दिन बटोरने को गये और
२८ कुछ न पाया। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि कब लों तुम मेरी आज्ञाओं को और मेरी व्यवस्था को पालन न करोगे। देखो कि परमेश्वर ने तुम्हें बिश्राम दिया इस लिये वह तुम्हें छठवें दिन में दो दिन का भोजन देता है हर एक तुम्में से अपने स्थान से बाहर न
३० जावे। तब लोगों ने सातवें दिन बिश्राम किया। और इसराएल के घराने
३१ ने उस का नाम मन्न रक्खा और वह धनियां की नाईं श्वेत और उस का स्वाद मधु सहित टिकिया की नाईं था॥

३२ और मूसा ने कहा कि यह वह बात है जो परमेश्वर ने आज्ञा किई है कि उस में से एक ओमर भर अपनी पीढ़ियों के लिये धर रक्खो जिसतें वे उस रोटी को देखें जो मैं ने तुम्हें बन में खिलाई जब मैं तुम्हें मिस्र के देश से बाहर
३३ लाया। और मूसा ने हारून को कहा कि एक हांड़ी ले और एक ओमर मन्न उस में भर और उसे परमेश्वर के आगे रख छोड़ जिसतें वह तुम्हारी पीढ़ियों के
३४ लिये धरा जाय। सो जैसा कि परमेश्वर को आज्ञा किई थी वैसा हारून
३५ ने साक्षी के आगे उसे धर रक्खा। और इसराएल के संतान चालीस बरस जब लों कि वे बस्ती में न आये मन्न खाते रहे जब लों कि वे कनआन की भूमि के
३६ सिवाने में न आये मन्न खाते रहे। अब एक ओमर ईफा का दसवां भाग है॥

सत्रहवां पर्ब्ब।

१ तब इसराएल के संतान की समस्त मंडली ने अपनी यात्रों के लिये परमेश्वर की आज्ञा के समान सीन के बन से यात्रा किई और रफीदीम में डेरा किया और लोगों के पीने को पानी न था।
२ सो लोग मूसा से झगड़ने लगे और कहा कि हमें पानी दे कि पीयें तब मूसा ने उन्हें कहा कि मुझ से क्यों झगड़ते हो परमेश्वर की क्यों परीक्षा करते हो।
३ और लोग पानी के पियासे थे तब वह लोग मूसा पर कुड़कुड़ाये और कहा कि तू हमें मिस्र से क्यों निकाल लाया कि हमें और हमारे लड़कों को और हमारे पशुन को पियास से मारे॥

और मूसा ने पुकारके परमेश्वर से

कहा कि मैं इन लोगों से क्या करूं वे मुझ पर पत्थरवाह करने को सिद्ध हैं। ५ और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि लोगों के आगे जा और इसराएल के संतान के प्राचीनों को अपने साथ ले और अपनी छड़ी जिस्से तू ने नील नदी को मारा था अपने हाथ में ले और जा। ६ देख मैं वहां हैारेब के पहाड़ पर तेरे आगे खड़ा हूंगा और तू उस पहाड़ को मारेगा और उस्से जल निकलेगा कि लोग पीयें और मूसा ने इसराएल के प्राचीनों ७ की दृष्टि में ऐसा ही किया। और इसराएल के संतानों के विवाद के कारण और इस कारण कि उन्हों ने परमेश्वर की परीक्षा करके कहा था कि परमेश्वर हमारे मध्य में है कि नहीं उस ने उस स्थान का मस्स: और मरीब: रक्खा॥

८ तब अमालीक चढ़ आये और रफीदीम ९ में इसराएल से लड़े। तब मूसा ने यहूसूअ से कहा कि हमारे लिये मनुष्य चुन और निकलकर अमालीक से लड़ कल मैं ईश्वर की छड़ी अपने हाथ में लेके पहाड़ की १० चोटी पर खड़ा हूंगा। सो जैसा मूसा ने उस्से कहा था यहूसूअ ने वैसा किया और अमालीक से लड़ा मूसा हारून और ११ हूर पहाड़ की चोटी पर चढ़े। और यों हुआ कि जब मूसा अपना हाथ उठाता था तब इसराएल जय पाता था और जब अपना हाथ लटका देता था तब १२ अमालीक जय पाता था। और मूसा के हाथ भारी हो रहे थे तब उन्हों ने एक पत्थर लेके उस के नीचे रक्खा और वह उस पर बैठा और हारून और हूर एक एक ओर और दूसरा दूसरी ओर उस के हाथों को संभाले रहे और उस के हाथ १३ सूर्य्य के अस्त लों स्थिर रहे। और यहूसूअ ने अमालीक और उस के लोगों को खड्ग १४ की धार से जीत लिया। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि स्मरण के लिये पुस्तक में इसे लिख रख और यहूसूअ के कान में कह दे कि मैं अमालीक के स्मरण को स्वर्ग के नीचे से सर्वथा मिटा देऊंगा। और मूसा ने यज्ञवेदी बनाई १५ और उस का नाम यह रक्खा कि परमेश्वर मेरी ध्वजा। और कहा कि परमेश्वर ने १६ किरिया खाके कहा है कि मैं अमालीक के साथ पीढ़ी से पीढ़ी लों लड़ता रहूंगा॥

अठारहवां पर्ब्ब।

जब मिदियान के याजक मूसा के ससुर १ यितरू ने यह सब सुना कि ईश्वर ने मूसा और अपने लोग इसराएल के लिये क्या किया कि परमेश्वर इसराएल को मिस्र से बाहर लाया। तो यितरू मूसा के २ ससुर ने सफूर: मूसा की पत्नी को उस के पीछे कि उस ने उसे फिर भेजा था लिया। और उस के दो बेटों को जिन में से एक ३ का नाम गैरसुम इस लिये कि उस ने कहा कि मैं परदेश में परदेशी हूं। और ४ दूसरे का नाम इलिअजर क्योंकि मेरे पिता का ईश्वर मेरा सहायक है और उस ने मुझे फिरऊन के खड्ग से बचाया है। और मूसा का ससुर यितरू उस के ५ पुत्र और उस की पत्नी को लेके मूसा पास बन में आया जहां उस ने ईश्वर के पहाड़ पर डेरा किया था। और मूसा से ६ कहा कि मैं तेरा ससुर यितरू तेरी पत्नी और उस के दो पुत्र उस के संग तुझ पास आये हैं। तब मूसा अपने ससुर की ७ भेंट को निकला और उसे प्रणाम किया और उसे चूमा और आपुस में एक ने दूसरे का क्षेम कुशल पूछा और तंबू में आये। और सब जो परमेश्वर ने इस- ८ राएल के लिये फिरऊन और मिस्रियों से किया था उस समस्त कष्ट को जो मार्ग में उन पर पड़े थे और कि परमेश्वर ने उन्हें बचाया मूसा ने अपने ससुर यितरू

९ से वर्णन किया। और यितरू उस सब भलाई पर जिसे परमेश्वर ने इसराएल के लिये किई थी कि उस ने उसे मिस्र के हाथ से बचाया आनंदित हुआ।
१० और यितरू बोला कि परमेश्वर धन्य है जिस ने तुम्हें मिस्रियों के हाथ और फिरऊन के हाथ से बचाया जिस ने लोगों को मिस्रियों के बश से छुड़ाया।
११ अब मैं जानता हूं कि परमेश्वर सब देवों से बड़ा है क्योंकि जिस बात में वह अहंकार करते थे उस में वह उन पर
१२ प्रबल हुआ। और मूसा का ससुर यितरू चढ़ावा और बलिदान ईश्वर के लिये लाया और हारून और इसराएल के समस्त प्राचीन मूसा के ससुर के साथ रोटी खाने के लिये ईश्वर के आगे आये॥
१३ और दूसरे दिन यों हुआ कि मूसा लोगों का न्याय करने को बैठा और लोग मूसा के आगे बिहान से सांझ लों
१४ खड़े रहे। जब मूसा के ससुर ने सब कुछ जो वह लोगों के लिये करता था देखा तब उस ने कहा कि यह तू लोगों से क्या करता है तू क्यों आप अकेला बैठा है और सब लोग बिहान से सांझ
१५ लों तेरे आगे खड़े हैं। तब मूसा ने अपने ससुर से कहा कि यह इस लिये है कि लोग ईश्वर को ढूंढ़ने के लिये
१६ मुझ पास आते हैं। जब उन में कुछ विवाद होता है तब वे मेरे पास आते हैं और मैं मनुष्य में और उस के संगी के मध्य में न्याय करता हूं और मैं उन्हें ईश्वर की बिधि और उस की व्यवस्था
१७ से चिता देता हूं। तब मूसा के ससुर ने उस्से कहा कि तू अच्छा काम नहीं
१८ करता। तू निश्चय खोण हो जायगा तू और यह मंडली भी जो तेरे साथ है क्योंकि यह काम तुझ पर निपट भारी है यह तुझ से अकेले न बन पड़ेगा।
१९ अब मेरा कहा मान मैं तुझे मंत्र दूंगा और ईश्वर तेरे साथ रहे तू उन लोगों के पास ईश्वर के आगे हो और ईश्वर
२० के पास उन के बचन लाया कर। और तू व्यवहार और व्यवस्था की बातें उन्हें सिखा और वह मार्ग जिस पर चलना और वह काम जिसे करना उन्हें उचित
२१ है उन्हें बता। सो तू समस्त लोगों में से योग्य मनुष्य चुन ले जो ईश्वर से डरते हैं और सत्यबादी हों और लोभी न होवें और उन्हें सहस्रों और सैकड़ों और पचास पचास और दस दस पर आज्ञा-
२२ कारी कर। कि हर समय में उन लोगों का न्याय करें और ऐसा होगा कि वे हर एक बड़ा कार्य्य तुझ पास लावेंगे परन्तु हर एक छोटे कार्य्य का बिचार वह आप करेंगे यों तेरे लिये सहज हो जायगा और वे बोझ उठाने में तेरे साथी रहेंगे।
२३ यदि तू यह काम करे और ईश्वर तुझे आज्ञा करे तो तू सहि सकेगा और ये लोग भी अपने अपने स्थान पर कुशल से जायेंगे॥
२४ सो मूसा ने अपने ससुर का कहा सुना और जो उस ने कहा था उस ने सब किया और मूसा ने समस्त इसराएलियों में से योग्य मनुष्य चुने और उन्हें लोगों का प्रधान किया सहस्रों का प्रधान सैकड़ों का प्रधान पचास का प्रधान और दस दस का प्रधान।
२५ और वे हर समय में लोगों का न्याय करते थे
२६ कठिन कार्य्य मूसा पास लाते थे। परन्तु हर एक छोटी बात आप ही चुका लेते
२७ थे। फिर मूसा ने अपने ससुर को बिदा किया और वह अपने देश को चला गया॥

उन्नीसवां पर्ब्ब।

१ इसराएल के संतान मिस्र की भूमि से बाहर होके तीसरे मास के उसी दिन

२ सीना के बन में आये । और रफीदीम से चलके सीना के बन में आये और बन में डेरा किया और वहां इसराएल ने ३ पहाड़ के आगे तंबू खड़ा किया । तब मूसा ईश्वर पास चढ़ गया और परमेश्वर ने उसे पहाड़ पर से बुलाया और कहा कि तू यअकूब के घराने को यों कहियो और इसराएल के संतानों से यों ४ बोलियो । कि तुम ने देखा कि मैं ने मिस्रियों से क्या किया और तुम्हें गिद्ध के डैनों पर बैठाके तुम्हें अपने पास ले ५ आया । और अब यदि मेरे शब्द को निश्चय मानोगे और मेरी बाचा का पालन करोगे तो तुम समस्त लोगों से विशेष धनिक होओगे क्योंकि सारी ६ पृथिवी मेरी है । और तुम मेरे याजकमय राज्य और एक पवित्र जाति होओगे ये वह बातें हैं जो तू इसराएल के संतान से कहेगा ॥

७ तब मूसा आया और लोगों के प्राचीनों को बुलाया और उन के सन्मुख ये सारी बातें जो परमेश्वर ने उसे आज्ञा किई ८ यों कह सुनाईं । और सब लोगों ने एक साथ उत्तर देके कहा कि जो कुछ परमेश्वर ने कहा है सो हम करेंगे और मूसा ने लोगों का उत्तर परमेश्वर कने ले पहुंचाया ॥

९ और परमेश्वर ने मूसा से कहा देख मैं अंधियारे मेघ में तुझ पास आता हूं कि जब मैं तुझ से बातें करूं लोग सुनें और सदा लों तेरी प्रतीति करें और मूसा ने लोगों की बातें परमेश्वर से कहीं । १० और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि लोगों पास जा और आज कल में उन्हें पवित्र ११ कर और उन के कपड़े धुलवा । और तीसरे दिन सिद्ध रहें कि परमेश्वर तीसरे दिन सारे लोगों की दृष्टि में सीना के १२ पहाड़ पर उतरेगा । और तू लोगों के लिये चारों ओर आड़ बांधियो और कहियो कि आप से चौकस रहो पहाड़ पर न चढ़ो और उस के खूंट को न छूओ जो कोई पहाड़ को छूयेगा सो निश्चय १३ प्राण से मारा जायगा । कोई हाथ उसे न छूये नहीं तो वह निश्चय पत्थरवाह किया जायगा अथवा बाण से मारा जायगा चाहे पशु चाहे मनुष्य हो जीता न बचेगा जब तुरही अबेर लों बजा करे तो वे पहाड़ पर चढ़ें ॥

१४ तब मूसा पहाड़ पर से लोगों के पास उतरा और लोगों को पवित्र किया और १५ उन्हों ने अपने कपड़े धोये । और उस ने लोगों से कहा कि तीसरे दिन सिद्ध रहो स्त्रियों से अलग रहियो ॥

१६ और यों हुआ कि तीसरे दिन बिहान को मेघ गर्ज्जने लगे और बिजलियां चमकीं और पहाड़ पर काली घटा उमड़ी और तुरही का अति बड़ा शब्द हुआ यहां लों कि सब लोग छावनी में थर्थरा १७ उठे । और मूसा लोगों को तंबू के भीतर से बाहर लाया कि ईश्वर से भेंट करावे और वे पहाड़ की नीचाई में जा खड़े १८ हुए । और समस्त सीना पहाड़ धूआं से भर गया क्योंकि परमेश्वर लौर में होके उस पर उतरा और भट्ठी का सा धूआं उस पर से उठा और सारा पहाड़ अति १९ कांप गया । और जब तुरही का शब्द बढ़ता जाता था तब मूसा ने कहा और ईश्वर ने २० उसे शब्द से उत्तर दिया । और परमेश्वर सीना पहाड़ पर उतरा पहाड़ की चोटी पर और परमेश्वर ने पहाड़ की चोटी पर मूसा को बुलाया और मूसा चढ़ गया । २१ तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि उतर जा लोगों को चिता ऐसा न हो कि वे मेंड़ तोड़के परमेश्वर को देखने आवें २२ और बहुतेरे उन में नाश हो जावें । और याजक भी जो परमेश्वर के पास आवें

हैं अपने को पवित्र करें कहीं ऐसा न हो कि परमेश्वर उन पर चपेट करे।

२३ तब मूसा ने परमेश्वर से कहा कि लोग सीना पहाड़ पर आ नहीं सक्ते क्योंकि तू ने तो हमें चिता दिया है कि पहाड़ के आस पास बाड़ा बांधें और उसे पवित्र करें।

२४ तब परमेश्वर ने उस्से कहा कि चल नीचे जा और तू हारून समेत फिर ऊपर आ परन्तु याजक और लोग मेंड़ तोड़के परमेश्वर पास ऊपर न आवें न

२५ होवे कि वह उन पर चपेट करे। सो मूसा लोगों के पास नीचे उतरा और उन से कहा॥

बीसवां पर्ब्ब।

१ और ईश्वर ने ये सब बातें यह कहते हुए कहीं॥

२ कि परमेश्वर तेरा ईश्वर जो तुझे मिस्र की भूमि से बंधुआई के घर से

३ निकाल लाया मैं हूं। मेरे सन्मुख तेरे लिये दूसरा ईश्वर न होगा॥

४ तू अपने लिये खोदके किसी की मूर्त्ति और किसी बस्तु की प्रतिमा जो ऊपर स्वर्ग पर और जो नीचे पृथिवी पर और जो जल में जो पृथिवी के नीचे है मत

५ बना। तू उन को प्रणाम मत कर और न उन की सेवा कर क्योंकि मैं परमेश्वर तेरा ईश्वर ज्वलित सर्व्वशक्तिमान हूं पितरों के अपराध का दण्ड उन के पुत्रों को जो मेरा बैर रखते हैं उन की तीसरी

६ और चौथी पीढ़ी लों देवैया हूं। और उन में से सहस्रों पर जो मुझे प्यार करते हैं और मेरी आज्ञाओं को पालन करते हैं दया करता हूं॥

७ परमेश्वर अपने ईश्वर का नाम अकारथ मत ले क्योंकि परमेश्वर उसे जो उस का नाम अकारथ लेता है निर्दोष न ठहरावेगा॥

८ विश्राम के दिन को उसे पवित्र रखने

९ के लिये स्मरण करके छः दिन लों तू परिश्रम कर और अपना समस्त कार्य्य

१० कर। परन्तु सातवां दिन परमेश्वर तेरे ईश्वर का विश्राम है उस में तू कुछ कार्य्य न करेगा न तू न तेरा पुत्र न तेरी पुत्री न तेरा दास न तेरी दासी न तेरे पशु न तेरा पाहुन जो तेरे फाटकों के

११ भीतर है। क्योंकि परमेश्वर ने छः दिन में स्वर्ग और पृथिवी और समुद्र और सब कुछ जो उन में है बनाया और सातवें दिन विश्राम किया इस कारण परमेश्वर ने विश्राम दिन को आशीष दिई और उसे पवित्र ठहराया॥

१२ अपने पिता और अपनी माता का आदर कर जिसतें तेरी बय उस भूमि पर जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है अधिक होवे॥

१३ हत्या मत कर॥

१४ परस्त्रीगमन मत कर॥

१५ चोरी मत कर॥

१६ अपने परोसी पर झूठी साक्षी मत दे॥

१७ अपने परोसी के घर का लालच मत कर अपने परोसी की स्त्री और उस के दास और उस की दासी और उस के बैल और उस के गदहे और किसी बस्तु का जो तेरे परोसी की है लालच मत कर॥

१८ और सब लोग गर्ज्जना और बिजली का चमकना और तुरही का शब्द और पर्वत से धूआं उठना देखते थे और जब लोगों ने देखा तो हटे और दूर जा खड़े

१९ रहे। तब उन्हों ने मूसा से कहा कि तूही हम से बोल और हम सुनें परन्तु ईश्वर हम से न बोले न हो कि हम

२० मर जायें। तब मूसा ने लोगों से कहा कि भय मत करो इस लिये कि ईश्वर आया है कि तुम्हें परखे और जिसतें उस का भय तुम्हारे सन्मुख प्रगट होय जिसतें तुम पाप न करो॥

२१ तब लोग दूर खड़े रहे और मूसा उस गाढ़े अंधकार के समीप गया जहां ईश्वर था॥

२२ और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि तू इसराएल के संतान से यों कह कि तुम ने देखा कि मैं ने स्वर्ग से

२३ तुम्हारे संग बातें किईं। तुम मेरे सन्मुख चांदी का ईश्वर और सोने का ईश्वर मत बनाओ अपने लिये उन्हें मत बनाओ।

२४ तू मेरे लिये मट्टी की यज्ञबेदी बना और उस पर अपने चढ़ावे और अपनी कुशल की भेंट अर्थात् अपनी भेड़ बकरी और अपनी गाय बैल चढ़ा हर स्थान में जहां अपना नाम प्रगट करूंगा वहां मैं तुझ पास आऊंगा और तुझे

२५ दूंगा। और यदि तू मेरे लिये यज्ञबेदी बनावे तो गढ़े हुए पत्थर से मत बना क्योंकि यदि तू उस पर अपना हाथियार उठावे तो उसे अपवित्र करेगा।

२६ और तू मेरी यज्ञबेदी पर सीढ़ी से मत चढ़ जिसतें तेरा नंगापन उस पर प्रगट न होवे॥

।

१ अब वे बिचार जिन्हें तू उन के आगे धरेगा ये हैं॥

२ कि यदि तू इब्री दास को मोल लेवे तो वह छः बरस सेवा करेगा और सातवें

३ में सेंत से छोड़ दिया जायगा। यदि वह अकेला आया तो अकेला जायगा यदि वह बिवाहित था तो उस की पत्नी

४ उस के साथ जायगी। यदि उस के स्वामी ने उसे पत्नी दिई है और उस की पत्नी उस्से बेटे और बेटियां जनी तो उस की पत्नी और उस के बालक उस के स्वामी के होंगे और वह अकेला चला

५ जायगा। और यदि वह दास खोलके कहे कि मैं अपने स्वामी अपनी पत्नी को और अपने बालकों को प्यार करता हूं

६ मैं निर्बंध न हूंगा। तो उस का स्वामी उसे न्यायियों के पास ले जायगा और उसे द्वार पर अथवा द्वार की चौखट पर लावेगा और उस का स्वामी सुतारी से उस का कान छेदेगा और वह सदा उस की सेवा करेगा॥

७ और यदि कोई मनुष्य अपनी कन्या को बेचे जिसतें वह दासी हो तो वह दासों की नाईं बाहर न जा सकेगी।

८ यदि वह अपने स्वामी की दृष्टि में जिस ने उस्से बिवाह किया बुरी होय तब वह उसे छुड़वावे परन्तु उसे सामर्थ्य न होगा कि किसी अन्यदेशी के हाथ बेच डाले

९ क्योंकि उस ने उस्से छल किया। और यदि वह उसे अपने बेटे से ब्याह देवे तो वह उस्से बेटियों का व्यवहार करे।

१० यदि वह अपने लिये दूसरी को लेवे तो उस का अन्न उस का बस्त्र और उस के

११ बिवाह का व्यवहार न घटावे। और यदि वह ये तीन उस्से न करे तो वह सेंत से बिना दाम दिये चली जाय॥

१२ जो कोई किसी मनुष्य को मारे और वह मर जाय वह निश्चय घात किया

१३ जाय। और यदि वह मनुष्य घात में न लगा हो परन्तु ईश्वर ने उस के हाथ में सौंप दिया हो तब मैं तुझे उस के भागने

१४ का स्थान बता दूंगा। परन्तु यदि कोई मनुष्य अपने परोसी पर साहस से चढ़ आवे जिसतें उसे छल से मारे तो उसे तू मेरी यज्ञबेदी से ले जिसतें वह मारा

१५ जाय। और जो अपने पिता अथवा अपनी माता को मारे वह निश्चय घात किया जायगा॥

१६ और जो मनुष्य को चुरावे और उसे बेच डाले अथवा वह उस के हाथ में पाया जाय तो वह निश्चय घात किया जायगा॥

१७ और वह जो अपने पिता अथवा

अपनी माता पर धिक्कार करे निश्चय घात किया जायगा ॥

१८ और यदि दो मनुष्य झगड़ें और एक दूसरे को पत्थर से अथवा मुक्का मारे और वह न मरे परन्तु बिछौने पर पड़ा १९ रहे । तो यदि वह उठ खड़ा होय और लाठी लेके चले तो जिस ने मारा सो निर्दोष ठहरेगा केवल उस के समय की घटी के लिये भर देवे और चंगा करावे ॥

२० और यदि कोई अपने दास अथवा अपनी दासी को छड़ी मारे और वह मार खाती हुई मर जाय तो निश्चय उस का २१ पलटा लिया जायगा । तथापि यदि वह एक दिन अथवा दो दिन जीवे तो उसे दण्ड न दिया जावे इस लिये कि वह उस का धन है ॥

२२ और यदि मनुष्य झगड़ें और गर्भिणी को दुःख पहुंचावें ऐसा कि उस का गर्भ-पात हो जाय परन्तु वह आप न मरे तो जिस रीति का दण्ड उस पत्नी का पति कहे दिया जावे और न्यायियों के २३ बिचार के समान उसे डांड़ देवे । और यदि उसे कुछ हानि होवे तो तू प्राण २४ की संती प्राण दे । आंख की संती आंख दांत की संती दांत हाथ की संती हाथ २५ पांव की संती पांव । जलाने की संती जलाना घाव की संती घाव चोट की संती चोट ॥

२६ और यदि कोई अपने दास अथवा अपनी दासी की आंख में मारे कि उस की आंख फूट जाय तो उस की आंख २७ की संती में उसे छोड़ देवे । और यदि वह अपने दास का अथवा अपनी दासी का दांत तोड़े तो उस के दांत की संती उसे छोड़ देवे ॥

२८ और यदि मनुष्य को अथवा स्त्री को बैल सींग मारे ऐसा कि वह मर जाय तो वह बैल पत्थरवाह किया जाय और उस का मांस खाया न जावे परन्तु बैल का स्वामी निर्दोष है । और यदि वह २९ बैल आगे से सींग मारने की बान रखता था और उस के स्वामी को संदेश दिया गया और उस ने उसे बांध न रक्खा परन्तु उस ने पुरुष अथवा स्त्री को मार डाला तो बैल पत्थरवाह किया जाय और उस का स्वामी भी घात किया जाय । यदि उस पर डांड़ ठहराया जाय ३० तो अपने प्राण के प्रायश्चित्त के लिये जो उस के लिये ठहराया गया हो वह देवे । चाहे उस ने सींग से पुत्र को ३१ मारा हो अथवा पुत्री को इसी आज्ञा के समान उस के लिये बिचार किया जावे । यदि किसी के दास अथवा ३२ को बैल सींग मार बैठे तो वह उस के स्वामी को तीस शैकल रूपा देवे और वह बैल पत्थरवाह किया जाय ॥

और यदि कोई गड़हा खोले अथवा ३३ खोदे और उस का मुंह न ढांपे और बैल अथवा गदहा उस में गिरे । तो उस ३४ गड़हे का स्वामी उसे भर देवे और उन के स्वामी को दाम दे और लोथ उस की होगी ॥

और यदि किसी का बैल दूसरे के ३५ बैल को सतावे ऐसा कि वह मर जाय तो वह जीते बैल को बेचे और उस के दाम को आधोआध आपुस में बांट लेवें और वह मरा हुआ भी उन में आधो-आध बांटा जाय । और यदि जाना ३६ जाय कि उस बैल को सींग मार बैठने की बान थी और उस के स्वामी ने उसे बांध न रक्खा तो वह निश्चय बैल की संती बैल देवे और मरा हुआ उस का होगा ॥

यदि कोई बैल अथवा भेड़ चुरावे ३७ और उसे मारे अथवा बेचे तो वह एक बैल के पांच बैल और एक भेड़ की चार भेड़ देगा ॥

बाईसवां पर्व्व ।

१ यदि चोर सेंध मारते हुए पाया जाय और कोई उसे मार डाले तो उस को २ संती लोहू न बहाया जायगा । यदि सूर्य्य उस पर उदय होवे तो उस को संती लोहू बहाया जायगा उचित था कि वह उसे भर देता यदि वह कंगाल हो तो अपनी चोरी के लिये बेचा ३ जायगा । यदि चोरी की वस्तु निश्चय उस के हाथ में जीवत पाई जाय चाहे बैल हो चाहे गदहा चाहे भेड़ बकरी तो वह दूना देगा ॥

४ यदि कोई खेत अथवा दाख की बारी खिलावे और अपने पशु उस में छोड़े और दूसरे के खेत में चरावे अपना अच्छे से अच्छा खेत और से सुंदर दाख की बारी उस की संती ५ देगा । यदि आग फूट निकले और कांटों में जा लगे ऐसा कि अनाज के ढेर अथवा बढ़ा हुआ अन्न अथवा खेत जल जाय तो जिस ने आग बारी निश्चय वह भर देगा ॥

६ यदि कोई अपने परोसी को रूपा अथवा पात्र रखने को सौंपे और उस के घर से चोरी जाय तो जब वह चोर ७ हाथ लगे तो वह दूना भर देगा । यदि चोर पकड़ा न जाय तो उस घर का स्वामी न्यायियों के आगे लाया जाय जिसतें जाना जाय कि उस ने अपने परोसी की संपत्ति पर अपना हाथ ८ बढ़ाया कि नहीं । समस्त प्रकार के अपराध में चाहे बैल चाहे गदहे चाहे भेड़ चाहे कपड़े चाहे किसी खोई हुई वस्तु को जिसे दूसरा अपनी कहता है दोनों की बात न्यायियों के पास लाई जावे और जिस को न्यायी दोषी ठहरावे वह अपने परोसी को दूना देगा ॥

९ यदि कोई अपने परोसी पास गदहा अथवा बैल अथवा भेड़ अथवा कोई पशु थाती रक्खे और वह मर जाय अथवा अंग भंग हो जाय अथवा हांका जाय और कोई न देखे । तो उन दोनों १० के मध्य में परमेश्वर की किरिया लिई जाय कि उस ने अपने परोसी की संपत्ति में अपना हाथ नहीं बढ़ाया और उस का स्वामी मान ले तब वह उसे भर न देगा । और यदि वह उस के पास से ११ चुराया जाय तो वह उस के स्वामी को भर दे । यदि वह फाड़ा जाय तो वह १२ उसे साक्षी के लिये लावे और भर न देगा ॥

और यदि कोई मनुष्य अपने परोसी १३ से कुछ भाड़ा लेवे और वह अंग भंग हो जाय अथवा मर जाय और स्वामी उस के साथ न था तो वह निश्चय उसे भर देगा । यदि उस का स्वामी उस के १४ साथ था तो वह भर न देगा यदि भाड़े का होय तो उस के भाड़े के लिये जायगा ॥

और यदि कोई किसी कन्या को १५ फुसलावे जिस की बचनदत्त न हुई और उस के संग शयन करे वह अवश्य उसे दैजा देके पत्नी करे । यदि उस का पिता १६ उस के देने में सर्व्वथा नाह करे तो वह कुंवारियों के दान के समान उसे दैजा देगा ॥

तू टोनहिन को जीने मत दे ॥ १७

जो कोई पशु से रति करे निश्चय १८ घात किया जायगा ॥

जो कोई परमेश्वर को छोड़ किसी १९ देवता को बलिदान देगा वह निश्चय नाश किया जायगा ॥

और परदेशी को मत खिजा और उसे २० मत सता इस लिये कि तुम मिस्र के देश में परदेशी थे । किसी बिधवा को २१ अथवा अनाथ लड़के को दुःख मत देओ ।

२२ यदि तू उसे किसी रीति से दुःख देवे और वह मेरी दोहाई देवे तो मैं निश्चय
२३ उस का चिल्लाना सुनूंगा । और मेरा क्रोध भड़केगा और मैं तुम्हें खड्ग से मारूंगा और तुम्हारी पत्नियां बिधवा और तुम्हारे पुत्र अनाथ हो जायेंगे ॥

२४ यदि तू मेरे लोग में के कंगाल को कुछ ऋण देवे तो उस पर ब्याज-ग्राहक के समान मत हो उस्से ब्याज
२५ मत ले । यदि तू अपने परोसी का वस्त्र बंधक रक्खे तो चाहिये कि तू सूर्य्य
२६ अस्त होते हुए उसे पहुंचा दे । क्योंकि उस का केवल वही ओढ़ना है वह उस की देह का वस्त्र है जिस में वह सो रहता है और यों होगा कि जब वह मेरे आगे दोहाई देगा तब मैं सुनूंगा क्योंकि मैं दयाल हूं ॥

२७ तू अध्यक्षों को दुर्वचन मत कह और अपने लोग के प्राचीन को स्राप मत दे ॥

२८ अपने पक्के फलों की बढ़ती में से और अपने दाखरस में से देने में बिलंब मत कर अपने पुत्रों में से पहिलौठा
२९ मुझे दे । ऐसा ही तू अपने बैलों से और अपने भेड़ों से कीजियो सात दिन लों वह अपनी मा के साथ रहे आठवें दिन उसे मुझे दीजियो ॥

३० और तुम मेरे लिये पवित्र मनुष्य होओगे और जो पशु खेत में फाड़ा जाय उस का मांस मत खाइयो तुम उसे कुत्तों को दीजियो ॥

तेईसवां पर्व्व ।

१ तू मिथ्या संदेश मत फैलाइयो अधर्म की साक्षी में दुष्टों का साथी मत हो ।
२ बुराई करने के लिये मंडली का पीछा मत कर और तू किसी झगड़े में बहुतों की ओर होके अन्याय का उत्तर मत
३ दीजियो । और न कंगाल पर उस के व्यवहार पद में दृष्टि कीजियो ॥

४ यदि तू अपने बैरी के बैल अथवा उस के गदहे को बहकते देखे तो उसे
५ अवश्य उस पास पहुंचाइयो । यदि तू अपने बैरी के गदहे को देखे कि अपने बोझ के नीचे बैठ गया क्या उस की सहाय न करेगा तू निश्चय उस की सहाय कीजियो ॥

६ तू अपने कंगाल के व्यवहार पद में
७ न्याय से अलग मत रहियो । झूठी बात से दूर रहियो और निर्दोषी और धर्मी को घात मत कीजियो क्योंकि मैं दुष्ट को निर्दोष न ठहराऊंगा ॥

८ और तू अकोर मत लेना क्योंकि अकोर दृष्टिमानों को अंधा करती है और धर्म्मियों के बचन को फेर देती है ॥

९ और बिदेशी पर अंधेर मत कीजियो क्योंकि तुम परदेशी के मन को जानते हो इस लिये कि तुम आप भी मिस्र के देश में परदेशी थे ॥

१० और अपनी भूमि में छः बरस बो
११ और उस के फल एकट्ठे कर । पर सातवें में उसे पड़ी रहने दे और छोड़ दे जिसतें तेरे लोग के कंगाल उसे खावें और जो उन से बचे खेत के पशु चरें इसी रीति अपनी दाख और जलपाई की बारी से व्यवहार कीजियो ॥

१२ छः दिन अपना काम काज करना और सातवें दिन बिश्राम कीजियो जिसतें तेरे बैल और तेरे गदहे चैन करें और तेरी दासियों के बेटे और परदेशी
१३ सुस्तावें । और सब बात में जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दिई है चौकस रहो और उपरी देवतों का नाम लों मत लो वह तेरे मुंह से सुना न जाय ॥

१४ तू बरस दिन में तीन बार मेरे लिये
१५ पर्व्व मान । तू अखमीरी रोटी का पर्व्व मान सात दिन लों जैसा मैं ने तुझे आज्ञा किई है अखमीरी रोटी खा

आबीब के मास में क्योंकि उस में तू मिस्र से निकला और कोई मेरे आगे
१६ छूछा न आवे। और लवने का पर्व्व तेरे परिश्रम के प्रथम ही फल जो तू खेत में बोवेगा और एकट्ठा करने का पर्व्व बरस के अंत जब तू खेत से अपने परिश्रम के
१७ फल एकट्ठा कर ले। तेरे समस्त पुरुष बरस बरस तीन बार प्रभु परमेश्वर के सम्मुख होवें॥
१८ तू मेरे बलिदान का लोहू खमीरी रोटी के साथ मत चढ़ा और मेरे बलि की चिकनाई बिहान लों रहने न पावे।
१९ अपनी भूमि के पहिले फलों के पहिले को परमेश्वर अपने ईश्वर के घर में ला तू बकरी का मेम्ना उस की माता के दूध में मत सिझा॥
२० देख मैं एक दूत तेरे आगे भेजता हूं कि मार्ग में तेरी रक्षा करे और तुझे उस स्थान में जो मैं ने सिद्ध किया है
२१ ले जाय। उस्से चौकस रह और उस का कहा मान उसे मत खिजा क्योंकि वह तुम्हारे अपराध को क्षमा न करेगा
२२ क्योंकि मेरा नाम उस में है। क्योंकि यदि तू सचमुच उस का कहा माने और सब जो मैं कहता हूं करे तो मैं तेरे शत्रुन का शत्रु और तेरे बैरियों का बैरी
२३ हूंगा। क्योंकि मेरा दूत तेरे आगे आगे चलेगा और तुझे अमूरियों और हित्तियों और फरिज्जियों और कनआनियों हवियों और यबूसियों के देश में लावेगा और
२४ मैं उन्हें नाश करूंगा। तू उन के देवतों के आगे मत झुकियो और न उन की सेवा करना और न उन के ऐसा कार्य्य करना परन्तु उन्हें ढा दे और उन की
२५ मूर्त्तिन को तोड़ डाल। और परमेश्वर अपने ईश्वर की सेवा करो और वह तुम्हारे अन्न जल में आशीष देगा और मैं तुम्हारे बीच में से रोग उठा लूंगा।
२६ तेरे देश में कोई गर्भपात और बांझ न रहेगी मैं तेरे दिनों की गिनती को पूरा
२७ करूंगा। मैं अपने भय को तेरे आगे भेजूंगा और मैं उन समस्त लोगों को जिन पास तू आवेगा नाश करूंगा और मैं ऐसा करूंगा कि तेरे बैरी तेरे आगे
२८ पीठ फेर देंगे। और मैं तेरे आगे बर्रय को भेजूंगा और वह हवी और कनआनी और हित्ती को तेरे साम्ने से भगावेगी।
२९ मैं उन्हें एक ही बरस में तेरे आगे से दूर न करूंगा ऐसा न हो कि देश उजाड़ होवे और बन के पशु तेरे बिरोध में बढ़
३० जायें। मैं उन्हें थोड़े थोड़े करके तेरे आगे से दूर करूंगा यहां लों कि तू बढ़ जाय और देश का अधिकारी हो जाय॥
३१ और लाल समुद्र से लेके फिलिस्तियों के समुद्र लों और बन से नदी लों तेरा सिवाना बांधूंगा क्योंकि मैं देश के बासियों को तेरे बश में करूंगा और तू उन्हें
३२ अपने आगे से निकाल देगा। तू न उन से
३३ न उन के देवतों से बाचा बांधना। वे तेरे देश में न रहेंगे ऐसा न हो कि वे मेरे बिरोध में तुझ से पाप करावें क्योंकि यदि तू उन के देवों की सेवा करे तो यह तेरे लिये फंदा होगा॥

चौबीसवां पर्व्व

१ और उस ने मूसा से कहा कि परमेश्वर पास चढ़ आ तू और हारून नदब और अबिहू और इसराएल के प्राचीनों में से सत्तर मनुष्य और तुम दूर से दण्डवत
२ करो। और मूसा अकेला परमेश्वर के पास आवगा पर वे पास न आवें और लोग उस के साथ न चढ़ आयें॥
३ और मूसा ने आके परमेश्वर की सारी बातें और न्याय लोगों से कहे और सारे लोगों ने एक शब्द से उत्तर देके कहा कि सारी बातें जो परमेश्वर ने कही हैं

४ हम करेंगे। और मूसा ने परमेश्वर की सारी बातें लिखीं और बिहान को तड़के उठा और पहाड़ के नीचे एक बेदी बनाई और इसराएल की बारह गोष्ठी के समान
५ बारह खंभे खड़े किये। और उस ने इसराएल के संतानों के तरुण मनुष्यों को भेजा और उन्हों ने होम का और कुशल का बलिदान बैलों से परमेश्वर
६ के लिये चढ़ाया। और मूसा ने आधा लोहू लेके पात्रों में रक्खा और आधा
७ लोहू बेदी पर छिड़का। फिर उस ने नियम की पत्री लिई और लोगों को पढ़ सुनाई और वे बोले कि सब कुछ जो परमेश्वर ने कहा है हम करेंगे और
८ आधीन रहेंगे। और मूसा ने उस लोहू को लेके लोगों पर छिड़का और कहा कि यह लोहू उस नियम का है जिसे परमेश्वर ने इन बातों के कारण तुम्हारे साथ किया है॥

९ तब मूसा और हारून नदब और अबिहू और इसराएल के सत्तर प्राचीन
१० ऊपर गये। और उन्हों ने इसराएल के ईश्वर को देखा और उस के चरणों के नीचे जैसे नीलमणि की गच के कार्य्य
११ स्वर्ग की आकृति की नाईं थे। और इसराएल के संतानों के अध्यक्षों पर उस ने अपना हाथ न रक्खा और उन्हों ने ईश्वर को देखा और खाया पीया॥

१२ और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि पहाड़ पर मुझ पास आ और वहां रह और मैं तुझे पत्थर की पटियां और व्यवस्था और आज्ञा जो मैं ने लिखी है
१३ दूंगा जिसतें तू उन्हें सिखावे। और मूसा और उस का सेवक यहूसूअ उठे और मूसा ईश्वर के पहाड़ पर गया।
१४ और उस ने प्राचीनों से कहा कि हमारे लिये यहां ठहरो जब लों तुम पास हम फिर न आवें और देखो कि हारून और हूर तुम्हारे साथ हैं यदि किसी को कुछ काम होवे तो उन पास जाय॥

१५ तब मूसा पहाड़ पर गया और एक
१६ मेघ ने पहाड़ को ढांप लिया। और परमेश्वर का बिभव सीना के पहाड़ पर ठहरा और मेघ उसे छः दिन लों ढांपे रहा और सातवें दिन उस ने मेघ के
१७ मध्य में से मूसा को बुलाया। और परमेश्वर का बिभव इसराएल के संतान की दृष्टि में पहाड़ की चोटी पर धधकती हुई आग की नाईं देख
१८ पड़ता था। और मूसा मेघ के मध्य में चला गया और पहाड़ पर चढ़ गया और मूसा पहाड़ पर चालीस दिन रात रहा॥

पचीसवां पर्ब्ब

१ परमेश्वर ने मूसा से कहा।
२ कि इसराएल के संतान से कह कि वे मेरे लिये भेंट लेवें हर एक से जो अपनी इच्छा और अपने मन से मुझे देवे
३ तुम मेरी भेंट ले लीजियो। और भेंट जो तुम उन से लेओगे सो ये हैं सोना
४ और रूपा और पीतल। और नीला और बैंजनी और लाल और झीना कपड़ा और
५ बकरी के रोम। और मेंढ़ों का रंगा हुआ लाल चमड़ा और तुखस की खालें
६ और शमशाद की लकड़ी। दीपक के लिये तेल मलने के तेल के लिये और
७ सुगंध धूप के लिये सुगंध द्रव्य। एफोद के लिये और चपरास के लिये सूर्य्यकांत
८ मणि और जड़ने के मणि। और वे मेरे लिये एक पवित्र स्थान बनावें और
९ मैं उन के मध्य में बास करूंगा। तंबू और उस के समस्त पात्रों को जैसा मैं तुझे दिखाऊं वैसा ही बनाइयो॥

१० और शमशाद की लकड़ी की एक मंजूषा बनावें जिस की लंबाई अढ़ाई हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ और ऊंचाई

११ डेढ़ हाथ होवे। और तू उस के भीतर और बाहर निर्म्मल सोना मढ़ियो और उस के ऊपर आस पास सोने के कलश १२ बनाइयो। और उस के लिये सोने के चार कड़े ढालके उस के चारों कोनों पर दो कड़े एक अलंग और दो कड़े १३ दूसरी अलंग लगाइयो। और शमशाद की लकड़ी के बहंगार बनाइयो और उन १४ पर सोना मढ़ियो। उस मंजूषा के अलंग अलंग के कड़े में उन बहंगारों को डाल दीजियो जिसतें उन से मंजूषा उठाई १५ जाय। मंजूषा के कड़ों में बहंगार डाले १६ जायें वे उस्से अलग न हों। और तू उस साक्षी को जो मैं तुझे देऊंगा उस मंजूषा में रखियो॥

१७ और तू निर्म्मल सोने का एक ढकना बनाइयो जिस की लंबाई अढ़ाई हाथ १८ और चौड़ाई डेढ़ हाथ होवे। और पीटे हुए सोने के दो करोबी उस के १९ ढकने के दोनों खूंटों में बनाइयो। और एक करोबी एक खूंट में और दूसरा करोबी दूसरे खूंट में ढकने से उस के दोनों खूंट में करोबियों को बनाइयो। २० और वे करोबी पर फैलाये हुए हों ऐसे कि ढकना उन के पंखों के नीचे ढंप जाय और उन के मुंह आम्ने साम्ने ढकने की २१ ओर होवें। और तू उस ढकने को उस मंजूषा के ऊपर रखियो और वह साक्षी जो मैं तुझे देऊं उस मंजूषा में रखियो। २२ और वहां मैं तुझ से भेंट करूंगा और मैं ढकने के ऊपर से दोनों करोबियों के मध्य में से जो साक्षी की मंजूषा के ऊपर होंगे उन सब बस्तुन के कारण जो मैं इसराएल के संतानों के लिये तुझे आज्ञा करूंगा तुझ से बातचीत करूंगा॥

२३ और तू शमशाद की लकड़ी का दो हाथ लंबा और एक हाथ चौड़ा और २४ डेढ़ हाथ ऊंचा मंच बनाइयो। और उसे निर्म्मल सोने से मढ़ियो और उस पर चारों ओर सोने का एक कलश बनाइयो। और उस के लिये चार अंगुल झालर २५ चारों ओर बनाइयो और उस झालर के चारों ओर सोने के मुकुट बनाइयो। और उस के लिये सोने के चार कड़े २६ बनाइयो और उस के चार पायों के चार कोनों में लगाइयो। झालर के आगे २७ कड़े बहंगार के कारण हों कि मंच उठाया जाय। और तू बहंगार शमशाद २८ की लकड़ी का बनाना और उन्हें सोने से मढ़ना कि मंच उन से उठाया जाय। और तू उस के बरतन और उस के कर- २९ छुल और उस के पात्र ढकने और उस के उंडेलने के कटोरे जिन से उंडेला जाय बना तू उन्हें निर्म्मल सोने से बना। और मंच पर भेंट की रोटियां मेरे सन्मुख ३० सदा रखियो॥

और तू दीपक का एक झाड़ निर्म्मल ३१ सोने का बना पीटे हुए कार्य्य का झाड़ बने और उस की डंडी और उस की डालियां उस की कली उस के फल और उस के फूल एक ही के होवें। और छः ३२ डालियां उस की अलंगों से निकलें एक अलंग से तीन दूसरी अलंग से तीन हों। तीन कली बदामी एक डाली में फूल ३३ फल के साथ हों और तीन कली बदामी दूसरी डाली में अपने फूल फल के साथ हों इसी रीति से छः डालियों में जो दीअट से निकली हुई हों। और दीअट ३४ में चार कली बदामी उस के फूल फल के साथ हों। और एक एक फल उस की ३५ दो दो डालियों के नीचे होवे और छः डालियां जो दीअट से निकली हैं उन के नीचे ऐसी ही हों। उन के फल और ३६ उन की डालियां उसी से हों वह सब के सब गढ़े हुए निर्म्मल सोने के हों। और तू उस के सात दीपक बना और ३७

उस के दीपक जला जिसतें उस के सन्मुख
३८ उंजियाला होवे। और तू उस की कतरनी
और उस के चिमटा निर्म्मल सोने के
३९ बना। वह उसे इन समस्त पात्र समेत
मन सवा एक निर्म्मल सोने से बनावे।
४० और चौकस हो कि जैसा तुझे पहाड़
पर दिखाया गया तू उसी डौल का बना॥

छब्बीसवां पर्व्व।

१ और तू बटे हुए झीने सूती और नीले
और बैंजनी और लाल कपड़े के दस
ओटों का तंबू बना तू उन्हें चित्रकारी
के कार्य्य से करोबियों के साथ बना।
२ हर एक ओट की लंबाई अट्ठाईस हाथ
और हर एक ओट की चौड़ाई चार हाथ
की हो हर एक ओट एक ही नाप की
३ हो। पांचों ओट एक दूसरे से जोड़ी
हुई हो और पांच एक दूसरे से जोड़ी
४ हुई हो। और एक ओट के अंचल में
मिलाने के खूंट में नीले तुकमे बना और
ऐसे ही दूसरी ओट के अंत खूंट में
५ मिलाने की ओर बना। एक ओट में
पचास तुकमे बना और पचास तुकमे
दूसरी ओट के मिलाने के खूंट में बना
जिसतें तुकमे एक दूसरे में जुट जावें।
६ और सोने की पचास घुण्डी बना और
उन्हीं घुण्डियों से ओट को जोड़ जिसतें
एक तंबू हो जाय॥

७ और बकरी के बालों की ओट बना
जिसतें तंबू के लिये ढांपन हो ग्यारह
८ ओटें तू बना। एक ओट की लंबाई
तीस हाथ और एक ओट की चौड़ाई
चार हाथ होय ग्यारहों ओट एक ही
९ नाप की हों। और पांच ओट को अलग
जोड़ और छः ओट को अलग और
छठवीं ओट को तंबू के साम्ने दोहराव।
और पचास तुकमे एक ओट के खूंट
में जो अंत के जोड़ में है और पचास
तुकमे दूसरी ओट के जोड़ में बना।
११ और पीतल की पचास घुण्डियां बना
और घुण्डियों को तुकमों में डाल
और तंबू को मिला जिसतें एक होवे।
१२ और तंबू की ओटों के बचे हुए को आधी
ओट जो बची हुई है तंबू के पिछली
ओर लटकी रहे। और तंबू के ओटों १३
की लंबाई में जो बचा हुआ हाथ भर
इधर और हाथ भर उधर है वह तंबू
के अलंगों पर इधर उधर लटकाया
जायगा जिसतें उसे ढांपे॥

१४ और तंबू के लिये एक घटाटोप
मेंढ़ों के लाल रंगे हुए चमड़ों से और
एक घटाटोप उस के ऊपर तुखस के
चमड़ों का बना॥

१५ और तंबू के लिये शमशाद की लकड़ी
१६ से खड़े पाट बना। हर एक पाट की
लंबाई दस हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ
१७ होवे। और हर एक पाट में दो दो
चूल हों कि एक दूसरे में किया जाय
और यों तंबू के समस्त पाटों में कर॥

१८ और तंबू के लिये दक्खिन की ओर
१९ बीस पाट बना। और बीस पाटों के
नीचे चांदी के चालीस पाए दो दो पाए
हर एक पाट के नीचे उस की दोनों
चूलों के लिये बना॥

२० और तंबू की दूसरी ओर के लिये
२१ जो उत्तर की ओर है बीस पाट। और
उन के लिये चांदी के चालीस पाए एक
पाट के नीचे दो पाए और दूसरे पाट
के लिये दो पाए बना॥

२२ और तंबू की पश्चिम ओर छः पाट
२३ बना। और दो पाट तंबू के कोनों के लिये
२४ दोनों ओर बना। और वे नीचे से मिलाये
जावें और ऊपर से एक कड़ी में जोड़े जावें
ऐसा ही दोनों कोनों के लिये होय।
२५ सो आठ पाट और उन के सोलह चांदी
के पाए होंगे दो पाए एक पाट के नीचे
और दो पाए दूसरे पाट के नीचे॥

२६ और तू शमशाद की लकड़ी के अड़ंगे बना तंबू के एक अलंग के पाट के लिये २७ पांच । और पांच अड़ंगे तंबू की दूसरी ओर के पाट के लिये और पांच अड़ंगे तंबू के अलंग के पाटों के लिये पश्चिम २८ के दोनों अलंग के लिये । और पाटों के मध्य के बीच का अड़ंगा एक ओर २९ से दूसरी ओर लों पहुंचे । और पाटों को सोने से मढ़ और अड़ंगों के लिये सोने के कड़े बना और अड़ंगों को सोने से मढ़ ॥

३० और तंबू को जैसा कि मैं ने तुझे पहाड़ पर दिखाया है वैसा ही खड़ा कर ॥

३१ और बटे हुए झीने बूटे काढ़े हुए सूती कपड़े से नीला और बैंजनी और ३२ लाल घूंघट करोबों समेत बना । और उसे सोने से मढ़े हुए शमशाद के चार खंभे पर लटका उन के सोने के अंकुरे चांदी की चार चूलों पर होवें । ३३ और घूंघट को घुण्डों के नीचे लटका जिसतें तू घूंघट के भीतर साक्षी की मंजूषा लावे और वह घूंघट पवित्र और महापवित्र स्थान में बिभाग करेगा । ३४ और ढकना साक्षी की मंजूषा पर महा- ३५ पवित्र स्थान में रख । और मंच को घूंघट के बाहर रख और दीअट को मंच के सन्मुख तंबू की एक ओर दक्षिण अलंग और मंच को उत्तर अलंग रख ॥

३६ और तंबू के द्वार के लिये नीला और बैंजनी और लाल और बटे हुए झीने वस्त्र से बूटा काढ़ी हुई एक ओट बना ३७ और ओट के लिये शमशाद के पांच खंभे बना और उन्हें सोने से मढ़ उन के अंकुरे सोने के हों और तू उन के लिये पीतल के पांच पाए ढालके बना ॥

सत्ताईसवां पर्ब्ब

१ और तू शमशाद की लकड़ी की एक यज्ञबेदी पांच हाथ लंबी और पांच हाथ चौड़ी बना यज्ञबेदी चौकोर होवे और २ उस की ऊंचाई तीन हाथ हो । और उस के चारों कोनों के लिये सींग बना उस की सींगें उसी से हों और उसे पीतल ३ से मढ़ । और उस की राख के लिये पात्र बना और उस की फावड़ियां और उस के कटोरे और उस के कांटे और उस की अंगेठियां बना उस के समस्त पात्र पीतल ४ के बना । और उस के लिये पीतल के जाल की एक झंझरी बना और उस जाल में पीतल के चार कड़े उस के चारों ५ कोनों में बना । और उसे बेदी के घेरा के नीचे रख जिसतें बेदी के मध्य लों ६ पहुंचे । और यज्ञबेदी के लिये शमशाद की लकड़ी का बहंगर बना और उन्हें ७ पीतल से मढ़ । और उन बहंगरों को कड़ों में डाल और बहंगर यज्ञबेदी के उठाने के लिये दोनों अलंग में होवें । ८ उस के पाट यों पोले बना जैसा कि तुझे पहाड़ में दिखाया गया वैसा ही उन्हें बना ॥

९ और तंबू के लिये आंगन बना दक्षिण दिशा के आंगन के लिये बटे हुए झीने सूती कपड़े से सौ हाथ लंबा एक अलंग १० के लिये ओट बना । और उस के बीस खंभे और उन के बीस पाए पीतल के हों खंभों के अंकुरे और उन के डंडे रूपे ११ के हों । और ऐसे ही उत्तर की ओर की लंबाई के लिये सौ हाथ की लंबी ओट और उस के बीस खंभे और उन के पीतल के बीस पाए खंभों के अंकुरे और १२ उन के डंडे रूपे के हों । और पश्चिम अलंग के आंगन की चौड़ाई में पचास हाथ की ओट हों उन के दस खंभे और १३ उन के दस पाए हों । और पूरब अलंग के आंगन की चौड़ाई पचास हाथ हो । १४ और एक ओर की ओट पंदरह हाथ हाथ उन के तीन खंभे और उन के तीन

१५ पाए हों। और दूसरी ओर की ओट पंदरह हाथ उन के तीन खंभे और उन
१६ के तीन पाए। और आंगन के फाटक के लिये नीला और बैंजनी और लाल रंग का बटे हुए झीने सूती कपड़े से बूटे कांढ़े हुए का बीस हाथ की एक ओट बना उन के खंभे चार और उन
१७ के पाए चार। आंगन के चारों ओर के समस्त खंभे रूपे के डंडों से हों उन के अंकुरे रूपे के और उन के पाए पीतल के।
१८ आंगन की लंबाई सौ हाथ और चौड़ाई पचास हाथ और ऊंचाई पांच हाथ झीने बटे हुए सूती कपड़े से और उन के पाए
१९ पीतल के। तंबू की समस्त सेवा के लिये समस्त पात्र और उस के सब खूंटे उस के और आंगन के समस्त खूंटे पीतल के हों॥

२० और इसराएल के संतान को आज्ञा कर कि तेरे पास कूटे हुए जलपाई का निर्मल तेल लावें जिसतें दीपक सदा
२१ बरा करे। घूंघट के बाहर जो साक्षी के आगे है मंडली के तंबू में हारून और उस के बेटे सांझ से लेके बिहान लों परमेश्वर के आगे नित्य उन की पीढ़ी से पीढ़ी लों इसराएल के संतानों के लिये यह बिधि है॥

अठाईसवां पर्ब्ब।

१ और इसराएल के संतानों में से अपने भाई हारून और उस के पुत्रों को अपने पास ले जिसतें वे याजक के पद में मेरी सेवा करें अर्थात् हारून और हारून के पुत्र नदब और अबिहू इलि-
२ अजर और ईतमर को। और अपने भाई हारून के लिये जिसतें बिभव और
३ शोभा हो पवित्र बस्त्र बना। और उन समस्त बुद्धिमानों से जिन्हें मैं ने बुद्धि का आत्मा दिया है कह कि वे हारून को पवित्र करने के लिये बस्त्र बनावें जिसतें वह मेरे लिये याजक हो। और
४ ये वे बस्त्र हैं जो वे बनावेंगे चपरास और एफोद और बागा और बूटा काढ़ी हुई कुरती और मुकुट और कटिबंध और वे पवित्र बस्त्र तेरे भाई हारून और उस के बेटों के लिये बनावें कि मेरे लिये
५ याजक होवें। और वे सोना और नीला और बैंजनी और लाल और झीना कपड़ा लेवें।

६ और वे एफोद को सोने नीले और बैंजनी लाल और बटे हुए झीने कपड़े
७ से बूटा काढ़ा हुआ बनावें। दो कंधे का जोड़ा उस की दोनों ओरों से मिले
८ हुए हों जिसतें यों मिलाया जाय। और बूटा काढ़ा हुआ एफोद का पटुका जो उस पर है उसी के कार्य्य के समान उसी से हो सोने नीले और बैंजनी और लाल और झीने बटे हुए सूती कपड़े से हो।
९ और दो बैदूर्यमणि ले और उन पर इस-
१० राएल के संतानों के नाम खोद। उन में से छः के नाम एक मणि पर और शेष के छः नाम दूसरे मणि पर उन की
११ उत्पत्ति की बिधि से होवें। मणि के खोदवैये के कार्य्य से छापा के खोदने के समान दोनों मणि पर इसराएल के संतानों के नाम खोद उन्हें सोने के
१२ ठिकानों में जड़। और दोनों मणि को एफोद के दोनों मोंढ़ों पर रख कि इस-राएल के संतानों के स्मरण के लिये होवें और हारून उन के नाम परमेश्वर के आगे अपने दोनों कंधों पर स्मरण के
१३ लिये उठावेगा। और सोने के ठिकाने
१४ बना। और दोनों सीकरें निर्मल सोने से खूंटों में गूथने के कार्य्य से उन्हें बना और गुथी हुई सीकरों को उन ठिकानों में जड़॥

१५ और चित्रकारी से न्याय के लिये एक चपरास बना एफोद के कार्य्य के समान

सोने नीले बैंजनी और लाल और भीने
१६ बटे हुए सूती कपड़े से बना । यह
चौकोर दोहरा होवे उस की लंबाई एक
बित्ता और उस की चौड़ाई एक बित्ता ।
१७ और मणि की चार पांती उस में भर
दे पहिली पांती में माणिक्य पद्मराग
१८ और लालड़ी । और दूसरी पांती में
१९ मर्कत नीलमणि और हीरा । और
तीसरी पांती में लशम सूर्यकांत और
२० नीलम । और चौथी पांती में बैदूर्य
फीरोजा और चंद्रकांत वे सोने के
२१ ठिकाने में जड़े जावें । और वे मणि
इसराएल के बंश के नामों के समान
होंगे उन के नामों के समान बारह वे बारह
गोष्ठी लों छापे के खोदे हुए हर एक अपने
२२ अपने नाम के समान होंगे
चपरास के ऊपर निर्म्मल सोने की गुथी
२३ हुई सीकरें खूंट में बना । और चपरास
पर सोने की दो कड़ियां बना और उन्हें
२४ चपरास के दोनों खूंटों में लगा । और
सोने की गुथी हुई सीकर उन दोनों
कड़ियों में जो चपरास के दोनों खूंटों
२५ में हैं लगा । और गुथे हुए दोनों के
दोनों खूंट उन के दो ठिकाने में जड़
और उन्हें एफोद के कंधों पर आगे
२६ रख । और सोने की दो कड़ियां बना
और उन्हें चपरास के दोनों अंतों पर
उस के कोर पर जो भीतर एफोद के
२७ साम्ने है रख । और सोने की दो कड़ियां
बना और उन्हें एफोद के नीचे दोनों
अलंग में उस के आगे की ओर जोड़ के
साम्ने चित्रकारी के एफोद के ऊपर रख ।
२८ और वे चपरास को उस की कड़ियों से
एफोद की कड़ियों में नीले गोटे से
बांधें कि एफोद के पटुके के ऊपर हों
२९ जिसतें चपरास एफोद से न हटे । और
हारून नित्य परमेश्वर के आगे स्मरण
के लिये जब वह पवित्र स्थान में जावे
इसराएल के संतानों के नाम न्याय की
चपरास पर अपनी छाती पर उठावे ॥
और तू ऊरीम और तुम्मीम को ३०
न्याय की चपरास में रख वह हारून की
छाती पर होंगे जब वह परमेश्वर के
आगे जायगा और हारून इसराएल के
संतानों के न्याय को अपनी छाती पर
परमेश्वर के आगे सदा लिये रहे ॥
और एफोद का बागा सर्व्वत्र नीला ३१
बना । और उस के ऊपर उस के मध्य ३२
में एक छेद होवे और उस छेद की
चारों ओर बिने हुए कार्य्य के गोटे हों
जैसा भिलम का मुंह होता है जिसतें
फटने न पावे । और उस के खूंट के ३३
घेरे में नीले और बैंजनी और लाल रंग
के अनार बना और घेरे में सोने के घंटे
उन के मध्य में बना । सोने का घंटा ३४
और अनार सोने का घंटा और अनार
बागे के खूंटों के घेरे में । और सेवा ३५
के समय हारून उसे पहिने और जब वह
पवित्र स्थान में परमेश्वर के आगे जावे
और जब निकले तब उस का शब्द
सुना जायगा जिसतें वह मर न जाय ॥
और निर्म्मल सोने की एक पटरी ३६
बना और उस पर खोदे हुए छाप की
नाईं खोद कि परमेश्वर के लिये
पवित्रमय । और उसे नीले गोटे पर ३७
लगा जिसतें वह मुकुट पर होवे वह
मुकुट पर आगे की ओर होगा । और ३८
वह हारून के ललाट पर होय कि हारून
पवित्र बस्तुन के पापों को जिन्हें
इसराएल के संतान अपनी समस्त पवित्र
भेंटों में पवित्र करेंगे और वही उस के
ललाट पर सदा हो जिसतें वे परमेश्वर
के आगे ग्राह्य होवें ॥
और बागे पर भीने सूती कपड़े से ३९
बूटा काढ़ और मुकुट को भीने वस्त्र से
बना और कटिबंध को चित्रकारी से बना ॥

४० और हारून के बेटों के लिये कुरते बना और उन के लिये कटिबंध बना और उन के लिये पगड़ी विभव और ४१ शोभा के लिये बना। और उन्हें अपने भाई हारून पर और उस के संग उस के बेटों पर पहिना और उन्हें अभिषेक कर और उन्हें स्थापित और पवित्र कर जिसतें कि वे मेरे लिये याजक होवें। ४२ और उन के लिये सूती जांघिया बना कि उन की नग्नता ढांपी जाय और चाहिये कि यह कटि से जांघ लों हो। ४३ और वे हारून और उस के बेटों पर होवें जब वे मंडली के मंदिर में प्रवेश करें अथवा जब वे पवित्र स्थान में यज्ञबेदी के पास सेवा को आवें कि वे पाप न उठावें और मर जायें यह विधि उस के और उस के पीछे उस के बंश के लिये सदा को है॥

उंतीसवां पर्ब्ब

और जो तू उन के लिये करेगा जिसतें उन्हें पवित्र करे कि वे मेरे लिये याजक होवें सो यह है कि तू एक बछड़ा और दो २ निष्कलंक मेंढे ले। और अखमीरी रोटी और फुलके और अखमीरी फुलके तेल से चुपड़े हुए और अखमीरी टिकरी तेल में चुपड़ी हुई श्वेत गेहूं के पिसान की बना। ३ और उन्हें एक टोकरी में रख और उन्हें टोकरी में बछड़े और दोनों मेंढों समेत ४ आगे ला। और हारून और उस के बेटों को मंडली के तंबू के द्वार पर ला और ५ उन्हें जल से नहला। और बस्त्र ले और हारून को कुरते और एफोद का बागा और एफोद और चपरास पहिना और ६ एफोद का पटुका उस पर बांध। और मुकुट को उस के सिर पर रख और ७ पवित्र किरीट मुकुट पर धर। तब अभिषेक करने का तेल ले और उस के सिर पर ढाल और उसे अभिषेक कर॥

और उस के बेटों को आगे ला और ८ उन्हें कुरते पहिना। और उन पर अर्थात् ९ हारून और उस के बेटों पर कटिबंध लपेट और उन पर पगड़ी बांध जिसतें याजक का पद सनातन की विधि के लिये उन्हीं का होवे और हारून और उस के बेटों को स्थापित कर॥

और उस बैल को मंडली के तंबू के १० आगे ला और हारून और उस के बेटे अपने हाथ उस बैल के सिर पर रक्खें। और उस बैल को मंडली के तंबू के ११ द्वार पर परमेश्वर के आगे बलिदान कर। और उस बैल के लोहू में से कुछ ले और १२ अपनी अंगुली से यज्ञबेदी के सींगों पर लगा और समस्त लोहू यज्ञबेदी के नीचे ढाल। और उस की समस्त चिकनाई १३ जो उस के अंतर को ढांपती है और जो कलेजे के ऊपर है और दोनों गुर्दे और जो चिकनाई उन पर है ले और यज्ञ-बेदी पर जला। और उस बैल का मांस १४ और उस की खाल और उस का गोबर छावनी के बाहर आग से जला यह पापों का बलिदान है॥

और एक मेंढे को ले और हारून १५ और उस के बेटे अपने हाथ उस मेंढे के सिर पर रक्खें। और उस मेंढे को बलि- १६ दान कर और तू उस का लोहू ले और यज्ञबेदी पर उस के चारों ओर छिड़क। और उस मेंढे को टुकड़ा टुकड़ा कर १७ और उस के अंतर और उस के पांव को धो और उन्हें उस के टुकड़ों पर और उस के सिर पर रख। और उस समस्त १८ मेंढे को यज्ञबेदी पर जला यह बलिदान की भेंट परमेश्वर के लिये अग्नीय सुगंध बास परमेश्वर के लिये है॥

और दूसरा मेंढा ले और हारून और १९ उस के बेटे अपने हाथ उस मेंढे के सिर पर रक्खें। तब तू उस मेंढे को बलिदान २०

कर और उस के लोहू में से ले और हारून के और उस के बेटों के दहिने कान की लहर पर और उन के दहिने हाथ के अंगूठे पर और दहिने पांव के अंगूठे पर लगा और लोहू को यज्ञबेदी पर चारों ओर छिड़क। २१ और उस लोहू में से जो यज्ञबेदी पर है और अभिषेक का तेल ले और हारून पर और उस के बस्त्रों पर और उस के बेटों पर और उस के बेटों के बस्त्रों पर उस के साथ छिड़क तब वह और उस के बस्त्र और उस के बेटे और उस के बेटों के बस्त्र उस के संग पवित्र होंगे। २२ और मेंढे की चिकनाई और पूंछ और वह चिकनाई जो ओझ को ढांपती है और जो कलेजे को ढांपती है और दोनों गुर्दों को और वह चिकनाई जो उन पर है और दहिना मोंढा ले इस लिये कि वह स्थापने का मेंढा है। २३ और एक रोटी और तेल में चुपड़ी हुई रोटी का एक फुलका और एक टिकरी उस अखमीरी रोटी के टोकरे में से जो परमेश्वर के सन्मुख है। २४ और यह सब हारून के और उस के बेटों के हाथ पर रख और उन्हें परमेश्वर के आगे हिलाने की भेंट के लिये हिला। २५ और उन्हें उन के हाथ से ले और यज्ञबेदी पर बलिदान की भेंट के लिये जला कि परमेश्वर के आगे सुगंध के लिये हो यह आग का बलिदान परमेश्वर के लिये है। २६ और तू हारून के स्थापित मेंढे की छाती ले और उसे परमेश्वर के आगे हिलाने के बलिदान के लिये हिला और वह तेरा भाग होगा। २७ और तू हिलाने की छाती को और उठाने के मोंढे को जो हारून और उस के बेटों को स्थापित करने का मेंढा हिलाया और उठाया गया है पवित्र कर। २८ और हारून और उस के बेटों के लिये इसराएल के संतानों में से यह बिधि सदा होगी क्योंकि वह उठाई हुई भेंट है और सदा इसराएल के संतानों से उन के कुशल के बलिदानों में से उठाई हुई भेंट होगी यह उन की उठाई हुई भेंट परमेश्वर के लिये है॥

२९ और हारून के पवित्र बस्त्र उस के पीछे उस के बेटों के लिये उन के अभिषेक के लिये हों कि वे उन में स्थापित होवें। ३० जो बेटा उस की संती याजक होवे जब वह मंडली के तंबू में पवित्र सेवा करने को आवे तब वह उन्हें सात दिन पहिने। ३१ और स्थापने का मेंढा ले और उस का मांस पवित्र स्थान में उसिन। ३२ और हारून और उस के बेटे मेंढे का मांस और वह रोटी जो टोकरी में मंडली के तंबू के द्वार पर है खावें। ३३ और जिन बस्तुन से प्रायश्चित्त हुआ कि उन्हें स्थापित और पवित्र करें वे खावें परन्तु परदेशी न खावे क्योंकि वे पवित्र हैं। ३४ और यदि स्थापित के मांस में से और रोटी में से बिहान लों कुछ रह जाय तो तू उस बचे हुए को आग में जला दे वह खाया न जाय क्योंकि वह पवित्र है॥

३५ और तू हारून और उस के बेटों को यों कर उस समस्त के समान जो मैं ने तुझे आज्ञा किई है सात दिन लों उन्हें स्थापित करेगा। ३६ और तू प्रतिदिन पाप के प्रायश्चित्त के कारण एक बैल को चढ़ाइयो और यज्ञबेदी को पवित्र करने को जब तू उस के लिये प्रायश्चित्त करे तो उसे पावन करने को अभिषेक कर। ३७ तू बेदी के लिये सात दिन प्रायश्चित्त करके उसे पवित्र कर और वह बेदी अत्यंत पवित्र हो जायगी जो कोई उस बेदी को छूये सो पवित्र हो॥

३८ और यह तू यज्ञबेदी पर कीजियो पहिले बरस का दो मेम्ना प्रतिदिन

चढ़ाइयो। एक मेम्ना बिहान को और दूसरा मेम्ना सांझ को बलिदान कीजियो। ४० और गोहूं के पिसान का दसवां भाग जो अलपाई के कूटे हुए एक पाव हीन तेल से मिला हुआ हो और एक पाव हीन दाखरस एक मेम्ना के साथ तपावन के ४१ लिये होय। और दूसरा मेम्ना सांझ को चढ़ाइयो। बिहान की भेंट के समान और उस के तपावन के समान उसे कीजियो जिसतें परमेश्वर के लिये आग की सुगंध ४२ बासना की भेंट हो। बलिदान की भेंट तुम्हारी पीढ़ी से पीढ़ी लों मंडली के तंबू के द्वार पर परमेश्वर के आगे नित्य होगी जहां मैं तुम से बात्ता करने के ४३ लिये भेंट करूंगा। और मैं इसराएल के संतान से वहां भेंट करूंगा और वह मेरे ४४ बिभव में पवित्र होगा। और मैं मंडली के तंबू को और यज्ञबेदी को पवित्र करूंगा और हारून और उस के बेटों को पवित्र करूंगा कि वे मेरे लिये याजक ४५ होवें। और मैं इसराएल के संतानों में बास करूंगा और मैं उन का ईश्वर ४६ हूंगा। और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर उन का ईश्वर हूं जो उन्हें मिस्र की भूमि से निकाल लाया जिसतें मैं उन के मध्य में बास करूं मैं परमेश्वर उन का ईश्वर हूं।

तीसवां पर्व्व

१ और तू शमशाद की लकड़ी से धूप २ जलाने के लिये एक यज्ञबेदी बना। उस की लंबाई और चौड़ाई एक एक हाथ चौकोर होवे और उस की ऊंचाई दो ३ हाथ उस के सींग उसी से हों। और उसे निर्मल सोने से मढ़ उस की छत और उस के चारों ओर के मुकुट और उस के सींगों को और उस के चारों ओर ४ सोने का मुकुट बना। और सोने के दो कड़े उस के मुकुट के नीचे उस के दोनों कोनों के पास उस की दोनों अलंगों पर बना और वे उठाने के बहंगर के स्थान ५ होंगे। और बहंगर को शमशाद की लकड़ी से बना और उन्हें सोने से मढ़। ६ और उसे ओभल के आगे जो साक्षी की मंजूषा के ऊपर है रख उस ढकने के साम्ने जो साक्षी के ऊपर है जहां मैं तुझ ७ से भेंट करूंगा। और हर बिहान को हारून उस पर सुगंध द्रव्य का धूप जलावे जब वह दीपकों को सुधारे वह ८ उस पर धूप जलावे। और जब हारून संध्या के समय में दीपक को बारे तो वह उस पर तुम्हारी समस्त पीढ़ियों में ९ परमेश्वर के आगे धूप जलावे। तुम उस पर उपरी धूप और भेंट का बलिदान और भोजन की भेंट न चढ़ाइयो और १० उस पर तपावन न तपाइयो। और हारून बरस भर में एक बार उस के सींगों पर पाप की भेंट के प्रायश्चित्त के लोहू से प्रायश्चित्त करे तुम्हारी पीढ़ियों में बरस में एक बार उस पर प्रायश्चित्त करे यह परमेश्वर के लिये अति पवित्र है॥

११ और परमेश्वर मूसा से यह कहके १२ बोला। कि जब तू इसराएल के संतानों को गिने तब उन में से हर मनुष्य अपने प्राण के छुड़ाने के लिये परमेश्वर को देवे जब तू उन की गिनती करे जिसतें गिनती करने में उन पर मरी न आवे। १३ जो कोई गिनती किये गये होवें सो पवित्र स्थान के शैकलों के समान आधा शैकल देवे एक शैकल बीस गिरह सो १४ आधा शैकल परमेश्वर की भेंट है। जो कोई गिनती किये गये में होवें बीस बरस का और जो ऊपर होवे सो परमे- १५ श्वर के लिये भेंट देवे। अपने प्राण का प्रायश्चित्त करने को परमेश्वर की भेंट देने में धनी कंगाल से अधिक न देवे

और कंगाल आधे शेकल से न घटावे । १६ और तू इसराएल के संतानों के प्रायश्चित्त का दाम ले और उसे मंडली के तंबू के कार्य्य की सेवा के लिये ठहरा और यह इसराएल के संतानों के लिये परमेश्वर के आगे स्मरण होगा जिसतें उन के प्राणों के लिये प्रायश्चित्त करे ॥

१७ और परमेश्वर मूसा से कहके बोला । १८ कि पीतल का एक स्नानपात्र बना और उस का पाया स्नान करने के लिये पीतल का बना और उस को मंडली के तंबू और यज्ञवेदी के मध्य में रख और उस १९ में जल डाल । और हारून और उस के बेटे अपने हाथ पांव उस्से धोवें । २० जब वे मंडली के तंबू में जावें तब वे जल से धोवें जिसतें न मरें अथवा जब वे सेवा के लिये यज्ञवेदी के पास जावें कि परमेश्वर के लिये आग की भेंट २१ जलावें । तब वे अपने हाथ पांव धोवें जिसतें वे न मरें और यह व्यवहार उन के लिये अर्थात् उस के और उस के वंश की समस्त पीढ़ी लों सदा के लिये होवे ॥

२२ और परमेश्वर मूसा से कहके बोला । २३ कि तू अपने लिये प्रधान सुगंध द्रव्य अर्थात् पांच सौ शेकल के चोखे गंधरस और उस की आधी अर्थात् अढ़ाई सौ की मीठी दारचीनी और अढ़ाई सौ २४ का सुगंध बच अपने लिये ले । और पवित्र स्थान की शेकल के तौल पांच सौ शेकल भर तज ले और जलपाई का २५ तेल एक हीन । और इन्हें पवित्र मलने का तेल बना गंधी की रीति के समान मिलाके लेपन बना यही पवित्र अभिषेक २६ का तेल होगा । और उस्से मंडली के तंबू को और साक्षी की मंजूषा को २७ अभिषेक कर । और मंच और उस के समस्त पात्र और दीवट और उस के पात्र और धूप की वेदी । और बलिदान २८ की भेंट की वेदी उस के समस्त पात्र सहित और स्नानपात्र और उस का पाया । और उन्हें पवित्र कर कि वे २९ अति पवित्र हो जायें जो उन्हें छूवे सो पवित्र होवे । और हारून और उस के ३० बेटों को अभिषेक करके उन्हें पवित्र कर कि मेरे लिये याजक होवें । और इसरा- ३१ एल के संतान को यह कहके बोल कि यह पवित्र अभिषेक का तेल मेरे लिये तुम्हारी पीढ़ियों में होय । किसी मनुष्य ३२ के शरीर पर न डाला जाय और तुम वैसा और उसी के मेल में न बनाइयो वह पवित्र है तुम्हारे लिये पवित्र होगा । जो कोई उस के समान बनावे अथवा ३३ जो कोई उसे किसी परदेशी पर लगावे सो अपने लोगों से कट जायगा ॥

और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि ३४ तू अपने लिये सुगंध द्रव्य अर्थात् बोल और नखी और शुद्ध कुंदुरू यह सुगंध द्रव्य और चोखा लोबान लीजियो हर एक समान समान होगा । और उन का ३५ सुगंध बनाइयो गंधी के कार्य्य के समान मिलाया हुआ पवित्र और शुद्ध होवे । और उस में से कुछ बुकनी कर और ३६ उस में से कुछ मंडली के तंबू की साक्षी के आगे रख जहां मैं तुझ से भेंट करूंगा वह तुम्हारे लिये अति पवित्र होगा । और वह धूप जो तू बनायेगा तुम उस ३७ की मिलावट के समान अपने लिये मत बनाओ वह तुम्हारे पास परमेश्वर के लिये पवित्र होगा । जो कोई सूंघने के ३८ लिये उस के समान बनावेगा सो अपने लोगों में से कट जायगा ॥

एकतीसवां

और परमेश्वर मूसा से यह कहके १ बोला । कि देख मैं ने ऊरी के पुत्र २ बज़लिएल को जो हूर का पोता यहूदाह

के कुल में का है नाम लेके बुलाया । और मैं ने उसे बुद्धि में और समझ में और ज्ञान में और समस्त प्रकार की कारीगरी में ईश्वर के आत्मा से भर दिया । कि सोने और रूपे और पीतल के कार्य्य करने में अपनी बुद्धि से कारीगरी का कार्य्य निकाले । और मणि के खोदने में जड़ने के लिये और काष्ठ के खोदने में जिसतें समस्त प्रकार की कारीगरी का कार्य्य करे । और देख मैं ने उस के संग अहलियाब को जो अखिसमक का पुत्र और दान के कुल में का है दिया और मैं ने समस्त बुद्धिमानों के अंत:करणों में बुद्धि दिई कि सब जो मैं ने तुझे आज्ञा किई है बनावें । अर्थात् मंडली का तंबू और साक्षी की मंजूषा और वह ढकना जो उस पर है और तंबू के समस्त पात्र । और मेज और उस के पात्र और पवित्र दीअट उस के पात्र सहित और धूप की बेदी । और बलिदान की भेंट की बेदी उस के समस्त पात्र समेत और स्नानपात्र और उस का पाया । और सेवा के बस्त्र और हारून याजक के लिये पवित्र बस्त्र और उस के बेटों के बस्त्र जिसतें याजक की सेवा में सेवा करें । और अभिषेक का तेल और पवित्र स्थान के लिये सुगंध धूप उस समस्त आज्ञा के समान जो मैं ने तुझ से किई है वे करें ॥

और परमेश्वर मूसा से यह कहके बोला । कि तू इसराएल के संतानों को यह कहके बोल कि निश्चय तुम मेरे बिश्रामों का पालन करो क्योंकि वह मेरे और तुम्हारे मध्य में तुम्हारी पीढ़ियों में एक चिन्ह है जिसतें तुम जानो कि मैं परमेश्वर तुम्हें पवित्र करता हूं । सो बिश्राम का पालन करो क्योंकि वह तुम्हारे लिये पवित्र है हर एक जो उसे अशुद्ध करेगा निश्चय बध किया जायगा क्योंकि जो कोई उस में कार्य्य करे वह प्राणी अपने लोगों में से काट डाला जायगा । १५ छ: दिन कार्य्य किया जावे परन्तु सातवां चैन का बिश्राम परमेश्वर के लिये पवित्र है जो कोई बिश्राम के दिन में कार्य्य करे वह निश्चय बध किया जायगा । १६ सो इसराएल के संतान बिश्राम का पालन करें कि सनातन नियम के लिये उन की पीढ़ियों में बिश्राम का पालन होवे । १७ मेरे और इसराएल के संतानों के मध्य में यह सदा के लिये चिन्ह है क्योंकि परमेश्वर ने छ: दिन में स्वर्ग और पृथिवी उत्पन्न किये और सातवें दिन अवकाश पाया और तृप्त हुआ ॥

१८ और जब वह मूसा से सीना के पहाड़ पर बातें कर चुका तब साक्षी के पत्थर की दो पटियां ईश्वर की अंगुलियों से लिखी हुईं उस ने उसे दिईं ॥

बत्तीसवां पर्ब्ब ।

जब लोगों ने देखा कि मूसा ने पहाड़ से उतरने में बिलंब किया तब वे लोग हारून के पास एकट्ठे हुए और उसे कहा कि उठ हमारे लिये ईश्वर बना जो हमारे आगे चलेंगे क्योंकि यह मूसा वह पुरुष जो हमें मिस्र देश से निकाल लाया हम नहीं जानते कि उसे क्या हुआ । तब हारून ने उन्हें कहा कि सोने की उन बालियों को जो तुम्हारी पत्नियों के तुम्हारे बेटों के और तुम्हारी बेटियों के कानों में हैं तोड़ तोड़के मुझ पास लाओ । सो समस्त लोग सोने की बालियां तोड़ तोड़के जो उन के कानों में थीं हारून के पास लाये । और उस ने उन के हाथों से लिया और ढाला हुआ एक बछड़ा बनाके टांकी से उस का डौल किया और उन्हें कहा कि हे इसराएल यह तेरा ईश्वर है जो तुझे मिस्र के देश

५ से निकाल लाया। और जब हारून ने देखा तो उस के आगे वेदी बनाई और यह कहके प्रचार कराया कि कल ६ परमेश्वर के लिये पर्व्व है। और वे बिहान को तड़के उठे और बलिदान की भेंटें चढ़ाईं और कुशल की भेंटें लाये और लोग खाने पीने को बैठे और क्रीड़ा करने को उठे॥

७ तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि उतर जा क्योंकि तेरे लोगों ने जिन्हें तू मिस्र के देश से निकाल लाया आप को ८ भ्रष्ट किया है। वे उस मार्ग से जिस को मैं ने उन्हें आज्ञा किई थी शीघ्र फिर गये उन्हों ने अपने लिये ढाला हुआ बछड़ा बनाया और उसे पूजा और उस के लिये बलिदान चढ़ाके कहा कि हे इसराएल यह तेरे ईश्वर हैं जो तुझे मिस्र ९ देश से निकाल लाये। और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि मैं ने इन लोगों को देखा और देखो कि वह कठोर १० गरदन के लोग हैं। सो अब तू मुझे छोड़ कि मेरा क्रोध उन पर भड़के और मैं उन्हें भस्म करूं और मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊंगा॥

११ तब मूसा ने परमेश्वर अपने ईश्वर की बिनती किई और कहा कि हे परमेश्वर किस लिये तेरा क्रोध अपने लोगों पर भड़केगा जिन्हें तू मिस्र देश से महापराक्रम और सामर्थी हाथ से १२ निकाल लाया। किस लिये मिस्री कहके बोलें कि वह बुराई के लिये उन्हें निकाल ले गया जिसतें उन्हें पहाड़ों में नाश करे और उन्हें पृथिवी पर से भस्म करे अपने अत्यंत क्रोध से फिर जा और अपने लोगों पर बुराई पहुंचाने १३ से फिर जा। अपने दासों अबिरहाम इज़हाक और इसराएल को स्मरण कर जिन से तू ने अपनी ही किरिया खाके कहा कि मैं तुम्हारे बंश को स्वर्ग के तारों के समान बढ़ाऊंगा और यह समस्त देश जिस के विषय में मैं ने कहा है कि मैं तुम्हारे बंश को देऊंगा और वे उस के सनातन के अधिकारी होंगे। १४ तब परमेश्वर उस बुराई से जो चाहती थी कि अपने लोगों पर करे फिरा॥

१५ और मूसा फिरा और पहाड़ से उतरा और साक्षी की दोनों पटियां उस के हाथ में थीं पटियां दोनों ओर लिखी १६ हुई थीं। और वे पटियां ईश्वर के कार्य्य थीं और जो लिखा हुआ सो ईश्वर का लिखा पटियों पर खोदा १७ हुआ। जब यहूसूअ ने लोगों के कोलाहल का शब्द सुना तो मूसा से कहा १८ कि छावनी में लड़ाई का शब्द है। और कहा कि यह आपुस में जो शब्द होता है सो न हार का शब्द है और न जीत का शब्द है परन्तु गीत का शब्द मैं १९ सुनता हूं। और यों हुआ कि जब वह छावनी के पास आया तब उस ने उस बछड़े को और नाचना देखा तब मूसा का क्रोध भड़का और उस ने वह पटियां अपने हाथों से फेंक दिईं और २० उन्हें पहाड़ के नीचे तोड़ डाला। तब उस ने उस बछड़े को जिसे उन्हों ने बनाया था लिया और उसे आग में जलाया और उसे बुकनी किया और पानी पर बिथराया और इसराएल के संतानों को पिलाया॥

२१ और मूसा ने हारून को कहा कि इन लोगों ने तुझ से क्या किया कि तू २२ उन पर ऐसा महापाप लाया। और हारून ने कहा कि मेरे प्रभु का क्रोध न भड़के तू लोगों को जानता है कि २३ वे बुराई पर हैं। और उन्हों ने मुझे कहा कि हमारे लिये ईश्वर बना जो हमारे आगे चलेंगे क्योंकि यह मूसा वह

पुरुष जो हमें मिस्र देश से निकाल लाया हम नहीं जानते कि उसे क्या हुआ। तब मैं ने उन्हें कहा कि जिस किसी के पास सोना हो तोड़ डाले सो उन्हों ने मुझे दिया तब मैं ने उसे आग में डाला और यह बछड़ा निकला॥

और मूसा ने लोगों को देखा कि वह निरंकुश हैं क्योंकि हारून ने उन के शत्रुन के सन्मुख उन की लाज के लिये उन्हें निरंकुश किया था। तब मूसा छावनी के निकास पर खड़ा हुआ और कहा कि जो परमेश्वर की ओर है सो मेरे पास आवे तब लावी के समस्त संतान उस पास एकट्ठे हुए। और उस ने उन्हें कहा कि परमेश्वर इसराएल के ईश्वर ने यह कहा है कि हर मनुष्य अपना खड्ग अपनी जांघ पर बांधे और छावनी में एक फाटक से दूसरे फाटक लों चलो फिरो और हर एक मनुष्य अपने भाई को और अपने मित्र को और अपने परोसी को घात करे। और लावी के संतान ने मूसा के बचन के समान किया और उस दिन लोगों में से तीन सहस्र मनुष्य के लगभग मारे पड़े। और मूसा ने कहा कि आज परमेश्वर के लिये अपने हाथ भरो हर एक मनुष्य अपने पुत्र और अपने भाई से जिसतें आज अपने ऊपर आशीष लाओ॥

और दूसरे दिन सवेरे यों हुआ कि मूसा ने लोगों से कहा कि तुम ने महापाप किया और अब मैं परमेश्वर के पास ऊपर जाता हूं क्या जाने मैं तुम्हारे पाप के लिये प्रायश्चित्त करूं। और मूसा परमेश्वर की ओर फिर गया और कहा कि हाय इन लोगों ने महापाप किया और अपने लिये सोने का देवता बनाया। और अब यदि तू उन के पाप क्षमा करे और यदि नहीं तो मैं तेरी बिनती करता हूं कि मुझे अपनी उस पुस्तक से जो तू ने लिखी है मेट दे। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि ३३ जिस ने मेरा अपराध किया है मैं उसी को अपनी पुस्तक से मेट देऊंगा। और ३४ अब तू लोगों को उस स्थान को जो मैं ने तुझे बताया है ले जा देख मेरा दूत तेरे आगे आगे चलेगा और मैं अपने बिचार के दिन में उन से उन के पाप का बिचार करूंगा। और परमेश्वर ने ३५ लोगों पर मरी भेजी इस लिये कि उन्हों ने उस बछड़े को बनाया जिसे हारून ने बनाया॥

तेंतीसवां पर्ब्ब।

१ फिर परमेश्वर ने मूसा को कहा कि यहां से जा तू और वह लोग जिन्हें तू मिस्र देश से निकाल लाया उस देश को जिस के बिषय में अबिरहाम और इजहाक और यअकूब से यह कहके मैं ने किरिया खाई है कि मैं उसे तेरे बंश को देऊंगा। २ और मैं तेरे साम्ने दूत भेजूंगा और कनआनियों अमूरियों और हित्तियों और फरिज्जियों हावियों ३ और यबूसियों को हांक देऊंगा। एक देश में जहां दूध और मधु बहता है क्योंकि मैं तेरे मध्य में न जाऊंगा इस लिये कि तुम कठोर गरदन लोग हो कि मैं तुम्हें मार्ग में भस्म कर डालूं॥

४ और जब लोगों ने यह बुरा समाचार सुना तो बिलाप किया और किसी ने अपना आभूषण न पहिना। क्योंकि परमेश्वर ने मूसा से कहा कि इसराएल के संतान से कह कि तुम एक कठोर लोग हो मैं तेरे मध्य एक पलमात्र में आके तुझे भस्म करूंगा सो अब अपना आभूषण अपने ऊपर से उतारो और मैं जानूंगा कि तुम से क्या करूंगा। ६ तब इसराएल के संतानों ने होरेब के पहाड़ पर अपना डाला॥

७ और मूसा ने तंबू लेके छावनी के बाहर अपने लिये छावनी से दूर खड़ा किया और उस का नाम मंडली का तंबू रक्खा और यों हुआ कि हर एक जो परमेश्वर का खोजी था सो मंडली के तंबू के पास जो छावनी के बाहर था
८ जाता था । और यों हुआ कि जब मूसा बाहर तंबू के पास गया तो सब लोग खड़े हुए और हर एक पुरुष अपने तंबू के द्वार पर खड़ा होके मूसा के पीछे देखता था यहां लों कि वह तंबू में गया ॥

९ और जब मूसा ने तंबू में प्रवेश किया तो मेघ का खंभा उतरा और तंबू के द्वार पर ठहरा और उस ने मूसा से बार्त्ता
१० किई । और समस्त लोगों ने मेघ का खंभा तंबू के द्वार पर ठहरा हुआ देखा और सब लोग अपने अपने तंबू के द्वार
११ पर उठे और दंडवत किई । और परमेश्वर ने मूसा से आम्ने साम्ने बार्त्ता किई जैसे कोई अपने मित्र से बार्त्ता करता है और वह छावनी को फिरा परन्तु उस का सेवक नून का बेटा यहूसूअ एक तरुण मनुष्य तंबू के मध्य में से न निकला ॥

१२ और मूसा ने परमेश्वर से कहा कि देख तू मुझ से कहता है कि इन लोगों को ले जा और तू ने मुझे नहीं बताया कि किसे मेरे साथ भेजेगा तथापि तू ने कहा है कि मैं नाम सहित तुझे जानता हूं और तू ने मेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया
१३ है । सो यदि मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया है तो मैं तेरी बिनती करता हूं कि अपना मार्ग मुझे बता जिसतें मुझे निश्चय होवे कि मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया है और देख कि ये जाति
१४ तेरे लोग हैं । तब उस ने कहा कि मेरा रूप जायगा और मैं तुझे विश्राम देऊंगा
१५ और उस ने उसे कहा कि यदि तेरा रूप न जाय तो हमें यहां से मत ले जाइये ।
१६ और अब किस रीति से जाना जायगा कि मैं ने और तेरे लोगों ने तुझ से अनुग्रह पाया है क्या इस में नहीं कि तू हमारे साथ जाता है सो मैं और तेरे लोग समस्त लोगों से जो पृथिवी पर हैं अलग किये जायेंगे ॥

१७ और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि जो बात तू ने कही है मैं ने उसे भी मान लिया क्योंकि तू ने मेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया है और मैं तुझे नाम सहित
१८ जानता हूं । तब उस ने कहा कि मैं तेरी बिनती करता हूं कि मुझे अपना
१९ बिभव दिखा । तब उस ने कहा कि मैं अपनी सब भलाई को तेरे आगे चलाऊंगा और मैं परमेश्वर के नाम का प्रचार तेरे आगे करूंगा और जिस पर कृपालु हूं उसी पर कृपा करूंगा और जिस पर
२० दयालु हूं उसी पर दया करूंगा । और बोला कि तू मेरा रूप नहीं देख सक्ता क्योंकि मुझे देखके कोई मनुष्य न
२१ जीयेगा । और परमेश्वर ने कहा कि देख एक स्थान मेरे पास है और तू उस टीले
२२ पर खड़ा रह । और यों होगा कि जब मेरा बिभव चल निकलेगा तो मैं तुझे पहाड़ के दरार में रक्खूंगा और जब लों जा निकलूं तुझे अपने हाथ से ढांपूंगा ।
२३ और अपना हाथ उठा लूंगा और तू मेरा पीछा देखेगा परन्तु मेरा रूप दिखाई न देगा ॥

चौंतीसवां पर्ब्ब

१ फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अपने लिये पहिली पटियों के समान पत्थर की दो पटियां चीर और मैं उन पटियों पर वे बातें लिखूंगा जो पहिली पटियों पर थीं जिन्हें तू ने तोड़ डाला ।
२ और तड़के सिद्ध हो और बिहान को

सीना के पहाड़ पर चढ़ आ और वहां पहाड़ की चोटी पर मेरे लिये खड़ा ३ हो । और कोई मनुष्य तेरे साथ न चढ़े और समस्त पहाड़ पर कोई देखा न जावे झुंड और ढोर पहाड़ के आगे चराई भी न करें ॥

४ तब अगिले पत्थरों के समान उस ने दो पटियां चीरीं और जैसा कि परमेश्वर ने उसे आज्ञा किई थी बिहान को मूसा पत्थर की दोनों पटियां अपने हाथ में लिये हुए सीना के पहाड़ पर ५ चढ़ गया । और परमेश्वर मेघ में उतरा और उस के साथ वहां खड़ा रहा और परमेश्वर के नाम का प्रचार किया । ६ और परमेश्वर उस के आगे से चला और प्रचार किया कि परमेश्वर परमेश्वर सर्बशक्तिमान दयालु और कृपालु धीर और भलाई और सच्चाई में भरपूर है । ७ सहस्रों के लिये दया रखनेवाला है पाप और अपराध और चूक का क्षमा करनेवाला और वह किसी भांति से अपराधी को निर्दोष न ठहरावेगा और पितरों के पाप का उन के पुत्रों और पौत्रों पर तीसरी और चौथी पीढ़ी लों प्रतिफल- ८ दायक है । तब मूसा ने शीघ्रता से भूमि की ओर सिर झुकाके दंडवत ९ किई । और बोला कि हे प्रभु यदि मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया है तो मैं तेरी बिनती करता हूं कि प्रभु हमारे मध्य में होके चले क्योंकि वह कठोर गरदन लोग हैं और हमारे अपराध और पाप क्षमा कर और हमें अपना अधिकार ठहरा ॥

१० तब वह बोला कि देख मैं तेरे समस्त लोगों के आगे एक बाचा बांधता हूं कि मैं ऐसा आश्चर्य करूंगा जैसा कि समस्त पृथिवी पर और किसी जातिगण में न उतना हुआ है और सब लोग जिन के मध्य में तू है परमेश्वर के कार्य्य देखेंगे क्योंकि वह भयंकर कार्य्य है जो मैं तुझ से करता हूं । ११ जो आज के दिन मैं तुझे आज्ञा करता हूं उसे मानियो देख मैं अमूरियों और कनआनियों और हित्तियों और फरिज्जियों और हविवियों और यबूसियों को तेरे आगे से हांकता हूं । १२ आप से चौकस रह ऐसा न हो कि तू उस भूमि के बासियों के साथ जिस में तू जाता है कुछ बाचा बांधे और तेरे मध्य में फंदा होवे । १३ क्योंकि तुम उन की यज्ञवेदियों को नाश करोगे और उन की मूर्त्तिन को तोड़ डालोगे और उन की पुतलियों को काट डालोगे । १४ क्योंकि तू किसी उपरी देव को पूजा न करेगा क्योंकि परमेश्वर जिस का नाम ज्वलन है वह ज्वलित सर्बशक्तिमान है । १५ ऐसा न होवे कि तू उस देश के बासियों से कुछ बाचा बांधे और वे अपने देवों के पीछे व्यभिचार करें और अपने देवों के लिये बलिदान करें और तुझे बुलावें और तू उस के बलिदान से खा लेवे । १६ और तू उन की बेटियां अपने बेटों के लिये लावे और उन की बेटियां अपने देवों के पीछे व्यभिचार करें और तेरे बेटों को भी अपने देवों के पीछे व्यभिचार करावें । १७ तू अपने लिये ढाले हुए देव मत बनाइयो ॥

१८ अखमीरी रोटी के पर्ब्ब का पालन कीजियो सात दिन लों जैसा मैं ने तुझे आज्ञा किई है आबीब के मास के समय में ठहराके अखमीरी रोटी खाइयो क्योंकि तू आबीब के मास में मिस्र से बाहर आया । १९ सब जो गर्भ को खोलते हैं और तेरे पशुन के समस्त पहिलौठे नर बैल अथवा भेड़ के हों मेरे हैं । २० परन्तु गदहे के पहिलौठे को

मेम्ना देके छुड़ाइयो और यदि न छुड़ावे तो उस का गला तोड़ डालियो अपने पुत्रों के समस्त पहिलौठों को छुड़ाइयो और मेरे आगे कोई छूछे हाथ न आवे ॥

२१ छः दिन लों कार्य्य करना परन्तु सातवें दिन बिश्राम करना हल जोतने और लवने का समय हो बिश्राम करना ॥

२२ और अठवारों का पर्व्व गोहूं के पहिले फल लवने के समय और संबत के अंत में एकट्ठा करने का पर्व्व करना ॥

२३ तुम्हारे समस्त पुत्र बरस में तीन बार प्रभु परमेश्वर इसराएल के ईश्वर के

२४ आगे आवें । इस लिये कि मैं जातिगणों को तेरे आगे से बाहर निकालूंगा और तेरे सिवाने को बढ़ाऊंगा और जब कि तू बरस में तीन बार अपने परमेश्वर ईश्वर के आगे जायगा तब कोई तेरे देश की बांछा न करेगा ॥

२५ तू मेरी यज्ञवेदी पर लोहू खमीर के साथ बलिदान मत चढ़ाना और फसह के पर्व्व का बलिदान कधी बिहान लों

२६ रहने न पावे । तू अपनी भूमि के पहिले फलों का पहिला अपने परमेश्वर ईश्वर के घर में लाना मेम्ना को उस की माता के दूध में मत सिझाना ॥

२७ और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि तू ये बातें लिख क्योंकि इन बातों के समान मैं ने तुझ से और इसराएल से

२८ बाचा बांधी है । और मूसा चालीस दिन रात वहां परमेश्वर के पास था उस ने न रोटी खाई और न पानी पीया और उस ने उस नियम की बातें वे दस आज्ञा पटियों पर लिखीं ॥

२९ और ऐसा हुआ कि जब मूसा सीना पहाड़ से उतरा और जब वह पहाड़ से उतरा तब साक्षी की दोनों पटियां मूसा के हाथ में थीं तो मूसा न जानता था कि जब वह उस के साथ बातें करता था तब उस के मुंह का चमड़ा चमकता

३० था । और जब हारून और इसराएल के समस्त संतानों ने मूसा को देखा तो देखो कि उस के मुंह का चमड़ा चमकता था और वे उस के पास आने से डरते

३१ थे । तब मूसा ने उन्हें बुलाया और हारून और मंडली के समस्त प्रधान उस पास फिर आये और मूसा ने उन से बातें

३२ किईं । और अंत को इसराएल के समस्त संतान पास आये और उस ने उन सब बातों को जो परमेश्वर ने उसे सीना के पहाड़ पर कही थीं उन्हें आज्ञा किईं ।

३३ और जब मूसा उन से बातें कर चुका तो उस ने अपने मुंह पर घूंघट डाला ।

३४ पर जब मूसा परमेश्वर के आगे उस्से बार्त्ता करने जाता था तो जब लों बाहर न आता था घूंघट को उतार देता था और जो आज्ञा होती थी वह बाहर आके इसराएल के संतानों को कहता

३५ था । और इसराएल के संतानों ने मूसा का मुंह देखा कि मूसा के मुंह का चमड़ा चमकता था और मूसा ने अपने मुंह पर घूंघट डाला जब लों कि ईश्वर से बातें करने गया ॥

पैंतीसवां पर्व्व ।

१ और मूसा ने इसराएल के संतानों की समस्त मंडली को एकट्ठा करके उन से कहा कि परमेश्वर ने इन बातों की आज्ञा किई है कि तुम उन्हें पालन

२ करो । छः दिन लों कार्य्य किया जावे परन्तु सातवां दिन तुम्हारे लिये पवित्र बिश्राम होवे परमेश्वर का बिश्राम जो कोई उस में कार्य्य करेगा सो मार

३ डाला जायगा । बिश्राम के दिन अपने समस्त निवासों में आग मत बारियो ॥

४ और मूसा ने इसराएल के संतानों की समस्त मंडली को कहा वह आज्ञा जो परमेश्वर ने किई यह है । तुम अपने

में से परमेश्वर के लिये भेंट लाओ जो कोई मन से चाहे सो परमेश्वर के लिये भेंट लावे सोना और रूपा और पीतल। ६ और नीला और बैंजनी और लाल और झीने सूती बस्त्र और बकरियों के ७ बाल। और लाल रंगे हुए मेंढ़ों के चमड़े और तुखसों के चमड़े और ८ शमशाद की लकड़ी। और जलाने का तेल और अभिषेक के तेल के लिये और धूप के लिये सुगंध द्रव्य। ९ और सूर्य्यकांतमणि और एफोद और १० चपरास पर जड़ने के लिये मणि। और तुम में से जो बुद्धिमान हैं आवे और जो कुछ परमेश्वर ने आज्ञा किई है ११ बनावे। निवास उस का तंबू और उस का घटाटोप उस की घुण्डियां और उस के पाट उस के अड़ंगे उस के खंभे १२ और उस के पाए। मंजूषा और उस के बहंगार ढकना और ढांपने का घूंघट। १३ मंच और उस के बहंगार और उस के १४ समस्त पात्र और भेंट की रोटी। और ज्योति के लिये दीअट और उस की सामग्री और उस के दीपक और प्रकाश के लिये १५ तेल। और धूप की बेदी और उस के बहंगार और अभिषेक का तेल और सुगंध द्रव्य का धूप और तंबू में प्रवेश करने १६ के द्वार की ओट। बलिदान के भेंट की यज्ञबेदी और उस के पीतल की झरनी उस के बहंगार और उस के समस्त पात्र स्नानपात्र उस के पाए समेत। १७ आंगन की ओट उस के खंभे और उस के पाए और आंगन के द्वार की ओट। १८ तंबू के खूंटे और आंगन के खूंटे और १९ उन की डोरियां। सेवा के बस्त्र जिसतें पवित्र स्थान में सेवा करें हारून याजक के लिये पवित्र बस्त्र और उस के बेटों के पवित्र बस्त्र जिसतें याजक के पद में सेवा करें॥

२० तब इसराएल के संतानों की समस्त २१ मंडली मूसा के आगे से चली गई। और हर एक जिस के मन ने उसे उभाड़ा और हर एक अपने मन के अभिलाष से जिस ने जो चाहा मंडली के तंबू के कार्य्य के लिये और उस की समस्त सेवा और पवित्र बस्त्र के लिये परमेश्वर की २२ भेंट लाया। और वे आये क्या स्त्री क्या पुरुष जितनों को बांछा हुई और खड़वे और बालियां और कुंडल और अंगूठियां ये सब सोने के गहने थे और हर एक मनुष्य जिस ने परमेश्वर के लिये २३ सोने की भेंट दिई। और हर एक मनुष्य जिस के पास नीला और बैंजनी और लाल और सूत के झीने बस्त्र और बकरियों के रोम और मेंढ़ों के लाल चमड़े और तुखसों के चमड़े थे लाया। २४ हर एक जिस ने कि परमेश्वर को रूपे की अथवा पीतल की भेंट दिई अपनी भेंट परमेश्वर के लिये लाया और जिस किसी के पास शमशाद की लकड़ी थी सो उसे सेवा के समस्त कार्य्य के लिये २५ लाया। और समस्त स्त्रियों ने जो बुद्धिमान थीं अपने अपने हाथों से काता और अपना काता हुआ नीला और बैंजनी और लाल और झीने सूत २६ का बस्त्र लाईं। और समस्त स्त्रियों ने जिन के मनों ने उन्हें बुद्धि में उभाड़ा २७ बकरियों के रोम काते। और प्रधान एफोद और चपरास के लिये सूर्य्यकांत २८ और जड़ने के मणि लाये। और सुगंध द्रव्य और तेल दीअट के लिये और अभिषेक के तेल के लिये और जलाने के २९ सुगंध द्रव्य के लिये। क्या पुरुष और क्या स्त्री जिस का मन चाहा सो समस्त कार्य्य के लिये जो परमेश्वर ने बनाने को मूसा के द्वारा कहा था इसराएल के संतान परमेश्वर के लिये बांछित भेंट लाये॥

३० तब मूसा ने इसराएल के संतानों से कहा कि देखो परमेश्वर ने ऊरी के पुत्र बजिल्लिएल को जो हूर का पोता और यहूदाह के कुल का है नाम लेके बुलाया। ३१ और उस ने उसे बुद्धि और समझ और ज्ञान में और समस्त प्रकार की हथौटी में परमेश्वर के आत्मा से भर दिया। ३२ कि अपनी बुद्धि से हथौटी का कार्य्य निकाले जिसतें सोने और रूपे और पीतल ३३ के कार्य्य करे। और मणि के खोदने में जड़ने के लिये और काष्ठ के खोदने में जिसतें समस्त प्रकार की हथौटी के ३४ कार्य्य करे। और उस ने उस के और अखिसमक के बेटे अहलिअब के जो दान के कुल से है मन में डाला कि ३५ सिखलावें। उस ने उन के अंतःकरणों में ऐसा ज्ञान दिया कि खोदक के और हथौटक के और बूटाकाढ़क के समस्त कार्य्य करें नीला और बैंजनी लाल और झीने बस्त्र में और जोलाहे के कार्य्य में और हथौटी के कार्य्य में जो बुद्धि से निकालते हैं॥

छत्तीसवां पर्ब्ब

१ तब बजिल्लिएल और अहलिअब और सब बुद्धिमानों ने जिन में परमेश्वर ने बुद्धि और समझ रक्खी थी कि पवित्र स्थान की सेवा के समस्त प्रकार के कार्य्य जैसा कि परमेश्वर ने समस्त आज्ञा २ दिई वैसा उन्हों ने किया। सो मूसा ने बजिल्लिएल और अहलिअब और हर एक बुद्धिमान को जिस के हृदय में परमेश्वर ने बुद्धि और समझ डाली थी हर एक जिस के मन ने उसे उभाड़ा था कि कार्य्य करने ३ के लिये पास आवे। और उन्हों ने मूसा के साम्हने से समस्त भेंट जिसे इसराएल के संतान पवित्र स्थान की सेवा के कार्य्य के लिये लाये थे पाईं और वे हर बिहान उस के पास मनमनती भेंट लाते थे॥

४ और सब बिद्यावान जो पवित्र स्थान का समस्त कार्य्य करते थे हर एक मनुष्य अपने अपने कार्य्य से जो वह करते थे ५ आये। और मूसा को कहके बोले कि कार्य्य की सेवा से जो परमेश्वर ने आज्ञा ६ किई है लोग अधिक लाते हैं। तब मूसा ने आज्ञा किई और समस्त छावनी में प्रचार कराया कि क्या पुरुष और क्या स्त्री अब कोई पवित्र स्थान की भेंट के कार्य्य के लिये और न बनावे सो लोग ७ लाने से रोके गये। और जो सामग्री उन के पास थी समस्त कार्य्य बनाने के लिये बहुत और अधिक थी॥

८ और तंबू के कार्य्यकारियों में से हर एक ने जो बुद्धिमान था बटे हुए सूती बस्त्र और नीले और बैंजनी और लाल हथौटी के कार्य्य से करोबीम के ९ साथ दस ओट बनाईं। हर ओट की लंबाई अठाईस हाथ और उस की चौड़ाई चार हाथ सब ओट एक नाप १० की। और पांच ओट को एक दूसरे में मिलाया और पांच ओट एक दूसरे में ११ मिलाया। और उस ने एक ओट के कोर पर अनवट से लेके जोड़ पर नीले तुकमे बनाये इसी रीति से दूसरी ओट के अत्यंत अलंग में दूसरे के जोड़ पर १२ बनाये। उस ने एक ओट के अंचल में पचास तुकमे बनाये और पचास तुकमे दूसरी ओट के मिलाने के खूंट में बनाये जिसतें तुकमे एक दूसरे में जुट जायें। १३ और उस ने सोने की पचास घुण्डियां बनाईं और उन घुण्डियों से ओट को जोड़ा जिसतें एक तंबू हो जावे॥

१४ और उस ने बकरी के रोम के ग्यारह ओट बनाये जिसतें तंबू के लिये छपना १५ हो। एक ओट की लंबाई तीस हाथ और चौड़ाई चार हाथ ग्यारहों ओट १६ एकही परिमाण की बनाईं। और उस

ने पांच ओट को अलग जोड़ा और छः
१७ ओट को अलग। और उस में पचास
तुकमे एक ओट के खूंट में जो अंत के
खूंट के जोड़ में है और पचास तुकमे
१८ दूसरी ओट के खूंट में बनाये। और उस
ने तंबू को जोड़ने के लिये जिसतें एक
हो जावे पीतल की पचास घुण्डियां
बनाईं॥

१९ और उस ने मेंढों के रंगे हुए लाल
चमड़ों से और तुखसों के चमड़ों से तंबू
के लिये ढांपन बनाया॥

२० और उस ने तंबू के लिये शमशाद
२१ की लकड़ी से खड़े पाट बनाये। हर
पाट की लंबाई दस हाथ और उस की
२२ चौड़ाई डेढ़ हाथ। हर पाट में दो दो
पाए जो एक दूसरे के समान अंतर में
थे उस ने तंबू के समस्त पाटों के लिये
२३ योंहीं बनाया। और उस ने तंबू के लिये
पाट बनाये बीस पाट दक्षिण की ओर
२४ के लिये। और उस ने उन बीस पाटों
के नीचे के लिये रूपे के चालीस पाए
बनाये हर पाट के नीचे के लिये दो दो
२५ उस के चूलों के समान। और तंबू की
दूसरी अलंग के लिये जो उत्तर की ओर
२६ है बीस पाट बनाये। और उन के
चालीस रूपे के पाए हर एक पाट के नीचे
२७ दो पाए। और उस में तंबू की पश्चिम
२८ अलंग के लिये छः पाट बनाये। और
तंबू की दोनों अलंग में कोने के लिये
२९ दो पाट बनाये। और वे नीचे जोड़े गये
और एक कड़ी में ऊपर से जोड़े गये इसी
रीति से उस ने दोनों के दोनों कोनों में
३० जोड़ा। और आठ पाट और उन के
चांदी के सोलह पाए थे एक पाट के
नीचे दो दो पाए॥

३१ और शमशाद काष्ठ से अड़ंगे बनाये
तंबू की एक अलंग के पाटों के लिये
३२ पांच। और तंबू की दूसरी अलंग के
पाटों के लिये पांच अड़ंगे और तंबू की
पश्चिम अलंगों के लिये पांच। और उस ३३
ने मध्य का अड़ंगा ऐसा बनाया कि एक
सिरे से दूसरे सिरे के पाटों में प्रवेश
होवे। और पाटों को सोने से मढ़ा और ३४
उन के कड़े सोने के बनाये अड़ंगों के
लिये स्थान और अड़ंगों को सोने से
मढ़ा॥

और नीला और बैंजनी और लाल रंग ३५
और बटे हुए झीने सूत के वस्त्र से एक
घूंघट बनाया हथौटी के कार्य्य से इसे
करोबीम के साथ बनाया। और उस के ३६
लिये शमशाद के चार खंभे बनाये और
उन्हें सोने से मढ़ा उन के आंकड़े सोने
के और उन के लिये चार पाए चांदी के
ढालकर बनाये॥

और वह नीला और बैंजनी और लाल ३७
और बटा हुआ झीने सूत से बूटा काढ़ी
हुई तंबू के द्वार के लिये एक ओट
बनाई। और उस के पांच खंभे उन के ३८
आंकड़े सहित बनाये और उन के सिरे
उन की कंगनी समेत सोने से मढ़े और
उन के पांच पाए पीतल के थे॥

सैंतीसवां पर्ब्ब।

और बजिल्लिएल ने शमशाद काष्ठ से १
मंजूषा को बनाया उस की लंबाई अढ़ाई
हाथ और उस की चौड़ाई डेढ़ हाथ
और उस की ऊंचाई डेढ़ हाथ की।
और उसे चोखे सोने से भीतर बाहर २
मढ़ा और उस की चारों ओर के लिये
एक सोने की कंगनी बनाई। और उस ३
ने उस के चार कोनों के लिये सोने के
चार कड़े ढाले और दो कड़े उस की
एक अलंग और दो कड़े उस की दूसरी
अलंग। और शमशाद की लकड़ी के ४
बहंगर बनाये और उन्हें सोने से मढ़ा।
और उस ने बहंगरों को मंजूषा की अलंग ५
के कड़ों में डाला कि मंजूषा को उठावें॥

६ और उस ने ढकने को चोखे सोने से बनाया उस की लंबाई अढ़ाई हाथ और ७ उस की चौड़ाई डेढ़ हाथ। और सोने के दो करोबी बनाये एक टुकड़े से पीटके ढकने के दोनों खूंट में उन्हें ८ बनाया। एक करोबी इस खूंट में और एक करोबी उस खूंट में ढकने में से उस ने करोबियों को उस के दोनों खूंट ९ में बनाया। और करोबियों ने अपने पंख ऊपर फैलाये और अपने पंख से ढकने को ढांप लिया और उन के मुंह एक दूसरे की ओर थे करोबी के मुंह ढकने की ओर थे॥

१० और उस ने मंच को शमशाद की लकड़ी से बनाया उस की लंबाई दो हाथ और उस की चौड़ाई एक हाथ और ११ उस की ऊंचाई डेढ़ हाथ। और उसे चोखे सोने से मढ़ा और उस के लिये चारों ओर सोने का एक कलश बनाया। १२ और उस ने उस के लिये चार अंगुल की एक कंगनी बनाई और उस की कंगनी के लिये १३ चारों ओर सोने के कलश बनाये। और उस ने उस के लिये सोने के चार कड़े ढाले और उन कड़ों को उस के चारों पायों के १४ चारों कोनों में लगाया। कंगनी के सन्मुख कड़े थे बहंगार के स्थान मंच उठाने के १५ लिये। और उस ने बहंगारों को शमशाद की लकड़ी का बनाया और उन्हें १६ सोने से मढ़ा मंच उठाने के लिये। और मंच पर के पात्र उस के थाल और उस के कटोरे और उस की थालियां और उस की कटोरियां ढपने के लिये निर्मल सोने के बनाये॥

१७ और उस ने दीअट को निर्मल सोने से बनाया गढ़के उस ने दीअट को बनाया उस की डंडी और उस की डालों उस की कटोरियां उस की कलियां और १८ उस के फूल उस ही में से थे। और उस के अलंगों से छः डालियां निकलती थीं दीअट की एक अलंग से तीन डालियां और दीअट की दूसरी अलंग से तीन डालियां। तीन कटोरियां बदाम की १९ नाईं एक डाली में थीं कली और फूल और तीन कटोरियां बदाम की नाईं एक एक डाली में यों छओं डालियों में जो दीअट से निकलती थीं। और दीअट २० में चार कटोरियां बदाम की नाईं बनी हुई थीं उस की कलियां और उस के फूल। और उस की दो दो डालियों २१ के नीचे एक एक कली थी छः डालियों के समान जो उस्से निकलती थीं। उन की २२ कलियां और उन की डालियां उसी में से थीं वह सब के सब निर्मल सोने से गढ़े हुए थे। और उस के सात दीपक २३ और उस के फूल की कतरनियां और उस के पात्र निर्मल सोने से बनाये। उस ने २४ उसे और उस के समस्त पात्रों को एक तोड़ा निर्मल सोने का बनाया॥

२५ और धूपबेदी को शमशाद की लकड़ी से बनाया उस की लंबाई एक हाथ और उस की चौड़ाई एक हाथ चौकोर बनाया और उस की ऊंचाई दो हाथ उस के सींग उसी से थे। और उस का २६ ढपना और उस की चारों ओर की अलंग और उस के सींग निर्मल सोने से मढ़े और उस के लिये सोने के चारों ओर कलश बनाये। और उस ने उस के २७ कलश के नीचे के लिये उस के दोनों कोनों के पास उस की दोनों अलंगों पर जिसतें उस के उठाने के बहंगार के स्थान होवें सोने के दो कड़े बनाये। और उस ने बहंगारों को शमशाद की २८ लकड़ी से बनाया और उन्हें सोने से मढ़ा। और अभिषेक का पवित्र तेल २९ और गंधी के कार्य्य के समान सुगंध द्रव्य से चोखी धूप बनाई॥

तीसवां

१ और उस ने बलिदान की भेंट की यज्ञबेदी को शमशाद की लकड़ी से बनाया उस की लंबाई पांच हाथ और उस की चौड़ाई पांच हाथ चौखूंटी २ और उस की ऊंचाई तीन हाथ। और उस के चारों कोनों पर सींग बनाये उस के सींग उस में से थे और उस ने उसे ३ पीतल से मढ़ा। और उस ने यज्ञबेदी के समस्त पात्र बटलोहीं और फावड़ियां और कटोरे और मांस के कांटे और अङ्गोठियां उस के समस्त पात्र पीतल से ४ बनाये। और उस ने यज्ञबेदी के लिये पीतल की जाली से उस के कोर के नीचे उस की आधी दूर लों एक झंझरी ५ बनाई। और उस ने पीतल की झंझरी के चारों कोनों के लिये बहंगार के ६ स्थान पर चार कड़े बनाये। और उस ने बहंगारों को शमशाद की लकड़ी से ७ बनाया और उन्हें पीतल से मढ़ा। और उस ने बहंगारों को यज्ञबेदी के उठाने के लिये अलंगों के कड़ों में डाला उस ने उसे पटियों से पोला बनाया॥

और उस ने स्नानपात्र और उस की चौकी पीतल से बनाई उन स्त्रियों के दर्पण से जो मंडली के तंबू के द्वार पर एकट्ठी होती थीं॥

और उस ने आंगन बनाया दक्षिण दिशा के दक्षिण ओर आंगन के ओट झीने बटे हुए सूती बस्त्र से एक सौ १० हाथ थे। उन के बीस खंभे और उन के पीतल के बीस पाए खंभों के आंकड़े ११ और उन की सामी चांदी की। और उत्तर दिशा के लिये सौ हाथ उन के बीस खंभे और उन के पीतल के बीस पाए खंभों के आंकड़े और उन की सामी १२ चांदी की। और पश्चिम की ओर पचास हाथ की ओट उन के दस खंभे और उन के दस पाए खंभों के आंकड़े और सामी उन की चांदी की। और १३ पूरब दिशा की पूरब ओर के लिये पचास हाथ। ओट पंदरह हाथ की १४ आंगन पर उन के खंभे तीन और उन के पाए तीन। और आंगन के द्वार की १५ दूसरी अलंग के लिये इधर उधर पंदरह हाथ की ओट उन के तीन खंभे और उन के तीन पाए। आंगन की १६ चारों ओर की समस्त ओट बटे हुए झीने सूती बस्त्र की थी। और खंभों १७ के पाए पीतल के खंभों के आंकड़े और उन की सामी चांदी की और उन के माथे चांदी से मढ़े हुए और आंगन के सब खंभे चांदी से जोड़े हुए थे। और आंगन के द्वार की ओट १८ बूटा काढ़े हुए नीले और बैंजनी और लाल और बटे हुए झीने सूती बस्त्र की थी और उस की लंबाई बीस हाथ और चौड़ाई पांच हाथ आंगन की ओट से मिलती थी। और उन के चार खंभे और १९ उन के चार पाए पीतल के उन के आंकड़े चांदी के और उन के माथे और उन की सामी चांदी से मढ़े हुए थे। और तंबू की और आंगन की चारों ओर २० के सब खूंटे पीतल के॥

हारून याजक के पुत्र ईतमर के २१ हाथ से लावियों की सेवा के लिये मूसा की आज्ञा के समान साक्षी के तंबू का लेखा यह है। यहूदा के कुल से हूर के २२ नाती ऊरी के बेटे बज़लिएल ने सब कुछ जो परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी बनाया। और उस के साथ २३ दान के कुल का अख़ीसमक का बेटा अहलिआब था जो खोदने के और हथौटी के कार्य्य में और नीला और बैंजनी और लाल बूटा काढ़ने में और झीने बस्त्र में बुद्धिमान था॥

२४ समस्त सोना जो पवित्र कार्य्य में उठा था अर्थात् भेंट का सोना सो उंतीस तोड़े और सात सौ तीस शैकल पवित्र स्थान के शैकल से था॥

२५ और मंडली की गिनती में की चांदी एक सौ तोड़े और एक सहस्र सात सौ पचहत्तर शैकल पवित्र स्थान के शैकल के समान था। २६ हर मनुष्य के लिये एक बीका अर्थात् आधा शैकल पवित्र स्थान के शैकल के समान हर एक के लिये बीस बरस से और ऊपर जिस की गिनती हुई छः लाख तीन सहस्र साढ़े पांच सौ थे। २७ और चांदी के सौ तोड़े से पवित्र स्थान के पाए और घूंघट के पाए ढाले गये सौ तोड़े के सौ पाए एक तोड़े का एक पाया। २८ और एक सहस्र सात सौ पचहत्तर शैकल से उस ने खंभों के आंकड़े बनाये और उन के माथे मढ़े और उन में सामी लगाईं॥

२९ और भेंट का पीतल जो सत्तर तोड़े और दो सहस्र चार सौ शैकल थे। ३० और उस ने उस्से मंडली के तंबू के द्वार के लिये पाए और पीतल की यज्ञवेदी और उस की पीतल की झंझरी और यज्ञवेदी के समस्त पात्र बनाये। ३१ और आंगन की चारों ओर के पाए और आंगन के द्वार के पाए और तंबू के सब खूंटे और आंगन की चारों ओर के सब खूंटे॥

उंतालीसवां पर्ब्ब।

१ और नीले और बैंजनी और लाल से उन्हों ने पवित्र सेवा के लिये सेवा के कपड़े बनाये और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी हारून के लिये पवित्र बस्त्र बनाये॥

२ और उस ने एफोद को सोने नीले और बैंजनी और लाल और झीने बटे ३ हुए सूत से बनाया। और उन्हों ने सोने के पतील पतील पत्तर गढ़े और तार खींचे जिसतें उन्हें नीले में और बैंजनी में और लाल में और झीने सूती बस्त्र में चित्रकारी की क्रिया से बनावें। ४ उस के लिये कांधों के टुकड़े बनाये कि जोड़े वह दोनों खूंट से जोड़ा हुआ था। ५ और उस के एफोद का पटुका जो उस के कार्य्य के समान सोने का और नीले और बैंजनी और लाल और बटे हुए झीने सूत से जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी उसी में से था॥

६ और उन्हों ने बैदूर्य्यमणि को सोने के ठिकानों में जड़े हुए बनाये और वह इसराएल के संतानों के नाम के समान खोदे गये जैसा कि अंगूठी खोदी जाती है। ७ और उस ने उन्हें एफोद के कांधों पर रक्खा जिसतें इसराएल के संतानों के लिये स्मरण के मणि हों जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी॥

८ और चपरास को हथौटी के कार्य्य से एफोद की नाईं सोने नीले और बैंजनी और लाल और बटे हुए झीने सूती बस्त्र से बनाया। ९ वह चौकोर थी उन्हों ने चपरास को दोहरा बनाया उस की लंबाई और उस की चौड़ाई बित्ता भर की दोहरी थी। १० और उन्हों ने उस में मणि की चार पांती जड़ीं पहिली पांती में माणिक पद्मराग और पन्ना। ११ और दूसरी पांती में लालड़ी नीलम और हीरा। १२ और तीसरी पांती में लशम १३ सूर्य्यकांत और नीलमणि। और चौथी पांती में फीरोजा बैदूर्य और चंद्रकांत सोने के घरों में जड़े हुए थे। १४ इन मणिन में इसराएल के संतानों के नाम के समान बारहों के नाम के समान बारह भेद के समान हर एक का नाम खोदा हुआ था जैसी अंगूठी खोदी जाती है। १५ और चपरास की कोरों में निर्मल सोने की गुंथी हुई सीकरें बनाईं। १६ और उन्हों

के सोने के दो घर और सोने के दो कड़े बनाये और दोनों कड़ों को चपरास के १७ दोनों कड़ों में लगाया। और उन्हों ने गुंथी हुई सोने की दो सीकरें चपरास की कोरों के दोनों कड़ों में लटकाईं। १८ और गुंथी हुई दो सीकरों के दोनों खूंट को उन्हों ने दोनों घरों में दृढ़ किया और उन्हें एफोद के दोनों पुट्ठों के १९ टुकड़ों के आगे लगाया। और उन्हों ने सोने के दो कड़े बनाये और उन्हें चपरास की दो कोरों में लगाया उस खूंट पर जो एफोद के भीतर की ओर था। २० और उन्हों ने सोने के दो कड़े बनाये और उन्हें एफोद के नीचे की दो अलंग में उस के आगे की ओर उस के जोड़ के सन्मुख एफोद के पटुके के ऊपर २१ लगाये। और उन्हों ने चपरास को उस के कड़ों से एफोद के कड़ों में नीले गोटों से बांधा॥

२२ जिसतें वह एफोद के पटुके के ऊपर होवे और जिसतें एफोद से चपरास खुल न जाय जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी और उस ने एफोद के बस्त्र को बिना बटे नीले कार्य्य से २३ बनाया। और उसी बस्त्र के मध्य में एक छेद हो जैसा कि झिलम का मुंह होता है और उस छेद की चारों ओर बिने हुए कार्य्य की गोटे जिसतें फटने २४ न पावे। और उन्हों ने उस बस्त्र के खूंट के घेरे में नीले और बैंजनी और लाल रंग और बटे हुए सूत के अनार बनाये। और उन्हों ने चोखे सोने की घंटियां बनाईं और घंटियों को उस बस्त्र के अनार के मध्य में लगाया अनार के मध्य में चारों ओर लगाया। घंटी और अनार घंटी और अनार बागे के अंचल की चारों ओर सेवा के लिये जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी॥

और झीने सूत की कुरतियां हारून २७ और उस के बेटों के लिये बिने हुए कार्य्य से बनाईं। और झीने सूती पगड़ी २८ और मुकुट और बटे हुए झीने सूती सुथना। और बटे हुए झीने सूती बस्त्र २९ का पटुका और नीला और बैंजनी और लाल बूटा काढ़ा हुआ जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी बनाया॥

और पवित्र मुकुट के पत्र को निर्मल ३० सोने से बनाया और उस में खोदी हुई अंगूठी की नाईं यह खोदा परमेश्वर के लिये पवित्रता। और उस में एक नीला ३१ गोटा बांधा जिसतें मुकुट के ऊपर हो जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी॥

इस रीति से मंडली के तंबू का ३२ कार्य्य बन गया और इसराएल के संतानों ने जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी वैसा ही किया॥

और वे तंबू मूसा पास लाये अर्थात् ३३ डेरा और उस की समस्त सामग्री उस की घुण्डियां उस की पटियां उस के अड़ंगे और उस के खंभे और उस के पाए। और मेंढ़ों के रंगे हुए लाल चमड़े ३४ का घटाटोप और तुखसों के चमड़े का घटाटोप और घटाटोप का घूंघट। साक्षी की मंजूषा और उस के बहंगर ३५ और ढकना। मंच और उस के समस्त ३६ पात्र और भेंट की रोटी। पवित्र दीअट ३७ उस के दीपक समेत और दीपक जो बिधि से रक्खे जायें और उसी के समस्त पात्र और जलाने का तेल। और सोने ३८ की बेदी और अभिषेक का तेल और सुगंध धूप और तंबू के द्वार की ओट। पीतल की यज्ञबेदी और उस की पीतल ३९ की झंझरी उस के बहंगर और उस के समस्त पात्र स्नानपात्र और उस के पाए। आंगन की ओट उस के खंभे और उस ४० के पाए समेत और आंगन के द्वार की

ओट उस की रस्सियां और उस के खूंटे और मंडली के तंबू के लिये तंबू की
४१ सेवा के समस्त पात्र। पवित्र स्थान में सेवा के लिये सेवा के बस्त्र और हारून याजक के लिये पवित्र बस्त्र और उस के बेटों के बस्त्र कि याजक के पद में सेवा
४२ करें। जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी वैसे ही इसराएल के
४३ संतानों ने सब काम किये। और मूसा ने सब काम को देखा और देखो कि जैसा परमेश्वर ने आज्ञा किई थी वैसा ही उन्हों ने किया तब मूसा ने उन्हें आशीस दिई॥

चालीसवां पर्ब्ब

१ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला।
२ कि पहिले मास के पहिले दिन तंबू को जो
३ मंडली का तंबू है खड़ा कर। और उस में साक्षी की मंजूषा रख और मंजूषा पर घूंघट
४ डाल। और मंच को भीतर ले जा और उस पर की बस्तु उस पर बिधि से रख और दीअट भीतर ले जा और उस के
५ दीपक बार। और धूप के लिये सोने की बेदी को साक्षी की मंजूषा के आगे रख
६ और तंबू के द्वार पर ओट रख। और यज्ञ-बेदी को तंबू के द्वार के आगे रख मंडली
७ के तंबू के आगे। और स्नानपात्र मंडली के तंबू और यज्ञबेदी के बीच में रख
८ और उस में पानी डाल। और आंगन को चारों ओर खड़ा कर और ओट को
९ आंगन के द्वार पर टांग। और अभिषेक का तेल ले और तंबू को और सब जो उस में है अभिषेक कर और उसे और उस के समस्त पात्रों को पवित्र कर
१० और वह पवित्र हो जायगा। और बलि-दान की यज्ञबेदी को और उस के समस्त पात्रों को अभिषेक कर और यज्ञबेदी को पवित्र कर तब यज्ञबेदी
११ अति पवित्र होगी। और स्नानपात्र और उस के पाए को भी अभिषेक कर और
१२ उसे पवित्र कर। और हारून और उस के बेटों को मंडली के तंबू के द्वार के समीप ला और उन को पानी से नहला।
१३ और हारून को पवित्र बस्त्र पहिना और उसे अभिषेक कर और उसे पवित्र ठहरा जिसतें वह मेरे लिये याजक के
१४ पद में सेवा करे। और उस के बेटों को समीप ला और उन्हें कुरतियां
१५ पहिना। और उन्हें अभिषेक कर जैसे उन के पिता को अभिषेक किया जिसतें वे मेरे लिये याजक होवें और उन के अभिषेक का होना निश्चय सनातन की याजकता उन की समस्त पीढ़ियों में होगी॥

१६ और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी उस ने वैसा ही किया।
१७ और दूसरे बरस के पहिले मास की पहिली तिथि में तंबू खड़ा हो गया।
१८ और मूसा ने तंबू को खड़ा किया और उस के पाए दृढ़ किये और उस के पाट खड़े किये और उस के अड़ंगे प्रवेश किये
१९ और उस के खंभे खड़े किये। और उस ने तंबू को डेरे पर फैलाया और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी उस ने तंबू के घटाटोप को उस के ऊपर रक्खा॥

२० और उस ने साक्षी को मंजूषा में रक्खा और बहंगर को मंजूषा के ऊपर रक्खा और ढकने को मंजूषा के ऊपर
२१ रक्खा। और वह मंजूषा को तंबू के भीतर लाया और घूंघट टांग दिये और साक्षी की मंजूषा को ढांप दिया जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी॥

२२ और घूंघट के बाहर तंबू की उत्तर अलंग उस ने मंडली के तंबू में मंच को
२३ रक्खा। और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा

को आज्ञा किई थी वैसा ही उस ने रोटी को विधि से उस पर परमेश्वर के आगे रक्खा ॥

२४ और उस ने दीअट को मंडली के तंबू में मंच के सम्मुख तंबू की दक्खिन २५ अलंग रक्खा। और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी उस ने परमेश्वर के आगे दीपक को बारा ॥

२६ और उस ने सोने की बेदी को मंडली २७ के तंबू में घूंघट के आगे रक्खा। और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी उस ने उस पर सुगंध धूप जलाया ॥

२८ और तंबू के द्वार पर ओट को टांगा। २९ और बलिदान की यज्ञबेदी को तंबू के द्वार पर मंडली के तंबू के पास खड़ा किया और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी उस ने उस पर बलिदान की भेंट और होम की भेंट चढ़ाई ॥

३० और उस ने स्नानपात्र को मंडली के तंबू के और यज्ञबेदी के मध्य में रक्खा और नहाने के लिये उस में पानी ३१ डाला। तब उस्से मूसा और हारून और उस के बेटों ने अपने हाथ पांव धोये। ३२ जब वे मंडली के तंबू में प्रवेश करते और यज्ञबेदी के पास आते तब नहाते जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी ॥

३३ और उस ने तंबू की और यज्ञबेदी की चारों ओर आंगन पर और आंगन के द्वार पर ओट टांगी सो मूसा ने सब कार्य्य पूरा किया ॥

३४ तब मेघ ने मंडली के तंबू को ढांपा और तंबू में परमेश्वर का तेज ३५ भर गया। और मूसा मंडली के तंबू में प्रवेश न कर सका इस लिये कि मेघ उस पर ठहरा था और तंबू परमेश्वर के ३६ तेज से भरा था। और जब मेघ तंबू पर से ऊपर उठाया जाता था तब इसराएल के संतान अपनी समस्त यात्रों ३७ में बढ़े जाते थे। परन्तु जब मेघ ऊपर उठाया न जाता था तब वे उस के उठाये जाने लों यात्रा न करते थे। ३८ क्योंकि दिन को परमेश्वर का मेघ और रात को आग तंबू पर इसराएल के सारे घरानों की दृष्टि में उन की समस्त यात्रों में ठहरता था ॥

लैव्यव्यवस्था की पुस्तक।

पहिला पर्व्व।

१ और परमेश्वर ने मूसा को बुलाया और मंडली के तंबू में से यह बचन उसे २ कहा। कि इसराएल के संतानों से बोल और उन्हें कह कि यदि कोई तुम्में से परमेश्वर के लिये भेंट लावे तो तुम ढोर में से अर्थात् गाय बैल और भेड़ बकरी में से अपनी भेंट लाओ ॥

यदि उस की भेंट गाय बैल में से बलिदान की भेंट होवे तो निष्खोट नर लावे वह मंडली के तंबू के द्वार पर परमेश्वर के आगे अपनी प्रसन्नता के लिये लावे। और वह बलिदान की भेंट के सिर पर अपना हाथ रक्खे और वह उस के प्रायश्चित्त के लिये ग्रहण किया जायगा। और वह उस बैल को

परमेश्वर के आगे बलि करे और हारून के बेटे याजक लोहू को निकट लावें और उस लोहू को यज्ञबेदी के चारों ओर जो मंडली के तंबू के द्वार पर है छिड़कें। ६ तब वह उस भेंट के बलिदान की खाल निकाले और उसे टुकड़ा टुकड़ा करे। ७ और हारून के बेटे याजक यज्ञबेदी पर आग रक्खें और उस पर लकड़ी चुनें। ८ और हारून के बेटे याजक उस के टुकड़ों को और सिर और चिकनाई को उन लकड़ियों पर जो यज्ञबेदी की आग पर हैं बिधि से धरें। ९ परन्तु उस का ओझ और उस के पगों को पानी से धोवे और याजक सभों को यज्ञबेदी पर जलावे जिसतें बलिदान की भेंट होवे जो आग से परमेश्वर के सुगंध के लिये भेंट किया गया॥

१० और यदि उस की भेंट झुंड में से अर्थात् भेड़ बकरी के बच्चों में से बलिदान की भेंट के लिये होवे तो वह निष्खोट नरख लावे। ११ और उसे परमेश्वर के आगे यज्ञबेदी की उत्तर दिशा में बलि करे और हारून के बेटे याजक उस के लोहू को यज्ञबेदी पर चारों ओर छिड़कें। १२ और वह उस के टुकड़ों और उस के सिर और उस की चिकनाई को अलग अलग करे और याजक उन्हें उन लकड़ियों पर जो यज्ञबेदी की आग पर हैं चुने। १३ परन्तु ओझ और पगों को पानी में धोवे और याजक सभों को लेके यज्ञबेदी पर जलावे वह बलिदान की भेंट जो परमेश्वर के सुगंध के लिये भेंट आग से किया गया॥

१४ और यदि उस के बलिदान की भेंट परमेश्वर की भेंट के लिये पंछियों में से होवे तो वह पिण्डुकी अथवा कपोत के बच्चों में से अपनी भेंट लावे। १५ और याजक उसे यज्ञबेदी पर लाके उस का सिर मरोड़ डाले और उसे यज्ञबेदी पर जला दे और उस के लोहू को यज्ञबेदी की अलंग पर निचोड़े। १६ और उस के ओझ को उस के मल सहित निकालके यज्ञबेदी की पूरब अलंग राख के स्थान में फेंक दे। १७ और वह उसे उस के डैनों सहित काटे परन्तु अलग न कर डाले तब याजक यज्ञबेदी की आग पर की लकड़ियों पर उसे जलावे वह बलिदान की भेंट है जो परमेश्वर के सुगंध के लिये आग से भेंट किया गया॥

दूसरा पर्व्व

१ और जब कोई भोजन की भेंट परमेश्वर के लिये लावे तो उस की भेंट चोखा पिसान हो और वह उस पर तेल डालके उस के ऊपर गंधरस रक्खे। २ और वह उसे हारून के बेटों के पास जो याजक हैं लावे और वह उस पिसान में से और तेल में से और समस्त गंधरस सहित मुट्ठी भर लेवे और याजक उस के स्मरण को यज्ञबेदी पर जलावे यह आनंद का सुगंध परमेश्वर के आग की भेंट के लिये है। ३ और भोजन की भेंट का उबरा हुआ हारून और उस के बेटों का होगा यह होम की भेंट में से परमेश्वर के लिये अत्यंत पवित्र है॥

४ और यदि तुम्हारी भेंट भोजन की भेंट तनूर में की पक्की हुई होवे तो अखमीरी पिसान अथवा अखमीरी चपातियां तेल से चुपड़ी हुई होवें॥

५ और यदि तेरी भेंट भोजन की भेंट तवे की होवे अखमीरी तेल से मिली हुई चोखे पिसान की होवे। ६ उसे टुकड़ा टुकड़ा करना और उस पर तेल डालना वह भोजन की भेंट है॥

७ और यदि तेरी भेंट भोजन की भेंट कराही में की होवे तो चोखा पिसान तेल सहित बने। ८ और तू भोजन की

भेंट को जो परमेश्वर के लिये इन वस्तुन से बनी है ला और उसे याजक के आगे धर दे और वह उसे यज्ञबेदी के आगे ९ लावे । और याजक उस भोजन की भेंट में से उस के स्मरण के लिये कुछ लेवे और यज्ञबेदी पर जलावे यह परमेश्वर के लिये सुगंध की भेंट आग से बनी १० है । और जो कुछ भोजन की भेंट में से बच रहा है सो हारून और उस के बेटों का है यह भेंट अत्यंत पवित्र परमेश्वर के लिये आग से बनी है ॥

११ कोई भोजन की भेंट जो तुम परमेश्वर के लिये लाओ खमीर से न बने क्योंकि खमीर और नई मधु परमेश्वर के लिये किसी भेंट में न जलाया जावे । १२ पहिले फलों की भेंट जो हैं तुम उन्हें परमेश्वर के आगे लाओ परन्तु सुगंध के लिये यज्ञबेदी पर जलाई न जावे । १३ और तू अपने भोजन की हर एक भेंट को नोन से लोनी कीजियो और तेरे भोजन की भेंट अपने ईश्वर के नियम के नोन से रहित न होने पावे अपनी समस्त भेंटों में नोन की भेंट लाइयो ॥

१४ और यदि तू पहिले फलों से परमेश्वर के लिये भोजन की भेंट लावे तो अपने पहिले फलों के भोजन की भेंट अन्न की हरी बालें भुनी हुई अर्थात् १५ भरी बालों में से अन्न पीटा हुआ । और उस पर तेल डालियो और गंधरस उस के ऊपर रखियो यह भोजन की भेंट १६ है । और उस के स्मरण की भेंट पीटे हुए अन्न में से और उस के तेल में से उस के समस्त गंधरस सहित याजक जलावे यह आग से परमेश्वर के लिये भेंट है ॥

तीसरा पर्ब्ब ।

१ और यदि उस की भेंट कुशल का बलिदान होवे और वह गाय बैल में से लावे चाहे नर अथवा स्त्रीबर्ग होवे परमेश्वर के आगे उसे निष्खोट लावे । २ और वह अपना हाथ अपनी भेंट के सिर पर रक्खे और मंडली के तंबू के द्वार पर उसे बलि करे और हारून के बेटे जो याजक हैं उस के लोहू को यज्ञबेदी पर चारों ओर छिड़कें । ३ और वह कुशल की भेंट के बलिदान में से परमेश्वर के लिये आग की भेंट लावे चिकनाई जो ओझ को ढांपती है और सारी चिकनाई जो ओझ पर है । ४ और दोनों गुर्दे और उन पर की चिकनाई जो पांजरों पास है और कलेजे पर की झिल्ली गुर्दे समेत अलग करे । ५ और हारून के बेटे उन्हें यज्ञबेदी के ऊपर बलिदान की भेंट पर आग की लकड़ियों पर जलावें यह परमेश्वर के लिये सुगंध जो आग से भेंट किया गया ॥

६ और यदि उस की भेंट कुशल की भेंट का बलिदान परमेश्वर के लिये भेड़ बकरी से नरख अथवा स्त्रीबर्ग से होवे तो वह उसे निष्खोट लावे । ७ यदि वह अपनी भेंट के लिये मेम्ना लावे तो वह उसे परमेश्वर के आगे भेंट देवे । ८ और वह अपना हाथ अपनी भेंट के सिर पर रक्खे और उसे मंडली के तंबू के आगे बलि करे और हारून के बेटे उस के लोहू को यज्ञबेदी पर चारों ओर छिड़कें । और वह कुशल के बलिदानों में से कुछ होम का बलिदान परमेश्वर के लिये लावे उस की चिकनाई और समस्त पूंछ रीढ़ से अलग करके और चिकनाई जो ओझों को ढांपती है और सारी चिकनाई जो ओझों पर है । १० और दोनों गुर्दे और उन पर की चिकनाई जो पांजरों के पास है और कलेजे पर की झिल्ली गुर्दे समेत अलग करे । ११ और याजक उसे बेदी पर जलावे यह भेंट का भोजन

आग से बना हुआ परमेश्वर के लिये है॥

१२ और यदि उस का बलिदान बकरी होय तो उसे परमेश्वर के आगे लावे।
१३ और वह अपना हाथ उस के सिर पर रक्खे और उसे मंडली के तंबू के आगे बलि करे और हारून के बेटे उस के लोहू को यज्ञबेदी पर चारों ओर छिड़कें।
१४ तब वह उस में से अपनी भेंट लावे परमेश्वर के लिये होम चिकनाई जो ओझ को ढांपती है और सारी चिकनाई
१५ जो ओझ पर है। और दोनों गुर्दे और उन पर की चिकनाई जो पांजरों पास है और कलेजे पर की झिल्ली गुर्दे समेत
१६ अलग करे। और याजक उन्हें यज्ञबेदी पर जलावे वह भेंट का भोजन आग से परमेश्वर के सुगंध के लिये बना है सारी
१७ चिकनाई परमेश्वर की है। यह तुम्हारी बस्तियों में तुम्हारी पीढ़ियों के लिये सनातन की बिधि है जिसतें तुम कुछ चिकनाई और लोहू न खाओ॥

चौथा पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा से यह कहके
२ बोला। कि इसराएल के संतानों से कह कि यदि कोई प्राणी परमेश्वर की आज्ञाओं के बिरोध में अज्ञानता से पाप करे
३ जिस का होना अनुचित था। यदि वह अभिषेक किया हुआ याजक लोगों के पाप के समान पाप करे तो वह अपने पाप के कारण जो उस ने किया है अपने पाप की भेंट के लिये निष्खोट एक बछिया परमेश्वर के लिये लावे।
४ और वह उस बछिया को मंडली के तंबू के द्वार पर परमेश्वर के आगे लावे और बछिया के सिर पर अपना हाथ रक्खे और बछिया को परमेश्वर के आगे बलि
५ करे। और वह याजक जो अभिषेक किया हुआ है उस बछिया के लोहू से कुछ लेवे और उसे मंडली के तंबू में
६ लावे। और याजक अपनी अंगुली लोहू में डुबोके परमेश्वर के आगे पवित्र स्थान के घूंघट के साम्ने उस लोहू से सात
७ बार छिड़के। और याजक लोहू से सुगंधबेदी के सींगों पर जो मंडली के तंबू में है परमेश्वर के आगे लगावे और उस बछिया के उबरे हुए लोहू को बलिदान की भेंट की यज्ञबेदी की जड़ पर जो मंडली के तंबू के द्वार पर है
८ ढाले। और सारी चिकनाई को पाप की भेंट के बछड़े से अलग करे जो चिकनाई ओझ को ढांपती है और सब
९ चिकनाई जो ओझ पर है। और दोनों गुर्दे और उन पर की चिकनाई जो पांजरों पास है और कलेजे पर की
१० झिल्ली गुर्दे समेत अलग करे। जिस रीति से कुशल के बलिदान की भेंट के बछड़े से अलग किया जाता है और याजक उन्हें बलिदान की भेंट की
११ यज्ञबेदी पर जलावे। और उस बछड़े की खाल और उस का समस्त मांस उस के सिर पांव समेत और उस के
१२ ओझ और उस का गोबर। और समस्त बछड़ा तंबू के बाहर निर्मल स्थान में जहां राख डाली जाती है ले जावे और उसे लकड़ियों पर आग से जलावे राख डालने के स्थान पर जलाया जावे॥

१३ और यदि इसराएल की सारी मंडली अज्ञानता से ऐसा पाप करे जो मंडली की दृष्टि से छिप जावे और वे परमेश्वर की आज्ञाओं में से ऐसा कुछ करें जो बिपरीत है और अपराधी हो जायें।
१४ तो जब वह पाप जो उन्हों ने किया जाना जावे तब मंडली एक बछड़ा पाप के बलिदान के लिये लेवे और उसे
१५ मंडली के तंबू के साम्ने लावे। और मंडली के प्राचीन अपने हाथ परमेश्वर

के आगे उस बछड़े के सिर पर रक्खें और बछड़ा परमेश्वर के आगे बलि किया जावे। और याजक जो अभिषेक किया हुआ है उस बछड़े के लोहू में से मंडली के तंबू में लावे। १७ और याजक अपनी अंगुली लोहू में डुबोके परमेश्वर के आगे घूंघट के सामे सात बार छिड़के। १८ और लोहू से यज्ञबेदी के सींगों पर जो परमेश्वर के आगे मंडली के तंबू में है लगावे और उबरा हुआ लोहू भेंट के बलिदान की भेंट की यज्ञबेदी की जड़ पर जो मंडली के तंबू के द्वार पर है ढाल दे। १९ और उस की सारी चिकनाई उस में से निकालके यज्ञबेदी पर जलावे। २० और जैसे अपराध के बलिदान के बछड़े से किया था वैसा ही इस बछड़े से करे और याजक उन के लिये प्रायश्चित्त करे और वह उन के लिये क्षमा किया जायगा। २१ और उस बछड़े को छावनी से बाहर ले जाय और जैसा उस ने पहिले बछिया को जलाया था वैसा इसे भी जलावे यह मंडली के लिये पाप की भेंट है॥

२२ जब कोई अध्यक्ष पाप करे और अज्ञानता से परमेश्वर अपने ईश्वर की किसी आज्ञा में से कोई ऐसा कार्य्य करे जो उचित न था और अपराधी होवे। २३ अथवा यदि उस का पाप जिसे उस ने किया जाना जावे तब वह बकरी का निष्खोट नर मेम्ना अपनी भेंट के लिये लावे। २४ और अपना हाथ उस बकरे के सिर पर रक्खे और उसे उस स्थान में जहां बलिदान की भेंट बलि होती है परमेश्वर के आगे बलि करे यह पाप की भेंट है। २५ और याजक पाप की भेंट के लोहू में से अपनी अंगुली पर लेके बलिदान की भेंट की यज्ञबेदी के सींगों पर लगावे और उस का लोहू बलिदान की भेंट की यज्ञबेदी की जड़ पर ढाले। २६ और उस की सब चिकनाई कुशल की भेंट के बलिदान की चिकनाई की नाईं यज्ञबेदी पर जलावे और याजक उस के पाप के कारण उस के लिये प्रायश्चित्त करे और उस के लिये क्षमा किया जायगा॥

२७ और यदि उस देश के लोगों में से अज्ञानता से कोई पाप करे और परमेश्वर की आज्ञा के विरुद्ध अनुचित करे और दोषी होवे। २८ अथवा यदि उस का पाप जो उस ने किया है उसे जान पड़े तब वह अपने पाप के लिये जो उस ने किया है अपनी भेंट के लिये एक स्त्रीबर्ग निष्खोट बकरी का एक मेम्ना लावे। २९ और अपना हाथ पाप की भेंट के सिर पर रक्खे और पाप की भेंट को बलिदान की भेंट के स्थान में बलि करे। ३० और याजक उस के लोहू में से अपनी अंगुली पर लेवे और बलिदान की भेंट की यज्ञबेदी के सींगों पर लगावे और उस का समस्त लोहू यज्ञबेदी की जड़ पर ढाले। ३१ और उस की सब चिकनाई जिस रीति से कुशल की भेंट के बलिदान की चिकनाई अलग किई जाती है अलग करे और याजक उसे परमेश्वर के सुगंध के लिये यज्ञबेदी पर जलावे और याजक उस के लिये प्रायश्चित्त करे और वह उस के लिये क्षमा किया जायगा॥

३२ और यदि वह अपने पाप की भेंट के लिये मेम्ना लावे तो वह एक स्त्रीबर्ग निष्खोट लावे। ३३ और वह अपना हाथ अपने पाप की भेंट के सिर पर रक्खे और उसे जहां बलिदान की भेंट बलि किई जाती है वहां पाप के लिये बलिदान करे। ३४ और याजक पाप की भेंट के लोहू से अपनी अंगुली पर लेके बलिदान

की भेंट की यज्ञवेदी के सींगों पर लगावे और उस का समस्त लोहू यज्ञ-
३५ बेदी की जड़ पर ढाले। और उस की समस्त चिकनाई जिस रीति से कि कुशल की भेंट के बलिदानों के मेम्ने की चिकनाई अलग किई जाती है अलग करे और याजक उन्हें परमेश्वर की होम की भेंटों के साथ यज्ञवेदी पर जलावे और याजक उस के पाप के लिये जो उस ने किया है प्रायश्चित्त करे और वह उस के लिये क्षमा किया जायगा॥

पांचवां पर्व्व।

१ और यदि कोई प्राणी पाप करे और किरिया का शब्द सुने और साक्षी होवे चाहे देखा अथवा जाना हो यदि वह न बतावे तो वह अपना पाप भोगेगा।
२ अथवा यदि कोई प्राणी कोई अपवित्र बस्तु छूवे चाहे अपवित्र पशु की लोथ अथवा अपवित्र ढोर की लोथ अथवा अपवित्र रेंगवैया जंतु की लोथ छूवे और उस्से अज्ञान होवे तो वह अपवित्र और
३ दोषी होगा। अथवा यदि वह मनुष्य की अपवित्रता को छूये हो जिस्से मनुष्य अशुद्ध होता है और वह उस्से गुप्त हो जब उसे जान पड़े तब वह दोषी होगा।
४ अथवा यदि कोई प्राणी किरिया खाके मुंह से बुरा अथवा भला करने को उच्चारे जो कुछ वह किरिया खाके उच्चारण करे और वह उस्से गुप्त हो जब उसे जान पड़े और वह इन में से एक के लिये
५ दोषी होगा। और यों होगा कि जब वह इन में से एक के लिये दोषी होवे तो वह मान लेवे कि मैं ने यह पाप
६ किया है। तब वह अपने अपराध की भेंट अपने पाप के लिये जो उस ने किया है झुंड में से स्त्रीबर्गी एक भेड़ अथवा बकरी में से एक मेम्ना अपने पाप की भेंट के लिये परमेश्वर के आगे लावे और याजक उस के पाप की भेंट से उस के लिये प्रायश्चित्त करे॥

७ और यदि उसे भेड़ लाने की पूंजी न हो तो वह अपने किये हुए अपराध के लिये दो पिण्डुकियां अथवा कपोत के दो बच्चे परमेश्वर के लिये लावे एक पाप की भेंट के लिये और दूसरा बलि-
८ दान की भेंट के लिये। फिर वह उन्हें याजक पास लावे और वह पहिले पाप की भेंट चढ़ावे और उस का सिर उस के गले के पास से मरोड़ डाले परन्तु
९ अलग न करे। और पाप की भेंट के लोहू को यज्ञवेदी के अलंग पर छिड़के और उबरा हुआ लोहू यज्ञवेदी की जड़ पर निचोड़ा जाय वह पाप की भेंट है।
१० और दूसरे को व्यवहार के समान बलि-दान की भेंट के लिये चढ़ावे और याजक उस के किये हुए पाप का प्रायश्चित्त करे और उस के लिये क्षमा किया जायगा॥

११ पर यदि उसे दो पिण्डुकियां अथवा कपोत के दो बच्चे लाने की पूंजी न हो तो वह अपने पाप की भेंट के लिये सेर भर चोखा पिसान पाप की भेंट के लिये लावे उस पर तेल न डाले और न उस पर गंधरस रक्खे क्योंकि वह पाप की भेंट
१२ है। तब वह उसे याजक पास लावे और याजक उस में से स्मरण के लिये अपनी मुट्ठी भरके उस भेंट के समान जो पर-मेश्वर के लिये आग से होती है यज्ञवेदी
१३ पर जलावे वह पाप की भेंट है। और याजक उस पाप के कारण जो उस ने किया इन बातों में से प्रायश्चित्त करे और वह क्षमा किया जायगा और भोजन की भेंट के समान याजक का होगा॥

१४ और परमेश्वर मूसा से कहके
१५ बोला। कि यदि कोई प्राणी अपराध करे और परमेश्वर की पवित्र बस्तुन में

से अज्ञानता से पाप करे तो वह अपने अपराध के लिये झुंड में से एक निष्खोट मेंढ़ा पवित्र स्थान के शैकल के समान चांदी के शैकल तेरे मोल के ठहराने के समान अपने अपराध की भेंट परमेश्वर १६ के आगे लावे। और वह उस पाप के कारण जो उस ने पवित्र बस्तु में किया है पलटा देवे और उस में से पांचवां भाग मिलाके याजक को देवे और याजक उस अपराध की भेंट के मेंढ़े से उस का प्रायश्चित्त करे और वह क्षमा किया जायगा॥

१७ और यदि कोई प्राणी पाप करे और वही करे जो परमेश्वर की आज्ञाओं से बर्जित है और यद्यपि वह नहीं जानता था तथापि वह अपराधी है और अपने १८ पाप को भोगेगा। और तेरे ठहराये हुए मोल के समान अपराध की भेंट के लिये एक निष्खोट मेंढ़ा झुंड में से याजक पास लावे और याजक उस की अज्ञानता के कारण जिस में उस ने अनजान की चूक किई और न जाना उस के लिये प्रायश्चित्त करे और वह क्षमा किया १९ जायगा। वह अपराध की भेंट है उस ने निश्चय परमेश्वर के विरुद्ध अपराध किया है॥

छठवां पर्व्व।

१ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। २ कि यदि कोई प्राणी पाप करे और परमेश्वर के विरुद्ध में अपराध करे और अपने परोसी की थाती में जो उस पास रक्खी गई थी अथवा साझे में अथवा किसी बस्तु में जो बरबस लिई जाय अथवा अपने परोसी को छल दिया है। ३ अथवा कोई बस्तु जो खोई गई थी पावे और उस के विषय में झूठ बोले और झूठी किरिया खाय इन सारी बातों ४ से जो मनुष्य करके पापी होता है। सो इस कारण कि उस ने पाप किया है और दोषी है तब वह उसे जिसे उस ने बरबस लिया है अथवा जो उस ने छल से पाया है अथवा वह जो उस पास थाती थी अथवा खोई हुई जो उस ने पाई है फेर दे। अथवा सब जिस के ५ कारण उस ने झूठी किरिया खाई है तो वह मूल को भर देवे और उस का पांचवां भाग उस में मिलावे और जिस का थाता हो वह अपने अपराध की भेंट के दिन में उस को फेर देवे। और ६ परमेश्वर के लिये वह अपने अपराध की भेंट झुंड में से एक निष्खोट मेंढ़ा तेरे ठहराये हुए मोल के समान अपराध की भेंट के लिये याजक पास लावे। ७ और याजक उस के लिये परमेश्वर के आगे प्रायश्चित्त करे और उस बात में उस ने जो कोई अपराध किया है उस के लिये क्षमा किया जायगा॥

८ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। ९ कि हारून और उस के बेटों को आज्ञा कर कि यह बलिदान की भेंट की व्यवस्था है वह बलिदान की भेंट जलाने के स्थान पर बेदी पर रात भर बिहान लों रहे और बेदी की आग उस्से १० सुलगती रहे। और याजक अपने सूती बस्त्र पहिने और सूती जांघिया से अपना शरीर ढांपे और राख को उठा लेवे जिसे आग बेदी पर बलिदान की भेंट में भस्म करेगी और उसे बेदी के पास ११ रक्खे। और वह अपने बस्त्र उतारके दूसरे बस्त्र पहिने और उस राख को छावनी के बाहर एक पावन स्थान पर १२ ले जावे। और बेदी की आग उस में जलती रहे वह बुझने न पावे और याजक उस पर लकड़ी हर बिहान जलाया करे और उस पर बलिदान की भेंट चुने और उस पर कुशल की भेंट

१३ की चिकनाई जलावे। आग बेदी पर सदा जलती रहे बुझने न पावे॥

१४ और भोजन की भेंट की व्यवस्था यह है कि उसे हारून के बेटे बेदी के आगे
१५ परमेश्वर के लिये चढ़ावें। और भोजन की भेंट में से एक मुट्ठी भर पिसान और कुछ तेल में से और सब गंधरस जो उस भोजन की भेंट पर है उठा लेवे और उन्हें स्मरण के कारण परमेश्वर के आनंद के सुगंध के लिये बेदी पर
१६ जलावें। और उस का उबरा हुआ हारून और उस के बेटे खावें वह अखमीरी रोटी के साथ पवित्र स्थान में खाया जावे मंडली के तंबू के आंगन में
१७ उसे खावें। वह खमीर के साथ न पकाया जावे मैं ने अपनी भेंटों से जो आग से बनी हैं उन का भाग कर दिया है वह अत्यंत पवित्र है पाप की भेंट की नाईं और अपराध की भेंट की
१८ नाईं। हारून के संतान में से हर एक पुरुष उसे खावे यह परमेश्वर की उन भेंटों में से जो आग से बनी हैं तुम्हारी पीढ़ियों के लिये सदा की बिधि है हर एक जो उन्हें छूवे सो पवित्र होवे॥

१९ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला।
२० कि हारून और उस के बेटों की भेंट जिसे वे अपने अभिषेक होने के दिन परमेश्वर के आगे भेंट लावें सो यह है ऐफा का दसवां भाग चोखा पिसान भोजन की नित्य की भेंट उस का आधा बिहान
२१ को और उस का आधा सांझ को। यह तेल से बनके तवे पर पकाया जावे उसे चुपड़के लाओ भोजन की भेंट पक्के हुए टुकड़े टुकड़े परमेश्वर के सुगंध के लिये
२२ चढ़ाओ। और उस के बेटों में का याजक जो उस के स्थान पर अभिषेक हो वह उसे चढ़ावे यह बिधि परमेश्वर के कारण सदा होवे वह संपूर्ण जलाया
२३ जावे। और याजक के हर एक भोजन की भेंट सब की सब जलाई जावे और कभी खाई न जावे॥

२४ और परमेश्वर मूसा से कहके बोला।
२५ कि हारून और उस के बेटों से कह पाप की भेंट की व्यवस्था यह है कि जिस स्थान में बलिदान की भेंट बलि किई जाती है वहीं पाप की भेंट भी परमेश्वर के आगे बलि किई जाय वह
२६ अत्यंत पवित्र है। जो याजक पाप के लिये उसे चढ़ावे सो उसे खाय वह पवित्र स्थान में मंडली के तंबू के आंगन में
२७ खाया जावे। जो कोई उस के मांस को छूवे सो पवित्र हो और जब उस का लोहू किसी बस्त्र पर छिड़का जाय जिस पर वह छिड़का जाय उसे पवित्र स्थान
२८ में धोवें। परन्तु जिस मिट्टी के पात्र में वह सिझाया जावे सो तोड़ा जाय और यदि वह पीतल के पात्र में सिझाया जावे तब वह मांजा जाके पानी में
२९ खंघारा जाय। याजकों में से समस्त पुरुष उसे खावें वह अत्यंत पवित्र है।
३० और पाप की कोई भेंट जिस का कुछ भी लोहू मंडली के तंबू में मिलाप के कारण लाया जाय सो खाया न जायगा आग से जलाया जावे॥

सातवां पर्ब्ब।

१ और अपराध की भेंट की व्यवस्था
२ भी यह है वह अत्यंत पवित्र है। जिस स्थान में वे बलिदान की भेंट को बलि करें उसी स्थान में अपराध की भेंट को बलि करें और उस के लोहू को बेदी के
३ चारों ओर पर छिड़कें। और वह उस की सारी चिकनाई को चढ़ावे उस की पूंछ और वह चिकनाई जो ओझ को ढांपती है।
४ और दोनों गुर्दे और उन पर की चिकनाई जो पांजरों के पास है और कलेजे पर
५ की झिल्ली गुर्दों समेत अलग करे। और

याजक उन्हें परमेश्वर की आग की भेंट के लिये बेदी पर जलावे वह अपराध की भेंट है। याजकों में से हर एक पुरुष उस्से खावे वह पवित्र स्थान में खाई जावे वह अत्यंत पवित्र है॥

७ जैसे पाप की भेंट वैसे ही अपराध की भेंट की एक ही व्यवस्था है जो याजक उस्से प्रायश्चित्त करता है उसी ८ की होगी। और जो याजक किसी मनुष्य के बलिदान की भेंट चढ़ाता है सो उसी बलिदान की खाल उसी याजक की ९ होगी जिस ने उसे चढ़ाया। और समस्त भोजन की भेंट जो तनूर में पकाई जावे और सब जो कड़ाही में अथवा तवे पर सो उसी याजक की होगी जो उसे १० चढ़ाता है। और हर एक भोजन की भेंट जो तेल से मिली हुई हो अथवा सूखी हो सो सब हारून के बेटों के लिये एक एक के समान होगी॥

११ और कुशल की भेंट के बलिदान जो वह परमेश्वर के लिये चढ़ावे उस की १२ यह व्यवस्था है। यदि वह धन्यबाद के लिये उसे चढ़ावे तो उस के साथ तेल से मिले हुए अखमीरी फुलके और अखमीरी तेल से चुपड़ी हुई और तेल में पकी हुई चोखे पिसान की पूरी धन्यबाद के बलिदान के लिये चढ़ावे। १३ फुलके से अधिक वह खमीरी रोटी की अपनी भेंट धन्यबाद के बलिदान के और अपनी कुशल की भेंट के साथ १४ लावे। और वह समस्त नैवेद्य में से एक को परमेश्वर के आगे हिलाने की भेंट चढ़ावे और यह उस याजक का होगा जो कुशल की भेंट के लोहू को १५ छिड़कता है। और कुशल की भेंट और बलिदान का मांस जो धन्यबाद के लिये है उसे चढ़ाये जाने के दिन में खाया जावे वह उस में से बिहान लों कुछ न छोड़े। परन्तु यदि भेंट का बलिदान १६ मनौती का अथवा उस के बांछित का हो तो वह चढ़ाने के दिन खाया जाय और उबरे हुए से दूसरे दिन भी खाया जाय। परन्तु बलिदान का उबरा हुआ १७ मांस तीसरे दिन आग से जला दिया जाय। और यदि कुशल के बलिदान के १८ मांस में से कुछ तीसरे दिन खाया जाय तो वह ग्रहण न किया जायगा न भेंटदायक के लिये लेखा किया जायगा वह घिनित होगा जो प्राणी उस में से खावे सो अपने पाप को भोगेगा। और १९ वह मांस जो किसी अशुद्ध वस्तु को छूवे सो खाया न जावे वह जलाया जावे और मांस जो है हर एक जो पवित्र हो सो मांस में से खावे। परन्तु जो अशुद्ध २० प्राणी परमेश्वर के कुशल की भेंट के बलिदान का मांस खावे सोई प्राणी अपने लोगों में से काट डाला जायगा। और जो प्राणी किसी अशुद्ध वस्तु को २१ छूवे चाहे मनुष्य की अथवा पशु की अथवा किसी घिनित अशुद्धता वस्तु को छूवे और परमेश्वर के कुशल की भेंट के बलिदान से मांस खावे वही प्राणी अपने लोगों में से काटा जायगा॥

और परमेश्वर मूसा से कहके बोला। २२ कि इसराएल के संतानों से कह कि २३ बैल और भेड़ और बकरी की कोई चिकनाई न खावें। और उस लोथ की २४ चिकनाई जो आप से आप मर गया हो अथवा उस की चिकनाई जो पशुन से फाड़ा गया हो वह किसी कार्य्य में लाई जाय परन्तु उस में से किसी भांति से मत खाइयो। क्योंकि जो मनुष्य ऐसे २५ पशु की चिकनाई खावे जिस्से आग के बलिदान परमेश्वर के आगे चढ़ाये जाते हैं सोई प्राणी अपने लोगों में से काटा जायगा। और तुम किसी पक्षी का २६

अथवा पशु का किसी भांति का लोहू २७ अपने सब स्थानों में मत खाइयो। जो प्राणी किसी भांति का लोहू खावे सोई प्राणी अपने लोगों में से काटा जायगा॥

२८ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। २९ कि इसराएल के संतानों से कह कि जो कोई अपने कुशल के बलिदान परमेश्वर के लिये चढ़ावे सो अपने कुशल के बलिदान में से परमेश्वर के आगे अपने ३० नैवेद्य लावे। वह उस बलिदान को जो परमेश्वर के लिये जलाया जाता है और छाती की चिकनाई को अपने हाथों में लावे जिसतें छाती के हिलाने के बलिदान के लिये परमेश्वर के आगे हिलाया ३१ जावे। और याजक चिकनाई को यज्ञवेदी पर जलावे परन्तु छाती हारून की ३२ और उस के बेटों की होगी। और तुम कुशल की भेंट के बलिदानों से दहिना कांधा याजक को हिलाने की भेंट के लिये ३३ दीजियो। हारून के बेटों में से जो कुशल के बलिदान का लोहू और चिकनाई चढ़ाता है सो दहिना कांधा अपने भाग के लिये ३४ लेवे। क्योंकि कुशल की भेंटों के बलिदानों में से हिलाने की छाती और उठाने का कांधा मैं ने इसराएल के संतानों से लिया और हारून याजक और उस के बेटों को सनातन की विधि के लिये ३५ दिया। हारून और उस के बेटों के अभिषेक का जिस दिन में वह उन्हें आगे धरे कि याजक के पद में परमेश्वर की सेवा करें परमेश्वर के लिये आग की भेंटों में का यह भाग होगा। ३६ जिसे परमेश्वर ने इसराएल के संतान को जिस दिन में उस ने उन्हें अभिषेक किया उन्हें देने को आज्ञा किई कि उन की पीढ़ियों में सनातन के लिये विधि होवे॥

३७ बलिदान की भेंट और भोजन की भेंट और पाप की भेंट और अपराध की भेंट और स्थापित करने की भेंट और कुशल की भेंट के बलिदान की यह व्यवस्था है। ३८ जिसे परमेश्वर ने सीना के पहाड़ में मूसा को आज्ञा किई जिस दिन उस ने सीना के बन में इसराएल के संतान को आज्ञा किई कि अपनी भेंटें परमेश्वर के आगे लावें॥

आठवां पर्व्व।

१ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। २ कि हारून और उस के साथ उस के बेटों को और वस्त्रों को और अभिषेक का तेल और पाप की भेंट का एक बैल और दो मेंढ़े और एक टोकरी अखमीरी ३ रोटी ले। और तू सारी मंडली को मंडली ४ के तंबू के द्वार पर एकट्ठा कर। सो जैसा कि परमेश्वर ने उसे आज्ञा किई थी मूसा ने वैसा ही किया और सारी मंडली मंडली के तंबू के द्वार पर एकट्ठी॥

५ तब मूसा ने मंडली से कहा कि यह वह बात है जो परमेश्वर ने पालन करने को आज्ञा किई है। और मूसा हारून को और उस के बेटों को आगे लाया और उन्हें पानी से नहलाया। ७ और उसे कुरता पहिनाया और उसे पटुका बांधा और उसे बागा पहिनाया और उस पर एफोद रक्खा और एफोद के अनोखे पटुके से उसे बांधा और एफोद उस पर पहिनाया। ८ और उस पर चपरास रक्खी और उस चपरास पर उरीम और तुम्मीम जड़े। ९ और उस के सिर पर मुकुट रक्खा और मुकुट पर और ललाट की ओर सोने का पत्तर पवित्र मुकुट पर लगाया जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी॥

१० और मूसा ने अभिषेक का तेल लिया और तंबू को और उस के समस्त पात्रों को अभिषिक्त करके उन्हें पवित्र किया।

११ और उस में से कुछ यज्ञबेदी पर सात बार छिड़का और यज्ञबेदी और उस के सारे पात्रों और स्नानपात्र और उस की चौकी को अभिषेक करके उन्हें शुद्ध किया । १२ और अभिषेक के तेल में से हारून के सिर पर ढाला और उस को अभिषेक करके पवित्र किया । १३ और मूसा हारून के बेटों को आगे लाया और उन्हें कुरते पहिनाये और उन पर पटुके बांधे और उन के सिर पर पगड़ी रक्खी जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई ॥

१४ और पाप की भेंट के लिये बैल लाया और हारून और उस के बेटों ने अपने हाथ पाप की भेंट के बैल के सिर पर रक्खे । १५ और उसे बलि किया और मूसा ने उस के लोहू को लिया और अपनी अंगुली से यज्ञबेदी के सींगों पर चारों ओर लगाया और यज्ञबेदी को पवित्र किया और लोहू को यज्ञबेदी की जड़ पर ढाला और उसे पवित्र किया जिसतें उस के लिये प्रायश्चित्त करे । १६ और उस ने सब चिकनाई जो ओझ पर और कलेजे पर की झिल्ली और दोनों गुर्दे और उन की चिकनाई लिई और मूसा ने यज्ञबेदी पर जलाई । १७ परन्तु बैल को और उस की खाल को और उस के मांस को और उस के गोबर को छावनी के बाहर आग से जलाया जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी ॥

१८ और बलिदान की भेंट का मेंढा आगे लाया और हारून और उस के बेटों ने अपने हाथ उस मेंढे के सिर पर रक्खे । १९ और उस ने उसे बलि किया और मूसा ने यज्ञबेदी के चारों ओर लोहू छिड़का । २० और उस ने मेंढे को टुकड़ा टुकड़ा किया और मूसा ने सिर को और टुकड़ों को और चिकनाई को जलाया । २१ और उस ने ओझ और पांव को पानी से धोया और मूसा ने सारे मेंढे को यज्ञबेदी पर जलाया वह बलिदान की भेंट परमेश्वर के सुगंध के लिये वह आग की भेंट परमेश्वर के लिये है जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी ॥

२२ और वह दूसरा मेंढा अर्थात् स्थापित का मेंढा लाया और हारून और उस के बेटों ने अपने हाथ उस मेंढे के सिर पर रक्खे । २३ और उसे बलि किया और मूसा ने उस के लोहू में से लिया और हारून के दहिने कान की लहर पर और उस के दहिने हाथ के अंगूठे और उस के दहिने पांव के अंगूठे पर लगाया । २४ और वह हारून के बेटों को लाया और लोहू में से उन के दहिने कानों की लहर पर और उन के दहिने हाथों के अंगूठों पर और उन के दहिने पांव के अंगूठों पर मूसा ने लगाया और मूसा ने लोहू को यज्ञबेदी के चारों ओर छिड़का । २५ और चिकनाई और पूंछ और सब चिकनाई जो ओझ पर और कलेजे पर की झिल्ली और दोनों गुर्दे और उन की चिकनाई और दहिना कांधा लिया । २६ और उस अखमीरी रोटी की टोकरी में से जो परमेश्वर के सन्मुख थी एक अखमीरी फुलका और एक फुलका तेल में चुपड़ा हुआ और एक लिट्टी निकाली और उन्हें चिकनाई पर और दहिने कांधे पर रक्खा । २७ और उस ने सब को हारून और उस के बेटों के हाथों पर रक्खा और उन को परमेश्वर के सन्मुख हिलाने की भेंट के लिये हिलाया । २८ तब मूसा ने उन्हें उन के हाथों से लिया और यज्ञबेदी पर बलिदान की भेंट के लिये जलाया वह स्थापना की भेंट सुगंध के लिये हैं वह परमेश्वर के लिये आग की भेंट है । २९ और मूसा ने छाती लिई और उसे हिलाने की भेंट के लिये परमेश्वर के आगे हिलाया

स्थापित करने के मेंढे से मूसा का भाग था जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई॥

३० तब मूसा ने अभिषेक का तेल और यज्ञबेदी पर के लोहू में से लिया और हारून पर और उस के बस्त्रों पर और उस के साथ उस के बेटों पर और उस के बेटों के बस्त्रों पर छिड़का और हारून को और उस के बस्त्रों को और उस के साथ उस के बेटों को और उस के बेटों के बस्त्रों को पवित्र किया॥

३१ और मूसा ने हारून से और उस के बेटों से कहा कि मांस को मंडली के तंबू के द्वार पर उसिन और उसे वहां उस रोटी के साथ जो स्थापित करने की टोकरी में है खाओ जैसे मैं ने यह कहके आज्ञा किई कि हारून और उस के बेटे ३२ उसे खावें। और मांस और रोटी में से ३३ जो उबरे उसे आग से जलाओ। और तुम मंडली के तंबू के द्वार से सात दिन लों बाहर न जाओ जब लों तुम्हारे स्थापित करने के दिन पूरे न होवें क्योंकि वह तुम्हें सात दिन में स्थापित ३४ करेगा। जैसा उस ने आज के दिन किया है परमेश्वर ने ऐसा करने की आज्ञा किई है कि तुम्हारे लिये प्रायश्चित्त ३५ होवे। इस कारण मंडली के तंबू के द्वार पर सात रात दिन ठहरो और परमेश्वर की आज्ञाओं को पालन करो जिसतें न मरो क्योंकि मुझे यों ही आज्ञा ३६ है। सो सब कुछ जो परमेश्वर ने मूसा के हसते आज्ञा किई थी हारून और उस के बेटों ने किया॥

नवां पर्ब्ब।

१ और जब आठवां दिन हुआ तब मूसा ने हारून को और उस के बेटों को और २ इसराएल के प्राचीनों को बुलाया। और हारून से कहा कि तू एक निष्खोट बछड़ा पाप की भेंट के लिये और एक निष्खोट मेंढा बलिदान की भेंट के लिये ले और परमेश्वर के आगे ला। ३ और इसराएल के संतान को यह कहके बोल कि एक बकरा पाप की भेंट के लिये और एक बछड़ा और पहिले बरस का एक मेम्ना सब निष्खोट बलिदान ४ की भेंट के लिये लेओ। और एक बैल और एक मेंढा कुशल की भेंटों के लिये लाओ जिसतें परमेश्वर के आगे बलि किये जावें और तेल से मिली हुई भोजन की भेंट क्योंकि आज के दिन परमेश्वर तुम पर प्रगट होगा॥

५ और जैसा कि मूसा ने आज्ञा किई थी वे मंडली के तंबू के आगे लाये और सारी मंडली निकट आके परमेश्वर ६ के आगे खड़ी हुई। और मूसा ने कहा कि यह वह बात है जिस की आज्ञा परमेश्वर ने दिई तुम उसे पालन करो और परमेश्वर की महिमा तुम पर प्रगट होगी॥

७ और मूसा ने हारून से कहा कि बेदी पास जा और अपने पाप की भेंट और अपने बलिदान की भेंट चढ़ा और अपने और लोगों के लिये प्रायश्चित्त कर और लोगों की भेंट चढ़ा और उन के लिये प्रायश्चित्त कर जैसा कि परमेश्वर ने आज्ञा किई॥

८ तब हारून बेदी पास गया और पाप की भेंट का बछड़ा जो अपने लिये था ९ बलि किया। और हारून के बेटे उस पास लोहू लाये और उस ने अपनी अंगुली लोहू में डुबोई और बेदी के सींगों पर लगाया और लोहू को बेदी की जड़ पर १० ढाला। और चिकनाई और गुर्दे और कलेजे पर की झिल्ली अपराध की भेंट से लेके बेदी पर जलाये जैसा कि परमेश्वर ११ ने मूसा को आज्ञा किई। और मांस

और खाल को छावनी के बाहर आग
१२ से जलाया। और उस ने बलिदान की
भेंट को बलि किया और हारून के
बेटों ने उसे लोहू दिया और उस ने बेदी
१३ के चारों ओर छिड़का। और उन्हों ने
बलिदान की भेंट को उस के टुकड़े और
सिर समेत उसे दिये और उस ने बेदी
१४ पर जलाये। और उस ने ओझ को और
पांव को धोया और बलिदान की भेंट
के साथ यज्ञबेदी के ऊपर जलाया॥

१५ और वह लोगों की भेंट को लाया
और लोगों के पाप की भेंट के लिये
बकरे को लिया और उसे बलि किया
और उसे पहिले के समान पाप के लिये
१६ चढ़ाया। और उस ने बलिदान की भेंट
को लाके उसी रीति के समान चढ़ाया।
१७ और बिहान के बलिदान की भेंट से
अधिक वह भोजन की भेंट लाया और
उस्से एक मुट्ठी भर लिया और यज्ञबेदी
१८ पर जलाया। और उस ने बैल और मेंढा
लोगों के कुशल की भेंटों के लिये बलि
किया और हारून के बेटे उस के पास
लोहू ले आये जिसे उस ने यज्ञबेदी की
१९ चारों ओर छिड़का। और बैल की और
मेंढे की चिकनाई और पूंछ और जो ओझ
को ढांपती है और गुर्दों को और कलेजे
२० पर की झिल्ली को। और उन्हों ने चिक-
नाई को छातियों पर रक्खा और उस
ने चिकनाई को यज्ञबेदी पर जलाया।
२१ और छातियों को और दहिने कांधे को जैसे
परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई हारून
ने परमेश्वर के आगे हिलाने की भेंट
के लिये हिलाया॥

२२ और हारून ने लोगों की ओर अपने
हाथ उठाये और उन्हें आशीस दिई और
पाप की भेंट और बलिदान की भेंट
और कुशल की भेंट चढ़ाके नीचे उतरा।
२३ तब मूसा और हारून मंडली के तंबू में
गये और बाहर निकलके लोगों को
आशीस दिई और सारे लोगों पर पर-
मेश्वर की महिमा प्रगट हुई॥

२४ और परमेश्वर के आगे से आग
निकली और यज्ञबेदी पर बलिदान की
भेंट और चिकनाई को भस्म किया जब
सारे लोगों ने देखा तब वे चिल्लाके
औंधे मुंह गिरे॥

दसवां पर्ब्ब।

१ और नदब और अबिहू हारून के
बेटों ने अपना अपना धूपपात्र लिया
और उस में आग भरके उस पर धूप
रक्खा और परमेश्वर के आगे उपरी
आग चढ़ाई जिसे परमेश्वर ने उन्हें आज्ञा
२ नहीं दिई थी। तब परमेश्वर की ओर
से आग निकली और उन्हें भस्म किया
३ और वे परमेश्वर के आगे मर गये। तब
मूसा ने हारून से कहा कि यह वह है
जो परमेश्वर ने कहा था कि जो जो मेरे
पास आवें मैं उन में पवित्र किया जाऊंगा
और मैं सारे लोगों के आगे महिमा
४ पाऊंगा तब हारून चुप हो रहा। तब
मूसा ने हारून के चाचा उज्जिएल के
बेटों मीसाएल और इलजाफान को
बुलाया और उन से कहा कि पास आओ
अपने भाइयों को पवित्र स्थान के साम्ने
से छावनी के बाहर उठा ले जाओ।
५ सो वे पास आये और उन्हें उन के सूती
कपड़ों में उठाके छावनी के बाहर ले
गये जैसा मूसा ने कहा था॥

६ फिर मूसा ने हारून और उस के बेटों
इलिअजर और ईतमर को कहा कि
अपने सिर को मत उघारो और अपने
कपड़े मत फाड़ो न हो कि मर जाओ
और सारी मंडली पर कोप पड़े परन्तु
तुम्हारे भाई इसराएल के घराने उस
ज्वलन के लिये बिलाप करें जिसे पर-
७ मेश्वर ने बारा है। और तुम मंडली के

तंबू के द्वार से बाहर न जाओ जिसतें न हो कि मर जाओ क्योंकि परमेश्वर के अभिषेक का तेल तुम पर है सो उन्हों ने मूसा के कहने के समान किया॥

८ फिर परमेश्वर कहके हारून से बोला।
९ कि जब तुम मंडली के तंबू में प्रवेश करो तो न तू न तेरे संग तेरे बेटे दाखरस अथवा तीक्ष्ण मदिरा पीजियो जिस में नाश न हो यह सनातन के लिये
१० तुम्हारी पीढ़ियों में बिधि है। और जिसतें तुम पावन और अपावन और
११ शुद्ध और अशुद्ध में ब्यवरा करो। और जिसतें तुम सारी बिधि जो परमेश्वर ने मूसा के द्वारा उन्हें आज्ञा किई है इसराएल के संतानों को सिखाओ॥

१२ और मूसा ने हारून और उस के बेटों इलिअजर और ईतमर से जो बचे थे कहा कि वह भोजन की भेंट जो परमेश्वर की आग की भेंटों में से बच रही है लेओ और उसे यज्ञवेदी के पास बिना खमीर से खाओ क्योंकि वह
१३ अत्यंत पवित्र है। और उसे पवित्र स्थान में खाओ क्योंकि परमेश्वर की आग की भेंटों में से तेरा और तेरे बेटों का यह भाग है क्योंकि मुझे योंही आज्ञा हुई
१४ है। और हिलाने की छाती और उठाने के कांधे को किसी पवित्र स्थान में तू और तेरे पुत्र और तेरी पुत्रियां तेरे साथ खावें क्योंकि यह तेरा और तेरे पुत्रों का भाग है जो इसराएल के संतानों के कुशल के बलिदानों में से दिया जाता
१५ है। वे उठाने का कांधा और हिलाने की छाती उन चिकनाई की भेंटों के साथ जो आग से चढ़ाई जाती हैं लावें जिसतें परमेश्वर के आगे हिलाने की भेंट हिलाई जावे और यह तेरे और तेरे बेटों के लिये तेरे संग सनातन की बिधि होगी जैसा कि परमेश्वर ने कहा है॥

१६ और मूसा ने पाप की भेंट की बकरी को बहुत ढूंढ़ा तो क्या देखता है कि वह जल गई तब उस ने हारून के बचे हुए बेटों इलिअजर और ईतमर पर
१७ रिसियाके कहा। कि तुम ने पाप की भेंट को क्यों नहीं पवित्र स्थान में खाया है क्योंकि वह अत्यंत पवित्र है और तुम्हें दिया गया है जिसतें तुम मंडली का पाप उठा लेओ और उन के लिये परमेश्वर के आगे प्रायश्चित्त
१८ करो। देखो उस का लोहू पवित्र स्थान के भीतर न पहुंचाया गया अवश्य था तुम उसे पवित्र स्थान में खाते जैसा मैं
१९ ने आज्ञा किई है। तब हारून ने मूसा से कहा कि देख आज ही उन्हों ने अपने पाप की भेंट और अपने बलिदान की भेंट परमेश्वर के आगे चढ़ाई है और मुझ पर ऐसी बातें बीतीं यदि मैं पाप की भेंट आज खाता तो क्या
२० परमेश्वर की दृष्टि में ग्राह्य होता। और मूसा ने यह सुनके मान लिया॥

ग्यारहवां पर्ब्ब।

१ और परमेश्वर मूसा और हारून से
२ कहके बोला। कि तुम इसराएल के संतानों से कहो कि समस्त पशुन में से जो पृथिवी पर हैं इन पशुन को खाइयो।
३ पशुन में से जिन का खुर बिभाग हो और जिन का पांव चीरा हुआ हो और
४ जो पागुर करते हों उन्हें खाइयो। तथापि उन में से इन्हें न खाइयो जो पागुर करते हैं अथवा जिन का खुर बिभाग हो ऊंट को क्योंकि वह पागुर करता है परन्तु उस का खुर बिभाग नहीं है वह तुम्हारे
५ लिये अशुद्ध है। और साफन क्योंकि वह पागुर करता है परन्तु उस का खुर बिभाग नहीं वह तुम्हारे लिये अशुद्ध
६ है। और खरहा इस कारण कि वह पागुर करता है परन्तु उस का खुर

खिभाग नहीं है वह तुम्हारे लिये अशुद्ध है । ७ और सूअर यद्यपि उस का खुर खिभाग है और उस का पांव चीरा तथापि वह पागुर नहीं करता वह तुम्हारे लिये अशुद्ध है । ८ तुम उन के मांस में से न खाइयो और उन की लोथों को न छूइयो वे तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं॥

सभों में से जो पानियों में हैं ये खाइयो पानियों में जिस किसी के पंख और छिलके हों समुद्रों में और नदियों में तुम उन्हें खाइयो । १० और समुद्रों में और नदियों में के सब जिन के पंख और छिलके नहीं हैं उन सभों में से जो पानियों में चलते हैं और सब जीवधारियों में से जो पानियों में हैं वह तुम्हारे लिये घिनित होंगे । ११ और वे तुम्हारे लिये घिनित होंगे तुम उन के मांस में से न खाओ परन्तु उन की लोथ को घिनित समझो । १२ पानियों में जिन के पंख और छिलके नहीं हैं वे सब तुम्हारे लिये घिनित होंगे ॥

१३ और पक्षियों में से तुम इन्हें घिनित समझो वे खायें न जायें वे घिनित हैं १४ गरुड़ और हड़फोड़ और कुरल । और गिद्ध और भांति भांति की चील्ह । १५ भांति भांति के काग । १६ और शुतुरमुर्ग और तखमस और कोकिल और भांति भांति की तुरमती । १७ और हवासिल और हाड़गील और बड़ा उल्लू । १८ और राजहंस और पनिबुड्डी और रखम । १९ और सारस और भांति भांति के बगुला और टिटिहिरी और चमगादड़ी ॥

२० सारे कीट जो उड़ते और चार पांव से रेंगते हैं तुम्हारे लिये वे घिनित हैं । २१ तथापि तुम सब पक्षियों में से जो चारों पांव से रेंगते हैं जिन की पिछली टांगें अगले पांव से लपटी हुई हैं जिस्से वे कूद कर पृथिवी पर चलें तुम इन्हें खाइयो । २२ तुम उन्हों में से इन्हें खाइयो जैसे भांति भांति की टिड्डी और भांति भांति के फनगे और भांति भांति के खरगोल और भांति भांति के हागाब । २३ परन्तु सब रेंगवैये पक्षियों में से जिन के चार पांव हैं वे तुम्हारे लिये घिनित हैं । २४ और इन से तुम अशुद्ध होगे जो कोई उन की लोथ को छूयेगा सो सांझ लों अपवित्र रहेगा । २५ और जो कोई उन में से किसी की लोथ को उठावे सो अपने कपड़े धोवे और सांझ लों अपवित्र रहेगा ॥

२६ हर एक पशु जिन के खुर खिभाग हों और पांव चीरा न हो और पागुर करता न हो सो तुम्हारे लिये अशुद्ध है जो कोई उन्हें छूयेगा सो अशुद्ध होगा । २७ और समस्त प्रकार के पशु जो अपने हाथों पर और चार पांव पर चलते हैं तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं जो कोई उन की लोथ को छूयेगा सो सांझ लों अशुद्ध रहेगा । २८ और जो कोई उन की लोथ को उठावे सो अपने कपड़े धोवे और वह सांझ लों अशुद्ध रहेगा वे तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं ॥

२९ और पृथिवी पर के रेंगवैयों में से ये तुम्हारे लिये अपवित्र हैं छछूंदर और चूहा और भांति भांति का गोह । ३० और टिकटिकी और गिरगिटान और अम्हनी और मांड़ा और गोहटा । ३१ सब रेंगवैयों में से ये तुम्हारे लिये अपवित्र हैं जो कोई उन की लोथ को छूये सो सांझ लों अशुद्ध होगा । ३२ और जिस किसी पर इन्हों में से मरके गिर पड़े सो अशुद्ध होगा चाहे लकड़ी का पात्र अथवा वस्त्र अथवा खाल अथवा टाट जो पात्र होवे जिस्से काम होता हो सो अवश्य जल में डाला जाये और सांझ लों अपवित्र रहेगा और इसी रीति से

३३ पवित्र होगा। और सब मिट्टी के पात्र जिन में उन में से गिरे जो उस में होवे सो अशुद्ध होगा और तुम उसे तोड़ ३४ डालियो। समस्त भोजन जो खाया जाता है जो उस पर उन से पानी पड़े सो अशुद्ध होगा और जो कुछ ऐसे पात्रों में पीया जाता है सो अशुद्ध होगा। ३५ और जिस पर उन की लोथ पड़े सो अपवित्र होगा चाहे तनूर चाहे चूल्हा होय तोड़ा जायगा वे अपवित्र हैं और ३६ तुम्हारे लिये अशुद्ध होंगे। तथापि सोता और कूआ जिस में बहुत जल होवे वह शुद्ध होगा परन्तु जो कोई उन की लोथ ३७ को छूवेगा सो अशुद्ध होगा। और यदि उन की लोथ से कुछ किसी बोने के ३८ बीज पर गिरे सो पवित्र रहेगा। परन्तु यदि उस बीज पर पानी पड़ा हो और उन की लोथ से कुछ उस पर गिरे सो तुम्हारे लिये अशुद्ध होगा॥

३९ और यदि तुम्हारे खाने के पशुन में से कोई मरे जो कोई उस की लोथ को ४० छूये सो सांझ लों अशुद्ध होगा। और जो कोई उस की लोथ में से खावे सो अपने कपड़े धोवे और सांझ लों अशुद्ध होगा और जो उस की लोथ को उठाता है सो भी अपने कपड़े धोवे और सांझ लों अशुद्ध होगा॥

४१ और हर एक जो पृथिवी पर रेंगता है सो घिनित हैं वह खाया न जायगा। ४२ जो पेट के बल चलता है और जो चार पांवों पर चलते हैं और रेंगवैये में से जो अधिक पांव रखते हैं और पृथिवी पर रेंगते हैं तुम उन्हें न खाइयो क्योंकि ४३ वे घिनित हैं। तुम किसी रेंगवैये से जो पृथिवी पर रेंगता है अपने को घिनित मत करो और न आप को उन के कारण से अपवित्र करो यहां लों कि तुम उस्से ४४ अशुद्ध हो जाओ। क्योंकि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं इस लिये तुम आप को शुद्ध करो और तुम पवित्र होगे क्योंकि मैं पवित्र हूं और अपने को किसी रेंगवैये जन्तु से जो पृथिवी पर रेंगता है अशुद्ध न करो। क्योंकि मैं परमेश्वर हूं ४५ जो मिस्र के देश से तुम्हें ले आता हूं जिसतें तुम्हारा ईश्वर हूं सो तुम शुद्ध होओ क्योंकि मैं पवित्र हूं॥

चारपाये और पक्षी और सब जीव- ४६ धारी जो पानी में चलते हैं और हर एक जन्तु जो पृथिवी पर रेंगते हैं उन की यही व्यवस्था है। कि अशुद्ध और ४७ शुद्ध में और उन पशुन में जो खाये जावें और उन में जो न खाये जावें तुम बिभेद करो॥

बारहवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। १ कि इसराएल के संतानों से कह कि २ जब स्त्री गर्भिणी होवे और बेटा जने तब वह सात दिन अशुद्ध होगी जैसे दुर्बलता के कारण अलग होने के दिनों में होती है। और आठवें दिन लड़के ३ का खतनः किया जावे। और वह ४ रुधिर से पवित्र होने के लिये तेंतीस दिन पड़ी रहे वह किसी पवित्र बस्तु को न छूवे और जब लों उस के पवित्र होने के दिन पूर्ण न होवें तब लों वह पवित्र स्थान में न जावे। और यदि ५ लड़की जने तो वह दो अठवारे अशुद्ध होगी जैसे अपने अलग किये जाने के दिनों में थी और वह अपने रुधिर की पवित्रता के लिये छियासठ दिन पड़ी रहेगी॥

और जब उस के पवित्र होने के दिन ६ पुत्र के अथवा पुत्री के पूर्ण होवें तब वह पहिले बरस का एक मेम्ना बलिदान की भेंट के लिये लेवे और एक कपोत का बच्चा अथवा पिण्डुकी पाप की भेंट

के लिये मंडली के तंबू के द्वार पर याजक ७ पास लावे। और वह उसे परमेश्वर के आगे लावे और उस के लिये प्रायश्चित्त करे और वह अपने रुधिर बहने से पवित्र होगी यह पुत्र और पुत्री जन्ने के लिये ८ व्यवस्था है। और यदि उसे मेम्ना लाने की पूंजी न हो तो दो पिण्डुकियां अथवा कपोत के दो बच्चे लावे एक बलिदान की भेंट के लिये और दूसरा पाप की भेंट के लिये और याजक उस के लिये प्रायश्चित्त करे तब वह पवित्र हो जायगी॥

तेरहवां पर्ब्ब।

१ फिर परमेश्वर मूसा और हारून से २ कहके बोला। जब किसी मनुष्य के शरीर में सूज अथवा खजुली अथवा चकचाकिया बिंदु हो और उस के शरीर के चमड़े में कोढ़ की मरी सी हो तब उसे हारून याजक के पास अथवा उस ३ के किसी पुत्र याजक पास लावें। और वह याजक उस के शरीर के चमड़े की मरी को देखे यदि मरी के स्थान का बाल उजला हो गया हो और वह मरी देखने में चमड़े से गहिरी हो तो वह कोढ़ की मरी है और याजक उसे देखके ४ उस को अशुद्ध ठहरावे। और यदि उस के शरीर के चमड़े पर चकचाकिया बिंदु देखने में चमड़े में गहिरा न हो और उस पर के बाल उजले न हुए हों तो याजक उस मरीवाले को सात दिन ५ लों बंद करे। और सातवें दिन याजक उसे देखे और यदि मरी उस के देखने में वैसी ही हो और मरी चमड़े पर फैली न हो तो याजक उसे और सात दिन ६ लों बंद करे। और सातवें दिन याजक फिर उसे देखे और यदि मरी कुछ मुरझाई हो और चमड़े पर फैली न हो तो याजक उसे पवित्र ठहरावे वह खाज है और वह अपने कपड़े धोवे ७ और पवित्र होवे। परन्तु यदि वह खाज याजक के देखने और पवित्र करने के पीछे चमड़े पर बहुत फैल जावे तो वह मनुष्य याजक को फिर दिखाया जावे। ८ और याजक देखे कि वह खाज चमड़े पर बढ़ गई हो तो याजक उसे अपवित्र ठहरावे वह कोढ़ है॥

जब किसी मनुष्य को कोढ़ की मरी १० होवे तब उसे याजक पास लावें। और याजक उसे देखे और यदि वह सूज चमड़े पर उजला हो और उस ने बालों को उजला कर लिया हो और उभरे हुए ११ में मूआ मांस हो। तो यह उस के शरीर के चमड़े में पुराना कोढ़ है और याजक उसे अशुद्ध ठहरावे उसे बंद न १२ करे क्योंकि वह अशुद्ध है। और यदि कोढ़ चमड़े पर फैल जावे और जहां कहीं याजक देखे तहां उस के चमड़े पर कोढ़ उस के सिर से उस के पांव लों १३ हो ले। तब याजक देखे और यदि कोढ़ ने उस के समस्त शरीर को छिपा लिया हो तो वह उस मरीवाले को पवित्र ठहरावे वह सब उजला हो गया है वह १४ पवित्र है। और जिस दिन मूआ मांस उस में दिखाई देवे तब वह अपवित्र १५ होगा। और याजक उस मूए मांस को देखे और उसे अपवित्र ठहरावे वह सड़ा १६ मांस अपवित्र है वह कोढ़ है। अथवा यदि मूआ हुआ मांस फिर ॰कर उजला १७ हो जावे तो वह याजक पास आवे। और याजक उसे देखे और यदि वह मरी उजली हो गई हो तो याजक उस मरी-वाले को पवित्र ठहरावे वह पवित्र है॥

१८ और जिस के शरीर के चमड़े पर १९ फुड़िया होवे और चंगी हो जावे। और फुड़िया के स्थान पर उजला उभरा हो अथवा चकचाकिया बिंदु उजला और

समिक लाल होवे तो वह याजक को २० दिखाया जावे । और यदि याजक की दृष्टि में वह चमड़े से कुछ दबा हुआ हो और उस पर के बाल भी उजले हो गये हों तो याजक उसे अपवित्र ठहरावे वह कोढ़ की मरी है जो फुड़िया से २१ फूट निकली है । परन्तु यदि याजक उसे देखे कि उस पर श्वेत बाल नहीं है और वह चमड़े से दबा नहीं है परन्तु कुछ कुछ मुरझाया सा है तो याजक उसे २२ सात दिन बंद करे । और यदि वह चमड़े पर बहुत फैल गया हो तो याजक उसे २३ अपवित्र ठहरावे वह मरी है । परन्तु यदि चकचकिया बिंदु अपने स्थान हो पर रहे और फैल न जावे तो वह ज्वलित फुड़िया है और याजक उसे पवित्र ठहरावे ॥

२४ यदि उस के मांस के चमड़े में आग की जलन हो और उस जलन का अथवा सूआ मांस चकचकिया बिंदु कुछ लाल २५ अथवा उजला हो । तो याजक उसे देखे और यदि उस चकचकिया बिंदु पर के बाल उजले हो गये हों और वह देखने में चमड़े से दबा हो तब जलन से वह फूटा हुआ कोढ़ है और याजक उसे अशुद्ध ठहरावे वह कोढ़ की मरी है । २६ परन्तु यदि याजक उसे देखे और उस पर और उस चकचकिया बिंदु पर उजला बाल न सूझ पड़े और यदि चमड़े से गहिरा दिखाई न देवे और वह मुरझाया होवे तो याजक उसे सात दिन लों बंद २७ करे । और सातवें दिन याजक उसे देखे यदि वह चमड़े पर बहुत फैल गया हो तब याजक उसे अपवित्र ठहरावे वह २८ कोढ़ की मरी है । और यदि वह चकचकिया बिंदु अपने स्थान पर हो और चमड़े पर न फैले परन्तु वह मुरझाया होवे तो वह जलने का उभरना है और याजक उसे शुद्ध ठहरावे क्योंकि वह जलने की जलन है ॥

यदि किसी पुरुष अथवा स्त्री के २९ सिर अथवा डाढ़ी में मरी होवे । तब ३० याजक उस मरी को देखे और यदि वह देखने में चमड़े से गहिरी देख पड़े और उस पर पतले पीले बाल हों तो याजक उसे अपवित्र ठहरावे वह सेहुआं सिर अथवा डाढ़ी का कोढ़ है । और यदि ३१ याजक उस सेहुआं की मरी को देखे और चमड़े से गहिरी न सूझ पड़े और उस पर काला बाल न हो तो याजक उस सेहुआं मरी जन को सात दिन लों बंद करे । और सातवें दिन याजक उस ३२ मरी को देखे और यदि सेहुआं को फैला न देखे और उस पर पीला बाल न हो और सेहुआं देखने में चमड़े से गहिरा न हो । तब वह अपने तईं मुंड़ावे परन्तु ३३ सेहुआं को न मुंड़ावे और जिस पर सेहुआं है याजक उस को और सात दिन बंद करे । और सातवें दिन याजक उस सेहुआं ३४ को देखे और यदि चमड़े पर फैलते न देखे और वह चमड़े से गहिरा न देख पड़े तो याजक उसे पवित्र ठहरावे और वह अपने कपड़े धोवे और पवित्र होवे । और यदि उस के पवित्र होने के पीछे ३५ वह सेहुआं चमड़े पर बहुत फैल जावे । तो याजक उसे देखे और यदि सेहुआं ३६ चमड़े पर फैला देखे तो याजक पीले बाल को न ढूंढे वह अपवित्र है । परन्तु ३७ यदि उस के देखने में सेहुआं वैसा ही है और उस में काला बाल निकला हो तो वह सेहुआं चंगा हुआ वह पवित्र है याजक उसे पवित्र ठहरावे ॥

और यदि किसी पुरुष अथवा स्त्री के ३८ शरीर के चमड़े पर चकचकिया बिंदु अथवा उजला होवे । तब याजक देखे ३९ और यदि उस के शरीर के चमड़े पर के

चकचकिया बिंदु मुरझाया हुआ उजला सूझ पड़े वह कोप है जो चमड़े से निकलती है वह पवित्र है॥

४० और जिस मनुष्य के सिर के बाल गिर गये हों वह चंदुला है वह पवित्र ४१ है। और जिस मनुष्य के सिर के बाल मुंह की ओर से गिर गये हों वह चंदुला ४२ है वह पवित्र है। और यदि उस चंदुले सिर अथवा माथे में उजला लाल सा घाव होवे वह कोढ़ है जो उस के चंदुले ४३ सिर अथवा माथे में फैला हुआ है। सो याजक उसे देखे और यदि घाव के ऊपर उजला लाल सा उस के चंदुले सिर अथवा उस के चंदुले माथे में दिखाई देवे जैसा कि शरीर के चमड़े में कोढ़ ४४ दिखाई देता है। तो वह मनुष्य कोढ़ी है वह अपवित्र है याजक उसे सर्वथा अपवित्र ठहरावे उस की मरी उस के सिर पर है॥

४५ और जिस कोढ़ी पर मरी है उस के कपड़े फाड़े जावें और उस का सिर नंगा किया जावे तब वह अपनी डाढ़ी को छिपावे और चिल्ला चिल्लाके कहे कि ४६ अपवित्र अपवित्र। जितने दिन लों मरी उस पर रहे वह अशुद्ध रहेगा वह अपावन है वह अकेला रहा करे उस का निवास छावनी के बाहर होवे॥

४७ और वह बस्त्र कि जिस में कोढ़ की मरी हो ऊन का अथवा सूत का बस्त्र ४८ हो। उस बस्त्र के ताने में अथवा बाने में सूत का हो अथवा ऊन का और चाहे चमड़े पर हो चाहे किसी बस्तु पर जो ४९ चमड़े की हो। और यदि वह मरी बस्त्र में हरी सी अथवा लाल सी हो अथवा चमड़े में अथवा ताने में अथवा बाने में हो अथवा किसी चमड़े की बस्तु में हो वह मरी का कोढ़ है और याजक को ५० दिखाया जावे। और याजक उस मरी को देखे और उस मरीवाले को सात ५१ दिन बंद करे। और सातवें दिन याजक उस मरी को देखे यदि वह मरी कपड़े पर अथवा ताने बाने में अथवा चमड़े पर अथवा किसी बस्तु पर जो चमड़े से बनी हुई है फैल जावे वह मरी कटाव ५२ का कोढ़ है वह अपवित्र है। सो वह उस बस्त्र को जो ऊन का अथवा सूत का हो जिस के ताने में है अथवा बाने में अथवा चमड़े की कोई बस्तु जिस में मरी है उसे जला देवे क्योंकि वह कटाव का कोढ़ है वह आग से जलाया जावे॥

५३ और यदि याजक देखे कि वह मरी जो बस्त्र में अथवा ताने में अथवा बाने में अथवा चमड़े की किसी बस्तु में है ५४ फैली नहीं। तो याजक आज्ञा करे और उस बस्तु को जिस में मरी होवे धोवें ५५ और फिर उसे सात दिन लों बंद करे। और याजक धोने के पीछे उस मरी को देखे और यदि उस मरी का रंग बदला न देखे और मरी न फैली हो तो वह अपवित्र है उसे आग में जलावे कि वह ५६ कटाव चाहे भीतर चाहे बाहर हो। और यदि याजक दृष्टि करे और देखे कि मरी धोने के पीछे कुछ मुरझाई हो तो वह उस बस्त्र से और चमड़े से ताने से ५७ अथवा बाने से फाड़ फेंके। और यदि वह मरी बस्त्र में ताने में अथवा बाने में अथवा किसी चमड़े की बस्तु में प्रगट बनी रहे तो वह फैलती है तू उसे जिस ५८ में मरी है आग से जला देना। और यदि मरी उस बस्त्र से ताने से अथवा बाने से अथवा चमड़े की बस्तु से जिसे तू धोवेगा यदि मरी उन से जाती रहे तो वह दूसरी बेर धोया जावे और पवित्र हो जायगा॥

५९ यह कोढ़ की मरी की व्यवस्था है जो ऊन अथवा सूत के बस्त्र में अथवा

खाने अथवा बाने में अथवा किसी चमड़े की वस्तु में है जिसतें उसे पवित्र अथवा अपवित्र ठहरावे ॥

चौदहवां पर्ब्ब।

१ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। २ कि कोढ़ी के लिये यह व्यवस्था होगी जिस दिन वह पवित्र किया जावे कि ३ वह याजक के पास लाया जावे। और याजक छावनी से बाहर जाके देखे और यदि वह कोढ़ी कोढ़ की मरी से चंगा ४ हो गया हो। तो याजक आज्ञा करे कि जो पवित्र किया जाता है सो अपने लिये दो पवित्र जीते पक्षी और शमशाद की लकड़ी और लाल और जूफा लेवे। ५ और याजक आज्ञा करे कि उन पक्षियों में से एक मिट्टी के पात्र में बहते पानी ६ पर मारा जावे। और वह जीते पक्षी को और शमशाद की लकड़ी और लाल और जूफा समेत लेके उस पक्षी के लोहू में जो बहते पानी पर मारा गया है ७ चभोरे। और जो कोढ़ से पवित्र किया जाता है उस पर सात बार छिड़के और उसे पवित्र ठहरावे और उस जीते पक्षी को खुले चौगान की ओर उड़ा देवे॥

८ और जो पवित्र किया जाता है सो अपने कपड़े धोवे और अपने सारे बाल मुंड़ावे और पानी में स्नान करे जिसतें पवित्र होवे और उस के पीछे वह छावनी में आवे और सात दिन लों अपने तंबू ९ के बाहर ठहरे। और ऐसा होगा कि सातवें दिन अपने सिर के सब बाल और अपनी डाढ़ी और अपनी भौंहें अर्थात् अपने सारे बाल मुंड़ावे और अपने कपड़े धोवे और अपना शरीर पानी से धोवे तब वह पवित्र होगा॥

१० और आठवें दिन दो निर्खोट मेम्ने और पहिले बरस की एक निर्खोट मेम्नी और चोखा पिसान तीन दसवें भाग तेल से मिला हुआ और एक नपुआ तेल भोजन की भेंट के लिये लेवे। ११ तब याजक जो पवित्र करता है उस मनुष्य को जो पवित्र किया जाता है उन वस्तुन सहित परमेश्वर के आगे मंडली के तंबू के द्वार पर ले आवे। १२ और याजक एक मेम्ना अपराध के बलिदान के लिये उस नपुआ तेल समेत पास लावे और उन्हें हिलाने की भेंट के लिये परमेश्वर के आगे हिलावे। १३ और उस मेम्ने को उस स्थान पर जहां पाप की भेंट और बलिदान की भेंट बलि किई जाती है पवित्र स्थान में बलि करे क्योंकि जैसी पाप की भेंट याजक की है वैसी अपराध की भेंट है वह अत्यंत पवित्र है। १४ और याजक अपराध की भेंट का कुछ लोहू लेके उस के जो पवित्र किया जाता है दहिने कान की लहर पर और उस के दहिने हाथ के अंगूठे पर और उस के दहिने पांव के अंगूठे पर लगावे। १५ और याजक उस नपुआ का कुछ तेल लेके अपने बाएं हाथ की हथेली पर डाले। १६ और याजक अपनी दहिनी अंगुली उस तेल में जो उस की बाईं हथेली पर है डुबावे और परमेश्वर के आगे सात बार अपनी अंगुली से कुछ तेल छिड़के। १७ और उस तेल में से जो उस की हथेली पर उबरा है उस मनुष्य के दहिने कान की लहर पर जो पवित्र किया जाता है और उस के दहिने हाथ के अंगूठे पर और उस के दहिने पांव के अंगूठे पर अपराध की भेंट के लोहू को लगावे। १८ और याजक उस उबरे हुए तेल को जो उस की हथेली पर है उस मनुष्य के सिर पर जो पवित्र किया जाता है डाल दे और याजक उन के लिये परमेश्वर के आगे प्रायश्चित्त करे। १९ और याजक पाप की भेंट चढ़ावे और उस के लिये जो अपनी अपवित्रता से

पवित्र किया जाता है प्रायश्चित्त करे और उस के पीछे बलिदान की भेंट को २० बलि करे। और बलिदान की भेंट और भोजन की भेंट याजक बेदी पर चढ़ावे और याजक उस के लिये प्रायश्चित्त करे और वह पवित्र होगा॥

२१ और यदि वह कंगाल होवे और इतना ला न सके तो वह अपराध की भेंट हिलाने के लिये एक मेम्ना लेवे जिसतें उस के लिये प्रायश्चित्त दिया जावे और एक दसवां भाग चोखा पिसान तेल में मिला हुआ भेंट के बलिदान के लिये २२ और एक चोंगा तेल। और दो पिण्डुकियां अथवा कपोत के दो बच्चे जैसा वह पा सके लेवे और एक पाप की भेंट और दूसरा बलिदान की भेंट का होगा। २३ और वह उन्हें आठवें दिन अपने पवित्र होने के लिये मंडली के तंबू के द्वार पर परमेश्वर के आगे याजक पास लावे। २४ और याजक अपराध की भेंट का मेम्ना और एक चोंगा तेल लेवे और वह उन्हें परमेश्वर के आगे हिलाने की भेंट के २५ लिये हिलावे। और वह अपराध की भेंट के मेम्ने को बलि करे और याजक अपराध की भेंट के लोहू में से कुछ लेके उस के जो पवित्र किया जाता है दहिने कान की लहर पर और उस के दहिने हाथ के अंगूठे और उस के दहिने पांव २६ के अंगूठे पर लगावे। और उस तेल में से याजक कुछ अपनी बाईं हथेली पर २७ डाले। और याजक उस तेल में से जो उस की बाईं हथेली पर है थोड़ा सा अपनी दहिनी अंगुली से परमेश्वर के आगे सात २८ बार छिड़के। और याजक उस तेल में से जो उस की हथेली पर है उस के जो पवित्र किया जाता है दहिने कान की लहर पर और उस के दहिने हाथ के अंगूठे और उस के दहिने पांव के अंगूठे पर अपराध की भेंट के लोहू के स्थान पर लगावे। और याजक उबरे २९ हुए तेल को जो उस की हथेली पर है उस के सिर पर जो पवित्र किया जाता है डाले कि जिसतें उस के लिये परमेश्वर के आगे प्रायश्चित्त करे। और वह उन ३० पिण्डुकियों में से अथवा कपोत के बच्चों में से जो उस के हाथ लगे। एक तो ३१ पाप की भेंट के लिये और दूसरा बलिदान की भेंट के लिये भोजन की भेंट के साथ चढ़ावे और याजक उस के लिये जो पवित्र किया जाता है परमेश्वर के आगे प्रायश्चित्त करे॥

यह उस कोढ़ी की मरी की व्यवस्था ३२ है जो अपने पवित्र करने की पूंजी न रखता हो॥

फिर परमेश्वर मूसा और हारून से ३३ कहके बोला। कि जब तुम कनआन ३४ देश में पहुंचो जो मैं तुम्हें अधिकार के लिये देता हूं और मैं तुम्हारे अधिकार के देश के किसी घर में कोढ़ की मरी लाऊं। तब उस घर का स्वामी याजक ३५ पास आके कहे कि मुझे ऐसा दिखाई देता है कि घर में कुछ मरी सी है। तब याजक आज्ञा करे कि वे उस घर ३६ को उस्से आगे कि याजक मरी को देखने जावे छूछा करें जिसतें घर की समस्त सामग्री अपवित्र न हो जावे और उस के पीछे याजक घर के भीतर देखने जावे। और वह उस मरी पर दृष्टि करे ३७ और यदि वह मरी उस घर की भीतों पर हरी सी अथवा लाल सी लकीरें दिखाई देवें और वह देखने में भीत से गहिरी दिखाई देवें। तो याजक उस ३८ घर के द्वार से बाहर निकलके घर को सात दिन लों बंद करे। और याजक ३९ सातवें दिन फिर आके देखे और यदि वह मरी घर की भीतों पर फैली

४० दिखाई देवे। तो याजक आज्ञा करे कि उन पत्थरों को जिन में मरी है निकाल डालें और उन्हें नगर के बाहर ४१ अपवित्र स्थान पर फेंक देवें। और वह घर के भीतर चारों ओर खुरचवावे और वे उस खुरची धूल को नगर के बाहर ४२ अपवित्र स्थान में फेंक देवें। और वे और पत्थर लेके उन पत्थरों के स्थान पर जोड़ें और वह दूसरा खाओ लेकर ४३ घर को गच करे। और यदि पत्थर निकालने के और घर खुरचाने के पीछे और गच करने के पीछे मरी फिर आवे ४४ और उस घर में फूट निकले। तब याजक आके देखे और यदि वह मरी घर में फैली देखे तो उस घर में कटाव ४५ का कोढ़ है वह अशुद्ध है। तब वह उस घर को उस के पत्थरों को और उस की लकड़ियों को और उस के सब खाये को गिरा देवे और वह उन्हें नगर के ४६ बाहर अपवित्र स्थान में ले जावे। और जब लों वह घर बंद होवे जो कोई उस में जावे सो सांझ लों अशुद्ध होगा। ४७ और जो कोई उस घर में सोवे सो अपने कपड़े धोवे और जो कोई उस घर में कुछ खावे सो अपने कपड़े धोवे॥

४८ और यदि घर के गच होने के पीछे याजक आते आते उस घर में आवे और देखे कि वह मरी घर पर नहीं फैली तो याजक उस घर को पवित्र ठहरावे ४९ क्योंकि वह मरी से चंगा हो गया। तब उस घर को पवित्र करने के लिये दो चिड़ियां और शमशाद की लकड़ी और ५० लाल और जूफा लेवे। और उन चिड़ियों में से एक को मिट्टी के पात्र में बहते ५१ पानी पर बलि करे। फिर वह शमशाद की लकड़ी और जूफा और लाल और उस जीती चिड़िया को लेके उन्हें बलि किई हुई चिड़िया के लोहू में और उस बहते पानी में चभोरे और सात बेर उस घर पर छिड़के। और चिड़िया के लोहू ५२ और बहते पानी और जीती चिड़िया और शमशाद की लकड़ी और जूफा और लाल से उस घर को पवित्र करे। परन्तु वह उस जीती चिड़िया को नगर ५३ के बाहर चौगान की ओर छोड़े और उस घर के लिये प्रायश्चित्त करे और वह पवित्र हो जायगा॥

हर भांति के कोढ़ की मरी और ५४ सेहुओं के। और वस्त्र और घर के कोढ़ ५५ के लिये। और उभरना और घाव और ५६ चकचकिया बिंदु के लिये यह व्यवस्था है। कि अपवित्र और पवित्र होने के ५७ दिन सिखलावे कोढ़ के लिये यही व्यवस्था है॥

पंदरहवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा और हारून से १ कहके बोला। कि इसराएल के संतानों २ से कहके बोलो कि यदि किसी मनुष्य के प्रमेह का रोग होवे तो वह प्रमेह के कारण से अशुद्ध है। और यदि उस का ३ प्रमेह थम जावे अथवा बना रहे वह अशुद्ध है। हर एक बिछौना जिस पर ४ प्रमेही लेटता है सो अशुद्ध होगा हर एक वस्तु जिस पर वह बैठता है अशुद्ध होगी। और जो कोई उस के बिछौने ५ को छूवे सो अपने कपड़े धोवे और पानी से स्नान करे और सांझ लों अपवित्र रहेगा। और जो कोई उस वस्तु पर ६ जिस पर प्रमेही बैठता है बैठे सो अपने कपड़े धोवे और पानी में नहावे और सांझ लों अशुद्ध रहेगा। और जो कोई ७ उस के शरीर को जिसे प्रमेह है छूवे सो अपने कपड़े धोवे और पानी से स्नान करे और सांझ लों अशुद्ध रहेगा। और ८ यदि प्रमेही किसी पवित्र मनुष्य पर थूके तो वह मनुष्य अपने कपड़े धोवे और

पानी से स्नान करे और सांझ लों अपवित्र रहेगा। ९ और जिस आसन पर वह बैठे सो अपवित्र होगा। १० और जो कोई उस बस्तु को जो उस प्रमेही के नीचे है छूवे सो सांझ लों अपवित्र रहेगा और जो कोई उन बस्तुन को उठावे सो अपने कपड़े धोवे और पानी से स्नान करे और सांझ लों अपवित्र रहेगा। ११ और बिन हाथ धोये जिस किसी को प्रमेही छूवे सो अपने कपड़े धोवे और पानी से स्नान करे और सांझ लों अपवित्र रहेगा। १२ और जिस मिट्टी के पात्र को प्रमेही छूवे सो तोड़ा जावे और यदि काष्ठ का पात्र होवे तो पानी से धोया जावे। १३ और जब प्रमेही चंगा हो जावे तब वह अपने पवित्र होने के लिये सात दिन गिने तब वह अपने कपड़े धोवे और अपना शरीर बहते पानी से धोवे तब वह पवित्र होगा। १४ और आठवें दिन दो पिण्डुकी अथवा कपोत के दो बच्चे लेके परमेश्वर के आगे मंडली के तंबू के द्वार पर आवे और उन्हें याजक को सौंपे। १५ और याजक उन्हें चढ़ावे एक पाप की भेंट के लिये और दूसरा बलिदान की भेंट के लिये और याजक उस प्रमेही के लिये परमेश्वर के आगे प्रायश्चित्त करे॥

१६ और यदि किसी मनुष्य से रात को बीर्य जावे तब वह अपना समस्त शरीर पानी से धोवे और सांझ लों अपवित्र रहेगा। १७ और जिस कपड़े अथवा चमड़े पर रति का बीर्य पड़े सो पानी से धोया जावे और सांझ लों अपवित्र रहेगा। १८ और स्त्री भी जिस्से पुरुष रति करे दोनों पानी से स्नान करें और सांझ लों अपवित्र रहेंगे॥

१९ और यदि स्त्री रजस्वला हो तो वह सात दिन अलग किई जावे जो कोई उसे छूयेगा सो सांझ लों अपवित्र रहेगा। २० और सब बस्तें जिस पर वह अपने अलग होने के दिन में लेटे अपवित्र होंगी और हर एक बस्तु जिस पर वह बैठे सो अपवित्र होगी। २१ और जो कोई उस के बिछौने को छूवे सो अपने कपड़े धोवे और पानी से स्नान करे और सांझ लों अपवित्र रहेगा। २२ और जो कोई किसी बस्तु को छूवे जिस पर वह बैठी थी सो अपने कपड़े धोवे और पानी से स्नान करे और सांझ लों अपवित्र रहेगा। २३ और यदि कोई बस्तु उस के बिछौने पर अथवा किस पर हो जिस पर वह बैठती है और उस समय कोई उस बस्तु को छूये तो वह सांझ लों अपवित्र रहेगा। २४ और यदि पुरुष उस के साथ लेटे और वह रजस्वला में होवे तो वह सात दिन लों अपवित्र रहेगा और हर एक बिछौना जिस पर वह पुरुष लेटता है सो अपवित्र होगा॥

२५ और यदि स्त्री का रजोधर्म्म उस के ठहराये हुए दिनों से अधिक होवे अथवा यदि उस के अलग होने के समय से अधिक बहे तो उस की अपवित्रता के बहने से सब दिन उस के अलग होने के दिनों के समान होवें वह अपवित्र है। २६ उस के बहने के सब दिनों में हर एक बिछौना जिस पर वह लेटती है और जिस पर वह बैठती है सो उस के अलग होने की अपवित्रता के समान अपवित्र होगा। २७ और जो कोई उन बस्तुन को छूवे सो अपवित्र होगा और अपने कपड़े धोवे और पानी से स्नान करे और सांझ लों अपवित्र रहेगा। २८ और जब वह अपने रज से पवित्र होवे तब सात दिन अपने लिये गिने और उस के पीछे वह पवित्र होगी। २९ और आठवें दिन वह अपने लिये दो पिण्डुकियां अथवा कपोत के दो बच्चे लेवे और उन्हें मंडली के

तंबू के द्वार पर याजक पास लावे । ३० और याजक एक को पाप की भेंट और दूसरे को बलिदान की भेंट के लिये चढ़ावे और याजक उस के रज की अपवित्रता के लिये परमेश्वर के आगे उस के लिये प्रायश्चित्त करे ॥

३१ यों तुम इसराएल के संतानों को उन की अपवित्रता से अलग करो जिसतें वे अपनी अपवित्रता से मर न जावें जब वे मेरे तंबू को जो उन के मध्य में है अपवित्र करें ॥

३२ उस के लिये जिसे प्रमेह का रोग होवे और उस के लिये जो रति करने ३३ से अपवित्र होवे । और उस के लिये जो रजस्वला होवे और उस पुरुष और स्त्री के लिये जिसे प्रमेह का रोग होवे और उस पुरुष के लिये जो रजस्वला के साथ लेटता हो यही व्यवस्था है ॥

सोलहवां पर्ब्ब ।

१ और हारून के दो बेटों के मरने के पीछे जब वे परमेश्वर के निकट आये और मर गये परमेश्वर ने मूसा से बात्ता २ किई । और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अपने भाई हारून को कह कि वह हर समय पवित्र स्थान के घूंघट के भीतर उस ढकना के आगे जो मंजूषा पर है न आया करे न हो कि मर जावे क्योंकि मैं मेघ में उस ढकना के ऊपर ३ दिखाई दूंगा । पवित्र स्थान में हारून यों आवे पाप की भेंट के लिये एक बछड़ा और बलिदान की भेंट के लिये ४ एक मेंढा लावे । पवित्र सूती कुरता पहिने और उस के शरीर पर सूती मुथनी हो और सूती पटुके से उस की कटि बंधी हो और अपने सिर पर सूती पगड़ी रक्खे ये पवित्र बस्त्र हैं और वह अपना शरीर पानी से धोवे और उन्हें पहिने । ५ और इसराएल के संतानों की मंडली से बकरी के दो मेम्ने पाप की भेंट के लिये और एक मेंढा बलिदान की भेंट के लिये लेवे ॥

६ और हारून पाप की भेंट के उस बछड़े को जो उस के लिये है आगे लावे और अपने लिये और अपने घर के लिये ७ प्रायश्चित्त करे । और उन दोनों बकरों को लेके मंडली के तंबू के द्वार पर पर-८ मेश्वर के आगे ले आवे । और हारून उन दोनों बकरों पर चिट्ठी डाले एक चिट्ठी परमेश्वर के लिये और दूसरी चिट्ठी ९ बकरा छुड़ाने के लिये । और हारून उस बकरे को लावे जिस पर परमेश्वर के नाम की चिट्ठी पड़े और उसे पाप की १० भेंट के लिये बलि चढ़ावे । परन्तु छुड़ाने के लिये जिस बकरे पर चिट्ठी पड़े उसे परमेश्वर के आगे जीता लावे कि उस्से प्रायश्चित्त किया जावे और उस को छुड़ावन के लिये बन में छोड़ दे ॥

११ तब हारून अपने लिये पाप की भेंट के बछड़े को लावे और अपने और अपने घर के लिये प्रायश्चित्त करे और पाप की भेंट के बछड़े को जो अपने लिये है १२ बलि करे । और वह परमेश्वर के आगे बेदी पर से एक धूपावरी अंगारों से भरी हुई और अपनी मुट्ठी भर सुगंध लेवे १३ और घूंघट के भीतर लावे । और उस धूप को परमेश्वर के आगे आग में डाल देवे जिस में धूप का मेघ उस ढकने को जो साक्षी पर है छिपावे और आप न मरे । १४ और वह बछड़े का लोहू लेके अपनी अंगुली से ढकने की पूरब और छिड़के और ढकने के आगे अपनी अंगुली से १५ सात बेर लोहू छिड़के । फिर वह लोगों के लिये पाप की भेंट की बकरी को बलि करे और उस के लोहू को घूंघट के भीतर लाके जैसा उस ने बछड़े के लोहू से किया था वैसा ही उस्से करे

और उसे ढकने के ऊपर और ढकने के १६ आगे छिड़के। और पवित्र स्थान के लिये इसराएल के संतानों की अपवित्रता के कारण से और उन के पापों और उन के समस्त अपराधों के कारण से प्रायश्चित्त करे और वह मंडली के तंबू के लिये भी जो उन के साथ उन की अपवित्रता के मध्य में है ऐसा ही करे। १७ और जब वह प्रायश्चित्त करने के लिये पवित्र स्थान में आवे तो जब लों वह बाहर न आवे तब लों कोई मनुष्य मंडली के तंबू में न आवे और वह अपने लिये और अपने घराने के लिये और इसराएल की समस्त मंडली के १८ लिये प्रायश्चित्त करेगा। फिर वह निकलके उस यज्ञबेदी पर आवे जो परमेश्वर के आगे है और उस के लिये प्रायश्चित्त करे और उस बछड़े और उस बकरे के लोहू में से लेके बेदी के सींगों १९ की चारों ओर लगावे। और अपनी अंगुली से उस पर सात बेर लोहू छिड़के और उसे इसराएल के संतानों की अपवित्रता से पावन और शुद्ध करे॥

२० और जब वह पवित्र स्थान के और मंडली के तंबू के और यज्ञबेदी के लिये प्रायश्चित्त कर चुका तब उस जीते २१ बकरे को लावे। और हारून अपने दोनों हाथ उस जीते बकरे के सिर पर रक्खे और इसराएल के संतानों की बुराइयां और उन के सारे पापों के समस्त अपराधों को मान लेके उन्हें इस बकरे के सिर पर धरे और उसे किसी मनुष्य के हाथ जो उस के लिये ठहराया गया हो बन को भिजवा दे। २२ और वह बकरा उन की सारी बुराइयां अपने ऊपर उठाके दूर देश में ले जायगा और वह उस बकरे को बन में छोड़ देवे॥

२३ और हारून मंडली के तंबू में आवे और सूती बस्त्रों को जो उस ने पवित्र स्थान में जाने के समय पहिने थे उतारे और उन्हें वहां रख देवे। और वह पवित्र २४ स्थान में अपना शरीर पानी से धोवे और अपने बस्त्र पहिनके बाहर आवे और अपने बलिदान की भेंट और लोगों के बलिदान की भेंट चढ़ावे और अपने लिये और लोगों के लिये प्रायश्चित्त करे। और पाप की भेंट की चिकनाई यज्ञबेदी २५ पर जलावे॥

और जिस ने छुड़ाया हुआ बकरा २६ छोड़ दिया सो अपने कपड़े धोवे और पानी से नहावे और उस के पीछे छावनी में प्रवेश करे। और पाप की भेंट के २७ बछड़े को और पाप की भेंट के बकरे को जिन का लोहू पवित्र स्थान में प्रायश्चित्त के लिये पहुंचाया गया छावनी से बाहर ले जावें और उन की खालें और उन का मांस और उन का गोबर आग में जला देवें। और जिस ने उन्हें २८ जलाया सो अपने कपड़े धोवे और पानी से स्नान करे और उस के पीछे छावनी में आवे॥

और यह तुम्हारे लिये सनातन की २९ बिधि होगी सातवें मास की दसवीं तिथि को तुम अपने प्राण को कष्ट देओ और कुछ कार्य्य न करो चाहे देशी चाहे परदेशी जो तुम्हों में बास करता है। क्योंकि उस दिन तुम्हारे कारण ३० तुम्हें पवित्र करने के लिये प्रायश्चित्त किया जायगा जिसतें तुम अपने समस्त पापों से परमेश्वर के आगे पवित्र हो जाओ। यह तुम्हारे लिये स्मरण का ३१ बिश्राम होगा और तुम अपने प्राण को कष्ट दीजियो यह तुम्हारे लिये सदा की बिधि है। और वह याजक जो अभिषेक ३२ किया जायगा और जो याजक के पद में सेवा करने के लिये अपने पिता की

संती स्थापित होगा सोई प्रायश्चित्त करे और पवित्र सूती बस्त्र को पहिने। ३३ और पवित्र स्थान के लिये और मंडली के तंबू के लिये और यज्ञबेदी के लिये और याजकों के लिये और मंडली के सब लोगों के लिये प्रायश्चित्त करे। ३४ और यह तुम्हारे लिये सनातन की बिधि है जिसतें तुम इसराएल के संतानों के लिये उन के सब पापों के कारण बरस में एक बार प्रायश्चित्त करो सो जैसा परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी उस ने वैसा ही किया॥

सत्तरहवां पर्ब्ब।

१ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। २ कि हारून और उस के बेटों और इसराएल के समस्त संतानों से कहके बोल कि यह वह बात है जिसे परमेश्वर ३ ने आज्ञा किई है। जो मनुष्य इसराएल के घरानों में से बैल अथवा मेम्ना अथवा बकरी छावनी में अथवा छावनी के ४ बाहर बलि करे। और मंडली के तंबू के द्वार पर परमेश्वर के तंबू के आगे भेंट चढ़ाने के लिये उसे न लावे तो उस मनुष्य पर लोहू का दोष होगा उस ने लोहू बहाया और वह मनुष्य अपने ५ लोगों में से कट जायगा। यह इस लिये है कि इसराएल के संतान अपने बलिदानों को जिन्हें वे चौगान में बलि करते हैं परमेश्वर के आगे मंडली के तंबू के द्वार पर याजक पास लावें और उन्हें परमेश्वर के आगे कुशल की भेंट ६ के लिये बलि करें। और याजक वह लोहू मंडली के तंबू के द्वार पर परमेश्वर की यज्ञबेदी पर छिड़के और परमेश्वर के सुगंध के लिये चिकनाई को जलावे। ७ और आगे को पिशाचों के लिये जिन के पीछे वे बेश्यागामी थे न चढ़ावें उन की पीढ़ियों में यह सनातन की बिधि होगी॥

८ और तू उन्हें कह कि इसराएल के घराने में अथवा परदेशी में जो तुम्हों में बास करता है जो कोई चढ़ावे की भेंट अथवा बलि की भेंट चढ़ावे। ९ और उसे मंडली के तंबू के द्वार पर परमेश्वर को चढ़ाने के लिये उसे न लावे वही मनुष्य अपने लोगों में से काट डाला जायगा॥

१० और इसराएल के घरानों में से अथवा परदेशियों में से जो उन में बास करता है जो कोई किसी रीति का लोहू खावे तो निश्चय मैं उसी लोहू के भक्षक का बिरोधी हूंगा और उसे उस के लोगों ११ में से काट डालूंगा। क्योंकि शरीर का जीवन लोहू में है सो मैं ने उसे यज्ञबेदी पर तुम्हें दिया है कि तुम्हारे प्राणों के लिये प्रायश्चित्त होवे क्योंकि लोहू से १२ प्राण के लिये प्रायश्चित्त होता है। इस लिये मैं ने इसराएल के संतानों से कहा कि तुम्में से कोई प्राणी लोहू न खावे और कोई परदेशी जिस का बास तुम्में है लोहू न खावे॥

१३ और इसराएल के संतानों में से अथवा परदेशियों में से जिन का बास उन में है जो कोई खाने के योग्य पशु अथवा पक्षी अहेर करके पकड़े सो उस के लोहू को बहा देवे और उसे धूल से १४ ढांप देवे। क्योंकि यह समस्त शरीर का जीव उस का लोहू है वह उस के जीव के लिये है इस लिये मैं ने इसराएल के संतानों को आज्ञा किई कि किसी रीति के मांस का लोहू मत खाओ क्योंकि समस्त मांस का जीव उस का लोहू है जो कोई उसे खायेगा सो अपने लोगों में से कट जायगा॥

१५ और जो कुछ मर जावे अथवा फाड़ा जावे चाहे देशी होवे चाहे परदेशी जो प्राणी उसे खावे सो अपने कपड़े

धोवे और पानी से स्नान करे और सांझ लों अपवित्र रहे तब वह पवित्र होगा। १६ पर यदि वह न धोवे और स्नान न करे तो वह दोषी होगा॥

अठारहवां पर्व्व।

१ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। २ कि इसराएल के संतानों से कहके बोल कि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं। ३ तुम मिस्र के देश के कार्य्य के समान जिस में तुम रहते थे न करियो और कनआन के देश के से काम न करो जहां मैं तुम्हें ले जाता हूं और उन की ४ बिधिन पर न चलियो। मेरे बिचारों पर चलो और मेरी बिधिन को पालन करो जिसतें तुम उन पर चलो मैं ५ परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं। सो मेरी बिधिन और मेरे बिचारों को पालन करो जिन पर यदि मनुष्य चले तो वह उन से जीयेगा मैं परमेश्वर हूं॥

६ उन का नंगापन उघारने के लिये तुम्में से कोई अपने कुटुम्ब के पास न ७ जावे मैं परमेश्वर हूं। अपने पिता का नंगापन अथवा अपनी माता का नंगापन मत उघार वह तेरी माता है ८ तू उस का नंगापन मत उघार। अपने पिता की पत्नी का नंगापन मत उघार ९ वह तेरे पिता का नंगापन है। अपनी बहिन का नंगापन अपने पिता की बेटी का अथवा अपनी माता की बेटी का जो घर में अथवा बाहर उत्पन्न हुई हो उन का नंगापन मत उघार। १० अपने पुत्र की बेटी का अथवा अपनी बेटी का नंगापन मत उघार क्योंकि ११ उन का नंगापन तेरा ही है। तेरे पिता की पत्नी की बेटी जो तेरे पिता की जन्मी है वह तेरी बहिन है तू उस का १२ नंगापन मत उघार। अपने पिता की बहिन का नंगापन मत उघार वह तेरे पिता की समीपी कुटुम्ब है। अपनी १३ माता की बहिन का नंगापन मत उघार क्योंकि वह तेरी माता की समीपी कुटुम्ब है। अपने पिता के भाई का नंगापन १४ मत उघार उस की पत्नी पास मत जा वह तेरी चाची है। अपनी बहू का १५ नंगापन मत उघार वह तेरे बेटे की पत्नी है उस का नंगापन मत उघार। अपने १६ भाई की पत्नी का नंगापन मत उघार वह तेरे भाई का नंगापन है। किसी १७ स्त्री का और उस की बेटी का नंगापन मत उघार उस के बेटे की बेटी को और उस की बेटी की बेटी को उस का नंगापन उघारने के लिये न ले वह उस की समीपी कुटुम्ब हैं यह बड़ी दुष्टता है। और तू किसी स्त्री को १८ खिजाने के लिये उस के जीते जी उस की बहिन समेत मत ले जिसतें उस का नंगापन उघारे॥

और जब लों स्त्री अपवित्रता के १९ लिये अलग किई गई हो उस का नंगापन उघारने के लिये उस के पास मत जा। और अपने परोसी की पत्नी २० के संग कुकर्म्म मत कर जिसतें आप को उस्से अपवित्र करे। और अपने २१ बंश में से मोलक को मत चढ़ा और अपने परमेश्वर के नाम को अनरीति से मत ले मैं परमेश्वर हूं। और तू २२ पुरुषगामन मत कर वह घिनित है। और पशुगामी होके आप को अशुद्ध २३ मत कर और कोई स्त्री पशुगामिनी न हो वह घिनौनी बात है॥

इन बातों में आप को अशुद्ध मत २४ कर क्योंकि जिन जातिगणों को मैं तुम्हारे आगे निकालता हूं वे इन बातों में अशुद्ध हैं। और देश अशुद्ध है इस २५ कारण मैं इस के अपराध का पलटा लेता हूं और देश भी अपने बासियों को

२६ उगलता है। सो तुम मेरी बिधिन और मेरे बिचारों को पालन करो और इन घिनितों में से किसी को न करो न देशी और न परदेशी जो तुम्में बास करता २७ है। क्योंकि उस देश के लोगों ने जो तुम से आगे थे ये समस्त घिनित कार्य्य २८ किये और देश अशुद्ध हुआ है। जिसतें जब तुम देश को अशुद्ध करो वह तुम्हें भी उगल न देवे जिस रीति से उन जातिगणों को जो तुम से आगे थे उगला। २९ क्योंकि जो कोई उन घिनौनी क्रियों में से कुछ करेगा ऐसे कुकर्म्मी प्राणी अपने ३० लोगों में से कट जायेंगे। सो तुम मेरी व्यवस्थों को पालन करो जिसतें उन घिनौनी क्रियों में से जो तुम से आगे किई गई कोई क्रिया न करो और अपने को उन से अशुद्ध न करो मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥

उन्नीसवां पर्ब्ब।

१ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। २ इसराएल के संतानों की सारी मंडली से कहके बोल कि पवित्र होओ क्योंकि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर पवित्र हूं॥

३ तुम अपने अपने माता पिता से डरते रहो और मेरे बिश्राम के दिनों को पालन करो मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥

४ तुम मूर्त्तिन की ओर मत फिरो और न ढालके अपने लिये देवता बनाओ मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥

५ और यदि तुम कुशल की भेंटों का बलिदान परमेश्वर के लिये चढ़ाओ तो अपनी प्रसन्नता के लिये उसे चढ़ाओ। ६ चाहिये कि जब उसे चढ़ाओ वह उसी दिन और दूसरे दिन खाया जावे और यदि तीसरे दिन लों कुछ बच रहे तो ७ आग में जला दिया जावे। और यदि वह तनिक भी तीसरे दिन खाया जावे ८ तो घिनित है वह ग्राह्य न होगा। सो जो कोई उसे खायगा सो अपराधी होगा क्योंकि उस ने परमेश्वर की पवित्र बस्तु को अशुद्ध किया और वह मनुष्य अपने लोगों में से काटा जायगा॥

९ और जब तू अपना खेत काटे तब खेत के कोने को सर्व्वत्र मत काटे ले और १० न अपने खेत का बिन्ना कर। और तू अपने दाख को मत बिन और न अपने हर एक अंगूर को बटोर उन्हें कंगालों और परदेशी के लिये छोड़ मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥

११ तुम चोरी मत करो और झुठाई से व्यवहार न करो एक दूसरे से झूठ मत १२ बोलो। और मेरा नाम लेके झूठी किरिया मत खाओ और तू अपने ईश्वर के नाम को अपवित्र मत कर मैं पर- १३ मेश्वर हूं। अपने परोसी से छल मत कर और उस्से कुछ मत चुरा बनिहारों की बनी रात भर बिहान लों तेरे पास न रह जावे॥

१४ बहिरे को दुर्वचन मत कह और तू अंधे के आगे ठोकर खाने की बस्तु मत रख परन्तु अपने ईश्वर से डरता रह मैं परमेश्वर हूं॥

१५ तुम न्याय में अधर्म्म मत करो तू कंगाल का पक्ष मत कर और बड़े की बड़ाई के लिये प्रतिष्ठा मत दे धर्म्म से अपने परोसी का न्याय कर॥

१६ अपने लोगों में लुतड़ा बनके मत आया जाया कर अपने परोसी के लोहू के बिरोध में मत खड़ा हो मैं परमेश्वर १७ हूं। अपने मन में अपने भाई से बैर मत रख तू अपने परोसी को किसी भांति से दपट दे और उस पर पाप मत १८ छोड़। तू अपने लोगों के संतानों से बैर मत रख और अपना पलटा मत ले परन्तु अपने परोसी को अपने समान प्यार कर मैं परमेश्वर हूं॥

तुम मेरी बिधिन का पालन करो तू अपने ढोरों को और जातों से मत मिलने दे तू अपने खेत में मिले हुए बीज मत बो और सूत का मिला हुआ बस्त्र मत पहिन॥

जो कोई किसी स्त्री से जो बचनदत्त दासी हो और छुड़ाई न गई हो और निर्बंध न हुई हो व्यभिचार करता है सो ताड़ना पावेगा वे मार डाले न जावेंगे इस लिये कि वह निर्बंध न थी। सो वह परमेश्वर के लिये मंडली के तंबू के द्वार पर अपने अपराध की भेंट लावे अपराध की भेंट एक मेढ़ा होवे। और याजक उस के लिये अपराध की भेंट के मेढ़े से परमेश्वर के आगे उस के पाप के लिये प्रायश्चित्त करे तब वह अपराध जो उस ने किया है क्षमा किया जायगा॥

और जब तुम उस देश में पहुंचो और खाने के लिये भांति भांति के पेड़ लगाओ तो तुम उस के फल को अखतनः समझो तीन बरस लों तुम्हारे लिये अखतनः के तुल्य रहे वह खाया न जायगा। परन्तु चौथे बरस उस के सारे फल परमेश्वर की स्तुति के लिये पवित्र होंगे। और पांचवें बरस तुम उस का फल खाओ जिसतें तुम्हारे लिये अपनी बढ़ती देवे मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥

तुम लोहू सहित मत खाओ टोना मत करो और समयों को न मानो। तुम अपने सिरों के बालों को गोलाई से मत मुंड़ाओ और अपनी डाढ़ी के कोनों को मत बिगाड़ो। मृतकों के लिये अपने मांस को मत काटो और अपने ऊपर गोदने से चिन्ह मत करो मैं परमेश्वर हूं॥

बेश्या बनाने के लिये अपनी कन्या से व्यभिचार मत कराओ ऐसा न होवे कि देश बेश्यागामी में पड़े और देश दुष्टता से परिपूर्ण होवे॥

३० मेरे बिश्राम के दिनों का पालन करो और मेरे पवित्र स्थान की प्रतिष्ठा करो मैं परमेश्वर हूं। ३१ ओझा को मत मानो और टोन्हों का पीछा करके उन से आप को अशुद्ध मत करो मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥

३२ पक्के बालों के आगे उठ खड़ा हो और पुरनिया के रूप को प्रतिष्ठा दे और अपने ईश्वर से डर मैं परमेश्वर हूं॥

३३ और यदि तुम्हारे देश में परदेशी टिके तो तुम उस को मत खिजाओ। ३४ परदेशी को जो तुम्हें बास करता है ऐसा जानो जैसा कि वह तुम्हें जन्मा और उसे अपने तुल्य प्यार करो क्योंकि तुम मिस्र की भूमि में परदेशी थे मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥

३५ बिचार में परिमाण में तौल में और मापने में अधर्म्म मत करो। ३६ धर्म्म का तुला धर्म्म का बांट धर्म्म की दसेरियां और धर्म्म की पसेरी तुम्हें होवे मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं जो तुम्हें मिस्र की भूमि से निकाल लाया। ३७ सो तुम मेरी समस्त बिधिन और मेरे बिचारों को पालन करो और उन्हें मानो मैं परमेश्वर हूं॥

बीसवां पर्व्व।

१ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। २ कि तू इसराएल के संतानों को कह कि जो कोई इसराएल के संतानों में से अथवा परदेशी जो इसराएल में टिका है अपने बंश में से मोलक को दे वह निश्चय घात किया जायगा देश के लोग उस पर पत्थरवाह करें। ३ और मैं उस मनुष्य पर बैर की कखाई करूंगा और उस के लोगों में से उसे काट दूंगा इस लिये कि उस ने अपने बंश में से मोलक को दिया जिसतें मेरे पवित्र स्थान को अपवित्र और मेरे पवित्र नाम का अपमान करे।

४ और यदि देश के लोग किसी भांति से उस मनुष्य से आंख छिपावें जब उस ने अपने वंश में से मोलक को दिया है ५ कि उसे घात न करें। तो मैं उस मनुष्य पर और उस के घराने पर बैर की रुखाई करूंगा और उसे उन सब समेत जो उस के पीछे मोलक से व्यभिचार करते हैं उन्हें अपने लोगों में से काट ६ डालूंगा। और उस मनुष्य पर जो ओझाओं और टोन्हों की ओर जाता है जिसतें उन के पीछे व्यभिचार करे मैं उस मनुष्य पर अपना क्रोध भड़काऊंगा और उसे उस के लोगों में से काट ७ डालूंगा। सो आप को पवित्र करो और पावन होओ क्योंकि मैं परमेश्वर तुम्हारा ८ ईश्वर हूं। और मेरी विधिन को स्मरण करो और उन्हें मानो मैं वह परमेश्वर हूं जो तुम्हें पवित्र करता है॥

९ जो कोई अपनी माता अथवा पिता को धिक्कारे सो निश्चय मार डाला जायगा उस ने अपने माता पिता को धिक्कारा है उस का लोहू उसी पर है॥

१० और जो मनुष्य किसी की पत्नी से अथवा अपने परोसी की पत्नी से कुकर्म्म करे कुकर्म्मी और कुकर्म्मिणी दोनों निश्चय मार डाले जायेंगे॥

११ और जो मनुष्य अपने पिता की पत्नी से व्यभिचार करे उस ने अपने पिता के नंगापन को उघारा है वे दोनों निश्चय मार डाले जायेंगे उन का लोहू उन्हीं पर है॥

१२ और जो मनुष्य अपनी बहू से कुकर्म्म करे वे दोनों निश्चय मार डाले जायेंगे उन्हों ने घिनौनी बात किई है उन का लोहू उन्हीं पर है॥

१३ और यदि कोई मनुष्य पुरुषगामी होवे तो उन दोनों ने घिनित कार्य्य किया है वे अवश्य मार डाले जायेंगे उन का लोहू उन्हीं पर है॥

१४ और यदि कोई स्त्री को और उस की माता को भी रक्खे वह दुष्टता है वे तीनों के तीनों जलाये जायेंगे जिसतें तुम्हों में दुष्टता न रहे॥

१५ और यदि कोई मनुष्य पशु से कुकर्म्म करे वह निश्चय मार डाला जायगा १६ और उस पशु को घात करो। और यदि स्त्री पशु से कुकर्म्म करे कि उस के तले होवे तो उस स्त्री को और उस पशु को मार डालो वे निश्चय प्राण से मारे जावें उन का लोहू उन्हीं पर है॥

१७ और यदि कोई मनुष्य अपनी बहिन को अपने पिता की बेटी को अथवा अपनी माता की बेटी को लेके आपुस में एक दूसरे की नग्नता देखें वह दुष्ट कर्म्म है वे दोनों अपने लोगों के आगे मार डाले जायेंगे उस ने अपनी बहिन का नंगापन प्रगट किया वह दोषी १८ होगा। और यदि मनुष्य रजस्वला स्त्री के साथ सोवे और उस की नग्नता उघारे तो उस ने उस का सोता उघारा है और उस ने अपने लोहू का सोता खुलवाया और वे दोनों अपने लोगों से काटे जायेंगे॥

१९ और तू अपनी मौसी और अपनी फूफू की नग्नता मत उघार क्योंकि उस ने अपने समीपी कुटुम्ब की नग्नता २० उघारी है वे दोषी होंगे। और यदि कोई अपनी चाची के साथ कुकर्म्म करे उस ने अपने चाचा की नग्नता को उघारा है वे अपने पाप को भोगेंगे वे २१ निर्वंश मरेंगे। और यदि मनुष्य अपने भाई की पत्नी को लेवे वह अशुद्ध कर्म्म है उस ने अपने भाई की नग्नता उघारी है वे निर्वंश होंगे॥

२२ सो तुम मेरी समस्त विधिन को और मेरे न्यायों को पालन करो और उन पर चलो जिसतें जिस देश में मैं

तुम्हें बसाने को ले जाता हूं सो तुम्हें उगाल न देवे। और तुम उस जातिगण की बिधिन पर जिसे मैं तुम्हारे आगे से हांकता हूं मत चलो क्योंकि उन्हों ने ऐसे ही सब काम किये इसी लिये मैं ने २४ उन से घिन किई। परन्तु मैं ने तुम्हें कहा कि तुम उन के देश के अधिकारी होगे और मैं उस देश को अधिकार के लिये तुम्हें दूंगा जहां दूध और मधु बहि रहा है मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं जिस ने तुम्हें लोगों में से अलग कर लिया है॥

२५ सो तुम पवित्र और अपवित्र पशुन में और अपवित्र और पवित्र पक्षियों में व्योरा करो और तुम पशुन और पक्षियों और किसी जीवधारी के कारण से जो भूमि पर रेंगता है जिन्हें मैं ने तुम्हारे लिये अपवित्र ठहराया है आप को अपवित्र २६ न करो। और मेरे लिये पवित्र हो जाओ क्योंकि मैं परमेश्वर पवित्र हूं और मैं ने तुम्हें लोगों में से अलग कर लिया है जिस तें तुम मेरे होओ॥

२७ और जो मनुष्य अथवा स्त्री ओझा अथवा टोन्हा हो सो निश्चय मार डाला जावे वे पत्थरवाह किये जायेंगे उन का लोहू उन्हीं पर होवे॥

इक्कीसवां पर्ब्ब।

१ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला कि हारून के बेटे याजकों से कह और उन्हें बोल कि अपने लोगों की मृत्यु के २ कारण कोई अशुद्ध न होवे। परन्तु अपने समीपी कुटुम्ब के लिये अपनी माता और अपने पिता और अपने पुत्र और अपनी पुत्री और अपने भाई के ३ लिये। और अपनी कुंआरी बहिन के लिये जो अनब्याही है उस के कारण ४ वह अशुद्ध होवे। जो अपने लोगों में प्रधान है सो आप को अशुद्ध न करे जिसतें आप को हलुक करे। वे अपने ५ सिरों के बाल न मुंड़ावें और अपनी डाढ़ी के कोनों को न मुंड़ावें और अपने मांस को न काटें। वे अपने ईश्वर के लिये ६ पवित्र बनें और अपने ईश्वर के नाम को हलुक न करें क्योंकि वे परमेश्वर के लिये आग की भेंट ईश्वर को भोग लगाते हैं सो वे पवित्र होंगे। वे वेश्या ७ का अथवा तुच्छ को पत्नी न करें और न उस स्त्री को जो अपने पति से त्यागी गई है पत्नी करें क्योंकि वे अपने ईश्वर के लिये पवित्र हैं। इस लिये तू उसे ८ पवित्र कर क्योंकि वह तेरे ईश्वर का भोजन चढ़ाता है वह तेरे लिये पवित्र होवे क्योंकि मैं परमेश्वर तुम्हारा शुद्धकर्त्ता पवित्र हूं। और यदि किसी याजक ९ की पुत्री वेश्या का कर्म्म करके आप को तुच्छ करे वह अपने पिता को तुच्छ करती है वह आग से जलाई जायगी॥

और वह जो अपने भाइयों में प्रधान १० याजक है जिस के सिर पर अभिषेक का तेल डाला गया और जो स्थापित किया गया कि वस्त्र पहिने सो अपना सिर नंगा न करे और अपने कपड़े न फाड़े। और वह किसी लोथ के पास न जावे ११ न अपने पिता और न अपनी माता के लिये आप को अशुद्ध करे। और कधी १२ पवित्र स्थान से बाहर न जावे और अपने ईश्वर के पवित्र स्थान को तुच्छ न करे क्योंकि उस के ईश्वर के अभिषेक के तेल का मुकुट उस पर है मैं परमेश्वर हूं। और वह कुंआरी को पत्नी करे। १३ बिधवा अथवा त्यागी गई अथवा तुच्छ १४ वेश्या को इन्हें न लेवे परन्तु वह अपने ही लोगों के बीच में की कुंआरी से बिवाह करे। और अपने बंश को अपने १५ लोगों में तुच्छ न करे क्योंकि मैं परमेश्वर उसे पवित्र करता हूं॥

१६ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। १७ कि हारून से कह कि जो कोई तेरे बंश में से अपनी अपनी पीढ़ियों में खोट होवे सो अपने ईश्वर की नैबेद्य चढ़ाने १८ को समीप न आवे। क्योंकि वह पुरुष जिस में कुछ खोट होवे सो समीप न आवे जैसे अंधा अथवा लंगड़ा अथवा वह जिस की नाक चिपटी हो अथवा १९ जिस पर कुछ उभड़ा है। अथवा वह जिस का पांव अथवा हाथ टूटा हो। २० अथवा कुबड़ा अथवा बावना अथवा उस की आंख में कुछ खोट हो अथवा दाद अथवा खजुली अथवा अंड पिचके २१ हों। हारून याजक के बंश में से कोई मनुष्य जिस में खोट है निकट न आवे कि परमेश्वर की आग की भेंट चढ़ावे उस में खोट है वह अपने ईश्वर की २२ नैबेद्य चढ़ाने को पास न आवे। वह अपने ईश्वर का नैबेद्य अति पावन २३ और पवित्र खावे। केवल वह घूंघट के भीतर न जावे और यज्ञबेदी के पास न आवे इस लिये कि उस में खोट है और मेरे पवित्र स्थान को तुच्छ न करे क्योंकि मैं परमेश्वर उन्हें शुद्ध करता हूं॥

२४ तब मूसा ने हारून और उस के बेटों और समस्त इसराएल के संतानों को यह सब कहा॥

बाईसवां पर्ब्ब।

१ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। २ कि हारून और उस के बेटों से कह कि वे इसराएल के संतान की पवित्र बस्तुन से आप को अलग रक्खें और मेरे पवित्र नाम की उन बस्तुन के कारण जिन्हें वे मेरे लिये पवित्र करते हैं निंदा ३ न करें मैं परमेश्वर हूं। उन्हें कह कि तुम्हारी पीढ़ियों में तुम्हारे समस्त बंश में जो कोई उन पवित्र बस्तुन के पास जो इसराएल के संतान परमेश्वर के लिये पवित्र करते हैं अपनी अपवित्रता रखके जावे तो वह जन मेरे पास से काटा जावेगा मैं परमेश्वर हूं। ४ जो कोई हारून के बंश में से कोढ़ी अथवा प्रमेही हो और जो मृतक के कारण से अपवित्र है और उसे जिस को प्रमेह है जब लों वह पवित्र न हो ले तब लों पवित्र बस्तुन में से कुछ न खावे। ५ और जो कोई किसी रेंगवैया जंतु को छूवे जिस्से वह अपवित्र होवे अथवा किसी मनुष्य को जिस्से वह अपवित्र हो सके जो अपवित्रता उस में होवे। ६ वह प्राणी जिस ने ऐसा कुछ छूआ सो सांझ लों अपवित्र रहेगा और जब लों अपना शरीर पानी से धो न ले पवित्र बस्तु में से कुछ न खावे। ७ और जब सूर्य्य अस्त होवे तब वह पवित्र होगा और उस के पीछे वह पवित्र बस्तें खावे क्योंकि वह उस का आहार है। ८ जो कुछ आप से मरे अथवा फाड़ा जावे वह उसे खाके आप को अशुद्ध न करे मैं परमेश्वर हूं। ९ इस लिये वे मेरी ब्यवस्थों का पालन करें ऐसा न होवे कि उस के लिये पापी होवें और मरें यदि वे उसे तुच्छ करें मैं परमेश्वर उन्हें पवित्र करता हूं॥

१० और कोई परदेशी पवित्र बस्तु न खावे और न याजक का पाहुन और न बनिहार पवित्र बस्तु को खावे। ११ परन्तु जिसे याजक ने अपने दाम से मोल लिया हो सो उसे खावे और वह जो उस के घर में उत्पन्न हुआ है सो उस के भोजन में से खावे। १२ यदि याजक की कन्या किसी परदेशी से ब्याही जावे तो वह भी चढ़ाई हुई पवित्र बस्तुन में से न खावे। १३ पर यदि याजक की कन्या बिधवा हो जावे अथवा त्यक्त होवे और निर्बंश हो और युवावस्था के समान अपने पिता के घर में फिर आवे तो वह अपने पिता

के भोजन में से खावे परन्तु परदेशी उसे न खावे। और यदि पवित्र बस्तुन में से कोई अनजान खा जावे तो वह उस के पांचवें भाग को मिलावे और उसे उस पवित्र बस्तु सहित याजक को देवे। और इसराएल के संतान की पवित्र बस्तुन को जो उन्हों ने परमेश्वर के लिये चढ़ाया है वे निंदा न करें। १६ और आप पवित्र बस्तुन के खाने से पाप का बोझ उन से न उठवावें क्योंकि मैं परमेश्वर उन्हें पवित्र करता हूं।

१७ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। १८ कि हारून को और उस के बेटों को और इसराएल के समस्त संतान को कहके बोल कि इसराएल के घराने में से अथवा इसराएल के परदेशियों में से जो कोई अपनी समस्त मनौती के लिये भेंट और अपनी समस्त मनमंता की भेंट जो वे परमेश्वर के लिये बलिदान की भेंट के लिये चढ़ावें। १९ सो अपनी ग्राह्यता के लिये ढोरों में से अथवा भेड़ बकरी में से निःखोट नरबा होवे। २० जिस पर दोष है उसे मत चढ़ाइयो क्योंकि तुम्हारे लिये ग्राह्य न होगा। २१ और जो कोई अपनी मनौती पूरी करने को अथवा बांछित भेंट ढोरों में से अथवा भेड़ में से कुशल की भेंट परमेश्वर के लिये चढ़ावे सो ग्राह्य होने के लिये निर्दोष होवे उस में कुछ खोट न होवे। २२ अंधा अथवा टूटा अथवा लंगड़ा अथवा लूला अथवा जिस पर मसा अथवा दाद अथवा खुजली होवे परमेश्वर के लिये भेंट मत चढ़ाइयो उन में से आग की भेंटों को परमेश्वर की यज्ञबेदी पर मत चढ़ाइयो। २३ और बैल और मेम्ना जिस का कोई अंग अधिक अथवा घटा होवे उसे बांछित भेंट के लिये चढ़ावे परन्तु मनौती के लिये ग्राह्य न होगा। २४ और अंड कुचला हुआ अथवा दबा हुआ अथवा टूटा अथवा काटा हुआ परमेश्वर के लिये मत चढ़ाइयो और अपने देश में ऐसों को मत बनाइयो। २५ और इन सब में से अपने ईश्वर की नैवेद्य किसी परदेशी की ओर से मत चढ़ाइयो क्योंकि उन की सड़ाहट उन में है वुह खोटे हैं वे तुम्हारे लिये ग्राह्य न होंगे॥

२६ और परमेश्वर मूसा से कहके बोला। २७ कि जब बैल अथवा भेड़ बकरी उत्पन्न होवे तब सात दिन लों अपनी माता के साथ रहे और आठवें दिन से और उस्से आगे परमेश्वर की आग की भेंट के लिये ग्राह्य होगा। २८ और गाय अथवा भेड़ को बच्चे समेत एक ही दिन मत मारियो॥

२९ और जब तुम परमेश्वर के लिये धन्यबाद के बलिदान भेंट चढ़ाओ तब अपनी ग्राह्यता के लिये उसे चढ़ाओ। ३० उसी दिन खाया जावे तुम उस में से दूसरे दिन लों तनिक भी न छोड़ियो मैं परमेश्वर हूं॥

३१ और मेरी आज्ञाओं को धारण करो और उन्हें पालन करो मैं परमेश्वर हूं। ३२ और मेरे पवित्र नाम को हलुक न करो परन्तु मैं इसराएल के संतानों में पवित्र हूंगा मैं परमेश्वर तुम्हें पवित्र करता हूं। ३३ जो तुम्हें मिस्र की भूमि से निकाल लाया कि तुम्हारा ईश्वर होऊं मैं परमेश्वर हूं॥

तेईसवां पर्ब्ब।

१ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। २ कि इसराएल के संतानों से कहके बोल कि परमेश्वर के पर्ब्ब जिन्हें तुम पवित्र बुलावा सभा के लिये प्रचारोगे ये मेरे पर्ब्ब हैं॥

३ छः दिन काम काज किया जावे परन्तु सातवां दिन जो बिश्राम का है उस में पवित्र सभा होगी कोई कार्य्य

न करो वह तुम्हारे समस्त निवासों में परमेश्वर के विश्राम का दिन है ॥

४ ये परमेश्वर के पर्व्व और पवित्र सभा जिन्हें तुम उन के समय में प्रचा-
५ रोगे। पहिले मास की चौदहवीं तिथि को सांझ को परमेश्वर का फसह है।
६ और उसी मास की पंदरहवीं तिथि को परमेश्वर के अखमीरी रोटी का पर्व्व है सात दिन लों अवश्य अखमीरी रोटी
७ खाइयो। पहिले दिन तुम्हारे लिये पवित्र बुलावा होगा कोई सांसारिक
८ कार्य्य मत करियो। परन्तु सात दिन लों परमेश्वर के लिये होम की भेंट चढ़ाइयो सातवें दिन पवित्र सभा होगी कोई सांसारिक कार्य्य मत कीजियो ॥

९ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला।
१० कि इसराएल के संतानों से कहके बोल कि जब तुम उस देश में पहुंचो जो मैं तुम्हें देता हूं और उस का अन्न लवो तब तुम अपनी बालों में से एक गट्ठा
११ पहिले फल याजक पास लाओ। और वह उस गट्ठे को परमेश्वर के आगे हिलावे कि तुम्हारी ओर से ग्राह्य होवे विश्राम के दूसरे दिन बिहान को याजक
१२ उसे हिलावे। और उस दिन जिस समय वह गट्ठा हिलाया जावे पहिले बरस का एक निष्खोट मेम्ना बलिदान की भेंट
१३ परमेश्वर के लिये चढ़ाओ। और उस के भोजन की भेंट दो दसवां भाग चोखा पिसान तेल मिलाके होम की भेंट परमेश्वर के सुगंध के लिये होवे और उस के तपावन की भेंट सेर भर दाखरस होवे।
१४ और जिस दिन लों अपने ईश्वर के लिये भेंट चढ़ाओ रोटी और भूना हुआ अन्न अथवा हरी बालें मत खाइयो तुम्हारे समस्त निवासों में तुम्हारी पीढ़ियों में यह सनातन की विधि है ॥

१५ और विश्राम दिन के बिहान से जब से हिलाने की भेंट के लिये तुम ने गट्ठा चढ़ाया है सात अठवारे गिनके पूरा
१६ करियो। सातवें विश्राम के दिन के पीछे बिहान से पचास दिन गिन लो और परमेश्वर के लिये नये भोजन की भेंट
१७ चढ़ाओ। अपने निवासों में से दो दसवें भाग की दो रोटी लाइयो ये चोखे पिसान की होवें वह खमीर के साथ पकाई जावें पहिले फल परमेश्वर के
१८ लिये हैं। और पहिले बरस के निष्खोट सात मेम्ने और एक बछड़ा और दो मेंढ़े अन्न के साथ लाइयो वह परमेश्वर के बलिदान की भेंट होंगे और उन के भोजन की और उन के तपावन की भेंट सहित परमेश्वर के सुगंध के लिये होम
१९ की भेंट है। और पाप की भेंट के लिये बकरी का एक मेम्ना और कुशल की भेंट के लिये पहिले बरस के दो मेम्ने
२० बलि कीजियो। और याजक उन्हें पहिले फल की रोटी के संग परमेश्वर के आगे हिलाने की भेंट के लिये दो मेम्ना समेत हिलावे याजक के लिये वे परमेश्वर के
२१ आगे पवित्र होंगे। और उसी दिन प्रचारियो वह तुम्हारे पवित्र बुलावा के लिये होवे कोई सांसारिक कार्य्य मत करियो यह तुम्हारे समस्त निवासों में तुम्हारी पीढ़ियों के अंत लों विधि होगी ॥

२२ और जब अपने खेत लवो तब तू अपने खेत के कोनों को झाड़के मत काटियो और लवने के पीछे मत बीनियो तू उन्हें कंगाल और परदेशी के लिये छोड़ियो मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं ॥

२३ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला।
२४ कि इसराएल के संतान से कह कि सातवें मास की पहिली तिथि तुम्हारे लिये एक विश्राम का दिन और नरसिंगे के शब्द
२५ से स्मरण पवित्र बुलावा है। कोई सांसारिक कार्य्य मत कीजियो परन्तु

परमेश्वर के लिये बलिदान की भेंट लाइयो ॥

२६ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। २७ सातवें मास की दसवीं तिथि प्रायश्चित्त देने का दिन है तुम्हारे लिये पवित्र बुलावा होगा और तुम अपने प्राणों को शोकित करोगे और परमेश्वर के लिये २८ होम की भेंट लाओ। और उसी दिन कोई काम मत करियो क्योंकि वह प्रायश्चित्त का दिन है तुम परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे अपने लिये प्रायश्चित्त २९ करो। क्योंकि जो प्राणी उस दिन में शोकित न होगा वह अपने लोगों में से ३० काटा जायगा। और जो प्राणी उस दिन में कोई काम करेगा मैं उसी प्राणी को ३१ उस के लोगों में से नाश करूंगा। किसी रीति का काम मत करना यह तुम्हारे समस्त निवासों में तुम्हारी पीढ़ियों के अंत लों सनातन के लिये बिधि होगी। ३२ वह तुम्हारे लिये एक बिश्राम का दिन होगा और अपने प्राण को शोकित करियो तुम उस मास की नवीं तिथि की सांझ से सांझ लों अपने बिश्राम के लिये पालियो॥

३३ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। ३४ इसराएल के संतानों से कह कि सातवें मास की पंदरहवीं तिथि से सात दिन ३५ लों परमेश्वर के तंबू का पर्ब्ब है। पहिले दिन पवित्र बुलावा होवे कोई सांसारिक ३६ कार्य्य न करना। सात दिन लों परमेश्वर के लिये होम की भेंट लाओ आठवें दिन तुम्हारा पवित्र बुलावा होगा सो तुम परमेश्वर के लिये होम की भेंट लाइयो वह सभा का दिन है कुछ सांसारिक ३७ कार्य्य मत कीजियो। परमेश्वर के ये पर्ब्ब हैं जिन में तुम पवित्र बुलावा प्रचारियो जिसतें परमेश्वर के लिये होम की भेंट बलिदान की भेंट और बलि की भेंट और तपावन की भेंट हर एक वस्तु अपने दिन में लाइयो। ३८ परमेश्वर के बिश्राम के दिनों के और अपनी भेंटों से अधिक और तुम्हारी समस्त मनौती से अधिक और तुम्हारे समस्त मनमंता भेंटों से अधिक जिन्हें तुम परमेश्वर के लिये चढ़ाते हो। ३९ सातवें मास की पंदरहवीं तिथि जब खेतों का अनाज एकट्ठा कर लो तब तुम सात दिन लों परमेश्वर के लिये पर्ब्ब मानियो पहिला दिन बिश्राम का होगा और आठवां दिन बिश्राम का होगा। ४० सो तुम पहिले दिन सुंदर बृक्षों का फल खजूर की डाली और घने बृक्षों की डालियां और नालियों के बेंत लीजियो और परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे सात दिन लों आनंद कीजियो। ४१ और बरस में परमेश्वर के लिये सात दिन भर पर्ब्ब के लिये पालन करियो यह तुम्हारी पीढ़ियों में सनातन की बिधि होगी सातवें मास यों ही स्मरण कीजियो। ४२ सात दिन लों डालियों की छान में रहियो जितने इसराएली हैं सब के सब डालियों की छान में रहें। ४३ जिसतें तुम्हारी पीढ़ी जाने कि जब मैं इसराएल के संतानों को मिस्र के देश से निकाल लाया मैं ने उन्हें डालियों की छान में बसाया मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥

४४ सो मूसा ने इसराएल के संतानों से परमेश्वर के पर्ब्बों को कह सुनाया॥

चौबीसवां पर्ब्ब।

१ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। २ कि इसराएल के संतानों को आज्ञा कर कि दीपक को नित्य जलाने के लिये कूटे हुए जलपाई का निर्म्मल तेल तुझ पास लावें। ३ हारून उसे मंडली के तंबू में साक्षी के ओट के बाहर सांझ से बिहान लों परमेश्वर के आगे रीति से नित्य रक्खा करे तुम्हारी पीढ़ियों के लिये यह बिधि सनातन की होगी।

४ वही दीपकों को पवित्र दीअट पर परमेश्वर के आगे रीति से सदा रक्खा करे॥

५ और चोखे पिसान लेके उस्से बारह फुलके पका एक एक फुलका दो दसवें ६ अंश का होवे। और तू उन्हें परमेश्वर के आगे पवित्र मंच पर छः छः करके ७ दो पांती में रख। और हर एक पांती पर निराला गंधरस रखना जिसतें वह रोटी स्मरण के लिये होवे अर्थात् होम ८ की भेंट परमेश्वर के लिये। यह सनातन की बाचा के लिये इसराएल के संतान से लेके हर बिश्राम दिन को परमेश्वर के आगे रीति से नित्य रक्खा ९ करे। और वह हारून की और उस के बेटों की होगी और वे उन्हें पवित्र स्थान में खावें क्योंकि वह उस के लिये परमेश्वर के होम की भेंटों में से अत्यंत पवित्र बिधि नित्य के लिये है॥

१० तब एक इसराएली स्त्री का बेटा जिस का पिता मिस्री था निकलके इसराएलियों में गया और उस इसराएली स्त्री का बेटा और इसराएल का एक ११ जन छावनी में झगड़ रहे थे। और इसराएली स्त्री के बेटे ने परमेश्वर के नाम की अपनिंदा किई और धिक्कारा तब वे उसे मूसा पास लाये और उस की माता का नाम सलूमियत था जो दिबरी के पुत्र १२ दान के कुल से थी। और वह बंधन में रक्खा गया जिसतें उन पर प्रगट करे कि परमेश्वर क्या आज्ञा करता है। १३ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। १४ जिस ने अपनिंदा किई है उसे छावनी के बाहर निकाल ले जा और जितनों ने सुना वे अपने हाथ उस के सिर पर रक्खें और सारी मंडली उसे पत्थरवाह १५ करे। और इसराएल के संतानों से कह कि जो कोई अपने ईश्वर को धिक्कारेगा १६ सो अपना पाप भोगेगा। और जो परमेश्वर के नाम की अपनिंदा करे सो निश्चय प्राण से मारा जायगा समस्त मंडली उसे निश्चय पत्थरवाह करे चाहे वह परदेशी होवे चाहे देशी जब उस ने परमेश्वर के नाम की अपनिंदा किई वह प्राण से मारा जायगा। १७ और जो दूसरे आदमी को मार डालेगा सो निश्चय १८ घात किया जायगा। और जो कोई पशु को मार डाले सो उस की संती पशु १९ देवे। और यदि कोई अपने परोसी को खोटा करे जैसा करेगा वैसा ही उस पर २० किया जायगा। तोड़ने की संती तोड़ना आंख की संती आंख दांत की संती दांत जैसा उस ने मनुष्य को खोटा किया २१ है उस्से वैसा ही किया जावे। और जो पशु को मार डाले वह उस का पलटा देवे और जो मनुष्य को मार डाले वह २२ प्राण से मारा जावे। तुम्हारी एक ही रीति की व्यवस्था होवे जैसी परदेशी की वैसी ही देशी के बिषय में होवे क्योंकि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं। २३ तब मूसा ने इसराएल के संतान से कहा कि उस जन को जिस ने धिक्कारा तंबू के बाहर निकाल ले जावें और उस पर पत्थरवाह करें सो इसराएल के संतानों ने जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी वैसा ही किया॥

पचीसवां पर्व्व।

१ फिर परमेश्वर सीना के पहाड़ पर २ मूसा से कहके बोला। कि इसराएल के संतानों को कहके बोल कि जब तुम उस देश में जो मैं तुम्हें देता हूं पहुंचो तब वह भूमि परमेश्वर के लिये बिश्राम ३ को बिश्राम करे। छः बरस अपने खेतों को बोओ और छः बरस अपने दाखों को सवांर और उस का फल बटोर। ४ परन्तु सातवां बरस देश के लिये चैन का बिश्राम होगा परमेश्वर के लिये

बिश्राम न तो अपने खेत को बोना और न अपने दाखों को सवांरना। जो कुछ आप से आप उगे तू उसे मत लव और बिन सवांरी हुई लता के दाखों को मत बटोर कि देश के लिये चैन का ६ बरस है। सो भूमि का बिश्राम तुम्हारे और तुम्हारे दास और दासी और तुम्हारे बनिहार और तुम्हारे परदेशियों के जो तुम्में ७ टिकते हैं खाने के लिये होगा। और तुम्हारे ढोर और जो पशु तुम्हारे देश में है उस का सब प्राप्त उन के खाने के लिये होगा॥

८ और तू सात बिश्राम के बरसों को अपने लिये गिन सात गुने सात बरस और सात बरसों के बिश्राम के समय ९ तुम्हारे लिये उंचास बरस होंगे। तब तू सातवें मास की दसवीं तिथि में आनंद का नरसिंगा फुंकवा प्रायश्चित्त के दिन अपने सारे देश में नरसिंगा १० फुंकवा। सो तुम पचासवें बरस को पवित्र जानो और देश में उस के सारे बासियों में मुक्ति प्रचारो वह तुम्हारे लिये आनंद है और तुम्में से हर एक मनुष्य अपने अपने अधिकार को और ११ अपने घराने को फिर जावे। पचासवां बरस तुम्हारे लिये आनंद है तुम कुछ मत बोइयो न उसे जो उस में आप से उगे काटियो और बिन सवांरी हुई दाख १२ की लता के दाखों को मत बटोरो। क्योंकि वह आनंद है यह तुम्हारे लिये पवित्र होगा खेतों में जो बढ़े तुम उसे १३ खाओ। इस आनंद के बरस तुम्में से हर एक अपने अपने अधिकार को फिर १४ जावे। और यदि तू अपने परोसी के हाथ बेचे अथवा अपने परोसी से मोल ले तो एक दूसरे पर अंधेर मत कीजियो। १५ आनंद के बरसों के पीछे के समान गिनके अपने परोसी से मोल लेना और बरसों के प्राप्त की गिनती के समान तेरे हाथ बेचे। बरसों की बहुताई के १६ समान उस का मोल बढ़ाइयो और बरसों की घटी के समान उस का मोल घटाइयो क्योंकि प्राप्त की गिनती के समान वह तेरे हाथ बेचता है। इस १७ लिये एक दूसरे पर अंधेर मत करो परन्तु अपने ईश्वर से डरियो क्योंकि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥

सो तुम मेरी बिधिन को मानो और १८ मेरे न्याय को धारण और पालन करियो और देश में कुशल से बास करोगे। और १९ भूमि तुम्हें अपने फल देगी और तुम खाके तृप्त होओगे और उस पर कुशल से रहा करोगे। और यदि तुम कहो २० कि हम सातवें बरस क्या खायेंगे क्योंकि न बोवेंगे न बटोरेंगे। तब मैं छठवें २१ बरस अपनी आशीष तुम्हें देऊंगा और उस से तीन बरस का प्राप्त होगा। और तुम २२ आठवें बरस बोओगे और नवें बरस लों पुराना अनाज खाओगे जब लों उस में अन्न फेर न होवे तब लों पुराना अन्न खाओगे॥

और भूमि सदा के लिये बेची न २३ जावे क्योंकि भूमि मेरी है और तुम मेरे संग परदेशी और निवासी हो। और २४ तुम अपने अधिकार की समस्त भूमि के लिये छुटकारा देना। यदि तेरा भाई २५ कंगाल होवे और कुछ अपने अधिकार में से बेचे और कोई उसे छुड़ाने आवे तब वह अपने भाई की बेची हुई छुड़ा ले। और यदि उस मनुष्य के छुड़ाने को २६ कोई न होवे और आप से छुड़ा सके। तब उस के बेचने के बरस गिने जावें २७ और जिस पास बेचा है उस को बढ़ती फेर देवे जिसतें वह अपने अधिकार पर फिर जावे। परन्तु यदि वह फेर २८ देने पर खड़ा न हो तब जो बेचा हुआ है सो आनंद के बरस लों उसी के हाथ में रहे जिस ने उसे मोल लिया और

आनंद में वह छूट जायगी तब वह अपने अधिकार पर फिर जावे॥

२९ और यदि कोई घर को जो भीतनगार में है बेचने के पीछे बरस भर में उसे छुड़ावे पूरे बरस में वह उसे छुड़ावे। ३० और यदि बरस भर में छुड़ाया न जावे तो वह घर जो भीतनगार में है सो उस के लिये जिस ने मोल लिया है उस की पीढ़ियों में दृढ़ रहेगा वह आनंद के ३१ बरस में बाहर न जायगा। परन्तु गांव के घर जिन के आसपास भीत न होवे देश के खेतों के समान गिने जावें वे छुड़ा सकें और आनंद में छूट जावेंगे। ३२ और लावियों के नगर और उन के अधिकार के नगरों के घर जब चाहें ३३ तब लावी छुड़ावें। और यदि कोई मनुष्य लावियों से मोल लेवे तब जो घर बेचा गया और उस के अधिकार का नगर फिर आनंद के बरस में छूट जायगा क्योंकि लावियों के नगर के घर इसराएल के संतानों में उन के अधिकार ३४ हैं। परन्तु वे खेत जो उन के नगरों के सिवानों में हैं बेचे न जावें क्योंकि वह उन के सनातन का अधिकार है॥

३५ और यदि तेरा भाई दुःखी और कंगाल हो जावे तो तुम उस की सहाय करो चाहे वह परदेशी होवे चाहे पाहुन जिसतें वह तुम्हारे साथ जीवन काटे। ३६ तू उस्से ब्याज और बढ़ती मत ले परन्तु अपने ईश्वर से डर जिसतें तेरा भाई ३७ तेरे साथ जीवन काटे। तू उसे ब्याज पर ऋण मत दे और बढ़ती के लिये अपने ३८ भोजन का ऋण मत दे। मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं जो तुम्हें मिस्र के देश से निकाल लाया जिसतें तुम्हें कनआन का देश देऊं और तुम्हारा ईश्वर होऊं॥

३९ और यदि तेरा भाई तुझ पास कंगाल हो जावे और तुझ पास बेचा जावे तो तू उस्से दास की नाईं सेवा मत करवा। ४० वह बनिहार और पाहुन की नाईं तेरे साथ रहे आनंद के बरस लों तेरी सेवा ४१ करे। और उस के पीछे वह अपने लड़कों समेत तुझ से अलग हो जायगा और अपने घराने और अपने पिता के अधिकार ४२ को फिर जावे। क्योंकि वे मेरे सेवक हैं जिन्हें मैं मिस्र की भूमि से बाहर ले आया वे दासों की नाईं बेचे न जावें। ४३ तू कठोरता से उन से सेवा मत ले परन्तु ४४ अपने ईश्वर से डर। तेरा दास और तेरी दासियां जिन्हें तू अन्यदेशियों में से जो तुम्हारे आसपास हैं रक्खेगा उन्हीं में से दास और दासियां मोल लेओ। ४५ और उन परदेशियों के लड़कों में से भी जो तुम्में बास करते हैं और उन के घराने में से जो तुम्हारी भूमि में उत्पन्न हुए हैं मोल लीजियो और वे तुम्हारे ४६ अधिकार होंगे। और तुम उन्हें अपने पीछे अपने लड़कों के लिये अधिकार में लेओ वे सदा लों तुम्हारे दास हैं परन्तु तुम अपने भाइयों पर जो इसराएल के संतान हैं एक दूसरे पर कठोरता से सेवा मत लेओ॥

४७ और यदि कोई पाहुन अथवा परदेशी तेरे पास धनी होवे और तेरा भाई जो उस के साथ है कंगाल हो जावे और उस परदेशी अथवा पाहुन के हाथ जो तेरे साथ है अथवा उस के हाथ जो परदेशी के घरानों में से होवे किसी के ४८ हाथ आप को बेच डाले। उस के बेचे जाने के पीछे वह फेर छुड़ाया जा सके उस के भाइयों में से एक उसे छुड़ा ४९ सकेगा। चाहे उस का चाचा चाहे उस के चाचा का पुत्र अथवा जो कोई उस के घराने में उस का गोती हो उस को छुड़ा सकेगा यदि उस्से हो सके तो वह ५० आप को छुड़ावे। और वह अपने बेचे जाने के बरस से लेके आनंद के बरस

लों गिने और उस के बेचे जाने का मोल बरसों की गिनती के समान होवे वह बनिहार के समय के समान उस के साथ ५१ रहेगा। यदि बहुत बरस रहे तो वह अपने छुड़ाने को उस मोल से जिस्से वह बेचा गया उन बरसों के समान फेर दे। ५२ और यदि आनंद के थोड़े बरस रह जावें तो वह लेखा करे और अपने छुटकारे का मोल अपने बरसों के समान उसे ५३ फेर दे। वह बरस बरस के बनिहार के समान उस के साथ रहे उस पर कठोरता ५४ से सेवा न करवावे। और यदि वह इन में छुड़ाया न जावे तो आनंद के बरस में वह अपने लड़कों समेत छूट जायगा। ५५ क्योंकि इसराएल के संतान मेरे सेवक हैं वे मेरे सेवक जिन्हें मैं मिस्र के देश से निकाल लाया मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥

छब्बीसवां पर्ब्ब

१ अपने लिये मूर्त्ति अथवा खोदी हुई प्रतिमा मत बनाइयो और पूजित मूर्त्ति तुम अपने लिये मत खड़ी कीजियो और दंडवत करने के लिये पत्थर की मूर्त्ति अपनी भूमि में स्थापित मत करियो क्योंकि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं। २ तुम मेरे बिश्राम के दिनों का पालन करो और मेरे पवित्र स्थान की प्रतिष्ठा देओ मैं परमेश्वर हूं॥

३ यदि तुम मेरी बिधिन पर चलोगे और मेरी आज्ञाओं को धारण करके ४ उन पर चलोगे। तो मैं तुम्हारे लिये समय पर मेंह बरसाऊंगा और देश अपनी बढ़ती उगावेगा और खेत के वृक्ष अपने ५ फल देंगे। यहां लों कि अन्न झाड़ने का समय दाख तोड़ने के समय लों पहुंचेगा और दाख तोड़ने के समय लों बोने का समय पहुंचेगा और तुम खाके संतुष्ट होओगे ६ और अपने देश में चैन से रहोगे। और मैं देश में कुशल देऊंगा और तुम लेट जाओगे और कोई तुम्हें न डरावेगा और मैं बुरे पशुओं को देश से दूर करूंगा और तुम्हारे देश में तलवार न चलेगी। ७ और तुम अपने बैरियों को खदेड़ोगे और वे तुम्हारे आगे तलवार से गिर जायेंगे। ८ और पांच तुम्में से सौ को खदेड़ेंगे और सौ तुम्में से दस सहस को भगावेंगे और तुम्हारे बैरी तुम्हारे आगे तलवार से गिर ९ जायेंगे। और मैं तुम्हारा पक्ष करूंगा और तुम्हें फलवंत करूंगा और मैं तुम्हें बढ़ाऊंगा और अपनी बाचा को तुम से १० पूरी करूंगा। और तुम पुराना अन्न खाओगे और नये के कारण पुराना ११ लाओगे। और मैं अपना तंबू तुम्में खड़ा करूंगा और मेरा प्राण तुम से घिन न १२ करेगा। और मैं तुम्हों में फिरा करूंगा और तुम्हारा ईश्वर होऊंगा और तुम मेरे १३ लोग होओगे। मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं जो तुम्हें मिस्र के देश से निकाल लाया जिसतें तुम उन के दास न बनो और मैं ने तुम्हारे कांधों के जूओं की लकड़ियों को तोड़ा और तुम्हें खड़ा चलाया॥

१४ परन्तु यदि तुम मेरी न सुनोगे और इन सब आज्ञाओं को पालन न करोगे। १५ और यदि मेरी बिधिन की निंदा करोगे अथवा तुम्हारे मन मेरे न्यायों को घिन करें ऐसा कि तुम मेरी आज्ञाओं को पालन न करो पर मेरी बाचा तोड़ दो। १६ तो मैं भी तुम से यह करूंगा कि भय और क्षयरोग और तप्तज्वर जो तेरी आंखों को नाश करेगा और मन को उदास और तुम अपने बीज अकारथ बोओगे क्योंकि १७ तुम्हारे बैरी उसे खावेंगे। और मैं तेरा साम्ना करूंगा और तुम अपने बैरियों के साम्ने जूझ जाओगे जो तुम्हारे बैरी हैं सो तुम पर राज्य करेंगे और कोई तुम्हारा पीछा न करते हो तुम भागे जाओगे। १८ और इन सभों पर भी यदि तुम मेरी न

सुनोगे तो मैं तुम्हारे पापों के कारण
१९ सातगुण तुम्हें दंड देऊंगा। और तुम्हारे
घमंड के बल को तोड़ूंगा और तुम्हारा
आकाश लोहा के समान और तुम्हारी
पृथिवी पीतल की नाईं कर देऊंगा।
२० और तुम्हारा बल संत से जाता रहेगा
क्योंकि तुम्हारी भूमि अपनी बढ़ती न
देगी और देश के पेड़ फल न पहुंचावेंगे।
२१ और यदि तुम मेरे बिपरीत चलोगे और
मेरी न सुनोगे तो मैं तुम्हारे पापों के
समान तुम पर सातगुण मरी लाऊंगा।
२२ और मैं बनैले पशु भी तुम्में भेजूंगा और
वे तुम्हारे बंश को भक्षण करेंगे और
तुम्हारे पशुन को नाश करेंगे और तुम्हें
गिनती में घटा देंगे और तुम्हारे मार्ग
२३ सूने पड़े रहेंगे। और यदि मेरी इन बातों
से न सुधरोगे परन्तु मुझ से बिपरीत
२४ चलोगे। तो मैं भी तुम्हारे बिपरीत
चलूंगा और तुम्हारे पापों के लिये तुम्हें
२५ सातगुण दंड देऊंगा। और मैं तुम पर
तलवार लाऊंगा जो मेरी बाचा के झगड़े
का पलटा लेनेवाली है और जब तुम
अपने नगरों में एकट्ठे होओगे तब मैं
तुम्हों में मरी भेजूंगा और तुम बैरियों
२६ के हाथ में सौंपे जाओगे। जब मैं तुम्हारी
रोटी की लाठी तोड़ डालूंगा तब दस
स्त्री तुम्हारी रोटियां एक तनूर में पकावें-
गी और तुम्हारी रोटियां तौलके तुम्हें देंगी
और तुम खाओगे परन्तु तृप्त न होओगे॥

२७ और यदि तुम इस पर भी न सुनोगे
२८ परन्तु मुझ से बिपरीत चलोगे। तो मैं
भी कोप से तुम्हारे बिपरीत चलूंगा और
मैं हां मैं ही तुम्हारे पापों के कारण
२९ तुम्हें सातगुण ताड़ना करूंगा। और तुम
अपने बेटों का और अपनी बेटियों का
३० मांस खाओगे। और मैं तुम्हारे ऊंचे स्थानों
को ढा दूंगा और तुम्हारी मूर्त्तियों को
काट डालूंगा और तुम्हारी लोथ तुम्हारी
मूर्त्तियों की लोथों पर फेंकूंगा और मेरा
प्राण तुम से घिन करेगा। और तुम्हारे ३१
नगरों को उजाड़ करूंगा और तुम्हारे
पवित्र स्थानों को सूना करूंगा और मैं
तुम्हारे सुगंध को न सूंघूंगा। और मैं ३२
तुम्हारी भूमि को उजाड़ूंगा और तुम्हारे
शत्रु उस के कारण आश्चर्य्य मानेंगे।
और मैं तुम्हें अन्यदेशियों में छिन्न भिन्न ३३
करूंगा और तुम्हारे पीछे से तलवार
निकालूंगा और तुम्हारी भूमि उजाड़
होगी और तुम्हारे नगर उजड़ जायेंगे।
तब देश अपने बिश्रामों को भोग करेगा ३४
अपने समस्त उजाड़ के दिनों में जब
तुम अपने शत्रुन के देश में रहोगे तब
देश चैन करेगा और अपने बिश्रामों को
भोग करेगा। जब लों वह उजाड़ रहेगा ३५
तब लों चैन करेगा इस कारण कि जब
तुम उस में बास करते थे तुम्हारे
बिश्रामों में चैन न किया। और तुम्में जो ३६
बच रहे हैं मैं उन के बैरियों के देश में
उन के मन में दुर्बलता डालूंगा और पात
खड़कने का शब्द उन्हें खदेड़ेगा और वे
ऐसे भागेंगे जैसे तलवार से भागते हैं और
बिना किसी के पीछा करने से वे गिर
पड़ेंगे। और वे ऐसे एक पर एक गिरेंगे ३७
जैसे तलवार के आगे और कोई उन का
पीछा न करेगा और तुम अपने बैरी के
आगे ठहर न सकोगे। और तुम अन्य- ३८
देशियों में नष्ट होओगे और तुम्हारे बैरियों
का देश तुम्हें खा जायगा। और वे जो ३९
तुम्में से बच जायेंगे सो तुम्हारे बैरियों
के देश में और अपने पाप में और अपने
पितरों के पाप में क्षीण हो जायेंगे।
यदि वह अपने पापों को और अपने ४०
पितरों के पापों को अपने अपराधों के
संग जो उन्हों ने मेरा अपराध किया
और यह कि वे मेरे बिपरीत चले हैं
मान लेंगे। मैं भी उन के बिपरीत ४१

चलता था और उन के बैरियों के देश में उन्हें लाया यदि उन के अखतनः मन दीन हो जायेंगे और अपने दंड को अपने
४२ अपराध के योग्य समझेंगे। तब मैं यअकूब के संग अपनी बाचा को स्मरण करूंगा और अपनी बाचा इज़हाक के साथ और अपनी बाचा अबिरहाम के साथ स्मरण करूंगा और उस देश को स्मरण करूंगा॥
४३ और वह देश उन से छोड़ा जायगा और जब लों वह उन दिनों में उजाड़ पड़ा रहा अपने बिश्रामों को भोग करेगा और वे अपने पाप के दंड को मान लेंगे इसी कारण कि उन्हों ने मेरे न्यायों को तुच्छ जाना और उन के अंतःकरण ने
४४ मेरी बिधिन से घिन किया। और इन सभों से अधिक जब वे अपने बैरी के देश में होंगे मैं उन्हें दूर न करूंगा और मैं उन से घिन न करूंगा कि उन्हें सर्बथा नाश कर देऊं और उन से बाचा तोड़ डालूं क्योंकि मैं परमेश्वर उन का ईश्वर
४५ हूं। परन्तु उन के कारण मैं उन के पितरों की बाचा को जिन्हें मैं ने मिस्र के देश से अन्यदेशियों के आगे निकाल लाया स्मरण करूंगा कि मैं उन का ईश्वर परमेश्वर हूं॥
४६ ये बिधि और न्याय और व्यवस्था जो परमेश्वर ने सीना पहाड़ पर आप में और इसराएल के संतानों में मूसा के द्वारा से ठहराये॥

सत्ताईसवां पर्ब्ब।

१ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला।
२ कि इसराएल के संतानों को कहके बोल जब मनुष्य बिशेष मनौती माने तेरे ठहराने के समान जन परमेश्वर के होंगे।
३ और तेरा मोल बीस बरस से साठ बरस लों पुरुष के लिये तेरा मोल पवित्र स्थान के शैकल के समान पचास शैकल रुपा
४ होंगे। और यदि स्त्री होवे तो तेरा मोल तीस शैकल होंगे। और यदि पांच से
५ बीस बरस की बय होवे तो तेरा मोल पुरुष के लिये बीस शैकल और स्त्री के लिये दस शैकल। और यदि एक
६ मास से पांच बरस की बय होवे तो तेरा मोल पुरुष के लिये चांदी के पांच शैकल और स्त्री के लिये तेरा मोल चांदी के तीन शैकल। और यदि वह साठ
७ बरस से ऊपर का होवे तो पुरुष के लिये तेरा मोल पंदरह शैकल और स्त्री के लिये दस शैकल। परन्तु यदि तेरे
८ मोल से वह कंगाल ठहरे तो वह याजक के आगे आवे और याजक उस का मोल उस की सामर्थ्य के समान ठहरावे जिस ने मनौती किई है याजक उस का मोल ठहरावे॥
९ और यदि पशु होवे जिसे मनुष्य परमेश्वर के लिये भेंट लाते हैं तो वह सब जो परमेश्वर के लिये चढ़ाया गया सो
१० पवित्र होगा। वह उसे न फेरे और भले के लिये बुरा और बुरे के लिये भला न पलटे और यदि वह किसी भांति से पशु की संती पशु दे तो वह और उस
११ का पलटा पवित्र होंगे। और यदि वह अपवित्र पशु होवे जो परमेश्वर का बलिदान नहीं चढ़ाते तो वह पशु को याजक
१२ के आगे लावे। और याजक उस का मोल करे चाहे भला होवे चाहे बुरा जैसा याजक उस का मोल ठहरावे वैसा
१३ ही होवे। परन्तु यदि वह किसी भांति से उसे छुड़ावे तो वह उस मोल में पांचवां भाग मिलावे॥
१४ और जब मनुष्य अपने घर को परमेश्वर के लिये पवित्र करे तो याजक उस का मोल ठहरावे चाहे भला होवे चाहे बुरा याजक के ठहराने के समान
१५ उस का मोल होगा। और जिस ने उस घर को पवित्र किया है यदि वह उसे छुड़ाया

चाहे तो तेरे मोल का पांचवां भाग उस में मिलाके देवे और घर उस का होगा॥

१६ यदि कोई अपने अधिकार से कुछ खेत परमेश्वर के लिये पवित्र करे तो तेरा मोल उस के अन्न के समान हो एक होमर जव का मोल पचास शैकल चांदी

१७ होगा। यदि वह आनंद के बरस से अपना खेत पवित्र करे तो तेरे मोल के

१८ समान ठहरेगा। परन्तु यदि वह आनंद के पीछे अपने खेत को पवित्र करे तो याजक उन बरसों के समान जो आनंद के बरस लों बचे हैं मोल का लेखा करे और तेरे मोल से उतना घटाया जावे।

१९ और जिस ने खेत को पवित्र किया है यदि वह उसे किसी भांति से छुड़ाया चाहे तो वह तेरे मोल का पांचवां भाग उस में मिलावे तब वह उस का हो

२० जायगा। और यदि वह उस खेत को न छुड़ावे अथवा यदि उस ने उस खेत को दूसरे के पास बेचा हो तो वह फिर

२१ कभी छुड़ाया न जायगा। परन्तु जब वह खेत आनंद के बरस में छूटे तब जैसा सङ्कल्प किया गया खेत वैसा परमेश्वर के लिये पावन होगा और वह याजक का अधिकार होगा॥

२२ और कोई खेत जो उस ने मोल लिया है और उस के अधिकार के खेतों में का

२३ नहीं है परमेश्वर के लिये पवित्र करे। तो याजक आनंद के बरसों के समान गिनके मोल ठहरावे और वह तेरे ठहराने के समान उस दिन उस का मोल परमेश्वर के लिये

२४ पवित्र बस्तु के समान देवे। खेत आनंद के बरस में उस के पास फिर आयगा जिस्से मोल लिया गया जिस का वह भूमि का

२५ अधिकार था। और तेरा मोल पवित्र स्थान के शैकल के समान होगा बीस गिरह का एक शैकल होगा॥

२६ केवल पशुन में का पहिलौठा जो परमेश्वर का पहिलौठा हुआ चाहे उसे कोई पवित्र न करे चाहे वह गाय बैल से होवे चाहे भेड़ से वह तो परमेश्वर

२७ का है। और यदि वह अपावन पशु का होवे तो वह तेरे मोल के समान उसे छुड़ावे और उस में पांचवां भाग मिलावे अथवा यदि वह छुड़ाया न जावे तो वह तेरे मोल के समान बेचा जावे॥

२८ तिस पर भी कोई सङ्कल्प किई हुई बस्तु जिसे मनुष्य अपने समस्त बस्तुन में से परमेश्वर के लिये सङ्कल्प करता है मनुष्य का अथवा पशु का अथवा अपने अधिकार के खेत का वह बेचा न जावे और न छुड़ाया जावे हर एक सङ्कल्प किई हुई बस्तु परमेश्वर के

२९ लिये अत्यंत पवित्र है। जो बस्तु मनुष्य सङ्कल्प करता है सो छुड़ाई न जायगी निश्चय मार डाली जायगी॥

३० और देश का समस्त दसवां भाग चाहे खेत का बीज चाहे पेड़ का फल परमेश्वर का वह परमेश्वर के लिये

३१ पवित्र है। और यदि मनुष्य किसी भांति से अपने दसवें भाग को छुड़ाया चाहे

३२ तो पांचवां भाग उस में मिलावे। और [illegible] का अथवा झुंड का दसवां भाग जो कुछ लाठी के नीचे जाता है सो परमेश्वर के लिये सब दसवां भाग

३३ पवित्र होगा। वह उस की खोज न करे चाहे भला अथवा बुरा और वह उसे न पलटे और यदि वह किसी भांति से उसे पलटे तो वह और उस का पलटा दोनों के दोनों पवित्र हो जायेंगे और वह छुड़ाया न जायगा॥

३४ ये आज्ञा जो परमेश्वर ने इसराएल के संतानों के लिये सीना के पहाड़ पर मूसा को किईं ये हैं॥

गिनती की पुस्तक।

पहिला पर्ब्ब।

१ और मिस्र की भूमि से उन के निकलने के पीछे दूसरे बरस दूसरे मास की पहिली तिथि को सीना के पहाड़ के बन में मंडली के तंबू में परमेश्वर मूसा २ से कहके बोला। उन के पितरों के घराने के समान इसराएल के संतानों की समस्त मंडली के घराने के समान हर एक पुरुष के नामों का लेखा करे। ३ बीस बरस से ऊपर सब जो इसराएल में लड़ाई के योग्य होवें तू और हारून उन ४ की सेना सेना गिन। और हर एक गोष्ठी में से एक एक मनुष्य जो अपने अपने पितरों के घराने का प्रधान है तुम्हारे साथ होवे॥

५ और जो जन तुम्हारे साथ खड़े होंगे उन के ये नाम हैं रूबिन में से शदेऊर ६ का बेटा इलिसूर। समऊन में से सूरि- का बेटा सलूमिएल। यहूदाह में ८ से अम्मिनदब का बेटा नहशून। इश- कार में से सुग्र का बेटा नतनिएल। ९ जबुलून में से हैलून का बेटा इलिअब। १० यूसुफ के संतान इफरायम में से अम्मिहूद का बेटा इलिसमः मुनस्सी में से फिदा- ११ हसूर का बेटा जमलीएल। बिनयमीन में से जिदःऊनी का बेटा अबिदान। १२ दान में से अम्मिशद्दी का बेटा अखि- १३ अजर। यसर में से अकरून का बेटा १४ फजइएल। जद में से दऊएल का बेटा १५ इलयासफ। नफताली में से ऐनान का १६ बेटा अखिरअः। अपने अपने पितरों की गोष्ठियों के अध्यक्ष मंडली में ये नामी थे इसराएल में सहस्रों के प्रधान ये थे॥

१७ सो मूसा और हारून ने उन मनुष्यों को १८ लिया जिन के नाम लिखे हैं। और उन्हों ने दूसरे मास की पहिली तिथि में सारी मंडली एकट्ठी किई और उन्हों ने अपने अपने पितरों के घरान के समान बीस बरस से लेके ऊपर लों अपनी अपनी पीढ़ी उन के नामों की गिनती के समान १९ लिखाया। जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी उस ने उन को सीना के बन में गिना॥

२० सो रूबिन के संतान में वह जो इस- राएल का पहिलौठा बेटा था अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उन की पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान हर एक पुरुष सब २१ जो लड़ाई के योग्य थे। जो रूबिन की गोष्ठी में से गिने गये छियालीस सहस्र और पांच सौ थे॥

२२ समऊन के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उन की पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान हर एक पुरुष बीस बरस से ऊपर २३ लों जो सब लड़ाई के योग्य थे। जो समऊन की गोष्ठी में से गिने गये सो उनहत्तर सहस्र और तीन सौ थे॥

२४ जद के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उन की पीढ़ियों में और नामों के समान बीस बरस से ऊपर लों जो लड़ाई के योग्य २५ थे। जो जद की गोष्ठी में से गिने गये सो पैंतालीस सहस्र और छः सौ पचास थे॥

२६ यहूदाह के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उन की पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान बीस बरस से ऊपर लों सब जो २७ लड़ाई के योग्य थे। जो यहूदाह के

घराने में से गिने गये सो चौहत्तर सहस्र और छः सौ थे॥

२८ इशकार के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उन की पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान बीस बरस से ऊपर लों सब जो २९ लड़ाई के योग्य थे। जो इशकार की गोष्ठी में से गिने गये सो चौवन सहस्र और चार सौ थे॥

३० जबूलून के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उन की पीढ़ियों में की गिनती के समान बीस बरस से ऊपर लों सब जो लड़ाई ३१ के योग्य थे। जो जबूलून की गोष्ठी में से गिने गये सत्तावन सहस्र और चार सौ थे॥

३२ यूसुफ के संतान में से इफरायम के संतान में से अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उन की पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान बीस बरस से लेके ऊपर लों सब जो ३३ लड़ाई के योग्य थे। जो इफरायम की गोष्ठी में से गिने गये सो चालीस सहस्र और पांच सौ थे॥

३४ मुनस्सी के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उन की पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान बीस बरस से लेके ऊपर लों ३५ सब जो लड़ाई के योग्य थे। जो मुनस्सी की गोष्ठी में से गिने गये बत्तीस सहस्र और दो सौ थे॥

३६ बिनयमीन के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उन की पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान बीस बरस से लेके ऊपर लों सब जो लड़ाई के योग्य थे। ३७ जो बिनयमीन की गोष्ठी में से गिने गये पैंतीस सहस्र और चार सौ थे॥

३८ दान के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उन की पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान बीस बरस से लेके ऊपर लों सब जो लड़ाई के योग्य थे। जो दान ३९ की गोष्ठी में से गिने गये बासठ सहस्र और सात सौ थे॥

यसर के संतान अपने घराने और ४० अपने पितरों के घराने के समान उन की पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान बीस बरस से लेके ऊपर लों सब जो लड़ाई के योग्य थे। जो यसर ४१ की गोष्ठी में से गिने गये एकतालीस सहस्र और पांच सौ थे॥

नफतालो के संतान अपने घराने ४२ और अपने पितरों के घराने के समान उन की पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान बीस बरस से लेके ऊपर लों सब जो लड़ाई के योग्य थे। जो नफतालो की गोष्ठी में से गिने गये ४३ तिरपन सहस्र और चार सौ थे॥

सो सब जो गिने गये थे जिन्हें मूसा ४४ और हारून ने गिना ये हैं और इसराएल के संतानों के प्रधान हर एक अपने अपने पितरों के घरानों में प्रधान था बारह थे। सो वे सब जो इसराएल के ४५ संतानों में से अपने पितरों के घरानों में से बीस बरस से लेके ऊपर लों गिने गये सब जो इसराएल में लड़ाई के योग्य थे। अर्थात् सब जो गिने गये थे ४६ सो छः लाख तीन सहस्र और पांच सौ पचास थे॥

परन्तु लावी अपने पितरों की गोष्ठी ४७ के समान उन्हों में गिने नहीं गये। और ४८ परमेश्वर मूसा से कहके बोला। केवल ४९ लावी की गोष्ठी को मत गिन और उन्हें इसराएल के संतानों की गिनती में मत मिला। परन्तु लावियों को साक्षी के ५० तंबू और उस की समस्त वस्तु पर ठहरा

वे तंबू को और उस के पात्रों को उठाया करें और उस की सेवा करें और तंबू के आसपास छावनी करें। ५१ और जब तंबू आगे बढ़े तब लावी उसे गिरावें और जब तंबू को खड़ा करना हो तब लावी उसे खड़ा करें और जो परदेशी उस के पास आवे सो प्राण से मारा जाय। ५२ और इसराएल के संतानों में हर एक अपनी अपनी छावनी में हर एक मनुष्य अपनी समस्त सेना में अपने ही झंडे के पास अपना अपना तंबू खड़ा करे। ५३ परन्तु लावी साक्षी के तंबू के आसपास डेरा करें जिसतें इसराएल के संतानों की मंडली पर कोप न पड़े और लावी साक्षी के तंबू की रखवाली करें। ५४ सो जैसा परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी इसराएल के संतानों ने उन सभों के समान किया॥

दूसरा पर्ब्ब।

१ फिर परमेश्वर मूसा और हारून से कहके बोला। २ कि इसराएल के संतानों में से हर एक जन अपना झंडा अपने पितरों के घराने की ध्वजा के संग मंडली के तंबू के आसपास दूर डेरा करे॥

३ और पूरब दिशा में सूर्य्य के उदय की ओर यहूदाह की छावनी अपनी समस्त सेना में झंडा गाड़े और अम्मिनदब का बेटा नहसून यहूदाह के संतान का प्रधान होवे। ४ और उस की सेना और जो उन में गिने गये सो चौहत्तर सहस्र छः सौ थे। ५ और उस के पास इशकार की गोष्ठी डेरा करे और सुग्र का बेटा नतनिएल इशकार के संतान का प्रधान होवे। ६ और उस की सेना और वे जो उन में गिने गये सो चौवन सहस्र चार सौ थे। ७ फिर जबूलून की गोष्ठी और हेलून का पुत्र इलीयाब जबूलून के संतान का प्रधान होवे। ८ और उस की सेना और सब जो उन में गिने गये सो सतावन सहस्र चार सौ थे। ९ सब जो यहूदाह की छावनी में गिने गये उन की समस्त सेनों में एक लाख छियासी सहस्र चार सौ थे ये पहिले बढ़ें॥

१० और दक्खिन दिशा की ओर रूबिन की छावनी के झंडे उन की सेना के समान होवें और शदेऊर का पुत्र इलीसूर रूबिन के संतान का प्रधान होवे। ११ और उस की सेना और जो उन में गिने गये सो छियालीस सहस्र पांच सौ थे। १२ और उस के पास समऊन के संतान की गोष्ठी डेरा करे और सूरिशद्दी का बेटा शलूमिएल समऊन के संतान का प्रधान होवे। १३ और उस की सेना और जो उन में गिने गये सो उनसठ सहस्र तीन सौ थे। १४ और जद की गोष्ठी और रऊएल का बेटा इलियासफ जद के संतान का प्रधान होवे। १५ और उस की सेना और जो उन में गिने गये सो पैंतालीस सहस्र छः सौ पचास थे। १६ सब जो रूबिन की छावनी में गिने गये उन की समस्त सेनाओं में एक लाख एकावन सहस्र चार सौ पचास थे और वे दूसरी पांती में बढ़ें॥

१७ तब मंडली के तंबू लावी की छावनी के मध्य में आगे बढ़े जैसा वे डेरा करें वैसा आगे बढ़ें हर एक मनुष्य अपने स्थान में अपने अपने झंडे के पास॥

१८ पश्चिम दिशा में इफरायम की छावनी उन की सेनों के समान झंडा खड़ा होवे और अम्मिहूद का बेटा इलिसमः इफ-रायम के बेटों का प्रधान होवे। १९ और उस की सेना और जो उन में गिने गये सो चालीस सहस्र पांच सौ थे। २० और उस के पास मुनस्सी की गोष्ठी और फिदाहसूर का बेटा जमलीएल मुनस्सी

२१ के संतान का प्रधान होवे। और उस की सेना और जो उन में गिने गये सो २२ बत्तीस सहस्र दो सौ थे। और बिनयमीन की गोष्ठी और जिद:ऊनी का बेटा अबिदान बिनयमीन के संतान का प्रधान २३ होवे। और उस की सेना और जो उन में गिने गये सो पैंतीस सहस्र चार सौ २४ थे। सब जो इफ़रायम की छावनी में गिने गये उन की समस्त सेनाओं में एक लाख आठ सहस्र एक सौ थे और वे तीसरी पांती में बढ़ें॥

२५ दान की छावनी का झंडा उन की सेना की उत्तर दिशा में होवे और अम्मिशद्दी का बेटा अखिअजर दान के संतान का २६ प्रधान होवे। और उस की सेना और जो उन में गिने गये सो बासठ सहस्र २७ सात सौ थे। और उस के पास यसर की गोष्ठी डेरा करे और अकरान का बेटा फजिअएल यसर के संतान का प्रधान २८ होवे। और उस की सेना और जो उन में गिने गये सो एकतालीस सहस्र पांच २९ सौ थे। और नफ़ताली की गोष्ठी और ऐनान का बेटा अखिरअ: नफ़ताली के ३० संतान का प्रधान होवे। और उस की सेना और जो उन में गिने गये सो तिर-३१ पन सहस्र चार सौ थे। सब जो दान की छावनी में गिने गये सो एक लाख सत्तावन सहस्र छ: सौ थे वे अपने झंडों को लेके पीछे पीछे बढ़ें॥

३२ इसराएल के संतानों में जो उन के पितरों के घरानों में गिने गये थे ये हैं से सब जो तंबू में उन की छावनियों की समस्त सेनों में जो गिने गये थे छ: लाख ३३ तीन सहस्र पांच सौ पचास थे। परन्तु जैसा परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी लावी इसराएल के संतानों में न ३४ गिने गये। और इसराएल के संतानों ने उन सब आज्ञाओं को जो परमेश्वर ने मूसा से कही थीं वैसा ही किया हर एक अपने कुल के समान अपने पितरों के घरानों के समान उन्हों ने अपने अपने झंडों के पास डेरा किया और वैसा ही आगे बढ़े॥

तीसरा पर्ब्ब।

१ और जिस दिन परमेश्वर ने सीना पहाड़ पर मूसा से बातें किईं हारून और मूसा की पीढ़ी ये हैं। २ और हारून के बेटों के ये नाम हैं नदब पहिलौठा और ३ अबिहू इलिअजर और ईतमर। हारून याजक के बेटों के ये नाम हैं जिन्हें उस ने याजक के पद की सेवा के लिये स्थापा ४ और अभिषेक किया। और नदब और अबिहू जब उन्हों ने सीना के अरण्य में परमेश्वर के आगे उपरी आग चढ़ाई तब परमेश्वर के आगे निर्बंश मर गये और इलिअजर और ईतमर अपने पिता हारून के समीप याजक के पद में सेवा करते थे॥

५ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। ६ कि लावी की गोष्ठी को समीप ला और उन्हें हारून याजक के आगे कर जिसतें ७ वे उस की सेवा करें। और वे उस की आज्ञा की और मंडली के तंबू के आगे समस्त मंडली की रक्षा करें जिसतें ८ तंबू की सेवा करें। और वे मंडली के तंबू के सब पात्र और इसराएल के संतानों का पालन करें जिसतें तंबू की सेवा करें। ९ और तू लावियों को हारून और हारून के बेटों को सौंप दे इसराएल के संतानों १० में से ये उसे सर्वथा दिये गये। और हारून को और उस के बेटों को ठहरा कि याजक के पद में सिद्ध रहें और जो अन्य-देशी पास आवे सो मार डाला जावे॥

११ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। १२ देख मैं ने इसराएल के संतानों में से उन सब पहिलौठों की संती जो इसराएल

के संतानों में उत्पन्न होते हैं लावियों को ले लिया सो लावी मेरे पहिलौठे होंगे
१३ क्योंकि सारे लावी मेरे हैं कि जिस दिन मैं ने मिस्र की भूमि में सारे पहिलौठे मारे मैं ने इसराएल के संतानों के सब पहिलौठे क्या मनुष्य के क्या पशु के अपने लिये पवित्र किये वे मेरे होंगे मैं परमेश्वर हूं ॥

१४ फिर परमेश्वर सीना के अरण्य में
१५ मूसा से कहके बोला । कि लावी के संतानों को उन के पितरों के घराने और उन के कुल में गिन हर एक पुरुष एक
१६ मास से लेके ऊपर लों गिन । सो परमेश्वर के बचन के समान जैसा उस ने आज्ञा किई थी मूसा ने उन्हें गिना ।
१७ सो लावी के पुत्रों के नाम ये हैं जैरसुन
१८ और किहात और मिरारी । और जैरसुन के बेटों के नाम उन के कुल में ये हैं
१९ लिबनी और शमई । और किहात के बेटे अपने घराने में अमराम और इजहार
२० हबरून और उज्जिएल हैं । और मिरारी के बेटे अपने घराने में महली और मूसी हैं सो लावी के कुल उन के पितरों के घरानों के समान ये हैं ॥

२१ जैरसुन से लिबनी का घराना और शमई का घराना ये जैरसुनियों के घराने
२२ हैं । जैसा सारे पुरुषों के गिनने के समान जो उन से गिने गये एक मास से लेके ऊपर लों सात सहस्र पांच सौ थे ।
२३ जैरसुनियों के घराने तंबू के पीछे पच्छिम
२४ दिशा में अपना डेरा खड़ा करें । और लएल का बेटा इलियासफ जैरसुनियों के
२५ पितरों के घराने का प्रधान होवे । और मंडली के तंबू में जैरसुन के बेटों की रखवाली में तंबू और उस के ओढ़ना और मंडली के तंबू के द्वार के ओझल ।
२६ और आंगन के ओझल और उस के द्वार के ओझल जो तंबू और यज्ञवेदी की चारों ओर है और उस की रस्सियां और उस की सब सेवा उन की होगी ॥

२७ और किहात से अमरामियों का घराना और इसहारियों का घराना और हबरूनियों का घराना और ओज्जिएलियों का घराना
२८ ये सब किहातियों के घराने हैं । उन के सारे पुरुष अपनी गिनती के समान एक मास से लेके ऊपर लों सब आठ सहस्र छः सौ थे पवित्र स्थान की रखवाली
२९ करते थे । किहात के बेटों के घराने तंबू की दक्खिन दिशा में डेरा खड़ा
३० करें । और ओज्जिएल का बेटा इलिसफन किहात के घरानों का प्रधान हो ॥

३१ और मंजूषा और मंच और दीअट और बेदियां और पवित्र स्थान के पात्र जिन से सेवा करते हैं ओझल और उन की समस्त सेवा की सामग्री उन की रखवाली
३२ में रहे । और हारून याजक का बेटा इलिअजर लावी के प्रधानों का प्रधान सो पवित्र स्थान की रखवाली करे ॥

३३ मिरारी से महलियों का घराना और मूसियों का घराना ये मिरारी के घराने
३४ हैं । और उन के पुरुषों की जो गिनती के समान एक मास से लेके ऊपर लों सब जो गिने गये थे छः सहस्र दो सौ थे ।
३५ और अबिखैल का पुत्र सूरिएल मिरारियों के घराने का प्रधान हो और ये तंबू की
३६ उत्तर दिशा में डेरा खड़ा करें । ये तंबू का पाट और उस के अड़ंगे और उस के खंभे और उस की चुरगहनी और सब जो उस की सेवा में लगते हैं मिरारी
३७ के बेटों की रखवाली में होवें । और आंगन की चारों ओर के खंभे और उन की चुरगहनी और उन के खूंटे और उन की डोरियां ॥

३८ परन्तु वे जो तंबू की पूरब और मंडली के तंबू के आगे पूरब दिशा को मूसा और हारून और उस के बेटे वे

पवित्र स्थान की और इसराएल के संतानों की रखवाली करें और जो परदेशी पास ३८ आवे सो मार डाला जावे । लावियों में से सब जो गिने गये जिन्हें मूसा और हारून ने परमेश्वर की आज्ञा से उन के घरानों में गिना सब पुरुष एक मास से लेके ऊपर लों बाईस सहस थे ॥

४० फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि इसराएल के संतानों के सारे पहिलौठे पुत्रों को एक मास से लेके ऊपर लों गिने और उन के नामों की गिनती ले । ४१ और मेरे लिये जो परमेश्वर हूं लावियों को इसराएल के संतानों के सब पहिलौठे बेटों की संती और लावियों के पशुओं को इसराएल के संतानों के सब पशुओं की संती जो पहिले उत्पन्न हुए हों ले । ४२ और जैसा परमेश्वर ने उसे आज्ञा किई थी मूसा ने इसराएल के संतानों के ४३ समस्त पहिलौठों को गिना । सो सारे पहिलौठे पुरुष वर्ग उन के नामों की गिनती के समान एक मास से लेके ऊपर लों जो गिने गये बाईस सहस दो सौ तिहत्तर थे ॥

४४ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । ४५ कि इसराएल के संतानों के सारे पहिलौठों की संती लावियों को और उन के पशुओं की संती लावियों के पशुओं को ले और लावी मेरे होंगे मैं परमेश्वर ४६ हूं । और दो सौ तिहत्तर इसराएल के संतानों के पहिलौठे जो छुड़ाया जाना ४७ है लावियों से अधिक हैं । और पवित्र स्थान के शैकल के समान मनुष्य पीछे पांच शैकल ले एक शैकल बीस गिरह ४८ है । और तू उस का मोल जो गिनती से ऊपर छुड़ाया जाना है हारून और उस ४९ के बेटों को दे । सो मूसा ने उन के छुड़ाने की रोकड़ लिई जो लावियों से ५० छुड़ाये जाने से उबरी थी । इसराएल के संतानों के पहिलौठे में से एक सहस तीन सौ पैंसठ पवित्र स्थान के शैकल से रोकड़ लिया । और मूसा ने उन की रोकड़ को ५१ जो छुड़ाये गये थे परमेश्वर की आज्ञा से हारून और उस के बेटों को दिया ॥

चौथा पर्व्व ।

१ फिर परमेश्वर मूसा और हारून से २ कहके बोला । किहात के बेटों को लावी के बेटों में उन के पितरों के घराने की और उन के कुल की गिनती ले । तीस ३ बरस से लेके पचास बरस लों सब जो सेना में पैठते हैं कि मंडली के तंबू में सेवा करें ॥

४ मंडली के तंबू में और उन वस्तुन में जो अति पवित्र हैं किहात के बेटों ५ की सेवा यह है । और जब छावनी आगे बढ़े तब हारून और उस के बेटे आवें और ढांपने के घटाटोप उतारें और उस्से साक्षी की मंजूषा को ढांपें । ६ और उस पर तुखस की खालों का घटाटोप डालें और उस के ऊपर नीला कपड़ा बिछावें और उस के बहंगर उस ७ में डालें । और भेंट की रोटी के मंच पर नीला कपड़ा बिछावें और उस पर पात्र और करछुल और कटोरा और ढांपने के लिये ढपने उस पर रक्खें और नित्य की रोटी उस पर होवे । और उन ८ पर लाल कपड़ा बिछावें और उसे तुखस की खालों से ढांपें और उस में बहंगर ९ डालें । फिर नीला कपड़ा लेके प्रकाश की दीअट और उस के दीपकों को और उस के फूल कतरनियों और उस के पात्र और उस के सब तेल के पात्रों पर जिस्से सेवा करते हैं ढांपें । और उसे और उस १० के सब पात्रों को तुखस की खालों के आड़ में रक्खें और उसे अड़ंगा पर ११ रक्खें । और सोनहली यज्ञवेदी पर नीला वस्त्र बिछावें और उसे तुखस की

खालों के ठपने से ढांपें और उस में उस के बहंगर डालें। १२ और समस्त पात्रों को जो पवित्र स्थान की सेवा में आते हैं लेके नीले कपड़ों में लपेटें और उन्हें तुखस की खालों से ढांपें और बहंगर पर रक्खें। १३ और बेदी में से राख निकाल फेंकें और लाल कपड़ा उस पर बिछावें। १४ और उस के सारे पात्र जिस्से वे उस की सेवा करते हैं अर्थात् धूपावरी मांस के कांटे और फावड़ियां और कटोरे बेदी के समस्त पात्र उस पर रक्खें और उन्हें तुखस की खालों से ढांपें और उस में उस के बहंगर डालें। १५ और जब हारून और उस के बेटे पवित्र स्थान को और उस की सामग्री को ढांप चुकें तब छावनी के आगे बढ़ने के समय में किहात के संतान उस के उठाने के लिये आवें परन्तु वे पवित्र बस्तु को न छूवें न हो कि मर जावें मंडली के तंबू की बस्तें किहात के संतानों को उठाने पड़ेंगी॥

१६ और दीपकों के लिये तेल और सुगंध धूप और समस्त तंबू और सब जो उस में है और उस के पात्र हारून याजक का बेटा इलिअज़र देखा करे॥

१७ फिर परमेश्वर मूसा और हारून से १८ कहके बोला। कि लावियों में से किहात के घराने की गोष्ठी को काट न १९ डालियो। परन्तु उन से ऐसा करो कि वे जीवें और अति पवित्र बस्तुन के समीप आने से न मरें हारून और उस के बेटे भीतर जावें और उन में से हर एक को उस की सेवा पर और बोझ २० उठाने पर ठहरावें। परन्तु जब कि पवित्र बस्तें ढांपी जावें तो वे उन्हें देखने न आवें जिसतें मर न जावें॥

२१ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। २२ कि जैरसून के बेटों को भी उन के पितरों के समस्त घराने उन के कुलों के समान गिनती करो। २३ तीस बरस से लेके पचास बरस लों सब जो सेवा के लिये भीतर जाते हैं कि मंडली के तंबू की सेवा करें उन की गिनती करो। २४ जैरसुनियों के कुलों की सेवा और बोझ उठाने के लिये यही कार्य्य है। २५ और वे तंबू के ओभल और उस का घटाटोप और तुखस की खालों का घटाटोप जो उस पर है और मंडली के तंबू के द्वार का ओट उठावें। २६ और आंगन के ओट और आंगन के द्वार का ओट जो तंबू और बेदी के चारों ओर हैं और उन की रस्सियां और सब पात्र जो उन की सेवा के कारण हैं और सब कार्य्य जो उन से किया जाय अवश्य है कि वे करें। २७ जैरसुन के बेटों की सारी सेवा बोझ उठाने में और सब काम करने में हारून और उस के बेटों की आज्ञा के समान होवे और तुम उन में से हर एक का बोझ ठहरा दीजियो। २८ जैरसुन के संतान के कुलों की सेवा मंडली के तंबू में यह है और वे हारून याजक के बेटे ईतमर की आज्ञा में हैं॥

२९ मिरारी के बेटे उन के पितरों के घरानों और उन के कुलों के समान उन की गिनती कर। ३० तीस बरस से लेके पचास बरस लों उन सब को जो सेना में पहुंचते हैं जिसतें मंडली के तंबू की सेवा करें गिन। ३१ और उस सेवा के समान जो मंडली के तंबू में उन के लिये है उन के बोझ ये ठहरें तंबू के पाट और उस के अड़ंगे और उस के खंभे और उस की चुरगहनी। ३२ और आंगन के खंभे जो चारों ओर हैं और उन की चुरगहनी और उन के खूंटे और उन की रस्सियां और उन की समस्त सामग्री सेवा समेत और उन की सामग्री के बोझे का नाम ले लेके

३३ गिन। मिरारी के बेटे के कुलों की सेवा जो मंडली के तंबू की समस्त सेवा के समान यह है वे हारून याजक के बेटे ईतमर के अधीन रहें॥

३४ सो मूसा और हारून और मंडली के प्रधानों ने किहातियों के बेटों को उन के पितरों के घरानों के और उन के ३५ कुलों के समान गिना। तीस बरस से लेके पचास बरस लों उन सब को जो सेना के लिये पहुंचते हैं जिसतें मंडली के तंबू की सेवा करें एक एक करके ३६ गिना। सो वे जो अपने घराने के समान गिने गये दो सहस्र सात सौ पचास थे। ३७ वे सब ये हैं जो किहात के घरानों में से मंडली के तंबू की सेवा के लिये गिने गये जिन्हें मूसा और हारून ने परमेश्वर की आज्ञा के समान जो मूसा के हस्ते कही थी गिना॥

३८ और जैरसुन के बेटे जो अपने पितरों के घरानों के समस्त कुलों के समान ३९ गिने गये। तीस बरस से लेके पचास बरस लों सब जो सेना के लिये पहुंचते हैं जिसतें मंडली के तंबू की सेवा करें। ४० और वे सब जो उन के पितरों के घरानों और उन के कुलों के समान गिने गये ४१ दो सहस्र छः सौ तीस हुए। वे सब ये हैं जो जैरसुन के बेटों के घरानों में से मंडली के तंबू की सेवा के लिये गिने गये जिन्हें मूसा और हारून ने परमेश्वर की आज्ञा से गिना॥

४२ और मिरारी के बेटे के पितरों के घराने और उन के समस्त कुल जो ४३ गिने गये थे। तीस बरस से लेके पचास बरस लों हर एक जो सेना के लिये पहुंचते हैं जिसतें मंडली के तंबू की ४४ सेवा करें। अर्थात् वे जो उन के कुल में गिने गये थे तीन सहस्र दो सौ थे। ४५ वे सब ये हैं जो मिरारी के बेटे के कुल में से जो गिने गये जिन्हें मूसा और हारून ने परमेश्वर की आज्ञा के समान जो मूसा के हस्ते कही थी गिना॥

४६ सब जो लावियों में से गिने गये थे जिन्हें मूसा और हारून और इसराएल के प्रधानों ने उन के पितरों के घराने और उन के कुल के समान गिना। तीस ४७ बरस से लेके पचास बरस लों गिना जो सेवा के लिये पहुंचते हैं जिस में मंडली के तंबू की सेवा करें और बोझ ४८ उठावें। अर्थात् वे जो उन में गिने गये थे आठ सहस्र पांच सौ अस्सी ४९ थे। मूसा के हस्ते परमेश्वर की आज्ञा के समान वे गिने गये हर एक अपनी सेवा और बोझ उठाने के समान जैसा परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी वैसा ही वे मूसा से गिने गये॥

पांचवां पर्ब्ब।

१ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। २ कि इसराएल के संतान को आज्ञा कर कि हर एक कोढ़ी और प्रमेही को और जो मृत्यु से अशुद्ध है उन को छावनी से ३ बाहर कर देवें। क्या स्त्री और क्या पुरुष तुम उन्हें छावनी से बाहर करो जिसतें अपनी छावनियों को जिन के मध्य में मैं रहता हूं वे अशुद्ध न करें। ४ सो इसराएल के संतानों ने ऐसा ही किया और उन्हें छावनी से बाहर कर दिया जैसा परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी वैसा ही इसराएल के संतानों ने किया॥

५ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। ६ कि इसराएल के संतानों को कह कि जब कोई पुरुष अथवा स्त्री परमेश्वर से बिरुद्ध होके ऐसा कोई पाप करे जो मनुष्य करते हैं और वह प्राणी दोषी ७ ठहरे। तब अपने पाप को जो उन्हों ने किया है मान लेवें और वह मूल के

संग पांचवां अंश मिलावे और अपने अपराध के पलटा के लिये उसे देवे जिस ८ का उस ने अपराध किया है । परन्तु यदि अपराध के पलटा देने को उस मनुष्य का कोई कुटुम्ब न होवे तो प्रायश्चित्त के मेंढ़े से अधिक जिस्से उस के लिये प्रायश्चित्त होवे वह अपराध की भेंट परमेश्वर को अर्थात् काहिन को दिई जायगी ॥

और इसराएल के संतानों की सारी पवित्र बस्तुन की सब भेंट जो वे १० चढ़ाते हैं याजक की होगी । और हर एक मनुष्य की पवित्र बस्तें उस की होंगी जो कुछ याजक को देगा उस की होगी ॥

११ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । १२ कि इसराएल के संतानों को कहके बोल कि यदि किसी की पत्नी अलग होके उस के बिरुद्ध कोई अपराध करे । १३ और कोई उस्से ब्यभिचार करे और यह उस के पति से छिपा हो और ढंपा हो और वह अशुद्ध हो जावे और उस पर साक्षी न होवे और वह पकड़ी न जावे । और उस के पति के मन में झल आवे और वह अपनी पत्नी से झल रक्खे और वह अशुद्ध हो अथवा यदि उस के पति के मन में झल आवे और वह अपनी पत्नी से झल रक्खे और वह स्त्री अशुद्ध न होवे । तब वह मनुष्य अपनी पत्नी को याजक पास लावे और वह उस के लिये एक ऐफा का दसवां भाग जव का पिसान उस की भेंट के लिये लावे वह उस पर तेल और लोबान न डाले क्योंकि वह झल की भेंट पाप को चेत में लाने के लिये स्मरण की भेंट है ॥

१६ तब याजक उस स्त्री को निकट लावे और परमेश्वर के आगे उसे खड़ी करे । और याजक मट्टी के एक पात्र में शुद्ध जल लेवे और तंबू के आंगन की धूल लेके उस पानी में मिलावे । फिर १८ याजक उस स्त्री को परमेश्वर के आगे खड़ी करे और उस का सिर उघारे और स्मरण की भेंट जो झल की भेंट है उस के हाथों पर रक्खे और याजक उस कड़ुवे पानी को जो धिक्कार के लिये है अपने हाथ में लेवे । और उस स्त्री को १९ किरिया देके कहे कि यदि किसी ने तुझ से कुकर्म्म नहीं किया और तू केवल अपने पति को छोड़ अशुद्ध मार्ग में नहीं गई तो तू इस कड़ुवे पानी के गुण से जो धिक्कार के लिये है बची रहे । परन्तु २० यदि तू अपने पति को छोड़के भटक गई हो और अशुद्ध हुई हो और अपने पति को छोड़ किसी दूसरे से कुकर्म्म किया हो । और याजक उस स्त्री को २१ साप की किरिया देवे और याजक उस स्त्री से कहे कि परमेश्वर तेरे लोगों के मध्य में तुझे साप देवे कि परमेश्वर तेरी जांघ को सड़ावे और तेरे पेट को फुलावे । और यह पानी जो साप का कारण होता २२ है तेरी अंतड़ियों में जाके तेरा पेट फुलावे और तेरी जांघ को सड़ावे और वह स्त्री कहे कि आमीन आमीन । तब २३ याजक इन धिक्कारों को एक पुस्तक में लिखे और कड़ुवे पानी से उसे मिटा दे । और याजक वह कड़ुवा पानी जो २४ साप का कारण होता है उस स्त्री को पिलावे तब वह पानी जो साप का कारण होता है उस में कड़ुवा पैठेगा ॥

तब याजक उस स्त्री के हाथ से झल २५ की भेंट लेके परमेश्वर के आगे उसे हिलावे और यज्ञबेदी पर चढ़ावे । और २६ उस भेंट के स्मरण के लिये एक मुट्ठी लेके याजक बेदी पर जलावे और उस के पीछे वह पानी उस स्त्री को पिलावे ॥

और जब वह पानी उसे पिलावेगा २७ तब ऐसा होगा कि यदि वह अशुद्ध

होवे और वह अपने पति के विरुद्ध कुछ अपराध किया हो तो वह पानी जो स्राप का कारण होता है उस के शरीर में पहुंचके कड़ुआ हो जायगा और उस का पेट फूलेगा और उस की जांघ सड़ जायगी और वह स्त्री अपने लोगों में धिक्कारित होगी। २८ परन्तु यदि वह स्त्री अशुद्ध न हो परन्तु शुद्ध होवे तो वह निर्दोष होगी और गर्भिणी होगी॥

२९ उस स्त्री के कारण जो अपने पति को छोड़के भटकती है और अशुद्ध है झल के लिये यह व्यवस्था है। ३० अथवा जब पुरुष के मन में झल आवे और वह अपनी पत्नी से संदेह रक्खे और स्त्री को परमेश्वर के आगे खड़ी करे और याजक उस पर ये सब व्यवस्था पूरी करे। ३१ तो वह पुरुष पाप से पवित्र होगा और वह स्त्री अपना पाप भोगेगी॥

छठवां पर्ब्ब

१ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। २ कि इसराएल के संतानों को कहके बोल कि जब कोई पुरुष अथवा स्त्री आप को अलग करने के लिये नसरानी की मनौती ईश्वर के लिये माने। ३ तो वह दाखरस से और तीक्ष्ण मदिरा से अलग रहे दाखरस का सिरका अथवा तीक्ष्ण मदिरा का सिरका न पीवे और अंगूर का कोई रस न पीवे और न हरे न सूखे अंगूर खावे। ४ अपने अलग होने के सब दिनों में कोई वस्तु जो दाखों से उत्पन्न होती है बीज से लेके उस के छिलके लों न खावे। ५ अपने अलग होने की मनौती के सब दिनों में सिर पर छुरा न फिरावे जब लों उस के अलग किये गये दिन बीत न जावें वह ईश्वर के लिये पवित्र है अपने सिर के बालों को बढ़ने देवे। ६ वह परमेश्वर के लिये अपने सारे अलग होने के दिनों में लोथ के पास न जावे। ७ वह अपने माता पिता अथवा अपने भाई बहिन के लिये जब वे मर जावें आप को अशुद्ध न करे क्योंकि उस के ईश्वर की स्थापना उस के सिर पर है। ८ वह अपने अलग होने के सब दिनों में परमेश्वर के लिये पवित्र है। ९ और यदि कोई मनुष्य अकस्मात् उस के पास मर जावे और उस के सिर के स्थापित को अपवित्र करे तो वह अपने पवित्र होने के दिन अपना सिर मुड़ावे सातवें दिन सिर मुड़ावे। १० और आठवें दिन दो पिण्डुकी अथवा कपोत के दो बच्चे मंडली के तंबू के द्वार पर याजक पास लावे। ११ और याजक एक को पाप की भेंट के लिये और दूसरे को बलिदान की भेंट के लिये चढ़ावे और उस अपराध का जो मृतक के कारण से हुआ प्रायश्चित्त देवे और अपने सिर को उसी दिन पवित्र करे। १२ और अपने अलग होने के दिनों को परमेश्वर के लिये स्थापित करे और पहिले बरस का एक मेम्ना अपराध की भेंट के लिये लावे परन्तु उस के आगे के दिन गिने न जायेंगे क्योंकि उस की भेंट अपवित्र हो गई॥

१३ सो नसरानी होने के लिये यह व्यवस्था है जब उस के अलग होने के दिन पूरे हों तब वह मंडली के तंबू के द्वार पर लाया जावे। १४ और वह परमेश्वर के लिये अपनी भेंट पहिले बरस का एक निर्दोष मेम्ना बलिदान की भेंट के लिये और पाप की भेंट के लिये पहिले बरस की एक भेड़ी और कुशल की भेंट के लिये एक निर्दोष मेंढा। १५ और एक टोकरी अखमीरी रोटियां और चोखे पिसान की पूरी और अखमीरी लिट्टी तेल में चुपड़ी हुईं उन के भोजन की भेंट और उन के तपावन। १६ और याजक उन्हें परमेश्वर के आगे लाके उस के पाप की भेंट को

और उस के बलिदान की भेंट को १७ चढ़ावे । और परमेश्वर के कारण एक टोकरा अखमीरी रोटी के साथ उस मेंढे को चढ़ावे और याजक उस के भोजन की भेंट और उस का १८ तपावनी चढ़ावे । तब वह नसरानी मंडली के तंबू के द्वार पर अपने अलग होने के लिये सिर मुड़ावे और उस के अलग होने के सिर के बालों को लेवे और उस आग में जो कुशल की भेंट के १९ बलिदान के तले है डाल देवे । जब अलग होने के लिये मुड़ाया जाय तब याजक उस मेंढे का सिझाया हुआ कांधा और टोकरी में से एक अखमीरी फुलका और एक अखमीरी लिट्टी लेके २० उस नसरानी के हाथों पर रक्खे । फिर याजक उन्हें हिलाने की भेंट के लिये परमेश्वर के आगे हिलावे यह हिलाने की छाती और उठाने का कांधा याजक के लिये पवित्र है उस के पीछे नसरानी २१ दाखरस पी सके । नसरानी की मनौती की व्यवस्था यह है कि परमेश्वर के लिये उस के अलग होने की भेंट जो उस के हाथ पहुंचने से अधिक उस की मनौती के समान अपने अलग होने की व्यवस्था के पीछे अवश्य यों करे ॥

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । २३ कि हारून को और उस के बेटों को कह कि इसराएल के संतानों को यों आशीस देके उन्हें कहियो ॥

कि परमेश्वर तुझे आशीस देवे और तेरी रक्षा करे ॥

परमेश्वर अपना रूप तुझ पर प्रकाश करे और तुझ पर अनुग्रह करे ॥

परमेश्वर अपना रूप तुझ पर प्रकाश करे और तुझे कुशल देवे ॥

और वे मेरा नाम इसराएल के संतानों पर रक्खें और मैं उन्हें आशीष देऊंगा ॥

सातवां पर्ब्ब ।

१ और ऐसा हुआ कि जिस दिन मूसा तंबू खड़ा कर चुका और उसे और उस की समस्त सामग्री को अभिषेक करके पवित्र किया और यज्ञवेदी को उस के समस्त पात्र सहित अभिषेक करके पवित्र किया । २ तब इसराएल के अध्यक्ष जो अपने पितरों के घरानों में प्रधान और गोष्ठियों के अध्यक्ष और उन में जो गिने गये उन के ऊपर थे भेंट लाये । ३ और ढांपी हुई छः गाड़ियां और बारह बछिया बैल अपनी भेंट परमेश्वर के आगे लाये दो दो अध्यक्षों के लिये एक एक गाड़ी और हर एक की ओर से एक एक बैल सो वे उन्हें तंबू के आगे लाये । ४ तब परमेश्वर ने मूसा से कहा । ५ कि यह उन से ले जिसतें वे मंडली के तंबू की सेवा में आवें और उन्हें लावियों को दे हर एक को उस की सेवा के समान । ६ सो मूसा ने गाड़ियां और बैल लेके उन्हें लावियों को दिया । ७ दो गाड़ियां और चार बैल उस ने जैरसुन के बेटों को उन की सेवा के समान दिये । ८ और चार गाड़ियां और आठ बैल मिरारी के संतान को जो हारून याजक के पुत्र ईतमर के अधीन थे उन की सेवा के समान दिये । ९ परन्तु उस ने किहात के बेटों को कुछ न दिया क्योंकि पवित्र स्थान की सेवा जो उन के लिये ठहराई गई यह थी कि वे अपने कांधों पर उठाके ले चलें ॥

१० और जिस दिन कि यज्ञवेदी अभिषेक किई गई अध्यक्षों ने उस के स्थापित के लिये चढ़ाई अर्थात् अध्यक्षों ने यज्ञवेदी के आगे अपनी भेंट चढ़ाई । ११ तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि हर एक अध्यक्ष यज्ञवेदी को स्थापित करने के लिये एक एक दिन अपनी अपनी भेंट चढ़ावे ॥

१२ सो पहिले दिन यहूदाह की गोष्ठी में से अम्मिनदब के पुत्र नहशून ने अपनी १३ भेंट चढ़ाई । और उस की भेंट एक सौ तीस शैकल एक चांदी का थाल जिस की तौल सत्तर शैकल थी चांदी का एक कटोरा पवित्र स्थान के शैकल से ये दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले हुए चोखे पिसान से भरे हुए । १४ एक करछुल दस शैकल सोने की धूप से १५ भरी हुई । बलिदान की भेंट के लिये एक बछड़ा एक मेंढा पहिले बरस का १६ एक मेम्ना । पाप की भेंट के लिये एक १७ बकरी का मेम्ना । और कुशल की भेंट के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढे पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने यह अम्मिनदब के बेटे नहशून की भेंट ॥

१८ दूसरे दिन सुग्र के बेटे नतनिएल ने जो इशकार का अध्यक्ष था अपनी १९ भेंट चढ़ाई । और उस की भेंट एक सौ तीस शैकल भर चांदी का एक थाल चांदी का एक कटोरा सत्तर शैकल का पवित्र स्थान की तौल से ये दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले हुए चोखे पिसान से भरे हुए । २० सोने की एक करछुल दस शैकल भर धूप २१ से भरी हुई । एक बछड़ा एक मेंढा पहिले बरस का एक मेम्ना बलिदान की २२ भेंट के लिये । पाप की भेंट के लिये २३ बकरी का एक मेम्ना । और कुशल की भेंट के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढे पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने सुग्र के बेटे नतनिएल की भेंट यह थी ॥

२४ तीसरे दिन हैलून के पुत्र इलियाब ने चढ़ाई जो जबुलून के बंश का अध्यक्ष २५ था । उस की भेंट एक सौ तीस शैकल चांदी का एक थाल सत्तर शैकल का चांदी का कटोरा पवित्र स्थान की शैकल से दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले हुए चोखे पिसान से भरे हुए । २६ सोने की एक करछुल दस शैकल भर २७ धूप से भरी हुई । एक बछड़ा एक मेंढा पहिले बरस का एक मेम्ना बलिदान की २८ भेंट के लिये । बकरी का एक मेम्ना २९ पाप की भेंट के लिये । और कुशल की भेंट के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढे पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने हैलून के पुत्र इलियाब की भेंट यह थी ॥

३० चौथे दिन शदेऊर के बेटे इलिसूर ने चढ़ाई जो रूबिन के बंश का अध्यक्ष ३१ था । उस की भेंट यह थी चांदी का एक थाल एक सौ तीस शैकल का चांदी का एक कटोरा सत्तर शैकल का पवित्र स्थान के शैकल से वह दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले ३२ हुए चोखे पिसान से भरे हुए । सोने की एक करछुल दस शैकल भर धूप से भरी ३३ हुई । बलिदान की भेंट के लिये एक बछड़ा एक मेंढा पहिले बरस का एक ३४ मेम्ना । पाप की भेंट के लिये बकरी का ३५ एक मेम्ना । और कुशल की भेंटों के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढे पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने शदेऊर के बेटे इलिसूर की भेंट यह थी ॥

३६ पांचवें दिन सूरिशद्दी के बेटे सलूमिएल ने जो शमऊन के बंश का अध्यक्ष ३७ था अपनी भेंट चढ़ाई । उस की भेंट चांदी का एक थाल एक सौ तीस शैकल का चांदी का एक कटोरा सत्तर शैकल का पवित्र स्थान के शैकल से वह दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले हुए चोखे पिसान से भरे हुए । ३८ सोने की एक करछुल दस शैकल भर की ३९ धूप से भरी हुई । बलिदान की भेंट के लिये एक बछड़ा एक मेंढा पहिले ४० बरस का एक मेम्ना । पाप की भेंट के

लिये बकरी का एक मेम्ना। और कुशल की भेंटों के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढे पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने सूरिशद्दी के बेटे शलूमिएल की भेंट यह थी॥

छठवें दिन दऊएल के बेटे इलियासफ ने जो जद के बंश का अध्यक्ष ३ था। उस की भेंट चांदी का एक थाल एक सौ तीस शैकल का चांदी का एक कटोरा सत्तर शैकल का पवित्र स्थान के शैकल से यह दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले हुए चोखे ४ पिसान से भरे हुए। सोने की एक करछुल दस शैकल भर की धूप से भरी ५ हुई। बलिदान की भेंट के लिये एक बछड़ा एक मेंढा पहिले बरस का एक ६ मेम्ना। पाप की भेंट के लिये बकरी का ७ एक मेम्ना। और कुशल की भेंट के लिये दो बैल पांच मेंढे पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने दऊएल के बेटे इलियासफ की भेंट यह थी॥

सातवें दिन अम्मिहूद के बेटे इलिसमः ने जो इफ्रायम के बंश का अध्यक्ष था। उस की भेंट एक सौ तीस शैकल चांदी का एक कटोरा सत्तर शैकल का पवित्र स्थान के शैकल से यह दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले हुए चोखे पिसान से भरे हुए। सोने की एक करछुल दस शैकल भर की धूप से भरी हुई। बलिदान की भेंट के लिये एक बछड़ा एक मेंढा पहिले बरस का एक मेम्ना। पाप की भेंट के ५३ लिये एक बकरी का मेम्ना। और कुशल की भेंटों के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढे पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने अम्मिहूद के बेटे इलिसमः की भेंट यह थी॥

आठवें दिन फिदाहसूर के बेटे जमलिएल ने जो मुनस्सी के बंश का अध्यक्ष था। उस की भेंट चांदी का ५५ एक थाल एक सौ तीस शैकल का चांदी का एक कटोरा सत्तर शैकल का पवित्र स्थान के शैकल से यह दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले हुए चोखे पिसान से भरे हुए। सोने की ५६ एक करछुल दस शैकल भर की धूप से भरी हुई। बलिदान की भेंट के लिये ५७ एक बछड़ा एक मेंढा पहिले बरस का एक मेम्ना। पाप की भेंट के लिये ५८ बकरी का एक मेम्ना। और कुशल की ५९ भेंट के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढे पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने फिदाहसूर के बेटे जमलिएल की भेंट यह थी॥

नवें दिन जिदःऊनी के बेटे अबिदान ६० ने जो बिनयमीन के बंश का अध्यक्ष था। उस की भेंट चांदी का एक थाल ६१ एक सौ तीस शैकल का चांदी का एक कटोरा सत्तर शैकल का पवित्र स्थान के शैकल से यह दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले हुए चोखे पिसान से भरे हुए। सोने की एक ६२ करछुल दस शैकल भर की धूप से भरी हुई। बलिदान की भेंट के लिये एक ६३ बछड़ा एक मेंढा पहिले बरस का एक मेम्ना। पाप की भेंट के लिये एक बकरी ६४ का मेम्ना। और कुशल की भेंटों के ६५ बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढे पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने जिदःऊनी के बेटे अबिदान की भेंट यह थी॥

दसवें दिन अम्मिसद्दाय के बेटे ६६ अखियअजर ने जो दान के बंश का अध्यक्ष था। उस की भेंट चांदी का एक थाल ६७ एक सौ तीस शैकल का चांदी का एक कटोरा सत्तर शैकल का पवित्र स्थान के

शैकल से वह दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले हुए चोखे ६८ पिसान से भरे हुए। सोने की एक करछुल दस शैकल भर की धूप से भरी ६९ हुई। बलिदान की भेंट के लिये एक बछड़ा एक मेंढ़ा पहिले बरस का एक ७० मेम्ना। पाप की भेंट के लिये एक ७१ बकरी का मेम्ना। और कुशल की भेंटों के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढ़े पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने अम्मिसद्दाय के बेटे अखिअज़र की भेंट यह थी॥

७२ ग्यारहवें दिन अकरन के बेटे फजिइएल ने जो यसर के वंश का अध्यक्ष ७३ था। उस की भेंट चांदी का एक थाल एक सौ तीस शैकल का चांदी का एक कटोरा सत्तर शैकल का पवित्र स्थान के शैकल से वह दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले हुए चोखे ७४ पिसान से भरे हुए। सोने की एक करछुल दस शैकल भर की धूप से भरी ७५ हुई। बलिदान की भेंट के लिये एक बछड़ा एक मेंढ़ा पहिले बरस का एक ७६ मेम्ना। पाप की भेंट के लिये एक ७७ बकरी का मेम्ना। और कुशल की भेंटों के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढ़े पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने अकरन के बेटे फजिइएल की भेंट यह थी॥

७८ बारहवें दिन ऐनान के बेटे अखिरअ: ने जो नफ़ताली के संतान के वंश का ७९ अध्यक्ष था। उस की भेंट चांदी का एक थाल एक सौ तीस शैकल का और चांदी का एक कटोरा सत्तर शैकल का पवित्र स्थान के शैकल से वह दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले हुए चोखे पिसान से भरे हुए। ८० सोने की एक करछुल दस शैकल भर की धूप से भरी हुई। बलिदान की भेंट ८१ के लिये एक बछड़ा एक मेंढ़ा पहिले बरस का एक मेम्ना। पाप की भेंट के ८२ लिये एक बकरी का मेम्ना। और कुशल ८३ की भेंटों के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढ़े पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने ऐनान के बेटे अखिरअ: की भेंट यह थी॥

जिस दिन यज्ञबेदी इसराएल के ८४ अध्यक्षों से अभिषेक किई गई उस की स्थापित यह चांदी के बारह थाल और चांदी के बारह कटोरे और सोने की बारह करछुल थीं। चांदी का हर एक ८५ थाल तौल में एक सौ तीस शैकल का और हर एक कटोरा सत्तर शैकल भर का सब चांदी के पात्र पवित्र स्थान के तौल से दो हज़ार चार सौ शैकल थे। सोने की बारह करछुल धूप से भरी ८६ हुईं एक करछुल दस शैकल भर की पवित्र स्थान के शैकल से करछुलों का सब सोना एक सौ बीस शैकल था। बलिदान की भेंट के लिये बारह बैल ८७ बारह मेंढ़े पहिले बरस के बारह मेम्ने उन की भोजन की भेंट सहित और पाप की भेंट के लिये बकरी के बारह मेम्ने। और कुशल की भेंटों के बलिदान के ८८ लिये चौबीस बैल साठ मेंढ़े साठ बकरियां पहिले बरस के साठ मेम्ने बेदी के अभिषेक करने के पीछे उस के स्थापित के लिये यह था॥

और जब मूसा ने उस्से बात करने ८९ के लिये मंडली के तंबू में प्रवेश किया तब उस ने उस ढकने के ऊपर से जो साक्षी की मंजूषा पर था दोनों करोबियों के मध्य में से वह शब्द सुना जो उस्से कहता था॥

आठवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा। १

२ हारून से कह और उसे बोल जब तू दीपकों को बारे तो सातों दीपक का उंजियाला दीअट के झाड़ के सन्मुख ३ होवे। सो हारून ने ऐसा ही किया उस ने दीअट के झाड़ के सन्मुख उस के दीपकों को बारा जैसा कि परमेश्वर ४ ने मूसा को आज्ञा किई थी। और दीअट के झाड़ की बनावट पीटे हुए सोने से थी उस के खंभे से उस के फूल लों पीटे हुए सोने का था उस नमूने के समान जो परमेश्वर ने मूसा को दिखाया था उस ने वैसा ही उस झाड़ को बनाया॥

५ फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा।
६ कि लावियों को इसराएल के संतानों में
७ से अलग कर और उन्हें पवित्र कर। और उन्हें पवित्र करने के लिये तू उन से यों कीजियो कि शुद्ध करने का जल उन पर छिड़क और वे अपने समस्त देह को मुड़ावें और अपने कपड़े धोवें और आप
८ को पावन करें। तब वे एक बछड़ा उस के भोजन की भेंट के साथ तेल से मिला हुआ चोखा पिसान लेवें और तू पाप की भेंट के लिये दूसरा बछड़ा
९ लीजियो। और लावियों को मंडली के तंबू के आगे लाइयो और इसराएल के संतानों की समस्त मंडली को एकट्ठी
१० करियो। और लावियों को परमेश्वर के आगे लाना और इसराएल के संतान अपने
११ हाथ लावियों पर रक्खें। और हारून लावियों को इसराएल के संतानों में से हिलाने की भेंट के लिये परमेश्वर के आगे चढ़ावे जिसतें वे परमेश्वर की
१२ सेवा करें। और लावी अपने हाथ बैलों के सिरों पर रक्खें और तू एक को पाप की भेंट और दूसरे को बलिदान की भेंट के लिये जिसतें लावियों के लिये प्रायश्चित्त होवे परमेश्वर के लिये चढ़ाइयो॥

१३ फिर तू लावियों को हारून और उस के बेटों के आगे खड़ा कर दीजियो और उन्हें परमेश्वर के आगे हिलाने की भेंट
१४ के लिये चढ़ाइयो। और तू लावियों को इसराएल के संतानों में से अलग करियो
१५ और लावी मेरे होंगे। और उस के पीछे लावी मंडली के तंबू में सेवा के निमित्त पहुंचें और तू उन्हें पवित्र करियो और उन्हें हिलाने की भेंट के लिये चढ़ाइयो।
१६ क्योंकि वे सब के सब इसराएल के संतानों में से मुझे दिये गये इसराएल के संतानों के सब पहिलौठों की संती हर एक की संती जो पहिले उत्पन्न होता है मैं ने
१७ उन्हें ले लिया है। क्योंकि इसराएल के संतानों के सारे पहिलौठे क्या मनुष्य के क्या पशु के मेरे हैं जिस दिन मैं ने मिस्र देश के हर एक पहिलौठे को मारा मैं
१८ ने उन को अपने लिये पवित्र किया। और इसराएल के संतानों के सारे पहिलौठों की संती मैं ने लावियों को ले
१९ लिया है। और मैं ने इसराएल के संतानों में से सब लावियों को हारून और उस के बेटों को दिया जिसतें मंडली के तंबू में इसराएल के संतानों की संती सेवा करें और इसराएल के संतानों के लिये प्रायश्चित्त देवें जिसतें इसराएल के संतानों पर जब वे पवित्र स्थान के पास आवें मरी न पड़े॥

२० सो जैसा कि परमेश्वर ने लावियों के विषय में मूसा को आज्ञा किई थी मूसा और हारून और इसराएल के संतानों की सारी मंडली ने लावियों से वैसा ही किया इसराएल के संतानों ने उन से
२१ वैसा ही किया। और लावी पवित्र किये गये और उन्हों ने अपने कपड़े धोये और हारून ने उन्हें हिलाने की भेंट के लिये परमेश्वर के आगे चढ़ाया और हारून ने उन के लिये प्रायश्चित्त दिया जिसतें

२२ उन्हें पवित्र करे। और उस के पीछे लावी अपनी सेवा करने को हारून और उस के संतानों के आगे मंडली के तंबू में गये जैसा कि परमेश्वर ने लावियों के विषय में मूसा को आज्ञा किई थी उन्हों ने वैसा ही उन से किया॥

२३ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला।
२४ लावियों का व्यवहार यह रहे कि वे पचीस बरस से लेकर ऊपर लों मंडली
२५ के तंबू में जाके सेवा में रहें। और जब पचास बरस के हों तो सेवकाई से रहि
२६ जावें और फिर सेवा न करें। परन्तु मंडली के तंबू में अपने भाइयों के साथ रखवाली किया करें और सेवा न करें तू लावियों से रक्षा के विषय में योंहीं कीजियो॥

नवां पर्ब्ब।

१ और मिस्र के देश से निकलने के दूसरे बरस के पहिले मास में परमेश्वर ने सीना के अरण्य में मूसा से कहा।
२ कि इसराएल के संतान उस के ठहराये
३ हुए समय में फसह का पर्ब्ब करें। इस मास की चौदहवीं तिथि की सांझ के ठहराये हुए समय में उसे करियो उस की समस्त विधिन और उस के समस्त
४ आचारों के समान उसे करियो। सो मूसा ने इसराएल के संतानों को कहा
५ कि वे फसह का पर्ब्ब करें। और उन्हों ने पहिले मास की चौदहवीं तिथि की सांझ को सीना के अरण्य में फसह का पर्ब्ब किया जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी इसराएल के संतानों ने वैसा ही किया॥

६ और वहां कितने जन थे जो किसी मनुष्य की लोथ के कारण से अपवित्र हुए थे और वे उस दिन फसह का पर्ब्ब न कर सके और वे उस दिन मूसा और
७ हारून के पास आये। और उन मनुष्यों ने उस्से कहा कि हम मनुष्य की लोथ के कारण से अपवित्र हैं किस लिये हम रोके जावें कि इसराएल के संतानों में ठहराये हुए समय में परमेश्वर के लिये
८ भेंट न लावें। तब मूसा ने उन्हें कहा कि ठहर जाओ और मैं सुनूंगा कि परमेश्वर
९ तुम्हारे विषय में क्या आज्ञा करेगा। तब
१० परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि इसराएल के संतानों से कहके बोल कि यदि कोई तुम्में से अथवा तुम्हारे बंश में से किसी लोथ के कारण से अशुद्ध होवे अथवा यात्रा में दूर होवे तथापि वह परमेश्वर के लिये फसह का पर्ब्ब
११ करे। दूसरे मास की चौदहवीं तिथि को सांझ को वे उसे करें अखमीरी रोटी और कड़वी तरकारी के साथ उसे खावें।
१२ वे बिहान लों उस में से कुछ रख न छोड़ें और न उस की कोई हड्डी तोड़ी जावे फसह की समस्त बिधि के समान
१३ उसे करें। परन्तु जो मनुष्य शुद्ध है और यात्रा में नहीं है और यदि फसह का पर्ब्ब न करे तो वही प्राणी अपने लोगों में से काट डाला जायगा क्योंकि वह ठहराये हुए समय में परमेश्वर की भेंट न लाया वह जन अपना पाप भोगेगा।
१४ और यदि कोई परदेशी तुम्में टिके और फसह का पर्ब्ब परमेश्वर के लिये किया चाहे तो वह फसह के पर्ब्ब को उस बिधि और रीति के समान करे तुम्हारे लिये क्या परदेशी और क्या देशी की एक ही बिधि होगी॥

१५ और जिस दिन तंबू खड़ा किया गया मेघ ने साक्षी के तंबू को ढांप लिया और सांझ से लेके बिहान लों तंबू
१६ पर आग सी दिखाई देती थी। सो सदा ऐसा ही था कि मेघ उसे ढांपता था और रात को आग सी दिखाई देती
१७ थी। और जब तंबू पर से मेघ उठाया

आता था तब उस के पीछे इसराएल के संतान कूच करते थे और जहां मेघ आके ठहरता था तहां इसराएल के संतान १८ डेरा करते थे। इसराएल के संतान परमेश्वर की आज्ञा से कूच करते थे और परमेश्वर की आज्ञा से डेरा करते थे जब लों तंबू पर मेघ रहता था वे डेरे १९ में चैन करते थे। और जब बहुत दिन लों तंबू पर मेघ ठहरता था तब इसराएल के संतान परमेश्वर की आज्ञा मानते २० और कूच न करते थे। और ऐसे ही जब मेघ थोड़े दिन लों तंबू पर ठहरता था वे परमेश्वर की आज्ञा के समान अपने डेरे में रहते थे और परमेश्वर की २१ आज्ञा से कूच करते थे। और यों होता था कि जब सांझ से बिहान लों मेघ ठहरता था और बिहान को उठाया जाता था तब वे कूच करते थे चाहे दिन चाहे रात जब मेघ उठाया जाता था २२ वे कूच करते थे। अथवा दो दिन अथवा एक मास अथवा एक बरस मेघ तंबू पर रहता था तब इसराएल के संतान अपने डेरों में रहते थे और कूच न करते थे परन्तु जब वह ऊपर उठाया २३ जाता था तब वे कूच करते थे। परमेश्वर की आज्ञा से वे तंबू में चैन करते थे और परमेश्वर की आज्ञा से कूच करते थे परमेश्वर की आज्ञा जो मूसा के हस्ते होती थी वे परमेश्वर की आज्ञा को पालन करते थे॥

दसवां पर्ब्ब।

१ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। २ कि अपने लिये चांदी के दो नरसिंगे एक ही टुकड़े से बना कि मंडली के बुलाने के और छावनी के कूच करने के कार्य्य ३ के लिये होवें। और जब वे उन्हें फूंकें तब सारी मंडली तेरे पास मंडली के तंबू के द्वार पर आप को एकट्ठी करे। ४ और यदि एक ही फूंका जावे तब अध्यक्ष जो इसराएलियों के सहस्रों के प्रधान हैं ५ तेरे पास एकट्ठे होवें। और जब तुम छोटे बड़े शब्द से फूंको तो पूरब दिशा ६ की छावनी आगे बढ़े। और जब तुम दूसरी बेर छोटे बड़े शब्द से फूंको तो दक्खिन दिशा की छावनी कूच करे वे अपने कूच के लिये छोटे बड़े शब्द से ७ फूंकें। और जब कि मंडली को एकट्ठी करना होवे तब फूंको परन्तु छोटे बड़े ८ शब्द मत करो। और हारून याजक के बेटे नरसिंगे फूंका करें और तुम्हारे लिये तुम्हारे समस्त बंशों में यह बिधि सनातन लों रहे। और यदि तुम बैरियों से जो तुम्हें सताते हैं अपने देश से लड़ने को निकलो तो तुम नरसिंगों से छोटे बड़े शब्द फूंको और अपने ईश्वर परमेश्वर के आगे स्मरण किये जाओगे और १० तुम अपने शत्रुन से बच जाओगे। और अपने आनंद के दिन और अपने पर्ब्बों में और अपने मासों के आरंभों में अपने बलिदान की भेंटों और अपने कुशल के बलिदानों पर नरसिंगे फूंका जिसतें तुम्हारे कारण तुम्हारे ईश्वर के आगे तुम्हारे स्मरण के लिये होवें मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥

११ फिर यों हुआ कि दूसरे बरस के दूसरे मास की बीसवीं तिथि को मेघ साक्षी के तंबू से ऊपर उठाया गया। १२ तब इसराएल के संतानों ने सीना के अरण्य से कूच किया और फ़ारान के १३ अरण्य में मेघ ठहर गया। सो मूसा के द्वारा से परमेश्वर की आज्ञा के समान उन्हों ने पहिले यात्रा किई॥

१४ और पहिले यहूदाह के संतान की छावनी के झंडे उन के कटकों के समान चले और उस के कटक पर अम्मिनदब का बेटा नहसून था। और इशकार के १५

संतान की गोष्ठी की सेना पर सुग्र का १६ बेटा नतनिएल था। और जबुलून के संतान की गोष्ठी की सेना पर हैलून १७ का बेटा इलिआब था। और जब तंबू उतारा गया तब गैरसुन के बेटे और मिरारी के बेटों ने तंबू को उठाके यात्रा १८ किई। फिर रूबिन का झंडा उन की सेनों के समान आगे बढ़ा और शदेऊर का बेटा इलिसूर उस के कटक का १९ प्रधान था। और शमऊन के बंश की गोष्ठी की सेना पर सूरिशद्दी का बेटा २० सलूमिएल था। और जद के बंश की गोष्ठी की सेना पर दऊएल का बेटा २१ इलियासफ था। फिर किहातियों ने पवित्र स्थान उठाके यात्रा किई और उन के पहुंचने लों तंबू खड़ा किया जाता २२ था। और इफरायम की छावनी का झंडा उन की सेनों के समान आगे बढ़ा और अम्मिहूद का बेटा इलिसम: उस २३ के कटक का प्रधान था। और मुनस्सी के बंश की गोष्ठी की सेनों पर फिदा-२४ हसूर का बेटा जमलिएल था। और बिनयमीन के बंश की गोष्ठी की सेना पर जिद:ऊनी का बेटा अबिदान था। २५ और सब छावनी के पीछे दान के संतान की छावनी का झंडा उन की सेनों के समान आगे बढ़ा और उन की सेना पर अम्मिसद्दाय का बेटा अखिअजर था। २६ और यसर के बंश की गोष्ठी की सेना पर अकरन का बेटा फजिइएल था। २७ और नफताली के बंश की गोष्ठी की सेना पर ऐनान का बेटा अखिरअ: था। २८ इसराएल के संतान की यात्रा जब वे आगे बढ़ते थे अपनी सेनाओं के समान ऐसी ही थी॥

२९ तब मूसा ने मिदयानी रऊएल के बेटे हूबाब को जो मूसा का ससुर था कहा कि हम उस स्थान को जाते हैं जिस के विषय में परमेश्वर ने कहा है कि मैं तुम्हें देऊंगा सो तू हमारे साथ आ और हम तुझ से भलाई करेंगे क्योंकि परमेश्वर ने इसराएल के विषय में अच्छा कहा है। ३० और उस ने उसे कहा कि मैं न जाऊंगा परन्तु मैं अपने देश को और अपने कुटुम्बों में जाऊंगा। ३१ तब उस ने कहा कि हमें न छोड़िये क्योंकि आप जानते हैं कि अरण्य में हमें क्योंकर डेरा किया चाहिये सो आप हमारी आंखों की संती होंगे। ३२ और यों होगा कि यदि आप हमारे साथ चलें तो जो भलाई परमेश्वर हम से करेगा सो हम आप से करेंगे॥

३३ फिर उन्हों ने परमेश्वर के पहाड़ से तीन दिन की यात्रा किई और परमेश्वर की बाचा की मंजूषा उन तीन दिन के मार्ग से आगे गई जिसतें उन के लिये बिश्राम का स्थान ढूंढे। ३४ और जब वे छावनी से बाहर जाते थे तब परमेश्वर का मेघ दिन को उन के ऊपर ठहरता था॥

३५ और जब मंजूषा आगे बढ़ती थी तब यों होता था कि मूसा कहता था कि उठ हे परमेश्वर और तेरे शत्रु छिन्न भिन्न होवें और जो तुझ से बैर रखते हैं सो तेरे आगे से भागें और जब वह ठहरती थी तब वह कहता था कि हे परमेश्वर सहस्रों इसराएलियों में फिर आ॥

ग्यारहवां पर्व्व।

१ और जब लोग कुड़कुड़ाने लगे तो परमेश्वर के सुन्ने में बुरा लगा और जब परमेश्वर ने सुना तो उस का क्रोध भड़का और परमेश्वर की आग उन में फूट निकली और छावनी के एक अंत को भस्म किया। २ तब लोग मूसा के पास चिल्लाये और जब मूसा ने परमेश्वर से प्रार्थना किई तब आग बुझ गई। ३ और इस लिये कि परमेश्वर की आग ने उन

में ज्वलन किया उस ने उस स्थान का नाम ज्वलन रक्खा ॥

४ और मिली जुली मंडली जो उन में थी कुइच्छा करने लगी और इसराएल के संतान भी बिलाप करके कहने लगे कि कौन हमें मांस का भोजन देगा। ५ हमें वह मछली की सुधि आती है जो हम सेंत से मिस्र में खाते थे खीरे और खरबूजे और गंदना और पियाज और ६ लहसुन। परन्तु अब तो हमारा प्राण सूख गया यहां तो हम मन्न को छोड़ ७ कुछ भी नहीं देखते। और मन्न धनिये को नाईं और उस का रंग मोती का ८ सा था। लोग इधर उधर जाके उसे एकट्ठा करते थे और चक्की में पीसते थे अथवा उखली में कूटते थे और फुलका बनाके तवे पर पकाते थे और उस का ९ स्वाद टटके तेल की नाईं था। और रात को जब छावनी पर ओस पड़ती थी तब मन्न उस पर पड़ता था ॥

१० तब मूसा ने सुना कि लोगों के हर एक घराने का हर एक मनुष्य अपने अपने तंबू के द्वार पर बिलाप कर रहा है तो परमेश्वर का क्रोध अत्यंत भड़का ११ और मूसा भी उदास हुआ। तब मूसा ने परमेश्वर से कहा कि तू अपने दास को क्यों दुःख दे रहा है और तेरी दृष्टि में मैं ने क्यों नहीं अनुग्रह पाया कि तू ने इन सब लोगों का बोझ मुझ पर १२ डाला है। क्या मैं ने इन सारे लोगों को गर्भ में रक्खा क्या मैं ने उन्हें जना है कि तू मुझे कहता है कि उन्हें उस देश में जिस की तू ने उन के पितरों से किरिया खाई है अपनी गोद में ले जिस रीति से पिता दूधपीवक बालक १३ को गोद में लेता है। मैं कहां से मांस लाऊं कि इन सब लोगों को देऊं क्योंकि वे मुझ रो रोके कहते हैं कि हमें खाने को मांस दे। १४ मैं अकेला इन सब लोगों का भार उठा नहीं सक्ता क्योंकि मेरे लिये बहुत भारी है। १५ और यदि तू मुझ से यों हीं करता है तो मुझे मारके अलग कर और यदि मैं तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाये हूं तो मैं अपनी बिपत्ति न देखूं ॥

१६ तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि इसराएल के प्राचीनों में से सत्तर पुरुष जिन्हें तू प्राचीन और प्रधान जानता है मेरे लिये बटोर और उन्हें मंडली के तंबू पास ला और वे तेरे संग वहां खड़े रहें। १७ और मैं उतरूंगा और वहां तेरे साथ बातें करूंगा और मैं उस आत्मा में से जो तुझ पर है लेकर उन पर डालूंगा कि तेरे साथ लोगों का बोझ उठावें जिसतें तू अकेला उसे न उठावे। १८ और लोगों से कह कि कल आप को पवित्र करो और तुम मांस खाओगे क्योंकि रो रोके तुम्हारा यह कहना परमेश्वर के कानों में पहुंचा कि कौन हमें मांस खाने को देगा क्योंकि हम तो मिस्र ही में भले थे सो परमेश्वर तुम्हें मांस देगा और तुम खाओगे। १९ तुम एक ही दिन न खाओगे और न दो दिन और न पांच दिन न दस दिन न २० बीस दिन। परन्तु एक मास भर खाओगे जब लों कि वह तुम्हारे नथुनों से न निकले और तुम उस्से घिन न करो क्योंकि तुम ने ईश्वर की निन्दा किई जो तुम्हों में है और उस के आगे यों कहके रोये कि हम मिस्र से क्यों बाहर आये ॥

२१ तब मूसा ने कहा कि ये लोग जिन में मैं हूं छः लाख पदायत हैं और तू ने कहा है कि मैं उन्हें इतना मांस देऊंगा कि वे एक मास भर खावें। २२ क्या झुंड और लेहंड़े उन्हें तृप्त करने के लिये बधन किये जायेंगे अथवा समुद्र की

सारी मछलियां उन के लिये एकट्ठी किई
२३ जायेंगी जिसतें वे तृप्त होवें । तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि क्या परमेश्वर का हाथ घट गया अब तू देखेगा कि मैं बचन का पूरा हूं कि नहीं ॥

२४ तब मूसा ने बाहर जाके परमेश्वर की बातें लोगों से कहीं और लोगों के प्राचीनों में से सत्तर मनुष्य एकट्ठे किये और उन्हें तंबू के आसपास खड़े किये ।
२५ तब परमेश्वर मेघ में उतरा और उस्से बोला और उस आत्मा में से जो उस पर था लेके उन सत्तर प्राचीनों को दिया और जब आत्मा उन पर ठहरा तब वे भविष्य कहने लगे और न थमे ।
२६ परन्तु दो मनुष्य छावनी में रह गये थे जिन में से एक का नाम इल्दाद और दूसरे का मेदाद सो आत्मा उन पर ठहरा और वे उन में लिखे गये थे परन्तु तंबू के पास बाहर नहीं गये और वे
२७ तंबू ही में भविष्य कहने लगे । तब एक तरुण ने दौड़के मूसा को संदेश दिया कि इल्दाद और मेदाद तंबू में
२८ भविष्य कहते हैं । सो मूसा के सेवक नून के बेटे यहूशूअ ने जो उस के तरुणों से था मूसा से कहा कि हे मेरे
२९ स्वामी मूसा उन्हें बरज दे । तब मूसा ने उसे कहा कि क्या तू मेरे कारण डाह रखता है हाय कि परमेश्वर के सारे लोग भविष्यवक्ता होते और परमेश्वर अपना आत्मा उन सभों पर डालता ।
३० और मूसा और इसराएल के प्राचीन छावनी में गये ॥

३१ तब परमेश्वर की ओर से एक पवन निकली और बटेर को समुद्र से लाई और छावनी पर ऐसा गिराया जैसा कि एक दिन के मार्ग इधर उधर छावनी की चारों ओर और जैसा कि दो हाथ
३२ भूमि के ऊपर । और लोग उस दिन और रात भर और उस के दूसरे दिन भी खड़े रहे और बटेर बटोरे जिस ने थोड़े से थोड़ा बटोरा उस ने दस होमर के अटकल बटोरा और उन्हों ने अपने लिये तंबू के आसपास फैलाये । और जब
३३ लों उन के दांत तले मांस था चाबने से पहिले परमेश्वर का क्रोध लोगों पर भड़का और परमेश्वर ने उन लोगों को बड़ी मरी से मारा । और उस ने उस
३४ स्थान का नाम कुइच्छा की समाधि रक्खा क्योंकि उन्हों ने उन लोगों को जिन्हों ने कुइच्छा किई थी वहीं गाड़ा ॥

३५ फिर उन लोगों ने कुइच्छा की समाधि से हसीरात को यात्रा किई सो वे हसीरात में रहे ॥

बारहवां पर्ब्ब ।

१ तब मूसा की उस हबशी स्त्री से ब्याह करने के कारण मिरयम और हारून ने उस पर अपवाद किया क्योंकि उस ने एक हबशी स्त्री से ब्याह किया था ।
२ और बोले क्या परमेश्वर ने केवल मूसा ही से बातें किई हैं क्या उस ने हम से भी बातें न किईं और परमेश्वर ने सुना ।
३ और मूसा समस्त लोगों से जो पृथिवी
४ पर थे अधिक कोमल था । सो परमेश्वर ने तत्काल मूसा और हारून और मिरयम को कहा कि तुम तीनों मंडली के तंबू
५ पास आओ सो वे तीनों आये । तब परमेश्वर मेघ के खंभे में उतरा और तंबू के द्वार पर खड़ा हुआ और हारून और मिरयम को बुलाया तब वे दोनों
६ गये । तब उस ने कहा कि मेरी बातें सुनो यदि तुम्में कोई भविष्यद्वक्ता होवे तो मैं परमेश्वर आप को दर्शन में उस पर प्रगट करूंगा और उस्से स्वप्न में बातें करूंगा । मेरा दास मूसा ऐसा नहीं वह मेरे सारे घर में बिश्वासी है । मैं उस्से आम्ने साम्ने अर्थात् प्रत्यक्ष बातें करूंगा

और गुप्त बातों से नहीं और वह परमेश्वर के आकार को देखेगा सो तुम मेरे सेवक मूसा पर अपवाद करते हुए क्यों न डरे ।
९ और परमेश्वर का क्रोध उन पर भड़का
१० और चला गया । तब मेघ तंबू पर से जाता रहा और क्या देखता है कि मिरयम हिम की नाईं कोढ़ी हो गई और हारून ने मिरयम की ओर दृष्टि किई
११ और देखो वह कोढ़ी थी । तब हारून ने मूसा से कहा कि हे मेरे स्वामी मैं तेरी बिनती करता हूं यह पाप हम पर मत लगा इस में हम ने मूर्खता किई
१२ और पापी हुए । वह उस मृतक के समान न हो जिस का आधा मांस अपनी माता के गर्भ से उत्पन्न होते ही गल
१३ जावे । तब मूसा ने परमेश्वर के आगे बिनती करके कहा कि हे सर्वशक्तिमान मैं तेरी बिनती करता हूं अब उसे चंगा
१४ कर । तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि यदि उस का पिता उस के मुंह पर थूकता तो क्या वह सात दिन लों लज्जित न रहती सो सात दिन लों उसे छावनी से बाहर बंद कर और उस के पीछे उसे
१५ मिला ले । सो मिरयम छावनी के बाहर सात दिन लों बंद हुई और जब लों मिरयम बाहर रही लोगों ने यात्रा न किई ॥

१६ और उस के पीछे लोगों ने हसीरात से यात्रा किई और फारान के अरण्य में डेरा किया ॥

तेरहवां पर्ब्ब ।

१ फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा ।
२ कि लोगों को भेज जिसतें वे कनआन के देश का भेद लेवें जो मैं इसराएल के संतानों को देता हूं एक एक मनुष्य उन के पितरों की हर एक गोष्ठी में से भेजो
३ उन में से हर एक प्रधान होवे । और परमेश्वर की आज्ञा से मूसा ने फारान के अरण्य से उन्हें भेजा वे सारे मनुष्य इसराएल के संतानों के प्रधान थे । और
४ उन के ये नाम रूबिन की गोष्ठी में से जक्कूर
५ का बेटा शम्मूअ । समऊन की गोष्ठी में से
६ हूरी का बेटा सफत । यहूदाह की गोष्ठी
७ में से यफुन्नः का बेटा कालिब । इशकार की गोष्ठी में से यूसुफ का बेटा इजाल ।
८ इफरायम की गोष्ठी में से नून का बेटा
९ हूसीअ । बिनयमीन की गोष्ठी में से रफू
१० का बेटा फिलती । जबुलून की गोष्ठी
११ में से सूदी का बेटा जदिएल । यूसुफ की गोष्ठी में से अर्थात् मुनस्सी की गोष्ठी
१२ में से सूसी का बेटा जदी । दान की गोष्ठी में से जमली का बेटा अमिएल ।
१३ यसर की गोष्ठी में से मीकाएल का बेटा
१४ शितूर । नफताली की गोष्ठी में से वफसी
१५ का बेटा नखबी । जद की गोष्ठी में से
१६ माकी का बेटा जियूएल । उन मनुष्यों के नाम जिन्हें मूसा ने देश का भेद लेने के लिये भेजा ये हैं और मूसा ने नून के बेटे हूसीअ का नाम यहूशूअ रक्खा ॥

१७ और मूसा ने उन्हें भेजा कि कनआन के देश का भेद लेवें और उन्हें कहा कि तुम दक्षिण दिशा से चढ़ जाओ और
१८ पहाड़ के ऊपर चले जाओ । और देश को और उन लोगों को जो उस में बसते हैं देखियो कि वे कैसे हैं प्रबल अथवा
१९ निर्बल थोड़े हैं अथवा बहुत । और वह देश जिस में वे रहते हैं कैसा है भला अथवा बुरा और कैसे कैसे नगर जिन में वे बसते हैं तंबुओं में हैं अथवा गढ़ों
२० में । और देश कैसा है फलवंत है अथवा निष्फल उस में पेड़ हैं अथवा नहीं और तुम हियाव करो और उस देश का कुछ फल ले आओ और वह समय दाख के
२१ पहिले फलों का था । सो वे चढ़ गये और भूमि के भेद को सीन के अरण्य में से रहूब लों जो हमात के मार्ग में है

२२ लिया । और वे दक्खिन की ओर से चढ़े और हबरून को आये जहां अनाक के वंश अखिमान और सीसी और तलमी थे और मिस्र का सुअन हबरून से सात बरस आगे बना था ॥

२३ सो वे इसकाल की नाली में आये और वहां से उन्हों ने दाख का एक गुच्छा काटा और उसे एक लट्ठ पर रखकर दो मनुष्यों ने उठाया और कुछ अनार और

२४ गूलर भी लिये । उस स्थान का नाम उस गुच्छे के लिये जिसे इसराएल के संतान वहां से काट लाये थे नहलइस-

२५ काल रक्खा । सो वे चालीस दिन के पीछे देश का भेद लेके फिर आये ॥

२६ और फिरके मूसा और हारून और इसराएल के संतानों की सारी मंडली के पास फारान के अरण्य में कादिस में आये और उन्हें और सारी मंडली के आगे संदेश दिया और उस भूमि का फल उन्हें

२७ दिखाया । और उस्से यह कहके बर्णन किया कि हम उस देश में जिधर तू ने हमें भेजा था गये और उस में सचमुच दूध और मधु बहता है और यह वहां

२८ का फल है । तथापि उस देश के बासी बलवंत हैं और उन के नगरों की भीतें अति ऊंची हैं और हम ने अनाक के

२९ संतान को भी वहां देखा । उस भूमि में दक्खिन की ओर अमालीक बसते हैं और हित्ती और यबूसी और अमूरी पहाड़ों पर रहते हैं और समुद्र के तीर और यरदन

३० के तीर पर कनआनी रहते हैं । तब कालिब ने मूसा के आगे लोगों को थांभा करके कहा कि आओ एक साथ चढ़ जावें और उसे बश में करें क्योंकि उस पर प्रबल होने की हम में शक्ति है ।

३१ परन्तु उस के संगियों ने कहा कि हम उन लोगों का साम्ना करने में दुर्बल हैं क्योंकि वे हम से अधिक बलवंत हैं

३२ और वे इसराएल के संतानों के पास उस भूमि का जिस का भेद लेने को गये थे बुरा संदेश लाये और बोले कि वह भूमि जिस का भेद लेने हम गये थे ऐसी भूमि है जो अपने बासियों को खा जाती है और सब लोग जिन्हें हम ने उस में देखा

३३ है बड़े डील के हैं । और हम ने वहां दानव अनाक के बेटे दानवों को देखा और हम अपनी और उन की दृष्टि में फनगों की नाईं थे ॥

चौदहवां पर्व्व ।

१ तब सारी मंडली चिल्लाके रोई और

२ लोग उस रात भर रोया किये । फिर सारे इसराएल के संतान मूसा और हारून पर कुड़कुड़ाये और समस्त मंडली ने उन्हें कहा हाय कि हम मिस्र में मर जाते और हाय कि हम इसी अरण्य में नष्ट

३ होते । हमें किस लिये परमेश्वर इस देश में लाया कि खड्ग से मारे जावें हमारी स्त्रियां और हमारे बालक पकड़े जावें क्या हमारे लिये अच्छा नहीं कि मिस्र

४ को फिर जावें । तब उन्हों ने आपुस में कहा कि आओ एक को अपना प्रधान बनावें और मिस्र को फिर चलें ॥

५ तब मूसा और हारून इसराएल के संतानों की सारी मंडली के साम्ने औंधे

६ मुंह गिरे । और नून के बेटे यहूशूअ और यफुन्नः के बेटे कालिब ने जो उन में थे जो देश का भेद लेने गये थे अपने कपड़े

७ फाड़े । और उन्हों ने इसराएल के संतानों की सारी मंडली से कहा कि जिस देश का भेद लेने को हम आरंपार गये अति

८ अच्छी भूमि है । यदि ईश्वर हम से प्रसन्न होवे तो हमें उस देश में ले जायगा और वह भूमि जिस पर दूध और मधु

९ बह रहा है हमें देगा । अब तुम केवल परमेश्वर से छल न करो और उस देश के लोगों से मत डरो क्योंकि वे तो

हमारे लिये भोजन हैं उन के आड़ उन से जा चुके हैं और परमेश्वर हमारे साथ है उन को भय मत करो ॥

१० परन्तु सारी मंडली ने कहा कि उन पर पत्थरवाह करो तब मंडली के तंबू में सारे इसराएल के संतानों के साम्ने परमेश्वर की महिमा प्रगट हुई ॥

११ और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि ये लोग कब लों मुझे खिझावेंगे और उन आश्चर्य्यों के कारण जो मैं ने उन में दिखाये हैं वे कब लों मुझ पर १२ विश्वास न करेंगे । मैं उन्हें मरी से मारूंगा और उन्हें अधिकार रहित करूंगा और तुझे इन से एक बड़ी और बलवंत १३ जाति बनाऊंगा । तब मूसा ने परमेश्वर से कहा कि मिस्र के लोग सुनेंगे क्योंकि तू अपनी सामर्थ्य से इन लोगों को १४ उन के मध्य से निकाल लाया । और वे इस देश के बासी से कहेंगे क्योंकि उन्हों ने तो सुना है कि तू परमेश्वर इन लोगों के बीच है कि तू हे परमेश्वर आम्ने साम्ने देखा जाता है और कि तेरा मेघ उन पर रहता है और कि तू दिन को मेघ के खंभे में और रात को आग के खंभे में इन के आगे आगे चलता है । १५ सो यदि तू इन लोगों को एक मनुष्य के समान मार डाले तब जातिगण जिन्हों ने तेरी कीर्त्ति सुनी है कहेंगे । १६ इस कारण कि परमेश्वर इन लोगों को उस देश में पहुंचा न सका जिस के विषय में उन से किरिया खाई थी इस लिये उस ने उन्हें अरण्य में घात किया । सो मैं तेरी बिनती करता हूं हे मेरे प्रभु अपनी सामर्थ्य को प्रगट कर जैसा तू १८ ने कहा है । कि परमेश्वर बड़ा धीर और महा दयाल है पाप और अपराध को क्षमा करता है और किसी भांति से न छोड़ेगा पितरों के पापों को उन के लड़कों से जो उन की तीसरी और चौथी पीढ़ी है प्रतिफल देता है । अब तू १९ अपनी दया की अधिकाई से इन लोगों का पाप क्षमा कर जैसा तू मिस्र से लेके यहां लों क्षमा करता आया है ॥

तब परमेश्वर ने कहा कि मैं ने तेरे २० कहे के समान क्षमा किया है । परन्तु २१ अपने जीवन सों समस्त पृथिवी परमेश्वर की महिमा से भर जायगी । क्योंकि उन २२ सब लोगों ने जिन्हों ने मेरा विभव और मेरे अचंभे जो मैं ने मिस्र में और अरण्य में प्रगट किया देखा अब लों मुझे दस बार परखा और मेरा शब्द न माना । सो वे उस देश को जिस के २३ कारण मैं ने उन के पितरों से किरिया खाई थी न देखेंगे और जितनों ने मुझे खिझाया उन में से कोई उसे न देखेगा । परन्तु मेरा दास कालिब क्योंकि और ही २४ आत्मा उस के साथ था और उस ने मेरी बात पूरी मानी है सो मैं उसे उस देश में जहां वह गया था ले जाऊंगा और वे जो उस के वंश से होंगे उस के अधिकारी बनेंगे । अब अमालीकी और कन- २५ आनी तराई में बास करते थे सो कल फिरो और लाल समुद्र के मार्ग से अरण्य में जाओ ॥

फिर परमेश्वर मूसा और हारून से २६ कहके बोला । कि मैं कब लों इस दुष्ट २७ मंडली की कुड़कुड़ाहट सहूं इसराएल के संतान जो मुझ पर कुड़कुड़ाते हैं मैं ने उन का कुड़कुड़ाना सुना । उन से कह २८ कि परमेश्वर कहता है मुझे अपने जीवन सों जैसा तुम ने मेरे सुन्ने में कहा है मैं तुम से वैसा ही करूंगा । तुम्हारी और २९ उन सभों की लोथ तुम्हारी समस्त गिन- तियों के समान बीस बरस से लेके ऊपर लों जो मुझ पर कुड़कुड़ाये इस अरण्य में गिरेंगी । यफुन्नः के बेटे कालिब और ३०

नून के बेटे यहूशूत्र को छोड़ तुम निःसंदेह उस देश में न पहुंचोगे जिस में मैं ने तुम्हें बसाने की किरिया खाई है कि ३१ तुम्हें वहां बसाऊंगा। परन्तु तुम्हारे बालकों को जिन के विषय में तुम ने कहा है कि वे लुट जायेंगे मैं उन्हें पहुंचाऊंगा और वे उस देश को जानेंगे जिसे ३२ तुम ने तुच्छ जाना है। पर तुम्हारी लोथें ३३ इस ही बन में गिरेंगी। और तुम्हारे लड़के उस अरण्य में चालीस बरस लों भ्रमते फिरेंगे और तुम्हारे व्यभिचारों को उठाया करेंगे जब लों कि तुम्हारी लोथें ३४ इस बन में छीन न होवें। उन दिनों की गिनती के समान जिन में तुम उस भूमि का भेद लेते थे जो चालीस दिन हैं दिन पीछे एक बरस सो तुम चालीस बरस लों अपने पाप को भोगा करोगे ३५ तब तुम मेरे बिरोध को जानोगे। मैं परमेश्वर ने कहा है और इस दुष्ट मंडली के लिये जो मेरे बिरुद्ध में एकट्ठी है निश्चय पूरा करूंगा इसी बन में नष्ट किई जायगी और यहीं मरेगी॥

३६ और जिन मनुष्यों को मूसा ने देश के भेद लेने को भेजा था जिन्हों ने उस देश पर बात बना बनाके कहा है और सारी मंडलियों को उस पर कुड़कुड़ाया ३७ है। हां वे मनुष्य जो उस देश का बुरा संदेश लाये हैं परमेश्वर के आगे मरी से ३८ मरेंगे। पर नून का बेटा यहूशूत्र और यफुन्नः का बेटा कालिब उन में से जो देश का भेद लेने गये थे जीते रहेंगे॥

३९ और मूसा ने इन बातों को इसराएल के समस्त संतानों को सुनाया और लोग ४० बहुत बिलाप करने लगे। और बिहान को तड़के वे उठे और यह कहते हुए पहाड़ पर चढ़ गये देख हम उस स्थान पर चढ़ जायेंगे जिस की परमेश्वर ने आज्ञा दिई है क्योंकि हम ने पाप किया है। तब मूसा ने कहा अब तुम लोग ४१ क्यों परमेश्वर की आज्ञा को भंग करते हो यह शुभ न होगा। ऊपर मत जाओ ४२ क्योंकि परमेश्वर तुम्हों में नहीं जिसतें तुम अपने बैरियों के आगे मारे न पड़ो। क्योंकि अमालीकी और कनआनी ४३ वहां तुम्हारे आगे हैं और तुम तलवार से छिन्न जाओगे क्योंकि तुम परमेश्वर से फिर गये हो सो परमेश्वर तुम्हारे साथ न होगा। परन्तु वे ढिठाई से ४४ पहाड़ की चोटी पर चढ़ गये तथापि परमेश्वर की बाचा की मंजूषा और मूसा छावनी के बाहर न गये॥

तब अमालीकी और कनआनी जो ४५ उस पहाड़ पर रहते थे उतरे और उन्हें हुरमः लों मारते गये॥

पंदरहवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। १ कि इसराएल के संतानों को कहके २ बोल कि जब तुम अपने निवास के देश में जो मैं तुम्हें देता हूं पहुंचो। और ३ आग से परमेश्वर के लिये बलिदान की भेंट चढ़ाओ अथवा मनौती पूरी करने का बलिदान अथवा बांछित भेंट अथवा ठहराये हुए पर्ब्ब की भेंट परमेश्वर के लिये आनन्द का सुगंध लेहंड़े अथवा झुंड से चढ़ाओ। तब वह जो अपनी ४ भेंट परमेश्वर के लिये चढ़ाता है भोजन की भेंट पिसान का दसवां भाग हीन के चौथे भाग तेल से मिला हुआ भेंट का बलिदान लावे। एक मेम्ना के लिये ५ बलिदान की भेंट अथवा बलिदान तपावन के लिये हीन का दाखरस सिद्ध कीजियो। अथवा मेंढे के लिये भोजन की ६ भेंट को दो दसवां भाग पिसान हीन के तीसरे भाग तेल से मिला हुआ सिद्ध कीजियो। और तपावन के लिये हीन ७ के तीसरे भाग दाखरस परमेश्वर के

८ सुगंध के लिये चढ़ाइयो। और जब तू बलिदान की भेंट के लिये अथवा मनौती पूरी करने को बलिदान के लिये अथवा कुशल की भेंट परमेश्वर के लिये बैल
९ सिद्ध करे। तब वह बैल के साथ भोजन की भेंट तीन दसवां भाग पिसान हीन के आधे भाग तेल से मिला हुआ लावे
१० और तपावन के लिये दाखरस हीन का आधा भाग आग से परमेश्वर के आनन्द
११ के सुगंध के लिये लाइयो। एक एक बैल अथवा एक एक मेंढ़ा अथवा एक एक मेम्ना अथवा एक एक बकरी का
१२ मेम्ना यों हीं किया जावे। गिनती के समान सिद्ध कीजियो हर एक उन की गिनती
१३ के समान ऐसा ही कीजियो। सब जिन का जन्म देश में हुआ आग से परमेश्वर के आनन्द के सुगंध के लिये भेंट चढ़ावें तो उसी रीति से इन बातों को मानें।
१४ और यदि परदेशी तुम्में बास करे अथवा वह जो तुम्हारी पीढ़ियों से होवे परमेश्वर के आगे सुगंध के लिये आग से भेंट चढ़ावे तो जिस रीति से तुम करते
१५ हो वैसा वह भी करे। मंडली के लिये और उस परदेशी के लिये जो तुम्में बास करता है तुम्हारी पीढ़ियों में सदा एक ही बिधि होवे परमेश्वर के आगे जैसे तुम वैसे परदेशी भी हैं। तुम्हारे और परदेशियों के लिये जो तुम्में रहते हैं एक ही व्यवस्था और एक ही रीति होवे॥

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला।
१८ कि इसराएल के संतानों से कहके बोल कि जब तुम उस देश में पहुंचो जहां मैं तुम्हें ले जाता हूं। तब ऐसा होगा कि जब तुम उस भूमि पर की रोटी खाओ तो परमेश्वर के लिये उठाने की भेंट चढ़ाइयो। तुम अपने पहिले गूंदे हुए आटे से एक फुलका उठाने की भेंट के लिये लेओ जैसी खलिहान की भेंट को

उठाते हो वैसा ही उसे उठाइयो। तुम २१ अपने गूंदे हुए पिसान से पहिले अपनी पीढ़ियों में परमेश्वर के लिये उठाने की भेंट चढ़ाइयो॥

और यदि तुम ने चूक किया हो और २२ इन सब आज्ञाओं को जो परमेश्वर ने मूसा से कहीं पालन न करो। जिस दिन २३ से परमेश्वर ने तुम्हें आज्ञा किई है और अब से आगे लों अपनी पीढ़ियों में समस्त आज्ञा जिन्हें परमेश्वर ने मूसा के हाथ से तुम्हें दिई है। तब यों होगा कि यदि २४ कुछ अज्ञानता हो जाय और मंडली न जाने तब समस्त मंडली बलिदान की भेंट के लिये परमेश्वर के सुगंध के लिये एक बछड़ा चढ़ावे उस के भोजन की और उस के तपावन की भेंट के साथ रीति के समान और अपराध की भेंट के लिये बकरी का एक मेम्ना। और याजक २५ इसराएल के संतानों की सारी मंडली के लिये प्रायश्चित्त देवे और वह उन्हें क्षमा किया जायगा क्योंकि वह अज्ञानता है और वे परमेश्वर के लिये अपनी भेंट आग के बलिदान से लावें और अपनी अज्ञानता के लिये अपने पाप की भेंट परमेश्वर के आगे लावें। और इसराएल २६ के संतानों की सारी मंडली और परदेशी जो उन में रहते हैं क्षमा किये जावेंगे इस लिये कि सारे लोग अज्ञानता में थे॥

और यदि कोई प्राणी अज्ञानता से पाप २७ करे तो वह पाप की भेंट के लिये पहिले बरस की एक बकरी लावे। और उस प्राणी २८ के लिये जो अज्ञानता से परमेश्वर के आगे पाप करे उस के लिये याजक प्रायश्चित्त करे और वह उसे क्षमा किया जायगा। तुम अज्ञानता के अपराध के कारण उस २९ के लिये जो इसराएल के संतानों में उत्पन्न हुआ हो और परदेशी के लिये जो उन में रहता हो एक ही व्यवस्था रक्खो॥

३० परन्तु जो प्राणी ढिठाई करे चाहे देशी चाहे परदेशी होवे वही परमेश्वर की निन्दा करता है और वही प्राणी ३१ अपने लोगों में से कट जावेगा। क्योंकि उस ने परमेश्वर के बचन की निन्दा किई और उस की आज्ञा को भंग किया वही प्राणी सर्वथा कट जायगा उस का पाप उसी पर होगा॥

३२ और जब इसराएल के संतान बन में थे तब उन्हों ने एक मनुष्य को बिश्राम ३३ के दिन लकड़ियां बटोरते पाया। और जिन्हों ने उसे लकड़ियां एकट्ठी करते पाया वे उसे मूसा और हारून और सारी ३४ मंडली के पास लाये। तब उन्हों ने उसे बंद रक्खा इस कारण कि प्रगट न हुआ था कि उस्से क्या किया जावे। ३५ तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि यह मनुष्य निश्चय मारा जायगा सारी मंडली छावनी के बाहर उस पर पत्थरवाह करे। ३६ सो जैसा परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी सारी मंडली उसे तंबू के बाहर ले गई और उन्हों ने उस पर पत्थरवाह करके मार डाला॥

३७ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। ३८ कि इसराएल के संतानों से कह और उन्हें आज्ञा कर कि वे अपनी पीढ़ियों में अपने बस्त्रों के खूंट की झालर पर ३९ नीली चोबली लगावें। यह तुम्हारे लिये झालर होगी जिसतें तुम उसे देखके परमेश्वर की सारी आज्ञाओं को स्मरण करो और उन्हें पालन करो और जिसतें तुम अपने मन का और अपनी आंखों का पीछा न करो जैसे तुम आगे ब्यभि- ४० चार करते थे। जिसतें तुम मेरी सब आज्ञाओं को स्मरण करो और उन का पालन करो और अपने ईश्वर के लिये ४१ पवित्र होओ। मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं जो तुम्हें मिस्र की भूमि से बाहर लाया कि तुम्हारा ईश्वर होऊं मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥

सोलहवां पर्ब्ब

१ और लावी के बेटे किहात के बेटे इसहार के बेटे कुरह और इलिआब के बेटे दातन और अबिराम और रूबिन के बेटे फलत के बेटे ओन ने लोगों को २ गांठा। और वे इसराएल के संतानों में से अढ़ाई सौ सभा के प्रधान जो मंडली में नामी और लोगों में कीर्त्तिमान थे उन्हें लेके मूसा के सन्मुख खड़े हुए। ३ तब मूसा और हारून के बिरोध में एकट्ठे होके उन्हें बोले कि तुम आप को बहुत बढ़ाते हो क्योंकि समस्त मंडली में तो हर एक मनुष्य पवित्र है और परमेश्वर उन में है सो किस लिये परमेश्वर की मंडली से आप को बढ़ाते हो॥

४ तब मूसा यह सुनके औंधे मुंह गिरा। ५ और उस ने कुरह और उस की सारी जथा को कहा कि कलही परमेश्वर दिखावेगा कि कौन उस का है और कौन पवित्र है और अपने पास पहुंचावेगा अर्थात् उसी को जिसे उस ने चुन लिया ६ है अपने पास पहुंचावेगा। सो हे कुरह और उस की सारी जथा तुम यह करो अपनी अपनी धूपावरी लेओ। ७ और उन में आग रक्खो और कल परमेश्वर के आगे उन में धूप जलाओ और यों होगा कि जिस मनुष्य को परमेश्वर चुनता है वही पवित्र होगा। हे लावी के बेटो तुम आप को बढ़ाते ८ हो। फिर मूसा ने कुरह से कहा कि ९ हे लावी के बेटो सुन रक्खो। तुम क्या उसे छोटा जानते हो कि इसराएल के ईश्वर ने तुम्हें इसराएल की मंडली में से अलग किया कि अपने पास लाके परमेश्वर के तंबू की सेवा करावे और मंडली की सेवा के लिये खड़े रहो।

१० और उस ने तुझे और तेरे समस्त भाई लावी के बेटे तेरे संग अपने पास किया ११ अब तुम याजकता भी ढूंढ़ते हो। इस कारण तू और तेरी सारी जथा परमेश्वर के बिरोध पर एकट्ठी हुई है और हारून वह कौन है जो तुम उस के बिरोध में कुड़कुड़ाते हो॥

१२ तब मूसा ने इलिअब के बेटे दातन और अबिराम को बुलवाया और वे बोले १३ कि हम न आवेंगे। क्या यह छोटी बात है कि तू हमें उस भूमि में से जिस में दूध और मधु बहता है चढ़ा लाया कि हमें अरण्य में नाश करे और अब आप को हमारे ऊपर सर्ब्बथा अध्यक्ष १४ बनाता है। और तू हमें ऐसी भूमि में न लाया जहां दूध और मधु बहे तू ने हमें खेत और दाख की बारी का अधिकारी नहीं कर दिया क्या तू इन लोगों की आंखें निकाल डालेगा हम १५ तो न आवेंगे। तब मूसा का क्रोध अत्यंत भड़का और परमेश्वर से यों बोला कि तू उन की भेंट की ओर मत ताक मैं ने उन से एक गदहा भी नहीं लिया न उन में से किसी को दुःख १६ दिया। फिर मूसा ने कुरह से कहा कि तू और तेरी सारी जथा और हारून सहित परमेश्वर के आगे कल के दिन १७ आओ। और हर॰ एक मनुष्य अपनी अपनी धूपावरी लेवे और उन में धूप डाले और तुम्में से हर एक अपनी अपनी धूपावरी परमेश्वर के आगे लावे सब अढ़ाई सौ धूपावरी होवें और तू और हारून अपनी धूपावरी लावे॥

१८ सो हर एक ने अपनी अपनी धूपावरी लिई और उन में आग रक्खी और उन पर धूप डाला और मंडली के तंबू के द्वार पर मूसा और हारून सहित आ १९ खड़े हुए। और कुरह ने सारी मंडली को मंडली के तंबू के द्वार पर उन के बिरोध पर एकट्ठी किया तब परमेश्वर की महिमा सारी मंडली के सामने प्रगट हुई॥

२० और परमेश्वर मूसा और हारून से २१ कहके बोला। कि इस मंडली में से आप को अलग करो कि मैं उन्हें पल २२ भर में नाश करूं। तब वे औंधे मुंह गिरे और बोले कि हे सर्ब्बशक्तिमान सारे शरीरों के आत्मा का ईश्वर पाप एक करे और क्या तू सारी मंडली पर २३ क्रुद्ध होवे। तब परमेश्वर मूसा से कहके २४ बोला। कि तू मंडली से कह कि कुरह और दातन और अबिराम के तंबुओं में से निकल आओ॥

२५ सो मूसा उठा और दातन और अबिराम के यहां गया और इसराएल के २६ प्राचीन उस के पीछे हो लिये। और उस ने मंडली से कहा कि इन दुष्ट जनों के तंबुओं से निकल जाओ और उन की किसी बस्तु को मत छूओ न होवे कि तुम भी उन के सब पापों में नाश २७ हो जाओ। सो वे कुरह और दातन और अबिराम के तंबुओं में से निकल गये और दातन और अबिराम और उन की पत्नियां और उन के बेटे और उन के बालक निकलके अपने तंबुओं के २८ द्वार पर खड़े हुए। तब मूसा ने कहा कि तुम इस में जानोगे कि परमेश्वर ने यह कार्य्य करने को मुझे भेजा है और मैं ने कुछ अपनी इच्छा से नहीं २९ किया। यदि ये मनुष्य उस मृत्यु से मरें जिस मृत्यु से सब मरते हैं अथवा उन पर कोई बिपत्ति ऐसी होवे जो सब पर होती है तो मैं ईश्वर का भेजा हुआ ३० नहीं। पर यदि परमेश्वर कोई नई बात करे और पृथिवी अपना मुंह फैलावे और उन्हें सब समेत निगल जावे और

से जीते जी पाताल में जा पड़ें तो तुम जानियो कि इन लोगों ने परमेश्वर को खिझाया है ॥

३१ और यों हुआ कि ज्योंहीं वह ये सब बातें कह चुका तो उन के नीचे की ३२ भूमि फट गई । और पृथिवी ने अपना मुंह खोला और उन्हें और उन के घर और उन सब मनुष्यों को जो कुरह के थे और उन की सब संपत्ति को निगल ३३ गई । सो वे और सब जो उन के थे जीते जी पाताल में गये और भूमि ने उन्हें छिपा लिया और मंडली के मध्य ३४ से नष्ट हो गये । और सारे इसराएल जो उन के आसपास थे उन का चिल्लाना सुनके भागे क्योंकि उन्हों ने कहा न हो ३५ कि भूमि हमें भी निगल जावे । फिर परमेश्वर के आगे से एक आग निकली और उन अढ़ाई सौ को जिन्हों ने धूप जलाया था खा गई ॥

३६ और परमेश्वर मूसा से कहके बोला । ३७ कि हारून याजक के बेटे इलिअजर से कह कि धूपावरी को आग में से उठा और आग वहीं बखेर दे क्योंकि वे तो ३८ पवित्र हैं । जिन्हों ने अपने प्राण के बिरोध पाप किया उन की धूपावरियों से चौड़े चौड़े पत्र बेदी के ढांपने के लिये बना क्योंकि उन्हों ने उन्हें परमेश्वर के आगे चढ़ाया इस लिये वे पवित्र हैं और वे इसराएल के संतानों के लिये ३९ एक चिन्ह होंगे । तब इलिअजर याजक ने उन पीतल की धूपावरियों को जिन्हें उन्हों ने जलाया था जो जल गये थे लिया और बेदी के लिये चौड़े पत्र ढांपने ४० के लिये बनाये । कि इसराएल के संतानों के लिये चेत होवे कि कोई परदेशी जो हारून के बंश से नहीं परमेश्वर के आगे धूप जलाने को पास न आवे जिसतें कुरह और उस की जथा के समान न होवे जैसा परमेश्वर ने मूसा के द्वारा से उसे कहा था ॥

४१ परन्तु बिहान को इसराएल के संतानों की सारी मंडली मूसा और हारून के बिरोध में कुड़कुड़ाके बोली कि तुम ने परमेश्वर के लोगों को मार डाला। ४२ और यों हुआ कि जब मूसा और हारून के बिरोध में मंडली एकट्ठी हुई तब उन्हों ने मंडली के तंबू की ओर ताका और क्या देखते हैं कि मेघ ने उसे ढांप लिया और परमेश्वर की महिमा प्रगट हुई । ४३ तब मूसा और हारून मंडली के तंबू के आगे आये । ४४ और परमेश्वर मूसा से कहके ४५ बोला । कि तुम इस मंडली में से अलग होओ जिसतें मैं उन्हें एक पल में नाश कर डालूं तब वे औंधे मुंह गिर पड़े । ४६ और मूसा ने हारून से कहा कि धूपावरी ले और उस में बेदी पर की आग रख और धूप डाल और मंडली में शीघ्र जाके उन के लिये प्रायश्चित्त दे क्योंकि परमेश्वर के आगे से कोप निकला और ४७ मरी आरंभ हुई । तब जैसी मूसा ने आज्ञा किई थी हारून मंडली के मध्य में दौड़ गया और क्या देखता है कि मरी लोगों में आरंभ हुई सो उस ने धूप रखके उन लोगों के लिये प्रायश्चित्त ४८ किया । और वह जीवतों और मृतकों के बीच में खड़ा हुआ तब मरी थम गई। ४९ सो जितने उस मरी से मरे उन्हें छोड़के जो कुरह के बिषय में नष्ट हुए चौदह ५० सहस्र सात सौ थे । फिर हारून मंडली के तंबू के द्वार पर मूसा पास फिर आया और मरी थम गई ॥

सत्रहवां पर्ब्ब ।

१ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । २ कि इसराएल के संतानों से कह और उन में से उन के पितरों के घराने के समान हर घराने पीछे उन के सब प्रधानों से

एक एक छड़ी ले और उन के पितरों के समान बारह छड़ी और हर एक का नाम ३ उस की छड़ी पर लिख। और लावी की छड़ी पर हारून का नाम लिख क्योंकि हर एक प्रधान के कारण उन के पितरों के घरानों के लिये एक एक छड़ी होगी। ४ और उन्हें मंडली के तंबू में साक्षी के आगे रख दे जहां मैं तुम से भेंट करूंगा। ५ और यों होगा कि जिसे मैं चुनूंगा उस की छड़ी में फूल लगेगा और मैं इसराएल के संतानों का कुड़कुड़ाना जो वे विरोध से कुड़कुड़ाते हैं दूर करूंगा॥

६ सो मूसा ने इसराएल के संतानों से कहा और हर एक ने उन के प्रधानों में से एक एक प्रधान के लिये उन के पितरों के घरानों के समान एक एक छड़ी अर्थात् बारह छड़ी दिईं और हारून की छड़ी ७ उन की छड़ियों में थी। और मूसा ने उन छड़ियों को साक्षी के तंबू में परमेश्वर के आगे रक्खा॥

८ और ऐसा हुआ कि बिहान को मूसा साक्षी के तंबू में गया तो क्या देखता है कि लावी के घराने के लिये हारून की छड़ी में कली लगीं और कली निकलीं ९ और फूल फूले और बादाम लगे। तब मूसा सब छड़ियों को परमेश्वर के आगे से सब इसराएल के संतानों के पास निकाल लाया और उन्हों ने देखा और हर एक ने अपनी अपनी छड़ी फेर लिई॥

१० फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि हारून की छड़ी साक्षी के आगे रख कि दंगइत के विरोध के लिये एक चिन्ह रहे और तू उन का कुड़कुड़ाना मुझ से ११ दूर करे जिसतें वे मर न जावें। और मूसा ने ऐसा ही किया जैसा परमेश्वर ने उसे आज्ञा किई॥

१२ तब इसराएल के संतानों ने मूसा से कहा कि हम मरे हम नाश हुए हम सब के सब बिनाश हुए। जो कोई परमेश्वर १३ के तंबू पास आवेगा सो मरेगा क्या हम सब मर मरके मिट जावेंगे॥

अठारहवां

१ फिर परमेश्वर ने हारून से कहा कि पवित्र स्थान का पाप तुझ पर और तेरे बेटों और तेरे संग तेरे पिता के घराने पर होगा और तेरे संग तेरे बेटे तुम्हारी याजकता का पाप भोगेंगे। २ और तेरे भाई की गोष्ठी भी जो तेरे पिता लावी की गोष्ठी है अपने साथ ला जिसतें वे तेरे साथ मिलाये जावें और तेरी सेवा करें पर तू अपने बेटों समेत साक्षी के तंबू के आगे रह। ३ और वे तेरी और सारे तंबू की रक्षा करें केवल वे पवित्र पात्रों और बेदी के पास न आवें न होवे कि वे भी और तुम भी नाश हो जाओ। ४ और तंबू की सारी सेवा के लिये तेरे संग होके मंडली के तंबू की रक्षा करें और कोई परदेशी तुम्हारे पास आने न पावे। ५ और तुम पवित्र स्थान को और बेदी को अगोर रक्खो जिसतें आगे को फिर इसराएल के संतानों पर कोप न पड़े। ६ और देखो मैं ने तुम्हारे भाई लावियों को इसराएल के संतानों में से लेके परमेश्वर की भेंट के लिये तुम्हें दिया जिसतें मंडली के तंबू की सेवा करें। ७ सो तू और तेरे संग तेरे बेटे बेदी की हर एक बात के और घूंघट के भीतर की सेवा के लिये अपने याजक के पद को पालन करो और सेवा करो मैं ने याजक के पद में तुम्हें भेंट की सेवा दिई और जो परदेशी पास आवे सो मारा जायगा॥

८ फिर परमेश्वर ने हारून से कहा कि देख मैं ने इसराएल के संतानों की समस्त पवित्र किई हुई उठाने की भेंटों की रक्षा करना तुझे दिया मैं ने उन्हें तेरे

अभिषिक्त होने के कारण तुझे और तेरे बेटों को सदा की बिधि के निमित्त दिया । ९ उन पवित्र बस्तुन में से जो आग से बच रही हैं ये तेरे लिये होंगी उन के सब बलिदान उन के हर एक भोजन की भेंट और उन के हर एक पाप की भेंट और उन के हर एक अपराध की भेंट जो वे मेरे लिये चढ़ावेंगे तेरे और तेरे पुत्रों के १० लिये अत्यंत पवित्र होंगी । तू उसे अत्यंत पवित्र स्थान में खाइयो हर एक पुरुष ११ उसे खाय यह तेरे लिये पवित्र है । और यह तेरी है इसराएल के संतानों की भेंट के उठाने के बलिदान उन के सब हिलाये हुए बलिदान सहित मैं ने तुझे और तेरे संग तेरे बेटों को और तेरी बेटियों को सदा के व्यवहार के लिये दिया जो कोई तेरे घर में पवित्र होवे सो उसे खावे । १२ सब अच्छे से अच्छा तेल और अच्छे से अच्छा दाखरस और गोहूं का और इन सभों का पहिला फल जिन्हें वे परमेश्वर की भेंट के लिये लावेंगे मैं ने तुझे १३ दिया । उन के देश में जो पहिले पकता है जिन्हें वे परमेश्वर के आगे लावें तेरे होंगे तेरे घर में जो कोई पवित्र होवे १४ सो उसे खावे । इसराएल के संतानों के हर एक नैवेद्य की बस्तु तेरी होगी । १५ समस्त प्राणी में से हर एक जो गर्भ खोलता है चाहे मनुष्य होवे चाहे पशु जिसे वे परमेश्वर के लिये लाते हैं तेरा होगा तथापि तू मनुष्यों के और अपवित्र पशुन के पहिलौठों को निश्चय छुड़ा- १६ इयो । और जो एक मास के बय से छुड़ाये जाने का होय पांच शेकल दाम जो पवित्र स्थान के शेकल के समान होवे जो बीस गिरह है अपने ठहराने के १७ समान उसे छुड़ाइयो । परन्तु गाय के पहिलौठे अथवा भेड़ के पहिलौठे अथवा बकरी के पहिलौठे को मत छुड़ाना वे पवित्र हैं तू उन का लोहू बेदी पर छिड़कियो और उन की चिकनाई आग से परमेश्वर के सुगंध की भेंट के लिये जलाइयो । जैसे हिलाई हुई छाती और १८ दहिना कांधा तेरे हैं वैसा उन का मांस तेरा होगा । पवित्र बस्तुन के हिलाने १९ के बलिदान जिन्हें इसराएल के संतान परमेश्वर के लिये चढ़ाते हैं मैं ने तुझे और तेरे संग तेरे बेटों को और तेरी बेटियों को सदा की बिधि के लिये दिया परमेश्वर के आगे तेरे और तेरे संग तेरे बंश के लिये लोन की बाचा सदा के लिये है ॥

फिर परमेश्वर ने हारून से कहा कि २० तू उन के देश में कुछ अधिकार न रखना और उन में कुछ भाग न रखना इसराएल के संतानों में तेरा भाग और तेरा अधिकार मैं हूं । देख मैं ने लावी २१ के संतान को उन की सेवा के लिये जो वे सेवा करते हैं अर्थात् मंडली के तंबू की सेवा के लिये इसराएल में सारा दसवां भाग दिया । और आगे को इस- २२ राएल के संतान मंडली के तंबू के पास न आवें न हो कि वे पापी होवें और मर जावें । परन्तु लावी मंडली के तंबू २३ की सेवा करें और वे अपने पाप भोगेंगे तुम्हारी पीढ़ियों में यह सदा की बिधि होगी कि वे इसराएल के संतानों में अधिकार नहीं रखते हैं । परन्तु इस- २४ राएल के संतान का दसवां भाग जिन्हें वे परमेश्वर के लिये हिलाने की भेंट के लिये चढ़ावें मैं ने लावियों के अधिकार में दिया इस कारण मैं ने उन्हें कहा कि इसराएल के संतानों में वे अधिकार न पावेंगे ॥

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । २५ कि लावियों को यों कह और उन्हें बोल २६ कि जब तुम इसराएल के संतानों से दसवां

भाग लेओ जो मैं ने उन से तुम्हारे अधिकार के लिये तुम्हें दिया है तब तुम दसवें का दसवां भाग उठाने के बलिदान के कारण परमेश्वर के आगे चढ़ाइयो। २७ जैसा कि खलिहान का अन्न और कोल्हू की भरपूरी तुम्हारे उठाने की भेंट गिनी २८ जायेगी। इस भांति से तुम भी उठाने की भेंट परमेश्वर के लिये अपने सारे दसवें भागों से चढ़ाओ जिन्हें तुम इसराएल के संतानों से पाओगे और तुम उस में से परमेश्वर की उठाने की भेंट २९ हारून याजक को दीजियो। अपनी समस्त भेंटों में से उस अच्छे से अच्छे अर्थात् उस में का पवित्र किया हुआ भाग परमेश्वर के हिलाने की भेंट ३० चढ़ाइयो। इस लिये उन्हें कह कि जब तुम उन में से अच्छे से अच्छे को उठाओ तब लावियों के लिये खलिहान की बढ़ती और कोल्हू की बढ़ती की नाईं गिना ३१ जायगा। और तुम और तुम्हारा घराना हर एक स्थान में उसे खावे क्योंकि यह तुम्हारी उस सेवा का प्रतिफल है जो ३२ तुम मंडली के तंबू में करते हो। और जब तुम उस में से अच्छे से अच्छा उठाओगे तब तुम उस के कारण पापी न ठहरोगे और इसराएल के संतानों की पवित्र बस्तुन को अशुद्ध न करोगे और नाश न होओगे॥

उन्नीसवां पर्ब्ब।

१ फिर परमेश्वर मूसा और हारून से २ कहके बोला। यह व्यवस्था की रीति है जो परमेश्वर ने आज्ञा करके कहा कि इसराएल के संतानों से कह कि एक निःखोट और निर्दोष लाल कलोर जिस पर कभी जूआ न रक्खा गया हो तुझ ३ पास लावें। और तुम उसे इलिअजर याजक को देओ कि उसे छावनी से बाहर ले जावे और वह उस के आगे बलि किई जावे। और इलिअजर याजक ४ अपनी अंगुली पर उस का लोहू लेके मंडली के तंबू के आगे सात बार छिड़के। फिर उस के आगे कलोर जलाई जावे ५ उस की खाल और उस का मांस और उस का लोहू उस के गोबर सहित सब जलाये जावें। तब याजक संत की ६ लकड़ी और जूफा और लाल लेके उस जलती हुई कलोर के ऊपर डाल देवे। तब याजक अपने कपड़े धोवे और पानी ७ में स्नान करे और उस के पीछे छावनी में प्रवेश करे और याजक सांझ लों अशुद्ध रहेगा। और वह जो उसे जलाता है ८ अपने कपड़े पानी से धोवे और अपना अंग धोवे और सांझ लों अपवित्र रहेगा। और कोई पावन मनुष्य उस कलोर की ९ राख को एकट्ठी करे और छावनी के बाहर पवित्र स्थान पर उठा रक्खे और वह इसराएल के संतानों की मंडली के लिये अलग करने के पानी के लिये होवे वह पाप की पवित्रता के लिये है। और १० जो उस कलोर की राख को समेटता है सो अपने कपड़े धोवे और सांझ लों अपवित्र रहेगा और यह इसराएल के संतानों के और उन परदेशियों के लिये जो उन में बसते हैं एक विधि सदा के लिये होवे॥

जो कोई मनुष्य की लोथ को छूवे ११ सो सात दिन लों अपवित्र रहेगा। वह १२ आप को तीसरे दिन उस्से पवित्र करे और सातवें दिन पवित्र होगा पर यदि वह आप को तीसरे दिन पवित्र न करे तो सातवें दिन पवित्र न होगा। जो १३ कोई किसी मनुष्य की लोथ को छूवे और आप को पवित्र न करे उस ने परमेश्वर के तंबू को अशुद्ध किया वह प्राणी इसराएल के संतानों में से कट जायगा क्योंकि अलग करने का पानी

उस पर छिड़का नहीं गया वह अपवित्र है उस की अपवित्रता अब लों उस पर है । जब मनुष्य तंबू में मरे तब उस की यही व्यवस्था है सब जो तंबू में आवें और सब जो तंबू में हैं सात दिन लों अशुद्ध होंगे । और हर एक खुला पात्र जिस पर ढंपना बंधा न होवे अशुद्ध है । और जो कोई तलवार से अरण्य में मारे हुए को अथवा लोथ को अथवा मनुष्य के हाड़ को अथवा समाधि को छूवे सो सात दिन लों अशुद्ध होवेगा ॥

१४ १५ १६

१७ और अशुद्ध को पाप से पवित्र करने के लिये जली हुई कलेवर की राख लेवें और एक बासन में बहता हुआ पानी उस पर डाले । १८ और एक पवित्र मनुष्य जूफा लेवे और पानी में डुबोके तंबू पर और सारे पात्रों पर और उन मनुष्यों पर जो वहां थे और उस पर जिस ने हाड़ को अथवा जूझे हुए को अथवा मृतक को अथवा समाधि को छूआ हो छिड़के । १९ और पवित्र जन तीसरे दिन और सातवें दिन अपवित्र पर छिड़के और फिर सातवें दिन अपने को पवित्र करे और अपने कपड़े धोवे और पानी में नहावे तब सांझ को पवित्र होगा । २० परन्तु वह मनुष्य जो अपवित्र होवे और आप को पवित्र न करे वही मनुष्य मंडली में से कट जायगा क्योंकि उस ने परमेश्वर के पवित्र स्थान को अशुद्ध किया इस लिये कि अलग करने का पानी उस पर छिड़का न गया वह अशुद्ध है । २१ और यह उन के लिये नित्य की विधि होगी जो कोई अलग करने के पानी को छिड़के सो अपने कपड़े धोवे और जो कोई अलग करने के पानी को छूवे सो सांझ लों अशुद्ध रहेगा । २२ और जो कुछ अपवित्र मनुष्य छूवे सो अपवित्र होगा और जो प्राणी उसे छूवेगा सो सांझ लों अशुद्ध होगा ॥

बीसवां पर्ब्ब ।

१ तब इसराएल के संतानों की सारी मंडली पहिले मास सीना के अरण्य में आई और कादिस में उतर पड़ी और मिरयम वहां मर गई और वहां गाड़ी गई ॥

२ और वहां मंडली के लिये पानी न था तब वे मूसा और हारून के बिरोध पर एकट्ठा हुए । ३ और लोगों ने मूसा से झगड़के कहा हाय कि जब हमारे भाई परमेश्वर के आगे मर गये हम भी मर जाते । ४ तुम परमेश्वर की मंडली को इस अरण्य में क्यों लाये कि हम और हमारे ढोर यहां मर जावें । ५ और तुम हमें मिस्र से इस बुरे स्थान में क्यों चढ़ा लाये यहां तो खेत और गूलर और दाख और अनार नहीं हैं और पीने को पानी नहीं ॥

६ तब मूसा और हारून सभा के आगे से मंडली के तंबू के द्वार पर गये और औंधे मुंह गिरे तब परमेश्वर की महिमा उन पर प्रगट हुई । ७ और परमेश्वर मूसा से कहके बोला । ८ कि छड़ी ले और तू और तेरा भाई हारून मंडली को एकट्ठी करो और उन की आंखों के आगे चटान को कहो और वह अपना पानी देगा और तू उन के लिये चटान से पानी निकाल और उस्से तू मंडली को और उन के पशुन को पिला ॥

९ सो मूसा ने छड़ी को परमेश्वर के आगे से लिया जैसी उस ने उसे आज्ञा किई थी । १० और मूसा और हारून ने मंडली को उस चटान के आगे एकट्ठी किया और उस ने उन्हें कहा कि सुनो हे दंगइतो क्या हम तुम्हारे लिये इस चटान से पानी निकालें । ११ तब मूसा ने

अपना हाथ उठाया और उस चटान को दो बार अपनी छड़ी से मारा तब बहुताई से पानी निकला और मंडली और उन के पशुन ने पीया ॥

१२ तब परमेश्वर ने मूसा और हारून को इस कारण कहा कि तुम ने मेरी प्रतीति न किई कि इसराएल के संतानों की दृष्टि में मुझे पवित्र करो इस लिये तुम इस मंडली को उस देश में जो मैं १३ ने उन्हें दिया है न लाओगे। यह झगड़े का पानी है क्योंकि इसराएल के संतानों ने परमेश्वर से झगड़ा किया और उस ने उन के मध्य आप को पवित्र किया ॥

१४ और कादिस से मूसा ने अदूम के राजा के पास दूतों को भेजा कि तेरा भाई इसराएल कहता है कि जो जो दुःख हम पर बीता है तू जानता है। १५ कि किस भांति से हमारे पितर मिस्र में उतर गये और हम मिस्र में बहुत दिन रहे और मिस्रियों ने हमें और हमारे पितरों १६ को दुःख दिया। और जब हम परमेश्वर के आगे चिल्लाये तब उस ने हमारा शब्द सुना और एक दूत को भेजके हमें मिस्र में से निकाल लाया और देख हम तेरे अत्यंत सिवाने के नगर कादिस में हैं। १७ सो हमें अपने देश में होके जाने दीजिये कि हम खेतों और दाखों की बाटिकों में न जावेंगे और न कूओं का पानी पीवेंगे हम राजमार्ग से होके निकले चले जावेंगे हम दहिने अथवा बायें हाथ न मुड़ेंगे जब लों कि तेरे सिवाने से बाहर १८ न निकल जावें। तब अदूम ने उसे कहा कि तू मेरे सिवाने में होके न जाना नहीं तो मैं तलवार से तुझ पर निक- १९ लूंगा। तब इसराएल के संतानों ने उसे कहा कि हम राजमार्ग से होके चले जावेंगे और यदि मैं अथवा मेरे ढोर तेरा पानी पीवें तो मैं उस का दाम देऊंगा कुछ न करूंगा केवल मैं अपने पांवों से २० चला जाऊंगा। तब उस ने कहा कि तू कभी जाने न पावेगा तब अदूम बहुत लोगों के साथ और बड़े बल से २१ उस पर चढ़ आया। सो अदूम ने इस- राएल को अपने सिवाने में से जाने न दिया इस कारण इसराएल उस्से फिर गये ॥

२२ और इसराएल के संतानों की सारी मंडली कादिस से कूच करके हूर पहाड़ पर आई ॥

२३ और परमेश्वर ने अदूम देश के सिवाने के लग हूर पहाड़ पर मूसा और हारून २४ से कहा। कि हारून अपने लोगों में एकट्ठा किया जायगा क्योंकि वह उस देश में जिसे मैं ने इसराएल के संतानों को दिया है न पहुंचेगा इस लिये कि तुम झगड़े के पानी पर मेरे बचन से २५ फिर गये। हारून और उस के बेटे इलि- अजर को ले और उन्हें हूर पहाड़ पर २६ ला। और हारून के बस्त्र उतार और उन्हें उस के बेटे इलिअजर को पहिना कि हारून समेटा जायगा और वहां मर २७ जायगा। सो जैसा परमेश्वर ने आज्ञा किई थी मूसा ने वैसा ही किया और वे मंडली के आगे हूर पहाड़ पर चढ़ २८ गये। और मूसा ने हारून के बस्त्र उतारे और उन्हें उस के बेटे इलिअजर को पहिनाया और हारून वहां पहाड़ की चोटी पर मर गया और मूसा और इलि- २९ अजर पहाड़ से उतर आये। और जब सारी मंडली ने देखा कि हारून मर गया तब इसराएल के सारे घराने ने हारून के कारण तीस दिन लों बिलाप किया ॥

इक्कीसवां पर्व्व ।

१ और जब राजा अराद कनआनी ने जो दक्खिन में बास करता था सुना कि इसराएल भेदियों के मार्ग से आये तो

इसराएल से लड़ा और उन में से बंधुआई २ किया। तब इसराएल ने परमेश्वर की मनौती मानी और बोला कि यदि तू सचमुच इन लोगों को मेरे बश में कर देगा तो मैं उन के नगरों को सर्व्वथा ३ नाश कर देऊंगा। सो परमेश्वर ने इसराएल का शब्द सुना और कनआनियों को उन के हाथ में सौंप दिया और उन्हों ने उन्हें और उन के नगरों को सर्व्वथा नष्ट कर दिया और उस ने उस स्थान का नाम हुरमः रक्खा॥

४ फिर उन्हों ने हूर पहाड़ से लाल समुद्र की ओर कूंच किया जिसतें अदूम के देश को घेर लेवें परन्तु मार्ग के कारण लोगों का प्राण बहुत उदास ५ हुआ। और लोग ईश्वर के और मूसा के बिरोध में बोले कि तुम क्यों हमें मिस्र से चढ़ा लाये कि हम अरण्य में मरें क्योंकि अन्न जल कुछ नहीं है और हमें तो इस हलकी रोटी से घिन आती ६ है। तब परमेश्वर ने उन लोगों में अग्नि-सर्प भेजे और उन्हों ने लोगों को काटा और इसराएल के बहुत लोग मर गये। ७ तब लोग मूसा पास आये और बोले कि हम ने पाप किया है क्योंकि हम ने परमेश्वर के और तेरे बिरोध में कहा है सो तू परमेश्वर से प्रार्थना कर कि हम्में से उन सांपों को उठा लेवे सो मूसा ने ८ लोगों के लिये प्रार्थना किई। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अपने लिये एक अग्निसर्प बना और उसे एक लट्ठ पर लटका और यों होगा कि हर एक डसा हुआ जब उस पर दृष्टि करेगा तो जीयेगा। ९ सो मूसा ने पीतल का एक सर्प बनाके उसे लट्ठ पर रक्खा और यों हुआ कि यदि सर्प ने किसी को डसा तो जब उस ने उस पीतल के सर्प पर दृष्टि किई तब वह जीया॥

१० तब इसराएल के संतान आगे बढ़े और ओबात में डेरा किया॥

११ फिर ओबात से कूच किया और अय्यी-अबरीम के बन में जो मोअब के आगे पूरब ओर है डेरा किया॥

१२ वहां से कूच करके जरद की तराई १३ में डेरा किया। वहां से जो चले तो अरनून के पार उस बन में जो अमूरियों के सिवाने का अंत है आके डेरा किया क्योंकि अरनून मोअब का सिवाना है १४ मोअब और अमूरियों के मध्य। इसी लिये परमेश्वर के संग्राम की पुस्तक में लिखा है कि

उस ने लाल समुद्र में और अरनून के १५ नालों में क्या क्या कुछ किया। और नालों के धारे के पास जो आर की बस्तियों के नीचे जाता है और मोअबियों के सिवानों पर है॥

१६ और वहां से बिअरः को जो कूआ है जिस के कारण परमेश्वर ने मूसा से कहा कि लोगों को एकट्ठे कर कि मैं १७ उन्हें पानी देऊंगा। उस समय इसराएल ने यह भजन गाया कि

हे कूए उबल उस के लिये गाओ। १८ अध्यक्षों ने उसे खोदा लोगों के महानों ने उसे खोदा व्यवस्थादायक के समान अपनी लाठियों से

१९ और बन से मत्तनः को गये। और मत्तनः से नहलिएल को और नहलिएल २० से बामात को। और बामात की तराई से जो मोअब के देश में है पिसगः की चोटी लों जहां से असमन का ओर दिखाता था॥

२१ और इसराएल ने अमूरियों के राजा सैहून के पास यह कहके दूत भेजे। २२ कि हमें अपने देश से निकल जाने दे हम खेतों और दाखों की बारियों में न पैठेंगे न हम कूए का पानी पीवेंगे

परन्तु राजमार्ग से चले आयेंगे यहां लों कि तेरे सिवानों से बाहर हो जावें । २३ पर सैहून ने इसराएल को अपने सिवानों से जाने न दिया परन्तु सैहून अपने लोगों को एकट्ठे करके इसराएल का साम्ना करने को अरण्य में निकला और जहाज में पहुंचके इसराएल से संग्राम २४ किया । और इसराएल ने उन्हें खड्ग की धार से मार लिया और उन के देश पर अरनून से लेके यबूक लों अर्थात् अम्मून के संतान लों बश में किया क्योंकि अम्मून के संतानों का सिवाना दृढ़ था । २५ सो इसराएल ने ये सब नगर ले लिये और अमूरियों के सब नगरों में और हसबून में और उस के सारे गांवों में २६ बास किया । क्योंकि हसबून अमूरियों के राजा सैहून का नगर था जो मोआब के अगले राजा से लड़ा और उस का समस्त देश अरनून लों उस के हाथ से ले २७ लिया । इसी लिये दृष्टांतबक्ते कहते हैं कि

हसबून में आओ सैहून का नगर बस २८ जावे और सिद्ध होवे । क्योंकि आग हसबून से निकली लवर सैहून के नगर से जिस ने मोआब के आर को और अरनून के ऊंचे स्थान के प्रधानों को २९ भस्म किया । हे मोआब तुझ पर संताप हे कमूस के लोगो तुम नाश हुए उस ने अपने बचे हुए बेटों को दे दिया और अपनी बेटियां अमूरियों के राजा सैहून ३० की बंधुआई में कर दिई । और उन का दिया हसबून से लेके दैबून लों बुझ गया और नफह लों जो मेदिबा के पास है उजाड़ दिया ॥

३१ यों इसराएलियों ने अमूरियों के देश ३२ में बास किया । तब मूसा ने यअजीर का भेद लेने को भेजा और उन्हों ने उस के गांवों को लिया और अमूरियों को जो वहां थे हांक दिया ॥

३३ तब वे फिरे और बसन की ओर चढ़े और बसन के राजा ऊज ने अपने सब लोग लेके युद्ध के लिये अद्रिअई में संग्राम के लिये उन का साम्ना किया । ३४ तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि उस्से मत डर क्योंकि मैं ने उसे और उस के समस्त लोगों को और उस के देश को तेरे हाथ में सौंप दिया सो तू उस्से जैसा कर जैसा तू ने अमूरियों के राजा सैहून ३५ से किया जो हसबून में रहता था । सो उन्हों ने उसे और उस के बेटों और उस के सारे लोगों को यहां लों मारा कि कोई जीता न छूटा और उस के देश में बास किया ॥

बाईसवां पर्ब्ब ।

१ फिर इसराएल के संतान आगे बढ़े और यरीहू के लग यरदन के इसी पार मोआब के चौगानों में डेरा किया ॥

२ और जब सफूर के बेटे बलक ने सब देखा जो इसराएल ने अमूरियों से किया । ३ तो मोआब उन लोगों से निपट डरा इस कारण कि वे बहुत थे और मोआब इसराएल के संतानों के कारण से दुःखित ४ हुआ । तब मोआब ने मिदयान के प्राचीनों से कहा कि अब ये जथा उन सब को जो हमारे आसपास हैं यों चाट जावेंगी जैसे कि बैल चौगान की घास को चट कर लेता है और उस समय सफूर का बेटा बलक मोआबियों का राजा ५ था । सो उस ने बऊर के बेटे बलआम पास फतूर: को जो उस के लोगों के संतान के देश की नदी पास थे दूत भेजे जिसतें उसे यह कहके बुला लावें कि देख लोग मिस्र से बाहर आये हैं [illegible]व उन से पृथिवी छिप गई है ६ [illegible]र वह मेरे साम्ने ठहरे हैं । सो अब आइये इन लोगों को मेरे लिये स्राप दीजिये क्योंकि वे मुझ से बली हैं क्या

जाने में उन्हें मार सकूं और उन्हें इस देश में से खदेड़ देऊं क्योंकि मैं जानता हूं कि जिसे तू आशीष देता है सो आशीष प्राप्त करता है और जिसे तू ७ स्राप देता है वह स्रापित है। तब मोआब के प्राचीन और मिदयान के प्राचीन टोने का प्रतिफल हाथ में लेके चले और बलआम पास आये और बलक ८ का बचन उसे कहा। और उस ने उन्हें कहा कि आज रात यहां रहो और जैसा परमेश्वर मुझे कहेगा मैं तुम्हें कहूंगा सो मोआब के प्रधान बलआम के संग रहे॥

९ तब ईश्वर बलआम पास आया और कहा कि तेरे संग ये कौन मनुष्य हैं। १० और बलआम ने ईश्वर से कहा कि मोआब के राजा सफूर के बेटे बलक ने उन्हें ११ मुझ पास भेजा और कहा। कि देख लोग मिस्र से निकल आये हैं और वह पृथिवी को ढांप रहे हैं अब आ मेरे कारण उन्हें स्राप दे क्या जाने मैं उन से १२ जय पाऊं और उन्हें खदेड़ देऊं। तब ईश्वर ने बलआम से कहा कि तू उन के साथ मत जा उन लोगों को स्राप मत दे क्योंकि वे आशीष प्राप्त किये हैं॥

१३ और बलआम ने बिहान को उठके बलक के अध्यक्षों से कहा कि अपने देश को जाओ क्योंकि परमेश्वर मुझे तुम्हारे १४ साथ जाने नहीं देता। सो मोआब के अध्यक्ष उठे और बलक पास आये और बोले कि बलआम ने हमारे साथ आने को नाह किया है॥

१५ तब बलक ने इन से अधिक और १६ प्रतिष्ठित अध्यक्षों को फिर भेजा। और उन्हों ने आके बलआम से कहा कि सफूर के बेटे बलक ने यों कहा है कि मुझ पास आने में आप को कोई रोकने १७ न पावे। क्योंकि मैं आप की अति बड़ी प्रतिष्ठा करूंगा और जो कुछ आप मुझे कहेंगे मैं करूंगा मैं आप की बिनती करता हूं कि आइये इन लोगों को मेरे निमित्त स्राप दीजिये। तब बलआम १८ ने बलक के सेवकों से उत्तर देके कहा कि यदि बलक अपना घर भरके चांदी सोना देवे तो मैं परमेश्वर अपने ईश्वर के बचन को उल्लंघन करके घट बढ़ नहीं कर सक्ता। सो अब तुम लोग भी १९ यहां रात भर रहो जिसतें मैं देखूं कि परमेश्वर मुझे अधिक क्या कहेगा॥

फिर ईश्वर रात को बलआम के २० पास आया और उसे कहा कि यदि ये मनुष्य तुझे बुलाने आवें तो उठके उन के साथ जा पर जो बचन मैं तुझे कहूं सोई कहियो॥

सो बलआम बिहान को उठा और २१ अपनी गदही पर काठी रक्खी और मोआब के प्रधानों के साथ गया। और २२ उस के जाने के कारण ईश्वर का क्रोध भड़का और परमेश्वर का दूत बैर लेने को उस के सन्मुख मार्ग में खड़ा हुआ सो वह अपनी गदही पर चढ़ा हुआ जाता था और उस के दो सेवक उस के साथ थे। सो गदही ने परमेश्वर के २३ दूत को अपने हाथ में तलवार खींचे हुए मार्ग में खड़ा देखा तब गदही मार्ग से अलग खेत में फिर गई तब उसे मार्ग में फिरने के लिये बलआम ने गदही को मारा। तब परमेश्वर का २४ दूत दाख की बारियों के पथ में खड़ा हुआ था जिस के इधर उधर भीत थी। और जब परमेश्वर के दूत को गदही २५ ने देखा तब उस ने भीत में जा रगड़ा और बलआम का पांव भीत से दबाया और उस ने उसे फिर मारा। तब पर- २६ मेश्वर का दूत आगे बढ़के एक सकेत स्थान में खड़ा हुआ जहां दहिने बायें फिरने का मार्ग न था। और गदही २७

परमेश्वर के दूत को देखके बलआम के नीचे बैठ गई तब बलआम का क्रोध भड़का और उस ने गदही को लाठी से
२८ मारा। तब परमेश्वर ने गदही का मुंह खोला और उस ने बलआम से कहा कि मैं ने तेरा क्या किया है कि तू ने मुझे अब
२९ तीन बार मारा। और बलआम ने गदही से कहा कि तू ने मुझे खोड़हा बनाया मैं चाहता कि मेरे हाथ में तलवार होती
३० तो मैं अब तुझे मार डालता। पर गदही ने बलआम से कहा कि क्या मैं आप की गदही नहीं हूं जिस पर आप आज के दिन लों चढ़ते हैं क्या मैं और ऐसा कभी करती आई हूं वह बोला कि नहीं।
३१ तब परमेश्वर ने बलआम की आंखें खोलीं और उस ने परमेश्वर के दूत को मार्ग में खड़े हुए देखा और उस के हाथ में खींची हुई तलवार है तब उस ने अपना सिर झुकाया और औंधा गिरा।
३२ तब परमेश्वर के दूत ने उसे कहा कि तू ने अपनी गदही को यह तीन बार क्यों मारा देख मैं तेरे बिरुद्ध में निकला हूं इस लिये कि तेरी चाल मेरे आगे
३३ हठीली है। और गदही मुझे देखके यह तीन बार मुझ से फिर गई यदि वह मुझ से न फिरती तो निश्चय अब मैं तुझे मार ही डालता और उसे जीती
३४ छोड़ता। तब बलआम ने परमेश्वर के दूत से कहा कि मुझ से पाप हुआ क्यों- कि मैं ने न जाना कि तू मेरे बिरुद्ध मार्ग में खड़ा है सो अब यदि तू अप्रसन्न
३५ है तो मैं फिर जाऊंगा। पर परमेश्वर के दूत ने बलआम से कहा कि इन मनुष्यों के साथ जा परन्तु केवल जो बचन मैं तुझे कहूं सोई कहियो सो बलआम बलक के प्रधानों के साथ गया॥
३६ जब बलक ने सुना कि पहुंचा तो उस ने अत्यंत तीर जो अरनून के सिवाने में मोआब के एक नगर लों उस की अगुआई को निकला।
३७ तब बलक ने बलआम से कहा कि क्या मैं ने बड़ी बिनती करके तुझे नहीं बुलाया तू मुझ पास क्यों चला न आया क्या निश्चय मैं तेरा माहात्म्य नहीं
३८ बढ़ा सक्ता। तब बलआम ने बलक से कहा देख मैं तेरे पास आया क्या मुझ में कुछ शक्ति है कि मैं कहूं जो बात ईश्वर मेरे मुंह में डालेगा सोई कहूंगा॥
३९ और बलआम और बलक साथ साथ
४० गये और करियातहूसूस में पहुंचे। तब बलक ने बैल और भेड़ चढ़ाये और बलआम के और उन अध्यक्षों के पास जो उस के साथ थे भेजा॥
४१ और बिहान को यों हुआ कि बलक ने बलआम को साथ लिया और उसे बआल के ऊंचे स्थानों में लाया जिसतें वह वहां से लोगों को बाहर बाहर देखे॥

तेईसवां पर्ब्ब

१ तब बलआम ने बलक से कहा कि मेरे लिये यहां सात बेदी बना और मेरे लिये यहां सात बैल और सात मेंढे सिद्ध
२ कर। और जैसा बलआम ने कहा था बलक ने वैसा किया और बलक और बलआम ने हर बेदी पर एक बैल और
३ एक मेंढा चढ़ाया। फिर बलआम ने बलक से कहा कि अपने बलिदान की भेंट के पास खड़ा रह और मैं जाऊंगा कदाचित् परमेश्वर मुझ से भेंट करे और जो कुछ वह मुझे दिखावेगा मैं तुझे कहूंगा सो वह ऊंचे स्थान को चला।
४ और ईश्वर बलआम को मिला और उस ने उसे कहा कि मैं ने सात बेदी सिद्ध किया और एक एक बैल और एक एक
५ मेंढा हर एक पर चढ़ाया। तब परमेश्वर

ने बलआम के मुंह में बचन डाला और उसे कहा कि बलक पास फिर जा ६ और उसे यों कह। सो वह उस पास फिर आया और क्या देखता है कि वह अपने बलिदान की भेंट के पास मोअब ७ के सब प्रधानों समेत खड़ा है। तब उस ने अपने दृष्टान्त में कहा कि

पूरब के पहाड़ों से अराम से मोअब के राजा बलक ने मुझे बुलाया कि मेरे निमित्त यअकूब को स्राप दीजिये और ८ इसराएल को धिक्कारिये। मैं उसे क्योंकर स्रापूं जिसे सर्व्वशक्तिमान ने नहीं स्रापा अथवा उसे धिक्कारूं जिसे परमे- ९ श्वर ने नहीं धिक्कारा। क्योंकि पहाड़ों की चोटी पर से मैं उसे देखता हूं और पहाड़ियों पर से उसे ताकता हूं देखो ये लोग अकेले रहेंगे और जातिगणों के १० मध्य गिने न जावेंगे। यअकूब की धूल को कौन गिन सक्ता है और इसराएल की चौथाई का लेखा कौन ले सक्ता है हाय कि मैं धर्मी की मृत्यु मरूं और मेरा अंत उस का सा हो॥

११ तब बलक ने बलआम से कहा कि तू ने मुझ से क्या किया मैं ने तुझे अपने शत्रुन को स्राप देने को लिया और देख १२ तू ने उन्हें सर्व्वथा आशीस दिया। और उस ने उत्तर दिया और कहा कि क्या मुझे उचित नहीं कि वही बात कहूं जो परमेश्वर ने मेरे मुंह में डाली है॥

१३ और बलक ने उसे कहा कि अब मेरे साथ और ही स्थान पर चलिये वहां से आप उन्हें देखिये आप केवल उन को बाहर बाहर देखियेगा और उन्हें सब के सब न देखियेगा और मेरे लिये वहां से १४ उन पर स्राप दीजिये। और वह उसे वहां से सोफीम के खेत में पिसगः की चोटी पर ले गया और सात बेदी बनाईं और हर बेदी पर एक बैल और एक मेंढ़ा चढ़ाया। तब उस ने बलक से १५ कहा कि जब लों मैं वहां जाऊं और ईश्वर से मिल आऊं तू यहां अपने बलिदान की भेंट पास खड़ा रह। सो पर- १६ मेश्वर बलआम को मिला और उस के मुंह में बचन डाला और कहा कि बलक पास फिर जा और यों कह। और जब १७ वह उस पास पहुंचा तो क्या देखता है कि वह अपने बलिदान की भेंट के पास मोअब के प्रधानों समेत खड़ा है तब बलक ने उस्से कहा कि परमेश्वर ने क्या कहा है। तब उस ने अपने दृष्टांत १८ उठाके कहा कि

उठ हे बलक और सुन हे सफूर के बेटे मेरी ओर कान धर। सर्व्वशक्तिमान १९ मनुष्य नहीं कि झूठ बोले न मनुष्य का पुत्र कि वह पछतावे क्या वह कहे और न करे अथवा बोले और उसे पूरा न करे। देख मैं ने आशीस के निमित्त २० पाया है और उस ने आशीस दिया है और मैं उसे पलट नहीं सक्ता। उस ने २१ यअकूब में बुराई नहीं देखी और न उस ने इसराएल में हठ देखा परमेश्वर उस का ईश्वर उस के साथ है और एक राजा का ललकार उन के मध्य में है। सर्व्व- २२ शक्तिमान उन्हें मिस्र से निकाल लाया वह अरने का सा बल रखता है। निश्चय २३ यअकूब के बिरोध टोना नहीं और इसराएल के बिरुद्ध कोई प्रश्न नहीं इस समय के समान यअकूब के और इसराएल के बिषय में कहा जायगा कि सर्व्वशक्तिमान ने क्या किया। देखो ये २४ लोग महासिंह की नाईं उठेंगे और आप को युवा सिंह के समान उठावेंगे वह न सोवेगा जब लों अहेर न खा ले और जब लों जूझे का लोहू न पी ले॥

तब बलक ने बलआम से कहा कि २५ न तो उन्हें स्राप न आशीस दीजिये।

२६ परन्तु बलआम ने उत्तर दिया और बलक से कहा क्या मैं ने तुझे नहीं कहा कि जो कुछ परमेश्वर कहेगा मैं उसे अवश्य करूंगा॥

२७ तब बलक ने बलआम से कहा कि आइये मैं आप को दूसरे स्थान पर ले जाऊं कदाचित् ईश्वर की इच्छा होवे कि वहां से आप मेरे लिये उन्हें साप २८ दीजिये। तब बलक बलआम को फ़ूर की चोटी पर जो जसमन के २९ सन्मुख है लाया। और बलआम ने बलक से कहा कि मेरे लिये यहां सात बेदी बना और यहां मेरे लिये सात बैल और ३० सात मेंढे सिद्ध कर। और जैसा बलआम ने कहा था बलक ने वैसा किया और हर एक बेदी पर एक बैल और एक मेंढा चढ़ाया॥

चौबीसवां पर्ब्ब

१ जब बलआम ने देखा कि इसराएल को आशीस देना ईश्वर को अच्छा लगा तब वह अबकी आगे की नाईं नहीं गया कि टोना करे परन्तु उस ने अपने २ मुंह को बन की ओर किया। और बलआम ने अपनी आंखें उठाईं और इसराएल को देखा कि अपनी अपनी गोष्ठियों के समान बसे हैं तब ईश्वर ३ का आत्मा उस पर उतरा। और उस ने अपने दृष्टांत उठाके कहा कि

बऊर के बेटे बलआम ने कहा है और वह मनुष्य जिस की आंखें खुली हैं ४ बोला है। जिस ने ईश्वर के बचन को सुना है और सर्वशक्तिमान ईश्वर का दर्शन पाया है सो पड़ा है परन्तु आंखें ५ खुली हैं उस ने कहा है। क्याही सुन्दर हैं तेरे तंबू हे यअकूब और तेरे निवास- ६ स्थान हे इसराएल। वे तराई की नाईं और नदी के निकट की बारियों की नाईं और जैसे अगर के वृक्ष जिसे परमेश्वर ने लगाया है और जैसे पानी के निकट के अरज़ वृक्ष होवें फैले हुए हैं। ७ वह अपनी मोट से पानी बहावेगा और उस का बीज बहुत से पानियों में होगा उस का राजा अगाग से बड़ा होगा ८ और उस का राज्य बढ़ जावेगा। सर्वशक्तिमान उसे मिस्र से बाहर निकाल लाया उस में अरने का सा बल है वह अपने शत्रु के देशियों को भक्षण करेगा और उन की हड्डियों को चूर करेगा और अपने बाणों से उन्हें छेदेगा। ९ वह झुकता है और सिंह की नाईं हां महासिंह की नाईं लेटा है उसे कौन छेड़ सक्ता है धन्य है वह जो तुझे आशीस देवे और सापित है वह जो तुझे साप देवे॥

१० तब बलक का क्रोध बलआम पर भड़का और उस ने अपने दोनों हाथों से थपोली पीटी और बलक ने बलआम से कहा कि मैं ने तो तुझे अपने बैरियों को साप देने को बुलाया और देख तू ने तीन बार उन्हें सर्वथा आशीस दिया ११ है। चल अपने स्थान को भाग मैं ने तेरी बड़ी प्रतिष्ठा करने चाहा था पर देख परमेश्वर ने तुझे प्रतिष्ठा से रोक १२ रक्खा। तब बलआम ने बलक से कहा कि मैं ने तेरे दूतों को जिन्हें तू ने मेरे १३ पास भेजा था नहीं कहा। कि यदि बलक अपना घर भर चांदी सोना मुझे देवे मैं भला अथवा बुरा करने में परमेश्वर की आज्ञा को उल्लंघन नहीं कर सक्ता परन्तु जो कुछ परमेश्वर कहे मैं वही कहूंगा। १४ और अब देख मैं अपने लोगों में जाता हूं आ मैं तुझे संदेश देऊंगा कि ये लोग तेरे लोगों से पिछले १५ दिनों में क्या करेंगे। तब उस ने अपने दृष्टांत उठाके कहा और बोला कि

बऊर का पुत्र बलआम कहता है और वह मनुष्य जिस की आंखें खुली हैं

१६ कहता है । वही जिस ने सर्वशक्तिमान के वचन को सुना है और अत्यंत महान के ज्ञान को जाना है जिस ने सर्वशक्तिमान का दर्शन पाया है जो पड़ा है परन्तु १७ उस की आंखें खुली हैं । मैं उसे देखूंगा पर अभी नहीं मेरी दृष्टि उस पर पड़ेगी पर निकट से नहीं यअकूब से एक तारा निकलेगा और इसराएल से एक राजदंड उठेगा और मोअब के कोनों को मार लेगा और सेत के सारे संतान को १८ नाश करेगा । और अदूम अधिकार होगा और शईर भी अपने शत्रुन के लिये अधिकार होगा और इसराएल १९ बीरता करेगा । और वह जो राज्य पावेगा सो यअकूब से निकलेगा और जो नगर में बच रहेगा उसे नाश करेगा ॥

२० तब उस ने अमालीक को देखा और अपना दृष्टान्त उठाया और कहा कि

अमालीक लोगों में पहिला था परन्तु अंत में वह नाश होगा ॥

२१ फिर उस ने कीनियों पर दृष्टि किई और अपना दृष्टांत उठाया और कहा कि

तेरा निवास दृढ़ है और तू पहाड़ २२ पर अपना खोंता बनाता है । तथापि कीनी उजाड़ किये जावेंगे यहां लों कि असूर तुझे बंधुआई में ले जावेगा ॥

२३ तब उस ने अपना दृष्टांत उठाया और कहा कि

हाय कौन जीता रहेगा जब सर्वशक्तिमान २४ योंहीं करेगा । और कित्ती के तीर से जहाज आवेंगे और असूर को और इब्र को सतावेंगे और वह भी सर्वथा नाश होवेगा ॥

२५ तब बलआम उठा और चला और अपने स्थान को फिर गया और बलक ने भी अपना मार्ग लिया ॥

पचीसवां पर्ब्ब ।

१ सो इसराएल सित्तीम में रहा और लोगों ने मोआबियों की बेटियों से व्यभिचार करना आरंभ किया । २ और उन्हों ने अपने देवतों के बलिदानों में उन लोगों को नेवता दिया और लोगों ने खाया और उन के देवतों को दण्डवत किई । ३ और इसराएल बअलफगूर से मिले तब परमेश्वर का क्रोध इसराएल पर भड़का । ४ और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि लोगों के सारे प्रधानों को पकड़ और उन्हें परमेश्वर के आगे सूर्य्य के सन्मुख टांग दे जिसतें परमेश्वर के क्रोध का भड़कना इसराएल पर से टल जावे । ५ सो मूसा ने इसराएल के न्यायियों से कहा कि तुम्में से हर एक अपने लोगों को जो बअलफगूर से मिल गये थे मार डालो ॥

६ और देखो एक इसराएली आया और अपने भाइयों के पास एक मिदयानी स्त्री को मूसा और इसराएल के संतानों की सारी मंडली के साम्ने लाया और वे मंडली के तंबू के द्वार पर बिलाप करते थे । ७ और जब हारून याजक के बेटे इलिअज़र के बेटे फीनिहास ने यह देखा तब वह मंडली में से उठा और बरछी अपने हाथ में लिई । ८ और उस मनुष्य के पीछे तंबू में घुसा और उन दोनों को इसराएली पुरुष और स्त्री के पेट को गोदा तब इसराएल के संतानों में से मरी थम गई । ९ और वे जो उस मरी से मरे सो चौबीस सहस्र थे ॥

१० फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । ११ कि हारून याजक के बेटे इलिअज़र के बेटे फीनिहास ने मेरे कोप को इसराएल के संतानों पर से फेरा जब वह उन में मेरे निमित्त ज्वलित था जिसतें मैं ने इसराएल के संतानों को अपने झल से भस्म न किया । १२ सो कह कि देख मैं उसे अपने कुशल की वाचा देता हूं । १३ सो

वह उस के और उस के पीछे उस के बंश के लिये होगा अर्थात् सनातन की याजकता की आज्ञा इस कारण कि वह अपने ईश्वर के लिये ज्वलित था और उस ने इसराएल के संतानों के लिये १४ प्रायश्चित्त किया। और उस इसराएली मनुष्य का नाम जो उस मिदयानी स्त्री के साथ मारा गया जिमरी था सलू का बेटा जो समऊनियों के एक श्रेष्ठ घर १५ का अध्यक्ष था। और उस मिदयानी स्त्री का नाम जो मारी गई कजबी था सूर की बेटी जो लोगों का प्रधान और मिदयान के संतानों में श्रेष्ठ घर का था॥

१६ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। १७ कि मिदयानियों को खिझाओ और उन्हें १८ मारो। क्योंकि उन्हों ने अपने छल से जिस्से उन्हों ने फगूर के बिषय में तुम्हें छल दिया और कजबी के बिषय में जो मिदयानी के प्रधान की बेटी और उन की बहिन थी जो उस मरी के दिन जो फगूर के कारण से हुई मारी गई उन्हों ने तुम्हें खिझाया॥

छब्बीसवां पर्ब्ब।

१ और ऐसा हुआ कि उस मरी के पीछे परमेश्वर ने मूसा से और हारून याजक २ के बेटे इलिअजर से कहा। कि इसराएल के संतानों की समस्त मंडली की बीस बरस से लेके ऊपर लों उन के पितरों के समस्त घरानों की सब जो इसराएल में संग्राम के योग्य हैं गिनती ३ लेओ। सो मूसा और इलिअजर याजक ने मोआब के चौगानों में यरदन नदी ४ और यरीहू के लग उन से कहा। कि बीस बरस से लेके ऊपर लों गिनो जैसे परमेश्वर ने मूसा और इसराएल के संतानों को जो मिस्र की भूमि से निकले थे आज्ञा किई थी॥

५ रूबिन इसराएल का पहिलौठा बेटा रूबिन का संतान हनूक जिस्से हनूकियों का घराना है और फलू जिस्से फलूइयों ६ का घराना है। हसरून जिस्से हसरूनियों का घराना है करमी जिस्से करमियों ७ का घराना है। ये रूबिनियों के घराने और जो उन में गिने गये सो तेंतालीस ८ सहस्र सात सौ तीस थे। और फलू के ९ बेटे इलिअब। और इलिअब के बेटे नमूएल और दातन और अबिराम ये वह दातन और अबिराम जो मंडली में नामी जो कुरह की जथा में मूसा और हारून के बिरोध में झगड़ा जब उन्हों ने परमेश्वर के बिरोध में झगड़ा। और भूमि १० ने अपना मुंह खोला और उन्हें कुरह सहित निंगल गई जिस समय वह जथा मर गई जब कि उस आग ने अढ़ाई सौ मनुष्यों को खा लिया और वे एक चिन्ह हुए। तथापि कुरह के संतान ११ न मरे॥

समऊन के बेटे अपने घराने के समान १२ नमूएल से नमूएलियों का घराना यमीन से यमीनियों का घराना याकीन से याकीनियों का घराना। जिरह से १३ जिरहियों का घराना साऊल से साऊलियों का घराना। ये समऊनियों के घराने १४ बाईस सहस्र दो सौ थे॥

जद के संतान अपने घरानों के १५ समान सफून से सफूनियों का घराना हाजी से हाजियों का घराना सूनी से सूनियों का घराना। उजनी से उजनियों १६ का घराना ऐरी से ऐरियों का घराना। अरूद से अरूदियों का घराना अरेली १७ से अरेलियों का घराना। ये जद के १८ संतान के घराने उन की गिनती के समान चालीस सहस्र पांच सौ थे॥

यहूदाह के बेटे ऐर और ओनान १९ और ऐर और ओनान कनआन के देश में मर गये। और यहूदाह के बेटे अपने २०

घरानों के समान ये हैं सेला से सेलानियों का घराना फारस से फारसियों का घराना जिरह से जिरहियों का घराना। २१ और फारस के बेटे हसरून से हसरूनियों का घराना हमूल से हमूलियों का २२ घराना। ये यहूदाह के घराने उन की गिनती के समान छिहत्तर सहस्र पांच सौ थे॥

२३ इशकार के बेटे उन के अपने घरानों के समान तोलअ से तोलियों का घराना २४ फव: से फूवियों का घराना। यसूब से यसूबियों का घराना सिमरून से सिम- २५ रूनियों का घराना। ये इशकार के घराने उन की गिनती के समान चौंसठ सहस्र तीन सौ थे॥

२६ जबुलून के बेटे अपने घरानों के समान सरद से सरदियों का घराना एलून से एलूनियों का घराना यहलिएल २७ से यहलिएलियों का घराना। ये जबु- लूनियों के घराने उन की गिनती के समान साठ सहस्र पांच सौ थे॥

२८ यूसुफ के बेटे अपने घरानों के समान २९ मुनस्सी और इफरायम। मुनस्सी के बेटे मकीर से मकीरियों का घराना और मकीर से जिलिआद उत्पन्न हुआ जिलिआद ३० से जिलिआदियों का घराना। ये जिलि- आद के बेटे ईअजर से ईअजरियों का घराना खलक से खलकियों का घराना। ३१ और असरिएल से असरिएलियों का घराना और सिकम से सिकमियों का ३२ घराना। और सिमीदा से सिमिदाइयों का घराना और हिफ्र से हिफ्रियों का ३३ घराना। और हिफ्र के बेटे सिलाफिहाद के बेटे न थे परन्तु बेटियां जिन के ये नाम महलः और नूअ: हजल: मिलक: ३४ और तिरज:। ये मुनस्सी के घराने उन की गिनती के समान बावन सहस्र सात सौ थे॥

३५ ये इफरायम के बेटे अपने घरानों के समान सूतलह से सूतलहियों का घराना बकर से बकरियों का घराना तहन से तहनियों का घराना। ३६ और ये सूतलह के बेटे ऐरान से ऐरानियों का घराना। ३७ ये इफरायम के बेटों के घराने उन की गिनती के समान बत्तीस सहस्र पांच सौ थे सो यूसुफ के बेटे अपने घरानों के समान ये थे॥

३८ बिनयमीन के बेटे अपने घरानों के समान बलअ से बलइयों का घराना असबील से असबीलियों का घराना अखिराम से अखिरामियों का घराना। ३९ सफूफाम से सफूफामियों का घराना ४० हूफाम से हूफामियों का घराना। और बोला के बेटे अरद और नअमान अर- दियों का घराना नअमान से नअमानियों ४१ का घराना। ये बिनयमीन के बेटे उन के घरानों के समान और वे जो उन में से गिने गये सो पैंतालीस सहस्र छ: सौ थे॥

४२ दान के बेटे अपने घरानों के समान सूहाम से सूहामियों का घराना दान के घराने उन के घरानों के समान ये हैं। ४३ सूहामियों के सारे घराने उन की गिनती के समान चौंसठ सहस्र चार सौ थे॥

४४ यसर के संतान अपने घरानों के समान यिमन: से यिमनियों का घराना यसवी से यसवियों का घराना बरीअ: से ४५ बरियों का घराना। बरीअ: के बेटों से हिब्र से हिब्रियों का घराना मलकिएल से ४६ मलकिएलियों का घराना है। और यसर ४७ की बेटी का नाम सारह था। यसर के संतान के घराने उन की गिनती के समान ये हैं तिरपन सहस्र चार सौ॥

४८ नफताली के बेटे अपने घरानों के समान यहसिएल से यहसिएलियों का घराना जुनी से जुनियों का घराना।

४९ यिसर से यिसरियों का घराना सिलीम
५० से सिलीमियों का घराना । उन के घरानों के समान ये नफताली के घराने थे और उन में से जो गिने गये पैंतालीस सहस्र चार सौ थे ॥
५१ सब इसराएल के संतान जो गिने गये छ: लाख एक सहस्र सात सौ तीस थे ॥
५२ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला ।
५३ कि यह देश उन के नाम की गिनती के समान इन के लिये अधिकार में भाग
५४ किया जावे । तू बहुतों को बहुत सा अधिकार दीजियो और थोड़ों को थोड़ा अधिकार हर एक को उस के गिने गये
५५ के समान उस को दिया जावे । तिस पर भी देश चिट्ठी से बांटा जावे वे अपने पितरों की गोष्ठियों के नाम के
५६ समान अधिकार पावें । बहुतों और थोड़ों में चिट्ठी से उन का अधिकार बांट दिया जावे ॥
५७ और वे जो लावियों में से गिने गये उन के घरानों के समान ये हैं जैरसुन से जैरसुनियों का घराना किहात से किहातियों का घराना मिरारी से मिरा-
५८ रियों का घराना । लावी के घराने ये हैं लबनियों का घराना इबरूनियों का घराना मुहली का घराना मूसी का घराना कुरह का घराना और किहात
५९ से अमराम उत्पन्न हुआ । और अमराम की पत्नी का नाम यूकबिद था लावी की कन्या जिसे उस की माता लावी से मिस्र में जनी सो वह अमराम से हारून और मूसा और उन की बहिन
६० मिरयम को जनी । और हारून से नदब और अबिहू इलिअजर और ईतमर उत्पन्न
६१ हुए । सो नदब और अबिहू जब कि वे ऊपरी आग परमेश्वर के आगे लाये
६२ मर गये । और वे जो उन में गिने गये एक मास से लेके ऊपर लों तेईस सहस्र पुरुष थे ये इसराएल के संतानों में गिने नहीं गये क्योंकि उन्हें इसराएल के संतान के मध्य में अधिकार नहीं दिया गया ॥

ये वे इसराएल के संतान हैं जिन्हें ६३ मूसा और इलिअजर याजक ने मोअब के चौगानों में यरदन नदी यरीहू के साम्ने गिना । परन्तु मूसा और हारून याजक ६४ के गिने हुओं में से जिस समय कि इसराएल के संतान को सीना के बन में गिना था एक मनुष्य भी उन में न था । क्योंकि परमेश्वर ने उन के विषय में ६५ कहा था कि वे निश्चय अरण्य में मर जावेंगे सो उन में से केवल यफुन्न: के बेटे कालिब और नून के बेटे यहूशूअ को छोड़ एक भी न बचा ॥

सत्ताईसवां पर्ब्ब ।

तब यूसुफ के बेटे मुनस्सी के घराने १ से मुनस्सी के बेटे मकीर के बेटे जिलिअद के बेटे हिफ्र के बेटे सिलाफिहाद की बेटियां निकट आईं और उस की बेटियों के नाम ये हैं महल: नूआ: और हजल: और मिलक: और तिरज: । और २ मूसा और इलिअजर याजक और अध्यक्षों और सब मंडली के आगे मंडली के तंबू के द्वार के निकट खड़ी हुईं और बोलीं । कि हमारा पिता बन में मर गया और ३ वह उन की जथा में न था जो परमेश्वर के विरुद्ध होके एकट्ठे हुए थे अर्थात् कुरह की जथा में परन्तु अपने पाप के कारण मर गया और उस के बेटे न थे । सो हमारे पिता का नाम ४ उस के घराने से क्यों निकाला जावे क्या इस लिये कि उस के कोई बेटा न था हमें हमारे पिता के भाइयों में मिलके भाग देओ ॥

तब मूसा उन का पद परमेश्वर के ५ निकट ले गया । और परमेश्वर मूसा से ६

७ कहके बोला। कि सिलाफिहाद की बेटियां सच कहती हैं तू उन्हें उन के पिता के भाइयों में भागी करके अवश्य अधिकार दे और ऐसा कर कि उन के पिता का ८ अधिकार उन्हों को पहुंचे। और इसराएल के संतानों से कह यदि कोई पुरुष मर जावे और उस के कोई बेटा न हो तो उस का अधिकार उस की बेटी को ९ पहुंचे। और यदि उस की बेटी भी न हो तो उस के भाइयों को उस का १० अधिकार दीजियो। और यदि उस के भाई न हों तो तुम उस का अधिकार ११ उस के पिता के भाइयों को देओ। और यदि उस के पिता के भाई भी न हों तो तुम उस का अधिकार उस के घराने के समीपी कुटुम्ब को देओ और वह उस का अधिकारी होगा और यह आज्ञा इसराएल के संतानों के लिये जैसा परमेश्वर ने मूसा से कहा यह सदा के लिये बिधि होगी॥

१२ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला कि अब तू अबरीम के इस पहाड़ पर चढ़ जा और उस देश को जो मैं ने इसराएल के संतानों को दिया है देख। १३ और जब तू उसे देख लेगा तू भी अपने लोगों में मिल जावेगा जिस रीति से १४ तेरा भाई हारून मिल गया। क्योंकि मंडली के झगड़े में सीन के अरण्य में तुम मेरी आज्ञा के बिरोध में फिर गये और उन की आंखों के आगे पानी पास जो मरीबः के पानी कादिस में सीन के अरण्य में मुझे पवित्र न किया॥

१५ तब मूसा परमेश्वर के आगे कहके १६ बोला। कि हे परमेश्वर सब शरीरों के प्राणों का ईश्वर किसी को मंडली १७ का प्रधान बना। जो बाहर भीतर उन के आगे आगे आया जाया करे और जो बाहर भीतर उन की अगुआई करे जिसतें परमेश्वर की मंडली उन भेड़ों की नाईं न हो जावे जिन का कोई रखवाल न हो॥

१८ तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि नून के बेटे यहूशूअ को ले जिस पर आत्मा है और उस पर अपना हाथ रख। १९ और उसे इलिअज़र याजक और सारी मंडली के आगे खड़ा कर और उन के २० आगे उसे आज्ञा कर। और अपनी प्रतिष्ठा में से उस पर कुछ रख जिसतें इसराएल के संतानों की सारी मंडली २१ बश में होवे। और वह इलिअज़र याजक के आगे खड़ा होवे जो उस के लिये ऊरिम के न्याय के समान परमेश्वर के आगे पूछे वह और सारे इसराएल के संतानों की सारी मंडली उस के कहने से बाहर जावें और उस के कहने से भीतर आवें॥

२२ सो जैसा परमेश्वर ने उसे आज्ञा किई थी मूसा ने यहूशूअ को लेके उसे इलिअज़र याजक और सारी मंडली के सामे २३ खड़ा किया। और उस ने अपने हाथ उस पर रक्खे और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा की ओर से कहा था उसे आज्ञा दिई॥

अट्ठाईसवां पर्व्ब।

१ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। २ कि इसराएल के संतानों को आज्ञा करके उन्हें बोल कि मेरी भेंट और होम के बलिदानों की रोटी मेरे सुगंध के लिये उन के समय में पालन करके चढ़ाओ॥

३ और तू उन्हें कह कि होम की भेंट जो तुम परमेश्वर के लिये चढ़ाइयो सो यह है कि पहिले बरस के दो निर्खोट मेम्ने प्रतिदिन नित्य के बलिदान की ४ भेंट के लिये। एक मेम्ना बिहान को ५ और एक मेम्ना सांझ को। और ऐफा का दसवां भाग पिसान और हीन का चौथा भाग कूटा हुआ तेल भोजन की

६ भेंट के लिये। यह बलिदान की भेंट नित्य के लिये है जो सीना के पहाड़ पर होम का बलिदान परमेश्वर के
७ सुगंध के लिये ठहराया गया है। और उस का तपावन हीन का चौथा भाग एक मेम्ना के लिये तीक्ष्ण दाखरस को परमेश्वर के आगे तपावन के लिये पवित्र
८ स्थान में तपाओ। और तू दूसरा मेम्ना सांझ को चढ़ाना तू बिहान के भोजन की भेंट की नाईं और उस के तपावन की नाईं परमेश्वर के सुगंध के लिये होम की भेंट चढ़ा॥

९ और बिश्राम के दिन पहिले बरस के दो निष्खोट मेम्ने दो दसवां भाग पिसान भोजन की भेंट के लिये तेल से मिला हुआ
१० और उस का तपावन। हर एक बिश्राम के बलिदान की भेंट नित्य के बलिदान की भेंट को छोड़के और उस का तपावन यही है॥

११ और तुम्हारे मास के आरंभ में बलिदान की भेंट के लिये परमेश्वर के आगे दो बछड़े एक मेंढ़ा पहिले बरस के
१२ निष्खोट सात मेम्ने चढ़ाओ। और एक बछड़े के लिये तेल से मिला हुआ तीन दसवां भाग पिसान भोजन की भेंट के लिये और एक मेंढे के लिये तेल से मिला हुआ दो दसवां भाग पिसान भोजन की
१३ भेंट के लिये। और एक मेम्ने के भोजन की भेंट के लिये तेल से मिला हुआ दसवां भाग पिसान सुगंध के बलिदान की भेंट के लिये आग से जलाया हुआ परमेश्वर
१४ लिये भेंट। और उन के तपावन एक बछड़े पीछे आधा हीन दाखरस और मेंढे पीछे तिहाई हीन है और मेम्ना पीछे चौथाई हीन बरस के हर मास के बलिदान की
१५ भेंट यह है। और नित्य के बलिदान की भेंट और उस के तपावन के बलिदान को छोड़ पाप की भेंट के लिये परमेश्वर के आगे बकरी का एक मेम्ना चढ़ाया जावे॥

१६ और पहिले मास की चौदहवीं तिथि
१७ परमेश्वर की फसह का पर्व्व है। और इस मास की पन्दरहवीं तिथि को पर्व्व होगा सात दिन लों अखमीरी रोटी खाई जावे।
१८ पहिले दिन पवित्र बुलावा होगा उस दिन तुम कोई सांसारिक कार्य्य न करना।
१९ और बलिदान की भेंट आग से परमेश्वर के लिये चढ़ाइयो दो बछड़े और एक मेंढा और पहिले बरस के सात निष्खोट मेम्ने।
२० और उन के साथ भोजन की भेंट तीन दसवां भाग पिसान तेल से मिला हुआ हर बछड़े पीछे और हर मेंढे पीछे दो दसवां
२१ भाग चढ़ाइयो। सातों मेम्नों में से हर मेम्ने
२२ पीछे दसवां भाग चढ़ाइयो। और अपने प्रायश्चित्त के निमित्त पाप की भेंट के
२३ लिये एक बकरी। तुम बिहान के बलिदान की भेंट से अधिक जो सदा जलाया
२४ जाता है चढ़ाया करो। परमेश्वर के सुगंध के लिये होम के बलिदान के मांस को सात दिन भर प्रतिदिन इस रीति से चढ़ाइयो नित्य के बलिदान की भेंट और उस के तपावन को छोड़के इसे
२५ चढ़ाइयो। और सातवें दिन तुम्हारा पवित्र बुलावा होगा उस में तुम कोई सांसारिक कार्य्य न करना॥

२६ और पहिले फल के दिन में भी जब तुम भोजन की भेंट अपने अठवारों के पीछे परमेश्वर के आगे चढ़ाइयो तो तुम्हारे लिये पवित्र बुलावा होगा कोई
२७ सांसारिक कार्य्य न कीजियो। और तुम परमेश्वर के सुगंध के लिये बलिदान की भेंट चढ़ाइयो दो बछड़े एक मेंढा पहिले बरस के सात निष्खोट मेम्ने चढ़ाइयो।
२८ और उन के भोजन की भेंट तीन दसवां भाग पिसान तेल से मिला हुआ हर बछड़े पीछे और दो दसवां भाग हर मेंढे पीछे।

२९ दसवां भाग सातों मेम्रों में से हर एक ३० मेम्रा पीछे। एक बकरी का मेम्रा जिसतें तुम्हारे लिये प्रायश्चित्त में दिया जावे। ३१ नित्य के बलिदान की भेंट और उस के भोजन की भेंट जो तुम्हारे लिये निष्खोट होवें और उन के तपावन छोड़के उसे जो निष्खोट होवे चढ़ाइयो॥

उन्तीसवां पर्ब्ब

१ और सातवें मास की पहिली तिथि में तुम्हारा पवित्र बुलावा होगा तुम कोई सेवा का कार्य्य न कीजियो यह तुम्हारे नरसिंगे फूंकने का दिन है। २ और तुम परमेश्वर के सुगंध के लिये एक बछड़ा एक मेंढा और पहिले बरस के सात निष्खोट मेम्रे बलिदान की भेंट ३ चढ़ाइयो। और उन के भोजन की भेंट हर बछड़े पीछे तीन दसवां भाग पिसान तेल से मिला हुआ और हर मेंढे पीछे दो ४ दसवां भाग। और सातों मेम्रों के लिये ५ हर मेम्रे पीछे एक दसवां भाग। और बकरी का एक मेम्रा पाप की भेंट के लिये जिसतें तुम्हारे लिये प्रायश्चित्त किया ६ जावे। मास के बलिदान की भेंट के और उस के भोजन की भेंट के अधिक और प्रतिदिन के बलिदान की भेंट के और उन के भोजन की भेंट के और उन के तपावनों के उन की रीति के समान आग से किये हुए भेंट परमेश्वर के सुगंध के लिये चढ़ाइयो॥

७ और॰ इस सातवें मास की दसवीं तिथि में तुम्हारे लिये पवित्र बुलावा होगा और तुम अपने प्राण को क्लेश ८ दीजियो कोई कार्य्य न करियो। परन्तु परमेश्वर के सुगंध के बलिदान की भेंट के लिये एक बछड़ा एक मेंढा पहिले बरस के सात मेम्रे चढ़ाइयो तुम्हारे लिये ९ निष्खोट होवें। और उन के भोजन की भेंट तीन दसवां भाग पिसान तेल से मिला हुआ बछड़ा पीछे और हर मेंढा पीछे दो दसवां भाग। सातों मेम्रों के १० लिये हर मेम्रा पीछे एक दसवां भाग। पाप के प्रायश्चित्त की भेंट के और ११ नित्य के बलिदान की भेंट के और उस के भोजन की भेंट के और उन के तपावनों के अधिक पाप की भेंट के लिये बकरी का एक मेम्रा॥

और सातवें मास की पन्दरहवीं तिथि १२ में तुम्हारा पवित्र बुलावा होगा उस दिन तुम सेवा का कोई कार्य्य न करो और सात दिन तक परमेश्वर के लिये पर्ब्ब करो। और तुम बलिदान की भेंट १३ के लिये परमेश्वर के सुगंध के लिये तेरह बछड़े दो मेंढे और पहिले बरस के चौदह मेम्रे आग से किये हुए बलिदान चढ़ाइयो वे निष्खोट होवें। और उन १४ के भोजन की भेंट तेल से मिला हुआ तीन दसवां भाग पिसान तेरह बछड़ों में से हर बछड़े के लिये दो मेंढों में से हर मेंढे पीछे। और चौदह मेम्रों में से १५ हर मेम्रे पीछे एक दसवां भाग। और १६ नित्य के बलिदान की भेंट के और उस के भोजन की भेंट के और उस के तपावन के अधिक पाप की भेंट के लिये बकरी का एक मेम्रा चढ़ाइयो॥

और दूसरे दिन बारह बछड़े दो मेंढे १७ पहिले बरस के चौदह निष्खोट मेम्रे चढ़ाइयो। और उन के भोजन की भेंट १८ और उन के तपावन बछड़ों और मेंढों और मेम्रों के लिये उन की गिनती के और रीति के समान होवें। और नित्य १९ के बलिदान की भेंट के और उस के भोजन की भेंट के और उन के तपावनों के अधिक पाप की भेंट के लिये बकरी का एक मेम्रा॥

और तीसरे दिन ग्यारह बछड़े दो २० मेंढे और पहिले बरस के चौदह निष्खोट

२१ मेम्ने। और उन के भोजन की भेंट और उन के तपावन बछड़ों और मेंढ़ों और मेम्नों उन की गिनती के और रीति २२ के समान होवें। और नित्य के बलिदान की भेंट के और उस के भोजन की भेंट के और उस के तपावन के अधिक पाप की भेंट के लिये बकरी का एक मेम्ना चढ़ाइयो॥

२३ और चौथे दिन दस बछड़े दो मेंढ़े पहिले बरस के चौदह निष्खोट मेम्ने। २४ उन के भोजन की भेंट और उन के तपावन बछड़ों और मेंढ़ों और मेम्नों के लिये उन की गिनती के और रीति के २५ समान होवें। और नित्य के बलिदान की भेंट के और उस के भोजन की भेंट के और उस के तपावन के अधिक पाप की भेंट के लिये बकरी का एक मेम्ना होवे॥

२६ और पांचवें दिन नव बछड़े दो मेंढ़े पहिले बरस के चौदह निष्खोट मेम्ने। २७ और उन के भोजन की भेंट और उन के तपावन बछड़ों मेंढ़ों और मेम्नों के लिये उन की गिनती के और रीति के २८ समान होवें। और नित्य के बलिदान की भेंट और उस के भोजन की भेंट के और उस के तपावन के अधिक पाप की भेंट के लिये एक बकरी होवे॥

२९ और छठवें दिन आठ बछड़े दो मेंढ़े पहिले बरस के चौदह निष्खोट मेम्ने। ३० और उन के भोजन की भेंट और उन के तपावन बछड़ों मेंढ़ों और मेम्नों के लिये उन की गिनती के और रीति के समान ३१ होवें। और नित्य के बलिदान की भेंट के और उस के भोजन की भेंट के और उस के तपावनों के अधिक पाप की भेंट के लिये एक बकरी होवे॥

३२ और सातवें दिन सात बछड़े दो मेंढ़े पहिले बरस के चौदह निष्खोट मेम्ने। ३३ और उन के भोजन की भेंट और उन के तपावन बछड़ों मेंढ़ों और मेम्नों के लिये उन की गिनती के और उस की रीति ३४ के समान होवें। और नित्य के बलिदान की भेंट के उस के भोजन की भेंट के और उस के तपावन के अधिक पाप की भेंट के लिये एक बकरी होवे॥

३५ आठवें दिन तुम्हारी पवित्र सभा होगी तुम उस दिन सेवा का कोई ३६ कार्य्य न कीजियो। और तुम एक बछड़ा एक मेंढ़ा पहिले बरस के सात निष्खोट मेम्ने बलिदान की भेंट के लिये परमेश्वर के सुगंध के लिये आग से बनाई हुई भेंट ३७ चढ़ाइयो। उन के भोजन की भेंट और उन के तपावन बछड़े और मेंढ़े और मेम्नों के लिये उन की गिनती के और रीति ३८ के समान होवें। और नित्य के बलिदान की भेंट के और उस के भोजन की भेंट के और उस के तपावन के अधिक पाप की भेंट के लिये एक बकरी होवे॥

३९ अपनी मनौतियों के और अपनी वांछित भेंटों के अपने बलिदान की भेंटों के और अपने भोजन की भेंटों के और अपने तपावनों के और अपने कुशल की भेंटों के अधिक तुम इन्हें अपने ४० ठहराये हुए पर्व्वों में कीजियो। और मूसा ने परमेश्वर की समस्त आज्ञा के समान इसराएल के संतानों से कहा॥

तीसवां पर्व्व

१ और मूसा ने इसराएल के संतान की गोष्ठियों के प्रधानों से कहा कि यह वह बात है जो परमेश्वर ने आज्ञा किई है। २ यदि कोई पुरुष परमेश्वर की मनौती माने अथवा किरिया खाके अपने प्राण को बंधन में करे तो वह अपनी बाचा को न तोड़े जो कुछ उस ने अपने मुंह से कहा है संपूर्ण करे॥

३ और यदि कोई स्त्री परमेश्वर की

मनौती माने और अपनी लड़काई में अपने पिता के घर में होते हुए आप ४ को बाचा में बांधे। और उस का पिता उस की मनौती और उस की बाचा जिस्से उस ने अपने प्राण को बांधा है सुनके चुप हो रहे तो उस की सब मनौतियां और हर एक बाचा जिस्से उस ने अपने प्राण को बांधा है स्थिर ५ रहेंगी। परन्तु यदि उस का पिता सुनते हुए उसे माने न देवे तो उस की कोई मनौती और कोई बाचा जो उस ने अपने प्राण को उस्से बांधा न ठहरेगी और परमेश्वर उसे क्षमा करेगा क्योंकि उस के पिता ने उसे माने न दिया॥

६ और जब उस ने मनौती मानी अथवा अपने मुंह से अपने प्राण को किसी बाचा से बांधा और यदि उस का पति ७ होवे। और उस का पति सुनके उस दिन चुपका हो रहा तो उस की मनौतियां ठहरेंगी और उस की बाचा जिन से उस ने अपने प्राण को बांधा ठहरेंगी। ८ परन्तु यदि उस का पति सुनके उसी दिन उस ने उसे माने न दिया हो तो उस ने उस की मनौती को जो उस ने मानी और उस की बाचा को जो उस ने अपने मुंह से अपने प्राण को उस्से बांधा बृथा किया तो परमेश्वर उसे क्षमा करेगा॥

९ परन्तु बिधवा और त्यक्त स्त्री अपनी हर एक मनौती जिस्से उन्हों ने अपने प्राण को बांधा उन पर बनी रहेगी॥

१० और यदि उस ने अपने पति के घर होते हुए कुछ मनौती मानी हो और किरिया करके किसी बाचा में आप को ११ बांधे हो। और उस का पति सुनके चुप हो रहे और उसे न रोके तो उस की मनौतियां ठहरेंगी और उस की हर एक बाचा जिस्से उस ने अपने प्राण को बांधा ठहरेगी। परन्तु यदि सुनके उसी दिन १२ उस का पति उसे बृथा करे तो जो कुछ मनौतियों और अपने प्राण के बंधन के विषय में उस के मुंह से निकला सो न ठहरेगी उस के पति ने उन्हें बृथा किया और परमेश्वर उसे क्षमा करेगा। सब १३ मनौतियां और सब किरिया जिस्से उस ने अपने प्राण को दुःख देने के लिये बांधा उस का पति चाहे तो उसे ठहरावे और चाहे उसे मिटावे। परन्तु यदि उस १४ का पति प्रतिदिन चुप रहे तो उस ने उस की समस्त मनौतियों और बाचों को जो उस पर है स्थिर किया क्योंकि सुनके उस ने अपने चुप रहने से उन्हें स्थिर किया। परन्तु यदि उस ने सुन १५ लिया और उस के पीछे उन्हें बृथा किया तो वह उस का पाप भोगेगा॥

पति और उस की पत्नी के मध्य में १६ पिता उस की पुत्री के मध्य में जब पुत्री लड़काई के समय में अपने पिता के घर होवे ये बिधिन हैं जो परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई॥

एकतीसवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। १
कि इसराएल के संतानों का पलटा २ मिदयानियों से ले इस के पीछे तू अपने लोगों में मिल जावेगा॥

तब मूसा ने लोगों से कहा कि आपुस ३ में कितनों को संग्राम के लिये लैस करो और मिदयान का साम्ना करो जिसतें परमेश्वर का पलटा मिदयान से लेओ। इसराएल की समस्त गोष्ठियों में से हर ४ एक गोष्ठी से एक एक सहस्र संग्राम करने को भेजो। सो इसराएल के सहस्रों ५ में से हर गोष्ठी पीछे एक सहस्र बारह सहस्र हथियारबंद युद्ध के लिये सौंपे गये। तब मूसा ने उन्हें इलिअजर ६ याजक के बेटे फीनिहास के साथ करके

लड़ाई पर भेजा और पवित्र पात्र और फूंकने के नरसिंगे उस के हाथ में थे। ७ और जैसी परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी उन्हों ने मिदयान से युद्ध किया और सारे पुरुषों को मार डाला। ८ और उन्हों ने उन जूझे हुओं से अधिक मिदयान के राजाओं अवी और रकम और सूर और हूर और रबअ को जो मिदयान के पांच राजा थे प्राण से मारा और बऊर के बेटे बलआम को भी खड्ग ९ से मार डाला। और इसराएल के संतानों ने मिदयान की स्त्रियों को और उन के लड़कों को बंधुआई में लिया और उन के समस्त पशु और उन के समस्त चौपाये और उन की संपत्ति समस्त लूट लिया। १० और उन की सारी बस्तियां जिन में वे रहते थे और उन के सुन्दर गढ़ों को ११ फूंक दिया। और उन्हों ने सारी लूट और समस्त मनुष्य और पशु को अहेर १२ किया। और मूसा और इलिअज़र याजक इसराएल के समस्त संतानों की मंडली छावनी में मोअब के चौगानों में जो यरदन के लग यरीहू है बंधुए और लूट और अहेर को लाये॥

१३ तब मूसा और इलिअज़र याजक और मंडली के समस्त प्रधान उन्हें आगे से मिलने के लिये छावनी में से बाहर गये। १४ और मूसा सेना के प्रधानों से और सहस्रों के पतिन से और सैकड़ों के पतिन से १५ जो लड़ाई से आये क्रुद्ध हुआ। और मूसा ने उन्हें कहा कि तुम ने सब १६ स्त्रियों को जीती रक्खा। देखो इन्हों ने बलआम के मंत्र से इसराएल के बंश को फ़ग़ूर के बिषय में परमेश्वर के बिरोध में अपराध करवाया सो परमे- १७ श्वर की मंडली में मरी पड़ी। सो अब लड़कों में से हर एक बेटे को और हर एक स्त्री को जो पुरुष से संयुक्त हुई हो प्राण से मारो। परन्तु वे बेटियां १८ जो पुरुष से संयुक्त न हुई हैं उन्हें अपने लिये जीती रक्खो। और तुम सारे दिन १९ लों छावनी से बाहर रहो जिस किसी ने मनुष्य को मारा हो और जिस किसी ने लोथ को छुआ हो वह आप को और अपने बंधुओं को तीसरे दिन और सातवें दिन पवित्र करे। और तुम अपने समस्त २० बस्त्र और सब जो चमड़े के बने हुए हैं और सब बकरी के रोम के कार्य्य और काष्ठ के पात्र शुद्ध करो॥

तब इलिअज़र याजक ने उन योद्धाओं २१ को जो लड़ाई में गये थे कहा कि यह व्यवस्था की बिधि है जो परमेश्वर ने मूसा से आज्ञा किई। केवल सोना और २२ रूपा पीतल लोहा रांगा और सीसा। समस्त बस्तें जो आग में ठहरें तुम उन्हें २३ आग में डालो और वह पवित्र होगा केवल वह अलग किये हुए जल से पवित्र किया जावेगा और सब बस्तें जो आग में नहीं ठहरतीं तुम उन्हें जल में डालो। और सातवें दिन अपने कपड़े धोके २४ पवित्र होओगे और उस के पीछे छावनी में आओ॥

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। २५ कि तू और इलिअज़र याजक और मंडली २६ के सब प्रधान मिलके मनुष्य की और पशुन की जो लूट में आये हैं गिनती करो। और लूट को दो भाग करो एक २७ उन को जो संग्राम में लड़े और एक समस्त मंडली को देओ। और योद्धा से २८ जो लड़ाई में चढ़ गये थे परमेश्वर के लिये कर लेओ पांच सौ में एक प्राणी चाहे मनुष्य हों चाहे गाय बैल चाहे गदहे हों चाहे भेड़ बकरी। और उन २९ के आधे भाग में से लेके इलिअज़र याजक को दे जिसतें परमेश्वर के लिये उठाने की भेंट होवे। और इसराएल ३०

के संतानों के भाग में से क्या मनुष्य क्या गाय बैल क्या गदहे क्या भेड़ बकरी पचास पचास पीछे एक एक ले और उन्हें लावियों को जो परमेश्वर की छावनी ३१ की रक्षा करते हैं दे। सो मूसा और इलिआज़र याजक ने वैसाही किया जैसी परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई॥

३२ और लूट का बचा हुआ जो योद्धा लोगों के पास था यह था छ: लाख ३३ पचहत्तर सहस्र भेड़ बकरी। और बहत्तर ३४ सहस्र गाय बैल। और एकसठ सहस्र ३५ गदहे। और वे लड़कियां जो पुरुष से संयुक्त न थीं बत्तीस सहस्र थीं॥

३६ सो आधा जो योद्धा लोगों का भाग ठहरा यह था तीन लाख सैंतीस सहस्र ३७ पांच सौ भेड़ बकरी। और परमेश्वर का कर भेड़ बकरी में से छ: सौ पचहत्तर ३८ थीं। और गाय बैल छत्तीस सहस्र थे जिन में से परमेश्वर का कर बहत्तर थे। ३९ और गदहों में से जो तीस सहस्र पांच सौ थे परमेश्वर का भाग एकसठ थे। ४० और मनुष्य में से जो सोलह सहस्र थे ४१ परमेश्वर का कर बत्तीस जन हुए। सो मूसा ने परमेश्वर की आज्ञा के समान उस कर को जो परमेश्वर की उठाने की भेंट थी इलिआज़र याजक को दिया॥

४२ और इसराएल के संतानों का भाग ४३ जो मूसा ने योद्धा लोगों से लिया। सो यह आधा जो मंडली का भाग हुआ यह था तीन लाख सैंतीस सहस्र पांच ४४ सौ भेड़ बकरी। और छत्तीस सहस्र ४५ ढोर। और तीस सहस्र पांच सौ ४६ गदहे। और सोलह सहस्र जन। ४७ और जैसी परमेश्वर ने आज्ञा किई थी मूसा ने इसराएल के संतानों के भाग में से हर पचास जीवधारी पीछे मनुष्य और पशु से एक एक लिया और उन्हें और लावियों को जो परमेश्वर के तंबू की रक्षा करते थे दिया॥

४८ तब सेना के सहस्रपति और शतपति ४९ मूसा के पास आये। और उन्हों ने मूसा से कहा कि तेरे सेवकों ने समस्त योद्धाओं को जो हमारी आज्ञा में हैं गिना और उन में से एक पुरुष भी न ५० घटा। सो हम हर एक वस्तु में से जो हर एक ने पाई परमेश्वर के लिये भेंट लाये हैं सोने के गहने और सीकरें और कड़े और अंगूठियां और बालियां और जंत्र जिसतें हमारे प्राणों के लिये परमेश्वर ५१ के आगे प्रायश्चित होवे। सो मूसा और इलिआज़र याजक ने सोने के बनाये ५२ हुए समस्त गहने उन से लिये। और भेंट का सब सोना जो सहस्रपति और शतपतिन ने परमेश्वर के लिये चढ़ाया ५३ सो सात सौ पचास शैकल था। योद्धों में से हर एक जन अपने अपने लिये ५४ लूट लाया था। सो मूसा और इलिआज़र याजक उस सोने को जो उन्हों ने सहस्रों और सैकड़ों के प्रधानों से लिया मंडली के तंबू में लाये जिसतें परमेश्वर के आगे इसराएल के संतानों का स्मरण हो॥

बत्तीसवां पर्ब्ब।

१ अब रूबिन और जद के संतानों के ढोर अति बहुत थे सो जब उन्हों ने यअज़ीर और जिलिआद के देश को देखा २ कि ढोर के लिये बहुत अच्छा है। तब जद के संतान और रूबिन के संतान ने आके मूसा और इलिआज़र याजक और ३ मंडली के अध्यक्षों से कहा। कि अतरात और दैबून और यअज़ीर और निमर: और हसबून और इलआली और शबाम और नबू और बऊन का देश। ४ जिसे परमेश्वर ने इसराएल की मंडली के आगे मारा वह ढोर का देश और ५ तेरे दासों के ढोर हैं। इस कारण उन्हों

ने कहा यदि आप की दृष्टि में हम लोगों ने अनुग्रह पाया है तो यह देश तेरे सेवकों के अधिकार में दिया जावे हमें यरदन पार न ले जाइये॥

६ तब मूसा ने जद के संतान और रूबिन के संतान से कहा कि क्या तुम्हारे भाई लड़ाई करने जावें और तुम यहीं ७ बैठे रहोगे। और जिस देश को परमेश्वर ने उन्हें दिया है उस में जाने से इसराएल के संतानों के मन को क्यों घटाते ८ हो। जब मैं ने तुम्हारे पितरों को कादिसबरनीअ से उस देश को देखने ९ भेजा उन्हों ने भी ऐसा ही किया। और जब वे इसकाल की तराई को पहुंचे और उस देश को देखा तो उन्हों ने इसराएल के संतानों के मन को घटा दिया जिसतें वे उस देश को जो पर- १० मेश्वर ने उन्हें दिया था न जावें। और उसी दिन परमेश्वर का क्रोध भड़का ११ और उस ने किरिया खाके कहा। कि निश्चय लोगों में से जो मिस्र से निकले बीस बरस से लेके ऊपर लों कोई उस देश को जिस के विषय में मैं ने अबिरहाम इज़हाक और यअकूब से किरिया खाई है न देखेगा इस कारण कि वे निरधार १२ मेरी बात पर न चले। केवल कनीजी यफुन्न: का बेटा कालिब और नून का बेटा यहूशूअ क्योंकि वे परमेश्वर की १३ और निरधार चले। तब परमेश्वर का क्रोध इसराएल पर भड़का और उस ने उन्हें बन में चालीस बरस लों भरमाया यहां लों कि वह समस्त पीढ़ी जो परमेश्वर के आगे बुराई करती थी नष्ट १४ हुई। और देखो तुम लोग अपने पितरों की संती पापमय जन बढ़ गये हो जिसतें परमेश्वर के क्रोध को इसरा- १५ एलियों की ओर बढ़ाओ। यदि तुम उस्से फिर जाओगे तो वह उन्हें फिर बन में छोड़ देगा और तुम इन सब लोगों को नाश करोगे॥

१६ तब वे उस के पास आये और बोले कि हम अपने ढोर के लिये यहां भेड़- शाले और अपने बालकों के कारण नगर १७ बनावेंगे। पर हम हथियार बांधे हुए लैस होके इसराएल के संतानों के आगे आगे जावेंगे यहां लों कि उन्हें उन के स्थान लों पहुंचावें और देश के बासियों के कारण हमारे बालक घेरित नगरों १८ में रहेंगे। हम अपने घरों को न फिरेंगे जब लों इसराएल के संतानों में से हर एक अपना अपना अधिकार न पा लेवें। १९ क्योंकि हम उन के संग यरदन के उस पार अथवा आगे अधिकार न लेंगे क्योंकि हमारा अधिकार पूरब की यरदन के इस पार मिला है॥

२० तब मूसा ने उन्हें कहा कि यदि तुम यह करो और परमेश्वर के आगे २१ हथियार बांधे हुए जाओगे। और हथि- यार बांधके परमेश्वर के आगे यरदन के उस पार जाओ यहां लों कि वह अपने २२ बैरियों को अपने आगे से दूर करे। और वह देश परमेश्वर के आगे बश में होवे तो उस के पीछे तुम फिर आओगे और परमेश्वर के और इसराएल के आगे निर्दोष ठहरोगे तब परमेश्वर के आगे २३ तुम्हारा अधिकार होगा। परन्तु यदि तुम यों न करोगे तो देखो कि तुम पर- मेश्वर के आगे पापी हुए और निश्चय २४ जानो कि तुम्हारा पाप तुम्हें पकड़ेगा। तुम अपने बालकों के लिये नगर बनाओ और अपनी भेड़ों के लिये भेड़शाले और जो तुम्हारे मुंह से निकला है सो करो॥

२५ तब जद के संतान और रूबिन के संतान मूसा से कहके बोले कि जैसा मेरा स्वामी आज्ञा करता है वैसा ही तेरे २६ सेवक करेंगे। हमारे बालक हमारी

बालियां हमारे झुंड और हमारे समस्त ढोर यहां जिलिअद के नगरों में रहेंगे। २७ परन्तु जैसा मेरा प्रभु कहता है तेरे सेवक हर एक हथियार बांधे हुए संग्राम के लिये परमेश्वर के आगे पार जावेंगे। २८ तब मूसा ने उन के विषय में इलिअज़र याजक को और नून के बेटे यहूशूअ को और इसराएल के संतानों की गोष्ठी के २९ प्रधान के पितरों को कहा। और मूसा ने उन्हें कहा कि यदि जद के संतान और रूबिन के संतान परमेश्वर के आगे तुम्हारे साथ यरदन के पार हथियार बांधके जावें और लड़ें और देश तुम्हारे बश में आवे तो तुम जिलिअद का देश ३० उन का अधिकार कर दीजियो। परन्तु यदि वे हथियार बांधके तुम्हारे साथ पार न जावें तो वे तुम्हारे मध्य में कन- ३१ आन के देश में अधिकार पावें। तब जद के संतान और रूबिन के संतान उत्तर में बोले कि जैसा परमेश्वर ने तेरे सेवकों को कहा हम वैसा ही करेंगे। ३२ हम हथियार बांधके परमेश्वर के आगे उस पार कनआन के देश को जावेंगे जिसतें यरदन के इधर का देश हमारा अधिकार होवे॥

३३ तब मूसा ने अमूरियों के राजा सैहून का राज्य और बसन के राजा ऊज का राज्य वह देश उन के नगर समेत जो उस सिवाने में है और देश के चारों ओर के नगरों को जद के संतान और रूबिन के संतान और यूसुफ के पुत्र मुनस्सी की आधी गोष्ठी को दिया॥

३४ तब जद के संतान ने दैबून और ३५ अतरात और अरआयर। और अतरात शूफान और यअजीर और युग्बिहाह। ३६ और बैतनिमरः और बैतहारान घेरे हुए नगर और भेड़ों के लिये भेड़शाले बनाये॥ ३७ और रूबिन के संतान ने हसबून और इलआली और करयतैन बनाये। और ३८ नबू और बअलमऊन उन के नाम फेरे गये और शिबमः और उन नगरों को जो उन्हों ने बनाये और ही नाम रक्खे॥

तब मकीर के संतान मुनस्सी के ३९ बेटे जिलिअद को गये और उसे ले लिया और उस में के अमूरियों को उठा दिया। और मूसा ने जिलिअद को मकीर ४० मुनस्सी के बेटे को दिया और वह उस में बसा। और मुनस्सी का बेटा याइर ४१ निकला और उस के छोटे छोटे नगरों को ले लिया और उन का नाम याइर गांव रक्खा। और नूबह गया और ४२ क़िनात और उस के गांवों को ले लिया और उस का नाम अपने नाम के समान नूबह रक्खा॥

तेंतीसवां पर्ब्ब

मूसा और हारून के बश में होके १ मिस्र देश से अपनी अपनी सेना समेत इसराएल के संतान बाहर निकल आये उन की यात्रा ये हैं। और मूसा ने पर- २ मेश्वर की आज्ञा के समान उन की यात्रा के अनुसार उन का कूच लिख रक्खा और उन की यात्रा के अनुसार उन का कूच यह है॥

और इसराएल के संतान पहिले मास ३ की पंदरहवीं तिथि में फसह के पर्ब्ब के दूसरे दिन रामसीस से बड़े बल के साथ यात्रा करके समस्त मिस्रियों की दृष्टि में सिधारे। क्योंकि मिस्रियों ने अपने समस्त ४ पहिलौठों को जिन्हें परमेश्वर ने उन में नाश किया था गाड़ा और परमेश्वर ने उन के देवतों को भी न्याय का दण्ड दिया। सो इसराएल के संतानों ने राम- ५ सीस से उठके सुक्कात में डेरे किये। और ६ सुक्कात से चलके ऐताम में जो बन के सिवाने में है डेरा किया। फिर ऐताम ७ से कूच करके फीउलहीरात को जो बअल-

सफून के सन्मुख है फिर गये और मिज-
८ दाल के आगे डेरा किया। और फीउल-
हीरात से चले और समुद्र के मध्य में
से निकलके बन में आये और ऐताम के
बन में तीन दिन के टप्पे पर गये और मर:
९ में डेरा किया। और मर: से चलके
ऐलीम में आये जहां पानी के बारह
सोते और छोहारे के सत्तर पेड़ थे और
१० वहां डेरा किया। और ऐलीम से यात्रा
करके लाल समुद्र के लग डेरा किया।
११ और लाल समुद्र से चलके सीन के बन
१२ में डेरा किया। और सीन के बन से
१३ यात्रा करके दफ़क: में डेरा किया। और
दफ़क: से चलके अलूस में डेरा किया।
१४ और अलूस से चलके रफ़ीदीम में डेरा
किया और वहां लोगों के पीने के लिये
१५ पानी न था। और रफ़ीदीम से चलके
१६ सीना के अरण्य में आये। और सीना
के अरण्य से चलके क़िबरातुलतावः में
१७ डेरा किया। और क़िबरातुलतावः से
यात्रा करके हसीरात में डेरा किया।
१८ और हसीरात से चलके रितम: में डेरा
१९ किया। और रितम: से चलके रम्मानफ़रस
२० में डेरा किया। और रम्मानफ़रस से चलके
२१ लिबन: में डेरा किया। और लिबन: से
२२ चलके रिस्सह में डेरा किया। और रिस्सह
२३ से चलके कहीलाथा में डेरा किया। और
कहीलाथा से चलके सफ़र पहाड़ में डेरा
२४ किया। और सफ़र पहाड़ से चलके
२५ हराद: में डेरा किया। और हराद: से
२६ चलके मकहीलात में डेरा किया। और
मकहीलात से चलके तहत में डेरा
२७ किया। और तहत से चलके तारह में
२८ डेरा किया। और तारह से यात्रा करके
२९ मितक: में डेरा किया। और मितक:
३० से चलके हश्मूना में डेरा किया। और
हश्मूना से चलके मूसीरूस में डेरा किया।
३१ और मूसीरूस से चलके बनयाकान में डेरा
किया। और बनयाकान से चलके जिदजाद ३२
में डेरा किया। और जिदजाद से चलके ३३
युतबता में डेरा किया। और युतबता ३४
से चलके अब्रून: में डेरा किया। और ३५
से चलके असयूनजब्र में डेरा
किया। और असयूनजब्र से चलके सीन ३६
के अरण्य में जो कादिस है डेरा किया।
और कादिस से चलके हूर पर्वत के बन ३७
में जो अदूम के देश का सिवाना है
डेरा किया॥

और हारून याजक परमेश्वर की ३८
आज्ञा से हूर पर्वत पर चढ़ गया और
वहां मर गया यह इसराएल के संतानों
के मिस्र से बाहर निकलने के चालीसवें
बरस के पांचवें मास की पहिली तिथि
थी। और हारून एक सौ तेईस बरस का ३९
था जब वह हूर पर्वत पर मर गया॥

और अराद राजा कनआनी ने जो ४०
कनआन देश की दक्षिण ओर रहता
था सुना कि इसराएल के संतान आ
पहुंचे॥

और हूर पर्वत से यात्रा करके जलमून: ४१
में डेरा किया। और जलमून: से चलके ४२
फ़ूनोन में डेरा किया। और फ़ूनोन ४३
से चलके ऐबात में डेरा किया। और ४४
ऐबात से चलके ऐयैउलअबारीम में जो
मोअब का सिवाना है डेरा किया। और ४५
ऐयीम से चलके दैबूनजद्द में डेरा किया।
और दैबूनजद्द से चलके अलमूनदिबलतैम: ४६
में डेरा किया। और अलमूनदिबलतैम: से ४७
यात्रा करके अबरीम पर्वतों पर नबू के
आगे डेरा किया। और अबरीम पर्वतों ४८
से चलके मोअब के चौगानों में यरदन
के तीर पर जो अरीहू के लग है डेरा
किया। और यरदन के तीर बैतुलयसीमात ४९
से यात्रा करके अबीलसत्तीन के होके
मोअब के चौगानों में डेरा किया॥

और परमेश्वर मोअब के चौगानों में ५०

अबीलशत्तीम के तीर अरीहू के लग
५१ मूसा से कहके बोला। कि इसराएल
के संतानों को आज्ञा कर और कह कि
जब तुम यरदन से पार होके कनआन
५२ के देश में पहुंचो। तब तुम उन सब
को जो उस देश के बासी हैं अपने सन्मुख
से दूर करो और उन की सारी प्रतिमा
को नाश करो और उन की ढाली हुई
मूर्तियों को नष्ट करो और उन के सब
५३ ऊंचे स्थानों को ढा देओ। और उन्हें
देश से बिदेश करके उस में बास करो
क्योंकि मैं ने वह देश तुम्हें तुम्हारे अधि-
५४ कार के लिये दिया है। और तुम चिट्ठी
डालके उस देश को आपुस में अपने
घराने के समान बांट लेओ बहुतों को
बहुत अधिकार देओ और थोड़ों को
थोड़ा हर एक का उसी में स्थान होगा
जहां उस की चिट्ठी पड़े अपने पितरों
की गोष्ठियों के समान तुम अधिकार
५५ लेओ। परन्तु यदि तुम उस देश के
बासियों को अपने आगे से दूर न करोगे
तो यों होगा कि जिन्हें तुम रहने देओगे
वे तुम्हारी आंखों में कांटे और तुम्हारे
पांजरों में कील होंगे और उस देश में
५६ जहां तुम बसोगे तुम्हें सतावेंगे। परन्तु
अंत को यह होगा कि जो कुछ मैं उन
से किया चाहता हूं सो तुम से करूंगा॥

चौंतीसवां पर्ब्ब।

१ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला।
२ कि इसराएल के संतानों को आज्ञा
कर और उन से कह कि जब तुम कनआन
के देश में पहुंचो यह देश जो तुम्हारे
अधिकार में पड़ेगा अर्थात् कनआन
का देश उस के सिवाने सहित॥
३ तब सीन के बन से अदूम के सिवाने
लों तुम्हारी दक्षिण दिशा होगी और
तुम्हारा दक्षिण सिवाना खारी समुद्र के
४ अंत तीर पूरब दिशा होगी। और
तुम्हारी दक्षिण सिवाना अकराबीम के
चढ़ाव के मार्ग लों घेरेगा और सीन लों
पहुंचेगा और उस का निकास कादिस-
बरनीअ की दक्षिण की ओर होगा और
हसरअद्दार लों आवेगा और असमून लों
चला जावेगा। ५ और यह सिवाना
असमून से घूमके मिस्र की नदी लों
पहुंचेगा और उस का निकास समुद्र की
ओर होगा॥
६ और तुम्हारा पश्चिम का सिवाना
महासमुद्र होगा यही तुम्हारा पश्चिम
सिवाना होगा॥
७ और यह तुम्हारा उत्तर सिवाना होगा
महासमुद्र से हूर पर्बत लों। ८ और हूर
पहाड़ से हमात के पैठ लों और वह
सिवाना सीदाद लों आवेगा। ९ और वह
सिवाना जिफ़रून को और उस का
निकास हसरऐनान से हो आवेगा यही
तुम्हारी उत्तर दिशा है॥
१० और तुम अपने लिये पूरब दिशा
हसरऐनान से लेके सफाम लों ठहराइयो।
११ और उस का सिवाना सफाम से लेके
रिबलः लों आईन के पूरब ओर होगा
और सिवाना वहां से उतरके किन्नारात
के समुद्र की पूरब दिशा में मिलेगा।
१२ और उस का सिवाना यरदन को उतरेगा
और उस का निकास खारी समुद्र लों
होगा यही तुम्हारे देश उस के तीर समेत
चौदिशा में होंगे॥
१३ फिर मूसा ने इसराएल के संतानों
को आज्ञा किई कि यह वह देश है
जिस के अधिकारी तुम चिट्ठी से होओगे
जिस के विषय में परमेश्वर ने कहा कि
तू साढ़े नव गोष्ठियों को बांट दीजियो।
१४ क्योंकि रूबिन की गोष्ठी ने अपने पितरों
के घराने के समान और जद के संतान
ने अपनी गोष्ठी के घराने के समान और
मनस्सी की आधी गोष्ठी ने

१५ के समान पाया । उन अढ़ाई गोष्ठियों ने यरदन के इस पार यरीहू के लग पूर्व्व दिशा की अपना अधिकार पाया ॥

१६ फिर परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा
१७ करके कहा । वे लोग जो तुम्हारे देश को बांटेंगे उन के ये नाम हैं इलिअजर
१८ याजक और नून का बेटा यहूशूअ । और तुम अपने लिये हर गोष्ठी का एक प्रधान लेओ जिसतें उस देश को भाग करे ।
१९ और उन प्रधानों के नाम ये हैं यफुन्न: का बेटा कालिब यहूदाह की गोष्ठी का ।
२० और अम्मिहूद का बेटा समूएल समऊन
२१ की गोष्ठी के घराने का । किसलून का बेटा इलिदाद बिनयमीन के घराने का ।
२२ और दान के संतान की गोष्ठी का अध्यक्ष
२३ युगली का बेटा बुक्की । यूसुफ के संतान के प्रधान मुनस्सी के संतानों की गोष्ठी
२४ के लिये अफूद का बेटा हन्निएल । और इफरायम के संतान की गोष्ठी का अध्यक्ष
२५ सिफतान का बेटा कमूएल । और जबू-लून के संतान की गोष्ठी का अध्यक्ष
२६ परनाक का बेटा इलीसफन । और इश-कार के संतान की गोष्ठी का अध्यक्ष
२७ अजान का बेटा फलतिएल । और यशर के संतान की गोष्ठी का अध्यक्ष सलूमी
२८ का बेटा अखिहूद । और नफताली के संतान की गोष्ठी का अध्यक्ष अम्मिहूद का बेटा फिदाहिएल ॥

२९ ये वे लोग हैं जिन्हें परमेश्वर ने आज्ञा किई कि कनआन का देश इसराएल के संतान को अधिकार में बांट देवें ॥

पैंतीसवां पर्व्व

१ फिर परमेश्वर मोअब के चौगान में यरदन के तीर पर यरीहू के लग
२ मूसा से कहके बोला । कि इसराएल के संतानों को आज्ञा कर कि लावियों को अपने अधिकार में से अधिकार के लिये नगर बसने को देवें और नगरों के चारों ओर के उपनगर उन्हें देओ । और
३ नगरों को उन के रहने के कारण और आसपास उन के गाय बैल के कारण और उन की संपत्ति और उन समस्त
४ पशुन के लिये हों । और नगरों के आस पास जो तुम लावियों को देओगे चाहिये कि नगर की भीत से सहस्र हाथ बाहर
५ होवे । और तुम नगर से लेके बाहर पूरब की ओर दो सहस्र हाथ मापो और दक्खिन की ओर दो सहस्र हाथ और पच्छिम की ओर दो सहस्र हाथ और उत्तर की ओर दो सहस्र हाथ और उन के मध्य में उन के लिये नगरों के उप-
६ नगर होंगे । और उन नगरों के मध्य में जो तुम लावियों को देओगे छ: नगर शरण के लिये होवें जिसे तुम घातक के लिये ठहराओ और उन में बयालीस
७ नगर और भी मिला देओ । सारे नगर जो तुम लावियों को देओगे अठतालीस
८ नगर उन के उपनगर सहित । और जो नगर तुम देओगे सो इसराएल के संतानों के अधिकार में से बहुत में से बहुत दीजियो और थोड़े में से थोड़ा सब कोई अपने अधिकार के समान अपने नगरों में से जो उस के अधिकार में है लावियों को दीजियो ॥

९ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला ।
१० कि इसराएल के संतानों को आज्ञा कर और उन्हें कह कि जब तुम यरदन पार
११ कनआन के देश में पहुंचो । तब तुम अपने लिये नगरों को शरणनगर के कारण ठहराओ जिसतें वह घातक जिस्से अनजाने घात हो जाय भागके
१२ वहां जा रहे । और वह तुम्हारे लिये पलटादायक से शरणनगर होगा और घातक जब लों विचार के लिये मंडली के आगे खड़ा न होवे मारा न जावे ।
१३ सो जो जो नगर तुम देओगे उन में छ:

१४ नगर शरण के लिये होंगे। यरदन के इस पार तीन नगर दीजियो और कन- आन के देश में तीन नगर दीजियो वे
१५ शरणनगर होंगे। ये छः नगर इस- राएल के संतानों और परदेशी और उन के मध्य जो तुम्में रहते हैं शरण के लिये होंगे कि जो कोई अनजाने किसी को मारे उधर भाग जावे॥

१६ और यदि कोई किसी को लोहे के हथियार से मारे ऐसा कि वह मर जावे तो वह घातक है घातक अवश्य घात
१७ किया जायगा। और यदि कोई किसी को ऐसा पत्थर फेंक मारे कि वह मर जावे तो वह घातक है घातक अवश्य
१८ मार डाला जावे। अथवा कोई किसी को ऐसा लठ मारे कि वह मर जावे तो वह घातक है घातक अवश्य घात किया
१९ जावे। लोहू का पलटादायक वही घातक को आप ही उसे घात करे जब
२० वही उसे पावे उसे मार डाले। और यदि कोई किसी को डाह से ठकेल देवे अथवा दांवघात से उसे पटक देवे कि
२१ वह मर जावे। अथवा बैर से उसे हाथ से मारे कि वह मर जावे तो जिस ने उसे मारा वह निश्चय मारा जायगा मारे हुए का कुटुम्ब जब उस घातक को पावे उसे घात करे॥

२२ और यदि कोई किसी को बिना बैर के अकस्मात उसे ठकेल देवे अथवा बिना दांवघात उस पर कोई वस्तु डाल
२३ देवे। अथवा उसे बिन देखे ऐसा पत्थर फेंके कि उस पर गिरे और वह मर जावे और वह उस का बैरी न था और न
२४ उस की बुराई चाहता था। तब मंडली उस घातक और लोहू के पलटादायक के मध्य इन न्यायों के समान बिचार
२५ करे। कि मंडली उस घातक को लोहू के पलटादायक के हाथ से छुड़ाके उस शरणनगर में जहां वह भागके गया था फिर भेज देवे और वह प्रधान याजक के जो पवित्र तेल से अभिषिक्त हुआ था मरने लों वहीं रहे॥

२६ परन्तु यदि घातक उस शरणनगर के सिवाने से जहां वह भागके गया था
२७ बाहर आवे। और लोहू का पलटादायक उसे शरणनगर के सिवाने से बाहर पावे और घातक को मार डाले तो उस पर
२८ घात का अपराध नहीं। क्योंकि उस घातक को उचित था कि प्रधान याजक की मृत्यु लों शरणनगर में रहता और उस के मरने के पीछे अपने अधिकार के देश में आता।
२९ सो तुम्हारी पीढ़ियों में तुम्हारी समस्त बस्तियों में न्याय के लिये यह व्यवस्था होगी॥

३० जो किसी को मार डाले तो घातक साक्षियों की साक्षी के समान घात किया जावे परन्तु एक साक्षी की साक्षी से किसी को घात न करना।
३१ और तुम घातक के प्राण की संती जो घात के योग्य है मोल मत लेओ परन्तु वह
३२ अवश्य मारा जावे। और तुम उस्से भी जो अपने शरण के नगर को भाग गया हो घात का मोल मत लेओ जिसतें वह याजक की मृत्यु लों अपने देश में आ बसे॥

३३ सो जहां हो उस देश को अशुद्ध मत कीजियो क्योंकि घात ही से देश अशुद्ध होता है और देश उस लोहू से जो उस में बहाया गया है शुद्ध नहीं होता परन्तु केवल उसी के लोहू से जिस ने उसे बहाया है। सो तुम अपने निवास के देश को जिस के मध्य में मैं रहता हूं अशुद्ध न करो क्योंकि मैं परमेश्वर इसराएल के संतानों के मध्य में रहता हूं॥

छत्तीसवां पर्व्व।

१ तब यूसुफ के संतान के घराने में से

मुनस्सी के बेटे माखीर के बेटे जलआद के संतान के घराने के पितरों के प्रधान आके मूसा के आगे और इसराएल के संतानों के पितरों के आगे बोले और कहा।
२ कि परमेश्वर ने मेरे प्रभु को आज्ञा किई कि चिट्ठी डालके देश को इसराएल के संतानों को अधिकार के लिये देवे और हमारे प्रभु ने परमेश्वर की आज्ञा से कहा कि हमारे भाई सिलाफिहाद का अधिकार उस की बेटियों को दिया
३ जावे। सो यदि वे इसराएल के संतानों की और गोष्ठियों के बेटों में से किसी के साथ ब्याही जावें तो उन का अधिकार हमारे पितरों के अधिकार से निकल जावेगा और उस गोष्ठी के अधिकार में जहां वे ब्याही गईं मिल जावेगा सो हमारा चिट्ठी का अधिकार घट
४ जावेगा। और जब इसराएल के संतानों के आनन्द का बरस आवे तब उन का अधिकार उस घराने के अधिकार में जहां वे ब्याही गईं मिल जावेगा और उन का अधिकार हमारे पितरों की गोष्ठी के अधिकार में से निकल जावेगा॥
५ तब मूसा ने परमेश्वर की आज्ञा से इसराएल के संतानों से कहा कि यूसुफ के संतान की गोष्ठी अच्छा कहती है।
६ सो परमेश्वर सिलाफिहाद की बेटियों के विषय में यों आज्ञा करता है कि वे जिस्से चाहें उस्से ब्याह करें केवल अपने पिता की गोष्ठी में ब्याह करें।
७ जिसतें इसराएल के संतानों का अधिकार एक गोष्ठी से दूसरी गोष्ठी में न जावे और इसराएल के संतान में से हर जन आप को अपने ही पितरों की गोष्ठी के अधिकार में रक्खे।
८ और हर एक बेटी इसराएल के संतानों की किसी गोष्ठी में अधिकार रक्खे अपने बाप ही के घराने की गोष्ठी में से एक की पत्नी होवे जिसतें इसराएल के संतान में हर जन अपने पिता के अधिकार पर स्थिर रहे।
९ और अधिकार एक गोष्ठी में से दूसरी गोष्ठी में न जावे परन्तु इसराएल के संतान के घरानों में हर एक जन अपने अधिकार में आप को रक्खे॥
१० सो सिलाफिहाद की बेटियों ने वैसा ही किया जैसी परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी।
११ क्योंकि महलः तिरजः और हजलः और मिलकः और नूअः सिलाफिहाद की बेटियां अपने चचेरे भाइयों के साथ ब्याही गईं।
१२ यूसुफ के बेटे मुनस्सी के घरानों में ब्याही गईं और उन का अधिकार उन के पिता की गोष्ठी में बना रहा॥
१३ ये वे आज्ञा और बिचार हैं जो परमेश्वर ने मूसा के हस्ते मोअब के चौगानों में यरदन के तीर पर यरीहू के सन्मुख इसराएल के संतानों को आज्ञा किई॥

विवाद की पुस्तक।

पहिला पर्ब्ब।

१ ये वे बातें हैं जिन्हें मूसा ने यरदन के इस पार अरण्य में लाल समुद्र के सन्मुख चौगान में फारान और तोफल और लाबन और हसीरात और दीजाहब के मध्य में इसराएल के संतानों से २ कहा। होरिब से कादिसबरनीअ लों शईर पर्बत के पथ से ग्यारह दिन का ३ मार्ग है। और ऐसा हुआ कि चालीसवें बरस के ग्यारहवें मास की पहिली तिथि में उन समस्त आज्ञाओं के समान जिन्हें परमेश्वर ने उसे दिईं थीं जिसतें इसराएल के संतानों से कही जावें मूसा ४ ने उन्हें कहा। उस के पीछे कि उस ने अमूरियों के राजा सैहून को जो हसबून में रहता था और बासान के राजा ऊज को जो इसतारात और अद्रिअई में रहता था बधन किया॥

५ यरदन के इस पार मोअब के चौगान में इस व्यवस्था को बर्णन करना आरंभ ६ किया और कहा। कि परमेश्वर हमारा ईश्वर होरिब में हमें यह कहके बोला कि तुम इस पहाड़ पर बहुत रहे। ७ फिरो और यात्रा करो और अमूरियों के पहाड़ को और उस के समस्त परोसियों में जाओ चौगान में पहाड़ों में और तराई में और दक्षिण में और समुद्र के तीर कनआनियों के देश को और लुबनान ८ को महानदी फुरात लों जाओ। देखो मैं ने आगे का देश तुम्हें दिया प्रवेश करो और उस देश पर जिस के बिषय में परमेश्वर ने तुम्हारे पितरों अबिरहाम इजहाक और यअकूब से किरिया खाई कि तुम्हें और तुम्हारे पीछे तुम्हारे बंश को देऊंगा अधिकार में लेओ॥

९ और उसी समय मैं ने तुम्हें कहा कि मैं अकेला तुम्हारा बोझ नहीं उठा १० सक्ता। परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हें बढ़ाया और देखो तुम आज के दिन आकाश के तारों की नाईं मंडली हो। ११ परमेश्वर तुम्हारे पितरों का ईश्वर तुम्हें इस्से भी सहस्र गुण अधिक बढ़ावे और जैसा उस ने तुम से कहा है तुम्हें १२ आशीस देवे। मैं तुम्हारे परिश्रम और तुम्हारे बोझ और तुम्हारे झगड़ों को १३ अकेला क्योंकर उठा सकूं। तुम बुद्धिमान और ज्ञानी और अपनी गोष्ठियों में से प्रसिद्ध लोगों को लाओ और मैं उन्हें १४ तुम पर आज्ञाकारी करूंगा। और तुम ने मुझे उत्तर देके कहा कि जो कुछ तू ने कहा है सो पालन करने को भला १५ है। सो मैं ने तुम्हारी गोष्ठियों के प्रधानों को बुद्धिमान और प्रसिद्धों को लिया और उन्हें तुम्हारा प्रधान सहस्रों का प्रधान और सैकड़ों का प्रधान और पचास पचास का प्रधान और दस दस का प्रधान तुम्हारी गोष्ठियों में करोड़ा १६ किया। और उस समय मैं ने तुम्हारे न्यायियों को आज्ञा करके कहा कि अपने भाइयों का विवाद सुनो मनुष्य में और उस के भाइयों में और उस के साथ के १७ परदेशियों में धर्म्म से न्याय करो। तुम मुंह देखा न्याय न करो तुम न्याय में किसी के रूप को मत मानो बड़े के समान छोटे की भी सुनियो तुम मनुष्य के रूप से न डरो क्योंकि न्याय ईश्वर का है और जो बिषय तुम्हारे लिये कठिन होवे मेरे पास लाओ और मैं उसे सुनूंगा। १८ सब जो तुम्हें करना था मैं ने उसी समय में तुम्हें आज्ञा किई॥

१९ और हम ने होरिब से यात्रा किई तो जैसी परमेश्वर हमारे ईश्वर ने हमें आज्ञा किई थी उस समस्त महा भयंकर बन में गये जिसे तुम ने अमूरियों के पहाड़ को जाते हुए देखा और कादिस २० बरनीअ में आये। और मैं ने तुम्हें कहा कि तुम अमूरियों के पहाड़ को पहुंचे हो जो परमेश्वर हमारा ईश्वर हमें देता २१ है। देख परमेश्वर तेरे ईश्वर ने यह देश तेरे आगे धरा है चढ़ उसे बश में कर जैसा परमेश्वर तेरे पितरों के ईश्वर ने तुझे आज्ञा किई है मत डर और हियाव २२ न छोड़। तब हर एक तुम्में से मुझ पास आया और बोला कि हम अपने आगे लोग भेजेंगे और वे हमारे लिये उस देश का भेद लेवें और आके हम से कहें कि हम किस मार्ग से वहां जायें २३ और कौन कौन नगरों में प्रवेश करें। और वह कहना मुझे भाया और मैं ने तुम्में से गोष्ठी पीछे एक एक मनुष्य करके २४ बारह मनुष्य लिये। और वे चल निकले और पहाड़ पर गये और इसकाल की तराई में आये और उस का भेद लिया। २५ और वे उस देश का फल अपने हाथों में लेके हमारे पास उतर आये और संदेश ले आये और बोले कि परमेश्वर हमारा ईश्वर हमें उत्तम देश देता है॥

२६ तथापि तुम चढ़ न गये परन्तु परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञा से फिर २७ गये। और तुम अपने तंबुओं में कुड़कुड़ाके बोले इस कारण कि परमेश्वर हम से डाह रखता था हमें मिस्र के देश से निकाल लाया कि हमें अमूरियों के हाथ २८ में करके नाश करे। हम कहां चढ़ें हमारे भाइयों ने तो यों कहके हमारे मन को घटा दिया कि वे लोग तो हम से बड़े और लम्बे हैं और उन के नगर बड़े हैं जिन की भीतें स्वर्ग लों हैं और इस्से अधिक हम ने अनाकियों के बेटों २९ को वहां देखा। तब मैं ने तुम्हें कहा कि मत डरो और उन से भय मत करो। ३० परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर जो तुम्हारे आगे आगे जाता है वही तुम्हारे लिये लड़ेगा। जैसा कि उस ने तुम्हारी दृष्टि में तुम्हारे ३१ लिये मिस्र में किया। और अरण्य में जहां तू ने देखा कि जैसा मनुष्य अपने बेटे को उठाता है वैसा परमेश्वर तेरे ईश्वर ने उस सारे मार्ग में जहां जहां तुम गये तुम्हें उठाया है जब लों तुम ३२ इस स्थान में आये। तथापि इस बात में तुम ने परमेश्वर अपने ईश्वर की ३३ प्रतीति न किई। वह रात को आग में और दिन को मेघ में जिसतें तुम्हें जाने का मार्ग बतावे मार्ग में तुम से आगे आगे गया जिसतें तुम्हारे लिये स्थान ठहरावे जहां अपने तंबू खड़े करो॥

३४ तब परमेश्वर ने तुम्हारी बातें सुनीं और क्रुद्ध हुआ और किरिया खाके बोला। ३५ कि निश्चय इस दुष्ट पीढ़ी के मनुष्यों में से एक भी उस अच्छे देश को जिस के देने को मैं ने तुम्हारे पितरों से किरिया ३६ खाई है न देखेगा। केवल यफुन्नः का बेटा कालिब वह उसे देखेगा और मैं वह देश जिस पर उस का पांव पड़ा उसे और उस के बंश को देऊंगा इस कारण कि वह पूर्णता से परमेश्वर के ३७ मार्ग पर चला। और तुम्हारे कारण से परमेश्वर ने मुझ पर भी क्रुद्ध होके कहा ३८ कि तू भी उस में प्रवेश न करेगा। नून का बेटा यहूशूअ जो तेरे आगे खड़ा रहता है वह उस में प्रवेश करेगा तू उसे उभाड़ क्योंकि वह इसराएल को ३९ उस का अधिकारी करेगा। और तुम्हारे बालक जिन्हें तुम ने कहा था कि अहेर हो जायेंगे और तुम्हारे लड़के जिन्हें भले बुरे का ज्ञान तब न था वहां प्रवेश

करेंगे और मैं उसे उन्हें देऊंगा और वे
४० उस के अधिकारी होंगे। परन्तु तुम
फिरो और लाल समुद्र के मार्ग से बन
में यात्रा करो ॥
४१ तब तुम ने मुझे उत्तर देके कहा कि
हम ने परमेश्वर का अपराध किया है
सो हम चढ़ जावेंगे और जैसी कि पर-
मेश्वर हमारे ईश्वर ने हमें आज्ञा किई
है हम लड़ेंगे और तुम सब के सब हथि-
यार बांधके सिद्ध हुए कि पहाड़ पर
४२ चढ़ जाओ। तब परमेश्वर ने मुझे कहा
कि तू उन्हें कह कि मत चढ़ो और युद्ध
न करो क्योंकि मैं तुम्में नहीं हूं न हो
कि तुम अपने बैरियों के आगे मारे
४३ जाओ। सो मैं ने तुम्हें कह दिया और
तुम ने न सुना परन्तु परमेश्वर की
आज्ञा से फिर गये और मगराई से पहाड़
४४ पर चढ़ गये। तब अमूरियों ने जो उस
पहाड़ पर रहते थे तुम्हारा साम्ना किया
और मधुमाखियों की नाईं तुम्हें रगेदा
और शईर में हुरमः लों तुम्हें मारा।
४५ तब तुम फिरे और परमेश्वर के आगे
रोये परन्तु परमेश्वर ने तुम्हारा शब्द न
सुना और न तुम्हारी ओर कान धरा।
४६ तब तुम कादिस में बहुत दिन लों रहे
उन दिनों के समान जो तुम रहे ॥

दूसरा पर्व्व।

१ तब जैसी परमेश्वर ने मुझे आज्ञा
किई थी हम फिरे और लाल समुद्र के
मार्ग से बन में यात्रा किई और बहुत
२ दिन लों शईर पर्वत को घेरा। तब
३ परमेश्वर मुझे कहके बोला। कि तुम
ने इस पर्वत को बहुत दिन लों घेरा
४ फिरो उत्तर की ओर जाओ। और लोगों
को आज्ञा कर कि तुम अपने भाई एसौ
के संतान के सिवाने से चलते हो वे
शईर में रहते हैं और वे तुम से डरेंगे
५ सो तुम आप से चौकस रहो। उन्हें मत
छेड़ो क्योंकि मैं उन की भूमि से एक पैर
भर भी तुम्हें न देऊंगा इस कारण कि
मैं ने शईर पर्वत एसौ के अधिकार में
दिया है। तुम खाने के लिये उन से ६
भोजन मोल लीजियो और पीने के लिये
दाम देके जल भी मोल लीजियो। क्यों- ७
कि परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तेरे हाथ के
सब कार्य्यों में तुझे आशीस दिया है वह
इस महा बन में तेरा जाना जानता है
इन चालीस बरस भर परमेश्वर तेरा
ईश्वर तेरे साथ है तुझे किसी बात की
घटी न हुई ॥

और जब हम अपने भाई एसौ के ८
संतान से जो शईर में रहते थे चौगान
के मार्ग में से एलत से और असयूनजब्र
से होके चले गये तो हम फिरे और
मोअब के बन के मार्ग में से आये।
तब परमेश्वर ने मुझे कहा कि मोअबियों ९
को मत छेड़ और उन से मत झगड़ क्यों-
कि उन के देश का अधिकारी तुझे न
करूंगा इस कारण कि मैं ने आर को
लूत के संतान के अधिकार में दिया है।
वहां आगे एमीम रहते थे वे बड़े बड़े १०
और बहुत और लम्बे लम्बे अनाकियों
के समान थे। वे भी अनाक के संतान ११
के समान दानव में गिने जाते थे परन्तु
मोअबी उन को एमीम कहते हैं। परन्तु १२
आगे शईर में हूरीम रहते थे और एसौ
के संतान उन के अधिकारी हुए और
उन्हें अपने आगे मिटा डाला और उन
के स्थान पर बसे जैसा इसराएल के
संतान ने अपने अधिकार के देश में
किया जो परमेश्वर ने उन्हें दिया था।
अब उठो और ज़रद की नाली पार होओ १३
सो हम ज़रद की नाली के पार उतर गये ॥

और जब से हम ने कादिसबरनीअ १४
को छोड़ा और ज़रद की नाली के पार
उतरे अठतीस बरस हुए जब लों कि

लड़ाके की समस्त पीढ़ी सेना में से घट गई जैसा परमेश्वर ने उन से किरिया १५ खाई थी। क्योंकि निश्चय परमेश्वर का हाथ उन की विरुद्धता में था कि सेना में से उन्हें नाश करे यहां लों कि वे भस्म हो गये॥

१६ सो ऐसा हुआ कि जब समस्त लड़ाके १७ मिलके लोगों में से मर गये। तब पर- १८ मेश्वर मुझे कहके बोला। कि तू आज आर में होके जो मोआब का सिवाना है १९ चला जायेगा। और जब तू अम्मून के संतान के आम्ने साम्ने आ पहुंचे तो उन्हें दुःख न दे और न उन्हें छेड़ क्योंकि मैं अम्मून के संतान के देश में तुझे अधि- कार नहीं देने का इस कारण कि मैं ने उसे लूत के संतान के अधिकार में दिया २० है। वह भी दानव का देश कहाता था आगे वहां दानव रहते थे और अम्मूनी २१ उन्हें जमजुम्मीम कहते थे। वे बहुत और लम्बे लम्बे अनाकियों के समान थे और परमेश्वर ने उन्हें उन के आगे नाश किया सो उन्हों ने उन्हें निकाल दिया २२ और उन के स्थान पर बसे। जैसा उस ने एसौ के संतानों से किया जो शईर में रहते थे जब उस ने हूरियों को उन के आगे से नाश किया सो उन्हों ने उन्हें निकाल दिया और उन के स्थान पर २३ आज लों बसे हैं। और अवियों को भी जो हसरैम में अज्जः लों रहते थे और कफतूरी जो कफतूर से आये उन्हें नाश २४ किया और उन के स्थान में बसे। तुम उठो चलो और अरनून के पार जाओ देखो मैं ने हसबून के राजा अमूरी सैहून को उस की भूमि सहित तुम्हारे हाथ में दिया है सो अधिकार लेने को आरंभ करो और लड़ाई में उन का साम्ना करो। २५ आज के दिन से मैं तेरा डर और भय उन जातिगणों पर डालूंगा जो सारे आकाश के नीचे हैं वे तेरी सुधि पावेंगे और घबरावेंगे और तेरे आगे थर्थरा जावेंगे॥

२६ तब मैं ने कदीमात के बन से हस- बून के राजा सैहून पास दूतों से मिलाप २७ का यह बचन कहला भेजा। कि तू अपने देश में से मुझे जाने दे मैं राज- मार्ग में होके जाऊंगा और मैं दहिने २८ बायें हाथ न मुड़ूंगा। खाने के लिये दाम लेके मुझे अन्न जल दीजियो केवल २९ मैं पांव पांव चला जाऊंगा। जिस रीति से कि एसौ के संतान ने जो शईर में रहते हैं और मोआबियों ने जो आर में बसते हैं मुझ से किया जिसतें हम यरदन के पार उस भूमि में पहुंचें जो परमेश्वर हमारा ३० ईश्वर हमें देता है। परन्तु हसबून के राजा सैहून ने हमें अपने पास से जाने न दिया क्योंकि परमेश्वर तेरे ईश्वर ने उस के आत्मा को कठोर और उस के मन को ढीठ कर दिया जिसतें उसे आज के समान तेरे हाथ में देवे॥

३१ तब परमेश्वर ने मुझे कहा कि देख मैं ने सैहून को उस के देश सहित तुझे देना आरंभ किया तू अधिकार लेना आरंभ कर जिसतें तू उस के देश का ३२ अधिकारी होवे। तब सैहून अपने सारे लोग लेके यहस में लड़ने को निकल ३३ आया। सो परमेश्वर हमारे ईश्वर ने उसे हमें सौंप दिया और हम ने उसे और उस के बेटे और उस के सब लोगों ३४ को मारा। और हम ने उसी समय उस के समस्त नगरों को ले लिया और हर एक नगर के पुरुष और स्त्री और लड़कों को नाश किया किसी को न छोड़ा। ३५ केवल ढोर हम ने अपने लिये अहेर में लिया और नगरों की लूट जिसे हम ने ३६ लिया। अरूईर से लेके जो अरनून की नदी के तीर पर है और उस नगर से

लेके जो नदी के तीर पर है अर्थात् जिलिअद लों ऐसा कोई नगर हमारे लिये दृढ़ न था जिसे परमेश्वर हमारे ३७ ईश्वर ने हमें न सौंप दिया। केवल अम्मून के संतान के देश जिस के निकट तू न गया और नदी यबूक के किसी स्थान में न पहाड़ के नगरों में और जहां जहां परमेश्वर हमारे ईश्वर ने हमें बरजा॥

तीसरा पर्ब्ब।

१ तब हम फिरे और बसन की ओर चढ़ गये और बसन का राजा ऊज अद्रिअई में अपने सारे लोग लेके हमारे २ सन्मुख लड़ने को निकला। और परमेश्वर ने मुझे कहा कि उस्से मत डर क्योंकि मैं ने उसे और उस के सारे लोगों को उस के देश सहित तेरे हाथ में सौंपा है और तू उस्से वैसा कर जैसा तू ने अमूरियों के राजा सैहून से जो हसबून ३ में रहता था किया। सो परमेश्वर हमारे ईश्वर ने बसन के राजा ऊज को भी और उस के समस्त लोग को हमारे बश में कर दिया और हम ने उन्हें यहां लों मारा कि उन में से कोई न बचा। ४ और हम ने उस समय उस के समस्त नगर ले लिये अरजूब का सारा देश ऊज का राज्य बसन का एक नगर भी न रहा जो हम ने उन से न लिया साठ ५ नगर ले लिये। ये सब नगर ऊंची ऊंची भीतों और फाटकों और अड़ंगों से दृढ़ थे और बहुत बिन भीत से घेरे हुए ६ नगर भी ले लिये। और हम ने उन्हें उन के पुरुषों और स्त्रियों और बालकों को हर एक नगर से नाश किया जैसा कि हम ने हसबून के राजा सैहून से ७ किया। परन्तु नगरों के समस्त ढोर और लूट हम ने अपने ही लिये लिया। ८ और हम ने उस समय अमूरियों के दोनों राजाओं से यरदन के उस ही पार का देश अरनून की नदी से हरमून पर्बत लों ले लिये। हरमून को सैदूनी सरियून ९ कहते हैं और अमूरी उसे सनीर कहते हैं। चौगान के समस्त नगर और सारा १० जिलिअद और सारा बसन सलकः और अद्रिअई लों जो बसन में ऊज के राज्य के नगर हैं। क्योंकि केवल बसन का ११ राजा ऊज रह गया जो दानव में का था देखो उस की खाट लोहे की थी क्या वह अम्मून के संतान राबाश में नहीं है मनुष्य के हाथों से नौ हाथ लम्बी चार हाथ की चौड़ी॥

१२ और यह देश हम ने उसी समय बश में किया अरूईर से जो अरनून की नदी के पास और आधा पहाड़ जिलिअद और उस के नगर मैं ने रूबिनियों और जद्दियों को दिये। और जिलिअद का १३ उबरा हुआ और समस्त बसन जो ऊज का राज्य था मैं ने मुनस्सी की आधी गोष्ठी को दिया अरजूब का सारा देश बसन सहित जो दानव का देश कहाता था। मुनस्सी के बेटे याईर ने अरजूब १४ का समस्त देश जसूरियों और माकासियों के सिवाने लों ले लिये और उस ने बसन हबसयाईर अपने नाम के समान उस का नाम आज लों रक्खा। और मैं ने जिलि- १५ अद माकीर को दिया। और जिलिअद १६ से अरनून की नदी लों और आधी तराई और सिवाना यबूक की नदी लों जो अम्मून के संतान का सिवाना है मैं ने रूबिनियों को और जद्दियों को दिया। और चौगान भी और यरदन और उस के १७ सिवाने किन्नारात से लेके चौगान के समुद्र लों अर्थात् खारी समुद्र जो पिसगः के नालों के नीचे है पूरब की ओर भी। और मैं ने उसी समय तुम्हें आज्ञा करके १८ कहा कि परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने इस

भूमि का तुम्हें अधिकारी किया तुम अपने भाई इसराएल के संतानों के आगे हथियार बांधके सब जितने लड़ाई १९ के योग्य हो पार उतरो। केवल तुम्हारी पत्नियां और तुम्हारे बालक और तुम्हारे ढोर तुम्हारे उन नगरों में रहें जो मैं ने तुम्हें दिये हैं क्योंकि मैं जानता हूं कि २० तुम्हारे ढोर बहुत हैं। जब लों कि परमेश्वर तुम्हारे भाइयों को चैन देवे जैसा तुम्हें दिया जिस में वे भी उस देश के जो परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने यरदन के पार उन्हें दिया है अधिकारी होवें तब हर एक पुरुष अपने अपने अधिकार में फिर आय जो मैं ने तुम्हें दिया है॥

२१ और उसी समय मैं ने यहूशूअ को आज्ञा किई और कहा कि तेरी आंखें सब कुछ देखती हैं जो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने इन दोनों राजाओं से किया परमेश्वर उन सब राजों से जहां जहां २२ तू जायगा वैसा करेगा। तुम उन से मत डरियो क्योंकि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर वही तुम्हारे लिये लड़ेगा॥

२३ और उस समय मैं परमेश्वर के आगे २४ गिड़गिड़ाया और बोला। कि हे प्रभु परमेश्वर तू ने अपनी बड़ाई और अपना सामर्थी हाथ अपने दास को दिखाने को आरंभ किया है क्योंकि स्वर्ग में अथवा पृथिवी में कौन सा सर्वशक्तिमान है जो तेरे कार्य्य और तेरी सामर्थ्य के २५ समान कर सके। मैं तेरी बिनती करता हूं कि मुझे पार जाके उस अच्छे देश को देखने दे जो यरदन के पार है वह २६ सुन्दर पर्वत और लुबनान। परन्तु परमेश्वर तुम्हारे कारण मुझ से क्रुद्ध हुआ और उस ने मेरी न सुनी और परमेश्वर ने मुझे कहा कि यही बस है इस विषय २७ में फेर मुझ से मत कह। पिसगः की चोटी पर चढ़ जा और अपनी आंखें पश्चिम और उत्तर और दक्खिन और पूरब की ओर उठा और अपनी आंखों से देख क्योंकि तू इस यरदन के पार न जायगा। पर यहूशूअ को आज्ञा कर २८ और उसे हियाव दे और उसे दृढ़ कर क्योंकि वह इन लोगों के आगे पार जायगा और वही उन्हें उस देश का जो तू देखता है अधिकारी करेगा। सो २९ हम तराई में फ़ग़ूर के सन्मुख रहे॥

चौथा पर्ब्ब।

१ सो अब हे इसराएल जो बिधि और बिचार मैं तुम्हें सिखाता हूं सुनो और उन पर ध्यान करो जिसतें तुम जीयो और उस देश में जो परमेश्वर तुम्हारे पितरों का ईश्वर तुम्हें देता है पहुंचके २ उस के अधिकारी होओ। तुम उस बात में जो मैं तुम्हें कहता हूं कुछ मत मिलाइयो और न उस्से घटाइयो जिसतें तुम परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञाओं को जो मैं तुम्हें आज्ञा करता हूं पालन ३ करो। जो कुछ कि परमेश्वर ने बअलफ़ग़ूर से किया तुम्हारी आंखें देखती हैं क्योंकि उन सब पुरुषों को जिन्हों ने बअलफ़ग़ूर का पीछा किया परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम में से नष्ट किया। ४ परन्तु तुम जो परमेश्वर अपने ईश्वर से लवलीन हो रहे हो सो तुम में से हर ५ एक आज लों जीता है। देखो मैं ने बिधि और बिचार जिस रीति से परमेश्वर मेरे ईश्वर ने मुझे आज्ञा किई तुम्हें सिखलाये जिसतें तुम उस देश में जाके जिस के अधिकारी होओगे उन ६ का पालन करो। सो उन्हें धारण करो और मानो क्योंकि जातिगणों के आगे यही तुम्हारी बुद्धि और समझ है कि वे इन समस्त बिधिन को सुनके कहेंगे कि निश्चय यह जाति बुद्धिमान और ज्ञान-

७ मान है। क्योंकि कौन जातिगण ऐसा बड़ा है जिस के पास ईश्वर ऐसा समीप होवे जैसा परमेश्वर हमारा ईश्वर सब में जो हम उस्से मांगते हैं हमारे समीप ८ है। और कौन ऐसी बड़ी जाति है जिस की बिधि और बिचार ऐसा धर्म्म का हो जैसी यह समस्त व्यवस्था जो मैं आज ९ तुम्हारे आगे धरता हूं। केवल आप से चौकस रह और अपने प्राण को यत्न से रख ऐसा न हो कि तू उन बस्तुन को जिन्हें तेरी आंखों ने देखा भूल जाय और ऐसा न हो कि वे बातें जीवन भर में कभी तेरे अंतःकरणों से जाती रहें परन्तु तू उन्हें अपने बेटों और पोतों को सिखा। १० जिस दिन तू परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे होरिब में खड़ा हुआ और परमेश्वर ने मुझे कहा कि लोगों को मेरे आगे एकट्ठा कर और मैं उन्हें अपने बचन सुनाऊंगा जिसतें वे मेरा डर सीखें जब लों वे भूमि पर जीते रहें और वे ११ अपने लड़कों को सिखावें। सो तुम पास आये और पहाड़ के नीचे खड़े रहे और पहाड़ स्वर्ग के मध्य लों अंधकार और मेघ और गाढ़ा अंधकार आग से १२ जल रहा था। और परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने उस आग के मध्य में से तुम्हारे साथ बातें किईं तुम ने बातों का शब्द सुना परन्तु मूर्त्ति न देखी केवल १३ शब्द। और उस ने अपनी बाचा तुम्हारे आगे बर्णन किई जिसे उस ने तुम्हें पालन करने को आज्ञा किई दस आज्ञा और उस ने उन्हें पत्थर की दो पटियों १४ पर लिखीं। और परमेश्वर ने उस समय मुझे आज्ञा किई कि तुम्हें बिधि और बिचार सिखाऊं जिसतें तुम उस देश में जाके जिस के तुम अधिकारी होओगे उन पर चलो॥

१५ सो तुम आप से बहुत चौकस रहो क्योंकि जिस दिन परमेश्वर ने होरिब में आग के मध्य में से तुम्हारे साथ बातें कहीं तुम ने किसी प्रकार का रूप न देखा। ऐसा न हो कि तुम बिगड़ १६ जाओ और अपने लिये खोदी हुई मूर्त्ति किसी पुरुष अथवा स्त्री की प्रतिमा बनाओ। किसी पशु की प्रतिमा जो १७ पृथिवी पर है अथवा किसी पंछी का रूप जो आकाश में उड़ते हैं। अथवा १८ किसी जंतु का रूप जो भूमि पर रेंगते हैं अथवा किसी मछली का रूप जो पृथिवी के नीचे पानियों में हैं। ऐसा १९ न हो कि तू स्वर्ग की ओर आंखें उठावे और सूर्य्य और चन्द्रमा और तारों को आकाश की समस्त सेनों को देखे तब उन्हें पूजने को बगदाया जावे और उन की सेवा करे जिन्हें परमेश्वर तेरे ईश्वर ने स्वर्ग के तले समस्त जातिगणों के लिये बिभाग किया है। परन्तु परमेश्वर २० ने तुम्हें लिया और वह तुम्हें लोहे के भट्ठे से अर्थात् मिस्र में से निकाल लाया जिसतें तुम उस की ओर से अधिकार के लोग होओ जैसा कि आज के दिन॥

और परमेश्वर ने तुम्हारे कारण से २१ मुझ पर रिसियाके किरिया खाई कि तू यरदन पार न जावेगा और उस अच्छे देश में जिस का परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे अधिकारी करता है न पहुंचेगा। परन्तु मैं अवश्य इसी देश में मरूंगा २२ निश्चय मैं यरदन पार उतरने न पाऊंगा परन्तु तुम पार उतरोगे और इस अच्छी भूमि के अधिकारी होओगे। आप से २३ चौकस रहो ऐसा न हो कि तुम परमेश्वर अपने ईश्वर की बाचा को जो उस ने तुम से किई भूल जाओ और अपने लिये खोदी हुई मूर्त्ति अथवा किसी बस्तु का रूप बनाओ जिस के बनाने से परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे

२४ वर्जा है । क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर भस्मक अग्नि ज्वलित सर्व्वशक्तिमान है ॥

२५ जब तुझ से लड़के और लड़कों के लड़के उत्पन्न होंगे और तुम अनेक दिन लों उस देश में रहोगे और बिगड़ जाओगे और खोदी हुई मूर्त्ति और किसी का रूप बनाओगे और परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे बुराई करके उस के कोप को भड़काओगे । २६ तो मैं आज के दिन तुम पर स्वर्ग और पृथिवी को साक्षी लाता हूं कि तुम उस देश पर से जहां तुम यरदन पार जाते हो कि अधिकारी बनो शीघ्र नाश हो जाओगे तुम वहां अपने दिन को न बढ़ाओगे परन्तु सर्व्वथा नष्ट हो जाओगे । २७ और परमेश्वर तुम्हें जातिगणों में छिन्न भिन्न करेगा और अन्यदेशियों के मध्य में जिधर तुम्हें परमेश्वर ले जावेगा २८ थोड़े से रह जाओगे । और वहां उन देवतों की सेवा करोगे जो मनुष्यों के हाथों से बने हैं लकड़ी के और पत्थर के जो न देखते न सुनते न खाते न २९ सूंघते हैं । पर वहां भी जब तू परमेश्वर अपने ईश्वर की खोज करेगा यदि तू अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण ३० से उसे ढूंढ़ेगा तो उसे पावेगा । जब तू कष्ट में होगा और ये सब अंत्य के दिनों में तुझ पर आ पड़ें यदि तू परमेश्वर अपने ईश्वर की ओर फिरेगा और उस ३१ का शब्द मानेगा । क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर दयाल सर्व्वशक्तिमान है वह तुझे न छोड़ेगा न तुझे नष्ट करेगा और तेरे पितरों की बाचा को जो उस ने उन से किरिया खाई है न भूलेगा ॥

३२ क्योंकि अगले दिनों से जो तुझ से आगे हो गये उस दिन से जब आदम को ईश्वर ने पृथिवी पर उत्पन्न किया और स्वर्ग की एक अलंग से लेके दूसरी लों पूछो यदि ऐसी बड़ी बात कभी हुई अथवा उस के समान सुनी गई । ३३ कि कभी लोगों ने परमेश्वर का शब्द सुना था कि आग में से बोलते जैसा तू ने सुना और जीता है । ३४ अथवा कभी ईश्वर ने यत्न किई कि जाके एक जातिगण को जातिगण के मध्य में से परीक्षा से लक्षण से और आश्चर्य्य से और लड़ाई से और सामर्थी हाथ से और बढ़ाई हुई भुजों से और बड़े बड़े भय से अपने लिये लेवे जिस रीति से परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हारी आंखों के सान्ने मिस्र में तुम्हारे लिये किया ॥ ३५ यह सब तुझे दिखाया गया जिसतें तू जाने कि परमेश्वर वही ईश्वर है उसे छोड़ कोई नहीं है । ३६ उस ने अपना शब्द स्वर्ग में से तुझे सुनाया जिसतें तुझे सिखावे और पृथिवी पर उस ने तुझे अपनी बड़ी आग दिखाई और तू ने उस के बचन आग में से सुने । ३७ और इस कारण कि उस ने तेरे पितरों से प्रेम किया उस ने उन के पीछे उन के बंश को इस कारण चुन लिया और अपनी बड़ी सामर्थ्य से तुझे मिस्र से अपनी दृष्टि के आगे निकाल लाया । ३८ जिसतें तेरे आगे से जातिगणों को जो तुझ से बड़े और बलवंत हैं दूर करे और तुझे लावे और उन के देश का अधिकारी करे जैसा आज के दिन है ॥

३९ सो आज के दिन जान और अपने मन में सोच कि परमेश्वर ऊपर स्वर्ग में और नीचे पृथिवी में वही ईश्वर है और कोई नहीं है । ४० सो तू उस की बिधिन और उस की आज्ञाओं को जो आज मैं तुझे आज्ञा करता हूं पालन कर जिसतें तेरे और तेरे पीछे तेरे बंश के लिये भला होवे और तेरी बय उस देश पर जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है बढ़ जावे ॥

४१ तब मूसा ने सूर्य्य के उदय की ओर के इसी पार तीन नगर ४२ किये । जिसतें घातक जो अचानक अपने परोसी को घात करे और आगे से उससे बैर न रखता था और अब उन नगरों में से एक में भागके प्रवेश करे ४३ तो जीता रहे । अर्थात् बुसर बन में रूबिनियों के चौगान के देश में और जादियों में रामात जिलिअद में और मुनस्सी के जौलान बसन में ॥

४४ और यह वह व्यवस्था है जिसे मूसा ने यहां इसराएल के संतानों के आगे ४५ धरी । ये हैं वे साक्षियां और विधिन और बिचार जिन्हें मूसा ने इसराएल के संतानों के लिये जब वे मिस्र से निकल ४६ आये उन से कहा । यरदन के इसी पार बैतफ़ूर के सन्मुख की तराई में अमूरियों के राजा सैहून के देश में जो हसबून में रहता था जिसे मूसा और इसराएल के संतानों ने मिस्र से निकलके ४७ मारा । और वे उस के और बसन के राजा ऊज के राज्य के अधिकारी हुए ये अमूरियों के दो राजा थे जो यरदन के इस पार सूर्य्य के उदय की ओर ४८ रहते थे । अरुआयर से लेके जो अरनून की नदी के तीर पर है सियोन के पहाड़ ४९ लों जो हरमून है । और समस्त चौगान इसी पार यरदन की पूरब ओर चौगान के समुद्र लों जो पिसगः के नालों के नीचे है ॥

पांचवां पर्ब्ब ।

१ फिर मूसा ने समस्त इसराएल को बुलाके उन से कहा कि हे इसराएल वह विधिन और बिचार सुन रक्खो जिन्हें मैं आज तुम्हारे कानों में कहता हूं जिसतें तुम उन्हें सीखो और धारण २ करके मानो । परमेश्वर हमारे ईश्वर ने होरिब में हम से एक बाचा बांधी । ३ परमेश्वर ने यह बाचा हमारे पितरों से नहीं बांधी परन्तु हम से हम जो ये जो सब आज के दिन जीते हैं । पर्ब्बत ४ पर आग के मध्य में से परमेश्वर ने तुम्हारे साथ आम्ने साम्ने बातें किईं । ५ मैं ने उस समय तुम्हारे और परमेश्वर के मध्य में खड़े होके परमेश्वर का बचन तुम्हें सुनाया क्योंकि तुम आग के कारण से डर गये और पहाड़ पर न चढ़े ॥

६ मैं परमेश्वर तेरा ईश्वर जो तुझे मिस्र के देश से सेवकाई के घर से बाहर लाया । ७ मेरे आगे तेरा कोई दूसरा ईश्वर न होवे ॥

८ अपने लिये खोदी हुई मूर्त्ति किसी का रूप जो ऊपर स्वर्ग में अथवा नीचे पृथिवी पर अथवा पृथिवी के नीचे पानियों में है मत बना । ९ तू उन्हें दण्डवत न करना और न उन की सेवा करना क्योंकि मैं परमेश्वर तेरा ईश्वर ज्वलित सर्व्वशक्तिमान हूं जो पितरों के अपराध का प्रतिफल बालकों पर तीसरी चौथी पीढ़ी लों जो मुझ से बैर रखते हैं देता हूं । १० और सहस्रों पर जो मुझ से प्रेम रखते हैं और मेरी आज्ञाओं को पालन करते हैं दया करता हूं ॥

११ तू परमेश्वर अपने ईश्वर का नाम अकारथ मत लेना क्योंकि जो उस का नाम अकारथ लेता है परमेश्वर उसे निर्दोष न ठहरावेगा ॥

१२ बिश्राम दिन को उसे पवित्र करने के लिये धारण कर जैसा परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे आज्ञा किई है । १३ छः दिन लों परिश्रम करना और अपने समस्त कार्य्य करना । १४ परन्तु सातवां दिन परमेश्वर तेरे ईश्वर का बिश्राम है कोई न करना न तू न तेरा पुत्र न तेरी पुत्री न तेरा दास न तेरी दासी न तेरा बैल न तेरा गदहा न तेरे ढोर न तेरा पाहुन

जो तेरे फाटकों के भीतर हैं जिसतें तेरा दास और तेरी दासी तेरी नाईं चैन करें । १५ और चेत कर कि तू मिस्र के देश में सेवक था और परमेश्वर तेरा ईश्वर अपने सामर्थी हाथ और बढ़ाये हुए भुजा से तुझे वहां से निकाल लाया इस लिये परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे आज्ञा किई कि तू बिश्राम दिन का पालन करे ॥

१६ अपने माता पिता को प्रतिष्ठा दे जैसी परमेश्वर तेरे ईश्वर ने आज्ञा किई है जिसतें तेरा जीवन बढ़ जावे और उस देश में जिसे तेरा ईश्वर तुझे देता है तेरा भला होवे ॥

१७ हत्या मत कर ॥

१८ और परस्त्रीगमन मत कर ॥

१९ और चोरी मत कर ॥

२० और अपने परोसी पर झूठी साक्षी मत दे ॥

२१ और अपने परोसी की पत्नी की इच्छा मत कर और अपने परोसी के घर की उस के खेत की अथवा उस के दास और उस की दासी की उस के बैल और उस के गदहे की और अपने परोसी की किसी बस्तु की लालच मत कर ॥

२२ परमेश्वर ने पहाड़ पर मेघ और गाढ़े अंधकार की आग में से तुम्हारी समस्त मंडली से महा शब्द से बातें किईं और उस्से अधिक कुछ न कहा और उस ने उन्हें पत्थर की दो पटियों पर लिखा २३ और उन्हें मुझे सौंपा । और यों हुआ कि जब तुम ने अंधकार में से यह शब्द सुना क्योंकि पहाड़ आग से जल रहा था तब तुम और तुम्हारी गोष्ठियों के प्रधान और तुम्हारे प्राचीन मेरे पास २४ आये । और तुम ने कहा कि देख परमेश्वर हमारे ईश्वर ने अपना ऐश्वर्य्य और अपनी महिमा दिखाई और हम ने आग के मध्य में से उस का शब्द सुना हम ने आज के दिन देखा कि ईश्वर मनुष्य से बातें करता है और मनुष्य जीता है । २५ सो अब हम किस लिये मरें कि यह ऐसी बड़ी आग हमें भस्म करेगी यदि हम परमेश्वर अपने ईश्वर का शब्द अब के फिर सुनेंगे तो हम २६ मर ही जावेंगे । क्योंकि समस्त शरीरों में से ऐसा कौन है जिस ने हमारे समान आग के बीच में से जीवते ईश्वर का शब्द सुना और जीता रहा । २७ तू आप ही समीप जा और सब जो कुछ कि परमेश्वर हमारा ईश्वर कहे सुन और जो कुछ परमेश्वर हमारा ईश्वर तुझे कहे तू हम से कह और हम सुनके मानेंगे ॥

२८ और जब तुम ने मुझ से कहा तब परमेश्वर ने तुम्हारी बातों का शब्द सुना और परमेश्वर ने मुझे कहा कि मैं ने इन लोगों की बातों का शब्द जो उन्हों ने तुझ से कहीं सुना जो कुछ उन्हों ने कहा अच्छा कहा । २९ हाय कि उन के ऐसे मन होते कि वे मुझ से डरते और सदा मेरी समस्त आज्ञाओं को पालन करते जिसतें उन के लिये और उन के बंश के लिये सनातन लों भला होवे । ३० जा उन्हें कह कि अपने अपने तंबू को फिर जाओ । ३१ परन्तु तू जो है यहां मुझ पास खड़ा रह और मैं समस्त आज्ञा और बिधिन और बिचार तुझे बताऊंगा तू उन्हें सिखाना जिसतें वे उस देश में जिस का अधिकारी मैं ने उन्हें किया है उन पर चलें । ३२ सो तुम चौकस होके जैसी परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने आज्ञा किई है पालन करो दहिने बायें न ३३ मुड़ो । तुम उस सब मार्ग पर चलो जो परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हें आज्ञा किई जिसतें तुम जीते रहो और तुम्हारा भला होवे और उस देश में जिस के

तुम अधिकारी होओगे तुम्हारे जीवन —ं॥

छठवां पर्ब्ब

१ और ये वह आज्ञा वे बिधिन और वे बिचार हैं जो परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हें सिखाने को मुझे आज्ञा किई जिसतें तुम उस देश में जिस के अधिकारी होने २ पार जाते हो उन पर चलो। जिसतें तू परमेश्वर अपने ईश्वर से डरके उस की सब बिधिन और आज्ञाओं को जो मैं तुझे आज्ञा करता हूं चेत में रक्खे तू और तेरा पुत्र और तेरा पौत्र जीवन ३ भर जिसतें तेरा जीवन बढ़ जावे। सो हे इसराएल सुन ले और उसे सोचके मान जिसतें तेरा भला होवे और तुम उस देश में अत्यंत बढ़ जाओ जिस में दूध और मधु बहता है जैसा परमेश्वर तुम्हारे पितरों के ईश्वर ने तुझ से प्रण किया है॥

४ सुन ले हे इसराएल परमेश्वर हमारा ५ ईश्वर एक परमेश्वर है। और अपने सारे मन से और अपने सारे जीव से और अपने सारे पराक्रम से परमेश्वर अपने ६ ईश्वर से हित रख। और ये बातें जो आज के दिन मैं तुझे आज्ञा करता हूं ७ तेरे अंतःकरण में रहें। और ये बातें अपने लड़कों को यत्न से सिखा और अपने घर में बैठते हुए और मार्ग में चलते हुए और लेटते और उठते उन की ८ चर्चा कर। और उन्हें चिन्ह के लिये अपने हाथ पर बांध और वे तेरी आंखों ९ के मध्य में टीकों की नाईं होंगे। और उन्हें अपने घर के खंभों पर और अपने द्वारों पर लिख॥

१० और यों होगा कि जब परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे उस देश में ले जायेगा जिस के विषय में उस ने तेरे पितरों अबिरहाम इजहाक और यअकूब से किरिया खाई है कि बड़ी और उत्तम बस्तियां जो तू ने नहीं बनाईं तुझे देवे। और ११ घर समस्त उत्तमों से भरे हुए जिन्हें तू ने नहीं भरा और खोदे खोदाये कूए जो तू ने नहीं खोदे दाख की बारी और जलपाई के पेड़ जो तू ने नहीं लगाये तुझे देगा और तू खावेगा और संतुष्ट होगा। चौकस रह न हो कि तू पर- १२ मेश्वर को भूल जावे जो तुझे मिस्र के देश से दासों के घर से निकाल लाया।

१३ तू परमेश्वर अपने ईश्वर से डरियो और उस की सेवा कीजियो और उस के नाम १४ की किरिया खाइयो। तुम आन आन देवतों के पीछे लोगों के देवतों के जो १५ तुम्हारे आसपास हैं मत जाइयो। क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर जो तुम्हारे मध्य में है ज्वलित सर्वशक्तिमान है न हो कि परमेश्वर तेरे ईश्वर के कोप की आग तुझ पर भड़के और तुझे पृथिवी पर से मिटा डाले॥

१६ तुम परमेश्वर अपने ईश्वर की परीक्षा मत कीजियो जैसी तुम ने मस्सः में उस १७ की परीक्षा किई। तुम यत्न से परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञाओं को और उस की साक्षियों को और उस की बिधिन को जो उस ने तुझे आज्ञा किई है स्मरण १८ करियो। और वही कीजियो जो परमेश्वर की दृष्टि में ठीक और भला है जिसतें तेरा भला होवे और तू उस सुथरी भूमि में जिस के विषय में परमेश्वर ने तेरे पितरों से किरिया खाई है प्रवेश १९ करके अधिकारी होवे। कि तुम्हारे आगे से तुम्हारे सारे बैरियों को दूर करे जैसा परमेश्वर ने कहा है॥

२० जब कल को तेरा बेटा तुझ से यह कहके पूछे कि ये कैसी साक्षियां और बिधिन और बिचार हैं जो परमेश्वर हमारे ईश्वर ने तुम्हें आज्ञा किई है। २१ तब अपने बेटे से कहियो कि हम मिस्र

में फिरऊन के बंधुए थे तब परमेश्वर सामर्थी हाथ से हमें मिस्र से निकाल २२ लाया। और परमेश्वर ने चिन्ह और बड़े बड़े दुःख और पीड़ा के आश्चर्य्य मिस्र में फिरऊन पर और उस के सारे घराने पर हमारी आंखों के आगे २३ दिखाये। और वह हमें वहां से निकाल लाया जिसतें हमें उस देश में पहुंचावे जिस के विषय में उस ने हमारे पितरों २४ से किरिया खाई हमें देवे। सो परमेश्वर ने हमें आज्ञा किई कि हम इन सब विधिन पर चलें और परमेश्वर अपने ईश्वर से अपने भले के लिये सर्व्वदा डरें जिसतें वह हमें जीता रक्खे जैसा आज २५ के दिन है। और यही हमारा धर्म्म होगा यदि हम इस सब आज्ञा को परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे जैसी उस ने आज्ञा किई पालन करें॥

सातवां पर्व्व।

१ अब कि परमेश्वर तेरा ईश्वर उस देश में जिस का अधिकारी होने जाता है तुझे पहुंचावे और तेरे आगे से बहुत जातिगणों को दूर करे अर्थात् हित्तियों को और जिरजाशियों को और अमूरियों को और कनआनियों को और फरिज्जियों और हवियों को और यबूसियों सात जातिगणों को जो तुझ से बड़े और २ सामर्थी हैं। और जब कि परमेश्वर तेरा ईश्वर उन्हें तुझे सैांप देवे तो तू उन्हें मारके सर्व्वथा नाश करियो उन से कोई बाचा न बांधियो न उन पर दया ३ कीजियो। न उन से विवाह करियो न उस के बेटे को अपनी बेटी दीजियो न अपने बेटे के लिये उस की बेटी लीजियो। ४ क्योंकि वे तेरे बेटे को मुझ से फिरावेंगे जिसतें वे आन देवतों की सेवा करें सो परमेश्वर का क्रोध तुम पर भड़केगा और वह तुझे अचानक नाश कर देगा।

५ परन्तु तुम उन से यह व्यवहार करियो उन की वेदियों को ढाइयो और उन की मूर्त्तिन को तोड़ियो और उन के कुंजों को काट डालियो और उन की खोदी हुई मूर्त्तियों को आग से जला- ६ इयो। क्योंकि तू सो परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये पवित्र लोग है परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे चुना कि तू सब लोगों में से जो पृथिवी पर हैं उस के निज ७ लोग होओ। परमेश्वर ने तुम से इस लिये प्रीति करके तुम्हें नहीं चुना कि तुम सारे लोगों से गिनती में अधिक थे क्योंकि तुम समस्त लोगों से थोड़े थे। ८ परन्तु इस कारण कि परमेश्वर तुम से प्रीति रखता था और इस कारण कि उसे उस किरिया को पालन करना था जो उस ने तुम्हारे पितरों से खाई थी परमेश्वर तुम्हें अपनी फैलाई हुई भुजा से निकाल लाया और दासों के घर से मिस्र के राजा फिरऊन के हाथ से तुझे ९ छुड़ाया। सो जान रखना कि परमेश्वर तेरा ईश्वर वही ईश्वर वह विश्वस्त सर्व्वशक्तिमान है जो उन से जो उस्से प्रेम रखते हैं और उस की आज्ञाओं को पालन करते हैं सहस्र पीढ़ी लों बाचा १० और दया रखता है। और जो उस्से बैर रखते हैं उन के मुंह पर पलटा देता है कि उन्हें नाश करे जो उस्से बैर रखता है वह उस के लिये विलंब न करेगा वह उस के मुंह पर पलटा देगा॥

११ सो तू उस आज्ञा और उन विधिन और उन विचारों को जो मैं तुझे आज के दिन पालन करने को आज्ञा करता १२ हूं धारण करियो। सो यदि तुम इन विचारों को सुनोगे और धारण करके उन्हें मानोगे तो यों होगा कि परमेश्वर तेरा ईश्वर उस बाचा और दया को जिस के विषय में उस ने तेरे पितरों से किरिया

१३ खाई है तेरे लिये स्मरण करेगा । और वह तुझे प्यार करेगा और तुझे आशीष देगा और तुझे बढ़ावेगा और वह तेरे गर्भ के फल और तेरी भूमि के फल में तेरा अन्न और तेरी मदिरा और तेरे तेल और तेरे ढोर की बढ़ती और तेरे झुंड की भेड़ उस देश में जिस के विषय में उस ने देने को तेरे पितरों से किरिया १४ खाई आशीष देगा । तू समस्त लोगों से अधिक आशीष पावेगा तुझ में और तेरे ढोर में नर अथवा स्त्रीगण बांझ न १५ होंगे । और परमेश्वर तुझ में से समस्त रोग दूर करेगा और मिस्र के सब बुरे रोगों में से जिन्हें तू जानता है तुझ पर न लावेगा परन्तु उन पर डालेगा जो तुझ से बैर रखते हैं ॥

१६ और सब लोगों को जिन्हें परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे सौंप देता है तू खा जावेगा तेरी आंख उन पर दया न करेगी और तू उन के देवों की पूजा न करना १७ क्योंकि वह तेरे लिये फंदा है । यदि तू अपने मन में कहे कि ये जातिगण मुझ से अधिक हैं मैं उन्हें क्योंकर निकाल १८ सकूंगा । तू उन से मत डरना जो कुछ परमेश्वर तेरे ईश्वर ने फिरऊन और समस्त मिस्र से किया अच्छी रीति से १९ स्मरण करना । वह बड़ी बड़ी परीक्षा जिन्हें तेरी आंखों ने देखा और वह चिन्ह और आश्चर्य्य और सामर्थी हाथ और फैलाई हुई भुजा जिन से परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे निकाल लाया जिन लोगों से तू डरता है परमेश्वर तेरा २० ईश्वर उन से वैसा ही करेगा । और परमेश्वर तेरा ईश्वर उन पर बर्रे को भी भेजेगा जब लों वे जो बचे हुए और तुम २१ से छिपते हैं नाश हो जावें । तू उन से मत डरना क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझ में है बड़ा और भयानक सर्व्वशक्ति-मान । और परमेश्वर तेरा ईश्वर उन २२ जातिगणों को तेरे आगे थोड़ा थोड़ा करके उखाड़ेगा तू एक बार उन्हें नाश न करना न होवे कि बनैले पशु तुझ पर बढ़ जावें । परन्तु परमेश्वर तेरा ईश्वर २३ उन्हें तेरे आगे सौंप देगा और महानाश से उन्हें नाश करेगा यहां लों कि वे नाश हो जावें । और वह उन के राजाओं २४ को तेरे हाथ में सौंपेगा और तू उन के नाम को स्वर्ग के तले से मिटा देगा कोई मनुष्य तेरे आगे ठहर न सकेगा जब लों तू उन्हें नाश न कर ले । तुम २५ उन की खोदी हुई देवतों की मूर्त्तिन को आग से जला देना तू उन पर के रूपे सोने का लोभ न करना और उसे अपने लिये मत लेना न हो कि तू उन में बझ जावे क्योंकि परमेश्वर तेरे ईश्वर के आगे वह घिनित है । और तू कोई २६ घिनित अपने घर में मत लाइयो न हो कि तू उस की नाईं स्रापित हो जावे तू उस से सर्व्वथा घिन कीजियो और उसे सर्व्वथा तुच्छ जानियो क्योंकि वह स्रापित वस्तु है ॥

आठवां पर्ब्ब ।

१ समस्त आज्ञा को जो आज के दिन मैं तुझे आज्ञा करता हूं मानियो और उन्हें पालन कीजियो जिसतें तुम जीओ और बढ़ जाओ और उस देश में जाओ जिस के विषय में परमेश्वर ने तुम्हारे पितरों से किरिया खाई है अधिकारी होओ । २ और उस समस्त मार्ग को स्मरण करियो जिस में परमेश्वर तेरा ईश्वर बन में इन चालीस बरस से तुझे लिये फिरा जिसतें तुझे दीन करे और तुझे परखे और तेरे मन की बात जांचे कि तू उस की आज्ञाओं को पालन करेगा कि नहीं । ३ और उस ने तुझे दीन किया और तुझे भूखा रक्खा और वह मन्न

सुन सुना है कि कौन है जो अनाक
३ के संतान के आगे ठहर सक्ता है । सो
तू आज के दिन समुझ ले कि परमेश्वर
तेरा ईश्वर जो तेरे आगे आगे पार जाता
है भस्मक आग्नि के तुल्य वह उन्हें नाश
करेगा और वह उन्हें तेरे आगे ध्वस्त
करेगा और तू उन्हें हांक देगा और उन्हें
शीघ्र नष्ट करेगा जैसा परमेश्वर ने तुझे
४ कहा है । जब परमेश्वर तेरा ईश्वर उन्हें
तेरे आगे से दूर कर देवे तब अपने मन
में मत कहना कि परमेश्वर ने मेरे धर्म्म
के कारण मुझे इस देश का अधिकारी
किया परन्तु परमेश्वर इन जातिगणों
की दुष्टता के कारण उन्हें तेरे आगे से
५ हांक देता है । तू अपने धर्म्म से और
अपने मन की खराई से उन के देश का
अधिकारी होने नहीं जाता परन्तु पर-
मेश्वर तेरा ईश्वर उन जातिगणों की
दुष्टता के कारण उन्हें तेरे आगे से हांक
देता है जिसतें उस बचन को जो पर-
मेश्वर ने किरिया खाके तेरे पितरों
अबिरहाम इजहाक और यअकूब से कहा
पूरा करे ॥

६ सो समुझ ले कि परमेश्वर तेरा ईश्वर
तेरे धर्म्म के कारण तुझे इस अच्छे देश
का अधिकारी नहीं करता क्योंकि तू
७ तो कठोर लोग है । चेत कर भूल न
जा कि तू ने परमेश्वर अपने ईश्वर के
क्रोध को बन में क्योंकर भड़काया जिस
दिन से कि तू मिस्र के देश से बाहर
निकला जब लों तुम इस स्थान में आये
८ तुम परमेश्वर से फिर गये हो । और
तुम ने होरिब में परमेश्वर के क्रोध
को भड़काया सो परमेश्वर तुम्हें नाश
करने के लिये क्रुद्ध हुआ ॥

९ जब मैं दो पत्थर की पटियां लेने
को पहाड़ पर चढ़ा अर्थात् नियम की
पटियां जो परमेश्वर ने तुम से किया तब
मैं चालीस रात दिन उस पहाड़ पर रहा
मैं ने रोटी न खाई और न पानी पीया ।
१० तब परमेश्वर ने पत्थर की दो पटियां
मुझे सौंपीं जिन पर परमेश्वर ने अपनी
अंगुली से लिखा था उन सब बातों के
समान जो परमेश्वर ने पहाड़ पर आग
में से तुम्हारे एकट्ठे होने के दिन तुम
से कही थीं । ११ और ऐसा हुआ कि चालीस
दिन रात के पीछे परमेश्वर ने पत्थर की
वे दोनों पटियां अर्थात् नियम की
पटियां मुझे दिईं । १२ और परमेश्वर ने मुझे
कहा कि उठ चल यहां से शीघ्र नीचे
जा क्योंकि तेरे लोगों ने जिन्हें तू मिस्र
से निकाल लाया आप को बिगाड़ दिया
वे झटपट उस मार्ग से जो मैं ने उन्हें
बताया फिर गये उन्हों ने अपने लिये
एक ढाली हुई मूर्त्ति बनाई ॥

१३ और परमेश्वर मुझे कहके बोला कि
मैं ने इन लोगों को देखा है और देख
वे कठोर लोग हैं । १४ मुझे छोड़ कि मैं
उन्हें नाश करूं और उन का नाम स्वर्ग
के तले से मिटा डालूं और मैं तुझ से
एक जाति जो उस्से बली और बहुत है
बनाऊंगा । १५ सो मैं फिरा और पहाड़ पर
से उतरा और पर्वत आग से जल रहा
था और नियम की दोनों पटियां मेरे
दोनों हाथ में थीं । १६ तब मैं ने दृष्टि
किई और क्या देखता हूं कि तुम ने
परमेश्वर अपने ईश्वर का पाप किया
था तुम ने अपने लिये ढाला हुआ
बछड़ा बनाया तुम शीघ्र उस मार्ग से
जो परमेश्वर ने तुम्हें बताया फिर गये ।
१७ तब मैं ने दोनों पटियां लेके अपने दोनों
हाथों से पटक दिईं और उन्हें तुम्हारी
आंखों के आगे तोड़ डाला । १८ और तुम्हारे
उन सब पापों के कारण जो तुम ने किये
जब तुम ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई
करके उसे रिस दिलाई मैं आगे की

चालीस रात दिन परमेश्वर के आगे गिरा पड़ा रहा मैं ने रोटी न खाई न पानी पीया। क्योंकि मैं परमेश्वर के कोप और क्रोध से डरा कि वह तुम्हें नाश करने के लिये कोपित था परन्तु परमेश्वर ने उस समय में भी मेरी सुनी। तब हारून को नाश करने के लिये परमेश्वर का क्रोध भड़का और मैं ने उस समय में हारून के लिये भी प्रार्थना किई। और मैं ने तुम्हारे पाप को अर्थात् उस बछड़े को जो तुम ने बनाया था लिया और उसे आग में जलाया फिर उसे कूटा और बुकनी किया ऐसा कि वह धूल सा हो गया और मैं ने उस धूल को नालों में जो पर्बत से बहती थी डाल दिया॥

२२ और तबअर: में और मस्स: में और कबरातुताव: में तुम ने परमेश्वर को कोपित किया। और उसी ढब से उस समय में जब परमेश्वर ने तुम्हें कादिसबरनीअ से यह कहके भेजा कि चढ़ जाओ और उस देश के जो मैं ने तुम्हें दिया है अधिकारी होओ तब तुम परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञा से फिर गये और तुम उस पर बिश्वास न लाये और उस के शब्द को न सुना। २४ जिस दिन से मैं ने तुम्हें जाना तुम परमेश्वर से फिर गये हो॥

२५ सो मैं परमेश्वर के आगे चालीस रात दिन पड़ा रहा क्योंकि परमेश्वर ने कहा था कि मैं उन्हें नाश करूंगा। २६ सो मैं ने परमेश्वर की बिनती किई और कहा कि हे प्रभु परमेश्वर अपने लोग को और अपने अधिकार को जिन्हें तू अपने महत्त्व से छुड़ा लाया तू अपनी भुजा के पराक्रम से मिस्र से निकाल २७ लाया नाश न कर। अपने सेवकों अबिरहाम इजहाक और यअकूब को स्मरण कर इस लोग की ढिठाई और उस की दुष्टता और पापों पर दृष्टि न कर। २८ न होवे कि वह देश जहां से तू हमें निकाल लाया कहे कि परमेश्वर सामर्थी न था कि उन्हें उस देश में जिस के बिषय में उन से बाचा किई पहुंचावे और इस लिये कि वह उन से डाह रखता था वह उन्हें निकाल ले गया कि उन्हें बन में नाश करे। २९ तथापि वे तेरे लोग और तेरे अधिकार हैं जिन्हें तू अपने बड़े पराक्रम और अपनी बढ़ाई हुई भुजा से निकाल लाया है॥

दसवां पर्ब्ब।

१ उस समय परमेश्वर ने मुझे कहा कि अपने लिये पत्थर की दो पटियां अगली के समान चीर और पहाड़ पर मुझ पास आ और अपने लिये लकड़ी की एक मंजूषा बना। २ और मैं उन पटियों पर वे बातें लिखूंगा जो अगली पटियों पर थीं जिन्हें तू ने तोड़ डाला और तू उन्हें मंजूषा में रखियो। ३ तब मैं ने शमशाद लकड़ी की मंजूषा बनाई और पत्थर की दो पटियां अगली के समान चीरीं और उन दोनों पटियों को अपने हाथ में लिये हुए पहाड़ पर चढ़ गया। ४ और उस ने पटियों पर अगले हुए के समान वे दस बचन लिखे जो परमेश्वर ने पहाड़ पर आग के मध्य से सभा के दिन तुम्हें कहा था और परमेश्वर ने उन्हें मुझे दिया। ५ तब मैं फिरा और पहाड़ पर से उतरा और उन पटियों को उस मंजूषा में जिसे मैं ने बनाया था रक्खा सो वे परमेश्वर की आज्ञा के समान अब लों वहां हैं॥

६ तब इसराएल के संतान ने यअकान के संतान बिअरात से मौसीर: को यात्रा किई वहां हारून मर गया और वहीं गाड़ा गया और उस के बेटे इलिआजर

ने याजक के पद पर उस के स्थान में
७ सेवा किई । वहां से उन्हों ने जिदजाद
को यात्रा किई और जिदजाद से युतबत:
को जो पानियों के नदियों का देश है ॥
८ उस समय परमेश्वर ने लावी की गोष्ठी
को इस लिये अलग किया कि परमेश्वर
के नियम की मंजूषा को उठावें और
परमेश्वर के आगे खड़े होके उस की
सेवा करें और उस के नाम से आशीस
देवें जो आज के दिन लों यों ही है ।
९ इस लिये लावी का अंश और अधिकार
उस के भाइयों के साथ नहीं परमेश्वर
उस का अधिकार है जैसा परमेश्वर तेरे
ईश्वर ने उसे बचन दिया ॥
१० और मैं अगले दिनों के समान फिर
चालीस रात दिन पहाड़ पर रहा और
उस समय भी परमेश्वर ने मेरी सुनी
और परमेश्वर ने न चाहा कि तुझे
११ बिनाश करे । फिर परमेश्वर ने मुझे
कहा कि उठ लोगों के आगे आगे चल
और वे जावें जिसतें वे उस देश में बसें
जो मैं ने उन के पितरों से किरिया खाके
कहा था कि उन्हें देऊंगा ॥
१२ और अब हे इसराएल परमेश्वर तेरा
ईश्वर तुझ से क्या चाहता है केवल
यही कि तू परमेश्वर अपने ईश्वर से डरे
और उस के सारे मार्गों पर चले और
उस्से प्रेम रक्खे और अपने सारे मन से
और अपने सारे प्राण से परमेश्वर अपने
१३ ईश्वर की सेवा करे । परमेश्वर की
आज्ञाओं को और उस की बिधिन को
जो आज के दिन तेरी भलाई के लिये
तुझे आज्ञा करता हूं पालन करे जिसतें
१४ तेरी भलाई होवे । देख कि स्वर्ग और
स्वर्गों के स्वर्ग और पृथिवी उस सब
समेत जो उस में है परमेश्वर तेरे ईश्वर
१५ का है । केवल परमेश्वर ने चाहा कि
तेरे पितरों से प्रेम रक्खे इस लिये उन
के पीछे उन के बंश को अर्थात् तुम्हें
समस्त लोगों से अधिक चुन लिया जैसा
कि आज है । सो अपने मन का खतनः १६
करो और आगे को कठोर मत होओ ।
क्योंकि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर वही १७
ईश्वरों का ईश्वर और प्रभुओं का प्रभु
महाशक्तिमान ईश्वर और भयंकर है जो
मनुष्यत्व पर दृष्टि नहीं करता और
अकोर नहीं लेता । वह अनाथों और १८
बिधवों का न्याय करता है और पर-
देशियों से प्रेम रखके उन्हें भोजन बस्त्र
देता है । सो तुम भी परदेशी को प्यार १९
करो क्योंकि तुम मिस्र के देश में पर-
देशी थे । परमेश्वर अपने ईश्वर से २०
डरता रह उस की सेवा कर और उसी
से लवलीन रह और उसी के नाम की
किरिया खा । वही तेरी स्तुति और वही २१
तेरा ईश्वर है जिस ने तेरे लिये ऐसे ऐसे
बड़े और भयंकर कार्य्य किये जिन्हें तू ने
अपनी आंखों से देखा । तेरे पितर सत्तर २२
जन लेके मिस्र में उतरे और अब परमेश्वर
तेरे ईश्वर ने आकाश के तारों के समान
तुझे बढ़ाया ॥

ग्यारहवां पर्व्व ।

सो तू परमेश्वर अपने ईश्वर से प्रेम १
रख और उस की ब्यवस्था और उस की
बिधिन और उस के न्याय और उस की
आज्ञा सदा पालन कर ॥

और तुम आज के दिन जान लेओ २
क्योंकि मैं तुम्हारे बंश से नहीं बोलता
जिन्हों ने तुम्हारे ईश्वर की ताड़ना और
उस की महिमा और उस के हाथ का
बल और उस की बढ़ाई हुई भुजा न
जाना है न देखा है । और उस के
आश्चर्य्य और उस के कार्य्य जो उस ने
मिस्र के मध्य में मिस्र के राजा फिर-
ऊन से और उस के समस्त देश से किया ।
और जो कुछ उस ने मिस्र की सेना के

साथ उन के घोड़ों और उन की गाड़ियों के साथ किये किस रीति से उस ने लाल समुद्र का पानी उन पर उभाड़ा जब उन्हों ने तुम्हारा पीछा किया सो परमेश्वर ने उन्हें नष्ट किया आज के दिन ५ लों। और जो कुछ उस ने अरण्य में जब लों कि तुम इस स्थान लों पहुंचे ६ तुम्हारे साथ किया। और जो उस ने दातन और अबिराम के साथ किया जो रुबिन के बेटे इलिअब के बेटे थे किस रीति से पृथिवी ने अपना मुंह खोला और उन्हें और उन के घरानों और उन के तंबुओं को और समस्त जीवधारियों को जो उन के बश में थे समस्त इस- ७ राएल के मध्य में निगल गई। क्योंकि तुम्हारी आंखों ने परमेश्वर के समस्त महान कार्य्य जो उस ने किये देखे। ८ सो तुम उस समस्त आज्ञा को जो आज मैं तुम्हें कहता हूं पालन करो जिसतें तुम बली होओ और जाके उस देश के जिस के अधिकारी होने के लिये पार जाते ९ हो अधिकारी होओ। और जिसतें तुम उस देश पर अपना जीवन बढ़ाओ जिस के कारण परमेश्वर ने तुम्हारे पितरों से किरिया खाके कहा कि मैं उन्हें और उन के बंश को देऊंगा वह देश जिस में दूध और मधु बहता है॥

१० क्योंकि वह देश जिस का तू अधिकारी होने जाता है मिस्र के समान नहीं जहां से तुम निकल आये जहां तू अपना बिहन बोता था और उसे अपनी तरकारी की बारी की नाईं पांव से ११ पानी सींचता था। परन्तु वह भूमि जिस के अधिकारी होने को जाते हो पहाड़ों और तराइयों का देश है जो आकाश के मेघ से सींचा जाता है। १२ यह वह देश है जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर चाहता है और बरस के आरंभ से लेके बरस के अंत लों सदा परमेश्वर तेरे ईश्वर की आंखें उस पर लगी हैं॥

१३ और यों होगा कि यदि तुम ध्यान से मेरी आज्ञाओं को सुनोगे जो मैं तुम्हें आज के दिन आज्ञा करता हूं कि परमेश्वर अपने ईश्वर से प्रेम करो कि अपने समस्त मन से और अपने सारे १४ प्राण से उस की सेवा करो। तो मैं तुम्हारी भूमि में समय पर मेंह बरसाऊंगा आरंभ के मेंह और अंत के मेंह मैं तुम्हें देऊंगा जिसतें तू अपना अन्न और अपना दाखरस और अपना तेल एकट्ठा करे। १५ और तेरे खेत में तेरे पशु के लिये घास उगाऊंगा जिसतें तू खाय और तृप्त होवे॥

१६ तुम आप से चौकस रहो जिसतें तुम्हारे मन छल न खावें और तुम फिर जाओ अन्य और देवतों की सेवा करो १७ और उन को दंडवत करो। और परमेश्वर का क्रोध तुम पर भड़के और वह स्वर्ग को बंद करे जिसतें मेंह न बरसे और भूमि अपना फल न देवे और तुम उस अच्छी भूमि से जो परमेश्वर तुम्हें देता है शीघ्र नष्ट हो जाओ॥

१८ सो मेरी इन बातों को अपने अंतःकरण में और अपने मन में रख छोड़ो और उन्हें चिन्ह के लिये अपनी बांह भुजा पर बांधो जिसतें वे तुम्हारी दोनों आंखों के मध्य में टीके की नाईं रहें। १९ और तुम उन्हें अपने घर में बैठे हुए और मार्ग चलते हुए और लेटते हुए और उठने के समय अपने लड़कों को सिखाओ। २० और तू उन्हें अपने घर के फाटकों पर २१ और अपने द्वारों पर लिख। जिसतें तुम्हारे और तुम्हारे बंश के दिन जैसा कि स्वर्ग के दिन पृथिवी पर बढ़ते हैं वैसे ही तुम्हारे दिन उस देश में जिस के कारण परमेश्वर ने तेरे पितरों से

किरिया खाके कहा कि मैं तुम्हें देऊंगा बढ़ जाय ॥

२२ क्योंकि यदि तुम इन सब आज्ञा को जो मैं तुम्हें आज्ञा करता हूं पालन करोगे और उसे मानोगे कि परमेश्वर अपने ईश्वर से प्रेम रक्खो कि उस के समस्त मार्गों पर चलो और उस्से लवलो २३ रहो । तब परमेश्वर इन सब जातिगणों को तुम्हारे आगे से हांक देगा और तुम जातिगणों के जो बड़े बली और तुम से अधिक सामर्थी हैं अधिकारी २४ होओगे । जिस जिस स्थान पर तुम्हारे पांवों का तलवा पड़ेगा सो सो तुम्हारा हो जावेगा बन और लुबनान से नदी से फुरात नदी से लेके अत्यंत समुद्र लों २५ तुम्हारा सिवाना होगा । किसी की सामर्थ्य न होगी कि तुम्हारे आगे ठहर सके परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हारा भय और तुम्हारा डर समस्त देश में जिस पर तुम्हारा पैर पड़ेगा डालेगा जैसा उस ने तुम से कहा है ॥

२६ देखो मैं आज के दिन तुम्हारे आगे २७ आशीस और साप धर देता हूं । आशीस यदि तुम परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञाओं को जो आज मैं तुम्हें देता हूं २८ पालन करोगे । और साप यदि तुम परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञाओं को पालन न करोगे परन्तु उस मार्ग से फिरके जो आज मैं तुम्हें आज्ञा करता हूं अन- और देवतों का पीछा करोगे जिन्हें तुम ने नहीं जाना ॥

२९ और यों होगा कि जब परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे उस देश में जहां तू अधिकारी होने को जाता है पहुंचावे तो तू आशीस को गरिजीम के पहाड़ पर रखियो और साप को ऐबाल के ३० पहाड़ पर । क्या वे यरदन पार नहीं उसी मार्ग में जिधर सूर्य्य अस्त होता है कनआनी के देश में जो जिलजाल के साम्ने चौगान में रहते हैं और चौगानों के लग हैं । ३१ क्योंकि तुम यरदन पार जाते हो जिसतें उस देश के जो परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हें देता है अधिकारी होओ और तुम उस के अधिकारी होगे ३२ और उस में बसोगे । सो तुम उन समस्त बिधिन और बिचारों को जो आज मैं तुम्हारे आगे धरता हूं सोच रखियो ॥

बारहवां पर्ब्ब ।

१ ये वे बिधिन और बिचार हैं जिन्हें तुम उस देश में जो परमेश्वर तुम्हारे पितरों का ईश्वर तुम्हें अधिकार में देता है जब लों तुम पृथिवी पर जीते रहो उन्हें सोचके मानियो ॥

२ तुम उन स्थानों को सर्वथा नाश कीजियो जहां उन जातिगणों ने जिन के तुम अधिकारी होओगे अपने देवतों की सेवा किई है ऊंचे पहाड़ों पर और टीलों पर और हर एक हरे पेड़ तले । और उन की यज्ञबेदियों को ढा दीजियो और उन के खंभों को तोड़ियो और उन के कुंजों को आग से जलाइयो और उन के देवतों की खोदी हुई मूर्त्तियों को ढा दीजियो और उन के नाम को उस स्थान से मिटा दीजियो ॥

४ तुम ऐसा कुछ परमेश्वर अपने ईश्वर ५ के लिये मत कीजियो । परन्तु वह स्थान जिसे परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हारी समस्त गोष्ठियों में से चुनेगा कि वहां अपना नाम रक्खे और उसी के निवास ६ को ढूंढ़ो और तुम वहीं आओ । और वहीं अपने बलिदान की भेंटें और अपने बलि और अपने अंश और अपने हाथ की हिलाई हुई भेंट और अपनी मनौतियां और अपनी बांछा की भेंटें और अपने ढोर और अपने झुंड के पहिलौठे लाइयो । ७ और वहां परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे

खाओगे और अपने सारे घराने समेत अपने हाथ के सब कामों में जिन में परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुम्हें आशीस दिया आनन्द करोगे॥

८ तुम ऐसे कार्य्य जैसे हम यहां करते हैं हर एक जो अपनी अपनी दृष्टि में ९ ठीक है वही मत कीजियो। क्योंकि तुम उस बिश्राम और अधिकार को जो परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हें देता है १० अब लों नहीं पहुंचे। परन्तु जब तुम यरदन पार जाओ और उस देश में बसो जिसे परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हारा अधिकार कर देता है और तुम्हें तुम्हारे सब शत्रुन से जो चारों ओर हैं चैन देगा ११ ऐसा कि तुम चैन से बसो। तब वहां एक स्थान होगा जिसे परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर चुनके अपना नाम वहां रक्खे तुम सब कुछ जो मैं तुम्हें आज्ञा करता हूं वहीं ले जाइयो अर्थात् अपनी बलिदान की भेंटें और अपने बलि अपने अंश और अपने हाथ की हिलाई हुई भेंट और अपनी बांछा की मनौती जो १२ तुम परमेश्वर के लिये मानते हो। और अपने बेटों और अपनी बेटियों और अपने दासों और अपनी दासियों और उस लावी सहित जो तुम्हारे फाटकों में हो क्योंकि उस का अंश और अधिकार तुम्हारे साथ नहीं परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे आनन्द कीजियो॥

१३ अपने से सुचेत रहो और अपने बलिदान की भेंट हर एक स्थान पर जहां १४ संयोग मिले मत चढ़ाइयो। परन्तु उसी स्थान में जिसे परमेश्वर तेरी गोष्ठियों में से चुन लेगा वहां तू अपने बलिदान की भेंट चढ़ाइयो और वहां सब कुछ जो मैं तुझे आज्ञा करता हूं वही कीजियो॥

१५ और जिस बस्तु को तेरा मन चाहे मार खाइयो परमेश्वर अपने ईश्वर की आशीस के समान जो उस ने तेरे समस्त फाटकों में तुझे दिया है चाहे पावन हो चाहे अपावन हर एक उसे खावे जैसे १६ हरिण और बारहसिंगा। केवल लोहू मत खाइयो परन्तु उसे पानी की नाईं भूमि पर ढाल दीजियो॥

१७ अपना अनाज और दाखरस और तेल का दसवां अंश और अपने ढोर अथवा अपने झुंड के पहिलौठे और अपनी समस्त मानी हुई मनौती और अपनी बांछा की भेंटें और अपने हाथ के हिलाने की भेंट अपने फाटकों में मत खाइयो। १८ परन्तु तुझ पर और तेरे बेटा बेटी और तेरे दास और तेरी दासी पर और लावी पर जो तेरे फाटकों में हैं उचित है कि उन बस्तुन को परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे उस स्थान में जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर चुनेगा खाइयो और तू परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे अपने सब १९ कामों में आनन्द करियो। आप से चौकस रहियो जब लों तू जीता रहे लावी को मत त्यागियो॥

२० जब परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे सिवानों को बढ़ावे जैसी उस ने तुझ से प्रतिज्ञा किई है और तू कहे कि मैं मांस खाऊंगा इस कारण कि तेरा जीव मांस खाने का अभिलाषी है तो तू मांस और हर एक बस्तु जिसे तेरा जीव चाहे खाइयो। २१ यदि वह स्थान जिसे परमेश्वर तेरे ईश्वर ने अपना नाम वहां रखने को चुन लिया तुझ से बहुत दूर होवे तो तू अपने ढोर और अपने झुंड में से जो परमेश्वर ने तुझे दिये हैं जैसा मैं ने तुझे आज्ञा किई है मारियो और अपने फाटकों में जो २२ कुछ तेरा जीव चाहे सो खाइयो। जैसा कि हरिण और बारहसिंगे खाये जाते हैं तू उन्हें खाइयो पवित्र और अपवित्र २३ उन्हें समान खावें। केवल चौकस होके

लोहू मत खाइयो क्योंकि लोहू जीव है और तुझे उचित नहीं कि मांस के साथ
२४ जीव खावे। तू उसे मत खाइयो उसे पानी की नाईं भूमि पर डाल दीजियो।
२५ तू उसे मत खाइयो जिस में तेरा और तेरे पीछे तेरे बंश का भला होवे जब कि तू वह जो ईश्वर की दृष्टि में ठीक है करे॥

२६ परन्तु तू अपने पवित्र बस्तुन को और अपनी मनौतियों को उस स्थान में
२७ जिसे ईश्वर चुनेगा ले आइयो। और तू अपने बलिदान की भेंट मांस और लोहू परमेश्वर अपने ईश्वर की बेदी पर चढ़ाइयो और तेरे बलिदानों का लोहू परमेश्वर तेरे ईश्वर की बेदी पर ढाला जावेगा और तू मांस को खाइयो॥

२८ चौकस हो और इन सब बातों को सोचो जो मैं तुझे आज्ञा करता हूं सुनो जिस में तेरा और तेरे पीछे तेरे बंश का सनातन लों भला होवे जब कि तुम वह जो भला और ठीक है परमेश्वर अपने ईश्वर की दृष्टि में करो॥

२९ जब परमेश्वर तेरा ईश्वर उन जातिगणों को तेरे आगे से काट डाले जहां तू जाता है कि अधिकारी बने और तू इन का अधिकारी होवे और उन के
३० देश में बास करे। अपने से चौकस रहियो न हो कि जब वे तेरे आगे से बिनाश होवें तू उन के पीछे बझ जावे और न हो कि तू उन के देवतों को खोज करके कहे कि इन जातिगणों ने अपने देवतों की सेवा किस रीति से
३१ किई थी मैं भी वैसी करूंगा। तू परमेश्वर अपने ईश्वर से ऐसा मत कीजियो क्योंकि उन्हों ने हर एक कार्य्य जिस्से परमेश्वर को घिन है जिस्से वह बैर रखता है अपने देवतों के लिये किया यहां लों कि अपने बेटों और बेटियों को भी अपने देवतों के लिये आग में
३२ जला दिया। तुम हर एक बात को जो मैं तुम्हें कहता हूं सोचके मानियो उस में न बढ़ाइयो न उस में घटाइयो॥

तेरहवां पर्व्व।

१ यदि तेरे मध्य में कोई आगमज्ञानी अथवा स्वप्नदर्शी खड़ा होवे और तुझे कोई लक्षण अथवा आश्चर्य्य दिखावे।
२ और वह लक्षण अथवा आश्चर्य्य जो उस ने तुझ से कहा था पूरा होवे और वह तुम्हें कहे कि आओ हम आन देवतों का पीछा करें जिन्हें तू ने नहीं जाना
३ और उन की सेवा करें। तो कभी उस आगमज्ञानी अथवा स्वप्नदर्शी के बचन मत सुनियो क्योंकि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हें परखता है जिसतें देखे कि तुम परमेश्वर अपने ईश्वर को अपने सारे जीव से और अपने सारे प्राण से
४ मित्र रखते हो कि नहीं। तुम परमेश्वर अपने ईश्वर का पीछा करो और उस्से डरो और उस की आज्ञाओं को धारण करो और उस का शब्द मानो और तुम उस की सेवा करो और उसी
५ से लवलीन रहो। और वह आगमज्ञानी अथवा स्वप्नदर्शी घात किया जावेगा क्योंकि उस ने तुम्हें परमेश्वर अपने ईश्वर से फिरावने की बात कही जो तुम्हें मिस्र देश से बाहर निकाल लाया और तुझे बंधुआई के घर से छुड़ाया जिसतें तुझे उस मार्ग में से जो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे आज्ञा किई है बगदा देवे सो तुझे उचित है कि तू उस बुराई को अपने मध्य से निकाल डाले॥

६ यदि तेरा सगा भाई अथवा तेरा बेटा अथवा तेरी बेटी अथवा तेरी गोद की पत्नी अथवा तेरा मित्र जो तेरे प्राण के समान होवे तुझे चुपके से

फुसलावे और कहे कि चल दूसरे देवतों की सेवा करें जिन्हें तू और तेरे पितर ७ नहीं जानते हैं। उन लोगों के देवतों में से जो तुम्हारे आसपास तेरे चारों ओर हैं अथवा तुझ से दूर भूमि के इस ८ खूंट से उस खूंट लों। तू उस की बात न मानियो न उस की सुनियो न उस पर दया की दृष्टि कीजियो और तू उसे ९ मत छोड़ न उस को छिपा। परन्तु उसे अवश्य मार डालियो उस के बधन में पहिले तेरा हाथ उस पर पड़े और पीछे १० सब लोगों के हाथ। और तू उस पर पत्थरवाह कीजियो जिसतें वह मर जावे क्योंकि उस ने चाहा कि परमेश्वर तेरे ईश्वर से तुझे भटकावे जो तुझे मिस्र के देश बंधुआई के घर से निकाल ११ लाया। और सारे इसराएल सुनके डरेंगे और तेरे मध्य में फिर ऐसी दुष्टता न करेंगे॥

१२ यदि तू उन नगरों में जो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे बसने के लिये दिये १३ हैं यह कहते सुने। कि कितने दुष्ट लोग तुझ में से निकल गये और अपने नगर के बासियों को यों कहके भटकाया कि आओ चलें और आन देवतों की सेवा करें जिन्हें तुम ने नहीं जाना है। १४ तो खोजियो और यत्न से पूछियो और देख यदि वह बचन सत्य होवे और निःसंदेह कि ऐसा घिनित कार्य्य तेरे १५ मध्य में किया गया। तो उस नगर के बासियों को खड्ग की धार से निश्चय मार डालियो उसे और जो कुछ उस में है और वहां के ढोर को खड्ग की धार १६ से सर्वथा नाश कीजियो। और तू वहां की सारी लूट को वहां की सड़क के मध्य में एकट्ठी कीजियो और उस नगर को और वहां की सारी लूट को परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये आग से जला दीजियो और वह सनातन लों एक ढेर रहेगा फिर बनाया न जावेगा॥ १७ और उस स्रापित बस्तु में से कुछ तेरे हाथ में सटी न रहे जिसतें परमेश्वर अपने क्रोध की जलजलाहट से फिर जावे और तुझ पर अनुग्रह करे और तुझ पर दयाल होवे और तुझे बढ़ावे जैसा कि उस ने तुम्हारे पितरों से किरिया १८ खाई है। जब तू परमेश्वर अपने ईश्वर का शब्द सुने कि उस की सारी आज्ञाओं को जो आज मैं तुझे आज्ञा करता हूं जो परमेश्वर तेरे ईश्वर के आगे ठीक है उसे पालन करे॥

चौदहवां पर्ब्ब।

१ तुम परमेश्वर अपने ईश्वर के पुत्र हो तुम मृतक के लिये अपने को काट-कूट न करियो न अपने माथे को मुड़ाइयो॥

२ क्योंकि तुम परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये पवित्र लोग हो और परमेश्वर ने समस्त जातिगणों में से जो पृथिवी पर हैं तुझे चुन लिया कि अपने निज ३ लोग बनावे। तू किसी घिनित बस्तु ४ को मत खाइयो। इन पशुन को खाइयो ५ बैल भेड़ बकरी। और हरिण और हरिणी कंवली और बनैली बकरी और गवय और बनैला बैल और अरना। ६ और हर एक चौपाया जिस के खुर चिरे हुए हों और उस के खुर में बिभाग हो ७ और पागुर करता हो तुम उसे खाइयो। तथापि उन में से जो पागुर करते हैं अथवा उन के खुर चिरे हुए हैं जैसे ऊंट और खरहा और शफन तुम इन्हें मत खाइयो इस लिये कि ये पागुर नहीं करते परन्तु उन के खुर चिरे हुए हैं सो ८ ये तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं। और सूअर इस कारण कि उस के खुर चिरे हुए हैं तथापि पागुर नहीं करता वह तुम्हारे

लिये अशुद्ध है तुम उन का मांस न खाइयो न उन की लोथों को छूइयो ॥

९ सब में से जो पानियों में रहते हैं इन्हें खाइयो जिन के पंख और छिलके हों। १० और जिस किसी के पंख और छिलके न हों तुम इन्हें न खाइयो वह तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं ॥

११ समस्त पावन पक्षी को खाइयो। १२ परन्तु इन में इन्हें न खाइयो गिद्ध और १३ हड़गील और कुरर। और शंकरचील्ह और चील्ह और भांति भांति के गिद्ध। १४ और भांति भांति के कव्वे। १५ और पेंचा और लक्ष्मीपेंचा और कोइल और भांति १६ भांति के सिकरा। और छोटा पेंचा १७ और उल्लू और राजहंस। और गरुड़ १८ और बासा और मकरंग। और सारस और भांति भांति के बगुले और टिटिहरी १९ और चमगादर। और हर एक रेंगवैया जो उड़ता है तुम्हारे लिये अशुद्ध है वे २० खाये न जावें। समस्त पवित्र पक्षी खाइयो ॥

२१ जो कुछ आप से मर जावे उसे मत खाइयो तू उसे किसी परदेशी को जो तेरे फाटकों में है खाने को दीजियो अथवा किसी बिदेशी के हाथ बेच डालियो क्योंकि तू परमेश्वर अपने ईश्वर का पवित्र लोग है तू मेम्ना को उस की माता के दूध में मत उसिन्ना ॥

२२ बरस बरस जो बीज तेरे खेतों में उगे तू निश्चय उस का अंश दिया कर। २३ तू परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे उस स्थान में जिसे वह अपने नाम के लिये चुनेगा अपने अन्न का अपनी मदिरा का और अपने तेल का और अपने ढोर और अपने झुंड के पहिलौठों के अंश को खाइयो जिसतें तू सर्बदा परमेश्वर अपने ईश्वर से डरना सीखे ॥

२४ और यदि मार्ग तेरे लिये अति दूर होवे यहां लों कि तू उसे न ले जा सके यदि वह स्थान जिसे परमेश्वर तेरे ईश्वर ने चुना जिसतें अपना नाम वहां स्थिर करे बहुत दूर होवे तो जब परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे आशीस देवे। २५ तब तू उन्हें बेचके उन की रोकड़ अपने हाथ में लेके उस स्थान को जा जो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने चुना है। २६ और उस रोकड़ से जिस बस्तु को तेरा मन चाहे मोल ले गाय बैल अथवा भेड़ अथवा दाखरस अथवा मद्य अथवा जो बस्तु तेरा जीव चाहे तू और तेरा घराना परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे खावे और आनन्द करे। २७ और जो लावी तेरे फाटकों में है उसे त्याग मत करियो क्योंकि उस का भाग और अधिकार तेरे साथ नहीं है ॥

२८ तीन बरस के पीछे अपनी बढ़ती का समस्त दसवां भाग उसी बरस लाइयो और अपने फाटकों के भीतर धरियो। २९ और इस कारण कि लावी तेरे संग भाग और अंश नहीं रखता है और परदेशी और अनाथ और बिधवा जो तेरे फाटकों में हैं आवें और खावें और तृप्त होवें जिसतें परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे हाथ के समस्त कार्य्यों में जो तू करता है आशीस देवे ॥

पंदरहवां पर्ब्ब।

१ सात बरसों के पीछे तू छुटकारा ठहराइयो। २ और छुटकारे की रीति यह है कि हर एक धनिक जो अपने परोसी को ऋण देता है सो उसे छोड़ देवे और अपने परोसी से अथवा अपने भाई से न लेवे इस कारण कि यह परमेश्वर का छुटकारा कहाता है। ३ परदेशी से तू ले सके परन्तु यदि तेरा कुछ तेरे भाई पर है तो उसे छोड़ दे। ४ जिसतें तुम्में कोई कंगाल न होवे

क्योंकि परमेश्वर उस देश में जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे अधिकार में ५ देता है तुझे आशीष देगा। यदि तू केवल परमेश्वर अपने ईश्वर के शब्द को सुने और ध्यान से इस समस्त आज्ञा पर चले जो आज मैं तुझे आज्ञा करता ६ हूं। क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर जैसा उस ने तुझ से प्रण किया है तुझे आशीष देगा और तू बहुत जातिगणों को उधार देगा परन्तु तू उधार न लेगा और तू बहुत से जातिगणों पर राज्य करेगा परन्तु वे तुझ पर राज्य न करेंगे॥

७ यदि तुम्हारे बीच तुम्हारे भाइयों में से तेरे किसी नगर में उस देश का जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है कोई कंगाल होवे तो उस्से अपने मन को कठोर मत करियो और अपने कंगाल भाई की ओर से अपना हाथ न खींचियो। ८ परन्तु अवश्य उस की सहाय के लिये अपना हाथ खोलियो और निश्चय उस के आवश्यक के समान उसे उधार देना। ९ सावधान हो कि तेरे दुष्ट मन में कोई बुरी चिन्ता न हो कि सातवां बरस तेरे छुटकारे का बरस समीप है और तेरी आंख तेरे कंगाल भाई की ओर बुरी होवे और तू उसे कुछ न देवे और वह तुझ पर परमेश्वर के आगे बिलाप १० करे और तेरे लिये पाप होवे। अवश्य उसे दीजियो और जब तू उसे देवे तो तेरा मन उदास न होवे क्योंकि इस कारण परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे समस्त कार्य्यों में जिन में तू हाथ लगावे बरकत ११ देगा। क्योंकि देश में से कंगाल न मिटेंगे इस लिये मैं तुझे आज्ञा करता हूं कि अपने भाई के लिये जो तेरे सन्मुख और अपने कंगाल और अपने दरिद्र के लिये जो तेरे देश में है अपना हाथ खोलियो॥

यदि तेरा इबरानी भाई पुरुष हो १२ अथवा स्त्री तेरे हाथ बेचा जावे और छः बरस लों तेरी सेवा करे तब सातवें बरस अंत से उसे जाने दीजियो। और १३ जब तू उसे अपने पास से जाने देवे तो उसे छूछे हाथ मत जाने दीजियो। अपने १४ झुंड और अपने खत्ते और अपने कोल्हू में से उस बरकत में से जो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे दिई है उसे मन खोलके दीजियो। और स्मरण कीजियो कि मिस्र १५ देश में तू बंधुआ था और परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे छुड़ाया इस लिये आज मैं तुझे यह आज्ञा करता हूं॥

और यदि वह तुझे कहे कि मैं तुझ १६ पास से न जाऊंगा इस कारण कि वह तुझ से और तेरे घर से प्रीति रखता है क्योंकि वह तेरे संग कुशल से है। तो १७ तू एक सुतारी लेके अपने द्वार पर उस का कान छेदियो जिसतें वह सदा को तेरा सेवक हो और अपनी दासी से भी तू ऐसा ही करियो। जब तू उसे छोड़ १८ देवे तो तुझे कठिन न समझ पड़े क्योंकि उस ने दो बनिहारों के तुल्य छः बरस लों तेरी सेवा किई सो परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे हर एक कार्य्य में तुझे आशीष देगा॥

अपने ढोर के और अपने झुंड के १९ सारे पहिलौठे नर परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये पवित्र करियो तू अपने बैलों के पहिलौठों से कुछ कार्य्य मत लीजियो और अपनी भेड़ के पहिलौठों का मत कतरना। परमेश्वर अपने ईश्वर के २० आगे बरस बरस उस स्थान में जो परमेश्वर चुनेगा अपने घराने सहित खाइयो॥

परन्तु यदि उस में कोई खोट होवे २१ लंगड़ा अथवा अंधा अथवा कोई भारी खोट होवे तो उसे परमेश्वर अपने

ईश्वर के लिये बलिदान मत करियो। २२ तुम उसे अपने द्वारों पर खाइयो पवित्र हो अथवा अपवित्र दोनों समान जैसे २३ हरिण और बारहसिंगा। केवल उस का लोहू मत खाइयो तू उसे पानी की नाईं भूमि पर ढाल दीजियो॥

सोलहवां पर्व्व।

१ आबीब मास का पालन करियो और परमेश्वर अपने ईश्वर के फसह का पर्व्व मानियो क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर आबीब के मास में रात को तुझे मिस्र २ से निकाल लाया। और उस स्थान में जिसे परमेश्वर अपना नाम वहां स्थापन करने के लिये चुनेगा अपने परमेश्वर ईश्वर के लिये तू अपने ढोर में से फसह ३ के पर्व्व के लिये बलि करियो। तू उस के साथ खमीरी रोटी मत खाना सात दिन उस के साथ अखमीरी रोटी अर्थात् कष्ट की रोटी खाइयो क्योंकि तू मिस्र देश से उतावली से निकला जिसतें तू उस दिन को जिस में तू मिस्र से निकला ४ अपने जीवन भर स्मरण करे। और तेरे सारे सिवाने में सात दिन लों खमीरी रोटी दिखाई न देवे और न उस मांस में से जिसे तू ने पहिले दिन सांझ को बलि किया रात भर बिहान लों बच ५ रहे। तू अपने किसी फाटकों के भीतर जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है ६ फसह बलि मत करियो। परन्तु उसी स्थान में जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर अपना नाम स्थापन करने के लिये चुनेगा सांझ को सूर्य्य अस्त होते उसी समय में जब तू मिस्र से निकला फसह बलि ७ करियो। और उस स्थान में जो परमेश्वर तेरा ईश्वर चुनेगा तू उसे भूनके खाइयो और बिहान को फिरके अपने ८ तंबुओं को चले जाइयो। छः दिन लों अखमीरी रोटी खाइयो और सातवें दिन जो तेरे ईश्वर के रोक का दिन है कुछ काम काज न करना॥

९ अपने लिये सात अठवारे गिन और खेती में हंसुआ लगाने से गिन्ने को आरंभ करियो। १० और परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये अठवारों का पर्व्व रखियो उस में तू अपने ईश्वर की आशीष के समान अपने हाथ के मनमंता दान दीजियो। ११ और परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे तू और तेरा बेटा और तेरी बेटी और तेरा दास और तेरी दासी और वह लावी जो तेरे फाटकों के भीतर हैं और परदेशी और अनाथ और बिधवा जो तेरे मध्य में हैं उस स्थान में आनन्द करियो जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर चुन लेगा कि अपना नाम वहां स्थापन करे। १२ और सुधि रखियो कि तू मिस्र में दास था सो चौकस रह कि इन बिधिन को पालन कर और मान॥

१३ जब तू अपने खरिहान और अपने कोल्हू को एकट्ठा कर चुके तो सात दिन लों तंबुओं का पर्व्व मानियो। १४ और अपने बेटा और अपनी बेटी और अपने दास और अपनी दासी और लावी और परदेशी और अनाथ और बिधवा समेत जो तेरे फाटकों के भीतर हैं आनन्द करियो। १५ सात दिन लों अपने ईश्वर परमेश्वर के लिये उसी स्थान में जिसे परमेश्वर चुनेगा पर्व्व मानियो क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरी सारी बढ़तियों में और तेरे हाथों के समस्त कार्य्यों में तुझे बर देगा सो तू निश्चय आनन्द करियो॥

१६ बरस में तेरे समस्त पुरुष तीन बार अर्थात् अखमीरी रोटी के पर्व्व में और अठवारों के पर्व्व में और तंबुओं के पर्व्व में परमेश्वर तेरे ईश्वर के आगे उस स्थान में जिसे वह चुनेगा एकट्ठे होवें और वे परमेश्वर के आगे छूछे न आवें।

१७ हर एक पुरुष अपनी पूंजी के समान परमेश्वर तेरे ईश्वर की आशीस के समान जो उस ने तुझे दिया है देवे॥

१८ अपने समस्त फाटकों में जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे तेरी गोष्ठियों के लिये देता है अपने लिये न्यायी और प्रधान ठहराइयो और वे यथार्थ से लोगों का

१९ न्याय करें। तू अन्याय बिचार मत करियो तू पक्ष न करियो और घूस मत लीजियो क्योंकि घूस बुद्धिमानों को अंधा कर देता है और धर्म्मियों की

२० बातों को फेर देता है। जो हर प्रकार से यथार्थ है तू उस का पीछा करियो जिसतें तू जीवे और उस देश का जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है अधिकारी होवे॥

२१ परमेश्वर अपने ईश्वर की बेदी के लग अपने लिये पेड़ों का कुंज जिसे तू

२२ लगाता है न लगाइयो। और न अपने लिये किसी भांति की मूर्त्ति स्थापित करियो जिस्से परमेश्वर तेरे ईश्वर को घिन है॥

सत्रहवां पर्व्व

१ तू परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये बैल अथवा भेड़ जिस में कोई खोट अथवा बुराई होवे बलि मत चढ़ाइयो क्योंकि परमेश्वर तेरे ईश्वर को उस्से घिन है॥

२ यदि तुम्हारे किसी फाटकों के भीतर जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है तुम्हों में कोई पुरुष अथवा स्त्री होवे जिस ने परमेश्वर तेरे ईश्वर के आगे उस की बाचा को भंग करके दुष्टता

३ किई होवे। और जाके दूसरे देवों की पूजा किई हो और उन्हें दण्डवत किई हो जैसे सूर्य्य अथवा चंद्रमा अथवा आकाश की कोई सेना जिन की मैं ने

४ आज्ञा नहीं दिई। और तुझ से कहा जावे और तू ने सुना है और बल से खोजा और सत्य पाया और निश्चय किया जावे कि इसराएल में ऐसा घिनित कार्य्य हुआ है। तब तू उस

५ पुरुष अथवा उस स्त्री को जिस ने तेरे फाटकों में यह दुष्ट कार्य्य किया है उसी पुरुष अथवा उसी स्त्री को बाहर लाइयो और उन पर पत्थरों से पत्थरवाह कीजियो कि वे मर जावें॥

६ दो अथवा तीन की साक्षी से जो मार डालने के योग्य है मार डाला जावे परन्तु एक साक्षी से वह मारा न

७ जावे। पहिले साक्षियों के हाथ उस के मारने के लिये उठें और पीछे सब लोगों के हाथ और तू अपने में से बुराई को यों मिटा डालियो॥

८ यदि आपुस के लोहू बहाने में और आपुस के विवाद में और आपुस की मार पीट में तेरे फाटकों के भीतर अपवाद के विषय में तेरे बिचार के लिये कठिन होवे तो तू उठ और उस स्थान को जा जो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने चुना

९ है। और याजकों अर्थात् लावियों पास और उस न्यायी के पास जो उन दिनों में हो जा और उस्से पूछ और वे तुझे

१० न्याय की आज्ञा बतावेंगे। और तू उस आज्ञा के समान करना जो वे तुझे उस स्थान से जिसे परमेश्वर चुनेगा बतावें और तू सोचके उन सभों के समान जो

११ वे तुझे बतावें मानना। उस व्यवस्था की आज्ञा के समान जो वे तुझे सिखावें और उस बिचार के तुल्य जो तुझे कहें करियो उस बात से जो वे तुझे बतावें

१२ दहिने बायें मत मुड़ियो। और जो मनुष्य ढिठाई करे कि उस याजक की बात जो वहां परमेश्वर तेरे ईश्वर के आगे सेवा करने के लिये खड़ा है अथवा उस न्यायी का बचन न सुने तो वही मनुष्य मार डाला जावे और तू इसराएल

में से उस बुराई को मिटा दीजियो। १३ और समस्त लोग सुनेंगे और डरेंगे और फेर ढिठाई से अपराध न करेंगे ॥

१४ जब तू उस देश में जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है पहुंचे और उसे अपने बश में करे और उस में बसे और कहे कि उन सब जातिगण के समान जो मेरे आसपास हैं मैं भी अपने लिये एक १५ राजा बनाऊंगा। जो तू किसी रीति से अपने ऊपर राजा ठहराना जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर चुने तू अपने भाइयों में से एक को अपना राजा बनाना और किसी परदेशी को जो तेरा भाई नहीं है अपने ऊपर न ठहराना। १६ केवल वह अपने लिये घोड़े न बटोरे और न लोगों को मिस्र में फेर लिवा जाये जिसतें वह घोड़े बटोरे कि परमेश्वर ने तुम्हें कहा है कि तुम इस १७ मार्ग में फेर कधी न जाना। और वह अपने लिये पत्नियां न बटोरे ऐसा न हो कि उस का मन फिर जाये और वह अपने लिये बहुत रूपा और सोना बटोरे। १८ और यों होगा कि जब वह अपने राज्य के सिंहासन पर बैठे तो इस व्यवस्था को पुस्तक में अपने लिये लिखे जो १९ लावी याजकों के आगे है। और वह उस के साथ रहा करे और अपने जीवन भर उसे पढ़ा करे जिसतें वह परमेश्वर अपने ईश्वर का डर सीखे और इस व्यवस्था के समस्त बचन और इन विधिन २० को पालन करे और माने। जिसतें उस का अंतःकरण अपने भाइयों के ऊपर न उभड़े और कि वह आज्ञा से दहिने अथवा बायें न मुड़े जिसतें उस के राज्य में उस के और उस के बंश के इसराएल के मध्य में जीवन बढ़ जावे ॥

अठारहवां पर्व्व।

१ याजकों लावियों लावी की समस्त गोष्ठी का भाग और अधिकार इसराएल के साथ न होगा वे परमेश्वर के होम की भेंट और उस के अधिकार खावें। २ और वे अपने भाइयों के मध्य में अधिकार न पावेंगे परमेश्वर उन का अधिकार है जैसा उस ने उन्हें कहा है ॥

३ और लोगों में से जो बलिदान चढ़ाते हैं चाहे बैल अथवा भेड़ याजक का भाग यह होगा कि वे याजक को कांधा और ४ दोनों गाल और ओझ देवें। तू अपने अन्न अपनी मदिरा और अपने तेल में का पहिला भाग और अपनी भेड़ों के ५ रोम में का पहिला उसे देना। क्योंकि परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तेरी समस्त गोष्ठियों में से उसे चुना है कि वह और उस के बेटे परमेश्वर के नाम की सदा सेवा करें ॥

६ और यदि कोई लावी समस्त इसराएल में से तेरे किसी फाटकों में आवे जहां वह बास करता था और उस स्थान में जिसे परमेश्वर चुनेगा बड़ी लालसा ७ से आ पहुंचे। तो वह परमेश्वर अपने ईश्वर के नाम से सेवा करे जैसे उस के समस्त लावी भाई जो परमेश्वर के आगे ८ वहां खड़े रहते हैं। अपने पितरों की बेची हुई बस्तुन के मोल को छोड़के वे उन के भाग के समान खाने को पावें ॥

९ जब तू उस देश में पहुंचे जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है तो उन जातिगणों के घिनित कार्य्य न सीखियो। १० तुझ में कोई ऐसा न हो कि अपने बेटे अथवा अपनी बेटी को आग में से चलावे अथवा दैवज्ञ कार्य्य करे अथवा मुहूर्त्त माने अथवा मायावी अथवा ११ टोनहिन। अथवा तांत्रिक अथवा बशकारी अथवा गाबक अथवा टोनहा। १२ क्योंकि सब लोग जो ऐसे कार्य्य करते हैं परमेश्वर से घिनित हैं और ऐसे घिन

के कारण से उन को परमेश्वर तेरा
१३ ईश्वर तेरे आगे से दूर करता है। तू
परमेश्वर अपने ईश्वर से निष्कपट हो।
१४ क्योंकि ये जातिगण जिन का तू अधि-
कारी होगा मुहूर्त्त के मनवैये को और
दैवज्ञ को सुनते थे परन्तु तू जो है पर-
मेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे रोक रक्खा है॥
१५ परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे कारण तेरे
ही मध्य में से तेरे ही भाइयों में से
एक आगमज्ञानी मेरे तुल्य उदय करेगा
१६ तुम उस की सुनियो। इन सभों की
नाईं जो तू ने परमेश्वर अपने ईश्वर से
होरिब में सभा के दिन मांगा और कहा
ऐसा न हो कि मैं परमेश्वर अपने ईश्वर
का शब्द सुनूं और ऐसी बड़ी आग मैं
फेर देखूं जिसतें कि मैं मर न जाऊं।
१७ और परमेश्वर ने मुझे कहा कि उन्हों
१८ ने जो कुछ कहा सो अच्छा कहा। मैं
उन के लिये उन के भाइयों में से तेरे
तुल्य एक आगमज्ञानी उदय करूंगा
और अपने बचन उस के मुंह में डालूंगा
और जो कुछ मैं उसे कहूंगा वह उन से
१९ कहेगा। और ऐसा होगा कि जो कोई
मेरी बातों को जिन्हें वह मेरे नाम से
कहेगा न सुनेगा मैं उस्से लेखा लेऊंगा॥
२० परन्तु जो आगमज्ञानी ऐसी ढिठाई
करे कि कोई बात जो मैं ने उसे आज्ञा
नहीं किई मेरे नाम से कहे अथवा जो
और देवों के नाम से कहे तो वह
२१ आगमज्ञानी मार डाला जावे। और यदि
तू अपने मन में कहे कि हम उस बचन
को क्योंकर जानें जिसे परमेश्वर ने न
२२ कहा। जब आगमज्ञानी परमेश्वर के
नाम से कुछ कहे और वह जो उस ने
कही है न होवे अथवा पूरी न हो तो
वह बात परमेश्वर ने नहीं कही परन्तु
उस आगमज्ञानी ने ढिठाई से कही है
तू उस्से मत डर॥

उन्नीसवां पर्ब्ब।

१ जब परमेश्वर तेरा ईश्वर उन जाति-
गणों को जिन का देश परमेश्वर तेरा
ईश्वर तुझे देता है काट डाले और तू
उन का अधिकारी होवे और उन के
२ नगरों में और उन के घरों में बसे। तो
तू अपने उस देश के मध्य में जिसे
परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे बश में करता
है अपने लिये तीन नगर अलग करना।
३ तू अपने लिये एक मार्ग सिद्ध करना
और अपने देश के सिवानों को जो
परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे अधिकार में
देता है तीन भाग करना जिसतें हर
४ एक घाती उधर भागे। और घाती की
व्यवस्था जो वहां भागे जिसतें वह
जीता रहे यह है जो कोई अपने परोसी
को जो उस्से आगे बैर न रखता था अजान
५ में मार डाले। अथवा कोई मनुष्य
अपने परोसी के साथ लकड़ी काटने
को बन में जावे और कुल्हाड़ा हाथ में
उठावे कि लकड़ी काटे और कुल्हाड़ा
बेंट से निकल जावे और उस के परोसी
को ऐसा लगे कि वह मर जावे तो
वह इन में से एक नगर में भागके बचे।
६ न हो कि मार्ग के दूर होने के कारण
लोहू का प्रतिफलदायक अपने मन के
कोप से घाती का पीछा करे और उसे
पकड़ लेवे और उसे मार डाले यद्यपि
वह मार डालने के योग्य नहीं क्योंकि
वह आगे से उस को डाह न रखता
७ था। इस लिये मैं तुझे आज्ञा करके
कहता हूं कि तू अपने कारण तीन
नगर अलग करना॥
८ और यदि परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरा
सिवाना बढ़ावे जैसा उस ने तेरे पितरों
से किरिया खाके कहा है और वह
समस्त देश जो तेरे पितरों को देने की
९ बाचा किई तुझे देवे। यदि तू इस

समस्त आज्ञा को पालन करे और उसे माने जो आज के दिन में तुझे आज्ञा करता हूं कि परमेश्वर अपने ईश्वर से प्रेम रखके सर्व्वदा उस के मार्ग पर चले तो तू इन तीन नगरों से अधिक अपने लिये

१० तीन नगर बढ़ाना ; जिसतें तेरे देश के मध्य में जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरा अधिकार कर देता है निर्दोष लोहू बहाया न जाय कि हत्या तुझ पर होवे ॥

११ परन्तु यदि कोई जन जो अपने परोसी से बैर रखता हो और उस की घात में लगा हो और उस के विरोध में उठके उसे ऐसा मारे कि वह मर जाय और इन में से एक नगर में भाग जाय ।

१२ तो उस के नगर के प्राचीन भेजके उसे वहां से मंगावें और लोहू के प्रतिफलदाता के हाथ में सौंप देवें कि वह घात किया

१३ जावे । तेरी आंख उस पर दया न करे परन्तु तू निर्दोष लोहू के पाप को इस-राएल से यों दूर करना कि तेरा भला हो ॥

१४ तू अपने अधिकार में उस देश में जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे अधिकार में कर देता है अपने परोसी के सिवाने को मत हटा जिसे अगिले लोगों ने ठहराया है ॥

१५ किसी मनुष्य के अपराध और पाप पर कोई पाप क्यों न हो एक साक्षी ठीक नहीं है परन्तु दो अथवा तीन साक्षियों के मुंह से हर एक बात ठहराई

१६ जायगी । यदि कोई झूठा साक्षी उठके

१७ किसी मनुष्य पर साक्षी देवे । तो वे दोनों जिन में विवाद है परमेश्वर के आगे याजकों और न्यायियों के सन्मुख जो उन दिनों में हों खड़े किये जावें ।

१८ और न्यायी यत्न से बिचार करें सो यदि वह साक्षी झूठा ठहरे और उस ने अपने

१९ भाई पर झूठी साक्षी दिई हो । तब तुम उस्से ऐसा करना जो उस ने चाहा था कि अपने भाई से करे इस रीति से

२० बुराई को अपने में से दूर करना । अब और जो हैं सुनके डरेंगे और आगे को

२१ तुम्में ऐसी बुराई फिर न करेंगे । और तेरी आंख दया न करे कि प्राण की संती प्राण आंख की संती आंख दांत की संती दांत हाथ की संती हाथ पांव की संती पांव होगा ॥

बीसवां पर्व्व ।

१ जब तू लड़ाई के लिये अपने बैरियों पर चढ़ जावे और देखे कि उन के घोड़े और गाड़ियां और लोग तुझ से बहुत हैं तो तू उन से मत डर क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर जो तुझे मिस्र देश

२ से निकाल लाया तेरे साथ है । और यों होगा कि जब तुम संग्राम के निकट पहुंचो तो याजक आगे होके लोगों को

३ कहे । और उन से बोले कि हे इसरा-एलियो सुनो तुम आज के दिन अपने बैरियों से लड़ाई करने को जाते हो सो तुम्हारा मन न घटे डरो मत और मत घबराओ और उन से मत थर्थराओ ।

४ क्योंकि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हारे साथ जाता है कि तुम्हारे लिये तुम्हारे बैरियों से लड़के तुम्हें बचावे ॥

५ और प्रधान लोगों से कहें और बोलें कि तुम्में कौन मनुष्य है जिस ने नया घर बनाया हो और उसे नहीं स्थापा है वह अपने घर को फिर जावे ऐसा न हो कि वह लड़ाई में मारा जावे

६ और दूसरा मनुष्य उसे स्थापे । और कौन मनुष्य है जिस ने दाख की बारी लगाई हो और उस का फल न खाया हो वह अपने घर को फिर जावे ऐसा न हो कि वह लड़ाई में मारा जावे और दूसरा उसे खावे । और कौन मनुष्य है जो किसी स्त्री से बचनदत्त हुआ है और वह

उसे घर न लाया हो वह अपने घर को फिर जावे ऐसा न हो कि वह लड़ाई ८ में मारा जावे और दूसरा उसे लेवे। और प्रधान लोगों से यह भी कहें कि कौन मनुष्य है जो डरपोकना और अलाहसी है अपने घर को फिर जावे न हो कि उस के भाइयों के मन उस के मन की ९ नाईं खोदे हो जावें। और यों हो कि जब प्रधान लोगों से कह चुकें तो वे सेना के प्रधानों को ठहरावें कि लोगों की अगुआई करें ॥

१० जब तू लड़ाई के लिये किसी नगर के निकट पहुंचे तो पहिले उस्से मिलाप का प्रचार कर और यदि वह तुझे मिलाप का उत्तर देवे और तेरे लिये द्वार खोले। ११ तब यों होगा कि सब लोग जो उस नगर में हैं तेरे करदायक होंगे और तेरी १२ सेवा करेंगे। और यदि वह तुझ से मिलाप न करे परन्तु तुझ से लड़ाई करे १३ तो तू उसे घेर ले। और जब परमेश्वर तेरा ईश्वर उसे तेरे हाथ में कर देवे तो तू वहां के हर एक पुरुष को तल- १४ वार की धार से मार डालियो। केवल स्त्रियों और लड़कों और पशुन को उन सब समेत जो उस नगर में हों लूट ले और तू अपने बैरियों की लूट को जो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे दिई हैं खा। १५ तू उन सब नगरों से जो तुझ से बहुत दूर हैं और इन जातिगणों के नगरों में १६ से नहीं हैं ऐसा करना। परन्तु इन लोगों के नगरों को जिन्हें परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरा अधिकार कर देता है किसी को जो सांस लेता हो जीता न छोड़ना। १७ परन्तु उन्हें सर्वथा नाश कर डालना हित्ती और अमूरी कनआनी और फरिज्जी हवी और यबूसी को जैसा परमेश्वर तेरे १८ ईश्वर ने तुझे आज्ञा किई है। जिसतें वे समस्त घिनौने कार्य्य जो उन्हों ने अपने देवों से किये तुम्हें न सिखावें कि तुम परमेश्वर अपने ईश्वर के अपराधी हो जाओ ॥

१९ जब तू किसी नगर को लेने के लिये लड़ाई में बहुत दिन लों उसे घेरे रहे तो तू कुल्हाड़ी चलायके उन के वृक्ष नाश मत करियो परन्तु तू उन के फल खाइयो सो तू उन्हें काट न डालियो कि तेरे लिये घेरने के काम में आवें क्योंकि खेत २० के पेड़ मनुष्य के लिये हैं। केवल वे वृक्ष जो खाने के काम के न हों उन्हें काटके नाश करियो और उस नगर के आगे जो तुझ से लड़ता है गढ़ बना जब लों वह तेरे बश में होवे ॥

इक्कीसवां पर्ब्ब ।

१ यदि उस देश में जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे बश में करता है किसी को लोथ खेत में पड़ी मिले और जाना न २ जावे कि किस ने उसे मारा। तब तेरे प्राचीन और तेरे न्यायी बाहर निकलें और उन नगरों को जो घातित के चारों ३ ओर हैं नापें। और यों होगा कि जो नगर घातित के समीप है उसी नगर के प्राचीन एक कलोर लेवें जिस्से कार्य्य न किया गया हो और जूये तले न आई हो। ४ और उस नगर के प्राचीन उस कलोर को खड़बिड़ तराई में जो न जोती गई हो न उस में कुछ बोया गया हो ले जावें और वहां उस तराई में उस कलोर के ५ सिर को उतारें। तब याजक जो लावी के संतान हैं पास आवें क्योंकि परमेश्वर तेरे ईश्वर ने अपनी सेवा के लिये और परमेश्वर के नाम से आशीस देने के लिये उन्हीं को चुना है और उन्हीं के बचन से हर एक झगड़ा और हर एक बिपत्ति ६ का निर्णय किया जावेगा। और उस नगर के समस्त प्राचीन जो घातित के पास हैं उस कलोर के ऊपर जो तराई

में बलि किई गई अपने हाथ धोवें। ७ और उत्तर देके कहें कि हमारे हाथों ने यह लोहू नहीं बहाया है न हमारी ८ आंखों ने देखा है। हे परमेश्वर अब अपने इसराएली लोगों पर दया कर जिन्हें तू ने छुड़ाया है और वृथा हत्या अपने इसराएली लोगों पर मत रख तब ९ वह हत्या क्षमा किई जावेगी। सो जब तू इसी रीति से वह करे जो परमेश्वर के आगे ठीक है तब तू हत्या को अपने में से दूर करेगा॥

१० जब तू युद्ध के लिये अपने बैरियों पर चढ़े और परमेश्वर तेरा ईश्वर उन्हें तेरे हाथ में कर देवे और तू उन्हें ११ बंधुआ करे। और उन बंधुओं में सुन्दर स्त्री देखे और तेरा मन उस पर चले १२ कि उसे अपनी पत्नी करे। तब तू उसे अपने घर में ला और उस का सिर १३ मुड़वा और उस के नंह कटवा। तब वह अपनी बंधुआई का वस्त्र उतारे और तेरे घर में रहे और पूरा एक मास भर अपने मा बाप के लिये शोक करे उस के पीछे तू उसे ग्रहण करना और उस का पति होना और वह तेरी १४ पत्नी हो। और यदि तू उस्से प्रसन्न न हो तो जिधर वह चाहे उसे जाने दे पर तू उसे रोकड़ पर मत बेचना तू उस्से कुछ बाणिज्य न करना क्योंकि तू ने उस की पत लिई॥

१५ यदि किसी की दो पत्नियां हों एक प्रिया और दूसरी अप्रिया और प्रिया और अप्रिया दोनों से लड़के हों और १६ पहिलौठा अप्रिया से हो। तो यों होगा कि जब वह अपने पुत्रों को अधिकारी करे तब वह प्रिया के बेटे को अप्रिया के बेटे पर पहिलौठा न १७ करे। परन्तु वह अप्रिया के बेटे को अपनी समस्त संपत्ति से दूना भाग देके पहिलौठा ठहरावे क्योंकि वह उस के बल का आरंभ है पहिलौठे होने का भाग उसी का है॥

यदि किसी का पुत्र ढीठ और मगरा १८ होवे जो अपने माता पिता की आज्ञा न माने और जब वे उसे ताड़ना करें और वह उन्हें न माने। तब उस के १९ माता पिता उसे पकड़के उस नगर के प्राचीनों पास उस स्थान के फाटक पर लावें। और उस नगर के प्राचीनों से कहें २० कि हमारा यह बेटा ढीठ और मगरा है हमारी बात नहीं मानता बड़ा ही खाऊ और पियक्कड़ है। और उस नगर के २१ सब लोग उस पर पत्थरवाह करें कि वह मर जावे और तू दुष्ट को अपने मध्य में से दूर करना जिसतें समस्त इसराएल सुनके डरें॥

और यदि किसी ने मार डालने के योग्य २२ पाप किया हो और वह मारा जावे तो तू उसे पेड़ पर लटका दे। उस की २३ लोथ रात भर पेड़ पर लटकी न रहे परन्तु तू उसी दिन उसे गाड़ियो क्योंकि जो लटकाया गया है सो ईश्वर का धिक्कारित है इस कारण चाहिये कि तेरी भूमि जिस का अधिकारी परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे करता है अशुद्ध न हो जावे॥

बाईसवां पर्ब्ब।

१ तू अपने भाई के बैल अथवा उस की भेड़ को भटकी हुई देखके अपनी आंख उन से मत छिपा परन्तु किसी न किसी भांति से उन्हें अपने भाई पास फेर ला। और यदि तेरा भाई तेरे परोस में न हो अथवा तू उसे पहिचानता न हो तब उसे अपने ही घर के मध्य में ला और वह तेरे पास रहे जब लों तेरा भाई उस की खोज करे और तू उसे फेर देना। और इसी रीति तू उस

के गदहे और उस के बस्त्र और सब कुछ से जो तेरे भाई की खोई हुई हो और तू ने पाई है ऐसा ही कर तू आप
४ को उन से मत छिपाना । अपने भाई का गदहा अथवा उस के बैल को मार्ग में गिरा हुआ देखके आप को उन से मत छिपा निश्चय उस का सहाय करके उठा देना ॥

५ पुरुष का बस्त्र स्त्री न पहिने और न पुरुष स्त्री का पहिने क्योंकि सब जो ऐसा करते हैं परमेश्वर तेरे ईश्वर के आगे घिनित हैं ॥

६ यदि पथ में चलते किसी पक्षी का खोंता पेड़ पर अथवा भूमि पर तुझे दिखाई देवे चाहे उस में गेंदे अथवा अंडे हों और मां गेंदों पर अथवा अंडों पर बैठी हुई हो तो तू गेंदों को मां
७ समेत मत पकड़ना । माता को निश्चय छोड़ देना और गेंदों को अपने लिये लेना जिसतें तेरा भला होवे और तेरा जीवन बढ़ जावे ॥

८ जब तू नया घर बनावे तब अपनी छत पर आड़ के लिये मुंडेरा बना ऐसा न हो कि कोई ऊपर से गिरे और तू अपने घर में हत्या का कारण हो ॥

९ अपने दाख की बारी में नाना प्रकार के बीज मत बोना ऐसा न हो कि बीज की भरपूरी जिसे तू ने बोया है और तेरी दाख की बारी का फल अशुद्ध हो
१० जावे । तू गदहे को बैल के साथ मत
११ जोतना । नाना भांति का बस्त्र जैसा कि ऊन और सूत का मत पहिनियो ॥

१२ अपने ओढ़ने की चारों ओर झालर लगाना ॥

१३ यदि कोई पत्नी करे और उसे ग्रहण
१४ करे और उस्से घिन करे । और उस पर कलंक लगावे और कहे कि मैं ने इस स्त्री से ब्याह किया और जब मैं उस पास गया तब मैं ने उसे कुमारी न
१५ पाया । तब उस कन्या के माता पिता उस के कुमारीपन का चिन्ह लेके उस नगर के फाटक पर प्राचीनों के आगे
१६ लावें । और उस लड़की का पिता प्राचीनों से कहे कि मैं ने अपनी पुत्री इस पुरुष को ब्याह दिई है अब यह उस्से घिन
१७ करता है । और देखो वह उस पर कलंक की बात लगाता है कि मैं ने तेरी पुत्री को कुमारी न पाया तथापि ये मेरी पुत्री के कुमारीपन के चिन्ह हैं और वह कपड़ा नगर के प्राचीनों के
१८ आगे फैलावे । तब उस नगर के प्राचीन उस पुरुष को पकड़के उसे दंड
१९ देवें । और वे उस्से सौ टुकड़ा चांदी डांड़ लेवें और लड़की के पिता को देवें इस लिये कि उस ने इसराएल की एक कुमारी पर कलंक लगाया और वह उस की पत्नी बनी रहेगी वह जीवन भर उसे
२० त्याग न करे । परन्तु यदि यह बात ठीक ठहरे और लड़की के कुमारीपन
२१ का चिन्ह न पाया जावे । तब वह उस लड़की को उस के पिता के घर के द्वार पर निकाल लावें और उस नगर के लोग उस पर पत्थरवाह करके मार डालें क्योंकि उस ने अपने पिता के घर में छिनाला करके इसराएल में मूर्खता किई इस रीति से तू बुराई को अपने में से दूर करना ॥

२२ यदि कोई पुरुष बिवाहिता स्त्री से पकड़ा जावे तब वे दोनों व्यभिचारी पुरुष और स्त्री मार डाले जावें इस रीति से तू इसराएल में से बुराई को
२३ दूर करना । यदि कुमारी लड़की किसी से बचनदत्त होवे और कोई दूसरा पुरुष उसे नगर में पावे और उस्से कुकर्म करे ।
२४ तब तुम उन दोनों को उस नगर के फाटक पर निकाल लाओ और उन पर

पत्थरवाह करके उन दोनों को मार डालो कन्या को इस लिये कि वह नगर में होते हुए न चिल्लाई और पुरुष को इस कारण कि उस ने अपने परोसी की पत्नी की पत लिई इस रीति से तू बुराई को अपने में से दूर करना॥

२५ और यदि कोई पुरुष किसी बचनदत्त कन्या को खेत में पावे और पुरुष बरबस उस्से कुकर्म्म करे तो केवल वह पुरुष जिस ने उस्से कुकर्म्म किया है २६ मार डाला जावे। परन्तु उस लड़की को कुछ न कर लड़की को घात का पाप नहीं है क्योंकि यह ऐसा है जैसे कोई अपने परोसी पर हुल्लड़ करे और उसे २७ मार डाले। क्योंकि उस ने उसे खेत में पाया और वह बचनदत्त लड़की चिल्लाई और छुड़ाने को कोई न था॥

२८ यदि कोई कुमारी कन्या को जो किसी से बचनदत्त न हो पकड़के उस्से २९ कुकर्म्म करे और वे पकड़े जावें। तब वह पुरुष जिस ने उस्से कुकर्म्म किया लड़की के पिता को पचास टुकड़ा चांदी देवे और वह उस की पत्नी होगी इस कारण कि उस ने उसे अपत किया वह उसे जीवन भर त्याग न करे॥

३० कोई अपने पिता की पत्नी को न ले और अपने पिता की नग्नता को न उघारे॥

तेईसवां पर्व्व।

१ जिस के अंडकोश पिचकाये गये हों अथवा लिंग कट गया हो वह परमेश्वर २ की मंडली में प्रवेश न करे। जारज अपनी दसवीं पीढ़ी लों परमेश्वर की ३ मंडली में प्रवेश न करे। अम्मूनी और मोआबी परमेश्वर की मंडली में दसवीं पीढ़ी लों प्रवेश न करे कोई उन में से सनातन लों परमेश्वर की मंडली में प्रवेश न करेगा। इस कारण कि जब तुम मिस्र से निकले उन्हों ने पंथ में अन्न जल लेके तुम से भेंट न किई और इस कारण कि उन्हों ने बऊर के पुत्र बलआम को अरम नहरैन के फतूर से बुलाया जिसतें तुझे साप देवे। तथापि ५ परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तेरे लिये आप को आशीस को संती पलट दिया क्योंकि परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझ पर प्रेम किया। जीवन भर सदा लों तू उन का ६ कुशल और उन की भलाई न चाहना। किसी अदूमी से घिन न करना क्योंकि ७ वह तेरा भाई है किसी मिस्री से घिन न करना क्योंकि तू उस के देश में परदेशी था। उन की तीसरी पीढ़ी के जो ८ लड़के उत्पन्न हों परमेश्वर की मंडली में प्रवेश करें॥

जब तू सेना में अपने बैरियों पर ९ चढ़े तब हर एक पाप से आप को बचा रखना। यदि तुझ में कोई पुरुष रात्रि १० की अशुद्धता के कारण अशुद्ध होवे तो वह छावनी से बाहर निकल जावे वह छावनी के भीतर न आवे। परन्तु ११ संध्या के समय में जल से स्नान करे और जब सूर्य्य अस्त हो चुके तब छावनी में आवे। और छावनी के बाहर तेरे १२ लिये एक स्थान होगा और वहां बाहर निकलके जाया करना। और तेरे पास १३ तेरे हथियार पर एक खंती होवे और जब तू बाहर जाके बैठे तो उस्से खोदना और मल को ढांप देना। इस लिये कि १४ परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरी छावनी के मध्य में फिरता है कि तुझे बचावे और तेरे बैरियों को तेरे बश में करे सो तेरी छावनी पवित्र रहे न होवे कि वह तेरे मध्य में किसी बस्तु की अशुद्धता देखे और तुझ से फिर जावे॥

यदि किसी का सेवक अपने स्वामी १५ से भागके तुझ पास आवे तू उसे उस के स्वामी को मत सौंप। वह तेरे स्थानों १६

में से जहां चाहे तहां तेरे मध्य में रहे तेरे फाटकों में से किसी एक में जो उसे अच्छा लगे तू उसे क्लेश मत देना ॥

१७ इसराएल की बेटियों में बेश्या न हों और न इसराएल के बेटों में पुरुषगामी
१८ हों । तू किसी छिनाल की कमाई अथवा कुत्ते का मोल किसी मनौती में परमेश्वर अपने ईश्वर के मन्दिर में मत लाइयो क्योंकि ये दोनों परमेश्वर तेरे ईश्वर से घिनित हैं ॥

१९ तू अपने भाई को बियाज पर ऋण मत देना रोकड़ अनाज अथवा और कोई बस्तु जो बियाज पर दिई जाती
२० है बियाज पर मत देना । परदेशी को बियाज पर उधार दे सके परन्तु अपने भाई को बियाज पर उधार मत देना जिसतें परमेश्वर तेरा ईश्वर उस देश में जिस का तू अधिकारी होने जाता है जिस जिस काम में तू हाथ लगावे तुझे आशीस देवे ॥

२१ जब तू ने कोई मनौती परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये मानी उसे पूरी करने में बिलम्ब मत कर क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर निश्चय तुझ से उस का लेखा लेगा और तुझ पर पाप लगेगा ।
२२ परन्तु यदि तू कुछ मनौती न माने तो
२३ तुझ पर पाप न लगेगा । जो कुछ तेरे मुंह से निकला अर्थात् बांछा की भेंट जैसा तू ने परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये मानी है जिसे तू ने अपने मुंह से प्रण किया है उसे मान और पूरी कर ॥

२४ जब तू अपने परोसी के दाख की बारी में जावे तब जितने दाख चाहे अपनी इच्छा भर खा परन्तु अपने पात्र
२५ में मत रख । जब तू अपने परोसी के अन्न के खेत में जावे तब अपने हाथ से बालें तोड़ सके परन्तु अपने भाई का खेत हसुआ से मत काट ॥

चौबीसवां पर्ब्ब ।

१ जब कोई पुरुष पत्नी से ब्याह करे और उस के पीछे ऐसा हो कि वह उस की दृष्टि में अनुग्रह न पावे इस कारण कि उस ने उस में कुछ अशुद्ध बात पाई तो वह त्यागपत्र लिखके उस के हाथ में देवे और उसे अपने घर से बाहर करे ।
२ और जब वह उस के घर से निकल गई
३ तब वह दूसरे पुरुष की हो सके । और दूसरा पति भी उसे देख न सके और उस के लिये त्यागपत्र लिखके उस के हाथ में देवे और उसे अपने घर में से निकाल देवे अथवा दूसरा उसे पत्नी करके मर जावे । तो उचित नहीं कि उस का पहिला पति जिस ने उसे निकाल दिया था जब वह अशुद्ध हो चुकी उसे फिर लेके पत्नी करे क्योंकि वह परमेश्वर के आगे घिनित है सो उस देश को अशुद्ध मत कर जिस का अधिकारी परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे करता है ॥

५ जब किसी का नया विवाह होवे तब वह लड़ाई को न जावे और उस्से कुछ कार्य्य न लिया जावे परन्तु वह एक बरस अपने घर में अवकाश से रहे और अपनी पत्नी को जिसे उस ने ब्याहा बहलावे ॥

६ कोई मनुष्य किसी की चक्की के ऊपर का अथवा नीचे का पाट बंधक न रक्खे क्योंकि वह जीवन को बंधक रखता है ॥

७ यदि कोई मनुष्य इसराएल के संतानों में से अपने किसी भाई को चुराते हुए पकड़ा जावे और उस का ब्योपार करे अथवा उसे बेचे तो वह चोर मारा जावे और तू बुराई को अपने में से दूर कर ॥

८ चौकस रह कि कोढ़ की मरी में तू चौकसी से देख और सब जो लावी याजक तुम्हें सिखावें उस की रीति पर

चल जैसी मैं ने तुझे आज्ञा किई है
९ वैसा ही करना। चेत कर कि जब तुम मिस्र से निकले परमेश्वर तेरे ईश्वर ने मार्ग में मिरयम से क्या किया॥
१० जब तू अपने भाई को कोई बस्तु मंगनी अथवा उधार देवे तब उस का बंधक लेने को उस के घर में मत पैठ।
११ तू बाहर खड़ा रह और उधारनिक आप अपना बंधक तेरे पास बाहर लावेगा।
१२ और यदि वह कंगाल होवे तो तू उस के बंधक को रखके मत लेट रह।
१३ किसी भांति से जब सूर्य्य अस्त होने लगे उस का बंधक उसे फिर देना जिसतें वह अपने बस्त्र में सोवे और तुझे आशीस देवे सो तुझे परमेश्वर तेरे ईश्वर के आगे धर्म्म होगा॥
१४ ऐसा न हो कि तू कंगाल और दीन बनिहार को सतावे चाहे वह तेरे भाइयों में से हो अथवा तेरे परदेशियों में से जो तेरे देश में तेरे फाटकों में रहते
१५ हैं। तू उस दिन सूर्य्य अस्त होने से पहिले उस की बनी दे डालना क्योंकि वह दरिद्र है और उस का मन उसी में है न हो कि परमेश्वर के आगे तुझ पर दोष देवे और तुझ पर पाप ठहरे॥
१६ संतान की संती पितर मारे न जावें न पितरों की संती संतान मारे जावें हर एक अपने ही पाप के कारण मारा जावेगा॥
१७ तू परदेशी और अनाथ के बिचार को मत बिगाड़ और बिधवा का कपड़ा
१८ बंधक मत रख। परन्तु चेत कर कि तू मिस्र में बंधुआ था और परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे वहां से छुड़ाया इस लिये मैं तुझे यह कार्य्य करने की आज्ञा करता हूं॥
१९ जब तू अपने खेत में कटनी करे और एक गट्ठा खेत में भूलके छूट जावे तो उस के लेने को फिर मत जा वह परदेशी और अनाथ और बिधवा के लिये रहे जिसतें परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे हाथ के समस्त कार्य्यों में तुझे आशीस देवे।
२० जब तू अपने जलपाई के बृक्ष को झोरे तो फिरके उस की डालियों को मत झाड़ वह परदेशी अनाथ और बिधवा के लिये रहे।
२१ जब तू अपनी बारी के दाख एकट्ठा करे तो अपने पीछे मत बीन्ना वह परदेशी अनाथ और बिधवा के लिये रहे।
२२ और चेत कर कि तू मिस्र के देश में बंधुआ था इस लिये मैं तुझे यह कार्य्य करने को आज्ञा देता हूं॥

पचीसवां पर्ब्ब।

१ यदि लोगों में झगड़ा होवे और धर्म्मसभा में आवें कि न्यायी उन का न्याय करे तो वे धर्म्मी को निष्पापी और दुष्ट को पापी ठहरावें।
२ और यदि वह दुष्ट पीटे जाने के योग्य होवे तो न्यायी उसे लेटवावे और जैसा उस का अपराध होवे न्यायी अपने आगे ठहराये हुए के समान उसे पिटावे।
३ चालीस कोड़े उसे मारें उस्से बढ़ती नहीं न होवे कि यदि वह उस्से बढ़ जावे और इन्हों से बहुत अधिक मारे तब तेरा भाई तेरे आगे तुच्छ समझा जावे॥
४ दांवने के समय में बैल का मुंह मत बांध॥
५ यदि कोई भाई एकट्ठे रहें और उन में से एक निर्बंश मर जावे तो उस मृतक की पत्नी का बियाह किसी परदेशी से न किया जावे परन्तु उस का दूसरा कुटुम्ब उसे ग्रहण करे और उसे अपनी पत्नी करे और पति के भाई का ब्यवहार उस्से करे।
६ और यों होगा कि जो पहिलौठा वह जने वह उस के मृतक भाई के नाम पर स्थापित होवे जिसतें

उस का नाम इसराएल में से न मिटे। और यदि वह पुरुष अपने कुटुम्ब की पत्नी को लेने न चाहे तो उस के भाई की पत्नी प्राचीनों पास फाटक पर जावे और कहे कि मेरे पति का भाई इसराएल में अपने भाई के नाम को स्थापने से नाह करता है मेरे पति का भाई मुझे ८ अपनी पत्नी नहीं किया चाहता है । तब उस के नगर के प्राचीन उस पुरुष को बुलाके उसे समझावें यदि वह उसी पर खड़ा होवे और कहे कि मैं उसे लेने ९ नहीं चाहता । तो उस के भाई की पत्नी प्राचीनों के सन्मुख उस के पास आवे और उस के पांवों से जूती खोले और उस के मुंह पर थूक देवे और उत्तर देके कहे कि उस मनुष्य की यही दशा होगी जो अपने भाई के घर को न बनावे । १० और इसराएल में उस का यह नाम रक्खा जावेगा कि यह उस जन का घर है जिस का जूता खोला गया ॥

११ जब मनुष्य आपुस में लड़ते हों और एक की पत्नी आवे कि अपने पति को उस के हाथ से जो उसे मार रहा है छुड़ावे और अपना हाथ बढ़ाके उस के १२ गुप्तों को पकड़े । तो तू उस का हाथ काट डालना तेरी आंख उस पर दया न करे ॥

१३ तू अपने थैले में बड़े छोटे बटखरे १४ न रखना । अपने घर में छोटा बड़ा १५ नपुआ मत रखना । पूरे और ठीक बटखरे रखना और पूरे और ठीक नपुए रखना जिसतें उस देश में जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है तेरा जीवन बढ़ १६ जावे । क्योंकि सब जो ऐसा अधर्म्म करते हैं परमेश्वर तेरे ईश्वर से घिनित हैं ॥

१७ चेत कर कि जब तू मिस्र से निकला तब मार्ग में अमालीक ने तुझ से क्या १८ किया । मार्ग में तुझ पर क्योंकर चढ़ आया जब तू मूर्छित और थका था तब उस ने तेरे पीछे के सब लोगों को जो दुर्बल पिछरे हुए थे मारा और वह ईश्वर १९ से न डरा । इस लिये ऐसा होगा कि जब परमेश्वर तेरा ईश्वर उस देश में जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे अधिकार के लिये तुझे देता है तुझे तेरे चारों ओर के वैरियों से चैन देवे तब तू स्वर्ग के तले से अमालीक के नाम को मिटा डालना इसे मत भूलना ॥

छब्बीसवां पर्व्व ।

१ जब तू उस देश में प्रवेश करे जिस का अधिकारी परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे करता है और उसे बश में २ करे और उस में बसे । तब तू उस देश का जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है समस्त फलों का पहिला जिसे तू भूमि से लेके पहुंचावेगा एक टोकरे में रखके उस स्थान में ले जा जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर अपने नाम को स्थापन करने ३ के लिये चुनेगा । और उन दिनों में जो याजक होगा उस के पास जा और उसे कह कि आज परमेश्वर तेरे ईश्वर के आगे प्रगट करता हूं कि मैं ने उस देश में जिस के विषय में परमेश्वर ने हमारे पितरों से किरिया खाके हमें देने को ४ कहा था प्रवेश किया । और याजक वह टोकरा तेरे हाथ से लेके उसे परमेश्वर ५ तेरे ईश्वर की बेदी के आगे रख देवे । तब तू परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे बिनती करके यों कहना कि मेरा पिता अरामी जो मरने पर था और वह मिस्र में उतरा और उस ने थोड़े लोगों के साथ वहां बास किया और वहां एक ६ अति बलवंत और बड़ी जाति बना । और मिस्रियों ने हम से बुरा व्यवहार किया और हमें सताया और हम से ७ कठिन सेवा कराई । और जब हम ने

परमेश्वर अपने पितरों के ईश्वर के आगे दोहाई दिई तब परमेश्वर ने हमारा शब्द सुना और हमारी बिपत्ति और हमारे परिश्रम और हमारे अंधेर को ८ देखा। और परमेश्वर सामर्थी हाथ और बढ़ाई हुई भुजा और महा आश्चर्य्यित और अद्भुत लक्षणों के हाथ से निकाल ९ लाया। और हमें इस स्थान में लाया और उस ने हमें यह देश दिया जिस में १० दूध और मधु बहता है। और अब देख में इस देश के पहिले फल जिसे हे परमेश्वर तू ने मुझे दिया लाया हूं सो तू परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे उसे रख देना और परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे दण्डवत ११ करना। और तू और लावी और परदेशी जो तेरे मध्य में होवे मिलके हर एक भलाई पर जो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे और तेरे घराने पर किई है आनन्द करना॥

१२ जब तू तीसरे बरस जो दशांश का बरस है अपनी समस्त बढ़ती के दसवें अंश को पूरा करेगा तब तू उसे लावी परदेशी अनाथ और बिधवा को देना जिसतें वे तेरे फाटकों के भीतर खावें १३ और तृप्त होवें। तब तू परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे यों कहना कि मैं अपने घर से पवित्र बस्तं लाया हूं लावी और परदेशी अनाथ और बिधवा को तेरी समस्त आज्ञा के समान जो तू ने मुझे किया और मैं ने तेरी आज्ञाओं से बिरुद्ध १४ न किया और न उन्हें भूला। मैं ने उस में से अपनी बिपत्ति में न खाया और मैं ने उस में से किसी अशुद्ध बात में न उठाया और न उस में से कुछ मृतकों के लिये दे डाला मैं ने परमेश्वर अपने ईश्वर के शब्द को माना जो कुछ तू ने मुझे आज्ञा किई है मैं ने उन सभों के १५ समान किया। अपने पवित्र निवास स्वर्ग पर से नीचे दृष्टि कर और अपने इसराएल लोगों को और इस भूमि को जिसे तू ने हमें दिया है आशीस दे जैसी तू ने हमारे पितरों से किरिया खाई एक देश जिस में दूध और मधु बहता है॥

१६ आज के दिन परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे इन बिधिन और बिचारों को पालन करने की आज्ञा दिई इस लिये उन्हें पालन कर और अपने सारे मन और अपने सारे प्राण से उन्हें मान। १७ तू ने आज के दिन मान लिया है कि परमेश्वर मेरा ईश्वर है और मैं उस के मार्गों पर चलूंगा और उस की बिधिन को और उस की आज्ञाओं को और उस के बिचारों को पालन करूंगा और उस १८ के शब्द को सुनूंगा। और परमेश्वर ने भी आज के दिन मान लिया है कि तू उस का निज लोग होवे जैसा उस ने तुझ से कहा है और तू उस की समस्त १९ आज्ञाओं को पालन करे। और तुझे समस्त जातिगणों से जिन्हें उस ने उत्पन्न किया बड़ाई और नाम और प्रतिष्ठा में अधिक बढ़ावे और कि तू परमेश्वर अपने ईश्वर का पवित्र लोग होवे जैसा उस ने कहा॥

सत्ताईसवां पर्ब्ब।

१ फिर मूसा ने इसराएल के प्राचीनों के साथ होके लोगों को आज्ञा करके कहा कि उस समस्त आज्ञा को जो आज के दिन मैं तुम्हें कहता हूं पालन २ करो। और यों होगा कि जिस दिन तुम यरदन पार होके उस देश में पहुंचो जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है तब तू अपने लिये बड़े बड़े पत्थर खड़े करना ३ और उन पर गच करना। और जब तू पार उतरे तब इस व्यवस्था के समस्त बचनों को उन पर लिखना जिसतें तू उस देश में प्रवेश करे जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है वह एक देश है जिस में दूध

और मधु बहता है जैसा परमेश्वर तेरे पितरों के ईश्वर ने तुझे देने को बाचा
४ बांधी है। सो जब तुम यरदन के पार उतर आओ तब तुम इन पत्थरों को जिन के बिषय में मैं तुम्हें आज के दिन आज्ञा करता हूं ऐबाल के पहाड़ पर खड़ा करना और उन पर गच फेरना।
५ और वहां परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये बेदी पत्थरों की एक बेदी बनाना उन
६ पर लोहा न उठाना। तू परमेश्वर अपने ईश्वर की बेदी ढोकों से बनाना और उस पर परमेश्वर अपने ईश्वर के
७ लिये बलिदान की भेंट चढ़ाना। कुशल की भेंट चढ़ाना और वहीं खाना और परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे
८ आनन्द करना। और उन पत्थरों पर इस व्यवस्था के समस्त बचन खोलके लिखना॥

९ फिर मूसा और लावी याजकों ने समस्त इसराएलियों से कहा कि हे इसराएल चौकस हो और सुन तू आज के दिन परमेश्वर अपने ईश्वर की मंडली
१० हुआ। सो परमेश्वर अपने ईश्वर के शब्द को मान और उस की आज्ञाओं को और उस की बिधिन को पालन कर जो आज के दिन मैं तुझे आज्ञा करता हूं॥

११ और मूसा ने उस दिन मंडली को
१२ आज्ञा करके कहा: कि जब तुम यरदन पार जाओ तब समऊन और लावी और यहूदाह और इशकार और यूसुफ और बिनयमीन जरिजीम के पहाड़ पर
१३ खड़े होके लोगों को आशीस देवें। और रूबिन और जद और यसर और जबूलून और दान और नफताली ऐबाल के पहाड़
१४ पर साप देने के लिये खड़े होवें। और लावी इसराएल के समस्त पुरुषों को बड़े शब्द से कहें॥

१५ कि वह जन सापित है जो खोदके अथवा ढालके मूर्त्ति बनावे जो परमेश्वर के आगे घिनित है और कार्य्यकारी के हाथ की बनाई हुई है और गुप्त स्थान में रक्खे तब समस्त मंडली उत्तर देके
१६ कहे आमीन। जो कोई अपने माता पिता की निन्दा करे वह सापित और
१७ समस्त लोग बोलें आमीन। जो अपने परोसी के सिवाने के चिन्ह को हटावे सो सापित और समस्त लोग कहें आमीन।
१८ जो अंधे को मार्ग से बहकावे सो सापित
१९ और समस्त लोग कहें आमीन। जो परदेशी अनाथ और बिधवा के बिचार को बिगाड़ देवे सो सापित और समस्त
२० लोग कहें आमीन। जो अपने पिता की पत्नी के साथ कुकर्म्म करे सो सापित क्योंकि उस ने अपने पिता की नग्नता उघारी और समस्त लोग कहें आमीन।
२१ जो किसी प्रकार के पशु से कुकर्म्म करे सो सापित और समस्त लोग कहें आमीन।
२२ जो कोई अपनी बहिन अपनी माता अथवा अपने पिता की पुत्री के साथ कुकर्म्म करे सो सापित और समस्त लोग
२३ कहें आमीन। जो कोई अपनी सास के संग कुकर्म्म करे सो सापित और समस्त
२४ लोग कहें आमीन। जो कोई अपने परोसी को छिपके मारे सो सापित और
२५ समस्त लोग कहें आमीन। जो कोई घूस लेके किसी निर्दोषी को घात करे सो सापित और समस्त लोग कहें आमीन।
२६ जो कोई इस व्यवस्था के बचनों को पालन करने को स्थिर न रहे सो सापित और समस्त लोग कहें आमीन॥

अट्ठाईसवां पर्व्व।

१ और ऐसा होगा कि यदि तू ध्यान से परमेश्वर अपने ईश्वर का शब्द सुनेगा और चेत में रखके उस की समस्त आज्ञाओं को मानेगा जो आज के दिन मैं तुझे आज्ञा करता हूं तो परमेश्वर तेरा

ईश्वर तुझे पृथिवी के समस्त जातिगणों २ में श्रेष्ठ करेगा। और यदि तू परमेश्वर अपने ईश्वर के शब्द को सुनेगा तो ये समस्त आशीष तुझ पर आवेंगी और ३ तुझे जा ही लेंगी। तू नगर में धन्य ४ और खेत में धन्य होगा। तेरे शरीर का और तेरी भूमि का फल और तेरे ढोर का फल तेरी गाय बैल की बढ़ती ५ और तेरे भेड़ के झुंड धन्य। तेरा ६ टोकरा और तेरा कठरा धन्य। तू अपने ७ बाहर भीतर आने जाने में धन्य। परमेश्वर तेरे बैरियों को जो तेरे विरुद्ध उठेंगे तेरे सन्मुख मारेगा वे एक मार्ग से तुझ पर चढ़ आवेंगे और सात मार्गों से तेरे आगे ८ से भाग निकलेंगे। परमेश्वर तेरे भंडार पर और तेरे हाथ के समस्त कार्य्यों पर तेरे लिये आशीष की आज्ञा करेगा और उस देश में जो परमेश्वर तेरा ईश्वर ९ तुझे देता है तुझे आशीष देगा। यदि तू परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करे और उस के मार्गों पर चले तो परमेश्वर तुझे अपना पवित्र लोग बनावेगा जैसा उस ने तुझ से १० किरिया खाई है। और पृथिवी के समस्त लोग देखेंगे कि तू परमेश्वर के नाम से प्रसिद्ध है सो वे तुझ से डरते ११ रहेंगे। और परमेश्वर तेरी संपत्ति में तेरे शरीर के फल में और तेरे ढोर के फल में और तेरी भूमि के फल में उस भूमि पर जिस के विषय में परमेश्वर ने तेरे पितरों से किरिया खाके कहा कि १२ तुझे देऊंगा तुझे बढ़ती देगा। परमेश्वर अपना सुथरा भंडार तेरे आगे खोलेगा कि आकाश तेरे देश पर ऋतु में जल बरसावेगा और तेरे हाथ के समस्त कार्य्यों में आशीष देगा और तू बहुत से जातिगणों को ऋण देगा परन्तु तू ऋण १३ न लेगा। और परमेश्वर तुझे सिर बनावेगा और पूंछ नहीं और तू केवल ऊंचा होगा और नीचा न होगा आज के दिन जो आज्ञा मैं तुझे करता हूं यदि तू उन आज्ञाओं को सुने और पालन करके माने। और तू उन सब बातों में १४ जो आज के दिन मैं तुम्हें आज्ञा करता हूं दहिने बायें न मुड़े अरु और देवतों का पीछा करके उन की सेवा न करे॥

परन्तु यदि तू परमेश्वर अपने ईश्वर १५ का शब्द न सुनेगा और ध्यान करके उस की समस्त आज्ञाओं को और उस की विधिन को जो आज के दिन मैं तुझे आज्ञा करता हूं न मानेगा तो ये समस्त स्राप तुझ पर आवेंगे और तुझे जा ही लेंगे। तू नगर में स्रापित और तू खेत १६ में स्रापित। तेरा टोकरा और तेरी थाल १७ स्रापित। तेरे शरीर का फल और तेरी १८ भूमि का फल तेरी गाय बैल की बढ़ती और तेरी भेड़ बकरी के झुंड स्रापित। तू अपने बाहर भीतर आने जाने में १९ स्रापित। परमेश्वर तेरे हाथ के समस्त २० कार्य्यों में तुझ पर स्राप झंझट और डपट भेजेगा यहां लों कि तू नाश हो जावे और शीघ्र मिट जावे तेरी करनी की दुष्टता के कारण जिस्से तू ने मुझे त्याग किया। परमेश्वर तुझ पर मरी संयुक्त २१ करेगा यहां लों कि तुझे उस भूमि से मिटा डालेगा जिस का तू अधिकारी होने जाता है। परमेश्वर तुझे क्षयी और २२ ज्वर और ज्वाला और अत्यंत ज्वलन और पियास और झुलस से और लेंढ़ी से मारेगा और वे तुझे खोद खोद के नाश करेंगे। और तेरे सिर पर का स्वर्ग पीतल और २३ तेरे तले की पृथिवी लोहे की होगी। परमेश्वर तेरे देश का बरसना बुकनी २४ और धूल बना डालेगा यह स्वर्ग से तुझ पर उतरेगा जब लों तू नाश न हो जावे। परमेश्वर तुझे तेरे बैरियों के आगे मारेगा २५

तू एक मार्ग से उन पर चढ़ जावेगा और उन के आगे सात मार्गों से भागेगा और पृथिवी के समस्त राज्यों में निकाला २६ जावेगा। और तेरी लोथ आकाश के समस्त पक्षियों का और बन के पशुन का भोजन होे जावेगी और कोई उन्हें २७ न हांकेगा। परमेश्वर तुझे मिस्र के फोड़े और बवासी और दिनाय और खुजली से मारेगा उन से तू कधी चंगा न होगा। २८ परमेश्वर तुझे बौड़हापन और अंधापन और मन की घबराहट से मारेगा। २९ और जिस रीति से कि अंधा अंधेरे में टटोलता है तू दोपहर दिन को टटोलता फिरेगा और तू अपने मार्गों में भाग्यवान न होगा और केवल तुझ पर अंधेर ३० हुआ करेगा और कोई न बचावेगा। तू पत्नी से मंगनी करेगा और दूसरा उसे ग्रहण करेगा तू घर बनावेगा परन्तु उस में बास न करेगा तू दाख की बारी लगावेगा परन्तु उस का फल न खावेगा। ३१ तेरा बैल तेरी आंखों के साम्ने मारा जावेगा और तू उस्से न खावेगा तेरा गदहा तेरे आगे से बरबस लिया जावेगा और तुझे फेरा न जावेगा तेरी भेड़ बकरियां तेरे बैरियों को दिई जावेंगी और ३२ कोई तेरे लिये न छुड़ावेगा। तेरे बेटे और तेरी बेटियां और लोगों को दिई जावेंगी और तेरी आंखें देखेंगी और दिन भर उन के लिये कुढ़ते कुढ़ते घट जावेंगी और तेरे हाथ में कुछ बूता न ३३ रहेगा। तेरी भूमि का और तेरे सारे परिश्रम का फल एक जाति जिसे तू नहीं जानता खा जावेगी और तुझ पर नित्य केवल अंधेर होगा और पिसा ३४ जावेगा। यहां लों कि तू आंखों से ३५ देखते देखते बौड़हा हो जावेगा। परमेश्वर तुझे घुटनों में और टांगों में ऐसे बुरे फोड़ों से मारेगा कि तू अपने पांव के तलवे से अपनी चांदी लों चंगा न हो सकेगा। परमेश्वर तुझे और तेरे ३६ राजा को जिसे तू अपने ऊपर स्थापित करेगा उस जाति के पास ले जावेगा जिसे तू और तेरे पितरों ने न जाना और वहां तू लकड़ी पत्थर के देवतों की पूजा ३७ करेगा। और तू उन सब जातियों में जहां जहां परमेश्वर तुझे पहुंचावेगा एक आश्चर्य्य और कहावत और ओलाहना ३८ होगा। तू खेत में बहुत से बीज बोयेगा और थोड़ा बटोरेगा क्योंकि उन्हें टिड्डी ३९ चाट लेंगी। तू दाख की बारी लगावेगा और उस की सेवा करेगा और मदिरा पीने और दाख एकट्ठा करने न पावेगा क्योंकि उन्हें कीड़े खा जावेंगे। ४० तेरे समस्त सिवानों में जलपाई के पेड़ होंगे परन्तु तू चिकनाई लगाने न पावेगा ४१ क्योंकि तेरी जलपाई झड़ जावेगी। तू बेटे बेटियां जन्मावेगा और वे तेरे न होंगे क्योंकि वे बंधुआई में जावेंगे। ४२ तेरे समस्त पेड़ को और तेरी भूमि के ४३ फल को टिड्डी चाट जावेंगी। परदेशी जो तेरे मध्य में होगा तुझ से प्रबल और ऊंचा होगा और तू नीचा हो जा- ४४ वेगा। वह तुझे उधार देगा परन्तु तुझ से उधार न लेगा वह सिर होगा और तू पूंछ होगा॥

४५ और ये समस्त स्राप तुझ पर आवेंगे और तेरे पीछे पड़ेंगे और तुझे जा लेंगे जब लों तू नाश न होवे क्योंकि तू ने परमेश्वर अपने ईश्वर के शब्द को न सुना कि उस की आज्ञाओं को और उस की बिधिन को पालन करता जैसी उस ४६ ने तुझे आज्ञा किई है। और वे तुझ पर और तेरे बंश पर सदा के लिये चिन्ह ४७ और आश्चर्य्य होंगे। इस कारण कि तू ने समस्त बहुताई के लिये मन की आनन्दता और मगनता से परमेश्वर अपने

४८ ईश्वर की सेवा न किई । इस लिये तू भूख में और पियास में और नग्नता में और दरिद्रता में अपने बैरियों की सेवा करेगा जिन्हें परमेश्वर तुझ पर भेजेगा और वह तेरे कंधे पर लोहे का जुआ डालेगा जब लों तुझे नाश न कर लेवे ।
४९ परमेश्वर दूर से एक जाति को पृथिवी के अंत सिवाने से एक ऐसी जाति जैसा गिद्ध उड़ता है तुझ पर चढ़ा लावेगा एक जाति जिस की भाषा तू न सम-
५० झेगा । भयंकर रूप की जाति जो न बूढ़ों को समझेगी न तरुण पर दया
५१ करेगी । और वह तेरे ढोर का फल और तेरी भूमि का फल खा जावेगी जब लों तू नाश न हो जाय जो तेरे लिये अन्न और दाखरस अथवा तेल अथवा तेरी गाय बैल की बढ़ती अथवा तेरी भेड़ बकरी का झुंड न छोड़ेगी जब लों तुझे
५२ नाश न करे । और वे तुझे तेरे हर एक फाटकों में आ घेरेंगे यहां लों कि तेरी ऊंची और दृढ़ भीतें जिन पर तू ने अपने समस्त देश में भरोसा किया था गिर जावेंगी और वे तुझे तेरे उस समस्त देश में जो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे दिया है तेरे हर एक फाटकों में आ
५३ घेरेंगे । और सकेती और कष्ट में जो तेरे बैरियों के कारण से तुझ पर पड़ेंगे तू अपनी देह का फल और अपने बेटे बेटियों का मांस खावेगा जिन्हें पर-
५४ मेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे दिया है । उस जन की आंखें जो तुम में कोमल और अति सुकुआर होगा अपने भाई और अपनी गोद की पत्नी और अपने बचे
५५ हुए लड़कों से बुरी हो जायेंगी । यहां लों कि वह अपने बालक के मांस में से जिसे वह खावेगा उन में से किसी को कुछ न देगा इस कारण कि उस सकेती और क्लेश में जो तेरे बैरियों के कारण से तेरे समस्त फाटकों में तुझ पर होंगे उस के लिये कुछ न बचेगा । तुझ में
५६ कोमल और सुकुआर स्त्री जो कोमलता और सुकुआरी के मारे अपने पांवों को भूमि पर न धरती थी अपनी गोद के पति और अपने बेटा बेटी की ओर से
५७ उस की आंखें बुरी हो जावेंगी । और अपने नन्हे बालक से जो उस्से उत्पन्न होगा और अपने लड़कों से जिन्हें वह जनेगी क्योंकि वह सकेती के कारण से जो तेरे बैरी तेरे फाटकों में तुझ पर लायेंगे छिपके उन्हें खावेगी ॥

५८ यदि तू पालन करके इस व्यवस्था के समस्त बचनों पर जो इस पुस्तक में लिखे हैं न चलेगा जिसतें तू उस के तेजमय और भयंकर नाम से जो परमेश्वर
५९ तेरा ईश्वर है न डरे । तब परमेश्वर तेरी मरियों को और तेरे बंश की मरियों को अर्थात् बड़ी बड़ी मरियों को जो बहुत दिन ताईं रहेंगी और बड़े बड़े रोगों को जो बहुत दिन लों रहेंगे
६० आश्चर्य्यित बनावेगा । और मिस्र के सारे रोग जिन से तू डरता था तुझ पर लावेगा और वे सब तुझ पर चिपकेंगे ।
६१ हर एक रोग भी और हर एक मरी जो इस व्यवस्था की पुस्तक में नहीं लिखी है परमेश्वर तुझ पर पहुंचावेगा जब
६२ लों तू नाश न होय । और जैसा कि तुम लोग स्वर्ग के तारों की नाईं थे गिनती में थोड़े से रह जाओगे क्योंकि तू ने परमेश्वर अपने ईश्वर के शब्द
६३ को न माना । और ऐसा होगा कि जिस रीति से परमेश्वर ने तुम पर आनन्द होके तुम्हारे साथ भलाई करके तुम्हें बढ़ाया उसी रीति से परमेश्वर तुम्हें नाश करके मिटा देने में आनन्दित होगा और तुम उस भूमि पर से उखाड़े जाओगे जिस का अधिकारी तू होने

६४ आता है । और परमेश्वर तुझे समस्त जातियों में पृथिवी के इस खूंट से उस खूंट लों छिन्न भिन्न करेगा और वहां तू और देवतों की जो काष्ठ और पत्थर हैं जिन्हें तू और तेरे पितर नहीं जानते ६५ थे पूजा करेगा । और उन जातिगणों में तुझ को चैन न मिलेगा और न तेरे पांवों के तलवों को बिश्राम मिलेगा परन्तु परमेश्वर वहां तुझे कंपित मन और धुंधली आंखें और मन की उदासी देगा । ६६ और तेरा जीवन तेरे आगे दुबिधा में टंगा रहेगा और तू रात दिन डरता रहेगा और तेरे जीवन का भरोसा न ६७ रहेगा । अपने मन के डर से जिस्से तू डरेगा और उन बस्तुन से जिन्हें तेरी आंखें देखेंगी बिहान को तू कहेगा कि हाय कब सांझ होगी और सांझ को कि ६८ हाय कब बिहान होगा । और परमेश्वर तुझे उस मार्ग से जिस के बिषय में मैं ने तुझे कहा कि तू उसे फिर न देखेगा तुझे जहाजों में मिस्र को फेर लावेगा और तुम वहां दासों और दासियों की नाईं अपने बैरियों के हाथ बेचे जाओगे ६९ और कोई मोल न लेगा । ये उस नियम की बातें हैं जो परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई कि मोअब की भूमि में इसराएल के संतानों से करे उस नियम को छोड़ जो उस ने उन से होरिब में किया था ॥

उन्तीसवां पर्ब्ब ।

१ और मूसा ने समस्त इसराएल को बुलाके उन्हें कहा जो कुछ कि परमेश्वर ने तुम्हारी आंखों के आगे मिस्र के देश में फिरऊन और उस के समस्त सेवकों और उस के समस्त देश से किया तुम ने देखा है ॥

२ वे बड़ी बड़ी परीक्षा जिन्हें तेरी आंखों ने देखा है वे लक्षण और वे बड़े बड़े आश्चर्य्य । ३ तथापि परमेश्वर ने तुम्हें समझने का मन और देखने की आंखें और सुन्ने के कान आज लों न दिये । ४ और मैं तुम्हें चालीस बरस बन में लिये फिरा तुम पर तुम्हारे कपड़े पुराने न हुए न तेरे जूते तेरे पांवों में पुराने हुए । ५ तुम ने रोटी न खाई और तुम ने मदिरा अथवा मद्य न पिया जिस्तें तुम जानो कि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं । ६ और जब तुम इस स्थान में आये तब हसबून का राजा सैहून और बसन का राजा ऊज संग्राम के लिये हम पर चढ़ आये और हम ने उन्हें मारा । ७ और हम ने उन का देश ले लिया और उसे रूबिनियों और जादियों और मुनस्सी की आधी गोष्ठी को अधिकार में दिया । ८ सो तुम इस नियम की बातों को पालन करो और उन्हें मानो जिस्तें अपने सब कामों में भाग्यवान होओ । ९ आज के दिन तुम तुम्हारे प्रधान तुम्हारी गोष्ठियां तुम्हारे प्राचीन और तुम्हारे करोड़े अर्थात् समस्त इसराएल के लोग परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर के आगे खड़े होते हैं ॥

१० तुम्हारे बालक तुम्हारी पत्नियां और तेरे परदेशी जो तेरी छावनी में रहते हैं तेरे लकड़हारे से लेके तेरे पनभरे लों । ११ जिस्तें तू परमेश्वर अपने ईश्वर के उस नियम और किरिया में प्रवेश करे जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझ से आज के दिन करता है । १२ जिस्तें वह आज के दिन तुझे अपने लिये एक लोग स्थिर करे कि वह तेरा ईश्वर होवे जैसा उस ने तुझे कहा और जैसा उस ने तेरे पितरों अबिरहाम इज़हाक़ और यअकूब से किरिया खाई है । १३ सो मैं तुम्हारे ही साथ केवल यह नियम और किरिया नहीं करता । १४ परन्तु उस के साथ भी जो आज के दिन परमेश्वर हमारे ईश्वर

के आगे हमारे संग खड़ा है और उस के साथ भी जो आज के दिन हमारे साथ नहीं है । १५ क्योंकि तुम जानते हो कि हम मिस्र में क्योंकर बास करते थे और क्योंकर उन जातिगणों के मध्य में से जिन में तुम रहते थे निकल गये ॥

१६ और तुम ने उन की लकड़ी और पत्थर और चांदी और सोने की घिनित मूर्त्तों को जो तुम्हारे साथ थीं देखा है । १७ ऐसा न हो कि तुम्हों में कोई पुरुष अथवा स्त्री अथवा घराना अथवा गोष्ठी ऐसी हो कि जिस का मन आज के दिन परमेश्वर हमारे ईश्वर से फिर जावे और उन जातिगणों के देवतों की सेवा करे ऐसा न हो कि तुम्हारे बीच ऐसी जड़ हो जो कड़ुआ और नागदौना उपजावे । १८ और यों होवे कि जब वह इस साप की बातें सुने तो वह आप को अपने मन में आशीस देके कहे कि मैं चैन करूंगा क्योंकि अपने मन की भावना में चलूंगा कि पियास में मतवालपन मिलाऊं । १९ परमेश्वर उसे न छोड़ेगा क्योंकि उसी समय उस जन पर परमेश्वर का क्रोध और उस का कोप भड़केगा और समस्त साप जो इस पुस्तक में लिखे हैं उस पर पड़ेंगे और परमेश्वर उस के नाम को स्वर्ग के तले से मिटा देगा । २० और परमेश्वर बाचा के समस्त सापों के समान जो इस व्यवस्था की पुस्तक में लिखे हैं इसराएल की सारी गोष्ठियों में से बुराई के लिये उस को अलग करेगा । २१ यहां लों कि अवैया पीढ़ी अर्थात् तुम्हारे बालक जो तुम्हारे पीछे उठेंगे और परदेशी जो दूर देश से आवेंगे उस देश की मरी और रोगों को जो परमेश्वर ने उस पर धरे हैं देखके कहेंगे । २२ कि यह सारा देश गंधक और लोन से जल गया कि न बोया जाता न उपजता और न कुछ घास उगती है जैसे कि सदूम और अमूर: अदम: और ज़िबोआन उलट गये जिन्हें परमेश्वर ने अपनी रिस से और अपने कोप से उलट दिया । २३ और समस्त जातिगण कहेंगे कि परमेश्वर ने इस देश पर ऐसा क्यों किया इस महा कोप के तपन का क्या कारण है । २४ तब लोग कहेंगे इस लिये कि उन्हों ने परमेश्वर अपने पितरों के ईश्वर की उस बाचा को त्याग किया जो मिस्र देश से निकालने के समय इन से बांधी थी । २५ और उन्हों ने जाके आन आन देवतों की सेवा और उन्हें दण्डवत किई उन देवतों को जिन्हें वे न जानते थे और जिन्हें उस ने उन्हें न दिया* था । २६ सो परमेश्वर का क्रोध इस देश पर भड़का कि उस ने समस्त साप जो इस पुस्तक में लिखे हैं इस पर प्रगट किये । २७ और परमेश्वर ने रिस और कोप और बड़ी जलजलाहट से उन के देश से उन्हें उखाड़ा है और दूसरे देश पर आज के दिन की नाईं उन्हें डाल दिया । २८ गुप्त बातें परमेश्वर हमारे ईश्वर की हैं परन्तु प्रकाशित हमारे और हमारे बंश के लिये सदा लों हैं जिसतें हम इस व्यवस्था के समस्त बचनों का पालन करें ॥

तीसवां पर्व्व ।

और यों होगा कि जब यह सब बातें अर्थात् आशीस और साप जिन्हें मैं ने तेरे आगे रक्खा तुझ पर पड़ेगा और तू उन सब जातिगणों में जहां जहां परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे हांकेगा उन्हें चेत करेगा । और तू परमेश्वर अपने ईश्वर की ओर फिरेगा और उस की समस्त आज्ञा के समान जो आज मैं तुझे कहता हूं अपने लड़कों समेत अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से उस के शब्द

३ को मानेगा। तब परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरी बंधुआई में तेरे पास आवेगा और तुझे उन सब जातिगणों में से जिन में परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे छिन्न भिन्न किया है दयालु होके फेरेगा और एकट्ठे ४ करेगा। यदि कोई तुझ में आकाश के अंत लों हांका गया होगा तो परमेश्वर तेरा ईश्वर वहां से एकट्ठा करके तुझे ५ फेर लावेगा। और परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे उस देश में जिस के तेरे पितर अधिकारी थे और तू उस का अधिकारी होगा और वह तुझ से भलाई करेगा और तेरे पितरों से अधिक तुझे बढ़ावेगा। ६ और परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे और तेरे बंश के मन का खतन: करेगा कि तू परमेश्वर अपने ईश्वर को अपने सारे मन और अपने सारे प्राण से प्यार करे ७ जिसतें तू जीता रहे। और परमेश्वर तेरा ईश्वर ये समस्त स्राप तेरे बैरियों पर और उन पर डालेगा जो तेरा डाह रखते ८ हैं जिन्हों ने तुझे सताया। और तू फिर आवेगा और परमेश्वर के शब्द को मानेगा और उस की उन समस्त आज्ञाओं को जो आज के दिन में तुझे करता हूं ९ पालन करेगा। और परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे हाथ के हर एक काम में तेरे शरीर के फल में और तेरे ढोर के फल में और तेरी भूमि के फल में भलाई के लिये तुझे अधिक करेगा क्योंकि परमेश्वर आनन्दित होके तुझ से फिर भलाई करेगा जैसा वह तेरे पितरों से आनन्दित था। १० जब तू परमेश्वर अपने ईश्वर के शब्द को सुनेगा जिसतें उस की आज्ञाओं और उस की बिधिन को जो व्यवस्था की इस पुस्तक में लिखी हुई हैं स्मरण करे जब तू अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से परमेश्वर अपने ईश्वर की ओर फिरे॥

क्योंकि यह आज्ञा जो आज मैं तुझे ११ करता हूं वह तुझ से न छिपी है और वह न दूर है। वह स्वर्ग पर नहीं १२ जो तू कहे कि हमारे लिये कौन स्वर्ग पर जावेगा और हमारे पास उसे लावे जिसतें हम उसे सुनें और पालन करें। और न वह समुद्र पार है जो तू १३ कहे कौन हमारे लिये समुद्र पार जावेगा और उसे हम पास लावे कि हम उसे सुनें और पालन करें। क्योंकि बचन तेरे १४ पास हां तेरे मुंह में और तेरे अंतःकरण में है जिसतें तू उसे पालन करे॥

देख मैं ने आज जीवन और भलाई को १५ और मृत्यु और बुराई को तेरे आगे रक्खा है। सो मैं तुझे परमेश्वर अपने ईश्वर १६ पर प्रेम करने को और उस के मार्गों पर चलने को और उस की आज्ञाओं और उस की बिधिन और उस के बिचारों को पालन करने को आज तुझे आज्ञा करता हूं जिसतें तू जीये और बढ़े और परमेश्वर तेरा ईश्वर उस देश में जिस का तू अधिकारी होने जाता है तुझे आशीष देवे। परन्तु यदि तेरा मन १७ फिर जावे और तू न सुने और फुसलाया जावे और और देवतों को दंडवत करे और उन की सेवा करे। तो आज मैं १८ तुम्हें सुना रखता हूं कि तुम निश्चय नाश हो जाओगे उस भूमि पर जिस के अधिकारी होने यरदन पार जाते हो तुम्हारी बय अधिक न होगी। मैं आज १९ स्वर्ग और पृथिवी को तुम्हारे ऊपर साक्षी लाता हूं कि मैं ने जीवन और मृत्यु और आशीष और स्राप तेरे साम्ने रक्खे सो तू जीवन को चुन जिसतें तू और तेरा बंश दोनों जीवें। कि तू परमेश्वर २० अपने ईश्वर से प्रेम करे और उस के शब्द को माने और उस्से लवलीन रहे क्योंकि वही तेरा जीवन और तेरे बय

को अधिकारी है जिसतें तू उस भूमि पर बास करे जिस के कारण परमेश्वर ने तेरे पितरों अबिरहाम इज़हाक और याकूब से किरिया खाके कहा कि मैं उसे तुम्हें देउंगा॥

एकतीसवां पर्व्व।

१ तब मूसा ने जाके ये बातें समस्त २ इसराएल से कहीं। और उस ने उन्हें कहा कि मैं तो आज एक सौ बीस बरस का हूं आगे मैं भीतर बाहर जा नहीं सक्ता और परमेश्वर ने भी मुझे कहा है कि तू यरदन पार न जायगा। ३ परमेश्वर तेरा ईश्वर ही तेरे आगे आगे पार जावेगा वही इन जातिगणों को तेरे आगे नाश करेगा और तू उन्हें बश में करेगा यहूशूअ वही परमेश्वर के कहने के समान तेरे आगे आगे पार ४ जावेगा। और परमेश्वर उन से वैसा ही करेगा जैसा उस ने अमूरियों के राजाओं सैहून और ऊज से और उन के देश से किया जिन्हें उस ने नाश किया। ५ और परमेश्वर उन्हें तुम्हारे आगे सौंप देगा जिसतें तुम उन से उस सब आज्ञा के समान जो मैं ने तुम्हें कहीं करो। ६ पोढ़ होओ और साहस करो भय न करो और उन से मत डरो क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर वही तेरे साथ जाता है वह तुझे न छोड़ेगा और न त्याग करेगा॥

७ फिर मूसा ने यहूशूअ को बुलाया और सारे इसराएल के आगे उसे कहा कि दृढ़ हो और साहस कर क्योंकि तू ही इन लोगों के साथ उस देश में प्रवेश करेगा जिस के देने के विषय में परमेश्वर ने उन के पितरों से किरिया खाई और तू उन्हें उस का अधिकारी करेगा। ८ और परमेश्वर वही तेरे आगे आगे जाता है वही तेरे साथ रहेगा वह तुझे न छोड़ेगा और तुझे न त्याग करेगा भय मत कर और मत डर॥

९ और मूसा ने इस व्यवस्था को लिखा और उसे लावी के बेटे याजकों को जो परमेश्वर के साक्षी की मंजूषा को उठाते थे और इसराएल के समस्त प्राचीनों १० को सौंप दिया। और मूसा ने उन्हें यह कहके आज्ञा किई कि हर एक सात बरस के अंत में छुटकारे के ठहराये हुए ११ समय में तंबू के पर्व्व में। जब कि सारे इसराएल परमेश्वर तेरे ईश्वर के आगे उस स्थान पर जिसे वह चुनेगा आया करें तब तू इस व्यवस्था को पढ़के समस्त इसराएल को सुनाया कर। १२ समस्त लोगों पुरुषों और स्त्रियों को और लड़कों और अपने परदेशी को जो तेरे फाटकों के भीतर हों एकट्ठे कीजियो कि वे सुनें और सीखें और परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर से डरें और इस व्यवस्था के समस्त बचनों का पालन करें और १३ मानें। और उन के लड़के जिन्हों ने ये बातें नहीं जानीं सुनें और जब लों तुम उस देश में जिस के अधिकारी होने को यरदन पार जाते हो रहो परमेश्वर अपने ईश्वर से डरा करो॥

१४ फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि देख तेरे दिन आ पहुंचे हैं तुझे मरना है सो तू यहूशूअ को बुला और मंडली के तंबू में खड़े होओ जिसतें मैं उसे आज्ञा करूं सो मूसा और यहूशूअ चले १५ और मंडली के तंबू में खड़े हुए। और परमेश्वर मेघ के खंभे में होके तंबू में प्रगट हुआ और मेघ का खंभा तंबू के १६ द्वार पर आके ठहरा। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि देख तू अपने पितरों के साथ शयन करेगा और इस मंडली के लोग उठेंगे और उस देश पर जहां ये बसने जाते हैं कुकर्म्मी होके वहां

अन्यदेशी देवतों का पीछा करेंगे और मुझे छोड़ देंगे और मेरी बाचा को जो मैं ने उन के साथ बांधी है तोड़ेंगे। १७ तब मेरा क्रोध उस दिन उन पर भड़केगा और मैं उन्हें त्याग करूंगा और मैं उन से अपना मुंह छिपाऊंगा और वे नष्ट हो जावेंगे और बहुत कष्ट और बिपति उन्हें पकड़ेंगे तब वे उस दिन कहेंगे कि क्या हम पर ये बिपत्ति इस लिये नहीं पड़ीं कि हमारा ईश्वर हम्में नहीं। १८ और उस सब बुराई के कारण से जो वे करेंगे और इस लिये कि ऊपरी देवतों की ओर लवलीन होंगे मैं निश्चय उस दिन अपना मुंह छिपाऊंगा। १९ सो तुम यह गीत अपने लिये लिखो और उसे इसराएल के संतानों को सिखाओ और उन्हें पढ़ाओ जिसतें यह गीत इसराएल के संतानों पर मेरी साक्षी रहे। २० क्योंकि जब मैं उन्हें उस देश में पहुंचाऊंगा जिस के कारण मैं ने उन के पितरों से किरिया खाई जिस में दूध और मधु बहता है और वे खावेंगे और तृप्त होवेंगे और मोटे हो जावेंगे तब वे और देवतों की ओर फिर जावेंगे और उन की सेवा करेंगे और मुझे खिजावेंगे २१ और मुझ से बाचा तोड़ देंगे। और यों होगा कि जब बहुत कष्ट और बिपत्ति उन पर पड़ेंगी तब यही गीत उन पर साक्षी देगा क्योंकि वह उन के बंश के मुंह से बिसर न जावेगा क्योंकि मैं उन के बिचारों को जानता हूं जो वे आज करते हैं उस्से आगे कि मैं उस देश में जिस के कारण मैं ने किरिया खाई है उन्हें पहुंचाऊं॥

२२ सो उसी दिन मूसा ने यह गीत लिखा और उसे इसराएल के संतान को २३ सिखाया। और उस ने नून के बेटे यहूशूअ को आज्ञा किई और कहा कि दृढ़ हो और साहस कर क्योंकि इसराएल के संतान को उस देश में जिस के कारण मैं ने उन से किरिया खाई है तू ले जावेगा और मैं तेरे साथ होऊंगा॥

२४ और ऐसा हुआ कि जब मूसा इस व्यवस्था की बातों को पुस्तक में लिख २५ चुका और उन्हें समाप्त किया। तब मूसा ने लावियों को जो परमेश्वर की साक्षी की मंजूषा को उठाते थे आज्ञा २६ करके कहा। कि इस व्यवस्था की पुस्तक को लेके परमेश्वर अपने ईश्वर की बाचा की मंजूषा के अलंग में रक्खो जिसतें यह तुम्हारी साक्षी के लिये वहां रहे। २७ क्योंकि मैं तेरे झगड़े और तेरे गले की कठोरता को जानता हूं देखो अब लों मैं जीता और आज के दिन लों तुम्हारे साथ हूं तुम ईश्वर से फिर गये हो और मेरे मरने के पीछे कितना अधिक और २८ करोगे। अपनी गोष्ठियों के समस्त प्राचीनों को और अपने प्रधानों को मुझ पास एकट्ठा करो जिसतें मैं ये बातें उन्हें सुनाऊं और स्वर्ग और पृथिवी को उन २९ पर साक्षी में लाऊं। क्योंकि मैं जानता हूं कि मेरे मरने के पीछे तुम आप को नष्ट करोगे और उस मार्ग से जो मैं ने तुम्हें आज्ञा किई है फिर जाओगे और पिछले दिनों में तुम पर बिपत्ति पड़ेगी क्योंकि तुम परमेश्वर के आगे बुराई करोगे कि अपने हाथ के कार्य्यों से उसे खिजाओगे॥

३० सो मूसा ने इस गीत के बचनों को इसराएल की समस्त मंडली को कह सुनाके पूरा किया॥

बत्तीसवां पर्ब्ब।

१ हे स्वर्गो कान धरो और मैं कहूंगा और हे पृथिवी मेरे मुंह की बातें सुन। २ मेरी शिक्षा मेंह की नाईं टपकेगी मेरी बातें ओस के समान चूवेंगी जैसे सागपात

पर कूही पड़े और घास पर झड़ियां। ३ क्योंकि मैं परमेश्वर के नाम को प्रगट करता हूं तुम हमारे ईश्वर के नाम की ४ महिमा करो। वह चटान है उस का कार्य्य सिद्ध है क्योंकि उस के सब मार्ग न्याय के हैं वह सच्चा सर्व्वशक्तिमान है और बुराई से रहित वह खरा और सच्चा ५ है। उन्हों ने आप को नष्ट किया वे उस के बालक नहीं वे अपने चिन्ह हैं ६ वे हठीली और टेढ़ी पीढ़ी हैं। हे मूर्ख और निर्बुद्धि लोगो क्या तुम परमेश्वर को यों पलटा देते हो क्या वह तेरा पिता नहीं है जिस ने तुझे मोल लिया क्या उस ने तुझे नहीं सिरजा और तुझे ७ स्थिर न किया। अगले दिनों को चेत करो पीढ़ी पर पीढ़ी के बरसों को सोचो अपने पिता से पूछ और वह तुझे बतावेगा अपने प्राचीनों से और वे तुझ ८ से कहेंगे। जब अति महान ने जाति-गणों के लिये अधिकार बांटा जब उस ने आदम के संतान को अलग किया इसराएल के संतानों की गिनती के समान उस ने लोगों का सिवाना ९ ठहराया। क्योंकि परमेश्वर का भाग उस के लोग हैं यअकूब उस के अधिकार १० की रस्सी है। वह उसे उजाड़ देश और भयानक अरण्य में पाता वह उसे घेर लेता उसे शिक्षा देता है अपनी आंख की पुतली की नाईं उस को रक्षा करता ११ है। जैसा गिद्ध अपने खोंते को हिलाता है अपने बच्चों पर फरफराता है अपने पंखों को फैलाके उन्हें लेता है अपने १२ पंखों पर उन्हें उठाता है। वैसा हो केवल परमेश्वर ने उस को अगुआई किई और उस के साथ कोई ऊपरी देव १३ न था। वह उसे पृथिवी के ऊंचे स्थानों पर चढ़ाता है जिसतें वह खेतों की बढ़ती खावे और उसे चटान में से मधु और चकमक के चटान में से तेल चुसाता १४ है। गाय के मक्खन और भेड़ के दूध मेम्नों की चिकनाई समेत और बसन देश के पाले हुए मेंढ़ों बकरों गोहूं के गुर्दों की चिकनाई सहित तू ने दाख १५ का निराला रस पीया। परन्तु यशूरून मोटा हुआ और लतिआने लगा तू मोटा हुआ है और फैल गया है तू ढंप गया है तब उस ने ईश्वर अपने बनानेहारे को छोड़ दिया और अपनी मुक्ति के १६ चटान को तुच्छ जाना। उन्हों ने ऊपरी देवतों के कारण उसे झल दिया उन्हों १७ ने उसे घिनितों से रिस दिलाया। उन्हों ने पिशाचों के लिये बलिदान चढ़ाये जो ईश्वर न थे उन देवतों के लिये जिन को वे न पहिचानते थे वे देवता जो थोड़े दिनों से प्रगट हुए जिन से १८ तुम्हारे पितर न डरते थे। तू उस चटान से अचेत है जिस ने तुझे उत्पन्न किया और उस सर्व्वशक्तिमान को भूल गया १९ जिस ने तेरा डौल किया। जब परमेश्वर ने देखा तब उस ने घिन किया इस कारण कि उस के बेटा बेटी ने उसे २० रिस दिलाया। और उस ने कहा कि मैं उन से अपना मुंह छिपाऊंगा जिसतें मैं उन का अंत देखूं क्योंकि वे टेढ़ी पीढ़ी हैं ऐसे लड़के जिन में बिश्वास नहीं। २१ उन्हों ने अनीश्वर से मुझे ज्वलन दिलाया उन्हों ने व्यर्थों से मुझे रिस दिलाया सो मैं भी उन्हें अलोग से झल दिलाऊंगा और एक मूर्ख जाति से उन्हें रिस २२ दिलाऊंगा। क्योंकि मेरी रिस में आग भड़की है और अत्यंत नरक लों जली है और पृथिवी को उस की बढ़ती समेत भस्म कर गई और पहाड़ों की २३ नेवों को जला दिया है। मैं उन पर बिपत्ति का ढेर करूंगा उन पर अपने २४ बाणों को घटाऊंगा। वे भूख से जल

जावेंगे और भस्मक तपन और कड़वे
बिनाश से भक्षण किये जावेंगे और मैं
पशुओं के दांतों को और पृथिवी के
२५ बिषधर सर्पों को छोड़ूंगा । बाहर
तलवार और कोठरियों से भय तरुण
मनुष्य को कुआरी को भी दूध पीवक
२६ को पुरनियां सहित नाश करेंगे । मैं ने
कहा कि मैं उन्हें कोने कोने छिन्न भिन्न
करता मैं मनुष्यों में से उन का नाम
२७ मिटा देता । यदि मैं शत्रु के क्रोध पर
दृष्टि न करता न हो कि उन के बैरी
घमंड करें और न हो कि वे कहें कि
हमारा ही हाथ प्रबल हुआ और परमे-
२८ श्वर ने ये सब नहीं किये । क्योंकि वे
मन्त्र रहित जाति हैं और उन में बुद्धि
२९ नहीं । हाय कि वे बुद्धिमान होके इसे
समझते अपने अन्तकाल की चिन्ता
३० करते । तो कैसे एक सहस्र को खेदता
और दो दस सहस्र को भगाते यदि उन
का चटान उन्हें न बेंच डाले होता
और परमेश्वर उन्हें बंद किये न होता ।
३१ क्योंकि उन का चटान हमारे चटान
के समान नहीं हां हमारे बैरी आप
३२ न्यायी हैं । क्योंकि उन का दाख सदूम
के दाख में के और अमूरः के खेतों का
है उन के अंगूर पित्त के अंगूर हैं उन
३३ के गुच्छे उन के लिये कड़वे हैं । उन
की मदिरा नागों का बिष है और सपोलों
३४ का कठिन बिष । क्या यह मुझ पास धरा
३५ नहीं मेरे भंडारों में बंद नहीं । प्रतिफल
और दण्ड देना मेरा है उन का पांव
समय पर फिसलेगा क्योंकि उन की
बिपत्ति का दिन आ पहुंचा और उन
पर जो बस्तु आती है सो शीघ्र करती
३६ है । क्योंकि परमेश्वर अपने लोगों का
न्याय करेगा और अपने सेवकों के लिये
पछतावेगा जब वह देखेगा कि सामर्थ्य
जाती रही और कोई बंद अथवा छूटा
नहीं है । और कहेगा कि उन के देव- ३७
गण पहाड़ जिन का उन्हें भरोसा था
क्या हुए । जिन्हों ने उन के बलिदानों ३८
की चिकनाई खाई और पीने की भेंट की
मदिरा पीई वे उठें और तुम्हारा बचाव करें
और तुम्हारे सहायक होवें । अब देखो ३९
कि मैं मैं वही हूं और कोई ईश्वर मेरा
साथी नहीं मैं ही मारता हूं और जिलाता
हूं मैं घायल करता हूं और मैं ही चंगा
करता हूं और कोई नहीं जो मेरे हाथ
से छुड़ावे । क्योंकि मैं अपना हाथ ४०
स्वर्ग की ओर उठाता हूं और कहता
हूं कि मैं ही सनातन जीवता हूं । यदि ४१
मैं अपना चमकता हुआ खड्ग चोखा
करूं और मेरा हाथ न्याय धारण करे
तो मैं अपने शत्रुन से प्रतिफल लूंगा और
जो मुझ से बैर रखते हैं उन्हें पलटा दूंगा ।
मारे हुओं और बंधुओं के लोहू से शत्रु ४२
पर पलटा लेने के आरंभ से मैं अपने
बाणों को रुधिर से उन्मत्त करूंगा और
मेरी तलवार मांस खावेगी । हे जाति- ४३
गणो उस के लोगों के साथ आनन्द से
गाओ क्योंकि वह अपने सेवकों के लोहू
का पलटा और अपने शत्रुन से बदला
लेगा और अपने देश और अपने लोगों
पर दयाल होगा ॥

तब मूसा और नून के बेटे यहूशूअ ४४
ने आके इस गीत की सारी बातें लोगों
को कह सुनाईं । और जब मूसा ये सारी ४५
बातें इसराएल के सन्तानों को कह
चुका । तब उस ने उन्हें कहा कि उन ४६
सारी बातों से जिन की मैं आज के दिन
तुम्हों में साक्षी देता हूं अपने मन लगाओ
जिसतें उन्हें अपने बालकों को आज्ञा
करो कि पालन करके इस व्यवस्था की
सारी बातों को मानें । क्योंकि वह ४७
तुम्हारे लिये बृथा नहीं इस कारण कि
वह तुम्हारा जीवन है और इसी बात

के लिये इस देश में जिस के अधिकारी होने तुम यरदन पार जाते हो अपनी आयुर्दाय बढ़ाओगे ॥

४८ और परमेश्वर ने उसी दिन मूसा से ४९ यह बचन कहा । अबरीम के इस पर्वत पर नबू पहाड़ों पर मोआब के देश में जो यरीहो के साम्ने है चढ़ जा और कनआन देश को देख जिसे मैं इसराएल के सन्तान ५० को अधिकार में देता हूं । और उसी पहाड़ों पर जिस पर तू जाता है मर जा और अपने लोगों में बटुर जा जैसे तेरा भाई हारून हूर पहाड़ पर मर गया और अपने लोगों में बटुर गया । ५१ इस कारण कि तुम्हों ने इसराएल के सन्तान के मध्य कादिस के झगड़े के पानी पर सीन के अरण्य में मेरा अपराध किया क्योंकि तुम ने इसराएल के सन्तान के मध्य में मुझे पवित्र न किया । ५२ क्योंकि तू साम्हने से उस देश को देख लेगा वहां न आवेगा अर्थात् उस देश में जो मैं इसराएल के सन्तानों को देता हूं ॥

तंतीसवां पर्व्व ।

१ और यह वह आशीस है जिस्से ईश्वर के जन मूसा ने अपने मरने से आगे इसराएल के सन्तानों को आशीस दिया । २ और कहा कि

परमेश्वर सीना से आया और शईर से प्रगट हुआ फाराम पहाड़ से उन पर चमक उठा और वह दस सहस्र सिद्धों के साथ आया उस के दहिने हाथ से एक आग की व्यवस्था उन के लिये ३ निकली । हां उस ने लोगों से प्रेम किया उस के समस्त सिद्ध तेरे हाथ में और वे तेरे चरणों के पास बैठ गये और तेरी ४ बातों से पावेंगे । मूसा ने हम से अर्थात् यअकूब की मंडली के अधिकार के लिये ५ एक व्यवस्था कही । और वह यशूरून में राजा था जब लोगों के प्रधान इसराएल की गोष्ठी इकट्ठे थे । रूबिन जीवे ६ और न मरे और उस के जन थोड़े न हों ॥

और यहूदाह के लिये उस ने यह ७ कहा कि

हे परमेश्वर यहूदाह का शब्द सुन और उसे उस के लोगों में पहुंचा उस के हाथ उस के लिये बहुत होवें और तू उस के बैरियों से सहायक हो ॥

और उस ने लावी के विषय में ८ कहा कि

तेरा तुम्मीम और तेरा उरीम तेरे धर्म्ममय के साथ होवे जिसे तू ने मस्सः में परखा और जिस के साथ तू मरीबः के पानियों पर झगड़ा । जिस ने अपनी ९ माता पिता से कहा कि मैं ने उसे न देखा और उस ने अपने भाइयों को न माना न अपने बालकों को पहिचाना क्योंकि उन्हों ने तेरे बचन को माना और तेरी बाचा को धारण किया । वे १० तेरे बिचार यअकूब को और तेरी व्यवस्था इसराएल को सिखावें वे तेरी नासिका के आगे धूप रक्खें और होम के पूरे बलिदान तेरी बेदी पर धरें । हे ११ परमेश्वर उस की संपत्ति पर आशीस दे और उस के हाथों के कामों को ग्राह्य कर जो उस के बिरोध में उठें और जो उस्से बैर रक्खें उन की कटि बेध डाल जिसतें वे फिर न उठें ॥

उस ने बिनयमीन के विषय में १२ कहा कि

परमेश्वर का प्रिय उस के पास चैन से रहेगा उसे दिन भर आड़ करेगा और वह उस के दोनों कांधों के बीच रहेगा ॥

और उस ने यूसुफ के विषय में १३ कहा कि

उस की भूमि पर ईश्वर की आशीस होगी स्वर्ग की बहुमूल्य बस्तुन के लिये

और ओस के कारण और गहिराव के
१४ कारण जो नीचे झुका है । और सूर्य्य के
निकाले हुए अच्छे फलों में से और चन्द्रमा
की निकाली हुई अच्छी बस्तुन के
१५ कारण । और प्राचीन पहाड़ों की श्रेष्ठ
बस्तुन के लिये और दृढ़ पहाड़ियों की
१६ बहुमूल्य बस्तुन के कारण । और पृथिवी
की बहुमूल्य बस्तें और उस की भरपूरी
के कारण और उस की भलाई के लिये
जो झाड़ी में रहता था यूसुफ के सिर पर
उतरे और उस के मस्तक पर जो अपने
१७ भाइयों से अलग किया गया था । उस
का बिभव उस के बैल के पहिलौटे की
नाईं और उस के सींग गैंड़ के सींग वह
उन्हीं से लोगों को पृथिवी के सिवाने
लों रेलेगा और वे इफरायम के दस सहस्र
और वे मुनस्सी के सहस्र ॥

१८ और उस ने जबूलून के बिषय में
कहा कि

हे जबूलून अपने बाहर जाने में
आनन्द हो और इशकार तू अपने तंबुओं
१९ में । वे लोगों को पहाड़ पर बुलावेंगे
वहां धर्म्म के बलिदान चढ़ावेंगे क्योंकि
वे समुद्रों की अधिकाई को और भंडारों
को जो बालू में छिपे हैं चूसेंगे ॥

२० और उस ने जद के बिषय में कहा कि
धन्य है वह जो जद को फैलाता
है वह सिंह के समान पड़ा रहता है
और भुजा को सिर की चांदी सहित
२१ फाड़ता है । और उस ने पहिला भाग
अपने लिये ठहराया क्योंकि उस ने वहां
व्यवस्थादायक के भाग को चुना और
वह लोगों के प्रधानों के साथ आया
वह परमेश्वर के न्याय को और उस के
बिचारों को इसराएल से बजा लाया ॥

२२ और दान के बिषय में कहा कि
दान एक सिंह का बच्चा है जो बसन
से उछलेगा ॥

२३ और उस ने नफताली के बिषय में
कहा कि

हे नफताली तू अनुग्रह से तृप्त और
परमेश्वर की आशीष से पूर्ण तू पश्चिम
और दक्षिण का अधिकारी हो ॥

२४ और उस ने यशर के बिषय में कहा कि
यशर बालकों की आशीष पावे वह
अपने भाइयों का ग्राह्य होवे और अपना
२५ पांव तेल में डुबोवे । तेरे जूते के तले
लोहा और पीतल होगा और तेरे समय
के समान तेरा बल होगा ॥

२६ यशूरून के सर्वशक्तिमान के समान
कोई नहीं जो स्वर्ग पर तेरी सहाय के
लिये चढ़ता है और उस की प्रतिष्ठा में
२७ आकाश पर । सनातन का ईश्वर तेरा
शरण है और नीचे सनातन की भुजा
और बैरी को तेरे आगे से वह हांकेगा
२८ और कहेगा कि उसे नाश कर । तब
इसराएल अकेला चैन से रहेगा यअकूब
का सोता अन्न और मदिरा की भूमि पर
होगा उस के आकाश से ओस पड़ेगी ।
२९ हे इसराएल तू धन्य है लोग तुझ सा
कौन है कि परमेश्वर ने तुझे बचाया
है वह तेरी सहाय के लिये ढाल और
तेरी बड़ाई की तलवार है और तेरे
शत्रु तेरे बश में होंगे और तू उन के ऊंचे
स्थानों को लताड़ेगा ॥

चौंतीसवां पर्ब्ब ।

१ और मूसा मोअब के चौगानों से
नबू के पहाड़ पर पिसगः की चोटी
पर जो यरीहो के साम्ने है चढ़ गया और
परमेश्वर ने जिलिअद के समस्त देश
२ दान लों उसे दिखाया । और समस्त
नफताली और इफरायम और मुनस्सी के
देश और यहूदाह के समस्त देश अत्यंत
३ समुद्र लों । और दक्खिण और यरीहो के
चौगान की नीचाई जो खजूर के पेड़
का नगर है सुग़र लों उस को दिखाया ।

४ और परमेश्वर ने उसे कहा कि यह वह देश है जिस की मैं ने अबिरहाम इज़हाक और यअकूब से किरिया खाके कहा कि मैं उसे तेरे बंश को दूंगा मैं ने तुझे आंखों से दिखा दिया परन्तु तू उधर पार न जावेगा॥

५ सो परमेश्वर का सेवक मूसा परमेश्वर के बचन के समान वहां मोअब

६ के देश में मर गया। और उस ने उसे मोअब के देश की तराई में बैतफ़ाऊर के साम्ने गाड़ा पर आज के दिन लों कोई उस की समाधि को नहीं जानता।

७ और मूसा अपने मरने के समय में एक सौ बीस बरस का था उस की आंखें धुंधली न हुईं और उस का स्वाभाविक

८ बल न घटा। और इसराएल के संतानों ने मूसा के लिये मोअब के चौगानों में तीस दिन लों बिलाप किया तब मूसा के लिये उन के रोने पीटने के दिन समाप्त हुए॥

९ और नून का बेटा यहूशूअ बुद्धि के आत्मा से भर गया क्योंकि मूसा ने अपने हाथ उस पर रक्खे थे और इसराएल के संतान ने उसे माना और जैसा परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी उस ने वैसा ही किया॥

१० और इसराएल में मूसा के समान कोई आगमज्ञानी फेर न हुआ जिसे

११ परमेश्वर आम्ने साम्ने जानता था। उन सब अचंभित और आश्चर्य्यित जिन्हें मिस्र देश में प्रगट करने के लिये परमेश्वर ने उसे फ़िरऊन के पास और उस के समस्त सेवकों के पास और उस के

१२ समस्त देश में भेजा। और समस्त सामर्थी हाथ और समस्त बड़े बड़े भय में जो मूसा ने समस्त इसराएल के आगे दिखाये॥

यहूशूअ की पुस्तक।

पहिला पर्ब्ब।

जब परमेश्वर का सेवक मूसा मर गया तब यों हुआ कि परमेश्वर ने मूसा के सेवक नून के बेटे यहूशूअ को कहा।

२ कि मेरा सेवक मूसा मर गया है सो अब तू उठ और इन समस्त लोगों समेत उस देश को जो मैं उन्हें देता हूं अर्थात् इसराएल के संतानों को लेके यरदन के

३ पार उतर जा। जैसा मैं ने मूसा से कहा कि हर एक स्थान जिस पर तेरे पांव का तलवा पड़ेगा मैं ने तुझे दिया

४ है। अरण्य से और इस लुबनान से लेके महा नदी अर्थात् फ़ुरात नदी लों हित्तियों का सारा देश महा समुद्र लों सूर्य्य के अस्त होने की ओर तुम्हारा सिवाना

५ होगा। तेरे जीवन भर कोई तेरे आगे ठहर न सकेगा जैसा मैं मूसा के साथ था तेरे साथ रहूंगा मैं तुझ से न हटूंगा

६ न तुझे त्यागूंगा। बलवंत हो और सुसाहस कर क्योंकि यह भूमि जो मैं ने किरिया खाके उन के पितरों को देने कही है तू इन लोगों को उसे अधिकार

७ में दिलावेगा। केवल तू बलवंत और अति साहसी हो जिसतें तू इस व्यवस्था के समान जिस की मेरे सेवक मूसा ने तुझे आज्ञा किई है सोचके मान उस से दहिने

आये मत मुड़ जिसतें जहां कहीं तू जावे ८ भाग्यवान होवे। इस व्यवस्था की पुस्तक की चर्चा तेरे मुंह से जाने न पावे परन्तु रात दिन उस में ध्यान कर जिसतें तू सोचके जो कुछ उस में लिखा है माने क्योंकि तब तू अपने मार्ग में भाग्यवान होगा और तब तू बुद्धि से ९ कार्य्य करेगा। क्या मैं ने तुझे आज्ञा न किई कि बलवंत हो और सुसाहस कर मत डर और मत घबरा क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर जहां जहां तू जाता है तेरे साथ है॥

१० तब यहूशूअ ने लोगों के अध्यक्षों को ११ आज्ञा करके कहा। कि तुम सेना में से होके जाओ और लोगों को आज्ञा करके कहो कि अपने लिये भोजन सिद्ध करो क्योंकि तीन दिन के भीतर तुम इस यरदन पार उतरोगे जिसतें उस भूमि के जो परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हें देता है अधिकारी होओ॥

१२ और रूबिनियों और जद्दियों को और मुनस्सी की आधी गोष्ठी को यहूशूअ १३ कहके बोला। कि जो बात परमेश्वर के सेवक मूसा ने तुम्हें आज्ञा किई चेत करो कि परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हें बिश्राम दिया है और यह देश तुम्हें १४ दिया है। तुम्हारी पत्नियां तुम्हारे बालक और तुम्हारे ढोर इस देश में रहेंगे जो मूसा ने यरदन के इस पार तुम्हें दिया है परन्तु तुम लोग अर्थात् समस्त बीर अपने भाइयों के आगे आगे हथियार बांधके चलो और उन की सहायता करो। १५ जब लों परमेश्वर तुम्हारी नाईं तुम्हारे भाइयों को चैन देवे और वे भी उस भूमि के जो परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर उन्हें देता है अधिकारी होवें तब तुम उस देश में जो तुम्हारा अधिकार है और परमेश्वर के सेवक मूसा ने यरदन के इसी पार पूरब दिशा में तुम्हें दिया है फिर आइयो और उसे अधिकार कीजियो॥

१६ तब उन्हों ने यहूशूअ को उत्तर दिया कि जो जो तू ने हमें आज्ञा किई सो हम मानेंगे और जहां जहां हमें भेजेगा १७ हम जावेंगे। जिस रीति से हम ने मूसा की सब बातें मानीं उसी रीति से तेरी सब मानेंगे केवल परमेश्वर तेरा ईश्वर जिस रीति से मूसा के साथ था १८ तेरे साथ भी रहे। जो कोई तेरी आज्ञा को न माने और तेरी सारी बातों को जो तू आज्ञा करे न सुनेगा सो मार डाला जावेगा केवल बलवंत हो और सुसाहस कर॥

दूसरा पर्ब्ब।

१ और नून के बेटे यहूशूअ ने सित्तीम से दो मनुष्य भेजे कि चुपके से भेद लेवें और उन्हें कहा कि जाओ उस देश को और यरीहो को देखो सो वे गये और एक गणिका के घर में जिस का नाम राहब था जाके वहां उतरे॥

२ तब यरीहो के राजा को संदेश पहुंचा कि देख आज रात इसराएल के संतान में से लोग यहां आये हैं जिसतें देश का ३ भेद लेवें। तब यरीहो के राजा ने राहब को यह कहके कहला भेजा कि उन मनुष्यों को जो तुझ पास आये हैं और तेरे घर में उतरे हैं निकाल दे क्योंकि वे सारे देश का भेद लेने को आये हैं॥

४ तब उस स्त्री ने उन दोनों मनुष्यों को लेके छिपा रक्खा और यों कहा कि वे मनुष्य मेरे पास आये तो थे पर मैं ५ नहीं जानती कि वे कहां के थे। और यों हुआ कि फाटक बंद करते वे मनुष्य अंधेरे में निकल गये और मैं नहीं जानती कि वे कहां गये सो शीघ्र उन का पीछा करो क्योंकि तुम उन्हें जा ही लेओगे।

६ परन्तु वह उन्हें अपनी छत पर चढ़ा ले गई और सनई के नीचे जो छत पर सजी रक्खी थी उन्हें छिपा दिया । ७ और लोग उन के पीछे यरदन की ओर हलाव लों गये और ज्यों उन के खोजी बाहर निकल गये त्योंहीं उन्हों ने फाटक बंद कर लिया ॥

८ और वह स्त्री उन के लेटने से आगे छत पर उन पास गई । ९ और उन मनुष्यों से कहा कि मैं जानती हूं कि परमेश्वर ने यह देश तुम्हें दिया है और कि तुम्हारा भय हम पर पड़ा है और इस देश के समस्त बासी तुम्हारे आगे गल गये हैं । १० क्योंकि हम ने सुना है जब कि तुम मिस्र से बाहर निकले तो परमेश्वर ने तुम्हारे साम्हने लाल समुद्र के पानी को किस रीति से सुखा दिया और तुम ने अमूरियों के दो राजाओं सैहून और ऊज से जो यरदन के उस पार थे क्या किया जिन्हें तुम ने सर्व्वथा नाश किया । ११ और ज्योंहीं हम ने सुना त्योंहीं हमारे मन गल गये और किसी में तुम्हारा साम्ना करने का तनिक भी ठहराव न रहा क्योंकि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर ऊपर स्वर्ग में और नीचे पृथिवी में वही ईश्वर है । १२ सो अब मुझ से परमेश्वर की किरिया खाओ कि जैसा मैं ने तुम पर अनुग्रह किया वैसा ही तुम भी मेरे पिता के घराने पर अनुग्रह करियो, और मुझे एक सच्चा चिन्ह दीजिये । १३ कि मेरे पिता और मेरी माता को और मेरे भाइयों और मेरी बहिनों को और सब जो उन का है बचाओ और हमारे प्राणों को मृत्यु से छुड़ाओ ॥

१४ तब उन मनुष्यों ने उसे उत्तर दिया कि मृत्यु के विषय में हमारे प्राण तुम्हारे प्राण के संती यदि तू हमारा यह कार्य्य न उच्चारे और ऐसा होगा कि जब परमेश्वर इस देश को हमें देगा तब हम तेरे साथ अनुग्रह और सच्चाई से व्यवहार करेंगे । १५ तब उस ने उन्हें डोरी से खिड़की में से उतार दिया क्योंकि उस का घर नगर की भीत पर था और वह भीत ही पर रहती थी । १६ और उस ने उन्हें कहा कि पहाड़ पर चढ़ जाओ न हो कि खोजी तुम्हें मिलें सो तुम वहीं तीन दिन लों छिपे रहो जब लों कि खोजी फिर आवें और उस के पीछे तुम अपने मार्ग पर चलो ॥

१७ तब उन मनुष्यों ने उसे कहा कि इस किरिया से जो तू ने हम से लिई है हम निर्दोषी होंगे । १८ देख जब हम इस देश में आवेंगे तब यह लाल सूत की डोरी इस खिड़की से बांधियो जिस्से तू ने हमें नीचे उतार दिया और अपने पिता और अपनी माता और अपने भाइयों को और अपने पिता के सारे घराने को अपने यहां घर में बटोरियो । १९ और ऐसा होगा कि जो कोई तेरे घर के द्वारों से बाहर जावेगा उस का लोहू उस के सिर पर होगा और हम निर्दोष होंगे और जो कोई तेरे साथ घर में होगा यदि किसी का हाथ उस पर पड़े तो उस का लोहू हमारे सिर पर होगा । २० और यदि तू हमारा यह कार्य्य उच्चारे तो हम उस किरियो से जो तू ने हम से लिई अलग होंगे । २१ और वह बोली जैसा तुम ने कहा वैसा ही हो सो उन्हें बिदा किया और वे चले गये तब उस ने वह लाल सूत की डोरी खिड़की पर बांधी ॥

२२ और वे वहां से चलके तीन दिन लों पहाड़ पर रहे जब लों कि खोजी लौट आवे और उन खोजियों ने उन्हें समस्त मार्ग में ढूंढ़ा और न पाया । २३ तब वे दोनों पुरुष फिरे और पहाड़ से

उतरे और पार हुए और नून के बेटे यहूशूअ पास आये और जो जो कुछ उन २४ पर बीता था सब उस्से कहा। और उन्हों ने यहूशूअ से कहा कि निश्चय परमेश्वर ने यह समस्त देश हमारे बश में कर दिया और देश के समस्त बासी भी हमारे कारण गल गये॥

तीसरा पर्ब्ब।

१ तब यहूशूअ बड़े तड़के उठा और सित्तीम से यात्रा किई और वह और समस्त इसराएल के संतान यरदन पार पहुंचे और पार उतरने से आगे वहां रात २ भर रहे। और यों हुआ कि तीन दिन ३ के पीछे अध्यक्ष सेना में होके गये। और लोगों को आज्ञा करके कहा कि जब तुम परमेश्वर अपने ईश्वर की साक्षी की मंजूषा को और लावी याजक को उसे उठाते हुए देखो तब तुम अपने स्थान से यात्रा करो और उस के पीछे पीछे ४ चलो। केवल तुम्हारे और उस के मध्य में दो सहस्र हाथ का अंतर रहे उस के पास मत आओ जिसतें जिस मार्ग से तुम्हें जाना है तुम पहिचानो क्योंकि तुम इस मार्ग से आज कल नहीं गये॥

५ और यहूशूअ ने लोगों से कहा कि अपने को शुद्ध करो क्योंकि कल परमेश्वर तुम्हारे मध्य में आश्चर्य्य दिखा- ६ वेगा। और यहूशूअ याजकों को कहके बोला कि साक्षी की मंजूषा को उठाओ और लोगों के आगे आगे पार उतरो सो उन्हों ने साक्षी की मंजूषा को उठाया और लोगों के आगे आगे चले॥

७ तब परमेश्वर ने यहूशूअ से कहा कि आज के दिन में समस्त इसराएल की दृष्टि में तुझे महान बनाना आरंभ करूंगा जिसतें वे जानें कि जिस रीति से मैं मूसा के साथ था तेरे साथ हूंगा। ८ और तू उन याजकों से जो साक्षी की मंजूषा को उठाते हैं आज्ञा करके कहियो कि जब तुम यरदन के जल के तीर पर पहुंचो तब यरदन में खड़े रहियो॥

९ सो यहूशूअ ने इसराएल के संतानों से कहा कि इधर आओ और परमेश्वर अपने ईश्वर की बातें सुनो। और १० यहूशूअ ने कहा कि इस्से तुम जानोगे कि जीवता सर्ब्बशक्तिमान तुम्हारे मध्य में है और वह कनआनियों और हित्तियों और हवियों और फरिज्जियों और जिरजाशियों और अमूरियों और यबूसियों को तुम्हारे आगे से हांक देगा। देखो ११ समस्त पृथिवी के परमेश्वर की साक्षी की मंजूषा तुम्हारे आगे आगे यरदन के पार जाती है। सो अब तुम अपने १२ लिये बारह जन इसराएल की गोष्ठियों में से हर एक गोष्ठी पीछे एक मनुष्य लेओ। और ऐसा होगा कि ज्योंही १३ याजक के पांव के तलवे जो परमेश्वर समस्त पृथिवी के प्रभु की साक्षी की मंजूषा उठाते हैं यरदन के जल में ठहरें त्योंही यरदन के पानी जो ऊपर से बहते हैं थम जायेंगे और एक ढेर हो रहेंगे॥

और ऐसा हुआ कि जब लोग अपने १४ डेरे से चल निकले कि यरदन पार जावें और याजकों ने लोगों के आगे साक्षी की मंजूषा को उठाया। और ज्यों वे १५ जो मंजूषा को उठाये हुए थे यरदन लों पहुंचे और उन याजकों के पांव जो मंजूषा को उठाये हुए थे तीर के पानी में डूबे क्योंकि लवनी के समय में यरदन अपने समस्त कड़ारों के ऊपर बहती है। तो जल जो ऊपर से आये ठहर १६ गये और एक ढेर होके आदम नगर से बहुत दूर उभड़े जो जरतान के पास है और जो समुद्र के चौगान की ओर बहि आये अर्थात् खारी समुद्र के घट गये

और अलग किये गये और लोग यरीहे ११७ के सम्मुख पार उतर गये। और याजक जो परमेश्वर की बाचा की मंजूषा को लिये हुए थे दृढ़ता से सूखी भूमि पर यरदन नदी के मध्य में खड़े रहे और समस्त इसराएली सूखी भूमि पर पार उतर गये यहां लों कि समस्त लोग निर्धार पार उतर चुके॥

चौथा पर्ब्ब।

१ और यों हुआ कि जब सारे लोग यरदन पार उतर चुके तब परमेश्वर २ यहूशूअ से कहके बोला। कि लोगों में से अपने लिये बारह मनुष्य लेओ हर ३ एक गोष्ठी में से एक मनुष्य। और उन्हें आज्ञा करके कह कि अपने लिये यहां से यरदन के बीचोंबीच में से उस स्थान से जहां याजकों के पांव दृढ़ खड़े रहे बारह पत्थर लेओ और उन्हें अपने साथ पार ले जाओ और उन्हें निवास स्थान में जहां तुम आज रात निवास ४ करोगे धरो। तब यहूशूअ ने बारह मनुष्यों को जिन्हें उस ने इसराएल के संतानों में से सिद्ध किया था बुलाया हर एक गोष्ठी पीछे एक एक मनुष्य। ५ और यहूशूअ ने उन्हें कहा कि अपने ईश्वर परमेश्वर की मंजूषा के आगे पार उतरके यरदन के बीचोंबीच जाओ और हर एक तुम्में से अपने लिये इस-राएल के संतानों की गोष्ठी की गिनती के समान एक पत्थर अपने कांधे पर ६ लेवे। जिसतें यह तुम्हारे मध्य एक चिन्ह होवे जब आगामी काल में तुम्हारे बंश पूछें और कहें कि ये पत्थर तुम्हारे ७ लिये कैसे हैं। तो तुम उन्हें कहियो कि जब यरदन के पानी परमेश्वर की बाचा की मंजूषा के आगे दो भाग हुए जब वह यरदन पार गया तो यरदन के पानी दो भाग हुए सो ये पत्थर स्मरण के लिये इसराएल के संतानों के कारण अन्त लों होंगे॥

८ और इसराएल के संतानों ने जैसी यहूशूअ ने उन्हें आज्ञा किई वैसा ही किया और इसराएल के संतानों की गोष्ठियों की गिनती के समान यरदन के मध्य में से बारह पत्थर उठाये जैसा परमेश्वर ने यहूशूअ से कहा था और उन्हें अपने संग उस स्थान लों जहां वे ९ टिके ले गये। तब यहूशूअ ने यरदन के बीचोंबीच उस स्थान पर जहां याजकों के पांव पड़े जो साक्षी की मंजूषा को उठाये थे बारह पत्थर खड़े किये सो वे आज के दिन लों वहां हैं॥

१० और याजक जो मंजूषा को उठाये हुए थे यरदन के बीचोंबीच खड़े रहे जब लों हर एक बात जो परमेश्वर ने यहूशूअ को आज्ञा किई कि मंडली को कहे उस सब के समान जो मूसा ने यहूशूअ को आज्ञा किई संपूर्ण हो चुकी तब लोग शीघ्रता करके पार उतर गये। ११ और यों हुआ कि जब समस्त लोग पार हो चुके तब लोगों के आगे याजक परमेश्वर की मंजूषा लिये हुए पार गये। १२ तब रूबिन के संतान और जद के संतान और मुनस्सी की आधी गोष्ठी जैसा मूसा ने कहा था इसराएल के संतानों के आगे हथियार बांधे हुए पार १३ उतर गये। चालीस सहस्र एक हथियार बांधे हुए लैस संग्राम के निमित्त पर-मेश्वर के आगे यरीहो के चौगानों में पार उतरे॥

१४ उस दिन परमेश्वर ने समस्त इस-राएल की दृष्टि में यहूशूअ को महिमा दिई और वे उस के जीवन भर उस्से ऐसा डरे जैसा वे मूसा से डरते थे॥

१५ तब परमेश्वर यहूशूअ से यों कहके १६ बोला। कि उन याजकों से जो साक्षी

की मंजूषा को उठाते हैं आज्ञा कर कि
१७ यरदन से बाहर निकल आओ । सो
यहूशूअ ने याजकों को आज्ञा किई कि
१८ यरदन से निकल आओ । और ऐसा
हुआ कि जब वे याजक जो परमेश्वर
की साक्षी की मंजूषा उठाये हुए थे यरदन
के बीच में से बाहर आये और याजकों
के पांव के तलवे सूखी भूमि पर निकल
आये त्योंही यरदन के पानी अपने स्थानों
में फिर आये और आगे के समान अपने
सब कड़ारों पर बहने लगे ॥

१९ और मंडली पहिले मास की दसवीं
तिथि को यरदन से निकली और यरीहो
के पूरब सिवाने में जिलजाल में छावनी
२० किई । और यहूशूअ ने उन बारह
पत्थरों को जो यरदन से उठाये गये थे
२१ जिलजाल में खड़ा किया । और इस-
राएल के संतानों से कहा कि जब
तुम्हारे लड़के आगामी काल में अपने
पितरों से पूछें कि ये पत्थर कैसे हैं ।
२२ तो तुम अपने लड़कों को बतलाके
कहियो कि इसराएली इस यरदन से
२३ सूखी भूमि से पार आये । क्योंकि पर-
मेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने यरदन के पानियों
को तुम्हारे आगे सुखा दिया जब लों
तुम पार हो गये जैसा परमेश्वर तुम्हारे
ईश्वर ने लाल समुद्र को किया था
जिसे उस ने हमारे आगे सुखा दिया
२४ जब लों हम पार उतर गये । जिसतें
समस्त पृथिवी के लोग जानें कि पर-
मेश्वर का हाथ सामर्थी है जिसतें तुम
परमेश्वर अपने ईश्वर से सदा डरा
करो ॥

पांचवां पर्ब्ब ।

१ और ऐसा हुआ कि जब अमूरियों के
सारे राजाओं ने जो यरदन के इस पार
पश्चिम दिशा में थे और कनआनियों
के समस्त राजाओं ने जो समुद्र के तीर
पर थे सुना कि परमेश्वर ने इसराएल के
संतानों के आगे यरदन के पानियों को
सुखा दिया यहां लों कि वे पार उतर
गये तो उन के मन घट गये और इस-
राएल के संतान के कारण उन के जी में
जी न रहा ॥

२ उस समय परमेश्वर ने यहूशूअ से कहा
कि अपने लिये चोखी छुरी बना और
इसराएल के संतानों का खतनः फेर कर ।
३ और यहूशूअ ने अपने लिये चोखी छुरियां
बनाईं और खलड़ियों के टीले पर इस-
राएल के संतानों का खतनः किया ।
४ और यहूशूअ ने जो खतनः किया उस का
कारण यह है कि सारे लोग जो मिस्र
से निकल आये थे अर्थात् समस्त योद्धा
५ पुरुष अरण्य के मार्ग में मर गये । क्योंकि
सब लोग जो बाहर आये खतनः किये गये
पर वे सब लोग जो मिस्र से निकलने के
पीछे अरण्य के मार्ग में उत्पन्न हुए थे
६ उन का खतनः न हुआ था । क्योंकि
इसराएल के संतान चालीस बरस अरण्य
में फिरते रहे यहां लों कि सारे योद्धा जो
मिस्र से बाहर आये नष्ट हुए क्योंकि
उन्हों ने परमेश्वर के शब्द को न माना
जिन से परमेश्वर ने किरिया खाई थी
कि मैं तुम्हें यह देश न दिखलाऊंगा
जिस के कारण मैं ने तुम्हारे पितरों से
किरिया खाके कहा कि मैं तुम्हें वह
देश देऊंगा जिस में दूध और मधु बहता
७ है । और उन के संतानों ने जिन्हें उस
ने उन की संती उठाया यहूशूअ ने उन
का खतनः किया क्योंकि वे अखतनः थे
इस कारण कि उन्हों ने मार्ग में खतनः
८ न करवाया । और ऐसा हुआ कि जब
वे सब लोग खतनः करवा चुके तब वे
छावनी में अपने अपने स्थान में रहे जब
९ लों वे चंगे हुए । तब परमेश्वर ने यहू-
शूअ से कहा कि आज के दिन मैं ने

मिस्र के अपमान को तुम पर से उठा दिया इस लिये वह स्थान आज के दिन लों जिलजाल कहाता है ॥

१० सो इसराएल के संतानों ने जिलजाल में डेरा किया और उन्हों ने यरीहो के चौगान में मास की चौदहवीं तिथि में सांझ को पार जाने का पर्ब्ब रक्खा।

११ और उन्हों ने बिहान को उसी दिन पार जाने के पर्ब्ब के पीछे उस देश के पुराने अन्न के अखमीरी फुलके और भुना

१२ खाया। और जब उन्हों ने उस देश के पुराने अन्न खाये उसी दिन से मन्न बरसना थम गया और इसराएल के संतानों के लिये मन्न न था और उन्हों ने उसी बरस कनआन के देश की बढ़ती खाई ॥

१३ और ऐसा हुआ कि जब यहूशूअ यरीहो के पास था तो उस ने अपनी आंख ऊपर किईं और देखा कि उस के साम्ने एक मनुष्य तलवार हाथ में खैंचे हुए खड़ा है तब यहूशूअ उस पास गया और उसे कहा कि तू हमारी ओर अथवा

१४ हमारे शत्रुन की ओर है। और वह बोला नहीं परन्तु मैं अभी परमेश्वर की सेना का अध्यक्ष होके आया हूं तब यहूशूअ भूमि पर औंधा गिरा और दंडवत किई और उसे कहा कि मेरे प्रभु अपने सेवक को क्या आज्ञा करता है।

१५ तब परमेश्वर की सेना के अध्यक्ष ने यहूशूअ से कहा कि अपने पांव से अपना जूता उतार क्योंकि यह स्थान जहां तू खड़ा है पवित्र है और यहूशूअ ने ऐसा ही किया ॥

छठवां पर्ब्ब।

१ अब इसराएल के संतानों के कारण यरीहो बंद हुआ और बंद किया गया कोई बाहर न जाता था और न कोई

२ भीतर आता था। और परमेश्वर ने यहूशूअ से कहा कि देख मैं ने यरीहो को और उस के राजा और वहां के महाबीरों को तेरे बश में कर दिया।

३ सो समस्त योद्धा नगर को घेर लेओ और एक बार उस के चारों ओर फिरो इस रीति से छः दिन लों कीजियो।

४ और सात याजक मंजूषा के आगे सात नरसिंगे उठावें और तुम सातवें दिन सात बार नगर के चारों ओर फिरो और याजक नरसिंगे फूंकें।

५ और यों होगा कि जब वे देर लों नरसिंगे फूंकेंगे और जब तुम नरसिंगे का शब्द सुनो तो समस्त लोग महा शब्द से ललकारें और नगर की भीत नीचे से गिर जायेगी और लोग ऊपर चढ़ जावें हर एक जन अपने अपने आगे ॥

६ तब नून के बेटे यहूशूअ ने याजकों को बुलाया और उन्हें कहा कि साक्षी की मंजूषा उठाओ और सात याजक सात नरसिंगे परमेश्वर की मंजूषा के आगे लिये हुए चलें ॥

७ तब उस ने लोगों से कहा कि जाओ और नगर को घेरो और जो हथियारबंद हैं सो परमेश्वर की मंजूषा के आगे

८ आगे चलें। और ऐसा हुआ कि जब यहूशूअ ने लोगों से यह कहा तो सात याजक सात नरसिंगे लेके परमेश्वर के आगे आगे चले और उन्हों ने नरसिंगे फूंके और परमेश्वर की साक्षी की मंजूषा उन के पीछे पीछे गई।

९ और हथियारबंद लोग उन याजकों के जो नरसिंगे फूंकते थे आगे आगे चले और जो अन्त की सेना में थे मंजूषा के पीछे पीछे चले और नरसिंगे फूंकते जाते थे।

१० और यहूशूअ ने लोगों को आज्ञा करके कहा कि तुम मत ललकारियो और न अपना शब्द सुनाइयो और तुम्हारे मुंह से कुछ बात न निकले जब लों मैं तुम्हें ललकारने को कहूं तब ललकारियो।

११ सो

परमेश्वर की मंजूषा नगर के चारों ओर एक बार फिर आई और वे छावनी में आये और छावनी में रात भर रहे॥

१२ और बिहान को यहूशूअ उठा और याजकों ने परमेश्वर की मंजूषा को उठा १३ लिया। और सात याजक सात नरसिंगे लेके परमेश्वर की मंजूषा के आगे आगे नरसिंगे फूंकते चले जाते थे और वे जो हथियारबंद थे उन के आगे आगे हो लिये और वे जो पीछे थे परमेश्वर की मंजूषा के पीछे हुए और नरसिंगे फूंकते १४ जाते थे। सो दूसरे दिन भी वे एक बार नगर की चारों ओर फिरके छावनी में फिर आये ऐसा ही उन्हों ने छ: दिन लों किया॥

१५ और सातवें दिन यों हुआ कि वे बिहान पौ फटते भोर को उठे और उसी भांति से नगर की चारों ओर सात बार फिरे केवल उसी दिन वे सात बार नगर १६ की चारों ओर फिरे। सो सातवीं फेरी में ऐसा हुआ कि जब याजकों ने नरसिंगे फूंके तब यहूशूअ ने लोगों से कहा कि ललकारो क्योंकि परमेश्वर ने १७ नगर तुम को दिया है। और नगर और सब जो उस में हैं परमेश्वर के लिये स्रापित होंगे केवल राहब गणिका उन सब समेत जो उस के साथ उस के घर में हैं जीती बचेगी क्योंकि उस ने उन अगुओं को जो हम ने भेजे थे छिपाया। १८ परन्तु तुम जो हो अपने को स्रापित बस्तों से अलग रखियो ऐसा न होवे कि तुम स्रापित बस्तु लेके स्रापित हो जाओ और इसराएल की छावनी को १९ स्रापित करके उसे दु:ख देओ। परन्तु सब चांदी और सोना और लोहे पीतल के पात्र परमेश्वर के लिये पवित्र हैं वे परमेश्वर के भंडार में पहुंचाये जावेंगे॥

२० सो लोगों ने ललकारा और उन्हों ने नरसिंगे फूंके और ऐसा हुआ कि जब लोगों ने नरसिंगे का शब्द सुना और लोगों ने महा शब्द से ललकारा तब भीत नीचे से गिर पड़ी और लोग नगर पर चढ़ गये हर एक मनुष्य अपने अपने आगे और नगर को ले लिया। और २१ उन्हों ने उन सब को जो नगर में थे क्या पुरुष क्या स्त्री क्या युवा क्या बृद्ध क्या बैल क्या भेड़ क्या गदहा एक बार तलवार की धार से मार डाला॥

परन्तु यहूशूअ ने उन दो मनुष्यों को २२ जो उस देश के भेद के लिये गये थे कहा कि गणिका के घर जाओ और वहां से उस स्त्री को और सब जो उस का हो जैसे तुम ने उस्से किरिया खाई थी निकाल लाओ। तब वे दोनों तरुण २३ भेदिये चले गये और राहब को उस के पिता और उस की माता और उस के भाइयों और सब जो उस का था और उस के समस्त घराने समेत निकाल लाये और उन्हें इसराएल की छावनी के बाहर रख छोड़ा॥

और उन्हों ने उस नगर को और २४ सब जो उस में थे आग से फूंक दिया केवल चांदी और सोना और पीतल और लोहे के पात्र परमेश्वर के घर के भंडार में पहुंचाये॥

और यहूशूअ ने राहब गणिका को २५ और उस के पिता के घराने को और सब जो उस का था बचाया और उस का निवास आज लों इसराएल के संतानों में है क्योंकि उस ने उन भेदियों को जिन्हें यहूशूअ ने यरीहो के भेद के लिये भेजा था छिपाया॥

और यहूशूअ ने उस समय किरिया २६ खाई और कहा कि जो मनुष्य उठे और इस नगर यरीहो को फिर बनावे वह परमेश्वर के आगे स्रापित होगा वह

अपने पहिलौठे पर उस की नेव डालेगा और अपने छोटे पर उस के फाटक को खड़ा करेगा॥

२७ सो परमेश्वर यहूशूअ के साथ था और समस्त देश में उस की कीर्त्ति फैली॥

सातवां पर्ब्ब।

परन्तु इसराएल के संतानों ने स्रापित बस्तु के विषय में अपराध किया क्योंकि ज़ारिह का पुत्र ज़बदी का पुत्र करमी के पुत्र अकन ने जो यहूदाह की गोष्ठी का था कुछ स्रापित बस्तु में से लिया और परमेश्वर का कोप इसराएल के संतानों पर भड़का॥

२ तब यहूशूअ ने यरीहो से अई में जो बैतअवन के लग बैतएल की पूरब ओर है लोगों को भेजा और उन्हें कहके बोला कि आओ और देश को देख आओ सो वे लोग चढ़ गये और अई ३ को देख आये। और वे यहूशूअ पास फिर आये और उस्से कहा कि समस्त लोग न चढ़ें केवल दो अथवा तीन सहस्र जन के लगभग चढ़ जायें और अई को मारें सब लोगों को परिश्रम न ४ दीजिये क्योंकि वे थोड़े हैं। सो लोगों में से तीन सहस्र के लगभग वहां चढ़ गये और अई के लोगों के आगे से ५ भागे। और अई के लोगों ने उन में से छत्तीस मनुष्य मार लिये और वे फाटक के आगे से लेके शबरीम लों उन्हें रगेदे आये और उन्हों ने उतार में उन्हें मारा इस कारण लोगों के मन घट गये और पानी की नाईं हो गये॥

६ तब यहूशूअ और इसराएल के प्राचीनों ने अपने अपने कपड़े फाड़े और परमेश्वर की साक्षी की मंजूषा के आगे सांझ लों भूमि पर औंधे पड़े रहे और ७ अपने सिरों पर धूल उड़ाई। और यहूशूअ बोला कि हाय हे प्रभु परमेश्वर तू इन लोगों को किस कारण यरदन पार लाया कि हमें नाश करने के लिये अमूरियों के हाथ में सौंप देवे हाय कि हम सन्तोष करते और यरदन के उसी पार रहते। हे मेरे स्वामी जब इसराएल ८ अपने शत्रुन के आगे पीठ फेरते हैं तब मैं क्या कहूं। क्योंकि कनआनी और ९ देश के समस्त बासी सुनेंगे और हमें घेर लेंगे और हमारा नाम पृथिवी पर से मिटा डालेंगे और तू अपने महत नाम के लिये क्या करेगा॥

तब परमेश्वर ने यहूशूअ से कहा १० कि उठ तू किस लिये औंधा पड़ा है। इसराएल ने पाप किया है और उन्हों ११ ने उस बाचा से जो मैं ने उन से बांधी अपराध किया क्योंकि उन्हों ने स्रापित बस्तु में से भी कुछ लिया और चोरी भी किई और छल भी किया और अपनी सामग्री में भी रख लिया। सो इसराएल १२ के संतान अपने शत्रुन के आगे ठहर न सके उन्हों ने अपने बैरियों के आगे पीठ फेरी क्योंकि वे स्रापित हुए सो अब मैं आगे को तुम्हारे साथ न होऊंगा जब लों तू स्रापित को अपने में से नाश न करे। उठ लोगों को शुद्ध कर और १३ कह कि अपने को कल के लिये शुद्ध करो क्योंकि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि हे इसराएल तेरे मध्य स्रापित बस्तु है तू अपने शत्रुन के साम्ने ठहर नहीं सक्ता जब लों स्रापित बस्तु को अपने में से दूर न करेगा। सो तुम बिहान को अपनी १४ अपनी गोष्ठियों के समान पहुंचाये जाओगे और ऐसा होगा कि जिस गोष्ठी को परमेश्वर पकड़ेगा सो अपने घराने समेत आवे और जिस घराने को परमेश्वर पकड़ेगा वह अपने परिवार समेत आवे और जिस घराने को परमेश्वर पकड़ेगा सो

१५ एक एक जन आवे। और ऐसा होगा कि जो किसी स्रापित बस्तु के साथ पकड़ा जायगा सो अपनी सामग्री समेत आग से जला दिया जायगा इस लिये कि उस ने परमेश्वर की बाचा का अपराध किया और इस कारण कि उस ने इसराएल के संतानों में मूरखता किई॥
१६ तब यहूशूअ बिहान को तड़के उठा और इसराएल को उन की गोष्ठियों के समान लाया और यहूदाह की गोष्ठी
१७ पकड़ी गई। और यहूदाह के घराने को समीप लाया और शारिक का घराना पकड़ा गया और शारिक के घराने के एक एक मनुष्य को आगे लाया और
१८ जबदी पकड़ा गया। और वुह उस के घराने का एक एक जन लाया और शारिक का बेटा जबदी का बेटा करमी का बेटा यहूदाह की गोष्ठी का अकन पकड़ा गया॥
१९ तब यहूशूअ ने अकन से कहा कि हे मेरे बेटे अब परमेश्वर इसराएल के ईश्वर की महिमा कर और उस को मान ले और मुझ से कहियो कि तू ने क्या
२० किया है मुझ से मत छिपा। तब अकन ने यहूशूअ को उत्तर दिया और कहा कि निश्चय मैं ने परमेश्वर इसराएल के ईश्वर का पाप किया है और मैं ने ऐसा
२१ ऐसा किया है। जब मैं ने बाबुलनी सुन्दर बस्त्र और दो सौ शैकल चांदी और पचास शैकल के तौल की सोने की गुल्ली लूट के धन में से देखा तो मैं ने उन का लालच किया और उन्हें ले लिया और देख वे मेरे तंबू के बीच भूमि में
२२ गड़े हैं और चांदी उस के तले। तब यहूशूअ ने दूत भेजे और वे तंबू को दौड़े और देखा कि उस के तंबू में गड़ा था
२३ और चांदी उस के तले। और वे उन्हें तंबू में से निकाल के यहूशूअ और समस्त इसराएल के संतान के आगे लाये और उन्हें परमेश्वर के आगे डाल दिया॥
२४ तब यहूशूअ और उस के संग सारे इसराएल ने शारिक के बेटे अकन को और चांदी और बस्त्र और सोने की गुल्ली और उस के बेटे बेटियां और उस के गोरू और उस के गदहे और उस के भेड़ बकरी और उस के तंबू और सब जो उस का था लिया और उन्हें अकूर की
२५ तराई में लाये। और यहूशूअ ने कहा कि तू ने हमें क्यों दुःख दिया परमेश्वर आज तुझे दुःख देगा तब समस्त इसराएल ने उस पर पत्थरवाह किया और उन्हें आग से जला दिया और उन्हें
२६ पत्थरों से छिपा दिया। और उन्हों ने उस पर पत्थरों का ढेर किया जो आज लों है तब परमेश्वर अपने क्रोध की जलजलाहट से फिर गया इस लिये उस स्थान का नाम आज लों अकूर की तराई है॥

आठवां पर्ब्ब।

१ तब परमेश्वर ने यहूशूअ से कहा कि मत डर और भय मत कर सारे योद्धाओं को अपने साथ ले और उठ अई पर चढ़ जा देख मैं ने अई के राजा और उस के लोग और उस के नगर और उस के देश को तेरे हाथ में कर दिया है।
२ और तू अई से और उस के राजा से वही कीजियो जो तू ने यरीहो से और उस के राजा से किया केवल वहां का धन और उस का ढोर तुम अपने लिये लूट लीजियो नगर के पीछे से घात में बैठियो॥
३ सो यहूशूअ और सारे योद्धा उठे जिसतें अई पर चढ़ें और यहूशूअ ने तीस सहस्र महाबीर चुन लिये और रात
४ को उन्हें भेज दिया। और उन्हें आज्ञा करके कहा कि देखो तुम नगर के पिछवाड़े

घात में बैठियो नगर से बहुत दूर मत जाइयो परन्तु तुम सब लैस हो रहो। ५ और मैं अपने संगी लोगों को लेके नगर की ओर बढूंगा और ऐसा होगा कि जब वे आगे की नाईं हमारा साम्ना करेंगे ६ तब हम उन के आगे से भागेंगे। और वे हमारा पीछा करेंगे यहां लों कि हम उन्हें नगर से खैंच ले आवें क्योंकि वे कहेंगे कि वे आगे की नाईं हमारे आगे से भागते हैं सो हम उन के आगे से ७ भागेंगे। तब तुम घात से उठियो और नगर को ले लीजियो क्योंकि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर उसे तुम्हारे हाथ में सौंप ८ देगा। और यों होगा कि जब तुम नगर को लेओगे तब नगर में आग लगाइयो और परमेश्वर की आज्ञा के समान कीजियो देखो मैं ने तुम्हें आज्ञा किई ९ है। सो यहूशुआ ने उन्हें भेज दिया और वे घात में बैठने गये और बैतएल और अई के मध्य में अई की पश्चिम ओर रहे परन्तु यहूशुआ उसी रात लोगों में रहा॥

१० और यहूशुआ ने बिहान को उठके लोगों को गिना और वह इसराएल के प्राचीन लोगों के आगे होके अई पर ११ चढ़ गया। और समस्त योद्धा जो उस के साथ थे चढ़े और पास आये और नगर के आगे पहुंचे और अई की उत्तर अलंग डेरे किये और उन में और १२ अई में एक नीचाई थी। तब उस ने पांच सहस्र मनुष्य के लगभग लिये और उन्हें बैतएल और अई के मध्य में नगर की पश्चिम अलंग घात में बैठाया। १३ और जब उन्हों ने सारे लोगों को अर्थात् समस्त सेना को जो नगर के उत्तर थी और अपने घात के लोगों को नगर की पश्चिम ओर घात में बैठाया तब यहूशुआ उसी रात उस नीचाई के मध्य में गया। १४ और ऐसा हुआ कि जब अई के राजा ने देखा तब उन्हों ने उतावली किई और तड़के उठे और नगर के मनुष्य राजा और उस के सारे लोग ठहराये हुए समय में चौगान के आगे इसराएल से लड़ाई करने के लिये निकले परन्तु उस ने न समझा कि नगर के पीछे उस के बिरोध में लोग घात में लगे हैं। १५ तब यहूशुआ और सारे इसराएल ने ऐसा किया जैसा कि उन के आगे मारे गये और अरण्य की ओर भागे। १६ और अई के समस्त लोग उन का पीछा करने के लिये एकट्ठे बुलाये गये सो उन्हों ने यहूशुआ का पीछा किया और नगर से १७ खैंचे गये। और अई में अथवा बैतएल में कोई पुरुष न छूटा जिस ने इसराएल का पीछा न किया और उन्हों ने नगर को खुला छोड़ा और इसराएल का पीछा किया॥

१८ तब परमेश्वर ने यहूशुआ से कहा कि अपने हाथ के भाले को अई की ओर बढ़ा क्योंकि मैं उसे तेरे हाथ में कर दूंगा सो यहूशुआ ने अपने हाथ के भाले १९ को उस नगर की ओर बढ़ाया। और उस के हाथ फैलाते ही घातिये अपने स्थान से तत्काल उठे और नगर में पैठ गये और उसे ले लिया और चटक से नगर २० में आग लगाई। और जब अई के लोगों ने अपने पीछे देखा तो क्या देखते हैं कि नगर का धूंआं स्वर्ग लों उठ रहा है और उन्हें इधर उधर भागने की सामर्थ्य न रही और जो अरण्य की ओर भाग गये थे खेदवैयों पर उलटे २१ फिरे। और जब यहूशुआ और सारे इसराएल ने देखा कि घातियों ने नगर ले लिया और नगर से धूंआं उठ रहा है तब वे उलटे फिरे और अई के लोगों २२ को घात किया। और वे नगर में से

उन पर निकल आये और इसराएल के मध्य में पड़ गये कुछ इधर कुछ उधर और उन्हों ने उन्हें ऐसा मारा कि उन में से एक को न छोड़ा न भागने दिया। २३ और उन्हों ने अई के राजा को जीता पकड़ लिया और उसे यहूशूअ पास लाये॥

२४ और यों हुआ कि जब इसराएल खेत में उस अरण्य में जहां उन का पीछा किया अई के सारे निवासियों को मार चुके और जब वे सब खड्ग की धार पर पड़ गये और खप गये तब सारे इसराएली अई को फिरे और उसे खड्ग २५ की धार से मारा। और यों हुआ कि जो उस दिन मारे गये पुरुष और स्त्री बारह सहस्र थे अर्थात् अई के सब २६ लोग। क्योंकि यहूशूअ ने भाले के बढ़ाने से अपने हाथ को न खैंचा जब लों अई के सारे निवासियों को सर्वथा नाश न २७ किया था। परमेश्वर के बचन के समान जो उस ने यहूशूअ को आज्ञा किई थी इसराएल ने उस नगर के केवल ढोर २८ और लूट को आप ही लिया। और यहूशूअ ने अई को जलाके उसे सदा के लिये ढेर कर दिया सो वह आज लों उजाड़ है। और उस ने अई के राजा को फांसी देके सांझ लों पेड़ पर लटका रक्खा और ज्योंहीं सूर्य्य अस्त हुआ यहूशूअ ने आज्ञा किई कि उस की लोथ को पेड़ से उतारें और नगर के फाटक के पैठ में फेंक देवें और उस पर पत्थरों का बड़ा ढेर करें सो आज लों है॥

३० तब यहूशूअ ने ऐबाल के पहाड़ पर परमेश्वर इसराएल के ईश्वर के लिये ३१ एक बेदी बनाई। जैसा परमेश्वर के सेवक मूसा ने इसराएल के संतानों से आज्ञा किई थी जैसा मूसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखा हुआ है कि ढोंकी की एक बेदी जिस में टांकी न लगाई गई हो और उन्हों ने परमेश्वर के लिये उस पर बलिदान की भेंटें और कुशल ३२ के बलि चढ़ाये। और उस ने वहां उन पत्थरों पर उस व्यवस्था को खोदा जो मूसा ने इसराएल के संतानों के आगे ३३ लिखी थी। और समस्त इसराएली और उन के प्राचीन और अध्यक्ष और उन के न्यायी लावी याजकों के आगे जो परमेश्वर की साक्षी की मंजूषा को उठाया करते थे मंजूषा के इधर उधर खड़े हुए और उसी रीति से परदेशी और जो उन में उत्पन्न हुए थे आधे जरिज़ीम के पहाड़ पर और आधे ऐबाल के पहाड़ पर जैसा कि परमेश्वर के सेवक मूसा ने पहिले कहा था कि वे इसराएल के ३४ संतानों को आशीस देवें। और उस ने उस के पीछे व्यवस्था की पुस्तक के समस्त लिखे हुए के समान आशीस और साप की व्यवस्था के समस्त बचन को ३५ पढ़ा। मूसा की समस्त आज्ञा के समान एक बात भी न रही जिसे यहूशूअ ने इसराएल की सारी मंडली और स्त्रियों और बालकों और उन परदेशियों के आगे जो उन के मध्य में चलते थे न पढ़ी॥

नवां पर्ब्ब।

१ और यों हुआ कि जब सारे राजाओं ने जो यरदन के इसी पार पहाड़ में और तराई में और महासागर के समस्त तीरों में जो लुबनान के आगे हैं हित्ती और अमूरी कनआनी फरिज़्ज़ी हवी और यबूसी २ ने सुना। तो वे एक मता होके यहूशूअ और इसराएल के संतान से संग्राम करने के लिये एकट्ठे हुए॥

३ और जो कुछ यहूशूअ ने यरीहो और अई से किया था जब जिबऊन के ४ बासियों ने सुना। तब उन्हों ने कपट से दूत का भेष बनाके पुराने पुराने बोरे

और पुराने और टूटे और जोड़े हुए मदिरा के पखाल अपने गदहों पर लादे। ५ और पुरानी और जोड़ी हुई जूती अपने पांवों में और अपनी देह पर पुराने वस्त्र और उन के भोजन की रोटी सूखी ६ और फफूंदी लगी हुई। और वे यहूशूअ पास जिलजाल की छावनी में गये और उस्से और इसराएल के लोगों से कहा कि हम दूर देश से आये हैं सो अब ७ तुम हम से बाचा बांधो। तब इसराएल के लोगों ने हविर्यो से कहा कि कदाचित तू हम में बास करता है तो हम तुझ से क्योंकर बाचा बांधें। ८ तब उन्हों ने यहूशूअ से कहा कि हम तेरे सेवक हैं और यहूशूअ ने उन से कहा कि तुम कौन और कहां से आये ९ हो। और उन्हों ने उसे कहा कि तेरे सेवक परमेश्वर तेरे ईश्वर के नाम के लिये अति दूर देश से आये हैं क्योंकि हम ने उस की कीर्त्ति सुनी है और १० सब जो उस ने मिस्र में किये। और सब जो उस ने अमोरियों के दो राजाओं से जो यरदन के उस पार अर्थात् हसबून के राजा सैहून और बसन के राजा ऊज से जो अशतरूत में ११ था किये। इस लिये हमारे प्राचीन और हमारे देश के समस्त बासी हम से कहके बोले कि तुम यात्रा का भोजन अपने साथ लेओ और उन से भेंट करो और उन्हें कहो कि हम तुम्हारे सेवक हैं सो १२ अब तुम हम से बाचा बांधो। हम ने जिस दिन तेरे पास आने को अपने घर छोड़े हमारे भोजन के लिये रोटी टटकी थी परन्तु अब देख सूख गई और १३ फफूंदी लग गई। पर जब हम ने इन्हें भरा था तब ये मदिरा के पखाल नये थे और हमारे ये वस्त्र और जूते दूर की यात्रा के कारण से पुराने हो गये। १४ तब उन लोगों ने उन के भोजन के कारण उन्हें ग्रहण किया और परमेश्वर १५ से न बूझा। और यहूशूअ ने उन से मिलाप किया और उन्हें जीते छोड़ने के लिये उन से बाचा बांधी और मंडली के अध्यक्षों ने उन से किरिया खाई॥

१६ और उन से बाचा बांधने के तीन दिन पीछे यों हुआ कि उन्हों ने सुना कि वे हमारे परोसी हैं और हम्में रहते १७ हैं। और इसराएल के संतान यात्रा करके तीसरे दिन उन के नगरों में पहुंचे और उन के नगर जिबऊन और कफीर: और बिअरात और करयतअरीम थे। १८ तब इसराएल के संतानों ने उन्हें न मारा क्योंकि मंडली के अध्यक्षों ने उन से परमेश्वर इसराएल के ईश्वर की किरिया खाई थी सो सारी मंडली अध्यक्षों से कुड़कुड़ाई॥

१९ परन्तु सारे अध्यक्षों ने समस्त मंडली से कहा कि हम ने उन से परमेश्वर इसराएल के ईश्वर की किरिया खाई है सो इस लिये हम उन्हें छू नहीं सक्ते। २० हम उन से यह करके उन्हें जीता छोड़ेंगे ऐसा न हो कि उस किरिया के कारण जो हम ने उन से खाई है हम पर कोप २१ पड़े। और अध्यक्षों ने उन्हें कहा कि उन्हें जीता छोड़ो परन्तु वे सारी मंडली के लिये लकड़हारे और पनिहारे होवें जैसा कि अध्यक्षों ने उन से प्रण किया था॥

२२ तब यहूशूअ ने उन्हें बुलाया और उन से कहा कि तुम ने हम से यह कहके क्यों छल किया कि हम तुम से अति दूर हैं जब कि तुम हम्में रहते हो। २३ सो इस लिये तुम स्रापित हुए और तुम्में से कोई बंधुआई से छुट्टी न पावेगा जो मेरे ईश्वर के घर के लिये लकड़हारा २४ और पनिहारा न हो। और उन्हों ने यहूशूअ को उत्तर दिया और कहा कि

तेरे सेवकों से निश्चय कहा गया था कि जिस रीति से परमेश्वर तेरे ईश्वर ने अपने दास मूसा को आज्ञा किई कि मैं सारा देश तुम्हें देऊंगा और उस देश के सारे बासियों को तुम्हारे आगे नाश करूंगा इस लिये हम ने तुम्हारे कारण अपने प्राणों के डर के लिये यह काम किया। २५ और अब देख हम तेरे बश में हैं जो कुछ तुझे हमारे लिये भला और ठीक जान पड़े सो कर। २६ और उस ने उन से वैसा ही किया और इसराएल के संतान के हाथ से उन्हें बचाया कि उन्हें मार न डालें। २७ और यहूशूअ ने उन्हें उसी दिन मंडली के लिये और परमेश्वर की बेदी के लिये उस स्थान में जिसे वह चुनेगा लकड़हारे और पनिहारे ठहराये॥

दसवां पर्ब्ब।

१ और जब यरूसलम के राजा अदूनीसिदक ने सुना कि यहूशूअ ने अई को ले लिया और उसे सर्वथा नाश किया जैसा उस ने यरीहो और उस के राजा से किया था वैसा ही उस ने अई और उस के राजा से किया और कि जिबऊन के बासियों ने इसराएल से मिलाप किया और उन में रहे। २ तब वे निपट डर गये क्योंकि जिबऊन एक बड़ा नगर था और राजनगरों के समान था और इस कारण कि वह अई से भी बड़ा था और वहां के लोग बली थे। ३ तब यरूसलम के राजा अदूनीसिदक ने हबरून के राजा हूहाम और यरमूत के राजा पिराम और लकीस के राजा यफीअ और इगलून के राजा दबीर के पास कहला भेजा। ४ कि मुझ पास चढ़ आओ और मेरी सहायता करो जिसतें हम जिबऊन को मारें क्योंकि उस ने यहूशूअ और इसराएल के संतानों से मिलाप किया। सो अमूरियों के पांच राजा अर्थात् यरूसलम का राजा हबरून का राजा यरमूत का राजा लकीस का राजा इगलून का राजा वे एकट्ठे होके और उन की समस्त सेना जिबऊन के आगे डेरे खड़े किये और उस्से लड़ाई किई॥

६ तब जिबऊन के लोगों ने यहूशूअ के पास जो जिलजाल में डेरा किये था कहला भेजा कि अपने सेवकों से अपना हाथ मत खैंच हम पास शीघ्र आइये और हमें बचाइये और हमारी सहायता कीजिये क्योंकि अमूरियों के सारे राजा जो पहाड़ में रहते हैं हमारे बिरोध में एकट्ठे हुए हैं। ७ तब यहूशूअ सारे योद्धाओं को और समस्त महाबीरों को साथ लेके जिलजाल से चढ़ गया। ८ और परमेश्वर ने यहूशूअ से कहा कि उन से मत डर क्योंकि मैं ने उन्हें तेरे बश में कर दिया उन में से एक जन भी तेरे साम्हे ठहर न सकेगा। ९ तब यहूशूअ जिलजाल से उठके रात भर चला गया और अचानक उन पर आ पहुंचा। १० और परमेश्वर ने इसराएल के आगे उन्हें ध्वस्त किया और जिबऊन में बड़ी मार से उन्हें मारा और बैतहौरान को जाते हुए मार्ग में उन्हें रगेदा और अजीक: और मुकैद: लों उन्हें मारा। ११ और ऐसा हुआ कि जब वे इसराएल के साम्हे से भाग निकले और बैतहौरान के उतार की ओर गये तब परमेश्वर ने अजीक: लों स्वर्ग से उन पर बड़े बड़े पत्थर बरसाये और वे मूये वे जो ओले से मारे गये थे उन से अधिक थे जिन्हें इसराएल के संतानों ने तलवार से मारा॥

१२ अब परमेश्वर ने अमूरियों को इसराएल के संतान के बश में कर दिया तब यहूशूअ ने उसी दिन परमेश्वर के लिये इसराएल के आगे यों कहा कि

हे सूर्य्य जिबऊन पर और हे चंद्रमा तू
१३ ऐयलून की तराई में ठहर जा। तब
सूर्य ठहर गया और चंद्रमा स्थिर हुआ
जब लों उन लोगों ने अपने शत्रुन से
पलटा लिया क्या यशर की पुस्तक में
नहीं लिखा है सो सूर्य्य स्वर्ग के मध्य
में ठहर रहा और दिन भर अस्त होने
१४ में शीघ्र न किया। और उस्से आगे
पीछे ऐसा दिन कभी न हुआ कि परमे-
श्वर ने एक पुरुष के शब्द को माना
क्योंकि परमेश्वर ने इसराएल के लिये
१५ युद्ध किया। तब यहूशूअ समस्त इसरा-
एल के संग जिलजाल की छावनी को
फिर गया॥

१६ परन्तु वे पांचों राजा भागे और
१७ मुकैद: की कंदला में जा छिपे। और
यहूशूअ को संदेश पहुंचा कि पांचों
राजा मुकैद: की कंदला में छिपे हुए
१८ पाये गये। तब यहूशूअ ने कहा कि
बड़े बड़े पत्थर उस कंदला के मुंह पर
ढुलकाओ और उस पर चौकी बैठाओ।
१९ और तुम मत ठहरो परन्तु अपने शत्रुन
का पीछा करो और उन के पछरे हुओं
को मार डालो उन के नगरों में उन्हें
पैठने मत देओ क्योंकि परमेश्वर तुम्हारे
ईश्वर ने उन्हें तुम्हारे हाथ में कर दिया
२० है। और ऐसा हुआ कि जब यहूशूअ
और इसराएल के संतान उन्हें नाश कर
चुके और बड़ी मार से उन्हें घात किया
यहां लों कि वे नष्ट हुए और उन में के
उबरे हुए बाड़े के नगरों में पैठ गये।
२१ और सारे लोग मुकैद: की छावनी में
यहूशूअ पास कुशल से फिर आये और
इसराएल के संतानों के बिरोध में किसी
ने मुंह न खोला॥

२२ तब यहूशूअ ने कहा कि कंदला के
मुंह को खोलो और उन पांचों राजाओं
को कंदला से मुझ पास बाहर लाओ।
२३ और उन्हों ने ऐसा ही किया और उन
पांचों राजाओं को अर्थात् यरूसलम के
राजा को हबरून के राजा को यरमूत
के राजा को लकीस के राजा को इज-
लून के राजा को कंदला से उस पास
२४ निकाल लाये। और यों हुआ कि जब
वे उन राजाओं को यहूशूअ के आगे
लाये तब यहूशूअ ने इसराएल के सारे
मनुष्यों को बुलाया और अपने साथ
के योद्धा के प्रधानों से कहा कि
आगे आओ इन राजाओं के गलों पर
अपने पांव रक्खो तब वे पास आये
और उन के गलों पर अपने पांव रक्खे।
२५ तब यहूशूअ ने उन्हें कहा कि डरो मत
और बिस्मित मत होओ प्रसन्न होके
हियाव करो क्योंकि परमेश्वर तुम्हारे
समस्त शत्रुन से जिन से तुम लड़ते हो
२६ ऐसा ही करेगा। और उस के पीछे
यहूशूअ ने उन्हें मारा और उन्हें घात
किया और उन्हें पांच पेड़ों पर लटका
दिया और वे सांझ लों उन पेड़ों
२७ पर लटके रहे। और सूर्य्य अस्त होने
पर यों हुआ कि उन्हों ने यहूशूअ की
आज्ञा से उन्हें पेड़ों पर से उतारा और
उसी कंदला में जिस में वे जा छिपे थे
डाल दिया और उस कंदला के मुंह पर
बड़े बड़े पत्थर ढुलकाये सो आज के
दिन लों है॥

२८ और उसी दिन यहूशूअ ने मुकैद: को
ले लिया और उसे और उस के राजा को
और उस में के सारे प्राणियों को तलवार
की धार से नाश किया किसी को न
छोड़ा और उस ने मुकैद: के राजा से
वही किया जो उस ने यरीहो के राजा
से किया था॥

२९ तब यहूशूअ सारे इसराएल सहित
मुकैद: से लिबन: को गया और लिबन:
३० से लड़ा। और परमेश्वर ने उसे भी उस

के राजा समेत इसराएल के हाथ में कर दिया और उस ने उसे और उस में के समस्त प्राणियों को तलवार की धार से नाश किया उस ने उस में एक भी न छोड़ा परन्तु वहां के राजा से उस ने वही किया जो यरीहो के राजा से किया था॥

३१ और लिबन: से यहूशूअ सारे इसराएल समेत लकीस को गया और उस के आगे छावनी किई और उस्से लड़ा।

३२ और परमेश्वर ने लकीस को इसराएल के हाथ में कर दिया और उस ने दूसरे दिन उसे ले लिया और उसे और उस में के सारे प्राणियों को तलवार की धार से नाश किया उस सब के समान जो उस ने लिबन: से किया था॥

३३ तब जजर का राजा होराम लकीस की सहायता को चढ़ आया पर यहूशूअ ने उसे और उस के लोगों को यहां लों मारा कि एक भी न बचा॥

३४ और यहूशूअ लकीस से सारे इसराएल समेत इजलून को गया और उस के साम्ने

३५ छावनी किई और उस्से लड़ा। और उसी दिन उसे ले लिया और उसे तलवार की धार से मारा और उस में के समस्त प्राणियों का सर्व्वथा नाश किया उस सब के समान जो उस ने लकीस से किया था॥

३६ फिर इजलून से यहूशूअ सारे इसराएल समेत हबरून को गया और उस्से

३७ लड़ा। और उसे लिया और उसे और उस के राजा को और उस के समस्त नगरों को और उस में के समस्त प्राणियों को तलवार की धार से मार डाला उस सब के समान जो उस ने इजलून से किया था उस में एक को भी न छोड़ा परन्तु उसे और उस में के सारे प्राणियों का सर्व्वथा नाश किया॥

३८ तब यहूशूअ सारे इसराएल सहित वहां से दबीर को फिरा और उस्से लड़ा।

३९ और उसे और उस के राजा और उस के सारे नगरों को ले लिया और उन्हें तलवार की धार से मार डाला और उस में के समस्त प्राणियों का सर्व्वथा नाश किया उस ने एक को भी न छोड़ा जैसा उस ने हबरून से किया था वैसा दबीर से और उस के राजा से किया और जैसा लिबन: से और उस के राजा से किया था॥

४० सो यहूशूअ ने पहाड़ों के और दक्खिन को और तराई के और नालों के देशों को और उन के समस्त राजाओं को मारा उस ने एक को न छोड़ा परन्तु समस्त श्वासियों का सर्व्वथा नाश किया जैसा कि परमेश्वर इसराएल के ईश्वर ने आज्ञा किई थी।

४१ और यहूशूअ ने कादिसबरनीअ से लेके अज्ज: लों और जशन के सारे देश को जिबऊन लों उन्हें

४२ मार डाला। और यहूशूअ ने उन सब राजाओं को और उन के देश को एक ही समय में ले लिया क्योंकि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर इसराएल के लिये

४३ लड़ा। तब यहूशूअ सारे इसराएल सहित जिलजाल को छावनी को फिर आया॥

ग्यारहवां पर्व्व।

१ और यों हुआ कि जब हासूर के राजा यबीन ने सुना तो उस ने मदून के राजा यूबाब और शमरून के राजा और

२ इकशाफ के राजा को। और उन राजाओं को जो पहाड़ में उत्तर दिशा को और किन्नारात की दक्खिन दिशा के चौगान को और तराई में और दोर की ऊंचाइयों

३ में पश्चिम में। और पूरब पश्चिम में कनआनियों को और अमूरियों और हित्तियों और फरिज्जियों और यबूसियों को पर्व्वत में और हविवियों को जो हरमून

के नीचे मिसफ: में थे कहला भेजा। ४ तब वे अपनी सब सेना समेत बहुत लोग समुद्र के तीर की बालू के समान मंडली में घोड़े और बहुत से रथों के ५ साथ बाहर निकले। और जब ये राजा ठहराके एकट्ठे निकले तब उन्हों ने मेरोम के पानियों पर एकट्ठे छावनी किई जिसतें इसराएल से लड़ें॥

६ तब परमेश्वर ने यहूशूअ से कहा कि उन से मत डर क्योंकि कल इसी समय उन सभों को इसराएल के आगे मारके डाल देता हूं तू उन के घोड़ों के पट्ठों की नस काटना और उन के रथों को ७ आग से जला देना। सो यहूशूअ और सारे लड़ाके लोग उस के संग मेरोम के पानियों पास अचानक उन पर आ गिरे। ८ और परमेश्वर ने उन्हें इसराएल के हाथ में सौंप दिया और उन्हों ने उन्हें मारा और बड़े सैदा और मिसरेफोटमाईम और पूरब में मिसफ: की तराई लों उन्हें रगेदा और उन्हें यहां लों मारा कि एक ९ भी न बचा। और यहूशूअ ने परमेश्वर की आज्ञा के समान उन के घोड़ों के पट्ठों की नस काटी और उन के रथ आग से जला दिये॥

१० फिर यहूशूअ उसी समय फिरा और हासूर को ले लिया और उस के राजा को तलवार से मारा क्योंकि अगले समय ११ में हासूर समस्त राज्यों से श्रेष्ठ था। और उन्हों ने समस्त प्राणियों को जो वहां थे तलवार की धार से मारके सर्व्वथा नाश किया वहां एक भी श्वासधारी न बचा और उस ने हासूर को आग से १२ जला दिया। और यहूशूअ ने उन राजाओं के सारे नगरों को और उन नगरों के सारे राजाओं को लिया और उन्हें तलवार की धार से मारके सर्व्वथा नाश किया जैसी कि परमेश्वर के सेवक मूसा ने आज्ञा किई थी। परन्तु हासूर को १३ छोड़ जिसे यहूशूअ ने जलाया उन समस्त नगरों को जो अपने टीलों पर थे इसराएल ने उन्हें न जलाया। और इन १४ नगरों की सारी लूट और ढोर को इसराएल के संतान ने अपने लिये लूट लिया परन्तु हर एक जन को तलवार की धार से मार डाला यहां लों कि उन्हें नाश कर दिया कि एक को भी श्वास लेने को न छोड़ा। जैसी कि परमेश्वर ने १५ अपने दास मूसा को आज्ञा किई थी वैसी ही मूसा ने यहूशूअ को आज्ञा किई और यहूशूअ ने वैसा ही किया उस ने उन समस्त बस्तुन में जो परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी एक को भी बिन करे अधूरा न छोड़ा॥

सो यहूशूअ ने उस सारे देश और १६ पर्वत को और दक्षिण के समस्त देश और जशन की समस्त भूमि और तराई और चौगान और इसराएल के पहाड़ और उस की तराई को लिया। चिकने १७ पहाड़ से जो शईर की ओर चढ़ता है और बआलगाद लों जो लुबनान की तराई में हरमून पहाड़ के नीचे है ले लिया और उस ने उन के सारे राजाओं को लिया और उन्हें मारा और नाश किया। यहूशूअ इन समस्त राजाओं से १८ बहुत दिन लों लड़ा किया॥

हवियों को छोड़ जो जिबऊन के १९ बासी थे कोई नगर न था जिस ने इसराएल के संतान से मिलाप किया हो सब को उन्हों ने लड़ाई में लिया। क्योंकि यह परमेश्वर की ओर से था २० कि उन के मन को कठोर करे जिसतें वे इसराएल के संतान से लड़ें जिसतें वह उन्हें सर्व्वथा नाश करे और जिसतें उन पर दया न होवे परन्तु जिसतें वह

उन्हें नाश करे जैसी कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी ॥

२१ और उसी समय यहूशूअ ने अनाकियों को पहाड़ों से नाश किया हबरून से दबीर से अनाब से और यहूदाह के सारे पहाड़ों से और इसराएल के सारे पहाड़ों से यहूशूअ ने उन्हें उन के २२ नगरों सहित सर्वथा नाश किया। अनाकियों में से इसराएल के संतानों के देश में कोई न बचा परन्तु केवल अज्जः जात और अशदूद में कुछ बचे थे ॥

२३ सो यहूशूअ ने उस समस्त देश को लिया उस सब के समान जो कि परमेश्वर ने मूसा को कहा था और यहूशूअ ने उसे इसराएल को उन के भागों के और उन की गोष्ठियों के समान अधिकार में दिया और देश ने युद्ध से चैन पाया ॥

बारहवां पर्ब्ब ।

१ और उस देश के राजा जिन्हें इसराएल के संतानों ने मार डाला और उन का देश यरदन के उस पार उदय की ओर अरनून की नदी से लेके हर्मून पहाड़ लों और पूरब दिशा के सारे २ चौगान अधिकार में लिया ये हैं। सैहून अमूरियों का राजा जो हसबून में रहता था अरआयर से लेके जो अरनून की नदी के तीर पर है और नदी के मध्य से और आधे जिलिआद से यब्बूक की नदी लों जो अम्मून के संतान का सिवाना ३ है। और चौगान से पूरब ओर किन्नरूत के सागर लों और चौगान के सागर लों अर्थात् पूरब के खारी सागर लों उस मार्ग से जो बैतयशीमूत को जाता है और दक्खिन से जो पिसगः के नालों के ४ तले है प्रभुता करता था। और बसन के राजा ऊज के सिवाने जो दानव के बचे हुए में थे जो इसतारात और अद्रिअई में रहता था। और हर्मून ५ पहाड़ में और सलकः में और सारे बसन में जसूरियों और मअकातियों के सिवाने लों और आधा जिलिआद जो हसबून के राजा सैहून का सिवाना था राज्य किया। उन को परमेश्वर के सेवक मूसा और इसराएल के संतानों ने मारा और परमेश्वर के सेवक मूसा ने रूबिनियों और जद्दियों और मुनस्सी की आधी गोष्ठी को उसे अधिकार में दिया ॥

और उस देश के राजा ये हैं जिन्हें यहूशूअ और इसराएल के संतानों ने यरदन के इस पार पश्चिम दिशा में बअलजद से लेके लुबनान की तराई में और चिकने पहाड़ लों जो शईर को जाता है और यहूशूअ ने उसे इसराएल की गोष्ठियों को उन के भागों के समान बांटा। हित्ती अमूरी और ८ कनआनी फरिज्जी हवी और यबूसी जो पहाड़ में और तराई में और चौगान में और नालों में और अरण्य में और देश में रहते थे। यरीहो का राजा एक अई ९ का राजा जो बैतएल के लग है एक। यरूसलम का राजा एक हबरून का १० राजा एक। यरमूत का राजा एक ११ लकीस का राजा एक। इजलून का १२ राजा एक जजर का राजा एक। दबीर १३ का राजा एक जद्र का राजा एक। हुरमः १४ का राजा एक अराद का राजा एक। लिबनः का राजा एक अदूलाम का १५ राजा एक। मुकैदः का राजा एक १६ बैतएल का राजा एक। तफ़कुह का १७ राजा एक हिफ़र का राजा एक। अफ़ीक १८ का राजा एक लशारून का राजा एक। मदून का राजा एक हासूर का राजा १९ एक। शमरूनमीरून का राजा एक २० अकशाफ का राजा एक। तअनाक का २१ राजा एक मजिद्दो का राजा एक।

२२ कादिश का राजा एक यकनियम करमिल २३ का राजा एक। दोर का राजा दोर की ऊंचाई में एक जातिगणों का राजा २४ जिलजाल में का एक। तिरज: का राजा एक ये सब एकतीस राजा थे ॥

तेरहवां पर्ब्ब।

१ अब यहूशूअ वृद्ह होके पुरनिया हुआ और परमेश्वर ने उसे कहा कि तू बूढ़ा और पुरनिया हुआ और अब लों बहुत सी भूमि अधिकार के लिये धरी २ है। वह देश अब लों धरा है फिलिस्तियों का समस्त विभाग और समस्त जसूरी। ३ सैहूर से जो मिस्र के आगे है अकरून के सिवाने लों उत्तर दिशा को कनआनियों में गिना जाता है जो फिलिस्तियों के पांच अध्यक्ष हैं गज्जाथी और अशदूदी अशकलूनी गित्ती और अकरूनी और ४ ऐवीम। दक्षिण दिशा से कनआनियों के सारे देश और कंदला जो सैदियों के लग है अमूरियों के सिवाने अफीक ५ लों। और जिबली का देश और सारा लुबनान उदय की ओर बअलजद से जो हरमून के पहाड़ के नीचे है हमात की ६ पैठ लों। पहाड़ी देश के समस्त बासी लुबनान से लेके मिसरेफोटमाईम लों और सारे सैदी मैं उन्हें इसराएल के संतान के सामने से दूर करूंगा केवल तू चिट्ठी डालके उसे इसराएलियों को अधिकार के लिये बांट दे जैसा मैं ने तुझे आज्ञा किई है॥

७ सो अब इस देश को नव गोष्ठियों को और मुनस्सी की आधी गोष्ठी को ८ अधिकार के लिये बांट दे। उस के साथ रूबिनी और जद्दी अपना अधिकार पाये हैं जो मूसा ने यरदन के पार उन्हें दिया पूरब दिशा को जैसा कि परमेश्वर के सेवक मूसा ने उन्हें दिया। अरूआयर से जो अरनून के तीर पर है और उस नगर से जो नदी के बीचोंबीच है और मेदिबा के चौगान से लेके दैबून लों। १० और अमूरियों के राजा सैहून के सारे नगर जो हसबून में राज्य करता था अम्मून के संतान के सिवाने लों। ११ और जिलिअद और जशूरी का सिवाना और मअकाती और हरमून का सारा पर्ब्बत और सारा बसन सलक: लों। १२ बसन में ऊज का सारा राज्य जो असतारात और आद्रिअई में राज्य करता था जो दानव के उबरे हुए से बच रहा था सो मूसा ने उन्हें मारा और उन्हें बाहर किया। १३ तथापि इसराएल के संतानों ने जशूरी और मअकातियों को दूर न किया परन्तु जशूरी और मअकाती आज लों इसराएलियों में बसते हैं। १४ केवल लावी की गोष्ठी को अधिकार न दिया इसराएल के ईश्वर परमेश्वर के होम के बलिदान उस के कहने के समान उन का अधिकार है॥

१५ और मूसा ने रूबिन के संतान की गोष्ठी को उन के घरानों के समान अधिकार दिया। १६ और अरूआयर से जो अरनून की नदी के तीर पर है उन का सिवाना था और वह नगर जो नदी के मध्य में है और सारा चौगान जो मेदिबः के लग है। १७ हसबून और उस के सारे नगर जो चौगान में हैं दैबून और बामोतबअल और बैतबअलमऊन। १८ और यहासा और कदीमोत और मेफाअत। १९ और करियतैम और सिबमा और जिरतसहर जो तराई के पहाड़ में हैं। २० और बैतफगूर और पिसग: के नाले और बैतुलयसीमोत। २१ और चौगान के सारे नगर और अमूरियों के राजा सैहून का सारा राज्य जो हसबून में राज्य करता था जिसे मूसा ने मिदयान के प्रधानों अवी और रकम और सूर और

हूर और रबअ जो सैहून के अध्यक्ष उस २२ देश में बसते थे मार डाला। और बऊर का बेटा बलआम जो गणक था जिसे इसराएल के संतान ने उन के जूझे हुओं के साथ अपनी तलवार से मारा।
२३ और रूबिन के संतान का सिवाना यरदन और उस का सिवाना हुआ ये और उन के गांव रूबिन के संतान के घरानों के समान अधिकार में पड़े॥
२४ और मूसा ने जद की गोष्ठी को उन
२५ के घरानों के समान भाग दिया। और उन का सिवाना यअजीर और जिलिअद के सारे नगर और अम्मून के संतान का आधा देश अरूआयर लों जो रब्बः
२६ के आगे है। और हसबून से रामात-मिसफः और बतूनीम लों और महनैन
२७ से लेके दबीर के सिवाने लों। और बैतुलराम की तराई में और बैतनिमरः और सकूत और साफून जो हसबून के राजा सैहून के राज्य में से बच रहा था यरदन और उस के सिवाने किनारत के समुद्र के तीर लों यरदन के उस पार
२८ पूरब ओर। ये नगर और उन के गांव जद के संतान के अधिकार उन के घरानों के समान हुए॥
२९ और मूसा ने मुनस्सी के संतान की आधी गोष्ठी को भी भाग दिया सो मुनस्सी के संतान की आधी गोष्ठी का भाग उन के घरानों के समान यह था।
३० और उन के सिवाने महानाईम से सारा बाशान बसन के राजा ऊज का सारा राज्य और यायर के सारे नगर बसन में
३१ हैं साठ नगर। और आधा जिलिअद और अशतरूत और अद्री बसन के राजा ऊज के नगर मुनस्सी के बेटे माकीर के संतान को अर्थात् माकीर के आधे संतान उन के घरानों के समान।
३२ इन्हें मूसा ने मोअब के चौगान में यरदन के उस पार यरीहो की लों पूरब की ओर अधिकार के लिये दिया। परन्तु ३३ मूसा ने लावी के संतान को अधिकार न दिया परमेश्वर इसराएल का ईश्वर वही उन का अधिकार था जैसा उस ने उन्हें कहा॥

चौदहवीं पर्व्व।

१ और इन्हें कनआन के देश में इसराएल के संतानों ने अपने अधिकार में लिया जिन्हें इलिअजर याजक और नून के बेटे यहूशूअ और इसराएल के संतानों की गोष्ठियों के पितरों के प्रधानों ने
२ उन्हें अधिकार में बांट दिया। जैसा परमेश्वर ने साढ़े नव गोष्ठी के विषय में मूसा के हाथ आज्ञा किई उन का
३ अधिकार चिट्ठी से हुआ। क्योंकि मूसा ने यरदन के उस पार अढ़ाई गोष्ठी को अधिकार दिया था पर लावियों को उन
४ में कुछ अधिकार न दिया। क्योंकि यूसुफ के संतान दो गोष्ठी थे मुनस्सी और इफराइम सो उन्हों ने लावियों को देश में कुछ भाग न दिया केवल कई एक नगर उन के रहने के लिये और उन के आसपास की बस्तियां उन के ढोर
५ और संपत्ति के लिये। जैसी परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई इसराएल के संतानों ने वैसा ही किया और उन्हों ने देश का भाग किया॥
६ तब यहूदाह के संतान जिलजाल में यहूशूअ पास आये और कनज़ी यफुन्ने के बेटे कालिब ने उसे कहा कि उस बात को जो ईश्वर ने अपने जन मूसा को मेरे और तेरे विषय में कादिसबरनीअ
७ में कही तू जानता है। जिस समय ईश्वर के दास मूसा ने कादिसबरनीअ से मुझे भेजा कि देश का भेद लेओ उस समय मैं चालीस बरस का था और मैं ने उसे अपने मन के समान संदेश

८ पहुंचाया। तथापि मेरे भाइयों ने जो मेरे
साथ चढ़ गये थे मंडली के मन को पिघला
दिया परन्तु मैं ने परमेश्वर अपने ईश्वर
९ का परिपूर्णता से पीछा किया। और
मूसा ने उसी दिन किरिया खाके कहा
कि निश्चय वह देश जिस पर तेरे चरण
पड़े थे तेरा और तेरे बेटों का सदा का
अधिकार होगा क्योंकि तू ने परमेश्वर
मेरे ईश्वर का परिपूर्णता से पीछा
१० किया। और अब देख परमेश्वर ने मुझे
अपने कहने के समान आज के दिन
लों जीता रक्खा और उस समय से लेके
जो परमेश्वर ने यह बात मूसा से कही
जब कि इसराएल अरण्य में फिरा किये
इस समय लों पैंतालीस बरस बीत गये
और अब आज के दिन मैं पचासी बरस
११ का वृद्ध हूं अब लों मैं ऐसा बली हूं
जैसा उस दिन था जब मूसा ने मुझे
भेजा जैसा लड़ाई के लिये और बाहर
भीतर आने जाने के लिये मेरा बल तब
१२ था वैसा ही अब भी है। सो अब यह
पहाड़ जिस के विषय में परमेश्वर ने
उस दिन कहा मुझे दीजिये क्योंकि
तू ने उस दिन सुना था कि अनाकीम
वहां हैं और नगर बड़े और बाड़ित हैं
सो यदि ऐसा हो कि परमेश्वर मेरे साथ
होवे तब मैं परमेश्वर के कहे के समान
उन्हें निकाल देऊंगा॥

१३ तब यहूसूअ ने उसे आशीष दिई
और यफुन्ने के बेटे कालिब को हबरून
१४ अधिकार में दिया। सो हबरून कनजी
यफुन्ने के बेटे कालिब का आज लों
अधिकार हुआ इस लिये कि उस ने
परमेश्वर इसराएल के ईश्वर का पीछा
१५ परिपूर्णता से किया। और अगले समय
में हबरून का नाम करयतअरबअ और
जो अरबअ अनाकियों में महाजन था
और देश ने लड़ाई से चैन पाया॥

पंदरहवां पर्ब्ब।

१ और यहूदाह के संतान की गोष्ठी
को चिट्ठी उन के घरानों के समान यह
थी सीन के बन से दक्षिण दिशा दक्षिण
के अत्यंत तीर अदूम के सिवाने लों
दक्षिण॥

२ और उन का दक्षिणी सिवाना खारी
सागर से अर्थात् उस कोल से जो दक्षिण
३ की ओर जाता है। और वह दक्षिण
की अलंग अक्राबिम की ऊंचाई से
निकलके सीन लों गया और दक्षिण की
ओर से कादिसबरनीअ लों चढ़ गया
और हसरून को पहुंचा और अद्दार लों
४ चढ़ गया और करकाअ को फिरा। और
अजमून को पहुंचा और निकलके मिस्र
की नदी लों गया और उस के तीर के
निकास समुद्र को गये यही तुम्हारा
दक्षिण सिवाना होगा॥

५ और उस का पूरब सिवाना खारी
समुद्र से यरदन के अंत लों॥

और उस का उत्तर का सिवाना
समुद्र के कोल से जो यरदन का अंत है।
६ और यह सिवाना बैतहजल: को चढ़
गया और बैतुलअरब: के उत्तर को अलंग
चला गया और रूबिन के बेटे बुहन के
७ पत्थर लों सिवाना चढ़ गया। फिर
अकूर की तराई से दबीर की ओर चढ़
गया और यों उत्तर को जिलजाल की
ओर गया जो अदूमीम की चढ़ाई के
साम्ने है जो नदी के दक्षिण अलंग है
और वह सिवाना ऐनशम्स के पानियों
की ओर गया और उस के निकास
८ ऐनराजिल में थे। और यबूसी जो
यरूसलम है उस की उत्तर अलंग हिन्नूम
के बेटे की तराई के पास सिवाना चढ़
गया और उस पहाड़ की चोटी लों जो
पश्चिम दिशा हिन्नूम की तराई के आगे
है जो उत्तर दिशा में दानव की तराई

९ के अंत में है। और सिवाना पहाड़ की चोटी से नफ़तूह के सोते के पास और इफ़रून पहाड़ के नगरों के पास जा निकला और वहां से सिवाना बअलः को जो करयतअरीम है खिंच गया। १० और बअलः को पश्चिम दिशा से घूमके सिवाना शईर पहाड़ को और वहां से जियारीम पहाड़ को अलंग गया जो कसलून है उत्तर अलंग की ओर बैतशम्स को उतर गया और तिमनः को निकल ११ गया। और सिवाना अक़रून की उत्तर दिशा के पास से जा निकला और सिवाना शिक्रून को खिंच गया और बअलः पहाड़ को गया और यबनिएल को निकला और सिवाने के निकास समुद्र को थे॥

१२ और उस का पश्चिम सिवाना महा सागर और उस के तीर लों था यहूदाह के संतान के घराने का सिवाना उन के घरानों के समान यह है॥

१३ और उस ने यफ़ुन्ने के बेटे कालिब को यहूदाह के संतानों में जैसा कि परमेश्वर ने यहूशूअ को आज्ञा किई थी करयतअरबअ अनाक का पिता जो १४ हबरून है भाग दिया। और कालिब ने अनाक के तीन बेटे शेशाई और अख़ीमान और तलमी को जो अनाक के संतान हैं १५ वहां से दूर किया। और वह वहां से दबीर के बासियों पर चढ़ा और दबीर १६ का नाम आगे करयतसिफ़र था। सो कालिब ने कहा कि जो कोई करयतसिफ़र को मारे और उसे लेवे मैं उसे अपनी बेटी अकसः को ब्याह देऊंगा। १७ तब कालिब के छोटे भाई कनज़ के बेटे ग़ुतनिएल ने उसे लिया तब उस ने अपनी बेटी अकसः को उस्से ब्याह दिई। १८ और ऐसा हुआ कि जब वह उस पास गई तो उसे उभारा कि वह उस के पिता से एक खेत मांगे सो वह अपने गदहे पर से उतरी तब कालिब ने उसे कहा कि तू क्या चाहती है। १९ और उस ने उत्तर दिया कि मुझे आशीस दीजिये क्योंकि आप ने मुझे दक्खिन की भूमि दिई सो मुझे पानी के सोते भी दीजिये तब उस ने उसे ऊपर के सोते और नीचे के सोते दिये॥

२० यहूदाह के संतान की गोष्ठी का अधिकार उन के घरानों के समान यह है॥

२१ और अदूम के सिवाने की ओर दक्खिन दिशा यहूदाह के संतान की गोष्ठी के नगर के अंत ये हैं क़बिज़एल और अद्र और यजूर। २२ और कैनः और दीमूना और अदअदः। २३ और क़ादिस और हासूर और इतनान। २४ ज़ीफ़ और तलम और बअलात। २५ और हासूर हदता और करयतहसरून जो हासूर है। २६ अमाम और समअ और मोलदः। २७ और हसरजद्दः और हशमून और बैतफलत। २८ और हासूर शुआल और बिअरसबः और बिज़यूतियाह। २९ बअलः और ऐयीम और अज़म्। ३० और इलतवलुद और कसील और हुरमः। ३१ और सिक़लज और मदमन्नः और सनसन्नः। ३२ और लिबावत और शिलहीम और ऐन और रम्मान ये सब उंतीस नगर और उन के गांव॥

३३ वे तराई में इसताल और सुरअः और अशनः। ३४ और ज़नूह और एनजन्नीम तुफ़्फ़ाह और ऐनाम। ३५ यरमूत और अदूलाम शोकः और अज़ीक़ः। ३६ और सग़ारीम और अदीतैन और जदीरः और अदीरतैन चौदह नगर उन के गांव समेत। ३७ ज़िनान और हदाशः और मिजदलजद्द। ३८ और दिलआन और मिसपः और युक़तिएल। ३९ लकीस और बुसक़त और इजलून। ४० और कबून और लहमास और ४१ कितलीस। और जदीरात बैतदजून और

नअमः और मुक्केदः सोलह नगर उन के
४२ गांवों समेत। लिबनः और अतर और
४३ अशन। और इफताह और अशनः और
४४ नसीब। और कईलः और अकजीब और
मरीशः नव नगर उन के गांवों समेत।
४५ अकरून उस के नगर और गांवों समेत।
४६ अकरून से समुद्र लों सब जो अशदूद
के आसपास थे उन के गांव समेत।
४७ अशदूद अपने नगरों और गांवों सहित
अज्जः अपने नगरों और गांवों समेत
मिस्र की नदी लों और महा सागर और
उस का सिवाना॥

४८ और पहाड़ में समार और यतीर
४९ और शोकः। और दन्नः और करयतसन्नः
५० जो दबीर है। और अनाब और इस्ति-
५१ माअ और आनीम। और जशन और
होलन और जैलः ग्यारह नगर उन के
५२ गांवों समेत। अराब और दूमः और
५३ इशअन। और यनूम और बैतुलतफाह
५४ और अफीकः। और हुमतः और कर-
यतअरबअ जो हबरून है और सैगुर नव
५५ नगर उन के गांवों समेत। मऊन कर-
५६ मिल और जैफ और जत्ता। और यजर-
अएल और यकदीआम और जनूह।
५७ काइन जिबअः और तिमनः दस नगर
५८ उन के गांवों समेत। हलहूल बैतसूर
५९ और जदूर। और मआरात और बैतअनात
और इलतकूनकः नगर उन के गांवों समेत।
६० करयतबअल जो करयतअरीम और रब्बः है
दो नगर उन के गांवों सहित॥

६१ अरबय में बैतुलअरबअ मद्दीन और
६२ सकाकः। और निबशान और लोन का
नगर और ऐनजदी छः नगर उन के
गांवों समेत॥

६३ परन्तु यबूसी जो थे यरूसलम में रहते
थे सो उन्हें यहूदाह के संतान दूर न कर
सके परन्तु यबूसी यहूदाह के संतान के साथ
आज के दिन लों यरूसलम में रहते हैं॥

सोलहवां पर्ब्ब।

१ और यूसुफ के संतान की चिट्ठी यर-
दन से यरीहो के पास निकलके यरीहो
के पानी के पूरब जो है और उस बन
लों जो यरीहो से बैतएल पहाड़ की ओर
२ पार को जाता है। और बैतएल से
निकलके लौज को आके अरकी के
३ सिवाने को अतरात के पास चला। और
पश्चिम दिशा से यफलती के तीर को
जाता है नीचे की ओर बैतहोरान के
तीर को और जजर लों पहुंचता है और
उस के निकास समुद्र में हैं॥

४ सो यूसुफ के संतान मुनस्सी और
इफरायम ने अपना अधिकार लिया।
५ और इफरायम के संतान का सिवाना
उन के घरानों के समान यह था अर्थात्
उन के अधिकार का सिवाना पूरब की
ओर अतरात अद्दार से ऊपर के बैत-
६ होरान को गया। और सिवाना निकलके
समुद्र की ओर उत्तर दिशा में मिकमतात
को निकला और सिवाना पूरब की
ओर तानतशैलोह को गया और उस
७ के पूरब को होके यनूहा को गया। और
यनूहा से अतरात को और नारात को
नीचे गया और यरीहो को आया और
८ यरदन पास जा निकला। पश्चिम का
सिवाना तुफ्फूह से कनकी नदी को और
उस के निकास समुद्र को हैं इफरायम
के संतान की गोष्ठी का अधिकार उन
९ के घरानों के समान यह है। और
इफरायम के संतान के लिये अलग अलग
नगर मुनस्सी के संतान के अधि-
कार में थे सारे नगर उन के गांवों
१० सहित। और उन्हों ने उन कनआनियों
को जो जजर में रहते थे दूर न
किया परन्तु कनआनी इफरायमियों में
आज के दिन लों बस्ते हैं और सेवा
करते हैं॥

सत्रहवां पर्ब्ब।

१ मुनस्सी की गोष्ठी ने भी अधिकार पाया क्योंकि वह यूसुफ का पहिलौठा था सो जिलिअद के पिता मुनस्सी के पहिलौठे मकीर ने जो लड़ाका था जिलिअद और बशन अधिकार पाया। २ और मुनस्सी के संतान के उबरे हुओं को उन के घरानों के समान अधिकार मिला अबिअज़र के संतान के लिये और खलक के संतान के लिये और यसरएल के संतान के लिये और सिकम के संतान के लिये और हिफ्र के संतान के लिये और सिमीदाअ के संतान के लिये यूसुफ के बेटे मुनस्सी के घरानों के समान पुरुष बालक ये थे॥

३ परन्तु मुनस्सी का बेटा मकीर का बेटा जिलिअद का बेटा हिफ्र का बेटा सिलाफिहाद के बेटे न थे परन्तु बेटियां थीं जिन के नाम ये हैं महल: और नूआ: ४ हजल: मिलक: और तिरज:। सो वे इलिअज़र याजक और नून के बेटे यहूशूअ के और प्रधानों के आगे आके बोलीं कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई कि वह हमारे भाइयों के मध्य में हमें अधिकार देवे सो परमेश्वर की आज्ञा के समान उस ने उन के पिता के भाइयों में उन्हें अधिकार दिया। ५ सो जिलिअद और बशन के देश को छोड़के जो यरदन के उस पार है मुनस्सी ६ को दस भाग पड़े। क्योंकि मुनस्सी की बेटियों ने अपने भाइयों के साथ अधिकार पाया था और मुनस्सी के उबरे हुए बेटों ने जिलिअद का देश पाया॥

७ और यसर से लेके मिकमताल लों जो सिकम के साम्ने है मुनस्सी का सिवाना था और सिवाना दहिने से निकलके ऐनतुफ्फाह के बासियों लों गया। ८ तुफ्फाह का देश मुनस्सी का था परन्तु तुफ्फाह जो मुनस्सी के सिवाने में था इफरायम के संतान का भाग था। ९ सो उस का सिवाना नल की नाली को दक्खिन ओर था और इफरायम के ये नगर मुनस्सी के नगरों में मिले हैं और मुनस्सी का सिवाना उत्तर को नदी से था और उस के निकास समुद्र में थे। १० दक्खिन दिशा इफरायम की हुई और उत्तर दिशा मुनस्सी की और उस का सिवाना समुद्र था सो वे दोनों उत्तर दिशा यसर और पूरब दिशा इशकार से जा मिलीं। ११ और मुनस्सी इशकार में और यसर में बैतशन और उस के नगर और इबलिआम और उस के नगर और दार के निवासी और उस के नगर और ऐनदार के निवासी और उस के नगर और तअनाक के बासी और उस के नगर और मजिद्दो के निवासी और उस के नगर अर्थात् तीन देश रखते थे। १२ तथापि मुनस्सी के संतान उन नगरों को न ले सके परन्तु कनआनी उस देश में बसा चाहते थे। १३ तथापि यों हुआ कि जब इसराएल के संतान प्रबल हुए तो कनआनियों से कर लिया परन्तु उन्हें सर्वथा दूर न किया॥

१४ सो यूसुफ के संतान ने यहूशूअ से कहा कि तू ने किस लिये चिट्ठी से हमें एक ही अधिकार और केवल एक ही भाग दिया यह जानके कि हम बहुत हैं जैसा कि परमेश्वर ने हमें अब लों आशीस दिई है। १५ तब यहूशूअ ने उन्हें उत्तर दिया कि यदि तू बड़ा जातिगण है तो अपने लिये बन की ओर चढ़ जा और वहां अपने लिये फरिज्जी और दानव के देश में काट क्योंकि इफरायम का पर्बत तेरे लिये सकेत है। १६ तब यूसुफ के संतान ने कहा कि यह पहाड़ हमारे लिये थोड़ा है और समस्त कनआनी जो

बैतशान के और उस के गांवों के और यजरअएल की नीचाई के और जो नीचाई के देश में रहते हैं लोहे की गाड़ियां १७ रखते हैं । तब यहूशूअ ने यूसफ के संतान इफरायम और मुनस्सी से कहा कि तू तो बड़ा जातिगण है और बड़ी सामर्थ्य रखता है तेरे लिये केवल एक १८ ही भाग न होगा । क्योंकि पहाड़ तेरा होगा क्योंकि वह अरण्य है और तू उसे काट डालियो और उस के निकास तेरे होंगे क्योंकि तू कनआनी को खदेड़ेगा यद्यपि वह लोहे का रथ रखके बली है ॥

अठारहवां पर्ब्ब ।

१ तब सारे इसराएल के संतान की मंडली सैला में एकट्ठी हुई और वहां मंडली के तंबू को खड़ा किया और देश उन के बश में आया ॥

२ और इसराएल के संतानों में सात गोष्ठी रह गई थीं जिन्हों ने अपना ३ अधिकार न पाया था । सो यहूशूअ ने इसराएल के संतानों से कहा कि कब लों उस देश को बस करने में जो परमेश्वर तुम्हारे पितरों के ईश्वर ने तुम्हें ४ दिया है आलस्य करोगे । अपने लिये हर एक गोष्ठी में से तीन तीन जन देओ और मैं उन्हें भेजूंगा कि वे उठके उस देश के आरंपार फिरें और उसे अपने अधिकार के समान लिखें और फिर मुझ ५ पास आवें । और वे उस के सात भाग करें यहूदाह अपने सिवाने पर दक्खिन की ओर रहे और यूसुफ के घराने उत्तर ६ दिशा में अपने सिवाने पर ठहरें । सो उस देश के सात भाग लिखके मुझ पास यहां लाओ जिसतें मैं परमेश्वर के आगे जो हमारा ईश्वर है तुम्हारे लिये चिट्ठी ७ डालूं । परन्तु तुम्हों में लावी का भाग नहीं क्योंकि परमेश्वर की याजकता उन का अधिकार है और जद और रूबिन और मुनस्सी की आधी गोष्ठी ने तो यरदन के पार पूरब दिशा में अपने अधिकार पाये हैं जो परमेश्वर के सेवक मूसा ने उन्हें दिया था ॥

८ तब लोग उठे कि चलें सो जो देश के लिखने को गये थे यहूशूअ ने उन्हें आज्ञा करके कहा कि उस देश में जाओ और आरंपार फिरो और लिखके मुझ पास फिर आओ जिसतें मैं यहां सैला में परमेश्वर के आगे तुम्हारे लिये चिट्ठी ९ डालूं । सो वे लोग गये और उस देश में आरंपार फिरे और उसे नगर नगर सात भाग करके एक पुस्तक में बर्णन किया और यहूशूअ पास सैला में तंबूस्थान १० को फिर आये । तब यहूशूअ ने सैला में परमेश्वर के आगे उन के लिये चिट्ठी डाली और देश इसराएल के संतान को उन के भागों के समान वहां बांट दिया ॥

११ और बिनयमीन के संतान की गोष्ठी की चिट्ठी उन के घरानों के समान निकली और उन के भाग का सिवाना यहूदाह के संतान और यूसुफ के संतान के मध्य में निकला ॥

१२ और उन का सिवाना उत्तर दिशा यरदन नदी से था और उस का सिवाना यरीहो के पास से उत्तर दिशा को चढ़ा और पर्बत में से पश्चिम चढ़ गया और उस के निकास बैतअवन के १३ बन में थे । और सिवाना वहां से लौज की ओर गया लौज की अलंग जो बैतएल है दक्खिन दिशा को और सिवाना अतरातअद्दार को उतरा उस पहाड़ के पास जो नीचे के बैतहैरान की दक्खिन की ओर है ॥

१४ और खैंचा जाके सिवाना वहां से होके उस पहाड़ पास जो बैतहैरान के दक्खिन को है दक्खिन की ओर समुद्र के

कोने को और उस के निकास करयत-अअल को थे जो करयतयअरीम है यहूदाह के संतान का एक नगर जो पश्चिम की ओर ॥

१५ और दक्खिन की अलंग करयतयअरीम के अंत से और सिवाना पश्चिम को गया और निफ़्तूह के पानियों

१६ के कुंए को गया। और सिवाना उस पहाड़ पास जो हिन्नम के बेटे की तराई के आगे है उतरा जो दानव की तराई के उत्तर को है और दक्खिन हिन्नम की तराई को दक्खिन की यबूसी की अलंग

१७ में ऐनराजिल को उतर गया। और उत्तर से खेंचा जाके ऐनश्शम्स को निकल गया और वहां से गलीलूत की ओर जो अदूमीम की घाटी के साम्ने है और वहां से रूबिन के बेटे बुहन के पत्थर लों

१८ उतरा। और उत्तर दिशा की ओर चौगान के साम्ने होके उस की अलंग की ओर निकल गया और अरबः को

१९ उतरा। फिर उत्तर दिशा की ओर निकलके बैतहजलः की एक ओर को गया और सिवाने के निकास उत्तर की खारी समुद्र के कोल पर और यरदन के दक्खिन अंत को थे यही दक्खिन तीर था ॥

२० और उस का पूरब सिवाना यरदन था बिनयमीन के संतान के सिवाने का अधिकार उस के सब सिवानों के समान उन के घरानों के समान चारों ओर यह था ॥

२१ अब वे बस्तियां जो बिनयमीन के संतान की गोष्ठी की थीं उन के घरानों के समान यरीहो और बैतहजलः और

२२ कोसिस की तराई थीं। और बैतुलअरबः

२३ और समरैन और बैतएल। और ऐवीम

२४ और फाराह और ऊफरः। और कफ्रअम्मूनी और ऊफनी और जिबअ बारह नगर उन के गांव सहित। जिबऊन

२५ और रामः और बिअरोत। और मिसफः

२६ और कफ़ीरः और मोजः। और रेकम और

२७ इरफाएल और तरलः। और जिलअ

२८ अलिफ और यबूसी जो यरूसलम है गबियात करियात चौदह नगर उन के गांव सहित बिनयमीन के संतान का अधिकार उन के घरानों के समान यह है ॥

उन्नीसवां पर्ब्ब।

१ और दूसरी चिट्ठी समऊन के संतान की गोष्ठी को उन के घरानों के समान निकली और उन का अधिकार यहूदाह के संतान के अधिकार के मध्य में था।

२ और उन के अधिकार में बिअरसबअ

३ और सबअ और मोलदः था। और हसर-

४ शूआल और बलह और अजम्। और

५ इलतूलद और बतूल और हुरमः। और

६ सिक्लज और बैतमरकबात और हसार-सूसः। और बैतलबाओत और सरूहन तेरह नगर उन के गांव समेत। ऐन

७ रम्मोन और अतर और असन चार नगर

८ उन के गांव समेत। और सारे गांव जो उन नगरों के आसपास थे बअलतबअर दक्खिन का रामात समऊन के संतान की गोष्ठी का अधिकार उन के घरानों के समान यह है।

९ यहूदाह के संतान के भाग में से समऊन के संतान का भाग था क्योंकि यहूदाह के संतान के भाग का देश उन के लिये अधिक था इस कारण समऊन के संतान ने उन के अधिकार के मध्य में अपना भाग पाया ॥

१० और तीसरी चिट्ठी जबुलून के संतान की उन के घरानों के समान निकली सो उन के अधिकार का सिवाना सारीद

११ लों हुआ। और उन का सिवाना समुद्र की ओर मरअलः को और गया और दब्बासत लों पहुंचा और युक्निआम के

१२ यामे की नदी लों गया। और पूरब और सलीद से फिरके सूर्य के उदय की ओर किसलातताबूर के सिवाने की ओर निकल आता है और वहां से दाबरत
१३ और यफीअ पर चढ़ा। और वहां से जाते जाते पूरब की ओर अश्ताहिफर और ऐतकाज़ीन लों गया और रिम्मुन-
१४ मथूआरनीअः पास जा निकला। और उस का सिवाना उत्तर अलंग हनातीन को घूम आता है और उस के निकास इफताइएल की तराई हैं॥
१५ और कत्तत और नहलाल और समरून और इदअलः और बैतलहम बारह नगर
१६ उन के गांव सहित। ये नगर और उन के गांव जबुलून के संतान के घरानों के अधिकार थे॥
१७ इशकार के संतान के घरानों के समान इशकार के लिये चौथी चिट्ठी
१८ निकली। और उन का सिवाना यज़रअएल और कसूलात और शूनेम की ओर
१९ था। और हफरैन और शीयून और
२० अनाहरत। और रब्बियत और किसयुन
२१ और इबतस्। और रमत और ऐनजन्नीम
२२ और ऐनहद्दः और बैतफसीस। और उन का सिवाना तबूर और शहसीम और बैतशम्स से जा मिला और उन के सिवाने के निकास यरदन को हुए सोलह
२३ नगर उन के गांव समेत। ये नगर और उन के गांव इशकार के संतान का अधिकार उन के घरानों के समान है॥
२४ और पांचवीं चिट्ठी यसर के संतान की गोष्ठी के लिये उन के घरानों के
२५ समान निकली। और उन का सिवाना हलकात और हली और बतन और इक-
२६ शाफ हुआ। और अलम्मिलिक और अमिआद और मिशाल और उन का सिवाना पश्चिम दिशा करमिल और
२७ शीहूर लिबनात लों पहुंचता है। और उदय की ओर बैतदजून को फिरा और जबुलून और इफताहिएल की तराई को बैतुलइमक की उत्तर ओर जा मिला और नअईएल और कबूल के बाईं ओर
२८ निकलता है। और अबरून और रहूब और हम्मून और काना बड़े सिदून लों।
२९ और उस का सिवाना रामा को और दृढ़ नगर सूर को फिर जाता है और वहां से मुड़के हूसः लों गया और उस के निकास समुद्र के तीर से अकज़ीब को।
३० और अम्मः और अफीक और रहूब बाईस
३१ नगर उन के गांव सहित। यसर के संतान की गोष्ठी का अधिकार उन के घरानों के समान ये नगर उन के गांवों सहित॥
३२ छठवीं चिट्ठी नफताली के संतान के अर्थात् नफताली के संतान के घरानों
३३ के समान निकली। और उन का सिवाना हिलफ से अलून से ज़अननीम को और अदामीनकब और यबनिएल लक्कूम लों
३४ और उस के निकास यरदन से थे। और सिवाना पश्चिम दिशा को फिरके उजनातुलतबूर को आता है और वहां से जाके हक्कूक को दक्खिन दिशा जबुलून को पहुंचता है और पश्चिम दिशा में यसर को पहुंचता है और पूरब की ओर यरदन पर यहूदाह से जा मिलता है॥
३५ और सिद्दीम और सूर और हम्मत और रक्कत और किन्नारात ये बाड़ित नगर
३६ हैं। और अदामः और रामा और
३७ हासूर। और कादिस और अद्रई और
३८ ऐनहसूर। और इरयून और मजदिएल हूरीम और बैतअनात और बैतशम्स उन्नीस
३९ नगर उन के गांवों सहित। ये नगर और उन के गांव नफताली के संतान की गोष्ठी का अधिकार उन के घरानों के समान था॥
४० सातवीं चिट्ठी दान के संतान की

गोष्ठी के घरानों के समान निकली।
४१ और उन के अधिकार का सिवाना सुरअ:
४२ और इश्ताल और ईरिश्मस थे। और
सअलबीन और ऐयलून और इतालह।
४३ और ऐलन और तमनात और अकरून।
४४ और इलतकी और जिब्बतून और बअलात।
४५ और यिहूद और बनीबरक और अअत-
४६ रम्मान। और मेयरकून और रकून उस
सिवाने समेत जो याफा के सन्मुख है।
४७ और दान के संतान का सिवाना निकला
वह उन के लिये थोड़ा था इस लिये
दान के संतान लसिम से लड़ने को चढ़
गये और उसे ले लिया और उसे तलवार
की धार से मार डाला और उसे बश में
कर लिया और उस में बसे और लसिम
का नाम दान रक्खा जो उन के पिता
४८ का नाम था। ये सब नगर उन के
गांवों समेत दान के संतान की गोष्ठी
का भाग था॥

४९ जब उन्हों ने अधिकार के लिये अपने
सिवानों के समान देश का बांटना
समाप्त किया तब इसराएल के संतान ने
नून के बेटे यहूशूअ को अपने मध्य में
५० अधिकार दिया। उस ने तिमनत सिरह
का नगर जो इफरायम के पहाड़ में है
मांगा सो उन्हों ने परमेश्वर के बचन
के समान उसे दिया और उस ने उस
नगर को बनाया और उस में जा बसा॥

५१ ये वे अधिकार हैं जिन्हें इलिअज़र
याजक ने और नून के बेटे यहूशूअ ने
और इसराएल के संतान की गोष्ठियों के
पितरों के प्रधानों ने चिट्ठी डालके सैला
में परमेश्वर के आगे मंडली के तंबू के
द्वार पर अधिकार के लिये बांट दिया
सो उन्हों ने देश का बांटना समाप्त
किया॥

बीसवां पर्ब्ब।

१ और परमेश्वर यहूशूअ से कहके
बोला। कि इसराएल के संतान को
यह कहके बोल कि अपने लिये शरण के
नगर ठहराओ जिन के विषय में मैं ने
तुम्हें मूसा के द्वारा से कहा। जिसतें ३
वह घातक जो अज्ञान से अथवा
अकस्मात् किसी को मार डाले वहां
भागे तो लोहू के पलटा लेवैये से वे
तुम्हारे शरण होवें। और जब कोई उन
में से किसी एक नगर में भाग आवे तो
नगर के फाटक की पैठ में खड़ा रहे
और उस नगर के प्रधानों के सुने में
अपना समाचार बर्णन करे तब वे उसे
नगर में अपने पास लेवें और उसे स्थान
देवें कि वह उन के साथ रहे। और
यदि घात का पलटा लेवैया उसे खेदे
तो वे घातक को उसे न सौंपें क्योंकि
उस ने अपने परोसी को अज्ञान से मारा
और उस्से आगे बैर न रखता था। और ६
वह उसी नगर में रहे जब लों न्याय
के लिये मंडली के आगे न खड़ा होवे
जब लों प्रधान याजक न मरे जो उन
दिनों में होवे उस के पीछे वह घातक
फिरे और अपने नगर में और अपने घर
में आवे उस नगर में जहां से वह भागा
था॥

सो उन्हों ने बचाव के लिये जलील ७
में कादिस को नफताली पर्ब्बत पर और
इफरायम पर्ब्बत पर शकीम को और कर-
यतअरबअ को जो हबरून है यहूदाह
के पहाड़ में पवित्र किया॥

और यरदन के पार यरीहो के पास ८
और पूरब दिशा को बुस्र के अरण्य में
रूबिन के संतान की गोष्ठी के चौगान
में और रामात जिलिअद में जो जद की
गोष्ठी का है और जौलान मुनस्सी की
गोष्ठी के बसन में ठहराया॥

सारे इसराएल के संतान के लिये ९
और उस परदेशी के लिये जो उन के

मध्य में बसता है इन बस्तियों को ठहराया जिसतें जो कोई कि अज्ञान से किसी को मार डाले सो उधर भागे और जब लों कि मंडली के आगे न आवे तब लों लोहू के पलटा लेवैये के हाथ से मारा न जावे ॥

इक्कीसवां पर्ब्ब ।

तब लावियों के पितरों के प्रधान इलिअजर याजक और नून के बेटे यहूशूअ और इसराएल के संतान की गोष्ठियों के पितरों के प्रधान पास आये। २ और वे कनआन के देश सैला में उन्हें कहके बोले कि परमेश्वर ने मूसा की ओर से आज्ञा किई कि हमारे निवास के लिये बस्तियां उन के उपनगर सहित ३ हमारे ढोरों के लिये हमें दिई जावें। तब इसराएल के संतान ने अपने अधिकार में से परमेश्वर की आज्ञा के समान ये नगर और उन के आसपास लावियों को दिया ॥

४ सो चिट्ठी किहातियों के घरानों के लिये और हारून याजक के बंश के जो लावियों में से थे उन्हों ने चिट्ठी डालके यहूदाह की गोष्ठी और समऊन की गोष्ठी और बिनयमीन की गोष्ठी में से तेरह नगर पाये ॥

५ और किहात के उबरे हुए बंश ने इफरायम की गोष्ठी के घरानों में से और दान की गोष्ठी में से और मुनस्सी की आधी गोष्ठी में से दस नगर पाये ॥

६ और जैरसुन के संतान ने चिट्ठी के समान इशकार की गोष्ठी के घरानों में से और यसर की गोष्ठी में से और नफताली की गोष्ठी में से और मुनस्सी की आधी गोष्ठी में से बसन में तेरह नगर पाये ॥

७ मिरारी के संतान ने अपने घरानों से रूबिन की गोष्ठी में से और जद की गोष्ठी में से और जबुलून की गोष्ठी में से बारह नगर पाये ॥

८ और इसराएल के संतान ने चिट्ठी डालके ये नगर और उन के आसपास जैसी परमेश्वर ने मूसा की ओर से आज्ञा किई थी लावियों को दिया ॥

९ सो उन्हों ने यहूदाह के संतान की गोष्ठी में से और समऊन के संतान की गोष्ठी में से ये नगर दिये जिन के नाम लिये जाते हैं। १० और हारून के संतान को जो किहातियों के घरानों में से थे क्योंकि पहिली चिट्ठी उन के नाम की थी। ११ सो उन्हों ने अनाक के पिता अरबअ का नगर जो हबरून है यहूदाह के पहाड़ पर उस के चारों ओर के आसपास समेत उन्हें दिये। १२ परन्तु नगर के खेत उस के गांव सहित उन्हों ने यफुन्ने के बेटे कालिब को उस के अधिकार के लिये दिया। १३ सो उन्हों ने हारून याजक के संतान को घातक के शरण के नगर के लिये हबरून का नगर उस के आसपास सहित और लिबन: उस के आसपास समेत दिये। १४ और यतीर उस के आसपास समेत और इसतिमाअ उस के आसपास समेत। १५ और होलून उस के आसपास समेत और दबीर उस के आसपास समेत। १६ और ऐन उस के आसपास समेत और युता उस के आसपास समेत बैतशम्स उस के आसपास समेत नव नगर उन दोनों गोष्ठियों में से। १७ और बिनयमीन की गोष्ठी में से जिबऊन उस के आसपास समेत और जिबअ उस के आसपास समेत। १८ अनतात उस के आसपास समेत और अलमून उस के आसपास समेत चार नगर। १९ सारे नगर हारून याजक के संतान के तेरह नगर उन के आसपास समेत थे ॥

२० और किहात के संतान के घरानों को

लावियों के जो किहात के संतान में से उबरे थे इफ़रायम की गोष्ठी में से ये नगर अधिकार मिले। २१ और घातक के शरण का नगर इफ़रायम के पहाड़ में सिकम जो उस के आसपास सहित दिया और जज़र उस के आसपास सहित। २२ और क़बज़ैम उस के आसपास सहित और बैतहौरान उस के आसपास सहित चार नगर। २३ और दान की गोष्ठी में से इल्तक़ी उस के आसपास सहित जिब्बतून उस के आसपास समेत। २४ ऐलून उस के आसपास समेत जतरिम्मोन उस के आसपास समेत चार नगर। २५ और मुनस्सी की आधी गोष्ठी में से तअनाक उस के आसपास सहित और जतरिम्मोन उस के आसपास समेत दो नगर। २६ ये सब दस नगर अपने अपने आसपास समेत किहात के उबरे हुए बंश के घरानों को मिले॥

२७ और जैरसुन के संतान को जो लावियों के घरानों में से हैं मुनस्सी की आधी गोष्ठी में से घातक के शरण के लिये उन्हों ने बसन में जौलान उस के आसपास समेत और बइस्तरा: उस के आसपास समेत दो नगर दिये। २८ और इशकार की गोष्ठी में से किसून उस के आसपास सहित दाबरत उस के आसपास सहित। २९ यरमूत उस के आसपास सहित ऐनजन्नीम उस के आसपास समेत चार नगर। ३० और यसर की गोष्ठी में से मिशाल उस के आसपास समेत अबदून उस के आसपास समेत। ३१ हलकात उस के आसपास समेत और रहूब उस के आसपास समेत चार नगर। ३२ और नफ़ताली की गोष्ठी में से गलील में क़ादिस उस के आसपास समेत घातक के शरण के नगर के लिये और हम्मतदूर उस के आसपास सहित और क़रतान उस के आसपास सहित तीन नगर। ३३ जैरसुनियों के सारे नगर उन के घरानों के समान तेरह नगर उन के आसपास सहित॥

३४ और मिरारी के संतान के घरानों को जो लावियों में से उबरे थे जबूलून की गोष्ठी में से ये नगर मिले युकनिआम उस के आसपास सहित क़रताह उस के आसपास सहित। ३५ दिमनः उस के आसपास समेत नाहलाल उस के आसपास सहित चार नगर। ३६ और रूबिन की गोष्ठी में से बुसर उस के आसपास सहित और यहसा उस के आसपास समेत। ३७ क़दमूत उस के आसपास सहित और मीफ़ात उस के आसपास समेत चार नगर। ३८ और जद की गोष्ठी में से घातक के शरण का नगर जिलिअद में से रामात उस के आसपास सहित और महनैम उस के आसपास समेत। ३९ हसबून उस के आसपास समेत याज़र यअज़ीर उस के आसपास समेत सब में चार नगर। ४० ये सारे नगर मिरारी के संतान के घरानों के लिये जो उबरे थे बारह नगर चिट्ठी से मिले॥

४१ इसराएल के संतान के अधिकार के मध्य में लावियों के सब नगर अठतालीस थे उन के आसपास सहित। ४२ उन नगरों में से हर एक नगर अपने आसपास समेत चारों ओर यों ही समस्त नगर थे॥

४३ सो परमेश्वर ने सब देश जिस को विषय में उस ने उन के पितरों को देने को किरिया खाई थी इसराएल को दिया सो उन्हों ने उसे बश में किया और उस में बसे। ४४ और परमेश्वर ने अपनी किरिया के समान सो उन के पितरों से खाई थी चारों ओर से उन्हें चैन दिया और उन के सब शत्रुन में से एक भी उन के आगे न ठहरा

परमेश्वर ने उन के सारे शत्रुन को उन के हाथ में कर दिया। उन सारी अच्छी बातों में से जो परमेश्वर ने इसराएल के घराने को कही थीं एक बात न घटी सब की सब पूरी हुईं॥

बाईसवां पर्व्व।

१ तब यहूशूअ ने रूबिनियों और जदियों और मुनस्सी की आधी गोष्ठी को २ बुलाया। और उन्हें कहा कि उन सब को जो परमेश्वर के दास मूसा ने तुम्हें आज्ञा किई तुम ने पालन किया और उन सब बातों को जो मैं ने तुम्हें कहीं ३ तुम ने माना। तुम ने अपने भाइयों को बहुत दिनों से आज लों नहीं छोड़ा परन्तु परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञा का ४ पालन किया। और अब परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हारे भाइयों को चैन दिया जैसी उस ने उन से बाचा बांधी थी सो तुम अब फिर जाओ और अपने तंबुओं के अधिकार की भूमि में जाओ जो परमेश्वर के दास मूसा ने यरदन के ५ उस पार तुम्हें दिई है। परन्तु चौकसी के साथ उस आज्ञा की और उस व्यवस्था की जो परमेश्वर के दास मूसा ने तुम्हें आज्ञा दिई है पालन करो जिसतें परमेश्वर अपने ईश्वर से प्रेम रक्खो और उस के सारे मार्गों पर चलो और उस की आज्ञाओं को पालन करो और उस्से लवलीन रहो और अपने सारे मन और अपने सारे प्राण से उस की सेवा करो। ६ और यहूशूअ ने उन्हें आशीस दिई और बिदा किया सो वे अपने अपने तंबुओं ७ को गये। और मुनस्सी की आधी गोष्ठी को मूसा ने बसन में अधिकार दिया था और उस की आधी को यहूशूअ ने उन के भाइयों के संग यरदन के इसी पार पश्चिम दिशा में अधिकार दिया और जब यहूशूअ ने उन्हें अपने अपने तंबुओं को बिदा किया तब उन्हें भी ८ आशीस दिई। और उन्हें कहा कि बड़े धन के साथ बहुत से ढोर और चांदी और सोना और तांबा और लोहा और बहुत से वस्त्र लेके अपने डेरों को जाओ अपने शत्रुन की लूट को अपने भाइयों के साथ बांट लेओ॥

९ तब रूबिन के संतान और जद के संतान और मुनस्सी की आधी गोष्ठी फिरे और सैला में से जो कनआन की भूमि है इसराएल के संतान से चले गये जिसतें जिलिआद के देश को जो उन के अधिकार का देश था जावें जिसे उन्हों ने मूसा के द्वारा से परमेश्वर के बचन के समान पाया था॥

१० और जब कि वे यरदन की सीमा कनआन के देश में पहुंचे तो रूबिन के संतान और जद के संतान और मुनस्सी की आधी गोष्ठी ने वहां यरदन पास एक बेदी बनाई एक बड़ी बेदी कि उसे देखा करें॥

११ और इसराएल के संतान ने यह सुनके कहा कि देखो रूबिन के संतान और जद के संतान और मुनस्सी की आधी गोष्ठी ने कनआन देश के साम्ने यरदन के तीर पर इसराएल के संतान के मार्ग १२ में बेदी बनाई। और जब इसराएल के संतान ने सुना तो इसराएल की सारी मंडली सैला में एकट्ठी हुई जिसतें उन के ऊपर लड़ाई के लिये चढ़ जावें। १३ और इसराएल के संतान ने रूबिन के संतान के और जद के संतान के और मुनस्सी की आधी गोष्ठी के पास इलिआजर याजक के बेटे फीनिहास को १४ भेजा। और उस के संग दस अध्यक्ष इसराएल की समस्त गोष्ठियों में हर एक घर में से एक अध्यक्ष भेजा जो उन में से हर एक अपने पितरों के घरानों में

सहस्रों इसराएलियों का प्रधान था।

१५ सो वे रूबिन के संतान और जद के संतान के और मुनस्सी की आधी गोष्ठी पास जिलिअद के देश में आये और

१६ उन से कहके बोले। कि परमेश्वर की सारी मंडलियों ने कहा है कि तुम ने इसराएल के ईश्वर के बिरोध यह क्या अपराध किया है जो तुम आज के दिन परमेश्वर का पीछा करने से उस बात में फिर गये कि अपने लिये एक बेदी बनाई जिसतें तुम आज के दिन पर-

१७ मेश्वर के बिरोधी होओ। क्या हमारे लिये फ़ूर की बुराई कुछ थोड़ी थी जिस्से हम आज के दिन लों पवित्र नहीं हुए यद्यपि परमेश्वर की मंडली में मरी

१८ थी। परन्तु क्या तुम्हें उचित था कि आज के दिन परमेश्वर की सेवा करने से फिर जाओ आज तो तुम परमेश्वर से फिरे हुए हो और कल इसराएल की सारी मंडली पर उस का कोप भड़केगा।

१९ तथापि यदि तुम्हारे अधिकार की भूमि अशुद्ध होवे तो अपने लिये पार आओ इस देश में जो परमेश्वर का अधिकार है जहां परमेश्वर का तंबू है और हमारे बीच अधिकार लेओ परन्तु हमारे ईश्वर परमेश्वर की बेदी को छोड़ अपने लिये बेदी बनाके परमेश्वर से और हम से

२० मत फिर जाओ। क्या शारिह के बेटे अकन ने सापित बस्तु में चूक न किया और इसराएल की सारी मंडली पर कोप न पड़ा और वह जन अकेला ही अपनी बुराई से नाश न हुआ॥

२१ तब रूबिन के संतान और जद के संतान और मुनस्सी की आधी गोष्ठी ने इसराएलियों के सहस्रों के प्रधानों

२२ को उत्तर देके कहा। कि सर्वशक्तिमान ईश्वर परमेश्वर सर्वशक्तिमान ईश्वर परमेश्वर वही जानता है और इसराएल वही जानेगा कि यदि फिर जाने में अथवा परमेश्वर के बिरोध करने में यह किया तो हमें आज के दिन मत

२३ छोड़। अथवा हम ने बेदी बनाई जिसतें परमेश्वर की सेवा से फिरें उस पर बलिदान की भेंट अथवा भोजन की भेंट अथवा कुशल की भेंट चढ़ावें तो परमेश्वर वही बिचार करे॥

२४ और यदि हम ने उस भय से यह कहके किया है कि आगे को तुम्हारा बंश हमारे बंश को कहके बोले कि तुम्हें परमेश्वर इसराएल के ईश्वर से क्या

२५ काम। क्योंकि परमेश्वर ने हमारे और तुम्हारे मध्य में यरदन की मेड़ बान्धी सो हे रूबिन के संतान और जद के संतान परमेश्वर में तुम्हारा भाग नहीं सो तुम्हारा बंश हमारे बंश को परमेश्वर के भय से फेर देवे।

२६ इस लिये हम ने कहा कि आओ हम अपने लिये एक बेदी बनावें कुछ बलिदान की भेंट के और बलि के लिये नहीं।

२७ परन्तु इस लिये कि यह हमारे तुम्हारे मध्य में और हमारे पीछे हमारी पीढ़ियों के मध्य में एक साक्षी होवे जिसतें हम परमेश्वर के आगे अपने बलिदान की भेंटों से और अपने बलि की भेंटों से और अपने कुशल की भेंटों से परमेश्वर की सेवा करें और आगे को तुम्हारे बंश हमारे बंश को न कहें कि परमेश्वर में तुम्हारा भाग नहीं।

२८ सो हम ने कहा कि ऐसा होगा कि जब वे हमें अथवा हमारे बंश को आगामी काल में कहें तब हम उन्हें उत्तर देंगे कि देखो परमेश्वर की बेदी का डौल जिसे हमारे पितरों ने बनाया कुछ बलिदान की भेंट और बलि की भेंट के लिये नहीं परन्तु इस लिये कि हमारे तुम्हारे मध्य में साक्षी रहे।

२९ ईश्वर न करे कि हम

परमेश्वर से फिर जावें और आज पर-
मेश्वर से जिसके परमेश्वर अपने ईश्वर
की बेदी को छोड़ जो उस के तंबू के
आगे है और बलिदान की भेंट और
भोजन की भेंट और बलि की भेंट के
लिये एक बेदी बनावें ॥

३० जब फीनिहास याजक और मंडली
के अध्यक्ष और इसराएल के सहस्रों के
प्रधानों ने जो उस के साथ थे वे बातें
सुनीं जो रूबिन के संतान और जद के
संतान और मुनस्सी के संतान ने कहीं
३१ तब उन की दृष्टि में अच्छा लगा । तब
इलिआज़र के बेटे फीनिहास याजक ने
रूबिन के संतान और जद के संतान
और मुनस्सी के संतान से कहा कि आज
के दिन हम जानते हैं कि परमेश्वर
हमारे मध्य में है इस कारण कि तुम ने
परमेश्वर का अपराध न किया क्योंकि
तुम ने इसराएल के संतान को परमेश्वर
के हाथ से छुड़ाया ॥

३२ तब इलिअज़र का बेटा फीनिहास
याजक और रूबिन के संतान और जद
के संतान के अध्यक्ष जिलिअद की भूमि
से कनआन के देश में इसराएल के
संतान पास फिर आये और उन पास
३३ संदेश पहुंचाये । और उसी बात से
इसराएल के संतान प्रसन्न हुए और
इसराएल के संतान ने ईश्वर की स्तुति
किई और न चाहा कि युद्ध के लिये
उन पर चढ़ जावें कि उस देश को जिस
में रूबिन के संतान और जद के संतान
बसते थे उजाड़ देवें ॥

३४ तब रूबिन के संतान और जद के
संतान ने उस बेदी का नाम साक्षी रक्खा
क्योंकि वह हमारे मध्य में एक साक्षी
ठहरी कि परमेश्वर ईश्वर है ॥

तेईसवां पर्व्व ।

१ जब परमेश्वर ने इसराएल को उन
के सारे शत्रुन से चैन दिया तो बहुत
दिन पीछे यों हुआ कि यहूशूअ वृद्ध और
२ दिनी हुआ । तब यहूशूअ ने सारे
इसराएल और उन के प्राचीनों और
उन के प्रधानों और उन के न्यायियों
और उन के करोड़ों को बुलाया और
उन्हें कहा कि मैं वृद्ध और दिनी हूं ।
३ और सब कुछ जो परमेश्वर तुम्हारे
ईश्वर ने उन सब जातिगणों से साथ
तुम्हारे साम्ने किया तुम देख चुके हो
क्योंकि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर आप
४ तुम्हारे लिये लड़ा । देखो मैं ने चिट्ठी
डालके इन सब जातिगणों को जो बचे
हैं तुम्हारी गोष्ठियों के लिये यरदन से
लेके समस्त जातिगणों के साथ जिन्हें
मैं ने काट डाला है अर्थात् अस्त की
ओर महा समुद्र लों अधिकार दिया ॥

५ और परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर वही
उन्हें तुम्हारे आगे निकाल देगा और
तुम्हारी दृष्टि से दूर करेगा और तुम उन
की भूमि को बश में करोगे जैसा कि
परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम से बाचा
६ बांधी है । इस लिये सब जो मूसा की
ब्यवस्था की पुस्तक में लिखा है उन्हें
पालन करने को और धारण करने को
हियाव करो जिसतें दहिने अथवा बायें
७ हाथ न मुड़ो । जिसतें तुम इन जातिगणों
में जो तुम्हारे संग बचे हैं मत जाओ
और उन के देवों के नाम मत लेओ
और उन की किरिया मत खाओ और
उन की सेवा मत करो और न उन को
८ दंडवत करो । परन्तु परमेश्वर अपने
ईश्वर से लवलीन रहो जैसा आज के
९ दिन लों रहे हो । क्योंकि परमेश्वर ने
तुम्हारे आगे बड़े बड़े और बलवंत
जातिगणों को नष्ट किया परन्तु कोई
आज के दिन लों तुम्हारे साम्ने ठहर न
१० सका । तुम्में से एक पुरुष सहस्र को

खदेड़ेगा क्योंकि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर वही तुम्हारे लिये लड़ता है जैसी उस ने तुम से बाचा बांधी है॥

११ इस लिये अपने प्राणों की अत्यंत चौकसी से रक्खो कि परमेश्वर अपने १२ ईश्वर को प्यार करो। यदि तुम किसी रीति से फिर जाओ और इन्हीं जाति-गणों के बचे हुओं में मिल जाओ जो तुम्हारे संग बचे हैं और उन के साथ बिवाह करो और उन में आया १३ जाया करो। तो निश्चय जानो कि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर फिर उन लोगों को तुम्हारे आगे से दूर न करेगा परन्तु वे तुम्हारे लिये फंदे और जाल और तुम्हारे पंजरों में छड़ियां और तुम्हारी आंखों में कांटे होंगे यहां लों कि इस अच्छे देश में से जो परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हें दिया है तुम नाश हो १४ जाओ। और देखो आज के दिन मैं समस्त पृथिवी के मार्ग जाता हूं और तुम अपने सारे मन में और अपने सारे प्राण में जानते हो कि उन सब भली बातों से जो जो परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हारे बिषय में कही हैं एक भी न घटी सब की सब तुम्हारे बिषय में पूरी हुईं उन में से एक भी न घटी। १५ सो ऐसा होगा कि जिस रीति से वह सारी भली बातें जिन के कारण परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने बाचा बांधी थी तुम्हारे आगे आईं उसी रीति से पर-मेश्वर सारी बुरी बातें तुम पर लावेगा यहां लों कि इस अच्छे देश में से जो परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हें दिया १६ है तुम्हें नाश करे। जब तुम परमेश्वर अपने ईश्वर की उस बाचा को जो उस ने तुम से बांधी भंग करोगे और जाके और देवतों की सेवा करोगे और उन्हें दण्डवत करोगे तब परमेश्वर का क्रोध तुम पर भड़केगा और तुम उस अच्छे देश में से जो उस ने तुम्हें दिया है शीघ्र नाश हो जाओगे॥

चौबीसवां पर्ब्ब।

तब यहूशूअ ने इसराएल की सारी १ गोष्ठियों को सिकम में एकट्ठा किया और इसराएल के प्राचीनों को और उन के प्रधानों को और उन के न्यायियों को और उन के करोड़ों को बुलाया और वे ईश्वर के आगे खड़े हुए॥

तब यहूशूअ ने सब लोगों को कहा २ कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि तुम्हारे पितर अबिरहाम का पिता तारह और नहूर के पिता प्राचीन समय से नदी के उस पार रहते थे अब और देवतों की सेवा करते थे। और मैं तुम्हारे पिता अबिरहाम को ३ नदी के उस पार से लेके उसे कनआन के समस्त देश में लिये फिरा और उस के बंश को बढ़ाया और उसे इजहाक दिया। और इजहाक को यअकूब और ४ एसौ दिये और एसौ को रहने के लिये शईर पहाड़ दिया परन्तु यअकूब और उस के बंश मिस्र को उतर गये। तब ५ मैं ने मूसा और हारून को भेजा और उन सब कामों से जो मैं ने वहां किये मिस्र को मारा और उस के पीछे तुम्हें निकाल लाया। और मैं तुम्हारे पितरों ६ को मिस्र से निकाल लाया और तुम समुद्र पर आये तब मिस्रियों ने रथ और घोड़चढ़े लेके लाल समुद्र लों तुम्हारे पितरों का पीछा किया। और ७ जब उन्हों ने परमेश्वर की प्रार्थना किई तब उस ने तुम्हारे और मिस्रियों के मध्य अंधियारा कर दिया और समुद्र को उन पर फेर दिया और उन्हें ढांप लिया और जो कुछ मैं ने मिस्रियों पर किया तुम ने अपनी आंखों से देखा

और तुम बहुत दिन लों अरण्य में रहा किये । फिर मैं तुम्हें उन अमूरियों के देश में जो यरदन के उस पार रहते थे ले आया और वे तुम से लड़े और मैं ने उन्हें तुम्हारे हाथ में सौंप दिया जिसतें तुम उन के देश को बश में करो और मैं ने उन्हें तुम्हारे आगे नाश किया । ९ तब मोआब का राजा सफ़ूर का बेटा बलक उठा और इसराएल से लड़ा और बऊर के बेटे बलआम को बुला भेजा कि तुम्हें स्राप देवे । १० पर मैं बलआम की न सुनता था इस लिये वह तुम्हें आशीस देता गया सो मैं ने तुम्हें उस के हाथ से छुड़ाया । ११ फिर तुम यरदन पार उतरे और यरीहो को आये और यरीहो के लोग अमूरी और फरिज्जी और कनआनी और हित्ती और जिरजाशी हवी और यबूसी तुम से लड़े और मैं ने उन्हें तुम्हारे बश में किया । १२ तब मैं ने तुम्हारे आगे बर्रों को भेजा और उन्हों ने उन्हें अर्थात् अमूरियों के दो राजाओं को तुम्हारे आगे से हांक दिया तेरी तलवार और तेरे धनुष से नहीं । १३ और मैं ने तुम्हें वह देश दिया जिस के लिये तुम ने परिश्रम न किया और वे नगर जिन्हें तुम ने न बनाया और तुम उन में बसे हो तुम दाख की बारी और जलपाई की बारी से जो तुम ने नहीं लगाई खाते हो ॥

१४ सो अब तुम परमेश्वर से डरो और सीधाई से और सच्चाई से उस की सेवा करो और उन देवतों को जिन की तुम्हारे पितर नदी के उस पार और मिस्र में सेवा करते थे निकाल फेंको और परमेश्वर की सेवा करो । १५ और यदि परमेश्वर की सेवा करना तुम्हें बुरा जान पड़े तो आज के दिन चुनो कि किस की सेवा करोगे उन देवतों की जिन की सेवा तुम्हारे पितर नदी के उस पार करते थे अथवा अमूरियों के देवतों को जिन के देश में तुम बसते हो परन्तु मैं और मेरा घराना परमेश्वर की सेवा करेंगे ॥

१६ तब लोगों ने उत्तर देके कहा कि ईश्वर न करे कि हम परमेश्वर को त्यागके आन देवतों की सेवा करें । १७ क्योंकि परमेश्वर हमारा ईश्वर वही है जो हमें और हमारे पितरों को मिस्र देश से बंधुआई के घर से निकाल लाया और जिस ने ये बड़े बड़े आश्चर्य्य हमारी आंखों के साम्ने दिखाये और सारे मार्ग में जहां जहां हम चलते थे और उन सब लोगों के मध्य जिन में से होके आये हमारी रक्षा किई । १८ और परमेश्वर ने सारे लोगों को अर्थात् अमूरियों को जो उस देश में बसते थे हमारे आगे से निकाल दिया इस लिये हम भी परमेश्वर की सेवा करेंगे क्योंकि वही हमारा ईश्वर है ॥

१९ फिर यहूशूअ ने लोगों से कहा कि तुम परमेश्वर की सेवा न कर सकोगे क्योंकि वह पवित्र ईश्वर वही ज्वलित सर्वशक्तिमान है वही तुम्हारे अपराधों और तुम्हारे पापों को क्षमा न करेगा । २० यदि तुम परमेश्वर को त्यागोगे और ऊपरी देवतों की सेवा करोगे तो वह भला करने के पीछे फिरके तुम्हें दुःख देगा और तुम्हें नाश कर डालेगा ॥

२१ तब लोगों ने यहूशूअ से कहा कि कभी नहीं परन्तु हम परमेश्वर ही की सेवा करेंगे ॥

२२ फिर यहूशूअ ने लोगों से कहा कि तुम आप ही अपने पर साक्षी हो कि सेवा के लिये तुम ने परमेश्वर को चुन लिया है ॥

तब वे बोले कि हम साक्षी हैं ॥

२३ सो अब तुम उपरी देवतों को जो तुम्हारे मध्य में हैं निकाल फेंको और अपने अपने मन को परमेश्वर इसराएल के ईश्वर की ओर झुकाओ॥

२४ तब लोगों ने यहूशूअ से कहा कि हम परमेश्वर अपने ईश्वर की सेवा करेंगे और उस का शब्द मानेंगे॥

२५ तब यहूशूअ ने उस दिन लोगों से बाचा बांधी और उन के लिये विधि और व्यवहार सिकम में ठहराये।

२६ और यहूशूअ ने ईश्वर की व्यवस्था की पुस्तक में इन बातों को लिख रक्खा और एक बड़ा पत्थर लेके बलूत के वृक्ष तले जो परमेश्वर के पवित्र स्थान में था खड़ा किया।

२७ और यहूशूअ ने सारे लोगों से कहा कि देखो यह पत्थर हमारा साक्षी होगा क्योंकि उस ने वे सब बातें जो परमेश्वर ने हमें कहीं सुनी हैं इस लिये यही तुम पर साक्षी होगा न हो कि तुम अपने ईश्वर से मुकर जाओ।

२८ फिर यहूशूअ ने हर एक जन को अपने अपने अधिकार की ओर बिदा किया॥

२९ और ऐसा हुआ कि इन बातों के पीछे परमेश्वर का दास नून का बेटा यहूशूअ एक सौ दस बरस का होके मर गया।

३० और उन्हों ने उस के अधिकार अर्थात् तिमनतसिरह के सिवाने में जो अफ़्रायम पहाड़ में गाअस की पहाड़ी की उत्तर दिशा इफ़-रायम पहाड़ में है उसे गाड़ा॥

३१ और इसराएल यहूशूअ के जीवन भर और प्राचीनों के जीवन भर जो यहूशूअ के पीछे जीये और परमेश्वर के समस्त कार्य्य को जो उस ने इसराएल के लिये किया जानते थे परमेश्वर की सेवा करते रहे॥

३२ और यूसुफ की हड्डियों को जिन्हें इसराएल के संतान मिस्र से उठा लाये थे उन्हों ने सिकम की उस भूमि में गाड़ा जिसे यअकूब ने सिकम के पिता हमूर के बेटों से सौ टुकड़े चांदी पर मोल लिया था सो वह भूमि यूसुफ के संतान का अधिकार हुई॥

३३ और हारून का बेटा इलिअज़र मर गया और उन्हों ने उसे उस पहाड़ी में जो उस के बेटे फ़ीनिहास की थी जो इफ़रायम के पहाड़ में उसे दिई गई थी गाड़ा॥

न्यायियों की पुस्तक ।

पहिला पर्ब्ब ।

१ अब यहूशूअ के मरने के पीछे यों हुआ कि इसराएल के संतानों ने परमेश्वर से यह कहके पूछा कि कनआनियों से युद्ध करने को हमारे कारण पहिले कौन २ चढ़ जावे । तब परमेश्वर ने कहा कि यहूदाह चढ़ जावे देखो मैं ने देश को ३ उस के हाथ में कर दिया है । तब यहूदाह ने अपने भाई समऊन से कहा कि मेरे भाग में मेरे साथ चढ़िये जिसतें हम कनआनियों से लड़ें और इसी रीति से मैं भी तेरे भाग में तेरे साथ चलूंगा ४ सो समऊन उस के साथ गया । तब यहूदाह चढ़ गया और परमेश्वर ने कनआनियों और फरिज्जियों को उन के हाथ में कर दिया और उन्हों ने उन में से बजक में दस सहस्र पुरुष को घात ५ किया । और उन्हों ने अदूनिबजक को बजक में पाया और उस्से लड़े और कनआनियों और फरिज्जियों को मारा । ६ परन्तु अदूनिबजक भाग निकला और उन्हों ने उस का पीछा किया और जा पकड़ा और उस के हाथ पांव के अंगूठे ७ काटे । तब अदूनिबजक ने कहा कि हाथ पांव के अंगूठे काटे हुए सत्तर राजा मेरे मंच तले के चूरचार चुन चुन खाते थे जैसा मैं ने किया था वैसा ही ईश्वर ने मुझे पलटा दिया फिर वे उसे यरूसलम में लाये और वह वहां मर गया ॥

८ अब यहूदाह के संतान यरूसलम से लड़े थे और उसे ले लिया था और उसे तलवार की धार से मारा और उस ९ नगर को आग से फूंक दिया । और उस के पीछे यहूदाह के संतान उतरके उन कनआनियों से जो पहाड़ में और दक्षिण में और तराई में बसते थे लड़े । और १० यहूदाह ने उन कनआनियों का जो हबरून में रहते थे साम्ना किया और उन्हों ने सीसी और अखिमान और तलमी को मारा और हबरून का नाम आगे करयतअरबअ था । और वह वहां से ११ दबीर के बासियों पर चढ़ गया और दबीर का नाम आगे करयतसिफर था । तब कालिब ने कहा कि जो कोई १२ करयतसिफर को मार लेगा मैं उसे अपनी कन्या अकस: को बिवाह देऊंगा । तब कालिब के लहुरे भाई कनज के १३ बेटे गुतनिएल ने उसे ले लिया और उस ने अपनी कन्या अकस: उसे बिवाह दिई । और ऐसा हुआ कि जाते ही उस १४ ने उसे उभाड़ा कि अपने पिता से एक खेत मांगे तब वह अपने गदहे पर से उतरी और कालिब ने उसे कहा कि तू क्या चाहती है । और उस ने उसे कहा १५ कि मुझे आशीस दीजिये क्योंकि तू ने मुझे दक्षिण दिशा की भूमि दिई मुझे पानी के सोते भी दीजिये तब कालिब ने ऊपर के और नीचे के सोते उसे दिये ॥

तब मूसा के ससुर कैनी के वंश १६ यहूदाह के संतान के साथ खजूरों के नगर में से यहूदाह के अरण्य को जो अराद की दक्षिण की ओर है चढ़ गये और उन लोगों में जा बसे ॥

और यहूदाह अपने भाई समऊन के १७ साथ गया और उन्हों ने उन कनआनियों को जो सफात में रहते थे जा मारा और उसे सर्बथा नाश किया और उस नगर का नाम हुरम: रक्खा । और यहूदाह १८ ने अज्ज: को उस के सिवाने सहित और असकलून को उस के सिवाने सहित

और अकरून को उस के सिवाने सहित १८ ले लिया । और परमेश्वर यहूदाह के साथ था और उस ने पर्बत को अधिकार में किया क्योंकि तराई के बासियों को निकाल न सका क्योंकि उन के रथ लोहे के थे । तब उन्हों ने मूसा के २० कहने के समान कालिब को हबरून दिया और उस ने वहां से अनाक के तीन बेटों को दूर किया ॥

२१ और बिनयमीन के संतान यबूसियों को जो यरूसलम में रहते थे दूर न किया परन्तु यबूसी बिनयमीन के संतान के साथ आज के दिन लों यरूसलम में बसते हैं ॥

२२ और यूसुफ का घराना भी बैतएल पर चढ़ गया और परमेश्वर उन के साथ २३ था । और यूसुफ के घराने ने बैतएल का भेद लेने को भेजा और उस नगर २४ का नाम आगे लौज था । और भेदियों ने नगर से एक मनुष्य को बाहर आते देखके उस्से कहा कि नगर का पैठ हमें बता और हम तुझ पर दया करेंगे । २५ जब उस ने उन्हें नगर का पैठ बताया तब उन्हों ने नगर को तलवार की धार से मारा परन्तु उस मनुष्य को उस के २६ सारे घराने समेत छोड़ दिया । और वह मनुष्य हित्तियों की भूमि में गया और वहां एक नगर बनाया और उस का नाम लौज रक्खा जो आज लों उस का नाम है ॥

२७ और मुनस्सी ने भी बैतशान को और उस के गांवों को और तअनाक को और उस के गांवों को और दोर के बासियों को और उस के गांवों को और इबलिआम के बासियों को और उस के गांवों को और मजिद्दो के बासियों को और उस के गांवों को न निकाल दिया परन्तु कनआनी उसी देश में बसा किये । २८ और यों हुआ कि जब इसराएल प्रबल हुए तब उन्हों ने कनआनियों से कर लिया परन्तु उन्हें सर्बथा निकाल न दिया । और इफरायम ने भी उन २९ कनआनियों को जो जज़र में बस्ते थे न निकाला परन्तु कनआनी उन के मध्य में जज़र में बस्ते थे । ज़बूलून ने ३० किलरून के बासियों को और नहलाल के बासियों को न निकाला परन्तु कनआनी उन के मध्य में रहे और करदायक हुए । यसर ने अक्को के बासियों को और सैदा ३१ के बासियों को और अहलाब और अकजीब और हिलब: और अफीक और रहूब के बासियों को दूर न किया । परन्तु यसरी ३२ उन कनआनियों के मध्य में जो उस देश के बासी थे बसे क्योंकि उन्हों ने उन्हें दूर न किया । नफताली ने बैत- ३३ शम्स के बासियों को और बैतअनात के बासियों को दूर न किया परन्तु वह उस देश के बासी कनआनियों के मध्य में रहा तथापि बैतशम्स और बैतअनात के बासी उन के करदायक हुए । और ३४ अमूरियों ने दान के संतान को पहाड़ में खेदा क्योंकि वे उन्हें तराई में उतरने न देते थे । परन्तु अमूरी हरिस पहाड़ ३५ में ऐयलन में और शालबीम में बसा किये तथापि यूसुफ के घराने का हाथ प्रबल हुआ यहां लों कि उन्हें करदायक किया । और अमूरियों का सिवाना ३६ अक्राबिम की चढ़ाई से पहाड़ के ऊपर लों था ॥

दूसरा पर्ब्ब

१ तब परमेश्वर के दूत ने जिलजाल से बोकीम को आके कहा कि मैं तुम्हें मिस्र से उठाके इस देश में जिस के कारण तुम्हारे पितरों से किरिया खाई थी ले आया और मैं ने कहा कि मैं तुम से कभी अपनी बाचा न तोड़ूंगा । और २

तुम इस देश के बासियों के साथ बाचा न बांधियो तुम उन की बेदियों को ढाइयो परन्तु तुम ने मेरे शब्द को न ३ माना तुम ने ऐसा क्यों किया। इसी कारण मैं ने भी कहा कि मैं उन्हें तुम्हारे आगे से दूर न करूंगा परन्तु वे तुम्हारे पांजरों में कांटे और उन के देवते तुम्हारे लिये फंदे होंगे॥

४ और ऐसा हुआ कि जब परमेश्वर के दूत ने सारे इसराएल के संतान को ये बातें कहीं तो उन्हों ने बड़े शब्द से ५ बिलाप किया। और उन्हों ने उस स्थान का नाम बोकीम रक्खा और उन्हों ने वहां परमेश्वर के लिये बलि चढ़ाया॥

६ और जब कि यहूशूअ ने लोगों को बिदा किया था तब इसराएल के संतान में से हर एक अपने अपने अधिकार पर गया जिसतें उस देश को बश में करे। ७ और वे लोग परमेश्वर की सेवा करते थे यहूशूअ के जीवन भर और उन प्राचीनों के जीवन भर जो यहूशूअ के पीछे रहते थे जिन्हों ने परमेश्वर का समस्त बड़ा कार्य्य देखा जिसे उस ने इसराएल के लिये किया परमेश्वर की ८ सेवा करते रहे। और परमेश्वर का दास नून का बेटा यहूशूअ एक सौ दस ९ बरस का बृद्ध होके मर गया। और उन्हों ने उस के अधिकार के सिवाने तिमनतहरिस में इफरायम के पहाड़ में जो जअश के पहाड़ की उत्तर अलंग १० है उसे गाड़ा। और वही समस्त पीढ़ी भी अपने पितरों में जा मिली

और उन के पीछे दूसरी पीढ़ी उठी जिस ने परमेश्वर को और उस कार्य्य को जो उस ने इसराएल के लिये किया ११ था नहीं पहिचाना। तब इसराएल के संतान ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई और बअलीम की सेवा किई। १२ और परमेश्वर अपने पितरों के ईश्वर को जो उन्हें मिस्र के देश से निकाल लाया था छोड़ दिया और ऊपरी देवों का पीछा किया अर्थात् अपने चारों ओर के लोगों के देवों के आगे दंडवत किई और परमेश्वर को रिस दिलाई। १३ सो उन्हों ने परमेश्वर को छोड़ दिया और बअल और इस्तारात की सेवा १४ किई। तब परमेश्वर का क्रोध इसराएल पर भड़का और उस ने उन्हें नष्टकारियों के बश में कर दिया और उन्हों ने उन्हें नष्ट किया और उस ने उन्हें उन के आसपास के बैरियों के हाथ में बेचा यहां लों कि वे फिर अपने बैरियों के १५ आगे न ठहर सक्ते थे। जहां कहीं वे निकलते थे परमेश्वर का हाथ बुराई के लिये उन के बिरोध में था जैसा कि परमेश्वर ने कहा था और जैसी कि परमेश्वर ने उन से किरिया खाई थी और वे अत्यंत दुःखी हुए॥

१६ तथापि परमेश्वर ने न्यायियों को खड़ा किया जिन्हों ने उन्हें उन के १७ नष्टकारियों के हाथ से छुड़ाया। तद भी वे अपने न्यायियों की भी न सुनते थे परन्तु ऊपरी देवों के पश्चाद्गामी हुए और उन के आगे दंडवत किई वे उस मार्ग से जिस पर उन के पितर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करके चलते थे बहुत शीघ्र उलटे फिरे और उन्हें पालन १८ न किया। और जब परमेश्वर उन के लिये न्यायियों को खड़ा करता था तब परमेश्वर न्यायी के साथ रहता था उन्हें उन के शत्रुन के हाथ से न्यायी के जीवन भर छुड़ाता रहा क्योंकि परमेश्वर उन के कहरने से जो उन के सताने और दुःख देनेहारों के कारण से था १९ पछताया। और ऐसा हुआ कि जब न्यायी

मर जाता था तब वे फेर फिर जाते थे और आप को अपने पितरों से अधिक बिगाड़ते थे कि और ऊपरी देवताओं का पीछा पकड़ते थे कि उन की सेवा और दंडवत करें वे अपनी अपनी चाल से और अपने अपने हठीले मार्ग से न फिरते थे॥

२० तब परमेश्वर का क्रोध इसराएल पर भड़का और उस ने कहा इस कारण कि जैसा इन लोगों ने मेरी उस आज्ञा को जो मैं ने उन के पितरों से बांधी थी भंग किया है और मेरे शब्द को न
२१ माना है। मैं भी अब से उन जातिगणों में से जिन्हें यहूशूअ छोड़के मरा किसी को भी उन के आगे से दूर न
२२ करूंगा। जिसतें मैं उन के द्वारा से इसराएल को परखूं कि वे अपने पितरों की नाईं परमेश्वर के मार्ग पर चलने
२३ को पालन करेंगे कि नहीं। सो परमेश्वर ने उन जातिगणों को छोड़ा कि उन्हें शीघ्र दूर न किया और उस ने उन्हें यहूशूअ के हाथ में न सौंपा॥

तीसरा पर्व्व।

१ और ये वे जातिगण हैं जिन्हें परमेश्वर ने इसराएल की परीक्षा के लिये उन में छोड़ा अर्थात् उन में जो कनआन के सारे संग्राम न जानते थे।
२ केवल जिसतें इसराएल के संतान को पीढ़ी निज करके जो आगे लड़ाई का भेद न जानते थे उन से सीखें।
३ फिलिस्तियों के पांच अध्यक्ष और सारे कनआनी और सैदानी और हवी थे जो लुबनान पर्बत में बअल हरमून पर्बत से लेके हमात के पैठ लों बसते थे।
४ और वे इसराएल की परीक्षा के लिये थे जिसतें जानें कि वे परमेश्वर की उन आज्ञाओं को जो उस ने मूसा की ओर से उन के पितरों को दिईं थीं मानेंगे कि नहीं॥

५ सो इसराएल के संतान कनआनियों हित्तियों और अमूरियों और फरिज्जियों और हवियों और यबूसियों के मध्य में
६ बसते थे। और उन्हों ने उन की बेटियों को अपनी पत्नियां किया और उन की बेटियां अपने बेटों को दिईं और उन
७ के देवतों की सेवा किई। और इसराएल के संतान ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई और परमेश्वर अपने ईश्वर को भूल गये और बअलीम और कुंजों की
८ सेवा किई। इस लिये इसराएल पर परमेश्वर का क्रोध भड़का और उस ने उन्हें कूशनरिसअतैन अरमनहराईम के राजा के हाथ बेचा और इसराएल के संतान ने कूशनरिसअतैन की सेवा आठ बरस लों किई॥

९ जब इसराएल के संतान ने परमेश्वर से दोहाई दिई तब परमेश्वर ने इसराएल के संतान के लिये एक निस्तारक जिस ने उन्हें छुड़ाया अर्थात् कालिब के लहुरे भाई कनज के पुत्र
१० अतिएल को खड़ा किया। और परमेश्वर का आत्मा उस पर था और उस ने इसराएल का न्याय किया और संग्राम को निकला तब परमेश्वर ने अराम के राजा कूशनरिसअतैन को उस के हाथ में सौंप दिया और उस का हाथ कूशनरिसअतैन पर प्रबल हुआ।
११ और देश को चालीस बरस लों चैन हुआ और कनज का बेटा अतिएल मर गया॥

१२ फिर इसराएल के संतान ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई तब परमेश्वर ने मोअब के राजा इजलून को इसराएल पर प्रबल किया इस कारण कि उन्हों ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई
१३ किई। और उस ने अम्मून के और अमालीक के संतान को अपने पास एकट्ठा किया और आके इसराएल को

मारा और खजूर पेड़ों के नगर को बश में किया। सो इसराएल के संतान मोअब के राजा इजलून की सेवा अठारह बरस लों करते रहे॥ १४

१५ परन्तु जब इसराएल के संतान परमेश्वर के आगे चिल्लाये तब परमेश्वर ने एक बिनयमीनी जैरा के बेटे अहूद को जो बेंहथा था उन के छुड़ाने के लिये उभाड़ा और इसराएल के संतान ने उस के द्वारा से मोअब के राजा इजलून के लिये भेंट भेजी। १६ परन्तु अहूद ने हाथ भर का दो धारा खंजर बनाया और उसे अपनी दहिनी जांघ में वस्त्र के तले बांधा। १७ और वह मोअब के राजा इजलून के पास भेंट लाया और इजलून बड़ा मोटा जन था॥

१८ और जब वह भेंट दे चुका तब उस ने उन लोगों को जो भेंट लाये थे बिदा किया। १९ परन्तु वह आप उन मूर्त्तिस्थान के पास से जो जिलजाल में हैं लौटा और कहा कि हे राजा मेरे पास तेरे लिये एक गुप्त संदेश है और उस ने कहा कि चुपके रह तब जितने लोग पास खड़े थे बाहर निकल गये। २० तब अहूद उस पास आया और वह एक ठंढे स्थान में जो उस ने अपने लिये बनाया था अकेला बैठा था और अहूद ने कहा कि ईश्वर का संदेश आप के लिये मुझ पास है तब वह आसन पर से उठ खड़ा हुआ। २१ तब अहूद ने अपना बायां हाथ बढ़ाया और दहिनी जांघ पर से खंजर को लिया और उस की तोंद में गोद दिया। २२ और मूठ भी फल के पीछे पैठ गई और चिकनाई से फल ढंप गया क्योंकि उस ने खंजर को उस की तोंद से नहीं निकाला और मल निकल पड़ा। २३ तब अहूद ओसारे में बाहर निकला और अपने पीछे ऊंचे स्थान के द्वारों को खैंच लिया और उन्हें बंद किया॥

२४ जब वह बाहर निकल गया तब उस के सेवक आये और उन्हों ने ऊंचे स्थान के द्वार को बंद देखके कहा कि निश्चय वह अपने ठंढे स्थान में चैन करता है। २५ और वे ठहरते ठहरते लज्जित हुए और देखो कि उस ने बैठक के द्वार को नहीं खोला तब उन्हों ने कुंजी लेके खोला और क्या देखते हैं कि उन का प्रभु भूमि पर मरा पड़ा है॥

२६ और उन के ठहरते ठहरते अहूद भाग निकला और मूर्त्तिस्थान से पार हुआ और सोरात में जाके बचा। २७ और आते ही यों हुआ कि उस ने पहाड़ इफरायम पर नरसिंगा फूंका तब इसराएल के संतान उस के साथ पहाड़ पर से उतरे और वह उन के आगे आगे हुआ। २८ और उस ने उन्हें कहा कि मेरे पीछे पीछे हो लेओ क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हारे शत्रु मोअबियों को तुम्हारे हाथ में कर दिया सो वे उस के पीछे पीछे उतर आये और यरदन के घाटों को जो मोअब की ओर थे ले लिया और एक को भी पार उतरने न दिया। २९ और उसी समय उन्हों ने मोअब के दस सहस्र मनुष्य के अटकल जो सब पुष्ट और साहसी थे घात किये उन में से एक भी न बचा। ३० सो उस दिन मोअब इसराएल के बश में हुआ और देश ने अस्सी बरस लों चैन पाया॥

३१ और उस के पीछे अनात का बेटा शमजर हुआ जिस ने छः सौ फिलिस्तियों को बैल की आर से मारा और उस ने भी इसराएल को छुड़ाया॥

गाया पर्व्व।

१ और जब अहूद मर गया तब इसराएल के संतान ने फिर परमेश्वर की दृष्टि में

२ बुराई किई। और परमेश्वर ने उन्हें कनआन के राजा यबीन के हाथ में बेचा जो हासूर में राज्य करता था और उस की सेना के अध्यक्ष का नाम सीसरा था और वह अन्यदेशियों के हरसत में ३ रहता था। तब इसराएल के संतान परमेश्वर के आगे चिल्लाये क्योंकि उस पास लोहे के नव सौ रथ थे और उस ने बीस बरस लों इसराएल के संतान को कठोरता से सताया॥

४ और लफीदात की पत्नी दबूर: आगमज्ञानिनी उस समय में इसराएल ५ का न्याय करती थी। और पहाड़ इफरायम में रामः और बैतएल के मध्य दबूर: के खजूर तले रहती थी और इसराएल के संतान उस पास न्याय के ६ लिये चढ़ आते थे। तब उस ने कादिस नफताली से अबिनुअम के बेटे बरक को बुला भेजा और उसे कहा कि क्या परमेश्वर इसराएल के ईश्वर ने आज्ञा नहीं किई कि जा और तबूर पहाड़ की ओर लोगों को बटोर और नफताली के संतान और जबुलून के संतान में से ७ दस सहस्र जन अपने साथ ले। और मैं कसून की नदी पर यबीन की सेना का प्रधान सीसरा को उस के रथ और उस की मंडली समेत तेरी ओर बटोरूंगा ८ और उसे तेरे हाथ में कर देऊंगा। और बरक ने उसे कहा कि यदि तू मेरे साथ जावेगी तो मैं जाऊंगा परन्तु यदि तू मेरे साथ न जावेगी तो मैं न जाऊंगा। ९ तब वह बोली कि निश्चय मैं तेरे साथ चलूंगी तथापि जो यात्रा तू करता है सो तेरी प्रतिष्ठा के लिये न होगी क्योंकि परमेश्वर सीसरा को एक स्त्री के हाथ में सौंपेगा तब दबूर: उठी और बरक १० के साथ कादिस को गई। और बरक ने जबुलून और नफताली को कादिस में बुलाया और वह दस सहस्र जन अपने साथ लेके चढ़ा और दबूर: भी उस के साथ साथ चढ़ गई॥

११ अब हिब्र कैनी ने जो मूसा के ससुर होबाब के बंश में का था कैनियों से आप को अलग किया और अपना डेरा जअनन्नीम में कादिस के लग बलूत के वृक्ष के पास जो है खड़ा किया॥

१२ तब सीसरा को संदेश पहुंचा कि अबिनुअम का बेटा बरक पहाड़ तबूर पर १३ चढ़ गया। तब सीसरा ने अपने समस्त रथ अर्थात् लोहे के नव सौ रथ और अपने साथ के सारे लोगों को अन्यदेशियों के हरसत से बुलाके कसून की नदी पर एकट्ठे किया॥

१४ तब दबूर: ने बरक से कहा कि उठ क्योंकि यह वह दिन है जिस में परमेश्वर ने सीसरा को तेरे हाथ में कर दिया है क्या परमेश्वर तेरे आगे नहीं गया तब बरक तबूर पहाड़ से नीचे उतरा और दस सहस्र जन उस के पीछे १५ पीछे। और परमेश्वर ने सीसरा को और समस्त रथों को और सारी सेना को बरक के आगे तलवार की धार से हरा दिया यहां लों कि सीसरा रथ पर से १६ उतरके पांव पांव भागा। परन्तु बरक रथों और सेनाओं के पीछे अन्यदेशियों के हरसत को इम लों रगेदे गया और सीसरा की सारी सेना तलवार की धार से मारी गई और एक भी न बचा। १७ तथापि सीसरा पांव पांव भागके हिब्र कैनी की पत्नी याइल के तंबू में घुसा क्योंकि हासूर के राजा यबीन और हिब्र १८ कैनी के घर में मिलाप था। तब याइल सीसरा से मिलने को निकली और उसे कहा कि हे मेरे प्रभु इधर फिरिये मेरे यहां फिर आइये मत डरिये और जब वह उस के तंबू में आया तब उस

१९ ने उसे एक ओढ़ने से ढांप दिया । तब उस ने उसे कहा कि मैं तेरी बिनती करता हूं कि मुझे तनिक जल दीजिये क्योंकि मैं प्यासा हूं सो उस ने दूध का एक कुप्पा खोलके उसे पिलाया और उसे
२० ढांप दिया । तब उस ने उसे कहा कि तंबू के द्वार पर खड़ी रह और यों होगा कि जब कोई आके तुझ से पूछे और कहे कि कोई पुरुष यहां है तो कहियो
२१ कि नहीं । तब हिब्र की पत्नी याइल ने तंबू की एक खूंटी और मोगरी हाथ में लिई और हौले हौले उस पास जाके उस खूंटी को उस की कनपटी में ठोंका और भूमि में गड़ा दिया क्योंकि वह थका होके बड़ी नींद में था सो वह
२२ मर गया । और देखो कि जब बरक सीसरा को खेदता आया तो याइल उस की भेंट को निकली और उसे कहा कि आ मैं तुझे उस जन को जिसे तू ढूंढ़ता है दिखाऊं और जब वह भीतर आया तो देखता है कि सीसरा मरा पड़ा है और खूंटी उस की कनपटी में है ॥

२३ सो ईश्वर ने उस दिन कनआन के राजा यबीन को इसराएल के संतान के
२४ बश में किया । और इसराएल के संतान का हाथ भाग्यवान हुआ और कनआन के राजा यबीन पर प्रबल हुआ यहां लों कि उन्हों ने कनआन के राजा यबीन को नाश किया ॥

पांचवां पर्ब्ब ।

१ तब दबूर: और अबिनुअम के बेटे बरक ने उसी दिन में गाके कहा

२ जब इसराएल में संपूर्ण निरंकुश थे जब लोगों ने मनमंता आप को सौंप
३ दिया परमेश्वर की स्तुति करो । हे राजाओ सुनो हे अध्यक्षो कान धरो मैं हों परमेश्वर के लिये गाऊंगा मैं परमेश्वर इसराएल के ईश्वर के लिये बजाऊंगा । हे परमेश्वर जब तू शईर
४ से निकला जब तू ने अदूम के चौगान से यात्रा किई तब भूमि थर्थरा उठी स्वर्ग भी टपके और मेघों से भी बूंदियां
५ पड़ीं । पहाड़ परमेश्वर के आगे बहि गये अर्थात् यह सीना परमेश्वर इसराएल के ईश्वर के आगे ॥

६ अनात के बेटे शमजर के दिनों में याइल के समय में राजमार्ग सूने थे और
७ पथिक टेढ़े मार्गों से जाते थे । गांव रह गये वे इसराएल में से उठ गये जब लों कि मैं दबूर: न उठी कि मैं इस-
८ राएल में एक माता उठी । जब उन्हों ने नये देवों को चुन लिया तब फाटकों पर युद्ध हुआ क्या इसराएल के चालीस सहस्रों में एक ढाल अथवा एक भाला था ॥

९ मेरा मन इसराएल के अध्यक्षों की ओर है जिन्हों ने लोगों में मनमंता आप को सौंप दिया तुम परमेश्वर का धन्य
१० मानो । तुम जो श्वेत गदहों पर चढ़ते हो जो न्याय पर बैठते हो और मार्ग
११ चलते हो सोचो । कि पनघटों में धनुषधारियों के शब्द से लोग परमेश्वर के धर्म्मों की चर्चा करेंगे अर्थात् धर्म्म कार्य्यों को जो गांवों में इसराएल पर हुए तब परमेश्वर के लोग फाटकों पर
१२ उतर जावेंगे । जाग जाग हे दबूर: जाग जाग गीत गा उठ हे बरक और अबिनुअम के बेटे अपने बंधुअन को बंधुआई में ले जा ॥

१३ तब उस ने उसे जो बच रहा है लोगों के प्रधानों पर प्रभुता दिई परमेश्वर ने मुझे सामर्थियों पर प्रभुता दिई ।
१४ इफरायम में से एक जड़ अमालीक के सन्मुख हुई तेरे लोगों में से हे बिनयमीन तेरे पीछे मकीर में से अध्यक्ष उतर आये और जबुलून में से जो लेखनी से खैंचते

१५ हैं । और इशकार के अध्यक्ष दबूर: के साथ थे अर्थात् इशकार बरक के साथ वह पांव पांव तराई को भेजा गया रूबिन के बिभागों में मन में बड़ी बड़ी
१६ चिन्ता हुई । तू क्यों झुंडों का मिमियाना सुन्ने को भेड़शालों में रहा रूबिन के बिभागों से मन में बड़ी बड़ी चिन्ता
१७ हुई । जिलिअद यरदन पार रहा और दान जहाजों पर क्यों रह गया यसर समुद्र के घाट में और कोलों में ठहर
१८ रहा । जबुलून और नफ़ताली जे चौगान में ऊंचे ऊंचे स्थानों पर अपने प्राण को तुच्छ जाना ॥

१९ राजा आके लड़े तब कनआन के राजाओं ने तअनाक में मजिद्दो पानियों पर युद्ध किया उन्हों ने कुछ
२० रोकड़ न लिया । वे स्वर्ग पर से लड़े तारागण अपने अपने चक्र में सीसरा से
२१ लड़े । कसून की नदी वह प्राचीन नदी कसून नदी उन्हें बहा ले गई हे मेरे प्राण तू ने बलवंतों को रौंद डाला ।
२२ तब उन के घोड़ों के खुर टापें मारते थे उस के बीरों के दौड़ाने से ॥

२३ परमेश्वर के दूत ने कहा कि मिरोज को स्राप देओ वहां के बासियों को अति स्राप देओ क्योंकि वे परमेश्वर की सहाय के लिये अर्थात् परमेश्वर की सहाय के लिये बलवंतों के सन्मुख न आये ॥

२४ कैनी हिब्र की पत्नी याइल सब स्त्रियों से अधिक धन्य होगी वह उन स्त्रियों से जो डेरों में हैं अधिक धन्य
२५ होगी । उस ने पानी मांगा उस ने उसे दूध दिया वह प्रतिष्ठित पात्र में माखन
२६ लाई । उस ने अपना हाथ खूंटी पर रक्खा और अपना दहिना हाथ कार्य्यकारी की मोगरी पर मोगरी से सीसरा को मारा उस ने उस के सिर को कुचला और गोवा और उस की कनपटी को आरंपार छेदा ।
२७ वह उस के चरणों के तले झुका गिर पड़ा पड़ रहा उस के चरणों के नीचे झुका गिर पड़ा जहां वह झुका तहां गिरके नाश हुआ ॥

२८ सीसरा की माता ने खिड़की से झांका और झरोखे से पुकारा कि उस का रथ क्यों बिलम्ब करता है उस के रथों के पहिये क्यों बिलम्ब करते हैं ।
२९ उस की बुद्धिमती स्त्रियों ने उत्तर दिया
३० हां उस ने आप ही उत्तर दिया । क्या वह न पावेंगे लूट न बांटेंगे एक एक पुरुष पीछे दो एक सहेलियां सीसरा को भांति भांति के रंगीले बस्त्र की लूट अर्थात् बूटे काढ़े हुए नाना रंग के बस्त्र की लूट दोनों अलंग बूटे काढ़े हुए नाना रंग के बस्त्र की लूट उठानेहारों के गलों के लिये ।
३१ इसी रीति से हे परमेश्वर तेरे सारे शत्रु नाश होवें परन्तु जो उस्से प्रेम रखते हैं सो सूर्य्य के तुल्य होवें जब वह अपने पराक्रम से निकलता है । और देश ने चालीस बरस चैन पाया ॥

छठवां पर्ब्ब ।

१ फिर इसराएल के संतान ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई तब परमेश्वर ने उन्हें सात बरस लों मिदयानियों के हाथ में सौंप दिया ।
२ और मिदयानियों का हाथ इसराएल पर प्रबल हुआ मिदयानियों के कारण इसराएल के संतानों ने अपने लिये पहाड़ों में मांद और कंदला और दृढ़स्थान बनाये ।
३ और ऐसा होता था कि जब इसराएल कुछ बोते थे तब मिदयानी और अमालीकी और पूरबी बंश उन पर चढ़ आते थे ।
४ और उन के साम्ने डेरा खड़ा करके अज्जः लों भूमि की बढ़ती को नष्ट करते थे और इसराएल के लिये न जीविका न भेड़ बकरी न गाय बैल न

५ गदहा छोड़ते थे। क्योंकि वे अपने ढोर और अपने तंबुओं सहित टिड्डी दल की नाईं मंडली होके आते थे वे और उन के ऊंट अगणित थे और वे पैठके उन के देश को नष्ट करते थे। ६ सो इसराएल मिदयानियों के कारण दुर्बल हो गये और इसराएल के संतान ने परमेश्वर की दोहाई दिई॥

७ और ऐसा हुआ कि जब इसराएल के संतान ने मिदयानियों के कारण ८ परमेश्वर की दोहाई दिई। तब परमेश्वर ने इसराएल के संतान पास एक जन अर्थात् आगमज्ञानी भेजा जिस ने उन्हें कहा कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि मैं तुम्हें मिस्र से ले आया और मैं तुम्हें सेवकाई के ९ घर से निकाल लाया। और मैं ने तुम्हें मिस्रियों के हाथ से और उन सब के हाथ से जो तुम्हें सताते थे छुड़ाया और तुम्हारे आगे से उन्हें दूर किया और १० उन का देश तुम्हें दिया। और मैं ने तुम्हें कहा कि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर मैं हूं उन अमूरियों के देवतों से जिन के देश में तुम बसते हो मत डरो पर तुम ने मेरा शब्द न माना॥

११ फिर परमेश्वर का एक दूत आया और बलूत वृक्ष तले उफ़र: में बैठा जो अबीअजरी यूआस का था और उस का बेटा जिदऊन कोल्हू के पास गोहूं झाड़ रहा था जिसतें मिदयानियों के १२ हाथ से छिपावे। तब परमेश्वर का दूत उसे दिखाई दिया और उसे कहा कि १३ हे महाबीर परमेश्वर तेरे साथ। तब जिदऊन ने उसे कहा कि हे मेरे प्रभु यदि परमेश्वर हमारे साथ है तो हम पर ये सब क्यों बीतते हैं और उस के समस्त आश्चर्य्य कहां हैं जो हमारे पितरों ने हम से बर्णन किया था क्या परमेश्वर हमें मिस्र से नहीं निकाल लाया परन्तु अब परमेश्वर ने हमें त्याग किया और हमें मिदयानियों के हाथ में सौंप दिया। १४ तब परमेश्वर ने उस पर दृष्टि किई और कहा कि अपनी इसी सामर्थ्य से जा और तू इसराएल को मिदयानियों के हाथ से छुड़ावेगा क्या मैं ने तुझे नहीं भेजा। १५ और उस ने उसे कहा कि हे प्रभु मैं किस करके इसराएल को छुड़ाऊं देख मेरा घराना मुनस्सी में सब से तुच्छ और मैं अपने पितरों के घराने में सब से छोटा। १६ तब परमेश्वर ने उसे कहा कि मैं तेरे साथ होऊंगा और तू एक ही मनुष्य के समान मिदयान को मारेगा। १७ तब उस ने उसे कहा कि यदि अब मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया है तो मुझे कोई लक्षण दिखा कि तू मुझ से बोलता है। १८ मैं तेरी बिनती करता हूं जब लों मैं तुझ पास फिर आऊं और अपने मांस की भेंट लाऊं और तेरे आगे धरूं तब लों तू यहां से मत जाइयो सो उस ने कहा कि जब लों तू फिर न आवे मैं ठहरूंगा॥

१९ तब जिदऊन गया और उस ने बकरी का एक मेम्ना और एक ईफा पिसान के फुलके सिद्ध किये और मांस को उस ने टोकरी में रक्खा और जूस एक कटोरे में डालके उस के लिये बलूत वृक्ष तले लाके भेंट चढ़ाई। २० तब ईश्वर के दूत ने उसे कहा कि मांस और फुलकों को लेके इस चटान पर रख और जूस उंडेल सो उस ने वैसे ही किया। २१ तब परमेश्वर के दूत ने अपने हाथ की लाठी को बढ़ाया और उस की टोंक से मांस और फुलकों को छुआ और उस चटान से आग निकली और मांस और फुलके को भस्म किया तब परमेश्वर का दूत उस की दृष्टि से जाता रहा॥

२२ जब जिदऊन ने देखा कि वह परमेश्वर का दूत था तब जिदऊन ने कहा कि हाय हे प्रभु परमेश्वर क्योंकि मैं ने ईश्वर का दूत साम्ने साम्ने देखा। २३ तब परमेश्वर ने उसे कहा कि तुझ पर कुशल हो मत डर तू न मरेगा॥

२४ तब जिदऊन ने वहां परमेश्वर के लिये बेदी बनाई और उस का नाम यह रक्खा कि परमेश्वर कुशल भेजे सो वह अबीअजरी उफर: में आज के दिन लों बनी है। २५ और ऐसा हुआ कि उसी रात परमेश्वर ने उसे कहा कि अपने पिता का बछड़ा और एक दूसरा बैल जो सात बरस का है ले और उस बेदी को जो तेरे पिता ने बअल के लिये बनाई है ढा दे और वह कुंज जो उस के निकट है काट डाल। २६ और परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये इस चटान पर जिस रीति से आज्ञा किई गई थी एक बेदी बना और उस दूसरे बछड़े को लेके उस कुंज की लकड़ियों से जिसे तू काटेगा होम की भेंट चढ़ा। २७ तब जिदऊन ने अपने सेवकों में से दस जन लिये और जैसा कि परमेश्वर ने उसे कहा था वैसा किया और इस कारण कि वह अपने पिता के घराने से और उस नगर के लोगों से डरता था वह दिन को न कर सका उस ने यह काम रात को किया॥

२८ और जब उस नगर के लोग बिहान को उठे तो क्या देखते हैं कि बअल की बेदी ढाई हुई पड़ी है और उस के पास का कुंज कटा पड़ा है और उस बेदी पर जो बनाई गई थी दूसरा बछड़ा चढ़ाया हुआ है। २९ तब उन्हों ने आपुस में कहा कि यह कौन है जिस ने यह काम किया और जब उन्हों ने यत्न करके पूछा तो लोगों ने कहा कि यूआस के बेटे जिदऊन का यह काम है। ३० तब उस नगर के लोगों ने यूआस को कहा कि अपने बेटे को निकाल ला जिसतें मारा जावे क्योंकि उस ने बअल की बेदी ढाई और उस के पास के कुंज को काट डाला। ३१ तब यूआस ने उन सभों को जो उस के साम्ने खड़े हुए थे कहा क्या तुम बअल के कारण बिवाद करोगे क्या तुम उसे बचाओगे जो कोई उस के लिये बिवाद करे सो बिहान होते ही मारा जावे यदि वह देव है तो आप ही अपने लिये बिवाद करे क्योंकि उस ने उस की बेदी ढा दिई। ३२ इस लिये उस ने उस दिन से उस का नाम यरुब्बअल रक्खा और कहा कि बअल अपना बिवाद उस्से करे क्योंकि उस ने उस की बेदी ढा दिई॥

३३ तब सारे मिदयानी और अमालीकी और पूरबी बंश एकट्ठे हुए और पार उतरके यजरअएल की तराई में डेरे खड़े किये। ३४ परन्तु परमेश्वर का आत्मा जिदऊन पर उतरा सो उस ने नरसिंगा फूंका और अबिअजर के लोग उस के पीछे एकट्ठे हुए। ३५ फिर उस ने सारे मुनस्सी में दूत भेजे सो वे भी उस के पीछे एकट्ठे हुए और उस ने यसर के और जबुलून के और नफताली के पास दूत भेजे सो वे भी उन को भेंट करने को आये॥

३६ तब जिदऊन ने ईश्वर से कहा कि यदि अपने कहने के समान तू इसराएल को मेरे हाथ से निस्तार देगा। ३७ तो देख मैं ऊन का एक गुच्छा खलिहान में रखता हूं यदि ओस केवल गुच्छे ही पर पड़े और समस्त पृथिवी सूखी रहे तो मैं निश्चय जानूंगा कि तू अपने कहे के समान इसराएल को मेरे हाथों से निस्तार देगा। ३८ और यों हुआ कि वह

प्रातःकाल उठा और उस ने उस गुच्छे को बटोरा और उस में की ओस एक
३८ कटोरा भरके निकाली। तब जिदऊन ने ईश्वर से कहा कि तेरा क्रोध मुझ पर न भड़के में एक ही बार और कहूंगा मैं तेरी बिनती करता हूं कि इसी गुच्छे पर केवल एक बार और तेरी परीक्षा करूं सो अब की केवल गुच्छा सूखा रहे और समस्त भूमि पर ओस
४० पड़े। सो ईश्वर ने उसी रात ऐसा किया कि गुच्छा तो सूखा था और केवल सारी भूमि पर ओस थी॥

सातवां पर्व्व।

१ तब यरुब्बअल जो जिदऊन है सारे लोग सहित जो उस के साथ थे तड़के उठा और हरूद के सोते पर डेरा खड़ा किया यहां लों कि मिदयानियों की सेना उस के उत्तर अलंग मोरिः की पहाड़ी
२ पास तराई में थी। तब परमेश्वर ने जिदऊन को कहा कि मिदयानियों को तेरे बश में कर देने को लोग अति बहुत हैं ऐसा न हो कि इसराएल मेरे साम्ने अहंकार करके कहे कि मेरे ही
३ हाथ ने मुझे बचाया। सो तू अब जाके लोगों के कानों में प्रचार करके कह कि जो कोई डरपोकना हो और भय रखता हो सो जिलिआद पहाड़ से तड़के फिर जाय सो उन लोगों में से बाईस सहस फिर
४ गये और दस सहस रहि गये। तब परमेश्वर ने जिदऊन से कहा कि तथापि अभी लोग बहुत हैं तू उन्हें पानी पर उतार ला और वहां मैं उन्हें तेरे लिये उन की परीक्षा करूंगा और ऐसा होगा कि जिस के विषय में मैं तुझे कहूंगा कि यह तेरे साथ जावे वही तेरे साथ जायेगा और हर एक जिस के विषय में मैं कहूं कि यह तेरे साथ न जावे सो
५ न जायगा। सो वह उन लोगों को पानी पर उतार लाया और परमेश्वर ने जिदऊन से कहा कि जो कोई पानी को कूकर की नाईं चपड़ चपड़ पीवे तू उस में से हर एक को अलग रख और हर एक जो अपने घुठनों पर झुकके पीवे
६ उन्हें भी। सो जिन्हों ने अपने हाथ अपने मुंह पास लाके चपड़ चपड़ पीया सो तीन सौ जन थे परन्तु बचे हुए लोग पानी पीने को घुठनों पर झुक गये।
७ तब परमेश्वर ने जिदऊन से कहा कि मैं उन तीन सौ मनुष्यों से जिन्हों ने चपड़ चपड़ पीया तुम्हें बचाऊंगा और मिदयानियों को तेरे हाथ में कर देऊंगा और समस्त लोग अपने स्थान को फिर
८ जायें। तब उन लोगों ने अपने भोजन और अपने नरसिंगे हाथों में लिये और उस ने सब इसराएल को डेरों में भेजा और उन तीन सौ को रख छोड़ा और मिदयानियों की सेना उस के नीचे तराई में थी॥

९ और ऐसा हुआ कि उसी रात परमेश्वर ने उसे कहा कि उठ सेना में उतर जा क्योंकि मैं ने उन्हें तेरे बश में
१० कर दिया। परन्तु यदि तू अकेला उतरने को डरता है तो अपने सेवक
११ फूराह के साथ सेना में उतर। और सुन वे क्या कहते हैं और पीछे से तेरे हाथ बली होंगे और तू सेना में उतर जाना सो वह अपने सेवक फूराह को साथ लेकर सेना के हथियारबंद की पांतियों
१२ में उतर गया। और मिदयानी और अमालीकी और पूरबी बंश बहुताई से टिड्डी की नाईं तराई में पड़े थे और उन के ऊंट समुद्र के तीर की बालू के समान
१३ अगणित थे। और जब जिदऊन आया तो क्या देखता है कि एक जन अपने परोसी से अपना स्वप्न कहि रहा है कि देख मैं ने एक स्वप्न देखा कि जव की

रोटी का एक फुलका मिदयानी की सेना में लुढ़का और एक तंबू में आया और उस तंबू को ऐसा मारा कि वह गिर गया और उसे उलट दिया ऐसा १४ कि वह डेरा पड़ा रहा । तब उस के परोसी ने उत्तर देके कहा कि यह इसराएल के पुरुष यूआस के बेटे जिदऊन की तलवार को छोड़ और नहीं है ईश्वर ने मिदयान और सारी सेना उस के बश में कर दिया है ॥

१५ और ऐसा हुआ कि जब जिदऊन ने यह स्वप्न और उस का अर्थ सुना तो दंडवत किई और इसराएल की सेना को फिर आके कहा कि उठो क्योंकि परमेश्वर ने मिदयानी सेना को तुम्हारे १६ हाथ में सौंप दिया । तब उस ने उन तीन सौ मनुष्यों को तीन जथा किया और उन सभों के हाथ में नरसिंगा और छूछा घड़ा दिया और एक एक दीपक १७ घड़े के भीतर रक्खा । और उन्हें कहा कि मुझे देखो और वैसा ही करो और सोचेत रहियो जब मैं छावनी के बाहर जाऊं तब जो कुछ मैं करूं सो तुम भी १८ कीजियो । और जब मैं और मेरे संगी नरसिंगे फूंकें तब तुम लोग भी सेना की हर एक ओर से नरसिंगा फूंकियो और बोलियो कि परमेश्वर के लिये और जिदऊन के लिये ॥

१९ फिर जिदऊन और वे सौ जन जो उस के साथ थे दो पहर की छावनी के बाहर आये और वहां पहरे बैठाये थे और उन्हों ने नरसिंगे फूंके और उन घड़ों को जो उन के हाथों में थे तोड़ा । २० और उन तीनों जथा ने नरसिंगे फूंके और घड़े तोड़े और दीपकों को अपने बायें हाथ में लिया और नरसिंगों को फूंकने के लिये अपने दहिने हाथों में और चिल्ला उठे कि परमेश्वर की और जिदऊन की तलवार । २१ और उन में से हर एक जन अपने स्थान पर सेना की चारों ओर खड़ा था तब सारी सेना दौड़ी और चिल्लाई और भाग निकली । २२ और उन तीनों सौओं ने नरसिंगे फूंके और परमेश्वर ने सारी सेना में हर एक की तलवार उस के संगी पर चलवाई और वे बैतसित्त: लों सरीर: की ओर और आबिलमहूल: के तीर लों जो तब्बात के लग है भाग गये ॥

२३ तब इसराएली लोग नफताली और यसर और समस्त मुनस्सी से एकट्ठे होके निकले और मिदयानियों का पीछा किया । २४ और जिदऊन ने सारे इफरायम पहाड़ में दूत भेजे और कहा कि मिदयानियों के बिरोध में उतरो और उन के आगे पानियों को बैतबर: और यरदन लों रोको तब सारे इफरायमी ने एकट्ठे होके पानियों को बैतबर: और यरदन लों रोका । २५ और उन्हों ने मिदयान के दो अध्यक्षों को गुराब और जिअब को पकड़ा और गुराब को गुराब पहाड़ पर और जिअब को जिअब के कोल्हू पास मार डाला और मिदयान का पीछा किया और गुराब और जिअब का सिर यरदन के उस पार जिदऊन पास लाये ॥

आठवां पर्ब्ब ।

१ और इफरायम के लोगों ने उसे कहा कि तू ने हम से यह क्यों किया कि जब तू मिदयानियों से लड़ने गया तब हमें न बुलाया और उन्हों ने उस्से बहुत बिवाद किया । २ तब उस ने उन्हें कहा कि मैं ने तुम्हारे तुल्य अब क्या किया क्या इफरायम के दाख का बीन्ना अबिअजर की लवनी से अति अच्छा है । ३ ईश्वर ने मिदयान के अध्यक्ष गुराब और जिअब को तुम्हारे हाथों में सौंप दिया सो तुम्हारे तुल्य काम करने को मुझे क्या

सामर्थ्य था जब उस ने यह कहा तब उन की रिस धीमी हुई॥

४ और जिदऊन यरदन पास आया वह और उस के तीन सौ संगी सहित पार ५ उतरे थके हुए और खेदते गये। तब उस ने सुक्कात के लोगों से कहा कि मेरे संगियों को रोटियां दीजिये क्योंकि वे थके हैं और मैं मिदयान के राजाओं का जिबह और जलमून: का पीछा ६ किये आता हूं। तब सुक्कात के अध्यक्षों ने कहा कि क्या जिबह और जलमून: अब तेरे हाथ में हो गये कि हम तेरे ७ कटक को रोटियां देवें। तब जिदऊन बोला कि जब परमेश्वर जिबह और जलमून: को मेरे हाथ में कर देगा तब मैं तुम्हारी देह को बन के कांटों से और ८ ऊंटकटारों से दाऊंगा। और वहां से फनुएल को गया और उन से ऐसा ही कहा और फनुएल के मनुष्यों ने भी सुक्कात के मनुष्यों के समान उसे उत्तर ९ दिया। और उस ने फनुएल के मनुष्यों से भी कहा कि जब मैं कुशल से फिरूंगा तब इस बुर्ज को ढा देऊंगा॥

१० अब जिबह और जलमून: अपनी सेना सहित जो पंदरह सहस्र पूरब के संतान की सेना में से बचे थे करकूर में था क्योंकि एक लाख बीस सहस्र मनुष्य खड्गधारी तलवार से जूझ गये ११ थे। तब जिदऊन उन की ओर जो नूबाह और युग्बिहाह की पूरब दिशा को तंबुओं में रहते थे गया और सेना को मारा क्योंकि वह सेना निश्चिन्त १२ थी। और जब जिबह और जलमून: भागे तो उस ने उन का पीछा किया और मिदयान के दोनों राजाओं को जिबह और जलमून: को पकड़ा और सारी सेना को डरा दिया॥

१३ और यूआस का बेटा जिदऊन सूर्य्य के उदय से आगे संग्राम से फिरा। १४ और सुक्कात के मनुष्यों में से एक तरुण को पकड़ा और उस्से पूछा तब उस ने उसे सतहत्तर मनुष्यों का पता बताया जो सुक्कात के अध्यक्ष और प्राचीन थे। १५ तब वह सुक्कात के मनुष्यों पास आया और कहा कि देखो जिबह और जलमून: जिन के विषय में तुम ने यह कहके मुझे ओलहना दिया कि क्या जिबह और जलमून: अब तेरे हाथ में हैं कि हम तेरे थके हुए मनुष्यों को रोटियां १६ देवें। तब उस ने नगर के प्राचीनों को और बन के कांटों को और ऊंटकटारों को लिया और उन से सुक्कातियों को १७ जनाया। और फनुएल का गढ़ ढा दिया और उस नगर के मनुष्यों को मार डाला॥

१८ तब उस ने जिबह और जलमून: को कहा कि वे लोग कैसे थे जिन्हें तुम ने तबूर में घात किया और वे बोले कि तेरे समान हर एक राजपुत्र के डौल १९ था। तब उस ने कहा कि वे मेरे सगे भाई थे जीवते परमेश्वर की किरिया है यदि तुम उन्हें जीता छोड़ते तो मैं २० भी तुम्हें न मारता। तब उस ने अपने पहिलौठे यित्र को आज्ञा किई कि उठ उन्हें बधन कर परन्तु उस तरुण ने अपनी तलवार न खींची क्योंकि वह डरता था २१ क्योंकि वह अब लों तरुण था। तब जिबह और जलमून: ने कहा कि तू उठके हमें घात कर क्योंकि जैसा मनुष्य तैसा उस का बल सो जिदऊन ने उठके जिबह और जलमून: को मार डाला और वे आभूषण जो उन के ऊंटों के गले में थे ले लिये॥

२२ तब इसराएल के मनुष्यों ने जिदऊन से कहा कि तू हम पर राज्य कर तू और तेरा बेटा और तेरा पोता भी हम पर राज्य करे क्योंकि तू ने हमें मिदयान

२३ के हाथों से छुड़ाया। तब जिदऊन ने उन्हें कहा कि मैं तुम पर प्रभुता न करूंगा और न मेरा बेटा तुम पर प्रभुता करेगा परमेश्वर तुम पर प्रभुता करेगा।
२४ और जिदऊन ने उन्हें कहा कि मैं तुम से एक बात चाहता हूं हर एक मनुष्य तुम्में से अपनी लूट का करनफूल मुझे देवे क्योंकि वे सोने के करनफूल रखते
२५ थे क्योंकि वे इसमअएली थे। और उन्हों ने उत्तर दिया कि हम मनमंता देंगे तब उन्हों ने बस्त्र बिछाया और हर एक ने अपनी लूट के धन से करनफूल उस पर
२६ डाल दिये। सो वे सोने के करनफूल जो उस ने मांगे तौल में एक सहस्र सात सौ शैकल सोने के थे गहना और पट्टा और लाल बस्त्र जो मिदयानी राजा पहिनते थे और ऊंटों के गले की सीकरों
२७ से अधिक थे। तब जिदऊन ने उस का एक अफूद बनाया और उसे अपने नगर ऊफर: में रक्खा और वहां सारे इसराएल के संतान उस के पीछे कुकर्म्मी हुए और जिदऊन और उस के घर के लिये फंदा हुआ॥

२८ और मिदयानी इस रीति से इसराएल के संतान के बश में हुए कि सिर फिर न उठा सके और जिदऊन के समय में चालीस बरस लों देश में चैन रहा।
२९ और यूआस का बेटा यरुब्बअल जाकर
३० अपने घर में रहा। और जिदऊन के सत्तर निज पुत्र थे क्योंकि उस की
३१ पत्नियां बहुत थीं। और उस की एक दासी भी जो सिकम में थी उस्से एक बेटा जनी और उस ने उस का नाम
३२ अबिमलिक रक्खा। और यूआस का बेटा जिदऊन अच्छा पुरनिया होके मर गया और अपने पिता यूआस की समाधि में अबिअजर के ऊफर: में गाड़ा गया॥

३३ और ऐसा हुआ कि जिदऊन के मरते ही इसराएल के संतान फिर गये और बअलीम के पीछे कुकर्म्मी हुए और बअल-
३४ बरीत को अपना देव बनाया। और इसराएल के संतान ने तो परमेश्वर अपने ईश्वर को जिस ने उन्हें हर एक ओर से उन के शत्रुन के हाथ से बचाया था
३५ स्मरण न किया। और उन्हों ने यरुब्बअल जिदऊन के घर पर जैसा उस ने इसराएल से भलाई किई वैसा उन्हों ने अनुग्रह न किया॥

नवां पर्ब्ब

१ अब यरुब्बअल का बेटा अबिमलिक अपने मामुओं के पास सिकम को गया और उन से और अपने नाना के समस्त
२ घराने से कहा। कि सिकम के सारे लोगों को कहो कि तुम्हारे लिये क्या भला है कि यरुब्बअल के सब सत्तर बेटे तुम पर राज्य करें अथवा कि एक ही राज्य करे और चेत रक्खो कि मैं
३ तुम्हारी हड्डी और तुम्हारा मांस हूं। और उस के मामुओं ने उस के लिये सिकम के लोगों से ये सब बातें कहीं यहां लों कि उन के मन अबिमलिक की ओर झुके क्योंकि वे बोले कि यह हमारा
४ भाई है। और उन्हों ने बअलबरीत के मन्दिर में से सत्तर टुकड़ा चांदी उसे दिई जिन से अबिमलिक ने तुच्छ और
५ नीच लोगों को अपनी ओर किया। और वह ऊफर: में अपने पिता के घर गया और उस ने यरुब्बअल के बेटे अपने सत्तर भाइयों को एक पत्थर पर मार डाला तथापि यरुब्बअल का सब से छोटा बेटा यूताम बच रहा क्योंकि उस ने आप को छिपाया॥

६ तब सिकम के सारे लोग और मिल्लो के सारे बासी एकट्ठे हुए और गये और बलूत के खंभे के निकट जो सिकम में था पहुंचके अबिमलिक को राजा किया।

७ और जब यूताम ने यह सुना तो वह गया और गरिजीम पहाड़ की चोटी पर चढ़के खड़ा हुआ और अपने शब्द से पुकारा और उन्हें कहा कि हे सिकम के लोगो मेरी सुनो जिसतें ईश्वर तुम्हारी सुने ॥

८ वृक्ष निकले कि किसी को अपने ऊपर राज्याभिषेक करें सो उन्हों ने जाके जलपाई वृक्ष से कहा कि तू हम पर ९ राज्य कर । परन्तु जलपाई वृक्ष ने उन से कहा कि मैं अपनी चिकनाई को जिस्से वे ईश्वर की और मनुष्य की प्रतिष्ठा देते हैं छोड़ देऊं और जाके १० वृक्षों पर बढ़ाया जाऊं । तब वृक्षों ने गूलर वृक्ष से कहा कि तू आ और हम ११ पर राज्य कर । और गूलर वृक्ष ने उन्हें कहा कि क्या मैं अपनी मिठाई और सुफल छोड़के वृक्षों पर बढ़ाया जाऊं । १२ तब वृक्षों ने दाख से कहा कि चल १३ हम पर राज्य कर । और दाख ने उन्हें कहा कि क्या मैं अपनी मदिरा जिस्से ईश्वर और मनुष्य आनन्द होते हैं छोड़के जाऊं और वृक्षों पर बढ़ाया जाऊं । १४ तब सब वृक्षों ने भटकटैया से कहा १५ कि तू आके हम पर राज्य कर । और भटकटैया ने वृक्षों से कहा कि यदि सच मुच मुझे अपने ऊपर राज्याभिषेक करते हो तो आओ मेरी छाया में शरण लेओ और यदि नहीं तो भटकटैया से एक आग निकलेगी और लबनान के आरज वृक्ष को जलावेगी ॥

१६ सो अब यदि सच्चाई और निष्कपट से तुम ने अबिमलिक को अपना राजा किया और यदि यरुब्बअल और उस के घर से अच्छा व्यवहार किया और यदि उसे उस उपकार के समान जो उस के १७ हाथों ने किया है पलटा दिया । क्योंकि मेरा पिता तुम्हारे कारण लड़ा और अपने प्राण को छोड़ दिया और तुम्हें मिदयान के हाथ से छुड़ाया । और तुम १८ आज मेरे पिता के घर पर उठे हो और उस के सत्तर बेटों को एक पत्थर पर मार डाला और उस की दासी के पुत्र अबिमलिक को सिकम के लोगों पर राजा किया क्योंकि वह तुम्हारा भाई है । सो यदि तुम ने सच्चाई और १९ निष्कपट से यरुब्बअल और उस के घर के साथ आज यह व्यवहार किया है तो तुम अबिमलिक से आनन्द रहो और वह भी तुम से आनन्द रहे । परन्तु २० यदि नहीं तो अबिमलिक से आग निकले और सिकम के लोगों को और मिल्लो के घर को भस्म करे और सिकम के लोग और मिल्लो के घर में से भी एक आग निकले और अबिमलिक को भस्म करे । तब यूताम भागके चला गया और २१ अपने भाई अबिमलिक के डर के मारे बईर में जाके रहा ॥

अब अबिमलिक ने इसराएल पर २२ तीन बरस राज्य किया । तब ईश्वर ने २३ अबिमलिक और सिकमियों के मध्य दुष्टात्मा भेजा और सिकम के लोगों ने अबिमलिक से छल किया । जिसतें वह २४ कठोरता जो यरुब्बअल के सत्तर बेटों के साथ किया था आवे और उन का लोहू उन के भाई अबिमलिक के सिर पर जिस ने उन्हें मार डाला और सिकमियों के सिर पर पड़े जो उन के भाइयों के मारने में साझी हुए । तब सिकम २५ के लोगों ने उस के लिये पहाड़ों की चोटियों पर घात में लोगों को बैठाया और जो उस मार्ग से आ निकलते थे वे उन्हें लूटते थे और अबिमलिक को संदेश पहुंचा । तब अबद का बेटा २६ जअल अपने भाइयों समेत आया और सिकम को गया और सिकम के लोगों

ने उस पर भरोसा रक्खा। और वे खेतों में निकले और अपने दाख के खेतों को लताड़ा और रौंदा और
किया और अपने देवतों के मन्दिर में घुसे और खाया पीया और अबिमलिक को धिक्कारा। तब अबद के बेटे जअल ने कहा कि अबिमलिक कौन और सिकम क्या है कि हम उस की सेवा करें क्या यरुब्बअल का बेटा नहीं और क्या जबूल उस का अध्यक्ष नहीं तुम सिकम के पिता हमूर के लोगों की सेवा करो और हम उस की सेवा क्यों करें। और हाय कि ये लोग मेरे वश में होते तो मैं अबिमलिक को अलग कर देता तब उस ने अबिमलिक से कहा कि तू अपने कटक बढ़ा और निकल आ॥

जब नगर के अध्यक्ष जबूल ने अबद के बेटे जअल की ये बातें सुनीं तो उस का क्रोध भड़का। ३१ और उस ने चतुराई से अबिमलिक के पास दूत भेजके कहा कि देख अबद का बेटा जअल अपने भाइयों समेत सिकम में आया और देख वे तेरे बिरोध में नगर को दृढ़ करते हैं। ३२ सो अब तू अपने लोगों सहित रात को उठ और खेत में घात में बैठ। और बिहान को ज्यों हीं सूर्य्य उदय हो त्यों हीं नगर पर चढ़ जा और नगर से लड़ और देख जब वह और उस के लोग तेरे पास निकल आवें तब जो हाथ से हो सके सो करियो॥

तब अबिमलिक अपने सारे लोग सहित रात ही को उठा और चार जथा करके सिकम के साम्ने घात में बैठा। ३५ और अबद का बेटा जअल बाहर निकला और नगर के फाटक के पैठ पर खड़ा हुआ और अबिमलिक अपने लोगों सहित ढूके से उठा। और जब जअल ने लोगों को देखा तो उस ने जबूल से कहा कि देख पहाड़ों की चोटियों पर से लोग उतरते हैं तब जबूल ने उसे कहा कि तू पहाड़ों की छाया को मनुष्यों की नाईं देखता है॥ तब जअल फिर कहके बोला कि देखो लोग खेत के मध्य से निकले आते हैं और एक जथा आभों के बलूत के मार्ग से आती है। ३८ तब जबूल ने उस्से कहा कि अब तेरा वह मुंह कहां है जिस्से तू ने कहा कि अबिमलिक कौन जो हम उस की सेवा करें क्या ये वे लोग नहीं जिन की तू ने निन्दा किई सो अब बाहर जाइये और उन से युद्ध कीजिये। ३९ तब जअल सिकमियों के आगे बाहर निकला और अबिमलिक से युद्ध किया। ४० और अबिमलिक ने उसे खदेड़ा और वह उस के साम्ने से भाग निकला और फाटक के पैठ लों आते बहुतेरे जूझ हुए गिर पड़े। ४१ और अबिमलिक ने अरूमः में बास किया और जबूल ने जअल को और उस के भाइयों को खदेड़ दिया कि वे सिकम में न रहें॥

४२ और बिहान को ऐसा हुआ कि लोग निकलके खेत में गये और अबिमलिक को संदेश पहुंचा। ४३ और उस ने लोगों को लेके उन को तीन जथा बिभाग किया और चौगान में ढूके में बैठा और क्या देखता है कि लोग नगर से निकले तब उस ने उन का साम्ना किया और उन्हें मार लिया। ४४ और अबिमलिक अपने साथ की जथा समेत आगे बढ़ा और नगर के फाटकों के पैठ में आके खड़ा हुआ और दो जथा उन लोगों पर जा पड़ीं जो खेत में थे और उन्हें काट डाला। ४५ और अबिमलिक उस दिन भर नगर से लड़ता रहा और नगर को ले लिया और नगर के लोगों को मार डाला

और नगर को ध्वस्त किया और वहां लोन छिड़राया॥

४६ जब सिकम के गढ़ के सब लोगों ने यह सुना तो वे अपने देव बिरीत के मन्दिर के गढ़ में शरण के लिये जा ४७ घुसे। और अबिमलिक को यह संदेश पहुंचा कि सिकम के गढ़ के सब लोग ४८ एकट्ठे हुए हैं। तब अबिमलिक अपने सारे लोग समेत जलमून पहाड़ पर चढ़ा और अबिमलिक ने कुल्हाड़ा अपने हाथ में लिया और वृक्षों में से एक डाली काटी और उसे उठाके अपने कांधे पर धरा और अपने साथियों से कहा कि जो कुछ तुम ने मुझे करते देखा है तुम ४९ भी शीघ्र वैसा करो। तब सब लोगों में से हर एक ने एक एक डाली काट लिई और अबिमलिक के पीछे हो लिये और उन्हें गढ़ पर डालके उन में आग लगा दिई यहां लों कि सिकम के गढ़ के समस्त जन मरे और वे सब पुरुष और स्त्री एक सहस्र के लगभग थे॥

५० तब अबिमलिक तैबीज में आया और तैबीज के साम्ने डेरा किया और उसे ५१ ले लिया। परन्तु नगर के भीतर एक दृढ़ गढ़ था और उस में समस्त पुरुष और स्त्रियां और नगर के सारे बासी भागके जा घुसे और उसे बंद किया और ५२ गढ़ की छत पर चढ़ गये। तब अबिमलिक गढ़ पर आया और उस्से लड़ा और चाहा कि गढ़ के द्वार जला देवे। ५३ तब किसी स्त्री ने चक्की के पाट का एक टुकड़ा अबिमलिक के सिर पर दे मारा जिसतें उस की खोपरी चूर हो ५४ जाय। तब उस ने अपने अस्त्रधारी तरुण को शीघ्र बुलाया और उसे कहा कि अपनी तलवार खींच और मुझे मार डाल जिसतें मेरे विषय में कहा न जाय कि एक स्त्री ने उसे घात किया तब उस तरुण ने उसे गोदा और वह मर गया। ५५ जब इसराएलियों ने देखा कि अबिमलिक मर गया तब हर एक अपने अपने स्थान को चला गया॥

५६ इसी रीति से ईश्वर ने अबिमलिक की दुष्टता को जो उस ने अपने सत्तर भाइयों को मारके अपने पिता से किई थी पलटा दिया। ५७ और सिकम के लोगों की सारी बुराई ईश्वर ने उन के सिरों पर डाली और वह स्राप जो यरुब्बअल के बेटे यूताम ने उन पर किया था उन पर पड़ा॥

दसवां पर्ब्ब।

१ और अबिमलिक के पीछे इशकार का एक जन दूदू का पोता फूआ: का पुत्र तोलअ इसराएल के संतान के बचाव के लिये उठा और वह इफरायम पहाड़ समीर में रहता था। २ और उस ने तेईस बरस इसराएल का न्याय किया और मर गया और समीर में गाड़ा गया॥

३ और उस के पीछे जिलिअदी याईर उठा और उस ने इसराएल का बाईस ४ बरस न्याय किया। और उस के तीस बेटे थे जो तीस गदहों पर चढ़ा करते थे और उन के तीस नगर थे जिन के नाम आज के दिन लों याईर के गांव हैं जो ५ जिलिअद के देश में हैं। और याईर मर गया और कमून में गाड़ा गया॥

६ तब इसराएल के संतानों ने परमेश्वर की दृष्टि में फिर बुराई किई और उन्हों ने बअलीम और इस्तारात और अराम के देवों की और सैदा के देवों की और मोअब के देवों की और अम्मून के संतान के देवों की और फिलिस्तियों के देवों की सेवा किई और परमेश्वर को छोड़ दिया और उस की सेवा ७ न किई। तब परमेश्वर का क्रोध इसराएल पर भड़का और उस ने उन्हें

फिलिस्तियों और अम्मून के संतानों ८ के हाथों में कर दिया। और उन्हों ने उस बरस से सारे इसराएल के संतान को जो यरदन के उस पार अमूरियों के देश में जो जिलिआद में थे अठारह बरस लों उन्हें अति खिजाके चूर ९ किया। और अम्मून के संतान ने यरदन पार होके यहूदाह से भी और बिनयमीन और इफरायम के घर से युद्ध किया यहां लों कि इसराएल अति दुःखी हुए॥

१० तब इसराएल के संतान ने परमेश्वर को पुकारके कहा कि हम ने तेरे बिरुद्ध में पाप किया इस कारण कि अपने ईश्वर को छोड़ा और बअलीम की सेवा ११ भी किई। तब परमेश्वर ने इसराएल के संतान से कहा कि क्या मैं ने तुम्हें मिसियों से और अमूरियों से अम्मून के संतान से और फ़िलिस्तियों से नहीं १२ छुड़ाया। और सैदानियों और अमालीकियों और मऊनियों ने भी तुम्हें दुःख दिया और तुम ने मेरी दोहाई दिई सो मैं ने १३ तुम्हें उन के हाथों से छुड़ाया। तथापि तुम ने मुझे त्याग किया और उपरी देवतों की सेवा किई इस लिये मैं तुम्हें १४ फिर न छुड़ाऊंगा। तुम जाओ और जिन देवों को तुम ने चुना है उन की दोहाई देओ कि वे तुम्हारे कष्ट के समय में १५ तुम्हें छुड़ावें। और इसराएल के संतानों ने परमेश्वर से कहा कि हम ने तो पाप किया सो जो तेरी दृष्टि में अच्छा जान पड़े सो हम से कर हम तेरी बिनती करते हैं केवल अब की हमें छुड़ा। १६ और उन्हों ने परदेशियों के देवतों को अपने में से दूर किया और परमेश्वर की सेवा करने लगे तब उस का जीव इसराएल की बिपत्ति के लिये उदासी में पड़ा॥

तब अम्मून के संतान बुलाये गये १७ और जिलिआद में छावनी किई और इसराएल के संतान एकट्ठे हुए और मिसफ़ः में छावनी किई। तब जिलिआद के १८ अध्यक्षों और लोगों ने आपुस में कहा कि वह कौन जन है जो अम्मून के संतान से युद्ध आरंभ करेगा वही जिलिआद के बासियों का प्रधान होगा॥

ग्यारहवां पर्ब्ब।

ब जिलिआदी इफ़ताह एक महा- १ बीर था जो गणिका स्त्री का बेटा था और जिलिआद से इफ़ताह उत्पन्न हुआ। और जिलिआद की पत्नी से बेटे जनी २ और उस की पत्नी के बेटे जब सयाने हुए तब उन्हों ने इफ़ताह को निकाल दिया और उसे कहा कि हमारे पिता के घर में तेरा अधिकार नहीं इस लिये कि तू उपरी स्त्री का लड़का है। तब ३ इफ़ताह अपने भाई के आगे से भागा और तूब के देश में जा रहा और इफ़ताह के पास बहुत से तुच्छ लोग एकट्ठे हुए और वे उस के साथ आया जाया करते थे॥

और कितने दिनों के पीछे अम्मून के ४ संतान ने इसराएल से लड़ाई किई। और ५ ऐसा हुआ कि जब अम्मून की संतान ने इसराएल से लड़ाई किई तब जिलिआद के प्राचीन निकले कि इफ़ताह को तूब के देश से ले आवें। और उन्हों ने ६ इफ़ताह को कहा कि आ और हमारा प्रधान हो जिस्तें हम अम्मून के संतानों से संग्राम करें। तब इफ़ताह ने जिलिआद ७ के संतानों से कहा कि क्या तुम ने मुझ से बैर करके मुझे मेरे पिता के घर से निकाल नहीं दिया सो अब जो तुम बिपत्ति में पड़े तो मुझ पास क्यों आये हो। और जिलिआद के प्राचीनों ने ८ इफ़ताह को कहा कि अब हम इस लिये तेरे पास फिर आये कि तू हमारे

चलके अम्मून के संतान से संग्राम करे और हमारा और जिलिअद के सारे

९ बासियों का प्रधान होवे । और इफताह ने जिलिअद के प्राचीनों से कहा कि यदि अम्मून के संतान से लड़ाई करने को तुम मुझे घर फेर लिये चलते हो और परमेश्वर उन्हें मेरे आगे सौंप देवे तो क्या मैं तुम्हारा प्रधान होऊंगा ।

१० तब जिलिअद के प्राचीनों ने इफताह को उत्तर दिया कि परमेश्वर हमारे मध्य में सुनवैया होगा यदि हम तेरे

११ कहने के समान न करें । तब इफताह जिलिअद के प्राचीनों के साथ चला और लोगों ने उसे अपना प्रधान और अध्यक्ष किया और इफताह ने मिसफः में परमेश्वर के आगे अपनी सारी बातें उच्चारण किईं ॥

१२ और इफताह ने अम्मून के संतान के राजा पास यह कहके दूत भेजे कि तुझे मुझ से क्या काम जो तू मुझ पर मेरे देश में युद्ध करने को चढ़ आया है ।

१३ तब अम्मून के संतान के राजा ने इफताह के दूतों को कहा इस लिये कि जब इसराएल मिस्र से निकल आये तब उन्हों ने मेरे देश को अरनून से लेके यब्बूक और यरदन लों ले लिया सो अब कुशल से उन्हें फेर देओ ॥

१४ तब इफताह ने दूतों को फेर अम्मून

१५ के संतान के राजा पास भेजा । और उसे कहा कि इफताह यह कहता है इसराएल ने मोअब का देश और अम्मून के

१६ संतान का देश नहीं लिया । परन्तु जब इसराएल मिस्र से चढ़ आये और अरण्य में होके लाल समुद्र और कादिस में आये

१७ आये । तब इसराएल ने अदूम के राजा को दूतों से यह कहला भेजा कि मुझे अपने देश में से जाने दीजिये परन्तु अदूम के राजा ने उस को न सुनी और इसी रीति से उस ने मोअब के राजा को भी कहला भेजा परन्तु उस ने न माना और इसराएल कादिस में ठहरा

१८ रहा । तब वह अरण्य में होके चला गया और अदूम के देश और मोअब देश से चक्कर खाके मोअब की पूरब ओर से आया और अरनून की पर्ली ओर डेरा खड़ा किया पर मोअब के सिवानों में प्रवेश न किया क्योंकि अरनून मोअब

१९ का सिवाना था । तब इसराएल ने अमूरियों के राजा सैहून को हसबून के राजा को दूत भेजे और इसराएल उसे बोला कि मुझे अपने स्थान को अपने देश में

२० से जाने दीजिये । पर सैहून ने इसराएल को अपने सिवाने से जाने न दिया परन्तु सैहून ने अपने समस्त लोग एकट्ठे किये और यहास में डेरा खड़ा किया और इस-

२१ राएल से लड़ा । और परमेश्वर इसराएल के ईश्वर ने सैहून को उस के सारे लोगों समेत इसराएल के हाथ में सौंप दिया और उन्हों ने उन्हें मारा सो इसराएल ने अमूरियों के सारे देश और उस देश

२२ के बासियों का अधिकार पाया । और उन्हों ने अरनून से लेके यब्बूक लों और अरण्य से यरदन लों अमूरियों के सारे

२३ सिवानों को बश में किया । सो अब परमेश्वर इसराएल के ईश्वर ने अमूरियों को अपने इसराएल लोग के आगे से दूर किया तो क्या तू उसे बश में करेगा ।

२४ जो तेरे देव कमूस ने तेरे बश में किया है उसे नहीं चाहता है सो परमेश्वर हमारा ईश्वर जिन्हें हमारे आगे से दूर

२५ करेगा हम उन्हें बश में करेंगे । और क्या तू मोअब के राजा सफूर के बेटे बलक से भला है उस ने कभी इसराएल से झगड़ा किया अथवा उस ने कभी उन

२६ से युद्ध किया । जब लों इसराएल हसबून में और उस के नगरों में और अरआअर

और उस के नगरों में और उन सब नगरों में जो अरनून के सिवानों में हैं तीन सौ बरस रहा किये तो उस समय लों तुम २७ ने उन्हें क्यों न छुड़ाया। सो मैं ने तेरा अपराध नहीं किया परन्तु मुझ से युद्ध करने में तू अनुचित करता है सो परमेश्वर न्यायी इसराएल के संतान के और अम्मून के संतान के मध्य में आज के दिन न्याय करे॥

२८ तिस पर भी अम्मून के संतान के राजा ने उन बातों को जो यफताह ने उसे कहला भेजीं न सुना॥

२९ तब परमेश्वर का आत्मा यफताह पर आया और वह जिलिआद और मुनस्सी के पार गया और जिलिआद के मिसफः से पार गया और जिलिआद के मिसफः से अम्मून के संतान की ओर उतरा। ३० और यफताह ने परमेश्वर की मनौती मानी और कहा कि यदि तू अम्मून के संतान को मेरे हाथ में सौंप ३१ देगा। तो ऐसा होगा कि जब मैं अम्मून के संतान से कुशल से फिर आऊंगा तो जो कुछ मेरे घर के द्वारों से पहिले मेरी भेंट को निकलेगा वह निश्चय परमेश्वर का होगा और मैं उसे बलिदान की भेंट के लिये चढ़ाऊंगा॥

३२ तब यफताह अम्मून के संतान की ओर पार उतरा कि उन से लड़े और परमेश्वर ने उन्हें उस के हाथ में सौंप ३३ दिया। और अरोआयर से लेके मिन्नियत के पहुंचने लों बीस नगर और दाख की बारी के चौगान लों अति बड़ी मार से उन्हें मारा इसी रीति से अम्मून के संतान इसराएल के संतानों के वश में हुए॥

३४ और जब यफताह मिसफः को अपने घर आया तब क्या देखता है कि उस की बेटी तबले बजाती और नाचती हुई उसे आगे लेने को निकली और वह उस की इकलौती थी उसे छोड़ उस का कोई बेटा बेटी न था। ३५ और यों हुआ कि जब उस ने उसे देखा तब अपने कपड़े फाड़े और बोला हाय हाय मेरी बेटी तू ने मुझे अति उदास किया और तू उन में से एक है जो मुझे सताते हैं क्योंकि मैं ने तो परमेश्वर को वचन दिया है और हट नहीं सकता। ३६ तब उस ने उसे कहा कि हे मेरे पिता यदि तू ने ईश्वर को वचन दिया है तो जो कुछ तेरे मुंह से निकला सो मुझ से कीजिये क्योंकि परमेश्वर ने तेरे शत्रु अम्मून के संतान से तेरा पलटा लिया ३७ है। फिर उस ने अपने पिता से कहा कि मेरे लिये इतना कीजिये कि दो मास मुझे छोड़िये जिसतें मैं पहाड़ों में फिरूं और अपनी संगियों को लेके अपने कुंआरपन पर बिलाप करूं। ३८ और वह बोला कि जा और उस ने उसे दो मास की छुट्टी दिई और वह अपनी संगियों सहित गई और पहाड़ों पर अपने ३९ कुंआरपन पर बिलाप किया। और दो मास के पीछे अपने पिता पास फिर आई और उस ने जैसी मनौती मानी थी वैसी ही उस्से किई और वह पुरुष से अज्ञान रही और यह इसराएल में ४० बिधि हुई। कि इसराएल की कन्या बरस बरस जिलिआदी यफताह की बेटी के सुमरने के लिये बरस में चार दिन जाती थीं॥

बारहवां पर्ब्ब।

१ और इफरायम के लोग एकट्ठे होके उत्तर दिशा को गये और यफताह से कहा कि जब तू अम्मून के संतान से युद्ध करने को पार उतरा तब हमें क्यों न बुलाया सो अब हम तेरे घर को तुझ समेत जला देंगे। २ तब यफताह ने

उन्हें उत्तर दिया कि मैं और मेरे लोग अम्मून के संतान से बड़ा झगड़ा रखते थे और जब मैं ने तुम्हें बुलाया तब तुम ने उन के हाथ से मुझे न छुड़ाया ।
३ और जब मैं ने देखा कि तू ने मुझे न छुड़ाया तब मैं ने अपना प्राण हाथ पर रक्खा और पार उतरके अम्मून के संतान का साम्हा किया और परमेश्वर ने उन्हें मेरे हाथ में सौंप दिया सो तुम आज के दिन किस लिये मुझ पर लड़ने को चढ़ आये हो ॥

४ तब इफताह ने सारे जिलिअदियों को एकट्ठा करके इफरायमियों से लड़ाई किई और जिलिअदियों ने इफरायमियों को मार लिया क्योंकि वे कहते थे कि जिलिअदी इफरायमियों में और मनस्सियों
५ में इफरायमियों के भगोड़े हैं । और जिलिअद ने इफरायमियों के आगे यरदन के घाटों को ले लिया और ऐसा हुआ कि जब इफरायमी भागे हुए आये और बोले कि मुझे पार जाने दे तब जिलिअदी उसे कहते थे कि तू इफरायमी
६ है यदि उस ने नाह किया । तब उन्हों ने उसे कहा कि शबूलीय कहो और उस ने सबूलीस कहा इस लिये कि वह ठीक उच्चारण कर न सकता था तब वे उसे पकड़के यरदन के घाटों पर मार डालते थे सो उस समय वहां बयालीस सहस्र इफरायमी मारे गये ॥

७ और इफताह ने छः बरस लों इसराएल का न्याय किया उस के पीछे जिलिअदी इफताह मर गया और जिलिअद की बस्तियों में गाड़ा गया ॥

८ और उस के पीछे बैतलहम का इबसान
९ इसराएल का न्यायी हुआ । और उस के तीस बेटे थे और तीस बेटियां और उस ने बेटों को बाहर भेजके उन के लिये तीस बेटियां मंगवाईं और उस ने सात बरस इसराएल का न्याय किया । तब इबसान मर गया
१० और बैतलहम में गाड़ा गया ॥

११ और उस के पीछे जबूलूनी ऐलून इसराएल का न्यायी हुआ और उस ने दस बरस इसराएल का न्याय किया ।
१२ और जबूलूनी ऐलून मर गया और ऐयलून में जबूलून के देश में गाड़ा गया ॥

१३ और उस के पीछे हलील का बेटा अबदून एक परअतूनी इसराएल का
१४ न्यायी हुआ । और उस के चालीस बेटे और तीस पोते थे जो सत्तर गदहों के बछेड़ों पर चढ़ा करते थे और आठ बरस उस ने इसराएल का न्याय किया ।
१५ और हलील का बेटा परअतूनी अबदून मर गया और अमालीकियों के पहाड़ इफरायम के देश में परअतून में गाड़ा गया ॥

तेरहवां पर्ब्ब ।

१ और इसराएल के संतान ने परमेश्वर की दृष्टि में फिर बुराई किई और परमेश्वर ने उन्हें चालीस बरस लों फिलिस्तियों के हाथ में सौंप दिया ॥

२ और दान के घराने में सुरअः का एक जन था जिस का नाम मनूहा था और उस की स्त्री बांझ होके न जनती
३ थी । तब परमेश्वर का दूत उस स्त्री को दिखाई दिया और उसे कहा कि देख तू बांझ होके नहीं जनती है पर
४ तू गर्भिणी होगी और बेटा जनेगी । सो चौकस हो और मदिरा अथवा मदक की कोई वस्तु न पीजियो और कोई
५ अशुद्ध वस्तु न खाइयो । क्योंकि देख तू गर्भिणी होगी और बेटा जनेगी और उस के सिर पर छुरा न फिरेगा क्योंकि वह बालक गर्भ से परमेश्वर के लिये नासरी होगा और वह इसराएलियों को फिलिस्तियों के हाथ से छुड़ाने को आरंभ करेगा ॥

६ तब उस स्त्री ने आके अपने पति से कहा कि ईश्वर का एक जन मुझ पास आया और उस का स्वरूप ईश्वर के दूत की नाईं अति डरावना था परन्तु मैं ने उसे न पूछा कि तू कहां का और उस ने भी अपना नाम मुझे न ७ बताया। पर उस ने मुझे कहा कि देख तू गर्भिणी होके बेटा जनेगी और अब तू मदिरा और कोई अमल की वस्तु न पीजियो और अपवित्र वस्तु मत खाइयो क्योंकि वह बालक गर्भ में से जीवन भर ईश्वर के लिये नासरी होगा॥

८ तब मनूहा ने परमेश्वर से बिनती करके कहा कि हे मेरे प्रभु ऐसा कर कि ईश्वर का वह जन जिसे तू ने भेजा था हम पास फिर आवे और हमें सिखावे कि हम उस लड़के के विषय में जो ९ उत्पन्न होगा क्या करें। और ईश्वर ने मनूहा का शब्द सुना और ईश्वर का दूत उस स्त्री पास जब वह खेत में थी फिर आया परन्तु उस का पति मनूहा १० उस पास न था। तब वह स्त्री फुरती से दौड़ी गई और अपने पति को बताया और उसे कहा कि देख वही मनुष्य जो अगिले दिन मुझे दिखाई दिया था फिर ११ दिखाई दिया है। तब मनूहा उठके अपनी पत्नी के पीछे चला और उस मनुष्य पास आके उसे कहा कि तू वही पुरुष है जिस ने इस स्त्री से बातें किईं और १२ उस ने कहा कि मैं हूं। तब मनूहा ने कहा कि जैसे तू ने कहा वैसे ही होवे लड़के की कौन सी रीति अथवा वह १३ क्या करेगा। तब परमेश्वर के दूत ने मनूहा से कहा कि सब जो मैं ने स्त्री १४ से कहा है वह चौकस रहे। वह दाख में का कुछ न खाय और मदिरा और कोई अमल न पीवे और अपवित्र वस्तु न खाय सब जो मैं ने उसे आज्ञा किई पालन करे।

१५ और मनूहा ने परमेश्वर के दूत को कहा कि तनिक आप ठहर जाइये कि हम आप के आगे एक मेम्ना सिद्ध करें। १६ परन्तु परमेश्वर के दूत ने मनूहा से कहा कि यद्यपि तू मुझे रोके तथापि मैं तेरी रोटी न खाऊंगा और यदि तू बलिदान की भेंट चढ़ावे तो तुझे उचित है कि परमेश्वर के लिये उसे चढ़ावे क्योंकि मनूहा न जानता था कि वह परमेश्वर १७ का दूत है। फिर मनूहा ने परमेश्वर के दूत से कहा कि आप का नाम क्या जिसतें जब आप का कहा पूरा होवे १८ हम आप की प्रतिष्ठा करें। और परमेश्वर के दूत ने उसे कहा कि तू मेरा नाम क्यों पूछता है कि वह आश्चर्य्यित। १९ तब मनूहा ने एक मेम्ना भोजन की भेंट के कारण परमेश्वर के लिये एक चटान पर चढ़ाया और उस ने आश्चर्य्यित रीति किई और मनूहा और उस की स्त्री देख २० रहे थे। क्योंकि ऐसा हुआ कि जब बेदी पर से स्वर्ग की ओर लौर उठी तब परमेश्वर का दूत लौर में होके बेदी पर से स्वर्ग को चला गया और मनूहा और उस की स्त्री ने देखा और मुंह के २१ बल भूमि पर गिरे। परन्तु परमेश्वर का दूत मनूहा को और उस की स्त्री को फेर दिखाई न दिया तब मनूहा ने जाना कि वह परमेश्वर का दूत था। २२ और मनूहा ने अपनी पत्नी से कहा कि हम अब निश्चय मर जावेंगे क्योंकि हम २३ ने ईश्वर को देखा। परन्तु उस की पत्नी ने उसे कहा कि यदि परमेश्वर की इच्छा हमें मारने की होती तो वह बलिदान की भेंट और भोजन की भेंट हमारे हाथों से ग्राह्य न करता और हमें यह सब न दिखाता और इस समय के समान हमें ये बातें न कहता॥

२४ और वह स्त्री बेटा जनी और उस

का नाम शम्सून रक्खा और वह लड़का बढ़ा और परमेश्वर ने उसे आशीष दिई।
२५ और परमेश्वर का आत्मा दान की छावनी सुरअः और इश्ताओल के बीच उसे उभाड़ने लगा॥

चौदहवां पर्व्व।

१ और शम्सून तिमनः में उतरा और तिमनः में उस ने फिलिस्तियों की बेटियों
२ में से एक स्त्री को देखा। और उस ने ऊपर आके अपने माता पिता से कहा कि मैं ने फिलिस्तियों की बेटियों में से तिमनः में एक को देखा सो उस्से मेरा
३ बिवाह करा देओ। तब उस के माता पिता ने उसे कहा कि क्या तेरे भाइयों की बेटियों में और मेरे सारे लोगों में कोई स्त्री नहीं जो तू अखतनः फिलिस्तियों में से पत्नी लिया चाहता है और शम्सून ने अपने पिता से कहा कि उसे मुझे बिलाइये क्योंकि वह मेरे मन में
४ भाई है। परन्तु उस के माता पिता न जानते थे कि यह परमेश्वर की ओर से है कि वह फिलिस्तियों से बैर है क्योंकि उस समय में फिलिस्ती इस-
५ राएलियों पर प्रभुता करते थे। तब शम्सून अपने माता पिता के संग तिमनः को उतरा और तिमनत के दाख की बारियों में आये और क्या देखता है कि एक युवा सिंह उस के सन्मुख गर्जता हुआ
६ उस पर आ पहुंचा। तब परमेश्वर का आत्मा सामर्थ्य के साथ शम्सून पर पड़ा और उस ने उसे ऐसा फाड़ा जैसे कोई मेम्ना को फाड़ता है और उस के हाथ में कुछ न था परन्तु जो कुछ उस ने किया था सो अपने माता पिता से भी
७ न कहा। तब उस ने जाके उस स्त्री से बातें किईं और वह शम्सून के मन में भाई॥

८ और कितने दिनों के पीछे वह उसे लेने फिरा और वह अलग होके उस सिंह की लोथ देखने गया और क्या देखता है कि सिंह की लोथ में मधुमक्खी का झुंड और छत्ता है। तब उस
९ ने उस में से हाथ में लिया और खाता हुआ चला गया और अपनी माता पिता के पास आया और उन्हें भी कुछ दिया और उन्हों ने खाया परन्तु उस ने उन्हें न कहा कि यह मधु सिंह की लोथ में से निकला॥

१० फिर उस का पिता उस स्त्री के पास गया और वहां शम्सून ने जेवनार किया क्योंकि तरुणों का यह व्यवहार
११ था। और ऐसा हुआ कि जब उन्हों ने उसे देखा तो वे तीस संगी को लाये
१२ कि उस के साथ रहें। और शम्सून ने उन्हें कहा कि मैं तुम से एक पहेली कहता हूं यदि तुम जेवनार के सात दिन के भीतर निश्चय उस का अर्थ मुझे बतलाओगे और उस का भेद पाओगे तो मैं तीस ओढ़ना और तीस जोड़े वस्त्र
१३ तुम्हें देऊंगा। परन्तु यदि तुम मुझे न बता सकोगे तो तुम तीस ओढ़ना और तीस जोड़े वस्त्र मुझे देओगे वे उसे बोले
१४ कि अपनी पहेली कह कि हम सुनें। तब उस ने उन्हें कहा कि भक्षक में से भक्ष्य निकला और बली में से मिठास और वे तीन दिन लों उस पहेली का अर्थ न
१५ बता सके। और यों हुआ कि सातवें दिन उन्हों ने शम्सून की स्त्री से कहा कि अपने पति को फुसला कि वह इस पहेली का अर्थ हमें बतावे नहीं तो हम तेरा और तेरे पिता का घर आग से जला देंगे क्या तुम ने हमें बुलाया है कि नहीं कि हमारा अधिकार लेओ।
१६ तब शम्सून की पत्नी उस के आगे बिलाप करके बोली कि तू मुझ से केवल बैर रखता है और मुझे प्यार नहीं करता तू ने मेरे

लोगों के संतानों से एक पहेली कही और मुझे न बतलाई और उस ने उसे कहा कि देख मैं ने अपने माता पिता को नहीं बताया सो क्या तुझे बताऊं ।

१७ और वह उस के आगे उन के जेवनार के सात दिन लों रोया किई और सातवें दिन ऐसा हुआ कि उस ने उसे बता दिया क्योंकि उस ने उसे निपट सताया और उस ने उस पहेली का अर्थ अपने

१८ लोगों के संतानों से कहा । और उस नगर के मनुष्यों ने सातवें दिन सूर्य्य के अस्त होने से पहिले उस्से कहा कि मधु से मीठा क्या है और सिंह से बलवान कौन तब उस ने उन्हें कहा कि यदि तुम मेरी कलोर से न जोतते तो

१९ मेरी पहेली का भेद न पावते । तब परमेश्वर का आत्मा उस पर पड़ा और वह अशकलून को गया और उन में से तीस मनुष्यों को मार डाला और उन के वस्त्र लिये और उन्हें जोड़ा जोड़ा वस्त्र दिये जिन्हों ने पहेली का अर्थ कहा था सो उस का क्रोध भड़का और अपने पिता के घर चढ़ गया ॥

२० परन्तु शम्सून की पत्नी उस के संगी को जिसे वह मित्र जानता था दिई गई ॥

पंदरहवां पर्ब्ब ।

१ और कितने दिन पीछे गोहूं की कटनी के समय में ऐसा हुआ कि शम्सून एक मेम्ना लेके अपनी पत्नी की भेंट को गया और कहा कि मैं अपनी पत्नी पास कोठरी में जाऊंगा परन्तु उस के पिता ने उसे

२ जाने न दिया । और उस के पिता ने कहा कि मुझे निश्चय हुआ कि तू उस्से बैर रखता था इस लिये मैं ने उसे तेरे संगी को दिया क्या उस की छोटी बहिन उस्से अति सुंदरी नहीं सो उस की संती उसे ले ॥

३ तब शम्सून ने उन के विषय में कहा कि अब मैं फिलिस्तियों से निर्दोष रहूंगा

४ क्योंकि मैं उन की हानि करूंगा । तब शम्सून ने जाके तीन सौ सियार पकड़े और दो दो की पूंछ एक साथ बांधी और पलीता लिया और पूंछ बांधके एक

५ एक पलीता बीच में बांधा । और पलीतों को बारके उन्हें फिलिस्तियों के खड़े खेतों में छोड़ दिया और फलों से लेके खड़े खेत लों और दाख के बारीकों को और जलपाई को जला दिया ।

६ तब फिलिस्तियों ने कहा कि यह किस ने किया और वे बोले कि तिमनी के जंवाई शम्सून ने क्योंकि उस ने उस की पत्नी को लेके उस के संगी को दिया तब फिलिस्ती चढ़ आये और उसे और उस के पिता को आग से जला दिया ॥

७ तब शम्सून ने उन्हें कहा कि यद्यपि तुम ने ऐसा किया है तथापि मैं तुम से प्रतिफल लेऊंगा तब पीछे चैन करूंगा ।

८ और उस ने उन्हें जांघ और कूला से मार मारके बड़ा नाश किया और फिर जाके ऐताम पर्ब्बत पर बैठ गया ॥

९ तब फिलिस्ती चढ़ गये और यहूदाह में डेरा किया और लही में फैल गये ।

१० और यहूदाह के मनुष्यों ने कहा कि तुम हम पर क्यों चढ़ आये हो और वे बोले कि शम्सून के बांधने को हम चढ़ आये हैं कि जैसा उस ने हम से किया हम

११ उस्से करें । तब यहूदाह के तीन सहस्र मनुष्य ऐताम पर्ब्बत की चोटी पर गये और शम्सून को कहा कि क्या तू नहीं जानता है कि फिलिस्ती हम पर प्रभुता करते हैं सो तू ने हम से यह क्या किया है और उस ने उन्हें कहा कि जैसा उन्हों ने मुझ से किया वैसा मैं ने उन से किया ।

१२ तब उन्हों ने उसे कहा कि हम आये हैं कि तुझे बांधके फिलिस्तियों के हाथ में

सौंप देवें और शम्सून ने उन्हें कहा कि मुझ से किरिया खाओ कि तुम आप मुझे न मारोगे । १३ पर उन्हों ने उसे कहा कि नहीं परन्तु हम तुझे दृढ़ता से बांधेंगे और तुझे उन के हाथ में सौंपेंगे पर निश्चय हम तुझे मार न डालेंगे और उन्हों ने उसे दो नई डोरियों से बांधा और उसे पहाड़ी पर से उतार लाये ॥

१४ जब वह लही में पहुंचा तब फिलिस्ती उस के मिलने पर ललकारे और परमेश्वर का आत्मा सामर्थ्य के साथ उस पर पड़ा और उस की बांह पर की डोरी जले सन की नाईं हो गई और उस के हाथों के बंधन खुल गये । १५ तब उस ने गदहे के एक नये जबड़े की हड्डी पाई और अपना हाथ बढ़ाके उसे लिया और उस ने उस्से एक सहस्र मनुष्य मार डाले । १६ और शम्सून बोला कि एक गदहे के जबड़े की हड्डी से ढेर पर ढेर मैं ने एक गदहे के जबड़े की हड्डी से एक सहस्र पुरुष मारे । १७ और ऐसा हुआ कि इतना कहके जबड़े की हड्डी को अपने हाथ से फेंक दिया और उस स्थान का नाम रामतलही रक्खा ॥

१८ और वह निपट पियासा हुआ तब वह परमेश्वर की बिनती करके बोला कि तू ने अपने दास के हाथ से ऐसा बड़ा बचाव दिया और अब क्या मैं पियासा मरके अख़तनों के हाथ में पडूं । १९ तब परमेश्वर ने एक गड़हा लही में खोदा और वहां से पानी निकला और उस ने उसे पीया तब उस के जी में जी आया और वह फिर जीया इस लिये उस ने उस का नाम बुलानेवाले का कूआ रक्खा जो आज लों लही में है ॥

२० और उस ने फिलिस्तियों के समय में बीस बरस लों इसराएल का न्याय किया ॥

सोलहवां पर्ब्ब ।

१ तब शम्सून अज्ज: को गया और वहां एक गणिका स्त्री देखी और उस पास गया । २ अज्जियों से कहा गया कि शम्सून यहां आया है सो उन्हों ने उसे घेर लिया और सारी रात नगर के फाटक पर उस की घात में लगे रहे पर रात भर यह कहके चुपचाप रहे कि जब बिहान होगा तब हम उसे मार लेंगे । ३ और शम्सून आधी रात लों पड़ा रहा और आधी रात को उठा और उस ने उस नगर के फाटक के द्वारों को और दो खंभों को पकड़के उन्हें अड़ंगे समेत उखाड़के अपने कांधे पर धरा और उन्हें उस पहाड़ी की चोटी पर जो हबरून के आगे है ले गया ॥

४ और उस के पीछे ऐसा हुआ कि उस ने सूरेक की तराई में एक स्त्री से प्रीति किई जिस का नाम दलील: था । ५ और फिलिस्तियों के प्रधान उस पास चढ़ गये और उसे कहा कि उसे फुसला और देख कि उस का महाबल कहां है और किस रीति से हम उसे बश में करें जिसतें हम उसे बांधके बश में करें और हर एक हम में से ग्यारह ग्यारह सौ टुकड़े चांदी तुझे देगा ॥

६ और दलील: ने शम्सून से कहा कि मुझे बता कि तेरा महाबल किस में है और किस्से तू बांधा जावे कि तुझे बश में करें । ७ और शम्सून ने उसे कहा कि यदि वे मुझे सात ओदी डोरियों से जो कभी झूरी न हुई हों बांधें तब मैं निर्बल हो जाऊंगा और दूसरे मनुष्य की नाईं हो जाऊंगा । ८ तब फिलिस्तियों के प्रधान उस पास सात ओदी डोरी लाये जो कभी न सूखी थीं और उस ने उन से उसे बांधा । ९ और घातवाले उस के संग कोठरी के भीतर दूके में थे और वह

९ उस्से बोली हे शम्सून फिलिस्ती तुझ पर पड़े तब उस ने उन डोरियों को सन के सूत की नाईं जो आग में लग जावे तोड़ा सो उस का बल जाना न गया ॥

१० तब दलील: ने शम्सून से कहा कि देख तू ने मुझे चिढ़ाया और मुझ से झूठ बोला अब मुझे बता कि तू किस्से ११ बांधा जावे। और उस ने उसे कहा कि यदि वे मुझे नई रस्सियों से कभी काम में न आई हों कसके बांधें तब मैं निर्बल होके दूसरे मनुष्य की नाईं १२ हो जाऊंगा। तब दलील: ने नई रस्सियां लेके उसे उन से बांधा और उस्से बोली कि हे शम्सून फिलिस्ती तुझ पर आये और घातवाले कोठरी में बैठे थे सो उस ने अपनी भुजाओं से उन्हें तागे की नाईं तोड़ डाला ॥

१३ तब दलील: ने शम्सून से कहा कि अब लों तू ने मुझे चिढ़ाया और मुझ से झूठ बोला मुझे बता कि तू किस्से बांधा जावे तब उस ने उसे कहा कि यदि तू मेरी १४ सात जटा ताने में बिने। तब उस ने खूंटे से उन्हें कसा और उस्से बोली कि हे शम्सून फिलिस्ती तुझ पर आ पड़े और वह नींद से जागा और बुन्ने के खूंटे को ताने के साथ लेके चला गया ॥

१५ तब उस ने उसे कहा कि क्योंकर तू कहता है कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूं और तेरा मन मुझ से नहीं लगा तू ने यह तीन बार मुझे चिढ़ाया और मुझे नहीं बताया कि तेरा महाबल किस में १६ है। और ऐसा हुआ कि जब उस ने उसे प्रतिदिन अपनी बातों से दबाया और उसे उसकाया यहां लों कि वह १७ जीवन से उदास हुआ। तब उस ने उसे अपने मन का सारा भेद खोलके कहा कि मेरे सिर पर छुरा नहीं फिरा क्योंकि मैं अपनी माता के गर्भ में से ईश्वर के लिये नासरी हूं यदि मेरा सिर मुड़ाया जावे तब मेरा बल मुझ से जाता रहेगा और मैं निर्बल होके और मनुष्य की नाईं हो जाऊंगा ॥

और जब दलील: ने देखा कि उस १८ ने अब उसे अपने सारे मन का भेद कह दिया तब उस ने फिलिस्तियों के प्रधानों को यह कहके बुलवाया कि एक बार फेर आओ क्योंकि उस ने अपने मन का सारा भेद मुझ पर प्रगट किया तब फिलिस्तियों के प्रधान उस पर चढ़ आये और रोकड़ अपने हाथ में लाये। और उस ने उसे अपने घुटनों पर सुला १९ रक्खा और एक जन को बुलवाके सात जटा जो उस के सिर पर थीं मुड़वाईं और उसे सताने लगी और उस का बल जाता रहा। तब वह बोली कि हे २० शम्सून फिलिस्ती तुझ पर आये और वह नींद से जागा और कहा कि मैं आगे की नाईं बाहर जाऊंगा और आप को बल से हिलाऊंगा परन्तु वह न जानता था कि परमेश्वर उसे छोड़ गया। तब २१ फिलिस्तियों ने उसे पकड़ा और उस की आंखें निकाल डालीं और उसे अज्ज: में उतार लाये और पीतल की सीकरों से उसे जकड़ा और वह बंदीगृह में पड़ा चक्की पीसता था ॥

तथापि सिर मुड़ाने के पीछे उस के २२ बाल फेर बढ़ने लगे। और फिलिस्तियों २३ के प्रधान एकट्ठे हुए कि अपने देव दजून के लिये बड़ा बलिदान चढ़ावें और आनन्द करें क्योंकि उन्हों ने कहा कि हमारे देव ने हमारे बैरी शम्सून को हमारे बश में कर दिया। और जब २४ लोगों ने उसे देखा तब उन्हों ने अपने देव की स्तुति किई क्योंकि उन्हों ने कहा कि हमारे देव ने हमारे बैरी को जिस ने हमारा देश उजाड़ा और हमारे

बहुत से लोगों को नाश किया हमारे २५ हाथ में सौंप दिया। और ऐसा हुआ कि जब वे मगन हो रहे थे तब उन्हों ने कहा कि शम्सून को बुलाओ कि हमारे आगे लीला करे तब उन्हों ने शम्सून को बंदीगृह से बुलवाया और वह उन के आगे लीला करने लगा और उन्हों २६ ने उसे खंभों के मध्य में रक्खा। तब शम्सून ने उस छोकड़े को जो उस का हाथ पकड़े हुए था कहा कि मुझे खंभे टटोलने दे जिन पर घर खड़ा है जिसतें २७ उन पर ओठगूं। और घर पुरुषों और स्त्रियों से भरपूर था और फिलिस्तियों के समस्त प्रधान वहीं थे और तीन सहस्र के लगभग स्त्री पुरुष छत पर थे २८ जो शम्सून की लीला देख रहे थे। तब शम्सून ने परमेश्वर को पुकारा और कहा कि हे प्रभु परमेश्वर दया करके मुझे स्मरण कीजिये केवल इसी बार मुझे बल दीजिये जिसतें मैं एकट्ठे फिलिस्तियों से अपनी दोनों आंखों का २९ पलटा लेऊं। तब शम्सून ने दोनों मध्य के खंभों को जिन पर घर खड़ा था एक को दहिने हाथ से और दूसरे को ३० बायें से पकड़ा। और शम्सून बोला कि मेरा प्राण भी फिलिस्तियों के साथ जाय सो उस ने बल करके उसे झुकाया और घर उन प्रधानों और उन सब लोगों पर जो उस में थे गिर पड़ा और वे लोग जिन्हें उस ने अपने साथ मारा उन से अधिक थे जिन्हें उस ने अपने जीते जी मारा था॥

३१ तब उस के भाई और उस के पिता के सारे घराने आये और उसे उठाया और उसे सुरअः और इसताल के मध्य में उस के पिता मनूहा की समाधि-स्थान में गाड़ा और उस ने बीस बरस लों इसराएल का न्याय किया॥

सत्रहवां पर्ब्ब।

१ और इफरायम पहाड़ का एक जन २ था जिस का नाम मीका था। और उस ने अपनी माता से कहा कि वे ग्यारह सौ रुपये जो तुझ से लिये गये थे जिस के कारण तू ने स्राप दिया और जिस के बिषय में मैं ने भी सुना देखो चांदी मेरे पास है मैं ने उसे लिया और उस की माता बोली कि हे मेरे बेटे ३ ईश्वर का धन्यबाद। और जब उस ने ग्यारह सौ चांदी अपनी माता को फेर दिई तब उस की माता ने कहा कि मैं ने यह चांदी अपने बेटे के लिये अपने हाथ से सर्बथा परमेश्वरार्पण किया था कि एक खोदी हुई और एक ढाली हुई मूर्त्ति बनाऊं सो अब मैं तुझे फेर देती ४ हूं। तथापि उस ने वह रोकड़ अपनी माता को दिया और उस की माता ने दो सौ चांदी लेके सोनार को दिया और उस ने एक खोदी हुई और एक ढाली हुई मूर्त्ति बनाई और वे दोनों ५ मीका के घर में थीं। और मीका के देवतों का एक मंदिर था और एक अफूद और तराफीम बनाया और अपने बेटों में से एक को पवित्र किया था ६ जो उस के लिये पुरोहित हुआ। उन दिनों में इसराएल में कोई राजा न था जिस को जो ठीक सूझ पड़ता था सो करता था॥

७ और यहूदाह के घराने का बैतलहम यहूदाह में का एक तरुण लावी था जो ८ वहां आ रहा था। और वह मनुष्य नगर में से यहूदाह के बैतलहम से निकला कि अंतेबास करे और वह चलते चलते ९ इफरायम पहाड़ को मीका के घर पहुंचा। तब मीका ने उसे कहा कि तू कहां से आता है और उस ने उसे कहा कि मैं बैतलहम यहूदाह में का एक लावी हूं

और मैं जाता हूं कि जहां कहीं ठिकाना होवे तहां रहूं। १० और मीका ने उसे कहा कि मेरे साथ रह और मेरे लिये पिता और पुरोहित हो और मैं तुझे बरस बरस दस टुकड़े चांदी और एक जोड़ा वस्त्र और भोजन देऊंगा सो लावी भीतर गया। ११ और वह लावी उस मनुष्य के साथ रहने पर प्रसन्न हुआ और वह तरुण उस के एक बेटा के समान हुआ। १२ और मीका ने उस लावी को ठहराया और वह तरुण उस का पुरोहित बना और मीका के घर में रहने लगा। १३ तब मीका ने कहा कि अब मैं जानता हूं कि परमेश्वर मेरा भला करेगा क्योंकि एक लावी मेरा पुरोहित हुआ॥

अठारहवां पर्ब्ब।

१ उन दिनों में इसराएल में कोई राजा न था और उन्हीं दिनों में दान की गाष्ठी अपने अधिकार के निवास ढूंढ़ती थी क्योंकि उस दिन लों इसराएल की गाष्ठियों में उन्हें कुछ अधिकार न मिला था। २ सो दान के संतान ने अपने घराने में से पांच जन अपने सिवाने सुरअः और इसताल से भेजे कि उन के देश को देखके भेद लेवें तब उन्हों ने उन से कहा कि जाओ देश को देखो जब वे इफरायम पहाड़ को मीका के घर आये तो वहां ३ रात भर टिके। जब वे मीका के घर के पास आये तब उन्हों ने उस लावी तरुण का शब्द पहिचाना और उधर मुड़के उसे कहा कि तुझे यहां कौन लाया और तू यहां क्या करता है और तेरा ४ यहां क्या काम। तब उस ने उन्हें कहा कि मीका ने मुझ से यों यों व्यवहार किया है और मुझे बनी में रक्खा है ५ और मैं उस का पुरोहित हूं। तब उन्हों ने उसे कहा कि ईश्वर से मंत्र लीजिये जिसतें हम जानें कि हमारा मार्ग जिस पर हम चलते हैं सिद्ध होगा अथवा नहीं। ६ और पुरोहित ने उन्हें कहा कि तुम्हारा मार्ग परमेश्वर के आगे है सो उस पर कुशल से जाओ॥

७ तब वे पांचों जन चल निकले और लैस को आये और वहां के लोगों को देखा कि सैदानियों के समान निश्चिंत रहते हैं और देश में कोई स्वामी न था जो उन्हें किसी बात में लज्जित करता और वे सैदानियों से दूर थे और किसी से कुछ कार्य्य न रखते थे। ८ तब वे अपने भाई कने सुरअः और इसताल को आये और उन के भाइयों ने पूछा कि तुम क्या करते हो। ९ तब वे बोले कि उठो और हम उन पर चढ़ जावें क्योंकि हम ने उस भूमि को देखा है और देखो वह बहुत अच्छी है और तुम चुपके हो उस भूमि में पैठके अधिकार लेने में आलस न करो। १० जब चलोगे तब निश्चिंत लोगों पर और बड़े देश में पहुंचोगे क्योंकि ईश्वर ने उसे तुम्हारे हाथ में कर दिया है वह एक देश है जिस में पृथिवी में की कोई वस्तु घटी नहीं है॥

११ तब दान के घराने में से सुरअः और इसताल के छः सो पुरुष युद्ध के हथियार बांधे हुए वहां से चले। १२ और वे चढ़ गये और आके यहूदाह के करयतअरीम में डेरा किया इस लिये आज के दिन लों उस स्थान का नाम उन्हों ने महानेह दान रक्खा देखो वह करयतअरीम के पीछे है। १३ और वहां से चलके इफरायम पहाड़ को पहुंचे और मीका के घर में आये। १४ तब उन पांच पुरुषों ने जो लैस के देश का भेद लेने को गये थे अपने भाइयों से उत्तर देके कहा कि तुम जानते हो कि इन घरों में अफूद और तराफीम और एक खोदी हुई और एक ढाली हुई मूर्त्ति है सो अब सोचो

१५ कि क्या करोगे। तब वे उधर फिरे और मीका के घर में उस लावी तरुण के स्थान में प्रवेश किया और उस्से कुशल १६ पूछा। और वे छ: सै जो दान के संतान के हथियारबंद थे फाटक के पैठ में खड़े १७ रहे। और वे पांच जो देश के भेद को निकले थे घरके भीतर घुसे और खोदी हुई मूर्त्ति और अफूद और तराफीम और ढाली हुई मूर्त्ति लिई और वह पुरोहित उन छ: सै हथियारबंद मनुष्यों के साथ १८ फाटक के पैठ में खड़ा था। और उन्हों ने मीका के घर में घुसके खोदी हुई मूर्त्ति अफूद और तराफीम और ढाली हुई मूर्त्ति उठा लिये तब पुरोहित उन १९ से बोला कि तुम क्या करते हो। तब उन्हों ने उसे कहा कि चुप रह अपने मुंह पर हाथ रखके हमारे साथ चल और हमारे लिये पिता और पुरोहित हो कौन सी बात भली है कि एक मनुष्य के घर का पुरोहित हो अथवा यह कि तू इसराएल के घराने की एक २० गोष्ठी का पुरोहित हो। और पुरोहित का मन मगन हुआ और उस ने अफूद और तराफीम और खोदी हुई मूर्त्ति को उठा लिया और लोगों के मध्य में प्रवेश २१ किया। सो वे फिरे और चले और बालकों और ढोर और गाड़ी को अपने आगे किया॥

२२ वे मीका के घर से बहुत दूर निकल गये थे कि मीका के घर के आसपास के बासी एकट्ठे हुए और दान के संतान २३ को जा ही लिया। और उन्हों ने दान के संतान को ललकारा तब उन्हों ने मुंह फेरा और मीका से कहा कि तुझे २४ क्या हुआ जो तू एकट्ठा हुआ है। और वह बोला कि तुम मेरे देवों को जिन्हें मैं ने बनाया और मेरे पुरोहित को लेके चले गये हो अब मेरा और क्या रहा और तुम मुझ से कहते हो कि तेरा क्या २५ हुआ। तब दान के संतान ने उसे कहा कि तू अपना शब्द हमें न सुना न हो कि क्रूर लोग तुझ पर लपकें और तू और तेरा २६ घराना मारा जावे। और दान के संतान ने अपना मार्ग लिया और जब मीका ने देखा कि वे मुझ से बली हैं तब मुंह फेरके अपने घर को लौट आया॥

२७ और वे मीका की बनाई हुई बस्तें उस के पुरोहित समेत लिये हुए लैस को उन लोगों पर आये जो चैन में और निश्चिंत थे और उन्हें तलवार की धार से मारा और नगर को आग से जला २८ दिया। और कोई छोड़वैया न था क्यों-कि सैदा से वह दूर था और वे किसी से व्यवहार न करते थे और वह उस तराई में था जो बैतरहुब के लग है और उन्हों ने २९ एक नगर बनाया और उस में बसे। और उस नगर का नाम दान रक्खा जो उन के पिता इसराएल के बेटे का नाम था परन्तु पहिले उस नगर का नाम लैस ३० था। और दान के संतान ने उस खोदी हुई मूर्त्ति की स्थापना किई और मुनस्सी के बेटे गैरसुम का बेटा यहूनतन और उस के बेटे उस देश की बंधुआई के दिन लों दान की गोष्ठी के पुरोहित ३१ बने रहे। और जब लों ईश्वर का मंदिर सैला में था उन्हों ने मीका की खोदी हुई मूर्त्ति अपने लिये स्थापित किई॥

उन्नीसवां पर्ब्ब।

१ और उन दिनों में ऐसा हुआ कि इसराएल में कोई राजा न था और एक लावी मनुष्य इफरायम पहाड़ की अलंग में रहता था और उस ने अपने लिये यहूदाह के बैतलहम से एक दासी पत्नी के २ लिये लिई। और उस की दासी कुकर्म्म करके उस पास से यहूदाह बैतलहम में

अपने पिता के घर जा रही और चार मास लों वहां रही॥

३ और उस का पति उठा और उस के पीछे चला कि उसे मनावे और फेर लावे और उस के साथ एक सेवक और दो गदहे थे सो वह उसे अपने पिता के घर में ले गई और उस दासी के पिता ने ज्यों उसे देखा त्यों उस की भेंट में

४ मगन हुआ। और उस के ससुर अर्थात् उस स्त्री के पिता ने उसे रोका और वह उस के साथ तीन दिन लों रहा और उन्हों ने खाया पीया और वहां टिके।

५ और चौथे दिन यों हुआ कि जब वे तड़के उठे तब उस ने चाहा कि यात्रा करे तब दासी के पिता ने अपने जंवाई से कहा कि रोटी के एक टुकड़े से अपने मन को संतुष्ट कर तब मार्ग लीजियो।

६ सो वे दोनों बैठ गये और मिलके खाया पीया क्योंकि दासी के पिता ने उस जन से कहा कि मैं तेरी बिनती करता हूं मान जा और रात भर रह जा और मन

७ को आह्लादित कर। फिर जब वह मनुष्य बिदा होने को उठा तब उस के ससुर ने उसे रोका इस लिये वह फेर

८ वहां रहा। और पांचवें दिन भोर को उठा कि बिदा होवे फिर दासी के पिता ने उसे कहा कि मैं तेरी बिनती करता हूं कि अपने मन को मगन कर सो वे दिन ढले लों ठहरे रहे और उन

९ दोनों ने खाया पीया। फिर वह मनुष्य और उस की दासी और उस का सेवक बिदा होने को उठे फिर कन्या के पिता ने उसे कहा कि देख दिन ढल चला है और सांझ पहुंची है अब रात भर ठहर जा देख दिन समाप्त हो चला है अब रह जा जिसतें तेरा मन मगन हो जावे और कल तड़के अपने डेरे जाने को

१० सिधार। परन्तु वह जन उस रात को न रहा पर उठके बिदा हुआ और यबूस के सन्मुख आया जिस का दूसरा नाम यरूसलम है और उस के संग काठी बांधे हुए दो गदहे और उस की दासी भी उस के साथ थी॥

११ जब वे यबूस पास पहुंचे तब दिन बहुत ढल गया तब सेवक ने अपने स्वामी से कहा कि मैं आप की बिनती करता हूं आइये यबूसियों के इस नगर

१२ में मुड़ें और उसी में टिकें। तब उस के स्वामी ने उसे कहा कि हम उपरी नगरों में जो इसराएल के संतानों का नहीं है न टिकेंगे परन्तु जिबअः को पार

१३ जायेंगे। और अपने सेवक से कहा कि चल इन स्थानों में से एक में जिबअः

१४ अथवा रामः में रात भर टिकें। और उन के जाते जाते बिनयमीन के जिबअः

१५ के पास सूर्य्य अस्त हुआ। और वे उधर फिरे कि जिबअः में टिकें और नगर के एक मार्ग में उतरके बैठ गये क्योंकि कोई ऐसा न था जो उन्हें अपने घर ले जाके टिकावे॥

१६ और देखो कि एक वृद्ध खेत पर से काम करके सांझ को वहां आया वह भी इफरायम पहाड़ का था जो जिबअः में आके बसा था परन्तु उस स्थान के बासी

१७ बिनयमीनी थे। जब उस ने आंखें उठाईं तब देखा कि एक पथिक नगर के मार्ग पर है तब उस वृद्ध ने उसे कहा कि तू किधर जाता है और कहां से

१८ आता है। तब उस ने उसे कहा कि हम यहूदाह बैतलहम से इफरायम के पहाड़ की अलंग लों जाते हैं जहां के हैं और मैं यहूदाह बैतलहम को गया था परन्तु अब परमेश्वर के मंदिर को जाता हूं और कोई ऐसा मनुष्य नहीं जो

१९ मुझे अपने घर उतारे। तथापि मेरे साथ गदहों के लिये अन्न भूसा है और मेरे और

तेरी दासी के लिये और इस तरुण के लिये जो मेरा सेवक है रोटी और मदिरा है किसी बस्तु की घटी नहीं है। २० और उस वृद्ध ने कहा कि तेरा कल्याण होवे तिस पर भी तेरा आवश्यक मुझ पर होवे केवल मार्ग में रात को मत टिको। २१ सो वह उसे अपने घर ले गया और उस के गदहों को चारा दिया तब उन्हों ने अपने पांव धोये और खाया पीया॥

२२ वे मगन हो रहे थे तब देखो कि उस नगर के लोगों ने जो बलियाल के लड़के थे उस घर को घेर लिया और द्वार ठोकके उस घर के स्वामी अर्थात् उस वृद्ध से कहा कि उस जन को जो तेरे घर में आया है बाहर ला जिसतें २३ हम उस्से कुकर्म्म करें। तब उस घर का स्वामी बाहर निकला और उन्हें कहा कि नहीं भाइयो मैं तुम्हारी बिनती करता हूं ऐसी दुष्टता न कीजिये देखो यह जन मेरे घर में आया है सो ऐसी २४ मूढ़ता न कीजिये। देख मैं अपनी कुंआरी बेटी और उस की दासी को बाहर ले आता हूं आप उन्हें आलिंगन कीजिये और इच्छा भर मनमंता जो चाहिये सो करिये परन्तु इस मनुष्य से २५ ऐसी दुर्गति न कीजिये। पर वे उस की बात न मानते थे सो वह जन उस की दासी को उन पास बाहर ले आया और उन्हों ने उस्से कुकर्म्म किया और रात भर बिहान लों उस की दुर्दशा किई और जब दिन निकलने लगा तब उसे छोड़ गये॥

२६ और वह स्त्री पौ फटते ही उस पुरुष के घर के द्वार पर जहां उस का स्वामी था आके गिर पड़ी यहां लों २७ कि उंजियाला हुआ। और उस का स्वामी बिहान को उठा और उस ने घर के द्वारों को खोला और बाहर निकला कि यात्रा करे और क्या देखता है कि उस की दासी घर के द्वार पर पड़ी है और उस के हाथ डेवढ़ी पर थे। तब उस ने उस्से कहा कि उठ २८ आ चलें पर कोई उत्तर न दिया तब उस मनुष्य ने उसे गदहे पर धर लिया और अपने स्थान को चल निकला॥

२९ और उस ने घर पहुंचके छुरी लिई और अपनी दासी को पकड़के हड्डियों समेत उस के बारह भाग करके टुकड़े टुकड़े काटे और इसराएल के समस्त सिवानों में भेज दिये। और ऐसा हुआ ३० कि जिस किसी ने वह देखा सो बोला कि जिस दिन से इसराएल के संतान मिस्र से चढ़ आये आज लों ऐसा कर्म्म न हुआ न देखा गया सोचो और बिचार करो और बोलो॥

बीसवां पर्ब्ब।

१ तब इसराएल के सारे संतान निकले और दान से लेके बिअरसबअ लों जिलिअद के देश लों मंडली एक मन होके परमेश्वर के आगे मिसफः में एकट्ठी २ हुई। और समस्त लोगों के अर्थात् इसराएल की समस्त गोष्ठियों के प्रधान जो ईश्वर के लोगों की सभा में आये चार लाख पगइत खड्गधारी थे॥

३ अब बिनयमीन के संतानों ने सुना कि इसराएल के संतान मिसफः में एकट्ठे हुए तब इसराएल के संतानों ने कहा ४ कि कह यह दुष्टता क्योंकर हुई। तब उस लावी पुरुष ने जो मारी गई स्त्री का पति था उत्तर देके कहा कि मैं अपनी दासी समेत बिनयमीन के ५ जिबिअत में टिकने को आया। और जिबिअत के लोग मुझ पर चढ़ आये और घर रात को घेर लिया और चाहा कि मुझे मार लेवें और उन्हों ने मेरी

दासी पर बरबस किया कि वह मर
६ गई। सो मैं ने अपनी दासी को पकड़के उसे टुकड़े टुकड़े किये और उन्हें इसराएल के अधिकार के समस्त देश में भेजा क्योंकि इसराएल में उन्हों ने कुकर्म्म
७ और मूढ़ता किई। देखो हे इसराएल के समस्त संतानो अब तुम भी अपना मंत्र और परामर्श देओ॥

८ तब सब के सब यह कहके एक जन की नाईं उठे और बोले कि हम में से कोई अपने डेरे में न जाएगा और हम में से कोई अपने घर की ओर न फिरेगा।
९ परन्तु अब हम जिबआः से यह करेंगे
१० कि चिट्ठी डालके उस पर चढ़ेंगे। और हम इसराएल के संतान की हर एक गोष्ठी में से सौ पीछे दस और सहस्र पीछे सौ और दस सहस्र पीछे एक सहस्र पुरुष लेंगे जिसतें लोगों के लिये भोजन लावें और जिस समय कि बिनयमीन के जिबआः में आवें तब उस समस्त मूढ़ता के कारण उन से करें जो उन्हों ने इसराएल में किई॥

११ सो सारे इसराएल के लोग एक मता
१२ होके उस नगर पर एकट्ठे हुए। और इसराएल की गोष्ठियों ने बिनयमीन की समस्त गोष्ठी में यह कहके लोग भेजे कि यह क्या दुष्टता है जो तुम्में हुई।
१३ सो अब बलियाल के संतानों को जो जिबआः में हैं हमें सौंप देओ कि हम उन्हें मार डालें और इसराएल में से बुराई को मिटा डालें परन्तु बिनयमीन के संतान ने अपने भाई इसराएल के संतान
१४ का कहा न माना। परन्तु बिनयमीन के संतान नगरों में से जिबआः में एकट्ठे हुए जिसतें इसराएल के संतान से संग्राम
१५ करें। और बिनयमीन के संतान जो नगरों में से उस समय गिने गये जिबआः के सात सौ चुने हुए जन को छोड़के छब्बीस सहस्र खड्गधारी थे। इन सब
१६ लोगों में सात सौ चुने हुए बैंहथे थे जिन में हर एक ढिलवांस के पत्थर से बाल भर मारने में न चूकता था। और बिन-
१७ यमीन को छोड़ इसराएल के संतान चार लाख योद्धा खड्गधारी थे॥

१८ और इसराएल के संतान उठके ईश्वर के मंदिर को गये और ईश्वर से मंत्र चाहा और कहा कि हम्में से कौन पहिले बिनयमीन के संतानों पर युद्ध के लिये चढ़ जावे तब परमेश्वर ने कहा कि पहिले यहूदाह॥

१९ सो इसराएल के संतान बिहान को उठे और जिबआः के सन्मुख छावनी
२० किई। और इसराएल के लोग बिनयमीन से लड़ाई करने को निकले और इसराएल के लोग जिबआः में उन के आगे पांती बांध संग्राम के लिये खड़े
२१ हुए। तब बिनयमीन के संतान ने जिबआः से निकलके उस दिन बाईस सहस्र इसराएलियों को मारके धूल में मिला दिया॥

२२ और इसराएल के लोगों ने हियाव किया और उसी स्थान पर जहां वे पहिले
२३ दिन लैस थे संग्राम किया। और इसराएल के संतानों ने ऊपर जाके सांझ लों परमेश्वर के आगे बिलाप किया और यह कहके परमेश्वर से मंत्र चाहा कि हम अपने भाई बिनयमीन के संतानों से संग्राम करें तब परमेश्वर ने कहा कि
२४ उन पर चढ़ जाओ। सो इसराएल के संतान दूसरे दिन बिनयमीन के संतान
२५ के बिरोध में समीप आये। और उस दूसरे दिन बिनयमीन ने जिबआः से निकलके इसराएल के संतान के अठारह सहस्र मनुष्य मारके भूमि पर डाल दिये ये सब खड्गधारी थे॥

२६ तब सारे इसराएल के संतान और सारे लोग ईश्वर के मंदिर को चढ़ गये और

रोये और वहां परमेश्वर के आगे बैठे और उस दिन सांझ लों ब्रत किया और बलिदान की भेंटें और कुशल की भेंटें परमे-
२७ श्वर के आगे चढ़ाईं। और इसराएल के संतानों ने परमेश्वर से बूझा क्योंकि परमेश्वर की साक्षी की मंजूषा उन दिनों
२८ में वहीं थी। और हारून के बेटे इलिअजर का बेटा फीनिहास उन दिनों में उस के आगे खड़ा रहता था तब उन्हों ने पूछा कि मैं अपने भाई बिनयमीन के संतान से फिर संग्राम के लिये जाऊं अथवा रहि जाऊं तब परमेश्वर ने कहा कि चढ़ जा क्योंकि कल मैं उन्हें तेरे हाथ में कर देऊंगा॥
२९ सो इसराएल ने जिबअ: के चारों
३० ओर घातियों को बैठाया। और इसराएल के संतान तीसरे दिन बिनयमीन के संतान के साम्ने चढ़ गये और जिबअ: के सन्मुख आगे के समान फिर पांती
३१ बांधी। और बिनयमीन के संतान ने उन का साम्ना किया और नगर से खैंचे गये और आगे की नाईं राजमार्गों में जो बैतएल को जाता है और दूसरा जिबअ: को तीस मनुष्य के अटकल
३२ मारते गये। और बिनयमीन के संतान ने कहा कि वे आगे की नाईं हमारे आगे मारे पड़े परन्तु इसराएल के संतान ने कहा कि आओ भागें और उन्हें
३३ नगर से राजमार्गों में खींच लावें। तब सारे इसराएल के लोग अपने स्थान से निकले और उस स्थान पर पांती बांधी जिस का नाम बअलतमर है और इसराएल के घातिये अपने स्थानों से
३४ जिबअ: के खेतों में से निकले। और समस्त इसराएल में से दस सहस्र चुने हुए जन जिबअ: के सन्मुख आये और बड़ा संग्राम हुआ पर उन्हों ने न जाना
३५ कि बिपत्ति उन पर आ पहुंची। तब परमेश्वर ने बिनयमीन को इसराएल के आगे मारा और इसराएल के संतान ने उस दिन पचीस सहस्र एक सौ जन बिनयमीनी मारे ये सब खड्गधारी थे॥
३६ और बिनयमीन के संतान ने देखा कि हम मारे पड़े क्योंकि इसराएल के मनुष्य बिनयमीनी को निकाल लाये क्योंकि वे उन घातियों के भरोसे पर थे जिन्हें उन्हों ने जिबअ: के अलंग बैठाया था।
३७ तब घातियों ने फुरती किई और जिबअ: पर लपके और बढ़ गये और सारे नगर को तलवार की
३८ धार से घात किया। अब इसराएल के मनुष्यों में और उन घातियों में एक पता ठहराया हुआ था कि नगर में से
३९ धूआं के साथ बड़ी लौर निकालें। जब इसराएल के मनुष्य संग्राम में हट गये तब बिनयमीनी उन में के तीस मनुष्य के अटकल मारने लगे क्योंकि उन्हों ने कहा कि निश्चय आगे के संग्राम के
४० समान वे हमारे आगे मारे पड़े। परन्तु जब लौर और धूआं एक साथ नगर से उठे तो बिनयमीनियों ने अपने पीछे दृष्टि किई और क्या देखते हैं कि नगर
४१ से स्वर्ग लों लौर उठ रही है। और जब इसराएल के संतान फिरे तब बिनयमीन के मनुष्य घबराये क्योंकि उन्हों ने देखा कि हम पर बिपत्ति आ
४२ पहुंची। इस लिये उन्हों ने इसराएलियों से भागके अरण्य का मार्ग लिया परन्तु संग्राम ने उन्हें जा लिया और जो नगरों से निकल आये थे उन्हों ने अपने
४३ बीच में नाश किया। उन्हों ने यों बिनयमीनी को घेरा और खेदा और सहज से जिबअ: के साम्ने पूरब दिशा
४४ में लताड़ा। और अठारह सहस्र बिन-
४५ यमीनी जूझ गये ये सब बीर थे। सो वे फिरे और रुम्मान की पहाड़ी की ओर

अरण्य में भाग गये और उन्हों ने राजमार्गों में चुन चुनके पांच सहस्र पुरुष मारे और गिदउम लों उन का पीछा किया और उन में से दो सहस्र और
४६ मारे । सो सब बिनयमीनी जो उस दिन जूझे पचीस सहस्र खड्गधारी बीर थे ।
४७ परन्तु छः सौ मनुष्य बन की ओर फिरके रम्मान पहाड़ी को भाग गये और चार मास रम्मान पहाड़ी में रहे ॥
४८ तब इसराएल के मनुष्य बिनयमीन के संतान पर फिरे और बसती के पुरुष और पशु और सब को जो उन के हाथ लगा तलवार की धार से मारा और जिस जिस नगर में आये उसे फूंक दिया ॥

इक्कीसवां पर्ब्ब ।

१ अब इसराएल के लोगों ने मिसफः में यह कहके किरिया खाई थी कि हम में से कोई अपनी बेटी पत्नी के
२ लिये बिनयमीन को न देगा । और लोग ईश्वर के मंदिर को आये और ईश्वर के आगे सांझ लों चिल्लाये और बिलख
३ बिलख रोये । और बोले कि हे परमेश्वर इसराएल के ईश्वर इसराएल पर यह क्यों हुआ कि इसराएल से आज के
४ दिन एक गोष्ठी घट गई । और यों हुआ कि बिहान को उठके उन लोगों ने वहां एक बेदी बनाई और बलिदान की भेंटें और कुशल की भेंटें चढ़ाईं ॥
५ और इसराएल के संतानों ने कहा कि मंडली में इसराएल की सारी गोष्ठियों में से परमेश्वर की मंडली के संग कौन कौन नहीं चढ़ा क्योंकि उन्हों ने उस के विषय में बड़ी किरिया खाई थी कि जो मिसफः में परमेश्वर के आगे न
६ आवेगा सो निश्चय मारा जावेगा । सो इसराएल के संतान अपने भाई बिनयमीन के कारण पछताये और बोले कि आज इसराएल में से एक गोष्ठी कट
गई । हम उन के लिये पत्नियां कहां
७ से लावें क्योंकि हम ने तो परमेश्वर की किरिया खाई है कि हम अपनी बेटियां
८ उन्हें पत्नियों के लिये न देंगे । तब उन्हों ने कहा कि इसराएल की गोष्ठियों में से वह कौन है जो मिसफः में परमेश्वर के आगे नहीं चढ़ा और देखो कि यबीस जिलिआद में से कोई सभा में नहीं आया
९ था । क्योंकि लोग गिने गये और यबीस जिलिआद के बासियों में से कोई न था ।
१० तब मंडली ने बारह सहस्र जन को जो बड़े बीर थे आज्ञा करके उधर भेजा कि यबीस जिलिआद के बासियों को जाके स्त्री और बालक सहित खड्ग की धार
११ से मार डालो । पर इतना कीजियो कि हर एक पुरुष और हर एक स्त्री को जो पुरुष से जाता हो सर्बथा नष्ट कर देना ।
१२ सो उन्हों ने यबीस जिलिआद के बासियों में चार सौ कुंआरी पाईं जो पुरुष से अज्ञान थीं और उन्हें सैला की छावनी में जो कनआन के देश में है ले आये ॥
१३ तब सारी मंडली ने बिनयमीन के संतान को जो रम्मान की पहाड़ी में थे कहला भेजा और उन से कुशल का
१४ प्रचार किया । और उस समय बिनयमीन फिर आये और उन्हों ने उन स्त्रियों को जो यबीस जिलिआद में से जीती बचा रक्खा था उन्हें दिया तथापि उन के
१५ लिये न अटीं । और लोग बिनयमीन के लिये पछताये क्योंकि परमेश्वर ने इसराएल की गोष्ठियों में फूट डाली ॥
१६ तब मंडली के प्राचीन बोले कि उबरे हुओं के लिये पत्नियों के विषय में क्या करें क्योंकि बिनयमीन में से सारी
१७ स्त्री नष्ट हुईं । तब उन्हों ने कहा कि बिनयमीन में से जो बच रहे हैं अवश्य है कि उन के लिये अधिकार होवे जिसतें

इसराएल की एक गोष्ठी नष्ट न हो जावे। १८ तथापि हम तो अपनी बेटियां उन्हें पत्नियों के लिये दे नहीं सक्ते क्योंकि इसराएल के संतानों ने यह कहके किरिया खाई है कि वह जो बिनयमीन को पत्नी देवे सो स्रापित है ॥

१९ तब उन्हों ने कहा कि देखो सैला में परमेश्वर के लिये बरस बरस का पर्ब्ब है जो बैतएल की उत्तर अलंग को और उस राजमार्ग की पूरब अलंग जो बैतएल से सिकम को जाता है और लबोना के २० दक्खिन। इस लिये उन्हों ने बिनयमीन के संतानों को आज्ञा करके कहा कि जाओ और दाख की बारियों में घात में २१ रहो। और देखते रहो और यदि सैला में की कन्या नाचने को बाहर आवें तो दाख की बारियों में से निकलो और हर एक पुरुष सैला की बेटियों में से अपनी पत्नी के लिये पकड़े और बिनयमीन के देश को जावे। और जो होगा कि २२ जब उन के पिता अथवा भाई हमारे पास आके बेरहाई देंगे तब हम उन्हें कहेंगे कि हमारे कारण उन पर कृपा कीजिये क्योंकि संग्राम में हम ने हर एक पुरुष के लिये पत्नी न बचा रक्खी क्योंकि तुम ने उन्हें न दिया जिसतें दोषी होते। २३ सो बिनयमीन के संतानों ने ऐसा ही किया और अपनी गिनती के समान उन में से जो नाचती थीं एक एक पत्नी ले लिई और उन्हें लिये हुए अपने अधिकार को फिरे और अपने नगरों को सुधारा और उन में बसे। २४ और इसराएल के संतान उस समय वहां से चले और हर एक अपनी अपनी गोष्ठी और अपने अपने घराने में और अपने अपने अधिकार को गया। २५ उन्हीं दिनों में इसराएल में कोई राजा न था जिस को जो अच्छा लगता था सो करता था ॥

रूत की पुस्तक।

पहिला पर्ब्ब ।

१ अब न्यायियों की प्रभुता के दिनों में देश में अकाल पड़ा और यहूदाह बैतलहम से एक जन अपनी पत्नी और दो बेटे समेत निकला कि मोआब के २ देश में जा रहे। और उस पुरुष का नाम इलीमलिक और उस की पत्नी का नाम नआमी था और उस के दो बेटों के नाम महलून और किलयून थे ये यहूदाह बैतलहम के इफरातो थे सो वे मोआब के देश में आये और वहां रहे ॥

३ तब नआमी का पति इलीमलिक मर गया और वह और उस के दोनों बेटे ४ रह गये। और उन दोनों ने मोआबी स्त्रियों से बिवाह किया एक का नाम उरफः और दूसरी का रूत था और वे ५ बरस दस एक वहां रहे। और महलून और किलयून भी दोनों मर गये सो वह स्त्री अपने दो बेटों से और पति से अकेली छोड़ी गई ॥

६ तब वह अपनी बहुओं समेत उठी कि मोआब के देश से फिर जावे क्योंकि

६ उस ने मोआब के देश में सुना था कि परमेश्वर ने अपने लोगों पर कृपा
७ करके उन्हें अन्न दिया। इस लिये वह उस स्थान से जहां थी अपनी दोनों बहुओं समेत चल निकली और अपना मार्ग लिया कि यहूदाह के देश को फिर
८ जावे। तब नअमी ने अपनी दोनों बहुओं से कहा कि अपने अपने मैके को जाओ और जैसे तुम ने मृतक से और मुझ से व्यवहार किया वैसे ही परमेश्वर
९ तुम पर अनुग्रह करे। परमेश्वर ऐसा करे कि अपने अपने पति के घर में बिश्राम पाओ तब उस ने उन्हें चूमा और उन्हों ने चिल्लाके बिलाप किया।
१० फिर उन्हों ने उसे कहा कि हम तो निश्चय तेरे साथ तेरे लोगों में फिर आवेंगी॥

११ और नअमी बोली मेरी बेटियो फिर जाओ मेरे साथ किस लिये जाओगी क्या मेरी कोख में और बेटे हैं कि तुम्हारे
१२ पति होवें। मेरी बेटियो फिर जाओ क्योंकि पति करने को मैं अति बूढ़ी हूं यदि मैं कहूं कि मेरी आशा है और
१३ आज रात पति करूं और बेटे जनूं। तो क्या तुम उन के सयाने होने लों आशा रखतीं और पति करने से उन के लिये ठहरतीं नहीं मेरी बेटियो मैं तुम्हारे लिये निपट दुःखी हूं क्योंकि परमेश्वर का
१४ हाथ मेरे बिरोध पर निकला। तब वे फिर चिल्लाके रोईं और उरफः ने अपनी सास को चूमा लिया परन्तु रूत उस्से लपटी रही॥

१५ तब वह बोली कि देख तेरी भाई की पत्नी अपने लोगों और अपने देवतों कने फिर गई तू भी अपने भाई की
१६ पत्नी के पीछे फिर जा। पर रूत बोली मुझे आप से छोड़के फिर जाने को मत कहो क्योंकि जिधर तू जावेगी मैं भी जाऊंगी और जहां तू रहेगी रहूंगी तेरे लोग मेरे लोग और तेरा ईश्वर मेरा
१७ ईश्वर। जहां तू मरेगी मैं मरूंगी और वहां गाड़ी जाऊंगी ईश्वर मुझ से ऐसा ही करे और उस्से अधिक यदि केवल
१८ मृत्यु मुझे तुझ से अलग करे। जब उस ने देखा कि उस का मन उस के साथ जाने पर दृढ़ है तब वह चुप हो रही॥

१९ सो वे दोनों जाते जाते बैतलहम में आईं और यों हुआ कि जब बैतलहम में पहुंचीं तो उन के बिषय में सारे नगर में धूम मची और लोग बोले कि क्या
२० यह नअमी है। तब उस ने उन्हें कहा कि मुझे नअमी मत कहो मुझे मारः कहो क्योंकि सर्वशक्तिमान ने अति कड़ुवाहट से मुझ से व्यवहार किया है।
२१ मैं भरी पूरी निकल गई और परमेश्वर मुझे छूछी फेर लाया मुझे नअमी क्यों कहते हो देखते हो कि परमेश्वर ने मेरे बिरोध साक्षी दिई है और सर्वसामर्थी ने मुझे दुःख दिया है॥

२२ सो नअमी अपनी बहू मोआबी रूत समेत मोआब के देश से फिर आई और जव की कटनी के आरंभ में बैतलहम में पहुंची॥

दूसरा पर्ब्ब।

१ और नअमी के पति का एक कुटुम्ब था जो इलीमलिक के घराने में बड़ा धनी था जिस का नाम बोआज था।
२ और मोआबी रूत ने नअमी से कहा कि मुझे उस के खेत में जो मुझ पर कृपा करे अन्न बीनने को जाने दीजिये तब वह उस्से बोली कि मेरी बेटी जा
३ सो वह गई और लवैयों के पीछे पीछे खेत में बीनने लगी और संयोग से वह इलीमलिक के कुटुम्ब बोआज के खेत में गई॥

४ और देखो कि बोआज़ बैतलहम में से आ गया और लवैयों से बोला कि परमेश्वर तुम्हारे साथ और वे उत्तर देके उस्से बोले कि परमेश्वर आप को बढ़ती ५ देवे। फिर बोआज़ ने अपने सेवक से जो लवैयों पर था पूछा कि यह किस ६ की कन्या है। तब जो सेवक लवैयों पर था सो उत्तर देके बोला कि वह मोअबी कन्या है जो मोअब के देश से निकलके नओमी के साथ फिर आई। ७ और वह बोली मुझे लवैयों के पीछे पीछे गट्ठों के बीच बीच में बीन्ने दीजिये सो वह आई और बिहान से अब लों बनी रही और तनिक घर में ठहरी। ८ तब बोआज़ ने रूत को कहा कि हे मेरी बेटी क्या तू नहीं सुनती है तू दूसरे खेत में अन्न बीन्ने न जा और यहां से मत जा परन्तु मेरी कन्यों से मिलती ९ रह। तेरी आंखें उसी खेत पर होवें जो वे लवते हैं और उन के पीछे पीछे चली जा क्या मैं ने तरुणों को नहीं चिताया कि तुझे न छूवें और जब तू पियासी होय तो पात्रों में से जाके पी १० जो तरुणों ने खींचा है। तब उस ने अपने मुंह के बल भूमि पर झुकके दण्डवत किई और उस्से बोली कि आप की दृष्टि में किस कारण मैं ने अनुग्रह पाया कि आप मेरी सुधि लेते हैं यद्यपि ११ मैं परदेशिन हूं। तब बोआज़ ने उत्तर देके उसे कहा कि जो तू ने अपने पति के मरने के पीछे अपनी सास से किया है रत्ती रत्ती मुझ पर प्रगट हुआ है कि तू ने अपने माता पिता को और अपनी जन्मभूमि को छोड़ा और इन लोगों में आई जिन्हें तू आगे न जानती थी। १२ परमेश्वर तेरे कार्य्य का प्रतिफल देवे और परमेश्वर इसराएल का ईश्वर जिस के डैने के नीचे भरोसा रखने आई है तुझे परिपूर्ण बलटा देवे। तब वह १३ बोली कि हे मेरे प्रभु आप की कृपा मुझ पर होवे क्योंकि आप ने मुझे शान्ति दिई है और इस लिये कि तू ने स्नेह से अपनी दासी से बातें किईं यद्यपि मैं तेरी दासियों में से एक के समान नहीं। फिर बोआज़ ने उसे कहा कि १४ भोजन के समय में तू इधर आ और रोटी खा और कौर को सिरके में चभोर तब वह लवैयों के पीछे बैठ गई और उस ने उसे चबेना दिया और वह खाके तृप्त हुई और कुछ छोड़ दिया। और १५ जब वह बीन्ने को उठी तब बोआज़ ने अपने तरुणों को आज्ञा करके कहा उसे गट्ठों हीं के बीच में बीन्ने देओ और उसे लज्जित न करो। और जान बूझके उस १६ के लिये मुट्ठी भर भर गिरा भी देओ और छोड़ देओ जिसतें वह बीने उसे कोई न झिड़के। सो वह सांझ लों १७ खेत में बीनती रही और जो कुछ उस ने बीना था सो झाड़ा और वह अब चार पसेरी से ऊपर हुआ॥

सो वह उसे उठाके नगर में गई १८ और जो कुछ उस ने बीना था सो उस की सास ने देखा और तृप्त होने के पीछे जो कुछ उस ने रख छोड़ा था सो निकालके अपनी सास को दिया। तब उस की १९ सास ने पूछा कि तू ने आज कहां बीना है और कहां परिश्रम किया धन्य है वह जिस ने तेरी सुधि लिई तब उस ने जिस के यहां परिश्रम किया था अपनी सास को बताके कहा कि जिस के यहां मैं ने आज परिश्रम किया है उस का नाम बोआज़ है। तब नओमी ने अपनी २० बहू से कहा कि वह परमेश्वर से धन्य होवे जिस ने जीवतों और मृतकों से अपना अनुग्रह न उठाया और नओमी ने उसे कहा कि वह जन हमारा कु

है वह हमारा एक समीपी कुटुम्ब। २१ और मोआबी रूत बोली कि उस ने मुझे यह भी कहा कि जब लों मेरी समस्त लवनी न हो जावे तू मेरे तरुणों के पास पास रहियो। २२ तब नआमी ने अपनी बहू से कहा कि मेरी बेटी भला है कि तू उस की कन्यों के साथ साथ जाया करे जिसतें वे किसी दूसरे खेत में तुझे न पावें। २३ सो वह जव और गोहूं की लवनी के अन्त लों बोआज की कन्यों के साथ पिलची रही और अपनी सास के साथ रहती थी॥

तीसरा पर्व्व।

१ तब उस की सास नआमी ने उसे कहा कि हे मेरी बेटी क्या मैं तेरा चैन न चाहूं जिस में तेरा भला होवे। २ सो अब क्या बोआज हमारा कुटुम्ब नहीं जिस की कन्यों के साथ तू थी देख वह आज रात खलिहान में जव ओसावता है। ३ सो तू स्नान कर और चिकनाई लगा और अपना वस्त्र पहिन और खलिहान को उतर जा जब लों वह खा पी न चुके तब लों आप को उस पुरुष पर प्रगट मत कर। ४ और ऐसा हो कि जब वह लेट जावे तब तू उस के शयनस्थान को देख रख और भीतर जाके उस के पांव को उघार और वहीं लेट जा और जो कुछ तुझे करना है वह सब बतावेगा। ५ और उस ने उसे कहा कि जो तू मुझे कहती है मैं सब करूंगी॥

६ सो वह खलिहान को उतर गई और जो कुछ कि उस की सास ने आज्ञा किई थी उस ने किया। ७ और जब बोआज खा पी चुका और उस का मन मगन हुआ तब अन्न के ढेर की एक अलंग जाके लेट गया तब उस ने हौले हौले आके उस के पांव को उघारा और लेट गई। ८ और ऐसा हुआ कि आधी रात को उस पुरुष ने उचके करवट लिई और क्या देखता है कि एक स्त्री उस के पांव पास पड़ी है। तब उस ने पूछा कि तू कौन है और वह बोली कि मैं तेरी दासी रूत और तू अपनी दासी पर अपने अंचल फैला क्योंकि तू छुड़ानेवाला कुटुम्ब है। १० और उस ने कहा कि हे मेरी बेटी तू ईश्वर की धन्य तू ने आरंभ से अंत को मुझ पर अधिक कृपा किई है इस कारण कि तू ने तरुणों का पीछा न किया चाहे कंगाल चाहे धनवान हो। ११ और अब हे मेरी बेटी मत डर जो कुछ तू चाहती है मैं सब तुझ से करूंगा क्योंकि लोगों का सारा नगर जानता है कि तू धर्म्मी स्त्री है। १२ और अब यह सच है कि मैं छुड़ानेवाला कुटुम्ब हूं तथापि एक छुड़ानेवाला कुटुम्ब मुझ से अधिक समीपी है। १३ आज रात ठहर जा और बिहान को ऐसा होगा कि यदि नाते का व्यवहार पूरा करे तो भला नाते का व्यवहार करे और यदि वह नाते का व्यवहार तुझ से न करे तो परमेश्वर के जीवन सों मैं नाते का व्यवहार तुझ से करूंगा सो बिहान लों लेटी रह॥

१४ सो वह बिहान लों उस के पांव पास पड़ी रही और उस्से पहिले उठी कि एक दूसरे को चीन्ह सके तब उस ने कहा कि कोई जाने न पावे कि कोई स्त्री खलिहान में आई थी। १५ फिर उस ने यह भी कहा कि अपनी ओढ़नी धर और जब उस ने धरा तो उस ने छः नपुआ जव उस पर डाल दिये और वह नगर को गई॥

१६ और जब वह अपनी सास पास आई तब वह बोली हे बेटी तू कौन और जो कुछ कि उस पुरुष ने उस्से किया था उस ने सब बर्णन किया। १७ और कहा

कि मुझे उस ने यह छः नपुआ जव दिया क्योंकि उस ने मुझे कहा कि तू
१८ अपनी सास पास छूछी मत जा । तब उस ने कहा कि हे मेरी बेटी जब लों इस बात का अंत न देख ले तब लों चुपकी रह क्योंकि जब लों आज इस बात को समाप्त न कर ले वह पुरुष चैन न करेगा ॥

चौथा पर्व्व ।

१ तब बोआज फाटक पर चढ़ गया और वहां जा बैठा और क्या देखता है कि जिस छुड़ानेवाले कुटुम्ब के विषय में बोआज ने कहा था वह आया जिसे उस ने कहा कि अहो अमुक आइये एक अलंग हो बैठिये सो वह एक अलंग जा
२ बैठा । तब उस ने नगर के दस प्राचीन बुलाये और कहा कि यहां बैठिये सो
३ वे बैठ गये । और उस ने उस छुड़ानेवाले कुटुम्ब को कहा कि नअमी जो मोआब के देश से फिर आई है भूमि का एक टुकड़ा बेचती है जो हमारे
४ भाई इलीमलिक का था । सो यह कहके मैं ने तुझे चिताने चाहा कि निवासियों के आगे और मेरे लोगों के प्राचीनों के आगे उसे मोल ले यदि तू छुड़ावे तो छुड़ा और यदि न छुड़ावे तो मुझे कह जिसतें मैं जानूं क्योंकि तुझे छोड़ कोई छुड़वैया नहीं और तेरे पीछे मैं हूं तब
५ वह बोला कि मैं छुड़ाऊंगा । तब बोआज ने कहा कि जिस दिन तू वह खेत नअमी से मोल लेवे तब रूत मोआबी से भी जो मृतक की पत्नी है मोल लेना तुझे अवश्य है और मृतक का नाम उस
६ के अधिकार पर ठहरावे । तब उस छुड़ानेवाले कुटुम्ब ने कहा कि मैं अपने लिये छुड़ा नहीं सक्ता न हो कि मैं अपना अधिकार बिगाड़ूं सो तू अपने लिये मेरा पद छुड़ा क्योंकि मैं छुड़ा नहीं सक्ता ।
७ और सब बात को दृढ़ करने के लिये अगले समय में पलटने और छुड़ाने के विषय में इसराएल में यह व्यवहार था कि मनुष्य अपना जूता उतार के अपने परोसी को देता था और
८ इसराएल में यही साक्षी थी । सो तब छुड़ानेवाले कुटुम्ब ने बोआज को कहा कि तू अपने लिये मोल ले तब उस ने अपना जूता उतारा ॥

९ और बोआज ने प्राचीनों को और सारे लोगों को कहा कि तुम आज साक्षी हो कि मैं ने इलीमलिक और किलयून और महलून का सब कुछ नअमी के
१० हाथ से मोल लिया । और उस्से अधिक मैं ने महलून की पत्नी मोआबी रूत को अपनी पत्नी के लिये मोल लिया जिसतें मृतक के नाम को उस के अधिकार में स्थिर करूं कि मृतक का नाम अपने भाइयों से और अपने स्थान के फाटक
११ में से मिट न जावे तुम आज के दिन साक्षी हो । तब सारे लोगों ने जो फाटक पर थे और प्राचीनों ने कहा कि हम साक्षी हैं परमेश्वर इस स्त्री को जो तेरे घर में आई है राखिल और लियाह के समान करे जिन दोनों ने इसराएल के घरानों को बनाया सो तू इफराता में भाग्यवान हो और अपना नाम बैत-
१२ लहम में प्रचार कर । और तेरा घर जिसे परमेश्वर इस कन्या के बंश से तुझे देगा फारिस के घर के समान होवे जिसे तामर यहूदाह के लिये जनी ॥

१३ तब बोआज ने रूत को लिया और वह उस की पत्नी हुई और जब उस ने उसे ग्रहण किया तब वह परमेश्वर के अनुग्रह से गर्भिणी हुई और बेटा जनी ।
१४ और स्त्रियों ने नअमी से कहा कि परमेश्वर धन्य है जिस ने तुझे आज के

बिन किया छुड़ानेवाला कुटुम्ब में छोड़ा जिस्तें उस का नाम इसराएल में प्रसिद्ध १५ होवे। और वह तेरे जीवन के बहुरावे का कारण और तेरे बुढ़ापे के पालने का कारण होगा क्योंकि तेरी बहू जो तुझ से प्रीति रखती है जो सात बेटों से तेरे लिये भली है उस के लिये जनी १६ है। और नयमी ने उस बालक को लिया और उसे अपनी गोद में रक्खा १७ और उस की दाई हुई। तब उस की परोसिन उस का नाम लेकर बोलीं कि नयमी का बेटा उत्पन्न हुआ और उन्हों ने उस का नाम ओबिद रक्खा वह यस्सी का पिता दाऊद का पिता॥

सो फ़ारस की वंशावली यह है कि १८ फ़ारस से हसरून उत्पन्न हुआ। और १९ हसरून से राम उत्पन्न हुआ और राम से अम्मिनदब उत्पन्न हुआ। और अम्मिन- २० दब से नहसून उत्पन्न हुआ और नहसून से सलमून उत्पन्न हुआ। और सलमून से २१ बोआज उत्पन्न हुआ और बोआज से ओबिद उत्पन्न हुआ। और ओबिद से २२ यस्सी उत्पन्न हुआ और यस्सी से दाऊद उत्पन्न हुआ॥

समूएल की पहिली पुस्तक।

पहिला पर्ब्ब।

१ और इफ़रायम पहाड़ के रामातयम सूफ़ीम का एक जन था वह सूफ़ इफ़राती के बेटे तुहु का बेटा इलिहू का बेटा यरुहम का बेटा था और उस का नाम २ एलकाना था। और उस की दो पत्नियां थीं एक का नाम हन्ना और दूसरी का फ़नीन: और फ़नीन: के बालक थे परन्तु हन्ना के बालक न थे॥

३ और वह जन बरस बरस अपने नगर से आके सैला में सेनाओं के परमेश्वर के आगे सेवा करके बलि चढ़ाता था और एली के दो बेटे हफ़नी और फ़ीनि- ४ हास वहां परमेश्वर के याजक थे। और ऐसा हुआ कि जब एलकाना भेंट चढ़ाता था तब वह अपनी पत्नी फ़नीन: को और उस के सब बेटों और बेटियों को ५ भाग देता था। परन्तु हन्ना को दुहरा भाग दिया करता था क्योंकि वह हन्ना से प्रीति रखता था परन्तु परमेश्वर ने उस की कोख बंद कर रक्खी थी। ६ और उस की सौत उसे कुढ़ाने के लिये अत्यंत खिझाती थी इस कारण कि परमेश्वर ने उस की कोख बंद कर रक्खी थी। और बरस बरस वह पर- ७ मेश्वर के मंदिर में जाता था उसी रीति से वह उसे खिझाती थी सो वह रोया करती और कुछ न खाती थी। तब ८ उस के पति एलकाना ने उसे कहा कि हे हन्ना तू क्यों बिलाप करती है और क्यों नहीं खाती है और तेरा मन क्यों शोकित है क्या तेरे लिये मैं दस बेटों से अच्छा नहीं॥

और जब वे सैला में खा पी चुके तो ९ हन्ना उठी और उस समय एली याजक परमेश्वर के मंदिर के खंभे पास बैठा

१० पर बैठा हुआ था। और उस ने मन के शोक से परमेश्वर की प्रार्थना किई और ११ बिलख बिलख रोई। और उस ने मनौती मानके कहा कि हे सेनाओं के परमेश्वर यदि तू अपनी दासी के कष्ट पर दृष्टि करे और मेरी सुधि लेवे और अपनी दासी को भूल न जावे परन्तु अपनी दासी को पुत्र देवे तो मैं उसे जीवन भर परमेश्वर के लिये समर्पण करूंगी और उस के सिर पर छुरा न फिरेगा॥

१२ और यों हुआ कि जब वह परमेश्वर के आगे प्रार्थना कर रही थी तब एली १३ उस के मुंह को देख रहा था। अब हन्ना मन ही मन कह रही थी केवल उस के होंठ हिलते थे परन्तु उस का शब्द सुना न जाता था इस लिये एली १४ समझा कि वह अमल में है। और एली ने उसे कहा कि कब लों तू मतवाली रहेगी अपनी मदिरा अपने से दूर कर। १५ तब हन्ना ने उत्तर देके कहा कि नहीं मेरे प्रभु मेरा मन दुःखी है मैं ने मदिरा अथवा अमल नहीं पीया परन्तु अपने मन को परमेश्वर के आगे बहा दिया १६ है। अब अपनी दासी को बलीआल की पुत्री मत जानिये क्योंकि मैं अपने ध्यान और शोक की अधिकाई से अब १७ लों बोली हूं। तब एली ने उत्तर देके कहा कि कुशल से जा और इसराएल का ईश्वर तेरी प्रार्थना जो तू ने उस्से १८ किई पूरी करे। तब उस ने कहा कि तेरी दासी तेरी दृष्टि में अनुग्रह पावे तब वह स्त्री चली गई और खाया और फिर उस का मुंह उदास न हुआ॥

१९ और वे बिहान को तड़के उठे और परमेश्वर के आगे दण्डवत किई और फिरे और रामात में अपने घर आये और एलकाना ने अपनी पत्नी हन्ना को ग्रहण किया तब परमेश्वर ने उसे स्मरण किया। और जितने दिन बीते ऐसा २० हुआ कि हन्ना गर्भिणी हुई और बेटा जनी और उस का नाम यह कहके समूएल रक्खा कि मैं ने उसे परमेश्वर से मांगा है॥

२१ और एलकाना अपने समस्त घर समेत चढ़ गया कि बरस का बलिदान और मनौती परमेश्वर के आगे चढ़ावे। २२ परन्तु हन्ना ऊपर न गई क्योंकि उस ने अपने पति से कहा कि जब लों बालक का दूध बढ़ाया न जावे मैं यहीं रहूंगी और तब उसे ले आऊंगी जिसतें वह परमेश्वर के आगे दिखाई देवे और सदा वहीं रहे। २३ तब उस के पति एलकाना ने उसे कहा कि जो तुझे भला लगे सो कर तू उस का दूध छुड़ाने लों ठहरी रह केवल परमेश्वर अपने बचन को स्थिर करे सो वह स्त्री ठहरी रही और जब लों उस का दूध न छुड़ाया गया तब लों अपने बेटे को दूध पिलाया किई॥

२४ और जब उस का दूध बढ़ाया गया तो उसे अपने साथ ले चली और तीन बैल और आध मन से ऊपर पिसान और एक कुप्पा मदिरा अपने साथ लिया और उसे सैला में परमेश्वर के मंदिर में लाई और बालक छोटा था। २५ तब उन्हों ने एक बैल को बलि किया और बालक को एली पास लाये। २६ और बोली कि हे मेरे प्रभु तेरे जीवन सों मैं वही स्त्री हूं जिस ने तेरे पास परमेश्वर के आगे यहां खड़ी होके प्रार्थना किई थी। २७ मैं ने इस बालक के लिये प्रार्थना किई थी सो परमेश्वर ने मेरी बिनती जो मैं ने उस्से किई थी ग्रहण किई। २८ सो इस लिये मैं ने इसे बिनती से पाके परमेश्वर को फेर दिया जब लों यह

जीता है परमेश्वर का दिया रहे और उस ने वहां परमेश्वर को दण्डवत किई ॥

दूसरा पर्ब्ब ।

१ तब हन्ना ने प्रार्थना करके कहा कि मेरा मन परमेश्वर से आनन्द है परमेश्वर से मेरा सींग बढ़ाया गया शत्रुन के साम्हे बोलने को मेरा मुंह खुल गया क्योंकि मैं २ तेरी मुक्ति में आनन्दित हूं । परमेश्वर के तुल्य कोई पवित्र नहीं क्योंकि तुझे छोड़ कोई नहीं और कोई चटान हमारे ईश्वर ३ के समान नहीं । अति घमंड की बातें मत कहो अहंकार तुम्हारे मुंह से न निकले क्योंकि परमेश्वर ज्ञान का सर्वशक्तिमान है और कार्य्य उस्से जांची ४ जाती हैं । बलवंतों के धनुष टूट गये और ठोकर खाये हुओं की कटि दृढ़ता ५ से बंध गई । वे जो तृप्त थे उन्हों ने अपने को अन्नों में लगाया है और जो भूखे थे उन्हों ने उस्से हाथ उठाया यहां लों कि बांझ सात जनी और जिस के ६ बहुत बालक हैं सो दुर्बल हुई । परमेश्वर मारता है और जिलाता है समाधि में ७ उतारता है और उठाता है । परमेश्वर कंगाल करता है और धनी बनाता है ८ घटाता है और बढ़ाता है । वह कंगाल को धूल से उठाता है कुंअरों में बैठाने के लिये भिखारी को कूड़े की ढेर से उठाता है और विभव के सिंहासन का अधिकारी करता है क्योंकि भूमि के खंभे परमेश्वर के हैं और उस ने ९ जगत को उन पर धरा है । वह अपने सिद्धों के चरणों की रक्षा करेगा और दुष्ट अंधियारे में चुपचाप पड़े रहेंगे १० क्योंकि बल से कोई न जीतेगा । परमेश्वर के बैरी चूर होंगे स्वर्ग से वह उन पर गर्जेगा परमेश्वर पृथिवी के अंत का न्याय करेगा और वह अपने राजा को बल देगा और अपने अभिषिक्त के सींग को उभारेगा ॥

११ तब एलकाना अपने घर रामात को गया और वह लड़का एली याजक के आगे परमेश्वर की सेवा करता रहा ॥

१२ अब एली के बेटे जो दुष्ट जन थे १३ परमेश्वर को पहिचानते न थे । और लोगों से याजकों की यह रीति थी कि जब कोई बलि चढ़ाता था और जब लों मांस उसना जाता था याजक का सेवक त्रिशूली मांस की कांटिया हाथ में १४ लेके आता था । और उसे कड़ाही अथवा बटलोही अथवा हण्डा अथवा हांडी में लगाता था जितना उस कांटे में निकलता था याजक आप लेता था सो वे सारे इसराएलियों से जो वहां सैला में आते थे योंहीं करते थे । १५ चिकनाई जलाने से आगे भी याजक का सेवक आता था और बलि के चढ़वैये से कहता था कि भूंजने के लिये याजक को मांस देओ क्योंकि वह तुझ से सिझाया हुआ मांस न लेगा परन्तु १६ कच्चा । और यदि कोई उसे कहता कि हम अभी चिकनाई जला लेवें तब जितना तेरा जी चाहे उतना लेना तब वह उत्तर देता था कि नहीं तू मुझे अभी दे नहीं तो मैं छीन लेऊंगा । १७ इस लिये परमेश्वर के आगे उन तरुणों का महा पाप था क्योंकि लोग परमेश्वर की भेंट से घिन करते थे ॥

१८ परन्तु वह बालक समूएल सूती अफूद पहिने हुए परमेश्वर के आगे सेवा १९ करता था । और उस्से अधिक उस की माता एक छोटा कुरता बनाके बरस बरस जब अपने पति के साथ भेंट चढ़ाने आती थी उस के लिये लाया २० करती थी । और एली ने एलकाना और उस की पत्नी को आशीष देके कहा कि

परमेश्वर इस उधार की संती जो परमेश्वर को उधार दिया गया तुझे इस स्त्री से बंश देवे और वे अपने स्थान को गये।

२१ क्योंकि हन्ना पर परमेश्वर की कृपा हुई यहां लों कि वह गर्भिणी हुई और तीन बेटे और दो बेटियां जनी और वह बालक समूएल परमेश्वर के आगे बढ़ा हुआ॥

२२ अब एली अति वृद्ध हुआ और उस ने सब कुछ सुना जो उस के बेटे समस्त इसराएलियों से करते थे और किस रीति से वे उन स्त्रियों से कुकर्म्म करते थे जो जथा की जथा मंडली के तंबू के द्वार पर एकट्ठी होती थीं।

२३ और उस ने उन्हें कहा कि तुम यह क्या करते हो क्योंकि मैं तुम्हारी बुराइयां इन सब लोगों से सुनता हूं।

२४ यह अच्छा नहीं है मेरे बेटो जो मैं सुनता हूं सो भला नहीं तुम परमेश्वर के लोगों से पाप कराते हो।

२५ यदि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के विरोध में पाप करे तो न्यायी विचार करेगा परन्तु यदि कोई परमेश्वर के विरोध में पाप करे तो उस के लिये कौन बिनती करेगा तिस पर भी उन्हों ने अपने पिता का कहा न माना क्योंकि परमेश्वर उन्हें घात किया चाहता था॥

२६ और वह लड़का समूएल बढ़ता गया और परमेश्वर के और लोगों के आगे अनुग्रह पाया॥

२७ तब ईश्वर का एक जन एली पास आया और उसे कहा कि परमेश्वर यों कहता है कि क्या मैं तेरे पिता के घराने पर जब वह मिस्र में फिरऊन के देश में था प्रगट न हुआ।

२८ और क्या मैं ने उसे इसराएल की समस्त गोष्ठियों से चुन न लिया कि मेरा याजक होवे और मेरी बेदी पर बलिदान चढ़ावे और सुगंध जलावे और मेरे आगे अफूद पहिने और होम की सारी भेंट जो इसराएल के संतान चढ़ाते हैं मैं ने तेरे पिता के घराने को नहीं दिया।

२९ तुम काहे को मेरे बलिदानों को और मेरी भेंटों को जो मैं ने अपने निवास में आज्ञा किई हैं लताड़ते हो और तू अपने बेटों को मुझ से अधिक प्रतिष्ठा देता है कि मेरे लोग इसराएल के संतान की भेंटों से मोटे बनो।

३० सो परमेश्वर इसराएल का ईश्वर कहता है कि मैं ने निश्चय कहा था कि तेरा घर और तेरे पिता का घर सदा मेरे आगे चले परन्तु अब परमेश्वर कहता है कि यह मुझ से दूर होवे क्योंकि जो मुझे प्रतिष्ठा देते हैं मैं उन्हें प्रतिष्ठा देऊंगा और जो मेरी निन्दा करते हैं सो निन्दित होंगे।

३१ देखो वे दिन आते हैं कि मैं तेरी भुजा और तेरे पिता के घराने की भुजा काट डालूंगा कि तेरे घर में कोई बूढ़ा न होगा।

३२ और समस्त समय में कि परमेश्वर इसराएल पर भलाई करेगा तू मंदिर में अपना बैरी देखेगा और तेरे बंश में कभी कोई वृद्ध न होगा।

३३ और तेरा वह जन जिसे मैं अपनी बेदी से से काट न डालूंगा तेरी आंखें फोड़ेगा और तेरे मन को शोकित करेगा और तेरे घर की बढ़ती तरुणाई में मर जावेगी।

३४ और तेरे दोनों बेटों हुफ्नी और फीनिहास पर यह पड़ेगा तेरे लिये यह पता है कि एक ही दिन में दोनों के दोनों मर जावेंगे।

३५ और मैं अपने लिये एक विश्वासमय याजक उठाऊंगा जो मेरे मन के और मेरे अंतःकरण के समान करेगा और उस के लिये मैं एक घर स्थिर करूंगा और वह सदा मेरे अभिषिक्त के आगे चलेगा।

३६ और ऐसा होगा कि हर एक जन जो तेरे घर में बच रहेगा एक टुकड़ा चांदी और एक एक कौर रोटी के लिये उस के पीछे

फिरेगा और कहेगा कि उन याजकों में से मुझे एक की सेवा दीजिये कि मैं एक टुकड़ा रोटी खाया करूं॥

तीसरा पर्व्व।

१ और वह बालक समूएल एली के आगे परमेश्वर की सेवा करता था और उन दिनों में ईश्वर का वचन बहुमूल्य था कोई प्रगट दर्शन न होता था।
२ और ऐसा हुआ कि जब एली अपने स्थान में लेटा था और उस की आंखें धुंधली होने लगीं ऐसा कि वह देख न
३ सकता था। जहां ईश्वर की मंजूषा थी तहां परमेश्वर के मंदिर का दीपक अब लों न बुझा था और समूएल लेट गया
४ था। कि परमेश्वर ने समूएल को पुकारा
५ और उस ने कहा कि मैं यहीं हूं। और एली पास दौड़के कहा कि मैं यहीं हूं क्योंकि तू ने मुझे पुकारा है तब वह बोला कि मैं ने नहीं पुकारा फिर जा
६ लेट रह सो वह जाके लेट गया। और परमेश्वर ने समूएल को फेर पुकारा और समूएल उठके एली पास गया और बोला कि मैं यहीं हूं क्योंकि तू ने मुझे बुलाया और उस ने उत्तर दिया कि हे पुत्र मैं
७ ने नहीं बुलाया फिर जा लेट रह। और समूएल अब लों परमेश्वर को न जानता था और न परमेश्वर का वचन उस पर
८ प्रगट हुआ था। तब परमेश्वर ने तीसरे बार समूएल को फिर पुकारा और वह उठके एली पास गया और कहा कि मैं यहीं हूं क्योंकि तू ने मुझे बुलाया सो एली ने बूझा कि इस बालक को पर-
९ मेश्वर ने पुकारा है। तब एली ने समूएल को कहा कि जा पड़ रह और यों होगा कि यदि तुझे पुकारे तो कहियो कि हे परमेश्वर कह क्योंकि तेरा दास सुनता है सो समूएल अपने स्थान पर
१० जाके लेट रहा। और परमेश्वर आके खड़ा हुआ और आगे की नाईं पुकारा समूएल समूएल तब समूएल ने उत्तर दिया कि कहिये क्योंकि तेरा दास सुनता है॥

११ तब परमेश्वर ने समूएल से कहा कि देख मैं इसराएल में ऐसा कार्य्य करूंगा जिससे सब सुनवैयों के कान
१२ उठेंगे। मैं उस दिन सब कुछ जो मैं ने एली के घराने के विषय में कहा है पूरा करूंगा जब मैं आरंभ करूंगा तब समाप्त भी करूंगा।
१३ क्योंकि मैं ने उसे कहा है कि मैं उस बुराई के लिये जो वह जानता है उस के घर का न्याय करूंगा इस कारण कि उस के बेटों ने आप को स्रापित किया है और उस ने उन्हें न
१४ घुरका। सो इस लिये एली के घर के विषय में मैं ने किरिया खाई है कि एली के घर का पाप बलिदानों और भेंटों से पावन न किया जावेगा॥

१५ तब समूएल बिहान लों पड़ा रहा और उस ने ईश्वर के मंदिर के द्वारों को खोला और समूएल उस दर्शन को एली पर प्रगट करने से डरा।
१६ तब एली ने समूएल को बुलाया और कहा कि हे मेरे बेटे समूएल तब वह बोला कि मैं यहीं हूं।
१७ तब उस ने कहा कि वह क्या वचन है जो उस ने तुझे कहा है मुझ से मत छिपा यदि तू इस में से कुछ छिपावे जो उस ने तुझे कहा है तो ईश्वर तुझ से ऐसा ही करे और अधिक।
१८ तब समूएल ने उस्से सारी बातें कहीं और कुछ न छिपाया तब वह बोला कि वह परमेश्वर है जो भला जाने सो करे॥

१९ और समूएल बढ़ा और परमेश्वर उस के साथ था और उस ने उस की कोई बात भूमि पर अकारथ गिरने न दिई।
२० और दान से लेके बिअरसबा लों समस्त इसराएल जान गये कि समूएल परमेश्वर

२१ का आगमज्ञानी स्थिर हुआ। और परमेश्वर सैला में फेर प्रगट हुआ क्योंकि परमेश्वर ने अपने को सैला में समूएल पर अपने बचन के द्वारा से प्रगट किया॥

चौथा पर्ब्ब।

१ और समूएल की बात सारे इसराएल को पहुंची और इसराएल फिलिस्तियों से संग्राम करने को निकले और अबन-अजर के पास डेरा खड़ा किया और फिलिस्तियों ने आफीक में डेरा खड़ा २ किया। और फिलिस्तियों ने इसराएल के आगे पांती बांधी और जब संग्राम फैल गया तब इसराएल फिलिस्तियों के आगे मारे गये और उन्हों ने सेना में से चार सहस्र मनुष्य चौगान में मारे॥

३ और जब लोग छावनी में आये तब इसराएल के प्राचीनों ने कहा कि परमेश्वर ने आज हमें फिलिस्तियों के आगे क्यों ध्वस्त किया आओ परमेश्वर की साक्षी की मंजूषा सैला से अपने पास ले आवें कि जब वह हम्में आवे वह हमें बैरियों के हाथ से बचावे। ४ सो उन्हों ने सैला में लोग भेजे जिसतें वहां से सेनाओं के परमेश्वर की जो करोबियों के ऊपर बैठा है साक्षी की मंजूषा को ले आवें और एली के दोनों बेटे हुफनी और फीनिहास ईश्वर की साक्षी की मंजूषा के पास वहां थे। ५ और जब परमेश्वर की साक्षी की मंजूषा छावनी में पहुंची तब सारे इसराएलियों ने बड़े शब्द से ललकारा यहां लों कि ६ भूमि कांप उठी। और जब फिलिस्तियों ने ललकारने का शब्द सुना तो बोले कि इबरानियों की छावनी में यह क्या महा शब्द है फिर उन्हों ने समझा कि परमेश्वर की मंजूषा छावनी में पहुंची। ७ तब फिलिस्ती डरे क्योंकि उन्हों ने कहा कि ईश्वर छावनी में आया है और बोले कि हाय हम पर क्योंकि ८ आज काल ऐसी बात नहीं हुई। हाय कौन ऐसे बलवंत देवों के हाथों से हमें बचावेगा यह वह देव हैं जिन्हों ने मिस्रियों को अरण्य में समस्त मरियों से ९ मारा। हे फिलिस्तियो बलवंत होओ और पुरुषार्थ करो जिसतें तुम इबरानियों के सेवक न बनो जैसा वे तुम्हारे हुए हैं परन्तु पुरुषार्थ करो और लड़ो॥

१० सो फिलिस्तियों ने लड़ाई किई और इसराएल मारे गये और हर एक पुरुष अपने अपने तंबू को भागा और वहां बड़ा जूझ हुआ क्योंकि तीस सहस्र इसराएल के पैदल मारे गये। ११ और ईश्वर की मंजूषा लिई गई और एली के दोनों बेटे हुफनी और फीनिहास जूझ गये॥

१२ और बिनयमीन का एक जन सेना से दौड़ा और कपड़े फाड़े हुए और सिर पर धूल डाले हुए उसी दिन सैला में १३ आया। और जब वह पहुंचा तब देखो एली एक आसन पर मार्ग के लग बैठके बाट जोह रहा था क्योंकि ईश्वर की मंजूषा के लिये उस का मन थर्थरा रहा था और जब उस जन ने नगर में पहुंचके संदेश दिया तब सारे नगर में रोना १४ पीटना हुआ। और जब एली ने रोने का शब्द सुना तब उस ने कहा कि इस हौरे के शब्द का कारण क्या और वह जन झप आ पहुंचा और एली को कहा। १५ अब एली अट्ठानवे बरस का वृद्ध था और उस की आंखें धुंधली थीं और वह १६ देख न सक्ता था। सो उस जन ने एली से कहा कि मैं सेना से आज भाग आया हूं और वही हूं जो सेना से निकला हूं तब वह बोला हे बेटे क्या समाचार १७ है। तब उस दूत ने उत्तर देके कहा कि इसराएल फिलिस्तियों के आगे भाग गये और लोगों में बड़ा जूझ हुआ और

१७ तेरे दोनों बेटे भी हफ्नी और फीनिहास मर गये हैं और ईश्वर की मंजूषा लिई गई ।

१८ और यों हुआ कि जब उस ने उसी के ईश्वर की मंजूषा का नाम लिया तब वह आसन पर से फाटक के लग पिछले बल गिरा और उस का गला टूट गया और मर गया क्योंकि वह बृद्ध और भारी था और उस ने चालीस बरस इसराएल का न्याय किया ॥

१९ और उस की बहू फीनिहास की पत्नी गर्भिणी थी और उस के जन्ने का समय समीप था जब उस ने यह संदेश सुना कि ईश्वर की मंजूषा लिई गई और उस का ससुर और पति मर गये तब वह झुक गई और जन पड़ी क्योंकि उस को पीड़ा आन पहुंची । २० और उस के मरते मरते उन स्त्रियों ने जो उस पास खड़ी थीं उसे कहा कि मत डर क्योंकि तू बेटा जनी है परन्तु उस ने उत्तर न दिया न सुरत लगाई । २१ और उस ने यह कहके उस बालक का नाम इकाबोद रक्खा और बोली कि विभव इसराएल में से जाता रहा इस लिये कि परमेश्वर की मंजूषा लिई गई और उस के ससुर और उस के पति चल बसे । २२ और वह बोली कि विभव इसराएल से जाता रहा क्योंकि ईश्वर की मंजूषा लिई गई ॥

पांचवां पर्ब्ब ।

१ और फिलिस्ती परमेश्वर की मंजूषा को अबनअज़र से लेके अशदूद को २ लाये । और जब फिलिस्ती परमेश्वर की मंजूषा को ले गये तब उन्हों ने उसे दागून के मंदिर में पहुंचाया और उसे ३ दागून के पास रक्खा । और जब अशदूदी बिहान को तड़के उठे तो क्या देखते हैं कि दागून परमेश्वर की मंजूषा के आगे मुंह के बल भूमि पर गिरा है सो उन्हों ने दागून को उठाके उस के स्थान पर फिर रक्खा । ४ फिर जब वे तड़के बिहान को उठे तब क्या देखते हैं कि दागून परमेश्वर की मंजूषा के आगे मुंह के बल भूमि पर पड़ा है और दागून का सिर और दोनों हथेलियां कटी हुईं डेवढ़ी पर पड़ी हैं केवल दागून का धड़ रह गया था । ५ इस लिये दागून के याजक और वे जो उस के मंदिर में आते हैं दागून की डेवढ़ी पर आज लों पांव नहीं धरते ॥

परन्तु परमेश्वर का हाथ अशदूदियों पर भारी पड़ा था और उस ने उन्हें नाश किया और अशदूद को और उस के सिवानों को बवासीर से मारा । और जब अशदूदियों ने यह देखा तब बोले कि इसराएल के ईश्वर की मंजूषा हमारे साथ न रहेगी क्योंकि उस का हाथ हम पर और हमारे देव दागून पर पड़ा है । ८ सो उन्हों ने फिलिस्तियों के सारे प्रधानों को बुला भेजा और कहा कि हम इसराएल के ईश्वर की मंजूषा को क्या करें तब वे बोले कि आओ इसराएल के ईश्वर की मंजूषा को जात को ले जावें सो वे इसराएल के ईश्वर की मंजूषा को वहां ले गये । और उस के ले जाने के पीछे ऐसा हुआ कि परमेश्वर का हाथ अत्यंत नाश करने को उस नगर के विरोध में पड़ा और उस ने उस नगर के लोगों को छोटे से लेके बड़े लों मारा और उन के गुप्तों में बवासी का लोहू बहने लगा ॥

१० तब उन्हों ने ईश्वर की मंजूषा अकरून में पहुंचाई और अकरूनी चिल्लाके बोले कि वे इसराएल के ईश्वर की मंजूषा को इस लिये हम्में लाये हैं कि हमें और हमारे लोगों को घात करें । ११ सो उन्हों ने भेजके फिलिस्तियों के प्रधानों को एकट्ठे किया और कहा कि

इसराएल के ईश्वर की मंजूषा को जहां से वह आई वहीं फेर भेजो जिसतें वह हमें और हमारे लोगों को घात न करे क्योंकि सारे नगर में मारू हुल्लड़ हुआ और परमेश्वर का हाथ उन पर भारी १२ था। और जो मर न गये सो बवेसी से रोगी थे और नगर का बिलाप स्वर्ग लों पहुंचा था॥

छठवां पर्व्व।

१ सो परमेश्वर की मंजूषा सात मास २ लों फिलिस्तियों के देश में थी। तब फिलिस्तियों ने याजकों और दैवज्ञों को बुलाके पूछा कि परमेश्वर की मंजूषा से क्या करें हमें बताओ कि हम किस रीति से उसे उस के स्थान को भेजें। ३ तब वे बोले कि यदि तुम इसराएल के ईश्वर की मंजूषा को भेजते हो तो उसे छूछी मत भेजो परन्तु किसी भांति से पाप की भेंट के साथ उसे फेर भेजो तब तुम चंगे होओगे और तुम्हें जान पड़ेगा कि उस का हाथ तुम से किस ४ लिये नहीं उठता है। तब उन्हों ने पूछा कि वह कौन सा पाप का बलिदान है जो हम उसे फेर देवें तब वे बोले कि फिलिस्ती प्रधानों की गिनती के समान पांच सोनैली बवेसी और सोने के पांच मूस क्योंकि तुम सभों पर और तुम्हारे प्रधानों पर एक ही मरी है। ५ सो तुम अपनी बवेसी की और मूसों की मूर्त्ति बनाओ जो देश को नष्ट करते हैं और इसराएल के परमेश्वर की महिमा करो क्या जाने वह तुम से और तुम्हारे देवतों से और तुम्हारे देश से हाथ उठा ६ लेवे। तुम क्यों अपने मन को कठोर करते हो जैसा कि मिस्रियों ने और फिरऊन ने अपने मन को कठोर किया था जब कि ईश्वर ने आश्चर्यित कार्य्य उन में किये सो क्या उन्हों ने उन्हें जाने न दिया और वे बिदा न हुए। ७ सो अब तुम एक नई गाड़ी बनाओ और दो दुधार गायें जो जूआ तले न आई हों लेओ और उन गायों को गाड़ी में जोतो और उन के बछड़ों को ८ घर में उन के पीछे रहने देओ। और परमेश्वर की मंजूषा लेके उस गाड़ी पर रक्खो और सोने के पात्र जो पाप की भेंट के कारण देते हो एक मंजूषा में धरके उस की अलंग में रख देओ और ९ उसे छोड़ देओ कि चली जावे। और देखो यदि वह अपने ही सिवाने से होके बैतशम्स को चढ़े तब उसी ने हम पर यह बड़ी बिपत्ति भेजी परन्तु यदि नहीं तो हम जानेंगे कि उस का हाथ हम पर नहीं पड़ा परन्तु यह बिपत्ति अकस्मात् हुई॥

१० सो लोगों ने वैसा ही किया और दो दुधार गायें लिईं और उन्हें गाड़ी में जोता और उन के बछड़ों को घर में ११ बंद किया। और परमेश्वर की मंजूषा और सोने के मूसों को और बवेसियों को १२ मंजूषा में रखके गाड़ी पर धरा। सो उन गायों ने बैतशम्स का सीधा मार्ग लिया और राजमार्ग में डंकारती चलीं और दहिने अथवा बायें हाथ न मुड़ीं और फिलिस्तियों के प्रधान उन के पीछे १३ पीछे बैतशम्स के सिवाने लों गये। और तराई में बैतशम्सी गोहूं लवते थे और जब उन्हों ने अपनी आंखें ऊपर किईं तब मंजूषा को देखा और देखते ही १४ आनन्द हुए। और गाड़ी बैतशम्सी यहूशूअ के खेत में और जहां बड़ा पत्थर था आके खड़ी हुई सो उन्हों ने गाड़ी की लकड़ियों को चीरा और गायों को परमेश्वर के लिये बलिदान की भेंट चढ़ाई। १५ और लावियों ने परमेश्वर की मंजूषा को उस मंजूषा सहित जो उस के साथ थी

जिस में सोने के गहने थे बोझे उतारा और उसे बड़े पत्थर पर रक्खा और बैतशम्स के लोगों ने उसी दिन परमेश्वर के लिये बलिदान की भेंट और
१६ बलि चढ़ाये। और जब फिलिस्तियों के पांच प्रधानों ने यह देखा तो वे उसी दिन अक्रून को फिर गये॥
१७ और सोने की बवासीरें जिन्हें फिलिस्तियों ने पाप की भेंट के लिये परमेश्वर को चढ़ाया थे हैं अशदूद के लिये एक अज्जः के लिये एक अस्कलून के लिये एक जात के लिये एक और अक्रून के
१८ लिये एक। और सोने के मूस फिलिस्तियों के सारे नगरों की गिनती के समान थे जो पांच प्रधानों के थे बाड़े के नगर और बाहर बाहर के गांवों अबील के बड़े पत्थर लों जिस पर उन्हों ने परमेश्वर की मंजूषा को रक्खा जो आज के दिन लों बैतशम्सी यहूशूअ के चौगान में है॥
१९ और परमेश्वर ने बैतशम्स के लोगों को मारा क्योंकि उन्हों ने परमेश्वर की मंजूषा के भीतर देखा अर्थात् पचास सहस्र और सत्तर मनुष्य लोगों में से मारे गये और लोगों ने बिलाप किया क्योंकि परमेश्वर ने लोगों में से बहुतों को बधन
२० किया था। सो बैतशम्स के लोग बोले कि किस की सामर्थ्य है कि इस पवित्र परमेश्वर ईश्वर के आगे खड़ा होवे और हम्में से वह किस के पास चढ़ जायगा।
२१ तब उन्हों ने करयतयारीम के निवासियों के पास यह कहके दूत भेजे कि फिलिस्ती परमेश्वर की मंजूषा को फेर लाये हैं तुम उसे उतारके अपने पास ले जाओ॥

सातवां पर्ब्ब।

१ तब करयतयारीम के लोग आये और परमेश्वर की मंजूषा को ले जाके अबिनदब के घर में पहाड़ी पर रक्खा और उस के बेटे इलिअज़र को पवित्र किया कि परमेश्वर की मंजूषा की रक्षा करे॥
२ और यों हुआ कि मंजूषा करयतयारीम में बहुत दिन लों रही क्योंकि बीस बरस बीत गये थे तब इसराएल के सारे घरानों ने परमेश्वर के लिये
३ बिलाप किया। और समूएल इसराएल के सारे घराने को कहके बोला कि यदि तुम अपने सारे मन से परमेश्वर की ओर फिरोगे तो उन उपरी देवतों को और इसतारात को अपने में से निकाल फेंको और परमेश्वर के लिये मन को सिद्ध करो और केवल उस की सेवा करो और वह तुम्हें फिलिस्तियों के हाथ
४ से छुड़ावेगा। तब इसराएल के संतान ने बअलीम और इसतारात को दूर किया और केवल परमेश्वर की सेवा करने
५ लगे। तब समूएल ने कहा कि सारे इसराएल मिसफः में एकट्ठे होवें और मैं तुम्हारे लिये परमेश्वर से प्रार्थना करूंगा।
६ सो वे मिसफः में एकट्ठे हुए और पानी खींचा और परमेश्वर के आगे उंडेला और उस दिन ब्रत रक्खा और वहां बोले कि हम परमेश्वर के अपराधी हैं और समूएल मिसफः में इसराएल के संतान का न्यायी हुआ॥
७ जब फिलिस्तियों ने सुना कि इसराएल के संतान मिसफः में एकट्ठे हुए तब उन के प्रधान इसराएल के साम्ने चढ़ आये सो इसराएल के संतान
८ यह सुनके फिलिस्तियों से डर गये। और इसराएल के संतान ने समूएल को कहा कि हमारे लिये परमेश्वर हमारे ईश्वर से प्रार्थना करने में थम मत जिसतें वह हमें फिलिस्तियों के हाथ से
९ बचावे। तब समूएल ने एक दूध पीवका मेम्ना लिया और उसे परमेश्वर के लिये बलिदान की भेंट चढ़ाया और समूएल

ने इसराएल के लिये परमेश्वर को प्रार्थना किई और परमेश्वर ने उसे उत्तर दिया। १० और समूएल बलिदान की भेंट चढ़ा रहा था कि फिलिस्ती संग्राम के लिये इसराएल के सन्मुख आये परन्तु परमेश्वर उस दिन फिलिस्तियों पर महा गर्ज्जन से गर्ज्जा और उन्हें हरा दिया और वे इसराएल के आगे मारे गये ११ और इसराएली लोगों ने मिसफ़ः से निकलके फिलिस्तियों को खदेड़ा और उन्हें बेतकर के नीचे लों उन्हें मारते चले गये। १२ तब समूएल ने एक पत्थर लेके मिसफ़ः और शेन के मध्य में खड़ा किया और उस का नाम यह कहके अबनअज़र रक्खा कि परमेश्वर ने यहां १३ लों हमारी सहाय किई। सो फिलिस्ती वश में हुए और वे इसराएल के सिवानों में फिर न आये और परमेश्वर का हाथ समूएल के जीवन भर फिलिस्तियों के १४ विरुद्ध था। और वे बस्तियां जो फिलिस्तियों ने इसराएल से ले लिई थीं इसराएल को फेरी गईं अकरून से लेके जात लों और उन के सिवाने को इसराएल ने फिलिस्तियों के हाथ से छुड़ाया और इसराएलियों में और अमूरियों में मेल हुआ॥

१५ और समूएल अपने जीवन भर इस- १६ राएल का न्यायी रहा। और बरस बरस वह बैतएल का और जिलजाल का और मिसफ़ः का फेरा करता था और उन समस्त स्थानों में इसराएल का न्याय १७ करता था। और रामात को फिर आता था क्योंकि वहां उस का घर था और इसराएल का न्याय वहां करता था और वहां उस ने परमेश्वर के लिये बेदी बनाई॥

आठवां पर्ब्ब।

१ और जब समूएल वृद्ध हुआ तब ऐसा हुआ कि उस ने अपने बेटों को इस- २ राएल पर न्यायी किया। अब उस के पहिलौठे का नाम यूएल था और उस के दूसरे का नाम अबियाह वे बियर- ३ सबअ में न्यायी थे। पर उस के बेटे उस की चाल पर न चलते थे परन्तु लोभ करके घूस लेने लगे और न्याय बिरुद्ध करने लगे॥

४ तब इसराएल के सारे प्राचीनों ने आप को एकट्ठे किया और रामात में ५ समूएल पास आये। और उसे कहा कि देख तू वृद्ध है और तेरे बेटे तेरी चाल पर नहीं चलते अब समस्त जातिगणों की नाईं हमारा न्याय करने के लिये एक राजा ठहरा॥

६ परन्तु जब उन्हों ने उसे कहा कि हमारे न्याय करने के लिये हमें एक राजा दे इस बात से समूएल उदास हुआ और समूएल ने परमेश्वर से प्रार्थना ७ किई। और परमेश्वर ने समूएल को कहा कि लोगों के शब्द पर जो वे तुझे कहें कान धर क्योंकि उन्हों ने कुछ तुझे त्याग नहीं किया परन्तु मुझे त्याग किया ८ जिसतें मैं उन पर राज्य न करूं। जब से कि मैं उन्हें मिस्र से निकाल लाया आज लों उन सब कार्य्यों के समान उन्हों ने किया जिन से मुझे छोड़ दिया और आन आन देवों की सेवा किई वैसा ही ९ वे तुझ से भी करते हैं। सो अब उन के शब्द पर कान धर तथापि अति दृढ़ता से उन के विरुद्ध उन्हें कह दे और उन्हें उस राजा का व्यवहार बता जो उन पर राज्य करेगा॥

१० और समूएल ने उन लोगों को जो उस्से राजा के मांगते थे परमेश्वर की ११ सारी बातें कहीं। और उस ने कहा कि उस राजा के जो तुम पर राज्य करेगा ये व्यवहार होंगे कि वह तुम्हारे बेटों

को लेके अपने लिये अपने रथों के और अपने घोड़चढ़ों के लिये ठहरावेगा और
१२ वे उस के रथों के आगे दौड़ेंगे। और अपने लिये सहस्र सहस्र के प्रधान और पचास पचास के प्रधान ठहरावेगा और अपनी भूमि उन से जोताके बोआवेगा और लवावेगा और अपने संग्राम के और
१३ अपने रथों के हथियार बनवावेगा। और तुम्हारी बेटियों से अपने लिये मिठाई बनवावेगा और भोजन बनवावेगा और
१४ रोटी पोवावेगा। और वह तुम्हारे खेतों को और तुम्हारे दाख के और तुम्हारी जलपाई की बारियों को जो अच्छी से अच्छी होंगी लेके अपने सेवकों को देगा।
१५ और तुम्हारे अन्न और तुम्हारे दाख की बारियों का दसवां अंश लेके अपने नपुंसकों को और अपने सेवकों को देगा।
१६ और वह तुम्हारे दासों और तुम्हारी दासियों को और तुम्हारे सुंदर से सुंदर युवा मनुष्यों को और तुम्हारे गदहों को
१७ लेके अपने काम में लगावेगा। तुम्हारी भेड़ों का दसवां अंश लेगा और तुम उस
१८ के सेवक होओगे। और तब तुम अपने राजा के कारण जिसे तुम ने चुना है दोहाई देओगे और उस दिन परमेश्वर तुम्हारी न सुनेगा॥

१९ तिस पर भी उन लोगों ने समूएल की बात न मानी पर बोले कि नहीं
२० परन्तु हम एक राजा लेंगे। जिसतें हम भी समस्त जातिगणों के समान होवें और जिसतें हमारा राजा हमारे लिये न्याय करे और हमारे आगे आगे चले
२१ और हमारे लिये संग्राम करे। तब समूएल ने मंडली की सारी बातें सुनीं और
२२ परमेश्वर के श्रवण लों पहुंचाईं। और परमेश्वर ने समूएल को कहा कि तू उन का शब्द सुन और उन के लिये एक राजा ठहरा तब समूएल ने इस्राएल के मनुष्यों से कहा कि हर एक अपनी अपनी बस्ती को जावे॥

नवां पर्व्व।

१ अब बिनयमीन का एक जन था जो अफीह के बेटे बकूरत के बेटे सरूर के बेटे अबिएल का बेटा जिस का नाम कीस था वह बिनयमीनी और महाबली
२ था। और उस के एक बेटा था जिस का नाम साऊल जो सुंदर और चुना हुआ तरुण था और इस्राएल के संतानों में उस्से कोई अधिक सुंदर न था सारे लोगों में कांधे से लेके ऊपर लों ऊंचा था॥

३ और साऊल के पिता के गदहे खो गये थे सो कीस ने अपने बेटे साऊल को कहा कि सेवकों में से एक को अपने साथ ले और उठ जा गदहों को
४ ढूंढ़। सो वह इफरायम पहाड़ में से और सलीस: के देश में होके निकला परन्तु न पाया तब वे सअलीम के देश में से निकले परन्तु वहां भी न पाया और वह बिनयमीन के देश में होके
५ गया परन्तु न पाया। जब वे सूफ के देश में आये तब साऊल ने अपने साथ के सेवक को कहा कि आ फिर चलें ऐसा न हो कि मेरा पिता गदहों को
६ छोड़ हमारे लिये चिंता करे। तब उस ने उसे कहा कि देख इस नगर में ईश्वर का एक जन है जो प्रतिष्ठित है जो कुछ वह कहता है सो निश्चय होता है आ उधर जावें क्या जाने कि जो मार्ग हमें जाना उचित है वह हमें बता सके। तब साऊल ने अपने सेवक से कहा कि देख यदि हम जावें तो हम उस जन के लिये क्या ले जावें क्योंकि हमारे पात्रों में रोटी चुक गई और ईश्वर के जन के लिये भेंट नहीं हमारे
७ पास क्या है। फिर सेवक ने साऊल को

उत्तर देके कहा कि देख पांव शैकल चांदी मुझ पास है सो मैं ईश्वर के जन ९ को देऊंगा कि हमें मार्ग बतावे। अगले समय में जब मनुष्य परमेश्वर से प्रश्न करने आता था तब यह कहता था कि आओ दर्शी पास जावें क्योंकि आगम- १० ज्ञानी आगे दर्शी कहाता था। तब साऊल ने अपने सेवक से कहा कि तू ने अच्छा कहा आ चलें सो वे नगर में आये जहां ईश्वर का वह जन था॥

११ जब वे उस नगर की चढ़ाई पर चढ़ते थे तब उन्हें कई कन्या मिलीं जो पानी भरने जाती थीं और उन्हों ने १२ उन से पूछा कि दर्शी यहां है। तब उन्हों ने उन्हें उत्तर दिया और कहा कि हां देख वह तुम्हारे आगे है अब शीघ्र करो क्योंकि वह आज नगर में आया है क्योंकि आज ऊंचे स्थानों में १३ लोगों का बलिदान है। जब तुम नगर में पहुंचो तब तुम उस्से आगे कि वह ऊंचे स्थान में खाने जावे उसे पाओगे क्योंकि जब लों वह न जावे तब लों लोग न खावेंगे क्योंकि वह बलि को आशीस देता है उस के पीछे नेउतहरी खाते हैं सो अब तुम चढ़ो क्योंकि आज १४ तुम उसे पाओगे। सो वे नगर को चढ़े और नगर में जाते ही क्या देखते हैं कि समूएल उन के आगे आया कि ऊंचे स्थान पर चढ़ जावे॥

१५ और परमेश्वर ने साऊल के आने से एक दिन आगे समूएल के कान में प्रगट १६ कह दिया था। कि कल इसी समय में एक जन को बिनयमीन के देश से तुझ पास भेजूंगा और तू मेरे इसराएल लोगों पर उसे प्रधान अभिषेक करियो जिसतें वह मेरे लोगों को फ़िलिस्तियों के हाथ से छुड़ावे क्योंकि मैं ने अपने लोगों पर दृष्टि किई क्योंकि उन का चिल्लाना मेरे पास पहुंचा। सो जब १७ समूएल ने साऊल को देखा तब परमेश्वर ने उसे उत्तर दिया कि देख यही जन जिस के कारण मैं ने तुझे कहा था यही मेरे लोगों पर राज्य करेगा॥

तब साऊल समूएल के पास फाटक १८ पर आके बोला कि कृपा करके हमें बताइये कि दर्शी का घर कहां है। तब समूएल ने साऊल को उत्तर देके १९ कहा कि दर्शी मैं ही हूं मेरे आगे आगे ऊंचे स्थान पर चढ़ क्योंकि तुम आज मेरे साथ भोजन करोगे और कल मैं तुझे बिदा करूंगा और जो कुछ तेरे मन में है तुझे बताऊंगा। और तेरे गदहे २० जो आज तीन दिन से खो गये हैं उन की ओर से निश्चिंत रह क्योंकि वे मिल गये और इसराएल की सारी इच्छा किस पर है क्या तेरे और तेरे पिता के समस्त घराने पर नहीं। सो साऊल ने २१ उत्तर देके कहा कि मैं बिनयमीनी इसराएल की गोष्ठियों में से सब से छोटा नहीं और क्या मेरा घराना बिनयमीन की गोष्ठी के सारे घरानों में छोटे से छोटा नहीं सो इस बचन के समान तू मुझ से क्यों बोलता है॥

और समूएल साऊल को और उस के २२ सेवक को लेके उन्हें कोठरी में लाया और उन्हें नेउतहरियों में जो बुलाये गये थे जो जन तीस एक थे सब से श्रेष्ठ स्थान में बैठाया। तब समूएल ने २३ रसोईकारक को कहा कि वह भाग जो मैं ने तुझे रख छोड़ने को कहा था ले आ। और रसोईकारक ने एक कांधे २४ को और जो उस पर था उठा लिया और साऊल के आगे रखके कहा कि देख यह जो धरा है अपने आगे रखके खा क्योंकि मैं ने जब से कि लोगों का नेउता किया अब लों तेरे लिये रख छोड़ा था

सो साऊल ने उस दिन समूएल के साथ भोजन किया॥

२५ और जब वे ऊंचे स्थान से नगर में उतर आये तब उस ने साऊल से छत पर बातचीत किई। २६ और वे तड़के उठे और बिहान होते ही समूएल ने साऊल को फिर छत पर बुलाके कहा कि उठ मैं तुझे बिदा करूं सो साऊल उठा और वे दोनों वह और समूएल बाहर चले गये॥

२७ जब वे नगर के निकास पर जाते थे तब समूएल ने साऊल को कहा कि अपने सेवक को कह कि हम से आगे बढ़े और वह बढ़ गया पर तू तनिक खड़ा रह जिसतें ईश्वर का बचन तुझे बताऊं॥

दसवां पर्ब्ब।

१ तब समूएल ने एक कुप्पी तेल लिया और उस के सिर पर ढाला और उसे चूमा और कहा कि यह इस कारण नहीं कि परमेश्वर ने तुझे अपने अधिकार के ऊपर प्रधान करके अभिषेक किया। २ जब तू मेरे पास से आज चला जायगा तब दो जन को राखिल की समाधि के पास बिनयमीन के सिवाने के जिल्जह में पाओगे और वे तुझे कहेंगे कि जिन गदहों को तू ढूंढ़ने गया था सो मिले और अब तेरा पिता गदहों की चिंता छोड़कर तेरे लिये कुढ़ता है और कहता है कि मैं अपने बेटे के लिये क्या करूं। ३ तब तू वहां से आगे बढ़ेगा और तबूर के चौगान को पहुंचेगा और वहां तुझे तीन जन मिलेंगे जो बैतएल को ईश्वर कने चले जाते होंगे एक तो बकरी के तीन मेम्ना लिये हुए और दूसरा तीन रोटी ४ और तीसरा एक कुप्पा दाखरस। और वे तेरा कुशल पूछेंगे और दो रोटी तुझे देंगे और तू उन के हाथ से ले लीजियो। ५ उस के पीछे तू ईश्वर के पहाड़ पास जहां फिलिस्तियों की चौकी है पहुंचेगा और जब नगर में प्रवेश करेगा ऐसा होगा कि तू आगमज्ञानियों की एक जथा पावेगा जो ऊंचे स्थान से उतरी होगी जिन के आगे आगे भरबंग और ढोलक और बांसुरी और बीणा होंगे और वे भविष्य कहेंगे। ६ तब परमेश्वर का आत्मा तुझ पर उतरेगा और तू भी उन के साथ भविष्य कहेगा और और ही एक मनुष्य हो जावेगा। ७ और यों होगा कि जब तू ये चिन्ह पावे फिर जैसा संयोग होवे तैसा कीजियो क्योंकि ईश्वर तेरे साथ है। ८ और मेरे आगे तू जिलजाल को उतरियो और देख मैं तुझ पास उतरूंगा जिसतें बलिदान की भेंट और कुशल की भेंट बलि करूं सो तू सात दिन लों वहीं ठहरियो जब लों मैं तुझ पास आऊं और तुझे बताऊं कि तू क्या क्या करेगा॥

९ और ऐसा हुआ कि ज्योंहीं उस ने समूएल से जाने को पीठ फेरी त्योंहीं ईश्वर ने उसे दूसरा मन दिया और वे सब लक्षण उस ने उसी दिन पाये। १० और जब वे उधर पहाड़ को आये तो क्या देखते हैं कि आगमज्ञानियों की एक जथा उन्हें मिली और ईश्वर का आत्मा उस पर उतरा और वह उन में भविष्य कहने लगा। ११ और यों हुआ कि जब उस के अगले जान पहिचानों ने यह देखा कि वह आगमज्ञानियों के मध्य भविष्य कहता है तब लोगों ने आपुस में कहा कि कीस के बेटे को क्या हुआ क्या साऊल भी आगमज्ञानियों में है। १२ तब एक ने उन में से उत्तर दिया और कहा कि उन का पिता कौन है तब ही से यह कहावत चली कि क्या साऊल भी आगमज्ञानियों में है। १३ और जब वह आगम कह चुका तब ऊंचे स्थान में आया॥

१४ और साऊल के चचा ने उसे और उस के सेवक को कहा कि तुम कहां गये थे और वह बोला कि गदहे ढूंढ़ने और जब उन्हें कहीं न पाया तो समूएल पास १५ गये। तब साऊल का चचा बोला कि मुझे बता कि समूएल ने तुम्हें क्या कहा। १६ और साऊल ने अपने चचा से कहा कि उस ने हमें खोलके बताया कि गदहे मिल गये पर राज्य का समाचार जो समूएल ने उसे कहा था उसे न बताया॥

१७ और समूएल ने मिसफः में परमेश्वर के आगे लोगों को एकट्ठे बुलाया। १८ और इसराएल के संतान को कहा कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि मैं इसराएल को मिस्र से निकाल लाया और तुम्हें मिस्रियों के और सारे राजाओं के हाथ से और जो १९ तुम्हें सताते थे उन से छुड़ाया। और तुम ने आज के दिन अपने ईश्वर को त्याग किया जिस ने तुम्हें तुम्हारे सारे बैरियों और तुम्हारी बिपतों से बचाया और तुम ने उसे कहा कि हम पर एक राजा ठहरा सो अब अपनी अपनी गोष्ठी के और सहस्र सहस्र के समान परमेश्वर के आगे आओ॥

२० और जब समूएल ने इसराएल की सारी गोष्ठियों को एकट्ठी किया तब २१ बिनयमीन की गोष्ठी लिई गई। और जब वह बिनयमीन की गोष्ठी को उन के घरानों के समान पास लाया तब मत्री का घराना चुना गया और कीस का बेटा साऊल चुना गया और जब उन्हों ने उसे ढूंढ़ा तो न पाया॥

२२ इस लिये उन्हों ने परमेश्वर से पूछा कि वह जन फिर यहां आवेगा कि नहीं और परमेश्वर ने उत्तर दिया कि देखो वह सामग्री के बीच छिप रहा है। २३ तब वे दौड़े और उसे वहां से लाये और जब वह लोगों में खड़ा हुआ तब अपने कांधे से लेके ऊपर लों सभों से अधिक ऊंचा था॥

२४ और समूएल ने समस्त लोगों को कहा कि जिसे परमेश्वर ने चुना है तुम उसे देखते हो क्योंकि उस के समान सारे लोगों में कोई नहीं तब समस्त लोग ललकारके बोले कि राजा जीता २५ रहे। तब समूएल ने लोगों को राज्य की रीति बताई और पुस्तक में लिखके परमेश्वर के आगे रक्खा और समूएल ने हर एक मनुष्य को अपने अपने घर भेजा॥

२६ और साऊल भी अपने घर जिबिअत को गया और उस के साथ लोगों की एक जथा जिन के मन को ईश्वर ने २७ फेर दिया था हो लिई। परन्तु दुष्ट जन बोले कि यह जन हमें क्योंकर बचावेगा और उस की निन्दा किई और उस के पास भेंट न लाये पर वह अनसुने के समान हो रहा॥

ग्यारहवां पर्व्व।

१ तब अम्मूनी नाहस चढ़ा और यबीसजिलिअद के साम्ने छावनी किई तब यबीस के सब लोगों ने नाहस से कहा कि हम से बाचा बांध और हम तेरी २ सेवा करेंगे। और अम्मूनी नाहस ने उन्हें उत्तर दिया कि इस बात पर मैं तुझ से बाचा बांधूंगा कि मैं तुम सभों की हर एक दहिनी आंख निकाल डालूं और समस्त इसराएल के अपमान के लिये धरूं॥

३ तब यबीस के प्राचीनों ने उसे कहा कि हमें सात दिन की छुट्टी दे जिसतें हम इसराएल के सारे सिवाने में दूत भेजें और यदि कोई हमारा उद्धारक न ठहरे तब हम तुझ पास निकलेंगे। ४ तब साऊल के दूत जिबिअः में पहुंचे

४ और लोगों के कान लों यह संदेश पहुंचाया तब सब लोगों ने अपना शब्द उठाके बिलाप किया। ५ और देखो कि साऊल खेत से ढोर के पीछे पीछे चला आता था और साऊल ने कहा कि क्या है कि लोग बिलाप करते हैं और उन्हों ने यबीसियों का संदेश उसे कह सुनाया। ६ तब इन संदेशों को सुनते ही साऊल पर ईश्वर का आत्मा पड़ा और उस का क्रोध अत्यंत भड़का। ७ और उस ने एक जोड़ा बैल लिया और उन्हें टुकड़ा टुकड़ा किया और उन्हें दूतों के हाथ इसराएल के सारे सिवाने में यह कहके भेजा कि जो कोई साऊल और समूएल के पीछे पीछे न निकल आवेगा उस के बैलों की यही दशा होगी तब लोगों पर परमेश्वर का डर पड़ा और वे एक जन की नाईं ८ निकल आये। और उस ने उन्हें बजक में गिना और इसराएल के संतान तीन लाख थे और यहूदाह के मनुष्य तीस सहस॥

९ और उन्हों ने उन दूतों को कहा कि तुम यबीसजिलिअद के लोगों को कहो कि कल सूर्य्य की तपन होते ही तुम छुटकारा पाओगे और दूतों ने आके यबीस के मनुष्यों से कहा और वे आनन्द १० हुए। तब यबीस के मनुष्यों ने कहा कि कल तुम पास हम निकलेंगे और जो भला जानो सो हमारे विषय में कीजियो॥

११ और बिहान को साऊल ने लोगों की तीन जथा किईं और तड़के के पहर सेना के मध्य में आया और दिन के घाम लों अम्मूनियों को मारा और ऐसा हुआ कि वे जो रह गये सो छिन्न भिन्न हो गये यहां लों कि दो एकट्ठे न थे॥

१२ तब लोग समूएल से बोले कि किस ने कहा है कि क्या साऊल हम पर राज्य करेगा उन लोगों को लाओ जिसतें हम १३ उन्हें बधन करें। तब साऊल बोला कि आज के दिन कोई मनुष्य मारा न जावेगा क्योंकि आज के दिन परमेश्वर ने इसराएल को बचाया॥

१४ तब समूएल ने लोगों को कहा कि आओ जिलजाल को जावें और राज्य १५ को ठहरावें। तब सारे लोग जिलजाल को गये और वहां जिलजाल में परमेश्वर के आगे उन्हों ने साऊल को राजा किया और वहां उन्हों ने कुशल की भेंटों को परमेश्वर के आगे बलि किया और वहां साऊल ने और सारे इसराएल के समस्त जनों ने बड़ा आनन्द किया॥

बारहवां पर्व्व।

१ तब समूएल ने सारे इसराएल से कहा कि देखो जो कुछ तुम ने मुझे कहा मैं ने तुम्हारी हर एक बात मानी और एक को तुम पर राजा किया। २ और अब देखो राजा तुम्हारे आगे आगे जाता है और मैं वृद्ध और मेरा बाल पक गया और देखो मेरे बेटे तुम्हारे साथ और मैं लड़काई से आज लों ३ तुम्हारे आगे आगे चला। देखो मैं यहां हूं सो आओ परमेश्वर के और उस के अभिषिक्त के आगे मुझ पर साक्षी देओ कि मैं ने किस का बैल लिया अथवा किस का गदहा मैं ने रख छोड़ा अथवा मैं ने किसे छला अथवा किस पर मैं ने अंधेर किया अथवा किस के हाथ से मैं ने घूस लिया कि उस्से अपनी आंखें ४ मूंदूं और मैं तुम्हें फेर देऊंगा। और वे बोले कि तू ने हमें न छला न हम पर अंधेर किया और न तू ने किसी के हाथ से कुछ लिया। तब उस ने उन्हें कहा कि परमेश्वर तुम पर साक्षी और उस का अभिषिक्त आज साक्षी है कि मेरे हाथ

में तुम ने कुछ न पाया तब वे बोले कि वह साक्षी है ॥

६ फिर समूएल ने लोगों से कहा कि परमेश्वर ने मूसा और हारून को बढ़ाया और तुम्हारे पितरों को मिस्र के देश ७ से ऊपर निकाल लाया। सो अब ठहर जाओ जिसतें मैं परमेश्वर के आगे उन सब भलाइयों के कारण जो परमेश्वर ने तुम से और तुम्हारे पितरों के साथ किईं ८ तुम से बिचार करूं। जब यअकूब मिस्र में आया और तुम्हारे पितर परमेश्वर के आगे चिल्लाये तब परमेश्वर ने मूसा और हारून को बुलाया और वे तुम्हारे पितरों को मिस्र से निकाल लाये और ९ उन्हें इस स्थान में बसाया। और जब वे परमेश्वर अपने ईश्वर को भूल गये तब उस ने उन्हें हसूर की सेना के प्रधान सीसरा के हाथ और फिलिस्तियों के हाथ और मोअब के राजा के हाथ बेचा और १० वे उन से लड़े। फिर वे परमेश्वर के आगे चिल्लाके बोले कि हम ने पाप किया क्योंकि हम ने परमेश्वर को त्याग किया और बअलीम और इसतारात की सेवा किई परन्तु अब हमारे बैरियों के हाथ से हमें छुड़ा और हम तेरी सेवा ११ करेंगे। तब परमेश्वर ने यरुब्बअल और बिदान और इफताह और समूएल को भेजा और तुम्हें तुम्हारे चारों ओर के बैरियों के हाथ से बचाया और तुम ने १२ चैन पाया। और जब तुम ने देखा कि अम्मून के संतान का राजा नाहस तुम पर चढ़ आया तब तुम ने मुझे कहा कि नहीं परन्तु राजा हम पर राज्य करे जब कि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हारा १३ राजा था। सो अब देखो तुम्हारा राजा जिसे तुम ने चुन लिया जिसे तुम ने मांगा और देखो परमेश्वर ने तुम पर एक १४ राजा ठहराया। यदि तुम परमेश्वर से डरते रहोगे और उस की सेवा करोगे और उस का शब्द मानोगे और परमेश्वर के सन्मुख से फिर न जाओगे तो तुम और तुम्हारा राजा भी जो तुम पर राज्य करता है परमेश्वर अपने ईश्वर के पीछे पीछे चलोगे। १५ पर यदि तुम परमेश्वर का शब्द न मानोगे और परमेश्वर की आज्ञाओं से फिर जाओगे तो परमेश्वर का हाथ तुम्हारे बिरुद्ध होगा जैसा कि तुम्हारे पितरों पर था। १६ सो अब ठहर जाओ और देखो वह बड़ा काम जो परमेश्वर तुम्हारी आंखों के साम्ने करेगा। १७ क्या आज गोहूं की लवनी नहीं मैं परमेश्वर से प्रार्थना करता हूं और वह गर्ज्जन और मेंह भेजेगा और तुम बूझो और देखो कि राजा के मांगने से तुम्हारी दुष्टता बड़ी है जो तुम ने परमेश्वर की दृष्टि में किई ॥

१८ सो समूएल ने परमेश्वर से प्रार्थना किई और परमेश्वर ने उसी दिन गर्ज्जन और मेंह भेजा तब सारे लोग परमेश्वर से और समूएल से निपट डर गये। १९ और सारे लोगों ने समूएल से कहा कि अपने दासों के लिये परमेश्वर अपने ईश्वर की प्रार्थना कीजिये कि हम न मरें क्योंकि हम ने अपने सारे पापों से यह बुराई अधिक किई कि अपने लिये एक राजा मांगा। २० तब समूएल ने लोगों को कहा कि मत डरो यह सब दुष्टता तुम ने किई है तिस पर भी परमेश्वर के पीछे पीछे जाने से अलग न होओ परन्तु अपने सारे अंतःकरण से परमेश्वर की सेवा करो। २१ और बृथा का पीछा करने को अलग मत होओ जिन में लाभ और मुक्ति नहीं क्योंकि वे ब्यर्थ हैं। २२ क्योंकि परमेश्वर अपने महत् नाम के लिये अपने लोग को छोड़ न देगा क्योंकि परमेश्वर की इच्छा हुई कि तुम्हें अपने

२३ लोग बनावे। और ईश्वर न करे कि मैं तुम्हारे लिये प्रार्थना करने में थम जाऊं और परमेश्वर के विरुद्ध पापी होऊं परन्तु मैं वह मार्ग जो अच्छा और सीधा
२४ है तुम्हें सिखाऊंगा। केवल परमेश्वर से डरो और सच्चाई के साथ अपने सारे मन से उस की सेवा करो क्योंकि देखो कि उस ने तुम्हारे लिये कैसा बड़ा काम
२५ किया है। परन्तु यदि तुम अब भी दुष्टता करोगे तो तुम और तुम्हारा राजा नाश हो जाओगे॥

तेरहवां पर्ब्ब।

१ साऊल ने एक बरस राज्य किया और जब वह इसराएल पर दो बरस
२ राज्य कर चुका। तब साऊल ने इसराएल में से तीन सहस अपने लिये चुने और दो सहस उस के साथ मिकमास में और बैतएल पहाड़ में थे और एक सहस यूनतन के साथ बिनयमीन के जिबिअत में थे और उबरे हुओं को उस ने बिदा किया कि अपने अपने डेरे को जावें॥
३ और यूनतन ने फिलिस्तियों के थाने को जो जिबिअः में था मारा और फिलिस्तियों ने सुना और साऊल ने सारे देश में यह कहके नरसिंगा फूंका कि इबरानी
४ सुनें। और सारे इसराएलियों ने यह समाचार सुना कि साऊल ने फिलिस्तियों के थाने को मारा और इसराएल भी फिलिस्तियों से घिनित हुए और लोग साऊल के पास जिलजाल में एकट्ठे बुलाये
५ गये। और फिलिस्ती इसराएल से लड़ने को एकट्ठे हुए तीस सहस रथ और छः सहस घोड़चढ़े और लोग समुद्र की बालू की नाईं समूह चढ़ आये और मिकमास में बैतअवन की पूर्ब्ब और डेरा किया॥
६ और जब इसराएल के मनुष्यों ने देखा कि हम सकेतों में हैं क्योंकि लोग दुःखी थे तब लोग आके खोहों में और झाड़ों में और पहाड़ों में और ऊंचे ऊंचे स्थानों में और गढ़हियों में जा छिपे।
७ और इबरानी यरदन के पार जद और जिलिआद के देश को गये और साऊल लों अब लों जिलजाल ही में था और समस्त लोग उस के पीछे पीछे थरथराते
८ गये। और वहां समूएल के ठहराने के समान सात दिन लों ठहरा रहा परन्तु समूएल जिलजाल में न आया और लोग
९ उस के पास से बिथरे थे। तब साऊल ने कहा कि बलिदान की भेंट और कुशल की भेंट मुझ पास लाओ और उस ने बलिदान की भेंट चढ़ाई॥
१० और ऐसा हुआ कि ज्योंहीं वह बलिदान की भेंट चढ़ा चुका त्योंहीं समूएल आ पहुंचा और साऊल उसे मिलने को बाहर निकला कि उसे धन्य-
११ बाद करे। और समूएल ने पूछा कि तू ने क्या किया तब साऊल बोला कि जब मैं ने देखा कि लोग मुझ से बिथर गये और तू ठहराये हुए दिनों के भीतर न आ पहुंचा और फिलिस्ती मिकमास
१२ में एकट्ठे हुए। तब मैं ने कहा कि अब फिलिस्ती जिलजाल में मुझ पर आ पड़ेंगे और मैं ने परमेश्वर की प्रार्थना किई इस लिये मैं ने सकेती से बलिदान
१३ की भेंट चढ़ाई। तब समूएल ने साऊल को कहा कि तू ने मूढ़ता किई है तू ने परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञा को जो उस ने तुझे किई पालन न किया क्योंकि परमेश्वर अब तेरा राज्य इसरा-
१४ एल पर सदा स्थिर करता। परन्तु अब तेरा राज्य बना न रहेगा परमेश्वर ने एक जन को अपने मन के समान खोजा है और परमेश्वर ने उसे आज्ञा किई कि उस के लोगों का प्रधान होवे क्योंकि तू ने परमेश्वर की आज्ञा को पालन न किया॥

१५ और समूएल उठा और जिलजाल से बिनयमीन के जिबिअत को चला गया तब साऊल ने उन लोगों को जो उस पास थे गिना और वे एक छः सौ जन १६ थे। और साऊल और उस का बेटा यूनतन और उस के साथ के लोग बिनयमीन के संतान के जिबिअः में ठहर गये परन्तु फिलिस्तियों ने मिकमास में छावनी किई॥

१७ और लुटेरे फिलिस्तियों की छावनी से तीन जथा होके निकले एक तो सूआल के देश की उफरः की ओर। १८ और दूसरी जथा बैतहोरान के मार्ग आई और तीसरी जथा ने उस सिवाने का मार्ग लिया जो सबुईम की तराई के बन के सन्मुख है॥

१९ अब इसराएल के सारे देश में कोई लोहार न मिलता था क्योंकि फिलिस्तियों ने कहा था कि न हो कि इबरानी खड्ग २० अथवा भाला बनावें। परन्तु सारे इसराएली हर एक जन अपना अपना फार और भाला और कुल्हाड़ी और कुदारी चोखा करने के लिये फिलिस्तियों २१ कने उतरते थे। तद भी कुदारियों और फारों और त्रिशूलों और कुल्हाड़ी के लिये और अरई को चोखा करने के २२ लिये उन के पास एक रेती थी। और ऐसा हुआ कि लड़ाई के दिन साऊल और उस के बेटे यूनतन को छोड़ उन लोगों में से जो साऊल और यूनतन के साथ थे किसी के हाथ में एक तलवार और एक भाला न था॥

२३ तब फिलिस्तियों का थाना मिकमास की घाटी पर आ पड़ा॥

चौदहवां पर्ब्ब।

१ और एक दिन ऐसा हुआ कि साऊल के बेटे यूनतन ने अपने अस्त्रधारी युवा मनुष्य को कहा कि आ हम फिलिस्तियों के थाने पर जो पर्ली ओर है चलें परन्तु २ उस ने अपने पिता से नहीं कहा। और साऊल जिबिअः के सिवाने पर एक अनार के वृक्ष तले जो मिगरून में था ठहर रहा और एक छः सौ लोग उस के ३ साथ थे। तब परमेश्वर का याजक सैला में एली का बेटा फीनिहास का बेटा ईकबूद के भाई अखितूब का बेटा अफूद पहिने हुए था और लोगों ने न जाना कि यूनतन चला गया।

४ और उन घाटियों के बीच जिन से यूनतन चाहता था कि फिलिस्तियों के थाने पर जा पड़े एक एक ओर चोखी चटान थी और एक का नाम बोजीज ५ और दूसरी का सनः था। एक का साम्ना उत्तर दिशा मिकमास के सन्मुख था और दूसरी का दक्षिण दिशा ६ जिबिअः के सन्मुख। तब यूनतन ने अपने अस्त्रधारी युवा से कहा कि आ और हम उन अखतनों के थाने पर चढ़ जायें क्या जाने परमेश्वर हमारे लिये कार्य्य करे क्योंकि परमेश्वर के आगे कुछ बड़ी बात नहीं चाहे बहुतों ७ से जय दे चाहे तो थोड़ों से। और उस के अस्त्रधारी ने उसे कहा कि सब जो आप के मन में है करिये फिरिये देखिये आप के मन के समान मैं भी ८ साथी हूं। तब यूनतन बोला कि देख हम इन लोगों पास पार जाते हैं आ ९ हम अपने तईं उन पर प्रगट करें। यदि वे हमें कहें कि ठहरो जब लों हम तुम्हारे पास आवें तब हम ठहरे रहेंगे और उन पास चढ़ न जावेंगे। १० परन्तु यदि वे यों कहें कि हम पर चढ़ आओ तो हम चढ़ जावेंगे क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें हमारे हाथ में कर दिया और यह हमारे लिये एक पता होगा॥

११ तब उन दोनों ने आप को फिलि-

स्त्रियों के थाने पर प्रगट किया और फिलिस्ती बोले कि देखो इब्रानी उन छेदों में से जहां वे छिप रहे थे बाहर १२ आते हैं। और उस थाने के लोगों ने यूनतन और उस के अस्त्रधारी को कहा कि हम पर चढ़ आओ और हम तुम्हें कुछ दिखावेंगे सो यूनतन ने अपने अस्त्रधारी से कहा कि अब मेरे पीछे चढ़ आ क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें इसराएल १३ के हाथ में कर दिया। और यूनतन बकैयां चढ़ गया और उस के पीछे उस का अस्त्रधारी और वे यूनतन के आगे मारे गये और उस के पीछे पीछे उस के १४ अस्त्रधारी ने मारा। सो यह पहिला काटकूट जो यूनतन और उस के अस्त्रधारी ने किया सारे मनुष्य बीस एक थे उतनी भूमि में जितनी में एक हल आधे दिन लों फिरे॥

१५ तब सेना में खेत में और सारे लोगों में थर्थराहट हुई और थाने के लोग और लुटेरे भी थर्थराने लगे और भूमि कंपित हुई यह थर्थराहट ईश्वर की ओर से थी॥

१६ और बिनयमीन के जिबिअत में के साऊल के पहरुओं ने देखा तो क्या देखते हैं कि मंडली घट गई और वे १७ मारते चले जाते थे। तब साऊल ने अपने साथी लोगों से कहा कि गिनो और देखो हम में से कौन निकल गया है जब उन्हों ने गिना तो क्या देखते हैं कि यूनतन और उस का अस्त्रधारी नहीं १८ है। तब साऊल ने अखी को कहा कि ईश्वर की मंजूषा यहां ला क्योंकि ईश्वर की मंजूषा उस समय में इसराएल के १९ पास थी। और ऐसा हुआ कि जब याजक से साऊल बात करता था तब फिलिस्तियों की सेना में धूम होती चली जाती थी और साऊल ने याजक से कहा २० कि अपना हाथ खींच ले। और साऊल और उस के सारे लोग एकट्ठे बुलाये गये और संग्राम को आये और देखो कि हर एक पुरुष का खड्ग उस के संगी पर पड़ा और बड़ी गड़बड़ाहट हुई। २१ और वे इब्रानी भी जो आगे फिलिस्तियों के साथ थे और जो चारों ओर से उन के पास छावनी में गये थे वे भी फिरके उन इसराएलियों में जो साऊल और २२ यूनतन के साथ थे मिल गये। और इसराएल के सारे लोग भी जिन्हों ने इफ्रायम पहाड़ में आप को छिपाया था यह सुनके कि फिलिस्ती भागे तब वे भी २३ संग्राम में उन्हें खदेड़ते गये। और परमेश्वर ने उस दिन इसराएलियों को बचाया और लड़ाई बैतअवन के उस पार लों पहुंची॥

२४ और इसराएली लोग उस दिन दुःखी हुए क्योंकि साऊल ने लोगों को किरिया देके कहा कि जो कोई सांझ लों खाना खावे उस पर धिक्कार जिसतें मैं अपने बैरियों से पलटा लेऊं यहां लों कि किसी २५ ने कुछ न चखा। और समस्त देश बन में पहुंचे और वहां भूमि पर मधु था। २६ और ज्योंहीं लोग बन में पहुंचे तो क्या देखते हैं कि मधु टपकता है पर किसी ने अपने मुंह लों हाथ न उठाया क्योंकि २७ लोग किरिया से डरे। परन्तु यूनतन ने न सुना था कि उस के पिता ने लोगों को किरिया दिई सो उस ने अपने हाथ की छड़ी की नोक से मधु के छत्ते में बोरा और हाथ में लेके मुंह में डाला और उस की आंखों में ज्योति आई। २८ तब उन लोगों में से एक ने उसे कहा कि तेरे पिता ने दृढ़ किरिया देके कहा था कि जो जन आज कुछ खाय उस पर धिक्कार और उस समय लोग थके हुए २९ थे। तब यूनतन बोला कि मेरे पिता

ने देश को दुःख दिया देखो मैं ने तनिक सा मधु चखा और मेरी आंखों में
३० ज्योति आई। क्या न होता यदि सारे लोग बैरियों की लूट से जो उन्हों ने पाई मनमंता खाते क्या फिलिस्ती अधिक मारे न जाते॥

३१ और उन्हों ने उस दिन मिकमास से लेके ऐयलून लों फिलिस्तियों को मारा
३२ और लोग निपट थक गये। और लोग लूट पर गिरे और भेड़ और बैल और बछड़े पकड़े और उन्हें मार मार लोहू
३३ समेत खा गये। तब वे साऊल से कहके बोले कि देख लोहू समेत खाके लोग परमेश्वर के अपराधी होते हैं और वह बोला कि तुम ने पाप किया सो एक बड़ा पत्थर आज मेरे साम्ने ढुलकाओ।
३४ तब साऊल ने कहा कि लोगों में फैल जाओ और उन से कहो कि हर एक जन अपना अपना बैल और अपनी अपनी भेड़ लावें और यहां मारके खावें और लोहू समेत खाके परमेश्वर के अपराधी न बनें सो उस रात हर एक जन अपना
३५ अपना बैल लाया और वहीं मारा। और साऊल ने परमेश्वर के लिये एक बेदी बनाई यह पहिली बेदी है जो उस ने परमेश्वर के लिये बनाई॥

३६ तब साऊल ने कहा कि आओ रात को फिलिस्तियों के पीछे उतरें और भिनसार लों उन्हें लूटें और उन में से एक जन को न छोड़ें और वे बोले कि जो कुछ आप को अच्छा जान पड़े सो करिये तब याजक बोला कि आओ
३७ यहां ईश्वर से मंत्र लेवें। तब साऊल ने ईश्वर से मंत्र पूछा कि मैं फिलिस्तियों का पीछा करने को उतरूं तू उन्हें इसराएल के हाथ में सौंप देगा परन्तु उस ने उस दिन उसे कुछ उत्तर न दिया॥

३८ तब साऊल ने कहा कि लोगों के समस्त प्रधान यहां आवें और जानें और देखें कि आज कौन सा पाप हुआ है।
३९ क्योंकि परमेश्वर के जीवन सों जिस ने इसराएल को बचाया यद्यपि मेरा बेटा यूनतन भी होवे तो वह निश्चय मारा जायगा परन्तु समस्त लोगों में से किसी
४० ने उत्तर न दिया। तब उस ने सारे इसराएल से कहा कि तुम लोग एक ओर होओ और मैं और मेरा बेटा यूनतन दूसरी ओर तब लोग साऊल से बोले कि जो आप भला जानें सो कीजिये।
४१ और साऊल ने परमेश्वर इसराएल के ईश्वर से कहा कि ठीक चिता दे और साऊल और यूनतन पकड़े गये परन्तु
४२ लोग निकल गये। तब साऊल ने कहा कि मेरे और मेरे बेटे यूनतन के नाम चिट्ठी डालो तब यूनतन पकड़ा गया।
४३ तब साऊल ने यूनतन से कहा कि मुझे बता कि तू ने क्या किया है और यूनतन ने उसे बताया और कहा मैं ने तो केवल तनिक मधु अपनी छड़ी की नोक से
४४ चखा था सो अब देख मुझे मरना है। तब साऊल ने कहा कि ईश्वर ऐसा ही और उस्से अधिक करे कि यूनतन तू निश्चय
४५ मर जायगा। तब लोगों ने साऊल को कहा कि क्या यूनतन मर जाय जिस ने इसराएल के लिये ऐसा बड़ा बचाव किया ईश्वर न करे परमेश्वर की सों उस के सिर का एक बाल लों भूमि पर न गिराया जायगा क्योंकि उस ने आज ईश्वर के साथ कार्य्य किया सो लोगों ने यूनतन को छुड़ा लिया जिसतें वह
४६ मर न जाय। तब साऊल फिलिस्तियों का पीछा करने से थम गया और फिलिस्ती अपने स्थान को गये॥

४७ और साऊल ने इसराएल का राज्य लिया और अपने समस्त बैरियों से हर एक ओर मोआब के और अम्मून के संतान

के और अदूम भी और सूबा के राजाओं के और फिलिस्तियों के साथ लड़ा और वह जहां कहीं जाता था उन्हें छेड़ता था। तब उस ने बल के साथ कार्य्य किया और अमालीक को मारा और इसराएलियों को लुटेरों के हाथ से छुड़ाया॥ ४८

४९ अब साऊल के बेटों के नाम ये हैं यूनतन और यशूई और मलिकिसूअ और उस की दोनों बेटियों के नाम ये हैं पहिलौठी मेरब और लहुरी मीकल।

५० और साऊल की पत्नी का नाम अखिनूअम जो अखिमअज की बेटी थी और उस के सेनापति का नाम अबिनैयिर था जो साऊल के चचा नैयिर का बेटा था।

५१ और कीस साऊल का पिता और नैयिर अबिनैयिर का पिता अबिएल का बेटा था॥

५२ और साऊल के जीवन भर फिलिस्तों से कठिन संग्राम रहा और जब कभी साऊल किसी बलवंत को अथवा जोधा को देखता था तब वह उसे अपने पास रखता था॥

पंदरहवां पर्ब्ब

१ और समूएल ने साऊल से कहा कि परमेश्वर ने मुझे भेजा कि तुझे अपने इसराएली लोगों पर राज्याभिषेक करूं

२ सो अब परमेश्वर की बातें सुन। सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि मुझे चेत है जो कुछ कि अमालीक ने इसराएल से किया वे मार्ग में उन के लिये ढूके में अंगीकार लगे जब वे मिस्र

३ से चढ़ आये। अब तू जा और अमालीक को मार और सब कुछ जो उन का है सर्बथा नाश कर और उसे मत छोड़ परन्तु क्या पुरुष क्या स्त्री और क्या बालक क्या दूध पीवक क्या बैल और क्या भेड़ क्या ऊंट और क्या गदहे सब को मार डाल॥

४ और साऊल ने लोगों को एकट्ठा किया और तलाइम में दो लाख पैदल गिना और यहूदाह के दस सहस्र जन

५ थे। और साऊल अमालीक के एक नगर को आया और तराई में लड़ा।

६ और साऊल ने कैनियों को कहा कि निकल जाओ अमालीकियों में से उतरो न हो कि मैं उन के साथ तुम्हें नाश करूं क्योंकि तुम ने इसराएल के समस्त संतान पर जब वे मिस्र से चढ़ आये कृपा किई सो कैनी अमालीकियों में से

७ निकल गये। और साऊल ने अमालीकियों को हवीलः से लेके सूर लों जो मिस्र

८ के सामने है मारा। और अमालीकियों के राजा अगाग को जीता पकड़ा और सब लोगों को खड्ग की धार से सर्बथा

९ नाश किया। परन्तु साऊल और लोगों ने अगाग को और अच्छी से अच्छी भेड़ों को और बैलों को और मोटे मोटे जीवधारियों को और मेम्नों को और सब अच्छी बस्तों को जीता रक्खा और उन्हें सर्बथा नाश न किया परन्तु उन्हों ने हर एक बस्तु को जो तुच्छ और बुरी थी सर्बथा नाश किया॥

१० तब परमेश्वर का यह बचन समूएल

११ को पहुंचा। मैं पछताता हूं कि साऊल को राजा किया क्योंकि वह मेरे पीछे से फिर गया और मेरी आज्ञाओं को पूर्ण न किया और समूएल उदास हुआ और रात भर परमेश्वर के आगे चिल्लाता

१२ रहा। और बिहान को बड़े तड़के समूएल उठा कि साऊल से भेंट करे और समूएल से कहा गया कि साऊल करमिल को आया और देखो कि उस ने अपने लिये एक स्मरण का चिन्ह खड़ा किया और फिरा और जिलजाल को उतर गया॥

१३ फिर समूएल साऊल पास गया और

साऊल ने उसे कहा कि तू परमेश्वर का आशीषित है मैं ने परमेश्वर की १४ आज्ञा को पूर्ण किया। तब समूएल ने कहा परन्तु यह भेड़ों का मिमियाना और बैलों का रमाना जो मैं सुनता हूं १५ सो क्या है। और साऊल ने कहा कि वे अमालीकियों से ले आये हैं क्योंकि लोगों ने अच्छी से अच्छी भेड़ और बैल को बचा रक्खा है कि परमेश्वर तेरे ईश्वर के लिये बलि चढ़ावें और बचे हुओं को तो हम ने सर्वथा नाश किया १६ है। तब समूएल ने साऊल को कहा कि ठहर जा और जो कुछ परमेश्वर ने आज रात मुझ से कहा है मैं तुझ से कहूंगा तब वह उसे बोला कि कहिये॥

१७ और समूएल ने कहा कि जब तू अपनी दृष्टि में तुच्छ था तब क्या इसराएल की गोष्ठियों का प्रधान न हुआ और परमेश्वर ने तुझे इसराएल पर १८ राज्याभिषेक न किया। और परमेश्वर ने तुझे यह कहके यात्रा को भेजा कि जा उन पापी अमालीकियों को सर्वथा नाश कर और उन से यहां लों लड़ाई १९ कर कि वे मिट जावें। सो तू ने किस लिये परमेश्वर का शब्द न माना परन्तु लूट पर दौड़ा और परमेश्वर की दृष्टि २० में बुराई किई। तब साऊल ने समूएल को कहा कि हां मैं ने तो परमेश्वर के शब्द को माना है और जिस मार्ग में परमेश्वर ने मुझे भेजा चला हूं और अमालीकियों के राजा अगाग को ले आया हूं और अमालीकियों को सर्वथा २१ नाश किया है। पर लोगों ने लूट में भेड़ और बैल और जो अच्छे से अच्छे चाहिये था कि सर्वथा नाश किये जावें सो रख लिये जिसतें जिलजाल में परमेश्वर तेरे ईश्वर के लिये भेंट चढ़ावें॥

२२ और समूएल बोला कि क्या परमेश्वर बलिदान की भेंटों और बलि से ऐसा आनन्द है जैसे परमेश्वर के शब्द के मानने से देखो मानना बलिदान से और सुनना मेंढ़े की चिकनाई से उत्तम है। २३ क्योंकि फिर जाना टोना के पाप के तुल्य है और बुराई और ढिठाई मूर्त्तिपूजा के समान इस लिये कि तू ने परमेश्वर के बचन को त्याग किया है उस ने तुझे भी राज्य से त्याग किया २४ है। तब साऊल ने समूएल से कहा कि मैं ने पाप किया है क्योंकि मैं ने परमेश्वर की आज्ञा को और तेरी बातों को उल्लंघन किया क्योंकि मैं ने लोगों से डरके उन के शब्द को माना। २५ सो मैं तेरी बिनती करता हूं कि मेरे पाप क्षमा कीजिये और मेरे साथ उलटा फिरिये जिसतें मैं परमेश्वर की सेवा २६ करूं। और समूएल ने साऊल से कहा कि मैं तेरे साथ न फिरूंगा क्योंकि तू ने परमेश्वर के बचन को त्याग किया है और परमेश्वर ने इसराएल पर राजा होने से तुझे त्याग किया है। २७ और जब समूएल फिरा कि चला जावे तो उस ने उस के वस्त्र का खूंट पकड़ा और २८ वह फट गया। तब समूएल ने उसे कहा कि परमेश्वर ने आज इसराएल के राज्य को तुझ से फाड़ा है और तेरे एक परोसी को दिया है जो तुझ से २९ अच्छा है। और जो इसराएल का बल है सो झूठ न बोलेगा और न पछतावेगा क्योंकि वह मनुष्य नहीं कि वह पछतावे। ३० तब उस ने कहा कि मैं ने तो पाप किया है अब लोगों के प्राचीनों के और इसराएल के आगे मेरी प्रतिष्ठा कीजिये और मेरे साथ लौटिये जिसतें मैं परमेश्वर ३१ तेरे ईश्वर की सेवा करूं। तब समूएल साऊल के पीछे फिरा और साऊल ने परमेश्वर की सेवा किई॥

३२ तब समूएल ने कहा कि अमालीक के राजा अगाग को इधर मुझ पास लाओ और अगाग निधड़क से उस पास आया और अगाग ने कहा कि निश्चय ३३ मृत्यु की कड़ूवाहट जाती रही। और समूएल ने कहा कि जैसा तेरी तलवार ने स्त्रियों को निर्बंश किया वैसा ही तेरी माता स्त्रियों में निर्बंश होगी और समूएल ने अगाग को जिलजाल में परमेश्वर के आगे टुकड़ा टुकड़ा किया॥

३४ और समूएल रामात को गया और साऊल अपने घर जिबिअत को चढ़ ३५ गया। और समूएल अपने जीवन भर साऊल को देखने न गया तिस पर भी समूएल साऊल के कारण बिलाप करता रहा और परमेश्वर भी पछताया कि उस ने साऊल को इसराएल पर राजा किया॥

सोलहवां पर्ब्ब।

१ और परमेश्वर ने समूएल से कहा कि तू कब लों साऊल के कारण बिलाप करता रहेगा मैं ने तो उसे इसराएल पर राज्य करने से त्याग किया अपने सींग में तेल भर और तुझे बैतलहमी यस्सी पास भेजता हूं क्योंकि मैं ने उस के बेटों में से अपने लिये एक २ को राजा ठहराया है। तब समूएल बोला मैं क्योंकर जाऊं यदि साऊल सुने तो मुझे मार ही डालेगा और परमेश्वर ने कहा कि एक बछिया अपने हाथ में ले जा और कह कि मैं परमेश्वर के ३ लिये बलिदान चढ़ाने आया हूं। और बलिदान चढ़ाने में यस्सी को बुला और मैं तुझे बताऊंगा कि तू क्या करेगा और जिस का नाम मैं तेरे आगे लेऊं तू उसे मेरे लिये अभिषेक कर॥

४ और जो परमेश्वर ने उसे कहा समूएल ने किया और बैतलहम को आया तब नगर के प्राचीन उस के आने से कांप गये और बोले कि तू कुशल से ५ आता है। और वह बोला कि कुशल से मैं परमेश्वर के लिये बलि करने आया हूं तुम आप को पवित्र करो और मेरे साथ बलि करने के लिये आओ और उस ने यस्सी को उस के बेटों सहित पवित्र किया और उन्हें बलि करने को ६ बुलाया। और ऐसा हुआ कि जब वे आये तो उस ने इलिअब पर दृष्टि किई और बोला कि निश्चय परमेश्वर का ७ अभिषिक्त उस के आगे है। परन्तु परमेश्वर ने समूएल से कहा कि उस के स्वरूप पर और उस के डौल की ऊंचाई पर दृष्टि न कर क्योंकि मैं ने उसे नाह किया कि परमेश्वर मनुष्य के समान नहीं देखता क्योंकि मनुष्य बाहरी रूप देखता है परन्तु परमेश्वर अंतःकरण पर ८ दृष्टि करता है। तब यस्सी ने अबिनदाब को बुलाया और उसे समूएल के आगे चलाया और वह बोला कि परमेश्वर ९ ने इसे भी नहीं चुना। तब यस्सी ने सम्मः को आगे चलाया और वह बोला कि परमेश्वर ने इसे भी नहीं चुना। १० तब यस्सी ने अपने सातों बेटों को समूएल के सामे किया सो समूएल ने यस्सी को कहा कि परमेश्वर ने इन्हें भी नहीं ११ चुना। और समूएल ने यस्सी से कहा कि तेरे सब बेटे येही हैं तब वह बोला कि सब से छोटा रह गया है और देख वह भेड़ चराता है सो समूएल ने यस्सी को कहा कि उसे भेजके मंगवा क्योंकि जब लों वह यहां न आवे हम न बैठेंगे। १२ और वह भेजके उसे भीतर लाया और वह लाल रङ्ग और सुंदर नेत्र देखने में अच्छा था तब परमेश्वर ने कहा कि उठके उसे अभिषेक कर क्योंकि यह १३ वही है। तब समूएल ने तेल का सींग लिया और उसे उस के भाइयों के मध्य

में अभिषेक किया और परमेश्वर का आत्मा उस दिन से आगे लों दाऊद पर उतरा और समूएल उठके रामात को चला गया ॥

१४ परन्तु परमेश्वर का आत्मा साऊल से जाता रहा और परमेश्वर की ओर से एक दुष्ट आत्मा उसे सताने लगा। १५ तब साऊल के सेवकों ने उसे कहा कि देखिये अब एक दुष्ट आत्मा ईश्वर की १६ ओर से आप को सताता है। सो अब हमारे प्रभु अपने सेवकों को जो आप के आगे हैं आज्ञा कीजिये कि एक जन ऐसा खोजें जो सारंगी बजाने में निपुण हो और यों होगा कि जब दुष्ट आत्मा ईश्वर से आप पर चढ़े तब वह अपने हाथ से बजावेगा और आप अच्छे १७ होंगे। और साऊल ने अपने सेवकों से कहा कि अब मेरे लिये अच्छा बजनिया ठहराओ और उसे मुझ पास लाओ। १८ तब उस के दासों में से एक ने उत्तर देके कहा कि देख मैं ने बैतलहमी यस्सी का एक बेटा देखा जो बजाने में निपुण है और वह जन सामर्थी बीर है और वह लड़ाक और बचन में चतुर और देखने में सुंदर है और परमेश्वर उस के १९ साथ है। तब साऊल ने यस्सी पास दूत भेजके कहा कि अपने बेटे दाऊद को जो २० भेड़ों के संग है मुझ पास भेज। सो यस्सी ने एक गदहा रोटी लिई और एक कुप्पा मदिरा और बकरी का मेम्ना लिया और अपने बेटे दाऊद को दिया २१ कि साऊल के लिये ले जाय। सो दाऊद साऊल पास आया और उस के आगे खड़ा हुआ और उस ने उसे बहुत प्यार किया २२ और वह उस का अस्त्रधारी हुआ। और साऊल ने यस्सी को कहला भेजा कि कृपा करके दाऊद को मेरे आगे रहने दीजिये क्योंकि वह मेरे मन में भाया है। और ऐसा हुआ कि जब ईश्वर से २३ आत्मा साऊल पर चढ़ता था तब दाऊद सारंगी लेके अपने हाथ से बजाता था और साऊल संतुष्ट होके अच्छा होता था और दुष्ट आत्मा उस पर से उतर जाता था ॥

सत्रहवां पर्ब्ब।

१ अब फिलिस्तियों ने युद्ध के लिये अपनी सेनाओं को यहूदाह के शोकः में एकट्ठी किया और शोकः और अजोकः के मध्य एफसदम्मिम में डेरा किया। २ और साऊल और इसराएल के मनुष्यों ने एकट्ठे होके एला की तराई में डेरा किया और युद्ध के लिये फिलिस्तियों के सन्मुख पांती बांधी। ३ और फिलिस्ती एक ओर पहाड़ पर खड़े हुए और दूसरी ओर एक पहाड़ पर इसराएल और उन दोनों के मध्य में तराई थी। ४ और फिलिस्ती की सेना से एक महाबीर जो जात का जुलिअत कहाता था जिस के डील की ऊंचाई छः हाथ थी। ५ और उस के सिर पर पीतल का एक टोप था और वह झिलम पहिने हुए था जो तौल में मन दो एक पीतल का था। ६ और उस की दो पिंडुलियों पर पीतल के अस्त्र थे और उस के दोनों कांधों के मध्य पीतल की एक फरी थी। ७ और उस के भाले की छड़ ऐसी थी जैसे जोलाहे का लट्ठा और उस के भाले का फल सेर नव एक का था और एक जन ढाल लिये हुए उस के आगे आगे चलता था। ८ और उस ने खड़े होके इसराएल की सेनाओं को ललकारके कहा कि तुम क्यों संग्राम के लिये निकले हो क्या मैं फिलिस्ती नहीं हूं और तुम साऊल के सेवक सो अपने में से एक जन को चुनो और वह ९ मेरा सामा करे। यदि वह मुझ से लड़ सके और मुझे मार डाले तो हम तुम्हारे

सेवक होंगे पर यदि मैं उस पर प्रबल होके उसे मार डालूं तो तुम हमारे सेवक होगे और हमारी सेवा करोगे। १० और फिलिस्ती बोला कि मैं आज के दिन इसराएल की सेनाओं को तुच्छ जानता हूं कोई जन मुझे दो कि हम ११ एक संग युद्ध करें। जब साऊल और समस्त इसराएल ने उस फिलिस्ती की ये बातें सुनीं तब वे बिस्मित होके डर गये॥

१२ अब दाऊद बैतलहम यहूदाह के इफ्-राती का पुत्र था जिस का नाम यस्सी था और उस के आठ बेटे थे और वह जन साऊल के दिनों में लोगों में पुर-१३ निया गिना जाता था। और यस्सी के तीन बड़े बेटे थे जो लड़ाई में साऊल के पीछे हुए और जो संग्राम में गये थे और उन तीनों के ये नाम थे पहिलौठा इलिअब और मंझिला अबिनदाब और १४ लहुरा सम्मः। और दाऊद सब से छोटा था और उस के तीनों बड़े बेटे साऊल १५ के साथ साथ गये। परन्तु दाऊद साऊल से फिरके अपने पिता की भेड़ें बैतलहम १६ में चराने गया था। और वह फिलिस्ती चालीस दिन लों सांझ बिहान आया करता था॥

१७ और यस्सी ने अपने बेटे दाऊद से कहा कि अब एक ऐफा भर भूना अन्न और ये दस रोटी लेके छावनी को अपने १८ भाइयों पास दौड़ जा। और पनीर की इन दस चक्कियों को सहस्रों के प्रधानों पास ले जा और देख तेरे भाई कैसे हैं १९ और उन का कुछ चिन्ह ला। और साऊल और वे और सारे इसराएल के लोग एला की तराई में फिलिस्तियों से लड़ रहे २० थे। और दाऊद भोर को तड़के उठा और झुंड को एक रखवाल को सौंपके जैसा यस्सी ने उसे कहा था लेके चला और मुरचे पर पहुंचा और उसी समय सेना लड़ाई के लिये ललकारती थी। क्यों-२१ कि इसराएलियों और फिलिस्तियों ने अपनी अपनी सेना के आम्ने साम्ने परे बांधे थे। और दाऊद अपने पात्रों को २२ रखवाल को सौंपके सेना को दौड़ गया और अपने भाइयों से कुशल पूछा। और २३ वह उन से बातें करता ही था कि देखो वह महावीर जात का फिलिस्ती जिस का नाम जुलिअत था फिलिस्तियों की सेनाओं में से निकल आया और उन्हीं बातों के समान बोला और दाऊद ने सुना। और इसराएल के सारे लोग उसे २४ देखके उस के सन्मुख से भागे और निपट डर गये। तब इसराएल के लोगों २५ ने कहा कि तुम इस जन को देखते हो जो निकला है कि यह निश्चय इसरा-एल को तुच्छ करने को निकल आया है और यों होगा कि जो जन उसे मारेगा राजा उसे बहुत धन से धनवान करेगा और अपनी बेटी उसे देगा और उस के पिता के घराने को इसराएल में निर्बंध करेगा॥

तब दाऊद ने अपने आसपास के २६ लोगों से पूछा कि जो जन इस फिलिस्ती को मारेगा और इसराएल से कलंक को दूर करेगा उसे क्या मिलेगा क्योंकि यह अखतनः फिलिस्ती कौन है जो जीवते ईश्वर की सेना को तुच्छ समझे। सो २७ लोगों ने इस रीति से उत्तर देके उसे कहा जो इसे मारेगा उसे यह मिलेगा॥

तब उस के बड़े भाई इलिअब ने २८ उस की बातें सुनीं जो वह लोगों से करता था और इलिअब का क्रोध दाऊद पर भड़का और वह बोला कि तू इधर क्यों आया है और बन में उन थोड़ी सी भेड़ों को किस पास छोड़ा मैं तेरे घमंड और तेरे मन की नटखटी को

जानता हूं क्योंकि तू संग्राम देखने को उतर आया है। २९ तब दाऊद बोला कि मैं ने क्या किया क्या कारण नहीं। ३० और वह वहां से दूसरी ओर गया और वही बात कही तब लोगों ने उसे आगे के समान फेर उत्तर दिया। ३१ और जब उन बातों की जो दाऊद ने कहीं थीं चर्चा हुई तब साऊल लों संदेश पहुंचा और उस ने उसे लिया॥

३२ और दाऊद ने साऊल से कहा कि उस के कारण किसी का मन न घटे तेरा दास जाके इस फिलिस्ती से लड़ेगा। ३३ तब साऊल ने दाऊद से कहा कि तुझ में यह सामर्थ्य नहीं कि इस फिलिस्ती से लड़े क्योंकि तू लड़का है और वह लड़कपन से योद्धा है। ३४ तब दाऊद ने साऊल से कहा कि तेरा सेवक अपने पिता की भेड़ों की रखवाली करता था और एक सिंह और एक भालू निकला ३५ और झुंड में से एक मेम्ना ले गया। और मैं ने उस के पीछे निकलके उसे मारा और उसे उस के मुंह से छुड़ाया और जब वह मुझ पर झपटा तब मैं ने उस की दाढ़ी पकड़के उसे मारा और नाश किया। ३६ तेरे सेवक ने उस सिंह और भालू दोनों को मार डाला फेर यह अखतनः फिलिस्ती उन में से एक के समान होगा कि उस ने जीवते ईश्वर की सेनाओं को तुच्छ जाना। ३७ और दाऊद ने यह भी कहा कि जिस परमेश्वर ने मुझे सिंह के और भालू के पंजे से बचाया वही मुझे इस फिलिस्ती के हाथ से बचावेगा तब साऊल ने दाऊद से कहा कि जा और परमेश्वर तेरे साथ होवे॥

३८ और साऊल ने अपना वस्त्र दाऊद को पहिनाया और पीतल का एक टोप उस के सिर पर रक्खा और उसे झिलम भी पहिनाया। ३९ और दाऊद ने अपनी तलवार झिलम पर लटकाई और जाने का मन किया क्योंकि उस ने उसे न जांचा था तब दाऊद ने साऊल से कहा कि इन से मैं नहीं जा सक्ता क्योंकि मैं ने इन्हें नहीं परखा तब दाऊद ने उन्हें अपने पर से उतार दिया। ४० और उस ने अपना लट्ठ हाथ में लिया और नाले में से पांच चिकने पत्थर चुन लिये और उन्हें अपने गड़रिया के पात्र में अर्थात् झोले में रक्खा और अपनी गोफन अपने हाथ में लिई और उस फिलिस्ती की ओर बढ़ा। ४१ और फिलिस्ती चला और दाऊद के निकट आने लगा और जो जन उस की ढाल उठाता था सो उस के आगे आगे गया॥

४२ जब उस फिलिस्ती ने इधर उधर ताका तब दाऊद को देखा और उसे तुच्छ जाना क्योंकि वह तरुण लाल और सुंदर रूप था। ४३ और फिलिस्ती ने दाऊद से कहा कि क्या मैं कुक्कर हूं जो तू लट्ठ लेके मुझ पास आता है और फिलिस्ती ने अपने देवतों के नाम से उसे धिक्कारा। ४४ और फिलिस्ती ने दाऊद से कहा कि मुझ पास आ और मैं तेरा मांस आकाश के पक्षियों को और बनैले पशुओं को देऊंगा। ४५ तब दाऊद ने उस फिलिस्ती को कहा कि तू तलवार और बरछा और ढाल लेके मुझ पर आता है परन्तु मैं सेनाओं के परमेश्वर के नाम से जो इसराएल की सेनाओं का ईश्वर है जिस ने निन्दा किई है तुझ पास आता हूं। ४६ आज ही परमेश्वर तुझे मेरे हाथ में सौंप देगा और मैं तुझे मार लूंगा और तेरा सिर तुझ से अलग करूंगा और मैं आज फिलिस्तियों की सेना की लोथों को आकाश के पक्षियों को बनैले पशुओं को देऊंगा जिसतें समस्त

पृथिवी जाने कि ईश्वर इसराएल में ४७ है। और यह समस्त मंडली जानेगी कि परमेश्वर तलवार और भाले से नहीं बचाता क्योंकि संग्राम परमेश्वर का है और वही तुम्हें हमारे हाथों में सौंप देगा॥

४८ और ऐसा हुआ कि जब फिलिस्ती उठा और दाऊद पास पहुंचने को आगे बढ़ा तब दाऊद ने फुर्ती किई और सेना की ओर फिलिस्ती पर पहुंचने ४९ दौड़ा। और दाऊद ने अपने थैले में हाथ डाला और उस में से एक पत्थर लिया और गोफन से उस फिलिस्ती के माथे पर मारा और वह पत्थर उस के माथे में गड़ गया और वह भूमि पर ५० मुंह के बल गिरा। सो दाऊद ने गोफन और पत्थर से उस फिलिस्ती को जीता और उस फिलिस्ती को मारा और उसे घात किया परन्तु दाऊद के हाथ में ५१ तलवार न थी। तब दाऊद लपकके फिलिस्ती के निकट आया और उस की तलवार लेके काठी से खींची और उसे नाश किया और उसी से उस का सिर उतारा और जब फिलिस्तियों ने देखा कि हमारा सूरमा मारा गया तब वे भाग निकले॥

५२ और इसराएल के और यहूदाह के लोग उठे और ललकारे और अकरून के फाटक लों और तराई लों फिलिस्तियों को खेदा और मारा और फिलिस्तियों के घायल सअरीम अर्थात् जात और ५३ अकरून लों जूझ गये। तब इसराएल के संतान फिलिस्तियों के खेदने से फिर आये और उन के तंबुओं को लूट लिया।

५४ और दाऊद उस फिलिस्ती का सिर लेके उसे यरूसलम में लाया परन्तु अपने हथियारों को तंबू में रक्खा॥

५५ और जब साऊल ने दाऊद को फिलिस्ती के साम्ने होते देखा तब उस ने सेना के प्रधान अबिनैयिर से पूछा कि हे अबिनैयिर यह तरुण किस का बेटा है तब अबिनैयिर बोला कि हे राजा आप के जीवन सों मैं नहीं ५६ जानता। तब राजा ने कहा कि बूझ यह तरुण किस का लड़का है। और ५७ जब दाऊद उस फिलिस्ती को मारके फिरा तब अबिनैयिर उसे राजा पास ले गया और फिलिस्ती का सिर उस के ५८ हाथ में था। तब साऊल ने उसे पूछा कि तू किस का लड़का और दाऊद ने उत्तर दिया कि मैं तेरे सेवक बैतलहमी यस्सी का लड़का हूं॥

अठारहवां पर्व्व।

१ और ऐसा हुआ कि जब वह साऊल से बात कह चुका तब यूनतन का मन दाऊद के मन से बंध गया और यूनतन ने उसे अपने ही प्राण के तुल्य प्रेम २ किया। और साऊल ने तब से उसे अपने साथ रक्खा और फिर उस के पिता के ३ घर जाने न दिया। तब यूनतन और दाऊद ने आपुस में बाचा बांधी क्योंकि वह उसे अपने प्राण के तुल्य प्रेम करता ४ था। तब यूनतन ने अपना बागा और अपने वस्त्र उतारे और अपनी तलवार और धनुष और अपने पटुका लों दाऊद को दिया॥

५ और जहां कहीं साऊल उसे भेजता था दाऊद जाया करता था और भाग्यवान होता था और साऊल ने उसे योधाओं का प्रधान किया और वह सारे लोगों की दृष्टि में और साऊल के समस्त सेवकों की दृष्टि में भी ग्राह्य हुआ॥

६ और उन के आते हुए ऐसा हुआ कि जब दाऊद उस फिलिस्ती को मारके फिर आया तब सारी इसराएली स्त्रियां नगरों से गाती नाचती आनंद से तबले और सितारे लेके साऊल राजा से भेंट

७ बजाने को निकलीं। और उन के बजाने से स्त्रियां उत्तर देके कहती थीं कि साऊल ने अपने सहस्रों को मारा और
८ दाऊद ने अपने दस सहस्रों को। और साऊल अति क्रोधित हुआ और यह कहावत उस की दृष्टि में बुरी लगी और वह बोला कि उन्हों ने दाऊद के लिये दस सहस्रों को ठहराया और मेरे लिये सहस्रों को अब केवल राज्य भर उसे
९ पाना है। और साऊल ने उसी दिन से दाऊद को तक रक्खा॥

१० और दूसरे दिन ऐसा हुआ कि ईश्वर की ओर से दुष्ट आत्मा साऊल पर उतरा और वह अपने घर में भविष्य कहने लगा और दाऊद आगे की नाईं हाथ से बजाने लगा और साऊल के हाथ में
११ एक सांग थी। तब साऊल ने सांग फेंकी क्योंकि उस ने कहा कि मैं दाऊद को भीत ही में गोदूंगा पर दाऊद दो बार उस के आगे से बच निकला॥

१२ और साऊल दाऊद से डरा करता था क्योंकि परमेश्वर उस के साथ था और
१३ साऊल से जाता रहा। इस लिये साऊल ने उसे अपने पास से अलग किया और सहस्र का प्रधान किया और वह लोगों
१४ के आगे आया जाया करता था। और दाऊद अपने सारे मार्ग में बुद्धिमान था
१५ और परमेश्वर उस के साथ था। इस लिये जब साऊल ने देखा कि वह अति बुद्धिमान है तब वह उस्से डरता था।
१६ पर सारे इसराएल और यहूदाह दाऊद को चाहते थे क्योंकि वह उन के आगे आया जाया करता था॥

१७ तब साऊल ने दाऊद को कहा कि मेरी बड़ी बेटी मेरब को देख मैं उसे तुझे बिवाह देऊंगा केवल तू मेरे लिये बली पुत्र हो और परमेश्वर का संग्राम किया कर क्योंकि साऊल ने कहा कि मेरा हाथ उस पर न पड़े परन्तु फिलिस्तियों का हाथ उस पर पड़े। तब
१८ दाऊद ने साऊल से कहा कि मैं कौन और मेरा प्राण क्या और इसराएल में मेरे पिता का घराना क्या जो मैं राजा
१९ का जंवाई हूं। परन्तु यों हुआ कि जब साऊल की बेटी मेरब को दाऊद के देने का समय आया तब वह महूलती अदरिएल से बियाही गई॥

२० और साऊल की बेटी मीकल दाऊद से प्रीति रखती थी और उन्हों ने साऊल से कहा और वह बात उस की दृष्टि में
२१ अच्छी लगी। तब साऊल ने कहा कि मैं उसे उस को देऊंगा जिसतें वह उस के लिये फंदा होवे और जिसतें फिलिस्तियों का हाथ उस पर पड़े तब साऊल ने दाऊद से कहा कि तू आज
२२ इन दोनों में से मेरा जंवाई होगा। और साऊल ने अपने सेवकों को आज्ञा किई कि दाऊद से गुप्त में बातचीत करो और कहो कि देख राजा तुझ से प्रसन्न है और उस के सारे सेवक तुझे चाहते हैं और अब तू राजा का जंवाई हो।
२३ सो साऊल के सेवकों ने ये बातें दाऊद से कह सुनाईं और दाऊद बोला कि तुम राजा का जंवाई होना छोटा समझते हो मैं तो कंगाल होके तुच्छ गिना जाता
२४ हूं। और साऊल के सेवकों ने इन बातों
२५ के समान उसे कहा। तब साऊल ने कहा कि तुम दाऊद से यों कहियो कि राजा कुछ दायजा नहीं चाहता परन्तु केवल एक सौ फिलिस्तियों की खलड़ियां जिसतें राजा के बैरियों से पलटा लिया जाय परन्तु साऊल ने चाहा कि दाऊद
२६ को फिलिस्तियों से मरवा डाले। और जब उस के सेवकों ने इन बातों को दाऊद से कहा तब राजा का जंवाई होना दाऊद को अच्छा लगा और दिन

२७ बीत न गये थे। और दाऊद उठा और अपने लोगों को लेके गया और दो सौ फिलिस्ती को मारा और दाऊद उन की खलड़ियों को लाया और उन्हों ने उन्हें राजा के आगे पूरा गिनके धर दिया जिसतें वह राजा का जंवाई होवे और साऊल ने अपनी बेटी मीकल उसे
२८ बियाह दिई। और जब साऊल ने देखा और जाना कि परमेश्वर दाऊद के साथ है और साऊल की बेटी मीकल उस्से
२९ प्रीति रखती है। तब साऊल दाऊद से अधिक डर गया और साऊल सदा दाऊद
३० का बैरी रहा। तब फिलिस्तियों के प्रधान निकले और उन के निकलने के पीछे यों हुआ कि दाऊद साऊल के सारे सेवकों से अधिक चौकसी करता था यहां लों कि उस का बड़ा नाम हुआ॥

उन्नीसवां पर्ब्ब

१ तब साऊल ने अपने बेटे यूनतन से और अपने समस्त सेवकों से कहा कि दाऊद को मार लेओ परन्तु साऊल का बेटा यूनतन दाऊद से अति प्रसन्न था।
२ और यूनतन दाऊद से कहके बोला कि मेरा पिता तुझे बधन करने चाहता है सो अब बिहान लों अपनी चौकसी करियो और गुप्तस्थान में छिप रहियो।
३ और मैं जाके चौगान में जहां तू होगा अपने पिता के पास खड़ा हूंगा और अपने पिता से तेरी चर्चा करूंगा और जो मैं देखूंगा सो तुझे कह देऊंगा॥
४ और यूनतन ने दाऊद के बिषय में अपने पिता साऊल से अच्छी कही कि राजा अपने दास दाऊद से बुराई न कीजिये क्योंकि उस ने आप का कुछ अपराध नहीं किया और इस कारण कि उस के कर्म्म आप के लिये अति उत्तम
५ हैं। और उस ने अपना प्राण हथेली पर रक्खा और उस फिलिस्ती को घात किया और परमेश्वर ने सारे इसराएल के लिये बड़ी मुक्ति दिई आप ने देखा और आनन्द हुए सो आप किस लिये निर्दोष से बुराई किया चाहते हैं और अकारण दाऊद को मारा चाहते हैं।
६ और साऊल ने यूनतन की बात सुनी और साऊल ने किरिया खाई कि ईश्वर के जीवन सों दाऊद मारा न जावेगा।
७ और यूनतन ने दाऊद को बुलाया और ये सारी बातें उसे बताईं और यूनतन दाऊद को साऊल पास लाया और कल परसों के समान फेर उस के पास रहने लगा॥

८ और फिर लड़ाई हुई और दाऊद निकला और फिलिस्तियों से लड़ा और बड़ी मार से उन्हें मारा और वे उस के आगे से भागे॥

९ और ज्यों साऊल अपने घर में एक सांग हाथ में लिये हुए बैठा था परमेश्वर की ओर से दुष्ट आत्मा उस पर उतरा और दाऊद हाथ से बजा रहा
१० था। और साऊल ने चाहा कि दाऊद को भीत में सांग से गोद देवे परन्तु दाऊद साऊल के आगे से अलग हो गया और सांग भीत में जा लगी और दाऊद भागके उस रात बच गया।
११ तब साऊल ने दाऊद के घर पर दूतों को भेजा कि उसे अगोरें और बिहान को उसे मार डालें तब दाऊद की पत्नी मीकल यह कहके उसे बोली कि यदि आज रात तू अपना प्राण न बचावे तो
१२ बिहान को मारा जावेगा। तब मीकल ने खिड़की में से दाऊद को उतार दिया
१३ और वह भागके बच गया। और मीकल ने एक पुतला लेके बिछौने पर रक्खा और बकरियों के रोम की तकिया उस के सिर तले रक्खी और कपड़ा से ढांप
१४ दिया। और जब साऊल ने दाऊद को

पकड़ने को दूत भेजे तब वह बोली कि १५ वह रोगी है। और साऊल ने यह कहके दूतों को दाऊद को देखने भेजा कि उसे खाट सहित मुझ पास लाओ जिसतें १६ मैं उसे मार डालूं। और जब दूत भीतर आये तब क्या देखते हैं कि बिछौने पर एक पुतला पड़ा है और उस के सिर तले बकरियों के रोम की तकिया है १७ तब साऊल ने मीकल से कहा कि तू ने मुझ से क्यों ऐसा छल किया और मेरे बैरी को निकाल दिया और वह बच गया सो मीकल ने साऊल को उत्तर दिया कि उस ने मुझे कहा कि मुझे जाने दे नहीं तो मैं तुझे मार डालूंगा॥

१८ और दाऊद भागा और बच रहा और रामात में समूएल पास गया और जो कुछ कि साऊल ने उस्से किया था सब उसे कहा तब वह और समूएल दोनों १९ नायूत में जा रहे। और साऊल को यह कहा गया कि देख दाऊद रामात में २० नायूत में है। और साऊल ने दूतों को भेजा कि दाऊद को पकड़ें और जब उन्हों ने देखा कि आगमज्ञानियों की जथा भविष्य कहती है और समूएल ठहराये हुए के समान उन में खड़ा है तब ईश्वर का आत्मा साऊल के दूतों पर उतरा और वे भी भविष्य कहने २१ लगे। जब साऊल को कहा गया तब उस ने और दूत भेजे और वे भी भविष्य कहने लगे तब साऊल ने तीसरे बार और दूत भेजे और वे भी भविष्य कहने २२ लगे। तब वह आप रामात को गया और उस बड़े कुए पर जो सैकू में है पहुंचा और उस ने पूछा कि समूएल और दाऊद कहां हैं तब एक ने कहा २३ कि देख वे नायूत में हैं। तब वह रामात नायूत की ओर चला और ईश्वर का आत्मा उस पर भी पड़ा और वह बढ़ा गया और रामात के नायूत लों भविष्य कहता गया। और उस ने भी अपने २४ कपड़े उतार फेंके और समूएल के आगे उस के समान भविष्य कहा और उस रात दिन भर नंगा पड़ा रहा इसी लिये यह कहावत हुई कि क्या साऊल भी आगमज्ञानियों में है॥

बीसवां पर्ब्ब।

१ तब दाऊद नायूत रामात से भागके यूनतन पास आया और उसे कहा कि मैं ने क्या किया मेरा क्या अपराध है मैं ने तेरे पिता का कौन सा पाप किया है जो वह मेरे प्राण का गांहक है। २ और वह बोला कि ऐसा न होवे तू मारा न जावेगा देख मेरा पिता बिना मुझ पर प्रगट किये कोई छोटी बड़ी बात न करेगा और यह बात किस कारण से मेरा पिता मुझ से छिपावे यह नहीं। ३ तब दाऊद ने फिर किरिया खाके कहा कि तेरा पिता निश्चय जानता है कि मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया है और वह कहता है कि यूनतन यह न जाने न हो कि वह शोकित हो परन्तु परमेश्वर सों और तेरे जीवन सों मुझ में और मृत्यु में केवल डग भर का ४ अन्तर है। तब यूनतन ने दाऊद से कहा कि जो कुछ तेरा जी चाहे मैं तेरे लिये करूंगा॥

५ और दाऊद ने यूनतन से कहा कि देख कल अमावास्या है और मुझे उचित है कि राजा के साथ भोजन करूं सो मुझे जाने दीजिये कि मैं तीसरी सांझ ६ लों खेत में जा छिपूं। यदि तेरा पिता मेरी खोज करे तो कहियो कि दाऊद यत्न से मुझे पूछके अपने नगर बैतलहम को दौड़ गया क्योंकि वहां समस्त घराने ७ के लिये बरसयन का बलिदान है। यदि वह यों बोले कि अच्छा तो तेरे

सेवक के लिये कुशल है परन्तु यदि वह अति क्रोध करे तो निश्चय जानियो कि ८ उस के मन में बुराई है। सो अपने सेवक पर दया से व्यवहार कीजियो क्योंकि तू अपने दास को अपने साथ परमेश्वर की बाचा में लाया है तथापि यदि मुझ में अपराध होवे तो तू मुझे बधन कर किस कारण मुझे अपने पिता पास ले जावेगा॥

तब यूनतन ने कहा कि तुझ से दूर होवे क्योंकि यदि मैं निश्चय जानता कि मेरे पिता ने ठाना है कि तेरी बुराई करे तो क्या मैं तुझे न बताता॥ १० फिर दाऊद ने यूनतन से कहा कि कौन मुझे कहेगा अथवा क्या जाने तेरा ११ पिता तुझे घुरकके कहे। तब यूनतन ने दाऊद से कहा कि आ खेत में चलें १२ सो वे दोनों खेत को गये। और यूनतन ने दाऊद से कहा कि हे परमेश्वर इसराएल के ईश्वर जब मैं कल अथवा परसों अपने पिता को बूझ लेऊं और देखूं कि दाऊद के बिषय में भला है १३ और भेजके तुझे न बताऊं। तो परमेश्वर ऐसा ही और इस्से अधिक यूनतन से करे और यदि तेरी बुराई करने को मेरे पिता की इच्छा होवे तो मैं तुझे बताऊंगा और तुझे बिदा करूंगा कि तू कुशल से चला जावे और जैसा परमेश्वर मेरे पिता के साथ हुआ है वैसा तेरे १४ साथ होवे। और तू केवल मेरे जीवन लों परमेश्वर की कृपा मुझे न दिखाइयो १५ जिसतें मैं न मरूं। परन्तु जब परमेश्वर दाऊद के हर एक शत्रु को पृथिवी पर से नाश करे तो मेरे घराने पर से भी १६ अनुग्रह उठा न लीजियो। सो यूनतन ने दाऊद के घराने से बाचा बांधी और कहा कि परमेश्वर दाऊद के शत्रुन के १७ हाथ से पलटा लेवे। और यूनतन ने दाऊद से फिर किरिया खिलाई इस लिये कि वह उस्से अपने प्राण ही के तुल्य प्रेम रखता था॥

१८ तब यूनतन ने दाऊद से कहा कि कल अमावास्या और तेरी खोज होगी इस कारण कि तेरा आसन सूना रहेगा। १९ और जब तू तीन दिन अलग रहे तब तू शीघ्र उतरके उसी स्थान में जाइयो जहां तू ने आप को कार्य्य के दिन छिपाया था और तू अजल के चटान २० पास रहियो। और मैं उस अलंग तीन बाण मारूंगा जैसा कि चिन्ह मारता २१ हूं। और देख मैं यह कहके एक छोकरे को भेजूंगा कि जा बाणों को खोज यदि मैं निश्चय छोकरे को कहूं कि देख बाण तेरे इस अलंग हैं उन्हें ले तब निकल आइयो क्योंकि परमेश्वर के जीवन सों तेरे लिये कुशल है और कुछ २२ नहीं। पर यदि मैं उस तरुण से यों कहूं कि देख बाण तेरे आगे हैं तब तू मार्ग लीजियो क्योंकि परमेश्वर ने तुझे २३ बिदा किया है। रही वह बात जो आपुस में ठहराई है सो देख परमेश्वर सदा मेरे और तेरे मध्य में है॥

२४ सो दाऊद खेत में जा छिपा और जब अमावास्या हुई तब राजा भोजन २५ पर बैठा। और राजा अपने व्यवहार के समान भीत के लग अपने आसन पर बैठा और यूनतन उठा और अबिनैयिर साऊल की एक अलंग में बैठा था और २६ दाऊद का स्थान सूना था। तथापि उस दिन साऊल ने कुछ न कहा क्योंकि उस ने समझा था कि उस पर कुछ बीता है वह अपवित्र होगा निश्चय वह अपावन २७ होगा। और बिहान को मास की दूसरी तिथि को ऐसा हुआ कि दाऊद का स्थान सूना रहा तब साऊल ने अपने बेटे यूनतन से कहा कि किस

कारण यस्सी का बेटा कल्ह और आज
२८ भोजन को नहीं आया है। तब यूनतन ने साऊल को उत्तर दिया कि दाऊद
२९ मुझ से पूछके बैतलहम को गया। और उस ने कहा कि मुझे जाने दे कि नगर में हमारे घराने में बलि है और मेरे भाई ने मुझे बुलाया है और अब यदि मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया है तो मुझे जाने दे कि अपने भाइयों को देखूं इस लिये वह राजा के भोजन पर नहीं आता॥

३० तब साऊल का कोप यूनतन पर भड़का और उस ने उसे कहा कि हे कीठ और दंगइत के पुत्र क्या मैं नहीं जानता कि तू ने अपनी लज्जा के लिये और अपनी माता के नंगापन की लज्जा के लिये यस्सी के बेटे को चुना है।
३१ क्योंकि जब लों यस्सी का बेटा भूमि पर जीता है तब लों तू और तेरा राज्य स्थिर न होगा सो अब भेजके उसे मुझ पास ला क्योंकि वह निश्चय मारा
३२ जावेगा। तब यूनतन ने अपने पिता को उत्तर देके कहा कि वह किस कारण मारा जावेगा उस ने क्या किया है।
३३ तब साऊल ने मारने को उस की ओर सांग फेंकी तब यूनतन को निश्चय हुआ कि उस के पिता ने दाऊद के मारने
३४ को ठाना है। सो यूनतन बहुत रिसियाके मंच से उठ गया और मास की दूसरी तिथि में भोजन न किया क्योंकि वह दाऊद के लिये निपट उदास हुआ क्योंकि उस के पिता ने उसे लज्जित किया॥

३५ और बिहान को यूनतन उसी समय जो दाऊद से ठहराया था खेत को गया और एक छोकरा उस के साथ था।
३६ और उस ने उस छोकरे को आज्ञा किई कि दौड़ और जो बाण मैं चलाता हूं उन्हें ढूंढ़ और ज्योंहीं वह दौड़ा त्योंहीं एक बाण उस के परे मारा।
३७ और जब वह छोकरा उस स्थान में पहुंचा जहां यूनतन ने बाण मारा था तब यूनतन ने छोकरे को पुकारके कहा कि क्या वह बाण तुझ से परे नहीं।
३८ और यूनतन ने छोकरे को पुकारा कि चटक कर ठहर मत सो यूनतन के छोकरे ने बाणों को एकट्ठा किया और अपने स्वामी पास आया।
३९ परन्तु उस छोकरे ने कुछ न जाना केवल दाऊद और यूनतन उस का भेद जानते थे।
४० तब यूनतन ने अपने हथियार उस छोकरे को दिये और उसे कहा कि नगर में ले जा॥

४१ छोकरे के जाने के पीछे दाऊद दक्खिन की ओर से निकला और भूमि पर औंधे मुंह गिरा और तीन बार दण्डवत किई और उन्हों ने आपुस में एक दूसरे को चूमा और परस्पर यहां लों बिलाप किये कि दाऊद ने जीता।
४२ और यूनतन ने दाऊद को कहा कि कुशल से चला जा उस बाचा पर जो हम ने परमेश्वर के नाम की किरिया खाके आपुस में किई है मेरे तेरे मध्य में और हमारे बंश के मध्य में सदा लों परमेश्वर साक्षी होवे सो वह उठके चला गया और यूनतन नगर में आया॥

इक्कीसवां पर्ब्ब

१ तब दाऊद नूब को अखिमलिक याजक पास आया और अखिमलिक दाऊद की भेंट करने से डरा और बोला कि तू क्यों अकेला है और तेरे साथ कोई नहीं।
२ और दाऊद ने अखिमलिक याजक से कहा कि राजा ने मुझे एक काम को भेजा है और मुझ से कहा कि यह काम जो मैं ने तुझे कहा है किसी को मत जनाइयो और मैं ने सेवकों को अमुक स्थान को भेज दिया है।
३ सो

अब तेरे हाथ तले क्या है मुझे पांच रोटी अथवा जो कुछ धरा हो सो मेरे ४ हाथ में दीजिये। और याजक ने दाऊद को कहा कि मेरे हाथ तले सामान्य रोटी नहीं परन्तु पवित्र रोटी है यदि तरुण लोग स्त्रियों से अलग रहे हों। ५ तब दाऊद ने उत्तर देके याजक को कहा कि निश्चय तीन दिन हुए होंगे जब से मैं निकला हूं स्त्री हम से अलग है और तरुणों के पात्र पवित्र हैं और यद्यपि रोटी आज पात्र में पवित्र किई गई हो तथापि सामान्य के तुल्य है। ६ सो याजक ने पवित्र किई गई रोटी उसे दिई क्योंकि भेंट की रोटी को छोड़ वहां कोई रोटी न थी जो परमेश्वर के आगे से उठाई गई थी जिसतें उस की संती वहां ताती रोटी रक्खी जावे। ७ अब उस दिन साऊल के सेवकों में से एक जन अदूमी परमेश्वर के आगे रोका गया था जिस का नाम दोयेग था वह साऊल के अहीरों का प्रधान ८ था। तब दाऊद ने अखिमलिक से पूछा कि यहां तेरे हाथ तले कोई भाला अथवा खड्ग तो नहीं क्योंकि मैं अपनी तलवार अथवा हथियार साथ नहीं लाया हूं क्योंकि राजा के काम की ९ शीघ्रता थी। तब याजक ने कहा कि फिलिस्ती जुलिअत का खड्ग जिसे तू ने एला की तराई में मारा एक कपड़े में लपेटा हुआ अफूद के पीछे धरा है यदि तू उसे लिया चाहे तो ले क्योंकि उसे छोड़ यहां दूसरा नहीं तब दाऊद बोला कि उस के तुल्य दूसरा नहीं वही मुझे दे॥

१० और दाऊद उठा और साऊल के सन्मुख से उसी दिन भागा चला गया और जात के राजा अकीस पास आया। ११ तब अकीस के सेवकों ने उसे कहा कि क्या यह दाऊद उस देश का राजा नहीं क्या यह वही नहीं जिस के विषय में वे आपुस में गा गाके और नाच नाचके कहतीं थीं कि साऊल ने अपने सहस्रों को मारा और दाऊद ने अपने दस सहस्रों को। १२ और दाऊद ने ये बातें अपने मन में जुगा रक्खीं और जात के राजा अकीस १३ से अति डरा। तब उस ने उन के आगे अपनी चाल पलट डाली और उन में आप को बौड़हा बनाया और फाटक के द्वारों पर लकीरें खींचने लगा और अपनी १४ लार को दाढ़ी में बहने दिया। तब अकीस ने अपने सेवकों से कहा कि लेओ यह जन तो सिड़ी है तुम उसे मुझ १५ पास क्यों लाये। क्या मुझे सिड़ी का प्रयोजन है कि तुम इसे मुझ पास लाये कि सिड़ीपन करे क्या यह मेरे घर में आवेगा॥

बाईसवां पर्ब्ब।

१ तब दाऊद वहां से निकलके भागा और अदूलाम की कंदला में गया और उस के भाई और उस के पिता का सारा घराना यह सुनके उस पास वहां गये। २ और हर एक दुःखी और ऋणी और उदासी उस पास एकट्ठे हुए और वह उन का प्रधान हुआ और उस के साथ चार सौ मनुष्य के लगभग हो गये॥

३ और वहां से दाऊद मोआब के मिसफः को गया और मोआब के राजा से कहा कि मैं तेरी बिनती करता हूं कि मेरे माता पिता निकलके आप के पास रहें जब लों मैं जानूं कि ईश्वर मेरे लिये ४ क्या करता है। और वह उन्हें मोआब के राजा के आगे लाया और जब लों दाऊद ने अपने तईं दृढ़ स्थानों में छिपाया ५ था वे उसी के साथ रहे। तब जद आगमज्ञानी ने दाऊद को कहा कि दृढ़ स्थानों में मत रह यहूदाह के देश को

जा तब दाऊद चला और हारित के बन में पहुंचा ॥

६ जब साऊल ने सुना कि दाऊद दिखाई दिया और लोग उस के साथ हैं अब साऊल उस समय रामात के जिबअ: में एक कुंज के नीचे अपने हाथ में भाला लिये था और उस के सारे दास उस के

७ आसपास खड़े थे। तब साऊल ने अपने आसपास के सेवकों से कहा कि सुनो हे बिनयमीनो क्या यस्सी का बेटा तुम्में से हर एक को खेत और दाख की बारी देगा और तुम सब को सहस्रों और सैकड़ों

८ का प्रधान करेगा। क्योंकि तुम सब ने मेरे बिरुद्ध परामर्श किया है और किसी ने मुझे नहीं सुनाया कि मेरे बेटे ने यस्सी के बेटे से बाचा बांधी है और तुम्में कोई नहीं जो मेरे लिये शोक करे अथवा मुझे संदेश देवे कि मेरे बेटे ने मेरे सेवक को उभारा है कि ढूके में रहे जैसा आज के दिन है ॥

९ तब अदूमी दोयेग ने जो साऊल के सेवकों का प्रधान था उत्तर दिया और यों कहा कि मैं ने यस्सी के बेटे को नूब में अखितूब के बेटे अखिमलिक पास

१० देखा है। और उस ने उस के लिये परमेश्वर से बूझा और उसे भोजन दिया और फिलिस्ती जुलिअत का खड्ग उसे दिया ॥

११ तब राजा ने अखितूब के बेटे अखिमलिक याजक को और उस के पिता के सारे घराने अर्थात् उन याजकों को जो नूब में थे बुला भेजा और वे सब के सब

१२ राजा पास आये। और साऊल ने कहा कि हे अखितूब के बेटे सुन तब वह

१३ बोला मेरे प्रभु मैं यहीं हूं। और साऊल ने उसे कहा कि तू ने मेरे बिरुद्ध पर यस्सी के बेटे के साथ क्यों एक मता किई कि तू ने उसे रोटी और खड्ग दिया और उस के लिये परमेश्वर से बूझा जिसतें वह मेरे बिरोध में उठे और घात

१४ में लगे जैसा कि आज के दिन है। तब अखिमलिक ने राजा को उत्तर देके कहा कि आप के सारे सेवकों में दाऊद सा बिश्वस्त कौन है जो राजा का जंवाई और आज्ञापालक है और आप के घर

१५ में प्रतिष्ठित है। क्या मैं ने उस के लिये परमेश्वर से बूझा यह मुझ से परे होवे राजा अपने सेवक पर और उस के पिता के सारे घराने पर यह दोष न लगावें क्योंकि आप का सेवक इन बातों में से घट बढ़ नहीं जानता ॥

१६ तब राजा बोला अखिमलिक तू और तेरे पिता का सारा घराना निश्चय मर

१७ जायेगा। तब राजा ने उन पादातों को जो पास खड़े थे आज्ञा किई कि फिरो और परमेश्वर के याजकों को मार डालो क्योंकि इन के हाथ भी दाऊद से मिले हुए हैं और उन्हों ने जाना कि वह भागा है और मुझे संदेश न दिया परन्तु राजा के सेवकों ने परमेश्वर के याजकों को मारने

१८ के लिये हाथ न बढ़ाया। तब राजा ने दोयेग को कहा कि तू फिर और उन याजकों को घात कर सो अदूमी दोयेग फिरा और याजकों पर लपका उस दिन उस ने पचासी मनुष्यों को जो सूती अफूद

१९ पहिनते थे घात किया। और उस ने याजकों के नगर नूब के पुरुषों और स्त्रियों और लड़कों और दूध पीवकों को और बैलों और गदहों और भेड़ों को तलवार की धार से घात किया ॥

२० और अखितूब के बेटे अखिमलिक के बेटों में से एक जन जिस का नाम अबियतर था बच निकला और दाऊद

२१ के पीछे भागा। और अबियतर ने दाऊद को संदेश दिया कि साऊल ने परमेश्वर

२२ के याजकों को मार डाला। और दाऊद

ने अबियतर को कहा कि जिस दिन अदूमी दोयेग वहां था मैं ने उसी दिन जाना था कि वह निश्चय साऊल को कहेगा मैं तेरे पिता के सारे घराने के २३ मारे जाने का कारण हुआ। सो तू मेरे साथ रह मत डर क्योंकि जो तेरे प्राण का गांहक है सो मेरे प्राण का गांहक है परन्तु मेरे पास बचा रह॥

तेईसवां पर्व्व।

१ तब उन्हों ने यह कहके दाऊद को संदेश दिया कि देख फिलिस्ती कईल: से लड़ते हैं और खलिहानों को लूटते २ हैं। तब दाऊद ने परमेश्वर से यह कहके बूझा कि मैं जाऊं और उन फिलिस्तियों को मारूं और परमेश्वर ने दाऊद से कहा कि जा और फिलिस्तियों को मार ३ और कईल: को बचा। और दाऊद के मनुष्यों ने उसे कहा कि देख हम तो यहूदाह में होते हुए डरते हैं तो कितना अधिक कईल: में जाके फिलिस्तियों ४ की सेनाओं का साम्ना करें। तब दाऊद ने परमेश्वर से फिर बूझा और परमेश्वर ने उत्तर देके उसे कहा कि उठ कईल: को उतर जा क्योंकि मैं फिलिस्तियों को ५ तेरे हाथ में सौंपूंगा। सो दाऊद और उस के लोग कईल: को गये और फिलिस्तियों से लड़े और उन के ढोर ले आये और उन्हें बड़ी मार से मारा यों दाऊद ने कईल: के बासियों को बचाया॥

६ और ऐसा हुआ कि जब अखिमलिक का बेटा अबियतर भागके कईल: में दाऊद पास गया तब उस के हाथ में एक अफूद था॥

७ और साऊल को संदेश पहुंचा कि दाऊद कईल: में आया और साऊल बोला कि ईश्वर ने उसे मेरे हाथ में सौंप दिया क्योंकि वह ऐसे नगर में जिस में फाटक और अड़ंगे हैं पहुंचके बंद ८ हो गया। और साऊल ने समस्त लोगों को युद्ध के लिये एकट्ठा किया कि कईल: में उतरके दाऊद को और उस के लोगों ९ को घेर लेवें। और दाऊद ने जाना कि साऊल चाहता है कि चुपके से मेरी बुराई करे तब उस ने अबियतर याजक १० से कहा कि अफूद मुझ पास ला। तब दाऊद ने कहा कि हे परमेश्वर इसराएल के ईश्वर तेरे सेवक ने निश्चय सुना है कि साऊल का बिचार है कि कईल: में आके मेरे कारण नगर को नष्ट करे। ११ क्या कईल: के लोग मुझे उस के हाथ में सौंप देंगे क्या जैसा तेरे दास ने सुना है साऊल उतर आवेगा हे परमेश्वर इसराएल के ईश्वर मैं तेरी बिनती करता हूं कि अपने सेवक को बता तब परमेश्वर ने कहा कि वह उतर आवेगा। १२ तब दाऊद ने कहा क्या कईल: के लोग मुझे और मेरे लोगों को साऊल की बंधुआई में सौंप देंगे और परमेश्वर ने १३ कहा कि वे सौंप देंगे। तब दाऊद अपने लोग सहित जो मनुष्य छ: सौ एक थे उठा और कईल: से निकल गया और जिधर जा सका गया और साऊल को संदेश पहुंचा कि दाऊद कईल: से बच निकला तब वह जाने से रह गया। १४ और दाऊद ने अरण्य में दृढ़ स्थानों में बास किया और जैफ के बन में एक पहाड़ के बीच रहा और साऊल प्रतिदिन उस की खोज में लगा हुआ था परन्तु ईश्वर ने उसे उस के हाथ में सौंप न १५ दिया। और दाऊद ने देखा कि साऊल उस के मारने के कारण निकला और दाऊद जैफ के अरण्य के बीच एक बन में था

१६ और साऊल का बेटा यूनतन उठा और बन में दाऊद पास गया और ईश्वर

१७ पर उसे दृढ़ किया। और उसे कहा कि मत डर क्योंकि तू मेरे पिता साऊल के हाथ में न पड़ेगा और तू इसराएल का राजा होगा और तेरे पीछे मैं हूंगा और मेरा पिता साऊल भी यह जानता है।
१८ और उन दोनों ने परमेश्वर के आगे बाचा बांधी और दाऊद बन में ठहर रहा और यूनतन अपने घर गया॥

१९ तब जैफ के लोग जिबिअः में साऊल पास चढ़ आके बोले कि क्या दाऊद दृढ़ स्थानों में हमारे मध्य एक बन में हकीलः पहाड़ पर जो यसीमून की दक्षिण
२० दिशा में है नहीं रहता। सो हे राजा अब तू चल और अपने मन के समान उतर आ और हमें उचित है कि उसे
२१ राजा के हाथ में सौंप देवें। तब साऊल बोला कि परमेश्वर तुम्हें आशीस देवे
२२ क्योंकि तुम ने मुझ पर दया किई। अब जाओ और और भी जुगत करो और देखो कि उस के लुकने का स्थान कहां है और किस ने उसे वहां देखा है क्योंकि मुझे कहा गया कि वह बड़ी चौकसी
२३ करता है। सो देखो और उन लुकने के सारे स्थानों को जहां वह छिपता है जाने और ठीक संदेश लेके मुझ पास फिर आओ और मैं तुम्हारे साथ जाऊंगा और यों होगा कि यदि वह देश में होवे तो मैं उसे यहूदाह के सारे सहस्रों में से ढूंढ़
२४ लेऊंगा। तब वे उठे और साऊल से आगे जैफ को गये परन्तु दाऊद अपने लोगों सहित मऊन के बन में यसीमून के दक्षिण दिशा को एक चौगान में था॥

२५ तब साऊल और उस के लोग उस को खोज को निकले और दाऊद को समाचार पहुंचा तब वह पहाड़ों से उतरके मऊन के बन में जा रहा और साऊल ने यह सुनके मऊन के बन में दाऊद का पीछा किया। और साऊल पर्व्वत की
२६ इस अलंग चला गया और दाऊद और उस के लोग पर्व्वत की उस अलंग और दाऊद ने साऊल के डर से हाली किया कि निकल जावे क्योंकि साऊल और उस के लोगों ने दाऊद को और उस के लोगों को पकड़ने को चारों ओर से
२७ घेर लिया। तब एक दूत ने साऊल पास आके कहा कि हाली आ कि
२८ फिलिस्ती देश में फैल गये। सो साऊल दाऊद के खेदने से फिरा और फिलिस्तियों के सन्मुख हुआ इस कारण उन्हों ने उस स्थान का नाम बिभाग का चटान धरा॥

चौबीसवां पर्व्व

१ और दाऊद वहां से चलके ऐनजदी
२ के दृढ़ स्थानों में जा रहा। और यों हुआ कि जब साऊल फिलिस्तियों के पीछे से फिरा तब उसे कहा गया कि देख दाऊद ऐनजदी के अरण्य में है।
३ तब साऊल समस्त इसराएली में से तीन सहस्र चुने हुए पुरुष लेके दाऊद की और उस के लोगों की खोज को बनैली
४ बकरियों के पहाड़ों पर गया। तब वह मार्ग के भेड़शाला में आया जहां एक खोह थी और साऊल उस खोह में अपने पांव दाबने और लेटने के लिये गया और दाऊद और उस के लोग खोह की
५ अलंगों में रहे। और दाऊद के लोगों ने उसे कहा कि देखिये यह वह दिन है जिस के विषय में परमेश्वर ने आप को कहा था कि देख मैं तेरे शत्रुन को तेरे हाथ में सौंपूंगा जिस्तें तू अपनी वांछा के समान उस्से करे तब दाऊद उठा और चुपके से साऊल के वस्त्र का खूंट
६ काट लिया। और उस के पीछे यों हुआ कि दाऊद के मन में खटका हुआ इस कारण कि उस ने साऊल का खूंट काटा।

७ और उस ने अपने लोगों से कहा कि परमेश्वर न करे कि मैं अपने स्वामी पर जो परमेश्वर का अभिषिक्त है ऐसा करूं कि अपना हाथ उस पर बढ़ाऊं क्योंकि वह परमेश्वर का अभिषिक्त है॥

८ सो दाऊद ने इन बातों से अपने लोगों को रोक रक्खा और उन्हें साऊल पर हाथ चलाने न दिया परन्तु साऊल ने खोह से निकलके अपना मार्ग लिया। ९ और उस के पीछे दाऊद उठा और उस खोह से बाहर आया और साऊल से यह कहके पुकारा कि हे मेरे स्वामी राजा और जब साऊल ने अपने पीछे फिरके देखा तब दाऊद ने भूमि पर १० झुकके दण्डवत किई। और दाऊद ने साऊल से कहा कि लोगों की ये बातें आप क्यों सुनते हैं कि देखिये दाऊद ११ आप की बुराई चाहता है। देखिये आज ही के दिन आप की आंखों ने देखा है कि परमेश्वर ने आज आप को खोह में मेरे हाथ में सौंप दिया और कितनों ने आप को मारने कहा परन्तु मैं ने आप को छोड़ा और अपने मन में बिचारा कि अपने स्वामी पर अपना हाथ न बढ़ाऊंगा क्योंकि वह परमेश्वर १२ का अभिषिक्त है। इस्से अधिक हे मेरे पिता देखिये हां अपने बस्त्र के खूंट को मेरे हाथ में देखिये क्योंकि मैं ने जो आप के बस्त्र का खूंट काट लिया और आप को न मारा इस्से जानिये और देखिये कि मेरे मन में बुराई और किसी प्रकार का अपराध नहीं है और मैं ने आप के बिरुद्ध पाप न किया तथापि आप मेरे प्राण का अहेर करने को निकले १३ हैं। परमेश्वर मेरे और आप के मध्य में न्याय करे और परमेश्वर आप से मेरा पलटा लेवे परन्तु मेरा हाथ आप १४ पर न पड़ेगा। जैसा प्राचीनों की कहावत में कहा गया है कि दुष्ट से दुष्टता निकलती है परन्तु मेरा हाथ आप पर न उठेगा। इसराएल का राजा किस के १५ पीछे निकला है आप किस के पीछे पड़े हैं क्या मरे हुए कूकर के अथवा एक पिसू के॥

१६ सो परमेश्वर बिचार करे और मेरे और आप के मध्य में न्याय करे और देखे और मेरे पद का पक्ष करे और आप के हाथ से मुझे बचावे। और जब दाऊद १७ ये बातें साऊल से कह चुका तब साऊल ने कहा कि मेरे बेटे दाऊद क्या यह तेरा शब्द है और साऊल ने बड़े शब्द से बिलाप किया। और दाऊद से कहा १८ कि तू मुझ से अधिक धर्मी है क्योंकि तू ने बुराई की संती मेरी भलाई किई। और तू ने आज के दिन दिखाया है कि १९ तू ने मुझ से भलाई किई है यद्यपि परमेश्वर ने मुझे तेरे हाथ में सौंप दिया और तू ने मुझे मार न डाला। क्योंकि २० यदि कोई अपने बैरी को पावे तो क्या वह उसे कुशल से छोड़ देगा सो जो तू ने आज मुझ से किया है परमेश्वर इस का प्रतिफल देवे। और अब देख मैं २१ जानता हूं कि तू निश्चय राजा होगा और इसराएल का राज्य तेरे हाथ में स्थिर होगा। सो अब तू मुझ से पर- २२ मेश्वर की किरिया खा कि तेरे पीछे मैं तेरे बंश को काट न डालूंगा और तेरे पिता के घराने में से तेरे नाम को मिटा न डालूंगा। तब दाऊद ने साऊल से २३ किरिया खाई और साऊल अपने घर को चला गया परन्तु दाऊद और उस के लोग दृढ़ स्थान में गये॥

पचीसवां पर्ब्ब।

और समूएल मर गया और समस्त १ इसराएलियों ने एकट्ठे होके उस पर बिलाप किया और रामात में उस के

घर में उसे गाड़ा और दाऊद उठके फाराम के अरण्य में उतर गया॥

२ और वहां मऊन में एक पुरुष था जिस की संपत्ति करमिल में थी वह महाजन था और उस के तीन सहस्र भेड़ और एक सहस्र बकरी थीं और वह अपनी भेड़ों का रोम करमिल में कतर-
३ ता था। और उस जन का नाम नबाल और उस की स्त्री का नाम अबिजैल था और वह स्त्री बुद्धिमती और सुंदरी थी परन्तु वह पुरुष कठोर और कुकर्म्मी था और कालिब के बंश के घराने में से था।
४ और दाऊद ने अरण्य में सुना कि नबाल
५ भेड़ों के रोम कतरता है। तब दाऊद ने दस तरुण भेजे और उन तरुणों से कहा कि नबाल पास करमिल को चढ़ जाओ और मेरे नाम से उस का कुशल पूछो।
६ और उस भरे पूरे जन से कहियो कि तुझ पर कुशल और तेरे घर पर कुशल और तेरी समस्त बस्तु पर कुशल होवे।
७ और मैं ने अब सुना है कि तुझ पास रोम कतरवैये हैं सो तेरे गड़रिये हमारे संग थे और हम ने उन्हें दुःख न दिया और जब लों वे करमिल में हमारे साथ
८ थे उन का कुछ जाता न रहा। तू अपने तरुणों से पूछ और वे तुझे कहेंगे इस लिये तरुण लोग तेरी दृष्टि में अनुग्रह पावें क्योंकि हम अच्छे दिन में आये हैं सो मैं तेरी बिनती करता हूं कि जो तेरे हाथ आवे सो तेरे सेवकों और अपने बेटे दाऊद को दीजिये॥

९ और दाऊद के तरुणों ने आके नबाल को दाऊद का नाम लेके उन सारी बातों
१० के समान कहा और चुप हो रहे। तब नबाल ने दाऊद के सेवकों को उत्तर देके कहा कि दाऊद कौन और यस्सी का बेटा कौन आजकल बहुत सेवक हैं जो अपने स्वामियों से भाग निकले
११ हैं। क्या अपनी रोटी और पानी और मांस जो मैं ने अपने कतरवैयों के लिये मारा है लेके उन मनुष्यों को देऊं जिन्हें
१२ मैं नहीं जानता कि कहां से हैं। सो दाऊद के तरुणों ने अपना मार्ग लिया आके उन सब बातों को उस्से
१३ कहा। तब दाऊद ने अपने लोगों से कहा कि हर एक तुम में से अपना अपना खड्ग बांधे सो उन्हों ने अपना अपना खड्ग बांधा और दाऊद ने भी अपना खड्ग बांधा और दाऊद के पीछे पीछे चार सौ जन गये और दो सौ सामग्री के साथ रहे॥

१४ परन्तु तरुणों में से एक ने नबाल की पत्नी अबिजैल से कहा कि देख दाऊद ने अरण्य में से हमारे स्वामी पास दूतों को भेजा कि नमस्कार करें
१५ पर वह उन पर झपटा। परन्तु उन मनुष्यों ने हम से भलाई किई कि हमें कुछ दुःख न हुआ और जब लों हम चौगान में थे और उन से परिचय रखते
१६ थे तब लों हम ने कुछ न खोया। जब लों हम उन के साथ भेड़ की रखवाली करते रहे रात दिन वे हमारे लिये एक
१७ आड़ थे। सो अब जान रख और सोच कि तू क्या करेगी क्योंकि हमारे स्वामी पर और उस के सब घराने पर बुराई ठहराई गई क्योंकि वह ऐसा बुरा जन है कि कोई उस्से बात नहीं कर सक्ता॥

१८ तब अबिजैल हाली से दो सौ रोटियां और दो कुप्पे दाखरस और पांच भेड़ बनी बनाई और मन सत्ताईस एक भूना और एक सौ गुच्छा अंगूर और दो सौ गूलर की लिट्टी लिई और उन्हें
१९ गदहों पर लादा। और अपने सेवकों को कहा कि मेरे आगे आगे बढ़ो देखो मैं तुम्हारे पीछे पीछे आती हूं परन्तु उस
२० ने अपने पति नबाल से न कहा। और

ज्योंहीं वह गदहे पर चढ़के पहाड़ की आड़ से उतरी तो क्या देखती है कि दाऊद अपने लोगों समेत उतरके उस के सन्मुख आया और उस्से भेंट हुई। २१ अब दाऊद ने कहा था कि निश्चय मैं ने इस जन की समस्त बस्तुन को जो अरण्य में थीं वृथा रखवाली किई यहां लों कि उस के सब में से कुछ नष्ट न हुआ और भलाई की संती मुझ से बुराई २२ किई। सो यदि बिहान लों उस के समस्त पुरुषों में से मैं एक को जो भीत पर मूता है छोड़ूं तो ईश्वर उस्से और उस्से भी अधिक दाऊद के शत्रुन से करे॥

२३ और ज्योंहीं अबिजैल ने दाऊद को देखा त्योंहीं वह गदहे से उतरी और दाऊद के आगे औंधी गिरी और भूमि २४ पर दंडवत किई। और उस के चरणों पर गिरके कहा कि हे मेरे प्रभु मुझ ही पर अपराध रखिये मैं तेरी बिनती करती हूं कि अपनी दासी को कान में बात करने दीजिये और अपनी दासी की २५ बातें सुनिये। मैं आप से बिनती करती हूं कि मेरे प्रभु इस बुरे पुरुष की अर्थात नबाल की चिंता न करिये क्योंकि जैसा उस का नाम वैसा वही है नबाल उस का नाम और मूर्खता उस के साथ परन्तु मैं जो तेरी दासी हूं अपने प्रभु के तरुणों को जिन्हें आप ने भेजा था न देखा। २६ सो अब हे मेरे प्रभु परमेश्वर के जीवन सों और आप के प्राण के जीवन सों जैसा कि परमेश्वर ने आप को लोहू बहाने से और अपने ही हाथ से प्रतिफल लेने से रोका है वैसा ही अब आप के शत्रु और वे जो मेरे प्रभु की बुराई २७ चाहते हैं नबाल के समान होवें। सो अब यह भेंट आप की दासी अपने प्रभु के आगे लाई है सो उन तरुणों को दिया जाय जो मेरे प्रभु के पश्चाद्गामी हैं। अब मैं आप की बिनती करती २८ हूं कि अपनी दासी का पाप क्षमा कीजिये क्योंकि निश्चय परमेश्वर मेरे प्रभु के लिये दृढ़ घर बनावेगा क्योंकि मेरा प्रभु परमेश्वर की लड़ाइयां लड़ता है और आप के दिनों में आप में बुराई न पाई गई। तथापि एक जन उठा है २९ कि आप का पीछा करे और आप के प्राण का गाहक होवे परन्तु मेरे प्रभु का प्राण आप के ईश्वर परमेश्वर के संग जीवन की डोर में बांधा जावेगा और तेरे शत्रुन के प्राण गोफन से फेंके जावेंगे। और ऐसा होगा कि जब पर- ३० मेश्वर अपने बचन के समान सब भलाई मेरे प्रभु से कर चुके और आप को इस- राएल पर आज्ञाकारी करे। तब आप ३१ के लिये यह कुछ डगमगाने का अथवा मेरे प्रभु के मन की ठोकर का कारण न होगा कि आप ने अकारण लोहू बहाया अथवा कि मेरे प्रभु ने अपना पलटा लिया परन्तु जब परमेश्वर मेरे प्रभु से भलाई करे तब अपनी दासी को स्मरण कीजिये॥

और दाऊद ने अबिजैल से कहा कि ३२ परमेश्वर इसराएल का ईश्वर धन्य है जिस ने तुझे मेरी भेंट के लिये आज के दिन भेजा है। और तेरा मंत्र धन्य और तू ३३ धन्य है जिस ने मुझे आज के दिन लोहू से और अपने हाथ से पलटा लेने से रोक रक्खा है। क्योंकि परमेश्वर इस- ३४ राएल के ईश्वर के जीवन सों जिस ने तुझे दुःख देने से मुझ से अलग रक्खा यदि तू शीघ्र न करती और मुझ पास चली न आती तो निःसंदेह बिहान लों नबाल का एक भी पुरुष जो भीत पर मूता है न छूटता। और जो कुछ कि ३५ वह उस के निमित्त लाई थी दाऊद ने

उस के हाथ से लिया और उसे कहा कि अपने घर कुशल से जा देख मैं ने तेरा वचन माना है और तुझे ग्रहण किया है ॥

३६ तब अबिजैल नबाल पास आई और देखो कि उस ने अपने घर में राजा का सा एक जेवनार किया और नबाल का मन मगन हो रहा था क्योंकि वह बड़ा मतवाला था सो इस कारण उस ने उसे ३७ बिहान लों कुछ घट बढ़ न कहा। परन्तु ऐसा हुआ कि बिहान को जब नबाल का मद उतरा और उस की स्त्री ने यह समाचार उसे कहा तब उस का मन मृतक सा हो गया और वह पत्थर हो गया ॥

३८ और ऐसा हुआ कि दस दिन के पीछे परमेश्वर ने नबाल को मारा और वह ३९ मर गया । और जब दाऊद ने सुना कि नबाल मर गया तब उस ने कहा कि परमेश्वर धन्य है जिस ने नबाल के हाथ से मेरे कलंक का पलटा लिया और अपने दास को बुराई से अलग रक्खा है क्योंकि परमेश्वर ने नबाल की दुष्टता को उसी के सिर पर डाला और दाऊद ने भेजा और अबिजैल से बात-चीत करवाई कि अपनी पत्नी करे ॥

४० और जब दाऊद के सेवक करमिल को अबिजैल पास आये तब वे यह कहके उस्से बोले कि दाऊद ने हमें तुझ पास भेजा है कि तुझे अपनी पत्नी करे । ४१ तब वह उठी और भूमि पर झुकके बोली कि देख तेरी दासी अपने स्वामी के सेवकों के चरण धोने के लिये दासी ४२ होवे । और अबिजैल शीघ्रता करके उठी और गदहे पर चढ़ी और अपनी पांच दासियां साथ लिईं और दाऊद के दूतों के साथ चली और उस की पत्नी ४३ हुई । और दाऊद ने यजरअएल में से अखिनुअम को लिया और वे दोनों उस की पत्नियां हुईं । परन्तु साऊल ने अपनी ४४ बेटी मीकल को जो दाऊद की पत्नी थी लैश के बेटे फलती को दिया जो जल्लीम का था ॥

छब्बीसवां पर्व्व ।

१ तब जैफी जिबिअः में साऊल पास आ बोले क्या दाऊद हकील: पहाड़ में यशीमून के आगे छिपा हुआ नहीं । २ तब साऊल उठके तीन सहस्र चुने हुए इसराएली लेके जैफ के अरण्य में उतरा कि दाऊद को जैफ के अरण्य में ढूंढे । ३ और हकील: के पहाड़ में जो यशीमून के आगे है मार्ग की ओर डेरा किया परन्तु दाऊद अरण्य में रहा और उस ने देखा कि साऊल उस का पीछा किये ४ हुए अरण्य में आया । तब दाऊद ने भेदिये भेजे और बूझ लिया कि साऊल सचमुच आया है ॥

५ तब दाऊद उठके साऊल के डेरे को चला और दाऊद ने उस स्थान को देख रक्खा जहां साऊल पड़ा था और नैयिर का बेटा अबिनैयिर उस की सेना का प्रधान था और साऊल खाई में सोता था और लोग उस के चारों ओर ६ डेरा किये थे । तब दाऊद ने हित्ती अखिमलिक और जरुयाह के बेटे अबिशै को जो यूअब का भाई था कहा कि कौन मेरे साथ छावनी में साऊल पास चलेगा और अबिशै बोला कि मैं आप ७ के साथ उतरूंगा । सो दाऊद और अबिशै रात को सेना में घुसे और क्या देखते हैं कि साऊल खाई के भीतर सोता है और उस का भाला उस के सिरहाने भूमि में गड़ा था परन्तु अबिनैयिर और उस के लोग चारों ओर ८ सोते थे । तब अबिशै ने दाऊद से कहा कि ईश्वर ने आज आप के शत्रु को आप के हाथ में कर दिया सो अब

मुझे भाले से एक ही बार मारके भूमि में उसे गोदने दीजिये और दूसरी बार ९ उसे न मारूंगा। तब दाऊद ने अबिशै से कहा कि उसे नाश न कर क्योंकि कौन परमेश्वर के अभिषिक्त पर हाथ १० बढ़ाके निर्दोष ठहर सके। और दाऊद ने कहा कि परमेश्वर के जीवन सों परमेश्वर उसे मारेगा अथवा उस का दिन आवेगा और वह मर जावेगा अथवा युद्ध पर उतरेगा और मारा जावेगा। ११ ईश्वर न करे कि मैं परमेश्वर के अभिषिक्त पर अपना हाथ बढ़ाऊं पर अब तू उस के सिरहाने के भाले को और पानी की झारी को ले लेना और १२ हम चल निकलें। सो दाऊद ने भाला और पानी की झारी साऊल के सिरहाने से ले लिई और चल निकले और किसी ने न देखा और न जाना और कोई न जागा क्योंकि सब के सब सोते थे क्योंकि परमेश्वर की ओर से भारी निद्रा उन पर पड़ी थी॥

१३ तब दाऊद दूसरी ओर गया और एक पहाड़ की चोटी पर दूर जा खड़ा १४ हुआ और उन में बड़ा बीच था। और दाऊद ने लोगों को और नैयिर के बेटे अबिनैयिर को पुकारके कहा कि हे अबिनैयिर तू उत्तर नहीं देता तब अबिनैयिर ने उत्तर देके कहा कि तू १५ कौन है जो राजा को पुकारता है। तब दाऊद ने अबिनैयिर से कहा कि क्या तू बलवंत नहीं और इसराएल में तेरे समान कौन सो किस लिये तू ने अपने प्रभु राजा की रक्षा न किई क्योंकि लोगों में से एक जन तेरे प्रभु राजा के १६ मारने को निकला था। तू ने यह काम कुछ अच्छा न किया परमेश्वर के जीवन सों तुम मार डालने के योग्य हो इस कारण कि तुम ने अपने स्वामी की जो परमेश्वर का अभिषिक्त है रक्षा न किई और अब देख कि राजा का भाला और पानी की झारी जो उस के सिरहाने थी कहां है॥

तब साऊल ने दाऊद का शब्द १७ पहिचाना और कहा कि हे मेरे बेटे दाऊद क्या यह तेरा शब्द है तब दाऊद बोला कि हे मेरे प्रभु हे राजा मेरा शब्द है। और उस ने कहा कि मेरे प्रभु क्यों १८ इस रीति से अपने दास के पीछे पड़े हैं क्योंकि मैं ने क्या किया और मेरे हाथ से क्या पाप हुआ। सो अब मैं १९ बिनती करता हूं कि मेरा प्रभु राजा अपने सेवक की बातों पर कान धरे यदि परमेश्वर ने मुझ पर आप को उभाड़ा है तो वह भेंट ग्रहण करे परन्तु यदि यह मनुष्य के वंश से है तो परमेश्वर का स्राप उन पर पड़े क्योंकि उन्हों ने आज मुझे परमेश्वर के अधिकार से यह कहके हांक दिया है कि जा उपरी देवतों की सेवा कर। सो अब परमेश्वर २० के आगे मेरा लोहू भूमि पर न बहे क्योंकि इसराएल का राजा एक पिस्सू की खोज को निकला है जैसा कोई तीतर के अहेर को पहाड़ों पर निकलता है॥

तब साऊल ने कहा कि मैं ने पाप २१ किया हे मेरे बेटे दाऊद फिर आ क्योंकि फेर तुझे न सताऊंगा इस लिये कि मेरा प्राण आज के दिन तेरी दृष्टि में बहुमूल्य हुआ देख मैं ने मूढ़ता किई और अति चूक किई। तब दाऊद ने उत्तर देके २२ कहा कि देख यह राजा का भाला है सो तरुणों में से एक आके इसे ले जावे। और परमेश्वर हर जन को उस के धर्म्म २३ का और उस की सच्चाई का प्रतिफल देवे क्योंकि परमेश्वर ने आज आप को मेरे हाथ में सौंप दिया पर मैं ने न

चाहा कि परमेश्वर के अभिषिक्त पर
२४ अपना हाथ बढ़ाऊं। और देख जिस रीति से आप का प्राण मेरी आंखों में आज के दिन प्रिय हुआ वैसा ही मेरा प्राण ईश्वर की दृष्टि में प्रिय होवे और
२५ वह मुझे सब कष्टों से बचावे। तब साऊल ने दाऊद से कहा कि तू धन्य है हे मेरे बेटे दाऊद तू महाकार्य्य करेगा और तब भी तू भाग्यवान होगा सो दाऊद ने अपना मार्ग लिया और साऊल अपने स्थान को फिरा॥

सत्ताईसवां पर्व्व।

१ और दाऊद ने अपने मन में कहा कि अब मैं किसी दिन साऊल के हाथ से मारा जाऊंगा सो मेरे लिये इस्से अच्छा कुछ नहीं कि मैं शीघ्रता से भागके फिलिस्तियों के देश में जा रहूं और साऊल इसराएल के सिवानों में मुझे खोजने से निरास हो जावेगा यों
२ मैं उस के हाथ से बच जाऊंगा। तब दाऊद अपने साथ के छः सौ तरुणों को लेके जात के राजा मऊक के बेटे
३ अकीस की ओर गया। और दाऊद अपने लोगों के साथ जिन में से हर एक अपने घराने समेत था अपनी दोनों स्त्री अखिनुअम को जो यजरअएली थी और करमिली अबिजैल को जो नबाल की पत्नी थी लेके जात में अकीस
४ के साथ रहा। और साऊल को संदेश पहुंचा कि दाऊद जात को भाग गया तब उस ने फिर उस का पीछा न किया॥

५ और दाऊद ने अकीस से कहा कि यदि मैं ने आप की दृष्टि में अनुग्रह पाया है तो वे इस देश में मुझे किसी बस्ती में स्थान देवें जहां मैं बसूं क्योंकि आप का दास किस लिये आप के राज्य
६ नगर में रहे। तब अकीस ने उस दिन सिकलाज उसे दिया इस लिये सिकलाज आज के दिन लों यहूदाह के राजाओं
७ के बश में है। और दाऊद फिलिस्तियों के देश में एक बरस चार मास लों रहा॥

८ और दाऊद ने अपने लोगों को लेके जसूरी और जरिजी और अमालीकियों को घेर लिया क्योंकि वे जसूर के सिवाने से लेके मिस्र के सिवाने लों
९ आगे से बस्ते थे। और दाऊद ने देश को नष्ट किया और न पुरुष को न स्त्री को जीता छोड़ा और उन के भेड़ और ढोर और गदहे और ऊंट और कपड़े
१० लिये और अकीस पास फिर आये। और अकीस ने पूछा कि आज तुम ने मार्ग किधर खोला और दाऊद ने कहा कि यहूदाह के दक्षिण और यरहमिएली के दक्षिण और कैनी के दक्षिण दिशा
११ पर। और दाऊद ने उन में से कोई स्त्री पुरुष को जीता न छोड़ा जो जात को संदेश ले आवे यह कहके कि न होवे कि हमारे बिरुद्ध संदेश पहुंचावें कि दाऊद ने ऐसा वैसा किया और जब से वह फिलिस्तियों के राज्य में आ रहा तब से उस का व्यवहार ऐसा
१२ ही था। और यह कहके अकीस ने दाऊद को सच्चा जाना कि उस ने आप को अपने इसराएली लोगों से अत्यंत निन्दा करवाई इस लिये वह मेरा दास सदा होगा॥

अट्ठाईसवां पर्व्व।

१ और उन्हीं दिनों में ऐसा हुआ कि फिलिस्तियों ने इसराएल से लड़ने को अपनी सेनाओं को एकट्ठी किया तब अकीस ने दाऊद से कहा कि तू निश्चय जान कि तुझे और तेरे लोगों को मेरे
२ साथ लड़ाई पर चढ़ने होगा। तब दाऊद ने अकीस से कहा निश्चय आप जानियेगा जो कुछ आप के दास से बन पड़ेगा

और अकीश ने दाऊद से कहा कि मैं अपने सिर का रक्षक सदा तुझे करूंगा॥

३ और समूएल मर गया और समस्त इसराएल उस पर रोते थे और उसे उसी के नगर रामात में गाड़ा था और साऊल ने उन्हें जो भुतहे और टोनहे थे देश से निकाल दिया था॥

४ और फिलिस्ती एकट्ठे होके आये और सूनेम में डेरा किया और साऊल ने भी सारे इसराएल को एकट्ठा किया और जिल-

५ बूअः में डेरा किया। और जब साऊल ने फिलिस्तियों की सेना को देखा तब डरा और उस का मन अत्यंत कंपित

६ हुआ। और जब साऊल ने परमेश्वर से बूझा परमेश्वर ने उसे कुछ उत्तर न दिया न तो दर्शन से न ऊरीम से न आगम-

७ ज्ञानियों के द्वारा से। तब साऊल ने अपने सेवकों से कहा कि मेरे लिये किसी स्त्री को खोजो जो भुतही होवे जिसतें मैं उस पास जाऊं और उस्से बूझूं तब उस के सेवकों ने उसे कहा कि देखिये ऐनदोर में एक भुतही स्त्री है॥

तब साऊल ने अपना भेष बदलके दूसरा बस्त्र पहिना और गया वह और दो जन उस के साथ और रात को उस स्त्री पास पहुंचा और उसे कहा कि कृपा करके मेरे लिये अपने भूत से बिचार पूछ और जिसे मैं कहूं उसे मेरे लिये

९ उठा। और उस स्त्री ने उसे कहा कि देख तू जानता है कि साऊल ने क्या किया कि उस ने उन्हें जो भुतहे थे और टोनहों को किस रीति से देश से काट डाला सो मुझे मरवा डालने के लिये तू क्यों

१० मेरे प्राण के लिये जाल डालता है। तब साऊल ने परमेश्वर की किरिया खाके कहा कि परमेश्वर के जीवन सों इस बात के लिये तुझ पर कोई दण्ड न

११ पड़ेगा। तब वह स्त्री बोली मैं किसे तेरे लिये उठाऊं तब वह बोला कि समूएल को मेरे लिये उठा॥

१२ जब उस स्त्री ने समूएल को देखा तब वह बड़े शब्द से चिल्लाई और उस स्त्री ने साऊल से कहा कि आप ने मुझ से क्यों छल किया आप तो साऊल

१३ हैं। तब राजा ने उसे कहा कि मत डर तू ने क्या देखा और उस स्त्री ने साऊल से कहा कि मैं ने देवों को

१४ पृथिवी से उठते देखा। तब उस ने उसे कहा कि उस का डौल क्या तब वह बोली कि एक बृद्ध पुरुष ऊपर आता है और दोहर ओढ़े है तब साऊल ने जाना कि वह समूएल है और वह मुंह के बल निहुड़के भूमि पर झुका।

१५ तब समूएल ने साऊल से कहा कि तू ने क्यों मुझे उठाके बेचैन किया और साऊल ने कहा कि मैं अति दुःखी हूं क्योंकि फिलिस्ती मुझ से लड़ते हैं और परमेश्वर ने मुझे छोड़ दिया है और कुछ उत्तर नहीं देता न तो आगमज्ञानियों के द्वारा से न दर्शन से सो मैं ने तुझे बुलाया जिसतें तू मुझे बतावे कि मैं क्या

१६ करूं। और समूएल ने कहा कि जब परमेश्वर ने तुझे छोड़ दिया और तेरा बैरी बना तब मुझ से किस लिये पूछता

१७ है। और जैसा परमेश्वर ने मेरे द्वारा से कहा उस ने उस के लिये वैसा ही किया है क्योंकि परमेश्वर ने तेरे राज्य को फाड़ा है और तेरे परोसी दाऊद को

१८ दिया है। इस लिये कि तू ने परमेश्वर के शब्द को नहीं माना और अमालीकियों पर उस के अति कोप को पूरा न किया इसी कारण से परमेश्वर ने आज के दिन

१९ तुझ से यह व्यवहार किया है। और परमेश्वर इसराएल को तेरे संग फिलिस्तियों के हाथ में सौंपेगा और तू और तेरे बेटे कल मेरे साथ होंगे परमेश्वर

इसराएली सेना को भी फिलिस्तियों के हाथ में सौंपेगा ॥

२० तब साऊल तुरंत भूमि पर गिरा और समूएल की बातों से बहुत डर गया और उस में कुछ सामर्थ्य न रही क्योंकि उस ने दिन भर और रात भर रोटी न खाई थी। २१ तब वह स्त्री साऊल पास आई और देखा कि वह अति व्याकुल है तब उस ने उसे कहा कि देख आप की दासी ने आप का शब्द सुना और मैं ने अपना प्राण अपनी हथेली पर रक्खा और जो कुछ आप ने मुझे कहा मैं ने उसे माना। २२ सो अब आप भी कृपा करके अपनी दासी की बात सुनिये और मुझे अपने आगे एक ग्रास रोटी धरने दीजिये और खाइये जिसतें आप को इतनी सामर्थ्य २३ हो कि अपने मार्ग जाइये। पर उस ने न माना और कहा कि मैं न खाऊंगा परन्तु उस के दासों ने उस स्त्री सहित उसे बरबस खिलाया और उस ने उन का कहा माना और भूमि पर से उठा २४ और खाट पर बैठा। और उस स्त्री के घर में एक मोटा बछड़ा था सो उस ने चटक किया और उसे मारा और पिसान लेके गूंधा और उस्से अखमीरी रोटियां २५ पकाईं। और साऊल और उस के सेवकों के आगे लाई और उन्हों ने खाया और उठे और उसी रात वहां से चले गये ॥

उनतीसवां पर्ब्ब।

१ सो फिलिस्ती की सब सेना अफीक में एकट्ठी हुई और इसराएली यजरअएल के सोते के पास डेरा किये हुए थे। २ और फिलिस्तियों के अध्यक्ष सैकड़ों सैकड़ों और सहस्र सहस्र आगे बढ़ते गये परन्तु दाऊद और उस के लोग अकीस ३ के पीछे पीछे गये। तब फिलिस्तियों के अध्यक्षों ने कहा कि इन इबरानियों का क्या काम और अकीस ने फिलिस्ती अध्यक्षों को कहा कि क्या यह इसराएल के राजा साऊल का सेवक दाऊद नहीं जो इतने दिनों और इतने बरसों से मेरे साथ है और जब से वह मुझ पास आया है आज लों उस में कुछ दोष नहीं पाया। ४ तब फिलिस्तियों के अध्यक्ष उस्से क्रुद्ध हुए और उन्हों ने उसे कहा कि इस जन को यहां से फेर दे जिसतें वह अपने स्थान को जो तू ने उसे दिया है फिर जाय और हमारे साथ युद्ध में न उतरे क्या जाने युद्ध में वह हमारा बैरी होवे क्योंकि वह अपने स्वामी से किस बात से मेल करेगा क्या इन लोगों के सिरों से नहीं। ५ क्या यह वही दाऊद नहीं जिस के विषय में वे नाचती हुई गाती थीं कि साऊल ने तो अपने सहस्रों को मारा और दाऊद ने अपने दस सहस्रों को ॥

६ तब अकीस ने दाऊद को बुलाया और उसे कहा कि निश्चय परमेश्वर के जीवन सों तू खरा है तेरा आना जाना सेना में मेरे साथ मेरी दृष्टि में अच्छा है क्योंकि जिस दिन से तू मुझ पास आया मैं ने आज लों तुझ में कुछ बुराई नहीं पाई तथापि अध्यक्षों की दृष्टि ७ में तू अच्छा नहीं। सो अब फिर और कुशल से चला जा और फिलिस्तियों के अध्यक्षों की दृष्टि में बुराई न कर। ८ परन्तु दाऊद ने अकीस से कहा कि मैं ने क्या किया है और जब से मैं आप के साथ रहा और आज लों आप ने अपने सेवक में क्या पाया कि मैं अपने प्रभु राजा के बैरियों से लड़ाई न करूं। तब अकीस ने दाऊद को उत्तर दिया और कहा कि मैं जानता हूं और तू मेरी दृष्टि में ईश्वर के दूत के समान है परन्तु फिलिस्तियों के अध्यक्षों ने कहा है कि वह हमारे साथ युद्ध में न आवे।

१० सो अब बिहान को तड़के अपने स्वामी के दासों समेत जो तेरे साथ यहां आये हैं उठके शीघ्र तड़के चले जाइये॥

११ तब दाऊद अपने लोगों सहित तड़के उठा कि प्रात:काल को वहां से चलके फिलिस्तियों के देश को फिर जावे और फिलिस्ती यज़्रअएल को चढ़ गये॥

तीसवां पर्व्व।

१ और ऐसा हुआ कि जब दाऊद और उस के लोग तीसरे दिन सिकलाज में पहुंचे क्योंकि अमालीकी दक्षिण दिशा से सिकलाज पर चढ़ आये थे और उन्हों ने सिकलाज को मारा और उसे २ आग से फूंक दिया। और उस में की स्त्रियों को पकड़ लिया पर उन्हों ने छोटों बड़ों को न मारा परन्तु उन्हें लेके ३ अपने मार्ग चले गये। जब दाऊद और उस के लोग नगर में पहुंचे तो क्या देखते हैं कि नगर जला पड़ा है और उन की पत्नियां और उन के बेटे और उन की बेटियां बंधुआई में पकड़ी गई ४ हैं। तब दाऊद और उस के साथ के लोग चिल्लाये और बिलाप किया यहां लों कि उन में रोने की सामर्थ्य न रही। ५ और दाऊद की दोनों पत्नियां यज़्रअएली अखिनुअम और करमिली नबाल की पत्नी अबिजैल बंधुआई में पकड़ी गईं। ६ और दाऊद अति दु:खी हुआ क्योंकि लोग उस पर पत्थरवाह करने की बातचीत करते थे इस लिये कि उन में से हर एक अपने बेटों और बेटियों के लिये निपट उदास था पर दाऊद ने परमेश्वर अपने ईश्वर से हियाव पाया॥

७ और दाऊद ने अखिमलिक के बेटे अबियतर याजक से कहा कि कृपा करके अफूद मुझ पास ला सो अबियतर ८ अफूद दाऊद पास ले आया। और दाऊद ने यह कहके परमेश्वर से बूझा कि मैं इस जथा का पीछा करूं क्या मैं उन्हें जा ही लूंगा तब उस ने उसे उत्तर दिया कि पीछा कर क्योंकि तू निश्चय उन्हें जा ही लेगा और नि:संदेह उन्हें छुड़ा- ९ वेगा। सो दाऊद अपने साथ के छ: सौ तरुणों को लेके चला और बसूर के नाले लों आया और जो पीछे छोड़े गये वहां १० पर रहि गये। पर दाऊद आप चार सौ तरुणों से उन का पीछा किये चला गया क्योंकि दो सौ पीछे रहि गये थे जो ऐसे थक गये थे कि बसूर के नाले पार जा न सके॥

११ और उन्हों ने खेत में एक मिस्री को पाया और उसे दाऊद पास ले आये और उसे रोटी खाने को दिई और उस ने खाई और उन्हों ने उसे पानी भी १२ पिलाया। और उन्हों ने गूलर की लिट्टी और दो गुच्छे अंगूर उसे दिये और जब वह खा चुका तब उस के जी में जी आया क्योंकि उस ने तीन रात दिन न १३ रोटी खाई न पानी पीया था। तब दाऊद ने उसे पूछा कि तू कौन और कहां का है और वह बोला कि मैं एक मिस्री तरुण और एक अमालीकी का सेवक हूं और मेरा स्वामी मुझे छोड़ गया क्योंकि तीन दिन हुए कि मैं रोगी १४ हुआ। हम करीती के दक्षिण और चढ़ गये और यहूदाह के सिवाने पर और कालिब की दक्षिण ओर चढ़ गये थे और हम ने सिकलाज को आग से फूंक १५ दिया। और दाऊद ने उसे कहा कि तू मुझे इस जथा लों ले जा सक्ता है वह बोला कि मुझ से ईश्वर की किरिया खाइये कि मैं तुझे प्राण से न मारूंगा और तुझे तेरे स्वामी के हाथ न सौंपूंगा तो मैं आप को इस जथा लों ले जाऊंगा॥

१६ जब वह उसे वहां ले गया तो क्या देखते हैं कि वे समस्त पृथिवी पर फैले

हुए खाते पीते और नाचते थे क्योंकि फिलिस्तियों के और यहूदाह के देश से
१७ बहुत लूट लाये थे। और दाऊद ने उन्हें गोधूली से दूसरे दिन की सांझ लों मारा और उन में से एक भी न बचा केवल चार सै तरुण ऊंटों पर चढ़के भाग
१८ निकले। और जो कुछ कि अमालीकी ले गये थे दाऊद ने फेर पाया और अपनी दोनों पत्नियों को भी दाऊद ने छुड़ाया।
१९ और उन के छोटे बड़े और बेटा बेटी और धन संपत्ति जो लूटी गई थी दाऊद
२० ने सब फेर पाई। और दाऊद ने सारे झुंड और ढोर ले लिये जिन्हें उन्हों ने ढोरों के आगे हांक लिया और बोले कि यह दाऊद की लूट॥

२१ और दो सै तरुण ऐसे थके थे जो दाऊद के साथ न जा सके थे और उन्हों ने उन्हें बसूर के नाले पर छोड़ दिया और वे दाऊद को और उस के लोगों को आगे से लेने को निकले और जब दाऊद उन लोगों के पास पहुंचा तब उस ने
२२ उन का कुशल पूछा। तब सब दुष्टों और कुकर्म्मियों ने जो दाऊद के साथ गये थे यह कहा इस लिये कि वे हमारे साथ न गये हम इन्हें इस लूट में से जो हम ने पाई है भाग न देंगे केवल हर एक अपनी पत्नी और बेटा बेटी को
२३ लेके बिदा होवे। तब दाऊद बोला कि हे मेरे भाइयो जो कुछ कि परमेश्वर ने हमें दिया है और उस ने हमें बचाया और जथा को जो हम पर चढ़ आये थे हमारे हाथ में कर दिया सो तुम उस
२४ में से ऐसा न करो। क्योंकि इस विषय में कौन तुम्हारी सुनेगा परन्तु जैसा जिस का भाग है जो युद्ध में चढ़ जाता है वैसा उस का भाग होगा जो संपत्ति पास रहता है दोनों एक समान भाग
२५ पावेंगे। और ऐसा हुआ कि उस दिन से आगे यही बिधि और व्यवस्था इसराएल के लिये आज के दिन लों हुई॥

२६ जब दाऊद सिकलाज में आया तब उस ने लूट में से यहूदाह के प्राचीन और अपने मित्रों के लिये भाग भेजा और कहा कि देखो परमेश्वर के शत्रुन
२७ की लूट में से यह तुम्हारी भेंट है। जो बैतएल में और जो दक्खिन रामात में
२८ और जो जतीर में। और जो अरआयर में और जो सिफमोत में और जो इस्ति-
२९ माअ में। और जो रकल में और जो यरमिएलों के नगरों में और जो कैनी के
३० नगरों में। और जो हुरम: में और जो
३१ कोराशान में और जो अताक में। और जो हबरून में और उन सब स्थानों में जहां जहां दाऊद और उस के लोग फिरा करते थे भेजा॥

एकतीसवां पर्ब्ब।

१ अब फिलिस्ती इसराएल से लड़े और इसराएल फिलिस्ती के आगे से भागे और जिलबूअ पहाड़ पर जूझ गये।
२ और फिलिस्ती साऊल के और उस के बेटों के पीछे पीछे पिलचे गये और फिलिस्तियों ने उस के बेटे यूनतन को और अबिनदाब और मलकीसूअ को मार
३ लिया। और साऊल से बड़ी लड़ाई हुई और धनुषधारियों ने उसे ऐसा बेधा कि वह धनुषधारियों के हाथ से अत्यन्त
४ घायल हुआ। तब साऊल ने अपने अस्त्रधारी से कहा कि अपनी तलवार खींच और मुझे गोद दे जिसतें ये अखतनः आके मुझे गोद न लेवें और मेरी दुर्दशा न करें पर उस के अस्त्रधारी ने न माना क्योंकि वह अत्यंत डरा तब साऊल ने
५ तलवार लिई और उस पर गिरा। और जब उस के अस्त्रधारी ने देखा कि साऊल मर गया तब वह भी अपनी तलवार पर गिरा और उस के साथ मर

६ गया। सो साऊल और उस के तीनों बेटे और उस का अस्त्रधारी और उस के सारे लोग उसी दिन एक साथ मर गये॥

७ जब इसराएल के लोगों ने जो तराई के उस अलंग थे और जो यरदन के पार थे देखा कि इसराएल के लोग भागे और साऊल और उस के बेटे मारे गये तब बस्तियां छोड़ छोड़ भाग निकले और फिलिस्ती आये और उन में बसे॥

और बिहान को ऐसा हुआ कि जब फिलिस्ती आये कि जूझे हुओं को लूटें तब उन्हों ने साऊल को और उस के तीन बेटों को जिलबूअ पहाड़ पर पड़ा ९ पाया। तब उन्हों ने उस का सिर काट लिया और उस के हथियार लेके फिलिस्तियों के देश में चारों ओर भेज दिये कि उन की मूरतों के मंदिर में और लोगों में प्रचार होवे। और उन्हों ने १० उस के हथियार को इस्तारात के मंदिर में रक्खा और उस की लोथ को बैतशान की भीत पर लटकाया॥

और जब यबीसजिलिअद के बासियों ११ ने सुना कि फिलिस्तियों ने साऊल से यों किया। तब उन में के सारे महाबीर १२ उठे और रात भर चले गये और बैतशान की भीत पर से साऊल की और उस के बेटों की लोथों को लेके यबीस में फिर आये और वहां उन्हें जला दिया। और १३ उन की हड्डियां को लेके यबोस के पेड़ तले गाड़ दिया और सात दिन लों ब्रत किया॥

समूएल की दूसरी पुस्तक।

पहिला पर्व्व।

१ और साऊल के मरने के पीछे ऐसा हुआ कि दाऊद अमालीकियों को मारके फिर आया और दो दिन सिकलाज में २ रहा। और तीसरे दिन ऐसा हुआ कि देखो एक जन साऊल की छावनी से अपने बस्त्र फाड़े हुए और अपने सिर पर धूल डाले हुए आया और ऐसा हुआ कि जब दाऊद के पास पहुंचा तब भूमि पर गिरा ३ और दण्डवत किई। तब दाऊद ने उसे कहा कि तू कहां से आता है और वह उस्से बोला कि इसराएल की छावनी ४ से मैं बच निकला हूं। तब दाऊद ने उस्से पूछा कि क्या हुआ मुझे कहिये और उस ने उत्तर दिया कि लोग संग्राम से भागे हैं और बहुत लोग जूझ गये हैं और साऊल और उस का बेटा यूनतन भी मर गये हैं। तब उस तरुण से जिस ५ ने उसे कहा था दाऊद ने पूछा कि तू क्योंकर जानता है कि साऊल और उस का बेटा यूनतन मर गये हैं। तब उस ६ तरुण ने उसे कहा कि मैं संयोग से जिलबूअ पहाड़ पर था तो क्या देखता हूं कि साऊल अपने भाले पर टेक रहा था और देखो कि रथ और घोड़चढ़े उस के पीछे धाये गये। और जब उस ७ ने पीछे फिरके मुझे देखा तब उस ने मुझे बुलाया और मैं ने उत्तर दिया कि

८ यहीं हूं। तब उस ने मुझे कहा कि तू कौन और मैं ने उसे कहा कि मैं एक ९ अमालीकी हूं। फिर उस ने मुझे कहा कि मैं तेरी बिनती करता हूं निकट खड़ा होके मुझे बधन कर क्योंकि व्याकुलता ने मुझे पकड़ा है कि मेरा प्राण अब १० लों मुझ में पूर्ण है। सो मैं उस के निकट खड़ा हुआ और उसे मार डाला क्योंकि मुझे निश्चय हुआ कि गिरने के पीछे वह जी न सक्ता था और मैं ने उस के सिर का मुकुट और बिजायठ जो उस की भुजा पर था लिया और उन्हें अपने स्वामी पास इधर लाया हूं॥

११ तब दाऊद ने अपने कपड़े को पकड़ा और उन्हें फाड़ डाला और उस के साथ के समस्त मनुष्यों ने भी ऐसा १२ ही किया। और वे साऊल और उस के बेटे यूनतन और परमेश्वर के लोगों और इसराएल के घराने के लिये जो तलवार से मारे पड़े थे रोये पीटे और सांझ लों ब्रत किया॥

१३ तब दाऊद ने उस तरुण से जिस ने उसे संदेश पहुंचाया था पूछा कि तू कहां का है और उस ने उत्तर दिया कि मैं परदेशी का लड़का एक अमालीकी १४ हूं। तब दाऊद ने उसे कहा कि क्योंकर तू परमेश्वर के अभिषिक्त पर नाश करने को हाथ उठाते हुए न डरा। १५ तब दाऊद ने तरुणों में से एक को बुलाया और कहा कि उस पास जाके उस पर लपक सो उस ने उसे ऐसा १६ मारा कि वह मर गया। और दाऊद ने उसे कहा कि तेरा लोहू तेरे ही सिर पर क्योंकि तेरे ही मुंह ने तुझ पर यह कहके साक्षी दिई कि मैं ने परमेश्वर के अभिषिक्त को घात किया॥

१७ और दाऊद ने साऊल और उस के बेटे यूनतन पर इस बिलाप से बिलाप किया। और उस ने आज्ञा किई कि १८ यहूदाह के संतान को धनुष का गीत सिखावें देख यशर की पुस्तक में लिखा है॥

१९ कि इसराएल की सुंदरता तेरे ऊंचे स्थानों पर जूझ गई बलवंत कैसे मारे २० पड़े हैं। जात में मत कहो अस्कलून की सड़कों में मत प्रचारो न हो कि फिलिस्तियों की बेटियां आनन्द करें न हो कि अखतनों की लड़कियां जय जय २१ करें। हे जिलबूअ के पहाड़ो ओस और मेंह तुम पर न पड़ें और न भेंटों का खेत होवे क्योंकि वहां बलवंत की ढाल तुच्छता से फेंकी गई साऊल की ढाल २२ जैसे कि वह अभिषिक्त न हुआ। जूझे हुए के लोहू बलवंत की चिकनाई से यूनतन का धनुष उलटा न फिरा और साऊल की तलवार छूछी न फिरी। २३ साऊल और यूनतन अपने जीवन में प्रिय और शोभित थे और अपनी मृत्यु में वे अलग न किये गये वे गिद्ध से अधिक २४ फुरतीले थे सिंहों से बलवंत थे। हे इस-राएल की बेटियो साऊल पर रोओ जिस ने तुम्हें बैंजनी वस्त्र पहिनाया जिस ने सोने के आभूषण तुम्हारे बस्त्र पर संवारा। २५ संग्राम के मध्य बलवंत कैसे गिर गये हैं यूनतन तू अपने ऊंचे स्थानों में मारा २६ गया। हे मेरे भाई यूनतन तेरे लिये मैं दुःखित हूं तू मेरे लिये अति शोभित था तेरी प्रीति मुझ पर अचंभित थी २७ स्त्रियों की प्रीति से अधिक। बलवंत कैसे गिर गये और संग्राम के हथियार नष्ट हुए॥

दूसरा पर्ब्ब।

१ और इस के पीछे ऐसा हुआ कि दाऊद ने यह कहके परमेश्वर से बूझा कि मैं यहूदाह के किसी नगरों में चढ़ जाऊं और परमेश्वर ने उसे कहा कि चढ़

आ तब दाऊद ने कहा कि किधर चढ़ जाऊं और उस ने कहा कि हबरून को।
२ सो दाऊद उधर चढ़ गया और उस की दोनों पत्नी भी यजरअएली अखिनुअम और नबाल की पत्नी करमिली अबिजैल।
३ और उस के लोग जो उस के साथ थे दाऊद हर एक जन को उस के घराने समेत ऊपर लाया और वे हबरून के
४ नगरों में आ बसे। तब यहूदाह के लोग आये और उन्हों ने वहां दाऊद को यहूदाह के घराने पर राज्याभिषेक किया और लोगों ने दाऊद से कहा कि यबीसजिलिअद के मनुष्यों ने साऊल को गाड़ा॥
५ तब दाऊद ने यबीसजिलिअद के लोगों को दूत से कहला भेजा कि परमेश्वर का धन्य क्योंकि तुम ने अपने प्रभु साऊल पर यह अनुग्रह किया और
६ उसे गाड़ा। सो अब परमेश्वर तुम पर अनुग्रह और सच्चाई करे और मैं भी इस अनुग्रह का पलटा तुम्हें देऊंगा इस कारण कि तुम ने यह काम किया है।
७ सो अब तुम्हारी भुजा बली होवे और शूरता के बेटे होओ क्योंकि तुम्हारा प्रभु साऊल मर गया और यहूदाह के घराने ने भी मुझे अपने पर राज्याभिषेक किया॥
८ परन्तु नैयिर के बेटे अबिनैयिर ने जो साऊल का सेनापति था साऊल के बेटे अशबोशीश को लिया और उसे
९ महनैन में पहुंचाया। और उसे जिलिअद और अशूरी और यजरअएल और इफरायम और बिनयमीन और समस्त
१० इसराएल पर राजा किया। साऊल के बेटे अशबोशीश की बय चालीस बरस की थी जब वह इसराएल पर राज्य करने लगा और उस ने दो बरस राज्य किया परन्तु यहूदाह के घराने ने दाऊद
११ का पीछा किया। और जिन दिनों में दाऊद यहूदाह के घराने पर हबरून में राजा था सो साढ़े सात बरस था॥
१२ तब नैयिर के बेटे अबिनैयिर और साऊल के बेटे अशबोशीश के सेवक महनैन से निकलके जिबऊन को गये।
१३ और जरूयाह का बेटा यूअब दाऊद के सेवकों को लेके निकला और जिबऊन के कुंड पर दोनों मिल गये और बैठ गये एक कुंड की इस अलंग और दूसरा कुंड की उस अलंग।
१४ तब अबिनैयिर ने यूअब से कहा कि तरुणों को उठने और हमारे आगे लीला करने दीजिये तब
१५ यूअब बोला कि उठें: तब गिनती में बिनयमीन के बारह जन जो साऊल के बेटे अशबोशीश की ओर से थे उठे और दाऊद के सेवकों में से बारह जन
१६ निकले। सो उन में से हर एक जन ने अपने अपने संगी का सिर पकड़ा और अपने संगी के पंजर में तलवार गोद दिई सो वे एकट्ठे गिर पड़े इस लिये उस स्थान का नाम हलकातहसुरीम हुआ जो जिबऊन में है।
१७ और उस दिन बड़ा संग्राम हुआ और अबिनैयिर और इसराएल के लोग दाऊद के सेवकों के आगे हार गये॥
१८ और जरूयाह के तीन बेटे यूअब और अबिशै और असहेल वहां थे और असहेल बनैली हरिणी की नाईं दौड़ता था।
१९ और असहेल ने अबिनैयिर का पीछा किया और वह अबिनैयिर के पीछे से दहिने
२० बायें न मुड़ा। तब अबिनैयिर ने अपने पीछे देखके कहा कि तू असहेल है और
२१ वह बोला हां। और अबिनैयिर ने उसे कहा कि दहिनी अथवा बाईं ओर फिर और तरुणों में से एक को पकड़ और उसे लूट ले परन्तु उस का पीछा करने से असहेल न फिरा।
२२ और अबिनैयिर ने असहेल को फिर कहा कि मेरा पीछा

करने से मुड़ किस कारण मैं तुझे भूमि पर मारके डाल देऊं सो क्योंकर मैं तेरे भाई यूअब को अपना मुंह दिखाऊं। २३ तथापि उस ने मुड़ने को न माना तब अबिनैयिर ने उलटे भाले से पांचवीं पसुली के नीचे मारा और भाला उस के पीछे से निकल पड़ा और वहां गिरके उसी स्थान में वह मर गया और ऐसा हुआ कि जितने उस स्थान में आते थे जहां असहैल गिरके मर गया था खड़े २४ रहते थे। तब यूअब और अबिशै भी अबिनैयिर के पीछे पड़े और जब वे अम्म: के टीले को जो जिबऊन के बन के मार्ग में जीहा के आगे है पहुंचे तब सूर्य्य अस्त हुआ॥

२५ और बिनयमीन के संतानों ने एकट्ठे होके अबिनैयिर की सहाय किई और सब के सब मिलके एक जथा बनके एक पहाड़ की चोटी पर खड़े हुए। २६ तब अबिनैयिर ने यूअब को पुकारके कहा कि क्या तलवार सदा लों नाश करेगी क्या तू नहीं जानता है कि अंत में कड़ुवाहट होगी सो कब लों तू लोगों को अपने भाइयों का पीछा करने से न २७ रोकेगा। तब यूअब ने कहा कि जीवते ईश्वर की किरिया यदि तू न कहता तो निश्चय लोगों में से हर एक अपने भाई का पीछा छोड़के भोर ही को फिर २८ जाता। फिर यूअब ने नरसिंगा फूंका और सब लोग ठहर गये और इसराएल का पीछा न किया और लड़ाई भी थम गई॥

२९ और अबिनैयिर अपने लोगों समेत चौगान से होके रात भर चला गया और यरदन पार उतरा और समस्त बितरून ३० से चलके महनैन में पहुंचा। और यूअब अबिनैयिर का पीछा करने से उलटा फिरा और उस ने सारे लोगों को एकट्ठा किया तब दाऊद के सेवकों में से असहैल को छोड़ उन्नीस जन घटे थे। परन्तु ३१ दाऊद के सेवकों ने बिनयमीनियों में से और अबिनैयिर के लोगों में से तीन सौ साठ जन मारे। और उन्हों ने असहैल ३२ को उठाया और उसे उस के पिता की समाधि में जो बैतलहम में है गाड़ा और अपने लोगों समेत रात भर चला गया और पौ फटते हुए हबरून में पहुंचा॥

तीसरा पर्व्व।

१ सो साऊल के और दाऊद के घरानों में बहुत दिन लों लड़ाई होती रही परन्तु दाऊद बलवंत होता गया और साऊल का घराना निर्बल होता गया। २ और हबरून में दाऊद के बेटे उत्पन्न हुए और उस का पहिलौठा अमनून जो यजरअएली अखिनुअम से था। ३ और उस का दूसरा किलिअब जो करमिली नबाल की पत्नी अबिजैल से हुआ और तीसरा अबिसलुम जो जशूर के राजा तलमी की बेटी मअक: से था। ४ और चौथा हगीस का बेटा अदूनियाह और पांचवां अबितल का बेटा शफतियाह। और छठवां यतरिआम जो दाऊद की पत्नी एगल: से था ये सब दाऊद के लिये हबरून में उत्पन्न हुए॥

६ और जब लों साऊल और दाऊद के घरानों में युद्ध होता रहा ऐसा हुआ कि अबिनैयिर ने आप को साऊल के घराने के लिये बली किया। ७ और साऊल की एक दासी थी जिस का नाम रिसफ़: था अयाह की बेटी और इसबुसत ने अबिनैयिर से कहा कि तू क्यों मेरे पिता की दासी के पास गया है। ८ तब अबिनैयिर ने इसबुसत की बातों से अति कोपित होके कहा कि क्या मैं कूकर का सिर हूं कि मैं यहूदाह का साम्हना करके आज के दिन लों तेरे पिता साऊल

के घराने पर उस के भाइयों और उस के मित्र पर दया करता हूं और तुझे दाऊद के हाथ में नहीं सौंपा है कि तू मुझे इस स्त्री के विषय में दोष ९ लगाता है। सो अब जैसी परमेश्वर ने दाऊद से बाचा बांधी है वैसा ही यदि मैं न करूं तो परमेश्वर अबिनैयिर से १० ऐसा ही और उस्से अधिक करे। कि साऊल के घराने से राज्य पलट डालूं और दाऊद के सिंहासन को इसराएल पर और यहूदाह पर दान से लेके ११ बिअरसबअ लों स्थिर करूं। तब वह अबिनैयिर को एक बात का उत्तर न दे सका क्योंकि वह उस्से डरता था॥

१२ और अबिनैयिर ने अपने विषय में दाऊद पास दूत से कहला भेजा कि देश किस का है मुझ से बाचा बांध और देख कि मेरा हाथ तेरे साथ होगा कि सारे इसराएल को तेरी ओर फेरूं। १३ तब वह बोला अच्छा मैं तुझ से बाचा बांधूंगा परन्तु तुझ से एक बात चाहता हूं और वह यह है कि तू मेरा मुंह न देखेगा जब लों पहिले साऊल की बेटी मीकल को अपने साथ लावे तब तू १४ मेरा मुंह देखेगा। और दाऊद ने साऊल के बेटे इसबुसत के पास यह कहके दूतों को भेजा कि मेरी पत्नी मीकल को जिसे मैं ने फिलिस्तियों की सौ खलड़ियां १५ देके बियाहा है सौंप दे। तब इसबुसत ने भेजके उस के पति लाईश के बेटे १६ फलतिएल से उसे मंगवाया। और उस का पति उस के पीछे पीछे बहूरीम लों रोता चला गया तब अबिनैयिर ने उसे कहा कि चल फिर जा तब वह फिर गया॥

१७ और अबिनैयिर ने इसराएल के प्राचीनों से संवाद करके कहा कि तुम तो पहिले ही चाहते थे कि दाऊद को अपना राजा करो। १८ और अब वैसा ही करो क्योंकि परमेश्वर ने दाऊद के विषय में कहा है कि मैं अपने दास दाऊद के हाथ से अपने इसराएली लोगों को फिलिस्तियों के और उन के सब बैरियों के हाथ से बचाऊंगा। १९ और अबिनैयिर ने बिनयमीनियों के कानों में भी कहा और फिर अबिनैयिर हबरून को चला कि दाऊद के कानों में भी कहे कि इसराएलियों को और बिनयमीनियों के सारे घराने को अच्छा लगा। २० सो अबिनैयिर हबरून में दाऊद पास आया और बीस जन उस के साथ थे और दाऊद ने अबिनैयिर का और उन लोगों का जो उस के साथ थे नेउंता किया। २१ और अबिनैयिर ने दाऊद से कहा कि अब मैं उठके जाऊंगा और सारे इसराएल को अपने प्रभु राजा के लिये एकट्ठा करूंगा जिसतें वे तुझ से बाचा बांधें और तू अपनी इच्छा के समान उन पर राज्य करे तब दाऊद ने अबिनैयिर को बिदा किया और वह कुशल से चला गया॥

२२ और देखो कि दाऊद के सेवक और यूअब एक जथा से बहुत सी लूट अपने साथ लेके आये परन्तु अबिनैयिर हबरून में दाऊद पास न था क्योंकि उस ने उसे बिदा किया था और वह कुशल से चला गया था। २३ जब यूअब और समस्त सेना के लोग जो उस के साथ थे पहुंचे तब उन्हों ने यह कहके यूअब से कहा कि नैयिर का बेटा अबिनैयिर राजा पास आया था और उस ने उसे फेर दिया और वह कुशल से चला गया। २४ तब यूअब राजा पास गया और बोला कि आप ने क्या किया देखिये अबिनैयिर आप के पास आया और आप ने उसे क्यों छोड़ दिया कि वह चल निकला।

२५ आप नैयिर के बेटे अबिनैयिर को जानते हैं कि वह आप को छल देने और आप के बाहर भीतर आने जाने से और सब जो आप करते हैं जान्ने को आया था॥

२६ तब यूअब ने दाऊद पास से निकलके अबिनैयिर के पीछे दूत भेजे जो उसे हासीरः के कुए से फेर लाये परन्तु

२७ दाऊद ने न जाना। और जब अबिनैयिर हबरून को फिर आया तब यूअब उसे फाटक की एक अलंग निराले में उसे बात करने को ले गया और वहां उस की पांचवीं पसुली के तले यहां लों गोदा कि वह मर गया क्योंकि उस ने उस के भाई असहेल को मारा था॥

२८ और उस के पीछे जब दाऊद ने सुना तब वह बोला कि मैं और मेरा राज्य परमेश्वर के आगे नैयिर के बेटे अबिनैयिर के लोहू से सदा निर्दोष हैं।

२९ वह यूअब के सिर पर और उस के पिता के समस्त घराने पर होवे और यूअब के घराने में एक भी ऐसा न हो जो प्रमेही अथवा कोढ़ी और जो लाठी टेकके न चले और तलवार से मारा न जाय और रोटी का अधीन न हो।

३० सो यूअब और उस के भाई अबिशै ने अबिनैयिर को घात किया क्योंकि उस ने उन के भाई असहेल को जिबऊन के बीच रण में मारा था॥

३१ और दाऊद ने यूअब को और उस के सारे साथियों को कहा कि अपने कपड़े फाड़ो और टाट ओढ़ो और अबिनैयिर के आगे आगे बिलाप करो और दाऊद राजा आप अर्थी के पीछे

३२ पीछे गया। और उन्हों ने अबिनैयिर को हबरून में गाड़ा और राजा अपना शब्द उठाके अबिनैयिर की समाधि पर रोया और सब लोग रोये॥

३३ और राजा ने अबिनैयिर पर यों बिलाप करके कहा कि अबिनैयिर मूढ़ की नाईं मूआ।

३४ तेरे हाथ बंधे न थे और तेरे पांवों में पैकाड़ियां पड़ी न थीं तू यों गिरा जैसा कोई दुष्टों के संतान के हाथ में पड़के गिरता है तब उस पर सब के सब दोहराके रोये।

३५ और जब सब लोग आये और चाहा कि दाऊद को दिन रहते कुछ खिलावें तब दाऊद ने किरिया खाके कहा कि यदि मैं सूर्य्य अस्त होने से आगे रोटी खाऊं अथवा कुछ चीखूं तो ईश्वर मुझ से ऐसा और इस्से अधिक करे।

३६ और सब लोगों ने सोचा और उन की दृष्टि में अच्छा लगा क्योंकि जो कुछ राजा करता था सो सब को अच्छा लगता था॥

३७ क्योंकि सब लोगों ने और सारे इसराएलियों ने उस दिन बूझा कि नैयिर के बेटे अबिनैयिर को मारना राजा की ओर से न था।

३८ और राजा ने अपने सेवकों से कहा कि क्या तुम नहीं जानते हो कि आज के दिन एक कुंअर और एक महाजन इसराएल में से गिर गया।

३९ और मैं आज के दिन दुर्बल हूं यद्यपि राज्याभिषिक्त हूं और ये लोग अर्थात् जरूयाह के बेटे मुझ से अति बली हैं परमेश्वर दुष्ट को उस की दुष्टता के समान फल देगा॥

चौथा पर्व्व।

१ और जब साऊल के बेटे ने सुना कि अबिनैयिर हबरून में मर गया तो उस की बांह टूट गई और सारे इसराएल व्याकुल हुए।

२ और साऊल के बेटे के दो जन थे जो जथा के प्रधान थे एक का नाम बअना और दूसरे का रैकाब दोनों बिनयमीन के संतान में बिअरोती रम्मान के बेटे थे क्योंकि बअरूत भी बिनयमीन में गिना जाता था।

३ तब

बिअरासी अज्ञतैन को भाग गये और आज के दिन लों वे वहीं रहते हैं॥

४ और साऊल के बेटे यूनतन का एक बेटा था जो पांव का लंगड़ा था जब साऊल और यूनतन को यज़रअएल का संदेश आया तब वह पांच बरस का था और उस की दाई उसे लेके भाग गई और उस ने भागने में शीघ्रता किई तब ऐसा हुआ कि वह गिर पड़ा और लंगड़ा हो गया और उस का नाम मिफ़िबूसत था॥

५ और रम्मान के बेटे बिअराती रैकाब और बअना आये और दिन के घाम के समय में इसबुसत के घर में पहुंचे और वह दो पहर को बिछौने पर लेटा था। ६ और वे घर के मध्य में ऐसा आये जैसा कि गोहूं लेने जाते हैं और उन्हों ने उस की पांचवीं पसुली के नीचे मारा और रैकाब और उस के भाई बअना बच निकले। ७ और जब वे घर में पैठे तब वह अपने शयनस्थान में बिछौने पर पड़ा था सो उन्हों ने उसे मारा और उसे घात किया और उस का सिर काटा और उस का सिर लिया और रात भर चौगान के मार्ग भागे चले गये। ८ और इसबुसत का सिर हबरून में दाऊद पास लाये और राजा को कहा कि देख यह साऊल के बेटे आप के बैरी इसबुसत का सिर है जो आप के प्राण का गाहक था सो परमेश्वर ने आज के दिन मेरे प्रभु राजा का पलटा साऊल और उस के बंश से लिया॥

९ तब दाऊद ने रैकाब और उस के भाई बअना को जो बिअरात रम्मान के बेटे थे उत्तर दिया और उन से कहा कि परमेश्वर के जीवन सों जिस ने मेरे आत्मा को समस्त बिपत्ति से छुड़ाया। १० जब किसी ने मुझे कहा कि देख साऊल मर गया और वह समझा कि सुसंदेश पहुंचाता है तब मैं ने उसे पकड़ा और उसे सिकलाग में घात किया यह मैं ने उसे उस के संदेश लाने का पलटा दिया। ११ कितना अधिक जब दुष्टों ने एक धर्म्मी जन को उस के घर में घुसके उस के बिछौने पर मारा तो क्या मैं अब उस का पलटा तुम से न लूंगा और तुम्हें पृथिवी पर से उठा न डालूंगा। १२ तब दाऊद ने अपने तरुणों को आज्ञा किई कि उन्हें मार डालें और उन के हाथ और पांव काट डालें और उन्हें हबरून के कुंड पर लटका देवें परन्तु इसबुसत के सिर को उन्हों ने लेके हबरून के बीच अबिनैयिर की समाधि में गाड़ दिया॥

पांचवां पर्व्व।

१ तब इसराएल की समस्त गोष्ठियां हबरून में दाऊद पास आईं और कहा कि देख हम तेरी हड्डी और तेरा मांस हैं। २ अगिले समय में भी जब साऊल हमारा राजा था तब तू इसराएल को बाहर भीतर ले आया करता था और परमेश्वर ने तुझे कहा है कि तू मेरे इसराएली लोगों को चरावेगा और तू इसराएल का प्रधान होगा। ३ सो इसराएल के सारे प्राचीन हबरून में राजा पास आये और दाऊद राजा ने हबरून में उन के साथ परमेश्वर के आगे बाचा बांधी और उन्हों ने दाऊद को इसराएल पर राज्याभिषेक किया। ४ जब दाऊद राज्य करने लगा तब तीस बरस का था और उस ने चालीस बरस राज्य किया। ५ उस ने हबरून में सात बरस छः मास यहूदाह पर राज्य किया और यरूसलम में सारे इसराएल और यहूदाह पर तेंतीस बरस॥

६ तब राजा और उस के लोग उस देश के बासी यबूसियों कने गये और

उन्हों ने दाऊद को कहा कि जब लों तू अंधों और लंगड़ों को दूर न करे यहां आने न पावेगा यह समझके कि दाऊद ७ यहां न आ सकेगा। तिस पर भी दाऊद ने सैहून का गढ़ ले लिया वही दाऊद ८ का नगर हुआ। और दाऊद ने उस दिन कहा कि जो कोई पनाले लों पहुंचे और यबूसियों और लंगड़ों और अंधों को जिस्से दाऊद को घिन है मारे सोई सेना का प्रधान होगा इस लिये यह कहावत कहते हैं कि अंधे ९ और लंगड़े घर में पैठने न पावेंगे। और दाऊद गढ़ में रहा और उस ने उस का नाम दाऊद का नगर रक्खा और दाऊद ने मिल्लो की चारों ओर और उस के १० भीतर बनाये। और दाऊद बढ़ता गया और परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर उस के साथ था॥

११ तब सूर के राजा हीराम ने देवदारु और बढ़ई और पत्थर के गढ़वैये दूतों के साथ दाऊद पास भेजे और उन्हों ने १२ दाऊद के लिये भवन बनाया। और दाऊद को सूझ पड़ा कि परमेश्वर ने मुझे इसराएल पर राजा स्थिर किया और मेरे राज्य को अपने लोग इसराएल के लिये स्थिर किया॥

१३ और दाऊद ने हबरून से आके यरूसलम में और सहेलियां और पत्नियां किईं और दाऊद के और भी बेटा बेटी १४ उत्पन्न हुए। और उस के उन बेटों के नाम जो यरूसलम में उत्पन्न हुए ये थे शमूअ और शोबाब और नातन और १५ सुलेमान। और इबहार और इलीसूअ: १६ और नफग और यफीअ। और इलिसम: और इलयद: और इलिफलत॥

१७ परन्तु जब फिलिस्तियों ने सुना कि उन्हों ने दाऊद को अभिषेक करके इसराएल का राजा किया तब सारे फिलिस्ती दाऊद को खोज को चढ़ आये और दाऊद सुनके गढ़ में उतरा। और फि- १८ लिस्ती आये और रिफाइम की तराई में फैल गये। तब दाऊद ने परमेश्वर १९ से यह कहके बूझा कि मैं फिलिस्तियों पर चढ़ जाऊं क्या तू उन्हें मेरे बश में कर देगा तब परमेश्वर ने दाऊद से कहा कि चढ़ जा क्योंकि मैं निःसंदेह फिलिस्तियों को तेरे हाथ में सौंपूंगा। तब दाऊद बअलफरसीन में आया और २० वहां उन्हें मारके कहा कि परमेश्वर मेरे आगे मेरे बैरियों पर ऐसा टूट पड़ा जैसा पानियों का दरार इस लिये उस ने उस स्थान का नाम बअलफरासीन रक्खा। और उन्हों ने अपनी मूर्त्तिन २१ को वहीं छोड़ा और दाऊद और उस के लोग उन्हें उठा ले गये॥

और फिलिस्ती फिर चढ़ आये और २२ रिफाइम की तराई में फैल गये। और २३ जब दाऊद ने परमेश्वर से बूझा तब उस ने कहा कि तू मत चढ़ जा परन्तु उन के पीछे से घूम और तूत के पेड़ों के सान्ने होके उन पर जा पड़। और २४ यों होवे कि जब तू तूत के पेड़ों के ऊपर जाने का शब्द सुने तो आप को चौकस कर क्योंकि तब परमेश्वर तेरे आगे आगे चलेगा कि फिलिस्तियों की सेना को मारे। और जैसा कि परमेश्वर २५ ने उसे आज्ञा किई थी दाऊद ने वैसा ही किया और फिलिस्तियों को जिबअ से लेके जजर लों मारा॥

छठवां पर्ब्ब।

फिर दाऊद ने इसराएल में से तीस १ सहस्र चुने हुओं को एकट्ठा किया। और २ दाऊद सारे लोगों को लेके यहूदाह के बअली से चला कि वहां से ईश्वर की मंजूषा को लावे जिस का नाम सेनाओं का परमेश्वर कहाता है जो करोबियों में रहता है॥

३ और उन्हों ने ईश्वर की मंजूषा को नई गाड़ी पर धराया और उसे अबिनदाब के घर से जो जिबअ में था निकाल लाये और उस नई गाड़ी को अबिनदाब के बेटों ने जो उज्ज: और ४ अखयू थे हांका। और वे अबिनदाब के घर से जो जिबअ में था उसे निकाल लाये और ईश्वर की मंजूषा के साथ साथ गये और अखयू मंजूषा के आगे ५ आगे चला। और दाऊद और इसराएल के सारे घराने सरो की लकड़ी के सब भांति के बाजे जैसे कि बीखा और सारंगियां और तबले और तंबूरे और झांझ लेके परमेश्वर के आगे आगे बजाते चले॥

६ और जब वे नकून के खलिहान पर पहुंचे तब उज्ज: ने हाथ बढ़ाके ईश्वर की मंजूषा को थाम लिया क्योंकि बैलों ७ ने उसे हिलाया था। तब परमेश्वर का क्रोध उज्ज: पर भड़का और ईश्वर ने उसे उस की ढिठाई के कारण मारा और वह ईश्वर की मंजूषा के लग मर ८ गया। और इस कारण कि परमेश्वर ने उज्ज: पर दरार किया दाऊद उदास हुआ और उस ने उस स्थान का नाम ९ आज लों परजउज्ज: रक्खा। और दाऊद उस दिन परमेश्वर से डरा और बोला कि परमेश्वर की मंजूषा मुझ पास क्योंकर १० आवेगी। और दाऊद ने न चाहा कि परमेश्वर की मंजूषा को अपने नगर में ले जाके अपने पास रक्खे परन्तु दाऊद उसे एक अलंग आबिदअदूम ११ जाती के घर ले गया। और परमेश्वर की मंजूषा आबिदअदूम जाती के घर में तीन मास लों रही और परमेश्वर ने आबिदअदूम को और उस के सारे घराने को आशीस दिया॥

१२ और यह दाऊद राजा से कहा गया कि परमेश्वर ने आबिदअदूम को और उस की हर एक वस्तु को अपनी मंजूषा के लिये आशीस दिया तब दाऊद गया और ईश्वर की मंजूषा को आबिदअदूम के घर से अपने नगर में आनन्द से चढ़ा १३ लाया। और यों हुआ कि जब परमेश्वर की मंजूषा के उठवैये छः डग चले तब दाऊद ने बैल और पले हुओं को १४ बलि किया। और दाऊद परमेश्वर के आगे सूती अफूद कटि में बांधे हुए १५ अपनी शक्ति भर नाचते नाचते चला। और दाऊद और इसराएल के सारे घराने परमेश्वर की मंजूषा को ललकारते और नरसिंगे के शब्द के साथ ले आये॥

१६ और ज्यों परमेश्वर की मंजूषा दाऊद के नगर में पहुंची तब साऊल की बेटी मीकल ने खिड़की में से दृष्टि किई और दाऊद राजा को परमेश्वर के आगे उछलते और नाचते देखा और उस ने अपने मन में उस की निन्दा किई॥

१७ और वे परमेश्वर की मंजूषा को भीतर लाये और उसे उस के स्थान पर उस तंबू के मध्य जो दाऊद ने उस के लिये खड़ा किया था रख दिया और दाऊद ने बलिदान की भेंटें और कुशल की भेंटें परमेश्वर के आगे चढ़ाईं। १८ और जब दाऊद बलिदान की भेंटें और कुशल की भेंटें चढ़ा चुका तब उस ने लोगों को सेनाओं के परमेश्वर के नाम १९ से आशीस दिया। और उस ने सारे लोगों को अर्थात् इसराएल की सारी मंडली को क्या स्त्री क्या पुरुष हर एक को एक एक रोटी और एक एक बोटी और एक एक दाख की टिकिया दिई और समस्त लोग अपने अपने घर को चले गये॥

२० जब दाऊद अपने घराने को आशीस देने को फिरा तब साऊल की बेटी

मीकल दाऊद की भेंट को निकली और बोली कि इसराएल का राजा आज क्या ही ऐश्वर्य्यवान था जिस ने आज अपने सेवकों की दासियों की आंखों में आप को ऐसा उघारा जैसा कि तुच्छ जन आप को निर्लज्जता से उघारता है।
२१ तब दाऊद ने मीकल से कहा कि यह परमेश्वर के आगे था जिस ने मुझे तेरे पिता के और उस के सारे घराने के आगे चुना और अपने इसराएल लोग पर मुझे आज्ञाकारी किया इस लिये मैं
२२ परमेश्वर के आगे लीला करूंगा। और मैं इस्से भी अधिक तुच्छ हूंगा अपनी दृष्टि में नीचा हूंगा और जिन दासियों के विषय में तू ने कहा है मैं
२३ उन से प्रतिष्ठा पाऊंगा। इस लिये साऊल की बेटी मीकल अपने जीवन भर निर्बंश रही॥

सातवां पर्व्व।

१ और ऐसा हुआ कि जब राजा घर में बैठा था और परमेश्वर ने उसे उस के सारे बैरियों से चारों ओर चैन दिया।
२ तब राजा ने नातन भविष्यद्वक्ता को कहा कि देख मैं देवदारु के घर में रहता हूं परन्तु ईश्वर की मंजूषा ओझलों
३ में रहती है। तब नातन ने राजा से कहा कि जा जो कुछ तेरे मन में है उसे कर क्योंकि परमेश्वर तेरे साथ है॥
४ और उसी रात ऐसा हुआ कि परमेश्वर का बचन यह कहके नातन को
५ पहुंचा। कि जा और मेरे सेवक दाऊद से कह कि परमेश्वर यों कहता है कि क्या मेरे निवास के लिये तू एक घर
६ बनावेगा। क्योंकि जब से इसराएल के संतान को मिस्र से निकाल लाया मैं ने तो आज के दिन लों घर में बास न किया परन्तु तंबू में और डेरे में फिरा
७ किया। जहां जहां मैं सारे इसराएल के संतान के साथ फिरता रहा क्या मैं ने इसराएल की किसी गोष्ठियों से कहा जिसे मैं ने आज्ञा किई कि मेरे इसराएल लोगों को चरावे कि तुम मेरे लिये देवदारु का घर क्यों नहीं बनाते।
८ सो अब तू मेरे सेवक दाऊद से कह कि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि मैं ने तुझे भेड़शाले में से भेड़ का पीछा करने से लेके अपने इसराएली लोगों पर अध्यक्ष
९ किया। और जहां जहां तू गया मैं तेरे साथ साथ रहा और तेरे सारे बैरियों को तेरे साम्ने से मार गिराया है और मैं ने जगत के महान लोगों के नाम के समान तेरा नाम बढ़ाया है।
१० और मैं अपने इसराएली लोगों के लिये एक स्थान ठहराऊंगा और उन्हें लगाऊंगा जिसतें वे अपने ही स्थान में बसें और फिर अस्थिर न होवें और दुष्टता के बंश आगे की नाईं उन्हें न सतावें।
११ और उस समय की नाईं जब से मैं ने न्यायियों को अपने इसराएली लोगों पर ठहराया और तुझे तेरे सारे बैरियों से चैन दिया परमेश्वर तुझे यह भी कहता है कि मैं
१२ तेरे लिये घर बनाऊंगा। जब तेरे दिन पूरे होंगे और तू अपने पितरों के साथ शयन करेगा तब मैं तेरे पीछे तेरे बंश को उभारूंगा जो तेरे ही उदर से होगा
१३ और उस के राज्य को स्थिर करूंगा। मेरे नाम के लिये वही घर बनावेगा और मैं उस के राज्य के सिंहासन को सदा लों
१४ स्थिर करूंगा। मैं उस का पिता हूंगा और वह मेरा बेटा होगा यदि वह अपराध करे तो मैं उसे मनुष्यों की छड़ी से और मनुष्यों के संतान की मार से ताड़ना
१५ करूंगा। परन्तु मेरी दया उस्से अलग न होगी जिस रीति से कि मैं ने साऊल से उठा लिई जिसे मैं ने तेरे आगे से अलग
१६ किया। परन्तु तेरा घर और तेरा राज्य

तेरे आगे सनातन लों स्थिर रहेगा तेरा
१७ सिंहासन नित्य स्थिर रहेगा। नातन ने इन समस्त बचनों के समान और इस समस्त दर्शन के समान वैसा ही दाऊद से कहा॥

१८ तब दाऊद राजा भीतर गया और परमेश्वर के आगे बैठके कहा कि हे प्रभु परमेश्वर मैं कौन और मेरा घर क्या कि तू ने मुझे यहां लों पहुंचाया।
१९ और तेरी दृष्टि में हे प्रभु परमेश्वर यह भी छोटी बात थी परन्तु तू ने अपने सेवक के घर के विषय में आगे को बहुत दिन के लिये कहा और हे प्रभु परमेश्वर
२० क्या मनुष्य का यह व्यवहार है। और दाऊद तुझे क्या कह सक्ता है क्योंकि हे प्रभु परमेश्वर तू अपने सेवक को
२१ जानता है। अपने बचन के कारण और अपने मन के समान तू ने ये सारे महाकार्य्य किये कि अपने सेवक को जनावे।
२२ इस कारण हे परमेश्वर ईश्वर तू महान है क्योंकि तेरे समान कोई नहीं और तुझे छोड़ कोई ईश्वर नहीं उन सभों के समान जो हम ने अपने कानों से सुना
२३ है। और तेरे इसराएल लोग के समान पृथिवी में कौन सी जाति है जिसे अपना ही लोग बनाने के लिये ईश्वर छुड़ाने गया कि अपना नाम करे और जिसतें तुम्हारे लिये बड़े बड़े और भयंकर कार्य्य अपने देश के लिये अपने लोगों के आगे करे जिन्हें तू ने मिस्र से जातिगणों से और उन के देवतों से
२४ छुड़ाया। क्योंकि तू ने अपने लिये अपने इसराएल लोग को दृढ़ किया कि अपने लिये सनातन के लोग होवें और हे
२५ परमेश्वर तू उन का ईश्वर हुआ। और अब हे परमेश्वर ईश्वर उस बचन को जो तू ने अपने सेवक के विषय में और उस के घराने के विषय में कहा है सदा लों स्थिर रख और अपने कहने के समान
२६ कर। और यह कहके तेरा नाम सनातन लों बढ़ जाय कि सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर और तेरे सेवक दाऊद का घर तेरे आगे स्थिर होवे।
२७ क्योंकि हे सेनाओं के परमेश्वर इसराएल के ईश्वर तू ने अपने सेवक के कान यह कहके खोले हैं कि मैं तेरे लिये घर बनाऊंगा सो तेरे सेवक ने अपने मन में पाया कि तेरे आगे यह प्रार्थना करे।
२८ और अब हे प्रभु परमेश्वर तू वही ईश्वर है और तेरे बचन सच्चे हैं और तू ने अपने सेवक से इस भलाई की बाचा
२९ दिई है। सो अब अनुग्रह करके अपने सेवक के घराने पर आशीस दे जिसतें वह सनातन लों तेरे आगे बना रहे क्योंकि हे प्रभु परमेश्वर तू ने कहा है सो तेरे आशीस से तेरे सेवक का घर सनातन लों आशीस पावे॥

आठवां पर्व्व।

१ और इस के पीछे ऐसा हुआ कि दाऊद ने फिलिस्तियों को मारा और उन्हें बश में किया और दाऊद ने मिथेगअम्मः फिलिस्तियों के हाथ से लिया॥

२ और उस ने मोअब को मारा और उन्हें भूमि पर गिराके रस्सी से नापा अर्थात् दो रस्सियों से बधन करने को और एक पूरी रस्सी से जीता रखने को और मोअबी दाऊद के सेवक हुए और भेंट लाये॥

३ और दाऊद ने सूबः के राजा रिहोब के बेटे हददअजर को भी जब कि वह अपना सिवाना छुड़ाने को फुरात नदी
४ को गया मार लिया। और दाऊद ने उस के एक सहस्र रथ और सात सौ घोड़चढ़े और बीस सहस्र पैदल लिये और दाऊद ने समस्त रथों के घोड़ों की घोड़नसें काट डालीं परन्तु उन में से सौ

५ रथों के लिये रख छोड़ा। और जब कि दमिशक के सुरियानी हददअजर सूबः के राजा की सहाय को आये तब दाऊद ने सुरियानियों में से बाईस सहस्र लोग ६ मार डाले। तब दाऊद ने दमिशक के सुरिया में चौकियां बैठाईं और सुरियानी दाऊद के सेवक हुए और भेंट लाये और जहां कहीं दाऊद गया परमेश्वर ने उस ७ की रक्षा किई। और दाऊद ने हदद-अजर के सेवकों की सोने की ढालें लेके ८ यरूसलम में पहुंचाईं। और बतह से और बिअराती से जो हददअजर के नगर हैं दाऊद राजा बहुत सा तांबा लाया॥

९ और जब कि हमात के राजा तुगी ने सुना कि दाऊद ने हददअजर की १० सारी सेना मारी। तब तुगी ने अपने बेटे यूराम को दाऊद राजा पास भेजा और उस का कुशल पूछा और बधाई दिई इस कारण कि उस ने संग्राम करके हददअजर को मार डाला क्योंकि हददअजर तुगी से लड़ा करता था और अपने हाथ में चांदी के और सोने के ११ और तांबे के पात्र लाये। दाऊद राजा ने उन्हें उस चांदी और सोने सहित जो उस ने सब जातिगणों से जिन्हें उस ने १२ बश में किया। अर्थात् सुरिया से और मोअब से और अम्मून के संतान से और फिलिस्तियों से और अमालीक से और सूबः के राजा रिहोब के बेटे हददअजर की लूट में ले लिया था परमेश्वर को समर्पण किया॥

१३ और जब दाऊद अठारह सहस्र सुरियानियों को नोन की तराई में मारके फिर आया तब उस की कीर्त्ति फैली। १४ और उस ने अदूम में चौकियां बैठाईं और सारे अदूम में चौकियां और सारे अदूमी भी दाऊद के सेवक हुए और जहां कहीं दाऊद गया परमेश्वर ने उस की रक्षा किई॥

१५ और दाऊद सारे इसराएल पर राज्य करता रहा और दाऊद अपनी समस्त प्रजा के लिये बिचार और न्याय करता था। १६ और जरूयाह का बेटा यूआब सेना पर था और अखिलूद का बेटा यहूसफत स्मारक था। १७ अखितूब का बेटा सदूक और अबियतर का बेटा अखिमलिक याजक थे और शिरायाह लेखक था। १८ और यहूयदः का बेटा बिनायाह करीती और पलीती पर था और दाऊद के बेटे प्रधान आज्ञाकारी थे॥

नवां पर्व्व।

१ तब दाऊद ने कहा कि अब भी साऊल के घराने में से कोई बचा है कि मैं उस पर यूनतन के लिये कृपा करूं। २ और साऊल के घराने का एक सेवक सीबा नाम था और जब उन्हों ने उसे दाऊद पास बुलाया तब राजा ने उसे कहा कि तू सीबा है और वह बोला मैं आप का सेवक। ३ तब राजा ने पूछा कि साऊल के घराने में से और कोई भी है जिसतें मैं उस पर ईश्वरीय कृपा दिखाऊं और सीबा ने राजा से कहा कि अब लों यूनतन का एक लंगड़ा बेटा है। ४ तब राजा ने उसे पूछा वह कहां है और सीबा ने राजा से कहा कि देखिये वह अमिएल के बेटे मकीर के घर लोदीबार में है। ५ तब दाऊद राजा ने भेजके अमिएल के बेटे मकीर के घर से जो लोदीबार में है उसे मंगवा लिया॥

६ और जब साऊल के बेटे यूनतन का बेटा मिफिबूसत दाऊद पास पहुंचा तब उस ने औंधे गिरके दण्डवत किई तब दाऊद ने कहा कि मिफिबूसत और उस ने उत्तर दिया देखिये तेरा सेवक है। ७ और दाऊद ने उसे कहा कि मत डर

क्योंकि निश्चय तेरे पिता यूनतन के लिये तुझ पर अनुग्रह करूंगा और तेरे पिता साऊल की सारी भूमि तुझे फेर देऊंगा और तू मेरे मंच पर नित भोजन
८ किया कर। तब उस ने दण्डवत किई और कहा कि तेरा सेवक क्या कि आप मुझ से मरे हुए कुत्ते पर दृष्टि करें॥

९ तब राजा ने साऊल के सेवक सीबा को बुलाया और उसे कहा कि मैं ने सब जो कुछ कि साऊल का और उस के घराने का था तेरे स्वामी के बेटे
१० को दे दिया है। सो तू अपने बेटों और सेवकों समेत उस के लिये भूमि जोत और ले आ जिसतें तेरे स्वामी के खाने को रहे परन्तु मिफिबूसत जो तेरे स्वामी का बेटा है नित मेरे मंच पर भोजन किया करेगा और सीबा के पंदरह बेटे
११ और बीस सेवक थे। तब सीबा ने राजा से कहा कि सब जो मेरे प्रभु राजा ने अपने सेवक को कहा सो तेरा सेवक करेगा परन्तु मिफिबूसत जो है सो मेरे मंच पर राजपुत्रों में से एक के समान
१२ खायगा। और मिफिबूसत का एक छोटा बेटा था जिस का नाम मीका था और सब जितने कि सीबा के घर में रहते
१३ थे मिफिबूसत के सेवक थे। सो मिफिबूसत यरूसलम में रहा क्योंकि वह राजा के मंच पर सदा भोजन करता था और वह अपने दोनों पांवों से लंगड़ा था॥

दसवां पर्ब्ब।

१ और उस के पीछे ऐसा हुआ कि अम्मून के संतान का राजा मर गया और उस का बेटा हनून उस के राज्य पर
२ बैठा। तब दाऊद ने कहा कि मैं नाहस के बेटे हनून पर अनुग्रह करूंगा जैसा उस के पिता ने मुझ पर अनुग्रह किया सो दाऊद ने अपने सेवकों को भेजा कि उस के पिता के लिये उसे शांति देवें और दाऊद के सेवक अम्मून के संतान के देश में पहुंचे। और अम्मून के संतान
३ के अध्यक्षों ने अपने प्रभु हनून को कहा कि तेरी दृष्टि में क्या दाऊद तेरे पिता की प्रतिष्ठा करता है कि उस ने शांतिदायकों को तेरे पास भेजा है क्या दाऊद ने अपने सेवकों को तेरे पास इस लिये नहीं भेजा है कि नगर को देख लेवें और उस
४ का भेद लेवें और उसे नाश करें। तब हनून ने दाऊद के सेवकों को पकड़ा और हर एक की आधी दाढ़ी मुंड़वाई और उन के वस्त्रों को बीच से अर्थात् पुट्ठे
५ लों काटा और उन्हें फेर भेजा। सो दाऊद को संदेश पहुंचा और उस ने उन्हें आगे से लेने के लिये लोग भेजे इस कारण कि वे अत्यंत लज्जित थे सो राजा ने कहा कि जब लों तुम्हारी दाढ़ियां बढ़ें यरीहो में रहो उस के पीछे चले आओ॥

६ और अम्मून के संतान ने ज्यों देखा कि हम दाऊद के आगे दुर्गंध हैं तो अम्मून के संतान ने भेजके बैतरहूब के सुरियानियों के और सूबः के सुरियानियों के बीस सहस्र पैदल और मअकः के राजा से सहस्र जन और तूब के बारह सहस्र जन भाड़े पर लिये॥

७ और दाऊद ने यह सुनके यूअब और
८ सूरों की सारी सेना को भेजा। तब अम्मून के संतान निकले और नगर के फाटक की पैठ में युद्ध के लिये पांती बांधी और सूबः के और रहूब के सुरियानी और तूब और मअकः आप ही
९ आप चौगान में थे। जब यूअब ने अपने आगे पीछे लड़ाई का साम्ना देखा तब उस ने इसराएल के चुने हुए में से चुन लिये और सुरियानियों के साम्ने पांती
१० बांधी। और उबरे हुए लोगों को अपने भाई अबिशै को सौंपा कि अम्मून के

११ संतान के आगे पांती बांधे। और कहा कि यदि सुरियानी मुझ पर प्रबल होवें तो तू मेरी सहाय कीजियो परन्तु यदि अम्मून के संतान तुझ पर प्रबल होवें
१२ तो मैं आके तेरी सहाय करूंगा। ढाढ़स कर और अपने लोगों के लिये और अपने ईश्वर के नगरों के लिये पुरुषार्थ कर और परमेश्वर जो भला जाने सो करे॥
१३ तब यूअब और उस के साथ के लोग सुरियानियों के सन्मुख बढ़े और वे उस
१४ के आगे से भागे। और अम्मून के संतान भी यह देखके कि सुरियानी भागे वे भी अबिशै के आगे से भागे और नगर में घुसे सो यूअब अम्मून के संतान के पीछे से फिरके यरूसलम को आया॥
१५ और जब सुरियानियों ने देखा कि हम इसराएल के आगे मारे गये तब वे
१६ एकट्ठे बटुर गये। और हददअजर लोग भेजके नदी पार से सुरियानियों को ले आया और वे हीलम में आये और साबिक जो हददअजर की सेना का प्रधान था
१७ उन के आगे आगे चला। और जब दाऊद को कहा गया तब वह सारे इसराएलियों को एकट्ठा करके यरदन पार उतरा और हीलम को आया और सुरियानी ने दाऊद के सन्मुख पांती
१८ बांधी और उस्से लड़े। और सुरियानी इसराएल के साम्ने से भागे और दाऊद ने सात सौ रथों के सुरियानी और चालीस सहस्र घोड़चढ़े मारे और उन की सेना के प्रधान साबिक को मार लिया और
१९ वह वहीं मर गया। और जब उन राजाओं ने जो हददअजर के सेवक थे देखा कि वे इसराएल के आगे मारे गये तब उन्हों ने इसराएलियों से मिलाप किया और उन की सेवा किई सो सुरियानी फेर अम्मून के संतान की सहाय करने को डरे॥

ग्यारहवां पर्ब्ब।

१ और जब बरस बीत गया कि राजा लड़ाई पर चढ़ते हैं यों हुआ कि दाऊद ने अपने सेवकों को और समस्त इसराएल को यूअब के साथ भेजा और उन्हों ने अम्मून के संतान को नाश किया और रब्बः को घेर लिया परन्तु दाऊद यरूसलम में रह गया॥
२ और एक संध्याकाल को यों हुआ कि दाऊद अपने बिछौने पर से उठा और राजभवन की छत पर टहलने लगा और वहां से उस ने एक स्त्री को स्नान करते देखा और वह स्त्री देखने में अत्यंत
३ सुंदरी थी। और दाऊद ने भेजके उस स्त्री का खोज किया और किसी ने कहा कि क्या वह इलिआम की बेटी बितसबअ
४ ऊरियाह हित्ती की पत्नी नहीं है। और दाऊद ने दूत भेजके उसे बुला लिया और वह दाऊद पास आई सो उस ने उस्से रति किया क्योंकि वह अपनी अपवित्रता से पवित्र हुई थी फिर वह
५ अपने घर को चली गई। और वह स्त्री गर्भिणी हुई और दाऊद को कहला
६ भेजा कि मैं गर्भिणी हूं। और दाऊद ने यूअब को कहला भेजा कि हित्ती ऊरियाह को मुझ पास भेज दे सो यूअब ने ऊरियाह को दाऊद पास भेज दिया॥
७ और जब ऊरियाह उस पास आया तब दाऊद ने यूअब का और लोगों का कुशल क्षेम और लड़ाई का समा-
८ चार पूछा। तब दाऊद ने ऊरियाह को कहा कि अपने घर जा और अपने पांव धो तब ऊरियाह राजा के घर से निकला और उस के पीछे पीछे राजा के घर से
९ भोजन गया। पर ऊरियाह राजा के घर की डेवढ़ी पर अपने प्रभु के सेवकों के साथ सो रहा और अपने घर को न

१० गया। और जब दाऊद को कहा गया कि ऊरियाह अपने घर नहीं गया तब दाऊद ने ऊरियाह से कहा कि क्या तू यात्रा से नहीं आया फिर तू अपने घर ११ क्यों न गया। और ऊरियाह ने दाऊद से कहा कि मंजूषा और इसराएल और यहूदाह तंबुओं में रहते हैं और मेरा प्रभु यूअब और मेरे प्रभु के सेवक खुले चौगान में पड़े हुए हैं और मैं क्योंकर अपने घर जाऊं और खाऊं पीऊं और अपनी स्त्री के साथ सो रहूं तेरे जीवन सों और तेरे प्राण के जीवन सों मैं ऐसा न करूं-१२ गा। तब दाऊद ने ऊरियाह को कहा कि आज के दिन भी यहीं रह जा और कल मैं तुझे भेजूंगा सो ऊरियाह उस दिन भी प्रात:काल लों यरूसलम में रह गया। १३ तब दाऊद ने उसे बुलाके अपने साम्ने खिलाया पिलाया और उसे उन्मत्त किया और सांझ को वह बाहर जाके अपने प्रभु के सेवकों के साथ अपने बिछौने पर सो रहा परन्तु अपने घर न गया॥

१४ और प्रात:काल यों हुआ कि दाऊद ने यूअब को चिट्ठी लिखके ऊरियाह के १५ हाथ भेजी। और उस ने चिट्ठी में यह लिखा कि ऊरियाह को भारी लड़ाई के आगे करो और उस के पीछे से हट जाओ जिसतें वह मारा जाय॥

१६ और ऐसा हुआ कि जब यूअब ने उस नगर का भेद ले लिया तो उस ने ऊरियाह को ऐसे स्थान में ठहराया जहां १७ वह जानता था कि सूरमा हैं। और उस नगर के लोग निकले और यूअब से लड़े और दाऊद के सेवकों में से गिरे और हित्ती ऊरियाह भी मारा गया॥

१८ तब यूअब ने युद्ध का समस्त समा-१९ चार दाऊद को कहला भेजा। और दूत को आज्ञा किई कि जब तू राजा से २० युद्ध का समाचार कह चुके। तो यदि ऐसा हो कि राजा का क्रोध भड़के और वह तुझे कहे कि जब तुम लड़ाई पर चढ़े तो नगर के निकट क्यों आये क्या तुम न जानते थे कि वे भीत पर से मारेंगे। यरुब्बसत के बेटे अबिमलिक २१ को किस ने मारा एक स्त्री ने चक्की का पाट भीत पर से उस पर नहीं दे मारा कि वह तैबीज में मरा तुम भीत के नीचे क्यों गये थे तब कहियो कि तेरा सेवक हित्ती ऊरियाह भी मारा गया॥

सो दूत बिदा हुआ और आया और २२ जो कुछ कि यूअब ने कहला भेजा था सो दाऊद को सुनाया। और दूत ने २३ दाऊद से कहा कि लोग हम पर प्रबल हुए और वे चौगान में हम पर निकले और हम उन्हें रगेदे हुए फाटक की पैठ लों चले गये। तब धनुषधारियों ने भीत २४ पर से तेरे सेवकों को बाण से मारा और राजा के कितने ही सेवक मारे गये और आप का सेवक हित्ती ऊरियाह भी मारा गया। तब दाऊद ने दूत से २५ कहा कि यूअब को जाके उभाड़ और कह कि यह बात तेरी दृष्टि में बुरी न लगे क्योंकि खड्ग जैसा एक को वैसा दूसरे को काटता है तू नगर के साम्ने संग्राम को दृढ़ कर और उसे ढा दे॥

और ऊरियाह की स्त्री अपने पति २६ ऊरियाह का मरना सुनके बिलाप करने लगी। और जब शोक के दिन बीत २७ गये तब दाऊद ने उसे अपने घर बुलवा लिया और वह उस की पत्नी हुई और वह उस के लिये बेटा जनी परन्तु जो दाऊद ने किया सो परमेश्वर की दृष्टि में बुरा था॥

बारहवां पर्ब्ब।

और परमेश्वर ने नातन को दाऊद १ पास भेजा और उस ने उस पास आके उस्से कहा कि एक नगर में दो जन थे

२ एक तो धनी और दूसरा कंगाल। उस धनी के पास बहुत से झुंड और ढोर ३ थे। परन्तु उस कंगाल के पास भेड़ की एक पठिया को छोड़ कुछ न था उसे उस ने मोल लिया और पाला था और वह उस के और उस के बालबच्चों के साथ बढ़ी उसी ही का कौर खाती और उसी ही के कटोरे से पीती थी और उस की गोद में सोती थी और उस के ४ लिये कन्या के समान थी। और उस धनवान के पास एक पथिक आया तब उस ने उस के लिये सिद्ध करने को अपने ही झुंड और अपने ही ढोर को बचा रक्खा परन्तु उस कंगाल की पठिया लिई और उस पुरुष के लिये जो उस पास आया था पकवाई॥

५ तब दाऊद का क्रोध उस पुरुष पर बहुत भड़का और उस ने नातन से कहा कि परमेश्वर के जीवन सों जिस पुरुष ने यह काम किया सो निश्चय मार ६ डालने के योग्य है। और वह पठिया चौगुनी उसे फेर दे इस कारण कि उस ने ऐसा काम किया और कुछ मया न किई॥

७ तब नातन ने दाऊद से कहा कि वह पुरुष तू ही है परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि मैं ने तुझे इसराएल पर राज्याभिषेक किया है और मैं ने तुझे साऊल के हाथ से ८ छुड़ाया। और मैं ने तेरे स्वामी का घर तुझे दिया और तेरे स्वामी की स्त्री को तेरी गोद में दिया और इसराएल और यहूदाह का घराना तुझे दिया और यदि यह थोड़ा था तो मैं तुझे ऐसी ९ वैसी वस्तु भी देता। तू ने क्यों परमेश्वर की आज्ञा की निन्दा किई कि उस की दृष्टि में बुराई करे तू ने हित्ती ऊरियाह को खड्ग से मरवाया और उस की पत्नी को लेके अपनी पत्नी किया और उसे अम्मून के संतान के खड्ग से १० मरवा डाला। इस लिये अब तेरे घर से खड्ग कधी जाता न रहेगा इस कारण कि तू ने मुझे तुच्छ किया और हित्ती ऊरियाह की पत्नी को लेके अपनी पत्नी ११ किया। परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं तेरे ही घर से तुझ पर बुराई उभारूंगा और मैं तेरी आंखों के आगे तेरी पत्नियों को लेके तेरे परोसी को देऊंगा और वह इस सूर्य्य के साम्ने तेरी १२ पत्नियों के साथ अकर्म्म करेगा। क्योंकि तू ने छिपके किया पर मैं यह सारे इसराएल के साम्ने और सूर्य्य के साम्ने करूंगा॥

१३ तब दाऊद ने नातन से कहा कि मैं ने परमेश्वर का अपराध किया और नातन ने दाऊद से कहा कि परमेश्वर ने भी तेरे अपराध को दूर किया तू न १४ मरेगा। तथापि इस काम के कारण से तू ने परमेश्वर के वैरियों को उस की अपनिन्दा करने का कारण दिया लड़का भी जो तेरे लिये उत्पन्न है निश्चय मर जावेगा॥

१५ सो नातन अपने घर को गया और परमेश्वर ने उस लड़के को जो ऊरियाह की पत्नी दाऊद के लिये जनी थी मारा १६ कि वह बड़ा रोगी हुआ। इस लिये दाऊद ने उस लड़के के लिये ईश्वर से बिनती किई और ब्रत रक्खा और भीतर १७ जाके सारी रात भूमि पर पड़ा रहा। और उस के घर के प्राचीन उसे भूमि पर से उठाने को आये परन्तु उस ने न चाहा और न उन के साथ भोजन किया। १८ और सातवें दिन वह लड़का मर गया और दाऊद के सेवक उसे कहने से डरे कि लड़का मर गया क्योंकि उन्हों ने कहा कि देखो जब लड़का जीता ही

था तब हम ने उसे कहा और उस ने हमारी बात न मानी और यदि हम उसे कहें कि लड़का मर गया फेर वह आप
१९ को कैसा कष्ट देगा। पर जब दाऊद ने देखा कि उस के सेवक फुसफुसा रहे हैं तब उस ने बूझा कि लड़का मर गया इस लिये दाऊद ने अपने सेवकों को कहा कि क्या लड़का मर गया और वे
२० बोले कि मर गया। तब दाऊद भूमि पर से उठा और नहाया और सुगंध लगाया और अपना वस्त्र बदला और परमेश्वर के घर में आया और दण्डवत किई तब वह अपने घर गया और जब उस ने चाहा तब उस के आगे रोटी
२१ धरी गई और उस ने खाई। तब उस के सेवकों ने उसे कहा कि आप ने यह कैसा किया है जब लों लड़का जीता था आप ने व्रत करके बिलाप किया परन्तु जब लड़का मर गया तब उठके
२२ रोटी खाई। और उस ने कहा कि जब लों लड़का जीता ही था तब लों मैं ने व्रत करके बिलाप किया क्योंकि मैं ने कहा कि कौन जानता है कि ईश्वर मुझ पर अनुग्रह करेगा जिसतें लड़का
२३ जीवे। पर अब तो वह मर गया सो मैं किस लिये व्रत करूं क्या मैं उसे फेर ला सक्ता हूं मैं उस पास जाऊंगा पर वह मुझ पास फिर न आवेगा॥

२४ और दाऊद ने अपनी पत्नी बितसबआ को शांति दिई और उस पास गया और बेटा जनी और उस ने उस का नाम सुलैमान रक्खा और परमेश्वर उस्से
२५ प्रीति रखता था। और उस ने नातन आगमज्ञानी के द्वारा से कहला भेजके उस का नाम परमेश्वर के कारण परमेश्वर का प्रिय रक्खा॥

२६ और यूआब अम्मून के संतान के रब्बः से लड़ा और राजनगर ले लिया।
२७ तब यूआब ने दूतों को भेजके दाऊद को कहला भेजा कि मैं रब्बः से लड़ा और मैं ने पानियों के नगर को ले लिया।
२८ अब आप उबरे हुए लोगों को एकट्ठा करिये और इस नगर के आगे छावनी करके उसे लीजिये न हो कि मैं उस नगर को लेऊं और मेरा नाम उस पर
२९ होवे। तब दाऊद ने सारे लोग एकट्ठे किये और रब्बः पर चढ़ा और लड़के
३० उसे ले लिया। और उस ने वहां के राजा का मुकुट उस के सिर पर से लिया और उस का तौल रत्न सहित एक तोड़ा सोने का था और वह दाऊद के सिर पर था और उस ने उस नगर से बहुत
३१ सी लूट निकाली। और उस ने उस में के लोगों को बाहर निकालके आरों और लोहे के दावने की गाड़ी से और कुल्हाड़ों के नीचे किया और उन्हें ईंटों के पैजावे में से चलाया और उस ने अम्मून के संतान के सारे नगरों से ऐसा ही किया और दाऊद सेना समेत यरूसलम को फिरा॥

तेरहवां पर्व्व।

१ और इस के पीछे ऐसा हुआ कि दाऊद के बेटे अबिसलुम की एक सुंदर बहिन थी जिस का नाम तमर और दाऊद के बेटे अमनून ने उस पर मन
२ लगाया था। और अमनून ऐसा बिकल हुआ कि अपनी बहिन तमर के लिये रोगी हुआ क्योंकि वह कुंआरी थी पर
३ कुछ बन न पड़ता था। परन्तु अमनून का एक मित्र था जिस का नाम यूनदब जो दाऊद के भाई सिमआह का बेटा था और यूनदब एक अति चतुर जन
४ था। सो उस ने उसे कहा कि राजा का बेटा होके तू क्यों प्रतिदिन दुर्बल होता जाता है क्या तू मुझ से न कहेगा तब अमनून ने उसे कहा कि मेरा जीव

अपने भाई अबिसलुम की बहिन तमर ५ पर लगा है। तब यूनदब ने उसे कहा कि तू अपने बिछौने पर पड़ा रह और आप को रोगी ठहरा और जब तेरा पिता तुझे देखने आवे तो उसे कहियो कि मैं आप की बिनती करता हूं कि मेरी बहिन तमर को आने दीजिये कि मुझे कुछ खिलावे और मेरे आगे भोजन बनावे जिसते मैं देखूं और उस के हाथ ६ से खाऊं। सो अमनून पड़ा रहा और आप को रोगी ठहराया और जब राजा उसे देखने को आया तो अमनून ने राजा से कहा कि मैं आप की बिनती करता हूं कि मेरी बहिन तमर को आने दीजिये कि मेरे आगे दो फुलके पकावे जिसते मैं उस के हाथ से खाऊं॥

७ तब दाऊद ने तमर के घर कहला भेजा कि अभी अपने भाई अमनून के घर जा और उस के लिये भोजन बना। ८ सो तमर अपने भाई अमनून के घर गई और वह पड़ा हुआ था और उस ने पिसान लेके गूंधा और उस के आगे ९ फुलके बनाये और पकाये। और उस ने एक पात्र लिया और उन्हें उस के आगे उंडेला पर उस ने खाने को नाह किया तब अमनून ने कहा कि सब जन मुझ पास से बाहर निकल जाओ सो हर एक १० उस पास से बाहर गया। और अमनून ने तमर को कहा कि भोजन कोठरी के भीतर ला कि मैं तेरे हाथ से खाऊं सो तमर फुलके जो उस ने बनाये थे उठाके कोठरी में अपने भाई अमनून पास लाई। ११ और जब वह खिलाने के लिये उस के आगे लाई तब उस ने उसे पकड़ा और उसे कहा कि आ मेरी बहिन मेरे संग १२ लेट जा। पर वह बोली नहीं भाई मुझे निन्दित मत कर क्योंकि इसराएलियों में यह बात उचित नहीं सो ऐसी मूर्खता मत कर। और मैं किधर अपना कलंक १३ छुड़ाऊं और तू जो है सो इसराएलियों में एक मूढ़ की नाईं होगा सो मैं तेरी बिनती करती हूं कि राजा से कहिये कि वह मुझे तुझ से न रोकेगा। तथापि १४ उस ने उस की बात न मानी परन्तु उस्से प्रबल होके बरबस किया और उस्से अकर्म्म किया॥

तब अमनून ने उस्से अति घिन १५ किया यहां लों कि जिस घिन से घिन किया उस प्रीति से जो वह उस्से रखता था अधिक हुआ और अमनून ने उसे कहा कि उठ दूर हो। और उस ने उसे १६ कहा कि यह बुराई कि तू ने मुझे निकाल दिया उस्से जो तू ने मुझ से किई अधिक है पर उस ने न माना। तब अमनून ने अपने सेवा करवैये एक १७ दास को बुलाके कहा कि अब इसे मुझ पास से निकाल दे और उस के पीछे द्वार में अगरी लगा। और उस पर बहु- १८ रंग बस्त्र था क्योंकि राजा की कुंआरी बेटियां ऐसा ही बस्त्र पहिनती थीं तब उस के सेवक ने उसे बाहर कर दिया और उस के पीछे द्वार पर अगरी लगाई॥

और तमर ने सिर पर धूल डाली १९ और अपना बहुरंगी बस्त्र फाड़ा और सिर पर हाथ धरके रोती चली गई। और २० उस के भाई अबिसलुम ने उसे कहा कि क्या तेरा भाई अमनून तेरे संग हुआ परन्तु हे बहिन अब चुपकी हो रह वह तेरा भाई है उस बात पर अपना मन मत लगा तब तमर अपने भाई अबिसलुम के घर में अति उदासीन पड़ी रही॥

परन्तु दाऊद राजा इन सब बातों २१ को सुनके अति क्रुद्ध हुआ। और अबि- २२ सलुम ने अपने भाई अमनून को कुछ भला बुरा न कहा क्योंकि अबिसलुम

अमनून से घिन करता था क्योंकि उस ने उस की बहिन तमर से बरबस किया
२३ था। और पूरे दो बरस के पीछे ऐसा हुआ कि बअलहसूर में जो इफरायम के लग है अबिसलुम की भेड़ों के रोम कतरवैये थे तब अबिसलुम ने राजा के
२४ सब बेटों को नेउंता दिया। और अबिसलुम राजा पास आया और कहा कि देखिये अब तेरे सेवक की भेड़ों के ऊन कतरवैये हैं सो अब मैं तेरी बिनती करता हूं कि राजा और उस के सेवक
२५ भी तेरे दास के साथ चलें। तब राजा ने अबिसलुम से कहा कि नहीं बेटे हम सब के सब न जावें जिसतें न हो कि तुझ पर भार होवे और उस ने उसे बहुत मनाया परन्तु तद भी वह न गया पर
२६ उसे आशीस दिया। तब अबिसलुम ने कहा कि यदि नहीं तो मैं आप की बिनती करता हूं कि मेरे भाई अमनून को हमारे साथ जाने दीजिये तब राजा ने उसे कहा कि वह किस लिये तेरे
२७ साथ जावे। परन्तु अबिसलुम ने उसे बहुत मनाया तब उस ने अमनून को और सारे राजपुत्रों को उस के साथ जाने दिया॥

२८ और अबिसलुम ने अपने सेवकों को कह रक्खा था कि चीन्ह रक्खो कि जब अमनून का मन मदिरा से मगन होवे और मैं तुम्हें कहूं कि अमनून को मारो तब उसे घात कीजियो डरियो मत क्या मैं ने तुम्हें आज्ञा नहीं किई
२९ सो ढाढ़स और शूरता कीजियो। और जैसी कि अबिसलुम ने उन्हें आज्ञा किई थी वैसा ही उस के सेवकों ने अमनून से किया तब समस्त राजपुत्र उठे और हर एक जन अपने अपने खच्चर पर चढ़ भागा॥

३० और ऐसा हुआ कि उन के मार्ग में होते ही दाऊद पास यह समाचार पहुंचा कि अबिसलुम ने सारे राजपुत्रों को मार डाला और उन में से एक भी न बचा।
३१ तब राजा उठा और अपने कपड़े फाड़े और भूमि पर लोट गया और उस के सारे सेवक भी कपड़े फाड़के उस के
३२ आगे खड़े हुए। तब दाऊद के भाई सिमआह का बेटा यूनदब उत्तर देके बोला कि मेरे प्रभु ऐसा न समझे कि समस्त तरुण अर्थात् राजपुत्र मारे गये क्योंकि अमनून अकेला मारा गया क्योंकि जिस दिन से अमनून ने अबिसलुम की बहिन तमर को पत खोई उस ने
३३ यह बात ठान रक्खी थी। सो अब मेरा प्रभु राजा इस बात को न समझे कि समस्त राजपुत्र मारे गये क्योंकि केवल अमनून मारा गया॥

३४ परन्तु अबिसलुम भागा और उस तरुण ने जो पहरे पर था आंखें उठाईं और दृष्टि किई और क्या देखता है कि बहुत से लोग मार्ग में पहाड़ की ओर
३५ से उस के पीछे आते हैं। तब यूनदब ने राजा से कहा कि देखिये तेरे दास
३६ के कहे के समान राजपुत्र आये। और ऐसा हुआ कि जब वह कह चुका तब राजपुत्र आ पहुंचे और चिल्ला चिल्ला बिलाप किये और राजा भी और उस के समस्त सेवकों ने बहुत बिलाप किया॥

३७ पर अबिसलुम जसूर के राजा अम्मिहूर के बेटे तलमी पास गया और दाऊद प्रतिदिन अपने पुत्र के लिये बिलाप करता रहा॥

३८ और अबिसलुम भागके जसूर में गया
३९ और तीन बरस लों वहां रहा। और दाऊद राजा का मन अबिसलुम पास जाने को बहुत था क्योंकि अमनून के मरने के बिषय में उस का मन शांत हुआ॥

चौदहवां पर्ब्ब।

१ अब जरूयाह के बेटे यूअब ने देखा कि राजा का मन अबिसलुम की ओर २ है। तब यूअब ने तकूअ में भेजके वहां से एक बुद्धिमती स्त्री बुलवाई और उसे कहा कि मैं तेरी बिनती करता हूं कि उदासी का भेष बना और उदासी बस्त्र पहिन और अपने पर तेल मत लगा परन्तु ऐसा हो जैसे कोई स्त्री जिस ने बहुत दिन से मृतक के लिये बिलाप ३ किया है। और राजा पास आ और इस रीति से उस्से कह सो यूअब ने उस के मुंह में बातें डालीं॥

४ और जब तकूअ की स्त्री राजा से बोली तब वह भूमि पर औंधे मुंह गिरी और दण्डवत करके बोली कि हे राजा ५ कुड़ाइये। तब राजा ने उसे कहा कि तुझे क्या हुआ और वह बोली मैं निश्चय बिधवा स्त्री हूं और मेरा पति मर ६ गया है। और आप की दासी के दो बेटे थे और उन दोनों ने खेत में झगड़ा किया और उन में कोई न था कि कुड़ावे और एक ने दूसरे को मारा और ७ उसे वध किया। और देखिये कि सारे घराने आप की दासी पर उठे हैं और वे कहते हैं कि जिस ने अपने भाई को मार डाला उसे हमें सौंप दे जिसतें हम उस के भाई के प्राण की संती जिसे उस ने घात किया उसे मार डालें और हम अधिकारी को भी नाश करेंगे और यों वे मेरी बची हुई चिनगारी को भी बुझा डालेंगे और मेरे पति के नाम और ८ बचे हुए को भूमि पर न छोड़ेंगे। तब राजा ने उस स्त्री से कहा कि अपने घर जा और मैं तेरे बिषय में आज्ञा ९ करूंगा। तब तकूअ की उस स्त्री ने राजा से कहा कि मेरे प्रभु राजा सारी बुराई मुझ पर और मेरे पिता के घराने पर होवे और राजा और उस का सिंहासन निर्दोष रहे। तब राजा ने १० कहा कि जो कोई तुझे कुछ कहे उसे मुझ पास ला और वह फिर तुझे न छूयेगा। तब वह बोली मैं बिनती ११ करती हूं कि राजा अपने ईश्वर परमेश्वर को स्मरण करे कि रुधिर का पलटा-दायक मेरे बेटे को घात करने को न बढ़े तब वह बोला परमेश्वर के जीवन सों तेरे बेटे का एक बाल भी भूमि पर न गिरेगा॥

तब उस स्त्री ने कहा कि मैं तेरी १२ बिनती करती हूं कि अपनी दासी को एक बात अपने प्रभु राजा से कहने दीजिये और वह बोला कहे जा। तब १३ उस स्त्री ने कहा कि आप ने किस लिये ईश्वर के लोगों के बिरुद्ध ऐसी चिंता किई क्योंकि राजा ऐसी बात कहते हैं जैसा कोई इस बात में दोषी है कि राजा भेजके अपने निकाले हुए को घर में फेर नहीं लाते। क्योंकि हमें मरने १४ पड़ेगा और पानी के समान हैं जो भूमि पर गिराया जाके बटोरा नहीं जा सक्ता और ईश्वर भी मनुष्यत्व पर दृष्टि नहीं करता तथापि वह युक्ति करता है कि उस का निकाला हुआ उस्से अलग न रहे। सो अब जो मैं अपने प्रभु राजा १५ पास इस बात के बिषय में कहने आई हूं इस कारण कि लोगों ने मुझे डराया और आप की दासी ने कहा कि मैं आप राजा से कहूंगी कदाचित राजा अपनी दासी की बिनती सुनें। क्योंकि १६ राजा अपनी दासी को उस पुरुष के हाथ से छुड़ाने को सुनेंगे जो मुझे और मेरे बेटे को ईश्वर के अधिकार से निकालके मार डाला चाहता है। तब १७ तेरी दासी बोली कि मेरे प्रभु राजा की बात कुशल की होगी क्योंकि मेरे प्रभु

राजा भला बुरा सुन्ने में ईश्वर के दूत के समान हैं इस कारण परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे साथ होगा॥

१८ तब राजा ने उस स्त्री को कहा कि जो कुछ मैं तुझ से पूछूं तू मुझ से मत छिपा और स्त्री बोली कि मेरे प्रभु राजा

१९ कहिये। तब राजा ने कहा कि क्या इन सब बातों में यूअब भी तेरे साथ नहीं तब उस स्त्री ने उत्तर दिया कि तेरे प्राण की किरिया हे मेरे प्रभु राजा कोई इन बातों में से जो प्रभु राजा ने कही हैं दहिने अथवा बायें जा नहीं सक्ती क्योंकि तेरे सेवक यूअब ही ने मुझे यह कहा है और उसी ने यह सब बातें तेरी दासी के मुंह में डाली हैं।

२० तेरे सेवक यूअब ने यह बात इस लिये किई जिसतें इस कहने का डौल बनावे और पृथिवी के समस्त ज्ञान में मेरा प्रभु ईश्वर के दूत के समान बुद्धिमान है॥

२१ तब राजा ने यूअब को कहा कि देख मैं ने यह बात किई है सो जा और उस तरुण अबिसलूम को फेर ला।

२२ सो यूअब भूमि पर औंधा गिरा और दण्डवत किई और राजा का धन्य माना और यूअब बोला कि आज तेरे सेवक को निश्चय हुआ कि मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया कि हे मेरे प्रभु राजा आप ने अपने सेवक की बिनती मानी।

२३ तब यूअब उठके जसूर को गया और

२४ अबिसलूम को यरूसलम में लाया। तब राजा ने कहा कि उसे कह कि अपने घर जावे और मेरा मुंह न देखे सो अबिसलूम अपने घर गया और राजा का मुंह न देखा॥

२५ परन्तु समस्त इसराएल में कोई जन अबिसलूम के तुल्य सुंदर और प्रशंसा के योग्य न था तलवे से लेके चांदी लों उस में कोई दोष न था। और जब वह

२६ अपने सिर के बाल मुंड़ाता था क्योंकि हर बरस के अंत में उस का यह बंधेज था क्योंकि उस के बाल बहुत घने थे और तौल में दो सौ मिसकाल राजा के बटखरे से होते थे। और अबिसलूम के

२७ तीन बेटे उत्पन्न हुए और एक बेटी जिस का नाम तमर था वह बहुत सुंदर थी॥

२८ सो अबिसलूम पूरे दो बरस यरूसलम में रहा और राजा का मुंह न देखा।

२९ तब अबिसलूम ने यूअब को बुलवाया कि उसे राजा पास भेजे परन्तु वह न चाहता था कि उस पास आवे तब उस ने दुहराके बुलवाया तब भी वह न आया।

३० तब उस ने अपने सेवकों से कहा कि देखो यूअब का खेत मेरे खेत से लगा है और वहां उस का जव है जाओ और उस में आग लगाओ तब अबिसलूम के सेवकों ने खेत में आग लगाई। तब

३१ यूअब उठा और अबिसलूम के घर आया और उस्से कहा कि तेरे सेवकों ने मेरे खेत में क्यों आग लगाई। तब अबि-

३२ सलूम ने यूअब को उत्तर दिया कि देख मैं ने तुझे कहला भेजा कि यहां आ कि मैं तुझे राजा पास भेजके कहूं कि मैं जसूर से क्यों यहां आया मेरे लिये तो वहीं रहना अच्छा था सो अब मैं राजा का मुंह देखूं और यदि मुझ में अपराध होवे तो वह मुझे मार डाले। तब यूअब

३३ ने राजा पास जाके यह कहा और उस ने अबिसलूम को बुलाया सो वह राजा पास आया और राजा के आगे औंधा गिरा और राजा ने अबिसलूम को चूमा॥

पंदरहवां पर्ब्ब।

१ और इन बातों के पीछे ऐसा हुआ कि अबिसलूम ने अपने लिये रथ और घोड़े और पचास मनुष्य अपने आगे दौड़ने को सिद्ध किये। और अबिसलूम तड़के २

उठा और फाटक की अलंग खड़ा हुआ और यों होता था कि जब कोई झगड़ा रखके राजा के न्याय के लिये आता था तब अबिसलुम उसे बुलाके पूछता था कि तू किस नगर का है और उस ने कहा कि तेरा सेवक इसराएल की एक ३ गोष्ठी में का है। और अबिसलुम ने उसे कहा कि देख तेरा पद भला और ठीक है परन्तु राजा की ओर से कोई श्रोता ४ नहीं है। और अबिसलुम ने कहा हाय कि मैं देश में न्यायी होता कि जिस किसी का पद अथवा कारण होता मुझ पास आता और मैं उस का न्याय करता। ५ और जब कोई उस पास आता था कि उसे नमस्कार करे तो वह हाथ बढ़ाके उसे पकड़ लेता था और उस का चूमा ६ लेता था। और इस रीति से अबिसलुम सारे इसराएल से करता था जो राजा पास बिचार के लिये आते थे सो अबिसलुम ने इसराएल के मनुष्यों के मन चुराये॥

७ और चालीस बरस के पीछे ऐसा हुआ कि अबिसलुम ने राजा से कहा कि मैं आप की बिनती करता हूं कि मुझे जाने दीजिये कि अपनी मनौती को जो मैं ने परमेश्वर के लिये मानी है हबरून में ८ पूरी करूं। क्योंकि आप के दास ने जब अराम जसूर में था यह मनौती मानी थी कि यदि परमेश्वर मुझे यरूसलम में निश्चय फेर ले जावेगा तो मैं परमेश्वर ९ की सेवा करूंगा। तब राजा ने उसे कहा कि कुशल से जा सो वह उठके हबरून को गया॥

१० परन्तु अबिसलुम ने इसराएल के संतान की सारी गोष्ठियों में भेदियों के द्वारा से कहला भेजा कि जब तुम नरसिंगे का शब्द सुनो तब बोल उठो कि अबिसलुम हबरून में राज्य करता है। ११ और अबिसलुम के साथ यरूसलम से दो सौ मनुष्य निकल आये और वे अपनी भोलाई से गये थे और कुछ न जानते थे। १२ और अबिसलुम ने जैलो अखितुफल दाऊद के मंत्री को उस के नगर जैला से बुलाया जब वह बलि चढ़ाता था और गुष्ठ दृढ़ हो रहा था क्योंकि अबिसलुम पास लोग बढ़ते जाते थे॥

१३ तब एक दूत ने आके दाऊद को कहा कि इसराएल के लोगों के मन अबिसलुम के पीछे लगे हैं। १४ तब दाऊद ने अपने समस्त सेवकों को जो यरूसलम में उस के साथ थे कहा कि उठो और हम भागें क्योंकि अबिसलुम से हम न बचेंगे शीघ्र चलो न हो कि वह अचानक हम पर आ पड़े और हम पर बुराई लावे और तलवार की धार से नगर को नाश करे। १५ तब राजा के सेवकों ने राजा से कहा कि देखिये आप के सेवक जो कुछ कि प्रभु राजा की इच्छा होवे॥

१६ तब राजा निकला और उस का सारा घराना उस के पीछे हुआ और राजा ने दस स्त्रियां जो उस की दासियां थीं घर देखने को छोड़ीं। १७ और राजा अपने सब लोगों समेत बाहर निकलके दूर स्थान में जा ठहरा। १८ और उस के सारे सेवक उस के साथ साथ निकल गये और सारे करेती और सारे फलेती और सारे जाती छः सौ जन जो जात से उस के पीछे आये थे राजा के आगे आगे गये। १९ तब राजा ने जाती इत्ती से कहा कि तू भी हमारे साथ क्यों आता है अपने स्थान को फिर जा और राजा के साथ रह क्योंकि तू परदेशी और अपने स्थान से भी निकाला हुआ है। २० कल ही तू आया है और आज मैं तुझे भ्रमाके चलाऊं और मेरे जाने का कहीं ठिकाना नहीं सो तू फिर जा और अपने भाइयों को ले जा दया और सत्य

२१ तेरे साथ होवे। तब इत्ती ने राजा को उत्तर देके कहा कि परमेश्वर के और मेरे प्रभु राजा के जीवन सों निश्चय जिस स्थान में मेरा प्रभु राजा होवेगा चाहे मृत्यु में चाहे जीवन में वहीं आप का २२ सेवक भी होगा। और दाऊद ने इत्ती को कहा कि पार उतर जा तब इत्ती जाती पार उतर गया और उस के सारे मनुष्य और उस के साथ सब लड़के बाले २३ चले। और सारे देश ने रो रोके बिलाप किया और सारे लोग उतर गये और राजा भी किदरून के नाले पार उतर गया और समस्त लोगों ने पार उतरके बन का मार्ग लिया॥

२४ और देखो कि सदूक भी और समस्त लावी ईश्वर की साक्षी की मंजूषा लिये हुए उस के साथ थे सो उन्हों ने ईश्वर की मंजूषा को रख दिया और अबियतर चढ़ गया जब लों कि सारे लोग नगर २५ से निकल आये। तब राजा ने सदूक से कहा कि ईश्वर की मंजूषा नगर को फेर ले जा यदि परमेश्वर के अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर होगी तो वह मुझे फेर लावेगा और उसे और अपने निवास को २६ मुझे दिखावेगा। पर यदि वह यों कहे कि अब मैं तुझ से प्रसन्न नहीं देख मैं २७ जो वह भला जाने सो मुझ से करे। और राजा ने सदूक याजक को फिर कहा क्या तू दर्शी नहीं नगर को कुशल से फिर और तेरे संग तेरे दो बेटे अखिमअज २८ और यूनतन अबियतर का बेटा। देख मैं उस बन के चौगान में ठहरूंगा जब लों कि तुम्हारे पास से कुछ संदेश आवे। २९ सो सदूक और अबियतर ईश्वर की मंजूषा को यरूसलम में फेर लाये और वहीं रहे॥

३० और दाऊद जलपाई के पहाड़ की चढ़ाई पर चढ़ता गया और चढ़ते चढ़ते बिलाप करता गया और उस का सिर ढंपा हुआ और नंगे पांव था और उस के साथ के सारे लोग अपने सिर ढांपे हुए बिलाप करते चढ़ते चले जाते थे। ३१ तब एक ने दाऊद से कहा कि अखितुफल अबिसलुम के गुट्टकारियों में है तब दाऊद ने कहा कि हे परमेश्वर तेरी बिनती करता हूं कि अखितुफल के मंत्र को मूढ़ता की संती पलट दे॥

३२ और ऐसा हुआ कि जब दाऊद चोटी पर पहुंचा जहां उस ने ईश्वर की पूजा किई तो हूसी अरकी अपना बस्त्र फाड़े हुए और अपने सिर पर धूल डाले हुए ३३ उस्से भेंट करने को आया। तब दाऊद ने उसे कहा कि यदि तू मेरे साथ पार ३४ उतरेगा तो मुझ पर भार होगा। परन्तु यदि तू नगर में फिर जावे और अबिसलुम से कहे कि हे राजा मैं तेरा सेवक हूंगा मैं अब लों तेरे पिता का सेवक था उसी रीति तेरा भी सेवक हूंगा तब तू मेरे कारण से अखितुफल के मंत्र को ३५ भंग कर सक्ता है। और क्या तेरे साथ सदूक और अबियतर याजक नहीं हैं सो ऐसा होवे कि जो कुछ तू राजा के घर में सुने सो सदूक और अबियतर ३६ याजकों से कह दे। देख वहां उन के साथ उन के दो बेटे अखिमअज सदूक के और यूनतन अबियतर के बेटे हैं और जो कुछ तुम सुन सको सो उन के ३७ द्वारा से मुझे कहला भेजो। सो दाऊद का मित्र हूसी नगर को आया और अबिसलुम भी यरूसलम में पहुंचा॥

सोलहवां पर्ब्ब।

१ और जब दाऊद चोटी पर से तनिक पार गया तब देखो कि मिफिबूसत का सेवक सीबा दो गदहे काठी कसे हुए जिन पर दो सौ रोटी और दाख के एक सौ गुच्छे और अंजीर के फल के सौ

गुच्छे और एक कुप्पा मदिरा का लदा हुआ था उसे मिला। और राजा ने सीबा को कहा कि इन बस्तुन से तुम्हारा क्या अभिप्राय है तब सीबा बोला कि ये गदहे राजा के घराने के चढ़ने के लिये और रोटियां और अंजीर फल तरुणों के भोजन के लिये और यह मदिरा उन के लिये जो अरण्य में थके हुए हों। तब राजा ने कहा कि तेरे स्वामी का बेटा कहां है और सीबा ने राजा से कहा कि देखिये वह यरूसलम में ठहरा है क्योंकि उस ने कहा है कि आज इसराएल के घराने मेरे पिता का राज्य मुझे फेर देंगे। तब राजा ने सीबा से कहा कि देख मिफ़िबुसत का सब कुछ तेरा है तब सीबा ने कहा कि मैं आप को दण्डवत करता हूं कि मैं अपने प्रभु राजा की दृष्टि में अनुग्रह पाऊं॥

५ और जब दाऊद राजा बहूरीम में पहुंचा तो देखो वहां से साऊल के घराने में से एक जन निकला जिस का नाम शमीय जैरा का पुत्र धिक्कारते हुए ६ चला आता था। और वह दाऊद पर और दाऊद राजा के सारे सेवकों पर पत्थर फेंकने लगा और समस्त लोग और समस्त बीर उस के दहिने बायें थे। ७ और धिक्कारते हुए शमीय यों कहता था कि निकल आ निकल आ हे हत्यारे ८ मनुष्य हे दुष्ट जन। परमेश्वर ने साऊल के घर की सारी हत्या को तुझ पर फेरा जिस की संती तू ने राज्य किया है और परमेश्वर ने राज्य को तेरे बेटे अबिसलुम के हाथ में सौंप दिया और देखो आप को अपनी बुराई में इस कारण कि तू हत्यारा है॥

तब ज़रूयाह के बेटे अबिशै ने राजा से कहा कि यह मरा हुआ कुत्ता मेरे प्रभु राजा को किस लिये धिक्कारे मैं आप की बिनती करता हूं कि मुझे पार जाने दीजिये कि उस का सिर उतार १० डालूं। तब राजा ने कहा कि हे ज़रूयाह के बेटे मुझे तुम से क्या काम उसे धिक्कारने देओ इस कारण कि परमेश्वर ने उसे कहा है कि दाऊद को धिक्कार और उसे कौन कहेगा कि तू ने ऐसा ११ क्यों किया है। और दाऊद ने अबिशै और अपने सारे सेवकों से कहा कि देख मेरा बेटा जो मेरी कटि से निकला मेरे प्राण का गांहक है तो कितना अधिक यह बिनयमीनी उसे छोड़ देओ धिक्कारने देओ क्योंकि परमेश्वर ने उसे कहा है। १२ क्या जाने परमेश्वर मेरे दुःख पर दृष्टि करे और परमेश्वर आज उस के धिक्कार १३ की संती मेरी भलाई करे। और ज्यों दाऊद अपने लोग लेके मार्ग से चला जाता था तब शमीय पहाड़ के अलंग उस के सन्मुख धिक्कारता हुआ चला जाता था और उसे पत्थर मारता था १४ और धूल फेंकता था। और राजा और उस के सारे लोग थके हुए आये और वहीं उन्हों ने अपने को संतुष्ट किया॥

१५ तब अबिसलुम और इसराएल के सारे लोग यरूसलम में आये और अखि-१६ तुफल उस के साथ। और यों हुआ कि जब दाऊद का मित्र हूसी अरकी अबि-सलुम पास पहुंचा तो हूसी ने अबि-सलुम से कहा कि राजा जीता रहे राजा १७ जीता रहे। और अबिसलुम ने हूसी से कहा कि क्या अपने मित्र पर यही अनुग्रह किया तू अपने मित्र के साथ १८ क्यों न गया। तब हूसी ने अबिसलुम से कहा कि नहीं परन्तु जिसे परमेश्वर और ये लोग और सारे इसराएल चुनें मैं उसी का हूं और उस के साथ रहूंगा। १९ और फिर किस की सेवा करूं यदि उस

के बेटे की नहीं तो जैसे मैं ने आप के पिता के सन्मुख सेवा किई है वैसा ही आप के सन्मुख हूंगा॥

२० तब अबिसलूम ने अखितुफल से कहा कि मंत्र देखो कि हम क्या करें।

२१ तब अखितुफल ने अबिसलूम से कहा कि अपने पिता की दासियों के पास जाइये जिन्हें वह घर की रक्षा को छोड़ गया है और सारे इसराएल सुनेंगे कि आप अपने पिता से घिनित हैं तब आप के सारे साथियों के हाथ दृढ़

२२ होंगे। सो उन्हों ने कोठे की छत पर अबिसलूम के लिये तंबू खड़ा करवाया और अबिसलूम सारे इसराएल की दृष्टि में अपने पिता की दासियों के पास

२३ गया। और अखितुफल का मंत्र जो उन दिनों में वह देता था ऐसा था जैसा कि कोई ईश्वर के बचन से बूझता था अखितुफल का समस्त मंत्र दाऊद और अबिसलूम के बिषय में ऐसा ही था॥

सत्रहवां पर्ब्ब।

१ और अखितुफल ने अबिसलूम से यह भी कहा कि मुझे बारह सहस्र पुरुष चुन लेने दीजिये और मैं उठके इसी

२ रात दाऊद का पीछा करूंगा। और थका और दुर्बल होते हुए मैं उस पर जा पड़ूंगा और उसे डराऊंगा और उस के साथ के सारे लोग भाग जावेंगे और

३ केवल राजा ही को मार लेऊंगा। और मैं सब लोगों को आप की ओर फेर लाऊंगा जब उसे छोड़ जिसे आप खोजते हैं सब फिर आये तो सब कुशल से

४ रहेंगे। और यह कहना अबिसलूम और इसराएल के समस्त प्राचीन की दृष्टि

५ में अच्छा लगा। तब अबिसलूम ने कहा कि हूसी अरकी को भी बुला और उस के मुंह में जो है सो भी सुनें॥

६ और जब हूसी अबिसलूम पास पहुंचा तब अबिसलूम यह कहके उसे बोला कि अखितुफल ने यों कहा है क्या हम उस के बचन के समान करें अथवा नहीं

७ तू ही कह। तब हूसी ने अबिसलूम से कहा कि यह मंत्र जो अखितुफल ने

८ दिया है इस समय भला नहीं। और हूसी ने कहा कि आप अपने पिता को और उस के साथियों को जानते हैं कि वे शूर हैं और वे अपने मन में ऐसे उदास हैं जैसे जंगली भालू जिस का बच्चा चुराया जावे और आप का पिता योद्धा पुरुष है और लोगों के साथ न

९ रहेगा। देखिये वह अब किसी गड़हे में अथवा किसी स्थान में छिपा है और यों होगा कि जब प्रथम उन में से कितने मारे पड़ेंगे तो जो कोई सुने सो कहेगा कि अबिसलूम के साथी जूझ

१० गये हैं। और वह भी जो शूर है जिस का मन सिंह के मन की नाईं है सर्बथा पिघल जावेगा क्योंकि सारे इसराएली जानते हैं कि आप का पिता बलवंत है और उस के साथ के लोग शूर हैं।

११ क्योंकि मैं यह मंत्र देता हूं कि सारे इसराएल दान से लेके बिअरसबअ लों बालू के समान जो समुद्र के तीर पर हो जिस का लेखा नहीं आप के साथ बटोरे जावें और कि आप लड़ाई पर

१२ चढ़िये। यों जहां वह होगा हम उस पर जा पहुंचेंगे और ओस की नाईं जो भूमि पर गिरती है उस पर टूट पड़ेंगे तब वह आप और उन लोगों में से जो उस के साथ हैं एक भी न बचेगा।

१३ और यदि वह किसी नगर में पैठा होगा तब सारे इसराएल उस नगर पर रस्सी लावेंगे और उसे नदी में खींच ले जावेंगे यहां लों कि एक रोड़ा पाया न जावे॥

१४ तब अबिसलुम और इसराएल के सारे लोग बोले कि हूसी अरकी का मंत्र अखितुफल के मंत्र से भला है क्योंकि परमेश्वर ने ठहराया था कि अखितुफल का भला मंत्र खंडित होवे जिसतें परमेश्वर अबिसलुम पर बुराई लावे॥

१५ तब हूसी ने सदूक और अबियतर याजक से कहा कि अखितुफल और इसराएल के प्राचीनों ने अबिसलुम को ऐसा ऐसा मंत्र दिया और मैं ने ऐसा

१६ ऐसा। सो अब चटक से भेजके दाऊद से कहो कि आज की रात बन के चौगान में मत टिकिये परन्तु बेग से पार उतर जाइये न हो कि राजा और उस के साथ के समस्त लोग निंगले जावें॥

१७ अब यूनतन और अखिमअज ऐन-राजिल के लग ठहरे थे क्योंकि उन्हें नगर में दिखाई देना न था और एक स्त्री ने जाके उन्हें कहा सो वे निकलके

१८ दाऊद राजा से बोले। तथापि एक छोकरे ने उन्हें देखके अबिसलुम से कहा परन्तु वे दोनों के दोनों चटक से चले गये और बहूरीम में पहुंचके एक पुरुष के घर में घुसे जिस के चौक में एक कुआ था और वहां वे उतर पड़े।

१९ और स्त्री ने उस कुए के मुंह पर एक ओढ़ना बिछाया और उस पर पिसा हुआ अन्न बिछाया और यह बात प्रगट न

२० हुई। और जब अबिसलुम के सेवक उस स्त्री के घर आये और पूछा कि अखिमअज और यूनतन कहां हैं तब उस स्त्री ने उन्हें कहा कि वे नाली पार उतर गये और जब उन्हों ने उन्हें ढूंढ़ा और न पाया तो यरूसलम को फिर

२१ आये। और यों हुआ कि जब वे चले गये तो वे कुए से निकलके चले और दाऊद राजा से कहा कि उठिये और शीघ्र जल से पार उतर जाइये क्योंकि अखितुफल ने आप के बिरोध में यों यों मंत्र दिया है।

२२ तब दाऊद और उस के सारे लोग उठे और यरदन के पार उतर गये और बिहान होते होते एक भी न रहा जो यरदन के पार न उतरा था॥

२३ और जब अखितुफल ने देखा कि उस का मंत्र न चला तो उस ने अपने गदहे पर काठी बांधी और चढ़के अपने घर अपने नगर में गया और अपने घर के बिषय में आज्ञा किई और आप फांसी लगाके मर गया और अपने पिता की समाधि में गाड़ा गया॥

२४ तब दाऊद महनैन को गया और अबिसलुम और उस के साथ इसराएल के सारे मनुष्य यरदन के पार उतरे।

२५ और अबिसलुम ने यूअब की संती अमासा को सेना का प्रधान बनाया और अमासा एक जन का बेटा था जिस का नाम इथरा इसराएली था जो नाहस की बेटी यूअब की मौसी अबिजैल के पास गया।

२६ सो इसराएल और अबिसलुम ने जिलिआद के देश में डेरा किया॥

२७ और यों हुआ कि जब दाऊद महनैन में पहुंचा तो अम्मून के संतान के रब्बः नाहस का बेटा शोबी और लोदिबार अमीएल का बेटा मकीर और राजिलीम जिलिआदी बरजिल्ली।

२८ खाट और बासन और माटी के पात्र और गोहूं और जब और पिसान और भूना और फलियां और मसूर और भूने

२९ चने। और मधु और माखन और भेड़ और ढोर का खोआ दाऊद के और उस के लोगों के खाने के लिये लाये क्योंकि उन्हों ने कहा कि लोग अरण्य में भूखे और थके और प्यासे हैं॥

अठारहवां पर्व्व।

१ और दाऊद ने अपने संग के लोगों को गिना और सहस्रों पर और सैकड़ों २ पर प्रधान ठहराया। और दाऊद ने लोगों के तिहाई भाग को यूअब के अधीन और तिहाई यूअब के भाई जरूयाह के बेटे अबिशै के अधीन और तिहाई को जाती इत्ती के अधीन किया और उन्हें भेजा और राजा ने लोगों से कहा कि मैं भी निश्चय तुम्हारे साथ ३ जाऊंगा। परन्तु लोगों ने उत्तर दिया कि आप न जाइये क्योंकि यदि हम भाग निकलें तो उन्हें कुछ हमारी चिंता न होगी और यदि हम्में से आधे मारे जायें तो उन्हें कुछ चिंता न होगी क्योंकि अब आप हम्में से दस सहस्र के तुल्य हैं सो अब अच्छा यह है कि आप नगर में रहके हमारी सहायता कीजिये।
४ तब राजा ने उन्हें कहा कि जो तुम्हें सब से अच्छा लगे सो मैं करूंगा और राजा फाटक की अलंग खड़ा हुआ और समस्त लोग सैकड़ों सैकड़ों और सहस्र सहस्र होके बाहर निकले॥

५ और राजा ने यूअब और अबिशै और इत्ती को कहा कि मेरे कारण उस युवा जन अर्थात् अबिसलुम से कोमलता कीजियो और जो कुछ राजा ने समस्त प्रधानों से अबिसलुम के विषय में कहा सो सब लोगों ने सुना॥

६ तब लोग निकलके चौगान में इसराएल के साम्ने हुए और संग्राम इफरा- ७ यम के बन में हुआ। और वहां इसराएल के लोग दाऊद के सेवकों के आगे मारे गये और उस दिन वहां बड़ा जूझ ८ अर्थात् बीस सहस्र का हुआ। क्योंकि संग्राम समस्त देश में फैल गया था और उस दिन बन ने खड्ग से अधिक लोगों ९ को नाश किया। और अबिसलुम दाऊद के सेवकों से मिला और अबिसलुम खच्चर पर चढ़ा था और खच्चर उसे लेके बलूत वृक्ष की घनी डारों के तले घुसा और उस का सिर बलूत में फंसा और वह अधर में टंग गया और खच्चर उस के नीचे से चला गया॥

१० और कोई देखके यूअब से कहके बोला कि मैं ने अबिसलुम को एक बलूत ११ वृक्ष पर टंगा देखा। तब यूअब उस कहवैये से बोला कि जब तू ने देखा तो उसे मारके भूमि पर क्यों न डाल दिया कि मैं तुझे दस टुकड़े चांदी और १२ एक पटुका देता। और उस जन ने यूअब को उत्तर दिया कि यदि तू सहस्र टुकड़े चांदी मुझे तौल देता तौभी मैं राजा के बेटे पर हाथ न उठाता क्योंकि राजा ने हमें सुनाके तुझे और अबिशै और इत्ती को आज्ञा करके चिताया कि चौकस हो कोई उस तरुण अबिसलुम १३ को न छूवे। नहीं तो मैं अपने प्राण ही के बिरोध में झूठा होता क्योंकि कोई बस्तु राजा से छिपी नहीं और तू भी १४ मेरे बिरोध पर खड़ा होता। तब यूअब ने कहा कि मैं तेरे आगे इस रीति से न ठहरूंगा और अब लों अबिसलुम जीता हुआ बलूत वृक्ष के मध्य में लटका था तब यूअब ने तीन बाण हाथ में लेके अबिसलुम के अंतःकरण में उन्हें गोदा।
१५ और दस तरुणों ने जो यूअब के अस्त्रधारी थे आ घेरा और अबिसलुम को मारके उसे बधन किया॥

१६ तब यूअब ने नरसिंगा फूंका और लोग इसराएल का पीछा करने से फिरे क्योंकि १७ यूअब ने लोगों को रोक रक्खा। और उन्हों ने अबिसलुम को लेके उस को बन के एक बड़े गड़हे में डाल दिया और उस पर पत्थरों का एक बड़ा ढेर किया और सारे इसराएल भागके अपने

१८ अपने तंबू को गये। अब अबिसलुम ने जीते जी अपने लिये राजा की तराई में एक खंभा बनाया था क्योंकि उस ने कहा कि मेरे कोई बेटा नहीं जिस्से मेरा नाम चले और उस ने अपना ही नाम खंभे पर रक्खा और आज के दिन लों वह अबिसलुम का स्थान कहाता है॥

१९ तब सदूक के बेटे अखिमअज ने कहा कि मैं दौड़के राजा को संदेश पहुंचाऊं कि परमेश्वर ने किस रीति से उस के बैरियों के हाथ से उस का प्रति-
२० फल लिया। तब यूअब ने उसे कहा कि आज तू संदेशी मत होना परन्तु दूसरे दिन संदेश पहुंचाइयो परन्तु आज तू संदेश मत ले जा क्योंकि राजा का पुत्र
२१ मर गया है। तब यूअब ने कूशी को कहा कि जा और जो कुछ तू ने देखा है सो राजा से कह तब कूशी यूअब
२२ को प्रणाम करके दौड़ा। तब सदूक के बेटे अखिमअज ने दूसरी बार यूअब से कहा कि जो कुछ हो परन्तु मुझे भी कूशी के पीछे दौड़ने दीजिये तब यूअब बोला कि हे पुत्र तू किस लिये दौड़ेगा तू देखता है कि कोई संदेश धरा नहीं।
२३ परन्तु जो होय मैं दौड़ता हूं तब उस ने कहा कि दौड़ तब अखिमअज ने चौगान का मार्ग लिया और कूशी से आगे बढ़ गया॥

२४ और दाऊद दो फाटकों के बीच बैठा था और पहरू नगर की भीत की छत पर फाटक के ऊपर चढ़ गया था और अपनी आंखें उठाके देखा और क्या देखता है कि एक जन अकेला दौड़ता
२५ आता है। और पहरू ने पुकारके राजा को कहा सो राजा ने कहा यदि अकेला है तो उस के मुंह में संदेश हैं और वह
२६ बढ़ते बढ़ते पास आया। तब पहरू ने दूसरे जन को दौड़ते देखा और पहरू ने द्वारपालक को पुकारके कहा कि देख पुरुष अकेला दौड़ा आता है और राजा बोला कि वह संदेश लाता है।
२७ तब पहरू ने कहा कि मैं देखता हूं कि अगले की दौड़ सदूक के बेटे अखिमअज की दौड़ की नाईं है तब राजा बोला कि वह भला मनुष्य है और मंगल संदेश लाता है॥

२८ और अखिमअज ने पुकारा और राजा से कहा कि सब कुशल है और राजा के आगे औंधे मुंह गिरा और बोला कि परमेश्वर आप का ईश्वर धन्य है जिस ने उन लोगों को जिन्हों ने मेरे प्रभु राजा के बिरोध में हाथ
२९ उठाये सौंप दिया। तब राजा बोला कि क्या तरुण अबिसलुम कुशल से है और अखिमअज ने कहा कि जब राजा के सेवक यूअब ने टहलू को भेजा तो उस समय में ने एक बड़ी भीड़ देखी
३० पर मैं ने न जाना वह क्या है। तब राजा ने कहा कि अलग होके यहां खड़ा हो और वह अलग जाके खड़ा
३१ हो रहा। और देखो कूशी आया और कूशी ने कहा कि मेरे प्रभु राजा संदेश है क्योंकि परमेश्वर ने आज के दिन आप को उन सभों से जो आप के बैर
३२ में उठे थे पलटा लिया। तब राजा ने कूशी से पूछा कि क्या अबिसलुम तरुण कुशल से है और कूशी ने उत्तर दिया कि मेरे प्रभु राजा के बैरी और सब जो आप को दुःख देने में उठते हैं आप उस तरुण की नाईं हो जावें। तब राजा अति ब्याकुल हुआ और उस कोठरी पर चढ़ गया जो फाटक के ऊपर थी और बिलाप किया और जाते जाते यों कहा कि हाय मेरे बेटे अबिसलुम हाय मेरे बेटे मेरे बेटे अबिसलुम भला होता जो तेरी संती मैं ही मरता हाय अबिसलुम हाय मेरे बेटे मेरे बेटे॥

उन्नीसवां पर्ब्ब।

१ और यूअब से कहा गया कि देख राजा अबिसलुम के लिये रोता और २ बिलाप करता है। और उस दिन का बचाव सब लोगों के लिये बिलाप का दिन हुआ क्योंकि लोगों ने उस दिन सुना कि राजा अपने बेटे के लिये खेद ३ में है। और लोग उस दिन लज्जितों के समान जो लड़ाई से भाग निकलते ४ हैं चोरी से नगर में चले गये। परन्तु राजा ने अपना मुंह ढांपा और चिल्ला चिल्ला रोया कि हाय मेरे बेटे अबिसलुम हाय अबिसलुम मेरे बेटे मेरे बेटे॥

५ तब यूअब घर में राजा पास आया और कहा कि तू ने आज के दिन अपने सब सेवकों के मुंह को लज्जित किया जिन्हों ने आज तेरे प्राण और तेरे बेटे बेटियों के प्राण और तेरी पत्नियों के प्राण और तेरी दासियों के प्राण बचाये। ६ क्योंकि तू अपने शत्रुन को प्यार करके अपने मित्रों से बैर करता है क्योंकि तू ने आज दिखाया है कि तुझे न प्रधानों को न सेवकों की चिंता है क्योंकि आज मैं जानता हूं कि यदि अबिसलुम जीता होता और हम सब आज मर जाते तो ७ तू अति प्रसन्न होता। सो अब उठ बाहर निकल और अपने सेवकों का बोध कर क्योंकि मैं परमेश्वर की किरिया खाता हूं कि यदि तू बाहर न जावेगा तो रात लों एक भी तेरे साथ न रहेगा और यह तेरे लिये उन सब बिपतों से जो युवावस्था से अब लों हुईं अधिक होगी। ८ तब राजा उठा और फाटक में बैठा और सब लोगों को कहा गया कि देखो राजा फाटक में बैठा है तब सब लोग राजा के आगे आये क्योंकि सारे इसराएल अपने अपने तंबुओं को भाग गये थे॥

९ और इसराएल की सारी गोष्ठियों में सारे लोग झगड़के कहने लगे कि राजा ने हमें हमारे शत्रुन के हाथ से और फिलिस्तियों के हाथ से बचाया और अब वह अबिसलुम के कारण देश से भाग निकला है। १० और अबिसलुम जिसे हम ने अपने ऊपर अभिषिक्त किया था रण में मारा गया सो अब राजा के फेर लाने में चुपके क्यों हो॥

११ तब दाऊद राजा ने सदूक और अबियतर याजक को कहला भेजा कि यहूदाह के प्राचीनों को कहो कि राजा को उस के घर में फेर लाने में क्यों सब से पीछे हो देखते हो कि समस्त इसराएल की बोली राजा के हां उस के घर के पास पहुंची। १२ तुम मेरे भाई मेरी हड्डी और मेरे मांस हो सो राजा को फेर लाने में क्यों सब से पीछे हो। १३ और अमासा से कहो क्या तू मेरी हड्डी और मेरा मांस नहीं सो यदि मैं तुझे यूअब की संती सदा के लिये सेना का प्रधान न करूं तो ईश्वर मुझ से ऐसा और उस्से अधिक करे। १४ और उस ने सारे यहूदाह के समस्त लोगों का मन ऐसा फेरा जैसा कि एक का मन होता है और उन्हों ने राजा कने भेजा कि आप अपने सारे सेवकों समेत फिर आइये। १५ तब राजा फिरा और यरदन को आया और यहूदाह जिलजाल में राजा की भेंट को आये कि राजा को यरदन पार लावें॥

१६ और जैरा के बेटे शमीय बिनयमीनी बहूरीम से शीघ्र चले और यहूदाह के मनुष्यों के साथ मिलके दाऊद राजा से भेंट करने आये। १७ और उस के साथ बिनयमीनी एक सहस्र जन थे और साऊल के घराने का सेवक अपने पंदरह बेटे और बीस टहलुओं समेत आया और वे राजा के आगे यरदन के पार उतर गये।

१८ और राजा के घराने को पार उतारने और उस की इच्छा के समान करने के लिये घटवाही की एक नाव पार गई और जैरा का बेटा शमीय यरदन पार आते ही राजा के आगे औंधे मुंह गिरा।
१९ और राजा से कहा कि मेरे प्रभु मुझ पर पाप मत धरिये उस बात को स्मरण करके मन में मत लाइये जो आप के सेवक ने जिस दिन कि मेरा प्रभु राजा यरूसलम से निकल आया था बैर से कही
२० थी। क्योंकि आप का सेवक जानता है कि मैं ने पाप किया सो देखिये आज के दिन मैं यूसफ के समस्त घराने में से पहिले आया हूं कि उतरके अपने प्रभु
२१ राजा से भेंट करूं। परन्तु जरूयाह के बेटे अबिशै ने उत्तर में कहा क्या शमीय इस कारण मारा न जावेगा कि उस ने परमेश्वर के अभिषिक्त को धिक्कारा।
२२ तब दाऊद ने कहा कि हे जरूयाह के बेटे मुझे तुम से क्या कि तुम आज के दिन मेरे बैरी हुआ चाहते हो क्या इसराएल में आज कोई मारा जावेगा क्या मैं नहीं जानता कि आज मैं इसराएल
२३ का राजा हूं। तब राजा ने शमीय से कहा कि तू मारा न जावेगा और राजा ने उस के लिये किरिया खाई॥
२४ तब साऊल का बेटा मिफिबूसत राजा को आगे से मिलने को उतरा और जब से राजा निकला था उस दिन लों कि वह कुशल से फिर न आया अपने पांव न धोये थे न अपनी दाढ़ी सुधारी थी और न अपने कपड़े धोलवाये
२५ थे। और ऐसा हुआ कि जब वह यरूसलम से राजा से मिलने आया तो राजा ने उसे कहा कि हे मिफिबूसत किस लिये तू हमारे साथ न गया।
२६ और उस ने उत्तर दिया कि हे मेरे प्रभु राजा मेरे सेवक ने मुझे छला क्योंकि आप के सेवक ने कहा था कि मैं अपने लिये गदहे पर काठी बांधूंगा जिसतें उस पर चढ़के राजा के पास जाऊं क्योंकि
२७ आप का सेवक लंगड़ा है। और उस ने तेरे सेवक को मेरे स्वामी राजा के आगे अपवाद लगाया परन्तु मेरा प्रभु राजा ईश्वर के दूत के समान है सो आप की दृष्टि में जो अच्छा लगे सो
२८ कीजिये। क्योंकि मेरे पिता के घराने मेरे प्रभु राजा के आगे मृतक थे तथापि आप ने अपने सेवक को उन में बैठाया जो आपही के मंच पर भोजन करते थे इस लिये मेरा क्या पद है कि अब भी
२९ मैं राजा के आगे पुकारूं। तब राजा ने उस्से कहा कि तू अपना समाचार क्यों अधिक वर्णन करता है मैं कह चुका कि तू और सीबा भूमि को बांट
३० लो। तब मिफिबूसत ने राजा से कहा कि हां सब वही लेवे जैसा कि मेरा प्रभु राजा अपने ही घर में फिर कुशल से पहुंचा॥
३१ और राजिलीम से जिलिअदी बरजिल्ली उतरके राजा के साथ यरदन पार
३२ गया कि उसे यरदन पार पहुंचावे। और यह बरजिल्ली अस्सी बरस का अति बृद्ध था और जब कि राजा महनैन में पड़ा था वह जीविका पहुंचाता था क्योंकि
३३ वह अति महत्त जन था। सो राजा ने बरजिल्ली से कहा कि तू मेरे साथ पार उतर और मैं यरूसलम में अपने साथ
३४ तेरा पालन करूंगा। और बरजिल्ली ने राजा को उत्तर दिया कि अब मेरे जीवन के बरस कितने दिन के हैं कि राजा के साथ साथ यरूसलम को चढ़ जाऊं।
३५ आज मैं अस्सी बरस का हुआ और क्या मैं भलाई बुराई का अंतर जान सक्ता हूं और क्या आप का सेवक जो कुछ खाता पीता है उस का स्वाद जान

सक्ता है और क्या मैं गायकों और गायिकाओं का शब्द सुन सक्ता हूं सो आप का सेवक अपने प्रभु राजा पर क्यों ३६ बोझ होवे। आप का सेवक राजा के संग थोड़ी दूर यरदन के पार चलेगा और किस कारण राजा ऐसे फल से मुझे ३७ प्रतिफल देवे। अपने सेवक को बिदा कीजिये कि फिर जावे जिसतें मैं अपने ही नगर में अपने माता पिता की समाधि पास मरूं परन्तु देखिये आप का सेवक किमहाम मेरे प्रभु राजा के साथ पार जावे और जो कुछ आप ३८ भला जानें सो उस्से कीजिये। तब राजा ने उत्तर दिया कि किमहाम मेरे साथ पार चले और जो कुछ मुझे अच्छा लगे सोई उस के लिये करूंगा और जो कुछ तेरी इच्छा होय सोई ३९ तेरे लिये करूंगा। और समस्त लोग यरदन पार गये और जब राजा पार आया तो राजा ने बरजिल्लै को चूमा और उसे आशीस दिया और वह अपने ४० ही स्थान को फिर गया। तब राजा जिलजाल को चला और किमहाम उस के साथ साथ गया और सारे यहूदाह के लोगों ने और इसराएल के आधे लोगों ने भी राजा को पहुंचाया॥

४१ और देखो कि सारे इसराएल राजा के पास आये और राजा से कहा कि हमारे भाई यहूदाह के लोगों ने आप को हम से क्यों चुराया है और राजा को और उस के घराने को और दाऊद के समस्त लोग सहित यरदन पार लाये हैं। ४२ और समस्त यहूदाह के मनुष्यों ने इसराएल के मनुष्यों को उत्तर दिया इस कारण कि राजा हमारे कुटुम्ब हैं सो इस बात में तुम क्यों क्रुद्ध होते हो क्या हम ने राजा का कुछ खाया है अथवा क्या उस ने हमें कुछ दान दिया है। ४३ तब इसराएल के मनुष्यों ने यहूदाह के मनुष्यों को उत्तर दिया और कहा कि राजा में हम दस भाग रखते हैं और दाऊद पर हमारा पद तुम से अधिक है सो तुम ने क्यों हमें हलुक समझा कि राजा के फेर लाने में पहिले हम से क्यों नहीं पूछा और यहूदाह के मनुष्यों की बातें इसराएल के मनुष्यों की बातों से प्रबल हुईं॥

बीसवां पर्ब्ब।

१ और संयोग से वहां एक दुष्ट पुरुष था जिस का नाम सबअ जो बिनयमीनी बिकरी का बेटा था और उस ने नरसिंगा फूंकके कहा कि हम दाऊद में कुछ भाग नहीं रखते और हम यस्सी के बेटे में कुछ अधिकार नहीं रखते हैं हे इसराएल हर एक जन अपने अपने तंबू २ में जाय। सो इसराएल का हर एक जन दाऊद के पीछे से चला गया और बिकरी के बेटे सबअ के पीछे हो लिया परन्तु यहूदाह के मनुष्य यरदन से लेके यरूसलम लों अपने राजा के साथ बने रहे॥

३ और दाऊद यरूसलम में अपने घर को पहुंचा और राजा ने अपनी दस दासियों को जिन्हें वह घर की रखवाली के लिये छोड़ गया था लेके दृष्टिबंध किया और उन्हें भोजन दिया परन्तु उन के पास न गया सो वे जीवन भर जीवन के रंडापे में बंद रहीं॥

४ तब राजा ने अमासा को कहा कि तीन दिन के भीतर यहूदाह के मनुष्यों को मुझ पास यहां एकट्ठा कर और तू भी यहां हो। सो अमासा यहूदाह को एकट्ठा करने गया परन्तु ठहराये हुए ५ समय से उसे अबेर हुई। तब दाऊद ने अबिशै से कहा कि अब बिकरी का बेटा सबअ अबिसलूम से हमारी अधिक बुराई करेगा सो तू अपने प्रभु के सेवकों

को ले और उस का पीछा कर न हो कि वह बाड़े के नगरों में पैठे और ७ हमारी दृष्टि से बच निकले । सो उस के साथ यूआब के मनुष्य और करीती और पलीती और समस्त बीर निकले और यरूसलम से बाहर गये कि बिकरी के बेटे सबअ का पीछा करें ॥

८ जब वे जिबऊन में बड़े पत्थर के पास पहुंचे तो अमासा उन के आगे आगे जाता था और यूआब का बस्त्र जो वह पहिने था सो उस पर लपेटा हुआ था और उस के ऊपर एक कटिबंध और एक खड्ग काठी समेत उस की कटि पर कसा हुआ था और उस के जाते जाते ९ निकल पड़ा । सो यूआब ने अमासा को कहा कि भाई तू कुशल से है और यूआब ने अमासा को चूमने को अपने दहिने १० हाथ से उस की दाढ़ी पकड़ी । परन्तु यूआब के हाथ के खड्ग को अमासा ने सुर्त न किया सो उस ने उसे उस के पांजर में मारा कि उस की अंतड़ियां भूमि पर निकल पड़ीं और दुहराके न मारा सो वह मर गया फिर यूआब और उस के भाई अबिशै ने बिकरी के बेटे ११ सबअ का पीछा किया । और यूआब के जनों में से एक जो उस पास खड़ा था यों बोला कि जिस को यूआब भला लगे और जो दाऊद की ओर है सो यूआब के १२ पीछे जावे । और अमासा मार्ग के मध्य में लोहू से लोटा हुआ था और जब उस पुरुष ने देखा कि सब लोग खड़े होते हैं तो वह अमासा को राजमार्ग से खेत में खींच ले गया और जब उस ने देखा कि जो कोई पास आता है सो खड़ा होता है तब उस ने उस पर कपड़ा डाल १३ दिया । जब वह मार्ग में से अलग किया गया तो सब लोग यूआब के पीछे पीछे गये कि बिकरी के बेटे सबअ को खेदें ॥

१४ और वह इसराएल की सारी गोष्ठियों में से होके अबीला और बैतमअक: और सारे बरीती लों गया और वे भी एकट्ठे होके उस के पीछे पीछे गये । १५ और उन्हों ने आके उसे बैतमअक: के अबीला में घेरा और नगर पर एक मेंड़ बांधी जो बाहर की भीत के सन्मुख थी और सब लोग जो यूआब के साथ थे खोद खोद करते थे कि भीत को गिरावें । १६ तब एक बुद्धिमती स्त्री ने नगर में से पुकारा कि सुनो सुनो अनुग्रह करके यूआब से कहो कि इधर पास आवे कि मैं उसे कुछ कहूं । १७ और जब वह उस पास आया तो उस स्त्री ने उसे कहा कि आप यूआब हैं और उस ने उत्तर दिया कि हां तब उस ने उसे कहा कि अपनी दासी की बात सुनिये और वह बोला मैं सुनता हूं । १८ तब वह कहके बोली कि आरंभ में यों कहा करते थे कि वे निश्चय अबीला में पूछेंगे और यों समाप्त करते थे । १९ मैं इसराएलियों में शांतिकारिणी और बिश्वस्त हूं सो आप एक नगर और इसराएल में एक माता को नाश किया चाहते हैं क्या आप परमेश्वर के अधिकार को निंगला चाहते हैं । २० तब यूआब ने उत्तर देके कहा कि यह परे होवे यह मुझ से परे होवे कि निंगलूं अथवा नाश करूं । २१ यह बात ऐसी नहीं परन्तु इफरायम पर्बत के एक जन बिकरी के बेटे ने जिस का नाम सबअ है राजा पर अर्थात् दाऊद पर बिरोध का हाथ उठाया है सो केवल उसी को सौंप दे और मैं नगर से जाता रहूंगा तब उस स्त्री ने यूआब को कहा कि देखिये उस का मस्तक भीत पर तेरे पास फेंक दिया जावेगा । २२ तब वह स्त्री अपनी चतुराई से सब लोगों के पास गई और उन्हों ने बिकरी के बेटे सबअ का मस्तक काटके बाहर

यूआब की ओर फेंक दिया तब उस ने नरसिंगा फूंका और लोग नगर में से हटके अपने तंबू को गये और यूआब फिरके यरूसलम में राजा पास आया॥

२३ और यूआब इसराएल की समस्त सेना का प्रधान था और यहूयदः का बेटा बिनायाह करीती और पलीती का प्रधान २४ था। और अदूराम कर पर था और अखिलूद का बेटा यहूसफत स्मारक था। २५ और शिया लेखक और सदूक और २६ अबियतर याजक। और ईरायाईरी दाऊद का एक याजक भी था॥

इक्कीसवां पर्ब्ब।

१ फिर दाऊद के दिनों में तीन बरस लगातार अकाल पड़ा और दाऊद ने परमेश्वर से पूछा सो परमेश्वर ने कहा कि यह साऊल के और उस के हत्यारे घराने के कारण है क्योंकि उस ने जिब-२ ऊनियों को बधन किया। तब राजा ने जिबऊनियों को बुलाके उन्हें कहा अब जिबऊनी इसराएल के संतानों में के न थे परन्तु अमूरियों के उबरे हुए थे और इसराएल के संतान ने उन से किरिया खाई थी और साऊल ने चाहा कि इस-राएल के संतान और यहूदाह के ज्वलन ३ के लिये उन्हें नाश करे। सो दाऊद ने जिबऊनियों से कहा कि मैं तुम्हारे लिये क्या करूं और किस्से मैं संतुष्ट करूं जिसतें तुम परमेश्वर के अधिकार को ४ आशीस देओ। तब जिबऊनियों ने उसे कहा कि हम साऊल से और उस के घराने से सोना चांदी नहीं चाहते हैं और न हमारे लिये इसराएल में किसी जन को बधन कीजिये तब वह बोला जो तुम कहोगे सो मैं तुम्हारे लिये ५ करूंगा। तब उन्हों ने राजा को उत्तर दिया कि जिस जन ने हमें नाश किया और इसराएल के सिवानों में से हमें नाश करने की युक्ति किई थी। ६ उस के सात बेटे हमें सौंपे जावें और हम उन्हें परमेश्वर के लिये साऊल के जिबअः में जो परमेश्वर का चुना हुआ है फांसी देंगे तब राजा बोला मैं देऊंगा॥

७ परन्तु राजा ने साऊल के बेटे यूनतन के बेटे मिफिबूसत को उस किरिया के कारण जो साऊल के बेटे यूनतन के और दाऊद के मध्य में थी बचा रक्खा। ८ परन्तु राजा ने ऐयाह की बेटी रिसफः के दो बेटों को जिन्हें वह साऊल के लिये जनी थी अर्थात् अरमूनी और मिफिबूसत को और साऊल की बेटी मीकल के पांच बेटों को जिन्हें वह महलाती बरजिल्ली के बेटे अदरिएल के ९ लिये जनी थी। और उस ने उन्हें जिबऊनियों के हाथ सौंप दिया और उन्हों ने उन्हें पहाड़ पर परमेश्वर के आगे फांसी दिई और वे सातों कटनी के दिनों में एक साथ मारे गये यह जव १० कटने के आरंभ में था। तब ऐयाह की बेटी रिसफः ने टाट बस्त्र लिया और कटनी के आरंभ से लेके आकाश में से उन पर पानी टपकने लों अपने लिये पहाड़ पर बिछा दिया और दिन को आकाश के पंछी और रात को बनैले पशु को उन पर ठहरने न देती थी॥

११ और दाऊद को कहा गया कि साऊल की दासी ऐयाह की बेटी रिसफः १२ ने यों किया। सो दाऊद ने जाके साऊल की हड्डियों और उस के बेटे यूनतन की हड्डियों को यबीस जिलिअद के मनुष्यों से फेर लिया जिन्हों ने उन्हें बैतशान की सड़क से जहां फिलिस्तियों ने उन्हें टांगा था तब फिलिस्तियों ने साऊल को जिलबूअ में १३ मारा था चुरा लिया। और वह वहां से साऊल की हड्डियों को और उस के

बेटे यूनतन की हड्डियों को ले आया और जो टांगे गये थे उन की हड्डियों १४ को एकट्ठा करवाया। और उन्हों ने साऊल और उस के बेटे यूनतन की हड्डियों को ज़िलअ के बिनयमीनी के देश में उस के पिता कीस की समाधि में गाड़ा और सब जो राजा ने उन्हें आज्ञा किई थी उन्हों ने किया और इस के पीछे देश के कारण ईश्वर ने बिनय को मान लिया॥

१५ और फिलिस्ती इसराएल से फिर लड़े और दाऊद अपने सेवकों के साथ उतरके फिलिस्तियों से लड़ा और दाऊद दुर्बल १६ हुआ। अब यशबूबनूब ने जो रफा के बेटों में से था जिस की बरछी के फल का पीतल सवा तीन सेर एक का और नया खड्ग बांधे था चाहा कि दाऊद १७ को मार डाले। पर जरूयाह के बेटे अबिशै ने उस की सहाय किई और उस फिलिस्ती को मारके बधन किया तब दाऊद के लोग उस्से किरिया खाके बोले कि आप फिर कभी हमारे साथ लड़ाई पर मत जाइये जिसतें आप इसराएल का दीया न बुझावें॥

१८ और उस के पीछे ऐसा हुआ कि जुब में फिलिस्तियों से फेर संग्राम हुआ तब हूशाती सिबिकाई ने साफ को जो दानव के बेटों में का था मार डाला। १९ और जुब में फिर फिलिस्तियों से संग्राम हुआ तब यअरीओरिजीम के बेटे इलहनन बैतलहमी ने जाती जुलियात को जिस के भाले की छड़ जोलाहे के २० लट्ठे सी थी मारा। फिर जात में एक और संग्राम हुआ जहां बड़े डौल का एक जन था और उस के एक एक हाथ में छः छः अंगुलियां और एक एक पांव में छः छः अंगुलियां थीं गिनती में चौबीस और वह भी दानव से उत्पन्न हुआ। और जब उस ने इसराएल को २१ तुच्छ जाना तब दाऊद के भाई शिमयाह के बेटे यूनतन ने उसे घात किया। ये २२ चार जात में दानव से उत्पन्न हुए और दाऊद और उस के सेवकों के हाथ से मारे गये॥

बाईसवां पर्ब्ब।

और दाऊद ने उस दिन परमेश्वर १ से इस भजन की बातें कहीं जब कि परमेश्वर ने उसे उस के सारे बैरियों के और साऊल के हाथ से छुड़ाया॥

और बोला कि परमेश्वर मेरा पहाड़ २ और मेरा गढ़ और मेरा बचवैया। मेरी ३ चटान का ईश्वर उस पर मैं भरोसा रक्खूंगा मेरी ढाल और मेरी मुक्ति का सींग मेरा ऊंचा गढ़ और मेरा शरण और मेरा त्राणकर्त्ता है तू मुझे अंधेर से बचाता है। मैं परमेश्वर की दुहाई ४ देऊंगा जो स्तुति के योग्य है और अपने बैरियों से बचाया जाऊंगा। क्योंकि ५ मृत्यु की लहरों ने मुझे घेरा और अधर्म्मियों के बाढ़ों ने मुझे डराया। नरक की पीड़ा ने मुझे घेरा मृत्यु के ६ फंदों ने मुझे रोका। अपने दुःख में मैं ७ ने परमेश्वर को पुकारा और अपने ईश्वर के आगे चिल्लाया तब उस ने अपने मंदिर में से मेरा शब्द सुना और मेरा चिल्लाना उस के कानों में पहुंचा। तब ८ उस के क्रोध के कारण पृथिवी हिल गई और थरथरा उठी स्वर्ग की नेवें हिल गईं। उस के क्रोध से एक धूंआ ९ उठा और उस के मुंह में की आग खा गई उस्से कोइले धधक उठे। उस ने १० स्वर्गों को भी झुकाया और उतर आया और उस के पांव तले अंधियारा था। और वह एक करोबी पर चढ़ा था और ११ उड़ा और पवन के डैनों पर दिखाई दिया। और उस ने जलों के बंधन से १२

और आकाश के घनघोर मेघों से अपनी चारों ओर अंधकार का तंबू किया। १३ उस के आगे की चमक से कोइले सुलग १४ गये। परमेश्वर स्वर्ग से गर्जा और अति १५ महान ने अपना शब्द उच्चारा। और उस ने बाण चलाये और उन्हें बिथरा दिया बिजुली और उन्हें हरा दिया। १६ परमेश्वर की दपट से और उस के नथुनों के स्वास के झोंके से समुद्र की थाह दिखाई दिई जगत की नेवें उघर गईं। १७ उस ने ऊपर से भेजा मुझे उठा लिया उस ने मुझे बहुत पानियों में से खींच १८ लिया। उस ने मुझे मेरे बलवंत बैरी से उन से जो मुझ से घिन करते थे छुड़ाया १९ क्योंकि वे मुझ से प्रबल थे। उन्हों ने मुझे मेरे बिपत के दिन में रोका परन्तु २० परमेश्वर मेरा आसा था। और वह मुझे बड़े स्थान में भी निकाल लाया उस ने मुझे छुड़ाया क्योंकि वह मुझ से प्रसन्न २१ था। परमेश्वर ने मेरे धर्म्म के समान मुझे प्रतिफल दिया और मेरे हाथ की पवित्रताई के समान मुझे पलटा दिया। २२ क्योंकि मैं ने परमेश्वर के मार्गों का पालन किया और अपने ईश्वर से दुष्टता २३ न किई। क्योंकि उस के सारे बिचार मेरे आगे हैं और उस की बिधिन से मैं २४ फिर न गया। और मैं उस के लिये खरा था और मैं ने आप को अपनी २५ बुराई से बचा रक्खा है। इस लिये परमेश्वर ने मेरे धर्म्म के समान और उस की दृष्टि में मेरी पवित्रता के समान मुझे प्रतिफल दिया॥

२६ दयाल पर तू आप को दयाल दिखावेगा खरे को खरा दिखावेगा। २७ निर्मल के लिये आप को निर्मल दिखावेगा और क्रूर को तू आप को बिपरीत २८ दिखावेगा। और तू कष्टित लोगों को बचावेगा परन्तु ध्वस्त करने के लिये तेरी आंखें घमंडियों पर हैं। क्योंकि हे २९ परमेश्वर तू मेरा दीपक और परमेश्वर मेरे अंधियारे को उंजियाला करेगा। क्योंकि तुझी से मैं ने एक जथा को ३० तोड़ दिया मैं अपने ईश्वर से भीत फांद गया। सर्व्वशक्तिमान का मार्ग ३१ सिद्ध परमेश्वर का बचन जांचा हुआ जिन सभों का भरोसा उस पर है वह उन के लिये ढाल है। क्योंकि परमेश्वर ३२ को छोड़ सर्व्वशक्तिमान कौन और हमारे ईश्वर को छोड़ चटान कौन। सर्व्वशक्तिमान मेरा दृढ़ता और पराक्रम ३३ वही मेरी चाल सिद्ध करता है। वह ३४ हरिणों के से मेरे पांव बनाता है और मुझे मेरे ऊंचे स्थानों पर बैठाता है। वह मेरे हाथों को युद्ध के लिये सिखाता ३५ है ऐसा कि पोलाद का धनुष मेरी भुजाओं से टूटता है। तू ही ने अपने ३६ बचाव की ढाल भी मुझे दिई है और तेरी कोमलता ने मुझे बढ़ाया है। तू ३७ मेरे डग को मेरे तले बढ़ावेगा और मेरी घुट्टियां फिसल न गईं। मैं अपने ३८ बैरियों का पीछा करूंगा और उन्हें नाश करूंगा और उलटा न फिरूंगा जब लों वह संघार न किया जावे। और मैं उन्हें ३९ नाश करूंगा और उन्हें घायल करूंगा ऐसा कि वे उठ न सकें और वे मेरे पांव तले गिरेंगे। क्योंकि तू ने संग्राम ४० के लिये बल से मेरी कटि बांधी जो मुझ पर चढ़ आवेंगे तू उन्हें मेरे नीचे झुकावेगा। और तू ने मेरे बैरियों के गले ४१ भी मुझे दिये हैं और मैं अपने बैरियों को नाश करूंगा। वह ताकेंगे पर कोई ४२ बचवैया न होगा परमेश्वर की ओर और वह उन की नहीं सुनता। और मैं उन्हें ४३ पृथिवी की धूल की नाईं बुकनी करूंगा मैं उन्हें मार्ग के चहले की नाईं रौंदूंगा और उन्हें बिछा दूंगा। और तू मुझे मेरे ४४

लोगों के झगड़ों से छुड़ावेगा तू मुझे अन्यदेशियों का प्रधान करेगा एक लोग जिसे मैं ने नहीं जाना मेरी सेवा करेंगे।
४५ परदेशियों के पुत्र कपट से मुझे मानेंगे सुनते ही वे मेरे अधीन हो जावेंगे।
४६ परदेशी कुम्हला जावेंगे और वे अपने सकेत स्थानों में से डर निकलेंगे॥
४७ परमेश्वर जीता है और मेरी चटान धन्य और मेरी मुक्ति की चटान का
४८ ईश्वर महान होवे। सर्बशक्तिमान जो मेरे लिये प्रतिफल देता है और लोगों
४९ को मेरे नीचे उतारता है। और मुझे मेरे बैरियों में से निकाल लाता है और तू मुझे उन से ऊपर उभार लावेगा जो मुझ पर चढ़ आयेंगे तू मुझे अंधेरी
५० मनुष्य से छुड़ावेगा। इस लिये हे परमेश्वर मैं अन्यदेशियों में तेरा धन्य मानूंगा और तेरे नाम की स्तुति गाऊंगा।
५१ जो अपने राजा की मुक्ति का गर्गज है और अपने अभिषिक्त दाऊद पर और उस के बंश पर सदा लों दया करता है॥

तेईसवां पर्ब्ब।

१ और ये दाऊद के अंत की बातें हैं यस्सी के बेटे दाऊद ने कहीं और उस पुरुष ने जो उभारा गया यअकूब के ईश्वर के अभिषिक्त ने जो इसराएल में
२ मधुरगायक है कहा। ईश्वर का आत्मा मेरी ओर से बोला और उस का बचन
३ मेरी जीभ पर था। इसराएल के ईश्वर ने कहा इसराएल के चटान ने मुझे कहा जो मनुष्यों पर राज्य करता है वह धर्म्मी हो और ईश्वर के डर से
४ राज्य करे। और प्रात:काल की ज्योति की नाईं बिना मेघों के बिहान सूर्य्य उदय होता है और मेंह के पीछे पृथिवी में से कोमल घास उगने की नाईं।
५ यद्यपि मेरा घर सर्बशक्तिमान के आगे ऐसा न हो तथापि उस ने मेरे साथ समस्त बिषय में सनातन की एक सत्य बाचा बांधी मेरी सारी मुक्ति और सारी बांछा के लिये यद्यपि वह उसे न उगावे।
६ परन्तु दुष्ट सब के सब कांटों के समान दूर किये जावेंगे क्योंकि वे हाथों से
७ पकड़े नहीं जा सके। परन्तु जो जन उन्हें छूवे उसे अवश्य है कि लोहे और बरछी के छड़ से पूर्ण होवे और वे उसी स्थान में सर्बथा जलाये जावेंगे॥

८ दाऊद के बीरों के नाम ये हैं तहकमूनी जो प्रधानों में श्रेष्ठ आसन पर बैठता था वही अजनी अदिनू था उसी ने आठ सौ के सन्मुख होके उन्हें एक
९ साथ घात किया। और उस के पीछे अहोही दूद का बेटा इलिअजर जो उन तीन बीरों में से जो दाऊद के संग थे उन्हों ने उन फिलिस्तियों को तुच्छ समझा जो इसराएली लोगों से लड़ने
१० के लिये एकट्ठे थे। उस ने उठके फिलिस्तियों को मारा यहां लों कि उस का हाथ थक गया और मूठ हाथ में चिपक गई और परमेश्वर ने उस दिन बड़ा जय दिया और लोग केवल लूट के लिये उस के पीछे फिर गये॥

११ और उस के पीछे हरारी अजी का बेटा शम्मः फिलिस्ती मसूर के खेत में कहीं लेने को एकट्ठे हुए और लोग
१२ फिलिस्तियों के आगे से भाग गये। परन्तु वह खेत के मध्य में खड़ा रहा और उसे बचाया और फिलिस्तियों को मार डाला और परमेश्वर ने बड़ा जय दिया॥

१३ और तीस में से तीन प्रधान निकले और कटनी के समय में दाऊद अदुल्लम की कंदला में गये और फिलिस्तियों की जथा ने रिफाइम की तराई में डेरा
१४ किया था। और दाऊद उस समय गढ़ में था और फिलिस्तियों की चौकी
१५ बैतलहम में। और दाऊद ने लालसा

करके कहा हाय कि कोई मुझे उस कुए का एक घूंट पानी पिलावे जो बैतलहम के फाटक पास है । १६ सो उन तीन शूरों ने फिलिस्तियों की सेना को आरपार तोड़के बैतलहम के कुए से जो फाटक के पास था पानी निकाल लाके दाऊद को दिया तथापि उस ने उस्से पीने न चाहा परन्तु परमेश्वर के आगे उसे उंडेल दिया । १७ और उस ने कहा कि हे परमेश्वर मुझ से परे होवे कि मैं ऐसा करूं क्या यह उन लोगों का लोहू नहीं जो अपने प्राण को जोखिम में लाये हैं इस लिये उस ने पीने न चाहा इन तीन शूरों ने ऐसे ऐसे काम किये ॥

१८ और जरूयाह के बेटे यूअब का भाई अबिशै भी तीन में प्रधान था और उस ने तीन सौ पर भाला चलाया और उन्हें मार डाला और तीन में नामी हुआ । १९ क्या वह तीनों में सब से प्रतिष्ठित न था इस लिये वह उन का प्रधान हुआ तथापि वह पहिले तीन लों न पहुंचा ॥

२० और कबजिएल में एक बलवन्त पुरुष था उस ने बड़े बड़े कार्य्य किये उस का बेटा यहूयदः जिस के बेटे बिनायाह ने मोअब के दो जन को जो सिंह के तुल्य थे मारा और जाके पाला के समय में गड़हे के बीच एक सिंह को मारा । २१ और उस ने एक सुंदर मिस्री को मार डाला और उस मिस्री के हाथ में एक भाला था परन्तु वह लट्ठ लेके उस पर उतरा और मिस्री के हाथ से भाला छीन लिया और उसी के भाले से उसे मार डाला । २२ यहूयदः के बेटे बिनायाह ने यह यह किये और तीन शूरों में नामी था । २३ वह उन तीसों से अधिक प्रतिष्ठित था पर वह उन तीन लों न पहुंचा और दाऊद ने उसे अपने मंत्रियों का प्रधान किया ॥

२४ यूअब का भाई असहेल उन तीसों में एक इलहनान बैतलहमी दूदू का बेटा । २५ शम्मः हरूदी इलिका हरूदी । २६ पलीती खालिस तकूई अकीश का बेटा ईरा । २७ अनाताती अबिअजर हूशाती मबनाई । २८ अहोही सलमून नीतोफाती महरी । २९ नीतोफाती बअना का बेटा हलिब बिनयमीन के संतान के जिबआ में से रैबी का बेटा इत्ती । ३० पिराथूनी बनाया गाश के नालों का हिदई । ३१ अरबाती अबिअलबोन बरहूमी अस्मावत । ३२ अलयहबा शअलबूनी बनियासन यूनतन । ३३ हरारी शम्मः और हरारी शरार का बेटा अहयाम । ३४ मअकाती का बेटा अहशबई का बेटा इलीफलत गलनी अखितुफल का बेटा इलियम । ३५ करमली हसराई अरबी पाराई । ३६ सूबा से नातन का बेटा ऐगाल जादी बानी । ३७ अमूनी सिलक बीरोती नहराई जरूयाह के बेटे यूअब का अस्त्रधारी था । ३८ इथरी ऐरा इथरी गारीब । ३९ हित्ती ऊरियाह सब समेत सैंतीस ॥

चौबीसवां पर्ब्ब ।

१ और फेर परमेश्वर का क्रोध इसराएल पर भड़का और उस ने दाऊद को उन पर उभारा कि इसराएल को और यहूदाह को गिनावे । २ क्योंकि राजा ने सेना के प्रधान यूअब को जो उस के साथ था आज्ञा किई कि इसराएल की सारी गोष्ठियों में से दान से बिअरसबअ लों जा और लोगों को गिन जिसतें मैं लोगों की गिनती को जानूं । ३ तब यूअब ने राजा से कहा कि परमेश्वर आप का ईश्वर उन लोगों को जितने वे होवें सौ गुना अधिक करे जिसतें मेरे प्रभु राजा की आंख देखें परन्तु किस कारण मेरे प्रभु राजा यह काम किया चाहते हैं ॥

४ तथापि राजा की बात यूअब के और

सेना के प्रधानों की बात पर प्रबल हुई
और यूअब और सेना के प्रधान राजा के
पास से इसराएल के लोगों को गिन्ने को
५ निकल गये। और यरदन पार उतरे और
अराईर में नगर की दहिनी ओर जो
जद की तराई के मध्य में याज़ेर की
६ ओर है डेरा किया। और जिलिअद और
नये बसे हुए नीचे के देश में आये और
दान को और घूमके सैदून को आये।
७ और सूर के गढ़ को आये और हवियों
के सारे नगरों को और कनआनियों के
और वे यहूदाह के दक्षिण को बिअरसबअ
८ लों निकल गये। सो जब वे सारे देश
में से होके गये तब नव मास बीस दिन
९ के पीछे यरूसलम को आये। और यूअब ने
लोगों की गिनती का पत्र राजा को दिया
सो इसराएल में आठ लाख खड्गधारी
बीर थे और यहूदाह के लोग पांच लाख॥

१० और लोगों के गिनाने के पीछे दाऊद
के मन में खटका हुआ और दाऊद ने
परमेश्वर से कहा कि मैं ने इस काम
में बड़ा पाप किया है और अब हे
परमेश्वर मैं तेरी बिनती करता हूं कि
अपनी कृपा से अपने दास का पाप
क्षमा कर क्योंकि मैं ने अति मूढ़ता
११ किई है। और जब दाऊद बिहान को
उठा तो परमेश्वर का बचन दाऊद के
दर्शी जाद भविष्यद्वक्ता पर यह कहके
१२ पहुंचा। कि जा और दाऊद से कह कि
परमेश्वर यों कहता है कि मैं तेरे आगे
तीन बात धरता हूं तू उन में से एक
१३ को चुन कि मैं तेरे लिये करूं। सो
जाद दाऊद पास आया और उसे कहके
बोला कि तेरे देश में तुझ पर सात
बरस का अकाल पड़े अथवा तू तीन
मास लों अपने शत्रुन के आगे भागा
फिरे और वे तुझे रगेदें अथवा तेरे देश
में तीन दिन की मरी पड़े अब सोच
और देख कि मैं उसे जिस ने मुझे भेजा
१४ क्या उत्तर देऊं। तब दाऊद ने जाद
से कहा कि मैं बड़े सकेत में हूं हम
परमेश्वर के हाथ में पड़ें क्योंकि उस
की दया बहुत है और मनुष्यों के हाथ
में मैं न पड़ूं॥

१५ सो परमेश्वर ने इसराएल पर बिहान
से ठहराये हुए समय लों मरी भेजी और
दान से लेके बिअरसबअ लों लोगों में
१६ से सत्तर सहस्र जन मर गये। और जब
दूत ने नाश करने के लिये यरूसलम पर
अपना हाथ बढ़ाया तब परमेश्वर
बुराई से फिर गया और उस दूत से
कहा जिस ने लोगों को नाश किया कि
बस है अब अपना हाथ रोक ले और
परमेश्वर का दूत यबूसी अराना के
१७ खलिहान के लग था। और जब दाऊद
ने उस दूत को देखा जिस ने लोगों
को मारा तो परमेश्वर से कहा कि देख
पाप तो मैं ने किया है और दुष्टता मैं ने
किई है परन्तु इन भेड़ों ने क्या किया
है सो मुझ पर और मेरे बाप के घराने
पर तेरा हाथ पड़े॥

१८ और उस दिन जाद ने दाऊद पास
आके उसे कहा कि चढ़ जा और यबूसी
अराना के खलिहान में परमेश्वर के
१९ लिये एक बेदी बना। और जाद के
कहने पर दाऊद परमेश्वर की आज्ञा
२० के समान चढ़ गया। और अराना ने
ताका और राजा को और उस के सेवकों
को अपनी ओर आते देखा सो अराना
निकला और राजा के आगे झुकके भूमि
२१ पर प्रणाम किया। और अराना ने कहा
कि मेरे प्रभु राजा अपने सेवक के पास
किस लिये आये हैं तब दाऊद ने कहा
कि तुझ से खलिहान मोल लेके पर-
मेश्वर के लिये एक बेदी बनाऊं जिसतें
२२ लोगों में से मरी थम जावे। और अराना

ने दाऊद से कहा कि मेरे प्रभु राजा लेवें और जो अच्छा जानें सो भेंट करें देखिये कि बलिदान की भेंट के लिये बैल और पीटने की सामग्री बैलों की २३ सामग्री समेत इंधन के लिये हैं। सो जैसा राजा राजा को देता है अराना ने सब कुछ किया और अराना ने राजा से कहा कि परमेश्वर आप का ईश्वर आप को ग्रहण करे। तब राजा ने अराना से कहा कि यों नहीं परन्तु मैं निश्चय दाम देके उसे मोल लेऊंगा और मैं अपने ईश्वर परमेश्वर के लिये ऐसी बलिदान की भेंट न चढ़ाऊंगा जो सेंत की हो सो दाऊद ने वह खलिहान और बैल पचास शेकल चांदी देके मोल लिये। २५ और दाऊद ने वहां परमेश्वर के लिये बेदी बनाई और बलिदान की भेंटें और कुशल की भेंटें चढ़ाईं और परमेश्वर देश के लिये मनाया गया और मरी इसराएल में से थम गई॥

राजाओं की पहिली पुस्तक।

पहिला पर्ब्ब।

१ अब दाऊद राजा पुरनिया और दिनी हुआ और उन्हों ने उसे कपड़े उढ़ाये २ परन्तु वह न गरमाता था। सो उस के सेवकों ने उसे कहा कि मेरे प्रभु राजा के लिये एक कन्या ढूंढ़ी जावे जिसतें वह राजा के आगे खड़ी रहे और उस के लिये सेविका होवे और वह आप की गोद में पड़ी रहे जिसतें मेरा प्रभु राजा ३ गरमा जावे। सो उन्हों ने इसराएल के समस्त सिवानों में एक सुंदरी कन्या ढूंढ़ी और शुनामी अबिशाग को पाया और ४ उसे राजा पास लाये। और वह कन्या अति रूपवती थी और राजा की सेवा और उस की टहल करती थी परन्तु राजा उस्से अज्ञान रहा॥

५ तब हज्जीत के बेटे अदूनियाह ने यह कहके आप को बढ़ाया कि मैं राज्य करूंगा और अपने लिये रथ और घोड़चढ़े और पचास मनुष्य अपने आगे आगे दौड़ने को सिद्ध किये। ६ और उस के बाप ने उसे यह कहके कभी उदास न किया कि तू ने ऐसा क्यों किया और वह भी बहुत सुंदर था और उस की मा उसे अबिसलुम के पीछे जनी थी। ७ और वह जरूयाह के बेटे यूअब और अबियतर याजक से बातचीत करता था और यह दोनों अदूनियाह के पीछे सहायता करते थे। ८ परन्तु सदूक याजक और यहूयदः का बेटा बिनायाह और नातन आगमज्ञानी और शमीय और रेई और दाऊद के महाबीर अदूनियाह के साथ न थे। ९ और अदूनियाह ने भेड़ और बैल और पले हुए ढोर जुहलत के पत्थर पर जो रुगल के कुए के लग है बधन किये और अपने सारे भाई अर्थात् राजा के बेटों का और यहूदाह के सारे लोगों का राजा के सेवकों का नेवता किया। १० परन्तु नातन आगमज्ञानी और बिनायाह और महाबीरों को और अपने भाई सुलेमान को न बुलाया॥

११ इस लिये नातन सुलेमान की माता बित्तसबअ को यह कहके बोला कि क्या तू ने नहीं सुना कि हज्जीत का बेटा अदूनियाह राज्य करता है और हमारा १२ प्रभु दाऊद नहीं जानता। सो अब आइये मैं आप को मंत्र देऊं जिसतें आप ही का प्राण और आप के बेटे सुलेमान का १३ प्राण बचे। आप दाऊद राजा पास जाइये और उसे कहिये कि मेरे प्रभु राजा क्या आप ने अपनी दासी से किरिया खाके नहीं कहा कि निश्चय तेरा बेटा सुलेमान मेरे पीछे राज्य करेगा और वही मेरे सिंहासन पर बैठेगा फेर अदूनियाह १४ क्यों राज्य करता है। देख आप के राजा से बातें करते हो मैं भी आप के पीछे आ पहुंचूंगा और आप की बातों को दृढ़ करूंगा॥

१५ सो बित्तसबअ भीतर कोठरी में राजा पास गई और राजा तो बहुत बृद्ध था और शूनामी अबिशाग राजा की १६ सेवा करती थी। और बित्तसबअ झुकी और राजा के आगे दण्डवत किई तब १७ राजा ने कहा कि तुझे क्या है। और उस ने उसे कहा कि हे मेरे प्रभु आप ने परमेश्वर अपने ईश्वर की किरिया खाके अपनी दासी से कहा कि निश्चय मेरे पीछे तेरा बेटा सुलेमान राज्य करेगा १८ और वह मेरे सिंहासन पर बैठेगा। सो अब देखिये अदूनियाह राज्य करता है और अब लों मेरा प्रभु राजा नहीं १९ जानता। और उस ने बहुत से बैल और पले हुए ढोर और भेड़ बधन किये और राजा के सब बेटों और अबियतर याजक और सेना के प्रधान यूआब को नेउंता किया है परन्तु उस ने आप के २० दास सुलेमान को नहीं बुलाया। और अब हे मेरे प्रभु राजा समस्त इसराएल की दृष्टि तुझ पर है जिसतें तू उन्हें कहे कि मेरे प्रभु राजा के सिंहासन पर उस के पीछे कौन बैठेगा। नहीं तो २१ यह होगा कि जब मेरा प्रभु राजा अपने पितरों के साथ शयन करेगा तब मैं और मेरा बेटा सुलेमान दोनों दोषी गिने जावेंगे॥

२२ और देखो कि वह राजा से बातें कर रही थी कि नातन आगमज्ञानी भी २३ आ पहुंचा। और उन्हों ने यह कहके राजा को जनाया कि नातन आगमज्ञानी आया है और जब वह राजा के आगे आया तो उस ने राजा के आगे भूमि २४ लों झुकके प्रणाम किया। और बोला हे मेरे प्रभु राजा क्या तू ने कहा है कि मेरे पीछे अदूनियाह राज्य करके मेरे २५ सिंहासन पर बैठेगा। क्योंकि वह आज उतरा और बहुत से बैल और पले हुए ढोर और भेड़ें मारीं और समस्त राजकुमारों को और सेना के प्रधानों को और अबियतर याजक को नेउंता किया और देखिये वे उस के साथ खाते पीते हैं और कहते हैं कि अदूनियाह राजा २६ जीये। परन्तु आप के दास मुझे और सदूक याजक और यहूयदः के बेटे बिनायाह को और तेरे दास सुलेमान २७ को न बुलाया। क्या यह मेरे प्रभु राजा की ओर से है और तू ने अपने दास को न जनाया कि मेरे प्रभु राजा के पीछे उस के सिंहासन पर कौन बैठेगा॥

२८ तब दाऊद राजा ने उत्तर देके कहा कि बित्तसबअ को मेरे पास बुलाओ और वह राजा के आगे आई और राजा २९ के सन्मुख खड़ी हुई। तब राजा ने किरिया खाके कहा कि उस परमेश्वर के जीवन सों जिस ने मेरे प्राण को ३० समस्त दुःख से छुड़ाया। जैसा मैं ने परमेश्वर इसराएल के ईश्वर की किरिया खाके तुझे कहा था कि निश्चय तेरा

बेटा सुलेमान मेरे पीछे राज्य करेगा और मेरी संती मेरे सिंहासन पर वही बैठेगा ३१ वैसा ही मैं आज निश्चय करूंगा। तब बितसबअ ने भूमि लों झुकके प्रणाम किया और बोली कि मेरा प्रभु राजा दाऊद सर्वदा जीता रहे॥

३२ तब दाऊद राजा ने आज्ञा किई कि सदूक याजक और नातन आगमज्ञानी और यहूयदः के बेटे बिनायाह को पास बुलाओ और वे राजा के आगे ३३ आये। तब राजा ने उन्हें भी कहा कि अपने प्रभु के सेवकों को अपने साथ लेओ और मेरे बेटे सुलेमान को मेरे ही खच्चर पर चढ़ाओ और उसे जैहून को ३४ ले आओ। और सदूक याजक और नातन आगमज्ञानी उसे वहां इसराएल पर राज्याभिषेक करें और तुरही फूंकके बोलें ३५ कि सुलेमान राजा जीता रहे। तब उस के पीछे पीछे चले आओ जिसतें वह आवे और मेरे सिंहासन पर बैठे क्योंकि मेरी संती वही राजा होगा और मैं ने ठहराया है कि इसराएल पर और यहूदाह ३६ पर वही प्रभुता करे। तब यहूयदः के बेटे बिनायाह ने राजा को उत्तर देके कहा कि आमीन मेरे प्रभु राजा का ३७ ईश्वर परमेश्वर भी ऐसा ही कहे। जिस रीति से परमेश्वर मेरे प्रभु राजा के संग था उसी रीति से सुलेमान के संग होवे और उस के सिंहासन को मेरे प्रभु दाऊद राजा के सिंहासन से श्रेष्ठ करे॥

३८ सो सदूक याजक और [illegible] ज्ञानी और यहूयदः का बेटा बिनायाह और करीती और पलीती आये और सुलेमान को दाऊद राजा के खच्चर पर ३९ चढ़ाया और उसे जैहून को लाये। और वहां सदूक याजक ने तंबू से एक सींग में तेल लिया और सुलेमान को अभिषेक किया तब उन्हों ने तुरही फूंकी और सब के सब बोले कि सुलेमान राजा ४० जीता रहे। और समस्त लोग उस के पीछे पीछे चढ़ आये और लोग बांसली बजाते बजाते बड़ा आनन्द करने लगे ऐसा कि भूमि उन के शब्द से फट गई॥

४१ और अदूनियाह ने और उस के साथ के समस्त नेवतहरी ने सुना और ज्यों वे खा चुके और यूआब ने तुरही का शब्द सुना तो बोला कि नगर में यह क्या ४२ कोलाहल और हौरा है। वह यह कह रहा था कि देखो अबियतर याजक का बेटा यूनतन आया और अदूनियाह ने उसे कहा कि आ क्योंकि तू वीर है ४३ और सुसंदेश लाता है। तब यूनतन ने उत्तर दिया और अदूनियाह से कहा कि निश्चय हमारे प्रभु राजा दाऊद ने सुले- ४४ मान को राजा किया है। और राजा ने सदूक याजक को और नातन आगमज्ञानी को और यहूयदः के बेटे बिनायाह को और करीती और पलीती को उस के साथ भेजा और उन्हों ने राजा के खच्चर ४५ पर उसे चढ़ाया। और सदूक याजक और नातन आगमज्ञानी ने जैहून में उसे राज्याभिषेक किया और वे वहां से ऐसा आनन्द करते हुए फिरे हैं कि नगर गूंज गया तुम ने वही शब्द सुना है। ४६ और सुलेमान राज्यसिंहासन पर भी बैठा ४७ है। और इस्से अधिक राजा के सेवक हमारे प्रभु राजा दाऊद को यह कहके बधाई दे रहे हैं कि ईश्वर सुलेमान को तेरे नाम से अधिक बढ़ावे और उस के सिंहासन को तेरे सिंहासन से अधिक श्रेष्ठ करे और राजा ने बिछौने पर दण्डवत किई। ४८ और राजा ने भी कहा है कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर धन्य है जिस ने आज के दिन मेरे सिंहासन का बैठवैया दिया और मेरी आंखों ने देखा॥

४९ तब सारे नेउंतहरी जो अदूनियाह के साथ थे डरके उठे और हर एक अपने
५० अपने मार्ग चला गया। और अदूनियाह सुलेमान के डर के मारे उठा और जाके
५१ बेदी के सींगों को पकड़ा। और सुलेमान को संदेश पहुंचा कि देखिये अदूनियाह सुलेमान राजा से डरता है क्योंकि वह बेदी के सींगों को पकड़े हुए कहता है कि सुलेमान राजा आज मुझ से किरिया खाके कहे कि मैं अपने सेवक
५२ को खड्ग से घात न करूंगा। तब सुलेमान बोला यदि वह आप को योग्य पुरुष दिखावेगा तो उस का एक बाल भूमि पर न गिरेगा परन्तु यदि उस में दुष्टता पाई जाय तो वह मारा जायेगा।
५३ सो सुलेमान राजा लोग भेजके उसे बेदी पर से उतार लाया और उस ने आके सुलेमान राजा के आगे दण्डवत किई और सुलेमान ने उसे कहा कि अपने घर जा॥

दूसरा पर्व्व।

१ अब दाऊद के मरने के दिन आ पहुंचे तब उस ने अपने बेटे सुलेमान
२ को यह कहके उपदेश किया। कि मैं समस्त पृथिवी की रीति पर जाता हूं सो तू दृढ़ हो और अपना पुरुषार्थ दिखा।
३ और परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञा को पालन करके उस के मार्गों में चल और उस की व्यवस्थों उस की आज्ञाओं और उस की बिधिन और उस की साक्षियों की रक्षा कर जैसा मूसा की व्यवस्था में लिखा है जिसतें तू अपने समस्त कार्य्यों में और जिधर तू
४ फिरे भाग्यवान होवे। जिसतें परमेश्वर अपने बचन पर बना रहे जो उस ने मेरे विषय में कहा कि यदि तेरे बंश अपने मार्ग में चौकस रहके अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से मेरे आगे सच्चाई से चलेंगे तो इसराएल के संतान का सिंहासन तुझ से अलग न होगा।
५ और जो कुछ कि जरुयाह के बेटे यूआब ने मुझ से और इसराएली सेना के दो प्रधानों अर्थात् नेयिर के बेटे अबिनेयिर और यतर के बेटे अमासा से किया तू जानता है कि उस ने उन्हें मार डाला और मिलाप में संग्राम का लोहू बहाया और संग्राम के लोहू को अपनी कटि के पटुके पर और अपने पांवों की जूतियों पर छिड़का।
६ सो तू अपनी बुद्धि के समान कर और उस का पक्का बाल कुशल से समाधि में
७ उतरने न दे। परन्तु जिलिअदी बरजिल्ली के बेटों पर दया कर और वे उन में होवें जो तेरे मंच पर भोजन करते हैं इस लिये कि जब मैं तेरे भाई अबिसलूम से भागा था वे मुझ पास आये।
८ और देख बहूरीमी बिनयमीनी जैरा का बेटा शमीय तेरे साथ है जिस ने मुझे भारी साप से सापा जिस दिन मैं महनैन में गया परन्तु वह यरदन पर मुझ से भेंट करने को आया और मैं ने यह कहके उस्से परमेश्वर की किरिया खाई कि मैं तुझे तलवार से घात न करूंगा।
९ पर अब उसे निर्दोष मत जानियो क्योंकि तू बुद्धिमान है और जानता है जो कुछ उस्से किया चाहे परन्तु उस का पक्का बाल लोहू के साथ समाधि में उतारियो।
१० और दाऊद ने अपने पितरों में शयन किया और दाऊद के नगर में गाड़ा गया।
११ और दाऊद ने इसराएल पर चालीस बरस राज्य किया सात बरस हबरून में और तैंतीस बरस यरूसलम में उस ने राज्य किया॥

१२ तब सुलेमान अपने पिता दाऊद के सिंहासन पर बैठा और उस का राज्य
१३ बहुत स्थिर हुआ। तब हज्जीत का बेटा अदूनियाह सुलेमान की माता

बिन्तसबअ पास आया और उस ने पूछा कि तू कुशल से आता है और वह १४ बोला कि कुशल से। तब उस ने कहा कि मैं तुझ से कुछ कहा चाहता हूं १५ और वह बोली कह। तब उस ने कहा कि तू जानती है कि राज्य मेरा था और समस्त इसराएल ने मुझ पर कख किया था कि मैं राज्य करूं परन्तु राज्य पलट गया और मेरे भाई का हुआ क्योंकि परमेश्वर की ओर से उसी १६ का था। सो अब मेरी तुझ से एक बिनती है उस्से मुंह न फेरिये और वह १७ उस्से बोली कह। तब उस ने कहा कि अनुग्रह करके सुलेमान राजा से कहिये क्योंकि वह आप को नाह न करेगा कि शुनामी अबिशाग को मुझे ब्याह १८ देवे। सो बिन्तसबअ बोली कि अच्छा मैं तेरे लिये राजा से कहूंगी॥

१९ सो बिन्तसबअ सुलेमान राजा पास अदूनियाह के लिये कहने गई और राजा उसे मिलने को उठा और उसे प्रणाम किया तब अपने सिंहासन पर बैठ गया और राजा ने अपनी माता के लिये एक आसन मंगवाया और वह उस २० की दहिनी ओर बैठी। तब वह बोली कि मैं एक छोटी बात चाहती हूं मुझ से नाह न कीजियो और राजा ने उसे कहा कि हे मेरी माता मांगिये क्योंकि २१ मैं तुझ को नाह न करूंगा। और वह बोली कि शुनामी अबिशाग तेरे भाई २२ अदूनियाह से ब्याही जावे। तब सुलेमान राजा ने अपनी माता को उत्तर देके कहा कि तू केवल शुनामी अबिशाग को अदूनियाह के लिये क्यों मांगती है उस के लिये राज्य भी मांग क्योंकि वह मेरा बड़ा भाई है हां उस के लिये और अबियतर याजक के और जरूयाह के २३ बेटे यूअब के लिये भी। तब सुलेमान राजा ने परमेश्वर की किरिया खाके कहा कि यदि अदूनियाह ने यह बात अपने प्राण पर खेलने को नहीं कही तो ईश्वर मुझ से ऐसा ही और उस्से २४ अधिक करे। सो अब परमेश्वर के जीवन सों जिस ने मुझे मेरे पिता दाऊद के सिंहासन पर बैठाया और स्थिर किया और जिस ने अपनी बाचा के समान मेरे लिये घर बनाया आज ही २५ अदूनियाह मारा जावेगा। और सुलेमान राजा ने यहूयदः के बेटे बिनायाह को भेजा और उस ने उस पर लपकके उसे मार डाला॥

२६ तब राजा ने अबियतर याजक को कहा कि अनातूत को अपने खेतों में जा क्योंकि तू मृत्यु के योग्य है परन्तु इस जून मैं तुझे मार न डालूंगा क्योंकि तू मेरे पिता दाऊद के आगे परमेश्वर ईश्वर की मंजूषा उठाता था और इस लिये कि तू उन सब दुःखों में जो मेरे २७ पिता पर पड़े संगी था। सो सुलेमान ने अबियतर को परमेश्वर का याजक होने से दूर किया जिसतें वह परमेश्वर के बचन को संपूर्ण करे जो उस ने सैला में एली के घराने के बिषय में कहा था॥

२८ तब यूअब को संदेश पहुंचा क्योंकि यूअब अदूनियाह के पीछे हुआ था यद्यपि वह अबिसलुम की ओर न फिरा था सो उस ने परमेश्वर के तंबू में भागके २९ बेदी के सींगों को धरा। और सुलेमान को संदेश पहुंचा कि यूअब भागके परमेश्वर के तंबू में गया और देखो कि वह बेदी के लग है तब सुलेमान ने यहूयदः के बेटे बिनायाह को कहला ३० भेजा कि उसे मार डाले। सो बिनायाह परमेश्वर के तंबू में गया और उसे कहा कि राजा की आज्ञा है कि तू बाहर

निकल और वह बोला कि नहीं मैं यहीं मरूंगा तब बिनायाह फिर गया और राजा से कहा कि यूअब यों कहता है और उस ने मुझे यों उत्तर दिया। ३१ तब राजा ने उसे आज्ञा किई कि जैसा उस ने कहा है वैसा ही कर और उस पर लपक और उसे गाड़ जिसतें तू उस निष्पाप लोहू को जो यूअब ने बहाया मुझ से और मेरे पिता के घराने से मिटा ३२ देवे। और परमेश्वर उस का लोहू उसी के सिर पर धरेगा जिस ने दो मनुष्यों पर जो उस्से अधिक धर्म्मी और भले थे लपकके उन्हें तलवार से घात किया और मेरा पिता दाऊद न जानता था अर्थात् इसराएली सेना के प्रधान नैयिर के बेटे अबिनैयिर को और यहूदाह की सेना के प्रधान यतर के बेटे अमासा ३३ को। सो उन का लोहू यूअब के सिर पर और उस के बंश के सिर पर सनातन लों पलटे परन्तु दाऊद पर और उस के बंश पर और उस के घराने पर और उस के सिंहासन पर परमेश्वर की ओर से ३४ सदा कुशल होगा। सो यहूयद: के बेटे बिनायाह ने जाके उस पर लपकके उसे मार डाला और वह अरण्य में अपने ही ३५ घर में गाड़ा गया। तब राजा ने यहूयद: के बेटे बिनायाह को उस की संती सेना का प्रधान किया और सदूक याजक को राजा ने अबियतर के स्थान पर रक्खा॥

३६ तब राजा ने शमीय को बुला भेजा और उसे कहा कि यरूसलम में अपने लिये घर बना और वहीं रह और वहां ३७ से कहीं बाहर मत निकल। क्योंकि जिस दिन तू बाहर निकलेगा और किदरून की नाली के पार जावेगा निश्चय जानियो कि अवश्य मारा जावेगा तेरा ३८ लोहू तेरे ही सिर पर होगा। और शमीय ने राजा से कहा कि आज्ञा उत्तम है जैसा मेरे प्रभु राजा ने कहा है वैसा ही तेरा सेवक करेगा सो शमीय बहुत दिन लों यरूसलम में रहा॥

३९ और तीसरे बरस के अंत में ऐसा हुआ कि शमीय के दो सेवक जात को राजा मअक: के बेटे अकीस कने भाग गये और शमीय से कहा गया कि देख ४० तेरे सेवक जात में हैं। तब शमीय ने उठके अपने गदहे पर काठी बांधी और अपने सेवकों के ढूंढने को जात में अकीस पास गया और शमीय जाके जात ४१ से अपने सेवकों को ले आया। और यह संदेश सुलेमान को पहुंचा कि शमीय यरूसलम से जात को गया था और फिर ४२ आया। तब राजा ने शमीय को बुला भेजा और उसे कहा कि क्या मैं ने तुझे परमेश्वर की किरिया न दिलाई थी और तुझ से साक्षा लेके न कहा था कि तू निश्चय जानियो कि जिस दिन तू बाहर जावेगा या कहीं फिरेगा तू अवश्य मारा जावेगा और तू ने मुझे कहा था कि यह बचन जो मैं ने सुना ४३ उत्तम है। सो तू ने परमेश्वर की किरिया को और उस आज्ञा को जो मैं ने तुझे ४४ किई क्यों नहीं माना। तब राजा ने शमीय से कहा कि तू उस सब दुष्टता को जानता है जो तू ने मेरे पिता दाऊद से किई जिन से तेरा मन जानकार है सो परमेश्वर तेरी दुष्टता ४५ को तेरे ही सिर पर पलटेगा। और सुलेमान राजा भाग्यवान होगा और दाऊद का सिंहासन परमेश्वर के आगे ४६ सर्वदा स्थिर रहेगा। सो राजा ने यहूयद: के बेटे बिनायाह को आज्ञा किई और उस ने बाहर जाके उस पर लपकके उसे मार डाला तब राज्य सुलेमान के हाथ में स्थिर हुआ॥

तीसरा पर्ब्ब।

१ और सुलेमान ने मिस्र के राजा फिरऊन से नाता किया और फिरऊन की कन्या को ब्याहा और अपने भवन और परमेश्वर के मंदिर और यरूसलम की भीत चारों ओर बनाके समाप्त करने लों उसे
२ दाऊद के नगर में लाया। केवल लोग ऊंचे स्थानों में बलिदान चढ़ाते थे क्योंकि उन दिनों लों कोई मंदिर परमेश्वर के नाम के लिये बनाया न गया था।
३ और सुलेमान परमेश्वर से प्रेम करके अपने पिता की बिधिन पर चलता था केवल वह ऊंचे स्थानों पर बलिदान चढ़ाता और धूप जलाता था॥
४ और बलिदान चढ़ाने को राजा जिबऊन को गया क्योंकि महा ऊंचा स्थान वहीं था और उस बेदी पर सुलेमान ने
५ सहस्र बलिदान की भेंट चढ़ाईं। जिबऊन में परमेश्वर ने रात को सुलेमान को स्वप्न में दर्शन दिया और ईश्वर ने
६ कहा कि मांग मैं तुझे क्या देऊं। तब सुलेमान ने कहा कि तू ने मेरे पिता अपने सेवक दाऊद को बड़ा दान दिया इस कारण कि वह तेरे आगे सच्चाई और धर्म्म और मन की खराई से चला था और तू ने उस पर यह बड़ा अनुग्रह किया कि तू ने उस के सिंहासन पर बैठने के लिये एक बेटा दिया जैसा
७ आज के दिन है। सो अब हे परमेश्वर मेरे ईश्वर तू ने मेरे पिता दाऊद की संती अपने सेवक को राजा किया और मैं बालक हूं बाहर भीतर आने जाने
८ नहीं जानता। और तेरा सेवक तेरे लोगों के मध्य में है जिन्हें तू ने चुना है बड़े लोग जो अगण्य और बहुत हैं
९ ऐसा कि गिने नहीं जा सक्ते हैं। सो अपने लोगों के न्याय करने के लिये अपने सेवक को सुज्ञ का मन दे जिसतें मैं भले और बुरे में बिबेक करूं क्योंकि तेरे ऐसे बड़े लोगों का न्याय कौन कर सक्ता है॥
१० और यह बात परमेश्वर को अच्छी लगी कि सुलेमान ने ऐसी बस्तु मांगी।
११ और ईश्वर ने उसे कहा इस कारण कि तू ने यह वस्तु मांगी है और अपनी बड़ी आयुर्दा न चाही और न अपने लिये धन मांगा है और न अपने बैरियों का प्राण चाहा है परन्तु अपने लिये न्याय करने को बुद्धि चाही।
१२ देख मैं ने तेरी बात के समान किया है देख मैं ने एक बुद्धिमान और ज्ञानवान मन तुझे दिया है ऐसा कि तेरे आगे तेरे तुल्य कोई न था और तेरे पीछे तेरे तुल्य कोई न होगा।
१३ और मैं ने तुझे वह भी जो तू ने नहीं मांगा अर्थात धन और प्रतिष्ठा यहां लों दिया है कि राजाओं के बीच तेरे जीवन भर तेरे तुल्य नहीं हुआ है।
१४ और यदि तू मेरे मार्गों पर चलके मेरी बिधिन और मेरी आज्ञाओं का पालन करेगा जिस रीति से तेरा पिता दाऊद चलता था तो मैं तेरी बय बढ़ाऊंगा।
१५ तब सुलेमान जागा और देखा कि स्वप्न है और वह यरूसलम को आया और परमेश्वर के नियम की मंजूषा के आगे खड़ा हुआ और बलिदान की भेंट और कुशल की भेंट चढ़ाईं और अपने समस्त सेवकों के लिये जेवनार किया॥
१६ उस समय में दो बेश्या राजा पास आईं और उस के आगे खड़ी हुईं।
१७ और एक बोली कि हे मेरे प्रभु मैं और यह स्त्री एक घर में रहती हैं और मैं उस के साथ घर में रहते हुए एक बालक जनी।
१८ और मेरे जन्ने के तीसरे दिन पीछे यों हुआ कि यह स्त्री भी जनी और हम एक साथ थीं घर में हम दोनों को

छोड़ कोई उपरी हमारे संग न था ।
१९ और इस स्त्री का बालक रात को मर गया इस लिये कि वह इस के नीचे
२० दब गया । तब वह आधी रात को उठी और जब कि तेरी लौंडी सोती थी मेरे पास से मेरे पुत्र को ले गई और अपनी गोद में रक्खा और अपने मरे हुए बालक को मेरी गोद में धर दिया ।
२१ और बिहान को जब मैं उठी कि अपने बालक को दूध पिलाऊं तो क्या देखती हूं कि वह मरा पड़ा है पर बिहान को जब मैं ने सोचा तो देखा कि यह मेरा
२२ जना हुआ लड़का नहीं । तब वह दूसरी स्त्री बोली नहीं परन्तु जीता मेरा पुत्र है और मरा तेरा पुत्र है और यह बोली कि नहीं मरा हुआ तेरा पुत्र और जीता मेरा पुत्र यों उन्हों ने राजा के आगे
२३ बातें किईं । तब राजा बोला कि एक कहती है जीता पुत्र मेरा है और मृतक तेरा पुत्र और दूसरी कहती है कि नहीं परन्तु मृतक तेरा पुत्र और जीता मेरा
२४ पुत्र । तब राजा ने कहा कि मुझ पास एक खड्ग लाओ तब वे राजा के आगे
२५ खड्ग लाये । तब राजा ने कहा कि इस जीते बालक को दो भाग करो और आधा एक को देओ और आधा दूसरी
२६ को । तब जिस स्त्री का जीता बालक था उस ने राजा से कहा क्योंकि उस की मया अपने पुत्र के लिये तपित हुई हे मेरे प्रभु जीता बालक उसी को दीजिये और किसी भांति से न मारिये परन्तु दूसरी बोली कि यह न मेरा हो न तेरा
२७ परन्तु भाग किया जावे । तब राजा ने कहके आज्ञा किई कि जीता बालक इसी को देओ और उसे किसी भांति से
२८ मत मारो उस की माता यही है । और समस्त इसराएल ने यह न्याय सुना जो राजा ने किया और राजा से डरे क्योंकि उन्हों ने देखा कि ईश्वर की बुद्धि न्याय करने के लिये उस के मन में है ॥

चौथा पर्व्व ।

१ सो सुलेमान राजा सारे इसराएल
२ का राजा हुआ । और उस के अध्यक्ष ये थे सदूक याजक का बेटा अजरियाह ।
३ इलीहुरिफ और अखियाह शीशा लेखक के बेटे थे और अखिलूद
४ का बेटा यहूशफत स्मारक । और यहूयद: का बेटा बिनायाह सेना का प्रधान और सदूक और अबियतर याजक ।
५ और नातन का बेटा अजरियाह प्रधानों पर और नातन का बेटा जबूद श्रेष्ठ
६ प्रधान और राजा का मित्र । और अखिशार घर का प्रधान और अबदा का बेटा अदुनीराम कर का प्रधान ॥
७ और सारे इसराएल पर सुलेमान के बारह प्रधान थे जो राजा के और उस के घराने के भोजन सिद्ध करते थे उन में से हर एक जन बरस भर में एक
८ मास भोजन सिद्ध करता था । और उन के नाम ये हैं हूर का बेटा इफरायम
९ पहाड़ में । दिक्र का बेटा मकस में और शअलबीम में और बैतशमश और
१० ऐलून बैतहनान में । हसद का बेटा अरबूत में शोक: और हिफ्र का समस्त
११ देश उस के वश में था । अबिनदाब का बेटा दार के समस्त देश में सुलेमान की बेटी ताफत उस की पत्नी थी ।
१२ अखिलूद का बेटा बअना तअनाक और मिजद्दो और समस्त बैतशान जो जरतान के लग यजरअएल के नीचे बैतशान से लेके अबील महूल: लों युकमिआम के पार लों उस के वश में
१३ था । जब्र का बेटा रामात जिलिअद में मनस्सी के बेटे याईर के नगर जो जिलिअद में हैं अरजूब के देश समेत जो बशन में है अर्थात् जो भीत से घेरे

और जिन में पीतल के अड़ंगे थे साठ नगर उस्से प्रयोजन रखते थे। १४ ईदू का बेटा अखिनदब महनैन रखता था। १५ अखिमअज नफतालों में वह भी सुलेमान की बेटी बासमत को पत्नी किये था। १६ हूशी का बेटा बअनः यसर और अलूत में। १७ फरूह का बेटा यहूशफत इशकार में। १८ आला का बेटा शमयी बिनयमीन में। १९ ऊरी का बेटा जब्र जिलिअद के देश में था जो अमूरी के राजा सैहून का राज्य और बशन के राजा ऊग का राज्य था और उस देश का केवल वही प्रधान था॥

२० यहूदाह और इसराएल बहुताई में समुद्र की बालू की नाईं थे वे खाते २१ पीते और आनन्द करते थे। और सुलेमान समस्त राज्यों पर राज्य करता था नदी से फिलिस्तियों के देश लों और मिस्र के सिवाने लों वे उस पास भेंट लाते थे और उस के जीवन भर उस की सेवा करते थे॥

२२ और सुलेमान के दिन भर का भोजन यह था तीस पैमानः चोखा पिसान और २३ साठ पैमानः आटा। दस मोटे बैल और चराई के बीस बैल एक सौ भेंड़ और उस्से अधिक चिकारे और हरिण और काले हरिण और मोटे मोटे पंछी २४ को छोड़के। क्योंकि वह नदी के इस पार तिफसह से लेके गअज्ज लों उन सारे राजाओं पर जो समुद्र की इसी ओर थे राज्य करता था और चौदिशा २५ से मेल रखता था। और यहूदाह और इसराएल हर एक पुरुष अपने अपने दाख और अपने गूलर के पेड़ तले दान से लेके बिअरसबअ लों सुलेमान के जीवन भर कुशल से रहता था॥

२६ और सुलेमान के रथों के लिये चालीस सहस्र घोड़शाला थीं और बारह सहस्र घोड़चढ़े। २७ और उन बारह प्रधानों में से हर एक जन अपने अपने मास में सुलेमान राजा के लिये और उन सब के लिये जो सुलेमान राजा के भोजन में आते थे भोजन सिद्ध करता था उन को किसी बात की घटती न थी। २८ और घोड़ों और चालाक पशुन के लिये जव और पुआल भी हर एक जन आज्ञा के समान उसी स्थान में लाता था॥

२९ और ईश्वर ने सुलेमान को अत्यन्त बुद्धि और ज्ञान और मन का फैलाव समुद्र के तीर की बालू की नाईं दिया था। ३० और सुलेमान की बुद्धि सारे पूर्बियों की बुद्धि से और मिस्रियों की सारी बुद्धि से अधिक थी। ३१ क्योंकि वह इसराकी ऐतान से और हैमान से और खलकल से और दरदअ से जो महूल के बेटे थे और समस्त मनुष्य से अधिक बुद्धिमान था और उस की कीर्त्ति चारों ओर के समस्त जातिगणों में फैल गई थी। ३२ और उस ने तीन सहस्र दृष्टांत कहे और उस के गीत एक सहस्र और पांच थे। ३३ और उस देवदार से लेके जो लबनान में है उस जूफा लों जो भीतों पर उगती है उस ने सब वृक्षों का बर्णन किया और पशुन और पंछियों और रेंगवैयों और मछलियों के बिषय में कहा। ३४ और सारे लोगों में से और पृथिवी के समस्त राजाओं से जिन्हों ने उस की बुद्धि का संदेश पाया था सुलेमान की बुद्धि सुन्ने को आते थे॥

पांचवां पर्ब्ब।

१ और सूर के राजा हीराम ने सुलेमान के पास अपने सेवकों को भेजा क्योंकि उस ने सुना था कि उन्हों ने उस के पिता की संती उसे राज्याभिषेक किया क्योंकि हीराम दाऊद से सदा प्रीति रखता था। २ और सुलेमान ने हीराम

३ को कहला भेजा। कि तू जानता है कि उन लड़ाइयों के कारण जो उस के आसपास चौदिशा थीं मेरा पिता दाऊद परमेश्वर अपने ईश्वर के नाम के लिये एक मंदिर न बना सका जब लों कि परमेश्वर ने उन सभों को उस ४ के पांवों तले न कर दिया। सो अब परमेश्वर मेरे ईश्वर ने मुझे चारों ओर से चैन दिया यहां लों कि अब न बैरी ५ न उपद्रवी है। सो देख मैं ने ठाना है कि परमेश्वर अपने ईश्वर के नाम से एक मंदिर बनाऊं जैसा कि परमेश्वर ने मेरे पिता दाऊद से कहा कि तेरा बेटा जिसे मैं तेरे सिंहासन पर बैठाऊंगा वही ६ मेरे नाम का मंदिर बनावेगा। सो तू आज्ञा कर कि मेरे लिये लुबनान से देवदार काटें और मेरे सेवक तेरे सेवकों के साथ होंगे और तेरे कहने के समान तेरे सेवकों को बनी देऊंगा क्योंकि तू जानता है कि हम्में यह गुण नहीं कि सैदानियों के समान लट्ठा काटें॥

७ और ऐसा हुआ कि जब हीराम ने सुलेमान की बातों को सुना तब उस ने अत्यन्त मगन होके कहा कि आज परमेश्वर का धन्यबाद होवे जिस ने अपने महत लोग पर दाऊद को एक बुद्धि-८ मान बेटा दिया। तब हीराम ने सुलेमान को कहला भेजा कि जो जो बात के लिये तू ने मुझे कहलाया है मैं ने समझा मैं देवदार के लट्ठे और सरो के लट्ठे के विषय में तेरी समस्त इच्छा ९ करूंगा। मेरे सेवक उन्हें लुबनान से समुद्र पर लावेंगे और उन्हें बेड़ों में समुद्र पर से उस स्थान लों जहां तू कहे पहुंचाऊंगा और वहां डलवा देऊंगा और तू पावेगा और तू मेरी इच्छा के समान मेरे घराने के लिये भोजन दे॥

१० सो हीराम ने सुलेमान को देवदार और सरो अपनी समस्त बांछा के समान ११ दिये। और सुलेमान ने हीराम को उस के घराने के भोजन के लिये बरस बरस बीस सहस्र पैमानः गोहूं और बीस पैमानः निराला तेल यों सुलेमान हीराम को १२ बरस बरस देता रहा। और परमेश्वर ने सुलेमान को अपनी बाचा के समान बुद्धि दिई और हीराम और सुलेमान में मिलाप था और उन दोनों ने आपुस में बाचा बांधी॥

१३ और सुलेमान राजा ने सब इसराएल के संतान से मनुष्यों का कर लिया और १४ तीस सहस्र मनुष्य हुए। और वह उन्हें लबनान को हर मास पारी पारी दस सहस्र भेजा किया मास भर लुबनान में रहते थे और दो मास अपने घर में और १५ अदूनीराम उन का प्रधान था। और सुलेमान के सत्तर सहस्र बोझिये थे और १६ अस्सी सहस्र पेड़ कटवैये पर्ब्बतों में थे। सुलेमान के श्रेष्ठ प्रधानों से अधिक जो कार्य्य पर थे तीन सहस्र तीन सौ थे जो १७ कार्य्यकरवैयों से काम लेते थे। और राजा ने आज्ञा किई और वे बड़े बड़े पत्थर और बहुमूल्य पत्थर और गढ़े हुए पत्थर लाये जिसतें घर की नेव डालें। १८ और सुलेमान के थवई और हीराम के थवई और पत्थर के सधरवैये उन्हें काटते थे सो घर बनाने के लिये उन्हों ने लट्ठे और पत्थर सधारे॥

छठवां पर्ब्ब।

१ और मिस्र के देश से इसराएल के संतान के निकलने से चार सौ अस्सी बरस पीछे इसराएल पर सुलेमान के राज्य के चौथे बरस जीफ के मास में जो दूसरा मास है ऐसा हुआ कि उस ने परमेश्वर का घर बनाना आरंभ किया॥

२ और वह घर जो सुलेमान राजा ने परमेश्वर के लिये बनाया उस की लम्बाई

साठ हाथ और चौड़ाई बीस हाथ और ३ ऊंचाई तीस हाथ थी। और उस घर के मंदिर के ओसारे की लम्बाई बीस हाथ घर की चौड़ाई के समान थी और उस की चौड़ाई घर के आगे दस हाथ ४ थी। और घर के लिये उस ने झरोखे बनाये बाहर की ओर से सकेत और ५ भीतर चौड़े। और घर की भीत से मिली हुई कोठरियां चारों ओर बनाईं अर्थात् घर की भीतों के चारों ओर क्या मंदिर का क्या ईश्वरीय वाणी का और उस ने चारों ओर कोठरियां बनाईं। ६ और नीचे की कोठरी पांच हाथ चौड़ी और बीच की छः हाथ चौड़ी और तीसरी सात हाथ चौड़ी थी क्योंकि घर के बाहर बाहर उस ने चारों ओर सकेत सकेत स्थान बनाये जिसतें लट्ठे घर की ७ भीतों में जमाये न जायें। और जब घर बन रहा था वहां लाने से आगे पत्थर सुधारा हुआ था यहां लों कि न हथौड़ा और न कुल्हाड़ी और न लोहे का कोई ८ हथियार घर बनाने में सुना गया। बीच की कोठरी का द्वार घर की दहिनी अलंग रक्खा और वे घूमती सीढ़ी से बीच में और उस्से तीसरी अटारी में ९ चढ़ते थे। सो उस ने उस घर को बनाया और उसे समाप्त किया और उस की छत देवदार के लट्ठे की पटरियों से १० पाटी। और उस ने समस्त घर के आस पास पांच पांच हाथ की ऊंची कोठरियां बनाईं और वे देवदार के लट्ठों से घर पर थंभी हुई थीं॥

११ तब परमेश्वर का बचन यह कहते १२ हुए सुलेमान पर उतरा। कि यदि तू मेरी बिधिन पर चलेगा और मेरे बिचारों को पूर्ण करेगा और मेरी समस्त आज्ञाओं को पालन करके उन पर चलेगा तो इस घर के विषय में जो तू बनाता है मैं अपने बचन को जो तेरे पिता दाऊद से कहा था तेरे साथ पूरा करूंगा। १३ और मैं इसराएल के संतानों में बास करूंगा और अपने इसराएली लोगों को १४ त्याग न करूंगा। सो सुलेमान ने उस घर को बनाया और उसे समाप्त किया॥

१५ और उस ने घर की गच से लेके भीत से छत लों देवदार काष्ठ के पटरे लगाये और उस ने भीतर की अलंग काष्ठ से ढांप दिया और घर की गच १६ को सरो की पटरियों से ढांपा। और उस ने घर की गच और भीतें देवदार के पटरों से घर की अलंगों में बीस बीस हाथ की बनाईं और उस ने उस के भीतर के लिये अर्थात् ईश्वरीय बाणी के लिये अर्थात् अत्यन्त पवित्र स्थान १७ के लिये बनाये। और घर अर्थात आगे १८ का मंदिर चालीस हाथ था। और घर के भीतर देवदार की खोदी हुई कली और खिले हुए फूल थे सब के सब देवदार के थे कोई पत्थर दिखाई न १९ देता था। और घर के भीतर परमेश्वर के नियम की मंजूषा रखने के लिये ईश्वरीय बाणी का स्थान सिद्ध किया। २० और ईश्वरीय बाणी के आगे की ओर लम्बाई में बीस हाथ और चौड़ाई में बीस हाथ और उस की ऊंचाई बीस हाथ और उसे निर्मल सोने से मढ़ा और २१ देवदार की बेदी को भी मढ़ा। और सुलेमान ने घर के भीतर भीतर निर्मल सोने से मढ़ा और उस में ईश्वरीय बाणी के आगे सोने की सीकरों के लग एक आड़ बनाया और उस पर सोना मढ़ा। २२ और सारे घर को सोने से मढ़ा यहां लों कि समस्त घर बन गया और समस्त बेदी को जो ईश्वरीय बाणी के लग थी सोने से मढ़ा॥

२३ और ईश्वरीय बाणी के भीतर

जलपाई वृक्ष के दस दस हाथ ऊंचे दो
२४ करोबी बनाये। और करोबी का एक पंख पांच हाथ का और दूसरा पंख पांच हाथ का एक के पंख के एक खूंट से लेके दूसरे पंख के खूंट लों दस हाथ
२५ थे। और दूसरा करोबी दस हाथ का दोनों करोबियों का एक ही नाप और
२६ एक ही डील का बनाया। एक करोबी की ऊंचाई दस हाथ और वैसी ही दूसरी
२७ करोबी की भी। और उस ने दोनों करोबियों को भीतर के घर में रक्खा और करोबी अपने डैने फैलाये हुए थे यहां लों कि एक का डैना एक भीत को छूता था और दूसरे करोबी का डैना दूसरी भीत को छूता था और उन के डैने एक दूसरे को घर के बीच में छूते
२८ थे। और उस ने करोबियों को सोने से मढ़ा॥

२९ और घर की सारी भीतों को चारों ओर खोदे हुए करोबियों की मूरतों से और खजूर पेड़ों से और खिले हुए फूलों
३० से बाहर भीतर खोदा। और घर की गच को बाहर भीतर सोने से मढ़ा॥

३१ और ईश्वरीय बाणी में पैठने के लिये उस ने जलपाई पेड़ के केवाड़े बनाये सहोट और साह भीत के पांचवें
३२ भाग थे। और केवाड़े के पाट जलपाई काष्ठ के थे और उस ने उन पर करोबियों को और खजूर पेड़ों को और खिले हुए फूलों को खोदा और करोबियों और खजूर पेड़ों पर सोना मढ़ा
३३ और वैसा उस ने मंदिर के द्वार के लिये जिस की चौखट जलपाई काष्ठ की थी
३४ भीत का चौथा भाग बनाया। और उस के दो केवाड़े सरो काष्ठ से बनाये उन दोनों केवाड़ों के दो दो पाट दोह-
३५ राए जाते थे। और उन पर करोबियों खजूर पेड़ और खिले हुए फूल खोदे और उन खोदे हुए कार्य्यों को सोने से मढ़ा। और उस ने भीतर के ३६ आंगन को तीन पांती खोदे हुए पत्थर की बनाई और एक पांती देवदार के काष्ठ की॥

चौथे बरस जीफ के मास में परमेश्वर ३७ के मंदिर की नेव डाली गई। और ३८ ग्यारहवें बरस बुल के मास में जो आठवां मास है घर उस की समस्त सामग्री समेत और उस के सारे डौल के समान बन गया और उस के बनाने में सात बरस लगे॥

सातवां पर्ब्ब।

परन्तु सुलेमान को अपना ही घर १ बनाने में तेरह बरस लगा और जब वह अपना सारा घर बना चुका। तो २ उस ने लुबनान के बन का भी देवदार काष्ठ के खंभों की चार पांती पर बनाया और खंभों पर देवदार काष्ठ के लट्ठे थे और उस घर की लम्बाई सौ हाथ और चौड़ाई पचास हाथ और ऊंचाई तीस हाथ। और उस की छत देवदार ३ काष्ठ से बनाई और कड़ियों को उस काष्ठ पर रक्खा जो पैंतालीस खंभों के ऊपर था हर एक पांती में पंदरह पंदरह खंभे थे। और खिड़कियों की तीन ४ पांती थीं तीनों पांती आम्ने साम्ने थीं। और समस्त द्वार और चौखट देखने में ५ चौकोर थे और तीन पांतियों में खिड़की के सन्मुख खिड़की थी। और उस ने ६ खंभों का एक ओसारा बनाया जिस की लम्बाई पचास हाथ और चौड़ाई तीस हाथ और ओसारा उस के सन्मुख था और खंभे और मोटा लट्ठा उन के सन्मुख। तब उस ने सिंहासन के लिये ७ एक ओसारा बनाया अर्थात् न्याय का ओसारा और उस की एक अलंग दूसरी लों देवदार काष्ठ से पाटा॥

८ और उस के रहने के घर के ओसारे में वैसा ही कार्य्य का एक दूसरा आंगन था और सुलेमान ने फिरऊन की बेटी के लिये जिसे उस ने ब्याहा था इस ओसारे की नाईं एक घर बनाया ॥

९ उस की नेव सारे बहुमूल्य पत्थर से थी जो गढ़े और आरे से चीरे गये थे और उसी रीति से घर के भीतर और बाहर नेव से लेके छत लों और उसी भांति घर के बाहर आंगन लों बनाया। १० और नेव बहुमूल्य बड़े बड़े पत्थरों की थी दस दस और आठ आठ हाथ के ११ पत्थर। और गढ़े हुए पत्थरों के समान ऊपर भी बहुमूल्य पत्थरों का और देव- १२ दार काष्ठ का था। और चारों ओर के बड़े आंगन तीन पांती गढ़े हुए पत्थर की और एक पांती देवदार लट्ठे की परमेश्वर के घर के भीतर के आंगन के लिये और घर के ओसारे के लिये ॥

१३ और सुलेमान राजा ने सूर से हीराम १४ को बुला भेजा। वह नफ़ताली की गोष्ठी की एक बिधवा स्त्री का बेटा था और उस का बाप सूर का एक ठठेरा और पीतल के समस्त कार्य्य में बिद्या और ज्ञान से निपुण और परिपूर्ण था और वह सुलेमान पास आया और उस का १५ समस्त कार्य्य किया। और उस ने पीतल के दो खंभे अठारह अठारह हाथ के ढाले और बारह हाथ की डोरी उन की १६ चारों ओर का नाप था। और उस ने खंभों के ऊपर धरने के लिये ढले हुए पीतल के दो झाड़ बनाये हर एक की १७ ऊंचाई पांच हाथ की। झाड़ों के लिये जो खंभों के ऊपर थे चौघरे कार्य्य के और गुथी हुई सीकरें हर एक झाड़ के १८ लिये सात सात बनाये। और उस ने खंभे और उन के मथाल के झाड़ों को अनारों से ढांपने के लिये जालकार्य्य के चारों ओर दो पांतियां बनाईं वैसा ही दूसरे झाड़ के लिये बनाया। १९ और खंभे के झाड़ों के ऊपर ओसारे में चार हाथ के सोसन फूल के कार्य्य। २० और वैसा ही दोनों खंभों के झाड़ों के ऊपर जो जाल-कार्य्य के लग थे बीच के साम्ने साम्ने और दूसरे झाड़ पर चारों ओर पांती पांती दो सौ अनार थे। २१ और उस ने मंदिर के ओसारे में खंभे खड़े किये और उस ने दहिना खंभा खड़ा किया और उस का नाम याकीन रक्खा और दूसरा खंभा बाईं ओर और उस का नाम बोअज़ रक्खा। २२ और खंभों के ऊपर सोसन फूल का कार्य्य सा खंभों का कार्य्य बन गया ॥

२३ तब उस ने ढला हुआ एक समुद्र बनाया जिस का एक कोर दूसरे कोर से दस हाथ का था वह चारों ओर गोल था और उस की ऊंचाई पांच हाथ और तीस हाथ की डोरी उस के चारों ओर जाती थी। २४ और उस के कोर की चारों ओर के नीचे हाथ भर में दस कलियां घेरीं जो समुद्र की चारों ओर घेरती थीं दो दो पांती में कलियां ढाली गईं। २५ वह बारह बैलों पर धरा गया था तीन के मुंह उत्तर की ओर और तीन के पश्चिम की ओर और तीन के दक्षिण की ओर और तीन के पूरब की ओर और समुद्र उन सभों के ऊपर और उन के पुट्ठे भीतर की अलंग थे। २६ और उस की मोटाई चार अंगुल की और उस का कोर कटोरे के कोर की नाईं सोसन के फूलों से बना हुआ था उस में दो सहस्र मन की समाई थी ॥

२७ और उस ने पीतल के दस आधार बनाये एक एक आधार चार हाथ का लम्बा चार हाथ चौड़ा और तीन हाथ ऊंचा। २८ और उन आधारों का कार्य्य ऐसा था उन के छोर थे और छोर कोरों

२९ के मध्य में थे। और कोरों के मध्य में छोर के ऊपर सिंह बैल और करोबो थे और कोरों के ऊपर एक आधार था और सिंहों और बैलों के नीचे कई एक अच्छे ३० चोखे कार्य्य बनाये। और हर एक आधार के लिये पीतल की चार चार पहिया और पीतल के पत्र थे और उन के चार कोनों के लिये नीचे के आधार थे और स्नानपात्र के नीचे हर एक साज की अलंग ढले हुए नीचे के आधार थे। ३१ और उस का मुंह झाड़ के भीतर और ऊपर हाथ भर का परन्तु उस का मुंह गोल उस के आधार के कार्य्य की नाईं डेढ़ हाथ का था और उस के मुंह पर चित्रकारी और चौकोर गोट थीं गोल ३२ नहीं। और गोट के नीचे चार पहिया थीं और पहियों की धुरी आधार में थी और हर एक पहिये की ऊंचाई डेढ़ ३३ हाथ की थी। और पहियों का काम रथ के पहियों के कार्य्य के समान उन की धुरी और माझा और पुट्ठी और ३४ आरा सब ढले हुए थे। और हर एक आधार के चारों कोनों के नीचे के चार आधार थे और नीचे के आधार उसी ३५ आधार ही से थे। और आधार के सिरे पर चारों ओर आधा हाथ ऊंचा और आधार के सिरे पर उस के कोर ३६ और उस के गोट एक ही थे। क्योंकि उस के कोरों का पत्तर और उन के गोटों पर करोबो सिंह और खजूर पेड़ हर एक के डौल और चारों ओर के ३७ साज के समान उस ने खोदा। इस डौल से उस ने दस आधार को बनाया और उन सब का नाप जोख और ढाल ३८ एक ही था। तब उस ने पीतल के दस स्नानपात्र बनाये हर एक स्नानपात्र में मन चालीस एक की समाई थी और हर एक स्नानपात्र चार हाथ का था उन दसों आधारों में हर एक पर एक स्नानपात्र था। और उस ने पांच आ- ३९ धार दहिनी अलंग और पांच बाईं अलंग रक्खे और उस ने समुद्र को पूरब ओर घर की दहिनी अलंग दक्खिन के सन्मुख रक्खा॥

४० और हीराम ने पात्र और फावड़ियां और बासन बनाये और हीराम ने परमेश्वर के घर के लिये सुलेमान के लिये ४१ समस्त कार्य्य समाप्त किया। दो खंभे और झाड़ के कटोरे जो दोनों खंभों के मथाले पर थे और दोनों जालकार्य्य झाड़ों के कटोरों के ढांपने के लिये ४२ दोनों खंभों के मथाले पर थे। और दोनों जालकार्य्य के लिये चार सौ अनार अनारों की दो पांतियां एक एक जाल-कार्य्य के लिये जिससे खंभों के ऊपर के ४३ झाड़ों के दोनों टोक ढांपे जावें। और दस आधार और आधारों पर दस ४४ स्नानपात्र। और एक समुद्र और बारह ४५ बैल समुद्र के नीचे। और हांडियां और फावड़ियां और बासन और यह समस्त पात्र जो हीराम ने सुलेमान राजा के लिये परमेश्वर के मंदिर के निमित्त ४६ बनाये ओपे हुए पीतल के थे। राजा ने उन्हें यरदन के चौगान में और सुक्कात और जरतान के मध्य भूमि की गहिराई ४७ में ढाला। और सुलेमान ने उन सब पात्रों को उन की बहुताई के मारे बेतौल छोड़ा और उस पीतल की तौल कधी जांची न गई॥

४८ और सुलेमान ने परमेश्वर के घर के लिये सब पात्र बनाये अर्थात् सोने की बेदी और सोने का मंच जिस पर भेंट ४९ की रोटी रक्खी जाती थी। और चोखे सोने की दीअटें पांच दहिनी और पांच बाईं अलंग और उस के फूल और दीये और चिमटे सोने के ईश्वरीय बाणी के

५० आगे। और कटोरे और कतरनियां और बासन और चमचे और धूपदान निर्मल सोने के और भीतर के अत्यन्त पवित्र स्थान के द्वारों के लिये और घर के अर्थात् मंदिर के द्वारों के लिये सोने की चूलें बनाईं॥

५१ सो सब कार्य्य जो सुलेमान राजा ने परमेश्वर के घर के लिये किये बन गये तब सुलेमान अपने पिता दाऊद की समर्पण किई हुई वस्तें भीतर लाया अर्थात् चांदी सोना और पात्र परमेश्वर के घर के भंडारों में रक्खा॥

आठवां पर्ब्ब

१ तब सुलेमान ने इसराएल के प्राचीनों को और गोष्ठियों के सारे प्रधानों को इसराएल के संतान के अध्यक्षों को अपने पास यरूसलम में एकट्ठा किया जिसतें वे परमेश्वर की बाचा की मंजूषा को दाऊद के नगर सैहून से लावें॥ तब इसराएल के सारे लोग सुलेमान राजा के पास जेवनार में इथानिम मास में जो सातवां मास है एकट्ठे हुए।
३ और इसराएल के सारे प्राचीन आये
४ और याजकों ने मंजूषा उठाई। और परमेश्वर की मंजूषा को और मंडली के तंबू को और तंबू में के समस्त पवित्र पात्रों को याजक और लावी उठा लाये।
५ और सुलेमान राजा ने और इसराएल की सारी मंडली ने जो उस पास एकट्ठी हुई और उस के साथ मंजूषा के आगे थे भेड़ और बैल इतने बलि किये जिन का लेखा और गिनती बहुताई के मारे न
६ किई गई। और याजकों ने परमेश्वर की बाचा की मंजूषा को लाके उस के स्थान में ईश्वर की बाचा के मंदिर के मध्य अत्यंत पवित्र में करोबियों के
७ डैनों के नीचे रक्खा। क्योंकि करोबी अपने डैने मंजूषा पर फैलाये थे और करोबियों ने मंजूषा को और उस के
८ बहंगरों को ढांप लिया। और बहंगरों के सारे पवित्र स्थान ईश्वरीय बाणी के आगे दिखाये जाने के लिये उन्हों ने बहंगरों को निकाला इस लिये वे बाहर देखे न जाते थे और वे आज
९ लों वहां हैं। पत्थर की उन दो पटियों को छोड़ जिन्हें मूसा ने उस में होरिब में रक्खा था जहां परमेश्वर ने इसराएल के संतान से जब वे मिस्र के देश से निकल आये थे बाचा बांधी थी मंजूषा में कुछ न था॥

१० और यों हुआ कि जब याजक पवित्र स्थान से बाहर आये तब परमेश्वर का
११ मंदिर मेघ से भर गया। यहां लों कि मेघ के कारण याजक सेवा के लिये ठहर न सके क्योंकि परमेश्वर के बिभव से परमेश्वर का मंदिर भर गया था॥

१२ तब सुलेमान ने कहा कि परमेश्वर ने कहा था कि मैं अंधकार मेघ में बास
१३ करूंगा। मैं ने निश्चय तेरे निवास के लिये घर बनाया है तेरे सनातन के रहने
१४ के लिये एक स्थिर स्थान। तब राजा ने अपना मुंह फेरके इसराएल की सारी मंडली को आशीष दिया और इसराएल
१५ की सारी मंडली खड़ी हुई। तब उस ने कहा कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर धन्य जिस ने मेरे पिता दाऊद से अपने मुंह से कहा और यह कहके अपने हाथ
१६ से पूरा किया है। जब से मैं अपने इसराएल लोगों को मिस्र से निकाल लाया मैं ने सारे इसराएल की गोष्ठियों में से किसी नगर को नहीं चुना कि घर बनावे जिसतें मेरा नाम उस में होवे परन्तु मैं ने दाऊद को चुना कि मेरे
१७ इसराएल लोगों पर प्रधान होवे। और मेरे पिता दाऊद के मन में था कि इसराएल के ईश्वर परमेश्वर के नाम के

१८ लिये एक घर बनावे। और परमेश्वर ने मेरे पिता दाऊद से कहा कि मेरे नाम के लिये एक घर बनाना तेरे मन में था सो तू ने अच्छा किया कि तेरे मन में था।
१९ तिस पर भी तू मेरे लिये घर न बनाना परन्तु तेरा बेटा जो तेरी कटि से निकलेगा सो मेरे नाम के लिये घर बनावेगा।
२० और परमेश्वर ने अपने कहे हुए बचन को पूरा किया और मैं अपने पिता दाऊद के स्थान में उठा हूं और परमेश्वर की बाचा के समान इसराएल के सिंहासन पर बैठा हूं और इसराएल के ईश्वर परमेश्वर के नाम का एक घर बनाया
२१ है। और मैं ने उस में मंजूषा के लिये एक स्थान बनाया जिस में परमेश्वर की बाचा है जो उस ने हमारे पितरों से किई जब वह उन्हें मिस्र के देश से निकाल लाया॥

२२ और सुलेमान ने परमेश्वर की बेदी के आगे इसराएल की सारी मंडली के आगे खड़े होके अपने हाथ स्वर्ग की ओर फैलाये॥

२३ और कहा कि हे परमेश्वर इसराएल के ईश्वर तेरे समान कोई ईश्वर ऊपर स्वर्ग में अथवा नीचे पृथिवी में नहीं जो अपने सेवकों के साथ जो तेरे आगे अपने सारे मन से चलते हैं बाचा और
२४ दया को रखता है। जिस ने अपने सेवक मेरे पिता दाऊद से अपने कहे के समान रक्खी तू ने अपने मुंह से भी कहा है और अपने हाथ से आज के
२५ दिन पूरा किया है। सो अब हे परमेश्वर इसराएल के ईश्वर अपने सेवक मेरे पिता दाऊद के साथ पालन कर जो तू ने यह कहके प्रण किया कि केवल यदि तेरे संतान अपनी चाल में चौकस होके तेरे समान मेरे आगे चलें तो तेरे लिये इसराएल के सिंहासन पर बैठने को मेरी दृष्टि में पुरुष कट न जावेगा। और अब हे इसराएल के
२६ ईश्वर मैं तेरी बिनती करता हूं अपने उस बचन को जो तू ने मेरे पिता अपने सेवक दाऊद से कहा पूरा कर॥

२७ परन्तु क्या सचमुच ईश्वर पृथिवी पर बास करेगा देख स्वर्ग और स्वर्गों के स्वर्ग तेरी समाई नहीं रखते तो फिर क्या यह घर जो मैं ने बनाया है। हे
२८ परमेश्वर मेरे ईश्वर अपने सेवक की प्रार्थना और उस की बिनती पर सुरत लगा और अपने दास का गिड़गिड़ाना और प्रार्थना सुन जो तेरे सेवक ने आज
२९ के दिन तेरे आगे किई है। जिसतें रात दिन तेरी आंखें इस स्थान की ओर खुली रहें उस स्थान की ओर जिस के विषय में तू ने कहा है कि मेरा नाम वहां होगा जिसतें तू उस प्रार्थना को सुने जो तेरा सेवक इस स्थान में करेगा।
३० अपने सेवक की बिनती सुन और जब तेरे इसराएल लोग इस स्थान में प्रार्थना करें तो अपने निवासस्थान स्वर्ग में से सुन और सुनके क्षमा कर॥

३१ यदि कोई पुरुष अपने परोसी का अपराध करे और वह उस्से किरिया लेने चाहे और इस घर में तेरी बेदी के
३२ आगे किरिया लाई जावे। तो तू स्वर्ग पर से सुन और कर और अपने सेवकों का बिचार कर और दुष्ट को दोषी ठहराके उस का पाप उसी के सिर पर ला और धर्म्मियों को निर्दोष ठहराके उस धर्म्म के समान उसे प्रतिफल दे॥

३३ और जब तेरे इसराएल लोग तेरे बिरोध पाप करने के कारण अपने बैरियों के आगे मारे जावें और फिर तेरी ओर फिरें और तेरे नाम को मान लेवें और प्रार्थना करें और इस घर की ओर तेरी
३४ बिनती करें। तो तू स्वर्ग में सुन और

अपने इसराएल लोगों के पाप को क्षमा कर और उन्हें उस देश में जो तू ने उन के पितरों को दिया था फेर ला॥

३५ जब तेरे बिरोध पाप करने के कारण से स्वर्ग बंद हो जावे और मेंह न बरसे यदि वे इस स्थान की ओर प्रार्थना करें और तेरे नाम को मान लेवें और अपने पाप से फिरें इस लिये कि तू ने उन्हें ३६ दुःख दिया। तो तू स्वर्ग में सुन और अपने सेवकों और अपने इसराएल लोग के पाप को क्षमा कर जिसतें उन्हें सच्चे मार्ग में जिन में उन्हें चलना उचित है सिखावे और अपने देश पर जो तू ने अपने लोगों को अधिकार के लिये दिया है मेंह बरसा॥

३७ यदि देश में अकाल पड़े और यदि मरी होवे और खेती झुलस जावे और गेरुआ लगे अथवा टिड्डी अथवा यदि कीड़े लगें यदि उन के बैरी उन के देश में उन के किसी नगरों में उन्हें घेरें और जो कुछ मरी अथवा रोग होवे। ३८ कोई मनुष्य से अथवा तेरे समस्त इसराएल लोग से जो जन अपने ही मन की बुराई को जाने और प्रार्थना और बिनती करे और अपने हाथ इस घर ३९ की ओर फैलावे। तब तू स्वर्ग पर से अपने निवासस्थान से सुन और क्षमा कर और संपूर्ण कर और हर एक जन को जिस के मन को तू जानता है उस की चालों के तुल्य प्रतिफल दे क्योंकि केवल तू ही समस्त मनुष्य के समस्त संतान ४० के अंतःकरण को जानता है। जिसतें वे जीवन भर उस देश में जो तू ने उन के पितरों को दिया है तुझ से डरते रहें॥

४१ और उस परदेशी के बिषय में जो तेरे इसराएल लोग में से नहीं है परन्तु तेरे नाम के कारण परदेश से आवे। ४२ क्योंकि वे तेरा बड़ा नाम और तेरी बलवंत भुजा और तेरी फैली हुई बांह को सुनेंगे और जब वह आवे और इस ४३ घर की ओर प्रार्थना करे। तो स्वर्ग पर से अपने निवासस्थान से सुन और परदेशी की समस्त यांचना के समान उसे पूरा कर जिसतें पृथिवी के समस्त लोग तेरे नाम को जानें और तेरे इसराएल लोग की नाईं तुझे डरें और जिसतें वे जानें कि तेरा नाम इस घर पर जिसे मैं ने बनाया है पुकारा जाता है॥

४४ यदि तेरे लोग अपने बैरी पर संग्राम के लिये निकलें जहां कहीं तू उन्हें भेजे और परमेश्वर की प्रार्थना इस नगर की ओर करें जिसे तू ने चुना है और इस घर की ओर जिसे मैं ने तेरे नाम के ४५ लिये बनाया है। तब तू स्वर्ग पर से उन की प्रार्थना और उन की बिनती सुन और उन का पद स्थिर कर॥

४६ यदि वे तेरे बिरुद्ध पाप करें क्योंकि कोई निष्पापी नहीं और तू उन से क्रुद्ध होके बैरी को सौंप देवे यहां लों कि वे उन्हें अपने देश में दूर अथवा नियर ले ४७ जायें। जिस देश में वे बंधुआई में पहुंचाये गये यदि वे फिरके सोचें और पश्चात्ताप करें और उन के देश में जो उन्हें बंधुआई में ले गये यह कहके बिनती करें कि हम ने पाप किया है और हम ने हठ किया है हम ने दुष्टता ४८ किई है। और अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से अपने बैरियों के देश में जो उन्हें बंधुआई में ले गये थे तेरी ओर फिरें और अपने देश की ओर जो तू ने उन के पितरों को दिया और उस नगर की ओर जो मैं ने तेरे नाम ४९ के लिये बनाया तेरी प्रार्थना करें। तो तू अपने निवासस्थान स्वर्ग में से उन की प्रार्थना और उन की बिनती सुन और

५० उन का पद स्थिर कर। और अपने लोगों को जिन्हों ने तेरे बिरुद्ध पाप किया है क्षमा कर और उन के सारे अपराधों को जो उन्हों ने तेरे बिरुद्ध अपराध किया है क्षमा कर और जो उन्हें बंधुआई में ले गये हैं वे उन पर ५१ दया करें और उन पर दयाल होवें। इस लिये कि जिन्हें तू मिस्र से अर्थात् लोहे की भट्ठी के मध्य में से निकाल लाया ५२ वे तेरे लोग और अधिकार हैं। जिसतें तेरे सेवक की प्रार्थना पर तेरी आंखें खुली रहें और तेरे इसराएल लोगों की बिनती पर हर बात के लिये जो वे तुझे ५३ पुकारते हैं तू सुने। क्योंकि हे परमेश्वर ईश्वर जब तू हमारे पितरों को मिस्र से निकाल लाया जैसा तू ने अपने सेवक मूसा के द्वारा से कहा था वैसा तू ने उन्हें समस्त पृथिवी के लोगों से अपने अधिकार के लिये अलग किया॥

५४ और ऐसा हुआ कि जब सुलेमान परमेश्वर के आगे समस्त प्रार्थना और यह बिनती कर चुका तो वह परमेश्वर की बेदी के आगे से अपने हाथ स्वर्ग की ओर फैलाने के साथ घुटना टेकने से उठा॥

५५ और खड़ा होके यह कहके बड़े शब्द से इसराएल की सारी मंडली को आशीस ५६ दिई। कि परमेश्वर धन्य जिस ने अपने बचन के समान अपने इसराएल लोगों को बिश्राम दिया और उस ने जो अपने सेवक मूसा के द्वारा से प्रतिज्ञा किई थी उन में से एक बात भी न ५७ घटी। परमेश्वर हमारा ईश्वर जिस रीति से हमारे पितरों के साथ था हमारे साथ होवे वह हमें न छोड़े और ५८ हमें त्याग न करे। जिसतें वह अपने समस्त मार्गों में चलाने को और अपनी आज्ञाओं को और बिधिन को और उस के बिचारों को जो उस ने हमारे पितरों से आज्ञा किई थी पालन करने को हमारे मन अपनी ओर झुकावे। और ५९ मेरे ये बचन जिस के लिये मैं ने परमेश्वर के आगे बिनती किई है सो रात दिन परमेश्वर हमारे ईश्वर के पास होवें कि जैसा प्रयोजन होवे वैसा वह अपने सेवक के पद को और अपने इसराएल लोगों के पद को प्रतिदिन स्थिर करे। ६० जिसतें पृथिवी के समस्त लोग जानें कि परमेश्वर को छोड़ और कोई ईश्वर नहीं ६१ है। इस लिये हमारे ईश्वर परमेश्वर की बिधि पर चलने को और आज के दिन की नाईं उस की आज्ञा पालन करने को हमारा अंतःकरण उस के आगे सिद्ध होवे॥

६२ और राजा और उस के साथ सारे इसराएल ने परमेश्वर के आगे बलिदान ६३ चढ़ाये। और सुलेमान ने परमेश्वर के लिये बाईस सहस्र बैल और एक लाख बीस सहस्र भेड़ बकरी से कुशल का बलि किया और राजा ने और सारे इसराएल के समस्त संतानों ने इस रीति से परमेश्वर के मंदिर की स्थापना किई। ६४ उस दिन राजा ने परमेश्वर के मंदिर के आगे मध्य के आंगन को पवित्र किया क्योंकि वहां उस ने बलिदान की भेंटें और भोजन की भेंटें और कुशल की भेंटों की चिकनाई चढ़ाई क्योंकि परमेश्वर के सन्मुख जो पीतल की बेदी है सो बलिदान की भेंटों के और भोजन की भेंटों के और कुशल की भेंटों की चिकनाई के लिये छोटी हुई॥

६५ तब सुलेमान ने और उस के साथ इसराएल के समस्त लोगों ने हमात के पैठ से मिस्र की नदी लों बड़ी मंडली ने सात दिन और सात दिन अर्थात् ६६ चौदह दिन पर्व्व किया। आठवें दिन

उस ने उन लोगों को बिदा किया और उन्हों ने राजा का धन्य माना और परमेश्वर ने जो अपने दास दाऊद के कारण और अपने इसराएल लोगों के कारण समस्त भलाई किई थी उस्से आनंदित और मगन होके अपने अपने डेरे गये॥

नवां पर्ब्ब।

१ और यों हुआ कि जब सुलेमान ने परमेश्वर के मंदिर और राजा के भवन और सुलेमान ने जो समस्त इच्छा किई २ सो बनाके समाप्त किया। तब परमेश्वर ने जैसा जिबऊन में सुलेमान को दर्शन दिया था वैसा दोहराके उसे दर्शन दिया॥

३ और परमेश्वर ने उसे कहा कि जो तू ने मेरे आगे प्रार्थना और बिनती किई है सो मैं ने सुनी है और जिस घर को तू ने मेरे नाम को वहां नित्य स्थापन करने के लिये बनाया है मैं ने उसे पवित्र किया है और मेरी आंखें और मेरा अंतः-४ करण उस में नित्य रहेंगे। और यदि तू अपने पिता दाऊद के समान मेरे आगे मन की खराई से और सच्चाई से चलेगा जिसतें मेरी समस्त आज्ञा के समान करे और मेरी बिधि और बिचार को ५ पालन करेगा। तब मैं तेरे राज्य के सिंहासन को इसराएल पर सदा के लिये स्थिर करूंगा जैसा मैं ने तेरे पिता दाऊद से यह कहके बाचा बांधी और कहा कि तेरे बंश से राज्य कधी न जायेगा। ६ परन्तु यदि तुम मेरा पीछा करने से किसी रीति से हटोगे अथवा तुम अथवा तुम्हारे बंश मेरी आज्ञाओं और बिधिन को जो मैं ने तुम्हारे आगे रक्खीं पालन न करोगे परन्तु जाके उपरी देवों की सेवा और ७ दण्डवत करोगे। तब मैं इसराएल को इस देश से जो मैं ने उन्हें दिया है उखाड़ डालूंगा और इस घर को जिसे मैं ने अपने नाम के लिये पवित्र किया है अपनी दृष्टि से दूर करूंगा और इसराएल एक कहावत और कहानी सारे ८ लोगों में होगा। और हर एक पथिक इस महत मंदिर से बिस्मित होके फुफकारी मारके कहेगा कि परमेश्वर ने किस कारण इस देश से और इस घर से ऐसा ९ किया है। तब वे उत्तर देंगे इस कारण कि उन्हों ने परमेश्वर अपने ईश्वर को छोड़ दिया जो उन के पितरों को मिस्र से निकाल लाया और उपरी देवों को ग्रहण किया और उन को दण्डवत और सेवा किई है इस लिये परमेश्वर उन पर ये सब बुराई लाया॥

१० और यों हुआ कि बीस बरस के अंत में जब सुलेमान दोनों घरों को अर्थात् परमेश्वर का घर और राजा का भवन ११ बना चुका। सूर के राजा हीराम ने सुलेमान की समस्त इच्छा के समान उसे देवदार और सरो के बृक्ष और सोना पहुंचाया था तब सुलेमान राजा ने हीराम को जलील के देश में बीस नगर दिये। १२ और हीराम सूर से उन नगरों को जो सुलेमान ने उसे दिये थे देखने को आया १३ और वे नगर उस की दृष्टि में ठीक न थे। और उस ने उसे कहा कि हे भाई कैसे नगर हैं जो आप ने मुझे दिये हैं और उस ने उन का नाम काबुल देश १४ रक्खा। और हीराम ने छः कोड़ी तोड़े सोना राजा कने भेजे॥

१५ और सुलेमान राजा के कर ठहराने का यह कारण था कि परमेश्वर के घर और अपने भवन और मिल्लो और यरूसलम की भीत और हसूर और मजिद्दो और १६ जजर बनावे। मिस्र का राजा फिरऊन चढ़ गया था और जजर को लेके उसे आग से फूंक दिया और उस नगर के बासी कनआनियों को घात किया और अपनी बेटी को सुलेमान की पत्नी होने

१७ के लिये उसे दिया। इस लिये सुलेमान ने ऊजर और नीचे के बैतहूरून को १८ बनाया। और देश के बन से बालात १९ और तदमूर को। और सुलेमान के समस्त भंडार के नगर और उस के रथों के नगर और घोड़चढ़ों के नगर के लिये और सुलेमान की बांछा जो उस ने बांछा किई थी यरूसलम और लुबनान में और अपने राज्य के सारे देश में बनाये॥

२० सारे लोग जो अमूरियों हित्तियों फरिज्जियों हवियों और यबूसियों से बच रहे थे जो इसराएल के संतान न थे। २१ उन के संतान जो देश में उन के पीछे बचे रहे जिन्हें इसराएल के संतान सर्बथा मिटा न सके उन्हों से सुलेमान ने आज के दिन लों दासत्व की सेवा २२ का कर लिया। परन्तु इसराएल के संतानों में से किसी को सुलेमान ने दास न बनाया परन्तु वे योद्धा और उस के सेवक और उस के अध्यक्ष और उस के सेनापति और उस के सारथी और उस २३ के घोड़चढ़े थे। सुलेमान के कार्य्यों पर पांच सौ पचास श्रेष्ठ प्रधान थे जो बनिहारों पर आज्ञाकारी थे॥

२४ परन्तु फिरऊन की कन्या दाऊद के नगर से निकलके अपने घर में आई जो सुलेमान ने उस के लिये बनाया वहां उस ने मिल्लो को बनाया॥

२५ और जो यज्ञबेदी सुलेमान ने परमेश्वर के कारण बनाई थी उस पर बरस में तीन बार बलिदान की भेंट और कुशल की भेंट चढ़ाई थीं और उस ने उस पर परमेश्वर के आगे सुगंध जलाया सो वह उस घर को बना चुका॥

२६ और सुलेमान राजा ने अदूम के देश में लाल समुद्र के तीर पर असयूनजब्र में जो ऐलूत के पास है जहाजों की २७ बहीर बनाई। और हीराम ने सुलेमान के सेवकों के साथ उसी बहीर में अपने सेवक मल्लाहों को जो समुद्र के जानकार थे भेजे। और वे ओफीर को गये और २८ वहां से चार सौ बीस तोड़े सोना लेके राजा सुलेमान पास आये॥

दसवां पर्ब्ब।

१ और जब सिबा की रानी ने परमेश्वर के नाम के बिषय में सुलेमान का यश सुना था वह गूढ़ प्रश्नों से उस की २ परीक्षा लेने आई। और वह बहुत से लोगों के और सुगंध द्रव्य लदे हुए ऊंट और बहुत सोना और मणि के साथ बड़ी भीड़ से यरूसलम में आई और उस ने सुलेमान पास आके सब जो उस के मन ३ में था उस्से पूछा। और सुलेमान ने उस के समस्त प्रश्नों का उत्तर दिया राजा से कोई बस्तु छिपी न थी जो उस ने ४ उसे न बताया। और जब सिबा की रानी ने सुलेमान की समस्त बुद्धि को और उस घर को जो उस ने बनाया ५ था। और उस के मंच के भोजन को और उस के सेवकों का बैठना और उस के दासों का खड़ा होना और उन का पहिरावा और उस के कटोरे के देवैयों और उस का चढ़ावा जो वह लेके परमेश्वर के मंदिर को जाता था देखा ६ तब वह मूर्छित हो गई। और उस ने राजा से कहा कि आप की कहावत और बुद्धि जो मैं ने अपने ही देश में ७ सुनी थी सो सत्य समाचार था। तिस पर भी जब लों मैं ने अपनी आंखों से न देखा तब लों उन बातों की प्रतीति न किई और देखिये कि आधा मुझे न कहा गया था तू ने बुद्धि और भलाई उस यश से जो मैं ने सुनी अधिक ८ बढ़ाई। धन्य तेरे जन धन्य ये तेरे सेवक जो नित तेरे आगे खड़े होके तेरा ज्ञान ९ सुनते हैं। परमेश्वर तेरा ईश्वर धन्य

जिस ने तुझ से प्रसन्न होके इसराएल के सिंहासन पर तुझे बैठाया इस कारण कि परमेश्वर ने इसराएल से प्रीति रक्खी इस लिये उस ने तुझे न्याय और धर्म्म १० के लिये राजा किया। और उस ने एक सौ बीस तोड़े सोना और अति बहुत सुगंध द्रव्य और मणि राजा को दिये और इन के समान जो सिबा की रानी ने सुगंध द्रव्य सुलेमान राजा को बहुताई से दिया ऐसा कभी न आया॥

११ और हीराम की बहीर भी जो ओफीर से सोना लाये थे और ओफीर से चंदन के बहुत वृक्ष और मणि लाये। १२ और राजा ने परमेश्वर के मंदिर के लिये और अपने भवन के लिये चंदन वृक्ष के खंभे बनवाये और गायकों के लिये बीणा और खजड़ी बनवाईं और चंदन के ऐसे वृक्ष न कभी आये न १३ आज लों देखे गये। और सुलेमान राजा ने सिबा की रानी को उस की समस्त बांछा जो उस ने मांगी उसे दिई उस के उपरांत जो सुलेमान राजा ने राजकीय दान से उसे दिया था और वह अपने सेवकों समेत अपने ही देश को फिर गई॥

१४ और सोने की तौल जो सुलेमान के पास एक बरस में आती थी सो छः सौ १५ छियासठ तोड़े थी। उस से अधिक जो ब्योपारियों और सुगंध द्रव्य के ब्योपारियों और अरब के समस्त राजाओं और पृथिवी के अध्यक्षों से पहुंचाया जाता था॥

१६ और सुलेमान राजा ने सोना गढ़वाके दो सौ ढालें बनवाईं हर एक ढाल में सवा पांच सौ मोहर के लगभग लगा। १७ और सोना गढ़वाके तीन सौ ढालें बनवाईं एक एक ढाल डेढ़ डेढ़ सेर सोने की थी सो राजा ने उन्हें लुबनान के बन के घर में रक्खा॥

१८ और राजा ने हाथीदांत का एक बड़ा सिंहासन बनवाके उसे अत्युत्तम सोने से मढ़वाया। १९ उस सिंहासन की छः सीढ़ी और सिंहासन के ऊपर पीछे की ओर गोल था और आसन की दोनों ओर टेक था और दोनों हाथों की अलंग दो सिंह खड़े थे। २० और उन छः सीढ़ियों के ऊपर दोनों अलंग सिंह खड़े थे किसी राज्य में ऐसा न बना था। २१ और सुलेमान के समस्त पीने के पात्र सोने के थे लुबनान के बन के घर के समस्त पात्र चोखे सोने के थे एक भी रूपे का न था सुलेमान के समय में उस को कुछ गिनती न थी। २२ क्योंकि हीराम के बहीरों के साथ राजा के तरसीसी बहीर समुद्र में थे और तरसीस के बहीर तीन तीन बरस में एक बार सोना और रूपा और हाथीदांत और बंदर और मोर लाते थे॥

२३ सो सुलेमान राजा धन और बुद्धि में पृथिवी के सारे राजाओं से अधिक था। २४ और ईश्वर ने सुलेमान के अंतःकरण में जो ज्ञान दिया था उसे सुन्ने के लिये सारी पृथिवी उस के दर्शन की बांछा करती थी। २५ और हर एक जन बरस बरस अपनी अपनी भेंट लाया अर्थात् रूपे और सोने के पात्र और पहिरावा और हथियार और सुगंध द्रव्य और घोड़े और खच्चर॥

२६ और सुलेमान ने रथ और घोड़चढ़े एकट्ठे किये और उस के पास चौदह सौ रथ और बारह सहस्र घोड़चढ़े थे जिन्हें उस ने रथों के नगरों में और राजा के संग यरूसलम में रक्खा॥

२७ और राजा ने यरूसलम में चांदी को पत्थरों के तुल्य और देवदार बहुताई में चौगान के गूलर पेड़ों के समान किया। २८ और सुलेमान के पास घोड़े मिस्र से

लाये गये थे और राजा के बैपारी भाव
२९ से लाते थे। और एक रथ छः सौ टुकड़े चांदी का मिस्र से निकलता और ऊपर आता था और एक घोड़ा डेढ़ सौ को और हित्ती के सारे राजाओं के लिये और अराम के राजाओं के लिये उन के द्वारा से ऐसा ही लाते थे॥

ग्यारहवां पर्ब्ब

१ परन्तु सुलेमान राजा ने फिरऊन की बेटी को छोड़ बहुत उपरी स्त्रियों से प्रीति किई अर्थात् मोअबी अम्मूनी अदूमी
२ सैदूनी और हित्ती की स्त्रियों से। उन जातिगणों से जिन के बिषय में परमेश्वर ने इसराएल के संतान को आज्ञा किई थी कि तुम उन के पास मत जाओ और न वे तुम्हारे पास आवें निश्चय वे तुम्हारे मन को अपने देवों की ओर फिरावेंगी पर सुलेमान प्रीति से उन्हीं
३ से मिलचा रहा। और उस की सात सौ राजकुमारी पत्नियां और तीन सौ सहेलियां थीं और उस की पत्नियों ने उस
४ के मन को फेर दिया। और ऐसा हुआ कि जब सुलेमान वृद्ध हुआ तब उस की पत्नियों ने उस के मन को भिन्न देवों की ओर फेर दिया और उस का मन अपने ईश्वर परमेश्वर की ओर अपने पिता दाऊद के मन के समान सिद्ध न था।
५ क्योंकि सुलेमान ने सैदानियों के देवता इसतारात का और अम्मूनों के घिनित
६ मिलकूम का पीछा पकड़ा। और सुलेमान ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई और उस ने परिपूर्णता से अपने पिता दाऊद के समान परमेश्वर का पीछा न
७ पकड़ा। तब सुलेमान ने यरूसलम के सन्मुख की पहाड़ी पर मोअबियों की घिनित कमूस के लिये और अम्मून के संतानों की घिनित मालक के लिये ऊंचा
८ स्थान बनाया। और इसी रीति से अपनी सारी उपरी पत्नियों के लिये जो अपने देवतों के लिये धूप जलाती और बलि करती थीं उस ने बनाया॥

९ और परमेश्वर सुलेमान पर इस कारण क्रुद्ध हुआ कि इसराएल के ईश्वर परमेश्वर से जिस ने उसे दो बार दर्शन
१० दिया था उस का मन फिर गया। और उसे इस बिषय में आज्ञा किई थी कि वह आन देवों का पीछा न पकड़े परन्तु उस ने परमेश्वर की आज्ञा को पालन
११ न किया। सो परमेश्वर ने सुलेमान से कहा इस कारण कि तुझ से यह हुआ है और तू ने मेरे नियम और मेरी बिधिन को जो मैं ने तुझे आज्ञा किईं पालन नहीं किया है निश्चय मैं राज्य तुझ से फाड़ूंगा और तेरे सेवक को देऊंगा।
१२ तथापि तेरे जीते जी तेरे पिता दाऊद के कारण से ऐसा न करूंगा परन्तु तेरे
१३ बेटे के हाथ से उसे फाड़ूंगा। तथापि मैं सारा राज्य न फाड़ लेऊंगा परन्तु अपने सेवक दाऊद के कारण और अपने चुने हुए यरूसलम के लिये तेरे बेटे को एक गोष्ठी देऊंगा॥

१४ तब परमेश्वर ने सुलेमान के एक बैरी को उभारा अर्थात् अदूमी हदद को वह अदूम में राजाओं के बंश
१५ से था। क्योंकि जब दाऊद अदूम में था और सेनापति यूअब अदूम के समस्त पुरुष को घात करके उन्हें गाड़ने
१६ गया। क्योंकि यूअब छः मास लों समस्त इसराएलियों के संग वहीं रहा यहां लों कि उस ने अदूम में एक पुरुष को
१७ जीता न छोड़ा। तब हदद अपने पिता के कई एक अदूमी सेवकों के साथ मिस्र को भाग गया और तब वह छोटा बालक था॥

१८ तब वे मिदयान से निकलके फारान में आये और फारान से लोगों को साथ

लेके मिस्र में मिस्र के राजा फिरऊन पास पहुंचे जिस ने उसे घर दिया और उस के लिये भोजन ठहराया और उसे भूमि १९ दिई। और हदद ने फिरऊन की दृष्टि में बड़ा अनुग्रह पाया यहां लों कि उस ने अपनी पत्नी तिहफनिहीस रानी की २० बहिन उसी को बियाह दिई। और तिहफनिहीस की बहिन उस के लिये जनूबत जनी जिस का दूध तिहफनिहीस ने फिरऊन के घर में छुड़ाया और जनूबत फिरऊन के बेटों के साथ फिरऊन के घराने में रहता था॥

२१ और जब हदद ने मिस्र में सुना कि दाऊद ने अपने पितरों में शयन किया और सेनापति यूआब मर गया तब उस ने फिरऊन से कहा कि मुझे बिदा कीजिये २२ कि मैं अपने ही देश को जाऊं। तब फिरऊन ने उसे कहा कि तुझे मेरे पास कौन सी घटती है कि तू अपने ही देश को जाने चाहता है और उस ने उत्तर दिया कुछ नहीं तथापि मुझे किसी रीति से जाने दीजिये॥

२३ फिर ईश्वर ने उस के लिये बैरी खड़ा किया अर्थात् इलियद: के बेटे रज़ून को जो सूब: के राजा अपने स्वामी २४ हददअज़र पास से भागा था। और जब दाऊद ने उन्हें घात किया तब उस ने अपने पास लोगों को एकट्ठा किया और एक जथा पर प्रधान हुआ और दमिश्क में जाके बास किया और दमिश्क में २५ राज्य किया। और हदद की बुराई से अधिक सुलेमान के जीवन भर वह इसराएल का बैरी था और वह इसराएल से घिन रखता था और अराम पर राज्य करता था॥

२६. और सरीद: के एक इफराती नबात के बेटे यरुबिआम ने जो सुलेमान का सेवक जिस की माता का नाम सरुआ: जो बिधवा थी उसी ने राजा के बिरोध हाथ उठाया। और राजा के बिरोध २७ हाथ उठाने का यह कारण था कि सुलेमान ने मिल्लो को बनाया और अपने बाप दाऊद के नगर के दरारों को बंद किया। और यरुबिआम अति बलवान २८ बीर था और उस तरुण को फुरतीला देखके सुलेमान ने उसे यूसुफ के घराने पर प्रधान किया॥

और उस समय में ऐसा हुआ कि जब २९ यरुबिआम यरूसलम से बाहर गया तब शैलूनी अखियाह भविष्यद्वक्ता ने उसे मार्ग में पाया। और वह एक नया बस्त्र पहिने था और केवल ये दोनों चौगान में थे। तब अखियाह ने उस पर के नये बस्त्र ३० को पकड़ा और फाड़के बारह टुकड़े किये। और उस ने यरुबिआम को कहा ३१ कि दस टुकड़े तू ले क्योंकि इसराएल का ईश्वर परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं सुलेमान के हाथ से राज्य फाड़ूंगा और दस गोष्ठियां तुझे देऊंगा। परन्तु मेरे ३२ सेवक दाऊद के कारण और यरूसलम नगर के कारण जिसे मैं ने इसराएल की समस्त गोष्ठियों में से चुन लिया वह एक गोष्ठी पावेगा। इस कारण कि ३३ उन्हों ने मुझे त्यागके सैदानियों के देवता इसतारात को और मोआबियों के देव कमूस को और अम्मून के संतान के देव मिलकूम को पूजा किई है और अपने पिता दाऊद की नाईं मेरी दृष्टि में जो भला है मेरे मार्गों में नहीं चला और मेरी बिधि और मेरे बिचारों को पालन नहीं किया। तथापि मैं समस्त राज्य ३४ को उस के हाथ से निकाल न लेऊंगा परन्तु मैं अपने सेवक दाऊद के कारण जिसे मैं ने इस कारण चुना कि उस ने मेरी आज्ञा और बिधिन को पालन किया उस के जीवन भर मैं इस को राजा कर

३५ रक्खूंगा। परन्तु उस के बेटे के हाथ से मैं राज्य लेऊंगा और दस गोष्ठी तुझे ३६ देऊंगा। और मैं उस के बेटे को एक गोष्ठी देऊंगा जिसतें यरूसलम नगर में जिसे मैं ने अपने नाम के लिये चुना है मेरा दास दाऊद एक दीपक रक्खा ३७ करे। और मैं तुझे लेऊंगा और तू अपने मन की समस्त इच्छा के समान राज्य करेगा और इसराएल का राजा होगा। ३८ और ऐसा होगा कि यदि तू मेरी समस्त आज्ञाओं को सुनेगा और मेरे मार्गों पर चलेगा और जिस रीति से मेरा दास दाऊद करता था वैसा मेरी बिधि और आज्ञा पालने के लिये मेरी दृष्टि में भलाई करेगा तो मैं तेरे साथ होऊंगा और तेरे लिये एक दृढ़ घर बनाऊंगा जैसा मैं ने दाऊद के लिये बनाया और ३९ इसराएल को तुझे देऊंगा। और इस लिये मैं दाऊद के बंश को दुःख देऊंगा ४० परन्तु सदा लों नहीं। इस लिये सुलेमान ने यरुबिआम को बधन करने चाहा तब यरुबिआम उठा और भागके मिस्र के राजा शिशाक के पास मिस्र में गया और सुलेमान के मरने लों वहीं रहा॥

४१ और सुलेमान का रहा हुआ कार्य्य और सब जो उस ने किया और उस की बुद्धि क्या सुलेमान की क्रिया की पुस्तक ४२ में नहीं लिखा है। और यरूसलम में सारे इसराएलियों पर सुलेमान के राज्य ४३ के दिन चालीस बरस थे। और सुलेमान ने अपने पितरों के संग शयन किया और अपने पिता दाऊद के नगर में गाड़ा गया और उस के बेटे रहबिआम ने उस की संती राज्य किया॥

बारहवां पर्ब्ब।

१ और रहबिआम सिकम को गया क्योंकि समस्त इसराएल सिकम में आये कि उसे राजा बनावें॥

२ और ऐसा हुआ कि जब नबात के बेटे यरुबिआम ने जो अब लों मिस्र में था यह सुना क्योंकि वह सुलेमान राजा के आगे से भागा था और मिस्र ३ में आ रहा था। तब उन्हों ने भेजके उसे बुलवाया और यरुबिआम और इसराएल की सारी मंडली आये और ४ यह कहके रहबिआम से बोले। कि तेरे पिता ने हमारे जूए को कठिन किया इस लिये अब तू अपने पिता की कठिन सेवा को और उस के भारी जूए को जो उस ने हम पर रक्खा हलका कर और ५ हम तेरी सेवा करेंगे। तब उस ने उन्हें कहा तीन दिन लों चले जाओ तब मुझ पास फिर आओ और लोग चले गये॥

६ तब रहबिआम राजा ने पुरनियों से जो उस के पिता सुलेमान के जीते जी उस के आगे होते थे परामर्श किया और कहा कि तुम्हारा क्या मंत्र है मैं ७ इन लोगों को क्या उत्तर देऊं। और वे उसे कहके बोले कि यदि आज के दिन तू इन लोगों का सेवक होके उन की सेवा करेगा और उत्तर देके उन्हें अच्छी बात कहेगा तो वे सर्बदा तेरे सेवक हो रहेंगे॥

८ परन्तु उस ने प्राचीनों के मंत्र को त्यागके उन युवा पुरुषों के संग जो उस के साथ साथ बैठे थे और उस के आगे खड़े होते थे परामर्श किया और उन ९ से कहा। कि ये लोग मुझ से यह कहके बोले और उस ने उन्हें कहा कि तेरे पिता ने जो जूआ हम पर रक्खा है उसे कुछ हलका कीजिये तुम क्या मंत्र १० देते हो मैं उन्हें क्या उत्तर देऊं। तब उन युवा पुरुषों ने जो उस के साथ साथ बढ़े थे उस्से कहके बोले कि जिन लोगों ने तुझ से यह कहा है कि तेरे पिता ने हमारे जूए को भारी किया है

परन्तु तू हमारे लिये उसे हलका कर तू उन्हें यों कहियो कि मेरी छिंगुली मेरे पिता की कटि से अधिक मोटी ११ होगी। और जैसा कि मेरे पिता ने तुम पर भारी जूआ रक्खा था मैं तुम्हारे जूए को बढ़ाऊंगा मेरे पिता ने कोड़े से तुम्हें ताड़ना किई परन्तु मैं तुम्हें बिच्छुओं से ताड़ना करूंगा॥

१२ सो जैसा राजा ने ठहराके कहा था कि तीसरे दिन फेर मेरे पास आना वैसा ही यरुबिआम और सारे लोग तीसरे दिन रहबिआम के पास आये। १३ तब राजा ने उन लोगों को कठोरता से उत्तर दिया और जो मंत्र प्राचीनों ने १४ दिया था उसे त्याग किया। और युवा पुरुषों के मंत्र के समान उन्हें कहा कि मेरे पिता ने तुम पर भारी जूआ रक्खा था परन्तु मैं उस जूए को और भारी करूंगा मेरे पिता ने तुम्हें कोड़ों से दंड दिया था परन्तु मैं तुम्हें बिच्छुओं से ताड़ना करूंगा॥

१५ सो राजा ने उन लोगों की बात न सुनी क्योंकि यह ईश्वर की ओर से था जिसतें वह अपने बचन को जो परमेश्वर ने शैलूनी अखियाह की ओर से नबात के बेटे यरुबिआम से कहा पूरा १६ करे। सो जब सारे इसराएलियों ने देखा कि राजा ने उन लोगों की न सुनी तब लोगों ने यह कहके राजा को उत्तर दिया कि दाऊद में हमारा क्या भाग है और यस्सी के बेटे के साथ हमारा कुछ अधिकार नहीं है हे इसराएल अब अपने अपने तंबुओं को जाओ हे दाऊद अपने घर को देख सो इसराएल अपने अपने तंबुओं को चले गये। १७ परन्तु इसराएल के संतान जो यहूदाह के नगरों में बस्ते थे रहबिआम ने उन पर राज्य किया॥

१८ तब रहबिआम राजा ने अदूराम को जो कर का स्वामी था भेजा और समस्त इसराएलियों ने यहां लों उसे पत्थरों से पथरवाह किया कि वह मर गया इस लिये रहबिआम राजा आप को दृढ़ करके यरूसलम को भागने के १९ लिये रथ पर चढ़ा। सो इसराएल आज के दिन लों दाऊद के घराने से फिर गये॥

२० और ऐसा हुआ कि जब सारे इसराएलियों ने सुना कि यरुबिआम फिर आया तो उन्हों ने भेजके उसे मंडली में बुलवाया और उन्हों ने उसे सारे इसराएलियों पर राजा किया केवल यहूदाह की गोष्ठी को छोड़ कोई दाऊद के घराने की ओर न हुआ॥

२१ और जब रहबिआम यरूसलम में पहुंचा तो उस ने यहूदाह के सारे घराने को बिनयमीन की गोष्ठी समेत जो सब एक लाख अस्सी सहस्र चुने हुए जन लड़ाक थे एकट्ठा किया कि इसराएल के घराने से लड़के राज्य को सुलेमान के बेटे रहबिआम की ओर लावें। २२ परन्तु ईश्वर के जन शमाया के पास ईश्वर का बचन यह कहके पहुंचा। २३ कि यहूदाह के राजा सुलेमान के बेटे रहबिआम को और सारे यहूदाह और बिनयमीन के घराने को और उबरे हुए २४ लोगों को कहके बोल। कि परमेश्वर यों कहता है कि चढ़ाई न करो और अपने भाइयों इसराएल के संतान से लड़ाई न करो परन्तु हर एक तुम्में से अपने अपने घर को फिरे क्योंकि यह बात मेरी ओर से है सो उन्हों ने परमेश्वर की आज्ञा मानी और परमेश्वर के बचन के समान उलटे फिरे॥

२५ तब यरुबिआम इफरायम पहाड़ में सिकम को बनाके उस में बसा इस के

पीछे वहां से निकलके फनुएल को २६ बनाया। तब यरुबिआम ने अपने मन में कहा कि अब राज्य दाऊद के घराने २७ को फिर जावेगा। यदि ये लोग बलि चढ़ाने के लिये परमेश्वर के मंदिर में यरूसलम को चढ़ेंगे तब इन लोगों का मन अपने प्रभु यहूदाह के राजा रहबिआम की ओर फिरेगा और वे मुझे मार लेंगे और यहूदाह के राजा २८ रहबिआम की ओर फिर जावेंगे। इस लिये राजा ने परामर्श करके सोने की दो बछिया बनवाईं और उन्हें कहा कि तुम्हारे लिये अति क्लेश है कि तुम यरूसलम को जाओ हे इसराएल अपने देवों को देख जो तुझे मिस्र की भूमि २९ से निकाल लाये। और उस ने एक को बैतएल में और दूसरे को दान में स्थापित ३० किया। और यह बात एक पाप हुई क्योंकि लोग दान में जाके एक की ३१ पूजा करते थे। और उस ने ऊंचे स्थानों में एक घर बनाया और नीच लोगों में से याजक बनाये जो लावी के बेटों में ३२ से न थे। और यरुबिआम ने यहूदाह के एक पर्ब की नाईं आठवें मास की पंदरहवीं तिथि में पर्ब ठहराया और बेदी पर बलिदान चढ़ाया ऐसा ही उस ने उन बछियों के आगे जो उस ने बनाई थीं बैतएल में किया और उस ने उन ऊंचे स्थानों के याजकों को जिन्हें ३३ उस ने बनाया था रक्खा। सो आठवें मास की पंदरहवीं तिथि को अर्थात् उस मास में जो उस ने अपने मन में रोपा था बैतएल में अपनी बनाई हुई बेदी पर बलिदान चढ़ाया और इसराएल के संतानों के लिये एक पर्ब ठहराया और उस ने उस बेदी पर चढ़ाया और धूप जलाया॥

तेरहवां पर्ब्ब

१ और देखो कि परमेश्वर के बचन से ईश्वर का एक जन यहूदाह से बैतएल में आया और यरुबिआम बेदी के पास धूप जलाने के लिये खड़ा था। और २ उस ने परमेश्वर के बचन से बेदी के बिरुद्ध में पुकारके कहा कि हे बेदी हे बेदी परमेश्वर यों कहता है कि देख यूसियाह नाम एक बालक दाऊद के घराने में उत्पन्न होगा और वह ऊंचे स्थानों के याजकों को जो तुझ पर धूप जलाते हैं तुझी पर चढ़ावेगा और मनुष्यों के हाड़ तुझ पर जलाये जावेंगे। और ३ उस ने उसी दिन यह कहके एक पता दिया कि परमेश्वर ने यह कहके यह पता दिया है कि देख बेदी फट जावेगी और उस पर की राख उंडेली जावेगी॥

४ और ऐसा हुआ कि जब यरुबिआम राजा ने ईश्वर के जन का कहना सुना जिस ने बैतएल की बेदी के बिरुद्ध पुकारा था तो उस ने बेदी पर से अपना हाथ बढ़ाके कहा कि उसे पकड़ लेओ सो उस का हाथ जो उस ने इस पर बढ़ाया था झुरा गया ऐसा कि वह उसे फिर मकोड़ न सका। और उस लक्षण ५ के समान जो ईश्वर के उस जन ने परमेश्वर के बचन से दिया था बेदी फट गई और राख बेदी पर से उंडेली गई। ६ तब राजा ने ईश्वर के उस जन को कहा कि अब अपने ईश्वर परमेश्वर से बिनती करिये और मेरे लिये प्रार्थना करिये कि मेरा हाथ चंगा किया जावे तब ईश्वर के जन ने परमेश्वर के रूख बिनती किई और राजा का हाथ चंगा किया गया और आगे की नाईं हो गया। ७ तब राजा ने ईश्वर के उस जन से कहा कि मेरे साथ घर में चलके सुस्ताइये और मैं तुझे प्रतिफल देऊंगा। परन्तु ८ ईश्वर के जन ने राजा से कहा कि यदि तू अपना आधा घर मुझे देवे तथापि

मैं तेरे साथ भीतर न जाऊंगा और इस स्थान में न रोटी खाऊंगा न जलपान ९ करूंगा। क्योंकि परमेश्वर के बचन से मुझे यों कहा गया कि न रोटी खाइयो न जलपान करियो और जिस मार्ग से होके तू जाता है उसी से फेर मत आना। १० सो वह जिस मार्ग में होके बैतएल में आया था उस मार्ग से न गया वह दूसरे मार्ग से चला गया॥

११ और बैतएल में एक बृद्ध भविष्यद्वक्ता रहता था और उस के बेटे उस पास आये और उन कार्य्यों को जो ईश्वर के जन ने उस दिन बैतएल में किये उसे कह सुनाया और उस को इन बातों को जो उस ने राजा से कहीं थीं १२ अपने पिता के आगे बर्णन किया। और उन के पिता ने उन से पूछा कि वह किस मार्ग से गया क्योंकि उस के बेटों ने देखा था कि ईश्वर का वह जन जो यहूदाह से आया किस मार्ग से फिर १३ गया। तब उस ने अपने बेटों से कहा कि मेरे लिये गदहे पर काठी बांधो सो उन्हों ने उस के लिये गदहे पर काठी १४ बांधी और वह उस पर चढ़ा। और ईश्वर के उस जन के पीछे चला और उसे बलूत बृक्ष तले बैठे पाया तब उस ने उसे कहा कि तू ईश्वर का वह जन है जो यहूदाह से आया और वह बोला १५ हां। तब उस ने उसे कहा कि मेरे संग १६ घर पर चल और रोटी खा। और वह बोला मैं तेरे साथ नहीं फिर सक्ता और न तेरे साथ जा सक्ता और न मैं तेरे साथ इस स्थान में रोटी खाऊंगा न जल १७ पीऊंगा। क्योंकि परमेश्वर के बचन से मुझे यों कहा गया कि तू वहां न रोटी खाना न जल पीना और जिस मार्ग से तू जाता है उस मार्ग से होके न फिरना। १८ तब उस ने उसे कहा कि मैं भी तेरी नाईं एक भविष्यद्वक्ता हूं और परमेश्वर के बचन के द्वारा से एक दूत ने मुझे कहा कि उसे अपने साथ अपने घर में फिरा ला जिसतें वह रोटी खावे और पानी पीये उस ने उस्से झूठ कहा। सो १९ वह उस के साथ फिर गया और उस के घर में रोटी खाई और जल पीया॥

२० और यों हुआ कि ज्यों वे मंच पर बैठे थे तब परमेश्वर का बचन उस भविष्यद्वक्ता पर जो उसे फिरा लाया था २१ उतरा। और उस ने ईश्वर के उस जन से जो यहूदाह से आया था चिल्लाके कहा कि परमेश्वर यह कहता है कि इस कारण तू ने परमेश्वर के बचन को उल्लंघन किया है और जो तेरे ईश्वर परमेश्वर ने तुझे आज्ञा किई है तू ने २२ उसे पालन न किया। परन्तु फिर आया और उस ने जिस स्थान के विषय में तुझे कहा कि कुछ रोटी न खाना न जल पीना उसी स्थान में तू ने रोटी खाई और जल पीया सो तेरी लोथ तेरे पितरों की समाधि में न पहुंचेगी॥

२३ और ऐसा हुआ कि जब वह खा पी चुका तब उस ने उस के लिये अर्थात् उस भविष्यद्वक्ता के लिये जिसे वह फेर लाया था गदहे पर काठी बांधी। २४ और जब वह वहां से गया तो मार्ग में उसे एक सिंह मिला जिस ने उसे मार डाला और उस की लोथ मार्ग में पड़ी थी और गदहा उस पास खड़ा रहा और सिंह भी उस लोथ के पास खड़ा था। २५ और देखो कि लोगों ने उधर से जाते जाते लोथ को मार्ग में पड़ी देखा और कि सिंह भी लोथ पास खड़ा है तब उन्हों ने नगर में आके जहां वह बृद्ध भविष्यद्वक्ता रहता था कहा। २६ और जब उस भविष्यद्वक्ता ने जो उसे मार्ग में से फिरा लाया था सुना तो कहा कि यह

ईश्वर का वह जन है जिस ने परमेश्वर का बचन न माना इस लिये परमेश्वर ने उसे सिंह को सौंप दिया जिस ने उसे परमेश्वर के बचन के समान जो उस ने कहा था फाड़ा और मार डाला है ।
२७ फिर वह अपने बेटों से यह कहके बोला कि मेरे लिये गदहे पर काठी
२८ बांधो और उन्हों ने बांधी । तब उस ने जाके उस को लोथ मार्ग में पड़ी पाई और गदहा और सिंह लोथ पास खड़े थे सिंह ने लोथ को न खाया था
२९ और न गदहे को फाड़ा था । तब उस भविष्यद्वक्ता ने ईश्वर के जन की लोथ को उठाके उस गदहे पर लादा और उसे फेर लाया और उस के लिये शोक करते हुए वृद्ध भविष्यद्वक्ता नगर में
३० पहुंचा कि उसे गाड़े । तब उस ने उस की लोथ को अपनी ही समाधि में रक्खा और यह कहके उस के लिये उन्हों ने बिलाप किया कि हाय मेरे
३१ भाई । और उस के गाड़ने के पीछे यों हुआ कि वह यह कहके अपने बेटों से बोला कि जब मैं मरूं तो मुझे ईश्वर के इस जन की समाधि में गाड़ियो और मेरी हड्डियां उस की हड्डियों के
३२ पास रखियो । क्योंकि वह बचन जो परमेश्वर ने बैतएल की बेदी और समरून के नगरों के ऊंचे स्थानों के समस्त घरों के बिरोध में कहा सो अवश्य पूरा होगा ॥

३३ इस के पीछे यरुबिआम अपने बुरे मार्ग से न फिरा परन्तु फिर नीच लोगों को ऊंचे स्थानों का याजक बनाया जिस ने चाहा उसे उस ने स्थापित किया और वह ऊंचे स्थानों का एक याजक
३४ हुआ । और यही बस्तु यरुबिआम के घराने के लिये यहां लों पाप हुई कि उसे उखाड़े और पृथिवी पर से नष्ट करे ॥

चौदहवां पर्ब्ब ।

१ उस समय में यरुबिआम का बेटा
२ अबियाह रोगी हुआ । और यरुबिआम ने अपनी पत्नी से कहा कि उठके अपना भेष बदल जिसतें न जाना जाय कि तू यरुबिआम की पत्नी है और शीलो को जा देख वहां अखियाह भविष्यद्वक्ता है जिस ने मुझे कहा था कि तू इन लोगों
३ का राजा होगा । और अपने हाथ में दस रोटियां और लड्डू और एक पात्र मधु लेके उस पास जा और वह तुझे बतावेगा कि इस लड़के को क्या होगा ।
४ तब यरुबिआम की पत्नी ने वैसा ही किया और उठके शीलो को गई और अखियाह के घर में पहुंची परन्तु अखियाह देख न सक्ता था क्योंकि बुढ़ापे के कारण उस की आंखें बैठ गई थीं ।
५ तब परमेश्वर ने अखियाह से कहा कि देख यरुबिआम की पत्नी अपने बेटे के बिषय में तुझ से कुछ पूछने को आती है क्योंकि वह रोगी है तू उसे यों यों कहियो क्योंकि यों होगा कि जब वह भीतर आवेगी वह अपना भेष बदल डालेगी ॥

६ और यों हुआ कि जब वह द्वार पर पहुंची और अखियाह ने उस के पांवों का शब्द सुना तो उस ने उसे कहा कि हे यरुबिआम की पत्नी भीतर आ तू अपना भेष क्यों बदलती है क्योंकि मैं कठिन समाचार के लिये तुझ पास भेजा
७ गया हूं । सो जा यरुबिआम से कह कि इसराएल का ईश्वर परमेश्वर यों कहता है कि जैसा मैं ने लोगों में से तुझे बढ़ाया और तुझे अपने इसराएल लोग
८ पर अध्यक्ष किया । और दाऊद के घराने से राज्य फाड़के तुझे दिया तथापि तू मेरे सेवक दाऊद के समान न हुआ जिस ने मेरी आज्ञाओं का पालन किया

और जो अपने सारे मन से मेरे पीछे चला जिसतें केवल वही करे जो मेरी
९ दृष्टि में अच्छा था। परन्तु सभों से जो तेरे आगे थे तू ने अधिक बुराई किई है क्योंकि मुझे क्रुद्ध करने को तू ने जाके अपने लिये और देवों को और ढाली हुई मूर्त्तिन को बनाया और मुझे अपने
१० पीछे टाल दिया है। इस लिये देख मैं यरुबिअ्राम के घराने पर बुराई लाऊंगा और यरुबिअ्राम के हर एक को जो भीत पर मूतता है और इसराएल में बन्द हैं और बचा है नष्ट करूंगा और उन को जो यरुबिअ्राम के घर में बच रहेंगे यों मिटा डालूंगा जैसा कोई जन कूड़े को यहां लों ले जाता है कि सब
११ जाता रहे। यरुबिअ्राम का जो कोई नगर में मरेगा उसे कुत्ते खावेंगे और जो चौगान में मरेगा उसे आकाश के पंछी खावेंगे क्योंकि परमेश्वर ने यों कहा है।
१२ सो तू उठके अपने ही घर जा और नगर में तेरे पांव पहुंचते ही वह लड़का मर
१३ जावेगा। और उस के लिये सारे इसराएल बिलाप करेंगे और उसे गाड़ेंगे क्योंकि यरुबिअ्राम की समाधि में केवल वही पहुंचेगा इस कारण कि इसराएल के ईश्वर परमेश्वर की ओर यरुबिअ्राम के घराने में से उस में भलाई पाई गई।
१४ और परमेश्वर इसराएल पर एक राजा खड़ा करेगा जो उसी दिन यरुबिअ्राम के घराने को नष्ट करेगा और क्या हां
१५ अभी नहीं। और परमेश्वर इसराएलियों को मारेगा जिस रीति से जल में सेंठा हिलता है और इसराएल को इस अच्छी भूमि से जो उस ने उन के पितरों को दिई है उखाड़ फेंकेगा और उन्हें नदी के पार लों छिपरावेगा इस कारण कि उन्हों ने अपना अपना कुंज बनाके
१६ परमेश्वर को खिजाके रिसियाया। और वह यरुबिअ्राम के पाप के कारण इसराएल को दूर करेगा क्योंकि उस ने पाप किया और इसराएल से पाप करवाया॥

१७ तब यरुबिअ्राम की पत्नी उठ चली और तिरज: में आई और ज्योंहीं वह देहली पर पहुंची त्योंहीं लड़का मर
१८ गया। और जैसा परमेश्वर ने अपने सेवक अखियाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा से कहा था उन्हों ने इसे गाड़ा और सारे इसराएलियों ने उस के लिये बिलाप किया॥

१९ और यरुबिअ्राम की रही हुई क्रिया जिस रीति से उस ने युद्ध किया और कि जिस रीति से उस ने राज्य किया सो देखो इसराएल के राजाओं के समाचार
२० की पुस्तक में लिखा है। और यरुबिअ्राम ने बाईस बरस राज्य किया तब अपने पितरों में सो गया और उस का बेटा नदब उस की सन्ती राज्य पर बैठा॥

२१ और सुलेमान के बेटे रहबिअ्राम ने यहूदाह पर राज्य किया उस ने एकतालीस बरस की अवस्था में राज्य करना आरंभ किया और यरूसलम में अर्थात् उस नगर में जिसे परमेश्वर ने अपना नाम रखने के लिये इसराएल की समस्त गोष्ठियों में से चुन लिया था सत्रह बरस राज्य किया और उस की माता का नाम
२२ नअमः जो अम्मूनी थी। और यहूदाह ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई और उन्हों ने अपने पितरों के पाप से अधिक पाप करके परमेश्वर को खिजाके क्रोध
२३ दिलाया। क्योंकि उन्हों ने भी अपने लिये हर एक ऊंचे पहाड़ पर और एक एक हरे पेड़ तले ऊंचा स्थान और मूर्त्ति
२४ और कुंज बनाया। और देश में सदूमी भी थे और उन्हों ने अन्यदेशियों के समस्त घिनित कार्य्यों के समान किया

जिन्हें परमेश्वर ने इसराएल के संतानों के आगे से दूर किया॥

२५ और रहबिआम राजा के पांचवें बरस ऐसा हुआ कि मिस्र का राजा शीशाक यरूसलम के बिरोध में चढ़ २६ आया। और वह परमेश्वर के मंदिर का धन और राजा के घर का धन लेके चला गया और वह सब कुछ ले गया जो सोने की ढालें सुलेमान ने बनाई थीं २७ वह सब ले गया। और रहबिआम राजा ने उन की सन्ती पीतल की ढालें बनाईं और प्रधान दौड़हों को जो राजा के भवन के द्वार की रक्षा करते २८ थे दिया। और ऐसा हुआ कि जब राजा परमेश्वर के मंदिर में जाता था तब पहरू उन्हें उठा लेते थे फिर उन्हें लाके पहरू की कोठरी में रख छोड़ते थे॥

२९ अब रहबिआम की रही हुई क्रिया और सब कुछ जो उस ने किया सो क्या यहूदाह के राजावली के समाचार की ३० पुस्तक में नहीं लिखा। और रहबिआम में और यरुबिआम में जीवन भर सर्वदा ३१ युद्ध रहा। और रहबिआम ने अपने पितरों में शयन किया और दाऊद के नगर में अपने पितरों के साथ गाड़ा गया और उस की माता का नाम नअमः जो अम्मूनी थी और उस के बेटे अबियाम ने उस की सन्ती राज्य किया॥

पन्द्रहवां पर्ब्ब।

१ और नबात के बेटे यरुबिआम के राज्य के अठारहवें बरस अबियाम ने २ यहूदाह पर राज्य किया। उस ने यरूसलम में तीन बरस राज्य किया और उस की माता का नाम मअकः था जो अबिसलुम ३ की बेटी थी। और जैसा उस के पिता ने उस्से पहिले पाप किया वैसे उस ने भी किये और उस का मन परमेश्वर अपने ईश्वर की ओर सिद्ध न था जैसा कि उस के पिता दाऊद का था। ४ तथापि दाऊद के कारण उस के ईश्वर परमेश्वर ने उसे यरूसलम में एक दीपक दिया कि उस के बेटे को उस के पीछे बैठावे और जिसतें यरूसलम को स्थिर ५ करे। इस कारण कि दाऊद ने वही कार्य्य किया जो ईश्वर की दृष्टि में ठीक था और अपने जीवन भर केवल ऊरियाह हित्ती की बात को छोड़ और ६ किसी आज्ञा से न मुड़ा। और रहबिआम और यरुबिआम के मध्य में जीवन भर युद्ध रहा॥

७ अब अबियाम की रही हुई क्रिया और सब जो उस ने किया था सो क्या यहूदाह के राजाओं के समयों के समाचार ८ की पुस्तक में नहीं लिखा है। और अबियाम और यरुबिआम में लड़ाई थी तब अबियाम ने अपने पितरों में शयन किया और उन्हों ने उसे दाऊद के नगर में गाड़ा और उस का बेटा असा उस की सन्ती राज्य पर बैठा॥

९ और इसराएल के राजा यरुबिआम के राज्य के बीसवें बरस असा यहूदाह १० पर राज्य करने लगा। और उस ने यरूसलम में एकतालीस बरस राज्य किया और उस की माता का नाम मअकः था ११ जो अबिसलुम की बेटी थी। और असा ने अपने पिता दाऊद की नाईं परमेश्वर १२ की दृष्टि में ठीक किया। और उस ने गांडुओं को देश से दूर किया और उन मूर्त्तिन को जिन्हें उस के पितरों ने बनाया १३ था निकाल फेंका। और उस ने अपनी माता मअकः को भी रानी होने के पद से अलग किया क्योंकि उस ने कुंज में एक मूर्त्ति बनाई थी और असा ने उस की मूर्त्ति को ढा दिया और कैदरून के नाले १४ के तीर जला दिया। परन्तु ऊंचे स्थान

अलग न किये गये तथापि उस का मन जीवन भर परमेश्वर के आगे सिद्ध था।

१५ और जो जो बस्तु उस के पिता ने समर्पण किई थी और जो जो बस्तु उस ने आप समर्पण किई थी अर्थात् रूपा और सोना और पात्र उस ने उन्हें परमेश्वर के मंदिर में पहुंचाया॥

१६ और असा में और इसराएल के राजा बअशा में उन के जीवन भर युद्ध रहा।

१७ और इसराएल का राजा बअशा यहूदाह के बिरोध में चढ़ गया और रामः को बनाया जिसतें यहूदाह के राजा असा पास किसी को जाने न देवे॥

१८ तब असा ने परमेश्वर के मंदिर के भंडार का बचा हुआ रूपा और सोना और राजा के घर का धन लेके उन्हें अपने सेवकों के हाथ में सौंपा और असा राजा ने उन्हें अराम हजयून के बेटे तबरिम्मून के बेटे बिनहदद पास जो दमिश्क में रहता था यह कहके भेजा।

१९ कि मेरे और तेरे मध्य में और मेरे बाप के और तेरे बाप के बीच मेल है देख मैं ने तेरे लिये रूपा और सोना भेंट भेजा सो आइये और इसराएल के राजा बअशा से मेल तोड़िये जिसतें वह मेरी ओर से चढ़ जावे॥

२० तब बिनहदद ने असा राजा की बात मानके अपने सेनापतिन को इसराएल के नगरों के बिरोध में भेजा और ऐयून और दान को और अबिल बैतमअकः को और समस्त किन्नारात को नफताली के समस्त देश सहित मारा।

२१ और ऐसा हुआ कि जब बअशा ने सुना तब रामः का बनाना छोड़के तिरजः में जा रहा॥

२२ तब असा राजा ने सारे यहूदाह में प्रचारा और कोई न रहा सो वे रामः के पत्थरों को और उस के लट्ठों को जिन से बअशा ने बनाया था उठा ले गये और असा राजा ने बिनयमीन के जिबअ को और मिसफा को उन से बनाया॥

२३ और असा की समस्त उबरी हुई क्रिया और उस के समस्त पराक्रम और सब जो उस ने किया था और उस ने जो जो नगर बनाये सो क्या यहूदाह के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखा है तथापि उस के बुढ़ापे में उस के पांव में रोग था।

२४ तब असा ने अपने पितरों में शयन किया और अपने पितरों में दाऊद के नगर में गाड़ा गया और उस का बेटा यहूशफत उस की सन्ती राजा हुआ॥

२५ और यहूदाह के राजा असा के राज्य के दूसरे बरस यरुबिआम का बेटा नदब इसराएल के संतान का राजा हुआ और उस ने इसराएल पर दो बरस राज्य किया।

२६ और उस ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई और अपने पिता के मार्ग में और उस के पाप में जिस्से उस ने इसराएल से पाप करवाया चला॥

२७ तब इशाकार के घराने में से अखियाह के बेटे बअशा ने उस के बिरोध में गुष्ट बांधी और फिलिस्तियों के जिबतून में उसे घात किया क्योंकि नदब और सारे इसराएल ने जिबतून को घेरा था।

२८ अर्थात् यहूदाह के राजा असा के तीसरे बरस बअशा ने उसे घात करके उस की सन्ती राज्य किया।

२९ और ऐसा हुआ कि उस ने राज्य पर स्थिर होके यरुबिआम के सारे घराने को बध किया और उस ने यरुबिआम के लिये एक स्वासधारी को न छोड़ा जब लों उसे नाश न कर डाला जैसा कि परमेश्वर ने अपने सेवक अखियाह शैलूनी के द्वारा से कहा था।

३० क्योंकि यरुबिआम ने आप

बहुत पाप किये थे और इसराएल से भी पाप करवाये थे और परमेश्वर इसराएल के ईश्वर को निपट क्रोधित किया था
३१ रिसियाके खिजाया था। और नदब की रही हुई क्रिया और सब जो उस ने किया था क्या वह इसराएल के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं
३२ लिखा है। और असा और इसराएल के राजा बअशा में उन के जीवन भर लड़ाई रही॥

३३ यहूदाह के राजा असा के राज्य के तीसरे बरस अखियाह का बेटा बअशा तिरज: में समस्त इसराएल पर राज्य करने लगा उस ने चौबीस बरस राज्य
३४ किया। और उस ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई और यरुबिआम के मार्ग में और उस के पाप में जिस्से उस ने इसराएल से पाप करवाया चलता था॥

सोलहवां पर्व्व।

१ तब बअशा के बिरोध में हनानी के बेटे याहू पर परमेश्वर का बचन
२ उतरा। जैसा कि मैं ने तुझे धूल में से उठाया और तुझे अपने लोग इसराएलियों पर अध्यक्ष किया परन्तु तू यरुबिआम के पथ पर चला और तू ने मेरे इसरा-
३ एली लोगों से पाप करवाया। देख मैं बअशा के बंश को और उस के घराने के बंश को दूर करूंगा और मैं तेरे घराने को नबात के बेटे यरुबिआम के
४ घराने के समान करूंगा। बअशा के घर का जो कोई नगर में मरेगा उसे कुत्ते खावेंगे और जो चौगान में मर जावेगा उसे आकाश के पंछी खावेंगे॥

५ और बअशा की रही हुई क्रिया और जो कुछ उस ने किया और उस की सामर्थ्य क्या वह इसराएल के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में
६ लिखा नहीं। सो बअशा अपने पितरों में सो गया और तिरज: में गाड़ा गया और उस के बेटे एला ने उस की सन्ती राज्य किया॥

७ और हनानी के बेटे याहू भविष्यद्वक्ता के द्वारा से परमेश्वर का बचन बअशा के बिरोध में और उस के घराने के बिरोध में आया अर्थात् उस समस्त बुराई के कारण जो उस ने परमेश्वर की दृष्टि में करके अपने हाथ के कार्य्यों से जो यरुबिआम के घराने की नाईं था और इस कारण कि उसे मार डाला था उसे रिस दिलाया॥

८ यहूदाह के राजा असा के राज्य के छब्बीसवें बरस बअशा के बेटे एला ने तिरज: में इसराएल पर दो बरस राज्य
९ किया। और जब वह तिरज: में अपने घर के प्रधान अरजा के घर में पीके मतवाला रहा था तब उस के आधे रथों के प्रधान उस के सेवक जिमरी ने
१० उस के बिरोध में गुष्ट किई। तब जिमरी ने भीतर पैठके उसे मारा और यहूदाह के राजा असा के सताईसवें बरस उसे मार डाला और उस की सन्ती राज्य किया॥

११ और यों हुआ कि जब वह राज्य करने लगा तो सिंहासन पर बैठते ही उस ने बअशा के सारे घराने को घात किया तब उस ने उस के लिये न तो एक पुरुष को जो भीत पर मूत्ता है न उस के कुटुम्ब को न मित्र को छोड़ा।
१२ यों जिमरी ने परमेश्वर की बाचा के समान जो उस ने बअशा के बिषय में याहू भविष्यद्वक्ता के द्वारा से कहा और बअशा के समस्त घराने को नष्ट किया।
१३ बअशा के सारे पापों के कारण और उस के बेटे एला के पापों के कारण जो उन्हों ने किये और जिन से उन्हों ने इसराएल से पाप करवाये यों अपनी

मूढ़ता से परमेश्वर इसराएल के ईश्वर को रिस दिलाया ॥

१४ अब एला की रही हुई क्रिया और सब कुछ जो उस ने किया था सो क्या वह इसराएल के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखा ॥

१५ यहूदाह के राजा असा के सताईसवें बरस ज़िमरी ने तिरज़: में सात दिन राज्य किया और लोगों ने फ़िलिस्तियों के जिबतून के बिरोध में छावनी किई। १६ और जब छावनी के लोगों ने सुना कि ज़िमरी ने गुष्टि करके राजा को भी बधन किया है इस लिये समस्त इसराएल ने सेनापति उमरी को छावनी में उसी दिन १७ इसराएल पर राजा किया। और उमरी ने सारे इसराएल समेत जिबतून से चढ़के १८ तिरज़: को घेरा। और यों हुआ कि जब ज़िमरी ने देखा कि नगर लिया गया तो वह राजा के भवन में गया और अपने ऊपर राजा के भवन में आग १९ लगाके जल मरा। उस के पापों के कारण जो उस ने यरुबिआम के मार्ग पर चलने में और अपने पाप में जो उस ने इसराएल से पाप करवाके किया था परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई ॥

२० और ज़िमरी की रही हुई क्रिया और उस का छल जो उस ने किया क्या वह इसराएल के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखा ॥

२१ उस के पीछे इसराएल लोग दो भाग हुए आधे लोग गिनात के बेटे तिबनी को राजा करने को उस की ओर और २२ आधे लोग उमरी के पीछे हुए। परन्तु जो लोग उमरी के पीछे हुए थे उन लोगों ने गिनात के बेटे तिबनी की ओर के लोगों को जीता और तिबनी मारा गया और उमरी ने राज्य किया ॥

२३ यहूदाह के राजा असा के राज्य के एकतीसवें बरस उमरी इसराएल पर राज्य करने लगा उस ने बारह बरस राज्य किया तिरज़: में छः बरस राज्य किया। २४ तब उस ने दो तोड़ा चांदी पर समरून का पहाड़ समर से मोल लेके उस पहाड़ पर एक नगर बसाया और उस नगर का नाम जो उस ने बनाया था समरून रक्खा जो समर के पहाड़ का स्वामी था। २५ परन्तु उमरी ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई और उन सब से जो उस्से आगे थे अधिक बुराई किई। २६ क्योंकि वह नबात के बेटे यरुबिआम के सारे मार्गों में और उस के पापों में चलता था जिन से उस ने इसराएल से पाप करवा-के परमेश्वर इसराएल के ईश्वर को अपनी मूढ़ता से रिस दिलाया ॥

२७ अब उमरी की रही हुई क्रिया और उस का पराक्रम जो उस ने दिखाया सो क्या वह इसराएल के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखा। २८ और उमरी अपने पितरों में सो गया और समरून में गाड़ा गया और उस के बेटे अखिअब ने उस की सन्ती राज्य किया ॥

२९ और यहूदाह के राजा असा के राज्य के अठतीसवें बरस उमरी का बेटा अखिअब इसराएल पर राज्य करने लगा और उमरी के बेटे अखिअब ने बाईस बरस समरून में इसराएल पर राज्य किया। ३० और उमरी के बेटे अखिअब ने उन सब से जो उस्से आगे थे परमेश्वर की दृष्टि में अधिक बुराई किई। ३१ और यों हुआ कि उस ने इतने पर बस न किया कि नबात के बेटे यरुबिआम के से पाप करता था परन्तु वह सैदानियों के राजा इतबअल की बेटी ईज़बिल को ब्याह लाया और जाके बअल को पूजा और उस के आगे दण्डवत किई।

३२ और अबअल के मंदिर में जो उस ने समरून में बनाया था अबअल के लिये ३३ एक बेदी बनाई। और अखिअब ने कुंज बनाया और परमेश्वर इसराएल के ईश्वर को उन सब इसराएली राजाओं से जो उस्से आगे थे अधिक रिस उभाड़ा॥

३४ उस के दिनों में हैएल बैतएली ने यरीहो को बनाया उस ने उस की नेंव अपने पहिलौठे अबिराम पर डाली और उस के फाटक अपने लहुरे सजूब पर खड़े किये जैसा कि परमेश्वर ने नून के बेटे यहूशूअ के द्वारा से बचन दिया था॥

सत्रहवां पर्ब्ब।

१ तब जिलिअद के बासियों में से इलियाह तिसबी ने अखिअब से कहा कि परमेश्वर इसराएल के ईश्वर के जीवन सों जिस के आगे मैं खड़ा हूं कोई एक बरस लों न ओस पड़ेगी न मेंह बरसेगा परन्तु जब मैं कहूंगा॥

२ और यह कहते हुए परमेश्वर का ३ बचन उस पर उतरा। कि यहां से चलके पूरब की ओर जा और करीथ की नाली के पास जो यरदन के आगे है आप को ४ छिपा। और ऐसा होगा कि तू उस नाली से पीजियो और मैं ने जंगली कौव्वों को आज्ञा किई है कि वे तुझे ५ वहां खिलावें। सो उस ने जाके परमेश्वर के बचन के समान किया और यरदन के आगे करीथ नाली के पास जा रहा। ६ और सांझ बिहान कौव्वे उस पास रोटी और मांस लाया करते थे और वह उस ७ नाली से पीता था। और कुछ दिन के पीछे ऐसा हुआ कि देश में मेंह न बरसने के कारण से नाली का जल सूख गया॥

८ तब परमेश्वर का बचन यह कहके ९ उस पर उतरा। कि उठके सैदानियों के सरफत को चला जा और वहां रह देख मैं ने तेरे प्रतिपाल के लिये एक रांड़ को आज्ञा किई है। १० सो वह उठके सरफत को गया और जब वह नगर के फाटक पर पहुंचा तो क्या देखता है कि एक बिधवा वहां लकड़ियां बटोर रही थी और उस ने उसे पुकारके कहा कि कृपा करके मुझे एक घूंट पानी किसी पात्र में लाइये कि पीऊं। ११ और जब वह लाने चली तो इतने में वह उसे पुकारके बोला कि मैं बिनती करता हूं कि अपने हाथ में एक टुकड़ा रोटी मेरे लिये लेती आइयो। १२ तब उस ने उसे कहा कि परमेश्वर तेरे ईश्वर के जीवन सों मेरे पास एक भी फुलका नहीं परन्तु केवल मुट्ठी भर पिसान एक मटके में है और पात्र में थोड़ा तेल और देखिये कि मैं दो लकड़ियां बटोर रही हूं जिसतें घर जाके अपने और अपने बेटे के लिये पोऊं और सिद्ध करूं कि हम खावें और मर जावें। १३ तब इलियाह ने उसे कहा कि मत डर जा अपने कहने के समान कर परन्तु पहिले मेरे लिये उस्से एक लिट्टी बना और मुझ पास ला और पीछे अपने और अपने बेटे के लिये पोइयो। १४ क्योंकि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि परमेश्वर पृथिवी पर जब लों मेंह न बरसावे मटके में का पिसान न घटेगा और पात्र में का तेल न चुकेगा। १५ और उस ने जाके इलियाह के कहने के समान किया और आप और वह और उस का घराना बहुत दिन लों खाते रहे। १६ परमेश्वर के बचन के समान जो उस ने इलियाह के द्वारा से कहा था मटके का पिसान और पात्र का तेल न घटा॥

१७ और इन बातों के पीछे ऐसा हुआ कि घर की स्वामिनी का बेटा रोगी हुआ और उस का रोग ऐसा बढ़ा कि उस में प्राण न रहा। १८ तब उस स्त्री ने

इलियाह से कहा कि हे ईश्वर के जन तुझ से मुझ से क्या प्रयोजन तू मेरे पाप स्मरण कराने को और मेरे बेटे को नाश १९ करने को आया है। और उस ने उस्से कहा कि अपना बेटा मुझे दे और वह उस की गोद से लेके उसे कोठे पर जहां वह रहता था चढ़ा ले गया और उसे २० अपने बिछौने पर लेटाया। और उस ने परमेश्वर से प्रार्थना करके कहा कि हे परमेश्वर मेरे ईश्वर क्या तू ने इस रांड़ पर भी बिपत्ति भेजी जिस के यहां मैं उतरा हूं कि उस के बेटे को नाश २१ करे। तब उस ने आप को तीन बार उस बालक पर फैलाया और परमेश्वर से प्रार्थना करके कहा कि हे परमेश्वर मेरे ईश्वर मैं बिनती करता हूं कि इस २२ बालक का प्राण इस में फिर आवे। तब परमेश्वर ने इलियाह की प्रार्थना सुनी और बालक का प्राण उस में फिर आया २३ और वह जी उठा। तब इलियाह उस बालक को उठाके कोठरी में से घर के भीतर ले गया और उसे उस की माता को सौंप दिया और इलियाह ने कहा २४ कि देख तेरा बेटा जीता है। तब उस स्त्री ने इलियाह से कहा कि अब इस्से मैं जानती हूं कि तू ईश्वर का जन है और तेरे मुंह से परमेश्वर का बचन सत्य है॥

अठारहवां पर्ब्ब।

१ और बहुत दिन के पीछे ऐसा हुआ कि तीसरे बरस परमेश्वर का बचन इलियाह पर उतरा कि जाके आप को अखिअब पर प्रगट कर और मैं देश में मेंह २ बरसाऊंगा। और जब इलियाह अपने तईं अखिअब को दिखाने गया तब समरून में बड़ा अकाल था॥

३ तब अखिअब ने अपने घर के अध्यक्ष अबदियाह को बुलाया अब अबदियाह ईश्वर से बहुत डरता था। क्योंकि यों ४ हुआ कि जब ईजबिल ने ईश्वर के भविष्यद्वक्तों को मार डाला तो अबदियाह ने सौ भविष्यद्वक्तों को लेके पचास पचास करके एक खोह में छिपाया और उन्हें अन्न जल से पाला। और अखिअब ५ ने अबदियाह से कहा कि देश में फिर और समस्त जल के सोताओं और नालों में जा क्या जाने कि घोड़े और खच्चर के जीते रखने के लिये घास मिल जावे न हो कि पशु हम्में से नष्ट होवें। सो ६ उन्हों ने आपुस में देश का बिभाग किया कि आरंपार जावें अखिअब आप एक ओर गया और अबदियाह आप दूसरी ओर॥

और ज्यों अबदियाह मार्ग में था तो ७ देखो इलियाह उसे मिला और उस ने उसे पहिचाना और औंधा गिरा और बोला कि आप मेरे प्रभु इलियाह हैं। और उस ने उसे उत्तर दिया कि मैं ही ८ हूं जा अपने प्रभु से कह कि इलियाह है। और वह बोला कि मैं ने क्या अप- ९ राध किया है जो तू अपने दास को बध करने के लिये अखिअब के हाथ सौंपा जाता है। परमेश्वर तेरे ईश्वर के जीवन १० सों कोई जाति अथवा राज्य नहीं है जहां मेरे प्रभु ने तेरी खोज के लिये न भेजा हो और जब उन्हों ने कहा कि वह नहीं है तब उस ने राज्य की और जाति की किरिया लिई कि हम ने उसे नहीं पाया। और अब तू कहता है कि जाके ११ अपने प्रभु से कह कि देख इलियाह है। और जब मैं तेरे पास से चला १२ जाऊंगा तब ऐसा होगा कि परमेश्वर का आत्मा तुझे क्या जाने कहां ले जावेगा और जब मैं जाके अखिअब से कहूंगा और वह तुझे न पा सके तब मुझे बधन करे परन्तु मैं तेरा सेवक अपनी लड़काई

१३ से परमेश्वर से डरता हूं। क्या मेरे प्रभु से नहीं कहा गया कि जब ईज़बिल ने परमेश्वर के भविष्यद्वक्तों को मार डाला तब मैं ने क्या किया कि परमेश्वर के सौ भविष्यद्वक्तों को लेके पचास पचास करके एक खोह में छिपाया और उन्हें अन्न जल
१४ से पाला। और अब तू कहता है कि जाके अपने प्रभु को जनाव कि देख इलियाह है और वह मुझे बधन करेगा।
१५ तब इलियाह ने कहा कि सेनाओं के परमेश्वर के जीवन सों जिस के आगे मैं खड़ा रहता हूं मैं अवश्य आज उस पर अपने को दिखाऊंगा॥

१६ सो अबदियाह अखिअब से भेंट करने को गया और उसे कहा और अखिअब इलियाह की भेंट को गया।
१७ और ऐसा हुआ कि जब अखिअब ने इलियाह को देखा तो अखिअब ने उसे कहा कि क्या तू वही है जो इसरा-
१८ एलियों को सताता है। और उस ने उत्तर दिया कि मैं ने नहीं परन्तु तू ने और तेरे पिता के घराने ने इस बात में इसराएलियों को सताया है कि तुम ने परमेश्वर की आज्ञाओं को छोड़के
१९ बअलीम का पीछा पकड़ा है। इस लिये अब भेज और सारे इसराएल को करमिल पहाड़ पर मेरे लिये एकट्ठा कर और बअल के साढ़े चार सौ भविष्यद्वक्तों को और कुंजों के चार सौ भविष्यद्वक्तों को जो ईज़बिल के मंच पर भोजन
२० करते हैं। सो अखिअब ने इसराएल के समस्त संतान के पास भेजा और भविष्यद्वक्तों को करमिल पहाड़ पर एकट्ठा किया॥

२१ तब इलियाह ने सारे लोगों के पास आके कहा कि कब लों अधर में पड़े रहोगे यदि परमेश्वर ईश्वर है तो उसे गहो परन्तु यदि बअल तो उसे गहो पर लोगों ने उसे तनिक उत्तर न दिया।
२२ तब इलियाह ने लोगों से कहा कि परमेश्वर के भविष्यद्वक्तों में से मैं ही अकेला बचा हूं परन्तु बअल के भविष्य-
२३ द्वक्ता साढ़े चार सौ जन हैं। सो वे अब हमें दो बैल देवें और अपने लिये एक बैल चुनें और उसे टुकड़ा टुकड़ा करें और लकड़ी पर धरें परन्तु आग न लगावें और दूसरा बैल मैं सिद्ध करूंगा और उसे लकड़ी पर धरूंगा परन्तु आग
२४ न लगाऊंगा। और तुम अपने देवों के नाम से प्रार्थना करो और मैं परमेश्वर के नाम से प्रार्थना करूंगा और जो ईश्वर आग के द्वारा से उत्तर देगा वही ईश्वर होवे तब सब लोगों ने उत्तर देके कहा कि यह अच्छी बात है॥

२५ और इलियाह ने बअल के भविष्यद्वक्तों से कहा कि तुम अपने लिये एक बैल चुनके पहिले उसे सिद्ध करो क्योंकि तुम बहुत हो और अपने देवों के नाम से प्रार्थना करो परन्तु उस में आग मत
२६ लगाओ। तब उन्हों ने एक बैल को जो उन्हें दिया गया लिया और उसे सिद्ध किया और बिहान से दो पहर लों यह कहके बअल के नाम से प्रार्थना किई कि हे बअल हमें उत्तर दे परन्तु न कुछ शब्द हुआ न किसी ने सुना और वे उस बनाई हुई बेदी पर कूद पड़े।
२७ और ऐसा हुआ कि दो पहर को इलियाह ने उन्हें चिढ़ाके कहा और बोला कि चिल्लाके पुकारो क्योंकि वह देव है क्योंकि वह किसी से बातें कर रहा है अथवा कहीं गया है अथवा किसी यात्रा में है क्या जाने वह सोता है और उसे
२८ जगाना अवश्य है। तब वे बड़े शब्द से चिल्लाये और अपने व्यवहार के समान आप को छुरियों और गोदनियों से यहां लों गोदा कि वे लोहू लुहान हो गये।

२९ और ऐसा हुआ कि दो पहर ढल गया और बलिदान चढ़ाने के समय लों भविष्य कहते रहे परन्तु न कुछ शब्द हुआ न कोई उत्तर देवैया न बुझवैया ठहरा॥

३० तब इलियाह ने सारे लोगों से कहा कि मेरे पास आओ और सारे लोग उस के पास गये तब उस ने परमेश्वर की

३१ ढाई हुई बेदी को सुधारा। और यअकूब के संतान की गोष्ठियों के समान जिन के पास यह कहके परमेश्वर का बचन आया था कि तेरा नाम इसराएल होगा

३२ इलियाह ने बारह पत्थर लिये। और उन पत्थरों से उस ने परमेश्वर के नाम के लिये एक बेदी बनाई और बेदी के आसपास उस ने ऐसी बड़ी खाईं खोदी

३३ जिस में दो नपुए बीज अमावें। और लकड़ियों को चुना और बैल को काटके टुकड़ा टुकड़ा किया और लकड़ियों पर

३४ धरा। और कहा कि चार पीपा पानी से भर देओ और उस बलिदान की भेंट पर और लकड़ियों पर उंडेलो और उस ने कहा कि दूसरी बेर उंडेलो तब उन्हों ने दूसरी बेर उंडेला फिर उस ने कहा कि तीसरी बेर उंडेलो और उन्हों ने

३५ तीसरी बेर उंडेला। और पानी बेदी की चारों ओर बहा और खाईं को भी पानी

३६ से भर दिया। और भेंट चढ़ाने के समय ऐसा हुआ कि इलियाह भविष्यद्वक्ता ने पास आके कहा कि हे परमेश्वर अबिरहाम इजहाक और इसराएल के ईश्वर आज जाना जावे कि इसराएल में तू ही ईश्वर है और कि मैं तेरा सेवक हूं और मैं ने तेरे बचन से यह सब बातें

३७ किई हैं। हे परमेश्वर मेरी सुन मेरी सुन जिसतें ये लोग जानें कि तू ही परमेश्वर ईश्वर है और उन के अंतःकरण

३८ को फेर दिया है। तब परमेश्वर की आग उतरी और बलिदान की भेंट को और लकड़ी को और पत्थरों को और धूल को भस्म किया और खाईं के जल को चाट लिया॥

३९ और जब सारे लोगों ने यह देखा तब वे औंधे मुंह गिरे और बोले कि परमेश्वर वही ईश्वर है परमेश्वर वही

४० ईश्वर है। तब इलियाह ने उन्हें कहा कि बअल के भविष्यद्वक्तों को पकड़ो उन में से एक भी न बचे सो उन्हों ने उन्हें पकड़ा और इलियाह उन्हें कीसून की नाली पर उतार लाया और वहां उन्हें बधन किया॥

४१ तब इलियाह ने अखिअब को कहा कि चढ़ जा खा और पी क्योंकि मेंह

४२ का बड़ा शब्द है। सो अखिअब खाने पीने को उठ गया और इलियाह करमिल की चोटी पर चढ़ गया और आप को भूमि पर झुकाया और अपना मुंह दोनों घुटनों के बीच में किया।

४३ और उस ने अपने सेवक को कहा कि अब चढ़ जा समुद्र की ओर देख और उस ने जाके देखा और कहा कि कुछ नहीं तब उस ने कहा कि फेर सात बेर

४४ जा। और सातवें बेर ऐसा हुआ कि वह बोला कि देख मनुष्य के हाथ की नाईं मेघ का एक छोटा सा टुकड़ा समुद्र में से उठता है तब उस ने कहा कि चढ़ जा अखिअब को कह कि सिद्ध हो और उतर जा न हो कि मेंह तुझे

४५ रोके। और इतने में ऐसा हुआ कि आकाश मेघों से और पवन से अंधेरा हो गया और अति बृष्टि होने लगी और अखिअब चढ़के यजरअएल को गया।

४६ और परमेश्वर का हाथ इलियाह पर था और वह अपनी कटि कसके अखिअब के आगे आगे यजरअएल लों दौड़ गया॥

उन्नीसवां पर्ब्ब।

१ तब जो कुछ कि इलियाह ने किया

था अखिअब ने ईजबिल से कहा और कि किस रीति से उस ने समस्त भविष्यद्वक्तों को तलवार से बध किया
२ था। तब ईजबिल ने दूत की ओर से इलियाह को कहला भेजा कि यदि मैं तेरे प्राण को उन में से एक की नाईं काल इस जून लों न करूं तो देवगण मुझ से वैसा ही और उस्से अधिक भी करें।
३ और जब उस ने देखा तो वह उठा और अपने प्राण के लिये गया और यहूदाह के बिअरसबअ में आया और वहां अपने सेवक को छोड़ा॥

४ परन्तु आप एक दिन के मार्ग बन में पैठ गया और एक रतम वृक्ष तले बैठा और अपने प्राण के लिये मृत्यु मांगी और कहा बस हे परमेश्वर हो चुका है अब मेरा प्राण उठा ले क्योंकि
५ मैं अपने पितरों से भला नहीं। और ज्यों वह रतम वृक्ष के तले लेटा और सो गया तो देखो कि एक दूत ने आके उसे छूआ और उस्से कहा कि उठ खा।
६ और उस ने दृष्टि किई तो देखो कि उस के सिरहाने एक फुलका कोइलों पर का पका हुआ है और एक पात्र जल धरा है तब वह खा पीके फेर
७ लेट गया। फिर परमेश्वर का दूत दोहराके आया और उसे छूके कहा कि उठ खा क्योंकि तेरी यात्रा तेरे बल से
८ अधिक है। सो उस ने उठके खाया और पीया और उसी भोजन के बल से चालीस दिन रात चलके ईश्वर के पहाड़ होरिब को गया॥

९ और वहां एक खोह में टिका और देखो कि परमेश्वर का बचन उस पास आया और उस ने उसे कहा कि हे इलि-
१० याह तू यहां क्या करता है। और वह बोला कि मैं सेनाओं के ईश्वर परमेश्वर के लिये अति ज्वलित हुआ हूं क्योंकि इसराएल के संतानों ने तेरी बाचा को त्यागा तेरी बेदियों को ढा दिया और तेरे भविष्यद्वक्तों को तलवार से घात किया है और मैं ही केवल मैं ही बचा और वे मेरे प्राण को भी लेने चाहते हैं।
११ और उस ने कहा कि बाहर निकल और पहाड़ पर परमेश्वर के आगे खड़ा हो और देख वहां परमेश्वर जा निकलता है और परमेश्वर के आगे एक बड़ी और प्रचंड पवन पर्बतों को तड़काती है और चटानों को टुकड़ा टुकड़ा करती है परन्तु परमेश्वर पवन में नहीं और पवन के पीछे भुइंडोल आया और परमेश्वर
१२ भुइंडोल में नहीं। और भुइंडोल के पीछे एक आग परन्तु परमेश्वर आग में नहीं और आग के पीछे एक किंचित
१३ शब्द। और ऐसा हुआ कि जब इलियाह ने सुना तो उस ने अपना मुंह अपने ओढ़ने से ढांप लिया और बाहर निकलके कन्दला की पैठ पर खड़ा हुआ और देखो कि यह कहके उस पास एक शब्द आया कि इलियाह तू यहां क्या करता
१४ है। और वह बोला कि मुझे परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर के लिये बड़ा ज्वलन हुआ है क्योंकि इसराएल के संतानों ने तेरी बाचा को त्यागा तेरी बेदियां ढाईं और तेरे भविष्यद्वक्तों को तलवार से घात किया और एक मैं ही अकेला जीता बचा सो वे मेरे भी प्राण को लेने
१५ चाहते हैं। तब परमेश्वर ने उसे कहा कि दमिश्क के अरण्य को और फिर जा और पहुंचते ही अराम पर हज़ाएल
१६ को राज्याभिषेक कर। और निमशी के बेटे याहू को इसराएल पर राज्याभिषेक कर और अबीलमहूल: सफत के बेटे इलीशअ को अभिषेक कर कि
१७ तेरी सन्ती भविष्यद्वक्ता होवे। और ऐसा होगा कि जो हज़ाएल की तलवार

से बच निकलेगा उसे याहू मार डालेगा और जो याहू की तलवार से बच रहेगा
१८ उसे इलीशअ घात करेगा। तथापि इसराएल में मैं ने सात सहस्र जन बचा रक्खे हैं जिन के घुटने बअल के आगे नहीं झुके और हर एक मुंह जिस ने उसे नहीं चूमा॥
१९ सो उस ने वहां से चलके सफ़त के बेटे इलीशअ को पाया जो अपने आगे बारह जोड़े बैल के हल से जोतता था और बारहवें जोड़े के संग आप था और इलियाह ने उस के पास से जाते जाते
२० अपना ओढ़ना उस पर डाल दिया। तब उस ने बैलों को छोड़के इलियाह के पीछे दौड़के कहा कि मैं तेरी बिनती करता हूं मुझे छुट्टी दीजिये कि अपने माता पिता को चूमूं और तेरे पीछे हो लेऊंगा और उस ने उस्से कहा कि फिर
२१ जा क्योंकि मैं ने तुझे क्या किया है। तब वह उस पास से फिर गया और उस ने एक जोड़ी बैल लेके उन्हें बधन किया और हल की लकड़ियों से उन के मांस को उसिना और लोगों को दिया और उन्हों ने खाया तब वह उठा और इलियाह के पीछे हो लिया और उस की सेवा किई॥

बीसवां पर्ब्ब।

१ तब अराम के राजा बिनहदद ने अपनी समस्त सेना को एकट्ठी किया और उस के साथ बत्तीस राजा और घोड़े और रथ थे और उस ने जाके समरून को घेर लिया और उस्से लड़ाई किई।
२ और उस ने इसराएल के राजा अखिअब के पास नगर में दूतों को भेजके कहा
३ कि बिनहदद यों कहता है। कि तेरा रूपा और तेरा सोना मेरा है और तेरी सुंदर सुंदर पत्नियां और तेरे बालक भी
४ मेरे हैं। तब इसराएल के राजा ने उत्तर देके कहा कि मेरे प्रभु राजा तेरे बचन के समान मैं और मेरा सब कुछ तेरा है॥

५ और दूतों ने फिर आके कहा कि बिनहदद यों कहता है कि यद्यपि मैं ने तेरे पास यह कहला भेजा है कि अपना रूपा और सोना और अपनी पत्नियां और
६ अपने बाल बच्चे मुझे सौंपना। तथापि मैं कल इस छन अपने सेवकों को तुझ पास भेजूंगा और वे तेरे घर और तेरे सेवकों के घरों को खोजेंगे और ऐसा होगा कि जो कुछ तेरी दृष्टि में मनभावनी होगी वे अपने हाथ में करके
७ ले आवेंगे। तब इसराएल के राजा ने देश के समस्त प्राचीनों को बुलाके कहा कि चीन्ह रक्खो और देखो कि वह कैसा बिरोध ढूंढ़ता है क्योंकि उस ने मेरी पत्नियां और मेरे बालकों के और मेरे रूपा और मेरे सोना के लिये लोगों
८ को भेजा और मैं ने उसे न रोका। तब सारे प्राचीन और सारे लोगों ने उसे कहा कि मत सुनिये और मत मानिये।
९ इस लिये उस ने बिनहदद के दूतों से कहा कि मेरे प्रभु राजा से कहो कि जो तू ने पहिले अपने सेवक को कहला भेजा सो सब मैं करूंगा परन्तु यह कार्य्य मैं न कर सकूंगा तब दूतों ने जाके संदेश दिया॥

१० तब बिनहदद ने उस पास यह कहला भेजा कि देवगण मुझ से ऐसा ही करें और उस्से अधिक यदि समरून की धूल सारे लोगों के लिये जो मेरे
११ चरण पर हैं मुट्ठी भर भर होवे। फिर इसराएल के राजा ने उत्तर देके कहा कि तुम कहो कि जो जन कटि कसता है सो उस के समान जो कटि खोलता
१२ है गर्ब न करे। और यों हुआ कि जब वह राजाओं के साथ तंबूओं में पी

रहा था उस ने यह बचन सुना तो अपने सेवकों को कहा कि लैस हो रहो और वे नगर के बिरुद्ध लैस हो रहे ॥

१३ और देखो कि इसराएल के राजा अखिअब पास एक भविष्यद्वक्ता ने आके कहा कि परमेश्वर यों कहता है कि क्या तू ने इस बड़ी मंडली को देखा है सो देख मैं आज सभों को तेरे हाथ में सौंपूंगा और तू जानेगा कि मैं ही १४ परमेश्वर हूं । तब अखिअब ने पूछा कि किन के द्वारा से और वह बोला कि परमेश्वर यों कहता है कि देश देश के अध्यक्षों के तरुणों के द्वारा से फिर उस ने पूछा कि संग्राम में कौन पांती बंधावे और उस ने उत्तर दिया कि तू ॥

१५ तब उस ने देशों के अध्यक्षों के तरुणों को गिना और वे दो सौ बत्तीस जन हुए फिर उस ने इसराएल के समस्त संतान को भी गिना और वे सात सहस्र १६ जन हुए । और वे सब दो पहर को निकले परन्तु बिनहदद और बत्तीस राजा जो उस के सहायक थे तंबुओं में १७ पी पीके मतवाले होते थे । तब देशों के अध्यक्षों के तरुण पहिले निकले और बिनहदद ने भेजा और वे कहके उसे बोले कि समरून से लोग निकल आये १८ हैं । तब वह बोला कि यदि वे मिलाप के लिये निकले हैं तो उन्हें जीता पकड़ो अथवा यदि युद्ध के लिये निकले हैं १९ तो उन्हें जीता पकड़ो । तब देशों के अध्यक्षों के तरुण लोग नगर से निकले २० और सेना उन के पीछे पीछे । और उन में से हर एक ने एक एक को घात किया और अरामी भागे और इसराएलियों ने उन्हें खेदा और अराम का राजा बिनहदद घोड़े पर घोड़चढ़ों के साथ भागके बचा । और इसराएल के राजा २१ ने निकलके घोड़ों और रथों को मार लिया और अरामियों को बनाके मारा । तब उस भविष्यद्वक्ता ने इसराएल के २२ राजा के पास आके उसे कहा कि तू फिर जा आप को दृढ़ कर और चीन्ह रख जो किया चाहता है सो देख क्योंकि अराम का राजा पीछे तेरे बिरोध में चढ़ आवेगा ॥

तब अराम के राजा के सेवकों ने २३ उसे कहा कि उन के देव पहाड़ों के देव हैं इस लिये वे हम से बलवान हुए परन्तु आओ हम चौगान में उन से युद्ध करें तो निश्चय हम उन पर प्रबल होंगे । और तू यह काम कर कि हर २४ एक राजा को उस के स्थान से अलग कर और उन की सन्ती सेनापतिन को खड़ा कर । और अपनी जूझी हुई सेना २५ की नाईं एक सेना गिन ले घोड़े की सन्ती घोड़ा और रथ की सन्ती रथ और हम चौगान में उन से संग्राम करेंगे और निश्चय उन पर प्रबल होंगे सो उस ने उन का कहा माना और वैसा ही किया ॥

और ज्योंहीं बरस बीता त्योंहीं २६ बिनहदद ने अरामियों को गिना और इसराएलियों से युद्ध करने को अफीक: को चढ़ा । और इसराएल के संतान गिने २७ हुए और सब एकट्ठे थे सो उन का साम्ना किया और इसराएल के संतान ने उन के आगे ऐसा डेरा किया जैसा मेम्ना का दो झुंड हो परन्तु अरामियों से देश भर गया ॥

और ईश्वर का एक जन इसराएल २८ के राजा पास आया और उसे कहा कि परमेश्वर यों कहता है इस कारण कि अरामियों ने कहा है कि परमेश्वर पहाड़ों का ईश्वर परन्तु तराई का

ईश्वर नहीं इस लिये मैं इस बड़ी मंडली को तेरे हाथ में सौंपूंगा और तुम २९ जानोगे कि मैं परमेश्वर हूं। सो उन्हों ने एक दूसरे के सन्मुख सात दिन लों छावनी किई और सातवें दिन ऐसा हुआ कि संग्राम हुआ और इसराएल के संतान ने दिन भर में अरामियों के एक ३० लाख पदाइत मारे। परन्तु उबरे हुए अफीक: के नगर में पैठे और वहां एक भीत सत्ताईस सहस बचे हुओं पर गिर पड़ी और बिनहदद भागके नगर में आया और भीतर की कोठरी में घुसा॥

३१ और उस के सेवकों ने उसे कहा कि देखिये हम ने सुना है कि इसराएल के घरानों के राजा बड़े दयाल राजा हैं सो हमें आज्ञा दीजिये कि अपनी कटि पर टाट लपेटें और अपने सिरों पर रस्सियां धरें और इसराएल के राजा पास जावें कदाचित वह तेरा प्राण ३२ बचावे। सो उन्हों ने अपनी कटि पर टाट और अपने सिर पर रस्सियां बांधीं और इसराएल के राजा पास आके बोले कि तेरा सेवक बिनहदद यों कहता है कि मैं तेरी बिनती करता हूं कि मुझे जीता छोड़िये और वह बोला कि क्या वह अब लों जीता है वह मेरा ३३ भाई है। और वे मनुष्य चौकसी से सोच रहे थे कि वह क्या कहता है और झट उस बात को पकड़के कहा कि हां तेरा भाई बिनहदद तब उस ने कहा कि जाओ उसे ले आओ तब बिनहदद उस पास निकल आया और उस ने उसे ३४ रथ पर उठा लिया। और उस ने उसे कहा कि जो जो नगर मेरे पिता ने तेरे पिता से ले लिया मैं फेर देऊंगा और जिस रीति से मेरे पिता ने समरून में सड़कें बनाईं तू दमिश्क में बना तब अखिअब बोला कि मैं तुझे इसी आज्ञा से बिदा करूंगा सो उस ने उस्से आज्ञा बांधी और बिदा किया॥

३५ और भविष्यद्वक्तों के संतानों में से एक जन ने परमेश्वर के बचन से अपने परोसी को कहा कि मैं तेरी बिनती करता हूं कि मुझे मार परन्तु उस जन ३६ ने उसे मारने से नाह किया। तब उस ने उसे कहा इस कारण कि तू ने परमेश्वर की आज्ञा न मानी देख ज्योंहीं तू मुझ पास से बिदा होगा त्योंहीं एक सिंह तुझे मार लेगा और ज्योंहीं वह उस के पास से बिदा हुआ त्योंहीं उसे एक सिंह ने पाया और उसे मार डाला। ३७ तब उस ने एक दूसरे को बुलाके कहा कि मैं तेरी बिनती करता हूं मुझे मार तब उस मनुष्य ने उसे मारा और मारके ३८ घायल किया। तब वह भविष्यद्वक्ता चला गया और मार्ग में राजा की बाट जोहने लगा और अपने मुंह पर राख ३९ मलके अपना भेष बदला। और राजा के उधर जाते जाते उस ने राजा को पुकारा और कहा कि तेरा सेवक संग्राम के मध्य में गया था और देखिये एक जन फिरा और मुझ पास एक जन यह कहके लाया कि इस की चौकसी कर यदि किसी रीति से यह पाया न जावेगा तो इस के प्राण की सन्ती तेरा प्राण जावेगा और नहीं तो तू एक तोड़ा ४० चांदी देगा। और जिस समय तेरा सेवक इधर उधर और काम में लिप्त था तब वह जाता रहा तब इसराएल के राजा ने उसे कहा कि तेरा यही ४१ बिचार है तू ही ने सुझाया है। और उस ने फुरती करके अपने मुंह की राख पोंछी तब इसराएल के राजा ने उसे पहिचाना कि वह भविष्यद्वक्तों में से ४२ है। तब उस ने उसे कहा कि परमेश्वर

यों कहता है इस लिये कि तू ने उस जन को अपने हाथ से जाने दिया जिसे मैं ने सर्व्वथा नाश के लिये ठहराया था इस कारण उस के प्राण की सन्ती तेरा प्राण और उस के लोगों की सन्ती तेरे ४३ लोग। तब इसराएल का राजा उदास और भारी मन होके अपने घर को गया और समरून में आया॥

इक्कीसवां पर्व्व।

१ और इन बातों के पीछे ऐसा हुआ कि नबात यजरअएली की एक दाख की बारी समरून के राजा अखिअब के भवन से लगी हुई यजरअएल में थी। २ और अखिअब ने नबात से कहा कि अपनी दाख की बारी मुझे दे कि उसे तरकारी की बारी बनाऊं क्योंकि वह मेरे भवन के लग है और मैं उस की सन्ती तुझे उस्से अच्छी दाख की बारी देऊंगा अथवा यदि तेरी दृष्टि में अच्छा लगे तो मैं तुझे उस का दाम रोकड़ ३ देऊंगा। और नबात ने अखिअब से कहा कि परमेश्वर ऐसा न करे कि मैं अपने पितरों का अधिकार तुझे देऊं॥

४ तब यजरअएली नबात की बात से अखिअब उदास और भारी मन होके अपने घर में आया क्योंकि उस ने कहा था कि मैं अपने पितरों का अधिकार तुझे न देऊंगा और अपने बिछौने पर पड़ा रहा और अपना मुंह फेर लिया ५ और रोटी न खाई। परन्तु उस की पत्नी ईजबिल ने उस पास आके कहा कि तू ऐसा उदास क्यों है कि रोटी नहीं ६ खाता। तब उस ने उसे कहा इस कारण कि मैं ने यजरअएली नबात से कहा था कि अपनी दाख की बारी मेरे हाथ बेंच और नहीं तो यदि तेरा मन होवे तो मैं तुझे उस की सन्ती दाख की बारी देऊंगा और उस ने उत्तर दिया कि मैं तुझे अपनी दाख की बारी न देऊंगा॥

७ तब उस की पत्नी ईजबिल ने उसे कहा कि क्या तू इसराएलियों पर राज्य करता है उठिये रोटी खाइये और मन को मगन करिये मैं तुझे यजरअएली नबात की दाख की बारी देऊंगी। ८ तब उस ने अखिअब के नाम से पत्रियां लिखीं और उस की छाप से छाप करके नबात के नगर के बासियों के अध्यक्षों और प्राचीनों के पास भेजीं। ९ और उस ने पत्रियों में यह बात लिखी कि ब्रत को प्रचारो और लोगों पर नबात को १० बैठाओ। और दुष्टों के पुत्रों में से दो जन ठहराओ कि यह कहके उस पर साक्षी देवें कि तू ने ईश्वर की और राजा की अपनिन्दा किई तब उसे बाहर ले जाके पथरवाह करो कि मर जावे॥

११ और उस के नगर के लोगों ने अर्थात् प्राचीन और अध्यक्षों ने जो उस के नगर के बासी थे ईजबिल के कहने के समान जैसा पत्रियों में जो उस ने उन पास १२ भेजी थीं लिखा था किया। उन्हों ने ब्रत को प्रचारा और लोगों पर नबात १३ को बैठाया। तब दुष्टों के पुत्रों में से दो जन भीतर आये और उस के आगे बैठे और दुष्ट जनों ने नबात के बिरोध में यह कहके लोगों के सोंहीं साक्षी दिई कि नबात ने ईश्वर की और राजा की अपनिन्दा किई है तब वे उसे नगर से बाहर ले गये और उस पर ऐसा १४ पथरवाह किया कि वह मर गया। तब उन्हों ने ईजबिल को कहला भेजा कि नबात पथरवाह किया गया और मर गया॥

१५ ऐसा हुआ कि जब ईजबिल ने सुना कि नबात पथरवाह किया गया

और मर गया तो ईजबिल ने अखिअब को कहा कि उठिये यजरअएली नबात की बारी को बश में करिये जिसे उस ने रोकड़ की सन्ती तुझे देने का नाह किया क्योंकि नबात जीता नहीं है परन्तु १६ मर गया। और यों हुआ कि जब अखिअब ने सुना कि नबात मर गया तो अखिअब उठा कि यजरअएली नबात की दाख की बारी में उतरे जिसतें उसे बश में करे॥

१७ तब परमेश्वर का बचन तिसबी १८ इलियाह पास यह कहके आया। कि उठ जाके इसराएल के राजा अखिअब से जो समरून में है भेंट कर देख कि वह नबात की दाख की बारी में है जिधर वह उसे बश में करने को उतरा १९ है। और तू उसे यह कहना कि परमेश्वर यों कहता है कि तू ने घात किया है और बश में भी किया है और तू उसे कह कि परमेश्वर आज्ञा करता है कि जिस स्थान में कुत्तों ने नबात का लोहू चाटा उसी स्थान में तेरा भी २० लोहू कुत्ते चाटेंगे। और अखिअब ने इलियाह को कहा कि हे मेरे बैरी क्या तू ने मुझे पाया है और उस ने उत्तर दिया कि मैं ने पाया है क्योंकि तू ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई करने के २१ लिये आप को बेंच डाला। देख मैं तुझ पर बुराई लाऊंगा और तेरे बंश को दूर करूंगा और अखिअब में से हर एक पुरुष को जो भीत पर मूता है और जो जन इसराएल में से बंधुआ और बचा २२ हुआ है उसे भी मैं मिटा डालूंगा। और उस खिजाव के कारण जिस्से तू ने मुझे खिजाया है और इसराएल से पाप करवाया है मैं तेरे घराने को नबात के बेटे यरुबिआम के घराने की नाईं और अखियाह के बेटे बअशा के घराने की नाईं करूंगा। और परमेश्वर ईजबिल २३ के बिषय में भी यह कहके बोला कि यजरअएल की खाईं के पास ईजबिल को कुत्ते खावेंगे। अखिअब का जो २४ जन नगर में मरेगा उसे कुत्ते खावेंगे और जो चौगान में मरेगा उसे आकाश के पक्षी खावेंगे॥

परन्तु अखिअब के समान कोई न २५ था जिस ने परमेश्वर की दृष्टि में दुष्टता के लिये आप को बेंचा जिसे उस की पत्नी ईजबिल ने उसे उभाड़ा। और उस २६ ने अमूरियों के समान जिन्हें परमेश्वर ने इसराएलियों के आगे से दूर किया था अति घिनित बस्तुन में मूर्त्तों का पीछा पकड़ा॥

और ऐसा हुआ कि जब अखिअब २७ ने ये बातें सुनीं तो अपने कपड़े फाड़े और अपने शरीर पर टाट रक्खा और ब्रत किया और टाट पहिने हुए हौले हौले चलने लगा। तब परमेश्वर का २८ बचन तिसबी इलियाह पर यह कहके उतरा। क्या तू देखता है कि अखिअब २९ मेरे आगे आप को कैसा दीन करता है इस कारण कि वह आप को मेरे आगे दीन करता है मैं यह बुराई उस के दिनों में न लाऊंगा परन्तु उस के बेटों के समय में उस के घराने पर बुराई लाऊंगा॥

बाईसवां पर्ब्ब।

और तीन बरस लों बिश्राम किया कि १ अरामियों इसराएलियों में कोई लड़ाई न हुई। और तीसरे बरस ऐसा हुआ २ कि यहूदाह का राजा यहूसफत इसराएल के राजा पास गया। तब इसराएल के ३ राजा ने अपने सेवकों से कहा कि तुम जानते हो कि रामात जिलिअद हमारे हैं और हम उसे लेने में चुपके हो रहे हैं और अराम के राजा के हाथ से उसे

४ नहीं लेते हैं । तब उस ने यहूसफत से कहा कि क्या तू मेरे साथ लड़ने को रामात जिलिअद पर संग्राम के लिये चढ़ेगा और यहूसफत ने इसराएल के राजा को उत्तर दिया कि तेरी नाईं मैं हूं तेरे लोग मेरे लोगों की नाईं तेरे घोड़े मेरे घोड़े की नाईं ॥

५ और यहूसफत ने इसराएल के राजा से कहा कि मैं तेरी बिनती करता हूं कि आज परमेश्वर के बचन से बूझिये ।

६ तब इसराएल के राजा ने भविष्यद्वक्तों को एकट्ठा किया जो चार सौ जन के लगभग थे और उन्हें कहा कि क्या मैं रामात जिलिअद पर लड़ने चढूं अथवा अलग रहूं और वे बोले कि चढ़ जाइये क्योंकि परमेश्वर उसे राजा के हाथ में सौंपेगा ॥

७ तब यहूसफत ने कहा कि यहां कोई परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता नहीं है कि

८ हम उस्से बूझें । तब इसराएल के राजा ने यहूसफत से कहा कि अब भी एक जन है यिमल: का बेटा मीकायाह जिस के द्वारा से हम परमेश्वर से बूझ सक्ते हैं परन्तु मैं उस्से बैर रखता हूं क्योंकि वह मेरे बिषय में अच्छी बात नहीं कहता परन्तु बुरी तब यहूसफत बोला कि राजा ऐसा न कहे ॥

९ तब इसराएल के राजा ने एक प्रधान को बुलाके कहा कि यिमल: के बेटे

१० मीकायाह को शीघ्र ले आ । तब इसराएल का राजा और यहूदाह का राजा यहूसफत राजबस्त्र पहिने हुए समरून के फाटक की पैठ में अपने अपने सिंहासन पर जा बैठे और समस्त भविष्यद्वक्ता उन

११ के आगे भविष्य करते थे । और कनआन: के बेटे सदकयाह ने अपने लिये लोहे के सींग बनाये और बोला कि परमेश्वर यों कहता है कि तू इन से अरामियों को ढकेलेगा यहां लों कि उन्हें

१२ नाश करेगा । तब सारे भविष्यद्वक्तों ने यह कहके भविष्य कहा कि रामात जिलिअद पर चढ़ जाइये और भाग्यवान हूजिये क्योंकि उसे परमेश्वर राजा के हाथ में सौंपेगा ॥

१३ और जो दूत मीकायाह को बुलाने गया था उस ने उस्से यह कहा कि देख भविष्यद्वक्तों का बचन एक सा राजा के लिये भला है इस लिये मैं बिनती करता हूं तेरा बचन उन में से एक के बचन

१४ की नाईं होवे और भला कहियो । और मीकायाह बोला कि परमेश्वर के जीवन सों परमेश्वर जो मुझे कहेगा वही मैं कहूंगा ॥

१५ सो वह राजा पास आया और राजा ने उसे कहा कि हे मीकायाह क्या हम लड़ने को रामात जिलिअद पर चढ़ें अथवा रह जावें तब उस ने उसे उत्तर दिया कि चढ़ जा और भाग्यवान हो क्योंकि परमेश्वर ने उसे राजा के हाथ

१६ में कर दिया है । तब राजा ने उसे कहा कि मैं के बेर तुझे किरिया खिलाया करूं कि तू परमेश्वर के नाम से सच्ची

१७ बात से अधिक कुछ न कह । तब उस ने कहा कि मैं ने सारे इसराएल को बिन चरवाहे की भेड़ों के समान पहाड़ों पर बिथरे हुए देखा और परमेश्वर ने कहा कि कोई उन का स्वामी नहीं सो उन में से हर एक जन अपने अपने घर

१८ कुशल से चला जावे । तब इसराएल के राजा ने यहूसफत से कहा क्या मैं ने तुझ से नहीं कहा कि वह मेरे बिषय में भला भविष्य न कहेगा परन्तु बुरा ।

१९ तब उस ने कहा कि परमेश्वर के बचन को सुन मैं ने परमेश्वर को अपने सिंहासन पर बैठे और स्वर्ग की सारी सेना को उस के दहिने बायें खड़ी देखा ।

२० तब परमेश्वर ने कहा कि अखिअब को कौन छलेगा जिसतें वह रामात जिलिअद पर चढ़के जूझ जावे तब उन में २१ से एक ने कुछ कहा दूसरे ने कुछ। और एक आत्मा निकलके परमेश्वर के आगे आ खड़ा हुआ और बोला कि मैं उस का बोध करूंगा फिर परमेश्वर ने कहा २२ कि किस्से। और वह बोला मैं जाऊंगा और उस के सारे भविष्यद्वक्तों के मुंह में मिथ्या आत्मा हूंगा तब उस ने कहा कि तू उस का बोध करेगा और प्रबल २३ भी होगा जा और ऐसा कर। सो अब देख परमेश्वर ने तेरे उन सब भविष्यद्वक्तों के मुंह में मिथ्या आत्मा को डाला है और परमेश्वर ही ने तेरे विषय में बुरा कहा है॥

२४ परन्तु कनआनः का बेटा सदकयाह पास आया और मीकायाह के गाल पर थपेड़ा मारके बोला कि परमेश्वर का आत्मा मुझ से निकलके किधर से तुझे २५ कहने गया। तब मीकायाह बोला कि देख तू उस दिन जब तू आप को छिपाने को एक कोठरी से दूसरी कोठरी में घुसता फिरेगा तब देखेगा॥

तब इसराएल के राजा ने कहा कि मीकायाह को लेओ और नगर के अध्यक्ष अम्मून और राजपुत्र यूआस के पास फिर २७ ले जाओ। और कहो कि राजा की आज्ञा है कि इसे बंधन में रक्खो और जब लों मैं कुशल से न आऊं तब लों उसे कष्ट की रोटी और कष्ट का जल दिया २८ करो। तब मीकायाह बोला यदि तू किसी रीति से कुशल से फिर आवे तो परमेश्वर ने मेरे द्वारा से नहीं कहा और वह बोला हे लोगो तुम में से हर एक जन सुन रक्खे॥

२९ तब इसराएल का राजा और यहूदाह का राजा यहूसफत रामात जिलिअद पर चढ़ गये। और इसराएल के राजा ३० ने यहूसफत से कहा कि मैं संग्राम में अपना भेष पलटके प्रवेश करूंगा परन्तु तू अपना राजवस्त्र पहिनियो सो इसराएल के राजा ने अपना भेष पलटके युद्ध में प्रवेश किया। परन्तु अरामी के ३१ राजा ने अपने रथों के बत्तीस प्रधानों को कहके आज्ञा किई कि छोटे बड़े किसी से मत लड़ियो परन्तु केवल इसराएल के राजा के संग। और ऐसा हुआ कि ३२ रथों के प्रधानों ने यहूसफत को देखके यों कहा कि निश्चय इसराएल का राजा वही है और उन्हों ने एक ओर झोके चाहा कि उस्से युद्ध करें तब यहूसफत चिल्लाया। और जब रथ के प्रधानों ने ३३ जाना कि यह इसराएल का राजा नहीं तो वे उस के खेदने से हट आये। और ३४ अकस्मात एक जन ने बाण चलाया और वह संयोग से इसराएल के राजा को झिलम के जोड़ में लगा तब उस ने अपने सारथी से कहा कि बाग फेर और सेना में से मुझे निकाल ले जा क्योंकि मैं घायल हुआ। परन्तु उस दिन संग्राम बढ़ गया और राजा अरामियों के सन्मुख रथ पर ठहरा रहा और सांझ होते होते मर गया और लोहू उस के घाव से रथ में बहि निकला। और सूर्य्य अस्त होते ३६ हुए समस्त सेना में प्रचार हुआ कि हर एक जन अपने अपने नगर और अपने अपने देश को जावे। सो राजा मर ३७ गया और उसे समरून में ले गये और समरून में राजा को गाड़ दिया। और ३८ रथ को समरून के कुंड में धोया और कुत्तों ने उस का लोहू चाटा और बेश्यायें धोती थीं उस बचन के समान जैसा परमेश्वर ने कहा था॥

और अखिअब की रही हुई क्रिया ३९ और सब जो उस ने किया था और हाथी-

दांत का भवन जो उस ने बनाया और जो जो नगर उस ने बनाये सो क्या वे इसराएल के राजाओं के समयों के समा-
४० चारों की पुस्तक में नहीं लिखे हैं। और अखिअब ने अपने पितरों में शयन किया और उस का बेटा अखजयाह उस की सन्ती राज्य पर बैठा ॥

४१ और इसराएल के राजा अखिअब के चौथे बरस असा का बेटा यहूसफत
४२ यहूदाह पर राज्य करने लगा। यहूसफत पैंतीस बरस का होके राज्य करने लगा और उस ने यरूसलम में पचीस बरस राज्य किया और उस की माता का नाम अजूब: था वह सीलही की बेटी
४३ थी। और वह अपने बाप असा के सारे मार्गों में चलता था वह उस्से परमेश्वर की दृष्टि में भलाई करने से न मुड़ा तथापि ऊंचे स्थान अलग न किये गये अब लों उन ऊंचे स्थानों पर लोग भेंट
४४ चढ़ाते और धूप जलाते रहे। और यहूसफत ने इसराएल के राजा से मिलाप किया ॥

४५ अब यहूसफत की रही हुई क्रिया और उस के पराक्रम जो उस ने दिखाया और किस रीति से युद्ध किया सो क्या वे यहूदाह के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखे हैं।
४६ और उस ने गांडुओं को जो उस के बाप असा के समय में रह गये थे देश में से दूर किया। उस समय अदूम में
४७ कोई राजा न था परन्तु एक उपराजा राज्य करता था ॥

४८ यहूसफत ने तरसीस के जहाज बनवाये जिसतें ओफीर से सोना मंगवावे परन्तु वे वहां लों न गये क्योंकि अस-
४९ यूनजब्र में जहाज मारे गये। तब अखिअब के बेटे अखजयाह ने यहूसफत से कहा कि जहाजों पर अपने सेवकों के साथ मेरे सेवकों को भी जाने दीजिये
५० परन्तु यहूसफत ने न माना। तब यहूसफत ने अपने पितरों के साथ शयन किया और अपने पितर दाऊद के नगर में अपने पितरों के मध्य में गाड़ा गया और उस का बेटा यहूराम उस की सन्ती राज्य पर बैठा ॥

५१ अखिअब का बेटा अखजयाह यहूदाह के राजा यहूसफत के राज्य के सत्रहवें बरस समरून में इसराएल पर राज्य करने लगा और उस ने दो बरस इसराएल
५२ पर राज्य किया। और उस ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई और अपने पिता और अपनी माता के और नबात के बेटे यरुबिआम के मार्ग पर जिस ने इसराएल
५३ से पाप करवाया चलता था। क्योंकि अपने पिता के सारे कार्य्य के समान उस ने बअल की सेवा किई और उस को दण्डवत किई और परमेश्वर इसराएल के ईश्वर को रिस दिलाई ॥

राजाओं की दूसरी पुस्तक।

पहिला पर्व्व।

१ और अखिअब के मरने के पीछे २ मोअब इसराएल से फिर गया। और अखजयाह अपने ऊपर की कोठरी के झरोखे से जो समरून में था गिर पड़ा और रोगी हुआ और उस ने दूतों को भेजा और उन्हें कहा कि जाओ अकरून के देव बअलजबूब से पूछो कि मैं इस ३ रोग से चंगा हूंगा कि नहीं। परन्तु परमेश्वर के दूत ने तिसबी इलियाह को कहा कि उठ समरून के राजा के दूतों से भेंट कर और उन्हें कह कि क्या इसराएल में कोई ईश्वर नहीं जो तुम अकरून के देव बअलजबूब से पूछने ४ जाते हो। सो इस कारण परमेश्वर यों कहता है कि जिस बिछौने पर तू पड़ा है उस्से न उतरेगा परन्तु निश्चय मर जावेगा तब इलियाह चला गया॥

५ और जब दूत उस पास फिर आये तब उस ने उन से पूछा कि तुम किस ६ लिये फिर आये हो। और उन्हों ने उसे कहा कि एक जन हमें मिला और हमें कहा कि राजा पास जिस ने तुम्हें भेजा है फिर जाओ और उसे कहो कि परमेश्वर यों कहता है इस लिये नहीं कि इसराएल में कोई ईश्वर नहीं जो तू अकरून के देव बअलजबूब से पूछने भेजता इस लिये तू उस बिछौने पर से जिस पर तू चढ़ा है उतरने न पावेगा ७ परन्तु निश्चय मर जावेगा। और उस ने उन से कहा कि उस जन की रीति जो तुम्हें मिला और जिस ने तुम्हें ये ८ बातें कहीं कैसी थीं। और उन्हों ने उसे कहा कि वह रोआंर जन था और चमड़े के पटुके से उस की करिहांव कसी हुई थी तब उस ने कहा कि वह तिसबी इलियाह है॥

९ तब राजा ने पचास के प्रधान को उस के पचास जन समेत उस पास भेजा और वह उस पास चढ़ गया और देखो कि वह एक पहाड़ की चोटी पर बैठा था और उस ने उसे कहा कि हे ईश्वर के जन राजा ने कहा है कि उतर आ। १० तब इलियाह ने उस पचास के प्रधान को उत्तर देके कहा कि यदि मैं ईश्वर का जन हूं तो स्वर्ग से आग उतरे और तुझे और तेरे पचास जन को भस्म करे तब आग स्वर्ग से उतरी और उसे और ११ उस के पचास को भस्म किया। फिर उस ने दूसरी बेर और एक पचास के प्रधान को उस के पचास समेत भेजा उस ने भी जाके कहा कि हे ईश्वर के जन राजा ने कहा है कि शीघ्र उतर १२ आ। तब इलियाह ने उन्हें उत्तर देके कहा कि यदि मैं ईश्वर का जन हूं तो स्वर्ग से आग उतरे और तुझे और तेरे पचास को भस्म करे और ईश्वर की आग स्वर्ग से उतरी और उसे और उस के पचास १३ को भस्म किया। फिर उस ने तीसरी बेर और एक पचास के प्रधान को उस के पचास समेत भेजा और तीसरा पचास का प्रधान चढ़ गया और आके इलियाह के आगे घुठने टेके और बिनती करके बोला कि हे ईश्वर के जन मैं तेरी बिनती करता हूं कि मेरा प्राण और तेरे इन पचास दासों के प्राण तेरी दृष्टि में १४ बहुमूल्य होवें। देखिये कि स्वर्गीय अग्नि ने दो पचास के प्रधानों को उन के पचास पचास समेत भस्म किया सो अब मेरा प्राण तेरी दृष्टि में बहुमूल्य होवे।

१५ तब परमेश्वर के दूत ने इलियाह को कहा कि उस के साथ उतर जा उस्से मत डर तब वह उठा और उतरके उस १६ के साथ राजा पास गया। और उस ने उसे कहा कि परमेश्वर यों कहता है जैसा कि तू ने दूतों को भेजा है कि अकरून के देव बअलज़बूब से जाके पूछें यह इस कारण नहीं कि इसराएल में कोई ईश्वर नहीं कि उस के बचन से बूझता इस लिये जिस बिछौने पर तू चढ़ा है उस्से न उतरेगा परन्तु निश्चय मर जावेगा॥

१७ सो परमेश्वर के बचन के समान जो इलियाह ने कहा था वह मर गया और यहूदाह के राजा यहूसफ़त के बेटे यहूराम के दूसरे बरस में यहूराम उस की सन्ती राज्य पर बैठा १८ क्योंकि उस का कोई बेटा न था। और अख़ज़याह की रही हुई क्रिया जो उस ने किई क्या इसराएली राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में लिखा नहीं॥

दूसरा पर्ब्ब।

१ और यों हुआ कि जब परमेश्वर ने चाहा कि इलियाह को बौंडर में स्वर्ग पर ले जावे तब इलियाह इलीशअ के २ साथ जिलजाल से चला। और इलियाह ने इलीशअ को कहा कि यहां ठहर जा क्योंकि परमेश्वर ने मुझे बैतएल को भेजा है तब इलीशअ ने कहा कि परमेश्वर के जीवन और तेरे प्राण के जीवन सों मैं तुझे न छोड़ूंगा सो वे बैतएल को ३ उतर गये। और बैतएल के भविष्यद्वक्तों के पुत्रों ने निकल आके इलीशअ से कहा कि तुझे कुछ चेत है कि परमेश्वर आज तेरे सिर पर से तेरे स्वामी को उठा लेगा और वह बोला कि हां मैं ४ जानता हूं तुम चुप रहो। तब इलियाह ने इलीशअ को कहा कि यहीं ठहर जा क्योंकि परमेश्वर ने मुझे यरीहो को भेजा है और उस ने कहा कि परमेश्वर के जीवन और तेरे प्राण के जीवन सों मैं तुझे न छोड़ूंगा सो वे यरीहो को आये॥

५ और भविष्यद्वक्तों के संतान जो यरीहो में थे इलीशअ पास आये और उस्से कहा कि तुझे कुछ चेत है कि परमेश्वर आज तेरे स्वामी को तेरे सिर पर से उठा लेगा और उस ने उत्तर दिया कि हां मैं जानता हूं तुम चुप ६ रहो। और इलियाह ने उसे कहा कि यहां ठहर जा क्योंकि परमेश्वर ने मुझे यरदन को भेजा है और वह बोला कि परमेश्वर के जीवन और तेरे प्राण के जीवन सों मैं तुझे न छोड़ूंगा सो वे ७ दोनों बढ़ गये। और पचास मनुष्य भविष्यद्वक्तों के पुत्रों में से चले और दूर खड़े होके देखने लगे और वे दोनों ८ यरदन के तीर खड़े हुए। और इलियाह ने अपना ओढ़ना लिया और लपेटके पानियों को मारा और वे इधर उधर बिभाग हो गये यहां लों कि वे दोनों सूखे सूखे उतर गये॥

९ और जब पार हुए तो इलियाह ने इलीशअ से कहा कि तुझ से अलग किये जाने से आगे मांग कि मैं तेरे लिये क्या करूं तब इलीशअ बोला कि मैं तेरी बिनती करता हूं कि तेरे आत्मा १० से दूना भाग मुझ पर पड़े। और उस ने कहा कि तू ने मांगने में कठिन किया यदि तू मुझे आप से अलग होते हुए देखेगा तो ऐसा ही तुझ पर होगा और यदि नहीं तो न होगा॥

११ और ऐसा हुआ कि ज्योंहीं वे दोनों टहलते हुए बातें करते चले जाते थे तो देखा कि एक आग का रथ और आग

के घोड़े आये और उन दोनों को अलग किया और इलियाह बौंडर में होके स्वर्ग १२ पर जाता रहा। और इलीशअ देखके चिल्लाया कि हे मेरे पिता हे मेरे पिता इसराएल के रथ और उस के घोड़चढ़े और उस ने उसे फिर न देखा और उस ने अपने ही कपड़ों को लेके उन्हें दो १३ टुकड़ा किया। और उस ने इलियाह के ओढ़ने को भी जो उस पर से गिर पड़ा था उठा लिया और उलटा फिरा और १४ यरदन के तीर पर खड़ा हुआ। और उस ने इलियाह के ओढ़ने को जो उस्से गिर पड़ा था लेके पानियों को मारा और कहा कि परमेश्वर इलियाह का ईश्वर कहां और जब उस ने भी पानियों को मारा तो पानी इधर उधर हो गया और इलीशअ पार गया॥

१५ और जब यरीहो के भविष्यद्वक्तों के संतानों ने जो देखने को निकले थे उसे देखा तो बोले कि इलियाह का आत्मा इलीशअ पर ठहरता है और वे उस की भेंट के लिये आये और उस के आगे १६ भूमि पर झुके। और उसे कहा कि देखिये अब तेरे सेवकों के साथ पचास बीर पुत्र हैं हम तेरी बिनती करते हैं कि उन्हें जाने दीजिये कि तेरे स्वामी को ढूंढ़ें क्या जाने परमेश्वर के आत्मा ने उसे उठाके किसी पर्बत पर अथवा तराई में फेंक दिया हो और वह बोला १७ कि मत भेजो। और जब उन्हों ने यहां लों उसे उभारा कि वह लज्जित हुआ तब उस ने कहा कि भेजो और उन्हों ने पचास जन भेजे और उन्हों ने तीन दिन लों उसे ढूंढ़ा परन्तु उसे न पाया। १८ और जब वे उस पास फिर आये क्योंकि वह यरीहो में ठहरा था तब उस ने उन्हें कहा कि क्या मैं ने तुम्हें न कहा था कि मत जाओ॥

तब उस नगर के लोगों ने इलीशअ १९ से कहा कि देखिये इस नगर का स्थान मनभावना है जैसा मेरे प्रभु देखते हैं परन्तु पानी निकम्मा और भूमि फलहीन है। तब उस ने कहा कि नया पात्र २० लाओ और उस में नोन डालो और वे उस पास लाये। तब वह पानियों के २१ सोतों पर गया और नोन वहां डालके बोला कि परमेश्वर यों कहता है कि मैं ने इन पानियों को अच्छा किया है फिर वहां से मृत्यु अथवा ऊपर न होगा। और इलीशअ के कहे हुए बचन २२ के समान आज लों जल अच्छे हुए॥

फिर वह वहां से बैतएल को चढ़ा २३ और ज्यों वह मार्ग में ऊपर जाता था त्यों देखो कि नगर के लड़के निकले और उसे चिढ़ा चिढ़ा कहने लगे कि चढ़ जा सिर मुंडे चढ़ जा सिर मुंडे। तब उस ने पीछे फिरके उन्हें देखा और २४ परमेश्वर का नाम लेके उन्हें साप दिया तब बन में से दो भालू निकले और उन में से बयालीस लड़कों को मार डाला। फिर वह वहां से करमिल पहाड़ को २५ गया और वहां से समरून को फिर आया॥

तीसरा पर्ब्ब

अब यहूदाह के राजा यहूसफत के १ अठारहवें बरस अखिअब का बेटा यहूराम समरून में इसराएल पर राज्य करने लगा और उस ने बारह बरस राज्य किया। और उस ने परमेश्वर की दृष्टि २ में बुराई किई परन्तु अपने माता पिता के तुल्य नहीं इस लिये कि उस ने बअल की मूर्त्ति को जो उस के पिता ने बनाई थी दूर किया। तथापि वह नबात के ३ बेटे यरुबिआम के समान पापों में जिस ने इसराएल से पाप करवाया लिपटा रहा उन से अलग न हुआ॥

और मोअब का राजा मैसा जो भेड़ों ४

का स्वामी था और इसराएल के राजा को एक लाख मेम्ने और एक लाख मेंढे
५ ऊन समेत भेंट भेजता था। परन्तु यों हुआ कि जब अखिअब मर गया तब मोअब का राजा इसराएल के राजा से फिर गया॥

६ और यहूराम राजा उसी समय समरून से निकला और सारे इसराएलियों
७ को गिना। और उस ने जाके यहूदाह के राजा यहूसफत को कहला भेजा कि मोअब का राजा मुझ से फिर गया क्या तू मोअब से लड़ने को मेरे साथ जावेगा और उस ने कहा कि मैं चढ़ जाऊंगा जैसा मैं वैसा तू जैसे मेरे लोग वैसे तेरे
८ लोग जैसे मेरे घोड़े वैसे तेरे घोड़े। तब उस ने पूछा कि हम किस मार्ग से चढ़ जावें और उस ने उत्तर दिया कि अदूम
९ के बन के मार्ग में से। सो इसराएल के राजा और यहूदाह के राजा और अदूम के राजा निकले और उन्हों ने सात दिन के मार्ग का चक्कर खाया और सेना के लिये और उन के ढोरों के लिये जल न था॥

१० तब इसराएल का राजा बोला हाय परमेश्वर ने इन तीन राजाओं को एकट्ठा किया कि उन्हें मोअब के हाथ में सौंपे।
११ परन्तु यहूसफत बोला कि परमेश्वर के भविष्यद्वक्तों में से कोई यहां नहीं जिसतें हम उस के द्वारा से परमेश्वर से बूझें तब इसराएल के राजा के सेवकों में से एक बोल उठा कि सफत का बेटा इलीशअ यहां है जो इलियाह के हाथों पर
१२ जल डालता था। तब यहूसफत बोला कि परमेश्वर का बचन उस पास है इस लिये इसराएल का राजा और यहूसफत और अदूम का राजा उस पास गये।
१३ तब इलीशअ ने इसराएल के राजा से कहा कि मुझे तुझ से क्या काम तू अपने पिता के भविष्यद्वक्तों और अपनी माता के भविष्यद्वक्तों पास जा और इसराएल का राजा उस्से बोला नहीं क्योंकि परमेश्वर ने इन तीन राजाओं को एकट्ठा किया कि उन्हें मोअब के हाथ में सौंपे।
१४ तब इलीशअ ने कहा कि सेनाओं के परमेश्वर की सों जिस के आगे मैं खड़ा हूं यदि यहूदाह के राजा यहूसफत के साक्षात होने को न मानता तो निश्चय मैं तेरी ओर न ताकता और न तुझे
१५ देखता। परन्तु अब मुझ पास एक बीणा बजवैया लाओ और जब उस ने बीणा बजाई तो ऐसा हुआ कि परमेश्वर का हाथ उस पर आया।
१६ और वह बोला कि परमेश्वर यों कहता है कि इस तराई को गड़हों से भर देओ।
१७ क्योंकि परमेश्वर यों कहता है कि तुम न बयार न मेंह देखोगे तथापि यह तराई पानी से भर जावेगी जिसतें तुम और तुम्हारे ढोर और तुम्हारे पशु पीवें।
१८ और यह परमेश्वर की दृष्टि में छोटी बात है वह मोअबियों को भी तुम्हारे
१९ हाथों में सौंपेगा। और तुम हर एक बाड़ित नगर और हर एक चुनी हुई बस्ती मारोगे और हर एक अच्छे पेड़ को गिराओगे और पानी के सारे कूओं को भाठोगे और हर एक अच्छी भूमि को पत्थरों से बिगाड़ोगे॥

२० और बिहान को यों हुआ कि जब भेंट चढ़ाई गई तो देखा कि अदूम के मार्ग से पानी आया और देश पानी से
२१ भर गया। और मोअबियों ने यह सुनके कि राजा हम से लड़ने चढ़ आये हैं उन्हों ने ललकारके सभों को जो करिहांव बांध सक्ते एकट्ठा किया और अपने
२२ सिवाने पर खड़े हुए। और बड़े तड़के उठे और सूर्य्य पानी पर चमकने लगा और मोअबियों ने उस पार से पानी को

२३ लोहू सा लाल देखा। तब वे बोल उठे कि वह लोहू है निश्चय राजा नष्ट हुए और एक ने दूसरे को बधन किया है हे २४ मोआबियो अब लूटो। और जब वे इसराएल की छावनी में आये तो इसराएली उठे और मोआबियों को यहां लों मारा कि वे उन के आगे से भाग निकले परन्तु वे मोआबियों को मारते २५ हुए बढ़ते गये अर्थात् देश में। और उन्हों ने उन के नगरों को ढा दिया और हर एक जन ने हर एक अच्छे स्थान पर अपना पत्थर डाला और उसे भर दिया और पानी के सारे कूए भाठ दिये और सब अच्छे पेड़ गिरा दिये यहां लों कि कीरहरसत के पत्थरों से अधिक कुछ बचा न रहा तथापि ढेलवासियों ने उसे जा घेरा और मार लिया॥

२६ और जब मोआब के राजा ने देखा कि संग्राम मेरे लिये अति भारी हुआ तो उस ने अपने संग सात सौ जन खड्गधारी लिये जिसतें अदूम के राजा २७ लों पैठे परन्तु न सके। तब उस ने अपने जेठे बेटे को लिया जिसे उस की सन्ती राज्य पर बैठना था और उसे भीत पर होम के बलिदान के लिये चढ़ाया और इसराएलियों के विरुद्ध बड़ी जलजलाहट हुई और वे उस्से हट गये और देश में फिर आये॥

चौथा पर्व्व।

१ अब भविष्यद्वक्तों के पुत्रों की पत्नियों में से एक स्त्री इलीशअ के आगे चिल्लाके बोली कि तेरा सेवक मेरा पति मर गया है और तू जानता है कि तेरा सेवक परमेश्वर से डरता था और अब धनिक आया है कि मेरे दोनों बेटों को लेके २ दास बनावे। तब इलीशअ ने उस्से कहा कि मैं तेरे लिये क्या करूं मुझे बतला तुझ पास घर में क्या है और वह बोली कि तेरी दासी के घर में एक हांडी तेल से अधिक कुछ नहीं। तब ३ उस ने कहा कि बाहर जाके अपने सब परोसियों से छूछे पात्र मंगनी ला और वे थोड़े न होवें। और अपने घर में ४ जाके अपने और अपने बेटों पर द्वार बन्द कर और उन सब पात्रों में उंडेल और जो जो भर जावे उसे अलग रख। सो वह उस ५ के पास से गई और अपने पर और अपने बेटों पर द्वार मूंद लिया वे उस के पास लाते जाते थे और वह उंडेलती थी। और ऐसा हुआ कि जब वे पात्र भर गये ६ तो उस ने अपने बेटे से कहा कि एक और पात्र ला और वह उस्से बोला और पात्र तो नहीं तब तेल थम गया। और ७ उस ने आके ईश्वर के जन से कहा तब वह बोला जा तेल बेंच और धनिक को दे और बचे हुए से तू और तेरे सन्तान जीवें॥

८ और एक दिन ऐसा संयोग हुआ कि इलीशअ सूनेम को गया और वहां एक धनवती स्त्री थी और उस ने उसे पकड़ा कि रोटी खाय सो ऐसा हुआ कि जब उस का जाना उधर होता था तब वह वहां जाके रोटी खाता था। फिर उस ९ ने अपने पति से कहा कि देख मैं जानती हूं कि यह ईश्वर का पवित्र जन है जो नित्य हमारे पास से जाता है। सो हम १० उस के लिये एक छोटी सी कोठरी भीत पर बनावें और वहां उस के लिये बिछौना बिछावें और एक मंच लगावें और एक पीढ़ी रक्खें और एक दीअट और जब वह हम पास आया करे तब वहीं टिके। सो एक दिन ऐसा हुआ कि ११ वह वहां गया और उस कोठरी में टिका और सोया। तब उस ने अपने सेवक १२ जैहाजी को कहा कि इस सूनेमी को बुला और उस ने उसे बुलाया तो वह

१३ उस के आगे आ खड़ी हुई। फिर उस ने अपने सेवक से कहा कि तू उसे कह कि तू ने जो हमारे लिये यह सब चिन्ता किई तो तेरे लिये क्या किया जावे तू चाहती है कि राजा अथवा सेना के प्रधान से तेरे बिषय में कहा जावे और वह बोली कि मैं अपने ही लोगों में
१४ रहती हूं। फिर उस ने कहा कि इस के लिये क्या किया जावे तब जैहाजी बोला कि निश्चय यह निर्बंश है और
१५ उस का पति बृद्ध। तब वह बोला कि उसे बुला और उस ने उसे बुलाया
१६ तब वह द्वार पर खड़ी हुई। और वह बोला इसी समय से पूरे दिन पर तू एक बेटा गोद में लेगी और वह बोली कि नहीं हे मेरे प्रभु ईश्वर के जन
१७ अपनी दासी से झूठ न कहिये। और वह स्त्री गर्भिणी हुई और उसी समय जो इलीशअ ने उसे कहा था जीवन के समान एक बेटा जनी॥

१८ और वह बालक बड़ा हुआ और एक दिन यों हुआ कि वह अपने पिता पास
१९ लवैयों कने गया। और अपने पिता से कहा कि मेरा सिर मेरा सिर और उस ने एक तरुण से कहा कि उसे उस की
२० माता पास ले जा। तब उस ने उसे लेके उस की माता के पास पहुंचाया और वह उस के घुठनों पर पड़े पड़े
२१ मध्यान्ह को मर गया। तब उस ने उसे ले जाके उस ईश्वर के जन के बिछौने पर डाल दिया और द्वार मूंदके निकल
२२ गई। और अपने पति पास गई और कहा कि शीघ्र एक तरुण और एक गदहा मेरे लिये भेजिये जिसतें मैं ईश्वर के जन पास दौड़ जाऊं और फिर आऊं।
२३ और उस ने पूछा कि आज तू उस पास क्यों जाया चाहती है आज न अमावास्या है न बिश्राम और वह बोली कि कुशल
२४ होगा। तब उस ने एक गदहे पर काठी बांधी और तरुण से कहा कि हांक और बढ़ मेरे चढ़ने के लिये मत रोक जब लों मैं तुझे न कहूं॥

२५ सो वह चल निकली और करमिल पहाड़ पर ईश्वर के जन पास आई और ऐसा हुआ कि जब ईश्वर के जन ने दूर से उसे देखा तो अपने सेवक जैहाजी
२६ से कहा देख वह सुनेमी है। अब उसे आगे से मिलने को दौड़ और उस्से पूछ कि तू कुशल से है तेरा पति कुशल से है तेरा बालक कुशल से है और उस ने
२७ उत्तर दिया कि कुशल से। और उस ने उस पहाड़ पर आके ईश्वर के जन के चरण को पकड़ा परन्तु जैहाजी ने पास आके चाहा कि उसे अलग करे परन्तु ईश्वर के जन ने कहा कि उसे छोड़ दे क्योंकि इस का प्राण दुःखी है और परमेश्वर ने मुझ से छिपाया और मुझे नहीं
२८ कहा। तब वह बोली कि कब मैं ने अपने प्रभु से पुत्र मांगा क्या मैं ने नहीं
२९ कहा कि मुझे मत भुला। तब उस ने जैहाजी को कहा कि अपनी करिहांव कस और मेरी छड़ी अपने हाथ में ले और चला जा यदि कोई तुझे मार्ग में मिले तो उसे नमस्कार मत कर और यदि कोई तुझे नमस्कार करे तो उसे उत्तर मत दे और मेरी छड़ी बालक के मुंह पर
३० रख। तब उस की माता बोली परमेश्वर के जीवन सों और तेरे प्राण के जीवन सों मैं तुझे न छोड़ूंगी तब वह उठा
३१ और उस के पीछे पीछे चला। तब जैहाजी उन से आगे आगे गया और छड़ी लड़के के मुंह पर धरी परन्तु कुछ शब्द अथवा सुरत न हुई इस लिये वह उस्से भेंट करने को फिरा और उसे कहा कि
३२ लड़का नहीं जागा। और जब इलीशअ घर में पहुंचा तो देखा वह बालक उस

३३ के बिछौने पर मरा पड़ा था। तब वह भीतर गया और दोनों पर द्वार मूंदके ३४ परमेश्वर से प्रार्थना किई। और जाके बालक से लिपटा और उस के मुंह पर अपना मुंह रक्खा और उस की आंखों पर अपनी आंखें और उस के हाथों पर अपने हाथ और बालक पर फैल गया ३५ तब उस बालक की देह गरमाई। फिर वह उठा और उस घर में इधर उधर टहलने लगा और फिर जाके उस पर फैला और बालक ने सात बेर छींका ३६ और अपनी आंखें खोलीं। तब उस ने जैहाजी को बुलाके कहा कि उस सूनेमी को बुला सो उस ने उसे बुलाया और जब वह भीतर उस पास आई तो उस ने उस्से कहा कि अपना बेटा उठा ३७ ले। तब वह भीतर गई और उस के पांवों पर गिरी और भूमि लों झुकके दण्डवत किई और अपने बेटे को उठाके बाहर गई॥

३८ और इलीशअ जिलजाल को फिर आया और उस देश में अकाल पड़ा था और वहां भविष्यद्वक्तों के पुत्र उस के साम्ने बैठे हुए थे और उस ने अपने सेवक से कहा कि बड़ा हंडा चढ़ा और भविष्यद्वक्तों के पुत्रों के लिये लपसी ३९ पका। और एक जन चौगान में गया कि कुछ तरकारी चुन लावे और उस ने बनैले दाख पाये और उस्से गोद भरके जंगली तुंबियां बटोरीं और आके लपसी की हांड़ी में डाल दिईं क्योंकि वे न ४० जानते थे। सो उन्हों ने लोगों के खाने के लिये उंडेला और यों हुआ कि जब वे वह लपसी खाने लगे तो चिल्ला उठे कि हे ईश्वर के जन खाने में मृत्यु है ४१ और खा न सके। तब उस ने पिसान मंगवाया और उस हांड़े में डाल दिया और कहा कि लोगों के खाने के लिये उंडेल तब हांड़े में कुछ अवगुण न हुआ॥

४२ तब बअलसलीसः से एक पुरुष ईश्वर के जन पास पहिले अन्न की रोटी जव के बीस फुलके और अन्न से भरी हुई बालें अपने अंचल में लाया और बोला ४३ कि लोगों को खाने को दे। तब उस का सेवक बोला कि क्या मैं इसे सौ मनुष्यों के आगे रक्खूं उस ने फिर कहा कि लोगों को खाने को दे क्योंकि परमेश्वर यों कहता है कि वे खावेंगे और ४४ बच रहेगा। तब उस ने उन के आगे रक्खा और उन्हों ने खाया और परमेश्वर के वचन के समान बच रहा॥

पांचवां पर्व्व।

१ अब नअमान जो अरामी के राजा की सेना का प्रधान था अपने प्रभु के आगे महान पुरुष और प्रतिष्ठित था क्योंकि परमेश्वर ने उस के द्वारा से अरामियों को जय दिया था और वह महावीर और बली था परन्तु कोढ़ी। २ और अरामी जथा जथा होके निकल गये थे और इसराएल के देश में से एक छोटी कन्या को बंधुआई में लाये थे और वह नअमान की पत्नी के पास ३ रहती थी। और उस ने अपनी स्वामिनी से कहा हाय कि मेरा स्वामी उस भविष्यद्वक्ता के आगे जाता जो समरून में है क्योंकि वह उसे उस के कोढ़ से ४ चंगा करता। और वह जाके अपने प्रभु से कहके बोली इसराएल के देश की ५ कन्या यों कहती है। सो अरामी के राजा ने कहा कि चल निकल और मैं इसराएल के राजा को पत्री लिख भेजूंगा सो वह चला और दस तोड़े चांदी और छः सहस टुकड़े सोना और दस ६ जोड़े वस्त्र अपने साथ ले चला। और वह उस पत्री को यह कहके इसराएल

के राजा पास लाया कि यह पत्री जब तेरे पास पहुंचे तब देख मैं ने अपने सेवक नअमान को तुझ पास भेजा है जिसतें तू उसे कोढ़ से चंगा करे। ७ और यों हुआ कि जब इसराएल के राजा ने उस पत्री को पढ़ा तो अपने कपड़े फाड़े और बोला कि क्या मैं ईश्वर हूं जो मारूं और जिलाऊं कि यह जन मुझ पास भेजता है कि एक जन को उस के कोढ़ से चंगा करो सो तुम्हीं बिचारो और देखो कि वह मुझ से झगड़ा ढूंढ़ता है॥

८ और जब ईश्वर के जन इलीशअ ने सुना कि इसराएल के राजा ने अपने कपड़े फाड़े तो राजा को कहला भेजा कि तू ने अपने कपड़े क्यों फाड़े अब वह मुझ पास आवे और उसे जान पड़ेगा कि इसराएल में एक भविष्यद्वक्ता ९ है। सो नअमान अपने घोड़े और अपने रथ समेत आया और इलीशअ के घर १० के द्वार पर खड़ा हुआ। तब इलीशअ ने उस पास दूत भेजके कहा कि जा और यरदन में सात बेर नहा और तेरा ११ शरीर फिर पवित्र हो जावेगा। परन्तु नअमान यह कहके क्रुद्ध होके चला गया देख मैं ने कहा था कि वह निश्चय मुझ पास निकल आवेगा और खड़ा होके अपने ईश्वर परमेश्वर का नाम लेगा और उस स्थान पर हाथ फेरेगा १२ और कोढ़ को चंगा करेगा। क्या अमानः और फरफर दमिश्क की नदियां इसराएल के सारे पानियों से कितनी अच्छी नहीं क्या मैं उन में नहाके शुद्ध नहीं हो सक्ता और वह फिरा और १३ कोपित चला गया। तब उस के सेवक उस पास आये और यह कहके बोले कि हे पिता यदि भविष्यद्वक्ता तुझे कुछ भारी बात बताता तो तू उसे न मानता फेर कितना अधिक जब वह तुझे कहता है कि नहा और शुद्ध हो। तब वह उतरा १४ और जैसा कि ईश्वर के जन ने कहा था यरदन में सात बेर डुबकी मारी और उस का शरीर बालक के शरीर के समान फिर हो गया और वह पवित्र हुआ॥

१५ तब वह अपनी सारी जथा समेत ईश्वर के जन के पास फिर आया और उस के आगे खड़ा हुआ और यों कहा कि देखिये अब मैं जानता हूं कि समस्त पृथिवी में इसराएल में छोड़ कोई ईश्वर नहीं है इस लिये अब अनुग्रह करके अपने सेवक की भेंट लीजिये। परन्तु १६ उस ने कहा कि परमेश्वर के जीवन सों जिस के आगे मैं खड़ा हूं मैं कुछ न लेऊंगा और उस ने उसे बहुत सकेती में डाला कि लेवे परन्तु उस ने न माना। और नअमान ने कहा कि मैं १७ तेरी बिनती करता हूं तेरे सेवक को दो खच्चर भरके मिट्टी न मिलेगी क्योंकि तेरा सेवक आगे को परमेश्वर को छोड़ दूसरे देवों के लिये न बलिदान न होम की भेंट चढ़ावेगा। इस बात में परमे- १८ श्वर तेरे सेवक को क्षमा करे कि जब जब मेरा स्वामी पूजा के लिये रिम्मन के मंदिर में जावे और वह मेरे हाथ पर ओठंगे और मैं रिम्मन के मंदिर में झुकूं सो जब मैं रिम्मन के मंदिर में झुकूं तब परमेश्वर इस बात में तेरे सेवक को क्षमा करे। और उस ने उसे कहा १९ कि कुशल से जा सो वह उस्से थोड़ी दूर गया॥

२० परन्तु ईश्वर के जन इलीशअ के सेवक जैहाजी ने कहा कि देख मेरे स्वामी ने इस अरामी नअमान को छोड़ दिया और जो कुछ वह लाया था उस के हाथ से ग्रहण न किया परमेश्वर के जीवन सों मैं निश्चय उस के पीछे दौड़ जाऊंगा

२१ और उस्से कुछ लेऊंगा। सो जैहाजी नअमान के पीछे गया और नअमान ने जो देखा कि वह पीछे दौड़ा आता है तो वह उस की भेंट के लिये रथ पर से उतरा और बोला कि क्या सब कुशल।
२२ और उस ने कहा कि सब कुशल मेरे स्वामी ने यह कहके मुझे भेजा है कि देख भविष्यद्वक्ता के संतान में से दो तरुण पुरुष इफरायम पहाड़ से आये हैं सो अनुग्रह करके उन्हें एक तोड़ा चांदी
२३ और दो जोड़े बस्त्र दीजिये। तब नअमान ने कहा कि प्रसन्न हो और दो तोड़े ले और उस ने उसे सकेत करके दो तोड़े चांदी दो थैलियों में दो जोड़े बस्त्र सहित बांधे और अपने दो सेवकों पर धरा और
२४ वे उठाके उस के आगे आगे गये। और उस ने एकान्त में आके उन के हाथ से उन्हें ले लिया और घर में रखके उन पुरुषों को बिदा किया सो वे चले गये।
२५ परन्तु वह जाके अपने स्वामी के साम्ने खड़ा हुआ तब इलीशअ ने उसे कहा कि जैहाजी कहां से और वह बोला कि तेरा सेवक तो इधर उधर नहीं गया
२६ था। फिर उस ने उसे कहा कि क्या मेरा मन न गया था जब वह जन अपने रथ पर से उतरके तेरी भेंट को फिरा क्या यह रोकड़ और बस्त्र और जलपाई और दाख की बारी और भेड़ें और बैल और दास और दासियां लेने का समय
२७ है। इस लिये नअमान का कोढ़ तुझे और तेरे बंश को सदा लगा रहेगा तब वह उस के आगे से पाला की नाईं कोढ़ी चला गया॥

छठवां पर्व्व।

१ और भविष्यद्वक्तों के पुत्रों ने इलीशअ से कहा कि अब देखिये यह स्थान जहां हम तेरे संग बसते हैं हमारे लिये
२ अति सकेत है। अब अनुग्रह करके यरदन को चलिये और वहां से हर एक जन एक एक बल्ला लावे और वहां एक बसमित बनावें और वह बोला कि
३ जाओ। तब एक ने कहा कि मान लीजिये और अपने सेवकों के साथ चलिये तब उस ने उत्तर दिया कि मैं जाऊंगा।
४ सो वह उन के साथ साथ गया और उन्हों ने यरदन पर आके लकड़ियां
५ काटीं। परन्तु ज्यों एक जन बल्ला काटता था तब कुल्हाड़ा पानी में गिर पड़ा और उस ने चिल्लाके कहा कि हे मेरे
६ स्वामी यह तो मंगनी का था। और ईश्वर का जन बोला कि कहां गिरा और उस ने उसे वह स्थान बताया तब उस ने टहनी काटके उधर डाल दिई
७ और कुल्हाड़ा उतरा उठा। तब उस ने कहा कि उठा ले और उस ने हाथ बढ़ाके उसे उठा लिया॥

८ तब अराम का राजा इसराएल से लड़ा और उस ने अपने सेवकों से परामर्श करके कहा कि मैं उस स्थान में
९ डेरा करूंगा। तब ईश्वर के जन ने इसराएल के राजा को कहला भेजा कि चौकस हो और अमुक स्थान से मत जाइयो क्योंकि वहां अरामी उतर आये
१० हैं। और इसराएल के राजा ने उस स्थान में भेजा जिस के विषय में ईश्वर के जन ने उसे कहके चौकस किया था और आप को बारंबार बचा रक्खा॥

११ इस लिये इस बात के कारण अराम के राजा का मन अति व्याकुल हुआ और उस ने अपने सेवकों को बुलाके कहा क्या मुझे न बताओगे कि हम्में से इस-
१२ राएल के राजा की ओर कौन है। तब उस के एक सेवक ने कहा कि हे मेरे प्रभु राजा नहीं परन्तु इलीशअ भविष्यद्वक्ता जो इसराएल में है तेरी हर एक बात जो तू अपने शयनस्थान में करता

है इसराएल के राजा को कहता है। १३ सो उस ने कहा कि जा और भेद ले कि वह कहां है जिसतें मैं भेजके उसे बुलाऊं और उसे यह कहके संदेश पहुंचाया कि देखिये वह दूतान में है॥ १४ इस लिये उस ने उधर घोड़े और रथ और भारी सेना भेजी और उन्हों ने रात को आकर उस नगर को घेर लिया १५ और जब ईश्वर के जन का सेवक तड़के उठा और बाहर निकला तो क्या देखता है कि सेना और घोड़चढ़े और रथ नगर को घेरे हुए हैं तब उस के सेवक ने उसे कहा कि हाय हे मेरे स्वामी हम १६ क्या करें। तब उस ने उत्तर दिया कि मत डर क्योंकि जो हमारे साथ हैं सो १७ उन के साथियों से अधिक हैं। तब इलीशअ ने प्रार्थना किई और कहा कि हे परमेश्वर कृपा करके इस की आंखें खोल जिसतें देखे सो परमेश्वर ने उस तरुण की आंखें खोलीं और उस ने जो दृष्टि किई तो देखा कि इलीशअ के चारों ओर पहाड़ आग के घोड़ों और १८ गाड़ियों से भरा हुआ है। और जब वे उस पर उतर आये तो इलीशअ ने परमेश्वर से प्रार्थना करके कहा कि इन लोगों को अन्धा कर डाल और इलीशअ के बचन के समान उस ने १९ अन्धा कर डाला। फिर इलीशअ ने उन्हें कहा कि यह मार्ग नहीं और यह नगर नहीं तुम मेरे पीछे पीछे चले आओ और मैं तुम्हें उस जन पास पहुंचाऊंगा जिसे तुम ढूंढ़ते हो और वह उन्हें सम- २० रून में ले गया। और जब वे समरून में पहुंचे तो यों हुआ कि इलीशअ ने कहा कि हे परमेश्वर उन की आंखें खोल जिसतें वे देखें तब परमेश्वर ने उन की आंखें खोलीं और वे देखने लगे और क्या देखते हैं कि समरून के मध्य में हैं॥

२१ और इसराएल के राजा ने उन्हें देखके इलीशअ से कहा कि हे पिता मैं बधन २२ करूं मैं बधन करूं। और उस ने कहा कि बधन मत कर क्योंकि जिन्हें तू ने अपने तलवार और धनुष से बन्धुआ किया तू उन्हें बधन करता उन के आगे खाना पीना धर दे जिसतें वे खा पीके २३ अपने स्वामी पास जावें। सो उस ने उन के लिये बहुत सा भोजन सिद्ध करवाया और जब वे खा पी चुके तो उस ने उन्हें बिदा किया और वे अपने स्वामी पास चले गये और फिर कभी अराम की जथा इसराएल के देश में न आई॥

२४ और इस के पीछे ऐसा हुआ कि अराम के राजा बिनहदद ने अपनी समस्त सेना एकट्ठी किई और चढ़के समरून को २५ घेरा। तब समरून में बड़ा अकाल पड़ा और वे उसे घेरे रहे यहां लों कि गदहे का एक सिर नब्बे रुपये के ऊपर बिकता था और कपोत की बीट पाव भर से कुछ ऊपर पांच रुपये से अधिक को बिकती थी॥

२६ और यों हुआ कि जब इसराएल का राजा भीत पर जाता था तब एक स्त्री उस के आगे चिल्लाके बोली कि हे मेरे २७ प्रभु राजा सहाय कीजिये। तब वह बोला कि यदि परमेश्वर ही तेरी सहाय न करे तो मैं तेरी सहाय क्योंकर करूं क्या खत्ते से अथवा अंगूर के कोल्हू से। २८ तब राजा ने उसे कहा कि तुझे क्या हुआ और उस ने उत्तर दिया कि इस स्त्री ने मुझे कहा कि आओ तेरे बेटे को आज खावें और अपने बेटे को कल २९ खावेंगे। सो हम ने अपने बेटे को उसिनके खाया और मैं ने दूसरे दिन उसे कहा कि अपना बेटा ला जिसतें हम उसे खावें परन्तु उस ने अपना बेटा छिपा ३० रक्खा है। तब राजा ने उस स्त्री की

बातें सुनके अपने कपड़े फाड़े और भीत पर चला जाता था और लोगों ने जो दृष्टि किई तो देखे अपने शरीर पर भीतर
३१ उदासी वस्त्र पहिने था। तब उस ने कहा कि ईश्वर मुझ से वैसा और उस्से भी अधिक करे यदि आज सफ़त के बेटे इलीशअ का सिर उस पर ठहरे॥
३२ और इलीशअ अपने घर में बैठा था और प्राचीन भी उस के साथ बैठे थे और राजा ने अपने साथ का एक जन अपने आगे भेजा परन्तु दूत न पहुंचा था कि उस ने प्राचीनों से कहा कि देखो इस बधिक के बेटे ने कैसा भेजा है कि मेरा सिर काटे सो देखो जब दूत आवे तो द्वार बन्द करो और उसे दृढ़ता से द्वार पर पकड़े रहो क्या उस के पीछे पीछे उस के स्वामी के पांव का शब्द
३३ नहीं। वह उन से यह कहि रहा था तो क्या देखता है कि दूत उस पास आ पहुंचा और उस ने कहा कि देखो यह बिपत्ति परमेश्वर की ओर से है अब आगे मैं परमेश्वर की बाट क्यों जोहूं॥

सातवां पर्व्व।

१ तब इलीशअ ने कहा कि परमेश्वर का बचन सुनो परमेश्वर यों कहता है कि कल इसी जून समरून के फाटक पर चोखा पिसान पांच सूकी का एक पैमान: बिकेगा और जव दो पैमान:
२ पांच सूकी को। तब राजा के एक प्रतिष्ठित ने जिस के हाथों पर राजा उठंगता था ईश्वर के जन को उत्तर दिया और कहा कि देख यदि परमेश्वर स्वर्ग में खिड़कियां बनाता तो क्या यह बात होगी तब उस ने कहा कि देख तू उसे अपनी आंखों से देखेगा पर उस्से न खायगा॥
३ और नगर के फाटक की पैठ में चार कोढ़ी थे और उन्हों ने आपुस में कहा कि मरने लों हम यहां क्यों बैठें। यदि
४ हम कहें कि नगर में जावेंगे तो नगर में अकाल है और हम वहां मर जावेंगे और यदि यहीं बैठे रहें तौभी मरेंगे सो अब चलो हम अरामी सेना में जावें यदि वे हमें जीवते छोड़ेंगे तो हम बचेंगे और यदि वे हमें बधन करें तो
५ मरही जावेंगे। सो वे गोधूली में उठके अरामियों की सेना को चल निकले और जब वे अरामियों की छावनी के बाहर ही बाहर पहुंचे तो देखो वहां कोई न
६ था। क्योंकि प्रभु ने रथों का और घोड़ों का और एक बड़ी सेना का शब्द अरामियों की सेना को सुनाया तब उन्हों ने आपुस में कहा कि देखो इसराएल का राजा हित्तियों के राजाओं को और मिस्रियों के राजाओं को हमारे बिरुद्ध
७ भाड़े में चढ़ा लाया। इस लिये वे उठके गोधूली में भाग निकले और अपने डेरे और अपने घोड़े और अपने गदहे अर्थात् अपनी छावनी को जैसी की तैसी छोड़ छोड़ अपने अपने प्राण ले भागे॥
८ और जब यह कोढ़ी छावनी में पहुंचे तो वे एक तंबू में घुसे और वहां खाया और पीया और वहां से रूपा और सोना और बस्त्र लिया और एक स्थान पर जाके छिपा रक्खा और फिर आके दूसरे तंबू में घुसे और वहां से भी ले
९ गये और छिपा रक्खा। तब उन्हों ने आपस में कहा कि हम अच्छा नहीं करते आज मंगलसमाचार का दिन है और हम चुप हो रहे हैं यदि हम बिहान की ज्योति लों ठहरें तो दण्ड पावेंगे सो आओ हम जाके राजा के घराने को संदेश पहुंचावें॥
१० तब उन्हों ने आके नगर के द्वारपाल को पुकारा और उन को संदेश पहुंचाया कि हम अरामियों की छावनी में गये

और देखो कि वहां न मनुष्य न मनुष्य का शब्द परन्तु घोड़े और गदहे बंधे
११ हुए और तंबू जैसे के तैसे हैं। और द्वारपालक बुलाये गये और उन्हों ने राजा के भवन में भीतर संदेश पहुंचाया॥

१२ और राजा रात ही को उठा और अपने सेवकों से कहा कि मैं तुम्हें बताता हूं कि अरामियों ने हम से क्या किया वे जानते हैं कि हम भूखे हैं इस लिये वे छावनी से निकलके चौगान में यह कहके छिपे हैं कि जब वे नगर से निकलेंगे तब हम उन्हें जीता पकड़
१३ लेंगे और नगर में घुसेंगे। और उस के सेवकों में से एक ने उत्तर देके कहा कि हम उन घोड़ों में से जो बचे हैं पांच घोड़े लेवें देख वे इसराएल की बची हुई मंडली के समान जो नष्ट हुए हैं
१४ आओ उन्हें भेजें और बूझें। सो उन्हों ने रथों के दो घोड़े लिये और राजा ने अरामियों की सेना के पीछे लोगों को यह कहके भेजा कि जाओ और बूझो।
१५ सो वे उन के पीछे पीछे यरदन लों चले गये और क्या देखते हैं कि सारे मार्ग में बस्त्र और पात्र जो अरामी अपनी उतावली में फेंक गये थे भरपूर थे तब दूत फिर आके राजा से बोले॥

१६ तब लोगों ने निकलके अरामियों के तंबुओं को लूटा सो परमेश्वर के बचन के समान चोखा पिसान पांच सूकी का एक पैमानः बिका और जब पांच सूकी
१७ का दो पैमानः। और राजा ने उस प्रतिष्ठित को जिस के हाथ पर वह ओठंगता था फाटक की चौकसी दिई और लोगों ने फाटक में उसे लताड़ा और जैसा कि परमेश्वर के जन ने कहा था वह मर गया जब राजा उस पास
१८ आया था वह मर गया। और जैसा कि ईश्वर का जन यह कहके राजा को बोला कि दो पैमानः जब पांच सूकी को और एक पैमानः चोखा पिसान पांच सूकी को कल इसी जून समरून के द्वार पर होगा सो पूरा हुआ।
१९ और उस प्रतिष्ठित ने ईश्वर के जन को उत्तर देके कहा था अब देख यदि परमेश्वर स्वर्ग में खिड़कियां बनावे क्या इस बात के समान होगा तब उस ने कहा कि तू उसे अपनी आंखों से देखेगा पर उस्से
२० न खावेगा। और उस पर ऐसा ही कुछ बीता क्योंकि लोगों ने फाटक पर उसे लताड़ डाला और वह मर गया॥

आठवां पर्व्व।

१ तब इलीशअ ने उस स्त्री को कहा जिस के बेटे को उस ने जिलाया था कि उठ और अपने घराने समेत जा और जहां कहीं बास कर सके बास कर क्योंकि परमेश्वर एक अकाल लाता है सो देश में सात बरस लों अकाल रहेगा।
२ तब वह स्त्री उठी और उस ने ईश्वर के जन के कहने के समान किया और अपने घराने समेत फिलिस्तियों के देश में सात बरस लों बास किया॥

३ और सातवें बरस के अन्त में ऐसा हुआ कि वह स्त्री फिलिस्तियों के देश से फिर आई और राजा पास चली गई जिसतें अपने घर और अपनी भूमि के
४ लिये चिल्लावे। तब राजा ईश्वर के जन के सेवक जैहाजी से यह कहके बोला कि सारे बड़े बड़े कार्य्य जो इलीशअ ने दिखलाये हैं उन्हें मेरे आगे बर्णन कर।
५ और ज्यों वह राजा से कहि रहा था कि उस ने एक मृतक को किस रीति से जिलाया तो देखा कि वह स्त्री जिस के बेटे को उस ने जिलाया था आके राजा के आगे अपने घर और अपनी भूमि के लिये चिल्लाई तब जैहाजी बोल उठा कि हे मेरे प्रभु राजा वह स्त्री

और उस का बेटा जिसे इलीशअ ने
६ जिलाया यही है। और जब राजा ने
उस स्त्री से पूछा तो उस ने बताया तब
राजा ने एक प्रधान को उस के संग
करके कहा कि उस का सब कुछ और
उस के अन्न जिस दिन से उस ने यह
भूमि छोड़ी है आज के दिन लों फेर
दिलाओ॥

७ तब इलीशअ दमिश्क में आया और
अराम का राजा बिनहदद रोगी था
और उसे संदेश पहुंचा कि ईश्वर का जन
८ यहां आया है। और राजा ने हजाएल
को कहा कि कुछ अपने दान हाथ में
ले और ईश्वर के जन से भेंट करके और
उस के द्वारा से परमेश्वर से बूझ और
कह क्या मैं इस रोग से चंगा होऊंगा।
९ सो हजाएल उस्से भेंट करने चला और
उस ने दमिश्क की समस्त अच्छी वस्तु
भेंट के लिये हाथ में लिईं अर्थात् चालीस
ऊंट लदे हुए और उस के आगे खड़े होके
कहा कि तेरे बेटे बिनहदद अराम के
राजा ने मुझे यह कहके तेरे पास भेजा
है और पूछा है कि क्या मैं इस रोग से
१० चंगा हूंगा। तब इलीशअ ने उसे कहा
कि जाके उसे कह कि तू निश्चय चंगा
होगा तथापि परमेश्वर ने मुझे दिखाया
११ है कि वह निश्चय मर जावेगा। और
उस ने रूप स्थिर करके यहां लों रक्खा
कि वह लज्जित हुआ और ईश्वर के जन
१२ ने बिलाप किया। तब हजाएल ने कहा
कि मेरा प्रभु क्यों रोता है और उस ने
उत्तर दिया इस लिये कि मैं जानता हूं
कि तू इसराएल के संतान से कैसी बुराई
करेगा उन के दृढ़ गढ़ों को फूंक देगा
और उन के तरुणों को तलवार से घात
करेगा और उन के बालकों को दे दे
पटकेगा और उन की गर्भिणियों को
१३ फाड़ेगा। तब हजाएल बोला क्या तेरा
सेवक कुत्ता है कि वह ऐसी बुरी बात
करे तब इलीशअ बोला परमेश्वर ने मुझे
बताया है कि तू अराम का राजा होगा।
१४ तब वह इलीशअ पास से अपने स्वामी
के पास गया जिस ने उसे पूछा कि
इलीशअ ने तुझे क्या कहा और उस
ने कहा कि उस ने मुझे बताया कि तू
१५ अवश्य चंगा होगा। और बिहान को
ऐसा हुआ कि उस ने एक मोटा कपड़ा
लिया और उसे पानी में चभोड़के उस के
मुंह पर यहां लों फैलाया कि वह मर
गया और हजाएल ने उस की सन्ती
राज्य किया॥

१६ और अखिअब के बेटे इसराएल के
राजा यूराम के राज्य के पांचवें बरस जब
यहूसफत यहूदाह का राजा था तब यहू-
सफत का बेटा यहूराम यहूदाह के राज्य
१७ पर बैठने लगा। जब कि वह राज्य
करने लगा उस की बय बत्तीस बरस की
थी और उस ने यरूसलम में आठ बरस
१८ राज्य किया। और वह अखिअब के
घराने के समान इसराएली राजाओं की
चाल पर चलता था क्योंकि अखिअब
की बेटी उस की पत्नी थी और उस ने
परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई।
१९ तथापि परमेश्वर ने न चाहा कि यहू-
दाह को नाश करे क्योंकि उसे अपने
सेवक दाऊद का पक्ष था कि उस ने
उसे बाचा दिई थी कि मैं तुझे और तेरे
बंश को सर्बदा के लिये एक दीपक दूंगा॥

२० उस के समय में अदूम यहूदाह
के बश से फिर गये और उन्हों ने
२१ अपने लिये एक राजा बनाया। तब
यूराम सईर में आया और सारे रथ उस
के साथ थे और उस ने रात को उठके
अदूमियों को जो उसे घेरे हुए थे और
रथों के प्रधानों को मारा और लोग अपने
२२ अपने तंबुओं को भाग गये। परन्तु अदूम

आज के दिन लों यहूदाह के वश से फिरा है उसी समय में लिबनः भी फिर गये॥

२३ और यूराम की उबरी हुई क्रिया और सब कुछ जो उस ने किया था सो क्या यहूदाह के राजाओं के समयों के समाचार
२४ की पुस्तक में लिखा नहीं है। तब यूराम ने अपने पितरों में शयन किया और दाऊद के नगर में अपने पितरों में गाड़ा गया और उस का बेटा अखजयाह उस की सन्ती राज्य पर बैठा॥

२५ इसराएल के राजा अखिअब के बेटे यूराम के बारहवें बरस यहूदाह का राजा यहूराम का बेटा अखजयाह राज्य पर
२६ बैठा। जब अखजयाह राज्य पर बैठा तब वह बाईस बरस का था और यरूसलम में एक बरस राज्य किया और उस की माता का नाम अतलीयाह था जो इसराएल के राजा उमरी की बेटी थी।
२७ और वह अखिअब के घराने की चाल पर चलता था और उस ने अखिअब के घराने के समान परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई क्योंकि वह अखिअब के
२८ घराने का जंवाई था। और वह अखिअब के बेटे यूराम के साथ अराम के राजा हजाएल से लड़ने को रामात जिलिअद पर चढ़ा और अरामियों ने
२९ यूराम को घायल किया। सो राजा यूराम यजरअएल को फिर गया जिसतें उन घावों से चंगा होवे जो अरामियों से जब वह अराम के राजा हजाएल से लड़ा था उसे लगा था और यहूराम का बेटा यहूदाह का राजा अखजयाह यजरअएल को गया जिसतें अखिअब के बेटे यूराम को देखे क्योंकि वह घायल था॥

नवां पर्व्व

१ तब इलीशअ भविष्यद्वक्ता ने भविष्यद्वक्ताओं के संतानों में से एक को बुलाया और उस्से कहा कि अपनी कटि बांध और तेल की यह कुप्पी अपने हाथ में
२ ले और रामात जिलिअद को जा। और जब तू वहां पहुंचे तो निमसी के बेटे यहूसफत के बेटे याहू को ढूंढ़ ले और भीतर जाके उसे अपने भाइयों में से
३ उठाके भीतर की कोठरी में ले जा। और कुप्पी का तेल लेके उस के सिर पर ढाल और कह कि परमेश्वर यों कहता है कि मैं ने तुझे इसराएल पर राज्याभिषेक किया तब तू द्वार खोलके भाग
४ और ठहर मत। सो वह तरुण अर्थात् वह तरुण भविष्यद्वक्ता रामात जिलिअद को गया॥

५ और जब वह आया तो क्या देखता है कि सेनापति बैठे हैं तब उस ने कहा कि हे सेनापति तेरे लिये मुझ पास संदेश है और याहू ने कहा कि हम सभों में से किस के लिये और उस ने कहा
६ कि तेरे लिये हे सेनापति। और वह उठके घर में गया और उस ने उस के सिर पर वह तेल ढालके उसे कहा कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि मैं ने तुझे परमेश्वर के लोगों पर अर्थात् इसराएल पर राज्याभिषेक
७ किया। और तू अपने स्वामी अखिअब के घराने को मारेगा जिसतें मैं अपने सेवक भविष्यद्वक्ताओं के लोहू का और परमेश्वर के सारे सेवकों के लोहू का
८ ईजबिल के हाथ से पलटा लेऊं। क्योंकि अखिअब का सारा घर नष्ट होगा और मैं अखिअब से हर एक पुरुष को जो भीत पर मूत्ता है क्या निर्बंध क्या दास
९ इसराएल में काट डालूंगा। और मैं अखिअब के घर को नबात के बेटे यरुबिआम के घर के समान और अखियाह के बेटे बअशा के घर के

१० समान करूंगा। और ऐजबिल को यजरअएल के भाग में कुत्ते खावेंगे और कोई गड़वैया न होगा और वह द्वार खोलके भागा॥

११ तब याहू निकलके अपने प्रभु के सेवकों के पास आया और एक ने उसे कहा कि सब कुशल है यह बौड़हा तेरे पास किस लिये आया तब उस ने उन्हें कहा कि तुम उस पुरुष को और उस १२ के संदेश को जानते हो। और वे बोले कि झूठ हमें अब बता तब उस ने कहा कि वह मुझे यों कहके बोला कि परमेश्वर यों कहता है कि मैं ने तुझे १३ इसराएल पर राज्याभिषेक किया। तब उन्हों ने फुरती किई और हर एक ने अपना अपना बस्त्र लिया और अपने नीचे सीढ़ी पर रक्खा और यह कहके नरसिंगा फूंका कि याहू राज्य करता १४ है। सो निमसी के बेटे यहूसफत के बेटे याहू ने यूराम के बिरोध में गुष्ट बांधी अब अराम के राजा हजाएल के कारण यूराम और सारे इसराएल रामात १५ जिलिअद की रक्षा करते थे। परन्तु राजा यहूराम ने उन घावों से जो अरामियों ने उसे मारा था जब वह अराम के राजा हजाएल से लड़ा था चंगा होने फिर आया तब याहू ने कहा कि यदि तुम्हारे मन होवें तो नगर से किसी को न निकलने न बचने देओ न होवे कि यजरअएल में हमारा समाचार १६ पहुंचावे। सो याहू रथ पर चढ़के यजरअएल को गया क्योंकि यूराम वहां था और यहूदाह का राजा अखजयाह यूराम को देखने को उतर आया था। १७ और यजरअएल की बुर्ज पर एक पहरू था और उस ने ज्यों याहू की जथा को आते देखा त्यों कहा कि मैं एक जथा को देखता हूं और यूराम ने कहा कि एक घोड़चढ़े को लेके उन की भेंट के १८ लिये भेज और पूछ कि कुशल है। सो उस की भेंट के लिये एक जन घोड़े पर चढ़के आगे बढ़ा और जाके उस ने कहा कि राजा पूछता है कि कुशल है और याहू ने कहा कि तुझे कुशल से क्या मेरे पीछे हो ले फिर पहरू यह कहके बोला कि दूत उन पास पहुंचा परन्तु १९ फिर नहीं आता। तब उस ने दूसरे को घोड़े पर भेजा और उस ने भी उन पास पहुंचके कहा कि राजा पूछता है कि कुशल है और याहू ने उत्तर दिया कि तुझे कुशल से क्या मेरे पीछे हो ले। २० फिर पहरू यह कहके बोला कि वह भी उन पास पहुंचा और फिर नहीं आता और हांकना निमसी के बेटे याहू के हांकने के समान है क्योंकि वह बौड़हा-२१ पन से हांकता है। तब यूराम ने कहा कि जोतो सो उस का रथ जोता गया तब इसराएल का राजा यूराम और यहूदाह का राजा अखजयाह अपने अपने रथ पर बाहर गये और वे याहू के बिरोध में बाहर गये और उसे यजरअएली नबात के भाग में पाया॥

२२ तब यूराम ने याहू को देखके कहा कि याहू कुशल है और याहू बोला कैसा कुशल कि जब तेरी माता ऐजबिल का २३ छिनाला और उस के टोने इतने हैं। तब यूराम अपने हाथ फेरके भागा और अखजयाह से कहा कि हे अखजयाह छल २४ है। तब याहू ने अपना हाथ धनुष से भरा और यहूराम को भुजाओं के मध्य में मारा और बाण उस के हृदय में पैठ गया और वह अपने रथ में झुक गया। २५ तब उस ने अपने प्रधान बिदकर से कहा कि उसे उठाके यजरअएली नबात के खेत के भाग में डाल दे क्योंकि चेत कर कि जब मैं और तू उस के बाप

अखिअब के पीछे चढ़े आते थे परमेश्वर ने यह बोझ उस पर धरा था। २६ परमेश्वर कहता है कि निश्चय मैं ने नबात के लोहू और उस के बेटों के लोहू को कल देखा है और परमेश्वर कहता है कि मैं तुझ से इसी भाग में पलटा लेऊंगा सो परमेश्वर के वचन के समान उसे लेके उसी स्थान में डाल दे॥

२७ परन्तु जब यहूदाह के राजा अखजयाह ने यह देखा तो वह घर की बारी के मार्ग से निकल भागा और याहू ने उस का पीछा किया और कहा कि उसे भी रथ में मार लेओ सो उन्हों ने जूर के मार्ग में जो इबलिआम के लग है उसे मारा और वह भागके मजिद्दो में २८ आया और वहां मर गया। और उस के सेवक उसे रथ में डालके यरूसलम को ले गये और उसे उस की समाधि में दाऊद के नगर में उस के पितरों २९ के साथ गाड़ा। और अखिअब के बेटे यूराम के ग्यारहवें बरस अखजयाह यहूदाह पर राज्य करने लगा॥

३० और जब याहू यजरअएल को आया तो ईजबिल ने सुना और अपनी आंखों में अंजन लगाया और अपना मस्तक संवारा और एक झरोखे ३१ से झांकने लगी। ज्योंहीं याहू ने फाटक में से प्रवेश किया त्योंहीं वह बोली कि क्या जिमरी को कुशल मिला जिस ३२ ने अपने प्रभु को बधन किया। तब उस ने झरोखे की ओर मस्तक उठाया और कहा कि मेरी ओर कौन कौन है और उस की ओर दो तीन शयनस्थान ३३ के प्रधानों ने देखा। तब उस ने कहा कि उसे गिरा दो सो उन्हों ने उसे नीचे गिरा दिया और उस का लोहू भीत पर और घोड़ों पर पड़ा और उस ने उसे ३४ लताड़ा। और भीतर आके खा पीके कहा कि आओ और उस स्रापित को देखो और उसे गाड़ो क्योंकि वह राजपुत्री है। और वे उसे गाड़ने गये परन्तु ३५ उन्हों ने उस की खोपड़ी और उस के पांवों और हथेलियों से अधिक कुछ न पाया। तब वे फिर आये और उसे संदेश ३६ दिया वह बोला कि यह वह बात है जो परमेश्वर ने अपने सेवक इलियाह तिसबी से कही थी कि यजरअएल के भाग में कुत्ते ईजबिल का मांस खावेंगे। और ईजबिल की लोथ यजरअएल के ३७ भाग में खेत पर खाद की नाईं पड़ी रहेगी और न कहेंगे कि यह ईजबिल है॥

दसवां पर्ब्ब।

और समरून में अखिअब के सत्तर १ बेटे थे सो याहू ने पत्र लिखे और यजरअएल के आज्ञाकारियों के और प्राचीनों के और अखिअब के संतानों के पालकों के पास समरून को यह कहके भेजा। कि अब जैसा कि तुम्हारे प्रभु के बेटे २ और रथ और घोड़े और बाड़ित नगर और नगर भी और अस्त्र हैं सो इस पत्र के तुम्हारे पास पहुंचते ही। जो तुम्हारे ३ स्वामी के बेटों में से सब से अच्छा और योग्य होवे देखके उस के पिता के सिंहासन पर उसे बैठाओ और अपने स्वामी के घर के लिये लड़ाई करो। परन्तु ४ वे अत्यन्त डर गये और बोले कि देखो दो राजा तो उस का साम्ना न कर सके फेर हम क्योंकर ठहरेंगे। तब जो घर ५ का प्रधान था और जो नगर का प्रधान था और प्राचीन और पालकों ने याहू को कहला भेजा कि हम तेरे सेवक हैं तू जो कुछ कहेगा सो सब हम मानेंगे हम राजा न बनावेंगे जो तुझे अच्छा लगे सो कर॥

तब उस ने उन के पास यह कहके ६ दूसरी पत्री लिखी कि यदि तुम मेरी

ओर हो और मेरा शब्द मानोगे तो अपने स्वामी के बेटों के मस्तकों को लेके कल इसी समय मुझ पास यजरअएल में चले आओ अब राजा के बेटे सत्तर जन होके नगर के महत लोगों के साथ थे
७ जो उन के पालक थे। और जब यह पत्री उन के पास पहुंची तो उन्हों ने सत्तर जन राजपत्रों को मार डाला और उन के मस्तकों को टोकरों में रखके
८ और उस पास यजरअएल में भेजा। तब एक दूत आया और यह कहके उसे बोला कि वे राजपुत्रों के मस्तक लाये हैं और वह बोला कि नगर के फाटक की पैठ में बिहान लों उन को दो ढेर
९ कर रक्खो। और यों हुआ कि प्रातःकाल को वह बाहर जाके खड़ा हुआ और सब लोगों से कहा कि तुम धर्म्मी हो देखो मैं ने तो अपने स्वामी के बिरुद्ध गुष्ठ बांधके उसे बधन किया पर इन सभों को किस ने घात किया।
१० अब जानो कि परमेश्वर के बचन में से जो परमेश्वर ने अखिअब के घर के बिषय में कहा था कोई बात भूमि पर न गिरेगी क्योंकि परमेश्वर ने जो कुछ कि अपने सेवक इलियाह के द्वारा से
११ कहा था उसे पूरा किया। सो याहू ने उन सब को जो अखिअब के घराने से यजरअएल में बच रहे थे और उस के समस्त महत जनों को और उस के कुटुम्बों को और उस के याजकों को मार डाला यहां लों कि एक को भी न छोड़ा॥

१२ तब वह उठा और चलके समरून को आया और ज्यों वह बैतएकद गड़ेरियों के मार्ग के निकट पहुंचा।
१३ तब याहू ने यहूदाह के राजा अखजयाह के भाइयों को पाया और कहा कि तुम कौन और वे बोले कि हम अखजयाह के भाई राजा और रानी के पुत्रों के
१४ कुशल के लिये जाते हैं। तब उस ने आज्ञा किई कि उन्हें जीते पकड़ लेओ सो उन्हों ने उन्हें जीते पकड़ लिया और उन्हें अर्थात् बयालीस को बैतएकद के गड़हे पर मार डाला और उन में से एक को न छोड़ा॥

१५ फिर वहां से चला और रैकाब के बेटे यहूनदब को पाया जो उस के भेंट करने को आता था तब उस ने उसे आशीस देके पूछा कि जैसा मेरा मन तेरे मन के साथ है क्या वैसा तेरा मन ठीक है तब यहूनदब ने उत्तर दिया कि है यदि होवे तो अपना हाथ मुझे दे सो उस ने अपना हाथ दिया और उस ने उसे रथ पर अपने साथ बैठा
१६ लिया। और कहा कि मेरे साथ चल और परमेश्वर के लिये मेरा ज्वलन देख सो वह उस के साथ रथ पर बैठ लिया॥
१७ और जब वह समरून में पहुंचा तो उस ने उन सभों को जो अखिअब के बचे हुए थे मार डाला यहां लों कि जैसा परमेश्वर ने इलियाह के द्वारा से कहा था उस ने उसे नष्ट कर दिया।
१८ फिर याहू ने सब लोगों को एकट्ठा किया और उन्हें कहा कि अखिअब ने बअल की थोड़ी पूजा किई याहू उस की
१९ बहुत सी पूजा करेगा। सो अब बअल के सारे भविष्यद्वक्तों को और उस के सारे सेवकों और उस के सारे याजकों को मुझ पास बुलाओ उन में से एक भी न छूटे क्योंकि मैं बअल के लिये बड़ा बलि चढ़ाऊंगा जो कोई घटेगा सो जीवता न बचेगा परन्तु याहू ने चतुराई से किया जिसतें बअल
२० के सेवकों को नाश करे। और याहू ने कहा कि बअल के लिये पर्ब्ब शुद्ध
२१ करो और उन्हों ने प्रचारा। और याहू

ने समस्त इसराएलियों में भेजा और बअल के सारे सेवक आये ऐसा कोई न था जो न आया हो और वे बअल के मन्दिर में गये और बअल का मन्दिर २२ इस सिरे से उस सिरे लों भर गया। तब उस ने वस्त्र के घर के प्रधान को कहा कि सारे बअल के सेवकों के लिये वस्त्र निकाल ला सो वह उन के लिये वस्त्र २३ निकाल लाया। तब याहू और रैकाब का बेटा यहूनदब बअल के मन्दिर में गये और बअल के सेवकों से कहा कि खोजो और देखो कि यहां तुम्हारे मध्य में परमेश्वर के सेवकों में से कोई न २४ हो परन्तु केवल बअल के सेवक। और जब वे भेंट और बलिदान चढ़ाने को भीतर गये तब याहू ने बाहर बाहर अस्सी जन को ठहरा रक्खा और उन्हें कहा कि यदि कोई इन लोगों में से जिन्हें मैं ने तुम्हारे हाथ में कर दिया है बच निकले तो उस का प्राण उस के प्राण की सन्तो होगा॥

२५ और ऐसा हुआ कि ज्यों वह बलिदान की भेंट चढ़ा चुका तो याहू ने पहरुओं को और प्रधानों को आज्ञा किई कि घुसो उन्हें मार डालो एक भी बाहर निकलने न पावे सो उन्हों ने उन को तलवार की धार से मार डाला और पहरू और प्रधान उन की लोथों को बाहर फेंकके बअल के मन्दिर को नगर २६ में गये। और उन्हों ने बअल के मन्दिर की मूर्त्तों को निकाला और उसे जला २७ दिया। और बअल की मूर्त्ति को चकनाचूर किया और बअल का मन्दिर ढा दिया और आज के दिन लों उसे २८ विष्ठा फिरने का घर बनाया। यों याहू ने बअल को इसराएल में से नष्ट किया। २९ परन्तु याहू ने उन पापों को जो नबात के बेटे यरुबिआम ने इसराएलियों से करवाया था छोड़ न दिया अर्थात् सोने के बछड़ों को जो बैतएल और दान में थे रहने दिया॥

३० तब परमेश्वर ने याहू से कहा इस कारण कि जो मेरी दृष्टि में अच्छा था तू ने उसे किया है और जो कुछ कि मेरे मन में था तू ने अखिअब के घराने पर किया है सो तेरे संतान चौथी पीढ़ी लों इसराएल के सिंहासन पर बैठेंगे। ३१ पर याहू इसराएल के ईश्वर परमेश्वर की व्यवस्था पर अपने सारे मन से न चला उस ने यरुबिआम के पापों को न छोड़ा जिस ने इसराएल से पाप ३२ करवाया। उन दिनों में परमेश्वर ने इसराएल को काट काटके घटाना आरंभ किया और हजाएल ने उन्हें ३३ इसराएल के सारे सिवानों में मारा। यरदन से लेके उदय की ओर सारे जिलिआद के देश जद और रूबीनी और मनस्सी अरआयर से लेके जो अरनून की नदी के लग है अर्थात् जिलिआद और बसन लों॥

३४ अब याहू की रही हुई क्रिया और सब जो उस ने किया और उस के सारे पराक्रम क्या वे इसराएल के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं ३५ लिखे। और याहू अपने पितरों में सो रहा और उन्हों ने उसे समरून में गाड़ा और उस के बेटे यहूअखज ने उस की ३६ सन्ती राज्य किया। और जिन दिनों में याहू ने समरून में इसराएल पर राज्य किया सो अट्ठाईस बरस थे॥

ग्यारहवां पर्व्व।

१ तब अखजयाह की माता अतलीयाह ने ज्यों देखा कि मेरा बेटा मूआ तो उठी और राजा के सारे बंश को २ मार डाला। परन्तु अखजयाह की बहिन यूराम राजा की बेटी यहूसबआ

ने अखजयाह के बेटे यूआस को लिया और उसे उन राजपुत्रों में से जो मारे गये थे चुराके उसे और उस की दाई को शयनस्थान में अतलीयाह से छिपाया ३ यहां लों कि वह मारा न गया। और वह उस के साथ परमेश्वर के मन्दिर में छः बरस लों छिपा रहा और अतलीयाह देश पर राज्य करती रही॥

४ और सातवें बरस यहूयदः ने सौ सौ के अध्यक्षों को और प्रधानों को पहरुओं समेत बुला भेजा और उन्हें परमेश्वर के मन्दिर में अपने पास बुलाके उन से बाचा बांधी और परमेश्वर के मन्दिर में उन से किरिया लिई और राजा के बेटे ५ को उन्हें दिखाया। और उस ने यह कहके उन्हें आज्ञा किई कि तुम यह काम करो कि तुम्हारा तीसरा भाग जो बिश्राम में भीतर जाता है राजा के ६ भवन का रक्षक होवे। और तीसरा भाग सूर के फाटक पर रहे और तीसरे फाटक पर पहरुओं के पीछे इस रीति से भवन ७ की रक्षा करो और रोको। और तुम सभों में से दो जथा जो बिश्राम में निकलती हैं राजा के आसपास होके परमेश्वर के मन्दिर की रखवाली करें। ८ और राजा की चारों ओर रहो और हर एक जन शस्त्र हाथ में लिये रहे और जो बाड़ों के भीतर आवे सो मारा जावे और बाहर भीतर आते जाते राजा के साथ रहो॥

९ तब जैसा यहूयदः याजक ने समस्त आज्ञा किई थी शतपतियों ने वैसा ही किया और उन में से हर एक ने अपने अपने जनों को जो बिश्राम में बाहर भीतर आने जाने पर थे लिया और यहूयदः याजक पास आये। १० तब याजक ने राजा दाऊद की बरछियां और ढालें जो परमेश्वर के मन्दिर में थीं शतपतियों को दिईं। ११ और पहरू अपने अपने शस्त्र हाथ में लेके हर एक जन मन्दिर के दहिने कोने से लेके बायें कोने लों और बेदी की और मन्दिर की और राजा की चारों ओर खड़े हुए। १२ तब वह राजपुत्र को निकाल लाया और उस पर मुकुट रखके उसे साक्षी दिई और उसे राजा बनाया और उसे अभिषेक किया और उन्हों ने तालियां बजाईं और बोले कि राजा जीवे। १३ और जब अतलीयाह ने पहरुओं और लोगों का शब्द सुना तो वह लोगों में परमेश्वर के मन्दिर में पहुंची। १४ और क्या देखती है कि ब्यवहार के समान राजा खंभे से लगा हुआ खड़ा है और अध्यक्ष और नरसिंगे के बजवैये राजा के लग खड़े हैं और देश के सारे लोग आनन्द में हैं और नरसिंगे फूंकते हैं तब अतलीयाह ने अपने कपड़े फाड़े और चिल्लाके बोली कि छल छल। १५ परन्तु यहूयदः याजक ने शतपतियों को और सेना के अध्यक्षों को आज्ञा किई और उन से कहा कि उसे बाड़ों से बाहर करो और जो उस का पीछा करे उसे तलवार से मार डालो क्योंकि याजक ने कहा था कि वह परमेश्वर के मन्दिर में मारी न जावे। १६ तब उन्हों ने उस पर हाथ चलाये और वह उस मार्ग में जिस मार्ग से घोड़े राजा के भवन में आते थे जाती थी और वहां मारी गई॥

१७ और यहूयदः ने परमेश्वर के और राजा के और लोगों के मध्य में एक बाचा बांधी कि वे परमेश्वर के लोग होवें और राजा और लोगों के मध्य में बाचा बांधी। १८ तब देश के सारे लोग बअल के मन्दिर में आये और उसे ढाया और उन्हों ने उस की मूर्त्तों और उस की बेदियों को चकनाचूर किया और

बअल के याजक मत्तान को बेदियों के सन्मुख घात किया और याजक ने परमेश्वर के मन्दिर के लिये पहरों को
१९ ठहराया। तब उस ने शतपतियों को और प्रधानों को और पहरुओं को और देश के सारे लोगों को लिया और वे राजा को परमेश्वर के मन्दिर से उतारके पहरुओं के फाटक के मार्ग से राजभवन में लाये और वह राजाओं के
२० सिंहासन पर बैठा। और देश के सारे लोग आनन्दित हुए और नगर में चैन हुआ और उन्हों ने अतलीयाह को राजभवन के लग खड्ग से घात किया।
२१ जब यूआस राजा सिंहासन पर बैठा तब वह सात बरस का था॥

बारहवां पर्ब्ब।

१ और याहू के सातवें बरस यूआस राज्य करने लगा और उस ने यरूसलम में चालीस बरस राज्य किया और उस की माता का नाम बिअरसबअ की
२ जिबय: था। जब लों यहूयद: याजक यूआस को उपदेश करता रहा उस के जीवन भर उस ने परमेश्वर की दृष्टि में
३ भलाई किई। परन्तु ऊंचे स्थान दूर न किये गये थे लोग अब लों ऊंचे स्थानों पर बलिदान चढ़ाते थे और सुगंध जलाते थे॥

४ और यूआस ने याजकों से कहा कि पवित्रता की सारी रोकड़ जो परमेश्वर के मन्दिर में पहुंचाई जाती हैं अर्थात् वह बिशेष रोकड़ जो प्राण का मोल ठहरती है समस्त रोकड़ जो हर एक अपनी इच्छा से परमेश्वर के मन्दिर में
५ लाता है। सो याजक हर एक अपने अपने जान पहिचान से लेवें और घर के दरारों को जहां कहीं दरार पाये जावें सुधारें॥

६ परन्तु ऐसा हुआ कि यूआस के राज्य के तेईसवें बरस लों याजकों ने मन्दिर के दरारों को न सुधारा।
७ तब यूआस राजा ने यहूयद: याजक को अरु और याजकों को बुलाके उन्हें कहा कि घर के दरारों को क्यों नहीं सुधारते हो सो अब अपने अपने जान पहिचानों से रोकड़ मत लेओ परन्तु उसे घर के दरारों के लिये सैंपो॥

८ और याजकों ने लोगों से रोकड़ न लेने को मान लिया कि घर के दरारों
९ को न सुधारें। परन्तु यहूयद: याजक ने एक मंजूषा लिई और उस के ढपने पर एक छेद किया और उसे बेदी के लग परमेश्वर के मन्दिर में जाने की दहिनी ओर रक्खा और याजक जो डेवढ़ी की रक्षा करता था सब रोकड़ को जो परमेश्वर के मन्दिर में लाई जाती थीं उस में रखता था॥

१० और ऐसा हुआ कि जब मंजूषा में बहुत रोकड़ होती थी तो राजा का लेखक और प्रधान याजक आके रोकड़ को थैलियों में बांधते थे और उस रोकड़ को जो परमेश्वर के मन्दिर में पाते थे
११ गिनते थे। और वे उस गिनी हुई रोकड़ को उन के हाथ में देते थे जो काम करते थे जो ईश्वर के मन्दिर पर करोड़े थे और वे उसे बढ़इयों को और थवइयों को जो परमेश्वर के मन्दिर का काम बनाते थे उसे पहुंचाते थे।
१२ और पत्थारियों को और पत्थर के गढ़वैयों को और लट्ठे और ढाए हुए पत्थर के लिये उठान करते थे जिसतें परमेश्वर के मन्दिर के दरारों को सुधारें और सब के लिये जो घर के सुधारने के लिये थे।
१३ तथापि उस रोकड़ से जो परमेश्वर के मन्दिर में आती थी परमेश्वर के मन्दिर के लिये चांदी के कटोरे और कतरनियां और थालियां और तुरहियां

कोई सोने का पात्र अथवा चांदी का
१४ पात्र नहीं बनाया गया। परन्तु उसे
बनिहारों को देते थे और उस्से परमेश्वर
१५ के मन्दिर को सुधारते थे। और जिन
के हाथ रोकड़ को बनिहारों के लिये
सौंपते थे वे उन से लेखा न लेते थे
१६ क्योंकि वे सच्चाई से उठाते थे। अप-
राध की रोकड़ और पाप की रोकड़
परमेश्वर के मन्दिर में न लाते थे परन्तु
वे याजक की थीं॥

१७ उसी समय अराम का राजा हजाएल
चढ़ गया और जात से लड़के उसे ले
लिया और फिर यरूसलम की ओर फिरा
१८ कि उसे भी लेवे। तब यहूदाह के राजा
यूआस ने समस्त पवित्र किई गई बस्तें
जो उस के पितर यहूसफत और यूराम
और अखजयाह यहूदाह के राजाओं ने
भेंट चढ़ाई थीं और उस की अपनी
पवित्र किई हुई बस्तु उस सब सोने
समेत जो परमेश्वर के मन्दिर के भंडारों
और राजा के भवन में पाया गया लेके
अराम के राजा हजाएल पास भेजी तब
वह यरूसलम से चला गया॥

१९ और यूआस की रही हुई क्रिया और
सब कुछ जो उस ने किया सो क्या
यहूदाह के राजाओं के समयों के समा-
चार की पुस्तक में लिखा हुआ नहीं
२० है। तब उस के सेवकों ने उठके युक्ति
बांधी और यूआस को मिल्लो के घर में
जो सिल्ला को उतरता है घात किया।
२१ और सिमआत के बेटे यूजकर और सामिर
के बेटे यहूजबद उस के सेवकों ने उसे
मारा और वह मर गया और उन्हों ने
उस के पितरों के संग दाऊद के नगर
में उसे गाड़ा और उस का बेटा अम-
सियाह उस की सन्ती राज्य पर बैठा॥

तेरहवां पर्ब्ब।

१ यहूदाह के राजा अखजयाह के बेटे
यूआस के तेईसवें बरस याहू के बेटे
यहूअखज ने समरून में इसराएल पर
राज्य करना आरंभ किया और सत्रह
२ बरस राज्य किया। और उस ने परमे-
श्वर की दृष्टि में बुराई किई और नबात
के बेटे यरुबिआम के पापों का पीछा किया
जिस ने इसराएल से पाप करवाया वह
३ उन से अलग न हुआ। तब परमेश्वर
का क्रोध इसराएल पर भड़का और उस ने
उन्हें अराम के राजा हजाएल की और
हजाएल के बेटे बिनहदद की उन के जीवन
४ भर सौंप दिया। और यहूअखज ने पर-
मेश्वर की बिनती किई और परमेश्वर
ने उस की सुनी क्योंकि उस ने इसराएल
का सताया जाना देखा क्योंकि अराम
५ का राजा उन्हें सताता था। और पर-
मेश्वर ने इसराएल को एक उद्धारक
दिया यहां लों कि वे अरामियों के बश
से निकल गये और इसराएल के संतान
आगे की नाईं अपने अपने डेरों में रहने
६ लगे। तथापि उन्हों ने यरुबिआम के घर
के पापों को न छोड़ा जिस ने इसराएल
से पाप करवाया परन्तु उसी चाल पर
चलता रहा और समरून में भी कुंज बना
७ रहा। और उस ने लोगों में से किसी
को यहूअखज के साथ न छोड़ा परन्तु
पचास घोड़चढ़े और दस रथ और दस
सहस्र पदातिक क्योंकि अराम के राजा ने
उन्हें नाश किया और उन्हें पीट पीटके
धूल की नाईं बनाया॥

८ अब यहूअखज की रही हुई क्रिया
और सब जो उस ने किया और उस का
पराक्रम क्या इसराएल के राजाओं के
समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं
९ लिखा है। और यहूअखज ने अपने
पितरों में शयन किया और उन्हों ने उसे
समरून में गाड़ा तब उस का बेटा यहू-
आश उस की सन्ती राजा हुआ॥

१० यहूदाह के राजा यूआस के सैंतीसवें बरस यहूअखज का बेटा यहूआश समरून में इसराएल पर राज्य करने लगा
११ सोलह बरस उस ने राज्य किया। और उस ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई वह नबात के बेटे यरुबिआम के सारे पापों से अलग न हुआ जिस ने इसराएल से पाप करवाया वह उस में
१२ चलता था। और यूआस की उबरी हुई क्रिया और सब जो उस ने किया और उस का पराक्रम जिस्से यहूदाह के राजा अमसियाह के बिरोध में लड़ता था सो क्या वे इसराएल के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं
१३ लिखे हैं। और यूआस ने अपने पितरों में शयन किया और यरुबिआम उस के सिंहासन पर बैठा और यूआस समरून में इसराएल के राजाओं में गाड़ा गया॥

१४ अब इलीशअ एक रोग से रोगी पड़ा जिस्से वह मर गया और इसराएल का राजा यूआस उस पास उतर आया और उस के मुंह पर रोके कहा कि हे मेरे पिता हे मेरे पिता इसराएल के रथ
१५ और उस के घोड़चढ़े। और इलीशअ ने उसे कहा कि धनुष बाण अपने हाथ में ले
१६ और उस ने धनुष बाण लिये। फिर उस ने इसराएल के राजा को कहा कि धनुष पर अपना हाथ धर और उस ने अपना हाथ धरा और इलीशअ ने राजा के
१७ हाथों पर अपने हाथ रक्खे। और उसे कहा कि पूरब की ओर की खिड़की खोल सो उस ने खोली तब इलीशअ ने कहा कि मार और उस ने मारा तब उस ने कहा कि यह परमेश्वर के बचाव का बाण और अराम से बचाव का बाण है क्योंकि तू अराम को अफीक में ऐसा
१८ मारेगा कि उन्हें मिटा डालेगा। फिर उस ने उसे कहा कि बाणों को ले और उस ने लिया तब उस ने इसराएल के राजा से कहा कि भूमि पर बाण मार और वह तीन बेर मारके रहि गया।
१९ तब ईश्वर के जन ने उस्से क्रुद्ध होके कहा उचित था कि पांच अथवा छः बेर मारता तब तू अराम को यहां लों मारता कि उन्हें मिटा डालता परन्तु अब तो तू अराम को तीन बेर मारेगा॥

२० तब इलीशअ मर गया और उन्हों ने उसे गाड़ा और बरस के आरंभ में मोआबियों की जथाओं ने देश को घेर
२१ लिया। और ऐसा हुआ कि जब वे एक जन को गाड़ते थे तो क्या देखते हैं कि एक जथा तब उन्हों ने उस मृतक को इलीशअ की समाधि में फेंका और वह गिरा और इलीशअ की लोथ पर पड़ा और वह जी उठा और अपने पांव से खड़ा हो गया॥

२२ परन्तु अराम का राजा हज़ाएल यहूअखज के जीवन भर इसराएलियों
२३ को सताता रहा। और परमेश्वर ने उन पर अनुग्रह किया और उन पर दयाल हुआ और उस ने अबिरहाम और इज़हाक और यअकूब से अपनी बाचा के कारण सुधि लिई और उन्हें नाश करने न चाहा और अपने आगे से अब लों दूर
२४ न किया। सो अराम का राजा हज़ाएल मर गया और उस के बेटे बिनहदद ने
२५ उस की सन्ती राज्य किया। और यहूअखज के बेटे यूआस ने हज़ाएल के बेटे बिनहदद के हाथ से उन नगरों को फेर लिया जो उस ने उस के पिता यहूअखज से लड़ाई में लिये थे और यूआस ने उसे तीन बेर मारा और इसराएलियों के नगर फेर लिये॥

चौदहवां पर्ब्ब।

इसराएल के राजा यहूअखज के बेटे यूआस के राज्य के दूसरे बरस यहूदाह

के राजा यहूआस का बेटा अमसियाह २ राजा हुआ। जब वह राज्य करने लगा तो पचीस बरस का था और उस ने यरूसलम में उनतीस बरस राज्य किया और उस की माता का नाम यहूअद्दान ३ यरूसलमी थी। और उस ने परमेश्वर की दृष्टि में भलाई किई तथापि अपने पिता दाऊद के समान नहीं परन्तु उस ने सब कुछ अपने पिता यूआस की ४ नाईं किया। तथापि ऊंचे स्थान दूर न किये गये अब लों लोग ऊंचे स्थानों पर बलिदान चढ़ाते थे और सुगंध जलाते ५ थे। और यों हुआ कि ज्यों राज्य उस के हाथ में स्थिर हुआ त्यों उस ने अपने सेवकों को मार डाला जिन्हों ने उस के ६ पिता राजा को मार डाला था। परन्तु घातकों के संतानों को घात न किया जैसा कि मूसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखा है जिस में परमेश्वर ने यह कहके आज्ञा किई थी कि बालकों के कारण पिता मारे न जावें और न पितरों के कारण बालक परन्तु हर एक जन अपने ही पाप के कारण मारा ७ जावेगा। उस ने नोन की तराई में दस सहस्र अदूमी को घात किया और सिला को लड़ाई में ले लिया और उस का नाम आज लों युक्तिएल रक्खा॥

८ तब अमसियाह ने याहू राजा के बेटे यहूअखज के बेटे यहूआस पास यह कहके दूत भेजा कि आ एक दूसरे के ९ मुंह परस्पर देखें। सो इसराएल के राजा यहूआस ने यहूदाह के राजा अमसियाह को कहला भेजा कि लुबनान की भटकटैया ने लुबनान के देवदार वृक्ष से कहला भेजा कि अपनी बेटी मेरे बेटे से ब्याह दे पर लुबनान के एक बनैले पशु ने उधर से जाते जाते १० उस भटकटैया को लताड़ा। निश्चय तू ने अदूम को मारा है और तेरे मन ने तुझे उभारा है बड़ाई कर और घर में रह जा अपनी घटती के लिये क्यों छेड़े कि तू अर्थात् यहूदाह समेत ध्वस्त होवे। ११ परन्तु अमसियाह ने उस की न सुनी इस लिये इसराएल का राजा यहूआस चढ़ गया और उस ने और यहूदाह के राजा अमसियाह ने बैत-शम्स में जो यहूदाह का है परस्पर मुंह देखा। १२ सो यहूदाह का राजा इसराएल के आगे ध्वस्त हुआ और उन में से हर एक अपने अपने तंबू को भागा। १३ और इसराएल के राजा यहूआस ने अखजयाह के बेटे यहूआस के बेटे यहू-दाह के राजा अमसियाह को बैतशम्स में पकड़ लिया और यरूसलम में आया और यरूसलम की भीत इफरायम के फाटक से लेके कोने के फाटक लों चार सौ हाथ ढा दिई। १४ और उस ने सारा सोना और चांदी और सारे पात्र जो परमेश्वर के मंदिर में और राजा के भंडारों में पाये ले लिये और ओल लेके समरून को फिर गये॥

१५ अब यहूआस की रही हुई क्रिया और उस का पराक्रम कि वह यहूदाह के राजा अमसियाह से क्योंकर लड़ा सो क्या इसराएली राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में लिखा हुआ नहीं है। १६ और यहूआस ने अपने पितरों में शयन किया और इसराएली राजाओं के संग समरून में गाड़ा गया और उस के बेटे यरुबिआम ने उस की सन्ती राज्य किया॥

१७ और यहूदाह के राजा यूआस का बेटा अमसियाह इसराएल के राजा यहू-अखज के बेटे यहूआस के मरने के पीछे पन्द्रह बरस जीया। १८ और अमसियाह की रही हुई क्रिया क्या वे यहूदाह के

राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में लिखी हुई नहीं हैं। १९ अब उन्हों ने यरूसलम में उस के बिरोध में युक्ति बांधी तब वह लकीस को भाग गया फिर उन्हों ने उस के पीछे लोग लकीस में भेजे और वहां उसे मार डाला। २० और वे उसे घोड़ों पर लाये और दाऊद के नगर में यरूसलम में उस के पितरों के संग गाड़ा ॥

२१ तब यहूदाह के सारे लोगों ने अजरियाह को जो सोलह बरस का था लेके उस के पिता अमसियाह की सन्ती २२ राजा किया। उस ने एलात का नगर बनाया और यहूदाह में मिला दिया उस के पीछे राजा ने अपने पितरों में शयन किया ॥

२३ और यहूदाह के राजा यूआस के बेटे अमसियाह के पन्द्रहवें बरस इसराएल के राजा यहूआस का बेटा यरुबिआम समरून में इसराएल के संतान पर राज्य करने लगा उस ने एकतालीस बरस राज्य २४ किया। और उस ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई नबात के बेटे यरुबिआम के सारे पापों के कारण जिस ने इसराएल से पाप करवाया छोड़ न दिया। २५ उस ने हमात की पैठ से लेके चौगान के समुद्र लों इसराएल के ईश्वर परमेश्वर के बचन के समान जो उस ने अपने सेवक आतहिफर के भविष्यद्वक्ता अमित्ते के बेटे यूनस के द्वारा से कहा था उस ने इसराएल के सिवाने को फेर २६ दिया। क्योंकि परमेश्वर ने इसराएल के कष्ट को देखा कि अति है क्योंकि न कोई बंधन में था न कोई छोड़ा गया और न कोई इसराएल का रक्षक २७ था। और परमेश्वर ने यह न कहा था कि मैं स्वर्ग के नीचे से इसराएल का नाम मिटाऊंगा परन्तु उस ने उन्हें यहूआस के बेटे यरुबिआम के द्वारा से बचाया ॥

२८ अब यरुबिआम की रही हुई क्रिया और सब जो उस ने किया और उस का पराक्रम कि क्योंकर लड़ा और दमिश्क को और यहूदाह के हमात को इसराएल के लिये फेर दिया सो क्या वे इसराएली राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में लिखे हुए नहीं हैं। २९ और यरुबिआम ने अपने पितरों में अर्थात् इसराएली राजाओं के संग शयन किया और उस के बेटे जकरियाह ने उस की सन्ती राज्य किया ॥

पंदरहवां पर्ब्ब ।

इसराएल के राजा यरुबिआम के सताईसवें बरस यहूदाह के राजा अमसियाह का बेटा अजरियाह राज्य २ करने लगा। जब वह राज्य पर बैठा तो सोलह बरस का था और उस ने यरूसलम में बावन बरस राज्य किया और उस की माता का नाम यकलियाह था जो यरूसलमी थी। ३ और उस ने अपने पिता अमसियाह की सारी क्रिया के समान परमेश्वर की दृष्टि में भलाई ४ किई। केवल यह कि ऊंचे स्थान दूर न किये गये और लोग अब लों ऊंचे स्थानों पर बलिदान चढ़ाते और धूप जलाते थे ॥

५ और परमेश्वर ने राजा को मारा कि वह मरने के दिन लों कोढ़ी रहा और घर में अलग रहता था और उस का बेटा यूताम घर का अध्यक्ष था और देश के लोगों का न्याय किया करता था ॥

६ और अजरियाह की उबरी हुई क्रिया और सब जो उस ने किया सो क्या वे यहूदाह के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में लिखे नहीं ७ हैं। सो अजरियाह ने अपने पितरों में

शयन किया और उन्हों ने दाऊद के नगर में उस के पितरों के संग उसे गाड़ा और उस के बेटे यूताम ने उस की सन्ती राज्य किया॥

८ यहूदाह के राजा अज़रियाह के अठतीसवें बरस यरुबिआम के बेटे जकरियाह ने इसराएल पर समरून में छ:
९ मास राज्य किया। और उस ने अपने पितरों के समान परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई नबात के बेटे यरुबिआम के पापों से जिस ने इसराएल से पाप
१० करवाया अलग न हुआ। और यबीस के बेटे सलूम ने उस के बिरोध में युक्ति बांधके लोगों के आगे मारा और उसे घात किया और उस की सन्ती राज्य किया॥

११ और जकरियाह की उबरी हुई क्रिया देखो वे इसराएल के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में लिखी हैं।
१२ परमेश्वर का यह बचन है जो वह याहू से कहके बोला कि तेरे बेटे चौथी पीढ़ी लों इसराएल के सिंहासन पर बैठेंगे वैसा ही संपूर्ण हुआ॥

१३ यहूदाह के राजा उज्ज़ियाह के राज्य के उनतालीसवें बरस यबीस के बेटे सलूम ने राज्य करना आरंभ किया और उस ने समरून में एक मास भर राज्य
१४ किया। क्योंकि जद्दी का बेटा मुनहिम तिरज़: से समरून पर चढ़ आया और यबीस के बेटे सलूम को समरून में मारा और उसे घात करके उस की सन्ती राज्य किया॥

१५ और सलूम की रही हुई क्रिया और उस की युक्ति जो उस ने बांधी सो देखो वे इसराएली राजाओं के समयों के
१६ समाचार की पुस्तक में लिखी हैं। तब मुनहिम ने तिफ़सह को उन सब समेत जो उस में थे तिरज़: से लेके उस के सिवाने लों मारा क्योंकि उन्हों ने उस के लिये न खोला इस लिये उस ने मारा और उस में की सारी गर्भिणी स्त्रियों का पेट फाड़ा॥

१७ यहूदाह के राजा अज़रियाह के उनतालीसवें बरस जद्दी के बेटे मुनहिम ने इसराएल पर राज्य करना आरंभ किया उस ने समरून में दस बरस राज्य
१८ किया। और परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई और नबात के बेटे यरुबिआम के पापों को जिस ने इसराएल से पाप करवाया अपने जीवन भर न छोड़ा।
१९ तब असूरियों का राजा फूल देश के बिरोध में चढ़ आया और मुनहिम ने चालीस लाख रुपये के लगभग फूल को दिया जिसतें उस का साथी होके उस
२० का राज्य स्थिर करे। और मुनहिम ने यह रोकड़ इसराएल से काढ़ी अर्थात् हर एक धनी से पचास शैकल चांदी लिई और असूरियों के राजा को दिया सो असूरियों का राजा फिर गया और देश में न ठहरा॥

२१ और मुनहिम की रही हुई क्रिया और सब जो उस ने किया सो क्या वे इसराएली राजाओं के समयों के समाचार
२२ की पुस्तक में नहीं लिखी हैं। और मुनहिम ने अपने पितरों में शयन किया और उस के बेटे फ़िकाहियाह ने उस की सन्ती राज्य किया॥

२३ यहूदाह के राजा अज़रियाह के पचासवें बरस मुनहिम का बेटा फ़िकाहियाह समरून में इसराएलियों पर राज्य करने लगा उस ने दो बरस राज्य
२४ किया। और परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई उस ने नबात के बेटे यरुबिआम के पापों को जिस ने इसराएल से पाप
२५ करवाया छोड़ न दिया। परन्तु उस के सेनापति रमलियाह के बेटे फ़िक: ने

उस के विरुद्ध युक्ति बांधी और उसे समरून में अरजूब और अरिया और जिलिअदी पचास मनुष्यों समेत राजा के भवन में मारा और उसे घात करके उस की सन्ती राज्य किया॥

२६ और फिकहियाह की रही हुई क्रिया और सब जो उस ने किया देखो वे इसराएल के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में लिखी हैं॥

२७ यहूदाह के राजा अजरियाह के बावनवें बरस में रमलियाह का बेटा फिकः समरून में इसराएल पर राज्य करने लगा और उस ने बीस बरस राज्य २८ किया। और उस ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई नबात के बेटे यरुबिआम के पापों से जिस ने इसराएल से पाप २९ करवाया अलग न हुआ। इसराएल के राजा फिकः के दिनों में असूर के राजा तिगलतपिलासर ने आके ऐयून को और अबीलबैतमअकः को और यूनहा को और कादिस को और हसूर को और जिलिअद को और जलील को और नफताली के सारे देश को लेके उन्हें ३० असूर को बंधुआई में ले गया। और एला के बेटे हूसीअ ने रमलियाह के बेटे फिकः के विरुद्ध में युक्ति बांधके उसे मारा और घात करके उज्जियाह के बेटे यूताम के बीसवें बरस उस की सन्ती राज्य किया॥

३१ और फिकः की रही हुई क्रिया और सब जो उस ने किया देखो वे इसराएल के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में लिखी हैं॥

३२ इसराएल के राजा रमलियाह के बेटे फिकः के दूसरे बरस यहूदाह के राजा उज्जियाह का बेटा यूताम राज्य ३३ करने लगा। जब उस ने राज्य करना आरंभ किया तो वह पचीस बरस का था और उस ने सोलह बरस यरूसलम में राज्य किया और उस की माता का नाम यरूसा था जो सदूक की बेटी ३४ थी। और उस ने परमेश्वर की दृष्टि में भलाई किई जो कुछ किया सो अपने बाप उज्जियाह के समान किया। ३५ तथापि ऊंचे स्थान अलग न किये गये अब लों लोग ऊंचे स्थानों पर बलि चढ़ाते और धूप जलाते थे उस ने परमेश्वर के मंदिर का ऊंचा फाटक बनाया॥

३६ अब यूताम की रही हुई क्रिया और सब जो उस ने किया सो क्या वे यहूदाह के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखी हैं। ३७ उन्हीं दिनों में परमेश्वर ने अराम के राजा रसीन को और रमलियाह के बेटे फिकः को यहूदाह पर भेजा। ३८ और यूताम ने अपने पितरों में शयन किया और अपने पिता दाऊद के नगर में अपने पितरों में गाड़ा गया और उस का बेटा आखज उस की सन्ती राज्य करने लगा॥

सोलहवां पर्व्व।

१ रमलियाह के बेटे फिकः के राज्य के सत्रहवें बरस यहूदाह के राजा यूताम का बेटा आखज राज्य करने लगा। २ जब आखज राज्य करने लगा तब वह बीस बरस का था और उस ने सोलह बरस यरूसलम में राज्य किया और उस ने परमेश्वर अपने ईश्वर की दृष्टि में अपने पिता दाऊद के समान भलाई न किई। ३ परन्तु वह इसराएल के राजाओं की चाल पर चलता था और उस ने भी अन्यदेशियों के घिनितों के समान जिन्हें परमेश्वर ने इसराएल के संतान के आगे से दूर किया था अपने बेटे को आग में से चलाया। ४ और ऊंचे ऊंचे स्थानों और पहाड़ों पर और हर एक हरे पेड़ के नीचे बलि चढ़ाये और धूप जलाये॥

५ तब अराम के राजा रसीन और इसराएल के राजा रमलियाह का बेटा फिक: यरूसलम पर लड़ने चढ़े और उन्हों ने आखज को घेर लिया परन्तु जीत न ६ सके । उसी समय अराम के राजा रसीन ने समरून के लिये ऐलात फेर लिया और यहूदियों को ऐलात से खेद दिया और अरामी ऐलात को आये और आज लों ७ उस में बस्ते हैं । और आखज ने असूर के राजा तिगलतपिलासर पास दूत के द्वारा से कहला भेजा कि मैं तेरा सेवक और तेरा बेटा सो आ और मुझे अराम के राजा के हाथ से और इसराएल के राजा के हाथ से जो मुझ पर चढ़ आये ८ हैं छुड़ा । और आखज ने सोना चांदी जो परमेश्वर के मंदिर में और राजा के घर के भंडारों में था लेके असूर के ९ राजा के लिये भेंट भेजी । और असूर के राजा ने उस का बचन माना क्योंकि असूर का राजा दमिश्क के बिरोध में चढ़ गया और उसे ले लिया और वहां के लोगों को बंधुआ करके कीर में लाया और रसीन को मार डाला ॥

१० तब राजा आखज असूर के राजा तिगलतपिलासर से भेंट करने दमिश्क को गया और दमिश्क में एक बेदी देखी और आखज राजा ने उस बेदी का डौल और रूप उस के समस्त कार्य्यकारी के समान ऊरियाह याजक के पास भेजा । ११ सो ऊरियाह याजक ने उन सभों के समान जो आखज ने दमिश्क से भेजा था एक बेदी बनाई और आखज राजा के दमिश्क से आते आते ऊरियाह १२ याजक ने बेदी को सिद्ध किया । और जब राजा दमिश्क से आया तो राजा ने बेदी को देखा और राजा बेदी पास १३ गया और उस पर चढ़ाया । और उस ने अपने बलिदान की भेंट और अपने होम की भेंट चढ़ाई और अपने पीने की भेंट उस पर ढाली और अपने कुशल की भेंट का लोहू बेदी पर छिड़का । और उस ने पीतल की उस बेदी को १४ जो परमेश्वर के आगे थी घर के साम्ने से अर्थात् बेदी के और परमेश्वर के घर के मध्य से लाके बेदी के उत्तर अलंग रक्खा । और राजा आखज ने ऊरियाह १५ याजक को आज्ञा करके कहा कि बिहान के बलिदान की भेंट और सांझ के होम की भेंट और राजा के बलिदान की भेंट और उस के होम की भेंट और देश के सारे लोगों के बलिदान की भेंट और उन के होम की भेंट और उन के पीने की भेंट जला और बलिदान की भेंट के सारे लोहू और बलि के सारे लोहू उस पर छिड़क और पीतल की बेदी मेरे बूझने के लिये होगी । यों ऊरियाह १६ याजक ने आखज राजा की आज्ञा के समान सब कुछ किया । और राजा १७ आखज ने आधार के कोरों को काट डाला और उन पर के स्नानपात्र को अलग किया और समुद्र को पीतल के बैलों पर से उतारके बिछे हुए पत्थरों पर रक्खा । और बिश्राम की छत को १८ जो उन्हों ने घर में बनाई थी और राजा के पैठ के बाहर बाहर असूर के राजा के लिये उस ने परमेश्वर के मंदिर से बाहर किया ॥

अब आखज की रही हुई क्रिया जो १९ उस ने किई सो क्या वे यहूदाह के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में लिखी नहीं हैं । और आखज ने अपने २० पितरों में शयन किया और अपने पितरों के संग दाऊद के नगर में गाड़ा गया और उस का बेटा हिजकियाह उस की सन्ती राज्य पर बैठा ॥

सत्रहवां पर्ब्ब।

१ यहूदाह के राजा आखज के बारहवें बरस एला का बेटा हूसीअ समरून में इसराएल पर राज्य करने लगा उस ने २ नव बरस राज्य किया। और उस ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई परन्तु इसराएल के राजाओं के समान नहीं ३ जो उस्से आगे थे। असूर का राजा शलमनाजर उस के बिरोध में चढ़ आया और हूसीअ उस का सेवक होके उसे भेंट देने लगा॥

४ और असूर के राजा ने हूसीअ में छल की युक्ति पाई क्योंकि उस ने मिस्र के राजा सो के पास दूतों को भेजा था और जैसा वह बरस बरस करता था असूर के राजा के पास भेंट न भेजी इस लिये असूर के राजा ने उसे बंधन में किया और उसे बन्दीगृह में डाला। ५ तब असूर का राजा सारे देश पर चढ़ गया और समरून पर आके तीन बरस ६ उसे घेरे रहा। हूसीअ के नवें बरस में असूर के राजा ने समरून को ले लिया और इसराएल को असूर में ले गया और उन्हें खलह और खबूर में जौजान नदी के पास और मादियों की बस्ती में बसाया॥

७ क्योंकि इसराएल के संतान ने परमेश्वर अपने ईश्वर के बिरोध में जिस ने उन्हें मिस्र की भूमि में से निकालके मिस्र के राजा फिरऊन के हाथ से मुक्ति दिई पाप किया अरु और देवों से डरते ८ थे। और अन्यदेशियों की बिधिन पर जिन्हें परमेश्वर ने इसराएल के संतान के आगे से दूर किया था और इसराएली राजाओं के जो उन्हों ने किई थीं ९ चलता था। और इसराएल के संतानों ने परमेश्वर अपने ईश्वर के बिरुद्ध छिप छिपके ठीक न किया और उन्हों ने अपनी सारी बस्तियों में पहरू के गर्गाज से लेके बाड़े के नगर लों ऊंचे ऊंचे स्थान बनाये। १० और हर एक पहाड़ पर और हर एक हरे पेड़ के नीचे मूर्त्तें स्थापित किईं और कुंज लगाये। ११ और अन्यदेशियों के समान जिन्हें परमेश्वर ने उन के आगे से दूर किया सारे ऊंचे स्थान में धूप जलाये और दुष्टता करके परमेश्वर को रिस दिलाया। १२ क्योंकि उन्हों ने मूर्त्ति पूजी जिन के बिषय में परमेश्वर ने उन्हें कहा था कि तुम यह काम मत कीजियो॥

१३ तद भी परमेश्वर ने सारे भविष्यद्वक्तों और सारे दर्शियों के द्वारा से इसराएल के संतान पर और यहूदाह के संतान पर यह कहके साक्षी दिई कि अपने बुरे मार्गों से फिरो और मेरी आज्ञाओं और मेरी बिधिन को सारी व्यवस्था के समान जो मैं ने तुम्हारे पितरों को आज्ञा किई और जिन्हें मैं ने अपने सेवक भविष्यद्वक्तों के द्वारा से तुम पास भेजा पालन करो। १४ तथापि उन्हों ने न माना परन्तु अपने पितरों के गले के समान जो परमेश्वर अपने ईश्वर पर बिश्वास न लाये थे अपने गले को कठोर किया। १५ और उन्हों ने उस की बिधिन को और उस की बाचा को जो उस ने उन के पितरों से किई और उस की साक्षियों को जो उस ने उन के बिरोध में साक्षी दिई थी त्याग किया। और व्यर्थ का पीछा किया और व्यर्थ होके अपने चारों ओर के अन्यदेशियों का पीछा किया जिन्हें परमेश्वर ने उन्हें चिता रक्खा था कि तुम उन के समान मत कीजियो। १६ और उन्हों ने परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञाओं को छोड़ दिया और अपने लिये ढाली हुई मूर्त्तें और दो बछियां बनाईं और एक कुंज लगाया और आकाश की

सारी सेना की पूजा किई और बअल
१६ की सेवा करते थे। और उन्हों ने अपने बेटों को और अपनी बेटियों को आग में से चलाया और आगम कहने और टोना करने लगे और परमेश्वर की दृष्टि में उसे रिसियाने के लिये और बुराई
१७ करने के लिये आप को बेचा। इस लिये
१८ परमेश्वर इसराएल पर निपट रिसाया और उन्हें अपनी दृष्टि से अलग किया और केवल यहूदाह की गोष्ठी को छोड़
१९ कोई न छूटा। यहूदाह के संतान ने भी परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञाओं को पालन न किया परन्तु इसराएल की बिधिन पर चलते थे॥

२० तब परमेश्वर ने इसराएल के सारे बंश को त्याग किया और उन्हें कष्ट दिया और उन्हें लुटेरों के हाथ में सौंप दिया यहां लों कि उस ने उन्हें अपनी दृष्टि
२१ से दूर किया। क्योंकि उस ने इसराएल को दाऊद के घराने से निकाल दिया और उन्हों ने नबात के बेटे यरुबिआम को राजा किया और यरुबिआम ने इसराएल को परमेश्वर का पीछा करने से दूर किया और उन से बड़ा पाप कर-
२२ वाया। क्योंकि इसराएल के संतान यरुबिआम के किये हुए सारे पापों पर
२३ चलते थे वे उन से अलग न हुए। यहां लों कि परमेश्वर ने इसराएल को अपनी दृष्टि से दूर किया जैसा उस ने अपने सारे दास भविष्यद्वक्तों के द्वारा से कहा था सो इसराएल अपने देश से निकाले जाके आज लों असूर में पहुंचाये गये॥

२४ और असूर के राजा ने बाबुल से और कूत से और अव्वा से और हमात से और सिफ़र्वाइम से लोगों को लाके समरून की बस्तियों में इसराएल के संतान की सन्ती बसाया और वे समरून के अधिकारी हुए और उस के नगरों में बसे।
२५ और जब वे आरंभ में वहां जा बसे तो परमेश्वर से न डरते थे इस लिये परमेश्वर ने उन में सिंहों को भेजा और वे
२६ उन्हें फाड़ने लगे। इस लिये यह कहके वे असूर के राजा से बोले कि जिन जातिगणों को तू ने उठा लिया है और समरून की बस्तियों में बसाया है इस देश के ईश्वर का व्यवहार नहीं जानते इस लिये उस ने उन में सिंह भेजे और देखो वे इस कारण उन्हें बधन करते हैं कि वे इस देश के ईश्वर का व्यव-
२७ हार नहीं जानते हैं। तब असूर के राजा ने यह आज्ञा किई कि उन याजकों में से जिन्हें तुम वहां से यहां ले आये हो एक को वहां ले जाओ कि वह जाके वहां रहा करे और उस देश के ईश्वर का व्यवहार उन्हें सिखावे।
२८ तब उन याजकों में से जिन्हें वे समरून से ले गये थे एक आया और बैतएल में रहा और उन्हें परमेश्वर का डर सिखा-
२९ या। परन्तु हर एक जाति ने अपने अपने देव बनाये और उन्हें ऊंचे स्थानों के घरों में जो समरूनियों ने बनाये थे रक्खा हर एक जाति अपने अपने रहने के
३० नगरों में। और बाबुल के मनुष्यों ने सुक्कातबिनात बनाया और कूत के मनुष्यों ने नेरगल बनाया और हमात के मनुष्यों
३१ ने असीमा बनाया। और अव्वियों ने निबहज और तरताक बनाये और सिफ़र्वियों ने अपने बालकों को अद-रम्मलिक और अदनम्मलिक सिफ़र्वियों के देवों के लिये आग में जला दिया।
३२ सो वे परमेश्वर से डरे और उन्हों ने अपने लिये सब में से लेके ऊंचे स्थानों का याजक बनाया जो उन के लिये ऊंचे स्थानों के घरों में बलिदान चढ़ाते
३३ थे। वे परमेश्वर से डरते थे और उन जातिगणों के समान जिन्हें वे वहां से

ले गये थे अपने ही देवों की सेवा करते थे ॥

३४ आज के दिन लों वे अगली बिधि और व्यवहार पर चलते हैं क्योंकि वे परमेश्वर से नहीं डरते और उन की बिधिन पर और व्यवस्था और आज्ञा पर जो परमेश्वर ने यअकूब के संतान के लिये आज्ञा किई जिस का नाम उस ३५ ने इसराएल रक्खा नहीं चलते। जिस्से परमेश्वर ने एक बाचा बांधी और यह कहके उन्हें चिताया कि तुम और देवों से मत डरो और उन के आगे प्रणाम मत करो और उन की सेवा मत करो और उन के लिये बलि मत चढ़ाओ। ३६ परन्तु तुम परमेश्वर से जिस ने अपनी बड़ी सामर्थ्य से और अपनी बढ़ाई हुई भुजा से तुम्हें मिस्र के देश से निकाल लाया डरियो और तुम उसी की सेवा कीजियो और उस के लिये बलि चढ़ाइयो। ३७ और उन व्यवहारों और बिधिन और व्यवस्था और आज्ञा को जो उस ने तुम्हारे लिये लिखवाये तुम सदा लों मानियो और और देवों से मत डरियो। ३८ और उस बाचा को जो मैं ने तुम से किई है मत भूलियो और और देवों से ३९ मत डरियो। परन्तु परमेश्वर अपने ईश्वर से डरियो और वही तुम्हारे सारे बैरियों के हाथ से तुम्हें छुड़ावेगा। ४० तथापि उन्हों ने न सुना परन्तु अपने अगिले व्यवहारों पर चलते थे ॥

४१ सो इन जातिगणों ने परमेश्वर का भय न रक्खा और अपनी खोदी हुई मूर्त्तों की सेवा किई उन के लड़के और उन के लड़कों के लड़के भी अपने पितरों के समान आज के दिन लों करते हैं ॥

अठारहवां पर्व्व।

१ और एला के बेटे हूसीअ इसराएल के राजा के तीसरे बरस यहूदाह के राजा आख़ज का बेटा हिजकियाह राजा २ हुआ। जब वह राजा हुआ तब पचीस बरस का था और उस ने उन्तीस बरस यरूसलम में राज्य किया और उस की माता का नाम अबी था जो जकरियाह ३ की बेटी थी। और उस ने अपने पिता दाऊद के समान परमेश्वर की दृष्टि में ४ सब बात में भलाई किई। उस ने ऊंचे स्थानों को ढा दिया और मूर्त्तों को तोड़ा और कुंजों को काट डाला और उस पीतल के सांप को जो मूसा ने बनाया था तोड़के टुकड़ा टुकड़ा किया क्योंकि इसराएल के सन्तान उस समय लों उस के आगे धूप जलाते थे और उस ने उस का नाम पीतल का सांप ५ रक्खा। और परमेश्वर इसराएल के ईश्वर पर भरोसा रखता था यहां लों कि उस के पीछे यहूदाह के सब राजाओं में ऐसा कभी न हुआ और न उस्से आगे ६ कोई हुआ था। क्योंकि वह परमेश्वर से लवलीन रहा और उस के पीछे से अलग न हुआ परन्तु उस ने उन आज्ञाओं की जो परमेश्वर ने मूसा से किई थीं पालन किया ॥

७ और परमेश्वर उस के साथ था वह जहां कहीं जाता था भाग्यवान होता था और असूर के राजा के बिरोध में फिर गया और उस की सेवा न किई। ८ उस ने फिलिस्तियों को अज्जः लों और उस के सिवानों के अन्त लों रखवालों के गर्गज से लेके घेरित नगर लों मारा ॥

९ और हिजकियाह राजा के चौथे बरस जो इसराएल के राजा एला के बेटे हूसीअ के सातवें बरस था यों हुआ कि असूर के राजा शलमनाजर के बिरोध पर चढ़ आया और उसे घेर लिया। और १० तीसरे बरस के अन्त में उन्हों ने उसे ले

लिया और हिजकियाह के छठवें बरस जो इसराएल के राजा हूसीअ का नवां
११ बरस है समरून लिया गया। और असूर का राजा इसराएलियों को असूर को ले गया और उन्हें खलह में और खबूर में जो जौजान की नदी के लग है और
१२ मादियों के नगरें में रक्खा। यह इस लिये हुआ कि उन्हों ने परमेश्वर अपने ईश्वर की बात न मानी परन्तु उस की बाचा को और उन सभों को जो परमेश्वर के दास मूसा ने कहा था टाल दिया और न सुनते थे और न करते थे॥

१३ और हिजकियाह राजा के राज्य के चौदहवें बरस असूर के राजा सनहेरीब ने यहूदाह के सारे बाड़ित नगरों पर
१४ चढ़ आके उन्हें ले लिया। तब यहूदाह के राजा हिजकियाह ने असूर के राजा को जो लकीस में था कहला भेजा कि मुझ से अपराध हुआ मुझ से फिर जाइये जो कुछ तू मुझ पर धरेगा मैं उठाऊंगा और उस ने यहूदाह के राजा हिजकियाह पर तीन सौ तोड़े चांदी और तीस तोड़े
१५ सोना ठहराये। और हिजकियाह ने सारी चांदी जो परमेश्वर के मन्दिर में और राजा के घर के भंडारों में पाई
१६ गई उसे दिई। उस समय हिजकियाह ने परमेश्वर के मन्दिर के द्वारों का और खंभों पर का सोना जो यहूदाह के राजा हिजकियाह ने उन पर मढ़ा था काट काटके असूर के राजा को दिया॥

१७ तब असूर के राजा ने तरतान को और रबसारीस को और रब्बसाकी को लकीस से भारी सेना सहित यरूसलम के बिरोध में भेजा और वे चढ़े और यरूसलम को आये और आके ऊपर कुंड के पनाले के लग जो धोबी के खेत के
१८ मार्ग में है खड़े हुए। और जब उन्हों ने राजा को बुलाया तब खिलकियाह का बेटा इलयकीम जो घराने पर था और शबना लेखक और आसफ का बेटा यूआख स्मारक उन पास आये॥

१९ तब रब्बसाकी ने उन्हें कहा कि तुम हिजकियाह से कहो कि महाराज असूर का राजा यों कहता है कि यह क्या
२० आसरा है जो तू रखता है। तू केवल होंठों की बात कहता है कि मुझ में परामर्श और युद्ध का पराक्रम है सो अब तू किस पर भरोसा रखता है कि
२१ मुझ से फिर जाता है। अब देख तू उस मसले हुए सेंठे के दंड पर अर्थात् मिस्र पर भरोसा रखता है यदि कोई उस पर ओठंगे तो वह उस के हाथ में गड़ जावेगा और उसे बेधेगा सो मिस्र का राजा फिरऊन उन सब के लिये जो उस पर भरोसा रखते हैं ऐसा ही है।
२२ परन्तु यदि तू मुझे कहे कि हमारा भरोसा परमेश्वर अपने ईश्वर पर है क्या वही नहीं जिस के ऊंचे स्थानों को और जिस की बेदियों को हिजकियाह ने अलग किया और यहूदाह और यरूसलम को कहा है कि तुम यरूसलम में इस
२३ बेदी के आगे सेवा करो। सो अब असूर के राजा मेरे प्रभु को ओल दीजिये और मैं तुझे दो सहस्र घोड़े देऊंगा यदि तुझ में यह शक्ति हो कि तू
२४ चढ़वैयों को उन पर बैठावे। सो किस रीति से तू मेरे प्रभु के सेवकों में से सब से छोटे प्रधान का मुंह फेरेगा और मिस्र पर रथों के और घोड़चढ़ों के लिये
२५ भरोसा रक्खे। अब क्या मैं इस स्थान के नाश करने को बिना परमेश्वर के आया हूं परमेश्वर ने मुझे कहा कि उस देश पर चढ़ जा और उसे नाश कर॥

२६ तब खिलकियाह का बेटा इलयकीम और शबना और यूआख ने रब्बसाकी से कहा कि मैं तेरी बिनती करता हूं कि

अपने दासों से अरामी भाषा में कहिये क्योंकि उसे हम समझते हैं और यहूदियों की भाषा में हम से भीत पर के लोगों २७ के कान में न कहिये। परन्तु रब्बसाकी ने उन्हें कहा कि क्या मेरे प्रभु ने मुझे तेरे प्रभु के अथवा तुझ पास ये बातें कहने को भेजा है क्या उस ने मुझे उन लोगों पास जो भीत पर बैठे हैं नहीं भेजा जिसतें वे तुम्हारे साथ अपना ही मल मूत्र खावें पीवें ॥

२८ तब रब्बसाकी खड़ा होके यहूदियों की भाषा में ललकारके बोला और कहा कि असूर के राजा महाराज का बचन २९ सुनो। राजा यह कहता है कि हिजकियाह तुम्हें छल न देवे क्योंकि वह मेरे हाथ से तुम्हें छुड़ा नहीं सक्ता। ३० और हिजकियाह तुम्हें यह कहके परमेश्वर का भरोसा न दिलावे कि परमेश्वर निश्चय हमें छुड़ावेगा और यह नगर असूर के राजा के हाथ में सौंपा ३१ न जावेगा। हिजकियाह की मत सुनो क्योंकि असूर का राजा यों कहता है कि मुझे भेंट देके मुझ पास निकल आओ और तुम्में से हर एक अपने अपने दाख में से और अपने अपने गूलर पेड़ में से खावे और अपने अपने कुंड का पानी पीवे। ३२ जब लों मैं आऊं और तुम्हें यहां से एक देश में जो तुम्हारे देश की नाईं है ले जाऊं वह अन्न और दाखरस का देश रोटी और दाख की बारी का देश जलपाई के तेल और मधु का देश है जिसतें तुम जीओ और न मरो और हिजकियाह की मत सुनो जब वह यह कहके तुम्हारा बोध करता है कि पर- ३३ मेश्वर हमें बचावेगा। भला जातिगणों के देवों में से किसी ने भी अपने देश को असूर के राजा के हाथ से छुड़ाया ३४ है। हमत और अरफाद के देव कहां हैं और सिफ्रवाइम हेना और ऐवा के देव कहां क्या उन्हों ने समरून को मेरे हाथ से छुड़ाया है। देशों के सारे देवों ३५ में वे कौन जिन्हों ने अपने देश मेरे हाथ से छुड़ाये जो परमेश्वर यरूसलम को मेरे हाथ से छुड़ावे ॥

परन्तु लोग चुपके रहे और उस के ३६ उत्तर में एक बात न कही क्योंकि राजा की आज्ञा यों थी कि उसे उत्तर मत दीजियो ॥

तब खिलकियाह का बेटा इलयकीम ३७ जो घराने पर था और शबना लेखक और आसफ स्मारक का बेटा यूआख अपने कपड़े फाड़े हुए हिजकियाह के पास आये और रब्बसाकी की बातें उस्से कहीं ॥

उन्नीसवां पर्ब्ब ।

और ऐसा हुआ कि जब हिजकियाह १ राजा ने यह सुना तब अपने कपड़े फाड़े और टाटबस्त्र ओढ़के परमेश्वर के मन्दिर में गया। तब उस ने इलय- २ कीम को जो घराने पर था और शबना लेखक और याजकों के प्राचीनों को टाटबस्त्र ओढ़े हुए अमूस के बेटे यशाअयाह भविष्यद्वक्ता पास भेजा। और उन्हों ने ३ उसे कहा कि हिजकियाह यों कहता है कि आज दुःख और दपट और खिझाव का दिन है क्योंकि बालक उत्पन्न होने पर हैं और जन्ने की सामर्थ्य नहीं। क्या जाने परमेश्वर तेरा ईश्वर ४ रब्बसाकी की सब बातें सुनेगा जिसे उस के स्वामी असूर के राजा ने जीवते ईश्वर की निन्दा करने को भेजा है और जिन बातों को परमेश्वर तेरे ईश्वर ने सुना है उन पर दोष देवे इस लिये तू बचे हुओं के कारण प्रार्थना करेगा ॥

सो हिजकियाह के सेवक यशाअयाह ५ पास आये। तब यशाअयाह ने उन्हें ६

कहा कि तुम अपने स्वामी से यों कहो कि परमेश्वर यह कहता है कि उन बातों से जिन्हें असूर के राजा के सेवकों ने मेरे विषय में पाषंड कहा है मत डर। ७ देख मैं उस पर एक झोंका भेजूंगा और वह एक कोलाहल सुनके अपने ही देश को फिर जावेगा और मैं उसे उसी के देश में तलवार से मरवा डालूंगा॥

८ सो रब्बसाकी फिर गया और उस ने असूर के राजा को लिबनः से लड़ते पाया क्योंकि उस ने सुना था कि वह ९ लकीश से चला गया। जब उस ने यह कहते सुना कि देखिये कूश के राजा तिरहाकः ने तुझ पर चढ़ाई किई तब उस ने दूतों के द्वारा से हिज़कियाह को १० फेर कहला भेजा। यहूदाह के राजा हिज़कियाह से यों कहियो कि तेरा ईश्वर जिस पर तू भरोसा रखता है यह कहके तुझे छल न देवे कि यरूसलम असूर के ११ राजा के हाथ में सौंपा न जावेगा। देख तू ने सुना है कि असूर के राजाओं ने सारे देशों को सर्वथा नाश करके क्या १२ किया और क्या तू बच जावेगा। क्या उन जातिगणों के देव जिन्हें मेरे पितरों ने नाश किया है उन्हें छुड़ा सके अर्थात् जौज़ान और हरान और रसफ और अदन के संतान जो तिलासर में थे। १३ हमात के राजा और अरफाद के राजा और सिफ़र्वाइम के नगर का राजा हेना और ऐवा के कहां हैं॥

१४ सो हिज़कियाह ने दूतों के हाथों से पत्रियां पाईं और उन्हें पढ़के परमेश्वर के मन्दिर में चढ़ गया और परमेश्वर के १५ आगे फैलाया। और हिज़कियाह ने परमेश्वर के आगे प्रार्थना करके कहा कि हे परमेश्वर इसराएल के ईश्वर जिस का सिंहासन करोबीम पर है केवल तू ही सारी पृथिवी के राज्यों का ईश्वर है तू ही ने स्वर्ग और पृथिवी को सिर्जा १६ है। हे परमेश्वर अब अपना कान धरके सुन हे परमेश्वर अपनी आंखें खोल और देख और सनहेरीब की बातों को जो उस ने जीवते ईश्वर की निन्दा के लिये कहला भेजी हैं सुन। सच है हे पर- १७ मेश्वर कि असूर के राजाओं ने जातिगणों को और उन के देशों को नाश १८ किया। और उन के देवों को आग में डाला क्योंकि वे देव न थे परन्तु मनुष्यों के हाथों के कार्य्य लकड़ी और पत्थर इसी लिये उन्हों ने उन्हें नाश किया। १९ और अब हे परमेश्वर हमारे ईश्वर मैं तेरी बिनती करता हूं तू हमें उस के हाथ से बचा ले जिसतें पृथिवी के सारे राज्य जानें कि परमेश्वर ईश्वर केवल तू ही है॥

२० तब अमूस के बेटे यसायाह ने हिज़कियाह को कहला भेजा कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि जो कुछ तू ने असूर के राजा सनहेरीब के विरोध में प्रार्थना किई है मैं २१ ने सुनी है। यह वह बचन है जो परमेश्वर ने उस के विषय में कहा है कि सैहून की कुंआरी बेटी ने तेरी निन्दा किई और तुझ पर हंसी और यरूसलम २२ की बेटी ने तुझ पर सिर धुना। तू ने किस की निन्दा किई और पाषंड कहा है और तू ने किस पर शब्द उठाया और आंखें चढ़ाके ऊपर किईं अर्थात् इसराएल २३ के पवित्रमय के विरोध में। तू ने अपने दूतों के द्वारा से प्रभु की निन्दा करके कहा है कि मैं अपने रथों की बहुताई से पहाड़ों की ऊंचाई पर और लुबनान की अलंगों पर चढ़ा और वहां के ऊंचे ऊंचे देवदार पेड़ को और चुने हुए सरो पेड़ को काट डालूंगा और मैं उस के सिवानों के निवासों में और उस के बन

वह बारह बरस का था और उस ने पचपन बरस यरूसलम में राज्य किया और उस की माता का नाम हिफ्सिबा २ था। और उस ने अन्यदेशियों के घिनितों के समान जिन्हें परमेश्वर ने इसराएल के सन्तान के आगे से दूर किया था परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई। ३ क्योंकि उस ने उन स्थानों को जिन्हें उस के पिता हिज़्कियाह ने ढाया था फिर बनाया और उस ने बअल के लिये बेदियां स्थापित किईं और एक कुंज लगाया जैसा कि इसराएल के राजा अखिअब ने किया था और स्वर्ग की सारी सेना को पूजा करके उन की सेवा ४ किई। और उस ने परमेश्वर के उस मन्दिर में जिस के विषय में परमेश्वर ने कहा था कि मैं यरूसलम में अपना ५ नाम रक्खूंगा बेदियां बनाईं। और उस ने परमेश्वर के मन्दिर के आंगनों में स्वर्ग की सारी सेनाओं के लिये बेदियां ६ बनाईं। और उस ने अपने बेटे को आग में से चलाया और मुहूर्तों को मानता था और टोना करता था और भूतहों और ओझों से ब्यवहार रखता था और परमेश्वर की दृष्टि में बहुत ही दुष्टता करके उसे रिस दिलाया। ७ और उस ने कुंज की एक खोदी हुई मूर्त्ति बनाके परमेश्वर के मन्दिर में स्थापित किई जिस के विषय में परमेश्वर ने दाऊद और उस के बेटे सुलेमान से कहा था कि इस मन्दिर में और यरूसलम में जिसे मैं ने इसराएल की सारी गोष्ठियों में से चुन लिया है मैं ८ अपना नाम सदा लों रक्खूंगा। और मैं इसराएल के पांव को इस भूमि से जो मैं ने उन के पितरों को दिई है कधी न डोलाऊंगा केवल यदि वे मेरी सारी आज्ञाओं के समान चलें और सारी ब्यवस्था के समान जो मेरे सेवक मूसा ने उन्हें दिई मानें। ९ पर उन्हों ने न माना और मुनस्सी ने उन्हें फुसलाके उन जातिगणों से जिन्हें परमेश्वर ने इसराएल के सन्तान के आगे से नष्ट किया अधिक बुराई करवाई॥

१० सो परमेश्वर अपने सेवक भविष्यद्वक्तों ११ के द्वारा से कहके बोला। इस कारण कि यहूदाह के राजा मुनस्सी ने ये सारे घिनित काम किये और अमूरियों से जो उस्से आगे थे अधिक बुराई किई और यहूदाह से अपनी मूर्त्तों के कारण पाप १२ करवाये। इस लिये परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि देखो मैं यरूसलम पर और यहूदाह पर ऐसी बिपत्ति लाता हूं कि उस का समाचार जिस के कान लों पहुंचेगा उस के दोनों १३ कान झंझना उठेंगे। और मैं यरूसलम पर समरून की डोरी और अखिअब के घराने का साहुल डालूंगा और मैं यरूसलम को ऐसा पोंछूंगा जैसे कोई बासन १४ को पोंछता है और औंधा देता है। और उन के अधिकार के बचे हुओं को अलग करूंगा और उन्हें उन के बैरियों के हाथ में सौंपूंगा और वे अपने सारे १५ बैरियों के लिये अहेर और लूट होंगे। क्योंकि उन्हों ने मेरी दृष्टि में बुराई किई और जिस दिन से उन के पितर मिस्र से निकले उन्हों ने आज लों मुझे १६ रिस दिलाई। और इस्से अधिक मुनस्सी ने बहुत निर्दोष लोहू बहाया यहां लों कि उस ने यरूसलम को एक सिरे से दूसरे सिरे लों भर दिया यह उस पाप से अधिक है जो परमेश्वर की दृष्टि में यहूदाह से बुराई करवाई॥

१७ और मुनस्सी की रही हुई क्रिया और सब कुछ जो उस ने किया और यह कि उस ने कैसे पाप किये सो क्या वे

यहूदाह के राजाओं के समयों की पुस्तक १८ में लिखी नहीं हैं। और मुनस्सी ने अपने पितरों में शयन किया और अपने घर की बाटिका में उज्जा की बाटिका में गाड़ा गया और उस का बेटा अमून उस की सन्ती राज्य पर बैठा॥

१९ जब अमून राज्य करने लगा तब बाईस बरस का था उस ने यरूसलम में दो बरस राज्य किया और उस की माता का नाम मुशल्लिमत था जो युतब: के २० हरूस की बेटी थी। और उस ने परमेश्वर की दृष्टि में अपने पिता मुनस्सी २१ के समान बुराई किई। और वह अपने पिता की सारी चाल पर चला किया और अपने पिता की मूर्त्तों की प्रार्थना २२ करके उन की पूजा किई। और उस ने परमेश्वर अपने पितरों के ईश्वर को त्यागा और परमेश्वर के मार्ग पर न २३ चला। और अमून के सेवकों ने उस के बिरोध में युक्ति बांधके राजा को उसी २४ के घर में घात किया। और देश के लोगों ने उन सब को घात किया जिन्हों ने अमून राजा के बिरुद्ध युक्ति बांधी और देश के लोगों ने उस के बेटे यूसियाह का उस के स्थान पर राजा किया॥

२५ और अमून की रही हुई क्रिया जो उस ने किई सो क्या वे यहूदाह के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक २६ में लिखी नहीं हैं। और वह अपनी समाधि में उज्जा की बाटिका में गाड़ा गया और उस का बेटा यूसियाह उस की सन्ती राज्य पर बैठा॥

बाईसवां पर्ब्ब।

१ जब यूसियाह राज्य करने लगा तो आठ बरस का था और उस ने एकतीस बरस यरूसलम में राज्य किया और उस की माता का नाम यदीदा था जो २ बुसकत के अदायाह की बेटी थी। और उस ने परमेश्वर की दृष्टि में भलाई किई और अपने पिता दाऊद की सारी चालों पर चलता था और दहिनी अथवा बाईं ओर न मुड़ा॥

३ और यूसियाह के अठारहवें बरस यों हुआ कि राजा ने मुसल्लम के बेटे असलियाह के बेटे साफन लेखक को परमेश्वर के मन्दिर में कहला भेजा। ४ कि तू प्रधान याजक खिलकियाह पास जा कि वह परमेश्वर के मन्दिर की चांदी का लेखा करे जो द्वारपालों ने ५ लोगों से एकट्ठा किया। और वे उन्हें कार्य्यकारियों के हाथ में सौंपें जो परमेश्वर के मन्दिर के करोड़े हैं और वे उन्हें परमेश्वर के मन्दिर के कार्य्यकारियों को देवें कि वे मन्दिर के दरारों ६ को सुधारें। अर्थात् बढ़ैयों को और थवैयों को और पथरियों को और लट्ठों के और गढ़े हुए पत्थर मोल लेने के ७ लिये जिसतें घर सुधारें। तिस पर भी रोकड़ का लेखा जो उन के हाथ में दिया गया था उन से न लिया जाता था क्योंकि वे धर्म्म से व्यवहार करते थे॥

८ और प्रधान याजक खिलकियाह ने साफन लेखक को कहा कि मैं ने परमेश्वर के मन्दिर में व्यवस्था की पुस्तक पाई है और खिलकियाह ने वह पुस्तक साफन को दिई और उस ने ९ उसे पढ़ा। और साफन लेखक राजा पास आया और राजा को संदेश पहुंचाया कि तेरे सेवकों ने वह रोकड़ जो ईश्वर के मन्दिर में पाई गई पिघलाई है और उसे कार्य्यकारियों के हाथ सौंपी है जो १० परमेश्वर के घर के करोड़े हैं। और साफन लेखक ने राजा से कहा कि खिलकियाह याजक ने मुझे एक पुस्तक दिई है और साफन ने उसे राजा के ११ आगे पढ़ा। और राजा ने ज्यों उस

पुस्तक के अभिप्राय को सुना त्यों अपने १२ कपड़े फाड़े । और राजा ने खिलकियाह याजक और साफन के बेटे अखीआम और मीका के बेटे अखबूर और साफन लेखक और राजा के सेवक असायाह १३ को आज्ञा देके कहा । कि तुम जाओ मेरे और लोगों के और सारे यहूदाह के लिये परमेश्वर से इस पुस्तक के बचन के बिषय में जो पाया गया है पूछो क्योंकि परमेश्वर का कोप हम पर निपट भड़का है इस कारण कि उन सभों के समान जो हमारे बिषय में लिखा है हमारे पितरों ने इस पुस्तक के बचन को पालन करने को नहीं सुना है ॥

१४ और खिलकियाह याजक और अखीआम और अखबूर और साफन और असायाह हुलदा आगमबक्तानी पास गये जो हरहास के बेटे तिकव: के बेटे सलूम बस्त्रों के रखवैये की पत्नी थी अब वह यरूसलम में एक दूसरे स्थान में रहती थी और उन्हों ने उस्से बात-१५ चीत किई । और उस ने उन्हें कहा कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि तुम उस पुरुष से जिस ने १६ तुम्हें मुझ पास भेजा है कहो । कि परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं इस स्थान पर और उस के निवासियों पर उस पुस्तक की सारी बातें जो यहूदाह के राजा ने पढ़ी हैं अर्थात् बुराई १७ लाऊंगा । क्योंकि उन्हों ने मुझे त्यागा है और और देवों के लिये धूप जलाया है जिसतें अपने हाथों के सारे कामों से मुझे रिस दिलावें इस लिये मेरा कोप इस स्थान के बिरोध भड़केगा और १८ बुझाया न जावेगा । परन्तु यहूदाह के राजा को जिस ने तुम्हें परमेश्वर से बूझने को भेजा उसे यों कहियो कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि जो बचन तू ने सुने हैं । इस १९ कारण कि तेरा मन कोमल था और परमेश्वर के आगे तू ने आप को नम्र किया है जब तू ने सुना जो मैं ने इस स्थान के और उस के निवासियों के बिरोध में कहा कि वे उजाड़ित और स्रापित होंगे और अपने कपड़े फाड़े हैं और मेरे आगे बिलाप किया परमेश्वर कहता है कि मैं ने भी सुना है । इस २० लिये देख मैं तुझे तेरे पितरों के साथ बटोरूंगा और तू अपनी समाधि में कुशल से समेटा जावेगा और सारी बुराई को जो मैं इस स्थान पर लाऊंगा तेरी आंखें न देखेंगी तब वे राजा पास फेर संदेश लाये ॥

तेईसवां पर्व्व ।

तब राजा ने भेजके यहूदाह और १ यरूसलम के सारे प्राचीनों को अपने पास एकट्ठा किया । और राजा और २ यहूदाह के सारे लोग और यरूसलम के सारे निवासी और याजकों और भविष्यद्वक्ता और सारे लोग छोटे से बड़े लों परमेश्वर के मन्दिर को उस के संग चढ़ गये और बाचा की पुस्तक के बचन को जो परमेश्वर के मन्दिर में पाया गया था उस ने उन्हें पढ़ सुनाया । और पर- ३ मेश्वर का पीछा करने को और उस की आज्ञाओं को और उस की साक्षियों को और उस की बिधिन को अपने सारे मन और सारे जीव से पालन करने को इस बाचा के बचन को जो इस पुस्तक में लिखा है राजा ने खंभे के लग खड़ा होके परमेश्वर के आगे बाचा बांधी और सारे लोग इस बाचा पर खड़े हुए ॥

तब राजा ने प्रधान याजक खिल- ४ कियाह को और दूसरी पांती के याजकों को और द्वारपालों को आज्ञा किई कि

परमेश्वर के मन्दिर में से सारे पात्र जो बअल के लिये और अश्तरूत के और सारी स्वर्गीय सेनाओं के लिये बनाये गये थे बाहर निकलवाये और उस ने यरूसलम के बाहर किदरून के खेतों में उन्हें जला दिया और उन की राख ५ को बैतएल में पहुंचा दिया। और उन देवपूजक याजकों को जिन्हें यहूदाह के राजाओं ने यहूदाह के नगरों के ऊंचे स्थानों में और यरूसलम के चारों ओर के स्थानों में धूप जलाने के लिये ठहराया था उन सब समेत जो बअल के और सूर्य्य के और चन्द्रमा के और नक्षत्रों के और स्वर्गीय सारी सेनाओं के लिये धूप ६ जलाते थे रोक लिया। और वह उस अश्तरूत को परमेश्वर के मन्दिर से निकालके यरूसलम के बाहर किदरून के नाले पर लाया और उसे किदरून के नाले पर जला दिया और उसे लताड़के बुकनी किया और उस बुकनी को लोगों के संतान की समाधि पर फेंक दिया। ७ और उस ने गांडुओं के घरों को जो परमेश्वर के घर से मिले हुए थे जिन में स्त्रियां कुंज के लिये घूंघट बुनतियां ८ थीं ढा दिया। और उस ने यहूदाह के सारे नगरों के याजकों को एकट्ठे किया और उन ऊंचे स्थानों को जहां याजकों ने सुगन्ध जलाया था जिबअ से बिअर-सबअ लों अशुद्ध किया और फाटकों के ऊंचे स्थानों को जो नगर के अध्यक्ष यहूशूअ के फाटक की पैठ में थे जो नगर के फाटक की बाईं ओर है ढा ९ दिया। तथापि ऊंचे स्थानों के याजक यरूसलम में परमेश्वर की बेदी के पास चढ़ न आये परन्तु उन्हों ने अखमीरी रोटी अपने भाइयों के साथ खाई थी। १० और उस ने तुफत को जो हिन्नुम के संतान की तराई में है अशुद्ध किया जिसतें कोई अपने बेटा बेटी को आग में से मोलक को न पहुंचावे। और उस ११ ने उन घोड़ों को जो यहूदाह के राजाओं ने सूर्य्य को चढ़ाये थे परमेश्वर के मन्दिर की पैठ में से जो नतनमालक प्रधान की कोठरी के लग जो आसपास में था दूर किया और सूर्य्य के रथ को भस्म किया। और उन बेदियों को जो १२ आखज की उपरौठी कोठरी पर थीं जिन्हें यहूदाह के राजाओं ने बनाया था और उन बेदियों को जिन्हें मुनस्सी ने परमेश्वर के मन्दिर के दो आंगनों में बनाया था राजा ने उन्हें चूर करके दूर किया और उन की राख को किदरून नाले में फेंक दिया। और जो जो ऊंचे १३ स्थान यरूसलम के आगे जो सड़ाहट के पहाड़ की दहिनी ओर थे जिन्हें इसराएल के राजा सुलेमान ने सैदानियों के घिनित अश्तरूत के और मोआबियों के घिनित कमूस के और अम्मून के सन्तान के घिनित मिलकूम के लिये बनाया था राजा ने उन्हें अशुद्ध किया। और मूर्त्तों १४ को तोड़ डाला और अश्तरूत को काट डाला और उन के स्थानों को मनुष्यों के हाड़ों से भर दिया॥

और उस बेदी को भी जो बैतएल १५ में थी उस ऊंचे स्थान को जिसे इसराएल के पाप करवैया नबात के बेटे यरूबिआम ने बनाया था हां उस बेदी को और उस ऊंचे स्थान को उस ने ढा दिया और उस ऊंचे स्थान को जलाके चूर करके रौंदा और अश्तरूत को जला दिया। और ज्यों यूसियाह फिरा तो १६ उस ने पहाड़ पर की समाधिन को देखा और लोग भेजके उन समाधिन की हड्डियां निकलवाईं और बेदी पर जलाईं और परमेश्वर के बचन के समान जो ईश्वर के उस जन ने प्रचारा था जिस ने इन

बातों को प्रचारा उस ने उसे अशुद्ध किया फिर उस ने पूछा कि यह पदवी
१७ क्या है जिसे मैं देखता हूं। और नगर के लोगों ने उसे कहा कि यह ईश्वर के उस जन की समाधि है जिस ने यहूदाह से आके इन बातों को जो तू ने किया है बैतएल की बेदी के बिरोध में
१८ प्रचारा था। तब उस ने कहा कि उसे रहने दो कोई उस की हड्डियों को न हटावे सो उन्हों ने उस की हड्डियां उस भविष्यद्वक्ता के साथ जो समरून से आया था रहने दिईं॥

१९ और सारे ऊंचे स्थानों के घरों को भी जो समरून के नगरों में थे जिन्हें इसराएल के राजाओं ने रिसियाने के लिये बनाये यूसियाह ने दूर किया और उन से वैसा ही किया जैसा उस ने बैतएल
२० में किया था। और ऊंचे स्थानों के सारे याजकों को जो बेदियों पर थे बधन किया और मनुष्यों का हाड़ उन पर जलाया और यरूसलम को फिरा॥

२१ और राजा ने यह कहके सारे लोगों को आज्ञा किई कि परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये पार जाने का पर्ब्ब रक्खो जैसा इस बाचा की पुस्तक में लिखा
२२ है। क्योंकि उन न्यायियों के समय से लेके जो इसराएल का न्याय करते थे और इसराएल के राजाओं के और यहूदाह के राजाओं के सब दिनों में ऐसा पार जाने का पर्ब्ब किसी ने न रक्खा
२३ था। परन्तु यूसियाह राजा के अठारहवें बरस यरूसलम में परमेश्वर के लिये यही पार जाना पर्ब्ब रक्खा गया॥

२४ और भूतों को और ओझाओं को और मूर्त्तों को और पुतलों को और सारे घिनितों को जो यहूदाह के देश में और यरूसलम में देखे गये थे यूसियाह ने दूर किया जिसतें व्यवस्था की वे बातें जो उस पुस्तक में जिसे खिलकियाह याजक ने परमेश्वर के मन्दिर में पाया था लिखी थीं पूरी करे।
२५ और उस के समान अगिले दिनों में ऐसा कोई राजा न हुआ जो अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से और अपनी सारी सामर्थ्य से मूसा की सारी व्यवस्था के समान परमेश्वर की ओर फिरा और उस के पीछे कोई उस के समान न उठा।
२६ तिस पर भी परमेश्वर अपने महा क्रोध से जो यहूदाह के संतान पर भड़काया था न फिरा उन सारे रिसों के कारण जिन से मुनस्सी ने उसे रिस दिलाया था।
२७ और परमेश्वर ने कहा कि जैसा मैं ने इसराएल को अलग किया वैसा यहूदाह को भी अपनी दृष्टि में से अलग करूंगा और मैं इस यरूसलम नगर को जिसे मैं ने चुना है और जिस घर के विषय में मैं ने कहा कि मेरा नाम वहां होगा दूर करूंगा॥

२८ अब यूसियाह की रही हुई क्रिया और सब जो उस ने किया सो क्या वे यहूदाह के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखी हैं॥

२९ उस के दिनों में मिस्र का राजा फिरऊन निकोह असूर के राजा के बिरोध में फुरात की नदी को चढ़ गया और यूसियाह राजा ने उस का साम्ना किया और उस ने उसे देखके मजिद्दो में घात किया।
३० और उस के सेवक उसे रथ में डालके मजिद्दो से यरूसलम में ले गये और उसे उसी की समाधि में गाड़ा और देश के लोगों ने यूसियाह के बेटे यहूअखज को लेके उसे अभिषेक किया और उस के पिता की सन्ती उसे राजा किया॥

३१ जब यहूअखज राज्य करने लगा तब वह तेईस बरस का था और उस ने

यरूसलम में तीन मास राज्य किया और उस की माता का नाम हमूतल था जो
३२ लिबनः के यरमियाह की बेटी थी। और उस ने उन सब के समान जो उस के पितरों ने किया था परमेश्वर की दृष्टि
३३ में बुराई किई। सो फिरऊन निकोह ने उसे हमात देश के रिबलः में बंधन में डाला जिसतें वह यरूसलम में राज्य न करे और देश पर सौ तोड़े चांदी और
३४ एक तोड़ा सोना कर ठहराया। और फिरऊन निकोह ने यूसियाह के बेटे इलयाकीम को उस के पिता यूसियाह की सन्ती राजा किया और उस का नाम यहूयकीन रक्खा और यहूआखज को ले गया और वह मिस्र में जाके मर गया।
३५ और यहूयकीन ने चांदी और सोना फिरऊन को दिया और फिरऊन की आज्ञा के समान रोकड़ देने को उस ने देश पर कर लगाया और देश के लोगों के हर एक जन से उस के कर के समान चांदी सोना निचोड़ा जिसतें फिरऊन निकोह को देवे॥

३६ यहूयकीन जब राज्य पर बैठा तब पचीस बरस का था और उस ने यरूसलम में ग्यारह बरस राज्य किया और उस की माता का नाम जबूदः था जो रूमः
३७ फिदायाह की बेटी थी। और उस ने उन सब के समान जो उस के पितरों ने किया था परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई॥

चौबीसवां पर्ब्ब

१ उस के दिनों में बाबुल का राजा नबूखुदनजर चढ़ आया और यहूयकीन तीन बरस लों उस का सेवक रहा तब
२ वह उस के बिरोध में फिरा। और परमेश्वर ने कसदियों की और अराम की और मोआब की और अम्मून के संतान की जथाओं को अपने बचन के समान जैसा उस ने अपने सेवक भविष्यद्वक्तों के द्वारा से कहा था यहूदाह के बिरोध में उसे नाश करने को भेजा।
३ निश्चय परमेश्वर की आज्ञा के समान यह सब कुछ मुनस्सी के पापों के कारण जो उस ने किये यहूदाह पर पड़ा कि उन्हें अपनी
४ दृष्टि से दूर करे। और निर्दोष लोहू के कारण भी जो उस ने बहाया क्योंकि उस ने यरूसलम को निर्दोष लोहू से भर दिया जिस को क्षमा परमेश्वर ने न चाही॥

५ अब यहूयकीन की रही हुई क्रिया और सब जो उस ने किया था सो क्या वे यहूदाह के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में लिखी नहीं हैं॥

६ सो यहूयकीन ने अपने पितरों में शयन किया और उस का बेटा यहूयकीन
७ उस की सन्ती राज्य पर बैठा। और मिस्र का राजा अपने देश से फेर बाहर न गया क्योंकि बाबुल के राजा ने मिस्र की नदी से लेके फुरात की नदी लों मिस्र के राजा का सब कुछ ले लिया॥

८ यहूयकीन जब राज्य करने लगा तब अठारह बरस का था और यरूसलम में उस ने तीन मास राज्य किया और उस की माता का नाम नहूसता था जो
९ यरूसलम इलनतन की बेटी थी। और उन सब के समान जो उस के पिता ने किया था परमेश्वर की दृष्टि में उस ने बुराई किई॥

१० उस समय में बाबुल के राजा नबूखुदनजर के सेवक यरूसलम पर चढ़ गये
११ और नगर घेरा गया। और बाबुल का राजा नबूखुदनजर नगर के बिरोध में आया और उस के सेवकों ने उसे घेर
१२ लिया। तब यहूदाह का राजा यहूयकीन और उस की माता और उस के सेवक और उस के प्रधान और उस के

नपुंसक बाबुल के राजा के पास बाहर गये और बाबुल के राजा ने अपने राज्य के आठवें बरस उसे लिया। १३ और परमेश्वर के मन्दिर का सारा भंडार और वह भंडार जो राजा के घर में था ले गया और सोने के सारे पात्रों को जो इसराएल के राजा सुलेमान ने परमेश्वर की आज्ञा के समान परमेश्वर के मन्दिर के लिये बनाये थे कटवाया। १४ और सारे यरूसलम को और सारे प्रधानों को और सारे महावीरों को अर्थात् दस सहस्र बंधुओं को और सारे कार्य्यकारियों को और लोहारों को और देश के लोगों के छोटों से छोटों को छोड़ कोई न छूटा। १५ और वह यहूयकीन को और उस की माता और राजा की पत्नियों को और उस के नपुंसकों को और देश के पराक्रमियों को यरूसलम से बंधुआई में बाबुल को ले गया। १६ और सारे वीरों को अर्थात् सात सहस्र को और एक सहस्र कार्य्यकारियों को और लोहारों को सब बलवन्त जो संग्राम के योग्य थे बाबुल का राजा उन्हें बंधुआई में बाबुल को ले गया। १७ और बाबुल के राजा ने उस के चचा मत्तनियाह को उस की सन्ती राज्य दिया और उस का नाम पलटके सिदकियाह रक्खा॥

१८ सिदकियाह जब राज्य पर बैठा तो एक्कीस बरस का था और उस ने ग्यारह बरस यरूसलम में राज्य किया और उस की माता का नाम हमूतल था जो लिबन: यरमियाह की बेटी थी। १९ और उस ने यहूयकीन के समस्त कार्य्य के समान किया और परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई। २० क्योंकि परमेश्वर के कोप के कारण यरूसलम और यहूदाह पर यों बीत गया यहां लों कि उस ने उन्हें अपने आगे से दूर किया और सिदकियाह बाबुल के राजा के बिरोध में फिर गया॥

पचीसवां पर्व्व।

१ और उस के राज्य के नवें बरस के दसवें मास की दसवीं तिथि में यों हुआ कि बाबुल का राजा नबूखुदनजर वह और उस की सारी सेना यरूसलम के बिरोध चढ़ आये और उस के सन्मुख डेरा किया और उन्हों ने उस के बिरोध में उस की चारों ओर गढ़ बनाये। २ और सिदकियाह राजा के ग्यारहवें बरस लों नगर घेरा हुआ था। ३ मास की नवीं तिथि में नगर में अकाल बढ़ा और देश के लोगों को रोटी न मिलती थी। ४ और नगर टूट निकला और सारे योद्धा उस फाटक के मार्ग से जो भीतों के मध्य राजा की बारी के लग है रात को भाग गये अब कसदी नगर को घेरे हुए थे और चौगान की ओर चले गये। ५ पर कसदियों की सेना ने राजा का पीछा किया और उसे यरीहो के चौगानों में जा लिया और उस का सारा कटक उस्से छिन्न भिन्न हुआ। ६ सो वे राजा को पकड़के उसे बाबुल के राजा पास रिबल: में लाये और उन्हों ने उस का न्याय किया। ७ और उन्हों ने सिदकियाह के बेटों को उस की आंखों के आगे घात किया और सिदकियाह की आंखें अंधी किईं और पीतल की बेड़ियों से उसे जकड़ा और उसे बाबुल को ले गया॥

८ और बाबुल के राजा नबूखुदनजर के राज्य के उन्नीसवें बरस के पांचवें मास सातवीं तिथि में बाबुल के राजा का एक सेवक नबूसरअद्दान जो निज सेना का प्रधान अध्यक्ष था यरूसलम में आया। ९ और उस ने परमेश्वर का मन्दिर और राजा का भवन और यरूसलम

के सारे घर और हर एक बड़े घर को
१० जला दिया। और कसदियों की सारी
सेना ने जो उस निज सेना के अध्यक्ष
के साथ थीं यरूसलम की भीतों को
११ चारों ओर से ढा दिया। और रहे हुए
लोगों को जो नगर में बचे थे और उन
को जो भागके बाबुल के राजा पास
गये थे मंडली के उबरे हुओं के साथ
नबूसरअद्दान निज सेना का अध्यक्ष ले
१२ गया। परन्तु निज सेना के अध्यक्ष ने
दाख के सुधरवैये और किसानों को
अर्थात् देश के कंगालों को छोड़ दिया॥

१३ और परमेश्वर के मन्दिर के पीतल
के खंभों को और आधारों को और पीतल
के समुद्र को जो परमेश्वर के मन्दिर में
था कसदियों ने तोड़के टुकड़ा टुकड़ा
किया और पीतल को बाबुल में ले गये।
१४ और बटलोहियां और फावड़ियां और
कतरनियां और चमचे और पीतल के
सारे पात्र जिस्से वे सेवा करते थे ले
१५ गये। और अंगेठियां और कटोरे और
सब कुछ जो सोने चांदी का था निज
१६ सेना का अध्यक्ष ले गया। दो खंभों को
और समुद्र को और आधारों को जिन्हें
सुलेमान ने परमेश्वर के मन्दिर के लिये
बनाया था इन सारे पात्रों का पीतल
१७ बेतौल था। एक खंभे की उंचाई अठा-
रह हाथ और उस पर का झाड़ तांबे
का और झाड़ की उंचाई तीन हाथ
झाड़ की चारों ओर जाल के कार्य्य और
अनार सब पीतल के और इन्हीं के समान
दूसरे खंभे में जालियों का काम था॥

१८ और प्रधान याजक शिरायाह को
और दूसरे याजक सफनियाह को और
तीनों द्वारपालों को निज सेना का अध्यक्ष
१९ ले गया। और उस ने नगर में से एक
नपुंसक को लिया जो योद्धों पर था उन में
से पांच जन राजा के सन्मुख रहते थे
और नगर में पाये गये थे और सेना के
अध्यक्ष लेखक को जो देश के लोगों की
गिन्ती करता था और देश के साठ जन
को जो नगर में पाये गये लिया। और २०
निज सेना का अध्यक्ष नबूसरअद्दान उन्हें
पकड़के बाबुल के राजा पास रिबल: में
ले गया। और बाबुल के राजा ने २१
हमात देश रिबल: में उन्हें घात किया
सो यहूदाह अपने देश से निकाला गया॥

और जो लोग यहूदाह के देश में रह २२
गये थे जिन्हें बाबुल के राजा नबूखुद-
नजर ने छोड़ा था उन पर उस ने आज्ञा-
कारी साफन के बेटे अखिकाम के बेटे
जिदालयाह को उन का प्रधान किया।
और जब सेनाओं के प्रधानों ने और उन २३
के लोगों ने सुना कि बाबुल के राजा
ने जिदलियाह को अध्यक्ष किया तो
नतनियाह का बेटा इसमअएल और
करीह का बेटा यूहानान नतूफाती तन-
हूमत का बेटा शिरायाह और मकाती
का बेटा याजानिया अपने लोगों समेत
मिसफा में जिदलियाह पास आये। और २४
जिदलियाह ने उन से और उन के लोगों
से किरिया खाके उन से कहा कि कस-
दियों के सेवक होने से मत डरो देश
में बसो और बाबुल के राजा की सेवा
करो और उस में तुम्हारी भलाई होगी।
परन्तु सातवें मास में ऐसा हुआ कि २५
इलीसम: के बेटे नतनियाह का बेटा
इसमअएल जो राजा के बंश से था आया
और उस के साथ दस जन और जिद-
लियाह को और उन यहूदियों को और
कसदियों को जो उस के साथ मिसफा
में थे प्राण से मारा। तब सब लोग २६
क्या छोटे क्या बड़े और सेनाओं के प्रधान
उठे और मिस्र में आ रहे क्योंकि वे
कसदियों से डरते थे॥

और यहूदाह के राजा यहूयकीन की २७

बंधुआई के सैंतीसवें बरस के बारहवें मास की सत्ताईसवीं तिथि में ऐसा हुआ कि बाबुल का राजा अबीलमरूदक जिस बरस राज्य करने लगा उस ने यहूदाह के राजा यहूयकीन को बंधुआई से उभारा। २८ और उस्से अच्छी अच्छी बातें कहीं और उस के सिंहासन को उन सब राजाओं से जो उस के साथ बाबुल में थे बढ़ाया। २९ और उस की बंधुआई के बस्त्र को पलट डाला और वह अपने जीवन भर उस मंच पर उस के संग भोजन करता रहा। ३० और उस के जीवन भर उस के प्रतिदिन की वृत्ति नित राजा की ओर से दिई जाती थी॥

काल के समाचार की पहिली पुस्तक।

पहिला पर्व्व।

१ २ आदम सेत अनूस। कीनान महलललियल यारद। ३ हनूक मतूसिलह लमक। ४ नूह शाम हाम और याफत॥

५ याफत के बेटे जुम्र और माजूज और मादी और यूनान और तूबल और मसक ६ और तीरास। और जुम्र के बेटे असकनाज ७ और रीफत और तजरमः। और यूनान के बेटे इलिसः और तरसीस और कित्ती और दानी॥

८ हाम के बेटे कूश और मिस्र फूत ९ और कनआन। और कूश के बेटे सिबा और हविलः और सबता और रामा और सबतिका और रामा के बेटे शिबा १० और ददान। और कूश से निमरूद उत्पन्न हुआ वह पृथिवी पर बलवन्त होने ११ लगा। और मिस्र से लूदीम और अनामीम और लहाबीम और नफतूहीम उत्पन्न १२ हुए। और फतरूसीम और कसलूहीम जिन से फिलिस्ती निकले और कफतू- १३ रीम। और कनआन से उस के पहिलौठे १४ सैदा और हित्ती उत्पन्न हुए। और यबूसी १५ और अमूरी और जिरजाशी। और हवी १६ और अरकी और सीनी। और अरवादी और समरी और हमाती॥

१७ सिम के बेटे ऐलाम और असूर और अरफकसद और लूद और आराम और ऊज और हूल और जतर और मसक। १८ और अरफकसद से सिलह उत्पन्न हुआ १९ और सिलह से इब्र उत्पन्न हुआ। और इब्र से दो बेटे उत्पन्न हुए एक का नाम फलज इस कारण कि उस के समय में पृथिवी बिभाग किई गई और उस के भाई का नाम युकतान। २० और युकतान से अलमूदाद और सलफ और हसरिमौत और इरख उत्पन्न हुए। २१ और २२ हदराम और उजाल और दिकलः। और ऐबाल और अबिमायल और सिबा। २३ और ओफिर और हविलः और जोबाब ये सब युकतान के बेटे थे॥

२४ २५ २६ २७ सिम अरफकसद सिलह। इब्र फलज रऊ। सरूज नहूर तारह। अबिराम जो अबिरहाम है॥

२८ अबिरहाम के बेटे इजहाक और इसमअएल॥

२९ यह उन की बंशावलियां इसमअएल

का पहिलौठा नबीत और कीदार और
३० अदबिएल और मिबसाम। मिसमाअ और दूमा मस्सा हदद और तैमा।
३१ यतूर नफीस और किदम: ये इसमअएल के बेटे थे॥

३२ और अबिरहाम की सहेली कतूर: के बेटे उस्से जिमरान और युकसान और मिदान और मिदयान और इसबाक और सूख उत्पन्न हुए और युकसान के
३३ बेटे सिबा और ददान। और मिदयान के बेटे ऐफ: और गिफ्र और हनूक और अबीद: और इलदाआ ये सब कतूर: के बेटे थे॥

३४ और अबिरहाम से इजहाक उत्पन्न हुआ और इजहाक के बेटे एसौ और इसराएल॥

३५ एसौ के बेटे इलीफज रऊएल और यऊस और यअलाम और कुरह।
३६ इलिफज के बेटे तैमन और ऊमर सफी और जअताम कनज और तिमनाअ
३७ और अमालीक। रऊएल के बेटे नहत
३८ शारिक सम्म: और मिज्ज:। और शईर के बेटे लोतान और सोबल और सबऊन और अनाह और दैसून और असर और
३९ दैसान। और लोतान के बेटे हूरी और हूमाम और लोतान की बहिन तिमनाअ।
४० सोबल के बेटे अलयान और मनहत और ऐबाल सिफी और ओनाम और सबऊन के बेटे ऐयाह और अनाह।
४१ अनाह के बेटे दैसून और दैसून के बेटे हमरान और इसबान और इथरान और
४२ किरान। असर के बेटे बिलहान और जअवान और यअकान दैसान के बेटे
४३ ऊज और अरान। अब इसराएलियों के संतान पर किसी राजा के राज्य करने से पहिले अदूम के देश में इन राजाओं ने राज्य किया बऊर का बेटा बालिग और उस के नगर का नाम दिनहब: था। और जब बालिग मर
४४ गया तब बूसर: के बेटे यूबाब ने उस की सन्ती राज्य किया। और जब
४५ यूबाब मर गया तब तैमानी के देश के हूसाम ने उस की सन्ती राज्य किया।
४६ और जब हूसाम मर गया तब बिदद के बेटे हदद ने उस की सन्ती राज्य किया उस ने मोअब के चौगान में मिदयान को मारा और उस के नगर का नाम गयीत था। और जब हदद
४७ मर गया तब मसरीक के बेटे समल: ने उस की सन्ती राज्य किया। और जब
४८ समल: मर गया तब नदी के तीर रिहाबात के साऊल ने उस की सन्ती राज्य किया। और जब साऊल मर गया तब
४९ अकबोर के बेटे बअलहनान ने उस की सन्ती राज्य किया। और जब बअल-
५० हनान मर गया तब हदद ने उस की सन्ती राज्य किया और उस के नगर का नाम पाई और उस की पत्नी का नाम मुहैतबिएल जो मतरिद की बेटी जो मेजाहब की बेटी थी। और हदद भी मर गया
५१ और अदूम के ये अध्यक्ष थे अध्यक्ष तिमनाअ अध्यक्ष अलियाह अध्यक्ष यतीत।
५२ अध्यक्ष अहलिबाम: अध्यक्ष एलाह अध्यक्ष
५३ फैनून। अध्यक्ष कनज अध्यक्ष तैमन
५४ अध्यक्ष मिबसार। अध्यक्ष मजदिएल अध्यक्ष ईराम ये अदूम के अध्यक्ष॥

दूसरा पर्व्व।

१ इसराएल के बेटे ये हैं रूबिन समऊन
२ लावी और यहूदाह इशकार और जबूलून। दान यूसुफ और बिनयमीन नफताली जद और यसर॥

३ यहूदाह के बेटे एर और ओनान और सेल: ये तीनों कनआनी सूआ की लड़की से उस के लिये उत्पन्न हुए और यहूदाह का पहिलौठा ऐर परमेश्वर की दृष्टि में बुरा था और परमेश्वर ने उसे

४ मारा । और उस की बहू तमर उस के लिये फाड़स और शारिक को जनी यहूदाह के सब बेटे पांच थे ॥

५ फाड़स के बेटे हसरून और हमूल ।
६ और शारिक के बेटे ज़िमरी और ऐतान और हैमान और कैलकूल और दरअ सब समेत पांच ॥

७ और करमी के बेटे अकार इसराएल का क्लेशदायक जिस ने स्रापित बस्तु में
८ अपराध किया । और ऐतान के बेटे
९ अज़रियाह । और हसरून के बेटे भी जो उस्से उत्पन्न हुए यरहमिएल और राम और कलूबी ॥

१० और राम से अम्मिनदब उत्पन्न हुआ और अम्मिनदब से यहूदाह के सन्तान
११ का अध्यक्ष नहसून उत्पन्न हुआ । और नहसून से सलमः और सलमः से बुअज़
१२ उत्पन्न हुआ । और बुअज़ से ओबिद
१३ और ओबिद से यस्सी उत्पन्न हुआ । और यस्सी का पहिलौठा इलिअब और दूसरा अबिनदाब और तीसरा सिमआ ।
१४ १५ चौथा नतनिएल पांचवां रद्दी । छठवां
१६ ऊज़म सातवां दाऊद । और उन की बहिन ज़रूयाह और अबिजैल और ज़रूयाह के तीन बेटे अबिशै और यूअब
१७ और असहेल । और अबिजैल से अमासा उत्पन्न हुआ और अमासा का पिता इसमअएली यित्र था ॥

१८ और हसरून के बेटे कालिब की पत्नी अजूबः से और यरीआत से ये बेटे उत्पन्न
१९ हुए येसर और सोबाब और अरदन । और जब अजूबः मर गई तब कालिब ने इफरात को ग्रहण किया और वह उस
२० के लिये हूर जनी । और हूर से ऊरी और ऊरी से बज़ल्लिएल उत्पन्न हुआ ।
२१ और उस के पीछे जब हसरून साठ बरस का हुआ तब जिलिआद के पिता मकीर की लड़की को ग्रहण किया और वह उस के लिये सजूब जनी । और सजूब
२२ से याईर उत्पन्न हुआ जो जिलिआद देश में तेईस नगर रखता था । और उस ने
२३ जसूर को और अराम को और याईर के नगरों को और किनात सहित और उस के नगरों को अर्थात् साठ नगर लिये ये सब जिलिआद के पिता मकीर के बेटे
२४ के थे । और जब कालिब इफरातः में हसरून मर गया तब हसरून की पत्नी अबियाह उस के लिये तकूअ के पिता अशहूर को जनी ॥

२५ और हसरून के पहिलौठे यरहमिएल के बेटे ये हैं राम उस का पहिलौठा और बुनाह और उरन और उज़म अखियाह ।
२६ और यरहमिएल की दूसरी पत्नी भी थी जिस का नाम अतारा जो ओनाम की माता थी ।
२७ और यरहमिएल के पहिलौठे राम के बेटे मअज़ और यमीन और अक्र ।
२८ और ओनाम के बेटे सम्मी और यदअ और सम्मी के बेटे
२९ नदब और अबीशूर । और अबीशूर की पत्नी का नाम अबिखैल और वह उस के लिये अख़बान और मोलीद को
३० जनी । और नदब के बेटे सिलद और अप्पईम परन्तु सिलद निर्बंश मर गया ।
३१ और अप्पईम के बेटे यसअई और यसअई के बेटे सेसान और सेसान के संतान
३२ अखलो । और सम्मी के भाई यदअ के बेटे यित्र और यूनतन और यित्र निर्बंश
३३ मर गया । और यूनतन के बेटे फलत और ज़ाज़ा ये यरहमिएल के बेटे थे ॥

३४ अब सेसान के बेटे न थे परन्तु बेटियां थीं और सेसान के एक मिस्री सेवक था जिस का नाम यरखाअ था ।
३५ और सेसान ने अपनी बेटी को अपने सेवक यरखाअ से बियाह दिया और वह
३६ उस के लिये अत्ती को जनी । और अत्ती से नातन और नातन से ज़बद उत्पन्न

३७ हुआ। और जबद से इफ़लाल और
३८ इफ़लाल से ओबिद उत्पन्न हुआ। और
ओबिद से याहू और याहू से अज़रियाह
३९ उत्पन्न हुआ। और अज़रियाह से खा-
लिस और खालिस से इलिअसः उत्पन्न
४० हुआ। और इलिअसः से सिसमी और
४१ सिसमी से सलूम उत्पन्न हुआ। और सलूम
से यकमियाह और यकमियाह से इलि-
समः उत्पन्न हुआ॥

४२ और यरहमिएल के भाई कालिब के
बेटे ये हैं उस का पहिलौठा मीसाअ
जो ज़ैफ़ का पिता और हबरून का
४३ पिता मरीसः के बेटे। और हबरून के
बेटे क़ुरह और तुफ़फ़ाह और रक़म और
४४ समाअ। और समाअ से रहम उत्पन्न
हुआ जो यरक़ाम का पिता था और
४५ रक़म से सम्मी उत्पन्न हुआ। और सम्मी
का बेटा मऊन और मऊन बैतसूर का
४६ पिता था। और कालिब की सहेली
ऐफ़ः से हरान और मोज़अ और जज़ीज
और हरान से जज़ीज उत्पन्न हुआ।
४७ और यहदी के बेटे रजम और यूताम और
गेशान और फ़लत और ऐफ़ः और शअफ़।
४८ कालिब की सहेली मअक़ः से शाबर
४९ और तिरहनः उत्पन्न हुए। और उस्से
मदमन्नः का पिता शअफ़ और मकबीनः
का पिता और जिबअ का पिता शिवा
उत्पन्न हुए और कालिब की बेटी अकसः॥

५० इफ़रातः का पहिलौठा हूर का बेटा
कालिब के ये बेटे थे करयतअरीम का
५१ पिता सोबल। बैतलहम का पिता
सलमा और बैतजदीर का पिता हरीफ़।
५२ और करयतअरीम के पिता सोबल के
बेटे ये हैं हारोए और हटसे हमनुखोथ।
५३ और करयतअरीम के घराने यित्री और
फ़ूती और सिमाती और मिश्राई इन से
५४ सरआती और इसताली निकले। सलमा
के बेटे बैतलहम और नतुफ़ती यूअब के
घराने के मुकुट और मनहती की आत-
राती सरई। और यअबीज के वासी ५५
लेखकों के घराने तिरआती सिमआती
शोकाती ये सब रैकाब के घराने के
पिता हमात से कैनी निकले॥

तीसरा पर्व्व।

अब जो बेटे दाऊद से हबरून में १
उत्पन्न हुए सो ये थे पहिलौठा यज़र-
अएली अख़िनुअम से अमनून दूसरा
दानिएल करमिली अबिजैल से। तीसरा २
जसूर के राजा तलमी की बेटी मअकः
का बेटा अबिसलूम चौथा हज्जित का
बेटा अदूनियाह। पांचवां अबिताल से ३
सफ़तियाह छठवां उस की पत्नी इजल
से यितरिआम। ये छः हबरून में उस ४
के लिये उत्पन्न हुए और उस ने वहां
साढ़े सात बरस और यरूसलम में तेंतीस
बरस राज्य किया। और यरूसलम में ५
उस के लिये ये उत्पन्न हुए सिमआ और
सोबाब नातन और सुलेमान ये चार
अमिएल की बेटी बित्तसूअ से उत्पन्न
हुए। इबहार भी और इलिसमः और ६
अलिफ़लत। और नूजः और नफज और ७
यफ़ीअ। और इलिसमः और इलियदः ८
और इलिफ़लत नव। सहेलियों के बेटों ९
को छोड़ दाऊद के ये सब बेटे और उन
की बहिन तमर॥

और सुलेमान का बेटा रहबिआम १०
उस का बेटा अबियाह उस का बेटा
आसा उस का बेटा यहूसफ़त। उस का ११
बेटा यूराम उस का बेटा अख़ज़याह
उस का बेटा यूआस। उस का बेटा १२
अमसियाह उस का बेटा अज़रियाह उस
का बेटा यूताम। उस का बेटा आख़ज़ १३
उस का बेटा हिज़कियाह उस का बेटा
मुनस्सी। उस का बेटा अमून उस का १४
बेटा यूसियाह॥

और यूसियाह के बेटे पहिलौठा १५

यूहनान दूसरा यहूयकीम तीसरा सिदक-याह चौथा शालूम॥

१६ और यहूयकीम के बेटे यकूनियाह उस का बेटा सिदकयाह॥

१७ और यकूनियाह का बेटा असीर उस १८ का बेटा सियालतिएल। और मलकी-राम भी और फ़िदायाह और सिनज्जर यक़मियाह हसमअ और नदबियाह॥

१९ और फ़िदायाह के बेटे जरुबाबल और शमीय और जरुबाबल के बेटे मुसल्लम और हननियाह और उन की २० बहिन सलूमियत। और हरुब: और अहल और वरकियाह और हसदियाह यसूबहसद पांच॥

२१ और हननियाह के बेटे फलतियाह और यसअियाह रिफ़ायाह के बेटे अरनान के बेटे अबदियाह के बेटे सकनियाह के बेटे॥

२२ और सकनियाह के बेटे समऐयाह और समऐयाह के बेटे हतूश और इजाल और बरीह और नआरियाह और सफत छ:॥

२३ और नआरियाह के बेटे इलियूऐनी और हिजकियाह और अजरिकाम तीन॥

२४ और इलियूऐनी के बेटे हूदायाह और इलयसीब और फ़िलायाह और अकूब और यूहनान और दिलायाह और अनानी सात॥

चौथा पर्व्व।

१ यहूदाह के बेटे फ़ाड़स हसरून और २ करमी और हूर और सोबल। और सोबल के बेटे रियाहाह से यहत उत्पन्न हुआ और यहत से अहूमाई और लहद ३ उत्पन्न हुए ये सुरआती के घराने हैं। और ऐताम के पिता ये हैं यजरअएल और इसमा और इदबास और उन की बहिन ४ का नाम हसालीलपूनी। और जदूर का पिता फनुएल और हूस: का पिता अज़र बैतलहम के पिता इफ़रात के पहिलौठे हूर के बेटे ये हैं॥

५ और तकूअ के पिता अशहूर की दो ६ पत्नियां थीं हिलयाह और नअर:। और नअर: उस के लिये अख़ज़ाम और हिफ़र और तमिनी और अख़सतारी को जनी ये ७ नअर: के बेटे हैं। और हिलयाह के बेटे जिहरत और इसहार और इतनान।

८ और कूज़ से अनूब और सोबिबह उत्पन्न हुए और हरुम के बेटे अख़िरखेल के घराने॥

९ और यअबीज अपने भाइयों से प्रतिष्ठित था और उस की माता ने कहा कि मैं इसे कष्ट से जनी इस लिये उस १० ने उस का नाम यअबीज रक्खा। और यअबीज ने यह कहिके इसराएल के ईश्वर की प्रार्थना किई कि यदि तू निश्चय मुझे आशीस देवे और मेरे सिवाने बढ़ावे जिसतें तेरे हाथ मेरे साथ होवें और कि बुराई से मेरी रक्षा करे जिसतें मुझे उदासी न होवे तब ईश्वर ने उस की बांछा पूर्ण किई॥

११ और सूख: के भाई कलूब से महीर उत्पन्न हुआ जो इसतून का पिता था।

१२ और इसतून से बैतराफ़ा और फ़सीह और ईरनहस के पिता तहिन्न: उत्पन्न १३ हुए ये सब रैक: के जन हैं। और कनज के बेटे ग़ातनिएल और सिराया १४ और ग़ातनिएल के बेटे हतत। और मऊनाती से उफ़र: उत्पन्न हुआ और सिराया से यूअब उत्पन्न हुआ जो हराश के वासों का पिता था क्योंकि वे कार्य्य-१५ कारी थे। और यफ़ुन्न: के बेटे कालिब के बेटे ईरू और ऐला और नआम और १६ ऐला के बेटे कनज। और यहलिएल के बेटे ज़ीफ़ और ज़ीफ़ाह तीरिया और १७ असरएल। और अज़र: के बेटे यिथ्र और मरद और ग़िफ़्र और यलून और

वह मिरयम को और सम्मी को और इश- लिमाअ के पिता इसबाह को जनी ।
१८ और उस की पत्नी यहूदिया जदूर के पिता यिरद को और सोको के पिता हिब्र को और जनूह के पिता यकूतिएल को जनी और फिरऊन की बेटी बित्तियाह के बेटे
१९ जिसे मरद ने लिया ये हैं । और उस की पत्नी हूदियाह नहम की बहिन के बेटे गरमी कईल: का पिता और माकाती
२० इसतिमाअ । और शिमोन के बेटे अमनून और रिन्न: और बिनेहनान और तैलून और यसअई के बेटे जोहित और बिनजोहित ॥
२१ यहूदाह के बेटे सेल: के बेटे लैक: का पिता एर और मारेशाह का पिता लगद: और अशबीअ उन के घर के घराने जो झीना सूती बस्त्र बनाते थे ।
२२ और यूकीम और कजीब: के लोग और यूआस और शराफ जो मोअब में प्रभुता रखते थे और यसूबीलहम ये प्राचीन बातें
२३ हैं । ये कुम्हार थे जो सागपात में और बाड़ों में रहते थे और राजा के संग उस के कार्य्य के लिये वहां रहते थे ॥
२४ समऊन के बेटे नमूएल और यमीन
२५ यरीब शारिक साऊल । उस का बेटा सलूम उस का बेटा मिबसाम उस का
२६ बेटा मिसमाअ । और मिसमाअ के बेटे हम्मूएल उस का बेटा जकूर उस का
२७ बेटा शमई उस का बेटा । और शमई के सोलह बेटे और छ: बेटियां थीं परन्तु उस के भाई के बहुत बालक न थे और उन के सारे घराने यहूदाह के सन्तान
२८ के समान न बढ़े । और वे बिअरसबअ
२९ में और मोलद: और हसरसूआल । और बिलह: में और अजम में और तोलद
३० में । और बतूएल में और हुरम: में और
३१ सिक्लज में । और बैतमरकबात में और हसरसूसीम में और बैतबिरी में और सग- रीम में रहते थे दाऊद के राज्य लों ये उन के नगर थे । और उन के गांव ऐताम ३२ और ऐन और रम्मान और तकन और असन पांच नगर । और बअल लों ३३ सारे गांव जो उन नगरों की चारों ओर थे ये उन के निवास और उन की बंशावली । और मिसोबाब और यमलीक ३४ और अमसियाह का बेटा योशाह । और ३५ यूएल और यूसिबियाह का बेटा याहू जो शिरायाह का बेटा जो असिएल का बेटा । और इलयूएनी और यअकूब: और ३६ यसूखायाह और असायाह और अदिएल और इसमिएल और बनायाह । और सम- ३७ ऐयाह का बेटा सिमरी का बेटा यादा- याह का बेटा अलोन का बेटा शिफई का बेटा जीजा । ये जिन का नाम ३८ लिया गया सो अपने अपने घराने के अध्यक्ष और उन के पितरों के घराने बहुत बढ़ गये थे ॥

और वे जदूर के पूरब की तराई के ३९ अलंग को पहुंच लों अपने झुंडों की चराई के लिये गये थे । और उन्हों ने पुष्ट और ४० उत्तम चराई पाई और वह फैलाव और चैन का और कुशल का देश था क्योंकि हाम के लोग आगे उस में रहते थे । और यहूदाह के राजा हिजकियाह के ४१ दिनों में जिन के नाम लिखे हुए हैं वे आये और उन के तंबुओं को और निवासों को जो वहां पाये गये थे मार लिया और आज लों उन्हें सर्बथा नष्ट किया और उन के स्थान में बास किया क्योंकि उन के झुंडों के लिये वहां चराई थी । और ४२ उन में से अर्थात् समऊन के बेटों में से पांच सौ जन शईर के पहाड़ पर गये फलतियाह और नअरियाह और रिफा- याह और उज्जिएल जो यसअई के बेटे थे उन के प्रधान थे । और ये उबरे हुए ४३ अमालीकियों को जो बच निकले थे मारके वहां बसे ॥

पांचवां पर्ब्ब ।

१ और इसराएल के पहिलौठे रूबिन के बेटे क्योंकि वह पहिलौठा था परन्तु इस लिये कि उस ने अपने पिता का बिछौना अशुद्ध किया उस का जन्मपद इसराएल के बेटे यूसुफ के बेटों को दिया गया और बंशावली जन्मपद पर २ नहीं गिनी जाती है। क्योंकि यहूदाह अपने भाइयों से बढ़ गया और उस्से श्रेष्ठ अध्यक्ष हुआ परन्तु जन्मपद यूसुफ ३ का था। इसराएल के पहिलौठे रूबिन के बेटे हनूक और पलू हसरून और करमी। ४ यूएल के बेटे समईयाह उस का बेटा जूज उस का बेटा शमीय उस का बेटा। ५ मीक: उस का बेटा रियाहाह उस का ६ बेटा बअल उस का बेटा। बिअर: उस का बेटा जिस को असर का राजा तिलगातपिलनेसर ले गया वह रूबिनियों का अध्यक्ष था॥

७ और जब उन की पीढ़ियों की बंशावली लिखी गई तब अपने अपने घराने की रीति पर उस के भाई प्रधान थे ८ यईएल और जकरियाह। और यूएल का बेटा समअ उस का बेटा अजज उस का बेटा बालिग जो अरआयर में अर्थात् नबू और बअलमऊन लों बसा ९ किया। और पूरब दिशा में उस ने फुरात नदी से बन की पैठ लों बास किया क्योंकि जिलिआद देश में उन के १० ढोर बढ़ गये। और साऊल के दिनों में उन्हों ने हगारियों से युद्ध किया जो उन के हाथ से मारे पड़े और वे जिलिआद देश की पूरब ओर सर्बत्र उन के तंबुओं में बसे॥

११ और जद के सन्तान उन के सन्मुख १२ बसन देश में सलक: लों बसे। यूएल प्रधान और दूसरा साफम और यअनी १३ और बसन में सफत। और उन के पितरों के घराने के भाई मीकाएल और मुसल्लम और सबअ और यूरी और यअकान और जीअ और अबर सात जन। बूज का बेटा १४ यहदू उस का बेटा यशीशी उस का बेटा मीकाएल उस का बेटा जिलिआद उस का बेटा यरूहा उस का बेटा हूरी उस के बेटे अबिखैल के ये सन्तान हैं। जूनी १५ का बेटा अबदिएल का बेटा अखी उन के पितरों के घराने का प्रधान। और वे बसन के जिलिआद में और उस १६ के नगरों में और सरून की चारों ओर के गांओं में और उन के निवासों में जा बसे। यहूदाह के राजा यूताम के दिनों १७ में और इसराएल के राजा यरूबिआम के दिनों में ये सब बंशावलियों में गिने गये थे॥

१८ रूबिन के और जद्दियों के और मुनस्सी की आधी गोष्ठियों के बेटे बीर पुत्र थे जो ढाल तलवार और धनुष से मारने में संग्राम में निपुण थे जो चौआलीस सहस्र सात सौ साठ जन जो संग्राम को निकल गये थे। और उन्हों ने हगा- १९ रियों से और यतूर से और नफीस से और नादब से युद्ध किई। और वे उन २० के बिरुद्ध जयमान हुए और हगारी और सब जो उन के साथ थे उन के हाथ में सौंपे गये क्योंकि उन्हों ने संग्राम में ईश्वर की प्रार्थना किई और उसी पर भरोसा रक्खा इस कारण उस ने उन की प्रार्थना ग्रहण किई। और वे उन २१ के ढोर को अर्थात् उन के पचास सहस्र ऊंट और अढ़ाई लाख भेड़ और दो सहस्र गदहे और एक लाख मनुष्य बंधुआई में ले गये। क्योंकि बहुत २२ जूझ गये इस कारण कि संग्राम ईश्वर का था और वे उन के स्थानों में बंधुआई लों बसे॥

२३ और मुनस्सी की आधी गोष्ठी के

मन्नाम देश में बसे बसन से बअलहरमून और सिनर और हरमून पर्बत लों बढ़ २४ गये। और उन के पितरों के घराने के प्रधान ये थे इफ्र और यसअई और इलिएल और अजरिएल और यरमियाह और हूदायाह और यहदिएल जो बल में बीर प्रसिद्ध जन थे अपने अपने पितरों के घरानों में श्रेष्ठ॥

२५ और उन्हों ने अपने पितरों के ईश्वर के बिरुद्ध अपराध किया और इस देश के लोगों के देवों के पीछे व्यभिचार में चले गये जिन्हें ईश्वर ने उन के आगे २६ नष्ट किया। और इसराएल के ईश्वर ने असूर के राजा पूल के मन को और असूर के राजा तिलगतपिलनेसर के मन को उभाड़ा और वे उन्हें अर्थात् रूबिनियों को और जद्दी को और मुनस्सी की आधी गोष्ठी को ले गये और उन्हें खलह में और खबूर में और हारा में और जौजान नदी में जहां वे आज लों हैं ले गये॥

छठवां पर्ब्ब।

१ लावी के बेटे जैरसुम किहात और २ मिरारी। और किहात के बेटे अमराम इज़हार और हबरून और उज्जिएल। ३ और अमराम के सन्तान हारून और मूसा और मिरयम हारून के बेटे भी नदब और अबिहू इलिअज़र और ईतमर। ४ इलिअज़र से फिनिहास फिनिहास से ५ अबिसूअ उत्पन्न हुआ। और अबिसूअ से बूक्की और बूक्की से उज्जी उत्पन्न ६ हुआ। और उज्जी से ज़रकियाह और ज़रकियाह से मिरयात उत्पन्न हुआ। ७ मिरयात से अमरियाह और अमरियाह ८ से अखितूब उत्पन्न हुआ। और अखितूब से सदूक और सदूक से अखिमअज उत्पन्न ९ हुआ। और अखिमअज से अजरियाह और अजरियाह से यूहनान उत्पन्न हुआ। १० और यूहनान से अजरियाह उत्पन्न हुआ वह उस मन्दिर में जो सुलेमान ने यरूसलम में बनाया याजक के पद का कार्य्य करता था। ११ और अजरियाह से अमरियाह और अमरियाह से अखितूब १२ उत्पन्न हुआ। और अखितूब से सदूक १३ और सदूक से सलूम उत्पन्न हुआ। और सलूम से खिलकियाह और खिलकियाह १४ से अजरियाह उत्पन्न हुआ। और अजरियाह से सिरायाह और सिरायाह से १५ यहूसदक उत्पन्न हुआ। जिस समय कि परमेश्वर नबूखुदनअर के द्वारा से यहूदाह और यरूसलम को ले गया उस समय यहूसदक गया॥

१६ लावी के बेटे जैरसुम किहात और १७ मिरारी। और ये जैरसुम के बेटों के १८ नाम लिबनी और शमई। और किहात के बेटे अमराम और यिजहार और १९ हबरून और उज्जिएल। मिरारी के बेटे मुहली और मूसी और उन के पितरों के २० समान ये लावी के घराने हैं। जैरसुम से लिबनी उस का बेटा यहत उस का २१ बेटा जिम्मः उस का बेटा। यूआख उस का बेटा ईदू उस का बेटा ज़ारिह उस का बेटा यतरी उस का बेटा। २२ किहात के बेटे अम्मिनदब उस का बेटा कुरह उस का बेटा असीर उस का २३ बेटा। इलकनः उस का बेटा अबीयसफ उस का बेटा और असीर उस का बेटा। २४ तहत उस का बेटा ऊरीएल उस का बेटा उज्जियाह उस का बेटा और २५ साऊल उस का बेटा। और इलकनः के बेटे अमासी और अखिमौत। २६ इलकनः के ये बेटे हैं सूफी और उस का बेटा २७ नहत। इलिअब उस का बेटा यरूहम उस का बेटा इलकनः उस का बेटा। २८ और समुएल के बेटे पहिलौठा वसनी २९ और अबियाह। मिरारी के बेटे मुहली

लिबनी उस का बेटा शिमई उस का ३० बेटा उज्ज: उस का बेटा। सिमआह उस का बेटा हग्गिया उस का बेटा असायाह उस का बेटा॥

३१ और जब कि मंजूषा ने ईश्वर के मन्दिर में बिश्राम पाया था ये वे हैं जिन्हें दाऊद ने गाने की सेवा पर ३२ ठहराया। जब लों सुलेमान ने यरूसलम में परमेश्वर का मन्दिर न बनाया और वे मंडली के तंबू के स्थान के आगे गाने की सेवा करते थे और वे अपने पद की पारी के समान सेवा में रहते थे॥

३३ और ये वे हैं जो अपने बालक सहित रहते थे किहातों के बेटों में से समुएल का बेटा यूएल उस का बेटा हैमान ३४ गायक। इलकन: का बेटा यरूहम का बेटा इलिएल का बेटा तूख का बेटा। ३५ सूफ का बेटा इलकन: का बेटा महत ३६ का बेटा अमासी का बेटा। इलकन: का बेटा यूएल का बेटा अजरियाह का ३७ बेटा सफनियाह का बेटा। तहत का बेटा असीर का बेटा अबियासफ का ३८ बेटा कुरह का बेटा। इजहार का बेटा किहात का बेटा लावी का बेटा ३९ इसराएल का बेटा। और उस का भाई आसफ जो उस की दहिनी ओर खड़ा होता था बरकियाह का बेटा आसफ ४० सिमआ का बेटा। मीकाएल का बेटा बअसियाह का बेटा मलकियाह का ४१ बेटा। एतनी का बेटा शारिक का ४२ बेटा अदायाह का बेटा। ऐतान का बेटा जिम्म: का बेटा शिमई का बेटा। ४३ यहत का बेटा जैरसुम का बेटा लावी ४४ का बेटा। और उन के भाई जो मिरारी के सन्तान थे जो बाएं हाथ खड़ा होता था ऐतान का बेटा कीसी का बेटा अबदी का बेटा मलूक का बेटा। ४५ हसबियाह का बेटा अमसियाह का ४६ बेटा खिलकियाह का बेटा। अमसी का बेटा बानी का बेटा समर का बेटा। ४७ मुहली का बेटा मूसी का बेटा मिरारी ४८ का बेटा लावी का बेटा। और उन के भाई लावी परमेश्वर के मन्दिर के तंबू की हर प्रकार की सेवा के लिये ठहराये गये॥

४९ परन्तु हारून और उस के बेटे बलिदान की बेदी और धूप की बेदी के लिये और सकल महा पवित्र कर्म्म के लिये और ईश्वर के सेवक मूसा ने जो जो आज्ञा किई थी उन के समान इसराएल के कारण प्रायश्चित्त करने के निमित्त ठहराये गये थे। ५० और हारून के बेटे ये हैं इलिअजर उस का बेटा फिनिहास उस का बेटा अबिसूआ उस ५१ का बेटा। बुक्की उस का बेटा उज्जी उस का बेटा शरकियाह उस का बेटा। ५२ मिरयात उस का बेटा अमरियाह उस ५३ का बेटा अखितूब उस का बेटा। सदूक उस का बेटा अखिमअज उस का बेटा॥

५४ अब किहात के घराने हारून के बेटे की बसती उन के सिवानों में जो उन्हें चिट्ठी से मिली यह है। ५५ और उन्हों ने यहूदाह की भूमि में हबरून और उस की चारों ओर के आसपास समेत ५६ उन्हें दिया। परन्तु नगर के खेत और उन के गांव उन्हों ने यफुन्न: के बेटे ५७ कालिब को दिये। और हारून के बेटों को यहूदाह के नगर दिये अर्थात शरण के लिये हबरून और लिबन: उस के आसपास समेत और यतीर और इसतिमाअ उन के आसपास समेत। ५८ और हैलान उस के आसपास समेत और दबीर उस के आसपास समेत। ५९ असन उस के आसपास समेत और बैतशम्स उस के आसपास समेत।

६० और बिनयमीन की गोष्ठी में से जिबअ उस के आसपास समेत और आलामत उस के आसपास समेत और अनतात उस के आसपास समेत उन के सारे नगर उन के घरानों में तेरह नगर। ६१ और उस गोष्ठी के घराने से बचे हुए किहात के बेटों को आधी गोष्ठी में से मुनस्सी की आधी गोष्ठी में से चिट्ठी ६२ डालके दस नगर। और जैरसुम के बेटों को उन के सारे घरानों में इशकार की गोष्ठी में से और यसर की गोष्ठी में से और नफताली की गोष्ठी में से और बसन में मुनस्सी की गोष्ठी में से ६३ तेरह नगर। मिरारी के बेटों को उन के सारे घरानों में रूबिन की गोष्ठी में से और जद की गोष्ठी में से और जबुलून की गोष्ठी में से चिट्ठी डालके ६४ बारह नगर। और इसराएल के सन्तानों ने लावियों को ये ये नगर उन के आस पास समेत दिये। और यहूदाह के सन्तान की गोष्ठी में से और समऊन के सन्तान की गोष्ठी में से और बिनयमीन के सन्तान की गोष्ठी में से चिट्ठी डालके ये ये नगर जिन के नाम लिये जाते हैं दिये गये॥

६६ और किहात के बेटों के घरानों ने अपने सिवानों में इफरायम की गोष्ठी ६७ में से नगर पाये थे। और उन्हों ने इफरायम पहाड़ में सिकम उस के आस पास समेत और जजर भी उस के आस पास समेत उन्हें शरण नगर के लिये ६८ दिये। और युक्मिआम उस के आस पास समेत और बैतहौरान उस के आस ६९ पास समेत। और ऐयलून उस के आस पास समेत और जातरुम्मान उस के ७० आसपास समेत। और मुनस्सी की आधी गोष्ठी में से अनेर उस के आस पास समेत और बलआम उस के आस पास समेत ये किहात के बेटों के उबरे हुए घरानों को दिये गये॥

७१ जैरसुम के बेटों को मुनस्सी की आधी गोष्ठी में से बसन में जौलान उस के आसपास समेत और इसतारात उस के आसपास समेत। ७२ और इशकार की गोष्ठी में से कादिस उस के आस पास समेत दाबरत उस के आसपास ७३ समेत। और रामात उस के आसपास समेत और आनेम उस के आसपास समेत। ७४ और यसर की गोष्ठी में से मसल उस के आसपास समेत और अबदून उस के आसपास समेत। ७५ और हकूक उस के आसपास समेत और राहब उस के आसपास समेत। ७६ और नफताली की गोष्ठी में से जलील में कादिस उस के आसपास समेत और हम्मून उस के आसपास समेत और करयतैन उस के आसपास समेत॥

७७ और मिरारी के उबरे हुए सन्तान जबुलून की गोष्ठी में से रुम्मान उस के आसपास समेत तबूर उस के आसपास ७८ समेत। और यरिहू के लग यरदन के उस पार अर्थात् यरदन की पूरब ओर रूबिन की गोष्ठी में से अरण्य में बुस उस के आसपास समेत और याहजा ७९ उस के आसपास समेत। कदीमात भी उस के आसपास समेत और मेफआत ८० उस के आसपास समेत। और जद की गोष्ठी में से जिलिअद में रामात उस के आसपास समेत और महनैम ८१ उस के आसपास समेत। और हसबून उस के आसपास समेत और याजीर उस के आसपास समेत॥

सातवां पर्व्व।

१ अब इशकार के बेटे तोलअ और २ फूआः यसूब और सिमरून चार। और तोलअ के बेटे उज्जी और रिफायाह और

यरिएल और यहमी और इबसाम और समुएल अपने पिता तोलअ के घराने के श्रेष्ठ जो अपने बंश में बड़े पराक्रमी बीर दाऊद के समय में गिनती में बाईस ३ सहस्र छ: सौ थे। और उज्जी के बेटे इज्राकियाह और इज्राकियाह के बेटे मीकाएल और अबदियाह और यूएल और यस्सीयाह पांच सब श्रेष्ठ थे॥

४ और उन के संग उन की बंशावलियों के समान उन के पितरों के घराने की रीति पर संग्राम के लिये योद्धा की जथा में छत्तीस सहस्र क्योंकि उन की ५ बहुत सी पत्नियां और बेटे थे। और उन के भाईबन्द इशकार के सारे घरानों में बड़े पराक्रमी बीर थे जो अपनी सारी पीढ़ियों में सत्तासी सहस्र जन गिने गये थे॥

६ बिनयमीन के बेटे बालिग और बकर ७ और यदीअएल तीन। और बालिग के बेटे इसबून और उज्जी और उज्जिएल और यरीमात और ईरी पांच अपने पिता के घराने के श्रेष्ठ बड़े पराक्रमी लोग और अपनी बंशावलियों में बाईस सहस्र ८ चौंतीस गिनती में थे। और बकर के बेटे जमीर: और यूआस और इलिअजर और इलियूनाई और उमरी और यरीमात और अबियाह और अनतात और अला- ९ मत ये सब बकर के बेटे। और उन की बंशावली के समान उन की पीढ़ी की रीति अपने पितरों के घराने के श्रेष्ठ उन की गिनती बीस सहस्र दो सौ जन १० जो बड़े पराक्रमी बीर थे। और यदीअएल के बेटे बिलहान और बिलहान के बेटे यईस और बिनयमीन और अहूद और कनआन: और जैतान और तरसीस ११ और अखिसहर। ये सब यदीअएल के बेटे अपने पितरों में श्रेष्ठ बलवन्त बीर सत्रह सहस्र दो सौ संग्राम करने के योग्य। और सुफ्फीम और हुफ्फीम ईर १२ के सन्तान अहीर के बेटे हूशिम॥

नफताली के बेटे यहसिएल और जूनी १३ और यिसर और सलूम बिलह: के बेटे॥

मुनस्सी के बेटे असरिएल जिसे वह १४ जनी परन्तु उस की दासी अरामी जिलिअद के पिता मकीर को जनी। और १५ मकीर ने हुफ्फीम और सुफ्फीम की बहिन से जिस का नाम मअक: था ब्याह किया और दूसरी का नाम सिलाफिहाद और सिलाफिहाद की बेटियां थीं। और १६ मकीर की पत्नी मअक: एक बेटा जनी और उस का नाम फारिस रक्खा और उस के भाई का नाम शारस और उस के बेटे औलाम और रकम। और औलाम १७ के बेटे बिदान ये मुनस्सी के बेटे मकीर के बेटे जिलिअद के बेटे थे। और उस १८ की बहिन हमोलिकत इसहोद को और अबिअजर को और महल: को जनी। और सिमीदाअ के बेटे अहीआन और १९ सिकम और लिकही और अनिआम थे॥

और इफरायम के बेटे शुसीलाह और २० उस का बेटा बरिद और उस का बेटा तहत और उस का बेटा इलिआद: और उस का बेटा तहत। और उस का बेटा २१ जबद और उस का बेटा शुसीला और अज्र और इलिआद जिन्हें जात के लोगों ने जो उस देश में उत्पन्न हुए थे मार डाला इस कारण कि वे उन के ढोर लेने को उतर आये थे। और उन २२ के पिता इफरायम ने बहुत दिन लों शोक किया और उस के भाई उसे शान्ति देने को आये। और वह अपनी २३ पत्नी के पास गया और वह गर्भिणी होके बेटा जनी और उस का नाम बरीअ: रक्खा इस लिये कि उस के घर पर बिपत्ति पड़ी थी। और उस की बेटी २४ सेर: जिस ने ऊपर नीचे का बैतहैराम

२५ और उज्जिशेर: बनाये। और उस का बेटा रिफह और रसफ भी और उस का बेटा तिलह और उस का बेटा तहन। २६ उस का बेटा लग्रदान उस का बेटा २७ अम्मिहूद उस का बेटा इलिशम:। उस का बेटा नून उस का बेटा यहूसूअ॥

२८ और उन के अधिकार और उन के निवास बैतएल और उस के गांव और पूरब और नअरान और पश्चिम और जजर और उस के गांव सिकम भी और उस के गांव अजर लों और उस के गांव। २९ और मुनस्सो के सन्तान के सिवाने के लग बैतशान और उस के गांव तअनाक और उस के गांव मजिद्दो और उस के गांव दोर और उस के गांव इन में इस-राएल के बेटे यूसुफ के सन्तान बसे॥

३० यसर के बेटे यिमन: और इसवाह और यिशुआई और बरीअ: और उन ३१ की बहिन सिरह। और बरीअ: के बेटे हिब्र और मलकिएल जो ब्रिजैत का ३२ पिता था। और हिब्र से यफलीत और शामिर और खातिम और उन की ३३ बहिन सूआ उत्पन्न हुए। और यफलीत के बेटे फासक और बिमहाल और अश- ३४ वास ये यफलीत के सन्तान। और समर के बेटे अखी और रुहज: और ३५ यहुब्बा और अराम। और उस के भाई हिलम के बेटे सुफह और यिमनाअ और ३६ सिलस और अमल। सुफह के बेटे सूह और हरनफर और सुआल और बिअरी ३७ और इमराई। बुस और हूद और सम्मा और सलीस: और इतरान और बिअरा ३८ और यिन्न के बेटे यफुन्न: और फिसफ: ३९ और अरा। और गुल्ला के बेटे अरख और हन्निएल और रिजिआ॥

४० ये सब यसर के सन्तान अपने पिता के घराने के श्रेष्ठ चुने हुए और बड़े पराक्रमी और अध्यक्षों में श्रेष्ठ और सारी बंशावली में जो संग्राम में निपुण थे गिनती में छब्बीस सहस्र जन थे॥

आठवां पर्ब्ब।

१ और बिनयमीन से उस का पहि-लौठा बालिग उत्पन्न हुआ दूसरा अस-बील तीसरा अखिरख। २ चौथा नूह: और पांचवां रफा। ३ और बालिग के बेटे अद्दार और जैरा और अबिहूद। ४ और अबिसूअ और नअमान और अखूह। ५ और जैरा और शफूफान और हूराम। ६ और ये एहूद के बेटे और जिबअ के बासी के पितरों के श्रेष्ठ और उन्हों ने उन्हें मनहत में उठा दिया। ७ और उस ने नअमान को और अखियाह को और जैरा को वहां से उठा दिया और उस्से उज्जा और अखिहूद उत्पन्न हुए। ८ और उन्हें भेज देने के पीछे सहरैन से मोअब के देश में बालक उत्पन्न हुए हुसीम और बअरा उस की पत्नियां थीं। ९ और उस की पत्नी हुदस से यूबअब और जिबिया और मैसा और मलकाम १० और यऊज और शाखियाह और मिरम: उत्पन्न हुए ये उस के बेटे अपने पितरों में श्रेष्ठ। ११ और हूसीम से अबितूब और इलपाएल उत्पन्न हुए। १२ और इलपाएल के बेटे इब्र और मिशआम और शामिर जिन्हों ने ओनू और लूद उन के आस पास के गांव बसाये। १३ और बरीअ: और शमअ जो ऐयलून के बासियों के पितरों में श्रेष्ठ जिन्हों ने जात के बासियों को खेद दिया। १४ और अखयू शाशक और यरीमात। १५ और जबदियाह और अराद १६ और अद्र। और मीकाएल और इसफाह १७ और यूखा ये बरीअ: के बेटे। और जबदियाह और मुसल्लम और हिजकी १८ और हिब्र। यसमरी भी और यजलियाह १९ और यूबाब इलपाएल के बेटे। और २० यकीम और जिकरी और जबदी। और

इलिएनी और जिल्लती और इलिएल। २१ और अदायाह और बिरायाह और २२ सिमरात ये सिमऐ के बेटे। और इस- २३ पान और हिब्र और इलिएल। और २४ अबदून और जिकरी और हन्नान। और हनानियाह और ऐलाम और अनता- २५ तियाह। और यफदियाह और फिनुएल २६ ये शाशक के बेटे। और शम्सरी और २७ सहरियाह और अतलीयाह। और यअरसियाह और इलियाह और जिकरी २८ ये यरूहम के बेटे। इन्हों ने अपनी अपनी बंशावली के समान अपने पितरों २९ में श्रेष्ठ यरूसलम में बास किया। और जिबऊन में जिबऊन का पिता बसा उस ३० की और पत्नी का नाम मअकः। और उस का पहिलौठा बेटा अबदून और सूर और कीस और बअल और नदब। ३१ और जदूर और अखयू और जकर। ३२ और मिकलात से सिमयाह उत्पन्न हुआ और ये भी अपने भाइयों के आगे यरू- ३३ सलम में अपने भाइयों समेत बसे। और नैयिर से कीस उत्पन्न हुआ और कीस से साऊल और साऊल से यूनतन और मलिकिसूअ और अबिनदाब और इश- ३४ बाल। और यूनतन के बेटे मुरीब्बअल और मुरीब्बअल से मीक: उत्पन्न हुआ। ३५ और मीक: के बेटे फैतून और मलिक ३६ और तरीअ और आखज। और आखज से यहूअद्दः उत्पन्न हुआ और यहूअद्दः से अलामत और अजिमौत और जिमरी उत्पन्न हुए और जिमरी से मौजा उत्पन्न ३७ हुआ। और मौजा से बनअः उत्पन्न हुआ उस का बेटा रफः उस का बेटा ३८ इलिअसः उस का बेटा असील। और असील के छः बेटे थे जिन के ये नाम हैं अजरिकाम आकिरू और इसमअएल और सअरियाह और अबदियाह और हन्नान ये ३९ सब असील के बेटे। और उस के भाई इशक के बेटे औलाम उस का पहिलौठा और दूसरा यऊश और तीसरा इलिफलत। और ये औलाम के बेटे बड़े ४० पराक्रमी धनुषधारी थे और बहुत से बेटे और पोते रखता था ये सब डेढ़ सौ बिनयमीन के बेटे॥

नवां पर्व्व

१ यों सारे इसराएल बंशावली गिने गये और देखो वे इसराएल के और यहूदाह के राजाओं की पुस्तक में लिखे हुए थे जो अपने अपराध के कारण बाबुल में उठाये गये॥

२ अब अगिले बासी जो उन के नगरों और अधिकारों में बसते थे सो इसराएली और याजक और लावी और नथीनी ३ थे। और यरूसलम में यहूदाह के सन्तान और बिनयमीन के सन्तान और इफरायम और मुनस्सी के सन्तान रहते थे॥

४ यहूदाह के बेटे फाड्स के सन्तान के बनी के बेटे इमरी के बेटे उमरी के बेटे अम्मिहूद के बेटे ऊती। और शीलूनि ५ का पहिलौठा असायाह और उस के ६ बेटे। और शारिक के बेटे यअएल और उस के भाईबन्द छः सौ नब्बे॥

७ और बिनयमीन के बेटे हसीनूआह के बेटे हूदायाह के बेटे मुसल्लम के बेटे ८ सल्लू। और यरूहम के बेटे इबनियाह और मिकरी के बेटे उज्जी के बेटे ऐलाह और इबनियाह के बेटे रऊएल के बेटे ९ सफतियाह के बेटे मुसल्लम। और उन की बंशावली के समान उन के भाई- बन्द नव सौ छप्पन ये सब अपने अपने पितरों के घराने में पितरों के प्रधान थे॥

१० और याजकों में से यदैअयाह और ११ यहूयरीब और यकीन। और ईश्वर के मन्दिर के आज्ञाकारी अखितूब का बेटा मिरयात का बेटा सदूक का बेटा मुसल्लम का बेटा खिलकियाह का बेटा

१२ अजरियाह। और मलकियाह का बेटा फशिहूर का बेटा यरुहम का बेटा अदायाह और अमीर के बेटे मुसलिमियत का बेटा मुसल्लम का बेटा यहजीर: का
१३ बेटा अदियल का बेटा मअसी। और उन के भाईबन्द अपने अपने पितरों के घराने के प्रधान एक सहस्र सात सौ साठ थे ईश्वर के मन्दिर के कार्य्य के लिये महाबीर थे॥

१४ और लावियों में से मिरारियों के बेटों में से हसवियाह का बेटा अजरिकाम का बेटा हसूब का बेटा समरैयाह।
१५ और बक़बक़्क़र और हरस और जलाल और आसफ का बेटा जिकरी का बेटा
१६ मीका का बेटा मत्तनियाह। और यदूतून का बेटा जलाल का बेटा समरैयाह का बेटा अबदियाह और नतूफातियों के गांवों के बासी इलकनः का बेटा
१७ असा का बेटा बरकियाह। और सलूम और अक़ूब और तलमान और अखिमान और उन के भाईबन्द द्वारपाल थे और
१८ सलूम श्रेष्ठ था। और वह अब लों पूरब ओर राजा के फाटक में रहता था वे लावियों के सन्तान की जथाओं में द्वार-
१९ पाल थे। और कुरह का बेटा अबियासफ का बेटा कारी का बेटा सलूम और उस के पिता के घराने के भाईबन्द जो कोराथी थे सेवा के कार्य्य पर और तंबू के डेवढ़ीदार थे और उन के पितर परमेश्वर की सेना के प्रवेश के रक्षक
२० थे। और इलिअजर का बेटा फीनिहास पिछले दिनों में उन पर आज्ञाकारी था
२१ और परमेश्वर उस के साथ था। मुसलिमियाह का बेटा जकरियाह मंडली
२२ के तंबू का द्वारपाल था। ये सब फाटकों के लिये दो सौ बारह चुने गये थे अपनी अपनी बंशावली में और गांवों में गिने गये जिन्हें दाऊद और समूएल दर्शी ने उन के कार्य्यों में ठहराया था। सो वे
२३ और उन के सन्तान परमेश्वर के मन्दिर के फाटकों पर थे अर्थात् तंबू के घर
२४ की चौकी के लिये। द्वारपाल चौदिशा थे अर्थात् पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण
२५ की ओर। और उन के गांवों में उन के भाईबन्द जब तब सात दिन पीछे
२६ उन के साथ आते थे। क्योंकि वे लावी चार प्रधान द्वारपाल अपने अपने कार्य्य में रहते थे और ईश्वर के मन्दिर
२७ की कोठरियों और भंडारों पर थे। और वे ईश्वर के मन्दिर की चारों ओर रात को रहते थे क्योंकि उन्हें चौकी देना था और हर बिहान उस का खोलना
२८ उन्हीं से था। और उन में से सेवा के पात्रों के रक्षक थे जिसतें वे उन्हें बाहर
२९ भीतर गिन गिनके ले आवें ले जावें। और उन में से भी पवित्र स्थान के पात्र और समस्त हथियार और चोखा पिसान और दाखरस और तेल और लोबान और सुगंध द्रव्य के देखने के लिये ठहराये
३० गये थे। और याजक के बेटों में से
३१ कितने सुगंध द्रव्य का तेल पेरते थे। और लावियों में से मत्तितियाह का सलूम कुरही पहिलौठा था वे बस्तें उसी के
३२ बंश में थीं जो थालों में बनती थीं। और किहातों के बेटों में से उन के भाईबन्द हर बिश्राम को भेंट की रोटी
३३ सिद्ध करने पर थे। और ये लावियों के पितरों के प्रधान गायक थे कोठरियों की सेवा से रहित थे क्योंकि कार्य्य
३४ दिन रात उन्हीं पर था। लावियों के पितरों के ये प्रधान अपनी अपनी पीढ़ियों में प्रधान यरुसलम में रहते थे॥

३५ और जिबऊन का पिता यऊएल जिबऊन में रहता था और उस की
३६ पत्नी का नाम मअकः। और उस का पहिलौठा बेटा अबदून तब सूर और

कीस और बअल और नैयिर और नदब ।
३७ और जदूर और अखयू और जकरियाह
३८ और मिकलात । और मिकलात से
शिमयाम उत्पन्न हुआ और वे भी अपने
भाइयों के साथ यरूसलम में अपने
३९ भाइयों के सन्मुख रहते थे । और नैयिर
से कीस उत्पन्न हुआ और कीस से
साऊल उत्पन्न हुआ और साऊल से
यूनतन और मलिकिसूअ और अबिनदाब
४० और इशबाअल उत्पन्न हुए । और यूनतन
के बेटे मुरीब्बअल और मुरीब्बअल से
४१ मीक: उत्पन्न हुआ । और मीक: के बेटे
४२ पैतून और मलिक और तहरीअ । और
आखज से जारा उत्पन्न हुआ और जारा
से अलामत और अजिमौत और जिमरी
४३ उत्पन्न हुए और जिमरी से मौजा और
मौजा से बनअ: उत्पन्न हुआ और उस
का बेटा रिफायाह उस का बेटा
४४ इलिअस: उस का बेटा असील । और
असील के छ: बेटे थे जिन के ये नाम
अजरिकाम बोकरू और इसमअएल और
शिअरियाह और अबदियाह और हन्नान
ये असील के बेटे थे ॥

दसवां पर्व्व ।

१ अब फिलिस्ती इसराएल से लड़े
और इसराएल फिलिस्तियों के आगे से
भागे और जिलबूअ पर्वत में जूझ गये ।
२ और फिलिस्ती साऊल के और उस के
बेटों के पीछे पीछे धाये गये और
फिलिस्तियों ने साऊल के बेटों यूनतन
को और अबिनदाब को और मलिकिसूअ
३ को मार डाला । और संग्राम साऊल
के बिरुद्ध हुआ और धनुषधारियों ने
उसे मारा और धनुषधारियों से घायल
४ किया गया । तब साऊल ने अपने
शस्त्रधारी से कहा कि अपनी तलवार
खींचके मुझे गोद दे ऐसा न हो कि ये
अखतने आके मेरा अपमान करें परन्तु
उस के शस्त्रधारी ने न माना क्योंकि
वह निपट डर गया तब साऊल एक
५ तलवार लेके उस पर गिरा । और साऊल
को मृतक देखके उस का शस्त्रधारी
भी उसी रीति से अपनी तलवार पर
६ गिरके मर गया । सो साऊल और उस
के तीन बेटे और उस के सारे घराने
७ एक साथ मर गये । और जब इसराएल
के सारे मनुष्यों ने जो तराई में थे देखा
कि वे भाग गये और साऊल और उस
के बेटे मर गये तब वे अपने अपने
नगरों को छोड़ छोड़ भाग गये और
फिलिस्ती आके उन में बसे ॥

८ और दूसरे दिन ऐसा हुआ कि जब
फिलिस्ती जूझे हुओं को नंगा करने
आये तब उन्हों ने जिलबूअ पर्वत पर
साऊल को और उस के बेटों को पड़े
९ पाया । और उसे नंगा करके उस के
सिर को और उस के अस्त्र को लेके
फिलिस्तियों के देश में चारों ओर
भेजा जिसतें उन की मूर्त्तिन के और
१० लोगों के पास संदेश पहुंचावें । और
उन्हों ने अपने देवों के मन्दिर में उस
के शस्त्र को रक्खा और दजून के मन्दिर
में उस के सिर को लटका दिया ॥

११ और जब जिलिअद में यबीस के सारे
लोगों ने सब कुछ सुना जो फिलिस्तियों
१२ ने साऊल से किया था । तब सारे बीर
उठे और साऊल की लोथ और उस के
बेटों की लोथें लिईं और उन्हें यबीस
में लाये और यबीस में बलूत पेड़ तले
उन की हड्डियां गाड़ीं और सात दिन
१३ लों ब्रत किया । सो साऊल अपने पाप
के लिये मर गया जो उस ने ईश्वर के
बिरुद्ध अर्थात् ईश्वर के बचन के बिरुद्ध
किया जो उस ने न माना और इस लिये
१४ भी कि उस ने भुतनी से पूछा था । और
उस ने परमेश्वर से न बूझा इस लिये

उस ने उसे मारा और यस्सी के बेटे दाऊद की ओर राज्य को फेर दिया॥

ग्यारहवां पर्ब्ब।

१ तब सारे इसराएल ने हबरून में दाऊद पास एकट्ठे होके कहा कि देखिये २ हम तेरे हाड़ मांस हैं। और कल परसों भी अर्थात् जब साऊल राजा था तब इसराएल को तू बाहर भीतर ले आया जाया करता था और परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे कहा कि तू मेरे इसराएल लोगों को चरावेगा और तू मेरे इसराएल ३ लोगों का अध्यक्ष होगा। इस लिये इसराएल के सारे प्राचीन हबरून में राजा पास आये और हबरून में दाऊद ने परमेश्वर के आगे उन से नियम किया और समूएल के द्वारा से परमेश्वर के बचन के समान उन्हों ने दाऊद को इसराएल पर राज्याभिषेक किया॥

४ और दाऊद और सारे इसराएल यरूसलम को जो यबूस है गये जहां देश ५ के बासी यबूसी थे। और यबूस के बासियों ने दाऊद से कहा कि तू यहां आने न पावेगा तथापि दाऊद ने सैहून के गढ़ को लिया वही दाऊद का नगर ६ हुआ। और दाऊद ने कहा कि जो कोई पहिले यबूसियों को मारेगा सो श्रेष्ठ और सेनापति होगा तब जरूयाह का बेटा यूअब पहिले चढ़ गया और ७ श्रेष्ठ हुआ। और दाऊद ने गढ़ में बास किया इस लिये उन्हों ने उस ८ का नाम दाऊद का नगर रक्खा। और उस ने नगर को चारों ओर अर्थात् मिल्लो से चारों ओर बनाया और यूअब ९ ने नगर के रहे हुए को सुधारा। और दाऊद बढ़ता गया क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर उस के साथ था॥

१० और दाऊद के शूरों के श्रेष्ठ भी ये हैं जो इसराएल के बिषय में परमेश्वर के बचन के समान उसे राजा बनाने के लिये दृढ़ता से सारे इसराएल के संग उस्से मिलचे रहे। और दाऊद के ११ शूरों की गिनती यह है युसुबिआम एक हकमूनी प्रधानों में श्रेष्ठ उस ने तीन सहस्र पर अपना भाला उठाके एकही समय में उन्हें मारा। और उस के पीछे १२ अहोहीदोदो का बेटा इलिअजर जो तीन शूरों में एक था। वह दाऊद के १३ साथ अफसदम्मीम में था जहां फिलिस्ती संग्राम के लिये एकट्ठे हुए थे उस स्थान में जव भरा हुआ था और लोग फिलिस्तियों के आगे से भागे। और उन्हों ने १४ उस खेत में खड़े होके उसे छुड़ाया और फिलिस्तियों को मारा और परमेश्वर ने उन्हें बड़ा जयमान किया॥

सो तीसों के प्रधान तीन जन अदूलाम की कन्दला से दाऊद पास चट्टान १५ को गये और फिलिस्तियों की सेना रिफाईम की तराई में छावनी किये हुई थी। और उस समय दाऊद गढ़ में था और १६ फिलिस्तियों का थाना बैतलहम में। तब दाऊद ने बड़ी लालसा से कहा १७ हाय कि कोई मुझे बैतलहम के फाटक के कुए का जल पिलाता। तब वह १८ तीनों फिलिस्तियों की सेना को तोड़के बैतलहम के फाटक के कुए का जल खींचके दाऊद पास लाये परन्तु दाऊद ने उसे न पिया पर उसे परमेश्वर के निमित्त उंडेला। और कहा कि मेरा ईश्वर १९ न करे कि मैं ऐसा करूं क्या मैं इन मनुष्यों के लोहू को पीऊं जो अपना अपना प्राण जोखिम में लाये क्योंकि वे अपने अपने प्राण के जोखिम से उसे लाये इस लिये उस ने उसे न पिया यह कार्य्य इन तीन बलवन्तों ने किया॥

और यूअब का भाई अबिशै इन २० तीनों का प्रधान था क्योंकि उस ने तीन

सो उस ने भाला चलाके उन्हें घात किया। २१ और वह तीनों में नामी था। उन तीनों में वह दो से प्रतिष्ठित था क्योंकि वह उन का प्रधान था तथापि वह अगिले तीन लों न पहुंचा॥

२२ कबिएल के शूर का बेटा यहूयदः का बेटा बिनायाह जो कार्य्य में महान था उस ने सिंह तुल्य मोअब दो जन को घात किया उस ने पाले के दिन में भी उतरके एक गड़हे में सिंह को मार २३ डाला। और उस ने नपे हुए पांच हाथ के एक मिस्री को मार डाला और उस मिस्री के हाथ में जुलाहे के तूर के समान भाला था परन्तु वह एक लट्ठ लेके उस पर उतरा और भाले को उस के हाथ से छीन लिया और उसी के २४ भाले से उसे मार डाला। यहूयदः के बेटे बिनायाह ने ये ये कार्य्य किये और २५ तीन शूरों में नामी था। देखो वह तीसों में प्रतिष्ठित था परन्तु अगिले तीन लों न पहुंचा और दाऊद ने उसे अपना निज मंत्री किया॥

२६ सेनाओं के भी शूर यूअब का भाई असहेल बैतलहमी दूदू का बेटा इलह- २७ नान। हरोरी सम्मात फलूनी खालिस। २८ तकूई अक्कीस का बेटा ईरा अनतातो २९ अबिअजर। हूशासी सिबकी अखूही ३० इलई। नतूफाती महरी नतूफाती बअना ३१ का बेटा हिलद। बिनयमीनी सन्तानों के जिबिअत के रैबी का बेटा इत्ती ३२ अमअतूनी बिनायाह। जअश की नालियों ३३ का हूरी अरबाती अबिएल। बहरूमी अज़िमौत शअलबूनी ईलियहबा। ३४ जिज़ूनी हशीम के बेटे हरारी शजी का ३५ बेटा यूनातन। हरारी शक्र का बेटा अखीआम ऊर का बेटा इलिफाल। ३६ मिकेराती हिफ्र फलूनी अखियाह। ३७ करमिली हसू अज़बी का बेटा नअरी। नातन का भाई यूएल हजरी ३८ मिबखार। अमूनी जिलक बेरोती ३९ नहाराई सरूया के बेटे यूआब का अस्त्र- धारी। इथरी ऐरा इथरी गारेब। ४० हत्ती औरिया अहलाई का बेटा ज़ाबाद। ४१ राओबीनी शीज़ा का बेटा अदीना ४२ राओबीनियों का एक प्रधान और उस के संग तीस जन। मअका का बेटा ४३ हनान और मितनी यूशाफात। अश- ४४ तिराती उज्जिया अरूईरी होथान के बेटे शामा और जईएल। शिमरी यदि- ४५ याएल उस का भाई योहा तीसीती। महावी इलईल और इलनआम के बेटे ४६ यरीबाई और यूशाविया और मोआबी इतमाह। एलीयेल और ओबेद और ४७ मिसोबाती यसिएल॥

बारहवां पर्ब्ब।

और ये वे हैं जो जिकलाग में १ दाऊद पास आये जब वह कीश के बेटे साऊल के कारण आप को बंद करता था और वे शूरों में संग्राम में सहायक थे। वे धनुष से लैस थे और २ पत्थरों को दहिने बायें हाथ से और बाणों को धनुष से मार सक्ते थे जो बिनयमीनी साऊल के भाईबन्द में से थे। अहईअज़र प्रधान और गिबियाती ३ शिमाह के बेटे यूआश और अज़मावेत के बेटे यज़ाईल और पलत और अनतोथी बराका और याहू। और गबिऊनी ४ इसमाया तीसों में शूर और तीसों का प्रधान और इर्मियाह और इहज़िएल और योहानान और गदराती यूसबाद। इलूजाई और यरीमूत और बिअलिया ५ और शिमरिया और हरूफी शिफतिया। ईलकाना और इसिया और अज़रईल ६ और यूज़ेर और कोरहाती यशोबिआम। और गिदोरी इरोहाम के बेटे योइला ७ और ज़बदीया॥

८ और जद्दियों के और और सेना में के संग्राम के योग्य जो ढाल और फरी उठा सक्ते थे जिन के मुंह सिंह के मुंह के समान और जो पहाड़ी में हरिणों की नाईं चालाक थे और बन के दृढ़ स्थान में दाऊद पास अलग हुए। ९ पहिले एजेर दूसरा उबदिया तीसरा १० इलिआब। चौथा मिशमन्ना पांचवां ११ इरमिया। छठवां अत्तई सातवां एली- १२ येल। आठवां यूहानान नवां एलजा- १३ बाद। दसवां इरमिया ग्यारहवां मक- १४ बनई। सेना के प्रधान जद के बेटों में के थे जो एक छोटे से छोटा था सो सौ पर था और बड़े से बड़ा सहस्र १५ पर। ये वे हैं जिन्हों ने पहिले मास में जब यरदन के कराड़े डूबे थे पार उतरके तराइयों के सारे लोगों को पूरब और पश्चिम ओर से भगा दिया॥

१६ और बिनयमीन के और यहूदाह के सन्तान कितने लोग दाऊद पास गढ़ १७ में आये। और दाऊद उन की भेंट को गया और उन से कहने लगा कि यदि तुम लोग निर्विरोध होके मेरे उपकार के निमित्त मुझ पास आये हो तो मेरा मन तुम से एक होगा परन्तु जो मुझे मेरे बैरियों के हाथ पकड़वाने आये हो यद्यपि मेरे हाथ में कुछ अंधेर नहीं है तो हमारे पितरों का ईश्वर देखे और १८ न्याय करे। तब सेनापतियों के श्रेष्ठ अमासी पर आत्मा उतरा और कहा हे दाऊद हम तेरे और हे यस्सी के बेटे हम तेरे हैं कुशल मुझ पर और कुशल तेरे उपकारियों पर क्योंकि तेरा ईश्वर तेरा उपकार करता है तब दाऊद ने उन्हें ग्रहण किया और उन्हें जथा का प्रधान बनाया॥

१९ और मुनस्सी में से कई जन दाऊद पास गये जब वह फिलिस्तियों के संग साऊल के विरुद्ध संग्राम को गया परन्तु उन्हों ने उन का उपकार न किया क्योंकि फिलिस्तियों के अध्यक्षों ने जानके ही यह कहके उसे बिदा किया कि वह हमारे सिर पर से अपने स्वामी साऊल २० से जा मिलेगा। जब वह सीकलग में गया तब मुनस्सी में से अदन: और यूज़- बद और यदीअएल और मीकाएल और यूज़बद और इलिहू और जिल्लती मुनस्सी में के सहस्रों के पति उस पास आये। २१ और उन्हों ने जथा के विरुद्ध दाऊद का उपकार किया क्योंकि वे सब के सब महावीर और सेना में प्रधान थे। २२ क्योंकि उस समय प्रतिदिन दाऊद के उपकार के लिये लोग चले आते थे यहां लों कि बड़ी सेना जैसी ईश्वर की सेना हुई॥

२३ और श्रेष्ठों की यह गिनती संग्राम के लिय हाथयारबन्द लेस दाऊद पास हब- रून को आये जिस्तें परमेश्वर के बचन के समान साऊल का राज्य दाऊद की २४ ओर फेर देवें। यहूदाह के सन्तान जो ढाल और बरछी लिये थे छ: सहस्र आठ २५ सौ जन संग्राम के लिये लैस। समऊन के सन्तान संग्राम के लिये महावीर सात २६ सहस्र एक सौ। लावी के सन्तान चार २७ सहस्र छ: सौ। और हारूनियों के अगु- आ यहूयद: और उस के संग तीन सहस्र २८ सात सौ। और सदूक एक तरुण महा- बीर और उस के पिता के घराने से २९ बाईस प्रधान। और बिनयमीन के सन्तान साऊल के भाईबन्द में से तीन सहस्र क्योंकि अब लों उन में से एक मंडली साऊल के घर की पहरू थी। ३० और इफरायम के सन्तान में से बीस सहस्र आठ सौ महाबीर अपने अपने ३१ पितरों के घराने में नामी। और मुनस्सी की आधी गोष्ठी में से अठारह सहस्र

को नाम नाम से बुलाये गये जिसतें
३२ आके दाऊद को राजा करें। और इशकार के सन्तानों में से जो समयों के ज्ञाता और जानते थे कि इसराएल क्या करेगा उन में से श्रेष्ठ दो सौ और उन के सारे भाईबन्द उन की आज्ञा में थे।
३३ जबुलून में से जो संग्राम को निकलते थे युद्ध के सारे हथियार सहित युद्ध में निपुण पचास सहस्र जो पांतों में स्थिर
३४ रहि सक्ते थे और दुचित न थे। और नफ़ताली में से एक सहस्र सेनापति और उन के संग सैंतीस सहस्र ढाल और
३५ भाला सहित। और दानियों में से संग्राम में निपुण अट्ठाईस सहस्र छः सौ।
३६ और यसर में से जो संग्राम को निकलते
३७ थे चालीस सहस्र संग्राम में निपुण। और यरदन के पार से रूबिनियों में से और जद्दियों में से और मुनस्सी की आधी गोष्ठी में से युद्ध के सारे प्रकार के हथियार सहित संग्राम के लिये एक लाख
३८ बीस सहस्र जन। ये सब योद्धा पांतों में स्थिर खरे मन से हबरून में आये जिसतें दाऊद को सारे इसराएल पर राजा करें और इसराएल के सारे उबरे हुए लोग एक मन से दाऊद को राजा
३९ बनाने आये। और वे दाऊद के संग खाते पीते वहां तीन दिन रहे क्योंकि उन के भाईबन्दों ने उन के लिये सिद्ध
४० किया था। और इशकार के और जबुलून के और नफ़ताली के आसपास के लोग भी गदहों पर और ऊंटों पर और खच्चरों पर और बैलों पर भोजन रोटी और गूलर और अंगूर के गुच्छे और दाखरस और तेल और बैल और भेड़ बहुताई से लाये क्योंकि इसराएल में बड़ा आनन्द हुआ

तेरहवां पर्व्व

१ और उस के पीछे दाऊद ने सहस्रपति से और शतपति से और हर एक अगुआ से परामर्श किया। और दाऊद
२ ने इसराएल की सारी मंडली को कहा कि जो तुम्हें और हमारे ईश्वर परमेश्वर को भला लगे तो आओ अपने भाईबन्द पास जो इसराएल के सारे देश में बच रहे हैं हर एक स्थान में और उन के संग याजकों के और लावियों के पास जो उन के नगरों में और खिवानों में हैं संदेश भेजें जिसतें
३ वे हमारे पास एकट्ठे होवें। और चलो अपने ईश्वर की मंजूषा को अपने यहां फेर लावें क्योंकि साऊल के दिनों में
४ हम ने उस्से नहीं बूझा। और सारी मंडली ने कहा कि हम यह बात करेंगे क्योंकि वह बात सारे लोगों की दृष्टि में अच्छी लगी॥

५ तब दाऊद ने मिस्र के सैहूर से हमात की पैठ लों सारे इसराएल को एकट्ठे किया जिसतें ईश्वर की मंजूषा
६ को करयतअरीम से लावें। तब सारे इसराएल दाऊद के संग बअलात को अर्थात् यहूदाह के करयतअरीम को चढ़ गये जिसतें उस ईश्वर परमेश्वर की मंजूषा को जो करोबियों के मध्य बास करता है जिस के नाम से पुकारी
७ जाती है वहां से ऊपर लावें। और उन्हों ने अबिनदाब के घर से ईश्वर की मंजूषा को नई गाड़ी पर धरा और उज्जा और अखयू ने उस गाड़ी
८ को हांका। और दाऊद और सारे इसराएल अपनी अपनी सारी सामर्थ्य और बीन और तबले और खंजड़ी और करताल और तुरही से ईश्वर के आगे
९ गाते बजाते गये। और जब वे कैदून के खलिहान को पहुंचे तब उज्जा ने मंजूषा को धरने के लिये अपना हाथ बढ़ाया क्योंकि बैलों ने ठोकर खाई।

१० तब परमेश्वर का क्रोध उज्जा पर भड़का और उस ने उसे इस कारण घात किया कि उस ने अपना हाथ मंजूषा पर रक्खा और वह वहां परमेश्वर के ११ आगे मर गया। और दाऊद उदास हुआ इस कारण कि परमेश्वर ने उज्जा पर चिघाड़ डाली इस लिये आज लों वह स्थान उज्जा का दरार कहावता १२ है। और उस दिन दाऊद यह कहके ईश्वर से डरा कि ईश्वर की मंजूषा १३ को अपने पास क्योंकर लाऊं। सो दाऊद मंजूषा को अपने यहां दाऊद के नगर में न लाया परन्तु जिती आबिद-अदूम के घर में उसे एक अलंग ले गया॥

१४ और ईश्वर की मंजूषा आबिदअदूम के घर में तीन मास रही और परमेश्वर ने आबिदअदूम के घराने पर और उस की सारी संपत्ति पर आशीस दिई॥

चौदहवां पर्ब्ब।

१ तब सूर के राजा हीराम ने दाऊद पास उस के घर बनाने के लिये दूतों को और देवदार लट्ठों को थवइयों और २ बढ़इयों के साथ भेजा। और दाऊद को निश्चय हुआ कि परमेश्वर ने इसराएल पर मेरे राज्य को स्थिर किया और अपने इसराएल लोग के लिये मेरा राज्य बढ़ाया॥

३ तब दाऊद ने यरूसलम में और पत्नियां किईं और दाऊद से और बेटे ४ बेटियां उत्पन्न हुए। और उस के सन्तान के नाम जो यरूसलम में उत्पन्न हुए ये हैं सम्मूअ और सोबाब नातन और ५ सुलेमान। और इबहार और इलिसूअ: ६ और इलिफलत। और नूगः और नफग ७ और यफीअ और इलिसमः। और बअल-यदअ और इलिफलत॥

८ जब फिलिस्तियों ने सुना कि दाऊद सारे इसराएल पर राज्याभिषिक्त हुआ तब सारे फिलिस्ती दाऊद की खोज को निकले और दाऊद सुनके उन के विरुद्ध निकला। और फिलिस्ती आये ९ और रिफाईम की तराई में फैल गये। और दाऊद ने यह कहके परमेश्वर से १० बूझा कि मैं फिलिस्तियों पर चढ़ जाऊं और तू उन्हें मेरे हाथ में सौंप देगा तब परमेश्वर ने उसे कहा कि चढ़ जा क्योंकि मैं उन्हें तेरे हाथ में सौंपूंगा। सो वे बअलफरसीन को चढ़ गये और ११ दाऊद ने वहां उन्हें मारा तब दाऊद ने कहा कि ईश्वर ने पानियों के तोड़ की नाईं मेरे बैरियों को तोड़ा इस लिये उन्हों ने उस स्थान का नाम बअलफरसीन रक्खा। और जब उन्हों १२ ने अपने देवों को वहां छोड़ा तो दाऊद ने आज्ञा किई और वे आग से जलाये गये॥

और फिलिस्ती फेर तराई में फैल १३ गये। इस लिये फेर दाऊद ने ईश्वर से १४ बूझा और ईश्वर ने उसे कहा कि उन के पीछे मत चढ़ जा उन से अलग हो जा और तूत पेड़ों के साम्ने से उन पर जा पड़। और ऐसा होगा कि जब तू १५ तूत पेड़ों के ऊपर चलने का सन्नाटा सुने तब तू संग्राम को निकल क्योंकि फिलिस्तियों की सेना के मारने को ईश्वर तेरे आगे आगे निकल गया। और जैसा ईश्वर ने दाऊद को आज्ञा १६ किई तैसा उस ने किया और उन्हों ने फिलिस्तियों की सेना को जिबऊन से जजर लों मारा। और दाऊद की १७ कीर्त्ति सारे देशों में फैली और परमेश्वर ने सारे जातिगणों पर उस का भय डाला॥

पंदरहवां पर्ब्ब।

और दाऊद ने अपने नगर में अपने १

लिये घर बनाये और ईश्वर की मंजूषा के लिये एक स्थान सिद्ध किया और उस
२ के लिये डेरा खड़ा किया। तब दाऊद ने कहा कि लावियों को छोड़ ईश्वर की मंजूषा उठाने को किसी को उचित नहीं क्योंकि ईश्वर की मंजूषा उठाने को और नित्य की सेवा करने को परमेश्वर ने उन्हें चुन लिया है॥

३ और दाऊद ने परमेश्वर की मंजूषा को उस स्थान में लाने के लिये जो उस ने उस के लिये सिद्ध किया था यरूसलम में सारे इसराएल को एकट्ठे किया।
४ और दाऊद ने हारून के सन्तान को
५ और लावियों को बटोरा। किहात के बेटों में से ऊरिएल प्रधान और उस के
६ भाईबन्द एक सौ बीस। मिरारी के बेटों में से असायाह प्रधान और उस के
७ भाईबन्द दो सौ बीस। जैरसुम के बेटों में से यूएल प्रधान और उस के भाईबन्द
८ एक सौ तीस। इलिसफन के बेटों में से समऐयाह प्रधान और उस के भाई-
९ बन्द दो सौ। हबरून के बेटों में से इलिएल प्रधान और उस के भाईबन्द
१० अस्सी। ऊज्जिएल के बेटों में से अम्मिनदब प्रधान और उस के भाईबन्द एक सौ बारह॥

११ और दाऊद ने सदूक और अबियतर याजक को और लावियों को ऊरिएल को असायाह को और यूएल को समऐयाह को और इलिएल को और अम्मिनदब
१२ को बुलाया। और उन्हें कहा कि हे लावियों के पितरों के प्रधानो तुम लोग और तुम्हारे भाईबन्द आप आप को पवित्र करें जिसतें इसराएल के ईश्वर परमेश्वर की मंजूषा को उस स्थान में जो मैं ने सिद्ध किया है उठा लाओ।
१३ क्योंकि तुम लोगों ने पहिले नहीं किया हमारे ईश्वर परमेश्वर ने हम पर बिघाड़ डाली क्योंकि हम ने उसे बिधि से न खोजा॥

१४ सो याजकों ने और लावियों ने इसराएल के ईश्वर परमेश्वर की मंजूषा लाने को आप आप को पवित्र किया।
१५ और जैसा मूसा ने परमेश्वर के बचन के समान आज्ञा किई थी तैसा ही लावियों के सन्तानों ने बहंगरों सहित अपने अपने कांधों पर ईश्वर की मंजूषा उठाई॥

१६ और दाऊद ने लावियों के प्रधान को कहा कि अपने भाईबन्दों को गायक ठहराओ कि वे बाजा अर्थात् खंजड़ी और बीना और करताल को बजाके आनन्द से अपना शब्द उठाके गावें।
१७ सो लावियों में से ये ठहराये गये यूएल के बेटे हमान को और उस के भाइयों में से बरकियाह के बेटे आसफ को और उन के भाईबन्द मिरारी के बेटों में से
१८ कौसायाह के बेटे ऐतान को। और उन के साथ उन के भाईबन्द दूसरी पांती के जकरियाह बिन और यअजिएल और सिमरामात और याहिएल और इलिअब और बिनायाह और मअसियाह और मत्तितियाह और इलिफिलेहू और मिकनयाहू और आबिदअदूम और यईएल द्वारपालक।
१९ सो हमान और आसफ और ऐतान गायक पीतल के करताल बजाते
२० थे। और अलामूस पर खंजड़ियों के साथ जकरियाह और यअजिएल और सिमिरामात और यहिएल और उन्नी और इलिअब और मअसियाह और बिनायाह।
२१ और शिमीनिस पर जय करने के लिये बीनों से मत्तितियाह और इलिफिलेहू और मिकनेयाहू और आबिदअदूम और यईएल और अजजियाह को ठहराया॥

२२ और गाने के लिये लावियों में से प्रधान कननियाह को उस ने गाने के

विषय में सिखाया क्योंकि वह निपुण था। २३ और मंजूषा के लिये द्वारपाल बरकियाह और इलकनः॥

२४ और शबनियाह और यहूशफत और नासानएल और अमासाई और जिकरिया और बिनाया और इलीयज़र याजक ईश्वर की मंजूषा के आगे तुरही बजाते थे और मंजूषा के लिये ओबिदअदूम और यहियाह द्वारपाल थे॥

२५ सो दाऊद और इसराएल के प्राचीन और सहस्रपति आनन्द से ओबिदअदूम के घर से परमेश्वर के नियम की मंजूषा २६ लाने को गये। और ऐसा हुआ कि जब ईश्वर ने उन लावियों को सहाय किई जो परमेश्वर के नियम की मंजूषा को उठाते थे तब उन्हों ने सात बैल और २७ सात मेंढे चढ़ाये। और दाऊद और सारे लावी जो मंजूषा को उठाते थे और गायक और गायकों के संग गान का गुरु किनानिया सूती बस्त्र पहिने था और दाऊद पर भी सूती अफूद था। २८ यों सारे इसराएल ललकारते हुए नरसिंगा और तुरही और करताल के शब्द से और खंजड़ी और बीणा के बड़े शब्द से इसराएल के परमेश्वर के नियम की मंजूषा को ऊपर लाये॥

२९ और यों हुआ कि ज्यों परमेश्वर के नियम की मंजूषा दाऊद के नगर में पहुंची त्यों साऊल की पुत्री मीकल ने दाऊद को गाते और नाचते एक खिड़की में से देखा तो उस ने अपने मन में उसे तुच्छ समझा॥

सोलहवां पर्ब्ब।

१ सो वे ईश्वर की मंजूषा ले आये और जो तंबू दाऊद ने उस के लिये खड़ा किया था उसे उस के मध्य रक्खा और उन्हों ने परमेश्वर के आगे बलिदान की भेंटें और कुशल की भेंटें चढ़ाईं। और जब दाऊद बलिदान की २ भेंटें और कुशल की भेंटें चढ़ा चुका तब उस ने परमेश्वर के नाम से लोगों को आशीष दिया। और उस ने हर एक ३ इसराएल को क्या पुरुष क्या स्त्री एक एक रोटी और अच्छा टुकड़ा मांस और एक एक दाख की टिकिया दिई॥

४ और उस ने कितने लावियों को परमेश्वर की मंजूषा के आगे सेवा करने के लिये और स्मरण करने के लिये और इसराएल के ईश्वर परमेश्वर का धन्य मान्ने और स्तुति करने के लिये स्थापित ५ किया। अर्थात् प्रधान आसफ को और उस के पीछे जकरियाह यईएल और शिमिरामात को और यहिएल और मत्तितियाह और इलिआब और बिनायाह और ओबिदअदूम को और यूएल को बीणा और बरबत लिये हुए ठहराया परन्तु ६ आसफ करताल बजाता था। और बिनायाह और यहजिएल याजक को भी तुरही लिये हुए नित्य ईश्वर के नियम की मंजूषा के आगे ठहराया॥

७ तब उसी दिन दाऊद ने आसफ के और उस के भाइयों के हाथ में परमेश्वर का धन्य मान्ने को यह गीत सौंपा॥

८ परमेश्वर का धन्य मानो उस का नाम लेओ लोगों में उस की क्रिया प्रगट ९ करो। उस के लिये गाओ उस के लिये बजाओ उस के सारे आश्चर्य्य कार्य्य की १० चर्चा करो। उस के पवित्र नाम की महिमा करो जिसतें परमेश्वर के खोजियों के मन आनन्दित होवें। ११ परमेश्वर को और उस के बल को ढूंढ़ो उस १२ का रूप सदा ढूंढ़ो। उस के आश्चर्य्य कार्य्यों उस के अचंभों और उस के मुंह १३ के बिचारों को स्मरण करो। हे उस के सेवक इसराएल के बंशो हे उस के चुने हुओ यअकूब के सन्तानो। १४ वही

परमेश्वर हमारा ईश्वर उस के बिचार सारी पृथिवी में हैं । उस के नियम को १५ जो बचन उस ने सहस्र पीढ़ियों के लिये आज्ञा किई है नित मनन करो । जो १६ उस ने अबिरहाम के साथ किया और इज़हाक से जो उस ने किरिया खाई । और उसे यअकूब को ब्यवस्था के लिये १७ इसराएल को सनातन के नियम के लिये स्थिर किया । कि मैं कनआन का देश १८ तुझे देऊंगा जो तुम्हारे अधिकार का भाग है । जब तुम लोग गिने हुए जन १९ थे अर्थात् थोड़े थे और उस में परदेशी । और वे एक जाति से दूसरी जाति को २० गये और एक राज्य से दूसरे लोग को । तब उस ने किसी को उन्हें सताने न २१ दिया हां उस ने उन के कारण राजाओं को डपटा । और कहा कि मेरे अभि- २२ षिक्तों को मत छूओ और मेरे भविष्य- द्वक्तों को दुःख मत देओ ॥

२३ हे सारी पृथिवी परमेश्वर के लिये गाओ प्रतिदिन उस की मुक्ति को प्रगट करो । उस की महिमा अन्यदेशियों में २४ उस के आश्चर्य्यित कर्म्म सारे जाति- गणों में बर्णन करो । क्योंकि परमेश्वर २५ महान और अति स्तुति के योग्य है और वही सब देवों से अधिक डरने के योग्य है । क्योंकि जातिगणों के सारे देव २६ तुच्छ हैं परन्तु परमेश्वर ने स्वर्गों को सिरजा । उस का बिभव और प्रतिष्ठा २७ उस के आगे है पराक्रम और आनन्दता उस के स्थान में हैं । परमेश्वर को मानो २८ हे जातिगणों के कुटुम्बो बिभव और पराक्रम परमेश्वर के लिये मानो । पर- २९ मेश्वर के नाम की महिमा उसे देओ भेंट लेके उस के आगे आओ पवित्रता की सुन्दरता में परमेश्वर की सेवा करो । हे सारी पृथिवी उस के आगे डरो जगत ३० भी स्थिर होगा जिसतें टल न जावे । स्वर्गगण आनन्दित होवें और पृथिवी ३१ आनन्द करे और जातिगणों में कहें कि परमेश्वर राज्य करता है । समुद्र और ३२ उस की भरपूरी हलरावे चौगान और सब जो उन में हैं आनन्द करें । तब बन के ३३ पेड़ परमेश्वर के साक्षात के लिये पुकार पुकारके गावें क्योंकि वह पृथिवी का बिचार करने को आता है । परमेश्वर ३४ का धन्यबाद करो क्योंकि वह भला और उस की दया नित्य है । और कहो ३५ हे हमारे मुक्तिदायक ईश्वर हमें बचा और हमें एकट्ठा कर और अन्यदेशियों से हमें छुड़ा जिसतें हम तेरे पवित्र नाम का धन्यबाद करें तेरी स्तुति में बड़ाई करें । इसराएल के ईश्वर परमेश्वर का ३६ धन्यबाद सदा लों होवे और सारे लोगों ने कहा आमीन और परमेश्वर की स्तुति किई ॥

३७ और परमेश्वर के नियम की मंजूषा के आगे उस ने आसफ को और उस के भाईबन्दों को प्रतिदिन के कार्य्य के समान मंजूषा के आगे नित्य सेवा करने के लिये वहां रक्खा । और आबिदअदूम ३८ और उन के भाईबन्द अरसठ और द्वार- पालों के लिये यदूतून का बेटा आबिद- अदूम भी और हासाह को । और पर- ३९ मेश्वर के तंबू के आगे सदूक याजक और उस के भाईबन्द याजकों को उस ऊंचे स्थान में जो जिबऊन में है रक्खा । जिसतें परमेश्वर के लिये सांझ बिहान ४० बलिदान की भेंट की बेदी पर नित्य बलिदान की भेंट चढ़ाने के लिये और परमेश्वर की ब्यवस्था में के सारे लिखे हुए के समान जो उस ने इसराएल को आज्ञा किई थी चढ़ावें । और उन के ४१ संग हमान और यदूतून और रहे हुए जो नाम नाम से कहे गये चुने हुओं को ठह- राया जिसतें परमेश्वर का धन्यबाद करें

इस कारण कि उस की दया सदा लों
४२ है। और शब्द करने के लिये तुरही और करताल और ईश्वर के बाजा को लिये हुए हमान और यदूतून को ठहराया और फाटक के लिये यदूतून के बेटों को।
४३ तब सारे लोग हर एक जन अपने अपने घर गये और दाऊद अपने घराने को आशीस देने को फिरा॥

सत्रहवां पर्ब्ब।

१ अब यों हुआ कि जब दाऊद अपने घर में बैठा था तब दाऊद ने नातन भविष्यद्वक्ता से कहा कि देख मैं देवदारों के घर में रहता हूं परन्तु परमेश्वर के नियम की मंजूषा ओझलों में॥

२ तब नातन ने दाऊद से कहा कि जो तेरे मन में है सो कर क्योंकि परमेश्वर तेरे साथ है॥

३ और उस रात को ऐसा हुआ कि ईश्वर का बचन नातन के पास यह
४ कहते हुए पहुंचा कि। जा और मेरे सेवक दाऊद से कह कि परमेश्वर यों कहता है कि मेरे निवास के लिये तू
५ घर मत बना। क्योंकि जिस दिन से मैं इसराएल को ऊपर लाया आज लों मैं ने घर में बास नहीं किया है परन्तु तंबू तंबू में और डेरे डेरे में रहा किया।
६ जहां कहीं मैं सारे इसराएल के साथ साथ फिरा किया हूं मैं इसराएल के न्यायियों को जिन्हें मैं ने अपने लोगों को चराने की आज्ञा किई यह कहके कोई बचन बोला कि तुम ने मेरे लिये देवदारों का घर क्यों नहीं बनाया।
७ सो अब तू मेरे दास दाऊद से कह कि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि मेरे इसराएल लोगों के ऊपर राज्य करने को मैं ने तुझे भेड़शाला से अर्थात्
८ भेड़ के पीछे से लिया। और जहां जहां तू गया है मैं तेरे साथ साथ रहा हूं और तेरे आगे से तेरे सारे बैरियों को काट डाला है और पृथिवी के महत जनों के नाम के समान तेरा नाम किया
९ है। और मैं ने अपने इसराएली लोगों के लिये एक स्थान ठहराया और उन्हें बसाया और वे उस स्थान में रहेंगे और फिर न घबरावेंगे और दुष्ट जन उन को न सतावेंगे जैसा कि आरंभ में और उन दिनों में कि मैं ने न्यायियों को अपने इसराएली लोगों पर ठहराया।
१० और जब से मैं ने न्यायियों को अपने इसराएल लोगों पर ठहराया दुष्टता के सन्तान उन्हें फेर न उठावेंगे उस्से अधिक तेरे सारे बैरियों को नीचा करूंगा और भी मैं तुस्से कहता हूं कि
११ परमेश्वर तेरा घर बनावेगा। और ऐसा होगा कि जब तेरे दिन पूरे होंगे जिसतें तू अपने पितरों में जावे तब तेरे पीछे तेरे बंश को जो तेरे बेटों में होगा उठाऊंगा और उस के राज्य को स्थिर
१२ करूंगा। वही मेरे लिये एक घर बनावेगा और मैं उस का सिंहासन सदा
१३ लों स्थिर करूंगा। मैं उस का पिता होऊंगा और वह मेरा पुत्र होगा और अपनी दया उस्से उठा न लूंगा जैसा
१४ तेरे अगिलों में से उठाई। परन्तु मैं उसे अपने घर में और अपने राज्य में सदा स्थिर करूंगा और उस का सिंहासन सदा लों स्थिर होगा॥

१५ इन सारी बातों के समान और इस सारे दर्शन के समान नातन ने दाऊद से कहा॥

१६ और दाऊद राजा आया और परमेश्वर के आगे बैठके कहा कि हे परमेश्वर ईश्वर मैं कौन और मेरा घर क्या जो तू ने मुझे यहां लों पहुंचाया।
१७ और हे ईश्वर तेरी दृष्टि में यह छोटी बात थी क्योंकि तू ने अपने सेवक के

घर के विषय में बहुत दिन के लिये कहा है और हे परमेश्वर ईश्वर तू ने मुझे बड़े पद के मनुष्य के समान समझा १८ है। तेरे दास की प्रतिष्ठा के लिये दाऊद तुझे और क्या कह सक्ता है क्योंकि तू अपने दास को पहिचानता १९ है। हे परमेश्वर अपने सेवक के लिये और अपने ही मन के समान यह सारी महिमा बनाने के लिये तू ने यह सारी २० बड़ाई प्रगट किई है। हे परमेश्वर तेरे समान कोई नहीं और तुझे छोड़ कोई ईश्वर नहीं जैसा कि हम ने अपने २१ कानों सुना। और तेरे इसराएल लोगों के तुल्य कौन ऐसी जाति है जिन्हें अपने लोग बनाने को ईश्वर मिस्र में छुड़ाने को गया और मिस्र से अपने छुड़ाये हुए लोगों के आगे जातिगणों को खेद खेदके अपने लिये एक महिमा २२ और भयानक नाम बनाया। क्योंकि अपने इसराएल लोग को तू ने सदा के लिये अपना लोग बनाया और हे परमे-२३ श्वर तू उन का ईश्वर हुआ है। सो अब हे परमेश्वर जो बात तू ने अपने दास के विषय में और उस के घर के विषय में कही है सो सदा के लिये स्थिर होवे और जैसा तू ने कहा है २४ तैसा कर। सो ही स्थिर होवे जिसतें यह कहके तेरे नाम की महिमा सदा होवे सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर अर्थात् इसराएल के लिये ईश्वर और तेरे दास दाऊद का घर तेरे २५ आगे स्थिर होवे। क्योंकि हे मेरे ईश्वर तू ने अपने दास पर प्रकाश किया है कि तू उस के लिये घर बनावेगा इस लिये तेरे सेवक ने तेरे आगे प्रार्थना २६ करने को मन पाया है। और अब हे परमेश्वर तू वही ईश्वर है और अपने सेवक से यह भलाई की बाचा बांधी २७ है। सो अब अपने सेवक के घर पर आशीष दे जिसतें तेरे आगे सदा बना रहे क्योंकि हे परमेश्वर जिस को तू आशीष देता है वह सदा आशीर्वाद होता है॥

अठारहवां पर्व्व।

१ और इन बातों के पीछे ऐसा हुआ कि दाऊद ने फिलिस्तियों को मारा और उन्हें बश में किया और जात को और उस के नगरों को फिलिस्तियों के हाथ से ले लिया॥

२ और मोआब को मारा और मोआबी दाऊद के सेवक हुए और भेंट लाये॥

३ और दाऊद ने सूबः के राजा हदर-अज़र को जब वह फ़ुरात नदी के लग अपने देश को स्थिर करने गया था हमात ४ लों मारा। और दाऊद ने उस्से एक सहस्र रथ और सात सहस्र घोड़चढ़ों को और बीस सहस्र पगइतों को लिया और दाऊद ने रथ के सारे घोड़ों की नस काटी परन्तु उन में से सौ रथों के लिये रख छोड़ा॥

५ और जब दमिश्क के अरामी सूबः के राजा हदरअज़र की सहाय को आये तब दाऊद ने अरामियों में से बाईस ६ सहस्र को मारा। तब दाऊद ने अरामी के दमिश्क में थाना बैठाया और अरामी दाऊद के सेवक होके भेंट लाये इस रीति से जहां कहीं दाऊद जाता था तहां परमेश्वर उस की रक्षा करता था। ७ और दाऊद ने हदरअज़र के सेवकों की सोने की ढालें लिईं और उन्हें यरूसलम ८ में लाया। इसी रीति से हदरअज़र के नगर तिभ्रखत से और कून से दाऊद अति बहुत पीतल लाया जिस्से सुलेमान ने पितली समुद्र और खंभे और पीतल के पात्र बनाये॥

९ और जब हमात के राजा तूगू ने

सुना कि दाऊद ने किस रीति से सूबः के राजा हदरअज़र की सारी सेना को १० मारा। तो उस ने अपने बेटे हदूराम को सोने चांदी और पीतल के सारे प्रकार के पात्रों के साथ दाऊद राजा का कुशल पूछने को और उसे आशीर्वाद देने को भेजा इस कारण कि उस ने हदरअज़र से संग्राम करके उसे मारा क्योंकि हदरअज़र तूग़ू से लड़ता था। ११ दाऊद राजा ने भी सोना चांदी जो उस ने सारे जातिगणों से अर्थात् अदूम से और मोअब से और अम्मून के सन्तान से और फिलिस्तियों से और अमालीक से लाया था परमेश्वर के लिये उन्हें समर्पण किया॥

१२ और ज़रुयाह के बेटे अबिशै ने लोन की तराई में अठारह सहस्र अदूमियों १३ को घात किया। और उस ने अदूम में थाने बैठाये और सारे अदूमी दाऊद के सेवक हुए और जहां कहीं दाऊद जाता था तहां परमेश्वर उस की रक्षा करता था॥

१४ सो दाऊद सारे इसराएल पर राज्य करता था और अपने सारे लोगों में १५ बिचार और नीति करता था। और ज़रुयाह का बेटा यूअब सेना पर था और अख़िलूद का बेटा यहूसफत लेखक था। १६ और अख़ितूब का बेटा सदूक और अबियातार का बेटा अबिमलिक याजक और १७ शौशा लेखक था। और यहूयदः का बेटा बिनायाह करीती और पलीती पर था और दाऊद के बेटे राजा के पास प्रधान थे॥

उन्नीसवां पर्व्व।

१ और इन बातों के पीछे ऐसा हुआ कि अम्मून के सन्तान का राजा नाहस मर गया और उस का बेटा उस की २ सन्ती राज्य पर बैठा। और दाऊद ने कहा कि मैं नाहस के बेटे हनून पर अनुग्रह करूंगा क्योंकि उस का पिता मुझ पर अनुग्रह करता था और उस के पिता के बिषय में दाऊद ने उसे शान्ति देने के लिये दूतों को भेजा सो दाऊद के सेवक अम्मून के सन्तान के देश में हनून के पास उसे शान्ति देने को आये। ३ परन्तु अम्मून के सन्तान के अध्यक्षों ने हनून को कहा कि तेरी दृष्टि में दाऊद क्या तेरे पिता की प्रतिष्ठा करता है जो उस ने तेरे पास शान्तिदायकों को भेजा है क्या उस के सेवक तेरे पास इस लिये नहीं आये हैं कि देश का भेद लेवें और उसे देखें और उसे उलट देवें। ४ इस लिये हनून ने दाऊद के सेवकों को पकड़ा और उन्हें मुड़ाया और उन के पुट्ठों लों उन के वस्त्रों को बीच से काट डाला ५ और उन्हें फेर भेजा। तब किसी ने जाके उन मनुष्यों की दशा दाऊद से कही तब उस ने उन की भेंट को लोग भेजे क्योंकि वे जन अति लज्जित हो रहे थे और राजा ने कहा कि जब लों तुम्हारी दाढ़ी बढ़ न जावे तब लों यरीहो में ठहरो तब फिर आओ॥

६ और जब अम्मून के सन्तान ने देखा कि हम दाऊद के आगे घिनित हुए तब हनून और अम्मून के सन्तान ने एक सहस्र तोड़े चांदी भेजी जिसतें अराम में से और मअकः में से और सूबः में से ७ रथ और घोड़चढ़े को भाड़ा करें। सो उन्हों ने बत्तीस सहस्र रथ और मअकः के राजा को और उस के लोगों को भाड़ा किया और उन्हों ने आके मेदिबा के आगे छावनी किई और अम्मून के सन्तान अपने अपने नगरों से एकट्ठे हुए और संग्राम में आये॥

८ और दाऊद ने सुनके यूअब को और ९ बीरों की सारी सेना को भेजा। और

अम्मून के सन्तानों ने आके नगर के फाटक के आगे लड़ाई की पांती बांधी और राजा जो आये थे सो चौगान में १० अलग थे। जब यूआब ने संग्राम के रुख अपने विरुद्ध आगे पीछे देखा तब उस ने इसराएल के तरुणों को चुन लिया और उन से अरामियों के सन्मुख पांती ११ बांधी। और रहे हुए लोगों को अपने भाई अबिशै के हाथ सैंपा और उन्हों ने अम्मून के सन्तान के सन्मुख पांती १२ बांधी। और कहा कि यदि अरामी मुझसे अति बलवन्त होवें तो तू मेरी सहायता करना परन्तु यदि अम्मून के सन्तान तेरे लिये अति बलवन्त होवें १३ तो मैं तेरी सहाय करूंगा। हियाव करो और आओ हम अपने लोगों के और अपने ईश्वर के नगरों के लिये सूरता करें और जो परमेश्वर की दृष्टि में भला हो सो करे॥

१४ सो यूआब और उस के लोग संग्राम के लिये अरामियों के आगे बढ़े और १५ वे उस के आगे से भाग गये। और जब अम्मून के सन्तानों ने अरामियों को भागते देखा तो वे भी उस के भाई अबिशै के आगे से भागे और नगर में घुसे तब यूआब यरूसलम को आया॥

१६ और जब अरामियों ने देखा कि हम इसराएल से हार गये तब वे दूतों को भेजके नदी पार के अरामियों को खींच लाये और हदरअजर की सेना का प्रधान १७ शोफाक उन के आगे आगे गया। और दाऊद से कहा गया तब उस ने सारे इसराएल को एकट्ठा किया और यरदन पार होके उन पर चढ़ आया और उन के सन्मुख पांती बांधी सो जब दाऊद ने अरामियों के विरुद्ध में संग्राम की १८ पांती बांधी तो वे उस्से लड़े। परन्तु अरामी इसराएल के आगे से भागे और दाऊद ने अरामियों के रथों में के सात सहस्र जन को और चालीस सहस्र पदातों को मारा और सेनापति शोफाक १९ को घात किया। और जब हदरअजर के सेवकों ने देखा कि हम इसराएल के आगे हार गये तब उन्हों ने दाऊद से मिलाप किया और उस के सेवक हुए फिर अरामियों ने अम्मून के सन्तान की सहायता करनी न चाही॥

बीसवां पर्ब्ब।

१ और जब बरस बीत गया तो यों हुआ कि जब राजा संग्राम को निकलते हैं तब यूआब सेना के बीरों को लेके निकला और अम्मून के सन्तान के देश को उजाड़ दिया और आके रब्बः को घेर लिया परन्तु दाऊद यरूसलम में ठहर गया और यूआब ने रब्बः को मारा और २ उसे नष्ट किया। और दाऊद ने उन के राजा के मुकुट को उस के सिर से उतार लिया और उसे तौल में तीन सहस्र सात सौ मोहर के लगभग पाया और उस पर मणि भी थे और वह दाऊद के सिर पर धरा गया और वह नगर में से बहुत सी ३ लूट भी लाया। और उस ने उन लोगों को जो उस में थे बाहर लाके उन्हें आरों से और लोहे के हेंगों से और कुल्हाड़ों से काट डाला इसी रीति से दाऊद ने अम्मून के सन्तान के सारे नगरों से किया और दाऊद के सारे लोग यरूसलम को फिर आये॥

४ और उस के पीछे ऐसा हुआ कि जजर में फिलिस्तियों से संग्राम हुआ उस समय हूशती सिब्बकी ने दानव के सन्तान सिपई को मारा और वे बश में किये गये॥

५ और फिलिस्तियों से फिर संग्राम हुआ और यईर के बेटे इलहनान ने जत्रा-तैनी जुलियत के भाई लहमी को मारा

जिस के भाले का छड़ जोलाहे के तूर के समान था॥

६ और फिर जात में संग्राम हुआ जहां एक लंबा हुआ जन था जिस की चौबीस अंगुलियां हाथ पांव में छः छः और
७ वह भी दानव उत्पन्न हुआ। परन्तु जब उस ने इसराएल को तुच्छ समझा तब दाऊद के भाई शिमआ के बेटे यहूनतन
८ ने उसे घात किया। ये जात में दानव से उत्पन्न हुए और वे दाऊद के और उस के सेवकों के हाथ से जूझ गये॥

एक्कीसवां पर्ब्ब।

१ और शैतान इसराएल के विरुद्ध उठा और इसराएल को गिनाने के लिये दाऊद
२ को उभारा। और दाऊद ने यूअब को और लोगों के आज्ञाकारियों को कहा कि जाओ बिअरसबअ से दान लों इसराएल को गिनो और उन की गिनती
३ मुझ पास लाओ जिसतें मैं जानूं। तब यूअब ने उत्तर दिया कि परमेश्वर अपने लोगों को जितने हैं उतने से सौ गुना अधिक बढ़ावे परन्तु हे मेरे प्रभु राजा क्या वे सब मेरे प्रभु के दास नहीं फिर मेरा प्रभु यह बात क्यों चाहता है तू क्यों इसराएल के पाप का कारण होगा।
४ तथापि राजा का बचन यूअब पर प्रबल हुआ इस लिये यूअब बिदा हुआ और सारे इसराएल में से हीके यरूसलम में
५ आया। और यूअब ने लोगों की गिनती दाऊद को दिई और सारे इसराएल ग्यारह लाख खड्गधारी और यहूदाह चार
६ लाख सत्तर सहस्र खड्गधारी थे। परन्तु उस ने उन में लावी को और बिनयमीन को न गिना क्योंकि राजा का बचन यूअब को घिनित था॥

७ और ईश्वर इस बात से उदास हुआ इस लिये उस ने इसराएल को मारा।
८ तब दाऊद ने ईश्वर से कहा कि यह कार्य्य करके मैं ने बड़ा पाप किया है परन्तु अब तेरी बिनती करता हूं कि अपने दास का पाप मिटा डाल क्योंकि मैं ने बड़ी मूर्खता किई है।
९ और परमेश्वर ने दाऊद के दर्शी जद से कहा।
१० कि जा दाऊद को कह कि परमेश्वर यों कहता है कि मैं तेरे आगे तीन बात धरता हूं उन में से एक चुन ले जिसतें
११ वही मैं तेरे लिये करूं। सो जद दाऊद पास आया और उसे कहा कि परमेश्वर यों कहता है कि तू इन में से एक ले।
१२ अर्थात् तीन बरस का अकाल अथवा अपने बैरी के आगे तीन मास नष्ट हो जब लों तेरे बैरी के खड्ग आ पड़ें अथवा तीन दिन परमेश्वर की तलवार अर्थात् मरी देश में पड़े और परमेश्वर का दूत इसराएल के सारे सिवानों में नाश किया करे अब इस लिये बता कि मैं अपने
१३ प्रेरक के पास क्या कहूं। तब दाऊद ने जद से कहा कि मैं बड़े सकेत में हूं मैं परमेश्वर के हाथ में पड़ूं क्योंकि उस की दया बड़ी है परन्तु मनुष्यों के हाथ में न पड़ूं॥

१४ सो परमेश्वर ने इसराएल पर मरी भेजी और इसराएल में से सत्तर सहस्र
१५ पुरुष गिर गये। और ईश्वर ने यरूसलम को नष्ट करने के लिये दूत को भेजा और उसे बिनाश करते ही परमेश्वर देखके उस बुराई के लिये पछताया और उस नाशक दूत से कहा कि बहुत है हाथ सिकोड़ और परमेश्वर का दूत यबूसी अरनान के खलिहान के लग खड़ा हुआ।
१६ और दाऊद ने अपनी आंखें उठाके अधर में परमेश्वर के दूत को हाथ में नंगा खड्ग यरूसलम पर बढ़ाये हुए देखा तब दाऊद और प्राचीन टाट ओढ़े हुए मुंह
१७ के बल गिरे। तब दाऊद ने ईश्वर से कहा कि क्या मैं ने लोगों को नहीं

गिनवाया अर्थात् मैं हीं ने सो पाप किया और निश्चय बुराई किई परन्तु इन भेड़ों ने क्या किया है कि मरी इन पर पड़े हे मेरे ईश्वर परमेश्वर मैं तेरी बिनती करता हूं तेरा हाथ मुझ पर और मेरे पिता के घराने पर पड़े परन्तु अपने इन लोगों पर नहीं॥

१८ तब परमेश्वर के दूत ने जद को आज्ञा किई कि दाऊद से कह कि तू चढ़ जा और अरनान यबूसी के खलिहान में परमेश्वर के लिये एक बेदी स्थापन १९ कर। और जद के कहने पर जो उस ने परमेश्वर के नाम से कहा था दाऊद २० गया। और अरनान ने फिरके दूत को देखा और उस के चार बेटों ने उस के संग आप आप को छिपाया अब अरनान २१ गोहूं पीटता था। और ज्यों दाऊद अरनान पास आया त्यों अरनान ने ताका और दाऊद को देखके खलिहान से बाहर गया और भूमि लों झुकके २२ दाऊद को दंडवत किई। तब दाऊद ने अरनान से कहा कि इस खलिहान का स्थान मुझे दे जिसतें मैं उस में परमेश्वर के लिये एक बेदी बनाऊं तू उस का पूरा दाम लेके मुझे दे जिसतें २३ मरी लोगों में से थम जावे। और अरनान ने दाऊद से कहा कि अपने लिये लीजिये और मेरे प्रभु राजा जो अपनी दृष्टि में भला जाने सो करे देखिये मैं बलिदान की भेंट के लिये बैलों को और ईंधन के लिये पीटने की सामग्री और भोजन की भेंट के लिये २४ गोहूं सब देता हूं। तब दाऊद राजा ने अरनान से कहा कि नहीं परन्तु निश्चय मैं पूरा दाम देके मोल लेऊंगा क्योंकि परमेश्वर के लिये मैं तेरा न लेऊंगा और बिना मोल के बलिदान की २५ भेंट न चढ़ाऊंगा। सो उस स्थान के लिये दाऊद ने छः सौ शेकल सोना तौलके अरनान को दिया। २६ तब दाऊद ने परमेश्वर के लिये वहां एक बेदी बनाई और बलिदान की भेंट और कुशल की भेंटें चढ़ाईं और परमेश्वर का नाम लिया और उस ने बलिदान के भेंट की बेदी पर आग के द्वारा से स्वर्ग से उसे उत्तर दिया। २७ और परमेश्वर ने उस दूत को आज्ञा किई और उस ने अपनी तलवार काठी में डाली॥

२८ उस समय में जब दाऊद ने देखा कि परमेश्वर ने यबूसी अरनान के खलिहान में उसे उत्तर दिया तब उस ने वहां बलि चढ़ाया। २९ क्योंकि परमेश्वर का तंबू जो मूसा ने अरण्य में बनाया और बलिदान के भेंट की बेदी उस समय जिबऊन के ऊंचे स्थान में थी। ३० परन्तु दाऊद ईश्वर से बूझने को उस के आगे न जा सका क्योंकि परमेश्वर के दूत की तलवार के कारण वह डरता था॥

बाईसवां पर्ब्ब।

१ तब दाऊद ने कहा कि यह परमेश्वर ईश्वर का मन्दिर है और यही इसराएल के लिये बलिदान के भेंट की बेदी है॥

२ और दाऊद ने इसराएल के देश के परदेशियों को एकट्ठा करने की आज्ञा किई और उस ने ईश्वर के मन्दिर को बनाने के लिये पत्थर के गढ़वैयों को पत्थर गढ़ने के लिये ठहराया। ३ और दाऊद ने फाटकों के किवाड़ के जोड़ों के लिये और कीलों के लिये बहुत से लोहे पीतल बेतौल सिद्ध किये। ४ और देवदारु काष्ठ भी बहुताई से क्योंकि सैदानी और सूर के लोग दाऊद पास बहुत देवदारु काष्ठ लाये थे। ५ और दाऊद ने कहा कि मेरा बेटा सुलेमान तरुण और कोमल है और चाहिये कि

परमेश्वर का मन्दिर बन जाये और अति सुंदर होवे जिस की कीर्त्ति और ऐश्वर्य्य सारे देशों में फैल जावे मैं अब उस के लिये लैस करूंगा सो दाऊद ने अपनी मृत्यु से आगे बहुत कुछ लैस किया॥

६ तब उस ने अपने बेटे सुलेमान को बुलाया और इसराएल के ईश्वर परमेश्वर का मन्दिर बनाने को उसे आज्ञा ७ किई। और दाऊद ने सुलेमान से कहा कि हे मेरे बेटे मैं जो हूं सो मेरे ईश्वर परमेश्वर के नाम के लिये मन्दिर बनाने ८ को मेरे मन में था। परन्तु यह कहिके परमेश्वर का बचन मेरे पास आया कि तू ने बहुत सा लोहू बहाया है और बड़ी बड़ी लड़ाई किई है तू मेरे नाम के लिये मन्दिर मत बनाना क्योंकि मेरी दृष्टि में तू ने पृथिवी पर बहुत लोहू ९ बहाया है। देख तुझ से एक बेटा उत्पन्न होगा वह कुशल का जन होगा और मैं उसे उस की चारों ओर के बैरियों से चैन देऊंगा क्योंकि उस का नाम सुलेमान होगा और उस के दिनों में मैं इसराएल को कुशल और चैन देऊंगा। १० वह मेरे नाम के लिये मन्दिर बनावेगा और वह मेरा बेटा और मैं उस का पिता हूंगा और मैं इसराएल पर उस के राज्य का सिंहासन सदा स्थिर करूंगा। ११ अब हे मेरे बेटे परमेश्वर तेरे साथ होवे और तू भाग्यवान हो और अपने ईश्वर परमेश्वर का मन्दिर बना जैसा उस ने १२ तेरे विषय में कहा है। केवल परमेश्वर तुझे बुद्धि और समझ देवे और इसराएल के विषय में आज्ञा करे जिसतें तू अपने ईश्वर परमेश्वर की व्यवस्था पालन १३ करे। यदि तू चौकस होके परमेश्वर की विधि और विचार को जो उस ने इसराएल के विषय में मूसा को आज्ञा किई पालन करे तब तू भाग्यवान होगा बलवान हो और साहस कर मत डर और विस्मित मत हो॥

१४ और देख मैं ने अपने दुःख में परमेश्वर के मन्दिर के लिये एक लाख तोड़ा सोना और दस लाख तोड़ा चांदी और पीतल और लोहा बेतौल बहुताई से सिद्ध किया है और मैं ने लट्ठे और पत्थर भी सिद्ध किये हैं और तू उन में १५ और भी मिला सके। और इस्से अधिक तेरे पास कार्य्यकारी अर्थात् पत्थरतोड़ और पत्थर और लट्ठे के कार्य्यकारी और हर प्रकार के कार्य्य के लिये और सारे प्रकार के गुणी लोग बहुताई से हैं। १६ सोना चांदी और पीतल और लोहा अनगिनित हैं उठ और कार्य्य कर और परमेश्वर तेरे साथ होवे॥

१७ और दाऊद ने इसराएल के सारे अध्यक्षों को भी अपने बेटे सुलेमान की १८ सहायता करने को आज्ञा किई। क्या तुम्हारा परमेश्वर ईश्वर तुम्हारे संग नहीं और उस ने चारों ओर से तुम्हें चैन नहीं दिया है क्योंकि उस ने देश के निवासियों को मेरे हाथ में दिया है और परमेश्वर के आगे और उस के लोगों के १९ आगे देश बश में हुआ है। अब अपने अन्तःकरण और मन को अपने ईश्वर परमेश्वर की खोज में लगाओ इस लिये उठो और ईश्वर परमेश्वर का पवित्र स्थान बनाओ जिसतें परमेश्वर की बाचा की मंजूषा को और ईश्वर के पवित्र पात्रों को उस मन्दिर में जो परमेश्वर के नाम के लिये बनेगा लाओ॥

तेईसवां पर्ब्ब।

१ जब दाऊद बृद्ध और दिनी हुआ तब उस ने अपने बेटे सुलेमान को इसराएल पर राजा किया॥

२ और उस ने इसराएल के सारे अध्यक्षों को और याजकों को और लावियों को

३ एकट्ठा किया। और लावी तीस बरस और उस्से अधिक बय में गिने गये थे और एक एक जन की गिनती अठतीस ४ सहस्र थी। उन से परमेश्वर के मन्दिर के कार्य्य को बढ़ाने के लिये चौबीस सहस्र थे और प्रधान और न्यायी छः ५ सहस्र। उस्से अधिक चार सहस्र द्वारपालक और उन बाजों से जो मैं ने स्तुति के लिये बनाये थे परमेश्वर की स्तुति के लिये चार सहस्र॥

६ और दाऊद ने लावियों के अर्थात् गैरसुम किहात मिरारी के बेटों को बिभाग बिभाग किया॥

७ गैरसुनियों में से लादान और शिमई। ८ लादान के बेटों में से श्रेष्ठ यहिएल ९ और जैताम और यूएल तीन। शिमई के बेटे सलूमियत और हजिएल और हारान तीन ये लादान के पितरों के श्रेष्ठ। १० और शिमई के बेटे यहत जीना और यऊस और बरीअः ये चार शिमई के ११ बेटे। और यहत श्रेष्ठ था और जीजः दूसरा परन्तु यऊस और बरीअः के बेटे बहुत न थे इस लिये वे अपने अपने पितरों के घराने के समान एक ही गिनती में थे॥

१२ किहात के बेटे अमराम इसहार १३ हबरून और उज्जिएल चार। अमराम के बेटे हारून और मूसा और हारून अलग किया गया था जिसतें अति पवित्र वस्तुन को पवित्र करे वह और उस के बेटे परमेश्वर के आगे सदा के लिये धूप जलावें और उस की सेवा करें और उस के नाम की सदा स्तुति १४ करें। अब ईश्वर के जन मूसा के बेटों १५ के नाम लावी की गोष्ठियों से थे। मूसा १६ के बेटे गैरसुम और इलिअजर। गैरसुम १७ के बेटों में से सबूएल श्रेष्ठ। और इलिअजर के बेटे रिहबियाह इलिअजर के और बेटे न थे परन्तु रिहबियाह के बहुत बेटे थे। १८ इसहार के बेटों में से प्रधान सलूमियत। १९ हबरून के बेटों में से पहिला यरीयाह दूसरा अमरियाह तीसरा यहजिएल और चौथा युकमिआम। २० उज्जिएल के बेटों में से पहिला मीकः और दूसरा यस्सीयाह॥

२१ मिरारी के बेटे मुहली और मूशी मुहली के बेटे इलिअजर और कीस। २२ और इलिअजर मर गया और उस के बेटे न थे परन्तु बेटियां और उन के भाई कीस के बेटों ने उन्हें लिया। २३ मूशी के बेटे मुहली और अदर और यरीमात तीन॥

२४ ये लावी के बेटे अपने अपने पितरों के घराने के समान अर्थात् पितरों में श्रेष्ठ जैसा वे नाम नाम गिने गये थे और बीस बरस और ऊपर के बय से परमेश्वर के मन्दिर की सेवा करते थे। २५ क्योंकि दाऊद ने कहा कि इसराएल के ईश्वर परमेश्वर ने अपने लोगों को चैन दिया है जिसतें वह सर्वदा यरूसलम में बास करेगा। २६ और लावियों को आगे को तंबू और उस की सेवा के किसी पात्र को उठाना न पड़ेगा। २७ क्योंकि दाऊद के अन्त के बचन से लावी बीस बरस और ऊपर से गिने गये थे। २८ क्योंकि वे परमेश्वर के मन्दिर की सेवा के लिये ओसारों और कोठरियों में और सारे पवित्र वस्तु पवित्र करने में और ईश्वर के मन्दिर की सेवा के कार्य्य में हारून के बेटों के पास बने रहें। २९ और भेंट की रोटी के लिये और चोखे पिसान और भोजन की भेंट के लिये और अखमीरी फुलकों के लिये और तावा में की रोटी के लिये और पूरी के लिये और सारे रीति के तौल और नाप के लिये। ३० और हर सांझ बिहान को खड़ा होके परमेश्वर की स्तुति और धन्य मानने के लिये। ३१ और बिश्रामों में और अमावास्यों में और ठहराये हुए पर्ब्बों

की सीमतों से आज्ञा के समान परमेश्वर के आगे परमेश्वर के लिये नित्य सारे ३२ बलिदान की भेंट चढ़ाने के लिये। और जिसतें वे मंडली के तंबू की रक्षा करें और और पवित्र स्थान की और अपने भाई हारून के बेटों की परमेश्वर के मन्दिर की सेवा में रक्षा करें॥

चौबीसवां पर्ब्ब।

१ अब हारून के बेटों के विभाग हारून के बेटे नदब और अबिहू इलि-२ अजर और ईतमर। परन्तु नदब और अबिहू अपने पिता से आगे मर गये और उन के सन्तान न थे इस कारण इलिअजर और ईतमर याजक के पद ३ का कार्य्य करते थे। और दाऊद ने उन्हें अर्थात् इलिअजर के बेटों में से सदूक और ईतमर के बेटों में से अखिमलिक को उन के पद के समान उन की सेवा में बांट दिया॥

४ और ईतमर के बेटों में से और इलि-अजर के बेटों में से अधिक श्रेष्ठ जन पाये गये और भाग किये गये और इलि-अजर के बेटों में से और पितरों के घरानों में से सोलह श्रेष्ठ जन और ईतमर के बेटों में उन के पितरों के घराने के समान आठ ५ जन पाये गये। और एक दूसरे के साथ चिट्ठी के द्वारा से पवित्र स्थान के और ईश्वर के मन्दिर के अध्यक्षों के लिये इलिअजर के बेटों में से और ईतमर के बेटों में से अलग किये गये॥

६ और लावियों में से नतनएल लेखक का बेटा समईयाह राजा के और अध्यक्षों के और सदूक याजक के और अबियतर के बेटे अखिमलिक के और याजकों के श्रेष्ठ पितरों के और लावियों के लेखों के आगे लिखा इलिअजर के लिये एक विशेष घराना और एक ईतमर के लिये लिया गया॥

७ अब पहिली चिट्ठी यहूयरीब की ८ और दूसरी यदैयाह की। तीसरी ९ हारिम की चौथी सगरीम की। पांचवीं मलकियाह की छठवीं मियमीन की। १० सातवीं हक्कूज की आठवीं अबियाह ११ की। नवीं यशूअ की दसवीं सकनियाह १२ की। ग्यारहवीं इलयसीब की बारहवीं १३ यकीम की। तेरहवीं हुप्फः की चौदहवीं १४ यसबिअब की। पंदरहवीं बिलजः की १५ सोलहवीं अमीर की। सत्तरहवीं हजीर १६ की अठारहवीं अफसीस की। उन्नीसवीं फतहियाह की बीसवीं हिजकिएल १७ की। एक्कीसवीं यकीन की बाईसवीं १८ जमूल की। तेईसवीं दिलायाह की चौबीसवीं मअजियाह की॥

१९ इसराएल के ईश्वर परमेश्वर की आज्ञा के समान हारून के नीचे उन की रीति के समान परमेश्वर के मन्दिर की सेवा में आने की यह विधि थी॥

२० और लावियों के उबरे हुए बेटे अमराम के बेटों में से सुबाएल सुबाएल २१ के बेटों में से यहदियाह। रहबियाह के विषय में रहबियाह के बेटों में से २२ पहिला इशियाह। सलूमियत इजहारी के विषय में सलूमियत के बेटों में से २३ यहत। और हबरून का पहिला बेटा यरीयाह दूसरा अमरियाह तीसरा यह-२४ जिएल चौथा युकामिआम। उज्जिएल के बेटे मीकः मीकः के बेटे समीर। २५ मीकः का भाई यस्सीयाह यस्सीयाह के २६ बेटे जकरियाह। मिरारी के बेटे मुहली और मूसी यअजियाह का बेटा बेनू। २७ यअजियाह से मिरारी के बेटे बेनू और २८ सुहाम और जक्कूर और इबरी। मुहली से इलिअजर जिस का कोई बेटा न २९ था। कीस के विषय में कीस का ३० बेटा यरहमिएल। और मूसी के बेटे भी मुहली और इदर और यरीमात ये

लावियों के बेटे अपने अपने पितरों के घराने के समान। ३१ और उन्हों ने भी दाऊद राजा के और सदूक के और अखिमलिक के और याजकों के और लावियों के श्रेष्ठ पितरों के आगे अर्थात् विशेष पितर जो अपने सारे भाइयों पर थे अपने भाई हारून के बेटों के सन्मुख चिट्ठी डाली॥

पचीसवां पर्व्व।

१ उस्से अधिक दाऊद और सेना के प्रधान आसफ के बेटे और हीमान के और यदूतून के बेटों की सेवा के लिये उन्हों को अलग किया जो बीणा और नवल और करताल से भविष्य कहते थे और वह कार्य्यों की गिनती उन की २ सेवा के समान थी। आसफ के बेटों में से जक्कूर और यूसुफ और नतनियाह और यसरएल आसफ के बेटे आसफ के हाथ के बश में जो राजा की आज्ञा के ३ समान भविष्य कहते थे। यदूतून से यदूतून के बेटे से जिदलयाह और सूरी और यशअयाह हसबियाह और मत्तितियाह छः जन अपने पिता यदूतून के हाथ के बश में जो परमेश्वर की स्तुति और धन्यबाद करने को बीणा से भविष्य ४ कहते थे। हीमान से हीमान के बेटे बुक्कियाह मत्तनियाह उज्जिएल सबूएल और यरीमात हननियाह हनानी इलियात: जिदलती और रूमतीअजर युसबिकस: मल्लूती होसीर महाजियात। ५ ये सब हीमान के बेटे ईश्वर के बचन राजा के दर्शी नरसिंगा उठाने के लिये और ईश्वर ने हीमान को चौदह बेटे ६ और तीन बेटियां दिईं। राजा की आज्ञा के समान जो आसफ को और यदूतून को और हीमान को दिई गई थी ये सब परमेश्वर के मन्दिर में भजन के लिये करताल नवल और बीणा से अपने पिता के बश में परमेश्वर के मन्दिर की सेवा के लिये सौंपे गये। सो उन की गिनती उन के ७ भाइयों के संग जो परमेश्वर के भजन में सिखाये गये थे अर्थात् सब जो निपुण थे सो दो सौ अट्ठासी थे॥

८ और क्या छोटे क्या बड़े क्या गुरु क्या शिष्य पहरे के सन्मुख उन्हों ने चिट्ठी डाली। ९ और पहिली चिट्ठी यूसुफ को आसफ के लिये निकली दूसरी जिदलयाह के लिये जो अपने भाई और बेटे समेत बारह थे। १० तीसरी जक्कूर के लिये उस के बेटे और भाई बारह। ११ चौथी इसरी के लिये उस के बेटे और भाई बारह। १२ पांचवीं नतनियाह के लिये उस के बेटे और भाई बारह। १३ छठवीं बुक्कियाह के लिये उस के बेटे और भाई बारह। १४ सातवीं यसरिलाह के लिये उस के बेटे और भाई बारह। १५ आठवीं यशअयाह के लिये उस के बेटे और भाई बारह। १६ नवीं मत्तनियाह के लिये उस के बेटे और भाई बारह। १७ दसवीं शिमई के लिये उस के बेटे और भाई बारह। १८ ग्यारहवीं अजरिएल के लिये उस के बेटे और भाई बारह। १९ बारहवीं हसबियाह के लिये उस के बेटे और भाई बारह। २० तेरहवीं सुबाएल के लिये उस के बेटे और भाई बारह। २१ चौदहवीं मत्तितियाह के लिये उस के बेटे और भाई बारह। २२ पंदरहवीं यरीमात के लिये उस के बेटे और भाई बारह। २३ सोलहवीं हनानियाह के लिये उस के बेटे और भाई बारह। २४ सत्रहवीं युसबिकस: के लिये उस के बेटे और भाई बारह। २५ अठारहवीं हनानी के लिये उस के बेटे और भाई बारह। २६ उन्नीसवीं मल्लुती के लिये उस के बेटे और भाई बारह। २७ बीसवीं इलियात:

के लिये उस के बेटे और भाई बारह। २८ एक्कीसवीं होसीर के लिये उस के बेटे २९ और भाई बारह। बाईसवीं गिद्दलती के लिये उस के बेटे और भाई बारह। ३० तेईसवीं महजियात के लिये उस के बेटे ३१ और भाई बारह। चौबीसवीं रुम्मतीअजर के लिये उस के बेटे और भाई बारह॥

२६

१ द्वारपालकों के बिभाग के बिषय में कोरियों से आसफ के बेटों में का कारी २ का बेटा मुसलिमियाह। और मुसलिमियाह के बेटे पहिलौठा जकरियाह दूसरा यदीअएल तीसरा जबदियाह ३ चौथा यतनिएल। पांचवां ऐलाम छठवां ४ यहूहनान सातवां इलियाहूऐनी। उन से अधिक ओबिदअदूम के बेटे समऐयाह पहिलौठा दूसरा यहूजबद तीसरा यूअख चौथा शकर पांचवां नतनिएल। ५ छठवां अमिएल सातवां इशकार आठवां फअलती क्योंकि ईश्वर ने उसे बर दिया। ६ और समऐयाह के बेटे उत्पन्न हुए जो अपने पिता के घराने पर प्रभुता करते ७ थे क्योंकि वे सामर्थी बीर थे। समऐयाह के बेटे उतनी और रफएल और ओबिद और इलजबद जिस के भाई ८ इलिहू और समाकियाह बलवन्त थे। ये सब ओबिदअदूम के बेटों में से थे और उन के बेटे और उन के भाई सेवा के लिये बल में सामर्थी ओबिदअदूम के ९ बासठ। और मुसलिमियाह के बेटे और १० भाई अठारह जन बलवन्त थे। और मिरारी के सन्तानों में से हूस: के भी बेटे थे सिमरी श्रेष्ठ क्योंकि वह पहिलौठा न था तथापि उस के पिता ने ११ उसे श्रेष्ठ किया। दूसरा खिलकियाह तीसरा तबलियाह चौथा जकरियाह हूस: के सारे बेटे और भाई तेरह॥

इन्हों में से द्वारपालों के बिभाग किये १२ गये अर्थात् श्रेष्ठ जनों में से परमेश्वर के मन्दिर की सेवा के लिये आम्ने साम्ने पहरे थे। और क्या छोटे क्या बड़े अपने अपने १३ पितरों के घराने के समान हर एक फाटक के लिये उन्हों ने चिट्ठी डाली। और पूरब ओर की चिट्ठी शलमियाह १४ के लिये पड़ी तब उस के बेटे जकरियाह को बुद्धिमान मंत्री था उन्हों ने डाली और उत्तर की ओर उस की चि निकली। और दक्खिन की ओर ओबिद- १५ अदूम के और उस के बेटों के घराने एकट्ठे किये गये के लिये। सुफ्फीम के १६ और हूस: के पश्चिम को सलकत के फाटक सहित जो ऊपर जाने के मार्ग के पहरुओं के सन्मुख पहरू। पूरब की १७ ओर छ: लावी थे उत्तर की ओर प्रतिदिन चार दक्खिन की ओर प्रतिदिन चार सुफ्फीम की ओर दो दो। पश्चिम की १८ ओर पार बार के पथ में चार और पार बार में दो। कोर के और मिरारी के १९ बेटों में द्वारपालकों के ये बिभाग हैं॥

और लावियों में से अखियाह ईश्वर २० के मन्दिर के भंडार और पवित्र भंडारों पर। लादान के बेटों के बिषय में २१ जैरसूनी लादानियों के बेटों में से श्रेष्ठ पितरों का अर्थात् जैरसूनी लादान को यहिएल। यहिएल के बेटे जैताम और २२ उस का भाई यूएल ये परमेश्वर के मन्दिर के भंडार पर थे। अमरामी के इजहारी २३ के हबरूनियों के उज्जिएलियों के। और २४ मूसा के बेटे जैरसूम का बेटा सबूएल भंडार पर था। और इलिअजर २५ से उस के भाई उस का बेटा रहबियाह और उस का बेटा यशइयाह और उस का बेटा यूराम और उस का बेटा जिकरी और उस का बेटा सलूमियत। यही २६ सलूमियत और उस के भाई सारे पवित्र

भंडारों पर थे जो दाऊद राजा ने और श्रेष्ठ पितरों ने और सहस्रपति और शत-पति और सेनापति ने समर्पण किया था।

२७ संग्रामों की लूट में से परमेश्वर के मन्दिर के कारण उन्हों ने समर्पण किया

२८ था। और सब जो समूएल दर्शी ने और कीश के बेटे साऊल ने और नैयिर के बेटे आबिनैयिर ने और अबयाह के बेटे ने समर्पण किया और जिस किसी ने समर्पण किया था सो सलूमियत के और उस के भाई के हाथों में था॥

२९ इसहारियों में से कनानियाह और उस के बेटे जो इसराएल के ऊपर बाहर बाहर के कार्य्य के प्रधान और न्यायियों

३० के लिये। इबरूनियों में हसाबियाह और उस के भाई एक सहस्र सात सौ बीर परमेश्वर के सारे कार्य्य और राजा की सारी सेना के लिये वे यरदन के इस पार पश्चिम की ओर इसराएलियों में

३१ से प्रधान थे। इबरूनियों में से यरीयाह श्रेष्ठ अर्थात् इबरूनी अपने पितरों की पीढ़ियों के समान दाऊद राजा के चालीसवें बरस में वे ढूंढ़े गये थे और जिलिआद के यअजीर में उस के महाबीर

३२ लोग पाये गये। और उस के भाईबन्द दो सहस्र सात सौ श्रेष्ठ पितर बीर थे जिन्हें दाऊद राजा ने ईश्वर के विषय के हर एक कार्य्य और राजा के कार्य्य पर रोबिनियों के और जद्दियों के और मुनस्सी की आधी गोष्ठी पर ठहराया॥

सत्ताईसवां पर्व्व।

१ अब इसराएल के सन्तान अपनी गिनती के समान अर्थात् जो पितरों के श्रेष्ठ और सहस्रों के और सैकड़ों के श्रेष्ठ जो अपनी अपनी पारी की रीति पर राजा की सेवा करते थे जो बरस के सारे मासों में मास मास आया जाया करते थे हर एक पारी के लिये चौबीस सहस्र थे॥

२ पहिली पारी पर पहिले मास के लिये जबदिएल का बेटा युसुबिआम और उस की पारी में चौबीस सहस्र थे।

३ फारस सन्तानों में से पहिले मास के लिये सेना के सारे पतियों का श्रेष्ठ था।

४ और दूसरे मास की पारी पर एक अख़ूही दोदाई था उस की पारी में मिकलात भी श्रेष्ठ उस की पारी में चौबीस सहस्र।

५ तीसरे मास के तीसरा सेनापति श्रेष्ठ याजक यहूयदः का बेटा बिनायाह और

६ उस की पारी में चौबीस सहस्र। यही बिनायाह तीसों में बलवन्त और तीसों से श्रेष्ठ और उस की पारी में उस का

७ बेटा अम्मिजबद। चौथे मास के लिये चौथा यूअब का भाई असहेल और उस के पीछे उस का बेटा जबदियाह और

८ उस की पारी में चौबीस सहस्र। पांचवें मास के लिये पांचवां सेनापति इज़राकी शमूस और उस की पारी में चौबीस

९ सहस्र। छठवें मास के लिये छठवां तकूई अक्कीस का बेटा ईरा और उस

१० की पारी में चौबीस सहस्र। सातवें मास के लिये सातवां इफरायम के सन्तान में से फलूनी हालिस और उस

११ की पारी में चौबीस सहस्र। आठवें मास के लिये आठवां ज़ारिहा में का हूशाती सिबाकी और उस की पारी में

१२ चौबीस सहस्र। नवें मास के लिये नवां बिनयमीनियों में से अनतोती अबिअज़र और उस की पारी में चौबीस सहस्र।

१३ दसवें मास के लिये दसवां ज़ारही में का नतूफाती महरी और उस की पारी

१४ में चौबीस सहस्र। ग्यारहवें मास के लिये ग्यारहवां इफरायम के सन्तान में का फरअतूनी बिनायाह और उस की

१५ पारी में चौबीस सहस्र। बारहवें मास

के लिये बारहवां गुलनिखल में का नतू-
फाती खुलदी और उस की पारी में
चौबीस सहस्र ॥

१६ और भी इसराएल की गोष्ठियों पर
रूबिनियों का आज्ञाकारी जिकरी का
बेटा इलिअजर समऊनियों के मअका:
१७ का बेटा सफतियाह । लावियों में का
कमूएल का बेटा हसबियाह हारून में
१८ का सदूक । यहूदाह में का दाऊद के
भाइयों में का इलिहू इशकार में का
१९ मीकाएल का बेटा उमरी । जबूलून
में का अबदियाह का बेटा इसमाइयाह
नफताली में का अजरिएल का बेटा
२० यरीमात । इफरायम के सन्तानों में का
अजजियाह का बेटा हूसीअ; मुनस्सी
की आधी गोष्ठी में का फिदायाह का
२१ बेटा यूएल । जिलिअद में आधे मुनस्सी
में का जकरियाह का बेटा यद्दू-
बिनयमीन में का अबिनेर का बेटा
२२ यआसिएल । दान में का यरूहम का
बेटा अजरिएल ये इसराएल की गोष्ठियों
के अध्यक्ष ॥

२३ परन्तु बीस बरस से और घटती की
वय के दाऊद ने गिनती न लिई इस
कारण कि परमेश्वर ने कहा था कि
मैं स्वर्ग के तारों के समान इसराएल
२४ को बढ़ाऊंगा । जरूयाह के बेटे यूआब
ने गिन्ना आरंभ किया परन्तु इस कारण
उस ने समाप्त न किया कि उस के लिये
इसराएल के बिरोध में कोप पड़ा और
न वह गिनती दाऊद राजा के समयों
के समाचार में लिखी गई ॥

२५ और राजा के भंडारों पर अदिएल
का बेटा अजमावत और नगर में और
गांवों में और गढ़ में के भंडारों के खत्तों
पर उज्जियाह का बेटा यहूनतन था ।
२६ और भूमि के जोतने बोने के लिये जो
खेतों में कार्य्य करते थे उन पर कलूब
का बेटा अजरी । और दाख की बारियों २७
पर रामाती शमई और दाख की
बारियों की बढ़ती पर और दाखरस की
खत्ता पर शिफमी जबदी । और अलफाई २८
के पेड़ों पर और गूलर पेड़ों पर जो
नीचे की भूमि में थे जदरी बअलहनान
और तेल की खत्तों पर यूआश । और २९
ढोर जो सरून में चरते थे उन पर शिटरी
और तराई में के ढोरों पर अदली का
बेटा शफत । और ऊंटों पर इसमाएली ३०
उबील और गदहों पर मेरूनाती यह-
दियाह । और झुंडों पर हाजरी याजीज ३१
ये सारे दाऊद राजा की संपत्ति के
आज्ञाकारी थे ॥

और दाऊद का चचा यहूनतन एक ३२
मंत्री और बुद्धिमान और लेखक था और
हकमनी का बेटा यहिएल राजपुत्रों के
संग रहता था । और अखितुफल राज- ३३
मंत्री था और अरकी हूसी राजा का
संगी था । और अखितुफल के पीछे ३४
बिनायाह का बेटा यहूयदः और अबिआतर
था और राजा की सेना का सेनापति
यूआब था ॥

अट्ठाईसवां पर्ब्ब

और दाऊद ने इसराएल के सारे १
अध्यक्षों को अर्थात् गोष्ठियों के अध्यक्षों
को और जथाओं के श्रेष्ठों को जो राजा
की सेवा पारी पारी करते थे और सहस्र-
पतियों को और शतपतियों को और
राजा के और उस के बेटों के ढोर और
सारी संपत्ति के भंडारियों को और श्रेष्ठों
और बलवन्तों और सारे बीर समेत यरू-
सलम में एकट्ठे किया ॥

तब दाऊद राजा अपने पांवों पर २
उठ खड़ा हुआ और बोला कि हे मेरे
भाइयो और हे मेरे लोगो मेरी सुनो मेरे
मन में था कि परमेश्वर के नियम की
मंजूषा के लिये और हमारे ईश्वर के

चरणों की पीढ़ी के लिये बिश्राम का मन्दिर बनाऊं और मैं ने बनाने के लिये सिद्ध कर रक्खा था। ३ परन्तु ईश्वर ने मुझे कहा कि तू मेरे नाम के लिये मन्दिर मत बनाना क्योंकि तू संग्रामी जन है और बहुत लोहू बहाया है। ४ तथापि इसराएल के ईश्वर परमेश्वर ने मुझे अपने पिता के सारे घराने से आगे इसराएल पर सदा राज्य करने को चुन लिया क्योंकि उस ने आज्ञाकारी के लिये यहूदाह को चुना है और यहूदाह के घराने में से मेरे पिता के घराने को चुन लिया और मेरे पिता के बेटों में से सारे इसराएल पर राज्य करने के लिये मुझे प्रसन्न किया। ५ और मेरे सारे बेटों में से क्योंकि परमेश्वर ने मुझे बहुत बेटे दिये हैं उस ने मेरे बेटे सुलेमान को चुन लिया है कि इसराएल पर परमेश्वर के राज्य के सिंहासन पर बैठे। ६ और उस ने मुझे कहा कि तेरा बेटा सुलेमान वही मेरा मन्दिर और मेरे आंगन बनावेगा क्योंकि मैं ने उसे चुन लिया कि वह मेरा बेटा होवे और मैं उस का पिता हूंगा। ७ और भी यदि वह आज की नाईं मेरी आज्ञा और बिचार पालने में दृढ़ होगा तो मैं उस के राज्य को सदा लों स्थिर करूंगा। ८ अब इस लिये परमेश्वर की मंडली सारे इसराएल की दृष्टि में और हमारे ईश्वर के सुन्ने में अपने ईश्वर परमेश्वर की सारी आज्ञा को ढूंढ़ो और पालन करो जिसतें तुम इस अच्छे देश के अधिकारी होओ और अपने पीछे अपने सन्तान के लिये सदा के कारण अधिकार छोड़ जाओ॥

९ और तू हे मेरे बेटे सुलेमान तू अपने पिता के ईश्वर को जान और सिद्ध अन्तःकरण से और मन की आंक्षा से उस की सेवा कर क्योंकि परमेश्वर सारे रणों को और चिंताओं की सारी भावनाओं को बिचारता है जो तू उसे ढूंढ़ेगा तो वह तुझ से पाया जावेगा परन्तु जो तू उसे बिसरावेगा तो वह तुझे सदा के लिये त्याग करेगा। १० अब चौकस हो क्योंकि परमेश्वर ने पवित्र स्थान के लिये मन्दिर बनाने के निमित्त तुझे चुना है बलवान हो और उसे बना॥

११ तब दाऊद ने अपने बेटे सुलेमान को उस ओसारे का और उस के घरों का और उस के भंडारों का और उस के ऊपर की कोठरियों का और उस के भीतर की कोठरियों का और दया के आसन के स्थान का डौल दिया। १२ और उन सभों का जो वह आत्मा के द्वारा से रखता था परमेश्वर के मन्दिर के आंगनों का और सारी कोठरियों और ईश्वर के मन्दिर के भंडारों का और समर्पण किई हुई बस्तुन के भंडारों का डौल दिया। १३ और याजकों की और लावियों की पारियों के लिये और परमेश्वर के मन्दिर की सेवा के सारे कार्य्य के लिये और परमेश्वर के मन्दिर में सेवा करने के सारे पात्रों के लिये। १४ भांति भांति की सारी सेवा के सारे सोने के पात्रों के लिये सोना तौल दिया और चांदी के सारे पात्रों के लिये हर प्रकार की सेवा के सारे पात्रों के लिये तौल के साथ। १५ और सोनहुली दीअटों के लिये और उन के सोनहुले दीपकों के लिये और हर एक दीअट के लिये और उस के दीपकों के लिये तौल के साथ और चांदी की दीअटों के लिये तौल के साथ दीअट के लिये और उन के दीपकों के लिये हर एक दीअट के कार्य्य के समान। १६ भेंट की रोटी के मंचों के लिये अर्थात् हर एक मंच के लिये सोना तौल

दिया और चांदी के मंचों के लिये चांदी। १७ और मांस के त्रिशूल के लिये और कटोरे कटोरियों के लिये निर्मल सोना और सोनहुले बासनों के लिये हर एक बासन के लिये तौल के साथ और हर एक रुप-१८ हुले बासन के लिये तौल दिया। और धूप की बेदी के लिये चोखा सोना तौल दिया और परमेश्वर के नियम की मंजूषा को ढांपने के लिये पंख फैलाये हुए करोबियों के रथ के डौल के लिये सोना १९ दिया। यह सब कार्य्य के डौल के समान परमेश्वर ने लिखके मुझे अपने हाथ के द्वारा से समझा दिया॥

२० तब दाऊद ने अपने बेटे सुलेमान से कहा कि बलवन्त और सुहियाव होके कार्य्य कर मत डर और विस्मित मत हो क्योंकि परमेश्वर ईश्वर मेरा ईश्वर तेरे साथ है वह तुझ से न घटेगा और न तुझे त्यागा करेगा जब लों तू परमेश्वर के मन्दिर की सेवा के २१ लिये सारे कार्य्य पूरे न करे। और ईश्वर के मन्दिर की सारी सेवा के लिये याजकों की और लावियों की पारियों को देख और तेरे संग सारे कार्य्यकारियों के लिये हर एक भांति की सेवा के लिये हर एक बांछित गुणी पुरुष और अध्यक्ष और सारे लोग भी तेरी आज्ञा में होंगे॥

उन्तीसवां पर्ब्ब।

१ और दाऊद राजा ने सारी मंडली से कहा कि मेरा बेटा सुलेमान जिसे केवल ईश्वर ने चुना है युवा और कोमल है और कार्य्य बड़ा क्योंकि वह भवन मनुष्य के लिये नहीं परन्तु परमेश्वर २ ईश्वर के लिये है। अब मैं ने अपनी सारी सामर्थ्य भर अपने ईश्वर के मन्दिर के कारण सिद्ध किया है सोने के लिये सोना और चांदी के लिये चांदी और पीतल के लिये पीतल लोहे के लिये लोहा और लकड़ी के लिये लकड़ी और जड़ने के लिये बैदूर्य्य मणि तेजस्वी पत्थर और नाना रंग के और सारे प्रकार के बहुमूल्य मणि ३ और मर्मर के पत्थर बहुताई से। और भी इस कारण कि मैं ने अपने ईश्वर के मन्दिर पर अपना मन लगाया है मैं ने अपनी निज संपत्ति में से उस पवित्र मन्दिर के लिये सोना और चांदी उन सभों से अधिक जो मैं ने पवित्र मन्दिर ४ के लिये सोना और रूपा दिया है। अर्थात् मन्दिर की भीत पर मढ़ने के लिये तीन सहस्र तोड़े सोने अर्थात् ओफीर के सोने और निर्मल चांदी का सात ५ सहस्र तोड़ा। सोना सुनहुले के लिये और रूपा रुपहुले के लिये और सारे प्रकार के कार्य्य के लिये कार्य्यकारियों के हाथों से और परमेश्वर को अपनी सेवा देने को आज कौन इच्छा रखता है॥

६ तब पितरों के प्रधानों ने और इसराएली गोष्ठियों के अध्यक्षों ने और सहस्र और शतपतियों ने और राजा के कार्य्य ७ के आज्ञाकारियों ने मनमंता चढ़ाया। और ईश्वर के मन्दिर के कार्य्य के लिये पांच सहस्र तोड़े और दस सहस्र द्राकम सोना और दस सहस्र तोड़ा चांदी और अठारह सहस्र तोड़ा पीतल और एक ८ लाख तोड़ा लोहा दिया। और जिन में मणि पाये गये उन्हों ने गैरसूनी यहिएल के हाथों से परमेश्वर के मन्दिर के ९ भंडार में दिये। तब लोगों ने आनन्द किया क्योंकि उन्हों ने मनमंता चढ़ाया इस कारण कि सिद्ध मन से उन्हों ने परमेश्वर के लिये मनमंता चढ़ाया और दाऊद राजा भी बड़े आनन्द से आनन्दित हुआ॥

१० इस कारण दाऊद ने सारी मंडली के आगे परमेश्वर का धन्य माना और

दाऊद ने कहा कि हे परमेश्वर हमारे पिता इसराएल के ईश्वर तू सनातन
११ काल के लिये धन्य है । हे परमेश्वर बड़ाई और पराक्रम और ऐश्वर्य्य और जय और महिमा तेरी क्योंकि स्वर्ग और पृथिवी में के सब तेरे हैं हे परमेश्वर राज्य तेरा और तू सभों पर श्रेष्ठ उभारा
१२ हुआ है । और धन और प्रतिष्ठा तुझी से और तू सभों पर राज्य करता है तेरे हाथ में पराक्रम और सामर्थ्य बढ़ा और सब को पराक्रम देना तेरे हाथ में है ।
१३ सो अब हे हमारे ईश्वर हम तेरा धन्यबाद करते हैं और तेरे ऐश्वर्य्यवान
१४ नाम की स्तुति करते हैं । परन्तु मैं कौन और मेरे लोग कौन कि इस रीति से हम मनमंता चढ़ा सकें क्योंकि तुझ से सब कुछ है और तेरी ही में से हम
१५ ने तुझे दिया है । क्योंकि हम अपने सारे पितरों के समान तेरे आगे परदेशी और प्रबासी हमारे दिन पृथिवी पर
१६ छाया के समान अस्थिर हैं । हे परमेश्वर हमारे ईश्वर यह सारी ढेर जो तेरे पवित्र नाम के लिये मन्दिर बनाने के लिये सिद्ध किई हैं सो तेरे ही हाथ
१७ से और सब तेरे ही हैं । हे मेरे ईश्वर मैं यह भी जानता हूं कि मन को तू जांचता है और खराई से प्रसन्न है मैं जो हूं सो अपने मन की खराई से ये सारी बस्तें मनमंती चढ़ाई हैं और आनन्द से मैं ने तेरे लोगों को जो यहां बाबास हैं मनमंता तुझे भेंट चढ़ाते
१८ देखा है । हे परमेश्वर हमारे पितर अबिरहाम इजहाक और इसराएल के ईश्वर तू इसे अपने लोगों के अन्तः- की चिन्ता की भावना में सदा लों रख और अपने लिये उन के मन
१९ को सिद्ध रख । और मेरे बेटे सुलेमान को सिद्ध अन्तःकरण दे जिसतें तेरी आज्ञाओं साक्षियों और विधिन को पालन करे और यह सब माने और उस भवन को बनावे जिस के लिये मैं ने सिद्ध किया है ॥

२० तब दाऊद ने सारी मंडली से कहा कि अब परमेश्वर अपने ईश्वर का धन्यबाद करो और सारी मंडली ने परमेश्वर अपने पितरों के ईश्वर का धन्यबाद किया और अपना अपना सिर झुकाके परमेश्वर की और राजा की दण्डवत किई ।
२१ और उस के दूसरे दिन उन्हों ने परमेश्वर के लिये बलि चढ़ाये और परमेश्वर के लिये बलिदान की भेंटें चढ़ाईं एक सहस्र बैल और एक सहस्र मेंढ़ा और एक सहस्र मेम्ने उन के पीने की भेंटों सहित और सारे इसराएल के कारण बहुताई से बलि चढ़ाया ।
२२ और उसी दिन बड़ी आनन्दता से परमेश्वर के आगे उन्हों ने खाया पीया और उन्हों ने दूसरी बेर दाऊद के बेटे सुलेमान को राजा किया और परमेश्वर के लिये श्रेष्ठ अध्यक्ष होने को उसे अभिषेक और सदूक को याजक किया ॥

२३ तब सुलेमान परमेश्वर के सिंहासन पर राजा होके अपने पिता दाऊद की सन्ती राज्य पर बैठा और भाग्यवान हुआ और सारे इसराएल उस के बश में हुए ।
२४ और सारे अध्यक्षों और सामर्थी लोगों और दाऊद राजा के सारे बेटे भी सुलेमान राजा के बश में हुए ।
२५ और परमेश्वर ने सारे इसराएल की दृष्टि में सुलेमान को अत्यन्त महान किया और उसे ऐसा राज्य बिभव दिया कि उस्से आगे इसराएल में किसी राजा का न था ॥

२६ यों यस्सी के बेटे दाऊद ने सारे इसराएल पर राज्य किया ।
२७ और उस ने इसराएल पर चालीस बरस राज्य किया सात बरस उस ने हबरून में और

२८ सलम में तेंतीस बरस राज्य किया। तब वह प्रतिष्ठा में और धन में और दिनों में परिपूर्ण अच्छा पुरनिया होके मरा और उस के बेटे सुलेमान ने उस की सन्ती
२९ । ३० राज्य किया। अब दाऊद राजा की अगिली और पिछली क्रिया उस के सारे राज्य सहित और उस का पराक्रम और जो जो समय उस पर और इसराएल पर और देशों के सारे राज्यों पर बीता था सो क्या समूएल दर्शी की पुस्तक में और नातन भविष्यद्वक्ता की पुस्तक में और दर्शी जद की पुस्तक में नहीं लिखा है॥

काल के समाचार की दूसरी पुस्तक।

पहिला पर्ब्ब।

अब दाऊद का बेटा सुलेमान अपने राज्य में दृढ़ हुआ और परमेश्वर उस का ईश्वर उस के साथ था और उसे
२ अत्यंत महान किया। तब सुलेमान ने सारे इसराएल और सहस्रपतिन और शतपतिन और न्यायियों और सारे इसराएल के हर एक अध्यक्ष और पितरों के प्रधानों
३ से बार्त्ता किई। तब सुलेमान और उस के साथ इसराएल की सारी मंडली जिबऊन के ऊंचे स्थान में गई क्योंकि मंडली का तंबू जिसे परमेश्वर के सेवक मूसा ने बन में बनाया सो वहीं था।
४ परन्तु दाऊद ईश्वर की मंजूषा को करयतअरीम से उस स्थान में उठा लाया था जो उस ने उस के लिये सिद्ध किया था क्योंकि उस ने उस के लिये यरूसलम
५ में एक तंबू खड़ा किया था। और भी अधिक पीतल की बेदी जिसे हूर के बेटे ऊरी के बेटे बजिल्लिएल ने बनाया था वहीं परमेश्वर के तंबू के आगे थी और सुलेमान और मंडली उस के पास
६ ढूंढ़ने के लिये आते थे। और सुलेमान उधर परमेश्वर के आगे पीतल की बेदी को जो मंडली के तंबू में थी चढ़ गया और उस पर एक सहस्र बलिदान की भेंटें चढ़ाईं॥

७ उसी रात ईश्वर ने सुलेमान को दर्शन देके कहा कि मांग मैं तुझे क्या देऊं।
८ तब सुलेमान ने ईश्वर से कहा कि तू ने मेरे पिता दाऊद पर बड़ी दया किई है और उस की सन्ती मुझ से राज्य करवाया है।
९ अब हे परमेश्वर ईश्वर मेरे पिता दाऊद से अपनी बाचा स्थिर कर क्योंकि तू ने एक लोग पर जो पृथिवी की धूल की नाईं बहुत हैं मुझे राजा
१० किया है। अब मुझे बुद्धि और ज्ञान दे जिसतें मैं इन लोगों के आगे बाहर भीतर आया जाया करूं क्योंकि तेरे इस बड़े लोगों का न्याय कौन कर सक्ता है॥

११ तब ईश्वर ने सुलेमान से कहा इस कारण कि तेरे मन में था और तू ने संपत्ति और धन अथवा प्रतिष्ठा और अपने बैरियों का प्राण न चाहा और न जीवन की बढ़ती मांगी है परन्तु अपने लिये बुद्धि और ज्ञान मांगा है जिसतें मेरे लोगों पर जिन पर मैं ने तुझे राजा किया
१२ है न्याय करे। बुद्धि और ज्ञान तुझे

दिये गये और मैं धन और संपत्ति और प्रतिष्ठा तुझे ऐसी देऊंगा जैसी तेरे आगे के राजाओं को न दिई और न तेरे १३ पिछलों को ऐसी होगी। तब सुलेमान जिबऊन के ऊंचे स्थान से मंडली के तंबू के आगे से यरूसलम को आया और इसराएल पर राज्य किया॥

१४ और सुलेमान ने रथों और घोड़चढ़ों को बटोरा और उस के चौदह सौ रथ और बारह सहस्र घोड़चढ़े थे जिन्हें उस ने रथ के नगरों में और यरूसलम में राजा के पास रक्खा॥

१५ और राजा ने यरूसलम में सोने चांदी को पत्थर की नाईं किया और देवदारु पेड़ों को बहुताई से बनैले गूलर पेड़ों १६ की नाईं किया। और सुलेमान के लिये घोड़े मिस्र से आते थे और राजा के बेपारियों के झुंड रोकड़ देके लाते थे। १७ और मिस्र से छः सौ टुकड़े चांदी पर एक एक रथ और डेढ़ सौ पर एक एक घोड़ा लाते थे और इसी रीति से हित्तियों के सारे राजाओं के लिये और अराम के राजाओं के लिये उन के द्वारा से लाते थे॥

दूसरा पर्ब्ब।

१ और सुलेमान ने परमेश्वर के नाम के लिये एक मन्दिर और अपने राज्य के २ लिये एक घर बनाने को ठाना। और सुलेमान ने सत्तर सहस्र बोझियों और पहाड़ में अस्सी सहस्र पत्थर तोड़वैयों को और उन पर तीन सहस्र छः सौ करोड़ों को ठहराया॥

३ और सुलेमान ने सूर के राजा हूराम पास कहला भेजा कि जैसा तू ने मेरे पिता दाऊद से व्यवहार करके एक निवासस्थान बनाने के लिये उस पास देवदारु काष्ठ भेजा था वैसा मुझ से भी ४ कर। देख मैं अपने ईश्वर परमेश्वर के नाम के और उस की स्थापना के लिये और उस के आगे सुगंधों का धूप जलाने के लिये और नित्य की भेंट की रोटी के लिये और सांझ बिहान के और बिश्रामों और अमावास्या में और परमेश्वर हमारे ईश्वर के भारी पर्ब्बों में बलिदान की भेंटों के लिये एक मन्दिर बनाता हूं यह इसराएल के लिये नित्य की बिधि है।

५ और मैं जो मन्दिर बनाता हूं सो महान होगा क्योंकि हमारा ईश्वर सारे देवों ६ से महान है। परन्तु किस ने सामर्थ्य पाई है कि उस के लिये एक मन्दिर बनावे क्योंकि स्वर्ग और स्वर्गों का स्वर्ग उसे समा नहीं सक्ता फेर मैं कौन हूं जो उस के लिये मन्दिर बनाऊं यह केवल इस कारण है कि उस के आगे सुगंध ७ जलाऊं। सो अब मेरे पास एक जन भेज जो सोने और रूपे और पीतल और लोहे और बैंजनी और किरमी और नीले बर्ण के सूत का कार्य्य जानता है और चित्रकारी में निपुण है कि उन कार्य्य-कारियों के संग जो यहूदाह और यरू-सलम में मेरे साथ हैं जिन्हें मेरे पिता ८ दाऊद ने ठहराया है काम करे। और देवदारु पेड़ सरो पेड़ और अलगुम पेड़ लुबनान में से मेरे पास भेज क्योंकि मैं जानता हूं कि तेरे सेवक लुबनान के लट्ठों को काटने में निपुण हैं और देख ९ मेरे सेवक तेरे सेवकों के साथ होंगे। अर्थात् लट्ठे बहुताई से सिद्ध करने को क्योंकि जो मन्दिर मैं बनाने पर हूं सो १० महान और आश्चर्य्यित होगा। और देख मैं तेरे लकड़हार सेवकों को जो लट्ठे काटते हैं बीस सहस्र नपुये गोहूं के पिसान और बीस सहस्र नपुये जव और बीस सहस्र कुप्पे दाखरस और बीस सहस्र कुप्पे तेल देऊंगा॥

११ तब सूर के राजा हूराम ने उत्तर

लिखके सुलेमान पास भेजा इस कारण कि परमेश्वर ने अपने लोगों से प्रेम किया उस ने तुझ को उन पर राजा १२ बनाया। हूराम ने और भी कहा कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर धन्य है जिस ने स्वर्ग और पृथिवी को सिरजा जिस ने दाऊद राजा को एक बुद्धिमान पुत्र दिया जो चतुराई और ज्ञान में निपुण है जिसतें परमेश्वर के लिये मन्दिर और अपने राज्य के लिये एक १३ भवन बनावे। और अब मैं ने अपने पिता हूराम के एक गुणवान जन को १४ जो ज्ञानी है भेजा है। सो दान की लड़कियों में की स्त्री का बेटा और उस का पिता सूर का एक जन वह सोना और चांदी पीतल लोहा पत्थर और लट्ठे बैंजनी नीले और झीने वस्त्र और लाल कार्य्य का गुणी है और हर प्रकार के खोदने में प्रवीण जो तेरे गुणवानों के संग और मेरे प्रभु तेरे पिता दाऊद के गुणवानों के साथ जो कार्य्य उसे दिया जावेगा वह हर एक १५ जुगत से निकालेगा। सो अब मेरे प्रभु ने जो गोहूं और जव और तेल और दाखरस के विषय में कहा है सो अपने १६ सेवकों के लिये भेजिये। और तेरे सारे प्रयोजन के समान हम लुबनान में लकड़ी काटेंगे और बेड़ा बांधके समुद्र से तेरे पास याफा में पहुंचावेंगे और तू उन्हें यरूसलम में चढ़ाइयो॥

१७ और उस के पिता दाऊद के गिन्ने के समान सुलेमान ने इसराएल के देश में के सारे परदेशियों को गिना और वे एक लाख तिरपन सहस्र छ: सौ ठहरे। १८ और उस ने उन में से सत्तर सहस्र जन बोझिये और अस्सी सहस्र जन पहाड़ में तोड़वैये और लोगों पर तीन सहस्र छ: सौ करोड़े ठहराये॥

तीसरा पर्व्व।

१ तब सुलेमान परमेश्वर के मन्दिर को यरूसलम में मोरियः पर्वत पर जहां उस के पिता दाऊद ने दर्शन पाया था उस स्थान में जो दाऊद ने यबूसी अरनान के खलिहान में सिद्ध किया था २ बनाने लगा। और उस ने अपने राज्य के चौथे बरस और दूसरे मास की दूसरी तिथि में बनाना आरंभ किया॥

३ अब ईश्वर का मन्दिर बनाने को सुलेमान ने यह पाया पहिले माप के समान हाथों से लम्बाई साठ हाथ की ४ और चौड़ाई बीस हाथ की। और आगे के ओसारे की लम्बाई घर की चौड़ाई के समान बीस हाथ और लम्बाई एक सौ बीस हाथ और उस ने उसे भीतर निर्मल सोने से मढ़ा॥

५ और उस्से बड़े घर को उस ने सरो के काठ से पटवाया जिसे उस ने चोखे सोने से मढ़ा और उस के ऊपर खजूर ६ पेड़ और सीकरें रक्खीं। और उस ने घर को शोभित करने के लिये मणि से जड़ा और सोना परवाइम का सोना ७ था। और उस ने घर को और लट्ठों को और खंभों को और उस की भीतों को और उस के केवाड़ों को भी सोने से मढ़ा और भीत पर करोबियों को खोदा॥

८ और उस ने अत्यंत पवित्र घर बनाया जिस की लम्बाई घर की चौड़ाई के समान बीस हाथ और उस की चौड़ाई बीस हाथ और उस ने उसे ९ छ: सौ तोड़े चोखे सोने से मढ़ा। और कीलों की तौल पचास शैकल सोना था और उस ने ऊपर की कोठरियां सोने से मढ़ीं॥

१० और उस अत्यंत पवित्र घर में उस ने दो करोबी खोदके बनवाये और

११ उन्हें सोने से मढ़ा । और करोबियों के डैनों की लम्बाई बीस हाथ एक डैना पांच हाथ का घर की भीत लों पहुंचा और दूसरा डैना पांच हाथ का दूसरे १२ करोबी के डैने लों पहुंचा । और दूसरे करोबी का डैना पांच हाथ का घर की भीत लों पहुंचा और दूसरा डैना पांच हाथ का दूसरे करोबी के डैने लों १३ मिला था । इन करोबियों के डैने बीस हाथ लों फैले और वे अपने अपने पांव पर खड़े थे और उन के मुंह भीतर १४ की ओर थे । और उस ने घूंघट को नीला और बैंजनी और लाल और झीने सूती कपड़े से बनाया और उस पर करोबियों को उभारा ॥

१५ और उस ने घर के आगे पैंतीस हाथ लम्बे दो खंभे भी बनाये और उस के ऊपर के कलश भी पांच हाथ के । १६ और उस ने ईश्वरीय बाचा में सीकरें बनाईं और खंभों के सिरों पर लगाईं और एक सौ अनार बनाये और सीकरों १७ पर रक्खे । और उस ने मन्दिर के आगे उ । खंभों को खड़ा किया एक दहिनी ओर और दूसरा बाईं ओर और दहिने का नाम उस ने याकीन और बायें का नाम बुअज रक्खा ॥

चौथा पर्व्व ।

१ और उस ने पीतल की बेदी भी बनाई जिस की लम्बाई बीस हाथ और चौड़ाई बीस हाथ की और उस की ऊंचाई दस हाथ की ॥

२ और उस ने कोर से कोर लों दस हाथ गोल एक ढला हुआ कुंड बनाया और उस की ऊंचाई पांच हाथ और तीस हाथ की रस्सी उस की चारों ओर ३ आती थी । और उस के नीचे बैल की सी सूरत जो उस की चारों ओर थे हाथ भर में दस कुंड को घेरे हुए थे और ढाले जाने के समय दो पांती बैल ढाले ४ गये । वह बारह बैलों पर धरा गया था तीन उत्तर की ओर देखते थे और तीन पश्चिम की ओर देखते थे तीन दक्षिण की ओर देखते थे और तीन पूरब की ओर देखते थे और कुंड उन्हीं के ऊपर ५ और उन सभों के पुट्ठे भीतर थे । और उस की मोटाई चार अंगुल की और उस के कोर जैसा कटोरे के कार्य्य का होता है सोसन के फूल के समान उस में एक सहस्र सात सौ मन के लगभग की समाई थी ॥

६ उस ने दस स्नानपात्र भी बनाये और उन में धोने के लिये पांच को दहिनी और पांच को बाईं अलंग रक्खा और जो वस्तु बलिदान की भेंट के लिये चढ़ाते थे उन्हीं में धोते थे परन्तु कुंड याजकों के स्नान के लिये था ॥

७ और उन के डौल के समान उस ने सोने की दस दीअट बनाईं और उन्हें मन्दिर में पांच दहिनी और पांच बाईं ओर रक्खा ॥

८ उस ने दस मंच भी बनाये और मन्दिर में पांच दहिनी और पांच बाईं ओर रक्खे और उस ने सोने के सौ कटोरे बनाये ॥

९ उन से अधिक याजकों का आंगन और बड़ा आंगन और आंगन के केवाड़े भी बनाये और उन के केवाड़ों को पीतल १० से मढ़ा । और उस ने कुंड को पूरब की दहिनी ओर दक्षिण के साम्ने रक्खा ॥

११ और हूराम ने बर्तन और करछुल और कटोरे बनाये सब हूराम ईश्वर के मन्दिर के निमित्त सुलेमान राजा के लिये जो कुछ बनाने को था सब बना चुका । १२ दो खंभे और गोलाई और दोनों खंभों के ऊपर की चोटी और खंभों के ऊपर के दो कलशों की गोलाई ढांपने के

१३ लिये दो ढपने जाली बनाये। और दोनों जाली ठकनों पर चार सौ अनार एक एक जाली पर दो दो पांती अनार जिसतें खंभों पर के कलशों की दोनों
१४ गोलाइयों को ढांपें। उस ने आधार भी ये और उन पर स्नानपात्रों को रक्खा।
१५ एक कुंड और उस के नीचे बारह बैल।
१६ और उस के पिता हूराम ने बर्तन और करछुल और मांस की कांटियें और उन की सारी सामग्री सुलेमान राजा के निमित्त परमेश्वर के मन्दिर के लिये
१७ मांजे हुए पीतल से बनाईं। यरदन के चौगान में सुक्कात और सरीदः के बीच कचली भूमि में राजा ने उन्हें ढाला॥
१८ यों सुलेमान ने इन सारे पात्रों को बहुताई से बनाया क्योंकि पीतल की
१९ तौल पाई न जा सकी। और सुलेमान ने ईश्वर के मन्दिर के सारे पात्रों को और सोने की बेदी को भी और भेंट
२० की रोटी के मंचों को भी बनाया। उन से अधिक दीअट उन के दीपक समेत बनाईं जिसतें वे चोखे सोने से ईश्वरीय बाणी के आगे रीति के समान जला
२१ करें। और फूल और दीपक और चिमटे
२२ सोने से निर्म्मल सोने से बनाये। और छुरियां और कटोरे और करछुल और निर्म्मल सोने की धूपायरियां और घर की पैठ और अति पवित्र के भीतर के केवाड़े और मन्दिर के घर के केवाड़े सोने के॥

पांचवां पर्व्व।

१ यों सारे कार्य्य जो सुलेमान ने परमेश्वर के मन्दिर के लिये किये बन चुके और सुलेमान अपने पिता दाऊद की समर्पण किई हुई बस्तुन को ले आया और सोना चांदी और सारे पात्रों को ईश्वर के मन्दिर के भंडारों में रक्खा॥

२ तब सुलेमान ने दाऊद के नगर अर्थात् सैहून से परमेश्वर के नियम की मंजूषा को ऊपर लाने के लिये इसराएल के प्राचीनों को और गोष्ठियों के सारे प्रधानों को अर्थात् इसराएल के सन्तानों के पितरों के प्रधानों को यरूसलम में एकट्ठा किया॥

३ इस लिये सातवें मास के पर्ब्ब में इसराएल के सारे मनुष्य राजा पास
४ एकट्ठे हुए। और इसराएल के सारे प्राचीन आये और लावियों ने मंजूषा
५ उठा लिई। और वे मंजूषा को और मंडली के तंबू को और सारे पवित्र पात्रों को जो तंबू में थे याजक और
६ लावी उठा लाये। और सुलेमान राजा ने और इसराएल की सारी मंडली ने जो उस पास मंजूषा के आगे एकट्ठे हुए थे इतने भेड़ और बैल के बलिदान चढ़ाये जो बहुताई के मारे गिने
७ नहीं जा सक्ते थे। तब याजक परमेश्वर के नियम की मंजूषा को उस के स्थान अर्थात् मन्दिर की ईश्वरीय बाणी अत्यंत पवित्र स्थान में करोबियों
८ के डैनों के नीचे लाये। क्योंकि मंजूषा के स्थान में करोबी डैना फैलाये हुए थे और करोबियों ने मंजूषा को और
९ उस के बहंगरों को ऊपर से ढांपा। और बहंगर ऐसे लम्बे थे कि उन के सिरे मंजूषा पर से बाणी के आगे दिखाई देते थे परन्तु बाहर से नहीं दिखाई देते
१० थे और आज लों वहीं हैं। मिस्र से निकलने से जब परमेश्वर ने इसराएल के सन्तान से नियम किया था पटियों को छोड़ जिन्हें मूसा ने होरिब में रक्खा था मंजूषा में कुछ न था॥

११ और ऐसा हुआ कि जब याजक पवित्र स्थान से निकल आया क्योंकि सारे याजक जो पाये गये थे और पवित्र

किये गये थे पारी पारी से नहीं ठहरते १२ थे। और आसफ के और हैमान के और यदूतून के सारे लावी गायक भी उन के बेटे और उन के भाईबन्द समेत झीने सूती कपड़े पहिने हुए करताल और भवल और बीन लेके बेदी के पूरब के अलंग खड़े हुए और उन के साथ तुरही १३ बजाते हुए एक सौ बीस याजक। और जब उन्हों ने तुरही से और करताल से और बाजे की सामग्री से शब्द उठाया और परमेश्वर की स्तुति किई क्योंकि वह भला है और उस की दया सर्व्वदा के लिये त्यों तुरहियां और गायक ने परमेश्वर की स्तुति और धन्य मानके सुनाया आने के लिये एक साथ स्वर उठाया यों हुआ कि घर अर्थात् परमेश्वर का मन्दिर १४ मेघ से भर गया। यहां लों कि याजक मेघ के मारे सेवा के लिये ठहर न सक्ते थे क्योंकि परमेश्वर के बिभव ने ईश्वर के मन्दिर को भर दिया था॥

छठवां पर्व्व।

तब सुलेमान ने कहा कि परमेश्वर ने कहा है कि मैं गाढ़े अंधकार में २ बास करूंगा। परन्तु मैं ने तेरे निवास के लिये एक घर बनाया है और तेरे सर्व्वदा के रहने के लिये एक स्थान। ३ और राजा ने अपना मुंह फेरके इसराएल की सारी मंडली को आशीस दिया और इसराएल की सारी मंडली उठ खड़ी हुई॥

४ और उस ने कहा कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर धन्य जिस ने अपने हाथों से वह संपूर्ण किया जो वह मेरे पिता दाऊद से अपने मुंह से कहके ५ बोला। कि जब से मैं अपने लोगों को मिस्र के देश से निकाल लाया मैं ने अपने नाम के लिये इसराएल की सारी गोष्ठियों में से मन्दिर बनाने को कोई नगर न चुना और अपने इसराएल लोगों पर प्रभुता करने को किसी को नहीं चुना। परन्तु मैं ने अपने नाम ६ के लिये यरूसलम को चुना है और मेरे इसराएल लोगों पर होने के लिये दाऊद को चुन लिया है। अब मेरे पिता ७ दाऊद के मन में था कि परमेश्वर इसराएल के ईश्वर के नाम के लिये एक मन्दिर बनावे। परन्तु परमेश्वर ने ८ मेरे पिता दाऊद से कहा इस कारण कि मेरे नाम के लिये तेरे मन में एक मन्दिर बनाना था सो तू ने अच्छा किया कि तेरे मन में था। तथापि तू ९ वह मन्दिर न बनाना परन्तु तेरा बेटा जो तेरी कटि से निकलेगा सोई मेरे नाम के लिये मन्दिर बनावेगा। इस १० लिये परमेश्वर ने अपने कहे हुए बचन को पूरा किया है क्योंकि मैं अपने पिता दाऊद के स्थान पर उठा हूं और परमेश्वर की प्रतिज्ञा के समान इसराएल के सिंहासन पर बैठा हूं और परमेश्वर इसराएल के ईश्वर के नाम के लिये वह मन्दिर बनाया है। और मैं ११ ने उस में मंजूषा रक्खी है जिस में परमेश्वर का वह नियम है जो उस ने इसराएल के सन्तानों के साथ किया॥

तब वह इसराएल की सारी मंडली १२ के सान्ने परमेश्वर की बेदी के आगे खड़ा हुआ और अपने हाथ फैलाये। क्योंकि सुलेमान ने पांच हाथ लम्बा १३ और पांच हाथ चौड़ा और तीन हाथ ऊंचा पीतल का एक मंच बनाया था और आंगन के मध्य में उसे रक्खा और उसी पर खड़ा होके इसराएल की सारी मंडली के आगे घुठना टेका और स्वर्ग की ओर अपने हाथ फैलाये॥

और कहा कि हे परमेश्वर इसराएल १४ के ईश्वर तेरे तुल्य स्वर्ग में अथवा

पृथिवी में कोई ईश्वर नहीं जो अपने दासों के लिये जो अपने सारे मन से तेरे आगे चलते हैं नियम और दया १५ रखता है। क्योंकि तू ने अपने दास मेरे पिता दाऊद से जो प्रतिज्ञा किई है सो संपूर्ण किया है और अपने मुंह से कहा और उसे अपने हाथ से पूरा किया जैसा १६ आज है। सो अब हे परमेश्वर इसराएल के ईश्वर उसे पालन कर जो तू ने अपने दास मेरे पिता से यह कहके प्रतिज्ञा किई कि तेरे लिये पुरुष मेरी दृष्टि में न घटेगा कि इसराएल के सिंहासन पर बैठे यदि तेरे बंश चौकस होके मेरी व्यवस्था पर चलें जैसा तू मेरे आगे १७ चला है। सो अब हे परमेश्वर इसराएल के ईश्वर जो बचन तू ने अपने दास दाऊद से कहा है उसे पूरा कर॥

१८ परन्तु क्या निश्चय ईश्वर पृथिवी के मनुष्यों के साथ बास करेगा देख स्वर्ग और स्वर्गों के स्वर्ग तुझे समा नहीं सक्ते कितना अधिक यह मन्दिर जो १९ मैं ने बनाया है। इस लिये हे परमेश्वर मेरे ईश्वर तू अपने दास की प्रार्थना पर और उस की बिनती पर सुरत लगा और अपने दास की बिनती और प्रार्थना को सुन जो वह तेरे आगे प्रार्थना करता २० है। जिसतें तेरी आंखें रात दिन इस मन्दिर पर अर्थात् इस स्थान पर जिस के बिषय में तू ने कहा है कि मैं अपना नाम उस में स्थापन करूंगा कि अपने दास की प्रार्थना को जो इस स्थान की २१ ओर करता है सुने। इस लिये अपने दास की और अपने इसराएल लोगों की बिनतियां सुन जो वे इस स्थान की ओर करें और तू अपने निवासस्थान स्वर्ग से सुन और सुनके क्षमा कर॥

२२ यदि कोई अपने परोसी का पाप करे और उस्से किरिया लेने को उस पर किरिया रक्खी जावे और वह किरिया इस मन्दिर में तेरी बेदी के आगे आवे। २३ तब स्वर्ग में से सुन और अपने दास का न्याय कर जिसतें दुष्ट के सिर पर उस की चाल का पलटा पड़े जिसतें धर्म्मी अपने धर्म्म के समान पाने को निर्दोष ठहरे॥

२४ और यदि तेरे इसराएल लोग तेरे बिरुद्ध पाप करने के कारण बैरी के आगे हार जावें और फिरके तेरे नाम को मान लेवें और प्रार्थना करके इस २५ मन्दिर में तेरे आगे बिनती करें। तब तू स्वर्गों में से सुन और अपने इसराएल लोगों का पाप क्षमा कर और उन्हें इस देश में फिर ला जो तू ने उन्हें और उन के पितरों को दिया है॥

२६ जब स्वर्ग बंद हो जावे और उन के पाप के कारण जल न बरसे जब तू उन्हें कष्ट देता है यदि वे इस स्थान की ओर प्रार्थना करें और तेरे नाम को मान लेवें २७ और अपने पाप से फिरें। तब तू स्वर्ग से सुन और अपने दासों का और अपने इसराएल लोगों का पाप क्षमा कर और उन्हें अच्छा मार्ग बता जिन में उन्हें चलना उचित है और अपने देश में जिसे तू ने अपने लोगों को अधिकार के लिये दिया है जल बरसा॥

२८ यदि देश में अकाल अथवा मरी अथवा झुलस अथवा लेंढ़ा होवे अथवा टिड्डी अथवा कीड़े हों अथवा उन के बैरी उन के देश के नगरों में उन्हें घेर लेवें जो कुछ घाव अथवा रोग होवे। २९ तब जो जो प्रार्थना अथवा बिनती किसी जन से अथवा अपने सारे इसराएल लोगों से किई जाय जब हर एक जन अपने ही घाव और अपने ही शोक को पहिचाने और अपने हाथ इस मन्दिर ३० की ओर फैलावे। तब तू अपने रहने

के निवास स्वर्ग से सुन और क्षमा कर और हर एक जन को उस की सारी चाल के समान जिस का मन तू जानता है प्रतिफल दे क्योंकि केवल तू मनुष्यों के सन्तान के अंतःकरणों को जानता है। ३१ जिसतें वे तुझे डरके तेरे मार्गों पर अपने जीवन भर उस देश में जिसे तू ने हमारे पितरों को दिया है चलें॥

३२ और जो बिदेशी तेरे इसराएल लोगों में का नहीं है परन्तु जो तेरे महत नाम और तेरे बलवन्त हाथ और फैलाई हुई भुजा के लिये दूर देश से आये हैं यदि वे आवें और इस मन्दिर में प्रार्थना करें। ३३ तो तू अपने निवासस्थान स्वर्गों में से सुन और परदेशी की सारी प्रार्थना के समान कर जिसतें पृथिवी के सारे लोग तेरे नाम को जानें और तेरे इसराएल लोगों के समान तुझे डरें और जानें कि इस मन्दिर पर तेरा नाम कहा जाता है॥

३४ यदि तेरे लोग उस मार्ग से अपने बैरियों से संग्राम करने को निकलें जिस्से तू उन्हें भेजेगा और वे इस नगर की ओर जिसे तू ने चुना है और इस मन्दिर की ओर जो मैं ने तेरे नाम के लिये ३५ बनाया है प्रार्थना करें। तो स्वर्ग में से उन की प्रार्थना और उन की बिनती सुन और उन के पद का पक्ष कर॥

३६ जब वे तेरे बिरोध पाप करें क्योंकि कोई जन नहीं जो पाप नहीं करता और तू उन से रिसियाके उन्हें बैरी के हाथ सौंप देवे और वे उन्हें बंधुआई में दूर देश में अथवा समीप ले जावें। ३७ तथापि जिस देश में वे बंधुआई में उठाये जावें यदि वे अपने मन में चेत करें और अपनी बंधुआई के देश में फिरें और यह कहके तेरी प्रार्थना करें कि हम ने पाप किया है हम ने चूक किई है और दुष्टता से व्यवहार किया है। ३८ वे अपनी बंधुआई के देश में जहां वे उन्हें बंधुआई में ले गये हैं यदि वे अपने सारे अंतःकरण से और अपने सारे प्राण से तेरी ओर फिरें और अपने देश की जो तू ने उन के पितरों को दिया है और उस नगर की ओर जिसे तू ने चुना है और इस मन्दिर की ओर जो मैं ने तेरे नाम के लिये बनाया है प्रार्थना करें। ३९ तब तू अपने निवासस्थान स्वर्ग में से उन की प्रार्थना और उन की बिनतियां सुन और उन के पद का पक्ष कर और जो पाप तेरे लोगों ने किया है क्षमा कर॥

४० अब हे मेरे ईश्वर मैं बिनती करता हूं कि इस स्थान की प्रार्थना पर तेरी आंखें खुली और तेरे कान झुके रहें। ४१ इस लिये अब हे परमेश्वर ईश्वर अपने बिश्रामस्थान पर उठ जा तू और तेरी मंजूषा का बल हे परमेश्वर ईश्वर तेरे याजक मुक्ति से पहिराये जावें और तेरे संत भलाई से आनन्द करें। ४२ हे परमेश्वर ईश्वर तू अपने अभिषिक्त का मुंह मत फेर अपने दास दाऊद की दया को स्मरण कर॥

सातवां पर्ब्ब।

१ जब सुलेमान प्रार्थना कर चुका था तब स्वर्ग से आग उतरी और बलिदान की भेंट और बलिदानों को भस्म किया और परमेश्वर के बिभव से मन्दिर भर गया। २ और याजक परमेश्वर के मन्दिर में प्रवेश न कर सके क्योंकि परमेश्वर के बिभव से परमेश्वर का मन्दिर भर गया था। ३ और जब इसराएल के सारे सन्तानों ने देखा कि किस रीति से आग और परमेश्वर का बिभव मन्दिर पर उतरा तब उन्हों ने गच पर भूमि लों मुंह के बल झुकके दंडवत और परमेश्वर

की स्तुति किई कि वह भला है और उस की दया सर्बदा लों है॥

४ तब राजा और सारे लोगों ने पर-
५ मेश्वर के आगे बलि चढ़ाये। और सुलेमान राजा ने बाईस सहस्र बैल और एक लाख बीस सहस्र भेड़ बलि चढ़ाये यों राजा और सारे लोगों ने ईश्वर के
६ मन्दिर की प्रतिष्ठा किई। और याजक और लावी भी परमेश्वर के बाजे की सामग्री लिये हुए जिन्हें दाऊद राजा ने परमेश्वर की स्तुति के लिये बनाया था अपने अपने पदों पर खड़े हुए और दाऊद ने उन के द्वारा से स्तुति किई क्योंकि उस की दया सर्बदा लों है और याजकों ने उन के आगे तुरही बजाई
७ और सारे इसराएल खड़े हुए। और सुलेमान ने परमेश्वर के मन्दिर के आगे के आंगन के मध्य को पवित्र किया क्योंकि वहां उस ने बलिदान की भेंट और कुशल की भेंटों की चिकनाई चढ़ाई क्योंकि सुलेमान ने जो पीतल की बेदी बनाई थी उस में बलिदान की भेंट और भोजन की भेंट और चिकनाई समा न सकी॥

८ और उस समय में सुलेमान और उस के साथ सारे इसराएल की एक अति बड़ी मंडली ने हमात की पैठ से मिस्र
९ की नदी लों सात दिन लों पर्ब्ब रक्खा। और आठवें दिन उन्हों ने बड़ा पर्ब्ब माना क्योंकि उन्हों ने सात दिन बेदी की प्रतिष्ठा के लिये और सात दिन पर्ब्ब
१० के लिये रक्खा। और दाऊद पर और सुलेमान पर और अपने इसराएल लोगों पर परमेश्वर के अनुग्रह के लिये उस ने सातवें मास की तेईसवीं तिथि में आनन्दित और मगनता से लोगों को अपने अपने डेरे को बिदा किया॥

११ यों सुलेमान परमेश्वर का मन्दिर और राजा का भवन बना चुका और परमेश्वर के मन्दिर में और अपने भवन में जो जो कुछ सुलेमान के मन में आया उस ने उसे सिद्ध किया॥

१२ और परमेश्वर ने रात को सुलेमान को दर्शन दिया और उसे कहा कि मैं ने तेरी प्रार्थना सुनी है और बलि के घर के लिये यह स्थान चुन लिया है।
१३ जो मैं स्वर्ग को बन्द करूं जिसतें न बरसे अथवा जो देश नष्ट करने को टिड्डियों को आज्ञा करूं अथवा जो मैं अपने
१४ लोगों में मरी भेजूं। यदि मेरे लोग जो मेरे नाम से कहाये जाते हैं आप को दीन करके प्रार्थना करें और मेरा मुंह ढूंढ़ें और अपने दुष्ट मार्गों से फिरें तो मैं स्वर्ग से सुनूंगा और उन का पाप क्षमा करूंगा और उन के देश को चंगा करूंगा।
१५ अब इस स्थान की प्रार्थना पर मेरी आंखें खुली रहेंगी और मेरे कान झुके
१६ रहेंगे। और अब मैं ने इस मन्दिर को चुनके इसे पवित्र किया है जिसतें मेरा नाम सर्बदा इस में रहे और मेरी आंखें और मेरा मन सदा यहां रहेंगे॥

१७ और तू जो है जैसा तेरा पिता दाऊद मेरे आगे चलता था वैसा यदि मेरे आगे चलेगा और मेरी सारी आज्ञा के समान करेगा और मेरी बिधिन और बिचार
१८ मानेगा। जैसा मैं ने यह कहके तेरे पिता दाऊद से बाचा बांधी है कि इसराएल में से तेरे लिये आज्ञाकारी न घटेगा तब मैं तेरे राज्य के सिंहासन को स्थिर करूंगा॥

१९ परन्तु मेरी बिधिन और आज्ञाओं को जो मैं ने तुम्हारे आगे रक्खी हैं यदि तुम फिरके छोड़ देओगे और जाके दूसरे
२० देवों की सेवा और पूजा करोगे। तो मैं उन्हें अपने देश से जो मैं ने उन्हें दिया है उखाड़ डालूंगा और यह मन्दिर जिसे

मैं ने अपने नाम के लिये पवित्र किया है अपनी दृष्टि से दूर करूंगा और उसे एक कहानी और एक कहावत सारे २१ जातिगणों में बनाऊंगा। और यह महत मन्दिर इधर के हर एक जानेवाले पर आश्चर्य्यित होगा यहां लों कि वह कहेगा कि परमेश्वर ने इस देश को और इस मन्दिर को क्यों ऐसा किया है। २२ तब उत्तर दिया जावेगा इस कारण कि उन्हों ने परमेश्वर अपने पितरों के ईश्वर को जो उन्हें मिस्र के देश से निकाल लाया था त्याग करके और देवों को गहा है और उन की पूजा और सेवा किई इस लिये वह ये सारी बुराई उन पर लाया है॥

आठवां पर्ब्ब

१ और बीस बरस के अन्त में जब कि सुलेमान ने परमेश्वर का मन्दिर और अपने ही भवन को बनाया यों हुआ। २ कि जो जो नगर हूराम ने सुलेमान को फेर दिया था सुलेमान ने उन्हें बनाके इसराएल के सन्तानों को उन में बसाया॥ ३ फिर सुलेमान हमात सूबः में जाके ४ उस पर प्रबल हुआ। और उस ने बन में तदमूर बनाया और हमात में सारे ५ भंडारनगर बनाये। उस ने ऊपर का और नीचे का बैतहैारान भी बनाये जो अड़ंगों और फाटक और भीत से बाड़ित ६ नगर थे। और बअलात और सारे भंडारनगर जो सुलेमान के थे और सारे रथनगर और घोड़चढ़ों के नगर बनाये और जो कुछ सुलेमान की बांछा थी सो यरूसलम में और लुबनान में और अपने राज्य के सारे देश में बनाये॥

७ हित्तियों के और अमूरियों के और फरिज्जियों के और हवियों के और यबूसियों के बचे हुए सारे लोग जो ८ इसराएल के न थे। परन्तु उन के वंश जो उन के पीछे उस देश में छोड़े गये जिन्हें इसराएल के सन्तानों ने नष्ट न किया उन्हें सुलेमान ने आज लों कर-दायक ठहराया। ९ परन्तु इसराएल के सन्तानों में से सुलेमान ने अपने कार्य्य के लिये किसी को दास न बनाया क्योंकि वे योद्धा और सेनापति और रथपति और घोड़चढ़े थे॥

१० और वे सुलेमान राजा के श्रेष्ठ प्रधान थे अर्थात् अढ़ाई सौ जो लोगों पर प्रभुता करते थे॥

११ और सुलेमान फिरऊन की पुत्री को दाऊद के नगर से उस भवन में लाया जो उस ने उस के लिये बनाया था क्योंकि उस ने कहा था कि मेरी पत्नी इसराएल के राजा दाऊद के भवन में न रहेगी इस कारण कि पवित्रता में परमेश्वर की मंजूषा आई है॥

१२ तब सुलेमान ने परमेश्वर की बेदी पर जो उस ने ओसारे के आगे बनाई थी परमेश्वर के लिये बलिदान की भेंटें चढ़ाईं। १३ अर्थात् मूसा की आज्ञा के समान प्रतिदिन के लिये बिश्रामों में और अमावास्यों में और बरस बरस तीन बार भारी पर्ब्बों में अखमीरी रोटी के पर्ब्ब में और अठवारों के पर्ब्ब में और तंबुओं के पर्ब्ब में ठहराये हुए नियम के समान भेंटें चढ़ाईं। १४ और उस ने अपने पिता दाऊद के ठहराने के समान याजकों की पारी सेवा के लिये ठहराई और प्रतिदिन के आवश्यक कार्य्य के समान याजकों के आगे स्तुति और सेवा करने के लिये लावियों को और उन की पारी के समान हर एक फाटक में द्वारपालक भी ठहराया क्योंकि ईश्वर के जन दाऊद की आज्ञा योंही थी। १५ और वे राजा की आज्ञा से जो उस ने याजकों और लावियों को किसी विषय

में और भंडार के बिषय में दिई थी
१६ अलग न हुए। अब सुलेमान के सारे
कार्य्य परमेश्वर के मन्दिर की नेव
डाली जाने के दिन से उस के पूरा
होने लों सिद्ध हुए सो परमेश्वर का
मन्दिर बन गया॥
१७ अब सुलेमान समुद्र के तीर अदूम
देश में असयूनजब्र को और आलूत को
१८ गया। और हूराम ने अपने दासों के
हाथ से जहाजों को और समुद्र के
जानकार दासों को उस पास भेजा और
वे सुलेमान के दासों के संग ओफीर
को गये और वहां से साढ़े चार सै तोड़े
सोना सुलेमान राजा पास लाये॥

नवां पर्ब्ब।

१ और जब सबग्न की रानी ने सुलेमान
की कीर्त्ति सुनी तो वह अति बड़ी
जथा और ऊंटों पर सुगंध द्रव्य लदे हुए
और बहुताई से सोना और मणि लेके
गूढ़ प्रश्नों से यरूसलम में सुलेमान को
परखने के लिये आई और सुलेमान पास
पहुंचके अपने मन की सारी बातों से
२ उस्से बातचीत किई। और सुलेमान ने
उस के सारे प्रश्नों का उत्तर दिया और
सुलेमान से कोई बात छिपी न रही
जो उस ने उस्से न कही हो॥
३ और सबग्न की रानी ने सुलेमान का
ज्ञान और घर जो उस ने बनाया था।
४ और उस के मंच का भोजन और उस
के सेवकों का बैठना और उस के
मंत्रियों का खड़ा होना और उन का
पहिरावा और उस के पानदायक को
भी और उन का पहिरावा और उस
चढ़ावा को जिस्से वह परमेश्वर के
मन्दिर में जाता था देखते ही मूर्छित
५ हो गई। तब उस ने राजा से कहा
कि वह सत्य चर्चा थी जो मैं ने तेरी
क्रिया और बुद्धि के बिषय में अपने ही
देश में सुना था। तथापि जब लों
६ आके मैं ने अपनी आंखों से नहीं देखा
तब लों मैं ने उन की बातें प्रतीत न
किईं और देखिये तेरी बुद्धि की बड़ाई
की आधी भी मुझ से नहीं कही गई
मेरे सुन्ने से आप की कीर्त्ति अधिक
७ है। धन्य तेरे जन और धन्य तेरे ये
सेवक जो तेरे आगे नित्य खड़े रहते हैं
८ और तेरी बुद्धि सुनते हैं। धन्य परमेश्वर
तेरा ईश्वर जिस ने तुझ से प्रसन्न होके
तुझे अपने सिंहासन पर बैठाया जिसतें
तू परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये राजा
होवे इस कारण कि तेरा ईश्वर इसरा-
एल को सदा स्थिर रखने के लिये उन
से प्रेम रखता था इस लिये बिचार और
न्याय करने के लिये उस ने तुझे उन पर
९ राजा किया। और उस ने राजा को
एक सै बीस तोड़े सोने और बहुताई
से सुगंध द्रव्य और मणि दिये और ऐसा
सुगंध द्रव्य जैसा कि सबग्न की रानी
ने सुलेमान को दिया था वैसा न था॥
१० और हूराम के सेवक भी और
सुलेमान के सेवक जो ओफीर से सोना
लाये अलगुम पेड़ और मणि ले आये।
११ तब राजा ने उन अलगुम पेड़ों से
परमेश्वर के मन्दिर की और राजा के
भवन की छत और गायकों के लिये
बीणा और नवल बनाये और ऐसा यहूदाह
के देश में आगे देखने में नहीं आया।
१२ और राजा सुलेमान ने सबग्न की रानी
को उस की सारी बांछा जो कुछ उस ने
मांगा उन्हें छोड़ जो वह राजा पास
लाई थी दिया और वह अपने सेवकों
समेत अपने देश को फिर गई॥
१३ अब सोने की तौल जो बरस भर में
सुलेमान पास आया था सो छः सै
१४ छियासठ तोड़े थे। उस ने सोने को
छोड़ जो बनिये और बैपारी लाये और

अरब के सारे राजा और देश के अध्यक्ष सुलेमान पास सोना चांदी लाये॥

१५ और सुलेमान राजा ने सोना गढ़वाके दो सौ फरी बनाईं फरी पीछे छः सौ
१६ शेकल सोना लगता था। और पीटे हुए सोने की तीन सौ ढाल बनाईं हर पीछे तीन सौ शेकल सोना लगता था और राजा ने लुबनान के बन के भवन में उन्हें रक्खा॥

१७ और भी राजा ने हाथीदांत का एक महा सिंहासन बनाया और उसे
१८ चोखे सोने से मढ़ा। और उस सिंहासन की छः सीढ़ी और सोने की एक पीढ़ी सिंहासन से जड़ी थी और आसन की दोनों ओर हाथ और हाथों के पास दो
१९ सिंह खड़े थे। और बारह सिंह छः सीढ़ियों के इधर उधर खड़े थे वैसा
२० किसी राज्य में नहीं बनाया गया। और सुलेमान राजा के सारे पानपात्र सोने के थे और लुबनान के भवन के सारे पात्र चोखे सोने के थे चांदी का कुछ भी न था सुलेमान के दिनों में उस की
२१ कुछ गिनती न थी। क्योंकि हूराम के सेवकों के साथ राजा के जहाज तरसीस को जाते थे और तीन तीन बरस पीछे तरसीस के जहाज सोना चांदी और हाथीदांत और बांदरों को और मोरों को लाते थे॥

२२ और सुलेमान राजा धन में और ज्ञान में पृथिवी के सारे राजाओं से बढ़
२३ गया। और जो बुद्धि ईश्वर ने सुलेमान के अन्तःकरण में डाली थी उसे सुन्ने को पृथिवी के सारे राजा उस्से भेंट करने
२४ की लालसा रखते थे। और उन में से हर एक जन चांदी के पात्र और सोने के पात्र और बस्त्र और शस्त्र और सुगंध द्रव्य और घोड़े और खच्चर नियम के साथ बरस बरस लाता था॥

२५ और घोड़ों के और रथों के लिये सुलेमान के चार सहस्र थान थे और उस के बारह सहस्र घोड़चढ़े थे जिन्हें उस ने रथनगरों में और यरूसलम में राजा के पास रक्खा॥

२६ और उस ने नदी से लेके फिलिस्तियों के देश लों और मिस्र के सिवाने लों सारे
२७ राजाओं पर राज्य किया। और राजा ने यरूसलम में चांदी को पत्थरों के समान और देवदारु पेड़ को बनैले गूलर की नाईं जो चौगान में बहुताई से हैं
२८ किया। और वे मिस्र से और सारे देशों से सुलेमान पास घोड़े लाये॥

२९ अब सुलेमान की रही हुई क्रिया आदि और अंत सो क्या नातन भविष्यद्वक्ता के बचन में और अखियाह शिलोनी की भविष्यबाणी में और नबात के बेटे यरुबिआम के बिरोध के दर्शी ईद्दू के
३० दर्शनों में नहीं लिखा है। और सुलेमान ने यरूसलम में सारे इसराएल पर
३१ चालीस बरस राज्य किया। उस के पीछे सुलेमान ने अपने पितरों में शयन किया और अपने पिता दाऊद के नगर में गाड़ा गया और उस के बेटे रहबिआम ने उस की संती राज्य किया॥

दसवां पर्ब्ब।

१ और रहबिआम सिकम को गया क्योंकि सारे इसराएल उसे राजा करने को सिकम में आये थे॥

२ और ऐसा हुआ कि जब नबात के बेटे यरुबिआम ने जो मिस्र में था और सुलेमान राजा के आगे से जहां भाग निकला था सुना तब यरुबिआम मिस्र
३ से फिर आया। और लोगों ने भेजके उसे बुलाया सो यरुबिआम और सारे इसराएल आये और यह कहके रहबिआम
४ से बोले। कि तेरे पिता ने हमारे जूआ को शोगवार किया सो अब अपने पिता

की शोगवार सेवा श्रोर उस के भारी जूश्रा के जो उस ने हम पर रक्खा था कुछ हलका कीजिये श्रोर हम तेरी सेवा ५ करेंगे। श्रोर उस ने उन्हें कहा कि तीन दिन पीछे मेरे पास फिर श्राश्रो श्रोर लोग बिदा हुए॥

६ श्रोर राजा रहबिश्राम ने प्राचीनों से जो उस के पिता के जीते जी उस के श्रागे खड़े होते थे यह कहके परामर्श किया कि इन लोगों को क्या उत्तर ७ देने को मंत्र देते हो। श्रोर वे यह कहके उसे बोले कि यदि तू उन लोगों की भलाई के लिये उन की इच्छा रक्खे श्रोर उन से श्रच्छी श्रच्छी बातें कहे तो ८ वे सदा तेरे सेवक बने रहेंगे। परन्तु उस ने प्राचीनों के मंत्र को त्याग किया श्रोर उन तरुणों से जो उस के ९ साथ बढ़े थे परामर्श किया। श्रोर उस ने उन्हें कहा कि जिन्हों ने मुझ से यह कहके पूछा कि जो जूश्रा तेरे पिता ने हम पर रक्खा था उसे कुछ हलका कर तुम लोग क्या मंत्र देते हो हम उन्हें १० क्या उत्तर देवें। श्रोर जो उस के साथ बढ़े थे यह कहके बोले कि जिन लोगों ने तुझ से यह कहा कि तेरे पिता ने हमारा जूश्रा भारी किया परन्तु तू हमारे लिये उसे कुछ हलका कर तू उन्हें यह उत्तर दे कि मेरी कनगुरिया मेरे पिता ११ की कटि से अधिक मोटी होगी। क्योंकि जैसा कि मेरे पिता ने भारी जूश्रा तुम पर रक्खा था मैं तुम्हारे जूश्रा में अधिक मिलाऊंगा मेरे पिता ने तुम्हें कोड़े से ताड़ना किई परन्तु मैं बिच्छुश्रों से ताड़ना करूंगा॥

१२ सो राजा के कहने के समान कि तीसरे दिन मेरे पास फिर श्राश्रो वैसा ही यरबिश्राम श्रोर सारे लोग तीसरे १३ दिन रहबिश्राम पास श्राये। श्रोर राजा ने कठोरता से उन्हें उत्तर दिया श्रोर रहबिश्राम राजा ने प्राचीनों के मंत्र को १४ त्यागा। श्रोर यह कहके तरुणों के मंत्र के समान उन्हें उत्तर दिया कि मेरे पिता ने तुम्हारा जूश्रा भारी किया था परन्तु मैं उसे बढ़ाऊंगा मेरे पिता ने कोड़े से तुम्हें ताड़ना किई थी परन्तु मैं तुम्हें बिच्छुश्रों से ताड़ना करूंगा॥

१५ सो राजा ने लोगों की न सुनी क्योंकि यह ईश्वर की श्रोर से था कि उस बात को जो उस ने शैलूनी श्रखियाह के द्वारा से नबात के बेटे यरबिश्राम १६ से कहा था उसे पूरा करे। श्रोर जब सारे इसराएल ने देखा कि राजा ने उन की न सुनी तो यह कहके राजा को उत्तर दिया कि दाऊद में हमारा क्या भाग श्रोर यस्सी के बेटे में हमारा अधिकार नहीं है इसराएल हर एक जन अपने अपने डेरे को चलें अब हे दाऊद अपने ही घर को देख तब सारे इसराएल अपने अपने डेरों को गये। १७ परन्तु इसराएल के सन्तान पर जो यहूदाह के नगरों में रहते थे रहबिश्राम ने राज्य किया॥

१८ तब रहबिश्राम राजा ने हदूराम को जो कर का अध्यक्ष था भेजा परन्तु इसराएल के सन्तानों ने उसे पत्थरवाह करके मार डाला तब राजा रहबिश्राम श्राप को दृढ़ कर रथ पर चढ़के यरूसलम को भागा। १९ श्रोर इसराएल दाऊद के घराने से श्राज लों फिरे रहे॥

ग्यारहवां पर्ब्ब।

श्रोर जब रहबिश्राम यरूसलम में श्राया तब उस ने यहूदाह के श्रोर बिनयमीन के घरानों में से एक लाख श्रस्सी सहस्र चुने हुए योधाश्रों को इसराएल से लड़ने के लिये एकट्ठे किया जिसतें राज्य को रहबिश्राम की श्रोर फेर लावें।

२ परन्तु परमेश्वर का बचन ईश्वर के जन
३ समसेयाह पास यह कहके पहुंचा । कि यहूदाह के राजा सुलेमान के बेटे रहबिआम से और यहूदाह और बिनयमीन
४ में के सारे इसराएल से कह । कि परमेश्वर यों कहता है कि चढ़ मत जाइयो और अपने भाइयों से मत लड़ियो हर एक जन अपने अपने घर जाय क्योंकि यह बात मुझ से हुई है और उन्हों ने परमेश्वर के बचन को माना और यरुबिआम के बिरुद्ध चढ़ जाने से फिर आये ॥

५ और रहबिआम ने यरूसलम में बास किया और बचाव के लिये यहूदाह में
६ नगर बनाये । और उस ने बैतलहम
७ और ऐताम और तकूअ । और बैतसूर
८ और शोको और अदूलाम । और जात
९ और मरीसः और जैफ । और अदूरैम
१० और लकीस और अजीकः । और सुरअः और ऐयलून और हबरून बनाये ये यहूदाह और बिनयमीन में बाड़ित नगर
११ हैं । और उस ने गढ़ों को दृढ़ किया और उन में प्रधानों को और भोजन और तेल और दाखरस एकट्ठे किये ।
१२ और उस ने हर एक नगर में ढाल और बरछी रखके उन्हें अति दृढ़ किया और यहूदाह और बिनयमीन उस की ओर
१३ थे । और याजक और लावी जो सारे इसराएल में थे अपने सारे सिवानों में
१४ से उस पास आये । क्योंकि लावी अपना अपना गांव और अधिकार छोड़ छोड़ यहूदाह में और यरूसलम में आये क्योंकि यरुबिआम और उस के बेटों ने उन्हें परमेश्वर के आगे याजक के पद की
१५ सेवा से अलग किया । और उस ने ऊंचे स्थानों के और बनैले पशुओं के और बछड़ों के लिये जो उस ने बनाये थे
१६ याजकों को ठहराया । और इसराएल की सारी गोष्ठी में से जितनों ने इसराएल के ईश्वर परमेश्वर की खोज के लिये अपना मन लगाया सब यरूसलम में अपने पितरों के ईश्वर परमेश्वर के लिये बलि चढ़ाने को उन के पीछे आये ।
१७ सो उन्हों ने यहूदाह का राज्य पोक्त किया और तीन बरस लों सुलेमान के बेटे रहबिआम को दृढ़ किया क्योंकि वे तीन बरस दाऊद के और सुलेमान के मार्ग पर चलते थे ॥

१८ और रहबिआम ने दाऊद के बेटे यरीमात की बेटी महलत को और यस्सी के बेटे इलिअब की बेटी अबिखैल को
१९ पत्नी किया । और वह उस के लिये बालक जनी अर्थात् यऊस और समरियाह और जहम ।
२० और उस के पीछे उस ने अबिसलुम की बेटी मअकः को लिया जो उस के लिये अबियाह को और अत्ती को और जीजा को और
२१ सलूमियत को जनी । और रहबिआम अपनी सारी पत्नियों से और सहेलियों से अबिसलुम की बेटी मअकः को अधिक प्यार करता था क्योंकि उस ने अठारह पत्नी और साठ सहेलियां किई थीं और उस्से अट्ठाईस बेटे और साठ बेटियां उत्पन्न हुईं ।
२२ और रहबिआम ने मअकः के बेटे अबियाह को राजा करने को श्रेष्ठ और अपने भाइयों पर
२३ आज्ञाकारी किया । और उस ने चतुराई से कार्य्य किया और यहूदाह और बिनयमीन के सारे देशों और हर एक बाड़ित नगरों में से अपने बेटों को बांट दिया और उन्हें बहुताई से भोजन दिया और उस ने बहुत पत्नियां चाहीं ॥

बारहवां पर्ब्ब

और यों हुआ कि जब रहबिआम ने राज्य को स्थिर किया और अपने को दृढ़ किया था तब उस ने और उस के

साथ सारे इसराएल ने परमेश्वर की व्यवस्था को छोड़ दिया॥

२ और रहबिआम राजा के पांचवें बरस में यों हुआ कि मिस्र का राजा सीसक यरूसलम पर चढ़ आया क्योंकि उन्हों ने परमेश्वर के बिरुद्ध अपराध ३ किया। वह बारह सौ रथ और साठ सहस्र घोड़चढ़े लेके आया और लूबी और सुक्की और हबशी लोग जो उस के साथ मिस्र से निकल आये अनगणित ४ थे। और उस ने यहूदाह के बाड़ित नगरों को ले लिया और यरूसलम में ५ आया। तब समऐयाह भविष्यद्वक्ता ने रहबिआम पास और यहूदाह के अध्यक्षों के पास जो सीसक के कारण यरूसलम में एकट्ठे थे आके उन्हें कहा कि परमेश्वर यों कहता है कि तुम ने मुझे त्यागा है इस लिये मैं ने तुम्हें भी ६ सीसक के हाथ में छोड़ दिया है। और इसराएल के अध्यक्षों ने और राजा ने आप आप को नम्र किया और कहा ७ कि परमेश्वर धर्म्मी है। और जब परमेश्वर ने देखा कि उन्हों ने अपने को नम्र किया तब परमेश्वर का बचन यह कहके समऐयाह पास आया कि उन्हों ने अपने को नम्र किया है मैं उन्हें नाश न करूंगा परन्तु उन का कुछ बचाव करूंगा और मेरा कोप सीसक के हाथ से यरूसलम पर उंडेला न जायगा। ८ तथापि वे उस के सेवक होंगे जिसतें वे मेरी सेवा और देशों के राज्यों की ९ सेवा जानें। सो मिस्र का राजा सीसक यरूसलम के बिरुद्ध चढ़ आया और परमेश्वर के मन्दिर का भंडार और राजभवन का भंडार ले लिया उस ने सब कुछ ले लिये वह सोने की ढालों को भी जो सुलेमान ने बनवाई थीं ले १० गया। और उन की सन्ती रहबिआम राजा ने पीतल की ढालें बनवाईं और राजभवन के प्रवेश के पहरुओं के प्रधान को सौंप दिईं। और जब राजा परमे- ११ श्वर के मन्दिर में जाया करता था तब पहरू आते थे और उन्हें लेके जाते थे और पहरू की कोठरी में फेर लाते थे। १२ और जब उस ने अपने को नम्र किया तब परमेश्वर का कोप उस्से यहां लों फिरा कि उस ने उसे सर्व्वथा नाश न किया और यहूदाह में भी कुछ भलाई रही॥

१३ सो रहबिआम राजा ने आप को यरूसलम में दृढ़ करके राज्य किया क्योंकि रहबिआम ने एकतालीस बरस के बय में राज्य करना आरंभ किया और उस ने उस नगर में अर्थात् यरूसलम में सत्रह बरस राज्य किया जो परमेश्वर ने इसराएल की सारी गोष्ठियों में से अपने नाम के लिये चुना था और उस की माता का नाम नअमः था जो एक १४ अम्मूनी थी। और उस ने परमेश्वर के खोज में अपना मन न लगाने से बुराई किई॥

१५ अब रहबिआम की क्रिया का आदि और अंत क्या समऐयाह भविष्यद्वक्ता के और बंशावली के विषय में ईदू दर्शी के बचन में नहीं लिखा है और रहबिआम और यरूबिआम में संग्राम नित्य १६ रहा किया। और रहबिआम ने अपने पितरों में शयन किया और दाऊद के नगर में गाड़ा गया और उस का बेटा अबियाह उस की सन्ती राज्य पर बैठा॥

तेरहवां पर्व्व।

१ यरूबिआम राजा के अठारहवें बरस में अबियाह ने यहूदाह पर राज्य करना २ आरंभ किया। उस ने यरूसलम में तीन बरस राज्य किया और उस की माता का नाम मीकायाह था जो जिबअः के

ऊरिएल की बेटी थी और अबियाह में और यरुबिआम में संग्राम रहा॥

३ और अबियाह ने चार लाख महाबीर चुने हुए योद्धा की गठी हुई सेना से संग्राम में पांती बांधी और यरुबिआम ने भी उस के बिरोध में आठ लाख चुने हुए बलवन्त बीरों से संग्राम में पांती बांधी॥

४ और अबियाह ने समरायम पहाड़ पर जो इफ़रायम पहाड़ में है खड़ा होके कहा कि हे यरुबिआम और सारे ५ इसराएल मेरी सुनो। क्या तुम्हें जान्ने को उचित नहीं कि परमेश्वर इसराएल के ईश्वर ने इसराएल का राज्य दाऊद को सदा के लिये दिया उस को और उस के बेटों को लोन के बाचा के ६ साथ दिया। तथापि नबात का बेटा यरुबिआम जो दाऊद के बेटे सुलेमान का एक सेवक था उठा है और अपने ७ प्रभु के बिरोध में फिर गया। और उस की ओर तुच्छ लोग और दुष्ट जन के सन्तान एकट्ठे हुए हैं और जब रहबिआम तरुण और कोमल मन था और उन का साम्ना न कर सक्ता था तब उन्हों ने आप को सुलेमान के बेटे रहबिआम के बिरुद्ध दृढ़ किया है। ८ सो अब तुम लोग चाहते हो कि परमेश्वर के राज्य का जो दाऊद के बेटों के हाथ में है साम्ना करो और तुम लोग बड़ी मंडली हो और तुम्हारे संग सोने के बछड़े हैं जिन्हें यरुबिआम ने ९ तुम्हारे लिये देव बना रक्खा है। क्या तुम लोगों ने परमेश्वर के याजकों को अर्थात् हारुन के बेटों को और लावियों को दूर नहीं किया और देश के जाति-गणों की नाईं अपने लिये याजक नहीं बनाये यहां लों कि जो कोई आप को पवित्र करने के लिये एक बैल और सात मेंढे ले आया सो अदेवों का याजक हुआ। १० परन्तु हम लोग जो हैं सो परमेश्वर हमारा ईश्वर है और हम ने उसे त्याग नहीं किया है और याजक जो परमेश्वर की सेवा करते हैं सो हारुन के बेटे हैं और लावी अपने अपने कार्य्य पर हैं। ११ और वे परमेश्वर के लिये हर सांझ बिहान को बलिदान की भेंटें और सुगंध जलाते हैं और पवित्र मंच पर भेंट की रोटी रखते हैं और हर सांझ के लिये सोने की दीअट और उन के दीआ समेत क्योंकि हम लोग परमेश्वर अपने ईश्वर के बारने के लिये ठहराये हुए कार्य्य को पालन करते रहते हैं परन्तु तुम लोगों ने उसे त्याग किया है। १२ और देख परमेश्वर आप सेनापति होने के लिये हमारे संग है और तुम्हारे बिरुद्ध उस के याजक तुरही के शब्दों के साथ चिताने को हैं हे इसराएल के सन्तानो अपने पितरों के ईश्वर परमेश्वर के बिरुद्ध संग्राम मत करो क्योंकि तुम लोग भाग्यवान न होओगे॥

१३ परन्तु यरुबिआम ने उन के पीछे घूमके छूके को बैठवाया यहां लों कि वे यहूदाह के आगे और छूके उन के पीछे हुए। १४ और जब यहूदाह ने पीछे दृष्टि किई तो क्या देखता है कि संग्राम आगे पीछे है और उन्हों ने परमेश्वर की प्रार्थना किई और याजकों ने तुरहियों से शब्द किया। १५ तब यहूदाह के लोगों ने ललकारा और यहूदाह के ललकारने से यों हुआ कि ईश्वर ने अबियाह के और यहूदाह के आगे से यरुबिआम को और सारे इसराएल को मारा। १६ और इसराएल के सन्तान यहूदाह के आगे से भाग गये और ईश्वर ने उन्हें उन के हाथ में सौंप दिया। १७ तब अबियाह और

उस के लोगों ने बड़ी जूझ से उन्हें जूझाया सो इसराएल में के पांच लाख
१८ चुने हुए जन जूझ गये। यों इसराएल के सन्तान उस समय बश में किये गये और यहूदाह के सन्तानों ने इस कारण जय पाया कि उन्हों ने अपने पितरों के ईश्वर परमेश्वर पर भरोसा रक्खा।
१९ और अबियाह ने यरुबिआम का खेदा और उस्से नगर ले लिये अर्थात् बैतएल और उस के गांव और यासन: और उस के गांव और इफरायम और उस के
२० गांव। और अबियाह के दिनों में यरुबिआम ने फेर बल न पकड़ा और परमेश्वर ने उसे मारा और वह मर गया॥

२१ परन्तु अबियाह सामर्थी हुआ और चौदह पत्नियां किईं और उस्से बाईस बेटे और सोलह बेटियां उत्पन्न हुईं॥

२२ और अबियाह की रही हुई क्रिया और उस की चाल और कहावत इदू भविष्यद्वक्ता के टीका में नहीं लिखा है॥

चौदहवां पर्व्व।

१ सो अबियाह ने अपने पितरों में शयन किया और उन्हों ने दाऊद के नगर में उसे गाड़ा और उस के बेटे असा ने उस की संती राज्य किया उस के दिनों में देश में दस बरस चैन रहा॥

२ और असा ने अपने ईश्वर परमेश्वर की दृष्टि में भला और ठीक किया।
३ क्योंकि उस ने ऊपरी बेदियों को और ऊंचे स्थानों को दूर किया और मूर्त्तिन को तोड़ा और कुंजों को काटके गिरा
४ दिया। और यहूदाह को आज्ञा किई कि परमेश्वर अपने पितरों के ईश्वर को खोजो और व्यवस्था और आज्ञा को
५ पालन करो। और उस ने यहूदाह के सारे नगरों में से ऊंचे स्थान और सूर्य्य की मूर्त्तिन को दूर किया और उस के आगे राज्य को चैन मिला॥

६ और उस ने यहूदाह में बाड़ित नगर बनवाये क्योंकि देश में चैन था और उन बरसों में संग्राम न हुआ क्योंकि परमेश्वर ने उसे चैन दिया था। इस लिये
७ उस ने यहूदाह को कहा कि जब लों देश हमारे आगे है चलो हम ये नगर बनावें और चारों ओर भीत और गुम्मट और फाटक और अड़ंगे बनावें इस कारण कि हम ने परमेश्वर अपने ईश्वर को खोजा है हम ने खोजा है और उस ने हमें चारों ओर से चैन दिया है सो उन्हों ने बनाया और सुफल हुए।
८ और यहूदाह में असा की एक सेना तीन लाख की थी जो फरी और भाला उठाती थी और बिनयमीन में से जो ढाल उठाते और धनुष चलाते थे दो लाख अस्सी सहस्र थे ये सब के सब बलवन्त बीर थे॥

९ और उन के बिरुद्ध कूसी शारिक दस लाख की एक सेना को और तीन सौ रथों को लेके मरीस: को आये।
१० तब असा उस के बिरुद्ध में निकला और उन्हों ने मरीस: के सफात की तराई में
११ संग्राम की पांती बांधी। और असा ने परमेश्वर अपने ईश्वर की प्रार्थना किई और कहा हे परमेश्वर तेरे लिये कुछ नहीं चाहे बहुत से चाहे निर्बलों से सहायता करे सो हे परमेश्वर हमारे ईश्वर सहायता कर क्योंकि हम लोग तुझ पर आशा रखते हैं और तेरे नाम से इस मंडली के बिरुद्ध आते हैं सो हे परमेश्वर हमारे ईश्वर मनुष्य तेरे बिरुद्ध
१२ जय न पावें। सो परमेश्वर ने असा के और यहूदाह के आगे से कूसियों को
१३ मारा और कूसी भागे। फिर असा और उस के साथी लोगों ने उन्हें जिरार लों खेदा और कूसी ऐसा ध्वस्त हुए कि

फेर आप को संभाल न सके क्योंकि वे परमेश्वर के आगे और उस की सेना के आगे नष्ट किये गये और वे बहुत सी
१४ लूट ले गये। और उन्हों ने जिरार की चारों ओर के सारे नगरों को मारा क्योंकि परमेश्वर का डर उन पर पड़ा और उन्हों ने सारे नगरों को लूट लिया क्यों-
१५ कि उन में बड़ी लूट थी। और उन्हों ने ढोरों के डेरों को भी मारा और भेड़ों को और ऊंटों को बहुताई से लेके यरूसलम को फिरे॥

पंदरहवां पर्व्व।

१ अब ईश्वर का आत्मा आदिद के
२ बेटे अजरियाह पर आया। और वह असा के आगे गया और उसे कहा कि हे असा और सारे यहूदाह और बिनयमीन हमारी सुनो जब लों तुम लोग परमेश्वर के संग हो तब लों वह तुम्हारे संग है और यदि उसे ढूंढ़ोगे तो वह तुम्हें मिलेगा परन्तु यदि उसे त्यागोगे
३ तो वह तुम्हें त्यागेगा। अब बहुत दिन से इसराएल सच्चे ईश्वर बिना और बिना शिक्षक याजक और बिना व्यवस्था थे।
४ परन्तु जब वे अपने दुःख में परमेश्वर इसराएल के ईश्वर की ओर फिरे और
५ उसे खोजा तो उन से पाया गया। और उन दिनों में जो बाहर अथवा भीतर आया जाया करता था उसे कुछ कुशल न मिलता था परन्तु देशों के सारे निवासियों पर बड़ी बड़ी बिपत्ति थी।
६ और जाति जाति से और नगर नगर से चूर्ण किया जाता था क्योंकि ईश्वर ने
७ उन्हें सारे क्लेशों से व्याकुल किया। इस लिये तुम पोढ़ होओ और अपने हाथों को दुर्बल होने न देओ क्योंकि तुम्हारे कार्य्य का प्रतिफल मिलेगा॥

८ और जब असा ने इन बातों को और आदिद भविष्यद्वक्ता की भविष्यवाणी को सुना तो उस ने हियाव पकड़ा और यहूदाह और बिनयमीन के सारे देश में से और उन नगरों में से जो उस ने इफ्रायम पहाड़ से लिया था घिनित मूर्त्तों को दूर किया और परमेश्वर के ओसारे के आगे परमेश्वर की बेदी दुहराके
९ बनाई। और उस ने सारे यहूदाह और बिनयमीन को और इफ्रायम में से और मुनस्सी में से और समऊन में से परदेशियों को एकट्ठे किया क्योंकि जब उन्हों ने देखा कि परमेश्वर उस का ईश्वर उस के साथ है तो इसराएल में से बहुताई से
१० उस की ओर आये। सो असा के राज्य के पंदरहवें बरस के तीसरे मास में उन्हों ने यरूसलम में आप को एकट्ठा
११ किया। और जो लूट की बस्तु वे लाये थे उस में से उसी दिन उन्हों ने परमेश्वर को सात सौ बैल और सात सहस
१२ भेड़ भेंट चढ़ाईं। और उन्हों ने अपने सारे मन और अपने सारे प्राण से अपने पितरों के ईश्वर परमेश्वर के खोजने के
१३ लिये वाचा बांधी। कि जो कोई इसराएल के ईश्वर परमेश्वर को ढूंढ़ने न चाहे सो बधन किया जाय चाहे छोटा चाहे बड़ा चाहे पुरुष चाहे स्त्री होवे।
१४ और उन्हों ने पुकारते हुए और तुरहियों से और सींगों के बड़े शब्द से परमेश्वर
१५ के लिये किरिया खाई। और सारे यहूदाह उस किरिया से आनन्दित हुए क्योंकि उन्हों ने अपने सारे अंतःकरण से किरिया खाई थी और अपनी सारी बांछा से उसे ढूंढ़ा और वह उन से पाया गया और परमेश्वर ने उन्हें चारों ओर से चैन दिया॥

१६ और असा ने अपनी माता मअकः को रानी के पद से भी अलग किया इस कारण कि उस ने कुंज के तले एक मूर्त्ति बनाई थी और असा ने उस की

मूर्त्ति को काट डाला और रौंदा और कैदरून नाले के तीर उसे जला दिया। १७ परन्तु ऊंचे स्थान इसराएल में से दूर न किये गये तथापि असा का मन उस १८ के जीवन भर शुद्ध रहा। और अपने पिता की समर्पण किई हुई वस्तुन को और जो उस ने आप चांदी सोना और पात्र समर्पण किया था वह ईश्वर १९ के मन्दिर में लाया। और असा के राज्य के पैंतीसवें बरस लों संग्राम न हुआ॥

सोलहवां पर्व्व।

असा के राज्य के छत्तीसवें बरस इसराएल का राजा बअशा यहूदाह के बिरुद्ध चढ़ आया और रामः को बनाया जिसतें यहूदाह के राजा असा कने कोई जाने न पावे॥

२ तब असा ने परमेश्वर के मन्दिर के और राजा के भवन के भंडारों में से चांदी और सोना बाहर किया और अराम के राजा बिनहदद पास जो दमिश्क में रहता था कहला भेजा। ३ कि मेरे और तेरे मध्य ऐसा मेल हो जैसा मेरे और तेरे पिता में था देखिये मैं ने तेरे पास सोना और चांदी भेजी है सो आके इसराएल के राजा बअशा से बाचा को तोड़ जिसतें वह मुझ से फिर ४ जावे। तब बिनहदद ने असा राजा की बात सुनी और इसराएल के नगरों के बिरुद्ध अपने सेनापतिन को भेजा और उन्हों ने ऐयून और दान और अबोलमायम और नफ़ताली के सारे भंडारनगरों को ले लिया॥

५ और ऐसा हुआ कि जब बअशा ने सुना तब रामः का बनाना छोड़ दिया ६ और अपने कार्य्य से थम गया। फिर असा राजा ने सारे यहूदाह को लिया और वे रामः के पत्थरों को और लट्ठों को ले गये जिन्हों से बअशा रामः बनाता था और उस ने उन से जिबअ और मिसफा बनाये॥

७ और उस समय हन्नानी दर्शी ने यहूदाह के राजा असा पास आके उस्से कहा तू ने जो अराम के राजा पर आशा रक्खी है और अपने ईश्वर परमेश्वर पर आशा नहीं रक्खी है इस लिये अराम के राजा की सेना तेरे हाथ से बच निकली है। ८ क्या कूशी और लूबीमी बहुताई से सेना और अति बहुत रथ और घोड़चढ़े को लिये हुए न थे तथापि तू ने जो परमेश्वर पर आशा रक्खी थी उस ने उन्हें तेरे हाथ में सौंप दिया। ९ क्योंकि परमेश्वर की आंखें सारी पृथिवी में आरंपार इधर उधर दौड़ती हैं जिसतें उन के लिये आप को बलवन्त दिखावे जिन का मन उस की ओर सिद्ध है इस में तू ने मूर्खता किई है इस लिये अब से तेरे साथ लड़ाई होगी। १० तब असा उस दर्शी पर कोपित हुआ और उसे बंदीगृह में डाला क्योंकि वह इस बात के लिये उस्से कोपित हुआ और उसी समय असा ने लोगों में से कितनों को सताया॥

११ अब देखो असा की क्रिया आदि से अंत लों यहूदाह के और इसराएल के राजावली की पुस्तक में लिखी है॥

१२ और असा के राज्य के उंतालीसवें बरस में उस के पांव में रोग हुआ यहां लों कि उस का रोग अति हुआ तथापि अपने रोग में उस ने परमेश्वर को न खोजा परन्तु बैद्यों को। १३ और असा ने अपने पितरों में शयन किया और अपने राज्य के एकतालीसवें बरस मर गया। १४ और उन्हों ने उसे उसी के समाधि में जो उस ने अपने लिये दाऊद के नगर में खोदी थी गाड़ा और उसे बिछौने पर

रक्खा जो नाना प्रकार के सुगंध द्रव्य से भरा हुआ था जिसे बैद्यों ने सिद्ध किया था और उन्हों ने उस के लिये बड़ी आग बारी॥

सत्रहवां पर्ब्ब।

१ और उस के बेटे यहूसफत ने उस की संती राज्य किया और इसराएल के बिरुद्ध २ अपने को दृढ़ किया। और यहूदाह के सारे बाड़ित नगरों में उस ने योद्धा रक्खे और यहूदाह देश में इफरायम के नगरों में जो उस के पिता असा ने लिया था ३ थाने बैठाये। और परमेश्वर यहूसफत के साथ था क्योंकि वह अपने पिता दाऊद की अगली चालों पर चलता था ४ और बअलीम का पीछा न किया। क्योंकि अपने पिता के ईश्वर को ढूंढ़ा और उस की आज्ञाओं पर चलता था और इसराएल के कार्य्य के समान न किया। ५ इस लिये परमेश्वर ने उस के हाथ में राज्य स्थिर किया और सारे यहूदाह यहूसफत के पास भेंट लाये और उस के पास धन और प्रतिष्ठा बहुताई से थी। ६ और उस का मन परमेश्वर के मार्गों में उभरा हुआ था और इस्से अधिक उस ने यहूदाह में से ऊंचे स्थानों को और कुंजों को दूर किया॥

७ और अपने राज्य के तीसरे बरस उस ने बिनखैल को और अबदियाह को और जकरियाह को और ननिएल को और मीकायाह को जो उस के अध्यक्ष थे भेजा कि यहूदाह के नगरों में उपदेश ८ करें। और उन के साथ लावियों को अर्थात् समरैयाह को और ननियाह को और जबदियाह को और असहेल को और सिमिरामात को और यहूनतन को और अदूनियाह को और तूबियाह को और तूब अदूनियाह लावियों को और उन के संग इलिसम: को और यहू-राम याजक को भेजा। और उन्हों ने ९ यहूदाह में उपदेश किया और परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक उन के साथ थी और यहूदाह के सारे नगरों में से हो होके लोगों को उपदेश किया॥

और ईश्वर का डर यहूदाह के चारों १० ओर के राज्यों के देशों पर हुआ यहां लों कि उन्हों ने यहूसफत से संग्राम न किया। और फिलिस्तियों में से भी यहू- ११ सफत के पास भेंट और चांदी कर लाये अरबी भी उस पास सात सहस्र सात सौ झुंड भेड़ और सात सहस्र सात सौ बकरे लाये। और यहूसफत अत्यन्त बढ़ १२ गया और यहूदाह में गढ़ और भंडार-नगर बनवाये। और यहूदाह के नगरों १३ में उस का बड़ा कार्य्य था और यरूसलम में महाबीर योद्धा लोग थे॥

और उन के पितरों के घरानों के १४ समान उन की गिनती यह है यहूदाह के सहस्रपति अदना प्रधान और उस के संग तीन लाख महाबीर थे। और उस के १५ लग यहूहनान सेनापति और उस के साथ दो लाख अस्सी सहस्र जन थे। और उस के पीछे जिकरी का बेटा १६ अमसियाह जिस ने आप को मनमन्ता परमेश्वर को सौंपा और उस के साथ दो लाख महाबीर थे। और बिनयमीन १७ का इलयद: एक महाबीर था और उस के साथ दो लाख ढाल और धनुष से लैस थे। और उस के पीछे यहूजाबाद १८ और उस के साथ संग्राम के लिये लैस एक लाख अस्सी सहस्र जन। उन से १९ अधिक जिन्हें राजा ने यहूदाह के सारे बाड़ित नगरों में रक्खा था ये राजा की सेवा करते थे॥

अठारहवां पर्ब्ब

१ अब यहूसफत धन और प्रतिष्ठा बहु-ताई से रखता था और उस ने अखिअब

२ के संग नाता किया। और बरसों के पीछे वह अखिअब पास समरून को उतर गया और अखिअब ने उस के और उस के साथियों के लिये भेड़ और बैलों को बहुताई से मारा और रामतजिलिअद ३ पर चढ़ जाने को उसे उभारा। और इसराएल के राजा अखिअब ने यहूदाह के राजा यहूसफत से कहा क्या तू मेरे साथ रामतजिलिअद को चलेगा तब उस ने उसे उत्तर दिया कि आप की नाईं मैं और मेरे लोग तेरे लोगों की नाईं और संग्राम में आप के साथी हैं॥

४ तब यहूसफत ने इसराएल के राजा से कहा कि आज परमेश्वर के बचन से ५ बूझिये। इस लिये इसराएल के राजा ने चार सौ भविष्यद्वक्तों को एकट्ठे किया और उन्हें कहा कि हम रामतजिलिअद को संग्राम करने जावें अथवा न जावें और उन्हों ने कहा कि चढ़ जाइये क्योंकि ईश्वर उसे राजा के हाथ में सौंप देगा॥

६ परन्तु यहूसफत ने कहा कि इन्हें छोड़ परमेश्वर का कोई भविष्यद्वक्ता ७ नहीं जिस्से हम बूझें। फिर इसराएल के राजा ने यहूसफत से कहा कि अब भी एक जन है जिस के द्वारा से हम परमेश्वर से बूझ सक्ते हैं परन्तु मैं उस्से बैर रखता हूं क्योंकि वह मेरे लिये कभी भला भविष्य नहीं कहता परन्तु सदा बुरा सो यिमला का बेटा मीकायाह है तब यहूसफत ने कहा कि राजा ऐसा न कहे॥

८ तब इसराएल के राजा ने एक प्रधान बुलाके कहा कि शीघ्रता से यिमला के ९ बेटे मीकायाह को ले आ। और इसराएल का राजा और यहूदाह का राजा यहूसफत राजबस्त्र से बिभूषित होके अपने अपने सिंहासन पर समरून के फाटक की पैठ के खुले स्थान में बैठे थे और सारे भविष्यद्वक्ता उन के आगे भविष्य कहि रहे थे। और कनानियाह १० के बेटे सिदकयाह ने अपने लिये लोहे के सींग बनवाये थे और कहा कि परमेश्वर यों कहता है कि इन्हों से तू अरामियों को ऐसा ठेलेगा कि वे मिट जावेंगे। और सारे भविष्यद्वक्ता यों ११ भविष्य कहि रहे थे कि रामतजिलिअद को चढ़ जाइये और भाग्यवान हूजिये क्योंकि परमेश्वर उसे राजा के हाथ में सौंप देगा॥

और जो दूत मीकायाह को बुलाने १२ गया था उस ने यह बचन उसे कहा कि देख भविष्यद्वक्तों के बचन राजा के लिये एक मन से अच्छा है सो मैं तेरी बिनती करता हूं कि तेरी बात भी उन में से एक के समान होवे और तू भी अच्छा कह। तब मीकायाह ने कहा कि पर- १३ मेश्वर के जीवन सों अर्थात् जो मेरा ईश्वर कहेगा सोई मैं कहूंगा॥

और राजा के पास आते ही राजा १४ ने उसे कहा कि मीकायाह हम संग्राम के लिये रामतजिलिअद को जावें अथवा मैं न जाऊं और उस ने कहा कि चढ़ जाइये और भाग्यवान हूजिये और वे तुम्हारे हाथ में सौंपे जावेंगे। फिर १५ राजा ने उसे कहा कि मैं तुझे कितने बेर किरिया दिलाऊं कि तू परमेश्वर के नाम से सत्य को छोड़ कुछ न कहना। तब उस ने कहा कि मैं ने सारे इस- १६ राएल को बिन गड़रिये की भेड़ों की नाईं पहाड़ों पर बिथरे हुए देखा और परमेश्वर ने कहा कि इन का कोई स्वामी नहीं सो उन में से हर एक जन अपने अपने घर कुशल से जावे। तब १७ इसराएल के राजा ने यहूसफत से कहा कि क्या मैं ने तुझ से नहीं कहा कि

वह मेरे लिये अच्छा भविष्य न कहेगा परन्तु बुरा। १८ तब उस ने कहा कि इस लिये परमेश्वर का वचन सुनो मैं ने परमेश्वर को अपने सिंहासन पर बैठे देखा और स्वर्ग की सारी सेना उस के दहिने बायें खड़ी है। १९ तब परमेश्वर ने कहा कि इसराएल के राजा अखिअब को कौन फुसलावेगा जिसतें वह चढ़ जावे और रामतजिलिअद में मारा जावे तब एक ने इस रीति का वचन कहा और दूसरे ने उस रीति का। २० तब एक आत्मा बाहर आके परमेश्वर के सन्मुख खड़ा होके बोला कि मैं उसे फुसलाऊंगा तब परमेश्वर ने उस्से पूछा कि किस बात से। २१ तब उस ने कहा कि मैं निकलूंगा और उस के सारे भविष्यद्वक्तों के मुंह में मिथ्यावादी आत्मा होऊंगा तब उस ने कहा कि तू फुसलावेगा और उस पर प्रबल भी होगा जा और वैसा कर। २२ सो अब देख परमेश्वर ने तेरे इन भविष्यद्वक्तों के मुंह में मिथ्यावादी आत्मा डाला है और परमेश्वर ने तेरे विरुद्ध बुरा कहा है॥

२३ तब कनानियाह का बेटा सिदकियाह पास आया और मीकायाह के गाल पर थपेड़ा मारा और कहा कि परमेश्वर का आत्मा तुझे कहने को मेरे पास से किधर से गया। २४ और मीकायाह ने कहा कि देख तू उस दिन देखेगा जब तू आप को छिपाने को भीतर की कोठरी में घुसेगा॥

२५ तब इसराएल के राजा ने कहा कि मीकायाह को लेओ और उसे नगर के अध्यक्ष अमून पास और राजकुमार यूआश पास फेर ले जाओ। २६ और कहो कि राजा यों कहता है कि इसे बन्धन में रक्खो और जब लों मैं कुशल से फिर न आऊं इसे कष्ट की रोटी और कष्ट का जल दिया करो। २७ और मीकायाह ने कहा कि यदि तू निश्चय कुशल से फिर आवे तो परमेश्वर ने मेरे द्वारा से नहीं कहा और उस ने कहा कि हे सारे लोगो सुन रक्खो॥

२८ तब इसराएल का राजा और यहूदाह का राजा यहूसफत रामतजिलिअद को चढ़ गये। २९ और इसराएल के राजा ने यहूसफत को कहा कि मैं भेष बदलके संग्राम में जाऊंगा परन्तु तू राजवस्त्र पहिन सो इसराएल के राजा ने भेष पलटा और वे संग्राम को गये। ३० अब अराम के राजा ने अपने साथ के रथपतिन को यह कहके आज्ञा किई थी कि केवल इसराएल के राजा को छोड़ तुम छोटे बड़े से मत युद्ध करना। ३१ और यों हुआ कि जब रथपतिन ने यहूसफत को देखा तो बोले कि यह इसराएल का राजा है इस लिये उन्हों ने लड़ने के लिये उसे घेरा परन्तु यहूसफत चिल्ला उठा और परमेश्वर ने उस का उपकार किया और ईश्वर ने उन्हें उस्से फेर दिया। ३२ क्योंकि ऐसा हुआ कि जब रथपतिन ने देखा कि यह इसराएल का राजा नहीं है तब वे उस के पीछे से हट गये। ३३ फिर एक जन ने धनुष पर बाण साजके इसराएल के राजा को बिना जाने भिलम के और जोड़ के मध्य में मारा इस लिये उस ने अपने सारथी को कहा कि बाग फेर दे जिसतें मुझे सेना में से बाहर ले जावे क्योंकि मुझे घाव लगा है। ३४ और उस दिन संग्राम बढ़ा तथापि सांझ लों इसराएल का राजा अरामियों के विरुद्ध अपने रथ पर थमा रहा और सूर्य्य के अस्त होते होते मर गया॥

उन्नीसवां पर्ब्ब।

और यहूदाह का राजा यहूसफत

कुशल से यरूसलम में अपने घर गया। २ और हनानी का बेटा याहू दर्शी उस की भेंट को निकला और यहूसफत राजा से कहा कि क्या उचित था कि तू अधर्मी की सहाय करे और परमेश्वर के बैरी से प्रेम करे सो इस लिये परमेश्वर के आगे से तुझ पर कोप है। ३ तथापि तुझ में कुछ भला कार्य्य पाया गया है क्योंकि तू ने देश में से कुंजों को दूर किया और ईश्वर की खोज के लिये अपना मन सिद्ध किया है॥

४ और यहूसफत ने यरूसलम में बास किया और फिरके बिअरसबअ से इफराइम पर्व्वत लों लोगों में से गया और उन्हें परमेश्वर अपने पितरों के ईश्वर ५ की ओर फेर लाया। और उस ने देश में यहूदाह के सारे बाड़ित नगरों में ६ नगर नगर न्यायियों को बैठाया। और न्यायियों को कहा कि अपने अपने काम में चौकस रहो क्योंकि तुम मनुष्यों के लिये नहीं परन्तु परमेश्वर के लिये जो न्याय की बात में तुम्हारे साथ है न्याय ७ करते हो। सो अब परमेश्वर का भय तुम पर होवे कि जो कुछ करो सो चौकस होके करो क्योंकि परमेश्वर हमारे ईश्वर के संग कोई दुष्टता अथवा अंधेर अथवा पक्ष अथवा अकोर लेना ८ नहीं है। और जब वे यरूसलम को फिरे तब यहूसफत ने परमेश्वर के बिचार के लिये और बिवाद के लिये यरूसलम में लावियों को और याजकों को और इसराएल के पितरों के प्रधानों को ठह- ९ राया। और उन्हें यह कहके आज्ञा किई कि यों परमेश्वर के भय से बिश्वास से और अन्त:करण की सिद्धता से करो। १० और जो कुछ लोहू और लोहू के मध्य व्यवस्था और आज्ञा और बिधिन के और बिचार के मध्य तुम्हारे भाइयों के बिषय में जो उन के नगरों में बसते हैं जो बात तुम पास आवे तुम उन्हें चिता देना कि वे परमेश्वर के बिरुद्ध अपराध न करें और कोप तुम पर और तुम्हारे भाइयों पर न पड़े यही करो और तुम अपराध न करोगे। ११ और देखो परमेश्वर की सारी बातों में तुम पर अमारयाह प्रधान याजक है और राजा की सारी बातों में इसमअएल का बेटा यहूदाह के घराने का प्रधान जबदियाह और तुम्हारे आगे लावी प्रधान होंगे हियाव से कार्य्य करो और परमेश्वर भले के साथ होगा॥

बीसवां पर्व्व।

१ और इस के पीछे ऐसा हुआ कि मोअब के सन्तान और अम्मून के सन्तान और उन के साथ बहुत से लोग अमूनियों को छोड़ यहूसफत के बिरुद्ध संग्राम करने को आये। २ तब कितनों ने आके यहूसफत से यह कहके सन्देश दिया कि अराम के इस अलंग के समुद्र पार से एक बड़ी मंडली तुम्हारे बिरुद्ध में आती है और देख वे हस:सूनतमर में हैं जो ३ ऐनजदी है। और यहूसफत डर गया और परमेश्वर की खोज को अपना रुख किया और यहूदाह के सर्व्वत्र व्रत प्रचारा। ४ और परमेश्वर से सहाय मांगने के लिये सारे यहूदाह एकट्ठे हुए अर्थात् यहूदाह के सारे नगरों में से परमेश्वर की खोज को आये॥

५ और यहूसफत परमेश्वर के मन्दिर में नये आंगन के आगे यहूदाह और यरूसलम की मंडली के मध्य खड़ा हुआ। ६ और कहा कि हे परमेश्वर हमारे पितरों के ईश्वर क्या स्वर्ग में तू ईश्वर नहीं और अन्यदेशियों के सारे राज्यों पर प्रभुता नहीं करता और तेरे हाथ में क्या पराक्रम और ऐसा बल नहीं कि कोई

७ तेरा साम्ना नहीं कर सक्ता। क्या तू हमारा ईश्वर नहीं जिस ने अपने इसराएल लोगों के आगे से इस देश के निवासियों को खेद दिया और इसे अपने मित्र अबिरहाम के बंश को सदा के लिये नहीं दिया। ८ और वे उस में बसे और यह कहके तेरे नाम के लिये उस में एक पवित्रस्थान बनाया। ९ कि यदि बुराई जैसा कि तलवार अथवा बिचार का दंड अथवा मरी अथवा अकाल आदिक हम पर आ पड़े और हम इस मन्दिर के आगे और तेरे साक्षात खड़े होवें क्योंकि तेरा नाम इस मन्दिर में है और हम अपने दुःख में तेरे आगे प्रार्थना करें तब तू सुनके सहाय करेगा। १० और अब अम्मून के सन्तान को और मोअब को और शईर पर्वत को देख जिन्हें तू ने इसराएल को जब वे मिस्र के देश से निकल आये घेरने न दिया परन्तु वे उन से फिर गये और उन्हें नष्ट न किया। ११ सो देख वे हमें यह प्रतिफल देते हैं कि हमें उस अधिकार में जो तू ने हमें भोग करने को दिया है निकाल देने को चढ़ आये हैं। १२ हे हमारे ईश्वर क्या तू उन का बिचार न करेगा क्योंकि इस बड़ी जथा के बिरुद्ध जो हम पर चढ़ आते हैं हम कुछ बल नहीं रखते और क्या करें सो भी नहीं जानते परन्तु हमारी आंखें तुझ पर हैं॥

१३ और सारे यहूदाह अपने बालकों और अपनी स्त्री और सन्तान समेत परमेश्वर के आगे खड़े हुए। १४ तब आसफ के बेटों में का एक लावी अर्थात् मत्तनियाह के बेटे यईएल के बेटे बिनायाह के बेटे जकरियाह के बेटे यहजिएल पर परमेश्वर का आत्मा मंडली के मध्य में उतरा। १५ और उस ने कहा कि हे सारे यहूदाह और यरूसलम के बासियो और यहूसफत राजा तुम मेरी सुनो परमेश्वर तुम्हें यह कहता है कि तुम इस बड़ी मंडली से मत डरो अथवा बिस्मित मत होओ क्योंकि संग्राम तुम्हारा नहीं परन्तु ईश्वर का। १६ उन के बिरुद्ध कल उतरो देखो वे सीस के चढ़ाव से आते हैं और तुम अरूयल बन के आगे नालों के तीर उन्हें पाओगे। १७ इस में तुम्हें लड़ने न पड़ेगा लैस होके खड़े होओ और हे यहूदाह और यरूसलम परमेश्वर की मुक्ति को अपने संग देखो मत डरो और बिस्मित मत होओ कल उन के बिरुद्ध निकलो क्योंकि परमेश्वर तुम्हारे संग है। १८ और यहूसफत ने भूमि पर झुकके प्रणाम किया और सारे यहूदाह और यरूसलम के बासियों ने परमेश्वर के आगे गिरके परमेश्वर की सेवा किई। १९ और किहातों के सन्तान कुरहों के सन्तान लावी इसराएल के ईश्वर परमेश्वर की स्तुति ऊंचे स्वर से करने को खड़े हुए॥

२० और वे भोर को उठके तकूअ के बन को गये और उन के जाते जाते यहूसफत ने खड़ा होके कहा कि हे यहूदाह और यरूसलम के बासियो मेरी सुनो परमेश्वर अपने ईश्वर पर बिश्वास रक्खो और तुम स्थिर किये जाओगे उस के भविष्यद्वक्तों की प्रतीति करो जिसतें तुम भाग्यवान होओ। २१ और जब उस ने लोगों के साथ परामर्श किया तब उस ने परमेश्वर के लिये गायकों और पवित्रता की सुन्दरता की स्तुति करवैयों को ठहराया कि सेना के आगे आगे यह कहते हुए चलें परमेश्वर की स्तुति करो क्योंकि उस की दया सदा लों है॥

२२ और गाने और स्तुति करने के समय परमेश्वर ने अम्मून के सन्तानों के और मोअब के और शईर पर्वत के जो यहूदाह

के विरुद्ध आये थे दूकिये बैठाये और वे २३ मारे गये। क्योंकि अम्मून के सन्तान और मोअब सर्व्वथा मार डालने और नष्ट करने को शईर पर्व्वत के वासियों के विरुद्ध उठे और जब उन्हों ने शईर के वासियों को समाप्त किया तो आपुस के नाश में सहायक हुए॥

२४ और जब यहूदाह बन में चौकी के गुम्मट लों आये तब उन्हों ने मंडली की ओर ताका और क्या देखते हैं कि लोथ भूमि पर पड़ी हैं और कोई न २५ बचा। और जब यहूसफत और उस के लोग उन्हें लूटने को आये तब उन्हों ने उन में धन और बहुमूल्य मणि बहुताई से पाये जो उन्हों ने अपने लिये यहां लों लोथों में से उतारा कि ले जा न सक्ते थे और इतने थे कि उन्हें तीन दिन लों २६ लूट बटोरते लगा। और चौथे दिन वे बरकः की तराई में एकट्ठे हुए क्योंकि उन्हों ने वहां परमेश्वर को धन्य माना इस लिये आज लों वह स्थान बरकः की तराई कहाता है॥

२७ तब यहूदाह के और यरूसलम के सारे लोग फिरे और उन के आगे आगे यहूसफत जिसतें आनन्द के साथ यरूसलम को लौटें क्योंकि परमेश्वर ने उन के बैरियों पर उन्हें आनन्द करवाया। २८ और वे नबल और बीणा और तुरहियों को लिये हुए यरूसलम को परमेश्वर के २९ मन्दिर में आये। और जब उन देशों के सारे राजाओं ने सुना कि परमेश्वर इसराएल के बैरियों के विरुद्ध लड़ा तब ३० ईश्वर का डर उन पर पड़ा। सो यहूसफत के राज्य पर चैन हुआ क्योंकि उस के ईश्वर ने चारों ओर से उसे चैन दिया॥

३१ और यहूसफत ने यहूदाह पर राज्य किया जब वह राज्य करने लगा तब पैंतीस बरस का था और उस ने यरूसलम में पचीस बरस राज्य किया और उस की माता का नाम अजूबः जो शिलही की बेटी थी। ३२ और वह अपने पिता असा की चाल पर चलता था और जो परमेश्वर की दृष्टि में भला था उन्हें पालने से न फिरा। ३३ तथापि ऊंचे स्थान दूर न किये गये थे क्योंकि अब लों लोगों ने अपने पितरों के ईश्वर की ओर अपने मन को सिद्ध न किया था॥

३४ और यहूसफत की रही हुई क्रिया आदि और अंत देखो वे हनानी के बेटे याहू के बचन में जो इसराएल के राजाओं की पुस्तक में उठाया गया है लिखी हैं॥

३५ और उस के पीछे यहूदाह का राजा यहूसफत इसराएल के राजा अखजयाह से मिल गया जिस ने बड़ी दुष्टता किई। ३६ और तर्सीस को जाने के लिये जहाज बनाने को उस्से मिल गया और उन्हों ने असयूनजब्र में जहाज बनाये। ३७ तब मरीसाई दोदावा के बेटे इलिअजर ने यहूसफत के विरुद्ध यह भविष्य कहा इस कारण कि तू अखजयाह से मिल गया परमेश्वर ने तेरे कार्य्यों को तोड़ दिया है और जहाज तोड़े गये कि वे तर्सीस को न जा सकें॥

एक्कीसवां पर्व्व।

अब यहूसफत ने अपने पितरों में शयन किया और अपने पितरों में दाऊद के नगर में गाड़ा गया और उस के बेटे यहूराम ने उस की सन्ती राज्य किया॥

२ और उस के भाई यहूसफत के बेटे अजरियाह और यहिएल और जकरियाह और अजरियाह और मीकाएल और सफतियाह थे ये सब इसराएल के राजा

३ यहूसफत के बेटे थे । और उन के पिता ने बहुत चांदी और सोना और बहुमूल्य वस्तें और यहूदाह में आड़ित नगर उन्हें दिये परन्तु उस ने राज्य यहूराम को दिया क्योंकि वह पहिलौठा था ।
४ और जब यहूराम ने अपने पिता के राज्य को पाया तब उस ने आप को दृढ़ करके अपने सारे भाइयों को और इसराएल के बहुत से अध्यक्षों को तलवार से घात किया ॥

५ यहूराम ने बत्तीस बरस का होके राज्य करना आरंभ किया और यरूसलम
६ में आठ बरस राज्य किया । और अखिअब के घराने के समान वह इसराएल के राजाओं की चाल पर चलता था क्योंकि अखिअब की बेटी उस की पत्नी थी और उस ने परमेश्वर
७ की दृष्टि में बुराई किई । तथापि उस बाचा के जो उस ने दाऊद से बांधी थी और उसे और उस के बेटों को सदा के लिये एक ज्योति देने की प्रतिज्ञा के कारण से परमेश्वर ने दाऊद के घराने को नाश करने न चाहा ॥

८ उस के दिनों में अदूमी यहूदाह के बश से फिर गये और अपने लिये एक
९ राजा बनाया । तब यहूराम अपने अध्यक्षों को और अपने सारे रथ साथ लेके बाहर निकला और रात हो को उठके अदूमियों को और रथपतिन को
१० जो उसे घेरे हुए थे मारा । सो अदूमी आज लों यहूदाह के बश से फिरे हैं उसी समय लिबना भी उस के हाथ से फिर गया क्योंकि उस ने अपने पितरों के ईश्वर परमेश्वर को त्याग किया ॥

११ उस ने भी यहूदाह के पर्बतों पर ऊंचे ऊंचे स्थान बनाये और यरूसलम के बासियों से और यहूदाह से ब्यभिचार
१२ करवाया । और इलियाह भविष्यद्वक्ता के पास से यह कहके लिखा हुआ उस पास आया कि तेरे पिता दाऊद का ईश्वर परमेश्वर यों कहता है इस कारण कि तू अपने पिता यहूसफत की चालों पर और यहूदाह के राजा असा
१३ की चालों पर न चला । परन्तु इसराएल के राजाओं की चाल पर चला है और अखिअब के घराने के छिनालों के समान यहूदाह से और यरूसलम के बासियों से छिनाला करवाया है और अपने पिता के घराने के अपने भाइयों को जो तुझ से भले थे तू ने घात
१४ किया । देख परमेश्वर तेरे लोगों को और तेरे बालकों और तेरी पत्नियों को और तेरी सारी संपत्ति को बड़ी मार से
१५ मारेगा । और तू अपनी अंतड़ियों के रोग से ऐसा रोगी होगा कि रोग के मारे तेरी अंतड़ियां प्रतिदिन निकलती रहेंगी ॥

१६ और परमेश्वर ने यहूराम के बिरुद्ध फिलिस्तियों को और अरबियों को और
१७ आसपास के कूशियों को उभारा । और वे यहूदाह पर चढ़ आये और उसे तोड़के राजभवन में सारी संपत्ति जो पाई गई और उस के बेटों को भी और उस की पत्नियों को ले गये यहां लों कि उस के बेटों में लहुरे यहूअखज को छोड़ उस के किसी बेटे को न छोड़ा ।
१८ और इन सब के पीछे परमेश्वर ने उस की अंतड़ियों के असाध्य रोग से उसे
१९ मारा । और दो बरस बीतने के समय में यों हुआ कि उस के रोग के मारे उस की अंतड़ियां निकल पड़ीं और वह बड़े बड़े रोगों से मरा और उस के लोगों ने उस के पितरों के जलाने के
२० समान उस के लिये नहीं जलाया । जब उस ने राज्य करना आरंभ किया तब वह बत्तीस बरस का था और उस ने

यरुसलम में आठ बरस राज्य किया और बिना आदर मर गया तथापि उन्हों ने दाऊद के नगर में उसे गाड़ा परन्तु राजाओं की समाधिन में नहीं॥

बाईसवां पर्ब्ब।

१ और यरुसलम बासियों ने उस की सन्ती उस के लहुरे बेटे अखजयाह को राजा किया क्योंकि अरबियों के साथ जो जथा छावनी में आई थी उन्हों ने सारे जेठों को घात किया था सो यहूदाह के राजा यहूराम के बेटे अखज- २ याह ने राज्य किया। अखजयाह ने बयालीस बरस का होके राज्य करना आरंभ किया और उस ने यरुसलम में एक बरस राज्य किया और उस की माता का नाम अतलीयाह उमरी की ३ बेटी था। वह भी अखिअब के घराने की चालों पर चलता था क्योंकि कुकर्म्म करने के लिये उस की माता उस की ४ मंत्री थी। इस लिये उस ने अखिअब के घराने के समान परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई क्योंकि उस के पिता के मरने के पीछे उस के नाश के लिये ५ वे उस के मंत्री थे। वह उन के मंत्र के समान भी चलता था और इसराएल के राजा अखिअब के बेटे यहूराम के साथ अराम के राजा हजाएल के बिरुद्ध युद्ध करने को रामतजिलिअद में गया और अरामियों ने यूराम को मारा। ६ और वह घावों के कारण जिस्से उन्हों ने रामः में उसे घायल किया जब वह अराम के राजा हजाएल के साथ लड़ा था वह चंगा होने को यजरअएल को फिर आया और यहूदाह के राजा यहूराम का बेटा अजरियाह अखिअब के बेटे यहूराम को देखने के लिये यजर-अएल को उतरा क्योंकि वह रोगी था। ७ और अखजयाह का उजाड़ा जाना यूराम पास आने के लिये ईश्वर की ओर से था क्योंकि वह आके यहूराम के साथ निमसी के बेटे याहू के बिरुद्ध उतरा जिसे परमेश्वर ने अखिअब के घराने को काट डालने के लिये अभिषेक किया था। ८ और ऐसा हुआ कि जब याहू अखिअब के घराने पर दंड देता था तो यहूदाह के अध्यक्षों को और अखजयाह के भाइयों के बेटों को जो अखजयाह की सेवा करते थे पाया और उस ने उन्हें घात किया। ९ और उस ने अखजयाह को ढूंढ़ा और उन्हों ने उसे पकड़ा क्योंकि वह समरून में छिपा था और उसे याहू पास लाये और उन्हों ने उसे घात करके गाड़ा क्योंकि उन्हों ने कहा कि वह यहूसफत का बेटा है जिस ने अपने सारे मन से परमेश्वर की खोज किई सो अखजयाह के घराने का राज्य रखने का सामर्थ्य न था॥

१० परन्तु जब अखजयाह की माता अतलीयाह ने देखा कि मेरा बेटा मर गया तो उस ने उठके यहूदाह के घराने के सारे राजबंशों को नाश किया। ११ परन्तु राजकन्या यहूसबअत ने अखज-याह के बेटे यूआश को लिया और राजा के बेटों में से जो घात किये जाते थे चुराया और उसे और उस की दाई को एक शयनस्थान की कोठरी में रक्खा इस रीति से यहूयदः याजक की पत्नी यहूराम राजा की बेटी यहूसबअत ने क्योंकि वह अखजयाह की बहिन थी उसे अतलीयाह से छिपाया यहां लों कि उस ने उसे घात न किया। १२ और वह उन के साथ ईश्वर के मन्दिर में छः बरस लों छिपा रहा और अतलीयाह ने देश पर राज्य किया॥

तेईसवां पर्ब्ब

१ और सातवें बरस में यहूयदः ने आप

को दृढ़ किया और शतपतियों को अर्थात् यरुहाम के बेटे अजरियाह को और यहूहनान के बेटे इसमअएल को और ओबिद के बेटे अजरियाह को और अदायाह के बेटे मअसियाह को और जिकरी के बेटे इलिसफत को बाचा में अपने साथ लिया । २ और वे यहूदाह में फिरा किये और यहूदाह के सारे नगरों में से लावियों को और इसराएल के पितरों के प्रधानों को एकट्ठे किया और वे यरूसलम में आये । ३ और सारी मंडली ने परमेश्वर के मन्दिर में राजा के साथ बाचा बांधी और उस ने उन्हें कहा कि देखो जैसा कि परमेश्वर ने दाऊद के बेटों के विषय में कहा था कि राजा का बेटा राज्य करेगा । ४ तुम यह काम करो विश्राम में भीतर आने में लावी के और याजकों के तीसरे भाग डेवढ़ियों के द्वारपालक होवें । ५ और तीसरे भाग राजा के भवन में और तीसरे भाग नेव के फाटक में और सारे लोग परमेश्वर के मन्दिर के आंगनों में । ६ परन्तु याजक और लावी सेवकों को छोड़ कोई परमेश्वर के मन्दिर में आने न पावे वे भीतर आवें क्योंकि वे पवित्र हैं परन्तु सारे लोग परमेश्वर के चौकी की रक्षा करें । ७ और लावियों का हर एक जन हथियार हाथ में लेके राजा को चारों ओर से घेरे और जो कोई मन्दिर में आवेगा सो मारा जावेगा परन्तु राजा के बाहर भीतर आने जाने में तुम लोग उस के साथ रहो ॥

८ सो लावी और सारे यहूदाह ने यहूयदः याजक की सारी आज्ञा के समान किया और हर एक ने अपने अपने जन को लिया जिन्हें विश्राम में भीतर आना था उन के साथ जिन्हें विश्राम में बाहर जाना था क्योंकि यहूयदः याजक ने पारीवालों को बिदा न किया था । ९ इस्से अधिक यहूयदः याजक ने दाऊद राजा की बरछी और फरी और ढाल जो ईश्वर के मन्दिर में थीं शतपतियों को सौंप दिईं । १० और उस ने हर एक जन को हाथ में हथियार लिये हुए मन्दिर की दहिनी बाईं ओर यज्ञबेदी और मन्दिर के पास राजा की चारों ओर सारे लोगों को खड़ा किया । ११ फिर वे राजपुत्र को बाहर ले आये और उस पर मुकुट रक्खा और साक्षी देके उसे राजा किया और यहूयदः और उस के बेटों ने उसे अभिषेक किया और कहा कि राजा जीता रहे ॥

१२ जब अतलीयाह ने लोगों के दौड़ने का और राजा की स्तुति का शब्द सुना तब वह परमेश्वर के मन्दिर में लोगों के पास आई । १३ और ताकके क्या देखती है कि राजा पैठ में खंभे के लग खड़ा है और अध्यक्ष और तुरही राजा के लग और देश के सारे लोगों ने आनन्द किया और तुरहियों से और गायक भी बाजों को लेके और जो स्तुति गाने को सिखाते थे शब्द किया तब अतलीयाह ने अपने बस्त्र फाड़के कहा कि छल है छल है । १४ तब यहूयदः याजक सेना के शतपतियों को निकाल लाया और उन्हें कहा कि उसे सिवाने से बाहर करो और जो कोई उस के पीछे आवे सो तलवार से मारा जावे क्योंकि याजक ने कहा था कि परमेश्वर के मन्दिर में उसे घात मत करो । १५ सो उन्हों ने उस पर हाथ डाले और जब वह घोड़फाटक के पैठ लों जो राजा के भवन के लग था पहुंची तो उन्हों ने उसे वहां घात किया ॥

१६ फिर यहूयदः ने अपने मध्य में और सारे लोगों के मध्य में और राजा के

मध्य में आज्ञा बांधी जिसतें वे परमेश्वर
१७ के लोग होवें। तब सारे लोग बअल
के मन्दिर में गये और उसे तोड़ डाला
और उस की बेदियों को और उस की
मूर्त्तिन को टुकड़े टुकड़े किये और
बअल के याजक मत्तान को बेदियों के
१८ आगे घात किया। और मूसा की व्य-
वस्था के लिखने के समान जैसा दाऊद
ने परमेश्वर के मन्दिर में अलग अलग
ठहराया था वैसा यहूयदः ने लावी
याजकों के हाथों से परमेश्वर के बलि-
दान की भेंट चढ़ाने के लिये गाते और
आनन्द करते हुए दाऊद के ठहराने के
१९ समान ठहराया। और उस ने परमेश्वर
के मन्दिर के फाटकों पर द्वारपालों को
बैठाया जिसतें जो कोई किसी बात में
अपवित्र होवे सो भीतर जाने न पावे।
२० और उस ने शतपतियों को और कुलीनों
को और लोगों के अध्यक्षों को और देश
के सारे लोगों को लिया और राजा को
परमेश्वर के मन्दिर से ले आये और
बड़े फाटक से होके राजभवन में आये
और राजा को राज्य के सिंहासन पर
२१ बैठाया। और अतलीयाह को तलवार
से घात करने के पीछे देश के सारे लोगों
ने आनन्द किया और नगर में चैन
हुआ॥

चौबीसवां पर्ब्ब

१ यूआश ने सात बरस की बय में
राज्य करना आरंभ किया और उस ने
यरूसलम में चालीस बरस राज्य किया
और उस की माता का नाम जिबिया
२ था जो बिअरसबअ की थी। और यहू-
यदः याजक के जीवन भर यूआश ने
परमेश्वर की दृष्टि में भलाई किई।
३ और यहूयदः ने उस के लिये दो पत्नियां
कर दिईं और उस्से बेटे और बेटियां
उत्पन्न हुईं॥

४ और उस के पीछे में हुआ कि यूआश
ने परमेश्वर के मन्दिर को नवीन करने
चाहा। और उस ने याजकों को और
५ लावियों को एकट्ठा करके उन्हें कहा
कि यहूदाह के नगरों में जाओ और
सारे इसराएलियों से बरस बरस पर-
मेश्वर का मन्दिर सुधारने के लिये
रोकड़ एकट्ठा करो और देखो कि यह
बात शीघ्र होवे तथापि लावियों ने
शीघ्र न किई॥

६ और राजा ने प्रधान यहूयदः को
बुलाके उसे कहा कि परमेश्वर के दास
मूसा के और इसराएल की मंडली के
कहे के समान साक्षी के तंबू के लिये
तू ने लावियों से क्यों नहीं चाहा कि
यहूदाह में से और यरूसलम में से बेहरी
७ लावें। क्योंकि उस दुष्ट स्त्री अतलीयाह
के बेटों ने परमेश्वर के मन्दिर को ढा
दिया था और परमेश्वर के मन्दिर की
अर्प्पण किई हुई सारी बस्तुन को भी
उन्हों ने बअलीम पर चढ़ाया॥

८ सो राजा की आज्ञा से उन्हों ने
एक मंजूषा बनाई और उसे परमेश्वर
के मन्दिर के फाटक पर बाहर रक्खी।
९ और उन्हों ने सारे यहूदाह और यरू-
सलम में प्रचारा कि जो बेहरी ईश्वर
के सेवक मूसा ने बन में इसराएल पर
ठहराई थी सो परमेश्वर के लिये भीतर
१० लावें। और सारे अध्यक्ष और सारे लोग
आनन्द से लाये और मंजूषा में डालते
११ रहे जब लों वे पूरा न कर चुके। अब
ऐसा हुआ कि जब लावियों के हाथ से
मंजूषा राजा के भंडार में पहुंचाई गई
और जब उन्हों ने बहुत रोकड़ देखा
तब राजा के लेखक और महायाजक
का एक प्रधान आके मंजूषा को छूछी
करते थे और फेर ले जाके उसी स्थान
में रखते थे वे प्रतिदिन ऐसा ही करते

१२ थे और बहुताई से रोकड़ बटोरा । फिर राजा ने और यहूयद: ने उसे परमेश्वर के मन्दिर के कार्य्यकारियों को दिया और परमेश्वर का मन्दिर सुधारने के लिये उन्हों ने थवइयों को और बढ़इयों को लिया और परमेश्वर का मन्दिर बनाने के लिये लोहारों को और ठठेरों १३ को लोहा और तांबा दिया । तब कार्य्यकारियों ने कार्य्य किया और उन से कार्य्य बन गया और उन्हों ने ईश्वर के मन्दिर को ठिकाने में लाके दृढ़ १४ किया । और वे बनाके उबरी हुई रोकड़ राजा के और यहूयद: के आगे लाये और उस्से परमेश्वर के मन्दिर के लिये पात्र बनवाये गये अर्थात् सेवा के पात्र और बलिदान के पात्र और करछुल और सोने चांदी के पात्र और यहूयद: के जीवन भर वे नित्य परमेश्वर के मन्दिर में बलिदान की भेंट चढ़ाते थे ॥

१५ परन्तु यहूयद: वृद्ध हुआ और दिन का पूरा होके मर गया और मरने के समय वह एक सौ तीस बरस का था । १६ और उन्हों ने उसे दाऊद के नगर में राजाओं में गाड़ा क्योंकि उस ने परमेश्वर की और उस के मन्दिर की ओर इसराएल में भला किया था ॥

१७ अब यहूयद: के मरने के पीछे यहूदाह के अध्यक्षों ने आके राजा को प्रणाम किया तब राजा ने उन की बात १८ मानी । और वे अपने पितरों के ईश्वर परमेश्वर के मन्दिर को त्याग करके कुंजों की और मूर्त्तों की पूजा करने लगे और उन के इस अपराध के लिये यहूदाह पर और यरूसलम पर कोप १९ पड़ा । तथापि उस ने भविष्यद्वक्तों को उन पास भेजा कि उन्हें परमेश्वर की ओर फेरें और उन्हों ने उन्हें जताया २० परन्तु उन्हों ने उन की न मानी । फिर ईश्वर का आत्मा यहूयद: याजक के बेटे जकरियाह पर आया और उस ने ऊपर खड़ा होके लोगों से कहा कि ईश्वर यों कहता है कि तुम लोग परमेश्वर की आज्ञाओं को क्यों उल्लंघन करते हो तुम लोग भाग्यवान नहीं हो सक्ते हो तुम ने जो परमेश्वर को त्यागा है इस कारण उस ने तुम्हें भी त्याग किया है । २१ तब उन्हों ने उस के विरुद्ध युक्ति बांधके राजा की आज्ञा से परमेश्वर के मन्दिर के आंगन में पत्थरवाह करके उसे मार डाला । २२ यों यूआश राजा ने उस के पिता यहूयद: की कृपा को जो उस ने उस पर किई थी स्मरण न किया परन्तु उस के बेटे को घात किया और मरने के समय में उस ने कहा कि परमेश्वर इस पर दृष्टि करके पलटा लेवे ॥

२३ और जब एक बरस बीत गया तो ऐसा हुआ कि अराम की सेना उस के बिरुद्ध में चढ़ आई और वे यहूदाह में और यरूसलम में आये और लोगों में से सारे अध्यक्षों को नष्ट किया और उन की सारी लूट दमिश्क के राजा पास २४ भेजी । क्योंकि अरामियों की सेना तो एक छोटी जथा को लेके आई और परमेश्वर ने एक अति बड़ी सेना को उन के हाथ में सौंप दिया क्योंकि उन्हों ने परमेश्वर अपने पितरों के ईश्वर को त्यागा था सो उन्हों ने यूआश पर न्याय का दण्ड किया ॥

२५ और जब वे उस्से फिर गये क्योंकि उन्हों ने उसे बड़े बड़े रोग में छोड़ दिया तब उसी के दासों ने यहूयद: याजक के बेटों के लोहू के लिये युक्ति बांधी और उस के बिछौने पर उसे मारके घात किया और उन्हों ने उसे दाऊद के नगर में गाड़ा परन्तु उसे राजाओं की

२६ समाधिन में न गाड़ा। और जिन्हों ने उस के विरुद्ध में गुष्ठ बांधी से एक अम्मूनी सिमआत का बेटा जबद था और एक मोअबी सिम्रियत का बेटा
२७ यहूजबद था। अब उस के बेटे और बोझों का भार जो उस पर धरा गया और परमेश्वर के मन्दिर की नेव डालना देखो वे राजाओं के बर्णन की पुस्तक में लिखे हैं और उस के बेटे अमसियाह ने उस की संती राज्य किया॥

पचीसवां पर्ब्ब।

१ अमसियाह ने पचीस बरस की बय में राज्य करना आरंभ किया और उस ने यरूसलम में उंतीस बरस राज्य किया और उस की माता का नाम यहूअद्दान
२ था जो यरूसलीमी थी। और उस ने परमेश्वर की दृष्टि में भलाई किई
३ परन्तु सिद्ध मन से नहीं। और ऐसा हुआ कि जब राज्य उस पर स्थिर हुआ तब उस ने अपने पिता के घातक
४ सेवकों का घात किया। परन्तु उस ने उन के सन्तानों को घात न किया पर जैसा कि मूसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखा है जहां परमेश्वर ने आज्ञा करके कहा था कि बालकों की संती पिता मारे न जावेंगे और पिता के लिये बालक मारे न जावेंगे परन्तु हर एक जन अपने अपने पाप के लिये मारा जावेगा॥

५ और अमसियाह ने यहूदाह को एकट्ठा किया और उन के घराने के समान उस ने उन्हें सहस्रपति और शतपति सारे यहूदाह और बिनयमीन में किये उस ने उन्हें बीस बरस के और उस्से ऊपर गिना और उन्हें तीन लाख चुने हुए पाया जो संग्राम में जाने के और बरछी और ढाल बांधने के योग्य
६ थे। और उस ने एक लाख महाबीर इसराएलियों में से सौ तोड़े चांदी पर भाड़े किये॥

७ परन्तु ईश्वर का एक जन यह कहते हुए उस पास आया कि हे राजा इसराएल की सेना तेरे साथ जाने न पावे क्योंकि परमेश्वर इसराएल के साथ अर्थात् सारे इफरायम के सन्तानों
८ के साथ नहीं है। परन्तु यदि तू जावेगा तो जा संग्राम के लिये दृढ़ हो ईश्वर तुझे तेरे बैरियों के आगे ध्वस्त करेगा क्योंकि सहाय करने को और ध्वस्त
९ करने को ईश्वर में शक्ति है। और अमसियाह ने ईश्वर के जन से कहा पर सौ तोड़े के लिये जो मैं ने इसराएल की सेना को दिये हैं हम क्या करें और ईश्वर के जन ने उत्तर दिया कि परमेश्वर इस्से अधिक तुझे देने को सामर्थ्य रखता है॥

१० तब अमसियाह ने उस सेना को अलग किया जो इफरायम में से उस पास आई थी कि अपने स्थान को फिर जावे इस कारण उन का क्रोध यहूदाह के विरुद्ध अत्यन्त भड़का और वे क्रोध
११ के तपन से अपने घर गये। तब अमसियाह ने आप को दृढ़ किया और अपने लोगों को बाहर नून की तराई में ले गया और शईर के सन्तानों के दस
१२ सहस्र जन को जुझा दिया। और यहूदाह के सन्तान ने दस सहस्र को जीते जी बंधुआई में ले जाके और एक पर्बत की चोटी पर पहुंचाके पर्बत की चोटी पर से उन्हें गिरा दिया कि सब
१३ के सब चकनाचूर हो गये। परन्तु जथा के पुत्र जिन्हें अमसियाह ने फेर दिया था जिसतें उस के साथ संग्राम पर न जावें समरून से लेके बैतहौरान लों यहूदाह के नगरों पर पड़े और उन में से तीन सहस्र को जुझा दिया और बहुत लूट लिया॥

१४ और जब अमसियाह अदूमियों को जुझाके फिर आया उस के पीछे यों हुआ कि वह शईर के सन्तान के देवों को लाया और उन्हें अपने लिये देव स्थापित किये और उन के आगे दण्डवत किये और उन के लिये धूप जलाया। १५ इसके परमेश्वर का क्रोध अमसियाह पर भड़का और उस ने उस पास एक भविष्यद्वक्ता को भेजा जिस ने उसे कहा कि जो देव अपने ही लोगों को तेरे हाथ से छुड़ा न सके तू ने उन का १६ पीछा क्यों किया। जब वह उस्से कह रहा था तो यों हुआ कि उस ने उसे कहा कि तू राज्य के मंत्रियों में का है रह जा तू क्यों मारा जावे तब भविष्यद्वक्ता रह गया और कहा कि जो तू ने यह किया है और मेरे मंत्र को नहीं माना है मैं जानता हूं कि परमेश्वर ने तुझे नाश करने को मंत्र दिया है॥

१७ तब यहूदाह के राजा अमसियाह ने मंत्र लेके इसराएल के राजा याहू के बेटे यहूअखज के बेटे यूआश कने कहला भेजा कि आ हम एक दूसरे को १८ आम्ने साम्ने देखें। सो इसराएल के राजा यूआश ने यहूदाह के राजा अमसियाह को कहला भेजा कि लुबनान के भटकटैया ने लुबनान के देवदारु पेड़ को कहला भेजा कि अपनी बेटी मेरे बेटे को बियाह दे फिर लुबनान का एक बनैला पशु उस मार्ग से निकला १९ और भटकटैये को रौंद डाला। तू कहता है कि देख मैं ने अदूमियों को मारा है और तेरे मन ने अहंकार के लिये तुझे उभारा है सो अब अपने घर में रह जा तू अपने कष्ट के लिये क्यों छेड़ता है कि आप और यहूदाह तेरे २० साथ मारे जावें। परन्तु अमसियाह ने न माना क्योंकि यह ईश्वर से था जिसतें वह उन्हें उन के हाथ में सौंप देवे क्योंकि उन्हों ने अदूम के देवों का पीछा किया था। २१ सो इसराएल का राजा यूआश चढ़ गया और उन्हों ने अर्थात् उस ने और यहूदाह के राजा अमसियाह ने यहूदाह के बैतशम्स में आम्ने साम्ने देखा। २२ और यहूदाह इसराएल के आगे मारे गये और हर एक जन अपने अपने तंबू को भागा। २३ और इसराएल के राजा यूआश यहूअखज के बेटे यूआश के बेटे यहूदाह के राजा अमसियाह को बैतशम्स में पकड़के यरूसलम में लाया और इफरायम के फाटक से देखवैये फाटक लों चार सौ हाथ यरूसलम की भीत ढा दिई। २४ और सारे सोना चांदी और सारे पात्र जो परमेश्वर के मन्दिर में पाये गये और ओबिदअदूम के संग और राजा के भवन के भंडार और ओलों को लेके समरून को फिर आया॥

२५ और यूआश का बेटा यहूदाह का राजा अमसियाह इसराएल के राजा यहूअखज के बेटे यूआश के मरने के पीछे पंदरह बरस जीया। २६ अब अमसियाह की रही हुई क्रिया आदि और अन्त देखो क्या वे इसराएल और यहूदाह के राजाओं की पुस्तक में नहीं लिखीं। २७ और जब अमसियाह परमेश्वर का पीछा करने से फिर गया तब उन्हों ने उस के बिरुद्ध यरूसलम में एक गुष्ठ बांधी और वह लकीस को भाग गया परन्तु उन्हों ने लकीस में उस के पीछे भेजा और उसे वहां घात किया। २८ और वे उसे घोड़ों पर लाये और यहूदाह के नगर में उस के पितरों में उन्हों ने उसे गाड़ा॥

छब्बीसवां पर्ब्ब।

१ तब यहूदाह के सारे लोगों ने उज्जि-

याह को लिया जो सोलह बरस का था और उस के पिता अमसियाह के २ स्थान पर उसे राजा किया । उस ने ऐलात को बनाया और जब राजा ने अपने पितरों में शयन किया तब उसे यहूदाह के राज्य में फेर मिला दिया ॥

३ उज्जियाह ने सोलह बरस की बय में राज्य करना आरंभ किया और बावन बरस यरूसलम में राज्य किया उस की माता का नाम यरूसलीमी यकुलियाह ४ था । और अपने पिता अमसियाह की सारी क्रिया के समान उस ने परमेश्वर ५ की दृष्टि में भलाई किई । और उस ने जकरियाह के दिनों में जो ईश्वर के दर्शन में समझ रखता था ईश्वर को खोजा और जब लों वह परमेश्वर को खोजता रहा तब लों ईश्वर ने उसे भाग्यवान किया ॥

६ और उस ने जाके फिलिस्तियों के बिरुद्ध संग्राम किया और जात की और यबनिः की और अशदूद की भीत को तोड़ डाला और असदूद के आसपास और फिलिस्तियों के मध्य नगर बनवाये । ७ और ईश्वर ने फिलिस्तियों के बिरुद्ध और अरबियों के बिरुद्ध जो गुरबअल में रहते थे मऊनियों के बिरुद्ध उस की ८ सहाय किई । और अम्मूनियों ने उज्जियाह के पास भेंट भेजी और मिस्र के पैठ लों उस की कीर्त्ति फैली क्योंकि वह अत्यंत दृढ़ हुआ ॥

९ और भी उज्जियाह ने यरूसलम में कोने के फाटक पर और तराई के फाटक पर और घूम में गुम्मट बनाके उन्हें दृढ़ १० किया । और उस ने अरण्य में गुम्मट बनवाये और बहुत कूए खोदवाये क्योंकि नीचे देश में और चौगानों में उस के बहुत ढोर थे और पर्बतों में और करमिल में किसान और दाख के बुझवैये थे क्योंकि किसनई उसे अच्छी लगती थी ॥

११ और भी उज्जियाह योद्धाओं की एक सेना रखता था जो जथा जथा यईएल लेखक के और मअसियाह आज्ञाकारी के और राजा के एक सेनापति हननियाह के बश में होके संग्राम को निकलती १२ थी । महावीरों के पितरों के प्रधानों की समस्त गिनती दो सहस्र छः सौ । १३ और उन के बश में बैरी के बिरुद्ध राजा की सहाय के लिये एक सेना का पराक्रम तीन लाख सात सहस्र पांच सौ १४ जो बड़े पराक्रम से युद्ध करते थे । और उज्जियाह ने उन के लिये सारी सेना में सर्वत्र ढाल और बर्छो और टोप और झिलम और धनुष और पत्थर के लिये १५ ढेलबांस सिद्ध किये । और उस ने गुम्मटों पर और कोटों पर धरने के लिये जिस्तें बाण और बड़े बड़े पत्थर मारे यरूसलम में गुणी लोगों से निकाले हुए कल बनाये और उस का नाम दूर लों फैल गया क्योंकि बलवन्त होने लों आश्चर्य्यित से उस की सहाय हुई ॥

१६ परन्तु जब वह बलवन्त हुआ तब बिनाश के लिये उस का मन फूला क्योंकि उस ने परमेश्वर अपने ईश्वर के बिरुद्ध अपराध किया और धूप की बेदी पर धूप जलाने के लिये परमेश्वर के १७ मन्दिर में गया । और अजरियाह याजक और उस के साथ परमेश्वर के अस्सी १८ बलवन्त याजक उस के पीछे गये । और उन्हों ने उज्जियाह राजा को रोकके उसे कहा कि हे उज्जियाह परमेश्वर के लिये धूप जलाने को तेरा काम नहीं परन्तु हारून के बेटे याजकों को जो धूप जलाने के लिये ठहराये गये हैं सो पवित्रस्थान से बाहर जा क्योंकि तू ने

अपराध किया है और परमेश्वर ईश्वर तेरी प्रतिष्ठा के लिये न होगा ॥

१९ तब उज्जियाह कोपित हुआ और धूप जलाने को उस के हाथ में एक धूपदानी थी और याजकों पर कोपित होते हुए धूप की वेदी के लग से ईश्वर के मन्दिर में याजकों के आगे उस के २० कपाल पर कोढ़ फूट निकला । और अजरियाह प्रधान याजक और सारे याजकों ने उस पर दृष्टि किई और क्या देखते हैं कि उस के सिर पर कोढ़ निकला और उन्हों ने उसे वहां से दूर करने को शीघ्रता किई क्योंकि पर- २१ मेश्वर ने उसे मारा था । और उज्जियाह राजा अपने मरने लों कोढ़ी रहा और अलग घर में कोढ़ी होके रहा क्योंकि वह परमेश्वर के मन्दिर से अलग किया गया था और उस का बेटा यूताम राजा के भवन पर होके देश के लोगों का न्याय करता था ॥

२२ अब उज्जियाह की रही हुई क्रिया आदि और अंत अमूस के बेटे यशअियाह २३ भविष्यद्वक्ता ने लिखा है । सो उज्जियाह ने अपने पितरों में शयन किया और उन्हों ने उसे उस के पितरों में राजाओं के समाधिस्थान में गाड़ा क्योंकि उन्हों ने कहा कि वह कोढ़ी है और उस के बेटे यूताम ने उस की संती राज्य किया ॥

सत्ताईसवां पर्ब्ब ।

१ यूताम ने पचीस बरस की बय में राज्य करना आरंभ किया और उस ने यरूसलम में सोलह बरस राज्य किया और उस की माता का नाम यरूस: था २ जो सदूक की बेटी थी । और उस ने अपने पिता उज्जियाह के सारे कार्य्य के समान परमेश्वर की दृष्टि में भलाई किई तथापि वह परमेश्वर के मन्दिर में नहीं पैठा और अब भी लोग अशुद्ध कर्म करते रहे । उस ने परमेश्वर के ३ मन्दिर का ऊंचा फाटक बनाया और उफल की भीत पर उस ने बहुत बनाया ॥

४ और इस्से अधिक उस ने यहूदाह के पर्बतों में नगर बनवाये और बन में उस ५ ने गढ़ियां और गुम्मट बनवाये । उस ने अम्मूनियों के राजा के साथ लड़के भी उसे जीता और उस बरस में अम्मून के सन्तानों ने उसे एक सौ तोड़े चांदी और दस सहस्र नपुए गोहूं और दस सहस्र नपुए जव दिये और दूसरे और तीसरे बरस भी अम्मून के सन्तानों ने उसे ६ उतना ही दिये । सो यूताम बलवन्त हुआ क्योंकि उस ने अपने ईश्वर परमेश्वर के आगे अपनी चाल सुधारी ॥

७ अब यूताम की रही हुई क्रिया और उस की सारी लड़ाइयां और उस की चाल देखो वे यहूदाह और इसराएल के ८ राजाओं की पुस्तक में लिखी हैं । जब उस ने राज्य करना आरंभ किया तब पचीस बरस का था और यरूसलम में ९ सोलह बरस राज्य किया । और यूताम ने अपने पितरों में शयन किया और उन्हों ने उसे दाऊद के नगर में गाड़ा और उस के बेटे आखज ने उस की सन्ती राज्य किया ॥

अट्ठाईसवां पर्ब्ब ।

१ आखज ने बीस बरस की बय में राज्य करना आरंभ किया और उस ने यरूसलम में सोलह बरस राज्य किया परन्तु अपने पिता दाऊद के समान परमेश्वर की दृष्टि में भलाई न किई । २ क्योंकि वह इसराएल के राजाओं की चालों पर चलता था और बअलीम के ३ लिये ढाली हुई मूर्त्तें भी बनाईं । और उस्से अधिक उस ने हिन्नुम के बेटे की तराई में बलि चढ़ाया और अन्यदेशियों

के घिनितों के समान जिन्हें परमेश्वर ने इसराएल के सन्तानों के आगे से दूर किया था अपने सन्तान को आग में
४ से चलाया। और उस ने ऊंचे स्थानों और पर्बतों पर और हर एक हरे पेड़ तले बलि चढ़ाया और धूप जलाया॥
५ इस लिये उस के ईश्वर परमेश्वर ने उसे अराम के राजा के हाथ में सौंप दिया और उन्हों ने उसे मारा और उन में से एक बड़ी मंडली को बंधुआई में ले गये और दमिश्क में पहुंचाया और वह भी इसराएल के राजा के हाथ में सौंपा गया जिस ने उसे बड़ी मार से
६ मारा। क्योंकि रमलियाह के बेटे फिक: ने दिन भर में यहूदाह में से एक लाख बीस सहस्र को घात किया ये सब बीर पुत्र थे इस कारण से कि उन्हों ने अपने पितरों के ईश्वर परमेश्वर को त्याग
७ किया था। और इफ़रायम के एक बलवन्त जन जिक्री ने राजा के बेटे मअसियाह को और घर के अध्यक्ष अज़रिकाम को और राजा के समीपी
८ इलकन: को घात किया। और इसराएल के सन्तान अपने भाईबंद में से दो लाख स्त्री बेटे और बेटी बंधुआई में ले गये और उन में बहुत सी लूट लेके लूट को समरून में लाये॥
९ परन्तु ओदिद नाम एक जन परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता वहां था और वह समरून की सेना के आगे गया और उन्हें कहा कि देखो तुम्हारे पितरों का ईश्वर परमेश्वर यहूदाह से कोपित था इस लिये उस ने उन्हें तुम्हारे हाथ में सौंप दिया है और तुम ने उन्हें ऐसे कोप से घात किया कि स्वर्ग लों पहुंच
१० गया। और अब तुम यहूदाह और यरूसलम के सन्तानों को दास और दासी में रक्खा चाहते हो क्या तुम्में अर्थात् तुम्हीं में अपने ईश्वर परमेश्वर के
११ बिरुद्ध पाप नहीं है। इस लिये अब मेरी सुनो और अपने भाईबंदों में के बंधुओं को जिन्हें तुम लाये हो उन बंधुओं को सौंप देओ क्योंकि परमेश्वर
१२ का कोप तुम पर भड़का है। तब इफ़रायम के सन्तान के कितने प्रधानों ने अर्थात् यहूहनान का बेटा अज़रियाह और मुसलिमियत का बेटा बरकियाह और सलूम का बेटा हिजकियाह और हदली का बेटा अमासा उन के बिरुद्ध
१३ खड़े हुए जो संग्राम से आये। और उन्हें कहा कि तुम बंधुओं को इधर न लाओगे क्योंकि हम ने तो परमेश्वर के बिरोध में अपराध किया है हमारे पापों को और अपराधों को बढ़ाने चाहते हो क्योंकि हमारा अपराध बड़ा है और
१४ इसराएल के बिरुद्ध महा कोप है। तब हथियारबंदों ने बंधुओं को और लूट को अध्यक्षों के और सारी मंडली के
१५ आगे छोड़ दिया। फिर जिन मनुष्यों का नाम लिखा था सो उठ खड़े हुए और बंधुओं को और लूट को लेके उन में के सारे नंगों को पहिराया और बिभूषित किया और जूते पहिनाये और उन्हें खिला पिलाके उन पर तेल लगवाया और उन में के सारे दुर्बलों को गदहों पर बैठाके खजूर पेड़ के नगर अर्थात् यरीहो में अपने भाइयों के पास पहुंचाया तब वे समरून को फिर आये॥
१६ उस समय आख़ज़ राजा ने अपनी सहाय के लिये असूर के राजा पास
१७ भेजा। क्योंकि अदूमी ने फेर आके यहूदाह को मारा और बंधुये ले गये।
१८ फिलिस्तियों ने भी तराई के देश के नगरों को और यहूदाह के दक्षिण को घेरा था और बैतश्म्स को और ऐयलून को और जदीरात को और शोको को

उस के गांवों समेत और तिमन: उस के गांवों समेत और जिमसू को भी और उस के गांवों को ले लिया और वे उन १९ में बसे । क्योंकि इसराएल के राजा आखज के कारण से परमेश्वर ने यहूदाह को घटाया इस लिये कि उस ने यहूदाह को नग्न किया और परमेश्वर २० के विरुद्ध महा अपराध किया । तब असूर के राजा तिगलतपिलासर ने उस पास आके उसे सताया परन्तु उसे २१ दृढ़ न किया । क्योंकि आखज ने परमेश्वर के मन्दिर से और राजभवन से और अध्यक्षों से भाग लेके असूर के राजा को दिया परन्तु उस ने उस की सहाय २२ न किई । और अपने दुःख के समय में इसी आखज राजा ने परमेश्वर के विरुद्ध अधिक अपराध किया ॥

२३ क्योंकि उस ने दमिश्क के देवों के लिये जिन्हों ने उसे मारा था बलि चढ़ाया और उस ने कहा कि अराम के राजाओं के देवों ने उन की सहायता किई इस लिये मैं उन के लिये बलि चढ़ाऊंगा जिसतें वे मेरी सहायता करें परन्तु वे उस की और सारे इसराएल २४ की नष्टता के कारण हुए । और आखज ने ईश्वर के मन्दिर के पात्रों को एकट्ठे किया और ईश्वर के मन्दिर के पात्रों को काटके टुकड़े टुकड़े किये और परमेश्वर के मन्दिर के द्वारों को बंद किया और उस ने अपने लिये यरूसलम के हर २५ एक कोने में बेदियां बनवाईं । और यहूदाह के हर एक नगर में उस ने दूसरी देवों के नाम से धूप जलाने को ऊंचे ऊंचे स्थान बनाये और अपने पितरों के ईश्वर परमेश्वर को रिस दिलाया ॥

२६ अब उस की रही हुई क्रिया और उस की सारी चाल आदि और अंत देखो कि यहूदाह के और इसराएल के राजाओं की पुस्तक में लिखी हैं । और आखज २७ ने अपने पितरों में शयन किया और उन्हों ने उसे यरूसलम नगर में गाड़ा परन्तु उसे इसराएल के राजाओं की समाधिन में न पहुंचाया और उस का बेटा हिजकियाह उस की संती राज्य पर बैठा ॥

उंतीसवां पर्ब्ब ।

हिजकियाह ने पचीस बरस की बय १ में राज्य करना आरंभ किया और उंतीस बरस यरूसलम में राज्य किया और उस की माता का नाम अबियाह था वह जकरियाह की बेटी थी । और उस ने २ अपने पिता दाऊद के सारे कार्य्य के समान परमेश्वर की दृष्टि में भलाई किई ॥

उस ने अपने राज्य के पहिले बरस ३ के पहिले मास में परमेश्वर के मन्दिर के द्वारों को खोला और उन्हें सुधारा । और उस ने याजकों को और लावियों ४ को भीतर लाके पूरब की सड़क में एकट्ठे किया । और उन्हें कहा कि हे लावियो ५ मेरी सुनो अब अपने को पवित्र करो और अपने पितरों के ईश्वर परमेश्वर के मन्दिर को पवित्र करो और पवित्रस्थान से सारा कूड़ा बाहर ले जाओ । क्योंकि ६ हमारे पितरों ने अपराध किया है और हमारे ईश्वर परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई है और उसे त्याग किया है और अपने अपने मुंह को परमेश्वर के निवास से फेर दिया है और अपनी अपनी पीठ उस की ओर किई है । और ओसारे के ७ द्वारों को बंद किया है और दीपकों को बुझाया है और इसराएल के ईश्वर के लिये धूप नहीं जलाया और पवित्रस्थान में बलिदान नहीं चढ़ाया । इस लिये ८ परमेश्वर का कोप यहूदाह और यरूसलम पर पड़ा और जैसे तुम लोग अपनी

आंखों से देखते हो उस ने वैसा ही उन्हें बिपत में पड़ने बिस्मित होने और ठट्ठे में उड़ाये जाने के लिये छोड़ दिया। ९ क्योंकि देखो हमारे पितर तलवार से मारे गये हैं और हमारे बेटे बेटियां और हमारी पत्नियां इस के लिये बंधुआई में हैं। १० अब मेरे मन में है कि इसराएल के ईश्वर परमेश्वर के साथ एक बाचा बांधूं जिसतें उस का महा कोप हम से फिर जावे। ११ हे मेरे बेटो तुम अब आलस्य न करो क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हें अपने आगे खड़ा होके सेवा करने को चुन लिया है जिसतें तुम लोग उस की सेवा करके धूप जलाओ॥

१२ तब किहातियों के सन्तानों में से अमासै का बेटा महत और अजरियाह का बेटा यूएल और मिरारी के बेटों में से अबदी का बेटा कीश और यहलिएल का बेटा अजरियाह और जैरसुनियों में से जिम्मः का बेटा यूआख और यूआख का बेटा अदन। १३ और इलिसफन के बेटों में से शिमरी और यईएल और आसफ के बेटों में से जिकरियाह और मत्तनियाह। १४ और हैमान के बेटों में से यहिएल और शमई और यदूतून के बेटों में से समएयाह और उज्जिएल लावी उठे। १५ और अपने भाईबन्दों को एकट्ठा किया और अपने को पवित्र किया और परमेश्वर के कार्य्य के विषय में राजा की आज्ञा के समान परमेश्वर के मन्दिर को झाड़ने आये। १६ और याजक झाड़ने के लिये ईश्वर के मन्दिर के भीतर गये और जो जो अपवित्रता उन्हों ने परमेश्वर के मन्दिर में और परमेश्वर के मन्दिर के आंगन में पाई सो सो बाहर किया और लावियों ने उठके बाहर कैदरून नाली में डाला। १७ अब पहिले मास की पहिली तिथि में उन्हों ने पवित्र करना आरंभ किया और मास के आठवें दिन वे परमेश्वर के ओसारे लों आये सो उन्हों ने आठ दिन में परमेश्वर के मन्दिर को पवित्र किया और पहिले मास की सोलहवीं तिथि में वे पूरा कर चुके॥

१८ तब उन्हों ने हिजकियाह राजा के आगे जाके कहा कि हम परमेश्वर के सारे मन्दिर को और बलिदान की बेदी को उस के सारे पात्र समेत और भेंट की रोटी का मंच उस के सारे पात्र समेत शुद्ध किया है। १९ और उस्से अधिक सारे पात्रों को जो आहाज राजा ने अपने राज्य में अपराध करके दूर किया हम ने सिद्ध करके पवित्र किया है और देख वे परमेश्वर की बेदी के आगे हैं॥

२० तब हिजकियाह राजा तड़के उठा और नगर के अध्यक्षों को एकट्ठा किया और परमेश्वर के मन्दिर को चढ़ गया। २१ और राज्य के पाप की भेंट के लिये और पवित्रस्थान के लिये और यहूदाह के लिये वे सात बैल और सात मेंढे और सात मेम्ने और सात बकरे लाये और उस ने हारून के बेटे याजकों को उन्हें परमेश्वर की बेदी पर चढ़ाने को आज्ञा किई। २२ सो उन्हों ने बैलों को मारा और याजकों ने लोहू लेके बेदी पर छिड़का इसी रीति से उन्हों ने मेंढों को मारके लोहू को बेदी पर छिड़का उन्हों ने मेम्नों को भी मारा और लोहू को बेदी पर छिड़का। २३ और वे पाप की भेंट के बकरों को राजा के और मंडली के आगे लाये और उन्हों ने अपने हाथ उन पर धरे। २४ फिर याजकों ने उन्हें मारा और सारे इसराएल के लिये प्रायश्चित्त करने को उन के लोहू से बेदी पर छिड़का क्योंकि राजा ने सारे इसराएल के लिये बलिदान की भेंट

और पाप की भेंट चढ़ाने की आज्ञा २५ किई। और दाऊद की और राजा के दर्शक जद की और नातन भविष्यद्वक्ता की आज्ञा के समान उस ने करताल और नबल और बीणा लिये हुए लावियों को परमेश्वर के मन्दिर में ठहराया क्योंकि परमेश्वर ने अपने भविष्यद्वक्तों २६ के द्वारा से यों आज्ञा किई थी। और लावी दाऊद के बाजों को और याजक २७ तुरहियों को लेके खड़े हुए। और हिजकियाह ने बेदी पर बलिदान की भेंट चढ़ाने की आज्ञा किई और बलिदान करने के समय में परमेश्वर का गान तुरहियों से और इसराएल के राजा २८ दाऊद के बाजों से आरंभ हुआ। और सारी मंडली ने दण्डवत किई और गायकों ने गाया और तुरही के बजवैयों ने शब्द किया और ये सब बलिदान की भेंट के चढ़ाये जाने लों होते रहे। २९ और जब वे बलिदान की भेंट चढ़ा चुके तब राजा ने और सभों ने जो उस ३० के पास थे झुकके प्रणाम किया। और भी हिजकियाह राजा ने और अध्यक्षों ने लावियों को आज्ञा किई कि दाऊद के और आसफ दर्शी के बचन से परमेश्वर की स्तुति गावें और उन्हों ने आनन्द से स्तुति गाई और सिर झुकाके सेवा किई॥

३१ तब हिजकियाह ने उत्तर देके कहा कि अब तुम परमेश्वर के लिये हाथ भरके आये हो सो अब पास आओ और बलि और धन्यवाद की भेंट परमेश्वर के मन्दिर में लाओ फिर मंडली बलि के लिये और धन्यवाद के लिये भेंट लाई और बहुतेरे अपनी बांछा के समान ३२ बलिदान के लिये भेंट लाये। और बलिदान की भेंट की गिनती जो मंडली लाई सो सत्तर बैल और सौ मेंढे और दो सौ मेम्ने ये सब परमेश्वर के बलिदान की भेंट के लिये थे। और पवित्रित ३३ वस्तु छः सौ बैल और तीन सहस्र भेड़ें। परन्तु याजक ऐसे थोड़े थे कि वे बलि- ३४ दान की सारी भेंटों की खाल उतार न सके इसी लिये उन के भाई लावियों ने कार्य्य के अंत लों और याजकों के आप को पवित्र करने लों उन की सहाय किई क्योंकि लावियों ने अपने को पवित्र करने के लिये याजकों से अधिक खरे मन के थे। और कुशल की भेंटों ३५ की चिकनाई के साथ और बलिदान की पीने की भेंटों के साथ बलिदान भी बहुताई से थे इसी रीति से परमेश्वर के मन्दिर की सेवा बिधि से ठहराई गई। और हिजकियाह और सारे लोगों ३६ ने आनन्द किया कि परमेश्वर ने लोगों को सिद्ध किया था क्योंकि वह कार्य्य अचानक हुआ॥

तीसवां पर्ब्ब।

और हिजकियाह ने सारे इसराएल १ और यहूदाह और इफरायम और मुनस्सी के पास पत्रियां लिख भेजीं जिसतें वे यरूसलम को परमेश्वर के मन्दिर में आके परमेश्वर इसराएल के ईश्वर के लिये फसह का पर्ब्ब रक्खें। क्योंकि २ राजा और उस के अध्यक्ष और यरूसलम में की सारी मंडली ने दूसरे मास में फसह के पर्ब्ब रखने को परामर्श किया। क्योंकि उस समय वे इस कारण रख न ३ सके कि याजकों ने आप को निरधार पवित्र न किया था और लोग भी यरू- सलम में एकट्ठे न हुए थे। और वह ४ बात राजा की और सारी मंडली की दृष्टि में अच्छी लगी। सो उन्हों ने बिअरसबअ से लेके दान लों सारे इस- राएलियों में प्रचारने को यह बात ठहराई कि वे यरूसलम में आके परमेश्वर

इसराएल के ईश्वर के लिये फसह का पर्ब्ब रक्खें क्योंकि लिखे हुए के समान उन्हों ने बहुत दिन से न किया था ॥
६ सो राजा के हाथ की और उस के अध्यक्षों की पत्री लेके डांकिये सारे इसराएलियों में और यहूदाह में ले गये और राजा की आज्ञा के समान कहा कि हे इसराएल के सन्तानो परमेश्वर अबिरहाम इज़हाक और इसराएल के ईश्वर की ओर फिरो और वह तुम्हारे रहे हुए की ओर जो असूर के राजाओं के हाथ
७ से बचे हैं फिरेगा । और अपने पितरों के समान और अपने भाईबंदों के समान जिन्हों ने परमेश्वर अपने पितरों के ईश्वर का अपराध किया मत होओ इस लिये उस ने उन्हें नाश को सौंप
८ दिया जैसा तुम देखते हो । इस कारण अब अपने पितरों की नाईं अपने गले को कठोर मत करो परन्तु आप आप को परमेश्वर को सौंपो और उस के पवित्रस्थान में जाओ जिसे उस ने सदा के लिये पवित्र किया है और परमेश्वर अपने ईश्वर की सेवा करो जिसतें उस का महा कोप तुम पर से जाता रहे ।
९ क्योंकि यदि तुम लोग फेर परमेश्वर की ओर उलटा फिरोगे तब तुम्हारे भाई और तुम्हारे बाल बच्चे उन के आगे जो उन्हें बंधुआई में ले गये हैं दया पावेंगे यहां लों कि वे इस देश में फिर आवेंगे क्योंकि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर कृपालु और दयालु है और जो तुम उस की ओर फिरोगे तो वह तुम से अपना मुंह न मोड़ेगा ॥
१० सो डांकिये इफरायम और मुनस्सी के देश में से नगर नगर जबूलन लों गये परन्तु उन्हों ने ठट्ठा करके उन्हें
११ चिढ़ाया । तथापि यसर के और मुनस्सी और जबूलन के बहुतेरों ने अपने को नम्र किया और यरूसलम को आये ।
१२ यहूदाह में भी उन्हें एक मन देने को परमेश्वर का हाथ उन पर पड़ा कि परमेश्वर के वचन से राजा की और अध्यक्षों की आज्ञा को पालन करें ॥
१३ और दूसरे मास में अखमीरी रोटी का पर्ब्ब रखने को अति बड़ी मंडली यरूसलम में एकट्ठी हुई ।
१४ और उन्हों ने उठके यरूसलम में की बेदियों को दूर किया और धूप जलाने की सारी बेदियों को दूर किया और कैदरून नाली में
१५ फेंक दिया । तब उन्हों ने दूसरे मास की चौदहवीं तिथि में फसह का मेम्ना मारा और याजकों ने और लावियों ने लज्जित होके आप को पवित्र किया और परमेश्वर के मन्दिर में बलिदान की
१६ भेंटें लाये । और वे ईश्वर के जन मूसा की व्यवस्था के समान अपनी रीति की नाईं अपने अपने स्थान में खड़े हुए और याजकों ने लावियों के हाथ से लोहू लेके छिड़का ॥
१७ क्योंकि मंडली में बहुत थे जो पवित्र न किये गये थे इस लिये हर एक की संती जो पवित्र न किया गया परमेश्वर के लिये पवित्र करने को लावियों ने फसह का मेम्ना मारा ।
१८ क्योंकि लोगों की एक मंडली अर्थात् इफरायम और मुनस्सी के इशकार और जबूलन के बहुतों ने आप को पवित्र न किया तथापि लिखे हुए से भिन्न फसह खाया परन्तु हिज़्क़ियाह ने यह कहके उन के लिये प्रार्थना किई कि परमेश्वर
१९ हर एक को क्षमा करे । जिस ने अपने ईश्वर परमेश्वर की खोज के लिये अपने मन को सिद्ध न किया यद्यपि पवित्रस्थान के पवित्र किये जाने के समान न हुआ
२० हो । और परमेश्वर ने हिज़्क़ियाह की सुनी और लोगों को क्षमा किया ॥

२१ और इसराएल के सन्तान जो यरूसलम में पाये गये बड़े आनन्द से सात दिन लों अखमीरी रोटी का पर्ब्ब रक्खा और लावी और याजक प्रतिदिन परमेश्वर के बड़े शब्द के बाजों से परमेश्वर २२ की स्तुति करते रहे। और हिजकियाह ने सारे लावियों से जो परमेश्वर का ज्ञान अच्छी रीति से जानते थे शान्ति की बात कही और वे सात दिन भर सारे पर्ब्ब लों खाते और कुशल की भेंट चढ़ाते धन्य मानते रहे॥

२३ और सारी मंडली ने परामर्श करके सात दिन और रक्खे और वे सात दिन २४ आनन्द से मानते रहे। क्योंकि यहूदाह के राजा हिजकियाह ने मंडली को एक सहस्र बैल और सात सहस्र भेड़ दिये और अध्यक्षों ने मंडली को एक सहस्र बैल और दस सहस्र भेड़ दिये और याजकों में से बहुतों ने अपने को २५ पवित्र किया। और यहूदाह की सारी मंडलियों ने याजकों और लावियों सहित और इसराएल में की सारी मंडली और परदेशी जो इसराएल के देश से आये थे और जो यहूदाह देश में रहते २६ थे उन्हों ने आनन्द किया। सो यरूसलम में बड़ा आनन्द हुआ क्योंकि इसराएल के राजा दाऊद के बेटे सुलेमान के समय से यरूसलम में ऐसा २७ न हुआ था। तब याजक और लावी उठे और लोगों को आशीर्बाद दिया और उन का शब्द सुना गया और उन की प्रार्थना उस की पवित्रता के निवास स्वर्ग लों पहुंची॥

एकतीसवां पर्ब्ब

१ और जब यह सब हो चुका तब सारे इसराएल वहां से यहूदाह के नगरों को गये और सारी मूरतों को तोड़ डाला और कुंजों को काट डाला और ऊंचे स्थानों को और बेदियों को सारे यहूदाह और बिनयमीन और इफरायम और मुनस्सी में से ढा दिया यहां लों कि उन्हों ने सभों को सर्बथा नाश किया तब इसराएल के सारे सन्तान अपने अपने नगर और अधिकार को फिर गये॥

२ और हिजकियाह ने याजकों की पारियों को ठहराया और लावियों को उन की पारियों के समान हर एक जन को उस की सेवा के समान बलिदान की भेंट के लिये और कुशल की भेंटों के लिये और परमेश्वर के तंबुओं के फाटकों में स्तुति करने के कारण याजकों ३ को और लावियों को ठहराया। और बलिदान की भेंटों के लिये अर्थात् सांझ बिहान के बलिदान की भेंटों के लिये और बिश्रामों और अमावास्या और ठहराये हुए पर्ब्बों के बलिदान की भेंटों के लिये जैसा परमेश्वर की व्यवस्था में लिखा है राजा का भाग उस की संपत्ति में से ठहराया॥

४ और उस ने यरूसलम बासियों को आज्ञा किई कि याजकों और लावियों को भाग देओ जिसतें वे परमेश्वर की ५ व्यवस्था में लगे रहें। और आज्ञा निकलते ही इसराएल के सन्तान बहुताई से अन्न और दाखरस और तेल और मधु और भूमि की सारी बढ़ती के पहिले फल लाये और सारी बस्तु का दसवां ६ भाग बहुताई से लाये। और इसराएल और यहूदाह के सन्तान जो यहूदाह की बस्तियों में बास करते थे वे भी बैलों और भेड़ों का दसवां अंश और पवित्र बस्तुन का दसवां अंश जो परमेश्वर उन के ईश्वर के लिये पवित्र किये गये ७ थे लाये और ढेर ढेर रक्खा। उन्हों ने तीसरे मास में ढेरों की नेंव डालना आरंभ किया और सातवें मास में पूरा

८ किया। और जब हिजकियाह और अध्यक्षों ने आके ढेरों को देखा तो उन्हों ने परमेश्वर का और उस के इस-
९ राएल लोगों का धन्य माना। तब हिजकियाह ने ढेरों के विषय में याजकों
१० से और लावियों से प्रश्न किया। और सदूक के घराने के प्रधान याजक अजरियाह ने उसे उत्तर देके कहा कि जब से लोगों ने परमेश्वर के मन्दिर में भेंट लाना आरंभ किया तब से हम खाने को बहुत रखते हैं और बहुत बच रहता है क्योंकि परमेश्वर ने अपने लोगों को बर दिया है और जो बचा सो यही बड़ा ढेर है॥

११ तब हिजकियाह ने आज्ञा किई कि परमेश्वर के मन्दिर में भंडार की कोठ-रियां सिद्ध करो और उन्हों ने सिद्ध
१२ किया। और भेंट और दसवां अंश और पवित्र किई हुई बस्तु बिश्वस्तता से भीतर लाये और जिन पर कननियाह लावी प्रभुता करता था और उस का
१३ भाई सिमई दूसरा। और यहिएल और अजजियाह और नहत और असहेल और यरमूत और यूजबद और इलिएल और इसमाकियाह और महत और बिनायाह हिजकियाह राजा की और परमेश्वर के मन्दिर के अध्यक्ष अजरियाह की आज्ञा से कननियाह और उस के भाई सिमई
१४ के बश में करोड़े थे। और सिमई लावी का बेटा कोर पूरब की ओर द्वारपाल था वह ईश्वर की मनमनता भेंटों पर था कि परमेश्वर के नैबेद्यों को और
१५ महा पवित्र बस्तुन को बांटे। और उस के पीछे अदन और बिनयमीन और यूशूअ और समऐयाह और अमरियाह और सक-नियाह थे कि याजकों के नगरों में अपने भाईबंदों को क्या बड़े क्या छोटे उन के बदों के समान बिश्वस्तता से बांटें।
१६ उन के लिखे हुए पुरुषों को जो तीन बरस से और ऊपर थे अर्थात् उन सब को जो अपनी पारियों के समान अपनी सेवा के कार्य्य करने के लिये प्रतिदिन परमेश्वर के मन्दिर में आते थे। और
१७ उन याजकों को जिन के नाम उन के पितरों की बंशावली के समान लिखे गये और उन लिखे हुए लावियों को जो बीस बरस के और ऊपर थे और अपनी पारियों में सेवा करते थे। और उन के
१८ सब लिखे हुए नन्हे बच्चों और उन की पत्नियों और उन के बेटों बेटियों को अर्थात् उस सारी मंडली को बांट देवें क्योंकि उन्हों ने अपनी अपनी पारियों में बिश्वस्तता से आप को पवित्र किया
१९ था। और हारून के बेटों उन याजकों के लिये जो अपने नगरों के आसपास के खेतों में थे हर एक नगर में कई एक पुरुष जिन के नाम लिखे गये थे ठह-राये गये कि सब याजकों के सब पुरुषों को और सब लिखे हुए लावियों को भाग देवें॥

२० ऐसा हिजकियाह ने यहूदाह में सर्वत्र किया और अपने ईश्वर परमेश्वर की दृष्टि में भला और ठीक और सत्य किया।
२१ और हर एक कार्य्य में जो उस ने ईश्वर के मन्दिर की सेवा में आरंभ किया और व्यवस्था और आज्ञा में और अपने ईश्वर के खोजने की आज्ञा में उस ने अपने सारे मन से किया और भाग्यमान हुआ॥

बत्तीसवां पर्ब्ब।

१ इन बातों के और अच्छे कार्य्यों के स्थिर होने के पीछे असूर का राजा सन-हेरीब आके यहूदाह में पैठा और बाड़ित नगरों के बिरुद्ध छावनी किई और चाहा कि उन्हें अपने बश में करे॥

२ और जब हिजकियाह ने देखा कि सनहेरीब आया है और कि यरूसलम से

३ लड़ने को मन किया। तब उस ने अपने अध्यक्षों से और महावीरों से उन सोतों के जल को जो नगर से बाहर थे बंद करने का परामर्श किया और ४ उन्हों ने उस की सहाय किई। सो बहुत लोग एकट्ठे हुए जिन्हों ने यह कहके सारे सोतों को और उस नाली को जो देश के मध्य में से बहती थी बंद किया कि असूर का राजा आके ५ क्यों मुक्ता जल पावे। और उस ने आप को दृढ़ किया और सारी टूटी हुई भीतों को गुम्मट लों बनाया और बाहर बाहर एक दूसरी भीत और दाऊद के नगर में मिल्लो को सुधारा और सांग और ६ ढाल बहुताई से बनवाईं। और उस ने लोगों पर सेनापति ठहराये और नगर के फाटक की सड़क में उन्हें अपने पास एकट्ठा किया और यह कहके उन्हें ७ शान्ति दिई। कि दृढ़ होके हियाव करो असूर के राजा से और उस के साथ की सारी मंडली से मत डरो और बिस्मित मत होओ क्योंकि हमारे साथी ८ उन के साथियों से अधिक हैं। उस के साथ शारीरिक की भुजा परन्तु हमारे साथ सहाय करने को और हमारे लिये संग्राम करने को हमारा ईश्वर परमेश्वर है और लोग यहूदाह के राजा हिजकियाह के बचन पर स्थिर हुए॥

९ इन बातों के पीछे असूर के राजा सनहेरीब ने अपने सेवकों को यरूसलम में यहूदाह के राजा हिजकियाह राजा को और सारे यहूदाह को जो यरूसलम में थे कहला भेजा परन्तु उस ने और उस के सारे पराक्रम ने लकीश को घेरा। १० कि असूर का राजा सनहेरीब यह कहता है कि तुम लोग किस पर भरोसा रखते हो जो तुम लोग यरूसलम के दृढ़ स्थान ११ में रहते हो। जिसतें अकाल से और पियास से मरो क्या यह कहके हिज-कियाह तुम्हारा बोध नहीं करता कि परमेश्वर हमारा ईश्वर हमें असूर के राजा के हाथ से छुड़ावेगा। क्या उसी १२ हिजकियाह ने उस के ऊंचे स्थानों को और उस की बेदियों को दूर करके और यह कहके यहूदाह और यरूसलम को आज्ञा न किई कि एक बेदी के आगे पूजा करो और उस पर धूप जलाओ। १३ जो मैं ने और मेरे पितरों ने देशों के सारे लोगों से किया है तुम नहीं जानते हो क्या उन देशों के जातिगणों के देव अपने देशों को किसी भांति से उन के १४ देश को मेरे हाथ से छुड़ा सके। उन जातिगणों के सारे देवों में से जिन्हें मेरे पितरों ने सर्वथा नाश किया कौन अपने लोगों को मेरे हाथ से बचा सका कि तुम्हारा ईश्वर तुम्हें मेरे हाथ से बचा १५ सके। इस लिये अब हिजकियाह तुम्हें न भरमावे और इस रीति से तुम्हारा बोध करने न पावे और उस की प्रतीति न करो क्योंकि किसी जातिगण का अथवा राज्य का देव अपने लोगों को मेरे हाथ से और मेरे पितरों के हाथ से छुड़ा न सका तो कितना थोड़ा तुम्हारा ईश्वर १६ हमारे हाथ से तुम्हें छुड़ावेगा। और उस के सेवकों ने ईश्वर परमेश्वर के बिरुद्ध और उस के दास हिजकियाह के बिरुद्ध और बहुत सी बातें कहीं॥

१७ उस ने इसराएल के ईश्वर परमेश्वर की निन्दा की पत्री भी लिखी और उस के बिरुद्ध यह कहा जैसा आन आन देशों के जातिगणों के देव ने अपने लोगों को मेरे हाथ से न छुड़ाया है वैसा हिज-कियाह का ईश्वर उस के लोगों को १८ मेरे हाथ से न छुड़ावेगा। तब वे उन्हें डराने को और दुःख देने को जिसतें नगर को ले लेवें यहूदियों की भाषा में

तत्कालके यरूसलम के लोगों को जो १९ भीत पर थे बोले। और जैसा उन्हों ने पृथिवी के लोगों के देवों के विषय में जो मनुष्य के हाथों से बने थे विरुद्ध कहा तैसा उन्हों ने यरूसलम के ईश्वर के विरोध में॥

२० इस कारण हिजकियाह राजा और अमूस का बेटा यशअियाह भविष्यद्वक्ता स्वर्ग की ओर प्रार्थना करके चिल्लाये। २१ तब परमेश्वर ने एक दूत को भेजा जिस ने असूर के राजा की छावनी में सारे महावीरों को और अगुओं को और सेनापतियों को मार डाला तब लज्जित होके अपने ही देश को वह फिर गया और जब वह अपने देव के मन्दिर में गया उसी के कोख के लोगों ने वहां उसे २२ तलवार से घात किया। यों परमेश्वर ने हिजकियाह को और यरूसलम बासियों को असूर के राजा सनहेरीब के हाथ से और सभों के हाथ से छुड़ाया और चारों २३ ओर से उन की रक्षा किई। और परमेश्वर के लिये बहुतेरे यरूसलम में भेंट और यहूदाह के राजा हिजकियाह के पास बहुमूल्य वस्तु यहां लों लाये कि तब से सारे जातिगणों की दृष्टि में उस का माहात्म्य हुआ॥

२४ उन दिनों में हिजकियाह ऐसा रोगी हुआ कि मरने पर था और परमेश्वर की प्रार्थना किई और उस ने यह कहके २५ उसे एक पता दिया। परन्तु हिजकियाह ने उस के अनुग्रह के समान गुण न माना क्योंकि उस का मन बढ़ गया इस लिये उस पर और यहूदाह पर और २६ यरूसलम पर कोप पड़ा। तथापि हिजकियाह ने अपने उभरने से आप को यहां लों दीन किया उस ने और यरूसलम बासियों ने कि हिजकियाह के दिनों में परमेश्वर का कोप उन पर न पड़ा। २७ और हिजकियाह के धन और प्रतिष्ठा बहुत थी और चांदी सोने के और मणि और सुगन्धद्रव्य के और ढाल के लिये और समस्त प्रकार के बांछित के लिये उस ने भंडार बनाये। २८ और अन्न और दाखरस और तेल की बढ़ती के लिये भंडार और हर प्रकार के पशुओं के लिये स्थान और झुंडों के लिये शाला रखते थे। २९ और भी उस ने अपने लिये नगर और झुंड और ढोर बहुताई से सिद्ध किये क्योंकि ईश्वर ने उसे बहुत संपत्ति दिई थी॥

३० और इसी हिजकियाह ने जैहून के ऊपर के जल की धारा को बंद करके दाऊद के नगर की पश्चिम ओर उतारा और हिजकियाह अपने सारे कार्य्यों में भाग्यवान हुआ। ३१ तथापि बाबुल के अध्यक्ष दो भाषिया के विषय में जिन्हों ने भेजके देश में के आश्चर्य्यित होने का बूझा था उसे परखने के लिये ईश्वर ने उसे छोड़ा जिसतें अपने मन का सब कुछ उसे सूझ पड़े॥

३२ और हिजकियाह की रही हुई क्रिया और उस की भलाई देखो वे अमूस के बेटे यशअियाह भविष्यद्वक्ता के दर्शन में और यहूदाह के और इसराएल के राजाओं की पुस्तक में लिखी हैं। ३३ तब हिजकियाह ने अपने पितरों में शयन किया और उन्हों ने उसे दाऊद के श्रेष्ठ समाधिन में गाड़ा और सारे यहूदाह और यरूसलम बासियों ने उस के मरने में उसे प्रतिष्ठा दिई और उस का बेटा मुनस्सी उस की सन्ती राजा हुआ॥

तेंतीसवां पर्ब्ब।

१ मुनस्सी ने बारह बरस की बय में राज्य करना आरंभ किया और उस ने यरूसलम में पचपन बरस राज्य किया। २ परन्तु उस ने अन्यदेशियों के घिनितों

के समान जिन्हें परमेश्वर ने इसराएल के सन्तान के आगे से दूर किया था परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई ३ क्योंकि उस ने फेरके उन ऊंचे स्थानों को बनाया जिन्हें उस के पिता हिजकियाह ने ढा दिया था और बअलीम के लिये बेदियां खड़ी किईं और कुंज लगाये और स्वर्ग की सारी सेना की पूजा और ४ सेवा किई। और जिस मन्दिर के बिषय में परमेश्वर ने कहा था कि मेरा नाम यरूसलम में सदा रहेगा उस ने उस में ५ भी बेदियां बनाईं। और उस ने स्वर्ग की सारी सेनाओं के लिये परमेश्वर के मन्दिर के दोनों आंगनों में बेदियां बनाईं। ६ और उस ने हिन्नूम की तराई में अपने सन्तानों को आग में से चलाया और मुहूर्त्त माना और मोहनी मंत्र और टोना और भुतनों से व्यवहार करते थे और परमेश्वर को रिस दिलाने को उस ने उस की दृष्टि में बहुत बुराई किई। ७ और जिस खोदी हुई मूर्त्ति को उस ने बनाया था उस ने उसे ईश्वर के मन्दिर में स्थापित किया जिस के बिषय में ईश्वर ने दाऊद से और उस के बेटे सुलेमान से कहा था कि इस मन्दिर में और यरूसलम में जिसे मैं ने इसराएल की सारी गोष्ठियों में से चुन लिया है उस में अपना नाम सदा रक्खूंगा। ८ और फेर मैं इसराएल के चरण को इस देश में से दूर न करूंगा जिसे मैं ने तुम्हारे पितरों के लिये ठहराया है केवल यह कि वे चौकस होके मेरी सारी आज्ञाओं को जैसा मैं ने मूसा के द्वारा से दिई थी सारी व्यवस्था और बिधि ९ और बिचार को पालन करें। सो मुनस्सी ने यहूदाह को और यरूसलम बासियों को भरमाके अन्यदेशियों से परमेश्वर ने इसराएल के सन्तानों के आगे से नष्ट किया था अधिक बुराई करवाई। १० और परमेश्वर ने मुनस्सी से और उस के लोगों से कहा ११ परन्तु उन्हों ने न माना। इस कारण परमेश्वर उन पर असूर के राजा के सेनापतिन को लाया जिन्हों ने सीकरों कांटों में मुनस्सी को धरा और उसे बेड़ियों से जकड़के बाबुल को ले गये। १२ और जब वह बिपत्ति में था तब अपने ईश्वर परमेश्वर की खोज किई और अपने पितरों के ईश्वर के आगे आप १३ को अति नम्र किया। और उस की प्रार्थना किई और उस ने उस की बिनती सुनके मान लिया और उसे उस के राज्य यरूसलम में फेर लाया तब मुनस्सी ने जाना कि परमेश्वर ईश्वर वही है॥

१४ और इस के पीछे उस ने दाऊद के नगर के बाहर जैहून की पश्चिम ओर तराई में अर्थात् मछली फाटक के पैठ लों एक भीत बनाई और उफल को घेरा और उसे अति ऊंचा किया और युद्धपतिन को यहूदाह के सारे बाड़ित १५ नगरों में रक्खा। और उस ने उपरी देवों को और प्रतिमा को परमेश्वर के मन्दिर से और सारी बेदियों को जो उस ने परमेश्वर के मन्दिर के पर्वत पर और यरूसलम में बनवाई थीं दूर किया और १६ नगर के बाहर फेंक दिया। और उस ने परमेश्वर की बेदी सुधारी और उस पर बलिदान और कुशल की भेंट और धन्यबाद की भेंट चढ़ाईं और यहूदाह को इसराएल के ईश्वर परमेश्वर की १७ सेवा करने की आज्ञा किई। तथापि लोग अब लों ऊंचे स्थानों पर बलि चढ़ाते रहे परन्तु केवल अपने ईश्वर परमेश्वर के लिये॥

१८ अब मुनस्सी की रही हुई क्रिया

और अपने ईश्वर के लिये उस की प्रार्थना और इसराएल के ईश्वर परमेश्वर के नाम से जिन दर्शियों ने उस्से कहा उन के बचन इसराएल के राजाओं की १९ पुस्तक में देखो। और उस की प्रार्थना भी और ईश्वर का मनाया जाना और उस के सारे पाप और अपराध और स्थान जहां जहां उस ने ऊंचे स्थान बनाये और अपने नम्र होने से आगे कुंजों को और खोदी हुई मूरतों को स्थापित किया देखो वे दर्शियों की कहावतों में २० लिखे हुए हैं। सो मुनस्सी ने अपने पितरों में शयन किया और उन्हों ने उसी के घर में उसे गाड़ा और उस का बेटा अमून उस की संती राज्य पर बैठा॥

२१ अमून ने बाईस बरस की बय में राज्य करना आरंभ किया और यरूसलम २२ में दो बरस राज्य किया। परन्तु उस ने अपने पिता मुनस्सी के समान परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई क्योंकि अमून ने अपने पिता मुनस्सी की समस्त खोदी हुई मूरतों के लिये बलि चढ़ाया और २३ उन की सेवा किई। और जैसा उस के पिता मुनस्सी ने आप को नम्र किया था तैसा उस ने आप को परमेश्वर के आगे नम्र न किया परन्तु अमून ने अपराध २४ को बढ़ाया। और उस के सेवकों ने उस के बिरुद्ध गुष्ठ बांधके उसी के घर में २५ उसे घात किया। परन्तु जिन्हों ने अमून राजा के बिरुद्ध में गुष्ठ बांधी थी देश के लोगों ने उन सभों को घात किया और देश के लोगों ने उस के बेटे यूसियाह को उस की संती राजा किया॥

चौंतीसवां पर्व्व।

१ यूसियाह ने आठ बरस की बय में राज्य करना आरंभ किया और यरूसलम २ में एकतीस बरस राज्य किया। और परमेश्वर की दृष्टि में भलाई किई और अपने पिता दाऊद की चालों पर चलता था और वह दहिने बायें न मुड़ा। क्यों- ३ कि उस के राज्य के आठवें बरस में जब लों वह बालक था उस ने अपने पिता दाऊद के ईश्वर का खोज करना आरंभ किया और बारहवें बरस में यहूदाह और यरूसलम को ऊंचे स्थानों से और कुंजों से और खोदी हुई मूरतों से और ढाली हुई मूरतों से पवित्र किया। और उस ४ के आगे बआलीम की बेदियों को तोड़ दिया और मूरतें जो उन के ऊपर थीं काट डालीं और कुंजों को और खोदी हुई और ढाली हुई मूरतों को टुकड़ा टुकड़ा किया और धूल बनाके उन की समाधिन पर जिन्हों ने उन पर भेंट चढ़ाई थीं बिथराईं। और उस ने ५ याजकों की हड्डियां उन की बेदियों पर जलाईं और यहूदाह और यरूसलम को शुद्ध किया। ऐसा उन्हों ने मुनस्सी के ६ और इफरायम के और समऊन के नगरों में नफ्ताली लों चारों ओर कुल्हाड़ी से किया। और जब उस ने बेदियों को और ७ कुंजों को तोड़ डाला और खोदी हुई मूरतों की बुकनी किई और इसराएल के सारे देश में से सारी प्रतिमाओं को काट डाला तब यरूसलम में फिर आया॥

अब उस के राज्य के अठारहवें बरस ८ जब उस ने देश को और मन्दिर को शुद्ध किया तब उस ने असलियाह के बेटे साफन को और नगर के अध्यक्ष मआसियाह को और यूआखज के बेटे यूआख स्मारक को अपने ईश्वर परमेश्वर के मन्दिर सुधारने को भेजा। और वे खिलकियाह प्रधान याजक पास पहुंचके रोकड़ को जो ईश्वर के मन्दिर में पहुं- चाई गई थी जिसे द्वारपाल लावियों ने

मुनस्सी के और इफ्रायीम के और इस्राएल के सारे बचे हुए के और सारे यहूदाह और बिनयमीन के हाथों से एकट्ठी किई थी सोंपके यरूसलम को १० फिर आये । और उन्हों ने उसे कार्य्यकारियों के हाथ में जो परमेश्वर के मन्दिर के करोड़े थे रक्खा और उन्हों ने मन्दिर को सुधारने और बनाने के ११ लिये कार्य्यकारियों को दिया । अर्थात् पंकारियों को और थवइयों को दिया जिसतें वे ढाये हुए पत्थर को और जोड़ाव के लिये लट्ठे और घरों के बरगों के लिये जिसे यहूदाह के राजाओं ने १२ नष्ट किया था मोल लेवें । और लोगों ने धर्म्म से कार्य्य किया और मिरारी के बेटे यहत और अबदियाह लावी और किहातियों के बेटों में से जकरियाह और मुसल्लम और सारे लावी जो निपुण बजवैये काम बढ़ाने के लिये उन पर १३ करोड़े थे । और वे बोझियों के और हर प्रकार की सेवा के कार्य्यों पर करोड़े थे और लावियों में से लेखक और प्रधान और द्वारपाल थे ॥

१४ और जब वे परमेश्वर के मन्दिर में से उस रोकड़ को निकाल लाये जो उस में पहुंचाई गई थी तो खिलकियाह याजक ने मूसा के हाथों की परमेश्वर की व्यवस्था की एक पुस्तक पाई । १५ फेर खिलकियाह ने उत्तर देके साफन लेखक से कहा कि मैं ने परमेश्वर के मन्दिर में व्यवस्था की पुस्तक पाई है फिर खिलकियाह ने साफन को पुस्तक १६ सौंपी । और साफन उस पुस्तक को राजा के पास ले गया और राजा के आगे यह कहके बोला कि सब जो आप ने अपने दासों को सैांपा है सो वे करते १७ हैं । और परमेश्वर के मन्दिर में जो रोकड़ पाई गई सो उंडेली गई है और करोड़ों के हाथों में और कार्य्यकारियों के हाथों में सैांपी गई है । तब साफन १८ लेखक राजा से यह कहके बोला कि खिलकियाह याजक ने मुझे एक पुस्तक दिई है और साफन ने उसे राजा के आगे पढ़ा । और ऐसा हुआ कि जब १९ राजा ने व्यवस्था के बचन को सुना तो उस ने अपने कपड़े फाड़े । और राजा २० ने खिलकियाह को और साफन के बेटे अखिकाम को और मीका: के बेटे अबदून को और साफन लेखक को और राजा के सेवक असायाह को कहा । कि मेरे लिये और उन के लिये जो २१ इस्राएल में और यहूदाह में बचे हैं इस पुस्तक के बचन के विषय में जो पाई गई है परमेश्वर से बूझो क्योंकि परमेश्वर का बड़ा कोप हम पर पड़ा है इस कारण कि हमारे पितरों ने परमेश्वर के बचन को पालन करने को सभों के समान जो इस पुस्तक में लिखा है नहीं माना ॥

तब खिलकियाह और वे जो राजा से २२ भेजे गये थे वस्त्र के रक्षक खसर: के बेटे तिकवास के बेटे शलूम की पत्नी भविष्यद्वादिनी खुलद: पास गये अब वह यरूसलम के पाठशाले में रहती थी और उन्हों ने उस के समान उसे कहा । और उस ने उन्हें २३ उत्तर दिया कि इस्राएल का ईश्वर परमेश्वर यों कहता है कि जिस जन ने तुम्हें मुझ पास भेजा है उस्से कहो । कि २४ परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं इस स्थान पर और उस के बासियों पर सारे स्राप जो उस पुस्तक में लिखे हैं जो उन्हों ने यहूदाह के राजा के आगे पढ़ा है लाऊंगा । इस कारण कि उन्हों ने २५ मुझे छोड़के आन आन देवों के लिये धूप जलाया है जिसतें वे मुझे अपने हाथ के सारे कार्य्यों से रिस दिलावें

इस लिये मेरा कोप इस स्थान पर उंडेला जायगा और बुताया न जायगा। २६ और यहूदाह के राजा के विषय में जिस ने तुम्हें परमेश्वर से बूझने को भेजा उस्से यों कहियो कि तेरे सुने हुए बचन पर परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है। २७ इस कारण कि तेरा मन कोमल था और जब तू ने इस स्थान के बिरुद्ध में और यहां के बासियों के बिरुद्ध में परमेश्वर के बचन को सुना था तू ने उस के आगे आप को नम्र किया और मेरे आगे आप को दीन करके अपने बस्त्र को फाड़ा और मेरे आगे बिलाप किया इस लिये परमेश्वर कहता है कि मैं ने सुना है। २८ देखो मैं तुझे तेरे पितरों में बटोरूंगा और तू कुशल से अपनी समाधि में बटोरा जायगा और सारी बिपत्ति जो मैं इस स्थान पर और उस के बासियों पर लाऊंगा तेरी आंखें न देखेंगी सो उन्हों ने फिरके राजा को बचन कहा॥

२९ तब राजा ने भेजके यहूदाह के और यरूसलम के सारे प्राचीनों को एकट्ठे किया। ३० और राजा और यहूदाह के सारे लोग और यरूसलम के निवासी और याजक और लावी और सारे लोग बड़े से लेके छोटे लों परमेश्वर के मन्दिर में गये और उस ने परमेश्वर के नियम की पुस्तक के सारे बचन जो परमेश्वर के मन्दिर में पाई गई पढ़ सुनाये। ३१ और राजा अपने स्थान में खड़ा हुआ और परमेश्वर के मार्ग पर चलने को और उस की आज्ञा और व्यवस्था और बिधि को अपने सारे मन और अपने सारे प्राण से पालन करने को और उस बाचा के बचन को जो इस पुस्तक में लिखा है पूरा करने को परमेश्वर के आगे बाचा बांधी। ३२ और सब जो यरूसलम में और बिनयमीन में पाये गये उन्हें इस बात पर खड़ा किया और यरूसलम के निवासियों ने ईश्वर की अपने पितरों के ईश्वर की बाचा के समान किया। ३३ और यूसियाह ने इसराएल के सन्तानों में के सारे देश में से सारी घिनितों को दूर किया और इसराएल में के सभों से सेवा अर्थात् उन के ईश्वर परमेश्वर की सेवा करवाई उस के जीवन भर वे अपने पितरों के ईश्वर परमेश्वर का पीछा करने से अलग न हुए॥

पतीसवां पर्ब्ब।

१ और यूसियाह ने यरूसलम में परमेश्वर के निमित्त फसह का पर्ब्ब रक्खा और उन्हों ने पहिले मास की चौदहवीं तिथि में फसह बलि किया। २ और उस ने याजकों को उन के ठहराये हुए पद पर स्थापित किया और परमेश्वर के मन्दिर की सेवा के लिये उन्हें उभारा। ३ और उस ने लावियों से जो सारे इसराएल को उपदेश करते थे और परमेश्वर के लिये पवित्र थे कहा कि पवित्र मंजूषा को उस मन्दिर में रक्खो जो इसराएल के राजा दाऊद के बेटे सुलेमान ने बनाया था तुम्हारे कंधे पर बोझ न रहे अब तुम ईश्वर परमेश्वर की और उस के इसराएल लोगों की सेवा करो। ४ और अपने अपने पितरों की गोष्ठी की रीति पर अपनी अपनी पारियों में इसराएल के राजा दाऊद के लिखने के और उस के बेटे सुलेमान के लिखने के समान तुम लोग सिद्ध करो। ५ और लोगों के पुत्रों के पितरों के घराने के भाग के समान और लावियों के घरानों के भाग के समान पवित्रता में खड़े होओ। ६ सो फसह बलि करो और आप आप को पवित्र करो और अपने भाइयों को सिद्ध करो जिसतें मूसा के द्वारा से परमेश्वर

७ के बचन के समान करें। और यूसियाह ने झुंड में से गिनती में तीस सहस मेम्ने और बकरी के बच्चे और तीन सहस बैल लोगों को सब फसह की भेंट के लिये
८ दिये ये राजा की संपत्ति से थे। और उस के अध्यक्षों ने लोगों को और याजकों को और लावियों को मनमंता दिया और ईश्वर के मन्दिर के प्रधान खिलकियाह और जकरियाह और यहिएल ने फसह बलि के लिये याजकों को दो सहस्र छः
९ सौ छोटे पशु और तीन सौ बैल दिये। और कननियाह और समऐयाह और नतनिएल उस के भाई और लावियों के प्रधान हसबियाह और यईएल और यूजबद ने फसह भेंट के लिये लावियों को पांच सहस भेड़ बकरी और पांच सौ बैल दिये॥

१० सो अब सेवा सिद्ध हुई और याजक अपने अपने स्थान पर और लावी अपनी अपनी पारी में राजा की आज्ञा के
११ समान खड़े हुए। और उन्हों ने फसह बलि किया और याजकों ने अपने अपने हाथ से लोहू छिड़का और लावियों ने
१२ उन की खाल खींची। और मूसा की पुस्तक के लिखे हुए के समान उन्हों ने बलिदान की भेंट अलग किई जिसतें वे लोगों के घराने के बिभागों के समान परमेश्वर की भेंट के लिये देवें वैसा
१३ उन्हों ने बैलों से भी किया। फिर उन्हों ने ठहराये हुए के समान फसह आग में भूना और पवित्र भेंटों को उन्हों ने हांडियों में और हंडों में और कड़ाहियों में उसिना और सारे लोगों को शीघ्र बांट दिया॥

१४ और उन्हों ने पीछे अपने और याजकों के लिये सिद्ध किया क्योंकि हारून के सन्तान याजक रात लों बलिदान की भेंट और चिकनाई चढ़ाते थे इस लिये लावियों ने अपने लिये और हारून के
१५ बेटे याजकों के लिये सिद्ध किया। और दाऊद की और आसफ की और हैमान की और राजा के दर्शी यदूतून की आज्ञा के समान आसफ के गायक बेटे अपने अपने ठिकाने पर और द्वारपालक हर एक फाटक पर थे उन्हें अवश्य न था कि वे अपनी अपनी सेवा से अलग होवें क्योंकि उन के भाई लावियों ने
१६ उन के लिये सिद्ध किया था। सो यूसियाह राजा की आज्ञा के समान फसह पालन करने को और परमेश्वर की बेदी पर बलिदान की भेंट चढ़ाने को परमेश्वर की सारी सेवा उसी दिन
१७ सिद्ध हुई। और जो इसराएल के सन्तान पाये गये उन्हों ने फसह और अखमीरी रोटी का पर्व्व रखने को सात दिन लों पालन किया॥

१८ और समुएल भविष्यद्वक्ता के दिनों से इसराएल में ऐसा फसह न हुआ था और इसराएल के सारे राजाओं ने भी ऐसा फसह न रक्खा था जैसा कि यूसियाह और याजकों और लावियों और सारे यहूदाह और इसराएल जो वहां थे और यरूसलम के निवासियों ने रक्खा
१९ था। यूसियाह के राज्य के अठारहवें बरस में यह फसह रक्खा गया॥

२० इन सभों के पीछे जब यूसियाह ने मन्दिर सिद्ध किया तो मिस्र का राजा निकोह फुरात नदी की ओर से करकिमीस में संग्राम के लिये आया तब
२१ यूसियाह उस के बिरुद्ध निकला। परन्तु उस ने दूतों के द्वारा उसे कहला भेजा कि हे यहूदाह के राजा तुझ से मेरा क्या काम आज तेरे बिरुद्ध नहीं परन्तु जिस के घराने से मेरा संग्राम है उस के बिरुद्ध आता हूं क्योंकि परमेश्वर ने मुझे शीघ्र करने को आज्ञा किई सो तू

ईश्वर से रहि जा जो मेरे साथ है
२२ जिसतें वह तुझे नाश न करे। तथापि यूसियाह ने उस्से मुंह न मोड़ा परन्तु उस्से लड़ने के लिये अपना भेष बदला और ईश्वर के बचन को निकोह के द्वारा से न माना और लड़ने के लिये
२३ मजिद्दो की तराई में आया। और धनुषधारियों ने यूसियाह राजा को ओर मारा तब राजा ने अपने सेवकों से कहा कि मुझे ले जाओ क्योंकि मुझे
२४ बड़ा घाव लगा है। इस लिये उस के सेवकों ने उसे उस रथ से उतारा और उस के दूसरे रथ पर उसे चढ़ाया और यरूसलम को ले गये और वह मर गया और अपने पितरों की समाधिन में गाड़ा गया और सारे यहूदाह और यरूसलम ने यूसियाह के लिये बिलाप
२५ किया। और यरमियाह ने यूसियाह के लिये बिलाप किया और सारे गायक और गायिका अपने अपने बिलाप में आज लों यूसियाह की बात कहते हैं और इसराएल में अपने लिये ठहराया और देखो वे बिलापों में लिखे हैं॥

२६ अब यूसियाह की रही हुई क्रिया और उस का अनुग्रह जैसा कि परमेश्वर की व्यवस्था में लिखा है और उस की क्रिया आदि और अंत देखो वे इसराएल के और यहूदाह के राजाओं की पुस्तक में लिखी हैं॥

छत्तीसवां पर्व्व।

१ तब देश के लोगों ने यूसियाह के बेटे यहूअखज को लेके उस के पिता की संती उसे यरूसलम में राजा किया।
२ जब यहूअखज ने राज्य करना आरंभ किया तो उस की बय तेईस बरस की थी और उस ने तीन मास यरूसलम में
३ राज्य किया। तब मिस्र के राजा ने यरूसलम से उसे अलग किया और देश से सौ तोड़े चांदी और एक तोड़ा सोना
४ डांड़ लिया। और मिस्र के राजा ने उस के भाई इलयकीम को यहूदाह और यरूसलम पर राजा किया और उस का नाम यहूयकीम रक्खा और निकोह उस के भाई यहूअखज को पकड़के उसे मिस्र को ले गया॥

५ अब कि यहूयकीम ने राज्य करना आरंभ किया तब वह पचीस बरस का था और ग्यारह बरस उस ने यरूसलम में राज्य किया और अपने ईश्वर परमेश्वर की दृष्टि में उस ने बुराई किई।
६ बाबुल का राजा नबूखुदनजर इस के बिरुद्ध चढ़ आया और बाबुल में ले जाने
७ को उसे सीकरों से बांधा। और नबूखुदनजर परमेश्वर के मन्दिर के पात्र बाबुल को ले गया और बाबुल में अपने मन्दिर में रक्खा॥

८ अब यहूयकीम की रही हुई क्रिया और जो जो घिन उस ने किया और जो उस में पाया गया देखो वे इसराएल और यहूदाह के राजाओं की पुस्तक में लिखी हैं और उस का बेटा यहूयकीन उस की संती राज्य पर बैठा॥

९ जब उस ने राज्य करना आरंभ किया तब यहूयकीन आठ बरस का था और उस ने यरूसलम में तीन मास दस दिन राज्य किया और उस ने परमेश्वर की
१० दृष्टि में बुराई किई। और जब बरस बीत गया तो नबूखुदनजर ने भेजके उसे परमेश्वर के मन्दिर के बांछित पात्र सहित बाबुल में मंगवाया और उस के भाई सिदकयाह को यहूदाह और यरूसलम पर राजा किया॥

११ जब सिदकयाह ने राज्य करना आरंभ किया तो वह एक्कीस बरस का था और उस ने यरूसलम में ग्यारह बरस
१२ राज्य किया। और उस ने अपने ईश्वर

परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई और यरमियाह भविष्यद्वक्ता के आगे परमेश्वर के मुंह से कहते हुए आप को नम्र न
१३ किया। और वह नबूखुदनजर राजा के बिरुद्ध फिर गया जिस ने उसे ईश्वर की किरिया दिलाई थी परन्तु उस ने इसराएल के ईश्वर की ओर से फिरके अपने गले को और अपने मन को कठोर
१४ किया। इस्से अधिक सारे प्रधान याजक और लोगों ने अन्यदेशियों के सारे घिनितों के समान बहुत अपराध किया और परमेश्वर के मन्दिर को जिसे उस ने यरूसलम में पवित्र किया था अशुद्ध किया।
१५ और उन के पितरों के ईश्वर परमेश्वर ने अपने दूतों के द्वारा से यत्न से उन के पास बारंबार भेजा किया कि अपने लोगों पर और अपने निवासस्थान पर
१६ उस की दया थी। परन्तु उन्हों ने परमेश्वर के दूतों को चिढ़ाया और उस के बचन को तुच्छ जाना और उस के भविष्यद्वक्तों की दुर्दशा किई यहां लों कि परमेश्वर का कोप उस के लोगों के बिरुद्ध उभरा और उपाय न रहा॥
१७ इस लिये वह कसदियों के राजा को उन पर लाया जिस ने उन के पवित्र स्थान में उन के तरुणों को तलवार से घात किया और उन के तरुणों पर अथवा कुंआरियों पर अथवा बूढ़ों पर अथवा कुबड़े पुरनियों पर दया न किई उस ने सभों को उस के हाथ में कर दिया।
१८ और ईश्वर के मन्दिर के छोटे बड़े सारे पात्रों को और परमेश्वर के मन्दिर के धन और राजा के और उस के अध्यक्षों के धन सब को वह बाबुल में लाया।
१९ और उन्हों ने ईश्वर के मन्दिर को जला दिया और यरूसलम की भीत को गिरा दिया और उस के सारे भवनों को आग से जला दिया और सारे उत्तम पात्रों
२० को नाश किया। और खड्ग से बचे हुओं को बाबुल में पहुंचाया जहां वे उस के और उस के पुत्रों के सेवक फारस के
२१ राज्य लों बने रहे। जिसतें परमेश्वर का बचन जो यरमियाह के द्वारा कहा गया पूरा होवे कि जब लों भूमि ने अपना बिश्राम पूरा न किया क्योंकि जितने दिनों वह उजाड़ पड़ी रही वह बिश्राम करती थी जब लों सत्तर वर्ष पूरे न हुए॥

२२ अब फारस के राजा खोरस के पहिले बरस जिसतें यरमियाह के द्वारा परमेश्वर का बचन पूरा होवे परमेश्वर ने फारस के राजा खोरस के मन को उभारा कि उस ने अपने सारे राज्य में सर्वत्र प्रचार करवाया और यह कहके लिखवाया भी।
२३ कि फारस का राजा खोरस कहता है कि स्वर्ग के ईश्वर परमेश्वर ने पृथिवी के सारे राज्य मुझे दिये हैं और उस ने अपने लिये यहूदाह के देश के यरूसलम के घर बनवाने को मुझे आज्ञा दिई है सो लो उस के सारे लोगों में तुम्में है उस का ईश्वर परमेश्वर उस के साथ हो और वह चढ़ जाये॥

एजरा की पुस्तक।

पहिला पर्व्व।

१ और जिसतें परमेश्वर का बचन यरमियाह के द्वारा से पूरा होवे परमेश्वर ने फारस के राजा खोरस के मन को उभाड़ा कि फारस के राजा खोरस के राज्य के पहिले बरस में उस ने अपने सारे राज्य में प्रचार करवाया और यह कहिके लिखवाया भी॥

२ कि फारस का राजा खोरस यों कहता है कि परमेश्वर स्वर्ग के ईश्वर ने पृथिवी का सारा राज्य मुझे दिया है और यहूदाह के यरूसलम में अपने लिये एक मन्दिर बनाने को मुझे आज्ञा ३ किई है। उस के सारे लोगों में से तुम्हों में कौन है उस का ईश्वर उस के संग होवे और वह यहूदाह के यरूसलम को चढ़ जावे और परमेश्वर इसराएल के ईश्वर का मन्दिर बनावे वही ईश्वर है जो यरूसलम में है।

४ और जो कोई किसी स्थान में रहता है जहां कहीं वह बास करता हो उसी स्थान के मनुष्य सोना चांदी से और संपत्ति और पशु से यरूसलम में ईश्वर के मन्दिर के लिये मनमनता भेंट से अधिक उस की सहायता करें॥

५ तब यहूदाह और बिनयमीन के पितरों के प्रधान और याजक और लावी उन सभों के साथ उठे जिन के मन को ईश्वर ने जाने को उभाड़ा कि यरूसलम में परमेश्वर का मन्दिर ६ बनावें। और उन की चारों ओर के लोगों ने सोने चांदी के पात्रों से संपत्ति और पशुन से और बहुमूल्य वस्तुन से उन सभों से अधिक मनमनता चढ़ाके उन के हाथों को दृढ़ किया॥

७ और खोरस राजा ने भी परमेश्वर के मन्दिर के उन पात्रों को जिन्हें नबूखुदनजर यरूसलम से निकाल लाया था और देवलों में रक्खा था निकाल ८ लाया। और फारस के राजा खोरस ने उन्हें मिथ्रदाद भंडारी के हाथ से मंगवाया और यहूदाह के अध्यक्ष ९ शसपानअजर के आगे उन्हें गिना। और उन की गिनती सोने की तीस थाली और चांदी की सहस्र थाली और उंतीस १० छुरी। और सोने के तीस कटोरे और दूसरी भांति की चांदी के चार सौ दस ११ कटोरे सहस्र और पात्र। सोने चांदी के सारे पात्र पांच सहस्र चार सौ थे. शसपानअजर इन सभों को जिस समय कि बाबुल से वह बंधुओं को यरूसलम में लाया था लेता आया॥

दूसरा पर्व्व।

१ अब ये प्रदेश के सन्तान हैं जो बंधुआई से निकल गये थे उन में से जो पहुंचाये गये थे जिन्हें बाबुल के राजा नबूखुदनजर ने बाबुल में पहुंचाया था और फेर यरूसलम में और यहूदाह में हर एक जन अपने अपने नगर में २ आया। जो जरूबाबुल के यूशूअ के नहमियाह के शिरायाह के रैअलायाह के मरदकी के बिलशान के मिसफार के बिगवै के रहूम के बअनह के संग आये ३ इसराएली लोगों की गिनती। बुरगुस ४ के सन्तान दो सहस्र एक सौ बहत्तर। सफतियाह के सन्तान तीन सौ। अरख ५ के सन्तान सात सौ पचहत्तर। पखत- ६ मोअब के सन्तान और यूशूअ और यूअब के सन्तान दो सहस्र आठ सौ बारह। ७ एलाम के सन्तान एक सहस्र दो सौ

८ चौवन। जूतू के सन्तान नव सौ पैंता-
९ लीस। जक्की के सन्तान सात सौ साठ।
१० बनी के सन्तान छः सौ बयालीस।
११ बबी के सन्तान छः सौ तेईस। अज-
१२ जाद के सन्तान एक सहस्र दो सौ बाईस।
१३ अदुनिकाम के सन्तान छः सौ छियासठ।
१४ बिगवै के सन्तान दो सहस्र छप्पन।
१५ अदीन के सन्तान चार सौ चौवन।
१६ अतीर से हिज्किय्याह के सन्तान अट्ठानबे।
१७ बैज़ी के सन्तान तीन सौ तेईस।
१८ यूर: के सन्तान एक सौ बारह। हशुम
१९ के सन्तान दो सौ तेईस। जव्वार के
२० सन्तान पंचानबे। बैतलहम के सन्तान
२१ एक सौ तेईस। नतूफ: के मनुष्य
२२ छप्पन। अनतात के मनुष्य एक सौ
२३ अट्ठाईस। अजिमौत के सन्तान बया-
२४ लीस। करयतअरीम कफीर: और बिअरात
२५ के सन्तान सात सौ तैंतालीस। रामः
२६ और जिबअ के सन्तान छः सौ एक्कीस।
२७ मिकमास के एक सौ बाईस मनुष्य।
२८ बैतएल और अई के दो सौ तेईस
२९ मनुष्य। नबू के सन्तान बावन। मज-
३० बीस के सन्तान एक सौ छप्पन। दूसरे
३१ ऐलाम के सन्तान एक सहस्र दो सौ
३२ चौवन। हारिम के सन्तान तीन सौ
३३ बीस। लूद के सन्तान हदीद और ओनू
३४ सात सौ पचीस। यरीहो के सन्तान तीन
३५ सौ पैंतालीस। सनाह के सन्तान तीन सहस्र छः सौ तीस॥

३६ युशूअ के घराने में के यदैअयाह के
३७ सन्तान नव सौ तिहत्तर याजक। अमीर
३८ के सन्तान एक सहस्र बावन। फसिहूर
के सन्तान एक सहस्र दो सौ सैंतालीस।
३९ हारिम के सन्तान एक सहस्र सत्रह॥

४० हूदायाह के सन्तान में से युशूअ के और कदमिएल के सन्तान चौहत्तर लावी॥

४१ आसफ के सन्तान एक सौ अट्ठाईस गायक॥

४२ द्वारपालकों के सन्तान सालो के सन्तान खतीता के सन्तान अकूब के सन्तान
जुल्मान के सन्तान अतीर के सन्तान
सूलम के सन्तान सब एक सौ उनतालीस॥

४३ नथनीम के सन्तान हसूफा के सन्तान
४४ सीहा के सन्तान नसीनेम। कैरुस के
सन्तान सीगहा के सन्तान फदून के
४५ सन्तान। लिबान: के सन्तान हजाब
४६ के सन्तान अकूब के सन्तान। हजाब
के सन्तान शमली के सन्तान हन्नान के
४७ सन्तान। जदील के सन्तान जहर के
४८ सन्तान रियाहाह के सन्तान। रसीन के
सन्तान नकूदा के सन्तान जज्जाम के
४९ सन्तान। ऊज्जा के सन्तान फसीख के
५० सन्तान बैजी के सन्तान। असन: के
सन्तान मऊनिम के सन्तान नफसीम के
५१ सन्तान। बकबूक के सन्तान हकूफा के
५२ सन्तान हरहूर के सन्तान। बसलूत के
सन्तान महीदा के सन्तान हरशा के
५३ सन्तान। बरकूस के सन्तान सीसरा के
५४ सन्तान तिमह के सन्तान। नसीह के
५५ सन्तान खतीफा के सन्तान। सुलेमान के
सेवकों के सन्तान सूती के सन्तान सफी-
५६ रत के सन्तान फरूदा के सन्तान। जअल:
के सन्तान दरकन के सन्तान जद्दील के
५७ सन्तान। सफतियाह के सन्तान खत्तील
के सन्तान फाकिरतुजबिआन के सन्तान
५८ आमी के सन्तान। सब नसीनेम और
सुलेमान के सेवकों के सन्तान तीन सौ
बानवे॥

५९ और ये हैं वे जो तल्ह्मिल्ह से और
तल्हरसा से और करूब से और अद्दान
से और अमीर से चढ़ गये थे पर वे
अपने पितरों के घराने को और अपने
वंश को जो इसराएल के थे अथवा न
६० थे बता न सके। दिलायाह के सन्तान
तूबियाह के सन्तान नकूदा के सन्तान
६१ छः सौ बावन जन। और याजकों के

सन्तानों में हबायाह के कूज के सन्तान बर्जिल्ली के सन्तान जिस ने जिलिअदी बर्जिल्ली की बेटियों में से पत्नी किई थी और उन के नाम से कहलाया।
६२ उन्हों ने अपने को बंशावली की गिनती में ढूंढ़ा परन्तु न पाये गये इस लिये
६३ वे याजकता से अशुद्ध हुए। और अध्यक्ष ने उन्हें कहा कि जब लों ऊरिम और तुम्मिम के साथ एक याजक न उठे तब लों महापवित्र बस्तुन में से न खाना॥
६४ समस्त मंडली एक संग बयालीस
६५ सहस्र तीन सौ साठ थी। उन के दास और दासियों से अधिक और ये सात सहस्र तीन सौ सैंतीस थे और उन में
६६ दो सौ गायक और गायिका थीं। उन के घोड़े सात सौ छत्तीस उन के खच्चर
६७ दो सौ पैंतालीस। उन के ऊंट चार सौ पैंतीस उन के गदहे छ: सहस्र सात सौ बीस॥
६८ और जब उन के पितरों के प्रधान यरूसलम को परमेश्वर के मन्दिर में आये तो ईश्वर के मन्दिर के और उस के स्थान में स्थापन के लिये मन खोलके
६९ चढ़ाया। उन्हों ने अपनी सामर्थ्य के समान कार्य्य के भंडार में एकसठ सहस्र दिरम सोना और पांच सहस्र मान: चांदी और याजकों के सौ बस्त्र दिये॥
७० सो याजक और लावी और लोगों में से और गायक और द्वारपालक और मन्दिर के सेवक अपने अपने नगरों में और सारे इसराएल अपने अपने नगरों में बसे॥

तीसरा पर्ब्ब।

१ और जब सातवां मास पहुंचा और इसराएल के सन्तान अपने नगरों में थे तब लोग यरूसलम में एक जन की नाईं
२ एक संग एकट्ठे हुए। तब यूसदक के बेटे यूशूअ ने और उस के भाई याजकों ने और सियालतिएल के बेटे जरुबाबुल और उस के भाई उठे और इसराएल के ईश्वर की बेदी को बनाया कि जैसा ईश्वर के जन मूसा की व्यवस्था में लिखा है उस पर बलिदान की भेंटें चढ़ावें॥
३ और उन्हों ने उस बेदी को उस के स्थान पर रक्खा क्योंकि उन देशों के लोगों के लिये उन पर भय था और उन्हों ने परमेश्वर के लिये उस पर बलिदान की भेंटें चढ़ाईं अर्थात् सांझ बिहान के बलिदान की भेंटें।
४ और लिखे हुए के समान उन्हों ने तंबुओं का पर्ब्ब रक्खा जैसा कि प्रतिदिन का व्यवहार था उस के समान प्रतिदिन गिन गिनके बलिदान की भेंटें चढ़ाईं।
५ और उस के पीछे नित्य के लिये और अमावस्यों के लिये और परमेश्वर के पवित्र किये हुए सारे पर्ब्बों के लिये और उन सभों के लिये जो परमेश्वर के लिये मन खोलके चढ़ावा लाते थे बलिदान की भेंट चढ़ाईं।
६ सातवें मास की पहिली तिथि से उन्हों ने परमेश्वर के लिये बलिदान की भेंट चढ़ाना आरंभ किया परन्तु परमेश्वर के मन्दिर की नेव अब लों डाली न गई थी।
७ और उन्हों ने थवइयों को और बढ़इयों को रोकड़ और सैदानियों को और सूर के लोगों को अन्नजल और तेल दिया कि फारस के राजा खोरस की आज्ञा के समान देवदारु पेड़ लुबनान से याफा के समुद्र लों लावें॥
८ और यरूसलम में परमेश्वर के मन्दिर में फिर आने के दूसरे बरस और दूसरे मास में सियालतिएल के बेटे जरुबाबुल और यूसदक के बेटे यूशूअ और उन के बचे हुए भाई याजक और लावी और सब जो बंधुआई में से यरूसलम में आये थे आरंभ किया और परमेश्वर के मन्दिर

के कार्य्य के देखने के लिये बीस बरस के और ऊपर लावियों को ठहराया। ९ तब युशूअ अपने बेटे और भाई और कदमियल और उस के बेटे जो यहूदाह के बेटे थे एक संग उठे कि ईश्वर के मन्दिर के कार्य्यकारियों को देखें और हन्नादाद के बेटे और उन के भाई लावी ऐसा ही करते थे॥

१० और जब थवई परमेश्वर के मन्दिर की नेव डालते थे तब याजक बस्त्र पहिने हुए और तुरहियां लेके और आसफ के बेटे लावी करताल लेके उठ खड़े हुए कि इसराएल के राजा दाऊद के समान परमेश्वर की स्तुति करें। ११ और वे पारी पारी स्तुति करते और परमेश्वर को धन्य मानते हुए गाते थे इस कारण कि वह भला है और उस की दया सदा इसराएल पर है और जब वे परमेश्वर की स्तुति करते थे तब सारे लोग परमेश्वर के मन्दिर की नेव डालने में बड़े शब्द से ललकारते थे। १२ परन्तु बहुत से याजकों और लावियों और पितरों के प्रधानों में प्राचीन जिन्हों ने पहिले मन्दिर को देखा था जब इस मन्दिर की नेव उन के देखने में डाली गई तो बड़े शब्द से बिलाप किया और बहुतेरे आनन्द के मारे ललकार उठे। १३ यहां लों कि लोग आनन्द के शब्द में और लोगों के बिलाप के शब्द में बिथरा न कर सके क्योंकि लोगों ने बड़े शब्द से ललकारा और शब्द दूर लों सुना गया॥

चौथा पर्ब्ब।

१ और जब यहूदाह और बिनयमीन के बैरियों ने सुना कि देश से निकाले हुओं के बेटे इसराएल के ईश्वर परमेश्वर के २ लिये मन्दिर बनाते हैं। तब उन्हों ने जरुबाबुल के और पितरों के प्रधान के पास आके उन से कहा कि हमें भी अपने साथ बनाने देओ क्योंकि हम तुम्हारी नाईं तुम्हारे ईश्वर को खोजते हैं और हम असूर के राजा असरहद्दून के दिनों से जो हमें उठा लाया है उस के लिये बलि चढ़ाते हैं। ३ परन्तु जरुबाबुल और युशूअ और इसराएल के पितरों के रहे हुए प्रधानों ने उन्हें कहा कि तुम्हारा काम नहीं कि हमारे साथ हमारे ईश्वर के लिये मन्दिर बनाओ परन्तु हम एकट्ठे होके आप इसराएल के ईश्वर परमेश्वर के लिये बनावेंगे जैसी फारस के राजा खोरस ने हमें आज्ञा किई है। ४ तब देश के लोगों ने यहूदाह के लोगों के हाथों को ढीला किया और ५ बनाने में उन्हें सताया। और फारस के राजा खोरस के समय से लेके फारस के राजा दारा के राज्य लों उन्हों ने उन के कार्य्य भंग करने को उन के बिरुद्ध में रोकड़ देकर मंत्रियों को ठहराया॥

६ और उन्हों ने शेरशाह राजा के आरंभ में यहूदाह के और यरूसलम निवासियों के बिरुद्ध दोषपत्र लिखा। ७ और अरदशेर के दिनों में बिसलाम ने और मित्रदाद ने और ताबिएल ने और उन के रहे हुए संगियों ने फारस के राजा अरदशेर पास पत्री लिखी और वह पत्री अरामी भाषा में थी और उस का अर्थ भी अरामी भाषा में किया गया। ८ रहूम प्रधान मंत्री ने और शम्सी लेखक ने राजा अरदशेर के पास यरूसलम के बिरुद्ध इस भांति की पत्री लिखी। ९ तब रहूम प्रधान मंत्री ने और शम्सी लेखक ने और उन के बचे हुए साथियों ने दीनाई और अफरसतक: और तरफील: और अफारसी और आर्किवी और बाबुलनी और सूसानकी और दिहावी और एलामी। १० और जातिगणों के रहे

हुए जिन्हें महान और कुलीन असनफ़ुर ने लाके समरैन के नगरों में और नदी इस पार के रहे हुओं को बसाया इत्यादि॥

११ उन्हों ने राजा अरदशेर पास यही पत्री भेजी कि आप के सेवक जो नदी के इस अलंग रहते हैं इत्यादि समय १२ में। राजा पर प्रगट होय कि यहूदी जो आप की ओर से हमारे पास आये हैं सो यरूसलम में आके उस दंगाइत और दुष्ट नगर को बनाते हैं और भीतों को खड़ी किये हैं और नेवों को जोड़ा १३ है। सो अब राजा पर प्रगट होवे कि यदि यह नगर बन जाय और भीत उठ जाय तो वे शुल्क और कर और पोत न देंगे और राजाओं के भंडार की १४ टूटी होगी। अब इस कारण कि हम भवन का लोन खाते हैं उचित नहीं है कि हम राजा का अनादर देखें इस लिये हम ने भेजके राजा को जनाया १५ है। जिसतें आप अपने पितरों के बर्णन की पुस्तक में ढूंढ़ लीजिये सो आप बर्णन की पुस्तक में पावेंगे और जानेंगे कि यह नगर दंगाइत नगर और राजाओं का और प्रदेशों का दुःखदायक और कि उन्हों ने उसी के मध्य पुरातन समय में दंगा किया है उसी कारण से १६ यह नगर नाश किया गया था। इस लिये हम राजा को जताते हैं कि यदि यह नगर बनाया जाय और उस की भीत खड़ी किई जाय तो इसी कारण से नदी के इस अलंग आप का कुछ भाग न रहेगा॥

१७ तब राजा ने रहूम प्रधान मंत्री को और शम्सी लेखक को और उन के रहे हुए साथियों को जो समरैन में रहते हैं और नदी पार के उबरे हुओं को उत्तर दिया कि अमुक समय में कुशल। १८ जिस पत्री को तुम ने हमारे पास भेजा खोल खोल मेरे आगे पढ़ी गई। १९ और मैं ने आज्ञा किई है और ढूंढ़ा गया है और पाया गया है कि पुरातन समय में इस नगर ने राजाओं के बिरुद्ध में आप को उभाड़ा है और उस में दंगा और हुल्लड़ हुआ है। २० यरूसलम पर बलवंत राजा भी हुए हैं जिन्हों ने नदी पार के सभों पर राज्य किया है और उन्हें शुल्क और कर और पोत दिये जाते थे। २१ सो अब आज्ञा करो कि वे थम जायें और कि यह नगर बनाया न जावे जब लों मुझ से आज्ञा न पावें। २२ सो अब चौकस होओ जिसतें इस बात में कुछ न घटे राजाओं के लिये क्यों घटती होवे॥

२३ सो जब अरदशेर राजा की पत्री का उतारा रहूम के और शम्सी लेखक के और उन के संगियों के आगे पढ़ा गया तब वे शीघ्र करके यरूसलम को यहूदियों के पास चढ़ गये और भुजा के बल से उन का कार्य्य बंद करवाया। २४ तब यरूसलम में परमेश्वर के मन्दिर का कार्य्य थम गया सो फारस के राजा दारा के राज्य के दूसरे बरस लों बंद रहा॥

पांचवां पर्व्व

१ और हज्जी भविष्यद्वक्ता ने और ईद्दू के बेटे जकरियाह भविष्यद्वक्ता ने यहूदाह और यरूसलम के यहूदियों को इसराएल के ईश्वर के नाम से भविष्य कहा। २ तब सियालतिएल का बेटा जरुबाबुल और यूसदक का बेटा युशूअ उठे और यरूसलम में ईश्वर के मन्दिर का बनाना आरंभ किया और उन के साथ सहायता के लिये ईश्वर के भविष्यद्वक्ते थे॥

३ उस समय नदी के इस पार के अध्यक्ष ततनी और सितारबाजनाई और उन के संगी उन पास आके बोले कि तुम्हें यह

मन्दिर बनाने को और यह भीत उठाने
४ को किस ने आज्ञा दिई है । तब हम
ने उन्हें इस रीति से कहा कि जो बनता
है उन के बनवैयों के नाम क्या हैं ।
५ परन्तु परमेश्वर की दृष्टि यहूदियों के
प्राचीनों पर थी कि वे उन्हें रोक न
सके थे जब लों यह बात दारा पास
न पहुंची और तब उन्हों ने उस के
विषय में उत्तर दिया ॥
६ पत्री का उतारा जो नदी के इस
पार के अध्यक्ष ततनी और सितारबाज-
नाई और उस के संगियों ने अफरसकी
जो नदी के इस पार रहते थे दारा
राजा पास भेजा ॥
७ उन्हों ने उस पास पत्री लिखी जिस
में यों था दारा राजा को सारा कुशल ।
८ राजा पर प्रगट होवे कि हम यहूदाह
के प्रदेश परमेश्वर के मन्दिर में गये जो
बड़े बड़े पत्थरों से बनता है और भीतों
पर लट्ठे धरे हैं और यह कार्य्य शीघ्र
बनता जाता है और उन के हाथों में
९ बढ़ जाता है । तब हम ने उन प्राचीनों
से यों कहके पूछा कि यह मन्दिर बनाने
को और ये भीतें उठाने को किस ने
१० तुम्हें आज्ञा दिई । आप को जनाने के
लिये हम ने उन का नाम भी पूछा जिसतें
हम उन के प्रधान जनों के नाम लिखें ।
११ और उन्हों ने हमें यों उत्तर दिया कि
हम स्वर्ग और पृथिवी के ईश्वर के
सेवक हैं और वही मन्दिर बनाते हैं जो
बहुत बरसों से बना था जिसे इसराएल
के एक महाराज ने बनवाया और उठाया
१२ था । परन्तु जब हमारे पितरों ने स्वर्ग
के ईश्वर का कोप भड़काया तब उस
ने उन्हें बाबुल के राजा कसदी नबू-
खुदनजर के हाथ में सौंपा जिस ने इस
मन्दिर को नष्ट किया और लोगों को
१३ बाबुल में ले गया । परन्तु बाबुल के
राजा खोरस के पहिले बरस खोरस
राजा ने ईश्वर के इस मन्दिर बनाने के
लिये आज्ञा किई । और ईश्वर के मन्दिर १४
के सोने चांदी के पात्रों को भी जिन्हें
नबूखुदनजर यरूसलम के मन्दिर से
निकाल लाया और बाबुल के मन्दिर में
पहुंचाया उन्हों को खोरस राजा ने बाबुल
के मन्दिर से निकाल लिया और शश-
पानआजर नाम एक जन को सौंपा जिसे
उस ने अध्यक्ष किया था । और उसे १५
कहा कि इन पात्रों को लेके जा
और यरूसलम के मन्दिर में पहुंचा
और ईश्वर का मन्दिर अपने स्थान में
बनाया जावे । तब वही शशपानआजर १६
आया और यरूसलम में ईश्वर के मन्दिर
की नेव डाली और उस समय से अब
लों बन रहा है और अब लों बन नहीं
चुका । अब यदि राजा को अच्छा जान १७
पड़े तो राजा के भंडारघर में जो बाबुल
में है ढूंढ़ा जावे कि खोरस राजा ने
यरूसलम में ईश्वर का मन्दिर बनाने को
आज्ञा किई थी कि नहीं और इस बात
के विषय में राजा हम पर अपनी इच्छा
जनावे ॥

छठवां पर्व्व ।

तब दारा राजा की आज्ञा से पुस्तकों १
का घर जहां बाबुल में धन धरा जाता
था ढूंढ़ा गया । और अखमताभवन में २
जो मादी के प्रदेश में है एक पत्र पाया
गया और उस में यों लिखा था ॥
कि खोरस राजा के पहिले बरस में ३
खोरस राजा ने आज्ञा किई कि यरू-
सलम में ईश्वर के लिये मन्दिर उस
स्थान में जहां बलि चढ़ाते थे बनाया
जावे और उस की नेवें दृढ़ता से डाली
जायें उस की ऊंचाई साठ हाथ और
चौड़ाई साठ हाथ की । तीन पांती ४
बड़े बड़े पत्थर की और एक पांती नये

लट्ठे की ओर उस की लागत राजभवन ५ से दिई जावे। और ईश्वर के मन्दिर के जो जो सोना चांदी के पात्र नबूखुदनज़र यरूसलम के मन्दिर से निकाल लाया और बाबुल में पहुंचाया था सो भी फेर दिया जावे और यरूसलम के मन्दिर में अपने अपने स्थान में लाया जावे और ईश्वर के मन्दिर में रक्खा जावे॥

६ अब नदी के पार का अध्यक्ष ततनी और शितारबोज़नाई और उन के संगी अफरसकी जो नदी के पार हैं तुम वहां ७ से दूर होओ। ईश्वर के इस मन्दिर के कार्य्य को बन्द न करो यहूदियों के अध्यक्ष को और उन के प्राचीनों को ईश्वर के इस मन्दिर को उस स्थान में ८ बनाने देओ। और मैं इस्से अधिक मैं ने ईश्वर के इस मन्दिर के बनाने के लिये एक आज्ञा किई है कि तुम यहूदियों के प्राचीनों से यों करियो कि राजा की संपत्ति से अर्थात् नदी के पार के कर से उन लोगों को तुरन्त उठा दिया जावे ९ जिसतें वे रोके न जावें। और जो कुछ उन्हें स्वर्ग के ईश्वर के बलिदान की भेंट के लिये बैल और मेंढे और मेम्ने और गोहूं और लोन और दाखरस और तेल यरूसलम में याजकों के ठहराने के समान अवश्य होवे सो उन्हें प्रतिदिन १० निरंतर दिया जावे। जिसतें वे स्वर्ग के ईश्वर के लिये बलि के सुगंध चढ़ावें और राजा के और उस के बेटों के ११ जीवन के लिये प्रार्थना करें। और मैं आज्ञा भी दे चुका कि जो कोई इस बचन को पलटेगा उस के घर से लट्ठा खींचा जावे और खड़ा किया जाके वहीं उस पर टांगा जावे और इस बात के उस का घर कूड़ा का ढेर किया १२ जावे। और जिस ईश्वर ने अपने नाम को उस में बसाया है सारे राजाओं को और लोगों को जो यरूसलम में ईश्वर के इस मन्दिर को पलटने को और नाश करने को हाथ बढ़ावें नाश करे मुझ दारा ने यह आज्ञा ठहराई है सो शीघ्र किई जावे॥

१३ तब नदी के इस पार के देश के अध्यक्ष ततनी और शितारबोज़नाई और उन के साथियों ने दारा राजा के भेजने के समान शीघ्रता से किया। १४ और यहूदियों के प्राचीनों ने बनाया और हज्जी भविष्यद्वक्ता और ईदू के बेटे ज़करियाह भविष्यद्वक्ता के भविष्य कहने से भाग्यवान हुए और बनाके इसराएल के ईश्वर की आज्ञा के समान और फारस के राजा खोरस की और दारा की और अरतखशेर की आज्ञा के समान पूरा किया। १५ और यह मन्दिर अदार मास की तीसरी तिथि में बन गया जो दारा राजा के छठवें बरस में था॥

१६ और इसराएल के सन्तान याजक और लावी और देश से निकाले गयों के सन्तानों ने आनन्द से ईश्वर के इस मन्दिर की प्रतिष्ठा किई। १७ और ईश्वर के मन्दिर की प्रतिष्ठा में सौ बैल और दो सौ मेंढे और चार सौ मेम्ने और सारे इसराएल के पाप की भेंट के लिये इसराएल की बारह गोष्ठी की गिनती के समान बारह बकरे चढ़ाये। १८ और मूसा की पुस्तक के लिखे हुए के समान उन्हों ने याजकों को उन के बिभाग में और लावियों को उन की पारियों पर यरूसलम में ईश्वर की सेवा के लिये रक्खा॥

१९ और पहिले मास की चौदहवीं तिथि में बंधुआई के सन्तानों ने फसह का पर्ब्ब रक्खा। २० क्योंकि याजकों और लावियों ने आप को पवित्र किया था वे सब के सब शुद्ध हुए और बंधुआई के सारे

सन्तानों के लिये और अपने याजक भाइयों के लिये और अपने लिये उन्हों ने फसह बलि किया। २१ और इसराएल के सन्तान जो बंधुआई से फिर आये और सभों ने जो कि इसराएल के ईश्वर परमेश्वर की खोज के लिये देश के अन्यदेशियों की मलीनता से उन में आप को अलग किया था खाया। २२ और आनन्द से सात दिन अखमीरी रोटी का पर्ब्ब रक्खा क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें आनन्दित किया था और असूर के राजा के मन को उन की ओर फेरा कि ईश्वर इसराएल के ईश्वर के मन्दिर के कार्य्य में उन के हाथ को दृढ़ करे॥

सातवां पर्ब्ब।

१ अब इन बातों के पीछे फारस के राजा अरदशेर के राज्य में एजरा जो शिरायाह का बेटा अजरियाह का बेटा २ खिलकियाह का बेटा। सलूम का बेटा सदूक का बेटा अखितूब का बेटा। ३ अमरियाह का बेटा अजरियाह का ४ बेटा मिरयात का बेटा। जरहियाह का बेटा उज्जी का बेटा बुक्की का ५ बेटा। अबिसूअ का बेटा फीनिहास का बेटा इलिअजर का बेटा हारून ६ प्रधान याजक का बेटा। यही एजरा बाबुल से उठ चला और मूसा की व्यवस्था में जिसे इसराएल के ईश्वर परमेश्वर ने दिया था निपुण अध्यापक था और राजा ने उस की सारी बांछा उसे दिई इस लिये कि परमेश्वर उस ७ का ईश्वर उस का सहायक था। और अरदशेर राजा के सातवें बरस इसराएल के सन्तानों में से और याजकों में से और लावी और गायक और द्वारपाल और मन्दिर के सेवक यरूसलम को ८ गये। और राजा के सातवें बरस के पांचवें मास में वह यरूसलम में पहुंचा। ९ क्योंकि उस ने बाबुल से चढ़ आने का आरंभ पहिले मास की पहिली तिथि में किया और ईश्वर की सहायता के समान जो उस पर थी पांचवें मास की पहिली तिथि में यरूसलम में पहुंचा। १० क्योंकि एजरा ने परमेश्वर की व्यवस्था के खोज के लिये और उसे पालने के लिये और इसराएल में बिधि और बिचार सिखाने के लिये अपने मन को सिद्ध किया था॥

११ अब उस पत्री का उतारा जो अरदशेर राजा ने एजरा याजक और लेखक को जो दिया सो यह है परमेश्वर की आज्ञाओं के बचन और इसराएल के बिधिन में निपुण था॥

१२ राजाओं का राजा अरदशेर स्वर्ग के ईश्वर की व्यवस्था के सिद्ध लेखक एजरा याजक को इत्यादि। १३ मैं आज्ञा करता हूं कि मेरे राज्य में इसराएल के सारे लोग और उस के याजक और लावी जो अपनी अपनी इच्छा से यरूसलम को चढ़ जाने चाहते हैं तेरे साथ जावें। १४ जैसा कि तू राजा के आगे से और उस के सात मंत्रियों से भेजा जाता है कि तू अपने ईश्वर की व्यवस्था के समान जो तेरे हाथ में है यहूदाह और यरूसलम के बिषय में बूझे। १५ और सोना चांदी जो राजा और उस के मंत्रियों ने इसराएल के ईश्वर के लिये जिस का निवास यरूसलम में है मनमंता भेंट चढ़ाई है पहुंचावे। १६ और सारे सोना चांदी जो तू बाबुल के सारे प्रदेश में लोगों के और याजकों के मनमंता की भेंट के संग जो अपने ईश्वर के मन्दिर के लिये जो यरूसलम में है पा सक्ता है। १७ जिसतें तू इस रोकड़ से शीघ्र बैल और मेंढ़े और मेम्ने उन के मांस की और पीने की भेंट

सहित मोल लेवे और यरूसलम में अपने ईश्वर के मन्दिर की बेदी पर चढ़ावे।
१८ और उबरे हुए सोना चांदी से जो कुछ तुझे और तेरे भाइयों को करने को अच्छा लगे सो अपने ईश्वर की इच्छा
१९ के समान करें। और जो जो पात्र तेरे ईश्वर के मन्दिर की सेवा के लिये तुझे दिये गये हैं सो यरूसलम के ईश्वर के
२० आगे सौंप दे। और तेरे ईश्वर के मन्दिर के लिये जो कुछ अधिक आवश्यक होय जो तुझे देने पड़े सो राजा के
२१ भंडारस्थान से देना। और मैं अर्थात् मैं ही अरतशेर राजा सारे भंडारियों के लिये जो नदी पार हैं आज्ञा करता हूं कि स्वर्ग के ईश्वर की व्यवस्था का लेखक एजरा याजक को जो कुछ तुम
२२ से चाहे। सो एक सौ तोड़े चांदी और सौ परिमाण गोहूं और सौ बत्त दाखरस और सौ बत्त तेल लों और बिना परिमाण
२३ नोन दिया जावे। जो कुछ स्वर्ग के ईश्वर की आज्ञा है सो स्वर्ग के ईश्वर के मन्दिर के लिये यत्न से किया जावे क्योंकि राजा के राज्य के और उस के
२४ बेटों के बिरुद्ध क्यों कोप होवे। और हम तुम्हें जता देते हैं कि याजकों के और लावियों के और गायकों और द्वारपालकों और मन्दिर के सेवकों के अथवा ईश्वर के इस मन्दिर के सेवकों के बिषय में कर अथवा शुल्क अथवा पोत उन से लेना तुम्हें उचित नहीं
२५ है। और हे एजरा तू अपने ईश्वर की बुद्धि के समान् जो तुझ में है न्यायक और बिचारक को ठहरा जिसतें नदी पार के सारे लोगों का सब जो तेरे ईश्वर की व्यवस्था जानते हैं न्याय करें और जो नहीं जानते हैं तू उन्हें सिखला।
२६ और जो कोई तेरे ईश्वर की व्यवस्था को और राजा की व्यवस्था को पालन न करे उन पर दण्ड की आज्ञा शीघ्र किई जावे चाहे मृत्यु लों अथवा देश से निकाले जाने लों अथवा संपत्ति को लेने लों अथवा बंधन में डालने लों॥

२७ परमेश्वर हमारे पितरों के ईश्वर का धन्यबाद होवे जिस ने यरूसलम में अपने मन्दिर को शोभित करने के लिये ऐसी बात राजा के मन में डाली। और
२८ राजा के और उस के मंत्रियों के आगे और राजा के सारे पराक्रमी अध्यक्षों के आगे मुझ पर दया किई और परमेश्वर की सहायता के समान मैं ने दृढ़ता पाई और मैं ने अपने संग चलने के लिये इसराएल में से श्रेष्ठ मनुष्यों को एकट्ठा किया

आठवां पर्ब्ब

१ अब उन के पितरों का प्रधान और उन की बंशावली जो अरतशेर राजा के राज्य में मेरे संग बाबुल से चढ़ गये
२ थे ये हैं। फीनिहास के बेटों में से गैरसुम ईतमर के बेटों में से दानिएल
३ दाऊद के बेटों में से हत्तूश। सकनियाह के बेटों में से फुरगुस के बेटों में से जकरियाह और उस के संग डेढ़ सौ
४ पुरुष गिने गये। पखतमोआब के बेटों में से जरहियाह का बेटा इलियाहूऐनी
५ और उस के संग दो सौ पुरुष। सकनियाह के बेटों में से यहजिएल का बेटा और उस के संग तीन सौ पुरुष।
६ अदीन के बेटों में से भी यूनतन के बेटे अबद और उस के संग पचास पुरुष।
७ और ऐलाम के बेटों में से अतालयाह का बेटा यसायियाह और उस के संग
८ सत्तर पुरुष। और सफतियाह के बेटों में से मीकाएल का बेटा जबदियाह और उस के संग अस्सी पुरुष। यूआब के
९ बेटों में से यहिएल का बेटा अबदियाह और उस के संग दो सौ अठारह

१० पुरुष। और सलूमियत के बेटों में से यूसिफियाह का बेटा और उस के संग ११ एक सौ साठ पुरुष। और बबी के बेटों में से बबी का बेटा जकरियाह और १२ उस के संग अट्ठाईस पुरुष। अजगाद के बेटों में से हक्कतान का बेटा यूहनान और उस के संग एक सौ दस १३ पुरुष। और अदूनिकाम के पिछले बेटों में से जिन के नाम ये हैं इलीफलत यईएल और समऐयाह और उन के संग १४ साठ पुरुष। बिगवै के भी बेटों में से ऊती और जबूद और उन के संग सत्तर पुरुष॥

१५ फिर मैं ने उन्हें उस नदी के पास जो अहवा की ओर बहती है एकट्ठे किया और वहां हम ने तंबुओं में तीन दिन डेरा किया और मैं ने लोगों को और याजकों को देखा और लावी के १६ बेटों में से वहां किसी को न पाया। तब मैं ने इलिअजर को और अरिएल को और समऐयाह को और इल्नातन को और यारीब को और इल्नातन को और नातन को और जकरियाह को और मुसल्लम श्रेष्ठ जनों को और बुद्धिमान यूयरीब को और इल्नातन को भी १७ बुलाया। और आज्ञा करके मैं ने उन्हें इद्दू प्रधान के पास कसिफिया में भेजा और जो कुछ उन्हें इद्दू को और उस के भाई मन्दिर के सेवकों को कसिफिया के स्थान में कहना था बताया जिसतें हमारे ईश्वर के मन्दिर के लिये सेवकों १८ को हमारे पास लावें। और हम पर ईश्वर की सहायता से वे इसराएल के बेटे लावी के बेटे मुहली के बेटों में से एक बुद्धिमान जन अर्थात् सरिबियाह को उस के बेटे और उस के भाइयों सहित १९ अठारह को लाये। और हसबियाह को और उस के साथ मिरारी के बेटों में से यसअयाह को उस के भाईबंद और उस के बेटे बीस जन। २० और मन्दिर के सेवकों में से भी जिन्हें दाऊद ने और अध्यक्षों ने लावियों की सेवा के लिये ठहराया था दो सौ बीस सेवक उन सभों के नाम लिखे हुए थे॥

२१ और मैं ने वहां अहवा की नदी पर व्रत प्रचारा जिसतें हम ईश्वर के आगे अपने को कष्ट देवें और अपने लिये और अपने बालकों के लिये और अपनी सारी संपत्ति के लिये उस्से ठीक मार्ग ढूंढ़ें। २२ क्योंकि मार्ग में बैरियों के बिरुद्ध सहायता के लिये मैं ने योद्धा और घोड़चढ़ों को राजा से मांगने में लाज किया क्योंकि हम यह कहके राजा से बोले कि हमारे ईश्वर का हाथ उन सभों पर भलाई के लिये है जो उसे ढूंढ़ते हैं परन्तु उस का पराक्रम और कोप उन सभों के बिरुद्ध है जो उसे त्यागते हैं। २३ सो हम ने इस बात के लिये व्रत करके अपने ईश्वर की बिनती किई और उस ने हमारी बिनती सुनी॥

२४ तब याजकों में से मैं ने बारह प्रधान को अलग किया अर्थात् सरिबियाह और हसबियाह और उन के संग उन के दस भाईबंदों को। २५ और उन्हें सोना चांदी और पात्र अर्थात् हमारे ईश्वर के मन्दिर की भेंट जिन्हें राजा और उस के मंत्री और उस के अध्यक्ष और सारे इसराएल ने भेंट के लिये चढ़ाया था तौल दिया। २६ अर्थात् मैं ने साढ़े छः सौ तोड़े चांदी और सौ तोड़े चांदी के पात्र और सौ तोड़ा सोना। २७ और एक सहस्र दिरम के सोनहुले बीस कटोरे जगमगाते हुए पीतल के दो पात्र जिन का मोल सोने की नाईं बहुमूल्य था तौल दिये। २८ और मैं ने उन्हें कहा कि तुम परमेश्वर के लिये पवित्र हो और पात्र भी पवित्र

और सेना चांदी तुम्हारे पितरों के ईश्वर परमेश्वर के लिये मनमंता भेंट है। २९ चौकस होके रक्षा करो जब लों तुम यरूसलम में परमेश्वर के मन्दिर की कोठरियों में प्रधान याजकों के और लावियों के और इसराएल के पितरों के ३० प्रधानों के आगे तौल न देओ। सो याजकों और लावियों ने सेना चांदी और पात्र को तौल लिया जिसतें यरूसलम में हमारे ईश्वर के मन्दिर में पहुंचावें॥

३१ तब हम यरूसलम को जाने के लिये पहिले मास की बारहवीं तिथि में अहवा नदी से चल निकले और हमारे ईश्वर की सहायता हम पर थी और उस ने हमें बैरियों के और जो मार्ग में घात में लगे थे उन के हाथों से बचाया। ३२ फिर हम यरूसलम में पहुंचके तीन दिन ३३ वहां रहे। अब चौथे दिन में वह सेना चांदी और पात्र हमारे ईश्वर के मन्दिर में ऊरियाह याजक के बेटे मरीमात के हाथ में तौला गया और उस के संग फीनिहास के बेटे इलिअजर और उन के संग यशूआ का बेटा यूजबद और बिनवी का बेटा नोअदियाह लावी थे। ३४ हर एक को गिनके और तौलके और उसी समय में सारी तौल लिखी गई॥

३५ निकाले हुओं के सन्तान जो बंधुआई से फिर आये थे इसराएल के ईश्वर के बलिदान की भेंटों के लिये सारे इसराएल के कारण बारह बैल और पाप की भेंट के लिये छानवे मेंढ़े और सतहत्तर मेम्ने और बारह बकरे भेंट दिये सब परमेश्वर के बलिदान की भेंट के ३६ लिये। और उन्हों ने राजा की पत्रियों को राज्य के प्रधानों को और नदी के इस पार के अध्यक्षों को दिया और उन्हों ने लोगों की और ईश्वर के मन्दिर की सहायता किई॥

नवां पर्व्व।

सो जब ये बातें हुईं तब अध्यक्ष मुझ पास आके बोले कि इसराएल के लोग और याजक और लावी ने देश के लोगों में से आप को अलग न किया पर कनआनियों और हित्तियों और फारज़ियों और यबूसियों और अम्मूनियों और मोआबियों और मिस्रियों और अमूरियों के घिनितों के समान करते हैं। २ क्योंकि उन्हों ने उन की लड़कियों में से अपने लिये और अपने बेटों के लिये लिया यहां लों कि पवित्र बंश देश के लोगों में मिल गये हैं हां इस अपराध में अध्यक्ष और आज्ञाकारियों के हाथ अगुआ हुए हैं। ३ सो मैं ने यह बात सुनके अपना बस्त्र और अपना ओढ़ना फाड़ा और अपने सिर के बाल और दाढ़ी नोच डाली और बिस्मित बैठ ४ गया। तब उन के पापों के कारण जो उठाये गये थे इसराएल के ईश्वर के बचन से हर एक जो डरता था मेरे आगे बटुर गया और सांझ की भेंट लों मैं बिस्मित बैठा रहा॥

५ और सांझ की भेंट के समय में मैं अपने शोक से उठा और अपने बस्त्र और ओढ़ने फाड़े हुए घुटना टेका और अपने ईश्वर परमेश्वर के आगे हाथ ६ फैलाये। और कहा कि हे मेरे ईश्वर मैं लज्जित हूं और हे मेरे ईश्वर मैं तेरी ओर सिर उठाने को लजाता हूं क्योंकि हमारे सिर पर हमारी दुष्टता बढ़ गई है और हमारा अपराध स्वर्ग लों उठ ७ गया है। अपने पितरों के समय से आज लों हम ने बड़ा अपराध किया है और हमारी दुष्टता के लिये हम और हमारे राजा और हमारे याजक देशियों के राजाओं के हाथ में तलवार और बंधुआई में लूट और मुंह की घबराहट में

८ सौंपे गये जैसा आज हैं। और अब पल भर के लिये हमारे ईश्वर परमेश्वर से अनुग्रह हुआ है कि हमारी बचती कुछ रहने दे और अपने पवित्रस्थान में हमें एक कील मारने दे जिसतें ईश्वर हमारी आंखों को ज्योतिमान करे और हमारी बंधुआई में तनिक फेर जिलावे।
९ क्योंकि हम बंधुए थे तथापि हमारी बंधुआई में ईश्वर ने हमें त्यागा नहीं किया है परन्तु फारस के राजाओं की दृष्टि में हम पर दया किई है कि हमें फेरके जिलावे जिसतें हम अपने ईश्वर के मन्दिर को खड़ा करें और उस के उजाड़ों को बना डालें जिसतें यहूदाह और यरूसलम में हमें एक बाड़ा देवे।
१० और अब हे हमारे ईश्वर इस के पीछे हम क्या कहें क्योंकि हम ने तेरी
११ आज्ञाओं को त्यागा है। जो तू ने अपने सेवक भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा से यह कहके आज्ञा किई है कि जिस देश में अधिकार करने के लिये तुम जाते हो सो देश लोगों की मलीनता से और घिनितों से जिन्हों ने अपनी अशुद्धता से उसे मुंहामुंह भर दिया है
१२ अशुद्ध है। इस लिये अब अपनी बेटियों को उन के बेटों को मत देओ और उन की बेटियों को अपने बेटों के लिये मत लेओ और उन के कुशल और उन के धन कधी मत चाहो जिसतें तुम बलवन्त होओ. देश की उत्तम वस्तु भोग करो और अधिकार के लिये अपने सन्तानों को सदा के लिये उसे छोड़ जाओ।
१३ और हे हमारे ईश्वर जैसा तू ने हमें हमारे पापों से थोड़ा दण्ड दिया है और हमें ऐसा बचाव दिया है और हमारे कुकर्म्मों के लिये और हमारे महा अपराधों के लिये यह सब हम पर पड़ा
१४ है। यदि हम इन घिनितों के लोगों से नाता करके तेरी आज्ञाओं को फेर उल्लंघन करें तो तू क्रोध करके हमें यहां लों न मिटा डालेगा कि कोई उबरा हुआ और बचाव न होवे। हे
१५ परमेश्वर इसराएल के ईश्वर तू धर्म्मी है क्योंकि आज की नाईं अब लों हम बच निकले हैं सो देख हम अपने अपराधों में तेरे आगे हैं क्योंकि इसी लिये हम तेरे आगे ठहर नहीं सक्ते॥

दसवां पर्व्व।

१ सो जब एजरा प्रार्थना कर चुका और बिलाप करते हुए ईश्वर के मन्दिर के आगे लोटता था और पाप मानता था तब इसराएल में से स्त्री पुरुष और बालक की एक अति बड़ी मंडली उस पास एकट्ठी हुई क्योंकि लोगों ने बहुत ही बिलाप किया। तब ऐलाम के बेटों में से यहिएल के बेटे सकनियाह ने एजरा को उत्तर देके कहा कि हम ने अपने ईश्वर का अपराध किया है और देश के लोगों में से उपरी स्त्रियों को लिया है जद भी इसराएल में इस बात के बिषय में आशा है।
३ सो अब आओ हम अपने ईश्वर के लिये वाचा बांधें कि अपने प्रभु के और उन के मंत्र के समान जो परमेश्वर की आज्ञा से डरते हैं सारी पत्नियों को और उन्हें जो उन से उत्पन्न हुए हैं दूर करें और यह व्यवस्था के समान होवे।
४ उठ क्योंकि यह तेरा कार्य्य और हम भी तेरे साथी सो दृढ़ हो और कर॥

तब एजरा उठा और याजकों और लावियों को और सारे इसराएल को यह किरिया खिलाई कि हम इस बचन के समान करेंगे और उन्हों ने किरिया खाई। तब एजरा ईश्वर के मन्दिर के आगे से उठा और इलयसीब के बेटे यहूहनान की कोठरी में गया और वहां

आके न रोटी खाई न जल पीया क्योंकि जो बंधुआई में पहुंचाये गये थे उन के पाप के कारण वह बिलाप करता था। ७ और उन्हों ने बंधुआई के बालकों में सारे यहूदाह और यरूसलम में प्रचार करवाया कि वे यरूसलम में एकट्ठे होवें। ८ और कि जो कोई अध्यक्षों और प्राचीन लोगों के परामर्श के समान तीन दिन के भीतर न आवे उस की सारी संपत्ति डांड़ में लिई जायगी और वह आप मंडली से जो बंधुआई में पहुंचाये गये थे अलग किया जायगा॥

९ तब यहूदाह के और बिनयमीन के सारे लोगों ने नवें मास की बीसवीं तिथि में तीन दिन के भीतर आप को यरूसलम में एकट्ठा किया और सारे लोग ईश्वर के मन्दिर के पथ में इस बात के लिये और झड़ी के मारे बैठे कांप रहे थे। १० और एजरा याजक ने खड़ा होके उन्हें कहा कि तुम लोगों ने अपराध किया है और उपरी स्त्रियों को लेके इसराएल के अपराध को बढ़ाया है। ११ इस लिये अब परमेश्वर अपने पितरों के ईश्वर के आगे मान लेओ और उस की इच्छा पालो और देश के लोगों से और उपरी स्त्रियों से आप आप को अलग करो॥

१२ तब सारी मंडलियों ने उत्तर देके बड़े शब्द से कहा कि जैसा आप ने कहा है तैसा हमें करना अवश्य है। १३ परन्तु लोग बहुत हैं और बड़ी बृष्टि का समय है और हम बाहर ठहर नहीं सक्ते और यह कार्य्य दो एक दिन का नहीं है क्योंकि इस बात में हम बहुतों ने अपराध किया है। १४ सो अब मंडली के सारे आज्ञाकारी उठें और जिन्हों ने हमारे नगरों में उपरी स्त्रियों को लिया है सब आवें और उन के संग हर एक नगर के प्राचीन और उस के न्यायी ठहराये हुए समयों में आवें जब लों इस बात के लिये हमारे ईश्वर का महा कोप हम से फिर न जावे। १५ इस कार्य्य पर केवल असहेल के बेटे यूनतन और तिकवः के बेटे यहजियाह खड़े हुए और लावी मुसल्लम और सबती ने उन की सहाय किई॥

१६ और बंधुआई के सन्तानों ने वैसा किया और एजरा याजक और पितरों के कई प्रधान अपने अपने पितरों के घराने के समान और सब के सब अपने नाम के समान अलग किये गये और दसवें मास की पहिली तिथि में इस बात के पूछने को बैठ गये। १७ और पहिले मास की पहिली तिथि में उन्हों ने सारे मनुष्यों से जिन्हों ने उपरी स्त्री किई थीं समाप्त किया। १८ और याजकों के बेटों में भी पाये गये जिन्हों ने उपरी स्त्रियां ग्रहण किईं अर्थात् यूसदक का बेटा यूशूअ के बेटों में से और उस के भाई मअसियाह और इलिअजर और यरीब और जिदलयाह। १९ और उन्हों ने अपनी अपनी पत्नी को त्याग करने को हाथ मारा और अपराधी होके झुंड में का एक मेढ़ा अपने अपराध के लिये चढ़ाया। २० और अमीर के बेटों में से हनानी और जबदियाह। २१ और हारिम के बेटों में से मअसियाह और इलियाह समएयाह और यहिएल और उज्जियाह। २२ और फशिहूर के बेटों में से इलियूऐनी और मअसियाह और इसमअएल और नतनिएल और यूजबद और इलिअसः। २३ और लावियों में का भी यूजबद और शिमई और केलायाह जो कलीता है और फतहियाह और यहूदाह और इलिअजर। २४ और गायकों से भी

हलयसीब और हारिमाबकों में से अलूम २५ और तूलस और कहे । और इसराएल में से पुरगुस के बेटों में से रमियाह और यज्जियाह और मिलकियाह और मिनयमीन और इलिअजर और मल- २६ कियाह और बिनायाह । और ऐलाम के बेटों में से मत्तनियाह और जकरियाह और यहिएल और अबदी और यरीमात २७ और इलियाह । और जत्तू के बेटों में से इलियूएनी और इलयसीब और मत्तनियाह और यरीमात और जबद २८ और अजीजा । और बबी के बेटों में से यहूहनान और हननियाह और जबी २९ और अतली । और बानी के बेटों में से मुसल्लुम और मलूक और अदायाह और यसूब और सियाल और रामात । ३० और पखतमोअब के बेटों में से अदना और किलाल और बिनायाह और मअ- सियाह और मत्तनियाह और बजलिएल ३१ और बिन्नू और मुनस्सी । और हारिम के बेटों में से इलिअजर और यस्सीयाह और मलकियाह और समईयाह और ३२ समऊन । और बिनयमीन और मलूक ३३ और समरियाह । हशूम के बेटों में से मत्तानी और मत्तता और जबद और इलिफलत और यरीमी और मनस्सी ३४ और शिमई । बानी के बेटों में से मअदी ३५ और अमराम और ऊएल । बिनायाह ३६ और बेदयाह और कलूही । और ३७ बनयाह और मरीमात और इलयसीब । मत्तनियाह और मत्तनी और यअसी । ३८ और बानी और बिनवी और शिमई । ३९ और सलमियाह और नातन और ४० अदायाह । मकनदबी और सासी और ४१ सारी । अजरिएल और सलमियाह और ४२ समरियाह । सलूम और अमरियाह और ४३ यूसुफ । नबू के बेटों में से यईएल और मत्तितियाह और जबद और जबीना और ४४ यद्दी और यूएल और बिनायाह । इन सभों ने उपरी पत्नियों को लिया था और उन में से कितनी पत्नियां थीं जिन से उन के बालक हुए थे ॥

नहमियाह की पुस्तक ।

पहिला पर्व्व ।

हकलियाह के बेटे नहमियाह के बचन और बीसवें बरस के किसलिउ मास में जब मैं सूसन के भवन में था २ तब ऐसा हुआ । कि हमारे भाइयों में से हनानी और यहूदाह में से कई जन आये और मैं ने उन से उन यहूदियों के विषय में जो बच निकले थे और बंधु- आई से रह गये थे और यरूसलम के ३ विषय में पूछा । और उन्हों ने मुझे कहा कि प्रदेश में जो बंधुआई से बच रहे हैं सो अति कष्टित और निन्दित हैं यरू- सलम की भीत भी टूटी पड़ी है और उस के फाटक आग से जले हुए हैं ॥

४ और यों हुआ कि जब मैं ने ये बातें सुनीं तो बैठके रोया और कई दिन लों बिलाप किया और ब्रत रखके स्वर्ग के ५ ईश्वर के आगे प्रार्थना किई । और कहा हे परमेश्वर स्वर्ग के ईश्वर सर्व्व- शक्तिमान महान और भयंकर जो अपने

प्रेमियों से और अपने आज्ञापालकों से ६ नियम और दया रखता है। मैं तेरी बिनती करता हूं कि अपने कान लगा और अपनी आंखें खोल जिसतें तू अपने सेवक की प्रार्थना सुने जो मैं तेरे आगे अब रात दिन तेरे सेवक इसराएल के सन्तानों के लिये करता हूं जो हम ने तेरे बिरुद्ध किया है मान लेता हूं मैं ने और मेरे पिता के घराने ने पाप किया ७ है। हम ने तेरे आगे अति बुराई किई है और उन आज्ञाओं को और बिधिन को और बिचारों को जो तू ने अपने सेवक मूसा को आज्ञा किई थी पालन ८ नहीं किया है। मैं तेरी बिनती करता हूं कि उस बचन को स्मरण कर जो तू ने अपने दास मूसा को यह कहके आज्ञा किई थी कि यदि अपराध करोगे तो मैं तुम्हें जातिगणों में बिथराऊंगा। ९ परन्तु जो तुम मेरी ओर फिरोगे और मेरी आज्ञाओं को पालन करोगे और उन्हें मानोगे तो यद्यपि तुम्में से स्वर्ग के अत्यंत सिवाने लों दूर किया जावे तौभी मैं उन्हें वहां से बटोरूंगा और उस स्थान में पहुंचाऊंगा जिसे मैं ने १० चुना है कि मेरा नाम वहां रहे। अब ये तेरे सेवक और तेरे लोग हैं जिन्हें तू ने अपने महापराक्रम और बलवन्त भुजा ११ से छुड़ाया है। हे प्रभु मैं तेरी बिनती करता हूं कि अपने सेवक की प्रार्थना की ओर अब तेरा कान झुके और तेरे उन दासों की प्रार्थना की ओर जो तेरे नाम से डरा चाहते हैं और मैं तेरी बिनती करता हूं कि आज अपने सेवक को भाग्यमान कर और इस जन की दृष्टि में उसे दया दे क्योंकि मैं राजा के घर का कटोरादायक था॥

दूसरा पर्व्व।

१ और अरदशेर राजा के बीसवें बरस नीसान मास में दाखरस उस के आगे था और मैं ने दाखरस उठाके राजा को दिया और आगे मैं उस के समीप उदा- २ सीन न था। तब राजा ने मुझे कहा कि तेरा रूप क्यों उदास है तू तो रोगी नहीं मन के शोक को छोड़ यह कुछ ३ नहीं तब मैं बहुत डर गया। और राजा से कहा कि राजा सदा जीवे अब वह नगर जो कि मेरे पितरों का समाधिस्थान है उजाड़ पड़ा होय और उस के फाटक भस्म किये गये हों तो मेरा रूप क्यों न उदास ४ होवे। तब राजा ने मुझे कहा कि फेर तू क्या चाहता है तब मैं ने स्वर्गीय ईश्वर ५ की प्रार्थना किई। और मैं ने राजा से कहा कि यदि राजा की इच्छा होय और जो आप के दास ने आप की दृष्टि में कृपा पाई है तो मुझे यहूदाह में अपने पितरों के समाधि के नगर में भेजिये जिसतें मैं ६ उसे बनाऊं। तब राजा और रानी ने जो उस के पास बैठी थी मुझे कहा कि तेरी यात्रा कब लों होगी और तू कब फिरेगा सो मुझे भेजने में राजा की इच्छा हुई और मैं ने उस के लिये समय ठह- ७ राया। फिर मैं ने राजा से कहा कि जो राजा की इच्छा होय तो नदी पार के अध्यक्षों के लिये मुझे पत्रियां दिई जायें जिसतें वे मुझे यहूदाह लों पहुं- ८ चावें। और राजा के बनरक्षक आसफ के लिये एक पत्री जिसतें वह मन्दिर के भवन के फाटकों के और नगर की भीत के और अपने रहने के घर के निमित्त लट्ठे के लिये लकड़ी देवे और जैसा कि ईश्वर की कृपा का हाथ मुझ पर था वैसा राजा ने मुझे दिया॥

९ तब मैं नदी पार के अध्यक्षों कने पहुंचा और राजा की पत्रियां उन्हें दिईं अब राजा ने मेरे साथ सेनापतिन को और घोड़चढ़ों को भेजा। जब हुरनी १०

सनबल्लत और अम्मूनी दास तूबियाह ने सुना तब उन्हें बड़ा शोक हुआ कि इसराएल के सन्तानों का कुशलचाहक एक जन आया है॥

११ सो मैं यरूसलम में पहुंचा और वहां १२ तीन दिन रहा। फिर मैं रात को उठा मैं और थोड़े जन मेरे संग और जो कुछ मेरे ईश्वर ने मेरे मन में यरूसलम में करने को डाला था सो मैं ने किसी से न कहा और मेरे बाहन को छोड़ १३ कोई पशु मेरे संग न था। और मैं तराई के फाटक से अर्थात् नाग कूआं के आगे से और कूड़ाखिड़की से रात को बाहर निकला और यरूसलम की टूटी हुई भीतों को और उस के जले हुए फाटकों १४ को देखा। तब मैं सोता के फाटक को और राजा के कुंड को चढ़ गया परन्तु वहां मेरे बाहन का निकास न १५ था। फिर मैं रात को नाली के पास होके चढ़ गया और भीत को देखा और घूमके तराई के फाटक से भीतर फिर आया॥

१६ और अध्यक्षों ने न जाना कि मैं कहां गया अथवा क्या किया और अब लों मैं ने न तो यहूदियों से न याजकों से न कुलीनों से न अध्यक्षों से न रहे हुए १७ कार्य्यकारियों से कहा। तब मैं ने उन्हें कहा कि हमारे दुःख को देखते हो कि यरूसलम उजाड़ है और उस के फाटक जले हुए हैं सो आओ यरूसलम की भीत को बनावें जिसतें आगे निन्दित न १८ होवें। तब मैं ने ईश्वर की सहाय के विषय में जो मुझ पर थी और राजा के बचन भी जो उस ने मुझे कहे थे उन्हें कहा तब उन्हों ने कहा कि चलो उठके बनावें सो इस सुकार्य्य के लिये उन्हों ने अपने हाथ को दृढ़ किया॥

१९ परन्तु जब हूरनी सनबल्लत ने और अम्मूनी दास तूबियाह ने और अरबी जिसम ने सुना तब उन्हों ने हमें ठट्ठे में उड़ाके हमारी निन्दा किई और कहा कि तुम यह क्या करते हो क्या राजा २० से फिर जाओगे। तब मैं ने उत्तर देके उन्हें कहा कि स्वर्ग का ईश्वर हमें भाग्यवान करेगा इस लिये हम उस के दास उठके बनावेंगे परन्तु यरूसलम में तुम्हारा भाग अथवा पद अथवा स्मरण नहीं है॥

तीसरा पर्ब्ब।

१ तब प्रधान याजक इलयसीब ने अपने याजक भाइयों के संग उठके भेड़ फाटक बनाये उन्हों ने उसे पवित्र करके उस के केवाड़ों को खड़ा किया अर्थात मियाह के गुम्मट लों और हननिएल के २ गुम्मट लों पवित्र किया। और उस के लग यरीहो के लोगों ने बनाया और उन के लग इमरी के बेटे जक्कूर ने बनाया॥

३ परन्तु मछली फाटक को हस्सिनाह के बेटों ने बनाया उन्हों ने उस के लट्ठे धरे और उस के केवाड़ों को उस के ताले और उस के अड़ंगे सहित खड़ा ४ किया। और उन के लग कूज के बेटे ऊरियाह के बेटे मरीमात ने सुधारा और उन के लग मुसीजबीएल के बेटे बरकियाह के बेटे मुसल्लम ने सुधारा और उन के लग बअना के बेटे सदूक ने सुधारा। ५ और उन के लग तकूअइयों ने सुधारा परन्तु उन के कुलीनों ने अपने प्रभु के कार्य्य में हाथ न लगाये॥

६ फिर फसीख के बेटे यूयदअ और बसूदियाह के बेटे मुसल्लम ने पुराना फाटक सुधारा उन्हों ने उस के लट्ठे धरे और उस के केवाड़ों को उस के ताले और उस के अड़ंगे सहित खड़ा ७ किया। और उन के लग जिबऊनी मलतियाह ने और मेरूनाती यदून ने और

खिबऊनी के और मिसफ: के लोगों ने नदी के इस अलंग अध्यक्ष के सिंहासन लों सुधारा। उस के लग सोनारों में से हरहया के बेटे उज्जिएल ने सुधारा और उस के लग गंधियों के बेटे हननियाह ने भी सुधारा और उन्हों ने यरूसलम की चौड़ी भीत लों सुधारा। ९ और उन के लग यरूसलम के आधे का अध्यक्ष हूर के बेटे रिफायाह ने सुधारा। १० और उन के लग हरूमाफ के बेटे यादायाह ने अपने घर के सन्मुख सुधारा और उस के लग हसबनियाह के बेटे हतूश ११ ने सुधारा। हारिम के बेटे मलकियाह ने और पखतमोअब के बेटे हसूब ने दूसरा भाग और भट्ठों का गुम्मट बनाया। १२ और उस के लग यरूसलम के एक भाग के अध्यक्ष हलोहेश के बेटे सलूम ने और उस की बेटियों ने सुधारा॥

१३ हनून और जनूह के बासियों ने तराईफाटक सुधारा उन्हों ने उसे बनाया और उस के केवाड़ों को उस के ताले और उस के अड़ंगे सहित खड़ा किया और कूड़ाफाटक लों भीत पर सहस हाथ सुधारे॥

१४ परन्तु कूड़ाफाटक को बैतुलकरम के भाग के अध्यक्ष रैकाब के बेटे मलकियाह ने सुधारा उस ने उसे बनाया और उस के केवाड़ों को उस के ताले और अड़ंगे सहित खड़ा किया॥

१५ परन्तु सोताफाटक को मिसफ: के भाग का अध्यक्ष कुलहोसी के बेटे [illegible]न ने सुधारा उस ने उसे बनाया और पाटा और उस के केवाड़ों को उस के ताले और अड़ंगे सहित खड़ा किया और राजा की बारी के लग सिलह के कुंड की भीत और सीढ़ी लों जो दाऊद के नगर से उतरती है बनाई। १६ उस के पीछे बैतसूर के आधे भाग के अध्यक्ष अजबूक के बेटे नहमियाह ने दाऊद के समाधिन के सन्मुख और बनाये हुए कुंड लों और पराक्रमियों के घर लों सुधारा। १७ उस के पीछे लावियों में से बानी के बेटे रहूम ने सुधारा उस के लग कईल: के आधे भाग के अध्यक्ष हसबियाह ने अपने भाग में सुधारा। १८ उस के पीछे उन के भाई अर्थात् कईल: के आधे भाग के अध्यक्ष हन्नादाद के बेटे बब्बी ने सुधारा। १९ और उस के लग मिसफ: के अध्यक्ष यूशूअ के बेटे एजर ने दूसरा टुकड़ा घूम से शस्त्रस्थान की चढ़ाई के सन्मुख सुधारा। २० उस के पीछे जब्बी के बेटे बरूक ने यत्न से घूम से दूसरे टुकड़े के प्रधान याजक इलयसीब के घर के द्वार लों सुधारा। २१ उस के पीछे कूज के बेटे ऊरियाह के बेटे मरीमात ने दूसरे टुकड़े इलयसीब के घर के द्वार से इलयसीब के घर के अन्त लों सुधारा। २२ और उस के पीछे चौगान के मनुष्य याजकों ने सुधारा। २३ उस के पीछे बिनयमीन और हसूब ने अपने घर के सन्मुख सुधारा उस के पीछे अननियाह के बेटे मअसियाह के बेटे अजरियाह ने अपने घर के पास सुधारा। २४ उस के पीछे हन्नादाद के बेटे बिनवी ने दूसरा टुकड़ा अजरियाह के घर से घूम लों अर्थात् कोने लों सुधारा। २५ ऊज्जी के बेटे फलाल ने उस घूम और गुम्मट के सन्मुख जो राजा के ऊंचे भवन के ऊपर से जाता है जो बन्दीगृह के आंगन के निकट है सुधारा उस के पीछे फुरगुस के बेटे फिदायाह ने। २६ और मन्दिर के सेवक उफल पर पूर्ब्ब की ओर जलफाटक के सन्मुख और गुम्मट जो बाहर है रहते थे॥

२७ उन के पीछे तकूइयों ने बड़े गुम्मट के सन्मुख जो बाहर है अर्थात् उफल की भीत लों दूसरा टुकड़ा सुधारा॥

२८ याजकों ने हर एक अपने अपने घर के सन्मुख घोड़फाटक के आगे से सुधारा। २९ उन के पीछे अमीर के बेटे सदूक ने अपने घर के सन्मुख सुधारा और उस के पीछे पूर्बफाटक के रक्षक सकनियाह के बेटे समऐयाह ने भी सुधारा। ३० उस के पीछे सलमियाह के बेटे हननियाह ने और सलफ के छठवें बेटे हनून ने दूसरा टुकड़ा सुधारा उस के पीछे बरकियाह के बेटे मुसल्लम ने अपनी कोठरी के सन्मुख सुधारा। ३१ उस के पीछे सोनार के बेटे मलकियाह ने मन्दिर के सेवकों के और बैपारियों के स्थान लों मिफकादफाटक के सन्मुख घूम के कोने लों सुधारा। ३२ और कोने की चढ़ाई के मध्य में भेड़फाटक सोनारों ने और बैपारियों ने सुधारा॥

चौथा पर्ब्व।

१ और ऐसा हुआ कि जब सनबल्लत ने सुना कि हम भीत बनाते हैं तब वह बहुत कोपित और क्रोधित हुआ २ और यहूदियों को चिढ़ाया। और अपने भाइयों के और समरः की सेना के आगे यह कहके बोला कि ये निर्बल यहूदी क्या करते हैं क्या उन्हें रहने देंगे क्या वे बलि चढ़ावेंगे वे दिन भर में बना डालेंगे और क्या वे जलाये हुए कूड़ों के ३ ढेरों से पत्थर जगावेंगे। तब अम्मूनी तूबियाह ने जो उस पास खड़ा था उसे कहा कि जो वे भी बनाते हैं यदि गीदड़ चढ़ जाय वह उन की पत्थर की भीत को तोड़ देगा॥

४ हे हमारे ईश्वर सुन क्योंकि हम निन्दित हैं और उन की निन्दा उन्हीं के सिर पर फेर और बंधुआई के देश ५ में उन्हें अहेर के लिये दे। और उन की बुराई मत ढांप और तेरे आगे उन का पाप मिटाया न जाय क्योंकि थवइयों के आगे उन्हों ने रिस दिलाया है॥

६ सो हम ने भीत बनाई और आधी लों सारी भीत जुट गई क्योंकि लोगों का मन काम पर था॥

७ परन्तु ऐसा हुआ कि जब सनबल्लत और तूबियाह और अरबियों और अम्मूनियों और अशदूदियों ने सुना कि यरूसलम की भीत बन गई और दरारें बंद होने लगीं तब वे अति कोपित हुए। ८ और सभों ने मिलके युक्ति बांधी कि आके यरूसलम के बिरुद्ध लड़ें और हानि पहुंचावें। ९ तथापि हम ने अपने ईश्वर की प्रार्थना किई और उन के कारण उन के बिरुद्ध दिन रात पहरा बैठा रक्खा। १० और यहूदाह ने कहा कि बोझियों का बल घट गया और कूड़ा बहुत है यहां लों कि हम भीत नहीं बना सक्ते हैं। ११ और हमारे बैरियों ने कहा कि जब लों हम उन के मध्य में न आ लें और उन्हें घात न करें और कार्य्य को रोक न लेवें वे न जानेंगे न देखेंगे॥

१२ और ऐसा हुआ कि जब उन के लग के निवासी यहूदी आये तब उन्हों ने हमें दस बार कहा कि अवश्य है कि हर स्थान से हमारे पास आओ। १३ इसी लिये मैं ने वहां के नीचे के स्थानों की भीत के पीछे और ऊंचे स्थानों में मैं ने लोगों को उन के घराने के समान तलवार और भाला और धनुषों को लिये हुए बैठाया। १४ और मैं ने देखा और उठा और कुलीनों को और प्रधानों को और बचे हुए लोगों को कहा कि तुम उन से मत डरो महा भयंकर परमेश्वर का स्मरण करो और अपने भाइयों और बेटों और बेटियों और पत्नियों और घरों के लिये लड़ो॥

१५ और ऐसा हुआ कि जब हमारे बैरियों ने सुना कि यह बात हम पर प्रगट हुई और कि ईश्वर ने उन का परामर्श व्यर्थ किया तब हम सब भीत के हर एक जन अपने अपने कार्य्य में फिर लगे। १६ और ऐसा हुआ कि उस समय से मेरे आधे सेवक तो काम में लगे और आधे ने भाले और ढाल और धनुष और झिलम पकड़ा और अध्यक्ष यहूदाह के सारे घराने के पीछे। १७ जो जो भीत के ऊपर जोड़ाई करते थे जो बोझा ढोते थे बोझवैया सहित एक एक हाथ से कार्य्य करता था और दूसरे में हथियार पकड़ता था। १८ क्योंकि हर एक थवई अपनी कटि पर तलवार बांधे था और जोड़ाई करता था और तुरही के बजवैये मेरे लग थे। १९ फिर मैं ने कुलीनों को और अध्यक्षों को और रहे हुए लोगों को कहा कि कार्य्य महान और बड़ा है और भीत पर हम एक दूसरे से अलग हैं। २० सो जहां तुम लोग तुरही का शब्द सुनो तहां हमारे पास चले आओ हमारा ईश्वर हमारे लिये लड़ेगा॥

२१ सो हम ने कार्य्य में परिश्रम किया और भोर से तारा दिखाई देने लों आधे जन भाला लिये रहे। २२ मैं ने भी उस समय में लोगों से कहा कि हर एक जन अपने अपने सेवक को ले ले यरूसलम में टिके जिसतें रात को हमारे लिये पहरा होवे और दिन को कार्य्य करें। २३ सो न मैं ने न मेरे भाईबंदों ने न मेरे सेवकों ने न पहरे के मनुष्यों ने जो मेरे पीछे थे स्नान की छून को छोड़ हम्में से किसी ने अपने वस्त्रों को न उतारा॥

पांचवां पर्ब्ब।

१ और लोगों ने और उन की पत्नियों ने अपने भाईबंद यहूदियों पर दोष लगाया। २ क्योंकि कितने कहते थे कि हम और हमारे बेटे बेटियां बहुत हैं इस लिये हम अन्न लेवें जिसतें खायें और जीयें। ३ कितनों ने यह भी कहा कि हम ने महंगी में अन्न मोल लेने के लिये अपनी भूमि और दाख की बारी और घरों को बंधक रक्खा है। ४ और कितनों ने यह भी कहा कि राजा का कर देने के लिये हम ने अपनी भूमि और दाख की बारी पर रोकड़ उधार लिया है। ५ तथापि हमारा मांस हमारे भाइयों के मांस के समान और हमारे बालक उन के बालकों के समान और अब देख हम अपने बेटे बेटियों को बंधुआई में दास होने के लिये लाते हैं और हमारी बेटियों में से कितनी बंधुआई में जा चुकी हैं और हम अशक्त हैं क्योंकि और लोग हमारी भूमि और दाख की बारी रखते हैं॥

६ जब मैं ने यह बचन और उन का चिल्लाना सुना तो मैं अति रिसिआया। ७ तब मैं ने अपने मन में बिचारा और कुलीनों को और अध्यक्षों को डपटके कहा कि तुम हर एक जन अपने अपने भाई से ब्याज लेते हो और मैं ने उन के बिरुद्ध बड़ी मंडली एकट्ठी किई। ८ और उन्हें कहा कि हम ने अपनी सामर्थ्य के समान अपने यहूदी भाइयों को जो अन्यदेशियों में बेचे गये थे छुड़ा लिया और तुम क्या अपने भाइयों को बेचोगे अथवा वे हमारे पास बेचे जायेंगे तब वे चुप रहे और कुछ उत्तर न पाया। ९ फिर मैं ने कहा कि तुम जो करते हो सो अच्छा नहीं हमारे बैरी अन्यदेशियों के कारण ईश्वर के भय में चलने को क्या तुम्हें उचित नहीं। १० और मैं भी मेरे भाई और मेरे सेवकों ने उन्हें अन्न और रोकड़ दिये हैं सो मैं तुम्हारी बिनती करता हूं कि आओ यह ब्याज लेना छोड़ देवें।

११ मैं बिनती करता हूं कि उन की भूमि और उन की दाख की और जलपाई की बारी और उन के घर और सौवां भाग रोकड़ और अन्न और दाखरस और तेल जो उन से लिया है उन्हें आज फेर
१२ देओ। तब उन्हों ने कहा कि आप के कहने के समान हम करेंगे हम फेर देंगे और उन से कुछ न लिया करेंगे तब मैं ने याजकों को बुलाया और उन से किरिया लिई कि इस बाचा के समान
१३ हम करेंगे। मैं ने भी अपना वस्त्र झाड़के कहा कि इसी रीति से ईश्वर हर एक जन को जो इस बाचा को पूरी न करे अपने मन्दिर से और अपनी बाचा से झाड़ देवे यों वह झाड़ा जाय और शून्य होवे और सारी मंडली ने कहा कि आमीन और परमेश्वर की स्तुति किई और इस बाचा के समान लोगों ने किया॥

१४ और भी जब से मैं यहूदाह के देश में उन पर अध्यक्ष ठहराया गया अर्थात् अरदशेर राजा के बीसवें बरस से बत्तीसवें बरस लों जो बारह हैं मैं ने और मेरे भाई ने अध्यक्ष की रोटी न खाई।
१५ परन्तु मेरे आगे के अध्यक्ष लोगों पर भार थे और उन से रोटी और दाखरस और चालीस शेकल चांदी लेते थे हां उन के सेवक भी लोगों पर प्रभुता करते थे परन्तु ईश्वर के डर के मारे मैं ने
१६ ऐसा न किया। और इस भीत के कार्य्य में भी मैं लगा रहा और हम ने भूमि न मोल लिई और मेरे सेवक वहां काम
१७ को ओर बटुर गये। और भी उन्हें छोड़ जो हमारे आसपास के अन्यदेशियों में से आते थे मेरे भोजन में डेढ़ सौ यहूदी
१८ और अध्यक्ष थे। और मेरे लिये प्रतिदिन एक बैल और छः चुने हुए भेड़ और पक्षी भी सिद्ध किये जाते थे और दस दिन में एक बार हर प्रकार का दाखरस था तथापि इन बातों के लिये मैं ने अध्यक्ष का भोजन न चाहा क्योंकि इन लोगों पर बंधुआई का बोझ था॥

१९ हे मेरे ईश्वर इन लोगों के लिये सब जो मैं ने किया है भलाई के लिये मुझे स्मरण कर॥

छठवां पर्व्व।

१ अब यों हुआ कि जब सनबल्लत और तूबियाह और अरबी जिसम और हमारे रहे हुए बैरियों ने सुना कि मैं भीत बना चुका और उस में कोई दरार न रहा तथापि उसी समय मैं ने फाटकों
२ पर केवाड़ें न चढ़ाये थे। तब सनबल्लत और जिसम ने मुझे यह कहला भेजा कि आ हम ओनो के चौगान के गांवों में भेंट करें परन्तु उन के मन में मेरा उप-
३ द्रव करना था। और मैं ने दूतों से कहला भेजा कि मैं बड़े कार्य्य में लगा हूं यहां लों कि मैं उतर आ नहीं सक्ता जब लों उसे छोड़के तुम पास आऊं क्यों
४ कार्य्य थम जाय। तथापि उन्हों ने इस रीति से चार बार मुझ पास भेजा और उसी रीति से मैं ने उन्हें उत्तर दिया॥

५ फिर सनबल्लत ने पांचवीं बार उसी रीति से अपने दास के हाथ से एक
६ खुली हुई पत्री मेरे पास भेजी। उस में लिखा था कि अन्यदेशियों में चर्चा है और जिसम कहता है कि तू और यहूदी फिर जाने की चिन्ता करते हो इस बात के लिये तू भीत बनाता है जिसते इन बातों के समान तू उन का राजा होवे। तू ने अपने लिये यह कहके यरूसलम में उपदेश करने को आचार्य्यों को भी ठहराया है कि यहूदाह में एक राजा है और अब इन बातों के समान राजा को समाचार दिया जायगा इस लिये अब आओ

८ एकट्ठे परामर्श करें। तब मैं ने उस पास कहला भेजा कि तेरे कहने के समान कोई बात नहीं हुई परन्तु तू ९ अपने ही मन से बनाता है। क्योंकि यह कहके सभों ने हमें डराया कि इस काम से उन के हाथ दुर्बल होंगे जिसतें बन न पड़े इस लिये अब मेरे हाथों को दृढ़ कर॥

१० उस के पीछे तब मैं मुहैतबिएल के बेटे दिलायाह के बेटे समऐयाह के घर गया जो बंधन में था और उस ने कहा कि आ ईश्वर के घर में मन्दिर के भीतर भेंट करें और मन्दिर के किवाड़े बन्द करें क्योंकि वे तुझे घात करने को आवेंगे हां रात को तुझे घात ११ करने को आवेंगे। और मैं ने कहा कि क्या मुझ ऐसा जन भागे और मुझ ऐसा होके अपने प्राण बचाने के कारण १२ मन्दिर में पैठे मैं न जाऊंगा। और लो मैं ने देख लिया कि ईश्वर ने उसे न भेजा था परन्तु कि उस ने यह आचार्य्यबचन मेरे बिरुद्ध कहा था क्योंकि तूबियाह और सनबल्लत ने उसे १३ ठीके में किया था। इस लिये उसे ठीके में किया जिसतें मैं डर जाऊं और ऐसा करके दोषी होऊं और जिसतें वे अपबाद का कारण पावें और मेरी निन्दा करें॥

१४ हे मेरे ईश्वर उन के इन कार्य्यों के समान तूबियाह को और सनबल्लत को और नोअदियाह आचार्य्यानी को और रहे हुए आचार्य्यों को जो मुझे डराने चाहते हैं स्मरण कर॥

१५ सो बावन दिन में एलुल मास की पचीसवीं तिथि में भीत बन चुकी। १६ और ऐसा हुआ कि जब हमारे सारे बैरियों ने सुना और चारों ओर के अन्यदेशियों ने देखा तो वे अपनी दृष्टि में अति शंकित हुए क्योंकि उन्हें सुझ पड़ा कि यह कार्य्य हमारे ईश्वर की ओर से हुआ॥

१७ उस्से अधिक उन दिनों में यहूदाह के कुलीन पत्री पर पत्री तूबियाह पास भेजते गये और तूबियाह की उन पास पहुंचती थी। १८ क्योंकि यहूदाह में बहुत उस की किरिया में थे इस कारण कि वह आरह के बेटे सकनियाह का जंवाई था और उस का बेटा यहूहनान बरकियाह के बेटे मुसल्लम की बेटी को ब्याह लाया था। १९ उन्हों ने मेरे आगे उस के सुकार्य्यों की भी चर्चा किई और मेरी बातें उस्से कहीं और तूबियाह ने मुझे डराने के लिये पत्रियां भेजीं॥

सातवां पर्ब्ब।

१ और जब भीत बन गई और मैं ने किवाड़ों को खड़ा किया और द्वारपालों को और गायकों को और लावियों को ठहराया तब यों हुआ। २ कि मैं ने अपने भाई हनानी को और भवन के अध्यक्ष हननियाह को यरूसलम सौंपा क्योंकि वह विश्वस्त मनुष्य और बहुतों से अधिक ईश्वर को डरता था। ३ और मैं ने उन्हें कहा कि जब लों धूप न चढ़े तब लों यरूसलम के फाटक खोले न जायें और उन के आगे अड़ंगे से द्वार बंद किये जायें और यरूसलम के बासी हर एक अपनी अपनी चौकी में और हर एक अपने अपने घर के सन्मुख चौकी के लिये ठहराया जाय॥

४ अब नगर बड़ा और चौड़ा था परन्तु उस में थोड़े लोग थे और घर बनाये न गये थे। ५ और कुलीनों को और अध्यक्षों को और लोगों को एकट्ठा करने के लिये मेरे ईश्वर ने मेरे मन में डाला जिसतें वे बंशावली से गिने जायें और जो पहिले चढ़ आये थे मैं ने उन की बंशावली की एक पत्री पाई और उस में लिखा पाया॥

६ ये प्रदेशी के वंश जो बंधुआई से चढ़ गये थे जिन्हें बाबुल का राजा नबूखुदनजर ले गया था और यरूशलम में और यहूदाह में हर एक जन अपने ७ अपने नगर में फिर आया। जो अब्बाबुल यूशूअ नहमियाह अजरियाह रामियाह नहमानी मरदकी बिलशान मिस्फरत बिगवै नहूम और बअना के साथ आये इसराएल के लोगों की ८ गिनती यह है। फुरगुस के सन्तान दो ९ सहस्र एक सौ बहत्तर। सफतियाह के १० सन्तान तीन सौ बहत्तर। अरख के ११ सन्तान छ: सौ बावन। यूशूअ के और यूअब के सन्तान पखतमोअब के सन्तान १२ दो सहस्र आठ सौ अठारह। ऐलाम के सन्तान एक सहस्र दो सौ चौावन। १३ जत्तू के सन्तान आठ सौ पैंतालीस। १४ जक्की के सन्तान सात सौ साठ। बिनवी १५ के सन्तान छ: सौ अठतालीस। बबी १६ के सन्तान छ: सौ अट्ठाईस। अजगाद १७ के सन्तान दो सहस्र तीन सौ बाईस। १८ अदूनिकाम के सन्तान छ: सौ सतसठ। १९ बिगवै के सन्तान दो सहस्र सतसठ। २० अदीन के सन्तान छ: सौ पचपन। २१ हिजकियाह के अतीर के सन्तान अट्ठानवे। २२ हशूम के सन्तान तीन सौ अट्ठाईस। २३ बैजी के सन्तान तीन सौ चौबीस। २४ हरीफ के सन्तान एक सौ बारह। २५ जिबऊन के सन्तान पंचानवे। २६ बैतलहम के और नतूफ: के एक सौ अट्ठासी जन २७ अनतोत के एक सौ अट्ठाईस जन। २८ बैतअजमैात के बयालीस जन। २९ करयतयरीम कफीर: और बीरूस के सात ३० सौ तैंतालीस जन। रामः और जिबअ ३१ के छ: सौ एक्कीस जन। मिकमास के ३२ एक सौ बाईस जन। बैतएल और ऐ के ३३ एक सौ तेईस जन। दूसरे नबू के बावन ३४ जन। दूसरे ऐलाम के सन्तान एक सहस्र दो सौ चौावन। ३५ हारिम के सन्तान तीन सौ बीस। ३६ यरीहो के सन्तान तीन सौ पैंतालीस। ३७ लूद के और हदीद के और ओनू के सन्तान सात सौ एक्कीस। ३८ सनाह के सन्तान तीन सहस्र नव सौ तीस॥

३९ यदैअयाह के सन्तान यूशूअ के घराने के याजक नौ सौ तिहत्तर। ४० अमीर के सन्तान एक सहस्र बावन। ४१ फशहूर के सन्तान एक सहस्र दो सौ सैंतालीस। ४२ हारिम के सन्तान एक सहस्र सत्रह॥

४३ लावी कदमिएल से यूशूअ के सन्तान और हूदियाह के सन्तान से चौहत्तर॥

४४ गायक असफ के सन्तान एक सौ अठतालीस॥

४५ द्वारपाल सलूम के सन्तान अतीर के सन्तान तल्मान के सन्तान अक्कूब के सन्तान खतीता के सन्तान साबी के सन्तान एक सौ अठतीस॥

४६ मन्दिर के सेवक जिहा के सन्तान हसूफा के सन्तान तबआत के सन्तान। ४७ कैरूस के सन्तान सीगा के सन्तान फदून के सन्तान। ४८ लिबाना के सन्तान हजाब: के सन्तान शलमई के सन्तान। ४९ हनान के सन्तान जदील के सन्तान गहर के सन्तान। ५० रियाहाह के सन्तान रसीन के सन्तान नकूदा के सन्तान। ५१ गज्जाम के सन्तान ऊज्जा के सन्तान फसीह के सन्तान। ५२ बैसी के सन्तान मिऊनिम के सन्तान निफीशिसम के सन्तान। ५३ बकबूक के सन्तान हकूफा के सन्तान हरहूर के सन्तान। ५४ बसलीस के सन्तान महीदा के सन्तान हरसा के सन्तान। ५५ बरकूस के सन्तान सीसरा के सन्तान तिमह के सन्तान। ५६ नसिया के सन्तान खतीफा के सन्तान। ५७ सुलेमान के दासों के सन्तान सूती के सन्तान साफिरत के सन्तान फरीदा के सन्तान। ५८ यअला के सन्तान

बरकूस के सन्तान अदील के सन्तान । ५९ सफतियाह के सन्तान खतील के सन्तान फाकिरतुजबीयान के सन्तान अमून के ६० सन्तान । मन्दिर के सारे सेवक और सुलेमान के सेवकों के सन्तान तीन सौ बानवे ॥

६१ और तल्लमिल्ह तल्लहरसा करुब अदून और अमीर में से गये थे परन्तु वे न तो अपने पितरों के घराने न अपने गोत्रों दिखा सके कि इसराएल के थे अथवा ६२ न थे । दिलायाह के सन्तान तूबियाह के सन्तान नकूदा के सन्तान छः सौ बयालीस ॥

६३ और याजकों में से हबायाह के सन्तान कोस के सन्तान बरजिल्ली के सन्तान जिस ने बरजिल्ली जिलिअदी की बेटियों में से ब्याहा और उन के नाम से कहा ६४ जाता था । ये वंशावली में गिने गये उन्हों ने उन में अपना नामपत्र ढूंढा परन्तु न पाया इस लिये वे अपवित्र के समान याजकता से अलग किये गये । ६५ और अध्यक्ष ने उन्हें कहा कि जब लों उरीम और तम्मीमधारी एक याजक न उठे तब लों वे पवित्र वस्तुन में से न खाने पावेंगे ॥

६६ सारी मंडली मिलके बयालीस सहस्र ६७ तीन सौ साठ । उन के दास दासी को छोड़के जो सात सहस्र तीन सौ सैंतीस थे और उन के गायक और गायिका दो ६८ सौ पैंतालीस । उन के घोड़े सात सौ छत्तीस उन के खच्चर दो सौ पैंतालीस । ६९ उन के ऊंट चार सौ पैंतीस उन के गदहे छः सहस्र सात सौ बीस ॥

७० और पितरों के कई प्रधान ने उस कार्य्य के लिये दिया अध्यक्ष ने भंडार में एक सहस्र दिरहम सोना और पचास पात्र और पांच सौ तीस याजकों के ७१ वस्त्र दिये । और पितरों के प्रधानों में से उस काम के भंडार में बीस सहस्र दिरहम सोना और दो सहस्र मना चांदी दिई । और रहे हुए लोगों ने बीस सहस्र ७२ दिरहम सोना और दो सहस्र मना चांदी और याजकों के सतसठ वस्त्र दिये ॥

७३ इस लिये याजक और लावी और द्वारपाल और गायक और कितने लोग और मन्दिर के सेवक और सारे इसराएल अपने अपने नगर में बसे और जब सातवां मास आया तब इसराएल के सन्तान अपने अपने नगर में थे ॥

आठवां पर्ब्ब ।

१ और सारे लोग एक मन हो जलफाटक के आगे चौगान में एकट्ठे हुए और उन्हों ने एजरा अध्यापक से मूसा की व्यवस्था की पुस्तक को जो परमेश्वर ने इसराएल को आज्ञा किई थी मंगवाया । २ और सातवें मास की पहिली तिथि में एजरा याजक स्त्री पुरुष की मंडली के और सब के आगे जो सुनके समझ सक्ते थे व्यवस्था को लाया । ३ और जलफाटक के चौगान के आगे भोर से दो पहर लों स्त्री पुरुष के और समझवैयों के आगे उस ने पढ़ा और सारे लोगों ने व्यवस्था की पुस्तक की ओर कान लगाये । ४ और एजरा अध्यापक काठ के एक मचान पर खड़ा हुआ जो उन्हों ने उसी बात के लिये बनाया था और उस के लग मत्तितियाह और समअ और अनायाह और ऊरियाह और खिलकियाह और मअसियाह उस की दहिनी ओर और बाईं ओर फिदायाह और मीसाएल और मलकियाह और हशूम और हसबदाना: और जकरियाह और मुसल्लम खड़े हुए । ५ और एजरा ने सारे लोगों की आंखों के आगे पुस्तक खोली क्योंकि वह सारे लोगों से ऊपर था और उस के खोलते ही सारे ६ लोग खड़े हुए । और एजरा ने परमेश्वर

परमेश्वर का धन्य माना और सारे लोगों ने हाथ उठाये हुए उत्तर में आमीन आमीन कहा और मुंह के बल सिर झुकाके भूमि लों परमेश्वर को प्रणाम
७ किया। और यूशूअ और बानी और शरिबियाह और यमीन और अक्कूब और सब्बती और हूदियाह और मअसियाह और कलीता और अजरियाह और यूजबद और हनान और फिलायाह और लावियों ने लोगों को व्यवस्था समझाई और लोग अपने
८ अपने ठिकाने पर खड़े हुए। इसी रीति से उन्हों ने परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक को खोलके पढ़ा और अर्थ किया और उन्हें पढ़ समझाया॥
९ और नहमियाह ने जो अध्यक्ष है और अध्यापक एजरा याजक ने और लावियों ने जिन्हों ने लोगों को सिखाया सारे लोगों से कहा कि यह दिन तुम्हारे ईश्वर परमेश्वर के लिये पवित्र है बिलाप और शोक मत करो क्योंकि व्यवस्था के बचन सुनके सारे लोगों ने
१० बिलाप किया। तब उस ने उन्हें कहा कि अब जाओ चिकना खाओ और मीठा पीओ और जिन के यहां कुछ नहीं पक्का उन के पास बैना भेजो क्योंकि आज हमारे प्रभु के लिये पवित्र है और उदास मत होओ क्योंकि परमेश्वर का बल
११ तुम्हारा आनन्द है। सो लावियों ने लोगों को यह कहके धीरज दिया और कहा कि चुपके रहो क्योंकि दिन पवित्र
१२ है और शोकित मत होओ। तब सारे लोगों ने खाने पीने और बैना भेजने और आनन्द करने को अपना अपना मार्ग लिया क्योंकि उन्हों ने उन बातों को जो इन के आगे कही गई थीं समझा॥
१३ और दूसरे दिन सारे लोगों के पितरों के प्रधान याजक और लावी व्यवस्था का बचन सीखने को एजरा अध्यापक पास एकट्ठे हुए। और जो परमेश्वर ने
१४ मूसा के द्वारा से व्यवस्था में आज्ञा किई थी उन्हों ने लिखा हुआ पाया कि सातवें मास के पर्व में इसराएल के सन्तान पर्णशालों
१५ में रहें। और कि वे अपने सारे नगरों में और यरूसलम में यह कहके प्रचारें कि पर्वत को जाओ और जलपाई की और अनानास की और हदस की और खजूर की और छप्पर बनाने के लिये घने पेड़ों की डालियां लिखे के समान लाओ।
१६ और लोग बाहर जा जाके लाये और हर एक जन ने अपने अपने घर की छत पर और अपने आंगनों में और ईश्वर के मन्दिर के आंगनों में और जलफाटक के चौगान में और इफरायमफाटक के चौगान में अपने लिये छप्पर बनाया।
१७ और सारी मंडली जो बंधुआई से फिर आई थी पर्णशाला बना बना उन के तले बैठ गये क्योंकि नून के बेटे यूशूअ के दिनों से उस दिन लों इसराएल के सन्तानों ने ऐसा न किया था और अत्यंत आनन्द था॥
१८ और पहिले दिन से अंत के दिन लों उस ने प्रतिदिन ईश्वर की व्यवस्था की पुस्तक को पढ़ा और उन्हों ने सात दिन पर्व्व रक्खा और रीति के समान आठवें दिन भारी सभा हुई॥

नवां पर्व्व।

१ सो इस मास के चौबीसवें दिन इसराएल के सन्तान ब्रत करते और टाट ओढ़े और धूल अपने ऊपर डालते हुए
२ एकट्ठे हुए। और इसराएल के सन्तानों ने उपरी सन्तानों से आप को अलग किया और खड़े होके अपने अपने पाप और अपने पितरों के पाप मान लिये।
३ और वे अपने स्थान पर खड़े हुए और एक पहर दिन लों अपने ईश्वर परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक को पढ़ा

और एक पहर में पाप को मान मानके परमेश्वर अपने ईश्वर को प्रणाम किया। ४ तब लावियों में से यशूअ और बानी और कदमिएल और शबनियाह और बुनी और सरिबियाह और बानी और कनानी ने मचान पर खड़े होके बड़े शब्द से अपने ईश्वर परमेश्वर के आगे दोहाई दिई॥

५ फिर यशूअ और कदमिएल और बानी और हसबनियाह और सरिबियाह और हूदियाह और शबनियाह और फतहियाह लावियों ने कहा कि उठो और अपने ईश्वर परमेश्वर का सदा धन्य मानो और तेरे ऐश्वर्यवान नाम का धन्य होवे जो सारे धन्यवाद और स्तुति से बढ़-६ कर है। तू केवल तू ही परमेश्वर है तू ने स्वर्ग अर्थात् स्वर्गों का स्वर्ग उन की सारी सेना सहित और पृथिवी और उस में के सब कुछ और समुद्र और उस में के सब कुछ उत्पन्न किया है और तू सब की रक्षा करता है और स्वर्ग की सेना तुझे भजती हैं॥

७ तू वह परमेश्वर ईश्वर है जिस ने अबराम को चुनके उसे कसदियों के ऊर से निकाल लाया और उस का नाम ८ अबिरहाम रक्खा। और अपने आगे उस का मन बिश्वासमय पाया और कनआनियों के और हित्तियों के और अमूरियों के और फरिज्जियों के और यबूसियों के और जिरजाशियों के देश को उस के सन्तान को देने के लिये तू ने उस्से नियम किया और अपने बचन को पूरा किया क्योंकि तू धार्म्मिक है॥

९ और मिस्र में हमारे पितरों के कष्ट को देखा और लाल समुद्र के तीर पर १० उन की दुहाई सुनी। और फिरऊन पर और उस के सारे सेवकों पर और उस के देश के सारे लोगों पर आश्चर्य्य और लक्षण दिखाया क्योंकि तू जानता था कि उन्हों ने उन से अहंकार से व्यवहार किया सो तू ने अपना नाम किया जैसा कि आज है। ११ और तू ने उन के आगे समुद्र को दो भाग किया यहां लों कि वे समुद्र के मध्य में से सूखी भूमि पर चले गये और उन के दुःखदायकों को गहिरावों में पत्थर की नाईं बड़े पानियों में फेंक दिया। १२ और दिन को मेघ के खंभे से और रात को आग के खंभे से उन्हें ले गया कि जिस मार्ग में उन्हें चलना था उस में उन्हें उंजियाला देवे। १३ और तू सीना पर्बत पर भी उतर आया और स्वर्ग से इन के साथ बातचीत किई और उन्हें ठीक बिचारों को और सच्ची व्यवस्थों को और अच्छी बिधि और आज्ञाओं को दिया। १४ और अपने पवित्र बिश्राम को उन पर प्रगट किया और अपने सेवक मूसा के हाथ से आज्ञा और बिधि और व्यवस्था उन्हें दिईं। १५ और उन की भूख के निमित्त उन्हें स्वर्ग से रोटी दिई और उन की प्यास के निमित्त पहाड़ में से पानी निकाला और उस देश को उन के बश में करने को जो तू ने उन्हें देने को हाथ बढ़ाया था बाचा दिई॥

१६ पर उन्हों ने और हमारे पितरों ने अहंकार और अपने गलों को कठोर किया और तेरी आज्ञाओं को न माना। १७ और उन्हें पालने को नहीं किया और जो आश्चर्य्य तू ने उन के मध्य में किये थे उन्हें स्मरण न किया परन्तु अपने गलों को कठोर किया और अपनी बंधुआई में फिर आने को अपनी दंगैती में एक प्रधान को ठहराया परन्तु तू ईश्वर क्षमा करने को सिद्ध और कृपाल और दयाल और रिसियाने में धीर और अनुग्रह में बड़ा और उन्हें न त्यागा। १८ हां जब उन्हों ने अपने लिये ढालके

एक बछड़ा बनाया और कहा कि यह तेरा देव है जो तुझे मिस्र से निकाल लाया और बड़े बड़े निन्दित कार्य्य १९ किये । तब तू ने अपनी बड़ी बड़ी दया से उन्हें अरण्य में त्याग न किया और मार्ग में ले जाने के लिये दिन को मेघ का खंभा और रात को आग का खंभा उन्हें उंजियाला करने के लिये जिस मार्ग में उन्हें जाना था उन से २० अलग न हुआ । उन्हें सिखाने के लिये अपना उत्तम आत्मा भी उन्हें दिया और उन के मुंह से अपने मन्ना को न रोका और प्यास में उन्हें पानी दिया । २१ हां चालीस बरस तू ने बन में उन्हें पाला और उन के लिये कोई वस्तु न घटी और उन के वस्त्र पुराने न हुए २२ और उन के पांव न फूले । और तू ने उन्हें राज्यों को और जातिगणों को दिया और उन्हें कोना कोना बांट दिया सो उन्हों ने सैहून के देश को और हसबून के राजा के देश को और बसन के राजा ऊज के देश को अधिकार में २३ लिया था । और तू ने उन के सन्तानों को भी स्वर्ग के तारों की नाईं बढ़ाया और इस देश में उन्हें लाया जिस के विषय में तू ने उन के पितरों को अधिकार में देने को प्रण किया था । २४ सो उन के सन्तान ने उस में जाके देश को बश में किया और तू ने उन के आगे उस देश के बासी कनआनियों को बश में किया और उन के राजा और देश की प्रजा समेत उन के बश में किया कि जैसा चाहें वैसा उन से करें । २५ और उन्हों ने दृढ़ नगर और फलवंत देश को लिया और संपत्ति से भरे हुए घर और खोदे हुए कुए और दाख और जलपाई की बारी और फलवंत पेड़ बहुताई से अपना अधिकार किया सो वे खाके तृप्त हुए और मोटाये और तेरी बड़ी भलाई से आनन्दित हुए ॥

तिस पर भी वे दंगइत हुए और तुझ २६ से फिर गये और तेरी व्यवस्था को अपनी पीठ के पीछे डाल दिया और तेरे भविष्यद्वक्तों को घात किया जिन्हों ने तेरी ओर फिराने को उन से विरुद्ध साक्षी दिई और उन्हों ने बड़ी बड़ी निन्दा का कर्म्म किया । सो तू ने उन्हें २७ उन के बैरियों के हाथ सौंप दिया जिन्हों ने उन्हें दुःख दिया और दुःख के समय में जब उन्हों ने तेरे आगे दुहाई दिई तब तू ने स्वर्ग से उन की सुनी और अपनी दया की बहुताई के समान उन्हें निस्तारक दिये जिन्हों ने उन्हें उन के बैरियों के हाथ से बचाया । परन्तु विश्राम पाने के पीछे उन्हों ने २८ तेरे आगे फेर बुराई किई इस लिये तू ने उन को बैरियों के हाथ में उन्हें छोड़ दिया यहां लों कि वे उन पर प्रभुता करने लगे तिस पर भी जब वे फिरे और तेरे आगे दुहाई दिई तब तू ने स्वर्ग में से सुन सुनके अपनी दया के समान उन्हें बारंबार छुड़ाया । और २९ अपनी व्यवस्था की ओर उन्हें फेर लाने के लिये उन के विरुद्ध साक्षी दिई तिस पर भी उन्हों ने अहंकार किया और तेरी आज्ञाओं को न सुना परन्तु तेरे विचारों के विरुद्ध पाप किया यदि मनुष्य उन्हें पालन करे तो उन में जियेगा और अपने कांधे को खींचके अपने गले को कठोर किया और न सुना । तथापि तू बहुत बरस लों उन ३० को सहता रहा और अपने भविष्यद्वक्तों के द्वारा अपने आत्मा से उन के विरुद्ध साक्षी दिई परन्तु उन्हों ने कान न धरा इस लिये तू ने उन्हें देश देश के लोगों के हाथ में सौंप दिया । तथापि ३१

अपनी बड़ी बड़ी दया के कारण तू ने उन्हें सर्वथा नाश न किया और उन्हें न त्यागा क्योंकि तू दयाल और कृपाल ईश्वर है॥

३२ सो अब हे हमारे ईश्वर महान और शक्तिमान और भयंकर ईश्वर जो नियम और कृपा को पालता है हम पर और हमारे राजाओं पर और हमारे अध्यक्षों पर और हमारे याजकों पर और हमारे भविष्यद्वक्ताओं पर और हमारे पितरों पर और तेरे सारे लोगों पर असूर के राजाओं के समय से आज लों जो दुःख कि हम पर पड़ा है सो तेरे

३३ आगे थोड़ा न जाना जाय। तथापि जो जो हम पर पड़ा है उन सभों में तू धर्म्मी है क्योंकि तू ने ठीक किया है

३४ और हम ने बुराई किई है। और हमारे राजा और हमारे अध्यक्ष और हमारे याजक और हमारे पितरों ने तेरी व्यवस्था को पालन नहीं किया है और तेरी आज्ञा और साक्षियों को नहीं सुना है जिन से तू ने हम पर साक्षी दिई है।

३५ क्योंकि उन्हों ने अपने राज्य में और तेरी भलाई की अधिकाई में जो तू ने उन्हें दिई है और इस बड़े और फलवंत देश में जो तू ने उन्हें दिया है तेरी सेवा न किई और अपने बुरे कार्य्यों से

३६ न फिरे। देख हम आज सेवक हैं और जो देश तू ने हमारे पितरों को उस के फल और अच्छी वस्तु खाने को दिया

३७ है देख हम उस में सेवक हैं। और हमारे पापों के कारण उन राजाओं के लिये जिन्हें तू ने हम पर किया है बहुत बढ़ती लाता है और वे हमारे देहों पर और हमारे ढोरों पर भी मनमंता प्रभुता करते हैं और हम बड़े दुःख में हैं॥

३८ और इन बातों के कारण हम दृढ़ करके लिखते हैं और हमारे अध्यक्ष और लावी और याजक छाप लगाते हैं॥

दसवां पर्ब्ब।

और छाप करने में ये थे हकालयाह का बेटा नहमियाह अध्यक्ष और सिद-

२ कियाह। शिरायाह और अजरियाह और

३ यरमियाह। फसिहूर और अमरियाह और

४ मलाकियाह हत्तूश और सबनियाह और

५ मलूक। हारिम और मरीमात और अब-

६ दियाह। दानिएल और जन्नतून और

७ बरूक। मुसल्लम और अबियाह और मियमीन। मअजियाह और बिलजो और समऐयाह ये याजक थे।

९ और लावी ये हैं अजनियाह का बेटा यशूअ और हन्नादाद के सन्तानों में से

१० बिनवी और कदमिएल। और उन के भाई शबनियाह और हूदियाह और कलीता और फिलायाह और हन्नान।

११ मीका और रहूब और हसबियाह। जक्कूर

१२ और शरिबियाह और शबनियाह। हूदि-

१३ याह और बानी और बनीनू॥

१४ लोगों के प्रधान पुरऊस और पखत-मोआब और ऐलाम और जत्तू और बानी।

१५ बुन्नी और अजगाद और बबी। अदू-

१६ नियाह और बिगवै और अदीन। अतीर

१७ और हिजकियाह और अजूर। हूदियाह

१८ और हशूम और बैजी। हरीफ और अन-

१९ तात और निबाई। मगफीआस और

२० मुसल्लम और हजीर। मुसेजबीएल और

२१ सदूक और यदूअ। फलतियाह और

२२ हन्नान और अनानियाह। हूसीअ और

२३ हननियाह और हसूब। हलोहेश और

२४ पिलिहा और शोबेक। रहूम और हसबनः

२५ और मअसियाह। अखियाह और हन्नान

२६ और अनान। मलूक और हारीम और

२७ बअना॥

२८ और उबरे हुए लोग याजक लावी द्वारपाल गायक मन्दिर के सेवक और

सब जिन्हों ने देशों के लोगों में से ईश्वर की व्यवस्था की ओर अपने को अलग किया था हां और उन की पत्नियां और उन के बेटे बेटियां हर एक जो २९ समझ बूझ रखता था। अपने कुलीन भाइयों से मिलचे रहे और आप और किरिया में मिले कि हम ईश्वर की व्यवस्था पर जो उस ने ईश्वर के सेवक मूसा के द्वारा दिई चलेंगे और परमेश्वर अपने प्रभु की सब आज्ञा और बिचार और बिधिन को मानेंगे और उस के ३० समान करेंगे। और कि हम अपनी बेटियों को देश के लोगों को न देंगे और अपने बेटों के लिये उन की बेटियां ३१ न लेंगे। और यदि देश के लोग बिश्राम-दिन में माल अथवा भोजन बेचने को लावें तो हम बिश्राम में अथवा पवित्र दिन में उन से भोजन न लेंगे और सातवें बरस बकती और ऋण को छोड़ देंगे॥

३२ और हम ने अपने लिये एक बिधि ठहराई कि हमें उचित है कि अपने ईश्वर के मन्दिर की सेवा के लिये। ३३ भेंट की रोटियों के लिये और नित्य के बलिदान के लिये और बिश्रामों के लिये और अमावस्यों के लिये और ठहराये हुए पर्व्वों और पवित्र बस्तुन के लिये और पाप के बलों के लिये इसराएल के कारण प्रायश्चित्त करने को और अपने ईश्वर के मन्दिर की सारी सेवा के लिये शेकल का तीसरा अंश हर बरस देवें॥

३४ और हम याजक और लावियों और लोगों ने चिट्ठी डाली काष्ठ की भेंट पर कि उसे हर बरस ठहराये हुए समयों में अपने पितरों के घरानों के समान अपने ईश्वर के मन्दिर में लावें कि परमेश्वर हमारे ईश्वर की यज्ञवेदी पर जलाई ३५ जाय जैसा व्यवस्था में लिखा है। और कि हम भूमि का नवान्न और सारे पेड़ों का पहिला फल बरस बरस परमेश्वर के मन्दिर में लावें। और व्यवस्था के ३६ लिखे के समान अपने बेटों के और अपने ढोरों के और अपने गोरुओं के और झुंडों के पहिलौठों को ईश्वर के मन्दिर में याजकों के पास जो अपने ईश्वर के मन्दिर में सेवा करते हैं लावें। ३७ और कि हम अपने गूंधे हुए का पहिला भाग और अपनी सारी भेंटें और हर प्रकार के पेड़ों का और दाख का और तेल का फल अपने ईश्वर के मन्दिर की कोठरियों में याजकों के पास लावें और अपनी खेती के दसवां भाग लावियों कने लावें क्योंकि लावियों को जो सब नगरों में जहां हम किसनई करते हैं चाहिये कि दसवां अंश देवें। ३८ और जब लावी दसवां भाग लेवें तब हारून के बेटे याजक लावियों के साथ होवें और लावी हमारे ईश्वर के मन्दिर की कोठरी में अर्थात् भंडार के घर में दसवें अंश ३९ का दसवां भाग लावें। कि उन कोठ-रियों में जहां पवित्र पात्र और याजक जो सेवा करते हैं और द्वारपाल और गायक रहते हैं इसराएल के सन्तान और लावी के सन्तान अन्न की और नये दाखरस की और तेल की भेंट लावें और हम अपने ईश्वर के मन्दिर को न छोड़ें॥

ग्यारहवां पर्व्व।

१ अब लोगों के अध्यक्ष यरूसलम में बसे और पवित्र नगर यरूसलम में बास करने के लिये उबरे हुए मनुष्यों ने भी चिट्ठी डाली जिसतें दस में एक उस में २ बसे और नव भाग नगरों में बसें। और जिन्हों ने यरूसलम में बसने के लिये मनमंता आप को सौंपा था लोगों ने उन सभों को धन्य माना॥

३ और प्रदेश के थे ये मुखिया यरूसलम में बसे परन्तु यहूदाह के नगरों में हर एक अर्थात् याजक और लावी और मन्दिर के सेवक और सुलेमान के सेवकों के सन्तान अपने अपने नगर के अधि-
४ कार में । और यरूसलम में यहूदाह के सन्तान और बिनयमीन के सन्तान में से बास किया यहूदाह के सन्तानों में से अतायाह जो बेटा ऊज्जियाह का बेटा जकरियाह का बेटा अमरियाह का बेटा सफतियाह का बेटा महललिएल
५ फाड़स के सन्तान में से । और मअ-सियाह जो बेटा बरूक का बेटा कलहूजी का बेटा हजायाह का बेटा अदायाह का बेटा यूयरीब का बेटा
६ जकरियाह का बेटा शैलूनी का । फाड़स के सारे बेटे जो यरूसलम में बसे थे चार सौ अठसठ बीर ॥

७ और बिनयमीन के बेटों में से सलू जो बेटा मुसल्लम का बेटा योइद का बेटा फिदायाह का बेटा कौलायाह का बेटा मअसियाह का बेटा इत्तिएल का
८ बेटा यसअियाह का । और उस के पीछे
९ जब्बी और सल्ला नव सौ अट्ठाईस । और जिकरी का बेटा यएल उन का करोड़ा था और सनूआह का बेटा यहूदाह नगर पर दूसरा था ॥

१० याजकों में से यूयरीब का बेटा यदै-
११ अयाह यकीन । शिरायाह जो बेटा खिलकियाह का बेटा मुसल्लम का बेटा सदूक का बेटा मिरयात का बेटा अखि-तूब का ईश्वर के मन्दिर का अध्यक्ष
१२ था । और घर के कार्य्यकारी उन के भाईबंद आठ सौ बाईस थे और अदा-याह जो बेटा यरूहाम का बेटा फिललियाह का बेटा अमसी का बेटा जकरियाह का बेटा फसिहूर का बेटा मलकियाह
१३ का बेटा । और पितरों के मुखिया उस के भाईबंद दो सौ बयालीस और अमस्सः जो बेटा अजरिएल का बेटा आखजी का बेटा मुसलिमात का बेटा अमीर
१४ का । और उन के भाईबंद महाबीर मनुष्य एक सौ अट्ठाईस और उन का करोड़ा एक महत जन का बेटा जबदिएल ॥

१५ और लावियों में से भी समएयाह जो बेटा हसूब का बेटा अजरिकाम का बेटा हसबियाह का बेटा बुन्नी का ।
१६ और लावियों में का मुखिया सबती और यूजबद ईश्वर के मन्दिर के बाहर के
१७ कार्य्य पर थे । और आसफ के बेटे जब्दी के बेटे मीका का बेटा मत्तनियाह प्रार्थना में धन्यवाद आरंभ करने को प्रधान था और अपने भाइयों में से बकबूकियाह दूसरा था और अबदा जो बेटा समूअ का बेटा जलाल का बेटा
१८ यदुतन का । पवित्र नगर में सारे लावी दो सौ चौरासी थे ॥

१९ और द्वारपाल अक्कूब और तल्मान उन के भाईबंद जो फाटकों के रक्षक थे एक सौ बहत्तर ॥

२० और इसराएल के और याजकों के और लावियों के उबरे हुए लोग यहूदाह के सारे नगरों में हर एक जन अपने अपने अधिकार में रहा ॥

२१ परन्तु मन्दिर के सेवक उफल में बसे और सीहा और जिसफा मन्दिर के सेवकों पर थे ॥

२२ और यरूसलम के लावियों का करोड़ा भी ऊज्जी बेटा बानी का बेटा हसबियाह का बेटा मत्तनियाह का बेटा मीका का आसफ के बेटों में से गायक ईश्वर के मन्दिर के कामकाज
२३ पर थे । क्योंकि उन के विषय में राजा की आज्ञा थी कि गायकों के लिये प्रतिदिन ठहराया हुआ भाग दिया जाय ॥

२४ और यहूदाह के बेटे जरह के सन्तानों

में से मुसीजबिएल का बेटा पताहियाह लोगों के सारे कार्य्यों के विषय में राजा के लग था ॥

२५ और गांवों के और उन के खेतों के कारण यहूदाह के सन्तान के कितने लोग करयतअरबअ में और उस के गांवों में और दैबून और उस के गांव में और यिकबजिएल और उस के गांव में २६ बसे । और यशूअ में और मूलादा में २७ और बैतफलत में । और हसरसूआल में और बिअरसबअ और उस के गांवों में । २८ और सिकलाज में और मकून: और उस २९ के गांवों में । और ऐनिरम्मान में और ३० सुरअ: में और यरमूत में । जनूह अदूलाम और उन के गांवों में लकीस और उस के खेतों में अजीक: में और उस के गांवों में और वे बिअरसबअ से लेके हिन्नूम की तराई लों रहा करते थे ॥

३१ और बिनयमीन के सन्तान भी जिबअ से मिकमास और ऐया और बैतएल और ३२ उन के गांवों । और अनतात और नूब ३३ और अननियाह में । और हसूर और ३४ रामा और जित्तैन । और हदीद और ३५ जिबिआम और नबल्लत । और लूद और ओनू कार्य्यकारी की तराई में ॥

३६ और लावियों के भाग यहूदाह में और बिनयमीन में रहे ॥

बारहवां पर्ब्ब ।

१ अब याजक और लावी जो सियालतिएल के बेटे जरूबाबुल और यशूअ के साथ चढ़ आये थे ये हैं शिरायाह और २ यरमियाह और एजरा । अमरियाह और ३ मलूक और हतूश । सकनियाह और ४ रहूम और मरीमात । ईदू और जिन्नतू ५ और अबियाह । मिनयमीन और मआदि-६ याह और बिलज: । समएयाह और ७ यूयरीब और यदैअयाह । सल्लू और अमूक और खिलकियाह और यदैअयाह ये यशूअ के दिनों में याजकों के मुखिया और उन के भाईबंद थे ॥

८ उन से अधिक लावी और यशूअ और बिनवी और कदमिएल और सरिबियाह और यहूदाह और मत्तनियाह धन्यबाद करने पर वह और उस के ९ भाईबंद । और उन के भाई बकबूकियाह और उन्नी चौकी में उन के सन्मुख थे ॥

१० और यशूअ से यूयकीम उत्पन्न हुआ और यूयकीम से भी इलयसीब उत्पन्न हुआ और इलयसीब से यूयदअ उत्पन्न ११ हुआ । और यूयदअ से यूनतन उत्पन्न हुआ और यूनतन से यदूअ उत्पन्न हुआ ॥

१२ और यूयकीम के दिनों में पितरों के मुखिये याजक थे शिरायाह से मिरायाह १३ यरमियाह और हननियाह । एजरा से मुसल्लम और अमरियाह से यहूहनान । १४ मलूक से यूनतन और शबनियाह से १५ यूसुफ । हरीम से अदना और मिरयात से १६ खिलकी । ईदू से जकरियाह और १७ जिन्नतू से मुसल्लम । अबियाह से जिकरी और मिनयमीन से मोअदियाह और १८ फिलती । बिलज: से समूअ और समएयाह १९ से यहूनतन । यूयरीब से मत्तानी और २० यदैअयाह से उज्जी । सल्ला से कल्ली २१ और अमूक से इब्र । खिलकियाह से हसबियाह और यदैअयाह से नतनिएल ॥

२२ इलयसीब के और यूयदअ के और यूहनान के और यदूअ के दिनों में लावी और याजक फारसी दारा के राज्य लों २३ पितरों के मुखिये लिखे गये । लावी के बेटे पितरों के मुखिये कालविवरण की पुस्तक में इलयसीब के बेटे यूहनान के २४ समय लों लिखे गये । और लावियों के मुखिये हसबियाह और सरिबियाह और कदमिएल का बेटा यशूअ और उन के भाईबंद उन के सन्मुख होते हुए ईश्वर के जन दाऊद की आज्ञा के समान

स्तुति करने और धन्य मान्ने के लिये
२५ चौकी के आगे चौकी। मत्तनियाह और बकबूकियाह और अबदियाह और मुसल्लम और तल्मान और अक्कूब द्वारपाल फाटकों की डेवढ़ी पर रखवाली
२६ करते थे। ये यूसदक के बेटे यशूअ के बेटे यूयकीम के दिनों में और नहामयाह अध्यक्ष के और एजरा याजक अध्यापक के दिनों में थे॥

२७ और यरूसलम की भीत के स्थापने में उन्हों ने लावियों को उन के सारे स्थानों से खोजा जिसतें नवल और करताल और बीण लिये हुए धन्यवाद करते और गाते हुए आनन्द से स्थापना करने के लिये यरूसलम में उन्हें लावें।
२८ और गायकों के बेटे यरूसलम की चारों ओर के चौगान से और नतूफः के गांवों
२९ से। और जिलजाल के घर से और जिबअ और अजिमौत के चौगानों से आप को एकट्ठा किया क्योंकि गायक यरूसलम की चारों ओर अपने लिये
३० गांव बनाये थे। और याजकों ने और लावियों ने अपने को पवित्र किया और लोगों को और फाटकों को और भीत को पवित्र किया॥

३१ इस के पीछे मैं यहूदाह के अध्यक्षों को भीत पर लाया और धन्यवाद के लिये दो जथा को ठहराया उन में से एक जो भीत पर दहिने अलंग कूड़ा
३२ फाटक की ओर गई। और उन के पीछे हूसअयाह और यहूदाह के आधे अध्यक्ष
३३ गये। और अजरियाह और एजरा और
३४ मुसल्लम। यहूदाह और बिनयमीन और
३५ समऐयाह और यरमियाह। और याजक के बेटों में से तुरही लिये हुए अर्थात् जकरियाह जो यूनतन का बेटा समऐयाह का बेटा मत्तनियाह का बेटा मीकायाह का बेटा जकूर का बेटा आसफ का बेटा। और उस के भाई
३६ समऐयाह और अजरिएल और मिलालौ और जिललौ और माई और नतनिएल और यहूदाह और हनानी ईश्वर के जन दाऊद के बाजे की सामग्री हाथ में लेके गये और एजरा अध्यापक उन
३७ के आगे आगे। और सोताफाटक से जो उन के सन्मुख था भीत पर जाने के स्थान में दाऊद के घर के आगे अर्थात् जलफाटक लों पूरब की ओर दाऊद के नगर की सीढ़ी पर चढ़ गये॥

३८ और धन्यवाद की दूसरी जथा उन के सन्मुख और मैं और आधे लोग भीत पर भट्ठों के गुम्मट के परे से चौड़ी
३९ भीत लों उन के पीछे पीछे गये। और इफरायम के फाटक के आगे से और पुराने फाटक के आगे से और मछली फाटक और हननिएल के गुम्मट और मियाह के गुम्मट के आगे से भेड़फाटक लों और वे बन्दीगृह के फाटक पर रह गये॥

४० सो दोनों ने ठहरके और मैं ने और अध्यक्ष के आधों ने ईश्वर के मन्दिर में
४१ धन्यवाद किया। और इलयकीम और मअसियाह और मिनयमीन और मीकायाह और इलयूऐनी और जकरियाह और हननियाह याजक तुरही लिये हुए।
४२ और मअसियाह और समऐयाह और इलिअजर और ऊज्जी और यहूहनान और मलकियाह और ऐलाम और अजर और गायकों ने इजराकियाह करोड़ा संहित
४३ अपना शब्द सुनाया। और उस दिन उन्हों ने बड़े बड़े बलि भी चढ़ाके आनन्द किया क्योंकि ईश्वर ने बड़े आनन्द से उन्हें आनन्दित किया और उन की पत्नियों और बालकों ने भी आनन्द किया यहां लों कि यरूसलम का आनन्द बहुत दूर लों सुना गया॥

४४ और उस समय में भंडारों के और भेंटों के और नवान्न के और दसवें अंश के लिये कितने लोग कोठरियों पर ठहराये गये जिसतें उन में नगरों के खेतों से व्यवस्था के भाग याजकों और लावियों के लिये एकट्ठे करें क्योंकि याजकों और लावियों के लिये जो खड़े थे यहूदाह ने आनन्द किया। ४५ और गायकों ने और द्वारपालों ने दाऊद की और उस के बेटे सुलेमान की आज्ञा के समान अपने ईश्वर की और पवित्रता की चौकी दिई। ४६ क्योंकि दाऊद के और आसफ के पुरातन दिनों में गायकों के प्रधान ईश्वर के निमित्त स्तुति और धन्यबाद गाते थे। ४७ और जरूबाबुल के दिनों में और नहमियाह के दिनों में सारे इसराएल ने प्रतिदिन अपना अपना भाग गायकों और द्वारपालों को दिया और उन्हों ने लावियों के लिये पवित्र किया और लावियों ने हारून के सन्तानों के लिये उसे पवित्र किया॥

तेरहवां पर्ब्ब।

१ उसी दिन उन्हों ने लोगों के कान में मूसा की व्यवस्था सुनाई और उस में यह लिखा पाया गया कि अम्मूनी और मोअबी ईश्वर की मंडली में कधी न २ आने पावें। क्योंकि उन्हों ने अन्न जल से इसराएल के सन्तानों से भेंट न किई परन्तु उन्हें साप देने को बलआम को उन के बिरुद्ध भाड़ा किया तथापि हमारे ईश्वर ने उस साप को आशीस ३ से पलट दिया। सो यों हुआ कि जब उन्हों ने व्यवस्था सुनी तो सारे परदेशियों को इसराएल से अलग किया॥

४ और इस के आगे हमारे ईश्वर के मन्दिर की कोठरी के करोड़ा इलयसीब याजक ने तूबियाह से नाता किया था। ५ और उस ने उस के लिये एक बड़ी कोठरी सिद्ध किई थी जहां आगे को वे मांस की भेंट और गन्धरस और बर्तन और अन्न का और नवीन दाखरस का और तेल का दसवां भाग आज्ञा समान लावियों और गायकों और द्वारपालों और याजकों की भेंट धरी जाती ६ थी। परन्तु जब यह सब होता था तब मैं यरूसलम में न था क्योंकि बाबुल के राजा अरदशेर के बत्तीसवें बरस में मैं राजा पास गया और कितने दिनों के पीछे मैं ने राजा की अति बिनती किई। ७ और मैं यरूसलम में आया और जो बुराई इलयसीब ने तूबियाह के लिये ईश्वर के मन्दिर के आंगनों में कोठरी सिद्ध ८ करने में किई थी उसे मैं ने बूझा। और उस्से मुझे बड़ा शोक हुआ इस लिये मैं ने तूबियाह की सारी सामग्री को ९ उस कोठरी से निकाल फेंका। तब मैं ने आज्ञा किई और उन्हों ने कोठरियों को पवित्र किया और मैं ईश्वर के मन्दिर के बर्तन मांस की भेंट गन्धरस सहित उस में फेर लाया॥

१० और मैं ने देख लिया कि लावियों के भाग उन्हें न दिये गये थे क्योंकि लावी और गायक जो कार्य्य करते थे हर एक अपने अपने खेत को भागा ११ था। तब मैं ने अध्यक्षों से बिबाद करके कहा कि ईश्वर का मन्दिर क्यों त्यागा गया है और मैं ने उन्हें एकट्ठे करके उन्हों के पद पर स्थिर किया। १२ तब सारे यहूदाह अन्न और नये दाखरस और तेल का दसवां भाग भंडार में १३ लाये। और मैं ने भंडारों पर सलमियाह याजक को और सदूक लेखक को और लावियों में से फिदायाह को भंडारी किया और उन के लग मत्तनियाह का बेटा जक्कूर के बेटे हनान को क्योंकि

वे बिश्वस्त गिने जाते थे और उन के भाइयों को बांट देना उन पर था ॥

१४ हे मेरे ईश्वर इस बिषय में मुझे स्मरण कर और मेरे सुकार्य्यों को जो मैं ने अपने ईश्वर के मन्दिर के और उस की सेवा के लिये किया है मिटा न डाल ॥

१५ उन दिनों में मैं ने यहूदाह में कितनों को बिश्राम के दिन में दाख का कोल्हू रौंदते और गठरियां लाते और गदहे लादते और बिश्राम में दाख-रस और दाख और गूलर और सारे बोझ यरूसलम में लाते भी देखा और जब उन्हों ने भोजन बेचा उसी दिन मैं ने १६ उन्हें जताया। उस में सूर के लोग भी बसते थे जो मछली और सारे प्रकार का माल लाके यहूदाह के सन्तानों के हाथ यरूसलम में बिश्राम के दिन में १७ बेचते थे। तब मैं ने यहूदाह के कुलीनों से बिबाद करके उन्हें कहा कि यह क्या बुरा काम है जो तुम करते हो और बिश्राम के दिन को अशुद्ध करते हो। १८ क्या तुम्हारे पितरों ने ऐसा नहीं किया और हमारा ईश्वर हम पर और इस नगर पर यह सारी बुराई नहीं लाया तद भी तुम बिश्राम दिन को अशुद्ध करके इसराएल पर अधिक कोप भड़काते हो ॥

१९ फेर यों हुआ कि बिश्राम से आगे जब यरूसलम के फाटक अंधियारे होने लगे तब मैं ने फाटकों को बंद करने की दृढ़ आज्ञा दिई कि जब लों बिश्राम न बीते तब लों वे न खोले जायें और मैं ने अपने सेवकों को फाटकों पर रक्खा जिसतें बिश्राम के दिन में कोई २० बोझ भीतर आने न पाये। इस लिये बैपारी और सब प्रकार के माल के बेचवैये एक दो बार यरूसलम के बाहर २१ रात को टिके रहे। तब मैं ने उन्हें जताया और उन्हें कहा कि तुम लोग किस लिये भीत के आगे टिके हो यदि फेर ऐसा करोगे तो मैं तुम पर हाथ डालूंगा तब से वे बिश्राम में फेर न २२ आये। और लावियों से जो अपने को पवित्र करते और आके फाटकों की रखवाली करते थे मैं ने कहा कि बिश्राम दिन को पवित्र मानो हे मेरे ईश्वर इस में भी मुझे स्मरण कर और अपनी दया की बहुताई से मुझ पर अनुग्रह कर ॥

२३ उन दिनों में मैं ने उन यहूदियों को भी देखा जिन्हों ने अशदूदी और अम्मूनी और मोअबी स्त्रियों से बिबाह किया २४ था। और उन के सन्तान आधी अशदूदी भाषा बोलते थे और यहूदी भाषा न बोल सक्ते थे परन्तु लोग लोग की भाषा के २५ समान। तब मैं ने उन से बिबाद किया और उन्हें स्राप दिया और उन में से कितनों को थपड़ाया और उन के बाल उखाड़े और उन से यों ईश्वर की किरिया लिई कि हम अपनी बेटियों को उन के बेटों को न देंगे और उन की बेटियों को अपने बेटों के और अपने लिये न २६ लेंगे। क्या इसराएल के राजा सुलेमान ने इन इन बातों में पाप नहीं किया तथापि बहुत से जातिगणों में उस के समान कोई राजा न था जो अपने ईश्वर का प्रिय था और ईश्वर ने उसे सारे इसराएल पर राजा किया तथापि परदेशी स्त्रियों ने उस्से भी पाप कर-२७ वाया। यों सारे महा पाप करके तुम जिसतें हमारे ईश्वर के बिरुद्ध उपरी स्त्रियों से बिबाह कर करके अपराध करो क्या हम तुम्हारी सुनेंगे ॥

२८ और इलयसीब प्रधान याजक के

बेटों में से यूहदय का एक बेटा हरूनी सनबल्लत का जंवाई था इस लिये मैं ने अपने पास से उसे निकाल दिया। हे मेरे ईश्वर उन्हें स्मरण कर इस कारण कि उन्हों ने याजकता को और याजकता के और लावियों के नियम को अशुद्ध किया है॥

२९

यों मैं ने सारे परदेशियों से उन्हें पवित्र किया और याजक और लावी की सेवा दृढ़ किई हर एक को अपने अपने कार्य्य में ठहराया। और काष्ठ की और नवान्न की भेंटें ठहराईं कि समय समय पर चढ़ाई जावें हे मेरे ईश्वर मेरी भलाई के लिये मुझे स्मरण कर॥

३० ३१

आसतर की पुस्तक।

पहिला पर्ब्ब।

१ और शेरशाह के समय में ऐसा हुआ यह वही शेरशाह है जिस ने हिंद से कोश लों एक सौ सत्ताईस प्रदेशों पर २ राज्य किया। कि उन दिनों में जब शेरशाह सूसन के भवन में अपने राज्य ३ के सिंहासन पर बैठा था। तब अपने राज्य के तीसरे बरस में उस ने अपने सारे अध्यक्षों और अपने सेवकों के लिये फारस और मादी के पराक्रमियों के लिये और प्रदेशों के कुलीन और अध्यक्षों के ४ लिये अपने आगे जेवनार बनाया। तब उस ने अपने राज्य के बिभव के धन को और अपनी उत्तम महिमा की प्रतिष्ठा को बहुत दिन लों अर्थात् एक सौ अस्सी दिन लों दिखाया॥

५ और जब वे दिन बीत गये तब राजा ने सारे लोगों के लिये जो सूसन के भवन में पाये गये क्या बड़े क्या छोटे के लिये राजा के भवन की बाटिका के आंगन में सात दिन लों जेवनार ६ बनाया। जहां बैंजनी और झीने कपड़े की डोरियों से चांदी की कड़ियों से मर्मर के खंभों पर श्वेत और हरे और नीले ओझल टंगे थे और नीले और श्वेत और काले मर्मर के पटाव पर सोने चांदी के पलंग बिछे थे। और उन्हों ने सोने के ७ पात्र में उन्हें पिलाया और पात्र भी भिन्न भिन्न डौल के थे और राजीय दाखरस राजा के महात्म के समान बहुताई से था। और पीना व्यवस्था के समान बरबस न ८ था क्योंकि राजा ने अपने घर के सारे प्रधानों के लिये ठहराया था कि हर एक जन अपनी अपनी इच्छा के समान करे। वशती रानी ने भी स्त्रियों के ९ लिये शेरशाह राजा के राजमन्दिर में जेवनार किया॥

सातवें दिन में जब राजा का मन १० दाखरस से मगन हुआ तब उस ने सात शयनस्थान के प्रधानों को जो शेरशाह राजा के आगे सेवा करते थे अर्थात् महूमान और बसतः और खरबूना और बिगता और अबगता और सितर और करगस को आज्ञा किई। कि वशती ११ रानी को राजमुकुट पहिने हुए राजा के आगे लाओ जिसतें लोगों को और अध्यक्षों को उस की सुन्दरता दिखावे क्योंकि वह सुन्दर रूप थी। परन्तु १२ शयनस्थान के प्रधान के द्वारा से राजा की आज्ञा पालन करने को वशती रानी

ने नाह किया इस लिये राजा महा कोपित हुआ और वह क्रोध से तपने लगा ॥

१३ तब राजा ने उन बुद्धिमानों से जो मुहूर्त्तों को जानते थे कहा क्योंकि नीति और बिचार के सारे जानकारों के लिये

१४ राजा की यही रीति थी । और उस के समीपी कारशिना और सितार और अदमाता और तरसीस और मरस और मरसिना और ममूकान फारस और मादी के सातों अध्यक्ष जो राजा के रूपदर्शी और

१५ राज्य में श्रेष्ठ स्थान में बैठते थे । कि नीति के समान वशती रानी से क्या करें क्योंकि उस ने शेरशाह राजा की आज्ञा शयनस्थान के प्रधानों के द्वारा सुनके न मानी ॥

१६ तब ममूकान ने राजा के और अध्यक्षों के आगे कहा कि वशती रानी ने केवल राजा का ही नहीं परन्तु सारे अध्यक्षों का भी और सारे लोगों का जो शेरशाह राजा के प्रदेशों में हैं अपराध किया ।

१७ क्योंकि रानी का यह कार्य्य समस्त स्त्रियों पर प्रगट होगा जब कि चर्चा होगी कि शेरशाह राजा ने वशती रानी को अपने आगे लाने की आज्ञा किई परन्तु वह न आई वे अपने अपने पति

१८ को तुच्छ जानेंगी । और आज के दिन फारस और मादी की स्त्रियें जिन्हों ने रानी की यह बात सुनी हैं सो भी राजा के सारे अध्यक्षों से कहेंगी सो यों निन्दा

१९ और झगड़ा होगा । जो राजा को अच्छा लगे तो उस के आगे से राजीय आज्ञा निकले और वही फारस और मादी की नीतों में लिखा जाय जिसतें न टले कि वशती रानी राजा शेरशाह के आगे फेर न आवे और राजा उस के राजीय पद उस की संगी को जो उस्से भली है

२० देवे । और जब राजा की किई हुई आज्ञा उस के सारे राज्य में प्रचारी जाय क्योंकि वह बड़ा है तब सारी पत्नियां अपने अपने पति बड़े से छोटे लों को प्रतिष्ठा देंगी ॥

२१ और यह बचन राजा की और उस के अध्यक्षों की दृष्टि में अच्छा लगा और राजा ने ममूकान के बचन के समान

२२ किया । क्योंकि उस ने राजा के सारे प्रदेशों में पत्रियां भेजीं हर एक प्रदेश में उस के लिखने के समान और हर एक लोग को उस की भाषा के समान जिसतें हर एक जन अपने अपने घर में प्रभुता करे और कि वह हर एक लोगों की भाषा के समान प्रचारी जाय ॥

दूसरा पर्ब्ब ।

१ इन बातों के पीछे जब शेरशाह राजा का क्रोध धीमा हुआ तब उस ने वशती को और जो कि उस ने किया था और जो कि उस के बिषय में आज्ञा

२ हुई थी स्मरण किया । तब राजा के सेवक दासों ने उसे कहा कि राजा के लिये युवती सुन्दरी कुमारियां ढूंढी जायें ।

३ और राजा अपने राज्य के सारे प्रदेशों में प्रधानों को ठहरावे जिसतें वे सारी युवती सुन्दरी कुमारियों को सूसन के भवन में राजा के शयनस्थान के प्रधान स्त्रियों के रक्षक हिजई के हाथ स्त्रियों के घर में एकट्ठे करें और पवित्र करने

४ की वस्तु उन्हें दिई जाय । और जो कन्या राजा को अच्छी लगे सो वशती की सन्ती रानी होय और राजा उस बात से प्रसन्न हुआ और उस ने वैसा ही किया ॥

५ अब सूसन के भवन में मरदकी नाम एक यहूदी था जो बिनयमीनी याईर

६ का बेटा था जो शमई का बेटा जो कीस का बेटा था । जो उस बंधुआई में यरूसलम से उठाये गये थे जो यहूदाह

के राजा यकूनियाह के संग उठाये गये जिन्हें बाबुल का राजा नबूखुद-नजर ले गया था। ७ और उस ने अपने चचा की बेटी हदश: अर्थात् आसतर को पाला था क्योंकि उस के माता पिता न थे और वह कन्या सुडौल और सुन्दर रूप थी जिसे मरदकी ने जब उस के माता पिता मर गये अपनी ही लड़की कर लिया था॥

८ और यों हुआ कि जब राजा की आज्ञा और उस का ठहराया हुआ सुना गया और जब बहुत कन्या सूसन भवन में हिजई के बश में एकट्ठी किई गई तब आसतर भी स्त्रियों के रक्षक हिजई के हाथ में राजा के भवन में पहुंचाई गई। ९ और वह कन्या उसे अच्छी लगी और उस ने उस्से अनुग्रह पाया और उस ने उसे पवित्र करने की बस्तु और उस के भाग दिये और राजा के भवन से योग्यता के समान सात दासी उसे दिई गईं और उस ने उसे और उस की दासियों को स्त्रियों के मन्दिर के अच्छे से अच्छा स्थान दिया। १० आसतर ने अपने लोग और कुटुम्ब न बताये क्योंकि मरदकी ने उसे जता दिया था कि न बतावे॥

११ और प्रतिदिन मरदकी स्त्रियों के मन्दिर के भवन के आगे फिरता था जिसतें आसतर का कुशल बूझे और कि उस का क्या होगा। १२ और जब स्त्रियों की रीति के समान बारह मास उस के लिये बीतते थे और हर एक कन्या की पारी शेरशाह राजा कने जाने को आती थी क्योंकि उन्हें पवित्र करने के दिन यों थे मुर के तेल से छ: मास और सुगन्धों से और स्त्रियों को पवित्र करने की बस्तु से छ: मास। १३ तब यों कन्या राजा कने आती थी और जो जो बस्तु वह चाहती थी सो स्त्रियों के मन्दिर में से राजा के घर में आने को उसे दिई जाती थी। १४ सांझ को वह जाती थी और बिहान को स्त्रियों के दूसरे मन्दिर में सासगाज राजा के शयनस्थान के प्रधान जो सहेलियों का रक्षक था उस के बश में फिर आती थी और जब लों राजा उस्से मगन न होता था और कि वह नाम लेके पुकारी न जाती थी तब लों राजा कने फेर न जाती थी॥

१५ और जब मरदकी के चचा अबिखैल की लड़की आसतर की जिसे मरदकी ने अपनी लड़की कर रखा था राजा कने जाने की पारी आई जो कुछ राजा के शयनस्थान के प्रधान स्त्रियों के रक्षक हिजई ने ठहराया था अधिक न चाहा और सभों की दृष्टि में जो उसे देखता था आसतर ने अनुग्रह पाया। १६ सो दसवें मास में जो तबीस मास है आसतर राजभवन में राजा शेरशाह कने पहुंचाई गई जो उस के राज्य का सातवां बरस था। १७ और राजा ने सारी स्त्रियों से आसतर को अधिक प्यार किया और उस ने सारी कुंआरियों से उस की दृष्टि में अधिक अनुग्रह और कृपा पाई यहां लों कि उस ने राजमुकुट उस के सिर पर रख दिया और वशती की सन्ती उसे रानी किया। १८ तब राजा ने अपने सारे अध्यक्षों और सेवकों के लिये एक बड़ा जेवनार किया अर्थात् आसतर का जेवनार और उस ने प्रदेशों को बिश्राम दिया और राजा के महात्म के समान दान किया॥

१९ और जब कुमारी दूसरी बार एकट्ठी हुईं तब मरदकी राजा की डेवढ़ी पर बैठा था। २० और मरदकी के चिताने के समान आसतर ने अपने कुटुम्ब और अपने यत को अब लों न बताया क्योंकि

आसतर मरदकी की आज्ञा को अब भी ऐसा मानती थी जैसा जब उस्से पाली जाती थी॥

२१ उन दिनों में जब मरदकी राजा के फाटक पर बैठता था तब राजा के शयनस्थान के दो प्रधान अर्थात् डेवढ़ी के रक्षकों में से बिगतान और तुर्श क्रुद्ध होके चाहते थे कि राजा शेरशाह पर
२२ हाथ डालें। और यह बात मरदकी को जान पड़ी और उस ने आसतर रानी को कहा और आसतर ने मरदकी के
२३ नाम से राजा को जनाया। फेर जब इस बात की पूछपाछ हुई तो खुल गई इस लिये दोनों एक पेड़ पर टांगे गये और वह राजा के काल के समाचार की पुस्तक में लिखा गया॥

तीसरा पर्ब्ब।

१ इन बातों के पीछे शेरशाह राजा ने अगागी हम्मिदासा के बेटे हामन को बढ़ाया और उसे महान किया और उस के संग के सारे अध्यक्षों से उस के आसन
२ को ऊंचा किया। और राजा के सारे सेवक जो राजा की डेवढ़ी पर रहते थे हामन के आगे झुकते थे और उसे प्रतिष्ठा देते थे क्योंकि राजा ने उस के विषय में वैसी ही आज्ञा किई थी परन्तु मरदकी न झुकता था न प्रतिष्ठा देता
३ था। तब राजा के सेवकों ने जो राजा की डेवढ़ी पर रहते थे मरदकी को कहा कि तू क्यों राजा की आज्ञा उल्लंघन करता है॥

४ सो यों हुआ कि जब वे प्रतिदिन उसे कहते रहे और उस ने उन की न मानी तब मरदकी की बात उन्हों ने हामन से बूझने को कही कि मरदकी की बात ठहरेगी कि नहीं क्योंकि उस ने उन्हें कहा था कि मैं यहूदी हूं।
५ और जब हामन ने देखा कि मरदकी न झुकता है न मुझे प्रतिष्ठा देता है तब
६ हामन कोप से भर गया। और उस ने केवल मरदकी पर हाथ डालना तुच्छ समझा क्योंकि उन्हों ने उसे मरदकी के लोगों को बताया था इस लिये हामन ने शेरशाह के सारे राज्य के सारे यहूदियों को अर्थात् मरदकी के लोगों को नष्ट करने के लिये चिन्ता किई॥

७ शेरशाह राजा के बारहवें बरस के पहिले मास में जो नीसान मास है दिन दिन और मास मास बारहवें लों जो अदार मास है वे हामन के आगे पारा
८ अर्थात् चिट्ठी डाला किये। तब हामन ने शेरशाह राजा से कहा कि आप के राज्य के सारे प्रदेशों के लोगों में एक छितरे हुए और फैले हुए लोग हैं और उन की व्यवस्था सारे लोगों से भिन्न है। और वे राजा की व्यवस्था भी नहीं मानते हैं इस लिये उन के रहने में
९ राजा को लाभ न होगा। जो राजा की इच्छा होय तो उन्हें नाश करने के लिये लिखा जाय और जो इस काम पर हैं मैं उन के हाथ में दस सहस्र तोड़े चांदी राजा के भंडारों में डालने को देऊंगा।
१० तब राजा ने अपने हाथ से अंगूठी निकालके यहूदियों के बैरी अगागी हम्मिदासा के बेटे हामन को दिई।
११ और राजा ने हामन से कहा कि चांदी और लोग भी तुझे दिये गये हैं जो चाहे सो उन से करे॥

१२ तब राजा के लेखक पहिले मास की तेरहवीं तिथि में बुलाये गये और हामन की सारी आज्ञा के समान हर एक प्रदेश पर के राजाध्यक्षों और अध्यक्षों के और हर एक प्रदेश के हर एक लोगों के प्रधानों के हर एक लोगों को उन की भाषा के समान उस लिखने के तुल्य लिखा गया और वह शेरशाह राजा के

नाम से लिखा गया और राजा की
१३ अंगूठी से छाप किई गई। और पत्रियां
डाकियों के हाथों से राजा के सारे
प्रदेशों में भेजी गईं कि क्या तरुण क्या
वृद्ध क्या स्त्री सारे यहूदियों को एक ही
दिन में अर्थात् बारहवें मास की तेरहवीं
तिथि में जो अदार मास है नाश करो
बधन करो और नष्ट कराओ और उन
१४ की संपत्ति लूट लो। हर एक प्रदेश के
सारे लोगों के लिये लिखे हुए का उतारा
आज्ञा के लिये प्रचारा गया जिसतें उस
१५ दिन के लिये लैस हो रहें। राजा की
आज्ञा की शीघ्रता के कारण डाकिये
निकल चले और आज्ञा सूसन के भवन
में दिई गई और राजा और हामन पीने
के लिये बैठ गये परन्तु सूसन नगर
व्याकुल हुआ॥

चौथा पर्व्व।

१ जो कि किया गया था जब मरदकी
ने देखा तो उस ने अपने कपड़े फाड़े
और राख सहित टाट पहिनके बाहर
नगर के मध्य में जाके चिल्ला चिल्ला
२ बिलख बिलख रोया। और राजा की
डेवढ़ी के भी आगे आया क्योंकि टाट
पहिने कोई राजा की डेवढ़ी से न
३ जाता था। और हर एक प्रदेश में जहां
कहीं राजा की आज्ञा और ठहराया
हुआ पहुंचता था तहां यहूदियों में बड़ा
विलाप और व्रत और रोना और पीटना
होता था और राख और टाट पर बैठ
गये॥

४ तब आसतर की दासियों ने और उस
के नपुंसकों ने आके उसे संदेश दिया
तब रानी अत्यन्त उदासिन हुई और
मरदकी को टाट ले लेने को और उसे
पहिनाने को वस्त्र भेजा परन्तु उस ने
५ न लिया। तब आसतर ने राजा के
शयनस्थान के प्रधान हताक को जिसे
उस ने उस के आगे रक्खा था बुल-
वाया और आज्ञा करके मरदकी को
पुछवा भेजा कि क्या है और किस लिये।
६ सो हताक निकलके नगर के चौक में
जो राजा की डेवढ़ी के आगे था मर-
७ दकी कने गया। और सब जो उस पर
बीता था और यहूदियों को नष्ट करने
के कारण और जो रोकड़ हामन ने राजा
के भंडारों में देने को प्रण किया था सो
८ मरदकी ने उसे कहा। और आज्ञा के
लिखे हुए का उतारा भी जो उन्हें नष्ट
करने को सूसन में दिया गया था उस
ने उसे दिया कि आसतर को दिखावे
और सुना देवे और उसे जता देवे कि
अपने लोगों के कारण बिनती और प्रार्थना
करने के लिये राजा के पास जाय॥

९ और हताक ने आके आसतर को
१० मरदकी की बातें सुनाईं। फिर आसतर
ने हताक से कहा और मरदकी के लिये
११ उसे आज्ञा दिई। कि राजा के सारे
दास और राजा के प्रदेश के लोग जानते
हैं कि क्या स्त्री क्या पुरुष जो कोई
बिना बुलाये राजा के पास जाय उस
के बधन करने की एक ही व्यवस्था है
केवल वह जिस के लिये राजा सोने
का राजदंड उठावे जिसतें वह जीये
परन्तु तीस दिन हुए कि मैं राजा कने
१२ बुलाई न गई। और उन्हों ने मरदकी
को आसतर की बातें कहीं॥

१३ तब मरदकी ने आज्ञा दिई कि
आसतर को उत्तर देओ कि अपने मन
में न समझे कि सारे यहूदियों से अधिक
१४ राजा के भवन में मैं बचूंगी। क्योंकि
यदि तू इस समय में सर्वथा चुपकी हो
रहेगी तो जीवन और बचाव यहूदियों
के लिये अन्त से उदय होगा परन्तु तू
अपने पितरों के घराने सहित नष्ट हो
जायेगी और कौन जानता है कि ऐसे

समय के लिये तू ने राज्य पाया है। १५ तब आस्तर ने मरदकी को फेर कहला १६ भेजा। कि जा सूसन में जितने यहूदी पाये जायें उन्हें एकट्ठे कर और मेरे लिये ब्रत कर और रात दिन तीन दिन लों न खा न पी मैं और मेरी दासियां भी ब्रत रक्खेंगी और यों मैं राजा कने जाऊंगी यह व्यवस्था की रीति नहीं है १७ यदि मैं नष्ट होऊं तो होऊं। सो मरदकी ने जाके आस्तर की आज्ञा के समान सब कुछ किया॥

पांचवां पर्ब्ब।

१ और तीसरे दिन ऐसा हुआ कि आस्तर राजीय पहिरावा पहिन राजा के भवन के आंगन के भीतर राजमन्दिर के साम्ने खड़ी हुई और राजा राजमन्दिर में अपने राजीय सिंहासन पर भवन के २ फाटक के सन्मुख बैठा था। फिर ऐसा हुआ कि जब राजा ने आस्तर रानी को आंगन में खड़ी देखा तब उस ने उस की दृष्टि में अनुग्रह पाया और राजा ने आस्तर के लिये अपने हाथ का सोनैला राजदंड बढ़ाया सो आस्तर ने ३ बढ़के राजदंड के टोंक को छूआ। तब राजा ने उसे कहा कि हे आस्तर रानी तू क्या चाहती है और तेरी क्या बिनती है आधे राज्य लों तुझे दिया जायगा। ४ तब आस्तर ने उत्तर दिया कि यदि राजा की इच्छा होय तो राजा और हामन आज मेरे सिद्ध किये हुए नेवते ५ में आवें। तब राजा ने कहा कि हामन को शीघ्र बुलाओ कि आस्तर के कहे के समान करे सो राजा और हामन आस्तर के सिद्ध किये हुए जेवनार में आये॥

६ और राजा ने दाखरस के पीने के समय में आस्तर से कहा कि तेरी बिनती क्या और वह तुझे दिया जायगा और तेरी इच्छा क्या सो आधे राज्य लों किया जायगा। ७ तब आस्तर ने उत्तर देके कहा कि मेरी बिनती और याचना ८ यह है। जो राजा की दृष्टि में मैं ने अनुग्रह पाया है और यदि मेरी बिनती सुन्ने को और मेरी याचना पूरी करने को राजा की इच्छा होय तो राजा और हामन उस जेवनार में आवें जो मैं उन के लिये सिद्ध करूंगी और राजा के कहे के समान मैं कल करूंगी॥

९ सो उस दिन हामन आह्लादित और मगन होके बाहर गया परन्तु जब हामन ने राजा के फाटक पर मरदकी को देखा कि वह खड़ा न हुआ और न उस के लिये टला तब वह मरदकी पर जल-जलाहट से भर गया। १० तथापि हामन ने आप को रोक रक्खा और घर में आ अपने मित्रों को और अपनी पत्नी जरिश को बुलवा भेजा। ११ और हामन ने उन से अपने धन की महिमा और अपने बालकों की बहुताई और सब जहां लों राजा ने उसे बढ़ाया था और किस रीति से उस ने उसे अध्यक्षों से और राजा के सेवकों से महान किया था सुनाया। १२ और हामन ने यह भी कहा हां आस्तर रानी ने राजा के साथ अपने जेवनार में जो उस ने सिद्ध किया था मुझे छोड़ किसी जन को आने नहीं दिया और कल भी राजा के साथ उस के यहां मेरा नेवता है। १३ परन्तु जब लों मैं राजा के फाटक पर यहूदी मरदकी को देखता हूं यह सब मेरे लिये कुछ नहीं। १४ तब उस की पत्नी जरिश और उस के सारे मित्रों ने उसे कहा कि पचास हाथ ऊंची फांसी की लकड़ी खड़ी किई जाय और कल राजा से कह कि मरदकी उस पर टांगा जाय तब तू आनन्द से राजा के संग जेवनार में जाइयो और उस बात से हामन प्रसन्न

हुआ और उस ने फांसी की लकड़ी बनवाई ॥

छठवां पर्व्व ।

१ राजा की नींद उस रात जाती रही और उस ने आज्ञा करके कालविवरण की लिखी हुई पुस्तकें मंगवाईं और वे
२ राजा के आगे पढ़ी गईं। और उस में यह लिखा हुआ पाया गया कि राजा के शयनस्थान के दो प्रधान द्वारपालक अर्थात् बगताना और तुर्श जिन्हों ने राजा अखशवारस पर हाथ बढ़ाने को चाहा और मरदकी ने उसे प्रगट किया था ॥
३ और राजा ने कहा कि इस बात के लिये मरदकी को क्या प्रतिष्ठा और आदर हुआ तब राजा के दासों ने जो उस की सेवा करते थे उस्से कहा कि
४ उस के लिये कुछ न हुआ। तब राजा ने कहा कि आंगन में कौन है इतने में हामन राजभवन के बाहर के आंगन में आया जिसतें राजा से कहके मरदकी को उस फांसी की लकड़ी पर जो उस
५ ने सिद्ध किई थी टांग देवे। तब राजा के सेवकों ने उसे कहा कि देखिये हामन आंगन में खड़ा है तब राजा ने कहा कि वह भीतर आवे ॥
६ तब हामन भीतर आया और राजा ने उसे कहा कि जिसे राजा प्रतिष्ठा देने चाहता है उस के लिये क्या किया जाय अब हामन ने अपने मन में समझा कि मुझ से अधिक राजा किसे प्रतिष्ठा
७ देने को चाहेगा। और हामन ने राजा को उत्तर दिया कि जिस की प्रतिष्ठा
८ में राजा आनन्दित है। उस के लिये राजकीय वस्त्र जो राजा आप पहिनते हैं और जिस घोड़े पर राजा आप चढ़ते हैं और राजीय मुकुट जो आप के सिर पर धरा जाता है मंगवाया
९ जाय। और वह वस्त्र और घोड़े राजा के अत्यन्त कुलीन अध्यक्षों में से एक को सौंपे जायें कि वह उस मनुष्य को बिभूषित करे जिसे राजा प्रतिष्ठा देने में आनन्दित है और उसे घोड़े पर नगर की सड़क में से ले जाये और उस के आगे प्रचारे कि जिस की प्रतिष्ठा में राजा आनन्दित है उस के लिये ऐसा
१० ही किया जायगा। तब राजा ने हामन से कहा कि चटक कर और अपने कहने के समान वस्त्र और घोड़ा ले और यहूदी मरदकी को जो राजा की डेवढ़ी पर बैठा है वैसा ही कर जैसा तू ने कहा है उस्से तनिक न घटे ॥
११ तब हामन ने वह वस्त्र और घोड़ा लेके मरदकी को बिभूषित किया और उसे घोड़े पर नगर की सड़क में से ले गया और उस के आगे प्रचारा कि जिस की प्रतिष्ठा में राजा आनन्दित है उस के लिये ऐसा ही किया जायगा ॥
१२ और मरदकी फेर राजा की डेवढ़ी पर आया परन्तु हामन बिलाप करते और सिर ढांपे हुए अपने घर उतावली
१३ से गया। और जो जो उस पर बीता था सो हामन ने अपनी पत्नी जरिश से और अपने सारे मित्रों से कहा तब उस के बुद्धिमानों ने और उस की पत्नी जरिश ने उसे कहा कि यदि मरदकी जिस के आगे तू ध्वस्त होने लगा यहूदियों के बंश में से होवे तो तू उस पर प्रबल न होगा परन्तु निश्चय उस के आगे ध्वस्त होगा ॥
१४ जब लों वे उस्से ये बातें कर रहे थे तब राजा के शयनस्थान के प्रधानों ने आसतर के बनाये हुए जेवनार में हामन को ले जाने के लिये शीघ्रता किई ॥

सातवां पर्व्व ।

१ सो आसतर रानी के साथ पान करने

२ को राजा और हामन आये। और दूसरे दिन दाखरस पीने के समय में राजा ने आसतर से फेर पूछा कि हे रानी आसतर तेरी बिनती क्या सो तेरे लिये किई जायगी और तू क्या चाहती है ३ सो आधे राज्य लों किया जायगा। तब आसतर रानी ने उत्तर देके कहा कि हे राजा यदि मैं ने आप की दृष्टि में अनुग्रह पाया है और यदि राजा की इच्छा होय तो मेरा प्राण मेरी बिनती में और मेरे मांगने में मेरे लोग मुझे ४ दिये जायें। क्योंकि मैं और मेरे लोग बेचे गये जिसतें नाश और घात और नष्ट किये जायें परन्तु यदि हम लोग दास और दासी में बेचे जाते तो मैं चुपकी रहती यद्यपि बैरी राजा की घटती सुधार न सक्ता॥

५ तब शेरशाह राजा ने उत्तर देके आसतर रानी से कहा कि किस के मन में उसे ऐसा करने को बुलाया है वह ६ कौन है और कहां है। तब आसतर ने कहा कि वह बैरी और शत्रु यह दुष्ट हामन है तब हामन राजा और रानी के आगे डर गया॥

७ तब राजा कोपित हो दाखरस के पास से उठके राजभवन की बाटिका में गया और हामन अपने प्राण के लिये आसतर रानी से बिनती करने को खड़ा हुआ क्योंकि उस ने देखा कि राजा की ओर से मेरे लिये बुराई ठहराई गई॥

८ तब राजा भवन की बाटिका में से दाखरस के पानस्थान में फिर आया और जिस पर आसतर थी हामन उस बिछौने पर गिरा था तब राजा ने कहा कि घर में मेरे आगे वह रानी पर भी बरबस करेगा यह बचन राजा के मुंह से निकलते ही उन्हों ने हामन का मुंह ढांपा। तब शयनस्थान के एक ९ प्रधान खरबूना: ने राजा के आगे कहा कि पचास हाथ ऊंची एक फांसी की लकड़ी भी देखिये जिसे हामन ने अपने घर में मरदकी के लिये खड़ी कर रक्खी थी जिस ने राजा के लिये भला कहा था तब राजा ने कहा कि उसी पर १० उसे टांगो। सो उन्हों ने हामन को उसी लकड़ी पर फांसी दिई जो उस ने मरदकी के लिये खड़ी कर रक्खी थी तब राजा का कोप धीमा हुआ॥

आठवां पर्व्व

१ उसी दिन शेरशाह राजा ने आसतर को यहूदियों के बैरी हामन का घर दिया और मरदकी राजा के आगे आया क्योंकि जो वह उस का था आसतर ने २ कह दिया था। और राजा ने अपने हाथ की अंगूठी जो उस ने हामन से ले लिई थी निकालके मरदकी को दिई और आसतर ने हामन के घर पर मरदकी को ठहराया॥

३ और आसतर ने राजा के चरणों पर गिरके और रो रोके उस की बिनती किई कि अगागी हामन की दुष्टता और उस की जुगत जो उस ने यहूदियों के बिरुद्ध जुगत किई थी सो दूर किई ४ जाय। तब राजा ने आसतर की ओर राजदंड बढ़ाया तब आसतर राजा के ५ आगे उठ खड़ी हुई। और बोली कि यदि राजा की इच्छा होय और यदि मैं ने उस की दृष्टि में अनुग्रह पाया है और यह बात राजा के आगे ठीक होवे और मैं उस की दृष्टि में अच्छी लगूं तो अगागी हम्मिदाथा के बेटे हामन की जुगत के मंत्र जो उस ने राजा के सारे प्रदेशों के यहूदियों को नष्ट करने को लिखा था उन्हें पलटने को लिखा ६ जाय। क्योंकि जो बुराई मेरे लोगों पर

पड़ेगी मैं उसे क्योंकर देख सकूंगी अथवा अपने कुटुम्बों का नष्ट होना मैं क्योंकर देख सकूंगी॥

७ तब शेरशाह राजा ने आसतर रानी से और यहूदी मरदकी से कहा कि देख मैं ने हामन का घर आसतर को दिया है और उन्हों ने उसे फांसी की लकड़ी पर इस कारण टांगा कि उस ने ८ यहूदियों पर हाथ डाला। जैसा तुम्हें अच्छा लगे राजा के नाम से तुम भी यहूदियों के लिये लिखो और राजा की अंगूठी से छाप करो क्योंकि जो लिखा हुआ राजा के नाम से लिखा गया है और राजा की अंगूठी से छापा गया है उसे कोई पलट नहीं सक्ता॥

९ तब उसी समय तीसरे मास में अर्थात् सिवान मास की तेईसवीं तिथि में राजा के लेखक बुलाये गये मरदकी की सारी आज्ञा के समान प्रदेशों के यहूदियों को और राजाध्यक्षों को और नायकों को और प्रधानों को जो हिन्द से हबश लों हैं एक सौ सत्ताईस प्रदेश उस लिखने के समान हर एक प्रदेश को और उन की भाषा के समान हर एक लोग को और यहूदियों को उन के लिखने और उन की भाषा के समान लिखा गया॥

१० और उस ने शेरशाह राजा के नाम से लिखा और राजा की अंगूठी से छाप किया और डाकियों के हाथ से जो घोड़ों और खच्चरों घोड़ियों के बच्चों पर चढ़- ११ वैये थे पत्रियां दौड़ाईं। कि राजा ने यहूदियों को छुट्टी दिई कि सब नगरों में एकट्ठे होवें और अपने प्राण के बचाव के लिये खड़े होवें जिसतें लोगों और प्रदेशों के सारे पराक्रम जो उन पर हल्ला करें क्या बालक क्या स्त्री घात करके नाश करें और नष्ट करवावें और उन की संपत्ति लूट लेवें। एक ही दिन में राजा १२ शेरशाह के सब प्रदेशों में बारहवें मास अर्थात् अदार मास की तेरहवीं तिथि में॥

लिखे हुए का उतारा हर एक प्रदेशों १३ में देने को सारे लोगों के लिये प्रगट किया गया जिसतें यहूदी अपने बैरियों से पलटा लेने को उस दिन में सैंस हो रहें। सो डाकिये जो सांड़नियों और १४ खच्चरों पर चढ़वैये थे राजा की आज्ञा से बेग से जाके निकल गये और सूसन के भवन में आज्ञा दिई गई थी॥

और मरदकी नीला और श्वेत राज- १५ वस्त्र और सोने का एक महा मुकुट बैंजनी और झीना वस्त्र पहिने हुए राजा के आगे से निकल गया और सूसन नगर आनन्दित और आंह्लादित हुआ। यहू- १६ दियों को ज्योति और आनन्द और आह्लाद और प्रतिष्ठा हुई। और हर एक प्रदेश १७ में और हर एक नगर में जहां कहीं राजा की आज्ञा और ठहराया हुआ पहुंचता था वहां पर यहूदियों को आनन्द और आह्लाद और जेवनार और मंगल दिन होता था और देश के बहुत लोग यहूदी हो गये क्योंकि यहूदियों का डर उन पर पड़ा था॥

नवां पर्ब्ब

अब बारहवें मास जो अदार मास १ है उस की तेरहवीं तिथि में जब राजा की आज्ञा और उस का ठहराया हुआ बजालाने को पास आ पहुंचा जिस में यहूदियों के बैरी उन पर प्रबल होने की आशा रखते थे यद्यपि वह पलटा गया था कि यहूदियों ने अपने बैरियों पर प्रभुता पाई थी। तब शेरशाह राजा २ के सारे प्रदेशों के सारे नगरों में जो उन की बुराई चाहते थे उन पर हाथ डालने को यहूदी एकट्ठे हुए और कोई उन का साम्ना न कर सक्ता था क्योंकि

३ उन का भय सारे लोगों पर पड़ा। और प्रदेश के सारे अध्यक्षों ने और राजाध्यक्षों ने और न्यायियों ने और राजा के कार्य्यकारियों ने यहूदियों का उपकार किया इस कारण कि मरदकी का भय ४ उन पर पड़ा। क्योंकि मरदकी राजभवन में महान हुआ और उस की कीर्त्ति सारे प्रदेशों में फैल गई क्योंकि यह मरदकी बढ़ता गया॥

५ यों यहूदियों ने अपने सारे बैरियों को तलवार की धार से जुझाया और मार डाला और नष्ट किया और अपनी इच्छा के समान अपने बैरियों से किया। ६ और सूसन के भवन में यहूदियों ने पांच ७ सौ मनुष्यों को मारके नष्ट किया। और परशनदासा और दलफून और असपासा। ८ और पूरता और अदलयाह और अरीदाता। ९ और फरमशता और अरिसाई १० और अरीदै और बजीजासा। अर्थात् यहूदियों के बैरी हम्मिदासा के बेटे हामन के दस बेटों को उन्हों ने घात किया परन्तु लूट पर उन्हों ने हाथ न डाला॥

११ उस दिन सूसन के भवन में जितने मारे गये उन की गिनती राजा के आगे १२ पहुंची। फिर राजा ने आसतर रानी से कहा कि यहूदियों ने सूसन के भवन में पांच सौ मनुष्यों को और हामन के दस बेटों को घात करके नष्ट किया और राजा के रहे हुए प्रदेशों में उन्हों ने क्या किया होगा अब तेरी बिनती क्या सो तुझे दिया जायगा अथवा तू और क्या मांगती है सो किया जायगा॥

१३ तब आसतर ने कहा कि यदि राजा की इच्छा होय तो सूसन के यहूदियों को आज के ठहराने के समान कल भी दिया जाय और लोग हामन के दस बेटों को फांसी की लकड़ी पर टांगें। १४ फिर राजा ने ऐसा ही होने की आज्ञा दिई और सूसन में यह आज्ञा दिई गई और उन्हों ने हामन के दस बेटों को १५ फांसी दिई। क्योंकि सूसन के यहूदी अदार मास के चौदहवें दिन में भी एकट्ठे हुए और सूसन में तीन सौ जनों को घात किया परन्तु लूट पर उन्हों ने हाथ न डाला॥

१६ परन्तु राजा के प्रदेशों के यहूदी अपने प्राण के लिये एकट्ठे हुए और अपने बैरियों से चैन पाया और अपने शत्रुन के पचहत्तर सहस्र जनों को घात किया १७ परन्तु लूट पर हाथ न डाले। अदार मास के तेरहवें और चौदहवें दिन उन्हों ने चैन पाया और उसे खाने पीने और १८ आनन्द करने का दिन किया। परन्तु उस के तेरहवें और चौदहवें दिन सूसन के यहूदी एकट्ठे हुए और उस के पंदरहवें बिश्राम किया और उसे खाने पीने और १९ आनन्द का दिन किया। इस लिये गांवों के यहूदियों ने जो अभीत नगरों में रहते थे अदार मास की चौदहवीं तिथि को खाने पीने और आनन्द करने और मंगल दिन और आपुस में बैना भेजने का किया॥

२० और मरदकी ने शेरशाह राजा के पास के और दूर के सारे प्रदेशों में सारे यहूदियों के पास इन बातों की पत्रियां २१ लिख भेजीं। कि उन में यह बात ठहर जाय कि वे अदार मास की चौदहवीं और पंदरहवीं तिथि को बरस बरस २२ माना करें। कि उन दिनों में यहूदियों ने अपने शत्रुन से चैन पाया और वह मास उन के लिये शोक से आनन्द और बिलाप से मंगल दिन हुआ जिसतें वे उन्हें खाने पीने और आनन्द करने और आपुस में बैना भेजने और दरिद्रों को २३ दान देने के दिन करें। और जैसा उन्हों ने आरंभ किया मरदकी के लिखने

के समान यहूदियों ने वैसा ही करने को २४ मान लिया। क्योंकि अगागी हम्मिदासा के बेटे यहूदियों के बैरी हामन ने उन्हें नष्ट करने की युक्ति किई थी और उन्हें चूर और नष्ट करने के लिये पूर २५ अर्थात् चिट्ठी डाली थी। परन्तु जब वह राजा के आगे आई तब उस ने पत्रियों के द्वारा से आज्ञा किई कि उस की दुष्ट युक्ति जो उस ने यहूदियों के विरुद्ध युक्ति किई थी उसी के सिर पर पलटे और कि वह और उस के बेटे २६ फांसी दिये जायें। इस लिये पूर के नाम से उन्हों ने उन दिनों को पूरीम कहा सो इस पत्री के सारे बचन के लिये और जो कुछ उन्हों ने इस बात के विषय में देखा था और जो उन पास पहुंचा था। २७ उन के लिखने के समान और उन के समय के समान यहूदियों ने अपने ऊपर और अपने बंश पर और उन सभों पर जो उन में मिल गये थे अपने लिये ठाना और ठहराया कि हम बरस बरस इन दो दिनों को मानेंगे जिसतें जाने न २८ पावें। और कि ये दिन हर एक पीढ़ी में और हर एक घराने में और हर एक प्रदेश में और हर एक नगर में स्मरण और पालन किये जायें और कि पूरीम के ये दिन यहूदियों में से जाने न पावें न उन का स्मरण उन के बंश से जाता रहे॥

तब अबिखैल की पुत्री आसतर रानी २९ ने और मरदकी यहूदी ने पूरीम की दूसरी पत्री दृढ़ करने को सारे पराक्रम से लिखा। और शेरशाह के राज्य के ३० एक सौ सत्ताईस प्रदेशों में उस ने पत्रियों को सारे यहूदियों के पास कुशल और सत्य के बचन से भेजा। कि पूरीम के ३१ इन दिनों को ठहराये समय में जैसा मरदकी यहूदी और आसतर रानी ने आज्ञा किई थी और जैसा उन्हों ने अपने लिये और अपने बंश के लिये ब्रत और प्रार्थना करने को दृढ़ किया था स्थापन करे। और आसतर की आज्ञा ३२ ने पूरीम की इन बातों को दृढ़ किया और पुस्तक में लिखा गया॥

दसवां पर्व्व।

और शेरशाह राजा ने देश पर और १ समुद्र के टापुओं पर कर ठहराया। और उस के पराक्रम और सामर्थ्य की २ सारी क्रिया और मरदकी के माहात्म्य का वर्णन जहां लों राजा ने उसे बढ़ाया था क्या वे मादी और फारस के राजाओं के काल की पुस्तकों में नहीं लिखी हैं। क्योंकि यहूदी मरदकी शेरशाह राजा ३ का समीपी और यहूदियों में महान और अपने भाइयों की मंडली में ग्राह्य था और अपने लोगों की बढ़ती का खोजी और अपने सारे बंश से कुशल की बात कहता था॥

ऐयूब की पुस्तक।

पहिला पर्ब्ब।

१ ऊज देश में ऐयूब नाम एक जन था जो सिद्ध और खरा पुरुष था और ईश्वर से डरता और बुराई से अलग रहता था। २ और उस्से सात बेटे और तीन बेटियां ३ उत्पन्न हुई। उस की संपत्ति भी सात सहस्र भेड़ और तीन सहस्र ऊंट और पांच सौ जोड़े बैल और पांच सौ गदहियां और अनेकन टहलू थे यहां लों कि पूरब के लोगों में सब से बड़ा था॥

४ और उस के बेटे हर एक अपने अपने दिन में अपने घरों में जेवनार करते थे और अपने संग खाने पीने के लिये भेजके अपनी तीनों बहिनों को नेउता ५ देते थे। और उन के जेवनार के दिनों के पीछे यों होता था कि ऐयूब उन्हें बुलवाके पवित्र करता था और बिहान को तड़के उठके उन की गिनती के समान बलिदान की भेंट चढ़ाता था क्योंकि ऐयूब ने कहा कि क्या जाने मेरे बेटों ने अपने मन में ईश्वर को त्याग करके पाप किया हो ऐयूब यों नित्य करता रहा॥

६ अब एक दिन ऐसा हुआ कि परमेश्वर के आगे ईश्वर के पुत्र आये और शैतान भी उन के मध्य में आया। ७ तब परमेश्वर ने शैतान से पूछा कि तू कहां से आता है और शैतान ने परमेश्वर को उत्तर में कहा पृथिवी पर घूमते और इधर उधर से फिरते आया ८ हूं। फिर परमेश्वर ने शैतान से कहा क्या तू ने मेरे सेवक ऐयूब को जांचा है कि उस के समान पृथिवी में कोई नहीं वह सिद्ध और खरा जन है जो ईश्वर से डरता और पाप से अलग रहता है। ९ तब शैतान ने उत्तर में परमेश्वर से कहा क्या ऐयूब संत से ईश्वर से डरता १० है। क्या तू ने उस का और उस के घर की और उस के सब कुछ का चारों ओर से बाड़ा नहीं बांधा तू ने उस के हाथ के कार्य्यों पर आशीस दिई है और उस की संपत्ति देश में बढ़ गई है। ११ परन्तु अब अपने हाथ बढ़ाके उस का सब कुछ छू तो वह तेरे साम्ने तुझे १२ न त्यागेगा। तब परमेश्वर ने शैतान से कहा देख उस का सब कुछ तेरे बश में है केवल उस पर अपना हाथ मत बढ़ा तब शैतान परमेश्वर के आगे से चल निकला॥

१३ और एक दिन ऐसा हुआ कि जब उस के बेटे बेटियां अपने जेठे भाई के घर में खाते और मद्यपान करते थे। १४ तब एक दूत ने ऐयूब पास आके कहा बैल जोत्ते थे और गदहियां उन के लग १५ चरती थीं। तब सबियूनी झपकके उन्हें ले गये हां सेवकों को तलवार की धार से घात किया पर आप को संदेश देने १६ को केवल मैं हीं बच निकला। यह कहता ही था और दूसरे ने भी आके कहा कि ईश्वर की आग स्वर्ग से पड़ी और भेड़ और तरुणों को भस्म किया और आप को संदेश देने को केवल मैं १७ हीं बच निकला। यह कहता ही था कि एक और ही आ बोला कि कसदी तीन जथा होके ऊंटों पर झपकके उन्हें ले गये हां तरुणों को तलवार की धार से घात किया और आप को संदेश देने १८ को केवल मैं हीं बच निकला। यह कहता ही था कि एक और ही ने आके कहा कि आप के बेटे बेटियां अपने

जेठे भाई के घर खाते और मद्यपान कर रहे थे। १९ और देखो बन की ओर से एक बड़ी आंधी आके उस घर के चारों कोनों में लगी और वह तरुणों पर गिर पड़ा और वे मर गये और आप को संदेश देने को केवल मैं हीं बच निकला॥

२० तब ऐयूब ने उठके अपना कपड़ा फाड़ा और सिर मुंड़ाया और भूमि पर २१ गिरके सेवा किई। और कहा मैं अपनी माता की कोख से नंगा निकला और नंगा फेर जाऊंगा परमेश्वर ने दिया और परमेश्वर ने लिया परमेश्वर का २२ नाम धन्य होा। इस सब में ऐयूब ने पाप न किया और ईश्वर के बिरुद्ध दुर्बचन न कहा॥

दूसरा पर्ब्ब।

१ और एक दिन ऐसा हुआ कि परमेश्वर के आगे ईश्वर के पुत्र आ खड़े हुए और शैतान भी उन के मध्य में पर- २ मेश्वर के आगे आ खड़ा हुआ। और परमेश्वर ने शैतान से कहा कि तू कहां से आता है तब शैतान ने उत्तर देके परमेश्वर से कहा कि पृथिवी पर घूमते और इधर उधर से फिरते चला आता ३ हूं। तब परमेश्वर ने शैतान से पूछा कि तू ने मेरे दास ऐयूब को जांचा है कि उस के समान पृथिवी में कोई नहीं है वह सिद्ध और खरा जन ईश्वर से डरता और पाप से अलग रहता है और अब लों अपनी सच्चाई को धर रक्खा है और तू ने मुझे उसे अकारण नाश ४ करने को उभारा है। तब शैतान ने उत्तर देके परमेश्वर से कहा कि चाम के लिये चाम हां जो मनुष्य का है सो अपने ५ प्राण के लिये देगा। परन्तु अब अपना हाथ बढ़ा और उस के हाड़ मांस को छू तब वह निःसन्देह तुझे तेरे साम्ने ६ त्यागेगा। तब परमेश्वर ने शैतान से कहा कि देख वह तेरे हाथ में है केवल उस के प्राण को बचा॥

७ तब शैतान परमेश्वर के आगे से चला गया और ऐयूब को सिर से तलवे लों बुरे फोड़ों से मारा। ८ और वह एक ठोकरा लेके अपने को खुजलाने लगा और राख पर बैठ गया॥

९ तब उस की पत्नी ने उसे कहा कि क्या तू अब लों अपने धर्म्म में स्थिर है ईश्वर को त्याग कर और मर जा। १० परन्तु उस ने उसे कहा कि तू मूर्ख स्त्री की नाईं बोलती है क्या हम ईश्वर के हाथ से भलाई लेंगे और बुराई न लेंगे इस सब में ऐयूब ने अपने होठों से पाप न किया॥

११ सो जब ऐयूब के तीन मित्रों ने अर्थात तीमानी इलीफाज ने और शूही बिलदाद ने और नामाती जोफार ने उस की सारी बिपत्ति को जो उस पर पड़ी थी सुना तो वे अपने अपने स्थान से आये क्योंकि उन्हों ने आके उस के साथ बिलाप करने और उसे शान्ति देने को एकट्ठे ठान रक्खा था। १२ और जब दूर ही से उन्हों ने अपनी आंखें उठाके उसे न चीन्हा तब चिल्लाके रोये और हर एक ने अपना अपना कपड़ा फाड़ा और स्वर्ग की ओर अपने अपने सिरों पर धूल डाली। १३ और सात दिन और सात रात वे उस के साथ भूमि पर बैठे रहे और किसी ने उसे एक बात न कही क्योंकि उन्हों ने देखा कि उस का शोक बहुत बड़ा है॥

तीसरा पर्ब्ब।

१ अन्त में ऐयूब ने अपना मुंह खोला और अपने दिन को धिक्कारा॥

२ और ऐयूब ने उत्तर देके कहा। ३ वह दिन नाश हो जिस में मैं उत्पन्न हुआ और वह रात जिस में कहा गया कि

४ एक बेटे का गर्भ हुआ। वह दिन अंधियारा होय ईश्वर ऊपर से उस की खोज न करे और न उजियाला उस पर चमके। ५ अंधियारा और मृत्यु की छाया फिर उसे अपने घेरे में लावें मेघ उस पर बने रहें दिन की अंधियारा करनेहारी बस्तें उसे ६ डरावें। अंधियारा उस रात को पकड़े वह बरस के दिनों में आनन्द न करे ७ मासों की गिनती में न आवे। देख कि वह रात बांझ होवे उस में आनन्दित ८ शब्द न होवे। दिन के कोसनेवाले उस को धिक्कारें अर्थात् वे जो लिवीयातन ९ के उठाने को सिद्ध हैं। उस की गोधूली के तारे अंधियारे हों वह ज्योति की बाट जोहे पर न पावे और बिहान के १० पलकों को न देखे। क्योंकि उस ने मेरे लिये कोख के द्वारों को बन्द न किया और मेरी आंखों से शोक न छिपाया॥

११ मैं कोख में मर क्यों न गया पेट से निकलते ही मैं ने प्राण क्यों न त्यागा। १२ क्यों घुठने मुझे मिले और स्तन कि मैं १३ चूसूं। क्योंकि अब तो मैं चुपका होके पड़ा रहता और चैन में होता मैं सो १४ रहता और बिश्राम करता। राजाओं और पृथिवी के मंत्रियों के संग जो उजाड़ स्थानों को अपने लिये बना लेते हैं। १५ अथवा उन अध्यक्षों के संग जो सोने की संपत्ति रखते थे और चांदी से अपने १६ घरों को भरते थे। अथवा मैं हुआ न होता उस गर्भ की नाईं जो छिपके गिरा है उन बालकों की नाईं जिन्हों १७ ने ज्योति को न देखा। वहां दुष्ट सताने से रहि जाते हैं और थके हुए १८ चैन से हैं। बंधुए एक साथ चैन करते हैं वे अंधेरी का शब्द नहीं सुनते। १९ छोटे बड़े वहां हैं और दास अपने स्वामी से छूटा है॥

२० कष्टित को ज्योति और कड़वे प्राण को जीवन क्यों दिया जाता है। जो २१ मृत्यु के लालसित हैं पर नहीं है और छिपे हुए धन से अधिक उस के लिये खोदते हैं। जब समाधि पा सक्ते हैं तो २२ अत्यन्त मगन और आह्लादित होते हैं। उस मनुष्य को क्यों ज्योति दिई गई २३ जिस का मार्ग गुप्त है और जिसे ईश्वर ने घेर रक्खा है। क्योंकि भोजन के २४ आगे मेरी ठंडी सांस आती है और मेरा बिलाप जल की नाईं बहता है। क्यों- २५ कि जिस दुःख से मैं डरता था सोई मुझ पर आ पड़ा और जिस्से मैं हटता गया उसी ने मुझे आ ही लिया। मुझे २६ कुशल न था मैं चैन न रखता था और मुझे शांति न थी और दुःख पहुंचा॥

चौथा पर्ब्ब।

तब तीमानी इलीफाज ने उत्तर देके १ कहा। यदि कोई तुझ से एक बात २ परीक्षारीति पूछे तो क्या तू शोकित होगा परन्तु बातें बोलने से कौन अपने को रोक सक्ता है। देख तू ने बहुतों को ३ सिखाया है और निर्बल हाथों को दृढ़ किया है। गिरते हुए को तेरे बचन ने ४ उभारा है और तू ने झुके घुठनों को दृढ़ किया है। पर अब तुझ पर पड़ा है ५ और तू मूर्छित होता है तुझे छूता है और तू घबराता है। क्या ईश्वरीय भय तेरी ६ आशा नहीं और तेरी चाल की खराई तेरा भरोसा नहीं। चेत कर मैं तेरी ७ बिनती करता हूं कि कौन निर्दोष होके नाश हुआ है अथवा धर्म्मी कहां कट गये। जैसा मैं ने देखा है जो बुराई ८ जोत्ते और दुष्टता बोते हैं सोई लवते हैं। ईश्वर के झोंके से वे नष्ट होंगे और ९ उस के नथुनों के श्वास से बिनाश होंगे। सिंह का गर्ज्जना और भयानक १० सिंह का शब्द रुक जाता है और युवा सिंह के दांत टूट जाते हैं। महा बली ११

सिंह अहेर बिना मरता है और सिंहिनी के बच्चे छिन्न भिन्न होते हैं ॥
१२ एक बात चुपके से मुझ पास पहुंचाई गई और मेरे कानों ने उस की कुछ भनक
१३ पाई। रात के स्वप्नों की चिन्ताओं में जब मनुष्यों पर भारी नींद पड़ती है।
१४ तब डर और थरथराहट मुझ पर ऐसी पड़ी कि मेरी सारी हड्डियों को कंपाया।
१५ तब एक आत्मा मेरे आगे चला उस ने मेरे शरीर के रोंगटे खड़े कर दिये।
१६ वह चुपचाप खड़ा रहा और मैं उस का डौल न पहिचान सका एक रूप मेरी आंखों के आगे था निःशब्दता थी तब
१७ मैं ने एक शब्द सुना। क्या मनुष्य ईश्वर से अधिक धर्म्मी ठहरेगा क्या मनुष्य अपने कर्त्ता के आगे पावन ठहरेगा।
१८ देख वह अपने सेवकों पर भरोसा नहीं रखता और अपने दूतों को मूर्ख जानता
१९ है। तो कितना थोड़ा उन पर जो मिट्टी के घर में रहते हैं जिन की नेव धूल में है जो कीड़े के आगे पिस जाते हैं।
२० जो बिहान से सांझ लों चूर हो जाते हैं वे सदा के लिये नष्ट हो जाते हैं
२१ और कोई बुझवैया नहीं। क्या उन की उत्तमता जो उन में है जाती नहीं रहती हां वे निर्बुद्धि मरते हैं ॥

पांचवां पर्ब्ब।

१ अब पुकार क्या वह तुझे उत्तर देगा और साधुन में से तू किस की ओर
२ फिरेगा। क्योंकि कोप मूर्ख को नाश करता है और डाह अनारी को घात
३ करता है। मैं ने मूर्ख को जड़ पकड़ते देखा परन्तु तत्काल मैं ने उस के घर
४ को धिक्कारा। उस के बालक चैन से परे हैं वे फाटक में कुचले हुए हैं और
५ उन का बचानेहार कोई नहीं। उस की खेती भूखा खा लेता है और उसे कांटों में से छीन लेता है और बटमार उन की संपत्ति लील जाता है। क्योंकि कष्ट
६ धूल से नहीं उपजता और दुःख भूमि
७ से नहीं निकलता। कि मनुष्य दुःख के लिये उत्पन्न हुआ है जैसा कि चिनगारियां ऊपर ऊपर उठती हैं ॥
८ तौभी मैं सर्वशक्तिमान को खोजूंगा और अपना पद ईश्वर ही को सौंपूंगा।
९ वह बड़े बड़े कार्य्य जो खोज से बाहर हैं और अगणित आश्चर्य्य करता है।
१० जो पृथिवी के ऊपर मेंह बरसाता है और चौगानों पर पानी पहुंचाता है।
११ जिसतें दीनों को उभाड़े और बिलापी
१२ चैन में बढ़ाये जायें। वह चतुरों की जुगतों को निरास करता है यहां लों कि उन के हाथों से कुछ उद्यम बन नहीं
१३ पड़ता। वह बुद्धिमानों को उन्हीं की चतुराई में बझाता है और हठीलों के
१४ परामर्श को उलट देता है। वे दिन को अंधियारे में जा पड़ते हैं और मध्यान्ह में रात की नाईं टटोलते फिरते हैं।
१५ परन्तु वह कंगाल को तलवार से और उन के मुंह से और बलवान के हाथ से
१६ बचाता है। सो निर्बल की आशा है और बुराई अपना मुंह मूंदती है ॥
१७ देख क्या ही धन्य वह मनुष्य जिसे ईश्वर ताड़ना करता है इस लिये सर्वशक्तिमान की ताड़ना को तुच्छ न जान।
१८ क्योंकि वही घोटालता है और बांधता है घायल करता है और उसी के हाथ
१९ चंगा करते हैं। वह छः दुःखों से तुझे छुड़ावेगा हां सात में तुझे बुराई न
२० छूयेगी। वह अकाल में तुझे मृत्यु से छुड़ावेगा और लड़ाई में तलवार की
२१ धार से। जीभ के कोड़े से तू बचा रहेगा और जब नाश आवेगा तब तू
२२ उस्से न डरेगा। नाश और अकाल से तू हंसेगा और तू बनपशुन से न डरेगा।
२३ क्योंकि तू खेत के पत्थरों से बाचा

बांधेगा और बनैले पशुन से तुझे मेल
२४ होगा । और तू जानेगा कि तेरा तंबू
कुशल से है और तू अपने निवास का
२५ ठिकाना करेगा और न चूकेगा । और
तू जानेगा कि तेरा बंश बहुत होगा
और तेरे सन्तान पृथिवी की घास की
२६ नाईं होंगे । तू पूरी आयुर्दाय में समाधि
में पहुंचेगा जैसे अन्न का पूला अपने
२७ समय में उठता है । देख हम ने इसे
बूझा है और यों ही है इसे सुन और
अपने लिये जान ले ॥

छठवां पर्व्व ।

१ तब ऐयूब ने उत्तर देके कहा ।
२ हाय कि मेरा शोक सर्व्वथा तौला जाता
और मेरी विपत्ति पलड़े में एक साथ
३ उठाई जाती । क्योंकि अब वह समुद्र
के बालू से भी अति भारी है इस लिये
४ मेरी बातें व्यर्थ हैं । क्योंकि सर्व्वशक्ति-
मान के बाण मुझ में लगे हैं जिन का
बिष मेरे प्राण को पीता है ईश्वर के
५ भय मेरे सन्मुख पांती बांधते हैं । क्या
जंगली गदहा घास पर रेंकता है अथवा
बैल अपने पुआल पर डकरता है ।
६ जो बस्तु फीकी है क्या वह बिना लोन
खाई जाती है अथवा क्या अंडे के लासे
७ में स्वाद है । जिन बस्तुन के छूने से
मेरा प्राण घिन करता है वेही मेरे शोक
के भोजन हैं ॥

८ हाय कि मेरी बिन्ती पूरी होती
और ईश्वर मेरी इच्छा पूरी करता ।
९ जो मुझे बिनाश करने को ईश्वर की
इच्छा होती जो वह अपने हाथ खोलके
१० मुझे बिनाश करता । तो मैं थोड़ी बहुत
शांति पाता हां कठोर दुःख में आनन्द
से ललकारता क्योंकि मैं ने धर्म्ममय की
११ बातों को नहीं छिपा रक्खा । मेरा
क्या बल जो आशा रक्खूं और मेरा
अन्त कब होगा कि धैर्य्यवान होऊं ।
क्या मेरा बल पत्थरों का बल है अथवा १२
मेरा शरीर क्या पीतल का है । क्या १३
मेरे लिये कुछ सहाय नहीं और क्या
छुटकारा मुझ्से दूर किया गया ॥

कष्टित पर उस के मित्र से दया १४
चाहिये परन्तु वह सर्व्वसामर्थी के डर
को त्यागता है । मेरे भाइयों ने नाली १५
की नाईं मेरे संग छल से व्यवहार
किया है तराई की नाली की नाईं वे
चले जाते हैं । जो हिम के मारे गदली १६
हो रही हैं और जिन में पाला छिपा
है । थोड़े ही समय में वे घट जाते १७
और जाते रहते हैं और घाम में अपने
स्थान से मिट जाते हैं । पथिक अपने १८
पथ से फिर जाते हैं वे शून्यस्थान में
जाते हैं और मिट जाते हैं । तीमा के १९
पथिक देखते और शीबा के यात्री उन
के लिये बाट जोहते हैं । आशा रखने २०
के मारे वे लज्जित हैं वे वहां पहुंचके
घबरा जाते हैं । क्योंकि अब तुम कुछ २१
नहीं हो तुम दुःख को देखके डरते
हो । क्या मैं ने कहा कि मुझे कुछ देओ २२
अथवा अपनी संपत्ति में से मुझे कुछ
दान देओ । अथवा बैरी के हाथ से २३
मुझे बचाओ अथवा बलवंतों के हाथ
से मुझे छुड़ाओ ॥

मुझे सिखाओ और मैं चुप रहूंगा २४
किस बात में मैं ने चूक किई है सो
मुझे समझाओ । सत्य बचन कैसे दृढ़ हैं २५
परन्तु तुम्हारे दपट में क्या बिचार ।
क्या तुम दपट के लिये बचन निकाला २६
चाहते हो निरासों की बातें तो पवन
के लिये हैं । हां तुम अनाथों पर फंदा २७
डालते हो और अपने मित्र के लिये
गड़हे खोदते हो । सो अब मान जाओ २८
और मुझे देखो और यदि मैं झूठा हूं
तो तुम्हारे आगे हूं । मैं बिनती करता २९
हूं कि फिर आओ बुराई न होवे हां

फिर आओ इस बात में मेरा धर्म्म है । ३० क्या मेरी जीभ पर बुराई है और मेरा तालू हठीली बस्तु नहीं बूझता ॥

सातवां पर्ब्ब ।

१ क्या पृथिवी पर मनुष्य के लिये कठिन सेवा नहीं और उस के दिन २ बनिहार के दिनों के समान नहीं । जैसे सेवक छाया के लिये हांफता है और बनिहार अपनी बनी की लालसा करता ३ है । तैसा मुझे बृथा मासों का अधिकारी बन्ना पड़ा और रातों का कष्ट मेरे लिये ४ ठहराया गया है । जब मैं लेटता हूं तब कहता हूं कि मैं कब उठूंगा और रात कब बीतेगी और पौ फटने लों इधर उधर छटपटाने से थक जाता ५ हूं । कीड़े और धूल की बहुताई से मेरा शरीर ढंका हुआ है मेरा चाम फिर आता और फिर फट जाता है । ६ मेरे दिन जोलाहे की ढरकी से भी अधिक बेगवान हैं और निरास से बीते ७ जाते हैं । स्मरण कर कि मेरा जीवन पवन है और मेरी आंखें भलाई देखने ८ को फिर न आवेंगी । जिस की आंख ने मुझे देखा है मुझे फिर न देखेगी तेरी आंखें मुझ पर हैं और मैं नहीं हूं । ९ जैसा मेघ छट गया और जाता रहा तैसा जो समाधि में उतरता है सो ऊपर १० न आवेगा । वह अपने घर में फिर न आवेगा और उस का स्थान उसे फिर ११ न जानेगा । मैं भी अपना मुंह न रोकूंगा मैं अपने मन के कष्ट में कहूंगा मैं अपने प्राण की कड़ुआहट में बोलूंगा ॥

१२ क्या मैं समुद्र अथवा महा मच्छ हूं जो तू मुझ पर चौकी बैठाता है । १३ जब मैं कहता हूं कि मेरा बिछौना मुझे बिश्राम देगा मेरी खाट मेरे बिलाप १४ को शांति करेगी । तब तू स्वप्नों से मुझे डराता है और दर्शनों से मुझे भय दिलाता है । यहां लों कि मेरा प्राण १५ फांसी को हां मृत्यु को भी अपनी हड्डियों से अधिक चाहता है । मैं घुला १६ जाता हूं मैं सदा जीने नहीं चाहता मुझे छोड़ दे क्योंकि मेरे दिन बृथा हैं । मनुष्य क्या है जो तू उसे महिमा १७ देवे और जो तू अपना मन उस पर लगावे । और जो तू हर बिहान उस १८ की सुधि लेवे और पल पल उसे परखे । तू कब लों मुझ से आंख न फेरेगा १९ और मुझे रहने न देगा जब लों मैं अपना थूक लीलूं । मैं ने पाप किया २० है हे मनुष्य के रक्षक मैं तेरे लिये क्या करूं तू ने मुझे अपने बिरोध का चिन्ह क्यों बना रक्खा है यहां लों कि मैं अपने लिये बोझ हूं । और मेरे अपराध २१ को तू क्यों नहीं क्षमा करता और मेरी बुराई को क्यों नहीं दूर करता क्योंकि अब मैं धूल पर सोऊंगा और तू बिहान को मुझे ढूंढ़ेगा परन्तु मैं न हूंगा ॥

आठवां पर्ब्ब ।

तब शूही बिलदाद ने उत्तर देके १ कहा । तू कब लों ये बातें कहेगा और २ तेरे मुंह की बातें बड़ी आंधी होंगी । क्या सर्वशक्तिमान बिचार को उलटेगा ३ अथवा क्या सर्वसामर्थी सच्चाई को लचावेगा । यदि तेरे बालकों ने उस के ४ बिरुद्ध पाप किया है और उस ने उन के अपराधों में उन्हें दूर किया है । यदि तू समय में सर्वशक्तिमान को ५ ढूंढ़ेगा और सर्वसामर्थी के आगे प्रार्थना करेगा । यदि तू पवित्र और खरा होता ६ तो निश्चय अब तेरे कारण वह उठेगा और तेरे धर्म्म के निवास को भाग्यवान करेगा । यद्यपि तेरा आरंभ छोटा ७ था तथापि तेरा अन्त बहुत बढ़ आवेगा ॥

८ क्योंकि मैं बिनती करता हूं कि पिछले समय से बूझो और सिद्ध होके ९ उन के पितरों में खोजो। क्योंकि कल के होके हम कुछ नहीं जानते क्योंकि हमारे दिन पृथिवी में छाया के तुल्य १० हैं। क्या वे तुझे न सिखावेंगे और तुझ से न कहेंगे और अपने मन से बातें न ११ उच्चारेंगे। क्या नल चहला बिना उग सक्ता है और हुगला पानी बिना बढ़ १२ सक्ता है। वह अब लों अपनी हरियाली ही में है और काटा नहीं गया तौभी सब सागपातों से आगे सूख जाता १३ है। जो ईश्वर को बिसराते हैं उन सभों की चाल ऐसी ही है और अधर्म्मी १४ की आशा नष्ट हो जायगी। उन की आशा काटी जायगी और मकड़ी का १५ जाला सा उन का भरोसा है। वह अपने घर पर ओठंगेगा परन्तु वह न ठहरेगा वह उसे पकड़ेगा परन्तु न १६ थमेगा। वह सूर्य्य के आगे हरा होता और उस की डालियां उस की बाटिका १७ पर बढ़ती हैं। उस की जड़ें ढेर की चारों ओर लिपटी हैं और वह पथरैले १८ स्थान को तकता है। जो वह अपने स्थान से उखड़ जाय तो वह उस्से मुकरेगा कि मैं ने तुझे नहीं देखा। १९ देख उस की चाल का आनन्द यह है और पृथिवी से दूसरे उगेंगे॥

२० देख सर्वशक्तिमान सिद्ध को न त्यागेगा और अधर्म्मी का हाथ न २१ पकड़ेगा। जब लों तेरे मुंह को हंसी से न भरे और तेरे होंठों को आनन्द के २२ शब्द से। जो तुझ से बैर करते हैं वे लाज से पहिराये जायेंगे और दुष्टों का निवास न रहेगा॥

नवां पर्व्व।

१ तब ऐयूब ने उत्तर देके कहा। २ सचमुच मैं जानता हूं कि योंही है और मनुष्य सर्वशक्तिमान के आगे क्योंकर ३ धर्म्मी ठहरेगा। यदि वह उस्से बिवाद करने चाहे तो वह सहस्र में एक का उस को उत्तर न दे सकेगा। ४ वह मन में बुद्धिमान और बल में बीर है कौन उस के बिरुद्ध कठोर होके भाग्यमान ५ हुआ है। वह पर्वतों को टालता है और वे नहीं जानते वह अपने क्रोध से ६ उन्हें उलट देता है। वह पृथिवी को उस के स्थान से हिलाता है और उस ७ के खंभे थरथराते हैं। वह सूर्य्य को आज्ञा करता है और वह उदय नहीं होता और वह तारों पर छाप करता ८ है। वह अकेला ही स्वर्गों को फैलाता है और समुद्र की लहरों पर चलता ९ है। वह भल्लूक और मृगशिर और कृत्तिका और दक्खिन के गुप्त स्थानों १० का सिरजनहार है। जो बड़े बड़े कार्य्य जो खोज से बाहर हैं और अगणित ११ आश्चर्य्य करता है। देख वह मेरे पास से जाता है और मैं नहीं देखता वह चला भी जाता है परन्तु वह मुझे सूझ १२ नहीं पड़ता। देख वह छीन लेता है और कौन उसे रोक सक्ता है कौन उसे १३ कहेगा कि तू क्या करता है। यदि ईश्वर अपना क्रोध उठा न ले तो अहंकारी सहायक उस के नीचे दब १४ जायेंगे। तो मैं कौन हूं जो उसे उत्तर दूं और बचन छांट छांटके उसे कहूं। १५ यद्यपि मैं धर्म्मी होता तथापि उसे उत्तर न देता परन्तु अपने न्यायी से बिनती १६ करता। यदि मैं पुकारता और वह मुझे उत्तर देता तथापि मैं प्रतीति न १७ करता कि उस ने मेरा शब्द सुना। वह जो आंधी से मुझ पर आ पड़ता है और अकारथ मेरे घावों को बढ़ाता १८ है। वह मुझे सांस नहीं लेने देता परन्तु १९ मुझे कड़ुआहट से पूर्ण करता है। यदि

मैं बल के विषय में कहूं तो देखो वह बली है और यदि न्याय की तो कौन मेरे लिये न्याय का समय ठहरावेगा।
२० यदि अपने को निर्दोष ठहराऊं तो मेरा मुंह मुझे दोषी ठहरावेगा यदि सिद्ध तो
२१ मुझे हठीला भी ठहरावेगा। यदि मैं सिद्ध होता तौभी मैं अपने प्राण की सुधि न ले सक्ता मैं अपने ही प्राण को तुच्छ समझता॥
२२ यह एक ही बात है इस लिये मैं ने कहा कि वह सिद्ध को और दुष्ट को
२३ एक समान नाश करता है। यदि कोड़ा अचानक मार डाले तो वह निर्दोषों के
२४ दुःख पर हंसता है। पृथिवी दुष्ट के हाथ में दिई गई है वह उस के न्यायियों के मुंह को ढांपता है यदि ऐसा न हो
२५ तो वह कौन है। पर मेरे दिन डाकिये से भी शीघ्र जाते हैं वे भाग गये और
२६ उन्हों ने भलाई को नहीं देखा। उड़ाक नौका के समान और गिद्ध की नाईं जो
२७ अहेर पर टूटता है वे चले गये। यदि मैं कहूं कि अपनी दोहाई को भूलूंगा अपने मुंह को बदल दूंगा और आप
२८ को मगन करूंगा। तौभी मैं अपने सारे दुःखों से डरता हूं मैं जानता हूं कि तू
२९ मुझे निर्दोष न ठहरावेगा। मैं दुष्ट ठहरूंगा तो फिर क्यों वृथा परिश्रम करता
३० हूं। यदि मैं अपने को पाले के जल से स्नान दूं और अपने हाथों को रेह से
३१ अति पावन करूं। तथापि तू मुझे गड़हे में बोर देगा और मेरे वस्त्र मुझ
३२ से घिन करेंगे। क्योंकि वह मेरे समान मनुष्य नहीं कि उसे उत्तर देऊं और हम
३३ आपुस में न्याय में एकट्ठे आवें। हमारे मध्य में कोई बिचवई नहीं जो अपना
३४ हाथ हम दोनों पर धरे। वह अपना डंडा मुझ पर से दूर करे और उस का
३५ भय मुझे न डरावे। तब मैं कहूंगा और उस्से न डरूंगा क्योंकि मैं अपने मन में ऐसा नहीं हूं॥

दसवां पर्व्व

१ मेरे जीवन से मेरा प्राण थक गया मैं अपना बिलाप अपने ऊपर रहने दूंगा मैं अपने प्राण की कड़ुआहट में बोलूंगा।
२ मैं ईश्वर से कहूंगा कि मुझ पर दोष मत ठहरा मुझे बता कि तू मुझ से क्यों
३ झगड़ता है। क्या तेरे लिये भला है कि तू सतावे और कि अपने हाथ के कार्य्य को तुच्छ जाने और दुष्टों के परामर्श
४ पर चमके। क्या तेरी आंखें शारीरिक हैं अथवा तू मनुष्य के समान देखता
५ है। क्या तेरे दिन मनुष्य के दिन की नाईं हैं और क्या तेरे बरस मनुष्य के
६ दिन के समान हैं। जो तू मेरी बुराई को ढूंढ़ता है और मेरे पाप को खोजता
७ है। यद्यपि तू जानता कि मैं दुष्ट नहीं हूं और कोई तेरे हाथ से छुड़ा नहीं सक्ता॥
८ तेरे हाथों ने मुझे बनाया और चारों ओर मेरा डौल किया तथापि तू मुझे
९ बिनाश करता है। मैं तेरी बिनती करता हूं कि स्मरण कर तू ने मुझे मिट्टी के समान बनाया और फिर क्या तू मुझे
१० धूल में मिलावेगा। क्या तू मुझे दूध के समान नहीं उंडेलेगा और दही की
११ नाईं मुझे नहीं जमावेगा। तू ने मुझे चाम और मांस से पहिनाया है और तू
१२ ने हाड़ और नस से मुझे बिना है। तू ने जीवन और कृपा मुझे दिई है और तेरी सुधि ने मेरे प्राण की रक्षा किई
१३ है। और इन बातों को तू ने अपने मन में छिपा रक्खा है मैं जानता हूं कि यही तेरे मन में था॥
१४ यदि मैं पाप करूं तो तू मुझे चीन्ह रखता है और मेरी बुराई से तू मुझे न
१५ छोड़ेगा। यदि मैं दुष्ट होऊं तो मुझ पर

सन्ताप और यदि धर्म्मी तो अपना सिर न उठाऊंगा मैं घबराहट से भरा हूं सो १६ तू मेरे दु:ख को देख। यदि वह उठे तो सिंह की नाईं तू मुझे अहेर करता है और मुझ पर फिर अपने को आश्च- १७ र्य्यित दिखाता है। मेरे बिरोध तू अपनी साक्षी ठहराता है और अपनी जलजलाहट मुझ पर बढ़ाता है अदल बदल और संग्राम मेरे बिरुद्ध हैं॥

१८ सो तू ने मुझे कोख से क्यों बाहर निकाला है हाय कि मैं ने अपना प्राण त्यागा होता और कोई आंख मुझे न १९ देखती। तो न होने के समान मैं हुआ होता और कोख में से समाधि में पहुं- २० चाया जाता। मेरे दिन क्या थोड़े नहीं थम जा और मुझे रहने दे जिसतें तनिक २१ शांति पाऊं। उस्से पहिले कि मैं जाऊं और फिर न आऊं अंधकार और मृत्यु २२ की छाया के देश में। अंधकार के देश में मृत्यु की छाया के अंधकार के समान जो बेडौल और जहां की ज्योति अंध- कार के तुल्य है॥

ग्यारहवां पर्ब्ब।

१ तब नामाती जोफार ने उत्तर देके २ कहा। क्या बचन की बहुताई का उत्तर दिया न जायगा क्या अति कथक निर्दोषी ३ ठहराया जायगा। क्या तेरी बकवाद मनुष्यों को चुप करेगी ऐसा कि तू चिढ़ावे और कोई तुझे न लजवाये। ४ और तू ने कहा कि मेरा उपदेश शुद्ध है और तेरी दृष्टि में मैं पवित्र हूं। ५ परन्तु हाय कि ईश्वर बोलता और अपने ६ होंठों को तेरे बिरुद्ध खोलता। और वह तुझे गुप्त ज्ञान दिखाता क्योंकि उस की बुद्धि जान्ने से परे है सो जान रख कि ईश्वर तेरी बहुत बुराइयों को भुला देता है॥

७ क्या खोजके तू ईश्वर को पा सक्ता है क्या तू सर्व्वसामर्थी की पूर्णता को पहुंच सक्ता है। वह स्वर्ग से भी ऊंचा ८ है तू क्या कर सक्ता है पाताल से गहिरा है तू क्या जान सक्ता है। उस का नाप ९ पृथिवी से लंबा और समुद्र से चौड़ा है। यदि वह चढ़ आवे और पकड़ ले १० और न्याय के लिये एकट्ठा करे तो कौन उसे रोक सक्ता है। क्योंकि वह बुरे ११ मनुष्यों को जानता है वह दुष्टता भी देखता है पर वे न बूझेंगे। और वृथा १२ मनुष्य निर्बुद्धि है और मनुष्य जंगली गदहे के बच्चे के समान जन्मता है॥

जो तू अपने मन को सिद्ध करे और १३ अपने हाथ उस की ओर फैलावे। जो १४ तेरे हाथ में बुराई हो तो उसे दूर कर और दुष्टता को अपने डेरे में रहने मत दे। तब तू अपना मुंह निष्कलंक उठा- १५ वेगा हां तू दृढ़ होगा और न डरेगा। क्योंकि तू अपने कष्ट को भूल जायगा १६ और उसे ऐसा जानेगा जैसे पानी जो बह जाता है। तेरी बय ठीक दोपहर दिन १७ से भी अधिक ज्योतिमान होगी और यद्यपि तू अब अंधेरे में है तथापि शीघ्र बिहान के समान हो जायगा। और तू १८ बचा रहेगा क्योंकि आशा है अभी तू भरमता है आगे को चैन में बिश्राम करेगा। और तू लेट जायगा और कोई १९ न डरावेगा हां बहुत से तेरी बिनती करेंगे। परन्तु दुष्टों की आंखें धुंधली २० हो जायेंगी और उन का शरणस्थान उन से जाता रहा और उन की आशा प्राण के निकलने के श्वास के समान होगी॥

बारहवां पर्ब्ब।

तब ऐयूब ने उत्तर देके कहा। १ नि:संदेह तुम्हीं लोग हो और बुद्धि २ तुम्हारे साथ मरेगी। परन्तु तुम सरीखा ३ मैं भी ज्ञान रखता हूं कुछ तुम से घाट

नहीं हूं ऐसी बातें कौन नहीं जानता । ४ मैं परोसी से खिझाया जाता हूं जो ईश्वर को पुकारता है और वह उसे उत्तर देगा सज्जन और खरा पुरुष ठट्ठे में उड़ाया ५ जाता है । जिस के पांव फिसलने के लिये सिद्ध हैं वह उस दीपक के समान है जो सुचित्तों की समझ में निन्दित है ॥

६ बटमारों के डेरे भाग्यवान होते हैं और सर्व्वशक्तिमान के खिजवैये निर्भय हैं उन के हाथ में ईश्वर पहुंचाता है । ७ परन्तु अब तू पशुन से पूछ और वे तुझे सिखावेंगे और आकाश के पक्षियों से ८ और वे तुझे बतावेंगे । अथवा पृथिवी से कह और वह तुझे सिखावेगी और ९ समुद्र की मछलियां तुझे बतावेंगी । इन सभों में कौन नहीं जानता कि परमेश्वर १० के हाथ ने यह सब किया है । जिस के हाथ में सब जीवधारियों का प्राण और मनुष्यों के सारे शरीर का श्वास है ॥

११ क्या कान बातों को नहीं जांचता १२ और तालू भोजन नहीं चीखता । बूढ़ों १३ में बुद्धि है और पुरनियों में समझ । बुद्धि और बल उस के साथ हैं वह मंत्र और १४ समझ रखता है । देख वह घर ढा देता है और फिर बनाया न जायेगा वह मनुष्य को बन्द करता है और वह खोला न १५ जायेगा । देख वह पानियों को रोक लेता है और वे सूख जाते हैं वह फिर उन्हें भेजता है और वे धरती को उलट-१६ पुलट कर देते हैं । बल और बुद्धि उस के साथ हैं छल खाया हुआ और छली १७ उस के हाथ में है । वह मंत्रियों को बंधुआई में ले जाता है और न्यायियों १८ को बौड़हा करता है । वह राजाओं की आज्ञा को भंग कर देता है और १९ रस्सी से उन की कटि बांधता है । वह याजकों को बंधुआई में ले जाता है २० और बलियों को उलट देता है । वह बिश्वस्तों के होंठों को बंद कर देता है और प्राचीनों की समझ को ले लेता है । वह अध्यक्षों पर निन्दा डालता है २१ और बलवंतों का पटुका खोलता है । अंधियारे में से वह गहिरी बातें प्रगट २२ करता है और मृत्यु की छाया को उंजियाले में लाता है । वह जातिगणों को २३ बढ़ाता है और उन्हें नाश करता है वह जातिगणों को फैलाता है और उन्हें फेर लाता है । वह पृथिवी के जातिगणों २४ के श्रेष्ठ लोगों का मन ले लेता है और बिना मार्ग जंगल में उन्हें भ्रमाता है । वे बिन उंजियाले अंधियारे में टटोलते २५ हैं और वह उन्हें मतवाले के समान झुमाता है ॥

तेरहवां पर्व्व ।

१ देख मेरी आंखों ने यह सब देखा है और मेरे कानों ने सुना और उसे बूझा २ है । जो कुछ तुम जानते हो सो मैं भी जानता हूं मैं तुम से घाट नहीं हूं ॥

३ हाय कि मैं सर्व्वसामर्थी से बोल सक्ता और ईश्वर से बिवाद किया चाहता ४ हूं । परन्तु तुम झूठ के बनानेहारे और ५ झूठमूठ के बैद्य हो । हाय कि तुम सर्व्वथा चुप हो रहते तो वही तुम्हारी बुद्धि होती ॥

६ अब मेरा बिचार सुनो और मेरे होंठों ७ के प्रत्युत्तर पर कान धरो । क्या तुम ईश्वर के लिये मिथ्या कहोगे और क्या ८ उस के लिये छल से बोलोगे । क्या तुम उस का पक्ष करोगे क्या ईश्वर के लिये ९ झगड़ोगे । क्या यह भला है कि वह तुम्हें जांचे अथवा जैसा कि एक मनुष्य दूसरे को धोखा देता है तुम उसे धोखा १० दोगे । यदि तुम गुप्त में पक्ष करो तो ११ निश्चय वह तुम्हें दपटेगा । क्या उस की महिमा तुम्हें न डरावेगी और उस १२ का भय तुम पर न पड़ेगा । तुम्हारे

स्मरण की बातें राख के समान हैं और तुम्हारे गढ़ मिट्टी के गढ़ हैं॥

१३ चुप हो रहो मुझे अकेला छोड़ो कि मैं बोलूं और मुझ पर जो हो सो हो। १४ किस लिये मैं अपने मांस को अपने दांतों से काटूं और अपना प्राण अपने १५ हाथ में लेऊं। देख वह मुझे घात करे तौभी मैं उस पर भरोसा रक्खूंगा परन्तु उस के आगे मैं अपनी चाल को स्थिर १६ करूंगा। मेरी मुक्ति भी वही है क्योंकि कपटी उस के आगे न पहुंचेगा। १७ मेरा बचन ध्यान से सुनो और मेरे बर्णन १८ पर कान धरो। अब देखो मैं ने अपना पद सिद्ध किया है मैं जानता हूं कि १९ मैं निर्दोष ठहरूंगा। कौन है जो मुझ से बिवाद कर सकेगा क्योंकि मैं अब चुप रहूंगा और मर ही जाऊंगा॥

२० केवल दो बात तू मुझ से मत कर तब मैं आप को तुझ से न छिपाऊंगा। २१ अपना हाथ मुझ से परे खींच ले और २२ अपने भय से मुझे मत डरा। तब पुकार और मैं उत्तर देऊंगा अथवा मैं कहूंगा २३ और तू उत्तर दे। मेरी बुराई और पाप कितने हैं मेरा अपराध और पाप मुझे २४ बता। किस लिये तू अपना मुंह छिपावेगा और मुझे अपना बैरी समझेगा। २५ क्या तू उड़ाये हुए पत्ते को तोड़ेगा और २६ तू सूखी खूंघी को खदेगा। क्योंकि तू मेरे बिरुद्ध कडुई कडुई बातें लिखता है और मुझे तरुणाई की बुराई का २७ पलटा देता है। और मेरे पांव को तू काठ में डालता है और मेरी सारी चालों को ताकता रहता है और मेरे पांव के २८ तलवे पर तू चिन्ह रखता है। और वह सड़ी हुई बस्तु के समान कीड़े खाये बस्त्र की नाईं नष्ट हो जायेगा॥

चौदहवां पर्ब्ब

१ मनुष्य जो स्त्री से उत्पन्न हुआ थोड़े दिन का और दुःख से भरा हुआ है। २ वह फूल की नाईं उगता है और काटा जाता है और छाया की नाईं जाता रहता और नहीं ठहरता। क्या तू निश्चय ३ ऐसे पर अपनी आंखें खोलता है और मुझे अपने संग बिचार में लाता है। ४ कौन अपवित्र से पवित्र निकाल सक्ता है कोई नहीं। ५ यद्यपि उस के दिन ठहराये गये उस के मासों की गिनती तेरे पास है तथापि तू ने उस के सिवाने ठहराये हैं और वह उन से पार नहीं जा ६ सक्ता। उस्से अपनी दृष्टि फेर जिसतें वह बिश्राम करे जब लों वह बनिहार के समान अपने दिन से मगन हो॥

७ क्योंकि पेड़ के लिये आशा है यदि वह काटा जाय तो वह फिर फूटेगा ८ और उस की कोंपलें निकलेंगी। यद्यपि उस की जड़ भूमि में पुरानी होवे और उस की खूंघी मट्टी में सूख जाय। ९ तथापि पानी के बास से पनपेगा और पौधे के समान डालें उगावेगा। १० परन्तु मनुष्य मरता है और मिट जाता है हां मनुष्य का प्राण निकल जाता है और वह कहां है॥

११ समुद्र से पानी घट जाते हैं और नदी १२ हटके सूख जाती है। और मनुष्य लेट जाता है और न उठेगा जब लों कि स्वर्ग टल न जायें वे न उठेंगे और अपनी नींद से न चौंकेंगे॥

१३ हाय कि तू मुझे समाधि में छिपा लेवे और जब लों तेरा क्रोध जाता न रहे मुझे गुप्त रक्खे और मेरे लिये समय १४ ठहराके मुझे स्मरण करे। यदि मनुष्य मरे तो क्या वह फिर जीयेगा मैं अपनी सेवकाई के सारे दिनों से बाट जोहूंगा जब लों मेरा पलटा न आवे॥

१५ तू पुकारेगा और मैं तुझे उत्तर देऊंगा तू अपने हाथ के कार्य्य पर इच्छा रक्खेगा।

१६ क्योंकि तू अब मेरे डग डग को गिनता है क्या तू मेरे पाप की नहीं देखा १७ करता। मेरा अपराध थैली में छाप किया गया है और तू मेरी बुराई को बढ़ाता जाता है॥

१८ निश्चय पर्वत गिरके नष्ट होता है और पत्थर अपने स्थान से सरकाया गया १९ है। पानी पत्थरों को घिस डालते हैं और झाड़ पृथिवी की धूल को बहा ले जाती हैं और तू मनुष्य की आशा को २० नष्ट करता है। तू उस के विरुद्ध नित्य प्रबल होता है और वह जाता रहता है तू उस के रूप को पलटता है और उसे २१ भेज देता है। उस के बेटे प्रतिष्ठा पाते हैं और वह नहीं जानता और वे घटाये २२ जाते हैं परन्तु वह नहीं देखता। केवल उस की देह अपने लिये पीड़ा में रहेगी और उस का प्राण अपने लिये बिलाप करेगा॥

पन्द्रहवां पर्ब्ब

१ तब इलीफाज तीमानी ने उत्तर देके २ कहा। क्या बुद्धिमान बृथा ज्ञान उच्चारेगा और अपने पेट को पुर्बी पवन से ३ भरेगा। क्या वह निष्फल बातों से बिचारेगा अथवा ऐसे बचन से जिसे वह ४ भला न कर सके। हां तू डर को व्यर्थ करता है और ईश्वर के आगे प्रार्थना ५ रोकता है। क्योंकि तेरा मुंह तेरी बुराई उच्चारता है और धूर्त्त की जीभ तुझे ६ भाती है। तेरा ही मुंह तुझ पर दोष लगाता है और मैं नहीं हां तेरे होंठ तुझ पर साक्षी देते हैं॥

७ क्या पहिला पुरुष तूही उत्पन्न हुआ अथवा तू पर्वतों से आगे बना था ८ क्या तू ईश्वर के भेद को सुनेगा और क्या तू अपने ही पास बुद्धि को ९ रक्खेगा। तू क्या जानता है जो हम नहीं जानते तुझ में कौन समझ है जो हम्में नहीं। पक्के बाल के और बड़े १० पुरनिये हमारे साथ हैं जो तेरे पिता से भी बहुत बूढ़े हैं। क्या सर्वशक्तिमान ११ की शांति तेरे लिये छोटी है और वह बचन जो कोमलता के साथ तुझ से कहा गया है॥

तेरा मन तुझे क्यों खींच ले जाता १२ है तेरी आंखें क्यों पलक मारती हैं। जो तू अपना प्राण सर्वशक्तिमान के १३ बिरुद्ध फेरता है और बातें अपने मुंह से निकालता है। मनुष्य क्या जो वह १४ पवित्र होवे और जो स्त्री से जन्मा वह धर्मी होवे। देख वह अपने साधुन पर १५ भरोसा नहीं करता और उस की दृष्टि में स्वर्ग भी पवित्र नहीं हैं। तो कितना १६ अधिक घिनित और मलीन मनुष्य है जो बुराई को पानी की नाईं पीता है॥

मैं तुझे बताऊंगा मेरी सुन और जो १७ मैं ने देखा है सोई बताऊंगा। जो १८ बुद्धिमान बर्णन करते और अपने पितरों से पाके नहीं छिपाते। केवल उन्हीं १९ को पृथिवी दिई गई थी और उन के मध्य में कोई उपरी न गया था। दुष्ट २० जन जीवन भर पीड़ा में रहता है और अंधेरी पर बरस की गिनती छिपी है। उस के कान में डरों का शब्द है २१ भाग्यमानी में नाशक उस पर आ पड़ेगा। वह प्रतीति नहीं करता कि २२ मैं अंधियारे से फिर आऊंगा परन्तु तलवार से उस की बाट जोही जाती है। वह रोटी के लिये भ्रमता है कि २३ कहां है वह जानता है कि अंधियारे का दिन उस के हाथ पर लैस है। दुःख और क्लेश उसे डरावेंगे जैसा कि २४ राजा संग्राम के लिये लैस होता है तैसा वे उस पर प्रबल होंगे। क्योंकि वह २५ सर्वशक्तिमान के बिरुद्ध अपना हाथ बढ़ाता है और सर्वसामर्थी के बिरुद्ध

२६ आप को बलवंत करता है। वह अकड़ता हुआ अपनी ढाल की घनी कुलियों के संग उस पर दौड़ता है।
२७ इस कारण कि वह अपनी मोटाई से अपना मुंह ढांपता है और अपने पांजर
२८ पर चिकनाई जमाई है। और वह उजाड़ नगरों में और उस घर में जिस में कोई नहीं रहता जो खंड़हर होने
२९ पर है बसेगा। वह धनी न होगा और उस की संपत्ति न ठहरेगी और उस का
३० अधिकार पृथिवी पर न फैलेगा। वह अंधियारे से निकल न जायगा लवर उस की डालियों को सुखा देगी और वह अपने मुंह के श्वास से जाता रहेगा॥
३१ जो छल खाया हुआ है सो वृथा का भरोसा न करे क्योंकि वृथा उस का
३२ प्रतिफल होगा। वह अपने समय से आगे कट जायगा और उस की डाली
३३ हरी न रहेगी। लता की नाईं वह अपने कच्चे दाख झाड़ेगा और जलपाई की
३४ नाईं अपना फूल गिरावेगा। क्योंकि कपटियों की मंडली उजड़ जायगी और अकोर के डेरे आग से भस्म हो जायेंगे।
३५ उन्हें दुष्टता का गर्भ है और बुराई जनते हैं और उन के पेट छल सिद्ध करते हैं॥

सोलहवां पर्व्व।

१ तब ऐयूब ने उत्तर देके कहा।
२ कि मैं ने ऐसी ऐसी बहुत सी बातें सुनी हैं तुम सब खिजाऊ शांतिदायक
३ हो। क्या वृथा बचन का अंत न होगा अथवा उत्तर देने को तुझे किस से
४ साहस होता है। मैं भी तुम सरीखा बात कर सक्ता हूं जो तुम्हारा प्राण मेरे प्राण की संती होता तो मैं तुम्हारे बिरुद्ध बातों का ढेर कर सक्ता और
५ तुम पर सिर धुनता। परन्तु मैं अपने मुंह से तुम्हें बल देता और मेरे होंठ की शांति तुम्हें ढाढ़स देती॥

६ यद्यपि मैं कहता हूं तथापि मेरा शोक नहीं घटता और जो चुप रहूं तो
७ क्या वह मुझ से जाता रहेगा। परन्तु अब केवल उस ने मुझे थकाया है तू ने
८ मेरी सारी जथा को उजाड़ा है। और तू ने मुझे दृढ़ता से पकड़ लिया है और यह मुझ पर साक्षी है और मेरी दुर्बलता उठके मेरे मुंह पर साक्षी देती है।
९ उस का क्रोध मुझे फाड़ता है और वह मुझ से बैर रखता है वह अपने दांत मुझ पर किचकिचाता है मेरा बैरी मुझ
१० पर आंखें चढ़ाता है। वे अपना मुंह मुझ पर पसारते हैं वे निन्दा से मेरे गाल पर थपेड़ा मारते हैं वे मेरे बिरुद्ध एकट्ठे हुए हैं॥
११ सर्वशक्तिमान मुझे अधर्म्मियों के हाथ बन्द करता है और दुष्टों के हाथ
१२ में सौंपता है। मैं चैन से था परन्तु उस ने मुझे फाड़ा और मेरा गला पकड़ा और झकोरके मुझे टुकड़ा टुकड़ा किया है और मुझे अपना चिन्ह खड़ा कर
१३ रक्खा है। उस के धनुषधारी मुझे घेरते हैं वह मेरे गुर्दे को बेधता है और नहीं छोड़ता और भूमि पर मेरा
१४ पित्त उंडेलता है। वह दरार पर दरार से मुझे तोड़ता है वह महाबली के
१५ समान मुझ पर दौड़ता है। मैं ने अपने चाम पर टाट वस्त्र सीया है और अपने सींग को धूल से अपवित्र किया है।
१६ बिलाप करते करते मेरा मुंह लाल हो गया और मृत्यु की छाया मेरी भौंहों
१७ पर है। यद्यपि मेरे हाथ में अधर्म्म नहीं है और मेरी प्रार्थना भी पवित्र है॥
१८ हे पृथिवी मेरा लोहू मत ढांप और मेरा चिल्लाना कहीं ठिकाना न पावे।
१९ अब भी देख मेरा साक्षी स्वर्ग पर है
२० और मेरा प्रमाण ऊंचे स्थानों पर। मेरे मित्र मेरे निन्दक हैं परन्तु मेरी आंखें

२१ ईश्वर के आगे बहती हैं। हाय कि कोई मनुष्य के लिये ईश्वर से ऐसा विवाद करता जैसा मनुष्य अपने मित्र २२ के लिये करता है। क्योंकि जब गिनती के बरस आवेंगे तब मैं उस मार्ग से जाऊंगा जहां से फिर न आऊंगा॥

सत्रहवां पर्व्व

१ मेरा प्राण घट गया मेरे दिन हो चुके मेरे लिये समाधि सिद्ध हैं॥

२ क्या मेरे पास निन्दक नहीं और मेरी आंखें उन के खिजाव पर नहीं बस्तीं। ३ सो अब आ गहने रख दे और मुझ में और आप में बिचवई दे वह कौन है ४ जो मुझ से हाथ मारेगा। क्योंकि तू ने उन के मन को ज्ञान से छिपाया है ५ इस लिये तू उन्हें न बढ़ावेगा। जो अपने मित्रों को दुष्टों के हाथ में पकड़वाता है उस के बालकों की आंखें धुंधली हो जायेंगी॥

६ और उस ने मुझे लोगों की कहावत बनाया है और मैं उन के आगे घिनित ७ हो गया। और मेरी आंखें शोक के मारे धुंधला गईं मेरे अंग अंग छाया के ८ समान हैं। खरे जन इस्से आश्चर्यित होंगे और निर्दोष आप को कपटी के ९ विरुद्ध उभारेगा। धर्म्मी भी अपने मार्ग को धरे रहेगा और जो पवित्र हाथ रखते हैं सो बल में बढ़ते जायेंगे। १० परन्तु तुम सब जो हो अब फिरो और आओ क्योंकि मैं तुम्हारे मध्य में एक भी बुद्धिमान नहीं पाता॥

११ मेरे दिन बीत गये हैं मेरी युक्ति अर्थात् मेरे मन का अधिकार जाता १२ रहा। वे रात को दिन से पलटते हैं १३ उंजियाला अंधियारे के निकट है। जो मैं ठहरूं तो समाधि मेरा घर हो मैं ने अपना बिछौना अंधियारे में बनाया १४ है। मैं ने गड़हे को अपना पिता करके पुकारा कीड़े को अपनी माता और बहिन। १५ परन्तु अब मेरी आशा कहां और मेरी आशा को कौन देखेगा कि १६ पूरी हुई। वे मेरे साथ पाताल के अड़ंगों में उतरेंगी हां हम एक संग धूल में उतरेंगे॥

अठारहवां पर्व्व।

१ तब शुहीती बिलदाद ने उत्तर देके २ कहा। कि अब तुम बातों का अंत कब लों करोगे सोचो और पीछे हम ३ कहेंगे। हम किस लिये पशुन के समान गिने जाते हैं और तुम्हारी दृष्टि में ४ अपवित्र जाने जाते हैं। तू जो अपने क्रोध में अपने प्राण को फाड़ता है तेरे लिये क्या पृथिवी त्यागी जायगी और क्या चटान अपने स्थान से सरकाई जायगी॥

५ हां दुष्ट की ज्योति बुत जायगी और उस की आग की चिनगारी न ६ चमकेगी। उंजियाला उस के तंबू में अंधियारा हो जायगा और उस का ७ दिआ उस के साथ बुत जायगा। उस के डग जो वह बल के साथ रखता है घट जायेंगे और उसी का बिचार उसे ८ गिरावेगा। क्योंकि वह अपने ही पांव से जाल में पड़ गया है और वह फंदे ९ पर चलता है। फंदा उस की एड़ी को पकड़ेगा और जाल उस पर प्रबल होगा। १० उस के लिये जाल भूमि पर छिपे हैं और उस के लिये मार्ग में एक फंदा। ११ चारों ओर से भय उसे डराता है और उस का पीछा करके उस के पांव को १२ हिलाता है। उस का बल भूख से घटा जाता है और नाश उस के पास लैस १३ है। वह उस के शरीर के अंगों को भखता है हां मृत्यु का पहिलौठा उस १४ के अंगों को खाता है। उस का भरोसा उस के तंबू से उखाड़ा जायगा और

भय राजा के समान उस का पीछा १५ करता है। भय उस के तंबू में बसेगा कि वह उस का न हो गंधक उस के १६ निवास पर बरसाई जायगी। नीचे से उस की जड़ सूख जायगी और ऊपर १७ उस की डाल काटी जायगी। उस का स्मरण पृथिवी से नाश हो जायगा और १८ मार्गों में उस का नाम न रहेगा। वे उसे उंजियाले से अंधियारे में खेदेंगे और १९ जगत से खदेड़ा जायगा। वह अपने लोगों में न बेटा न भतीजा रक्खेगा और न उस के निवासों में कोई रहेगा। २० जो पीछे आवेंगे सो उस के दिन से आश्चर्य्यित होंगे और जो उस के आगे २१ हैं वे डर को पकड़ेंगे। निश्चय दुष्टों के निवास यही हैं और जो सर्वशक्तिमान को नहीं जानता उस का ठिकाना यही है॥

उन्नीसवां पर्ब्ब।

१ फिर ऐयूब ने उत्तर देके कहा। २ तुम कब लों मेरे प्राण को खिजाओगे और बातों से मुझे टुकड़े टुकड़े करोगे। ३ तुम लोग अभी दस बार मेरी निन्दा कर चुके और लजाते नहीं कि मुझे ४ हक्काबक्का करते हो। और माना कि मैं ने चूक किई हो तो मेरी चूक मेरे ५ ही पास है। यदि निश्चय तुम मेरे बिरुद्ध आप को बढ़ाओगे और मेरी ६ निन्दा मेरे बिरुद्ध करोगे। तो जान रक्खो कि ईश्वर ने मुझे दबा दिया है और अपने जाल से मुझे घेरा है। ७ देखो मैं बरबस्ती से चिल्लाता हूं परन्तु सुना नहीं जाता मैं शब्द उठाता हूं पर ८ कोई नहीं बिचारता। उस ने मेरे मार्ग को घेरा है कि मैं बाहर नहीं जा सक्ता और उस ने मेरे पथों को अंधियारा ९ किया है। मेरे बिभव को उस ने उतार दिया है और मेरे सिर से मुकुट ले लिया। चारों ओर से उस ने मुझे नाश १० किया है और मैं जाता रहा और पेड़ के समान उस ने मेरे भरोसे को उखाड़ा है। और उस ने अपना कोप मुझ पर ११ भड़काया है और अपने बैरियों में मुझे गिनता है। उस की सेना ने एकट्ठी १२ आके मेरे बिरुद्ध अपने मार्ग सिद्ध किये हैं और मेरे डेरे की चारों ओर छावनी करती हैं। उस ने मेरे भाईबन्धों को १३ मुझ से दूर किया है और मेरे जान पहिचान निश्चय मुझ से अलग हुए हैं। मेरे कुटुम्ब घट गये हैं और मेरे समीपी १४ मित्र मुझे भूल गये हैं। मेरे घर के दास १५ और मेरी दासियां मुझे उपरी गिनती हैं उन की दृष्टि में मैं उपरी हूं। मैं ने १६ अपने दास को बुलाया और उस ने उत्तर न दिया मैं ने अपने मुंह से उस की बिनती किई। मेरा प्राण मेरी पत्नी १७ के आगे घिनौना हो गया और मेरी बिन्तियां मेरे भाइयों के आगे। हां १८ बालकों ने भी मेरी निन्दा किई मैं उठा और उन्हों ने मेरे बिरुद्ध कहा। मेरे १९ सारे परमहितों ने मुझ से घिन किया और जिन्हें मैं प्यार करता था मेरे बिरुद्ध फिर गये। मेरी हड्डी मेरे चाम और २० मेरे मांस से लगी है और मैं अपने दांतों के चाम से बच निकला हूं। हे मेरे २१ मित्रो मुझ पर दया करो मुझ पर दया करो क्योंकि ईश्वर का हाथ मुझ पर पड़ा है। सर्वशक्तिमान के समान क्यों २२ तुम मुझे सताते हो और मेरे मांस से क्यों नहीं संतुष्ट होते हो॥

हाय कि मेरे बचन अब लिखे जाते २३ हाय कि वे पुस्तक में छापे जाते। कि २४ वे लोहे की लेखनी और रांगे से सदा के लिये चटान पर खोदे जाते। क्यों- २५ कि मैं जानता हूं कि मेरा मुक्तिदायक जीता है और अंत में वह पृथिवी पर

२६ खड़ा होगा । यदि मेरे चाम के पीछे यह नाश हो जाय तथापि मैं अपने
२७ शरीर से ईश्वर को देखूंगा । जिसे मैं अपने लिये देखूंगा और मेरी आंखें देखेंगी और दूसरी नहीं ये मेरे लंक मुझ में नाश हो गये ॥

२८ क्योंकि तुम तो कहते हो कि हम क्योंकर उसे सतावें और बात का तत्व
२९ उस में पायें । अपने लिये तलवार से डरो क्योंकि कोप तलवार से दण्ड पाता है जिसतें तुम जानो कि न्याय है ॥

बीसवां पर्व्व ।

१ तब नामाती जोफार ने उत्तर देके
२ कहा । कि इस लिये मेरी चिन्तायें मुझ से उत्तर दिलाती हैं और इस लिये कि
३ शीघ्रता मुझ में है । मैं ने अपनी निन्दा का रोक सुना है और मेरी समझ का आत्मा मुझ से उत्तर दिलाता है ॥

४ क्या तू आगे से यह नहीं जानता है जब से पृथिवी पर मनुष्य रक्खा
५ गया । कि दुष्टों का जय जय करना थोड़े लों है और कपटी का आनन्द
६ पलमात्र । यद्यपि उस की ऊंचाई स्वर्ग लों पहुंचे और उस का सिर मेघ से जा
७ लगे । तथापि वह अपने बिष्ठा की नाईं सदा लों नाश हो जायगा जिन्हों ने उसे देखा है सो कहेंगे कि वह कहां
८ है । वह स्वप्न के समान उड़ जायगा और पाया न जायगा हां रात के दर्शन
९ के समान वह खेदा जायगा । जिस आंख ने उस पर दृष्टि किई थी वह फिर उसे न देखेगी और उस का स्थान
१० उसे फिर न देखेगा । उस के सन्तान कंगालों की प्रसन्नता ढूंढेंगे और उन के
११ हाथ उस की संपत्ति फेर देंगे । उस की हड्डियां उस की तरुणाई से भरी हैं पर वह धूल में उस के साथ लेट जायेंगी ॥

१२ यद्यपि दुष्टता उस के मुंह में मीठी लगे और वह उसे अपनी जीभ के तले
१३ छिपावे । यद्यपि वह उसे बचावे और न छोड़े परन्तु अपने तालू के मध्य में
१४ रक्खे । तथापि उस का भोजन उस के ओद्र में पलटके नाग के बिष के समान
१५ हुआ है । वह धन को लील गया है परन्तु वह उसे फिर उगलेगा सर्वशक्तिमान उस के ओद्र से उसे निकालेगा ॥

१६ वह नाग का बिष चूसेगा और काले
१७ सांप की जीभ उसे नाश करेगी । वह नदियों और मधु और दूध की बहती नालियों और धाराओं को न देखेगा ।
१८ जिन बस्तुन के लिये उस ने परिश्रम किया है वह उन्हें फेर देगा और उन्हें न लीलेगा उस की संपत्ति के समान पलटा होगा और वह आनन्दित न
१९ होगा । क्योंकि उस ने कंगालों को सताया और उन्हें त्यागा और जिस घर को उस ने नहीं बनाया उसे बरबस्ती
२० से ले लिया । क्योंकि उस ने अपने ओद्र में चैन न पाया और जिस की उस ने इच्छा किई उस में से वह कुछ रख न
२१ छोड़ेगा । उस के भोजन से कुछ न रहा इस लिये उस की संपत्ति न ठहरेगी ।
२२ अपनी भरपूरी की संपूर्णता में वह सकेती में पड़ेगा दुष्ट का हर एक हाथ उस पर पड़ेगा ॥

२३ अपना पेट भरते भरते ईश्वर अपने क्रोध का झोंका उस पर डालेगा और भोजन के समय उस पर बरसावेगा ।
२४ वह लोहे के हथियार से भागेगा परन्तु
२५ खेड़ी का धनुष उसे बेधेगा । वह खींचा गया है और देह में से निकलता है हां झलमलाता खड्ग उस के पित्ते से निकलता
२६ है भय उस पर पड़े हैं । उस के भण्डारों में हर प्रकार की बिपत्ति है बिन बरी आग उसे नाश करेगी उस के तंबू में जो छूटा है उस के लिये बुराई होगी ।

२७ स्वर्ग उस की बुराई प्रगट करेगा और
२८ पृथिवी उस के विरुद्ध उठेगी। उस के घर की बढ़ती जाती रहेगी उस के
२९ क्रोध के दिन में बहि जायगी। ईश्वर की ओर से दुष्टों का भाग यही है और अधिकार जो सर्व्वशक्तिमान की ओर से उस के लिये ठहराया गया यही है॥

२१ वां पर्ब्ब।

परन्तु ऐयूब ने उत्तर देके कहा।
२ मेरी कथा ध्यान से सुनो और यही
३ तुम्हारी शांति होवे। मुझे कहने देओ
४ और मेरे कहने के पीछे चिढ़ाओ। मैं जो हूं क्या मेरी दोहाई मनुष्य से है और यदि होती तो मेरा प्राण क्यों न घटता।
५ मुझे देखो और अचंभित होओ और हाथ मुंह पर धरो॥

६ और यदि मैं स्मरण करता हूं तो डरता हूं और थर्थराहट मेरे शरीर को
७ पकड़ती है। किस लिये दुष्ट जीते हैं और पुरनियां होते हैं हां बल में सामर्थी
८ हो जाते हैं। उन के सन्तान उन की दृष्टि के आगे उन के साथ और उन के सन्तान उन की आंखों के आगे स्थिर
९ हैं। भय से उन के घर निर्भय और कुशल में हैं और ईश्वर का दण्ड उन पर नहीं
१० है। उन के सांड़ बहते हैं और नहीं घटते उन की गाय बियाती है और गाभ
११ नहीं गिराती। वे झुंड की नाईं अपने बालकों को बाहर ले जाते हैं और उन
१२ के बालक नाचते हैं। वे तबला और बीणा बजाते हैं और बांसुरी के शब्द
१३ से आनन्दित होते हैं। वे सुख बिलास से अपने दिन काटते हैं और पलमात्र
१४ में पाताल में पड़ते हैं। इस लिये वे सर्व्वशक्तिमान से कहते हैं कि हम से दूर हो क्योंकि हम तेरे मार्गों का ज्ञान
१५ नहीं चाहते हैं। सर्व्वशक्तिमान क्या कि हम उस की सेवा करें और जो हम उस की प्रार्थना करें तो हमें क्या लाभ होगा॥

१६ देखो उन की भलाई उन के हाथ में नहीं है दुष्टों का परामर्श मुझ से दूर
१७ है। दुष्टों का दीपक बहुधा बुत जाता है और उन का नाश उन पर आता है ईश्वर अपने क्रोध से दुःख बांटता है।
१८ वे उस पुआल के समान हैं जो पवन के आगे हो और भूसे की नाईं जिसे
१९ आंधी उड़ा ले जाती है। ईश्वर उस की बुराई उस के सन्तानों के लिये रख छोड़ता है वह उसे पलटा दे जिसते
२० उसे उस का निश्चय हो। उस की आंखें उस का नाश देखें और वह सर्व्वशक्तिमान के कोप को पीये।
२१ क्योंकि उस के पीछे उस का अपने घर से क्या आनन्द होगा जब कि उस के मास की गिनती कट जाय॥

२२ क्या कोई ईश्वर को ज्ञान सिखावेगा
२३ जो महतों का न्याय करता है। एक अपने बल की भरपूरी में सर्व्वथा चैन
२४ और सुख में मरता है। उस की कोखें चिकनाई से भरपूर हैं और गूदा से उस
२५ की हड्डियां चिकनी हैं। दूसरा अपने प्राण की कड़ुआहट में मरता है और
२६ सुख से कधी नहीं खाता। वे एक ही समान धूल में पड़े रहेंगे और कीड़े उन्हें ढांपेंगे॥

२७ देखो मैं तुम्हारी चिन्तों को जानता हूं और उन जुगतों को जिन से तुम मुझ
२८ पर अंधेर करते हो। क्योंकि तुम कहते हो अध्यक्ष का घर कहां है और दुष्टों के
२९ तंबू के निवास कहां हैं। तुम ने क्या पथिकों से नहीं पूछा है और क्या उन
३० के पते नहीं जानते हो। कि नाश के दिन के लिये दुष्ट धरा है वे कोपों के
३१ दिन में ले लिये जायेंगे। उस के मुंह पर कौन उस की चाल को बर्णन करेगा

और उस के किये हुए का पलटा कौन
३२ उसे देगा । वही समाधों में पहुंचाया
३३ जायगा और ढेर में अगोरेगा । तराई
के ढेले उस के लिये मीठे होंगे और वह
हर एक जन को अपने पीछे खींचेगा
३४ जैसा अगिनित के आगे थे । सो तुम
लोग क्यों मुझे वृथा शांति देते हो और
तुम्हारे उत्तरों में अपराध धरा है ॥

बाईसवां पर्व्व ।

१ तब तीमानी इलीफाज ने उत्तर देके
२ कहा । क्या मनुष्य से सर्व्वशक्तिमान को
लाभ पहुंच सक्ता है जिस रीति से कि
बुद्धिमान अपनी बुद्धि से लाभ प्राप्त
३ करता है । क्या तेरे धर्म्मी होने से सर्व्व-
शक्तिमान को आनन्द है अथवा तेरे
४ मार्ग सिद्ध करने में उसे लाभ है । क्या
वह तेरे डर के मारे तुझे दपटेगा और
क्या वह तेरे संग बिचार में जायगा ।
५ क्या तेरी दुष्टता बड़ी नहीं और तेरी
६ बुराई अत्यन्त नहीं । क्योंकि तू अका-
रण अपने भाई से धरोहर मांग लेता
है और नंगे के बस्त्र को उतार लेता है ।
७ तू थके को जल नहीं पिलाता और न
८ भूखे को भोजन देता है । और जिस
को बल है उस की भूमि है और महान
९ उस में बसता है । तू ने रांड़ों को छूछे
हाथ फेर दिया है और अनाथों की
१० भुजा तोड़ी गई । इस लिये तेरी चारों
ओर जाल हैं और अचानक भय तुझे
११ सताता है । अथवा अंधियारा जिस के
कारण से तू देख नहीं सक्ता अथवा
पानी की बाढ़ तुझे छिपा लेगी ।

१२ क्या ईश्वर स्वर्ग की ऊंचाई पर
नहीं और तारों के सिरों को देख कि
१३ वे कैसे ऊंचे हैं । और तू कहता है कि
सर्व्वशक्तिमान क्या जानता है क्या वह
१४ काली घटा में से न्याय करेगा । गाढ़े
मेघ उस के लिये ढपना हैं कि वह न
देखेगा वह स्वर्ग के मंडल पर चलता
है । क्या तू उस पुराने मार्ग को थांभ १५
रक्खेगा जिस में दुष्ट जन चले हैं । जो १६
असमय में कट गये बाढ़ उन की नेव
पर बहाई गई । जो सर्व्वशक्तिमान से १७
कहते थे कि हमारे पास से हट जा और
सर्व्वसामर्थी हमारा क्या कर सक्ता है ।
तथापि उस ने अच्छी बस्तु से उन के १८
घर को भर दिया और दुष्टों का परामर्श
मुझ से दूर हो । धर्म्मी उन का अंत १९
देखते और आनन्दित होते हैं और निर्दोष
मनुष्य उन पर हंसते हैं । निश्चय हमारा २०
बैरी काटा गया और उन के बचे हुए
को आग ने भस्म किया है ॥

अब उस्से परिचित हो तो तेरा कुशल २१
होगा उस्से तेरा भला होगा । उस के मुंह से २२
व्यवस्था ले और उस के बचन अपने मन
में धर रख । जो तू सर्व्वशक्तिमान की ओर २३
फिरेगा तो बन जायगा तू अपने डेरों से
बुराई दूर करेगा । और भूमि पर सोना २४
फेंक दे और ओफीर का सोना नालों के
पत्थरों में । तब सर्व्वशक्तिमान तेरा सोना २५
होगा और तेरे लिये चांदी के भण्डार ।
क्योंकि तब तू सर्व्वशक्तिमान में आनन्द २६
पावेगा और ईश्वर के आगे अपना मुंह
उठावेगा । तू उस की प्रार्थना करेगा २७
और वह तेरी सुनेगा और तू अपनी
मनौतियों को पूरा करेगा । जो बात २८
कि तू ठहरावेगा वह तेरे लिये बन
पड़ेगी और तेरे मार्गों पर उंजियाला
होगा । जब लोग गिरा दिये जायेंगे २९
तब तू कहेगा कि महानता है और वह
दीन जन को बचा लेगा । वह उसे जो ३०
निर्दोषी नहीं है बचावेगा और वह तेरे
हाथों की पवित्रता से बच जायगा ॥

तेईसवां पर्व्व

तब ऐयूब ने उत्तर देके कहा । आज १
भी मेरा बिलाप कड़ूआ है मेरी पीड़ा २

३ मेरे कुढ़ने से अधिक भारी है। हाय कि मैं जानता कि मैं उसे कहां पाऊं जिसतें मैं उस के आसन लों आता। ४ मैं उस के आगे अपना बिचार धरता ५ और प्रमाणों से अपना मुंह भरता। जो कुछ वह मुझे उत्तर देता मैं उसे जान लेता और जो कुछ मुझ से कहता उसे ६ समझ लेता। क्या वह अपने बड़े पराक्रम से मेरे साथ बिवाद करेगा नहीं परन्तु ७ वह मुझ पर दृष्टि करेगा। वहां धर्म्मी उस्से बिवाद करता और यों मैं सदा ८ अपने न्यायी से बचता। देख मैं आगे जाता हूं परन्तु वह नहीं और पीछे ९ परन्तु उसे देख नहीं सक्ता। बाईं ओर जहां वह कार्य्य करता है परन्तु मैं उसे देख नहीं सक्ता वह आप को दहिनी ओर ऐसा छिपाता है कि मुझे सूझ नहीं १० पड़ता। क्योंकि वह मेरे मार्ग को जानता है जब वह मुझे परखे तब मैं ११ सोने की नाईं निकलूंगा। मेरे पांव ने उस के डग को धरा है मैं ने उस के पथ को धारण किया है और न मुड़ा। १२ मैं उस के होठों की आज्ञा से न हटा मैं ने उस के मुंह के बचन को आवश्यक भोजन से अधिक धर रक्खा है॥

१३ परन्तु वह एक समान है और उसे कौन फेर सक्ता है और जो उस का जी १४ चाहता है सो वह करता है। क्योंकि जो मेरे लिये ठहराया गया वह उसे पूरा करता है और ऐसी बहुत सी बातें उस के १५ पास हैं। इस लिये मैं उस के साक्षात से व्याकुल हूं और मैं जब सोचता हूं तो १६ उस्से डरता हूं। और सर्व्वशक्तिमान मेरे मन को कोमल करता है और सर्व्व- १७ सामर्थी मुझे व्याकुल करता है। इस कारण कि मैं अंधियारे के आने से आगे नहीं काटा गया और उस ने मेरे मुंह से अंधियारे को नहीं छिपाया॥

चौबीसवां पर्ब्ब।

१ दण्ड के समय सर्व्वशक्तिमान की ओर से क्यों छिपे नहीं हैं और जो उसे जानते हैं सो उस के दिनों को क्यों नहीं २ देखते हैं। वे मेंड़ों को सरकाते हैं वे बरबस्ती से झुंडों को ले जाते और चराते ३ हैं। वे अनाथों के गदहे को हांक लेते हैं वे बंधक में रांड़ का बैल लेते हैं। ४ वे दरिद्रों को मार्ग से फेरते हैं और पृथिवी के कंगाल सब के सब अपने ५ को छिपाते हैं। देख जैसे अरण्य में जंगली गदहे वे अपने अपने कार्य्य को निकलते हैं अहेर के लिये तड़के उठते हैं बन उन को और उन के सन्तानों के लिये ६ आहार देता है। वे खेत में अपना अपना अन्न लवते हैं और दुष्ट के दाख बटोरते ७ हैं। वे रात को बिन बस्त्र नग्न टिकते हैं और जाड़े में उन के ओढ़ना नहीं। ८ वे पर्व्वत की झड़ी से भीगते हैं और आड़ के लिये पत्थर में लिपटते हैं॥

९ वे अनाथों को छाती से छीनते हैं और कंगालों के बस्त्र बंधक रखते हैं। १० वे बिन बस्त्र नग्न फिरते हैं और भूखे ११ होके पूला उठा लाते हैं। वे अपने आंगनों में तेल पेरते हैं और अपने दाख के कोल्हू लताड़ते हैं और प्यासे रहते १२ हैं। नगर में से मरते हुए कहरते हैं और घायलों का प्राण दोहाई देता है और ईश्वर उन की प्रार्थना पर दृष्टि नहीं करता॥

१३ कितने उन में हैं जो उंजियाले से बैर रखते हैं उस के पथ को नहीं पहिचानते और न उस के पथों पर १४ ठहरते हैं। घातक भोर को उठता है और कंगाल और निर्धन को घात करता है और रात को चोर की नाईं है। १५ और छिनले की आंखें गोधूली की बाट जोहती हैं वह कहता है कि किसी

की आंख मुझ पर न पड़ेगी और अपना
१६ रूप छिपाता है । अंधियारे में वे घरों
में सेंध मारते हैं और दिन को अपने
तईं छिपाते हैं वे उंजियाला नहीं
१७ जानते । क्योंकि बिहान उन के लिये
मृत्यु की छाया है क्योंकि वे मृत्यु की
१८ छाया के भय को पहिचानते हैं । वे
पानियों के ऊपर शीघ्र चलते हैं पृथिवी
पर उन का भाग स्रापित है वे दाखों
की बारी की ओर नहीं फिरते ॥

१९ जैसे झुराहट और घाम पाला जल
को भक्षण करते हैं वैसा ही पाताल
२० पापियों को । कोख उसे भूल जायगी
कीड़े आनन्द से उसे खायेंगे वह फेर
स्मरण न किया जायगा और दुष्टता पेड़
की नाईं तोड़ी जायगी ॥

२१ वह बांझ को जो नहीं जनती है
सताता है और रांड़ की भलाई नहीं
२२ करता । वह बलवानों को भी अपने
पराक्रम से खींचता है वह उठता है
और किसी को जीवन की आशा नहीं
२३ रहती । ईश्वर उन्हें चैन के लिये देता
है और वे भरोसा करते हैं और उस की
२४ आंखें उन के मार्गों पर लगी हैं । वे
ढाये जाते हैं और थोड़ी बेर में हैं ही
नहीं वे उतारे जाते हैं और सभों की
नाईं बटोरे जाते हैं और अन्न की
२५ बालों के समान काटे जाते हैं । और
यदि अब न हो तो कौन मुझे झुठावेगा
और मेरा बचन व्यर्थ करेगा ॥

पचीसवां पर्ब्ब ।

१ तब शूहीती बिलदाद ने उत्तर देके
२ कहा । कि प्रभुता और डर उस के
साथ हैं वह अपने ऊंचे स्थानों में कुशल
३ रखता है । क्या उस की सेनाओं की
कुछ गिनती है और उस की ज्योति किस
४ पर नहीं चमकती । फेर मनुष्य क्योंकर
सर्वशक्तिमान के आगे निर्दोष ठहर
सक्ता है अथवा जो स्त्री से उत्पन्न हुआ
सो क्योंकर पवित्र हो सक्ता है । देख ५
चंद्रमा भी उस के आगे नहीं चमकता
और हां तारे उस की दृष्टि में पवित्र
नहीं हैं । फेर कितना थोड़ा मनुष्य जो ६
कीड़ा है और मनुष्य का पुत्र जो कीड़ा
ही है ॥

छब्बीसवां पर्ब्ब ।

परन्तु ऐयूब ने उत्तर देके कहा । कि १,२
तू ने क्योंकर निर्बल का उपकार किया
तू ने क्योंकर निर्बल भुजा को बचाया
है । निर्बुद्धि को तू ने किस रीति से ३
मंत्र दिया है और बुद्धि बिस्तार से बर्णन
किई है । किस के लिये तू ने बचन ४
उच्चारा है और किस का आत्मा तुझ से
निकला है ॥

उस के साम्ने मृतक नीचे से कांपते ५
हैं पानी और उस के निवासी भी ।
पाताल उस के आगे उघारा है और
बिनाश का ढपना नहीं है । वह उत्तर ७
को शून्य के ऊपर फैलाता है और नास्ति
के ऊपर पृथिवी को टांगता है । वह ८
अपने घने मेघों में जल को बांधता है
और उन के नीचे मेघ नहीं फटता है ।
वह अपने सिंहासन का मुंह छिपाता ९
है और अपना मेघ उस पर फैलाता है ।
उस ने जलों को सिवाने से घेरा है १०
जहां लों कि उंजियाला अंधियारे से
मिल जाता है । स्वर्ग के खंभे कांपते ११
हैं और उस की दपट से आश्चर्य्यित हैं ।
वह अपने पराक्रम से समुद्र को थम- १२
काता है और अपनी समझ से उस के
अहंकार को मारता है । उस ने अपने १३
आत्मा से स्वर्गों को सुन्दर किया उस के
हाथ ने शीघ्र बलवैये सर्प को बनाया ।
देखो यही उस के मार्गों के सिवाने १४
हैं परन्तु उसी के बिषय में कैसा
थोड़ा सुना जाता है पर उस के

सामर्थ्य की गर्जन को कौन समझ सक्ता है॥

सत्ताईसवां पर्ब्ब।

१ तब ऐयूब ने अपना दृष्टान्त बढ़ाया २ और कहा। कि जीवते सर्बशक्तिमान की सोंह जिस ने मेरा बिचार ले लिया और सर्बसामर्थी कि जिस ने मेरे प्राण ३ को शोकित किया। जब लों मेरा श्वास मुझ में है और परमेश्वर का ४ आत्मा मेरे नथुनों में। तब लों मेरे होंठ दुष्टता न कहेंगे और मेरी जीभ छल ५ न उच्चारेगी। ईश्वर न करे कि मैं तुम्हें निर्दोष ठहराऊं मैं मरने लों अपनी ६ खराई को न छोड़ूंगा। मैं अपना धर्म्म दृढ़ता से धरता हूं और उसे जाने न देऊंगा मेरा प्राण मेरे बीते हुए दिनों के बिषय मुझे दोषी नहीं ठहराता है। ७ मेरा बैरी दुष्ट की नाईं होय और जो मेरे बिरोध में उठता है सो अधर्म्मी के समान॥

८ क्योंकि कपटी को क्या आशा है जब ईश्वर उसे काट डाले और उस ९ का प्राण ले ले। क्या सर्बशक्तिमान उस का रोना सुनेगा जब उस पर दुःख १० पड़ेगा। क्या वह सर्बसामर्थी से आनन्दित होगा और क्या वह सदा ईश्वर की प्रार्थना करेगा॥

११ सर्बशक्तिमान की सामर्थ्य में तुम्हें सिखाऊंगा जो सर्बसामर्थी के पास है १२ मैं न छिपाऊंगा। लो तुम सभों ने यह देखा है तो क्यों यह सर्बथा व्यर्थ बातें १३ बोलते हो। सर्बशक्तिमान से दुष्ट मनुष्य का यह भाग है और अंधेरियों का अधिकार जो वे सर्बसामर्थी से १४ पावेंगे। यदि उस के सन्तान बढ़ जायें तो तलवार के लिये हैं और उस के १५ लड़के बाले रोटी से तृप्त न होंगे। उन के बचे हुए लोग मृत्यु से गाड़े जायेंगे और उन की रांड़ें बिलाप न करेंगी। १६ यद्यपि वह चांदी को धूल की नाईं ढेर करे और मिट्टी की नाईं बस्त्र सिद्ध १७ करे। वह सिद्ध करे परन्तु धर्म्मी उसे पहिनेगा और निर्दोषी चांदी बांट १८ लेगा। वह कीट के समान अपना घर बनाता है और उस कुटिया की नाईं जो १९ रखवाल ने बनाई। धनवान लेट जाता है पर गाड़ा नहीं जाता अपनी आंखें २० खोलता है और वह है ही नहीं। भय जल के समान उसे पकड़ते हैं और रात को आंधी उसे चुरा ले जाती है। २१ पुरवा पवन उसे उड़ा ले जाती है और वह चला जाता है वह आंधी की नाईं २२ उसे उस के स्थान से उड़ाती है। क्योंकि ईश्वर उस पर अपने तीर चलायेगा और दया न करेगा वह उस के हाथ से भागा २३ चाहता है। लोग उस पर तालियां बजावेंगे और उस के स्थान में से उसे सोसकारेंगे॥

अट्ठाईसवां पर्ब्ब।

१ निश्चय चांदी के लिये खान और सोने के लिये स्थान है जहां निर्मल करते २ हैं। लोहा भूमि से निकाला जाता है और पत्थर तांबा बनाने के लिये गलाया ३ जाता है। मनुष्य अंधियारे का अंत ठहराता है और अंधियारे और मृत्यु के छाया के पत्थर के लिये सारी नीचाइयों ४ की खोज करता है। जहां मनुष्य रहते हैं वहां से वह सोता खोल देता है पांव से बिना सहारा वे डोलते हैं और ५ मनुष्यों से अलग झूलते हैं। पृथिवी जिस्से भोजन की उत्पत्ति है अपने नीचे से मानो आग की नाईं उलटाई जाती ६ है। उस के पत्थर नीलमणि के स्थान ७ हैं और उस में सोने की धूल है। उस के मार्ग को कोई पंछी नहीं जानता और गिद्ध की आंखों ने उसे नहीं देखा।

८ भयानक बनैले पशु ने उसे नहीं लताड़ा
९ और न सिंह उस पर से गया। मनुष्य अपना हाथ चटान पर धरता है और
१० पहाड़ों को जड़ से उलटता है। चटानों में से वह नदियां निकालता है और उस की आंखें हर एक बहुमूल्य वस्तु
११ को देखती हैं। वह झरनों को रसने से रोकता है और छिपी हुई वस्तु को उंजियाले में लाता है॥

१२ परन्तु बुद्धि कहां पाई जायगी और
१३ समझ का स्थान कहां है। मनुष्य उस का मोल नहीं जानता और जीवतों के
१४ देश में वह नहीं पाई जाती। गहिराव कहता है कि वह मुझ में नहीं है और समुद्र कहता है कि मेरे साथ नहीं है।
१५ चोखा सोना उस के लिये दिया नहीं जा सक्ता और उस के मोल के लिये
१६ चांदी तौली नहीं जाती। ओफीर के सोने को उस्से क्या बरोबरी है बहुमूल्य
१७ बैदूर्य्य अथवा नीलमणि को। सोना और स्फटिक उस के तुल्य नहीं हो सक्ते और चोखे सोने के गहने भी उस का
१८ पलटा नहीं हो सक्ते। मूंगे और बिल्लौर का क्या बखान क्योंकि बुद्धि का मोल
१९ मोतियों से अधिक है। कूश का पोखराज उस के तुल्य नहीं और न चोखा सोना उस के मोल का है॥

२० फिर बुद्धि कहां से आती है और
२१ समझ का स्थान कहां है। वह तो सारे जीवतों की आंखों से गुप्त है और आकाश
२२ के पंछियों से छिपी है। बिनाश और मृत्यु कहती हैं कि हम ने अपने कानों से उस की कीर्त्ति सुनी है॥

२३ ईश्वर उस का पथ समझता है और
२४ वही उस का स्थान जानता है। क्योंकि वही पृथिवी के सिवाने लों देखता है
२५ सारे स्वर्ग के तले देखता है। जिसतें पवनों को तौले और पानियों को नपुए
२६ में नापे। जब उस ने मेंह के लिये आज्ञा ठहराई और कड़कनेहारी बिजली के
२७ लिये मार्ग। तब उस ने उसे देखा और उस का बर्णन किया उस ने उसे सिद्ध किया और उस ने उसे ढूंढ़ निकाला।
२८ और मनुष्य से उस ने कहा कि देख ईश्वर का भय सोई बुद्धि है और बुराई छोड़ना वही समझ है॥

उंतीसवां पर्व्व।

१ फिर ऐयूब ने अपना दृष्टान्त बढ़ाके
२ कहा। हाय कि मैं पिछले मासों के समान होता उन दिनों की नाईं जब
३ ईश्वर ने मेरी रक्षा किई थी। जब उस का दीपक मेरे सिर पर चमकता था और उस की ज्योति से मैं अंधियारे में
४ चलता था। जैसा मैं अपनी तरुणाई के दिनों में था जब कि ईश्वर की
५ संगति मेरे तंबू में थी। जब सर्व्वसामर्थी मेरे साथ था मेरे सन्तान मेरी चारों
६ ओर। जब कि मैं अपने डगों को दूध से धोता था और चटान मेरे लिये तेल की नदियां बहाती थी॥

७ जब कि मैं नगर में होके फाटक पर जाता था और चौक में अपना आसन
८ रखता था। तरुण मुझे देखके आप को छिपाते थे और वृद्ध उठ खड़े होते थे।
९ अध्यक्ष बोलने से रुक जाते थे और
१० अपना हाथ मुंह पर धरते थे। कुलीन चुप होते थे और उन की जीभ उन के
११ मुंह के तालू में लग जाती थी। जब कान सुनता था तब मुझे बर देता था और जब आंखें देखतीं थीं तब मेरे लिये
१२ साक्षी देती थीं। क्योंकि मैं ने कंगाल को जो दोहाई देता था और अनाथ को और उसे जिस का कोई उपकारी
१३ न था बचाया। उस की आशीस जो नाश होने पर था मुझ पर पड़ी और मैं बिधवा के मन के आनन्द के गान

१४ का कारण हुआ। मैं ने धर्म्म को पहिना और उस ने मुझे ढांपा मेरा बिचार बागा १५ और मुकुट की नाईं था। मैं अंधे के लिये आंख था और लंगड़े के लिये पांव। १६ मैं कंगालों के लिये पिता था और उस का व्यवहार जिस को मैं जानता न था १७ खोज लेता था। और मैं ने दुष्ट की डाढ़ें तोड़ीं और उस के दांतों से लूट १८ छीनी। तब मैं ने कहा कि मैं अपने बसेरे में मरूंगा और मैं अपने जीवन के १९ दिन बालू की नाईं बढ़ाऊंगा। मेरी जड़ पानियों के लग फैली है और मेरी डालियों पर रात भर ओस रहेगी। २० मेरा तेज मुझ में नवीन होगा और मेरा धनुष मेरे हाथ में बल बढ़ायेगा॥

२१ लोग मेरी ओर कान धरते थे और बाट जोहते थे और मेरे मंत्र के लिये २२ चुप हो रहते थे। मेरे बचन के पीछे फिर न बोलते थे और मेरा बचन उन २३ पर टपकता था। और वे मेंह की नाईं मेरी बाट जोहते थे और वे अपना मुंह ऐसा पसारते थे जैसा कोई पिछले मेंह २४ के लिये मुंह पसारता है। जब मैं उन के साथ हंसता था तो वे प्रतीति न करते थे और मेरे मुंह की लाली न २५ उतारते थे। जब मैं ने उन का मार्ग चुना तब अध्यक्ष के समान उन के मध्य में बैठा और उस राजा के समान जो सेना में है और उस मनुष्य के समान जो बिलापियों को शांति देता है रहता था॥

तीसवां पर्ब्ब।

१ परन्तु अब वे जो मुझ से थोड़े दिन के हैं मेरी निन्दा करते हैं जिन के पितरों को मैं अपने झुंड के कूकरों के २ साथ बैठाना तुच्छ जानता था। हां उन के हाथों के बल से मुझे क्या लाभ जिन पर से समाप्त करने की शक्ति ३ बीत गई। क्योंकि कंगालपन और भूख से वे क्षीन हैं जो शून्य स्थानों की रात ४ में उजाड़ को काट खाते हैं। जो झाड़ी के लग लोनियां तोड़ते हैं और ५ रतम की जड़ उन का भोजन है। वे मनुष्यों में से खेदे जाते हैं और चोर की ६ नाईं उन के पीछे पीछे पुकारते हैं। वे भयानक तराइयों और पृथिवी के गढ़हों ७ और चटानों में रहते हैं। वे झाड़ियों में रेंकते हैं भटकटैया के नीचे एकट्ठे ८ होते हैं। वे मूढ़ों के सन्तान हां नाम-हीन के सन्तान हैं वे देश से निकाले ९ जाते हैं। पर अब मैं उन का गान हूं १० और मैं उन की कथनी हो गया। वे मुझ से घिनाते हैं वे मुझ से परे खड़े रहते हैं और मेरे मुंह पर थूकने से अलग ११ नहीं रहते। क्योंकि वे अपनी बाग छोड़ देते और मुझे दुःख देते हैं और १२ मेरे आगे से बागडोरी फेंक देते हैं। मेरी दहिनी ओर नीच लोग उठते हैं और मेरे पांव को ठेल देते हैं और अपने नाश के मार्गों को मेरे बिरुद्ध बनाते १३ हैं। वे मेरे पथ को बिगाड़ते मेरी बिपत्ति की सहाय करते हैं वे जिन १४ का कोई उपकारी नहीं। वे मानो चौड़े दरार में से मुझ पर आते हैं वे १५ बन में मुझ पर पलट पड़ते हैं। भय मुझ पर उलट पड़े हैं और पवन की नाईं मेरी भाग्यमानी का पीछा करते हैं और मेघ के समान मेरा कुशल क्षेम जाता रहा॥

१६ और अब मेरा प्राण आप को बहाता है कष्ट के दिनों ने मुझे धर रक्खा है। १७ रात मेरी हड्डियों को बेधती और मेरे पास से खींच लेती है और मेरे काट १८ खानेहारे चैन नहीं लेते। मेरे रोग की बहुताई के कारण मेरा बस्त्र अपने को पलट देता है मेरे कुरते के गले की नाईं १९ मुझे जकड़ता है। उस ने मुझे चहले

में डाल दिया है और मैं धूल और राख २० की नाईं बना हूं। मैं तेरी दोहाई देता हूं और तू नहीं सुनता मैं तेरे आगे खड़ा होता हूं और तू मेरी सुधि नहीं २१ लेता। तू मेरे लिये क्रूर हो गया अपने हाथ के बल से मुझ से बैर रखता है। २२ तू मुझे पवन पर उठाता और चढ़ाता है और मुझे पिघलाता और डराता है। २३ क्योंकि मैं जानता हूं कि तू मुझे मृत्यु में और उस सभा के घर में जो सारे २४ जीवतों के लिये है पहुंचावेगा। निश्चय प्रार्थना से कुछ लाभ नहीं जब वह अपना हाथ बढ़ाता है और जब वह बिनाश करता है तब दोहाई से उन २५ को कुछ लाभ नहीं। क्या मैं ने दुःखियों के लिये बिलाप न किया और क्या मेरे प्राण ने कंगाल के लिये दुःख न सहा। २६ क्योंकि मैं ने भलाई के लिये बाट जोही और बुराई आई मैं ने उंजियाले की बाट जोही और अंधियारा आया॥

२७ मेरी अंतड़ियां उबलती हैं और थमती नहीं कष्ट के दिन मुझ पर आ २८ पड़े। मैं श्यामवर्ण हो गया पर धूप से नहीं मैं खड़ा हुआ और मण्डली में २९ दोहाई देता हूं। मैं गीदड़ों का भाई ३० और शुतरमुर्ग का संगी हो गया। मेरा चाम काला हो गया और मुझ पर खिंचता है और मेरी हड्डियां घाम से ३१ जल गईं। और मेरी बीणा बिलाप से पलट गई और मेरी बांसुरी बिलापियों के शब्द से॥

एकतीसवां पर्व्व।

१ मैं ने अपनी आंखों से बाचा बांधी फिर क्योंकर मैं कन्या पर दृष्टि करूं। २ पर ऊपर से ईश्वर की ओर से मेरा क्या भाग है और ऊंचाई से सर्वशक्ति- ३ मान से मेरा क्या अधिकार है। क्या दुष्टों के लिये नाश और कुकर्म्मियों के लिये महा बिपत्ति नहीं है। ४ क्या वह मेरी चालों को नहीं देखता और मेरे सारे डगों को नहीं गिनता है। ५ जो मैं कपट की चाल चला हूं अथवा जो मेरा पग छल की ओर बेग पड़ा हो। ६ तो वह मुझे न्याय की तुला में तौले और ईश्वर मेरी खराई को जाने। ७ जो मेरा डग पथ से फिरा हो और मेरा मन मेरी आंखों के पीछे गया हो और जो मेरे हाथों में कोई धब्बा लगा हो। ८ तो मैं बोऊं और दूसरा खाय और मेरी खेती उखाड़के फेंक दिई जाय। ९ यदि मेरे मन ने किसी स्त्री से छल खाया हो अथवा अपने परोसी के द्वार में बाट जोही हो। १० तो मेरी पत्नी दूसरे के लिये चक्की पीसे और दूसरे उस पर झुकें। ११ क्योंकि यह महा पाप है हां यह एक बुराई है जो न्यायियों के दण्ड के योग्य है। १२ क्योंकि यह एक आग है जो बिनाश लों भस्म करेगी और मेरी सारी बढ़ती को उखाड़ डालेगी॥

१३ जो मैं ने अपने दास अथवा दासी के पद को जब वे मुझ से झगड़ते थे निन्दा किई हो। १४ तो मैं क्या करूंगा जब सर्वशक्तिमान उठेगा और जब वह पूछेगा तब मैं उसे क्या उत्तर देऊंगा। १५ क्या जिस ने मुझे कोख में सृजा उसे नहीं सृजा और एक ही ने कोख में हमारा डौल नहीं किया॥

१६ जो मैं ने कंगालों को उन की इच्छा से रोका हो अथवा बिधवा की आंखों को धुंधला कर दिया हो। १७ अथवा अपना कौर आप ही खा लिया हो और अनाथ ने उस्से न खाया हो। १८ क्योंकि मेरी लड़काई से वह मेरे साथ ऐसा पला जैसा पिता के साथ और मैं ने अपनी माता के गर्भ ही में से बिधवा की अगुआई किई। १९ यदि मैं ने किसी

को बिना वस्त्र नष्ट होते अथवा किसी कंगाल को बिना ओढ़ना देखा हो। २० जो उस की कटि ने मुझे आशीस न किई और उस ने मेरी भेड़ों की ऊन से २१ गरमी न पाई हो। जो मैं ने अनाथ पर अपना हाथ उठाया हो इस लिये कि अपना सहायक फाटक में देखा। २२ तो मेरा कंधा अपनी भुजा के घर से गिर पड़े हां मेरी बांह जड़ से टूट २३ जावे। क्योंकि सर्वशक्तिमान की ओर से बिनाश मेरे लिये एक डर है और उस महत्व के आगे मैं कुछ नहीं कह सक्ता॥

२४ जो मैं ने कंचन पर अपनी आशा किई हो और चोखे सोने से कहा हो २५ कि तू मेरी आशा का स्थान है। यदि मैं मगन हुआ कि मेरा धन बहुत बढ़ गया और कि मेरे हाथ ने बहुत पाया। २६ जो मैं ने सूर्य्य को देखा जब वह चमकता था और ज्योतिमान चलनेहारे चन्द्रमा २७ को। और मेरा मन चुपके से फुसलाया गया हो अथवा मेरे मुंह ने मेरे हाथ २८ को चूमा हो। तो यह भी एक बुराई है जो न्यायियों के दण्ड के योग्य है क्योंकि मैं उस सर्वशक्तिमान से जो २९ ऊपर है मुकर जाता। यदि मैं अपने बैरी के नाश से आनन्दित हुआ अथवा जब बुराई उस पर पड़ी तो फूला। ३० और हां मैं ने अपने तालू से पाप होने न दिया कि उस के प्राण को धिक्कारूं। ३१ क्या मेरे डेरे के मनुष्यों ने नहीं कहा कि कौन है जो उस के मांस से सन्तुष्ट ३२ नहीं हुआ। परदेशी रात को बाहर न टिका मैं ने अपने द्वारों को पथिक के ३३ लिये खोला। क्या मैं ने आदम की नाईं अपने अपराधों को ढांपा कि अपनी बुराई को अपनी गोद में छिपाऊं। ३४ जिसतें बड़ी मंडली से भयमान हो जाऊं अथवा परिवारों की निन्दा मुझे डराये और मैं चुप हो रहूं और द्वार के बाहर न जाऊं॥

३५ हाय कि वह मेरी सुने देखो यह मेरी लिखावट है सर्वशक्तिमान मुझे उत्तर देवे और मेरा बैरी अपना बिवाद ३६ लिखे। अवश्य मैं उसे अपने कांधे पर उठाता और उसे मुकुट के समान अपने ३७ पर बांधता। मैं उस्से अपने डगों की गिनती बर्णन करता अध्यक्ष के समान मैं उस के पास जाता॥

३८ यदि मेरी भूमि मेरे बिरुद्ध चिल्लावे अथवा उस की रेघारियां मिलके बिलाप ३९ करें। यदि मैं ने बिना रोकड़ उस का फल खाया अथवा उस के स्वामियों के ४० प्राणों को मसोसा हो। तो गोहूं की संती भरभांड़ उगें और जव की संती ऊंटकटारे। ऐयूब के बचन समाप्त हुए॥

बत्तीसवां पर्ब्ब।

१ सो ये तीनों जन ऐयूब को उत्तर देने से रह गये क्योंकि वह अपनी ही दृष्टि में धर्म्मी ठहरा॥

२ तब राम के घराने के बाराकेल बूजी के बेटे इलीहू का कोप भड़का ऐयूब पर उस का कोप भड़का क्योंकि उस ने अपने प्राण को ईश्वर से बिशेष ३ धर्म्मी ठहराया। और उस के तीनों मित्रों पर भी उस का कोप भड़का इस कारण कि उन्हों ने उत्तर न पाया था ४ तौभी ऐयूब को दोषी ठहराया। अब इलीहू ने ऐयूब के बचनों की बाट ५ जोही क्योंकि वे उस्से जेठे थे। जब इलीहू ने तीनों जन के मुंह में उत्तर न देखा तब उस का कोप भड़का॥

६ और बाराकेल बूजी के बेटे इलीहू ने उत्तर देके कहा कि मैं थोड़े दिन का हूं और तुम लोग पुरनिये हो इस लिये मैं भयमान हुआ और अपना ज्ञान ७ तुम पर प्रगट करने से डरा। मैं ने

कहा कि दिनी लोग बातें करें और ८ वृद्ध बुद्धि उच्चारें। निश्चय मनुष्य में आत्मा है और सर्ब्बसामर्थी का श्वास ९ उन्हें समझ देता है। महत जन सदा बुद्धिमान नहीं हैं न प्राचीन बिचार १० बूझते हैं। इस लिये मैं ने कहा कि मेरी सुनो मैं भी अपने मन की कहूंगा॥

११ देखो मैं ने तुम्हारे बचनों की बाट जोही और तुम्हारे प्रमाणों को सुनता रहा जब लों कि तुम बातें खोजते थे। १२ और मैं तुम पर सुरत लगाये रहा और देखो तुम्में से कोई नहीं जो ऐयूब को दोषी ठहराता अथवा उस के बचन का १३ उत्तर देता। ऐसा कि तुम कहो कि हम ने बुद्धि पाई सर्ब्बशक्तिमान उसे १४ जीतेगा मनुष्य नहीं। उस ने तो मेरे बिरुद्ध बातों को नहीं गढ़ा और न मैं तुम्हारे बचनों के समान उसे उत्तर देऊंगा॥

१५ वे बिस्मित हुए फेर उत्तर न दिया १६ बातें कहने से चुप रहे। और मैं बाट जोहता रहा क्योंकि उन्हों ने और बातें न किईं क्योंकि वे खड़े रहे और फिर १७ उत्तर न दिया। मैं भी अपनी पारी में उत्तर देऊंगा मैं भी अपने मन की सुना- १८ ऊंगा। क्योंकि मैं बातों से परिपूर्ण हूं मेरे भीतर का आत्मा मुझे दबाता है। १९ देखो मेरा पेट उस दाखरस के समान है जो खोला नहीं गया नये कुप्पों की २० नाईं वह फटने पर है। मैं बातें करूंगा और श्वास लूंगा अपने होंठों को खोलूंगा २१ और उत्तर देऊंगा। मैं किसी का पक्ष न करूं और न मनुष्य को फुसलाने का २२ पद देऊं। क्योंकि फुसलाने का पद मैं नहीं जानता नहीं तो मेरा सृजनहार मुझे शीघ्र उठा लेता॥

तेंतीसवां पर्ब्ब

१ सो इस लिये हे ऐयूब मेरे बचन सुन और मेरी सब बातों पर कान धर। देख २ मैं ने अपना मुंह खोला है मेरी जीभ मेरे तालू में बातें करती है। मेरी बातें ३ मेरे मन की खराई से होंगी और मेरे होंठ खोल खोलके ज्ञान उच्चारेंगे। सर्ब्बशक्तिमान के आत्मा ने मुझे बनाया ४ है और सर्ब्बसामर्थी के श्वास ने मुझे जीवन दिया है। यदि तुझ से हो सके ५ तो मुझे उत्तर दे अपने तईं मेरे सन्मुख लैस कर और खड़ा हो। देख मैं तेरे ६ समान सर्ब्बशक्तिमान का बनाया हुआ हूं मैं भी मिट्टी से बना हूं। देख मेरा ७ भय तुझे न घबरायेगा और मेरा बोझ तुझ पर भारी न होगा॥

निश्चय तू ने मेरे कानों में कहा है ८ और तेरे बचन का शब्द मैं ने सुना है। कि मैं निरपराध पवित्र हूं मैं निर्दोष ९ हूं और मुझ में बुराई नहीं। देख वह १० मेरे बिरुद्ध बैर का कारण ढूंढ़ता है वह मुझे अपना बैरी जानता है। मेरे पांव ११ को वह काठ में डालता है मेरे सारे मार्गों को चीन्ह रखता है। देख इस १२ में तू धर्मी नहीं मैं तुझे उत्तर देऊंगा क्योंकि ईश्वर मनुष्य से बड़ा है॥

तू क्यों उस्से झगड़ता है क्योंकि वह १३ किसी को अपने कार्य्यों का लेखा नहीं देता है। क्योंकि सर्ब्बशक्तिमान एक १४ बार कहता है हां दो बार जब मनुष्य नहीं बूझता। स्वप्न में रात के दर्शन १५ में जब भारी नींद मनुष्यों पर पड़ती है जब वे बिछौने पर सोते हैं। तब वह १६ मनुष्यों के कानों को खोलता है और उन के उपदेश पर छाप करता है। जिसतें मनुष्य को उस के कार्य्य से १७ फिरावे और मनुष्य से अहंकार को छिपावे। वह उस के प्राण को गड़हे १८ से रोकता है और उस के जीव को कि खड्ग से न निकले॥

१९ फिर वह अपनी खाट पर पीड़ा से ताड़ना पाता है और उस की हड्डियों
२० में सदा की घबराहट से। यहां लों कि उस का प्राण रोटी से और उस का
२१ जीव रुचि भोजन से घिनाता है। उस का मांस गलके अदेख हो जाता है और उस की अदेख हड्डियां निकल आती
२२ हैं। सो उस का प्राण समाधि के पास और उस का जीव नाशकों कने पहुंचता
२३ है। यदि उस के पास कोई दूत हो भाषिया सहस्रों में से एक हो जो मनुष्य
२४ को उस के कार्य्य प्रगट करे। तब वह उस पर कृपाल होगा और कहेगा कि उसे गड़हे में गिरने से बचा ले मैं ने
२५ प्रायश्चित्त पाया है। उस की देह बालक की देह से भी अति पुष्ट होगी वह अपनी तरुणाई के दिनों में फिर
२६ आयेगा। वह ईश्वर से बिनती करेगा और वह उस पर कृपाल होगा हां वह आनन्द से उस का मुंह देखेगा और वह मनुष्य को उस के धर्म्म का प्रतिफल
२७ देगा। वह मनुष्यों के साम्हने गायेगा और कहेगा कि मैं ने पाप किया और सिद्ध को टेढ़ा किया और मुझे उस का
२८ बदला न मिला। उस ने मेरे प्राण को समाधि में जाने से बचा लिया और मेरा जीव उंजियाले को देखता है॥

२९ देखो ये सब कर्म्म दो बार तीन बार सर्व्वशक्तिमान मनुष्य के साथ करता
३० है। जिसतें उस के प्राण को गड़हे से फेर लावे जिसतें जीवतों के उंजियाले से उंजियाला हो॥

३१ हे ऐयूब कान धर मेरी सुन चुपका
३२ रह और मैं बातें करूंगा। जो तुझे कुछ कहना हो तो मुझे उत्तर दे बातें कर क्योंकि मैं तुझे निर्दोष ठहराने चाहता
३३ हूं। यदि नहीं तो मेरी सुन चुपका रह और मैं तुझे बुद्धि सिखाऊंगा॥

चौंतीसवां पर्ब्ब।

१ फेर इलीहू ने उत्तर देके कहा।
२ कि हे बुद्धिमानो मेरे बचन सुनो और
३ हे ज्ञानियो मेरी ओर कान धरो। क्योंकि कान बातों को परखता है और मुंह
४ भोजन को चीखता है। आओ हम बिचार को अपने लिये चुनें आपुस में
५ जानें कि क्या अच्छा है। क्योंकि ऐयूब ने कहा है कि मैं धर्म्मी हूं और सर्व्वशक्तिमान ने मेरा बिचार हटा दिया
६ है। मैं अपने बिचार में झूठा ठहरता हूं मेरा घाव असाध्य है यद्यपि मैं निरपराध हूं।
७ कौन जन ऐयूब के समान है जो निन्दा को पानी की नाईं पीता
८ है। और कुकर्म्मियों के संग संग जाता
९ है और दुष्टों के साथ चलता है। क्योंकि उस ने कहा है कि मनुष्य को कुछ लाभ नहीं यदि वह ईश्वर की संगत में मगन हो॥

१० इस लिये हे ज्ञानियो मेरी सुनो सर्व्वशक्तिमान से परे रहे कि वह दुष्टता करे और सर्व्वसामर्थी से कि बुराई करे।
११ क्योंकि वह हर एक मनुष्य को उस के कार्य्य का फल देता है और हर एक मनुष्य से उस की चाल के समान व्यवहार करता है।
१२ हां निश्चय सर्व्वशक्तिमान दुष्टता न करेगा और सर्व्वसामर्थी
१३ न्याय को न फेरेगा। किस ने उसे पृथिवी सौंपी और किस ने सारे संसार की नेव
१४ डाली। यदि वह उस पर अपना मन लगावे तो वह उस का आत्मा और उस का श्वास अपने पास समेटेगा।
१५ तो सारे शरीर एक साथ नष्ट होंगे और मनुष्य के सन्तान फेर धूल में मिल जायेंगे॥

१६ अब जो तुझ में बुद्धि है तो यह सुन मेरे बचनों के शब्द पर कान धर।
१७ क्या सत्य का बैरी प्रभुता करेगा और

क्या तू धर्म्ममय और महान पर दोष
१८ लगावेगा। क्या राजा को दुष्ट और
अध्यक्षों को अधर्म्मी कहना उचित है।
१९ तो उस को नहीं जो अध्यक्षों का पक्ष
नहीं करता और धनी को कंगाल से
अधिक नहीं बूझता क्योंकि सब के सब
२० उसी के हाथ के कार्य्य हैं। वे पल भर
में मर जायेंगे हां आधी रात को लोग
कांपेंगे और जाते रहेंगे और बिना हाथ
२१ लगाये बलवान दूर किये जायेंगे। क्यों-
कि उस की आंखें मनुष्यों की चालों
पर हैं और वह उस की सारी चालों को
२२ देखता है। न अंधकार है न मृत्यु की
छाया जहां कुकर्म्मी अपने को छिपावें।
२३ क्योंकि वह बेर लों मनुष्य पर ध्यान न
लगायेगा जिसतें वह ईश्वर के आगे
२४ न्याय में जाय। वह बिना पूछे बलवंतों
को टुकड़े टुकड़े करता है और उन के
२५ स्थान पर दूसरों को ठहराता है। इस
कारण कि वह उन के कार्य्यों को जानता
है और वह रात को उन्हें उलट देता
२६ है और वे नष्ट होते हैं। वह उन्हें उन
की दुष्टता के पलटे में मारता है देखने-
२७ हारों के आगे। क्योंकि वे उस के पीछे
से फिर गये और उस के सारे मार्गों से
२८ सुचेत न रहे। यहां लों कि वे कंगालों
को उस के आगे चिलवाते हैं और वह
दुःखियों की दोहाई को सुनता है।
२९ जब वह सुख देता है तब कौन दोषी
ठहरायेगा और जब वह अपना मुंह
छिपाता है तब कौन उसे देख सक्ता है
चाहे जातिगण के विषय होवे चाहे
३० केवल एक मनुष्य के। जिसतें कपटी
राज्य न करे और प्रजा फंदे में न पड़े॥

३१ क्योंकि उचित है कि तू सर्वशक्तिमान
से कहे कि मैं ने ताड़ना पाई है फेर
३२ पाप न करूंगा। जो मैं नहीं देखता तू
मुझे सिखा जो मैं ने बुराई किई है तो
में फेर न करूंगा। क्या वह तेरी इच्छा ३३
के समान तुझे पलटा देगा चाहे तू माने
चाहे न माने और वह नहीं इस लिये
जो तू जानता है सो कह। ज्ञानी और ३४
बुद्धिमान जो मेरी सुनते हैं मेरे विषय
में कहेंगे। कि ऐयूब अज्ञानता से बातें ३५
करता है और उस की बातें निर्बुद्धि
की हैं। मेरी यह इच्छा है कि ऐयूब ३६
अंत लों परखा जाय इस कारण कि
वह दुष्टों की नाईं उत्तर देता है।
क्योंकि वह अपने पापों में आज्ञा भंग ३७
करना मिलाता है और हमारे मध्य में
थपोड़ा मारता है और सर्वशक्तिमान के
विरुद्ध अपनी बातें बढ़ाता है॥

पैंतीसवां पर्ब्ब।

फिर इलीहू ने उत्तर दिया और कहा। १
क्या तू इसे ठीक समझता है जो तू ने २
कहा है कि मेरा धर्म्म सर्वशक्तिमान के
धर्म्म से अधिक है। क्योंकि तू कहता ३
है कि मुझे क्या बढ़ती और क्या लाभ
होगा उस्से अधिक कि मैं पाप करता।
मैं तुझे और तेरे संगियों को इन बातों ४
का उत्तर देऊंगा॥

स्वर्गों को ताक और मेघों को देख ५
जो तुझ से कहीं ऊंचे हैं। जो तू पाप ६
करे तो उस के विरुद्ध क्या करता है
अथवा तेरे अपराध बढ़ जायें तो उस
का क्या बिगाड़ता है। जो तू धर्म्मी होय ७
तो उसे क्या देता है अथवा वह तेरे
हाथ से क्या लेता है। तेरी दुष्टता से ८
उस को हानि हो सक्ती है जो तुझ
सरीखा मनुष्य है और तेरे धर्म्म से
मनुष्य के पुत्र को लाभ है। अंधेर की ९
बहुताई के कारण दुखियारे दोहाई देते
हैं वे बलवंतों की भुजा के मारे चिल्लाते
हैं। परन्तु कोई नहीं कहता कि मेरा १०
कर्त्ता कहां है जो रात को गान कराता
है। जो पृथिवी के पशुओं से अधिक हमें ११

सिखाता है और आकाश के पक्षियों से १२ अधिक हमें बुद्धिमान बनाता है । वहां वे दुष्टों के अहंकार के मारे चिल्लाते हैं पर वह उत्तर नहीं देता ॥

१३ निश्चय सर्व्वशक्तिमान व्यर्थ बिनती न सुनेगा और सर्व्वसामर्थी मन न लगा- १४ वेगा । हां तब भी नहीं जब तू कहता है कि मैं उसे नहीं देख सक्ता न्याय उस के आगे है और तू उस की बाट जोह । १५ पर अब इस कारण कि उस ने अपने कोप में होके दृष्टि न किई और पाप की अधिकाई को बहुत नहीं चीन्हा । १६ इस लिये ऐयूब वृथा अपना मुंह खोलता है और अज्ञानता से बातें बढ़ाता है ॥

छत्तीसवां पर्ब्ब ।

१ फिर इलीहू ने अपनी बात बढ़ाई २ और कहा । कि तनिक ठहर जा और मैं तुझे दिखाऊंगा क्योंकि मुझे ईश्वर ३ के लिये और बातें कहनी हैं । मैं दूर से अपना ज्ञान लाऊंगा और अपने ४ कर्त्ता को धर्म्मी ठहराऊंगा । क्योंकि निश्चय मेरे बचन मिथ्या न होंगे तेरे साथ पूरी बुद्धि का मनुष्य है ॥

५ देख सर्व्वशक्तिमान सामर्थी है और किसी की निन्दा नहीं करता बुद्धि की ६ शक्ति में सामर्थी । वह दुष्ट को जीता न रक्खेगा और कंगालों का बिचार ७ करेगा । वह अपनी आंखें धर्म्मी से न फेरेगा परन्तु राजाओं के साथ सिंहासन पर हैं और वह उन्हें सदा के लिये बसाता है और वे बढ़ाये जाते हैं । ८ और यदि वे सीकरों में जकड़े जायें और ९ दुःख की रस्सियों से बांधे जायें । तब वह उन्हें उन का कार्य्य और उन का अपराध दिखाता है कि उन्हों ने १० दुर्ब्बचन कहा । और उन के कानों को भी उपदेश के लिये खोलता है और उन ११ से कहता है कि बुराई से फिरो । जो वे मानें और सेवा करें तो वे अपने दिनों को कुशल में काटेंगे और अपने बरसों को आनन्द में । १२ परन्तु जो वे न मानें तो तलवार से मारे जायेंगे और अज्ञानता से मरेंगे ॥

१३ परन्तु मन के कपटी कोप ढेर करते हैं वे ईश्वर की दोहाई न देंगे जब वह उन्हें बांधता है । १४ उन का प्राण तरुणाई में जाता रहेगा और उन का जीवन अशुद्धों के साथ । १५ वह दरिद्र को उस के दुःख से छुड़ाता है और कष्ट में उन के कानों को खोलता है । १६ और वह तुझे सकेती के मुंह से भी निकालेगा चौड़े स्थान में जहां सकेती नहीं और जो तेरे मंच पर रक्खा जाता है सो चिकनाई से भरा होगा । १७ परन्तु यदि तू दुष्ट के बिचार को पूरा करे तो बिचार और न्याय एक दूसरे से लिपटेंगा । १८ क्योंकि उस के साथ कोप है ऐसा न हो कि वह अपनी ताड़ना से तुझे निकाल दे उस समय बड़ा प्रायश्चित्त तुझे न बचा सकेगा । १९ क्या वह तेरा धन बूझेगा नहीं न सोने को और न धन के सारे बल को । २० उस रात को मत चाह जब लोग अपने अपने स्थान से उठ जाते हैं । २१ चौकस रह बुराई पर मन मत लगा क्योंकि तू ने इसे दुःख से अधिक चाहा है ॥

२२ देख सर्व्वशक्तिमान अपने पराक्रम से आप को बढ़ाता है कौन उस के समान सिखवैया है । २३ किस ने उसे उस का मार्ग बताया है अथवा कौन कह सक्ता कि तू ने बुराई किई है । २४ स्मरण कर कि तू उस के कार्य्य की महिमा कर जिस के बिषय में मनुष्य गाते हैं । २५ हर एक जन उस पर दृष्टि करते हैं मनुष्य दूर से उसे देखते हैं । २६ देख सर्व्वशक्ति- मान महान है और हम नहीं जानते

उस के बरसों की गिनती का खोज २७ नहीं हो सक्ता । क्योंकि वह जल के बूंदों को खींचता है जो उस की भाप २८ से टपकती हैं । जिन से मेघ बहते हैं और मनुष्य पर बहुताई से चुआते हैं । २९ क्या उस के मेघों के फैलाने की रीति और उस के तंबू की कड़क को भी ३० कोई समझ सक्ता है । देख वह अपना उंजियाला अपने चहुंओर फैलाता है और समुद्र की जड़ों से अपने को ढांपता ३१ है । क्योंकि वह उन से लोगों का बिचार करता है और भोजन बहुताई ३२ से देता है । वह अपने हाथों को बिजली से ढांपता है और उसे बैरी पर ३३ आज्ञा करता है । वह अपना शब्द उस पर सुनाता है ढोर और सागपात पर भी ॥

सैंतीसवां पर्व्व ।

१ हां इस पर भी मेरा मन थर्थराता है और अपने स्थान से उछलता है । २ सुनो सुनो उस के शब्द की गर्जन और वह घूमधाम का शब्द जो उस के मुंह ३ से निकलता है । वह उसे सारे स्वर्ग के तले भेजता है और अपनी बिजुली को ४ पृथिवी के अंत लों । उस के पीछे शब्द गर्जता है वह अपनी महिमा के शब्द से गर्जता है और जब उस का शब्द सुना जाता है तब वह उन्हें नहीं रोकता । ५ सर्व्वशक्तिमान अपने शब्द से अद्भुत रीति से गर्जता है जो बड़े बड़े कार्य्य करता ६ है और हम नहीं बूझ सक्ते । क्योंकि वह पाले से कहता है कि तू पृथिवी पर हो जा और मेंह की झड़ी से हां ७ अपने बल की मेंह की झड़ियों से । वह हर एक मनुष्य के हाथों को बंद कर देता है जिसतें सारे लोग जिन्हें उस ने ८ बनाया उस को जानें । तब पशु अपनी मांदों में जाते हैं और अपने अपने ठिकाने में रहते हैं । दक्खिन से बवंडर आता ९ है और उत्तर से जाड़ा । सर्व्वशक्तिमान १० के श्वास से पाला पड़ता है और फैला हुआ पानी सकेत हो जाता है । वह ११ गाढ़े मेघ को भी मेंह में गिरा देता है अपनी बिजुली के मेघ को छितराता है । और वह अपने मंत्र से उन्हें घुमाता १२ फिराता है जिसतें पृथिवी में जगत पर वे सब कुछ करें जो वह उन्हें आज्ञा करता है । चाहे वह उन्हें दण्ड के १३ लिये अथवा अपने देश के लिये अथवा कृपा के लिये निकाले ॥

हे ऐयूब इस पर कान धर खड़ा हो १४ और सर्व्वशक्तिमान के आश्चर्य्य कार्य्यों को सोच । क्या तू जानता है जब १५ ईश्वर ने उन का ठिकाना किया और अपने मेघ की बिजुली को चमकाया । क्या तू मेघों के फैलने की रीति जानता १६ है उस के आश्चर्य्य कार्य्य जो ज्ञानमय हैं । तेरे बस्त्र किस भांति से गरमाते १७ हैं जब वह दक्खिनहा पवन से पृथिवी पर घुमस करता है । क्या तू उस के १८ साथ मेघों को फैला सक्ता है जो ढालुआ दर्पण की नाईं पोढ़ हैं । हमें १९ बतला कि हम उस्से क्या कहें क्योंकि अंधियारे के मारे हम बात बना नहीं सक्ते । क्या उस्से बताया जायेगा जो २० मैं बातें करूं यदि मनुष्य उस्से कहे तो निश्चय वह निगला जायगा ॥

और अब लोग उंजियाले को नहीं २१ देख सक्ते जब वह मेघों में चमकता है जब पवन बहती है और उन्हें पवित्र करती है । उत्तर से सोनहरी ज्योति २२ आती है ईश्वर के पास भयंकर महिमा है । हम सर्व्वसामर्थी को नहीं पा २३ सक्ते वह पराक्रम और बिचार में बड़ा है और सच्चाई में महान वह न सता- वेगा । इसी लिये मनुष्य उस्से डरें २४

वह किसी बुद्धिमान पर ध्यान न करेगा॥

अठतीसवां पर्ब्ब।

१ तब परमेश्वर ने आंधी में से ऐयूब २ को उत्तर दिया और कहा। यह कौन है जो अज्ञान की बातों से मेरे परामर्श ३ को अंधियारा कर देता है। अब मनुष्य की नाईं अपनी कटि कस क्योंकि मैं तुझ से पूछूंगा और तू मुझे उत्तर दे॥

४ जब मैं ने पृथिवी की नेवें डालीं तब तू कहां था यदि तू बुद्धि रखता ५ है तो बतला। किस ने उस का परिमाण किया है जो तू जानता है अथवा ६ किस ने उस पर सूत खींचा। किस पर उस की नेवें डाली गईं अथवा किस ने ७ उस के कोने का पत्थर रक्खा। जब बिहान के तारागणों ने मिलके गाया और ईश्वर के सारे पुत्रों ने आनन्द के मारे ललकारा॥

८ जब समुद्र फूटके गर्भ से निकल आया तब किस ने उस के द्वारों को बंद किया। ९ जब मैं ने मेघ को उस का बस्त्र बनाया और उस की पेटी के कारण गाढ़े मेघ १० को। और अपनी आज्ञा को उस पर स्थिर किया और अड़ंगे और कवाड़ रक्खे। ११ और कहा कि यहां लों तू आना और आगे न बढ़ना और यहां तेरी अहंकार लहरें ठहरें॥

१२ क्या तू ने अपने दिनों में बिहान को आज्ञा किई है और पौ फटने को १३ उस का ठिकाना जताया। जिसतें वह पृथिवी के अंतों को घेरे और दुष्ट उस्से १४ दूर किये जायें। वह छाप की मिट्टी के समान पलट जाती है और सब बस्तें १५ बिभूषित होके खड़ी होती हैं। और दुष्टों से उन की ज्योति रोकी जाती है और ऊंची भुजा तोड़ी जाती है॥

१६ क्या तू समुद्र के सोतों में पैठा है अथवा गहिराई की थाह लेने गया है। १७ क्या मृत्यु के फाटक तेरे लिये खोले गये हैं अथवा तू ने मृत्यु की छाया के १८ केवाड़ों को देखा है। क्या तू ने पृथिवी की चौड़ाई को देखा है यदि इन सभों को जानता हो तो कह॥

१९ जहां उंजियाला निवास करता है उस का मार्ग कहां है और अंधियारे का २० स्थान कहां है। जिसतें तू उसे उस के सिवाने लों पहुंचावे और उस के घर २१ की पगडंडियों को जाने। तू जानता है क्योंकि तू उस समय उत्पन्न हुआ था और तेरे दिनों की गिनती बहुत है॥

२२ क्या तू पाले के भंडारों में पैठा है अथवा ओले के भंडारों को तू ने देखा २३ है। जिन्हें मैं ने बिपत्ति के लिये लड़ाई और संग्राम के दिन के लिये रख छोड़ा है॥

२४ कहां है वह मार्ग जिस से ज्योति का भाग किया गया और पुरवा पवन २५ पृथिवी पर फैलाई गई है। किस ने मेंह की बाढ़ों के लिये नदियां ठहराईं और चमकनेहारी बिजुली के लिये मार्ग। २६ जिसतें पृथिवी पर बरसावे जहां मनुष्य नहीं और बन में जहां मनुष्य नहीं। २७ जिसतें उजाड़ और परती को तृप्त करे और कोमल सागपात की कली को निकलवाये॥

२८ क्या मेंह का कोई पिता है और ओस २९ की बूंदों को किस ने जना है। पाला किस की कोख से निकला और आकाश ३० के पाले का पिता कौन है। जल मानो पत्थर के नीचे आप को छिपाता है और गहिराव का मुंह जम जाता है॥

३१ क्या तू कृत्तिका के बंधनों को बांध सक्ता है अथवा मृगशिर का बंधन खोल ३२ सक्ता है। क्या तू राशिचक्र को उस की ऋतु में निकाल सक्ता है अथवा भल्लूक

उस के बेटों के साथ चला सक्ता है । ३३ क्या तू स्वर्ग की विधिन को जानता है और उस की प्रभुता पृथिवी पर ३४ ठहराता है । क्या तू मेघों को अपना शब्द उठा सक्ता है जिस्तें जल की ३५ बाढ़ तुझे ढांपे । क्या तू बिजुलियों को भेज सक्ता है जिस्तें वे जाके तुझे कहें ३६ कि देख हम यहां हैं । किस ने हृदय में बुद्धि डाली है अथवा किस ने मन ३७ में समझ दिई है । कौन बुद्धि से मेघों की गिनती करता है और कौन स्वर्ग ३८ के कुप्पों को उंडेलता है । जब धूल चहले में बहि जाती है और ढेले लिपट जाते हैं ॥

३९ क्या तू सिंहनी के लिये अहेर करेगा अथवा युवा सिंहों का जी भर देगा । ४० जब वे अपनी मांदों में झुकते हैं और ४१ झाड़ी में घात में बैठते हैं । कौन बनैले कौओं के लिये आहार सिद्ध करता है जब उस के कबेले सर्व्वशक्तिमान को पुकारते हैं जब वे भोजन बिना भ्रमते हैं ॥

उन्तालीसवां पर्व्व ।

१ क्या तू उस समय को जानता है जब पहाड़ी बकरियां जनती हैं अथवा हरिणियों के जन्ने की पीड़ा को बता २ सक्ता है । क्या तू उन मासों को जिन्हें वे पूरा करती हैं गिन सक्ता है अथवा ३ उन के जन्ने का समय जानता है । वे निहुड़ती हैं अपने बच्चे जनती हैं और अपने जन्ने के दुःख को दूर करती हैं । ४ उन के बच्चे हृष्टपुष्ट होते हैं खेत में बढ़ते हैं निकल जाते हैं और उन के पास फिर नहीं आते ॥

५ किस ने बनैले गदहे को निर्बन्ध भेजा है और किस ने बनैले गदहे के ६ बंधनों को खोला है । जिस का घर मैं ने बन को बनाया और नोनछार स्थान ७ उस का निवास । वह नगर की भीड़ पर हंसता है और हंकवैयों के शब्द को नहीं मानता । पर्वतों की दौड़ उस की ८ चराई का स्थान है और वह हर एक हरयाली को ढूंढ़ता है ॥

९ क्या अरना तेरी सेवा की इच्छा करेगा क्या तेरी चरनी के निकट रात १० भर रहेगा । क्या तू अरने को उस के बंधन से रेघारी में बांध सक्ता है क्या वह तेरे पीछे पीछे तराइयों में हेंगा ११ फेरेगा । क्या तू उस पर आशा रक्खेगा इस लिये कि वह महाबली है अथवा क्या तू अपने परिश्रम का काम उस पर १२ छोड़ेगा । क्या तू उस पर भरोसा रक्खेगा कि वह तेरा बोया हुआ फिर लवेगा और तेरे खलिहान में एकट्ठा करेगा ॥

१३ शुतुरमुर्ग का पंख आनन्द के साथ चलता है क्या लगलग के से पंख और १४ डैने उस के नहीं । क्योंकि वह अपने अंडे भूमि पर छोड़ जाती है और धूल १५ से उन्हें सेवती है । और भूल जाती है कि पांव उन्हें कुचलेगा और बनपशु १६ उन्हें रौंदेगा । वह अपने बच्चों पर कठोर है जैसा कि वे उस के नहीं हैं उस का १७ परिश्रम व्यर्थ और वह निर्भय है । इस कारण कि ईश्वर ने उसे बुद्धिरहित किया है और उस ने उसे समझ नहीं १८ दिई है । जब वह पंख मारके आप को उठाती है तब वह घोड़े और उस के चढ़वैये पर हंसती है ॥

१९ क्या तू घोड़े को बल देता है क्या तू उस के गले को कांपनेहारी चोटी से २० पहिनाता है । क्या तू उसे टिड्डी की नाईं कुदा सक्ता है उस का फुंकारना २१ बिभवमय और भयानक है । वह तराई में टापता है और अपने बल पर आनन्दित होता है और हथियार से मिलने को २२ बढ़ता है । वह भय पर हंसता है और नहीं डरता और तलवार से नहीं हटता

२३ है । तूणा उस पर खड़खड़ाते हैं और
२४ झलझलाता भाला और बर्छी । वह
हुल्लड़ और धूमधाम क्रोध से भूमि को
निंगलता है और प्रतीति नहीं करता
२५ कि वह तुरही का शब्द है । वह तुरही
का शब्द सुनते ही हाहा करता है और
दूर से संग्राम को सूंघता है सेनापतिन
के गर्ज्जन और ललकार ॥

२६ क्या तेरी बुद्धि से बाज उड़ता है
और दक्खिन की ओर अपने डैने फैलाता
२७ है । क्या तेरे बचन से गिद्ध ऊपर उड़ता
है और ऊंचाई पर अपना घोंसला बनाता
२८ है । वह चटान पर रहता और बसेरा
करता है चटान के किनारे और पहाड़
२९ की चोटी पर । वहां से वह अपना
अहेर ढूंढता है और उस की आंखें दूर
३० से देखती हैं । और उस के बच्चे लोहू
पीते हैं और जहां लोथ होती है तहां
वह है ॥

चालीसवां पर्ब्ब ।

१ फिर परमेश्वर ने ऐयूब को उत्तर
२ दिया और कहा । क्या सर्बसामर्थी का
निन्दक उस्से झगड़ेगा क्या ईश्वर का
दोषदायक उस को उत्तर देगा ॥

३ तब ऐयूब ने परमेश्वर को उत्तर
४ दिया और कहा । कि देख मैं तुच्छ हूं
मैं तुझे क्या उत्तर देऊं मैं अपना हाथ
५ अपने मुंह पर रखता हूं । एक बार मैं
ने बातें किईं पर उत्तर न देऊंगा हां
दो बार और आगे न बकूंगा ॥

६ तब परमेश्वर ने बवंडर में से ऐयूब
७ को उत्तर दिया और कहा । अब मनुष्य
की नाईं अपनी कटि बांध मैं तुझ से
८ प्रश्न करूंगा और तू मुझे बता । क्या
सचमुच तू मेरे बिचार को वृथा करेगा
मुझ पर दोष लगायेगा जिसतें तू धर्म्मी
९ ठहरे । क्या सर्बशक्तिमान के समान
तेरी भुजा है और क्या तू उस के समान
अपने शब्द से गर्जेगा । अब अपने को १०
प्रभाव और उत्तमता से संवार सुन्दरता
और बिभव से आप को बिभूषित कर ।
अपने कोप की जलजलाहट फैला और ११
हर एक अहंकारी को देख और उसे
तुच्छ कर । हर एक अहंकारी को १२
देखके उसे नीचे कर और दुष्टों को उन
के स्थानों में रौंद डाल । उन्हें एकही १३
साथ धूल में छिपा और गुप्त में उन के
मुंह बांध । तब मैं भी तेरे आगे मान १४
लेऊंगा कि तेरा दहिना हाथ तुझे बचा
सक्ता है ॥

बहेमोत को देख जिसे मैं ने तेरे साथ १५
बनाया है वह बैल की नाईं घास खाता
है । अब देख उस का बल उस की १६
कटि में है और उस का बल उस के
पेट की नसों में है । वह अपनी पूंछ १७
को देवदारु की नाईं हिलाता है और
उस के जांघों की नसें समेटी हुई हैं ।
उस के हाड़ तांबे की नलियां हैं उस १८
की हड्डियां लोहे की छड़ की नाईं हैं ।
वह सर्बशक्तिमान के बनाये हुए में श्रेष्ठ १९
है जिस ने उसे सृजा वह उसे उस की
तलवार देता है । क्योंकि पर्बत उस को २०
चारा देते हैं जहां सारे बनपशु कलोल
करते हैं । वह छतनार पेड़ों के नीचे २१
नरकट की आड़ और दलदल में लेटता
है । छतनार पेड़ उसे अपनी छाया से २२
ढांपते हैं नाले की बेंतें उसे घेरती हैं ।
देख नदी बाढ़ पर है पर वह नहीं २३
डरता वह चैन में है जब यरदन उस
के मुंह पर बह निकले । क्या कोई २४
उस के देखते हुए उसे पकड़ सक्ता है
अथवा उस की नाक को नकेल से छेद
सक्ता है ॥

एकतालीसवां पर्ब्ब

क्या तू कंटिया से लवियातान को १
बाहर खींच सक्ता है और रस्सी से उस

२ की जीभ की बांध सक्ता है। क्या तू उस की नाक में रस्सी लगा सक्ता है अथवा उस की डाढ़ को कांटे से छेद ३ सक्ता है। क्या वह तेरी बहुत सी बिन्तियां करेगा क्या वह तुझ से कोमल ४ बातें करेगा। क्या वह तुझ से बाचा बांधेगा क्या तू उसे सदा के दास के ५ लिये लेगा। क्या चिड़िया के समान तू उस्से खेलेगा और अपनी कन्यों के लिये ६ उसे बांधेगा। क्या मकुए मिलके उस के लिये फंदा लगाते हैं क्या उसे ब्यापा- ७ रियों में बांटते हैं। क्या तू उस की खाल को अंकड़ियों से अथवा उस के सिर को मकुओं के भालों से भर सक्ता ८ है। अपना हाथ उस पर धर संग्राम को स्मरण कर तू फिर ऐसा न करेगा। ९ देख उस की आशा मिथ्या है क्या उसे १० देखते ही मनुष्य गिर न पड़ेगा। कोई ऐसा निर्भय नहीं है कि उसे जगाये और कौन ऐसा है जो मेरे आगे खड़ा ११ हो सक्ता है। किस ने मुझे पहिले कुछ दिया है कि मैं उसे फेर देऊं स्वर्ग के तले सब कुछ मेरा है॥

१२ मैं उस के अंग और उस के बल और उस की सजावट की सुन्दरता के विषय १३ चुप न रहूंगा। किस ने उस के बस्त्र का रूप उघारा है उस के दोहरे जबड़ों १४ में कौन जा सक्ता है। उस के मुंह के कवाड़ों को किस ने खोला है उस के १५ दांतों की पांतियां भयंकर हैं। उस का पराक्रम उस की पीठ ढालें हैं जो १६ मानो दृढ़ छाप से बंद हैं। वे एक दूसरे से ऐसे गुथे हैं कि उन के मध्य १७ पवन का प्रवेश नहीं। वे एक दूसरे से मिले हुए हैं वे एकट्ठे ऐसे सटे हैं कि १८ अलग नहीं हो सक्ते। उस की छींक ज्योति चमकाती है और उस की आंखें १९ बिहान के पलकों की नाईं हैं। उस के मुंह से बरते हुए दीए निकलते हैं और आग की चिनगारियां उछल पड़ती २० हैं। उस के नथुनों से भाफ निकलती है जैसा उसिन्ने के हंडे अथवा कड़ाही २१ से। उस की श्वास से कोइले बर उठते हैं और उस के मुंह से लवर निकलती २२ है। उस के गले में बल रहता है और २३ उस के आगे शंका नाचती है। उस के मांस के परत मिले हुए हैं वे उस पर २४ सटे हुए हैं और हिल नहीं सक्ते। उस का मन पत्थर की नाईं पोढ़ है हां चक्की के नीचे के पाट की नाईं कड़ा है॥

२५ उस के उठने से बलवंत डरते हैं हां भय के मारे वे घबरा जाते हैं। २६ यदि कोई उस पर खड्ग चलाये तो वह न लगेगा न बरछी न सांग न फरी। २७ वह लोहे को पुआल और तांबे को २८ सड़ी लकड़ी जानता है। बाण उसे भगा नहीं सक्ते ढेलवांस के पत्थर उस २९ के आगे भूसी हो जाते हैं। सोंटे उस के आगे भूसी की नाईं गिने जाते हैं और बरछी के हिलाने से वह हंसता है॥

३० उस के नीचे चोखी चोखी ठीकरियां हैं और वह अपना करबरा चाम कांदो ३१ पर बिछाता है। वह गहिराई को हंडे की नाईं उबालता है और समुद्र को तेल के हांडे की नाईं बनाता है। ३२ वह अपने पीछे की लीक को चमकाता है मानो मनुष्य समझेगा कि गहिराई ३३ के पक्के बाल हैं। पृथिवी पर कोई उस के समान नहीं है जो निर्भय बनाया ३४ गया। वह सारी ऊंची बस्तुन को देखता है वह अहंकारियों के सारे सन्तानों का राजा है॥

बयालीसवां पर्व्व।

१ तब ऐयूब ने परमेश्वर को उत्तर २ दिया और कहा। मैं जानता हूं कि तू सब कुछ कर सक्ता है और तेरी कोई

३ चिंता नहीं रुक सक्ती। यह कौन है जो परामर्श को अज्ञानता से छिपाता है इस लिये मैं ने वह उच्चारा जो नहीं समझा मेरे लिये बड़े आश्चर्य्य की बातें ४ जो नहीं जानता था। कृपा करके सुन और मैं बातें करूंगा मैं तुझ से प्रश्न ५ करूंगा और तू मुझे बता। सुनी सुनाई बातों से मैं ने तेरे विषय में अपने कान से सुना था पर अब मेरी आंखों ने ६ तुझे देखा है। इस लिये मैं अपने से घिनाता हूं और धूल और राख पर बैठके पश्चात्ताप करता हूं॥

७ और यों हुआ कि जब परमेश्वर ये बातें ऐयूब से कह चुका तो परमेश्वर ने तीमानी इलीफाज से कहा कि मेरा कोप तुझ पर और तेरे दोनों मित्रों पर भड़का है क्योंकि तुम ने मेरे दास ऐयूब के समान मेरे विषय में सच्ची बातें नहीं ८ कहीं। सो अब अपने लिये सात बैल और सात मेंढ़े लेके मेरे दास ऐयूब पास जाओ और अपने लिये बलिदान की भेंट चढ़ाओ और मेरा दास ऐयूब तुम्हारे लिये प्रार्थना करेगा क्योंकि मैं उसे ग्रहण करूंगा न हो कि मैं तुम्हारी मूर्खता के समान तुम्हारे संग व्यवहार करूं क्योंकि तुम ने मेरे दास ऐयूब के समान मेरे विषय ठीक बातें नहीं कहीं॥

९ सो इलीफाज तीमानी और बिलदाद शुही और जोफार नामाती गये और जैसा परमेश्वर ने उन्हें आज्ञा किई थी वैसा उन्हों ने किया और परमेश्वर ने ऐयूब को ग्रहण किया॥

१० और जब ऐयूब ने अपने मित्रों के लिये प्रार्थना किई तब परमेश्वर ने ऐयूब की बंधुआई को पलट दिया और परमेश्वर ने ऐयूब को आगे से दूना ११ धन दिया। तब उस के सारे भाई और उस की सारी बहिनें और उस के सारे आगे के जान पहिचानों ने आके उस के घर में उस के संग भोजन किया और उस के लिये विलाप किया और उस सारी विपत्ति के लिये जो परमेश्वर ने उस पर डाली थी उसे शांति दिई और हर एक जन ने उसे एक एक टुकड़ा चांदी और हर एक ने उसे सोने की एक एक मुंदरी दिई॥

१२ सो परमेश्वर ने ऐयूब के अंत को उस के आरंभ से अधिक बर दिया क्योंकि उस के चौदह सहस्र भेड़ बकरी और छः सहस्र ऊंट और एक सहस्र जोड़े गाय बैल और एक सहस्र गदहियां १३ थीं। और उस के सात बेटे और तीन १४ बेटियां थीं। और उस ने जेठी का नाम जमीमा और दूसरी का नाम कसीआ और तीसरी का नाम करनहप्पूक १५ रक्खा। और उस सारे देश में कोई स्त्री ऐयूब की बेटियों के समान सुन्दर न थी और उन के पिता ने उन्हें उन के भाइयों के साथ अधिकार दिया॥

१६ और उस के पीछे ऐयूब एक सौ चालीस बरस जीया और अपने बेटे और १७ अपने पोते चार पीढ़ी लों देखे। और ऐयूब वृद्ध और पूरे दिनों का होके मर गया॥

गीतों की पुस्तक।

पहिला गीत।

१ वह मनुष्य क्या ही धन्य है जो पापियों के मत पर नहीं चला और अपराधियों के पथ पर नहीं खड़ा हुआ और निन्दकों की सभा में नहीं बैठा है।
२ परन्तु परमेश्वर की व्यवस्था में उस की प्रसन्नता है और उस की व्यवस्था पर वह दिन रात ध्यान करेगा॥
३ और वह उस पेड़ के समान होगा जो जल की धारों पर लगाया गया जो अपना फल अपने ऋतु पर देगा और उस के पत्ते न मुरझायेंगे और जो वह करेगा सब भाग्यमानी से करेगा।
४ अधर्म्मी ऐसे नहीं परन्तु उस भूसे के समान हैं जिसे बयार उड़ा ले जाती है॥
५ इस कारण से अधर्म्मी न्याय में और अपराधी धर्म्मियों की सभा में खड़े न रहेंगे।
६ क्योंकि परमेश्वर धर्म्मियों का मार्ग जानता है पर अधर्म्मियों का मार्ग नष्ट हो जायगा॥

दूसरा गीत।

१ अन्यदेशी किस लिये हुल्लर मचाते हैं और लोग अनर्थ चिन्ता करते हैं।
२ जगत के राजा साम्हना करते हैं और प्रधान परमेश्वर और उस के मसीह के
३ बिरुद्ध आपस में परामर्श करते हैं। कि आओ हम उन के बंधनों को तोड़ डालें और उन की रस्सियों को अपने पास से फेंक देवें॥
४ स्वर्ग पर बैठा हुआ वह हंसेगा पर-
५ मेश्वर उन्हें ठट्ठों में उड़ायेगा। तब वह अपने कोप में उन से बातें करेगा और अपने महा कोप से उन्हें कंपायेगा।
६ और मैं ने अपने राजा को अपने पवित्र पहाड़ सेहून पर स्थिर किया है॥
७ मैं नियम को बर्णन करूंगा परमेश्वर ने मुझ से कहा कि तू मेरा पुत्र है मैं ने आज तुझे उत्पन्न किया।
८ मुझ से मांग और मैं अन्यदेशियों को तेरे बश में और पृथिवी के सिवानों को तेरे अधिकार में देऊंगा।
९ तू उन्हें लोहे के राजदण्ड से तोड़ेगा कुम्हार के पात्र की नाईं उन्हें चूर चूर कर डालेगा॥
१० और अब हे राजाओ बुद्धिमान होओ हे पृथिवी के न्यायियो उपदेश को ग्रहण करो।
११ डर के साथ परमेश्वर की सेवा करो और कांपते हुए आनन्द करो।
१२ पुत्र को चूमो कि वह रिसिया न जाय और तुम बगदके नाश हो क्योंकि उस का क्रोध शीघ्र भड़केगा उस के समस्त भरोसा रखनेहारे क्या ही धन्य हैं॥

तीसरा गीत।

दाऊद का गीत जब वह अपने बेटे अबिसलूम के साम्हने से भागा॥

१ हे परमेश्वर मेरे दुःखदायक क्या ही बढ़ गये बहुतेरे मेरे बिरुद्ध उठते हैं।
२ बहुतेरे मेरे प्राण को कहते हैं कि उस के लिये ईश्वर से कुछ मुक्ति नहीं है। सिलाह॥
३ और तू हे परमेश्वर मेरे चहुंओर ढाल मेरी प्रतिष्ठा और मेरा ऊंचा करनेहारा है।
४ जब मैं अपने शब्द से परमेश्वर को पुकारता हूं तब वह अपने पवित्र पहाड़ पर से मुझे उत्तर देता है। सिलाह॥
५ मैं लेट गया और सो रहा और जाग उठा हूं क्योंकि परमेश्वर मेरी रक्षा करता है।
६ मैं जातिगण के सहस्रों के सहस्र से न डरूंगा जिन्हें उन्हों ने चारों ओर मेरे बिरोध में रक्खा है॥

७ हे परमेश्वर उठ हे मेरे ईश्वर मुझे बचा क्योंकि तू ने मेरे सारे बैरियों के गाल पर थपेड़े मारे हैं तू ने अधर्म्मियों के दांत तोड़े हैं। परमेश्वर ही से ८ मुक्ति है तेरे लोगों पर तेरी आशीस हो। सिलाह॥

चौथा गीत।

प्रधान बजानिये के लिये तार के बाजों पर दाऊद का गीत॥

१ हे मेरे धर्म्म के ईश्वर जब मैं पुकारूं तब मुझे उत्तर दे कष्ट में तू ने मुझे छुड़ाया मुझ पर दया कर और मेरी प्रार्थना सुन ले॥

२ हे मनुष्य के पुत्रो कब लों मेरी प्रतिष्ठा लाज में बदलती जायगी कब लों तुम वृथा को प्रीति करोगे और झूठ ३ के पीछे रहोगे। सिलाह। और जानो कि परमेश्वर ने धर्म्मी को अपने लिये अलग कर लिया है जब मैं परमेश्वर को पुकारूं तब वह सुन लेगा॥

४ क्रोध करके पाप न करो अपने बिछौने पर अपने मन में कहो और चुप ५ रहो। सिलाह। धर्म्म के बलिदान चढ़ाओ और परमेश्वर पर भरोसा करो॥

६ बहुतेरे कहते हैं कि हमें कौन भलाई दिखावेगा हे परमेश्वर अपने स्वरूप की ७ ज्योति हम पर उदय कर। जिस समय से उन का अनाज और उन का दाखरस अधिक हो गया तू ने मेरे मन को अति ८ आनन्द किया है। चैन में मैं एक ही साथ लेटूंगा और सो जाऊंगा क्योंकि तू ही हे परमेश्वर अकेला मुझे चैन में रहने देगा॥

पांचवां गीत।

प्रधान बजानिये के लिये अधिकारों के विषय में दाऊद का गीत॥

१ हे परमेश्वर मेरी बातों पर कान धर २ मेरे सोच पर ध्यान रख। हे मेरे राजा और मेरे ईश्वर मेरी दोहाई के शब्द को सुन क्योंकि मैं तुझ ही से प्रार्थना ३ करूंगा। हे परमेश्वर तू बिहान को मेरा शब्द सुनेगा बिहान को मैं अपनी प्रार्थना को सिद्ध करूंगा और ताकता रहूंगा॥

४ क्योंकि तू वह सर्वशक्तिमान नहीं जो दुष्टता से प्रसन्न हो दुष्ट तेरे साथ न ५ रहेगा। घमंडी तेरी आंखों के साम्हने खड़े न रहेंगे तू सारे कुकर्म्मियों से घिन ६ करता है। तू मिथ्यावादियों को नाश करेगा बधिक और छली से परमेश्वर घिन ७ रक्खेगा। और मैं तेरी दया की बहुताई से तेरे घर में आऊंगा तेरे पवित्र मन्दिर की ओर तेरे डर के साथ दण्डवत करूंगा॥

८ हे परमेश्वर मेरे बैरियों के कारण से अपने धर्म्म में मेरी अगुआई कर मेरे ९ आगे अपने मार्ग को सीधा कर। क्योंकि उस के मुंह में कुछ सच्चाई नहीं उन का मन ही दुष्ट है उन का गला खुली हुई समाधि है वे अपनी जीभ १० को चिकनी करते हैं। हे ईश्वर उन्हें दोषी ठहरा वे अपने परामर्शों से आप ही गिर जायेंगे उन के अपराधों की बहुताई में उन्हें धकिया दे क्योंकि उन्हों ने तुझ से बिरोध किया है॥

११ और तेरे सारे भरोसा रखनेहारे मगन होंगे वे सदा आनन्द करेंगे और तू उन पर आड़ करेगा और तेरे नाम के प्रीति रखनेहारे तुझ से आनन्दित होंगे। १२ क्योंकि हे परमेश्वर तू ही धर्म्मी को आशीस देगा ढाल की नाईं तू उसे कृपा से ढांपेगा॥

छठवां गीत।

प्रधान बजानिये के लिये तार के बाजों के साथ आठवीं पर गाया जाय दाऊद का गीत॥

हे परमेश्वर अपनी रिस से मुझे मत

दपट और न अपने क्रोध की तप्त से मुझे
२ दण्ड दे । हे परमेश्वर मुझ पर दया
कर क्योंकि मैं कुम्हला गया हे परमेश्वर
मुझे चंगा कर क्योंकि मेरी हड्डियां
३ थर्थराती हैं । और मेरा प्राण बहुत
थर्थराता है और तू हे परमेश्वर कब लों
४ हे परमेश्वर फिर आ मेरे प्राण को छुड़ा
५ अपनी दया के कारण मुझे बचा । क्योंकि
कि मृत्यु में तेरा कुछ स्मरण नहीं
समाधि में कौन तेरा धन्यबाद करेगा
६ मैं अपने कराहने से थक गया हर रात
अपने बिछौने को भिगाऊंगा अपनी सेज
७ अपने आंसुओं से भिगाऊंगा । मेरी आंख
खिजाहट से धुंधला गई मेरे सारे बैरियों
के कारण बुढ़ा गई ॥

८ हे सारे कुकर्म्मियो मुझ से दूर होओ
क्योंकि परमेश्वर ने मेरे रोने का शब्द
९ सुना है । परमेश्वर ने मेरी बिनती सुनी
है परमेश्वर मेरी प्रार्थना ग्रहण करेगा ।
१० मेरे सारे बैरी लज्जित और अत्यन्त
थर्थरा जायेंगे वे पलट जायेंगे और
अकस्मात् लज्जित होंगे ॥

सातवां गीत ।

दाऊद की डंवांडोली का गीत जो उस ने
परमेश्वर के लिये बिनयमीनी कूश
के बचनों के बिषय में गाया ॥

१ हे परमेश्वर मेरे ईश्वर मैं ने तुझ पर
भरोसा रक्खा है मेरे सारे सतानेहारों
२ से मुझे बचा और मुझे छुड़ा । न होवे
कि वह सिंह की नाईं मेरे प्राण को
फाड़े टुकड़े टुकड़े करे और कोई
छोड़वैया न हो ॥

३ हे परमेश्वर मेरे ईश्वर यदि मैं ने
यह किया हो यदि मेरे हाथों में टेढ़ाई
४ हो । यदि मैं ने अपने मित्र से बुराई
किई हो और जो अकारण मेरा बैरी
५ था उसे लूटा हो । तो बैरी मेरे प्राण
का पीछा करे और पकड़ ले और मेरे
जीवन को पृथिवी पर लताड़े और मेरी
प्रतिष्ठा को धूल में मिलावे । सिलाह ॥

६ हे परमेश्वर अपने क्रोध में उठ मेरे
बैरियों के कोपों के मध्य में आप को
ऊंचा कर और मेरे लिये जागा न्याय की
७ आज्ञा तू ने किई है । और लोगों की
मंडली तुझे घेरे और तू उस के ऊपर
८ ऊंचे पर फिर जा । परमेश्वर लोगों का
न्याय करेगा हे परमेश्वर मेरे धर्म्म और
मेरी खराई के समान जो मेरे ऊपर है
९ मेरा न्याय कर । हाय कि दुष्टों की
बुराई नाश हो और तू धर्म्मी को दृढ़
करे और हे धर्म्मी ईश्वर तू मनों और
अन्तःकरणों का जांचनेहारा है ॥

१० मेरी ढाल ईश्वर पर है जो खरे
११ मनों का बचानेहारा है । ईश्वर धर्म्मी
का बिचार करता है और सर्वशक्तिमान
१२ प्रतिदिन क्रोधित है । यदि वह न फिरे
तो वह अपनी तलवार पर बाढ़ धरेगा
उस ने अपने धनुष को चढ़ाया और उसे
१३ लैस किया है । और उस ने उस की ओर
मृत्यु के हथियार साधे हैं वह अपने
बाणों को जलनेवाले बनावेगा ॥

१४ देखो उसे बुराई की पीड़ होगी
और उसे अपकार का गर्भ रहेगा और
१५ झूठ को जनेगा । उस ने कूआ खोदा
और उसे गहिरा किया है और उस
गड़हे में आप ही गिरा है जिसे वह
१६ बनाता है । उस का अपकार उस के
सिर पर लौट आयेगा और उस की
खोपड़ी पर उस का उपद्रव उतरेगा ।
१७ मैं परमेश्वर की स्तुति उस के धर्म्म के
समान करूंगा और परमेश्वर अति महान
के नाम की स्तुति में गाऊंगा ॥

आठवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये गित्तीत पर
दाऊद का गीत ॥

१ हे परमेश्वर हमारे ईश्वर तेरा नाम

सारी पृथिवी पर क्या ही बिभवमय है अपनी इस महिमा को स्वर्गों के ऊपर २ प्रकाश कर। तू ने अपने बैरियों के लिये जिसतें बैरी और पलटालेनेहारे को चुप करे बालकों और दूधपीवकों के मुंह से शक्ति की नेव डाली है॥

३ जब मैं तेरे स्वर्गों तेरे हाथों की क्रिया चांद और तारों को जिन्हें तू ने ४ ठहराया है देखता हूं। तो मरणहार मनुष्य क्या है कि तू उस का चेत करे और मनुष्य का पुत्र क्या कि तू उस पर ५ दृष्टि करे। और उसे ईश्वरता से थोड़ा सा छोटा करे और बिभव और प्रतिष्ठा ६ का मुकुट उस पर रक्खे। और अपने हाथ के कार्य्यों पर उसे प्रभुता देवे तू ने सब कुछ उस के पांवों के नीचे ७ रक्खा है। झुंड और गाय बैल सब के ८ सब और जंगल के बनपशु भी। आकाश के पक्षी और समुद्र की मछलियां और जो समुद्र के पथों में चलते हैं॥

९ हे परमेश्वर हमारे ईश्वर तेरा नाम सारी पृथिवी पर क्या ही बिभवमय है॥

नवां गीत।

प्रधान् बजानिये के लिये पुत्र की मृत्यु पर दाऊद का गीत॥

१ मैं अपने सारे मन से परमेश्वर की स्तुति करूंगा तेरे सारे आश्चर्य्यों का २ बर्णन करूंगा। मैं तुझ में आनन्द और आह्लाद करूंगा हे अति महान मैं तेरे नाम की स्तुति में गाऊंगा॥

३ जब मेरे बैरी पलट जायेंगे तब वे तेरे आगे से ठोकर खायेंगे और नाश ४ होंगे। क्योंकि तू ने मेरा झगड़ा और मेरा न्याय चुकाया है तू सच्चाई से न्याय ५ करते हुए सिंहासन पर बैठा है। तू ने अन्यदेशियों को दपटा दुष्ट को नष्ट किया उन का नाम सदा के लिये मिटा ६ डाला है। बैरी की दुष्टतायें सर्बदा के लिये समाप्त हुईं और तू ने उन के नगरों को उजाड़ा है उन का स्मरण उन्हीं के साथ मिट गया। और परमेश्वर सदा ७ लों बिमान पर बैठा रहेगा उस ने न्याय के लिये अपने सिंहासन को स्थापित किया है। और वही धर्म्म के साथ ८ संसार का बिचार करेगा खराई के साथ लोगों का न्याय करेगा। और परमेश्वर ९ सताये हुए के लिये ऊंचा स्थान होगा ऊंचा स्थान दुःख के समयों में। और १० तेरे नाम के जाननेहारे तुझ पर भरोसा रक्खेंगे क्योंकि हे परमेश्वर तू ने अपने खोजियों को नहीं छोड़ा है॥

परमेश्वर जो सैहून में बास करता ११ है उस की स्तुति में गाओ लोगों में उस के बड़े कार्य्यों का बर्णन करो। क्यों- १२ कि लोहू का लेखा लेते हुए उस ने उस का स्मरण किया है वह दुःखियों की दोहाई को नहीं भूला॥

हे परमेश्वर मुझ पर दया कर मेरे १३ दुःख को जो मेरे बैरियों से है देख तू कि मृत्यु के द्वारों से मेरा उठानेहारा है। जिसतें मैं सैहून की बेटी के द्वारों १४ में तेरी सारी स्तुति बर्णन करूं तेरी मुक्ति से आनन्दित होऊं॥

अन्यदेशी उस गड़हे में जिसे उन्हों १५ ने खोदा धंस गये उस फंदे में जिसे उन्हों ने छिपाया उन्हीं का पांव फंसा। परमेश्वर जाना गया उस ने न्याय किया १६ है दुष्ट अपने ही हाथों के कार्य्य में फंस गया। हिग्गायून। सिलाह॥

दुष्ट समाधि लों पलट जायेंगे हां १७ ईश्वर को भूलनेहारे सारे जातिगण। क्योंकि कंगाल सदा भुलाया न जायगा १८ और न दीनों की आशा सदा लों नष्ट होगी॥

उठ हे परमेश्वर मरणहार मनुष्य १९ प्रबल न होने पावे अन्यदेशियों का

२० बिचार तेरे आगे किया जावे । हे परमेश्वर उन्हें भय में डाल जातिगण जानें कि हम मरणहार मनुष्य हैं । सिलाह ॥

दसवां गीत ।

१ हे परमेश्वर तू किस लिये दूर खड़ा रहता है सकेतों के समयों में अपने
२ तईं छिपाता है । दुष्ट के अहंकार से दुःखी जलता है वे उन जुगुतों में जो उन्हों ने निकाली हैं फंस जाते हैं ।
३ क्योंकि दुष्ट अपने प्राण की लालसा पर बड़ाई किया करता है और अपनी इच्छा पूरी करके परमेश्वर को धन्य कहता और उस की निन्दा करता है ।
४ दुष्ट अपने अहंकार में परमेश्वर का खोजी न होगा उस की सारी चिंतायें
५ ये हैं कि ईश्वर है ही नहीं । उस के मार्ग हर घड़ी स्थिर रहते हैं तेरे न्याय उस की दृष्टि से ऊंचे हैं वह अपने सारे
६ बैरियों पर फूंक मारता है । उस ने अपने मन में कहा है कि मैं न टलूंगा पीढ़ी से पीढ़ी लों मैं वही हूं जो
७ बिपत्ति में न पड़ूंगा । उस का मुंह धिक्कार और कपट और अंधेर से भरा है उस की जीभ के तले अपकार और
८ बुराई हैं । वह गांव के कूकों में बैठता है गुप्त स्थानों में निर्दोष को घात करता है उस की आंखें दुःखी के लिये
९ छिपती हैं । वह सिंह की नाईं जो अपनी झाड़ी में हो गुप्त स्थान में दुके में रहता है वह दुःखी के पकड़ने के लिये ताक में रहता है दुःखी को अपने
१० जाल में खींचके पकड़ता है । और वह दबके बैठ जाता है और उस के
११ बलवंतों से दुःखी गिर पड़ते हैं । उस ने अपने मन में कहा है कि सर्वशक्तिमान भूल गया उस ने अपना मुंह छिपाया है उस ने कभी नहीं देखा ॥

१२ हे परमेश्वर उठ हे सर्वशक्तिमान अपना हाथ बढ़ा दुःखियों को न भूल ।
१३ किस कारण से दुष्ट ने ईश्वर को तुच्छ जाना और अपने मन में कहा है कि तू
१४ पूछपाछ न करेगा । तू ने देखा है क्योंकि तू अपकार और खिजाहट को देखता है जिसतें अपने हाथ में रक्खे दुःखी तुझ पर अपना बोझ छोड़ता है अनाथ का उपकारी तू ही हुआ है ।
१५ दुष्ट की भुजा तोड़ और बुरे मनुष्य की दुष्टता को तू ढूंढ़ेगा और उसे न पायेगा ॥
१६ परमेश्वर सनातन से सनातन लों राजा रहेगा जातिगण उस की भूमि से
१७ नष्ट हुए । हे परमेश्वर तू ने दीनों की इच्छा सुनी है तू उन के मनों को दृढ़ करेगा अपना कान धरके सुनेगा ।
१८ जिसतें अनाथ और सताये हुए का न्याय करे मरणहार मनुष्य जो पृथिवी से है फिर बिरुद्ध न करेगा ॥

ग्यारहवां गीत ।

प्रधान बजानिये के लिये दाऊद का गीत ॥

१ मैं ने परमेश्वर पर भरोसा रक्खा है तुम क्योंकर मेरे प्राण से कहोगे कि चिड़िया की नाईं तुम अपने पहाड़ पर
२ भाग जाओ । क्योंकि देखो दुष्ट धनुष को चढ़ाया चाहते हैं उन्हों ने अपना बाण पनच पर चढ़ाया है जिसतें खरे मनवालों
३ को अंधेरे में मारें । क्योंकि खंभा गिरा चाहते हैं धर्म्मी ने क्या किया है ॥
४ परमेश्वर अपने पवित्र मन्दिर में है परमेश्वर का सिंहासन स्वर्ग पर है उस की आंखें देखती हैं उस की पलकें मनुष्य
५ के सन्तानों को परखती हैं । परमेश्वर धर्म्मी को जांचता है और दुष्ट और अंधेर के प्रेमी से उस का आत्मा घिन करता
६ है । वह दुष्टों पर फंदे आग और गंधक बरसावेगा और भयंकर आंधी उन के
७ कटोरे का भाग होगी । क्योंकि परमेश्वर

धर्म्मी है वह धर्म्म को प्यार करता है
उस का रूप खरे जन को देखता है॥

बारहवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये आठवीं पर दाऊद का गीत॥

१ हे परमेश्वर बचा क्योंकि साधु जन हो चुका क्योंकि बिश्वासी मनुष्य के २ सन्तान में से लोप हो गये। वे हर एक अपने परोसी से झूठ बोलते हैं चापलूसी के होंठ और दोहरे मन से बातें करते ३ हैं। परमेश्वर सारे चापलूसी के होंठों को और उस जीभ को जो बड़ा बोल ४ बोलती है काट डाले। जिन्हों ने कहा है कि हम अपनी जीभ से जीतेंगे हमारे होंठ हमारे साथ हैं कौन हमारा प्रभु है॥

५ दुःखियों की दरिद्रता से और कंगालों की ठंढी सांस से परमेश्वर बोला चाहता है कि अब मैं उठूंगा मैं उसे जो उस के लिये हांफता है चैन में रक्खूंगा। ६ परमेश्वर की बातें पवित्र बातें हैं पृथिवी के महान मनुष्य के लिये ताई हुई हां सात बार निर्मल किई हुई चांदी हैं। ७ हे परमेश्वर तू ही उन्हें रक्षा में रक्खेगा तू उसे इस पीढ़ी से सदा लों बचा- ८ वेगा। दुष्ट चारों ओर चलते फिरते हैं पर मनुष्य के सन्तान के लिये उन की यह नीचाई मानो ऊंचाई है॥

तेरहवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये दाऊद का गीत॥

१ हे परमेश्वर तू कब लों मुझे सना- तन लों भूला रहेगा तू कब लों अपना २ मुंह मुझ से छिपावेगा। मैं कब लों अपने प्राण में परामर्श और अपने मन में शोक प्रतिदिन रक्खूंगा मेरा बैरी कब लों मुझ पर ऊंचा रहेगा॥

३ हे परमेश्वर मेरे ईश्वर दृष्टि कर मेरी सुन मेरी आंखें उंजियाली कर ४ कदाचित मैं मृत्यु में सोऊं। कदाचित मेरा बैरी कहे कि मैं ने उसे जीता और मेरे बिरोधी जब मैं टल जाऊंगा आनन्द करें॥

५ और मैं ने तेरी दया पर भरोसा रक्खा है मेरा मन तेरी मुक्ति से आनन्द ६ करे। मैं परमेश्वर की स्तुति गाऊंगा क्योंकि उस ने मुझ से अच्छा व्यवहार किया है॥

चौदहवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये दाऊद का गीत॥

१ मूर्ख ने अपने मन में कहा है कि ईश्वर है हीं नहीं उन्हों ने बिगाड़ किया घिनौने कार्य्य किये हैं कोई सुकर्म्मी २ नहीं। परमेश्वर ने स्वर्ग पर से मनुष्य के सन्तान पर झांका जिसतें देखे कि कोई बुद्धिमान है अर्थात ईश्वर को ३ ढूंढता अथवा नहीं। वे सब के सब भटक गये वे एक ही साथ बिगड़ गये कोई धर्म्मी नहीं एक भी नहीं॥

४ क्या यह सारे कुकर्म्मी नहीं जानते जो मेरे लोगों को खाते जैसे रोटी खाते हैं और परमेश्वर का नाम नहीं लेते। ५ वहां वे बहुत ही डरे क्योंकि ईश्वर ६ धर्म्मी के बंश में है। तुम दुःखी के परामर्श का निरादर करोगे क्योंकि पर- मेश्वर उस का शरणस्थान है॥

७ हाय कि परमेश्वर के अपने बंधुवे लोगों के पास फिर आने में सैहून से इसराएल की मुक्ति हो तब यअकूब आनन्दित और इसराएल मगन हो॥

पंदरहवां गीत।

दाऊद का गीत॥

१ हे परमेश्वर तेरे तंबू में कौन रहेगा तेरे पवित्र पहाड़ में कौन बास करेगा॥

२ अपने मन से सीधा चलते हुए और धर्म्म करते हुए और सच बोलते हुए। उस ने अपनी जीभ से चुगली नहीं किई

अपने परोसी की हानि नहीं किई और अपने परोसी पर अपवाद नहीं लगाया। ४ निकम्मा उस की आंखों में निन्दित है और वह परमेश्वर के डरवैयों की प्रतिष्ठा करता है उस ने अपनी हानि करनेहारी ५ किरिया खाई और न पलटेगा। उस ने अपनी रोकड़ ब्याज के लिये नहीं दिई और न निर्दोषी के लिये अकोर लिया है यही करते हुए वह सदा लों न टलेगा॥

सोलहवां गीत।

दाऊद का भेद॥

१ हे सर्वशक्तिमान मेरी रखवाली कर क्योंकि मैं ने तुझ पर भरोसा रक्खा है॥

२ हे मेरे प्राण तू ने परमेश्वर से कहा है कि तू ही प्रभु है मेरी भलाई तुझ ३ बिना नहीं। उन साधुन के संग जो पृथिवी पर हैं और उत्तमों के जिन में मेरा सारा आनन्द है॥

४ उन के शोक बहुत होंगे जिन्हों ने आन देव के संग गांठिबंधन किया है उन के लोहू के तपावन मैं न तपाऊंगा और न अपने होंठों से उन के नाम ५ लूंगा। परमेश्वर मेरा ठहराया हुआ भाग और मेरा कटोरा है तू ही मेरे ६ पासे को बढ़ती देगा। मापने की रस्सियां मेरे लिये मनभावने स्थानों में पड़ी हैं हां मेरा अधिकार सुथरा है॥

७ मैं परमेश्वर का धन्य मानूंगा जिस ने मुझे मंत्र दिया है हां रात को मेरे ८ अंतःकरण ने मुझे सिखाया है। मैं ने परमेश्वर को सदा अपने साम्हने रक्खा है क्योंकि वह मेरे दहिने हाथ है मैं न ९ टलूंगा। इस लिये मेरा मन मगन हुआ और मेरे विभव ने आनन्द किया हां १० मेरा शरीर चैन से रहेगा। क्योंकि तू मेरा प्राण समाधि को न सौंपेगा तू ११ अपने धर्म्ममय को सड़ने न देगा। तू जीवन का मार्ग बतलावेगा तेरे आगे आनन्द की भरपूरी है तेरे दहिने हाथ में सनातन का विलास है॥

सत्रहवां गीत।

दाऊद की प्रार्थना॥

१ हे परमेश्वर धर्म्म को सुन मेरे उस चिल्लाने पर सुरत लगा मेरी उस प्रार्थना पर कान धर जो निष्कपट होंठों से है। २ मेरा न्याय तेरे आगे से होगा तेरी आंखें ३ खराइयों को देखेंगी। तू ने मेरे मन को परखा रात को तू मेरे पास आया तू ने मुझे ताया तू कुछ न पावेगा मेरा मुंह मेरे ध्यान से अधिक न बकेगा। ४ तेरे होंठों के बचन के द्वारा से जो मनुष्य के सन्तान के कार्य्यों के विषय में है मैं ने अपने को नाशक के पथों से बचा ५ रक्खा है। मेरे डगों ने तेरे पथों को पकड़ा मेरे पांव नहीं टले॥

६ मैं ने तुझे पुकारा है क्योंकि हे सर्वशक्तिमान तू मुझे उत्तर देगा अपना कान मेरी ओर झुका मेरी बात सुन। ७ हे तू कि अपने दहिने हाथ से अपने आश्रितों को उन के बैरियों से बचाता है उन पर अपनी दया को मुख्य कर। ८ आंख की पुतली की नाईं मेरी रक्षा कर तू अपने पंखों के छाया तले मुझे छिपा- ९ वेगा। दुष्टों के साम्हने से जिन्हों ने मुझे बिगाड़ा है मेरे प्राण के बैरी मुझे १० घेर लेंगे। वे अपनी चिकनाई में ढंप गये उन्हों ने अपने मुंह से घमंड में शब्द ११ उच्चारा है। अब उन्हों ने हमारे हर डग पर हमें घेरा है वे अपनी आंखें लगाये रहेंगे जिसतें भूमि पर सीधे मार्ग से हट १२ जायें। उस का सादृश्य सिंह का सा है वह फाड़ने चाहता है और युवा सिंह का सा जो गुप्त स्थानों में बैठता है। १३ हे परमेश्वर उठ उस का साम्हना कर उसे झुका दे अपनी तलवार से मेरे प्राण

को दुष्ट से बचा। १४ अपने हाथ से हे परमेश्वर मेरे प्राण को मनुष्यों से बचा हां मनुष्यों से और संसार से उन का भाग इसी जीवन में है और तू अपने छिपे हुए धन से उन का पेट भर देगा वे लड़कों से संतुष्ट होंगे और अपनी बचती अपने बच्चों के लिये छोड़ जायेंगे। १५ मैं धर्म्म से तेरा मुंह देखूंगा जब मैं जागूंगा तब तेरे रूप से तृप्त होऊंगा॥

अठारहवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये परमेश्वर के सेवक दाऊद का गीत जिस ने परमेश्वर से इस गीत की बातें कहीं जिस दिन परमेश्वर ने उसे उस के सारे बैरियों के पंजे से और साऊल के हाथ से छुड़ाया और कहा॥

१ हे परमेश्वर मेरे बल मैं तुझे प्यार करूंगा। २ परमेश्वर मेरी चटान और मेरा गढ़ और मेरा छुड़वैया है मेरा सर्वशक्तिमान मेरी चटान है मैं उस पर भरोसा रक्खूंगा मेरी ढाल और मेरी मुक्ति का सींग मेरा ऊंचा स्थान। ३ मैं परमेश्वर को जो स्तुति के योग्य है पुकारूंगा और अपने बैरियों से बच जाऊंगा॥

४ मृत्यु के बंधनों ने मुझे घेरा है और दुष्टता की बाढ़ें मुझे डराया करेंगी। ५ समाधि के बंधनों ने मुझे घेरा मृत्यु के फंदों ने मेरा साम्हना किया है। ६ मैं अपनी सकेती में परमेश्वर को पुकारूंगा और अपने ईश्वर को दोहाई दूंगा वह अपने मन्दिर से मेरा शब्द सुनेगा और मेरी दोहाई उस के आगे हां उस के कानों में पहुंचेगी। ७ तब पृथिवी कांपी और थर्थराई और पहाड़ों की नेवें हिल गईं और थर्थरा गईं क्योंकि वह क्रोधित था। ८ उस के क्रोध से धूआं उठा और उस के मुंह की आग भस्म करती है अंगारे उस्से धधके। ९ और उस ने स्वर्गों को झुकाया और नीचे उतरा और उस के पांव तले घटा थी। १० और वह करोबी पर चढ़ा और उड़ा और उस ने पवन के डैनों पर उड़ान किया। ११ उस ने अपने चारों ओर अंधियारे को अपनी ओट ठहराया अपनी आड़ पानी का अंधेरा बादलों की घटायें। १२ उस चमक से जो उस के आगे थी उस के बादल हट गये ओले और अंगारे। १३ तब परमेश्वर स्वर्गों में गर्जा और अति महान ने अपना शब्द उच्चारा ओले और अंगारे। १४ तब उस ने अपने बाण चलाये और उन्हें छिन्न भिन्न किया और बिजुलियां चमकाईं और उन्हें घबरा दिया। १५ तब हे परमेश्वर तेरी डांट से और तेरे क्रोध के श्वास के झोंके से पानी की नालियां देख पड़ीं और जगत की नेवें खुल गईं॥

१६ वह ऊपर से अपना हाथ बढ़ायेगा मुझे ले लेगा मुझे बड़े पानी में से खैंच लेगा। १७ वह मेरे बैरी से मुझे छुड़ावेगा क्योंकि वह बलवंत है और मेरे डाह रखनेहारों से क्योंकि वे मुझ से अति बली हैं। १८ वे मेरी बिपत्ति के दिन मेरा साम्हना करेंगे और परमेश्वर मेरे लिये टेक हुआ है। १९ और मुझे फैलाव स्थान में लाया वह मुझे बचावेगा क्योंकि वह मुझ्से प्रसन्न है॥

२० परमेश्वर मेरे धर्म्म के समान मुझ से व्यवहार करेगा मेरे हाथों की पवित्रता के समान वह मुझे प्रतिफल देगा। २१ क्योंकि मैं ने परमेश्वर के मार्गों को मनन किया है और अपने ईश्वर से न फिरा। २२ क्योंकि उस के सारे न्याय मेरे साम्हने हैं और उस की बिधिन को मैं अपने से दूर न करूंगा। २३ और मैं उस के साथ निर्दोष रहा और आप को अपनी बुराई से बचा रक्खा। २४ और परमेश्वर

से मेरे धर्म्म के समान और मेरे हाथों की पवित्रता के समान जो उस की आंखों के साम्हने थी मुझे प्रतिफल दिया है ॥

२५ साधु के साथ तू अपने तईं साधु दिखावेगा सज्जन मनुष्य के साथ तू २६ अपने तईं सज्जन दिखावेगा । पवित्र किये हुए के साथ तू अपने तईं पवित्र दिखावेगा और टेढ़े के साथ तू अपने २७ तईं टेढ़ा दिखावेगा । क्योंकि तू ही दुःखी लोगों को बचावेगा और ऊंची २८ आंखों को नीची करेगा । क्योंकि तू ही मेरा दीपक बारेगा परमेश्वर मेरा ईश्वर मेरे अंधियारे को उंजियाला २९ करेगा । क्योंकि मैं तेरी सहाय से जथा पर दौड़ूंगा और अपने ईश्वर की ३० सहायता से भीत फांदूंगा । अर्थात् सर्वशक्तिमान से जिस का मार्ग शुद्ध है परमेश्वर का बचन ताया गया है वह अपने सारे आश्रितों के लिये ढाल है । ३१ क्योंकि परमेश्वर को छोड़ कौन ईश्वर है और हमारे ईश्वर को छोड़ कौन चटान है ॥

३२ अर्थात् सर्वशक्तिमान को छोड़ जो मेरी कटि दृढ़ता से बांधता है और ३३ जिस ने मेरा मार्ग शुद्ध किया है । जो मेरे पांव को हरिणियों के से बनाता है और मेरी ऊंचाइयों पर मुझे खड़ा करता ३४ है । जो मेरे हाथों को युद्ध करना सिखाता है और मेरी बांहों ने पीतल ३५ का धनुष झुकाया है । और तू ने मुझे अपनी मुक्ति की ढाल दिई है और तेरा दहिना हाथ मुझे संभालेगा और ३६ तेरी कोमलता मुझे बढ़ावेगी । तू मेरे डगों को मेरे नीचे बढ़ावेगा और मेरे ३७ घुटने न हटेंगे । मैं अपने बैरियों का पीछा करूंगा और उन्हें जा लूंगा और पीछे न फिरूंगा जब लों वे नाश न हों । मैं उन्हें पटक दूंगा और वे उठ ३८ न सकेंगे वे मेरे पांव के नीचे गिर पड़ेंगे । और तू ने संग्राम के लिये मेरी ३९ कटि दृढ़ता से बांधी है तू मेरे बिरोधियों को मेरे नीचे झुकावेगा । और तू ने ४० मेरे बैरियों की पीठ मुझे दिखाई और मैं अपने शत्रुओं का नाश करूंगा । वे ४१ दोहाई देंगे और कोई बचानेहारा नहीं परमेश्वर को और वह उन की नहीं सुनता है । और मैं उन्हें धूल की नाईं ४२ जो बयार के आगे है पीस डालूंगा मार्गों की कीच की नाईं उन्हें फेंक दूंगा । तू मुझे लोगों के झगड़ों से ४३ छुड़ावेगा तू मुझे अन्यदेशियों का अध्यक्ष ठहरावेगा जिन लोगों को मैं ने नहीं जाना वे मेरी सेवा करेंगे । कान से ४४ सुनते हीं वे मुझे मानेंगे परदेशियों के बंश मुझ से झूठ बोलेंगे । परदेशियों ४५ के बंश मुरझा जायेंगे और अपने बाड़ों से थर्थरा जायेंगे ॥

परमेश्वर जीवता है और धन्य मेरी ४६ चटान और मेरी मुक्ति का ईश्वर महान होगा । अर्थात् सर्वशक्तिमान जो मेरा ४७ पलटा लेता है और जिस ने जातिगणों को मेरे नीचे दबाया है । जो मुझे मेरे ४८ बैरियों से छुड़ाता है हां मेरे बिरोधियों से तू मुझे ऊंचा करेगा अंधेरी मनुष्य से तू मुझे छुड़ावेगा । इस लिये हे परमेश्वर ४९ मैं जातिगणों में तेरा धन्य मानूंगा और तेरे नाम की स्तुति में गीत गाऊंगा । जो अपने राजा को बड़ी बड़ी मुक्ति ५० देता है और अपने अभिषिक्त अर्थात् दाऊद और उस के बंश पर सनातन लों दया करता है ॥

उन्नीसवां गीत ।

प्रधान बजानिये के लिये दाऊद का गीत ॥

स्वर्ग सर्वशक्तिमान की महिमा बर्णन १ करते हैं और आकाश उस के हाथों के

२ कर्म्म का संदेश देते हैं। एक दिन दूसरे दिन से बातें बर्णन किया करता है और एक रात दूसरी रात को ज्ञान ३ देती रहती है। न उन का कुछ शब्द है और न उन की कोई बातें उन का शब्द तनिक भी नहीं सुना जाता। ४ सारी पृथिवी में उन की रेखा पड़ी है और जगत के अंत लों उन की बातें हैं सूर्य्य के लिये उस ने उन में तंबू खड़ा ५ किया है। और वह दुल्हे की नाईं अपने एकान्त स्थान से निकलता है बलवन्त की नाईं मार्ग में दौड़ने से आनन्दित ६ रहता है। स्वर्गों के खूंट से उस का निकलना और उस का चक्र उन के अंत लों है और उस की घाम से कुछ छिपा

७ परमेश्वर की व्यवस्था शुद्ध आत्मा को यथावस्थित करनेवाली है परमेश्वर की साक्षी सच्ची भोलों को बुद्धिमान ८ करनेवाली है। परमेश्वर की विधि ठीक मन को मगन करनेवाली हैं परमेश्वर की आज्ञा पवित्र आंखों को ९ उंजियाला करनेवाली है। परमेश्वर का भय पवित्र सर्वदा लों ठहरता है परमेश्वर के बिचार सच्चे और सम्पूर्ण १० धर्म्ममय हैं। जो सोने और बहुत चोखे सोने से अधिक चाहने के योग्य और मधु और उस के छत्तों के टपकनेवाले ११ से अधिक मीठे हैं। इस्से अधिक तेरा दास उन से उंजियाला पाता है उन के कंठ करने में बड़ा ही फल है॥

१२ भूल चूक के पापों को कौन समझेगा तू मुझे इन गुप्त पापों से शुद्ध ठहरा। १३ अपने दास को साहस के पापों से भी बचा रख उन्हें मुझ पर राज्य करने मत दे तब मैं सिद्ध होऊंगा और बहुत १४ अपराध से निर्दोष होऊंगा। तब हे परमेश्वर मेरी चटान और मेरे त्राणकर्ता मेरे मुंह की बातें और मेरे मन का सोच जो तेरे साम्हने हैं ग्राह्य होंगे॥

बीसवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये दाऊद का गीत॥

१ परमेश्वर बिपत्ति के दिन तेरी सुने यअकूब के ईश्वर का नाम तुझे उंचाई २ पर रक्खे। पवित्र स्थान से तुझे सहाय ३ भेजे और सैहून से तुझे संभाले। तेरी सारी भेंटों को स्मरण करे और तेरे होम के बलिदान को ग्राह्य करे। सिलाह। ४ तेरे मन के समान तुझे देवे और तेरे सारे ५ परामर्शों को पूरा करे। हम तेरी मुक्ति से आनन्दित होवें और अपने ईश्वर के नाम से झंडा खड़ा करें परमेश्वर तेरी सारी बिनतियां पूरी करे॥

६ अब मैं ने जाना है कि परमेश्वर ने अपने दहिने हाथ के मुक्ति देनेहारे बल से अपने अभिषिक्त को बचाया है वह अपने पवित्र स्वर्गों से उस की सुनेगा। ७ ये गाड़ियों का और वे घोड़ों का और हम परमेश्वर अपने ईश्वर के नाम का ८ स्मरण करेंगे। वे झुके और गिर पड़े हैं और हम उठे और सीधे खड़े हुए हैं॥

९ हे परमेश्वर बचा जिस दिन कि हम पुकारें राजा हमारी सुने॥

इक्कीसवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये दाऊद का गीत॥

१ हे परमेश्वर राजा तेरे बल से आनन्द होगा और तेरी मुक्ति से क्या ही २ बहुत मगन होगा। तू ने उस के मन की इच्छा उसे दिई है और उस के होंठों की बिनती को उस्से नहीं रोका। ३ सिलाह। क्योंकि तू भलाई की आशीषों के साथ उस के आगे आवेगा उस के सिर पर चोखे सोने का मुकुट रक्खेगा। ४ उस ने तुझ से जीवन मांगा तू ने उसे जीवन की बढ़ती सर्वदा के लिये दिई। ५ तेरी मुक्ति से उस का बिभव बड़ा होगा

प्रतिष्ठा और महिमा तू उस के ऊपर ६ रक्खेगा । क्योंकि तू उसे सर्वदा के लिये आशीष ठहरावेगा तू अपने रूप से उस को आनन्द से आनन्दित करेगा । ७ क्योंकि राजा परमेश्वर पर भरोसा करता है और अति महान की दया से वह न टलेगा ॥

८ तेरा हाथ तेरे सारे बैरियों को ढूंढ़ निकालेगा तेरा दहिना हाथ तेरे बैर रखने- ९ हारों को पकड़ लेगा । तू अपनी सन्मुखता के समय उन्हें जलते हुए भट्ठे के समान ठहरावेगा परमेश्वर अपने कोप में उन्हें निगल लेगा और आग उन को खा १० जायगी । तू उन का फल पृथिवी से और उन का वंश मनुष्य के सन्तान में ११ से नष्ट करेगा । क्योंकि उन्हों ने तेरे बिरुद्ध में बुराई फैलाई है उन्हों ने ऐसी जुगुत बांधी है जिसे समाप्त न १२ कर सकेंगे । क्योंकि तू उन को पीठ दिखावेगा जब तू उन के साम्हने अपने धनुष को चढ़ावेगा ॥

१३ हे परमेश्वर अपने ही बल से महान हो हम तेरी सामर्थ्य की स्तुति में गावेंगे और बड़ाई करेंगे ॥

बाईसवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये बिहान की हरिणी के बिषय में दाऊद का गीत ॥

१ हे मेरे ईश्वर हे मेरे ईश्वर तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया है तू क्यों मेरी मुक्ति और मेरे कहरने की बातों से दूर २ खड़ा रहता है । हे मेरे ईश्वर मैं दिन को पुकारता हूं और तू उत्तर नहीं देता और रात को और मुझे चैन नहीं है ॥

३ और तू इसराएल की स्तुति में बास ४ करनेहारा पवित्र है । हमारे पितरों ने तुझ पर भरोसा किया उन्हों ने भरोसा ५ किया और तू ने उन्हें छुड़ाया । उन्हों ने तुझ को पुकारा और छुड़ाये गये उन्हों ने तुझ पर भरोसा रक्खा और लज्जित ६ न हुए । पर मैं कीड़ा हूं और न मनुष्य मनुष्यों की निन्दा और लोगों में लज्जा । ७ मेरे सारे देखनेहारे मुझ पर हंसते हैं वे यह कहते हुए होंठ बिचकाते और मूड़ ८ हिलाते हैं । कि परमेश्वर पर डाल दे वह उसे छुड़ावेगा उस को निर्बंध करेगा ९ क्योंकि उस्से प्रसन्न है । क्योंकि तू ही गर्भ से मेरा निकालनेहारा था मेरी माता के स्तनों पर मुझे आशा देने- १० हारा । कोख से मैं तुझ पर डाला गया मेरी माता के गर्भ से मेरा सर्वशक्तिमान तू ही है ॥

११ मुझ से दूर मत रह क्योंकि संकट निकट है और इस लिये कि कोई सहा- १२ यक नहीं । बहुत से बैलों ने मुझे घेरा है बसानिया के सांड़ों ने मुझे घेरा है । १३ उन्हों ने फाड़ने और गर्जनेवाले सिंह होके मुझ पर अपना मुंह पसारा १४ है । मैं पानी की नाईं उंडेला गया हूं और मेरी सारी हड्डियां अलग हो गईं मेरा मन मोम की नाईं हो गया मेरी अंतड़ियों के मध्य में पिघल गया । १५ मेरा बल ठीकरे की नाईं सूख गया और मेरी जीभ मेरे तालू से लग गई और मृत्यु की धूल में तू मुझे उतारेगा । १६ क्योंकि कुत्तों ने मुझ घेरा है दुष्टों की मंडली ने मुझे घेर लिया उन्हों ने मेरे १७ हाथों और मेरे पांवों को छेदा है । मैं अपनी सारी हड्डियों को गिन सक्ता हूं वे ताकते रहते और मुझे घूरते हैं । १८ वे मेरे कपड़े आपुस में बांटा चाहते और मेरे बागे पर चिट्ठी डाला चाहते हैं ॥

१९ पर तू हे परमेश्वर दूर मत रह हे मेरे बल मेरी सहाय के लिये शीघ्र कर । २० मेरे प्राण को तलवार से और मेरे प्रिय २१ को कुत्ते के हाथ से बचा । मुझे सिंह

के मुंह से बचा और तू ने भैंसों के सींगों से मेरी सुनी है॥

२२ मैं अपने भाइयों से तेरा नाम बर्णन करूंगा मंडली के मध्य तेरी स्तुति २३ करूंगा। हे परमेश्वर के डरवैयो उस की स्तुति करो हे यअकूब के सारे बंश उस की प्रतिष्ठा करो और हे इसराएल २४ के सारे अंश उस्से भय रक्खो। क्योंकि उस ने दुःखी के दुःख को तुच्छ न जाना और न उस्से घिन किई और न उस्से अपना मुंह छिपाया है और जब उस ने उस को दोहाई दिई तब उस २५ ने सुना। तेरी सहाय से मैं बड़ी मंडली में तेरी स्तुति करूंगा उस के डरनेहारों के साम्हने अपनी मनौती पूरी करूंगा॥

२६ दीन लोग खायेंगे और तृप्त होवेंगे परमेश्वर के खोजी उस की स्तुति करेंगे तुम्हारा मन सदा लों जीता २७ रहे। जगत के सारे खूंट चर्चा करेंगे और परमेश्वर की ओर फिरेंगे और जातिगणों के सारे घराने तेरे साम्हने झुकेंगे। २८ क्योंकि राज्य परमेश्वर का है और वह २९ जातिगणों पर अध्यक्ष है। पृथिवी के सारे पुष्टों ने खाया और सेवा किई है सारे धूल में मिलनेहारे उस के आगे झुकेंगे और वह भी जो अपने प्राण को ३० नहीं बचा सक्ता था। आनेवाला बंश उस की सेवा करेगा आनेवाली पीढ़ी को परमेश्वर के बिषय में बतलाया ३१ जायगा। वे आवेंगे और उन लोगों को जो उत्पन्न होंगे उस के धर्म्म का बर्णन करेंगे कि उस ने यह किया है॥

तेईसवां गीत।

दाऊद का गीत॥

१ परमेश्वर मेरा गड़रिया है मुझे २ घटती न होगी। वह मुझे कोमल घास की चराई में बिठलायेगा मुझे स्थिर ३ जल के लग ले जायेगा। वह मेरे प्राण को पश्चात्तापित करेगा अपने नाम के लिये धर्म्म के पथों पर मेरी अगुआई ४ करेगा। इस के उपरान्त जब मैं मृत्यु की छाया की तराई में चलूंगा तब भी बिपत्ति से न डरूंगा क्योंकि तू ही मेरे साथ होगा तेरी छड़ी और तेरी लाठी ५ वही मुझे शान्ति देंगी। तू मेरे बैरियों के आगे मेरे साम्हने मंच बिछावेगा तू ने तेल से मेरे सिर को चिकना किया है ६ मेरा कटोरा छलकता है। केवल भलाई और दया जीवन भर मेरा पीछा करेंगी और मैं जीवन की बढ़ती लों परमेश्वर के घर मे रहूंगा॥

चौबीसवां गीत।

दाऊद का गीत॥

१ पृथिवी और उस की भरपूरी जगत और उस के बासी परमेश्वर के हैं। २ क्योंकि उसी ने उस की नेव समुद्रों पर डाली और उसे धारों पर स्थिर किया है॥

३ परमेश्वर के पहाड़ पर कौन चढ़ेगा और उस के पवित्र स्थान में कौन स्थिर रहेगा॥

४ जिस का हाथ शुद्ध और मन पवित्र है जिस ने अपना जी मिथ्या पर नहीं लगाया और छल देने के लिये किरिया ५ नहीं खाई। वह परमेश्वर से आशीस और अपने मुक्तिदाता ईश्वर से धर्म्म प्राप्त करेगा॥

६ यह बंश उस का ढूंढ़नेहारा है तेरे रूप के खोजी यअकूब हैं। सिलाह॥

७ हे फाटको अपने सिरों को ऊंचा करो और हे सनातन के द्वारो ऊंचे हो जाओ और बिभव का राजा प्रवेश करेगा॥

८ यह बिभव का राजा कौन है परमेश्वर पराक्रमी और बलवंत परमेश्वर संग्राम ९ में बलवंत। हे फाटको अपने सिरों को ऊंचा करो और हे सनातन के द्वारो

उन्हें ऊंचा करो और बिभव का राजा प्रवेश करेगा ॥

१० यह बिभव का राजा कौन है परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर वही बिभव का राजा है । सिलाह ॥

पचीसवां गीत ।

दाऊद का गीत ॥

१ हे परमेश्वर मैं अपने प्राण को तेरी २ ओर उठाता हूं । हे मेरे ईश्वर मैं ने तुझ पर भरोसा किया है मुझे लज्जित न होने दे मेरे बैरियों को मुझ पर फूलने ३ न दे । मेरे सारे जोहनेहारों में से कोई भी लज्जित न होगा वे लज्जित होंगे जो ४ अकारण छल करते हैं । हे परमेश्वर अपने मार्ग मुझे दिखला अपने पथ मुझे ५ बतला । अपनी सत्यता के मार्ग पर मुझे ले चल और मुझे शिक्षा दे क्योंकि मेरा मुक्तिदाता ईश्वर तू ही है मैं ने ६ सारे दिन तेरी बाट जोही है । हे परमेश्वर अपनी दया और कृपा को स्मरण ७ कर क्योंकि वे सनातन से हैं । मेरी तरुणाई के पापों और अपराधों को स्मरण मत कर तू अपनी दया के लिये अपनी भलाई के समान मुझे स्मरण कर ॥

८ परमेश्वर अच्छा और सीधा है इस लिये वह मार्ग में पापियों की अगुआई ९ करेगा । वह बिचार में दीनों की अगुआई करेगा और अधीनों को अपने मार्ग १० बतलावेगा । परमेश्वर के सारे मार्ग उन के लिये जो उस के नियम और साक्षी के पालन करनेहारे हैं दया और सच्चाई ११ हैं । हे परमेश्वर अपने नाम के लिये तू दया करेगा और मेरी बुराई को क्षमा १२ करेगा क्योंकि वह बहुत है । वह कौन सा मनुष्य है जो परमेश्वर से डरता है वह उस मार्ग में जिसे चुन लेगा उस १३ की अगुआई करेगा । उस का प्राण सुख में रहेगा और उस का बंश पृथिवी का अधिकारी होगा । परमेश्वर की १४ मित्रता उस के डरवैयों के साथ और उस का नियम उन्हें पहिचान देने को है ॥

मेरी आंखें सदा परमेश्वर की ओर १५ हैं क्योंकि वही मेरे पांवों को फंदे में से निकालेगा । मेरी ओर फिर और मुझ १६ पर दया कर क्योंकि मैं अकेला और दुःखी हूं । मेरे मन के दुःख बढ़ गये १७ मेरे दुःखों से मुझे निकाल । मेरे दुःख १८ और मेरी पीड़ा को देख और मेरे सारे पापों को क्षमा कर । मेरे बैरियों को १९ देख क्योंकि वे बहुत हैं और बड़े बैर के साथ उन्हों ने मुझ से बैर रक्खा है । मेरे प्राण की रक्षा कर और मुझे छुड़ा २० मुझे लज्जित न होने दे क्योंकि मैं ने तुझ पर भरोसा रक्खा है । धर्म्म और २१ खराई मेरी रक्षा करेंगी क्योंकि मैं ने तेरी बाट जोही है । हे ईश्वर इसराएल को २२ उस के सारे दुःखों से छुड़ा ॥

छब्बीसवां गीत ।

दाऊद का गीत ॥

हे परमेश्वर मेरा बिचार कर क्योंकि १ मैं अपने धर्म्म में चला हूं और मैं ने परमेश्वर पर भरोसा रक्खा है मैं न टलूंगा । हे परमेश्वर मुझे परख और २ मुझे ताड़ मेरे अंतःकरण को और मेरे मन को जांच ले ॥

क्योंकि तेरी दया मेरी आंखों के आगे ३ है और मैं तेरी सच्चाई में चला हूं । मैं ४ मिथ्यावादी मनुष्यों के संग नहीं बैठा और कपटियों के साथ न चलूंगा । मैं ५ ने कुकर्म्मियों की मंडली से घिन रक्खा है और दुष्टों के साथ न बैठूंगा । हे ६ परमेश्वर मैं अपने हाथों को निष्कपटता में धोऊंगा और तेरी बेदी की प्रदक्षिणा करूंगा । जिसतें धन्यबाद के शब्द के ७ साथ तेरे सारे आश्चर्य्यों को सुनाऊं और बर्णन करूं । हे परमेश्वर मैं ने तेरे घर के ८

निवास और तेरे विभव के तंबू के स्थान ९ से प्रेम रक्खा है । मेरे प्राण को पापियों के संग और मेरे जीवन को बधिकों के १० संग मत मिला । जिन के हाथों में बुराई है और उन का दहिना हाथ ११ अकोर से भरा है । और मैं अपनी खराई में चलूंगा मुझे छुड़ा और मुझ पर दया १२ कर । मेरा पांव समथर स्थान पर स्थिर हुआ है मैं मंडलियों में परमेश्वर को धन्य कहूंगा ॥

सत्ताईसवां गीत ।

दाऊद का गीत ॥

१ परमेश्वर मेरा उंजियाला और मेरी मुक्ति है मैं किस्से डरूं परमेश्वर मेरे जीवन का गढ़ है मैं किस्से भय रक्खूं । २ जब दुष्ट मेरे बिरोध में निकट आये जिसतें मेरा मांस खा लें जब मेरे विरोधी और मेरे बैरी मेरे निकट आये तब उन्हीं ने ठोकर खाई और गिर पड़े । ३ यद्यपि सेना मेरे बिरुद्ध चढ़ाई करे तो मेरा मन न डरेगा यदि संग्राम मेरे बिरुद्ध उभरे इस में भी मैं धैर्य्यवान ४ रहूंगा । मैं ने परमेश्वर से एक प्रश्न किया है मैं उसी के खोज में रहूंगा कि परमेश्वर के घर में अपने जीवन भर रहूं जिसतें परमेश्वर की सुन्दरता को देखा करूं और उस के मन्दिर में ढूंढा ५ करूं । क्योंकि वह बिपत्ति के दिन मुझे अपने तंबू में छिपावेगा अपने डेरे की आड़ में मुझे आड़ देगा मुझे चटान की ६ ऊंचाई पर रक्खेगा । और अब मेरा सिर मेरे चारों ओर के बैरियों के ऊपर ऊंचा होगा और मैं उस के तंबू में आनन्दित शब्द के साथ बलि चढ़ाऊंगा मैं परमेश्वर की स्तुति में गाऊंगा और बजाऊंगा ॥

७ हे परमेश्वर सुन मैं अपने शब्द से पुकारता हूं और मुझ पर दया कर और मुझे उत्तर दे । ८ जब तू ने कहा है कि मेरे मुंह के खोजी हो तब मेरे मन ने कहा कि हे परमेश्वर मैं तेरे मुंह का खोजी हूंगा । ९ मुझ से अपना मुंह मत छिपा क्रोध से अपने दास को मत हटा तू मेरा सहायक हुआ है हे मेरे मोक्ष के ईश्वर मुझे मत त्याग और मुझे मत छोड़ । १० क्योंकि मेरे पिता और मेरी माता ने मुझे त्यागा है पर परमेश्वर मुझे अपने घर में लेगा । ११ हे परमेश्वर मुझे अपना मार्ग बतला और मेरे बैरियों के कारण सीधे मार्ग पर मुझे ले चल । १२ मुझे मेरे बैरियों की इच्छा पर न छोड़ क्योंकि झूठे साक्षी और अंधेर की सांस लेनेहारे मुझ पर उठे हैं ॥

१३ यदि मुझे बिश्वास न होता कि जीवन की भूमि पर परमेश्वर की भलाई को देखूं तो नाश होता । १४ परमेश्वर की बाट जोह दृढ़ रह और वह तेरे मन को बल देवे हां परमेश्वर की बाट जोह ॥

अट्ठाईसवां गीत ।

दाऊद का गीत ॥

१ हे परमेश्वर मैं तुझे पुकारूंगा हे मेरी चटान मुझ से चुपका मत हो न होवे कि तू मुझ से चुप हो रहे और मैं गड़हे में गिरनेवालों की नाईं हो जाऊं । २ जब मैं तेरी दोहाई दूं और अपने हाथ तेरे पवित्र मन्दिर की ओर उठाऊं तब मेरी बिनतियों का शब्द सुन । ३ मुझे दुष्टों के साथ और कुकर्म्मियों के साथ न खींच जो अपने परोसियों के साथ कुशल की बातें करते हैं पर उन के मन में बुराई है । ४ उन की क्रिया के समान और उन के कार्य्यों की दुष्टता के समान उन्हें दे उन के हाथों के कार्य्य के समान उन्हें दे उन का व्यवहार उन्हीं पर पलट दे । ५ इस लिये कि वे परमेश्वर के कार्य्यों

और उस के हाथों की क्रिया पर ध्यान न करेंगे वह उन्हें ढावेगा और उन्हें न बनावेगा ॥

६ परमेश्वर धन्य हो क्योंकि उस ने मेरी ७ बिनतियों का शब्द सुना है। परमेश्वर मेरा बल और मेरी ढाल है मेरे मन ने उस पर भरोसा किया और मैं ने सहाय पाई है और मेरा मन अत्यन्त आनन्दित होगा और मैं अपने छन्द में उस की ८ स्तुति करूंगा। परमेश्वर उन के लिये बल है और वही अपने अभिषिक्त के ९ लिये बचाव का गढ़ है। अपने लोगों को बचा और अपने अधिकार को आशीस दे और उन्हें चरा और उन्हें सदा के लिये ऊंचा कर ॥

उनतीसवां गीत ।

दाऊद का गीत ॥

१ हे सर्वशक्तिमान के पुत्रो परमेश्वर को दो परमेश्वर को महिमा और बल २ दो। परमेश्वर को उस के नाम की प्रतिष्ठा दो पवित्रता की सुन्दरता के संग परमेश्वर को दण्डवत करो ॥

३ परमेश्वर का शब्द पानियों पर है महिमा का सर्वशक्तिमान गर्जता परमे- ४ श्वर बड़े पानियों पर है। परमेश्वर का शब्द बल के साथ परमेश्वर का शब्द ५ बिभव के साथ है। परमेश्वर का शब्द देवदारों को तोड़ता है और परमेश्वर ने लुबनान के देवदारु पेड़ों को तोड़ ६ डाला है। और उन्हें बछेरे की नाईं लुबनान और सुरियून को भैंसों के बच्चों की ७ नाईं कुदाया है। परमेश्वर का शब्द आग की लवरों के द्वारा से चीरता है। ८ परमेश्वर का शब्द बन को कंपा सक्ता परमेश्वर कादिश के बन को कंपा सक्ता ९ है। परमेश्वर का शब्द हरिणियों के गाभ गिरा सक्ता और जंगलों को पतझाड़ कर सक्ता है और उस के मन्दिर में हर एक उस के बिभव की बात कहता है।

१० परमेश्वर बाढ़ पर बैठा था और परमेश्वर राजा सदा लों सिंहासन पर बैठा ११ रहेगा। परमेश्वर अपने लोगों को बल देगा परमेश्वर अपने लोगों को कुशल की आशीस देगा ॥

तीसवां गीत ।

गीत। मन्दिर के स्थापन करने के लिये दाऊद का भजन ॥

१ हे परमेश्वर मैं तेरी महिमा करूंगा क्योंकि तू ने मुझे बढ़ाया है और मेरे बैरियों को मेरे बिषय में आनन्द करने २ नहीं दिया। हे परमेश्वर मेरे ईश्वर मैं ने तेरी दोहाई दिई और तू ने मुझे चंगा ३ किया। हे परमेश्वर तू ने मेरे प्राण को समाधि से उठाया तू ने गड़हे के गिरने- हारों में से मुझे जिलाया है ॥

४ हे उस के धर्म्मियो परमेश्वर की स्तुति में गान करो और उस की पवित्रता के स्मरण में उस का धन्यबाद करो। ५ क्योंकि उस की रिस पल भर की है उस की कृपा में जीवन है बिलाप सांझ को टिकेगा और बिहान को आनन्द ॥

६ और मैं ने अपनी बढ़ती में कहा कि ७ कभी न टलूंगा। हे परमेश्वर तू ने अपनी कृपा से मेरे पहाड़ के लिये बल स्थापन किया तू ने अपना मुंह छिपाया ८ मैं घबरा गया। हे परमेश्वर मैं तुझ को पुकारूंगा और परमेश्वर की दया के ९ लिये पुकारूंगा। मेरे लोहू में क्या लाभ जब मैं गड़हे में गिरूंगा क्या धूल तेरी स्तुति करेगी क्या वह तेरी सत्यता बर्णन १० करेगी। हे परमेश्वर सुन और मुझ पर दया कर हे परमेश्वर मेरा सहायक हो। ११ तू ने मेरे लिये मेरे शोक को नाच से पलट डाला है तू ने मेरा टाट खोला १२ और आनन्द से मेरी कटि बांधी है। जिसतें बिभव तेरी स्तुति में भजन करे

और चुपका न रहे हे परमेश्वर मेरे ईश्वर मैं सर्वदा लों तेरा धन्यवाद करूंगा ॥

तीसवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये दाऊद का गीत ॥

१ हे परमेश्वर मैं ने तुझ पर भरोसा रक्खा है मुझे सदा लों लज्जित न २ होने दे अपने धर्म्म से मुझे छुड़ा । अपना कान मेरी ओर झुका झटपट मुझे छुड़ा मेरे लिये गढ़ की चटान और आड़ का ३ घर हो जिस्तें मुझे बचाये । क्योंकि तू ही मेरी चटान और मेरा गढ़ है और तू अपने नाम के लिये मुझे ले चलेगा और मेरा अगुआ होगा । तू मुझे उस जाल से जो उन्हों ने मेरे लिये छिपाया है निकालेगा क्योंकि तू ही मेरा गढ़ ५ है । मैं अपने आत्मा को तेरे हाथ में सौंपता हूं हे परमेश्वर सत्यता के सर्व-६ शक्तिमान तू ने मुझे छुड़ाया है । मैं ने झूठ की वृथा वस्तुन के माननेहारों से घिन किया है और मैं ने परमेश्वर पर ७ भरोसा किया है । मैं तेरी दया में आनन्दित और आल्हादित हूंगा तू जिस ने मेरे दुःख को देखा मेरे प्राण की ८ विपत्तों को पहिचाना है । और मुझे बैरी के हाथ में बंद नहीं किया पर मेरे पांव को चौड़े स्थान में खड़ा किया है ॥

९ हे परमेश्वर मुझ पर दया कर क्योंकि मुझ पर विपत्ति है मेरी आंख खिजलाहट से छीण हो गई मेरा आत्मा और मेरा १० पेट भी । क्योंकि मेरा जीवन शोक में और मेरी वय कराहने में नाश हो गई मेरे पाप के कारण से मेरे बल ने डगमगाहट खाई है और मेरी हड्डियां ११ सूख गईं । मैं अपने सारे बैरियों के कारण से दुर्नाम हुआ और अपने परोसियों के निकट बहुत और अपने जान पहिचानों के निकट भय मुझे बाहर १२ देखते ही वे मुझ से भागे । मैं मृतक की नाईं मन से भुलाया गया मैं टूटे हुए पात्र के तुल्य हुआ । १३ क्योंकि मैं ने बहुतों से निन्दा सुनी भय चारों ओर था जब कि उन्हों ने आपुस में मेरे विरोध परामर्श किया तब उन्हों ने मेरे प्राण लेने की युक्ति किई ॥

१४ और हे परमेश्वर मैं ने तुझ पर भरोसा किया मैं ने कहा कि तू ही मेरा ईश्वर है । १५ मेरे समय तेरे हाथ में हैं मेरे बैरियों के हाथ से और मेरे पीछा करनेहारों से मुझे छुड़ा । १६ अपना बदन अपने सेवक पर चमका अपनी दया से मुझे बचा । १७ हे परमेश्वर मुझे लज्जित न होने दे क्योंकि मैं ने तुझे पुकारा है दुष्ट लज्जित हों समाधि में चुपके पड़े रहें । १८ झूठे होंठ जो धर्म्मी के विरुद्ध घमण्ड और निन्दा करते हुए ढिठाई से बोलते हैं गूंगे किये जावें ॥

१९ क्या ही बड़ी तेरी कृपा है जो तू ने अपने डरवैयों के लिये छिपा रक्खी है और अपने भरोसा रखनेहारों पर मनुष्य के सन्तानों के आगे प्रगट किई है । २० तू मनुष्य की जुगुतों से अपने रूप की ओट में उन्हें छिपायेगा जीभों के झगड़े से उन्हें आड़ में छिपा लेगा । २१ परमेश्वर धन्य हो क्योंकि उस ने मुझे दृढ़ नगर में लाके अपनी कृपा मेरे लिये आश्चर्य्य किई है । २२ और मैं ने अपनी घबराहट में कहा कि मैं तेरी आंखों के साम्हने से कट गया परन्तु जब मैं ने तेरी दोहाई दिई तब तू ने मेरी बिन्तियों का शब्द सुना ॥

२३ परमेश्वर से प्रेम रक्खो हे उस के सारे साधुओ परमेश्वर सत्य का रखवाल है और अहंकारी को बहुताई से पलटा देता है । २४ हे तुम सब कि परमेश्वर के आश्रित हो दृढ़ हो और वह तुम्हारे मन को दृढ़ करे ॥

बत्तीसवां गीत।

दाऊद का उपदेश देनेहारा गीत॥

१ वह क्या ही धन्य है जिस का अपराध क्षमा किया गया जिस का पाप २ ढांपा गया। वह मनुष्य क्या ही धन्य है जिस के लिये परमेश्वर अधर्म्म लेखा नहीं करता और जिस के प्राण में कुछ छल नहीं है॥

३ क्योंकि मैं चुप हो रहा और मेरे सारे दिन के कहरने से मेरी हड्डियां ४ गल गईं। क्योंकि रात दिन तेरा हाथ मुझ पर भारी रहता है मेरी तरावट गरमी की झुराहट से पलट गई। ५ सिलाह। मैं ने कहा कि अपनी बुराई तुझ पर प्रगट करूंगा और अपना अधर्म्म नहीं छिपाया मैं ने कहा कि परमेश्वर के आगे अपने अपराधों को मान लूंगा और तू ही ने मेरे पाप का अधर्म्म क्षमा ६ किया। सिलाह। इसी लिये हर एक साधु जब तक तू मिल सक्ता है तेरी ओर फिरके प्रार्थना करे निश्चय जब बड़े पानियों के बाढ़ हों तब उस लों ७ न पहुंचेंगे। तू ही मेरे लिये आड़ है तू मुझे सकेतों से बचावेगा बचाव के गानों से मुझे घेरेगा। सिलाह॥

८ मैं तुझे शिक्षा देऊंगा और जिस मार्ग पर तू चलेगा तेरी अगुआई करूंगा मैं तुझे मन्त्र दूंगा मेरी आंख तुझ पर लगी ९ रहेगी। घोड़े के समान खच्चर के समान न हो जिन में कुछ समझ नहीं बाग और लगाम में उन का सिङ्गार है जिसतें उन का मुंह पकड़े क्योंकि वे तेरे समीप १० नहीं आते। दुष्ट पर बहुत बिपत्ति हैं और जो परमेश्वर पर भरोसा रखता है ११ वह उसे दया से घेरेगा। हे धर्म्मियो परमेश्वर से आह्लादित हो और आनन्द करो और हे सारे खरे अन्तःकरणियो आनन्द के मारे चिल्लाओ॥

तेंतीसवां गीत।

१ हे धर्म्मियो परमेश्वर में आनन्दित होओ स्तुति करना सज्जनों को सजता है। २ बीणा के संग परमेश्वर की स्तुति करो दस तार की सारङ्गी के संग उस की स्तुति में गाओ। ३ उस के लिये नया गीत गाओ मंगल के शब्द के साथ भली रीति बजाओ॥

४ क्योंकि परमेश्वर का बचन ठीक है और उस का सारा कार्य्य सच्चाई के साथ किया गया। ५ वह धर्म्म और न्याय से प्रेम रखता है पृथिवी परमेश्वर की दया से भरी है। ६ परमेश्वर के बचन से स्वर्ग बने और उस के मुंह के श्वास से उन की सारी सेना। ७ वह समुद्र के जल को ढेर की नाईं एकट्ठा करता है गहिरापों को भंडारों में रख छोड़ता है। ८ सारी पृथिवी के रहनेहारे परमेश्वर से डरें संसार के सारे बासी उस का भय रक्खें। ९ क्योंकि उसी ने कहा कि हो और हो गया उसी ने आज्ञा किई और खड़ा हुआ। १० परमेश्वर ने अन्यदेशियों के परामर्श को व्यर्थ किया लोगों की युक्ति को मिथ्या किया है। ११ परमेश्वर का मन्त्र सर्वदा लों स्थिर रहेगा उस के मन की चिन्तायें पीढ़ी से पीढ़ी लों॥

१२ वह जाति क्या ही धन्य है जिस का ईश्वर परमेश्वर है वह लोग जिसे उस ने अपने अधिकार के लिये चुन लिया। १३ परमेश्वर ने स्वर्ग पर से दृष्टि किई उस ने मनुष्य के सारे सन्तान को देखा। १४ अपने निवासस्थान से उस ने पृथिवी के सारे निवासियों की ओर ताका। १५ जो उन के सारे अन्तःकरणों को बनाता है जो उन के सारे कार्य्यों की ओर ध्यान रखता है। १६ राजा बल की बहुताई से कभी नहीं बचता और बल की बहुताई से छुड़ाया न जायेगा। १७ घोड़ा

बचाने के लिये वृथा है और वह अपने बल की बहुताई से न बचायेगा ॥

१८ देखो परमेश्वर की आंख उस के डरनेहारों की ओर है उन के लिये जो १९ उस की दया के आसरेहारे हैं । जिसतें मृत्यु से उन के प्राण को छुड़ावे और २० उन्हें अकाल में जीता रक्खे । हमारे प्राण ने परमेश्वर की बाट जोही है हमारा उपकार और हमारी ढाल वही २१ है । क्योंकि हमारा अन्तःकरण उस्से आनन्दित होगा इस कारण कि हम ने उस के पवित्र नाम पर भरोसा रक्खा २२ है । हे परमेश्वर तेरी दया हम पर होवे जैसा हम ने तेरी आशा किई है ॥

चौंतीसवां गीत

दाऊद का गीत जब उस ने अबिमालक के साम्हने अपनी समझ को बदल डाला और उस ने उसे निकलवा दिया और वह चला गया ॥

१ मैं हर समय परमेश्वर को धन्य कहूंगा उस की स्तुति सदा मेरे मुंह में २ होगी । मेरा प्राण परमेश्वर पर फूलता रहेगा दीन सुनेंगे और आनन्दित होंगे । ३ मेरे साथ परमेश्वर की बड़ी स्तुति करो और हम मिलके उस का नाम ऊंचा करें ॥

४ मैं ने परमेश्वर को खोजा और उस ने मेरी सुनी और मेरे सारे भय से मुझे ५ छुड़ाया । उन्हों ने उस की ओर दृष्टि किई और उंजियाला हो गये और उन ६ के मुंह लज्जित न हों । यह दुःखी चिल्लाया और परमेश्वर ने सुना और उसे उस की सारी बिपतों से बचाया । परमेश्वर का दूत उस के डरनेहारों के चहुंओर छावनी किये है और उस ने ८ उन्हें छुड़ाया है । चीखो और देखो कि परमेश्वर भला है वह मनुष्य क्या ही धन्य जो उस पर भरोसा रखता है । हे उस के संतो परमेश्वर से डरो क्योंकि उस के डरनेहारों को कुछ कमी नहीं । १० तरुण सिंह आचिकत और भूखे हुए पर परमेश्वर के खोजी किसी अच्छी वस्तु के आकांक्षित न होंगे ॥

११ आओ हे लड़को मेरी सुनो मैं तुम्हें १२ परमेश्वर का भय सिखाऊंगा । वह कौन मनुष्य है जो जीवन को चाहता और दिनों से प्रेम रखता है जिसतें भलाई १३ को देखे । अपनी जीभ को बुराई से और अपने होठों को झूठ बोलने से रोक १४ रख । बुराई से फिर जा और भलाई कर कुशल को ढूंढ और उस का पीछा कर ॥

१५ परमेश्वर की आंखें धर्म्मियों की ओर हैं और उस के कान उन की दोहाई १६ की ओर । परमेश्वर का मुंह कुकर्म्मियों के विरुद्ध है जिसतें उन की चर्चा पृथिवी १७ पर से मिटा दे । वे चिल्लाये और परमेश्वर ने सुना और उन के सारे दुःखों १८ से उन्हें छुड़ाया । परमेश्वर टूटे मनों के निकट है और जिन का आत्मा १९ कुचला हुआ है उन्हें बचावेगा । धर्म्मी पर बहुत सी बिपत्ति पड़ती हैं पर परमेश्वर उन सभों से उसे छुड़ावेगा । २० जो उस की सारी हड्डियों का रक्षक है उन में से एक भी टूटने नहीं पाती । २१ क्लेश दुष्ट को मृत्यु तक पहुंचावेगा और २२ धर्म्मी के बैरी दोषी ठहरेंगे । परमेश्वर अपने सेवकों के प्राण को बचाता है और उस के सारे भरोसा रखनेहारों में से एक भी दोषी न ठहरेगा ॥

पैंतीसवां गीत ।

दाऊद का गीत ॥

१ हे परमेश्वर मेरे लड़नेहारों से लड़ २ मेरे निगलनेहारों को निगल जा । ढाल और फरी को थाम और मेरी सहाय के लिये ३ खड़ा हो । और भाला निकाल और मेरे

धोखा करनेहारों के सामने में मार्ग रोक मेरे प्राण से कह कि मैं तेरी मुक्ति हूं ।
४ मेरे प्राण के गाहक लज्जित और संकोचित होवें मेरी बुराई के चाहनेहारे पीछे
५ हटाये जायें और लज्जित हों । वे भूसे की नाईं हों जो बयार के सामने है और परमेश्वर का दूत उन्हें मारता हो ।
६ उन का मार्ग अंधियारा और फिसलहा होवे और परमेश्वर का दूत उन्हें रगेदता
७ हो । क्योंकि उन्हों ने अकारण मेरे लिये गड़हे में अपना जाल छिपाया उन्हों ने अकारण मेरे प्राण के लिये खोदा ॥

८ उस पर अचानक बिनाश आवे और उस का जाल जिसे उस ने छिपाया है उसे फंसा ले वह बिनाश के साथ उस
९ में गिरे । और मेरा प्राण परमेश्वर में आनन्दित होगा उस की मुक्ति में मगन
१० होगा । मेरी सारी हड्डियां कहेंगी कि हे परमेश्वर तेरे तुल्य कौन है जो दुःखी को उस मनुष्य से जो उस्से बलवान है हां दुःखी और कंगाल को उस के लूटनेहारे से छुड़ाता है ॥

११ अंधेर के साक्षी उठते हैं वे मुझ से उस के बिषय में प्रश्न करते हैं जिस
१२ को मैं ने नहीं जाना । वे भलाई की संती मुझे बुराई का पलटा देते हैं बरन
१३ मेरे प्राण के लिये नठुला । और मैं जब वे रोगी हुए तब मेरा पहिराव टाट था मैं ने ब्रत से अपने प्राण को दुःख दिया और मेरी प्रार्थना मेरी गोद में
१४ फिर आवेगी । मेरी चाल ऐसी थी कि वह मेरा हितु मेरा भाई था जैसा कोई माता के लिये बिलाप करे वैसा ही मैं
१५ मैला कुचैला होकर झुक गया । और वे मेरे लंगड़ाने से आनन्दित हुए और एकट्ठे हो गये लंगड़े मेरे बिरोध में एकट्ठे हुए और मैं ने न जाना उन्हों ने फाड़ा और चुप न रहे ।
१६ उन निकम्मों के साथ जो रोटी के लिये ठट्ठा करते हैं जिन्हों ने मुझ पर अपने दांत पीसे ॥

१७ हे प्रभु तू कब लों देखेगा मेरे प्राण को उन की बुराई से फेर ला मेरे अकेले को तरुण सिंहों से ।
१८ मैं बड़ी मंडली में तेरा धन्यबाद करूंगा बलवान लोगों में तेरी स्तुति करूंगा ।
१९ मेरे झूठ कहनेहारे बैरी मुझ पर आनन्दित न होने पायें और जो अकारण मेरे बैरी हैं वे आंख न मारने पायें ।
२० क्योंकि वे कुशल की बात नहीं करते और पृथिवी के सुखियों के बिरोध छल की बातें सोचते हैं ।
२१ और उन्हों ने मुझ पर अपना मुंह बिचकाया है उन्हों ने कहा है कि अहा अहा हमारी आंखों ने देखा है ॥

२२ हे परमेश्वर तू ने देखा है चुपका मत रह हे प्रभु मुझ से दूर मत रह ।
२३ मेरे बिचार के लिये और मेरे झगड़े के लिये हे मेरे ईश्वर और मेरे परमेश्वर अपने तईं जगा और चौंका ।
२४ हे परमेश्वर मेरे ईश्वर अपने धर्म्म के समान मेरा बिचार कर और वे मेरे बिषय में आनन्दित न होने पायें ।
२५ वे अपने मन में न कहने पायें आहा हमारे मन की इच्छा वे न कहने पायें कि हम उसे निगल गये ।
२६ मेरी बिपत्ति से आनन्द करनेहारे एक ही साथ लज्जित और संकोचित हों जो मेरे बिरुद्ध में आप को बढ़ाते हैं वे लाज और दुर्नामी का पहिरावा पहिनें ।
२७ मेरे धर्म्म के चाहनेहारे ललकारें और आनन्द करें और नित कहा करें कि परमेश्वर महान हो जो अपने सेवक के कुशल का चाहनेहारा है ।
२८ और मेरी जीभ तेरे धर्म्म का हां सब दिन तेरी स्तुति का चर्चा किया करेगी ॥

छत्तीसवां गीत।

प्रधान बजानिये के लिये परमेश्वर के सेवक दाऊद का गीत॥

१ मुझ दुष्ट से मेरे मन के भीतर बुराई बात करती है उस की आंखों के आगे ईश्वर का भय तनिक भी नहीं। २ क्योंकि उस ने अपने अधर्म्म के ढूंढ निकालने के विषय और उस्से घिन करने के विषय अपनी समुझ में अपने विषय ३ में चिकनी चिकनी बातें किई हैं। उस के मुंह की बातें झूठ और छल हैं वह ज्ञान की बातें करने और भलाई ४ करने से फिरा है। वह अपने बिछौने पर झूठ सोचा करता है वह अपने तई उस मार्ग पर खड़ा करता है जो अच्छा नहीं है वह बुराई को नहीं छोड़ता॥

५ हे परमेश्वर तेरी दया स्वर्गों पर है ६ और तेरी सच्चाई मेघों लों। तेरा धर्म्म सर्वशक्तिमान के पर्वतों की नाई है तेरे न्याय बड़े गहिराव हैं हे परमेश्वर तू ७ मनुष्य और पशुन को बचाता है। हे ईश्वर तेरी दया क्या ही बहुमूल्य है और मनुष्य के सन्तान तेरे पंखों की ८ छाया के नीचे आश्रय ले सक्ते हैं। वे तेरे घर की चिकनाई से सन्तुष्ट होके पियेंगे और तू अपने बिलासों की नदी ९ से उन्हें तृप्त करेगा। क्योंकि जीवन का सोता तेरे पास है तेरे उंजियाले में हम उंजियाले को देखेंगे॥

१० अपनी दया को अपने पहिचाननेहारों के लिये और सूधे मनवालों के लिये ११ अपने धर्म्म को बढ़ाता रह। घमण्ड का पांव मुझ पर आने न पावे और दुष्टों का हाथ मुझे देशान्तर करने न पावे॥

१२ कुकर्म्मी वहीं गिर पड़े हैं वे ढकेले गये और उठ नहीं सक्ते॥

सैंतीसवां गीत।

दाऊद का गीत।

१ कुकर्म्मियों के कारण से तू अपने तई न कुढ़ और बुराई करनेहारों पर २ डाह न कर। क्योंकि घास की नाईं वे झट से काटे जायेंगे और हरियाली ३ की नाईं मुरझावेंगे। परमेश्वर पर भरोसा रख और भलाई कर पृथिवी पर बास कर और सत्यता पर चराई कर। ४ और परमेश्वर पर अपने तईं मगन कर और वह तुझे तेरे मन की इच्छा पूरी करेगा। अपना मार्ग परमेश्वर पर छोड़ दे और उस पर भरोसा कर और वह आप बना लेगा। और तेरे धर्म्म को उंजियाले की नाईं और तेरे न्याय को दो पहर की नाईं निकालेगा

७ परमेश्वर के आगे चुप रह और उस की बाट जोह उस पर जो अपने मार्ग को भाग्यवान करता है अपने तईं मत कुढ़ उस मनुष्य पर जो कुमंत्रणा करता ८ है। क्रोध को छोड़ और कोप को त्याग दे तू केवल बुराई करने के लिये ९ अपने तईं न कुढ़। क्योंकि कुकर्म्मी काट डाले जायेंगे और परमेश्वर के आश्रित वे ही पृथिवी के अधिकारी १० होंगे। और थोड़ी बेर में और दुष्ट है की नहीं और तू उस के स्थान पर सोच ११ करेगा वह भी किंचित नहीं। और दीन पृथिवी के अधिकारी होंगे और चैन की बहुताई से अपने तईं मगन करेंगे॥

१२ दुष्ट धर्म्मी के लिये युक्ति बांधता है और उस पर अपने दांत किचकिचाता १३ है। प्रभु उस पर हंसता है क्योंकि उस ने देखा है कि उस का दिन आवेगा। १४ दुष्टों ने तलवार निकाली और अपनी कमान खींची है जिसतें दुःखी और कंगाल को गिरा दें और उन्हें जिन का मार्ग सीधा है बध करें। उन की तलवार १५

उन्हीं के हृदय में बैठेगी और उन के धनुष तोड़े जायेंगे॥

१६ थोड़ा जो धर्म्मी का है बहुत
१७ दुष्टों के हूहूकार से भला है। क्योंकि दुष्टों की भुजा तोड़ी जायेगी और धर्म्मियों का संभालनेहारा परमेश्वर है॥

१८ परमेश्वर खरों के दिनों को जानता है और उन का अधिकार सर्वदा लों
१९ रहेगा। वे बिपत्ति के समय लज्जित न होंगे और अकाल के दिनों में तृप्त रहेंगे।
२० क्योंकि दुष्ट नष्ट होंगे और परमेश्वर के बैरी भेड़ों की चिकनाई की नाईं जाते रहे
२१ वे धूएं में जाते रहे। दुष्ट उधार लेता है और भर नहीं देता और धर्म्मी दया करता
२२ है और देता है। क्योंकि उस के आशीर्बादी लोग पृथिवी के अधिकारी होंगे और उस के सापित काट डाले जायेंगे॥

२३ भले मनुष्य के डग परमेश्वर से स्थिर हुए और वह उस के मार्ग में आनन्दित
२४ होगा। क्योंकि वह गिरेगा परन्तु पड़ा न रहेगा क्योंकि परमेश्वर उस का हाथ
२५ थामता है। मैं बालक था वृद्ध भी हुआ और मैं ने धर्म्मी को अव्यवहारित और उस के बंश को रोटी मांगते न
२६ देखा। वह सारे दिन दया करता है और उधार देता है और उस का बंश आशीष का कारण है॥

२७ बुराई से अलग हो और भलाई कर
२८ और सदा लों बास कर। क्योंकि परमेश्वर न्याय से प्रीति रखता है और अपने अनुग्रहीतों को छोड़ न देगा वे सदा लों रक्षित हैं और दुष्टों का बंश
२९ कट गया। धर्म्मी भूमि के अधिकारी होंगे और सदा लों उस पर बास करेंगे॥

३० धर्म्मी का मुंह बुद्धि बर्णन करता है और उस की जीभ न्याय का बचन
३१ बोलती है। उस के ईश्वर की व्यवस्था उस के मन में है उस के डग न हटेंगे।
३२ दुष्ट धर्म्मी की घात में लगा रहता है
३३ और उसे घात करने चाहता है। परमेश्वर उसे उस के हाथ में न छोड़ेगा और जब उस का न्याय किया जाय तब
३४ उसे दोषी न ठहरावेगा। परमेश्वर के लिये आशा कर और उस के मार्ग को थाम और वह तुझे पृथिवी के अधिकारी होने के लिये बढ़ती देगा जब दुष्ट काट डाले जायेंगे तब तू देखेगा॥

३५ मैं ने दुष्ट को डरौना और देशी हरे पेड़ की नाईं अपने तईं फैलते हुए
३६ देखा। और वह जाता रहा और देख वह था ही नहीं और मैं ने उसे ढूंढा
३७ और वह न मिला। सिद्ध मनुष्य को ताक रख और खरे को देख क्योंकि कुशल चाहनेहारे मनुष्य के लिये अंत
३८ है। और अपराधी एक ही संग नष्ट
३९ हुए दुष्टों का अंत कट गया। और धर्म्मियों की मुक्ति परमेश्वर से है दुःख
४० के समय वह उन का गढ़ है। और परमेश्वर ने उन की सहायता किई और उन्हें छुड़ाया है वह उन्हें दुष्टों से छुड़ावेगा और उन्हें बचावेगा क्योंकि उन्हों ने उस पर भरोसा रक्खा है॥

अठतीसवां गीत।

स्मरण कराने के लिये दाऊद का गीत॥

१ हे परमेश्वर अपने क्रोध से मुझे मत दपट और न अपने कोप की तपन से
२ मुझे दण्ड दे। क्योंकि तेरे बाण मुझ में चुभ गये हैं और तेरा हाथ मुझ पर बल के साथ पड़ा है॥

३ तेरे कोप के कारण से मेरी देह में कहीं आरोग्यता नहीं मेरे पाप के कारण से मेरी हड्डियों में कहीं कल नहीं।
४ क्योंकि मेरे अधर्म्म मेरे सिर पर से ऊपर हो गये भारी बोझ की नाईं वे मेरे

५ लिये भारी हैं। मेरी मूर्खता के कारण से मेरे घाव बास करने लगे और बहते ६ हैं। मैं ऐंठ गया अति झुक गया मैं सारे दिन मैला कुचैला चलता फिरता ७ रहा। क्योंकि मेरी कटि शुष्क से भर गई और मेरी देह में कहीं आरोग्यता ८ नहीं। मैं ठिठुर गया और अति पिस गया हूं अपने मन के चिल्लाने से गर्ज उठा हूं॥

९ हे प्रभु मेरी सारी इच्छा तेरे आगे है और मेरा कराहना तुझ से छिपा नहीं। १० मेरा मन धड़कता है मेरे बल ने मुझे छोड़ दिया है और मेरी जिन आंखों में ज्योति थी वे भी मेरे साथ नहीं हैं। ११ मेरे मित्र और मेरे साथी मेरी ताड़ना के आगे से अलग खड़े हैं और मेरे १२ कुटुम्ब दूर खड़े हुए हैं। और जो मेरे प्राण के गाहक हैं उन्हों ने फंदे लगाये हैं और मेरी हानि के चाहकों ने बुराई की बातें कही हैं और सारे दिन छल १३ की जुगुत सोचते हैं। और मैं बहिरे के समान नहीं सुनता और गूंगे के समान १४ हूं जो अपना मुंह नहीं खोलता। और मैं उस मनुष्य की नाईं हुआ जो नहीं सुनता और जिस के मुंह में कुछ उत्तर नहीं॥

१५ क्योंकि हे परमेश्वर मैं ने तेरी बाट जोही हे प्रभु मेरे ईश्वर तू ही उत्तर १६ देगा। क्योंकि मैं ने कहा न हो कि वे मुझ पर आनन्दित होवें मेरे पांव के १७ टलने में वे मुझ पर फूले हैं। क्योंकि मैं लंगड़ाने पर हूं और मेरा शोक सदा १८ मेरे आगे है। क्योंकि मैं अपना अधर्म्म मान लेता हूं अपने पाप के कारण से १९ उदास रहता हूं। और मेरे प्राण के बैरी बलवन्त हैं और जो अकारण मेरे २० बैरी हैं वे बढ़ गये। और वे जो भलाई की संती बुराई का बदला देते हैं वे इस कारण से मेरे विरोधी हैं कि मैं २१ भलाई का पीछा करता हूं। हे परमेश्वर मुझे मत त्याग हे मेरे ईश्वर मुझ से दूर मत रह। मेरी सहाय के लिये शीघ्र २२ कर हे मेरी मुक्ति के प्रभु॥

उन्तालीसवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये अर्थात् यदूतून के लिये दाऊद का गीत॥

१ मैं ने कहा कि अपने मार्गों की चौकसी करूंगा जिसतें अपनी जीभ से पाप न करूं जब लों कि दुष्ट मेरे साम्हने हैं मैं अपने मुंह पर खोंच लगाऊंगा। २ मैं गूंगा होके चुप हो रहा भलाई से अपना मुंह मूंद लिया और मेरा शोक ३ उभारा गया। मेरा मन मेरे भीतर जल उठा जब मैं सोचता हूं तब आग भड़कती है मैं अपनी जीभ से बोल उठा॥

४ कि हे परमेश्वर मेरे अंत का मुझे ज्ञान दे और मेरे दिनों का प्रमाण कि वह कितना है मैं जान्नि चाहता हूं कि ५ किस समय समाप्त हूंगा। देख तू ने मेरे दिन बित्तों से दिये हैं और मेरी स्थापिता तेरे साम्हने मानो निकम्मा है सारे मनुष्य केवल सर्वथा वृथा स्थापित ६ हुए हैं। सिलाह। मनुष्य केवल स्वरूप में चलता फिरता है वे केवल क्षण भर धूमधाम करते हैं वह धन का ढेर करता है और नहीं जानता कि कौन उन्हें बटोर ले जायगा॥

७ और अब मैं ने किस की बाट जोही है हे प्रभु मेरी आशा तुझी पर है। ८ मुझ को मेरे सारे अपराधों से छुड़ा मुझे ९ मूर्खों की निन्दा न बना। मैं चुपका हो गया हूं अपना मुंह न खोलूंगा क्योंकि तू ही ने यह किया है। १० अपनी ताड़ना मुझ पर से हटा ले मैं तो तेरे ११ हाथ की मार से नाश हो गया। तू अधर्म्म के कारण से दपटों के साथ मनुष्य को दण्ड देता है और उस की वाञ्छित वस्तु को कीड़े के समान नाश

कर डालता है सारे मनुष्य केवल वृथा हैं । सिलाह ॥

१२ हे परमेश्वर मेरी प्रार्थना सुन ले और मेरी दोहाई पर कान धर मेरे आंसुओं से चुप मत रह क्योंकि मैं तेरे साथ परदेशी हूं अपने सारे पितरों की नाईं

१३ यात्री । मुझ से क्रोध की दृष्टि फेर ले और मैं मगन हूं उस्से पहिले कि मैं जाऊं और फिर न रहूं ॥

चालीसवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये दाऊद का गीत ॥

१ मैं ने धीरज के साथ परमेश्वर की बाट जोही है और उस ने अपना कान मेरी ओर झुकाया और मेरी दोहाई

२ सुनी । और मुझे भयंकर गहिराव से और दलदल की कीच से उठा लिया और मेरे पांवों को चटान पर स्थिर किया

३ उस ने मेरे डगों को अचल किया । और मेरे मुंह में नया गीत डाला अर्थात हमारे ईश्वर की स्तुति बहुतेरे देखेंगे और डरेंगे और परमेश्वर पर भरोसा

४ रक्खेंगे । वह मनुष्य क्या ही धन्य है जिस ने परमेश्वर को अपनी आड़ का स्थान ठहराया है और अहंकारियों की ओर उन की ओर जो झूठ की ओर बगदते हैं नहीं फिरा ॥

५ हे परमेश्वर मेरे ईश्वर तू ने बहुत से काम किये हैं हो नहीं सक्ता कि तेरे अनूठे और तेरी चिंतों को जो हमारे बिषय में हैं तेरे साम्हने क्रम से बखान कर सकें मैं चर्चा और बर्णन किया चाहता हूं परन्तु वे गिनती से बाहर हैं ।

६ बलि और भेंट से तू प्रसन्न नहीं तू ने मेरे कान छेदे हैं बलिदान की भेंट और पाप की भेंट को तू ने नहीं चाहा ।

७ तब मैं ने कहा देख मैं आता हूं पुस्तक के पत्रों में मेरे बिषय में लिखा है ।

८ हे मेरे ईश्वर मैं तेरी इच्छा मान्ने से आनन्दित हुआ हूं और तेरी व्यवस्था मेरे मन के भीतर है । मैं ने बड़ी मंडली

९ में धर्म्म का प्रचारा है देख मैं अपने होंठों को न रोकूंगा हे परमेश्वर तू

१० जानता है । मैं ने तेरे धर्म्म को अपने मन के भीतर नहीं छिपाया मैं ने तेरी सच्चाई और तेरी मुक्ति का बर्णन किया है मैं ने तेरी दया और तेरी सच्चाई को बड़ी मंडली से नहीं छिपाया ॥

११ हे परमेश्वर तू अपनी दया मुझ से रोक न रक्खेगा तेरी दया और तेरी

१२ सच्चाई नित मेरी रक्षा करेंगी । क्योंकि अगणित बुराइयों ने मुझे घेरा है मेरे पापों ने मुझे पकड़ लिया है और मैं देख नहीं सक्ता वे मेरे सिर के बालों से अधिक हैं और मेरे मन ने मुझे छोड़

१३ दिया है । हे परमेश्वर मुझे छुटकारा देने पर प्रसन्न हो हे परमेश्वर मेरी

१४ सहायता के लिये शीघ्र कर । वे जो मेरे प्राण के चाहक हैं कि उसे नाश करें एक साथ लज्जित और संकोचित होंगे मेरे दुःख के चाहनेहारे पीछे हटाये और

१५ लज्जित किये जायंगे । जो मुझ पर अहा अहा कहते हैं वे अपनी लाज के

१६ कारण से उजड़ जायंगे । तेरे सारे खोजी तुझ से आनन्दित और मगन होंगे तेरी मुक्ति के प्रेमी नित कहा करेंगे कि

१७ परमेश्वर महान हो । और मैं दुःखी और कंगाल हूं परमेश्वर मेरी चिंता करेगा मेरा सहायक और मेरा छुड़ानेवाला तू ही है हे मेरे ईश्वर बिलम्ब न कर ॥

एकतालीसवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये दाऊद का गीत ॥

१ वह क्या ही धन्य है जो कंगाल के बिषय में बुद्धिमानी करता है परमेश्वर

२ बिपत्ति के दिन उसे छुड़ावेगा । परमेश्वर उस की रक्षा करेगा और उसे जीता

रक्खेगा वह भूमि पर आशीषित रहेगा
२ और तू उसे उस के बैरियों की इच्छा
३ पर न छोड़ । परमेश्वर उसे रोग के
बिछौने पर संभालेगा तू ने उस की
बेरामी में उस के सारे बिछौने को उलटके
बिछाया है ॥

४ मैं ने कहा है कि हे परमेश्वर मुझ
पर दया कर मेरे प्राण को चंगा कर
५ क्योंकि मैं ने तेरा पाप किया है । मेरे
बैरी मेरे बिषय में बुरा कहते हैं कि
वह कब मरेगा और कब उस का नाम
६ मिट जायेगा । और यदि वह देखने
को आये तो मिथ्या बोलेगा वह अपने
मन में अपने लिये अधर्म्म बटोरता है
वह बाहर जायेगा और मार्ग में बखान
७ करेगा । मेरे सारे बैरी आपुस में मेरे
बिरोध में फुसफुसाते हैं वे मेरे बिषय में
८ मेरी हानि की परामर्श करते हैं । दुष्टता
की बात उस में उंडेली गई और जो
९ वहां पड़ा है वह फेर न उठेगा । जिस्से
मैं मिलाप रखता था जिस पर मेरा
भरोसा था जो मेरी रोटी खाता
था उस मनुष्य ने भी मुझ पर लात
उठाई है ॥

१० और तू हे परमेश्वर मुझ पर दया
कर और मुझे उठाके खड़ा कर और मैं
११ उन से बदला लूंगा । इस्से मैं ने जाना
है कि तू मुझ से प्रसन्न हुआ कि मेरा
१२ बैरी मुझ पर जय नहीं पा सक्ता । और
मैं जो हूं तू ने मेरी खराई में मुझे थांभा
और मुझे अपने साम्हने सदा लों रक्खा
१३ है । परमेश्वर इसराएल का ईश्वर
सनातन से सनातन लों धन्य होवे ।
आमीन और आमीन ॥

बयालीसवां गीत ।

प्रधान बजानिये के लिये कोरह के
पुत्रों के लिये उपदेश का गीत ॥

१ जैसा हरिणी पानी की नदियों के
लिये हांफती है वैसा ही मेरा प्राण हे
ईश्वर तेरे लिये हांफता है । २ मेरा प्राण
ईश्वर के लिये जीवते सर्वशक्तिमान के
लिये पियासा है मैं कब आऊंगा और
ईश्वर के आगे आके उपस्थित होऊंगा ।
३ मेरा आंसू रात दिन मेरे लिये रोटी
हुआ है जब वे सारे दिन मुझ से कहते
थे कि तेरा ईश्वर कहां है । ४ मैं इन
बातों को स्मरण करूंगा और मन ही
मन में सोच ओ बिचार करूंगा जब
मंडली में चलूंगा आनन्द और स्तुति
के शब्द और पर्व के धूमधाम से उन
के संग ईश्वर के घर में जाऊंगा ॥

५ हे मेरे प्राण तू आप को क्यों झुकाया
करेगा और मुझ में धूम मचायेगा ईश्वर
की बाट जोह क्योंकि मैं उस के मुंह
की मुक्ति के लिये फिर उस की स्तुति
करूंगा ॥

६ हे मेरे ईश्वर मेरा प्राण मुझ में
आप को झुकाया करता है इस कारण
मैं यरदन और हरमूनीम की भूमि से
और मिसगार के पहाड़ से तुझे स्मरण
करूंगा । ७ तेरे परनालों के शब्द से
गहिराव गहिराव को पुकारता है तेरी
सारी लहरें और तेरे ढेव मेरे ऊपर से
चले गये हैं । ८ दिन को परमेश्वर अपनी
दया और रात को अपना गीत मेरे
साथ रहने की आज्ञा करेगा मेरे जीवन
के सर्वशक्तिमान से मेरी प्रार्थना होगी ।
९ मैं सर्वशक्तिमान से जो मेरी चटान है
कहूंगा कि तू मुझे क्यों भूल गया मैं
क्यों बैरी के अंधेर से बिलाप करता
चलूं । १० मेरी हड्डियों की टूटन के संग
मेरे बैरियों ने मुझ पर निन्दा किई है
जब वे सारे दिन मुझ से कहते थे कि
तेरा ईश्वर कहां है ॥

११ हे मेरे प्राण तू आप को क्यों झुकाया
करेगा और क्यों मुझ में धूम मचाया

करेगा ईश्वर की बाट जोह क्योंकि मैं फिर उस की स्तुति करूंगा जो मेरे मुंह की मुक्ति और मेरा ईश्वर है॥

तैंतालीसवां गीत।

१ हे ईश्वर मेरा न्याय कर और निर्दई जातिगण से मेरे बिवाद में मेरी सहाय कर छली और टेढ़े मनुष्य से तू मुझे २ छुड़ावेगा। क्योंकि मेरे गढ़ का ईश्वर तू ही है किस कारण तू ने मुझे छोड़ा है किस कारण मैं बैरी के अंधेर से ३ शोक करता फिरूं। अपनी ज्योति और अपनी सच्चाई को भेज वे ही मेरी अगुआई करेंगी मुझे तेरे पवित्र पर्वत पर और तेरे तंबुओं के पास पहुंचायेंगी। ४ और मैं ईश्वर की बेदी के पास आऊंगा सर्वशक्तिमान के पास जो मेरा बड़ा आनन्द है और हे ईश्वर मेरे ईश्वर मैं बीणा के संग तेरी स्तुति करूंगा॥

५ हे मेरे प्राण तू आप को क्यों झुकाया करेगा और क्यों मुझ में धूम मचायेगा ईश्वर की बाट जोह क्योंकि मैं फिर उस की स्तुति करूंगा जो मेरे मुंह की मुक्ति और मेरा ईश्वर है॥

चवालीसवां गीत।

प्रधान बजानिये के लिये कोरह के पुत्रों के लिये उपदेश का गीत॥

१ हे ईश्वर हम ने अपने कानों से सुना हमारे पितरों ने हम से वह कार्य्य बर्णन किया है जो तू ने उन के दिनों २ में अगले समयों में किया। तू ने अपने हाथ से जातिगणों को बिन अधिकार किया और इन्हें जमाया लोगों को ३ दबाया और इन्हें फैलाया। क्योंकि वे अपनी ही तलवार से पृथिवी के अधिकारी नहीं हुए और न उन की भुजा ने उन्हें मुक्ति दिई परन्तु तेरे दहिने हाथ और तेरी भुजा और तेरे रूप की ज्योति ने यह किया क्योंकि तू उन से प्रसन्न था॥

४ हे ईश्वर तू ही मेरा राजा है यअकूब के लिये छुटकारे की आज्ञा ५ कर। तेरी ही सहाय से हम अपने सतानेहारों को ठेल देंगे हम तेरे नाम से अपने बिरोधियों को लतरौंदन करेंगे। ६ क्योंकि मैं अपने धनुष पर भरोसा न रक्खूंगा और मेरी तलवार मुझे छुटकारा ७ न देगी। क्योंकि तू ने हमें हमारे सतानेहारों से बचाया और हमारे शत्रुन ८ को लज्जित किया है। हम ने सारे दिन ईश्वर पर फूलना किया है और सदा तेरे नाम का स्वीकार करेंगे। सिलाह॥

९ परन्तु तू ने हमें त्यागा और लज्जित किया है और हमारी सेनाओं के साथ १० न चलेगा। तू सतानेहारे के साम्हने से हमें पांव के पीछे करेगा और हमारे ११ शत्रुओं ने अपने लिये लूट पाई है। तू हमें भोजन की भेड़ों के समान बनायेगा और जातिगणों के मध्य तू ने हमें छिन्न १२ भिन्न किया है। तू अपने लोगों को सेंत बेच डालेगा और तू ने उन के मोल १३ से अपने धन को नहीं बढ़ाया है। तू हमें हमारे परोसियों के लिये निन्दा बनायेगा हमारे अड़ोसपड़ोसवालों के १४ लिये ठट्ठा और हंसी। तू हमें जातिगणों में कहावत बनावेगा लोगों में सिर १५ हिलाने का कारण। सारे दिन मेरा अपमान मेरे साम्हने है और लाज ने १६ मेरे मुंह को ढांप लिया है। दोषक और ठट्ठा करनेहारे के शब्द से बैरी और पलटा लेनेहारे के साम्ने से॥

१७ यह सब हम पर बीता और हम तुझे नहीं भूले और न तेरी बाचा से १८ बिगड़ गये हैं। हमारा मन पीछे नहीं फिरा और न हमारा डग तेरे मार्ग से १९ हटा। कि तू ने हमें गीदड़ों के स्थान में कुचला है और मृत्यु की छाया से

२० हमें ढांपा है। यदि हम अपने ईश्वर के नाम को भूले और उपरी देव को २१ ओर अपने हाथ फैलाये हों। क्या ईश्वर इसे ढूंढ न निकालेगा क्योंकि वही मन २२ के भेदों को जानता है; क्योंकि हम तेरे लिये सारे दिन घात हुए हैं हम घात होने की भेड़ की नाईं गिने गये हैं॥

२३ जाग हे प्रभु तू किस लिये सोता २४ रहेगा जाग सदा लों दूर न कर। तू किस लिये अपना मुंह छिपायेगा हमारे दुःख और हमारी बिपत्ति को भुला २५ देगा। क्योंकि हमारा प्राण धूल लों झुक गया हमारा पेट भूमि से चिपक २६ गया। हमारी सहाय के लिये उठ और अपनी दया के कारण से हमें उद्धार दे॥

पैंतालीसवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये सोसनों के बिषय में कोरह के पुत्रों के लिये उपदेश का गीत पियारियों का गान॥

१ मेरा मन उबल रहा है मैं अच्छी बात कहता हूं मेरे कार्य्य राजा के लिये हों मेरी जीभ चटक लेखक की लेखनी २ हो। तू मनुष्य के सन्तानों से अति सुन्दर औ स्वरूप है तेरे होंठों में अनुग्रह उंडेला गया है इसी लिये ईश्वर ने तुझे सदा के लिये आशीस दिई है॥

३ हे शक्तिमान अपनी तलवार कटि पर बांध अपने बिभव और अपने ४ माहात्म्य समेत। और अपने माहात्म्य में सत्यता और कोमलता औ धर्म्मता के कारण चढ़के आगे बढ़ और तेरा दहिना हाथ तुझे भयंकर कार्य्यों का ५ मार्ग दिखावेगा। राजा के बैरियों के अंतःकरण में तेरे बाण चोखे किये गये हैं लोग तेरे नीचे गिरेंगे॥

६ हे ईश्वर तेरा सिंहासन सनातन से सनातन लों है तेरे राज्य का राजदण्ड सच्चाई का दण्ड है। तू ने धर्म्म को ७ प्रेम रक्खा और दुष्टता से घिन किया है इसी कारण से ईश्वर तेरे ईश्वर ने आनन्द के तेल से तेरे संगियों से अधिक तुझे अभिषिक्त किया है॥

८ तेरे सारे पहिरावे बोल और अगर और तज हैं हाथीदांत के भवनों से वहीं से उन्हों ने तुझे आनन्दित किया है। ९ राजा की बेटियां तेरी बहुमूलियों में हैं रानी ओफीर के सोने से संवारी आके १० तेरे दहिने हाथ बैठलाई गई है। हे बेटी सुन और देख और अपना कान झुका और अपनी जाति और अपने पिता ११ के घर को भूल जा। और राजा तेरी सुन्दरता का अभिलाषी हो क्योंकि वही तेरा प्रभु है और तू उस को दण्डवत १२ कर। और सूर की बेटी अर्थात् सब से धनवान लोग भेंट के द्वारा से तेरी कृपा की बिनती करेंगे॥

१३ राजा की बेटी भवन के भीतर सम्पूर्ण पराक्रमी है उस का पहिरावा १४ सोनहला बूटेदार है। बहुरंगी पहिरावे में वह राजा के पास पहुंचाई जायगी उस के पीछे पीछे उस की संगी कुंआरियां १५ तुझ पास लाई गईं। वे मंगल और मगनता के संग पहुंचाई जायेंगी राजा १६ के भवन में आयेंगी। तेरे पितरों की संती तेरे सन्तान होंगे तू उन्हें सारी १७ पृथिवी पर अध्यक्ष ठहरावेगा। मैं सारी पीढ़ियों में तेरे नाम का स्मरण कराऊंगा इस कारण से लोग सर्व्वदा लों तेरा स्वीकार करेंगे॥

छियालीसवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये कोरह के पुत्रों के लिये कुमारियों के शब्द के संग। गान॥

१ ईश्वर हमारे लिये शरणस्थान और बल है वह बिपत्तों में बड़ा ही सहायक

२ पाया गया। इसी कारण से पृथिवी के बदल जाने और पर्वतों के समुद्रों के अंतःकरण में हिल जाने से हम न ३ डरेंगे। उस के पानी हड़हड़ावें और फेनावें उस के बढ़ने से पर्वत थर्थरावें। ४ सिलाह। एक नदी है जिस की धारें ईश्वर के नगर अर्थात् अति महान के निवासों के पवित्र स्थान को आनन्दित ५ करेंगी। ईश्वर उस के मध्य में है वह न टलेगा ईश्वर बिहान होते ही उस ६ को सहाय करेगा। जातिगणों ने हुल्लर मचाया राज्य कंप उठे उस ने अपना शब्द दिया है पृथिवी पिघल जायगी। ७ परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर हमारे साथ है यअकूब का ईश्वर हमारे लिये शरणस्थान है। सिलाह॥

८ आओ परमेश्वर के कार्यों को देखो जिस ने पृथिवी पर उजाड़ किया ९ है। जो पृथिवी के अंत लों लड़ाइयों को उठा डालता है वह धनुष को तोड़ेगा और बर्छी को टुकड़े टुकड़े १० करेगा रथों को आग से जलावेगा। थम जाओ और जानो कि मैं ईश्वर हूं मैं जातिगणों में प्रतिष्ठित होऊंगा पृथिवी ११ पर महान होऊंगा। परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर हमारे साथ है यअकूब का ईश्वर हमारे लिये शरणस्थान है। सिलाह॥

सैंतालीसवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये कोरह के पुत्रों का गीत॥

१ हे सब लोगो तालियां बजाओ जय के शब्द से ईश्वर के लिये ललकारो। २ क्योंकि परमेश्वर महान भयंकर है वह ३ सारी पृथिवी पर महाराजा है। वह जातिगणों को हमारे नीचे दबायेगा और ४ लोगों को हमारे पांव के नीचे। वह हमारे लिये हमारे अधिकार को चुनेगा यअकूब की ऊंचाई को जिसे उस ने प्यार किया है। सिलाह॥

५ ईश्वर ललकार के साथ चढ़ गया है परमेश्वर तुरही के शब्द के साथ। ६ ईश्वर की स्तुति में भजन करो भजन करो हमारे राजा की स्तुति में भजन करो भजन ७ करो। क्योंकि ईश्वर सारी पृथिवी पर राजा है उपदेश देनेहारे गान से उस ८ की स्तुति में भजन करो। ईश्वर जातिगणों पर राजा हुआ ईश्वर अपने ९ पवित्र सिंहासन पर बैठा है। लोगों के अध्यक्ष अबिरहाम के ईश्वर के लोग होकर एकट्ठा हुए क्योंकि पृथिवी की ढालें ईश्वर की हैं वह अत्यन्त महान है॥

अठतालीसवां गीत

कोरह के पुत्रों का गीत और गान॥

१ हमारे ईश्वर के नगर में अपने पवित्र पहाड़ पर परमेश्वर महान और २ अति स्तुति के योग्य है। ऊंचाई में सुन्दर सारी पृथिवी का आनन्द उत्तर की अलंग में सैहून पर्वत महाराज का ३ नगर है। ईश्वर उस के भवनों में शरण का स्थान जाना गया है॥

४ क्योंकि देखो राजा आपुस में मिले ५ वे एक साथ ही चले गये। ज्योंहीं उन्हों ने देखा त्योंहीं आश्चर्यित हुए ६ घबरा गये भाग निकले। वहां जन्नेहारी की पीड़ा की नाईं कंपकंपी ने उन्हें ७ पकड़ा। तू तरसीस के जहाजों को ८ पूरबी पवन से तोड़ेगा। जैसा हम ने सुना था वैसा ही हम ने परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर के नगर में अपने ईश्वर के नगर में देखा है ईश्वर उसे सदा लों स्थिर रक्खेगा। सिलाह॥

९ हे ईश्वर हम ने तेरे मन्दिर के मध्य १० तेरी दया पर सोच किया है। हे ईश्वर जैसा तेरा नाम वैसा ही तेरी स्तुति पृथिवी

के अंत लों है तेरा दहिना हाथ धर्म्म ११ से भरा है। तेरे न्यायों के कारण से सैहून पहाड़ आनन्दित और यहूदाह की बेटियां मगन होंगी ॥

१२ सैहून का चक्र करो और उस के आर पार फिरो उस के गुम्मटों को १३ गिनो। अपना मन उस के परकोट पर लगाओ उस के भवनों का बर्त्तमान करो जिसतें तुम आनेहारी पीढ़ी से बर्णन १४ करो। क्योंकि यह ईश्वर सनातन लों हमारा ईश्वर है वही मृत्यु लों हमारा अगुआ होगा ॥

उंचासवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये कोरह के पुत्रों का गीत ॥

१ हे सारे लोगो यह सुनो हे जगत के २ सारे बासियो कान लगाओ। क्या छोटे क्या बड़े धनी और कंगाल एक ही साथ। ३ मेरा मुंह बुद्धि की बातें करेगा और मेरे ४ मन का सोच बुद्धि है। मैं अपना कान दृष्टान्त की ओर लगाऊंगा बीणा के साथ अपनी पहेली खोलके कहूंगा ॥

५ मैं क्लेश के दिनों में किस लिये डरूं जब मेरे लताड़नेहारों की बुराई मुझे ६ घेरेगी। जो अपने बल पर भरोसा करते हैं और अपनी संपत्ति की बहुताई पर ७ फूलते हैं। मनुष्य अपने भाई का छुटकारा किसी प्रकार न दे सकेगा और न ईश्वर को अपना प्रायश्चित्त देगा। ८ और उन के प्राण का प्रायश्चित्त बहुमूल्य है और वह सर्व्वदा के लिये उस्से असाध्य ९ है। कि सदा लों जीता रहे और सड़न को न देखे ॥

१० क्योंकि वह उसे देखेगा बुद्धिमान मरेंगे मूढ़ और पशुवत एक ही संग नष्ट होंगे और अपनी संपत्ति औरों के लिये ११ छोड़ जायेंगे। उन के मन की चिंता यह है कि हमारे घर सदा लों स्थिर रहेंगे हमारे निवास पीढ़ी से पीढ़ी लों उन्हों ने अपने अपने खेतों पर अपने नाम रक्खे हैं। पर मनुष्य प्रतिष्ठा में न १२ टिकेगा वह पशु की नाईं ठहराया गया है वे नाश हुए। यह उन की चाल है १३ उन की ऐसी मूर्खता है और उन के पीछे आनेहारे उन की बातों से आनन्दित होंगे। सिलाह। वे झुंड की नाईं १४ समाधि की ओर हंकाये जाते हैं मृत्यु उन का चरवाहा होगी और बिहान को धर्म्मी उन पर प्रभुता करेंगे और उन का स्वरूप समाधि में गल जायेगा वे अपने निवास से उस में उतरते हैं। केवल १५ ईश्वर समाधि के हाथ से मेरे प्राण का छुटकारा देगा क्योंकि वह मुझे उस्से निकाल लेगा। सिलाह ॥

इस्से मत डर कि मनुष्य धनवान हो १६ जाय कि उस के घर का बिभव बढ़े। क्योंकि वह अपनी मृत्यु में कुछ न ले १७ जायगा उस का बिभव उस के पीछे उतरेगा। क्योंकि वह अपने जीवन में १८ अपने प्राण को आशीस देगा और लोग तेरी स्तुति करेंगे इस कारण से कि तू अपने लिये भला करता है। तू अपने १९ पितरों की पीढ़ी में मिल जायगा वे सदा लों उंजियाले को न देखेंगे। जो २० मनुष्य का सन्मान बिभव में है और समझ नहीं रखता वह उन पशुओं की नाईं ठहराया गया है जो नाश होते हैं ॥

पचासवां गीत।

आसफ का गीत ॥

सर्व्वशक्तिमान ईश्वर परमेश्वर ने १ उच्चारण किया है और पृथिवी को सूर्य्य के उदय से उस के अस्त लों बुलाया है। सैहून से जो सुन्दरता की सम्पूर्णता २ है ईश्वर उजागर हुआ है। हमारा ३ ईश्वर आवेगा और चुपचाप न रहे आग उस के साम्हने खा जायगी और

उस के आसपास बड़ी चंचल औ तीक्ष्ण ४ होगी। वह ऊपर स्वर्गों को और पृथिवी को बुलायेगा जिसतें अपने लोगों का ५ न्याय करे। मेरे साधुओं को जो बलिदान पर मुझ से बाचा बांधते हैं मेरे ६ लिये एकट्ठा करो। और अब स्वर्गों ने उस के धर्म्म को प्रगट किया है क्योंकि ईश्वर आप ही न्यायी है। सिलाह॥

७ हे मेरे लोगो सुनो और मैं उच्चारण करूंगा हे इसराएल और मैं तुझ पर साक्षी देऊंगा ईश्वर तेरा ईश्वर मैं ही ८ हूं। मैं तेरे बलिदानों और तेरे जलाने की भेंटों के कारण जो नित मेरे साम्हने ९ होती हैं तुझे धिक्कार न करूंगा। मैं तेरे घर से बैल और तेरे भेड़शाले से १० बकरे न लेऊंगा। क्योंकि बन के सारे पशु और पहाड़ों पर सहस्रों ढोर मेरे ११ हैं। मैं पहाड़ों के हर पक्षी को जानता हूं और चौगान के पशु मेरे पास हैं। १२ यदि मैं भूखा हूं तो तुझ से न कहूंगा क्योंकि जगत और उस की भरपूरी मेरी १३ है। क्या मैं बैलों का मांस खाऊंगा। १४ और बकरों का लोहू पीऊंगा। ईश्वर के लिये धन्यबाद की भेंट चढ़ा और अति महान के लिये अपनी मनौतियां १५ पूरी कर। और बिपत्ति के दिन मुझे पुकार मैं तुझे छुड़ाऊंगा और तू मेरी महिमा प्रगट करेगा॥

१६ और ईश्वर ने दुष्ट से कहा है कि तुझे क्या है कि मेरी बिधिन को प्रगट करे और मेरी बाचा को अपनी जीभ १७ पर लाये। और तू ने उपदेश से बैर रक्खा और मेरे बचनों को अपने पीछे १८ डाल दिया है। जब तू ने चोर को देखा तो उस्से प्रसन्न हुआ और ब्यभि-१९ चारियों का साझी हुआ। तू ने अपना मुंह बुराई के समर्पण किया है और तेरी २० जीभ छल का उपाय बांधेगी। तू बैठके अपने भाई के बिरोध बातें करता है अपनी माता के बेटे को धक्का देता है॥

२१ तू ने ये कार्य्य किये और मैं चुपका हो रहा तू ने समझा कि मैं सर्वथा तुझी सा हूं मैं तुझे दपटूंगा और तेरे पापों को तेरी आंखों के साम्हने संभारके २२ धरूंगा। हे ईश्वर के बिसरवैयो मैं बिनती करता हूं सोचो न हो कि मैं फाड़ूं और कोई छुड़वैया न हो॥

२३ जो गुणानुबाद की भेंट चढ़ाता है वह मेरी महिमा प्रगट करेगा और जो अपना मार्ग ठीक रखता है मैं उसे ईश्वर की मुक्ति दिखलाऊंगा॥

एकावनवां गीत।

प्रधान बजानिये के लिये दाऊद का गीत जब नातन भविष्यद्वक्ता उस पास आया जब कि वह बिन्तसबअ पास गया था॥

१ हे ईश्वर अपनी दया के समान मुझ पर कृपा कर अपनी दया की अधिकाई के समान मेरे अपराधों को मिटा दे। २ मेरे अधर्म्म से मुझे भली भांति धो और मेरे पाप से मुझे पावन कर॥

क्योंकि मैं अपने अपराधों को जानता हूं और मेरा पाप सदा मेरे साम्हने है। मैं ने तेरा केवल तेरा ही अपराध किया है और तेरी दृष्टि में बुराई किई है जिसतें तू अपनी बात में सच्चा रहे और अपने बिचार में शुद्ध ५ ठहरे। देख मैं अधर्म्म में उत्पन्न हुआ और पाप के संग मेरी माता ने मुझे गर्भ में लिया॥

६ देख तू ने अंतर में सच्चाई चाही है और गुप्त में तू मुझे बुद्धि की पहि-७ चान देगा। तू मुझे जूफा से पावन करेगा और मैं पवित्र होऊंगा मुझे धो डालेगा और मैं पाला से अधिक उजला ८ हो जाऊंगा। तू मुझे आनन्द और

मगनता का संदेश सुनावेगा तब वह
८ हड्डियां जिन्हें तू ने कुचला है आनन्दित
९ होंगी । मेरे पापों से अपना मुंह छिपा
और मेरे सारे अधर्म्मों को मिटा दे ।
१० हे ईश्वर मेरे लिये पवित्र मन उत्पन्न
कर और स्थिर आत्मा मेरे भीतर में
११ नवीन बना । मुझे अपने आगे से मत
निकाल और अपना पवित्र आत्मा मुझ
१२ से मत ले । अपनी मुक्ति की आनन्दता
मुझे फिर दे और प्रसन्न आत्मा से मुझे
संभाल ॥

१३ तब मैं अपराधियों को तेरे मार्ग
सिखाऊंगा और पापी तेरी ओर फिरेंगे ।
१४ हे ईश्वर मेरी मुक्ति के ईश्वर हत्या से
मुझे छुड़ा और मेरी जीभ तेरे धर्म्म के
१५ गीत गावेगी । हे प्रभु तू मेरे होंठों को
खोलेगा और मेरा मुंह तेरी स्तुति बर्णन
१६ करेगा । क्योंकि तू बलिदान से प्रसन्न
नहीं होता नहीं तो मैं देता होम के
१७ बलिदान से तू प्रसन्न नहीं है । ईश्वर
के बलिदान चूर्ण आत्मा हैं चूर्ण अंतः-
करण और कुचले हुए को हे ईश्वर तू
तुच्छ न जानेगा ॥

१८ अपनी प्रसन्नता से सैहून पर दया
कर तू यरूसलम की भीतों को बनावेगा ।
१९ तब तू धर्म्म के बलिदानों और होम
और पूरी भेंटों से आनन्दित होगा तब
वे तेरी बेदी पर बैल चढ़ावेंगे ॥

बावनवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये दाऊद का उप-
देश देनेहारा गीत जब अदूमी दोयेग
आया और साऊल को संदेश दिया
और उस्से कहा कि दाऊद अखि-
मलिक के घर में आया है ॥

१ हे बलवान तू क्यों बुराई पर फूलता
है सर्वशक्तिमान की कृपा सारे दिन
२ रहती है । तीक्ष्ण किये हुए छुरे की
नाईं जो छल से अपना कार्य्य करता है
तेरी जीभ बुराइयां निकाला करती है ।
३ तू ने भलाई से अधिक बुराई को और
सत्य बोलने से अधिक झूठ को प्यार
४ किया है । सिलाह । हे छली जीभ तू
ने सारी नाश करनेहारी बातों को प्यार
किया है ॥

५ सर्वशक्तिमान भी तुझे सदा के लिये
ढा देगा वह तुझे झाड़ डालेगा और
तुझे तेरे तंबू से निकाल फेंकेगा और तुझे
जीवन की भूमि से उखाड़ डालेगा ।
६ सिलाह । और धर्म्मी देखेंगे और डरेंगे
७ और उस पर हंसेंगे । देख उस बलवान
को जो ईश्वर को अपना शरणस्थान
नहीं ठहराता और अपने धन की अधि-
काई पर भरोसा रखता है और अपनी
दुष्टता में प्रबल रहता है ॥

८ परन्तु मैं ईश्वर के मन्दिर में हरे
जलपाई के पेड़ की नाईं हूं मैं ने ईश्वर
की दया पर जो सदा सर्बदा लों रहेगी
९ भरोसा रक्खा है । मैं सर्बदा तेरी स्तुति
करूंगा क्योंकि तू ने यह किया है और
तेरे संतों के साम्हने तेरे नाम की बाट
जोहूंगा क्योंकि वह भला है ॥

तिरपनवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये रोग के बिषय
दाऊद का उपदेश देनेहारा गीत ॥

१ मूर्ख ने अपने मन में कहा है कि
ईश्वर है ही नहीं उन्हों ने बुराई किई
और घिनित बुराई किई है कोई भलाई
२ करनेहारा नहीं । ईश्वर ने स्वर्ग पर से
मनुष्य के सन्तान पर झांका जिसतें देखे
कि कोई बुद्धिमानी करता अर्थात् ईश्वर
३ को ढूंढ़ता है अथवा नहीं । वे सब
के सब फिर गये वे एक ही साथ
बिगड़ गये कोई सुकर्म्मी नहीं एक भी
नहीं ॥

४ क्या ये कुकर्म्मी नहीं जानते जो मेरे
लोगों को खाते जैसे रोटी खाते हैं और

५ ईश्वर का नाम नहीं लेते। वहां वे अत्यन्त डरे जहां डर न था क्योंकि ईश्वर ने तेरे छावनी करनेहारों की हड्डियों को बिथराया है तू ने उन्हें लज्जित किया क्योंकि ईश्वर ने उन्हें ६ त्यागा है। हाय कि ईश्वर के अपने बंधु लोगों के पास फिर आने में सैहून से इसराएल का उद्धार हो तब यअकूब आनन्दित और इसराएल मगन हो ॥

चौअनवां गीत

प्रधान बजानिये के लिये तार के बाजों पर दाऊद का उपदेश देनेहारा गीत जब जिफीम ने आके साऊल से कहा कि क्या दाऊद आप को हमारे साथ नहीं छिपाता है ॥

१ हे ईश्वर अपने नाम से मुझे बचा और तू अपने बल से मेरा न्याय करेगा। २ हे ईश्वर मेरी प्रार्थना सुन मेरे मुंह की ३ बातों पर कान धर। क्योंकि परदेशी मेरे बिरोध में उठते हैं और सताऊ मेरे प्राण के गाहक हुए उन्हों ने ईश्वर को अपने साम्हने नहीं रक्खा। सिलाह ॥

४ देखो ईश्वर मेरा सहायक है प्रभु ५ मेरे प्राण के संभारनेहारों में है। वह बुराई मेरे बैरियों पर लौट आयेगी अपनी सच्चाई से उन्हें नष्ट औ ध्वस्त ६ कर। मैं आप से आप तेरे लिये बलि चढ़ाऊंगा हे परमेश्वर मैं तेरे नाम की ७ स्तुति करूंगा क्योंकि वह भला है। क्योंकि उस ने सारी बिपत्ति से मुझे छुड़ाया और मेरी आंख ने मेरे बैरियों पर दृष्टि किई है ॥

पचपनवां गीत।

प्रधान बजानिये के लिये तार के बाजों के संग दाऊद का उपदेश देनेहारा गीत ॥

१ हे ईश्वर मेरी प्रार्थना पर कान धर और मेरी बिनती से आप को मत छिपा। २ मेरा श्रोता हो और मेरी सुन मैं अपने सोच में अपने मन को भरमाऊंगा और चिल्लाऊंगा। ३ बैरी के शब्द के कारण से और दुष्ट के अंधेर के कारण से क्योंकि वे मेरे ऊपर हानि पहुंचाते हैं और कोप में मेरा बिरोध करते हैं ॥

४ मेरा मन मेरे भीतर में मसोसता है और मृत्यु के भय मेरे ऊपर पड़े हैं। ५ डर और थरथराहट मुझ में आया चाहती है और कंपकंपी मुझ पर प्रबल आई ६ है। और मैं ने कहा हाय कि मेरे पंख कपोत के से होते तो मैं उड़ जाता ७ और चैन पाता। देख मैं दूर तक फिरा करता और जंगल में रहता। सिलाह। ८ मैं प्रचण्ड आंधी से और झक्कड़ से अपने लिये बचाव बेग करूंगा ॥

९ हे प्रभु उन्हें निगल जा उन की जीभ भाग भाग कर क्योंकि मैं ने नगर में अंधेर और झगड़ा देखा है। १० वे दिन और रात उसे उस की भीतों पर घेरते हैं और बुराई और घटी उस के मध्य ११ में हैं। बुराइयां उस के मध्य में हैं और उस के चौक से अंधेर और कपट अलग नहीं होते ॥

१२ क्योंकि न मेरा बैरी मेरी निन्दा करेगा नहीं तो मैं सह लेता न मेरे डाही ने मेरे बिरुद्ध में अपनी बड़ाई किई है नहीं तो मैं आप को उस्से १३ छिपाता। परन्तु तू मेरे बराबर का जन मेरा मित्र और मेरा चिन्हार। १४ जिस्से हम आपुस में मीठा परामर्श करते हैं ईश्वर के घर में पर्व्व के धूम १५ धाम से चलते हैं। उन पर बिनाश आ पड़े वे जीते जी समाधि में गिरेंगे क्योंकि उन के निवास में और उन के अन्तःकरण में बुराइयां हैं ॥

१६ मैं ईश्वर को पुकारूंगा और पर- १७ मेश्वर मुझे बचा लेगा। सांझ और बिहान और मध्यान्ह को मैं सोचूंगा और चिल्लाऊंगा और उस ने मेरा शब्द १८ सुना है। जो लड़ाई मुझ पर थी उस ने उस्से कुशल में मेरे प्राण को मोल दिई क्योंकि मेरे विरोधी बहुत थे॥

१९ सर्वशक्तिमान सुनेगा और उन्हें उत्तर देगा और जो सनातन से सिंहासन पर । सिलाह। वह सबके उन्हें उत्तर देगा जिन के लिये बदले न होंगे २० और जो ईश्वर से नहीं डरते। उस ने अपने मित्रों के विरोध में अपने हाथ बढ़ाये हैं अपनी बाचा को तोड़ डाला २१ है। उस के मुंह की लुपड़ी बातें चिकनी चुपड़ी हैं पर उस का मन लड़ाई है उस की बातें तेल से अधिक कोमल हैं पर वे खींची हुई तलवारें हैं॥

२२ परमेश्वर पर अपना बोझ डाल दे और वह तेरी पालना करेगा वह धर्म्मी २३ को सदा लों टलने न देगा। और तू हे ईश्वर उन्हें सड़न के कूप में गिरा देगा हत्यारा और छली मनुष्य अपनी आधी बय लों न पहुंचेंगे और मैं तुझ पर भरोसा रक्खूंगा॥

छप्पनवां गीत।

प्रधान बजानिये के लिये परदेशियों के मध्य गूंगी पिण्डुकी के विषय दाऊद का भेद जब फिलिस्तियों ने उसे जात में पकड़ा॥

१ हे ईश्वर मुझ पर दया कर क्योंकि मरखाहार मनुष्य ने मुझ पर मुंह फैलाया है निगलनेहारा सारे दिन मुझे दबाया २ करता है। मेरे बैरियों ने सारे दिन मुंह फैलाया है क्योंकि हे अति महान मेरे निगलनेहारे बहुत हैं॥

३ जिस दिन मैं डरूंगा मैं तुझ पर ४ भरोसा रक्खूंगा। मैं ईश्वर की स्तुति में उस के बचन की बड़ाई करूंगा मैं ने ईश्वर पर भरोसा रक्खा है मैं न डरूंगा मनुष्य मेरा क्या करेगा॥

५ वे सारे दिन मेरी बातों को बिगाड़ते हैं मेरे विरुद्ध में उन की सारी चिन्ता बुराई के लिये हैं। ६ वे एकट्ठे होंगे अपने तईं छिपावेंगे वेही मेरे गिरानेवाले कूके में बैठेंगे जिस रीति कि वे मेरे प्राण की बाट जोह चुके ७ हैं। अधर्म्म पर उन का बचना धरा है हे ईश्वर क्रोध में जातिगणों को ८ गिरा दे। तू ने मेरे भ्रमण को गिना है मेरे आंसुओं को अपने पात्र में रख क्या वे तेरी बही में नहीं हैं॥

९ जिस दिन मैं पुकारूंगा उसी समय मेरे बैरी पीछे हटेंगे यह मैं जानता हूं १० कि ईश्वर मेरी ओर है। ईश्वर की स्तुति में मैं इस बचन की बड़ाई करूंगा परमेश्वर की प्रशंसा में मैं इस बचन ११ की स्तुति करूंगा। मैं ने परमेश्वर पर भरोसा रक्खा है मैं न डरूंगा आदमी १२ मेरा क्या करेगा। हे ईश्वर तेरी मनौतियां मुझ पर हैं मैं तेरी स्तुति करूंगा। १३ क्योंकि तू ने मेरे प्राण को मृत्यु से बचाया है क्या तू मेरे पांव को ठोकर खाने से छुटकारा न देगा जिसतें मैं जीवन के उंजियाले में ईश्वर के साम्हने चला फिरा करूं॥

सत्तावनवां गीत।

प्रधान बजानिये के लिये नाश न कर दाऊद का भेद जब वह साऊल के साम्हने से कंदला में भागा॥

१ मुझ पर दया कर हे ईश्वर मुझ पर दया कर क्योंकि मेरे प्राण ने तुझ में शरण ढूंढ़ा है और मैं तेरे डैनों की छाया के नीचे शरण लेऊंगा जब लों ये संकष्ट टल न जायें। २ मैं ईश्वर अति महान को पुकारूंगा उस सर्वशक्तिमान

को जो अपने बचनों को मेरे बिषय में ३ पूरा करता है। वह स्वर्गों से भेजेगा और मुझे बचावेगा जिस पर मेरे निगलनवाले ने निन्दा किई है। सिलाह। ईश्वर अपनी दया और अपनी सच्चाई को भेजेगा॥

४ मेरा प्राण सिंहों के मध्य में है मैं जलनेहारों अर्थात् मनुष्य के पुत्रों के मध्य लेटूंगा उन के दांत भाले और तीर हैं और उन की जीभ चोखी तलवार॥

५ हे ईश्वर स्वर्गों के ऊपर महान हो सारी पृथिवी के ऊपर तेरा बिभव हो। ६ उन्हों ने मेरे डगों के लिये जाल सिद्ध किया उस ने मेरे प्राण को दबा डाला उन्हों ने मेरे साम्हने गड़हा खोदा वे ७ उस के बीच में गिर पड़े। सिलाह। हे ईश्वर मेरा मन स्थिर है मेरा मन स्थिर ८ है मैं गाऊंगा और बजाऊंगा। हे मेरे बिभव जाग हे बीणा और सितार जाग ९ मैं बिहान को जगाऊंगा। हे प्रभु मैं लोगों में तेरा धन्य करूंगा जातिगणों के मध्य तेरी स्तुति में बजाऊंगा। १० क्योंकि तेरी दया स्वर्गों लों महान है ११ और तेरी सच्चाई मेघों लों। हे ईश्वर स्वर्गों के ऊपर महान हो सारी पृथिवी के ऊपर तेरी महिमा हो॥

अट्ठावनवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये नाश न कर दाऊद का भेद॥

१ हे मनुष्य के पुत्रो क्या तुम सचमुच गूंगे रहते हो जब अवश्य है कि धर्म्म से बोलो और सच्चाई से बिचार करो। २ हां तुम मन में दुष्टता करते हो अपने हाथों का अंधेर पृथिवी पर तौलते ३ हो। दुष्ट कोख हीं से पराये हुए वे झूठ बोलते हुए पेट ही से भटक गये। ४ उन का बिष सर्प के बिष के समान है वह अपने कान को उस बहिरे नाग ५ की नाईं मूंद लेगा। जो मंत्र पढ़नेहारों के शब्द न सुनेगा कैसो ही बुद्धिमानी से मंत्र क्यों न फूंकता हो॥

६ हे ईश्वर उन के दांत उन के मुंह में तोड़ डाल हे परमेश्वर युवा सिंहों ७ की डाढ़ों को कुचल डाल। वे पानी की नाईं पिघल जायें अपने मार्ग चले जायें वह अपने बाण लगाये मानो कि ८ वे कट जायें। जिस रीति कि घोंघा पिघल जाता है वह भी चला जाये स्त्री के गर्भपात की नाईं उन्हों ने ९ सूर्य्य को नहीं देखा। उस्से आगे कि तुम्हारी हांडियों में कांटे की आंच लगे क्या कच्चा हो क्या पक्का वह उसे उड़ा ले जावेगा॥

१० धर्म्मी आनन्दित होगा क्योंकि उस ने प्रतिफल को देखा है वह अपने चरणों को दुष्ट के लोहू में डुबायेगा। ११ और मनुष्य कहेगा कि हां धर्म्मी के लिये प्रतिफल है हां पृथिवी पर न्याय करनेहारा ईश्वर है॥

उनसठवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये नाश न कर दाऊद का भेद जब साऊल ने भेजा और उन्हों ने घर की चौकसी किई जिसतें उसे घात करे॥

१ हे मेरे ईश्वर मुझे मेरे बैरियों से छुड़ा तू मुझे मेरे बिरोधियों से ऊंचा २ करेगा। मुझे कुकर्म्मियों से छुड़ा और हत्यारे मनुष्यों से मुझे बचा॥

३ क्योंकि देख वे मेरे प्राण के लिये घात में लगे हैं बलवन्त मेरे बिरोध पर एकट्ठा होते हैं हे परमेश्वर न मेरा ४ अपराध है और न मेरा पाप। मेरे दोष के बिना वे दौड़ते हैं और अपने तईं लैस करते हैं मुझ से मिलने के लिये ५ जाग और देख। और तू हे परमेश्वर

ईश्वर सेनाओं के स्वामी इसराएल के ईश्वर सारे आनिगणों पर कृपा करने के लिये जाग किसी दुष्ट अपराधी पर
६ दया मत कर । सिलाह । वे सांझ को फिरें कुत्ते की नाईं भूंकें और नगर में घूमते फिरें ॥
७ देख वे अपने मुंह से निकालते हैं तलवारें उन के होंठों पर हैं क्योंकि
८ कौन सुनता है । और तू हे परमेश्वर उन पर हंसेगा तू सारे आनिगणों को
९ ठट्ठे में उड़ावेगा । मैं तेरे लिये उस के बल की रक्षा करूंगा क्योंकि ईश्वर
१० मेरा शरणस्थान है । मेरा ईश्वर अपनी दया से मेरे आगे आवेगा ईश्वर मेरे बैरियों पर मुझे जयवान कर दिखावेगा ॥
११ उन्हें प्राण से न मार ऐसा न हो कि मेरे लोग भूल जायें हे प्रभु हमारी ढाल अपने पराक्रम से उन्हें छिन्न भिन्न
१२ कर और उन्हें गिरा दे । उन के होंठों का बचन उन के मुंह का पाप है और वे अपने अहंकार में और अपनी क्रिया से और उस झूठ से जो वे बोलेंगे
१३ पकड़े जायेंगे । क्रोध से उन्हें नाश कर नाश कर और वे ध्वस्त हो जायें और लोग पृथिवी के अंत लों जानें कि ईश्वर यअकूब में राज्य करता है ।
१४ सिलाह । और वे सांझ को फिरें कुत्ते की नाईं भूंकें और नगर में घूमते
१५ फिरें । वे खाने के लिये भ्रमते फिरेंगे और यदि तृप्त न हों तो रात भर दौड़ते रहेंगे ॥
१६ और मैं तेरे पराक्रम का छन्द गाऊंगा और बिहान को तेरी दया का गान करूंगा क्योंकि तू मेरे लिये ऊंचा स्थान हुआ और मेरी बिपत्ति के दिन में मेरा
१७ शरणस्थान । हे मेरे बल मैं तेरे लिये गाऊंगा क्योंकि ईश्वर मेरा शरणस्थान और मेरा दयावान ईश्वर है ॥

साठवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये साक्षी के सोसन के विषय दाऊद का भेद सिखलाने के लिये जब उस ने अराम नहराइन पर और अराम सोबाह पर जय पाई और यूअब लौटा और लोन की तराई में बारह सहस्र आदमी मारे ॥

१ हे ईश्वर तू ने हमें त्यागा हम्में फूट डाली है तू क्रोधित हुआ तू हमें
२ फिर यथावस्थित करेगा । तू ने पृथिवी को कंपाया उसे चीरा है उस की दरारों को सुधार क्योंकि वह हिल गई ।
३ तू ने अपने लोगों को कठोरता दिखलाई हमें लड़खड़ाने की मदिरा पिलाई है ।
४ तू ने अपने डरवैयों को एक ध्वजा दिया है जिसतें तेरी सच्चाई के कारण
५ से खड़ा किया जाय । सिलाह । जिसतें तेरे प्रेमी छुड़ाये जायें तू अपने दहिने हाथ से बचा और हमारी सुन ॥
६ ईश्वर ने अपनी पवित्रता के संग बचन किया इस कारण मैं फूलूंगा सिकम को बिभाग करूंगा और सुक्कात
७ की तराई को नापूंगा । जिलिअद मेरा है मुनस्सी भी मेरा और इफरायम मेरे सिर का गढ़ यहूदाह मेरा व्यवस्था-
८ दायक । मोअब मेरे धोनेधाने का पात्र है मैं अदूम पर अपनी जूती फेंकूंगा हे फिलिस्त मेरे लिये जयजयकार कर ॥
९ कौन मुझे दृढ़ नगर में लायेगा किस
१० ने मुझे अदूम लों पहुंचाया है । क्या तू ही ने नहीं हे ईश्वर जिस ने हमें त्यागा और हे ईश्वर तू जो हमारी सेनाओं के
११ संग न चलेगा । बिपत्ति में हमारी सहाय कर क्योंकि मनुष्य की ओर से बचाव बृथा है ॥
१२ ईश्वर से हम बल पावेंगे और वही हमारे सतानेहारों को लताड़ेगा ॥

एकसठवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये तार के बाजे पर दाऊद का गीत॥

१ हे ईश्वर मेरा चिल्लाना सुन मेरी २ प्रार्थना पर सुरत लगा। मैं अपने मन के शोक में पृथिवी के खूंट से तेरी ओर पुकारूंगा उस चटान पर जो मुझ से ऊंची है तू मेरी अगुआई करेगा। ३ क्योंकि तू मेरे लिये शरणस्थान हुआ है ४ बैरी के सन्मुख दृढ़ गढ़। मैं तेरे तंबू में सदा लों रहा करूंगा तेरे पंखों की छाया के नीचे में शरण लेऊंगा। सिलाह॥

५ क्योंकि हे ईश्वर तू ही ने मेरी मनौतियों को ग्रहण किया अपने नाम से डरवैयों का अधिकार मुझे दिया है। ६ तू राजा की वय पर वय बढ़ावेगा उस ७ के बरस पीढ़ी से पीढ़ी लों। वह सदा लों ईश्वर के साम्हने सिंहासन पर बैठा रहेगा तू दया और सत्यता भावमान ८ रख वे उस की रक्षा करेंगी। सो मैं सदा लों तेरे नाम की स्तुति करूंगा जिसतें प्रतिदिन अपनी मनौतियां पूरी करूं॥

बासठवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये यदूतून के ऊपर दाऊद का गीत॥

१ केवल ईश्वर की ओर फिरने से मेरा प्राण चैन में है उसी से मेरी मुक्ति २ है। केवल वही मेरी चटान और मेरी मुक्ति है मेरा शरणस्थान मुझे अत्यन्त ३ हिलना न होगा। तुम कब लों एक मनुष्य पर चढ़ाई करोगे तुम सब के सब उस के मारने के निमित्त पीछा करोगे जो झुकी हुई भीत और ढाई हुई बारी ४ के समान है। केवल उस के महत्व से वे उसे ढकेलने का परामर्श करते हैं वे झूठ से आनन्दित हैं वे अपने मुंह से आशीस देते हैं पर अपने अंत:करण में सरापते हैं। सिलाह॥

५ हे मेरे प्राण केवल ईश्वर की ओर फिरके चुप रह क्योंकि उसी से मेरी ६ आशा है। केवल वही मेरी चटान और मेरी मुक्ति है मेरा शरणस्थान मुझे ७ हलचल न होगी। मेरी मुक्ति और मेरा बिभव ईश्वर में है मेरे बल की चटान ८ और मेरा शरणस्थान ईश्वर में है। हे जातिगण सदा उस पर भरोसा रक्खो अपने अंत:करण उस के आगे उंडेल दो ईश्वर हमारे लिये शरणस्थान है। सिलाह॥

९ नीच लोग केवल वृथा हैं ऊंचे पदवाले झूठ वे तुला में उठ जायेंगे वे १० सब के सब वृथा से हलुक हैं। अन्धेर पर भरोसा न करो और अन्याय में निरर्थक न बनो धन यद्यपि बढ़े उस पर ११ मन न लगाओ। ईश्वर ने एक बात कही ये दो बातें मैं ने सुनीं कि पराक्रम ईश्वर का है। १२ और हे प्रभु दया तेरी है क्योंकि तू हर एक मनुष्य को उस के कार्य्यों के समान पलटा देगा॥

तिरसठवां गीत।

दाऊद का गीत जब वह यहूदाह के बन में था॥

१ हे ईश्वर मेरा सर्वशक्तिमान तू ही है मैं तड़के तुझे ढूंढूंगा मेरा प्राण तेरे लिये प्यासा है मेरा शरीर सूखी भूमि में और थका बिन पानी तेरा लालसित है। २ जिसतें तेरे पराक्रम और तेरे बिभव को देखूं जैसा कि मैं ने धर्म्मधाम में देखा ३ है। क्योंकि तेरी कृपा जीवन से भली है मेरे होंठ तेरी स्तुति किया करेंगे। ४ सो मैं जीवन भर तुझे धन्य कहा करूंगा तेरा नाम ले लेके अपने हाथ उठाऊंगा। ५ मेरा प्राण मानो मज्जा और चिकनाई से तृप्त होगा और आनन्दित होंठों से मेरा मुंह स्तुति करेगा॥

६ जब मैं अपने बिछौने पर तुझे स्मरण

करता हूं सो रात के पहरों में तुझ पर ७ ध्यान किया करता हूं। क्योंकि तू मेरे लिये सहाय हुआ है और मैं तेरे पंखों ८ की छाया तले आनन्द करूंगा। मेरा प्राण तेरे पीछे लिपटा है तेरा दहिन ९ हाथ मुझे संभालता है। और वे अपने बिनाश के लिये मेरे प्राण के गाहक होते हैं वे पृथिवी के नीचे के स्थान १० को जायेंगे। वे तलवार से खेत आयेंगे ११ गीदड़ों के ग्रास होंगे। और राजा ईश्वर से आनन्दित होगा हर एक मनुष्य जो उस की किरिया खाता है उस्से दर्प करेगा क्योंकि झूठ बोलनेहारों के मुंह बन्द किये जायेंगे॥

चौंसठवां गीत।

प्रधान बजानिये के लिये दाऊद का गीत॥

१ हे ईश्वर मेरी दोहाई में मेरा शब्द सुन तू मेरे प्राण को बैरी के डर से २ बचा रक्खेगा। तू मुझे दुष्टों की छिपी हुई सम्मति से और कुकर्म्मियों के हुल्लर से छिपायेगा॥

३ जिन्हों ने तलवार की नाईं अपनी जीभ चोखी किई है और अपना तीर चिल्ले पर चढ़ाया है अर्थात कड़वी बात। ४ जिसतें गुप्त स्थानों में सिद्ध मनुष्य को मारें वे अचानक उसे मारेंगे और न ५ डरेंगे। वे अपने लिये बुरी बात स्थिर करते हैं छिपके फंदे मारने की बातचीत करते हैं वे कहते हैं कि कौन हमें ६ देखेगा। वे बुरे कर्म्मों की खोज करते हैं कहते हैं कि हम लैस हैं क्या ही अच्छी युक्ति और हर एक का अन्तर और मन गहिरा है॥

७ परन्तु ईश्वर ने उन्हें अचानक बाण से मारा है घाव उन्हीं के हो गये। ८ और वे गिराये गये उन की जीभ उन्हीं पर पड़ी सब कोई उन पर दृष्टि करते ९ हुए भागेंगे। और सारे मनुष्य डरते हैं और कहते हैं कि यह ईश्वर का किया हुआ है और इसे उसी का कार्य्य समझते हैं। धर्म्मी परमेश्वर से आनन्दित होगा १० और उस पर भरोसा रक्खेगा और सारे खरे मनवाले उस्से दर्प करेंगे॥

पैंसठवां गीत।

प्रधान बजानिये के लिये दाऊद का गीत और गान॥

१ हे ईश्वर सैहून में चुपके चुपके तेरी स्तुति किई जाती है और तेरे लिये मनौती पूरी किई जायगी। हे प्रार्थना २ के श्रोता सारे शरीर तेरे पास आवेंगे। अधर्म्म की बातें मुझ से अति प्रबल हैं ३ हमारे अपराधों का बलिदान तू ही देगा। वह क्या ही धन्य है जिसे तू ४ चुने और समीपी करेगा जिसतें तेरे आंगनों में रहे हम तेरे घर अर्थात् तेरे पवित्र मन्दिर की भलाई से तृप्त होंगे। हे हमारे मुक्तिदाता ईश्वर पृथिवी और ५ समुद्र के सारे अति दूर सिवानों की आशा तू धर्म्म से हमें भयंकर उत्तर देगा॥

६ जो सामर्थ्य से कटि बांधके अपने बल से पहाड़ों को दृढ़ करता है। जो ७ समुद्रों के गर्गराहट उन की लहरों के गर्गराहट और लोगों की धूमधाम को स्थिर करता है। तब पृथिवी के अन्त ८ के बसनेहारे तेरे चिन्हों से डरें तू सांझ और बिहान के निकासस्थानों से आनन्द करायेगा। तू ने पृथिवी पर दृष्टि किई ९ और उसे सींचा है तू उसे अति फलदायक करेगा ईश्वर की नदी जल से परिपूर्ण है तू उन के अनाज को सिद्ध करेगा क्योंकि तू उसे इस रीति से सिद्ध करता है। उस की रेघारियों को सींच उस १० के ढेलों को समथर कर तू उसे मेंहों से कोमल करेगा उस की कोंपलों पर आशीष देगा। तू ने अपनी भलाई से ११

बरस पर मुकुट रक्खा है और तेरे पथों १२ से चिकनाई टपकती है। बन की चराइयां टपकती हैं और टीले आनन्द १३ से गुथे हैं। चराई ने झुंडों का पहिरावा पहिना है और तराइयां अन्न से ढंप जायेंगी वह आनन्द से ललकारेंगी हां वे गाया करेंगी॥

छियासठवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये गीत और गान॥

१ हे सारी पृथिवी ईश्वर की ओर २ ललकारो। उस के नाम के बिभव में गान करो उस की स्तुति में उसे पराक्रम ३ देओ। ईश्वर से कहो कि तेरे कार्य्य क्या ही भयंकर हैं तेरे बल की बहुताई ४ से तेरे बैरी तुझ से दब जायेंगे। सारी पृथिवी के रहनेहारे तुझे दण्डवत करेंगे और तेरी स्तुति में गान करेंगे वे तेरे नाम के लिये गान करेंगे। सिलाह॥

५ आओ और ईश्वर के कार्य्यों को देखो जो अपने कार्य्य में मनुष्य के पुत्रों ६ पर भयंकर है। उस ने समुद्र को सूखी से पलट डाला वे नदी से पांव पांव चले जायेंगे वहां हम उस्से आनन्दित ७ होंगे। जो अपने बल से सदा लों राज्य करता है उस की आंखें जातिगणों को देखती हैं दंगाइत अपने को न उभारें। सिलाह॥

८ हे लोगो हमारे ईश्वर का धन्यबाद करो और उस की स्तुति का शब्द ९ सुनाओ। जो हमारे प्राण को जीता रखता है और जिस ने हमारे पांव को १० टलने नहीं दिया है। क्योंकि हे ईश्वर तू ने हमें परखा तू ने हमें ऐसा ताया ११ है जैसा रूपा ताया जाये। तू ने हमें जाल में फंसाया हमारी कटि पर भार १२ रक्खा है। तू ने मरणहार मनुष्य को हमारे सिर पर चढ़ाया है हम आग और पानी में आये और अब तू ने हमें आनन्द की भरपूरी में पहुंचाया है॥

१३ मैं बलिदानों के साथ तेरे घर में आऊंगा अपनी मनौतियां तुझे पूरी १४ करूंगा। जिन्हें मेरे होंठों ने उच्चारा और मेरी बिपत्ति में मेरा मुंह बोला। १५ मैं पुष्ट मेम्नों के बलिदानों मेढ़ों की चिकनाई समेत तुझे चढ़ाऊंगा बैल बकरों समेत बलि करूंगा। सिलाह॥

१६ हे सारे ईश्वर के डरनेहारो आओ सुनो और मैं बर्णन करूंगा जो उस ने १७ मेरे प्राण के लिये किया है। मैं ने अपने मुंह से उस को पुकारा और बड़ी बड़ाई १८ मेरी जीभ के नीचे थी। यदि मैं अपने मन में अधर्म्म की ओर ताकता तो १९ प्रभु न सुनता। परन्तु ईश्वर ने सुना है उस ने मेरी प्रार्थना के शब्द पर कान २० धरा है। ईश्वर धन्य हो जिस ने न मेरी प्रार्थना फेरी है और न मेरी ओर से अपनी दया॥

सतसठवां गीत

प्रधान बजनिये के लिये तार के बाजों पर गीत और गान॥

१ ईश्वर हम पर दया करे और हमें आशीष दे और अपना मुख हम पर २ चमकावे। सिलाह। जिसतें तेरा मार्ग पृथिवी में जाना जाय सारे जातिगणों ३ में तेरी मुक्ति। हे ईश्वर जातिगण तेरी स्तुति करेंगे सारे जातिगण तेरी ४ स्तुति करेंगे। जातिगण आनन्दित होंगे और जय जय करेंगे क्योंकि तू धर्म्म से लोगों का बिचार करेगा और पृथिवी पर जातिगणों की अगुआई करेगा। ५ सिलाह। हे ईश्वर जातिगण तेरी स्तुति करेंगे जातिगण तेरी स्तुति करेंगे सब ६ के सब। पृथिवी ने अपनी बढ़ती दिई है और ईश्वर हमारा ईश्वर हमें ७ आशीष देगा। ईश्वर हमें आशीष देगा

और पृथिवी के सारे सिवाने उस्से डरेंगे ॥

अठसठवां गीत

प्रधान बजानिये के लिये दाऊद का गीत और गान ॥

१ ईश्वर उठेगा उस के बैरी छिन्न भिन्न होंगे और उस के बैर रखनेहारे उस के २ आगे से भागेंगे। जैसे धूआं मिट जाता है तैसा तू उन्हें मिटा देगा जैसे मोम आग के आगे पिघल जाता है तैसा दुष्ट ३ ईश्वर के आगे नाश होंगे। और धर्म्मी आनन्दित होंगे ईश्वर के आगे आह्लादित होंगे और आनन्द के मारे हर्षित होंगे ॥

४ ईश्वर का गान करो उस के नाम की स्तुति गाओ उस के लिये मार्ग सिद्ध करो जो अपने नाम याह से बनों से चढ़के आता है और उस के आगे आनन्द ५ करो। ईश्वर अपने धर्म्मधाम में अनाथों का पिता और रांड़ों का बिचारी है। ६ ईश्वर अकेलों को गृहस्थ बनाता है बंधुओं को बंदीगृह से भाग्यमानी में निकाल लाता है केवल दंगइत झूर स्थान में रहते हैं ॥

७ हे ईश्वर जब तू अपने लोगों के आगे चल निकला जब तू ने बन में ८ पग धरा। सिलाह। तब पृथिवी थर्थराई हां स्वर्ग भी ईश्वर के आगे टपके यह सीना पर हुआ ईश्वर अर्थात् ९ इसराएल के ईश्वर के साम्हने। हे ईश्वर तू संत के दान का मेंह बरसाता है तू ही अपने अधिकार हां अपने निर्बल अधिकार को स्थिर करता है ॥

१० तेरा झुंड उस में बसा है हे ईश्वर तू अपनी दया से कंगाल के लिये सिद्ध ११ करेगा। प्रभु संदेश देता है उस की १२ प्रचारक बड़ी सेना हैं। सेनाओं के राजा भाग भाग जायेंगे और घर की १३ रहनेहारी लूट बांटेगी। जब तुम पृथिवी के सिवानों के मध्य लेटोगे तब तुम चांदी से मढ़ी हुई कपोत के डैनों और उस के पीले सुनहले पंखों के समान होओगे। जब सर्वसामर्थी उस भूमि में १४ राजाओं को छिन्न भिन्न करता है तब जिल्मून में पाला गिरता है। बसनिया १५ का पहाड़ ईश्वर का पहाड़ है बसनिया का पहाड़ चोटियों का पहाड़ है। हे १६ पहाड़ो हे चोटियो उस पहाड़ के लिये जिसे ईश्वर ने अपने रहने के लिये चाहा है तुम क्यों घात में बैठते हो हां परमेश्वर उस में सर्वदा लों रहेगा ॥

ईश्वर की रथें बीस सहस्र सहस्रों १७ पर सहस्र हैं प्रभु उन में है और सीना धर्म्मधाम में। तू ऊंचे पर चढ़ गया है १८ तू ने बंधुओं को बंधुआ किया है हे परमेश्वर ईश्वर तू ने आदम के सन्तान में हां दुष्टों में भी भेंटें ले लिईं जिसतें वहां बसे ॥

प्रभु प्रतिदिन धन्य होवे जब मनुष्य १९ हम पर बोझ रक्खेगा तब सर्वशक्तिमान हमारी मुक्ति होगा। सिलाह। सर्वशक्तिमान हमारी मुक्ति के लिये २० सर्वसामर्थी है और मृत्यु से छुड़ाना परमेश्वर प्रभु ही का काम है। निश्चय २१ ईश्वर अपने बैरियों का सिर कुचलेगा। उस बालवाली खोपड़ी को जो अपने अपराधों में चलती फिरती है। प्रभु ने २२ कहा कि मैं उन्हें बसनिया से फेर लाऊंगा समुद्र के गहिरावों से फेर लाऊंगा। जिसतें तू उन्हें कुचले और २३ तेरा पांव लोहूलुहान और तेरे कुत्तों की जीभ बैरियों के लोहू से हां उसी से लोहूलुहान हो ॥

हे ईश्वर उन्हों ने तेरी धूमधामी २४ चालों को मेरे सर्वसामर्थी और मेरे राजा की धूमधामी चालों को धर्म्मधाम में देखा है। मृदंग बजाती हुई २५

कुमारियों के मध्य गायक आगे आगे और बजनिये पीछे पीछे चले। अरे तुम कि इसराएल के सोते से हो मंडलियों में ईश्वर प्रभु को धन्य कहो। वहां छोटा बिनयमीन उन पर दबानेहारा है यहूदाह के अध्यक्ष उन के पत्थरवाह करवैये हैं जबूलून के अध्यक्ष नफ़ताली के अध्यक्ष॥

तेरे ईश्वर ने तेरे बल को ठहराया है हे ईश्वर जिस ने हमारे लिये यह किया है दृढ़ हो। तेरे मन्दिर के कारण से जो यरूसलम के ऊपर है राजा तेरे पास भेंट लावेंगे। तू जंगल के बनपशु को और बलवन्त बैलों की मंडली को जातिगणों के बछड़ों सहित जो चांदी के टुकड़े लिये हुए निहुर जाते हैं तिरस्कार कर उस ने जातिगणों को जो संग्राम से मगन रहते हैं छिन्न भिन्न किया है। अध्यक्ष लोग मिस्र से आवेंगे कूश अपने हाथ ईश्वर की ओर बढ़ावेगा॥

हे पृथिवी की राजधानियो ईश्वर का गान करो प्रभु की स्तुति में गाओ। सिलाह। उस के लिये गाओ जो सनातन के स्वर्गों के स्वर्ग पर असवार है देखो वह अपना शब्द महा शब्द उच्चारता है। ईश्वर को बल देओ उस का माहात्म्य इसराएल के ऊपर है और उस का बल मेघों पर। हे ईश्वर तू अपने धर्म्मधामों से भयंकर है इसराएल का सर्व्वशक्तिमान वही जातिगण को बल और सामर्थ्य देता है ईश्वर धन्य हो॥

उनहत्तरवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये सोसनों के विषय दाऊद का गीत॥

१ हे ईश्वर मुझे बचा क्योंकि पानी २ मेरे प्राण लों पहुंच गया है। मैं गहिराव की कीच में धस गया हूं और खड़े होने का स्थान नहीं है मैं पानी के गहिरावों में आया और बाढ़ ने मुझे दबा लिया है। मैं पुकारते पुकारते ३ थक गया हूं मेरा गला सूख गया अपने ईश्वर की बाट जोहते जोहते मेरी आंखें धुंधला गईं। जो अकारण ४ मुझ से बैर रखते हैं वह मेरे सिर के बालों से अधिक हैं मेरे नाशक मेरे धोखादेनेहारे बैरी बली हैं जो मैं ने नहीं लूटा मैं आगे को उन्हें भर दूंगा॥

हे ईश्वर तू मेरी मूर्खता को जानता ५ है और मेरे अपराध तुझ से छिपे नहीं हैं। हे प्रभु परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर ६ तेरी बाट जोहनेहारे मेरे कारण से लज्जित न हों हे इसराएल के ईश्वर तेरे खोजी मेरे कारण से अपमानित न हों। क्योंकि मैं ने तेरे लिये उलहना ७ सहा लाज ने मेरे मुंह को ढांप लिया है। मैं अपने भाइयों के निकट परदेशी ८ हो गया और अपनी माता के पुत्रों में ऊपरी। क्योंकि तेरे घर के ज्वलन ने ९ मुझे खा लिया है और तेरे अपवाद करनेहारों के अपवाद मुझ पर आ पड़े। और मैं ने व्रत में रो रो अपने प्राण को १० निकाला और वह भी मेरे लिये अपवादों का कारण हुआ। और मैं ने ११ टाट का वस्त्र पहिना और उन के लिये कहावत बना। फाटक पर के बैठवैये १२ मेरे विरुद्ध सोचते हैं और मदिरा के पिअक्कड़ गान करते हैं॥

और मैं हे परमेश्वर मेरी प्रार्थना तुझ १३ से है हे ईश्वर तेरी दया की बहुताई में ग्राह्य का समय हो अपनी मुक्ति की सत्यता में मेरी सुन ले। मुझे कीच से १४ निकाल और मैं धसने न पाऊं मैं अपने बैरियों से और पानी के गहिराव से बचाया जाऊं। पानी की बाढ़ मुझे १५ दबाने न पावे और गहिराव मुझे निगलने

न पावे और कूआं अपना मुंह मुझ पर १६ बंद न करने पावे। हे परमेश्वर मेरी सुन क्योंकि तेरी दया भली है अपनी दया की बहुताई के समान मेरी ओर १७ फिर। और अपने दास से अपना मुंह न छिपा क्योंकि मैं बिपत्ति में हूं शीघ्र १८ कर मेरी सुन। मेरे प्राण के निकट आ उसे बचा मेरे बैरियों के कारण मुझे बचा॥

१९ तू ही ने मेरा उलहना और मेरी लज्जा और मेरे अनादर को जाना है २० मेरे सारे सताऊ तेरे आगे हैं। अपवाद ने मेरा मन तोड़ा है और मैं रोगी हूं और मैं ने दया की बाट जोही और कुछ नहीं और शान्तिदायकों की पर २१ नहीं पाया। और उन्हों ने मेरे भोजन में पित्त दिया और मेरी प्यास बुझाने को २२ मुझे सिरका पिलाया। उन का मंच उन के लिये फंदा हो जाये और उन के २३ लिये जो कुशल में हैं जाल होवे। उन की आंखें अंधी हो जायें जिसतें न देखें और उन की कटि सदा झुकी रख। २४ अपना क्रोध उन पर उंडेल और तेरे कोप की जलजलाहट उन्हें पकड़ ले। २५ उन का घर उजाड़ हो जाये उन के २६ तंबुओं में कोई बसवैया न हो। क्योंकि उन्हों ने उन्हें सताया जिन्हें तू ने मारा है और तेरे घायलों के शोक के विषय २७ वे बातें करते हैं। उन के अधर्म्म पर अधर्म्म का दण्ड दे और वे तेरे धर्म्म में २८ आने न पावें। वे जीवतों की बही से मिटाये जावें और धर्म्मियों के संग न लिखे जावें॥

२९ और मैं बिपत्ति का मारा और दुःखी हूं हे ईश्वर तेरी मुक्ति मुझे ऊंचाई पर ३० रक्खे। मैं गीत में ईश्वर के नाम की स्तुति करूंगा और धन्यबाद से उस की ३१ महिमा करूंगा। और यह परमेश्वर के लिये सींगदार और खुरीले बैल और बछड़ ३२ से अधिक भला होगा। दीन लोगों ने देखा है और आनन्दित होंगे अर्थात तुम जो ईश्वर के खोजी हो और तुम्हारा ३३ मन जीता रहे। क्योंकि परमेश्वर कंगालों की सुनता है और उस ने अपने बंधुओं ३४ को तुच्छ नहीं जाना। आकाश और पृथिवी उस की स्तुति करें समुद्र और ३५ उन में के सारे रेंगनेहारे। क्योंकि ईश्वर सैहून को बचावेगा और यहूदाह के नगरों को बनावेगा और वे उस में बसेंगे और ३६ उसे अधिकार में लेंगे। और उस के सेवकों के बंश उस के अधिकारी होंगे और उस के नाम के प्रेमी उस में रहा करेंगे॥

सत्तरवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये स्मरण के लिये दाऊद का गीत॥

१ हे ईश्वर मेरे बचाव के लिये हे परमेश्वर मेरी सहायता के लिये चटक कर। २ वे जो मेरे प्राण के गाहक हैं लज्जित और संकोचित होंगे मेरी बिपत्ति के चाहनेहारे पीछे हटाये और अपमानित ३ किये जायेंगे। जो अहा अहा कहते हैं वे अपने लाज के कारण उलटे फिरेंगे। ४ तेरे सारे खोजी तुझ से आनन्दित और मगन होंगे और तेरी मुक्ति के प्रेमी सदा ५ कहा करेंगे कि ईश्वर महान हो। और मैं दुःखी और कंगाल हूं हे ईश्वर मेरे लिये शीघ्र कर मेरा सहायक और मेरा मुक्तिदाता तू ही है हे परमेश्वर बिलंब न कर॥

एकहत्तरवां गीत।

१ हे परमेश्वर मैं ने तुझ पर भरोसा रक्खा है मुझे कधी लज्जित होने न २ दे। तू अपने धर्म्म से मेरा छुटकारा करेगा और मुझे छुड़ावेगा अपना कान ३ मेरी ओर झुका और मुझे बचा। तू

मेरे निवास की चटान हो कि मैं नित्य आया करूं तू ने मुझे बचाने की आज्ञा किई है क्योंकि तू ही मेरी चटान और ४ मेरा गढ़ है। हे मेरे ईश्वर दुष्ट के हाथ से और अधर्म्मी और क्रूर मनुष्य ५ के पंजे से मुझे छुड़ा। क्योंकि हे प्रभु परमेश्वर मेरी आशा तू ही है मेरी युवा ६ अवस्था से मेरा शरणस्थान। मैं कोख से तुझ से थामा गया तू ही ने मुझे मेरी माता के पेट से निकाला मेरी स्तुति नित्य तेरे विषय में है॥

७ मैं बहुतों के लिये अचंभा हुआ पर ८ तू ही मेरा दृढ़ शरणस्थान है। मेरा मुंह तेरी स्तुति से और सारे दिन तेरे ९ विभव से भरा रहेगा। बुढ़ापे में मुझे फेंक न दे जब मेरा बल घटे तब मुझे १० दूर न कर। क्योंकि मेरे बैरियों ने मुझ से यों कहा है और जो मेरे प्राण के घात में हैं उन्हों ने आपुस में युक्ति ११ बांधी हैं। और कहते हैं कि ईश्वर ने उसे त्यागा है उस का पीछा करो और उसे पकड़ लो क्योंकि कोई छुड़वैया १२ नहीं है। हे ईश्वर मुझ से दूर मत हो हे मेरे ईश्वर मेरी सहाय के लिये चटक १३ कर। मेरे प्राण के बैरी लज्जित और नष्ट हो जायेंगे मेरी बुराई के चाहक निन्दा और अनादर से ढंप जायेंगे॥

१४ और मैं नित्य आशा रक्खूंगा और तेरी सारी स्तुति पर बढ़ाता जाऊंगा। १५ मेरा मुंह तेरे धर्म्म का और सारे दिन तेरी मुक्ति का वर्णन किया करेगा क्योंकि मैं उन की गिनती नहीं जानता। १६ मैं प्रभु परमेश्वर के पराक्रम कर्म्मों के साथ आऊंगा मैं तेरी केवल तेरे ही १७ धर्म्म की चर्चा करूंगा। हे ईश्वर तू ने मेरी युवा अवस्था से मुझे सिखाया और अब लों मैं तेरी आश्चर्य्य क्रिया वर्णन १८ किया करता हूं। और बुढ़ापे और बाल पकने लों भी हे ईश्वर मुझे मत त्याग जब लों कि मैं आनेहारी पीढ़ी से तेरे हाथ का और हर एक अवैया से तेरे पराक्रम का बखान न करूं। और हे १९ ईश्वर तेरा धर्म्म अति ऊंचा है हे ईश्वर तू जिस ने बड़े बड़े कार्य्य किये हैं तेरे तुल्य कौन है॥

तू जिस ने हमें बहुत कठिनताएं २० और विपत्ति दिखलाई हैं फिर आके हमें जिलावेगा और पृथिवी के गहिरावों से फिर आके हमें उठा लेगा। तू मेरी २१ महिमा को बढ़ावेगा और फिरके मुझे शान्ति देगा। हे मेरे ईश्वर मैं भी तेरी २२ सत्यता के लिये बीणा बजाके तेरी स्तुति करूंगा हे इसराएल के धर्म्ममय मैं सितार के संग तेरी स्तुति में गान करूंगा। जब मैं तेरी स्तुति में बजाऊंगा २३ तब मेरे होंठ और मेरा प्राण जिसे तू ने छुड़ाया है गायेंगे। मेरी जीभ भी २४ सारे दिन तेरे धर्म्म को रटा करेगी क्योंकि मेरी बुराई के चाहक निन्दित और लज्जित हो गये हैं॥

बहत्तरवां गीत।

सुलेमान का गीत॥

हे ईश्वर राजा को अपने विचार १ और राजा के पुत्र को अपना धर्म्म दे॥

वह धर्म्म के साथ तेरे लोगों का और २ विचार के साथ तेरे दुःखियों का न्याय करेगा। तब धर्म्म से पहाड़ और पहा- ३ ड़ियां लोगों के लिये कुशल उपजावेंगी। वह लोगों के दुःखियों का न्याय करेगा ४ कंगाल के सन्तानों को बचावेगा और अन्धेरी को कुचलेगा। जब लों कि सूर्य्य ५ और चन्द्रमा ठहरेंगे पीढ़ी से पीढ़ी लों वे तुझ से डरा करेंगे। वह मेंह की ६ नाईं जो कटी हुई घास पर हो और झड़ी की नाईं जो पृथिवी को सींचती है उतरेगा। उस के दिनों में जब लों ७

चांद रहेगा धर्म्मी उगेगा और कुशल
८ की अधिकाई होगी। और वह समुद्र
से समुद्र लों और नदी से पृथिवी के
९ अंत लों प्रभुता करेगा। बनबासी लोग
उस के आगे झुकेंगे और उस के बैरी
१० माटी चाटेंगे। तरसीस और टापुओं
के राजा भेंट भेजेंगे सबा और सिबा के
११ राजा भेंट बलिदान में लायेंगे। और
सारे राजा उस को दण्डवत करेंगे सारे
१२ जातिगण उस की सेवा करेंगे। क्योंकि
वह दोहाई देनेहारे कंगाल को और
दुःखी और जिन का कोई सहायक
१३ नहीं बचावेगा। वह दरिद्र और कंगाल
पर दया करेगा और कंगालों का प्राण
१४ बचावेगा। वह उन के प्राण को अन्धेर
और उपद्रव से छुड़ावेगा और उन का
लोहू उस की दृष्टि में बहुमूल्य होगा।
१५ और वह जीता रहेगा और सबा के सोने
में से उसे दिया करेगा और वह उस के
लिये सदा प्रार्थना किया करेगा वह
सारे दिन उस का धन्यबाद करेगा।
१६ पृथिवी में पहाड़ों की चोटी पर केवल
मुट्ठी भर अनाज हो उस का फल लुब-
नान की नाईं हड़हड़ायेगा और नगर में
से वे पृथिवी की घास की नाईं लह-
१७ लहावेंगे। उस का नाम सदा लों रहेगा
जब लों कि सूर्य्य रहेगा तब लों उस का
नाम फैलता जायेगा और लोग उस्से
आशीस पायेंगे सारे जातिगण उसे धन्य
कहेंगे॥

१८ परमेश्वर ईश्वर इसराएल का प्रभु
जो अकेला आश्चर्य्य कार्य्य करता है
१९ धन्य हो। और उस का बिभवमय
सदा लों धन्य हो और सारी पृथिवी
उस के बिभव से परिपूर्ण होवे आमीन
और आमीन॥

२० यस्सी के बेटे दाऊद की प्रार्थनाएं
समाप्त हुईं॥

तिहत्तरवां गीत।

आसफ का गीत॥

१ ईश्वर इसराएल के लिये खरे अन्तः-
२ करणियों के लिये केवल भला है। और
मैं निकट था कि मेरे पांव टल जायें
निकट था कि मेरे पग फिसल जायें।
३ क्योंकि मैं अहंकारियों से डाह करता
था और कहता था कि दुष्टों का कुशल
देखा करूंगा॥

४ क्योंकि उन के लिये मृत्यु के समय
किसी प्रकार के बंधन नहीं हैं और उन
५ का बल पुष्ट है। वे मनुष्य की नाईं
दुःख में नहीं हैं और मनुष्य के पुत्र के
६ संग मार नहीं खाते। इस लिये घमंड
उन के गले की हसुली हुआ अन्धेर के
७ वस्त्र ने उन्हें ढांप लिया है। उन की आंखें
चिकनाई से उभरी हुई हैं उन के मन
८ की चिन्तायें निकलती हैं। वे चिढ़ाते
और दुष्टता के संग बातें करते हैं घमंड
९ से अन्धेर की बातें करते हैं। उन्हों ने
अपना मुंह स्वर्ग पर रक्खा है और उन
१० की जीभ पृथिवी पर घूमती है। इस
लिये वह अपने लोगों को यहां फेर लाता
है और मुंहामुंह पानी उन पर निचोड़ा
११ जाता है। और वे कहते हैं कि सर्व-
शक्तिमान क्योंकर जाने और क्योंकर
अति महान को इस का ज्ञान हो।
१२ देखो ये अधर्म्मी हैं और सदा के भाग्यवान
उन्हों ने अपनी संपत्ति बढ़ाई है॥

१३ केवल बृथा मैं ने अपने मन को
शुद्ध किया है और निर्मलता में अपने
१४ हाथ धोये हैं। और मैं सारे दिन मार
खाता रहा और हर बिहान को मेरी
१५ ताड़ना हुई। यदि मैं ने कहा हो कि
यों बर्णन करूंगा तो देख मैं ने तेरे
बालकों की मंडली से छल किया है।
१६ और मैं इसे जानने के लिये सोचा करता
१७ था वह मेरी आंखों में दुःख था। और

मैं ने कहा कि जब लों सर्वशक्तिमान के धर्म्मधाम में न आऊं तब लों उन के अन्त का सोच किया करूंगा ॥

१८ तू उन्हें केवल फिसलने स्थानों में रखेगा और अब तू ने उन्हें नाश में १९ डाला है। वे मानो एक पलमात्र में क्या ही उजाड़ में पड़ गये भय से सर्वथा २० मिट गये। जागनेहारे के स्वप्न की नाईं हे प्रभु जब तू जागेगा तब उन के स्वरूप को तुच्छ जानेगा ॥

२१ क्योंकि मेरा मन आप को खट्टा कर देता है और मैं अपनी कटि में अपने २२ तईं छेदता हूं। और मैं मूर्ख हूं और नहीं जानता मैं तेरे आगे पशु हुआ। २३ और मैं सर्वदा तेरे संग हूं तू ने मेरा २४ दहिना हाथ धरा। तू अपने मंत्र से मेरी अगुआई करेगा और उस के पीछे २५ मुझे विभव में ले लेगा। स्वर्ग पर मेरा कौन है और पृथिवी पर तेरे संग मैं ने २६ किसी को नहीं चाहा। मेरा शरीर और मेरा मन घट गया पर ईश्वर सदा मेरे मन की चटान और मेरा भाग है ॥

२७ क्योंकि देख जो तुझ से दूर हैं वे नष्ट होंगे तू ने हर एक को जो तुझ २८ से व्यभिचारी हुआ काट डाला है। और मैं—ईश्वर की संगति मेरे लिये भली है मैं ने प्रभु परमेश्वर पर अपना भरोसा रक्खा है जिसतें तेरे सारे कार्य्यों का वर्णन करूं ॥

चौहत्तरवां गीत।

आसफ का उपदेशदायक गीत ॥

१ हे ईश्वर तू ने क्यों हमें सर्वदा के लिये त्यागा है और क्यों तेरे रिस का धूआं तेरी चराई की भेड़ों पर उठता २ है। अपनी मंडली को जिसे तू ने सदा से मोल लिया और अपने अधिकार के दल कबक को छुड़ाया इस सैहून पहाड़ को जिस में तू रहा है स्मरण कर।

३ सदा के उजाड़ों की ओर उन सभों की ओर जिन्हें बैरी ने धर्म्मधाम में बिगाड़ा है अपने डग उठा ॥

४ तेरे बैरी तेरी मंडली के मध्य गर्जते हैं उन्हों ने अपने चिन्ह प्रभुता के चिन्ह ५ ठहराये हैं। वह जान पड़ता है कि मानो घने पेड़ों पर कुल्हाड़ियां बहुत ६ ऊंची उठाता है। और अब उस के खोदे हुए कार्य्य को वे हथौड़े और हथौड़ियों से तोड़के एक ही साथ गिरा देते हैं। ७ उन्हों ने तेरे धर्म्मधाम में आग लगाई है भूमि लों तेरे नाम के निवासस्थान ८ को अशुद्ध किया है। उन्हों ने अपने मन में कहा है कि हम उन्हें एक ही साथ नाश करें उन्हों ने भूमि पर सर्वशक्तिमान के सारे सभास्थानों को जला दिया ९ है। हम अपने चिन्हों को नहीं देखते अब कोई भविष्यद्वक्ता नहीं है और हमारे मध्य कोई नहीं जानता कि यह कब लों होगा ॥

१० हे ईश्वर बैरी कब लों निन्दा करेगा क्या बैरी सदा तेरे नाम की अपनिन्दा ११ करेगा। तू क्यों अपना हाथ और अपना दहिना हाथ खींचे रहता है उसे अपनी गोद में से निकालके उन्हें नाश कर। १२ और ईश्वर प्राचीन से मेरा राजा है जो पृथिवी के मध्य छुटकारे दिया करता १३ है। तू ही ने अपने पराक्रम से समुद्र को फाड़ा अजगरों के सिरों को पानी १४ पर कुचल डाला। तू ही ने लिवयातान के सिरों को कुचल डाला तू उसे बनवासी लोगों के भोजन के लिये देगा। १५ तू ही ने सोता और धारा को चीरा तू ही ने नित्य बहती नदियों को सुखा १६ दिया। दिन तेरा है रात भी तेरी है तू ही ने उंजियाले और सूर्य्य को सिद्ध १७ कर रक्खा। तू ही ने पृथिवी के सारे सिवानों को ठहराया गरमी और जाड़ा तू ही ने उन्हें बनाया ॥

१८ इसे स्मरण कर कि बैरी ने परमेश्वर की निन्दा किई और मूढ़ जातिगण ने
१९ तेरे नाम की अपनिन्दा किई है। पेडू अथा को अपनी पंडुकी मत दे अपने दुःखियों की मंडली को सदा लों न
२० भूल। बाचा को चेत कर क्योंकि पृथिवी के अंधियारे स्थान क्रूरता के निवासों
२१ से पूर्ण हैं। सताया हुआ लज्जित होके पलट न जाये दुःखी और कंगाल तेरे
२२ नाम की स्तुति करें। हे ईश्वर उठ अपना ही बिवाद कर अपनी उस निन्दा को जो सारे दिन मूर्ख की ओर
२३ से होती है स्मरण कर। अपने बैरियों का शब्द अपने शत्रुओं के कोलाहल को जो नित्य उठता है भूल न जा॥

पचहत्तरवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये नाश न कर आसफ का गीत और गान॥

१ हे ईश्वर हम तेरी स्तुति करते हैं हम स्तुति करते हैं क्योंकि तेरे नाम का प्रगट होना निकट है उन्हों ने तेरे
२ आश्चर्य्य का बर्णन किया है। क्योंकि मैं ठहराया हुआ समय चुन लूंगा मैं
३ ही सच्चाई से बिचार करूंगा। पृथिवी और उस के सारे निवासी पिघल गये मैं ही ने उस के खंभों को संभाला है। सिलाह॥
४ मैं ने घमंडियों से कहा कि घमंड न करो और दुष्टों से कि सींग न
५ उठाओ। अपना सींग ऊंचाई पर न उठाओ और गराई से ढिठाई की
६ बातें न करो। क्योंकि न पूरब से न पच्छिम से और न पहाड़ों के बन से
७ न्याय आवेगा। क्योंकि ईश्वर न्यायी है वह एक को नीचा करेगा और
८ दूसरे को ऊंचा करेगा। क्योंकि परमेश्वर के हाथ में कटोरा है और उस में मदिरा फेनाती है मिलावट से भरी हुई है और वह इस कटोरे से उंडेला करता है केवल उस की तलछट पृथिवी के सारे दुष्ट निचोड़ेंगे और पीयेंगे॥
९ और मैं सदा लों बर्णन करूंगा यअकूब के ईश्वर की स्तुति में गान
१० करूंगा। और मैं दुष्टों के सारे सींगों को काट डालूंगा धर्म्मी के सींग ऊंचे किये जायेंगे॥

छिहत्तरवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये तार के बाजों पर आसफ का गीत और गान॥

१ ईश्वर यहूदाह में प्रसिद्ध है इसराएल
२ में उस का नाम महान है। और सालिम में उस का तंबू था और सैहून में उस
३ का निवास। उधर उस ने धनुष के जलते हुए बाणों ढाल और तलवार और लड़ाई को तोड़ डाला। सिलाह॥
४ तू लुटेरे पर्बतों से अधिक ज्योति-
५ मान और बिभवमय है। हियाव मन मनुष्य लुट गये वे अपनी नींद में सो गये हैं और सारे बलवान मनुष्यों में से
६ किसी ने अपना हाथ नहीं पाया। हे यअकूब के ईश्वर तेरी डपट से रथ और
७ घोड़े नींद में पड़ गये। तुझ से हां तुझी से डरा चाहिये और जब तू क्रोध करे
८ तब कौन तेरे आगे खड़ा रहेगा। तू ने स्वर्ग पर से बिचार सुनाया पृथिवी डर
९ गई और थम गई। जब ईश्वर न्याय के लिये उठा जिसतें पृथिवी के सारे कोमलों को बचावे। सिलाह॥
१० क्योंकि मनुष्य का क्रोध तेरी स्तुति करेगा और कोपों का शेष तू कटि पर
११ बांधेगा। हे तुम सब जो उस के आस-पास हो परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये मनौतियां मानो और पूरी करो उस भयंकर ईश्वर के आगे लोग भेंट लावें।
१२ वह अध्यक्षों के प्राण को काट डालेगा वह पृथिवी के राजाओं के लिये भयंकर है॥

सतहत्तरवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये यदूतून के ऊपर आसफ का गीत॥

१ मैं अपना शब्द ईश्वर की ओर उठाऊंगा और पुकारूंगा अपना शब्द ईश्वर की ओर उठाऊंगा और वह मेरी २ ओर कान धरेगा। मैं ने अपनी विपत्ति के दिन प्रभु को ढूंढा मेरा हाथ रात को फैला रहा और निर्बल न हो गया मेरे प्राण ने शान्ति पाने से नाह किया। ३ मैं ईश्वर को स्मरण करता और हाहाकार करता हूं चिन्ता करता हूं और मेरा प्राण मूर्छा में पड़ा है। सिलाह। ४ तू ने मेरी आंखें खुली रक्खी हैं मैं मारा गया और बोल नहीं सक्ता॥

५ मैं ने अगिले दिनों पर और प्राचीन ६ बरसों पर सोच किया। मैं अपने रात के गान को स्मरण करूंगा अपने मन में सोच करूंगा और मेरा आत्मा खोज ७ करता है। कि क्या प्रभु सदा के लिये त्यागेगा और फिर कभी प्रसन्न न होगा। ८ क्या उस की दया सदा के लिये जाती रही उस की बाचा पीढ़ी से पीढ़ी लों ९ कट गई। क्या सर्वशक्तिमान अनुग्रह करना भूल गया क्या उस ने क्रोध में अपनी दया को बन्द कर रक्खा है। सिलाह॥

१० और मैं ने कहा कि यह मेरी निर्बलता है अति महान के दहिने हाथ के ११ वर्ष। मैं परमेश्वर के कार्य्यों का वर्णन करूंगा क्योंकि मैं तेरे प्राचीन आश्चर्य्यों १२ को स्मरण करूंगा। और मैं तेरे सारे कार्य्यों को ध्यान करूंगा और तेरी कीर्त्ति पर सोच करूंगा॥

१३ हे ईश्वर तेरा मार्ग पवित्रता में है ईश्वर के समान कौन बड़ा महेश्वर १४ है। तू ही वह सर्वशक्तिमान है जो आश्चर्य्य कर्म्म किया करता है तू ने लोगों में अपना बल प्रगट किया है। १५ तू ने अपनी भुजा से अपने लोग यअकूब और यूसुफ के सन्तानों को छुड़ाया। १६ सिलाह। हे ईश्वर पानियों ने तुझे देखा पानियों ने तुझे देखा वे थर्थराते १७ हैं हां गहिराव कांप उठते हैं। मेघों ने जल उंडेल दिया बादलों ने शब्द दिया हां तेरे बाण चारों ओर उड़ते हैं। १८ तेरे गर्ज्जन का शब्द बवंडर में हुआ बिजलियों ने भूमंडल को उंजियाला कर दिया तब पृथिवी थर्थराई और १९ कांप गई। तेरा मार्ग समुद्र में था और तेरे पथ बड़े पानियों में और तेरे पांव २० के चिन्ह नहीं जाने गये। तू ने मूसा और हारून के हाथ से झुंड की नाईं अपने लोगों की अगुआई किई॥

अठहत्तरवां गीत

आसफ का उपदेशदायक गीत॥

१ हे मेरे लोगो मेरी व्यवस्था पर कान धरो मेरे मुंह की बातों पर अपने २ कान लगाओ। मैं अपना मुंह दृष्टान्त में खोलूंगा प्राचीन भेदों को प्रगट ३ करूंगा। जिन्हें हम ने सुना और उन्हें जाना और हमारे पितरों ने हम से वर्णन ४ किया। हम उन्हें उन के बालकों से न छिपावेंगे परन्तु आवैया पीढ़ी से परमेश्वर की स्तुतों का और उस के बल का और उस के आश्चर्य्यों का जो उस ने किये वर्णन करते रहेंगे॥

५ और उस ने यअकूब में साक्षी ठहराई और इसराएल में व्यवस्था स्थिर किई जिन के विषय उस ने हमारे पितरों को आज्ञा किई कि उन्हें अपने ६ बालकों को सिखावें। जिसतें आवैया पीढ़ी जाने बालक उत्पन्न होवें और उठकर अपने बालकों से वर्णन करें। ७ और ईश्वर पर अपना आसा रक्खें और सर्वशक्तिमान के कार्य्यों को न भूलें और

८ उस की आज्ञाओं को पालन करें। और अपने पितरों की नाईं मरारे और दंगाइत पीढ़ी न होवें ऐसी पीढ़ी कि जिस ने अपने मन को सिद्ध न रक्खा और जिस का आत्मा सर्वशक्तिमान पर पूरा भरोसा न रखता था॥

९ इफरायम के सन्तान हथियार बांधे हुए धनुष चढ़ाये हुए लड़ाई के दिन १० में लौट आये। उन्हों ने ईश्वर की बाचा को स्मरण न किया और उस की व्यवस्था पर चलने से नाह किया। ११ और उस के कार्य्यों को और उस के आश्चर्य्यों को जो उस ने उन्हें दिखाये भूल गये॥

१२ उन के पितरों के आगे मिस्र देश में जुअन के चौगान में उस ने आश्चर्य्य १३ कर्म्म किये। उस ने समुद्र को दो भाग कर दिया और उन्हें पार पहुंचाया और पानी को ढेर की नाईं खड़ा कर १४ दिया। और दिन को मेघ से और रात भर आग की ज्योति से उन की अगुआई १५ किई। वह बन में चटानों को चीरता है और उन्हें पीने को माना बड़े १६ गहिराव देता है। और चटान से धारें निकालता है और नदी की नाईं पानी बहा देता है॥

१७ पर उन्हों ने उस की बिरुद्धता में और अधिक पाप किया और बन में अति महान के आगे बहुत दंगा किया। १८ और अपने मन में सर्वशक्तिमान को यों परखा कि अपनी इच्छा के अनुसार १९ भोजन मांगा। और ईश्वर के बिरुद्ध बोले और कहा कि क्या सर्वशक्तिमान २० बन में मंच सिद्ध कर सकेगा। देखो उस ने चटान को मारा और पानी बहता है और धारें फूट निकलती हैं पर क्या वह रोटी भी दे सक्ता है अथवा अपने लोगों के लिये मांस सिद्ध कर सक्ता है। इस लिये परमेश्वर ने सुना २१ और अति क्रोधित हुआ और यअकूब में आग भड़की और इसराएल पर भी क्रोध उभरा। क्योंकि वे ईश्वर पर २२ बिश्वास न लाये और उन्हों ने उस की मुक्ति पर भरोसा न रक्खा। यद्यपि २३ उस ने ऊपर से मेघों को आज्ञा किई और स्वर्ग के द्वार खोले। और उन पर २४ खाने के लिये मन्न बरसाया और उन्हें स्वर्गीय अन्न दिया। हर एक ने दूतों २५ की रोटी खाई उस ने उन्हें बहुताई से मार्ग के लिये भोजन भेजा। वह स्वर्ग २६ में पूरबी पवन चलाता है और अपने बल से दक्षिणी पवन बहाता है। और २७ उस ने उन पर धूल की नाईं मांस और समुद्र के बालू की नाईं पक्षी बरसाये। और उन की छावनी के बीच में उन के २८ घरों के आसपास गिराये। और उन्हों २९ ने खाया और अति तृप्त हुए और वह उन्हें उन्हीं की इच्छा देता है। वे ३० अपनी लालसा से अलग न हुए अब लों उन का भोजन उन के मुंह ही में था। कि ईश्वर का कोप उन पर भड़का और ३१ उन के पुष्टों में से मारा और इसराएल के तरुणों को गिरा दिया॥

तिस पर भी उन्हों ने फिर पाप ३२ किया और उस के आश्चर्य्य कार्य्यों का बिश्वास न किया। इस लिये उस ने ३३ उन के दिनों को अनर्थ में और उन के बरसों को भय में बिताया॥

जब उस ने उन्हें मारा तब उन्हों ने ३४ उसे ढूंढा और पश्चात्ताप किया और शीघ्र सर्वशक्तिमान के खोजी हुए। और ३५ चेत किया कि ईश्वर उन की चटान और सर्वशक्तिमान महेश्वर उन का मुक्तिदाता था। पर उन्हों ने अपने मुंह ३६ से उस्से लल्लोपत्तो किई और अपनी जीभ से उस्से झूठ बोले। और उन का मन ३७

उन के साथ स्थिर न रहा और वे उस ३८ की बाचा पर बिश्वास न लाये । और वह दयालु अधर्म्म को क्षमा करता है और सर्व्वथा नाश नहीं करता है और उस ने अपने क्रोध को बारम्बार रोका और अपने सारे क्रोध को न भड़काया । ३९ और उस ने स्मरण किया कि वे मांस हैं और चलनेहारी पवन जो फेर न आवेगी ॥

४० वे बन में उस्से क्या ही बेर बेर दंगा करते हैं और अरण्य में उसे उदास ४१ करते हैं । और उन्हों ने फिर सर्व्वशक्तिमान को परखा और इसराएल के पवित्रमय पर अनादर का चिन्ह लगाया । ४२ उन्हों ने उस के हाथ को स्मरण न किया उस दिन को जब उस ने उन्हें ४३ सतानेहारे से छुड़ाया । जिस ने मिस्र में अपने चिन्ह और जुअन के चौगान में ४४ अपने आश्चर्य्य प्रगट किये । और उन की नदियों को लोहू कर डाला और वे ४५ अपनी धाराओं से पी नहीं सक्ते । वह उन में मक्खियां भेजता है और वे उन्हें खा लेती हैं और मेंडुक और वे उन्हें ४६ नष्ट करते हैं । और उस ने उन के फल कीड़े को और उन का परिश्रम टिड्डी ४७ को दिया । वह उन के दाख को ओलों से और उन के गूलरों को पाले से ४८ मारता है । और उस ने उन के ढोर ओलों को और उन के झुंड बिजुलियों ४९ को सौंपे । वह उन पर अपने कोप की ज्वलन क्रोध और जलजलाहट और व्याकुलता अर्थात् आपत्ति के दूतों की ५० जथा भेजता है । वह अपने क्रोध के लिये मार्ग सिद्ध करता है उस ने उन के प्राण को मृत्यु से नहीं बचाया और ५१ उन के प्राण मरी को सौंपे । और मिस्र में हर एक पहिलौठे को हाम के तंबुओं में उन के बलों के पहिले फल को मारा । और अपने लोगों को भेड़ों ५२ की नाईं चलाया और झुंड की नाईं बन में उन की अगुआई किई । और ५३ कुशल के संग उन की अगुआई किई ऐसा कि वे न डरे और समुद्र ने उन के बैरियों को ढांप लिया । और उन्हें ५४ अपने पवित्र सिवाने लों इस पहाड़ पर जिसे उस के दहिने हाथ ने मोल लिया पहुंचाया । और उन के आगे से जाति- ५५ गणों को दूर किया और रस्सी के साथ उन जातिगणों को अधिकार ठहराया और इसराएल की गोष्ठियों को उन के तंबुओं में बसाया ॥

तिस पर भी उन्हों ने ईश्वर अति ५६ महान को परखा और उस्से फिर गये और उस की साक्षियों को पालन न किया । और फिर गये और अपने पितरों ५७ की नाईं छल किया वे बरे हुए धनुष की नाईं फिर गये । और अपने ऊंचे ५८ स्थानों के कारण से उस को खिजाया और अपनी खोदी हुई मूर्त्तों के कारण से उसे ज्वलित किया ॥

ईश्वर ने सुना और कोपित हुआ और ५९ इसराएल से अति घिन किया । और ६० सैला के निवास को उस तंबू को जिसे उस ने मनुष्यों के मध्य में खड़ा किया था त्यागा । और अपने बल को बंधुआई ६१ में दिया और अपने बिभव को बैरी के हाथ में । और अपने लोगों को तलवार ६२ को सौंपा और अपने अधिकार पर क्रुद्ध हुआ । आग ने उस के तरुणों को ६३ भस्म किया और उस की कुंआरियों के बिवाह के गीत गाये न गये । उस के ६४ याजक तलवार से मारे गये और उन की रांड़ें बिलाप नहीं करतीं ॥

तब प्रभु उस की नाईं जो नींद से ६५ चौंके जागा उस महाबीर के समान जो मदिरा के अमल से ललकारता

६६ है। और उस ने अपने बैरियों को मारके पीछे हटा दिया सदा की लज्जा उन्हें दिई॥
६७ और यूसुफ के तंबू से घिन किई और
६८ इफ़रायम की गोष्ठी को न चुना। और यहूदाह की गोष्ठी को सैहून के पहाड़ को जिसे उस ने प्यार किया चुन लिया।
६९ और ऊंचे पहाड़ों के समान पृथिवी की नाईं जिस की नेव उस ने सदा के लिये डाली अपने धर्म्मधाम को बनाया।
७० और दाऊद को अपना सेवक होने के लिये चुन लिया और उसे झुंडों के
७१ भेड़शालों में से निकाल लाया। उस ने बच्चेवाली भेड़ियों के पीछे से उसे ले लिया जिसतें उस के लोग यअकूब को और उस के अधिकार इसराएल को
७२ चरावे। सो उस ने अपने मन की खराई के समान उन्हें चराया है और अपने हाथों की गुणता से उन की अगुआई किया करेगा॥

उनासीवां गीत।

आसफ का गीत॥

१ हे ईश्वर अन्यदेशी तेरे अधिकार में आये हैं उन्हों ने तेरे पवित्र मन्दिर को अशुद्ध किया यरूसलम को ढेर ढेर
२ कर दिया है। उन्हों ने तेरे सेवकों की लोथों को आकाश के पंछियों का और तेरे साधुन का मांस पृथिवी के बनपशुन
३ का आहार ठहराया है। उन्हों ने उन का लोहू यरूसलम की चारों ओर पानी की नाईं बहाया है और कोई
४ गाड़नेहारा नहीं है। हम अपने परोसियों के लिये निन्दा अपने आसपासियों के लिये ठट्ठा और उपहास हो गये हैं॥
५ हे परमेश्वर तू कब लों सदा रिसियाता रहेगा और तेरा ज्वलन आग की नाईं
६ बरा करेगा। अपना कोप उन जातिगणों पर उंडेल जिन्हों ने तुझे नहीं जाना और उन राज्यों पर जिन्हों ने तेरा नाम लेके नहीं पुकारा है। क्योंकि उन्हों
७ ने यअकूब को निगल लिया और उस के निवास को उजाड़ कर दिया है॥
८ अगिली पीढ़ियों के पापों का स्मरण हमारे विषय न कर शीघ्र कर तेरी दया हमारे आगे आयें क्योंकि हम बहुत दीन हो गये। हे हमारे मुक्तिदाता
९ ईश्वर अपने नाम की महिमा के लिये हमारी सहाय कर और अपने नाम के लिये हमें छुड़ा और हमारे पापों को
१० क्षमा कर। अन्यदेशी किस लिये कहें कि उन का ईश्वर कहां है अन्यदेशियों के मध्य हमारी दृष्टि के आगे तेरे दासों के उस लोहू का पलटा जो बहाया गया है प्रगट हो॥
११ बंधुए का कराहना तेरे आगे पहुंचे अपनी भुजा की महिमा के समान मृत्यु के बालकों को जीता रहने दे।
१२ और जिस रीति कि उन्हों ने हे प्रभु तेरी निन्दा किई तू उन की इस निन्दा का पलटा शतगुण हमारे परोसियों की
१३ गोद में रख दे। और हम तेरे लोग और तेरी चराई की भेड़ सदा तेरा धन्य मानेंगे पीढ़ी से पीढ़ी लों तेरी स्तुति वर्णन करेंगे॥

अस्सीवां गीत

प्रधान बजानिये के लिये सोसनों के विषय। साक्षी। आसफ का गीत॥

१ हे इसराएल के चरवाहे जो झुंड की नाईं यूसुफ की अगुआई करता है कान धर हे करोबीम पर के बैठवैये विभूषित
२ हो। इफ़रायम और बिनयमीन और मुनस्सी के आगे अपने बल को
३ जगा और हमारे बचाव के लिये आ। हे ईश्वर हमें फिर स्थिर कर और अपने मुख को हम पर चमका और हम बच जायेंगे॥
४ हे परमेश्वर ईश्वर सेनाओं के ईश्वर

तू ने कब से अपने लोगों की प्रार्थना
५ पर धूआं उठाया है। तू ने उन्हें आंसुओं
की रोटी खिलाई और उन्हें मटके भर
६ भर आंसू पिलाये हैं। तू हमें हमारे
परोसियों के लिये झगड़े का कारण
ठहराता है और हमारे बैरी अपने को
७ मुदित करते हैं। हे ईश्वर सेनाओं के
ईश्वर हमें फिर स्थिर कर और अपना
मुख चमका और हम बच जायेंगे॥

८ तू एक लता मिस्र से निकालता
अन्यदेशियों को दूर करता और उसे
९ लगाता है। तू ने उस के आगे ठिकाना
सिद्ध किया और उस ने जड़ पकड़ लिई
१० और पृथिवी को भर दिया। पहाड़ उस
की छाया से ढंप गये और उस की डा-
११ लियों से सर्वशक्तिमान के देवदारु। वह
अपनी डालियां समुद्र लों पहुंचाता है
१२ और अपनी टहनियां नदी लों। तू ने
उस के बाड़ों को किस कारण तोड़
डाला कि सारे पथिक उसे खसोटते
१३ हैं। बनैला सूअर उसे उजाड़ता है और
बनपशु उसे चर जाता है॥

१४ हे ईश्वर सेनाओं के ईश्वर दया
करके फिर आ स्वर्ग से दृष्टि कर और
१५ देख और इस लता पर दृष्टि कर। और
जो तेरे दहिने हाथ ने लगाया है उसे
स्थिर कर और उस बेटे पर जिसे तू ने
१६ अपने लिये पोसा है रक्षा कर। वह
आग से जलाया गया काटा गया वे
तेरे मुख की दपट से नाश होते हैं।
१७ तेरा हाथ अपने दहिने हाथ के मनुष्य
पर हो उस मनुष्य के पुत्र पर जिसे तू
ने अपने लिये पोसा है॥

१८ तो हम तुझ से न फिरेंगे तू हमें
जिलावेगा और हम तेरा ही नाम पुका-
१९ रेंगे। हे परमेश्वर ईश्वर सेनाओं के
ईश्वर हमें फिर स्थिर कर अपना मुख
चमका और हम बच जायेंगे॥

एकासीवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये। गित्तीत पर।
आसफ का गीत॥

ईश्वर के लिये जो हमारा बल है १
पुकारके गाओ यअकूब के ईश्वर की
ओर आनन्द से ललकारो। गीत २
उठाओ और तबला बजाओ मनोहर
बीणा सितार समेत। पर्बमास में पूर्ण- ३
मासी में और हमारे पर्ब के दिन में
तुरही फूंको॥

क्योंकि यह इसराएल के लिये आज्ञा ४
और यअकूब के ईश्वर का अधिकार है।
उस ने उसे यूसुफ में साक्षी के लिये ५
ठहराया जब वह मिस्र की भूमि पर से
होके निकला जहां मैं ने एक ऐसी भाषा
सुनी जो नहीं जानता था॥

मैं ने उस के कांधे पर से बोझ ६
उतारा उस के हाथ टोकरी से निर्बंध
होते हैं। तू ने विपत्ति में पुकारा और ७
मैं ने तुझे छुड़ाया है मैं गर्ज्जन के ओट
में होके तुझे उत्तर दूंगा मरीब: के पानी
पर तुझे परखूंगा। सिलाह। हे मेरे ८
लोग सुन और मैं तेरे बिरुद्ध साक्षी दूंगा
हे इसराएल मैं बोलूंगा यदि तू मेरी
सुनेगा। तेरे मध्य और कोई सर्वशक्ति- ९
मान न हो और तू अन्य सर्वशक्तिमान
की पूजा न कर। मैं ही परमेश्वर तेरा १०
ईश्वर हूं जो तुझे मिस्र देश से बाहर
लाया अपना मुंह फैला और मैं उसे भर
दूंगा। पर मेरे लोग मेरे शब्द के सुन्न- ११
हारे न हुए और इसराएल ने मुझे न
माना। और मैं ने उन्हें उन के मन की १२
कठोरता पर छोड़ दिया वे अपने ही
मतों पर चलते हैं॥

हाय कि मेरे लोग मेरी सुनें और १३
इसराएल मेरे मार्गों पर चलें। तो मैं १४
उन के बैरियों को झुकाऊंगा और
उन के सतानेहारों पर अपना हाथ

१५ फेरूंगा। परमेश्वर के बैर रखनेहारे उस्से दब जायेंगे और उन का समय सदा
१६ लों रहेगा। और वह उसे अच्छे से अच्छा गोहूं खिलायेगा और पत्थर के मधु से मैं तुझे तृप्त करूंगा॥

बयासीवां गीत।

आसफ का गीत॥

१ ईश्वर सर्वशक्तिमान की मंडली में खड़ा होता है वह देवों के मध्य में
२ बिचार करेगा। तुम कब लों अधर्म्म से बिचार करोगे और दुष्टों का पक्ष
३ करोगे। सिलाह। दुर्बल और अनाथ का बिचार करो दुःखी और कंगाल का
४ न्याय करो। दुर्बल और कंगाल को छुड़ाओ दुष्टों के हाथ से उसे बचाओ॥
५ वे नहीं जानते और न समझेंगे वे अंधियारे में चला करेंगे पृथिवी की
६ सारी नेवें हिल जायेंगी। मैं ने तो कहा कि तुम देव हो और तुम सब
७ कोई अति महान के पुत्र हो। पर निश्चय तुम मनुष्य के समान मरोगे और राजपुत्रों में से एक की नाईं गिरोगे॥
८ हे ईश्वर उठ पृथिवी का बिचार कर क्योंकि तू ही सारे जातिगणों को अधिकार में लेगा॥

तिरासीवां गीत।

आसफ का गान और गीत॥

१ हे ईश्वर चुप मत हो चुपका मत रह और चैन न ले हे सर्वशक्तिमान॥
२ क्योंकि देख तेरे बैरी हुल्लर करते हैं और तुझ से डाह रखनेहारे सिर उठाते
३ हैं। वे तेरे लोगों पर छल का परामर्श करते हैं और तेरे छिपे हुओं के बिरुद्ध
४ चिन्ता करते हैं। उन्हों ने कहा है कि आओ और हम उन्हें काट डालें जिसतें वे एक जाति न रहें और इसराएल का
५ नाम फिर स्मरण न हो। क्योंकि उन्हों ने आपुस में मन से परामर्श किया है वे तेरे बिरुद्ध नियम बांधते हैं। अर्थात्
६ अदूम के तंबू और इसमअएली मोअब
७ और हाजरी। जिबाल और अमून और अमालीक फिलिस्त सूर के बासी
८ समेत। असूर भी उन के संग मिल गया वे लूत के सन्तान की बांह हो गये। सिलाह॥
९ तू उन से ऐसा कर जैसा मिदियान से जैसा सीसरा से जैसा याबीन से कैसून
१० की तराई में तू ने किया। वे एनदोर में नाश हुए पृथिवी के लिये खाद हो
११ गये। उन्हें हां उन के कुलीनों को गुराब की नाईं और जिअब की नाईं कर और जिबह की नाईं और जिलमनअ की नाईं उन के समस्त अध्यक्षों को।
१२ जिन्हों ने कहा है कि हम अपने लिये ईश्वर के भवनों को अधिकार में लें।
१३ हे मेरे ईश्वर उन्हें बवंडर की नाईं कर
१४ भूसे की नाईं पवन के सन्मुख। जैसे आग बन को भस्म करती है और जैसे
१५ लवर पहाड़ों को दहन करता है। वैसा ही तू अपनी आंधी से उन का पीछा करेगा और अपनी झंकार से उन्हें डरा-
१६ वेगा। उन का मुंह लाज से भर दे तब हे परमेश्वर लोग तेरे नाम का पीछा
१७ करेंगे। वे सदा लों लज्जित और भय-मान रहेंगे और लज्जित और नाश होंगे।
१८ और लोग जानेंगे कि तू ही जिस का नाम परमेश्वर है अकेला सारी पृथिवी पर महान है॥

चौरासीवां गीत।

प्रधान बजानिये के लिये। गित्तीत पर। कोरह के पुत्रों के लिये गीत॥

१ हे परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर तेरे
२ तंबू कैसे मनभावने हैं। मेरा प्राण परमेश्वर के आंगनों के लिये अभिलाषी और मूर्छित भी है मेरा मन और मेरा

तन जीवते सर्वशक्तिमान के लिये आनन्द
३ का शब्द करता है। हां गौरैये ने घर पाया और सुपाबिना ने अपने लिये खोंथा जहां वह अपने गेदे रखती है अर्थात् तेरी बेदियों को हे परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर मेरे राजा और मेरे ईश्वर॥

४ तेरे घर के निवासी क्या ही धन्य हैं वे सदा तेरी स्तुति किया करेंगे।
५ सिलाह। क्या ही धन्य वह मनुष्य जिस का बल तुझ से है जिस के मन में मार्ग
६ हैं। वे रोने की तराई में चलते चलते उसे कुण्ड ठहराते हैं हां मार्गदर्शक
७ आशीषों से ढंप जाता है। वे बल पर बल बढ़ाते हुए चला करेंगे ईश्वर के आगे सैहून में प्रगट होंगे॥

८ हे परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर मेरी प्रार्थना सुन हे यअकूब के ईश्वर कान
९ धर। सिलाह। हे हमारी ढाल देख हे ईश्वर और अपने अभिषिक्त के मुंह पर
१० दृष्टि कर। क्योंकि एक दिन तेरे आंगनों में सहस्र से भला है मैं ने अपने ईश्वर के घर की डेवढ़ी पर खड़ा रहना चुन लिया है उस्से अधिक कि दुष्टता के
११ तंबुओं में रहूं। क्योंकि परमेश्वर ईश्वर सूर्य्य और ढाल है परमेश्वर अनुग्रह और बिभव देगा जो खराई से चलते हैं वह
१२ उन से भलाई न रख छोड़ेगा। हे परमेश्वर सेनाओं के प्रभु क्या ही धन्य वह मनुष्य जो तुझ पर भरोसा रखता है॥

पचासीवां गीत।

प्रधान बजानिये के लिये। कोरह के पुत्रों का गीत॥

१ हे परमेश्वर तू ने अपनी भूमि पर प्रसन्नता प्रगट किई तू यअकूब की
२ बंधुआई की दशा में फिर आया। तू ने अपने लोगों के अधर्म्म को क्षमा किया उन के सारे पाप को ढांप लिया।
३ सिलाह। तू ने अपने सारे कोप को उठा लिया अपने क्रोध की ज्वलन से फिर गया॥

४ हे हमारे मुक्तिदाता ईश्वर हमारे पास फिर आ और अपनी रिस को हम
५ पर से रोक। क्या तू सदा लों हम से रिसियावेगा पीढ़ी से पीढ़ी लों अपने
६ क्रोध को बढ़ाता रहेगा। क्या तू न फिरेगा और हमें जिलावेगा और क्या
७ तेरे लोग तुझ से आनन्द न होंगे। हे परमेश्वर अपनी दया हमें दिखला और निश्चय तू अपनी मुक्ति हमें देगा॥

८ मैं सुनूंगा कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर क्या कहेगा क्योंकि वह अपने लोगों के लिये और अपने साधुन के लिये कुशल का बचन कहेगा पर वे
९ मूर्खता की ओर न फिरें। केवल उस के डरवैयों के पास उस की मुक्ति है जिसतें बिभव हमारी भूमि में बास करे।
१० दया और सच्चाई मिल गई हैं धर्म्म और
११ कुशल चूमा ले चुके हैं। सच्चाई पृथिवी से उगती है और धर्म्म स्वर्ग से झांकता
१२ है। परमेश्वर भलाई भी देगा और
१३ हमारी भूमि अपना फल देगी। धर्म्म उस के आगे आगे चला करेगा और हमें उस के डगों के मार्ग पर रक्खेगा॥

छियासीवां गीत।

दाऊद की प्रार्थना॥

१ हे परमेश्वर अपना कान धर और मेरी सुन क्योंकि मैं दुःखी और कंगाल
२ हूं। मेरे प्राण की रक्षा कर क्योंकि मैं तेरा अनुगृहीत हूं हे तू मेरे ईश्वर अपने दास को बचा जो तुझ पर भरोसा
३ रखता है। हे प्रभु मुझ पर दया कर क्योंकि मैं प्रतिदिन तुझ को पुकारता
४ ही रहूंगा। अपने दास के प्राण को आनन्दित कर क्योंकि हे प्रभु मैं अपने
५ प्राण को तेरी ओर उठाता हूं। क्योंकि तू ही हे प्रभु भला और क्षमावान है

और अपने सारे पुकारवैयों पर दया में
६ बहुत। हे परमेश्वर मेरी प्रार्थना पर
कान धर और मेरी बिनतियों के शब्द
७ पर ध्यान रख। मैं अपनी बिपत्ति के
दिन तुझे पुकारूंगा क्योंकि तू मेरी
सुनेगा॥

८ हे प्रभु देवों में तेरे तुल्य कोई नहीं
९ और तेरे से कार्य्य कहीं नहीं। सारे
जातिगण जिन्हें तू ने सिरजा है आवेंगे
और तेरे आगे दण्डवत करेंगे हे प्रभु
१० और तेरे नाम की बड़ाई करेंगे। क्योंकि
तू ही महान और आश्चर्य्यकर्त्ता है तू
११ ही अकेला ईश्वर है। हे परमेश्वर
अपना मार्ग मुझे दिखला मैं तेरी सच्चाई
में चलूंगा मेरे मन को एकाग्र कर
१२ जिसतें तेरे नाम से डरूं। हे प्रभु मेरे
ईश्वर मैं अपने सारे मन से तेरी स्तुति
करूंगा और सदा लों तेरे नाम की
१३ बड़ाई किया करूंगा। क्योंकि तेरी
दया मुझ पर बड़ी थी और तू ने मेरे
प्राण को अति नीचे पाताल से छुड़ाया है॥

१४ हे ईश्वर अहंकारी मेरे बिरुद्ध उठे
हैं और अंधेरियों की मंडली मेरे प्राण
को गाहक हुई और उन्हों ने तुझे अपने
१५ आगे नहीं रक्खा। और तू ही हे प्रभु
सर्वशक्तिमान दयालु और कृपालु धैर्य्य-
वान और दया और सच्चाई में परिपूर्ण
१६ है। मेरी ओर फिर और मुझ पर दया
कर अपने दास को अपनी सामर्थ्य दे
और अपनी दासी के पुत्र को छुटकारा
१७ दे। मेरे संग भलाई के लिये चिन्ह कर
तो मेरे बैरी देखेंगे और लज्जित होंगे
क्योंकि हे परमेश्वर तू ही ने मेरी सहाय
किई और मुझे शान्ति दिई है॥

सतासीवां गीत।

कोरह के पुत्रों का गीत और गान॥

१ उस की नेव पवित्र पर्वतों पर है।
२ परमेश्वर सैहून के फाटकों को यअकूब
के सारे निवासों से अधिक प्यार करता
३ है। हे ईश्वर के नगर तुझ में बिभव-
मय बातें कही गईं। सिलाह॥

४ मैं अपने जाननेहारों के साथ रहब
और बाबुल का चर्चा करूंगा देखो
फिलिस्त और सूर कूश समेत इन में से
हर एक के बिषय कहा जायेगा कि
५ यह जातिगण वहां उत्पन्न हुआ। और
सैहून के बिषय कहा जायेगा कि यह
जन और वह जन उस में उत्पन्न हुआ
और अत्यन्त महान आप उसे स्थिर
६ करेगा। जब जातिगण लिखे जायेंगे
तब परमेश्वर गिनेगा कि यह वहां
७ उत्पन्न हुआ। सिलाह। और जैसे गवैये
वैसे बजवैये कहते होंगे कि मेरे सारे
सोते तुझ में हैं॥

अठासीवां गीत।

कोरह के पुत्रों का गीत और गान।
प्रधान बजनिये के लिये। पीड़ा-
दायक रोग के बिषय। हैमान इज़-
राही का उपदेश देनेहारा गीत॥

१ हे परमेश्वर मेरी मुक्ति के ईश्वर मैं
ने दिन रात तेरे आगे दोहाई दिई है।
२ मेरी प्रार्थना तेरे आगे पहुंचे अपना
कान मेरे रोने पर रख॥

३ क्योंकि मेरा प्राण बिपत्तों से भरा
है और मेरा जीवन पाताल के लग आ
४ रहा है। मैं गड़हे में गिरनेहारों के
संग गिना गया निर्बल मनुष्य की नाईं
५ हो गया। मृतकों में निर्बन्ध घायलों
की नाईं जो समाधि में लेटते हैं जिन्हें
तू फिर स्मरण नहीं करता और वे ही
६ तेरे हाथ से कट गये हैं। तू ने मुझे
नीचे स्थानों के गड़हे में अंधियारे स्थानों
७ में गहिरावों में रक्खा है। तेरे कोप
ने मुझ पर दबाव डाला और तू ने अपनी
सारी लहरों से मुझे दुःख दिया है।
८ सिलाह। तू ने मेरे जान पहिचानों को

मुझ से दूर रक्खा है तू ने मुझे उन के लिये घिनित किया मैं बन्दीगृह में हूं ९ और न निकलूंगा। मेरी आंख दुःख के मारे धुंधला गई है परमेश्वर मैं ने प्रतिदिन तुझे पुकारा है अपने हाथ तेरी ओर फैलाये हैं॥

१० क्या तू मृतकों के लिये आश्चर्य्य-कर्म्म करेगा क्या मृतक उठेंगे और तेरी ११ स्तुति करेंगे। सिलाह। क्या तेरी दया समाधि में और तेरी सच्चाई बिनाश में १२ बर्णन किई जायेगी। क्या तेरे आश्चर्य्य-कर्म्म अंधियारे में जाने जायेंगे और तेरा १३ धर्म्म भुलावा के देश में। और हे परमेश्वर मैं ने तेरी दोहाई दिई है और बिहान को मेरी प्रार्थना तेरे साम्हने पहुंचेगी॥

१४ हे परमेश्वर तू किस कारण मेरे प्राण को त्यागेगा अपना मुंह मुझ से छिपा-१५ वेगा। मैं लड़काई से दुःखी और मरने पर हूं मैं ने तेरे भयों को सहा है मैं १६ घबरा गया। तेरे कोपानल मुझ पर बीत गये तेरे भयों ने मुझे काट डाला १७ है। उन्हों ने पानी की नाईं मुझे दिन भर घेरे में रक्खा अकस्मात् मुझे चारों १८ ओर से घेर लिया है। तू ने प्रिय और मित्र को मुझ से दूर कर दिया है मेरे चीन्ह पहिचान अंधियारे स्थान हैं॥

नवासीवां गीत

ऐतान इजराही का उपदेश देनेहारा गीत॥

१ मैं सदा लों परमेश्वर की दया को गाया करूंगा पीढ़ी से पीढ़ी लों अपने मुंह से तेरी सच्चाई का संदेश देता २ रहूंगा। क्योंकि मैं ने कहा है कि दया का घर सदा लों बनाया जायेगा तू अपनी सच्चाई स्वर्गों ही पर स्थिर ३ रक्खेगा। मैं ने अपने चुने हुए से बाचा बांधी अपने दास दाऊद से किरिया खाई है। कि सदा लों तेरे बंश को ४ स्थिर रक्खूंगा और पीढ़ी से पीढ़ी लों तेरा सिंहासन बनाये रक्खूंगा। सिलाह॥

५ और स्वर्ग हे परमेश्वर तेरे आश्चर्य्य-कर्म्मों का स्वीकार करेंगे हां तेरी सच्चाई सिद्धों की मंडली में स्वीकार ६ किई जायेगी। क्योंकि स्वर्ग में कौन परमेश्वर के तुल्य हो सक्ता और सर्व-शक्तिमान के पुत्रों में कौन परमेश्वर ७ के समान होगा। उस सर्वशक्तिमान के समान जो अपने सिद्धों की सभा में अत्यन्त भयंकर है और उन सब से जो उस की चारों ओर हैं अति प्रतिष्ठा के ८ योग्य है। हे परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर हे परमेश्वर कौन तेरे तुल्य बलवान है ९ और तेरी सच्चाई तेरे आसपास है। तू ही समुद्र की प्रचण्डता पर प्रभुता करता है उस की लहरें जब उठती हैं तब तू १० ही उन्हें स्थिर कर देता है। तू ही ने रहब को घायल के समान कुचल डाला अपनी बलवन्त भुजा से अपने बैरियों ११ को छिन्न भिन्न किया। स्वर्ग तेरा है पृथिवी भी तेरी भूमंडल और उस की १२ भरपूरी को तू ही ने नेव डाली। उत्तर और दक्षिण को तू ही ने सिरजा तबूर और हरमून तेरे नाम से आनन्द करते १३ हैं। तेरी बाहु बल सहित है तेरा हाथ शक्तिमान है तेरा दहिना हाथ ऊंचा। १४ धर्म्म और बिचार तेरे सिंहासन का स्थान है दया और सत्य तेरे मुंह के आगे चला करेंगे॥

१५ वह जातिगण बड़ा ही धन्य है जो मंगल के शब्द को जानता है हे पर-मेश्वर वह तेरे मुंह की ज्योति में चला १६ करेगा। वह तेरे नाम से सारे दिन आनन्द रहेगा और तेरे धर्म्म से ऊंचा १७ होगा। क्योंकि उन के बल का बिभव तू ही है और तू अपनी कृपा से हमारे

१८ सींग को ऊंचा करेगा। क्योंकि हमारी ढाल परमेश्वर की ओर हमारा राजा इसराएल के धर्म्ममय का है॥

१९. तब तू ने दर्शन में अपने साधुन से बार्त्ता किई और बोला कि मैं ने एक सामर्थी पर सहायता रक्खी है जातिगण
२० में से एक चुने हुए को बढ़ाया है। मैं ने दाऊद अपने दास को पाया अपने पवित्र तेल से उसे अभिषिक्त किया
२१ है। जिस के साथ मेरा हाथ उपस्थित रहेगा मेरी भुजा भी उसे बल देगी।
२२ बैरी उसे दुःख न पहुंचावेगा और दुष्टता का सन्तान उसे क्लेश न देगा।
२३ और मैं उस के सन्मुख उस के दुःखदायकों को कुचल डालूंगा और उस के
२४ बैरियों को मारूंगा। और मेरी सच्चाई और मेरी दया उस के संग रहेगी और मेरे नाम से उस का सींग ऊंचा होगा।
२५ और मैं उस का हाथ समुद्र पर रक्खूंगा और उस का दहिना हाथ नदियों पर।
२६ वह मुझे पुकारेगा कि मेरा पिता तू ही है मेरा सर्वशक्तिमान और मेरी मुक्ति
२७ की चटान। मैं भी उसे अपना पहिलौठा ठहराऊंगा पृथिवी के राजाओं से
२८ महान। मैं सदा अपनी दया उस के लिये रक्खूंगा और मेरी बाचा उस के
२९ साथ दृढ़ है। और मैं उस के वंश को सदा लों और उस के सिंहासन को स्वर्ग के दिनों के समान स्थिर करूंगा॥

३० यदि उस के बालक मेरी व्यवस्था को त्याग देंगे और मेरे न्यायों पर न
३१ चलेंगे। यदि वे मेरी बिधि को अपवित्र करेंगे और मेरी आज्ञाओं को पालन न
३२ करेंगे। तो मैं छड़ी के साथ उन के पापों का और कोड़ों से उन के अधर्म्म
३३ का दण्ड देऊंगा। तथापि अपनी दया उस्से दूर न करूंगा और अपनी सच्चाई
३४ में झूठा न होऊंगा। मैं अपनी बाचा को भंग न करूंगा और जो मेरे मुंह से निकला उसे न पलटूंगा। मैं ने अपनी ३५ पवित्रता के साथ एक बात की किरिया खाई है मैं दाऊद से झूठ न बोलूंगा। उस का वंश सदा लों और उस का ३६ सिंहासन मेरे आगे सूर्य्य की नाईं बना रहेगा। जिस रीति कि चन्द्रमा सदा ३७ लों स्थिर रहेगा और स्वर्ग पर वह साक्षी सच्चा है। सिलाह॥

पर तू ने तो दूर और छिन किया ३८ है तू तो अपने अभिषिक्त पर क्रुद्ध हुआ। तू ने अपने दास से नियम को ३९ तोड़ा भूमि पर उस का मुकुट अपवित्र कर दिया है। तू ने उस के सारे ४० बाड़ों को तोड़के गिरा दिया उस के गढ़ों को बिनाश कर दिया है। सारे ४१ पथिक उसे लूटते हैं वह अपने परोसियों के निकट निन्दा हुआ। तू ने उस के ४२ शत्रुन का दहिना हाथ ऊंचा किया उस के सारे बैरियों को मगन किया है। तू ४३ उस की तलवार की धार को भी मोड़ देता है और उसे युद्ध में ठहरने नहीं देता। तू ने उसे उस के बिभव से दूर ४४ कर दिया और उस के सिंहासन को भूमि पर गिरा दिया है। तू ने उस की ४५ तरुणाई के दिनों को अल्प किया तू ने उसे लाज से ढांपा है। सिलाह॥

हे परमेश्वर तू कब लों सदा के ४६ लिये आप को छिपायेगा कब लों तेरा क्रोध आग की नाईं धधकता रहेगा। चेत कर कि मैं कितना जीवन रखता ४७ हूं तू ने किस लिये सारे मनुष्य के सन्तानों को व्यर्थ उत्पन्न किया। कौन ४८ मनुष्य जीता रहेगा और मृत्यु को न देखेगा और अपने प्राण को समाधि के हाथ से बचावेगा। सिलाह। हे प्रभु ४९ तेरी अगिली दया जिन की तू ने दाऊद से अपनी सच्चाई में किरिया खाई कहां

५० हैं । हे प्रभु अपने दासों की निन्दा को स्मरण कर और यह कि मैं अपनी गोद ५१ में बहुत जातिगणों को लिये हूं । मैं जिसे हे परमेश्वर तेरे उन बैरियों ने तुच्छ समझा है जिन्हों ने तेरे अभिषिक्त के पांव के चिन्ह की निन्दा किई है । ५२ परमेश्वर सदा लों धन्य हो । आमीन और आमीन ॥

नब्बेवां गीत ।

ईश्वर के जन मूसा की प्रार्थना ॥

१ हे प्रभु पीढ़ी से पीढ़ी लों हमारा २ शरणस्थान तू ही रहा है । उस्से पहिले कि पहाड़ उत्पन्न हुए और तू ने पृथिवी और जगत को सिरजा और सनातन से सनातन लों तू ही सर्वशक्तिमान है । ३ तू मनुष्य को धूर लों फिर पहुंचाता है और कहता है कि हे मनुष्य के सन्तानो ४ फिरो । क्योंकि तेरी दृष्टि में सहस्र बरस कल की नाईं हैं जो बीत गया और ५ रात का एक पहर । तू उन्हें बहा ले जाता है वे मानो नींद हैं बिहान को वे घास की नाईं जाते रहते हैं । ६ बिहान को वह फूलता तब जाता रहता है क्योंकि संध्या को वह काटा जाता ७ और सूख जाता है । क्योंकि हम तेरे क्रोध से नाश हो गये और तेरे कोप से ८ व्याकुल हो गये । तू ने हमारे अधर्म्मों को अपने आगे रक्खा है हमारे गुप्त पाप को अपने रूप के प्रकाश में । ९ क्योंकि हमारे सारे दिन तेरे क्रोध में बीत गये हम अपने बरसों को ध्यान १० की नाईं बिताते हैं । हमारे जीवन के दिन उन में सत्तर बरस हैं और यदि बल से अस्सी बरस हों तथापि उन का अहंकार क्लेश और दुःख है क्योंकि हम शीघ्र हंकाये जाते और उड़ जाते हैं । ११ तेरे क्रोध के पराक्रम का और तेरे डर के समान तेरे कोप का कौन जानकार है। १२ हमें ऐसा ज्ञान दे जिस्तें अपने दिनों को गिनें और हम बुद्धिमान मन भेंट के लिये लायेंगे ॥

१३ हे परमेश्वर हमारी ओर फिर कब लों हमें छोड़े रहेगा और अपने सेवकों के विषय पछता । १४ बिहान को हमें अपनी दया से तृप्त कर तो हम अपने जीवन भर आनन्द करेंगे और मगन रहेंगे । १५ उन दिनों के समान जिन में तू ने हमें दुःख में रक्खा और उन बरसों के समान जिन में हम ने बुराई देखी है हमें आनन्दित कर । १६ तेरा कार्य्य तेरे दासों को प्रगट हो और तेरा विभव उन के बेटों पर । १७ और प्रभु हमारे ईश्वर की सुन्दरता हम पर हो और हमारे हाथों के कार्य्य हम पर दृढ़ कर हां हमारे हाथों का कार्य्य दृढ़ कर ॥

एकानवेवां गीत ।

१ अति महान के ओझल में बैठनेहारा सर्वशक्तिमान की छाया के नीचे रहा करेगा । २ मैं परमेश्वर से कहूंगा कि मेरा शरणस्थान और मेरा गढ़ मेरा ईश्वर तू ही है जिस पर मैं भरोसा रक्खूंगा । ३ क्योंकि वह तुझे व्याधा के जाल से और नाशक मरी से मुक्ति देगा । ४ वह अपने पर से तुझे ढांप लेगा और उस के पंखों के नीचे तू शरण पायेगा उस की सच्चाई फरी और ढाल है । ५ तू रात के भय से न डरेगा न उस बाण से जो दिन को उड़ता है । ६ न उस मरी से जो अंधियारे में चलती है न उस बिनाश से जो मध्यान्ह में उजाड़ करता है । ७ तेरे लग सहस्र गिरेंगे और तेरे दहिने हाथ सहस्रों के सहस्र पर यह बिपत्ति तुझ लों न पहुंचेगी । ८ तू केवल अपनी आंखों से दृष्टि करेगा और दुष्टों के पलटे को देखेगा ॥

९ क्योंकि हे परमेश्वर तू ही मेरा

शरणस्थान है तू ने अति महान को अपना शरण ठहराया है। १० बिपत्ति तुझ लों आने न पायेगी और मरी तेरे निवास के पास न आवेगी। ११ क्योंकि वह तेरे लिये अपने दूतों को आज्ञा करेगा जिसतें तेरे सारे मार्गों में तेरी रक्षा करें। १२ वे अपने हाथों पर तुझे उठा लेंगे जिसतें न हो कि तू अपना पांव पत्थर पर पटके। १३ तू सिंह और सांप को लताड़ेगा सिंह के बच्चे और अजगर को कुचलेगा॥

१४ क्योंकि वह मुझ पर मोहित हुआ और मैं उसे छुड़ाऊंगा उसे ऊंचे पर रक्खूंगा क्योंकि उस ने मेरे नाम को जाना है। १५ वह मुझे पुकारेगा और मैं उस की सुनूंगा बिपत्ति में मैं उस के संग हूं मैं उसे छुड़ाऊंगा और उसे प्रतिष्ठा दूंगा। १६ मैं उसे बय की बृद्धि से सन्तुष्ट करूंगा और अपनी मुक्ति उसे दिखाऊंगा॥

बानबेवां गीत।

बिश्राम दिन के लिये गीत और गान॥

१ परमेश्वर का धन्य मानना और हे अति महान तेरे नाम की स्तुति में गान करना भला है। २ कि बिहान को तेरी दया का और रातों को तेरी सच्चाई का बर्णन करें। ३ दस तार का बाजा और बीण बरबत के संग सोच और बिचार से बजा बजाके। ४ क्योंकि हे परमेश्वर तू ने अपने कार्य्य से मुझे आनन्दित किया है मैं तेरे हाथों की क्रिया से आनन्द के शब्द करूंगा॥

५ हे परमेश्वर तेरे कार्य्य क्या ही बड़े हैं तेरी चिन्ता अति गहिरी हैं। ६ पशुवत जन न जानेगा और मूर्ख इसे न समझेगा। ७ जब दुष्ट घास की नाईं उगते और सारे कुकर्म्मी फूलते हैं तो यह उन के सदा के नाश होने के लिये है। ८ और हे परमेश्वर तू ही सर्वदा लों अति महान है॥

९ क्योंकि देख तेरे बैरी हे परमेश्वर क्योंकि देख तेरे बैरी नाश होंगे सारे कुकर्म्मी अपने को छिन्नभिन्नता में डालेंगे। १० और तू ने मेरे सींग को गैंडे की नाईं ऊंचा किया मैं ने टटके तेल से अपने सिर को चिकना किया है। ११ और मेरी आंख ने मेरे बैरियों पर दृष्टि किई है मेरे कान उन दुष्टों के बिषय सुनेंगे जो मेरे बिरोध में उठते हैं॥

१२ धर्म्मी खजूर के पेड़ की नाईं लहलहावेगा लुबनान के देवदारु बृक्ष के समान बढ़ेगा। १३ परमेश्वर के घर में लगाये हुए वे हमारे ईश्वर के आंगनों में लहलहावेंगे। १४ वे बुढ़ापे में भी फला करेंगे मोटे और हरे रहेंगे। १५ जिसतें बर्णन करें कि परमेश्वर खरा है और मेरी चटान और उस में अनीति नहीं है॥

तिरानबेवां गीत।

१ परमेश्वर राज्य करता है उस ने बिभव का बस्त्र पहिना है परमेश्वर ने बल का बस्त्र पहिना और उस ने अपनी कटि बांधी है जगत भी स्थिर रहेगा और न टलेगा। २ तेरा सिंहासन सदा से स्थिर है सनातन से तू ही है। ३ नदियों ने उठाया हे परमेश्वर नदियों ने अपना महाशब्द उठाया है नदियां अपना महाशब्द उठावेंगी। ४ बड़े और बलवन्त पानियों के महाशब्द से समुद्र की लहरों से परमेश्वर ऊंचाई में अति बलवान है। ५ तेरी साक्षियां अत्यन्त सच्ची हैं हे परमेश्वर सर्वदा लों तेरे घर को पवित्रता फबती है॥

चौरानबेवां गीत

१ हे पलटा लेनेहारे सर्वशक्तिमान परमेश्वर हे पलटा लेनेहारे सर्वशक्तिमान प्रकाशित हो। २ हे जगत के बिचारी

अपने तईं उठा घमंडियों पर उन का व्यवहार पलट दे ॥

३ हे परमेश्वर दुष्ट कब लों कब लों ४ दुष्ट फूला करेंगे। सारे कुकर्म्मी कब लों वचन निकालेंगे कठोरता से बातें करेंगे ५ और फूला करेंगे। हे परमेश्वर वे तेरे लोगों को पीस डालते हैं और तेरे ६ अधिकार को दुःख देते हैं। वे रांड और परदेशी को घात करते हैं और ७ अनाथों को बधन करते हैं। और वे कहते हैं कि परमेश्वर न देखेगा और याकूब का ईश्वर न समझेगा

८ अरे पशुवत लोगो समझो और अरे ९ मूर्खो तुम कब बुद्धिमान होओगे। क्या कान का उत्पन्न करनेहारा न सुनेगा अथवा आंख का बनानेहारा न देखेगा। १० क्या जातिगणों का शिक्षक ताड़ना न करेगा मनुष्य को ज्ञान देनेहारा क्या वह हर एक को नहीं शिक्षा दे सक्ता। ११ परमेश्वर मनुष्य की चिन्ताओं को जानता है कि वे मिथ्या हैं ॥

१२ हे परमेश्वर वह मनुष्य क्या ही धन्य है जिसे तू ताड़ना करता है और अपनी व्यवस्था से उसे सिखाता है। १३ जिससे उसे बिपत्ति के दिनों से बचाके चैन देवे जब लों कि दुष्ट के लिये १४ गड़हा खोदा जाय। क्योंकि परमेश्वर अपने लोगों को छोड़ न देगा और अपने १५ अधिकार को न त्यागेगा। क्योंकि बिचार धर्म्म लों फिर आवेगा और उस के पीछे सारे खरे अंतःकरणी चलेंगे ॥

१६ कौन मेरे लिये दुष्टों पर उठेगा कौन मेरे लिये अधर्म्मियों का साम्ना करेगा। १७ यदि परमेश्वर मेरे लिये सहायक न होता तो शीघ्र मेरा प्राण सुनसानों में १८ चुपका हो जाता। यदि मैं कहूं कि मेरा पांव फिसलता है तो हे परमेश्वर १९ तेरी दया मुझे संभालेगी। जब मेरे मन में मेरी चिन्तायें बढ़ जाती हैं तब तेरी शान्ति मेरे प्राण को आनन्दित करती हैं ॥

२० क्या अधर्म्मों का सिंहासन जो व्यवस्था की रीति बुराई उत्पन्न करता है तेरा साझी होगा। २१ वे धर्म्मी के प्राण के बिरोध में एकट्ठे होते हैं और निर्दोष के लोहू बहाने की आज्ञा करते २२ हैं। परन्तु परमेश्वर मेरा ऊंचा स्थान हुआ और मेरा ईश्वर मेरे शरण की २३ चटान। और वह उन का अधर्म्म उन्हीं पर फेर देता है और वह उन्हें उन की दुष्टता में नष्ट करेगा हां परमेश्वर हमारा ईश्वर उन्हें नष्ट करेगा ॥

पंचानबेवां गीत

१ आओ परमेश्वर के लिये गान करें अपनी मुक्ति की चटान की ओर २ ललकारें। धन्यबाद के साथ उस के आगे आवें और गीतों के संग उस की ३ ओर ललकारें। क्योंकि परमेश्वर बड़ा महेश्वर है और सारे देवों के ऊपर ४ महाराजा। जिस के हाथ में पृथिवी की गहिराइयां और पहाड़ों की ऊंचाइयां ५ उस की हैं। समुद्र उस का है और उसी ने उसे बनाया और उस के हाथों ने स्थल को बनाया ॥

६ आओ दण्डवत करें और झुकें परमेश्वर अपने कर्त्ता के आगे घुटने टेकें। ७ क्योंकि वही हमारा ईश्वर है और हम उस की चराई के लोग और उस के हाथ की भेड़ें आज यदि तुम उस का शब्द ८ सुनो। अपने मन को कठोर मत करो मरीबः की नाईं मस्सः के दिन के समान ९ बन में। जहां तुम्हारे पितरों ने मुझे परखा मेरी परीक्षा किई मेरे कार्य्य को १० भी देखा। मैं चालीस बरस लों उस बुरी पीढ़ी से उदास रहता हूं और मैं ने कहा कि वे एक मन फिरी हुई जाति

हैं और उन्हों ने मेरे मार्गों को नहीं
११ जाना। जिन से मैं ने अपने क्रोध में
किरिया खाई कि वे मेरे बिश्राम में कभी
प्रवेश न करेंगे॥

छयानवेवां गीत।

१ परमेश्वर के लिये नया गीत गाओ
हे सारी पृथिवी परमेश्वर के लिये गाओ।
२ परमेश्वर के लिये गाओ उस के नाम
का धन्य मानो प्रतिदिन उस की मुक्ति
३ को प्रगट करो। अन्यदेशियों में उस की
महिमा प्रगट करो सारे लोगों में उस के
४ आश्चर्य्यकर्म्म। क्योंकि परमेश्वर महान
है और अति स्तुति के योग्य वह सारे
५ देवों के ऊपर भयमान है। क्योंकि
जातिगणों के सारे देव तुच्छ हैं और
६ परमेश्वर ने स्वर्ग को बनाया। प्रतिष्ठा
और महिमा उस के आगे हैं बल और
सुन्दरता उस के धर्म्मधाम में॥

७ परमेश्वर को दो हे जातिगणों के
घरिआरो परमेश्वर को प्रतिष्ठा और बल
८ दो। परमेश्वर को उस के नाम की
प्रतिष्ठा दो भेंट लाओ और उस के
९ आंगनों में आओ। पवित्रताई की
सुन्दरता के संग परमेश्वर को दण्डवत
करो हे सारी पृथिवी उस के आगे कांपो।
१० अन्यदेशियों के मध्य में कहो कि पर-
मेश्वर राज्य करता है हां जगत स्थिर
रहेगा और न टलेगा वह खराइयों के संग
११ जातिगणों का बिचार करेगा। स्वर्ग
आनन्द करें और पृथिवी मगन हो समुद्र
१२ और उस की भरपूरी गर्जन करे। खेत
और सब जो उस में है आनन्दित होवे
तब बन के सारे पेड़ आनन्द के शब्द
१३ करेंगे। परमेश्वर के आगे क्योंकि वह
आता है क्योंकि वह पृथिवी का न्याय
करने को आता है वह धर्म्म के साथ
जगत का और अपनी सच्चाई के साथ
जातिगणों का न्याय करेगा॥

सत्तानवेवां गीत।

१ परमेश्वर राज्य करता है पृथिवी
आनन्दित हो सारे टापू आह्लादित होवें॥
२ मेघ और काली घटा उस के आस
पास है धर्म्म और न्याय उस के सिंहा-
३ सन का स्थान। आग उस के आगे
चलती है और उस के बैरियों को चारों
४ ओर जलाती है। उस की बिजलियों
ने जगत को उंजियाला किया तब पृथिवी
५ ने देखा और थर्थरा गई। पहाड़ पर-
मेश्वर के आगे सारे जगत के प्रभु के
६ आगे मोम की नाईं पिघल गये॥ स्वर्ग
उस के धर्म्म को प्रगट करते हैं और
सारे लोग उस के बिभव को देखते हैं।
७ खोदी हुई मूर्त्ति के सारे पूजनेहारे जो
तुच्छ बस्तुन पर फूलते हैं लज्जित होंगे
हे सारे देवगण उस को दण्डवत करो॥

८ सैहून सुनती और मगन होती है और
यहूदाह की बेटियां आनन्दित होती हैं
९ हे परमेश्वर तेरे बिचारों के लिये। क्यों-
कि हे परमेश्वर तू ही सारी पृथिवी के
ऊपर महेश्वर है तू सारे देवों के ऊपर
अत्यन्त ही बड़ा है॥

१० हे परमेश्वर के प्रेमियो बुराई से
घिन करो वह अपने साधुओं के प्राणों
का रक्षक है दुष्टों के हाथ से उन्हें छुड़ा-
११ वेगा। धर्म्मी मनुष्य के लिये उंजियाला
बोया गया और खरे अन्तःकरणियों के
१२ लिये आनन्द। हे धर्म्मियो परमेश्वर से
आनन्दित होओ और उस की पवित्रता
का बर्णन करते हुए धन्यबाद करो॥

अठानवेवां गीत।

गीत॥

१ परमेश्वर के लिये गाओ नया गीत
गाओ क्योंकि उस ने आश्चर्य्यकार्य्य
किये हैं उस के दहिने हाथ और उस के
पवित्र भुजा ने उस के लिये उस के लोगों
को बचाया है॥

२ परमेश्वर ने अपनी मुक्ति को प्रगट किया है अन्यदेशियों की दृष्टि में अपने ३ धर्म्म को प्रगट किया है। उस ने अपनी दया और अपनी सच्चाई को इसराएल के घराने के लिये स्मरण किया है पृथिवी के सारे खूंटों ने हमारे ईश्वर की मुक्ति को देखा है॥

४ हे सारी पृथिवी परमेश्वर की ओर ललकारो फूट निकलो और आनन्द करो ५ और गाओ बजाओ। बीणा के संग परमेश्वर के लिये गाओ बजाओ बीणा ६ और गान के शब्द के साथ। तुरहियों और नरसिंगो के शब्द के संग परमेश्वर ७ राजा के आगे ललकारो। समुद्र और उस की भरपूरी गर्ज्जन करे जगत और ८ उस के रहनेवाले। नदियें ताल दें पहाड़ ९ मिलके आनन्द करें। परमेश्वर के आगे क्योंकि वह पृथिवी का न्याय करने आता है वह धर्म्म के साथ जगत का और खराइयों के संग लोगों का न्याय करेगा॥

निन्नानवेवां गीत।

१ परमेश्वर राज्य करता है जातिगण थर्थराते हैं वह करोबीम पर बैठा हुआ राज्य करता है पृथिवी कांपती है। २ परमेश्वर सैहून में महान है और सारे ३ जातिगणों के ऊपर वही श्रेष्ठ है। वे तेरे बड़े और भयंकर नाम का स्वीकार ४ करेंगे कि पवित्र वही है। और राजा का बल बिचार से प्रीति रखता है तू ही ने खराइयों को स्थिर किया है न्याय और धर्म्म यअकूब में तू ही ने किया ५ है। परमेश्वर हमारे ईश्वर की बड़ाई करो और उस के चरणों के नीचे की चौकी को दण्डवत करो पवित्र वही है॥

६ मूसा और हारून उस के याजकों के मध्य और समुएल उन के बीच जो उस का नाम लेते हैं परमेश्वर को ओर पुकारते हैं और वह उन की सुनता है। ७ वह मेघ के खंभे में से उन से बातें करता है उन्हों ने उस की साखियों को और उस आज्ञा को जो उस ने उन्हें दिई पालन किया। ८ हे परमेश्वर हमारे ईश्वर तू ही ने उन की सुनी तू उन के लिये क्षमा करनेवाला सर्व्वशक्तिमान था और उन के बुरे कार्य्यों का पलटा लेनेहारा। ९ परमेश्वर हमारे ईश्वर की बड़ाई करो और उस के पवित्र पहाड़ को दण्डवत करो क्योंकि परमेश्वर हमारा ईश्वर पवित्र है॥

सौवां गीत।

धन्यबाद का गीत॥

१ हे सारी पृथिवी परमेश्वर की ओर २ ललकारो। आनन्दता के संग परमेश्वर की सेवा करो जयध्वनि के संग उस के ३ आगे आओ। जानो कि परमेश्वर वही ईश्वर है उसी ने हमें अपनी जाति और अपनी चराई की भेड़ें बनाया और हम ने नहीं। ४ धन्यबाद करते हुए उस के फाटकों में और स्तुति करते हुए उस के आंगनों में प्रवेश करो उस का धन्य मानो उस के नाम का धन्यबाद कहो। ५ क्योंकि परमेश्वर भला है सदा लों उस की दया और पीढ़ी से पीढ़ी लों उस की सच्चाई है॥

एकसौ पहिला गीत।

दाऊद का गीत॥

१ मैं दया और न्याय का गीत गाऊंगा तेरी स्तुति में हे परमेश्वर बजाऊंगा। २ मैं सिद्ध मार्ग में चौकसी दिखलाऊंगा तू कब मेरे पास आवेगा मैं अपने घर के भीतर सिद्ध मन से चला करूंगा। ३ मैं अपनी आंखों के आगे बुराई की बात न रक्खूंगा कुटिलता करने से मैं बैर रखता हूं वह मुझ से न लिपटेगी। ४ कुटिल अन्तःकरण मुझ से जाता रहेगा

५ मैं जुगाली और न जानूंगा । जो छिपके अपने परोसी पर दोष लगाता है मैं उसे नाश करूंगा जो ऊंची दृष्टि और अभिमानी है मैं उस को न सहूंगा । ६ मेरी आंखें पृथिवी के बिश्वस्तों पर हैं जिसतें वे मेरे संग रहें जो सिद्ध मार्ग में चलता है वही मेरी सेवा करेगा । ७ मेरे घर के भीतर छली और झूठ बोलने हारा न रहेगा वह मेरी आंखों के ८ साम्हने न ठहरेगा । बिहान को मैं पृथिवी के सारे दुष्टों को नाश किया करूंगा जिसतें परमेश्वर के नगर से सारे कुकर्म्मियों को काट डालूं ॥

एकसौ दूसरा गीत ।

दुःखी की प्रार्थना जब वह शोकित है और परमेश्वर के आगे अपनी दोहाई देता है ॥

१ हे परमेश्वर मेरी प्रार्थना सुन और २ मेरी दोहाई तुझ लों पहुंचे । मुझ से अपना मुंह न छिपा मेरी बिपत्ति के दिन मेरी ओर अपना कान धर जिस दिन मैं पुकारूं शीघ्र मेरी सुन ॥

३ क्योंकि मेरे दिन धूंए में बीत गये और मेरी हड्डियां लुकटी की नाईं ४ जल गईं । मेरा मन घास की नाईं कुम्हला गया और सूख गया क्योंकि मैं ५ अपनी रोटी खाना भूल गया । मेरे कराहने के शब्द से मेरी हड्डियां मेरे ६ मांस से सट गईं । मैं जंगली गरुड़ के तुल्य हूं मैं खंडहरों के उल्लू के समान हो ७ गया । मैं जागता रहा और उस चिड़िया की नाईं हो गया जो अकेली छत के ८ ऊपर रहती है । सारे दिन मेरे बैरियों ने मुझ पर निन्दा किई है जो मेरे बिरोध में उन्मत्त हैं वे मेरे नाम से कोसते हैं । ९ क्योंकि मैं ने रोटी के समान राख फांकी और अपने पानी में आंसू मिलाया है । १० तेरे अलजलाहट और तेरे कोप के कारण के क्योंकि तू ने मुझे उठाकर फेंक दिया है ॥

मेरे दिन छाया के समान बीत गये ११ और मैं घास के समान कुम्हलाने पर हूं । और तू हे परमेश्वर सदा लों सिंहा- १२ सन पर बैठा रहेगा और तेरा स्मरण पीढ़ी से पीढ़ी लों । तू उठेगा सैहून १३ पर दया करेगा क्योंकि उस पर कृपा करने का समय हां उस का ठहराया हुआ समय आया है । क्योंकि तेरे सेवक १४ उस के पत्थरों से मगन हैं और उस की धूल पर अनुग्रह करते हैं । और जाति- १५ गण परमेश्वर के नाम से डरेंगे और पृथिवी के सारे राजा तेरे बिभव से ॥

क्योंकि परमेश्वर ने सैहून को बनाया १६ है अपने बिभव में प्रगट हुआ है । वह १७ कंगाल की प्रार्थना की ओर फिरा है और उस ने उन की प्रार्थना को तुच्छ नहीं जाना है । यह अवैया पीढ़ी के १८ लिये लिखा जायगा और उत्पन्न होने- हारी जाति परमेश्वर की स्तुति करेगी । क्योंकि उस ने अपने धर्म्मधाम की १९ ऊंचाई पर से झांका परमेश्वर ने स्वर्ग पर से पृथिवी की ओर दृष्टि किई है । जिसतें बंधुए का कराहना सुने जिसतें २० मृत्यु के सन्तानों को छुड़ावे । जिसतें २१ सैहून में परमेश्वर का नाम बर्णन किया जाये और यरूसलम में उस की स्तुति । जब जातिगण आपुस में एकट्ठे होंगे २२ और राज्य जिसतें परमेश्वर की सेवा करें ॥

उस ने मार्ग में उस दुःखी का बल २३ घटा दिया मेरी बय को घटा दिया है । मैं कहूंगा कि हे मेरे सर्वशक्तिमान २४ मेरी आधी बय में मुझे न उठा ले पीढ़ी से पीढ़ी लों तेरे बरस हैं । तू ने २५ आरंभ से पृथिवी की नेव डाली और स्वर्ग तेरे हाथों के कार्य्य हैं । वे नाश २६

होंगे और तू स्थिर रहेगा और वे सब वस्त्र की नाईं पुराने हो जायेंगे तू वस्त्र की नाईं उन्हें पलटेगा और वे २७ पलट जायेंगे । और तू वही है और २८ तेरे बरसों का अन्त न होगा । तेरे सेवकों के लड़के बने रहेंगे और उन के वंश तेरे आगे स्थिर रहेंगे ॥

एकसौ तीसरा गीत ।

दाऊद का गीत ॥

१ हे मेरे प्राण परमेश्वर को धन्य कह और सब जो मुझ में है उस के पवित्र २ नाम को । हे मेरे प्राण परमेश्वर को धन्य कह और उस के सारे उपकारों को न भूल ॥

३ जो तेरे सारे अधर्म्मों को क्षमा करता है जो तेरे सारे रोगों को चंगा करता ४ है । जो समाधि से तेरे प्राण को छुड़ाता है जो तुझ पर अनुग्रह और दया ५ का मुकुट रखता है । जो तेरे प्राण को भलाई से तृप्त करता है तब तेरी तरुणाई गिद्ध की नाईं अपने तईं नये सिरे से नवीन करती है ॥

६ परमेश्वर सारे सताये हुओं के लिये ७ धर्म्म और बिचार करता है । वह मूसा को अपने मार्गों को इसराएल के सन्तान को अपने बड़े कार्य्य बनाता ८ है । परमेश्वर दयालु और कृपालु है ९ क्रोध में धीमा और दया में बड़ा । न सदा लों वह झगड़ा करेगा और न १० सदा लों क्रोध रक्खेगा । उस ने हमारे पापों के समान हमारे साथ नहीं किया और न हमारे अधर्म्मों के समान हम से ११ व्यवहार किया है । क्योंकि जैसा स्वर्ग पृथिवी के ऊपर ऊंचा है वैसा ही उस की दया उस के डरवैयों के ऊपर बड़ी १२ है । जैसा पूरब पच्छिम से दूर है वैसा ही उस ने हमारे पापों को हम से दूर १३ किया है । जैसा पिता बालकों पर मया करता है वैसा ही परमेश्वर अपने डरवैयों पर दया करता है ॥

क्योंकि वही हमारी बनावट को १४ जानता है स्मरण करता है कि हम माटी हैं । मरणहार मनुष्य जो है उस १५ के दिन घास की नाईं हैं जैसा बन का फूल वैसा ही वह फूलता है । क्योंकि १६ पवन उस पर बही और वह है ही नहीं और उस का ठौर फिर उसे न पहिचानेगा । और परमेश्वर की दया १७ उस के डरवैयों पर सनातन से सनातन लों है और उस की सच्चाई सन्तानों के सन्तानों पर । उस के नियम के धारण १८ करवैयों पर और उस की बिधों के स्मरण करवैयों पर जिसतें उन्हें पूरा करें ॥

परमेश्वर ने स्वर्गों पर अपना १९ सिंहासन स्थिर किया और उस का राज्य सब पर प्रभुता करता है । परमेश्वर २० का धन्य मानो हे उस के दूतो बल में सामर्थी उस के बचन पर इस रीति से चलनेहारो कि उस के बचन का शब्द सुनो । परमेश्वर का धन्य मानो हे उस २१ की सारी सेनाओ उस के सेवको उस की इच्छा पर चलनेहारो । परमेश्वर का २२ धन्य मानो हे उस के सारे कार्य्यो उस के राज्य के सारे स्थानों में हे मेरे प्राण परमेश्वर का धन्य मान ॥

एकसौ चौथा गीत ।

हे मेरे प्राण परमेश्वर का धन्य मान १ हे परमेश्वर मेरे ईश्वर तू अति महान है तू प्रतिष्ठा और ऐश्वर्य्य से बिभूषित है । वह ज्योति को वस्त्र की नाईं २ पहिरता है स्वर्गों को घूंघट की नाईं फैलाता है । पानी से अपनी ऊपर की ३ कोठरियों को बनाता है मेघों को अपना रथ बनाता पवन के डैनों पर चलता है । पवनों को अपने दूत बनाता है ४ जलती आग अपने सेवक ॥

५ उस ने पृथिवी की नेवें उस के ठौरों पर डालीं वह सनातन लों न टलेगी। ६ तू ने उसे बस्त्र की नाईं गहिराव से ढांपा पानी पहाड़ों के ऊपर खड़े होते ७ हैं। वे तेरी डपट से भाग जाते हैं तेरे ८ गर्ज्जन के शब्द से शीघ्र करते हैं। वे पहाड़ों पर चढ़ते हैं तराइयों में बहते हैं उस स्थान लों जिस की नेव तू ने ९ उन के लिये डाली है। तू ने सिवाना बांधा वे उस्से पार न जायेंगे पृथिवी को ढांपने के लिये न फिरेंगे॥

१० वह नालों में सोते बहाता है वे ११ पहाड़ों के बीचोंबीच बहते हैं। वे बन के हर एक पशुन को पिलाते हैं उन से बनैले गदहे अपनी पियास मिटाते १२ हैं। उन के ऊपर आकाश के पक्षी बसते हैं डालियों के बीच में से वे चहचहाते १३ हैं। अपनी ऊपर की कोठरियों से पर्बतों को सींचता है पृथिवी तेरे कार्य्य के फल से तृप्त होती है॥

१४ वह पशु के लिये घास उगाता है और हरियाली मनुष्य के जोतने बोने के लिये जिसतें पृथिवी से रोटी निकाले। १५ और मदिरा मनुष्य के मन को मगन करती है जिसतें उस के मुंह को तेल से अधिक चमकावे और रोटी मनुष्य के १६ मन को बल देती है। परमेश्वर के पेड़ रस से परिपूर्ण हैं लुबनान के देवदारु १७ जिन्हें उस ने लगाया है। जहां छोटी चिड़ियां खोंते बनाती हैं लगलग जो १८ है सरो उस का घर है। पहाड़ ऊंचे पहाड़ पहाड़ी बकरों के लिये हैं चटान खरहों के लिये शरणस्थान हैं॥

१९ उस ने चन्द्रमा को ठहराई हुई ऋतों के लिये बनाया सूर्य्य अपने अस्त २० होने को पहिचानता है। तू अंधियारे को उत्पन्न करता है और रात हो जाती उस में जंगल का हर एक पशु चलने लगता है। २१ सिंह के बच्चे अहेर के लिये गर्ज्जते हुए और सर्वशक्तिमान से अपना अहेर ढूंढ़ने के लिये। २२ सूर्य्य उदय होते ही वे एकट्ठे हो जाते हैं और अपनी अपनी मांदों में लेट जाते हैं। २३ मनुष्य अपने काम काज के लिये बाहर निकलता है और अपने परिश्रम के लिये सांझ लों॥

२४ हे परमेश्वर तेरी रचना क्या ही बहुत हैं तू ने उन सभों को बुद्धि के साथ बनाया पृथिवी तेरे धन से परिपूर्ण है। २५ यह समुद्र है बड़ा और हर ओर से चौड़ा वहां अगणित रेंगवैये हैं छोटे जन्तु बड़ों समेत। २६ वहां नावें चलती हैं और यह लिबियातान जिसे तू ने उस में कलोल करने के लिये बनाया। २७ वे सब तुझ पर भरोसा रखते हैं जिसतें समय पर उन का आहार देवे। २८ तू उन्हें देता है वे उठा लेते हैं तू अपनी मुट्ठी खोलता है वे उत्तम बस्तु से तृप्त होते हैं। २९ तू अपना मुंह छिपाता है वे ब्याकुल होते हैं तू उन का श्वास फेर लेता है वे मर जाते हैं और अपनी माटी में फिर मिल जाते हैं। ३० तू अपना आत्मा भेजता है वे उत्पन्न होते हैं और तू पृथिवी के स्वरूप को नवीन करता है॥

३१ परमेश्वर का ऐश्वर्य्य सर्वदा लों हो परमेश्वर अपनी क्रिया पर आनन्दित रहे। ३२ जो पृथिवी पर दृष्टि करता और वह थर्थराती है पहाड़ों को छूता है और उन से धूंआं उठता है। ३३ मैं अपने जीवन भर परमेश्वर के लिये गाऊंगा अपने जीते रहने लों अपने ईश्वर के लिये गान करूंगा। ३४ मेरा उस के विषय सोच करना अच्छा होगा मैं परमेश्वर से मगन रहूंगा। ३५ पापी भूमि पर से नाश होंगे और दुष्ट आगे को है ही

नहीं है मेरे प्राण परमेश्वर का धन्य मान। हल्लिलूयाह॥

एकसौ पांचवां गीत।

१ परमेश्वर का धन्य मानो उसे उस के नाम से पुकारो जातिगणों में उस के २ बड़े कार्य्यों को प्रगट करो। उस के लिये गाओ उस के लिये बजाओ उस के सारे आश्चर्य्य कार्य्यों पर सोच करो। ३ उस के पवित्र नाम से फूलो परमेश्वर के खोजियों का मन आनन्दित रहेगा। ४ परमेश्वर और उस के बल को ढूंढो सदा उस के रूप के खोजनेहारे रहो। ५ उस के अचम्भित कार्य्यों को जो उस ने किये उस के आश्चर्य्यों को और उस के ६ मुंह के बिचारों को स्मरण करो। हे उस के दास अबिरहाम के बंश यअकूब के सन्तान उस के चुने हुओ॥

७ वही परमेश्वर हमारा ईश्वर है सारी पृथिवी पर उसी के न्याय हैं ८ उस ने अपने नियम को सदा के लिये उस बचन को जो उस ने सहस्र पीढ़ियों ९ के लिये कहा चेत किया। जिस नियम को उस ने अबिरहाम के संग बांधा और अपनी किरिया को जो इजहाक १० से खाई। और उसे यअकूब के संग ब्यवस्था इसराएल के संग सर्बदा का ११ नियम ठहराया। यह कहते हुए कि मैं तुझे कनआन की भूमि तुम्हारी अधिकार के भाग में देऊंगा॥

१२ जब उन की गिनती हो सक्ती थी १३ थोड़े से और उस में परदेशी थे। और वे जातिगण से जातिगण में और एक राज्य से दूसरे लोगों में फिरा किये। १४ उस ने किसी मनुष्य को उन पर अंधेर करने नहीं दिया और उन के लिये १५ राजाओं को धिक्कारा। कि मेरे अभिषिक्तों को न छूओ और मेरे भविष्यद्वक्तों को हानि न पहुंचाओ

१६ और उस ने देश पर अकाल की आज्ञा किई रोटी के हर टेकन को तोड़ डाला॥

१७ उस ने एक मनुष्य को उन के आगे भेजा यूसुफ बेचा गया कि दास हो। १८ उन्हों ने बेड़ी से उस के पांवों को दुःख १९ दिया उस का प्राण लोहे में पड़ा। उस समय लों कि उस का बचन पूरा हुआ परमेश्वर के बचन ने उसे परखा। २० राजा ने भेजके उसे छुड़ाया लोगों के अध्यक्ष ने भेजा और उसे निर्बंध किया। २१ उस ने उसे अपने घर का अधिपति और अपने सारे अधिकार का प्रधान ठहराया। २२ जिसतें अपनी इच्छा से उस के अध्यक्षों को बांधे और उस के महन्तों को बुद्धिमान बनाये॥

२३ और इसराएल मिस्र में आया और यअकूब हाम के देश में परदेशी हुआ। २४ और उस ने अपने लोगों को बहुत ही बढ़ाया और उन्हें उन के बैरियों से २५ अधिक बलवान किया। उस ने उन के मनों को फेरा जिसतें उस के लोगों से बैर रक्खें उस के सेवकों से छल करें। २६ उस ने मूसा अपने दास को भेजा हारून को जिसे उस ने चुन लिया॥

२७ उन्हों ने उन के मध्य उस के चिन्हों के बचन और हाम के देश में आश्चर्य्य २८ प्रगट किये। उस ने अंधियारा भेजा और अंधकार कर दिया और उन्हों ने उस के बचनों की बिरुद्धता न किई। २९ उस ने उन के पानियों को लोहू कर डाला और उन की मछलियों को मार ३० डाला। उन की भूमि मेंडकों से भर गई और वे उन के राजाओं की कोठरियों ३१ में आये। उस ने आज्ञा किई और मक्खियां और मच्छड़ उन के सारे सिवानों ३२ में आये। उस ने उन पर मेंह की संती ओले बरसाये उन के देश में जलती

३३ आग। और उन के दाख और उन के गूलर के वृक्षों को बिनाश किया और उन के सिवानों के पेड़ों को तोड़ ३४ डाला। उस ने आज्ञा किई और टिड्डियां आईं और कीड़े और वे असंख्य ३५ थे। और उन्हों ने उन के देश की सारी हरियाली को खा लिया और उन के खेत के फल को भक्षण कर लिया। ३६ और उस ने उन के देश में हर पहिलौठे को उन के सारे बल के पहिले फल को ३७ मार डाला। और उन्हें चांदी और सोने के साथ निकाल लाया और उन की गोष्ठियों में ठोकर खानेहारा कोई ३८ न था। मिस्र उन के निकलने से आनन्दित था क्योंकि उन का भय उन ३९ पर पड़ा था। उस ने छाये के लिये मेघ फैलाया और रात को उंजियाला देने के ४० लिये आग। लोगों ने मांगा और उस ने बटेर पहुंचाये और स्वर्गीय रोटी से ४१ उन्हें तृप्त किया। उस ने चटान को खोल दिया और पानी बह निकला वह सूखी भूमि पर नदी की नाईं चला॥

४२ क्योंकि उस ने अपने उस पवित्र बचन को स्मरण किया जो अबिरहाम ४३ उस के दास के साथ था। और अपनी जाति को आनन्द के संग अपने चुने हुओं को गाते बजाते निकाल लाया। ४४ और उन्हें अन्यदेशियों का देश दिया और वे जातिगणों का परिश्रम अधिकार ४५ में पाते हैं। जिसतें वे उस की विधिन को मनन करें और उस की व्यवस्थाओं को मानें। हल्लिलूयाह॥

एकसौ छठवां गीत।

१ हल्लिलूयाह। परमेश्वर का धन्य मानो क्योंकि वह भला है क्योंकि उस २ की दया सदा लों है। कौन परमेश्वर के पराक्रमों का बर्णन करेगा कौन उस ३ की सारी स्तुति सुनायेगा। बिचार के पालन करवैये क्या ही धन्य हैं और वह जो सदाकाल धर्म्म करता है॥

४ हे परमेश्वर जो अनुग्रह तू अपने लोगों पर प्रगट करता है उस के संग मुझे स्मरण कर मुझ पर कृपा करके ५ मुक्ति दे। जिसतें तेरे चुने हुओं की भलाई को देखूं तेरे लोगों के आनन्द से आनन्दित होऊं तेरे अधिकार के संग बड़ाई करूं॥

६ हम ने अपने पितरों समेत पाप किया ७ टेढ़ाई किई दुष्टता किई। हमारे पितर मिस्र में तेरे आश्चर्य्य कार्य्यों को न समझे उन्हों ने तेरी दया की अधिकाई को स्मरण न किया और समुद्र पर अर्थात् लाल समुद्र ८ पर फिर गये। और उस ने उन्हें अपने नाम के लिये बचाया जिसतें अपने पराक्रम को ९ प्रगट करे। और उस ने लाल समुद्र को दपटा और वह सूख गया और उन्हें गहिराव में ऐसा चलाया जैसा बन में। १० और उस ने उन्हें शत्रु के हाथ से बचाया ११ और उन्हें बैरी के हाथ से छुड़ाया। और पानी ने उन के बैरियों को ढांप लिया १२ उन में से एक भी न बचा। तब वे उस की बातों पर बिश्वास लाये उस की १३ स्तुति गाई। उन्हों ने झट उस के कार्य्यों को भुला दिया उस के मंत्र की १४ बाट न जोही। और उन्हों ने जंगल में कुइच्छा के संग इच्छा किई और बन १५ में सर्वशक्तिमान को परखा। और उस ने उन की बांछा पूरी किई पर उन के प्राण में क्षीणता भेजी॥

१६ और उन्हों ने मूसा से और परमेश्वर १७ के सिद्ध हारून से डाह किया। तब पृथिवी ने अपना मुंह खोला और दातान को निगल गई और अबिराम की जथा १८ को ढांप लिया। और आग ने उन की जथा को खा लिया लवर ने उन दुष्टों को भस्म किया॥

१९ उन्हों ने होरेब में बछड़ा बनाया और ढाली हुई मूर्त्ति को दण्डवत किई। २० और अपने ऐश्वर्य्य को घास खानेहारे बैल २१ की मूर्त्ति से बदल डाला। उन्हों ने सर्वशक्तिमान को भुला दिया जिस ने उन्हें बचाया मिस्र में बड़े बड़े कार्य्य २२ किये। हाम के देश में आश्चर्य्य कार्य्य २३ लाल समुद्र पर भयंकर कर्म्म। और उस ने कहा कि मैं उन्हें नाश करूंगा यदि उस का चुना हुआ मूसा उस के सन्मुख दरार में खड़ा न होता जिसतें उस के कोप को नाश करने से फेरे॥

२४ और उन्हों ने मनोनीत भूमि को तुच्छ जाना वे उस के बचन पर बिश्वास न २५ लाये। और अपने तंबुओं में कुड़कुड़ाये वे परमेश्वर के शब्द के श्रोता न हुए। २६ तब उस ने किरिया खाने में उन की ओर अपना हाथ उठाया कि उन्हें बन २७ में गिरा दे। और उन के बंश को जातिगणों में गिरा दे और उन्हें देशों में बिथरावे॥

२८ और वे बअलपिऊर से मिल गये और २९ मृतकों के बलिदानों को खाया। और उन्हों ने अपने बुरे कर्म्मों से उसे रिसाया ३० और मरी उन में टूट पड़ी। तब फिनिहास खड़ा हुआ और न्याय किया और ३१ मरी थम गई। और यह उस के लिये धर्म्म गिना गया पीढ़ी से पीढ़ी लों सर्वदा के लिये॥

३२ और उन्हों ने उसे मरीबः के पानियों पर रिस दिलाई और उन के कारण से ३३ मूसा की हानि हुई। क्योंकि उन्हों ने उस के आत्मा से दंगा किया और उस ने अपने होंठों से अनुचित बातें कहीं॥

३४ उन्हों ने उन जातिगणों को नाश न किया जिन के बिषय में परमेश्वर ने ३५ उन्हें आज्ञा किई। और उन्हों ने अपने तईं जातिगणों में मिला दिया और उन के स्वभाव सीखे। और उन की मूर्त्तिन ३६ की सेवा किई और वे उन के लिये फंदा हो गईं। और उन्हों ने अपने बेटों और ३७ अपनी बेटियों को पिशाचों के लिये बलिदान किया। और उन्हों ने निर्दोष ३८ लोहू अर्थात् अपने बेटों और अपनी बेटियों का लोहू बहाया जिन्हें उन्हों ने कनआन की मूर्त्तिन के लिये बलि किया और देश लोहू से अशुद्ध हुआ। और वे अपने कार्य्यों से अपवित्र हो गये ३९ और अपनी बुराइयों से व्यभिचारी॥

४० तब परमेश्वर का कोप अपने लोगों पर भड़का और उस ने अपने लोगों से ४१ घिन किया। और उस ने उन्हें जातिगणों के हाथ में सौंपा और उन के बैरी ४२ उन पर अधिकृत हो गये। और उन के शत्रुन ने उन पर अंधेर किया और वे ४३ उन के हाथ के नीचे दब गये। उस ने कई बार उन्हें छुड़ाया और उन्हों ने अपने परामर्श से उस्से दंगा किया और वे अपने अधर्म्म के कारण से हीन हो गये। ४४ और उस ने उन की इस कठिनता पर दृष्टि किई है जब उस ने उन का रोना ४५ सुना। और उस ने उन के लिये अपनी बाचा को स्मरण किया और अपनी दया की अधिकाई के समान पछताया है। ४६ और उस ने उन के सारे बंधुआई करवैयों को उन पर दयावन्त किया है॥

४७ हे परमेश्वर हमारे ईश्वर हमें बचा और हमें जातिगणों में से बटोर जिसतें तेरे पवित्र नाम का धन्यबाद करें और ४८ तेरी स्तुति में बड़ाई करें। परमेश्वर इसराएल का ईश्वर धन्य हो सनातन से सनातन लों और सारे लोग कहते हैं आमीन। हलिलूयाह॥

एकसौ सातवां गीत।

१ परमेश्वर का धन्य मानो क्योंकि वह भला है क्योंकि उस की दया सदा

२ लों है। परमेश्वर के वे छुड़ाये हुए यह कहते हैं जिन्हें उस ने कष्ट के हाथ से
३ छुड़ाया है। और उन्हें देशों से एकट्ठा किया है पूरब और पच्छिम से उत्तर और समुद्र से॥
४ वे बन में सूने मार्ग में भ्रमते फिरे उन्हों ने बसने के लिये कोई नगर न
५ पाया। वे भूखे प्यासे भी हैं उन का
६ प्राण उन में मूर्छित होता है। और उन्हों ने अपनी बिपत्ति में परमेश्वर को पुकारा उस ने उन के कठिन क्लेशों से
७ उन्हें छुड़ाया। और उस ने सीधे पथ पर उन की अगुआई किई जिसतें रहने के लिये नगर में पहुंचें॥
८ वे लोग परमेश्वर को उस के अनुग्रह के लिये और उस के आश्चर्य्य कर्म्मों के लिये जो मनुष्य के सन्तान के लिये हैं
९ स्तुति करें। क्योंकि उस ने लालसित प्राण को तृप्त किया और भूखे प्राण को भलाई से सन्तुष्ट किया है॥
१० अंधेरे और मृत्यु की छाया में रहते थे दुःख और लोहे के बंधायमान।
११ क्योंकि उन्हों ने सर्वशक्तिमान के बचनों से बिरुद्धता किई और अति महान के
१२ मंत्र को तुच्छ जाना। और उस ने उन के अन्तःकरण को परिश्रम से घटाया उन्हों ने ठोकर खाई और कोई सहायक
१३ न था। और उन्हों ने अपनी बिपत्ति में परमेश्वर को पुकारा उस ने उन के
१४ कठिन क्लेशों से उन्हें बचाया। वह उन्हें अंधियारे और मृत्यु की छाया से निकालता है और उन के बंधनों को तोड़ डालता है॥
१५ वे लोग परमेश्वर को उस के अनुग्रह के लिये और उस के आश्चर्य्य कर्म्मों के लिये जो मनुष्य के सन्तान के लिये
१६ हैं स्तुति करें। क्योंकि उस ने पीतल के फाटकों को टुकड़े टुकड़े कर दिया और लोहे के बेंड़ों को काट डाला है॥
१७ मूर्ख अपने अपराध के मार्ग से और अपने अधर्म्म के कारण से अपने तईं
१८ दुःख देते हैं। उन का प्राण हर प्रकार के भोजन से घिन करता है और वे ठीक मृत्यु के फाटकों के निकट पहुंचते
१९ हैं। तब वे अपनी बिपत्ति में परमेश्वर को पुकारते हैं वह उन्हें उन के कठिन
२० क्लेशों से बचाता है। वह अपना बचन भेजता है और उन्हें चंगा करता है और उन्हें उन के नाशों से छुड़ाता है॥
२१ वे लोग परमेश्वर को उस के अनुग्रह के लिये और उस के आश्चर्य्य कर्म्मों के लिये जो मनुष्य के सन्तान के लिये हैं
२२ स्तुति करें। और धन्यबाद के बलिदान बलि करें और आनन्द के शब्द के संग उस के कार्य्यों का बर्णन करें॥
२३ समुद्र में नौकों पर चढ़े हुए बड़े
२४ पानियों में कार्य्य करते हुए। उन्हों ने परमेश्वर के कार्य्यों को और गहिराव
२५ में उस के आश्चर्य्यों को देखा। और उस ने कहा और प्रचण्ड पवन उठी और उस ने अपनी लहरों को उठाया।
२६ वे स्वर्ग लों चढ़ते हैं गहिराव में नीचे जाते हैं उन का प्राण अपने तईं बुराई
२७ से गला देता है। वे मतवाले की नाईं डगमगाते और लड़खड़ाते हैं और उन का सम्पूर्ण ज्ञान लोप हो जाता है।
२८ और उन्हों ने अपनी बिपत्ति में परमेश्वर को पुकारा और उस ने उन्हें उन के
२९ कठिन क्लेशों से निकाला। वह आंधी को शान्ति कर देता है और उन की
३० लहरें थम जाती हैं। तब वे मगन होते हैं कि आनन्द में हैं और वह उन्हें उन की इच्छा के घाट में पहुंचाता है॥
३१ वे लोग परमेश्वर को उस के अनुग्रह के लिये और उस के आश्चर्य्य कर्म्मों

के लिये जो मनुष्य के सन्तान के लिये
३२ हैं स्तुति करें । और जातिगणों की मंडली में उस की बड़ाई करें और प्राचीनों की सभा में उस की स्तुति करें ॥
३३ वह नदियों को बन और पानी के सोतों को सूखी भूमि कर देता है ।
३४ फलवन्त भूमि को नोनखार उन की बुराई के कारण से जो उस में रहते हैं ।
३५ वह बन को झील कर देता है और
३६ सूखी भूमि को पानी के सोते । और उस ने वहां भूखों को बसाया है और उन्हों ने बसने के लिये नगर सिद्ध किया
३७ है । और खेतों को बोया है और दाख की बारी लगाई है और बढ़ती के फल
३८ कमाये हैं । और उस ने उन्हें आशीस दिया और वे बहुत बढ़ गये हैं और वह
३९ उन के पशुन को घटने नहीं देता । और वे अंधेर बुराई और शोक के मारे घट
४० और दीन हो गये । और अध्यक्षों पर तुच्छता उंडेलते हुए उस ने उन्हें अपथ
४१ अरण्य में भ्रमाया है । और कंगाल को दु:ख से उठाया और घरानों को झुंड की
४२ नाईं बनाया है । खरे जन देखेंगे और आनन्दित होंगे और सारी अधर्म्मता
४३ अपना मुंह बंद करेगी । कौन बुद्धिमान है कि इन बातों को सोच करेगा और कौन बुद्धिमान लोग परमेश्वर की दया पर ध्यान करेंगे ॥

एकसौ आठवां गीत

दाऊद का गान और गीत ॥

१ हे ईश्वर मेरा मन स्थिर है मैं गाऊंगा और बजाऊंगा हां मेरा विभव भी ।
२ हे बीणा और सितार जाग मैं भोर को
३ जगाऊंगा । हे परमेश्वर मैं जातिगणों में तेरी स्तुति करूंगा और देशगणों में
४ तेरी स्तुति गाऊंगा । क्योंकि तेरी दया स्वर्गों के ऊपर ऊंची है और तेरी सच्चाई
५ मेघों लों । हे ईश्वर स्वर्गों के ऊपर महान हो और सारी पृथिवी के ऊपर तेरा विभव हो । जिसतें तेरे प्रिय छुड़ाये
६ जायें तू अपने दाहिने हाथ से बचा और हमारी सुन ॥
७ ईश्वर ने अपनी पवित्रता के संग वचन कहा इस कारण मैं आनन्दित होऊंगा सिकम को बिभाग करूंगा और
८ सुक्कात की तराई को नापूंगा । जिलिअद मेरा है मनस्सी मेरा और इफ्रायम मेरे सिर का गढ़ यहूदाह मेरा व्यवस्था-
९ दायक । मोअब मेरे धोनेधाने का पात्र है मैं अदूम पर अपनी जूती फेकूंगा फिलिस्त पर जयजयकार करूंगा ॥
१० कौन मुझे दृढ़ नगर में ले जायगा किस ने मुझे अदूम लों पहुंचाया है ।
११ क्या ईश्वर नहीं है तू जिस ने हमें छोड़ दिया है और हे ईश्वर तू जो हमारी
१२ सेनाओं के संग न चलेगा । बिपत्ति में हमारी सहाय कर क्योंकि मनुष्यीय मुक्ति
१३ वृथा है । ईश्वर से हम शूरता पावेंगे और वही हमारे बैरियों को रौंद डालेगा ॥

एकसौ नवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये दाऊद का गीत ॥

१ हे मेरे स्तुति के ईश्वर चुप मत
२ हो । क्योंकि उन्हों ने दुष्ट मुंह और छल का मुंह मुझ पर खोला है वे मेरे साथ
३ झूठ की जीभ से बोले हैं । और उन्हों ने बैर की बातों से मुझे घेरा है और
४ अकारण मुझ से लड़े हैं । मेरे प्रेम की सन्ती वे मेरी बिरुद्धता करते हैं और मैं
५ प्रार्थना में हूं । और भलाई की सन्ती वे मुझ पर बुराई लगाते हैं और मेरे प्रेम की सन्ती बैर ॥
६ उस पर दुष्ट को करोड़ा ठहरा और बैरी उस के दाहिने हाथ पर खड़ा रहे ।
७ जब उस का बिचार किया जायेगा तो वह दोषी ठहरेगा और उस की प्रार्थना
८ पाप गिनी जायगी । उस के दिन थोड़े

९ हों उस का पद दूसरा कोई ले । उस के बच्चे अनाथ हों और उस की स्त्री १० रांड हो । और उस के बच्चे भ्रमते फिरें और भीख मांगें और अपने उजाड़ों से ११ अपना भोजन ढूंढें । ब्याज लेनेहारा उस का सब कुछ फंसा ले और परदेशी १२ उस की कमाई को लूट लें । उस पर कोई दया बढ़ानेहारा न हो और उस के अनाथों पर कोई अनुग्रह करवैया न १३ हो । उस का बंश काटा जाय अवैया पीढ़ी में उन का नाम मिटाया जाय । १४ उस के पितरों का अधर्म्म परमेश्वर के आगे स्मरण किया जावे और उस की १५ माता का पाप मिटाया न जाय । वे परमेश्वर के आगे नित्य रहें और वह पृथिवी पर से उन का स्मरण काट डाले ॥

१६ इस कारण कि उस ने दया करना स्मरण न किया और दुःखी और कंगाल मनुष्य को सताया और चूर्ण अन्तःकरण १७ को जिसतें उसे बध करे । और उस ने स्राप को चाहा और वह उस पर पहुंच गया है और वह आशीस से प्रसन्न नहीं १८ हुआ सो वह उस्से दूर हो गई है । और उस ने स्राप को अपने बस्त्र की नाईं पहिना है और वह पानी की नाईं उस के भीतर आया है और तेल की नाईं १९ उस की हड्डियों में । वह उस के लिये उस बस्त्र के समान हो जिसे वह पहिनता है और पटुके के समान वह सदा उसे २० बांधे । मेरे बैरियों का पलटा परमेश्वर की ओर से और उन का जो मेरे प्राण के विरोध में बुरा कहते हैं यही हो ॥

२१ और तू हे परमेश्वर प्रभु अपने नाम के लिये मेरे संग व्यवहार कर क्योंकि २२ तेरी दया भली है मुझे छुड़ा । क्योंकि मैं दुःखी और कंगाल हूं और मेरा अन्तः- २३ करण मुझ में घायल है । छाया की नाईं अब वह फिर जाती मैं जाता रहता मैं टिड्डी की नाईं हंकाया गया । २४ मेरे घुटने उपवास से डगमगाते हैं और मेरा मांस ऐसा घट गया कि मोटा २५ नहीं । और मैं उन के लिये निन्दा हुआ वे मुझे देखते हैं अपना सिर हिलाते हैं ॥

२६ हे परमेश्वर मेरे ईश्वर मेरी सहाय कर अपनी दया के समान मुझे बचा । २७ और वे जानेंगे कि यह तेरा हाथ है हे २८ परमेश्वर तू ही ने यह किया है । वे स्राप देंगे और तू आशीस देगा वे उठे हैं और लज्जित होंगे और तेरा दास २९ आनन्दित होगा । मेरे बैरी दुर्नामी का बस्त्र पहिनेंगे और बस्त्र के समान अपनी ३० लज्जा को पहिनेंगे । मैं अपने मुंह से परमेश्वर का अत्यन्त धन्य मानूंगा और बहुतों के मध्य उस की स्तुति करूंगा । ३१ क्योंकि वह कंगाल के दहिने हाथ पर खड़ा होगा जिसतें उसे उस के प्राण के बिचारियों से बचावे ॥

एकसौ दसवां गीत ।

दाऊद का गीत ॥

१ परमेश्वर मेरे प्रभु से कहता है कि मेरे दहिने हाथ पर बैठ जब लों कि मैं तेरे बैरियों को तेरे चरण की पीढ़ी न २ करूं । परमेश्वर तेरे बल का राजदण्ड सैहून से भेजेगा तू अपने बैरियों के मध्य ३ में प्रभुता कर । तेरी सामर्थ्य के दिन तेरे लोग पवित्रता की सुन्दरता के संग प्रसन्नता की भेंट होंगे बिहान के कोख से तेरे लिये तेरी तरुणाई की ओस है । ४ परमेश्वर ने किरिया खाई है और न पछतावेगा कि तू मलिकिसिदक के समान ५ सदा लों याजक रहेगा । प्रभु ने तेरे दहिने हाथ पर अपने कोप के दिन ६ राजाओं को मारा है । वह जातिगणों में बिचार करेगा उस ने उन्हें लोथों से पूर्ण किया है उस ने बहुत देशों में सिरों

७ को कुचला है। वह मार्ग में नाले से पीयेगा इस कारण से वह सिर को ऊंचा करेगा॥

एकसौ ग्यारहवां गीत।

१ हल्लिलूयाह। मैं सारे अन्तःकरण से परमेश्वर की स्तुति करूंगा साधुन की
२ सभा और मंडली में। परमेश्वर के कार्य्य महान हैं और उन साधुन की सारी इच्छाओं के समान खोज किये
३ गये हैं। उस का कार्य्य प्रतिष्ठित और ऐश्वर्य्यवान है और उस का धर्म्म सर्वदा
४ लों स्थिर। उस ने अपने आश्चर्य्य कार्य्यों के लिये चिन्ह रक्खा है परमेश्वर कृपालु
५ और दयालु है। उस ने अपने डरवैयों को अहेर दिया है वह सदा अपनी
६ बाचा को स्मरण रक्खेगा। उस ने अपने कार्य्यों का बल अपने लोगों से वर्णन किया है जिसतें उन्हें अन्यदेशियों
७ का अधिकार देवे। उस के हाथ की क्रिया सत्यता और बिचार हैं उस की
८ सारी आज्ञाएं सत्य हैं। सर्वदा के लिये स्थिर सच्चाई के संग किई गईं और
९ सीधी हैं। उस ने अपने लोगों को मुक्ति दिई है सदा के लिये अपनी बाचा को स्थिर किया है उस का नाम पवित्र
१० और भयंकर है। परमेश्वर का भय बुद्धि का आरंभ है उन सभों के माननेहारों की उत्तम बुद्धि है उस की स्तुति सदा लों स्थिर है॥

एकसौ बारहवां गीत।

१ हल्लिलूयाह। वह मनुष्य क्या ही धन्य जो परमेश्वर से डरता है उस की आज्ञाओं पर अत्यन्त आनन्दित होता
२ है। उस का बंश पृथिवी पर बलवन्त होगा खरों के सन्तान आशीषित होंगे।
३ उस के घर में धन और सम्पत्ति है और
४ उस का धर्म्म सदा लों स्थिर। खरों के लिये अंधियारे में उंजियाला उदय होता है जो कृपालु और दयालु और धर्म्मी हैं। क्या ही धन्य वह मनुष्य जो ५ अनुग्रह करता और ऋण देता है वह अपने काम काज को बिचार से सुधारेगा।
क्योंकि वह सदा लों न टलेगा सदा ६ लों उस का धर्म्मी होना स्मरण किया जायगा। वह कुसमाचार से भय न ७ करेगा उस का मन दृढ़ है परमेश्वर पर भरोसा रखता हुआ। उस का मन ८ स्थिर है वह न डरेगा यहां लों कि अपने बैरियों पर दृष्टि करे। उस ने ९ बिथराया कंगालों को दिया है उस का धर्म्म सदा लों स्थिर उस का सींग प्रतिष्ठा के संग ऊंचा होगा। दुष्ट देखेगा १० और कुढ़ेगा अपने दांत किड़किड़ावेगा और गल जायगा दुष्टों का अभिलाष नाश हो जायगा॥

एकसौ तेरहवां गीत।

हल्लिलूयाह। स्तुति करो हे परमेश्वर १ के दासो परमेश्वर के नाम की स्तुति करो। परमेश्वर का नाम अब से और २ सदा लों धन्य हो। सूर्य्य के उदय से ३ लेके उस के अस्त लों परमेश्वर के नाम की स्तुति हो। परमेश्वर सारे जाति- ४ गणों पर महान है और स्वर्ग पर उस का बिभव॥

परमेश्वर हमारे ईश्वर की नाईं ५ स्वर्ग और पृथिवी पर कौन है। जो ६ ऊंचाई पर रहता जो नीचे देखता है। जो कंगाल को धूल से उठा लेता है ७ घूरे से दीन को ऊंचा करेगा। जिसतें ८ उसे अध्यक्षों के संग अपने लोगों के अध्यक्षों के संग बैठावे। जो घर की ९ रहनेहारी बांझ को बच्चों की आनन्द करनेहारी माता बनाकर बिठलाता है। हल्लिलूयाह॥

एकसौ चौदहवां गीत।

जब इस्राएल मिस्र से और यअकूब १

का घराना परदेशी भाषा की जाति में से
२ निकला। तब यहूदाह उस का धर्म्म-
धाम और इसराएल उस का राज्य हो
३ गया। समुद्र ने देखा और भागा यरदन
४ उलटी बही। पहाड़ मेंढ़ों की नाईं
उछले पहाड़ियां भेड़ के बच्चों की नाईं॥

५ हे समुद्र तुझे क्या हुआ कि तू
भागता है और हे यरदन तुझे क्या हुआ
६ कि तू उलटी बहती है। हे पहाड़ो
क्या हुआ कि तुम मेंढ़ों की नाईं उछलते
हो और हे पहाड़ियो भेड़ के बच्चों की
७ नाईं। हे पृथिवी प्रभु के आगे कांप
८ यअकूब के ईश्वर के आगे। जो पत्थर
को पानी का कुण्ड बनाता है और कड़े
पाषाण को पानियों के सोते॥

एकसौ पन्द्रहवां गीत।

हम को नहीं हे परमेश्वर हम को
नहीं परन्तु अपने नाम को महिमा दे
अपनी दया के कारण अपनी सच्चाई के
२ कारण। जातिगण क्यों कहें कि अब
३ उन का ईश्वर कहां है। हमारा ईश्वर
तो स्वर्ग पर है जो उस ने चाहा सो
सब किया है॥

४ उन की मूर्त्तें चांदी और सोना हैं
५ मनुष्यों के हाथ की बनाई हुई। वे
मुंह रखती हैं पर बोलती नहीं आंखें
६ रखती हैं पर देखती नहीं। कान रखती
हैं पर सुनती नहीं नाक रखती हैं पर
७ सूंघती नहीं। उन के हाथ हैं पर छूती
नहीं उन के पांव हैं पर चलती नहीं वे
अपने गले से कुछ शब्द नहीं निकालतीं।
८ उन्हीं के समान उन के बनवैये होंगे और
हर एक जो उन पर भरोसा रखता है॥

९ हे इसराएल परमेश्वर पर भरोसा
रख उन की सहाय और उन की ढाल
१० वही है। हे हारून के घराने परमेश्वर
पर भरोसा रक्खो उन की सहाय और
११ उन की ढाल वही है। हे परमेश्वर के
डरवैयो परमेश्वर पर भरोसा रक्खो उन
की सहाय और उन की ढाल वही है॥

परमेश्वर ने हमें स्मरण किया है १२
वह आशीस देगा इसराएल के घराने
को आशीस देगा हारून के घराने को
आशीस देगा। वह परमेश्वर के डरवैयों १३
को आशीस देगा छोटों को बड़ों समेत।
परमेश्वर तुम को बढ़ती देवे तुम को १४
और तुम्हारे लड़कों को। तुम परमेश्वर १५
के निकट स्वर्ग और पृथिवी के बनाने-
हारे के निकट आशीषित हो॥

स्वर्ग परमेश्वर के लिये स्वर्ग हैं और १६
उस ने मनुष्य के वंश को पृथिवी दिई
है। न मृतक परमेश्वर की स्तुति करेंगे १७
और न वे सब जो समाधि में उतरते हैं।
और हम अब से और सदा लों परमेश्वर १८
की स्तुति किया करेंगे। हलिलूयाह॥

एकसौ सोलहवां गीत।

मैं प्यार करता हूं क्योंकि परमेश्वर
मेरा शब्द मेरी बिनतियां सुनता है।
क्योंकि उस ने अपना कान मेरी ओर २
झुकाया है और मैं अपने सारे दिनों में
उसे पुकारता रहूंगा। मृत्यु के बंधनों ने ३
मुझे घेरा समाधि के कष्टों ने मुझे पकड़
लिया मैं दुःख और शोक को पाता हूं।
और मैं परमेश्वर के नाम को पुकारता ४
हूं कि हे परमेश्वर मैं बिनती करता हूं
मेरे प्राण को बचा ले॥

परमेश्वर अनुग्राहक और धर्म्मी है ५
और हमारा ईश्वर दया दिखलाता है।
परमेश्वर सूधे लोगों का रक्षक है मैं ६
दीन हो गया और उस ने मुझे मोक्ष दिई।
हे मेरे प्राण अपने चैनस्थानों में फिर ७
क्योंकि परमेश्वर ने तुझ पर भलाई किई
है। क्योंकि तू ने मेरा प्राण मृत्यु से ८
मेरी आंखों को आंसू बहाने से मेरे पांवों
को फिसलने से बचाया है। मैं परमेश्वर
के आगे जीवतों के देशों में चला फिरा

१० करूंगा। मैं बिश्वास लाया क्योंकि यों
११ बोलता हूं मैं बड़ा दुःखी हुआ। मैं ने
अपनी घबराहट में कहा कि सारे मनुष्य
झूठे हैं॥
१२ मैं किस रीति परमेश्वर को उस के
सारे पदार्थों के लिये जो मुझ पर हैं
१३ पलटा दूंगा। मैं मुक्ति का कटोरा
उठाऊंगा और परमेश्वर के नाम को
१४ पुकारूंगा। मैं परमेश्वर के लिये अपनी
मनौतियां पूरी करूंगा उस के सारे लोगों
के आगे मैं बिनती करता हूं॥
१५ परमेश्वर की दृष्टि में उस के साधुन
१६ की मृत्यु बहुमूल्य है। हे परमेश्वर मैं
बिनती करता हूं क्योंकि मैं तेरा दास
हूं मैं तेरा दास हूं तेरी दासी का पुत्र
१७ तू ने मेरे बंधनों को खोला है। मैं तुझे
धन्यबाद का बलि चढ़ाऊंगा और
१८ परमेश्वर के नाम को पुकारूंगा। मैं
अपनी मनौतियां परमेश्वर के लिये पूरी
करूंगा उस के सारे लोगों के आगे मैं
१९ बिनती करता हूं। परमेश्वर के मन्दिर
के आंगनों में हे यरूसलम तुझ में।
हल्लिलूयाह॥

एकसौ सत्रहवां गीत।

१ हे सारे जातिगणो परमेश्वर की
स्तुति करो हे सारे लोगो उस का धन्य
२ मानो। क्योंकि उस की दया हम पर
बहुत है और परमेश्वर की सच्चाई सदा
लों है। हल्लिलूयाह॥

एकसौ अठारहवां गीत।

१ परमेश्वर का धन्यबाद करो क्योंकि
वह भला है क्योंकि उस की दया सदा
२ लों है। हाय कि इसराएल कहे क्योंकि
३ उस की दया सदा लों है। हाय कि
हारून का घराना कहे क्योंकि उस की
४ दया सदा लों है। हाय कि परमेश्वर
के डरवैये कहें क्योंकि उस की दया
सदा लों है॥

५ मैं ने सकेती में परमेश्वर को पुकारा
परमेश्वर ने बिस्तारित स्थान में मेरी
६ सुनी। परमेश्वर मेरी ओर है मैं न
७ डरूंगा मनुष्य मेरा क्या करेगा। परमे-
श्वर मेरे सहायकों में मेरी ओर है और
मैं अपने बैरियों पर दृष्टि करूंगा।
८ परमेश्वर पर भरोसा करना मनुष्य पर
९ भरोसा करने से भला है। परमेश्वर
पर भरोसा करना अध्यक्षों पर भरोसा
१० करने से भला है। सारे जातिगणों ने
मुझे घेर लिया है परमेश्वर के नाम से
मैं किरिया खाता हूं कि उन्हें नाश
११ करूंगा। उन्हों ने मुझे घेर लिया हां
मुझे घेर लिया परमेश्वर के नाम से मैं
किरिया खाता हूं कि उन्हें नाश करूंगा।
१२ उन्हों ने मधुमाखियों की नाईं मुझे
घेर लिया है वे कांटों की आग के
समान बुझ गये परमेश्वर के नाम से मैं
किरिया खाता हूं कि उन्हें नाश करूंगा।
१३ तू ने ढकेला मुझे ढकेला जिसतें मैं
गिर पड़ूं और परमेश्वर ने मेरी सहाय
किई॥

१४ मेरा बल और मेरा गान परमेश्वर
है और वह मेरी मुक्ति हो गया है।
१५ आनन्द और मुक्ति का शब्द धर्म्मियों
के तंबुओं में है परमेश्वर के दहिने
१६ हाथ ने शूरता किई है। परमेश्वर का
दहिना हाथ ऊंचा परमेश्वर का दहिना
१७ हाथ शूरता करता है। मैं न मरूंगा
परन्तु जीता रहूंगा और परमेश्वर की
१८ क्रिया बर्णन करूंगा। परमेश्वर ने अति
ताड़ना से मुझे ताड़ना किई पर मुझे
मृत्यु को नहीं दिया॥

१९ मेरे लिये धर्म्म के फाटक खोलो मैं
उन में प्रवेश करूंगा परमेश्वर की स्तुति
२० करूंगा। यह वह फाटक जो परमेश्वर
२१ का है धर्म्मी उस में जायेंगे। मैं तेरी
स्तुति करूंगा क्योंकि तू ने मेरी सुनी है

२२ और मेरी मुक्ति हो गया है । जिस पत्थर को थवइयों ने निकम्मा ठहराया वह कोने का सिरा हो गया है ।
२३ परमेश्वर से यह हुआ वह हमारी दृष्टि
२४ में आश्चर्य्यित है । यह वह दिन है जिसे परमेश्वर ने बनाया है हम उस
२५ में आनन्द करेंगे और मगन होंगे । हे परमेश्वर हम बिनती करते हैं कृपा करके बचा हे परमेश्वर हम बिनती करते हैं कृपा करके भाग्यमानी दे ।
२६ जो आता है वह परमेश्वर के नाम से धन्य हो हम ने परमेश्वर के घर से तुम्हें आशीस दिई है ॥
२७ परमेश्वर शक्तिमान है और उस ने हमें उंजियाला दिया है बलिदान को रस्सियों से बांधो यज्ञबेदी के सींगों
२८ लों । मेरा सर्वशक्तिमान तू ही है और मैं तेरी स्तुति करूंगा मेरा ईश्वर मैं
२९ तेरी प्रतिष्ठा करूंगा । परमेश्वर का धन्यबाद करो क्योंकि वह भला क्योंकि उस की दया सदा लों है ॥

एकसौ उन्नीसवां गीत ।

आलिफ़ ॥

१ क्या ही धन्य वे जो मार्ग में सिद्ध हैं जो परमेश्वर की व्यवस्था पर चलते
२ हैं । क्या ही धन्य उस की साक्षियों के पालन करनेहारे जो सारे मन से उसे
३ ढूंढ़ते हैं । वे बुराई भी नहीं करते और
४ उस के मार्गों पर चलते हैं । तू ने अपनी आज्ञाएं प्रचारीं कि हम उन्हें दृढ़ता से
५ पालन करें । हाय कि मेरे मार्ग तेरी बिधिन को पालन करने के लिये स्थिर
६ हों । तब मैं लज्जित न होऊंगा जब तेरी सारी आज्ञाओं पर दृष्टि करूंगा ।
७ मैं मन की खराई से तेरी स्तुति करूंगा जब तेरे धर्म्म के बिचारों को सीखूं ।
८ मैं तेरी बिधिन को पालन करूंगा तू मुझे सर्वथा न त्याग ॥

बेत ॥

९ तरुण किस रीति अपने मार्ग को पवित्र रक्खे जिसतें तेरे बचन के समान
१० उसे पालन करे । मैं ने अपने सारे मन से तुझे ढूंढ़ा मुझे अपनी आज्ञाओं से
११ भरमने मत दे । मैं ने अपने मन में तेरे बचन को छिपाया है जिसतें तेरे बिरुद्ध
१२ पाप न करूं । हे परमेश्वर तू धन्य हो
१३ अपनी बिधिन की मुझे शिक्षा दे । मैं ने तेरे मुंह के सारे न्याय अपने होठों से
१४ बर्णन किये हैं । मैं तेरी साक्षियों के मार्ग में आनन्दित हुआ जैसे कि सारी
१५ बढ़ती पर । मैं तेरी आज्ञाओं पर ध्यान करूंगा और तेरे मार्गों पर दृष्टि करूंगा ।
१६ मैं तेरी बिधिन में अपने तईं मगन करूंगा तेरे बचन को न भूलूंगा ॥

गीमल ॥

१७ अपने सेवक पर भलाई कर जिसतें
१८ मैं जीऊं और तेरे बचन को मानूं । मेरी आंखों को खोल और मैं देखा करूंगा
१९ तेरी व्यवस्था से आश्चर्य्य । मैं पृथिवी पर परदेशी हूं अपनी आज्ञाओं को मुझ
२० से मत छिपा । मेरा प्राण हर घड़ी तेरे न्यायों की लालसा के मारे टूटा जाता
२१ है । तू ने अहंकारियों को स्रापितों को जो तेरी आज्ञाओं से भटकते हैं दपटा
२२ है । मेरे ऊपर से निन्दा और तुच्छता उलट दे क्योंकि मैं ने तेरी साक्षियों को
२३ पालन किया है । अध्यक्ष भी बैठे और मेरे बिरुद्ध में बातें किईं तेरा सेवक
२४ तेरी बिधिन पर ध्यान लगाता है । तेरी साक्षियां मेरे लिये आनन्द भी हैं और मेरी मंत्र देनेहारी ॥

दालेथ ॥

२५ मेरा प्राण धूल से लिपट गया है
२६ अपने बचन के समान मुझे जिला । मैं ने अपने पथों को बर्णन किया और तू ने मेरी सुनी अपनी बिधिन की मुझे

२७ सिखा दे। अपनी आज्ञाओं का मार्ग मुझे समझा और मैं तेरे आश्चर्यों पर २८ ध्यान लगाऊंगा। मेरा प्राण शोक के मारे आंसू बहाता है अपने बचन के २९ समान मुझे उठा। झूठ के मार्ग को मुझ से अलग कर और अपनी व्यवस्था ३० कृपा करके मुझे दे। मैं ने सच्चाई का मार्ग चुन लिया है और तेरे न्यायों को ३१ अपने सन्मुख रक्खा है। मैं तेरी साक्षियों से लिपटा हुआ हूं हे परमेश्वर मुझे ३२ लज्जित न कर। मैं तेरी आज्ञाओं के मैं दौड़ूंगा क्योंकि तू मेरे मन को बढ़ावेगा॥

हे॥

३३ हे परमेश्वर मुझे अपनी बिधिन का मार्ग दिखा और मैं अन्त लों उसे पालन ३४ करूंगा। मुझे समुझ दे और मैं तेरी व्यवस्था को पालन करूंगा और सारे ३५ मन से उसे मानूंगा। मुझे अपनी आज्ञाओं के मार्ग पर चला क्योंकि मैं ३६ उस में आनन्दित हूं। मेरे मन को अपनी साक्षियों की ओर फिरा और न ३७ लालच की ओर। मेरी आंखों को झूठ पर दृष्टि करने से उलट दे अपने मार्ग ३८ में मुझे जिला। अपने सेवक के लिये अपने उस बचन को स्थिर कर जो तेरे ३९ डरवैयों के लिये है। मैं अपनी जिस निन्दा से डरता हूं उसे फेर दे क्योंकि ४० तेरे न्याय उत्तम हैं। देख मैं तेरी आज्ञाओं का लालसित हूं अपने धर्म्म में मुझे जिला॥

वाव॥

४१ और हे परमेश्वर तेरी दया मुझ पर आवे तेरी मुक्ति तेरे बचन के समान। ४२ तो मैं अपने निन्दक से उत्तर का बचन बोलूंगा क्योंकि मैं तेरे बचन पर भरोसा ४३ रखता हूं। और सच्चाई का यह बचन मेरे मुंह से सर्व्वथा छीन न ले क्योंकि मैं तेरे बिचारों का आशावान् हूं। ४४ और मैं तेरी व्यवस्था को सदा सर्व्वदा लों पालन करूंगा। ४५ और मैं निर्बंधता में चला फिरा करूंगा क्योंकि मैं ने तेरी आज्ञाएं ढूंढ़ी हैं। ४६ और मैं राजाओं के आगे तेरी साक्षियों की चर्चा करूंगा और लज्जित न होऊंगा। ४७ और मैं तेरी उन आज्ञाओं में जिन्हें प्यार करता हूं अपने तईं आनन्दित करूंगा। ४८ और मैं अपने हाथ तेरी उन आज्ञाओं की ओर जिन्हें प्यार करता हूं उठाऊंगा और तेरी बिधिन पर ध्यान लगाऊंगा॥

ज़ैन॥

४९ अपना बचन अपने सेवक के लिये स्मरण कर क्योंकि तू ने मुझे आशावान् किया है। ५० यह मेरी शान्ति मेरे दुःख में है कि तेरे बचन ने मुझे जिलाया है। ५१ अभिमानियों ने मुझे अति ठट्ठे में उड़ाया है मैं तेरी व्यवस्था से नहीं हटा। ५२ हे परमेश्वर मैं ने तेरे पुरातन बिचारों को स्मरण रक्खा है और अपने को शान्ति दिई है। ५३ कोपाग्नि ने मुझे पकड़ लिया है उन दुष्टों के कारण से जो तेरी व्यवस्था को त्यागते हैं। ५४ मेरे यात्रालय में तेरी बिधिन मेरे लिये गान हुई हैं। ५५ हे परमेश्वर मैं रात को तेरे नाम को स्मरण करता और तेरी व्यवस्था को पालन करता हूं। ५६ यह मुझ से बन पड़ा क्योंकि मैं ने तेरी आज्ञाओं को पालन किया है॥

खेत॥

५७ हे परमेश्वर मैं ने कहा कि मेरा भाग यह है कि तेरे बचनों को पालन करूं। ५८ मैं ने सारे मन से तेरे रूप की याचना किई है अपने बचन के समान मुझ पर दया कर। ५९ मैं ने अपने मार्गों पर सोच किया है और अपने पांव तेरी साक्षियों की ओर फिर फेरे हैं। ६० मैं ने तेरी आज्ञाओं का पालन करने में फुरती किई और

६१ आलस्य न किई। दुष्टों के बंधनों ने मुझे घेरा पर मैं ने तेरी व्यवस्था को नहीं
६२ भुलाया। मैं आधी रात को उठूंगा जिसतें तेरे धर्म्म के बिचारों के कारण
६३ तेरा धन्य मानूं। मैं उन सभों का संगी हूं जो तुझ से डरते हैं और उन का जो
६४ तेरी आज्ञाओं को मानते हैं। हे परमेश्वर पृथिवी तेरी दया से पूर्ण है अपनी बिधिन की मुझे शिक्षा दे॥

तेथ॥

६५ हे परमेश्वर तू ने अपने बचन के समान अपने सेवक से अच्छा व्यवहार
६६ किया है। सुबिचार और ज्ञान की मुझे शिक्षा दे क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं पर
६७ बिश्वास लाया हूं। उस्से पहिले कि मैं ने दुःख पाया मैं भटका हुआ था पर अब मैं ने तेरे बचन को पालन किया
६८ है। तू भला है और भलाई करता है
६९ अपनी बिधिन का मुझे ज्ञान दे। अहंकारियों ने मेरे बिरुद्ध झूठ बना रक्खा है मैं सारे मन से तेरी आज्ञाओं को
७० पालन करूंगा। उन का मन चिकनाई के समान चिकना है मैं तेरी व्य-
७१ वस्था से आनन्दित हूं। मेरे लिये भला है कि मैं दुःख में पड़ा जिसतें तेरी
७२ बिधिन को जानूं। तेरे मुंह की व्यवस्था मेरे लिये सोने और चांदी के सहस्रों से अच्छी है॥

योद॥

७३ तेरे हाथों ने मुझे बनाया और मुझे सिद्ध किया मुझे समझ दे और मैं तेरी
७४ आज्ञाओं का ज्ञान प्राप्त करूंगा। तेरे डरवैये मुझे देखेंगे और आनन्दित होंगे क्योंकि मैं तेरे बचन का आशावान् रहा।
७५ हे परमेश्वर मैं जानता हूं कि तेरे बिचार सत्य हैं और तू ने सत्यता के संग मुझे
७६ दुःख दिया है। अपने उस बचन के समान जो अपने सेवक से किया हाय कि तेरी दया मुझे शान्ति देने के लिये
७७ हो। तेरी कृपायें मुझ पर आवें तो मैं जीता रहूंगा क्योंकि तेरी व्यवस्था मेरी आनन्दता है।
७८ अहंकारी लज्जित हों क्योंकि उन्हों ने झूठ से मेरे बिगाड़ को टेका किया है मैं तेरी आज्ञाओं पर ध्यान रक्खूंगा।
७९ तेरे डरवैये मेरी ओर फिरें और तेरी साक्षियों को जानें।
८० मेरा मन तेरी बिधिन में सिद्ध हो जिसतें मैं लज्जित न होऊं॥

काफ॥

८१ मेरा प्राण तेरी मुक्ति के लिये मूर्छित है मैं तेरे बचन पर आश रहता हूं।
८२ मेरी आंखें तेरे बचन की बाट जोहने में मूर्छित हुईं यह कहते हुए कि तू कब मुझे शान्ति देगा।
८३ क्योंकि मैं उस चर्म्मकर्पी जलपात्र के समान हुआ जो धूएं में है मैं ने तेरी बिधिन को नहीं भुलाया।
८४ तेरे सेवक के दिन कितने हैं तू कब मेरे सतानेहारों पर न्याय प्रगट करेगा।
८५ अहंकारियों ने मेरे लिये गड़हे खोदे हैं जो तेरी व्यवस्था के समान नहीं हैं।
८६ तेरी सारी आज्ञायें बिश्वासमय हैं वे झूठ से मुझे सताते हैं मेरी सहाय कर।
८७ निकट था कि वे मुझे पृथिवी पर से मिटा डालते पर मैं ने तेरी आज्ञाओं का त्याग न किया।
८८ अपनी दया के समान मुझे जीता रख और मैं तेरे मुंह की साक्षियों को पालन करूंगा॥

लामद॥

८९ हे परमेश्वर तेरा बचन सर्व्वदा स्वर्ग पर स्थिर है।
९० तेरी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी लों है तू ने पृथिवी को स्थिर किया और वह स्थिर है।
९१ वे तेरे न्यायों के कारण आज लों स्थिर हैं क्योंकि सब तेरे सेवक हैं।
९२ यदि तेरी व्यवस्था मेरी आनन्दता न होती तो मैं अपनी बिपत्ति में नाश

९३ हो जाता। मैं कभी तेरी आज्ञाओं को
न भूलूंगा क्योंकि तू ने उन के द्वारा
९४ से मुझे जिलाया है। मैं तेरा हूं मुझे
बचा क्योंकि मैं ने तेरी आज्ञाओं को
९५ खोज किया है। दुष्ट मेरी घात में
लगे हैं जिसतें मुझे नाश करें मैं तेरी
९६ साक्षियों पर ध्यान लगाऊंगा। मैं ने
सारी सिद्धता का अंत देखा पर तेरी
आज्ञा अत्यन्त चौड़ी है॥

मीम॥

९७ वाह मैं तेरी व्यवस्था से क्या ही
प्रीति रखता हूं सारे दिन मेरा ध्यान
९८ वही है। तेरी आज्ञाएं मुझे मेरे बैरियों
से अधिक बुद्धिमान बनाती हैं क्योंकि
९९ वे सदा मेरे लिये हैं। मैं अपने सारे
उपदेशकों से अधिक समझ रखता हूं
क्योंकि तेरी साक्षियों पर मेरा ध्यान
१०० है। मैं प्राचीनों से अधिक समझता हूं
क्योंकि मैं ने तेरी आज्ञाओं का पालन
१०१ किया है। मैं ने अपने पांव को हर
कुमार्ग से रोक रक्खा है जिसतें
१०२ तेरे बचन को पालन करूं। मैं तेरे
बिचारों से नहीं हटा क्योंकि तू ही ने
१०३ मेरी अगुआई किई है। तेरी बातें मेरे
तालू में क्या ही मीठी लगती हैं मधु
१०४ से अधिक मेरे मुंह में। मैं तेरी आज्ञाओं
से समझ पाता हूं इस लिये मैं ने हर
झूठे मार्ग से घिन किया है॥

नून॥

१०५ तेरा बचन मेरे पांव के लिये दीपक
है और मेरे मार्ग के लिये उंजियाला।
१०६ मैं ने किरिया खाई है और उसे पूरा
करूंगा कि तेरे धर्म्म के बिचारों को
१०७ पालन करूंगा। मैं अति दुःखी हूं हे
परमेश्वर अपने बचन के समान मुझे
१०८ जिला। हे परमेश्वर मैं बिनती करता
हूं मेरे मुंह की मनमनता की भेंटों
से प्रसन्न हो और अपने न्यायों का मुझे
ज्ञान दे। मेरा प्राण सदा मेरी हथेली १०९
पर है पर मैं ने तेरी व्यवस्था को नहीं
बिसराया। दुष्टों ने मेरे लिये फंदा ११०
लगाया है पर मैं तेरी आज्ञाओं से
भटक नहीं गया। मैं ने सदा के लिये १११
तेरी साक्षियों को अधिकार में लिया
है क्योंकि मेरे मन का आनन्द वेही
हैं। मैं ने अपने मन को झुकाया है ११२
कि सदा लों हां अन्त लों तेरी बिधिन
को पालन करूं॥

सामिख॥

मैं कुभावनाओं से घिन करता हूं ११३
और तेरी व्यवस्था से प्रेम रखता हूं।
मेरे छिपने का स्थान और ढाल तू ही ११४
है मैं तेरे बचन का आशावान् हूं। हे ११५
कुकर्म्मियो मेरे पास से दूर होओ और
मैं अपने ईश्वर की आज्ञाओं को
मानूंगा। अपने बचन के समान मुझे ११६
संभाल और मैं जीता रहूं और मेरी आशा
से मुझे लज्जित न कर। मुझे थाम ले ११७
और मैं बचा रहूंगा और सदा तेरी
बिधिन पर दृष्टि रक्खूंगा। तू अपनी ११८
बिधिन के सारे भटके हुओं को तुच्छ
जानता है क्योंकि उन का छल मिथ्या
है। तू ने पृथिवी के सारे दुष्टों को ११९
सोने चांदी के मैल की नाईं मिटा
डाला है इस लिये मैं तेरी साक्षियों से
प्रीति रखता हूं। मेरा शरीर तेरे डर १२०
से थर्थराता है और मैं तेरे न्यायों से
डरता हूं॥

ऐन॥

मैं ने न्याय और धर्म्म किया है मुझे १२१
मेरे सतानेवालों के बश में न छोड़।
भलाई के लिये अपने सेवक का बिच- १२२
वई हो अहंकारी मुझे न सतावें। मेरी १२३
आंखें तेरी मुक्ति के और तेरे धर्म्म के
बचन की बाट जोहने में मूर्छित हो
गईं। अपनी दया के समान अपने १२४

सेवक से व्यवहार कर और अपनी
१२५ बिधिन का मुझे ज्ञान दे। मैं तेरा
सेवक हूं मुझे समझ दे जिसतें तेरी
१२६ साक्षियों को जानूं। परमेश्वर के लिये
कार्य्य करने का समय है वे तेरी व्य-
१२७ वस्था को भंग करते हैं। इस लिये मैं
तेरी आज्ञाओं को सोने हां चोखे सोने
१२८ से अधिक प्यार करता हूं। इस लिये
मैं तेरी सारी आज्ञाओं को सभों के
बिषय ठीक जानता हूं और झूठ के
हर मार्ग से घिन करता हूं॥

पे॥

१२९ तेरी साक्षियां आश्चर्य्यित हैं इस
लिये मेरा प्राण उन्हें पालन करता है।
१३० तेरे बचनों का खुल जाना मूर्खों
१३१ को समझाके उंजियाला करता है। मैं
अपना मुंह फैलाता और हांफता हूं
क्योंकि तेरी आज्ञाओं के लिये अभि-
१३२ लाषी हूं। अपने नाम के प्रेमियों के
आचरण के समान मेरी ओर दृष्टि कर
१३३ और मुझ पर दया कर। अपने बचन
के कारण से मेरे डगों को स्थिर कर
और कोई अधर्म्म मुझ पर राज्य न करे।
१३४ मनुष्य के अंधेर से मुझे छुड़ा और मैं
तेरी आज्ञाओं को पालन किया करूंगा।
१३५ अपने सेवक पर अपने मुंह को चमका
और अपनी बिधिन का मुझे ज्ञान दे।
१३६ मेरी आंखें पानी की नदियां होके बह
जाती हैं इस कारण कि वे तेरी व्य-
वस्था को पालन नहीं करते॥

सादि॥

१३७ हे परमेश्वर तू ही धर्म्मी है और
१३८ अपने बिचारों में सच्चा। तू ने अति
धर्म्म और सच्चाई के संग अपनी साक्षियां
१३९ प्रचारी हैं। मेरी ज्वलन मुझे खा लेती
है क्योंकि मेरे बिरोधी तेरे बचनों को
१४० भुला देते हैं। तेरा बचन भली भांति
ताया गया और तेरा दास उस्से प्रेम
रखता है। मैं अधम हूं और तुच्छ पर १४१
तेरी आज्ञाओं को नहीं भूलता। तेरा १४२
धर्म्म सर्वदा सच्चा है और तेरी व्यवस्था
सत्य। सकेती और कष्ट ने मुझे ले लिया है १४३
तेरी आज्ञाएं मेरी आनन्दता हैं। तेरी १४४
साक्षियां सनातन लों सच्ची हैं मुझे ज्ञान
दे तो मैं जीता रहूंगा॥

काफ॥

मैं सारे मन से पुकारता हूं हे १४५
परमेश्वर मेरी सुन मैं तेरी बिधिन को
पालन करूंगा। मैं तुझे पुकारता हूं १४६
मुझे बचा और मैं तेरी साक्षियों को
ताकता रहूंगा। मैं पौ फटने के समय १४७
तेरे आगे आता हूं और दोहाई देता
हूं तेरे बचनों का आशावान् हूं। मेरी १४८
आंखें रात के पहरों को आगे से ले
लेती हैं जिसतें तेरे बचन पर ध्यान
रक्खूं। अपनी दया के समान मेरा १४९
शब्द सुन हे परमेश्वर अपने बिचारों
के अनुसार मुझे जिला। बुराई के १५०
पीछा करवैया समीप हैं वे तेरी व्यवस्था
से दूर हैं। हे परमेश्वर तू ही निकट १५१
है और तेरी सारी आज्ञाएं सत्य हैं।
मैं ने आगे से तेरी ही साक्षियों से १५२
जाना है कि तू ने उन्हें सदा के लिये
स्थिर किया है॥

रेश॥

मेरी बिपत्ति को देख और मुझे १५३
छुड़ा क्योंकि मैं ने तेरी व्यवस्था को
नहीं भुलाया है। मेरे पद के बिवाद १५४
में मेरी सहायता कर और मुझे छुड़ा
अपने बचन के समान मुझे जिला।
मुक्ति दुष्टों से दूर है क्योंकि वे तेरी १५५
बिधिन को नहीं ढूंढ़ते। हे परमेश्वर १५६
तेरी दया बहुत हैं अपने न्यायों के
समान मुझे जिला। मेरे सतानेहारे १५७
और दुःखदेनेहारे बहुत हैं मैं तेरी
साक्षियों से नहीं हटा। मैं उन १५८

परपंचियों को देखता और घिन करता हूं जो तेरे बचन को पालन नहीं १५९ करते। देख कि मैं तेरी आज्ञाओं से प्रीति रखता हूं हे परमेश्वर अपनी १६० दया के समान मुझे जिला। तेरे बचन का आरंभ सत्य है और तेरी सच्चाई का हर एक बिचार सदा के लिये है॥

शीन॥

१६१ अध्यक्ष अकारण मेरे पीछे पड़े हैं और मेरा मन तेरे बचनों से भयमान १६२ है। मैं बहुत लूट पानेहारों की नाईं १६३ तेरे बचन पर मगन रहता हूं। मैं झूठ से घिन करता और बैर रखता हूं १६४ तेरी व्यवस्था से प्रीति रखता हूं। मैं तेरे धर्म्म के न्याय के कारण प्रतिदिन १६५ सात बेर तेरी स्तुति करता हूं। तेरी व्यवस्था के प्रेमियों को बड़ा चैन है और उन के लिये किसी प्रकार की १६६ ठोकर नहीं है। हे परमेश्वर मैं तेरी मुक्ति का आशावान् हूं और तेरी आज्ञाओं १६७ के अनुसार करता हूं। मेरा प्राण तेरी साक्षियों को पालन करता है और मैं १६८ उन से अत्यन्त प्रेम रखता हूं। मैं तेरी आज्ञाओं और तेरी साक्षियों को पालन करता हूं क्योंकि मेरी सारी चाल तेरे आगे है॥

ता॥

१६९ हे परमेश्वर मेरा बिलाप तेरे आगे पहुंचे अपने बचन के समान मुझे समझ १७० दे। मेरी बिनती तेरे आगे आये १७१ अपने बचन के समान मुझे छुड़ा। मेरे होंठ स्तुति बर्णन किया करेंगे क्योंकि तू अपनी बिधिन का मुझे ज्ञान देगा। १७२ मेरी जीभ तेरे बचन का यह उत्तर दे १७३ कि तेरी सारी आज्ञाएं सच्ची हैं। तेरा हाथ मेरी सहायता के लिये निकट रहे क्योंकि मैं ने तेरी आज्ञाओं को १७४ अंगीकार किया है। हे परमेश्वर मैं तेरी मुक्ति की लालसा रखता हूं और तेरी व्यवस्था मेरे आनन्द हैं। मेरा १७५ प्राण जीता रहे और तेरी स्तुति करे और तेरे न्याय मेरी सहायता करें। मैं १७६ खोई हुई भेड़ की नाईं भटक गया अपने दास को ढूंढ़ क्योंकि मैं ने तेरी आज्ञाओं को नहीं भुलाया॥

एकसौ बीसवां गीत।

यात्राओं का गान॥

१ मैं ने अपनी सकेती में परमेश्वर २ को पुकारा और उस ने मेरी सुनी। हे परमेश्वर मेरे प्राण को झूठ के होंठ से और छली जीभ से छुड़ा॥

३ हे छली जीभ वह तुझे क्या देगा ४ और तुझे क्या अधिक करेगा। बलवान के चोखे किये हुए बाण रतमबृक्ष के कोइले सहित॥

५ हाय मुझ पर कि मैं मसक के संग परदेशी हूं और किदार के तंबुओं के ६ निकट रहता हूं। मेरा प्राण कुशल के बैर रखनेहारे के संग अपनी भलाई के ७ लिये अबेर लों रहा है। मैं कुशल हूं और जब बातें करता हूं तब वे लड़ाई के लिये लैस होते हैं॥

एकसौ एक्कीसवां गीत।

यात्राओं का गान॥

१ मैं अपनी आंखें पहाड़ों की ओर उठाता हूं मेरी सहाय कहां से आवेगी। २ मेरी सहाय परमेश्वर स्वर्ग और पृथिवी ३ के बनानेहारे से है। वह तेरे पांव को टलने न दे तेरा रक्षक न ऊंघे। ४ देख इसराएल का रक्षक न ऊंघेगा ५ और न सोवेगा। परमेश्वर तेरा रक्षक है परमेश्वर तेरे दहिने हाथ पर तेरा ६ छाया है। दिन को सूर्य्य तुझे कुछ दुःख ७ न देगा और रात को चन्द्रमा। परमेश्वर तुझे सारी बुराई से बचावेगा तेरे ८ प्राण को बचावेगा। परमेश्वर तेरे

आने जाने में तुझे बचावेगा अब से सदा लों॥

एकसौ बाईसवां गीत

यात्राओं का गान। दाऊद का॥

१ मैं उन से आनन्दित हूं जो मुझ से कहते हैं कि परमेश्वर के मन्दिर में २ चलें। हे यरूसलम हमारे पांव तेरे ३ फाटकों में खड़े होते हैं। यरूसलम में जो ऐसे नगर की नाईं बनाया गया जो ४ अपने घरों में आप में संयुक्त है। जहां गोष्ठियां परमेश्वर की गोष्ठियां इसराएल को साक्षी देने के लिये ऊपर चढ़ती हैं जिसतें परमेश्वर के नाम का धन्यवाद ५ करें। क्योंकि वहां न्याय के लिये सिंहासन दाऊद के घराने के लिये सिंहासन धरे हुए हैं॥

६ यरूसलम के कुशल के लिये प्रार्थना करो तेरे प्यार करनेहारे कुशल से रहें। ७ तेरी भीतों के भीतर कुशल हो तेरे ८ भवनों में चैन। मैं अपने भाइयों और अपने संगियों के लिये कहूं कि तुझ में कुशल ९ हो। मैं परमेश्वर अपने ईश्वर के मन्दिर के कारण तेरी भलाई का खोजी रहूंगा॥

एकसौ तेईसवां गीत।

यात्राओं का गान॥

१ मैं अपनी आंखें तेरी ओर उठाता २ हूं हे स्वर्ग पर बैठनेहारे। देख जिस रीति से कि सेवक अपने स्वामियों के हाथों को ताकते हैं जिस रीति से कि दासी अपनी स्वामिनी के हाथों को ताकती है उसी रीति हमारी आंखें परमेश्वर अपने ईश्वर की ओर हैं जब लों कि वह हम पर दया न करे। ३ हम पर दया कर हे परमेश्वर हम पर दया कर क्योंकि हम निन्दा से अत्यन्त ४ परिपूर्ण हुए। हमारे प्राण सुखियों की निन्दा से अहंकारियों के ठट्ठे से अपने लिये अत्यन्त परिपूर्ण हुए॥

एकसौ चौबीसवां गीत।

यात्राओं का गान। दाऊद का॥

१ यदि परमेश्वर न होता जो हमारी ओर हुआ हाय कि इसराएल कहे। २ यदि परमेश्वर न होता जो हमारी ओर हुआ जब मनुष्य के सन्तान हमारे ३ बिरोध में उठे। तो वे उसी समय हमें जीता निंगल जाते जब उन का क्रोध ४ हम पर भड़का। उसी समय पानी हम पर बहि जाता और धारा हमारे प्राण के ५ ऊपर जाती। उस समय पानी उमड़ता हुआ पानी हमारे प्राण के ऊपर जाता॥

६ परमेश्वर धन्य हो जिस ने हमें उन के दांतों में अहेर के समान नहीं दिया। ७ हमारा प्राण चिड़िया की नाईं व्याधों के जाल से छूट गया फंदा टूट गया ८ और हम छूट गये। हमारी सहाय परमेश्वर स्वर्ग और पृथिवी के बनानेहारे के नाम से है॥

एकसौ पचीसवां गीत।

यात्राओं का गान॥

१ परमेश्वर पर भरोसा रखनेहारे सैहून पर्वत की नाईं हैं जो न टलेगा परन्तु २ सदा लों स्थिर रहेगा। यरूसलम उस के आसपास पर्वत हैं और परमेश्वर अपने लोगों के चहुंओर है अब से और ३ सदा लों। क्योंकि दुष्टता का दण्ड धर्म्मियों के भाग पर न रहेगा जिसतें धर्म्मी अपने हाथ बुराई पर न बढ़ावें॥

४ हे परमेश्वर भलों से भलाई कर और उन से जो अपने अन्तःकरणों में खरे ५ हैं। और जो अपने टेढ़े टेढ़े मार्गों की ओर बहक जाते हैं उन्हें परमेश्वर कुकर्म्मियों के संग चलावेगा इसराएल पर कुशल हो॥

एकसौ छब्बीसवां गीत।

यात्राओं का गान॥

१ जब परमेश्वर सैहून के फिरनेहारों

की ओर फिरा तब हम स्वप्नदर्शियों की
२ नाईं थे। उसी समय हमारा मुंह हंसी
से और हमारी जीभ आनन्द के शब्द से
भर गई उसी समय उन्हों ने जातिगणों
में कहा कि परमेश्वर ने इन के साथ
३ बड़े कार्य्य किये हैं। परमेश्वर ने हमारे
साथ बड़े कार्य्य किये हैं हम आनन्दित हैं॥
४ हे परमेश्वर हमारी बंधुआई को
ओर फिर उन धारों की नाईं जो
५ दक्षिण में हैं। जो आंसुओं के साथ
बोते हैं वे आनन्द के साथ लवेंगे।
६ वह अपने बीज का बोझ उठाये हुए
रोता हुआ चला जायगा अपने पूले
उठाये हुए आनन्द के साथ आयेगा
आयेगा॥

एकसौ सत्ताईसवां गीत।

यात्राओं का गान। सुलेमान का॥

१ यदि परमेश्वर घर न बनावे तो
उस के बनवैया अकारथ उस में परिश्रम
करते हैं यदि परमेश्वर नगर की रक्षा
न करे तो उस का रखवाल व्यर्थ
२ जागता है। तुम्हारे लिये वृथा है कि
तुम तड़के उठते अबेर में बैठते परिश्रमों
की रोटी खाते हो वह तो ऐसी बस्ती
अपने प्यार करनेहारे को नींद में
देता है
३ देखो लड़के परमेश्वर की ओर से
अधिकार हैं गर्भ का फल प्रतिफल है।
४ जैसे बलवान के हाथ में बाण तैसे ही
५ तरुणाई के लड़के हैं। क्या ही धन्य
वह मनुष्य जिस ने अपने तूण को उन
से भर दिया है वे लज्जित न होंगे जब
अपने शत्रुओं से द्वार पर बात्ता करेंगे॥

एकसौ अट्ठाईसवां गीत।

यात्राओं का गान॥

१ परमेश्वर का हर एक डरवैया क्या
ही धन्य है जो उस के मार्गों पर चलता
२ है। जब तू अपने हाथों की कमाई
खायेगा तब तू क्या ही धन्य और तेरे
लिये भलाई। तेरी पत्नी फलवन्त दाख ३
की नाईं तेरे घर के भीतर तेरे बच्चे तेरे
मंच की चारों ओर जलपाई के पौधों
की नाईं होंगे॥
देख कि जो मनुष्य परमेश्वर से ४
डरता है वह इसी रीति से धन्य होगा।
परमेश्वर तुझे सैहून से आशीष दे और ५
तू जीवन भर यरूसलम की भलाई पर
दृष्टि किया कर। और अपने बच्चों के ६
बच्चों को देख इसराएल पर कुशल हो॥

एकसौ उंतीसवां गीत।

यात्राओं का गान॥

मेरी तरुणाई से उन्हों ने बहुधा मुझे १
सताया हाय कि इसराएल कहे। मेरी २
तरुणाई से उन्हों ने बहुधा मुझे सताया
तद भी मुझ पर प्रबल न हुए। हलवाहों ३
ने मेरी पीठ पर हल जोता उन्हों ने
अपनी रेघारियां लंबी किईं। परमेश्वर ४
धर्म्मी है उस ने दुष्टों की रस्सी को
काट डाला॥
सैहून के सारे बैर रखनेहारे लज्जित ५
होंगे और पीछे हटाये जायेंगे। वे छतों ६
की घास की नाईं होंगे जो उस्से पहिले
कि कोई उसे उखाड़े सूख जाती है।
जिस्से लवनेहारा अपने हाथ को नहीं ७
भरता और पूलों का बंधवैया अपनी
अंकवार को। और मार्ग के जवैया नहीं ८
कहते हैं कि परमेश्वर की आशीष तुम
पर आवे हम तुम को परमेश्वर के नाम
से आशीष देते हैं॥

एकसौ तीसवां गीत।

यात्राओं का गान॥

हे परमेश्वर मैं गहिराओं में से तुझे १
पुकारता हूं। हे प्रभु मेरा शब्द सुन २
तेरे कान मेरे शब्द की बिन्तियों पर
लगे रहें। हे परमेश्वर यदि तू अधर्म्मों ३
पर दृष्टि करे तो हे प्रभु कौन खड़ा

४ रहेगा । क्योंकि तेरे पास क्षमा है जिसतें तुझ से डरें ॥
५ मैं परमेश्वर की बाट जोहता हूं मेरा प्राण बाट जोहता है और मैं
६ उस के बचन का आशावान् हूं । मेरा प्राण बिहान के बाट जोहनेहारों से हां बिहान के बाट जोहनेहारों से अधिक प्रभु की बाट जोहता है ॥
७ हे इसराएल परमेश्वर पर आशा रख क्योंकि परमेश्वर के पास दया है और उस के पास मुक्ति की बहुताई ।
८ और वही इसराएल को उस के सारे अधर्म्मों से छुड़ावेगा ॥

एकसौ एकतीसवां गीत ।

यात्राओं का गान । दाऊद का ॥

१ हे परमेश्वर मेरा मन अहंकारी नहीं है और मेरी आंखें ऊंची नहीं हैं और मैं बड़ी बातों में और उन में जो मेरे लिये आश्चर्य्यित हैं नहीं लवलीन होता ।
२ यदि मैं ने अपने प्राण को सदृश और चुपचाप नहीं किया है जैसा दूध छुड़ाया हुआ बालक अपनी माता पर बिश्राम करता है तो ईश्वर जानता है दूध छुड़ाये हुए बालक के समान मेरा प्राण
३ मुझ पर बिश्राम करता है । हे इसराएल परमेश्वर का आशावान् हो अब से और सदा लों ॥

एकसौ बत्तीसवां गीत ।

यात्राओं का गान ॥

१ हे परमेश्वर दाऊद के लिये उस के
२ सारे क्लेशित होने का स्मरण कर । जिस ने परमेश्वर से किरिया खाई और यअकूब के शक्तिमान की मनौती मानी ।
३ कि यदि मैं अपने घर के डेरे में जाऊं
४ अपने बिछौने की खाट पर चढूं । यदि अपनी आंखों में नींद अपने पलकों में
५ औंघाई को आने दूं । जब लों परमेश्वर के लिये स्थान यअकूब के शक्तिमान के लिये निवासस्थान न पाऊं तो ईश्वर बूझे ।
६ देखो हम ने इफराता में उस के विषय में सुना हम ने उसे अरण्य के खेतों में पाया ।
७ हम उस के तंबुओं में आवें उस के पांव के नीचे की पीढ़ी को दण्डवत करें ॥
८ हे परमेश्वर अपने बिश्रामस्थान को उठ तू और तेरे पराक्रम की मंजूषा ।
९ तेरे याजक सच्चाई का वस्त्र पहिरे हों और तेरे साधु आनन्द का शब्द करें ।
१० अपने दास दाऊद के कारण सुन अपने अभिषिक्त के मुंह को न फिरा ॥
११ परमेश्वर ने सच्चाई के साथ दाऊद से किरिया खाई है और उस्से न फिरेगा कि मैं तेरी देह के फल से तेरे लिये
१२ सिंहासन पर बैठाऊंगा । यदि तेरे लड़के मेरी बाचा को पालन करेंगे और मेरी साक्षियों को जो मैं उन्हें सिखाऊंगा तो उन के लड़के भी सदा लों तेरे लिये सिंहासन पर बैठे रहेंगे ।
१३ क्योंकि परमेश्वर ने सैहून को चुन लिया है और चाहा कि वह उस के लिये निवास हो ।
१४ यह सदा लों मेरा बिश्रामस्थान है यहीं मैं बास करूंगा क्योंकि मैं ने उसे चाहा है ।
१५ मैं उस के भोजन पर आशीष देऊंगा आशीष देऊंगा उस के कंगालों को रोटी से तृप्त करूंगा ।
१६ और उस के याजकों को मुक्ति का वस्त्र पहिराऊंगा और उस के साधु आनन्द का शब्द करेंगे आनन्द का शब्द करेंगे ।
१७ वहां मैं दाऊद के लिये सींग जमाऊंगा मैं ने अपने अभिषिक्त के लिये दीपक सिद्ध किया है ।
१८ मैं उस के बैरियों को लाज का वस्त्र पहिराऊंगा और उस पर उस का मुकुट खिला रहेगा ॥

एकसौ तेंतीसवां गीत ।

यात्राओं का गान । दाऊद का ॥

१ देखो क्या ही भला और क्या ही

मनोहर भाइयों का साथ साथ रहना है। २ उस तेल उस अच्छे तेल की नाईं है जो सिर पर और दाढ़ी अर्थात् हारून की दाढ़ी पर बहि जाता है जो उस के पहिरावे के खूंट लों बहि जाता है। ३ हरमून की ओस की नाईं वह ओस है जो सैहून के पहाड़ों पर गिरती है क्योंकि वहां परमेश्वर ने आशीस अर्थात् जीवन को सदा के लिये आज्ञा किया॥

एकसौ चौंतीसवां गीत।

यात्राओं का गान॥

१ देखो हे परमेश्वर के सारे सेवको जो रातों को परमेश्वर के घर में खड़े रहते हो परमेश्वर को धन्यबाद कहो। २ अपने हाथ धर्म्मधाम की ओर उठाओ और परमेश्वर को धन्यबाद कहो। ३ परमेश्वर स्वर्ग और पृथिवी का बनानेहारा सैहून से तुझे आशीस दे॥

एकसौ पैंतीसवां गीत।

१ हलिलूयाह। परमेश्वर के नाम की स्तुति करो हे परमेश्वर के सेवको उस २ की स्तुति करो। जो परमेश्वर के घर में हमारे ईश्वर के घर के आंगनों में ३ खड़े रहते हो। हलिलूयाह। क्योंकि परमेश्वर भला है उस के नाम की स्तुति गाओ क्योंकि वह सुन्दर है॥

४ क्योंकि परमेश्वर ने यअकूब को चुन लिया इसराएल को अपने विशेष अधि- ५ कार के लिये। क्योंकि मैं जानता हूं कि परमेश्वर महान है और हमारा प्रभु सारे ६ देवों से श्रेष्ठ। जो कुछ परमेश्वर चाहता है वह सब स्वर्ग और पृथिवी में समुद्रों ७ में और गहिराओं में करता है। पृथिवी की सीमों से भाफों को उठाता है मेंह के लिये उस ने बिजलियों को बनाया पवन को अपने भंडारों से निकालता ८ है। जिस ने मिस्र के पहिलौठों को मनुष्य से लेके पशु लों मार डाला। लक्षण और आश्चर्य्य हे मिस्र तेरे मध्य ९ फिरऊन और उस के सारे सेवकों पर भेजे। जिस ने बहुत जातिगणों को मार १० डाला और पराक्रमी राजाओं को घात किया। अर्थात् अमूरियों के राजा सीहून ११ को और बसनिया के राजा ऊज को और कनआन के सारे राज्यों को। और उन १२ का देश अधिकार में अपने लोगों इसराएल को अधिकार में दिया॥

हे परमेश्वर तेरा नाम सर्वदा है हे १३ परमेश्वर तेरा स्मरण पीढ़ी से पीढ़ी लों है। क्योंकि परमेश्वर अपने लोगों का १४ न्याय करेगा और अपने सेवकों के लिये पछतायेगा। अन्यदेशियों की मूर्त्ति रूपा १५ और सोना हैं मनुष्य के हाथों की क्रिया। वे मुंह रखती हैं पर बोलतीं नहीं आंखें १६ रखती हैं पर देखती नहीं। कान रखतीं १७ हैं पर सुनती नहीं हां उन के मुंह में कुछ श्वास नहीं है। उन्हीं के समान उन १८ के बनवैये होंगे और हर एक जो उन पर भरोसा रखता है॥

हे इसराएल के घराने परमेश्वर को १९ धन्यबाद कहो हे हारून के घराने परमेश्वर को धन्यबाद कहो। हे लावी २० के घराने परमेश्वर को धन्यबाद कहो हे परमेश्वर के डरनेहारो परमेश्वर को धन्यबाद कहो। परमेश्वर जो यरूसलम २१ में बास करता है सैहून से धन्य हो। हलिलूयाह॥

एकसौ छत्तीसवां गीत।

परमेश्वर का धन्य मानो क्योंकि १ वह भला है क्योंकि उस की दया सर्वदा है। ईश्वरों के ईश्वर का धन्य मानो २ क्योंकि उस की दया सर्वदा है। प्रभुओं ३ के प्रभु का धन्य मानो क्योंकि उस की दया सर्वदा है॥

उस का जो अकेला आश्चर्य्य और ४ बड़े काम करता है क्योंकि उस की

५ दया सर्बदा है । उस का जिस ने स्वर्ग को बुद्धि के साथ बनाया क्योंकि ६ उस की दया सर्बदा है । उस का जिस ने पृथिवी को पानी के ऊपर फैलाया ७ क्योंकि उस की दया सर्बदा है । उस का जिस ने बड़ी बड़ी ज्योति बनाईं ८ क्योंकि उस की दया सर्बदा है । सूर्य्य को दिन पर प्रभुता के लिये क्योंकि ९ उस की दया सर्बदा है । चन्द्रमा और तारागण को रात पर प्रभुता के लिये क्योंकि उस की दया सर्बदा है ॥

१० उस का जिस ने मिस्र को उन के पहिलौठों की मृत्यु में मारा क्योंकि उस ११ की दया सर्बदा है । और इसराएल को उन के मध्य से निकाल लाया १२ क्योंकि उस की दया सर्बदा है । प्रबल हाथ और फैली हुई भुजा से क्योंकि १३ उस की दया सर्बदा है । उस का जिस ने लाल समुद्र को दो भाग किया १४ क्योंकि उस की दया सर्बदा है । और इसराएल को उस के मध्य से पार कर दिया क्योंकि उस की दया सर्बदा है । १५ और फिरऊन और उस की सेना को लाल समुद्र में झाड़ डाला क्योंकि १६ उस की दया सर्बदा है । उस का जिस ने अरण्य में अपने लोगों की अगुआई किई क्योंकि उस की दया सर्बदा है ॥

१७ उस का जिस ने बड़े राजाओं को मार डाला क्योंकि उस की दया सर्बदा १८ है । और बलवान राजाओं को मार डाला क्योंकि उस की दया सर्बदा है । १९ अमूरियों के राजा सीहून को क्योंकि २० उस की दया सर्बदा है । और ऊज बसानियों के राजा को क्योंकि उस की २१ दया सर्बदा है । और उन की भूमि अधिकार के समान दिई क्योंकि उस २२ की दया सर्बदा है । अपने सेवक इसराएल का अधिकार क्योंकि उस की दया सर्बदा है ॥

२३ जिस ने हमारी दुर्दशा में हमें स्मरण किया क्योंकि उस की दया २४ सर्बदा है । और हमें हमारे बैरियों से छीन लिया क्योंकि उस की दया सर्बदा २५ है । जो सारे शरीर को भोजन देता है २६ क्योंकि उस की दया सर्बदा है । स्वर्ग के सर्बशक्तिमान का धन्यबाद करो क्योंकि उस की दया सर्बदा है ॥

एकसौ सैंतीसवां गीत ।

१ बाबुल की नदियों पर वहां जब हम ने सैहून को स्मरण किया तो बैठे २ और रोये भी । बेंत के बृक्षों पर उस के मध्य हम ने अपनी बीणों को लटका ३ दिया । क्योंकि वहां हमारे बंधुआ करवैये गीतों के बचनों के और हमारे लूटनेहारे आनन्द के चाहक हुए कि हमारे लिये सैहून के गीतों से कुछ गाओ ॥

४ हम क्योंकर पराई भूमि पर परमेश्वर ५ का गीत गावें । हे यरूसलम यदि मैं तुझे भूल जाऊं तो मेरा दहिना हाथ ६ अपनी बुद्धि को भूल जाय । यदि मैं तुझे स्मरण न करूं यदि मैं यरूसलम को अपनी बड़ी से बड़ी आनन्दता पर श्रेष्ठ न जानूं तो मेरी जीभ मेरे तालू से लग जाय ॥

७ हे परमेश्वर अदूम के सन्तान के दण्ड के लिये यरूसलम के दिन को स्मरण कर जो कहते थे कि उस को जड़ मूल ८ लों उजाड़ करो उजाड़ करो । हे बाबुल की बेटी जो उजाड़ी गई क्या ही धन्य वह जो तुझे उस व्यवहार का पलटा देगा जो व्यवहार तू ने हमारे साथ ९ किया । क्या ही धन्य वह जो तेरे बालकों को पकड़ लेगा और पत्थर पर पटकेगा ॥

एकसौ अठतीसवां गीत।

दाऊद का गीत॥

१ मैं अपने सारे मन से तेरी स्तुति करूंगा देवों के आगे तेरी स्तुति गाऊंगा। २ मैं तेरे पवित्र मन्दिर की ओर दण्डवत करूंगा और तेरे नाम की स्तुति करूंगा तेरी दया और तेरी सत्यता के कारण क्योंकि तू ने अपने सारे नाम के ऊपर अपने वचन को अधिक बढ़ाया है। ३ जिस दिन मैं ने पुकारा तू ने मेरी सुनी तू मुझे मेरे आत्मा में बल के साथ ४ बलवन्त करता है। हे परमेश्वर पृथिवी के सारे राजा कि वे तेरे मुंह के वचन ५ सुन चुके हैं तेरा स्वीकार करेंगे। और वे परमेश्वर के मार्गों में गायेंगे क्योंकि परमेश्वर का ऐश्वर्य्य महान होगा॥

६ क्योंकि परमेश्वर महान है और नम्र को देखता है और अहंकारी को दूर से ७ जानता है। यदि मैं संकट के मध्य चलूं तो तू मुझे जीता रक्खेगा मेरे बैरियों के क्रोध के ऊपर अपना हाथ बढ़ावेगा और अपने दहिने हाथ से मुझे ८ बचावेगा। परमेश्वर ने जो मेरे लिये आरंभ किया है उसे पूरा करेगा हे परमेश्वर तेरी दया सर्वदा है अपने हाथों की क्रिया का त्याग न कर॥

एकसौ उंतालीसवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये। दाऊद का गीत॥

१ हे परमेश्वर तू ने मेरा खोज किया और २ जानता है। तू ही मेरे बैठने और उठने को जानता है दूर से मेरी चिन्ता को ३ बूझता है। तू मेरे मार्ग और मेरे शयन को जांचता है और मेरे सारे मार्गों को ४ पहिचानता है। क्योंकि मेरी जीभ पर कोई ऐसी बात नहीं है देख जिसे हे ५ परमेश्वर तू सर्वथा नहीं जानता। तू आगे पीछे मुझे घेरता है और अपना हाथ मुझ पर रखता है॥

६ यह ज्ञान मेरे लिये आश्चर्य्यित है और ऊंचा मैं उस लों नहीं पहुंच सक्ता। ७ तेरे आत्मा से मैं किधर जाऊं और तेरे ८ आगे से किधर भागूं। यदि स्वर्ग पर चढ़ जाऊं तो वहां तू है और समाधि को बिछौना बनाऊं देख तू वहां भी है। ९ मैं बिहान के पंखों को फैलाऊंगा समुद्र १० के अन्त सिवाने में रहूंगा। वहां भी तेरा हाथ मेरी अगुआई करेगा और ११ तेरा दहिना हाथ मुझे पकड़ेगा। और मैं कहता हूं कि केवल अंधियारा मुझे दबाये डालता है और उंजियाला मेरे १२ आसपास रात हो गया। अंधियारा भी तुझ पर अंधियारी नहीं कर देता और रात दिन की नाईं चमकती है जैसा १३ अंधियारा वैसा उंजियाला। क्योंकि तू मेरे अन्तःकरण का स्वामी है मेरी माता १४ की कोख में तू ने मुझे ढांप लिया। मैं तेरी स्तुति करता हूं क्योंकि मैं आश्चर्य्य रीति से बनाया गया हूं तेरे कार्य्य अद्भुत हैं और यह मेरा प्राण भली भांति जानता १५ है। मेरा पिण्डा तुझ से छिपा न रहा जब मैं गुप्त में बनाया गया पृथिवी की १६ नीचाई में बिना गया। तेरी आंखों ने मेरे अधूरे मूल को देखा और तेरी बही में मेरे सब दिन लिखे जाते चित्रकारी हो जाते थे यद्यपि उन में से एक भी भावमान न था॥

१७ और हे सर्वशक्तिमान मेरे निकट तेरे संकल्प क्या ही बहुमूल्य हैं उन का समु- १८ दाय क्या ही बड़ा है। मैं उन्हें गिना चाहता हूं पर वे बालू से कहीं अधिक हैं मैं जागा और अब लों तेरे साथ हूं॥

१९ हे ईश्वर हाय कि तू दुष्ट को नाश करे और हे हत्यारे मनुष्यो मेरे पास से २० दूर हो। जो दुष्टता के लिये तेरा स्मरण

करते हैं और तेरे बैरी तेरा नाम झूठ २१ पर लगाते हैं। हे परमेश्वर क्या मैं तेरे बैरियों से बैर न रक्खूं और तेरे बिरोधियों २२ से घिन न करूं। अत्यन्त बैर के साथ मैं उन से बैर रखता हूं वे मेरे निकट २३ बैरी समान हैं। हे सर्वशक्तिमान मेरा खोज कर और मेरे अन्तःकरण को जान मुझे ताड़ और मेरी चिन्ताओं को जान। २४ और देख यदि मुझ में दुःख का मार्ग है और सनातन के मार्ग पर मेरी अगुआई कर॥

एकसौ चालीसवां गीत।

प्रधान बजानिये के लिये। दाऊद का गीत॥

१ हे परमेश्वर मुझे दुष्ट मनुष्य से छुड़ा अंधेरी मनुष्य से तू मेरी रक्षा २ करेगा। जो मन में बुराइयों की चिन्ता करते हैं वे नित लड़ाइयों के लिये ३ एकट्ठा होते हैं। उन्हों ने सांप की नाईं अपनी जीभ को चोखा किया है नाग का विष उन के होंठों के नीचे ४ है। सिलाह। हे परमेश्वर मुझे दुष्ट के हाथों से बचा अंधेरी मनुष्य से तू मेरी रक्षा करेगा जिन्हों ने मेरे पांवों को ढा देने की चिन्ता किई है। ५ अहंकारियों ने मेरे लिये फंदा और रस्सियां छिपाई हैं उन्हों ने मार्ग की ओर जाल बिछाया है उन्हों ने मेरे लिये फंदे लगाये हैं। सिलाह॥

६ मैं ने परमेश्वर से कहा है कि मेरा सर्वशक्तिमान तू ही है हे परमेश्वर मेरी ७ बिनतियों के शब्द पर कान धर। हे परमेश्वर प्रभु मेरी मुक्ति के पराक्रम तू ने संग्राम के दिन मेरे सिर को ढांपा ८ है। हे परमेश्वर दुष्ट की इच्छाओं को पूरी न कर उस की युक्ति को पूरी न कर नहीं तो वे ऊंचे होंगे। सिलाह॥

९ मेरे घेरनेहारों के सिर को उन के होंठों की बुराई ढांपेगी। उन पर १० अंगारे डाले जायेंगे वह उन्हें आग में गिरावेगा और गहिरे पानियों में जहां से वे न उठेंगे। कुवक्ता मनुष्य पृथिवी ११ पर स्थिर न रहेगा और न अन्धेरी जन वह दुष्ट को बिनाश लों अहेर करेगा। मैं जानता हूं कि परमेश्वर दुःखी का १२ न्याय और दरिद्रों का बिचार करेगा। केवल धर्म्मी तेरे नाम का धन्य मानेंगे १३ खरे जन तेरे आगे बैठेंगे॥

एकसौ एकतालीसवां गीत।

दाऊद का गीत॥

हे परमेश्वर मैं तुझे पुकारता हूं मेरी १ ओर शीघ्रता कर जब मैं तुझे पुकारूं तब मेरे शब्द पर कान धर। मेरी २ प्रार्थना सुगंध की नाईं तेरे आगे उपस्थित हो मेरे हाथों का उठाना सांझ की भेंट की नाईं। हे परमेश्वर मेरे मुंह पर ३ पहरू बैठा मेरे होंठों के द्वार की रक्षा कर। मेरे मन को बुरी बात की ओर ४ न झुकने दे कि कुकर्म्मियों के संग दुष्ट कर्म्म करूं उन मनुष्यों के संग जो बुराई करते हैं और मैं उन के स्वादित भोजनों में से न खाऊं। धर्म्मी ईश्वर मुझे कृपा ५ के संग मारे और दपटे मेरा सिर सिर के तेल से नाह न करे क्योंकि वह फिर अवश्य होगा और मेरी प्रार्थना उन की बुराइयों के मध्य फिर किई जायगी॥

उन के न्यायी पत्थर के हाथों में ६ गिराये गये तब उन्हों ने मेरी बातें सुनीं कि वे मीठी हैं। जैसा मनुष्य पृथिवी ७ को हर से जोतता और चीरता है वैसा ही हमारी हड्डियां समाधि के मुंह पर बिथराई गईं। क्योंकि हे परमेश्वर ८ प्रभु मेरी आंखें तेरी ओर हैं मैं ने तुझ पर भरोसा रक्खा है मेरे प्राण को न उंडेल। उस फंदे के हाथों से जो उन्हों ९

ने मेरे लिये बनाया है और कुकर्म्मियों १० के जालों से मुझे बचा रख। दुष्ट अपने फंदों में गिरें जिस समय कि मैं बच जाऊं॥

एकसौ बयालीसवां गीत।

दाऊद का उपदेशदायक गीत जब वह खोह में था। प्रार्थना॥

१ मैं अपने शब्द से परमेश्वर को पुकारता हूं अपने शब्द से परमेश्वर से २ बिन्ती करता हूं। मैं अपना सोच उस के आगे प्रगट करता हूं अपना दुःख ३ उस्से बर्णन करता हूं। इस कारण कि मेरा प्राण मेरे भीतर ब्याकुल है और तू मेरे मार्ग को जानता है उस मार्ग में जिस में मैं चलता हूं उन्हों ने मेरे लिये ४ छिपाके फंदा लगाया है। दहिनी ओर ताक और देख कि मेरा पहिचाननेहारा नहीं है शरण मुझ से जाता रहा कोई ५ मेरे प्राण का पुछवैया नहीं। हे परमेश्वर मैं ने तुझ को पुकारा है मैं ने कहा कि तू ही मेरा शरणस्थान है ६ जीवन के देश में मेरा भाग। मेरे रोने पर सुरत लगा क्योंकि मैं बहुत दुर्बल हो गया मुझे मेरे सतानेहारों से छुड़ा ७ क्योंकि वे मुझ से बली हैं। मेरे प्राण को बंदीगृह से छुड़ा जिसतें तेरे नाम की स्तुति किई जाय धर्म्मी मुझे घेरेंगे जब तू मुझ पर कृपा का व्यवहार करेगा॥

एकसौ तेंतालीसवां गीत।

दाऊद का गीत॥

१ हे परमेश्वर मेरी प्रार्थना सुन मेरी बिन्तियों पर कान रख अपनी सच्चाई के साथ मेरी सुन और अपने धर्म्म के २ साथ। और अपने सेवक के संग लड़ने के लिये बिचार में मत आ क्योंकि तेरे सन्मुख कोई प्राणी निर्दोष न ठहरेगा॥

३ क्योंकि बैरी मेरे प्राण के पीछे पड़ा है मेरे जीवन को भूमि लों लताड़ता है मुझे अगिले मृतकों की नाईं अंधियारे स्थानों में बैठाता है। और मेरा प्राण मुझ में ४ मूर्छित है मेरा मन मुझ में उजड़ गया। मैं अगिले दिनों को स्मरण करता हूं ५ तेरे सारे कार्य्यों पर सोच करता हूं तेरे हाथ की रचना पर ध्यान करता हूं। मैं ६ अपने हाथ तेरी ओर फैलाता हूं मेरा प्राण सूखी भूमि की नाईं तेरा प्यासा है। सिलाह॥

हे परमेश्वर शीघ्रता कर मेरी सुन ७ मेरा प्राण छीण हो गया अपना मुंह मुझ से मत छिपा नहीं तो मैं गड़हे में गिरनेहारों के साथ मिलाया जाऊंगा। बिहान ८ को मुझे अपनी दया सुना क्योंकि मैं तुझ पर भरोसा रखता हूं मुझे वह मार्ग बता जिस पर चलूं क्योंकि मैं अपना प्राण तेरी ओर उठाता हूं। हे परमेश्वर ९ मुझे मेरे बैरियों से छुड़ा मैं तेरे पास अपने को छिपाता हूं। मुझे सिखला १० कि तेरी इच्छा के समान करूं क्योंकि तू ही मेरा ईश्वर है तेरा आत्मा भला है वह मुझे समथर भूमि पर अगुआई करे। हे परमेश्वर तू अपने नाम के ११ लिये मुझे जिलावेगा तू अपने धर्म्म के साथ मेरे प्राण को सकेती से निकालेगा। और तू अपनी दया के साथ मेरे बैरियों १२ को नाश करेगा और मेरे प्राण के दुःख देनेहारों को नाश करेगा क्योंकि मैं तेरा सेवक हूं॥

एकसौ चौंतालीसवां गीत

दाऊद का गीत॥

परमेश्वर मेरी चटान धन्य हो जो १ मेरे हाथों को युद्ध करना मेरी अंगुलियों को लड़ना सिखलाता है। मेरा २ अनुग्रह करनेहारा और मेरा गढ़ मेरा ऊंचा स्थान और मेरा छुड़ानेवाला मेरी ढाल और मैं उस पर भरोसा रखता हूं जो मेरे लोगों को मेरे नीचे करता है॥

३ हे परमेश्वर मनुष्य क्या है कि तू उसे जाने मनुष्य का पुत्र कि तू उस का ४ सोच करे। मनुष्य व्यर्थ वस्तु की नाईं है उस के दिन बीतते हुए छाये के समान हैं॥

५ हे परमेश्वर अपने स्वर्गों को झुका और नीचे आ पहाड़ों को छू और उन ६ से धूआं उठे। बिजुली गिरा और उन्हें बिथरा अपने बाण चला और उन्हें ७ घबरा दे। अपने हाथ ऊपर से बढ़ा मुझे बचा और मुझे छुड़ा बहुत पानियों ८ से परदेशी सन्तानों के हाथ से। जिन का मुंह वृथा कहता है और उन का दहिना हाथ झूठ का दहिना हाथ है॥

९ हे ईश्वर मैं तेरे लिये नया गीत गाऊंगा दस तार के बीन के साथ तेरे १० लिये गाऊंगा। जो राजाओं को मुक्ति देता है जो दाऊद अपने दास को दुःखदायक की तलवार से छुड़ाता है। ११ मुझे बचा और मुझे छुड़ा परदेशियों के वंश के हाथ से जिन का मुंह वृथा कहता है और उन का दहिना हाथ १२ झूठ का दहिना हाथ है। जिसतें हमारे बेटे पौधों की नाईं अपनी तरुणाई में बढ़े हों हमारी बेटियां कोने के पत्थरों की नाईं मन्दिर की बनावट के लिये १३ खोदी जायें। हमारे खत्ते पूर्ण नाना प्रकार का अनाज देते हों हमारी भेड़ें हमारे खेत्रों में लखूखा सहस्र जनतीं १४ रहें। हमारे बैल लदे हुए हों और कुछ हानि और बिगाड़ न हो और हमारे १५ मार्गों में कुछ बिलाप न हो। क्या ही धन्य वे लोग जिन की यह दशा है क्या ही धन्य वे लोग जिन का ईश्वर परमेश्वर है॥

एकसौ पैंतालीसवां गीत।

दाऊद की स्तुति॥

१ हे मेरे ईश्वर राजा मैं तेरी बड़ाई करूंगा और मैं सदा सर्वदा तेरे नाम का धन्यबाद करूंगा। २ मैं प्रतिदिन तेरा धन्यबाद करूंगा और सदा सर्वदा तेरे नाम की स्तुति करूंगा। ३ परमेश्वर महान और अत्यन्त स्तुति के योग्य है और उस की महिमा खोज से बाहर। ४ एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी से तेरे कार्य्यों की स्तुति करती रहेगी और लोग तेरे महत कार्य्यों का बर्णन किया करेंगे। ५ मैं तेरी महिमा की बिभवमय सुन्दरता पर और तेरे आश्चर्य्य कार्य्यों की बातों पर सोच किया करूंगा। ६ और वे तेरे भयंकर कार्य्यों के बल की चर्चा करेंगे और मैं तेरी बड़ाइयों का बर्णन करूंगा। ७ वे तेरी अत्यन्त भलाई का चर्चा किया करेंगे और तेरी सच्चाई पर गान करेंगे॥

८ परमेश्वर कृपालु और दयालु है धैर्य्यवान और दया में बड़ा। ९ परमेश्वर सब के लिये भला है और उस की दया उस के सारे कार्य्यों पर हैं। १० हे परमेश्वर तेरी सारी क्रिया तेरी स्तुति करती हैं और तेरे साधु तेरा धन्यबाद करते हैं। ११ वे तेरे राज्य के ऐश्वर्य्य की चर्चा करते हैं और तेरे सामर्थ्य की बातें करते हैं। १२ जिसतें मनुष्य के सन्तान को उस के महान कार्य्यों का और उस के राज्य की सुन्दरता के बिभव का ज्ञान दें। १३ तेरा राज्य सनातन का राज्य है और तेरी प्रभुता पीढ़ी से पीढ़ी लों॥

१४ परमेश्वर सारे गिरवैयों का थामनेहारा और सारे झुके हुओं का उठानेहारा है। १५ सभों की आंखें तेरी ओर लगी रहती हैं और तू समय पर उन्हें उन का भोजन देता है। १६ तू अपनी मुट्ठी खोलता है और हर एक जीवधारी को उस की इच्छा से संतुष्ट करता है। १७ परमेश्वर अपने सारे मार्गों में धर्म्मी और अपने सब कार्य्यों में दयालु है॥

१८ परमेश्वर अपने सारे पुकारनेहारों के निकट है सभों के निकट जो सच्चाई के १९ साथ उसे पुकारते हैं। वह अपने डरवैयों की इच्छा पूरी करेगा और उन की दोहाई सुनेगा और उन्हें बचावेगा। २० परमेश्वर अपने सारे प्रेमियों का रक्षक है और सारे दुष्टों को नाश करेगा। २१ मेरा मुंह परमेश्वर की स्तुति की बातें करेगा और सारे प्राणी सदा सर्बदा उस के पवित्र नाम को धन्यबाद कहा करेंगे॥

एकसौ छियालीसवां गीत।

१ हलिलूयाह। हे मेरे प्राण परमेश्वर २ की स्तुति कर। मैं जब लों जीता रहूंगा परमेश्वर की स्तुति करूंगा अपने अस्ति रहने लों अपने ईश्वर के लिये ३ मैं गाऊंगा। अध्यक्षों पर भरोसा न करो मनुष्य के सन्तान पर जिस्से ४ छुटकारा कुछ नहीं। उस का श्वास निकल जाता है वह अपनी मिट्टी में फिर जाता है उसी दिन उस की चिन्ता नाश हो जाती हैं॥

५ क्या ही धन्य वह जिस का उपकारक यअकूब का सर्बशक्तिमान है और उस का भरोसा परमेश्वर अपने ईश्वर पर ६ है। जिस ने स्वर्ग और पृथिवी समुद्र और जो कुछ उन में है सब बनाया जो ७ सदा सर्बदा सच्चाई का रक्षक है। जो सताये हुओं के लिये बिचार करता है भूखों को रोटी देता है परमेश्वर बंधुओं को खोल देता है॥

८ परमेश्वर अंधों की आंखें खोल देता है परमेश्वर झुके हुओं को उठाता है परमेश्वर धर्म्मियों को प्यार करता है। ९ परमेश्वर परदेशियों का रखवाल है अनाथ और रांड़ को संभालता है और १० दुष्टों के मार्ग को टेढ़ा करता है। परमेश्वर सनातन लों राज्य करेगा तेरा ईश्वर हे सैहून पीढ़ी से पीढ़ी लों। हलिलूयाह॥

एकसौ सैंतालीसवां गीत

१ हलिलूयाह। क्योंकि हमारे ईश्वर के लिये स्तुति गाना भला है क्योंकि वह मनोहर है और स्तुति करना सुन्दर २ है। परमेश्वर यरुसलम को बनाता है इसराएल के बिछुरे हुओं को एकट्ठा ३ करता है। जो टूटे अन्तःकरणियों को चंगा करता है और उन के घावों को ४ बांधता है। जो तारों की गिनती बतलाता है वह उन सभों को नाम ले ५ ले बुलाता है। हमारा प्रभु महान है और महा सामर्थ्य रखता है और उस ६ की समुझ अगणित। परमेश्वर दीनों को उठाता है दुष्टों को भूमि पर दे मारता है॥

७ परमेश्वर को धन्यबाद के संग उत्तर दो हमारे ईश्वर के लिये बीणा के संग ८ गाओ। जो स्वर्ग को मेघों से ढांपता है जो पृथिवी के लिये मेंह सिद्ध करता है जो पहाड़ों पर घास उगाता है। ९ जो पशु को उस का आहार देता है १० कौवे के बच्चों को जो चिल्लाते हैं। वह घोड़े के बल से आनन्दित नहीं है पुरुष ११ की पिंडुलियों से प्रसन्न नहीं है। परमेश्वर अपने डरवैयों से प्रसन्न है उन से जो उस की दया के आश्रित हैं॥

१२ हे यरुसलम परमेश्वर की स्तुति कर हे सैहून अपने ईश्वर की स्तुति कर। १३ क्योंकि उस ने तेरे फाटकों के अड़ंगों को दृढ़ किया है तेरे मध्य तेरे बालकों १४ को आशीर्वाद दिया है। जो तेरे सिवानों को चैन ठहराता है तुझे गेहूं १५ की चिकनाई से तृप्त करता है। जो अपनी आज्ञा पृथिवी पर भेजता है उस का बचन बहुत शीघ्र दौड़ा जाता १६ है। जो हिम ऊन के नाईं देता है वह १७ पाला राख की नाईं बिथराता है। जो ग्रास की नाईं अपना तुषार फेंकता है

उस की शीत के आगे कौन खड़ा हो सक्ता है। वह अपना बचन भेजता है और उन्हें पिघलाता है वह अपनी पवन चलाता है पानी बह जाता है। वह अपना बचन यअकूब से बर्णन करता है अपनी बिधि और अपने न्याय इसराएल से। उस ने किसी जातिगण से ऐसा नहीं किया है और वे उस के न्यायों को नहीं जानते हैं। हलिलूयाह॥

(१८, १९, २०)

एकसौ अठतालीसवां गीत।

हलिलूयाह। स्वर्गों से परमेश्वर की स्तुति करो ऊंचाइयों पर उस की स्तुति करो। हे उस के सारे दूतो उस की स्तुति करो हे उस की सारी सेनाओ उस की स्तुति करो। हे सूर्य्य और चांद उस की स्तुति करो हे सारे ज्योतिमय तारो उस की स्तुति करो। हे स्वर्गों के स्वर्गो और हे पानियो जो स्वर्ग के ऊपर हो उस की स्तुति करो। वे परमेश्वर के नाम की स्तुति करें क्योंकि उसी ने आज्ञा किई और वे उत्पन्न हुए। और उन्हें सनातन के लिये स्थिर किया उस ने सीमा ठहराई और वे उस के पार नहीं जा सक्ते॥

(२, ३, ४, ५, ६)

पृथिवी पर से परमेश्वर की स्तुति करो हे बड़ी मछलियो और सारी गहिराइयो। आग और ओले हिम और कुहिरे बड़ी आंधी जो उस के बचन का पालन करती है। पहाड़ो और सब पहाड़ियो फलवान पेड़ और सारे देवदारुओ। बनपशु और सारे चौपाये रेंगवैये और उड़नेवाले पक्षी। पृथिवी के राजाओ और सारे लोगो अध्यक्षो और पृथिवी के सारे न्यायियो। तरुणो और कुंआरियो भी बूढ़ो बालकों समेत। ये सब परमेश्वर के नाम की स्तुति करें क्योंकि उस का नाम अकेला श्रेष्ठ है उस का ऐश्वर्य्य पृथिवी और स्वर्ग के ऊपर है। और उस ने अपने लोगों के लिये एक सींग अपने सारे सिद्धों के लिये स्तुति ऊंची किई है अर्थात् इसराएल के सन्तान अपने समीपी लोगों के लिये। हलिलूयाह॥

(७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४)

एकसौ उंचासवां गीत।

हलिलूयाह। परमेश्वर के लिये नया गीत गाओ और उस की स्तुति उस के सिद्धों की सभा में। इसराएल अपने सृष्टिकर्त्ता से आनन्दित हो सैहून के बंश अपने राजा से मगन हों। वे नाच में उस के नाम की स्तुति करें तबले और बीणा के साथ उस के लिये गान करें। क्योंकि परमेश्वर अपने लोगों से प्रसन्न है वह दीनों को मुक्ति से बिभूषित करता है॥

(१, २, ३, ४)

सिद्ध लोग प्रतिष्ठा में आनन्दता से बजायें अपने बिछौनों पर आनन्द के शब्द करें। सर्वशक्तिमान की बड़ी स्तुतें उन के मुंह में हों और दोधारा खड्ग उन के हाथ में। जिसतें जातिगणों में पलटा और लोगों में दंड चलावें। जिसतें उन के राजाओं को सीकरों से और उन के अध्यक्षों को लोहे की बेड़ियों से जकड़ें। जिसतें लिखा हुआ बिचार उन पर करें यही बिचार उस के सारे सिद्धों के लिये प्रतिष्ठा है। हलिलूयाह॥

(५, ६, ७, ८, ९)

एकसौ पचासवां गीत।

हलिलूयाह। सर्वशक्तिमान की स्तुति उस के धर्म्मधाम में करो उस के सामर्थ्य के आकाश में उस की स्तुति करो। उस के महत्कार्य्यों के लिये उस की स्तुति करो उस की महिमा की उत्तमता के समान उस की स्तुति करो। तुरही के शब्द के साथ उस की स्तुति करो बीणा और बरबत के साथ उस

४ की स्तुति करो । तबले और नाच के
साथ उस की स्तुति करो तार और
बांसुरी के साथ उस की स्तुति करो ।
५ बड़े शब्द की झांझों के साथ उस की
स्तुति करो आनन्द के शब्द की झांझों
के साथ उस की स्तुति करो । हर एक ६
श्वासधारी परमेश्वर की स्तुति करे ।
हलिलूयाह ॥

सुलेमान के दृष्टान्त ।

पहिला पर्ब्ब ।

१ दाऊद के बेटे इसराएल के राजा
२ सुलेमान के दृष्टान्त । बुद्धि और उपदेश
प्राप्ति को और समुझ की बातें बूझने को ।
३ बुद्धि धर्म्म और बिचार और खराई का
४ उपदेश ग्रहण करने को । भोलों को
चतुराई और तरुण को ज्ञान और समुझ
५ देने को । बुद्धिमान सुनके बिद्या बढ़ावेगा
और समुझवैया बुद्धि का मंत्र प्राप्त करेगा ।
६ जिसतें दृष्टान्त और उस के अर्थ और
बुद्धिमान की बातों और उन की गुप्त
कहावतों को समुझे ॥

७ परमेश्वर का डर ज्ञान का आरंभ
है परन्तु मूढ़ लोग बुद्धि और उपदेश
८ की निन्दा करते हैं । हे मेरे बेटे अपने
पिता के उपदेश को सुन और अपनी
माता की आज्ञा को त्याग मत कर ।
९ क्योंकि वे तेरे सिर के लिये अनुग्रह का
मुकुट और तेरे गले की सीकरें होंगी ॥

१० हे मेरे बेटे यदि पापी तुझे फुसलावें
११ तो मत मान । यदि वे कहें कि हमारे
संग आ हम रक्तपात के लिये घात में
लगें और अकारण निर्दोष के लिये छिपके
१२ बैठें । हम पाताल की नाईं उन्हें जीता
और उन की नाईं जो गड़हे में गिरते
१३ हैं समूचा निगल जायें । हमें सब बहु-
मूल्य संपत्ति मिलेगी लूट से हम अपना
घर भरेंगे । तेरा भाग हमारे मध्य में १४
गिरे एक ही थैली हम सभों के लिये
हो । हे मेरे बेटे तू मार्ग में उन के १५
साथ मत चल उन के पथ से अपने
पांवों को रोके रह । क्योंकि उन के १६
पांव बुराई पर दौड़ते हैं और लोहू
बहाने में शीघ्रता करते हैं । क्योंकि १७
पंछी की दृष्टि में जाल बिछाना बृथा
है । और वे अपने लोहू के लिये ठूकें में १८
हैं वे अपने प्राणों के लिये घात में हैं ।
हर एक जो धन का लोभी है उस की १९
चालें ऐसी ही हैं कि वह अपने स्वामियों
के प्राण को ले लेता है ॥

बुद्धि बाहर खड़ी पुकारती है वह २०
सड़कों में अपना शब्द करती है । वह २१
सभास्थान में फाटकों के निकास में
पुकारती है नगर में वह अपने बचन
उच्चारती है । हे भोले लोगो कब लों २२
भोलेपन से प्रीति रक्खोगे और निन्दक
अपनी निन्दा में आनन्द करेंगे और मूढ़
ज्ञान से बैर रक्खेंगे । मेरी दपट से २३
फिरो देखो मैं अपने आत्मा को तुम
पर डालूंगा मैं अपने बचन तुम्हें
जनाऊंगा ॥

इस कारण कि मैं ने बुलाया पर तुम २४

ने नाह किया मैं ने अपना हाथ बढ़ाया
२५ पर किसी ने न माना। पर तुम ने मेरे
समस्त मंत्र को तुच्छ जाना और मेरी
२६ दपट को न माना। मैं भी तुम्हारी
बिपत्ति पर हंसूंगा जब तुम पर भय
२७ आवेगा मैं ठट्ठ मारूंगा। जब तुम्हारा
भय उजाड़ की नाईं आवेगा और तुम्हारा
बिनाश बवंडर की नाईं आ जायेगा
जब कष्ट और दुःख तुम पर पड़ेगा।
२८ तब वे मुझे पुकारेंगे परन्तु मैं उत्तर न
देऊंगा वे मुझे तड़के ढूंढ़ेंगे परन्तु मुझे
२९ न पावेंगे। इस लिये कि उन्हों ने ज्ञान
से बैर रक्खा और परमेश्वर का भय
३० न चुना। उन्हों ने मेरे मंत्र को न माना
उन्हों ने मेरी सारी दपट की निन्दा
३१ किई। सो वे अपनी ही चाल का फल
खावेंगे और अपनी ही भावनाओं से
३२ पूर्ण होवेंगे। क्योंकि भोलों का भटकना
उन्हें नाश करेगा और मूढ़ों की
३३ भाग्यमानी उन्हें नाश करेगी। परन्तु
जो मेरी सुनता है सो चैन से रहेगा
और बुराई के भय से बचा रहेगा॥

दूसरा पर्व्व।

१ हे मेरे बेटे यदि तू मेरे बचनों को
मानेगा और मेरी आज्ञाओं को अपने
२ पास छिपा रक्खेगा। कि तू अपने
कान को बुद्धि की ओर झुकावे और
समझ की ओर अपना मन लगावे।
३ क्योंकि यदि तू ज्ञान के लिये पुकारेगा
और समझ के लिये अपना शब्द
४ बढ़ावेगा। यदि तू चांदी की नाईं
उसे खोजेगा और छिपे हुए धन की
५ नाईं उसे ढूंढ़ेगा। तब तू परमेश्वर के
भय को समझेगा और ईश्वर के ज्ञान
को पावेगा॥

६ क्योंकि परमेश्वर बुद्धि देता है उस
७ के मुंह से ज्ञान और समझ है। वह
धर्म्मियों के लिये चोखी बुद्धि धर रखता
है वह उन के लिये जो खराई से चलते
हैं एक ढाल है। जिसतें बिचार के
८ पथों की रक्षा करे और वह अपने
साधुओं के मार्ग की चौकसी करता
९ है। तब तू ठीक धर्म्म और बिचार
और खराई हां हर एक अच्छे पथ को
समझेगा॥

१० जब बुद्धि तेरे मन में प्रवेश करेगी
और ज्ञान तेरे जीव को अच्छा लगेगा।
११ तब सोच तेरी रक्षा करेगा और समझ
१२ तेरी रखवाली करेगी। जिसतें तुझे
दुष्ट के मार्ग से और उस मनुष्य से जो
१३ छल की बातें करता है बचावे। उन
से जो खराई के पथ को छोड़ देते हैं
१४ जिसतें अंधियारे मार्गों पर चलें। जो
बुराई करने से आनन्दित होते हैं और
१५ दुष्ट के छल से मगन होते हैं। जिन
की चालें टेढ़ी हैं और वे अपने पथों में
१६ तिरछे हैं। कि तुझे परस्त्री से बचावे
उस उपरी स्त्री से जो अपने बचन से
१७ फुसलाती है। जो अपनी तरुणाई के
मित्र को त्याग करती है और अपने
ईश्वर की आज्ञा को बिसराती है।
१८ क्योंकि उस का घर मृत्यु की ओर
और उस के मार्ग मृतकों की ओर झुके
१९ हैं। कोई उन में से जो उस पास गये
सो फिर नहीं लौटे और वे जीवन के
२० मार्गों को नहीं पहुंचे। जिसतें तू भलों
के मार्ग पर चले और धर्म्मियों के पथों
२१ को धरे रहे। क्योंकि खरे देश में बसेंगे
२२ और सिद्ध उस में बने रहेंगे। परन्तु दुष्ट
पृथिवी पर से काट डाले जायेंगे और
धोखा देनेहारे उस्से उखाड़े जायेंगे॥

तीसरा पर्व्व।

१ हे मेरे बेटे मेरी व्यवस्था को मत
भूल परन्तु तेरा मन मेरी आज्ञाओं को
२ पालन करे। क्योंकि दिनों की बढ़ती
और जीवन के बरस और कुशल वे तुझे

३ बढ़ायेंगे । दया और सत्यता तुझे त्याग न करें उन्हें अपने गले में लपेट उन्हें ४ अपने मन की पटिया पर लिख । और ईश्वर और मनुष्य की दृष्टि में अनुग्रह और अच्छा ज्ञान पा ॥

५ अपने सारे मन से परमेश्वर पर भरोसा रख और अपनी ही समझ पर ६ आसा न कर । अपने सारे मार्गों में उस को पहिचान और वह तेरे पथों ७ को सुधारेगा । अपनी दृष्टि में बुद्धिमान मत हो परमेश्वर से डर और बुराई ८ से अलग हो । यह तेरी नाभी के लिये आरोग्यता और तेरी हड्डियों के लिये तरावट होगी ॥

९ अपनी संपत्ति में से और अपनी सारी बढ़ती के पहिले फल से परमेश्वर की १० प्रतिष्ठा कर । सो तेरे खत्ते बहुताई से भर जायेंगे और तेरे कोल्हू नई मदिरा से फूट निकलेंगे ॥

११ हे मेरे बेटे परमेश्वर की ताड़ना की निन्दा मत कर और उस के दंड से थक १२ मत जा । क्योंकि परमेश्वर जिसे प्यार करता है उसे ताड़ना करता है जिस रीति बाप उस पुत्र को जिस्से वह प्रसन्न है ॥

१३ क्या ही धन्य वह मनुष्य जिस ने बुद्धि को पाया और वह मनुष्य जिस ने १४ समझ को प्राप्त किया है । क्योंकि उस का ब्योपार चांदी के ब्योपार से और उस का लाभ चोखे सोने के लाभ से १५ अच्छा है । वह रत्नों से बहुमूल्य है और समस्त वस्तु जिन की तू लालसा कर १६ सक्ता है उस के तुल्य नहीं । दिनों की बढ़ती उस के दहिने हाथ है धन और १७ प्रतिष्ठा उस के बाएं में है । उस के मार्ग आनन्दता के मार्ग हैं और उस के १८ समस्त पथ कुशल हैं । वह उन के लिये जो उसे ग्रहण करते हैं जीवन का वृक्ष है हर एक जो उसे थामता है धन्य है ।

१९ परमेश्वर ने बुद्धि से पृथिवी की नेव डाली समझ से स्वर्ग को स्थिर किया । २० उस के ज्ञान से गहिराइयां फूट निकली हैं और मेघों से ओस टपकती है ॥

२१ हे मेरे बेटे उन्हें अपनी आंखों से अलग मत होने दे बुद्धि और सोच को २२ धर रख । सो वे तेरे प्राण के लिये जीवन और तेरे गले के लिये अनुग्रह २३ होंगे । तब तू अपने मार्ग में कुशल से चलेगा और तेरा पांव ठोकर न खायेगा । २४ जब तू लेट जायेगा तब न डरेगा हां तू लेट जायेगा और तेरी निद्रा मीठी २५ होगी । अचानक भय से और दुष्टों के उजाड़ से जब वह आता है मत डर । २६ क्योंकि परमेश्वर तेरा भरोसा होगा और तेरे पांव की रक्षा करेगा कि फंदे में न पड़े ॥

२७ भलाई उन से जो भलाई के योग्य हैं अलग मत रख जब कि तेरे हाथ में २८ करने की सामर्थ्य हो । जब तेरे पास हो तो अपने परोसी को यह मत कह कि जा फिर आइयो और मैं कल देऊंगा । २९ अपने परोसी से बुरा व्यवहार मत कर जब वह चैन से तेरे पास रहता है ॥

३० किसी मनुष्य से अकारण मत झगड़ यदि उस ने तुझ से कुछ खोटाई न किई हो ॥

३१ अंधेरी से डाह मत कर और उस के ३२ सारे मार्गों को मत चुन । क्योंकि द्रोही से परमेश्वर को घिन है परन्तु उस की ३३ मित्रता धर्म्मियों से है । परमेश्वर का साप दुष्ट के घर पर है परन्तु धर्म्मियों के निवास पर वह आशीस देगा । ३४ निश्चय वह निन्दकों की निन्दा करता है पर दीनों पर दया करता है । ३५ बुद्धिमान विभव के अधिकारी होंगे परन्तु मूढ़ों की बढ़ती लाज होगी ॥

चौथा पर्ब्ब।

१ हे बालको पिता के उपदेश को सुनो और ज्ञान के प्राप्त करने पर २ ध्यान रक्खो। क्योंकि मैं तुम्हें अच्छा उपदेश देता हूं तुम मेरी व्यवस्था को ३ त्याग मत करो। क्योंकि मैं अपने पिता का बेटा था अपनी माता का एकलौता ४ लाड़ला। उस ने भी मुझे सिखलाया और मुझ से कहा कि मेरे बचन तेरे मन में धरे रहें मेरी आज्ञाओं को पालन कर और जीता रह॥

५ बुद्धि को प्राप्त कर समझ को प्राप्त कर उसे न भूल और मेरे मुंह की बातों से मुंह ६ मत फेर। उसे त्याग मत कर और वह तेरी रक्षा करेगी उसे प्यार कर और वह तुझे ७ बचावेगी। बुद्धि सब से मूल बस्तु है बुद्धि को प्राप्त कर और अपनी समस्त ८ सामर्थ्य से समझ प्राप्त कर। तू उस की प्रतिष्ठा कर और वह तुझे बढ़ावेगी वह तुझे प्रतिष्ठा देगी जब तू उसे गोद ९ में लेगा। वह तेरे सिर पर अनुग्रह का आभूषण रक्खेगी वह तुझे बिभव १० का मुकुट देगी। हे मेरे बेटे सुन और मेरी बातों को ग्रहण कर और तेरे ११ जीवन के बरस बहुत होंगे। मैं ने बुद्धि के मार्ग में तेरी अगुआई किई ठीक १२ पथों में तुझे चलाया है। जब तू चलेगा तब तेरे डग सकेत न होंगे और जब तू दौड़ेगा तब तू ठोकर न खायेगा। १३ उपदेश को दृढ़ता से धर रख उसे जाने मत दे उसे रख छोड़ क्योंकि वह तेरा जीवन है॥

१४ दुष्टों के पथ में मत पैठ और बुरों १५ के मार्ग में मत जा। उसे छोड़ दे उस पर मत चल उधर से फिर और निकल १६ जा। क्योंकि जब लों वे बुराई न कर लेवें तब लों सोते नहीं और जब लों किसी को गिरा न देवें तब लों उन्हें नींद नहीं आती। क्योंकि वे दुष्टता की १७ रोटी खाते हैं और अंधेर की मदिरा पीते हैं। परन्तु धर्म्मियों की चाल उस १८ चमकती ज्योति के समान है जो मध्यान्ह लों चमकती चली जाती है। दुष्टों का १९ मार्ग अंधेरे के समान है वे नहीं जानते हैं कि किस्से ठोकर खायेंगे। हे मेरे बेटे २० मेरी बातों पर ध्यान रख और मेरी कहावतों पर अपना कान झुका। उन्हें अपनी २१ दृष्टि से जाने मत दे उन्हें अपने अन्तःकरण में धारण कर। क्योंकि वे उन २२ के लिये जो उन्हें प्राप्त करते हैं जीवन और उन के सारे शरीर के लिये आरोग्यता हैं। अपने अन्तःकरण को समस्त २३ धारण से धारण कर क्योंकि जीवन की धारें उसी से हैं। मुंह के हठ को अपने २४ से अलग कर और होंठों की टेढ़ाई अपने पास से दूर रख। तेरी आंखें आगे २५ देखा करें और तेरी पलकें तेरे साम्हने देखें। अपने पांव के पथ को तौल तो २६ तेरे सारे मार्ग ठीक किये जायेंगे। न २७ दहिने न बायें हाथ को मुड़ अपने पांव को बुराई से हटा॥

पांचवां पर्ब्ब।

१ हे मेरे बेटे मेरी बुद्धि पर ध्यान रख और मेरी समझ की ओर अपना कान धर। जिसतें तू सोचे और तेरे २ होंठ ज्ञान को धारण करें॥

३ क्योंकि परस्त्री के होंठ मधु के समान टपकते हैं और उस का तालू तेल से अधिक चिकना है। पर उस ४ का अन्त नागदौना की नाईं कड़ुआ है दोधारे खड्ग की नाईं चोखा। उस के ५ पांव मृत्यु में उतरते हैं उस की डग पाताल को धारण करती हैं। जिसतें ६ न हो कि तू जीवन के पथ को तौले उस के मार्ग चलायमान हैं कि तू उन्हें न जाने। सो अब हे बालको मेरी ७

सुनो और मेरे मुंह के बचन से अलग
८ मत हो। अपना मार्ग उस से दूर बना
और उस के घर के द्वार के पास मत
९ आ। ऐसा न होवे कि तू अपनी प्रतिष्ठा
औरों को और अपने बरस क्रूर को
१० देवे। न होवे कि पराये लोग तेरे बल
से पूर्ण होवें और तेरा सारा परिश्रम
११ उपरी के घर में हो। और तू अन्त में
बिलाप करेगा जब तेरा मांस और तेरी
१२ देह छोण हो जायेगी। और कहेगा
कि हाय मैं ने उपदेश से क्यों बैर रक्खा
और मेरे मन ने दपट की क्यों निन्दा
१३ किई। और अपने उपदेशकों के शब्द
को न माना और जो मुझे उपदेश देते
थे मैं ने उन की ओर कान न झुकाये।
१४ निकट था कि मैं मंडली और सभा के
मध्य हर प्रकार की बुराई में पडूं॥

१५ अपने ही कुण्ड से पानी पी और
१६ अपने ही कूए से बहता पानी। तेरे
सोते बाहर फैलें और मार्गों में पानी
१७ की नदियां। वे अकेले तेरे ही लिये
हों और कोई पराया तेरा साथी न हो।
१८ तेरे सोते में आशीस हो और अपनी
तरुणाई की पत्नी से आनन्दित हो।
१९ वह प्रिय हरिणी और मनोहर मृग के
समान हो उस के स्तन हर समय में
तुझे संतुष्ट करें और उस की प्रीति में
२० सर्बदा मगन हो। सो हे मेरे बेटे तू
किस लिये परस्त्री से आह्लादित होवेगा
और उपरी को किस लिये गोद में लेगा।
२१ क्योंकि मनुष्य की चालें परमेश्वर की
आंखों के आगे हैं और वह उस के
२२ सारे चलनों को जांचता है। दुष्ट की
बुराइयां उसी को पकड़ लेंगी और वह
अपने ही पाप की डोरियों से जकड़ा
२३ जायगा। वह बिना शिक्षा से मर जायगा
और अपनी अति मूढ़ता में भटकता
फिरेगा॥

छठवां पर्ब्ब।

हे मेरे बेटे यदि तू अपने मित्र का १
बिचवई हुआ हो यदि किसी परदेशी
से हाथ मारा हो। यदि तू अपने ही २
मुंह की बातों से फंस गया हो और
अपने ही मुंह की बातों से पकड़ा गया
हो। तो हे मेरे बेटे अब यह कर और ३
आप को बचा कि तू अपने मित्र के
हाथ में पड़ा है तो जा आप को नम्र
कर और अपने मित्र की बिन्ती कर।
अपनी आंखों को नींद मत दे और ४
अपनी पलकों को ऊंघने मत दे। अपने ५
को हरिण की नाईं ब्याधा के हाथ से
और चिड़िया के समान चिड़ीमार के
हाथ से बचा॥

हे आलसी चिउंटी के पास जा उस ६
के मार्गों को बूझ और बुद्धिमान हो।
यद्यपि उस का कोई अगुआ अध्यक्ष ७
और राजा नहीं। तथापि वह ग्रीष्म ८
में अपने लिये भोजन सिद्ध करती है
और लवने में अपना आहार बटोरती
है। हे आलसी तू कब लों सोवेगा तू ९
कब अपनी नींद से उठेगा। थोड़ा १०
सोना थोड़ा ऊंघना थोड़ा और हाथों
को नींद के लिये समेटना। सो तेरा ११
कंगालपन पथिक की नाईं आवेगा और
तेरी दरिद्रता हथियारबन्द की नाईं॥

क्रूर जन और दुष्ट मनुष्य मुंह की १२
हठ से चलता है। वह अपनी आंखें १३
मारता है अपने पांवों से बोलता है
अपनी अंगुलियों से बताता है। टेढ़ाई १४
उस के मन में है वह सदा बुराई सोचता
है वह बिगाड़ फैलाता है। सो उस १५
पर अचानक बिपत्ति आ पड़ेगी वह एका-
एक टूट जायगा और कुछ औषध न
होगी॥

परमेश्वर इन छओं से बैर रखता है १६
हां सात से उस का जीव घिन करता

१७ है । अहंकारी आंखें झूठी जीभ और हाथ जो निर्दोष का लोहू बहाते हैं । १८ मन जो बुरा बिचार बांधता है पांव जो बुराई के लिये बेग दौड़ते हैं । १९ झूठा साक्षी जो झूठ बोलता है और भाइयों में बिगाड़ डालता है ॥

२० हे मेरे बेटे अपने पिता की आज्ञा को पालन कर और अपनी माता की २१ व्यवस्था को त्याग न कर । उन्हें सदा अपने मन में बांध ले उन्हें अपने गले २२ में लपेट । जब तू चलेगा तब वह तेरी अगुआई करेगी जब तू सोवेगा तब वह तेरी रक्षा करेगी और जब तू जागेगा तब वह तुझ से बातें करेगी । २३ क्योंकि आज्ञा एक दीपक है और व्यवस्था उंजियाला और उपदेश की २४ डपट जीवन के मार्ग । जिसतें तुझे बुरी स्त्री से अलग रक्खें पराई स्त्री २५ की जीभ की फुसलाहट से । अपने मन में उस की सुन्दरता की इच्छा मत कर और वह तुझे अपनी पलकों से २६ पकड़ने न पावे । क्योंकि व्यभिचारिणी के कारण से पुरुष टुकड़े मांगता फिरता है और व्यभिचारिणी महंगा मोल प्राण २७ की अहेर करती है । क्या मनुष्य अपनी गोद में आग लेवे और उस के कपड़े २८ न जलें । क्या कोई अंगारों पर चले २९ और उस के पांव न जलें । ऐसा ही वह जो अपने परोसी की पत्नी के पास जाता है और जो कोई उसे छूता सो ३० निर्दोष न रहेगा । मनुष्य चोर की जो भूखा होके चोरी करे निन्दा नहीं करते ३१ हैं । पर यदि वह पकड़ा जाय तो सातगुण भर देगा वह अपने घर की ३२ समस्त संपत्ति देगा । परन्तु वह जो किसी की स्त्री से व्यभिचार करता है सो निर्बुद्धि है जो यह करता है वही अपने प्राण को नाश करने के लिये करता है । ३३ वह घाव और निरादर पावेगा और उस का कलंक मिटाया न जायगा । ३४ क्योंकि डाह से मनुष्य को कोप होता है और वह पलटे के दिन न छोड़ेगा । ३५ वह किसी भांति के छुड़ौते को न मानेगा और प्रसन्न न होगा यद्यपि तू उसे घूस पर घूस देवे ॥

सातवां पर्ब्ब ।

१ हे मेरे बेटे मेरी बातों को धारण कर और मेरी आज्ञाओं को अपने पास छिपा रख । २ मेरी आज्ञाओं को धारण कर और जीता रह और मेरी व्यवस्था को अपनी आंखों की पुतली की नाईं कर । ३ उन्हें अपनी अंगुलियों पर बांध उन्हें अपने मन की पटरी पर लिख । ४ बुद्धि से कह कि तू मेरी बहिन है और समझ को अपना कुटुम्ब जान । ५ जिसतें वे तुझे परस्त्री से और उस उपरी से जो तुझे अपनी बातों से फुसलाती है बचा रक्खें ॥

६ क्योंकि मैं ने अपने घर की खिड़की में बैठे हुए झरोखे से झांका । ७ और भकुओं में से एक को देखा और बेटों में से एक अज्ञान तरुण पर ध्यान किया । ८ वह गली में उस के कोने के निकट चला जाता था और उस ने उस के घर का मार्ग लिया । ९ गोधूली में सांझ को बड़ी अंधियारी रात को । १० और देखो कि वहां बेश्या के पहिरावे में उसे एक स्त्री मिली जो बड़ी चतुर थी । ११ वह चिल्लाती है और ढीठ है उस के पांव उस के घर में नहीं ठहरते । १२ कभी बाहर है कभी चौकों में है और हर कोने के निकट घात में लगी है । १३ सो उस ने उसे पकड़ा और उस का चूमा लिया और टकटकी बांधके उसे कहा । १४ कि मेरे यहां कुशल की भेंटें हैं आज के दिन मैं ने अपनी मनौतियां

१५ पूरी किई हैं। इस लिये मैं तुझ से मिलने को निकली हूं कि यत्न से तुझे १६ ढूंढूं और मैं ने तुझे पाया है। मैं ने अपने बिछौने को मिसर के बूटे काढ़े १७ हुए झीने वस्त्र से संवारा है। मैं ने अपने बिछौने को मुर और अगर और दारचीनी के सुगंध से सुगंधित किया १८ है। आ प्रातःकाल लों प्रेम से मिलके उन्मत्त होवें आपुस में प्यार से जी १९ बहलावें। क्योंकि पति तो घर में नहीं है उस ने दूर की यात्रा किई है। २० वह एक थैला रोकड़ अपने हाथ में ले गया है और पर्व्व का घर आवेगा। २१ सो यहां लों कि उस ने अपने छल की बातों से उसे वश में किया और अपने २२ होंठों के फुसलाने से उसे खींचा। वह अचानक उस के पीछे चला जाता है जैसे बैल घात होने को जाता है अथवा मूढ़ की नाईं जो पांव में सोकरें पहिनके अपने दंड के लिये जाता है। २३ यहां लों कि बरछी उस के कलेजे के पार हो गई उस चिड़िया के समान जो जाल की ओर शीघ्र जाती है और नहीं जानती कि वहां उस का प्राण जायगा॥

२४ सो अब हे बालको मेरी सुनो और मेरे मुंह के वचनों पर ध्यान रक्खो। २५ अपने मन को उस के मार्गों पर झुकने मत देओ भटकके उस के पथों में मत २६ जाओ। क्योंकि उस ने बहुतों को घायल करके गिरा दिया है हां बहुत २७ से सूर उस्से जूझ गये हैं। उस का घर नरक के मार्ग हैं जो मृत्यु के भवनों में पहुंचाते हैं॥

आठवां पर्व्व।

१ क्या बुद्धि नहीं पुकारती और क्या २ समुझ अपना शब्द नहीं उठाती। वह ऊंचे स्थानों की चोटी पर मार्गों के सिरे पर और चौराहों के बीच में खड़ी ३ रहती है। वह फाटकों पर और नगर के पैठ पर और भीतर आने के द्वारों ४ पर पुकारती है। कि हे लोगो मैं तुम्हें बुलाती हूं और मनुष्य के सन्तानों के ५ लिये मेरा शब्द है। हे भोलो बुद्धि को समुझो और हे मूर्खो समुझ का मन ६ रक्खो। सुनो क्योंकि मैं उत्तम बातें कहूंगी और मेरे होंठों के खुलने से ठीक ७ बातें निकलेंगी। क्योंकि मेरा मुंह सच सच कहेगा और दुष्टता से मेरे होंठों को ८ घिन है। मेरे मुंह की सारी बातें धर्म्म की हैं उन में टेढ़ी तिरछी कोई वस्तु ९ नहीं। समुझवैये के लिये सब खुला है १० और ज्ञानी के लिये सब ठीक। मेरे उपदेश का ग्रहण करो और रूपे को नहीं और ज्ञान को चोखे सोने से अधिक ११ चुनो। क्योंकि बुद्धि मोतियों से भी अच्छी है और समस्त वस्तें जिन की लालसा किई जाती हैं उस के तुल्य हो नहीं सक्तीं॥

१२ मैं जो बुद्धि हूं चौकसी के साथ रहती हूं और चतुराई के भेद के ज्ञान १३ को प्राप्त करती हूं। बुराई से घिन करना परमेश्वर का भय है और मैं अहंकार और अभिमान और कुमार्ग और १४ कुवचन से बैर रखती हूं। मंत्र और ठीक बुद्धि मेरी हैं मैं ही समुझ हूं मुझी १५ में बल है। मुझ से राजा राज्य करते १६ हैं और राजपुत्र बिचार करते हैं। मुझ से प्रधान और अध्यक्ष और पृथिवी के १७ सारे न्यायी प्रभुता करते हैं। मैं उन से प्रेम करती हूं जो मुझ से प्रेम रखते हैं और वे जो मुझे तड़के ढूंढ़ते हैं मुझे १८ पावेंगे। धन और प्रतिष्ठा हां दृढ़ धन १९ और धर्म्म मेरे साथ हैं। मेरा फल सोने से हां चोखे सोने से और मेरी प्राप्ति २० चोखी चांदी से भली है। मैं धर्म्म के मार्ग में और बिचार के पथ के मध्य में

२१ ले आती हूं। जिसतें मैं उन्हें जो मुझे प्यार करते हैं संपत्ति का अधिकारी करूं और मैं उन के भंडार भर देऊं॥

२२ परमेश्वर अपने मार्ग के आरंभ में अपने प्राचीन कार्य्यों से आगे मुझे २३ रखता था। मैं सनातन से स्थापित किई गई आरंभ से पृथिवी के होने से २४ आगे। जब गहिराव न थे मैं उत्पन्न २५ हुई जब पानी से भरे सोते न थे। मैं पहाड़ों के स्थिर होने से पहिले पहाड़ियों २६ से आगे उत्पन्न हुई। जब लों उस ने पृथिवी न बनाई थी न चौगान न २७ जगत की रेणु का सिरा। जब कि उस ने स्वर्ग बनाये और गहिराव के मुंह २८ को घेर लिया मैं वहां थी। जब उस ने ऊपर मेघों को ठहराया और जब कि उस ने गहिराव के सोतों को दृढ़ २९ किया। जब उस ने समुद्र को आज्ञा दिई कि पानी उस की आज्ञा से बाहर न जावें जब उस ने पृथिवी की ३० नेवें डालीं। तब मैं उस के पास प्रतिपालित के समान थी और मैं प्रतिदिन आनन्दित थी और सदा उस के आगे ३१ आनन्द करती थी। मैं उस की पृथिवी के मण्डल पर आनन्द करती थी और मेरा आनन्द मनुष्य के सन्तान के साथ था॥

३२ सो अब हे बालको मेरी सुनो क्योंकि जो मेरे मार्ग को धारण करते हैं सो ३३ क्या ही धन्य हैं। उपदेश को सुनो और बुद्धिमान होओ और उसे टाल मत देओ। ३४ क्या ही धन्य वह मनुष्य जो मेरी सुनता है और जो प्रतिदिन मेरे फाटकों पर बाट जोहता है और मेरे द्वारों के खंभों ३५ पर ठहरता है। क्योंकि जिस किसी ने मुझे पाया उस ने जीवन को पाया और परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त करेगा। ३६ परन्तु जो मेरा पाप करता है सो अपने प्राण का बैर करता है वे सब जो मुझ से बैर रखते हैं मृत्यु से प्रेम करते हैं॥

नवां पर्व्व।

१ बुद्धि ने अपना घर बनाया है उस २ ने अपने सात खंभे गाड़े हैं। उस ने अपने पशुन को बध किया है उस ने अपनी मदिरा को मिलाया है उस ने ३ अपना मंच भी बिछाया है। उस ने अपनी सहेलियों को भेजा है वह नगर के ऊंचे से ऊंचे स्थानों पर पुकारती है। ४ जो कोई भोला हो सो इधर फिरे जो ५ असमझ है वह उस्से कहती है। कि आ और मेरी रोटी में से खा और उस मदिरा को पी जिसे मैं ने मिलाया है। ६ मूढ़ों की संगत को त्यागो और जीओ ७ और समझ के मार्ग में जाओ। जो निन्दक को झिड़कता है सो अपने लिये लाज प्राप्त करता है और जो दुष्ट को दपटता है सो आप ही कलंक पाता ८ है। निन्दक को मत झिड़क न हो कि वह तुझ से बैर करे बुद्धिमान को झिड़क तो वह तुझ से प्रेम रक्खेगा। ९ बुद्धिमान को उपदेश कर तो वह अधिक बुद्धिमान होगा धर्म्मी को सिखला तो वह १० विद्या में बढ़ेगा। परमेश्वर का भय बुद्धि का आरंभ है और पवित्रमय का ज्ञान ११ समझ है। क्योंकि मुझ से तेरे दिन बढ़ जायेंगे और तेरे जीवन के बरस अधिक १२ होंगे। यदि तू बुद्धिमान होवे तो तू अपने ही लिये बुद्धिमान होगा और तू जो निन्दा करता है तो तू ही अकेला सहेगा॥

१३ मूढ़ स्त्री झगड़ालू है वह मूढ़ है और १४ कुछ नहीं जानती। और वह अपने घर के द्वार पर नगर के ऊंचे स्थानों में पीढ़ी पर १५ बैठी है। जिसतें पथिकों को जो अपने सीधे मार्गों पर चले जाते हैं बुलावे। १६ कि जो कोई भोला हो सो इधर फिरे और जो बुद्धिहीन है वह उस्से कहती

१७ है। कि चोरी का पानी मीठा है और जो रोटी छिपके खाई जाय वह बड़ी १८ स्वादित है। परन्तु वह नहीं जानता कि वहां मृतक हैं और उस के पाहुन नरक के गहिरावे में हैं॥

दसवां पर्व्व।

१ सुलेमान के दृष्टान्त। बुद्धिमान बेटा पिता को आनन्दित करता है परन्तु मूढ़ बेटा अपनी माता को उदास करता २ है। दुष्टता के भंडार से कुछ प्राप्त नहीं ३ परन्तु धर्म्म मृत्यु से छुड़ाता है। परमेश्वर धर्म्मी के प्राण को भूख से मरने न देगा परन्तु वह दुष्ट की इच्छा को ४ दूर करेगा। जो ढीले हाथ से कार्य्य करता है सो कंगाल है परन्तु चतुरों ५ का हाथ धन बटोरेगा। जो ग्रीष्म में बटोरता है सो बुद्धिमान पुत्र है परन्तु जो लवनी में सोता है सो लाज देवैया ६ पुत्र है। धर्म्मी के सिर पर आशीष हैं परन्तु अंधेर दुष्टों के मुंह को ढांपता ७ है। धर्म्मी का स्मरण धन्य है परन्तु ८ दुष्टों का नाम सड़ जायगा। अन्तःकरण का बुद्धिमान आज्ञा मानेगा परन्तु होंठों ९ का मूर्ख गिराया जायगा। जो खराई से चलता है सो कुशलता से चलता है परन्तु जो अपने मार्गों को बिगाड़ता १० है सो प्रगट हो जायगा। जो आंख मटकाता है सो शोक करता है परन्तु ११ गप्पी मूर्ख गिराया जायगा। धर्म्मी का मुंह जीवन का कूआं है परन्तु अंधेर १२ दुष्टों के मुंह को ढांपेगा। बैर झगड़ा उठाता है पर प्रेम सारे पापों को ढांपता १३ है। समुझवैये के होंठों में बुद्धि पाई जाती है परन्तु जो मूर्ख है उस १४ की पीठ के लिये छड़ी है। बुद्धिमान ज्ञान को बटोरते हैं परन्तु मूर्ख का १५ मुंह नाश के समीप है। धनवान का धन उस का दृढ़ नगर है परन्तु कंगालों का कंगालपन उन का नाशक है। १६ धर्म्मी का परिश्रम जीवन के लिये है परन्तु दुष्ट का फल पाप के लिये है। १७ जो उपदेश धारण करता है सो जीवन के मार्ग पर है परन्तु जो दपट को नहीं मानता है सो चूक करता है। १८ जो झूठे होंठों से बैर छिपाता है और जो अपवाद लगाता है सो मूर्ख है। १९ बचन की बहुताई पाप के बिना नहीं होती परन्तु जो अपने होंठों को रोकता है सो बुद्धिमान है। २० धर्म्मी की जीभ चुनी हुई चांदी है दुष्टों का मन न्यूनता की नाईं है। २१ धर्म्मियों के होंठ बहुतों को खिलाते हैं परन्तु मूर्ख लोग मूर्खता से मरते हैं। २२ परमेश्वर ही की आशीष धनी करती है और वह उस में कुछ परिश्रम नहीं बढ़ाती। २३ बुराई करना मूर्ख के लिये ठट्ठा है परन्तु समुझवैये के पास बुद्धि है। २४ दुष्ट का भय वही उस पर पड़ेगा परन्तु धर्म्मियों की इच्छा पूर्ण होगी। २५ जिस रीति से बगुला जाता रहता है वैसा ही दुष्ट न बचेगा परन्तु धर्म्मी सनातन की नेव है। २६ जैसा दांतों के लिये सिरका और आंखों के लिये धूआं ऐसा ही आलसी उन के लिये है जो उसे भेजते हैं। २७ परमेश्वर का भय वय को बढ़ाता है परन्तु दुष्टों के बरस घटाये जायेंगे। २८ धर्म्मियों की आशा आनन्द है परन्तु दुष्टों की आशा नाश होगी। २९ परमेश्वर का मार्ग खरे मनुष्य के लिये गढ़ है परन्तु कुकर्म्मियों के लिये बिनाश। ३० धर्म्मी कभी टलाया न जायेगा परन्तु दुष्ट पृथिवी के अधिकारी न होंगे। ३१ धर्म्मी के मुंह से बुद्धि निकलती है परन्तु टेढ़ी जीभ काट डाली जायेगी। ३२ धर्म्मी के होंठ जानते हैं कि ग्राह्य के योग्य क्या है परन्तु दुष्ट का मुंह टेढ़ा है॥

ग्यारहवां पर्व्व।

१ छल की तुला से परमेश्वर को घिन है परन्तु पूरी तौल उस को प्रसन्नता है। २ अहंकार जब आता है तब लज्जा आती है परन्तु नम्रता के साथ बुद्धि है। ३ सीधों की खराई उन को अगुआई करेगी परन्तु अपराधियों की टेढ़ाई उन्हें नाश करेगी। ४ क्रोध के दिन धन से लाभ नहीं होता परन्तु धर्म्म मृत्यु से छुड़ाता है। ५ सिद्ध का धर्म्म उस के मार्ग को सुधारेगा परन्तु दुष्ट अपनी दुष्टता से गिर पड़ेगा। ६ खरों का धर्म्म उन्हें छुड़ावेगा परन्तु अपराधी नटखटी में पकड़े जायेंगे। ७ जब दुष्ट मनुष्य मरता है तब उस की आशा नष्ट होती है और असत्य का आसरा नष्ट होता है। ८ धर्म्मी संकट से छुड़ाया जाता है और उस की सन्ती दुष्ट आता है। ९ अधर्म्मी मनुष्य मुंह से अपने परोसी को नाश करता है परन्तु धर्म्मी ज्ञान के द्वारा से छुड़ाये जाते हैं। १० धर्म्मियों की मगनता में नगर आनन्दित होता है और जब दुष्ट नष्ट होते हैं तब चिल्लाना होता है। ११ खरों की आशीस से नगर बढ़ाया जाता है परन्तु दुष्टों के मुंह से उलटाया जाता है। १२ मूर्ख अपने परोसी की निन्दा करता है परन्तु समुझवैया चुपका रहता है। १३ लुतड़ा मनुष्य चलते फिरते भेद प्रगट करता है परन्तु जिस का बिश्वस्त प्राण है सो बात छिपाता है। १४ जहां परामर्श नहीं तहां लोग गिर पड़ते हैं परन्तु मंत्रियों की बहुताई से बचाव है। १५ जो परदेशी का मध्यस्थ होता है उस का बड़ा टूटा होगा और जो बिचवई होने से बैर रखता है सो निर्भय है। १६ अनुग्रहीत स्त्री प्रतिष्ठा रख छोड़ती है और बलवन्त पुरुष धन को रख छोड़ता है। १७ दयाल मनुष्य अपने ही प्राण पर भलाई करता है परन्तु कठोर अपने ही मांस को दुःख देता है। १८ दुष्ट छल के कार्य्य करता है परन्तु जो धर्म्म बोता है सो सच्चा प्रतिफल पावेगा। १९ जैसा धर्म्म से जीवन है वैसा जो बुराई का पीछा करता है सो अपनी ही मृत्यु के लिये है। २० जिन के मन टेढ़े हैं वे परमेश्वर के आगे घिनित हैं परन्तु जिन की चाल खरी है सो उस का आनन्द है। २१ यद्यपि हाथ से हाथ मिले तथापि दुष्ट निर्दंड न जायगा परन्तु धर्म्मियों का बंश छुड़ाया जायगा। २२ रूपवती स्त्री जो लाज को छोड़ती है सो उस सूअर की नाईं है जिस की थूथनी में सोने की नथुनी है। २३ धर्म्मियों की लालसा केवल भलाई है परन्तु दुष्टों की आशा क्रोध है। २४ कोई तो ऐसा है जो बिथराता है तथापि बहुत बढ़ाता है और कोई उचित से अधिक रख छोड़ता है परन्तु केवल दरिद्रता के कारण हो जाता है। २५ आशीस का अंतःकरण मोटा होगा और वह जो सींचता है आप भी सींचा जायगा। २६ जो अन्न रख छोड़ता है उस को मनुष्य स्राप देंगे परन्तु बेचवैये के सिर पर आशीस होगी। २७ जो यत्न से भलाई ढूंढ़ता है सो अनुग्रह प्राप्त करता है परन्तु जो बुराई को ढूंढ़ता है वह उसी पर आवेगी। २८ जो अपने धन पर भरोसा रखता है सो गिर पड़ेगा परन्तु धर्म्मी पत्ती की नाईं लहलहावेंगे। २९ जो अपने घराने को सताता है सो पवन का अधिकारी होगा और मूर्ख जन बुद्धिमान अंतःकरण का सेवक होगा। ३० धर्म्मी का फल जीवन का वृक्ष है और जो धर्म्म से प्राणों को मोल लेता है वह बुद्धिमान है। ३१ देख धर्म्मी को पृथिवी पर पलटा दिया जायगा तो कितना अधिक दुष्ट और पातकी को॥

बारहवां पर्व्व।

१ जो उपदेश से प्रेम रखता है सो ज्ञान से प्रेम रखता है परन्तु जो दपट से बैर रखता है सो पशुवत है। २ उत्तम मनुष्य परमेश्वर से अनुग्रह पाता है परन्तु दुष्ट जुगती मनुष्य को वह दोषी ठहरावेगा। ३ दुष्टता से मनुष्य स्थिर न किया जायगा परन्तु धर्म्मियों की जड़ टलाई न जायगी। ४ सुकर्म्मी स्त्री अपने पति के लिये मुकुट है परन्तु जो लज्जित करती है सो उस की हड्डियों में सड़ाहट की नाईं है। ५ धर्म्मियों की चिन्ता ठीक है परन्तु दुष्टों का परामर्श कपट है। ६ दुष्टों की बातें यही हैं कि घात में बैठके लोहू बहावें पर खरों का मुंह उन्हें छुड़ावेगा। ७ दुष्ट उलट दिये जाते हैं और हैं ही नहीं पर धर्म्मियों का घर स्थिर रहेगा। ८ मनुष्य का सराहना उस की बुद्धि के समान होगा परन्तु जो अंतःकरण का टेढ़ा है सो निन्दित है। ९ वह जो तुच्छ किया जाता है और जिस का सेवक है उस्से श्रेष्ठ है जो अपनी प्रतिष्ठा करता है और रोटी का आधीन है। १० धर्म्मी अपने पशुन के प्राण की चिन्ता करता है परन्तु दुष्टों की कोमल दया कठोरता है। ११ जो अपनी भूमि को जोता बोया करता है सो रोटी से तृप्त होगा परन्तु जो तुच्छ लोगों का पीछा करता है सो मूर्ख है। १२ दुष्ट की इच्छा यह है कि बुराई का जाल बिछाये परन्तु धर्म्मियों की जड़ फल देगी। १३ होंठों के पाप से दुष्ट फंसाया जाता है परन्तु धर्म्मी दुःख से निकल आवेगा। १४ अपने मुंह के अच्छे फलों से मनुष्य तृप्त किया जायगा और मनुष्य के हाथों का प्रतिफल उसे दिया जायगा। १५ मूढ़ की चाल उस की दृष्टि में भली है परन्तु जो मंत्र को मानता है सो बुद्धिमान है। १६ मूर्ख का क्रोध तुरंत जाना जाता परन्तु चतुर लाज को ढांपता है। १७ जो सच बोलता है सो धर्म्म को प्रगट करता है परन्तु झूठा साक्षी छल देता है। १८ किसी की बोली ऐसी है जैसे खड्ग का चुभना परन्तु बुद्धिमान की जीभ कुशल है। १९ सच्चाई का होंठ सदा स्थिर रहेगा परन्तु झूठी जीभ पल भर की है। २० कुचिन्तक के मन में छल है परन्तु मिलाप के मंत्रियों को आनन्द है। २१ धर्म्मी पर कोई बिपत्ति आने न पायेगी परन्तु दुष्ट बुराई से पूर्ण होंगे। २२ झूठे होंठों से परमेश्वर को घिन है परन्तु जो सच्चा व्यवहार करते हैं सो उस की प्रसन्नता हैं। २३ चतुर मनुष्य ज्ञान को छिपाता है परन्तु मूर्खों के मन मूर्खता प्रचारते हैं। २४ चालाकों का हाथ प्रभुता करेगा परन्तु आलसी कर के बश में होगा। २५ मनुष्य के मन का शोक उसे निहुड़ाता है परन्तु सुबचन मगन करता है। २६ धर्म्मी अपने परोसी की अगुआई करता है परन्तु दुष्टों का मार्ग उन्हें भटकाता है। २७ आलसी अपनी अहेर को नहीं भूंजता परन्तु चालाक मनुष्य की संपत्ति बहुमूल्य है। २८ धर्म्म के मार्ग में जीवन है और उस के पथ मृत्यु नहीं॥

तेरहवां पर्व्व।

१ बुद्धिमान बेटा अपने पिता का उपदेश सुनता है परन्तु निन्दक दपट को नहीं सुनता। २ मनुष्य अपने मुंह के फल में से अच्छा खायगा परन्तु अपराधियों का प्राण अंधेर को। ३ जो अपने मुंह को संभालता है सो अपने प्राण की रक्षा करता है जो अपने होंठों को पसारता है सो नाश होगा। ४ आलसी का मन बहुत कुछ चाहता है और कुछ नहीं पाता परन्तु चालाकों का मन पुष्ट होगा। ५ धर्म्मी जन झूठी बात से बैर रखता है परन्तु दुष्ट बुराई करता और लाज

६ पहुंचाता है। धर्म्म उस को जिस का मार्ग सीधा है रक्षा करता है परन्तु दुष्टता ७ पापों को उलट देती है। एक तो आप को धनी बनाता है तथापि उस के पास कुछ नहीं एक आप को कंगाल करता ८ है तथापि बड़ा धनी है। मनुष्य के प्राण का प्रायश्चित्त उसी का धन है परन्तु कंगाल दपट को नहीं सुनता। ९ धर्म्मियों का दिया जलता रहेगा परन्तु १० दुष्टों का दीपक बुझाया जायगा। झगड़ा केवल अहंकार से उठता है परन्तु सुमंत्री ११ के साथ बुद्धि है। जो धन कि अनर्थ से प्राप्त किया गया सो घट जायगा परन्तु जो परिश्रम से बटोरता है सो १२ बढ़ जायगा। आशा का टालना मन को रोगी करता है परन्तु आशा का १३ पूर्ण होना जीवन का वृक्ष है। जो कोई बचन की निन्दा करता है सो नाश किया जायगा परन्तु वह जो आज्ञा से १४ डरता है कुशल से रहेगा। ज्ञानी की व्यवस्था जीवन का सोता है जिसतें १५ मृत्यु के जालों से अलग होवे। अच्छी समझ अनुग्रह देती है परन्तु अपराधियों १६ का मार्ग कठिन है। हर एक चतुर जन ज्ञान से व्यवहार करता है परन्तु मूर्ख १७ अपनी मूर्खता फैलाता है। दुष्ट दूत बुराई में पड़ता है परन्तु बिश्वस्त दूत कुशल १८ है। कंगालपन और लाज उस के लिये हैं जो उपदेश को नहीं मानता परन्तु जो दपट को मानता है सो प्रतिष्ठा पावेगा। १९ इच्छा का पूर्ण होना प्राण को मीठा है परन्तु बुराई को छोड़ना मूर्खों को २० घिन है। जो बुद्धिमानों के संग चलता सो बुद्धिमान होगा परन्तु मूर्खों का २१ संगी चूर्ण होगा। बिपत्ति पापियों के पीछे दौड़ती है परन्तु धर्म्मियों को उत्तम २२ प्रतिफल मिलेगा। उत्तम अपने पोतों के लिये अधिकार छोड़ जाता है परन्तु पापी का धन धर्म्मी के लिये धरा है। कंगालों के जोतने बोने से बहुत सा २३ भोजन मिलता है परन्तु ऐसा भी होता है कि धन बिचार के न होने से उड़ाया जाता है। जो अपनी छड़ी को रोकता २४ है सो अपने बेटे से बैर रखता है परन्तु जो उसे प्यार करता है सो उस को आगे से ताड़ना करता है। धर्म्मी अपने २५ प्राण की संतुष्टता के लिये खाता है परन्तु दुष्टों का पेट नहीं भरता॥

चौदहवां पर्व्व।

बुद्धिमान स्त्री अपना घर बनाती है १ परन्तु अज्ञान उसे अपने हाथों से ढाती है। जो अपनी खराई से चलता है सो २ परमेश्वर से डरता है परन्तु कुमार्गी उस की निन्दा करता है। मूर्खों के ३ मुंह में घमंड की लाठी है परन्तु बुद्धिमानों के होंठ उन की रक्षा करेंगे। जहां बैल नहीं तहां चरनी छूछी हैं ४ परन्तु अनाज की अधिकाई बैल के बल से है। बिश्वस्त साक्षी झूठ न ५ बोलेगा परन्तु झूठा साक्षी झूठ उच्चारण करेगा। निन्दक बुद्धि को खोज करता ६ है और नहीं पाता परन्तु ज्ञान समझवैये के लिये सहज है। जब तू ज्ञान के ७ होंठ नहीं देखता है तब मूर्ख से अलग हो जा। चतुर की बुद्धि यह है कि ८ अपना मार्ग बूझे परन्तु मूढ़ों की मूढ़ता कपट है। मूढ़ पाप को ठट्ठा ९ जानते हैं परन्तु धर्म्मियों में कृपा है। प्राण की कड़वाहट को प्राण ही जानता १० है और उपरी मनुष्य उस की आनन्दता में हाथ नहीं डालता है। दुष्टों का ११ घर नष्ट हो जायगा परन्तु खरों का तंबू लहलहावेगा। एक मार्ग है जो १२ मनुष्य को ठीक दिखलाई देता है परन्तु उस का अन्त मृत्यु का मार्ग है। हंसने १३ में भी मन शोकित है और उस आनन्द

१४ का अन्त उदासी है। भटका हुआ मन अपने ही मार्गों से तृप्त हो जायगा
१५ और उत्तम मनुष्य आप ही से। भोला हर एक बचन की प्रतीति करता है
१६ परन्तु चतुर देखके चलता है। बुद्धिमान डरता है और बुराई से भागता है परन्तु मूर्ख कोपित और निर्भय है।
१७ जो शीघ्र क्रोध करता है सो मूर्खता से व्यवहार करता है और दुष्ट जुगती
१८ से बैर है। अज्ञान मूर्खता के अधिकारी हैं परन्तु चतुरों के सिर पर ज्ञान का
१९ मुकुट है। बुरे भलों के आगे और दुष्ट धर्म्मी के फाटकों के आगे झुकते हैं।
२० कंगाल से उस का परोसी भी बैर रखता है परन्तु धनी के बहुत से मित्र
२१ हैं। जो अपने परोसी की निन्दा करता है सो पाप करता है परन्तु जो कंगालों
२२ पर दया करता है सो धन्य है। जो बुरी युक्ति करते हैं क्या वे चूक नहीं करते परन्तु दया और सत्य उन पर है
२३ जो भले युक्ती हैं। समस्त परिश्रम में लाभ होगा परन्तु होंठों की बोली से
२४ केवल दरिद्रता है। बुद्धिमानों का धन उन का मुकुट है परन्तु मूर्खों की
२५ मूर्खता मूर्खता ही रहती है। सच्चा साक्षी प्राणों को बचाता है परन्तु छली
२६ झूठ बोलता है। परमेश्वर के डर में दृढ़ बिश्वास है और उस के बालकों
२७ को शरणस्थान मिलेगा। परमेश्वर का डर जीवन का सोता है जिसतें मृत्यु
२८ के फंदों से अलग होवे। लोगों की बहुताई में राजा की प्रतिष्ठा है परन्तु लोगों के न होने में राजपुत्र का नाश
२९ है। जो क्रोध में धीमा है बड़ा बुद्धिमान है परन्तु जो शीघ्र क्रोध करता मूर्खता
३० प्रगट करता है। शरीर का जीवन शुद्ध मन है परन्तु डाह हड्डियों की सड़ाहट
३१ है। जो कंगाल पर अंधेर करता है सो उस के कर्त्ता की निन्दा करता है परन्तु जो उस की प्रतिष्ठा करता है कंगाल पर दया करता है। दुष्ट अपनी
३२ दुष्टता में खदेड़ा जाता है परन्तु धर्म्मी अपनी मृत्यु में आशा रखता है।
३३ समझवैये के मन में बुद्धि चुपचाप रहती है और मूढ़ों के मन की दशा प्रगट
३४ होती है। धर्म्म जातिगण को बढ़ाता है परन्तु पाप लोगों के लिये कलंक
३५ है। बुद्धिमान सेवक पर राजा की कृपा है परन्तु जो लाज दिलाता है उस का क्रोध उस पर है॥

पंद्रहवां पर्व्व।

१ कोमल उत्तर क्रोध को फेर देता है परन्तु कटुक बचन क्रोध को उभाड़ते
२ हैं। बुद्धिमानों की जीभ ज्ञान को उत्तम रीति से काम में लाती है परन्तु मूर्खों का मुंह मूर्खता उगलता है।
३ परमेश्वर की आंखें हर स्थान में बुरों
४ भलों को देखती हैं। कुशलता की जीभ जीवन का वृक्ष है परन्तु उस की चिकनी चुपड़ी बातें आत्मा के लिये हानि हैं।
५ मूर्ख अपने पिता के उपदेश को तुच्छ जानता है परन्तु जो घुड़की को मान
६ लेता है सो चतुर है। धर्म्मी के घर में बहुत धन है परन्तु दुष्ट की प्राप्ति में
७ दुःख है। बुद्धिमान के होंठ ज्ञान फैलाते हैं परन्तु मूर्ख का मन ऐसा
८ नहीं है। दुष्ट के बलिदान से परमेश्वर को घिन है परन्तु खरे की
९ प्रार्थना उस की प्रसन्नता है। दुष्ट की चाल से परमेश्वर को घिन है परन्तु जो धर्म्म का पीछा करता है वह उस्से
१० प्रेम रखता है। जो मार्ग को छोड़ देता है ताड़ना उस के लिये भारी है और जो दपट से बैर रखता है सो मर
११ जायगा। पाताल और नाश परमेश्वर के आगे हैं तो कितना अधिक मनुष्य

के सन्तान के अन्तःकरण न होंगे।
१२ निन्दक अपने डपटनेहारे से प्रेम न करेगा
और बुद्धिमानों के पास न जायगा।
१३ मगनमन रूप को आनन्द करता है
परन्तु मन के शोक से मन टूट जाता
१४ है। समुझवैये का मन ज्ञान को खोजता
है परन्तु मूर्खों का मुंह मूर्खता आहार
१५ करता है। दुःखी के जीवन के दिन
दुःख हैं परन्तु जिस का मन मगन है
१६ उस के लिये सदा जेवनार है। थोड़ा
सा जो परमेश्वर के भय के साथ हो
उस बड़े भण्डार से जो क्लेश के संग हो
१७ भला है। सागपात का भोजन प्रेम के
साथ उस्से भला है कि पाला हुआ
१८ बरद बैर के साथ। क्रोधी मनुष्य
झगड़ा उभाड़ता है परन्तु जो क्रोध में
धीमा है सो झगड़े को मिटाता है।
१९ आलसी का मार्ग कांटों के बाड़ के
समान है परन्तु धर्म्मियों का मार्ग ऊंचा
२० मार्ग है। बुद्धिमान लड़का पिता को
आनन्दित करता है परन्तु मूर्ख अपनी
२१ माता की निन्दा करता है। मूढ़ता
निर्बुद्धि के लिये आनन्द है परन्तु समुझ-
२२ वैया मनुष्य खराई से चलता है। बिना
परामर्श मनोरथ वृथा होते हैं परन्तु
मंत्रियों की बहुताई से वे दृढ़ होते हैं।
२३ मनुष्य अपने मुंह के उत्तर से आनन्दित
होता है और समय पर की बात कैसी
२४ अच्छी है। जीवन का मार्ग बुद्धिमान
के लिये ऊंचा है जिसतें वह नीचे
२५ पाताल से निकल जाय। परमेश्वर
घमंडियों का घर ढा देगा परन्तु वह रांड़
२६ के सिवाने को स्थिर करेगा। दुष्ट की
चिन्ता से परमेश्वर को घिन है परन्तु
२७ पावनों की बातें मनोहर हैं। जो लाभ
का लालच करता है सो अपने घराने
को दुःख देता है परन्तु जो घूंस से
२८ बैर रखता है सोई जीयेगा। धर्म्मी
का मन उत्तर देने को सोचता है परन्तु
दुष्टों का मुंह बुराइयां उगलता है।
परमेश्वर दुष्टों से दूर है परन्तु वह २९
धर्म्मियों की प्रार्थना सुनता है। आंखों ३०
की ज्योति मन को आनन्द करती है
और सुसंदेश हड्डियों को पुष्ट करता है।
जो कान जीवन की झिड़की सुनता है ३१
सो बुद्धिमानों में रहेगा। जो उपदेश ३२
को नहीं मानता सो अपने ही प्राण
को तुच्छ करता है परन्तु जो डपट को
मानता है सो बुद्धि प्राप्त करता है।
परमेश्वर का भय बुद्धि का उपदेश है ३३
और प्रतिष्ठा के आगे दीनताई है॥

सोलहवां पर्ब्ब।

मनुष्य के मन का उपाय और जीभ १
का उत्तर परमेश्वर की ओर से हैं।
मनुष्य की सारी चालें उस की आंखों २
के आगे पवित्र हैं परन्तु परमेश्वर
आत्माओं को तौलता है। अपने कार्य्यों ३
को परमेश्वर को सौंप तो तेरी चिन्ताएं
स्थिर किई जायेंगी। परमेश्वर ने सब ४
कुछ अपने लिये बनाया है हां दुष्ट को
भी बुराई के दिन के लिये। हर एक ५
अहंकारी मन से परमेश्वर को घिन है
यद्यपि हाथ हाथ में मिले तथापि
वह बिना दण्ड न छूटेगा। दया और ६
सत्य से बुराई ढांपी जाती है और लोग
परमेश्वर के भय से बुराई से अलग
रहते हैं। जब मनुष्य की चालें परमेश्वर ७
को अच्छी लगती हैं तब वह उस के
बैरियों को भी उस्से मेल कराता है।
थोड़ा सा जो धर्म्म के साथ है बहुत ८
प्राप्ति से जो अन्याय के साथ है अच्छा
है। मनुष्य का मन अपना मार्ग ठहराता ९
है परन्तु परमेश्वर उस की डग को दृढ़
करता है। दिव्य बचन राजा के होंठों १०
से निकलता है और उस का मुंह न्याय
में अपराध नहीं करता। खरी तौल और ११

तुला परमेश्वर के हैं थैली के सारे बट-
१२ खरे उस के कार्य्य हैं। दुष्टता के कर्म्म
करने से राजाओं को घिन है क्योंकि
सिंहासन धर्म्म से दृढ़ किया जाता है।
१३ धर्म्मी होंठ राजाओं को प्रसन्न हैं और
वे उस को जो ठीक बोलता है प्यार
१४ करते हैं। राजा का क्रोध मृत्यु के
दूतों के समान है परन्तु बुद्धिमान
१५ मनुष्य उसे धीमा करेगा। राजा के
मुख की ज्योति में जीवन है और उस
की कृपा पिछली बर्षा की एक बदली
१६ के समान है। बुद्धि को प्राप्त करना
सोने से कितना भला है और समझ को
प्राप्त करना रूपे से कितना उत्तम है।
१७ खरों का राजमार्ग यह है कि बुराई से
अलग रहे जो अपने मार्ग की चौकसी
करता है सो अपने प्राण की रक्षा करता
१८ है। नाश से पहिले अहंकार और गिर
१९ पड़ने से आगे मन का घमंड है। दीनों
के साथ दीन होना उस्से अच्छा है कि
२० अहंकारियों के साथ लूट बांटे। जो
बुद्धिमानी के साथ कार्य्य करता है सो
भलाई देखेगा और जो परमेश्वर पर
भरोसा रखता है सो क्या ही धन्य है।
२१ जो मन में बुद्धिमान है वह चतुर कह-
लावेगा और होंठों की मीठाई विद्या
२२ बढ़ाती है। समझवैयों के लिये समझ
जीवन का सोता है परन्तु मूर्खों का
२३ उपदेश मूर्खता है। बुद्धिमान का अन्तः-
करण उस के मुंह को बुद्धिमान करता
है और उस के होंठों को विद्या देता
२४ है। मनभावनी बातें मधु के छत्ते के
समान प्राण को मीठी लगती हैं और
२५ वे हड्डियों के लिये चैन हैं। ऐसा
मार्ग है जो मनुष्य को सीधा समझ
पड़ता है परन्तु उस का अन्त मृत्यु के
२६ मार्ग हैं। जो परिश्रम करता है वह
अपने लिये करता है क्योंकि उस का
मुंह उस्से परिश्रम करवाता है। दुष्ट २७
मनुष्य बुराई को खोदके निकालता है
और उस के होंठों में जलती आग की
नाईं है। क्रूर मनुष्य झगड़ा उठाया २८
करता है और फुसफुसहा मित्रों में बिभाग
करता है। अंधेरी मनुष्य अपने परोसी २९
को फुसलाता है और उसे उस मार्ग से
ले जाता है जो भला नहीं। वह आंखें ३०
मटकाता है जिसतें टेढ़ी बात की
युक्ति करे और होंठ हिलाता है जिसतें
बुराई उत्पन्न करे। उजला सिर बिभव ३१
का मुकुट है जो धर्म्म के मार्ग में पाया
जाय। जो क्रोध में धीमा है सो सामर्थी ३२
से भला है और जो अपने मन को बश
में रखता है उस्से जो नगर को लेता
है। चिट्ठी गोद में डाली जाती है ३३
परन्तु उस का समस्त न्याय परमेश्वर
से है॥

सत्रहवां पर्व्व।

रूखा ग्रास जो चैन के साथ हो उस १
घर से भला है जो झगड़े के बलिदानों
से भरा हुआ हो। बुद्धिमान सेवक उस २
पुत्र पर जो लज्जित करता है प्रभुता
करेगा और भाइयों में अधिकार का
भाग पावेगा। चांदी के लिये घरिया ३
है और सोने के लिये भट्ठी परन्तु
परमेश्वर अंतःकरणों को जांचता है।
कुकर्म्मी झूठे होंठों की सुनता है और ४
झूठा कुबचन का श्रोता है। जो कंगाल ५
पर हंसता है सो उस के कर्त्ता को
कलंक लगाता है और जो औरों की
बिपत्ति से आनन्दित होता है सो निर्दोषी
न ठहरेगा। बालकों के बालक अपने ६
के मुकुट हैं और बालकों के
बिभव उन के पिता हैं। होंठों की ७
शोभा मूर्ख को नहीं सजती तो कितने
अधिक झूठे होंठ राजपुत्र को। दान ८
उस की आंखों में जो उसे पाता है

अनुग्रह का मार्ग है और वह जहां कहीं ९ फिरता है सुफल होता है। जो अपराध को छिपाता है सो प्रेम का खोजी है परन्तु जो बात को दुहराता है सो १० मित्रों में बिभाग करता है। एक झिड़की बुद्धिमान को अधिक चितानी है कि ११ सौ कोड़ा मूर्ख को। दुष्ट केवल दंगे का खोजी है सो उस पर कठोर दूत १२ भेजा जायगा। मनुष्य का उस भालू से भेंट करना जिस के बच्चे छीन लिये गये उस्से भला है कि मूर्ख से उस की १३ मूर्खता की दशा में भेंट करे। जो भलाई की संती बुराई करता है बुराई १४ उस के घर से अलग न होगी। झगड़े का आरंभ पानी के बहि निकलने की नाईं है सो इस लिये झगड़े को उस्से १५ पहिले कि बढ़ जाय त्याग करो। जो दुष्ट को निर्दोष और जो धर्म्मी को दोषी ठहराता है उन दोनों से परमेश्वर १६ को घिन है। काहे को मूर्ख के हाथ में दाम है जिस्से कि वह बुद्धि मोल ले जब कि उस का मन उस की ओर १७ नहीं है। जो मित्र है सो सदा प्रेम करता है और भाई बिपत्ति के दिन के १८ लिये उत्पन्न हुआ है। निर्बुद्धि मनुष्य हाथ मारता है और अपने मित्र के १९ आगे बिचवई होता है। जो झगड़े से प्रीति रखता है सो अपराध से प्रीति रखता है जो अपने फाटक को ऊंचा करता है सो नाश को ढूंढ़ता है। २० जिस के मन में हठ है सो भलाई प्राप्त नहीं करेगा और जो टेढ़ी जीभ रखता है २१ सो बुराई में पड़ेगा। जो मूर्ख को उत्पन्न करता है सो अपने ही शोक के लिये करता है और मूर्ख के पिता को आनन्द २२ नहीं है। आनन्दित मन औषध की नाईं भला करता है परन्तु टूटा मन २३ हड्डियों को सुखाता है। दुष्ट मनुष्य गोद में से घूस लेता है कि न्याय के मार्ग फेर देवे। समुझवैया के आगे २४ बुद्धि है परन्तु मूर्ख की आंखें पृथिवी के सिवानों लों हैं। मूढ़ पुत्र अपने २५ पिता के लिये शोक है और अपनी मा के लिये बड़ी कड़वाहट। धर्म्मी को २६ भी दंड देना अच्छा नहीं और कुंअरों को न्याय के लिये मारना भला नहीं। ज्ञानी संभालके बोलता है और समुझवैया २७ शीतल मन है। मूर्ख भी जब वह २८ चुपका रहता है बुद्धिमान गिना जाता है और समुझवैया अपने होंठों को बंद कर रखता है॥

अठारहवां पर्ब्ब।

जो आप को औरों से अलग करता १ है वह अपनी इच्छा को ढूंढ़ता है और हर एक मनोरथ में छेड़ता है। मूर्ख २ को समुझ प्रसन्न नहीं परन्तु जब कि उस का मन आप को प्रगट करे। जब ३ दुष्ट आता है तब निन्दा भी आती है और दुर्गति के साथ अपयश आता है। मनुष्य के मुंह की बातें गहिरे जल हैं ४ और बुद्धि का सोता बहता नाला है। धर्म्मी को न्याय में पलटने को दुष्ट का ५ पक्ष करना अच्छा नहीं है। मूर्ख के ६ होंठ बिवाद में पैठते हैं और उस का मुंह थपेड़ा मांगता है। मूर्ख का मुंह ७ उस का बिनाश है और उस के होंठ उस के प्राण के लिये फंदे। फुसफुसाहट ८ की बातें मीठे ग्रास की नाईं हैं और वे अंतःकरण के भीतर पैठ जाती हैं। जो अपने कार्य्य में आलसी है सो वृथा ९ उठान करवैये का भाई है। परमेश्वर १० का नाम एक दृढ़ गढ़ है धर्म्मी उस में दौड़के बचा रहता है। धनी मनुष्य का ११ धन उस का दृढ़ नगर और उसी की समुझ में एक ऊंची भीत की नाईं है। बिनाश के आगे मनुष्य का मन फूलता १२

है और प्रतिष्ठा के आगे दीनताई है ।
१३ जो बिन सुने बचन कह बैठता है उस
१४ के लिये मूर्खता और लाज है । मनुष्य
का प्राण उस की निर्बलता को संभाल
सक्ता है पर टूटे प्राण को कौन सह
१५ सक्ता है । चतुर का मन ज्ञान प्राप्त
करता है और बुद्धिमानों के कान ज्ञान
१६ को ढूंढ़ते हैं । मनुष्य का दान उस के
लिये ठिकाना कर लेता है और उसे
१७ महज्जनों के पास पहुंचाता है । जो
अपने ही पद में पहिला है सो धर्म्मी
जाना जाता है परन्तु उस का परोसी
१८ आके उसे जांचता है । चिट्ठी डालना
झगड़ों को मिटा देता है और बलवानों
१९ को अलग करता है । उदास भाई को
मिला लेना दृढ़ नगर को लेने से कठिन
है और उन के झगड़े गढ़ के अड़ंगे की
२० नाईं हैं । मनुष्य का पेट उस के मुंह
के फल से तृप्त होता है वह अपने होंठों
२१ की प्राप्ति से संतुष्ट होता है । जीवन
और मरण जीभ के बश में हैं और जो
उस्से प्रीति रखते हैं वे उस का फल
२२ खाते हैं । जो पत्नी को प्राप्त करता है
सो उत्तम बस्तु प्राप्त करता है और
२३ परमेश्वर से अनुग्रह पाता है । कंगाल
बिन्ती किया करता है परन्तु धनी कड़ा
२४ उत्तर देता है । मनुष्य के मित्र हानि
के लिये हैं परन्तु एक जन जो प्रेम
रखता है सो भाई से अधिक सटा
रहता है ॥

उन्नीसवां पर्ब्ब ।

१ जो कंगाल अपनी सच्चाई में चलता
है सो उस्से अच्छा है जो टेढ़े होंठ से
२ चलता है और मूढ़ है । प्राण का अज्ञान
रहना भी अच्छा नहीं और जो पांवों से
३ बेग करता है सो पाप करता है । मनुष्य
की मूर्खता उस के मार्ग बिगाड़ती है
और उस का मन परमेश्वर से उदास
होता है । धन बहुत से मित्र बनाता ४
है परन्तु कंगाल अपने मित्र से अलग
किया जाता है । झूठा साक्षी निर्दोष ५
न ठहरेगा और मिथ्यावादी न बचेगा ।
बहुत से लोग राजपुत्र की दया के लिये ६
बिन्ती करेंगे और सब उस मनुष्य के मित्र
हैं जो दान देता है । कंगाल के तो ७
सारे भाई उस्से बैर रखते हैं सो कितना
अधिक उस के मित्र उस्से दूर जायेंगे
वह गिड़गिड़ाके उन का पीछा करता
है परन्तु वे नहीं मानते । जो बुद्धि को ८
प्राप्त करता है सो अपने प्राण को प्यार
करता है जो समझ रखता है सो भलाई
पावेगा । झूठा साक्षी बिना दंड न ९
छूटेगा और मिथ्यावादी नाश हो
जायगा । आनन्दता मूर्ख को नहीं सजती १०
तो कितना अधिक कि सेवक कुंअर
पर राज्य करे । मनुष्य की चतुराई उस ११
के क्रोध को टालती है और अपराध
पर दृष्टि न करने में उस की प्रतिष्ठा है ।
राजा का कोप सिंह के गर्जने की नाईं १२
है परन्तु उस की कृपा घास पर की
ओस की नाईं है । मूढ़ पुत्र अपने १३
पिता की बिपत्ति है और पत्नी का झगड़ा
रगड़ा नित्य का टपकना है । घर और १४
धन पितरों का अधिकार है और बुद्धि-
वती पत्नी परमेश्वर से मिलती है ।
आलस भारी नींद में डाल देता है और १५
आलसी प्राणी भूखा मरेगा । जो आज्ञा १६
को पालन करता है सो अपने प्राण की
रक्षा करता है और जो अपनी चालों को
तुच्छ जानता है सो मारा जायगा । जो १७
कंगाल पर दया करता है सो परमेश्वर
को उधार देता है और जो उस ने दिया
होगा वह उसे फेर देगा । जब लों कि १८
आशा है तब लों अपने बेटे को ताड़ना
किये जा और उस के मार डालने पर
अपना मन मत लगा । अति कोपित १९

मनुष्य दंड ही पावेगा क्योंकि यदि तू उसे छुड़ाये तो तुझे यह बारंबार करना २० पड़ेगा। मंत्र को सुन और उपदेश को ग्रहण कर जिसतें अपने अन्त में तू बुद्धि-२१ मान होवे। मनुष्य के मन में बहुत सी युक्ति हैं परन्तु परमेश्वर का मंत्र वही २२ ठहरेगा। मनुष्य की इच्छा उस की दया २३ है और झूठे से कंगाल अच्छा है। परमेश्वर का भय जीवन के लिये है और जिस में वह है सो तृप्त रहेगा बुराई २४ उस के पास न आवेगी। आलसी अपना हाथ भोजनपात्र में छिपाता है और इतना नहीं करता कि उसे अपने मुंह २५ लों लावे। ठठेलू को मार तो भोला चतुर हो जाएगा और समुझवैये को दपट २६ तो वह ज्ञान को समुझेगा। जो अपने पिता को लूटता है और अपनी माता को खदेड़ता है सो पुत्र लाज दिलाता २७ है और कलंक लाता है। हे मेरे बेटे ऐसे उपदेश को मत मान जो ज्ञान की २८ बातों से फिरता है। झूठा साक्षी न्याय की निन्दा करता है और दुष्ट का मुंह २९ बुराई निगलता रहता है। ठठेलू के लिये दंड की आज्ञा धरी है और मूर्खों की पीठ के लिये कोड़े॥

बीसवां पर्व्व।

१ मदिरा ठठेलू बनाती है और मद कोपित करता है और जो कोई इस में २ भ्रमित है सो बुद्धिमान नहीं है। राजा का भय सिंह के गर्ज्ज के समान है जो कोई उसे रिसियाता है सो अपने प्राण ३ का घातक है। मनुष्य की प्रतिष्ठा इसी में है कि झगड़े से अलग रहे परन्तु हर एक मूढ़ छेड़ा करता है। ४ आलसी मनुष्य जाड़े के मारे न जोतेगा इस कारण वह लवनी में भीख मांगेगा ५ और न पावेगा। मनुष्य के मन का मंत्र गहिरे जल के समान है परन्तु समुझवैया मनुष्य उसे खींचेगा। बहुधा ६ मनुष्य अपनी भलाई प्रचारते हैं परन्तु बिश्वस्त मनुष्य को कौन पा सक्ता है। धर्म्मी मनुष्य अपनी खराई पर चलता ७ है उस के पीछे उस के बालक धन्य हैं। राजा जो न्याय के सिंहासन पर ८ बैठता है सो अपनी आंखों से सारी बुराई को दूर करता है। कौन कह ९ सक्ता कि मैं ने अपने मन को पावन किया है मैं अपने पाप से पवित्र हूं। नानाप्रकार के बटखरे और नानाप्रकार १० के तौल वे दोनों के दोनों परमेश्वर को घिनित हैं। बालक भी अपनी चाल ११ से जाना जाता है कि उस के कार्य्य पावन और सीधे होंगे। सुन्ने के कान १२ और देखने की आंखें परमेश्वर ने दोनों को बनाया है। बहुत नींद से प्रीति १३ मत कर न होवे कि कंगालपना तुझ पर आ जावे अपनी आंखें खोल तो तू रोटी से तृप्त होगा। गांहक कहता है १४ कि यह बुरा है बुरा है परन्तु जब वह चल निकलता है तब बड़ाई करता है। सोना और बहुत से मणि हैं परन्तु १५ ज्ञान के होंठ बहुमूल्य गहने हैं। जो १६ परदेशी का बिचवई हो उस का कपड़ा छीन ले और उपरी के लिये उसे बंधक रख। छल की रोटी मनुष्य को मीठी १७ लगती है परन्तु पीछे उस का मुंह कंकरों से भर जाता है। मनोरथ परामर्श १८ से स्थिर होता है और सुमंत्र से युद्ध कर। लुतरा जो फिरा करता है सो १९ अपने भेदों को प्रगट करता है और जो अपने होंठों से फुसलाता है उसे मत छेड़। जो कोई अपने पिता अथवा २० अपनी माता को स्राप देता है उस का दीपक महा अंधकार में बुझाया जायगा। आरंभ में शीघ्रता से अधिकार प्राप्त २१ किया गया परन्तु उस का अन्त न

फलेगा । २२ मत कह कि मैं बुराई का पलटा लेऊंगा परन्तु परमेश्वर पर ठहर और वही तुझे बचावेगा । २३ नानाप्रकार के बटखरों में परमेश्वर को घिन है और छल की तुला कुछ अच्छी नहीं । २४ मनुष्य की चाल परमेश्वर से है फिर मनुष्य क्योंकर अपनी चाल को समझ सके । २५ यह मनुष्य के लिये फंदा है कि पवित्र बस्तु को भक्षण करे और मनौती के पीछे सोच करे । २६ बुद्धिमान राजा दुष्टों को छिन्न भिन्न करता है और उन पर पहिया फिरवाता है । २७ मनुष्य का आत्मा परमेश्वर का दीपक है जो मनुष्य के उदर के अन्तर को ढूंढा करता है । २८ दया और सत्य राजा की रक्षा करते हैं और उस का सिंहासन दया से उभड़ा हुआ है । २९ तरुण मनुष्यों का बिभव उन का बल है परन्तु बृद्धों की शोभा उन के उजले बाल हैं । ३० मार की चोट उस की बुराई को दूर करती है और कोड़े उदर को अन्तर से शुद्ध करते हैं ॥

पर्ब्ब ।

१ राजा का मन परमेश्वर के हाथ में नदियों के जल की नाईं है वह उसे जिधर चाहता है उधर फेरता है । २ मनुष्य की हर एक चाल अपनी दृष्टि में ठीक है परन्तु परमेश्वर मन को तौलता है । ३ धर्म्म और बिचार करना परमेश्वर को बलिदान से अधिक प्रसन्न है । ४ ऊंची दृष्टि और अभिमानी मन और दुष्टों की ज्योति पाप है । ५ चटकहों की चिन्ता केवल बहुताई के लिये है परन्तु हर एक जो उतावली है केवल कंगालता को पहुंचता है । ६ झूठी बोली से भंडार प्राप्त करना एक उड़नेहारी बृथा है उन लोगों के लिये जो मृत्यु के खोजी हैं । ७ दुष्टों की बटमारी उन्हें भय देगी क्योंकि उन्हों ने बिचार को न माना । ८ मनुष्य का मार्ग टेढ़ा और कुपन्थ है परन्तु जो पवित्र है उस का कार्य्य ठीक है । ९ घर के कोठे के एक कोने में रहना झगड़ालू स्त्री के साथ संयोग के घर में रहने से अच्छा है । १० दुष्ट का प्राण बुराई चाहता है उस का परोसी उस की दृष्टि में कृपा नहीं पाता । ११ जब निन्दक दंड पाता है तब भोला बुद्धिमान होता है और जब बुद्धिमान उपदेश पाता है तब वह समझ प्राप्त करता है । १२ धर्म्मी मनुष्य बुद्धि से दुष्ट के घर को सोचता है कि ईश्वर दुष्टों को दुष्टता के कारण से उन्हें गिरा देता है । १३ जो कंगाल के रोने से अपने कान मूंदता है वह आप भी रोवेगा परन्तु उस का रोना सुना न जायेगा । १४ गुप्त दान क्रोध को धीमा करता है और गोद में प्रतिफल देना महा कोप को ठंडा करता है । १५ धर्म्मी के न्याय में आनन्द है परन्तु कुकर्म्मियों के लिये नाश है । १६ जो मनुष्य समझ के मार्ग से भटकता है सो मृतकों की मंडली में पड़ा रहेगा । १७ जो लीला से प्रीति रखता है सो कंगाल मनुष्य होगा जो मदिरा और चिकनाई से मन लगाता है सो धनी न होगा । १८ धर्म्मी की सन्ती दुष्ट और खरों की सन्ती अपराधी पलटा दिये जायेंगे । १९ अरण्य में रहना झगड़ालू और क्रोधी स्त्री के साथ रहने से और भी भला है । २० अच्छे भंडार और तेल बुद्धिमानों के निवास में हैं परन्तु मूर्ख मनुष्य उसे उड़ा डालेगा । २१ जो धर्म्म और दया का पीछा करता है सो जीवन और धर्म्म और प्रतिष्ठा पाता है । २२ बुद्धिमान मनुष्य बलवानों के नगर पर चढ़ जाता है और उस बल को जिस पर उन का भरोसा है ढा देता है । २३ जो अपने मुंह और अपनी जीभ को बश में

रखता है सो अपने प्राण को दुःखों से
२४ बचाता है। अहंकारी और अभिमानी
निन्दक उस का नाम है जो अहंकार
२५ और क्रोध से कार्य्य करता है। आलसी
की इच्छा उसे बधन करती है क्योंकि
उस के हाथ परिश्रम से नाह करते हैं।
२६ वह दिन भर अत्यन्त लालच करता है
परन्तु धर्म्मी दान करता है और नहीं
२७ रख छोड़ता। दुष्टों का बलिदान घिनित
है तो कितना अधिक जब कि वह दुष्टता
२८ से लाता है। झूठा साक्षी नाश होवेगा
परन्तु जो जन सुनता है वह बोलने के
२९ लिये नित्य लैस रहता है। दुष्ट मनुष्य
अपने मुंह को कठोर करता है परन्तु
खरा वही अपने मार्गों को सोचता है।
३० कोई बुद्धि और कोई समुझ और कोई
परामर्श परमेश्वर के आगे न लहेगा।
३१ संग्राम के दिन के लिये घोड़ा सिद्ध है
परन्तु जय परमेश्वर से है॥

बाईसवां पर्ब्ब।

१ शुभ नाम बड़े धन से अधिक चुने
जाने के योग्य है और कृपा सोने रूपे से
२ अधिक अच्छी है। धनवान और कंगाल
एकट्ठे मिलते हैं परमेश्वर उन सभों का
३ कर्त्ता है। बुराई को आगे से देखके
चतुर आप को छिपाता है परन्तु भोले
लोग उस में बढ़े जाते हैं और दण्ड
४ पाते हैं। दीनताई और परमेश्वर के
भय का फल धन और प्रतिष्ठा और जीवन
५ है। हठीले के मार्ग में कांटे और जाल
हैं जो अपने प्राण की रक्षा करता है सो
६ उन से दूर रहेगा। जिस मार्ग में बालक
को चला चाहिये उस में उसे चला और
जब बूढ़ा हुआ वह उस्से न फिरेगा।
७ कंगाल पर धनवान प्रभुता करता है
और उधारनिक धनिक का सेवक है।
८ जो बुराई बोता है सो वृथा लवेगा
और उस के दण्ड की छड़ी नष्ट हो
जावेगी। जिस की आंखें भली हैं सो ९
आशीष पावेगा क्योंकि वह अपनी रोटी
में से कंगालों को देता है। निन्दक को १०
निकाल दे तो झगड़ा मिट जायेगा हां
झगड़ा और कलंक जाते रहेंगे। जो मन ११
की पवित्रताई से प्रेम रखता है उस के
होंठों में अनुग्रह रहता है राजा उस
का मित्र होगा। परमेश्वर की आंखें १२
ज्ञान की रक्षा करती हैं और वह अप-
राधी के व्यवहारों को उलट देता है।
आलसी कहता है कि बाहर सिंह है मैं १३
गलियों में फाड़ा जाऊंगा। पराई स्त्रियों १४
का मुंह एक गहिरा गड़हा है उस में
वह गिरता है जिस्से परमेश्वर घिन
करता है। मूढ़ता बालक के मन में १५
बंधी हुई है परन्तु ताड़ना की छड़ी
उसे उस में से दूर करेगी। जो कंगाल पर १६
अन्धेर करता है कि अपना धन बढ़ावे
और जो धनी को देता है वह निश्चय
दरिद्र होगा॥

अपना कान झुका और बुद्धिमानों के १७
वचन सुन और मेरे ज्ञान पर अपना
मन लगा। क्योंकि यह अच्छी बात है १८
कि तू उन्हें अपने हृदय में धारण करे
और वे तेरे होंठों में सजेंगे। जिसतें १९
तेरा भरोसा परमेश्वर पर होवे मैं ने
आज के दिन तुझे हां तुझी को जताया
है। क्या मैं ने तुझे अच्छे अच्छे परामर्श २०
और ज्ञान नहीं लिखे। जिसतें मैं सच्ची २१
बातों को निश्चय तुझे जनाऊं कि तू
उन के उत्तर में जिन्हों ने तुझे भेजा
है सच्ची बातों का उत्तर दे सके॥

कंगाल को मत लूट इस कारण से २२
कि वह कंगाल है और फाटक में दुःखी
को मत सता। क्योंकि परमेश्वर उन २३
के पद का बिवाद करेगा और उन के
प्राणों को लूटेगा जिन्हों ने उन को लूटा
है। क्रोधी मनुष्य से मित्रता मत कर २४

और अति क्रोधित के साथ मत जा । २५ न हो कि तू उस की चालें सीखे और अपने प्राण को फंदे में फंसावे ॥

२६ तू उन में मत हो जो हाथ मारते हैं अथवा उन में जो ऋण के कारण २७ बिचवई होते हैं । यदि तुझ पास कुछ भर देने को न हो तो किस लिये तेरे २८ नीचे का बिछौना खींच ले जावे । पुराने सिवाने को जो तेरे पितरों ने बांधे हैं मत तोड़ ॥

२९ जिसे तू अपने काम में चतुर देखता है वह राजाओं के आगे खड़ा होगा वह तुच्छ जनों के आगे खड़ा न होगा ॥

तेईसवां पर्ब्ब ।

१ जब तू आज्ञाकारी के साथ भोजन पर बैठे तो चौकसी से सोच कि तेरे २ आगे क्या है । यदि तू पेटू है तो अपने ३ गले पर छूरी लगा । उस के स्वादित भोजन का लालच मत कर क्योंकि वह छल का भोजन है ॥

४ धनी होने के लिये परिश्रम मत कर ५ अपनी ही बुद्धि से थम जा । क्या तू अपनी आंखें उस पर दौड़ावेगा जो कुछ नहीं है क्योंकि धन निश्चय अपने लिये पंख बनाता है और गिद्ध की नाईं आकाश की ओर उड़ जाता है ।

६ कुदृष्टि की रोटी मत खा और उस के स्वादित भोजनों की लालसा मत कर । ७ क्योंकि जैसा वह अपने मन में चिन्ता करता है वह वैसा ही है वह तुझे कहता है खा और पी परन्तु उस का मन तेरे ८ संग नहीं है । ग्रास जो तू ने खाया है उसे उगल देगा और अपनी मीठी बातें गंवावेगा ॥

९ मूढ़ के कानों में अपनी बातें मत कह क्योंकि वह तेरी बुद्धि के बचन की निन्दा करेगा ॥

१० पुराने सिवाने को मत टाल और अनाथों के खेत में मत पैठ । ११ क्योंकि उन का मुक्तिदाता सामर्थी है वही तुझ से उन के पद का बिवाद करेगा ॥

१२ उपदेश से अपना मन लगा और ज्ञान की बातों पर कान धर ॥

१३ बालक से ताड़ना अलग मत रख क्योंकि यदि तू उसे छड़ी मारेगा तो वह मर न जायगा । १४ तू उसे छड़ी से मार और उस के प्राण को समाधि से बचा ॥

१५ हे मेरे बेटे यदि तेरा मन बुद्धिमान हो तो मैं ही हां मेरा मन ही आनन्दित होगा । १६ और जब तेरे होंठों से सच्ची बातें निकलेंगी तब मेरा हृदय आनन्दित होगा ॥

१७ तेरा मन पापियों से डाह करने न पावे परन्तु तू सारे दिन परमेश्वर से डरता रह । १८ क्योंकि निश्चय आगे एक प्रतिफल है और तेरी आस घट न जायेगी ॥

१९ हे मेरे बेटे तू सुन और बुद्धिमान हो और मार्ग में अपने मन को चला । २० तू मद्यपों में और उन में जो अपने मांस गंवाते हैं मत जा । २१ क्योंकि मद्यप और पेटू कंगाल हो जायेंगे और नींद चिथड़े पहिनावेगी ॥

२२ अपने पिता की बात जो तेरा जनक है सुन और जब तेरी माता बृद्ध होवे तब उस की निन्दा मत कर । २३ सच्चाई को मोल ले और मत बेच बुद्धि और उपदेश और समझ भी । २४ धर्म्मी का पिता अत्यन्त आनन्दित होगा और जो बुद्धिमान पुत्र उत्पन्न करता है सो उस्से आनन्द पावेगा । २५ तेरे माता पिता आनन्द होंगे और जो तुझे जनी सो आनन्दित होगी ॥

२६ हे मेरे बेटे अपना मन मुझे दे और तेरी आंखें मेरे मार्गों से प्रसन्न होवें ।

२७ क्योंकि वेश्या एक गहिरी खाईं है और
२८ उपरी स्त्री सकेत कूआं है । वह बटमार
की नाईं घात में लगी है और मनुष्यों
में अपराधों को बढ़ाती है ॥

२९ किस पर संताप है किस पर शोक
है कौन झगड़े में पड़ता है किस को
लुतड़ापन है और किस को घाव
अकारण हैं और किस की आंखें लाल
३० हैं । वे जो मदिरा के पास अबेर लों
ठहरते हैं वे जो मिली हुई मदिरा की
३१ खोज में रहते हैं । जब मदिरा लाल
होवे और उस का रंग कटोरे में देख
पड़े और जब वह अच्छी भांति से
३२ फिलती है तब उसे मत ताक । अन्त
को वह नाग के समान काटेगी और
३३ सर्प्प के नाईं डंसेगी । तेरी आंखें पराई
स्त्रियों को देखेंगी और तेरा मन अनुचित
३४ बातें निकालेगा । और तू उस के समान
हो जायेगा जो समुद्र के मध्य में पड़ा
रहता है अथवा उस की नाईं जो
३५ गुनरखा की चोटी पर लेटता है । तू
कहेगा कि उन्हों ने तो मुझे मारा है
पर मैं तो पीड़ित न हुआ उन्हों ने
मुझे पीटा मैं नहीं जानता कि कब
उठूंगा मैं फिर उसे खोजूंगा ॥

चौबीसवां पर्व्व ।

१ बुरे मनुष्यों से डाह मत कर और
उन की संगत की चाह मत रख ।
२ क्योंकि उन के मन बिनाश का सोच
करते हैं और उन के होंठ बुराई बोलते
३ हैं । बुद्धि से घर बनाया जाता है और
समुझ से वह दृढ़ किया जाता है ।
४ और ज्ञान से कोठरियां बहुमूल्य और
सुन्दर धन से भर जायेंगी ॥

५ बुद्धिमान मनुष्य बली है हां ज्ञानी
६ मनुष्य बल बढ़ाता है । क्योंकि बुद्धि
के मंत्र से तू अपना युद्ध करेगा और
मंत्रियों की बहुताई से बचाव है ॥

७ बुद्धि मूर्खों के लिये अति ऊंची है
वह फाटक पर अपना मुंह न खोलेगा ॥

८ जो बुराई की चिन्ता करता है सो
बिगाड़ू जन कहलायेगा ॥

९ मूर्खता की चिन्ता पाप है और ठट्ठेलू
से मनुष्यों को घिन है ॥

१० यदि तू बिपत्ति के दिन मूर्छित हो
जावे तो तेरा बल थोड़ा है ॥

११ यदि तू उन्हें जो मृत्यु के लिये खैंचे
गये हां और उन्हें जो मारे जाने पर लैस
१२ हैं अपना हाथ खींचे । यदि तू कहे
कि देखो हम जानते न थे तो क्या वह
जो अन्तःकरण को जांचता है यह नहीं
सोचता और जो तेरे प्राण का रक्षक है
सो क्या नहीं जानता और क्या मनुष्य
को उस के कार्य्य के समान पलटा न
देगा ॥

१३ हे मेरे बेटे तू मधु खा क्योंकि वह
अच्छा है और मधु का छत्ता जो तेरे तालू
१४ में मीठा है । सो बुद्धि का ज्ञान तेरे
प्राण को होगा जब तू उसे पावे तब
उस का प्रतिफल होगा और तेरी आशा
बृथा न होगी ॥

१५ हे दुष्ट धर्म्मी के निवास की घात
में मत लग उस के चैन के स्थान को
१६ मत लूट । क्योंकि धर्म्मी सात बार
गिरता है और फिर उठता है परन्तु दुष्ट
१७ बुराई में गिर जायेंगे । जब तेरा बैरी
गिर पड़े तब आनन्दित मत हो और
जब वह ठोकर खाय तो तेरा मन मगन
१८ न हो । जिसतें न हो कि परमेश्वर देखे
और उस की दृष्टि में बुरा लगे और अपना
१९ क्रोध उस पर से उठा लेवे । दुष्टों के
कारण से तू अपने तईं मत कुढ़ा और
२० दुष्टों से डाह मत कर । क्योंकि बुरे का
अंत सुफल न होगा और दुष्टों का दीपक
बुझ जायेगा ॥

२१ हे मेरे बेटे तू परमेश्वर से और राजा

के डर और दंगइतों के संग मत रह।
२२ क्योंकि उन की बिपत्ति अचानक आ पड़ेगी और उन दोनों के बिनाश को कौन जानता है॥
२३ ये भी बुद्धिमानों की बातें हैं न्याय
२४ में पक्ष करना भला नहीं। जो दुष्ट से कहता है कि तू धर्म्मी है लोग उसे साप देंगे और जातिगण उस्से घिन
२५ करेंगे। परन्तु जो उसे दपटते हैं वे आनन्दित होंगे और उन पर अच्छी आशीष होगी॥
२६ जो ठीक उत्तर देता है उस के होंठ चूमे जायेंगे॥
२७ बाहर में अपना कार्य्य सिद्ध कर और अपने लिये खेत में उसे ठीक कर और उस के पीछे अपना घर बना॥
२८ अपने परोसी पर अकारण साक्षी मत हो और अपने होंठों से मत छल।
२९ मत कह कि मैं उस्से ऐसा करूंगा जैसा उस ने मुझ से किया मैं मनुष्य को उस के काम के समान पलटा देऊंगा॥
३० मैं आलसी के खेत के पास से और असमुझ के दाख की बाटिका के पास
३१ से गया। और देखो वह कांटों से समस्त छा रहा था और भटकटैया उसे छांपे हुए थीं और उस की पत्थर की भीत
३२ टूटी हुई थी। तब मैं ने देखा और मन से बूझा मैं ने उस पर दृष्टि किई
३३ और उपदेश पाया। थोड़ा सोना और थोड़ा ऊंघना और सोने के लिये हाथ को
३४ समेटना। सो तेरी दरिद्रता पथिक की नाईं और तेरी दीनता ढलैत मनुष्य के समान आवेगी॥

पच्चीसवां पर्ब्ब

१ ये भी सुलेमान के दृष्टान्त हैं जिन्हें यहूदाह के राजा हिजकियाह के लोगों ने उतारा॥
२ बात को छिपाना ईश्वर का बिभव है परन्तु राजा की प्रतिष्ठा बात को
३ खोज लेने में है। जैसे स्वर्ग की ऊंचाई और पृथिवी की नीचाई वैसे राजाओं
४ के मन का भेद नहीं मिलता। रूपे का मैल छांट डाल तो सुनार के लिये एक
५ पात्र निकल आवेगा। दुष्ट को राजा के पास से दूर कर तब उस का सिंहासन
६ धर्म्म से दृढ़ होगा। राजा के आगे अपना बिभव मत दिखा और महानों
७ के स्थान पर खड़ा मत हो। क्योंकि भला है कि तुझ से कहा जाय कि ऊपर आ उस्से कि तू कुंअर के आगे जिसे तेरी आंखों ने देखा है घटाया
८ जाय। झगड़ने को शीघ्र मत निकल न हो कि तू उस के अन्त को न जाने कि तू क्या करे जब तेरा परोसी तुझे
९ लज्जित करे। तू अपने परोसी से अपने पद का बिवाद कर ले और दूसरे
१० के गुप्त को प्रगट न कर। न हो कि सुनवैया तुझे लज्जित करे और तेरा
११ अपयश किसी रीति से न मिटे। समय पर कहा हुआ बचन सोने के आलों के समान है जो चांदी के चित्र पर खुदे
१२ हों। जैसे सोने की बाली और चोखे सोने का गहना वैसे ही बुद्धिमान घुड़कवैया आधीन कान के लिये है।
१३ जैसे पाले का शीत लवनी में वैसे ही बिश्वस्त दूत अपने भेजवैयों के लिये है क्योंकि वह अपने स्वामियों के मन
१४ को शान्ति करता है। जो कोई झुठाई के दान पर अपनी बड़ाई करता है वह उन मेघों और पवनों के समान है
१५ जिन के साथ बर्षा न हो। बड़े धीरज से कुंअर मान लेता है और कोमल जीभ
१६ हड्डी को तोड़ती है। क्या तू ने मधु पाया तू इतना खा जितना तेरे लिये बस है न होवे कि तू अधिक खा जाय
१७ और उछाल डाले। अपने परोसी के

घर से अपने पांवों को रोक न हो कि
वह तुझ से अघा जाय और तुझ से बैर
१८ रक्खे । जो मनुष्य अपने परोसी पर
झूठी साक्षी देता है सो हथौड़ा और
१९ एक खड्ग और चोखा बाण है । दुःख
में अविश्वस्त मनुष्य का भरोसा रखना
टूटे दांत और लंगड़े पांवों के समान
२० है । जैसा जाड़े में वस्त्र उतार लेना
और जवखार पर सिरका वैसा है जैसा
२१ राग गाना शोकार्त्त मन के आगे । यदि
तेरा बैरी भूखा होवे तो उसे रोटी
खाने को दे और यदि वह प्यासा होवे
२२ तो उसे पानी पीने को दे । क्योंकि तू
उस के सिर पर आग के अंगारों का
ढेर करेगा और परमेश्वर तुझे प्रतिफल
२३ देगा । जिस रीति से उतरहिया पवन
मेंह को उड़ा ले आती है वैसा ही
२४ क्रोधित रूप चवाई जीभ को । घर
की छत के एक कोने में रहना और भी
भला है कि झगड़ालू स्त्री के साथ
२५ चौड़े घर में । जैसे प्यासे के लिये ठंडा
पानी वैसा ही वह मंगलसमाचार है
२६ जो दूर देश से आवे । धर्म्मी मनुष्य
का दुष्ट के आगे झुकना ऐसा है जैसे
गंदला सोता अथवा बिगड़ी धारा ।
२७ जैसा बहुत मधु खाना अच्छा नहीं है
वैसा अपना विभव ढूंढ़ना ठीक नहीं
२८ है । जो अपने प्राण को वश में नहीं
रखता सो एक नगर के समान है जो
गिरा हुआ बिन भीत का हो ॥

छब्बीसवां पर्ब्ब

१ जैसा तपन में पाला और लवनी में
मेंह वैसा मूर्ख को प्रतिष्ठा नहीं सजती ।
२ जैसे चिड़ियों का भ्रमना और सुपाबेना
का उड़ते फिरना वैसा अकारण स्राप न
३ आवेगा । घोड़े के लिये कोड़ा और
गदहे के लिये लट्टी और मूर्ख की पीठ
४ के लिये छड़ी । मूर्ख को उस की मूर्खता
के समान उत्तर मत दे न हो कि तू
५ भी उस के समान हो जाय । मूर्ख को
उस की मूर्खता के समान उत्तर दे न
हो कि वह अपनी दृष्टि में बुद्धिमान
६ होवे । जो मूर्ख के हाथ से संदेश
भेजता है सो पांव काटता है और
७ अंधेर पीता है । जैसा लंगड़े की टांगें
लटकती हैं वैसा मूर्खों के मुंह में
८ दृष्टान्त है । जैसे मणि की थैली पत्थरों
के ढेर में वैसा ही वह जो मूर्ख को
९ प्रतिष्ठा देता है । जैसा कांटा मद्यप
के हाथ में गड़ जाता है वैसा मूर्खों के
१० मुंह में दृष्टान्त है । अति महान जो
सब का सृष्टिकर्त्ता है वह मूर्खों और
अपराधियों दोनों को प्रतिफल देता है ।
११ जैसा कुत्ता अपने छांट को फिर खाता
है वैसा मूर्ख अपनी मूर्खता फिर फिर
१२ प्रगट करता है । क्या तू मनुष्य को
जो अपनी दृष्टि में बुद्धिमान हो देखता
है तो उस के विषय में मूर्ख से अधिक
१३ आशा है । आलसी कहता है कि मार्ग
१४ में सिंह है सिंह गलियों में है । जैसा
द्वार अपनी चूलों पर फिरता है वैसा
१५ आलसी अपने बिछौने पर । आलसी
अपना हाथ पात्र में छिपाता है और
उसे मुंह में फेर लाना बड़ा दुःख है ।
१६ आलसी अपनी समझ में सात मनुष्यों
से जो बिचार ला सक्ते हैं आप को
अधिक बुद्धिमान जानता है ॥

१७ जो चल निकलने में औरों के झगड़े
से छेड़ता है सो ऐसा है जैसा कोई
१८ कुत्ते का कान धर लेता है । जैसा
बौड़हा जो लवर को और बाण और
१९ मृत्यु को फेंकता है । वैसा ही वह
मनुष्य है जो अपने परोसी को छल
देकर कहता है कि मैं ने तो ठट्ठा
२० किया । ईंधन बिना आग बुझ जाती
है वैसे जहां लुतड़ा नहीं तहां झगड़ा

२१ मिट जाता है। जैसा अंगारों पर
कोइले और आग पर ईंधन वैसा झग-
२२ ड़ालू मनुष्य झगड़ा उठाने में। फुस-
फुसाऊ की बातें मीठे ग्रासों की नाईं हैं
और वे अन्तःकरण के भीतर जाती हैं॥
२३ जलते होंठ और दुष्ट मन चांदी के
मैल से ढंपे हुए ठीकरे के समान हैं।
२४ जो बैर रखता है सो होंठों से कपट
करता है कि मानो नहीं जानता पर
२५ मन में छल रख छोड़ता है। जब वह
अनुग्रह की बातें करता है तब उस
की प्रतीति न कर क्योंकि उस के मन
२६ में सात घिन हैं। जिस की डाह गुप्त
में छिपी है उस की दुष्टता मंडली के
२७ आगे दिखाई जायेगी। जो गड़हा
खोदता है सो उस में गिरेगा और जो
पत्थर ढलकाता है वह पलटके उसी
२८ पर पड़ेगा। झूठी जीभ उन से डाह
रखती है जो उसे ताड़ना करते हैं और
लुतड़े का मुंह बिनाश करता है॥

सत्ताईसवां पर्व्व।

१ घमंड मत कर कि कल यों करूंगा
क्योंकि तू नहीं जानता कि दिन भर में
२ क्या होगा। दूसरा तेरी बड़ाई करे और
न तेरा ही मुंह ऊपरी और न तेरे ही
३ होंठ। पत्थर भारी है और बालू गरू
परन्तु मूढ़ का कोप दोनों से भारी है।
४ क्रोध क्रूर है और रिस एक बाढ़ियाल परन्तु
कौन है जो डाह के आगे ठहर सक्ता
५ है। प्रगट झिड़की गुप्त प्रेम से उत्तम
६ है। स्नेही के घाव बिश्वस्त हैं परन्तु
७ बैरी के चूमे छली हैं। अघाया मन मधु
को लताड़ता है परन्तु भूखे प्राणी के
लिये हर एक कड़वी बस्तु मीठी है।
८ जो मनुष्य अपने स्थान से भ्रमता है वह
चिड़िया के समान है जो अपने खोंते
९ से भ्रमती है। सुगंध तेल और धूप मन
को आनन्दित करते हैं वैसा मनुष्य के
लिये उस के मित्र के प्राण के मंत्र मीठे
हैं। अपने मित्र और अपने पिता के १०
मित्र को त्याग मत कर और अपनी
बिपत्ति के दिन अपने भाई के घर मत
जा क्योंकि समीप का परोसी दूर के
भाई से अच्छा है। हे मेरे बेटे बुद्धिमान ११
हो और मेरे मन को आनन्दित कर जिसतें
मैं उसे जो मुझे उलाहना देता है उत्तर
दे सकूं। चतुर आगे से बुराई को १२
देखता है और आप को छिपाता है
परन्तु भोले बढ़ जाके दण्ड पाते हैं।
जो परदेशी का बिचवई हो तू उस के १३
कपड़े ले ले और उस्से जो उपरी स्त्री
का हो बंधक रख ले। जो बिहान को १४
उठके अपने मित्र को बड़े शब्द से आ-
शीस देता है सो उस के लिये एक स्राप
गिना जायेगा। झड़ी के दिन का १५
सदा टपकना और झगड़ालू स्त्री दोनों
एक हैं। जो उसे छिपाता है सो पवन १६
को छिपाता है और अपने दाहिने हाथ
की सुगंध जो आप को प्रगट करती
है। जैसा लोहा लोहे को चोखा करता १७
है वैसा मनुष्य अपने मित्र के रूप को
चोखा करता है। जो गूलर के बृक्ष १८
की रक्षा करता है सो उस का फल
खायगा और जो अपने स्वामी की रक्षा
करता है सो प्रतिष्ठा पावेगा। जैसा पानी १९
में मुंह मुंह के समान दिखाई देता है
वैसा मनुष्य का मन मनुष्य के समान।
पाताल और नाश नहीं भरते वैसा ही २०
मनुष्य की आंखें तृप्त नहीं होतीं। जिस २१
रीति से चांदी के लिये घड़िया और सोने
के लिये भट्ठी है उसी रीति से मनुष्य की
बड़ाई मनुष्य के लिये। यद्यपि तू मूढ़ २२
को गेहूं के साथ ओखली में डालके
मूसल से कूटे तथापि उस की मूढ़ता
उस्से दूर न होगी। अपने झुंडों की २३
दशा को जान्ने में यत्न कर और अपने

२४ ढोरों पर मन लगा। क्योंकि संपत्ति
सदा नहीं रहती और क्या मुकुट पीढ़ी
२५ से पीढ़ी लों। तृण हटाया जाता है
और कोमल घास दिखाई देती है और
पहाड़ों के सागपात बटोरे जाते हैं।
२६ मेम्ने तेरे पहिरावा के लिये हैं और बकरे
२७ तेरे खेत के मोल हैं। और बकरियों का
दूध तेरे खाने के लिये और तेरे घराने
के लिये और तेरी लौंडियों की जीविका
के लिये है॥

अट्ठाईसवां पर्ब्ब।

१ दुष्ट जब कोई उन का पीछा नहीं
करता तब भागते हैं परन्तु धर्म्मी सिंह
२ के समान साहसी हैं। देश के अपराधों
के कारण उस के बहुत से कुंअर होते
हैं परन्तु समुझवैया और बुद्धिमान से
३ वह स्थिर हो जायेगा। जो मनुष्य
कंगाल है और कंगालों पर अन्धेर करता
है सो बौछार की नाईं है जो अन्न को
४ नाश करता है। जो व्यवस्था को त्याग
करते हैं सो दुष्ट की स्तुति करते हैं
परन्तु व्यवस्था के पालक उन से विरुद्ध
५ करते हैं। बुरे मनुष्य न्याय को नहीं
समुझते पर जो परमेश्वर के खोजी हैं
६ सो सब कुछ समुझते हैं। कंगाल जो
अपनी खराई पर चलता है उस्से भला
है जो अपने मार्गों से भटका हुआ और
७ वह धनी है। जो व्यवस्था को पालन
करता है सो बुद्धिमान पुत्र है परन्तु
जो खाऊ को खिलाता है सो अपने
८ पिता को लज्जित करता है। जो
व्याज और अधर्म्म से अपनी संपत्ति को
बढ़ाता है सो उस के लिये जो कंगालों
९ पर दया करेगा बटोरता है। जो
व्यवस्था के सुन्ने से अपने कान को फेर
देता है उस की प्रार्थना भी घिनित
१० है। जो धर्म्मियों को भटकाके उन्हें
बुरे मार्ग पर चलाता है सो अपने गड़हे
में आप ही गिरेगा परन्तु खरे अच्छी
बस्तुन के अधिकारी होंगे। धनी मनुष्य ११
अपनी दृष्टि में बुद्धिमान है परन्तु
कंगाल जो बुद्धिमान है उसे पहिचान
लेता है। जब धर्म्मी आनन्द करते हैं १२
तब बड़ा बिभव है परन्तु जब दुष्ट
उभड़ते हैं तब मनुष्य ढूंढ़ा जाता है।
जो अपने पापों को ढांपता है सो १३
भाग्यमान न होगा परन्तु जो उन्हें मान
लेता है और उन्हें छोड़ता है सो दया
पावेगा। क्या ही धन्य वह मनुष्य जो १४
सदा डरा करता है परन्तु जो अपने
मन को कठोर करता है सो बुराई में
गिरेगा। जैसा गर्ज्जता हुआ सिंह और १५
भ्रमता हुआ रीछ वैसा ही दुष्ट आज्ञा-
कारी कंगाल पर है। असमुझ प्रधान १६
भी महा अंधेरी है परन्तु जो लोभ से
बैर रखता है सो अपनी बय बढ़ावेगा।
जो मनुष्य किसी मनुष्य के लोहू से १७
दबा हुआ है सो भागके गड़हे में गिरेगा
उसे कोई न थांभेगा। जो खराई से १८
चलता है सो बच जायेगा परन्तु जो
कुचाली है सो अकस्मात् गिर पड़ेगा।
जो अपना खेत जोता बोया करता है १९
सो बहुत भोजन प्राप्त करेगा परन्तु जो
वृथा लोगों का पीछा करता है सो
कंगालपन से पूर्ण होगा। विश्वस्त २०
मनुष्य आशीसों से उभड़ेगा परन्तु जो
धनी होने के लिये उतावली करता है
निर्दंड न जायेगा। मनुष्यों का पक्ष २१
करना अच्छा नहीं क्योंकि ऐसा मनुष्य
रोटी के टुकड़े के लिये पाप करेगा।
जो बुरी आंख रखता है सो धनी होने २२
की उतावली करता है और नहीं सोचता
कि दरिद्रता उस पर आ पड़ेगी। जो २३
मनुष्य को दपटता है सो आगे को
उस्से जो अपनी जीभ से फुसलाता है
अधिक अनुग्रह पावेगा। जो अपनी २४

माता अथवा पिता को लूटता है और कहता है कि यह अपराध नहीं सो २५ बिनाशक का संगी है। जिस के मन में घमंड है सो झगड़ा उभाड़ता है परन्तु जिस का भरोसा परमेश्वर पर है २६ सो पुष्ट किया जायेगा। जो अपने मन पर भरोसा रखता है सो मूर्ख है परन्तु जो बुद्धि से चलता है सोई छुड़ाया २७ जायेगा। जो कंगाल को देता है उस की घटी न होगी परन्तु जो अपनी आंखें छिपाता है बहुत साप पावेगा। २८ जब दुष्ट उभड़ते हैं तब मनुष्य आप को छिपाते हैं परन्तु जब वे नष्ट होते हैं तब धर्म्मी बढ़ते हैं ॥

उनतीसवां पर्व्व ।

१ दपटा हुआ मनुष्य जो अपने गले को कठोर करता है सो बिना औषध २ अकस्मात् मारा जायगा। जब धर्म्मी बढ़ते हैं तब लोग आनन्दित होते हैं परन्तु जब दुष्ट प्रभुता करता है तब ३ लोग शोक करते हैं। जो मनुष्य बुद्धि से प्रेम रखता है सो अपने पिता को मगन करता है परन्तु जो बेश्यों की संगत करता है सो अपनी संपत्ति उड़ाता ४ है। राजा न्याय से अपने देश को स्थिर करता है परन्तु भेंटों का जन ५ उसे बिगाड़ता है। जो मनुष्य अपने परोसी से मिथ्या प्रशंसा करता है सो उस के डगों के लिये जाल बिछाता है। ६ दुष्ट मनुष्य के अपराध में एक जाल है परन्तु धर्म्मी गाता है और मगन होता ७ है। धर्म्मी मनुष्य कंगालों के पद को बूझता है परन्तु दुष्ट जान्ने की चिन्ता ८ नहीं करता। निन्दक नगर में आग लगाते हैं परन्तु बुद्धिमान क्रोध को ९ फेर देते हैं। यदि बुद्धिमान मूर्ख से बिवाद करे चाहे कोप से चाहे हंसी १० से तो वहां चैन नहीं। घातक खरे से बैर रखते हैं परन्तु सज्जन उस का प्राण बचाता है। ११ मूर्ख अपना सारा मन उच्चारता है परन्तु बुद्धिमान आगे के लिये रोकता है। १२ यदि आज्ञाकारक झूठी बात को सुना करे तो उस के समस्त सेवक दुष्ट हो जाते हैं। १३ कंगाल और ब्याजग्राहक एकट्ठे होते हैं परमेश्वर उन दोनों की आंखें उंजियाली करता है। १४ जो राजा धर्म्म से कंगालों का न्याय करता है उस का सिंहासन सदा स्थिर रहेगा। १५ छड़ी और दपट बुद्धि देती हैं परन्तु छोड़ा हुआ बालक अपनी माता को लज्जित करता है। १६ जब दुष्ट बढ़ जाते हैं तब अपराध बढ़ता है परन्तु धर्म्मी उन का गिरना देखेंगे। १७ अपने बेटे को ताड़ना कर और वह तुझे चैन देगा हां वह तेरे आत्मा को आनन्दित करेगा। १८ जहां दर्शन नहीं तहां लोग बिना बिचार हो जाते हैं परन्तु जो व्यवस्था को पालन करता है सो धन्य है। १९ सेवक बचन से ताड़ना न पावेगा क्योंकि यद्यपि वह समझे तथापि वह न मानेगा। २० तू देखता है कि मनुष्य अपनी बातों से शीघ्रता करता है तो मूर्ख से उस्से अधिक आशा है। २१ जो लड़काई से अपने सेवक को सुकुआरी से पालता है अन्त को वह उस का बेटा हुआ चाहेगा। २२ क्रोधी मनुष्य झगड़ा उभाड़ता है और कोपित मनुष्य अपराध में घाट नहीं। २३ मनुष्य का अहंकार उसे नीचा करेगा परन्तु प्रतिष्ठा दीनात्मा को संभालेगी। २४ जो चोर का साझी है सो अपने ही प्राण का बैरी है वह साप सुनता है और उसे प्रगट नहीं करता। २५ मनुष्य का डर जाल लाता है परन्तु जो परमेश्वर पर भरोसा रखता है सो रक्षित होगा। २६ बहुत हैं जो आज्ञाकारक

का बप ढूंढ़ते हैं परन्तु मनुष्य का न्याय
२७ परमेश्वर से है। अधर्म्मी मनुष्य धर्म्मियों के लिये घिन है और खरा दुष्ट के लिये घिन॥

तीसवां पर्ब्ब।

१ याकीह के बेटे आगुर के बचन अर्थात् भविष्यवाणी जो उस ने एतियाल हां एतियाल और उकाल से कही॥
२ निश्चय मैं मनुष्य से अधिक पशुवत हूं और मनुष्य की सी बुद्धि मुझ में
३ नहीं। और मैं ने न बुद्धि सीखी न
४ धर्म्मियों की पहिचान प्राप्त किई। कौन स्वर्ग पर चढ़ गया और उतरा किस ने पवन को अपनी मुट्ठी में एकट्ठा किया किस ने पानियों को बस्त्र में बांधा किस ने पृथिवी के सारे सिवानों को दृढ़ किया यदि तू कह सके उस का नाम क्या और उस के बेटे का नाम
५ क्या। ईश्वर का हर एक बचन शुद्ध किया गया है जिन का भरोसा उस पर
६ है वह उन के लिये ढाल है। तू उस के बचन में कुछ मत मिला न हो कि वह तुझे दपटे और तू झूठा ठहरे॥
७ मैं ने तुझ से दो बातें चाही हैं सो जीते जी मुझ से अलग मत रख।
८ वृथा और झूठ को मुझ से अलग कर और मुझे न कंगालपन न धन दे मेरे
९ योग्य मुझे भोजन दे। न होवे कि मैं तृप्त हो जाऊं और मुकरके कहूं कि परमेश्वर कौन अथवा कंगाल होके चोरी करूं और अपने ईश्वर का नाम अकारथ लेऊं॥
१० सेवक को उस के स्वामी के आगे कलंक मत लगा न हो कि वह तुझे
११ स्राप दे और तू दोषी ठहरे। एक पीढ़ी ऐसी है जो अपने पिता को स्राप देती है और अपनी माता को धन्य नहीं
१२ कहती। एक पीढ़ी अपनी ही दृष्टि में पवित्र है परन्तु अपनी मलीनता से धोई
१३ नहीं गई। एक पीढ़ी है हाय उस की आंखें उभड़ी हुई हैं और उस की पलकें
१४ उठी हुई हैं। एक पीढ़ी ऐसी है जिस के दांत खड्ग हैं और उस की डाढ़ें छुरियां जिसतें कंगालों को पृथिवी पर से और दरिद्रों को मनुष्यों में से भक्षण
१५ करे। जोंकिया जोंक की दो बेटियां हैं जो दे दे पुकारती हैं तीन हैं जो कभी तृप्त नहीं होतीं चार नहीं कहतीं कि
१६ बस। समाधि और बांझ और पृथिवी जो जल से पूर्ण नहीं और आग नहीं कहती है कि बस॥
१७ वह आंख जो अपने पिता को चिढ़ाती है और अपनी माता की आज्ञा तुच्छ जानती है तराई के कौवे उसे निकाल लेंगे और गिद्ध के चिंगने उसे खा लेंगे।
१८ मेरे लिये तीन अति अचंभित हैं हां
१९ चार जो मैं नहीं समझता। गिद्ध का मार्ग आकाश में और सांप की चाल चटान पर और समुद्र के मध्य में जहाज की चाल और मनुष्य की चाल कन्या
२० के साथ। व्यभिचारिणी का मार्ग ऐसा है कि वह खाती है और अपना मुंह पोंछती है और कहती है मैं ने कुछ दुष्टता नहीं किई॥
२१ तीन बस्तुन से पृथिवी दुःखित है हां चार का भार उठा नहीं सक्ती।
२२ सेवक जब वह राजा हो जाय और मूढ़
२३ जब वह भोजन से तृप्त हो। निर्लज्ज से जब वह ब्याही जावे और दासी से जो अपनी स्वामिनी की अधिकारिणी
२४ होवे। चार हैं जो पृथिवी पर छोटी
२५ हैं परन्तु अति बुद्धिमान हैं। चिउंटी बलवान नहीं तथापि वे अपने लिये
२६ भोजन तपन में बटोरती हैं। खरहा निर्बल है तथापि पहाड़ियों में अपनी
२७ मांद बनाता है। टिड्डियों का राजा

नहीं तथापि वे एकट्ठी होके निकलती २८ हैं। और मकड़ी जो अपने हाथों से पकड़ती है और राजाओं के भवनों में है॥

२९ तीन हैं जो सुरीति से चलती हैं हां ३० चार की चाल सुन्दर है। सिंह जो पशुन में प्रबल है और किसी के सामे ३१ से फिरता नहीं। पराक्रमी अश्व और बकरा भी और राजा जिस के साथ लोग हैं॥

३२ यदि तू ने मूढ़ता से आप को उभाड़ा अथवा यदि तू ने बुरी चिन्ता किई तो हाथ अपने मुंह पर रख। ३३ निश्चय दूध मथने से मक्खन निकलता है और नाक मरोड़ने से लोहू निकलता है वैसा कोप को छेड़ने से झगड़ा उठता है॥

एकतीसवां पर्ब्ब।

लमूएल राजा के बचन अर्थात् वह भविष्यवाणी जो उस की माता ने उसे सिखाई॥

२ हे मेरे बेटे क्या और हे मेरी कोख के बेटे क्या और हे मेरी मनौतियों के ३ बेटे क्या कहूं। अपना बल स्त्रियों को मत दे और अपनी चाल उसे जो राजाओं को नष्ट करती है॥

४ हे लमूएल राजाओं को मद्यपान करना ठीक नहीं और तीक्ष्ण पान राजपुत्रों को ५ उचित नहीं। न होवे कि वे पीवें और व्यवस्था को भूल जायें और दुःखित के समस्त पुत्र के न्याय को पलट डालें। ६ तीक्ष्ण पान उसे देओ जो नाश होने पर है और दाखरस उन्हें जिन का मन ७ उदास है। जिसतें वह उसे पीये और अपने कंगालपन को भूल जाये और अपनी बिपत्ति को फिर चेत न करे॥

८ अपना मुंह गूंगे के लिये खोल और उन के पुत्रों के पद के लिये जो नाश ९ होने पर हैं। अपना मुंह खोलके धर्म्म-न्याय कर और दीन और कंगाल के पद के लिये बिचार कर॥

१० धर्म्मी स्त्री को कौन पा सक्ता है क्योंकि उस का मोल मोतियों से अधिक है। ११ उस के पति का मन चैन से उस की प्रतीति करता है कि वह लाभ का अधीन न होगा। १२ वह अपने जीवन भर उस्से भलाई करेगी और बुराई नहीं। १३ वह ऊन और सन ढूंढ़ती है और अपने हाथों से बांछा के साथ कार्य्य करती है। १४ वह व्योपारियों के जहाजों के समान है अपना भोजन दूर से ले आती है। १५ और वह रात रहते हुए उठती है और अपने घराने को भोजन देती है और अपनी कन्याओं को भाग देती है। १६ वह एक खेत की चिन्ता करती है और उसे ले लेती है अपने हाथों के फल से दाख की बाटिका लगाती है। १७ वह अपनी कटि को बल से कसती है और अपनी भुजाओं को पोढ़ करती है। १८ उस को जान पड़ता है कि मेरा व्योपार भला है रात को उस का दीपक नहीं बुझता। १९ वह तकले पर अपने हाथ चलाती है और उस के हाथ अटेरन पकड़ते हैं। २० वह कंगाल की ओर अपना हाथ बढ़ाती है हां वह अपना हाथ अधीन की ओर फैलाती है। २१ वह अपने घराने के लिये पाला से नहीं डरती क्योंकि उस के समस्त घराने लाल वस्त्र पहिने हैं। २२ वह अपने लिये बूटा काढ़े हुए का ओढ़ना बनाती है उस का वस्त्र पीताम्बर और बैंजनी है। २३ उस का पति प्रसिद्ध है जब वह फाटकों में देश के प्राचीनों के संग बैठता है। २४ वह झीना कपड़ा बनाती है और बेचती है और कटिबंध व्योपारियों को सौंपती है। २५ बल और प्रतिष्ठा उस का पहिराव है और आने-

२६ वाले दिनों में आनन्दित होगी। वह अपना मुंह बुद्धि से खोलती है और उस २७ की जीभ में दया की व्यवस्था है। वह अपने घराने की चाल को अच्छी रीति से देखती है और आलस की रोटी नहीं २८ खाती। उस के बालक उठते हैं और उसे धन्य कहते हैं उस का पति भी उठता है और उसे सराहता है। बहुतेरी २९ बेटियों ने अच्छे कार्य्य किये हैं परन्तु तू उन सब से उत्तम है। सुशीलता छली ३० है और सुन्दरता बृथा परन्तु वह स्त्री जो परमेश्वर से डरती है सराही जायेगी। उसे उस के हाथों का फल देओ और ३१ उसी के कार्य्य फाटकों में उसे सराहें॥

उपदेशक की पुस्तक।

पहिला पर्ब्ब।

१ यरूसलम के राजा दाऊद के बेटे २ उपदेशक के बचन। उपदेशक कहता है कि व्यर्थों का व्यर्थ व्यर्थों का व्यर्थ सब व्यर्थ है॥

३ अपने सारे परिश्रम से जो सूर्य्य के नीचे मनुष्य करता है उन से क्या लाभ ४ है। एक पीढ़ी बीती जाती है और दूसरी आती है परन्तु पृथिवी सदा ५ बनी रहती है। सूर्य्य उदय भी होता है और सूर्य्य अस्त होता है और जहां से उदय हुआ तहां के लिये शीघ्रता ६ करता है। पवन दक्खिन की ओर बहती है और उत्तर को घूम जाती है वह नित्य घूमा करती है और फिर अपने चक्र के समान फिर आती है। ७ सारी नदियां समुद्र में जा मिलती हैं तथापि समुद्र भरता नहीं जहां से नदियां निकलती हैं तहां वे फिर जाती ८ हैं। सब कार्य्य परिश्रम से भरा है ऐसा कि मनुष्य कह नहीं सक्ता आंख देखने से और कान सुन्ने से तृप्त नहीं होते॥

९ जो बस्तु हुई है सोई होवेगी और जो बना है सोई बनेगा और सूर्य्य के नीचे कुछ नया नहीं। क्या कोई ऐसी १० बस्तु है जिस के बिषय में कहा जाय देख यह नई है हमारे आगे पुरातन समय से यह हुआ है। अगिली बस्तुन ११ का स्मरण नहीं है और उन का स्मरण भी जो होंगे उन के बीच न रहेगा जो उन के पीछे होंगे॥

मैं उपदेशक यरूसलम में इसराएल १२ का राजा था। और स्वर्ग के नीचे के १३ सारे कार्य्य के बिषय में बुद्धि से ढूंढ़ने और खोजने को मैं ने अपना मन लगाया यह अति कष्ट ईश्वर ने मनुष्य के पुत्रों को व्यवहार के लिये दिया है॥

सूर्य्य के नीचे जो काम होते हैं मैं १४ ने उन सभों को देखा है और देखो कि सब व्यर्थ और जी का झंझट है। जो १५ टेढ़ा है सो सीधा नहीं हो सक्ता और जो घाट है सो गिना भी नहीं जा सक्ता। मैं ने अपने जी में कहा कि १६ देख मैं ने उन सब से जो मुझ से आगे यरूसलम में हो गये हैं अधिक बड़ी बुद्धि प्राप्त किई है हां मेरे अन्तःकरण

१७ ने बुद्धि और ज्ञान बहुत देखा है। और मैं ने बुद्धि और बौड़हापन और मूढ़ता जानने को मन लगाया मैं ने जान लिया
१८ कि यह भी मन का झंझट है। क्योंकि अधिक बुद्धि में बड़ा शोक है और जो ज्ञान में बढ़ता है सो दुःख में बढ़ता है॥

दूसरा पर्ब्ब।

१ मैं ने अपने मन में कहा कि आ मैं तुझे सुख बिलास से परखूंगा इस लिये सुख भोग और देखो यह भी बृथा है।
२ मैं ने हंसी के बिषय में कहा कि तू बौड़ही है और सुख बिलास से कि क्या करता है॥

३ मैं ने अपने मन से चाहा कि अपने शरीर को मद्य से खींचूं तथापि अपने मन को बुद्धि से स्थिर रक्खा और मूढ़ता को धरने चाहा जब लों देखूं कि वह कौन सी भली बस्तु है जिस के लिये मनुष्य के पुत्र स्वर्ग के नीचे जीवन भर
४ परिश्रम करते हैं। मैं ने अपने बड़े बड़े कार्य्य किये अपने लिये घर बनाये और अपने लिये दाख की बारियां लगाईं।
५ मैं ने अपने लिये बाटिके और बारियां बनाईं और उन में हर प्रकार के फल-
६ दार पेड़ लगाये। मैं ने अपने लिये जल के कुंड बनाये जिसतें उन से उस बन को सींचूं जो पेड़ों को उपजाता
७ है। मैं ने दास और दासियां प्राप्त किईं और घर ही के दास मेरे पास थे और जो मुझ से आगे यरूसलम में थे उन सभों से अधिक छोटे बड़े चौपायों की
८ संपत्ति रखता था। मैं ने चांदी और सोना भी और राजाओं और परदेशों का बिशेष धन अपने लिये बटोरा मैं ने गानेहारे और गानेहारियां और मनुष्य के पुत्रों के आनन्द रानी और रानियां
९ अपने लिये ठहराईं। सो मैं महान हुआ और सभों से जो यरूसलम में मेरे आगे थे बढ़ गया मेरी बुद्धि भी मेरे
१० ही साथ रही। और जो कुछ मेरी आंखों ने चाहा मैं ने उन से न रोका मैं ने किसी आनन्दता को अपने मन से न रोका क्योंकि मेरे सारे परिश्रम से मेरा मन आनन्दित हुआ और मेरे सारे परिश्रम का यही फल हुआ।
११ तब मैं ने अपने हाथ के सारे कार्य्यों को और उस परिश्रम को जो परिश्रम मैं ने किया था देखा और क्या देखता हूं कि सब बृथा और जीव का झंझट और सूर्य्य के नीचे कुछ लाभ नहीं॥

१२ तब मैं ने बुद्धि और बौड़हापन और मूर्खता देखने को अपने को फेरा क्योंकि जो जन राजा के पीछे आयेगा सो जो हो चुका है उस्से अधिक क्या करेगा।
१३ तब मैं ने देखा कि जैसा उंजियाला अंधियारे से उत्तम है तैसी मूर्खता से बुद्धि उत्तम है।
१४ बुद्धिमान की आंखें उस के सिर में हैं परन्तु मूढ़ अंधियारे में चलता है और मैं ने आप ही देखा कि एक ही बात उन सभों पर बीत्ती है॥

१५ तब मैं ने अपने मन में कहा कि जैसी मूढ़ पर बीत्ती है तैसी मुझ पर भी बीत्ती है फिर मैं अधिक बुद्धिमान क्यों हुआ तब मैं ने अपने मन में कहा कि यह भी बृथा है।
१६ क्योंकि बुद्धिमान का स्मरण मूर्ख से अधिक सदा न किया जायेगा क्योंकि जो अब है सो आवैये समयों में भुलाया जायेगा और कैसा बुद्धिमान मूर्ख की नाईं मरता है।
१७ इस लिये मैं जीवन से उदास हुआ क्योंकि जो कार्य्य सूर्य्य के नीचे बना है सो मेरे लिये शोकमय है क्योंकि सब बृथा और जीव का झंझट है।
१८ और मैं अपने सारे परिश्रम से जो सूर्य्य के नीचे किया था उदास हुआ क्योंकि जो जन मेरे पीछे होगा मुझे उस के लिये छोड़ना पड़ेगा।

१९ और कौन जाने कि वह बुद्धिमान अथवा मूर्ख होवे तथापि वह मेरे सारे परिश्रम पर प्रभुता करेगा जिस पर मैं ने परिश्रम किया है और जिस में मैं ने सूर्य्य के नीचे अपने तईं बुद्धिमान दिखाया है यह भी वृथा है॥

२० इस लिये मैं ने सूर्य्य के नीचे सारे परिश्रमों से अपने मन को निरास कराया। २१ क्योंकि एक जन है जिस का परिश्रम बुद्धि में और ज्ञान में और नीति में है तथापि वह उस जन के लिये अपना भाग छोड़ जायेगा जिस ने परिश्रम नहीं किया यह भी वृथा और बड़ी बुराई है। २२ क्योंकि उस के सारे परिश्रम से और मन के सारे झंझट से जो उस ने सूर्य्य के नीचे परिश्रम किया २३ है मनुष्य के लिये क्या है। क्योंकि उस का सारा समय दुःख और उस का परिश्रम उदास हां उस का मन रात को भी चैन नहीं पाता यह भी वृथा २४ है। मनुष्य के लिये खाने पीने और मन को अपने परिश्रम में आनन्द करने से भला नहीं यह भी मैं ने देखा कि ईश्वर २५ की ओर से है। क्योंकि मुझ से अधिक कौन खा सक्ता और कौन मगन हो २६ सक्ता है। क्योंकि जो जन ईश्वर के आगे भला है उसे ईश्वर बुद्धि और ज्ञान और आनन्द देता है परन्तु पापी को बटोरने और ढेर करने को परिश्रम देता है जिसतें वह उसे देवे जो ईश्वर के आगे भला है यह भी वृथा और जीव का झंझट है॥

तीसरा पर्व्व।

१ हर एक वस्तु के लिये एक समय है और आकाश के नीचे की हर एक २ आछा के लिये एक काल है। जन्मे का एक समय है और मरने का एक समय है लगाने का एक समय है और लगाये हुए के उखाड़ने का एक समय ३ है। घात करने का एक समय है और चंगा करने का एक समय है ढाने का एक समय है और बनाने का एक समय ४ है। बिलाप करने का एक समय है और हंसने का एक समय है हाय हाय करने का एक समय है और नाचने का ५ एक समय है। पत्थर फेंक देने का एक समय है और पत्थर बटोरने का एक समय है मिलने का एक समय है और ६ अलग होने का एक समय है। पाने का एक समय है और खोने का एक समय है रखने का एक समय है और ७ फेंक देने का एक समय है। फाड़ने का एक समय है और सीने का एक समय है चुप होने का एक समय है और ८ बोलने का एक समय है। प्रेम करने का एक समय है और घिनाने का एक समय है संग्राम करने का एक समय है और मिलाप करने का एक समय है॥

९ जिस में मनुष्य परिश्रम करता है उस में उसे क्या लाभ है॥

१० मैं ने उस परिश्रम को देखा है जो ईश्वर ने मनुष्य के पुत्रों को व्यवहार ११ के लिये दिया है। अपने अपने समय में उस ने हर एक को सुन्दर बनाया है हां उस ने संसार को उन के मन में रक्खा है यहां लों कि जो कार्य्य ईश्वर करता है मनुष्य उसे आदि से अन्त लों १२ नहीं पा सक्ता। मैं जानता हूं कि उन में कुछ अच्छा नहीं परन्तु यह कि आनन्द होके अपने जीवन में भलाई १३ करें। और यह भी कि हर एक मनुष्य खाय पीये और अपने सारे परिश्रम की भलाई भोगे यही ईश्वर का दान है। १४ मैं जानता हूं कि जो कुछ ईश्वर करता है सो सदा के लिये है उस में कुछ बढ़ाया नहीं जा सक्ता न उस्से घटाया

का कल्का और ईश्वर ऐसा करता है
१५ जिसते मनुष्य उस के आगे डरें। जो
है सो आगे था और जो होना है सो
आगे हुआ है और जो बीत गया ईश्वर
उस का लेखा चाहता है॥

१६ और मैं ने सूर्य्य के नीचे बिचारस्थान
भी देखा कि वहां दुष्टता थी और धर्म्म
१७ का स्थान कि वहां बुराई। मैं ने अपने
मन में कहा कि ईश्वर धर्म्मी और दुष्ट
का बिचार करेगा क्योंकि हर एक
कांक्षा के लिये और हर एक कार्य्य के
लिये वहां एक समय है॥

१८ मैं ने अपने मन में मनुष्य के पुत्रों
की दशा के बिषय में कहा कि ईश्वर
उन का खोज करे कि उन्हें सूझ पड़े
१९ कि हम पशु हैं। क्योंकि जो मनुष्य के
पुत्रों पर बीतता है सो पशु पर बीतता है
और सभों पर एक ही सा बीतता है
जैसा यह मरता है वैसा वह मरता है
हां सभों का एक श्वास है यहां लों
कि पशुन से मनुष्य की कुछ श्रेष्ठता
२० नहीं है क्योंकि सब बृथा है। सब एक
ही स्थान को जाते हैं सब धूल से हैं
२१ और सब धूल में फिर जाते हैं। कि
मनुष्य के पुत्रों का प्राण जो ऊपर जाता
है और पशु का प्राण जो पृथिवी में
२२ उतरता है कौन जानता है। सो मैं ने
देखा कि इस्से भला कुछ नहीं कि
मनुष्य अपने ही कार्य्य में आनन्द करे
क्योंकि यह उस का भाग है क्योंकि
उस के पीछे जो होगा सो उसे दिखाने
को कौन लावेगा॥

चौथा पर्ब्ब।

१ सो मैं फिरा और सूर्य्य के नीचे के
सारे अंधेरों को देखा और क्या देखता
हूं कि सताये हुए का आंसू और उन
का कोई शान्तिदायक नहीं और उन
के अंधेरी के हाथ में पराक्रम परन्तु
उन का कोई शान्तिदायक न था।
२ सो मैं ने मृतकों को जो मर चुके हैं
उन जीवतों से जो अब जीते हैं अधिक
३ स्तुति किई। और वह उन दोनों से
अच्छा है जो अब लों नहीं हुआ है
और जिस ने सूर्य्य के नीचे के बुरे कार्य्यों
को नहीं देखा है॥

४ फिर मैं ने सारे परिश्रम और सारे
कार्य्य की खराई सोची कि इस बात
के लिये मनुष्य अपने परोसी के डाह
में पड़ता है यह भी बृथा और जीव
५ का झंझट है। मूर्ख अपने हाथ समेटके
६ अपना ही मांस खाता है। कुशल के
साथ मुट्ठी भर भला है कि परिश्रम
और जीव के झंझट के साथ दो मुट्ठी
भर॥

७ तब मैं फिरा और सूर्य्य के नीचे
८ बृथा को देखा। एक है और दूसरा
नहीं हां उस के न बालक हैं न भाई
तथापि उस के परिश्रम का अन्त नहीं
न उस की आंख धन से तृप्त हैं न वह
कहता है कि मैं किस के लिये परिश्रम
करता हूं और अपने प्राण के सुख को
खोता हूं यह भी बृथा हां अति परिश्रम
९ है। दो एक से भले हैं इस कारण कि
वे अपने परिश्रम का फल पाते हैं।
१० क्योंकि यदि वे गिरें तो एक अपने
संगी को उठावेगा परन्तु जो जन अकेला
होके गिरता है उस पर सन्ताप क्योंकि
११ उसे उठाने को दूसरा नहीं। फिर यदि
दो एक साथ लेटें तो गरमाते हैं परन्तु
१२ अकेला क्योंकर गरमा सक्ता है। और
यदि एक उस के बिरुद्ध प्रबल होवे तो
दो उस का साम्ना करेंगे और तेहरी
रस्सी झट नहीं टूटती॥

१३ बृद्ध और मूर्ख राजा जो चिताया
न जाय उस्से कंगाल और बुद्धिमान
१४ लड़का भला है। क्योंकि वह बन्दीगृह

के राज्य करने को आता है पर जो उस के राज्य में उत्पन्न होता है सो १५ कंगाल होता है। मैं ने सूर्य्य के नीचे के जीवधारियों को उस दूसरे बालक सहित जो उस की सन्ती उठेगा देखा। १६ उन सब लोगों का अन्त नहीं जिन का वह अगुआ हुआ है वे भी जो पीछे आते हैं उस्से आनन्दित न होंगे क्योंकि यह भी वृथा और जीव का झंझट है॥

पांचवां पर्व्व।

जब तू ईश्वर के मन्दिर में जाय तब अपना पांव चौकसी से रख और सुनने के लिये उद्यत हो क्योंकि वे नहीं सोचते कि २ हम बुरा करते हैं। अपने मुंह से उतावली मत कर और मन से ईश्वर के आगे शीघ्रता से मत बोल क्योंकि ईश्वर स्वर्ग पर और तू पृथिवी पर इस लिये ३ तेरे बचन थोड़े होवें। क्योंकि कार्य्य की बहुताई से स्वप्न होता है और बचन की बहुताई से मूर्ख का शब्द जाना ४ जाता है। जब तू ईश्वर के लिये मनौती माने तब पूरा करने को मत टाल क्योंकि मूर्खों से वह प्रसन्न नहीं है जो तू ५ ने माना है सो पूरा कर। मनौती न मान्ने से भला है कि तू मनौती माने और ६ पूरा न करे। अपने मुंह से अपने शरीर को पाप कराने न दे और न दूत के आगे कह कि यह चूक थी किस लिये ईश्वर तेरे शब्द से रिसियाके तेरे हाथों ७ के कार्य्य को नष्ट करे। क्योंकि स्वप्न की और बचन की बहुताई में भी वृथा है परन्तु तू ईश्वर से डर॥

८ यदि तू दरिद्र पर अंधेर और देश में अति विरुद्ध न्याय और बिचार देखे तो उस बात से आश्चर्य्यित मत हो क्योंकि जो सब से ऊंचे से ऊंचा है सो देखता है और उन से ऊंचे भी हैं। और देश का ९ लाभ सब के लिये है राजा भी खेत से पाला जाता है॥

जो चांदी से प्रीति रखता है सो १० चांदी से तृप्त न होगा और न वह जो बहुताई से प्रीति रखता है बहुताई से यह भी वृथा है। जब संपत्ति बढ़ती है ११ तो उस के खवैये भी बढ़ते हैं और उस के स्वामियों का क्या लाभ है केवल यह कि वे उसे अपनी आंखों से देखें। परि- १२ श्रमी की नींद चाहे थोड़ा खाय चाहे बहुत मीठी है परन्तु धनवान की बहुताई उसे सोने न देगी। एक अति बुराई १३ है जो मैं ने सूर्य्य के नीचे देखी है कि धन अपने स्वामियों की हानि के लिये धरा है। परन्तु ऐसे धन बुरे परिश्रम १४ से नष्ट होते हैं और वह पुत्र जन्माता है और उस के हाथ में कुछ नहीं। जैसा १५ वह अपनी मा की कोख से आया वैसा ही नंगा वह फिर जायेगा और वह अपने हाथ में अपने परिश्रम का कुछ फल अपने संग न ले जायेगा। और यह भी १६ अति बुराई है कि सब बातों में जैसा वह आया तैसा जायेगा और जिस ने पवन के लिये परिश्रम किया है उसे क्या लाभ है। वह अपने जीवन भर भी १७ अंधियारे में खाता है और दुःख और कोप में बहुत क्लेश पाता है॥

लो मैं ने यह देखा है कि खाने पीने १८ और सारे परिश्रम में जो सूर्य्य के नीचे जीवन भर मनुष्य करता है जो ईश्वर उसे देता है उस का फल भोगे यह भला और शुभ है क्योंकि उस का भाग है। फिर यदि ईश्वर किसी मनुष्य को धन १९ संपत्ति देता है और उसे पराक्रम देता है कि उसे खावे और अपना भाग लेवे और अपने परिश्रम में आनन्द होवे तो यह भी ईश्वर का दान है। क्योंकि वह २०

९ जो जन पत्थरों को टारता है सो उन से चोट पावेगा और जो लकड़ी चीरता है उसी से जोखिम में पड़ेगा॥ १० यदि लोहा भोता होवे और सान पर उस की धार न चढ़ावे तो अधिक बल आवश्यक है परन्तु बताने के लिये बुद्धि लाभ है॥

११ निश्चय मंत्र बिना सांप डंसेगा और १२ बड़बड़िया उस्से अच्छा नहीं। बुद्धिमान के मुंह के बचन कृपा हैं परन्तु मूर्ख के होंठ उसी को लील जायेंगे। १३ उस के मुंह के बचन का आरंभ मूर्खता है और उस के मुंह का अन्त नटखटी १४ और बौड़हापन है। मूर्ख भी बचन बढ़ाता है मनुष्य नहीं कह सक्ता कि क्या होगा और जो कुछ उस के पीछे १५ होगा उसे कौन कह सक्ता है। मूर्खों का परिश्रम उन में से हर एक को थका डालता है क्योंकि वह नगर में जाने को नहीं जानता॥

१६ हे देश जब तेरा राजा बालक हो और तेरे अध्यक्ष बिहान को खाते हैं १७ तब तुझ पर संताप। हे देश जब तेरा राजा कुलीनों का बेटा हो और तेरे अध्यक्ष समय पर बल के लिये खाते हैं और मतवाले होने को नहीं तू धन्य है॥

१८ अति आलस के कारण जोड़ाई घटी जाती है और हाथों के आलस के मारे घर गिर पड़ता है॥

१९ आनन्दता के लिये जेवनार होती है और दाखरस जीवन को मगन करता है परन्तु रोकड़ सब कार्य्य की है॥

२० राजा को अपने मन में भी स्राप न दे और धनी को अपने शयनस्थान में स्राप न दे क्योंकि आकाश का पंछी शब्द पहुंचावेगा और पखेरू बात कह देगा॥

ग्यारहवां पर्व्व

१ पानियों के ऊपर अपनी रोटी फेंक दे क्योंकि बहुत दिनों के पीछे तू उसे २ पावेगा। सात जन को हां आठ को भी भाग दे क्योंकि पृथिवी में जो जो बिपत्ति होगी सो सो तू नहीं जानता। ३ यदि मेघ बर्षा से भरे हैं तब वे पृथिवी पर छूछे होते हैं और यदि दक्खिन अथवा उत्तर की ओर पेड़ गिरे तो जहां पेड़ गिरेगा तहां पड़ा रहेगा। ४ जो वायु का पारखी है सो न बोयेगा और जो मेघों को देखता है सो न ५ लवेगा। तू जैसे पवन के मार्ग को और गर्भिणी की कोख में के हाड़ बढ़ने को नहीं जानता तैसा तू ईश्वर के कार्य्य को नहीं जानता जो सब बनाता ६ है। बिहान को अपना बीज बो और सांझ को भी अपना हाथ मत उठा क्योंकि तू नहीं जानता कि कौन ठीक होगा यह अथवा वह अथवा दोनों के दोनों भले होंगे॥

७ निश्चय उंजियाला मीठा है और आंखों को सूर्य्य का दर्शन उत्तम है। ८ क्योंकि यदि मनुष्य बहुत दिन जीवे और उन सभों में आनन्द करे तथापि अंधियारे दिनों को चेत रक्खे क्योंकि बहुत होंगे सब जो आता है सो बृथा है॥

९ हे तरुण जन अपनी तरुणाई में मगन हो और तेरी तरुणाई के दिनों में तेरा मन तुझे आनन्दित करे और अपने मन के मार्गों पर और अपनी आंखों की दृष्टि में चल परन्तु जान रख कि इन सारी बातों के लिये ईश्वर तेरा १० बिचार करेगा। और अपने मन से शोक को दूर कर और अपने शरीर से बुराई निकाल डाल क्योंकि लड़काई और तरुणाई बृथा है॥

बारहवां पर्व्व।

१ और अपनी तरुणाई के दिनों में अपने सिरजनहार को स्मरण कर जब

लों बुराई के दिन और वे बरस न आवें जब तू कहेगा कि इन में मुझे आनन्द २ नहीं है। जब लों सूर्य्य अथवा उंजियाला अथवा चन्द्रमा अथवा तारे अंधियारे न होवें और बरसने के पीछे मेघ फेर ३ न आवें। उस दिन में कि जब घर के रखवाल थर्थराने लगेंगे और बलवन्त जन कुबड़े होवेंगे और पिसवैये थोड़े के कारण घट जायेंगे और जो खिड़कों ४ से देखते हैं धुंधले हो जायेंगे। और गली के किवाड़े बन्द हो जायें जब चक्की का शब्द धीमा हो जायेगा और मनुष्य पंछी के शब्द के करते हो उठेगा और गान की सारी कन्या घट जायेंगी। ५ लोग ऊंची वस्तु से भी डरेंगे और मार्ग में भय होगा और बादाम का पेड़ फूलेगा और फनगा भारी होगा और इच्छा घट जायेगी क्योंकि मनुष्य अपने सनातन के घर को जानेवाला है और बिलापी ६ गली गली फिरनेवाले हैं। पहिले उस्से कि चांदी की डोरी खोली जाय और सोने की कटोरी फट जाय और सोते में घड़ा तोड़ा जाय और कुंड में रहट टूट जाय। ७ तब धूल पृथिवी में फिर जायेगी जैसी थी और आत्मा ईश्वर पास फिर जायेगा जिस ने उसे दिया है॥

८ उपदेशक कहता है वृथा पर वृथा ९ सब वृथा है। और इस के उपरान्त जैसा कि उपदेशक बुद्धिमान था उस ने लोगों को हर प्रकार का ज्ञान सिखाया हां मन लगाया और खोज खोजके बहुत से दृष्टांतों को सिद्ध १० किया। उपदेशक ने मनभावनी बात पाने को ढूंढ़ा और लिखा हुआ ठीक ११ और सत्य बचन है। बुद्धिमानों के बचन अरई और इन कीलों की नाईं हैं जो सभाओं के स्वामियों से दृढ़ किई गई हैं जिन को एक ही गड़ेरिये १२ ने एकट्ठे किया है। और इस के उपरान्त हे मेरे बेटे इन बातों से सीख बहुत पुस्तक बनाने का अन्त नहीं और बहुत पढ़ना शरीर को थकाता है॥

१३ अब आओ सारी बातों का अभिप्राय सुनें ईश्वर से डर और उस की आज्ञा पालन कर क्योंकि यह सब मनुष्य के १४ लिये अवश्य है। क्योंकि ईश्वर हर एक कार्य्य का और हर एक गुप्त बात का न्याय करेगा चाहे भला हो चाहे बुरा॥

गीतों का गीत।

पहिला पर्ब्ब।

१, २ सुलेमान के गीतों का गीत। वह अपने मुंह के चूमों से मुझे चूमे क्योंकि ३ तेरा प्रेम दाखरस से भला है। तेरे सुगंधों के बास के कारण तेरा नाम सुगंध के समान उंडेला हुआ है इस लिये कन्या तुझ से प्रेम रखती हैं। ४ मुझे खींच हम तेरे पीछे दौड़ेंगी राजा मुझे अपनी कोठरी में लाया है हम तुझ से आनन्द और मगन होंगी हम तेरे प्रेम को दाखरस से अधिक स्मरण करेंगी खरे जन तुझ से प्रेम रखते हैं॥

५ हे यरूसलम की पुत्रियो मैं काली हूं परन्तु सुन्दरी हूं कीदार के तंबुओं की नाईं सुलेमान के ओहलों की नाईं। ६ मुझे मत देखो क्योंकि मैं काली हूं इस कारण कि सूर्य्य मुझ पर पड़ा है मेरी मां के बालक मुझ से बहुत रिसियाए उन्हों ने मुझ से दाख की बारी की रखवाली करवाई परन्तु मैं ने अपने ही दाख की बारी की रखवाली न किई॥

७ हे मेरे मन के प्रिय मुझे बताइये कि आप कहां चराते हैं मध्यान्ह में कहां विश्राम देते हैं क्योंकि मैं उस की नाईं क्यों बनूं जो आप के संगियों के झुंड के अलंग के आड़ में हो॥

८ हे तू जो स्त्रियों में अति सुन्दरी है जो तू न जाने तो झुंड के पगचिन्हों पर जा और अपने मेम्नों को गड़ेरियों के ९ तंबुओं के लग चरा। हे मेरी प्रिया मैं ने तुझे फिरऊन के रथों के घोड़ों की १० जथा से उपमा दिई है। तेरे गाल गहनों की पांती से और तेरा गला ११ सीकरी से शोभित है। हम तेरे लिये सोने के हार चांदी की घुंडी सहित बनावेंगे॥

१२ जब लों राजा अपने मंच पर है तब लों मेरी जटामासी से सुगंध निकलती १३ है। मेरा प्रिय मेरे लिये गंधरस की पोटली है वह रात भर मेरी छातियों १४ के मध्य में पड़ा रहेगा। मेरा प्रिय मेरे लिये ऐनजदी के दाख की बारी के कपूर का गुच्छा है॥

१५ हे मेरी प्रिया देख तू सुन्दरी है देख तू सुन्दरी है तेरी आंखें कपोतों की सी हैं॥

१६ हे मेरी प्रिया देख तू सुन्दरी है हां मनभावनी आ हमारा बिछौना भी हरा १७ है। हमारे घर के लट्ठे देवदारु के और धरन सरो की हैं॥

दूसरा पर्ब्ब।

१ मैं शारून की सेवती और तराइयों २ का सोसन हूं। जैसा सोसन कांटों में तैसी मेरी प्रिया पुत्रियों में है॥

३ जैसा बन के पेड़ों में सेव का पेड़ तैसा मेरा प्रिय पुत्रों में मैं बड़ी आनन्दता से उस की छाया तले बैठी और उस ४ का फल मेरे तालू में मीठा था। वह मुझे दाखरस के घर में ले गया और ५ उस का झंडा मेरे ऊपर प्रेम था। दाख की टिकियों से मुझे संभालो सेव से मुझे मगन करो क्योंकि मैं प्रेम से रोगी ६ हूं। उस का बांयां हाथ मेरे सिर के नीचे है और उस का दहिना हाथ मुझे समेटता है॥

७ हे यरूसलम की पुत्रियो मैं बन के हरिण और हरिणियों की किरिया तुम्हें देती हूं कि मेरे प्रिय को मत उठाओ और मत जगाओ जब लों वह आप न चाहे॥

८ मेरे प्रिय का शब्द देखो वह पर्ब्बतों पर उछलते और टीलों पर कुदक्का मारते आता है॥

९ मेरा प्रिय हरिण की अथवा युवा हरिण की नाईं है देखो वह हमारी भीत के पीछे खड़ा है वह खिड़कियों से देखता है झंझरियों में से आप को १० दिखाता है। मेरा प्रिय यह कहके मुझ से बोला कि हे मेरी प्रिया हे मेरी ११ सुन्दरी उठ चली आ। क्योंकि देख जाड़ा बीत गया बरषा हो गई और १२ जाती रही। पृथिवी पर फूल दिखाते हैं दाख के बटोरने का समय आया है और हमारे देश में कपोत का शब्द १३ सुना जाता है। गूलरपेड़ फलता है और अंगूर फूलते और उन से सुगंध निकलती है हे मेरी प्रिया सो उठ हे १४ मेरी सुन्दरी चली आ। हे मेरे कपोत

चटान की दरारों में और करारे की ओझल में अपना रूप मुझे दिखा अपना शब्द मुझे सुना क्योंकि तेरा शब्द मीठा और तेरा रूप सुन्दर है ॥

१५ लोमड़ियों को छोटी छोटी लोमड़ियों को जो लता को नष्ट करती हैं हमारे लिये पकड़ लो क्योंकि हमारी लता पर कोमल अंगूर लगे हैं ॥

१६ मेरा प्रिय मेरा है और मैं उस की हूं वह सोसनों में चराता है ॥

१७ जब दिन ढले और छाया जाती रहे तब हे मेरे प्रिय लौट और हरिण की और पर्ब्बतों के दरारों के युवा हरिण की नाईं हो ॥

तीसरा पर्ब्ब ।

१ रात को मैं ने अपने बिछौने पर अपने प्राण प्रिय को खोजा मैं ने उसे २ खोजा पर न पाया । अब मैं उठूंगी और नगर में गली गली फिरूंगी और चौड़े मार्गों में अपने प्राण प्रिय को ढूंढूंगी मैं ३ ने उसे ढूंढ़ा पर उसे न पाया । रख-वाले जो नगर में फिरते हैं मुझे मिले उन से मैं ने पूछा कि तुम ने मेरे प्राण ४ प्रिय को देखा है । जब मैं उन से तनिक आगे बढ़ गई थी तो अपने प्राण प्रिय को पाया मैं ने उसे पकड़ा और उसे न छोड़ा जब लों मैं उसे अपनी मां के घर में और अपनी जननी की कोठरी में न ले गई ॥

५ हे यरूसलम की पुत्रियो मैं तुम्हें हरिण और जंगली हरिणियों की किरिया देता हूं कि तुम मेरी प्रिया को मत उठाओ और मत जगाओ जब लों वह आप न चाहे ॥

६ यह कौन है जो धूआं की उठान की नाईं मुर और लोबान और गंधी के सारे गंधरस द्रव्य से सुगंधित होके ७ बन से आती है । देखो सुलेमान का बिछौना उस के आसपास इसराएल के बीरों में से साठ बीर हैं । वे सब के ८ सब खड्गधारी और संग्राम में निपुण हर एक जन रात के डर के मारे अपनी जांघ पर तलवार लटकाये हुए है ।

९ सुलेमान राजा ने अपने लिये लुबनान के काष्ठ का एक चौपाला बनवाया ।

१० उस ने उस के खंभे चांदी के बनवाये उस के उसीसे सोने के उस का चंदवा बैंजनी बनवाया और उस का भीतर-वार यरूसलम की पुत्रियों के प्रेम से बिछाया हुआ था । हे सैहून की पुत्रियो ११ निकलके मुकुट पहिरे हुए सुलेमान राजा को देखो जो उस की मां ने उस के ब्याह के दिन में और उस के मन की मगनता के दिन में उसे पहिराया ॥

चौथा पर्ब्ब ।

१ लो हे मेरी प्रिया तू सुन्दरी है लो तू सुन्दरी है तेरी ओढ़नी के नीचे तेरी आंखें कपोतों की सी हैं तेरे बाल बक-रियों के झुंड की नाईं हैं जो जिलिअद के पहाड़ की घाटी पर बैठती हैं ।

२ तेरे दांत कतरे हुए झुंड की नाईं हैं जो नहान से निकला हर एक उन में से जोड़ा जनती हैं और उन में कोई बांझ नहीं है । तेरे होंठ लाल सूत की ३ नाईं हैं तेरा मुंह सुन्दर है और तेरी कनपटियां तेरे अलकों के नीचे अनार के टुकड़े की नाईं हैं । तेरा गला दाऊद ४ के गुम्मट की नाईं है जो अस्त्र के लिये बनाया गया उस पर सहस्र ढालें लटकाई गई हैं सब महाबीरों की ढालें । तेरे ५ दो स्तन दो तरुण हरिण की नाईं हैं जो जोड़ा होवें और सोसनों में चरते हैं । दिन ढलने और छाया के बढ़ने लों ६ मैं गंधरस के पर्ब्बत पर और लोबान के टीले लों जाऊंगा । हे मेरी प्रिया तू ७ निर्धार सुन्दरी है और तुझ में कोई पय नहीं ॥

८ हे दुल्हिन लुबनान से मेरे संग लुबनान से मेरे संग आ अमानः की चोटी पर से शनीर और हरमून की चोटी पर से सिंहों की मांदों में से और चीतों के ९ पर्व्वतों में से देख। हे मेरी बहिन हे मेरी पत्नी तू ने मेरे मन को मोह लिया अपनी एक आंख से अपने गले की एक १० सीकर से मेरे मन को मोह लिया। हे मेरी बहिन हे मेरी पत्नी तेरे प्रेम कैसे सुन्दर हैं दाखरस से तेरा प्रेम कितना भला है और तेरे सुगंध की बास सारे ११ सुगंधों से। हे मेरी पत्नी तेरे होंठ मधु के छत्ते की नाईं टपकते हैं तेरी जीभ तले मधु और दूध है और तेरे बस्त्र की बास लुबनान की बास की नाईं है। १२ मेरी बहिन मेरी पत्नी एक घेरी हुई बारी बंधा हुआ सोता और छाप किया हुआ १३ झरना है। तेरे पौधे अनारों की बारी हैं जिन में मनभावने फल हैं कपूर और १४ जटामासी सहित। जटामासी और केसर और गौरगाक और दारचीनी और लोबान के सारे पेड़ सहित गंधरस और एलुआ १५ सारे उत्तम सुगंध द्रव्य सहित। बारियों का सोता अमृत जल का कूआं और लुबनान से धारे॥

१६ हे उत्तर की पवन जाग और हे दक्खिन की पवन आ मेरी बारी पर बह जिस्तें उस का सुगंध द्रव्य महके अब मेरा प्रिय अपनी बारी में आवे और अपने मनभावने फल खाय॥

पांचवां पर्व्व।

१ हे मेरी बहिन हे मेरी पत्नी मैं अपनी बारी में आया हूं मैं ने अपना गंधरस और सुगंध द्रव्य समेत बटोरा है मैं ने अपने मधु के साथ अपना मधु छत्ता खाया है मैं ने अपने दूध के साथ अपना दाखरस पीया है हे मित्रो खाओ पीओ हे प्रिय बहुताई से पीओ॥

२ मैं सोती हूं पर मेरा मन जागता है मेरे प्रिय का शब्द जो द्वार पर खटखटाता है मेरी बहिन मेरी प्रिया मेरे कपोत मेरे शुद्ध मेरे लिये खोल क्योंकि मेरा सिर ओस से भर गया है और मेरी अलकें रात के बूंदों से। ३ मैं ने अपना बस्त्र उतारा है मैं उसे क्योंकर पहिनूं मैं ने अपने पांव धोये हैं मैं उन्हें ४ क्योंकर अशुद्ध करूं। मेरे प्रिय ने झरोखे में से अपना हाथ डाला और मेरा मन ५ उस के लिये उभड़ा। अपने प्रिय के लिये मैं खोलने को उठी और मेरे हाथों से गंधरस टपका और मेरी अंगुलियों ने ताली की कड़ियों पर ६ सुबास गंधरस। मैं ने अपने प्रिय के लिये खोला परन्तु मेरा प्रिय फिरके चला गया था उस की बोली से मेरा प्राण मूर्छित हुआ मैं ने उसे ढूंढ़ा परन्तु पा न सकी मैं ने उसे पुकारा परन्तु ७ उस ने मुझे उत्तर न दिया। रखवालों ने जो नगर में फिरते थे मुझे पाया उन्हों ने मुझे मारा और घायल किया भीतों के रखवालों ने मुझ से मेरा घूंघट ८ ले लिया। हे यरूसलम की पुत्रियो मैं तुम्हें किरिया देती हूं जो मेरे प्रिय को पाओ तो उसे कहियो कि मैं प्रेम की रोगी हूं॥

९ तेरा प्रिय और प्रिय से अधिक क्या है हे सारी स्त्रियों में सुन्दरी तेरा प्रिय और प्रिय से अधिक क्या है जो तू हमें यों किरिया देती है॥

१० मेरा प्रिय गोरा और लाल है दस ११ सहस्रों में प्रसिद्ध। उस का सिर चोखा सोना है उस की अलकें गुच्छे और काले १२ कौवे की नाईं हैं। उस की आंखें उन कपोतों की नाईं हैं जो पानी की नदियों पर हैं दूध से धोई हुई और भरी पुरी। १३ उस के गाल सुगंध द्रव्य की कियारी

की ओर फूलों के गुम्मट की नाईं उस के होंठ सैासन की नाईं सुबास गंधरस
१४ टपकाते हैं। उस के हाथ पद्मराग मणि जड़ी हुई सोने की अंगूठियों की नाईं हैं उस का पेट नीलकान्त मणि से मढ़े हुए चमकते हाथीदांत की
१५ नाईं है। उस के पांव चोखे सोने की चूलों पर बैठाये हुए मर्मर के खंभों की नाईं उस का रूप लुबनान की नाईं
१६ और देवदारु पेड़ों की नाईं उत्तम। उस का तालू अति मीठा है हां वह सर्वथा प्रिय है हे यरूसलम की पुत्रियो यही मेरा प्रिय और यही मेरा मित्र है॥

छठवां पर्ब्ब।

हे स्त्रियों में अति सुन्दरी तेरा प्रिय कहां गया तेरा प्रिय किधर मुड़ा जो तेरे संग हम भी उसे ढूंढ़ें॥
२ मेरा प्रिय अपनी बारी में सुगंध द्रव्य की कियारियों में बारियों में चरने को और सैासन बटोरने को उतर गया।
३ मैं अपने प्रिय की हूं और मेरा प्रिय मेरा है वह सैासनों के मध्य चराता है॥
४ हे मेरी प्रिया तू तरज़ा की नाईं रूपवती है यरूसलम की नाईं सुन्दरी और ध्वजा सहित की नाईं भयावनी
५ है। अपनी आंखें मुझ से अलग कर क्योंकि उन्हों ने मुझे मोह लिया है तेरा बाल बकरियों के झुंड की नाईं है जो जिलिअद के पहाड़ के उतार पर बैठती
६ हैं। तेरे दांत भेड़ियों के झुंड की नाईं जो नहान से निकलीं जिन में से हर एक जोड़ा जोड़ा जनती हैं और उन में
७ से एक भी बांझ नहीं। तेरी ओढ़नी के नीचे तेरी कनपटियां अनार के टुकड़े की नाईं हैं॥
८ साठ रानियां और अस्सी सहेलियां
९ और अगणित कुमारियां हैं। पर मेरा कपोत मेरा शुद्ध एक ही है वह अपनी माता की एक ही है अपनी जननी की लाड़ली है पुत्रियों ने उसे देखा और उसे धन्य कहा हां रानियां और सहेलियां और उन्हों ने उसे सराहा।
१० यह कौन है जो बिहान के तुल्य चन्द्रमा के समान सुन्दरी सूर्य्य की नाईं निर्मल और ध्वजा सहित की नाईं भयावनी दिखाई देती है॥
११ मैं तराई के फूलों को देखने को और कि यदि लता लहलहाती हैं और अनार में कली लगी हैं मैं देखने को एगोज़ की बारी में उतर गया।
१२ मैं जानता न था पर मेरे प्राण ने मुझे मेरे बांछित लोगों के रथों पर बैठाया॥
१३ लौट आ लौट आ हे सुलामी लौट आ लौट आ जिसतें हम तुझ पर दृष्टि करें तुम सुलामी में क्या देखोगी जैसे दो सेना का नाच॥

सातवां पर्ब्ब।

हे राजकन्या जूती से तेरे पांव कैसे सुन्दर हैं तेरी जांघ की गांठें आभूषण की नाईं गुनकारी के हाथ के कृत्य हैं। तेरी नाभी एक गोल पात्र की नाईं है जिस में दाखरस की घटी नहीं तेरा पेट गोहूं के ढेर की नाईं है जो सैासनों से घेरा हुआ हो। तेरे दो स्तन दो यमल युवा हरिण की नाईं हैं।
४ तेरा गला हाथीदांत के गुम्मट की नाईं है तेरी आंखें बतरब्बिम फाटक के लग के हशबून के कुंडों की नाईं हैं तेरी नाक लुबनान के गुम्मट की नाईं जो दमिश्क की ओर देखता है।
५ तेरा सिर करमिल की नाईं है और तेरे सिर का बाल बैंजनी की नाईं है राजा तेरी अलकों में बंधा है।
६ हे प्रिया तू कैसी सुन्दरी और आनन्दों के लिये मनभावनी है। तेरी यह डौल खजूर पेड़ की नाईं और तेरे स्तन गुच्छों की

८ नाईं हैं। मैं ने कहा कि मैं खजूरपेड़ पर चढ़ूंगा मैं उस की डारों को पकड़ूंगा अब भी तेरे स्तन लता के गुच्छों की नाईं होंगे और तेरी नाक का गंध चकोतरों की नाईं। और तेरा तालू अच्छे दाखरस की नाईं है जो मेरे प्रिय के लिये सीधे चलती है और उन के होंठों पर जो सोते हैं मीठे मीठे बह जाती
९
१० है। मैं अपने प्रिय की हूं और उस की
११ वांछा मेरी ओर। हे मेरे प्रिय चलो
१२ खेत में जायें गांवों में टिकें। चलो तड़के दाख की बारियों में जायें आओ देखें यदि लता लहलहाती है यदि कोमल दाख लगा है और अनार में कली लगी हैं वहां मैं अपना प्रेम तुझे
१३ देऊंगी। दुदायीम महकते हैं और हमारे फाटकों पर समस्त रीति के मनभावन नये पुराने फल हैं जो हे प्रिय मैं ने तेरे लिये धर रक्खे हैं॥

आठवां पर्व्व।

१ हाय कि तू मेरे भाई की नाईं होता जिस ने मेरी माता के स्तनों को चूमा जब मैं तुझे बाहर पाती तो तुझे चूमती
२ हां मेरी निन्दा न होती। मैं तुझे अपनी माता के घर में ले आऊंगी कि तू मुझे सिखाये मैं तुझे अपने अनार के रस के सुगंध दाखरस से पिलाऊंगी॥

३ उस का बायां हाथ मेरे सिर के नीचे और उस का दहिना हाथ मुझे समेटता है॥

४ हे यरूसलम की पुत्रियो मैं तुम्हें किरिया देता हूं कि मेरी प्रिया को मत जगाओ और मत उठाओ जब लों कि वह आप न चाहे॥

५ यह कौन है जो बन से अपने प्रिय पर ओठंगती हुई ऊपर आती है मैं ने तुझे सेब के पेड़ तले से उठाया जहां तेरी माता तुझे जनी जहां तेरी जननी तुझे जनी। मुझे अपने मन में छाप की नाईं रख अपनी भुजा पर की छाप की नाईं क्योंकि प्रेम मृत्यु की नाईं प्रबल है डाह समाधि की नाईं कठिन है उस के अंगारे आग के अंगारे हैं एक अति धधकती हुई लवर। बहुत से जल प्रेम को बुझा नहीं सक्ते और बाढ़ उसे डुबा नहीं सक्तीं यदि मनुष्य अपने घर की सारी संपत्ति प्रेम के लिये देता तो सर्व्वथा निन्दा होती॥
६
७

८ हमारी एक छोटी बहिन है और उस के स्तन नहीं हम अपनी बहिन के लिये उस दिन क्या करें जब उस की बात
९ चलेगी। जो वह भीत होवे तो हम उस पर चांदी का भवन बनावेंगी और जो वह द्वार होवे तो हम उसे देवदारु की पटियों से छांपेंगी॥

१० मैं भीत हूं और मेरे स्तन गुम्मटों की नाईं तब मैं उस की दृष्टि में कुशल
११ पाये हुए की नाईं हुई। बालहमून में सुलैमान की एक दाख की बारी थी उस ने उस दाख की बारी को रखवालों को सौंपा जिस के फल के लिये हर एक को उसे सहस्र टुकड़ा चांदी देना
१२ पड़ता था। मेरी दाख की बारी जो मेरी है मेरे आगे है हे सुलैमान तू सहस्र ले और जो उस के फल की रखवाली करते हैं दो सौ॥

१३ हे तू जो बारियों में वास करती है जथा तेरा शब्द सुनती हैं मुझे भी सुना॥

१४ हे मेरे प्रिय उड़ जा और हरिण अथवा सुगंध द्रव्य के पर्व्वतों पर की हरिणी की नाईं हो जा॥

यसअियाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक ।

पहिला पर्ब्ब ।

१ अमूस के बेटे यसअियाह का दर्शन जो उस ने यहूदाह और यरूसलम के विषय में यहूदाह के राजाओं उज्जियाह और यूताम और आखज और हिजकियाह के दिनों में देखा ॥

२ हे आकाशो सुनो और हे पृथिवी कान लगा क्योंकि परमेश्वर कहता है कि मैं ने लड़कों को पाला और पोसा ३ और वे मुझ से फिर गये । बैल अपने स्वामी को पहिचानता है और गदहा अपने प्रभु की चरनी को इसराएल नहीं जानता मेरे लोग नहीं सोचते ॥

४ हाय पापमय जातिगण पाप से लदे हुए लोग कुकर्म्मियों के वंश बिगाड़ू लड़के उन्हों ने परमेश्वर को छोड़ दिया इसराएल के धर्म्ममय को तुच्छ जाना ५ है वे पीछे हटके पराये हो गये । तुम किस अंग पर और मार खाओगे जो अधिक फिरते जाते हो सारा सिर रोगी ६ हो गया और सारा मन दुर्बल । पांव के तलवे से लेके सिर ताईं उस में कहीं आरोग्यता नहीं परन्तु घाव और चोट और नवीन घाव वे न दबाये गये और न बांधे गये और किसी ने तेल से नम्र ७ नहीं किया है । तुम्हारा देश उजाड़ है तुम्हारे नगर आग से जल गये तुम्हारा खेत तुम्हारे आगे परदेशी उसे खाते जाते हैं और वह परदेशियों के उजाड़ किये हुए के समान उजाड़ हो गया । ८ और सैहून की पुत्री दाख की बाटिका में झोंपड़ी की नाईं ककड़ी के खेत में कुटिया के समान घेरे हुए नगर की ९ नाईं बच गई है । यदि परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर हमारे लिये बहुत छोटा शेषभाग न छोड़ देता तो हम सदूम की नाईं हो जाते अमूर: से उपमा दिये जाते ॥

१० हे सदूम के न्यायियो परमेश्वर का बचन सुनो हे अमूर: के लोगो हमारे ईश्वर की ब्यवस्था पर कान लगाओ । ११ परमेश्वर कहता है कि तुम्हारे बलिदानों की बहुताई मेरे किस काम की है मैं मेढ़े के होम की भेंटों से और पुष्ट चौपायों की चिकनाई से छक गया हूं और बैलों और मेम्नों और बकरों के लोहू १२ से प्रसन्न नहीं हूं । जब तुम आते हो कि मेरे सन्मुख सन्निधान होओ तो कौन तुम्हारे हाथों से इस का खोजी हुआ १३ है कि मेरे आंगनों को रौंदो । मिथ्या की भेंट तुम मत लाया करो लोबान से मुझे घिन आती है नये चांद और विश्राम के दिन और मण्डली के बुलाने से भी मैं कुकर्म्म और पूजा दोनों को १४ सह नहीं सक्ता । तुम्हारे नये चांदों और तुम्हारी मण्डली से मेरा प्राण घिन करता है वे मेरे ऊपर बोझ हो गये मैं १५ उन के उठाने से थक गया । और जब तुम अपने हाथ फैलाओगे तब मैं तुम से अपनी आंखें फेर लूंगा हां जब तुम प्रार्थना पर प्रार्थना करोगे तो मैं न सुनूंगा तुम्हारे हाथ लोहूलोहान हैं । १६ अपने को धोओ आप को पवित्र करो अपने कर्म्मों की बुराई को मेरी आंखों के साम्हने से दूर करो कुकर्म्म से फिरो । १७ सुकर्म्म सीखो न्याय के खोजी हो अन्धेर को सुधारो अनाथ का न्याय करो बिधवा का उपकार करो ॥

१८ परमेश्वर कहता है कि अब आओ और हम आपुस में बिवाद करें यदि

तुम्हारे पाप लाल रंग पर हों पर पाले की नाईं श्वेत हो जायेंगे यदि बैंजनी रंग के समान लाल हों ऊन के समान
१९ हो जायेंगे। यदि तुम सम्मति हो और सुनो तो तुम भूमि की अच्छी वस्तुएँ खाओगे।
२० और यदि तुम नाह और दंगा करोगे तो खड्ग का कौर हो जाओगे क्योंकि परमेश्वर के मुंह ने कहा है॥

२१ विश्वासमय बस्ती क्योंकर व्यभिचारिणी हो गई वह न्याय से भरी थी धर्म्म उस में निवास करता था और
२२ अब हत्यारी। तेरा रूपा मैल हो गया
२३ तेरे दाखरस में पानी मिल गया। तेरे अध्यक्ष दंगाइत और चोरों के साथी हैं उन में से हर एक अकोर का मित्र और दान का खोजी है वे अनाथ का न्याय नहीं करते और बिधवा का बिवाद उन तक नहीं पहुंचता॥

२४ इस लिये प्रभु सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का सर्व्वशक्तिमान कहता है कि हाय मैं अपने बिरोधियों से शान्ति पाऊंगा और अपने बैरियों से पलटा
२५ लेऊंगा। और मैं अपना हाथ तुझ पर फेरूंगा और संपूर्ण तेरे मैल को निकालूंगा और तेरे सारे रांगे को दूर करूंगा।
२६ और मैं तेरे न्यायी जैसे पहिले थे और तेरे मंत्री जैसे आरंभ में थे फिर स्थापित करूंगा इस के पीछे तू धर्म्म का नगर
२७ विश्वस्तमय बस्ती कहलायेगी। सैहून न्याय से उद्धार पायेगा और उस के फिरे
२८ हुए धर्म्म से। और उसी के साथ दंगाइतों और पापियों की हार होगी और परमेश्वर के त्यागनेहारे नष्ट हो ध्वस्त
२९ होंगे। क्योंकि वे उन बुत्मबृक्षों से लज्जित होंगे जिन को तुम ने इच्छा किई और तुम उन बाटिकों से लज्जित
३० होगे जिन्हें तुम ने चुना है। क्योंकि तुम उस बुत्मबृक्ष की नाईं होगे जिस के पत्ते झड़ जाते और उस बाटिका की नाईं जिस में कुछ जल नहीं है। और
३१ बलवन्त सन हो जायेगा और उस का कार्य्य चिनगारी और वे दोनों एक साथ जल जायेंगे और कोई बुझवैया न होगा॥

दूसरा पर्व्व।

१ वह बचन जो अमूस के बेटे यशयियाह ने यहूदाह और यरूसलम के
२ बिषय दर्शन में देखा। और पिछले दिनों में ऐसा होगा कि परमेश्वर के घर का पहाड़ पहाड़ों की चोटी पर स्थापित होगा और टीलों से ऊंचा किया जायेगा और सारे जातिगण उस की ओर रेले
३ चले जायेंगे। और बहुत सी जातें चल खड़ी होंगी और कहेंगी कि आओ और हम परमेश्वर के पहाड़ की ओर और यअकूब के ईश्वर के घर की ओर चढ़ चलें और वह हमें अपना मार्ग बतलायेगा और हम उस के पथों पर चलेंगे क्योंकि सैहून से व्यवस्था और परमेश्वर का बचन
४ यरूसलम से निकलेगा। और वह जातिगणों के मध्य न्याय करेगा और बहुत जातों का बिचार करेगा और वे अपनी तलवारों को तोड़के फाले और अपने भालों को हंसुवे बना डालेंगी जाति जाति पर तलवार न उठावेगी और वे
५ फिर लड़ाई न सीखेंगे। हे यअकूब के घराने आओ और हम परमेश्वर की ज्योति में चलें॥

६ क्योंकि तू ने अपने लोगों अर्थात् यअकूब के घराने को छोड़ दिया है क्योंकि वे पूरब के टोने से और फिलिस्तियों के समान टोनहों से भरे हैं और परदेशियों के लड़कों से पूर्ण हैं। और उन
७ की भूमि सोने रूपे से भरपूर हो गई है और उन के भंडारों का कुछ अंत नहीं और उन का देश घोड़ों से भर गया है और उन के रथों की कुछ गिनती नहीं।

८ और उन की भूमि मूर्त्तों से भर गई है वे अपने हाथों के कार्य्य को पूजते हैं उस को जो उन की अंगुलियों ने बनाया ९ है। और छोटा मनुष्य झुक गया और बड़ा मनुष्य नीचे हो गया और तू उन्हें क्षमा न कर॥

१० चटान में घुस जा और अपने तईं धूल में छिपा परमेश्वर के भय के साम्हने और उस की महिमा के बिभव से।
११ मनुष्य की ऊंची आंखें नीची हो गईं और मनुष्यों का अहंकार उतारा गया और परमेश्वर अकेला उस दिन महान
१२ ठहरा। क्योंकि सेनाओं के परमेश्वर का दिन हर अहंकारी और ऊंची वस्तु के ऊपर और हर उभड़ी हुई वस्तु के
१३ ऊपर है और वह नीचे आयेगी। और लुबनान के सारे ऊंचे और उभड़े हुए देवदारु बृक्षों के ऊपर और बसनिया के
१४ सारे बलूतों के ऊपर। और सारे ऊंचे पहाड़ों के ऊपर और सारे ऊंचे टीलों के
१५ ऊपर। और हर ऊंचे गुम्मट के ऊपर
१६ और हर दृढ़ भीत के ऊपर। और तरसीस के सारे जहाजों के ऊपर और सारे
१७ सुन्दर चित्रों के ऊपर। और मनुष्य की ऊंचाई नीची किई जायेगी और लोगों का अभिमान उतारा जायेगा और परमेश्वर अकेला उस दिन महान होगा।
१८ १९ और मूरतें सर्व्वथा जाती रहेंगी। और लोग परमेश्वर के भय के साम्हने और उस की महिमा के बिभव से पत्थरों के कंदलों में और भूमि के छेदों में घुस जायेंगे जब वह उठेगा जिसतें पृथिवी को कंपाये॥

२० उस दिन मनुष्य अपनी रुपहली मूरतों और अपनी सुनहरी मूरतों को जो उस की पूजा के लिये बनाई गईं छछूंदरों और चमगुदड़ों के आगे फेंक
२१ देगा। जिसतें परमेश्वर के भय से और उस के बिभव की महिमा से पत्थरों के दरारों में और चटानों के छेदों में घुस जाये जब वह उठेगा जिसतें पृथिवी को कंपाये॥

२२ मनुष्य कि जिस का श्वास उस के नथुनों में है उस्से हाथ उठाओ क्योंकि वह किस लेखे में है॥

तीसरा पर्ब्ब।

१ क्योंकि देखो प्रभु सेनाओं का परमेश्वर यरूसलम और यहूदाह से टेक और टेकन को दूर करता है रोटी की हर टेक को और पानी की हर टेक
२ को। बीर और योद्धा मनुष्य न्यायी और भविष्यद्वक्ता और ज्योतिषी और
३ प्राचीन को। पचास के प्रधान को और प्रतिष्ठित और मंत्री और प्रवीण कार्य्य-
४ कारी और चतुर टोनहे को। और मैं लड़कों को उन पर प्रधान बनाऊंगा और छिछिल्ले उन पर प्रभुता करेंगे।
५ और लोग आपुस में उपद्रव करेंगे मनुष्य मनुष्य पर और मनुष्य अपने परोसी पर वे घमंड करेंगे लड़का बृद्ध से और तुच्छ प्रतिष्ठित से॥

६ जब मनुष्य अपने पिता के घर में अपने भाई को पकड़ेगा यह कहके कि तेरे पास वस्त्र है तू हमारा अध्यक्ष होगा और यह नष्टता तेरे हाथ के नीचे
७ होगी। उस दिन वह अपना शब्द उठायेगा यह कहते हुए कि मैं बैद्य न हूंगा और मेरे घर में न कुछ रोटी है और न कुछ कपड़ा तुम मुझे लोगों का
८ अध्यक्ष न ठहराओ। क्योंकि यरूसलम उजाड़ हुआ और यहूदाह गिर गया क्योंकि उन की बोलचाल और उन के कर्म्म परमेश्वर के बिरुद्ध हैं जिसतें उस की बिभूषित आंखों का साम्हना करें।
९ उन के मुंह का रूप उन पर साक्षी देता है और वे सदूम की नाईं अपना पाप

बर्णन करते हैं और उसे नहीं छिपाते उन के प्राणों पर संताप क्योंकि उन्हों ने अपनी आति से कुब्यवहार किया है॥
१० धर्म्मी से कहो कि उस का कल्याण होगा क्योंकि वह अपने कर्म्मों का फल
११ खायेगा । दुष्ट पर संताप उस का बुरा होगा क्योंकि उस के हाथों का ब्यवहार
१२ उस्से किया जायेगा । हाय मेरे लोग उस के सताऊ चिबिल्ले हैं और स्त्रियां उन पर प्रभुता करती हैं हे मेरे लोग तेरे अगुआ भुलानेहारे हैं और तेरे पथों के मार्ग को निगलते हैं॥

१३ परमेश्वर बिवाद करने के लिये उठता है और लोगों का न्याय करने के
१४ लिये खड़ा होता है । परमेश्वर अपने लोगों के प्राचीनों और उन के अध्यक्षों के संग बिचार में आयेगा और तुम ने दाख की बाटिका को चट कर लिया है दुःखी की लूट तुम्हारे घरों में है ।
१५ प्रभु सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि तुम्हें क्या हुआ कि तुम मेरे लोगों को टुकड़े टुकड़े करते हो और दुःखियों के मुंह को कुचलते हो॥

१६ और परमेश्वर ने कहा इस लिये कि सैहून की पुत्रियां अहंकारी हैं और ग्रीवा उठाके चलती हैं और आंखें मटकाती हैं और ठुमुक चालों से चलती हैं और पांवों से अपना घुंघुरू ठनठनाती
१७ हैं । इस लिये प्रभु सैहून की पुत्रियों को चांद को गंजी कर डालेगा और परमेश्वर उन के गुप्तस्थानों को उघारेगा ।
१८ उस दिन प्रभु उन के घुंघुरुओं और जालियों और चांदों की शोभा को दूर
१९ करेगा । और झुमकों और खड़वों और
२० घूंघटों । मुकुटों और पायलों और पटुकों और सुगंधपात्रों और बिजायठों ।
२१ २२ अंगूठियों और नाक की नथों । बूटेदार बस्त्रों और झूलों और दुपट्टों और बटुओं । आरसियों और महीन बस्त्रों
२३ और सिरबन्धनों और घूंघटों की शोभा
२४ को दूर करेगा । और ऐसा होगा कि सुगंध की संती दुर्गन्ध होगी और पटुके की संती रस्सी और गुंथे हुए बाल की संती गंजापन और ओढ़नी की संती टाट की चोली और दाह रूप की
२५ संती । तेरे पुरुष तलवार से गिरेंगे और
२६ तेरी सामर्थ्य युद्ध में । और उस के फाटक बिलाप और रोदन करेंगे और वह उजाड़ होके धूल पर बैठ जायेगा॥

चौथा पर्ब्ब ।

१ और उस दिन सात स्त्रियां यह कहती हुई एक पुरुष को पकड़ेंगी कि हम अपनी रोटी खायेंगी और अपने बस्त्र पहिनेंगी केवल हम तेरे नाम की कहलावें हमारे अपयश को दूर कर॥

२ उस दिन परमेश्वर की डाली इसराएल की बचती के लिये प्रतिष्ठा और बिभव होगी और भूमि का फल उत्तमता और
३ शोभा । और ऐसा होगा कि जो सैहून में छोड़ा जायेगा और यरूसलम में बच रहेगा वह पवित्र कहलायेगा हर एक जो यरूसलम में जीवन के लिये लिखा
४ हुआ । जब प्रभु न्याय के आत्मा और जलन के आत्मा से सैहून की पुत्रियों के मैल को धोयेगा और यरूसलम के लोहू को उस के मध्य से दूर करेगा ।
५ और परमेश्वर सैहून पर्ब्बत के समस्त निवास के ऊपर और उस की सभाओं के ऊपर दिन को मेघ और धूआं उत्पन्न करेगा और रात को अग्नि की लवर की चमक क्योंकि उस सारे बिभव के ऊपर
६ ढकना होगा । और दिन को तपन से छाया के लिये चंदोआ होगा और झड़ी और मेंह से आड़ और शरण का स्थान॥

पांचवां पर्ब्ब ।

मैं अपने प्रिय के बिषय गाया चाहता

हूं अपने प्रिय का छंद उस की बाटिका के बिषय मेरे प्रिय की दाख की बाटिका २ अति फलवान पहाड़ पर थी। और उस ने उसे खोदा और उस के पत्थर दूर किये और उस में अच्छे से अच्छा दाख लगाया और उस के बीचोंबीच गर्गज बनाया और कुण्ड भी उस में खोदा और बाट जोही कि दाख फले पर उस में बुरे दाख फले॥

३ और अब हे यरूसलम के बासी और यहूदाह के पुरुष कृपा करके मेरे और मेरी दाख की बाटिका के मध्य न्याय ४ करो। मुझे अपने दाख की बाटिका से और क्या करना है कि मैं ने उस में नहीं किया है मैं ने क्यों बाट जोही कि वह दाख फले और उस में बुरे दाख ५ फले। और अब मैं तुम्हें वह बताया चाहता हूं जो अपनी दाख की बाटिका से करवैया हूं उस के बाड़े को दूर करना और वह भक्षण किई जायेगी उस की भीत को तोड़ डालना और वह ६ रौंदने का स्थान हो जायेगी। और मैं उसे उजाड़ कर डालूंगा वह न छांटी जायेगी और न उस के थाले गोड़े जायेंगे और कांटे और कटीले उगेंगे और मैं मेघों को आज्ञा करूंगा कि उस पर मेंह न ७ बरसावें। क्योंकि सेनाओं के परमेश्वर की दाख की बाटिका इसराएल का घराना है और यहूदाह का मनुष्य उस के आनन्दों का पौधा और उस ने न्याय की बाट जोही और देखो अन्धेर धर्म्म का और देखो चिल्लाना॥

८ उन पर संताप जो घर घर से मिला देते हैं खेत को खेत के निकट कर देते हैं यहां लों कि कुछ स्थान न रह जाये और तुम भूमि के मध्य में अकेले रह जाओ॥

९ मेरे कानों में सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि सचमुच बहुतेरे घर हां बड़े और सुन्दर घर उजाड़ हो जायेंगे इस कारण से कि उन में कोई बसवैया न रहेगा। क्योंकि दाख की बाटिका के १० दस बिघों से एक बत्त दाखरस प्राप्त होगा और हूमर बीज से ऐफा अनाज॥

११ उन पर संताप जो भोर को उठते हैं मद का पीछा करते हैं सांझ को अबेर करते हैं यहां लों कि मदिरा उन्हें उन्मत्त करे। और बीणा और बीन ढोलक १२ और बांसली और मदिरा उन के जेवनार हैं और वे परमेश्वर के कार्य्य पर दृष्टि नहीं करते और उन्हों ने उस के हाथों की क्रिया को नहीं देखा है॥

१३ इस लिये मेरे लोग अज्ञानता से बंधुआई में गये हैं और उन के प्रतिष्ठित भूखे मनुष्य हैं और उन की जथा प्यास से झूरी। इस लिये समाधि ने अपने १४ तईं बढ़ाया और अपना मुंह बेपरिमाण पसारा है और उन के बिभव और उन का हूहा और उन की भीड़ और जो उन में आनन्द करता है सब के सब उस में गिरते हैं। और छोटा मनुष्य झुक गया १५ और बड़ा मनुष्य नीचे हो गया और ऊंचों की आंखें नीची हो गईं। और सेनाओं १६ का परमेश्वर न्याय में महान है और सर्बशक्तिमान धर्म्ममय धर्म्म में पवित्र है। और मेम्ने माना अपनी चराई १७ में चरेंगे और मोटों के उजाड़ खेतों को परदेशी खा लेंगे॥

१८ उन पर संताप जो झूठ की रस्सियों से अधर्म्म को खींचते हैं और पाप को माना गाड़ी की रस्सी से। जो कहते १९ हैं कि वह शीघ्र करे फुर्ती से अपना काम करे जिसतें हम देखें और इसराएल के धर्म्ममय का मंत्र समीप आये और पहुंचे जिसतें हम जानें॥

२० उन पर संताप जो बुरे को भला

और भले को बुरा कहते हैं अंधियारा उंजियाले की संती और उंजियाला अंधियारे की संती रखते हैं कडुआ मिठास की संती और मिठास कडुए की संती
२१ रखते हैं। उन पर संताप जो अपनी दृष्टि में बुद्धिमान और अपनी समझ में
२२ चतुर हैं। उन पर संताप जो मदिरा पीने में बली और अमल की बस्तु
२३ मिलाने में बीर मनुष्य हैं। जो दुष्ट को घूस के कारण से सच्चा ठहराते हैं और धर्म्मियों का धर्म्म उन से दूर करते हैं॥

२४ सो जिस रीति आग की लवर भूसे को खा लेती है और जलती हुई घास गिर जाती है उसी रीति उन की जड़ सर्बथा सड़ जायेगी और उन का फूल धूल की नाईं उड़ जायेगा क्योंकि उन्हों ने सेनाओं के परमेश्वर की ब्यवस्था को तुच्छ जाना और इसराएल के धर्म्ममय
२५ के बचन की निन्दा किई है। इस लिये परमेश्वर का कोप अपने लोगों पर भड़का है और उस ने अपना हाथ उन के बिरोध में बढ़ाया और उन्हें मारा और पहाड़ कांपे और उन की लोथें उस कूड़े की नाईं हैं जो मार्गों के मध्य में है इन सब के उपरान्त उस का क्रोध दूर नहीं हुआ परन्तु उस का हाथ अब लों फैला हुआ है॥

२६ और वह जातिगणों की ओर दूर से झंडा उठाता है और पृथिवी के अंत से उस के लिये सीटी बजाता है और देखो
२७ शीघ्र हां फुरती से वह आयेगा। उस में कोई थका और ठोकर खानेहारा नहीं है वह न ऊंघेगा न सोवेगा और उस का पटुका नहीं खुलता और उस
२८ के जूतों का तस्मा नहीं टूटा। जिस के बाण चोखे किये गये और उस के सारे धनुष खींचे गये उस के घोड़ों के खुर चकमाक के पत्थर की नाईं गिने गये और उस के पहिये बगूले के समान।
२९ उस की गर्ज सिंहिनी के समान है और वह सिंह के बच्चों की नाईं गर्जेगा और गुर्रायेगा और अहेर को पकड़ेगा और उसे अनम्मत पहुंचायेगा और कोई छुड़ा-
३० नेहारा न होगा। और वह उस दिन समुद्र की गड़गड़ाहट की नाईं उस पर गड़गड़ावेगा और वह पृथिवी की ओर देखेगा और देखो अंधकार सकेती और उंजियाला उस के मेघों में अंधियारा हो गया॥

छठवां पर्ब्ब।

१ जिस बरस उज्जियाह राजा मर गया मैं ने परमेश्वर को एक ऊंचे और महान सिंहासन पर बैठे देखा और उस के बस्त्र के खूंट मन्दिर को भर देते
२ थे। सराफीम उस के ऊपर खड़े थे और हर एक के छः छः पंख थे हर एक दो पंखों से अपने मुंह को ढांपे रहा और दो से अपने पांवों को ढांपे रहा
३ और दो से उड़ता रहा। और एक ने दूसरे को पुकारा और कहा पवित्र पवित्र पवित्र सेनाओं का परमेश्वर सारी पृथिवी उस के बिभव से परिपूर्ण है॥

४ तब उस पुकारनेवाले के शब्द से चौखटों की नेवें हिल गईं और घर
५ धूएं से भर गया। तब मैं ने कहा कि हाय मुझ पर क्योंकि मैं नष्ट हुआ क्योंकि मैं अशुद्ध होंठों का मनुष्य हूं और अशुद्ध होंठ जाति के मध्य में बसता हूं क्योंकि मेरी आंखों ने राजा सेनाओं के परमे-
६ श्वर को देखा है। तब उन सराफीमों में से एक मेरी ओर उड़ा जिस के हाथ में अंगारा था उस ने चिमटे से उसे
७ यज्ञबेदी पर से उठा लिया। और उस ने उसे मेरे मुंह पर लगा दिया और कहा कि देख इस ने तेरे होंठों को

हूआ है और तेरे कुकर्म्म दूर हुए और तेरे पाप का प्रायश्चित्त किया जायेगा ॥

८ तब मैं ने प्रभु का शब्द यह कहते हुए सुना कि मैं किस को भेजूं और कौन हमारी ओर से जायेगा और मैं ने कहा कि देख मैं उपस्थित हूं मुझे भेज ॥

९ और उस ने कहा कि जा और इस जाति से कह कि सुनते रहो पर न समझो और देखते रहो पर न जानो । १० इस जाति के मन को मोटा बना और उस के कानों को भारी कर और उस की आंखों को मूंद न हो कि वह अपनी आंखों से देखे और अपने कानों से सुने और उस का मन समझे और वह फिरे और चंगी हो ॥

११ और मैं ने कहा कि हे प्रभु यह कब लों और उस ने कहा कि यहां लों कि बसनेहारों के न होने से नगर उजाड़ हो जायें और मनुष्यों के न होने से घर और भूमि उजाड़ हो जाये और तहस-नहस । १२ और यहां लों कि परमेश्वर मनुष्यों को दूर करे और इस देश में परती भूमि बहुत हो । १३ और अब भी इस में दसवां भाग बच रहेगा और वह फिर नाश किया जायेगा पर बुत्मवृक्ष और बलूत की नाईं जिन में गिरने के समय जमने की शक्ति रह जाती है वैसा ही पवित्र बंश उस के जमने की शक्ति होगा ॥

सातवां पर्ब्ब ।

१ और यहूदाह के राजा यूताम के बेटे उज्जियाह के बेटे आखज के समय में ऐसा हुआ कि अराम का राजा रसीन और इसराएल का राजा रमलियाह का बेटा फिकः यरूसलम पर चढ़ आया जिसतें उस्से युद्ध करे पर उस्से युद्ध न कर सका । २ और दाऊद के घराने को यह संदेश दिया गया कि अराम इफरायम पर सहारा करता है और उस का मन और उस के लोगों का मन हिल गया जैसे बन के वृक्ष पवन के साम्हने हिल जाते हैं । ३ तब परमेश्वर ने यसाअियाह से कहा कि तू और तेरा बेटा शिआरयाशूब ऊपर के पोखरे की नाली के कोने पर धोबी के खेत की सड़क पर आखज से मिलने को जा ॥

४ और उस्से कह कि सोचेत हो और स्थिर रह मत डर और तेरा मन इन लकटियों की धूआंवाली लूकों के कारण से न घबराये जब रसीन और अराम और रमलियाह के बेटे का क्रोध भड़के । ५ इस लिये कि अराम इफरायम और रमलियाह के बेटे ने यह कहके तेरे बिरोध में कुबिचार किया है । ६ कि हम यहूदाह पर चढ़ें और उसे सतावें और उस में अपने अयमान होने के लिये फूट डालें और उस के मध्य एक राजा को सिंहासन पर बैठावें अर्थात् ताबिएल के बेटे को ॥

७ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि यह न ठहरेगा और न ऐसा होगा । ८ क्योंकि अराम की राजधानी दमिशक है और दमिशक का अध्यक्ष रसीन और पैंसठ बरस के भीतर इफरायम जाति होने से तोड़ा जायेगा । ९ और इफरायम की राजधानी समरून है और समरून का अध्यक्ष रमलियाह का बेटा यदि तुम बिश्वास न लाओगे तो अवश्य कि चैन में न रहोगे ॥

१० और परमेश्वर ने फिर आखज से ये बातें कहते हुए बातें किईं । ११ कि परमेश्वर अपने ईश्वर के पास से अपने लिये चिन्ह मांग चाहे नीचाई से मांग चाहे ऊंचाई से । १२ पर आखज ने कहा कि मैं न मांगूंगा और परमेश्वर को परीक्षा न करूंगा ॥

१३ और उस ने कहा कि हे दाऊद के घराने सुनो क्या मनुष्यों को थकाना तुम्हारे लिये थोड़ा है जो तुम मेरे ईश्वर को भी थकाया चाहते हो। १४ इस लिये परमेश्वर आप तुम को एक चिन्ह देगा देखो वह कुआंरी गर्भिणी है और बेटा जनती है और उस का १५ नाम इम्मानूएल रखती है। यह मक्खन और मधु खायगा जब लों कि बुराई से घिन करना और भलाई को चुन लेने में १६ बिराव न जाने। क्योंकि उस्से पहिले कि वह लड़का बुराई से घिन करना और भलाई को चुन लेने का ज्ञान जाने वह भूमि जिस के दो राजाओं के कारण से तू भयमान है उजाड़ हो जायेगी॥

१७ परमेश्वर तुझ पर और तेरे लोगों पर और तेरे पिता के घराने पर ऐसे समय लावेगा जो उस दिन से नहीं आये जब इफरायम यहूदाह से अलग हुआ अर्थात् असूर के राजा को॥

१८ और उस दिन ऐसा होगा कि परमेश्वर उस मक्खी के लिये जो मिस्र की नदियों के तीर पर है और उस बर्रे के लिये जो असूर की भूमि में है सीटी १९ बजायेगा। और वे आवेंगे और वे सब के सब कराड़ों की निचाइयों में और चटानों की दरारों में और सारे कटीले स्थानों और सारे चराइयों के स्थानों में बैठेंगे॥

२० उसी दिन प्रभु उस छुरे से जो नदी के पार से भाड़े में लिया गया अर्थात् असूर के राजा से सिर और पांवों के बाल को मूंड़ेगा और दाढ़ी को भी वह मूंड़ डालेगा॥

२१ और उस दिन ऐसा होगा कि एक मनुष्य एक छोटी गाय और दो भेड़ २२ बचा रक्खेगा। और ऐसा होगा कि दूध की अधिकाई से वह मक्खन खायगा क्योंकि हर एक जो इस भूमि में बच रहेगा सो मक्खन और मधु खाया करेगा॥

२३ और उस दिन ऐसा होगा कि हर एक स्थान जहां सहस्र रुपये की सहस्र लतायें होंगी सो कांटे और कटीले हो जायेंगी। २४ लोग धनुष और बाण लेके वहां आवेंगे क्योंकि यह सारी भूमि कांटे और कटीले होगी। २५ और सारे पहाड़ जो कुदाली से खोदे जाते हैं तू कांटे और कटीले के भय से उधर न आयेगा और गाय बैल वहां भेजे जायेंगे और भेड़ें उन्हें रौंदेंगी॥

आठवां पर्ब्ब।

१ और परमेश्वर ने मुझ से कहा कि अपने लिये एक बड़ी पट्टी ले और उस पर मनुष्य की लेखनी से लिख कि महेरशालालहाशबज के लिये। २ और मैं अपनी साक्षी के लिये बिश्वस्त साक्षियों को लूंगा अर्थात् ऊरियाह याजक और यबरकियाह के बेटे जकरियाह को। ३ और मैं ने आगमज्ञानिनी से समीपता किई और वह गर्भिणी हुई और बेटा जनी और परमेश्वर ने मुझ से कहा कि उस का नाम महेरशालालहाशबज रख। ४ क्योंकि उस्से आगे कि वह लड़का बप्पा अम्मा बोल सके दमिशक का धन और समरून की लूट असूर के राजा के आगे उठा ले जायेंगे॥

५ और परमेश्वर ने यह कहते हुए फिर मुझ से बातें किईं। ६ इस कारण से कि इस जाति ने सिलोआह के पानी को जो धीरे बहता है निरादर किया है और रसीन और रमलियाह के बेटे के विषय उस को आनन्द है। ७ तो इस लिये देखो प्रभु उन पर नदी के पानी को जो तरखा और बहुत है चढ़ा लायेगा अर्थात् असूर के राजा और उस की

सारी महिमा को और वह अपने सारे सोतों पर चढ़ आयेगा और अपने सारे ८ कड़ारों पर बढ़ि निकलेगा। और यहूदाह के भीतर से जायेगा बाढ़ के साथ बहेगा और चला जायेगा गले लों पहुंचेगा और उस के परों के फैलाओं से हे इम्मानूएल तेरी भूमि सर्वथा भर जायेगी॥

९ हे लोगो दुष्टता करो और हार जाओ और हे पृथिवी के सारे दूरदेशियो कान धरो अपनी कटि बांधो और हार जाओ अपनी कटि बांधो और हार १० जाओ। परामर्श करो और वह खण्डन किया जायेगा बात बनाओ और न ठहरेगी क्योंकि सर्वशक्तिमान हमारे संग ११ है। क्योंकि परमेश्वर ने मुझ से यों कहा जब उस का हाथ मुझ पर प्रबल था और मुझे जनाया कि इन लोगों के १२ मार्ग पर न चलूं यह कहते हुए। कि तुम उस सब को युक्ति मत कहो जिसे ये लोग युक्ति कहते हैं और जिस्से वे डरते हैं न डरो और न भय रक्खो। १३ सेनाओं का परमेश्वर उसी को पवित्र जानो और उसी से डरो और उसी से १४ भयमान होओ। और वह पवित्र जाना जायेगा और इसराएल के दोनों घरानों के लिये ठोकर का पत्थर और ठेस की चटान और यरूसलम के निवासियों के १५ लिये फंदा और जाल। और बहुतेरे उन में से ठोकर खायेंगे और गिरेंगे और टूट जायेंगे और जाल में फसेंगे और पकड़े १६ जायेंगे। मेरे शिष्यों में साक्षी के पत्र को बंद कर व्यवस्था पर छाप कर॥

१७ और मैं परमेश्वर की बाट जोहता रहूंगा जो अपना मुंह यअकूब के घराने से छिपाता है और उस की आशा करता १८ रहूंगा। देख मैं और वे लड़के जिन्हें परमेश्वर ने मुझे दिया है सेनाओं के परमेश्वर की ओर से जो सैहून के पहाड़ में रहता है इसराएल में चिन्हों और आश्चर्य्यों के लिये हैं॥

और जब वे तुम से कहें कि टोनहों १९ और ओझों से प्रश्न करो जो चहचहाते और बड़बड़ाते हैं तो कहो क्या लोग अपने ईश्वर से प्रश्न न करें क्या जीवतों के लिये मृतकों से प्रश्न करें। व्यवस्था २० और साक्षी के पत्र से प्रश्न करो यदि वे इस बचन के समान न कहें तो वह ऐसा मनुष्य है जिस के लिये बिहान नहीं है। और वे उस देश में दुःखी और २१ भूखे होके फिरेंगे और ऐसा होगा कि जब वे भूखे होंगे तो अपने तईं खिजावेंगे और अपने राजा और अपने ईश्वर को धिक्कारेंगे और ऊपर देखेंगे। और पृथिवी २२ की ओर ताकेंगे और देखो सकेती और अंधकार सकेती और अंधकार की अंधियारी हटाई गई॥

क्योंकि जो भूमि अभी कष्ट में है वह २३ सदा अंधकार में न रहेगी जैसा कि अगिले समय ने जबूलून की भूमि और नफताली की भूमि को तुच्छ किया वैसा ही पिछला समय समुद्र के मार्ग यरदन के तीर अन्यदेशियों के जलील को प्रतिष्ठित करेगा॥

नवां पर्व्व।

जो लोग अंधियारे में चलते हैं उन्हों १ ने बड़ी ज्योति देखी है जो मृत्यु की छाया के देश में रहते हैं उन पर ज्योति चमक गई है। तू ने जातिगण को २ बढ़ाया है तू ने इस का आनन्द अधिक किया है वे तेरे आगे आनन्दित होते हैं उस आनन्द के समान जो लवनी के समय होता है और जिस रीति लोग लूट बांटने में आनन्द करते हैं। कि तू ने उस के भारी जूए को और उस के कांधे के लठ को उस के हांकनेहारे की छड़ी

को मिदियान के दिन की नाईं तोड़ ४ डाला है। क्योंकि जो हथियारबन्द युद्ध में आता है उस के सारे हथियार और जो वस्त्र कि लोहू में डूबे हैं सो जलाये जायेंगे और ईंधन हो जायेंगे॥

५ क्योंकि हमारे लिये एक बालक उत्पन्न हुआ हम को एक पुत्र दिया गया और प्रभुता उस के कांधे पर है और उस का नाम आश्चर्य्य मंत्री सर्व्वशक्तिमान सनातन का पिता कुशल का प्रधान कह- ६ लाता है। दाऊद के सिंहासन पर और उस के राज्य पर इस राज्य की बढ़ती और कुशल का अन्त न होगा जिसतें न्याय और धर्म्म के साथ अब से सदा लों उसे स्थिर और स्थापना दे सेनाओं के परमेश्वर का तेज यह करेगा॥

७ परमेश्वर ने यअकूब में एक वचन भेजा और वह इसराएल पर उतरा। ८ और वे उसे जानते हैं सारे लोग अर्थात् इफरायम और समरुन के बासी जो गर्व और मन के अहंकार के साथ कहते हैं। ९ कि ईंटें गिर गईं पर हम कटाऊ पत्थरों के घर बनायेंगे गूलर के वृक्ष काटे गये पर हम उन की संती देवदारु १० वृक्ष लगायेंगे। और परमेश्वर उस के ऊपर रसीन के सतानेहारों को उठाता है और उस के बैरियों को भी भड़का- ११ येगा। अर्थात् अराम आगे से और फिलिस्त पीछे से और वे इसराएल को मुंह फैलाके भक्षण कर जायेंगे तथापि इस का क्रोध उतर नहीं गया पर उस का हाथ अब लों फैला हुआ है॥

१२ और लोग अपने मारनेहारे की ओर नहीं फिरे हैं और सेनाओं के परमेश्वर १३ को उन्हों ने नहीं ढूंढ़ा है। और परमेश्वर ने एक ही दिन में इसराएल के सिर और पूंछ ताड़ और नरकट को १४ काट डाला है। जो महान और प्रतिष्ठित है वही सिर है और जो आगमज्ञानी झूठ सिखलाता है सोई पूंछ है। क्यों- १५ कि इस जाति के अगुआ भटकानेहारे हुए हैं और जिन्हों ने उन से शिक्षा पाई वे नष्ट हो गये। इस लिये प्रभु उस के १६ तरुणों पर आनन्दित न होगा और उस के अनाथों पर और उस की विधवों पर दया न करेगा क्योंकि वे सब बेधर्म्म और कुकर्म्मी हैं और हर एक मुंह मूढ़ता की बातें करता है तथापि उस का क्रोध उतर नहीं गया पर उस का हाथ अब लों फैला हुआ है॥

क्योंकि दुष्टता आग की नाईं जलती १७ है कांटे और कटीले को भस्म करती है तब बन की झाड़ी में बर उठती है और वे लोग धूयें का खंभा होकर चक्र मारते हुए ऊपर चढ़ते हैं। सेनाओं के १८ परमेश्वर के क्रोध के मारे यह देश अंधियारा हो गया और लोग ईंधन की नाईं हो गये लोग एक दूसरे पर दया नहीं करते हैं। और वे दहिनी ओर १९ नोचते हैं और भूखे रहते हैं और बाईं ओर खा जाते हैं और वे लोग तृप्त नहीं हुए वे हर एक अपने बाहु का मांस खाते हैं। अर्थात् मुनस्सी इफरायम को २० और इफरायम मुनस्सी को और वे मिलके यहूदाह के विरुद्ध हैं तथापि उस का क्रोध उतर नहीं गया पर उस का हाथ अब लों फैला हुआ है॥

दसवां पर्ब्ब

उन पर संताप जो अन्याय की १ व्यवस्था को लिखते हैं और उस अंधेर के बिचार लिखते हैं जिसे उन्हों ने स्थापन किया है। जिसतें दीनों को २ न्याय से दूर रक्खें और मेरे लोगों के दरिद्रों का पद छीन लें जिसतें विधवों का घात करें और वे अनाथों को लूटते हैं। और पलटा लेने के दिन और उस ३

बिपत्ति में जो दूर से आवेगी तुम क्या करोगे तुम सहायता के लिये किस के पास भागोगे और कहां अपना बिभव ४ रक्खोगे । यद्यपि वे बंधुओं के नीचे नहीं झुके तथापि तुम्हारे अध्यक्ष घात किये हुओं के नीचे गिर पड़ेंगे पर तौभी इस सब के उपरान्त उस का क्रोध उतर नहीं गया परन्तु उस का हाथ अब लों फैला हुआ है ॥

५ असूर पर संताप जो मेरे क्रोध का सोंटा है और जो लठ उन के हाथ में ६ है वह मेरा कोप है । मैं उसे अधर्म्मी जाति पर भेजूंगा और उन लोगों के बिरोध में जिन पर मेरा क्रोध है आज्ञा देऊंगा जिसतें नाश करे और लूट ले और उस जाति को मार्गों की कीच की ७ नाईं लताड़े । परन्तु वह ऐसा सोच न रक्खेगा और उस का मन ऐसी चिन्ता न करेगा क्योंकि उस के मन में है कि नाश करे और बहुत से जातिगणों को काट डाले ॥

८ क्योंकि वह कहता है कि क्या मेरे अध्यक्ष सब के सब राजा नहीं हैं । ९ क्या कलनो करकमीस की नाईं नहीं क्या हमात अरपाद की नाईं नहीं अथवा समरून दमिशक की नाईं नहीं । १० जैसा मेरे हाथ ने मूर्त्तिपूजकों के राज्यों को पाया जिन की खोदी हुई मूरतें यरूसलम और समरून की मूर्त्तों से कहीं ११ अधिक थीं । क्या जैसा मैं ने समरून और उस की मूर्त्तिन से किया है वैसा ही मैं यरूसलम और उस की मूर्त्तिन से न करूंगा ॥

१२ और ऐसा होगा कि प्रभु सैहून के पहाड़ के पास और यरूसलम के पास उस के समस्त कार्य्य को काट डालेगा हां वहां मैं असूर के राजा के गर्व्वित अंतःकरण के फल की और उस की ऊंची आंखों के बिभव का दण्ड देऊंगा ॥

१३ क्योंकि वह कहता है कि मैं ने अपनी भुजा के बल से यह सब किया है और अपनी बुद्धि से क्योंकि मैं बुद्धिमान हूं और जातिगणों के सिवानों को सरकाता हूं और उन के भंडारों को लूटता हूं और बलवानों की नाईं होकर उन के बसनेवालों को गिरा देता हूं । १४ और मेरे हाथ ने घोंसले की नाईं जातिगणों के धन को पाया है और जैसा कोई पड़े हुए अंडों को समेटता है वैसा ही मैं ने समस्त पृथिवी को समेट लिया और कोई पंख फैलानेहारा और मुंह खोलनेहारा और चहचहानेहारा न था ॥

१५ क्या कुल्हाड़ा उस के आगे जो उस्से काटता है डींग मारेगा अथवा आरा आराखिचवैये के ऊपर अपने तईं बढ़ायेगा यह ऐसा है कि लठ अपने उठानेहारों को हिलावे और ऐसा कि छड़ी उसे उठाये जो लकड़ी नहीं है । १६ इस कारण प्रभु सेनाओं का परमेश्वर उस के मोटों पर दुर्ब्बलता भेजेगा और उस की महिमा के नीचे एक जलन आग की तपन की नाईं बरेगी । १७ और इसराएल की ज्योति आग हो जायेगी और उस का धर्म्ममय लवर और वह उस के कांटे और कटीले को एक ही दिन में खा जायेगा । १८ और उस के जंगल और उस की बारी की सुन्दरता को वह प्राण से मांस लों भस्म करेगा और रोगी के क्षय हो जाने के समान होगा । १९ और उस के बन के रहे हुए बृक्ष थोड़े होंगे और बालक उन्हें लिख सकेगा ॥

२० और उस दिन ऐसा होगा कि इसराएल के बचे हुए और यअकूब के

घराने के बचे हुए अपने मारनेहारे पर फिर सहारा न करेंगे परन्तु परमेश्वर इसराएल के धर्म्ममय पर सच्चाई के २१ साथ भरोसा करेंगे । बचे हुए यअकूब के बचे हुए सर्ब्बशक्तिमान अति बलवान २२ की ओर फिरेंगे । क्योंकि यद्यपि तेरे लोग हे इसराएल समुद्र की बालू की नाईं होंगे पर उस में से केवल बचे हुए फिरेंगे उन का बिनाश ठहरा हुआ है २३ जो धर्म्म के साथ बहि चलेगा । क्योंकि सेनाओं का प्रभु सारी भूमि के मध्य में बिनाश हां ठहराया हुआ बिनाश प्रगट करनेवाला है ॥

२४ इस कारण सेनाओं का प्रभु यों कहता है कि हे मेरी जाति जो सैहून में बस्ती है असूर से मत डर वह तो तुझे लठ से मारेगा और अपनी छड़ी तेरे ऊपर मिस्र की नाईं उठायेगा । २५ क्योंकि थोड़ी ही देर और है कि क्रोध थम जाये और मेरा कोप उन के २६ बिनाश के लिये चले । और सेनाओं का परमेश्वर उस के ऊपर कोड़ा उठायेगा जिस रीति कि मिदयान ऊरेब की पहाड़ी पर मारा गया और उस की छड़ी फिर नदी के ऊपर होगी और वह २७ उसे मिस्र की नाईं उठावेगा । और उस दिन ऐसा होगा कि उस का बोझ तेरे कांधे पर से और उस का जूआ तेरे गले पर से दूर हो जायेगा और वह जूआ तेल के साम्हने तोड़ा जायेगा ॥

२८ वह ऐयत लों आया है मिजरून से पार गया है मिकमास में अपनी सामा २९ सौंपता है । वे घाटी से पार गये जिबआ में रात भर टिके रामः कांपता है जिबिआ साऊल भागा जाता है । ३० हे जल्लीम की पुत्री चीख मार हे लैस ३१ सुन हाय शोकमय अनातूत । मदमनः हट गया जबीम के बासी अपनी सामा हटाते हैं । आज वह नूब में खड़ा ३२ हुआ चाहता है और वहां से सैहून के पहाड़ के घर यरूसलम के पहाड़ पर अपना हाथ हिलायेगा ॥

देखो प्रभु सेनाओं का परमेश्वर इस ३३ बड़े पेड़ की डालों को भयानक रीति से छांटनेहारा है और जो पेड़ ऊंचाई में लंबे हैं सो काट डाले जायेंगे और जो ऊंचे हैं सो नीचे किये जायेंगे । और ३४ वह इस बन की झाड़ी को लोहे से काट डालेगा और यह लुबनान बलवन्त के हाथ से गिर जावेगा ॥

ग्यारहवां पर्ब्ब ।

और यस्सी के ठूंठ से एक कोंपल १ निकलेगी और उस की जड़ों से एक डाली उगेगी । और उस पर परमेश्वर २ का आत्मा रहेगा ज्ञान और बुद्धि का आत्मा मंत्र और सामर्थ्य का आत्मा ज्ञान और परमेश्वर के भय का आत्मा । और वह परमेश्वर के भय की बास ३ सूंघेगा और अपनी आंखों के देखने के समान न्याय न करेगा और अपने कानों के सुन्ने के अनुसार चुकाव न करेगा । परन्तु वह धर्म्म के साथ दीनों का ४ न्याय करेगा और सच्चाई के संग पृथिवी के नम्रों का बिचार करेगा और वह अपने मुंह की लाठी से पृथिवी को मारेगा और अपने होंठों के श्वास से दुष्ट को मार डालेगा । और धर्म्म उस ५ की कटि का पटुका होगा और सच्चाई उस की कटि का बंधन ॥

और भेड़िया मेम्ना के संग रहेगा और ६ चीता बकरी के बच्चे के संग बैठेगा और बछिया और सिंहबच्चे और पुष्ट पशु साथ साथ और नन्हा बालक उस की अगुआई करेगा । और गाय और ७ भालुक मिलके चरेंगे उन के बच्चे साथ

साथ बैठेंगे और सिंह बैल की नाईं
८ भूसा खायेगा। और दूधपीवक बालक
सांप की बांबी पर खेलेगा और दूध
छुड़ाया हुआ लड़का काले की बांबी
९ में अपना हाथ डालेगा। वे मेरे पवित्र
पर्वत पर हानि न करेंगे और न
बिगाड़ेंगे क्योंकि पृथिवी परमेश्वर के
ज्ञान से परिपूर्ण हो गई जिस रीति
से पानी समुद्र को ढांपता है॥

१० और उस दिन यस्सी की जड़ जो
खड़ी होती है लोगों के लिये झंडा होगी
जातिगण उस का पीछा करेंगे और उस
का आश्रय बिभवमय होगा॥

११ और उस दिन ऐसा होगा कि प्रभु
दूसरी बार अपना हाथ बढ़ायेगा जिसतें
अपने लोगों के बचे हुओं को मोल ले
जो असूर और मिस्र और फतरूस और
कूश और ऐलाम और सिनआर और
हमात और समुद्र के टापुओं से बच
१२ रहेंगे। और वह देशगणों की दृष्टि में
झंडा उठायेगा और निकाले हुए इस-
राएलियों को एकट्ठे करेगा और बिथरे
हुए यहूदियों को पृथिवी के चारों खूंट
१३ से बटोर लेगा। और इफ्रायम का डाह
मिट जायेगा और यहूदाह के बिरोधी
काट डाले जायेंगे इफ्रायम यहूदाह से
डाह न रक्खेगा और यहूदाह इफ्रायम
१४ को कष्ट न पहुंचावेगा। और वे पच्छिम
की ओर फिलिस्तियों के कन्धे पर झपट्ट
मारेंगे वे साथ साथ पूरब के बासियों
को लूटेंगे अदूम और मोअब पर हाथ
डालेंगे और अम्मून के संतान उन के
१५ आधीन होंगे। और परमेश्वर मिस्र की
नदी की जीभ को सुखा डालेगा और
अपनी आंधी के बल से अपना हाथ
नदी पर हिलावेगा और उसे सात नाले
कर देगा और अपने लोगों को जूते
१६ पहिने हुए उस में चलायेगा। और उस
के लोगों के बचे हुओं के लिये जो असूर
से बच रहेंगे एक सड़क होगी जिस
रीति इसराएल के लिये थी जिस दिन
कि वह मिस्र की भूमि से चढ़ा॥

बारहवां पर्ब्ब।

१ और तू उस दिन कहेगा कि हे पर-
मेश्वर मैं तेरा धन्यबाद करूंगा क्योंकि
यद्यपि तू मुझ पर क्रुद्ध हुआ तथापि
तेरा क्रोध उतर गया और तू मुझे शांति
२ देता है। देखो सर्बशक्तिमान मेरी मुक्ति
है मैं आशा रक्खूंगा और न डरूंगा
क्योंकि मेरा बूता और मेरा गान ईश्वर
परमेश्वर है और वह मेरी मुक्ति हुआ
३ है। और तुम आनन्द के साथ मुक्ति के
सोतों से पानी भरोगे॥

४ और तुम उस दिन कहोगे कि पर-
मेश्वर का धन्य मानो उस का नाम
पुकारो जातिगणों में उस के कार्य्य प्रगट
करो उन्हें चेत दिलाओ कि उस का
५ नाम महान है। परमेश्वर की स्तुति
में गान करो क्योंकि उस ने महत कार्य्य
किया है समस्त पृथिवी में यह प्रगट
६ हो जाये। हे सैहून की निवासिनी चिल्ला
और ललकार क्योंकि तेरे मध्य इसराएल
का धर्म्ममय महान है॥

तेरहवां पर्ब्ब।

१ बाबुल का बोझ जिसे अमूस के
बेटे यशश्रियाह ने दर्शन में देखा।
२ नंगे पहाड़ पर झंडा उठाओ उन को
और शब्द ऊंचा करो हाथ हिलाओ
और वे अध्यक्षों के फाटकों में आवें।
३ मैं ने अपने ठहराए हुओं को आज्ञा
किई है हां अपने कोप के लिये अपने
बीरों को अपने अभिमानी घमण्ड कर-
वैयों को बुलाया है॥

४ पहाड़ों में भीड़ का शब्द बड़ी
जाति के समान एकट्ठे हुए जातिगणों
के राज्यों के हुल्लड़ का शब्द सेनाओं

का परमेश्वर लड़ाई के लिये सेना की ५ गिन्ती लेता है। दूर देश से स्वर्गों के अन्त से आते हैं परमेश्वर और उस के क्रोध के हथियार जिसतें सारे देश को नाश करें॥

६ बिलाप करो क्योंकि परमेश्वर का दिन समीप है शक्तिमान की ओर से ७ वह शक्ति के समान आयेगा। इस लिये सारे हाथ नीचे हो जायेंगे और हर ८ मनुष्य का मन पिघल जायेगा। और वे भयातुर होंगे शोक और जन्न की पीड़ा उन्हें पकड़ लेंगी जन्नेहारी स्त्री के समान वे ऐंठेंगे वे हर एक अपने पड़ोसी पर आश्चर्य्यित होंगे उन के मुंह लवर के मुंह होंगे॥

९ देखो परमेश्वर का दिन आता है कठोरता और जलजलाहट और ज्वलत्-कोप से भरा जिसतें देश को उजाड़ करे और वह उस के पापियों को उस १० में से नाश करेगा। क्योंकि स्वर्ग के तारे और उस के नक्षत्र अपनी ज्योति न देंगे सूर्य्य उदय होते होते अंधकार हो गया है और चन्द्रमा अपनी ज्योति ११ न देगा। और मैं जगत को उस की बुराई का और दुष्टों को उन के कुकर्म्म का दण्ड दूंगा और अभिमानियों के अभिमान को मिटा दूंगा और भयंकरों १२ के अहंकार को नीचा करूंगा। मैं मनुष्य को चोखे सोने से और पुरुष को ओफीर के सोने से अधिक बहुमूल्य १३ बनाऊंगा। इस कारण मैं स्वर्गों को कंपाऊंगा और पृथिवी अपने ठिकाने से टल जायेगी सेनाओं के परमेश्वर की जलजलाहट से और उस के ज्वलत्-१४ कोप के दिन में। और ऐसा होगा कि खेदी हुई हरिणी के समान और उस झुंड की नाईं जिस का बटुरवैया कोई नहीं है वे हर एक अपनी जाति की ओर फिरेंगे और हर एक अपने देश की ओर भागेंगे। हर एक जो १५ वहां पाया जायेगा सो बेधा जायेगा और हर एक जो उन से मेल रक्खेगा सो खड्ग से मारा पड़ेगा। और उन के १६ बालक उन की आंखों के आगे पटके जायेंगे और उन के घर लूटे जायेंगे और उन की पत्नियों की पत लिई जायेगी॥

१७ देखो मैं उन के बिरोध में मादियों को उठाता हूं जो रूपे को कुछ न समझेंगे और सोने से आनन्दित न होंगे। और धनुष १८ लड़कों को टुकड़े टुकड़े कर डालेंगे और वे गर्भ के फल पर दया न करेंगे उन की आंखें बालकों पर मया न करेंगी। १९ और बाबुल जो राज्यों का सौंदर्य और कसदियों की सुन्दरता और बिभव है उस की दशा ईश्वर के सदूम और अमूरा २० के उलट देने की नाईं होगी। वह कभी बसाया न जायेगा और पीढ़ी से पीढ़ी लों कोई उस में न बसेगा और न वहां कोई अरब डेरा खड़ा करेगा और न चरवाहे वहां अपने झुंडों को २१ बैठायेंगे। पर वहां बन्यपशु बैठेंगे और उन के घर भयानक शब्दों से भर जायेंगे और वहां शुतरमुर्ग रहेंगे और बड़े बाल-२२ वाले पशु वहां नाचेंगे। और भेड़िये उस के भवनों में और गीदड़ सुन्दर स्थानों में हूहा करेंगे और उस का समय आने के समीप है और उस के दिन बढ़ाए न जायेंगे॥

चौदहवां पर्ब्ब

१ क्योंकि परमेश्वर यअकूब पर दया करेगा और फिर इसराएल को चुनेगा और उन्हें उन के देश में चैन देगा और परदेशी उन से आ मिलेंगे और परदेशी यअकूब के घराने से मिल २ जायेंगे। और जातिगण उन्हें ले लेंगे

और उन्हें उन के स्थान में पहुंचावेंगे और इसराएल का घराना परमेश्वर के देश में उन्हें अधिकार में लेगा जिसतें उस के दास और दासियां हों और वे अपने बंधुआ करवैयों को बंधुआ करेंगे और अपने अंधेरियों पर प्रभुता करेंगे॥

३ और ऐसा होगा कि जिस दिन परमेश्वर तुझे तेरे दुःख से और तेरी घबराहट से और उस कठोर दासता से जो
४ तुझ से लिई गई चैन देगा। तब तू बाबुल के राजा पर यह दृष्टान्त उठावेगा और कहेगा कि बलवान क्योंकर नष्ट हो गया सोनहरा नगर नष्ट हो गया।
५ परमेश्वर ने दुष्टों का लठ और आज्ञा-
६ कारियों का दण्ड तोड़ डाला है। जो जातिगणों को क्रोध के साथ उस मार से जो थमती नहीं मारता था जो जातिगणों पर कोप के साथ उस अंधेर से जिसे कोई नहीं रोकता था प्रभुता
७ करता था। सारी पृथिवी बिश्राम और चैन में है वे आनन्द की ललकार में
८ फूट निकलते हैं। सरो के वृक्ष भी तेरे बिषय आनन्द करते हैं और लुबनान के देवदारु और यह कहते हैं इस लिये कि तू गिराया गया कोई लकड़हारा
९ हमारे बिरुद्ध न चढ़ेगा। पाताल नीचे से तेरे लिये हिल उठा है जिसतें तेरे आने की अगौनी करे वह तेरे लिये रफाईम को पृथिवी के सारे अध्यक्षों को जगाता है वह जातिगणों के सारे राजाओं को उन के सिंहासनों पर से
१० उठाता है। वे सब कोई उत्तर देंगे और तुझ से कहेंगे कि तू भी हमारे समान दुर्बल हो गया हमारे समान
११ बनाया गया। तेरा ऐश्वर्य्य औ बिभव तेरी बीणों का बजना पाताल में गिराया गया तेरे नीचे कृमि बिछाया गया तेरा ओढ़ना कीड़ा है। हे शुक्र प्रातःकाल
१२ के पुत्र तू क्योंकर स्वर्ग पर से गिर पड़ा तू कि जातिगणों पर अंधेर करता था
१३ क्योंकर पृथिवी पर गिराया गया। और तू अपने मन में कहता था कि मैं स्वर्ग पर चढ़ूंगा सर्बशक्तिमान के तारों के ऊपर अपना सिंहासन उठाऊंगा और मंडली के पहाड़ पर उत्तर की अलंग में बैठूंगा।
१४ मैं मेघों की ऊंचाइयों पर चढ़ूंगा अपने तईं अति महान के तुल्य बनाऊंगा।
१५ पर तू केवल पाताल में गढ़हे की गहि-
१६ राइयों में गिराया जायगा। जो तुझे देखेंगे सो तुझ को घूरेंगे तुझ पर ध्यान से दृष्टि करेंगे और कहेंगे क्या यह वही मनुष्य है जो पृथिवी को हिलाता और
१७ राज्यों को कंपाता था। जिस ने जगत को जंगल के समान बनाया और उस के नगरों को उजाड़ किया उस के बंधुओं को उन के घर की ओर न जाने दिया।
१८ जातिगणों के समस्त राजा गाड़े जाकर बिभव में लेटते हैं हर एक अपने अपने
१९ घर में। पर तू अपनी समाधि से फेंका गया घिनित डालों की नाईं उन संघारितों के बस्त्र की नाईं जो खड्ग से छेदे गये जो गढ़हे के पत्थरों में गिरते
२० हैं लताड़ी हुई लोथ की नाईं। तू उन के संग समाधि में जाकर गाड़ा न जायेगा क्योंकि तू ने अपने देश को उजाड़ किया अपनी प्रजा को घात किया कुकर्म्मियों के बंश का फिर सदा लों
२१ चर्चा न हो। उस के बालकों के लिये घात सिद्ध करो उन के पितरों के पाप के कारण से वे न उठें और पृथिवी को बश में न करें और जगत को नगरों से न भर दें॥

२२ और मैं आप उन के बिरुद्ध में उठूंगा सेनाओं का परमेश्वर कहता है और बाबुल से हर नाम और चिन्ह को और

वंश और संतान को काट डालूंगा परमेश्वर कहता है। २३ और मैं उसे साही का अधिकार और पानी की झीलें ठहराऊंगा और उसे नाश की बुहारू से बुहार डालूंगा सेनाओं का परमेश्वर कहता है॥

२४ सेनाओं के परमेश्वर ने यह कहके किरिया खाई है कि निश्चय जैसा मैं ने चाहा वैसा ही हुआ और जैसा मैं ने २५ ठाना वही स्थिर रहेगा। कि असूर को अपने देश में हारमान करूं और मैं अपने पहाड़ों पर उसे लताड़ूंगा और उस का जूआ उन के ऊपर से अलग हो जायेगा और उस का बोझ उस के कंधे पर से २६ टल जायेगा। यह वह इच्छा है जो सारी पृथिवी पर ठहराई गई और यह वह हाथ है जो समस्त जातिगणों के २७ ऊपर बढ़ाया गया। क्योंकि सेनाओं के परमेश्वर ने इस को ठहराया है और कौन उस की इच्छा को टाल सकेगा और उस ही का हाथ है जो बढ़ाया गया और कौन उसे फेरेगा॥

२८ जिस बरस कि आखज राजा मर गया उसी बरस यह बोझ बर्णन हुआ॥

२९ कि हे सारी फिलिस्त तू इस लिये आनन्द मत कर कि तेरा मारनेवाला लठ तोड़ा गया क्योंकि सर्प के मूल से एक काला निकलेगा और उस का बंश एक प्रज्वलित उड़वैया सांप होगा। ३० और कंगालों के पहिलौठे झुंड के समान चरेंगे और दरिद्र चैन से बैठेंगे और मैं तेरी जड़ को आकाल से नाश कराऊंगा और तेरे बचे हुओं को आकाल मार ३१ डालेगा। हे फाटक बिलाप कर हे नगर चिल्ला हे फिलिस्त तू सर्वथा पिघल गया क्योंकि उत्तर से धूआं आता है और उस की सेनाओं में कोई भटका हुआ ३२ नहीं है। और देश के दूतों को क्या उत्तर दिया जायेगा कि परमेश्वर ने सैहून की नेव डाली है और उस में उस के लोगों के दरिद्र शरण पायेंगे॥

पंदरहवां पर्व्व।

१ मोआब का यह बोझ है कि रात को आरमोआब उजाड़ दिया गया सुनसान हो गया कि रात को कीरमोआब उजाड़ दिया गया सुनसान हो गया। २ वे देवालय में चढ़ जाते हैं और दीबान ऊंचे स्थानों पर रोने के लिये नबू पर और मेदिबा पर मोआब बिलाप करता है उस के सारे सिर मुड़ाये गये हर एक ३ दाढ़ी कट गई। उस के मार्गों में उन्हों ने टाट का पटुका बांधा है उस की छतों पर और उस के चौकों में वह सर्वथा रोने के साथ उतरते हुए बिलाप ४ करता है। और हसबान और अलिआले चिल्लाते हैं यहज लों उन का शब्द सुना गया इस लिये मोआब के शस्त्रधारी चिल्लाते हैं उस का प्राण उस में बेचैन ५ है। मेरा मन मोआब के लिये चिल्लाता है उस के भगोड़ू जुग्र लों भाग गये वह अब तीन बरस की बछिया है क्योंकि लूहीत पर चढ़नेहारा रोने के साथ उस पर चढ़ता है क्योंकि होरोनैम के मार्ग ६ पर वे हार का शब्द उठाते हैं। क्योंकि निमरीम की धाराएं सूखी पड़ी हैं क्योंकि घास सूख गई बनस्पति झुरा ७ गई और हरियाली कुछ नहीं है। इस लिये जो कुछ किसी ने प्राप्त किया उस को बचती और अपना धन वे बेंतों की ८ नदी के पार उठा ले जायेंगे। क्योंकि उस का चिल्लाना मोआब के सिवाने को घेरता है अजलैम लों उस का बिलाप सुना गया और बिअरऐलीम ९ लों उस का हाहाकार। क्योंकि दीमान के जल लोहू से भर गये क्योंकि मैं दीमान पर अधिक बिपत्तें डालूंगा

मोआब के बचे हुओं पर और उस देश के बचे हुओं पर सिंह भेजूंगा ॥

सोलहवां पर्व्व

१ तुम सिलअ से बन की ओर सैहून की पुत्री के पहाड़ लों देश के अध्यक्ष के पास मेम्ना भेजो । २ और ऐसा होगा कि भटकी हुई चिड़िया के समान फेंके हुए खोंते की नाईं मोआब की बेटियां अर्नून के घाट होंगी । ३ परामर्श दो बिचार करो ठीक दोपहर को अपनी छाया रात के समान बना निकाले हुओं को छिपा ले भटके हुए को प्रगट न कर । ४ मेरे अर्थात् मोआब के भटके हुए तुझ में रहें तू उन के लिये नाशक के साम्हने आड़ हो क्योंकि अंधेरी हो चुका बरबस्ती मिट गई भूमि पर से रौंदवैया नष्ट हुआ । ५ और सिंहासन दया से स्थिर किया जायेगा और उस पर दाऊद के तंबू में सत्य के संग वह बैठेगा जो न्याय करवैया और बिचार का चाहक और धर्म्म में चतुर होगा ॥

६ हम ने मोआब के अर्थात् उस बड़े अहंकारी के अहंकार का संदेश सुना है उस का घमंड और उस का गर्व्व और उस का क्रोध और उस की निरर्थक बातों का बे ठिकाने होना ॥

७ इस लिये मोआब मोआब के लिये बिलाप करेगा उस का सर्व्वथा बिलाप करेगा तुम सर्व्वथा मारे जाके कीरहरसत की दाख की लिट्टियों के लिये हाय मारोगे । ८ क्योंकि हसबान के खेत सूख गये जातिगणों के अध्यक्षों ने सिबमाह की दाख की उत्तम डालियों को तोड़ डाला वे यअजेर लों पहुंचीं जंगल में बिखर गईं उस की डालियां फैल गईं समुद्र के पार गईं । ९ इस लिये मैं सिबमाह की दाख के लिये यअजेर के रोने के साथ रोऊंगा हे हसबान और हे अलिआले मैं तुझे अपने आंसुओं से भिगाऊंगा क्योंकि तेरे फलों के बटोरने पर और तेरे अनाज के काटने पर ललकार पड़ी है । १० और बाटिका से मगनता और आनन्दता ले लिई गई और दाख की बाटिकों में फिर गाया न जायेगा और ललकारा न जायेगा रौंदवैया दाख को कोल्हुओं में फिर न रौंदेगा मैं ने ललकार को चुप कर दिया है । ११ इस लिये मेरी अंतड़ियां मोआब के लिये बीणा के समान बिलाप करेंगी और मेरा अंतःकरण कीरहरस के लिये । १२ और ऐसा होगा कि जब मोआब अपने देवों के साम्हने देखा जायेगा जब ऊंचे स्थान पर अपने तईं निर्लोभ की प्रार्थनाओं से थकायेगा तब वह अपने मन्दिर में प्रार्थना करने के लिये आयेगा पर उत्तर न पा सकेगा ॥

१३ यह वह बचन है जो परमेश्वर ने मोआब के बिषय में प्राचीन से कहा । १४ और अब परमेश्वर यह कहता है कि तीन बरस में बनिहार के बरसों के समान मोआब का बिभव अपने सारे बड़े हुल्लड़ सहित तुच्छ हो जायेगा और उस का बचा हुआ छोटा और थोड़ा होगा और बहुत नहीं ॥

सत्तरहवां पर्व्व ।

१ दिमिशक का बोझ देखो दिमिशक ऐसा नष्ट हुआ कि नगर नहीं है और टीला और उजाड़ हो गया । २ अरआयर के नगर छोड़ लिये गये वे झुंडों के लिये होंगे और वे वहां बैठेंगे और उन का कोई डरानेहारा न होगा । ३ तब इफराईम से गढ़ जाता रहेगा और दिमिशक और अराम की बचती से राज्य वे बचे हुए इसराएल के संतानों के बिभव की नाईं हो जायेंगे सेनाओं का परमेश्वर कहता है ॥

४ और उस दिन ऐसा होगा कि यअकूब का विभव दुर्बल हो जायेगा और उस ५ की पुष्ट देह दूबर हो जायेगी। और ऐसा होगा जैसा कोई लवनी करते हुए खड़े हुए अनाज को बटोरे और उस का हाथ बालों को लवे और ऐसा होगा जैसा कोई रफाईम की तराई में सिला बीने।
६ और उस में सिला बीन्ने के लिये कुछ बच रहेगा जैसा कि जलपाई के वृक्ष में हिलाने के समय दो तीन दाने फुनगी के ऊपर चार पांच फलवन्त पेड़ की डालों पर परमेश्वर इसराएल का ईश्वर कहता है ॥
७ उस दिन मनुष्य अपने सृष्टिकर्त्ता की ओर फिरेगा और उस की आंखें इसराएल के धर्म्मभय की ओर दृष्टि करेंगी।
८ और वह यज्ञवेदियों अर्थात् अपने हाथों के कार्य्य की ओर दृष्टि न करेगा और जो उस की अंगुलियों ने बनाया वह उस पर और बिधातृदेवियों पर और सूर्य्य की प्रतिमाओं पर दृष्टि न करेगा।
९ उस दिन उस के दृढ़ नगर उस के समान होंगे जो झाड़ी और फुनगी में बच गया अर्थात् वह नगर जो वे छोड़ देते हैं जब इसराएल के संतानों के आगे से फिर आते हैं और देश उजाड़
१० होगा। कि तू ने अपने मुक्तिदाता ईश्वर को भुला दिया और अपनी शरण की चटान को चेत नहीं किया इस लिये तू मनभावने पौधों को लगावेगा और
११ उस में परदेशी कोंपल जमावेगा। जिस दिन तू उसे लगायेगा तू उस के चहुंओर बाड़ा बांधेगा और बिहान को अपने बीज से फूल दिखावेगा पर उदासी और अत्यन्त शोक के दिन उस का फल जाता रहेगा ॥
१२ हाय बहुत से जातिगणों का हुल्लड़ जो समुद्रों के शब्द की नाईं के हाहा करते हैं और जातिगणों का रेला बड़े पानियों के रेले के समान ही रौला करते
१३ हैं। जातिगण बहुत पानियों के रेले के समान रौला मचाते हैं और वह उसे दपटता है और वह दूर से भाग जाता है और पर्व्वतों की भूसी के समान आंधी के आगे और घूमती हुई वस्तु के समान
१४ बगूले के साम्हने खेदा जाता है। सांझ के जून और देखो भय और बिहान से पहिले वह है ही नहीं यह हमारे लूटनेहारों का भाग और हमारे नाश करनेहारों का अधिकार होगा ॥

अठारहवां पर्व्व ।

१ अरे हे फड़फड़ानेहारी पंखों की भूमि जो कूश की नदियों के उस पार
२ है। जो समुद्र पर और पटेरे की नौकों में पानियों के ऊपर दूतों को भेजती है हे शीघ्र चलवैये दूतो लंबी और सिर मुंडी हुई जाति के पास जाओ एक जाति के पास जो आरंभ से अब लों भयानक है दूने बल और रौंदनेहारी जाति जिस के देश की नदियां दो
३ भाग कर देती हैं। हे जगत के समस्त बासियो और पृथिवी के निवासियो तुम मानो पर्व्वत पर ध्वजा उठाना देखोगे और मानो तुरही फूंकना सुनोगे ॥
४ क्योंकि परमेश्वर ने मुझ से यों कहा कि मैं अपने निवास में चुपचाप रहूंगा और ताक रक्खूंगा मध्यम ग्रीष्म के समान जो हरियाली पर है और ओस टपकानेहारे बादल के समान जो लवनी
५ की तपन में है। क्योंकि लवनी से पहिले जब कली पूर्ण हो और फूल पकनेहारा दाख होने पर हो तब वह हंसुओं से डालियों को काट डालता है और टहनियों को काटके अलग कर
६ देता है। वे एक ही साथ पहाड़ों के अहेरी पक्षियों के लिये और पृथिवी के

बनैले पशुओं के लिये छोड़े जायेंगे और अहेरी पक्षी उन पर ग्रीष्म का समय काटेंगे और पृथिवी के सारे बनैले
७ पशु उन पर जाड़ा काटेंगे। उस समय सेनाओं के परमेश्वर के पास एक भेंट पहुंचाई जायेगी अर्थात् एक लंबी और सिर मुंडी हुई जाति और एक जाति के द्वारा से जो आरंभ से अब लों भयानक है और दूने बलवाली और रौंदनेहारी जाति जिस के देश को नदियां दो भाग कर देती हैं सेनाओं के परमेश्वर के नाम के स्थान अर्थात् सैहून के पर्बत पर॥

उन्नीसवां पर्ब्ब।

१ मिस्र का बोझ देखो परमेश्वर हलकी बदली पर चढ़के मिस्र में आता है और मिस्र की मूर्ते उस के आगे कांपती हैं और मिस्र का मन उस के
२ भीतर पिघल जाता है। और मैं मिस्र को मिस्र पर उसकाऊंगा और वे लड़ेंगे हर एक अपने भाई से और हर एक अपने पड़ोसी से नगर नगर से और राज्य
३ राज्य से। और मिस्र का आत्मा उस के भीतर घट जायेगा और मैं उस की चतुराई को निगल जाऊंगा और वे मूर्तों और गणकों और टोनहों और
४ ओझाओं से प्रश्न करेंगे। और मैं मिस्र को क्रूर अध्यक्ष के हाथ में जकड़ूंगा और बलवान राजा उन पर राज्य करेगा परमेश्वर सेनाओं का प्रभु कहता है।
५ और समुद्र का जल घट जायेगा और
६ नदी झूरी और निर्जल हो जायेगी। और धाराएं दुर्गंध करेंगी मिस्र की नदियां छूछी और झूरी हो गईं नल और शर
७ कुम्हला गये। कछार नदी पर नदी के मोहाने पर और नदी की सारी तुतार भूमि सारी जाके सूख जायेगी और फिर
८ न होगी। और मछवे हाय मारेंगे और बिलाप करेंगे नील नदी के सारे बंसी फेंकनेहारे और पानी के ऊपर के सारे जाल फैलानेहारे कुम्हला गये। और
९ निर्मल किये हुए पटसन के शिल्पी और स्वेत वस्त्रों के बिनेहारे लज्जित हैं।
१० और उस के खंभे तोड़े गये सारे बनिहार
११ दुःखित हैं। जोअन के अध्यक्ष सब के सब मूर्ख हैं फिरऊन के मंत्रियों के बुद्धिमान जो हैं उन का मंत्र पशुवत हो गया तुम क्योंकर फिरऊन से कहोगे कि मैं बुद्धिमानों का पुत्र प्राचीन राजाओं
१२ का बेटा हूं। वे कहां हैं तेरे बुद्धिमान कहां हैं अब जाय कि तुझे बतलावें और नहीं तो जानें कि सेनाओं के परमेश्वर ने मिस्र के विषय में क्या ठहराया है।
१३ जोअन के अध्यक्ष मूर्ख हो गये नूफ के अध्यक्ष छल खा गये और जो उस की गोष्ठी के प्रधान हैं उन्हों ने मिस्र को
१४ भरमा दिया है। परमेश्वर ने उस के मध्य में उलटनेहारा आत्मा मिलाया है और उन्हों ने मिस्र को उस के सारे कार्यों में डगमगा दिया जिस रीति कि मद्यप अपनी छांट की दशा में
१५ डगमगाता है। और मिस्र का ऐसा कोई काम न होगा जो सिर और पूंछ ताड़ और नरकट कर सकेगा॥

१६ उस दिन मिस्र स्त्रियों की नाईं होगा और डरेगा और कांपेगा सेनाओं के परमेश्वर के हाथ के उस हिलाने से जो वह उस के ऊपर हिलाता है।
१७ और यहूदाह की भूमि मिस्र के लिये भय का कारण होगी हर एक जिस्से उस की चर्चा किई जायेगी वह सेनाओं के परमेश्वर के उस मनोरथ से डरेगा जो वह उस के बिरुद्ध में रखता है॥

१८ उस दिन मिस्र के देश में पांच नगर कनआन की भाषा बोलनेहारे और सेनाओं के परमेश्वर से सेवा की किरिया

आनेहारे होंगे और एक विनाश का नगर कहा जायेगा ॥

१९ उस दिन मिस्र के देश के मध्य में परमेश्वर के लिये बेदी और उस के सिवाने पर परमेश्वर के लिये खंभा

२० होगा । और यह मिस्र के देश में सेनाओं के परमेश्वर का चिन्ह और साक्षी होगा कि वे अंधेरियों के आगे परमेश्वर को पुकारेंगे और वह उन के लिये एक मुक्तिदाता और लड़नेहारा

२१ भेजेगा और उन्हें छुड़ावेगा । और परमेश्वर मिस्र में जाना जायेगा और मिस्री उस दिन परमेश्वर को जानेंगे और बलिदानों और भेंटों के साथ सेवा करेंगे और परमेश्वर से मनौती मानेंगे

२२ और उसे पूरी करेंगे । और परमेश्वर मिस्र को मारेगा मारके चंगा करेगा और वे परमेश्वर की ओर फिरेंगे और वह उन की प्रार्थना सुनेगा और उन्हें चंगा करेगा ॥

२३ उस दिन मिस्र से असूर लों एक बड़ी सड़क होगी और असूर मिस्र में आवेगा और मिस्र असूर में और मिस्री असूर के साथ सेवा करेंगे ॥

२४ उस दिन इसराएल मिस्र और असूर के संग एक तीसरा होगा और पृथिवी

२५ के मध्य आशीष का कारण । जिसे सेनाओं के परमेश्वर ने यह कहते हुए आशीष दिई है कि धन्य हो मेरे लोग मिस्र और मेरे हाथों के कार्य्य असूर और मेरा अधिकार इसराएल ॥

बीसवां पर्व्व ।

१ जिस बरस कि तरतान अशदूद में आया जब असूर के राजा सरजून ने उसे भेजा और वह अशदूद से लड़ा और उसे

२ ले लिया । उस समय परमेश्वर ने अमूस के बेटे यशअियाह के द्वारा यह कहते हुए बातें किईं कि जा और अपनी कटि पर से टाट खोल डाल और अपने पांवों से अपनी जूती उतार और उस ने ऐसा ही किया कि नग्न और नंगे पांवों होके चला फिरा ।

३ और परमेश्वर ने कहा कि जिस रीति से मेरा सेवक यशअियाह नग्न और नंगे पांवों होके चला फिरा है जिसतें मिस्र और कूश के लिये तीन

४ बरस लों चिन्ह और लक्षण रहे । इसी रीति से असूर का राजा मिस्र के बंधुओं को और कूश के देशत्यागियों को तरुणों और बूढ़ों सहित नग्न और नंगे पांवों और उन के चूतड़ों को नंगा करके मिस्र की

५ लज्जा के लिये ले जायेगा । और वे कूश से जो उन की आशा का स्थान और मिस्र से जो उन की प्रतिष्ठा थी भयमान

६ और लज्जित होंगे । और उस दिन इस तट के बासी कहेंगे कि देखो हमारी आशा के स्थान की यह दशा है जहां हम सहाय के लिये भागे जिसतें असूर के राजा के साम्हने से छुटकारा पावें सो हम किस रीति से बचेंगे ॥

एक्कीसवां पर्व्व ।

१ समुद्र के अरण्य का बोझ दक्खिनी बल करनेहारे बगूलों के समान वह अरण्य से भयंकर देश से आता है ॥

२ एक डरावने दर्शन का मुझ से बर्णन किया गया कि धोखादेनेहारा धोखा देता है और लुटेरा लूटता है हे ऐलाम चढ़ाई कर हे मादै घेर ले मैं ने सारे कराहने को जो उस के कारण से हुआ

३ बंद कर दिया है । इस कारण से मेरी कटि बड़ी पीड़ा से भर गई जन्नेहारी स्त्री के जन्ने की पीड़ा के समान जन्ने की पीड़ा ने मुझे पकड़ लिया है मैं ऐसा ऐंठ गया हूं कि सुन नहीं सक्ता घबरा

४ गया हूं कि देख नहीं सक्ता । मेरा मन घबरा गया डर मुझ पर आ पड़ा उस ने मेरे बिलास की सांझ को मेरे लिये

५ डर ठहराया है। मंच लगाई गई भोजन-आसनीयवस्त्र बिछाया गया वे खाते पीते हैं हे अध्यक्षो उठो ढाल पर तेल मलो॥
६ क्योंकि प्रभु ने मुझ से यों कहा है कि जा पहरू खड़ा कर जो वह देखे सो बताये॥
७ और जो वह घोड़चढ़ों को घोड़े के दो दो घोड़चढ़ों को गदहे के चढ़नेहारों को ऊंट के चढ़नेहारों को देखे तो बड़ी चौकसी के साथ कान धरे।
८ और वह सिंह की नाईं पुकारता है कि हे प्रभु मैं सदा दिन को पहिरे के गुम्मट पर खड़ा रहता हूं और सब रातों को
९ अपनी चौकी पर बना रहता हूं। और देखो ये मनुष्य चढ़े हुए आते हैं दो दो अश्वार और वह उत्तर देके कहता है कि बाबुल गिर पड़ा गिर पड़ा है और उस के देवों की सारी मूर्त्तों को उस ने भूमि पर चूर चूर कर डाला है॥
१० हे मेरे मांड़े हुए और मेरे खलिहान के अनाज जो मैं ने सेनाओं के परमेश्वर इसराएल के ईश्वर से सुना है सो तुम से बर्णन किया है॥
११ दूम: का बोझ शईर से कोई मुझे पुकारता है कि हे पहरू कितनी रात है हे पहरू कितनी रात॥
१२ पहरू कहता है कि बिहान होता है और रात भी यदि तुम पूछा चाहते हो तो फिर आके पूछो॥
१३ अरब का बोझ हे ददानियों के यात्रिको तुम अरब की झाड़ियों में रात
१४ बिताओगे। तैमा के देश के बासी पानी लेके पियासे की अगौनी करते हैं और भगवैये के लिये रोटी लेकर उस्से मिलने
१५ को निकलते हैं। क्योंकि वे खड्ग के आगे से नंगे खड्ग के साम्हने से और चढ़ाये हुए धनुष से और युद्ध की बहु-
१६ ताई के कारण से भागे। क्योंकि प्रभु मुझ से यों कहता है कि एक और बरस में बनिहार के बरसों के समान कीदार का सारा बिभव जाता रहेगा। और
१७ धनुषधारियों की गिन्ती में से जो बचे हुए हैं अर्थात् कीदार के संतानों के थोर घट जायेंगे क्योंकि परमेश्वर इसराएल के ईश्वर ने कहा है॥

बाईसवां पर्ब्ब।

१ दर्शन की तराई का बोझ अब तुझे क्या हुआ कि तू सर्बथा छतों के ऊपर
२ चढ़ गई है। अरे कोलाहल से भरी हुल्लड़ करनेहारे नगर आनन्द करनेहारी बस्ती तेरे जूझे हुए खड्ग के जूझे हुए
३ नहीं और न युद्ध के मारे हैं। तेरे सारे अध्यक्ष एक ही साथ भागे वे धनुषधारियों के बंधुए हुए जो तुझ में मिले वे सब एक ही संग बांधे गये वे दूर से
४ भागे। इसी लिये मैं ने कहा कि मेरी ओर से मुंह फेर लो मैं बिलख बिलखके रोऊंगा मुझे मेरी जाति की बेटी के उजाड़ के बिषय शांति देने की चिंता
५ न करो। क्योंकि प्रभु सेनाओं का परमेश्वर दर्शन की तराई में कोलाहल और रौंदने और घबराहट का दिन रखता है भीत तोड़ डाली जायेगी और लोग पर्बत की ओर सहाय के लिये
६ दोहाई देंगे। और ऐलाम ने रथों और पदातियों और घोड़चढ़ों के साथ तूण उठाया और कीर ने ढाल निकाली।
७ और ऐसा हुआ कि तेरी चुनी हुई तराई रथों से भर गई और घोड़चढ़ों ने फाटक
८ की ओर डेरा किया। और यहूदाह का ओट खोला गया और तू ने उस दिन बन के घर के हथियारस्थान पर दृष्टि
९ रक्खी। और तुम ने दाऊद के नगर की दरारों को देखा कि वे बहुत थीं और तुम ने नीचे के पोखरे के पानी को
१० एकट्ठा कर लिया। और तुम ने यरूसलम

के घरों को गिन लिया और घरों को ढा दिया जिसतें भीतों को फिर सुधारो।
११ और तुम ने प्राचीन सरोवर के पानी के लिये दोहरी भीतों के मध्य में कुण्ड बनाया और उस के मुख्यकर्त्ता की ओर दृष्टि नहीं रक्खी और जो प्राचीन से उस का बनानेहारा है तुम ने उस नहीं
१२ देखा। और प्रभु परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर ने उस दिन रोने और बिलाप करने और बार नोचने और टाट बांधने
१३ को बुलाया। और देखो आनन्द और आल्हाद गाय बैल बध करना और भेड़ बकरी का मारना मांस खाना और मदिरा पीना खायें और पीयें क्योंकि
१४ कल हम मरेंगे। और सेनाओं के परमेश्वर ने मेरे कानों में यह प्रकाश किया कि निश्चय तुम्हारे मरने लों तुम्हारे इस कुकर्म्म का प्रायश्चित्त न लिया जायेगा प्रभु परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर कहता है॥

१५ प्रभु परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर ने यों कहा कि जा इस भंडारी के पास शिबना के पास जो भवन का प्रधान
१६ है भीतर जा। और कह कि तेरा यहां क्या है और तेरा यहां कौन है कि तू ने यहां अपने लिये समाधि खोदी है यह जो ऊंचाई पर अपनी समाधि खोदता है चटान में अपना निवासस्थान काटता
१७ है। हे मनुष्य देख परमेश्वर बल के साथ तुझे सर्व्वथा गिरा देता है और तुझे सर्व्वथा बेष्टन से बेष्टित करता है।
१८ लपेटते लपेटते वह तुझे लपेट लेगा गेंद के समान जो चौड़ी भूमि में लुढ़काया गया वहां तू जाके मरेगा और वहां तेरे बिभव के रथ तुझे ले जायेंगे अरे तू कि अपने स्वामी के घर की
१९ लज्जा है। और मैं तुझे तेरे ठिकाने से निकाल दूंगा और तू अपने पद से गिराया जायेगा। और उस दिन ऐसा
२० होगा कि मैं अपने सेवक खिलकियाह
२१ के बेटे इलियाकीम को बुलाऊंगा। और मैं तेरा बस्त्र उसे पहिनाऊंगा और तेरे पटुके से उसे दृढ़ करूंगा और तेरा राज्य उस के हाथ में सौंपूंगा और वह यरूसलम के बासियों और यहूदाह के घराने
२२ का पिता हो जायेगा। और मैं दाऊद के घर की कुंजी उस के कांधे पर धरूंगा सो वह खोलेगा और कोई बंद करवैया न होगा और बंद करेगा और कोई खोलवैया न होगा।
२३ और मैं उसे खूंटी की नाईं दृढ़ स्थान में स्थापन करूंगा और वह अपने पिता के घराने के लिये
२४ महिमा की चौकी हो जायेगा। और उस के पिता के घराने का सारा बिभव लड़केबाले और बालबच्चे सारे छोटे छोटे पात्र कटोरों से लेके सारे बड़े पात्रों तक उस पर लटकाये जायेंगे॥

२५ परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर कहता है कि उस दिन जो खूंटी दृढ़ स्थान में स्थापित किई गई सो सरक जायेगी और काटी जायेगी और गिर पड़ेगी और जो बोझ उस पर था सो काट दिया जायेगा क्योंकि परमेश्वर ने कहा है॥

तेईसवां पर्ब्ब।

१ सूर का बोझ है तरसीस के जहाजो बिलाप करो क्योंकि यहां लों उजाड़ दिया गया कि न घर न प्रवेश करने का स्थान है कित्तीम के देश से उन को
२ प्रगट हुआ। हे टापू के बासियो चुप रहो सैदा के बैपारी जो समुद्र पार
३ जाते थे तुझ में भर गये। और बड़े पानियों में नील का अनाज होता था इसी नदी का लाभ उस की प्राप्ति थी और वह जातिगणों का ब्योपारस्थान
४ था। हे सैदा लज्जित हो क्योंकि समुद्र हां समुद्र की गढ़ी यों कहती है मुझे

जन्ने की पीड़ा नहीं हुई और मैं नहीं जनी और तरुणों को नहीं पाला कुंवारियों को नहीं पोसा। जिस रीति कि मिस्र के संदेश से लोग पीड़ित हुए वैसा ही सूर के संदेश से पीड़ित होंगे। ६ तरसीस की ओर पार उतर जाओ हे ७ टापू के बासियो बिलाप करो। क्या यह तुम्हारी आनन्द करनेहारी बस्ती है अगिले समयों से उस की प्राचीनता है उस के पांव उसे दूर लों प्रदेश में ८ बसने के लिये ले जायेंगे। किस ने यह मंत्र सूर मुकुट देनेहारे नगर के बिरोध में बांधा है जिस के ब्योपारी अध्यक्ष हैं और उस के बणिक भूमि के कुलीन। ९ परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर ने यह मंत्र किया है कि सारी सुन्दरता की बड़ाई को नष्ट करे पृथिवी के सारे कुलीनों १० को निन्दित करे। अपने देश पर नील नदी के समान बढ़ जा हे तरसीस की ११ पुत्री अब और कुछ बंधन नहीं है। उस ने अपना हाथ समुद्र के ऊपर फैलाया राज्यों को हिला दिया परमेश्वर ने कनआन के बिषय में आज्ञा किई है १२ कि उस के दृढ़ स्थानों को ढा दे। और उस ने कहा कि हे सैदा की पुत्री अपति किई हुई कुंवारी तू फिर कभी अभिमान न करेगी कित्तीम की ओर उठ पार उतर जा वहां भी तुझे चैन १३ न मिलेगा। कसदियों के देश को देखो ये जाति न थी असूर ने बनबासियों के लिये उस की नेव डाली उन्हों ने अपने गर्गज बनाये हैं उन्हों ने उस के भवनों को ढा दिया है उस ने उन्हें उजाड़ १४ ठहराया है। हे तरसीस के जहाजो बिलाप करो क्योंकि तुम्हारा गढ़ उजाड़ दिया गया॥

१५ और उस दिन ऐसा होगा कि सूर सत्तर बरस लों एक राजा के समय के समान भुला दिया जायेगा सत्तर बरस के पीछे सूर की दशा बेश्या के गीत के १६ समान होगी। हे भूली हुई बेश्या बीणा ले नगर में फिरा कर भली भांति बजा बहुत गा कि तू फिर चेत किई जाय॥

१७ और ऐसा होगा कि सत्तर बरस के पीछे परमेश्वर सूर पर दृष्टि करेगा और वह अपने छिनाले की बृत्ति के कमाने के लिये फिरेगी और जगत की सारी राजधानियों के संग जो पृथिवी के ऊपर १८ हैं छिनारा करेगी। और उस के ब्योपार का फल और उस की छिनाले की बृत्ति परमेश्वर के लिये पवित्र होगी वह न ढेर किई जायगी और न रख छोड़ी जायेगी क्योंकि उस की बाणिज्य का फल उन के लिये होगा जो परमेश्वर के सन्मुख रहते हैं जिसते भोजन करके तृप्त हों और टिकाऊ बस्त्र पहिनें॥

चौबीसवां पर्ब्ब।

१ देखो परमेश्वर देश को सूना करता और उसे सर्बथा छूछा करता है और वह उसे उलट देगा और उस के बासियों को २ छिन्न भिन्न करेगा। और ऐसा होगा कि जैसी जाति वैसा याजक जैसा सेवक वैसा उस का स्वामी जैसी दासी वैसी उस की स्वामिनी जैसा ग्राहक वैसा बिचवैया जैसा ऋण देनेहारा वैसा ऋण लेनेहारा जैसा ब्याजग्राहक वैसा ब्याज-३ दायक होगा। देश सर्बथा छूछा किया जायेगा और हर प्रकार से लूटा जायेगा क्योंकि परमेश्वर ने यह बचन कहा है। ४ देश बिलाप कर रहा मुरझा रहा है जगत कुम्हला गया मुरझा रहा है देश के लोगों के बड़े पदवीवाले कुम्हला ५ गये। और देश अपने बासियों के बोझे अशुद्ध हो गया क्योंकि उन्हों ने व्यवस्थाओं को उल्लंघन किया बिधि को पलट डाला और सदा की आज्ञा को तोड़ डाला है।

६ इस लिये स्राप ने देश को भक्ष लिया और उस के बासी अपराधी ठहरे इसी लिये देश के बासी भस्म हो गये और ७ थोड़े मनुष्य बच रहे। नया दाखरस बिलाप करता है दाख कुम्हला गया सारे आनन्दित अंतःकरणी हाय मारते ८ हैं। मृदंग का आनन्दित शब्द हो चुका जय करवैयों का शब्द जाता रहा बीणा ९ का आनन्दित शब्द हो चुका। वे गा गाके दाखरस न पीयेंगे तीक्ष्ण मदिरा उस के पीनेहारों के लिये कड़वी होगी। १० बिनाश नगर टूट गया हर एक घर मुंद गया कि कोई भीतर नहीं जा सक्ता। ११ मार्गों में दाखरस के लिये चिल्लाना है सारी आनन्दता अंधियारी हो गई देश १२ की आनन्दता दूर किई गई। जो नगर में बचती छोड़ दिई गई सो उजाड़ है और फाटक तोड़के नष्ट किये गये। १३ क्योंकि देश के मध्य में लोगों के बीच ऐसा होगा जैसे जलपाई का वृक्ष हिलाया जाये और दाख के तोड़े जाने के पीछे १४ बीन्ना। वे अपना शब्द उठायेंगे गावेंगे वे परमेश्वर की बड़ाई के कारण से १५ समुद्र से ललकारते हैं। इस लिये तुम उंजियालों में परमेश्वर की समुद्र के टापुओं में परमेश्वर इसराएल के ईश्वर के १६ नाम की बड़ाई करो। पृथिवी के अन्त से हम ने गान अर्थात् धर्म्मी की प्रतिष्ठा के गान सुने हैं और मैं ने कहा कि मेरी दुर्गति मेरी दुर्गति मुझ पर संताप छलियों ने छल किया है हां छल के साथ छलियों १७ ने छल किया है। हे देश के बासी भय १८ और गड़हा और जाल तुझ पर है। और ऐसा होगा कि जो डर के शब्द से भागता है सो गड़हे में गिरेगा और जो गड़हे के बीच में से निकलता है सो जाल में पकड़ा जायेगा क्योंकि ऊपर से खिड़कियां खुल गईं और पृथिवी की नेवें हिल गईं। पृथिवी टुकड़े टुकड़े १९ हो गई पृथिवी चूर चूर हो गई पृथिवी हिल हिल गई। पृथिवी डगमगाती २० मतवाले के नाईं डगमगाती है और हिंडोले के नाईं हिल गई और उस की बुराई उस पर भारी है और वह गिरेगी और फिर न उठेगी॥

और उस दिन ऐसा होगा कि परमे- २१ श्वर ऊंचे स्थान में महान स्थान की सेना को और पृथिवी पर पृथिवी के महाराजाओं को दण्ड देगा। और जिस २२ रीति बन्धुए गड़हे में बटोरे जाते हैं वे बटोरे जायेंगे और बन्दीगृह में बन्द किये जायेंगे और बहुत दिनों के पीछे उन पर दृष्टि किई जायेगी। और चन्द्रमा २३ घबरा जायेगा और सूर्य्य लज्जित क्योंकि परमेश्वर सेनाओं का प्रभु सैहून के पहाड़ में और यरूसलम में राजा हुआ और उस के प्राचीनों के आगे बिभव है॥

पचीसवां पर्ब्ब।

हे परमेश्वर मेरा ईश्वर तू ही है १ मैं तेरी बड़ाई करूंगा तेरे नाम की स्तुति करूंगा क्योंकि तू ने आश्चर्य्यित कार्य्य पुरातन से मंत्र दृढ़ भक्ति और सत्यता किये हैं। क्योंकि तू ने उसे २ नगर से ढेर कर डाला गढ़वाली बस्ती को उजाड़ औरों के भवन को ऐसी दशा में कि नगर नहीं रहा वह सदा लों न बसाया जायेगा। इसी कारण से ३ बलवाली जाति तेरी बड़ाई करेगी भयंकर जातिगणों का नगर तुझ से डर रक्खेगा। क्योंकि तू दरिद्री के लिये ४ गढ़ हुआ कंगाल के लिये उस की बिपत्ति में गढ़ मेंह की आंधी में शरण-स्थान गरमी में छाया जब अंधेरियों की आंधी उस मेंह के झकूड़ के समान थी जो भीत पर आता है। जिस रीति ५ झूरा में गरमी छांह से दब जाती है

वैसा ही तू परदेशियों के हुल्लड़ को दबायेगा जिस रीति गरमी मेघ की छांह से दब जाती है वैसा ही अंधेरियों का गान दबाया जायेगा॥

६ और सेनाओं का परमेश्वर इस पहाड़ पर सारे लोगों के लिये पुष्ट वस्तुन का जेवनार सिद्ध करेगा तलछट से निथरे हुए दाखरस की पुष्ट मज्जा-वाली वस्तुन की तलछट से निथरे हुए और भली भांति छाने हुए दाखरस का ७ जेवनार। और जो ओट सारे लोगों पर है वह इस पहाड़ पर उस ओट के साम्हने को मिटा देगा और उस घूंघट को जो सारे जातिगणों पर बिना हुआ ८ है। उस ने सर्बदा के लिये मृत्यु को निगल लिया है और प्रभु परमेश्वर सारे मुंहों पर से आंसू पोंछता है और वह अपने लोगों के अपमान को सारी पृथिवी पर से दूर करेगा क्योंकि परमेश्वर ने कहा है॥

९ और उस दिन लोग कहेंगे कि देखो हमारा ईश्वर यही है हम ने उस की बाट जोही और वह हमें मुक्ति देगा यही परमेश्वर है हम ने उस की बाट जोही हम उस की मुक्ति से आनन्द और मगन हों॥

१० क्योंकि परमेश्वर का हाथ इस पहाड़ पर रहेगा और मोआब अपने नीचे ऐसा लताड़ा जायेगा जैसे पुआल ११ घूरे के पानी में लताड़ा जाये। और वह अपने हाथ उस के मध्य में ऐसा फैलावेगा जैसे पैराक पैरने को फैलाता है और वह उस के अहंकार को उस के हाथों के छल बल समेत नीचा १२ करेगा। और उस ने तेरी भीतों के ऊंचे गढ़वाले गढ़ को ढा दिया गिरा दिया भूमि लों हां धूल लों पहुंचा दिया है॥

छब्बीसवां पर्ब्ब।

१ उस दिन यहूदाह के देश में यह गीत गाया जायेगा कि हमारे लिये एक दृढ़ नगर है वह मुक्ति को भीतें और २ परिकोट ठहरावेगा। फाटकों को खोलो जिसतें धर्म्मी और सच्चे लोग भीतर आएं। ३ जिस अन्तःकरण का भरोसा तुझ पर है तू उसे कुशल में रक्खेगा क्योंकि वह ४ तेरा दृढ़ भक्त है। परमेश्वर पर सर्बदा भरोसा रक्खो क्योंकि तुम्हारे लिये याह ५ परमेश्वर में सदा की चटान है। क्योंकि उस ने ऊंचे स्थानों के बासियों और ऊंचे नगर को नीचा कर दिया है वह उसे नीचा करेगा उसे भूमि लों नीचा ६ करेगा उसे धूल लों पहुंचायेगा। वह पांव से रौंदा जायेगा दरिद्रों के पांवों ७ से दीनों के डगों से। धर्म्मी का मार्ग सच्चाइयां हैं तू कि खरा है साधुन के ८ मार्ग को समथर करेगा। हां तेरे न्यायों के मार्ग में हे परमेश्वर हम ने तेरी बाट जोही तेरे नाम और तेरे स्मरण की ओर ९ हमारे मन की अभिलाषा थी। मैं रात को अपने मन में तेरा अभिलाषी रहा हां मैं अपने आत्मा से अपने भीतर में भोर को तुझे ढूंढूंगा क्योंकि जब तेरे न्याय पृथिवी पर आते हैं तब जगत के १० बासी धर्म्म सीखते हैं। यद्यपि दुष्ट पर दया किई जावे तथापि वह धर्म्म को न सीखेगा सच्चाइयों की भूमि में वह टेढ़ाई करेगा और परमेश्वर की ११ ऊंचाई को न देखेगा। हे परमेश्वर तेरा हाथ ऊंचा है वे देखा नहीं चाहते हैं पर वे तेरे उस ताप को जो तेरे लोगों के लिये है देखेंगे और लज्जित होंगे हां वह आग जो तेरे शत्रुन के लिये है उन्हें १२ भस्म कर डालेगी। हे परमेश्वर तू हमें कुशल देगा क्योंकि तू ने हमारे सब के १३ सब काम हमारे लिये किये हैं। हे

परमेश्वर हमारे ईश्वर तुझे छोड़ और प्रभु हमारे स्वामी रहे हैं पर आगे को हम केवल तेरा तेरे ही नाम का स्मरण
१४ करेंगे । वे मृतक हैं फिर न जीयेंगे रफाईम हैं फिर न उठेंगे इस लिये तू ने दृष्टि किई और उन्हें नाश किया है और उन का सारा स्मरण मिटा डाला
१५ है । तू ने लोगों को बढ़ाया है हे परमेश्वर तू ने लोगों को बढ़ाया है तू ने अपने तईं महान प्रगट किया है तू ने उस देश के सारे सिवाने को दूर लों बढ़ाया है ॥

१६ हे परमेश्वर वे बिपत्ति में तेरी ओर फिरे उन्हों ने दीनताई के साथ प्रार्थना किई जब तेरा दण्ड उन पर था ।
१७ जिस रीति कि जब गर्भिणी स्त्री जन्ने के निकट पहुंचती है वह जन्ने की पीड़ा में होती है अपनी पीड़ों में चिल्लाती है वैसा ही हे परमेश्वर हम तेरे आगे से
१८ निकाले हुए रहते हैं । हम पीड़ों में थे जन्ने की पीड़ा में पड़े मानो हम पवन जने हम देश को छुटकारे नहीं दे सक्ते थे और जगत के बासी न गिरते थे ।
१९ तेरे मृतक जी उठेंगे मेरी लोथें उठ खड़ी होंगी हे धूल के बासियो जागो और गाओ क्योंकि तेरी ओस उस ओस की नाईं जो हरियालियों पर पड़ती है और तू उसे पृथिवी पर और रफाईम पर गिरावेगा ॥

२० हे मेरी जाति जा अपनी कोठरियों के भीतर जा और अपने बाहर के द्वार मूंद ले अपने तईं क्षणमात्र के लिये छिपा यहां लों कि जलजलाहट उतर जाये ।
२१ क्योंकि देखो परमेश्वर अपने स्थान से बाहर आता है जिसतें पृथिवी के बासियों के अपराध का दण्ड उन्हें दे और पृथिवी अपने लोहू को प्रगट करेगी और फिर अपने जूझे हुओं को न छिपायेगी ॥

सत्ताईसवां पर्व्व ।

१ उस दिन परमेश्वर अपनी तलवार से उस कठोर और बड़ी और बली तलवार से लिवयातान शीघ्रगामी सर्प्प को और लिवयातान पेचीला सर्प्प को दण्ड देगा और उस अजगर को जो नदी में
२ है मार डालेगा । उस दिन दाख की
३ बाटिका के समान उसे दखा दो । मैं परमेश्वर उस की रक्षा करता हूं मैं हर घड़ी उसे सींचा करूंगा जिसतें न हो कि कोई उसे हानि पहुंचावे मैं रात
४ दिन उस की रक्षा किया करूंगा । जलन मुझ में नहीं है हाय कि लड़ाई में कांटे और कटीले मेरे साम्हने रक्खे जायें जिसतें मैं उन पर दौड़ूं और उन्हें एक
५ ही साथ जला दूं । अथवा वह मेरे गढ़ की शरण पकड़े और मुझ से मिलाप करे मिलाप मुझ से करे ॥

६ आनेहारे दिनों में यअकूब जड़ पकड़ेगा और इसराएल कोंपल लायेगा और फूलेगा और वे जगत को फल से भर
७ देंगे । क्या उस ने उसे ऐसा मारा जैसा उस के मारनेहारे को मारा क्या वह उस के घातकों के घात की नाईं घात किया
८ गया । उस के निकलने में तू प्रमाण के साथ उस्से लड़ता है वह पुरवा पवन के दिन अपनी प्रचंड आंधी से उसे दूर
९ कर देता है । इस लिये इस ताड़ना के कारण से यअकूब के पाप का प्रायश्चित्त किया जायेगा और यह उस का सारा फल है कि उस के पाप को दूर करे जैसा जान पड़ेगा जब वह यज्ञबेदी के सब पत्थरों को चूने के चूर चूर किये हुए पत्थरों के समान कर देगा यहां लों कि विधातृदेवी की मूर्त्ति और सूर्य्य की मूरतें
१० फिर खड़ी न होंगी । क्योंकि दृढ़ नगर उजाड़ होगा एक सूनी बस्ती और बन के समान छोड़ी हुई वहां बछड़ा चरेगा

और वहां लेट जायेगा और उस की ११ डालियां खा जायेगा । जब उस की डालें सूख जायेंगी तब तोड़ी जायेंगी और स्त्रियां आके उन्हें जला देंगी क्योंकि वह निर्बुद्धि जाति है इस लिये उस का सिरजनहार उस पर दया न करेगा और उस का बनानेहारा उस पर दयालु न होगा ॥

१२ और उस दिन ऐसा होगा कि परमेश्वर नदी की बाढ़ से लेके मिस्र की नाली लों वृक्ष को हिलाके फल बटोरेगा और तुम हे इसराएल के संतानो सब १३ के सब एकट्ठे किये जाओगे । और उस दिन ऐसा होगा कि बड़ा नरसिंगा फूंका जायेगा और जो असूर के देश में छिन्न भिन्न थे और जो मिस्र की भूमि में देशान्तर थे वे आयेंगे और पवित्र पहाड़ पर परमेश्वर को दंडवत करेंगे ॥

अट्ठाईसवां पर्ब्ब ।

१ सन्ताप इफरायम के मतवालों के ऊंचे मुकुट पर और कुम्हलाते हुए फूल उस की तेजवती सुन्दरता पर जो मदिरा के मारे हुओं की फलवंत तराई के सिरे २ पर है । देखो प्रभु एक पराक्रमी और बली मनुष्य रखता है जिस ने ओलों के मेंह और नाशक प्रचंड वायु के समान महा डुबानेहारे पानियों के मेंह की नाईं अपने हाथ से उसे भूमि पर गिरा दिया ३ है । इफरायम के मतवालों का ऊंचा मुकुट ४ पांव से रौंदा जायेगा । और उस की तेजवती सुन्दरता का मुरझाता हुआ फूल जो फलवंत तराई के सिरे पर है सो पहिले पक्के गूलर के समान होगा ऋतु से पहिले जिसे उस का देखवैया देखता है और जब उस के हाथ ही में है तब उसे निगल जाता है ॥

५ उस दिन सेनाओं का परमेश्वर अपनी जाति के बचे हुओं के लिये सुन्दरता का मुकुट और तेजस्वी किरीट होगा । और ६ उस के लिये जो न्याय पर बैठता है न्याय का आत्मा और उन के लिये जो लड़ाई को द्वार पर लौटा देते हैं बल होगा । पर ये भी मदिरा से भटक गये ७ और मद्यपान से भटक गये याजक और भविष्यद्वक्ता मद्यपान से भटक गये मदिरा ने उन्हें खा लिया मद्यपान से भटक गये दर्शन में भटक गये बिचार में डगमगा गये । क्योंकि सारे मंच छांट ८ से और मल से भर गये बिना निर्मल स्थान ॥

वह किस को ज्ञान सिखावेगा और ९ किस को सुनी हुई बात समझायेगा क्या उन को जिन का दूध छुड़ाया गया जो स्तनों से अलग किये गये । क्योंकि आज्ञा १० पर आज्ञा आज्ञा पर आज्ञा पांती पर पांती पांती पर पांती थोड़ा यहां थोड़ा वहां । क्योंकि तुतले होंठों से और अन्य ११ भाषा से वह इस जाति से बातें करेगा । जिस ने उन से कहा कि यही बिश्राम १२ है थके को बिश्राम देओ और यही चैन है पर उन्हों ने सुनने को न चाहा । और १३ परमेश्वर का बचन उन को आज्ञा पर आज्ञा आज्ञा पर आज्ञा पांती पर पांती पांती पर पांती थोड़ा यहां थोड़ा वहां था जिसतें वे चलें और ठोकर खाके चित गिर पड़ें और टूट जायें और फंस जायें और पकड़े जायें ॥

सो हे ठट्ठा करनेहारे मनुष्यो इस १४ जाति के न्याइयो जो यरूसलम में हो परमेश्वर का बचन सुनो । इस लिये १५ कि तुम ने कहा है कि हम ने मृत्यु से बाचा बांधी और पाताल से हम ने नियम किया है डुबानेहारा कोड़ा जब आरपार जायेगा तब हम पर न आयेगा क्योंकि हम ने झूठ को अपना शरणस्थान ठहराया है और छल में अपने को

१६ दिखाया है। इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देखो मैं सैहून में नेव के लिये एक पत्थर रखता हूं एक परीक्षा किया हुआ पत्थर कोने के सिरे का बहुमूल्य पत्थर एक स्थिर नेव बिश्वासी

१७ शीघ्र न करेगा। और मैं शलाका पर न्याय और साहुल पर धर्म्म रक्खूंगा और ओला झूठ के शरणस्थान को ढा देगा और छिपने के स्थान को जल डुबा

१८ देगा। और तुम ने जो मृत्यु से बाचा बांधी सो टूट जायेगी और पाताल से जो तुम ने नियम किया वह स्थिर न रहेगा डुबानेहारा कोड़ा जब आरंपार आयेगा तब तुम उस के नीचे रौंदे

१९ जाओगे। वह अपने आरंपार जाते हो तुम को ले जायेगा क्योंकि वह हर बिहान को आरंपार जायेगा दिन और रात को और केवल भय तुम को सुनी

२० हुई बात समझायेगा। क्योंकि खाट ऐसी छोटी है कि कोई उस पर आप को लम्बा नहीं कर सक्ता और ओढ़ना ऐसा सकेत है कि कोई आप को उस

२१ में लपेट नहीं सक्ता। क्योंकि प्रासीम के पहाड़ की नाईं परमेश्वर उठेगा उस तराई के समान जो जिबऊन में है क्रुद्ध होगा जिसतें अपना काम अपना अनूठा काम करे और अपना कार्य्य अपना

२२ अनोखा कार्य्य करे। और अब ठट्ठा न करो न होवे कि तुम्हारे बंधन दृढ़ हो जायें क्योंकि सारी भूमि पर बिनाश हां ठहराये हुए बिनाश का संदेश मैं ने प्रभु सेनाओं के परमेश्वर से सुना है॥

२३ कान धरके मेरा शब्द सुनो ध्यान

२४ धरके मेरी बात सुनो। क्या हरवाहा बोने के लिये प्रतिदिन हर जोता है क्या वह प्रतिदिन अपनी भूमि को ढेलता और समथर किया करता है।

२५ जब वह उस की धरातल को समथर कर चुका तो क्या वह अजवायन को नहीं छींटता और जीरे को नहीं छितराता और गोहूं को पांतियों में लगाता और जव को उस के ठहराये हुए ठौर में और मुड़िया गोहूं को अपने ठिकाने

२६ में। यों उस का ईश्वर ठीक रीति से उसे सिखाता है और उसे ज्ञान देता है।

२७ क्योंकि अजवायन दावने की बस्तु से नहीं दाई जाती है और न गाड़ी का पहिया जीरे पर घुमाया जाता है पर अजवायन लाठी से झाड़ी जाती है

२८ और जीरा छड़ी से। रोटी का अन्न कुचलवाया जाता है क्योंकि वह सदा उसे दावता न रहेगा पर वह उस पर अपनी गाड़ी का पहिया चलाता है पर अपने घोड़ों से उसे नहीं कुचलवाता।

२९ यह भी सेनाओं के परमेश्वर से आता है वह मंत्र में आश्चर्य्यित बुद्धि में महान है॥

उनतीसवां पर्ब्ब।

१ अरिएल पर अरिएल पर संताप उस नगर पर जिस में दाऊद ने बास किया था बरस पर बरस बढ़ने देओ पर्ब्ब

२ क्रम क्रम से आया करें। और मैं अरिएल को दुःख देऊंगा और उदासी और बिलाप होगा और वह मेरे लिये अरिएल

३ की नाईं होगा। और मैं तेरे चारों ओर छावनी खड़ी करूंगा और सेना से तुझे घेरूंगा और तेरे बिरोध में गढ़

४ बनाऊंगा। और तू नीचे उतारा जायेगा और धूल से बातें करेगा और धूल से तेरी बोली धीमी होगी और तेरा शब्द टोन्हे के समान भूमि से होगा और धूल

५ से तेरी बोली चहचहायेगी। तब तेरे शत्रुन की मंडली सूक्ष्म धूल की नाईं होगी और उपद्रवियों की मंडली उड़नेहारे भूसे की नाईं और वह क्षणमात्र

६ एक पल में होगा। सेनाओं के परमेश्वर

की ओर से गर्जन और भूमिकंप से और बड़े शब्द आंधी और झक्कड़ और भस्मक आग की लवर से उस पर दृष्टि ७ किई जायेगी। तब स्वप्न और रात के दर्शन की नाईं उन सारे जातिगणों की भीड़ होगी जो अरिएल के सन्मुख संग्राम करते हैं हां सब जो उस्से और उस की गढ़ियों से लड़ते हैं और उसे ८ दुःख देते हैं। और ऐसा होगा जैसा भूखा स्वप्न में है और क्या देखता है कि खाता है और जाग उठा और उस का पेट छूछा है और जैसा प्यासा स्वप्न में है और क्या देखता है कि पीता है और जाग उठा और क्या देखता है कि थका और उस का पेट इच्छुक है वैसा ही उन सारे जातिगणों की भीड़ होगी जो सैहून के पहाड़ के विरोध में युद्ध करते हैं॥

९ शङ्कित रहो और आश्चर्य्यित हो अपने को मगन रक्खो और अन्धे बन जाओ वे मतवारे हैं पर मदिरा से नहीं वे लड़खड़ाते हैं पर तीक्ष्ण मदिरा १० से नहीं। क्योंकि परमेश्वर ने तुम पर भारी नींद का आत्मा उंडेला है और तुम्हारी आंखें बंद किईं भविष्यद्वक्तों को हां तुम्हारे अध्यक्षों को दर्शियों को ११ उस ने ढांप लिया है। और सारे दर्शियों का दर्शन तुम्हारे लिये उस पुस्तक की बातों के समान हो गया जो छाप से बंद हो जिसे यह कहके पढ़े लिखे को देते हैं कि आप इसे पढ़िये और वह उत्तर देवे कि मैं नहीं पढ़ सक्ता क्योंकि उस के ऊपर छाप १२ किई हुई है। और पुस्तक यह कहके उस को दिई जाये जो बिन पढ़ा लिखा है कि आप इस को पढ़िये और वह कहे कि मैं पढ़ा लिखा नहीं हूं॥

१३ और प्रभु ने कहा इस कारण से कि ये लोग अपने मुंह से मेरी निकटता चाहते हैं और ये लोग अपने होंठों से मेरी प्रतिष्ठा करते हैं पर ये लोग अपना मन मुझ से दूर रखते हैं और उन का मुझ से भय रखना मनुष्यों की आज्ञा और सिखलाई बात है। इस लिये देखो १४ मैं इस जाति से आश्चर्य्यित व्यवहार करता जाऊंगा बड़ा ही आश्चर्य्य और अचंभे के साथ और उस के बुद्धिमानों की बुद्धि नाश हो जायेगी और उस के पंडितों की पंडिताई अपने को लुप्त करेगी॥

१५ उन पर सन्ताप जो गहिराई में जाते हैं जिसतें परमेश्वर से मंत्र छिपावें और उन के कामकाज अंधियारे में हैं और वे कहते हैं कि कौन हमें देखता और कौन हमें पहिचानता है। आहा १६ का तुम्हारा क्या ही उलटना है क्या कुम्हार मिट्टी की नाईं गिना जायेगा कि कृत्य कर्त्ता के विषय में कहे कि उस ने मुझे नहीं बनाया और निर्माण किई हुई वस्तु अपने निर्माणकर्त्ता के विषय कहे कि वह निर्बुद्धि है॥

१७ अब क्या थोड़ी बेर में ऐसा न होगा कि लुबनान बाटिका हो जायेगा और बाटिका झाड़ी में गिनी जायेगी। और १८ उसी दिन बहिरे पुस्तक की बातें सुनेंगे और अंधों की आंखें अंधियारे में से और तिमिर में से देखेंगी। और कोमल पर- १९ मेश्वर से अधिक आनन्द करते रहेंगे और मनुष्यों के दीन इसराएल के धर्म्म- मय से आह्लादित होंगे। क्योंकि उपद्रवी २० हो चुका और ठठेल नष्ट हो गया और सारे बुराई के जोहक काट डाले गये। जो मनुष्य को बात में दोषी ठहराते थे २१ और उस के लिये जो फाटक पर बाद करता था फंदा लगाते थे और धर्म्मी को झूठ के बल से हटा देते थे॥

२२ इस लिये परमेश्वर जिस ने अबि-रहाम को मुक्ति दिई यअकूब के घराने से यों कहता है कि अब यअकूब लज्जित न होगा और अब उस का मुंह पीला न २३ होगा । क्योंकि जब वह अपने मध्य में अपने सन्तानों को जो मेरे हाथों के बनाये हुए हैं देखेगा तब वे मेरे नाम को पवित्र करेंगे हां यअकूब के धर्म्म-मय को पवित्र मानेंगे और इसराएल के २४ ईश्वर से डरेंगे । तब आत्मा के भ्रमी ज्ञान प्राप्त करेंगे और क्रूर लोग उप-देश ग्रहण करेंगे ॥

तीसवां पर्व्व ।

१ परमेश्वर कहता है कि उन दंगाइत बालकों पर सन्ताप जो ऐसा परामर्श करते हैं जो मेरी ओर से नहीं और ऐसा घूंघट बिनते हैं जो मेरे आत्मा से नहीं है जिस्तें पाप पर पाप बढ़ावें । २ जो मिस्र में उतर जाने के लिये चले जाते हैं और मेरे मुंह से प्रश्न नहीं किया जिस्तें फिरऊन के गढ़ में बचने के लिये भागें और मिस्र की छाया में ३ शरण लें । और फिरऊन का गढ़ तुम्हारे लिये लाज होगा और मिस्र की छाया ४ में शरण लेना दुर्नामी । क्योंकि उस के अध्यक्ष जुअन में हैं और उस के दूत ५ हानेस में पहुंचते हैं । वे सब उस जातिगण के कारण से लज्जित हैं जो उन्हें कुछ लाभ न पहुंचायेगा उस जाति-गण से जो न सहाय के लिये और न लाभ के लिये पर लज्जा के लिये और निन्दा के लिये भी होगा ॥

६ दक्षिण के पशुन का क्या ही बोझ विपत्ति और कष्ट की भूमि में जहां से सिंहिनी और सिंह नाग और अगिया उड़वैया सर्प्प आता है वे अपना धन तरुण गदहों की पीठ पर और अपने रोकड़ ऊंटों के पालानों पर उठा ले जाते हैं उस जातिगण के लिये जो कुछ लाभ न पहुंचायेगा । और मिस्री वृथा ७ और अनर्थ सहायता करेंगे इस लिये मैं ने इस देश के लोगों के विषय में यह कहा है कि वे अभिमानी बैठे रहेंगे ॥

अब जा उन के आगे उसे पाटी पर ८ लिख और पुस्तक में उसे लिख रख और वह आनेहारे दिन के लिये सदा के लिये सर्वदा रहे । क्योंकि वह दंग- ९ इत जाति है झूठे लड़के लड़के जो परमेश्वर की व्यवस्था को सुन्ने नहीं चाहते । जो दर्शकों को कहते हैं कि १० दर्शन न देखो और भविष्यद्वक्तों से यह कि हमें सच्ची बातों का संदेश न दो हम से चिकनी चुपड़ी बातें करो झूठे संदेश दो । मार्ग से भटक जाओ पथ ११ से एक ओर हो जाओ इसराएल के धर्म्ममय को हमारी दृष्टि से दूर करो ॥

इस लिये इसराएल का धर्म्ममय यों १२ कहता है कि इस कारण से कि तुम ने इस बचन को तुच्छ जाना है और अंधेर और वक्रता पर भरोसा किया है और उन पर आशा किये हो । इस १३ लिये यह अपराध तुम्हारे लिये गिरने-हारे दरार की नाईं होगा जो ऊंची भीत में कूबड़ पड़ जाता है जिस का फटना अकस्मात एक पलमात्र हो सक्ता । और वह ऐसी टूट गई जैसे कुम्हार का १४ पात्र टूट जाता है चूर चूर हो जाता और उस के चूरों में से ऐसी ठीकरी नहीं पाई जाती जिस्से चूल्हे से आग उठायें और कुण्ड से पानी भर लें ॥

क्योंकि प्रभु परमेश्वर इसराएल का १५ धर्म्ममय यों कहता है कि फिर आने और चैन में तुम बच जाओगे चुपके रहने और भरोसा करने में तुम्हारा बल होगा पर तुम ने नहीं चाहा । और तुम ने १६ कहा कि नहीं क्योंकि हम घोड़ों पर

चढ़के भाग जायेंगे इस लिये तुम भाग जाओगे और शीघ्रगामी पशुओं पर चढ़ोगे इस लिये तुम्हारे पीछा करने-

१७. हारे शीघ्रगामी होंगे। एक सहस्र एक की घुरकी से पांच की घुरकी से हां तुम भागोगे यहां लों कि तुम उस स्तंभ के समान रह जाओगे जो पहाड़ की चोटी पर है और उस ध्वजा के समान जो टीले पर है॥

१८ और इस लिये परमेश्वर तुम पर अनुग्रह करने के लिये ताकता रहेगा और इस लिये वह तुम पर दया करने के लिये उठेगा क्योंकि परमेश्वर न्याय का ईश्वर है क्या ही धन्य उस के सारे आश्रित॥

१९ क्योंकि जाति सैहून और यरूसलम में बास करेगी तू फिर बिलाप न करेगी वह तेरी दुहाई का शब्द सुनके तुझ पर बड़ी कृपा करेगा वह सुनते ही

२० तुझे उत्तर देगा। और प्रभु तुम्हें कष्ट की रोटी और दुःख का पानी देगा और तेरे उपदेशक फिर अपने को न छिपावेंगे परन्तु तेरी आंखें तेरे उपदेशकों

२१ को देखती रहेंगी। और तेरे कान तेरे पीछे से यह बचन सुनेंगे कि मार्ग यही है इसी पर चलो जब कि तुम दहिने

२२ और जब कि तुम बायें मुड़ो। और तुम अपनी गढ़ी हुई मूर्त्तिन का रुपहला बस्त्र और अपनी ढाली हुई प्रतिमा के सोनहरे आभरण को अशुद्ध जानोगे तू उन्हें अशुद्ध बस्तु की नाईं फेंक देगा

२३ तू उस्से कहेगा कि दूर हो। और वह तेरे उस बीज के लिये मेंह देगा जो तू भूमि में बोयेगा और रोटी भूमि का फल और वह चिकनी और चुपड़ी होगी तेरे पशु उस दिन फैलाव चराई के

२४ स्थान में चरेंगे। और बैल और गदहे भूमि के जोतनेहारे सलोनी सानी खायेंगे जो चलनी और सूप से उसाई गई है।

२५ और हर एक ऊंचे पहाड़ और हर एक ऊंचे टीले पर प्रनाले और पानी की धाराएं होंगी महा संहार के दिन गढ़ों

२६ के गिरने के समय। और चंद्रमा की ज्योति सूर्य्य की ज्योति के समान होगी और सूर्य्य की ज्योति शतगुणी होगी सात दिनों के प्रकाश के समान जिस दिन परमेश्वर अपनी जाति के टूटे फूटे को सुधारेगा और वह उस की मार के घाव को चंगा करेगा॥

२७ देखो परमेश्वर का नाम दूर से आता है और उस का क्रोध जलानेहारा और उठनेहारी अत्यन्त लवर है उस के होंठ कोप से भरे हैं और उस की जीभ भस्मक आग की नाईं है। और

२८ उस का आत्मा डुबानेहारी धारा की नाईं गले लों दो भाग कर देगा जिस्तें देशगणों को झूठ की चलनी में छाने और जातिगणों की दाढ़ों में भरमानेहारी

२९ बाग होगी। तुम्हारा गाना ऐसा होगा जैसा पर्ब्ब के पवित्र मान्ने की रात और मन का आनन्द जैसा उस का जो बांसुरी लिये हुए चलता है जिसतें परमेश्वर के पर्बत में इसराएल की चटान के

३० पास जाये। और परमेश्वर अपने शब्द का तेज सुनावेगा और अपने हाथ का नीचे आना दिखावेगा कोप की जलन और भस्मक आग की लवर के साथ महा झड़ी और बर्षा और ओले।

३१ क्योंकि परमेश्वर के शब्द से असूर हार-मान होगा वह छड़ी से उसे मारेगा।

३२ और प्रारब्ध के दंड का हर प्रहार जो परमेश्वर उस पर लगायेगा सो दमामों और बीणों के साथ होगा और धूमधाम की लड़ाइयों के साथ उस्से संग्राम किया

३३ जाता है। क्योंकि तुफत कल से सिद्ध है हां वह राजा के लिये सिद्ध हुआ है

उस ने उसे गहिरा किया चौड़ा किया है उस का ढेर अग्नि और बहुत सी लकड़ी है परमेश्वर का श्वास गंधक की धारा के समान उस को सुलगाता है॥

एकतीसवां पर्व्व।

१ उन पर सन्ताप जो सहायता के लिये मिस्र को उतर जाते हैं और घोड़ों पर भरोसा करते हैं और रथों पर आशा रखते हैं क्योंकि वे बहुत हैं और घोड़चढ़ों पर क्योंकि वे बड़े बलवंत हैं और इसराएल के धर्म्ममय की ओर नहीं फिरते और परमेश्वर के खोजी २ नहीं हैं। और वह भी बुद्धिमान है और बिपत्ति लाता है और अपने बचनों को टलने नहीं देता और दुष्टों के घराने को बिरुद्धता पर और कुकर्म्मियों के उपकार के बिरोध में खड़ा होता है। ३ और मिस्री तो मनुष्य हैं और सर्वशक्तिमान नहीं और उन के घोड़े मांस हैं और आत्मा नहीं और परमेश्वर अपना हाथ बढ़ावेगा और उपकारक ठोकर खायेगा और उपकृत गिर पड़ेगा और वे सब के सब एकट्ठे नाश हो जायेंगे॥

४ क्योंकि परमेश्वर ने मुझ से यों कहा कि जैसा सिंह और तरुण सिंह अपने अहेर को दबोचके गर्जता है जिस की बिरुद्धता पर गड़रियों की जथा बुलाई गई उन के शब्द से वह नहीं डरता और उन के कोलाहल से नहीं दबता वैसा ही सेनाओं का परमेश्वर सैहून के पहाड़ और उस के टीले पर संग्राम ५ करने के लिये उतरेगा। जैसे चिड़ियां अपने घोसलों के ऊपर उड़ती हैं वैसा ही सेनाओं का परमेश्वर यरूसलम को ढांपेगा ढांपेगा और छुड़ावेगा आरंपार जायेगा और बचायेगा॥

६ उस की ओर फिरो जिस्से इसराएल ७ के संतान बहुत ही भटक गये। क्योंकि उस दिन वे हर एक अपनी रुपहली मूर्त्तों और अपनी सोनहली प्रतिमाओं को जिन्हें तुम्हारे हाथों ने तुम्हारे लिये पाप की सामा बनाई फेंक देंगे। और ८ असूर उस की तलवार से गिरेगा जो पुरुष नहीं है और उस का खड्ग जो मनुष्य नहीं है उसे खा जायेगा और वह खड्ग के सन्मुख से भागेगा और उस के तरुण करदायक हो जायेंगे। ९ और उस की चटान भय के मारे जाती रहेगी और उस के अध्यक्ष ध्वजा से घबरा जायेंगे परमेश्वर कहता है जिस की आग सैहून में है और उस का भट्ठा यरूसलम में॥

बत्तीसवां पर्व्व।

१ देखो धर्म्म के लिये एक राजा राज्य करेगा और अध्यक्ष न्याय के लिये प्रभुता २ करेंगे। और एक मनुष्य आंधी से रक्षास्थान की नाईं होगा और मेंह से छिपने का स्थान पानी की धाराओं की नाईं मरुस्थल देश में भारी चटान की छांह ३ की नाईं थकाई की भूमि में। और देखनेहारों की आंखें न धुंधलायेंगी और श्रोताओं ४ के कान भली भांति सुनेंगे। और अबिवेकी का मन ज्ञान को समझेगा और तोतले की जिह्वा भली भांति बोलने के लिये ५ शीघ्रता करेगी। मूर्ख प्रतिष्ठित न कहलावेगा और न कृपण दाता कहावेगा। ६ क्योंकि मूर्ख मूर्खता की बातें करेगा और उस का अन्तःकरण बुराई करेगा जिस्तें दुष्कर्म्म करे और परमेश्वर की बिपरीतता में भटकने की बातें करे जिस्तें भूखे के पेट को छूंछा रक्खे और वह प्यासे के पानी को थोड़ा कर ७ देगा। और कृपण के हथियार बुरे हैं वह बुरी युक्ति बांधता है जिस्तें झूठी बातों से नम्र लोगों को फंसावे हां जब कि कंगाल न्याय की बातें करता है।

८ पर दाता दातृता का बिचार करता है और वह दातृता पर स्थिर रहेगा॥
९ हे निडर स्त्रियो खड़ी हो मेरा शब्द सुनो हे निश्चिन्त बेटियो मेरी
१० बात पर कान धरो। हे निश्चिन्त स्त्रियो एक बरस और कुछ दिनों के उपरान्त तुम थर्थराओगी क्योंकि दाख की ऋतु जाती रही समेटने का समय
११ न आवेगा। हे निडर स्त्रियो थर्थराओ हे निश्चिन्त बेटियो कांपो अपने को उघारो और नंगा करो और टाट अपनी
१२ कटि पर बांधो। सुन्दर खेतों के लिये फलवान दाख के लिये छातियां पीटती
१३ हुईं। मेरी जाति की भूमि पर कांटे और कटीले उगेंगे क्योंकि हे हर्षित नगर वे तेरे सारे मंगलस्थानों में उगेंगे।
१४ क्योंकि भवन त्यागा गया नगर का हुल्लड़ छोड़ दिया गया टीला और गढ़ खोहों के चहुंओर सदा के लिये हो गये और जंगली गदहों के आनन्दस्थान
१५ झुंडों के चराईस्थान। जब लों कि ऊपर से आत्मा हम पर उंडेला न जाये और बन बाटिका हो जाय और बाटिका
१६ बन के समान गिनी जावे। और न्याय बन में बसेगा और धर्म्म बाटिका में
१७ निवास करेगा। और धर्म्म का कार्य्य कुशल होगा और धर्म्म का फल स्थिरता
१८ और निश्चिन्तता सदा के लिये। और मेरी जाति कुशल के भवन में और निश्चिन्तता के निवासों में और चैन के
१९ स्थानों में रहेगी। और झाड़ी के गिरने के समय ओले पड़ेंगे और वह नगर
२० नीचाई में नीचा होगा। तुम क्या ही धन्य हो जो सारे पानियों के पास बोते हो वहां बैल और गदहे के पांव जाने देते हो॥

तेतीसवां पर्ब्ब।

१ तुझ लुटेरे पर सन्ताप और तू लूटा न गया और तुझ छली पर और तू ने छल नहीं खाया जब तू लूट चुकेगा तब तू लूटा जायेगा और जब तू छल दे चुकेगा तब तू छला जायेगा॥
२ हे परमेश्वर हम पर दयालु हो हम तेरी बाट जोहते हैं हर बिहान को उन की भुजा हो हां बिपत्ति के समय
३ में हमारी मुक्ति। हुल्लड़ के शब्द से जातिगण भाग गये तेरे उठने से जातिगण छिन्न भिन्न हो गये॥
४ और तुम्हारी लूट ऐसी एकट्ठी किई जायेगी जैसे भक्षण करनेहारी टिड्डी बटोरती है टिड्डियों के दौड़ने के समान
५ कोई उस पर दौड़ता होगा। परमेश्वर महान प्रगट हुआ क्योंकि ऊंचाई पर रहता है उस ने सैहून को न्याय और
६ धर्म्म से भर दिया है। और वह तेरे समयों का रक्षक होगा उद्धारों का बल बुद्धि और ज्ञान परमेश्वर का भय वही उस का भण्डार है॥
७ देखो उन के बलवान बाहर चिल्लाते हैं मिलाप के दूत बिलख बिलखके
८ रोते हैं। राजमार्ग सुनसान हो गये यात्रिक जाता रहा उस ने बाचा भंग किई है नगरों को तुच्छ जाना मनुष्य
९ को लेखे में नहीं लाया। देश बिलाप करता है झुरा गया लुबनान लज्जित हुआ कुम्हला गया सरून बन की नाईं हो गया और बसनिया और करमिल पत्ते झाड़ते हैं॥
१० परमेश्वर कहता है कि अब मैं उठूंगा अब मैं ऊंचा हो जाऊंगा अब मैं आप
११ को महान करूंगा। तुम्हें भूसे का गर्भ होगा तुम पुआल जनोगे तुम्हारा श्वास
१२ आग के समान तुम्हें खा लेगा। और जातिगण चूने की भट्ठियां होंगे कटे हुए कांटे होकर वे आग में जलाये जायेंगे॥

१३ अरे तुम कि दूर हो जो मैं ने किया है उसे सुनो और अरे तुम कि समीप हो
१४ मेरी सामर्थ्य को जानो। सैहून में पापी भयमान हुए कपकपी ने कपटियों को पकड़ लिया है कौन हम्में से भस्मक अग्नि में रहेगा कौन हम्में से सनातन की जलन में रहेगा॥

१५ धर्म्म के साथ चलते हुए और खराइयों की बातें करते हुए अंधेरों के लाभ को तुच्छ करते हुए अकोर लेने से अपने हाथ झाड़ते हुए हत्या की बातें सुन्ने से अपना कान मूंदते हुए और बुराई पर दृष्टि करने से अपनी आंखें मूंदते
१६ हुए। वही ऊंचे स्थानों में बास करेगा चटानों के गढ़ उस के ऊंचे स्थान होंगे उस को रोटी दिई गई उस के लिये
१७ जल का प्रण किया गया। तेरी आंखें राजा को उस के बिभव में देखेंगी वे दूर दूर के देश पर दृष्टि करेंगी॥

१८ तेरा मन भय पर सोच करेगा कहां गिनवैया कहां तुलवैया कहां गढ़ों का
१९ गिनवैया है। तू उस बली जाति को फिर न देखेगा उस जाति को जिस की बोली ऐसी अनोखी है कि समझ में नहीं आती जिस की भाषा बिदेशी और निरर्थ है॥

२० हमारे पर्ब्बों के नगर सैहून पर दृष्टि कर तेरी आंखें यरूसलम को देखेंगी कि अब चैन का निवास है एक तंबू जो न टलेगा उस के खूंटे कभी उखाड़े न जायेंगे और उस की डोरियों में से
२१ एक भी न तोड़ी जायेगी। परन्तु वहां परमेश्वर हमारे लिये बली होगा उस स्थान में जहां धाराएं दोनों ओर चौड़ी धाराएं हैं उस में डांड की नौका चलेगी और न सुन्दर जहाज उस में
२२ होके पार जायेगा। क्योंकि परमेश्वर हमारा न्यायी परमेश्वर हमारा व्यवस्था-दायक परमेश्वर हमारा राजा वही हमें मुक्ति देगा॥

२३ तेरी रस्सियां ढीली किई गईं वे अपने मस्तूल को खड़ा नहीं रख सक्तीं वे पाल को नहीं फैलातीं तब लूट की सामा बहुताई से बांटी जाती है लंगड़े
२४ लूट को लूटते हैं। और बसनेहारा न कहेगा कि मैं रोगी हूं जो जाति उस में रहती है उस का पाप क्षमा किया गया॥

चौंतीसवां पर्व्व

१ हे जातिगणो सुन्ने के लिये समीप आओ और हे लोगो कान धरो पृथिवी और उस की भरपूरी सुने जगत और सब
२ बस्तें जो उस्से निकलती हैं। क्योंकि परमेश्वर का कोप सारे जातिगणों पर है और उस का क्रोध उन की सारी सेना पर उस ने उन्हें स्राप के नीचे रक्खा उन्हें संहार के लिये सौंप दिया
३ है। और उन के संहारित फेंक दिये जायेंगे और उन की लोथों की दुर्गंध उठेगी और पहाड़ उन के लोहू से पिघल
४ जायेंगे। और स्वर्ग की सारी सेनायें गल जायेंगी और स्वर्ग पाते की नाईं लपेटे जायेंगे और उन की सारी सेनायें मुरझा जायेंगी जैसा दाख का पत्ता मुरझा जाता है और गूलर के वृक्ष के मुरझाते हुए पत्ते के समान।
५ क्योंकि मेरा खड्ग स्वर्ग में परिपुत हो गया देखो वह अदूम पर उतरेगा और उस जाति पर जो मेरे स्राप के नीचे है न्याय के
६ लिये। परमेश्वर का एक खड्ग है वह लोहू से भरा है चिकनाई से चिकना किया गया है मेंढों और बकरों के लोहू से मेंढों के गुर्दों की चिकनाई से क्योंकि बुसराह में परमेश्वर के लिये एक बलिदान है और अदूम के देश में महा संहार। और बनैले भैंसे उन के साथ

गिरेंगे और बैल सांढ़ों के साथ और उन का देश रुधिर से परिपूर्ण हो जायेगा और उन की धूल चिकनाई से चिकनाई
८ जायेगी । क्योंकि परमेश्वर के पलटा लेने का दिन है और सैहून के कारण
९ के लिये पलटा लेने का बरस । और उस के नाले राल हो जायेंगे और उस की धूल गंधक और उस का देश जलती
१० हुई राल हो जायेगा । रात दिन वह कभी न बुझेगी सर्व्वदा लों उस का धूआं उठता रहेगा पीढ़ी से पीढ़ी लों वह उजाड़ रहेगा सनातन लों उस में
११ कोई यात्री न होगा । तब सारस और साही उसे अधिकार में लेंगे और गरुड़ और काग उस में बसेंगे और उस पर उजाड़ का सूत और शून्यता के पत्थर
१२ फैलाये जायेंगे । उस की मांदों को जिन में कोई नहीं है वे राज्य कहेंगे और
१३ उस के सारे अध्यक्ष जाते रहेंगे । और उस के भवनों में कांटे उगेंगे बिछुए और ऊंटकटारे उस के गढ़ों में और वह भेड़ियों का निवास और शुतुर्मुर्गों की
१४ राजधानी होगी । और बनपशु हूहा करनेहारे पशुओं से भेंट करेंगे और बालवाला अपने संगी को पुकारेगा केवल वहां निशाचर पशु चैन करता है और अपने लिये शयनस्थान पाता है ।
१५ वहां उकाल करवैया सर्प्प बांबी बनायेगा और अंडे देगा और सेवेगा और अपनी छाया के नीचे रक्षा करेगा केवल वहां गिद्ध एकट्ठे होंगे हर एक अपने साथी के साथ ॥

१६ परमेश्वर की पुस्तक में ढूंढ़ो और सुनाओ उन में से एक भी नहीं घटा है वे एक दूसरे को बिछुरा हुआ नहीं पाते हैं क्योंकि मेरे मुंह ही ने आज्ञा किई है और उसी के आत्मा ही ने
१७ उन्हें एकट्ठा किया है । और उसी ने उन के लिये चिट्ठी डाली है और उस के हाथ ने रस्सी डालके उसे उन के लिये भाग कर दिया है वे सदा के लिये उसे अधिकार में रक्खेंगे पीढ़ी से पीढ़ी लों उस में बसा करेंगे ॥

पैंतीसवां पर्व्व ।

१ बन और उजाड़ उन के लिये मगन होंगे और जंगल आनन्दित होगा और
२ फूल की नाईं फूलेगा । वह बहुत फूलेगा और आनन्द करेगा हां मगनता और आनन्दता के साथ लुबनान का विभव उसे दिया गया है करमिल और सरून की सुन्दरता वे ही परमेश्वर का तेज
३ देखेंगे हमारे ईश्वर की सुन्दरता । गिरते हुए हाथों को बल देओ और डगमगाते हुए घुटनों को दृढ़ करो ॥

४ अधीर्य्यों से कहो कि बलवान होओ मत डरो देखो तुम्हारा ईश्वर तुम्हारे निमित्त है और पलटा आया चाहता है ईश्वर की ओर से बदला वही आया चाहता है और तुम्हें बचावेगा ॥

५ तब अंधों की आंखें खोली जायेंगी और बहिरों के कान खोले जायेंगे ।
६ तब लंगड़ा हरिण के समान चौकाड़ियां भरेगा और गूंगे की जीभ गावेगी क्योंकि जंगल में पानी फूट निकले हैं और
७ शून्य स्थान में धारें । और मरीचिका पोखरा हो जायेगी और पियासी भूमि पानियों के सोते हां भेड़ियों के घर में उन की गुफा में नल और नरकट के
८ स्थान में । और वहां सड़क और मार्ग होगा और वह धर्म्ममय का मार्ग कहा जायेगा उस पर अपावन मनुष्य न चलेगा और वह उन्हीं के लिये होगा मार्गगामी और अज्ञान भटक न जायेंगे ।
९ वहां सिंह न होगा और हिंसक पशु उस पर न चढ़ेगा न वहां पाया जायेगा
१० परन्तु वहां छुड़ाये गये लोग चलेंगे । और

परमेश्वर के मोल लिये हुए लोग फिरेंगे और ललकार के साथ सैहून में आवेंगे और नित्यानंद उन के सिरों पर होगा आनन्द और आह्लाद उन्हें प्राप्त होगा और शोक और कहरना भागेगा ॥

छत्तीसवां पर्व्व ।

१ और ऐसा हुआ कि हिजकियाह राजा के चौदहवें बरस असूर का राजा सनहेरीब यहूदाह के सारे दृढ़ नगरों पर चढ़ २ आया और उन्हें ले लिया । और असूरियों के राजा ने रब्बसाकी को बड़ी सेना के साथ लकीस से हिजकियाह राजा के पास यरूसलम को भेजा और वह ऊपर के कुण्ड की नाली पर धोबी ३ के खेत की सड़क पर खड़ा था । और हिजकियाह का बेटा इलयाकीम जो घर का अध्यक्ष था और शबना लेखक और आसफ का बेटा यूअख स्मारक उस के पास आये ॥

४ तब रब्बसाकी ने उन से कहा कि जाके हिजकियाह से कहो कि महाराज असूरियों का राजा यह कहता है वह कौन सी आशा है जिस पर तू ५ भरोसा रखता है । मैं कहता हूं कि युद्ध के लिये तुम्हारे मंत्र और सामर्थ्य केवल मुंह की बातें हैं अब किस पर तेरा भरोसा है कि तू मेरे बिरोध में ६ फिर गया है । देख तू ने इस टूटे हुए नल की लाठी पर अर्थात् मिस्र पर भरोसा रक्खा है जिस पर यदि कोई मनुष्य आसा करे तो वह उस के हाथ में जाके उसे बेधेगी वैसा ही मिस्र का राजा फिरऊन उन सभों के लिये है जो ७ उस पर भरोसा रखते हैं । और यदि तू मुझ से कहे कि हमारा भरोसा परमेश्वर अपने ईश्वर पर है क्या वह नहीं कि जिस के ऊंचे स्थानों और जिस की यज्ञवेदियों को हिजकियाह ने दूर किया और यहूदाह और यरूसलम से कहा कि तुम इस यज्ञवेदी के आगे पूजा किया करो । ८ सो अब मेरे प्रभु असूर के राजा से होड़ बांधिये और मैं तुझे दो सहस्र घोड़े दूंगा यदि तू उन पर चढ़वैये बैठा सके । ९ सो तू क्योंकर एक आज्ञाकारी को मेरे प्रभु के दासों में से छोटे से छोटे को हटा देगा और यों तू मिस्र पर गाड़ियों और घोड़चढ़ों के लिये भरोसा रखता है । १० और अब क्या मैं परमेश्वर बिना इस देश को नाश करने आया हूं परमेश्वर ही ने तो मुझ से कहा कि उस देश पर चढ़ जा और उसे नाश कर ॥

११ तब इलयाकीम और शबना और यूअख ने रब्बसाकी से कहा कि हम तेरी बिनती करते हैं कि अराम की बोली में अपने दासों से बात कीजिये क्योंकि हम इसे समझते हैं और लोगों के सुन्ने में जो भीत पर हैं यहूदी भाषा में हम से न कहिये । १२ तब रब्बसाकी बोला क्या मेरे प्रभु ने मुझे तेरे प्रभु के पास अथवा तेरे पास ये बातें कहने को भेजा है क्या उस ने मुझे उन लोगों के पास जो भीत पर बैठे हैं नहीं भेजा कि वे तुम्हारे साथ अपना बिष्ठा खावें और मूत्र पीवें ॥

१३ और रब्बसाकी खड़ा रहा और यहूदी भाषा में बड़े शब्द से पुकारके बोला और कहा कि महाराज की अर्थात् असूर के राजा की बात सुनो । १४ राजा यों कहता है कि हिजकियाह तुम्हें छल न देवे क्योंकि वह तुम्हें बचा न सकेगा । १५ और हिजकियाह तुम्हें यह कहके उभारने न पावे कि तुम परमेश्वर पर भरोसा रक्खो कि परमेश्वर निश्चय हमें बचावेगा यह नगर असूर के राजा के हाथ में न सौंपा जायेगा । १६ हिजकियाह की न सुनो क्योंकि असूर का राजा यों कहता

है कि मुझ से मिलाप करके मेरे पास बाहर निकल आओ और तुम में से हर एक अपने अपने दाख का और अपने अपने गूलरवृक्ष का फल खावे और अपने १७ अपने कुण्ड का पानी पीवे । जब लों कि मैं आऊं और तुम्हारे देश की नाईं तुम्हें एक देश में ले जाऊं अन्न और दाखरस के देश में रोटी और दाख की १८ बारी के देश में । चौकस रहो जिस्तें हिजकियाह तुम्हें छल देने न पावे जो कहता है कि परमेश्वर हमें मुक्ति देगा भला जातिगणों के देवों में से कोई अपने देश को असूर के राजा के हाथ १९ से बचा सका है । हमात और अरपाद के देव कहां हैं सिफ़रवाईम के देव कहां और कब और कहां हुआ कि उन्हों ने २० समरून को मेरे हाथ से बचाया । कौन इन देशों के सब देवों में से है जो अपने देश को मेरे हाथ से बचा सके कि परमेश्वर भी यरूसलम को मेरे हाथ से बचावेगा ॥

२१ और वे चुपके हो गए और उत्तर में उसे एक बात न कही क्योंकि राजा की आज्ञा यह थी कि उसे उत्तर मत दीजियो ॥

२२ तब खिलकियाह का बेटा इलयाकीम जो घर का अध्यक्ष था और शबना लेखक और आसफ का बेटा यूआख स्मारक अपने वस्त्र फाड़े हुए हिजकियाह के पास आये और उन्हों ने रब्बसाकी की बातें उसे कह सुनाईं ॥

सैंतीसवां पर्व्व ।

१ और ऐसा हुआ कि जब हिजकियाह राजा ने ये बातें सुनीं तब उस ने अपने कपड़े फाड़े और टाट ओढ़ा और परमेश्वर के मन्दिर में आया । २ और उस ने इलयाकीम को जो घर का अध्यक्ष था और शबना लेखक और याजकों के प्राचीनों को टाट ओढ़ाके अमूस के बेटे यशश्रियाह भविष्यद्वक्ता के पास भेजा । ३ और उन्हों ने उस्से कहा कि हिजकियाह यों कहता है कि आज का दिन दुःख और दपट और अपमान का दिन है क्योंकि बालक उत्पन्न होने के स्थान पर आये और जन्ने का बल नहीं है । ४ यदि परमेश्वर तेरा ईश्वर रब्बसाकी की बातें सुनेगा जिसे उस के प्रभु असूर के राजा ने भेजा कि जीते ईश्वर की निन्दा करे और इन बातों का दण्ड देवे जो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने सुनी हैं तब तू इन बचे हुओं के लिये जो अब हैं प्रार्थना करेगा ॥

५ तब हिजकियाह राजा के सेवक ६ यशश्रियाह के पास आये । और यशश्रियाह ने उन से कहा कि तुम अपने स्वामी से यों कहो कि परमेश्वर यों कहता है कि तू इन बातों से जो तू ने सुनीं जिन से असूर के राजा के सेवकों ने मेरी निन्दा किई है भय मत कर । ७ देख मैं उस में एक आत्मा डालता हूं और वह एक सन्देश सुनेगा और अपने देश की ओर लौटेगा और मैं उसे उस के देश में खड्ग से मरवा डालूंगा ॥

८ और रब्बसाकी लौटा और असूर के राजा को लिबनः से लड़ते पाया क्योंकि उस ने सुना कि वह लकीस से चला गया था । और उस ने कूश के राजा तिरहाक: के विषय में यह सुना कि वह तुझ से लड़ने आता है और जब उस ने सुना तब उस ने दूतों को हिजकियाह के पास यह कहते हुए भेजा । १० कि तुम यहूदाह के राजा हिजकियाह से यों कहो कि तेरा ईश्वर जिस पर तू भरोसा रखता है तुझे छल न देवे जब कहता है कि यरूसलम असूर के राजा के हाथ में न दिया जायेगा । ११ देख तू ने सुना जो कि असूर के राजाओं ने

सारे देशों से किया कि उन्हें सर्व्वथा
१२ नाश करें और तू बच जायेगा। क्या
देशगणों के देवों ने उन्हें बचाया जिन्हें
मेरे पितरों ने बिनाश किया अर्थात्
जौज़ान को और हारान को और रसफ
और अदन के संतान को जो तिलस्सार में
१३ हैं। हमात का राजा और अरफाद का
राजा और सिफ़र्वाईम के नगर का राजा
हेना और इव्वा का राजा कहां है॥

१४ और हिज़कियाह ने वह पत्री दूतों
के हाथ से लिई और उसे पढ़ा और
परमेश्वर के मन्दिर में ऊपर चढ़ गया
और हिज़कियाह ने उसे परमेश्वर के
१५ आगे फैलाया। तब हिज़कियाह ने
परमेश्वर के आगे आके प्रार्थना किई
१६ और कहा। कि हे सेनाओं के परमेश्वर
इसराएल के ईश्वर करोबीम पर
बैठनेहारे तू वही ईश्वर है तू ही
अकेला पृथिवी के समस्त राज्यों के
लिये है तू ही ने आकाश और पृथिवी
१७ को सृजा। हे परमेश्वर अपना कान
झुका और सुन हे परमेश्वर अपनी आंखें
खोल और देख और सनहेरीब की सारी
बातें सुन जिस ने जीवते ईश्वर की
१८ निन्दा करने के लिये भेजा है। हे
परमेश्वर सत्य है कि असूर के राजाओं
ने सारे देशों को और उन की भूमि को
बिनाश कर दिया है और उन के देवों
१९ को आग में झोंक दिया है। क्योंकि
वे ईश्वर न थे पर मनुष्यों के हाथ के
बनाये हुए लकड़ी और पत्थर और
२० उन्हें सर्व्वथा नाश किया। और अब हे
परमेश्वर हमारे ईश्वर हमें उस के हाथ
से बचा और पृथिवी के सारे राज्य
जानेंगे कि तू ही अकेला परमेश्वर है॥

२१ तब अमूस के बेटे यशायाह ने
यह कहते हुए हिज़कियाह के पास
भेजा कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर
यों कहता है कि जो तू ने असूर के
राजा के विषय में मुझ से प्रार्थना
किई॥

२२ यह वह बचन है जो परमेश्वर ने
उस के विषय में कहा है कि सैहून की
कुंवारी बेटी ने तेरी निन्दा किई तुझे
ठट्ठे में उड़ाया है यरूसलम की बेटी
२३ ने तेरे पीछे सिर हिलाया है। तू ने
किस की निन्दा किई और किसे कुबचन
कहा और तू ने किस के बिरोध में
अपना शब्द उठाया है और अपनी आंखें
इसराएल के धर्म्ममय के बिरोध में
२४ चढ़ाईं। तू ने अपने सेवकों के हाथ से
प्रभु की निन्दा करके कहा है कि मैं
अपने रथों की बहुताई से पहाड़ों की
ऊंचाई पर लुबनान की ओर चढ़ गया
मैं उस के ऊंचे देवदारुओं उस
के चुने हुए सरोवृक्षों को काट डालूंगा
और उस के सिवाने की ऊंचाई पर उस
२५ के बन की बारी लों आऊंगा। मैं ने
खोदा और पानी पिया और अपने
पांवों के तलवों से मिस्र की सारी
नदियों को सुखा दूंगा॥

२६ क्या तू ने नहीं सुना दूर से मैं ने
उसे किया प्राचीन दिनों से और उसे
बनाया अब मैं ने उसे पहुंचाया और
वह दृढ़ नगरों को उजाड़ ढेरों में नाश
२७ करने के लिये होगा। और उन के
निवासी अल्प बलवान हैं वे हारमान
और ब्याकुल हो गये वे खेत की घास
और हरियाली हो गये छतों की घास
और बन के खड़े अनाज से आगे वे
२८ मुरझा गये। पर तेरा बैठना और तेरा
जाना और तेरा आना मैं जानता हूं और
तेरा मेरे बिरुद्ध अपने को कोप में
२९ लाना। तेरा मेरे बिरुद्ध अपने को कोप
में लाने के कारण से और इस कारण
से कि तेरा कोप मेरे कानों लों पहुंचा

है सो मैं अपनी नकेल तेरी नाक में लगाऊंगा और अपनी ठाठी तेरे मुंह में और जिस मार्ग से तू आया है उसी पर तुझे फिराऊंगा॥

३० और यह तेरे लिये चिन्ह होगा इस बरस में उसे खाओ जो आप से उगता है और दूसरे बरस में उसे जो उसी से उगता है और तीसरे बरस में बोओ और लवो और दाख की बारियों को ३१ लगाओ और उन के फल खाओ। और यहूदाह के घराने के बचे हुए जो बच रहे हैं सो फिर नीचे जड़ पकड़ेंगे और ३२ ऊपर फल देंगे। क्योंकि यरूसलम से बचे हुए निकलेंगे और सैहून पर्व्वत से बचे हुए सेनाओं के परमेश्वर का ताप यह करेगा॥

३३ इस लिये परमेश्वर असूर के राजा के विषय में यों कहता है कि वह इस नगर लों न आयेगा और यहां बाण न चलावेगा और ढाल के साथ इस के साम्हने न आयेगा और न इस के आगे ३४ मेंड़ बांधेगा। जिस मार्ग से वह आया उसी से वह लौटेगा और इस नगर लों ३५ न आवेगा परमेश्वर कहता है। और मैं अपने लिये और अपने सेवक दाऊद के लिये इस नगर पर उसे बचाने के लिये रक्षा करूंगा॥

३६ और परमेश्वर का दूत निकला और असूर की छावनी में एक लाख पचासी सहस्रों को प्राण से मारा और वे बिहान को तड़के उठे और देखो वे सब मरे पड़े ३७ थे। तब असूर के राजा सनहेरीब ने डेरा उठाया और चला गया और फिर ३८ गया और नीनवः में ठहरा। और वह अपने देव अर्थात् निसरूक के मन्दिर में पूजा करता रहा और अदरम्मलिक और सराज़र उस के बेटों ने उसे खड्ग से मार डाला और उन्हों ने अरारात के देश में अपने को बचाया और असरहद्दून उस का बेटा उस की संती राजा हुआ॥

अठतीसवां पर्व्व।

उन्हीं दिनों में हिज़कियाह को मृत्यु का रोग हुआ और अमूस का बेटा यशाअयाह भविष्यद्वक्ता उस के पास आया और उस्से कहा कि परमेश्वर यों कहता है कि अपने घराने को आज्ञा कर क्योंकि तू मरता है और न जीयेगा। २ तब हिज़कियाह ने अपना मुंह भीत की ओर फेर लिया और परमेश्वर से ३ प्रार्थना किई। और कहा कि अब हे परमेश्वर स्मरण कर मैं बिन्ती करता हूं कि मैं सच्चाई से और सिद्ध मन से तेरे आगे चला फिरा हूं और जो तेरी दृष्टि में भला था सो मैं ने किया और हिज़कियाह बिलख बिलखके रोया॥

४ और परमेश्वर का बचन यशअियाह ५ के पास आया और कहा। कि जा और हिज़कियाह से कह कि परमेश्वर तेरे पिता दाऊद का ईश्वर यों कहता है कि मैं ने तेरी प्रार्थना सुनी मैं ने तेरे आंसू देखे देख मैं तेरी आयुर्दा पंदरह ६ बरस और बढ़ाता हूं। और मैं तुझे और इस नगर को असूर के राजा के हाथ से बचाऊंगा और इस नगर की रक्षा ७ करूंगा। और यह तेरे लिये परमेश्वर की ओर से वह चिन्ह होगा कि परमेश्वर इस बचन को जो उस ने कहा ८ है पूरा करेगा। देख मैं छाये को वे छायायंत्रक्रम जो वह आखज़ के छायायंत्रक्रमों में सूर्य्य के साथ उतर गया है दस क्रम पीछे फिरा देता हूं सो सूर्य्य दस क्रम फिरा उन छायायंत्रक्रमों पर जिन पर उतर गया था॥

९ यहूदाह के राजा हिज़कियाह का लिखा हुआ जब वह रोगी हुआ और अपने रोग से चंगा हुआ॥

१० मैं ने कहा कि अपने दिनों के दूसर जाने में मैं समाधि के फाटकों में प्रवेश करूंगा मैं अपने बरसों के रहे हुए से ११ निरास हो गया । मैं ने कहा कि परमेश्वर को न देखूंगा परमेश्वर को जीवतों की भूमि में मनुष्य को जगत के बासियों के साथ फिर न देखा करूंगा। १२ मेरा निवास उखाड़ा गया और मुझ पर खोला गया है गड़रिये के डेरे के समान मैं ने जुलाहे के समान अपने जीवन को लपेट लिया वह मुझे तांत से काट डालेगा दिन से रात लों तू मुझे समाप्त १३ कर डालेगा । मैं ने उसे बिहान लों सिंह की नाईं अपने साम्हने रक्खा यह कहता हुआ कि वह ऐसा ही मेरी सारी हड्डियों को तोड़ डालेगा दिन से रात लों तू मुझे समाप्त कर डालेगा । १४ सुपाबिना के वा सारस के समान वैसा ही मैं चहचहाता हूं पंडुकों के समान कूकू करता हूं ऊपर की ओर देखने से मेरी आंखें घट गईं हे परमेश्वर मैं दब गया मेरा उपकारी हो ॥

१५ मैं क्या कहूं उस ने तो मुझ से कहा और उसी ने किया है मैं अपने प्राण की कड़वाहट के कारण से अपने सारे १६ बरसों में हौले हौले चला करूंगा । हे प्रभु उन्हीं पर वे जीते हैं और हर एक के विषय में जो उन में है मेरे आत्मा का जीवन है और तू मुझे चंगा करेगा १७ और जीता रक्खेगा । देख मेरी अधम कड़वाहट चैन में पलट गई और तू ने मेरे प्राण को बिनाश के गड़हे से प्यार किया क्योंकि तू ने अपनी पीठ के पीछे मेरे सारे पापों को फेंक दिया है । १८ क्योंकि समाधि तेरा स्वीकार न करेगी न मृत्यु तेरा धन्य मानेगी गड़हे में उतरनेहारे तेरी सच्चाई के विषय बाट न १९ जोहेंगे । जीवता जीवता वही तेरी स्तुति करेगा जैसा मैं आज के दिन करता हूं पिता पुत्रों को तेरी सच्चाई के विषय संदेश देगा । २० परमेश्वर मुझे बचाने के लिये आया और हम अपनी छन्दों को अपने जीवन के सब दिन परमेश्वर के मन्दिर में बजाया करेंगे ॥

२१ और यशैयाह ने कहा कि वे गूलरों की टिकिया लें और उस फोड़े पर लेप चढ़ावें और वह चंगा हो जायेगा । २२ और हिजकियाह ने कहा कि क्या चिन्ह है कि मैं परमेश्वर के मन्दिर में चढ़ जाऊंगा ॥

उंतालीसवां पर्ब्ब ।

१ उस समय बलदान के बेटे मरूदक बलदान ने जो बाबुल का राजा था हिजकियाह के लिये पत्री और भेंट भेजी क्योंकि उस ने सुना कि वह रोगी था २ और चंगा हुआ । और हिजकियाह उन के आने से आनन्दित हुआ और उन्हें अपना भंडारस्थान अर्थात् रूपा और सोना और सुगंध द्रव्य और महंगामोल तेल और अपने सारे हथियारस्थान और सब कुछ जो उस के भंडारों में था उन्हें दिखलाया उस के घर में और उस के राज्य में कोई ऐसी वस्तु न थी जो हिजकियाह ने उन्हें नहीं दिखलाई ॥

३ तब यशैयाह भविष्यद्वक्ता हिजकियाह राजा के पास आया और उस्से पूछा कि इन मनुष्यों ने क्या कहा और कहां से तेरे पास आये और हिजकियाह ने कहा कि दूर देश से बाबुल से वे ४ मेरे पास आये । और उस ने कहा कि उन्हों ने तेरे घर में क्या देखा है और हिजकियाह ने कहा कि सब कुछ जो मेरे घर में है उन्हों ने देखा है कोई वस्तु नहीं जो मैं ने अपने भंडारों में उन्हें नहीं दिखाई ॥

५ तब यशायाह ने हिज़कियाह से कहा कि सेनाओं के परमेश्वर की बात ६ सुन । देख वे दिन आते हैं कि सब कुछ जो तेरे घर में है और जिसे तेरे पितरों ने आज के दिन लों एकट्ठा किया है बाबुल को पहुंचाया जायेगा कि कोई वस्तु छोड़ी न जायेगी परमे-७ श्वर कहता है । और तेरे बेटों से जो तुझ से निकलेंगे जो तुझ से उत्पन्न होंगे वे ले जायेंगे और वे बाबुल के राजा के भवन में नपुंसक होंगे ॥

८ तब हिज़कियाह ने यशायाह से कहा कि भला है परमेश्वर का बचन जो तू ने कहा है और उस ने कहा क्योंकि मेरे दिनों में कुशल और चैन रहेगा ॥

चालीसवां पर्व्व ।

१ तुम शान्ति दो मेरे लोगों को शान्ति २ दो तुम्हारा ईश्वर कहता है । यरूसलम के मन के समान बातें करो और उस को पुकारो कि तेरा संग्राम समाप्त हो गया और तेरे पाप का प्रायश्चित्त हुआ और तू ने परमेश्वर के हाथ से अपने सारे पापों के पलटे में दूना पाया ॥

३ एक पुकारनेहारे का शब्द कि बन में परमेश्वर के मार्ग को सुधारो जंगल में हमारे ईश्वर के लिये राजमार्ग सिद्ध ४ करो । हर एक नीचाई ऊंची किई जायेगी और हर एक पहाड़ और पहाड़ी नीचे किये जायेंगे और ऊंचा नीचा बराबर हो जायेगा और बीहड़ चौगान । ५ और परमेश्वर का बिभव प्रगट किया जायेगा और समस्त मांस एक ही संग उसे देखेंगे क्योंकि परमेश्वर के मुंह ने कहा है ॥

६ एक शब्द कहता है कि पुकार और उस ने कहा कि क्या पुकारूं सारे मांस तो घास हैं और उस की सुन्दरता खेत के फूल की नाईं । घास सूख गई फूल ७ कुम्हला गया क्योंकि परमेश्वर के श्वास ने उस पर फूंक मारी है निश्चय लोग घास हैं । घास तो सूख गई फूल ८ कुम्हला गया पर हमारे ईश्वर का बचन सदा लों स्थिर रहेगा ॥

ऊंचे पहाड़ पर चढ़ जा हे मंगल- ९ समाचार प्रचारनेहारी सैहून पराक्रम के साथ अपना शब्द उठा हे मंगलसमाचार प्रचारनेहारी यरूसलम ऊंचा कर मत डर यहूदाह की बस्तियों से कह कि देखो तुम्हारा ईश्वर । देखो प्रभु परमेश्वर १० बलवाले में होके आता है और उस की भुजा उस के लिये राज्य करती है देखो उस का पलटा उस के साथ है और उस का प्रतिफल उस के आगे । चरवाहे के ११ समान वह अपने झुंड को चरावेगा अपनी भुजा में मेम्नों को एकट्ठा करेगा और उन्हें अपनी गोद में उठायेगा और दूध पिलानेहारियों की अगुआई करेगा ॥

किस ने पानियों को अपने चुल्लू से १२ नापा और आकाशों को बित्ता से परिमाण किया और पृथिवी की धूल को पात्र में भरा और पहाड़ों को पलड़े में और पहाड़ियों को तुला में तौला । किस १३ ने परमेश्वर के आत्मा को परिमाण किया और कौन उस का मंत्री होके उसे सिखलायेगा । उस ने किस्से परा- १४ मर्श पाया और उस ने उसे समझाया और उसे न्याय का पथ बताया और उसे बिद्या बताई और समझ कि मार्ग कौन उसे सिखलायेगा ॥

देखो जातिगण डोल की एक बूंद १५ की नाईं हैं और पलड़ों की धूल के समान गिने गये देख वह टापुओं को अणु की नाईं उठायेगा । और लुबनान १६ ईंधन के लिये बस नहीं और उस के

१७ पशु यज्ञ के लिये बस नहीं । समस्त जातिगण उस के आगे कुछ बस्तु नहीं हैं नास्ति से कम और वृथा उस के निकट गिने गये ॥

१८ सो तुम किस्से सर्वशक्तिमान को उपमा देओगे और उस्से क्या उपमा

१९ ठहराओगे । उस मूर्त्ति को जिसे कार्य्यकारी ने ढालके बनाया है और सुनार उसे सोने से मढ़ेगा और रूपे की

२० सीकरियां वह ढालता है । जो बलिदान चढ़ाते चढ़ाते दरिद्र हो गया वह ऐसे वृक्ष को चुन लेता है जो न घुनेगा वह उस के लिये चतुर कार्य्यकारी ढूंढ़ता है जिस्ते ऐसी मूर्त्ति खड़ी करे जो हिलाई न जायेगी ॥

२१ क्या तुम न जानोगे क्या तुम न सुनोगे क्या आरंभ से तुम को संदेश नहीं दिया गया क्या तुम ने धरती की

२२ नेवों को न समझा । जो भूमि के मंडल पर बैठता है और उस के बासी टिड्डों के समान हैं जो आकाशों को सूक्ष्म बस्त्र की नाईं फैलाता है और उन्हें उस तंबू की नाईं जो निवास के लिये है

२३ फैलाता है । जो अध्यक्षों को तुच्छ कर देता है पृथिवी के न्यायियों को उस ने

२४ व्यर्थ ठहराया है । हां वे न लगाये गये हां वे न बोये गये हां उन के मूल ने भूमि में जड़ नहीं पकड़ी और उस ने केवल उन पर फूंक मारी और वे सूख गये और बगूला उन को भूसे की नाईं उड़ा ले जायेगा ॥

२५ सो अब तुम किस्से मुझे उपमा देओगे और मैं किस के बरोबर हूं धर्म-

२६ मय कहता है । अपनी आंखें ऊंचाई पर उठा और देख किस ने इन्हें सिरजा और वह कौन है जो उन की सेना को गिनके निकालता है वह उन सभों को नाम लेके बुलायेगा बल के महत्त्व से और पराक्रम में बलवान होकर उन में से एक भी नहीं रह जाता ॥

२७ हे यअकूब तू किस लिये कहेगा और हे इसराएल तू क्यों ये बातें करेगा कि मेरा मार्ग परमेश्वर से छिपाया गया और मेरा बिचार मेरे ईश्वर के पास से पार हो

२८ जायेगा । क्या तू ने नहीं जाना क्या तू ने नहीं सुना सनातन का ईश्वर परमेश्वर पृथिवी के सिवानों का सृष्टिकर्त्ता न निर्बल होगा और न थकेगा उस की बुद्धि अखोज है ।

२९ निर्बल को बल देता है और दुर्बल के

३० बल को बढ़ायेगा । और तरुण निर्बल हो जायेंगे और थक जायेंगे और चुने हुए युवा मनुष्य सर्वथा डगमगायेंगे

३१ पर परमेश्वर के भरोसा रखनेहारे नया बल प्राप्त करेंगे वे गिद्धों की नाईं बाल और पर फैलायेंगे और दौड़ेंगे और न थकेंगे चले जायेंगे और निर्बल न होंगे ॥

एकतालीसवां पर्ब्ब ।

१ हे टापुओ मेरे आगे चुप हो रहो और जातिगण नया बल प्राप्त करें वे पास आवें तब बातें करें हम एक ही साथ बिवाद के लिये समीप आवें ॥

२ किस ने पूरब से जगाया है धर्म्म उस को अपने पांव के पास बुलावेगा वह जातिगणों को उस के आगे कर देगा और उसे राजाओं पर अधिकारी करेगा वह उन्हें धूल के समान उस के खड्ग को और उड़ाये हुए भूसे के समान उस के धनुष को देगा ।

३ वह उन का पीछा करेगा कुशल के साथ पार हो जायेगा वह मार्ग में अपने पांवों के साथ न जायेगा ।

४ किस ने पीढ़ियों को आरंभ से बुलाते हुए बनाया और यह काम किया है मैं परमेश्वर पहिले और पिछले के साथ मैं वही हूं ॥

५ टापुओं ने देखा और डर गये पृथिवी के अन्त कांपते हैं वे निकट आये और

६ पहुंच गये हैं। वे हर एक अपने पड़ोसी की सहाय करेंगे और हर एक अपने
७ भाई से कहेगा कि हियाव कर। और मूर्त्ति बनानेहारे ने सुनार को और हथौड़े से बरोबर करनेहारे ने निहाई पर ठकनेहारे को दृढ़ किया है वह जोड़न के विषय कहता है कि वह अच्छा हुआ है और उस ने उसे कीलों से दृढ़ किया है वह हिलाई न जायेगी॥

८ और तू हे इसराएल मेरे दास हे यअकूब जिसे मैं ने चुन लिया है मेरे
९ मित्र अबिरहाम के बंश। जिसे मैं ने जगत के अन्तों से खैंच लिया और उस के सिवानों से तुझे बुलाया और तुझ से कहा कि तू ही मेरा दास है मैं ने तुझे
१० चुन लिया और तुझे नहीं त्यागा। तू मत डर क्योंकि मैं तेरे साथ हूं मत घबरा क्योंकि मैं तेरा ईश्वर हूं मैं ने तुझे दृढ़ किया हां तेरी सहायता किई हां तुझे अपने धर्म्म के दहिने हाथ से
११ संभाला है। देख वे सब जो तुझ पर जलते हैं लज्जित होंगे और निन्दित किये जायेंगे जो तुझ से लड़ते हैं वे
१२ मिट जायेंगे और नाश होंगे। जो तुझ से झगड़ा करते हैं तू उन्हें ढूंढ़ेगा और उन्हें न पायेगा जो तुझ से संग्राम करते हैं वे मिट जायेंगे और नास्ति की नाईं
१३ होंगे। क्योंकि मैं परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरा दहिना हाथ धरता हूं जो तुझ से कहता हूं कि मत डर मैं ने तेरी सहायता
१४ किई है। हे कीड़े यअकूब मत डर हे इसराएल के मनुष्यो मैं ने तेरी सहायता किई है परमेश्वर और तेरा मुक्तिदाता इसराएल का धर्ममय कहता है।
१५ देख मैं ने तुझे नया चोखा दांतेदार दावने का हथियार ठहराया है तू पहाड़ों को दावेगा और उन्हें चूर चूर करेगा और टीलों को भूसे की नाईं बनावेगा।
१६ तू उन्हें ओसावेगा और पवन उन्हें उड़ा ले जायेगी और बवंडर उन्हें बिथरा देगा पर तू परमेश्वर से आनन्दित होगा और इसराएल के धर्ममय पर फूलेगा॥

१७ दुःखी और कंगाल पानी के खोजी हैं और कुछ नहीं है उन की जिह्वा मारे प्यास के सूख गई मैं परमेश्वर उन की सुनूंगा मैं इसराएल का ईश्वर उन्हें न
१८ छोड़ूंगा। मैं उघारे टीलों पर नदियां और तराइयों के बीच में सोते खोलूंगा मैं बन को पानी की झील और सूखी
१९ भूमि को पानी के सोते बनाऊंगा। मैं बन में देवदारु और बबूर और मेंहदी और जंगली जैतूनवृक्ष लगाऊंगा मैं शून्यस्थानों में सरो सनोवर और शमशादवृक्ष एक
२० साथ लगाऊंगा। जिस्तें वे देखें और जानें और मन लगावें और एक ही साथ समझें कि परमेश्वर के हाथ ने यह किया है और इसराएल के धर्ममय ने उसे सृजा है॥

२१ अपना विवाद समीप लाओ परमेश्वर कहता है अपने दृढ़ प्रमाणों को मेरे आगे लाओ यअकूब का राजा कहता
२२ है। वे आगे लावें और हमें बतावें जो बातें होंगी व्यतीत बातें क्या थीं बतला दो और हम अपना मन लगायेंगे और उन का अन्त जानेंगे अथवा आवैया
२३ समाचार हमें सुनाओ। जो आगे को आनेहारी बस्तें हैं बतला दो और हम जानेंगे कि तुम देव हो हां भला करो अथवा बुरा करो और हम बिचार करेंगे
२४ और एक ही साथ दृष्टि करेंगे। देखो तुम तुच्छ से छोटे और तुम्हारा कार्य्य अबस्तु से लघु जो तुम्हें चुन लेता सो घिनौना है॥

२५ मैं ने उत्तर से एक को जगा दिया और वह आया है सूर्य्य के उदय से वह

मेरा नाम लेगा और वह अध्यक्षों पर गारे की नाईं आयेगा और जैसे कुम्हार माटी को रौंदता है॥

२६ किस ने आरंभ से बताया वर्णन करो और हम जानेंगे और पहिले से और हम कहेंगे कि सत्य है हां कोई बतानेहारा न था हां कोई सुनानेहारा न था हां कोई तुम्हारी बातों का

२७ सुन्नेहारा न था। मैं पहिले सैहून को मंगलसमाचार देता हूं कि देख उन्हें देख और यरूसलम को मैं मंगलसमाचार

२८ देनेहारा देऊंगा। और मैं देखूंगा पर कोई नहीं है और उन में से पर कोई मंत्री नहीं और मैं उन से प्रश्न करूंगा

२९ और वे बचन का उत्तर देंगे। देखो वे सब नास्ति हैं तुच्छ उन के कार्य्य पवन और व्यर्थ उन की ढाली हुई मूर्त्तें॥

बयालीसवां पर्ब्ब।

१ देखो मेरा दास मैं उसे संभालूंगा मेरा चुना हुआ जिस्से मेरा प्राण संतुष्ट है मैं ने अपना आत्मा उस पर रक्खा है न्याय वह जातिगणों में चलायेगा।

२ वह न चिल्लायेगा और न अपना शब्द उठायेगा और न अपना शब्द बाहर

३ सुनावेगा। वह मसले हुए सेंटे को न तोड़ेगा और न धुंधली बत्ती को बुझायेगा वह सच्चाई के संग न्याय को

४ चलायेगा। न वह धुंधलायेगा और न मसला जायेगा जब लों कि पृथिवी पर न्याय को स्थापित न करे और टापू उस की व्यवस्था की बाट जोहेंगे॥

५ सर्वशक्तिमान परमेश्वर जो स्वर्गों को सिरजता है और उन्हें तानता है पृथिवी और उस की उगनेहारी वस्तु को बिछाता है उस जाति को जो उस पर है श्वास देता है और आत्मा उन्हें जो उस पर चलते हैं यों कहता है।

६ कि मैं परमेश्वर ने तुझ को धर्म्म में बुलाया है और तेरा हाथ थामूंगा और तेरी रक्षा करूंगा और तुझे लोगों के लिये वाचा और जातिगणों के लिये

७ ज्योति ठहराऊंगा। जिस्तें तू अंधों की आंखों को खोल दे जिस्तें बन्धुआई से बन्धुए को और बन्दीगृह से अंधियारे

८ के बैठनेहारों को निकाल दे। मैं परमेश्वर हूं यह मेरा ही नाम है और मैं अपना बिभव दूसरे को न दूंगा और न अपनी स्तुति खोदी हुई मूर्त्तों को।

९ अगिली बातें देखो वे आ चुकीं और नई बातें मैं बतलाता हूं उस्से पहिले कि वे उगें मैं तुम्हें सुनाऊंगा॥

१० परमेश्वर के लिये नया गीत गाओ पृथिवी के अन्त से उस की स्तुति करो हे तुम जो समुद्र पर चलते हो और उस की भरपूरी सहित हे टापुओ और

११ उन के बसवैयो। बन और उस की बस्तियां शब्द उठायेंगी वे बाड़े जिन में कीदार बसता है पतरा के बासी आनन्द का शब्द करेंगे पहाड़ों की

१२ चोटी पर से ललकारेंगे। वे परमेश्वर को प्रतिष्ठा दें और टापुओं

१३ में उस की स्तुति बतायें। परमेश्वर बीर के समान निकलेगा युद्धकारी मनुष्य के समान अपनी ज्वलन को जगायेगा वह ललकारेगा हां चिल्लायेगा अपने शत्रुओं के बिरुद्ध में अपनी बीरता दिखलावेगा॥

१४ मैं एक बड़े काल से चुप हो रहा यह कहता हुआ कि मैं चुप रहूंगा अपने को रोकूंगा पर अब जन्नेहारी स्त्री की नाईं चिल्लाऊंगा हांफूंगा और

१५ एक ही साथ मुंह फैलाऊंगा। मैं पहाड़ों और पहाड़ियों को उजाड़ कर डालूंगा और उन पर की घास को सुखा डालूंगा और नदियों को टापू कर दूंगा और

१६ पोखरों को सुखा डालूंगा। और मैं

अंधों को उस मार्ग पर ले जाऊंगा जिसे वे नहीं जानते हैं और उन पगडंडियों पर जिन से वे अज्ञान हैं उन की अगुआई करूंगा मैं उन के आगे अंधकार को ज्योति और टेढ़े मार्गों को सीधा कर डालूंगा ये ही वे बातें हैं मैं ने उन्हें पूरा किया है और उन्हें नहीं छोड़ा॥

१७ वे पीछे हटाये गये सर्वथा लाज से लज्जित होंगे जो खोदी हुई मूर्त्ति का भरोसा रखते हैं जो ढाली हुई मूर्त्ति से कहते हैं कि तुम्हीं हमारे देव हो॥

१८ हे बहिरो सुनो और हे अंधो दृष्टि १९ करो जिस्ते तुम देखो। मेरे दास को छोड़ कौन अंधा है और बहिरा मेरे दूत के समान जिसे मैं भेजूंगा कौन अनुग्रहित के समान अंधा और परमेश्वर २० के दास के समान अंधा। तू ने बहुत बातों को देखा है और उन की कुछ चिन्ता न करेगा कानों को खोलने के लिये वह भेजा गया पर न सुनेगा। २१ परमेश्वर अपने धर्म्म के लिये प्रसन्न है वह व्यवस्था की महिमा करेगा और २२ उसे प्रतिष्ठा देगा। पर वह लूटी हुई और छीनी हुई जाति है सब के सब गुफाओं में फंस गये और बन्दीगृहों में छिप गये वे अहेर के लिये हैं और कोई छुड़वैया नहीं लूट के लिये और कोई नहीं कहता कि फेर दे॥

२३ कौन तुम्में से इस पर कान धरेगा आगे के लिये श्रोता होगा और सुनेगा। २४ किस ने यअकूब को लूट के लिये दिया और इसराएल को अहेर करवैयों को क्या परमेश्वर ने नहीं जिस के बिरोध में हम ने पाप किया और वे उस के मार्गों पर चलने नहीं चाहते थे और उस की व्यवस्था के श्रोता न हुए। २५ और इस ने इस पर क्रोध अर्थात् अपना क्रोध और युद्ध की प्रबलता उस पर डाली और उस ने उसे चारों ओर जला दिया और उस ने नहीं जाना और उसे भस्म कर दिया और वह मन में न रक्खेगा॥

तेंतालीसवां पर्ब्ब।

१ और अब हे यअकूब परमेश्वर तेरा सृजनहार और हे इसराएल तेरा बनानेहारा यों कहता है कि मत डर क्योंकि मैं ने तुझे छुड़ाया है मैं ने तेरा नाम लेके तुझे बुलाया है तू हो मेरा है। २ जब तू पानियों में से चलेगा तब मैं तेरे साथ हूंगा और नदियों में से तब वे तुझे न डुबायेंगी जब तू आग में चलेगा तब जलाया न जायेगा और लवर तुझे ३ भस्म न करेगी। क्योंकि मैं परमेश्वर तेरा ईश्वर इसराएल के धर्म्ममय तेरे मुक्तिदाता ने तेरे प्रायश्चित्त में मिस्र दिया है कूश और सबा तेरे बदले में। ४ इस लिये कि तू मेरी दृष्टि में बहुमूल्य है तू ने प्रतिष्ठा पाई और मैं ने तुझे प्यार किया है और मनुष्य तेरी संती में और जातिगणों को तेरे प्राण के पलटे ५ में देऊंगा। तू मत डर क्योंकि मैं तेरे साथ हूं पूरब से मैं तेरे बंश को लाऊंगा ६ और पच्छिम से तुझे एकट्ठा करूंगा। मैं उत्तर से कहूंगा कि दे डाल और दक्खिन से कि रख मत छोड़ मेरे बेटों को दूर से ला और मेरी बेटियों को ७ पृथिवी के अन्त से। हर एक जो मेरे नाम से बुलाया जाता है और मैं ने उसे अपने बिभव के लिये सृजा है मैं ने उसे बनाया है हां उसे सिद्ध किया है॥

८ उस ने अंधी जाति को निकाला है और उन की आंखें हैं और बहिरों को ९ और उन के कान हैं। सारे जातिगण एक ही साथ एकट्ठा किये गये और

देशगण एकट्ठे किये जायेंगे कौन उन में इसे बर्णन करेगा और वे हमें पहिली बातें सुनायें वे अपने साक्षी निकालें और निर्दोष ठहरें और सुनें और कहें कि सच है ॥

१० तुम मेरे साक्षी हो परमेश्वर कहता है और मेरा दास जिसे मैं ने चुना जिसतें तुम जानो और मुझ पर बिश्वास लाओ और समझो कि मैं वही हूं मुझ से आगे कोई सर्बशक्तिमान न बनाया

११ गया और मेरे पीछे कोई न होगा । मैं मैं परमेश्वर वही हूं और मुझे छोड़ कोई

१२ मुक्तिदाता नहीं । मैं ने बताया और बचाया और सुनाया और तुम्में कोई परदेशी देव नहीं है और तुम मेरे साक्षी हो परमेश्वर कहता है और मैं सर्ब-

१३ शक्तिमान हूं । हां आरंभ से मैं वही हूं और मेरे हाथ से कोई छुड़ानेहारा नहीं है मैं काम करूंगा और कौन उसे मेटेगा ॥

१४ परमेश्वर तुम्हारा मुक्तिदाता इसराएल का धर्म्ममय यों कहता है कि मैं ने तुम्हारे लिये बाबुल लों भेजा है और सब भगोड़ों को नीचे कर दिया है और कसदियों को जिन के जहाजों पर

१५ उन को ललकार है । मैं परमेश्वर तुम्हारा धर्म्ममय इसराएल का सृष्टिकर्त्ता तुम्हारा राजा हूं ॥

१६ परमेश्वर यों कहता है जो समुद्र में मार्ग बनाता है और महाजलों में पथ ।

१७ जो रथ और घोड़ा पराक्रम और बलवान निकालता है वे एक साथ लेट रहेंगे और न उठेंगे वे बुझ गये बत्ती की नाईं

१८ ठण्डे हो गये । पहिली बातों को स्मरण न करो और पुरानी बातों को सोच न

१९ करो । देखो मैं एक नई बात करता हूं अब वह उगेगी क्या तुम उसे न जानोगे हां मैं बन में मार्ग और अरण्य में धारें बनाऊंगा । बन्यपशु मेरी प्रतिष्ठा

२० करेगा गीदड़ और शुतरमुर्ग क्योंकि मैं ने अरण्य में पानी और बन में नदियां निकाली हैं जिस्तें अपनी चुनी हुई

२१ जाति को पिलाऊं । यह जाति मैं ने अपने लिये बनाई है वे लोग मेरी स्तुति बर्णन करेंगे ॥

२२ पर हे यअकूब तू ने मुझे नहीं बुलाया क्योंकि हे इसराएल तू मुझ से थक

२३ गया । तू अपने होम के बलिदानों की भेड़ बकरी मेरे पास नहीं लाया और अपने बलिदानों से मेरा आदर नहीं किया मैं ने भेंट से तुझ से सेवा नहीं कराई और लोबान से तुझे नहीं थकाया ।

२४ तू ने रूपे से मेरे लिये सुगंधित सरकण्डा मोल नहीं लिया और अपने बलिदानों की चिकनाई से मुझे तृप्त नहीं किया तू ने केवल अपने पापों से मुझ पर भार दिया अपने कुकर्म्मों से मुझे थकाया ।

२५ मैं मैं ही अपने कारण तेरे अपराधों को मिटाता हूं और तेरे पापों को स्मरण न

२६ करूंगा । मुझे स्मरण कर हम आपस में बिवाद करें तू अपनी दशा बर्णन

२७ कर जिस्तें तू निर्दोष ठहरे । तेरे पहिले पिता ने पाप किया और तेरे उलथा

२८ करनेहारे मुझ से फिर गये । और मैं पवित्र अध्यक्षों को अशुद्ध करूंगा और यअकूब को स्राप के लिये और इसराएल को निन्दा के लिये दूंगा ॥

चौंतालीसवां पर्ब्ब ।

१ और अब हे यअकूब मेरे सेवक सुन और हे इसराएल जिसे मैं ने चुन लिया ।

२ परमेश्वर यों कहता है कि तेरा सृष्टिकर्त्ता और गर्भ से तेरा बनानेहारा तेरी सहायता करेगा हे मेरे दास यअकूब और यशूरून जिसे मैं ने चुना है मत

३ डर । क्योंकि मैं प्यासे पर पानी उंडेलूंगा और बहिते पानी सूखी भूमि पर मैं

अपना आत्मा तेरे बंश पर उंडेलूंगा और ४ अपनी आशीष तेरे संतानों पर। और वे घास के बीच में उगेंगे बेंत की नाईं ५ पानियों की धाराओं में। एक तो यह कहेगा कि मैं परमेश्वर का हूं और दूसरा यअकूब का नाम लेगा और तीसरा अपने हाथ से लिखेगा कि मैं परमेश्वर का हूं और आप को इसराएल के नाम से प्रसिद्ध करेगा॥

६ परमेश्वर इसराएल का राजा और उस का मुक्तिदाता सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि मैं आदि और मैं अन्त हूं और मुझे छोड़ कोई ईश्वर नहीं है। ७ और कौन मेरे समान पुकारेगा और उसे बतायेगा और मेरे लिये क्रम में उस का वर्णन करेगा जब से मैं ने अगिली जाति को स्थापन किया और आनेहारी बस्तें और जो होनहार हैं उन को लिये ८ बतलायेगा। तू न थर्थरा और मत डर क्या मैं ने तब से तुझे न सुनाया और बताया और तुम मेरे साक्षी हो क्या मुझे छोड़ कोई ईश्वर है और कोई चटान नहीं है मैं किसी को नहीं जानता॥

९ मूर्त्तों के बनानेहारे सब के सब वृथा हैं और उन की मनोहर बस्तें उन्हें कुछ लाभ न देंगी और उन के साक्षी आप न देखेंगे और न जानेंगे जिसतें लज्जित १० हों। किस ने सर्ब्बशक्तिमान को बनाया और मूर्त्ति को ढाला कि कुछ लाभ न ११ करे। देखो उस के सारे संगी लज्जित होंगे और मूर्त्ति के गढ़नेहारे वे तो आप मनुष्य हैं वे सब के सब एकट्ठे होंगे खड़े होंगे थर्थरायेंगे एक साथ लज्जित होंगे॥

१२ उस ने लोहे को छेनी से काटा और अंगारों से उसे कमाया है और हथौड़ों से उसे बनायेगा और अपनी बलवाली भुजा से उसे कमायेगा वह भूखा भी है और उस में बल नहीं है उस ने पानी नहीं पीया और मूर्छित है॥

१३ उस ने लकड़ी काटी है सूत खींचा है सूजे से उस पर लकीर खींचेगा रुखानियों से उसे बनायेगा और परकार से उस पर चिन्ह करेगा तब पुरुष के स्वरूप पर मनुष्य की सुन्दरता पर बनायेगा जिसतें घर में रहे। १४ वह देवदारुओं को काटता है और अब उस ने सरो और बलूत को लिया है और बन में उसे अपने काम के लिये दृढ़ता दिई है उस ने सनोबरवृक्ष लगाया है और मेंह उसे बढ़ायेगा। १५ और वह मनुष्य के ईंधन के लिये होगा और उस ने उन में से कुछ लिया और तापा है हां वह सुलगायेगा और रोटी पकावेगा हां वह सर्ब्बशक्तिमान को बनावेगा और मुंह के बल गिरेगा उस ने उसे ढाली हुई मूर्त्ति बनाया और उसे दण्डवत किया है। १६ उस का आधा उस ने आग में जलाया है उस के आधे के ऊपर वह मांस खायेगा मांस भूनेगा और तृप्त होगा हां वह तापेगा और कहेगा कि वाह मैं तात हुआ मैं ने आग को देखा है। १७ और उस का बचा हुआ उस ने एक सर्ब्बशक्तिमान में अपनी खोदी हुई मूर्त्ति में बनाया है वह उसे दण्डवत करेगा और मुंह के बल गिरेगा और उस्से प्रार्थना करेगा और कहेगा कि मुझे बचा क्योंकि तू ही मेरा सर्ब्बशक्तिमान है॥

१८ उन्हों ने नहीं जाना और वे न समझेंगे क्योंकि उस ने उन की आंखें लेस दिई हैं कि नहीं देखते उन के अन्तःकरणों को कि नहीं समझते। १९ और वह अपने मन पर न लगायेगा और न ज्ञान और न समझ है कि कहे कि उस का आधा मैं ने आग में जलाया और

उस के अंगारों पर रोटी भी पकाई है मैं मांस भूनूंगा और खाऊंगा और उस का बचा हुआ मैं घिनित बस्तु बनाऊंगा पेड़ की पीड़ को मैं दण्डवत करूंगा।
२० राख चरता हुआ उस का मन छल खाया हुआ है उसे बहकाया है और वह अपने प्राण को बचा नहीं सक्ता और न कहेगा कि क्या मेरे दहिने हाथ में झूठ नहीं है॥

२१ इन बातों को स्मरण कर हे यअकूब और हे इसराएल क्योंकि तू ही मेरा दास है मैं ने तुझे बनाया तू ही मेरे लिये सेवक है हे इसराएल तू मुझ से
२२ बिसराया न जायेगा। मैं ने घटा के समान तेरे अपराधों को और मेघ के समान तेरे पापों को मिटा दिया है मेरी ओर फिर क्योंकि मैं ने तुझे छुड़ा लिया है॥

२३ हे आकाशो आलापो क्योंकि परमेश्वर ने यह किया है हे पृथिवी की नीचाइयो ललकारो हे पहाड़ो ललकार में फूट निकलो हे बन और उस के हर एक पेड़ क्योंकि परमेश्वर ने यअकूब को छुड़ा लिया है और इसराएल में अपना बिभव प्रगट करेगा॥

२४ परमेश्वर तेरा त्राणकर्त्ता और गर्भ से तेरा निर्माण करनेहारा मैं परमेश्वर सब का उत्पन्न करनेहारा अकेला आकाशों का फैलानेहारा पृथिवी का बिछानेहारा यों कहता है कि कौन मेरे
२५ साथ है। जो टोन्हों के चिन्ह बृथा कर देता है और दैवज्ञों को सिड़ी बनायेगा जो बुद्धिमानों को पीछे हटा देता है और वह उन के ज्ञान को
२६ अज्ञानता ठहरायेगा। जो अपने दास के बचन को स्थिर करता है और वह अपने दूतों के मंत्र को पूरा करेगा जो यरूसलम के विषय में कहता है कि वह बसाई जायेगी और यहूदाह के नगरों के विषय में कि वे बनाये जायेंगे और मैं उस के खंडहरों को उठाऊंगा।
२७ जो गहिराव से कहता है कि सूख जा और
२८ मैं तेरी नदियों को सुखा डालूंगा। जो खोरस के विषय कहता है कि वह मेरा चरवाहा है और वह मेरे समस्त अभिलाष को पूरा करेगा हां यरूसलम से यह कहते हुए कि तू बनाई जायेगी और मन्दिर से यह कि तेरी नेव डाली जायेगी॥

पैंतालीसवां पर्ब्ब।

परमेश्वर अपने अभिषिक्त खोरस से जिस का दहिना हाथ मैं ने पकड़ा है जिस्तें उस के आगे जातिगणों को लताड़ूं और राजाओं की कटि मैं खोलूंगा जिस्तें उस के आगे दोहरे द्वारों को खोल दूं और फाटक बंद न किये
२ जायेंगे। मैं तेरे आगे चलूंगा और टेढ़े स्थानों को समथर करूंगा पीतल के द्वारों को टुकड़े टुकड़े करूंगा और लोहे के
३ अड़ंगों को काट डालूंगा। और मैं तुझे अंधियारे के धन को और गुप्त स्थानों के छिपे हुए भंडारों को दूंगा जिस्तें तू जाने कि मैं परमेश्वर जो तेरा नाम लेके तुझे बुलाता हूं इसराएल का ईश्वर हूं।
४ अपने दास यअकूब और अपने चुने हुए इसराएल के कारण इस लिये मैं तेरा नाम लेके तुझे बुलाऊंगा मैं तुझे पदवी
५ दूंगा और तू ने मुझे नहीं जाना। मैं परमेश्वर हूं और कोई दूसरा नहीं मुझे छोड़ कोई ईश्वर नहीं मैं तेरी कटि बांधूंगा और तू ने मुझे नहीं जाना।
६ जिस्तें सूर्य्य के उदय से पच्छिम लों लोग जानें कि मुझे छोड़ कुछ नहीं है मैं परमेश्वर हूं और कोई दूसरा नहीं।
७ मैं उंजियाला बनाता और अंधियारा सृजता कुशल निर्माण करता और बिपत्ति

उत्पन्न करता मैं परमेश्वर यह सब किया करता हूं ॥

८ हे आकाशो ऊपर से टपक पड़ो और मेघ धर्म्म बरसावें पृथिवी खुल जावे और मुक्ति और धर्म्म फलें वह उन्हें एक ही संग उपजावे मैं परमेश्वर ने उसे सृजा है ॥

९ हाय उस पर जो अपने सृष्टिकर्त्ता से लड़ता है ठीकरा मिट्टी के ठीकरों के साथ क्या माटी अपने बनानेहारे से कहे कि तू क्या करता है और तेरा कार्य्य

१० कि उस के हाथ नहीं हैं। हाय उस पर जो पिता से कहता है कि तू क्या उत्पन्न करेगा और स्त्री से कि तू क्या जनेगी ॥

११ परमेश्वर इसराएल का धर्म्ममय और उस का कर्त्ता यों कहता है कि आनेहारी बातों के विषय मुझ से प्रश्न करो मेरे बालकों के विषय और मेरे हाथों के कार्य्य के विषय तुम मुझे आज्ञा

१२ दो। मैं ही ने पृथिवी को बनाया और मनुष्य उस पर सृजा मैं ही मेरे हाथों ने आकाशों को फैलाया और उन की समस्त

१३ सेना को आज्ञा दिई। मैं ही ने उसे धर्म्म में जगाया और उस के सारे मार्गों को समथर करूंगा वही मेरे नगर को बनावेगा और मेरे बंधुओं को बिना दाम और बिना भेंट लिये हुए उन की जन्मभूमि में भेज देगा सेनाओं का परमेश्वर कहता है ॥

१४ परमेश्वर यों कहता है कि मिस्र की कमाई और कूश के व्योपार का लाभ और सबा के लोग लंबे मनुष्य तेरे पास आगे आयेंगे और तेरे होंगे तेरे पीछे चलेंगे सीकरों में तेरे आगे आयेंगे और तेरी ओर दण्डवत करेंगे तेरी ओर प्रार्थना करेंगे और कहेंगे कि केवल तुझ मे [illegible]मान है और कोई दूसरा नहीं दूसरा ईश्वर नहीं ॥

१५ निश्चय तू ही सर्व्वशक्तिमान आप को छिपाता है हे इसराएल के ईश्वर

१६ मुक्तिदाता। वे लज्जित हुए वे सब के सब संकोचित भी किये गये मूर्त्ति के निर्माण करनेहारे एक ही साथ संकोच

१७ में चले गये। इसराएल अनन्त मुक्ति के साथ परमेश्वर में बचाया गया तुम न लज्जित होगे और न संकोची किये जाओगे हां सनातन लों ॥

१८ क्योंकि परमेश्वर आकाशों का उत्पन्न करनेहारा वही ईश्वर है पृथिवी का बनानेहारा और उस का कर्त्ता उसी ने उसे स्थिर किया न शून्य होने के लिये उसे उत्पन्न किया बसाने के लिये उसे बनाया यों कहता है कि मैं परमेश्वर हूं और

१९ कोई दूसरा नहीं। मैं ने गुप्त में एक स्थान में जो अंधकार का देश है बातें नहीं किईं मैं ने इसराएल के संतान से नहीं कहा कि अकारथ मेरा खोज करो मैं परमेश्वर सत्य का वचन बोलता

२० सत्यताओं का प्रचार करता हूं। एकट्ठे हो और आओ एक ही साथ निकट आओ हे देशगणों के बचे हुओ वे नहीं जानते जो लकड़ी अपनी खोदी हुई मूर्त्ति उठाते हैं और ऐसे सर्व्वशक्तिमान से प्रार्थना करते हैं जो नहीं बचा सक्ता।

२१ वर्णन करो और पास लाओ हां वे एक ही साथ परामर्श करें किस ने आगे से यह सुनाया आरंभ से उस का वर्णन किया क्या मैं परमेश्वर नहीं और मुझे छोड़ कोई दूसरा नहीं धर्म्मी और मुक्तिदाता सर्व्वशक्तिमान मुझे छोड़ कोई दूसरा नहीं ॥

२२ मेरी ओर फिरो और मुक्ति पाओ हे जगत के समस्त सीमा क्योंकि मैं ही सर्व्वशक्तिमान हूं और कोई दूसरा नहीं।

२३ मैं ने अपनी किरिया खाई धर्म्म के मुंह से वचन निकला है और न फिरेगा कि

मेरे आगे हर एक घुटना झुकेगा हर जीभ किरिया खावेगी॥

२४ मनुष्य कहता है कि केवल परमेश्वर में मेरा धर्म्म और सामर्थ्य है उस के पास मनुष्य आवेगा और सब जो उस

२५ के विरोध में थे लज्जित होंगे। परमेश्वर में इसराएल के समस्त बंश धर्म्मी ठहरेंगे और बड़ाई करेंगे॥

छियालीसवां पर्ब्ब।

१ बेल झुक गया नबू निहुड़ता है उन की मूर्त्तें पशुओं और चौपायों पर लादी गईं तुम्हारा बोझ लादा गया थके हुए

२ पशु के लिये बोझ। वे एक ही साथ निहुड़े झुक गये वे बोझ को बचा नहीं सके वे आप बंधुआई में गये॥

३ हे यअकूब के घराने मेरी सुनो और हे इसराएल के घर के सारे बचे हुए लोगो जो गर्भ से बोझ किये गये और

४ पेट से उठाये गये। और बुढ़ापे लों मैं वही हूं और बाल पकने लों मैं तुम्हें उठाऊंगा मैं ने यह किया और मैं ले जाऊंगा और उठाऊंगा और तुम्हें बचाऊंगा॥

५ तुम मुझे किस्से उपमा देओगे और तुल्य करोगे और मुझे मिलाओगे जिस्तें

६ हम समान होवें। उड़ाऊ लोग सोना थैली से निकालके और रूपा तखरी से तौलेंगे वे मूर्त्ति के बनानेहारे को बनी देंगे और वह उसे सर्व्वशक्तिमान बनावेगा वे झुकेंगे हां मुंह के बल गिरेंगे।

७ वे उसे कांधे पर उठा लेंगे उसे ले जायेंगे और उसे इस के स्थान में खड़ा करेंगे और वह वहां खड़ा रहेगा अपने स्थान से न टलेगा हां कोई उसे पुकारेगा और वह उत्तर न देगा वह उसे उस के दुःख से न बचा सकेगा॥

८ इसे चेत करो और आप को पुरुष दिखाओ हे फिरे हुओ ध्यान से इसे

९ सोचो। अगिली बातों को प्राचीन से स्मरण करो क्योंकि मैं ही सर्व्वशक्तिमान हूं और कोई दूसरा नहीं ईश्वर और मेरे तुल्य कोई नहीं। आरंभ से अंत

१० का प्रारंभ बताता हूं और आगे से वे काम जो नहीं किये गये हैं यह कहते हुए कि मेरा मंत्र स्थिर रहेगा और मैं अपनी समस्त इच्छा पूरी करूंगा।

११ पूरब से एक अहेरी पक्षी को बुलाता हूं दूर देश से अपने मंत्र के पुरुष को हां मैं ने कहा हां मैं उसे पूरा करूंगा मैं ने ठहराया हां उसे समाप्त करूंगा॥

१२ हे कठोर अंतःकरणियो जो धर्म्म से

१३ दूर हो मेरी सुनो। मैं ने अपने धर्म्म को समीप पहुंचाया है वह दूर न होगा और अपनी मुक्ति को वह बिलम्ब न करेगी और मैं सैहून में अपनी मुक्ति देऊंगा और इसराएल को अपना बिभव॥

सैंतालीसवां पर्ब्ब।

१ नीचे उतर आ और धूल पर बैठ हे बाबुल की कुंवारी बेटी भूमि पर बैठ कोई सिंहासन नहीं है हे कसीदीम की पुत्री क्योंकि लोग फिर तुझे कोमल और

२ सुकुमारी न कहेंगे। चक्कियां ले और आटा पीस अपनी ओढ़नी अलग कर तिलकवस्त्र उतार टांग को नंगी कर नदियों

३ के पार उतर जा। तेरी नग्नता उघारी जाये हां तेरी लाज प्रगट किई जाये मैं पलटा लूंगा मनुष्य से भेंट न करूंगा॥

४ हमारा मुक्तिदाता जो है सेनाओं का परमेश्वर उस का नाम है इसराएल

५ का धर्म्ममय। चुपकी हो बैठ और अंधकार में जा हे कसीदीम की पुत्री क्योंकि लोग तुझे फिर राज्यों की रानी न

६ कहेंगे। मैं अपनी जाति पर क्रुद्ध हुआ मैं ने अपने अधिकार को अशुद्ध कर दिया और उन्हें तेरे हाथ में दिया तू ने उन पर दया न किई बृद्ध पर तू ने अपना

७ जूआ बहुत भारी कर दिया। और तू

ने कहा कि मैं सदा लों रानी बनी रहूंगी जब लों कि तू ने इन बातों पर मन न लगाया इस का समय सोच नहीं
८ किया। और अब यह सुन हे भोग-बिलासिनी जो निश्चिन्त बैठी है जो अपने मन में कहती है कि मैं ही हूं और मुझे छोड़ कोई दूसरा नहीं मैं रांड होके न बैठूंगी और लड़कों के खो जाने
९ को न जानूंगी। और ये दोनों बातें अचानक एक ही दिन में तुझ पर आवेंगी अर्थात् लड़कों का खो जाना और रांड होना तेरे टोनों की बहुताई में तेरे मंत्रों की बड़ी अधिकाई में वे अपनी भर-
१० पूरी के साथ तुझ पर आ पड़ेंगी। और तू अपनी बुराई में बेसोच है तू ने कहा है कि कोई मुझे नहीं देखता है तेरी बुद्धि और तेरा ज्ञान उसी ने तुझे बह-काया और तू ने अपने मन में कहा है कि मैं ही हूं और मुझे छोड़ कोई दूसरा
११ नहीं। और यों तुझ पर दुःख आता है तू उस के बिहान को न जानेगी और तुझ पर बिपत्ति आवेगी तू उस का प्रायश्चित्त न कर सकेगी और अचानक तुझ पर नाश आवेगा जिसे तू न जानेगी।
१२ अपने मंत्रों और अपने टोनों की बहुताई में जिन में तू ने अपनी युवावस्था से परिश्रम किया है कृपा करके खड़ी रह क्या जाने तू लाभ उठा सकेगी क्या जाने
१३ तू साम्हना करेगी। तू अपने परामर्शों की बहुताई में थक गई हाय कि आकाश के बिचारी नक्षत्रों के दर्शक जो अमा-वास्या का भविष्य कहते हैं उन बस्तुओं के विषय जो तुझ पर आवेंगी खड़े हों
१४ और तुझे बचावें। देख वे भूसे की नाईं हैं आग ने उन्हें भस्म कर लिया है वे अपने प्राण को लवर के हाथ से बचा नहीं सक्ते यह तापने के लिये अंगारा नहीं है आग उस के साम्हने बैठने के लिये। यों वे तेरे लिये हैं जिन के विषय
१५ तू ने परिश्रम किया तेरे बेपारी तेरी युवावस्था से हर एक अपनी अपनी ओर भटक गये तेरा बचानेहारा कोई नहीं है॥

अठतालीसवां पर्ब्ब।

१ यह सुनो हे यअकूब के घराने जो इसराएल के नाम से बुलाये गये और यहूदाह के सोते से निकले हो जो परमेश्वर के नाम से किरिया खाते हो और इसराएल के ईश्वर का स्मरण करते हो न सच्चाई में और न धर्म्म में।
२ क्योंकि वे पवित्र नगर के लोग कहलाते हैं और इसराएल के ईश्वर पर भरोसा रखते हैं सेनाओं का परमेश्वर उस का
३ नाम है। पहिली बातें मैं ने पुरातन से बतलाईं और वे मेरे मुंह से निकलीं और मैं उन्हें सुनाता हूं अकस्मात मैं करता
४ हूं और वे देखने में आती हैं। इस कारण से कि मैं ने जाना कि तू कठोर मन है और लोहे का पट्टा तेरी ग्रीवा
५ है और तेरा ललाट पीतल। इस कारण मैं ने पहिले ही से तुझे बतला दिया उस्से आगे कि देखने में आवे तुझे सुना दिया कदापि तू कहे कि मेरी मूर्त्ति ने यह काम किये मेरी खोदी हुई मूर्त्ति और मेरी ढाली हुई मूर्त्ति ने उन की
६ आज्ञा किई। तू ने सुना है देख वह सब देखने में आया और क्या तुम न बताओगे मैं ने तुझे नई बातें सुनाईं अब से और गुप्त बातें और तू ने उन्हें
७ नहीं जाना। अभी वे उत्पन्न किई गईं और प्राचीनता से नहीं और आज के दिन से आगे तू ने तो उन्हें नहीं सुना था न हो कि तू कहे कि देख मैं उन्हें
८ जानता था। हां तू ने नहीं सुना था हां तू ने नहीं जाना था हां आरंभ से तेरा कान नहीं खुला था क्योंकि मैं

जानता था कि तू सर्व्वथा छल का काम करेगा और पेट ही से तू ईश्वरत्यागी कहा गया। ९ अपने नाम के लिये मैं अपने क्रोध में अबेर करूंगा और अपनी स्तुति के कारण उसे तेरे विषय में रोकूंगा जिस्तें तुझे न काट डालूं। १० देख मैं ने तुझे ताया पर चांदी न निकली मैं ने तुझे कष्ट के भट्ठे में चुना। ११ अपने लिये हां अपने ही लिये मैं करूंगा क्योंकि किस रीति मेरा नाम बुरा ठहराया जाये और मैं अपना विभव दूसरे को न देऊंगा॥

१२ हे यअकूब और हे इसराएल मेरे बुलाये हुए मेरी सुन मैं वही हूं मैं आदि हूं १३ हां मैं अंत हूं। हां मेरे हाथ ने पृथिवी की नेव डाली और मेरे दहिने हाथ ने स्वर्ग को बित्ते से नापा मैं उन को बुलाता हूं और वे एक ही साथ खड़े होंगे। १४ तुम सब के सब एकट्ठे हो आओ और सुनो उन में से किस ने ये बातें बताईं परमेश्वर उसे प्यार करता है वह अपनी इच्छा बाबुल में करेगा और उस का हाथ कसदियों पर होगा। १५ मैं मैं ही ने बचन कहा हां मैं ने उसे बुलाया मैं उसे अस्ति में लाया और उस ने अपने मार्ग को भाग्यमान किया॥

१६ मेरे निकट आओ यह सुनो आरंभ से छिपके मैं ने बचन नहीं कहा उस के समय के होने से मैं वहीं था और अब प्रभु परमेश्वर और उस के आत्मा ने मुझे भेजा है। १७ परमेश्वर तेरा मुक्तिदाता इसराएल का धर्ममय यों कहता है कि मैं परमेश्वर तेरा ईश्वर हूं जो तुझे लाभ प्राप्त करने के लिये सिखलाता हूं उस मार्ग पर तेरी अगुआई करता हूं जिस पर तुझे चलना होगा। १८ हाय कि तू मेरी आज्ञाओं का श्रोता होता तो तेरा कुशल नदी की नाईं होता और तेरा धर्म्म समुद्र की लहरों की नाईं। १९ तो तेरा बंश बालू के समान होता और तेरे गर्भ के संतान उस के गर्भ के संतानों के समान उस का नाम मेरे आगे से न काटा जायेगा और न मिटाया जायेगा॥

२० बाबुल से निकलो कसदियों से भागो आनन्द के शब्द के साथ बतला दो यह सुनाओ उसे पृथिवी के अंत लों पहुंचा दो कहो कि परमेश्वर ने अपने सेवक यअकूब को छुड़ाया है। २१ और वे प्यासे न हुए उन जंगलों में जिन में उस ने उन्हें चलाया उस ने पानी पत्थर से उन के लिये बहाया और उस ने पत्थर को चीरा और पानी फूट निकला। २२ परमेश्वर कहता है कि दुष्टों के लिये कुशल कुछ नहीं है॥

उंचासवां पर्ब्ब

१ हे टापुओ मेरी सुनो और हे जातिगणो दूर से मेरे श्रोता हो परमेश्वर ने कोख से मुझे बुलाया मेरी माता के गर्भ से मेरे नाम का चर्चा किया। २ और उस ने मेरे मुंह को चोखे खड्ग के समान बनाया उस ने मुझे अपने हाथ की छाया में छिपाया और मुझे चमकता बाण बनाया अपने तूण से मुझे छिपाया। ३ और मुझ से कहा कि तू ही मेरा दास है इसराएल जिस में मैं अपना विभव प्रगट करूंगा॥

४ और मैं ने कहा कि मैं ने वृथा परिश्रम किया वृथा वस्तु के लिये और अकारण अपना बल गंवाया है पर मेरा बिचार परमेश्वर के साथ है और मेरा कार्य्य मेरे ईश्वर के साथ॥

५ और अब परमेश्वर कहता है कोख से मेरा निर्माण करनेहारा जिस्तें उस का दास हूं जिस्तें यअकूब को उस की

ओर फिरा दूं पर इसराएल बटोरा न आयेगा और मैं परमेश्वर की दृष्टि में ऐश्वर्य्यमान होऊंगा और मेरा ईश्वर मेरा बल हुआ है॥

और उसी ने कहा कि हलकी बात है कि तू मेरा दास हो जिस्तें यअकूब की गोष्ठियों को उठावे और इसराएल के बचे हुओं को फिरा दे और मैं ने तुझे अन्यदेशियों की ज्योति ठहराया है जिस्तें मेरी मुक्ति पृथिवी के अंत लों हो॥

७ परमेश्वर इसराएल का मुक्तिदाता उस का धर्ममय मन से तुच्छ जाने के विषय घिन दिलानेहारी जाति के विषय अध्यक्षों के सेवक के विषय यों कहता है कि राजा देखेंगे और उठ खड़े होंगे अध्यक्ष देखेंगे और दण्डवत करेंगे परमेश्वर के कारण जो सच्चा है इसराएल के धर्ममय के लिये जिस ने तुझे चुना है॥

८ परमेश्वर कहता है कि ग्राह्य के समय में मैं ने तेरी सुनी है और मुक्ति के दिन तेरी सहायता किई है और मैं तेरी रक्षा करूंगा और तुझे जाति का नियम ठहराऊंगा जिस्तें पृथिवी को स्थिर रक्खे जिस्तें उजाड़ अधिकारों ९ को स्वामियों को देवे। जिस्तें बंधुओं को कहे कि निकलो उन से जो अंधियारे में हैं कि आप को दिखलाओ वे पथों पर देखेंगे और सारी नंगी पहाड़ियों १० पर उन के चराई के स्थान होंगे। वे न भूखे और न प्यासे होंगे और न मरीचिका और न धूप उन को मारेगा क्योंकि जो उन पर दया करता है वह उन को अगुआई करेगा और उन्हें पानी ११ के सोतों के पास ले जायेगा। और मैं अपने सारे पहाड़ों को पथ बनाऊंगा १२ और मेरे राजमार्ग ऊंचे होंगे। देखो ये दूर से आयेंगे और देखो ये उत्तर से और पश्चिम से और ये सीनीम के देश से॥

१३ हे स्वर्गो ललकारो और हे पृथिवी आनन्द हो पहाड़ ललकार में फूट निकलें क्योंकि परमेश्वर ने अपने लोगों को शांति दिई है और अपने दुःखियों पर दया करेगा॥

१४ पर सैहून ने कहा कि परमेश्वर ने मुझे छोड़ दिया और प्रभु मुझे भूल गया है॥

१५ क्या स्त्री अपने दूध पीते हुए बच्चे को भूलेगी कि अपनी कोख के बालक पर मया न करे हां यह तो भूल जायेंगी १६ पर मैं तुझे न भूलूंगा। देख मैं ने तुझे अपनी हथेलियों पर खोदा है तेरी १७ भीतें प्रतिदिन मेरी दृष्टि में हैं। तेरे बेटे आने में शीघ्र करते हैं तेरे बिगाड़नेवाले और तेरे उजाड़ करनेवाले तुझ में १८ से निकल जायेंगे। अपनी आंखें चारों ओर उठा और देख वे सब के सब एकट्ठा हुए और तेरे पास आये हैं परमेश्वर कहता है कि मेरे जीवन सों कि आभूषण के समान तू उन सभों को पहिन लेगी और दूल्हिन की नाईं आप १९ को उन से संवारेगी। क्योंकि तेरे खंडहर और तेरे शून्यस्थान और तेरे सत्यानाश किये गये देश ऐसे न रहेंगे क्योंकि अब तू रहनेहारों के लिये सकेत होगी और तेरे निगलनेवाले दूर हो २० जायेंगे। तेरी निःसंतानता के लड़के तेरे कानों में फिर फिर कहा करेंगे कि स्थान मेरे लिये सकेत है मुझे स्थान दे २१ कि मैं बसूं। तब तू अपने मन में कहेगी कि किस ने इन्हें मेरे लिये उत्पन्न किया है और मैं निःसंतान और बांझ बंधुवी और दूर थी और इन्हें किस ने पाला देख मैं अकेली रह गई थी ये कहां थे॥

२२ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि

देखो मैं अपना हाथ देशगणों की ओर उठाऊंगा और जातिगणों की ओर अपना झंडा ऊंचा करूंगा और वे तेरे बेटों को गोद में लायेंगे और तेरी बेटियां कांधे पर उठाई जायेंगी । २३ और राजा तुझे गोद में उठानेहारे होंगे और उन की रानियां तेरी दूध पिलानेहारियां पृथिवी पर मुंह रखके वे तेरे आगे दण्डवत करेंगे और तेरे पांवों की धूल चाटेंगे और तू जानेगी कि मैं परमेश्वर हूं जिस के आश्रित लज्जित न होंगे ॥

२४ क्या बलवंत की लूट छीन लिई जायेगी और धर्म्मी के बंधुए छुड़ाये जायेंगे । २५ क्योंकि परमेश्वर यों कहता है कि हां बलवंत के बंधुए छीन लिये जायेंगे और भयानक की लूट ले लिई जायेगी और मैं तेरे लड़नेहारों के साथ लड़ूंगा और तेरे बालकों को मैं ही बचाऊंगा । २६ और मैं तेरे अंधेरियों को उन्हीं का मांस खिलाऊंगा और वे नई मदिरा की नाईं अपने ही लोहू से मतवाले होंगे और सारे प्राणी जानेंगे कि मैं परमेश्वर तेरा त्राणकर्त्ता हूं और तेरा मुक्तिदाता इसराएल का शक्तिमान हूं ॥

पचासवां पर्व्व ।

१ परमेश्वर यों कहता है कि तुम्हारी मा का त्यागपत्र कहां है जिसे मैं ने छोड़ दिया अथवा कौन मेरे धनिकों में है जिस को मैं ने तुम्हें बेच डाला देखो तुम ने अपने पापों के कारण अपने को बेच डाला और तुम्हारे अपराधों के कारण से तुम्हारी मा छोड़ दिई गई । २ जब मैं आया तो कोई मनुष्य क्यों न था जब मैं ने पुकारा तो कोई उत्तर देनेहारा क्यों न था क्या मेरा हाथ छुड़ाने में बहुत छोटा है और मुझ में मुक्ति देने का बल नहीं देखो मैं अपनी घुरकी से समुद्र को सुखा देता हूं नदियों को बन कर देता हूं उन की मछलियां पानी न होने के कारण से दुर्गन्ध करें और प्यास के मारे मर जायें । ३ मैं स्वर्गों को कालिक से पहिनाऊंगा और टाटवस्त्र उन का ओढ़ना ठहराता हूं ॥

४ प्रभु परमेश्वर ने मुझे बुद्धिमानों की जीभ दिई है जिस्तें थके हुए को बात से सहाय करने जानूं वह बिहान को जगावेगा बिहान को मेरे लिये कान जगावेगा जिस्तें विद्यार्थियों की नाईं सुनूं । ५ प्रभु परमेश्वर ने मेरे लिये कान खोला और मैं दंगइत न था और पीछे न हटा । ६ मैं ने अपनी पीठ ताड़कों को दिई और अपने गाल नोचनेहारों को मैं ने अपना मुंह लाजों और थूक से न छिपाया । ७ और प्रभु परमेश्वर मेरी सहायता करेगा इस लिये मैं निन्दित नहीं होता इस लिये मैं ने अपना मुंह पत्थरों के समान धरा और मैं जानता हूं कि मैं लज्जित न हूंगा । ८ मेरा धर्म्मी ठहरानेहारा निकट है कौन मेरे साथ लड़ेगा हम एक साथ खड़े हों कौन मेरा बैरी है वह मेरे निकट आवे । ९ देखो प्रभु परमेश्वर मेरी सहायता करेगा वह कौन है जो मुझे दोषी ठहरावेगा देखो वे सब के सब वस्त्र के समान पुराने हो जायेंगे कीड़ा उन्हें खा लेगा ॥

१० तुम्में कौन परमेश्वर से डरनेहारा उस के सेवक के शब्द का सुन्नेहारा जो अन्धकार में चलता है और उस के लिये कुछ ज्योति नहीं है वह परमेश्वर के नाम पर भरोसा रक्खे और अपने ईश्वर पर सहारा रक्खे ॥

११ देखो तुम सब के सब जो आग को सुलगाते और चिनगारियां कटि पर बांधते हो अपनी आग की ज्योति में

और उन चिनगारियों में जिन्हें तुम ने सुलगाया मेरे हाथ से यह तुम्हारे लिये होगा कि पीड़ा के स्थान में लेट जाओगे ॥

एकावनवां पर्ब्ब ।

१ मेरी सुनो हे धर्म्म के पीछा करनेहारे परमेश्वर के खोजी उस पत्थर की ओर दृष्टि रक्खो जिस्से तुम काटे गये और उस गड़हे के छेद की ओर जिस्से तुम २ खोदे गये । अपने पिता अबिरहाम की ओर दृष्टि रक्खो और सर: की ओर जो तुम्हें जनी क्योंकि मैं ने उसे एक बुलाया और मैं उसे आशीष दूंगा और उसे बढ़ा- ३ ऊंगा । क्योंकि परमेश्वर ने सैहून को शान्ति दिई उस के सारे उजाड़ स्थानों को शान्ति दिई है और उस ने उस का बन अदन की नाईं और उस के शून्यस्थान परमेश्वर की बाटिका की नाईं बनाया है आनन्द और आह्लाद उस में पाया जायेगा धन्यबाद और स्तुति का शब्द ॥

४ हे मेरी जाति मेरी ओर कान धर और हे मेरे जातिगण मेरी ओर कान लगा क्योंकि व्यवस्था मेरी ओर से जायेगी और मैं अपना न्याय जातिगणों की ज्योति के लिये स्थिर रक्खूंगा ॥

५ मेरा धर्म्म निकट है मेरी मुक्ति चल निकली है और मेरी भुजा जातिगणों का न्याय चुकायेगी टापू मेरी बाट जोहेंगे और मेरी भुजा की आशा करेंगे ॥

६ अपनी आंखें स्वर्ग की ओर उठाओ और नीचे पृथिवी की ओर दृष्टि करो क्योंकि स्वर्ग धुंएं के समान मिट जायेंगे और पृथिवी बस्त्र की नाईं पुरानी हो जायेगी और उस के बासी उसी रीति से नष्ट होंगे पर मेरी मुक्ति सनातन लों ठहरेगी और मेरा धर्म्म लोप न होगा ॥

७ हे धर्म्म के जाननेहारो मेरी सुनो हे जाति जिस के हृदय में मेरी व्यवस्था है दुर्गत मनुष्य की निन्दा से मत डरो और उन की अपनिन्दों से व्याकुल न हो । क्योंकि बस्त्र की नाईं कीड़ा उन्हें चाट लेगा और ऊर्णबस्त्र की नाईं कृमि उन्हें खा लेगा पर मेरा धर्म्म सनातन लों रहेगा और मेरी मुक्ति पीढ़ी से पीढ़ी लों ॥

९ जाग जाग बल से विभूषित हो हे परमेश्वर की भुजा अगिले दिनों और प्राचीन पीढ़ियों की नाईं क्या तू वही नहीं है जिस ने रहब को काट डाला और अजगरों को घायल कर दिया । १० क्या तू वह नहीं है जिस ने समुद्र को बड़े गहिराव के पानी को सुखा डाला जिस ने समुद्र के गहिराव को छुड़ाये हुओं के पार जाने के लिये मार्ग कर दिया ॥

११ और परमेश्वर के मोल लिये हुए लोग फिरेंगे और ललकारते हुए सैहून में आवेंगे और सनातन का आनन्द उन के सिरों पर होगा और आनन्द और आह्लाद उन्हें मिलेगा और शोक और बिलाप भाग गया ॥

१२ मैं मैं वही हूं जो तुम्हें शान्ति देता हूं तू कौन है जो दुर्गत मनुष्य से जो मरेगा डरता है और मनुष्य के पुत्र से जो घास के समान किया जायेगा । और १३ परमेश्वर अपने कर्त्ता को भूला है जो स्वर्गों का फैलानेहारा और पृथिवी की नेव डालनेहारा है और सदा प्रतिदिन अंधेरी के कोप के आगे से डरता रहा जब वह नाश करने के लिये लैस होता था और अब अंधेरी का कोप कहां है । झुका हुआ वह निर्बन्ध होने के १४ लिये शीघ्र करता है और वह गड़हे में न गिरेगा और उस की रोटी न घटेगी । १५ और मैं परमेश्वर तेरा ईश्वर हूं समुद्र

को थांभा करनेहारा जब उस की लहरें धूमधाम करती हैं सेनाओं का परमेश्वर
१६ उस का नाम है । और मैं ने अपनी बातें तेरे मुंह में डाली हैं और तुझे अपने हाथ की छाया तले ढांपा है जिस्तें तू स्वर्गों को लगाये और पृथिवी की नेव डाले और सैहून से कहे कि तू मेरी जाति है ॥
१७ अपने को जगा अपने को जगा खड़ी हो हे यरूसलम तू जिस ने परमेश्वर के हाथ से उस के कोप का कटोरा पीया है तू ने लड़खड़ाहट के कटोरे का तलछट पीया तू ने उन्हें
१८ निचोड़ा है । उन सारे बेटों में से जिन्हें वह जनी कोई उस की अगुआई करनेहारा नहीं है और उन सारे लड़कों में से जिन्हें उस ने पाला कोई उस का
१९ हाथ पकड़नेहारा नहीं है । ये दो बातें तुझ पर आनेहारी हैं कौन तेरे लिये बिलाप करेगा उजाड़ और नाश और अकाल और खड्ग मुझे छोड़ कौन तुझे
२० शान्ति देगा । तेरे बेटे मूर्छित हैं सारे मार्गों के सिरे पर पड़े हैं जंगली बैल के समान फन्दे में परमेश्वर के कोप से तेरे ईश्वर के डपट से भरे हुए ॥
२१ इस लिये हाय कि तू यह सुने हे दुःखित और मतवाली पर मदिरा से
२२ नहीं । तेरा प्रभु परमेश्वर और तेरा ईश्वर यों कहता है वह अपनी जाति की सहाय करेगा देख मैं ने तेरे हाथ से लड़खड़ाने का कटोरा अपने कोप के कटोरे का तलछट ले लिया है तू
२३ फिर कभी उसे न पीयेगी । और उसे तेरे दुःख देनेहारों के हाथ में जिन्हों ने तेरे प्राण से कहा कि झुक जा जिस्तें हम पार हो जायें और तू ने पार जानेहारों के लिये अपनी पीठ भूमि की नाईं और मार्ग की नाईं रक्खी ॥

बावनवां पर्व्व ।

१ जाग जाग अपना बल पहिन ले हे सैहून अपने सिंगार के वस्त्र पहिन ले हे यरूसलम पवित्र नगर क्योंकि तुझ में कोई अखतनिक और अपवित्र मनुष्य
२ कभी फिर न आयेगा । अपनी धूल झाड़ दे खड़ी हो बैठ जा हे यरूसलम अपने गले के बंधनों को खोल दे हे सैहून की बंधुवी कन्या ॥
३ क्योंकि परमेश्वर यों कहता है कि तुम सेंत में बेचे गये और बिना दाम के
४ छुड़ाये जाओगे । क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि आरम्भ में मेरी जाति मिस्र में वहां यात्री के समान रहने के लिये उतर गई और असूर ने अकारण
५ उस पर अन्धेर किया । और मेरा यहां क्या है परमेश्वर कहता है कि मेरी जाति सेंत से ले लिई गई उस के राज्य करवैया ललकारते हैं परमेश्वर कहता है और प्रतिदिन मेरे नाम की निन्दा
६ किई जाती है । इस लिये मेरी जाति मेरा नाम जानेगी इस लिये उसी दिन जानेगी कि मैं वही हूं जो कहता हूं कि मुझे देख ॥
७ पहाड़ों पर मंगल सुनानेहारे के पांव क्या ही सुन्दर हैं जो कुशल का प्रचार करता है भलाई का संदेश देता है मोक्ष का उपदेश करता है सैहून से कहता है कि तेरा ईश्वर राज्य करता है ।
८ तेरे रखवालों का शब्द वे शब्द उठाते हैं एक साथ ललकारेंगे क्योंकि आंख से आंख मिलाके वे देखेंगे जब परमेश्वर
९ सैहून में फिर आवेगा । आनन्द में फूट निकलो मिलके शब्द करो हे यरूसलम के खंडहरो क्योंकि परमेश्वर ने अपनी जाति को शान्ति दिई उस ने यरूसलम
१० को मुक्ति दिई है । परमेश्वर ने अपनी पवित्र भुजा को समस्त जातिगणों को

दृष्टि में उघारा है और पृथिवी के सारे सिवानों ने हमारे ईश्वर की मुक्ति को देखा है॥

११ अलग होओ अलग होओ वहां से निकलो अपवित्र को मत छूओ उस के मध्य से निकलो अपने को पवित्र करो हे परमेश्वर के हथियार के उठानेहारो।

१२ क्योंकि तुम शीघ्रता के संग न निकलोगे और भागने के समान न चलोगे क्योंकि परमेश्वर तुम्हारे आगे आगे चलता है और इसराएल का ईश्वर तुम्हारे पीछे पीछे चलेगा॥

१३ देखो मेरा दास बुद्धिमानी करेगा ऊंचा होगा अपने को उठायेगा और

१४ बहुत ऊंचा होगा। जैसा बहुतेरे तुझे देखके आश्चर्य्यित हुए वैसा ही उस का रूप ऐसा बिगड़ गया कि मनुष्य नहीं रहा और उस की मूर्त्ति कि मनुष्य के

१५ बेटों में से नहीं है। वैसा वह बहुत से जातिगणों पर छिड़केगा राजा उस के विषय अपना मुंह बंद करेंगे क्योंकि जो उन से वर्णन नहीं किया और जो उन्हों ने नहीं सुना उसे उन्हों ने जान लिया॥

तिरपनवां पर्ब्ब।

१ कौन हमारे संदेश पर बिश्वास लाया और परमेश्वर की भुजा किस पर प्रगट

२ हुई। और वह उस के आगे कोंपल की नाईं बढ़ा और जड़ की नाईं सूखी भूमि से उस में न कुछ डौल था और न सुन्दरता और जब हम उसे देखेंगे तब

३ कुछ रूप नहीं कि हम उसे चाहें। वह निन्दित किया गया और मनुष्यों से त्यक्त दुःखों का मनुष्य और शोक से परिचित और हम से अपना मुंह छिपाके की नाईं निन्दित किया गया और हम

४ उसे कुछ लेखे में न लाये। निश्चय उस ने हमारे रोग उठा लिये और हमारे दुःख से गया और हम ने उसे प्रहारित ईश्वर का मारा कूटा और दुखाया हुआ

५ समझा। और वह हमारे अपराधों के लिये छेदा गया हमारी बुराइयों के कारण से कुचला गया हमारे कुशल के लिये उस पर ताड़ना हुई और उस के मार

६ खाने से हम चंगे हो गये। हम सब के सब भेड़ों की नाईं भटक गये थे हम्में से हर एक अपने अपने मार्ग पर फिर गया था और परमेश्वर ने हम सभों का

७ कुकर्म्म उस पर लाद दिया। वह क्लेशित था और आप अपने को दुःख में डाला और वह अपना मुंह न खोलेगा जैसा मेम्ना घात के लिये पहुंचाया जाता है और जैसे भेड़ अपने रोम कटवैये के आगे चुपचाप रहती है वैसा ही वह

८ अपना मुंह न खोलेगा। वह अंधेर और बिचार से लिया गया और उस की पीढ़ी में कौन सोच करेगा कि वह मेरी जाति के अपराध के कारण से जीवतों की भूमि से काट डाला गया

९ जिस्तें उस के लिये दण्ड हो। और उस की समाधि दुष्टों के साथ ठहराई गई पर वह अपनी मृत्यु के समय धनवान के संग रहा क्योंकि उस ने कुछ अनुचित न किया और न उस के मुंह में छल

१० था। और परमेश्वर को अच्छा लगा कि उसे कुचल डाले उस ने उसे क्लेशित किया जब उस का प्राण प्रायश्चित्त का बलि करेगा तो वह अपने बंश को देखेगा अपनी आयुर्दा को बढ़ावेगा और परमेश्वर का मनोरथ उस के हाथ

११ में फलेगा। वह अपने प्राण की पीड़ा का फल देखेगा और संतुष्ट होगा मेरा धर्म्मी सेवक अपने ज्ञान से बहुतों को धर्म्मी ठहरावेगा और वह आप उन

१२ की बुराइयों को उठा लेगा। इस लिये मैं उस को बहुतों के साथ भाग देऊंगा

और बलवन्तों के साथ वह लूट का भाग लेगा इस के बदले कि उस ने अपने प्राण को मृत्यु के लिये नंगा कर दिया और वह अपराधियों के साथ गिना गया और उस ने बहुतों का पाप उठा लिया और अपराधियों के लिये बिन्ती करेगा ॥

चौवनवां पर्व्व ।

१ हे बांझ जो न जन्मी थी आनन्द कर हे तू कि जन्ने की पीड़ा में न थी आनन्द में फूट निकल क्योंकि अनाथ के बालक बिवाहिता के बालकों से अधिक २ हैं परमेश्वर कहता है । अपने तंबू के स्थान को चौड़ा कर दे और तेरे निवासों को फैला दें मत रोक अपनी रस्सियों को लम्बी कर और अपने खूंटों को ३ दृढ़ कर । क्योंकि तू दहिने और बायें फूट निकलेगी और तेरे बंश जातिगणों के अधिकार प्राप्त करेंगे और उजाड़ ४ नगरों को बसावेंगे । मत डर क्योंकि तू लज्जित न होगी संकोचित मत हो क्योंकि तू अपमानित न किई जायेगी क्योंकि तू अपनी तरुणाई की लाज को भूलेगी और अपने रंड़ापे के अपमान ५ को फिर स्मरण न करेगी । क्योंकि तेरा पति तेरा कर्त्ता है सेनाओं का परमेश्वर उस का नाम है और तेरा मुक्तिदाता इसराएल का धर्ममय है वह सारी पृथिवी का ईश्वर कहा जायेगा । ६ क्योंकि त्यक्त किई हुई और दुखित स्त्री की नाईं परमेश्वर ने तुझे बुलाया और युवावस्था की स्त्री की नाईं क्योंकि वह त्यक्त किई जायेगी परमेश्वर ने ७ कहा है । एक पल भर के लिये मैं ने तुझे त्यागा और बड़ी दया के साथ ८ तुझे बटोर लूंगा । क्रोध की बाढ़ में एक पलमात्र के लिये मैं ने अपना मुंह तुझ से छिपा लिया और सनातन की दया के साथ मैं जो तुझ पर दया किई परमेश्वर तेरा मुक्तिदाता कहता है । ९ क्योंकि यह मेरे निकट नूह का प्रलय है जो मैं ने किरिया खाई कि नूह का पानी पृथिवी पर फिर न होगा वैसा ही मैं ने किरिया खाई कि तुझ पर फिर क्रोध न करूंगा और तुझे न १० डपटूंगा । क्योंकि पहाड़ सरक जायेंगे और पहाड़ियां हिल जायेंगी पर मेरी दया तेरे पास से न सरकेगी और न मेरे कुशल की वाचा हिलेगी परमेश्वर तेरा दया करनेहारा कहता है ॥

११ हे दुखित आंधी की मारी हुई और शांतिरहित देख मैं तेरे पत्थरों को सुरमे में डालता हूं और तेरी नेवें नील- १२ मणि पर डालूंगा । और मैं तेरी मुंडेरों को वैदूर्य्य बनाऊंगा और तेरे फाटकों को चमकनेहारे मणि और तेरी चारों १३ ओर की भीत महंगा मोल पत्थर । और तेरे सारे लड़के परमेश्वर के सिखाये हुए होंगे और तेरे लड़कों का बड़ा कुशल १४ होगा । तू धर्म्म में दृढ़ किई जायेगी अंधेर के भय से दूर रहेगी क्योंकि तुझ पर भय न होगा और नाश से क्योंकि १५ तेरे पास न आवेगा । देख वे एकट्ठे एकट्ठे होंगे परन्तु मेरे शासन से नहीं कौन तेरे बिरोध में एकट्ठा हुआ वह १६ तेरे पास गिरेगा । देख मैं ने लोहार को सृजा जो कोयलों को आग में फूंकता है और हथियार अपने कार्य्य के लिये निकालता है और मैं ने नाशक को १७ उजाड़ करने के लिये सृजा । कोई हथियार जो तेरे बिरोध में बनाया गया हो न फलेगा और हर जीभ को जो बिचार में तेरे बिरोध खड़ी होगी तू दोषी ठहरायेगी यह परमेश्वर के दासों का अधिकार है और उन का धर्म्म मेरी ओर से है परमेश्वर कहता है ॥

पचपनवां पर्ब्ब ।

१ हे हर एक प्यासे जल के पास आओ और वह जिस के पास रोकड़ नहीं आओ मोल लेओ और खाओ और आओ बिना रोकड़ और बिना दाम दाखरस २ और दूध मोल लेओ । तुम किस लिये रोकड़ उस के लिये तौलना चाहते हो जो रोटी नहीं है और अपनी कमाई उस के लिये जिस्से जी नहीं भरता है सुनो मेरी सुनो और अच्छा खाओ और तुम्हारा प्राण अपने को चिकनाई में आनन्दित ३ करे । अपना कान झुकाओ और मेरे पास आओ सुनो और तुम्हारा प्राण जीता रहे और मैं तुम्हारे साथ सनातन की बाचा बांधूंगा अर्थात् उन दृढ़ अनुग्रहों की बाचा जो दाऊद से किई गई ४ थीं । देखो मैं ने उसे देशगणों का साक्षी ठहराया है जातिगण का अगुआ और आज्ञाकारी

५ देख तू एक जातिगण को जिसे नहीं जानता बुलावेगा और वे जातिगण जो तुझे नहीं जानते तेरी ओर दौड़ेंगे परमेश्वर तेरे ईश्वर के कारण और इसराएल के धर्ममय के लिये क्योंकि उस ने तुझे महान किया है ॥

६ परमेश्वर को ढूंढ़ो जब लों कि मिल सक्ता है उसे पुकारो जब कि निकट ७ है । दुष्ट अपने मार्ग को छोड़ दे और बुराई का मनुष्य अपनी भावनाओं को और परमेश्वर की ओर फिरे और वह उस पर दया करेगा और हमारे ईश्वर की ओर और वह बहुताई से क्षमा ८ करेगा । क्योंकि मेरी चिन्तायें तुम्हारी चिन्तायें नहीं हैं और न मेरे मार्ग तुम्हारे ९ मार्ग हैं परमेश्वर कहता है । क्योंकि जैसे स्वर्ग पृथिवी से ऊंचे हैं वैसे ही मेरे मार्ग तुम्हारे मार्गों से और मेरी चिन्तायें तुम्हारी चिन्ताओं से ऊंची हैं ।

१० क्योंकि जैसा कि बर्षा और पाला आकाश से गिरते और उधर फिर नहीं जाते जब लों कि पृथिवी को न सींचें और उसे फलवती करें और उस्से उगायें और बोवैये को बीज और खवैये को रोटी देवें । ११ वैसा ही मेरा बचन होगा जो मेरे मुंह से निकलता है वह मेरे पास छूछा न फिरेगा जब लों उसे न करे जो मैं ने चाहा और उस में सुफल न हो जिस के लिये मैं ने उसे भेजा । १२ क्योंकि तुम आनन्द के साथ निकलोगे और कुशल के साथ पहुंचाये जाओगे पहाड़ और पहाड़ियां तुम्हारे आगे ललकार में फूट निकलेंगी और खेत के सारे पेड़ तालियां बजावेंगे । १३ कांटों के झाड़ की सन्ती सरो का वृक्ष उगेगा और बिछुए की सन्ती मेंहदी और यह परमेश्वर के निकट नाम के लिये होगा सनातन के चिन्ह के लिये जो काटा न जायेगा ॥

छप्पनवां पर्ब्ब ।

परमेश्वर यों कहता है कि न्याय को धारण करो और धर्म्म का काम में लाओ क्योंकि मेरी मुक्ति आने के समीप है और मेरा धर्म्म प्रगट होने के लिये । २ धन्य हां धन्य वह मनुष्य जो यह करेगा और मनुष्य का पुत्र जो इसे दृढ़ता से धारण करेगा बिश्राम को पालन करते हुए कि उसे अशुद्ध न करे और अपना हाथ सारे कुकर्म्म करने से खेंचते हुए ॥

३ और परदेशी का पुत्र जो परमेश्वर से मिल गया यह न कहे कि परमेश्वर मुझे अपनी जाति से सर्वथा अलग करेगा और नपुंसक न कहे कि देखो मैं सूखा ४ वृक्ष हूं । क्योंकि उन नपुंसकों के बिषय जो मेरे बिश्राम को पालन करते हैं और जिस्से मैं प्रसन्न हूं उसे चाहते हैं परमेश्वर यों कहता है । ५ कि मैं उन्हें अपने घर में और अपनी भीतों में स्थान और

नाम बेटों और बेटियों से अच्छा देऊंगा सनातन का नाम मैं उसे देऊंगा जो ६ काटा न जायेगा। और परदेशी के बेटे जो आप को परमेश्वर से मिला देते हैं जिस्तें उस की सेवा करें और परमेश्वर के नाम को प्यार करें कि उस के सेवक हो जायें हर एक बिश्राम दिन का पालन करनेहारा कि उसे अशुद्ध न करे और मेरी बाचा को दृढ़ता से पकड़ने-
७ हारे। सो मैं उन्हें अपने पवित्र पहाड़ पर पहुंचाऊंगा और उन्हें अपने प्रार्थनागृह में आनन्दित करूंगा उन के होम की भेंटें और उन के बलिदान मेरी यज्ञबेदी पर ग्राहग्र होंगे क्योंकि मेरा घर सारे जातिगणों का प्रार्थना का घर कहा
८ जायेगा। प्रभु परमेश्वर इसराएल के निकाले हुओं का एकट्ठा करनेहारा यों कहता है कि उस के बटोरे हुओं के अधिक मैं उस पर और भी बटोरूंगा॥
९ हे बन के सारे पशुओ भक्षण करने के लिये आओ हे जंगल के सारे बनैले
१० पशुओ। उस के रखवाले सब के सब अंधे हैं वे नहीं जानते वे सब के सब गूंगे कुत्ते हैं वे भूंक नहीं सक्ते स्वप्न देखते लेट जाते ऊंघने को प्यार करते
११ हैं। और वे कुत्ते मरभुक्खे हैं तृप्त को नहीं जानते और गड़रिये आप चौकसी करने नहीं जानते वे सब के सब अपने अपने मार्ग की ओर झुके हर एक अपने अपने स्वारथ की ओर अपने ठिकाने
१२ से। हर एक कहता है कि आओ मैं मदिरा लाऊंगा और हम अमल से अपने को मद्यपान में डालेंगे और कल आज के दिन की नाईं होगा बड़ा हां अधिक बड़ा॥

सत्तावनवां पर्व्व।

१ धर्म्मी नाश होता है और कोई मनुष्य उसे सोच में नहीं लाता और दया करनेहारे मनुष्य उठा लिये जाते जब कोई नहीं सोचता कि धर्म्मी बिपत्ति के साम्हने से उठा लिया जाता
२ है। वह कुशल में प्रवेश करेगा वे अपने बिछौनों पर चैन करेंगे हर एक सीधा अपने साम्हने चलनेहारा॥
३ और तुम यहां निकट आओ हे टोन्हिन के बेटो छिनलो और छिनाल
४ के बंश। तुम किस्से अपने को आनन्दित करते हो किस पर मुंह फैलाते जीभ निकालते हो क्या तुम पाप के बालक
५ नहीं मिथ्या के बंश। अपने को मूर्त्तों के मध्य हर एक हरे पेड़ के नीचे जलाते हो तराइयों में चटानों की कंदरों में बालकों को घात करते हो।
६ नाले के चिकने पत्थरों के मध्य तेरा अंश है वे वेही तेरे भाग हैं हां उन के लिये तू ने तर्पण किया है तू ने अर्पण किया क्या मैं ऐसे कार्य्यों के बिषय शांति
७ पाऊंगा। अति ऊंचे पर्व्वत के ऊपर तू ने अपना बिछौना बिछाया है हां वहां
८ बलिदान करने के लिये तू चढ़ा है। और द्वार और चौखट के पिछवाड़े तू ने अपने स्मरण का चिन्ह स्थापन किया क्योंकि मुझ से अलग तू ने अपने को नंगा किया और तू खाट पर चढ़ गई अपने बिछौने को फैलाया और उन से बाचा बांधी तू ने उन के बिछौने को प्रीति रक्खा स्थान सिद्ध किया है।
९ और तू राजा के पास तेल लगाके गई और अपने को भली रीति से सुगन्धित किया और अपने दूतों को बहुत दूर
१० भेजा और नीचे पाताल लों गई। तू अपने मार्ग की अधिकाई में थक गई पर तू ने नहीं कहा कि कुछ आशा नहीं तू ने अपने हाथ का जीवन पाया
११ इस लिये तू निर्बल नहीं हो गई। और तू किस्से भयमान हुई और डरी कि झूठ

बोली और तू ने मुझे स्मरण नहीं किया और अपने मन में नहीं रक्खा क्या इस लिये नहीं कि मैं चुपका रहा हां बहुत १२ दिन से कि तू मुझ से न डरेगी। मैं तेरे धर्म्म और तेरे कार्य्य बतलाऊंगा और वे तुझे कुछ लाभ न पहुंचावेंगे। १३ जब तू पुकारे तब तेरे लाभ की वस्तें तुझे छुड़ावें पर पवन उन सभों को उड़ा ले जायेगा और स्वास ले जावेगी और जो मुझ पर भरोसा रखता है वह देश को प्राप्त करेगा और मेरे पवित्र पहाड़ १४ का अधिकारी होगा। और वह कहेगा कि ऊंचा करो ऊंचा करो मार्ग सिद्ध करो ठोकर खिलानेहारी वस्तु मेरी जाति के मार्ग से उठा ले जाओ॥

१५ क्योंकि ऊंचा और अति महान सनातन का निवास करनेहारा और उस का नाम धर्म्ममय है यों कहता है कि मैं ऊंचे पर और पवित्र रहूंगा और कुचले हुए और दीन आत्मावाले के साथ जिस्तें दीनों के आत्मा को उभारूं और कुचले १६ हुओं के अन्तःकरण को जिलाऊं। क्योंकि मैं सदा लों अपवाद न करूंगा और सदा लों कोप न रक्खूंगा क्योंकि आत्मा मेरे आगे से मूर्छा में आ गया और वे १७ प्राण जो मैं ने बनाये। उस के लोभ की बुराई के कारण से मैं कोप में हूं और उसे मारूंगा आप को छिपाऊंगा और कोप में रहूंगा क्योंकि वह अपने मन के १८ मार्ग पर भटकके चला गया। मैं ने उस की चालों को देखा और उसे चंगा करूंगा और उस का अगुआ होऊंगा और उस को और उस के बिलापियों को १९ फिर शान्ति देऊंगा। कि मैं होंठों के फल का उत्पन्न करनेहारा कुशल कुशल दूर को और समीप को परमेश्वर कहता है और मैं उसे चंगा करता हूं॥

२० और दुष्ट तरंगित समुद्र के समान हैं क्योंकि वह स्थिर नहीं हो सकता और उस के जल चहला और कीचड़ उछालते २१ हैं। मेरा ईश्वर कहता है कि दुष्टों के लिये कुशल नहीं है॥

अट्ठावनवां पर्ब्ब।

१ गला फाड़के चिल्ला ठहर मत तुरही के समान अपना शब्द उठा और मेरी जाति को उन के अपराध और यअकूब के घराने को उन के अपराध बतला। २ और वे प्रतिदिन मुझे ढूंढ़ते हैं और मेरे मार्गों की पहिचान चाहते हैं उस जाति के समान जिस ने धर्म्म का कार्य्य किया और अपने ईश्वर की बिधिन को नहीं छोड़ा है वे धर्म्म की बिधिन के विषय में मुझ से पूछेंगे ईश्वर के निकट आने ३ से आनन्दित हैं। हम किस लिये व्रत करते हैं और तू नहीं देखता अपने प्राण को क्लेशित करते हैं और तू नहीं जानता देखो तुम अपने व्रत के दिन में आनन्द पाते हो और अपने सब काम अंधेर से ४ लेते हो। देखो लड़ाई और झगड़े के कारण तुम व्रत रखते हो और जिस्तें दुष्टता के घूंसे मारो तुम आज के दिन व्रत न रक्खोगे कि ऊंचे पर अपना ५ शब्द सुना दो। क्या इस के समान वह होगा जिसे मैं चुनूंगा वह दिन जिस में मनुष्य अपने प्राण को दुःख दे क्या झाऊ की नाईं अपना सिर झुकाना और टाट और राख बिछाये क्या तू इसे व्रत और परमेश्वर के लिये प्रसन्नता का दिन कहेगा॥

६ क्या यह वह व्रत नहीं जिसे मैं चुनूंगा कि दुष्टता के बंधनों को खोल दे जूए की रस्सियों को तोड़ डाले और पिसे हुओं को निर्बन्ध करे और हर एक ७ जूए को तुम तोड़ डालो। क्या यह नहीं कि अपनी रोटी भूखे को खिलावे और दुखियों और अनाथों को घर में लाओ

क्योंकि तू नंगे को देखेगा और उसे पहि-
नावेगा और अपने मांस से आप को न
छिपावेगा ॥

८ तब तेरी ज्योति प्रातःकाल के समान
फूट निकलेगी और तेरे घाव शीघ्र चंगे
होंगे और तेरा धर्म्म तेरे आगे आगे चलेगा
और परमेश्वर का तेज तेरे पीछे पीछे
९ चलेगा। तब तू पुकारेगा और परमेश्वर
उत्तर देगा तू दुहाई देगा और वह कहेगा
कि मुझे देख यदि तू अपने मध्य में से
जूए को और अंगुली दिखाने को और
१० कुवचन बोलने को दूर करेगा। और
यदि तू अपना प्राण भूखों को देगा और
दुःखित प्राण को संतुष्ट करेगा तब तेरी
ज्योति अंधकार में उदय होगी और तेरा
११ अंधकार मध्यान्ह के समान। और पर-
मेश्वर सदा तेरी अगुआई करेगा और
झुराहट के समय में तेरे प्राण को संतुष्ट
करेगा और तेरी हड्डियों को बली करेगा
और तू सींची हुई बाटिका के और पानी
के सोते के समान जिस के जल कधी
१२ न घटेंगे होगा। और तुझ से निकलके
वे पुराने खंडहरों को बना डालेंगे
और तू पुरातन की नेवों को उठावेगा
और तू टूटी हुई भीत का सुधारक
और बसने के लिये पथों का बनवैया
कहावेगा ॥

१३ यदि तू विश्राम के दिन से अपना
पांव फिराये कि अपना अभिलाष मेरे
पवित्र दिन में न करे और विश्राम के
दिन को आनन्द और परमेश्वर के पवित्र
दिन को प्रतिष्ठित कहे औम उसे प्रतिष्ठित
करे कि अपने काम काज न करे और
अपने अभिलाष को न पावे और वृथा
१४ बातचीत में करे। तब तू परमेश्वर में
अपने को आनन्दित करेगा और मैं तुझे
पृथिवी के ऊंचे स्थानों पर चढ़ाऊंगा
और तुझे तेरे पिता यअकूब का अधि-
कार खिलाऊंगा क्योंकि परमेश्वर के
मुख ने बचन कहा है ॥

उनसठवां पर्व्व ।

१ देखो परमेश्वर का हाथ बचाने से
छोटा नहीं है और उस का कान सुन्ने
२ से भारी नहीं है। परन्तु तुम्हारी
बुराइयां तुम्हारे और तुम्हारे ईश्वर में
विभाग डालती रहीं और तुम्हारे पापों
ने उस का मुंह तुम से छिपा दिया ऐसा
३ कि वह नहीं सुनता। क्योंकि तुम्हारे
हाथ लोहू से और तुम्हारी अंगुलियां
बुराई से अशुद्ध हैं तुम्हारे होंठों ने झूठी
बातें किईं और तुम्हारी जीभ दुष्टता
बर्णन करेगी ॥

४ कोई धर्म्म के साथ बिवाद नहीं
करता और सच्चाई के साथ नहीं लड़ता
वे तुच्छ पर भरोसा रखते हैं और झूठी
बातें करते हैं उन्हें बुराई का गर्भ है
और वे पाप जनते हैं। उन्हों ने नाग
के अंडों को सेया है और मकड़ी के
जालों को बिनेंगे जो उन के अंडों में
से कुछ खाता है वह मरेगा और कुचले
हुए अंडे से सपोला सेया जायेगा। उन
के जाले बस्त्र के लिये न होंगे और वे
अपने कामों से अपने को न छिपायेंगे
उन के कार्य्य अधर्म्म के कार्य्य हैं और
अंधेर का कार्य्य उन के हाथों में है।
७ उन के पांव बुराई की ओर दौड़ेंगे और
वे निर्दोष लोहू बहाने के लिये शीघ्रता
करेंगे उन की चिन्ताएं बुराई की
चिन्ताएं हैं नाश और विपत्ति उन के
८ मार्गों में हैं। उन्हों ने कुशल के मार्ग
को नहीं जाना और उन के मार्गों में
न्याय नहीं है उन्हों ने अपने लिये अपने
मार्ग टेढ़े कर लिये हर एक उन में
चलनेहारा कुशल को नहीं जानता ॥

९ इस लिये न्याय हम से दूर है और
धर्म्म हमें न पहुंचेगा हम ज्योति की

बाट जोहते हैं परन्तु देखो अंधकार जगमगाहटों की परन्तु अंधियारे में
१० चलते हैं। हम अंधों की नाईं भीत को टटोलते हैं और उन की नाईं जिन के आंख नहीं टटोलते हैं हम मध्यान्ह को मानो संध्याकाल की नाईं ठोकर खाते हैं और अति अंधकार में मृतकों
११ की नाईं। हम सब के सब भालुओं की नाईं गर्जते हैं और पिंडुकों की नाईं कू कू करते हैं हम न्याय की बाट जोहते हैं परन्तु नहीं है और मुक्ति की पर वह हम से दूर है॥

१२ क्योंकि हमारे अपराध तेरे आगे बढ़ गये हैं और हमारे ही पाप हम पर साक्षी देते हैं क्योंकि हमारे पाप हमारे साथ हैं और हम अपनी बुराइयों को
१३ जानते हैं। पाप करना परमेश्वर के विरुद्ध झूठ बोलना और हमारे ईश्वर के पीछे से फिर जाना अंधेर और भटक जाने की बातें करना और मन से मिथ्या बातों का गर्भ रहना और उच्चारना।
१४ और विचार पीछे हटाया गया और धर्म्म दूर से खड़ा रहता है क्योंकि सत्य सड़क में गिर पड़ा है और खराई प्रवेश
१५ नहीं हो सक्ती। तब सत्यता लुप्त हो गई और बुराई से अलग होनेहारे ने अपने को लूट ठहराया तब परमेश्वर ने देखा और उस की दृष्टि में बुरा था
१६ कि कुछ न्याय नहीं है। और उस ने देखा कि कोई मनुष्य नहीं है और अति शोकित हुआ कि कोई बिचवई नहीं और उसी की भुजा ने उस के लिये बचाया और उस का धर्म्म उसी ने उसे
१७ संभाला। और उस ने धर्म्म को झिलम की नाईं पहिन लिया और मुक्ति का टोप अपने सिर पर और उस ने वस्त्र के लिये पलटा लेने के पहिरावे पहिन लिये और उवलन का उत्तरीय वस्त्र की नाईं ओढ़ा। उन के कार्य्यों के समान १८
उन्हीं की नाईं वह प्रतिफल देगा क्रोध अपने बैरियों के लिये प्रतिफल अपने बैरियों के लिये टापुओं को वह पूरा प्रतिफल देगा। और पश्चिम के वासी १९ परमेश्वर के नाम से डरेंगे और पूरब के निवासी उस की महिमा से क्योंकि सकरी नदी की नाईं वह आवेगा जब परमेश्वर का आत्मा झंडा खड़ा करता है। तब सैहून के लिये और यअकूब २० में अधर्म्म से पश्चात्ताप करनेहारों के लिये मुक्तिदाता आवेगा परमेश्वर कहता है। और मैं जो हूं उन के साथ २१ मेरी यह बाचा है परमेश्वर कहता है कि मेरा आत्मा जो तुझ पर है और मेरी बातें जो मैं ने तेरे मुंह में डाली हैं तेरे मुंह से और तेरे बंश के मुंह से और तेरे बंश के बंश के मुंह से इस समय से सनातन लों जाती न रहेंगी परमेश्वर कहता है॥

साठवां पर्व्व।

उठ ज्योतिमान हो क्योंकि तेरी १ ज्योति आ गई और परमेश्वर का तेज तुझ पर उदय हुआ। क्योंकि देख अंध- २ कार पृथिवी को ढांप लेगा और अंधियारी अन्यदेशियों को और तुझ पर परमेश्वर उदय होगा और उस का तेज तेरे ऊपर देखा जायेगा। और देशगण ३ तेरी ज्योति में चलेंगे और राजागण तेरे उदय की चमक में॥

अपनी आंखें चारों ओर उठा और ४ देख वे सब के सब एकट्ठे हो गये तेरे पास आते हैं तेरे बेटे दूर से आवेंगे और तेरी बेटियां गोद में उठाई जायेंगी। तब तू देखेगी और ज्योतिमय होगी और ५ तेरा अंतःकरण हिलेगा और बढ़ जायेगा क्योंकि समुद्र का धन तुझ पास लौटा दिया जायेगा अन्यजातियों का बल तुझ

६ में आवेगा। ऊंटों का झुंड तुझे ढांपेगा मिदयान और ऐफा की सांड़नियां वे सब के सब सिबा से आवेंगे सोना और लोबान लावेंगे और परमेश्वर की स्तुति ७ का प्रचार करेंगे। कीदार के सारे झुंड तेरे लिये एकट्ठे होंगे नबायूत के मेंढे तेरी सेवा करेंगे वे ग्राह्य के साथ मेरी यज्ञबेदी पर चढ़ेंगे और मैं अपनी शोभा के घर को शोभित करूंगा॥

८ ये कौन हैं जो मेघ की नाईं उड़ते हैं और कपोतों की नाईं अपनी खिड़कियों की ९ ओर। क्योंकि टापू मेरी बाट जोहते हैं और तर्शीश के जहाज पहिले जिस्तें तेरे बेटों को दूर से लावें उन की चांदी और उन का सोना उन के साथ परमेश्वर तेरे प्रभु के नाम के लिये और इसराएल के धर्ममय के लिये क्योंकि १० उस ने तुझे ऐश्वर्य्यमान किया है। और परदेशियों के बेटे तेरी भीतों को उठावेंगे और उन के राजा तेरी सेवा करेंगे क्योंकि मैं ने अपने क्रोध में तुझे मारा और अपने अनुग्रह में तुझ पर दया किई ११ है। और तेरे फाटक नित खुले रहेंगे वे रात दिन कभी बंद न होंगे कि देशगणों का द्रव्य तुझ पास लावें और उन १२ के राजा बन्दीगृह में लाये हुए। क्योंकि वह जाति और वह राज्य जो तेरी सेवा न करेंगे सो नाश हो जायेंगे और वे देशगण सर्वथा नष्ट हो जायेंगे॥

१३ लुबनान का विभव तुझ पास आवेगा देवदारु सनोवर और शमशाद एक ही साथ जिस्तें अपने पवित्र स्थान को विभूषित करूं और मैं अपने चरणों के स्थान को शोभित करूंगा॥

१४ तब तेरे सारे अंधेर करनेहारों के सन्तान निहुड़े हुए तुझ पास आवेंगे तब तेरे सारे निन्दा करनेहारे तेरे चरणों के तलवों के पास प्रणाम करेंगे और तुझे परमेश्वर का नगर सैहून जो इसराएल का धर्ममय कहेंगे। तेरे त्यक्त होने और १५ घिनित होने की संती जब तुझ में कोई तेरे मध्य जानेहारा न होगा मैं तुझे सदा की ऊंचाई और सनातन की पीढ़ियों के आनन्द का कारण बनाऊंगा॥

और तू जातिगणों का दूध पीयेगी १६ और राजाओं के स्तन चूस लेगी और तू जानेगी कि मैं परमेश्वर तेरा मुक्तिदाता हूं और तेरा निस्तारकर्त्ता यअकूब का सामर्थ्यमय॥

पीतल की संती मैं सोना लाऊंगा १७ और लोहे की संती रुपा लाऊंगा और काठ की संती पीतल और पत्थरों की संती लोहा और मैं तेरे राज्य को शांति और तेरे करग्राहकों को धर्म्म ठहराऊंगा। तेरे देश में आगे को अंधेर न सुना १८ जायेगा बिनाश और बिपत्ति तेरे सिवाने में और तू अपनी भीतों को मुक्ति और अपने फाटकों को स्तुति कहेगी॥

सूर्य्य तेरे लिये फिर दिन को ज्योति १९ के लिये न होगा और चमक के लिये चन्द्रमा तुझे ज्योति न देगा और परमेश्वर तेरी सनातन की ज्योति हो जायेगा और तेरा ईश्वर तेरी महिमा। तेरा सूर्य्य फिर कभी अस्त न होगा और २० तेरा चन्द्रमा न घटेगा क्योंकि परमेश्वर तेरी नित्य की ज्योति हो जायेगा और तेरे बिलाप के दिन जाते रहेंगे॥

और तेरी जाति सब की सब धर्म्मी २१ होकर सदा लों देश की अधिकारी रहेगी मेरी लगाई हुई टहनी मेरे हाथों की क्रिया जिस्तें अपना ऐश्वर्य्य प्रगट करूं। एक छोटा सहस्र हो जायेगा २२ और एक तनिक सा एक बलवन्त जाति मैं परमेश्वर उस के समय में उसे शीघ्र पहुंचाऊंगा॥

एकसठवां पर्व्व।

१ प्रभु परमेश्वर का आत्मा मुझ पर है क्योंकि परमेश्वर ने मुझे अभिषिक्त किया कि दीनों को मंगलसमाचार सुनाऊं उस ने मुझे भेजा कि चूर्ण अंतःकरणों को बांधूं जिस्तें बंधुओं के लिये मोक्ष का और बंधे हुओं के लिये बन्दीगृह से छुट्टी पाने का प्रचार करूं। २ कि परमेश्वर के लिये ग्राह्य के बरस को और हमारे ईश्वर के लिये पलटा लेने के दिन का प्रचार करूं कि सारे शोकितों ३ को शांति देऊं। कि सैहून के बिलापियों को वस्त्र पहिना दूं कि उन को राख की संती मुकुट आनन्द की चिकनाहट शोक की संती और स्तुति का वस्त्र मन की उदासी की संती और वे धर्म्म के बलूतवृक्ष कहे जायेंगे परमेश्वर के लगाये हुए जिस्तें वह अपने को विभवमय करे॥

४ और वे सनातन के उजाड़ों को बनावेंगे और प्राचीनों के उजड़े स्थानों को उठावेंगे और उजड़े हुए नगरों को नया करेंगे पुरातन के उजाड़ों को॥

५ तब परदेशी खड़े होंगे और तुम्हारे झुंडों को चरावेंगे और परदेशी के पुत्र तुम्हारे किसान और अंगूर के माली ६ होंगे। और तुम परमेश्वर के याजक कहलाओगे हमारे ईश्वर के सेवक कहे जाओगे तुम जातिगणों का धन खाओगे और बदले की नाईं उन के विभव में प्रवेश करोगे॥

७ तुम अपनी लाज की संती दूना पाओगे और संकोच की संती वे अपने भाग के लिये आनन्द की ललकार मारेंगे इस लिये वे अपने देश में दूना अधिकार पावेंगे और उन्हें सदा का आनन्द होगा॥

८ क्योंकि मैं परमेश्वर न्याय से प्रेम रखता हूं और अनर्थ लूटी हुई वस्तु से घिन करता हूं और मैं उन के कार्य्य का प्रतिफल सच्चाई से दूंगा और उन के साथ एक सदा की वाचा बांधूंगा। ९ तब उन का बंश अन्यदेशियों में और उन के सन्तान जातिगणों में प्रसिद्ध होंगे सब जो उन्हें देखेंगे उन को मान लेंगे कि वे परमेश्वर के आशीर्बादी बंश हैं॥

१० मैं परमेश्वर से निपट आनन्दित होऊंगा मेरा मन मेरे ईश्वर से मगन हो क्योंकि उस ने मुक्ति के वस्त्रों से मुझे बिभूषित किया और धर्म्म का बागा उस ने मुझे पहिना दिया है जिस रीति से दूल्हा अपने याजकीय मुकुट से आप को संवारता है और जिस रीति से दुल्हिन अपने गहनों से अपने को संवारती है। ११ क्योंकि जिस रीति से पृथिवी अपनी बोई हुई वस्तु को उगाती है और जिस रीति से बाटिका जो उस में बोया गया है उसे उगाती है इसी रीति से प्रभु परमेश्वर धर्म्म और स्तुति को समस्त जातिगणों के साक्षात् उगावेगा॥

बासठवां पर्व्व।

१ सैहून के कारण मैं चुप न रहूंगा और यरूसलम के लिये मैं चैन न लूंगा जब लों कि उस का धर्म्म ज्योति के समान न चमके और उस की मुक्ति उस दीपक के समान जो बरता है। २ और देशगण तेरे धर्म्म को देखेंगे और समस्त राजा तेरे बिभव को और तू एक नये नाम से पुकारी जायेगी जिसे परमेश्वर का मुंह उच्चारेगा। ३ और तू परमेश्वर के हाथ में एक सुन्दर मुकुट होगी और अपने ईश्वर की हथेली पर एक राजकीय अध्यक्ष॥

४ तू अजूबाह अर्थात् छोड़ी हुई फिर न कही जायेगी और तेरी भूमि शमामाह

अर्थात् उजाड़ फिर न कही जायेगी पर तू हफ़्ज़ीबाह अर्थात् मेरा आनन्द उस में है पुकारी जायेगी और तेरी भूमि बऊलाह अर्थात् ब्याही हुई क्योंकि परमेश्वर तुझ से आनन्दित है और तेरी भूमि ब्याही जायेगी ॥

५ क्योंकि जैसे तरुण मनुष्य कुंवारी को ब्याह लाता है उसी रीति से तेरे बेटे तुझे ब्याह लायेंगे और जिस रीति से दुल्हा दुल्हिन से आनन्दित है उसी रीति से तेरा ईश्वर तुझ पर आनन्दित होगा ॥

६ हे यरूसलम मैं ने तेरी भीतों पर पहरू बैठलाये हैं सारे दिन और सारी रात वे चुप न रहेंगे हे परमेश्वर के स्मरण दिलानेहारो तुम्हें चैन न हो । ७ और उसे चैन न दो जब लों कि वह स्थिर न करे और जब लों कि वह यरूसलम को पृथिवी पर स्तुति न ठहराये ॥

८ परमेश्वर ने अपने दहिने हाथ की और अपनी बलवती भुजा की किरिया खाई है कि यदि मैं तेरा अन्न फिर तेरे शत्रुओं को भोजन के लिये दूंगा और यदि परदेशी के लड़के तेरे नये दाखरस को पीयेंगे जिस में तू ने परिश्रम किया है तो मैं ईश्वर नहीं । ९ क्योंकि उस के लवनेहारे उसे खायेंगे और परमेश्वर की स्तुति करेंगे और जो उस को एकट्ठा करते हैं मेरे पवित्र आंगनों में पीयेंगे ॥

१० चले आओ फाटकों में से चले आओ लोगों के लिये मार्ग सुधारो ऊंचा करो सड़क ऊंची बनाओ उस्से पत्थर दूर करो जातिगणों के ऊपर झंडा खड़ा करो ॥

११ देखो परमेश्वर ने पृथिवी के अंत लों यह सुना दिया है कि सैहून की कन्या से कहो कि देख तेरी मुक्ति आती है देख उस का प्रतिफल उस के साथ है और उस की मुक्ति उस के आगे । १२ और वे उन्हें पवित्र जाति परमेश्वर के छुड़ाये हुए कहेंगे और तू दरशाह अर्थात् अति याचित ऐर-लो-निअज़िबाह अर्थात् अत्यक्त नगर कहलायेगा ॥

तिरसठवां पर्व्व ।

१ यह कौन है जो अदूम से आता है बुसरा से अपने वस्त्रों में चमकनेहारा यह जो अपने पहिरावे में ऐश्वर्य्यमान अपने बल के महत्त्व में झुकता है मैं धर्म्म में बचन कहनेहारा बचाने के लिये बलवान ॥

२ तू क्यों अपने पहिरावे में रक्तवर्ण है और तेरे पहिरावे उस के पहिरावे की नाईं हैं जो कोल्हू में लताड़ता है । ३ मैं ने अकेले कोल्हू में लताड़ा है और लोगों में से कोई मनुष्य मेरे साथ न था और मैं अपने क्रोध में उन्हें लताड़ूंगा और अपनी जलजलाहट में उन्हें रौंदूंगा और उन के रस का मेरे वस्त्रों पर छींटा पड़ेगा और मैं ने अपने सारे पहिरावों को डुबाया है । ४ क्योंकि पलटा लेने का दिन मेरे मन में है और मेरे मोल लिये हुओं का बरस आया है । ५ और मैं देखता हूं और कोई सहायक नहीं और अति शोकित हूं और कोई संभालनेवाला नहीं और मेरी भुजा मेरे लिये मुक्ति का कार्य्य करती है और मेरी जलजलाहट वही मुझे संभालती है । ६ और मैं अपने क्रोध में जातिगणों को लताड़ता हूं और अपनी जलजलाहट में उन्हें मतवाला करता हूं और उन का रस भूमि पर गिरा देता हूं ॥

७ मैं परमेश्वर की कृपाओं परमेश्वर की स्तुतों की चर्चा कराऊंगा उस सब के समान जो परमेश्वर ने हम से व्यवहार

किया है और इसराएल के घराने के लिये वे बड़ी बड़ाई जो उस ने उन से व्यवहार किया है उस की दयाओं के समान और उस की कृपाओं के समान ॥

८ और उस ने कहा कि केवल येही मेरी जाति हैं मेरे लड़के झूठ न बोलेंगे और वह उन का मुक्तिदाता हो गया।

९ उन के सारे बैर में वह बैरी न था और उस के आगे के दूत ने उन्हें बचाया अपने प्रेम में और अपनी बड़ी दया में उसी ने उन्हें मुक्ति दिई और उस ने उन्हें उठाया और सारे प्राचीन दिनों में उन्हें ले गया ॥

१० परन्तु वे फिर गये और उस के पवित्र आत्मा को खिजाया और वह उन का शत्रु हो गया वही उन से लड़ा ॥

११ और उस ने प्राचीन दिनों को मूसा और उस की जाति को स्मरण किया कहां है वह जो उन्हें समुद्र से उठा लाया अपने झुंड के गड़रिये को कहां है वह जिस ने उस के मध्य में अपने

१२ पवित्र आत्मा को डाला। उन्हें मूसा के दहिने हाथ अपने बिभव की भुजा से ले चलता था उन के आगे से पानियों को चीरता था कि अपने लिये एक

१३ सनातन का नाम करे। उन्हें गहिराइयों में ले चलता था घोड़े की नाईं चौगान

१४ में वे ठोकर न खायेंगे। जिस रीति से पशु तराई में उतर जायेगा उसी रीति परमेश्वर का आत्मा उसे बिश्राम में पहुंचायेगा इसी रीति तू ने अपनी जाति की अगुआई किई कि अपने लिये एक तेजस्वी नाम बनावे ॥

१५ स्वर्ग पर से दृष्टि कर और अपने पवित्र और महिमा के स्थान से देख तेरा उद्योग और तेरा बल कहां है तेरे हृदय की मरोड़ ने और तेरे कोमल प्रेम ने अपने को मुझ से रोक रक्खा है।

१६ क्योंकि तू ही हमारा पिता है क्योंकि इबराहीम ने हमें न उत्पन्न किया और इसराएल हमें न पहिचानेगा तू ही परमेश्वर हमारा पिता है हमारा मुक्तिदाता सनातन से तेरा नाम है।

१७ हे परमेश्वर तू क्यों हमें अपने मार्गों से भटकने देगा और क्यों हमारे मन को अपने डर से कठोर करेगा अपने सेवकों के लिये अर्थात् अपने अधिकार की गोष्ठियों के कारण फिर आ।

१८ थोड़ी बेर के लिये तेरी पवित्र जाति तेरे पवित्र स्थान की अधिकारी रही तेरे बिरोधियों ने उसे

१९ लताड़ा है। हम सदा से हैं तू ने उन पर प्रभुता न किई तेरा नाम उन पर नहीं रक्खा गया ॥

चौंसठवां पर्व्व।

१ हाय कि तू स्वर्गों को फाड़े और उतर आवे हाय कि पहाड़ तेरे आगे

२ पिघल जायें। जिस रीति से आग लकड़ी को सुलगाती है और जैसा कि आग पानी को उबालती है कि तेरा नाम तेरे बैरियों पर प्रगट होवे जाति-

३ गण तेरे आगे थर्थरा जायेंगे। तेरे आश्चर्य्यकार्य्य करने में जिन की बाट हम नहीं जोहते हाय कि तू नीचे उतरे कि पहाड़ तेरे आगे से पिघल जावें ॥

४ और सनातन से उन्हों ने नहीं सुना उन के कानों में नहीं पहुंचा और तुझे छोड़ आंख ने एक ईश्वर को नहीं देखा जो अपने आश्रित के लिये कार्य्य करेगा।

५ तू उस्से मिल गया है जो आनन्दित होता और धर्म्म करता है तेरे मार्गों में वे तुझे स्मरण करेंगे देख तू क्रुद्ध हुआ है और हम ने पाप किया है उन में नित्यता है और हम बच जायेंगे ॥

६ और हम सब के सब अशुद्ध की नाईं हैं और हमारे सारे धर्म्म त्यक्त वस्त्र की

नाईं और पत्ते के समान मुरझा गये और हमारी बुराइयां पवन की नाईं हमें उड़ा ले जायेंगी। ७ और कोई तेरा नाम लेनेहारा नहीं है जो अपने को जगाये कि तुझे पकड़े क्योंकि तू ने अपना मुंह हम से छिपाया है और हमें हमारी बुराइयों के हाथ से पिघलाया है॥

८ और अब हे परमेश्वर हमारा पिता तू ही है हम माटी हैं और तू हमारा कुम्हार है और सब के सब तेरे हाथ के ९ कार्य्य हैं। हे परमेश्वर अत्यन्त ही कोपित मत हो और सदा कुकर्म्म को स्मरण न कर देख दृष्टि कर हम तेरी बिन्ती करते हैं हम सब के सब तेरी १० जाति हैं। तेरे पवित्र नगर अरण्य हो गये सैहून जंगल हो गया यरूसलम उजाड़। ११ हमारा पवित्र और बिभवमय मन्दिर जिस में हमारे पितर तेरी स्तुति करते थे आग से जलाया गया और हमारे सारे बाञ्छित स्थान उजाड़ हो गये। १२ हे परमेश्वर क्या तू इन बातों के कारण आप को रोक रक्खेगा और क्या तू चुपका होके हमें अब लों निपट सताता रहेगा॥

पैंसठवां पर्ब्ब

१ मैं ने उन्हें पूछने की अनुमति दिई जिन्हों ने प्रश्न न किया था मैं उन को मिला जिन्हों ने मुझे नहीं ढूंढ़ा था मैं ने एक जाति से कहा कि मुझे देख मुझे देख जो मेरे नाम से बुलाई न गई थी। २ मैं ने सारे दिन अपने हाथ फैलाये एक दंगइत जाति की ओर जो उस मार्ग पर जो अच्छा नहीं है अपनी ही इच्छा ३ पर चलती है। उस जाति की ओर जो नित्य मेरे मुंह पर मुझे खिजाती है और बाटिकों में बलि करती है और ईंटों ४ पर सुगंध जलाती है। जो समाधिन में बैठती है और खोहों में बस्ती है जो सूअर का मांस खाती है और घिनित बस्तुओं का जूस उन के पात्रों में है। ५ जो मनुष्य कहते हैं कि अलग खड़ा रह मेरे पास मत आ क्योंकि मैं तुझ से पवित्र हूं ये मेरे कोप में धूआं हैं एक आग जो दिन भर जला करती है। ६ देखो मेरे आगे लिखा है मैं चुप न रहूंगा क्योंकि पलटा अवश्य लूंगा हां उन की गोद में प्रतिफल दूंगा। ७ तुम्हारी बुराइयों का और तुम्हारे पितरों की बुराइयों का एक ही साथ परमेश्वर कहता है जिन्हों ने पहाड़ों पर लोबान जलाया और पहाड़ियों पर मेरा अनादर किया और मैं उन का अगिला कार्य्य उन की गोद में नापूंगा॥

८ परमेश्वर यों कहता है जैसे दाख के गुच्छे में रस पाया जाता है और मनुष्य कहता है कि उसे नष्ट न कर क्योंकि उस में आशीष है वैसे मैं अपने सेवकों के कारण करूंगा जिसतें सब का नाश न करूं। ९ और मैं यअकूब से बंश निकालूंगा और यहूदाह से अपने पहाड़ों का अधिकारी और मेरे चुने हुए उस के अधिकारी होंगे और मेरे सेवक वहां बसेंगे। १० और सरून झुंडों का निवास हो जायेगा और अकूर की तराई गाय बैलों के चैन के स्थान मेरी जाति के लिये जिस ने मुझे खोजा है॥

११ और तुम परमेश्वर के त्यागनेहारे जो मेरे पवित्र पहाड़ को भूलते हो जो भाग्यमानों के लिये मंच सिद्ध करते हो और प्रालब्ध के लिये मिलाया हुआ दाखरस १२ भर देते हो। सो मैं ने तुम्हें तलवार को सौंप दिया और तुम सब के सब संहार होने के लिये झुक जाओगे इस कारण कि मैं ने बुलाया और तुम ने उत्तर न दिया मैं बोला और तुम ने न सुना परन्तु तुम ने मेरी आंखों के साम्ने

बुराई किई और वह बस्तु चुनी कि जिस्से मैं आनन्दित न था ॥

१३ सो प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देखो मेरे सेवक खायेंगे परन्तु तुम भूखे रहोगे देखो मेरे सेवक पीयेंगे परन्तु तुम प्यासे रहोगे देखो मेरे सेवक आनन्दित १४ होंगे परन्तु तुम लज्जित होओगे । देखो मेरे सेवक मन की आनन्दता से गायेंगे परन्तु तुम मन की उदासी के कारण रोओगे और चूर्ण अंतःकरण के शोक से १५ तुम चिल्लाओगे । और तुम अपना नाम मेरे चुने हुओं के लिये किरिया के लिये छोड़ोगे और प्रभु परमेश्वर तुझे घात करेगा और अपने सेवकों का दूसरे नाम १६ से पुकारेगा । जिस्से जो मनुष्य पृथिवी पर अपने को आशीष देवे वह सच्चाई के ईश्वर से अपने को आशीष देगा और जिस्से जो मनुष्य पृथिवी पर किरिया खावे वह सच्चाई के ईश्वर की किरिया खायेगा क्योंकि अगिलो खिजा-हटें भुलाई गईं और मेरी आंखों से छिपाई गईं ॥

१७ क्योंकि देखो मैं नये स्वर्ग और नई पृथिवी बनाता हूं और अगिली बस्तें स्मरण न किई जायेंगी और मन में न १८ आवेंगी । पर सदा लों उस में आह्लादित और मगन रहो जो मैं सृजता हूं क्योंकि देखो मैं यरूसलम को आनन्द और उस की जाति को आह्लाद उत्पन्न १९ करता हूं । और मैं यरूसलम में मगन होऊंगा और अपनी जाति से आनन्दित और उस में फिर रोने और बिलाप का शब्द न सुना जायगा ॥

२० और वहां से फिर थोड़ी बय का कोई बालक न होगा न कोई बृद्ध जो अपने दिनों को पूरा न करेगा क्योंकि लड़का सौ बरस का होके मरेगा और पापी सौ २१ बरस का होके स्रापित होगा । और वे घर बनावेंगे और उन में बसेंगे और दाख की बारी लगावेंगे और उस के फल २२ खायेंगे । और वे न बनावेंगे कि दूसरा बास करे वे न लगायेंगे कि दूसरा खावेगा क्योंकि मेरे लोगों के दिन बृक्ष के दिन के समान होंगे और मेरे चुने हुए अपने २३ हाथों के कार्य्य से अधिक भोगेंगे । वे बृथा परिश्रम न करेंगे और घबड़ाहट के लिये न जनेंगे और थोड़ी आयुर्दा के बंश उन से उत्पन्न न होंगे क्योंकि वेही परमेश्वर के आशीषों के बंश हैं और उन के संतान उन के साथ ॥

२४ और ऐसा होगा कि वे अब लों न पुकारेंगे और मैं उत्तर देऊंगा अब लों वे बातें कहते होंगे और मैं सुनूंगा । भेड़िया २५ और मेम्ना एक साथ चरेंगे और सिंह बैल के समान भूसा खायेगा और सर्प्प अपने भोजन की सन्तों धूल वे मेरे सारे पवित्र पहाड़ पर न दुःख देंगे और न नाश करेंगे परमेश्वर कहता है ॥

छियासठवां पर्ब्ब ।

१ परमेश्वर यों कहता है कि स्वर्ग मेरा सिंहासन और पृथिवी मेरे चरणों की पीढ़ी है कहां है वह घर जो तुम मेरे लिये बनाओगे और कहां है मेरा चैन-२ स्थान । और इन सभों को मेरे हाथ ने बनाया और ये सब हुए परमेश्वर कहता है और इस पर मैं दृष्टि रक्खूंगा दुःखी और चूर्ण अंतःकरण पर और उस पर जो मेरे बचन से थर्थराता है ॥

३ बैल का घात करनेहारा मनुष्य को घात करनेहारा भेड़ी का बलि करनेहारा कुत्ते का गला तोड़नेहारा भेंट का चढ़ानेहारा सूअर के लोहू का चढ़ानेहारा स्मरण के लिये लोबान चढ़ानेहारा नास्ति का धन्य कहनेहारा है हां उन्हों ने अपने मार्गों को चुन लिया है और उन के प्राण उन की घिनित

४ वस्तुओं से आनन्दित रहे हैं। मैं भी उन की खिझाहटों को चुन लूंगा और उन के डर उन पर पहुंचाऊंगा क्योंकि मैं ने बुलाया और कोई उत्तर देनेहारा न था मैं बोला और उन्हों ने न सुना परन्तु उन्हों ने मेरी आंखों के साम्ने बुराई किई और उस बात को चुन लिया जिसे मैं ने न चाहा॥

५ परमेश्वर की बात सुनो हे तुम उस के बचन से कांपनेहारो तुम्हारे भाई तुम्हारे बैरी मेरे नाम के कारण तुम्हें निकालनेहारे कहते हैं कि परमेश्वर महान होगा और हम तुम्हारी आनन्दता देखेंगे पर वे लज्जित होंगे॥

६ नगर में से हुल्लड़ का शब्द मन्दिर में से शब्द परमेश्वर का शब्द अपने शत्रुन को उन के व्यवहार का पलटा ७ देता है। पीड़ा से पहिले वह जन बैठी उस्से आगे कि पीड़ा उस को हो ८ उस्से एक पुत्र उत्पन्न हुआ। किस ने इस के समान सुना है किस ने इन के समान देखा है क्या पृथिवी एक ही दिन में उत्पन्न होगी अथवा जाति एक ही साथ उत्पन्न होगी क्योंकि सैहून को पीड़ लगी ही वह अपने बालक जनी ९ है। क्या मैं जन्ने पर लाऊं और न जनाऊं परमेश्वर कहता है अथवा मैं जनानेहारा और जन्ने से रोकूं तेरा परमेश्वर कहता है॥

१० यरूसलम के साथ आनन्द करो और उस में मगन हो हे उस के सारे प्यार करनेहारो उस में आह्लाद के साथ आनन्द करो हे उस के सारे बिलाप ११ करनेहारो। जिस्तें तुम चूसो और उस की शान्ती के स्तनों से संतुष्ट होओ जिस्तें तुम निचोड़ो और उस के बिभव की भरी हुई छातियों से अपने को मगन करो॥

१२ क्योंकि परमेश्वर यों कहता है कि देखो मैं कुशल को उस की ओर नदी की नाईं फैलाता हूं और जातिगणों के बिभव को डुबानेहारी धारा के समान और तुम चूसोगे और गोद में उठाये जाओगे और घुटनों पर कुदाये जाओगे। १३ जैसा मनुष्य जिसे उस की मां शान्ति देती है वैसा ही मैं तुम्हें शान्ति दूंगा और तुम यरूसलम में शान्ति पाओगे। १४ और तुम देखोगे और तुम्हारा मन आनन्दित होगा और तुम्हारी हड्डियां हरियाली के समान लहलहायेंगी और परमेश्वर का हाथ उस के सेवकों पर प्रगट होगा और उस की जलजलाहट उस के शत्रुन पर भड़केगी॥

१५ क्योंकि देखो परमेश्वर आग में आवेगा और बगूले में उस के रथ जिस्तें कोप में अपने ताप फिरा दे और अपनी १६ दपट को आग की लौ में। क्योंकि आग से परमेश्वर लड़ेगा और अपने खड्ग से सारे मनुष्यों के साथ और परमेश्वर के जूझे हुए बहुत होंगे॥

१७ जो अपने को पावन ठहराते हैं और जो अपने को पवित्र ठहराते हैं बाटिकों की ओर मध्य में एक के पीछे सूअर का मांस और घिनित वस्तु और चूहे के खानेहारे वे एक ही साथ नाश हो १८ जायेंगे परमेश्वर कहता है। और मैं उन के कार्य्यों और उन की युक्तिन को जानता हूं समय अब आया है कि सारे देशगणों और भाषाओं को एकट्ठा करूं और वे आवेंगे और मेरे बिभव को १९ देखेंगे। और मैं उन के मध्य में एक चिन्ह रक्खूंगा और उन में से बचे हुओं को देशगणों की ओर भेजूंगा अर्थात् तरशीस और पूल और लूद को जो धनुषधारी हैं और तूबल और यूनान की ओर दूर के टापुओं की ओर जिन्हों ने कभी

मेरा नाम न सुना और मेरे विभव को नहीं देखा। और वे जातिगणों में मेरा २० विभव वर्णन करेंगे। और वे सारे जातिगणों में से तुम्हारे सारे भाइयों को घोड़ों पर और गाड़ियों पर और पालकियों में और खच्चरों पर और सांड़नियों पर मेरे पवित्र पहाड़ यरूसलम में परमेश्वर की भेंट के लिये लावेंगे परमेश्वर कहता है जिस रीति से कि इसराएल के सन्तान पावन पात्रों में अपनी भेंटों को परमे-२१ श्वर के मन्दिर में लाते हैं। और उन में से मैं याजक और लावी भी बनाऊंगा परमेश्वर कहता है॥

क्योंकि जिस रीति से कि नये स्वर्ग २२ और नई पृथिवी जिन्हें मैं बनाता हूं मेरे आगे बने रहेंगे परमेश्वर कहता है वैसे तुम्हारे वंश और तुम्हारे नाम होंगे। और ऐसा होगा कि अमावास्या २३ से अमावास्या लों और बिश्राम से बिश्राम लों सारे मनुष्य आके मेरे आगे सेवा करेंगे परमेश्वर कहता है॥

और वे निकलेंगे और उन मनुष्यों की २४ लोथों पर जो मुझ से फिर गये थे देखेंगे क्योंकि उन का कीड़ा न मरेगा और उन की आग न बुझेगी और वे सारे मनुष्यन से घिनित होंगे॥

यरमियाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक।

पहिला पर्व्व।

१ खिलकियाह के पुत्र यरमियाह के बचन जो अनतात में बिनयमीन की २ भूमि के याजकों में से था। जिस पर परमेश्वर का बचन अम्मून के बेटे यहूदाह के राजा यूसियाह के दिनों में उस के राज्य के तेरहवें बरस में उतरा। ३ और यहूदाह के राजा यूसियाह के बेटे यहूयकीम के भी दिनों में यहूदाह के राजा यूसियाह के बेटे सिदकियाह के ग्यारहवें बरस के समाप्त होने लों यरूसलम की बंधुआई के पांचवें मास में पहुंचाये जाने लों॥

४ और परमेश्वर का बचन यह कहते हुए मेरे पास पहुंचा॥

५ कि मैं ने तुझे कोख में पड़ने से आगे जाना और तेरा जन्म होने से आगे मैं ने तुझे पवित्र किया और जातिगणों के लिये मैं ने तुझे भविष्यद्वक्ता ठहराया॥

और मैं ने कहा हाय प्रभु परमेश्वर ६ देख मैं बोलने नहीं जानता क्योंकि मैं बालक हूं। और परमेश्वर ने मुझ से कहा मत कह कि मैं बालक हूं क्योंकि जिन सभों के पास मैं तुझे भेजूंगा तू जायेगा और जो कुछ मैं तुझे आज्ञा करूं सो कहेगा। तू उन से मत डर ८ क्योंकि परमेश्वर कहता है कि तुझे बचाने को मैं तेरे साथ हूं। और परमे- ९ श्वर ने अपना हाथ बढ़ाके मेरा मुंह छूआ और परमेश्वर ने मुझ से कहा कि देख मैं ने अपने बचन तेरे मुंह में डाले हैं॥

देख आज के दिन मैं ने तुझे जाति- १० गणों और राज्यों को उखाड़ने और ढाने

और नाश करने और उलटने और बनाने और लगाने को पराक्रम दिया है॥

११ और परमेश्वर का बचन यह कहते हुए मेरे पास पहुंचा कि हे यरमियाह तू क्या देखता है और मैं ने कहा कि बदाम के पेड़ की एक छड़ी मैं देखता १२ हूं। तब परमेश्वर ने मुझ से कहा कि तू ने ठीक देखा है क्योंकि मैं अपने बचन को पूरा करने के लिये सावधान १३ हूं। और दूसरी बार परमेश्वर का बचन यह कहते हुए मेरे पास पहुंचा कि तू क्या देखता है और मैं ने कहा कि उबलता हुआ हंडा देखता हूं और उस का मुंह उत्तर की ओर है॥

१४ और परमेश्वर ने मुझ से कहा कि इस देश के सारे बासियों पर उत्तर से १५ बुराई निकल आवेगी। क्योंकि परमेश्वर कहता है कि देख मैं उत्तर के राज्यों के सारे परिवारों को बुलाता हूं और वे आवेंगे और हर एक जन अपना अपना सिंहासन यरूसलम के फाटकों की पैठ में और उस की चारों ओर की भीतों पर और यहूदाह के सारे नगरों १६ पर रक्खेंगे। और उन की सारी दुष्टता के लिये मैं उन के बिरुद्ध अपना बिचार उच्चारूंगा क्योंकि उन्हों ने मुझे त्याग किया है और आन देवों के लिये धूप जलाया है और अपने हाथ के कृत्य की सेवा किई है॥

१७ सो तू अपनी कटि बांधके उठ और सब जो मैं तुझे आज्ञा करूं सो उन से कह उन से मत डरना न हो कि मैं १८ उन के आगे तुझे डराऊं। और देख आज मैं ने तुझे इस सारे देश के बिरुद्ध यहूदाह के राजाओं के बिरुद्ध और उस के राजपुत्रों के बिरुद्ध और उस के याजकों के बिरुद्ध और देश के लोगों के बिरुद्ध दृढ़ किये हुए नगर की नाईं और लोहे के खंभे की नाईं और पीतल की भीतों की नाईं बना रक्खा है। और वे १९ तेरे बिरुद्ध लड़ेंगे परन्तु तुझ पर प्रबल न होंगे क्योंकि परमेश्वर कहता है कि तुझे छुड़ाने को मैं तेरे साथ हूं॥

दूसरा पर्व्व।

१ और परमेश्वर का बचन यह कहते २ हुए मेरे पास आया। कि तू जाके यरूसलम के कानों में पुकारके कह कि परमेश्वर यों कहता है कि मैं तेरे बिषय तेरी तरुणाई की दया और तेरे ब्याह के प्रेम को स्मरण करता हूं जब तू बन में बिन जोते बोये देश में मेरे पीछे पीछे ३ चली। इसराएल और उस के पहिले फल की बढ़ती परमेश्वर के लिये पवित्र थी उस के सारे भक्षण करनेहारे अपराधी होंगे उन पर बुराई आवेगी परमेश्वर कहता है॥

४ हे यअकूब के घर और हे इसराएल के घर के सारे परिवारो परमेश्वर का ५ बचन सुनो। परमेश्वर यों कहता है कि तुम्हारे पितरों ने मुझ में कौन सी बुराई पाई जो वे मुझ से दूर हुए और बृथा ६ के पीछे जाके ब्यर्थ हुए। और उन्हों ने नहीं कहा कि परमेश्वर कहां है जो हमें मिस्र देश से निकाल लाया जिस ने अरण्य में हमें चलाया अर्थात बड़े उजाड़ देश और गड़हे में और अवृष्टि और मृत्यु की छाया के देश में ऐसे देश में जिस में कोई नहीं गया और जहां ७ कोई मनुष्य न बसा। और मैं तुम्हें फलवंत देश में लाया कि तुम उस के फल और उस की अच्छी बस्तुन को खाओ परन्तु तुम लोगों ने उस में पहुंचके मेरे देश को अशुद्ध किया और मेरे अधिकार को घिनित कर डाला। याजकों ने नहीं कहा कि परमेश्वर कहां है और ब्यवस्था के ज्ञातों ने मुझे नहीं जाना

उन के रखवाल भी मुझ से फिर गये और भविष्यद्वक्तों ने बअल के नाम से भविष्य कहा और निर्लाभ बस्तुन के पीछे चले गये॥

९ इस लिये परमेश्वर कहता है कि मैं तुम से फिर बिवाद करूंगा और तुम्हारे सन्तानों के सन्तानों से बिवाद १० करूंगा। क्योंकि पार उतरके कित्तीम के टापुओं को देखो और कीदार में लोगों को भेजके अच्छी रीति से बूझो और देख रक्खो कि जो ऐसी बस्तु हुई ११ है। क्या किसी जातिगण ने अपने देवों को बदला है यद्यपि वे देव न थे परन्तु मेरी जाति ने उस की महिमा को उस १२ के लिये बदला जिस्से लाभ नहीं। हे स्वर्गो इस्से अचंभित होओ और डर जाओ और अत्यन्त घबराओ परमेश्वर १३ कहता है। क्योंकि मेरी जाति ने दो बुराइयां किई हैं उन्हों ने मुझ अमृतजल के सोते को त्यागा है और अपने लिये टूटे कुण्ड खोदे हैं जिन में जल नहीं ठहरता॥

१४ क्या इसराएल दास है अथवा वह घर का बालक है तो फिर क्यों लूटा १५ गया। युवा सिंह उस पर गर्जते हैं उन्हों ने अपना शब्द उठाया है और उस के देश को एक उजाड़ बनाया है उस के नगर जल गये ऐसा कि कोई १६ निवासी न रहा। मन्फ के और तहफनीस के सन्तान भी तेरी खोपड़ी के १७ चाम को खा लेते हैं। क्या तू इसे अपने लिये नहीं करता है कि तू ने परमेश्वर अपने ईश्वर को त्यागा जिस समय वह मार्ग में तेरी अगुआई करता था॥

१८ और अब सैहूर का जल पीने को तुझे मिस्र के मार्ग में क्या काम है अथवा नदी के पानी पीने को तुझे असूर के मार्ग में क्या काम है। १९ तेरी ही दुष्टता तुझे ताड़ना करेगी और तेरा फिर फिर जाना तुझे दपटेगा सो जान और देख कि परमेश्वर अपने ईश्वर को बिसराना बुरा और कड़वा है और मेरा भय तुझ में नहीं प्रभु सेनाओं का परमेश्वर कहता है॥

२० क्योंकि सनातन से मैं ने तेरा जूआ तोड़ा तेरे बंधनों को झटक डाला है और तू ने कहा है कि सेवा मैं न करूंगी क्योंकि हर एक ऊंचे टीले पर और हर एक हरे पेड़ तले तू छिनाला करती थी। २१ और मैं ने तुझे उत्तम दाख सर्बथा सत्य बीज बोया था फिर तू क्योंकर उपरी लता का बिगाड़ा हुआ पेड़ मेरे लिये २२ हुई है। यद्यपि तू आप को रेह से धोवे और बहुत सा साबुन लेवे तथापि तेरी बुराई मेरे आगे छिपी है प्रभु परमेश्वर कहता है॥

२३ तू क्योंकर कह सक्ती है कि मैं अपवित्र नहीं हूं मैं बअलीम के पीछे नहीं गई हूं अपनी चाल को तराई में देख और अपने किये हुए को मान ले तू एक चालाक सांड़नी की नाईं है जो अपने मार्गों पर दौड़ती है। २४ तू बन परिचित जंगली गदही की नाईं है जो अपने प्राण की वांछा में पवन को सुरकती है उस के प्रयोजन में कौन उसे फेर सक्ता है उस की खोज में कोई नहीं आप को थकावेगा उस के मास में वे उसे पावेंगे। २५ तू अपने पांव को नंगाई से और अपने गले को प्यास से अलग रख परन्तु तू ने कहा है कि आशा नहीं है ऐसा न करूंगी क्योंकि मैं ने उपरियों से प्रीति किई है और उन्हीं के पीछे जाऊंगी॥

२६ जैसा पकड़े जाने में चोर लज्जित है तैसा इसराएल का घराना वे उन के

राजा उन के प्रधान और उन के याजक और उन के भविष्यद्वक्ते लजाये गये हैं । २७ जो पेड़ से कहते हैं कि तू मेरा पिता और पत्थर से कि तू मुझे जनी क्योंकि उन्हों ने मेरी ओर पीठ फेरी और मुंह नहीं और वे अपने दुःख के समय में कहेंगे कि उठके हमें बचा ॥

२८ परन्तु तेरे देव कहां हैं जिन्हें तू ने अपने लिये बनाया है वे उठें यदि तेरे दुःख के समय तुझे बचा सकें क्योंकि हे यहूदाह तेरे नगरों की गिन्ती के २९ समान तेरे देव हुए हैं । तुम लोग किस बात के लिये मुझ से बिवाद करोगे तुम सब के सब मेरे बिरुद्ध फिर ३० गये हो परमेश्वर कहता है । बृथा मैं ने तुम्हारे बालकों को मारा है उन्हों ने उपदेश नहीं ग्रहण किया है तुम्हारी ही तलवार ने नाशक सिंह के समान तुम्हारे भविष्यद्वक्तों को भक्षण किया है ॥

३१ हे इस पीढ़ी के लोगो तुम परमेश्वर के बचन को देखो क्या मैं इसराएल के लिये अरण्य अथवा अंधियारा देश हुआ हूं मेरे लोगों ने क्यों कहा है कि हम अपने ही स्वामी हैं हम तेरे पास ३२ फिर न आवेंगे । क्या कुंवारी अपने आभूषण को भूल सक्ती है अथवा दुल्हिन अपना पहिरावा तथापि मेरी जाति अनगिनित दिन से मुझे बिसरा रही ॥

३३ प्रेम ढूंढ़ने के लिये तू क्यों अपने मार्ग को सिद्ध करेगी इस लिये तू ने अपना मार्ग दुष्टों को सिखाया है । ३४ तेरे अंचलों में भी लोहू पाया गया है अर्थात् दरिद्र निर्दोषों के प्राण मैं ने उन्हें खोदे हुए स्थान में नहीं पाया परन्तु इन सभों पर ॥

३५ तथापि तू ने कहा है कि मेरे निर्दोष होने के कारण निश्चय उस का कोप मुझ से जाता रहेगा देख मैं तेरा बिचार करूंगा क्योंकि तू ने कहा है कि मैं ने पाप नहीं किया ॥

३६ तू अपनी चाल को पलटने के लिये क्यों ऐसा दौड़ती है मिस्र के कारण भी तू लजाई जायेगी जैसे असूर के ३७ कारण लजाई गई है । यहां से भी तू अपने सिर पर हाथ रक्खे हुए निकल जायेगी क्योंकि परमेश्वर ने तेरे भरोसा की बस्तुन को त्याग किया है और तू उन में भाग्यमान न होगी ॥

तीसरा पर्ब्ब ।

१ कहते हैं कि यदि मनुष्य अपनी पत्नी को त्यागे और वह उस के पास से जाके दूसरे पुरुष की हो जाये तो क्या वह उसे फिर ग्रहण करेगा क्या वह देश सर्बथा अशुद्ध न होगा परन्तु तू ने बहुत से जारों से छिनाला किया है तथापि अब भी मेरी ओर फिर परमेश्वर कहता है ।

२ ऊंचे स्थानों पर अपनी आंखें उठा और देख कहां तू अशुद्ध न किई गई तू उस अरब की नाईं जो बन में है उन के लिये मार्गों पर बैठी और तू ने अपने छिनालों से और अपनी दुष्टता से देश ३ को अशुद्ध किया है । सो झड़ी रोकी गई और अन्त की बरषा भी नहीं हुई और तू बेश्या का कपाल रखती है क्योंकि तू लाज नहीं मानती । क्या अब ४ से तू ने मुझे नहीं पुकारा हे मेरे पिता ५ तू मेरी तरुणाई का अगुआ है । क्या वह सदा लों अपना क्रोध रक्खेगा अथवा क्या वह सर्बदा लों उसे स्मरण करेगा देख तू ने कहा और दुष्टता किई है और प्रबल हुई है ॥

६ और यूसियाह राजा के दिनों में परमेश्वर ने मुझ से कहा कि क्या तू ने देखा है कि फिरे हुए इसराएल ने क्या किया है वह हर एक ऊंचे पर्ब्बत पर

चढ़ गई है और हर एक हरे पेड़ तले ७ और वहां छिनाला किया है। और इस के पीछे कि उस ने ये सारी बातें किईं मैं ने कहा कि मेरी ओर फिर परन्तु वह न फिरी और उस की अविश्वासिनी ८ बहिन यहूदाह ने देखा। और जब मैं ने देखा कि फिरे हुए इसराएल के सारे छिनाले के मारे जो उस ने किया था मैं ने उसे त्यागा और उसे त्यागपत्र दिया तौभी उस की अविश्वासिनी बहिन यहूदाह न डरी परन्तु उस ने भी जाके ९ छिनालकर्म्म किया। और ऐसा हुआ कि उस ने अपने निर्लज्ज छिनालपन से देश को अशुद्ध किया और पत्थर और १० लकड़ों के साथ व्यभिचार किया। और इस सब पर भी उस की अविश्वासिनी बहिन यहूदाह अपने सारे मन से मेरी ओर न फिरी परन्तु छल से परमेश्वर कहता है॥

११ और परमेश्वर ने मुझ से कहा कि अविश्वासिनी यहूदाह से भी अधिक फिरे हुए इसराएल ने आप को निर्दोष ठहराया है॥

१२ तू उत्तर की ओर जाके यह प्रचारके कह कि हे फिरे हुए इसराएल फिर आ परमेश्वर कहता है और मैं तुझ पर क्रोधित न हूंगा क्योंकि मैं दयाल हूं परमेश्वर कहता है मैं सदा लों क्रोध न १३ रक्खूंगा। केवल अपनी बुराई को मान ले क्योंकि तू ने परमेश्वर अपने ईश्वर का अपराध किया और हर एक हरे पेड़ के तले उपरियों से मनमंता चली और तुम ने मेरे शब्द को नहीं माना है परमेश्वर १४ कहता है। परमेश्वर कहता है कि फिरे हुए सन्तानो फिर आओ क्योंकि मैं तुम्हारा पति हुआ हूं और तुम्हें नगर में से एक को और गोष्ठी में से दो को १५ निकालके सैहून में लाऊंगा। और मैं अपने ही मन के समान तुम्हें गड़रिये देऊंगा और वे तुम्हें ज्ञान और समझ से चरावेंगे॥

१६ और परमेश्वर यों कहता है कि उन दिनों में ऐसा होगा कि जब तुम लोग देश में बढ़ोगे और फलोगे तब वे फिर न कहेंगे कि परमेश्वर के नियम की मंजूषा और वह उन के मन में न आवेगा और वे उसे स्मरण न करेंगे और उस की चिंता न करेंगे और वह फिर बनाया न १७ जायेगा। उस समय यरूसलम परमेश्वर का सिंहासन कहावेगा और सारे जातिगण परमेश्वर के नाम के लिये यरूसलम में एकट्ठे होंगे और वे फिर अपने बुरे मन की कठोरता के समान न चलेंगे॥

१८ उन्हीं दिनों में यहूदाह का घराना इसराएल के घराने में जायेगा और वे उत्तर देश में से एकट्ठे होके इस देश में आवेंगे जो मैं ने तुम्हारे पितरों का अधिकार किया था॥

१९ और मैं ने कहा कि मैं तुझे बेटों में अंगीकार रक्खूं और बांछित देश तुझे देऊं जातिगणों के अच्छे से अच्छा अधिकार तब मैं ने कहा तू मुझे पिता करके पुकारेगा और मेरे पीछे आने से फिर न २० जायेगा। निश्चय जैसा कि स्त्री अपने पति से अविश्वासिनी होती है तैसा हे इसराएल के घराने तुम लोगों ने मेरी ओर से विश्वास घात किया है परमेश्वर कहता है॥

२१ ऊंचे स्थानों में शब्द सुना गया है कि इसराएल के सन्तान बिलाप करते हैं और बिनती करते हैं इस कारण कि उन्हों ने अपनी चाल को बिगाड़ा है और अपने ईश्वर परमेश्वर को बिसराया २२ है। हे फिरे हुए बालको फिर आओ मैं तुम्हारे धर्म्मत्यागियों को चंगा करूंगा देख हम तेरी ओर आते हैं क्योंकि तू

२३ ही परमेश्वर हमारा ईश्वर है । निश्चय टीलों और बहुत से पर्व्वतों का आसा वृथा है निश्चय परमेश्वर हमारे ईश्वर २४ में इसराएल की मुक्ति है । और हमारी तरुणाई से लज्जित वस्तु ने हमारे पितरों की संपत्ति को उन के झुंड और उन के ढोर और उन के बेटे बेटियों २५ को भक्षण किया है । हम अपनी लाज में पड़े रहेंगे और हमारा लज्जित कर्म्म हमें ढांपेगा क्योंकि हम ने और हमारे पितरों ने अपनी तरुणाई से आज लों परमेश्वर अपने ईश्वर के बिरुद्ध पाप किया है और परमेश्वर अपने ईश्वर का शब्द नहीं माना है ॥

चौथा पर्व्व ।

१ हे इसराएल यदि तू फिर आवेगा तो परमेश्वर कहता है कि मेरी ओर फिर और यदि तू अपनी घिनितों को मेरी दृष्टि से दूर करेगा तो तू भरमाया २ न जायेगा । परन्तु तू सच्चाई से और बिचार से और धर्म्म से परमेश्वर के जीवन की किरिया खायेगा और जातिगण उस में आप आप को आशीष देंगे और उसी की स्तुति करेंगे ॥

३ क्योंकि परमेश्वर यहूदाह और यरुसलम के लोगों से यह कहता है कि अपनी बंजर भूमि को खेत करो और ४ कांटों में मत बोओ । हे यहूदाह के मनुष्यो और हे यरुसलम के बासियो परमेश्वर के लिये खतनः कराओ और अपने अपने मन की खलड़ी को अलग करो न होवे कि तुम्हारी चाल की बुराइयों के कारण मेरा क्रोध आग की नाईं फूट निकले और ऐसा बर उठे कि कोई उसे बुता न सके ॥

५ यहूदाह में प्रगट करो और यरुसलम में यह कहके प्रचारो और देश में तुरही का शब्द करो सर्व्वत्र प्रचारके कहो कि एकट्ठे होओ और हम बाड़ित नगरों में ६ चलें । सैहून की ओर ध्वजा खड़ा करो और हटो खड़े मत होओ क्योंकि मैं उत्तर से बुराई और बड़ा बिनाश लाता ७ हूं । सिंह अपनी झाड़ी से निकला है और जातिगणों का नाशक अपने मार्ग में है वह तेरा देश उजाड़ने को अपने स्थान से निकला है और तेरे नगर बिना ८ निवासी उजाड़ होंगे । इस लिये टाट पहिनो छाती पीटो और बिलाप करो क्योंकि परमेश्वर का महा कोप हम्से ९ फिर नहीं गया है । और परमेश्वर कहता है कि उस दिन ऐसा होगा कि राजा का मन और राजपुत्रों के मन घट जायेंगे और याजक आश्चर्य्यित होंगे और भविष्यद्वक्ता अचंभित ॥

१० तब मैं ने कहा हाय प्रभु परमेश्वर निश्चय तू ने इन लोगों को और यरुसलम को यह कहके भुलाया है कि तुम लोग कुशल पाओगे यद्यपि तलवार प्राण लों पहुंचती है ॥

११ उस समय यरुसलम के और इन लोगों के बिषय में यह कहा जायेगा कि मेरी जाति की पुत्री की ओर बन के चौगानों पर एक उष्ण पवन चलती है कुछ बुहारने और पावन करने को १२ नहीं आती । एक पवन इन से अधिक पूर्ण मेरे लिये बहेगी अब मैं भी उन १३ का न्याय करूंगा । देख वह मेघों की नाईं चढ़ आता है और उस के रथ बवंडर की नाईं उस के घोड़े गिद्ध से भी बेगवन्त हैं हाय हम पर क्योंकि हम १४ उजाड़े गये । हे यरुसलम अपने मन को दुष्टता से पवित्र कर जिस्तें तू मुक्ति पावे कब लों तेरी बुराई की युक्ति तुझ १५ में बनी रहेगी । क्योंकि दान से एक शब्द प्रगट करता है और इफरायम १६ पहाड़ से बुराई प्रचारता है। जातिगणों

में प्रचारो देखो यरूसलम के विरुद्ध सुनाओ कि दूर देश से पहरू आते हैं और यहूदाह के नगरों के विरुद्ध अपना
१७ शब्द उठाते हैं। खेत के रखवालों की नाईं वे उस के विरुद्ध चारों ओर हैं क्योंकि वह मेरे विरुद्ध फिर गई है
१८ परमेश्वर कहता है। तेरी चाल और तेरे कर्म्मों की कमाई ये हैं यही तेरी बुराई है क्योंकि वह कड़वी है क्योंकि तेरे अंतःकरण लों पहुंची है॥

१९ मेरी अंतड़ियां मेरी अंतड़ियां मेरे अंतःकरण की भीतें पीड़ित हैं और मेरा अंतःकरण मुझे व्याकुल करता है मैं चुप रह नहीं सक्ता इस लिये कि तू ने हे मेरे प्राण तुरही का शब्द और
२० लड़ाई की ललकार सुनी है। नाश पर नाश सुनाया जाता है क्योंकि सारा देश नाश हुआ है मेरे तंबू अचानक लुट
२१ गये हैं मेरे ओझल पलमात्र में। कब लों मैं ध्वजा को देखूं तुरही का शब्द सुनूं

२२ क्योंकि मेरी जाति मूर्ख है उस ने मुझे नहीं पहिचाना वे मूर्ख बालक हैं और वे अज्ञान हैं वे कुकर्म्म में बुद्धिमान परन्तु सुकर्म्म में असमझ हैं॥

२३ मैं ने पृथिवी को देखा और क्या देखता हूं कि उजाड़ और सुनसान है और आकाश की ओर और उंजियाला
२४ नहीं। मैं ने पर्वतों को देखा और क्या देखता हूं कि वे थर्थराये और सारे
२५ टीले हिल गये। मैं ने देखा और क्या देखता हूं कि कोई मनुष्य नहीं और
२६ आकाशों के सारे पंछी उड़ गये। मैं ने देखा और क्या देखता हूं कि फलवंत खेत अरण्य हो गया है और परमेश्वर के आगे उस के कोप के अति तपन के आगे उस के सारे नगर गिराये गये हैं॥

२७ क्योंकि परमेश्वर यों कहता है कि सारा देश उजाड़ हो जायेगा तथापि
२८ मैं समाप्त न करूंगा। इस बात के लिये पृथिवी बिलाप करेगी और ऊपर आकाश काले हो जायेंगे क्योंकि मैं कह चुका और ठाना है और न पछताऊंगा
२९ और न उस्से हटूंगा। घोड़चढ़ों और धनुषधारियों के शब्द के मारे हर एक नगर भागता है वे घने बन में जा रहे हैं और वे टीलों पर चढ़ गये हैं हर एक नगर त्यागा गया है और उन में
३० कोई पुरुष बास नहीं करता। और लूटे जाने पर तू क्या करेगी कि तू आप को लाल बस्त्र से बिभूषित करेगी कि तू सोने के आभूषण से आप को संवारेगी कि तू अपनी आंखों में सुरमा लगावेगी तथापि बृथा तू अपनी सुन्दरता प्रगट करती है तेरे जारों ने तुझे त्यागा है वे तेरे प्राण के गाहक होंगे॥

३१ क्योंकि मैं ने पीड़ित स्त्री का चिल्लाना सुना है उस के दुःख की नाईं जो पहिलौठा पुत्र जनती है सैहून की पुत्री का चिल्लाना वह हांपती है वह अपने हाथ फैलाके यह कहती है कि हाय मुझ पर क्योंकि बधिकों के कारण मेरा प्राण घटा जाता है॥

पांचवां पर्ब्ब।

१ यरूसलम की सड़कों में चारों ओर दौड़ो और देखो और जानो और उस के चौड़े स्थानों में ढूंढो यदि एक भी जन पा सको यदि एक भी न्यायकर्ता है जो सत्य को ढूंढता है जिस्से मैं उसे क्षमा करूं।
२ परन्तु यद्यपि वे कहते हैं कि परमेश्वर के जीवन की सौंह निश्चय वे झूठी किरिया
३ खाते हैं। हे परमेश्वर क्या तेरी आंखें सत्य पर नहीं हैं तू ने उन्हें मारा है और वे शोकित न हुए तू ने उन्हें क्षीण किया है परन्तु उन्हों ने ताड़ना ग्रहण

न किई उन्हों ने अपने मुंह को पत्थर से भी अधिक कठोर किया है फिर आने में उन्हों ने नाह किया है ॥

४ तब मैं ने कहा कि निश्चय ये दीन लोग हैं जिन्हों ने मूर्खता किई है क्योंकि उन्हों ने परमेश्वर के मार्ग को और अपने ईश्वर के न्याय को नहीं ५ जाना है। मैं महतों के पास जाऊंगा और उन से कहूंगा क्योंकि उन्हों ने परमेश्वर के मार्ग को और अपने ईश्वर के बिचार को जाना है परन्तु उन्हों ने भी जूआ को सर्वथा तोड़ दिया है उन्हों ने बंधनों को झटक दिया है ॥

६ इस लिये बन में से सिंह उन्हें घात करेगा सांझ का हुंडार उन्हें नाश करेगा चीता उन के नगरों को अगोरेगा हर एक जो उन में से निकलेगा सो टुकड़ा टुकड़ा किया जायेगा क्योंकि उन का फिर जाना बढ़ गया है और उन का ७ धर्म्म त्यागना अधिक हुआ है। इस्से मैं तुझे क्योंकर क्षमा कर सकूं तेरे सन्तानों ने मुझे बिसरा दिया है और उन की किरिया खाई है जो देव नहीं हैं और जब मैं ने उन्हें सन्तुष्ट किया तब उन्हों ने व्यभिचार किया और ८ कंचनी के घर में एकट्ठे हुए। वे सांड़ घोड़ों के समान कामी हुए हर एक अपने अपने परोसी की पत्नी के पीछे ९ हिनहिनाया करते हैं। परमेश्वर कहता है कि इन बातों के लिये क्या मैं पलटा न लेऊंगा और ऐसे लोगों से क्या मेरा प्राण बैर न लेगा ॥

१० तुम उन की भीतों पर चढ़के नाश करो परन्तु समाप्त न करो उन की डालियां तोड़ डालो क्योंकि वे परमेश्वर ११ की नहीं हैं। क्योंकि इसराएल के घराने और यहूदाह के घराने ने मेरे बिरुद्ध अति बिश्वास घात किया है परमेश्वर कहता है। १२ वे परमेश्वर से मुकर गये हैं और कहा है कि वह नहीं और बिपत्ति हम पर न आवेगी और हम तलवार और अकाल न देखेंगे। १३ परन्तु भविष्यद्वक्ते पवन हो जायेंगे और बचन उन में नहीं है उन पर ऐसा ही होगा ॥

१४ इस लिये सेनाओं का ईश्वर परमेश्वर यों कहता है कि तुम लोग जो यह बात कहते हो सो देखो मैं अपने बचनों को तेरे मुंह में आग की नाईं करूंगा और इन लोगों को लकड़ी की और वह उन्हें भस्म करेगी। १५ परमेश्वर कहता है हे इसराएल के घराने देखो मैं दूर से तुम्हारे बिरुद्ध एक जातिगण लाऊंगा वह बलवंत जातिगण है और वह प्राचीन जातिगण ऐसा जातिगण है जिस की भाषा तू नहीं जानता और जिस का कहना तू नहीं समझता। १६ उन का तूण खुली समाधि है वे सब के सब बलवंत हैं। १७ तेरा लवण और तेरी रोटी जो तेरे बेटे बेटियों को खाना था वे खा जायेंगे तेरे झुंड और तेरे ढोर खा जायें वे तेरे दाख और तेरे गूलर पेड़ खा जायेंगे वे तेरे बाड़ित नगरों को जिन पर तेरा भरोसा है तलवार से उजाड़ेंगे। १८ तथापि परमेश्वर कहता है कि मैं उन दिनों में तुम्हें समाप्त न करूंगा ॥

१९ और यों होगा कि जब तुम कहोगे कि परमेश्वर हमारे ईश्वर ने यह सब हम पर क्यों किया तब तू उन से यों कहियो जैसा कि तुम ने मुझे त्यागके अपने देश में उपरी देवों की सेवा किई है तैसा तुम परदेश में उपरी की सेवा करोगे ॥

२० यअकूब के घराने में इसे जताओ और यहूदाह में यह कहके प्रचारो।

२१ आब इसे सुन हे मूर्ख और अज्ञान जाति जो आंखें रखती है पर नहीं देखती और कान रखती है पर नहीं सुनती। २२ परमेश्वर कहता है कि क्या तुम मुझ से न डरोगे मेरे साक्षात से न थर्थराओगे जिस ने समुद्र के सिवाने के लिये बालू सदा की बिधि के लिये ठहरा रक्खा है और लह उस्से आगे बढ़ नहीं सक्ता यद्यपि उस की लहरें उठा करें तथापि वे प्रबल न होंगी यद्यपि वे गर्जें तथापि २३ वे पार नहीं जा सक्तीं। परन्तु इस जाति का मन हटा हुआ और फिरा हुआ है वे और हटके चले गये हैं। २४ और उन्हों ने अपने मन में नहीं कहा कि चलो अपने ईश्वर परमेश्वर से डरें जो ऋतु में अगले और पिछले मेंह देता है लवनी के ठहराये हुए अठवारों को २५ हमारे लिये रख छोड़ता है। तुम्हारी बुराइयों ने इन बस्तुन को दूर किया है और तुम्हारे पापों ने तुम से भलाई २६ को रोक रक्खा है। क्योंकि मेरी जाति दुष्ट पाये जाते हैं जो व्याधा की नाईं घात में रहते हैं और मनुष्यों के २७ फंसाने को जाल बिछाते हैं। जैसे पिंजड़ा चिड़ियों से भरा हुआ है तैसे उन के घर छल से भरे हुए हैं इस २८ लिये वे बढ़के धनी हुए हैं। वे मोटे होके चमकते हैं हां वे दुष्टों की क्रिया से बढ़ गये हैं तथापि वे पद अर्थात् अनाथों का पद नहीं बिचारते और वे भाग्यमान होते हैं और दरिद्रों का बिचार २९ उन्हों ने नहीं बिचारा। परमेश्वर कहता है कि क्या इन बातों के लिये मैं पलटा न लेऊंगा और ऐसी जाति से क्या मेरा प्राण बैर न लेगा॥

३० देश में एक आश्चर्य्यित और घिनित ३१ बस्तु हुई है। भविष्यद्वक्ते झूठ भविष्य कहते हैं और याजक भी उन के द्वारा से प्रभुता करते हैं और मेरी जाति ऐसा ही चाहती है परन्तु उस के अन्त में तुम लोग क्या करोगे॥

छठवां पर्व्व।

१ हे बिनयमीन के सन्तानो यरूसलम के मध्य में से भाग जाओ और तकूअ में तुरही बजाओ और बैतुलकरम में झण्डा खड़ा करो क्योंकि उत्तर से बुराई दिखाई देती है और एक बड़ा नाश। २ मैं ने सैहून की पुत्री को एक सुन्दरी ३ और सुकवारी से उपमा दिई है। गड़रिये अपने झुंडों के साथ उस के पास आवेंगे वे उस के चारों ओर डेरे खड़े करेंगे हर एक उस के आसपास चरावेगा॥

४ उस के बिरुद्ध में संग्राम लैस करो उठो और मध्यान्ह को चढ़ जायें हाय हम पर क्योंकि दिन ढलता है क्योंकि ५ सांझ की छाया बढ़ गई है। उठो और रात को चढ़ जायें और उस के भवनों को नाश करें॥

६ क्योंकि सेनाओं के परमेश्वर ने कहा है कि पेड़ों को काटो और यरूसलम के बिरुद्ध टीला उठाओ यह नगर पलटा पाने पर है उस के मध्य में हर प्रकार ७ का अंधेर है। जैसा सोता अपना पानी बहाता है तैसा वह अपनी दुष्टता फैलाती है उपद्रव और लूट उस में सुना जाता है शोक और मारपीट सदा मेरे साक्षात है॥

८ हे यरूसलम सुधर जा ऐसा न होवे कि मेरा मन तुझ से अलग हो जाय न हो कि मैं तुझे एक उजाड़ और सूना देश बनाऊं॥

९ सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि वे इसराएल के उबरे हुए को लता की नाईं सर्व्वथा बिनेंगे दाख के बटोरवैये की नाईं टोकरों में अपने हाथ फेर १० दे। मैं किस्से कहूं और चिताऊं जिसतें वे

सुनें देखो उन का कान अखतन: है यहां लों कि वे सुन नहीं सक्ते देखो परमेश्वर का बचन उन में वृथा बस्तु हुआ है वे उस्से आनन्दित नहीं होते ॥

११ और मैं परमेश्वर के कोप से भरपूर हूं सहने से थक गया हूं मार्ग में लड़के पर उंडेल और युवा पुरुषों को मंडली पर भी पत्नी समेत पति भी और पुरनिये १२ पूर्ण बय सहित धरे जायेंगे। और उन के घर और उन की भूमि स्त्री सहित औरों के हो जायेंगे क्योंकि परमेश्वर कहता है कि देश के बासियों पर मैं अपना हाथ बढ़ाऊंगा ॥

१३ क्योंकि उन के छोटे से उन के बड़े लों सब के सब कामाभिलाष में लिप्त हैं और भविष्यद्वक्ता से लेके याजक लों वे १४ सब के सब झूठ कर्म्म करते हैं। और उन्हों ने मेरी जाति की पुत्री के घाव को यह कहिके बाहरी बाहर चंगा किया है कि कुशल कुशल जब कुशल न था। १५ क्या घिनित कार्य्य करके वे लज्जित हुए नहीं वे तनिक लज्जित न हुए वे लाज न कर सके इस लिये वे एक पर एक गिरेंगे परमेश्वर कहता है कि अपने पलटे के समय में वे गिराये जायेंगे ॥

१६ परमेश्वर यों कहता है कि मार्गों पर खड़े होके देखो और पुराने पथों के बिषय में पूछो कि वह उत्तम मार्ग कहां है और उसी में चलो और अपने जी में जी पाओ परन्तु उन्हों ने कहा कि हम १७ न चलेंगे। और मैं तुम पर पहरू बैठाऊंगा तुरही का शब्द सुनो परन्तु उन्हों ने कहा कि हम न सुनेंगे ॥

१८ इस लिये हे जातिगणो सुनो और हे १९ मंडली जो उन में है जान। हे पृथिवी सुन देखो मैं इस जाति पर बुराई लाता हूं अर्थात् उन्हीं की भावना का फल क्योंकि उन्हों ने मेरे बचनों को न सुना और मेरी व्यवस्था जो है उसे उन्हों ने त्यागा है। मेरे लिये धूप सिबा से क्यों २० पहुंचाया जाय अथवा दूर देश से सुगन्ध द्रव्य तुम्हारी बलिदान की भेंटें ग्राह्य नहीं और तुम्हारी बलि भी मुझे प्रसन्न नहीं ॥

इस लिये परमेश्वर यों कहता है कि २१ देखो मैं इस जाति के आगे ठोकरें धरता हूं और पिता और पुत्र उन से ठोकर खायेंगे निवासी और उस का संगी एकट्ठे नष्ट होंगे ॥

परमेश्वर यों कहता है कि देखो २२ उत्तर देश से एक जाति आती है और एक बड़ी जाति पृथिवी के अंतों से उभारी जायेगी। वे धनुष और भाले २३ को हाथ में लेंगे वे बड़े क्रूर हैं और दया न दिखावेंगे उन का शब्द समुद्र की नाईं हा हा करेगा और वे घोड़े पर चढ़ेंगे सो हे सैहून की पुत्री वे तेरे बिरुद्ध योद्धाओं की नाईं पांती बांधेंगे ॥

हम ने उस का समाचार सुना है २४ हमारे हाथ दुर्बल हुए हैं पीड़ित स्त्री की पीड़ा की नाईं व्याकुलता ने हमें पकड़ रक्खा है। खेत में मत निकल २५ जाओ और राजमार्ग में मत फिरो क्योंकि बैरी के पास खड्ग है चारों ओर भय। हे मेरी जाति की पुत्री टाट २६ पहिन और राख में लोट दुलारे बालक के लिये हाय हाय और अत्यन्त बिलाप कर क्योंकि लुटेरा हम पर अचानक आवेगा ॥

मैं ने तुझे ठहराया है कि मेरी जाति २७ के सोने के बिषय में परीक्षा करो जब तू उन की चाल को परखेगा तो जानेगा। वे सब के सब अति फिरे हुए हैं वे २८ कलंक लगाते हुए चलते हैं वे पीतल और लोहे हैं वे सब के सब बिगाड़नेवाले

२९ हैं । धौंकनी जल गई सीसा भस्म हो गया कलवैये ने व्यर्थ गलाया है क्योंकि
३० बुरे अलग नहीं हुए । लोग उन्हें खोटी चांदी कहेंगे क्योंकि ईश्वर ने उन्हें त्यागा है ॥

सातवां पर्ब्ब ।

१ यह बचन जो परमेश्वर की ओर से यह कहते हुए यरमियाह के पास
२ पहुंचा । तू परमेश्वर के मन्दिर के फाटक में खड़ा हो और वहां इस बचन को प्रचारके कह कि हे सारे यहूदाह जो परमेश्वर की सेवा के लिये इन फाटकों से भीतर जाते हो परमेश्वर
३ का बचन सुनो । सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि अपनी अपनी चालों और अपनी अपनी करनियों को सुधारो और मैं इस स्थान
४ में तुम्हें बसाऊंगा । झूठी बातों पर भरोसा मत करो यह कहके कि परमेश्वर का मन्दिर परमेश्वर का मन्दिर परमेश्वर का मन्दिर ये ही हैं ॥

५ क्योंकि जो तुम लोग अपनी अपनी चालों और अपनी अपनी करनियों को निर्धार सुधारोगे और जो तुम मनुष्य में और उस के परोसी के मध्य में सर्वथा
६ न्याय करोगे । यदि तुम लोग परदेशी और अनाथ और बिधवा पर अंधेर न करोगे और इस स्थान में निर्दोष लोहू न बहाओगे और अपनी घटी के लिये
७ उपरी देवों का पीछा न करोगे । तो मैं इस देश में जो तुम्हारे पितरों को दिया इस स्थान में सनातन से सनातन लों बसाऊंगा ॥

८ देखो तुम झूठी बातों पर जो व्यर्थ
९ हैं भरोसा रखते हो । क्या चोरी और हत्या और परस्त्रीगमन करते हो और झूठी किरिया खाते हो और बअल के लिये धूप जलाते हो और उपरी देवों के पीछे जिन्हें तुम ने न जाना जाते
१० हो । और मेरे आगे इस मन्दिर में जो मेरे नाम से कहा जाता है आके खड़े होगे और कहोगे कि हम ने छुटकारा पाया कि ये सारे घिनित कार्य्य करें ।
११ यह मन्दिर जो मेरे नाम से प्रसिद्ध है क्या तुम्हारी दृष्टि में चोरों की मांद है परमेश्वर कहता है कि देखो मैं ने हां मैं ही ने देखा है । क्योंकि अब मेरे
१२ स्थान में जा जो सैला में था जहां अगिले समय में मैं ने अपना नाम स्थापन किया था और देखो मैं ने अपने इसराएल लोगों की दुष्टता के कारण उस्से क्या किया है ॥

१३ और अब इस कारण कि तुम लोगों ने ये सारे कार्य्य किये हैं परमेश्वर कहता है और मैं तड़के उठ उठके तुम से कहा करता रहा परन्तु तुम ने न सुना और मैं ने तुम्हें पुकारा परन्तु तुम ने उत्तर
१४ न दिया । इस लिये मैं इस मन्दिर से जो मेरे नाम से प्रसिद्ध है जिस पर तुम लोग भरोसा करते हो और इस स्थान से जो मैं ने तुम्हें और तुम्हारे पितरों को दिया वही करूंगा जैसा मैं ने सैला
१५ से किया है । और मैं तुम्हें अपने आगे से दूर करूंगा जैसा मैं ने तुम्हारे सारे भाईबन्द इफ़रायम के सारे सन्तानों को दूर किया ॥

१६ पर तू जो है इस जाति के लिये प्रार्थना मत कर और उन के निमित्त प्रार्थना अथवा बिनती मत कर और मुझ से बिचवई की बिनती मत कर क्योंकि
१७ मैं तेरी न सुनूंगा । क्या तू नहीं देखता कि यहूदाह के नगरों में और यरूसलम की सड़कों में ये लोग क्या करते हैं ।
१८ कि लड़के ईंधन बटोरते हैं और पितर आग बारते हैं और स्त्री आटा गूंधती हैं जिस्ते स्वर्ग की रानी के लिये रोटी

बनावें और उपरी देवी के लिये तर्प्पण करें जिस्तें मुझे रिस दिलावें। १९ क्या वे मुझे रिस दिलाते हैं क्या वे अपने ही मुंह की घबराहट के लिये आप ही नहीं रिसियावते हैं परमेश्वर कहता है॥

२० इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देखो इस स्थान पर और मनुष्य पर और पशुन पर और चौगान के पेड़ों पर और भूमि के फलों पर मेरी रिस और मेरा कोप उंडेला जायेगा और वह जरेगा और बुताया न जायेगा॥

२१ इसराएल का ईश्वर सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि तुम लोग अपने बलिदानों में अपने बलि की भेंट मिलाओ और मांस खाओ। २२ क्योंकि जिस दिन मैं तुम्हारे पितरों को मिस्र के देश में से निकाल लाया मैं ने उन्हें बलिदान और बलि की भेंट के निमित्त नहीं कहा और उन्हें आज्ञा न किई। २३ परन्तु इसी बात के लिये मैं ने उन्हें आज्ञा करके कहा कि मेरे शब्द को मानो और मैं तुम्हारे लिये ईश्वर होऊंगा और तुम मेरे लिये एक जाति होओगे और उस सारे मार्ग में चलो जो मैं तुम्हें आज्ञा करूंगा जिस्तें तुम्हारा भला होवे। २४ परन्तु उन्हों ने न सुना और न अपना कान झुकाया परन्तु अपने बुरे मन के परामर्श और कठोरता के समान चले और पीछे हटे और आगे न बढ़े २५ जिस दिन से तुम्हारे पितर मिस्र के देश से निकल आये आज लों मैं ने तुम्हारे पास अपने सारे सेवक भविष्यद्वक्तों को प्रतिदिन तड़के उठ उठके भेजा है। २६ परन्तु उन्हों ने मेरी न सुनी और न अपने कान झुकाये परन्तु अपने गले को कठोर किया और अपने पितरों से भी अधिक दुष्ट कर्म्म किया॥

२७ अब जब तू यह सारी बातें उन्हें कहेगा वे तेरी न सुनेंगे और जब तू उन्हें पुकारेगा वे तुझे उत्तर न देंगे। २८ इस लिये तू उन से कहियो कि यह वह जातिगण है जिस ने अपने ईश्वर परमेश्वर के शब्द को न सुना और ताड़ना न मानी सच्चाई घट गई और उन के मुंह से जाती रही॥

२९ अपने बाल मुंड़ा और फेंक दे और ऊंचे स्थानों में बिलाप कर क्योंकि परमेश्वर ने अपने कोप की पीढ़ी को त्यागा और फेंक दिया है। ३० परमेश्वर कहता है कि यहूदाह के सन्तानों ने मेरी दृष्टि में बुराई किई है उन्हों ने अपने घिनितों को उस घर में जो मेरे नाम से प्रसिद्ध है अपवित्र करने को स्थापन किया है। ३१ और उन्हों ने अपने बेटे बेटियों को आग में जलाने को तुफ़त के ऊंचे ऊंचे स्थानों को जो हिन्नूम के बेटे की तराई में है स्थापन किया है जो मैं ने आज्ञा न किई और न मेरे लिये ग्राह्य था। ३२ इस लिये परमेश्वर कहता है कि देखो वे दिन आते हैं कि वह तुफ़त और हिन्नूम के बेटे की तराई फिर न कहावेगी परन्तु जूझ की तराई और वे तुफ़त में यहां लों गाड़ेंगे कि स्थान न मिलेगा। ३३ और इन लोगों की लोथें आकाश के पंछियों के लिये और पृथिवी के पशुन के लिये भोजन होंगी और कोई उन्हें न हांकेगा। ३४ और मैं यहूदाह के नगरों से और यरूसलम की सड़कों से आनन्द का शब्द और सुखबिलास का शब्द दुल्हा और दुल्हिन का शब्द उठवाऊंगा क्योंकि देश उजाड़ हो जायेगा॥

आठवां पर्व्व।

१ परमेश्वर कहता है कि उस समय में वे यहूदाह के राजाओं की हड्डियों को और उन के राजपुत्रों की हड्डियों

को और याजकों की हड्डियों को और भविष्यद्वक्तों की हड्डियों को और यरूसलम के निवासियों की हड्डियों को उन की समाधिन में से निकाल फेंकेंगे। २ और सूर्य्य और चांद और स्वर्ग की सारी सेना के आगे उन्हें फैलावेंगे जिन से उन्हों ने प्रीति किई है और जिन की सेवा किई है और जिन के पीछे गये हैं और जिन को खोज किई है और जिन्हें दंडवत किई है वे बटोरी न जायेंगी और गाड़ी न जायेंगी परन्तु वे भूमि पर ३ के मल की नाईं होंगी। और सारे बचे हुए जो इस बुरे घराने से हर एक स्थान में रह जायेंगे जहां जहां मैं ने उन्हें खेदा है मृत्यु को जीवन से अधिक चाहेंगे सेनाओं का परमेश्वर कहता है॥

४ तू उन से यह भी कह कि परमेश्वर कहता है जो गिरेंगे सो क्या फिर न उठेंगे अथवा जो जाता है सो फिर न ५ आवेगा। यरूसलम के ये लोग सदा के धर्म्मत्यागी से किस लिये फिर गये उन्हों ने छल को दृढ़ता से पकड़ रक्खा है ६ और फिर आने को नाह किया है। मैं ने ध्यान से सुना कि उन्हों ने ठीक न कहा और यह कहके कोई अपनी दुष्टता से नहीं पछताता कि मैं ने क्या किया है हर एक अपनी चाल पर चलता है जैसा ७ घोड़ा लड़ाई में घुसता है। आकाश की लगलग भी अपने समय को जानती है और पिंडुकी और सुपाबीना और सारस अपने आने की ऋतु को जानती हैं परन्तु मेरी जाति परमेश्वर के न्याय को नहीं बूझती है॥

८ तुम क्योंकर कहते हो कि हम बुद्धिमान हैं और परमेश्वर की व्यवस्था हमारे पास है देख व्यर्थ लेखकों की झूठी लेखनी ने उसे झूठ बना रक्खा है। ९ बुद्धिमान जन घबरा गये विस्मित हुए और पकड़े गये देखो उन्हों ने परमेश्वर के वचन की अवज्ञा किई और उन में से किस बात की बुद्धि है। १० इस लिये मैं उन की पत्नियां औरों को देऊंगा और उन के खेत उन्हें जो उन के अधिकारी होंगे क्योंकि छोटे से बड़े लों वे सर्व्वथा कामाभिलाषी भविष्यद्वक्ता से लेके याजक लों हर एक झूठा व्यवहार करता है। ११ और उन्हों ने मेरी जाति की पुत्री के घाव को ऊपरी ऊपर यह कहके चंगा किया है कि कुशल कुशल जब कि कुशल न था। १२ क्या वे अपने घिनित कर्म्म से लज्जित थे नहीं वे लज्जित होने न जानते थे इस लिये वे गिरनेवालों में गिरेंगे वे अपने दण्ड के समय गिराये जायेंगे परमेश्वर कहता है। १३ परमेश्वर कहता है कि मैं सर्व्वथा उन्हें नाश करूंगा लता में दाख न होंगे और गूलरपेड़ में गूलर न होंगे पत्ते भी मुरझायेंगे क्योंकि मैं ने ठहराया है कि ये जाते रहें॥

१४ हम क्यों चुपके बैठ रहे हैं आओ एकट्ठे होवें और दृढ़ नगरों में पैठें और वहां चुपके ठहरें क्योंकि हमारे ईश्वर परमेश्वर ने हमें चुप किया है और बिष का जल हमें पीने को दिया है क्योंकि हम ने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है। १५ हम ने कुशल की बाट जोही परन्तु कुछ भलाई नहीं है चंगा होने के समय के लिये और देख भय॥

१६ दान से उस के घोड़ों का फर्राना सुना जाता है उस के बलवन्त घोड़ों के हिनहिनाने के शब्द से सारा देश थर्थरा रहा है वे आये भी हैं और देश को और सब को जो उस में हैं नगर और उस में के बासियों को खा गये हैं। १७ क्योंकि देख मैं तुम्हारे विरुद्ध सर्पों को अर्थात् नागों को भेजता हूं जो

मोहे नहीं जा सक्ते और वे तुम्हें डसेंगी परमेश्वर कहता है ॥

१८ हाय कि सुख मेरे शोक पर आवे १९ मेरा मन मुझ में मूर्छित है । देखो मेरी जाति की पुत्री का शब्द दूर देश से क्या परमेश्वर सैहून में नहीं क्या उस का राजा उस में नहीं तो उन्हों ने क्यों मुझे अपनी खोदी हुई मूर्त्तिन से और अपनी उपरी व्यर्थता से खिजाया २० है । लवनी हो गई ग्रीष्म जाता रहा तथापि हम बचाये न गये ॥

२१ अपनी जाति की लड़की के घाव के कारण से मेरा मन चूर हो रहा है मैं बिलाप करता हूं घबराहट ने मुझे २२ ग्रासा है । क्या गिलियाद में औषध नहीं है वहां कोई बैद्य नहीं फिर मेरी जाति की लड़की का घाव क्यों नहीं अच्छा हुआ ॥

नवां पर्ब्ब ।

१ हाय कि मेरा सिर जल हो जाता और मेरी आंखें आंसुओं का सोता जिसतें मैं अपनी जाति की लड़की के जूझे हुओं के लिये बिलाप करूं ॥

२ हाय कि बन में मेरे लिये पथिकों का टिकाव होता जिस्तें मैं अपनी जाति को छोड़के उन के पास से चला जाता क्योंकि वे सब परस्त्रीगामी हैं ३ और छल व्यवहारक की मंडली । और धनुष की नाईं उन्हों ने अपनी जीभ खींची है झूठ से और सत्य के समान नहीं वे देश में बलवन्त हुए हैं क्योंकि वे दुष्टता से दुष्टता में बढ़ गये हैं और मुझे नहीं जाना परमेश्वर कहता है । ४ हर एक जन अपने अपने संगी से चौकस रहे और कोई भाई पर भरोसा न करे क्योंकि हर एक भाई निश्चय छल से व्यवहार करेगा और हर एक संगी दोष ५ लगाता फिरेगा । और हर एक जन अपने अपने संगी को छलेगा और वे सच सच न कहेंगे उन्हों ने अपनी जीभ को झूठ बोलना सिखाया है और पाप करते करते थक गये । तेरा निवासस्थान कपट ६ के मध्य में है छल के मारे मुझे जान्ने में उन्हों ने नाह किया है परमेश्वर कहता है ॥

७ इसी लिये सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं उन्हें पिघलाके जांचूंगा कि क्योंकर अपनी जाति की लड़की के बिषय में व्यवहार करूं । ८ उन की जीभ घातक बाण के समान है वह कपट से बचन बोलती है वह अपने संगी से कुशल की बात मुंह से कहेगी परन्तु अपने मन से उस की घात ९ में बैठती है । परमेश्वर कहता है कि क्या इन बातों के लिये मैं उन्हें दण्ड न देऊंगा और मेरा प्राण ऐसी जाति-गण से पलटा न लेगा । मैं पहाड़ों पर १० रोना पीटना डालूंगा और चौगान को चराई पर बिलाप क्योंकि वे यहां लों जल गये कि कोई उस में से नहीं जाता और ढोर का शब्द नहीं सुना जाता परन्तु आकाश के पंछी और पशु भाग गये वे जाते रहे । और मैं यरूसलम को ११ ढूह और गीदड़ों की मांद बनाऊंगा और यहूदाह के नगरों को उजाड़ करूंगा ऐसा कि कोई निवासी उस में न रहेगा ॥

१२ बुद्धिमान कौन है जो इसे बूझे और परमेश्वर के मुंह ने किस्से कहा कि वह प्रगट कर सके देश किस लिये नाश हुआ है और अरण्य की नाईं यहां लों जल गया है कि कोई उस में से नहीं जाता ॥

१३ और परमेश्वर ने कहा इस कारण कि उन्हों ने मेरी व्यवस्था को त्यागा है जो मैं ने उन के आगे रक्खी और मेरे शब्द को नहीं माना और उस के

१४ समान नहीं चले। परन्तु अपने अपने मन की कठोरता के पीछे चले गये और बग्रलीम के पीछे जो उन के पितरों ने १५ उन को सिखलाया। इस लिये सेनाओं का परमेश्वर और इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि देख मैं इस जाति को नागदौना खिलाऊंगा और बिषजल १६ पीने को देऊंगा। और मैं उन्हें जातिगणों में छिन्न भिन्न करूंगा जिन्हें न उन्हों ने न उन के पितरों ने जाना है और मैं उन के पीछे तलवार भेजूंगा जब लों मैं उन्हें मिटा न डालूं॥

१७ सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि सोचो और बिलापिनियों को बुलाओ और वे आवें और गुणकारिनियों को १८ बुलवा भेजो और वे आवें। और वे शीघ्र हम पर बिलाप आरंभ करें जिस्तें हमारी आंखें आंसू बहावें और हमारी १९ पलकें जल ढालें। क्योंकि बिलाप का शब्द सैहून से सुना गया है कि हम कैसे नष्ट हुए हैं हम अति घबरा गये हैं क्योंकि हम ने देश को छोड़ दिया है क्योंकि उन्हों ने हमारे निवासों को २० ढा दिया है। इस लिये हे स्त्रियो परमेश्वर का बचन सुनो और तुम्हारे कान उस के मुंह की बात ग्रहण करें और अपनी लड़कियों को बिलाप सिखाओ और हर एक अपने अपने संगी को २१ बिलाप सिखावे। क्योंकि मृत्यु हमारी खिड़कियों में से चढ़ आई है और हमारे भवनों में पैठी है जिस्तें सड़क में से बालक को और चौकों में से तरुणों को २२ काट डाले। परमेश्वर यों कहता है बोल कि मनुष्यों की लोथ खाद की नाईं खेतों में गिरेंगी और लवैयों की मुठिया की नाईं जिन का कोई उठानेवाला न हो॥

२३ परमेश्वर यों कहता है कि बुद्धिमान अपनी बुद्धि पर बड़ाई न करे और बलवान अपने बल पर घमंड न करे धनवान अपने धन पर न फूले। परन्तु २४ जो बड़ाई करता है सो मेरी समझ और ज्ञान रखने में बड़ाई करे कि मैं परमेश्वर पृथिवी पर दया और न्याय और सच्चाई का ब्यवहार करता हूं क्योंकि परमेश्वर कहता है कि मैं इन बातों से आनन्दित हूं॥

परमेश्वर कहता है कि देख वे दिन २५ आते हैं कि मैं खतनः किये हुओं को उन के साथ जिन का खतनः किया नहीं गया है दण्ड देऊंगा। मिस्र को २६ और यहूदाह को और अदूम को और अम्मून के सन्तानों को और मोआब को और सब को जिन की दाढ़ी के कोने मुड़े हुए हैं जो बन में बास करते हैं क्योंकि सारे जातिगण अखतनः हैं और इसराएल के सारे घराने मन के अखतने हैं॥

दसवां पर्ब्ब।

हे इसराएल के घराने जो बचन १ परमेश्वर ने तुम से कहा है सुनो। परमेश्वर यों कहता है कि अन्यदेशियों २ की चाल मत सीखो और स्वर्ग के चिन्हों से बिस्मित मत होओ क्योंकि अन्यदेशी उन से बिस्मित होते हैं। क्योंकि लोगों ३ के ठहराये हुए कार्य्य बृथा ही हैं क्योंकि वे बन में पेड़ काटते हैं और कार्य्यकारी उसे बसूले से बनाता है। वे चांदी और ४ सोने से उसे बिभूषित करते हैं कीलों और हथौड़ियों से उसे दृढ़ करते हैं जिस्तें वह न डगमगावे। वे खजूरपेड़ ५ की नाईं सीधे हैं परन्तु बोल नहीं सक्ते उन्हें सर्वथा ले जाने पड़ेगा क्योंकि वे चल नहीं सक्ते उन से मत डरो क्योंकि वे दुःख नहीं दे सक्ते और भलाई करने में वे अशक्त हैं॥

६ हे परमेश्वर तेरे तुल्य कोई नहीं तू महान है और पराक्रम में तेरा नाम ७ बड़ा है । हे जातिगणों के राजा तुझ से कौन न डरेगा इस लिये कि तुझे योग्य है क्योंकि जातिगणों में और सारे बुद्धिमानों में और उन के सारे राज्यों में ८ तेरे तुल्य कोई नहीं । और वे सर्वथा पशु और मूढ़ हैं उन की शिक्षा वृथा है ९ वह काष्ठ है । पीटी हुई चांदी तरसीस से और सोना ऊफाज से पहुंचाया जाता है सोनार के और ठठेरों के हाथों के कार्य्य हैं नीला और बैंजनी उन का पहिरावा है वे सब के सब गुणी के १० कार्य्य हैं । परन्तु परमेश्वर सत्य ईश्वर वही जीवता ईश्वर और सनातन का राजा है उस के कोप से पृथिवी थरथरावेगी और जातिगण उस की जलजलाहट को नहीं सह सकेंगे । ११ उन्हें इस रीति से कहो कि जिन देवों ने स्वर्ग और पृथिवी को नहीं बनाया वे पृथिवी पर से और इन स्वर्गों के १२ तले से नष्ट होंगे । उस ने अपनी सामर्थ्य से पृथिवी को सृजा है अपनी बुद्धि से जगत को स्थिर किया और अपनी समझ १३ से स्वर्गों को फैलाया है । जब वह अपने शब्द को बढ़ाता है तब जल का कोलाहल आकाश में होता है और पृथिवी के सिवानों से मेघों को उठाता है वह मेंह के साथ बिजुली निकालता है और अपने भंडारों से पवन निकालता १४ है । हर एक मनुष्य अपनी समझ से मूर्ख होता है हर एक कार्य्यकारी मूरत से लज्जा जाता है क्योंकि उस की ढाली हुई मूर्त्ति मिथ्या है और उन में कुछ १५ स्वास नहीं । वे व्यर्थ हैं भूल चूक के कार्य्य अपने पलटा के समय में वे नाश १६ होंगे । यअकूब का भाग इन की नाईं नहीं है क्योंकि वह सर्वलोक का कर्त्ता और इसराएल उस के अधिकार का दण्ड है उस का नाम सेनाओं का परमेश्वर है ॥

१७ हे गढ़ के निवासी देश से अपनी सामग्री को बटोर । १८ क्योंकि परमेश्वर यों कहता है कि देखो मैं अब की बार देश के निवासियों को ढेलवांसों से मारूंगा और मैं उन्हें यहां लों सकेत करूंगा कि वे पकड़े जायेंगे ॥

१९ मेरी चोट के कारण हाय मुझ पर मेरा घाव दुखता है परन्तु मैं ने कहा है कि निश्चय यह कष्ट है तथापि मैं उसे सहूंगा । २० मेरा तंबू उजाड़ पड़ा है और मेरी सारी रस्सियां टूटी हैं मेरे बेटे मुझ में से निकल गये और नहीं हैं फिर मेरा तंबू खड़ा करने को अथवा ओझलों को टांगने को कोई नहीं । २१ क्योंकि चरवाहे पशुवत हुए और उन्हों ने परमेश्वर को नहीं ढूंढ़ा इस लिये वे भाग्यवान न हुए और उन के सारे झुंड छिन्न भिन्न हुए हैं । २२ देखो धूम का शब्द आया है यहूदाह के नगरों को उजाड़ने और गीदड़ों का निवास करने को उत्तर देश से एक बड़ा कोलाहल बढ़ा आता है ॥

२३ हे परमेश्वर मैं जानता हूं कि मनुष्य की चाल आप से नहीं है और चलनेवाले मनुष्य से नहीं कि अपने डग को सुधारे । २४ हे परमेश्वर मुझे ताड़ना कर परन्तु बिचार से अपने क्रोध में नहीं न होवे कि मुझे चूर कर डाले । २५ अन्यदेशियों पर जिन्हों ने तुझे नहीं जाना है अपना कोप उंडेल और घरानों पर जिन्हों ने तेरे नाम की प्रार्थना नहीं किई है क्योंकि उन्हों ने यअकूब को खाया और उन्हों ने उसे भक्षण करके भस्म किया है और उस के निवासस्थान को उजाड़ा है ॥

ग्यारहवां पर्ब्ब

१ परमेश्वर का बचन यह कहते हुए यरमियाह के पास आया ॥

२ कि इस बाचा के बचन सुनो और यहूदाह के मनुष्यों से और यरूसलम के निवासियों से कहो । ३ और तू उन से कह कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि वह जन स्रापित है जो इस बाचा के बचनों को न सुनेगा । ४ जो मैं ने तुम्हारे पितरों से उस दिन कहा जब मैं उन्हें मिस्र देश से लोहे के भट्ठे से यह कहके निकाल लाया कि मेरा शब्द सुनो और मेरी सारी आज्ञा पालन करो सो तुम मेरे लिये एक जाति होओगे और मैं भी तुम्हारा ईश्वर होऊंगा । ५ जिस्तें मैं अपनी उस किरिया को पूरी करूं जो मैं ने तुम्हारे पितरों से खाई है कि मैं दूध और मधु से बहते हुए देश उन्हें देऊं जैसा आज के दिन है तब मैं ने उत्तर देके कहा कि हे परमेश्वर ऐसा ही होवे ॥

६ और परमेश्वर ने मुझ से कहा कि इन सारी बातों को यहूदाह के नगरों में और यरूसलम की सड़कों में प्रचारके कह कि इस बाचा के बचनों को सुनो ७ और उन्हें पालन करो । क्योंकि मैं ने तुम्हारे पितरों को बड़े यत्न से चिताया उस दिन से कि उन्हें मिस्र देश से निकाल लाया आज लों मैं ने तड़के उठके उन्हें चिता चिताके कहा कि ८ मेरे शब्द को सुनो । परन्तु उन्हों ने न माना और न अपना कान झुकाया पर हर एक अपने अपने दुष्ट मन की कठोरता पर चला इस लिये मैं इस बाचा की सारी धमकियों को उन पर लाया जो मैं ने उन्हें पालने को आज्ञा किई परन्तु उन्हों ने न पाला ॥

९ और परमेश्वर ने मुझ से कहा कि यहूदाह के मनुष्यों में और यरूसलम के बासियों में कुयुक्ति पाई गई है । १० वे अपने प्राचीन पितरों की बुराइयों में फिर पलट गये हैं जिन्हों ने मेरे बचन पालने को नाह किया है और वे उपरी देवों के पीछे उन की सेवा करने को गये हैं इसराएल के घराने और यहूदाह के घराने ने मेरी बाचा को भंग किया है जो मैं ने उन के पितरों से किई थी ॥

११ इस लिये परमेश्वर यों कहता है कि देखो मैं उन पर बिपत्ति लाने पर हूं जिस्से वे अपने को छुड़ा न सकेंगे और यद्यपि वे मेरी प्रार्थना करें तथापि मैं उन की न सुनूंगा । १२ और यहूदाह के नगर और यरूसलम के निवासी जायेंगे और उन देवों की प्रार्थना करेंगे जिन के लिये वे धूप जलाते हैं परन्तु उन की बिपत्ति के समय में वे उन्हें कुछ न बचावेंगे । १३ क्योंकि हे यहूदाह तेरे नगरों की गिनती के समान तेरे देव हुए हैं और यरूसलम की सड़कों की गिनती के समान एक लज्जित बस्तु के लिये बेदी और बअल के लिये धूप जलाने को बेदी तुम ने स्थापन किई हैं । १४ इस लिये तू इस जाति के लिये प्रार्थना मत कर और न उन के निमित्त बिनती अथवा प्रार्थना कर क्योंकि उन की बिपत्ति के समय में मैं उन की प्रार्थना न सुनूंगा ॥

१५ मेरे घर में मेरी प्रिया का क्या काम जब लों वह बहुतों से दुष्टता करती है और पवित्र मांस तुझ से बीत जायेगा क्योंकि तू अपनी बिपत्ति के समय में आनन्द करेगी । १६ परमेश्वर ने तेरा नाम हरी जलपाई और सुन्दर फलवंत पेड़ रक्खा था उस ने बड़े हुल्लड़ के शब्द से उस पर आग बारी है और उस की डालियां तोड़ी गईं । १७ और सेनाओं

के परमेश्वर ने जिस ने तुझे रोपा तुझ पर बुराई उच्चारी है उस बुराई के लिये जो इसराएल के घराने और यहूदाह के घराने ने अपने बिरुद्ध किई कि मुझे रिस दिलाने को बअल के लिये धूप जलाया॥

१८ और परमेश्वर ने मुझ पर प्रगट किया और मैं ने जाना तब तू ने उन

१९ का व्यवहार मुझे दिखाया। क्योंकि मैं घरैले मेम्ने की नाईं था जो घात के लिये पहुंचाया जाता है पर मैं ने न जाना कि उन्हों ने मेरे बिरुद्ध यह कहके युक्ति बांधी थी कि फल सहित पेड़ का नाश करें और जीवतों के देश में से उसे काट डालें जिस्तें उस का नाम फिर न लिया

२० जाये। परन्तु हे सेनाओं के परमेश्वर जो धर्म्म से बिचार करता है जो गुर्दों और मन को जांचता है मैं तेरा बैर लेना उन पर देखूं क्योंकि मैं ने अपना बाद तेरे आगे धरा है॥

२१ इस लिये परमेश्वर यों कहता है कि अनतात के मनुष्यों के बिषय में जो यह कहके तेरे प्राण के गाहक हैं पर-मेश्वर के नाम से भविष्य मत कह जिस्तें तू हमारे हाथ से मारा न जाये।

२२ इस कारण सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि देखो मैं उन पर दण्ड बिचार करने पर हूं तरुण मनुष्य तल-वार से मारे जायेंगे और उन के बेटे

२३ बेटियां अकाल से मरेंगे। और उन में से कोई न बचेगा क्योंकि मैं अनतात के मनुष्यों पर बुराई और उन के पलटे का बरस लाऊंगा॥

बारहवां पर्ब्ब।

१ हे परमेश्वर जब मैं तुझ से अपवाद करूं तू धर्म्मी है तथापि बिचार के बिषय में मैं तुझ से संवाद करूंगा कि दुष्टों का मार्ग क्यों भाग्यवान होता है क्या सब के सब चैन में हैं जो छल से

२ व्यवहार करते हैं। तू ने उन्हें लगाया उन्हों ने जड़ भी पकड़ी है वे बढ़ गये और फल लाये तू उन के मुंह के पास

३ है परन्तु उन के मन से दूर है। परन्तु हे परमेश्वर तू ने मुझे जाना है तू मुझे देखेगा और जांचने से तू ने मेरा मन अपनी ओर पाया है उन्हें घात के लिये भेड़ों की नाईं निकाल और घात के दिन

४ के लिये उन्हें अलग कर। उस में के बासियों की दुष्टता के मारे कब लों देश बिलाप करेगा और हर एक खेत की घास झुरा जायेगी पशु पंछी तो मिट गये क्योंकि उन्हों ने कहा है कि वह हमारा अन्त न देखेगा॥

५ यदि पयादत के संग दौड़ने में उन्हों ने तुझे थकाया फिर तू घोड़ों के साथ क्योंकर दौड़ेगा और यद्यपि कुशल के देश पर तुझे भरोसा हो तथापि यरदन

६ के बाढ़ में तू क्या करेगा। जब कि तेरे भाईबन्दों ने भी और तेरे पिता के घराने अर्थात् इन्हों ने भी तुझ से छल का व्यवहार किया है और इन्हों ने भी ललकारते ललकारते तेरा पीछा किया है उन की प्रतीति मत कर जो वे तुझ से मित्रता से बात करें॥

७ मैं ने अपने घर को त्यागा है मैं ने अपने अधिकार को छोड़ दिया है अपने प्राण के प्रिय को उस के बैरियों के

८ हाथ में दिया है। मेरे लिये मेरा अधि-कार बन में के सिंह की नाईं हुआ है उस ने मेरे बिरुद्ध अपना शब्द बढ़ाया

९ है इस लिये मैं ने उस्से घिन किया। क्या मेरा अधिकार मेरे लिये बनपशु हां लकड़बग्घे के समान हुआ बनपशु उस के बिरुद्ध चारों ओर से हैं हे खेत के सारे पशुओ एकट्ठे होके खाने आओ।

१० बहुत से चरवाहों ने मेरी दाख को

चारियों को नष्ट किया उन्हों ने मेरे अधिकार को पांव तले रौंदा है और मेरा सुन्दर अधिकार उजाड़ अरण्य कर
११ डाला है। उन्हों ने उसे एक उजाड़ बनाया है वह उजाड़ होके मेरे लिये रोता है सारा देश उजाड़ हुआ है
१२ तथापि कोई उसे नहीं सोचता है। बन के सारे ऊंचे स्थानों पर लुटेरे आये हैं क्योंकि तलवार परमेश्वर के ठहराने से भक्षण करती है देश की एक ओर से दूसरी ओर लों किसी का कुशल नहीं
१३ है। उन्हों ने गोहूं बोये हैं पर कांटे लवे हैं वे परिश्रम करते हैं परन्तु लाभ न पावेंगे और वे परमेश्वर के बड़े क्रोध के मारे तुम्हारे अनाज से लज्जित होंगे॥

१४ मेरे सारे बुरे परोसियों के विषय में जो अधिकार को छेड़ते हैं जो मैं ने इसराएल अपने लोगों का अधिकार किया है परमेश्वर यों कहता है कि देखो मैं उन्हें उन के देश से उखाड़ डालूंगा और यहूदाह के घराने को उन के मध्य में से उखाड़ूंगा॥

१५ और उन्हें उखाड़ने के पीछे मैं फिर उन पर दया करूंगा और हर एक को अपने अपने अधिकार और अपने अपने
१६ देश में फिर लाऊंगा। और यदि वे निश्चय मेरी जाति की चालें सीखेंगे कि मेरे नाम से किरिया खायें कि जीवते परमेश्वर सोंह जैसा उन्हों ने मेरी जाति को बअल की किरिया सिखाई है तो ऐसा होगा कि वे मेरी
१७ जाति के मध्य में बनाये जायेंगे। परन्तु यदि वे न मानेंगे तब मैं उस जातिगण को उखाड़ूंगा उखाड़ते उखाड़ते नाश करूंगा परमेश्वर कहता है॥

तेरहवां पर्ब्ब।

१ परमेश्वर ने मुझ से यों कहा कि तू जाके एक सूती पटका ले और उसे अपनी कटि पर बांध परन्तु उसे पानी में मत
२ डालना। सो परमेश्वर के बचन के समान मैं ने पटका लेके अपनी कटि
३ पर बांधा। और परमेश्वर का बचन दूसरी बार यह कहते हुए मेरे पास
४ पहुंचा। कि अपनी कटि पर का बंधा हुआ पटका ले और उठके फुरात पर जा और चटान के एक दरार में उसे
५ छिपा। सो जैसा परमेश्वर ने मुझे आज्ञा किई थी तैसा ही जाके मैं ने उसे फुरात
६ के लग छिपाया। और बहुत दिनों के पीछे ऐसा हुआ कि परमेश्वर ने मुझ से कहा कि उठ फुरात को जा और वह पटका जो मैं ने तुझे वहां छिपाने को
७ आज्ञा किई थी ले। और मैं फुरात को गया और खोदा जहां मैं ने पटका छिपाया था वहां से उसे लिया और क्या देखता हूं कि वह पटका ऐसा बिगड़
८ गया कि किसी काम का न रहा। तब परमेश्वर का बचन यह कहते हुए मेरे पास पहुंचा॥

९ परमेश्वर यों कहता है कि मैं इस भांति से यहूदाह की बड़ाई और यरूसलम की बड़ी बड़ाई को अति नाश
१० करूंगा। ये दुष्ट लोग जो मेरे बचन सुने को नाह करते हैं और अपने ही मन की कठोरता के समान चलते हैं और सेवा करने और दण्डवत करने को उपरी देवों के पीछे गये हैं वे इस पटके की नाईं
११ होंगे जो किसी काम का नहीं। क्योंकि जैसे पटका मनुष्य की कटि पर लिपटा रहता है तैसे इसराएल के सारे घराने और यहूदाह के सारे घराने को अपने से लिपटाया परमेश्वर कहता है कि वे मेरे लिये एक जाति और एक नाम और स्तुति और विभव बनें पर उन्हों ने न सुना॥

१२ और तू उन से यह बचन कह कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि हर एक पात्र दाखरस से भरा जावेगा और वे तुझे कहेंगे कि हम क्या निश्चय यह नहीं जानते कि हर एक पात्र दाखरस से भरा जायेगा॥
१३ और तू उन से कह कि परमेश्वर यों कहता है कि देखो मैं इस देश के सारे बासियों को और राजाओं को जो दाऊद के सिंहासन पर बैठते हैं और याजकों और भविष्यद्वक्तों को और यरूसलम के सारे निवासियों को मतवालपन से भर दूंगा। १४ और मैं उन्हें एक दूसरे पर पटकूंगा और पुत्र सहित पिता पर परमेश्वर कहता है मैं मया न करूंगा और न छोड़ूंगा और मैं ऐसी दया न दिखाऊंगा जिस्तें मैं उन्हें नाश न करूं॥
१५ सुनो और कान धरो गर्ब न करो १६ क्योंकि परमेश्वर ने कहा है। परमेश्वर अपने ईश्वर को तुम महिमा दो उस्से आगे कि वह अंधियारा लावे और उस्से आगे कि तुम्हारे पांव अंधेरे पहाड़ों पर ठोकर खावें और जब तुम उंजियाले की बाट जोहते तब वह उसे मृत्यु की छाया में फिरावे और घोर अंधकार बनावे। १७ पर यदि तुम लोग न सुनोगे तो मेरा मन गुप्त स्थान में तुम्हारे गर्ब के लिये शोक करेगा और बहुत रोदन करेगा और मेरी आंखों से आंसू बहि निकलेगा क्योंकि परमेश्वर का झुंड बंधुआई में पहुंचाया जाता है॥
१८ राजा और रानी से कहो कि अपने अपने को दीन करके बैठो क्योंकि तुम्हारे बिभव का मुकुट तुम्हारे सिर से गिर पड़ा है। १९ दक्खिन के नगर बंद हैं और कोई नहीं खोलता यहूदाह की बंधुआई भरपूर हुई है सभों की बंधुआई हुई है। २० अपनी आंखें उठाओ और उन्हें देखो जो उत्तर दिशा से आते हैं तुझे दिया गया झुंड तेरे बिभव की भेड़ें कहां हैं। २१ जब पलटा तुझ पर आवेगा तो तू क्या कहेगा क्योंकि तू तो उन्हें अपने ऊपर प्रधानता और प्रभुता सिखाता है क्या पीड़ित स्त्री की नाईं पीर तुझे न पकड़ेगी। २२ और जब तू अपने मन में कहेगा कि ये बातें मुझ पर क्यों पड़ी हैं तेरी बुराई की बहुताई के लिये तेरा ही आंचर उघारा गया और तेरी एड़ी भी उघारी छोड़ी गई॥

२३ क्या हबशी अपने चाम को अथवा चीता अपने बिंदुओं को पलट सक्ता है तब तुम भी जो कुकर्म्म सीखे हो सुकर्म्म कर सको। २४ इस लिये मैं उन्हें छिन्न भिन्न करूंगा उस भूसी की नाईं जो बन के पवन से उड़ जाती है। २५ परमेश्वर कहता है कि यही तेरा भाग मेरी और से तेरा नपा हुआ अंश जिस ने मुझे बिसराया है और झूठ पर भरोसा किया है। २६ इस लिये मैं तेरे आंचरों को तेरे मुंह लों उघारूंगा जिस्तें तेरी लाज देखी जाये। २७ मैं ने तेरा ब्यभिचार और तेरा हिनहिनाना और तेरे छिनाले की बुराई और तेरे घिनितों को देखा है टीलों पर खेतों में हे यरूसलम तुझ पर हाय तू कब लों पवित्र न होगी॥

चौदहवां पर्ब्ब।

१ परमेश्वर का बचन जो झुराहट के बिषय में यरमियाह के पास पहुंचा। २ यहूदाह बिलाप करता है और उस के फाटक घटे जाते हैं और भूमि पर काले बस्त्र पहिने हुए हैं और यरूसलम का रोना ऊपर पहुंचा। ३ कुलीनों ने भी अपने छोटों को पानी के लिये भेजा वे कूए पर आये परन्तु पानी न पाया वे पात्र ले ले फिर आये वे लज्जित

होके घबराये और उन्हों ने अपने सिर ४ ढांपे । इस लिये कि भूमि फट गई क्योंकि भूमि पर पानी न बरसा किसानों ने लज्जित होके अपना सिर ढांपा । ५ क्योंकि हरिणी भी खेतों में बियानी परन्तु घास के न होने से उस ने उसे ६ त्याग किया । और बनैले गदहे ऊंचे स्थानों में खड़े रहे उन्हों ने गीदड़ों की नाईं पवन को सुड़क लिया और हरयाली न होने से उन की आंखें घट गईं ॥

७ यद्यपि हमारी बुराइयों ने हम पर साक्षी दिई है तथापि हे परमेश्वर अपने ही नाम के लिये कार्य्य कर क्योंकि हमारा फिर फिर धर्म्म त्यागना बहुत हुआ है हम ने तेरे बिरोध में पाप ८ किया है । हे इसराएल की आशा बिपत्ति में उस का निस्तारक तू देश में क्यों परदेशी के समान होता है और पथिक की नाईं जो रात भर के टिकने ९ के लिये बिछाता है । तू क्यों व्याकुल मनुष्य के समान और बीर की नाईं है जो बचाने का पराक्रम नहीं रखता हे परमेश्वर तू तो हमारे मध्य में है और हम तेरे नाम से पुकारे जाते हैं तू हमें मत छोड़ ॥

१० परमेश्वर ने इस जाति से यों कहा है कि वे भ्रमने ऐसा चाहते हैं उन्हों ने अपने पांव को नहीं रोका है इस लिये परमेश्वर उन्हें ग्रहण नहीं करता अब वह उन की बुराई को स्मरण करेगा और उन के पापों का लेखा लेगा ॥

११ और परमेश्वर ने मुझ से कहा कि इस जाति की भलाई के लिये प्रार्थना १२ मत कर । वे जब ब्रत करें तब मैं उन की प्रार्थना न सुनूंगा और जब वे बलि-दान की अथवा मांस की भेंट चढ़ावें तो मैं उन्हें ग्रहण न करूंगा क्योंकि तलवार से और अकाल से और मरी से उन्हें मिटा डालूंगा ॥

१३ तब मैं ने कहा कि हाय हे प्रभु पर-मेश्वर देख भविष्यद्वक्ते उन से कहते हैं कि तुम तलवार न देखोगे और तुम पर अकाल न पड़ेगा क्योंकि निश्चय मैं तुम्हें इस स्थान में कुशल देऊंगा ॥

१४ तब परमेश्वर ने मुझ से कहा कि भविष्यद्वक्ते मेरे नाम से झूठ भविष्य कहते हैं मैं ने उन्हें नहीं भेजा और न उन्हें आज्ञा किई और न उन से कहा वे झूठा दर्शन और गणकता और बृथा और अपने ही मन की कुटिलता तुम १५ पर प्रगट करते हैं । इस लिये उन भविष्यद्वक्तों के बिषय में जो मेरे नाम से भविष्य कहते हैं यद्यपि मैं ने उन्हें नहीं भेजा परन्तु वे आप से आप कहते हैं कि इस देश पर तलवार और अकाल न होगा परमेश्वर यों कहता है कि तलवार और अकाल से वे ही भविष्य-१६ द्वक्ता नाश होंगे । और जिन लोगों से वे भविष्य कहते हैं सो अकाल और तल-वार के द्वारा से यरूसलम की सड़कों में फेंके जायेंगे और उन्हें और उन की पत्नियों को और उन के बेटे बेटियों को गाड़ने को कोई न होगा और मैं उन्हीं की दुष्टता उन पर उंडेलूंगा ॥

१७ और तू उन से यह बचन कह कि मेरी आंखें रात दिन आंसू टपकाया करें और न थमें क्योंकि मेरी जाति की कुंआरी लड़की ने बड़ा दुःख पाया है १८ अति पीड़ित चोट पाई है । यदि मैं बाहर खेत में जाऊं तो उन्हें देखता हूं कि तलवार से जूझे हैं और जब नगर में भीतर आऊं तो क्या देखता हूं कि अकाल से गले हुए तथापि भविष्यद्वक्ता और याजक भी देश में फिरते हैं और सुध नहीं रखते ॥

आंखों के आगे और तुम्हारे दिनों में मैं इस स्थान से आनन्द का शब्द और हर्ष का शब्द और दुल्हे का शब्द और दुल्हिन का शब्द मिटाने पर हूं॥

१० और ऐसा होगा कि जब तू इस जाति पर ये बातें प्रगट करेगा और वे तुझ से कहें कि परमेश्वर ने क्यों यह सारी बड़ी बुराई हमारे बिरुद्ध उच्चारी है और हमारी बुराई क्या और हमारा पाप क्या जो हम ने अपने ईश्वर परमेश्वर के बिरुद्ध किया है॥

११ तब तू उन से कहियो कि परमेश्वर कहता है इस कारण कि तुम्हारे पितरों ने मुझे त्यागा है और उपरी देवों के पीछे गये हैं और उन की सेवा और पूजा किई है और मुझे त्यागा है और मेरी १२ व्यवस्था पालन न किई। और तुम लोगों ने आप अपने पितरों से अधिक दुष्टता किई है और देखो मुझे न मानके तुम सब अपने ही दुष्ट मन की कठोरता १३ पर चलते हो। इस लिये मैं तुम्हें इस देश से उस देश में निकाल ले जाऊंगा जिसे न तुम ने न तुम्हारे पितरों ने जाना है और वहां तुम लोग रात दिन उपरी देवों की सेवा करोगे इस कारण कि मैं तुम पर कृपा न करूंगा॥

१४ इस लिये देख दिन आते हैं परमेश्वर कहता है जिन में फिर कहा न जायेगा कि जीवते ईश्वर सोंह जो इसराएल के सन्तानों को मिस्र देश से १५ निकाल लाया। परन्तु जीवते परमेश्वर सोंह जो इसराएल के सन्तानों को उत्तर देश से और सारे देशों में से जिधर जिधर उस ने उन्हें खेद दिया था निकाल लाया क्योंकि मैं उन्हीं के देश में उन्हें फिर पहुंचाऊंगा जो मैं ने उन के पितरों को दिया था॥

१६ देख मैं बहुत से मछुओं को बुलवा भेजूंगा परमेश्वर कहता है और वे उन्हें फंसावेंगे और उस के पीछे मैं बहुत से अहेरियों को बुलवा भेजूंगा जो हर एक पहाड़ और पहाड़ियों से और कंदलों में से उन्हें अहेर करेंगे। क्योंकि मेरी १७ आंखें उन की सारी चालों पर हैं वे मेरे आगे से छिपी नहीं हैं और उन की बुराई मेरी दृष्टि से गुप्त नहीं। और मैं १८ पहिले उन की बुराई और उन के पापों का दूना पलटा देऊंगा क्योंकि उन्हों ने मेरे देश को अशुद्ध किया है उन्हों ने अपनी निन्दित और घिनित बस्तुन की लोथों से मेरे अधिकार को भर दिया है॥

हे परमेश्वर मेरा बल और मेरा गढ़ १९ और बिपत्ति के दिन में मेरा शरण जातिगण पृथिवी के अन्तों से तेरे पास आवेंगे और कहेंगे कि निश्चय हमारे पितरों ने झूठ और बृथा और उन बस्तुन को जिन में लाभ नहीं अधिकार में लिया। क्या मनुष्य अपने लिये देवों को २० बनावेगा और वे देव नहीं हैं। इस २१ लिये देख मैं उन्हें अब की बार समझाऊंगा और मैं उन पर अपनी भुजा और अपना बल जनाऊंगा और वे जानेंगे कि परमेश्वर मेरा नाम है॥

सत्रहवां पर्व्व।

यहूदाह का पाप लोहे की लेखनी १ से और हीरे की नोक से लिखा गया उन के अन्तःकरण की पटिया पर और उन की बेदियों के सींगों पर खोदा गया है। जब उन के बालक हरे पेड़ों २ के लग और सब से ऊंचे टीलों पर अपनी बेदियों और बिधातृ देवियों को स्मरण करते हैं। हे मेरे पर्व्वत खेत ३ में तेरी संपत्ति तेरे सारे भंडार और तेरे दृढ़ गढ़ तेरे सारे सिखानों में तेरे पापों के लिये मैं लुटा देऊंगा। और तू आप से ४ उस अधिकार से जो मैं ने तुझे दिया

है छिदा होगा और मैं तुझ से तेरे बैरियों की एक ऐसे देश में सेवा कराऊंगा जिसे तू ने नहीं जाना है क्योंकि तुम ने मेरी रिस की आग भड़काई जो नित जला करेगी॥

५ परमेश्वर यह कहता है कि स्रापित है वह मनुष्य जो मनुष्य पर भरोसा रखता है और मांस को अपनी भुजा बनाता है और जिस का मन परमेश्वर ६ से हट जाता है। क्योंकि वह अरण्य के झुराये हुए पेड़ की नाईं होगा जो भलाई आने से अचेत है परन्तु वह सूखे स्थान और खारी भूमि में रहेगा ७ जहां निवासी नहीं। धन्य है वह मनुष्य जो परमेश्वर पर भरोसा रखता है और ८ जिस का बिश्वास परमेश्वर है। क्योंकि वह उस पेड़ के तुल्य होगा जो पानी के लग लगाया जाय जो धारा के पास अपनी जड़ फैलाता है और घाम आने से नहीं डरता परन्तु उस का पत्ता हरा होगा और अबृष्टि के बरस में वह निश्चिन्त है और फल फलने में चूक नहीं करता॥

९ मन सारी बस्तुन से अधिक छली और असाध्य है उसे कौन जान सक्ता १० है। मैं परमेश्वर मन को जांचता हूं और गुर्दों को परखता हूं जिस्तें हर एक जन को उस की चाल के समान और उस की करणी के फल के तुल्य देऊं॥

११ जैसा तीतरी उपरी अंडे को सेवती है तैसा ही जो अधर्म्म से धन प्राप्त करता है सो अपने दिनों के मध्य में उसे छोड़ देगा और अपने अन्त में मूर्ख होगा॥

१२ तेजस्वी सिंहासन आरम्भ से हमारा १३ पवित्र स्थान है। हे परमेश्वर इसराएल की आशा सब जो तुझे त्यागते हैं सो लज्जित होंगे और वे सब जो मुझ से फिर जाते हैं धूल पर टांके जायेंगे क्योंकि उन्हों ने अमृतजलों के सोते परमेश्वर को त्यागा है॥

१४ हे परमेश्वर मुझे चंगा कर और मैं चंगा हूंगा मुझे बचा और मैं बचूंगा १५ क्योंकि तू मेरी स्तुति है। देख वे मुझ से कहते हैं कि परमेश्वर का बचन १६ कहां है वह अभी आवे। और मैं तेरी अगुआई से चरवाहा होने से न हटा और मैं ने बिपत्ति का दिन न चाहा तू जानता है जो मेरे होंठों से निकला १७ सो तेरे आगे हुआ है। तू मेरे लिये भय मत हो बिपत्ति के दिन तू मेरा १८ शरण है। मेरे सताऊ लज्जित होवें परन्तु मुझे लज्जित होने न दे वे बिस्मित हो जायें परन्तु मुझे बिस्मित होने न दे बिपत्ति का दिन उन पर ला और दूने नाश से उन्हें नाश कर॥

१९ परमेश्वर ने मुझ से यों कहा कि लोगों के सन्तानों के फाटक में जिस में से यहूदाह के राजा बाहर भीतर आया जाया करते हैं और यरूसलम के २० सारे फाटकों में खड़ा हो। और उन से कह कि हे यहूदाह के राजा और सारे यहूदाह और यरूसलम के सारे बासियो जो इन फाटकों में से जाते २१ हो परमेश्वर का बचन सुनो। परमेश्वर यों कहता है कि तुम आप आप से चौकस रहो और बिश्राम के दिन में बोझा मत ढोओ और यरूसलम के फाटकों में २२ से मत लाओ। और बिश्राम दिन में अपने अपने घर से बोझ मत ले जाओ और कुछ ब्यवहार मत करो परन्तु जैसा मैं ने तुम्हारे पितरों को आज्ञा किई है बिश्राम दिन को पवित्र रक्खो। २३ पर उन्हों ने न सुना और न अपना कान लगाया परन्तु अपनी गरदन को

कठोर किया जिस्तें न सुनें और उपदेश न मानें ॥

२४ परमेश्वर कहता है कि यदि निश्चय तुम लोग मेरी सुनोगे यहां लों कि विश्राम दिन में इस नगर के फाटकों में से कोई बोझ न लावे और बिना व्यवहार करने से विश्राम दिन को २५ पावन रक्खो । तो इस नगर के फाटकों से राजा और अध्यक्ष प्रवेश करेंगे कि दाऊद के सिंहासन पर बैठें वे और उन के अध्यक्ष यहूदाह के लोग और यरूसलम के वासी रथों और घोड़ों पर चढ़ेंगे २६ और यह नगर सदा स्थिर रहेगा । और यहूदाह के नगरों से और यरूसलम को चारों ओर से और बिनयमीन के देश से और चौगान से और पर्व्वत से और दक्खिन से बलिदान की भेंट और बलि और मांस की भेंट और धूप ले ले और स्तुति की भेंट लिये हुए परमेश्वर के मन्दिर में आवेंगे ॥

२७ परन्तु यदि विश्राम दिन को पवित्र रखने को और कोई बोझ ढोके यरूसलम के फाटकों में से जाने को मेरी न सुनोगे तब मैं उस के फाटकों में एक आग बारूंगा और वह यरूसलम में के भवनों को भस्म करेगी और वह बुताई न जायेगी ॥

अठारहवां पर्व्व ।

१ वह बचन जो परमेश्वर की ओर से यरमियाह के पास यह कहते हुए २ पहुंचा । कि उठके कुम्हार के घर को उतर जा और मैं वहां अपने बचन तुझे सुनाऊंगा ॥

३ तब मैं कुम्हार के घर को उतर गया और क्या देखता हूं कि वह चाक ४ पर कुछ बना रहा है । और जो मिट्टी का बर्त्तन वह बना रहा था सो कुम्हार के हाथ से बिगड़ गया तब उस ने उस्से फिर एक बर्त्तन बनाया जैसा कुम्हार की दृष्टि में अच्छा लगा । तब ५ यह कहते हुए परमेश्वर का बचन मेरे पास पहुंचा ॥

६ कि हे इसराएल के घराने क्या मैं तुम्हारे विषय में इस कुम्हार की रीति नहीं कर सक्ता परमेश्वर कहता है कि हे इसराएल के घराने देखो जैसा मिट्टी कुम्हार के बश में है तैसा तुम लोग ७ मेरे बश में हो । जब कभी मैं किसी जातिगण के अथवा राज्य के उखाड़ने के और गिरा देने के और नाश करने के ८ विषय में कहूं । और जिस जातिगण के विषय में मैं ने कहा है सो अपनी दुष्टता से फिरे तो जो बुराई मैं ने उस पर करने को ठानी थी उस्से पछताऊंगा । ९ और जब कभी मैं किसी जातिगण के अथवा राज्य के बनाने और लगाने के १० विषय में कहूं । और वह वही करे जो मेरी दृष्टि में बुराई है जिस्तें मेरे शब्द को न माने तो जो भलाई मैं ने उस के निमित्त करने को कहा था उस्से मैं पछताऊंगा ॥

११ और अब यहूदाह के मनुष्यों से और यरूसलम के बासियों से कह कि परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं तुम्हारे विरुद्ध बुराई ठहराता हूं और तुम्हारे विरुद्ध युक्ति बांधता हूं सो तुम हर एक अपनी अपनी बुरी चाल से फिरो और अपनी अपनी चालों और अपने १२ अपने व्यवहारों को सुधारो । परन्तु उन्हों ने कहा कि आशा नहीं है क्योंकि हम अपनी अपनी भावना पर चलेंगे और हम अपने अपने बुरे मन की कठोरता पर चलेंगे ॥

१३ इस लिये परमेश्वर यों कहता है कि अब अन्यदेशियों में पूछो किस ने ऐसी ऐसी बातें सुनी हैं कि इसराएल की

कुंआरी ने बड़ा बड़ा भयानक कार्य्य
१४ किया है। क्या लुबनान का पाला खेत के चटान से बन्द हो जायेगा क्या सकेत नाली का ठण्ढा बहता पानी सूख
१५ जायेगा। क्योंकि मेरे लोगों ने मुझे बिसराया है और व्यर्थ के लिये धूप जलाया है और उन्हों ने पुरातन पथों से उन को चालों में उन्हें ठोकर दिलाया जिस्तें खड़बिड़ पथों पर उन्हें चलावें।
१६ वे अपने देश को उजाड़ और नित्य का फुफकार बनाते हैं हर एक जो उधर से आता है आश्चर्य्य मानेगा और अपना
१७ सिर धुनेगा। पुरवा पवन की नाईं मैं उन्हें उन के बैरियों के आगे छितराऊंगा उन के नाश के दिन में मैं अपनी पीठ उन की ओर फेरूंगा अपना मुंह नहीं॥

१८ तब उन्हों ने कहा कि आओ और हम यरमियाह की बिरुद्धता में युक्ति बांधें क्योंकि याजक से व्यवस्था घट न जायेगी और न बुद्धिमान से परामर्श और न भविष्यद्वक्ता से बचन सो आओ और हम उसे जीभ से मारें उस का कोई बचन न मानें॥

१९ हे परमेश्वर मेरी ओर सुरत लगा और मेरे झगड़नेवालों का शब्द सुन।
२० क्या भलाई की संती बुराई किई जायेगी क्योंकि उन्हों ने मेरे प्राण के लिये गड़हा खोदा है सो स्मरण कर मैं तेरे आगे उन की भलाई के लिये बिन्ती करने को खड़ा हुआ हूं जिस्तें तेरा कोप उन
२१ से फिर जाये। इस लिये उन के लड़कों को अकाल को सौंप और तलवार के द्वारा से उन्हें खींच ले और उन की स्त्रियां निर्बंश और रांड होवें और उन के पुरुष मरी से मारे जायें उन के तरुण संग्राम में तलवार से जुझाये जायें।
२२ जब तू अचानक उन पर एक जथा लावेगा तो उन के घरों से रोना पीटना सुना जायेगा क्योंकि उन्हों ने मेरे फंसाने को गड़हा खोदा है और चुपके से मेरा पांव बझाने के लिये जाल बिछाया है
२३ परन्तु हे परमेश्वर मेरे प्राण के बिरुद्ध तू उन का सारा परामर्श जानता है तू उन की बुराई के लिये प्रायश्चित्त ग्रहण न कर और अपने आगे से उन के पाप को मत मिटा परन्तु तेरे साक्षात वे उलटाये जायें अपने कोप के समय में तू उन से ऐसा कर॥

उन्नीसवां पर्ब्ब।

परमेश्वर ने यों कहा कि तू जाके कुम्हार का एक मिट्टी का पात्र और लोगों में के प्राचीनों में से और याजकों के प्राचीनों में से ले। और हिन्नुम के बेटे की तराई में निकल जा जो तपन फाटक के आगे है और जो बचन मैं तुझे कहूंगा सो वहां प्रचारियो॥

और कहियो कि हे यहूदाह के राजाओ और यरूसलम के निवासियो परमेश्वर का बचन सुनो सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि देखो मैं इस स्थान पर ऐसी बिपत्ति लाता हूं कि जो कोई उसे सुनेगा उस के कान झंझना उठेंगे।
४ क्योंकि उन्हों ने मुझे छोड़ा और इस स्थान को उपरियों के लिये छोड़ दिया और उस में उपरी देवों के लिये धूप जलाया जिन्हें न उन्हों ने न उन के पितरों ने न यहूदाह के राजाओं ने जाना और इस स्थान को निर्दोषियों के लोहू से भर दिया है।
५ और बअल के ऊंचे स्थानों को खड़ा किया है जिस्तें अपने बेटों को बअल के बलिदानों की भेंट के लिये आग में जलावें जो मैं ने आज्ञा न किई और न कहा न मेरे मन में आया॥

६ इस लिये परमेश्वर कहता है कि वह समय आता है जब कि यह स्थान फिर तुफ़त न कहावेगा अथवा हिन्नुम के बेटे की तराई परन्तु जूझ की तराई । ७ क्योंकि मैं इस स्थान में यहूदाह का और यरूसलम का परामर्श वृथा करूंगा और मैं उन्हें उन के बैरियों के आगे और जो उन के प्राण के गाहक हैं तलवार से गिराऊंगा और मैं उन की लोथों को आकाश के पंछियों के और बनैले पशुन ८ के आहार के लिये देऊंगा । और मैं इस नगर को उजाड़ का और फुफकार का कारण बनाऊंगा हर एक जो उस के पास से जाता है उस की सारी मरियों के लिये आश्चर्य्यित होके फुफ- ९ कारेगा । और मैं उन्हें उन के बेटों का मांस और उन की बेटियों का मांस खिलाऊंगा और घेरे जाने में और बिपत्ति में जिन से उन के बैरी और उन के प्राण के गाहक उन्हें सकेती में डालेंगे हर एक अपने अपने संगी का मांस खावेगा ॥

१० तब उस बर्त्तन को उन पुरुषों के आगे जो तेरे साथ चलते थे तोड़ डाल । ११ और तू उन से कहियो कि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि मैं इस जाति को और इस नगर को ऐसा तोडूंगा जैसा यह कुम्हार के पात्र को फोड़ता है जो फिर सुधर नहीं हो सक्ता और लोग तुफ़त में गाड़ेंगे जब १२ लों गाड़ने का स्थान न रहे । परमेश्वर कहता है कि मैं इस स्थान को और इस में के बासियों को ऐसा करूंगा हां इस नगर को तुफ़त की नाईं बनाऊंगा । १३ और यरूसलम के घर और यहूदाह के राजाओं के घर तुफ़त की नाईं इन सारे घरों सहित जिन की छतों पर उन्हों ने स्वर्ग की सारी सेनाओं के लिये और उपरी देवों के लिये अर्घ्य किया और धूप जलाया अशुद्ध होंगे ॥

१४ तब यरमियाह तुफ़त से आया जिधर परमेश्वर ने उसे भविष्य कहने को भेजा था और परमेश्वर के मन्दिर के आंगन में खड़े होके सारे लोगों से १५ कहा । कि सेनाओं का परमेश्वर इसरा-एल का ईश्वर यों कहता है कि देख मैं इस नगर पर और इस में के सारे नगरों पर सारी बुराई जो मैं ने इस के बिरुद्ध उच्चारी है लाता हूं क्योंकि उन्हों ने अपने गले को कठोर किया है जिस्ते मेरे बचनों को न सुनें ॥

बीसवां पर्ब्ब ।

१ जब अमीर याजक के बेटे फ़सिहूर ने यरमियाह की भविष्य बातें सुनीं क्योंकि वह भी ईश्वर के मन्दिर का २ प्रधान था । तो फ़सिहूर ने यरमियाह भविष्यद्वक्ता को मारा और उसे काठ में डाल दिया जो बिनयमीन के ऊपर के फाटक में परमेश्वर के मन्दिर के लग था ॥

३ और दूसरे दिन यों हुआ कि जब फ़सिहूर ने यरमियाह को काठ से छोड़ दिया तब यरमियाह ने उस्से कहा कि परमेश्वर ने तेरा नाम फ़सिहूर नहीं रक्खा परन्तु मागोरमिस्साबीब अर्थात् ४ चारों ओर भय । क्योंकि परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं तुझे को अपने लिये और तेरे सारे मित्रों के लिये भय बनाता हूं और वे अपने बैरियों की तलवार से गिरेंगे और तेरी आंखें भी देखा करेंगी और सारे यहूदाह को मैं बाबुल के राजा के हाथ में सौंपूंगा और वह उन्हें बंधुआई में बाबुल को ले जायेगा और वहां उन्हें तलवार से घात ५ करेगा । और मैं इस नगर के सारे परा-क्रम को और इस के सारे परिश्रम को

और उन में के सारे बहुमूल्य को और यहूदाह के राजा के सारे भंडारों को उन के बैरियों के हाथ में सौंपूंगा और वे उन्हें लूटेंगे और उन्हें पकड़के बाबुल ६ को ले जायेंगे। और तू हे फसिहूर और सब जो तेरे घर में निवास करते हैं बंधुआई में जायेंगे और तू बाबुल में जाके वहां मरेगा और वहां गाड़ा जायेगा तू और तेरे सारे मित्र जिन से तू ने झूठा भविष्य कहा है॥

७ हे परमेश्वर तू ने मुझे मनाया है और मैं मान गया तू मुझ से बली हुआ और प्रबल हुआ है मैं प्रतिदिन सवांग बना हूं हर एक मुझे ठट्ठे में उड़ाता ८ है। क्योंकि जब जब मैं बोलूं और पुकारूंगा अंधेर और लूट मैं पुकारूंगा क्योंकि परमेश्वर का बचन प्रतिदिन मेरी निन्दा और ठट्ठे का कारण होता ९ है। तब मैं ने कहा कि मैं उस की चर्चा न करूंगा और उस के नाम से फिर न कहूंगा परन्तु उस का बचन मेरे हृदय में आग की तपन की नाईं था जो मेरी हड्डियों में बन्द था और मैं थांभने से थक गया और मैं न सका।

१० क्योंकि मैं ने बहुतों का अपवाद सुना है चारों ओर भय था संदेश देओ वे कहते हैं और हम संदेश देंगे मेरे सारे हित मेरे ठोकर खाने की बाट जोह रहते हैं और कहते हैं कि क्या जाने वह उसकाया जायेगा और हम उस पर प्रबल होंगे और उस्से अपना पलटा लेंगे॥

११ परन्तु परमेश्वर भयंकर पराक्रमी मेरी ओर है इस लिये मेरे सताऊ ठोकर खायेंगे और प्रबल न होंगे वे अति लज्जित हुए क्योंकि उन से कुछ बन न पड़ा उन के सनातन की लाज कभी १२ भुलाई न जायेगी। और हे सेनाओं के परमेश्वर जो धर्म्मी को परखता है गुर्दों और अन्तःकरण को देखता है मैं तेरा पलटा उन पर देखूंगा क्योंकि मैं ने अपना बाद तेरे आगे खोला है।

१३ परमेश्वर का गान करो परमेश्वर की स्तुति करो क्योंकि उस ने कुकर्म्मियों के हाथ से कंगाल के प्राण को छुड़ाया है॥

१४ मेरे जन्मदिन पर धिक्कार होवे जिस दिन में मेरी माता मुझे जनी उस १५ पर आशीष न होवे। उस जन पर धिक्कार जो यह कहते हुए मेरे पिता के पास यह संदेश लाया कि तेरे एक पुत्र उत्पन्न हुआ और उसे अत्यन्त १६ आनन्दित किया। और वह जन उन नगरों की नाईं होवे जिन्हें परमेश्वर ने उलट दिया और न पछताया बिहान को रोना पीटना सुने और मध्यान्ह को १७ चिल्लाना। क्योंकि उस ने मुझे कोख में से घात न किया अथवा मेरी माता समाधि होती और उस की कोख सदा १८ मुझ से गर्भिणी रहती। कोख से क्यों मैं बाहर निकला कि शोक और दुःख भोगूं और मेरे दिन लाज में बीत जायें॥

एक्कीसवां पर्ब्ब।

१ वह बचन जो परमेश्वर की ओर से यरमियाह के पास आया जब राजा सिदकयाह ने मलकियाह के बेटे फसिहूर को और मआसियाह याजक के बेटे सफनियाह को उस के पास कहला २ भेजा। कि परमेश्वर के आगे हमारे लिये बिन्ती कर क्योंकि बाबुल का राजा नबूखुदनजर हम से संग्राम करता है सो क्या जाने परमेश्वर अपने सारे आश्चर्य्य कार्य्य के समान हम से व्यवहार करे और वह हम्में से चला जाये॥

३ तब यरमियाह ने उन से कहा कि ४ सिदकयाह से यों कहो। कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि

देख मैं तुम्हारे संग्राम के हथियारों को जो तुम्हारे हाथ में हैं फेरूंगा जिन से तुम बाबुल के राजा से और कसदियों से जो भीत के बाहर से तुम्हें घेरे हैं लड़ते हो और मैं उन्हें इस नगर के ५ मध्य में एकट्ठा करूंगा। और मैं आप फैलाये हुए हाथ से और पराक्रमी भुजा से और रिस से और जलजलाहट और ६ बड़े कोप के साथ तुम से लड़ूंगा। और मैं इस नगर के निवासियों को क्या मनुष्य क्या पशु को मारूंगा और वे एक ७ बड़ी मरी से मरेंगे। और इस के पीछे परमेश्वर कहता है कि मैं यहूदाह के राजा सिदकयाह को और उस के सेवकों को और लोगों को और उन्हें जो इस नगर में छूटे हैं मरी से और तलवार से और अकाल से बाबुल के राजा नबूखुदनजर के हाथ में और उन के बैरियों के हाथ में और उन के प्राण के गाहकों के हाथ में सौंपूंगा और वह उन्हें तलवार की धार से मारेगा वह उन पर मया न करेगा और न छोड़ेगा और दया न करेगा॥

८ और इस जाति से कहियो कि परमेश्वर यों कहता है कि देखो मैं तुम्हारे आगे जीवन का मार्ग और मृत्यु का ९ मार्ग धरता हूं। जो इस नगर में रहेगा सो तलवार से और अकाल से और मरी से मरेगा परन्तु जो बाहर जायेगा और अपने को कसदियों को सौंपेगा जो तुम्हें चारों ओर घेरे हैं वही जीयेगा और अपने प्राण को लूट में १० पावेगा। क्योंकि मैं ने बुराई के लिये अपना मुंह इस नगर के बिरुद्ध किया है और भलाई के लिये नहीं परमेश्वर कहता है यह बाबुल के राजा के हाथ में सौंपा जायेगा और वह उसे आग से जलावेगा॥

और यहूदाह के राजा के घराने के ११ विषय में परमेश्वर का बचन सुनो। हे दाऊद के घराने परमेश्वर यों कहता १२ है कि बिहान को न्याय करो और अंधेरी के हाथ से लूटे हुए को छुड़ाओ न हो कि मेरा कोप आग के समान फूट निकले और बरे और तुम्हारी बुराई के कारण उस का बुझवैया कोई न होवे। देख हे तराई के बासी हे १३ चौगान की चटान परमेश्वर कहता है मैं तेरे बिरुद्ध हूं जो कहते हो कि हम पर कौन उतरेगा अथवा हमारे निवासों में कौन पैठेगा। और मैं तुम्हारी युक्ति १४ के फल के समान तुम्हें दण्ड देऊंगा परमेश्वर कहता है और उस के अरण्य में एक आग बारूंगा और वह उस के चारों ओर सब को भस्म करेगी॥

बाईसवां पर्ब्ब।

परमेश्वर ने यों कहा कि तू यहूदाह १ के राजा के घर को जा और वहां यह बचन कह॥

और बोल कि हे यहूदाह के राजा जो दाऊद के सिंहासन पर बैठा है परमेश्वर का बचन सुन तू और तेरे सेवक और तेरे लोग जो इन फाटकों से प्रवेश करते हैं। परमेश्वर यों कहता है कि ३ न्याय और बिचार करो और अंधेरियों के हाथ से सताये हुए को छुड़ाओ और परदेशी और अनाथों और रांडों से छल न करो और अंधेर से न सताओ और न इस स्थान में निर्दोष लोहू बहाओ। क्योंकि जो निश्चय तुम लोग इस बचन ४ के समान करोगे तो दाऊद के सिंहासन पर बैठवैये राजा रथों और घोड़ों पर चढ़े हुए इस घर के फाटकों में से भीतर जायेंगे वह और उस के सेवक और उस के लोग। परन्तु यदि तुम ५ लोग इन बातों को न मानोगे तो मैं

अपनी ही किरिया खाता हूं परमेश्वर कहता है कि निश्चय यह घर उजाड़ हो जायेगा ॥

६ क्योंकि यहूदाह के राजा के घराने के विषय में परमेश्वर यों कहता है कि मेरे लिये तू जिलिअद है और लुबनान की चोटी निश्चय मैं तुझे एक उजाड़ ७ और अबसाय नगर बनाऊंगा । और मैं तेरे बिरोध में नाशकों को भेजूंगा हर एक जन को अपना अपना हथियार लिये हुए और वे चुन चुनके तेरे देव-दारुओं को काटेंगे और आग में डालेंगे।

८ और बहुत जातिगण इस नगर के पास से जायेंगे और वे आपुस में कहेंगे कि परमेश्वर ने इस बड़े नगर पर यों क्यों ९ किया है । तब वे उत्तर देके कहेंगे इस लिये कि उन्हों ने परमेश्वर अपने ईश्वर की बाचा को त्यागा है और उपरी देवों की पूजा और सेवा किई ॥

१० मृतक के लिये बिलाप और शोक मत करो परन्तु उस के लिये बहुत रोओ जो चला गया है क्योंकि वह फिर न आवेगा और अपनी जन्मभूमि न ११ देखेगा । क्योंकि यहूदाह के राजा यूसियाह के बेटे सलूम के विषय में जो अपने पिता यूसियाह की सन्ती राज्य पर बैठा जो इस स्थान से निकल गया परमेश्वर यों कहता है कि वह इधर १२ फिर न आवेगा । परन्तु जहां वे उसे बन्धुआई में ले गये हैं तहां वह मरेगा और इस देश को फिर न देखेगा ॥

१३ हाय उस पर जो अधर्म्म से अपना घर और अंधेर से अपनी ऊपर की कोठरियां बनाता है और सेंत से अपने परोसी से काम कराता है और उसे १४ बनी नहीं देता । जो कहता है कि मैं अपने लिये बड़ा घर और ऊंची ऊंची कोठरियां बनाऊंगा जो अपने लिये खिड़कियां भी काटता है और देवदारु की लकड़ी से छत ढांपता है और सिन्दूर से रंगता है । क्या तू देवदारु से आप १५ को घेरके राज्य करेगा क्या तेरे पिता ने खा पीके न्याय और धर्म्म नहीं किया तब वह भाग्यमान हुआ । उस ने दुःखी १६ और दरिद्रों के बाद का पक्ष किया तब वह भाग्यमान था क्या यह तेरी पहिचान न थी परमेश्वर कहता है । क्योंकि तेरी आंखें और तेरा मन केवल १७ अपनी लालच पर है और निर्दोष लोहू बहाने पर और अंधेर पर और उत्पात पर ॥

इसी लिये परमेश्वर यहूदाह के राजा १८ यूसियाह के बेटे यहूयकीम के विषय में कहता है कि वे उस के लिये यह बिलाप न करेंगे कि हाय मेरे भाई और हाय बहिन वे उस के लिये यों बिलाप न करेंगे कि हाय प्रभु अथवा हाय उस का बिभव । वह गदहे के गड़ाव से १९ गाड़ा जायेगा और यरूसलम के फाटकों के बाहर घसीटा और फेंका जायेगा ॥

लुबनान पर जाके चिल्ला और बसन २० पर अपना शब्द उठा और घाटियों से पुकार क्योंकि तेरे सारे प्रेमी नाश हुए हैं । तेरे कुशल के समयों में मैं ने तुझ २१ से कहा पर तू ने कहा मैं न सुनूंगी तरुणाई से यही तेरी रीति थी क्योंकि तू ने मेरे शब्द को नहीं माना है । एक २२ झोंका तेरे सारे रखवालों को बहा ले जायेगा और तेरे मित्र बंधुआई में जायेंगे क्योंकि तब तू लज्जित हो जायेगी और अपनी सारी दुष्टता के कारण घबरा जायेगी । हे लुबनान की निवासिनी २३ जो देवदारुओं पर अपना बसेरा बनाती है जब तुझ पर पीड़ित स्त्री की नाईं पीड़ें लगेंगी तब तू कैसी दीन होगी ॥

परमेश्वर कहता है कि अपने जीवन २४

सोंह यद्यपि यहूदाह के राजा यहूयकीम का बेटा कुनियाह मेरे दहिने हाथ की अंगूठी होता तथापि मैं वहां से तुझे २५ निकालता । और मैं तुझे तेरे प्राण के गाहकों को सौंप देऊंगा और जिन से तू डरता है उन के हाथ में तुझे सौंप देऊंगा अर्थात् बाबुल के राजा नबूखुदनज़र के हाथ में और कसदियों के हाथ २६ में । और मैं तुझे और तेरी जननी को परदेश में निकाल फेंकूंगा जहां तुम उत्पन्न नहीं हुए और तहां मरोगे । २७ परन्तु जिस देश में उन्हों ने फिरने को मन लगाया है उस में फिर न आवेंगे । २८ क्या यह जन कुनियाह टूटी हुई घिनित मूर्त्ति है अथवा एक पात्र जिस्से कोई प्रसन्न नहीं वह और उस का बंश किस लिये बाहर निकाले गये और जिस देश से वे अज्ञान थे उस में फेंके गये ॥

२९ हे धरती हे धरती हे धरती परमेश्वर ३० का बचन सुन । परमेश्वर यों कहता है कि इस जन को निर्बंश लिख रक्खो यह जन अपने दिनों में भाग्यमान न होगा क्योंकि उस का कोई बंश दाऊद के सिंहासन पर बैठते हुए और यहूदाह पर फिर राज्य करते हुए भाग्यमान न होगा ॥

तेईसवां पर्ब्ब ।

१ उन गड़रियों पर संताप जो मेरी चराई की भेड़ों का नाश और छिन्न भिन्न २ करते हैं परमेश्वर कहता है । इस लिये परमेश्वर इसराएल का ईश्वर उन गड़रियों के बिषय में जो मेरी जाति को चराते हैं कहता है तुम ने मेरे झुंड को छिन्न भिन्न किया और उन्हें खेद दिया है और उन की रखवाली न किई देखो मैं तुम्हारे बुरे कार्य्यों के लिये तुम्हें प्रतिफल देता हूं परमेश्वर यों कहता ३ है । और मैं अपने झुंड के उबरे हुओं को सारे देशों से जहां जहां मैं ने उन्हें खदेड़ा है बटोरूंगा और उन्हीं के झुंड में उन्हें फिर लाऊंगा और वे फलवंत ४ होके बढ़ेंगे । और मैं उन के लिये गड़रियों को ठहराऊंगा जो उन्हें चरावेंगे और वे फिर न डरेंगे और न बिस्मित होंगे और उन पर घटी न पड़ेगी परमेश्वर कहता है ॥

५ देखो वे दिन आते हैं परमेश्वर कहता है जब मैं दाऊद के लिये एक धर्म्मी शाखा को उदय करूंगा और एक राजा राज्य करेगा और भाग्यमान होगा और देश में न्याय और धर्म्म करेगा । ६ उस के दिनों में यहूदाह बचाया जायेगा और इसराएल कुशल से रहेगा और इसी नाम से पुकारा जायेगा कि ७ परमेश्वर हमारा धर्म्म । इस लिये देखो वे दिन आवेंगे परमेश्वर कहता है जब कि वे फिर न कहेंगे कि परमेश्वर के जीवन सोंह जो इसराएल के संतान को ८ मिस्र देश से निकाल लाया । परन्तु परमेश्वर के जीवन सोंह जिस ने इसराएल के घराने के बंश को उत्तर देश से और सारे देशों से जहां जहां मैं ने उन्हें खेदा था निकाल लाया और उन्हें ले गया जिस्तें वे अपनी ही भूमि में बास करें ॥

९ भविष्यद्वक्तों के बिषय में मेरा अन्तःकरण मुझ में चूर हो रहा है मेरी सारी हड्डियां हिलती हैं और परमेश्वर के कारण और उस के पवित्र बचनों के कारण मैं मतवाले जन की नाईं हुआ हूं और उस जन की नाईं जिसे मद्य ने १० बश में किया । क्योंकि देश परस्त्रीगामियों से भरा है कि स्राप करने के कारण देश बिलाप करता है और अरण्य की चराई झुरा गई और उन की दौड़ दुष्टता है और उन की सामर्थ्य ठीक

११ नहीं। क्योंकि भविष्यद्वक्ता और याजक दोनों अशुद्ध हैं हां मैं ने उन की दुष्टता को अपने मन्दिर में पाया है परमेश्वर १२ कहता है। इस लिये उन का मार्ग उन के लिये फिसलहा होगा अंधियारे में वे ढकेले जायेंगे और उस में गिरेंगे क्योंकि मैं उन पर बुराई लाऊंगा अर्थात् उन के दण्ड पाने का बरस परमेश्वर कहता है॥

१३ और मैं ने समरून के भविष्यद्वक्तों में मूर्खता देखी उन्हों ने बअल के नाम से भविष्य कहा और मेरे इसराएल लोगों १४ को भुलाया है। और यरूसलम के भविष्यद्वक्तों में मैं ने एक भयानक वस्तु देखी है वे परस्त्रीगमन करते और झूठ से चलते वे दुष्टों के हाथों को भी दृढ़ करते हैं जिस्तें कोई अपनी दुष्टता से न फिरे वे सब के सब मेरे लिये सदूम की नाईं और उस के निवासी अमूरः की नाईं हुए हैं॥

१५ इस लिये सेनाओं का परमेश्वर भविष्यद्वक्तों के विषय में यों कहता है कि देखो मैं उन्हें नागदौना खिलाऊंगा और पित्त का जल पिलाऊंगा क्योंकि यरूसलम के भविष्यद्वक्तों से हठ सारे देश में फैला है॥

१६ सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि भविष्यद्वक्तों के बचनों को मत सुनो जो तुम्हें भविष्य कहते हैं वे तुम से वृथा कराते हैं वे अपने ही मन के दर्शन उच्चारते हैं परमेश्वर के मुंह के १७ समान नहीं कहते। वे उन को जो मुझे तुच्छ जानते हैं कहा करते हैं कि परमेश्वर ने कहा है कि तुम पर कुशल होगा और हर एक जन को जो अपने अपने मन की कठोरता के समान चलता है वे कहते हैं कि तुम पर कभी बुराई १८ न आवेगी। क्योंकि परमेश्वर के मंत्र में कौन खड़ा हुआ है और किस ने उस की बात को देखा सुना है अथवा किस ने सुरत लगाके उस के बचन को सुना १९ है। देख परमेश्वर का बवंडर वह क्रोध से निकलता है हां एक भयानक बवंडर २० जो दुष्टों के सिर पर उतरेगा। परमेश्वर की रिस न फिरेगी जब लों वह कार्य्य न करे और जब लों वह अपने मन के ठहराये हुए को पूरा न करे पिछले दिनों में तुम लोग अच्छी रीति से बूझोगे॥

२१ मैं ने इन भविष्यद्वक्तों को नहीं भेजा परन्तु वे आप से आप दौड़ गये मैं ने उन से नहीं कहा पर उन्हों ने २२ आप से आप भविष्य कहा। परन्तु जो वे मेरे मंत्र में खड़े होते तो वे मेरे लोगों को मेरे बचन सुनाते और उन्हें उन के बुरे मार्ग से और उन के कार्य्यों की दुष्टता से फिराते॥

२३ परमेश्वर कहता है कि क्या मैं समीप २४ का ईश्वर हूं और दूर का ईश्वर नहीं। परमेश्वर कहता है कि क्या कोई अपने को ऐसे गुप्त स्थानों में छिपा सक्ता है जो मैं उसे न देखूं परमेश्वर कहता है कि क्या स्वर्ग और पृथिवी मुझ से परिपूर्ण नहीं हैं॥

२५ मैं ने सुना है जो भविष्यद्वक्तों ने कहा है जो यह कहके मेरे नाम से झूठा भविष्य कहते हैं कि मैं ने स्वप्न देखा २६ है स्वप्न देखा है। कब लों यह भविष्यद्वक्तों के मन में होगा जो झूठ भविष्य कहते हैं हां वे अपने मन के छल के २७ भविष्यद्वक्ते हैं। वे जुगत करते कि अपने स्वप्नों से जिन्हें हर एक अपने अपने परोसी के आगे बर्णन करता है मेरे लोगों से मेरे नाम को भुलवाते जैसा उन के पितरों ने मेरे नाम को बअल के २८ कारण से बिसराया। जिस भविष्यद्वक्ता

के पास स्वप्न है सो स्वप्न कहे परन्तु जिस के पास मेरा बचन है सो मेरे बचन को सच्चाई से कहे गेहूं को भूसे से क्या काम परमेश्वर कहता है ।
२९ मेरे बचन का पराक्रम क्या आग के समान नहीं परमेश्वर कहता है और हथौड़ी की नाईं नहीं जो चटान को टुकड़े टुकड़े करती है ॥
३० इस लिये देख मैं भविष्यद्वक्तों के बिरुद्ध हूं परमेश्वर कहता है जो हर एक अपने अपने परोसी से मेरे बचनों
३१ को चुराते हैं । देख मैं उन भविष्यद्वक्तों के बिरुद्ध हूं परमेश्वर कहता है जो अपनी ही जीभ से कहते हैं कि उस ने
३२ कहा है । देख मैं उन के बिरुद्ध हूं परमेश्वर कहता है जो झूठे स्वप्नों से भविष्य कहते हैं और उन्हें बर्णन करते हैं और अपनी झुठाई और हलकापन से मेरे लोगों को भटकाते हैं परन्तु मैं ने उन्हें नहीं भेजा और न उन्हें आज्ञा दिई इस लिये इन लोगों को कुछ लाभ नहीं परमेश्वर कहता है ॥
३३ और जब ये लोग अथवा भविष्यद्वक्ता अथवा याजक यह कहके तुझ से पूछें कि परमेश्वर का बोझ क्या है तब उन से कहियो क्या बोझ यह कि मैं ने तुम को त्यागा परमेश्वर कहता है ।
३४ और भविष्यद्वक्ता और याजक और लोग जो कहेंगे कि परमेश्वर का बोझ मैं उसी जन को और उस के घराने को
३५ दंड देऊंगा । हर एक मनुष्य अपने अपने परोसी से और अपने अपने भाई से यों कहेगा कि परमेश्वर ने क्या उत्तर दिया है और परमेश्वर ने क्या कहा है ।
३६ परन्तु तुम परमेश्वर का बोझ फिर न कहोगे क्योंकि हर एक का बचन उसी का बोझ होगा क्योंकि जीवते ईश्वर सेनाओं के परमेश्वर हमारे ईश्वर के बचन को तुम ने बिगाड़ा है । तू भवि- ३७ ष्यद्वक्ता से यों कह कि परमेश्वर ने तुम्हें क्या उत्तर दिया है और परमेश्वर ने क्या कहा है । परन्तु जो तुम लोग ३८ कहोगे कि परमेश्वर का बोझ तो इस लिये परमेश्वर यों कहता है कि तुम लोग जो यह बचन कहते हो कि परमेश्वर का बोझ और मैं ने यह कहके तुम्हारे पास भेजा कि तुम परमेश्वर का बोझ मत कहो । इस लिये देख मैं तुम्हें ३९ सर्बथा उठा लेऊंगा और मैं तुम्हें उस नगर सहित जो मैं ने तुम्हें और तुम्हारे पितरों को दिया था अपने आगे से त्याग करूंगा । और मैं तुम पर सनातन ४० की निन्दा और नित का अपमान लाऊंगा जो भुलाया न जायेगा ॥

चौबीसवां पर्ब्ब ।

परमेश्वर ने मुझे दिखाया और देखो १ दो टोकरी गूलर परमेश्वर के मन्दिर के आगे धरे थे उस के पीछे कि बाबुल का राजा नबूखुदनजर यहूदाह के राजा यहूयकीम के बेटे यकुनियाह को और यहूदाह के अध्यक्षों को और कार्य्य-कारियों को और अस्त्रकारकों को यरू-सलम से बाबुल को बंधुआई में ले गया । एक टोकरी में अच्छे से अच्छे २ गूलर थे पहिले पक्के हुए गूलर की नाईं और दूसरी टोकरी में गूलर बुरे से बुरे थे जो बुराई के मारे खाये न जा सकें । तब परमेश्वर ने मुझ से कहा कि हे ३ यरमियाह तू क्या देखता है और मैं ने कहा कि गूलर अच्छे गूलर बहुत ही अच्छे और बुरे बहुत ही बुरे जो बुराई के मारे खाये नहीं जा सकें ॥

तब परमेश्वर का बचन यह कहते ४ हुए मेरे पास पहुंचा । कि परमेश्वर ५ इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि मैं इन अच्छे गूलरों की नाईं यहूदाह

की अंधुआई को पहचानूंगा जिन्हें मैं ने इस स्थान से कसदियों के देश में ६ भलाई के लिये भेजा है। और मैं भलाई के लिये उन पर दृष्टि करूंगा और उन्हें इस देश में फिर लाऊंगा और उन्हें बनाऊंगा और ढा न देऊंगा और ७ उन्हें लगाऊंगा पर न उखाडूंगा। और मैं उन्हें मन देऊंगा कि मुझे पहिचानें कि मैं परमेश्वर हूं और वे मेरी जाति होंगे और मैं उन का ईश्वर हूंगा क्योंकि वे मेरी ओर अपने सारे मन से फिरेंगे॥

८ परन्तु बुरे गूलर जो बुराई के मारे खाये नहीं जा सक्ते निश्चय परमेश्वर यों कहता है कि मैं यहूदाह के राजा सिदकयाह को और उस के अध्यक्षों को और यरूसलम के उबरे हुओं को जो इस देश में छूटे हैं और जो मिस्र के ९ देश में बसते हैं ऐसा ही करूंगा। और मैं उन्हें जगत के सारे राज्यों में झंझट और क्लेश के लिये सौंपूंगा कि सब स्थानों में जहां मैं उन्हें खेदूंगा वहां वे निन्दा और कहावत और ठट्ठा और स्राप १० के लिये होवें। और मैं उन में तलवार और अकाल और मरी यहां लों भेजूंगा कि वे उस देश पर से जो मैं ने उन्हें और उन के पितरों को दिया है मिट जायें॥

पचीसवां पर्व्व ।

वह बचन जो यहूदाह के राजा यूशियाह के बेटे यहूयकीम के चौथे बरस में जो बाबुल के राजा नबूखुदनजर का पहिला बरस था यहूदाह के सारे लोगों के विषय में यरमियाह के पास २ आया। जिसे यरमियाह भविष्यद्वक्ता ने यह कहके यहूदाह के सारे लोगों को और यरूसलम के सारे बासियों को कहा॥

३ यहूदाह के राजा अम्मून के बेटे यूशियाह के तेरहवें बरस से आज लों अर्थात् तेईस बरस लों परमेश्वर का बचन मेरे पास आया और मैं ने तुम्हें कहा तड़के उठ उठके कहा पर तुम ४ लोगों ने न माना। और परमेश्वर ने अपने सारे भविष्यद्वक्ता सेवकों को कहके तुम्हारे पास भेजा तड़के उठ उठके भेजा परन्तु तुम ने न सुना और सुन्ने के लिये अपना कान न झुकाया। यह कहते हुए कि हर एक अपने अपने बुरे मार्ग से और अपने कार्य्यों की दुष्टता से फिरो और उस देश में बसो जिसे परमेश्वर ने तुम्हें और तुम्हारे पितरों को सदा के लिये दिया है। और उपरी देवों के पीछे उन की सेवा और पूजा करने को मत जाओ और अपने हाथों के कार्य्य से मुझे रिस मत दिलाओ और मैं तुम्हें दुःख ७ न देऊंगा। परन्तु तुम ने मेरी न सुनी परमेश्वर कहता है जिस्तें तुम अपने दुःख के लिये अपने ही हाथों के कार्य्य से मुझे रिस दिलाओ॥

८ इस लिये सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है इस कारण कि तुम लोगों ९ ने मेरी बातों को नहीं माना। देखो मैं उत्तर के सारे घरानों को और अपने दास बाबुल के राजा नबूखुदनजर को लेके भेजता हूं परमेश्वर कहता है और इस देश के और उस के निवासियों के और चारों ओर के इन सारे देशगणों के बिरुद्ध लाऊंगा और उन्हें सर्व्वथा नाश करूंगा और उन्हें एक आश्चर्य्यित और फुफकार और नित का उजाड़ बनाऊंगा॥

१० और मैं उन में से आनन्द का शब्द और आह्लाद का शब्द दुल्हा और दुल्हिन का शब्द चक्की का शब्द और दीपक की ज्योति मिटाऊंगा॥

११ और यह सारा देश एक उजाड़ और आश्चर्य्यित होगा और ये जातिगण सत्तर बरस लों बाबुल के राजा की सेवा करेंगे ॥

१२ परमेश्वर कहता है कि यों होगा जब सत्तर बरस पूरे होंगे तब मैं बाबुल के राजा और उसी जातिगण को और कसदियों के देश को उन के पाप का दंड देऊंगा और उसे सनातन का उजाड़ १३ करूंगा । और अपने सारे बचनों को जो मैं ने उस के विषय में कहा है सब जो इस पुस्तक में लिखा है जो यरमियाह ने जातिगणों के विषय में भविष्य कहा १४ है मैं उसी देश पर लाऊंगा । क्योंकि उन से अर्थात् इन्हीं से बहुत से जातिगण और बड़े बड़े राजा सेवा लेंगे और उन की क्रिया के समान और उन के हाथ के कार्य्य के समान मैं उन्हें पलटा देऊंगा ॥

१५ क्योंकि परमेश्वर इसराएल के ईश्वर ने मुझ से यों कहा कि मेरे हाथ से इस कोप की मदिरा के कटोरे को ले और उसे सारे जातिगणों को जिन के पास मैं तुझे भेजूंगा पीने को दे । १६ और वे पीयेंगे और डगमगावेंगे और उन्मत्त होंगे उस तलवार के कारण जो मैं उन पर भेजने पर हूं ॥

१७ तब मैं ने उस कटोरे को परमेश्वर के हाथ से लेके उन सारे देशगणों को जिन के पास परमेश्वर ने मुझे भेजा था १८ पीने को दिया । अर्थात् यरूसलम और यहूदाह के नगरों और उस के राजाओं और उस के अध्यक्षों को कि वह उन्हें उजाड़ और आश्चर्य्यित और फुफकार और स्राप बनावे जैसा आज के दिन है १९ मिस्र के राजा फिरऊन और उस के दासों और उस के अध्यक्षों और उस के २० सारे लोगों को । और सारे मिले जुले लोगों और ऊज़ के देश के सारे राजाओं और फिलिस्तानियों के देश के सारे राजाओं और असकलून और अज्जः और अकरून और अशदूद के उबरे हुओं २१ को । अदूम और मोआब और अम्मून २२ के संतानों को । और सूर के सारे राजाओं और सैदा के सारे राजाओं को और समुद्र के उस पार के टापुओं के २३ सारे राजाओं को । ददान और तैमा और बूज और सभों को जो दाढ़ी के २४ कोनों को मुड़वाते हैं । और अरब के सारे राजाओं और जंगल के मिले जुले निवासी लोगों के सारे राजाओं को । २५ और ज़िमरी के सारे राजाओं और ऐलाम के सारे राजाओं और मादी के सारे २६ राजाओं को । और उत्तर के सारे राजाओं को जो निकट हैं और दूर हैं एक दूसरे के साथ और पृथिवी के सारे राज्यों को जो भूमि पर हैं और शेशाक का राजा उन के पीछे पीयेगा ॥

२७ और तू उन से कहना कि सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि उस तलवार के आगे जो मैं तुम पर भेजता हूं पीयो और मतवाले होओ और छांट करो और ऐसा गिरो कि फेर न उठो ॥

२८ और यों होगा कि जो वे पीने को तेरे हाथ से कटोरा लेने को नाह करें तो तू उन से कहियो कि सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि तुम निश्चय २९ पियोगे । क्योंकि देखो मैं उस नगर पर जो मेरे नाम से कहा जाता है बुराई लाने को आरंभ करता हूं और क्या तुम सर्वथा अदंडित रहोगे तुम अदंडित न रहोगे क्योंकि मैं पृथिवी के सारे निवासियों के विरुद्ध तलवार को लाता हूं सेनाओं का परमेश्वर कहता है ॥

३० और तू इन सारी बातों को उन से भविष्य कह और उन से बोल कि परमेश्वर ऊपर से गर्जेगा और अपने पवित्र निवास से अपने शब्द को उच्चारेगा वह अपने चैनस्थान के विरुद्ध गर्जेगा वह दाख के लताड़नेहारों की नाईं पृथिवी के सारे निवासियों के विरुद्ध ललकारेगा। ३१ पृथिवी के अन्त लों हौरा पहुंच गया है क्योंकि परमेश्वर का झगड़ा देशगणों से है वह सारे मनुष्यों का विचार करेगा और दुष्टों को तलवार के बश में सौंपेगा परमेश्वर कहता है॥

३२ परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर यों कहता है कि देखो जाति से जाति पर बुराई निकलती है और पृथिवी के अंतों ३३ से एक बड़ा बवंडर उठेगा। और उस दिन परमेश्वर के जुझाये हुए पृथिवी के एक खूंट से पृथिवी के दूसरे खूंट लों होंगे उन के लिये बिलाप न किया जायेगा और वे एकट्ठे न किये जायेंगे और न गाड़े जायेंगे वे भूमि पर घूर की ३४ नाईं होंगे। हे गड़रियो बिलाप करके रोओ और हे झुंड के प्रधानो राख में लोटो क्योंकि तुम्हारे जूझने के और छिन्न भिन्न होने के दिन पूरे हुए और तुम ३५ बहुमूल्य पात्र के समान गिरोगे। और भागने के उपाय गड़रियों से और बचने के उपाय झुंड के प्रधानों से कट जायेंगे। ३६ गड़रियों के चिल्लाने का और झुंड के प्रधान के बिलाप करने का शब्द क्योंकि परमेश्वर उन की चराई को उजाड़ता ३७ है। और परमेश्वर के भयंकर कोप के ३८ मारे कुशल के निवास उजड़ गये। सिंह के समान उस ने अपना लुकान छोड़ा है क्योंकि उस के मरा कोप के मारे और उत्कट ज्वलन के मारे उन का देश एक उजाड़ हुआ है॥

छब्बीसवां पर्व्व।

१ यहूदाह के राजा यूसियाह के बेटे यहूयकीम के राज्य के आरंभ में यह कहते हुए परमेश्वर का बचन पहुंचा॥

२ परमेश्वर यों कहता है कि परमेश्वर के मन्दिर के आंगन में खड़ा हो और यहूदाह के सारे नगरों से जो परमेश्वर के मन्दिर में सेवा करने को आते हैं वे सारी बातें जो मैं ने तुझे कहने को आज्ञा किई हैं उन्हें कह बात भर मत घटा। ३ क्या जाने वे सुनें और हर एक जन अपने अपने कुमार्ग से फिरे जिस्तें मैं उस बुराई से पछताऊं जो मैं उन के कुकर्म्मों के कारण से उन पर करने को ठहराता हूं। ४ और तू उन से यह कह कि परमेश्वर यों कहता है कि जो तुम लोग मेरी न सुनोगे कि मेरी व्यवस्था पर चलो जो मैं ने तुम्हारे आगे रक्खी। ५ जिस्तें मेरे सेवक भविष्यद्वक्तों के बचन सुनो जिन्हें मैं तुम्हारे पास भेजता हूं तड़के उठके भेजा परन्तु तुम ने नहीं ६ माना है। तो मैं इस घर को सैला की नाईं बनाऊंगा और पृथिवी के सारे जातिगणों में मैं इस नगर को स्रापित करूंगा॥

७ और याजक और भविष्यद्वक्ता और सारे लोगों ने यरमियाह को ईश्वर के मन्दिर में यह बचन कहते सुना। ८ और यों हुआ कि जब यरमियाह सब बातें कह चुका जो परमेश्वर ने उसे सारे लोगों से कहने को आज्ञा किई थीं तब याजकों ने और भविष्यद्वक्तों ने और सारे लोगों ने उसे पकड़के कहा कि तू निश्चय ९ मारा जायेगा। तू ने यह कहके परमेश्वर के नाम से क्यों भविष्य कहा है कि यह मन्दिर सैला की नाईं होगा और यह नगर बिना निवासी उजाड़ किया जायेगा और सारे लोग परमेश्वर

के मन्दिर में यरमियाह के बिरुद्ध बटुर गये ॥

१० जब यहूदाह के अध्यक्षों ने ये बातें सुनीं तब वे राजा के घर से परमेश्वर के मन्दिर में चढ़ गये और परमेश्वर के मन्दिर के नये फाटक की पैठ में बैठ

११ गये। तब याजकों और भविष्यद्वक्तों ने अध्यक्षों से और सारे लोगों से कहा कि यह जन मारे जाने के योग्य है क्योंकि उस ने इस नगर के विषय में भविष्य कहा है जैसा तुम ने अपने अपने कानों से सुना है ॥

१२ तब यरमियाह सारे अध्यक्षों और सारे लोगों से कहके बोला कि जो सारी बातें तुम लोगों ने सुनी हैं सो परमेश्वर ने इस मन्दिर के और इस नगर के विषय में मुझे भविष्य कहने

१३ को भेजा है। परन्तु अब अपने अपने मार्गों और चालों को सुधारो और परमेश्वर अपने ईश्वर का शब्द मानो और परमेश्वर उस बुराई से जो उस ने तुम्हारे

१४ बिरुद्ध में कही है पछतावेगा। और मैं जो हूं देखो मैं तुम्हारे बश में हूं जो तुम्हारी दृष्टि में भला और ठीक होवे

१५ सो मुझ से करो। केवल निश्चय जान रक्खो जो तुम लोग मुझे घात करोगे तो निर्दोष लोहू को अपने ऊपर और इस नगर पर और उस के बासियों पर लाओगे क्योंकि परमेश्वर ने निश्चय मुझे तुम्हारे पास भेजा है कि तुम्हारे कानों में ये सारी बातें कहूं ॥

१६ तब अध्यक्षों ने और सारे लोगों ने याजकों से और भविष्यद्वक्तों से कहा कि यह जन मारे जाने के योग्य नहीं क्योंकि इस ने परमेश्वर हमारे ईश्वर के नाम से हमें कहा है ॥

१७ तब देश के कितने प्राचीनों ने भी उठके लोगों की सारी सभा से कहा।

१८ मोरासथी मीकायाह ने यहूदाह के राजा हिजकियाह के दिनों में भविष्य कहा और यहूदाह के सारे लोगों से यह कहा कि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि सैहून खेत की नाईं जोता जायेगा और यरूसलम ढेर ढेर होगा और इस घर का पर्व्वत बन के ऊंचे ऊंचे स्थानों

१९ की नाईं होगा। क्या यहूदाह के राजा हिजकियाह ने और सारे यहूदाह ने उसे घात किया उस ने क्या परमेश्वर को डरके उस की कृपा न चाही और परमेश्वर उस बुराई से पछताया जो उस ने उन के बिरुद्ध उच्चारी थी परन्तु हम लोग अपने प्राणों पर बड़ी बुराई लाते हैं ॥

२० और भी एक जन था जिस ने परमेश्वर के नाम से भविष्य कहा करयतुलयअरमी से समऐयाह के बेटे ऊरियाह जिस ने इस नगर और इस देश के बिरुद्ध यरमियाह की सारी बातों के

२१ समान भविष्य कहा। और जब यहूयकीम राजा और उस के सारे महतजन और सारे अध्यक्षों ने उस की बातें सुनीं तब राजा ने उसे घात करने चाहा परन्तु ऊरियाह सुनके डर गया और मिस्र

२२ को भागा। परन्तु यहूयकीम राजा ने मिस्र में मनुष्यों को अर्थात् अकबूर के बेटे अलनसन को और उस के साथ

२३ कितने जनों को भेजा। और वे मिस्र से ऊरियाह को निकाल लाये और उसे यहूयकीम राजा के पास पहुंचाया जिस ने उसे तलवार से घात किया और उस की लोथ को लोगों के सन्तान की

२४ समाधिस्थान में फेंक दिया। परन्तु साफन के बेटे अखिकाम का हाथ यरमियाह पर था जिस्तें वह घात के लिये लोगों के हाथ में सौंपा न जाये ॥

सत्ताईसवां पर्ब्ब ।

१ यहूदाह के राजा यूसियाह के बेटे यहूयकीम के राज्य के आरंभ में परमेश्वर का बचन यरमियाह के पास यह कहता हुआ पहुंचा ॥

२ परमेश्वर ने मुझ से यों कहा है कि तू अपने लिये बंधन और जूआ बना ३ और उन्हें अपने गले पर धर । और उन्हें अदूम के राजा के पास और मोआब के राजा के पास और अम्मून के सन्तान के राजा और सूर के राजा के पास और सैदा के राजा के पास दूतों के हाथ से जो यहूदाह के राजा सिदकियाह के पास यरूसलम में आये ४ हैं भेज । और उन के स्वामियों के पास यह संदेश भेज कि सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि तुम लोग अपने अपने प्रभुओं से यह ५ कहो । कि मैं ने पृथिवी को और मनुष्यों को और पशुन को जो पृथिवी पर हैं अपने बड़े पराक्रम से और अपनी बढ़ाई हुई भुजा से सिरजा है और जिसे मैं ने ६ चाहा उसे दिया है । और अब मैं ने इन सारे देशों को अपने दास बाबुल के राजा नबूखुदनजर के हाथ में दिया है और उस की सेवा के लिये मैं ने खेत के पशुन को भी उस के बश में किया ७ है । और सारे जातिगण उस की और उस के बेटे की और उस के पोते की सेवा करेंगे जब लों उस के देश का समय हां उसी का न आवे और बहुत से जातिगण और बड़े बड़े राजा उस्से ८ सेवा लेंगे । और ऐसा होगा कि जो जातिगण और राज्य बाबुल के राजा नबूखुदनजर की सेवा न करेगा और अपना गला बाबुल के राजा के जूआ तले न रक्खेगा परमेश्वर कहता है मैं उसी जातिगण पर तलवार से और अकाल से और मरी से दंड भेजूंगा जब लों मैं उस के हाथ से उन्हें नाश न करूं ॥

९ और तुम अपने भविष्यद्वक्तों की और अपने दैवज्ञों की और अपने स्वप्न व्यवहारियों की और अपने गणकों की और मोहकों की न सुनो जो तुम से कहते हैं कि तुम बाबुल के राजा की सेवा न करोगे । १० क्योंकि वे तुम्हारे आगे मिथ्या भविष्य कहते हैं जिस्तें तुम्हें तुम्हारे देश से दूर करें और मैं तुम्हें बाहर खेद देऊं और तुम नष्ट हो जाओ । ११ परन्तु जो जातिगण अपने गले को बाबुल के राजा के जूए तले धरेगा और उस की सेवा करेगा परमेश्वर कहता है कि मैं उसे उसी के देश में कुशल से रहने देऊंगा और वह उस में जोते बोवेगा और उस में बसेगा ॥

१२ और इन सारी बातों के समान मैं ने यहूदाह के राजा सिदकियाह से कहा कि अपने अपने गलों को बाबुल के राजा के जूए तले लाओ और उस की और उस के लोगों की सेवा करो और १३ जीते रहो । क्यों तुम तलवार से और अकाल से और मरी से मारे जाओगे तू और तेरे लोग परमेश्वर के बचन के समान जो उस ने उस जातिगण के विषय में कहा है जो बाबुल के राजा की सेवा करेगा । १४ और भविष्यद्वक्तों की बातों को जो तुम से कहते हैं कि तुम बाबुल के राजा की सेवा न करोगे मत मानियो क्योंकि वे तुम से मिथ्या १५ भविष्य कहते हैं । क्योंकि परमेश्वर कहता है कि मैं ने उन्हें नहीं भेजा है परन्तु वे मेरे नाम से मिथ्या भविष्य कहते हैं जिस्तें मैं तुम्हें खेद देऊं और तुम लोग और भविष्यद्वक्ते जो तुम्हें भविष्य कहते हैं नष्ट हो जाओ ॥

१६ और मैं ने याजकों और इन सारे

लोगों से यह बचन कहा कि परमेश्वर यों कहता है कि तुम लोग अपने भविष्यद्वक्तों की बातें मत मानियो जो तुम से कहते हैं कि देखो परमेश्वर के मन्दिर के पात्र थोड़े दिन के पीछे बाबुल से फिर लाये जायेंगे क्योंकि वे
१७ तुम से झूठा भविष्य कहते हैं। उन की बात मत सुनो बाबुल के राजा की सेवा करो और जीओ यह नगर किस
१८ लिये उजाड़ हो जाये। परन्तु यदि वे भविष्यद्वक्ता होवें और परमेश्वर का बचन उन के पास होवे तो वे सेनाओं के परमेश्वर से बिन्ती करें कि जो पात्र परमेश्वर के मन्दिर में और यहूदाह के राजा के घर में और यरूसलम में छूटे हैं बाबुल को जाने न पावें॥

१९ क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है उन खंभों के बिषय और उस समुद्र के बिषय और उन आधारों के बिषय और और पात्रों के बिषय में जो
२० इस नगर में रह गये हैं। जिन्हें बाबुल का राजा नबूखुदनजर न ले गया था जब वह यहूदाह के राजा यहूयकीम के बेटे यकुनियाह को और यहूदाह और यरूसलम के सारे कुलीनों को यरूसलम से बाबुल को बंधुआई में ले गया।
२१ क्योंकि उन पात्रों के बिषय में जो परमेश्वर के मन्दिर में और यहूदाह के राजा के घर में और यरूसलम में बच रहे हैं सेनाओं का परमेश्वर इसराएल
२२ का ईश्वर यों कहता है। कि वे बाबुल में पहुंचाये जायेंगे और जब लों मैं उन पर दृष्टि न करूं तब लों वे वहां रहेंगे परमेश्वर कहता है उस के पीछे मैं उन्हें फिर लाऊंगा और इस स्थान में पहुंचाऊंगा॥

अट्ठाईसवां पर्व्व।

१ और उसी बरस में यहूदाह के राजा सिदकियाह के राज्य के आरंभ में चौथे बरस के पांचवें मास में ऐसा हुआ कि जिबऊनीअजूर के बेटे हनानियाह भविष्यद्वक्ता ने परमेश्वर के मन्दिर में याजकों के और सारे लोगों के आगे
२ मुझ से कहा। कि सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि मैं ने बाबुल के राजा का जूआ
३ तोड़ डाला है। परमेश्वर के मन्दिर के सारे पात्र जिन्हें बाबुल का राजा नबूखुदनजर इस स्थान से बाबुल को ले गया मैं उन्हें दो बरस के भीतर भीतर
४ इस स्थान में फिर लाऊंगा। और मैं यहूदाह के राजा यहूयकीम के बेटे यकुनियाह को और यहूदाह के सारे बंधुओं को जो बाबुल में पहुंचाये गये मैं इस स्थान में फिर लाऊंगा परमेश्वर कहता है क्योंकि बाबुल के राजा के जूए को तोड़ूंगा॥

५ तब यरमियाह भविष्यद्वक्ता ने याजकों के और सारे लोगों के आगे जो परमेश्वर के मन्दिर में खड़े थे हनानियाह भविष्यद्वक्ता से कहा।
६ और यरमियाह भविष्यद्वक्ता ने कहा आमीन परमेश्वर ऐसा ही करे परमेश्वर तेरी बातों को पूरा करे जिन का तू ने भविष्य कहा कि परमेश्वर के घर के पात्रों को और सारे बंधुओं को बाबुल
७ से इस स्थान में फिर लावे। तिस पर भी यह बचन सुन जो मैं तेरे कानों में और सारे लोगों के कानों में कहता हूं।
८ भविष्यद्वक्तों ने भी जो मुझ से और तुझ से आगे प्राचीन समय में थे बहुत से देशों के और बड़े बड़े राज्यों के बिषय में संग्राम और बिपत्ति और मरी का
९ संदेश दिया था। जो भविष्यद्वक्ता कुशल का भविष्य कहेगा उस भविष्यद्वक्ता के बचन के पूरे होने से जाना

आवेगा कि निश्चय परमेश्वर ने उसे भेजा है ॥

१० तब हननियाह भविष्यद्वक्ता ने यरमियाह भविष्यद्वक्ता के गले पर से जूआ
११ उतारके तोड़ डाला । और हननियाह ने सारे लोगों के आगे यह कहा कि परमेश्वर यों कहता है कि दो बरस के भीतर भीतर मैं इसी रीति से बाबुल के राजा नबूखुदनजर का जूआ सारे देशगणों के गले से तोडूंगा तब यरमियाह भविष्यद्वक्ता अपने मार्ग चला गया ॥

१२ जब कि हननियाह भविष्यद्वक्ता ने यरमियाह भविष्यद्वक्ता के गले पर से जूआ तोड़ा था तब यह कहते हुए परमेश्वर का बचन यरमियाह के पास
१३ पहुंचा । कि जा और हननियाह से कह परमेश्वर यों कहता है कि तू ने तो लकड़ी के जूओं को तोड़ा है परन्तु उस की संती तू लोहे के जूए बना ।
१४ क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि मैं ने इन सारे देशगणों के गले पर लोहे का जूआ रक्खा है जिस्तें वे बाबुल के राजा नबूखुदनजर की सेवा करें और वे उस की सेवा करेंगे और मैं ने चौगान के पशुन को भी उसे दिया है ॥

१५ और यरमियाह भविष्यद्वक्ता ने हननियाह भविष्यद्वक्ता से भी कहा कि हे हननियाह सुन परमेश्वर ने तुझे नहीं भेजा है परन्तु तू ने इन लोगों को झूठ
१६ की प्रतीति कराई है । इस लिये परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं तुझे भूमि पर से फेंकता हूं तू इसी बरस मर जायेगा क्योंकि तू ने परमेश्वर से
१७ फिर जाने को कहा है । और इसी बरस के सातवें मास में हननियाह भविष्यद्वक्ता मर गया ॥

उंतीसवां पर्व्व ।

१ और ये उस पत्री की बातें हैं जिसे यरमियाह भविष्यद्वक्ता ने यरूसलम से प्राचीनों के बचे हुओं को जो बंधुआई में गये थे और याजकों और भविष्यद्वक्तों को और उन सारे लोगों को जिन्हें नबूखुदनजर यरूसलम से बाबुल की बंधुआई में ले गया
२ था । उस के पीछे कि यकुनियाह राजा और रानी और नपुंसक और यहूदाह और यरूसलम के अध्यक्ष और बढ़ई और
३ लोहार यरूसलम से चले गये । साफन के बेटे इलिअस: के और खिलकियाह के बेटे जमरियाह के हाथों से कहते हुए भेजा जिन्हें यहूदाह के राजा सिदकयाह ने बाबुल में बाबुल के राजा नबूखुदनजर के पास भेजा ॥

४ सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर सारी बंधुआई से यों कहता है जिन्हें मैं ने यरूसलम से बाबुल को
५ बंधुआई में पहुंचाया । घर बना बना
६ बसो और बारी लगा लगा उन के फल खाओ । बियाह करो और बेटे बेटियां जन्माओ और अपने बेटों के लिये पत्नियां लेओ और अपनी बेटियों का बियाह करो जिस्तें वे बेटा बेटी जनें और वहां
७ बढ़ो और मत घटो । और जिस नगर में मैं ने तुम्हें बंधुआई में पहुंचाया उस का कुशल चाहो और उस के लिये परमेश्वर से प्रार्थना करो क्योंकि उस के कुशल में तुम्हारा कुशल है ॥

८ क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि तुम्हारे भविष्यद्वक्ता जो तुम्हारे मध्य में हैं और तुम्हारे दैवज्ञ तुम्हें छल न देने पावें और अपने स्वप्न व्यवहारियों को मत मानो जिन्हें तुम स्वप्न दिखवाते हो ।
९ क्योंकि वे मेरे नाम से तुम से मिथ्या

भविष्य कहते हैं मैं ने उन्हें नहीं भेजा १० है परमेश्वर कहता है। क्योंकि परमेश्वर यों कहता है कि बाबुल में सत्तर बरस पूरे होने के पीछे मैं तुम से भेंट करूंगा और तुम्हें इस स्थान में फिर लाने को तुम पर अपनी अच्छी प्रतिज्ञा ११ पूरी करूंगा। क्योंकि मैं तुम्हारे विषय में अपने मन की बांछा जानता हूं अर्थात् कुशल की परन्तु दुःख की बांछा नहीं जिस्तें तुम्हारी पिछली दशा को १२ आशा की बनाऊं। तब तुम लोग मुझे पुकारोगे और आके मेरी प्रार्थना करोगे १३ और मैं तुम्हारी सुनूंगा। और तुम मुझे ढूंढ़ोगे और पाओगे क्योंकि तुम अपने १४ सारे मन से मुझे ढूंढ़ोगे। और मैं तुम से पाया जाऊंगा परमेश्वर कहता है और तुम्हारी बंधुआई को पलट देऊंगा और तुम्हें सारे जातिगणों में से और सारे स्थानों में से जहां जहां मैं ने तुम्हें खदेड़ा है मैं तुम्हें बटोरूंगा परमेश्वर कहता है और तुम्हें उस स्थान में जहां से मैं ने तुम्हें बंधुआई में पहुंचवाया फिर लाऊंगा॥

१५ क्योंकि तुम ने कहा कि परमेश्वर ने हमारे लिये बाबुल में भविष्यद्वक्तों १६ को खड़ा किया है। क्योंकि परमेश्वर राजा के विषय में जो दाऊद के सिंहासन पर बैठा है और इस नगर के सारे निवासियों के विषय में और तुम्हारे भाईबंद के विषय में जो तुम्हारे साथ बंधुआई में न गये थे यों कहता है। १७ सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है देखो मैं उन पर तलवार और अकाल और मरी भेजने पर हूं और उन्हें बुरे गूलरों की नाईं बनाऊंगा जो बुराई के मारे १८ खाये नहीं जा सक्ते। और मैं उन्हें तलवार से और अकाल से और मरी से सताऊंगा और मैं उन्हें पृथिवी के सारे राज्यों में झंझट के लिये सौंपूंगा कि वे सारे जातिगणों में जिन में मैं ने उन्हें खेदा जाय और आश्चर्य्य और फुफकार और निन्दा के कारण होवें। इस लिये १९ कि उन्हों ने मेरे बचनों को न सुना परमेश्वर कहता है जिन्हें मैं ने अपने सेवक भविष्यद्वक्तों के द्वारा उन के पास भेजा बिहान हो को उठके भेजा पर तुम ने न सुना परमेश्वर कहता है॥

इस लिये हे बंधुआई के सारे लोगो २० जिन्हें मैं ने यरूसलम से बाबुल में भेजा है परमेश्वर का बचन सुनो। कोलायाह २१ के बेटे अखिअब के विषय में और मअसियाह के बेटे सिदकयाह के विषय में जो मेरे नाम से तुम्में मिथ्या भविष्य कहते हैं सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है देखो मैं उन्हें बाबुल के राजा नबूखुदनजर के हाथ में सौंपूंगा और वह उन्हें तुम्हारी आंखों के आगे मार डालेगा। और उन से जो २२ बाबुल में यहूदाह के सारे बंधुओं में हैं यह स्राप लिया जायेगा कि परमेश्वर तुझे सिदकयाह और अखिअब की नाईं बनावे जिन्हें बाबुल के राजा ने आग में भूना था। क्योंकि उन्हों ने इसराएल २३ में मूर्खता किई है और अपने परोसियों की पत्नियों से व्यभिचार किया है और मेरे नाम से मिथ्या कहा है जो मैं ने उन्हें आज्ञा न किई मैं जानता हूं और साक्षी हूं परमेश्वर कहता है॥

और नखलामी समऐयाह से यह २४ कहके बोल। कि सेनाओं का परमेश्वर २५ इसराएल का ईश्वर यों कहता है इस कारण कि तू ने अपने नाम से यरूसलम के सारे लोगों के पास और मअसियाह याजक के बेटे सफनियाह के और सारे याजकों के पास यह कहके पत्री भेजी है। कि यहूयदः याजक की सन्ती २

परमेश्वर ने तुझे याजक किया है जिस्तें परमेश्वर के मन्दिर में तुम प्रधान होओ और हर एक बौड़हे का और जो अपने को भविष्यद्वक्ता बनाता है तू उसे बन्दीगृह और काठ में डाले। २७ और अब किस लिये तू ने अनतातो यरमियाह को नहीं डपटा जो अपने को तुम्हारे आगे भविष्यद्वक्ता दिखाता है। २८ क्योंकि उस ने यह कहके हमारे पास बाबुल में कहला भेजा है कि बहुत दिन हैं घर बना बनाके बसो और बारी लगाके उन के फल खाओ। २९ और सफनियाह याजक ने इस पत्री को यरमियाह भविष्यद्वक्ता के सुन्ने में पढ़ा॥

३० और परमेश्वर का बचन यह कहता हुआ यरमियाह के पास पहुंचा। ३१ कि बंधुआई के सारे लोगों को कहला भेज नखलामी समयाह के विषय में परमेश्वर यों कहता है इस लिये कि समयाह ने तुम्हें भविष्य कहा और मैं ने उसे नहीं भेजा और उस ने तुम्हें झूठ ३२ पर भरोसा करवाया है। इस लिये परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं नखलामी समयाह को और उस के बंश को दंड देउंगा और उस के परिवार का एक भी उस के लोगों में न रहने पावेगा और जो भलाई मैं अपने लोगों पर करूंगा परमेश्वर कहता है वह उसे न देखेगा क्योंकि उस ने परमेश्वर से फिर जाने को कहा है॥

तीसवां पर्व्व।

१ यह कहते हुए परमेश्वर का बचन २ यरमियाह के पास पहुंचा। परमेश्वर इसराएल के ईश्वर ने यों कहा है कि सारे बचन जो मैं ने तुझे कहा है पुस्तक ३ में लिख। क्योंकि परमेश्वर कहता है कि देखो वे दिन आते हैं जब कि मैं अपने इसराएल और यहूदाह के लोगों की बंधुआई को पलटूंगा और परमेश्वर कहता है कि मैं उन्हें उस देश में फिर लाऊंगा जो उन के पितरों को दिया था और वे उस के अधिकारी होंगे। ४ और यह वे बचन हैं जो परमेश्वर ने इसराएल और यहूदाह के विषय में कहे हैं॥

५ कि परमेश्वर यों कहता है कि हम ने थरथराहट का शब्द सुना है भय है और कुशल नहीं। ६ अब पूछो और देखो यदि पुरुष जन सक्ता है क्यों मैं ने हर एक पुरुष को पीड़ित स्त्री की नाईं अपनी अपनी कटि पर हाथ धरे हुए देखा है कि सब के मुंह पीले हो रहे हैं। ७ हाय क्योंकि वह दिन बड़ा है यहां लों कि उस के तुल्य नहीं है वह यअकूब की बिपत्ति का समय होगा परन्तु वह उस्से बच जायेगा॥

८ और उस दिन ऐसा होगा सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि मैं उस का जूआ तेरे गले पर से तोड़ देऊंगा और उस के बंधनों को झटक देऊंगा और परदेशी उस्से फिर सेवा न करावेंगे। ९ परन्तु वे परमेश्वर अपने ईश्वर की और अपने राजा दाऊद की सेवा करेंगे जिसे मैं उन के लिये उठाऊंगा। १० इस लिये हे मेरे दास यअकूब मत डर परमेश्वर कहता है और हे इसराएल बिस्मित मत हो क्योंकि देख दूर से मैं तुझे कुशल से पहुंचाऊंगा और तेरे बंशों को उन की बंधुआई के देश से और यअकूब फिरेगा और चैन करेगा और निर्भय से भी रहेगा और उसे कोई न डरावेगा। ११ क्योंकि मैं तेरे साथ हूं परमेश्वर कहता है कि तुझे बचाऊं क्योंकि मैं सारे देशगणों को जहां जहां मैं ने तुझे बिथराया है मिटाऊंगा पर मैं तुझे सर्व्वथा न मिटाऊंगा परन्तु तुझे परिमाण से ताड़ना करूंगा और तुझे निर्दंड न छोड़ूंगा॥

१२ क्योंकि परमेश्वर यों कहता है कि तेरी चोट असाध्य है तेरा घाव दुःखदायक । १३ कोई नहीं जो तेरा न्याय करे कि तू बांधा जाये अच्छा करने को औषध तुझ पर कोई नहीं लगाता । १४ तेरे सारे मित्र तुझे भूल गये वे तेरी खोज नहीं करते तेरे पाप बड़े होने के और तेरे अपराध बहुत होने के कारण निश्चय मैं ने एक बड़ी ताड़ना से बैरी की मार से तुझे मारा है । १५ अपनी चोट के मारे क्यों चिल्लाता है तेरा कष्ट असाध्य है तेरे पाप बड़े होने के और तेरे अपराध बहुत होने के कारण मैं इन बातों को तुझ पर लाया । १६ इस लिये सब जो तुझे भक्षते हैं पीछे आप भक्षे जायेंगे और तेरे सारे बैरी बंधुआई में जायेंगे और जो तुझे लूटते हैं सो आप लूट बनेंगे और जो तुझे नष्ट करते हैं उन्हें मैं नष्टता को सौंपूंगा । १७ क्योंकि मैं तुझे फिर चंगा करूंगा और तेरा घाव अच्छा करूंगा परमेश्वर कहता है क्योंकि उन्हों ने तेरा नाम अजाती सैहून रक्खा है जिस की सुधि कोई नहीं लेता ॥

१८ परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं यअकूब के तंबुओं की बंधुआई को पलटूंगा और उस के निवासस्थानों पर दया करूंगा और नगर अपने ढेर पर बनाया जायेगा और राजभवन अपने ठिकाने पर बसाया जायेगा । १९ और उन में से धन्यबाद और आनन्दित लोगों का शब्द निकलेगा और मैं उन्हें बढ़ाऊंगा और वे घटाये न जायेंगे और मैं उन्हें प्रतिष्ठा देऊंगा और वे तुच्छ न होंगे ॥

२० और उस के बालक आगे की नाईं होंगे और उस की मंडली मेरे आगे स्थिर होगी और मैं उन के अंधेरकों को दंड देऊंगा । २१ और उस का अध्यक्ष उसी के कुल में का होगा और उस का प्रधान उस के मध्य में से निकलेगा और मैं उसे खींचूंगा जिस्तें वह मेरे पास आवे क्योंकि परमेश्वर कहता है कि कौन है जिस ने मेरे पास आने को अपना मन सिद्ध किया है । २२ और तुम मेरे लोग होओगे और मैं तुम्हारा ईश्वर हूंगा ॥

२३ देखो परमेश्वर का बवंडर वह कोप से निकलता है हां एक भयानक बवंडर जो दुष्टों के सिर पर उतरेगा । २४ परमेश्वर का महा कोप फिर न आवेगा जब लों कार्य्य न करे और अपने मन का ठाना हुआ पूरा न करे पिछले दिनों में तुम लोग उस पर सोच करोगे ॥

एकतीसवां पर्ब्ब ।

१ परमेश्वर कहता है कि उस समय में मैं इसराएल के सारे परिवारों का ईश्वर हूंगा और वे मेरे लोग होंगे । २ परमेश्वर यों कहता है कि तलवार से उबरे हुए लोगों ने अर्थात् इसराएल ने बन में कृपा पाई जब कि मैं उसे चैन देने गया । ३ दूर से परमेश्वर ने मुझे दिखाई देते हुए कहा कि मैं ने सनातन के प्रेम से तुझे प्रेम किया इसी लिये मैं ने तुझ पर दया बढ़ाई है । ४ हे इसराएल की कन्या तथापि मैं तुझे फिरके बनाऊंगा और तू बन जायेगी तू फिर अपने मृदंग से आप को सिंगारेगी और आनन्दित लोगों के साथ नाच में जायेगी । ५ तू फिरके समरून के पर्ब्बतों पर दाख की बारी लगायेगी लगानेवाले लगावेंगे और भोगेंगे । ६ क्योंकि दिन आया है इफरायम पहाड़ के पहरू ने पुकारा है कि उठो हम परमेश्वर अपने ईश्वर के पास सैहून पर चढ़ जायें ॥

७ क्योंकि परमेश्वर ने कहा है कि

यअकूब के लिये आनन्द से गाओ और जातिगणों के श्रेष्ठ के साथ जय जयकार करो प्रचारो स्तुति करके कहो कि हे परमेश्वर अपने लोगों को अर्थात् इसराएल के उबरे हुओं को बचा। ८ देख मैं उत्तर देश से उन्हें लाऊंगा और पृथिवी के खूंटों से उन्हें एकट्ठा करूंगा और उन में अन्धे और लंगड़े और गर्भिणी और जो पीर में हैं एक बड़ी मंडली ९ फिर आवेंगी। वे बिलाप करते करते आवेंगे और बिन्ती करते करते मैं उन्हें लाऊंगा मैं उन्हें जल की धारों पर समथर मार्ग से चलाऊंगा जिस में वे ठोकर न खायेंगे क्योंकि मैं इसराएल का पिता हुआ हूं और इफरायम मेरा पहिलौठा था॥

१० हे अन्यदेशियो परमेश्वर का बचन सुनो और दूर के टापुओं में सुनाके कहो कि जिस ने इसराएल को छिन्न भिन्न किया वही उसे बटोरेगा और जैसे गड़रिया अपनी झुंड की तैसा वह उस की ११ रखवाली करेगा। क्योंकि परमेश्वर ने यअकूब को छुड़ा लिया है और जो उस्से बलवन्त हैं उस के हाथ से छुड़ावेगा। १२ इस लिये वे आके सैहून के टीले पर गावेंगे और परमेश्वर की अच्छी बस्तुन को अर्थात् अन्न और दाखरस और तेल और लेंढ़े के और झुंड के बच्चों को भाग लेने को एकट्ठे होंगे और उन का प्राण सींची बारी की नाईं होगा और वे फिर १३ उदास न होंगे। तब कन्या नाच में और तरुण और पुरनिया एकट्ठे आनन्दित होंगे और मैं उन के बिलाप को आनन्द से पलट डालूंगा और उन के शोक के पीछे मैं उन्हें शान्ति देके मगन करूंगा। १४ और मैं याजकों के प्राण को पदार्थों से अघाऊंगा और मेरे लोग मेरी अच्छी बस्तुन से संतुष्ट होंगे परमेश्वर कहता है॥

१५ परमेश्वर यों कहता है कि रामः में एक शब्द सुना गया अति बिलाप का हाहाकार राखिल अपने बालकों के लिये रोती है और शान्ति नहीं होती क्योंकि वे नहीं हैं॥

१६ परमेश्वर यों कहता है कि अपने बिलाप के शब्द को और आंखों से आंसू को रोक ले क्योंकि तेरे कार्य्य का प्रतिफल होगा परमेश्वर कहता है और वे बैरियों के देश से फिर आवेंगे। १७ और परमेश्वर कहता है कि तेरे अन्त में भरोसा है और तेरे बालक अपने ही सिवाने में आवेंगे॥

१८ निश्चय मैं ने इफरायम को बिलाप करते सुना है कि तू ने मुझे ताड़ना किई है और मैं ने बिन निकाले हुए बछड़े की नाईं ताड़ना पाई तू मुझे फिरा और मैं फिरूंगा क्योंकि तू ही परमेश्वर मेरा ईश्वर है। १९ निश्चय मेरे फिराये जाने से मैं पछताया और सिखाये जाने के पीछे अपनी जांघ पर हाथ मारा मैं लज्जित हुआ और लाज से भर गया क्योंकि मैं ने अपनी तरुणाई की निन्दा सही॥

२० क्या इफरायम मेरा प्रिय पुत्र नहीं क्या वह दुलारा बालक नहीं क्योंकि मेरा बचन ज्यों हीं उस के मन में पहुंचा मैं ने उसे फिर स्मरण किया इस लिये मेरा मन उस के लिये व्याकुल हुआ निश्चय मैं उस पर दया करूंगा परमेश्वर कहता है॥

२१ पथचिन्ह अपने लिये स्थापन कर अपने लिये खंभे खड़े कर राजमार्ग की ओर मन लगा हे इसराएल की कन्या जिस मार्ग से तू गई फिर आ अपने इन नगरों की ओर फिर आ। २२ हे भगैली कन्या तू कब लों फिर फिर जायेगी क्योंकि परमेश्वर पृथिवी में एक नई

बात सिरजने पर है कि स्त्री पुरुष को घेरेगी॥

२३ सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि जब मैं उन की बंधुआई को पलटूंगा तब वे यहूदाह देश में और उस के नगरों में यह बचन कहेंगे कि हे धर्म्म के निवास हे अति धार्म्मिक के पर्व्वत परमेश्वर तुझे आशीष २४ देगा। और यहूदाह और उस के सारे नगर किसान होके एक साथ उस में बसेंगे और वे झुंडों को लिये हुए फिरेंगे। २५ क्योंकि मैं ने पियासे प्राणी को संतुष्ट किया है और हर एक मरभूखे प्राणी को २६ तृप्त किया है। उस्से मैं जाग उठा और देखा और मेरी नींद सुख की थी॥

२७ परमेश्वर कहता है कि देखो वे दिन आते हैं कि मैं इसराएल के घराने को और यहूदाह के घराने को मनुष्य २८ के और पशु के बीज से बोऊंगा। और यों होगा कि जैसा मैं उन्हें उखाड़ने को और ढाने को और उलटने को और नाश करने को और दुःख देने को चौकस हुआ हूं तैसा उन्हें बनाने और बोने को २९ चौकस हूंगा परमेश्वर कहता है। उन दिनों में वे फिर न कहेंगे कि पितरों ने खट्टा अंगूर खाया है और बालकों के ३० दांत खट्टे हुए हैं। परन्तु हर एक जन अपनी ही बुराई के लिये मरेगा जिस जन ने खट्टा अंगूर खाया है उस के दांत खट्टे होंगे॥

३१ परमेश्वर कहता है कि देख वे दिन आते हैं जिस में मैं इसराएल के घराने से और यहूदाह के घराने से एक नई ३२ बाचा बांधूंगा। उस बाचा के समान नहीं जो मैं ने उन के पितरों से किई थी जब कि मैं उन के हाथ पकड़के उन्हें मिस्र के देश से निकाल लाया मेरी उस बाचा को उन्हों ने भंग किया यद्यपि मैं उन का पति था परमेश्वर कहता है। क्योंकि यह वह बाचा है ३३ जो मैं इसराएल के घराने से बांधूंगा उन दिनों के पीछे परमेश्वर कहता है मैं अपनी व्यवस्था उन के अन्तःकरण में डालूंगा और उन के मन में उसे लिखूंगा और मैं उन का ईश्वर हूंगा और वे मेरे लोग होंगे। और वे फिर अपने अपने ३४ परोसी और अपने अपने भाई को यह कहके न सिखावेंगे कि परमेश्वर को जानो क्योंकि छोटे से बड़े लों सब मुझे जानेंगे परमेश्वर कहता है क्योंकि मैं उन की बुराई को क्षमा करूंगा और उन का पाप फिर स्मरण न करूंगा॥

परमेश्वर यों कहता है जो दिन के ३५ उंजियाले के लिये सूर्य्य को ठहराता है और रात के उंजियाले के लिये चांद और तारों की बिधि करता है जो समुद्र को यहां लों लहराता है कि उन के ढेऊ हाहा करते हैं उस का नाम सेनाओं का परमेश्वर है। जो ये व्यवस्था मुझ से जाती ३६ रहें परमेश्वर कहता है तो इसराएल के बंश भी मेरे आगे नित्य एक जाति होने से जाते रहेंगे। परमेश्वर यों कहता ३७ है कि यदि ऊपर स्वर्ग नापा जा सके अथवा पृथिवी के नीचे की नेवों की थाह लिई जाये तो मैं भी उन की सारी करनी के कारण इसराएल के सारे बंश को त्यागूंगा परमेश्वर कहता है॥

देख वे दिन आते हैं परमेश्वर ३८ कहता है कि हननिएल के गुम्मट से कोने के फाटक लों परमेश्वर के लिये नगर बनाया जायेगा। और नापने की ३९ रस्सी जरीब पहाड़ के ऊपर से होके जुअः को घेर लेगी। और लोथों की ४० और राख की सारी तराई और सारे खेत कैदरून नाली लों पूरब के घोड़फाटक के कोने लों परमेश्वर के लिये पवित्र

होगी वह उखाड़ा और फिर कभी गिराया न जायेगा॥

बत्तीसवां पर्ब्ब।

१ यहूदाह के राजा सिदकयाह के दसवें बरस जो नबूखुदनजर का अठारहवां बरस था परमेश्वर का बचन यरमियाह के पास पहुंचा॥

२ और उस समय बाबुल के राजा की सेना ने यरूसलम को घेर रक्खा था और यरमियाह भविष्यद्वक्ता बन्दीगृह के आंगन में जो यहूदाह के राजा के भवन ३ में था बन्द था। क्योंकि यहूदाह के राजा सिदकयाह ने यह कहके उसे बंधन में रक्खा कि तू ने क्यों यह भविष्य कहा है कि परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं इस नगर को बाबुल के राजा के हाथ में सैांपता हूं और वह ४ इसे ले लेगा। और यहूदाह का राजा सिदकयाह कसदियों के हाथ से न छूटेगा परन्तु निश्चय बाबुल के राजा के हाथ में सैांपा जायेगा और वह उस्से मुंहे मुंह बोलेगा और इस की आंखें ५ उस की आंखों को देखेंगी। और वह सिदकयाह को बाबुल में ले जायेगा और जब लों मैं उस्से पलटा न लेऊं तब लों वह वहीं रहेगा परमेश्वर कहता है जब तुम लोग कसदियों से संग्राम करोगे तो भाग्यमान न होओगे॥

६ और यरमियाह ने कहा कि यह कहते हुए परमेश्वर का बचन मेरे पास ७ पहुंचा। देख तेरे चचा सलूम का बेटा हनमिएल यह कहते हुए तेरे पास आवेगा कि मेरा खेत जो अनतात में है अपने लिये मोल ले क्योंकि उसे ८ छुड़ाने को तेरा अधिकार है। तब मेरे चचा के बेटे हनमिएल ने परमेश्वर के बचन के समान बन्दीगृह के आंगन में आके मुझ से यह कहा कि मैं तेरी बिन्ती करता हूं कि मेरा खेत जो बिनयमीन देश के अनतात में है मोल ले क्योंकि तेरा अधिकार है और छोड़ाना तेरा है तू अपने लिये मोल ले तब मैं ने जाना कि यह परमेश्वर का बचन ९ है। इस लिये मैं ने उस खेत को जो अनतात में था अपने चचा हनमिएल के बेटे से मोल लिया और उसे रोकड़ दिया अर्थात् सत्तरह शेकल चांदी। १० और बिक्रयपत्र लिखके छापा और साक्षी करवाई और रोकड़ को तौल ११ दिया। और मैं ने छाप किये हुए बिक्रय पत्र को लिया अर्थात् व्यवस्था और रीति के समान छापा हुआ था और जो १२ खुला था। और वह बिक्रयपत्र मैं ने चचा के बेटे हनमिएल के आगे और बिक्रयपत्र के साक्षियों के आगे और सारे यहूदियों के आगे जो बन्दीगृह के आंगन में बैठे थे महसियाह के बेटे नेरियाह के बेटे बरूक को सैांप दिया। १३ और उन के आगे मैं ने बरूक को यह १४ कहके आज्ञा किई। कि सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि इन लिखे हुए बिक्रयपत्रों को ले छापे हुए को और खुले हुए को और उन्हें एक मिट्टी के पात्र में रख जिस्तें १५ बहुत दिन ठहरें। क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि घर और खेत और दाख की बारी इस देश में फिर पाई जायेंगी॥

१६ जब मैं ने नेरियाह के बेटे बरूक को वह बिक्रयपत्र सैांप दिया तब यह कहके मैं ने परमेश्वर की प्रार्थना किई। १७ हाय प्रभु परमेश्वर देख तू ने अपने महा पराक्रम से और अपनी बढ़ाई हुई भुजा से स्वर्ग और पृथिवी को सृजा है १८ तेरे लिये कुछ कठिन नहीं है। जो सहस्रों पर दया करता है और पितरों

की बुराई उन के पीछे उन के बालकों की गोद में जो उन के पीछे आते हैं पलटा देता है अत्यन्त महान और अत्यन्त पराक्रमी ईश्वर जिस का नाम १९ सेनाओं का परमेश्वर है। परामर्श में महान और कार्य्यों में बलवन्त जिस की आंखें मनुष्य के पुत्रों की सारी चालों पर खुली हैं जिस्तें हर एक को उस की चालों के समान और उस के कार्य्यों २० के प्रतिफल के तुल्य देवे। जिस ने मिस्र देश में और इसराएल में और मनुष्यों में आज लों लक्षण और आश्चर्य्य दिखाये हैं और अपने लिये आज के २१ समान नाम कर रक्खा है। और अपने इसराएल लोगों को मिस्र देश से लक्षण और आश्चर्य्य और दृढ़ हाथ से और फैलाई हुई भुजा से और बड़े भय से २२ निकाल लाया है। और यह देश उन्हें दिया है जिस के विषय में तू ने उन के पितरों से किरिया खाई थी कि दूध २३ और मधु का देश उन्हें देऊंगा। और ये प्रवेश करके उस के अधिकारी हुए परन्तु उन्हों ने तेरा शब्द न माना और तेरी व्यवस्था पर न चले और तेरी आज्ञाओं को उन्हों ने पालन न किया इसी कारण तू यह सारी बिपत्ति उन पर २४ लाया है। देख नगर लेने को मोर्चे बढ़े आते हैं और नगर कसदियों के हाथ में जो उस के बिरुद्ध लड़ते हैं तलवार के और अकाल के और मरी के कारण दिये गये हैं और सो तू देखता है कि जो कुछ तू ने कहा है सो पूरा हुआ है। २५ और हे प्रभु परमेश्वर तू ने मुझ से कहा है कि रोकड़ से अपने लिये खेत मोल ले और साक्षी करा यद्यपि नगर कसदियों के हाथ में दिया गया है॥

२६ तब परमेश्वर का बचन यह कहके २७ यरमियाह के पास पहुंचा। देख मैं परमेश्वर सारे प्राणियों का ईश्वर क्या मेरे लिये कुछ कठिन हो सक्ता है। २८ इस लिये परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं यह नगर कसदियों के हाथ में और बाबुल के राजा नबूखुदनजर के हाथ में देता हूं और वह उसे ले लेगा। २९ और कसदी जो इस नगर से लड़ते हैं पैठेंगे और इस नगर में आग लगावेंगे और उसे और उन घरों को जिन की छतों पर मुझे रिस दिलाने को उन्हों ने बअल के लिये धूप जलाया है और उपरी देवों के लिये तर्प्पण किया है जला देंगे। ३० क्योंकि इसराएल के संतान और यहूदाह के संतान अपनी युवावस्था से वही बात करते हैं जो मेरी दृष्टि में बुरी है कि इसराएल के संतान अपने ही हाथों के कार्य्यों से मुझे रिस दिला रहे हैं परमेश्वर कहता है। ३१ क्योंकि यह नगर जब से उन्हों ने बनाया है आज लों मेरे कोप और मेरी जलजलाहट का कारण हो रहा है कि मैं उसे अपनी ३२ दृष्टि से निकालूं। इसराएल के संतानों की और यहूदाह के संतानों की समस्त दुष्टता के कारण जो उन्हों ने और उन के राजाओं ने और उन के अध्यक्षों ने और उन के याजकों ने और उन के भविष्यद्वक्तों ने और यहूदाह के मनुष्यों ने और यरूसलम के निवासियों ने ३३ किई। क्योंकि उन्हों ने मेरी ओर पीठ फेरी और मुंह नहीं और जब मैं ने उन्हें भोर को उठ उठके उपदेश किया और सिखाया तो उपदेश ग्रहण करने को ३४ किसी ने न सुना। और जो घर मेरे नाम से कहावता है उसे अशुद्ध करने को उन्हों ने उस में घिनौनी वस्तुन ३५ को स्थापन किया है। और उन्हों ने बअल के लिये ऊंचे ऊंचे स्थान बनाये जो हिन्नूम के बेटे की तराई में है

जिस्तें अपने बेटे बेटियों को मोलिक के लिये आग में से चलावें जिसे मैं ने उन्हें बर्जा था और जो मेरे मन में नहीं आया था कि वे यहूदाह पर अपराध लगाने को ऐसा घिनित कार्य्य करें॥

३६ और अब इस लिये परमेश्वर इसराएल का ईश्वर इस नगर के बिषय में जिस की अवस्था में तुम लोग कहते हो कि तलवार से और अकाल से और मरी से बाबुल के राजा के हाथ में सौंपा गया है यों कहता है।

३७ देख जहां जहां मैं ने उन्हें अपनी रिस में और जलजलाहट में और महा कोप में खेदा है मैं उन्हें उन सारे देशों से बटोरूंगा और फिर उन्हें इस स्थान में लाके निर्भय से बसाऊंगा।

३८ और वे मेरे लोग होंगे और मैं उन का ईश्वर हूंगा।

३९ और मैं उन्हें एक मन और एक ही मार्ग उन की भलाई के लिये और उन के पीछे उन के संतानों की भलाई के लिये देऊंगा जिस्तें मुझ से नित्य डरा करें।

४० और मैं उन की भलाई करने को उन से एक सनातन की बाचा बांधूंगा जो मैं उन से उठा न लेऊंगा और मैं अपना भय उन के मन में डालूंगा जिस्तें वे मुझ से फिर न जायें।

४१ और उन पर भलाई के लिये मैं उन से आनन्दित हूंगा और निश्चय मैं उन्हें अपने सारे अन्तःकरण और अपने सारे प्राण से इस देश में बसाऊंगा॥

४२ क्योंकि परमेश्वर यों कहता है कि जैसा मैं इन लोगों पर यह सारी महा बिपत्ति लाया हूं तैसा ही मैं उन पर सारी भलाई लाऊंगा जो मैं ने उन के बिषय में कही है।

४३ और इस देश में खेत फिर मोल लिया जायेगा जिस के बिषय में तुम लोग कहते हो कि वह बिन मनुष्य और बिन पशु उजाड़ है और कसदियों के हाथ में दिया गया है।

४४ बिनयमीन देश में और यरूसलम के आसपास और यहूदाह के नगरों में और पर्ब्बत देश के नगरों में और चौगान के नगरों में और दक्खिन के नगरों में मनुष्य रोकड़ से खेत मोल लेंगे और मोल लेने का पत्र भी लिखके छापकर साक्षी करावेंगे क्योंकि मैं उन की बंधुआई को फेरूंगा परमेश्वर कहता है॥

तेंतीसवां पर्ब्ब।

१ और यरमियाह के बन्दीगृह के आंगन में बन्द रहते ही परमेश्वर का बचन उस के पास यह कहते हुए दूसरी बार पहुंचा॥

२ उस का कारक परमेश्वर यों कहता है उस का सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर जो उसे स्थिर भी करता है परमेश्वर उस का नाम है।

३ मेरी बिन्ती कर और मैं तुझे उत्तर देऊंगा और बड़े बड़े कार्य्य और छिपी छिपी वस्तु जो तू नहीं जानता तुझे बतलाऊंगा।

४ क्योंकि इस नगर के घरों के और यहूदाह के राजाओं के घरों के बिषय में जो मोर्चों से और तलवार से गिराये गये हैं परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है।

५ जो कसदियों से संग्राम करने को आये हैं और उन्हें मनुष्यों की लोथों से भरने को जिन्हें मैं ने अपनी रिस और क्रोध में मारा है और जिन की सारी दुष्टता के कारण मैं ने अपना मुंह इस नगर से छिपाया है।

६ देखो मैं उस पर लेप लगाऊंगा और औषध से चंगा करूंगा और कुशल और सचाई की अधिकाई प्रगट करूंगा।

७ और मैं यहूदाह की और इसराएल की बंधुआई को फेर लाऊंगा और पहिले के समान उन्हें बनाऊंगा।

८ और मैं उन की सारी बुराई से जो उन्हों ने मेरे बिरुद्ध अपराध किया है उन्हें

पवित्र करूंगा और उन की सारी बुराइयों को जो उन्हों ने मेरे बिरोध अपराध किया है और जो उन्हों ने हठ से मेरा

९ बिरोध किया है क्षमा करूंगा। और वह मेरे लिये आनन्द का नाम और स्तुति और बिभव होगा पृथिवी के सारे जातिगणों में जो मेरी सारी भलाई को जो मैं उन पर करता हूं सुनेंगे और उस सारी भाग्यमानी और कुशलता के कारण जो मैं उन्हें देता हूं वे डरेंगे और कांपेंगे॥

१० परमेश्वर यों कहता है कि इस स्थान में जिस के बिषय में तुम लोग कहते हो कि मनुष्य बिना और पशु बिना उजाड़ है यहूदाह के नगरों में और यरूसलम के मार्गों में जो मनुष्य बिना उजाड़ हैं अर्थात् निवासी और

११ पशु बिना। आनन्द का शब्द और सुख-बिलास का शब्द और दुल्हा का शब्द और दुल्हिन का शब्द और उन का शब्द सुना जायेगा जो कहते हैं कि सेनाओं के परमेश्वर की स्तुति करो क्योंकि परमेश्वर भला है और उस की दया सदा लों है और उन का शब्द जो परमेश्वर के मन्दिर में स्तुति की भेंट लाते हैं क्योंकि मैं पहिले के समान देश की बंधुआई को फेर देऊंगा परमेश्वर कहता है॥

१२ सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि इस स्थान में जो मनुष्य बिना और पशु बिना उजाड़ है और उस के सारे नगरों में गड़रिये निवास करेंगे जो अपनी भेड़ बकरियों को बैठावेंगे।

१३ पर्ब्बत देश के नगरों में और चौगान के नगरों में और दक्खिन के नगरों में और बिनयमीन के देश में और यरूसलम के आसपास के स्थानों में और यहूदाह के नगरों में झुंड फिर गिनवैये के हाथ के नीचे जांतेंगे परमेश्वर कहता है॥

१४ देखो वे दिन आते हैं परमेश्वर कहता है जो मैं ने इसराएल के घराने के और यहूदाह के घराने के बिषय में कहा है

१५ उस अच्छी बात को पूरा करूंगा। उन दिनों में और उस समय में मैं दाऊद के लिये एक धर्म्म की डाली उभाड़ूंगा और वह देश में बिचार और न्याय

१६ करेगा। उन दिनों में यहूदाह मुक्ति पावेगा और यरूसलम निर्भय से बसेगा और वह इस नाम से पुकारा जायेगा

१७ कि परमेश्वर हमारा धर्म्म। क्योंकि परमेश्वर यों कहता है कि इसराएल के घराने के सिंहासन पर बैठने को दाऊद

१८ से एक भी न घटेगा। और बलिदान की भेंट और होम की भेंट मेरे आगे चढ़ाने को और नित्य बलि चढ़ाने को लावी याजकों से एक न घटेगा॥

१९ यह कहते हुए भी परमेश्वर का

२० बचन यरमियाह के पास पहुंचा। परमेश्वर यों कहता है कि जो तुम लोग दिन के मेरे नियम को और रात के मेरे नियम को वृथा कर सको यहां लों कि प्रतिदिन प्रतिरात समय में न होवे।

२१ तो मेरे दास दाऊद से मेरा नियम वृथा होगा कि उस के सिंहासन पर राज्य करने को पुत्र न होवे और याजक लावियों से जो मेरी सेवा करते हैं।

२२ जैसे स्वर्ग की सेना गिनी नहीं जा सकती है और समुद्र की बालू तौली नहीं जा सकती तैसा मैं अपने दास दाऊद के बंश को और लावियों को जो मेरी सेवा करते हैं बढ़ाऊंगा॥

२३ परमेश्वर का बचन यह भी कहते

२४ हुए यरमियाह के पास पहुंचा। क्या तू ने नहीं देखा कि जिन दो घरानों को परमेश्वर ने चुना है उस ने उन्हें भी त्यागा है कि ये लोग क्या कहते हैं इस रीति उन्हों ने मेरे लोगों को

तुच्छ जाना यहां लों कि वे एक जाति-
२५ गण उन के साम्हने नहीं हैं। परमेश्वर
यों कहता है जो दिन और रात से मेरा
नियम न हो और स्वर्ग पृथिवी की मैं
२६ ने ठहराई है विधि न हो। तो मैं
यअकूब के बंश को और अपने दास
दाऊद को त्यागूंगा यहां लों कि अबि-
रहाम और इजहाक और यअकूब के
बंश के लिये उन के बंश में से प्रभुता
के लिये न लेऊं क्योंकि मैं उन की
बंधुआई को पलट डालूंगा और उन
पर दया करूंगा॥

चौंतीसवां पर्ब्ब।

१ जब बाबुल का राजा नबूखुदनजर
और उस की सारी सेना और पृथिवी के
सारे राज्य जो उस के अधीन थे और
सारे लोग यरूसलम के और उस के
सारे नगरों के बिरुद्ध संग्राम कर रहे
थे तब परमेश्वर का बचन यह कहते
हुए यरमियाह के पास पहुंचा॥

२ परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों
कहता है कि तू जाके यहूदाह के राजा
सिदकयाह से कह कि परमेश्वर यों
कहता है कि देख मैं बाबुल के
राजा के हाथ में यह नगर सौंपता हूं
३ और वह उसे आग से जला देगा। और
तू उस के हाथ से न बचेगा परन्तु
निश्चय पकड़ा जायेगा और उस के
हाथ में सौंपा जायेगा और तेरी आंखें
बाबुल के राजा की आंखें देखेंगी और
वह मुंहे मुंह तुझ से कहेगा और तू
बाबुल को जायेगा॥

४ तथापि हे यहूदाह के राजा सिदक-
याह परमेश्वर का बचन सुन परमेश्वर
ने तेरे बिषय में यों कहा है कि तू तलवार
५ से मारा न जायेगा। तू कुशल से मरेगा
और जिस रीति से तेरे पितर अगिले
राजाओं के लिये सुगंध जलाते थे तेरे
लिये जलावेंगे और तेरे लिये यों बिलाप
करेंगे कि हाय प्रभु क्योंकि परमेश्वर
कहता है कि मैं ने बचन कहा है॥

६ और यरमियाह भविष्यद्वक्ता ने यहूदाह
के राजा सिदकयाह से ये सारी बातें
यरूसलम में कहीं। ७ और जब बाबुल के
राजा की सेना यरूसलम के और यहूदाह
के सारे रहे हुए नगरों के बिरुद्ध और
लकीस के और अजीक: के बिरुद्ध लड़
रही थीं क्योंकि यहूदाह के नगरों में
ये बाड़ित नगर रह गये थे॥

८ यह बचन जो परमेश्वर की ओर
से यरमियाह के पास पहुंचा जब सिदक-
याह राजा ने सारे लोगों के साथ जो
यरूसलम में थे छुटकारा प्रचारने के लिये
नियम किया। ९ कि हर एक अपने
अपने इबरी दास दासी को छोड़ देवे
और कोई अपने यहूदी भाई से सेवा न
लेवे। १० और सारे अध्यक्षों ने और सारे
लोगों ने जिन्हों ने अपने ही दास दासी
को छोड़ने को और उन से सेवा न लेने
को नियम किया था उसे मानके उन्हें
छोड़ दिया। ११ परन्तु उस के पीछे उन्हों
ने अपने दास दासियों को जिन्हें उन्हों
ने छोड़ दिया था फिर लिया॥

१२ इस लिये परमेश्वर का बचन परमे-
श्वर से यरमियाह के पास पहुंचा।
१३ परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता
है कि जिस दिन मैं तुम्हारे पितरों को
मिस्र देश से बंधुआई के घर से निकाल
लाया मैं ने यह कहके उन के साथ एक
बाचा बांधी। १४ कि सात सात बरस पीछे
हर एक जन अपने अपने इबरी भाई
को जो तेरे पास बेचा गया हो जाने दे
और जब उस ने तेरे पास छ: बरस तेरी
सेवा किई तू उसे छोड़ दे परन्तु तुम्हारे
पितरों ने मेरा बचन न सुना और अपना
कान न लगाया। १५ और आज जब कि

तुम लोग फिरे और हर एक जन ने अपने अपने परोसी पर छुटकारा प्रचारके जो मेरी दृष्टि में भलाई किई थी और उस मन्दिर में जो मेरे नाम से कहा जाता है मेरे साथ नियम किया । १६ परन्तु तुम फिरे और मेरे नाम को अशुद्ध किया और हर एक जन ने अपने अपने दास और हर एक अपनी दासी को जिन्हें तुम ने उन की इच्छा पर चलने को छोड़ दिया था फिरके लिया और उन्हें अपने बश में लाये कि वे तुम्हारे लिये दास और दासियां बनें ॥

१७ इस लिये परमेश्वर यों कहता है कि तुम ने मेरी न मानी कि हर एक अपने अपने भाई और अपने अपने परोसी पर छुटकारा प्रचारे देख परमेश्वर कहता है कि मैं तुम्हारे लिये तलवार और मरी और अकाल को छुटकारा प्रचारता हूं और तुम्हें पृथिवी के सारे राज्यों में झंझट में डालूंगा । १८ और जिन लोगों ने मेरी आज्ञा को उल्लंघन किया है जिन्हों ने इस आज्ञा की बातों को पूरा न किया जो उन्हों ने मेरे आगे किई थी जब वे बछड़े को दो टुकड़े करके उन के मध्य में होके गये थे । १९ अर्थात् यहूदाह के अध्यक्षों को और यरूसलम के अध्यक्षों को और नपुंसकों को और याजकों को और देश के सारे लोगों को जो बछड़े के टुकड़ों के मध्य में से गये थे । २० सो मैं उन्हें अर्थात् उन्हों को बैरियों के हाथ में और उन के प्राण के गाहकों के हाथ में सौंपूंगा और उन की लोथें आकाश के पंछियों के लिये और पृथिवी के पशुन के लिये भोजन होंगी । २१ और यहूदाह के राजा सिदकयाह को और उस के अध्यक्षों को उन के बैरियों के हाथ में और उन के प्राण के गाहकों के हाथ में सौंपूंगा अर्थात् बाबुल के राजा की सेना के हाथ में जो तुम से उठ गई । २२ देखो मैं आज्ञा करूंगा परमेश्वर कहता है और उन्हें इस नगर में फिर लाऊंगा और वे इस्से लड़ेंगे और इसे लेके आग से जलावेंगे और मैं यहूदाह के नगरों को एक उजाड़ और निवासी रहित बनाऊंगा ॥

पैंतीसवां पर्ब्ब ।

१ वह बचन जो यहूदाह के राजा यूसियाह के बेटे यहूयकीम के समय में परमेश्वर की ओर से यह कहते हुए यरमियाह के पास पहुंचा । २ कि तू रैकाबियों के घर जा और उन से कहके उन्हें परमेश्वर के मन्दिर में की एक कोठरी में ले आ और उन्हें पीने को दाखरस दे ॥

३ तब मैं ने हबसनियाह के बेटे यरमियाह के बेटे याजनियाह को और उस के भाइयों को और उस के सारे बेटों को और रैकाबियों के सारे परिवार को लिया । ४ और उन्हें परमेश्वर के मन्दिर में ईश्वर के जन यजदलियाह के बेटे हन्नान के बेटों की कोठरी में लाया जो अध्यक्षों की कोठरी के लग थी जो द्वारपाल सल्लूम के बेटे मअसियाह की कोठरी के ऊपर थी । ५ और मैं ने रैकाबियों के घराने के पुत्रों के आगे हंडे भर भर दाखरस और कटोरियां धर दिये और उन से कहा कि दाखरस पीओ ॥

६ पर उन्हों ने कहा कि हम दाखरस न पीयेंगे क्योंकि हमारे पितर रैकाब के बेटे यूनदब ने हमें यह कहके चिताया कि तुम और तुम्हारे बेटे कभी दाखरस न पीना । ७ और न घर बनाना न बीज बोना न दाख की बारी लगाना न उस के अधिकारी होना परन्तु अपने जीवन भर तंबुओं में रहा करो जिस्तें देश में

जहां तुम परदेशी हो बहुत दिन लों ८ जीओ । और हम ने अपने पितर रैकाब के बेटे यहूनदब की बात मानी सारी बातों में जो उस ने हमें आज्ञा किई कि हम और हमारी पत्नियां और हमारे बेटे और हमारी बेटियां अपने जीवन ९ भर दाखरस न पीवें । और न अपने लिये निवासस्थान बनावें और न हम दाख की बारी न खेत न बीज रखते १० हैं । परन्तु हम तंबुओं में रहते हैं और अपने पितर यूनदब की सारी आज्ञा के ११ समान हम ने किया है । परन्तु यों हुआ कि जब बाबुल का राजा नबूखुदनजर देश पर चढ़ आता था तब हम लोगों ने कहा कि कसदियों की सेना के डर के मारे और अरामियों की सेना के डर के मारे आओ हम यरूसलम में चलें तब ही से हम यरूसलम में रहते हैं ॥

१२ तब परमेश्वर का बचन यरमियाह १३ के पास यह कहते हुए पहुंचा । कि सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि तू जा और यहूदाह के लोगों और यरूसलम के निवासियों से कह क्या तुम लोग मेरे बचनों को सुनके उपदेश ग्रहण न करोगे १४ परमेश्वर कहता है । जो बचन रैकाब के बेटे यहूनदब ने अपने बेटों को दाखरस न पीने की आज्ञा दिई थी सो दृढ़ता से पाली गई क्योंकि उन्हों ने आज लों दाखरस नहीं पिया है परन्तु अपने पितरों की आज्ञा मानी है मैं ने तुम से भी कहा है तड़के उठ उठके कहा पर तुम ने मुझे नहीं माना । १५ और मैं ने अपने सारे भविष्यद्वक्ता सेवकों को तुम्हारे पास भेजा है तड़के उठ उठके यह कहला भेजा कि तुम्में से हर एक जन अपने अपने कुमार्ग से फिरे और अपनी चालों को सुधारे और दूसरी देवों की सेवा के लिये उन के पीछे न जाओ और जो देश मैं ने तुम्हें और तुम्हारे पितरों को दिया है उस में बसो पर तुम ने अपना कान न झुकाया और न मेरी सुनी । १६ क्योंकि रैकाब के बेटे यहूनदब के बेटों ने अपने पिता की आज्ञाओं को पूरी किया जो उस ने उन्हें दिई थी परन्तु इन लोगों ने मेरी बात न मानी । १७ इसी लिये परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि देखो मैं यहूदाह पर और यरूसलम के सारे निवासियों पर वह सारी बुराई जो मैं ने उन के विरुद्ध में कही है लाता हूं इस कारण कि मैं ने उन से कहा है पर उन्हों ने न माना और मैं ने उन्हें बुलाया पर उन्हों ने उत्तर न दिया ॥

१८ और यरमियाह ने रैकाबियों के घराने से कहा कि सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है इस कारण कि तुम ने अपने पिता यहूनदब की आज्ञा मानी है और उस की सारी शिक्षा को माना है और उस की सारी आज्ञा के समान चले हो । १९ इस लिये सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि रैकाब के बेटे यूनदब में से मेरे आगे नित खड़े होने के लिये एक भी न घटेगा ॥

छत्तीसवां पर्ब्ब ।

१ और यहूदाह के राजा यूसियाह के बेटे यहूयकीम के चौथे बरस यों हुआ कि परमेश्वर का बचन यरमियाह के पास यह कहते हुए पहुंचा ॥

२ एक पोथी अपने लिये ले और सारी बातें जो मैं ने तुझे इसराएल के और यहूदाह के और सारे जातिगणों के विषय में कही हैं उस दिन से लेके

कि मैं तुझ से कहने लगा यूसियाह के दिनों से लेके आज लों उस में लिख। ३ क्या जानें यहूदाह के घराने सारी बुराइयों को जो मैं ने उन पर लाने को ठानी हैं मानें यहां लों कि हर एक अपने अपने कुमार्गों से फिरे और मैं उन का अपराध और पाप क्षमा करूं॥

४ तब यरमियाह ने नैयरियाह के बेटे बरूक को बुलाया और बरूक ने परमेश्वर की सारी बातें यरमियाह के मुंह से जो उस ने उसे कही थीं एक बोंडे में लिखीं॥

५ और यरमियाह ने यह कहके बरूक को आज्ञा दिई कि मैं बंद हूं मैं परमेश्वर के मन्दिर में जा नहीं सक्ता। ६ इस लिये तू जा और उस बोंडे में से जो तू ने मेरे मुंह से लिखा है परमेश्वर की बातें परमेश्वर के घर में ब्रत के दिन लोगों को पढ़ सुना और सारे यहूदाह को भी जो अपने नगरों से ७ आये हों तू उन्हें पढ़ सुनाना। क्या जानें वे प्रार्थना में परमेश्वर के आगे दंडवत करें और हर एक जन अपने अपने कुमार्गों से फिरे क्योंकि परमेश्वर का कोप और जलजलाहट बड़ा है जो परमेश्वर ने इन लोगों के बिरुद्ध कहा है॥

८ तब नैयरियाह के बेटे बरूक ने यरमियाह भविष्यद्वक्ता की सारी आज्ञा के समान किया और परमेश्वर के मन्दिर में पुस्तक में परमेश्वर के बचन ९ को पढ़ा। और यहूदाह के राजा यूसियाह के बेटे यहूयकीम के पांचवें बरस के नवें मास में ऐसा हुआ कि यरूसलम के सारे लोगों ने और सारे लोगों ने जो यहूदाह के नगरों से निकल आये थे यरूसलम में परमेश्वर के आगे १० ब्रत प्रचारा। तब बरूक ने यरमियाह के बचनों को परमेश्वर के मन्दिर में राजा के लेखक साफन के बेटे जमरियाह की कोठरी के ऊपर आंगन में परमेश्वर के मन्दिर के नये फाटक की पैठ में सारे लोगों को पढ़ सुनाया॥

११ और साफन के बेटे जमरियाह के बेटे मीकायाह ने उस पुस्तक से परमेश्वर के सारे बचनों को सुना। १२ तब वह राजा के घर को लेखक की कोठरी में उतर गया और देखा कि सारे अध्यक्ष अर्थात् इलिसमः लेखक और समैयाह का बेटा दिलायाह और अकबूर का बेटा अलनतन और साफन का बेटा जमरियाह र हननियाह का बेटा सिदकयाह १३ और सारे अध्यक्ष वहां बैठे हैं। तब मीकायाह ने उन सारे बचनों को जो उस ने सुना था जब बरूक ने लोगों के सुन्ने में पुस्तक पढ़ी उन के आगे दुहराया॥

१४ तब सारे अध्यक्षों ने कूशी के बेटे सलमियाह के बेटे नतनियाह यहूदी को बरूक के पास यह कहके भेजा कि जो बोंडा तू ने लोगों को पढ़ सुनाया है उसे हाथ में लेके आ तब नैयरियाह का बेटा बोंडा अपने हाथ में लिये हुए उन १५ के पास आया। और उन्हों ने उस्से कहा कि बैठिये और हमें पढ़ सुनाइये तब बरूक ने उन्हें पढ़ सुनाया॥

१६ और ऐसा हुआ कि जब उन्हों ने सारी बातें सुनीं तो डर के मारे एक दूसरे को देखने लगा और बरूक से कहा कि हम सारी बातों के बिषय में निश्चय १७ हम राजा से कहेंगे। और उन्हों ने यह कहके बरूक से पूछा कि अब हम से कह तू ने ये सारी बातें क्योंकर उस के १८ मुंह से लिखीं। तब बरूक ने उन से कहा कि उस ने ये सारी बातें अपने मुंह से मेरे आगे दुहराईं और उस के

पीछे पीछे मैं ने इस पुस्तक में सियाही से लिखीं। तब अध्यक्षों ने बरूक से कहा कि जा छिप रह तू और यरमियाह और कोई जान्ने न पावे कि तुम कहां हो॥

२० और वे आंगन में राजा के पास गये परन्तु उन्हों ने उस बोंड़े को इलिसम: लेखक की कोठरी में धर रक्खा और राजा के आगे ये सारी बातें कहीं। २१ तब राजा ने यहूदी को बोंड़ा लाने को भेजा और वह आके इलिसम: लेखक की कोठरी में से निकाल लाया और यहूदी ने राजा को और सारे अध्यक्षों को जो राजा के आसपास खड़े थे पढ़ २२ सुनाया। और नवें मास में राजा जाड़े की कोठरी में बैठा था और उस के आगे अंगेठी में बरता हुआ कोइला था। २३ और ऐसा हुआ कि जब यहूदी ने तीन चार भाग पढ़ा तब राजा ने लेखक की छूरी से उसे काट डाला और अंगेठी की आग में डाल दिया यहां लों कि सारा बोंड़ा अंगेठी की आग से भस्म २४ हुआ। परन्तु न तो राजा न उस के कोई सेवक जिन्हों ने इन बातों को सुना था डरे न अपने कपड़े फाड़े। २५ और यद्यपि अलनतन ने और दिलायाह ने और अमरियाह ने राजा से बिन्ती किई कि इस बोंड़े को मत जलाइये २६ तथापि उस ने उन की न मानी। और राजा ने अपने बेटे यरहमिएल को और अजरिएल के बेटे शिरायाह को और अबदिएल के बेटे सलमियाह को आज्ञा किई कि बरूक लेखक को और यरमियाह भविष्यद्वक्ता को पकड़ लाओ परन्तु परमेश्वर ने उन्हें छिपाया॥

२७ और उस के पीछे जब राजा ने इस बोंड़े को और जो बचन कि बरूक ने यरमियाह के मुंह से लिखा था जला दिया परमेश्वर का बचन यह कहती हुआ यरमियाह के पास पहुंचा। २८ कि तू फिर एक दूसरा बोंड़ा ले और उस में सारे बचन जो अगिले बोंड़े में थे जो यहूदाह के राजा यहूयकीम ने जलाया है उस में लिख। २९ और यहूदाह के राजा यहूयकीम से कह कि परमेश्वर यों कहता है कि तू ने यह कहके इस बोंड़े को जलाया है कि तू ने उस में ऐसा क्यों लिखा है बाबुल का राजा निश्चय आवेगा और इस देश को नष्ट करेगा और इस में से मनुष्य को और पशु को मिटा डालेगा॥

३० इस लिये यहूदाह के राजा यहूयकीम के विषय में परमेश्वर यों कहता है कि दाऊद के सिंहासन पर बैठने को उस के लिये एक भी न रहेगा और उस की लोथ दिन के घाम में और रात के पाले में बाहर फेंकी जायेगी। ३१ और मैं उस्से और उस के बंश से और उस के सेवकों से उन के अपराधों का पलटा लेऊंगा और मैं उन पर और यरूसलम के निवासियों पर और यहूदाह के मनुष्यों पर वह सारी बुराई लाऊंगा जो मैं ने उन के विरुद्ध उच्चारी पर उन्हों ने न सुना॥

३२ तब यरमियाह ने एक दूसरा बोंड़ा लिया और उसे नैरियाह के बेटे बरूक लेखक को दिया और उस ने उस में यरमियाह के मुंह से उस पुस्तक की सारी बातें लिखीं जो यहूदाह के राजा यहूयकीम ने आग में जलाई थीं और वैसी ही बहुत सी बातें उस में मिलाई गईं॥

सैंतीसवां पर्ब्ब

और कुनियाह के बेटे यहूयकीम के स्थान पर यूसियाह के बेटे सिदकियाह ने राज्य किया जिसे बाबुल के राजा नबूखुदनजर ने यहूदाह देश में राजा

२ किया था। परन्तु न तो उस ने न उस के सेवकों ने और न देश के लोगों ने परमेश्वर के बचन पर जो उस ने यर्मियाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा से कहा था मन लगाया॥

३ और सिदकियाह राजा ने सलमियाह के बेटे यहूकल और मअसियाह याजक के बेटे सफनियाह से यर्मियाह भविष्यद्वक्ता को कहला भेजा कि अब हमारे लिये परमेश्वर हमारे ईश्वर से ४ प्रार्थना कर। और यर्मियाह लोगों में बाहर भीतर आया जाया करता था और उन्हों ने उसे बंदीगृह में न डाला ५ था। और फिरऊन की सेना मिस्र से निकल आई थी और जब यरूसलम के घेरवैये कसदियों ने उन का समाचार सुना तो वे यरूसलम के आगे से कूच कर गये॥

६ तब यह कहते हुए परमेश्वर का बचन यर्मियाह भविष्यद्वक्ता के पास ७ पहुंचा। परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि यहूदाह के राजा को जिस ने मुझ से बूझने को तुझे भेजा है यों कहना कि देख फिरऊन की सेना जो तुम्हारे सहाय के लिये आई है मिस्र में अपने ही देश को फिर जायेगी। ८ और कसदी फिर आके इस नगर से लड़ेंगे और इसे ले लेंगे और उसे आग ९ से जला देंगे। परमेश्वर यों कहता है कि यह कहके अपने को मत छल दे कि कसदी निश्चय हम से जाते रहेंगे १० क्योंकि वे न जायेंगे। परन्तु यद्यपि तुम लोगों ने कसदियों की सारी सेना को जो तुम से लड़ते हैं मारा होता और उन में केवल घायल लोग अपने अपने तंबू में रह जाते तथापि वे उठके इस नगर को आग से जला देते॥

११ और ऐसा हुआ कि जब फिरऊन की सेना के कारण से कसदियों की सेना यरूसलम के आगे से कूच कर गई। १२ तब यर्मियाह बिनयमीन के देश में जाने को यरूसलम से बाहर निकल गया जिस्तें वहां लोगों में से भाग लेवे। १३ और जब वह बिनयमीन के फाटक में पहुंचा तब हनानियाह का बेटा सलमियाह का बेटा इरियाह नामक पहरे का प्रधान वहां था और उस ने यह कहके यर्मियाह को पकड़ा कि तू कसदियों के पास जाता है। तब १४ यर्मियाह ने कहा कि झूठ मैं कसदियों के पास नहीं जाता हूं परन्तु उस ने न माना और इरियाह यर्मियाह को पकड़के उसे अध्यक्षों कने लाया। तब १५ अध्यक्षों ने यर्मियाह को रिसियाके मारा और उसे यहूनतन लेखक के घर में बंद किया क्योंकि उन्हों ने उसे बन्दीगृह बना रक्खा था॥

१६ जब यर्मियाह बन्दीगृह और भकसी की कोठरियों में गया और वहां बहुत दिन रहा। १७ तब सिदकियाह राजा ने उसे बुला मंगाया और राजा ने अपने घर में उसे एकान्त में यह कहके पूछा कि परमेश्वर की ओर से कोई बचन है और यर्मियाह ने कहा कि है और उस ने कहा है कि तू बाबुल के राजा के हाथ में सौंपा जायेगा। १८ फिर यर्मियाह सिदकियाह राजा से कहा कि मैं ने तेरा और तेरे सेवकों के अथवा इन लोगों के विरुद्ध क्या अपराध किया कि तुम लोगों ने मुझे बन्दीगृह में डाला है। १९ अब तुम्हारे भविष्यद्वक्ते कहां हैं जिन्हों ने तुम्हारे आगे भविष्य कहा था कि बाबुल का राजा तुम्हारे विरुद्ध और इस देश के विरुद्ध न आवेगा। २० हे मेरे प्रभु राजा अब मेरी सुनिये और मेरी बिनती तेरे आगे ग्राह्य होवे और मुझे

यहूनतन लेखक के घर में फिर न २१ भेजवाइये न हो कि मैं वहां मरूं। तब सिदकियाह राजा ने आज्ञा किई कि यरमियाह को बन्दीगृह के आंगन में रक्खें और जब लों नगर में से सारी रोटी चुक न जाये उसे रोटी पोअक की सड़क में से एक एक रोटी प्रतिदिन मिला करे और यरमियाह बन्दीगृह के आंगन में रहा किया॥

अठतीसवां पर्ब्ब।

तब मत्तान के बेटे सफतियाह ने फसिहूर के बेटे जिदलयाह ने और सल-मियाह के बेटे यूकल ने और मलकियाह के बेटे फसिहूर ने यरमियाह की वे बातें सुनीं जो वह यह कहके सारे लोगों २ से कहा करता था। परमेश्वर यों कहता है कि जो कोई इस नगर में रहेगा सो तलवार से और अकाल से और मरी से मरेगा परन्तु जो कोई कसदियों कने जायेगा सो जीता रहेगा और उस का प्राण उस के लिये लूट के ३ समान होगा और वह जीयेगा। परमे-श्वर यों कहता है कि यह नगर निश्चय बाबुल के राजा की सेना के हाथ में सौंपा जायेगा और वह उसे ले लेगा॥

४ तब अध्यक्षों ने राजा से कहा कि हम आप की बिन्ती करते हैं कि यह जन घात किया जाय क्योंकि वह योद्धाओं के हाथों को जो इस नगर में रहते हैं और सारे लोगों के हाथों को ऐसे ऐसे बचन कह कहके दुर्बल करता है निश्चय यह जन इन लोगों का भला नहीं चाहता ५ परन्तु बुरा। तब सिदकियाह राजा ने कहा कि देखो वह तुम्हारे बश में है क्योंकि तुम्हारे बिपरीत राजा कुछ नहीं ६ कर सक्ता। तब उन्हों ने यरमियाह को लिया और हम्मलक के बेटे मलकि-याह की भकसी में जो बन्दीगृह के आंगन में थी डाल दिया और उन्हों ने यरमियाह को रस्सों से नीचे उसे डाल दिया और भकसी में पानी न था परन्तु दलदल सो यरमियाह दलदल में धंस गया॥

७ तब नपुंसक कूशी अबदमलिक ने जो राजा के घर में उस समय था सुना कि उन्हों ने यरमियाह को भकसी में डाला और वह बिनयमीन के फाटक में बैठा था। ८ तब अबदमलिक राजा के घर से बाहर आके राजा से यह कहके बोला। ९ हे मेरे प्रभु राजा इन लोगों ने जो कुछ यरमियाह भविष्यद्वक्ता से किया जिसे उन्हों ने भकसी में डाला है बुरा किया और जहां वह है भूख से मरेगा क्योंकि नगर में रोटी नहीं है। १० तब राजा ने कूशी अबदमलिक को यह कहके आज्ञा किई कि तू यहां से तीस जन अपने संग ले और यरमियाह भवि-ष्यद्वक्ता को मरने से आगे भकसी में से निकाल॥

११ तब अबदमलिक ने उन लोगों को अपने साथ लिया और राजा के भवन के भंडार की कोठरी के नीचे गया और उस में से गले फटे पुराने चीथड़े लिये और उन्हें रस्सियों से भकसी में यरमियाह के पास लटका दिया। १२ और कूशी अबद-मलिक ने यरमियाह से कहा कि अब इन गले फटे और पुराने चीथड़ों को रस्सी के नीचे अपनी कांख तले डाल और यरमियाह ने वैसा ही किया। १३ और उन्हों ने रस्सियों से यरमियाह को भकसी में से खींच लिया और यरमियाह बन्दी-गृह के आंगन में रहा किया॥

१४ तब सिदकियाह राजा ने सेवकों को भेजके यरमियाह भविष्यद्वक्ता को अपने पास तीसरे पैठ में जो परमेश्वर के मन्दिर में है मंगवा लिया और राजा ने

यरमियाह से कहा कि मैं तुझ से एक बात पूछता हूं मुझ से कुछ मत छिपा॥ १५ तब यरमियाह ने सिदकयाह से कहा कि जो मैं तुझ से कहूं तो क्या निश्चय तू मुझे घात न करेगा और जब मैं तुझ को मंत्र दूं तो तू मेरी न मानेगा॥

१६ तब सिदकयाह राजा ने गुप्त में यरमियाह से किरिया खाके कहा कि परमेश्वर के जीवन सैांह जिस ने हमारा प्राण सृजा है मैं तुझे घात न करूंगा और न तुझे उन मनुष्यों के हाथ में सैांपूंगा जो तेरे प्राण के गाहक हैं॥

१७ और यरमियाह ने सिदकयाह से कहा कि सेनाओं का ईश्वर इसराएल का ईश्वर परमेश्वर यों कहता है कि जो तू निश्चय बाबुल के राजा के अध्यक्षों के पास जायेगा तो तेरा प्राण बचेगा और यह नगर आग से जलाया न जायेगा परन्तु तू अपने परिवार सहित बच १८ जायेगा। परन्तु जो तू बाबुल के राजा के अध्यक्षों के पास न जायेगा तो यह नगर कसदियों के हाथ में सैांपा जायेगा और वे उसे आग से जला देंगे और तू आप उन के हाथ से न बचेगा॥

१९ तब सिदकयाह राजा ने यरमियाह से कहा कि मैं उन यहूदियों से डरता हूं जो कसदियों के पास गये हैं क्या जाने वे मुझे उन के हाथ में सैांपें और वे मेरी हंसी करें॥

२० परन्तु यरमियाह ने कहा कि वे तुझे न सैांपेंगे मैं तेरी बिनती करता हूं कि परमेश्वर का शब्द जो मैं तुझ से कहता हूं मान जिस्तें तेरा भला होवे और तेरा २१ प्राण बचे। परन्तु जो तू बाहर जाने को नाह करे तो परमेश्वर ने यही बचन २२ मुझ पर प्रगट किया है। कि देख सारी स्त्रियां जो यहूदाह के राजा के भवन में रह गई हैं बाबुल के राजा के अध्यक्षों के पास पहुंचाई जायेंगी और वे यह कहेंगी कि तेरे परमहितों ने तुझे उभाड़ा और तुझ पर प्रबल हुए उन्हों ने तेरा पांव दलदल में फंसाया है और फिर गये हैं। और तेरी सारी २३ पत्नियों को और तेरे बालकों को वे कसदियों के पास पहुंचावेंगे और तू उन के हाथ से न बचेगा परन्तु बाबुल के राजा के हाथ से पकड़ा जायेगा और तू इस नगर के आग से जलाने का कारण होगा॥

२४ तब सिदकयाह ने यरमियाह से कहा कि यह बचन कोई न जाने और तू मारा २५ न जायेगा। परन्तु जो अध्यक्ष सुनें कि मैं ने तुझ से बातचीत किई है और तेरे पास आके कहें कि तू ने राजा से जो कहा है सो हमें बता और हम से मत छिपा और हम तुझे घात न करेंगे और राजा ने जो तुझे कहा है सो भी कह। २६ तब उन से कहियो कि मैं ने नम्रता से राजा की बिन्ती किई कि वह मुझे यहूनतन के घर मरने को फिर न भेजे॥

२७ और सारे अध्यक्ष यरमियाह के पास आये और उस्से पूछा और उस ने उन्हें राजा की आज्ञा के समान सारे बचन कहे और वे उस्से और न बोले क्योंकि २८ बातचीत न सुनी गई। और जिस दिन लों यरूसलम लिया गया यरमियाह बन्दीगृह के आंगन में रहा और जब यरूसलम लिया गया वह वहीं था॥

उंतालीसवां पर्ब्ब

१ यहूदाह के राजा सिदकयाह के नवें बरस के दसवें मास में बाबुल का राजा नबूखुदनजर अपनी सारी सेना समेत यरूसलम पर आया और उसे घेर लिया॥

२ सिदकयाह के ग्यारहवें बरस के

चौथे मास की नवीं तिथि में नगर ३ तोड़ा गया । और बाबुल के राजा के सारे अध्यक्ष अर्थात् नेरगालसरअज़र समजरनबू सरसाकिम रबसारीस और नेरगालसरअज़र रबमाग और बाबुल के राजा के सारे रहे हुए अध्यक्ष पैठ के मध्य के फाटक में बैठे ॥

४ और ऐसा हुआ कि जब यहूदाह के राजा सिदकयाह और सारे योधों ने उन्हें देखा तो भागके रातों रात राजा की बारी के मार्ग में दो भीतों के मध्य के फाटक से हो नगर से बाहर चौगान ५ की ओर निकल गये । परन्तु कसदियों की सेना ने उन का पीछा किया और यरीहू के चौगानों में सिदकयाह को जा लिया और उसे पकड़के हमात देश के रिबलः में बाबुल के राजा नबूखुदनज़र के पास लाये और उस ने उस पर न्याय ६ किया । और बाबुल के राजा ने सिदकयाह के बेटों को रिबलः में उस की आंखों के आगे घात किया और बाबुल के राजा ने यहूदाह के सारे कुलीनों ७ को भी मार डाला । और उस ने सिदकयाह की आंखें निकाल डालीं और उसे बाबुल में ले जाने के लिये दो ८ पीतल की सीकरों से जकड़ा । और कसदियों ने राजभवन को और लोगों के घरों को आग से जला दिया और यरूसलम की भीतें तोड़ डालीं ॥

९ तब नबूसरअद्दान पहरुओं के प्रधान ने नगर के रहे हुए लोगों को और जो भागके उन के पास गये थे अर्थात् बचे हुए लोगों को जो बच रहे थे बाबुल में १० ले गया । परन्तु नबूसरअद्दान पहरुओं के प्रधान ने तुच्छ लोगों को जिन की संपत्ति न थी यहूदाह देश में छोड़ दिया और उसी दिन उन्हें खेत और दाख की बारियां दिईं ॥

और बाबुल के राजा नबूखुदनज़र ने ११ यरमियाह के विषय में नबूसरअद्दान पहरुओं के प्रधान से यह कहके आज्ञा दिई । कि उसे लेके देखा कर और उसे १२ किसी रीति का दुःख मत दे परन्तु उस के कहे के समान उस्से व्यवहार कर । तब राजा के पहरुओं के प्रधान १३ नबूसरअद्दान और नबूशज़बान रबसारीस और नेरगलसरअज़र रबमाग और बाबुल के सारे प्रधान । भेजके यरमियाह को १४ बन्दीगृह के आंगन से निकाल लाये और साफ़न के बेटे अखिकाम के बेटे जिदलयाह को उसे घर पहुंचाने को सौंपा और वह लोगों के मध्य में रहा ॥

और जिस समय यरमियाह बन्दीगृह १५ के आंगन में बंद था परमेश्वर का बचन उस के पास पहुंचा । कि जा और कूशी १६ अबदमलिक से कह कि सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि देख मैं इस नगर पर अपने बचन को बुराई के लिये लाता हूं और भलाई के लिये नहीं और उस दिन वे तेरे आगे होंगे । परन्तु उसी दिन मैं तुझे बचाऊंगा १७ परमेश्वर कहता है और जिन लोगों से तू डरता है उन लोगों के हाथ तू सौंपा न जायेगा । क्योंकि निश्चय मैं तुझे १८ छुड़ाऊंगा और तू तलवार से न गिरेगा और मुझ पर भरोसा रखने के कारण तेरा प्राण लूट की नाईं तुझे दिया जायेगा परमेश्वर कहता है ॥

चालीसवां पर्ब्ब ।

परमेश्वर का बचन जो यरमियाह १ के पास उस के पीछे पहुंचा जब कि पहरुओं के प्रधान नबूसरअद्दान ने उसे लेके रामः से छोड़ दिया क्योंकि यरूसलम के और यहूदाह के सारे बंधुओं में जो बाबुल में बंधुआई में पहुंचाये गये वह सीकरों से उन में बंधा था ॥

२ और पहरुओं के प्रधान ने यरमियाह को लेके उस्से कहा कि परमेश्वर तेरे ईश्वर ने इस स्थान के विरुद्ध विपत्ति ३ प्रगट किई है। अब परमेश्वर ने आके अपने कहने के समान पूरा किया है क्योंकि तुम ने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया था और उस का बचन नहीं माना ४ इस लिये तुम पर यह पड़ा है। और देख मैं ने आज तेरी हथकड़ी से तुझे छुड़ाया है जो मेरे संग बाबुल में आने को तुझे अच्छा लगे तो चल और मैं तेरी सुधि लेऊंगा परन्तु जो मेरे संग बाबुल में आने को तुझे बुरा लगे तो रह जा देख सारा देश तेरे आगे है जिधर जाने को अच्छा लगे और जिधर तेरी दृष्टि में जाने को ठीक होवे तिधर ५ जा। और जब वह फिरने पर न था उस ने कहा इस लिये साफन के बेटे अखिकाम के बेटे जिदलयाह के पास फिर जा जिसे बाबुल के राजा ने यहूदाह के नगरों पर अध्यक्ष किया है और उस के संग लोगों के मध्य में रह अथवा जिधर तेरी दृष्टि में जाने को अच्छा लगे तिधर जा और पहरुओं के प्रधान ने उसे भोजन और दान देके बिदा किया। ६ तब यरमियाह अखिकाम के बेटे जिदलयाह के पास मिसफः में गया और उस के संग उन लोगों में रहा जो देश में छोड़े गये॥

७ जब सारे सेनापतियों और उन के लोगों ने जो चौगान में थे सुना कि बाबुल के राजा ने अखिकाम के बेटे जिदलयाह को देश पर अध्यक्ष किया और कि उस ने पुरुष और स्त्री और लड़केबाले उसे सौंप दिये अर्थात् देश के कितने एक कंगालों को जो बाबुल ८ को बंधुआई में न पहुंचाये गये। तब वे अर्थात् नतनियाह का बेटा इसमअएल और करीह के बेटे यूहनान और यूनतन और तनहूमत का बेटा सिरायाह और नतूफती ऐफा के बेटे और मअकाती का बेटा यजनियाह वे और उन के जन मिसफः में जिदलयाह के पास आये॥

९ तब साफन के बेटे अखिकाम के बेटे जिदलयाह ने उन से और उन के जनों से किरिया खाके कहा कि तुम लोग कसदियों की सेवा करने को मत डरो देश में रहो और बाबुल के राजा की सेवा १० करो और तुम्हारा भला होगा। और मैं जो हूं देखो जो कसदी हमारे पास आवेंगे उन के आगे खड़ा होने को मैं मिसफः में रहूंगा परन्तु तुम लोग दाखरस और ग्रीष्मफल और तेल एकट्ठा करके अपने अपने पात्रों में रक्खो और अपने अपने नगरों में जो तुम ने लिया है बसो॥

११ जब सारे यहूदियों ने भी जो मोआब में और अम्मून के संतानों में और अदूम में और जो सारे देश में थे सुना कि बाबुल का राजा यहूदाह में कुछ लोग छोड़ गया और कि उस ने साफन के बेटे अखिकाम के बेटे जिदलयाह को उन १२ पर अध्यक्ष किया था। तब सब यहूदी सारे स्थानों से जहां जहां वे खेदे गये थे यहूदाह के देश मिसफः में जिदलयाह के पास आये और दाखरस और ग्रीष्मफल बहुताई से एकट्ठे किये॥

१३ और करीह का बेटा यूहनान और सेना के सारे प्रधान जो चौगान में थे मिसफः में जिदलयाह के पास आये। १४ और उस्से कहा कि तुझे चेत है कि अम्मून के संतान के राजा नतनियाह के बेटे इसमअएल को तेरा प्राण लेने को भेजा है परन्तु अखिकाम के बेटे जिदलयाह ने उन की प्रतीति १५ न किई। तब करीह के बेटे यूहनान ने मिसफः में जिदलयाह से चुपके से

कहा कि मैं तेरी बिनती करता हूं कि मुझे जाने दे जिस्तें मैं नतनियाह के बेटे इसमअएल को घात करूं और कोई न जानेगा वह किस लिये तेरा प्राण लेवे और सारे यहूदाह जो तेरे पास एकट्ठे हुए हैं यहूदाह के रहे हुए नष्ट हों। १६ परन्तु अखिकाम के बेटे जिदलयाह ने करीह के बेटे यूहनान से कहा कि तू यह काम मत कर निश्चय तू इसमअएल के विषय में झूठ कहता है॥

एकतालीसवां पर्ब्ब।

१ और सातवें मास में ऐसा हुआ कि राजवंश इलिसम: के बेटे नतनियाह का बेटा इसमअएल और राजा के बड़े बड़े प्रधान दस जन उस के संग मिसफ: में अखिकाम के बेटे जिदलयाह के पास आये और उन्हों ने मिसफ: में २ एकट्ठे रोटी खाई। तब नतनियाह का बेटा इसमअएल और उस के संगी दस जन उठे और साफन के बेटे अखिकाम के बेटे जिदलयाह को जिसे बाबुल के राजा ने देश पर अध्यक्ष किया था खड्ग ३ से मारके घात किया। और सारे यहूदी जो जिदलयाह के संग मिसफ: में थे और कसदी योद्धा जो वहां पाये गये उन्हें इसमअएल ने घात किया॥

४ और जिदलयाह के घात करने के दूसरे दिन जब लों कोई न जानता था ५ यों हुआ। कि लोग सिकम से और सैला से और समरून से अस्सी जन दाढ़ी मुड़ाये हुए और कपड़े फाड़े हुए और अपने को काटे हुए परमेश्वर के मन्दिर में नैवेद्य और धूप अपने हाथ ६ में लिये हुए आये। तब नतनियाह का बेटा इसमअएल मिसफ: से रोते उन से भेंट करने को गया और उन से भेंट होते ही उस ने उन से कहा कि अखिकाम के बेटे जिदलयाह के पास चलो। ७ और यों हुआ कि जब वे नगर के मध्य में आये तब नतनियाह के बेटे इसमअएल और उस के संगियों ने उन्हें घात करके एक गड़हे में डाल दिया। ८ परन्तु उन में दस जन पाये गये जिन्हों ने इसमअएल से कहा कि हमें घात मत कर क्योंकि हमारे पास खेतों में गोहूं और जव और तेल और मधु छिपे हुए धरे हैं इस लिये उस ने उन को भाइयों में उन्हें घात न किया॥

९ अब जिस गड़हे में इसमअएल ने उन मनुष्यों की लोथों को फेंका था जिन्हें उस ने जिदलयाह के साथ घात किया वही था जिसे राजा आसा ने इसराएल के राजा बअशा के कारण बनाया था नतनियाह के बेटे इसमअएल ने उसे जूझे हुओं से भर दिया॥

१० और मिसफ: के बचे हुओं को बंधुआई में ले गये अर्थात् राजपुत्रियों को और मिसफ: के सारे रहे हुओं को जिन्हें नबूसरअद्दान पहरुओं के प्रधान ने अखिकाम के बेटे जिदलयाह को सौंपा था और उन्हें नतनियाह का बेटा इसमअएल बंधुआ करके अम्मून के संतान के देश की ओर चल निकला॥

११ परन्तु जब करीह के बेटे यूहनान ने और उस के साथ के सारे सेनापतियों ने सारी बुराई सुनी जो नतनियाह के १२ बेटे इसमअएल ने किई थी। तब वे सारे लोगों को लेके नतनियाह के बेटे इसमअएल से लड़ने को निकले और जिबऊन के महा जलों पर उसे जा लिया। १३ और ऐसा हुआ कि जब इसमअएल के संग के लोगों ने करीह के बेटे यूहनान को और उस के संग उन के सारे अध्यक्षों को देखा तो १४ आनन्दित हुए। तब जितने लोगों को इसमअएल ने मिसफ: से बंधुआ किया

था से कोहके करीह के बेटे यूहनान
१५ के पास गये। परन्तु नतनियाह का
बेटा इसमअएल आठ जन के संग
यूहनान से बच निकलके अम्मूनियों के
संतानों कने गया॥

१६ तब करीह के बेटे यूहनान ने और
उस के संग के सेनाओं के सारे अध्यक्षों
ने लोगों के सारे बचे हुओं को लिया
जिन्हें उस ने अखिकाम के बेटे जिदल-
याह के घात होने के पीछे मिसफ:
से नतनियाह के बेटे इसमअएल के
हाथ से छुड़ाया था बलवंत योद्धाओं
को और स्त्रियों को और बालकों को
और नपुंसकों को जिन्हें वह जिबऊन
१७ से फेर लाया था। और वे किमहाम
के निवासस्थान में जो बैतलहम के लग
है जा रहे जिस्तें मिस्र को जायें।
१८ कसदियों के मारे क्योंकि वे उन से डरे
इस कारण कि नतनियाह के बेटे
इसमअएल ने अखिकाम के बेटे जिदल-
याह को जिसे बाबुल के राजा ने
देश पर अध्यक्ष किया था घात किया॥

बयालीसवां पर्व्व।

१ तब सारे सेनापति और करीह का
बेटा यूहनान और हूसअयाह का बेटा
यजनियाह और छोटे बड़े सारे लोग
२ पास आये। और यरमियाह भविष्यद्वक्ता
से कहा कि हमारी बिन्ती तेरे आगे
पहुंचे और हमारे लिये अर्थात् इन सारे
बचे हुओं के लिये परमेश्वर अपने
ईश्वर से प्रार्थना कर क्योंकि बहुत से
हम थोड़े रह गये जैसा तेरी आंखें हमें
३ देखती हैं। जिस्तें परमेश्वर तेरा ईश्वर
हमें बतावे कि किस मार्ग पर हम
चलें और कौन सा कार्य्य करें॥

४ तब यरमियाह भविष्यद्वक्ता ने उन
से कहा कि मैं ने सुना सो देखो तुम्हारे
बचनों के समान मैं परमेश्वर तुम्हारे
ईश्वर की प्रार्थना करता हूं और जो
कुछ परमेश्वर उत्तर देगा मैं तुम पर
प्रगट करूंगा और मैं तुम से कुछ बात
न छिपाऊंगा॥

५ तब उन्हों ने यरमियाह से कहा
कि परमेश्वर हमारे मध्य में सच्चा और
बिश्वस्त साक्षी होवे यदि हम उन
सारी बातों के समान न करें जिन के
लिये परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे हमारे
६ पास भेजेगा। चाहे भला हो चाहे बुरा
हम परमेश्वर अपने ईश्वर का जिस के
पास हम तुझे भेजते हैं शब्द मानेंगे
जिस्तें जब हम परमेश्वर अपने ईश्वर
का शब्द मानें तब हमारा भला होवे॥

७ और दस दिनों के पीछे यों हुआ
कि परमेश्वर का बचन यरमियाह के
८ पास पहुंचा। तब उस ने करीह के
बेटे यूहनान को और उस के साथ के
सेनापतियों को और छोटे से बड़े सारे
९ लोगों को बुलाया। और उन से कहा
कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर जिस
के पास तुम ने अपनी बिन्ती पहुंचाने
को मुझे भेजा यों कहता है॥

१० कि जो तुम लोग निश्चय इस देश
में बने रहोगे तो मैं तुम्हें बनाऊंगा और
न ढाऊंगा और मैं तुम्हें लगाऊंगा और
न उखाड़ूंगा क्योंकि मैं इस बुराई से
पछताता हूं जो मैं तुम पर लाया।
११ बाबुल के राजा से जिस्से तुम डरते हो
मत डरो उस्से मत डरो परमेश्वर कहता
है क्योंकि तुम्हें उद्धार करने को और
उस के हाथ से छुड़ाने को मैं तुम्हारे
१२ साथ हूं। और मैं तुम पर दया करूंगा
और वह तुम पर दया करेगा और तुम्हें
तुम्हारे ही देश में फेर लावेगा॥

१३ परन्तु जो तुम लोग कहो कि हम
इस देश में न रहेंगे यहां लों कि पर-
मेश्वर अपने ईश्वर का शब्द न मानोगे।

१४ और कहो कि नहीं परन्तु हम मिस्र के देश को जायेंगे जिस्तें हम लड़ाई न देखें और तुरही का शब्द न सुनें और रोटी के मारे भूखे न होवें और १५ वहां रहेंगे । और अब इस लिये हे यहूदाह के बचे हुए लोगो परमेश्वर का बचन सुनो सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि जो तुम लोग सर्वथा मिस्र में आने को रुख करोगे और वहां रहने को जाओगे। १६ तो ऐसा होगा कि जिस तलवार से तुम लोग डरते हो वही तुम्हें मिस्र में जाही लेगी और जिस अकाल के तुम लोग खटके में हो वह तुम्हारे पीछे पीछे मिस्र में जायेगा और तुम लोग १७ वहां मरोगे । और यों होगा कि सारे लोग जिन्हों ने बसने के लिये मिस्र में जाने को रुख किया है सो तलवार से और अकाल से और मरी से मरेंगे और उन में से एक भी न रहेगा और उस बुराई से जो मैं उन पर लाऊंगा न बचेगा ॥

१८ क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि जैसा मेरा कोप और मेरा क्रोध यरूसलम के निवासियों पर उंडेला गया तैसा जब तुम लोग मिस्र में आओगे मेरा कोप तुम पर उंडेला जायेगा और तुम लोग एक घिन और आश्चर्य्य और स्राप और निन्दा होओगे और इस स्थान को फिर न देखोगे ॥

१९ हे यहूदाह के बचे हुए लोगो परमेश्वर तुम्हारे विषय में यों कहता है मिस्र को मत जाओ तुम लोग निश्चय जानोगे कि आज मैं ने तुम्हारे आगे २० साक्षी दिई है । क्योंकि तुम ने अपने प्राण के बिरुद्ध छल किया है क्योंकि मुझे यह कहके तुम लोगों ने परमेश्वर अपने ईश्वर के पास भेजा कि हमारे लिये परमेश्वर हमारे ईश्वर की प्रार्थना कर और सब जो परमेश्वर हमारा ईश्वर कहेगा सो हम से कह और हम मानेंगे । २१ और आजके दिन मैं ने तुम से बर्णन किया है परन्तु तुम ने परमेश्वर अपने ईश्वर का शब्द और उस बात को जिस के लिये उस ने मुझे तुम्हारे पास भेजा २२ है नहीं माना है । और अब निश्चय जानो कि जिस स्थान को तुम लोगों ने बास करने को और जाने को चुना है उस में तुम तलवार से और अकाल से और मरी से मरोगे ॥

तेंतालीसवां पर्ब्ब ।

१ और यों हुआ कि जब यरमियाह सारे लोगों को परमेश्वर उन के ईश्वर के सारे बचन जिन से परमेश्वर उन के ईश्वर ने उसे उन के पास कहला भेजा था अर्थात् ये सारे बचन कह चुका । २ तब हूसअयाह के बेटे अजरियाह ने और करीह के बेटे यूहनान ने और सारे अहंकारियों ने यरमियाह से यों कहा कि तू झूठ कहता है परमेश्वर हमारे ईश्वर ने यह कहने को तुझे नहीं भेजा है कि मिस्र में बसने को वहां मत जाओ । ३ क्योंकि नेरियाह के बेटे बरूक ने तुझे हमारे बिरुद्ध उभाड़ा है कि तू हमें कसदियों के हाथ में सैांपे कि वे हमें घात करें और बाबुल में बंधुवे ले जावें । ४ सो करीह के बेटे यूहनान ने और सारे सेनापतियों ने और सारे लोगों ने यहूदाह के देश में रहने को परमेश्वर का शब्द न माना ॥

५ परन्तु करीह के बेटे यूहनान और सारे सेनापतियों ने यहूदाह के बचे हुए सारे लोगों को लिया जो सारे जातिगणों में से जहां जहां वे खेदे गये थे यहूदाह देश में बसने के लिये फिर आये।

६ अर्थात् पुरुषों और स्त्रियों को और लड़कों को और राजपुत्रियों को और हर एक जन को जिसे पहरुओं के अध्यक्ष नबूसरअदान ने साफन के बेटे अखिकाम के बेटे जिदलयाह के साथ छोड़ा था और यरमियाह भविष्यद्वक्ता को और ७ नेरियाह के बेटे बरूक को। और वे मिस्र देश को गये क्योंकि उन्हों ने परमेश्वर का शब्द नहीं माना और वे तिहफनिहीस लों पहुंचे॥

८ तब परमेश्वर का यह बचन तिहफनिहीस में यरमियाह के पास यह कहते ९ हुए पहुंचा। कि अपने हाथ में बड़े बड़े पत्थर ले और उन्हें ईंट के भट्ठे की मिट्टी में जो तिहफनिहीस में फिरऊन के घर की पैठ में है यहूदाह के कई १० जनों की दृष्टि में छिपा। और उन से कह कि सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि देखो मैं भेजके अपने दास बाबुल के राजा नबूखुदनजर को लाऊंगा और उस के सिंहासन को इन्हीं पत्थरों के ऊपर रक्खूंगा जिसे मैं ने छिपाया है और वह अपनी ११ गद्दी उन पर फैलावेगा। और वह आके मिस्र देश को मारेगा जो मृत्यु के लिये हैं मृत्यु को और जो बंधुआई के लिये हैं बंधुआई को और जो तलवार के लिये १२ हैं तलवार को सौंपेगा। और मैं मिस्र के देवों के मन्दिरों में एक आग बारूंगा और वह उन्हें जलावेगा और उन्हें बंधुआई में ले जायेगा और जैसे गड़रिया अपने वस्त्र पहिनता है तैसा ही वह मिस्र देश को पहिनेगा और वह वहां १३ से कुशल से चला जायेगा। और वह सूर्य्य के मन्दिर की मूर्त्तिन को जो मिस्र के देश में हैं टुकड़ा टुकड़ा करेगा और मिस्र के देवों के मन्दिरों को आग से जला देगा॥

चवालीसवां पर्ब्ब।

१ वह बचन जो उन सारे यहूदियों के विषय में जो मिस्र देश में अर्थात् मिजदाल में और तिहफनिहीस में और नोफ में और फतरूस के देश में रहते थे यह कहते हुए यरमियाह के पास पहुंचा॥

२ सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि सारी बुराई को जो मैं यरूसलम पर और यहूदाह के सारे नगरों पर लाया हूं तुम लोगों ने देखा है और देखो वे आजके दिन उजाड़ हैं और कोई उन में नहीं बसता। ३ उस दुष्टता के कारण जो उन्हों ने मुझे रिस दिलाने के लिये किई कि उन्हों ने धूप जलाया और उपरी देवों की सेवा किई जिन्हें न वे जानते थे न तुम ४ और न तुम्हारे पितर। तब भी मैं ने अपने सारे सेवक भविष्यद्वक्तों को भेजा तड़के उठके भेजा और कहा कि यह घिनित कार्य्य मत करो जिस्से मैं ५ घिन करता हूं। परन्तु उन्हों ने न सुना और न अपना कान लगाया कि अपनी दुष्टता से फिरें जिस्तें उपरी देवों ६ के आगे धूप न जलावें। इस लिये मेरा कोप और मेरी रिस उंडेली गई है और यहूदाह के नगरों के बिरुद्ध और यरूसलम की सड़कों के बिरुद्ध भड़की है और वे आजके दिन की नाईं एक उजाड़ और शून्य हो रहे हैं॥

७ और अब सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि यहूदाह के मध्य में से पुरुष और स्त्री और बालक और दूधपिउआ काट डालने को तुम लोग अपने प्राण के बिरुद्ध क्यों बुराई करते हो जिस्तें तुम्में ८ बचे हुए न रहें। कि मिस्र देश में जहां तुम लोग बसने गये हो उपरी देवों के लिये धूप जलाने में अपने हाथ

को क्रियों से मुझे रिस दिलाते हो जिस्तें काटे जाओ और जिस्तें तुम लोग एक साप और पृथिवी के सारे जातिगणों ९ में निन्दित होओ। क्या अपने पितरों की दुष्टताओं को और यहूदाह के राजाओं की दुष्टताओं को और उन की पत्नियों की दुष्टताओं को और अपनी ही दुष्टताओं को और अपनी पत्नियों की दुष्टताओं को जो उन्हों ने यहूदाह के देश में और यरूसलम की सड़कों में १० किई हैं भूल गये हो। वे आज लों न पछताये और न डरे और मेरी व्यवस्था और मेरी बिधिन को जो मैं ने तुम्हारे और तुम्हारे पितरों के आगे धरी हैं पालन नहीं किया॥

११ इस लिये सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि देख बुराई के लिये अर्थात् समस्त यहूदाह को काट डालने के लिये मैं अपना मुंह तुम्हारे बिरुद्ध करता हूं। १२ और मैं यहूदाह के बचे हुओं को जिन्हों ने मिस्र के देश में जाके रहने को रुख किया है लेऊंगा और वे सब के सब मिस्र देश में नष्ट होंगे वे तलवार से और अकाल से नष्ट होंगे छोटे से बड़े लों तलवार से और अकाल से मर जायेंगे और वे धिक्कार और घबराहट और साप और १३ निन्दा हो जायेंगे। क्योंकि जैसा मैं ने तलवार से और अकाल से और मरी से यरूसलम से पलटा लिया है तैसा मैं मिस्र के निवासियों से पलटा लेऊंगा। १४ और यहूदाह के जो बचे हुए लोग मिस्र में बास करने को आये हैं एक भी न बचेगा कि यहूदाह देश में फिर जावें जिधर वे फिरने को और रहने को अपना मन लगाते हैं क्योंकि बचे हुओं को छोड़ कोई न फिरेगा॥

१५ तब सारे लोगों ने जो जानते थे कि हमारी पत्नियों ने उपरी देवों के लिये धूप जलाया था और सारी स्त्रियों ने जो पास खड़ी थीं एक बड़ी जथा अर्थात् सारे लोगों ने जो मिस्र में फतरूस में रहते थे यरमियाह को उत्तर देके कहा॥

१६ कि जो बचन तू ने परमेश्वर के नाम से हमें कहा है हम तेरी न १७ मानेंगे। क्योंकि जैसा हमारे मुंह से निकल गया स्वर्ग की रानी के लिये धूप जलाने में और उस के लिये तपावन करने में जैसा हम ने और हमारे पितरों ने और हमारे राजाओं ने और हमारे अध्यक्षों ने यहूदाह के नगरों में और यरूसलम की सड़कों में किया था जब हमारा भोजन बहुत था और हम भाग्यमान थे और बिपत्ति न देखते थे तैसा १८ हम निश्चय करेंगे। परन्तु जब से हम लोगों ने स्वर्ग की रानी के लिये धूप जलाना और तपावन करना छोड़ दिया तब से हमारे लिये हर बात की घटती हुई और हम तलवार से और अकाल १९ से छीण हुए हैं। और जब हम स्वर्ग की रानी के लिये धूप जलाते थे और उस के लिये तपावन करते थे तब क्या हम ने अपने पुरुषों को छोड़के उस की पूजा के लिये रोटी बनाई और उस के लिये तपावन तपाये॥

२० तब यरमियाह ने सारे लोगों को क्या पुरुष क्या स्त्रियों को अर्थात् सारे लोगों को जिन्हों ने उसे उत्तर दिया था यह कहा॥

२१ वह धूप जो तुम ने यहूदाह के नगरों में और यरूसलम की सड़कों में तुम ने और तुम्हारे पितरों ने और तुम्हारे राजाओं ने और तुम्हारे अध्यक्षों ने और देश के लोगों ने जलाया था तो क्या परमेश्वर ने उसे स्मरण नहीं किया और क्या वह उस के मन

२२ में आया। परन्तु तुम्हारी क्रियों की दुष्टता के कारण और तुम्हारे घिनित कार्य्यों के लिये जो तुम ने किये परमेश्वर सह न सका इस लिये तुम्हारा देश एक उजाड़ और आश्चर्य्य और स्राप हुआ है यहां लों कि आजके दिन को २३ नाईं निवासी रहित है। इस कारण कि तुम ने धूप जलाया है और परमेश्वर का अपराध किया है और परमेश्वर का शब्द नहीं माना और उस की व्यवस्था और उस की बिधिन और उस की साक्षियों के समान नहीं चले इस लिये यह बिपत्ति तुम लोगों पर पड़ी जैसा आज है॥

२४ और यरमियाह ने उन सारे लोगों और उन सारी स्त्रियों से यह भी कहा कि हे सारे यहूदाह जो मिस्र देश में २५ हो परमेश्वर का बचन सुनो। सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि तुम लोगों ने और तुम्हारी स्त्रियों ने जिन्हों ने तुम्हारे द्वारा से कहा है और तुम लोगों ने अपने हाथों से यह कहके पूरा किया है कि अपनी मनौतियों को जो हम ने स्वर्गों की रानी के लिये धूप जलाने को और तपावन तपाने को मानी हैं निश्चय पूरी करेंगे तुम निश्चय अपनी मनौतियां पूरी करोगे हां तुम निश्चय अपनी २६ मनौतियां पूरी करोगे। इस लिये हे सारे यहूदाह जो मिस्र देश में रहते हो परमेश्वर का बचन सुनो कि देखो मैं ने अपने महत नाम की किरिया खाई है परमेश्वर कहता है कि मेरा नाम यहूदाह के किसी जन की जीभ से मिस्र के सारे देश में यह कहके फिर लिया न जायेगा कि परमेश्वर के जीवन २७ सोंह। देखो मैं बुराई के लिये उन्हें जागोंगा और भलाई के लिये नहीं और यहूदाह के सारे लोग जो मिस्र देश में हैं तलवार से और अकाल से क्षीण होंगे जब लों कि नाश न हो जायें।

२८ और तलवार से बचे हुए जो मिस्र देश से यहूदाह के देश में फिर आवेंगे गिनती में थोड़े होंगे और यहूदाह के सारे उबरे हुए लोग जो मिस्र में रहने को आये हैं जानेंगे कि किस का बचन ठहरेगा मेरा अथवा उन का॥

२९ और यह तुम्हारे लिये एक पता होगा परमेश्वर कहता है कि मैं हीं इस स्थान में तुम्हें पलटा देऊंगा जिस्तें तुम जानो कि मेरे बचन निश्चय तुम्हारे दुःख के ३० लिये पूरे होंगे। परमेश्वर यों कहता है कि देखो मैं मिस्र के राजा फिरऊन हुफरअ को उस के बैरियों के हाथ और उस के प्राण के गाहकों के हाथ सौंपूंगा जैसा मैं ने यहूदाह के राजा सिदकयाह को उस के बैरी बाबुल के राजा नबूखुदनजर के हाथ में सौंपा जो उस के प्राण का गाहक था॥

पैंतालीसवां पर्व्व।

वह बचन जो यरमियाह भविष्यद्वक्ता नैरियाह के बेटे बरूक से कहा उस के पीछे कि उस ने इन बातों को यरमियाह के मुंह से पुस्तक में लिखा था यहूदाह के राजा यूसियाह के बेटे यहूयकीम के चौथे बरस में। हे बरूक तेरे बिषय में परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है। कि तू ने कहा है कि हाय मुझ पर क्योंकि परमेश्वर ने मेरे दुःख पर शोक मिलाया है मैं अपनी ठंडी सांसों से थक गया और चैन न पाया॥

४ तू उसे यह कह कि परमेश्वर यों कहता है कि देख जो मैं ने बनाया है सो ढाता हूं और जो मैं ने लगाया है सो उखाड़ता हूं अर्थात् यह सारा देश।

५ और क्या तू अपने लिये बड़ी बातें खोजता है मत खोज कि देख मैं सब प्राणियों पर बुराई लाता हूं परमेश्वर कहता है परन्तु तू जहां कहीं जायेगा मैं तेरे प्राण को लूट के लिये तुझे देऊंगा ॥

छयालीसवां पर्व्व ।

परमेश्वर का वचन जो जातिगणों के विषय में यरमियाह भविष्यद्वक्ता के पास पहुंचा । मिस्र के विषय में मिस्र के राजा फिरऊननिकोह की सेना के विषय में जो फुरात नदी के पास करकिमीस में थी जिसे यहूदाह के राजा यूशियाह के बेटे यहूयकीम के चौथे बरस बाबुल के राजा नबूखुदनजर ने मारा था ॥

३ तुम फरी और ढाल सिद्ध करो और ४ संग्राम के लिये बढ़ो । घोड़ों को जोतो और अश्वों पर चढ़ो और टोप पहिन लैस हो रहो भालों को चमकाओ झिलम पहिनो ॥

५ मैं ने उन्हें क्यों शंकित और पीछे हटते हुए देखा है उन के बलवंत मारे पड़े और भाग गये हैं और उन्हों ने पीछे नहीं ताका चारों ओर भय है परमेश्वर ६ कहता है । चालाक न भागेगा और बलवंत बचने न पावेगा उत्तर की ओर फुरात नदी के लग उन्हों ने ठोकर खाई और गिर पड़े ॥

७ यह कौन है जो नदियों की नाईं उमड़ा आता है जिस के पानी बाढ़ की ८ नाईं बढ़ते हैं । नदी की नाईं मिस्र उठता है और उस के पानी बाढ़ की नाईं बढ़ते हैं और वह कहता है कि मैं बढ़ूंगा और देश को ढा लूंगा और नगर को उस के निवासी सहित नाश ९ करूंगा । घोड़ों पर चढ़ो और रथ गर्जें और योद्धे निकलें अर्थात् कूश और फूट ढाल लिये हुए और लूदीम जो धनुष लेके तीर लगाते हैं । १० क्योंकि यही प्रभु का दिन है सेनाओं के परमेश्वर के पलटे का दिन जिस्तें अपने बैरियों से पलटा लेवे और तलवार खा लेगी वह उन के लोहू से ढोरी जाके अघायेगी क्योंकि उत्तर देश में फुरात नदी के लग प्रभु सेनाओं के परमेश्वर का एक यज्ञ है ॥

११ हे मिस्र की कुंआरी पुत्री जिलिअद को चढ़ जा और औषध ले तू ने वृथा औषध बटोरी है तू चंगी न होगी । १२ जातिगणों ने तेरा अपमान सुना है और तेरे चिल्लाने से पृथिवी भर गई है क्योंकि बलवंतों ने बलवंतों पर ठोकर खाई है वे दोनों एकट्ठे गिरे हैं ॥

१३ वह वचन जो परमेश्वर ने यरमियाह भविष्यद्वक्ता से बाबुल के राजा नबूखुदनजर के आने और मिस्र के देश को मारने के विषय में कहा ॥

१४ मिस्र में प्रगट करो और मिजदाल में प्रचारो नोफ में भी और तिहफनिहीस में प्रचारो और कहो स्थिर खड़ा रह और आप को लैस कर क्योंकि तलवार तेरी चारों ओर के लोगों को खायेगी ॥

१५ तेरे बलवंत क्यों गिराये गये वे न ठहरे क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें ढकेल दिया । १६ उस ने बहुतों को ठोकर खिलाया हां एक दूसरे पर गिरा और उन्हों ने कहा कि उठो और हम अंधेर की तलवार से अपने अपने लोगों में और अपनी जन्मभूमि में फिर जावें । १७ वहां वे चिल्लाये कि मिस्र का राजा फिरऊन नाश हुआ ठहराया हुआ समय बीत गया है । १८ वह राजा जिस का नाम सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि

अपने जीवन सोँ जैसे पर्व्वतों में तबूर और जैसे करमिल समुद्र के लग वैसा १९ निश्चय वह आवेगा। हे मिस्र की निवासिनी पुत्री बंधुआई में जाने को अपनी संपत्ति सिद्ध कर क्योंकि नोफ एक उजाड़ हो जायेगा वह नाश भी किया जायेगा जिस्तें कोई निवासी न होवे॥

२० मिस्र एक सुन्दर रूप कलोर है नाश
२१ आता है उत्तर से आता है। उस के भड़हत लोग भी उस के मध्य में मोटे बैलों की नाईं हैं तथापि ये भी अपनी पीठ फेरे हैं वे एकट्ठे भागे हैं और न ठहरे क्योंकि उन के नाश का दिन उन पर आया उन के पलटा का दिन।
२२ उस का शब्द सर्प के समान निकलेगा क्योंकि वे बल के संग चलेंगे और कुल्हाड़ी लिये हुए उस पर आवेंगे।
२३ उन्हों ने उस का बन काट डाला परमेश्वर कहता है यद्यपि उस का खोज नहीं हो सक्ता क्योंकि वे टिड्डियों से
२४ भी अधिक अनगणित हैं। मिस्र की कन्या घबरा गई वह उत्तर के लोगों के हाथ में सैांपी गई॥

२५ सेनाओं के परमेश्वर इसराएल के ईश्वर ने कहा है कि देखो मैं अमून को नो में और फिरऊन को और मिस्र को और उन के देवों को और उन के राजाओं को अर्थात् फिरऊन को और उस के आश्रितों को दण्ड देऊंगा।
२६ और मैं उन्हें उन के प्राण के गाहकों के हाथ अर्थात् बाबुल के राजा नबूखुदनजर के हाथ और उस के सेवकों के हाथ सैांपूंगा और उस के पीछे वह अगिले दिनों के समान बसाया जायेगा परमेश्वर कहता है॥

२७ परन्तु हे मेरे दास यअकूब तू मत डर और हे इसराएल तू मत घबरा क्योंकि देख मैं तुझे बड़ी दूर से और तेरे बंश को उन की बंधुआई के देश से लाऊंगा और यअकूब फिर चैन पावेगा और वह निर्भय से रहेगा और उसे कोई
२८ न डरावेगा। हे मेरे दास यअकूब तू मत डर परमेश्वर कहता है क्योंकि मैं तेरे साथ हूं जहां जहां मैं ने तुझे खेदा है मैं वहां के सारे देशगणों का अंत करूंगा तथापि तेरा अंत सर्व्वथा न करूंगा परन्तु मैं तुझे न्याय से ताड़ना करूंगा और सर्व्वथा दण्ड रहित तुझे न छोड़ूंगा॥

सैंतालीसवां पर्व्व।

१ फिरऊन के अज्जः मारने से आगे परमेश्वर का बचन फिलिस्तियों के बिषय में यरमियाह भविष्यद्वक्ता के पास पहुंचा॥

२ परमेश्वर यों कहता है देख उत्तर से जल चले आते हैं और उमड़ती हुई एक धारा होगी और देश को और सब को जो उस में हैं और नगर को और उस के निवासियों को डुबावेगी तब मनुष्य चिल्लावेंगे और देश के सारे निवासी
३ बिलाप करेंगे। उस के बली घोड़ों के खुरों की पोइयों के शब्द से और उस के रथों के हड़हड़ाने से और उस की पहियों के गड़गड़ाने से और पिता अपने हाथ की ढीलाई के कारण से
४ अपने बालकों की ओर न फिरेंगे। उस दिन के कारण जो आता है कि फिलिस्तियों को उजाड़े और सूर और सैदा से हर एक सहायक को जो बचा है काट डाले क्योंकि परमेश्वर फिलिस्तियों को कफतूर टापू के बचे हुओं को
५ उजाड़ करेगा। अज्जः पर चंदलापन आया है असकलून अपनी तराई के समेत सुनसान हुआ तू कब लों आप को काटेगा॥

६ हे परमेश्वर की तलवार तू कब लों चैन न करेगी तू अपनी काठी में फिर आ बिश्राम ले और स्थिर हो ॥
७ वह क्योंकर चैन करेगी क्योंकि परमेश्वर ने असकलून पर और समुद्र के किनारे पर उसे आज्ञा दिई है वहां उसे ठहराया है ॥

अठतालीसवां पर्व्व ।

१ मोआब के बिषय में सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता कि हाय नबू पर क्योंकि वह लूटा गया है करयतैन घबराया हुआ और लिया गया है मिसजाब घबराया हुआ
२ और बिस्मित हुआ है । मोआब की बड़ाई फिर न होगी हसबून में उन्हों ने यह कहके उस पर बुरी युक्ति बांधी है कि आओ हम जातिगण होने से उसे काटें तू भी हे मदमीन चुप किया जायेगा एक तलवार तेरे पीछे पड़ेगी ।
३ होरानैम से रोने का शब्द होगा उजाड़
४ और बड़ा बिनाश । मोआब तोड़ा गया उस के छोटों ने रोना सुनाया
५ है । क्योंकि लौहियत की चढ़ाई में बिलाप उठेगा निश्चय होरानैम के उतार में मेरे बैरियों ने नाश का शब्द सुना है ॥
६ भागो अपना प्राण बचाओ और अरण्य में झुराये हुए पेड़ की नाईं हो
७ जाओ । क्योंकि तू ने अपनी कमाई और धन पर भरोसा किया है इस लिये तू पकड़ा जायेगा और कमूस अपने पुरोहित और अध्यक्ष सहित बंधुआई
८ में जायेगा । और लुटेरा भी हर एक नगर पर आवेगा और कोई नगर न बचेगा परमेश्वर के कहने के समान तराई नष्ट हो जायेगी और चौगान
९ उजाड़ा जायेगा । मोआब को पंख दे कि उड़ जावे और भागे कि उस के नगर उजाड़ होंगे और उन में कोई
१० निवासी न होगा । स्रापित वह मनुष्य है जो छल से परमेश्वर का कार्य्य करता है और स्रापित वह है जो अपनी तलवार को लोहू से रख छोड़ता है ॥
११ मोआब अपनी तरुणाई से चैन में और अपने तरछट पर बैठा है और पात्र से पात्र में नहीं उंडेला गया और वह बंधुआई में न गया इस लिये उस का स्वाद उस में बना है और उस का
१२ बास नहीं पलटा । इस लिये देख वे दिन आते हैं परमेश्वर कहता है जब कि मैं उस के पास उंडेलवैयों को भेजूंगा जो उसे उंडेलेंगे और वे उस के पात्र छूछे करेंगे और उन के कुप्पे फाड़
१३ डालेंगे । जैसा इसराएल का घराना अपनी आसा बैतएल से लज्जित हुआ तैसा मोआब कमूस से लज्जित होगा ॥
१४ तुम लोग क्योंकर कहोगे कि हम बलवंत और संग्राम के लिये वीर जन
१५ हैं । मोआब लूटा गया है और उस के नगर उठ गये और उस के तरुण घात के लिये उतर गये हैं वह राजा जिस का नाम सेनाओं का परमेश्वर है यों
१६ कहता है । मोआब का बिनाश पहुंचता है और उस की बिपत्ति शीघ्र चढ़ी
१७ आती है । हे उस के चारों ओर के सारे लोगो बिलाप करो तुम सब जो उस का नाम जानते हो कहो कि बल का राजदंड और सुन्दर छड़ी कैसी टूटी
१८ पड़ी है । हे दैबून की निवासिनी पुत्री अपने ऐश्वर्य्य से उतर और प्यासी बैठ क्योंकि मोआब का नाशक तेरे बिरुद्ध चढ़ आया है वह तेरे दृढ़ गढ़ों का
१९ नाशक । हे अरआयर की निवासिनी मार्ग के लग खड़ी होके देख और

भगवैये से और बचे हुए से पूछ और कह कि क्या हुआ है॥

२० मोआब घबराया है क्योंकि वह ढाया गया है बिलाप करो और रोओ अरनून में प्रचारो कि मोआब लुट २१ गया। समथर भूमि पर दंड बिचार आता है होलून पर और यहास पर और २२ मेफअत पर। और दैबून पर और नबू २३ पर और बैतदिबलतैन पर। और करयतैम पर और बैतजमूल पर और २४ बैतमऊन पर। और करयत पर और बुसर: पर और मोआब के देश के सारे नगरों पर जो दूर हैं और पास २५ हैं। मोआब का सींग कट गया है और उस की भुजा टूटी है परमेश्वर कहता है॥

२६ उसे मतवाला करो क्योंकि उस ने आप को परमेश्वर के बिरोध में फुलाया और मोआब अपने छांट में बहेगा उस २७ की भी निन्दा होगी। क्या इसराएल तेरे लिये निन्दा न था क्या वह चोरों में पाया गया कि जितनी बेर तेरी बातें उस के बिषय में थीं तू ने अपना २८ सिर धुना। हे मोआब के निवासियो नगरों को छोड़के चटान पर बसो और एक पंडुकी की नाईं हो जो गड़हे के मुंह के अलंगों में अपना खोता बनाती है॥

२९ हम ने मोआब का घमंड सुना है वह अति घमंडी है उस का फूलना और उस की बड़ाई भी और उस का अहंकार और उस के मन का उभड़ना। ३० मैं उस का महा कोप जानता हूं परमेश्वर कहता है परन्तु उस की सामर्थ्य ऐसी नहीं है वह पूरा करने में ऐसा नहीं है॥

३१ इस लिये मैं मोआब के लिये बिलाप करूंगा हां मैं सारे मोआब के लिये चिल्लाऊंगा कीरिहर्स के मनुष्यों के लिये ३२ बिलाप होगा। हे शिबम: के दाख मैं तेरे लिये यअज़ीर के बिलाप से बिलाप करूंगा और तेरी लता समुद्र पार चली गई वे यअज़ीर के समुद्र लों पहुंच गईं तेरे ग्रीष्मफलों पर और तेरे दाख के ३३ फलों पर लुटेरा पड़ा है। और फलवंत खेत से अर्थात् मोआब के देश से आनन्द और मगनता उठाई जायेगी और कोल्हुओं में से मैं ने दाख के रस को रोका है लताड़ू न लताड़ेगा और ३४ उन का ललकारना न होगा। हसबून के रोने से इलिआली लों और यहस लों और सुग्र से हैरानैम लों तीन बरस के बछड़े की नाईं उन्हों ने अपना शब्द बढ़ाया है क्योंकि निमरिम के जल भी जाते रहेंगे॥

३५ परमेश्वर कहता है कि जो मनुष्य ऊंचे स्थान में भेंट चढ़ाता है और अपने देवों के लिये धूप जलाता है मैं उसे ३६ मोआब से मिटाऊंगा। इस लिये मेरा मन मोआब के लिये बांसुलियों की नाईं बजेगा और कीरिहर्स के मनुष्यों के लिये मेरा मन बांसुलियों की नाईं शब्द करेगा क्योंकि धन जो उस ३७ ने प्राप्त किया था नष्ट हुआ है। क्योंकि हर एक सिर मुंडा है और हर एक दाढ़ी कतरी है सब हाथों पर कटा ३८ कटा है और कटि पर टाटबस्त्र है। मोआब की सारी छतों पर और उस की सड़कों में भरपूर बिलाप है क्योंकि मोआब को मैं ने ऐसा तोड़ा है जैसा पात्र जिस्से कोई प्रसन्न नहीं परमेश्वर ३९ कहता है। वह कैसा तोड़ा गया है वे चिल्लाये हैं कि मोआब ने कैसी पीठ फेरी है मोआब लज्जित है और अपने चारों ओर के सारे लोगों के लिये एक ठट्ठे का और भय का चिन्ह होगा॥

४० क्योंकि परमेश्वर यों कहता है कि देख गिद्ध की नाईं एक उड़ेगा और मोआब पर अपने पंख फैलावेगा। ४१ करयत लिया गया और दृढ़ गढ़ अकस्मात लिये गये और मोआब के बलवंत जनों के मन उस दिन पीड़ित ४२ स्त्री के मनों की नाईं होंगे। और मोआब ऐसा नाश हो जायेगा कि फिर एक जाति न रहेगा क्योंकि उस ने अपने को परमेश्वर के विरुद्ध फुलाया है। ४३ हे मोआब के निवासी डर और गड़हा और जाल तुझ पर हैं परमेश्वर कहता ४४ है। जो भय से भागता है सो गड़हे में गिरेगा और जो गड़हे से निकलता है सो जाल में पकड़ा जायेगा क्योंकि मैं मोआब पर बिलाप अर्थात् उस के दंड पाने का बरस लाऊंगा परमेश्वर कहता ४५ है। जो भाग गये सो बल के लिये हसबून की छाया तले ठहर गये परन्तु एक आग हसबून से और एक लवर सैहून के मध्य से बाहर निकलेगी और मोआब के कोने को और कोलाहल के पुत्रों के सिर की खोपड़ी को खा जायेगी॥

४६ हाय तुझ पर हे मोआब कमूस के लोग नष्ट हुए क्योंकि उन्हों ने तेरे पुत्रों को बंधुआ किया है और तेरी पुत्रियों को भी बंधुई॥

४७ परन्तु पिछले दिनों में मैं मोआब की बंधुआई को फेरूंगा परमेश्वर कहता है यहां मोआब का बिचार है॥

उंचासवां पर्ब्ब।

१ अम्मून के सन्तानों के विषय में परमेश्वर यों कहता है कि क्या इसराएल के बेटे नहीं क्या उस का कोई अधिकारी नहीं फिर मिलकूम ने जाद को क्यों बश में किया है और उस के लोग उस के नगरों में बसे॥

२ इस लिये देख वे दिन आते हैं परमेश्वर कहता है कि मैं अम्मूनियों के रब्बः में संग्राम का भय सुनाऊंगा और वह उजाड़ का एक ढेर होगा और उस की पुत्रियां आग से नष्ट होंगी तब इसराएल उन का अधिकार होगा जैसा वे उस के अधिकार थे परमेश्वर कहता है॥

३ हे हसबून बिलख बिलखके रो क्योंकि ऐ लूटा गया है रब्बः की पुत्रियो रोओ और टाटबस्त्र कसो बिलाप करो और बाड़ों के भीतर इधर उधर दौड़ो क्योंकि मिलकूम बंधुआई में जायेगा अपने पुरोहितों और अध्यक्षों सहित॥

४ हे हठीली कन्या यद्यपि तेरी तराई फलवंत है तू तराइयों की क्यों बड़ाई करती है जो अपने धन पर बड़ाई करती है और अपने मन में कहती है ५ कि कौन मेरे पास आवेगा। प्रभु सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि देख अपनी चारों ओर से तुझ पर एक भय लाऊंगा और तुम्में से हर एक उस के आगे आगे खेदा जायेगा और भागे हुए को कोई नहीं बटोर सकेगा॥

६ परन्तु इस के पीछे मैं अम्मून के सन्तान की बंधुआई को फेरूंगा परमेश्वर कहता है॥

७ अदूम के विषय में सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि क्या तैमन में और बुद्धि न रही और क्या चतुरों से मंत्र जाता रहा क्या ८ उन की बुद्धि लोप हो गई। हे ददान के निवासियो भागो अपनी अपनी पीठ फेरो बसने को गहिरे उतर जाओ क्योंकि मैं एसौ की बिपत्ति अर्थात् उस के दंड का समय उस पर लाया हूं॥

९ जो दाख के बटोरक तेरे पास आवें तो क्या वे खिनिया न छोड़ेंगे जो रात को चोर तो क्या वे लूटके न अघावेंगे। १० क्योंकि मैं ने एसौ को छूछा किया उस के गुप्त स्थानों को उघारा है यहां लों कि वह आप को छिपा नहीं सक्ता उस के बोज और उस के भाईबंद और उस के अरोसी परोसी लूटे गये हैं और उस ११ का कुछ नहीं बचा। अपने अनाथ बालकों को छोड़ मैं उन के जीवन की रक्षा करूंगा और तेरी रांड़ें मुझ पर बिश्वास करें॥

१२ क्योंकि परमेश्वर ने निश्चय यों कहा है कि देख जिन का भाग पीना न था उन्हों ने कटोरे से निश्चय पीया है और क्या तू अर्थात् तू ही सर्वथा निर्दंड रहेगा तू निर्दंड न रहेगा क्योंकि १३ तू निश्चय पीयेगा। क्योंकि परमेश्वर कहता है कि मैं ने अपनी ही किरिया खाई है कि बूसर: आश्चर्य्यित और निन्दित और उजाड़ और घिनित होगा और उस के सारे नगर सदा उजाड़ रहेंगे॥

१४ मैं ने परमेश्वर से एक प्रचार सुना है और एक दूत जातिगणों के पास यह कहते हुए भेजा गया कि आप आप को एकट्ठे करके उस के बिरुद्ध चढ़ो और १५ संग्राम के लिये उठो। क्योंकि देख मैं ने तुझे जातिगणों में छोटा और मनुष्यों १६ में अत्यन्त निन्दित किया है। तेरी भयानकता और तेरे मन के अहंकार ने तुझे छला है हे चटान की खोह के निवासी जो पहाड़ की चोटी पर रहता है यद्यपि तू गिद्ध की नाईं अपने खोंते को ऊंचा बनावे तौभी वहां से मैं तुझे उतारूंगा परमेश्वर कहता है॥

१७ और अदूम उजाड़ होगा हर एक जो उस के पास से जायेगा सो आश्चर्य्यित होगा और उस की सारी बिपत्ति के लिये फुफकारी मारेगा। १८ सदूम और अमूर: और आसपास के स्थानों के उलटने के समान उस में एक मनुष्य न बसेगा हां मनुष्य का पुत्र भी उस में न रहेगा परमेश्वर कहता है। १९ देख जैसा एक सिंह यरदन के उमड़ने से एक बलवंत के निवासस्थान पर आता है परन्तु मैं उसे उस के आगे से अकस्मात भगाऊंगा और कौन चुना गया है जो उस पर स्थापित करूं क्योंकि कौन मेरे समान है जो मुझे बतावेगा अथवा कौन वह गड़रिया है जो मेरे आगे खड़ा हो सक्ता॥

२० इस लिये परमेश्वर के परामर्श को सुनो जो उस ने अदूम के बिरुद्ध किया है और उस की युक्ति को जो उस ने तैमन के निवासियों के बिरुद्ध ठहराई है निश्चय झुंड के छोटे छोटे में से खींचे जायेंगे निश्चय वह उन के निवास को उन के संग उजाड़ करेगा। २१ उन के गिरने के शब्द से पृथिवी थर्थराती है उन के चिल्लाने का शब्द लाल समुद्र लों सुना जाता है। २२ देखो वह गिद्ध की नाईं चढ़के उड़ेगा और बूसर: पर अपने डैने फैलावेगा और अदूम के बलवंतों का मन उस दिन जन्नेवाली के मन की नाईं होगा जो पीड़ा में है॥

२३ दमिशक के बिषय में हमात और अरफाद घबरा गये हैं क्योंकि उन्हों ने कुसंदेश सुना है वे मूर्छित हैं समुद्र पर व्याकुलता है वह स्थिर नहीं हो सक्ता। २४ दमिशक दुर्बल हुआ है और भागने के लिये फिरा है और थर्थराहट ने उसे जकड़ा है पीड़ा और क्लेश ने जन्नेवाली स्त्री की नाईं उसे पकड़ा है। २५

क्यों उन्हों ने उसे एक स्तुति का नगर मेरे आनन्द का नगर नहीं छोड़ा है॥

२६ इस लिये उस के तरुण उस की सड़कों में गिरेंगे और सारे संग्रामी उस दिन चुप किये जायेंगे सेनाओं का परमेश्वर कहता है॥

२७ और मैं दमिश्क की भीत पर एक आग बारूंगा और वह बिनहदद के भवनों को भस्म करेगी॥

२८ कीदार के विषय और हसूर के राज्यों के विषय में जिन्हें बाबुल के राजा नबूखुदनजर ने मारा परमेश्वर ने यों कहा है कि उठो कीदार को चढ़ जाओ

२९ और पूर्बी लोगों को लूटो। उन के तंबुओं को और भुंडों को ले जायेंगे उन के ओभल और उन की सारी संपत्ति और उन के ऊंट अपने ही कार्य्य के लिये ले जायेंगे और वे चिल्लावेंगे

३० कि चारों ओर डर है। हे हसूर के निवासियो भागो शीघ्र बढ़ो और गहिरे बसने को उतरो परमेश्वर कहता है क्योंकि तुम्हारे बिरोध में बाबुल के राजा नबूखुदनजर ने परामर्श किया है और तुम्हारे बिरोध में एक युक्ति बांधी है॥

३१ उठो और उस देश के बिरुद्ध चढ़ जाओ जो चैन से और निर्भय से रहता है परमेश्वर कहता है जिन के न फाटक न अड़ंगे हैं वे अलग निवास करते हैं।

३२ और उन के ऊंट लूट के लिये होंगे और उन के ढोर की बहुताई लूट के लिये और मैं उन्हें जो अपनी दाढ़ी का कोना काटते हैं चारों ओर छिन्न भिन्न करूंगा और उन के सारे अलंगों से मैं उन पर बिपत्ति लाऊंगा परमेश्वर कहता है।

३३ और हसूर गीदड़ों का निवास सदा उजाड़ होगा कोई जन उस में न बसेगा और न कोई मनुष्य का बंश उस में बास करेगा

३४ परमेश्वर का बचन जो यह कहते हुए यहूदाह के राजा सिदकयाह के राज्य के आरंभ में ऐलाम के विषय में यरमियाह भविष्यद्वक्ता के पास पहुंचा।

३५ सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि देखो मैं ऐलाम के धनुष उन के बल के श्रेष्ठ भाग को तोड़ता हूं।

३६ और मैं स्वर्ग के चारों खूंटों से चार पवनों को ऐलाम के बिरुद्ध लाऊंगा और उन सारी पवनों के आगे उन्हें छिन्न भिन्न करूंगा और कोई ऐसा जातिगण न होगा जिस में ऐलाम का निकाला हुआ न आवे।

३७ और मैं ऐलाम को उन के बैरियों के आगे और उन के प्राण के गाहकों के सन्मुख घबराऊंगा. और मैं उन पर बुराई अर्थात् अपना प्रचण्ड कोप लाऊंगा परमेश्वर कहता है और जब लों मैं उन्हें नष्ट न करूं तब लों उन के पीछे पीछे तलवार भेजूंगा।

३८ और मैं अपना सिंहासन ऐलाम में रक्खूंगा और राजा को और अध्यक्षों को वहां से नष्ट करूंगा परमेश्वर कहता है॥

३९ परन्तु दिनों के अन्त में यों होगा कि मैं ऐलाम की बंधुआई को फेर देऊंगा परमेश्वर कहता है॥

पचासवां पर्ब्ब।

१ परमेश्वर का वह बचन जो यरमियाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा से बाबुल और कसदियों के देश के विषय में पहुंचा॥

२ कि जातिगणों में कहो और प्रचारो और ध्वजा खड़ी करो प्रचारो मत छिपाओ कहो कि बाबुल लिया गया है और बेल मूर्त्ति घबरा गई है मरूदक टूट गया है उस की मूरतें घबरा गईं और उस की घिनित बस्तें तोड़ी गईं

३ हैं। क्योंकि उत्तर से उस के बिरुद्ध एक जातिगय चढ़ आया है जो उस के देश को उजाड़ करेगा यहां लों कि उस में कोई निवासी न होगा मनुष्य और पशु भाग गये हैं वे चले गये॥

४ परमेश्वर कहता है कि उन दिनों और उस समय में इसराएल के सन्तान आवेंगे और यहूदाह के सन्तान एकट्ठे आवेंगे वे जायेंगे वे रोते रोते जायेंगे और अपने ईश्वर परमेश्वर को खोजेंगे।
५ वे अपना रुख सैहून की ओर करते करते उसे खोजेंगे वे आवेंगे और सर्व्वदा की बाचा में परमेश्वर से मिल जायेंगे जो भुलाई न जायेगी॥

६ मेरे लोग खोई हुई भेड़ें हैं उन के गड़रियों ने उन्हें भटकाया उन्हों ने उन्हें छोड़ दिया है वे पर्व्वतों से टीलों पर फिरे हैं वे अपने चैनस्थान को भूल
७ गये हैं। जितनों ने उन्हें पाया उन सभों ने उन्हें भक्षण किया और उन के बैरियों ने कहा कि हम अपराध नहीं करते इस कारण कि उन्हों ने धर्म्म के धाम परमेश्वर के बिरुद्ध अर्थात् अपने पितरों के भरोसा परमेश्वर के बिरुद्ध पाप किया है॥

८ बाबुल में से निकल जाओ और कसदियों के देश से बाहर जाओ और झुंडों के आगे के बकरों की नाईं होओ।
९ क्योंकि देखो मैं बाबुल के बिरुद्ध उत्तर देश से बड़े बड़े जातिगणों की मंडली को उठाऊंगा और लाऊंगा और उन के बिरुद्ध उन से पांती बांधूंगा जिस्से वह लिया जायेगा उन के बाण निपुण संग्रामियों की नाईं होंगे छूछे न फिरेंगे।
१० और कसदिया लूट के लिये होगा सब जो उसे लूटेंगे तृप्त होंगे परमेश्वर कहता है॥

हे मेरे अधिकार के लुटेरो इस लिये ११ कि तुम लोगों ने आनन्द किया और मगन हुए कि तुम घास खाऊ बछड़े की नाईं मोटे हुए हो और घोड़ों की नाईं हिनहिनाते हो। तब तुम्हारी १२ माता बहुत घबरावेगी तुम्हारी जननी लज्जित हो जायेगी देख अन्त में जातिगणों को अरण्य और झुराया हुआ देश और बन। परमेश्वर के कोप के मारे १३ वह फिर बसाया न जायेगा परन्तु वह सर्व्वथा उजाड़ होगा हर एक जो बाबुल के पास से जायेगा आश्चर्य्यित होगा और उस की सारी बिपत्तों के कारण फुफकारेगा॥

अपने तईं बाबुल के बिरुद्ध चारों १४ ओर से लैस हो रहो तुम जो धनुष खींचते हो उस पर बाण चलाओ बाण को मत रख छोड़ो क्योंकि उस ने परमेश्वर के बिरुद्ध पाप किया है। उस १५ के चारों ओर ललकारो उस ने अपना हाथ दिया है उस की नेवें गिरी हैं उस की भीतें ढाई गई हैं क्योंकि यह परमेश्वर का पलटा है सो उस्से पलटा लेओ जैसा उस ने किया है तैसा उस्से करो। बोवैये को और उसे जो लवनी १६ में हंसुआ पकड़ता है बाबुल में से काट डालो हर एक उन में से नाशक की तलवार के मारे अपने अपने लोगों में फिर जायेगा और उन में हर एक अपने अपने देश को भाग जायेगा॥

इसराएल छिन्न भिन्न भेड़ है सिंहों १७ ने फाड़ा है पहिले असूर के राजा ने उसे भक्षण किया और इस पिछले ने अर्थात् बाबुल के राजा उस के हाड़ों को तोड़ा है। इस लिये १८ सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि देखो जैसा मैं ने असूर के राजा को दण्ड दिया है

लेगा बाबुल के राजा को और उस के
१९ देश को दण्ड देऊंगा। परन्तु मैं इसराएल को उसी के स्थान में फेर लाऊंगा और वह करमिल और बसन पर चराई करेगा और उस का प्राण इफरायम पर्ब्बत पर और जिलियद पर तृप्त होगा।
२० परमेश्वर कहता है कि उन दिनों में और उस समय में इसराएल की बुराई खोजी जायेगी और पाई न जायेगी और यहूदाह के पापों का बिचार किया जायेगा परन्तु पाये न जायेंगे क्योंकि जिन्हें मैं ने रख छोड़ा है उन को क्षमा करूंगा॥

२१ दो बेर दंगाइत देश पर हां उस पर चढ़ जा और दण्ड के निवासियों पर उजाड़ कर और उस के बंश को नष्ट कर परमेश्वर कहता है और मेरी सारी
२२ आज्ञा के समान कर। देश में संग्राम
२३ का और बड़े नाश का शब्द है। सारी पृथिवी की हथौड़ी कैसी काटी और तोड़ी गई देशगणों में बाबुल कैसा
२४ एक उजाड़ हुआ है। हे बाबुल जब तू अचेत था तब मैं ने तेरे लिये जाल बिछाया है और तू पकड़ा भी गया है तू पाया गया है और अचानक पकड़ा गया है क्योंकि तू ने परमेश्वर की बिरुद्धता किई है॥

२५ परमेश्वर ने अपना अस्त्रस्थान खोला है और अपनी जलजलाहट के हथियार निकाले हैं क्योंकि कसदियों के देश में प्रभु सेनाओं के परमेश्वर का यह कार्य्य
२६ है। दूर सिवाने से उस पर चढ़ आओ उस के भंडारों को खोलो उसे ढेर ढेर करो और उसे नष्ट करो कुछ भी उस्से
२७ न बचे। उस के सारे बैलों को बध करो और उन्हें घात के लिये उतरने देओ हाय उन पर क्योंकि उन का दिन आया है अर्थात् उन के दण्ड
२८ पाने का समय। उन का शब्द जो बाबुल देश से भागके बच गये हैं कि परमेश्वर हमारे ईश्वर का पलटा अर्थात् उस के मन्दिर का पलटा सैहून में प्रचारें॥

२९ धनुषधारियों को बाबुल के बिरुद्ध बुलाओ तुम सब जो धनुष खींचते हो उस के बिरुद्ध चारों ओर छावनी करो और कोई बचने न पावे उस के कार्य्य के समान उसे पलटा देओ उस के सारे किये हुए के समान उस्से करो क्योंकि उस ने परमेश्वर के बिरुद्ध अहंकार से कार्य्य किया है अर्थात् इसराएल के
३० धर्म्ममय के बिरुद्ध। इस लिये उस के तरुण उस की सड़कों में गिरेंगे और उस के सारे योद्धा उस दिन काट डाले जायेंगे परमेश्वर कहता है॥

३१ हे अहंकारी देख मैं तुझ पर आता हूं प्रभु सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि मैं तेरे बिरुद्ध हूं क्योंकि तेरा दिन अर्थात् तेरे दण्ड का समय आया है।
३२ और अहंकारी ठोकर खाके गिरेगा और उसे उठाने को कोई न होगा और मैं उस के नगरों में आग बारूंगा और वह उस के चारों ओर भस्म करेगी॥

३३ सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि इसराएल के सन्तान और यहूदाह के सन्तान एकट्ठे सताये गये और सभों ने जो उन्हें बंधुआई में ले गये उन्हें दृढ़ता से पकड़ रक्खा उन्हों ने उन्हें छोड़ने को
३४ नाह किया। उन का मुक्तिदायक बली है उस का नाम सेनाओं का परमेश्वर है वह निश्चय उन के पद का पक्ष करेगा यहां लों कि पृथिवी में कुशल देवे और बाबुल के निवासियों को कंपवावे॥

३५ परमेश्वर कहता है कि कसदियों पर और बाबुल के निवासियों पर और उस के अध्यक्षों पर और उस के बुद्धि-
३६ मानों पर तलवार । कलदायकों पर खड्ग और उन की बुद्धि मारी जायेगी उन के वीरों पर तलवार और वे
३७ विस्मित होंगे । उन के घोड़ों पर और उन के रथों पर और उन की सारी मिली हुई मंडली पर जो उस के मध्य में हैं तलवार और वे स्त्रियों की नाईं हो जायेंगे उन के भंडारों पर
३८ तलवार और वे लूटे जायेंगे । उन के जलों पर सुखाहट और वे सूख जायेंगे क्योंकि वह खोदी हुई मूर्त्तिन का देश है और वे मूर्त्तिन से बौड़हे हैं ।
३९ इस कारण बनबिलाव सियारों के साथ रहेंगे ऊंटपक्षी की चिंगनियां भी उस में रहेंगी वह फिर कधी बसाया न जायेगा और पीढ़ी से पीढ़ी लों वहां
४० कोई न रहेगा । परमेश्वर यों कहता है कि जैसा ईश्वर ने सदूम और अमूर: और उस के आसपास के स्थानों को उलट दिया तैसा उस में कोई न बसेगा और मनुष्य का कोई पुत्र उस में बास न करेगा ॥

४१ देख उत्तर से एक बड़ी जाति आती है और बहुत से लोग और बहुत से राजा पृथिवी के अन्तों से उभड़ेंगे ।
४२ वे धनुष और बरछी हाथ में लेंगे वे क्रूर हैं और दया न दिखावेंगे उन का शब्द समुद्र की नाईं गर्जेगा और वे घोड़ों पर चढ़ेंगे हे बाबुल की पुत्री वे तेरे बिरुद्ध संग्रामियों की नाईं पांती
४३ बांधेंगे । बाबुल के राजा ने उन की चर्चा सुनी है और उस के हाथ दुर्बल हुए हैं जननी की पीड़ा के समान
४४ पीड़ा ने उसे पकड़ा है । देख जैसा एक सिंह यरदन के उभड़ने से एक बलवन्त के निवासस्थान पर आता है परन्तु मैं उसे उस के आगे से अकस्मात् भगाऊंगा और कौन चुना गया है जो उस पर स्थापित करूं क्योंकि मेरी नाईं कौन है अथवा कौन मुझे बतावेगा अथवा कौन वह गड़रिया है जो मेरे आगे खड़ा होगा ॥

४५ इस लिये परमेश्वर का परामर्श सुनो जो उस ने बाबुल के बिरुद्ध युक्ति किई है और उस के ठहराये हुए जो उस ने कसदियों के निवासियों के बिरुद्ध ठहराया है वे झुंड के छोटे छोटों में से खींचे जायेंगे वह निश्चय उन के निवासों को उन के संग उजाड़
४६ करेगा । बाबुल लिया गया इस बात के शब्द से पृथिवी सरक गई और उस का चिल्लाना अन्यदेशियों लों सुना गया है ॥

एकावनवां पर्ब्ब

१ परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं बाबुल के बिरुद्ध और कसदीम के निवासियों के बिरुद्ध एक नाशक पवन
२ उभाड़ूंगा । और मैं बाबुल के बिरुद्ध ओसवैयों को भेजूंगा और वे उसे ओसावेंगे और उस का देश छूछा करेंगे क्योंकि बिपत्ति के दिन वे उस के बिरुद्ध चारों ओर होंगे ।
३ खींचनेहारे पर धनुषधारी अपना धनुष खींचे और उस पर जो आप को अपने झिलम में उभाड़ता और उस के तरुणों को मत छोड़ो उस की सारी सेना को सर्बथा
४ नाश करो । और वे कसदीम के देश में जूझ जायेंगे और उस की सड़कों में गोदे हुए गिरेंगे ॥

५ क्योंकि न इसराएल न यहूदाह अपने ईश्वर सेनाओं के परमेश्वर से त्यागा गया है क्योंकि उन का देश

इसराएल के धर्म्ममय के बिरुद्ध अपराध से परिपूर्ण है॥

६ बाबुल के मध्य में से भाग निकलो और हर एक अपना अपना प्राण बचाओ जिस्तें उस के दण्ड में तुम लोग काटे न जाओ क्योंकि परमेश्वर के पलटे का समय है वह उसे प्रतिफल देगा।

७ परमेश्वर के हाथ में बाबुल एक सोने का कटोरा है जिस ने सारी पृथिवी को मतवाली किया अन्यदेशियों ने उस में का दाखरस पीया है इस लिये अन्यदेशी

८ बौड़हे हो गये हैं। कि बाबुल अचानक गिर पड़ा है और टूट गया उस के लिये चिल्लाओ उस के दुःख के लिये औषध लेओ क्या जाने वह चंगा हो जाय॥

९ हम ने बाबुल पर औषध लगाई है परन्तु वह चंगी न हुई उसे छोड़ देओ और चलो हर एक अपने अपने देश को जायें क्योंकि उस का दण्ड स्वर्ग लों पहुंचा है और आकाश लों उठ गया

१० है। परमेश्वर ने हमारे बचाव प्रगट किये हैं आओ हम सैहून में अपने ईश्वर परमेश्वर का कार्य्य प्रगट करें॥

११ बाण जगमगाओ ढालों को धरो परमेश्वर ने मादी के राजाओं के मन को उभाड़ा है क्योंकि बाबुल को नष्ट करने को उस ने ठहराया है निश्चय वह परमेश्वर का पलटा अर्थात् उस के

१२ मन्दिर का पलटा है। बाबुल की भीतों पर ध्वजा खड़ी करो और दृढ़ पहरू रक्खो पहरे बैठाओ और ठुकियों को लैस करो क्योंकि परमेश्वर ने ठहराया है और जो कुछ उस ने बाबुल के निवासियों के विषय में कहा सो उस ने पूरा किया॥

१३ अरे तू जो बहुत से जलों के अलंग में रहती है जिस में धन मुक्ता है तेरा अन्त पहुंचा तेरी लालच हो चुकी।

१४ सेनाओं के परमेश्वर ने अपनी ही किरिया खाई कि मैं निश्चय तुझे मनुष्यों से जैसा टिड्डियों से भर देऊंगा और वे तेरे बिरुद्ध ललकारेंगे॥

१५ उस ने अपने पराक्रम से पृथिवी को सृजा है अपनी बुद्धि से जगत को स्थिर किया है और अपने ज्ञान से उस ने

१६ स्वर्गों को फैलाया है। जब वह अपना शब्द बढ़ाता है तब आकाशों में जलों का कोलाहल होता है और पृथिवी के अन्त से वह मेघों को उठाता है बृष्टि के साथ बिजुलियां निकालता है और वह अपने भंडारों से पवन निकालता

१७ है। हर एक जन अपनी समझ से मूर्ख होता है हर एक कार्य्यकारी मूर्त्ति से लजा जाता है क्योंकि उस की ढाली हुई मूर्त्ति मिथ्या हैं और उन में श्वास

१८ नहीं। ये बृथा हैं उन का कार्य्य जो बहुत चूक करते हैं अपने दण्ड आने

१९ के समय में वे नष्ट होंगे। यअकूब का भाग ऐसा नहीं क्योंकि वह सृष्टि का कर्त्ता है और इसराएल उस के अधिकार का दण्ड उस का नाम सेनाओं का परमेश्वर है॥

२० हे संग्राम के कुल्हाड़े तू मेरे संग्राम का हथियार होगा और जातिगणों को मैं तुझी से तोड़ूंगा और तुझी से राज्यों

२१ को नष्ट करूंगा। और तुझी से मैं घोड़े को और उस के चढ़वैये को तोड़ूंगा और तुझी से रथ को और उस के सारथी को

२२ तोड़ूंगा। और तुझी से पति पत्नी को तोड़ूंगा और तुझी से बूढ़े और लड़के को तोड़ूंगा और तुझी से तरुण पुरुष

२३ और कुंआरी को तोड़ूंगा। और तुझी से गड़रिये और उस के झुंड को तोड़ूंगा और तुझी से मैं किसान को और उस के जोड़े बैल को तोड़ूंगा और तुझी

५८ सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि बाबुल की चौड़ी भीत सर्ब्बथा ढाई जायेगी और उस के ऊंचे ऊंचे फाटक आग से जलाये जायेंगे और लोग बृथा परिश्रम करेंगे और जातिगण आग में और वे थक जायेंगे ॥

५९ यर्मियाह भविष्यद्वक्ता का वह बचन जो उस ने महसियाह के बेटे नैयरियाह के बेटे शिरायाह को आज्ञा किई थी जब वह यहूदाह के राजा सिदकयाह के संग उस के राज्य के चौथे बरस में बाबुल को गया था क्योंकि शिरायाह ६० नम्र अध्यक्ष था । और यर्मियाह ने सारी बुराई को जो बाबुल पर बीतनी थी एक पुस्तक में लिखी ये सारी बातें ६१ बाबुल के बिषय में लिखीं । और यर्मियाह ने शिरायाह से कहा कि जब तू बाबुल में पहुंचे तब देखके इन सारी ६२ बातों को पढ़ना । और कहना कि हे परमेश्वर तू ने इस स्थान के काट डालने के बिषय में कहा है यहां लों कि उस में कोई निवासी मनुष्य अथवा पशु न रहेगा क्योंकि सनातन उजाड़ रहेगा । ६३ और यों होगा कि जब तू इस पुस्तक को पढ़ चुकेगा तब उस में एक पत्थर बांधके फुरात के मध्य में फेंक देना । ६४ और कहना कि यों बाबुल डूब जायेगा और उस बुराई के कारण जो मैं उस पर लाता हूं फिर न उठेगा और वे थक जायेंगे यहां लों यर्मियाह के बचन ॥

बावनवां पर्ब्ब ।

१ सिदकयाह एक्कीस बरस का था जब राज्य करने लगा और उस ने यरूसलम में ग्यारह बरस राज्य किया और उस की माता का नाम हमूतल जो लिबनाही यर्मियाह की बेटी थी । २ और उस ने यहूयकीम की सारी क्रिया के समान परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई । ३ क्योंकि यरूसलम और यहूदाह के बिरोध में परमेश्वर के कोप के कारण ऐसा हुआ था कि उस ने उन्हें अपनी दृष्टि से दूर किया सिदकयाह राजा बाबुल के राजा के बिरुद्ध फिर गया ॥

४ और उस के राज्य के नवें बरस के दसवें मास की दसवीं तिथि में ऐसा हुआ कि बाबुल का राजा नबूखुदनजर वह और उस की सारी सेना यरूसलम के बिरुद्ध आई और उस के साम्ने छावनी किई और उस के बिरुद्ध चारों ५ ओर गढ़ बनाये । और सिदकयाह राजा के ग्यारहवें बरस लों नगर घेरा रहा ॥

६ चौथे मास की नवीं तिथि में जब नगर में बड़ा अकाल था और देश के ७ लोगों के लिये रोटी न रही । तब नगर तोड़ा गया और सारे योद्धा भागे और दोनों भीतों के फाटक में से जो राजा की बारी के लग है रात को नगर से निकल गये और वे चौगान की ओर गये जब लों कसदी नगर की चारों ओर ८ थे । परन्तु कसदियों की सेना ने राजा का पीछा किया और यरीहो के चौगानों में सिदकयाह को जा ही लिया और उस की सारी जथा उस्से छिन्न भिन्न थी । ९ और उन्हों ने राजा को पकड़ा और उसे हमात देश रिबल: में बाबुल के राजा के पास लाये और उस ने उस का बिचार १० किया । और बाबुल के राजा ने सिदकयाह की आंखों के आगे उस के पुत्रों को घात किया और उस ने रिबल: में यहूदाह के सारे अध्यक्षों को भी मार ११ डाला । और उस ने सिदकयाह की आंखें निकालीं और उसे पीतल की सीकरों से जकड़ा और बाबुल का राजा

बाबुल में ले गया और उस के मरने लों उसे बन्दीगृह में रक्खा ॥

१२ और बाबुल के राजा नबूखुदनज़र के उन्नीसवें बरस के पांचवें मास की दसवीं तिथि में बाबुल के राजा का समीपी पहरुओं का प्रधान नबूसरअद्दान यरू-
१३ सलम में आया। और परमेश्वर के मन्दिर को और राजा के भवन को जला दिया और यरूसलम के सारे घरों को और हर एक बड़े घर को आग से जला दिया।
१४ और पहरुओं के प्रधान के संग के कस-दियों की सारी सेनाओं ने यरूसलम की चारों ओर की सारी भीतें तोड़ डालीं ॥

१५ तब पहरुओं के प्रधान नबूसरअद्दान ने लोगों में के कितने कंगालों और नगर में के रहे हुए लोगों को और भगोड़ूओं को जो बाबुल के राजा की ओर गये अर्थात् रही हुई मंडली बंधु-
१६ आई में ले गया। परन्तु पहरुओं के प्रधान नबूसरअद्दान ने देश के कितने एक कंगालों को दाख की बारी के और
१७ किसनई के लिये छोड़ दिया। और परमेश्वर के मन्दिर में के पीतल के खंभे और आधार और परमेश्वर के मन्दिर में के पीतल का समुद्र कसदियों ने तोड़ डाला और उन का सारा पीतल
१८ बाबुल को ले गये। वे कड़ाहे भी और फावड़े और कतरनियां और कटोरे और करछुलें और सारे पीतल के पात्र जिन
१९ से वे सेवा करते थे ले गये। और बर्त्तन और धूपावरी और कटोरे और कड़ाहे और दीअट और करछुल और कटोरियां और जो कुछ सोने का था सोने को और जो कुछ चांदी का था चांदी को
२० पहरुओं का प्रधान ले गया। दो खंभे और समुद्र और पीतल के बारह बैल जो नीचे थे और आधार जिन्हें सुले-मान राजा ने परमेश्वर के मन्दिर के लिये बनाया था इन पात्रों का पीतल बेतौल था ॥

२१ और खंभे एक एक खंभे की ऊंचाई अठारह हाथ थी और बारह हाथ की रस्सी उस की गोलाई थी और पोला होके वह चार अंगुल मोटा था। और
२२ उस पर पीतल का मथाल था और एक मथाल की ऊंचाई पांच हाथ और मथाल की चारों ओर जालकार्य्य और अनार थे और सब पीतल के और इसी रीति से
२३ दूसरे खंभे पर भी अनार। और एक एक ओर छियानवे अनार और जाल-कार्य्य पर के चारों ओर के अनार एक सौ ॥

२४ और पहरुओं के प्रधान ने शिरायाह प्रधान याजक को और दूसरे याजक सफनियाह को और तीन द्वारपालों को
२५ लिया। और नगर में से उस ने एक नपुंसक को जो योद्धा का प्रधान था और सात जन राजा के समीपियों में से जो नगर में पाये गये और सेना के श्रेष्ठ लेखक को जो देश के लोगों की गिन्ती करता था और देश में के साठ जन को
२६ जो नगर के मध्य पाये गये। और नबूसरअद्दान पहरुओं का प्रधान उन्हें
२७ लेके रिबलः में बाबुल के राजा के पास ले आया। और बाबुल के राजा ने उन्हें मारा और हमात देश के रिबलः में उन्हें घात किया और यहूदाह को उन के देश में से बंधुआई में ले गया ॥

२८ ये वे लोग हैं जिन्हें नबूखुदनज़र सातवें बरस में बंधुआई में ले गया
२९ अर्थात् तीन सहस तेईस यहूदी। नबू-खुदनज़र के अठारहवें बरस में वह यरूसलम से आठ सौ बत्तीस जन को
३० ले गया। नबूखुदनज़र के तेईसवें बरस

में नबूकदनज़ार यहूदियों का प्रधान सात सौ पैंतालीस यहूदियों को बंधुआई में ले गया सारे लोग चार सहस्र छः सौ थे॥

३१ और यहूदाह के राजा यहूयकीम की बंधुआई के सैंतीसवें बरस के बारहवें मास की पचीसवीं तिथि में ऐसा हुआ कि बाबुल के राजा अवीलमरुदक ने अपने राज्य के पहिले बरस में यहूदाह के राजा यहूयकीम को बढ़ाया और उसे
३२ बन्दीगृह से निकाल लाया। और उस्से अनुग्रह की बातें किईं और उस के सिंहासन को अपने संग के राजाओं के सिंहासन से जो बाबुल में थे सभों
३३ से ऊंचा किया। और उस ने उस के बन्दीगृह के बस्त्रों को पलट डाला और वह अपने जीवन भर नित्य उस के
३४ आगे भोजन करता रहा। और उस के जीवन भर की जीविका मरने लों नित्य की जीविका बाबुल के राजा की आज्ञा से प्रतिदिन परिमाण से दिई जाती थी॥

यरमियाह का बिलाप।

पहिला पर्व्व।

१ लोगों से भरी हुई नगरी क्यों अकेली बैठी है वह बिधवा की नाईं हो गई जो जातिगणों में बड़ी थी और प्रदेशों में रानी थी सो करदायक हुई॥

२ वह रात को बिलख बिलख रोती है और उस के आंसू उस के गालों पर उस के सारे प्रेमियों में उस का शांतिदायक कोई नहीं उस के सारे मित्रों ने उस्से छल का ब्यवहार किया है वे उस के बैरी हुए हैं॥

३ अति कष्ट के मारे और सेवा के कारण यहूदाह बंधुआई में गया है वह अन्यदेशियों में बास करता है वह चैन नहीं पाता उस के सारे खेदनेहारों ने उसे सकेती में जा लिया॥

४ सैहून के मार्ग बिलाप करते हैं क्योंकि बड़े पर्व्व में कोई नहीं आता उस के सारे फाटक उजाड़ हैं उस के याजक हाय हाय करते हैं उस की कुंवारियां कष्टित हैं और वह आप कड़वाहट में है॥

५ उस के बैरी श्रेष्ठ उस के शत्रु भाग्यमान हुए हैं क्योंकि उस के अपराधों की बहुताई के लिये परमेश्वर ने उसे दुःख दिया है उस के बालक बैरी के आगे बंधुआई में गये हैं॥

६ और सैहून की कन्या से उस की सारी सुन्दरता जाती रही उस के अध्यक्ष उन हरिणों की नाईं हैं जो चराई नहीं पाते और खेदनेहारे के आगे निर्बल चले गये॥

७ यरूसलम ने अपने दुःख और बिपत्ति के दिनों में अपने पुरातन दिनों की सारी मनभावनी बस्तुन को चेत किया है जब उस के लोग बैरी के हाथ में पड़े और उस का सहायक कोई न हुआ बैरियों ने उसे देखा और उस के बिश्राम दिनों पर हंसे॥

८ यरूसलम ने बहुत ही पाप किया है इस लिये वह अलग किई गई उस के सारे आदरदायकों ने उस की निन्दा किई है क्योंकि उन्हों ने उस की नग्नता देखी है हां वह हाय हाय करते करते मुंह फिराती है ॥

९ उस की अपवित्रता उस के अंचलों में थी उस ने अपने अन्त को नहीं सोचा इसी लिये वह आश्चर्य्यित से उतारी गई उस का शांतिदायक कोई नहीं है परमेश्वर मेरे कष्ट को देख क्योंकि बैरी ने आप को बढ़ाया है ॥

१० बैरी ने उस की सारी मनभावनी बस्तुन पर अपना हाथ फैलाया है क्योंकि उस ने जातिगणों को अपने पवित्रस्थान में पैठते देखा है जिन के बिषय में तू ने आज्ञा किई है कि वे मेरी मंडली में न पैठेंगे ॥

११ उस के सारे लोग हाय हाय करते हैं वे रोटी ढूंढ़ते हैं उन्हों ने अपना जीव पालने को भोजन के लिये अपने मोल की बस्तु दिई है हे परमेश्वर देख और सोच क्योंकि मैं तुच्छ बना हूं ॥

१२ हे सारे पथिको क्या यह तुम्हें कुछ नहीं है दृष्टि करके देखो क्या कोई दुःख मेरे दुःख के समान है जो मुझ पर हुआ है जिस्से परमेश्वर ने अपने महाकोप के दिन में मुझे कष्टित किया है ॥

१३ ऊपर से उस ने मेरी हड्डियों में आग भेजी है और वह उन पर प्रबल होती है उस ने मेरे पांव के लिये जाल बिछाया है उस ने मुझे उलटा फेर दिया है उस ने मुझे उजाड़ा और दिन भर घटाया है ॥

१४ मेरे अपराधों का जूआ उसी के हाथ से बांधा गया वे लिपटे हुए मेरे गले पर आ रहे उस ने मेरे बल को घटाया है प्रभु ने मुझे उन के हाथों में सौंपा है मैं उठ नहीं सक्ती हूं ॥

१५ प्रभु ने मेरे मध्य में सारे बलवन्त जनों को रौंदा है उस ने मेरे तरुणों को चूर करने को मेरे बिरुद्ध जथा बुलाई है प्रभु ने यहूदाह की कुंवारी पुत्री को दाख के कोल्हू में रौंदा है ॥

१६ इन बातों के लिये मैं बिलाप करती हूं मेरी आंख मेरी आंख जल बहाती है क्योंकि मेरे प्राण के सहायक शांतिदायक दूर हैं मेरे बालक उजड़ गये हैं क्योंकि बैरी प्रबल हुए हैं ॥

१७ सैहून अपने हाथ फैलाती है उस का शांतिदायक कोई नहीं परमेश्वर ने यअकूब के बिषय में आज्ञा किई है उस के बैरी उस के चारों ओर हैं उन में यरूसलम अशुद्ध स्त्री की नाईं हुई है ॥

१८ परमेश्वर धर्म्मी है क्योंकि मैं उस की आज्ञा से फिर गया हूं हे सारे लोगो सुन रक्खो और मेरे दुःख को देखो मेरी कुंवारियां और मेरे तरुण बंधुआई में पहुंचाये गये हैं ॥

१९ मैं ने अपने प्रेमियों को बुलाया पर वे मुझ से छली ठहरे मेरे याजक और मेरे प्राचीनों ने अपना अपना जीव पालने को अपने लिये भोजन खोजते खोजते नगर में प्राण त्यागा ॥

२० हे परमेश्वर देख कि मुझ पर दुःख है मेरी अंतड़ियां ममोड़ती हैं मुझ में मेरा अन्तःकरण उलट पुलट हुआ है क्योंकि मैं ने तेरे बिरुद्ध अति सिर उठाया है बाहर तलवार नष्ट करती है और भीतर मृत्यु की नाईं है ॥

२१ उन्हों ने सुना है कि मैं हाय हाय करता हूं मेरा शांतिदायक कोई नहीं मेरे सारे बैरियों ने मेरी बिपत्ति को सुना और आनन्दित हुए हैं क्योंकि तू

ने बंद किया है जो तू ने उच्चारा सोई दिन तू लाया है और वे मेरे समान होंगे ॥

२२ उन की सारी दुष्टता तेरे आगे आवे और जैसा तू ने हम से सारे अपराधों के लिये व्यवहार किया है तू उन से ऐसा व्यवहार कर क्योंकि मेरा हाय हाय करना बहुत और मेरा मन निर्बल है ॥

दूसरा पर्ब्ब ।

१ प्रभु ने अपनी रिस से सैहून की कन्या को घटा से कैसे ढांपा है उस ने इसराएल की शोभा को स्वर्ग से पृथिवी पर डाल दिया है और अपनी रिस के दिन अपने पांव की पीढ़ी को स्मरण नहीं किया है ॥

२ प्रभु ने यअकूब के सारे स्थानों को निर्दयता से बिगाड़ा है उस ने अपने कोप से यहूदाह की लड़की के दृढ़ गढ़ों को गिरा दिया है उस ने उन्हें भूमि पर उतार दिया है उस ने राज्य को और उस के अध्यक्षों को अशुद्ध किया है ॥

३ उस ने अपनी अति रिस से इसराएल के हर एक सींग को काट डाला है उस ने बैरियों के आगे से अपना दहिना हाथ खींचा है और उस ने यअकूब में धधकती आग की नाईं बारा है जो चारों ओर भक्षण करती है ॥

४ उस ने बैरी की नाईं अपना धनुष खींचा है उस का दहिना हाथ बैरी की नाईं बढ़ाया हुआ है और हर एक आंख की सारी बांछा को सैहून की पुत्री के तंबू में घात किया है उस ने आग की नाईं अपने कोप को उंडेला है ॥

५ प्रभु बैरी की नाईं हुआ है उस ने इसराएल को उजाड़ा है उस ने उस के सारे भवनों को उजाड़ा है उस ने उस के दृढ़ गढ़ों को नाश किया है और यहूदाह की पुत्री में हाहाकार और बिलाप बढ़ाया है ॥

६ और उस ने अपनी ही बाड़ित बाड़ी पर बरबस किया है उस ने अपनी मंडली को नष्ट किया है परमेश्वर ने सैहून में पवित्र पर्ब्बों और बिश्राम दिनों को भुलवाया है और अपनी रिस की जलजलाहट से उस ने राजा को और याजक को तुच्छ जाना है ॥

७ परमेश्वर ने अपनी बेदी को त्यागा है अपना पवित्रस्थान त्यागित किया है उस ने उस के भवनों की भीतों को बैरी के हाथ में सौंपा है पवित्र पर्ब्बों के दिनों की नाईं उन्हों ने परमेश्वर के मन्दिर में शब्द उठाया है ॥

८ परमेश्वर ने सैहून की पुत्री की भीत को नाश करने को ठाना है उस ने रस्सी फैलाई है उस ने नाश करने में अपना हाथ नहीं उठाया है परन्तु उस ने कोट और भीत से बिलाप करवाया है वे मिलके घट गये हैं ॥

९ उस के फाटक भूमि में गिर गये हैं उस ने उस के अड़ंगों को तोड़के बिनाश किया है उस का राजा और उस के अध्यक्ष अन्यदेशियों में हैं व्यवस्था नहीं है उस के भविष्यद्वक्ते भी परमेश्वर से दर्शन नहीं पाते हैं ॥

१० सैहून की पुत्री के प्राचीन भूमि पर बैठे हैं वे चुपचाप हैं उन्हों ने अपने सिरों पर धूल डाली है उन्हों ने टाट बस्त्र कसा है यरूसलम की कुंवारियों ने भूमि लों सिरों को झुकाया है ॥

११ आंसुओं से मेरी आंखें घट गई हैं मेरी अंतड़ियां मरोड़ती हैं मेरे लोगों की पुत्री के दरार के मारे मेरा कलेजा भूमि पर उंडेला गया है जब लों बालक और दूधपीवक नगर की गलियों में मूर्छित पड़े हैं ॥

१२ अब वे नगर की गलियों में के घायलों की नाईं मूर्छित हैं जब उन की माता की गोद में उन का प्राण निकलता है तब वे अपनी अपनी माता से कहते हैं अन्न और दाखरस कहां॥

१३ हे यरूसलम की पुत्री मैं तुझे कौन सी बात से उपदेश देऊं और किस्से उपमा देऊं हे सैहून की कुंवारी पुत्री तुझे शांति देने को मैं तुझे किस के तुल्य करूं क्योंकि तेरा दरार समुद्र की नाईं चौड़ा है कौन तुझे चंगा कर सक्ता है॥

१४ तेरे भविष्यद्वक्तों ने तेरे लिये भविष्य कहा है जो वृथा और मिथ्या है और उन्हों ने तेरी बंधुआई फेर लाने को तेरे आगे तेरी बुराई प्रगट नहीं किई है परन्तु उन्हों ने तेरे लिये वृथा बोझ और देश निकाले जाने का भविष्य कहा है॥

१५ मार्ग के सारे पथिकों ने तुझ पर थपोड़ी मारी है वे यरूसलम की पुत्री पर सिर धुनके फुफकारी मारे मार कहते हैं क्या यह वही नगरी है जो पूरी सुन्दरी और सारी पृथिवी का आनन्द कहलाती थी॥

१६ तेरे सारे बैरियों ने तेरे विरुद्ध मुंह खोला है उन्हों ने फुफकारी मार और दांत किचकिचाके कहा कि हम उसे लील गये हैं निश्चय हम इसी दिन की बाट जोहते थे हम ने पाया है हम ने देखा है॥

१७ परमेश्वर ने अपनी युक्ति को कर डाला उस ने अपने बचन को पूरा किया है जो उस ने अगिले दिनों में ठहराया सो उस ने नाश किया और न छोड़ा परन्तु उस ने एक बैरी को तुझ पर आनन्द कराया है उस ने तेरे बैरियों के सींग को उभाड़ा है॥

१८ उन का मन प्रभु के आगे चिल्लाता है हे सैहून की पुत्री रात दिन धारा की नाईं अपने आंसू बहने दे आप को चैन मत दे अपनी आंख की पुतली को स्थिर मत होने दे॥

१९ उठ रात्री के पहरों के आरम्भ में चिल्ला चिल्ला रो अपना मन पानी की नाईं प्रभु के आगे उंडेल अपने नन्हे बालकों के प्राण के लिये अपने हाथ उठा जो सारे मार्गों के सिरे में भूख के मारे मूर्छित हैं॥

२० हे परमेश्वर देख और दृष्टि कर कि तू ने किस्से यह व्यवहार किया है क्या स्त्री अपने कोख का फल जो बालक हाथ में नचाया गया भखेंगी क्या याजक और भविष्यद्वक्ता परमेश्वर के पवित्रस्थान में मारे जायेंगे॥

२१ बालक और बृद्ध मार्गों में पड़े हुए हैं मेरी कुंवारियां और मेरे युवा पुरुष तलवार से गिरे हैं तू ने उन्हें अपनी रिस के दिन में घात किया है तू ने उन्हें मार डाला है और दया न किई॥

२२ तू ने जैसा पवित्र दिन में मेरे भय को चारों ओर बटोरा है यहां लों कि परमेश्वर की रिस के दिन में कोई न छूटा न बचा जिन्हें मैं ने पाला पोसा था वे सब मेरे बैरी हुए॥

तीसरा पर्ब्ब।

१ मैं वह मनुष्य हूं जिस ने उस के कोप के दण्ड का दुःख देखा है। २ उस ने मेरी अगुआई किई और अंधियारे में चलाया है परन्तु उंजियाले में नहीं। ३ निश्चय वह मेरे विरुद्ध बैठा है वह दिन भर अपना हाथ फेरता है॥

४ उस ने मेरा मांस और मेरा चाम गला दिया है उस ने मेरी हड्डियों को तोड़ा है। ५ उस ने मुझ पर गुढ़ाई किई है और कड़ुआहट और परिश्रम ने मुझे घेरा

६ है । उस ने उन की नाईं जो पुरातन से मर गये हैं मुझे अंधियारे के मध्य में रहने कराया है ॥

७ उस ने मेरी चारों ओर बाड़ा बांधा है कि मैं निकल नहीं सक्ता उस ने ८ मेरी सीकरें भारी किई हैं । हां जब मैं चिल्ला चिल्ला पुकारता हूं तब वह मेरी ९ प्रार्थना को रोकता है । उस ने गढ़े हुए पत्थर से मेरे मार्गों को बन्द किया है उस ने मेरे पथों को टेढ़ा किया है ॥

१० वह घात में लगे हुए भालू की और छिपे हुए सिंह की नाईं मेरे लिये है । ११ उस ने मेरे मार्गों को टेढ़ा किया है और मुझे टुकड़े टुकड़े किया है उस ने मुझे १२ उजाड़ा है । उस ने अपना धनुष खींचा है और मुझे बाण के लिये चिन्ह कर रक्खा है ॥

१३ उस ने अपने तूण के बाण को मेरे १४ गुर्दों में चलाया है । मैं अपने सारे लोगों के लिये स्वांग और दिन भर उन १५ का गान हुआ हूं । उस ने मुझे कड़वाहट से भर दिया है और नागदौना मुझे पिलाया है ॥

१६ और उस ने कंकड़ से मेरे दांतों को भी तोड़ा है उस ने मुझे राख पर १७ लोटाया है । और मेरा प्राण कुशल से दूर किया गया मैं भलाई को भूल गया । १८ तब मैं ने कहा कि परमेश्वर से मेरा बल और मेरी आशा जाती रही ॥

१९ मेरे क्लेश और मेरी बिपत्ति नाग- २० दौना और पित्त का स्मरण कर । मेरा प्राण स्मरण करता है और मुझ में २१ निहुरता है । यह मैं अपने मन में दुहराता हूं इस लिये मैं आशा रक्खूंगा ॥

२२ परमेश्वर की दया से हम क्षय नहीं होते क्योंकि उस की दया नहीं घटती २३ है । वे कृपा हर बिहान को नई हैं २४ तेरी सत्यता बड़ी है । मेरा प्राण कहता है कि परमेश्वर मेरा भाग इस लिये मैं उस पर भरोसा रक्खूंगा ॥

२५ परमेश्वर उस पर कृपाल है जो उस की बाट जोहता है और जो प्राणी २६ उसे खोजता है । भला है कि मनुष्य आशा रक्खे और परमेश्वर की मुक्ति २७ की बाट चुपके से जोहे । भला है कि मनुष्य अपनी तरुणाई में जूआ उठावे ॥

२८ कि वह चुपका और एकांत बैठा रहे क्योंकि वह उसे उस पर रखता है । २९ वह अपने मुंह को धूल पर रक्खे क्या जाने आशा होवे । ३० वह थपड़ाऊ की ओर गाल फेरे वह अपमान से भरपूर होवे ॥

३१ क्योंकि प्रभु सदा त्याग न करेगा । ३२ परन्तु यद्यपि वह क्लेश देवे तथापि वह अपनी दया की बहुताई के समान मया करेगा । ३३ क्योंकि वह आनन्द से मनुष्य के पुत्रों को दुःख नहीं देता अथवा न शोकित करता ॥

३४ कि देश के सारे बंधुओं को अपने पांव तले रौंदे । ३५ और महा शक्तिमान के आगे मनुष्य के बिचार को फेर देवे । ३६ और मनुष्य का पद बिगाड़ने में प्रभु को नहीं भावता ॥

३७ किस ने कहा है और पूरा हुआ है जब प्रभु ने आज्ञा न दिई । ३८ क्या अति महान के मुंह से भला बुरा नहीं निकलता । ३९ जीवता मनुष्य क्यों कुड़कुड़ाता है हर एक अपने पाप के लिये कुड़कुड़ावे ॥

४० आओ हम अपने मार्गों को ढूंढें और परखें और परमेश्वर की ओर फिरें । ४१ आओ हम अपने अन्तःकरण और हाथ स्वर्ग को सर्वशक्तिमान की ओर उठावें । ४२ हम ने अपराध किया है और फिर गये हैं तू ने क्षमा नहीं किई है ॥

४३ तू ने अपनी रिस से आप को छिपाया है और हमें खेदा है तू ने घात किया

४४ है और नहीं छोड़ा है। तू ने अपनी चारों ओर मेघ से घेरा है जिस्तें प्रार्थना ४५ प्रवेश न करे। तू ने हमें लोगों के मध्य में खोहारन और कूड़ा किया है॥

४६ हमारे सारे बैरियों ने हमारे विरुद्ध ४७ मुंह खोले हैं। भय और गड़हा और ४८ उजाड़ और नाश हम पर पड़ा है। मेरे लोगों की पुत्री के नाश के कारण मेरी आंखें जल की धारा बहाती हैं॥

४९ मेरी आंखें टपकती हैं और नहीं थमतीं यहां लों कि उसे चैन नहीं। ५० जब लों परमेश्वर स्वर्ग से न झांके और ५१ न देखे। मेरे नगर की सारी पुत्रियों के कारण मेरी आंखों से प्राण को कष्ट होता है॥

५२ मेरे बैरी मुझे चिड़िया की नाईं ५३ अकारण खेदते हैं। उन्हों ने मेरे प्राण को गड़हे में काटा है और मुझ पर ५४ पत्थर धर दिया है। मेरे सिर के ऊपर से पानी बढ़ गये मैं ने कहा कि मैं कट गया हूं॥

५५ हे परमेश्वर मैं ने नीचे की भकसी ५६ में से तेरा ही नाम लिया। तू ने मेरा शब्द सुना है मेरे रोने पर और सहाय ५७ करने में अपना कान मत छिपा। जब मैं ने तुझे पुकारा पास आके तू ने कहा कि मत डर॥

५८ हे प्रभु तू ने मेरे प्राण के बाद का विवाद किया है तू ने मेरे जीव को ५९ छुड़ाया। हे परमेश्वर जो अनीति मुझ पर हुई सो तू ने देखी है मेरा न्याय ६० कर। तू ने उन के सारे बैर और सारी युक्तियों को मेरे विरुद्ध देखा है॥

६१ हे परमेश्वर तू ने उन की निन्दा और मेरे विरुद्ध उन की सारी युक्तियों को ६२ सुना है। बैरियों के होंठ और उन का ६३ कुड़कुड़ाना मेरे विरुद्ध दिन भर। उन के बैठने उठने को देख मैं उन का गान हूं॥

६४ हे परमेश्वर उन के हाथों के कार्य्य के समान तू उन्हें प्रतिफल दे। ६५ तू उन्हें मन की कठोरता दे तेरा धिक्कार उन पर। ६६ हे परमेश्वर तू रिस से उन का पीछा कर और स्वर्ग के तले से उन्हें नाश कर॥

चौथा पर्ब्ब

१ सोना क्यों मलीन हुआ चोखे से चोखा सोना क्योंकर पलटा गया पवित्र पत्थर गलियों के हर एक सिरे पर छितरे हैं॥

२ सैहून के अत्युत्तम पुत्र जो चोखे सोने के तुल्य थे कुम्हार के बनाये हुए मिट्टी के घड़े की नाईं क्यों समझे जाते हैं॥

३ सियारिनें भी अपने स्तनों को निकाल निकाल अपने बच्चों को पिलाती हैं मेरे लोगों की पुत्री अरण्य के ऊंट-पक्षियों की नाईं क्रूर है॥

४ दूध के बालक की जीभ प्यास के मारे तालू से लगी है नन्हे बालक रोटी मांगते हैं परन्तु कोई उन्हें नहीं देता॥

५ जो सुस्वाद खाते थे वे सड़कों में त्यक्त हैं जो लाल वस्त्र पर पाले गये थे सो घूरों पर लोटते हैं॥

६ और मेरे लोगों की पुत्री का पाप सदूम के अपराध से भी बड़ा है जो पलमात्र के तुल्य उलटाया गया और उस में हाथों ने कार्य्य न किया॥

७ उस के कुलीन पाले से भी शुद्ध थे वे दूध से अति श्वेत थे उन की हड्डें पद्मरागमणि से भी लाल उन का डौल नीलमणि की नाईं था॥

८ अब उन का रूप कालिख से काला है वे सड़कों में जाने नहीं जाते उन का चमड़ा उन के हाड़ों से सटा हुआ है वह काठ की नाईं झुरा गया है॥

९ जो तलवार से मारे गये हैं सो

अकाल से मारे हुओं से अच्छे हैं क्योंकि वे खेत के फलों की घटी से घुले जाते हैं ॥

१० मयालु स्त्रियों के हाथों ने अपने ही बालकों को उसिना है जो मेरे लोगों की पुत्री के नाश में उन के लिये भोजन हुए ॥

११ परमेश्वर ने अपने क्रोध को प्रगटा है उस ने अपनी रिस की जलजलाहट उंडेली है और सैहून में एक आग बारी है और उस ने उस की नेवों को भस्म किया है ॥

१२ पृथिवी के राजाओं ने और जगत के सारे बासियों ने प्रतीति न किई कि बैरी और शत्रु यरूसलम के फाटकों में पैठेंगे ॥

१३ उस के भविष्यद्वक्तों के पापों और उस के याजकों की बुराइयों के कारण जिन्हों ने धर्म्मियों का लोहू उस में बहाया यों हुआ ॥

१४ वे अन्धों की नाईं गलियों में भटकते फिरे उन्हों ने आप को लोहू से अशुद्ध किया ऐसा कि लोग उन के कपड़े नहीं छूते ॥

१५ उन्हें पुकार पुकारके कहते थे कि अरे अपवित्र दूर होओ दूर होओ दूर होओ छूओ मत क्योंकि वे भागे वे भटक भी गये जातिगणों में कहा जाता है कि वे फिर वहां न टिकेंगे ॥

१६ परमेश्वर के रूप ने उन को विभाग किया है वह उन पर फिर दृष्टि न करेगा उन्हों ने याजकों का आदर नहीं किया उन्हों ने प्राचीनों पर कृपा न दिखाई ॥

१७ हम जो हैं सो हमारी आंखें मिथ्या सहायता के लिये घट गईं पहरे के गुम्मट पर हम ने एक जाति की बाट जोही जो बचा नहीं सक्ती ॥

१८ वे हमारे डग अहेरते थे यहां लों कि हम अपने मार्गों में चल न सक्ते थे हमारा अन्त आ पहुंचा हमारे दिन पूरे हुए क्योंकि हमारा अन्त आया है ॥

१९ हमारे खेदवैये आकाश के गिद्धों से अधिक बेगवान थे उन्हों ने हमें पर्व्वतों पर खेदा वे जंगल में हमारे छूके में लगे हैं ॥

२० हमारे नथुनों का श्वास परमेश्वर का अभिषिक्त उन के गड़हों में पकड़ा गया जिस के विषय में हम ने कहा कि हम उस की छाया के तले अन्य-देशियों में जियेंगे ॥

२१ हे अदूम की पुत्री जो ऊज के देश में बास करती है तू आनन्द कर और मगन हो कटोरा तुझ पर भी पहुंचेगा तू भी मतवाली होगी और अपनी नग्नता उघारेगी ॥

२२ हे सैहून की पुत्री तेरे दण्ड का अन्त हुआ है वह तुझे फिर कभी बंधुआई में न पहुंचावेगा हे अदूम की पुत्री वह तेरे पापों का प्रतिफल देगा तेरे पापों के कारण तुझे बंधुआई में ले गया है ॥

पांचवां पर्व्व

१ हे परमेश्वर जो कुछ हम पर बीता है सो स्मरण कर विचार और हमारे अपमान को देख ॥

२ हमारा अधिकार उपरियों को

३ हमारे घर परदेशियों को मिले । हम अनाथ हुए और पितारहित और हमारी

४ मातायें बिधवाओं की नाईं हुईं । हम ने रोकड़ दे दे जल पीया है हमारा

५ ईंधन मोल से आता है । हमारे गलों पर जूए हैं जिन से हम सताये जाते हैं हम परिश्रम करते हैं और हमें बिश्राम

६ नहीं मिलता । हम ने मिस्रियों और असूरियों को हाथ दिया जिस्तें हमें

७ भोजन से तृप्त होवें। हमारे पितरों ने पाप किया है और वे नहीं हैं हम ने उन की बुराइयों का दण्ड भोगा है।
८ सेवकों ने हम पर प्रभुता किई है और उन के हाथ से हमें छुड़ाने को कोई
९ नहीं। बन की तलवार के मारे हम अपनी रोटी जी के जोखिम से पाते
१० हैं। भयानक अकाल के मारे हमारे
११ चाम भट्ठी की नाईं झौंस गये। सैहून में स्त्रियों पर और यहूदाह के नगरों में
१२ कुंआरियों पर बलात्कार किया है। उन के हाथ से राजपुत्र लटकाये गये और
१३ प्राचीनों की प्रतिष्ठा न हुई। तरुणों को चक्की पीसने पड़ा और लड़के लकड़ी
१४ तले दब गये। प्राचीन फाटक में से और तरुण अपने बाजे से रह गये हैं।
१५ हमारे मन का आनन्द जाता रहा है हमारा नाच विलाप से पलट गया
१६ है। हमारे सिर से मुकुट गिरा है हाय हम पर क्योंकि हम ने पाप किया है॥

१७ इसी कारण हमारा मन घट गया है इन बातों के कारण हमारी आंखें
१८ धुंधला गईं। सैहून पहाड़ के कारण जो उजाड़ है लोमड़ियां उस में चलती फिरती हैं॥

१९ हे परमेश्वर तू सदा स्थिर रहेगा
२० तेरा सिंहासन पीढ़ी से पीढ़ी लों। तू क्यों हमें सर्वथा भूलेगा क्या तू हमें
२१ बहुत दिन लों त्यागेगा। हे परमेश्वर हमें अपनी ओर फिरा और हम फिरेंगे आगे की नाईं हमारे दिनों को नवीन
२२ कर। क्या तू ने हमें सर्वथा त्यागा है तू हम पर अत्यन्त कोपित रहेगा॥

हिजकिएल भविष्यद्वक्ता की पुस्तक।

पहिला पर्ब्ब।

१ अब तीसवें बरस के चौथे मास की पांचवीं तिथि में ऐसा हुआ कि खबूर नदी के लग जब मैं बंधुआई में था तब स्वर्ग खुल गये और मैं ने ईश्वर के दर्शन
२ पाये। यहूयकीन राजा की बंधुआई के पांचवें बरस के मास की पांचवीं तिथि
३ में। खबूर नदी के लग कसदीम के देश में बूज के बेटे हिजकिएल याजक के पास परमेश्वर का बचन पहुंचा और परमेश्वर का हाथ वहां उस पर था॥

४ और मैं ने दृष्टि किई तो क्या देखता हूं कि उत्तर से एक बवंडर एक महा मेघ और बरती हुई आग और उस के आस-पास एक चमक थी और उस के मध्य में से अर्थात् आग में से चमकते पीतल का सा रंग॥

और उस के मध्य में से चार जीवधारियों का आकार निकला और यह उन का रूप और उन्हें मनुष्य का आकार था। और हर एक के चार चार मुंह और हर एक के चार चार डैने थे। और उन के पांव सीधे पांव और उन के पांव के तलवे बछरू के पांव के तलवे की नाईं और वे चमकते पीतल की नाईं चमकते थे। और उन के चारों अलंग डैनों

के नीचे मनुष्य के हाथ थे और उन ९ चारों के मुंह और डैने थे। उन के डैने एक एक से जोड़े हुए थे चलने में वे फिरते न थे उन में हर एक अपने मुंह १० के साम्हने चलता था। और उन के दहिने अलंग उन चारों के मुंह मनुष्य के मुंह की नाईं और सिंह के मुंह की नाईं थे और बाईं अलंग उन चारों के मुंह बैल के से थे और उन चारों के ११ मुंह गिद्ध के से भी थे। और उन के मुंह यों हीं और उन के डैने ऊपर से बिभक्त थे हर एक के दो डैने एक दूसरे से जोड़े हुए थे और दो उन की देह १२ ढांपते थे। और उन में से हर एक अपने मुंह के साम्हने चला जाता था जिधर आत्मा को जाना था उधर वे १३ जाते थे वे जाने में फिरते न थे। और उन जीवधारियों का स्वरूप जो था सो आग के जलते अंगारों की नाईं और देखने में दीपकों की नाईं जीवधारियों में ऊपर नीचे जाते थे और वह आग तेज थी और उस आग में से बिजली १४ निकलती थी। और वे जीवधारी देखने में बिजली की चमक की नाईं दौड़ते थे और फिर आते थे॥

१५ सो जब मैं उन जीवधारियों को देख रहा था तो क्या देखता हूं कि उन जीवधारियों के लग पृथिवी पर चार १६ मुंह का एक एक चक्र है। चक्र और उन का कार्य्य बैदूर्य्य रंग के समान और चारों एक ही समान थे और उन के देखने और उन के कार्य्य में चक्र के १७ मध्य में चक्र की नाईं थे। चलने में वे अपने चारों अलंगों पर चलते थे १८ चलने में वे फिरते न थे। और उन की गोलाई जो थी सो ऐसी ऊंची थी कि वे भयंकर थे और उन की गोलाई में चारों ओर आंखें भरी हुई थीं॥

और जीवधारियों के चलने में चक्र १९ उन के आसपास जाते थे और जब जीवधारी पृथिवी से उठाये जाते थे तब चक्र भी उठाये जाते थे। जहां २० कहीं आत्मा को जाना था तहां वे जाते थे जहां आत्मा को जाना था और उन के सन्मुख चक्र उठाये जाते थे क्योंकि जीवधारी का आत्मा चक्रों में था। उन के चलने में चलते थे और उन के २१ ठहरने में ठहरते थे और जब वे पृथिवी से उठाये जाते थे तब चक्र उन के सन्मुख उठाये जाते थे क्योंकि चक्रों में जीवधारी का आत्मा था॥

और उन जीवधारियों के सिरों पर २२ आकाश की नाईं भयंकर स्फटिक के रंग के समान उन के सिरों के ऊपर फैला था। और आकाश के तले उन २३ के डैने सीधे एक दूसरे की ओर हर एक के दो दो थे जो इस अलंग को ढांपते थे और हर एक के दो दो थे जो उन के शरीरों के उस अलंग को ढांपते थे। और जब वे चलते थे तब २४ मैं ने उन के डैनों का शब्द जैसे बहुत से पानियों का शब्द सुना सर्व्वशक्तिमान के शब्द की नाईं बोली का शब्द सेना के शब्द की नाईं खड़े होने में वे डैने सिकोड़ लेते थे। और जब वे खड़े होते २५ और पर को सिकोड़ते थे तब उन के सिर के ऊपर आकाश से शब्द होता था॥

और उन के सिरों पर के आकाश २६ के ऊपर देखने में नीलकांत की नाईं एक सिंहासन था और सिंहासन के रूप पर मनुष्य के रूप की नाईं उस के ऊपर था। और उस के भीतर चारों ओर २७ आग की नाईं चमकते पीतल की नाईं मैं ने देखा अर्थात् उस की कटि के स्वरूप ऊपर लों और उस की कटि से नीचे लों मैं ने आग की नाईं देखा और उस की

२८ चारों ओर चमक थी। उस धनुष की नाईं जो बरसने के दिन मेघ पर होता है चारों ओर की चमक देखने में वैसी ही थी परमेश्वर का विभव देखने में ऐसा ही था और देखते ही मैं औंधे मुंह गिरा और एक के कहने का मैं ने शब्द सुना॥

दूसरा पर्ब्ब

१ और उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र अपने पांव के बल खड़ा २ हो और मैं तुझ से कहूंगा। और जब वह कहता था तब आत्मा ने मुझ में प्रवेश किया और मुझे पांव के बल खड़ा किया और जो मुझ से कह रहा था मैं ने उस की सुनी॥

३ और उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र मैं तुझे इसराएल के संतानों के पास दंगाइत जातिगणों के पास जो मुझ से फिर गये हैं भेजता हूं उन्हों ने और उन के पितरों ने आज ४ लों मेरा अपराध किया है। क्योंकि वे ढीठ और कठोर मन के संतान हैं मैं तुझे उन के पास भेजता हूं और उन से कहियो कि प्रभु परमेश्वर यों कहता ५ है। और चाहे वे सुनें चाहे न सुनें क्योंकि वे दंगाइत घराने हैं तथापि वे जानेंगे कि एक भविष्यद्वक्ता उन के मध्य में है॥

६ और हे मनुष्य के पुत्र तू उन से मत डर और न उन के बचनों से डर क्योंकि दंगाइत और कांटे तेरे साथ हैं और तू बिच्छुओं में बास करता है उन बचनों से मत डर और उन की दृष्टि से बिस्मित मत हो क्योंकि वे दंगाइत ७ घराने हैं। और मेरे बचन उन से कहियो चाहे वे सुनें चाहे न सुनें क्योंकि वे दंगाइत हैं॥

८ परन्तु हे मनुष्य के पुत्र तू मेरा कहना सुन तू उस दंगाइत घराने के समान दंगाइत मत हो जो मैं तुझे देता हूं उसे अपना मुंह खोल के खा। और दृष्टि ९ करके क्या देखता हूं कि एक हाथ मेरी ओर बढ़ाया गया और क्या देखता हूं कि उस में एक पुस्तक का बोंड़ा है। १० और उस ने मेरे आगे उसे खोला और बाहर भीतर लिखा था उस में बिलाप और शोक और सन्ताप लिखा था॥

तीसरा पर्ब्ब।

१ और उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र जो तू पावे सो खा इस बोंड़े को खा और जाके इसराएल २ के घराने से कह। और मैं ने मुंह खोला और उस ने वह बोंड़ा मुझे ३ खिलाया। फिर उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र इस बोंड़े से जो मैं तुझे देता हूं अपने पेट को खिला और उस्से अपना उदर भर तब मैं ने खाया और वह मेरे मुंह में मधु की नाईं मीठा था॥

४ तब उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र तू इसराएल के घराने के पास जा और मेरे बचन उन से कह। ५ क्योंकि उपरी भाषा और कठिन बोली के लोगों के पास तू नहीं भेजा जाता ६ है परन्तु इसराएल के घराने के पास। उपरी भाषा और कठिन बोली के बहुत से लोगों के पास नहीं जिन के बचन तू समझ नहीं सक्ता जो मैं तुझे उन के पास भेजता तो वे निश्चय तेरी ७ मानते। परन्तु इसराएल के घराने तेरी न सुनेंगे क्योंकि मेरी न सुनेंगे क्योंकि इसराएल के सारे घराने ढीठ और कठोर ८ अन्तःकरण के हैं। देख उन के मुंह के आगे मैं ने तेरे मुंह को दृढ़ किया है और तेरे कपाल को उन के कपाल के ९ सन्मुख दृढ़ किया है। मैं ने तेरे कपाल

को हीरे की नाईं चकमक से भी कठोर किया है उन से मत डर और उन के मुंह से विस्मित मत हो क्योंकि वे दंगइत घराने हैं ॥

१० और उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र सारे बचनों को जो मैं तुझ से कहूंगा उन्हें अपने मन में ग्रहण ११ कर और अपने कानों से सुन। और उठके अपने लोगों के सन्तानों के बंधुआइयों के पास जा और उन से कहके बोल कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है चाहे वे सुनें चाहें न सुनें ॥

१२ फिर आत्मा ने मुझे उठा लिया और मैं ने अपने पीछे एक बड़े सन्नाटे का शब्द सुना कि अपने स्थान से परमेश्वर १३ के माहात्म्य का धन्यबाद। और मैं ने जीवधारियों के भिड़े हुए डैनों का शब्द भी सुना और उन के साम्ने के चक्रों का शब्द और एक बड़े सन्नाटे का शब्द। १४ और आत्मा मुझे उठाके ले गया और मैं अपने मन की रिस की अति कड़वाहट से गया परन्तु परमेश्वर का हाथ १५ मुझ पर बलवान था। तब मैं तल्-अबीब में ख़बूर नदी के तीर बंधुआइयों के पास पहुंचा और जहां वे बैठे थे तहां मैं बैठ गया और उन में सात दिन लों आश्चर्य्यित रह गया ॥

१६ और सात दिनों के पीछे यों हुआ कि परमेश्वर का बचन यह कहते हुए मेरे १७ पास पहुंचा। हे मनुष्य के पुत्र मैं ने तुझे इसराएल के घराने के लिये रखवाल बनाया है इस लिये मेरे मुंह से बचन १८ सुन और मेरी ओर से उन्हें चिता। जब मैं दुष्ट से कहूं कि तू निश्चय मरेगा और तू उसे न चितावे और दुष्ट को उस का प्राण बचाने को उस की दुष्टता से फिराने को न चितावे तो वह दुष्ट अपनी बुराई में मरेगा परन्तु मैं उस का लोहू तेरे हाथ से मांगूंगा। १९ तथापि यदि तू दुष्ट को चितावे और वह अपनी दुष्टता से और अपने दुष्ट मार्ग से न फिरे तो वह अपनी बुराई में मरेगा परन्तु तू ने अपना प्राण छुड़ाया है ॥

२० फिर जब धर्म्मी अपने धर्म्म से फिर जाये और बुराई करे और मैं उस के आगे ठोकर रक्खूं तो वह मरेगा क्योंकि तू ने उसे नहीं चिताया वह अपने पाप में मरेगा और उस का धर्म्म कर्म्म जो उस ने किया स्मरण न किया जायेगा परन्तु मैं उस के लोहू का पलटा तेरे हाथ से लेऊंगा। २१ परन्तु यदि तू धर्म्मी को चितावे कि पाप न करे और धर्म्मी पाप न करे तो वह चिताये जाने के कारण से अवश्य जीयेगा और तू ने भी अपना प्राण छुड़ाया ॥

२२ और वहां परमेश्वर का हाथ मुझ पर पड़ा और उस ने मुझ से कहा कि उठ चौगान को जा और वहां मैं तुझ से बार्त्ता करूंगा। २३ तब मैं उठके चौगान में गया और क्या देखता हूं कि परमेश्वर का माहात्म्य उस माहात्म्य की नाईं जो मैं ने ख़बूर नदी के तीर देखा था खड़ा है और मैं मुंह के बल गिरा। २४ तब आत्मा ने मुझ में प्रवेश करके मुझे मेरे पांव पर खड़ा किया और मुझ से कहके बोला कि जा अपने घर में आप को बंद कर। २५ परन्तु हे मनुष्य के पुत्र देख वे तुझ पर बन्धन डालेंगे और उन से तुझे बांधेंगे और तू उन में फिर बाहर न जायेगा। २६ और तुझे गूंगा करने को मैं तेरी जीभ को तेरे तालू से लगाऊंगा और तू उन का दपटवैया न होगा क्योंकि वे दंगइत घराने हैं। २७ परन्तु जब मैं तुझ से कहूं तब मैं तेरा मुंह खोलूंगा और तू उन से कहना कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि जो सुनता है सो सुने

और जो न सुने सो न सुने क्योंकि वे दंगइत घराने हैं॥

चौथा पर्ब्ब।

१ और तू हे मनुष्य के पुत्र एक खपरा ले और उसे अपने आगे रख और उस २ पर यरूसलम नगर का चित्र उतार। और उस के विरुद्ध ओर और उस के सन्मुख गढ़ बना और उस के विपरीत मोर्चा बांध और उस के विरुद्ध छावनी भी कर और उस के विरुद्ध चारों ओर ढाहक ३ लगा। और तू अपने लिये एक लोहे की कड़ाही ले और अपने और नगर के मध्य में उस्से एक लोहे की भीत खड़ी कर और उस के विरुद्ध हो और वह घेरा जायेगा और तू उस के विरुद्ध उसे घेरना यही इसराएल के घराने के लिये एक चिन्ह होगा॥

४ और तू अपनी बाईं करवट भी लेटना और इसराएल के घराने की बुराई उस पर धर तू अपने लेटने के दिनों की गिनती के समान उन की ५ बुराई को सहना। क्योंकि मैं ने तुझ पर उन की बुराइयों के बरसों के दिनों की गिनती के समान तीन सौ नब्बे दिन धरे हैं और तू इसराएल के घराने ६ की बुराई को सहेगा। और उन्हें पूरा करके फिर अपने दहिने करवट लेट जा और चालीस दिन लों यहूदाह के घराने की बुराई को सहना मैं ने बरस बरस के लिये तुझे एक एक दिन दिया है॥

७ इस लिये तू यरूसलम के घेरे जाने की ओर मुंह फेर और तेरी भुजा उघारी हुई और उस के विरुद्ध भविष्य कह। ८ और देख मैं तुझ पर बंधन डालूंगा और अपने घेरे जाने के दिनों के समाप्त लों करवट से करवट लों न फिरेगा॥

९ और तू अपने लिये गोहूं और जव और उर्द और तिल और बाजरा और मसूर ले और उन्हें एक पात्र में रख और अपनी करवट के दिनों की गिनती के समान उन की रोटी बना तू तीन सौ नब्बे दिन लों उन्हें खाया कर। १० और तेरा भोजन जो तू खायेगा तौल के बीस शेकल भर दिन भर में हो तू उसे जब तब खाया करना। ११ और तू एक हिन का छठवां भाग तौल तौलके जल भी जब तब पीया करना। १२ और तू जव का फुलका खाना और तू उन की दृष्टि में मनुष्यों के विष्ठा से उसे पकाया कर॥

१३ और परमेश्वर ने कहा कि मैं जिधर उन्हें खेदूंगा इसराएल के सन्तान इसी रीति से अपनी अशुद्ध रोटी अन्यदेशियों में खायेंगे॥

१४ तब मैं ने कहा कि हाय प्रभु परमेश्वर देख मेरा प्राण अशुद्ध नहीं हुआ है क्योंकि तरुणाई से अब लों मरा हुआ अथवा फाड़ा हुआ मैं ने नहीं खाया है और न घिनित मांस मेरे मुंह में

१५ तब उस ने मुझ से कहा कि देख मैं ने मनुष्य के विष्ठा की सन्ती गोइंठे तुझे दिये हैं और तू अपनी रोटी उन पर पकाया कर॥

१६ उस ने मुझ से यह भी कहा कि हे मनुष्य के पुत्र देख मैं यरूसलम में रोटी की टेक तोड़ डालूंगा और वे चिन्ता से रोटी तौल तौल खायेंगे और आश्चर्य्य से जल नाप नाप पीयेंगे। १७ जिस्तें वे अन्न जल के मारे हों और एक दूसरे से बिस्मित हों और अपने पाप के मारे छीन हो जावें॥

पांचवां पर्ब्ब।

१ और हे मनुष्य के पुत्र तू एक चोखी छुरी ले और एक नापित का छुरा ले और उन्हें अपने सिर पर और दाढ़ी पर चला तब तौलने और भाग करने

२ को तुला ले। जब घेरे जाने के दिन पूरे होवें तब नगर के मध्य में तू तीसरा भाग आग से जला और तीसरा भाग लेके उस के आसपास छुरी मार और तीसरा भाग पवन में उड़ा और मैं उन ३ के पीछे तलवार खींचूंगा। और तू उन में से गिनती में थोड़ा सा लेके अपने ४ खूंट में बांध। और उन में से लेके आग में डाल और आग से उन्हें जला इस्से आग सारे इसराएल के घराने पर निकलेगी॥

५ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि यही यरूसलम है मैं ने उसे चारों ओर के जातिगणों और देशों के मध्य में ६ रक्खा है। और जातिगणों से अधिक उस ने मेरे न्यायों को दुष्टता से और अपने चारों ओर के देशों से मेरी बिधिन को अधिक पलट डाला है क्योंकि उन्हों ने मेरे न्यायों को नाह किया और मेरी बिधिन पर नहीं चले। ७ इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है इस कारण कि तुम लोग अपनी चारों ओर के जातिगणों से बढ़ गये और मेरी बिधिन पर न चले और न मेरे न्यायों को पाला है और न चारों ओर के जातिगणों के न्याय के समान किया ८ है। इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं हां तेरे बिरुद्ध हूं और अन्यदेशियों की दृष्टि में तेरे मध्य में ९ न्याय करूंगा। और तेरे सारे घिनित कार्य्यों के कारण मैं तुझ में वही करूंगा जो मैं ने कभी नहीं किया है और वैसा १० फिर कभी न करूंगा। इस लिये तेरे मध्य में पिता पुत्रों को खायेंगे और पुत्र पिताओं को खायेंगे और मैं तुझ में दण्ड का न्याय करूंगा और तुम्हारा सारा बचा हुआ चौदिसा में छितरा देऊंगा॥

इस लिये प्रभु परमेश्वर कहता है ११ कि अपने जीवन सोंह निश्चय जैसा तू ने अपनी सारी तुच्छ और सारी घिनित बस्तुन से मेरे पवित्रस्थान को अशुद्ध किया है तैसा मैं भी तुझे घटाऊंगा और मेरी आंख न छोड़ेगी और मैं मया न करूंगा। तेरा तीसरा भाग मरी से १२ मरेगा और तेरे मध्य में अकाल से छीण हो जायेंगे और तीसरा भाग तेरी चारों ओर की तलवार से गिरेगा और मैं सारे पवन में तीसरे भाग को छितरा देऊंगा और उन के पीछे तलवार खींचूंगा। इस रीति से मैं अपनी रिस १३ पूरी करूंगा और मैं अपना कोप उन पर धरूंगा तब मैं शान्ति पाऊंगा और जब मैं अपने कोप को उन पर उतार चुकूंगा तब वे जानेंगे कि मुझ से परमेश्वर ने अपने ज्वलन में कहा है॥

और मैं तुझे चारों ओर के जाति- १४ गणों में और सारे पथिकों की दृष्टि में उजाड़ और निन्दा बनाऊंगा। जब मैं १५ रिस और कोप और जलजलाहट और दपट में तुझे दण्ड देऊंगा तो तू चारों ओर के जातिगणों के लिये एक निन्दा और ठट्ठा और चितावनी और आश्चर्य्य होगा मैं ही परमेश्वर ने कहा है। जब १६ कि मैं उन पर अकाल के बुरे बाण भेजूंगा जो नाश के लिये होंगे जिन्हें मैं तुम्हें नाश करने को भेजूंगा और मैं अकाल को तुम पर बढ़ाऊंगा और तुम्हारी रोटी की टेक तोड़ूंगा। इसी रीति से १७ मैं तुम पर अकाल और क्रूर पशुन को भेजूंगा और वे तुझे निर्बंश करेंगे और मरी और लोहू तुझ में से प्रवेश करेंगे और मैं तलवार तुझ पर लाऊंगा मैं ही परमेश्वर ने कहा है॥

छठवां पर्ब्ब।

और परमेश्वर का बचन यह कहते १

२ हुए मेरे पास पहुंचा। कि हे मनुष्य के पुत्र इसराएल के पर्ब्बतों की ओर अपना मुंह फेर और उन के बिरुद्ध भविष्य कह॥

३ और बोल कि हे इसराएल के पर्ब्बतो प्रभु परमेश्वर का बचन सुनो प्रभु परमेश्वर पर्ब्बतों को और टीलों को और नदियों को और तराइयों को कहता है कि देखो मैं हो तुम पर तलवार लाके तुम्हारे ऊंचे स्थानों को नाश करूंगा।

४ और तुम्हारी बेदियां उजड़ जायेंगी और तुम्हारी मूर्त्तें तोड़ी जायेंगी और तुम्हारी प्रतिमा के आगे मैं तुम्हारे जूझे हुओं

५ को डाल देऊंगा। और मैं इसराएल के सन्तानों की लोथ उन की प्रतिमाओं के आगे रक्खूंगा और मैं तुम्हारे हाड़ों को तुम्हारी बेदियों की चारों ओर छित-

६ राऊंगा। तुम्हारे सारे निवासों में नगर खंडहर किये जायेंगे और ऊंचे स्थान उजाड़े जायेंगे जिस्तें तुम्हारी बेदियां खंडहर किई जायें और उजाड़ी जायें और तुम्हारी प्रतिमा तोड़ी जायें और न रहें और तुम्हारी मूर्त्तें काटी जायें और तुम्हारे

७ कार्य्य मिटाये जायें। और जूझे हुए लोग तुम्हारे मध्य में गिरेंगे और तुम लोग जानोगे कि मैं परमेश्वर हूं॥

८ तथापि मैं बचे हुओं को छोड़ूंगा जिस्तें जब कि तुम लोग देशों में छिन्न भिन्न होगे तब जातिगणों में तलवार

९ से बचे हुए तुम्में होवें। और जो तुम्में से बच निकलेंगे सो जातिगणों में जहां जहां वे बंधुआई में पहुंचाये जायेंगे मुझे स्मरण करेंगे क्योंकि मैं उन के बेश्याई मन से जो मुझ से फिर गया है और उन की मूर्त्तिन के पश्चाद्गामी आंखों से टूटा हुआ हूं और वे अपनी सारी बुराइयों के लिये जो उन्हों ने अपने सारे घिनितों में किई हैं वे

१० आप से घिनावेंगे। और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूं और मैं ने यह बुराई उन पर लाने को वृथा न कहा॥

११ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि अपना हाथ पीट और अपना पांव दे दे मार और कह कि इसराएल के घराने की बुरी घिनितों के लिये हाय क्योंकि वे तलवार से और अकाल से और मरी से

१२ गिरेंगे। जो दूर है सो मरी से मरेगा और जो पास है सो तलवार से गिरेगा और जो रह गया है और घेरा हुआ है सो अकाल से मरेगा इस रीति से मैं अपना कोप उन पर पूरा करूंगा॥

१३ और जब उन के जूझे हुए उन की मूर्त्तिन में उन की बेदी की चारों ओर हर एक ऊंचे पर्ब्बत पर और पर्ब्बतों के सारे टीलों पर और हर एक हरे पेड़ तले और हर एक मोटे बुत्मबृक्ष तले जिस स्थान में उन्हों ने अपनी सारी प्रतिमा के लिये सुगंध जलाया था होंगे तब तुम लोग जानोगे कि मैं परमेश्वर

१४ हूं। इस रीति से मैं उन पर अपना हाथ बढ़ाऊंगा और उन के देश को उन के सारे निवासों में दिबलः बन से अधिक उजाड़ करूंगा और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूं॥

सातवां पर्ब्ब।

१ और परमेश्वर का बचन यह कहते

२ हुए मेरे पास पहुंचा। और तू हे मनुष्य के पुत्र प्रभु परमेश्वर इसराएल के देश से भी यों कहता है कि एक अन्त देश के चारों कोनों पर अन्त आया है।

३ अब तुझ पर अन्त आ पहुंचा है और मैं अपनी रिस तुझ पर भेजूंगा और तेरी चालों के समान तेरा बिचार करूंगा और तेरे सारे घिनितों का पलटा तुझे

४ देऊंगा। और मेरी आंख तुझे न छोड़ेगी और मैं मया न करूंगा क्योंकि तेरी

चालों का पलटा तुझे देऊंगा और तेरे घिन तेरे मध्य में होंगे और तुम जानोगे कि मैं परमेश्वर हूं॥

५ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि बुराई एक बुराई देखो वह आई है
६ अन्त पहुंचा है अन्त पहुंचा है जो तेरे विरुद्ध जागता है देख वह आ पहुंचा
७ है। हे देश के निवासी पारी तुझ पर पहुंची है समय पहुंचा है घबराहट का दिन पास आया है और पर्व्वतों का
८ प्रतिशब्द नहीं। अब मैं तुझ पर अपना कोप उंडेलूंगा और अपनी रिस तुझ पर पूरी करूंगा और तेरी चालों के समान तेरा बिचार करूंगा और तेरे सारे
९ घिनितों का पलटा तुझे देऊंगा। और मेरी आंख न छोड़ेगी और मया न करूंगा तेरी चालों और तेरे घिनितों के समान जो तेरे मध्य में हैं मैं तुझे पलटा देऊंगा और तुम लोग जानोगे कि मैं दण्ड-दायक परमेश्वर हूं॥

१० वह दिन देखो देखो वह पहुंचा है पारी निकल चली है छड़ी फूली है
११ अहंकार में कली निकली है। अंधेर दुष्टता की छड़ी बन गया है न उन में से और न उन के दंगाल से और न उन के जथा से कोई बचेगा और न उन के
१२ लिये शोक किया जायेगा। समय आया है दिन आ पहुंचा किनवैया आनन्द न करे और न बेचवैया शोक करे क्योंकि उस की सारी मंडली पर कोप है।
१३ क्योंकि बेचवैया बेचे हुए की ओर न फिरेगा यद्यपि अब लों जीवतों के मध्य में उस का जीवन होता क्योंकि दर्शन जो उन की सारी मंडलियों के विषय में है न लौटेगा और न कोई अपनी बुराई के जीवन में आप को दृढ़
१४ करेगा। उन्हों ने तुरही फूंकी और सब लैस हैं परन्तु कोई संग्राम को नहीं जाता क्योंकि उस की सारी मंडली पर मेरा कोप है।
१५ तलवार बाहर और अकाल और मरी भीतर खेत में का तलवार से मारा जायेगा और नगर में का अकाल और मरी से भक्षा जायेगा॥

१६ परन्तु जो उन में से बच निकलेंगे सो बच निकलें और हर एक अपनी अपनी बुराई के लिये तराइयों के पंडुकों की नाईं सब के सब पर्व्वतों
१७ पर कूकू करेंगे। सारे हाथ दुर्बल होंगे
१८ और सारे घुटने पानी हो जायेंगे। और वे अपने पर टाट लपेटेंगे और भय उन्हें ढांपेगा और सभों के मुंह पर लाज होगी और सभों के सिरों पर मुंडापन।
१९ वे अपनी अपनी चांदी सड़कों में फेंक देंगे और उन का सोना मैल हो जायेगा और परमेश्वर के क्रोध के दिन में उन का चांदी सोना उन्हें न बचा सकेगा वे अपने प्राण को तृप्त न करेंगे न अपने पेट भरेंगे क्योंकि वह उन के
२० ठोकर खाने की बुराई है। और वे उस की सुन्दरता के आभूषण को घमंड के लिये रखते हैं और अपने घिनितों की और अपनी तुच्छ बस्तुन की मूरतें उस में बनाते हैं इस लिये मैं उसे उन के
२१ लिये मैल करूंगा। और मैं उसे अहेर के लिये परदेशियों के हाथ और लूट के लिये पृथिवी के दुष्टों को सौंपूंगा और
२२ वे उसे अशुद्ध करेंगे। मैं अपना मुंह भी उन से फेरूंगा और वे मेरा गुप्तस्थान अशुद्ध करेंगे क्योंकि बटमार उस में पैठके उसे अशुद्ध करेंगे॥

२३ एक सीकर बना क्योंकि देश लोहू के अपराधों से और नगर अंधेर से भरा
२४ हुआ है। इस लिये मैं अति बुरे अन्यदेशियों को लाऊंगा और वे उन के घर को बश में करेंगे और मैं बल-वन्तों का बिभव मिटाऊंगा और उन

के पवित्रस्थान अशुद्ध किये जायेंगे। २५ नाश आता है और वे मिलाप चाहेंगे २६ और न होगा। दुर्दशा पर दुर्दशा आवेगी और चर्चा पर चर्चा होगी तब वे भविष्यद्वक्ता से दर्शन चाहेंगे और याजक से व्यवस्था और प्राचीनों २७ से मंत्र जाता रहेगा। राजा शोक करेगा और राजपुत्र घबराहट से पहिराया जायेगा और देश के लोगों के हाथ कांपेंगे उन की चाल के समान मैं उन से करूंगा और उन के बिचार के समान उन से बिचार करूंगा और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूं॥

आठवां पर्ब्ब।

१ और छठवें बरस के छठवें मास की पांचवीं तिथि में ऐसा हुआ कि मैं अपने घर में बैठा था और यहूदाह के प्राचीन मेरे आगे बैठे थे कि प्रभु परमेश्वर का २ हाथ वहां मुझ पर पड़ा। तब मैं ने दृष्टि किई और क्या देखता हूं कि आग का सा स्वरूप उस की कटि से नीचे लों आग की सी और उस की कटि से ऊपर लों चमक की सी चमकते हुए ३ पीतल के रंग की नाईं। और उस ने हाथ का सा डौल बाहर निकाला और मेरे सिर की चोटी पकड़ लिई और आत्मा ने मुझे अधड़ में उठा लिया और ईश्वरीय दर्शनों से मुझे यरूसलम में उत्तर की ओर के भीतर के फाटक के द्वार पर पहुंचाया जहां झल की मूर्त्ति का आसन था जो झल करावती ४ है। और क्या देखता हूं कि जो दर्शन मैं ने चौगान में देखा था वैसा ही इसराएल के ईश्वर का बिभव वहां था॥

५ तब उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र उत्तर के मार्ग की ओर अपनी आंखें उठा सो मैं ने उत्तर के मार्ग की ओर अपनी आंखें उठाईं और क्या देखता हूं कि झल की यही मूर्त्ति उत्तर की ओर यज्ञबेदी के फाटक की पैठ में थी॥

६ फिर उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र तू उन की क्रिया देखता है अर्थात् बड़े बड़े घिनित जो इसराएल के घराने यहां करते हैं जिस्तें मैं अपने पवित्रस्थान से दूर जाऊं परन्तु तू फिर इन से अधिक घिनित कार्य्य देखेगा॥

७ तब वह मुझे आंगन के द्वार पर लाया और देखते हुए मैं ने देखा और ८ देखो भीत में एक छेद। तब उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र अब भीत खोद तब मैं ने भीत खोदी और ९ एक द्वार देखा। फिर उस ने मुझ से कहा कि भीतर जा और जो जो घिनित १० वे यहां करते हैं उन्हें देख। तब मैं ने भीतर जाके देखा और क्या देखता हूं कि चारों ओर भीत पर हर एक रेंगवैये बस्तु के रूप और घिनित पशु और इसराएल के घराने की सारी मूर्त्तिन के ११ चित्र हैं। और इसराएल के घराने के प्राचीनों के सत्तर जन उन के आगे खड़े हैं और उन के मध्य में साफन का बेटा याजनियाह खड़ा है हर एक जन धूपावरी हाथ में लिये हुए और धूप का एक घना मेघ उठ रहा है॥

१२ तब उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र क्या तू ने देखा है जो इसराएल के घराने के प्राचीन अंधियारे में हर एक जन अपनी अपनी मूर्त्तिन की कोठरियों में करता है क्योंकि वे कहते हैं कि परमेश्वर हमें नहीं देखता परमेश्वर ने तो पृथिवी को त्यागा है। १३ उस ने मुझ से यह भी कहा कि तू फिर इन से अधिक घिनित कर्म्म देखेगा॥

१४ तब वह परमेश्वर के मन्दिर की उत्तर ओर के फाटक पर मुझे ले आया और क्या देखता हूं कि स्त्रियां तम्मुज के लिये वहां बैठके बिलाप कर रही हैं॥
१५ तब उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र तू ने यह देखा है तू फिर इन से भी अधिक घिनित देखेगा॥
१६ फिर वह मुझे परमेश्वर के मन्दिर की भीतर के आंगन में लाया और क्या देखता हूं कि परमेश्वर के मन्दिर के ओसारे और बेदी के मध्य के द्वार पर एक पचीस जन पीठ परमेश्वर के मन्दिर की ओर किये हुए और उन के मुंह पूरब की ओर और पूरब की ओर वे सूर्य्य पूजते थे॥
१७ तब उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र क्या तू ने यह देखा है क्या यहूदाह के घराने के लिये यह सहज बात है कि वे घिनित कार्य्य करें जो यहां करते हैं क्योंकि उन्हों ने देश को अंधेर से भर दिया है और मुझे फिर रिस दिलाते रहते हैं और देखो वे
१८ अपनी नाक पर डाली लगाते हैं। इस लिये मैं भी कोप से व्यवहार करूंगा मेरी आंख न छोड़ेगी और मया न करूंगा और यद्यपि वे मेरे कानों में चिल्ला चिल्ला रोवें तथापि मैं उन की न सुनूंगा॥

नवां पर्ब्ब।

१ उस ने यह कहते हुए बड़े शब्द से भी मेरे कानों में पुकारा कि जिन के बश में नगर है उन्हें निकट लाओ हर एक जन अपना नाशक हथियार अपने
२ हाथ में लिये हुए। और क्या देखता हूं कि छः जन ऊपर के फाटक के मार्ग में से जो उत्तर के अलंग है चले आये और हर एक जन के हाथ में घात का हथियार और उन में से एक पर सूती बस्त्र था और उस की कटि पर लेखक का मसिपात्र और वे भीतर गये और पीतल की बेदी के लग खड़े हुए।
३ और इसराएल के ईश्वर का बिभव करूब के ऊपर से जिस पर वह था उठके मन्दिर की डेहरी पर गया और उस ने उस जन को जो सूती बस्त्र पहिने था जिस की कटि में लेखक का मसिपात्र था पुकारा।
४ और परमेश्वर ने उस्से कहा कि नगर के मध्य में से यरूसलम के मध्य में से जा और हर एक जन के कपाल पर जो उस के मध्य के सारे घिनित कार्य्यों के लिये ठंढी सांस भरते और रोते हैं चिन्ह कर।
५ और उस ने मेरे सुन्ने में औरों से कहा कि तुम लोग उस के पीछे पीछे नगर के आरंपार जाओ और मारो तुम्हारी आंख न छोड़े और मया मत
६ करो। पुरनियों को युवों को और कुंआरियों को और नन्हे बालकों और स्त्रियों को नाश लों घात करो परन्तु जिन पर चिन्ह है उन में से किसी जन के पास मत जाओ और मेरे पवित्रस्थान से आरंभ करो तब उन्हों ने प्राचीन जनों से जो घर के आगे थे आरंभ किया।
७ और उस ने उन से कहा कि घर को अशुद्ध करो और जूझे हुओं से आंगन को भर देओ और उन्हों ने निकलके नगर में घात किया॥
८ और जब वे उन्हें घात कर रहे थे और मैं छोड़ा गया तब यों हुआ कि मैं मुंह के बल गिरा और चिल्लाके कहा कि हाय प्रभु परमेश्वर अपने कोप को यरूसलम पर उंडेलते हुए क्या इसराएल के सारे बचे हुओं को तू नाश करेगा॥
९ तब उस ने मुझ से कहा कि यहूदाह और इसराएल के घराने की बुराई अत्यन्त बड़ी है और देश लोहू

से भरा हुआ है और नगर अन्याय से भरा है क्योंकि वे कहते हैं कि परमेश्वर ने पृथिवी को त्यागा है और परमेश्वर १० नहीं देखता। और मैं भी जो हूं मेरी आंख न छोड़ेगी मया न करूंगा मैं ने उन के सिर पर उन की चाल का पलटा दिया है॥

११ और क्या देखता हूं कि जो जन सूती बस्त्र पहिने था जिस की कटि पर मसिपात्र था उस ने यह कहके उत्तर दिया कि तेरी आज्ञा के समान मैं ने किया है॥

दसवां पर्ब्ब

१ जब मैं ने दृष्टि किई तो क्या देखता हूं कि करोबियों के सिर के ऊपर के आकाश में उन के ऊपर नीलकांतमणि का सा दिखाई दिया जो देखने में २ सिंहासन का सा था। और वह सूती बस्त्र पहिने हुए जन से कहके बोला कि कब्ब के नीचे चक्रों के मध्य में जा और अपने चुल्लू को करोबियों के मध्य से आग के अङ्गारे से भर और नगर के ऊपर छिड़क और वह मेरे देखने में चला गया॥

३ जब वह जन भीतर गया तब करोबी घर के दहिने अलंग खड़े हुए और भीतर का आंगन मेघ से भर ४ गया। तब परमेश्वर का बिभव कब्ब पर से उठाया गया और घर की डेहरी पर हुआ और घर मेघ से भर गया और परमेश्वर के बिभव की चमक से आंगन ५ पूर्ण हुआ। और करोबियों के परों का शब्द बाहर के आंगन लों सुना गया सर्व्वशक्तिमान ईश्वर के शब्द की नाईं जब वह बोलता है॥

६ और यों हुआ कि जब उस ने सूती बस्त्र पहिने हुए जन को यह कहके आज्ञा किई कि करोबियों के मध्य के चक्रों के बीच में से आग ले तब वह भीतर जाके चक्रों के लग खड़ा हुआ॥ ७ तब करोबियों के मध्य में से एक करूब ने अपना हाथ उस आग की ओर बढ़ाया जो करोबियों के मध्य में थी और लेके सूती बस्त्र पहिने हुए जन के हाथ में रक्खा जो लेके बाहर गया॥ ८ और करोबियों में उन के पंख के तले मनुष्य के हाथ का डौल दिखाई दिया॥

९ और जब मैं ने दृष्टि किई तो क्या देखता हूं कि करोबियों के लग चार चक्र एक करूब के लग एक चक्र और दूसरे करूब के लग दूसरा चक्र और चक्र देखने में मरकतमणि का सा १० दिखाता था। और चारों एक सा दिखाई देते थे जैसा कि चक्र के मध्य में चक्र। ११ जब वे चलते थे तब वे अपने चारों अलंग पर जाते थे और चलने में वे फिरते न थे परन्तु जिधर सिर का रुख था उधर ही वे उस के पीछे पीछे जाते १२ थे चलने में वे फिरते न थे। और उन की सारी देह और उन की पीठ और उन के हाथ और उन के डैने और चक्र चारों ओर आंखों से भरे थे अर्थात् उन १३ चारों के चक्र। और चक्र जो थे वे १४ मेरे सुन्ने में पुकारे गये कि हे चक्र। और हर एक के चार चार मुंह थे पहिला मुंह एक करूब का मुंह और दूसरा मुंह मनुष्य का मुंह और तीसरा सिंह का १५ मुंह और चौथा गिद्ध का मुंह। और करूब उठाये गये यही जीवधारी जो मैं ने खबूर नदी के लग देखा था॥

१६ और जब करोबी चलते थे तब चक्र उन के लग जाते थे और जब करोबी पृथिवी पर से उठने को पंख उठाते थे तब वे चक्र भी उन के पास से न फिरते १७ थे। उन के ठहरने में ठहरते थे और जब वे उठाये जाते थे तब आप को

बढ़ाते थे क्योंकि जीवधारी का आत्मा उन में था॥

१८ तब परमेश्वर का बिभव घर के डेहरी पर से जाता रहा और करोबियों १९ के ऊपर ठहर गया। और करोबियों ने अपने डैने उठाये और मेरे देखने में पृथिवी पर से उठ गये वे जब निकल गये तब चक्र भी उन के संग थे और हर एक परमेश्वर के मन्दिर के पूरब फाटक के द्वार पर खड़ा हुआ और इसराएल के ईश्वर का बिभव उन के २० ऊपर था। मैं ने इसी जीवधारी को खबूर नदी के लग इसराएल के ईश्वर के नीचे देखा था और मैं ने जाना कि २१ वे करोबी थे। हर एक के चार चार मुंह थे और हर एक के चार चार डैने और उन के डैने के नीचे मनुष्य के हाथ २२ था। और वे ही और उन के स्वरूप और उन के मुंह वे ही मुंह थे जो मैं ने खबूर नदी के लग इसराएल के ईश्वर के नीचे देखा था और मैं ने २३ जाना कि वे करोबी थे। हर एक के चार चार मुंह थे और हर एक के चार चार डैने और उन के डैने के नीचे मनुष्य २४ के हाथ था। वे ही और उन के स्वरूप और उन के मुंह वे ही मुंह थे जो मैं ने खबूर नदी के लग देखा था उन में से हर एक बराबर आगे बढ़ता था॥

ग्यारहवां पर्ब्ब।

१ और आत्मा ने मुझे उठाके परमेश्वर के मन्दिर के पूरब ओर के पूरब फाटक पर पहुंचाया और क्या देखता हूं कि पचीस पुरुष फाटक के द्वार पर हैं जिन में मैं ने लोगों के अध्यक्ष अज़ुर के बेटे याजनियाह और बिनायाह के बेटे २ फलतियाह को देखा। तब उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र ये ही लोग बुरी जुगत बांधते हैं और इस ३ नगर में कुमंत्र देते हैं। जो कहते हैं कि पास नहीं है हम घर बनावें यह ४ कड़ाहा और हम मांस। इस लिये उन के बिरुद्ध भविष्य कह हे मनुष्य के पुत्र ५ भविष्य कह। तब परमेश्वर का आत्मा मुझ पर पड़ा और मुझ से कहा कि बोल परमेश्वर यों कहता है कि हे इसराएल के घराने तुम लोगों ने यों कहा है और मैं हर एक बात को जो ६ तुम्हारे मन में आती है जानता हूं। तुम ने अपने जूझे हुओं को इस नगर में बढ़ाया है और उस की सड़कों को ७ जूझे हुओं से भर दिया है। इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि तुम्हारे जूझे हुए जिन्हें तुम ने इस के मध्य में धरा है सो मांस हैं और यह कड़ाहा परन्तु मैं तुम्हें उस के मध्य में से ८ निकालूंगा। तुम लोग तलवार से डरे हो और प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं ९ तुम पर तलवार लाऊंगा। और मैं तुम्हें उस के मध्य में से निकाल लाऊंगा और तुम्हें परदेशियों के हाथ में सौंपूंगा और १० तुम्हें दण्ड देऊंगा। तुम लोग तलवार से गिरोगे मैं इसराएल के सिवाने में तुम्हारा न्याय करूंगा और तुम लोग ११ जानोगे कि मैं परमेश्वर हूं। यह तुम्हारा कड़ाहा न होगा और न तुम लोग उस में के मांस मैं इसराएल के १२ सिवाने में तुम्हारा न्याय करूंगा। और तुम लोग जानोगे कि मैं परमेश्वर हूं कि तुम लोग मेरी बिधिन पर नहीं चले और न मेरे बिचारों को माना है परन्तु चारों ओर के अन्यदेशियों की रीति पर चले हो॥

१३ और मेरे भविष्य कहने से यों हुआ कि बिनायाह का बेटा फलतियाह मर गया तब मैं मुंह के बल गिरा और बड़े शब्द से चिल्लाके कहा कि हाय प्रभु

परमेश्वर क्या तू इसराएल के बचे हुओं को सर्वथा मिटा डालेगा॥

१४ फिर यह कहते हुए परमेश्वर का १५ बचन मेरे पास पहुंचा। कि हे मनुष्य के पुत्र तेरे भाई तेरे ही भाईबन्द तेरे कुनबे के जन और इसराएल के सारे घराने सब के सब जो हैं उन से यिरूसलम के निवासियों ने कहा है कि परमेश्वर से परे हो जाओ देश हमारे बश में किया गया है॥

१६ इस लिये कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि जब मैं ने उन्हें अन्यदेशियों में दूर फेंका है और जब मैं ने उन्हें देशों में छिन्न भिन्न किया है तब जिस जिस देश में वे आवेंगे में उन के लिये थोड़े समय लों पवित्रस्थान हूंगा।

१७ इस लिये कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मैं तुम्हें लोगों में से एकट्ठा करूंगा और तुम लोग जिस जिस देश में बिथराये गये हो मैं उन में से तुम्हें बटोरूंगा और इसराएल का देश तुम्हें देऊंगा॥

१८ और वे वहां आवेंगे और वे वहां से सारी तुच्छता और सारी घिनितों को १९ दूर करेंगे। और मैं उन्हें एक ही मन देऊंगा और तुम्में एक नया आत्मा डालूंगा और उन के मांस में से पत्थरैला मन निकालूंगा और उन में एक मांसिक २० मन डालूंगा। जिस्तें वे मेरी बिधिन पर चलें और मेरी व्यवस्थों को पालन करें और उन्हें मानें और वे मेरे लोग होंगे और मैं उन का ईश्वर हूंगा॥

२१ परन्तु जिन का मन अपनी तुच्छ और घिनित बस्तुन पर चलता है प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं उन की चाल का पलटा उन्हीं के सिर पर देऊंगा॥

२२ तब करोबियों ने अपने अपने पंख उठाये और चक्र उन के संग और इसराएल के ईश्वर का बिभव उन के ऊपर २३ था। और परमेश्वर का बिभव नगर के मध्य में से उठ गया और नगर के पूरब अलंग पहाड़ पर खड़ा हुआ॥

२४ तब आत्मा ने मुझे उठाया और ईश्वर का आत्मा दर्शन से मुझे कसदीम में बंधुओं के पास लाया और जो दर्शन २५ मैं ने देखा सो ऊपर जाता रहा। फिर जो परमेश्वर ने मुझे दिखाया था सो मैं ने भी बंधुओं को कह सुनाया॥

बारहवां पर्ब्ब।

१ और यह कहते हुए परमेश्वर का २ बचन मेरे पास पहुंचा। कि हे मनुष्य के पुत्र तू एक दंगाहत लोगों में बास करता है जो देखने को आंख रखते हैं पर नहीं देखते और सुन्ने के कान रखते हैं पर नहीं सुनते क्योंकि वे दंगाहत ३ घराने हैं। इस लिये हे मनुष्य के पुत्र सिधारने के लिये सामग्री सिद्ध कर और उन के देखते ही दिन को सिधार और तू अपने स्थान से दूसरे स्थान को उन के देखते ही सिधार यद्यपि वे दंगहत ४ घराने हैं क्या जानें कि वे सोचें। और तू दिन में उन के आगे अपनी सामग्री को सिधारने की सामग्री के समान निकाल ला और सांझ को उन के देखते देखते उन के समान निकल जा जो ५ सिधारने को निकल जाते हैं। उन के देखते ही भीत को खोदके उस में से ६ निकाल ले जा। उन के देखते ही तू उसे अपने कंधे पर उठा और गोधूली में ले जा तू अपना मुंह ढांप ले जिस्तें भूमि न देखे क्योंकि इसराएल के घराने के लिये मैं ने तुझे एक चिन्ह बना रक्खा है॥

७ और आज्ञा के समान मैं ने किया और सिधारने के लिये सामग्री के समान

मैं ने दिन को अपनी सामग्री बाहर निकाली और सांझ को मैं ने अपने हाथ ७ से अपने लिये भीत खोदी और मैं ने गोधूली में उसे निकाला और उन के देखते ही कांधे पर उठा लिया॥

८ और बिहान को यह कहते हुए परमेश्वर का बचन मेरे पास पहुंचा। ९ कि हे मनुष्य के पुत्र क्या इसराएल के घराने ने वह दंगाइत घराने ने तुझ से १० नहीं कहा कि तू क्या करता है। उन से कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि यरूसलम के अध्यक्ष का और उन में के इसराएल के सारे घराने का यह बोझ है॥

११ कह कि मैं तुम्हारे लिये चिन्ह हूं जैसा मैं ने किया है तैसा उन से किया जायेगा वे सिधारके बंधुआई में जायेंगे। १२ और जो अध्यक्ष उन में है सो अपने कांधे पर उठाये हुए गोधूली में निकल जायेगा वे बाहर ले जाने को भीत खोदेंगे और जिस्तें आंखों से भूमि न १३ देखे वह अपना मुंह ढांपेगा। मैं अपना जाल भी उस पर बिछाऊंगा और वह मेरे फंदे में बझ जायेगा और मैं उसे कसदियों के देश में बाबुल को लाऊंगा परन्तु वह उसे न देखेगा और वहां १४ मरेगा। और मैं उस के आसपास के सारे सहायकों को और उस की सारी सेनाओं को हर एक दिशा में छिन्न भिन्न करूंगा और मैं उन के पीछे तलवार १५ खींचूंगा। और जब मैं उन्हें जातिगणों में छिन्न भिन्न करूंगा और देशों में उन्हें बिथराऊंगा तब वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूं॥

१६ परन्तु मैं तलवार से और अकाल से और मरी से उन में से गिन्ती के थोड़े जनों को छोडूंगा जिस्तें वे अपनी घिनितों को अन्यदेशियों में जहां जहां वे पहुंचें प्रगट करें और वे जानें कि मैं परमेश्वर हूं॥

१७ फिर यह कहते हुए परमेश्वर का १८ बचन मेरे पास पहुंचा। हे मनुष्य के पुत्र तू थर्थराते हुए अपनी रोटी खा और कांपते हुए चिन्ता के साथ अपना १९ जल पी। और देश के लोगों से कह कि यरूसलम के बासियों के और इसराएल देशियों के बिषय में प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि वे अपनी रोटी चिन्ता के साथ खायेंगे और अपना जल आश्चर्य्य के साथ पीयेंगे जिस्तें उस के सारे बासियों के उपद्रव के कारण उन के देश अपनी भरपूरी से उजड़ जायें। २० और बसे हुए नगर उजाड़े जायेंगे और देश उजाड़ा जायेगा और तुम जानोगे कि मैं परमेश्वर हूं॥

२१ फिर यह कहते हुए परमेश्वर का २२ बचन मेरे पास पहुंचा। हे मनुष्य के पुत्र तुम लोग इसराएल के देश में क्या कहावत रखते हो कि तुम कहते हो कि दिन बढ़ गये और हर एक दर्शन घट २३ गया। इस लिये उन से कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मैं इस कहावत को मिटा डालूंगा और वे इसराएल में उस कहावत के समान फिर न कहा करेंगे परन्तु उन से कहो कि दिन और हर एक दर्शन का बचन २४ समीप है। क्योंकि फिर बृथा दर्शन अथवा भुलाने का मंत्र इसराएल के २५ घराने में न होगा। क्योंकि मैं परमेश्वर कहूंगा और जो बचन मैं कहूंगा सो पहुंचेगा वह बिलंब न करेगा क्योंकि हे दंगाइत घराने प्रभु परमेश्वर कहता है कि तुम्हारे दिनों में मैं बचन कहूंगा और पूरा करूंगा॥

२६ फिर यह कहते हुए परमेश्वर का २७ बचन मेरे पास पहुंचा। कि हे मनुष्य

के पुत्र देख इसराएल के घराने यह कहते हैं कि जो दर्शन वह देखता है सो बहुत दिनों के लिये है और वह दूर समयों का भविष्य कहता है ॥

२८ इस लिये उन से कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मेरा कोई बचन फिर विलंब न करेगा परन्तु प्रभु परमेश्वर कहता है कि जो मैं ने कहा सो होगा ॥

तेरहवां पर्ब्ब ।

१ फिर यह कहते हुए परमेश्वर का २ बचन मेरे पास पहुंचा । हे मनुष्य के पुत्र इसराएल के भविष्यद्वक्तों के विरुद्ध जो भविष्य कहते हैं भविष्य कहके उन से बोल और जो अपने अपने मन से भविष्य कहते हैं उन से कह कि पर३ मेश्वर का बचन सुनो । प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मूर्ख भविष्यद्वक्तों पर संताप जो अपने मन के समान चलते हैं ४ और कुछ नहीं देखा है । हे इसराएल तेरे भविष्यद्वक्ते खंडहरों में गीदड़ों की ५ नाईं हैं । तुम लोग दरारों पर चढ़ नहीं गये और परमेश्वर के दिन में संग्राम में खड़ा होने को इसराएल के घराने के ६ लिये बाड़े को बाड़ित न किया । वे झूठ और मिथ्या दैवज्ञता देखके कहते हैं कि परमेश्वर कहता है और परमेश्वर ने उन्हें नहीं भेजा है और उन्हों ने औरों को आशा दिई है जिस्ते बचन ७ को स्थिर करें । क्या तुम ने झूठा दर्शन नहीं देखा क्या तुम ने मिथ्या दैवज्ञता न कही यद्यपि तुम लोग कहते हो कि परमेश्वर ने कहा है यद्यपि मैं ने नहीं कहा ॥

८ इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि तुम लोगों ने जो व्यर्थ कहा और मिथ्या देखा इस लिये देखो प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं तुम्हारे विरुद्ध हूं । ९ और मेरा हाथ भविष्यद्वक्तों पर जो व्यर्थ दर्शन देखते और मिथ्या मंत्र कहते हैं फैलेगा वे मेरे लोगों की सभा में न रहेंगे पावेंगे न वे इसराएल के घराने के लिखे हुए में लिखे जायेंगे और न वे इसराएल के देश में पहुंचेंगे और तुम जानोगे कि १० मैं प्रभु परमेश्वर हूं । इस कारण हां इस कारण कि उन्हों ने मेरे लोगों को भरमाया है और कहा है कि कुशल और कुशल न था और किसी ने भीत उठाई और देखो दूसरों ने उसे कच्चा पोता है । ११ जो कच्चा पोते हैं उन से कह कि गिरेगी उबलती हुई झड़ी होगी और तुम हे बड़े बड़े ओले पड़ोगे और आंधी १२ उसे तोड़ेगी । और देखो जब वह भीत गिरेगी तब तुम से कहा न जायेगा कि अब वह पोतना कहां है जिस्से तुम ने १३ पोता है । इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मैं अपने क्रोध में आंधी से उसे फाड़ूंगा और मेरी रिस में उबलती हुई झड़ी होगी और नाश करने को मेरे १४ कोप में बड़े बड़े ओले पड़ेंगे । यों मैं भीत को जिसे तुम ने कच्चो पोतनी से पोता है तोड़ूंगा और उसे भूमि लों गिराऊंगा यहां लों कि उस की नेव उघारी जायेगी और वह गिरेगी और तुम उस के बीच नष्ट होओगे और जानोगे कि मैं परमेश्वर हूं ॥

१५ यों मैं उस भीत पर और उन पर जिन्हों ने कच्चा पोता है अपना क्रोध पूरा करूंगा और तुम से कहूंगा कि न भीत न उस के पोतवैये हैं । १६ इसराएल के भविष्यद्वक्ते जो यरूसलम के विषय में भविष्य कहते हैं और उस के लिये कुशल का दर्शन देखते हैं और प्रभु परमेश्वर कहता है कि कुशल नहीं ॥

१७ और तू हे मनुष्य के पुत्र अपने लोगों की पुत्रियों के विरुद्ध जो अपने ही मन

से भविष्य कहती हैं अपना मुंह फेर
१८ और उन के बिरुद्ध भविष्य कह । और
बोल कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है
कि संताप तुम पर जो सारी केहुनियों
के लिये उसीसा सीती हो और प्राण को
अहेर करने के लिये हर एक डील के सिर
के लिये बिछौना बनाती हो क्या तुम मेरे
लोगों के प्राण को अहेर करोगी और
क्या तुम अपनी ओर के प्राणियों को
१९ बचाओगी । और तुम लोग मुट्ठी भर भर
जव के लिये और रोटी के टुकड़ों के
लिये मुझे मेरे लोगों में अशुद्ध करोगी
कि तुम उन प्राणों को घात करती हो
जिन का मरना न था और उन प्राणों
को जीने देती हो जिन को जीना न
था कि तुम मेरे लोगों से जो झूठ सुनते
हैं झूठ बोलती हो ॥

२० इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता
है कि देखो मैं तुम्हारे उसीसों के बिरुद्ध
हूं जिन से तुम प्राणों को उड़ाने के लिये
अहेरती हो और जिन प्राणों को उड़ाने के
लिये तुम अहेरती हो मैं उन्हें तुम्हारे बाहों
से फाड़ूंगा और प्राणों को छुड़ाऊंगा ।
२१ और मैं तुम्हारे बिछौनों को भी फाड़
डालूंगा और अपने लोगों को तुम्हारे
हाथ से छुड़ाऊंगा और अहेर के लिये
वे फिर तुम्हारे हाथ में न होंगे और
२२ तुम जानोगी कि मैं परमेश्वर हूं । इस
कारण कि तुम लोगों ने धर्म्मी के मन
को झूठ से उदास किया जिन्हें मैं ने
उदास न किया और दुष्ट के हाथ में
बल दिया जिस्तें वह अपने दुष्ट मार्ग से
२३ न फिरे और जीवन पावे । इस लिये तुम
वृथा न देखोगी और न देवबाणी कहोगी और
मैं अपने लोगों को तुम्हारे हाथों से छुड़ा-
ऊंगा और तुम जानोगी कि मैं परमेश्वर हूं ॥

चौदहवां पर्व्व ।

१ तब इसराएल के प्राचीनों में से
कई जन मेरे आगे आ बैठे । और यह
२ कहते हुए परमेश्वर का बचन मेरे पास
पहुंचा । हे मनुष्य के पुत्र इन मनुष्यों
३ ने अपनी अपनी मूर्त्तिन को अपने मन
में स्थापन किया है और अपनी बुराई
के ठोकर को अपने आगे धर रक्खा
४ है क्या मैं ऐसों से पूछा जाऊं । इस
लिये उन से कह और उन से बोल कि
प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि इसराएल
के घराने में से हर एक जो अपने
अंतःकरण में अपनी मूर्त्तिन का स्थापन
करके अपनी बुराई का ठोकर अपने
आगे धरता है और भविष्यद्वक्ता के
पास आता है मैं परमेश्वर उस को
मूर्त्तों की बहुताई के समान उसे उत्तर
५ देऊंगा । जिस्तें मैं इसराएल के घराने
को उन्हीं के मन ही में पकड़ूं क्योंकि
वे सब के सब अपनी मूर्त्तिन के लिये
मझ से फिर गये हैं ॥

६ इस लिये इसराएल के घराने से कह
कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि
पश्चात्ताप करके अपनी मूर्त्तिन से फिरो
और अपने सारे घिनितों से अपने अपने
७ मुंह फेरो । क्योंकि इसराएल के घराने
के हर एक अथवा इसराएल का
परदेशी निवासी जो मुझ से अलग होता
है और अपने मन में अपनी मूर्त्तिन को
रोपता है और अपनी बुराई के ठोकर
को अपने आगे धरता है और मेरे बिषय
में बूझने को भविष्यद्वक्ता के पास
आता है उसे मैं ही परमेश्वर आप ही
८ उत्तर देऊंगा । और मैं अपना मुंह उसी
जन के बिरुद्ध फेरूंगा और उसे चिन्ह
और कहावत के लिये उजाड़ बनाऊंगा
और अपने लोगों के मध्य में से उसे
उखाड़ूंगा और तुम लोग जानोगे कि मैं
ही परमेश्वर हूं ॥

और यदि भविष्यद्वक्ता कोई बात

कहके भरमाया जाये तो मुझ परमेश्वर ने उस भविष्यद्वक्ता को भरमाया है और मैं अपना हाथ उस पर बढ़ाऊंगा और अपने इस्राएल लोगों के मध्य में १० से उसे नष्ट करूंगा। और वे अपनी बुराई का दण्ड भोगेंगे पुछवैये का दण्ड भविष्यद्वक्ता के दण्ड के समान होगा। ११ जिस्तें इसराएल का घराना फिर मुझ से भटक न जाये और अपने सारे अपराधों से अशुद्ध न हो जाये परन्तु प्रभु परमेश्वर कहता है जिस्तें वे मेरे लोग होवें और मैं उन का ईश्वर॥

१२ तब यह कहते हुए परमेश्वर का १३ बचन मेरे पास पहुंचा। हे मनुष्य के पुत्र जब अति अपराध करने के कारण से देश मेरे बिरुद्ध पाप करे तब मैं अपना हाथ उस पर बढ़ाऊंगा और उस के भोजन की टेक तोड़ डालूंगा और उस पर अकाल भेजूंगा और मनुष्य को और १४ पशु को उस्से मिटा डालूंगा। प्रभु परमेश्वर कहता है कि यद्यपि ये तीन जन अर्थात् नूह और दानिएल और ऐयूब उस में होते तो वे अपने धर्म्म से केवल अपने ही प्राण बचाते॥

१५ यदि मैं फड़वैये पशुन को देश में से प्रवेश कराऊं और वे उन्हें ऐसा नष्ट करें कि वह ऐसा उजाड़ हो जाये कि बनपशुन के मारे कोई मनुष्य उस में से १६ न जाये। प्रभु परमेश्वर कहता है कि अपने जीवन सोंह जो ये तीन जन उस के मध्य में होते तो बेटे बेटियों को न बचाते केवल वे ही बच जाते परन्तु देश उजाड़ होता॥

१७ अथवा जो मैं उस देश पर तलवार लाऊं और कहूं कि हे तलवार देश में प्रवेश कर जिस्तें मैं उस्से मनुष्यों को १८ और पशुन को नष्ट करूं। प्रभु परमेश्वर कहता है अपने जीवन सोंह जो ये तीन जन उस में होते तो न बेटे न बेटियों को छुड़ा सक्ते परन्तु वे अकेले ही बचते॥

यदि मैं मरी उस देश में भेजूं और १९ मनुष्यों को और पशुन को उस्से नाश करने के लोहू से अपना क्रोध उस पर उंडेलूं। प्रभु परमेश्वर यों कहता २० है कि अपने जीवन सोंह जो नूह और दानिएल और ऐयूब उस में होते तो वे बेटा बेटी को न छुड़ाते वे अपने ही धर्म्म से अपने ही प्राण को छुड़ाते॥

क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता तो २१ कितना अधिक जब मैं यरूसलम पर मनुष्यों और पशुन को नष्ट करने के लिये अपने चार बड़े दण्ड अर्थात् तलवार और अकाल और फड़वैये पशु और मरी को भेजूं। तथापि देख बेटे २२ बेटियों का बचा हुआ उस में छोड़ा जायेगा जो बाहर किये जायेंगे और देखो वे तुम्हारे पास बाहर आवेंगे और तुम उन की चाल और उन के व्यवहार देखोगे और सारी बुराई के विषय में जो मैं यरूसलम पर लाया हूं तुम लोग शान्ति पाओगे अर्थात् सभों के विषय में जो मैं उस पर लाया। और जब २३ तुम उन की चाल और व्यवहारों को देखोगे तो वे तुम्हें शान्ति देंगे और प्रभु परमेश्वर कहता है कि यह सब तुम जानोगे जो मैं ने उस में किया सो बिना कारण नहीं॥

पंदरहवां पर्व्व।

और यह कहते हुए परमेश्वर का १ बचन मेरे पास पहुंचा। हे मनुष्य के २ पुत्र दाखपेड़ दूसरे पेड़ से अधिक क्या है अथवा बन के पेड़ों में की डाली से। क्या किसी काम के लिये उस्से ३ लकड़ी लिई जायेगी अथवा किसी वस्तु

को टांगने के लिये कोई उस्से खूंटी
४ लेगा। देख वह आग में ईंधन के लिये
डाला जाता है और आग उस के दोनों
सिरों को भस्म करती है और उस के
मध्य को जला देती है क्या वह किसी
५ काम का है। देख जब वह समूची थी
वह किसी काम की न थी कितना
अधिक अब वह किसी काम की नहीं
जब आग उसे भस्म कर गई और वह
जल गई ॥

६ इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है
कि जैसा बन के पेड़ों में दाख की लता
को जो मैं ने आग के ईंधन के लिये
दिया है तैसा मैं यरूसलम के निवासियों
७ को देऊंगा। और मैं अपना मुंह उन के
बिरुद्ध फेरूंगा वे एक आग में से निक-
लेंगे और दूसरी आग उन्हें भस्म करेगी
और जब मैं अपना मुंह उन के बिरुद्ध
फेरूं तब तुम लोग जानोगे कि मैं पर-
८ मेश्वर हूं। और प्रभु परमेश्वर कहता
है कि मैं उन के अपराध करने के कारण
देश को उजाड़ डालूंगा ॥

सोलहवां पर्ब्ब ।

१ फिर यह कहते हुए परमेश्वर का
२ बचन मेरे पास पहुंचा। हे मनुष्य के
पुत्र यरूसलम को उस की घिनित क्रिया
जना ॥

३ और कह कि प्रभु परमेश्वर यरूसलम
से यों कहता है कि तेरा निवास और
तेरा जन्म कनआन देश का है तेरा
पिता अमूरी और तेरी माता हित्ती।
४ और तेरा जन्म जो है जब तू उत्पन्न
हुई तेरी नाभी काटी न गई और जब
मैं ने तुझे देखा तब तू जल से नहलाई
न गई थी और तुझ पर लोन लगाया
न गया था और कपड़ों से लपेटी न गई
५ थी। किसी की आंख तुझ पर न लगी
कि मया से तुझ पर कुछ ऐसा करे परन्तु
अपने जन्मदिन में अपने घिन के लिये
तू बाहर खेत में फेंकी गई थी ॥

६ और जब मैं तेरे पास से होके गया
और तुझे तेरे ही लोहू में लोटते देखा
तब मैं ने तुझ से तेरे लोहू में होते हुए
कहा कि जी हां मैं ने तुझ से तेरे लोहू
७ में कहा कि जी। मैं ने खेत की कली
की नाईं तुझे बढ़ाया है और तू बढ़ते
बढ़ते महान हुई और तू उत्तम शोभा
को पहुंची और तेरे स्तन फूल उठे और
तेरा बाल बढ़ गया है पर आगे तू नग्न
और उघारी थी ॥

८ जब मैं तेरे पास से जाता था और
तुझ पर दृष्टि किई और क्या देखता
हूं कि तेरा समय प्रेम का समय है और
मैं ने अपना आंचल तुझ पर फैलाया
और तेरी नग्नता ढांपी हां मैं ने तुझ से
किरिया खाई और तेरे साथ बाचा
बांधी प्रभु परमेश्वर कहता है और तू
९ मेरी हुई। और मैं ने तुझे जल से
धोया हां मैं ने तेरा लोहू तुझ से धो
१० डाला और तुझ पर तेल मला। और
मैं ने बूटाकार्य्य से तुझे पहिराया और
तुझे तुखसचाम की जूती पहिनाई और
मैं ने तेरी कटि पर झीना बस्त्र लपेटा
११ और मैं ने तुझे चेवली ओढ़ाई। और
मैं ने तुझे गहनों से आभूषित किया
और तेरे हाथों में कंकण और तेरे गले
१२ में हार पहिनाया। और मैं ने तेरी नाक
में नथ पहिनाई और तेरे कानों में कर्ण-
फूल और तेरे सिर पर सुन्दर मुकुट
१३ धरा। और इस रीति से तू सोना चांदी
से शोभित हुई और तेरे बस्त्र झीने और
चेवली और बूटे काढ़े हुए थे तू ने
चोखा पिसान और मधु और तेल खाया
और तू परम सुन्दरी हुई और तू एक
१४ राज्य लों भाग्यवती हुई। और तेरी
कीर्त्ति सुन्दरता के कारण अन्यदेशियों

में फैली क्योंकि प्रभु परमेश्वर कहता है कि मेरी सुन्दरता के कारण जो मैं ने तुझ पर रक्खी अत्यन्त सम्पूर्ण हुई ॥

१५ परन्तु तू ने अपनी सुन्दरता पर भरोसा रक्खा और अपनी कीर्त्ति के कारण वेश्याई किई और हर एक जवैये पर अपने व्यभिचार को उंडेला
१६ वह उस का हुआ । और तू ने अपने वस्त्रों से लेके अपने ऊंचे स्थानों को नाना प्रकार के रंग से शोभित किया और उन पर वेश्याई किई ऐसा न
१७ आवेगा और न होगा । और तू ने मेरे दिये हुए सोने चांदी के गहने ले ले अपने लिये पुरुष की मूर्त्ति बनाईं और
१८ उन से व्यभिचार किया । और अपने बूटे काढ़े हुए वस्त्र को लेके उन्हें ओढ़ाया और मेरा तेल और धूप उन के
१९ आगे धरा । और मेरा दिया हुआ भोजन भी और जिस चोखे पिसान और तेल और मधु से मैं ने तुझे खिलाया तू ने उन्हें सुगन्ध के लिये उन के आगे धरा है प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि यों ही हुआ ॥

२० और तू ने अपने बेटे बेटियों को जिन्हें तू मेरे लिये जनी थी लिया और उन के भक्ष के लिये बलि चढ़ाया है तेरी यह वेश्याई क्या थोड़ी है ।
२१ कि तू ने मेरे बालकों को घात किया है और सौंपके उन के लिये आग में से
२२ चलाया है । और अपने सारे घिनितों में और वेश्याई में तू ने अपने युवा के दिनों को स्मरण न किया जब कि तू नग्न और उघारी थी और अपने लोहू में लोटती थी ॥

२३ और तेरी सारी दुष्टता के पीछे यों हुआ प्रभु परमेश्वर कहता है कि संताप
२४ संताप तुझ पर । और तू ने अपने लिये वेश्यास्थान भी बना रक्खा है और हर एक सड़क में ऊंचा स्थान बना
२५ है । मार्ग के हर एक निकास में तू ने अपना ऊंचा स्थान बना रक्खा है और अपनी सुन्दरता को घिनौना किया है और हर एक के लिये जो तेरे पास से जाता है अपने पांव पसारा है और
२६ अपना छिनालपन बढ़ाया है । अपने परोसी और मिस्रियों के साथ जो बड़े मांस के हैं तू ने व्यभिचार भी किया है और मुझे रिसियाने को अपना छिनालपन बढ़ाया है ॥

२७ इस लिये देख मैं ने अपना हाथ तुझ पर बढ़ाया है और तेरे प्रतिदिन का भोजन घटाया है और तुझे फिलिस्तियों की बेटियों को जो तेरी वेश्याई चाल से लज्जित हैं और तुझ से बैर रखती हैं उन की इच्छा पर तुझे सौंपा है ॥

२८ अपने असन्तोष के कारण तू ने असूरियों से भी छिनालकर्म्म किया है हां तू ने उन से छिनालकर्म्म किया है
२९ तथापि सन्तुष्ट न हुई । कनआन देश में कसदिया लों तू ने अपने व्यभिचार को भी अधिक बढ़ाया है और उससे भी तू सन्तुष्ट न हुई ॥

३० प्रभु परमेश्वर कहता है कि तेरा मन कैसा निर्बल है जो तू ये सारे कर्म्म करती
३१ है जो निर्लज्ज छिनाल के कर्म्म हैं । तू जो हर एक मार्ग के सिरे पर अपना वेश्यास्थान बनाती है और हर एक सड़क में ऊंचा स्थान बनाती है और इस बात में वेश्या की नाईं न हुई कि तू खरची
३२ को तुच्छ जानती है । परन्तु व्यभिचारिणी पत्नी की नाईं जो अपने पति की
३३ सन्ती उपरी को लेती है । लोग सारी वेश्या को खरची देते हैं पर तू अपने जारों को दान देती है और जिस्तें वे चारों ओर से तेरे छिनालपने से तेरे पास

३४ जावें तू उन्हें कुछ देती है । और अपने छिनालपन में तू और स्त्रियों से विरुद्ध है क्योंकि व्यभिचारकर्म्म के लिये तेरे पीछे कोई नहीं जाता और इस में कि तू खरची देती है और तुझे खरची नहीं दिई जाती इस लिये तू विपरीत है ॥

३५ इस लिये, अरे वेश्या परमेश्वर का ३६ वचन सुन । प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि तेरे जारों के और तेरी सारी घिनित मूर्त्तिन के साथ तेरे छिनालकर्म्म के कारण तेरी अशुद्धता उंडेली गई और तेरी नग्नता उघारी गई और अपने बालकों के लोहू के कारण जो तू ने ३७ उन्हें दिया है । इस लिये देख मैं तेरे सारे जारों को जिन से तू आनन्दित हुई है और सब को जिन से तू ने प्रीति किई है और सभों को जिन से तू ने घिन किया है बटोरूंगा हां मैं उन्हें तेरे विरुद्ध तेरी चारों ओर एकट्ठे करूंगा और उन पर तेरी नग्नता उघारूंगा जिस्तें वे तेरी ३८ सारी नग्नता देखें । और मैं तेरा न्याय ऐसा करूंगा जैसा विवाहभंजक और हिंसक स्त्रियों के न्याय किये जाते हैं और मैं कोप से और झल से तुझ से ३९ लोहू का पलटा लेऊंगा । और मैं तुझे उन के हाथ में भी सौंपूंगा और वे तेरे वेश्यास्थान को ढा देंगे और तेरे ऊंचे स्थानों को तोड़ देंगे वे तेरे कपड़े भी उतार लेंगे और तेरे सुन्दर गहने छीन लेंगे और तुझे नंगी और उघारी छोड़ेंगे । ४० और वे तेरे विरुद्ध एक जथा लावेंगे और तुझे पत्थर से पथरावेंगे और अपनी ४१ तलवारों से तुझे बेधेंगे । और वे तेरे घर आग से जलावेंगे और बहुत सी स्त्रियों के देखने में तुझे दण्ड देंगे और मैं तुझे छिनालकर्म्म से छुड़ाऊंगा और तू फिर खरची न देगी ॥

४२ इस रीति से मैं अपने कोप को तेरी ओर शान्त करूंगा और मेरा झल तुझ से जाता रहेगा और मैं शान्त होऊंगा और फिर न रिसियाऊंगा ॥

४३ इस कारण कि तू ने अपनी युवावस्था के दिनों को स्मरण न किया परन्तु इन सब बातों में मुझे रिसाया है इस लिये प्रभु परमेश्वर कहता है कि देख मैं तेरे सिर पर तेरी चाल का पलटा देऊंगा और अपने सारे घिनितों से अधिक तू यही लंपटता न करेगी ॥

४४ देख हर एक जो कहावत कहता है यही कहावत तेरे विरुद्ध कहेगा कि ४५ जैसी माता तैसी पुत्री । तू अपनी माता की पुत्री जो अपने पति और बालकों से घिन करती है और तू अपनी बहिनों की बहिन है जिन्हों ने अपने अपने पति और बालकों से घिन किया है तुम्हारी माता हित्ती और तुम्हारा ४६ पिता अमूरी था । और तेरी जेठी बहिन समरून है वह और उस की पुत्रियां जो तेरी बाईं ओर रहती हैं और तेरी लहुरी बहिन जो तेरी दहिनी ओर रहती है सो सदूम और उस की पुत्रियां । ४७ यद्यपि तू उन की चाल पर न चली और उन के घिनित के समान न किया तथापि थोड़ी वस्तु के समान तू अपनी सारी चालों में उन से अधिक सड़ गई ॥

४८ प्रभु परमेश्वर कहता है कि अपने जीवन सौंह तेरी बहिन सदूम ने न किया न उस ने न उस की बेटियों ने जैसा तू ने और तेरी पुत्रियों ने किया ४९ है । देख तेरी बहिन सदूम की बुराई यह थी उस में और उस की पुत्रियों में अहंकार और भोजन की भरपूरी और आलस की बहुताई थी और उस ने कंगाल और दरिद्र के हाथ को बल न ५० दिया । और उन्हों ने अभिमानी होके मेरे आगे घिनितकर्म्म किया इस

लिये जैसा मैं ने देखा तैसा उन्हें दूर किया ॥

५१ समरून ने भी तेरे पाप का आधा न किया परन्तु तू ने अपने छिनिलों को उन से अधिक बढ़ाया है और अपने सारे किये हुए छिनिलों से अपनी बहिनों

५२ को निर्दोष ठहराया है । सो तू अपनी ही लाज भोग तू ने अपनी बहिनों का बिचार किया तू भी अपने पाप के कारण जो तू ने उन से अधिक छिनिल कर्म्म किया है अपनी ही लाज भोग वे तुझ से भी धर्म्मी हैं हां तू भी घबरा जा और तू ने जो अपनी बहिनों को

५३ निर्दोषी ठहराया है । जब मैं उन की बंधुआई को फेर लाऊंगा अर्थात् सदूम और उस की बेटियों को और समरून की और उस की बेटियों की बंधुआई तब मैं तेरी बंधुआई के बंधुओं को

५४ उन के मध्य में लाऊंगा । जिस्तें तू अपनी ही लाज भोगे और अपने सारे किये हुए कार्य्य में घबरा जाये तू उन के लिये शान्ति है ॥

५५ जब तेरी बहिनें सदूम और उस की बेटियां अपनी अगिली दशा में फिर आवेंगी और समरून और उस की बेटियां अपनी अगिली दशा में फिर आवेंगी तब तू और तेरी बेटियां अपनी अगिली दशा में फिरोगी ॥

५६ तेरे अहंकारों के दिन में तेरी बहिन

५७ सदूम तेरे मुंह से सुनाई न गई । तेरी दुष्टता के प्रगट होने से आगे उस समय के समान जब कि तू ने अराम की बेटियों की और उस के सारे चारों ओर के फिलिस्तियों की बेटियों से निन्दा पाई जो तेरी चारों ओर तुझे तुच्छ

५८ जानती थीं । परमेश्वर कहता है कि तू अपने छिनिलों और लंपटता को भोगती है ॥

५९ क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि तेरी करनी के समान मैं तुझ से भी व्यवहार करूंगा कि तू ने नियम को भंग करके किरिया की निन्दा किई

६० है । तिस पर भी मैं तेरे साथ तेरी युवावस्था के नियम को स्मरण करूंगा और तेरे साथ एक सनातन का नियम स्थिर

६१ करूंगा । जब तू अपनी जेठी और लहुरी बहिनों को ग्रहण करेगी तब तू अपनी चालों को स्मरण करके लज्जित होगी और मैं उन्हें पुत्रियों के लिये तुझे देऊंगा

६२ परन्तु तेरे नियम से नहीं । और मैं अपने नियम को तुझ से स्थिर करूंगा और तू जानेगी कि मैं ही परमेश्वर हूं ।

६३ जिस्तें तू स्मरण करे और लज्जित होवे और लाज के मारे अपना मुंह न खोले जब कि मैं तेरी सारी करनी को क्षमा करूं प्रभु परमेश्वर कहता है ॥

सत्रहवां पर्ब्ब ।

१ और यह कहते हुए परमेश्वर का

२ बचन मेरे पास पहुंचा । कि हे मनुष्य के पुत्र एक पहेली निकाल और इस्राएल के घराने से एक दृष्टान्त कह ।

३ और बोल कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि बड़े डैने का एक बड़ा गिद्ध लंबे पंख का पर से भरा हुआ बूटेदार रंग का लुबनान में आके देवदारुपेड़ की

४ फुनगी ले गया । उस ने उस की कोमल कनखियों की फुनगी तोड़ डाली और बैपार के देश में ले गया और उसे बैपारियों के नगर में लगाया ।

५ और वह उस देश का बीज भी ले गया और उसे फलवान खेत में लगाया और उसे बड़े पानियों के लग लगाया और बेंतपेड़ की नाईं उसे बोया ।

६ और वह बढ़के फैलती छोटी जाति की लता हुई जिस की डालियां उस की ओर मुड़ीं और उस की सोर भी उस के नीचे हुई वह यों

शाख की लता हो गई और डालियां निकालीं और कनखियां फुटकाईं॥

७ और बड़े बड़े डैने और बहुत पर का एक दूसरा बड़ा गिद्ध था और देखो यह लता ने अपनी जड़ें उस की ओर झुकाईं और उस की ओर अपनी डालियां बढ़ाईं जिस्तें अपनी कियारी की नाली से उसे सींचे। ८ और वह बड़े बड़े पानियों के लग अच्छी मिट्टी में लगाई गई जिस्तें डालियां फूटें और फल फले और अच्छी लता होवे॥

९ तू कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है क्या वह लहलहावेगी उसे सुखाने के लिये क्या वह उस की जड़ न उखाड़ेगा और उस का फल न काटेगा जिस्तें वह सूख जाये उस के दाख के सारे पत्ते सूख जावेंगे हां जड़ से बिना पराक्रम अथवा बहुत लोग से उखाड़ी जायेगी। १० हां देख लगाई जाके क्या वह लहलहावेगी क्या जब पुरुवा पवन उस पर लगेगी वह सर्व्वथा सूख न जायेगी वह नाली में जहां उगी तहां सूख जायेगी॥

११ फिर यह कहते हुए परमेश्वर का १२ वचन मेरे पास पहुंचा। अब दंगाइत घराने से कह क्या तुम लोग इन बातों का अर्थ नहीं जानते कह कि देखो बाबुल का राजा यरूसलम पर आया है और उस के राजा को और उस के अध्यक्षों को पकड़ा है और उन्हें अपने १३ साथ साथ बाबुल को ले गया है। और राजा के वंश में से एक लिया है और उस्से नियम बांधा और उस्से किरिया लिई और देश के बलवंतों को भी ले १४ गया। जिस्तें राज्य तुच्छ होवे और आप को न उभाड़े कि उस के नियम को पाले और उस पर स्थिर होवे। १५ परन्तु उस दूतों को मिस्र में भेजके उन से घोड़े और बहुत से लोग मंगवाके उस के विरुद्ध फिर गया क्या वह भाग्यमान होगा क्या ऐसा कार्य्यकारी बचेगा अथवा नियम को तोड़के वह छूट जायेगा॥

१६ प्रभु परमेश्वर कहता है कि अपने जीवन सोंह निश्चय जिस स्थान में राजा ने उसे राजा किया जिस की किरिया को उस ने निन्दा किई और जिस का नियम उस ने तोड़ा उस के साथ वह बाबुल में मरेगा। १७ अपनी पराक्रमी सेना और बड़ी जथा से बहुत से लोगों को जुझाने के लिये मोर्चा और गढ़ बना बनाके फिरऊन से संग्राम में उस के लिये कुछ न बन पड़ेगा। १८ क्योंकि नियम भंग करके उस ने किरिया की निन्दा किई और देख कि उस ने अपना हाथ दिया था और इन सब बातों को करके वह न बचेगा॥

१९ इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि अपने जीवन सोंह निश्चय मेरी किरिया जिस को उस ने निन्दा किई और मेरा नियम जो उस ने भंग किया है उसी का पलटा मैं उसी के सिर पर देऊंगा। २० और मैं अपना जाल उस पर फैलाऊंगा और वह मेरे फंदे में पकड़ा जायेगा और मैं उसे बाबुल को लाऊंगा और उस के अपराध के लिये जो उस ने मेरे बिरुद्ध अपराध किया है मैं वहां उस्से बिवाद करूंगा। २१ और उस के सारे भगेडू और सारी जथा तलवार से मारी जायेंगी और बचे हुए चौदिशा में छिन्न भिन्न होंगे और तुम लोग जानोगे कि मुझ परमेश्वर ने कहा है॥

२२ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मैं ऊंचे देवदारुपेड़ की ऊंची से ऊंची फुनगी लेके लगाऊंगा और ऊपर की कोमल टहनियों में से एक को कांटूंगा और उसे एक ऊंचे और महान पर्व्वत

२३ पर लगाऊंगा । इसराएल के ऊंचे पहाड़ पर मैं उसे लगाऊंगा और उस्से डालियां निकलेंगी और फलेंगी और सुन्दर देवदारुपेड़ होगा और हर डैने के सारे पंछी उस के तले बसेंगे उस की डालियों
२४ की छाया तले वे बसेंगे । और बन के सारे पेड़ जानेंगे कि मुझ परमेश्वर ने ऊंचे पेड़ को उतारा और नीचे पेड़ को बढ़ाया मैं ने हरे पेड़ को सुखा दिया और सूखे पेड़ को लहलहाया मुझ परमेश्वर ने यह कहा है और किया है ॥

अठारहवां पर्व्व ।

१ फिर यह कहते हुए परमेश्वर का
२ बचन मेरे पास पहुंचा । तुम लोगों का यह अभिप्राय क्या जो इसराएल के देश के बिषय में यह कहावत कहते हो कि पितरों ने खट्टा दाख खाया है और बालकों के दांत खट्टे हुए ॥
३ प्रभु परमेश्वर कहता है कि अपने जीवन सोंह तुम लोग फिर इसराएल में इस कहावत का कारण न पाओगे ।
४ देख सारे प्राण मेरे हैं पिता के प्राण के समान पुत्र का प्राण भी मेरा है जो प्राणी पाप करता है सोई मरेगा ।
५ परन्तु यदि मनुष्य धार्म्मिक होवे और
६ न्याय और धर्म्म करे । उस ने पहाड़ों पर भोजन न किया और इसराएल के घराने की मूर्त्तिन की ओर आंखें न उठाईं और अपने परोसी की पत्नी को अशुद्ध न किया और रजस्वला स्त्री
७ के पास न जायेगा । और वह किसी को न सतावेगा ऋण का बन्धक फेर देगा अन्धेर से किसी को न लूटेगा भूखे को अपनी रोटी खिलावेगा और उघारे हुए को कपड़ा ओढ़ावेगा ।
८ बियाज पर न देगा और कुछ बढ़ती नहीं लेगा बुराई से अपना हाथ खींच लेगा मनुष्य और मनुष्य के मध्य में ठीक बिचार करेगा । वह मेरी
चलेगा और उस ने सच्चाई से व्यवहार करने को मेरे बिचार को पालन किया है सो धर्म्मी है प्रभु परमेश्वर कहता है कि वह निश्चय जीयेगा ॥

१० और यदि उस्से बेटा उत्पन्न होवे जो बटमार और घातक और इन में से कोई
११ बात के समान पाप करे । और इन में की कोई बातों को उस ने न किया हो परन्तु उस ने पहाड़ों पर खाया और अपने परोसी की पत्नी को अशुद्ध किया
१२ है । कंगाल और दरिद्र को उस ने सताया अन्धेर से लूटा बन्धक को फेर नहीं देता और मूर्त्तिन की ओर उस ने अपनी आंखें उठाईं और घिनित
१३ कार्य्य किया । उस ने बियाज पर दिया और बढ़ती लिई तो क्या वह जीयेगा वह न जीयेगा उस ने ये सारे घिनित कार्य्य किये हैं वह निश्चय मरेगा उस का लोहू उस पर पड़ेगा ॥

१४ यदि उस्से बेटा उत्पन्न होवे जो अपने पिता के किये हुए सारे पापों को देखे और सोचके ऐसा न करे ।
१५ पहाड़ों पर उस ने नहीं खाया और इसराएल के घराने की मूर्त्तिन पर अपनी आंखें नहीं उठाईं और अपने परोसी
१६ की पत्नी को अशुद्ध न किया । और किसी को न सताया और बन्धक को बन्धक न रक्खा और न अन्धेर से लूटा परन्तु अपनी रोटी भूखे को दिया और
१७ उघारे हुए को वस्त्र ओढ़ाया । अपना हाथ कंगालों पर से उतारा और बियाज और बढ़ती नहीं लिया मेरे न्यायों को पालन किया मेरी बिधिन पर चला वह अपने पिता की बुराई के लिये न मरेगा निश्चय वह जीयेगा ॥

१८ उस के पिता ने क्रूरता से सताके अन्धेर से अपने भाई को लूटा और

अपने लोगों में जो भलाई न थी सो उस ने किई देखो वह अपनी बुराई में मरेगा ॥

१९ तथापि तुम लोग कहते हो कि किस लिये क्या बेटा बाप की बुराई नहीं भोगता जब बेटे ने उचित और ठीक किया है और मेरी सारी बिधिन को पाला है और उन्हें माना है वह

२० अवश्य जीयेगा । जो प्राणी पाप करता है सोई मरेगा बेटा बाप की बुराई न भोगेगा और न बाप बेटे की बुराई भोगेगा धर्म्मी का धर्म्म उसी पर होगा और दुष्ट की दुष्टता उसी पर पड़ेगी ॥

२१ परन्तु यदि दुष्ट अपने किये हुए सारे पापों से फिरे और मेरी सारी बिधिन को पाले और उचित और ठीक करे तो वह निश्चय जीयेगा वह न मरेगा ।

२२ उस के सारे अपराधकर्म्म उसे सुनाये न जायेंगे वह अपने धर्म्म कर्म्म में

२३ जीयेगा । प्रभु परमेश्वर कहता है कि क्या दुष्ट की मृत्यु से मैं किसी बात में प्रसन्न हूं और इस्से नहीं कि वह अपनी चाल से फिरे और जीये ॥

२४ परन्तु जब धर्म्मी अपने धर्म्म से फिरके बुराई करे और दुष्ट के समान सारे घिनित कार्य्य करे क्या वह जीयेगा उस के सारे धर्म्मकार्य्य न कहे जायेंगे वह अपने किये हुए अपराध में और अपने किये हुए पाप में मरेगा ॥

२५ तब भी तुम लोग कहते हो कि परमेश्वर का मार्ग स्थिर नहीं सो हे इसराएल के घराने अब सुनो क्या मेरा मार्ग स्थिर नहीं क्या तुम्हारे मार्ग स्थिर

२६ नहीं । जब धर्म्मी अपने धर्म्म से फिरे और अधर्म्म करे और उस में मरे वह अपनी किई हुई बुराई में मरेगा ।

२७ फिर जब दुष्ट अपनी दुष्टता से फिरे और उचित और ठीक करे तो अपना प्राण जीता रक्खेगा । क्योंकि उस ने

२८ सोचा और अपने किये हुए सारे अपराध से फिरा वह निश्चय जीयेगा वह न मरेगा ॥

२९ तथापि इसराएल के घराने कहते हैं कि प्रभु का मार्ग स्थिर नहीं है इसराएल के घराने क्या मेरे मार्ग स्थिर नहीं क्या तुम्हारे मार्ग स्थिर नहीं ॥

३० इसी लिये प्रभु परमेश्वर कहता है कि हे इसराएल के घराने मैं हर एक की चाल के समान तुम्हारा बिचार करूंगा पछताओ और अपने अपने सारे अपराधों से फिरो और बुराई तुम्हारे

३१ नाश के लिये न होगी । जिस जिस अपराध से तुम सभों ने अपराध किया है उन्हें त्याग करो और अपने लिये नया मन और नया आत्मा बनाओ क्योंकि हे इसराएल के घराने तुम क्यों मरोगे ।

३२ क्योंकि प्रभु परमेश्वर कहता है कि मरणीय की मृत्यु से मैं प्रसन्न नहीं सो फिरो और जीओ ॥

उन्नीसवां पर्ब्ब ।

१ और तू इसराएल के अध्यक्षों के लिये

२ एक बिलाप उठा । और कह कि तेरी माता क्या एक सिंहिनी वह सिंहों में लेट गई उस ने युवा सिंहों में अपने

३ बच्चों को पाला । और उस ने अपने एक बच्चे का प्रतिपाल किया और वह युवा सिंह हुआ और अहेर पकड़ना सीखा

४ वह मनुष्यों को भक्षने लगा । अनिगणों ने भी उस का समाचार पाया वह उन के गाड़ में पकड़ा गया और वे उसे सीकरों से मिसर देश में लाये ॥

५ और जब उस ने देखा कि मैं ने बाट जोही और आशा जाती रही तब उस ने अपने बच्चों में से दूसरे को लिया

६ और उसे युवा सिंह किया । और वह सिंहों में फिरते फिरते तरुण सिंह हुआ

और अहेर पकड़ना सीखा और मनुष्यों ७ को भखने लगा। और उस ने उन के उजाड़ भवनों को जाना और उन के नगरों को उजाड़ किया और देश और उस की भरपूरी उस के गर्जने के शब्द से उजड़ गई॥

८ तब चारों ओर के प्रदेशों से जातिगण उस के विरुद्ध हुए और उस पर अपना जाल फैलाया वह उन के गाड़ ९ में पकड़ा गया। और उन्हों ने उसे सीकर से बांधके बंधनों में किया और उसे बाबुल के राजा के पास ले गये उन्हों ने उसे गढ़ों में डाला जिस्तें उस का शब्द इसराएल के पर्व्वतों पर फिर सुना न जाये॥

१० तेरी माता दाख की लता के समान तेरी नाईं जल के लग लगाई गई है वह मुक्ता जल के मारे फलमय होके ११ डालों से भर गई। और आज्ञाकारियों के राजदण्डों के लिये उस की कड़ पोढ़ थीं और वह घनी डालियों में बढ़ गई वह अपनी डालियों की बहुताई से अपनी ऊंचाई से देखी जाती थी॥

१२ परन्तु वह कोप से उखाड़ी जाके भूमि पर फेंकी गई और पुरुआ पवन ने उस के फल को झुरा दिया उस की पोढ़ कड़ें टूटके सूख गईं आग ने उन्हें १३ भस्म किया। और अब वह सूखी और तृषित भूमि में बन में लगाई गई है। १४ और उस की डालियों में की एक कड़ से आग निकली है जिस ने उस के फलों को भस्म किया यहां लों कि प्रभुता करने को राजदण्ड के लिये उस की कोई पोढ़ कड़ न रही यह बिलाप है और बिलाप का कारण होगा॥

बीसवां पर्व्व।

और सातवें बरस के पांचवें मास की दसवीं तिथि में यों हुआ कि परमेश्वर से बूझने को इसराएल के कई प्राचीन मेरे आगे आ बैठे। २ तब यह कहते हुए परमेश्वर का बचन मेरे पास पहुंचा। ३ हे मनुष्य के पुत्र इसराएल के प्राचीनों से यह कहके बोल कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि तुम लोग मुझ से बूझने को आये हो प्रभु परमेश्वर कहता है कि अपने जीवन सोंह मैं तुम से बूझा न जाऊंगा। ४ हे मनुष्य के पुत्र क्या तू उन से बिवाद करेगा। क्या तू बिवाद करेगा उन के पितरों के घिनित कार्य्य उन्हें जता॥

५ और उन से कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि जिस दिन मैं ने इसराएल को चुना और यअकूब के बंश के लिये अपना हाथ उठाके किरिया खाई और मिस्र देश में आप को उन पर प्रगट किया जब मैं ने उन के लिये हाथ उठाया और कहा कि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं। ६ उसी दिन मैं ने उन के लिये अपना हाथ उठाया कि उन्हें मिस्र देश से उस देश में निकाल लाऊं जो मैं ने उन के लिये देख रक्खा था जिस में मधु और दूध बहता है और सब देशों से अधिक शोभायमान है। ७ और मैं ने उन से कहा कि तुम्में से हर एक जन अपनी अपनी आंखों की घिनित बस्तुन को त्यागो और मिस्र की मूर्त्तिन से अपने को अशुद्ध न करो मैं ही परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥

८ परन्तु वे मेरे विरुद्ध फिर गये और मेरी न मानी उन में से हर एक ने अपनी अपनी आंखों की घिनित बस्तुन को न फेंका और मिस्र की मूर्त्तिन को न त्यागा तब मैं ने कहा कि मिस्र देश के मध्य में अपनी रिस पूरी करने को उन के विरुद्ध अपना कोप उन पर उंडेलूंगा॥

९ परन्तु मैं ने अपने नाम के लिये कार्य्य किया कि अन्यदेशियों के आगे जिन में वे थे जिन की दृष्टि में मिस्र देश से बाहर लाने में मैं ने आप को उन पर जनाया वे मेरा नाम अशुद्ध न करें ॥

१० इसी कारण मैं उन्हें मिस्र देश से

११ निकालके बन में लाया । और अपनी बिधि उन्हें दिई और अपने न्याय को उन्हें जनाया जिन्हें यदि मनुष्य पालन

१२ करे तो उन में जीयेगा । और मैं ने अपने बिश्रामों को भी दिया कि वे मेरे और उन के मध्य में चिन्ह होवें जिस्तें वे जानें कि मैं परमेश्वर उन्हें पवित्र करता हूं ॥

१३ परन्तु इसराएल के घराने बन में मेरे बिरुद्ध फिर गये और वे मेरी बिधिन पर न चले और मेरे न्यायों की निन्दा किई जिन्हें यदि मनुष्य पालन करे तो वह उन में जीयेगा और उन्हों ने मेरे बिश्रामों को अति अशुद्ध किया तब मैं ने कहा कि मैं उन्हें नष्ट करने के निमित्त अपना कोप उन पर बन में उंडेलूंगा ॥

१४ परन्तु मैं ने अपने नाम के लिये कार्य्य किया जिस्तें अन्यदेशियों के आगे जिन की दृष्टि में मैं उन्हें निकाल लाया मेरा नाम अशुद्ध न होवे ॥

१५ तब भी मैं ने अपना हाथ बन में उन के लिये उठाया कि जिस देश को मैं ने उन को दिया था जिस में दूध और मधु बहता है जो सारे देशों से शोभायमान है मैं उस में उन्हें न लाऊं ।

१६ इस कारण कि उन्हों ने मेरे न्यायों की निन्दा किई और मेरी बिधिन पर न चले और मेरे बिश्रामों को अशुद्ध किया क्योंकि उन का मन उन की मूर्त्तिन के पीछे पीछे गया ॥

१७ परन्तु नाश करने से मेरी आंखों ने उन्हें छोड़ दिया और मैं ने बन में उन्हें मिटा न डाला ॥

१८ परन्तु बन में उन के सन्तानों को कहा कि तुम लोग अपने पितरों की बिधिन पर मत चलो और उन के न्यायों को मत मानो और उन की मूर्त्तिन से आप को अशुद्ध न करो ।

१९ मैं ही परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं मेरी बिधिन पर चलो और मेरे न्यायों को

२० पालो और मानो । और मेरे बिश्रामों को पवित्र मानो और वे मेरे और तुम्हारे मध्य में चिन्ह होवें जिस्तें तुम जानो कि मैं ही परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं ॥

२१ तिस पर भी उन के सन्तान मेरे बिरुद्ध फिर गये वे मेरी बिधिन पर न चले और मेरे न्यायों पर चलने को न माना जिन्हें यदि मनुष्य माने तो उन में जीयेगा और मेरे बिश्रामों को अशुद्ध किया तब मैं ने कहा कि अपनी रिस बन में उन पर पूरी करने को अपना

२२ कोप उन पर उंडेलूंगा । तथापि मैं ने अपना हाथ फेर लिया और अपने नाम के लिये कार्य्य किया जिस्तें अन्यदेशियों की दृष्टि में जिन के आगे मैं उन्हें बाहर लाया अशुद्ध न होने पावे ॥

२३ मैं ने बन में भी अपना हाथ उन पर उठाया कि मैं उन्हें अन्यदेशियों में बिथराऊं और देशों में छिन्न भिन्न करूं ।

२४ इस कारण कि उन्हों ने मेरे न्यायों को न माना परन्तु मेरी बिधिन की निन्दा किई थी और मेरे बिश्रामों को अशुद्ध किया और उन की आंखें अपने पितरों की मूर्त्तिन के पीछे पीछे गई थीं ॥

२५ इस लिये मैं ने भी उन्हें बिधि दिई जो अच्छी न थी और न्याय जिस्से

२६ वे न जीयें । और मैं ने उन्हें उन्हीं के बलिदानों से अशुद्ध किया कि जोरन के

सारे उत्पन्न हुओं को उन्हों ने आग में चलाया है जिस्तें मैं उन्हें उजाडूं कि वे जानें कि मैं परमेश्वर हूं॥

२७ इस लिये हे मनुष्य के पुत्र तू इसराएल के घराने को यह कहके बोल कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि इस बात में भी तुम्हारे पितरों ने मेरे बिरुद्ध अपराध करके मेरी अपनिन्दा किई। २८ क्योंकि जब मैं उन्हें उस देश में लाया जिसे उन्हें देने को मैं ने अपना हाथ उठाया था तब उन्हों ने हर एक ऊंचे पहाड़ को और सारे घने पेड़ों को देखा और उन्हों ने वहां अपने बलि चढ़ाये और वहां उन्हों ने अपनी रिस की भेंट चढ़ाई और वहां उन्हों ने अपना सुगंध भी चढ़ाया और उसी स्थान में २९ अपने पीने की भेंट उंडेली। तब मैं ने उन से कहा कि किस ऊंचे स्थान में तुम जाते हो तौ भी उस का नाम आज लों ऊंचा स्थान है॥

३० इस लिये इसराएल के घराने से कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है क्या तुम अपने पितरों के समान अशुद्ध हुए हो और तुम भी उन के घिनितों के ३१ समान व्यभिचार करते हो। इस लिये आज लों जब तुम लोग भेंट चढ़ाते हो और अपने बेटों को आग में से चलाते हो तब तुम अपनी सारी मूर्त्तिन से आप को अशुद्ध करते हो सो हे इसराएल के घराने क्या मैं तुम से बूझा जाऊं प्रभु परमेश्वर कहता है कि अपने जीवन सोंह मैं तुम से बूझा न ३२ जाऊंगा। जो तुम्हारे मन में आता है सो कधी न होगा क्योंकि तुम कहते हो कि काठ और पत्थर की सेवा में हम अन्यदेशियों के और देश के घरानों के समान होंगे॥

३३ प्रभु परमेश्वर कहता है कि अपने जीवन सोंह पराक्रमी हाथ से और बढ़ाई हुई भुजा से और उंडेले हुए कोप से मैं तुम पर राज्य करूंगा। ३४ और मैं तुम्हें लोगों में से बाहर निकाल लाऊंगा और जिस जिस देश में तुम छिन्न भिन्न हो मैं तुम्हें पराक्रमी हाथ से और बढ़ाई हुई भुजा से और उंडेले हुए कोप से ३५ एकट्ठा करूंगा। और मैं तुम्हें लोगों के बन में लाऊंगा और मुंहे मुंह तुम से ३६ बिवाद करूंगा। जैसा मैं ने तुम्हारे पितरों के साथ मिस्र देश के बन में बिवाद किया था प्रभु परमेश्वर कहता है तैसा मैं तुम से भी बिवाद करूंगा। ३७ और मैं तुम्हें दण्ड के नीचे से चलाऊंगा और तुम्हें नियम के बंधन में लाऊंगा। ३८ और तुम्में से दंगइतों को और उन्हें जो मेरे बिरुद्ध अपराध करते हैं दूर करूंगा और उन के टिकने के देश में उन्हें निकाल लाऊंगा और वे इसराएल के देश में प्रवेश न करेंगे और तुम लोग जानोगे कि मैं परमेश्वर हूं॥

३९ हे इसराएल के घराने प्रभु परमेश्वर तुम्हारे बिषय में यों कहता है कि तुम लोग जाओ और हर एक जन अपनी अपनी मूर्त्ति की सेवा करे और इस के पीछे जो मेरी न सुनो और अपनी भेंटों और अपनी मूरतों से मेरे पवित्र नाम ४० को फिर अशुद्ध न करो। क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मेरे पवित्र पर्ब्बत पर इसराएल के ऊंचे पहाड़ पर सारे इसराएल के घराने सब के सब देश में मेरी सेवा करेंगे वहां मैं उन्हें ग्रहण करूंगा और वहां मैं तुम्हारी भेंट और तुम्हारे नैवेद्य का पहिला फल तुम्हारी सारी पवित्र बस्तुन के साथ चाहूंगा॥

४१ जब मैं तुम्हें लोगों में से निकाल लाऊंगा और देशों में से जिन में तुम

भिन्न भिन्न हुए हो बटोरूंगा तब मैं तुम्हें तुम्हारे सुगन्धद्रव्य सहित ग्रहण करूंगा और अन्यदेशी लोगों के आगे तुम लोगों में पवित्र किया जाऊंगा।
४२ और जब मैं तुम्हें इसराएल की भूमि में उस देश में जिसे तुम्हारे पितरों को देने को मैं ने अपना हाथ उठाया था लाऊंगा तब तुम जानोगे कि मैं पर-
४३ मेश्वर हूं। और वहां तुम अपनी अपनी चालों को और अपनी सारी क्रिया को जिन से अशुद्ध हुए हो स्मरण करोगे और अपनी किई हुई सारी बुराइयों के लिये आप को अपनी ही दृष्टि में
४४ घिनाओगे। और हे इसराएल के घराने प्रभु परमेश्वर कहता है कि जब मैं तुम्हारी दुष्ट चालों के समान और तुम्हारे कुकर्म्म के समान तुम से व्यवहार न करूंगा परन्तु अपने नाम के लिये तब तुम जानोगे कि मैं परमेश्वर हूं॥
४५ फिर यह कहते हुए परमेश्वर का
४६ बचन मेरे पास पहुंचा। हे मनुष्य के पुत्र अपना मुंह दक्खिन ओर कर और दक्खिन ओर उच्चार और दक्खिन के चौगान के बन के विरुद्ध भविष्य कह।
४७ और दक्खिन के बन से कह कि परमेश्वर का बचन सुन प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं तुझ में एक आग बारूंगा और वह हर एक हरे पेड़ और हर एक सूखे पेड़ को भखेगी बरती लवर न बुझेगी और उस में दक्खिन से उत्तर लों सभों का मुंह जल जायेगा।
४८ और सारे शरीर देखेंगे कि मुझ परमेश्वर ने उसे बारा है वह न बुझेगी।
४९ तब मैं ने कहा कि हाय प्रभु परमेश्वर वे मेरे विषय में कहते हैं कि क्या वह दृष्टान्त नहीं कहता॥

एक्कीसवां पर्व्व

१ और यह कहते हुए परमेश्वर का बचन मेरे पास पहुंचा। हे मनुष्य के
२ पुत्र अपना मुंह यरूसलम की ओर फेर और पवित्र स्थानों की ओर उच्चार और इसराएल के देश के विरुद्ध भविष्य कह।
३ और इसराएल के देश से कह कि परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं तेरे विरुद्ध हूं और अपनी तलवार को काठी से निकालूंगा और धर्म्मी और दुष्ट को
४ तुझ में से नष्ट करूंगा। सो जैसा कि मैं तेरे मध्य से धर्म्मी और दुष्ट को नष्ट करूंगा इस लिये मेरी तलवार अपनी काठी से उत्तर से दक्खिन लों सारे
५ शरीरों पर निकलेगी। जिस्तें सारे शरीर जानें कि मुझ परमेश्वर ने अपनी तलवार काठी से निकाली है वह फिर न लौटेगी॥
६ इस लिये हे मनुष्य के पुत्र अपनी कटि के टूटने से हाय हाय कर और उन की आंखों के आगे बिलख बिलखके
७ हाय हाय कर। और ऐसा होगा कि जब वे तुझ से पूछें कि तू क्यों हाय हाय करता है तब उत्तर देना कि संदेशों के लिये क्योंकि वह आता है और हर एक का मन पिघल जायेगा और सारे हाथ दुर्बल होंगे और हर एक अन्तः-करण मूर्छित होगा और सारे घुटने पानी हो जायेंगे प्रभु परमेश्वर कहता है कि देख वह आता है और पहुंचाया जायेगा॥
८ और यह कहते हुए फिर परमेश्वर का बचन मेरे पास पहुंचा। हे मनुष्य के
९ पुत्र भविष्य कह और बोल कि परमेश्वर यों कहता है कि एक तलवार धार किई गई और चमकाई भी गई। वह
१० बड़ी जूझ के लिये चोखी किई गई है वह चमकाई गई है जिस्तें जगमगावे तो क्या हम आनन्द करें वह मेरे बेटे की लाठी है वह हर एक पेड़ को

११ निन्दा करता है। और उस ने तलवार दिई कि चमकाई जाये और हाथ से चलाई जाये और वह चोखी किई गई और जगमगाई गई है कि घातक के हाथ में दिई जाये॥

१२ हे मनुष्य के पुत्र रो रोके चिल्ला क्योंकि यह मेरे लोगों पर होगी वह इसराएल के सारे अध्यक्षों पर होगी वे मेरे लोगों के संग तलवार को सौंपे गये

१३ हैं इस लिये जांघ पीट। क्योंकि परीक्षा हुई और क्या वह निन्दित दंड भी न

१४ होगा प्रभु परमेश्वर कहता है। और तू हे मनुष्य के पुत्र भविष्य कह और हाथ पीट और तीसरी बार तलवार जूझे हुए की तलवार दुहराई जाये वह तलवार महत जूझे हुओं की है जो उन की

१५ कोठरियों में पैठती है। मैं ने डरावनी तलवार उन के सारे फाटकों पर धरी है जिस्तें मन पिघल जावें और जूझे हुए बढ़ाये जायें हाय वह चमकने के लिये बनाई गई है वह जुझाने के लिये

१६ चोखी किई गई है। तू एक ओर अथवा दूसरी ओर दहिने अथवा बायें जा जिधर

१७ तेरा मुंह होवे। मैं अपना हाथ भी पीटूंगा और अपना कोप धीमा करूंगा मुझ परमेश्वर ने कहा है॥

१८ और यह कहते हुए परमेश्वर का

१९ बचन मेरे पास पहुंचा। हे मनुष्य के पुत्र तू भी अपने लिये दो मार्ग ठहरा जिस्तें बाबुल के राजा की तलवार आवे एक ही देश से दोनों निकलेंगे तू एक चिन्ह बना नगर के पथ के सिरे पर उसे

२० बना। एक मार्ग ठहरा जिस्तें तलवार अम्मूनियों के रब्बाथ पर और बाड़ित यरूसलम में यहूदाह पर तलवार आवे॥

२१ क्योंकि बाबुल का राजा मार्ग के भाग पर दोनों मार्ग के सिरे पर गणना करवाने को खड़ा हुआ उस ने अपने बाण को चमकाया उस ने मूर्त्तिन से मंत्र लिया है और उस ने कलेजे में देखा।

२२ उस की दहिनी ओर यरूसलम के लिये गणना हुई कि जुझ में मुंह खोलने को और शब्द से ललकारने को सेनापतिन को ठहरावे टीला और गढ़ उठाने को कि फाटकों के साम्ने ढाहक ठहरावे।

२३ और उन की दृष्टि में उन के लिये वह झूठी गणना की नाईं होगी अर्थात् जिन्हों ने किरिया खाई है परन्तु वह उस बुराई को स्मरण करेगा कि पकड़े जावें॥

२४ इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है क्योंकि तुम अपने अपराधों को स्मरण करवाते हो ऐसा कि तुम्हारे पाप प्रगट हैं यहां लों कि तुम्हारे पाप देख पड़ते हैं क्योंकि तुम अपने को स्मरण करवाते हो तुम उसी हाथ से पकड़े जाओगे।

२५ अरे इसराएल के अधर्म्म दुष्ट अध्यक्ष जिस का दिन बुराई के अन्त के समय में

२६ आता है। प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मुकुट दूर कर और किरीट को उतार यह आगे को न रहेगा नीचे को उभाड़

२७ और ऊंचे को घटा। मैं उसे बिगाड़ूंगा बिगाड़ूंगा बिगाड़ूंगा और वह न रहेगा जब लों वह न आवे जिस का पद है और मैं उसे देऊंगा॥

२८ और हे मनुष्य के पुत्र तू भविष्य प्रचारके कह कि प्रभु परमेश्वर अम्मूनियों के बिषय में और उन की निन्दा के बिषय में यों कहता है कि तू कह कि तलवार तलवार खींची गई जुझाने के लिये जगमगाई गई और नाश करने

२९ को चमकाई गई। तुझे दुष्टों के जूझे हुओं के गले पर पहुंचाने को वे तेरे लिये बृथा देखते हैं और मिथ्या आगम कहते हैं जिस का दिन बुराई के अन्त के समय में आता है॥

३० क्या मैं उसे उस की कोठी में फिर- लाऊं मैं उस स्थान में जहां तू उत्पन्न हुआ तेरे जन्मदेश में तेरा न्याय करूंगा। ३१ और मैं अपनी जलजलाहट तुझ पर उंडेलूंगा मैं अपने क्रोध की आग तेरे विरुद्ध बारूंगा और तुझे पशुवत जन के और निपुण नाशक के हाथ में सोंपूंगा। ३२ तू आग के लिये ईंधन होगा तेरा लोहू देश के मध्य में होगा और तू फिर स्मरण किया न जायेगा क्योंकि मुझ परमेश्वर ने कहा है॥

बाईसवां पर्ब्ब ।

१ यह कहते हुए फिर परमेश्वर का २ बचन मेरे पास पहुंचा। कि हे मनुष्य के पुत्र क्या तू उन के लिये बिवाद करेगा क्या तू इस घातक नगर के लिये बिवाद करेगा और तू उसे उस के सारे ३ घिनित कार्य्य जना। और तू कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि जिस्तें इस नगर का समय आवे वह अपने मध्य में लोहू बहाता है और आप को अशुद्ध करने के लिये अपने बिरुद्ध मूर्त्ति ४ बनाता है। तू लोहू बहाके दोषी हुआ है और अपनी बनाई हुई मूर्त्तिन से आप को अशुद्ध किया है और अपने दिन समीप करवाये हैं और अपने बरस लों पहुंचा है इस लिये मैं ने तुझे अन्यदेशियों के लिये निन्दित और सारे देशों के लिये एक ठट्ठा बनाया है। ५ जो लोग कि तेरे निकट अथवा तुझ से दूर हों तुझे चिढ़ावेंगे कि तेरा नाम अशुद्ध और तू बिपत्ति में॥

६ देख इसराएल के अध्यक्ष अपनी सामर्थ्य भर लोहू बहाने के लिये हर ७ एक तेरे मध्य में थे। तुझी में उन्हों ने माता पिता को तुच्छ जाना है तेरे मध्य में उन्हों ने परदेशियों से छल ब्यवहार किया है तुझ में उन्हों ने अनाथ और रांडों को सताया है। तू ८ ने मेरी पवित्र बस्तुन की निन्दा किई है और मेरे बिश्रामों को अशुद्ध किया है। तुझ में लोहू बहाने को मिथ्या ९ अपवादी हैं और तुझ में पर्ब्बतों पर भोजन करते हैं वे तेरे मध्य में लंपटता करते हैं। तुझ में उन्हों ने अपने पिता की १० नग्नता उघारी है तुझ में वे हैं जिन्हों ने अशुद्धता के लिये अलग किई गईयों को ग्रहण किया है। हर एक ने अपने ११ परोसी की पत्नी से घिनित कर्म्म किया है और किसी ने लंपटता से अपनी पतोह को ग्रहण किया है और किसी ने तुझ में अपने पिता की कन्या अर्थात् अपनी बहिन को नम्र किया है। तुझ १२ में उन्हों ने लोहू बहाने को घूस लिया है तू ने ब्याज और बढ़ती लिई है तू ने अपने परोसी को अंधेर से लूटा है प्रभु परमेश्वर कहता है कि तू ने मुझे त्यागा है॥

देख तेरे हाथ की अधर्म्म कमाई १३ पर और तेरे मध्य में के लोहू पर मैं ने अपना हाथ मारा है। क्या तेरा मन १४ सह सकेगा अथवा जिन दिनों में मैं तुझ से ब्यवहार करूंगा क्या तेरे हाथ प्रबल होंगे मुझ परमेश्वर ने कहा और करूंगा। और मैं तुझे अन्यदेशियों में १५ बिथराऊंगा और देशों में तुझे छिन्न भिन्न करूंगा और तेरी अपवित्रता तुझ में से मिटा डालूंगा। और अन्यदेशियों के १६ मध्य में तू आप में अशुद्ध होगी और तू जानेगी कि मैं परमेश्वर हूं॥

और यह कहते हुए परमेश्वर का १७ बचन मेरे पास पहुंचा। हे मनुष्य के १८ पुत्र इसराएल का घराना मेरे लिये मैल हो रहा है वे सब घरिये के मध्य में पीतल और जस्ता और लोहा और सीसा हुए हैं और चांदी के मैल हैं॥

१९ इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है क्योंकि तुम सब मैल हुए हो सो अब देखो मैं तुम्हें यरूसलम के मध्य में एकट्ठा २० करूंगा। जैसा चांदी और पीतल और लोहा और सीसा और जस्ता को घरिया के मध्य में पिघलाने को एकट्ठा करते हैं तैसा मैं अपने कोप और रिस में तुम्हें बटोरूंगा और उस में धरके पिघलाऊंगा। २१ और मैं तुम्हें बटोरूंगा और अपने क्रोध की आग से तुम्हें फूकूंगा और तुम उस २२ के मध्य में पिघलाये जाओगे। जैसा चांदी घरिया में गलाई जाती है तैसा तुम लोग उस के मध्य में गलाये जाओगे और तुम जानोगे कि मुझ परमेश्वर ने अपना कोप तुम पर उंडेला है॥

२३ फिर यह कहते हुए परमेश्वर का २४ बचन मेरे पास पहुंचा। हे मनुष्य के पुत्र उस्से कह कि तू वही देश जो पवित्र नहीं किया गया और जलजलाहट के दिन में तुझ पर बरसाया नहीं गया। २५ उस के मध्य में उस के भविष्यद्वक्ता का एका करना अहेर के फड़वैये गर्जनहारे सिंह की नाईं उन्हों ने प्राणों को भक्षण किया है उन्हों ने धन और बहुमूल्य बस्तु लिया है उन्हों ने उस के मध्य में २६ बहुतों को बिधवा किया है। उस के याजकों ने मेरी ब्यवस्था पर अंधेर किया है और मेरी पवित्र बस्तुन को अशुद्ध किया है और उन्हों ने अपवित्र में और पवित्र में कुछ भेद नहीं किया है न शुद्ध अशुद्ध में कुछ भेद किया है और मेरे बिश्रामों से अपनी आंखें छिपाई हैं और मैं उन में अशुद्ध २७ हुआ हूं। उस के मध्य में उस के अध्यक्ष के घात करने में और प्राणों को नाश करने में और अधर्म्म कमाई में अहेर के फड़वैये हुंड़ार की नाईं हैं। २८ और उस के भविष्यद्वक्तों ने ब्यर्थ देख देख और मिथ्या गणित कर कर उन पर कच्चा गारा पोता है और कहते हैं कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है और परमेश्वर ने नहीं कहा है। देश के लोगों ने छल २९ करके बटमारी किई है और दरिद्रों को और दीनों को खिझाया है और उन्हों ने वृथा परदेशियों को सताया है॥

और बाड़ा बनाने को और देश के ३० लिये मेरे आगे दरार में खड़ा होने को मैं ने उन में एक जन को ढूंढ़ा जिस्तें उन्हें नाश न करूं परन्तु किसी को न पाया। इस लिये मैं ने उन पर ३१ अपनी जलजलाहट उंडेली है मैं ने अपने कोप की आग से उन्हें भस्म किया है प्रभु परमेश्वर कहता है कि उन की चाल का पलटा मैं ने उन के सिर पर डाला है॥

तेईसवां पर्ब्ब

फिर परमेश्वर का बचन यों कहते १ हुए मेरे पास पहुंचा। हे मनुष्य के पुत्र २ दो स्त्रियां एक माता की पुत्रियां थीं। और उन्हों ने मिस्र में ब्यभिचार किया ३ और उन्हों ने अपनी तरुणाई में ब्यभिचार किया वहां उन के स्तन मले गये और वहां उन्हों ने अपने कुंवारपन के स्तन मर्दन करवाये। और उन में की ४ जेठी का नाम अहल: और उस की बहिन अहलिब: वे मेरी थीं और वे बेटे बेटियां जनीं और उन के ये नाम अहल: समरून है और अहलिब: यरूसलम॥

और मेरे होते हुए अहल: ने बेश्याई ५ किई और वह अपने जार परोसी असूरों पर मर रही थी। जो सेनापति और ६ आज्ञाकारी नीला पहिने हुए घोड़ों पर चढ़े हुए घोड़चढ़े सब के सब मनोहर युवा पुरुष थे। यों उस ने अपने ७ ब्यभिचारों को उन्हें सौंपा असूर के संतान के चुने हुए के संग और सभों

पर वह मर रही थी उन की सारी मूर्त्तिन से उस ने आप को अशुद्ध किया
८ उस ने मिस्र से भी अपने व्यभिचार को न त्यागा क्योंकि उस की तरुणाई में उन्हों ने उस्से कुकर्म्म किया और उन्हों ने उस के कुंवारपन के स्तनों को मीसा और अपना व्यभिचार उस पर उंडेला॥
९ इस लिये मैं ने उसे उस के जारों के हाथ में सौंपा अर्थात् असूरियों के
१० हाथ जिन पर वह मर रही थी। इन्हों ने उस का नंगापन उघारा उन्हों ने उस के बेटे बेटियों को लिया और उसे तलवार से घात किया और वह स्त्रियों में नामी हुई क्योंकि उन्हों ने उस पर दण्ड की आज्ञा किई थी॥
११ और जब उस की बहिन अहलिब: ने देखा तो उस ने अपने अति मोह से उस्से अधिक अशुद्ध किया और अपने व्यभिचार में अपनी बहिन के व्यभि-
१२ चार से अधिक बढ़ गई। वह अपने परोसी असूरियों पर जो भड़कीले से बिभूषित और घोड़ों पर चढ़े हुए घोड़चढ़े सब के सब मनोहर युवा पुरुष सेना और आज्ञाकारियों पर मर रही
१३ थी। तब मैं ने देखा कि वह अशुद्ध हुई
१४ दोनों एक ही मार्ग में गईं। और उस ने अपने व्यभिचारकर्म्म बढ़ाये क्योंकि जब उस ने मनुष्यों को चित्रित अर्थात् कसदियों की सूरत सिन्दूर से चित्रित
१५ भीत पर देखा। कटि में पटुका बंधा हुआ अति रंगीली पगड़ी उन के सिरों पर सब के सब अपनी जन्मभूमि कसदी के बाबुलियों की नाईं देखने
१६ में अध्यक्ष। देखते ही वह उन पर मरने लगी और उन के पास कसदियों
१७ में उन्हों ने दूत भेजे। और बाबुल के सन्तान उस के पास प्रीति के बिछौने पर आये और उन्हों ने अपने व्यभिचार से उसे अशुद्ध किया और वह उन के संग अशुद्ध हुई और उस का मन उन
१८ से फिर गया। यों उस ने अपने व्यभिचार उघारे और अपनी नग्नता उघारी सो जैसा मेरा मन उस की बहिन से
१९ हट गया तैसा उस्से भी हटा। तथापि अपनी तरुणाई के दिनों को स्मरण करके जिन में मिस्र देश में बेश्याई किई थी उस ने अपने व्यभिचार बढ़ाये।
२० क्योंकि वह अपने जारों पर मरने लगी उन का मांस गदहों का सा मांस और
२१ उन का बीर्य्य घोड़ों का सा। अपनी तरुणाई के स्तनों को मिस्रियों से अपनी छाती मिसाने में तू ने अपनी लंपटता को स्मरण किया॥
२२ इस लिये हे अहलिब: प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं तेरे जारों को तेरे बिरुद्ध उभाडूंगा जिन से तेरा मन हटा है और मैं उन्हें चारों ओर से तेरे
२३ बिरुद्ध लाऊंगा। बाबुलनी और सारे कसदी पोकुद और सूअ और कूअ और उन के संग सारे असूरी सब के सब मनोहर युवा पुरुष सेनापति और आज्ञाकारी और बड़े बड़े नामी अध्यक्ष सब के सब
२४ घोड़े पर चढ़े हुए। और वे रथों को और छकड़ों को और चक्रों को बहुत से लोगों को साथ लेके तेरे बिरुद्ध आवेंगे और ढाल और फरी और टोप चारों ओर तेरे बिरुद्ध होंगे और मैं उन के आगे न्याय रक्खूंगा और वे अपने बिचार के
२५ समान तेरा बिचार करेंगे। और मैं अपना झल तेरे बिरुद्ध रक्खूंगा और वे अति कोप से तुझ से व्यवहार करेंगे वे तेरी नाक कान काटेंगे और तेरे बचे हुए लोग तलवार से मारे जायेंगे वे तेरे बेटे बेटियों को लेंगे और तेरे बचे हुए आग
२६ से भस्म होंगे। वे तेरे बस्त्र भी तुझ से उतारेंगे और तेरा अच्छा आभूषण ले

२७ लेंगे। और मैं तेरी लंपटता और मिस्र देश के व्यभिचार को मिटा डालूंगा यहां लों कि तू अपनी आंखें उन की ओर न उठावेगी और फिर मिस्र को स्मरण न करेगी॥

२८ क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देख जिन से तू घिन करती है और जिन से तेरा मन हटा हुआ है मैं तुझे उन

२९ के हाथ में सौंपूंगा। और वे घिन से तेरे संग व्यवहार करेंगे और तेरा सारा परिश्रम ले जायेंगे और तुझे नंगी और उघारी छोड़ेंगे और तेरे व्यभिचार का नंगापन तेरी लंपटता और तेरे व्यभिचार देखे जायेंगे॥

३० मैं इस कारण यह कार्य्य तुझ से करूंगा कि तू अन्यदेशियों की ओर व्यभिचार के लिये चली गई है और इस कारण कि तू उन की मूर्त्तिन से

३१ अशुद्ध हुई है। तू अपनी बहिन की चाल पर चली है इस लिये मैं उस का

३२ कटोरा तेरे हाथ में देऊंगा। प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि तू अपनी बहिन के बड़े और गहिरे कटोरे से पीयेगी तेरी हंसी और निन्दा किई जायेगी

३३ क्योंकि उस में बहुत समाता है। तू मतवालपन से और शोक से और आश्चर्य्य और उजाड़ के कटोरे से अपनी बहिन

३४ समरून के कटोरे से भर जायेगी। और तू उसे पीयेगी और चूस लेगी और उस का टुकड़ा टुकड़ा करेगी और अपने ही स्तन उखाड़ डालेगी क्योंकि प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं ही ने कहा है।

३५ इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है क्योंकि तू मुझे भूल गई है और मुझे अपने पीछे डाल दिया है इस लिये तू भी अपनी लंपटता और व्यभिचारों को भोग॥

३६ और परमेश्वर ने मुझ से यह भी कहा कि हे मनुष्य के पुत्र क्या तू अहूल: और अहूलिब: के लिये विवाद करेगा हां उन के घिनित कर्म्म उन पर प्रगट कर।

३७ क्योंकि उन्हों ने परगमन किया है और लोहू उन के हाथों में है और उन्हों ने अपनी मूर्त्तिन से परगमन किया है और जो बेटे वे मेरे लिये जनीं उन्हों ने नाश के लिये उन्हें आग में से चलाया है।

३८ उन्हों ने मुझ से यह भी किया है उन्हों ने उसी दिन मेरे पवित्र स्थान को अशुद्ध किया है और मेरे विश्रामों को

३९ अशुद्ध किया है। और जब उन्हों ने अपने बालकों को अपनी मूर्त्तिन के लिये घात किया तब वे उसी दिन मेरे पवित्र स्थान को अशुद्ध करने को आईं और देख उन्हों ने मेरे घर के मध्य में ऐसा

४० किया है। और इस्से अधिक जब तुम ने मनुष्यों के पास भेजा जो दूर से आये जिन के पास दूत भेजे गये और देखो वे आये जिन के लिये तू ने नहाया है और अपनी आंखों को रंगाया है और आभूषण

४१ से आप को संवारा है। और प्रतिष्ठित पलंग पर बैठी और उस के आगे एक मंच सिद्ध था जिस पर तू ने मेरा धूप

४२ और मेरा तेल धरा था। और चैन से होते हुए एक मण्डली का शब्द उस के संग था और मनुष्यों के संग लोगों की मण्डली और बन में के साबियाना पहुंचाये गये जिन के हाथों पर खड़ुवे और सिरों पर सुन्दर सुन्दर मुकुट थे॥

४३ तब मैं ने व्यभिचारकर्म्म की पुरनिया से कहा कि वे अब उस्से और

४४ वह उन से व्यभिचार करेगी। तथापि वे उस के पास ऐसे गये जैसा वेश्या के पास जाते हैं सो वे लंपट स्त्री अहूल: और अहूलिब: के पास गये।

४५ और धर्म्मी लोग व्यभिचारियों की रीति के समान और उन स्त्रियों की नाईं जो लोहू

कहाती हैं उन का बिचार करेंगे क्योंकि वे व्यभिचारिणी और लोहू उन के हाथ में है ॥

४६ क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मैं उन पर एक जथा लाऊंगा और निकाले जाने और लूट के लिये मैं उन्हें

४७ देऊंगा । और जथा उन्हें पत्थर से पथरावेगी और अपनी तलवार से उन्हें छील लेगी वे उन के बेटे बेटियों को घात करेंगे और उन के घर आग से

४८ भस्म करेंगी । इस रीति से मैं लंपटता को देश में से मिटवा डालूंगा जिस्तें सारी स्त्रियां चिताई जाके तुम्हारी

४९ लंपटता के समान न करें । और वे तुम्हारी लंपटता का पलटा तुम्हें देंगे और तुम अपनी मूर्त्तिन के पाप भोगोगे और जानोगे कि मैं प्रभु परमेश्वर हूं ॥

चौबीसवां पर्ब्ब ।

१ फिर नवें बरस के दसवें मास की दसवीं तिथि में यह कहते हुए परमे-

२ श्वर का बचन मेरे पास पहुंचा । हे मनुष्य के पुत्र दिन का नाम लिख अर्थात् इसी दिन का बाबुल के राजा ने इसी दिन यरूसलम के बिरुद्ध आप को लैस कर रक्खा है ॥

३ और दंगाइत घराने के लिये एक दृष्टान्त उच्चार और उन से कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि एक हंडा चढ़ा और उस में जल भी डाल ।

४ उस के टुकड़े उस में बटोर हां जांघ और कंधे का हर एक अच्छा टुकड़ा

५ और चुनी हुई हड्डियों से भर । और झुंड का चुना हुआ ले और उस के तले हड्डियां जला और उसे अच्छी रीति से उबाल और उन में की हड्डियां उसिन ॥

६ इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि लोहू बहाऊ नगर पर संताप उस हंडे को जिस का फेन उस में है और जिस का फेन उस में से नहीं गया टुकड़ा टुकड़ा करके उसे निकाल और उस पर चिट्ठी पड़ने न पावे । क्योंकि

७ उस का लोहू उस के मध्य में उस ने उसे एक पहाड़ की चोटी पर रक्खा उस ने उसे धूल से ढांपने को भूमि पर

८ न उंडेला । जिस्तें पलटा लेने को कोप पहुंचावे मैं ने उस के लोहू को पर्ब्बत की चोटी पर रक्खा है जिस्तें ढांपा न जाये ॥

९ इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि बधिक नगर पर संताप हां मैं आग के लिये बड़ा ढेर बनाऊंगा ।

१० ईंधन बटोर आग बार मांस को गला अच्छी रीति से सुगंधद्रव्य दे और हड्डियों

११ को जलने दे । तब छूछे उसे कोएलों पर धरो जिस्तें उस का पीतल गरमावे और जले और उस का मैल उसी में गल जाये और उस का फेन भस्म होवे ।

१२ उस ने झूठ से मुझे थकाया है और उस का बड़ा फेन उस में से निकल नहीं गया उस का फेन आग में पड़ेगा ।

१३ तेरी अशुद्धता में लंपटता है इस कारण कि मैं ने तुझे पवित्र किया है और तू पवित्र न हुआ तू फिर अपनी अशुद्धता से पवित्र न किया जायेगा जब लों मैं अपना कोप तुझ पर न उतरवाऊं ॥

१४ मुझ परमेश्वर ने यह कहा है और वही होगा मैं वही करूंगा और मैं न हटूंगा न छोड़ूंगा न पछताऊंगा प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि तेरी चालों और तेरी करनियों के समान वे तेरा बिचार करेंगे ॥

१५ और यह कहते हुए परमेश्वर का

१६ बचन मेरे पास पहुंचा । हे मनुष्य के पुत्र देख मैं एक चोट से तेरी आंखों की बांछा को ले लेता हूं तथापि तू शोक और बिलाप न करेगा और तेरे

१७ आंसू न बहेंगे। मत रो और मृतक के लिये बिलाप मत कर सिर पर अपनी पगड़ी बांध और पांव में जूता पहिन और ऊपर के होंठ मत ढांप और मनुष्यों की रोटी मत खा॥

१८ सो बिहान को मैं लोगों से बोला और सांझ को मेरी पत्नी मर गई और जैसी मैं ने आज्ञा पाई थी तैसा मैं ने १९ बिहान को किया। तब लोगों ने मुझ से कहा कि तू हमें न बताएगा जो तू २० करता है सो हमारे लिये क्या। तब मैं ने उन से उत्तर दिया कि परमेश्वर का बचन यह कहते हुए मेरे पास पहुंचा॥

२१ इसराएल के घराने से कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देखो मैं अपने पवित्रस्थान को और तुम्हारे बल की उत्तमता को तुम्हारी आंखों की बांछा को और तुम्हारे प्राण की मया को अशुद्ध करूंगा और तुम्हारे बेटे बेटियां जो बचे हैं सो तलवार से मारे २२ पड़ेंगे। और मेरे कार्य्य के समान तुम लोग करोगे तुम होंठ न ढांपोगे न २३ मनुष्य की रोटी खाओगे। और तुम्हारी पगड़ियां तुम्हारे सिरों पर और तुम्हारी जूतियां तुम्हारे पांव में होंगी और तुम शोक बिलाप न करोगे परन्तु अपनी बुराइयों में गले जाओगे और एक दूसरे २४ की ओर बिलाप करोगे। इसी रीति से हिजकिएल तुम्हारे लिये एक चिन्ह है उस के सारे कार्य्य के समान तुम लोग करोगे और जब यह आवे तब जानोगे कि मैं प्रभु परमेश्वर हूं॥

२५ और भी हे मनुष्य के पुत्र जब मैं उन के बल उन के बिभव की आनन्दता और उन की आंखों की बांछा और उन के मन के उभाड़ अर्थात् उन के बेटे २६ बेटियों को उन से ले लेऊंगा। उसी दिन जो बच निकलेगा सो तुझे सुनाने को आवेगा। २७ उस दिन तेरा मुंह उस के लिये जो बच निकला है खुल जायगा और तू बोलेगा और फिर गूंगा न रहेगा और तू उन के लिये एक चिन्ह होगा और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूं॥

पचीसवां पर्ब्ब।

१ और यह कहते हुए परमेश्वर का २ बचन मेरे पास पहुंचा। हे मनुष्य के पुत्र अम्मूनियों के बिरुद्ध अपना मुंह कर और उन के बिरुद्ध भविष्य कह। ३ और अम्मूनियों से कह कि प्रभु परमेश्वर का बचन सुनो प्रभु परमेश्वर यों कहता है इस कारण कि तू ने मेरे पवित्रस्थान के बिरुद्ध जब वह अशुद्ध हुआ और इसराएल के देश के बिरुद्ध जब वह उजाड़ हुआ और यहूदाह के घराने के बिरुद्ध जब वे बंधुआई में पहुंचाये गये अहा कहा। ४ इस लिये देखो मैं तुझे पूर्बी पुत्रों के अधिकार के लिये सौंपूंगा और वे तुझ में अपने भवन बनावेंगे और अपना निवास तेरे मध्य में करेंगे वे तेरा फल खायेंगे और वे तेरा दूध पीयेंगे। ५ और मैं रब्बः को एक ऊंटशाला और अम्मूनियों का भेड़शाला बनाऊंगा और तुम लोग जानोगे कि मैं परमेश्वर हूं॥

६ क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है इस लिये कि तू ने थपोड़ी पीटी है और पांव पीटा है और इसराएल के देश के बिरुद्ध अपने सारे मन के साथ ७ आनन्द किया है। इस लिये देख मैं तेरे बिरुद्ध अपना हाथ बढ़ाऊंगा और लूट के लिये तुझे अन्यदेशियों के हाथ सौंपूंगा और लोगों में से तुझे काट डालूंगा और देशों में से तुझे नाश करूंगा और तू जानेगा कि मैं परमेश्वर हूं॥

८ प्रभु परमेश्वर यों कहता है इस कारण कि मोआब और सईर कहते हैं कि देखो यहूदाह का घराना सारे अन्यदेशियों

९ की नाईं है । इस लिये देख मैं नगरों से देश के विभव के आगे आगे के नगरों से अर्थात् बैतुलयसीमात और बअलमऊन और करयतैम से मोआब की ओर को १० खोलूंगा । अम्मूनियों के साथ मैं उसे अधिकार के लिये पूर्बी लोगों को दूंगा जिस्तें जातिगणों में अम्मूनियों का स्मरण ११ न किया जाये । और मैं मोआब को दण्ड देऊंगा और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूं ॥

१२ प्रभु परमेश्वर यों कहता है इस कारण कि अदूम ने यहूदाह के घराने से बैर लेने के लिये बैर से व्यवहार किया और बड़ा अपराध किया है और १३ अपना बैर उन से लिया । इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मैं अपना हाथ अदूम पर बढ़ाऊंगा और उस में से मनुष्य को और पशु को नष्ट करूंगा और तैमन से उसे शून्य करूंगा और ददान १४ तलवार से मारे पड़ेंगे । और अपने इस-राएल लोगों के द्वारा मैं अपना बैर अदूम से लेऊंगा और प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि वे मेरे कोप और मेरी रिस के समान अदूम से करेंगे और वे मेरा बैर जानेंगे ॥

१५ प्रभु परमेश्वर यों कहता है इस लिये कि फिलिस्तियों ने बैर से व्यवहार किया है और पुराने बैर के लिये नाश करने १६ को घातक मन से बैर लिया है । इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं फिलिस्तियों पर अपना हाथ बढ़ाऊंगा और करीतीयों को काट डालूंगा और समुद्र के घाट के रहे हुओं को नाश १७ करूंगा । और मैं अपने कोप के दपट से उन से बड़ा पलटा लेऊंगा और जब मैं उन से पलटा लेऊंगा तो वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूं ॥

छब्बीसवां पर्ब्ब ।

१ और ग्यारहवें बरस में मास के पहिले दिन परमेश्वर का बचन यह कहते हुए मेरे पास पहुंचा । २ हे मनुष्य के पुत्र इस कारण कि सूर ने यरूसलम के बिरुद्ध कहा है कि अहा लोगों के फाटक वह टूट गई सो मेरी ओर फिरी है अब उस के उजाड़े जाने से मैं भर जाऊंगा । ३ इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देख हे सूर मैं तेरे बिरुद्ध हूं और जैसा समुद्र अपनी लहरों को उठाता है तैसा मैं तेरे बिरुद्ध बहुत से जातिगणों को उठवाऊंगा । ४ और वे सूर की भीत को नाश करेंगे और उस के गुम्मटों को ढा देंगे और मैं उस पर की धूल भी खुरच डालूंगा और उसे चटान की चोटी की नाईं करूंगा । ५ वह समुद्र के मध्य जाल बिछाने के लिये होगा क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मैं ने कहा है वह जातिगणों में एक लूट होगा । ६ और उस की बेटियां जो खेत में हैं तलवार से मारी जायेंगी और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूं ॥

७ क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं सूर पर उत्तर से राजाओं के राजा अर्थात् बाबुल के राजा नबूखुदनजर को घोड़ों और रथों और घोड़चढ़ों और जथा बहुत से लोगों के साथ लाऊंगा । ८ वह खेत में तेरी लड़कियों को तलवार से घात करेगा और तेरे बिरुद्ध गढ़ बनावेगा और टीला उठावेगा और तेरे बिरुद्ध फरी उठावेगा । ९ और संग्राम की सामग्री तेरी भीतों के बिरुद्ध लगावेगा और वह अपनी कुदारियों से तेरे गुम्मटों को ढा देगा । १० उस के घोड़ों की बहुताई के मारे उन की धूल तुझे ढांपेगी जब वह टूटे नगरों के प्रवेशों के समान तेरे फाटकों में पैठेगा तब घोड़चढ़ों के और पहियों के और रथों के शब्द के मारे तेरी भीतें हिल जायेंगी । ११ वह अपने घोड़ों की

टापों से तेरी सारी सड़कों को लताड़ेगा वह तलवार से तेरे लोगों को घात करेगा और तेरे दृढ़ सैन्यस्थान भूमि पर १२ गिर जायेंगे। और वे तेरा धन लूटेंगे और तेरे ब्यापार को नाश करेंगे और वे तेरी भीतें तोड़ डालेंगे और तेरे बांछित घरों को नष्ट करेंगे और तेरे पत्थर और लट्ठे और धूल जल के मध्य में डाल १३ देंगे। और मैं तेरे गान का शब्द बन्द करूंगा और तेरी बीणा का शब्द फिर १४ सुना न जायेगा। और मैं तुझे एक पहाड़ की चोटी की नाईं करूंगा तू जाल फैलाने के लिये होगा और तू फिर उठाया न जायेगा क्योंकि प्रभु परमेश्वर कहता है कि मुझ परमेश्वर ने कहा है॥

१५ प्रभु परमेश्वर सूर से यों कहता है कि जब घायल लोग रोवेंगे और तेरे मध्य में जूझ होगी तब क्या टापू तेरे १६ गिरने के शब्द से न थर्थरावेंगे। तब समुद्र के समस्त अध्यक्ष अपने अपने सिंहासन से उतरेंगे और अपने अपने बागे को त्यागेंगे और अपने बूटे काढ़े हुए बस्त्रों को उतारेंगे वे थर्थराहट को पहिनेंगे भूमि पर बैठ बैठ पल पल थर्थरावेंगे और तुझ से बिस्मित होंगे। १७ और वे तेरे लिये एक बिलाप करेंगे और तुझ से कहेंगे कि हे समुद्रों के निवासी तू क्योंकर नष्ट हुआ वह बिदित नगर जो समुद्र में दृढ़ था वह और उस के निवासी अपना भय अपने सारे ब्यव- १८ हारियों पर दिखाते हैं। अब तेरे गिरने के दिन टापू थर्थरावेंगे और समुद्र में के टापू तेरे जाने से ब्याकुल होंगे॥

१९ क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि जब मैं तुझे अबसाव नगरों की नाईं एक उजाड़ नगर बनाऊंगा और जब मैं गहिराव को तुझ पर लाऊंगा और बड़े २० बड़े पानी तुझे ढांपेंगे। जब मैं तुझे पुरातन समय के लोगों की नाईं गड़हे के उतरवैयों के समान उतारूंगा और तुझे पृथिवी के नीच स्थानों में बैठाऊंगा प्राचीन उजाड़ स्थानों में उन के संग जो गड़हे में उतरते हैं जिस्तें तू बसाया न जाये और मैं जीवतों के देश में बिभव रक्खूंगा। तब मैं तुझे भय २१ बनाऊंगा और तू न होगा प्रभु परमेश्वर कहता है कि यद्यपि तू ढूंढ़ा जाये तथापि तू कधी पाया न जायेगा॥

सत्ताईसवां पर्ब्ब।

१ फिर यह कहते हुए परमेश्वर का २ बचन मेरे पास पहुंचा। और तू हे मनुष्य के पुत्र अब सूर के लिये बिलाप कर। ३ और सूर से कह कि अरे तू जिस का ठिकाना समुद्र की पैठ में है और बहुत से टापुओं के लोगों के लिये ब्यापारी है प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि अरे सूर तू ने कहा है कि मैं सुन्दरता में ४ सिद्ध हूं। तेरे सिवाने समुद्रों के मध्य में हैं और तेरे बनवैये ने तेरी सुन्दरता ५ को पूरा किया है। उन्हों ने तेरी सारी पटियां सनीर के चीरपेड़ से बनाई हैं तेरे गुनरखे बनाने को उन्हों ने लुबनान ६ से देवदारुपेड़ लिया है। उन्हों ने तेरे डांडों को बसन के बलूतपेड़ों से बनाया है और कित्ती के टापुओं से असूर की जथाओं ने हाथीदांत लाके तेरे बैठकों ७ को बनाया है। तू ने अपने पाल के लिये मिस्र से बूटा काढ़ा हुआ झीना बस्त्र फैलाया है और इलीसः के टापुओं की बैंजनी और लाल बस्त्र ने तुझे ढांपा है॥

८ सैदा और अरवाद के निवासी तेरे डांडी थे और हे सूर तेरे बुद्धिमान जो ९ तुझ में थे तेरे मांझी थे। जबल के प्राचीन और वहां के बुद्धिमान तेरे गहनकार थे तेरे ब्यापार के लिये समुद्र की सारी जहाजें डांडी सहित थीं॥

१० फारसी और लूदी और फूती तेरी सेना में तेरे योद्धा थे उन्हों ने ढाल और टोप तुझ में लटकाया उन्हों ने तेरी
११ सुन्दरता प्रगट किई। अरवाद के लोग तेरी भीतों पर तेरी सेना के संग चारों ओर थे और बीर तेरे गुम्मटों पर थे वे चारों ओर तेरी भीतों पर अपनी ढाल लटकाते थे और उन्हों ने तेरी सुन्दरता को पूरा किया॥
१२ समस्त रीति के धन की बहुताई के कारण तरसीस चांदी और लोहे और जस्ते से और सीसे से तेरे व्यापारी थे और वे तेरी हाटों में व्यापार करते थे।
१३ यावन और तूबल और मसक तेरे व्यापारी थे वे मनुष्यों का और पीतल के पात्र का तेरी हाट में व्यापार करते
१४ थे। तजरम: के घराने तेरी हाटों में घोड़ों का और घोड़चढ़ों का और खच्चरों
१५ का व्यापार करते थे। ददान के लोग तेरे व्यापारी थे बहुत से टापू तेरे हाथ के व्यापार थे वे तेरी भेंट के लिये हाथीदांत के सींग और आबनूस लाते
१६ थे। तेरे बनाये हुए कार्य्य की अधिकाई के मारे अराम तेरा व्यापारी था वह तेरी हाट में पन्ना और बैंजनी और बूटा काढ़ा हुआ झीना बस्त्र और मूंगा और
१७ नीलम बेचते कीनते थे। यहूदाह और इसराएल के देश तेरे व्यापारी थे वे मिनियत का गोहूं और पकवान और मधु और तेल और धूना का तेरी हाट में
१८ व्यापार करते थे। सारे धन की बहुताई के लिये तेरी बनाई हुई सामग्री की अधिकाई में हलबून के दाखरस और श्वेत ऊन में दमिशक़ तेरे व्यापारी
१९ थे। बदान और यावन तेरी हाटों में सूत का व्यापार करते थे और तेरी हाटों में उजला लोहा और तेजपात और दार-
२० चीनी बेचते थे। रथों के लिये बहुमूल्य बस्त्र से ददान तेरा व्यापारी था।
२१ अरब और कीदार के सारे अध्यक्ष मेम्ने से और मेंढे और बकरी से तेरे हाथों के व्यापार थे इन बस्तुन के वे तेरे लिये
२२ व्यापारी थे। सिबा और रामः के व्यापारी तेरे व्यापारी थे वे सारे श्रेष्ठ द्रव्य और बहुमूल्य मणि और सोने से तेरी
२३ हाट में व्यापार करते थे। हरान और कन्नः और अदन और सिबा और असूर और किलमद के व्यापारी तेरे व्यापारी
२४ थे। ये लोग नील नीले परत में और बूटा काढ़े हुए में और देवदारु काष्ठ की मंजूषा में बहुमूल्य बस्त्र में डोरों से बंधे हुए तेरे व्यापार में वे व्यापारी थे।
२५ तेरी हाटों में तरसीस की जहाजें तेरा गान करती थीं तू भरा गया था और समुद्र के मध्य में बड़ा तेजवान हुआ है॥
२६ तेरे डांड़ी तुझे गंभीर जलों में लाये हैं समुद्रों के मध्य में पूर्बी पवन ने तुझे
२७ तोड़ा है। तेरे धन और तेरी हाट और तेरे व्यापार और तेरे नाविक और तेरे मांझी और तेरे गहनकार और तेरे व्यापारों के अधिकारी और तेरे योद्धा जो तुझ में हैं और तेरी सारी जथायें जो तेरे मध्य में हैं तेरे नाश के दिन में
२८ समुद्रों के बीच तुझ में गिरेंगे। तेरे मांझियों के चिल्लाने के शब्द से लहरें हलोरा
२९ मारेंगी। और सारे डांड़ी और नाविक और समुद्र के सारे मांझी अपनी अपनी जहाजों से उतरके भूमि पर खड़े होंगे।
३० और तेरे बिरुद्ध अपना शब्द सुनावेंगे और बिलख बिलख रोवेंगे और अपने सिरों पर धूल उड़ावेंगे और आप राख
३१ पर लोटेंगे। और वे तेरे लिये आप को सर्बथा मुंडा करेंगे और आप टाटबस्त्र ओढ़ेंगे और वे तेरे लिये मन की कड़वाहट
३२ से बिलख बिलख रोवेंगे। और वे अपने बिलाप में तेरे लिये एक बिलाप उठा उठा तुझ पर बिलाप करेंगे कि सूर

के समान कौन समुद्र के मध्य में नष्ट हुआ है। जब तेरी सामग्री समुद्र में से निकली तब तू ने बहुत लोगों को भर दिया तू ने अपने धन की और व्यापार की बहुताई से पृथिवी के राजाओं को धनी किया है। तू जिस समय में समुद्र से जलों की गंभीरता में तोड़ी जायेगी उस समय तेरा व्यापार और तेरे मध्य में की सारी जथा तुझ में गिरेंगी। टापुओं के सारे निवासी तुझ से आश्चर्य्यित होंगे और उन के राजा बहुत डर जायेंगे और उन का रूप व्याकुल होगा। लोगों में के व्यापारी तुझ पर फुफकारेंगे और तू भयानक होगा और फिर कधी न होगा॥

अट्ठाईसवां पर्ब्ब।

१ फिर यह कहते हुए परमेश्वर का २ बचन मेरे पास पहुंचा। हे मनुष्य के पुत्र सूर के प्रधान से यों कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि अपने मन के उभाड़े जाने से तू ने कहा है कि मैं सर्वशक्तिमान हूं मैं ही समुद्रों के मध्य में देव के आसन पर बैठा हूं यद्यपि तू अपने मन को ईश्वर के मन के समान करे तथापि तू मनुष्य है और सर्व- ३ शक्तिमान नहीं। देख तू दानिएल से अधिक बुद्धिमान है और वे तुझ से ४ कोई भेद छिपा नहीं सक्ते। तू ने अपनी बुद्धि और समझ से धन प्राप्त किया है और सोना चांदी अपने भंडारों ५ में प्राप्त किया है। तू ने अपनी बड़ी बुद्धि से और अपने व्यापार से अपना धन बढ़ाया है और तेरे धन के कारण तेरा मन उभाड़ा गया है॥

६ इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है इस कारण कि तू ने अपने मन को ईश्वर के मन के समान किया है। ७ इस लिये देख मैं उपरियों को अर्थात् जातिगणों के भयंकरों को तुझ पर लाऊंगा और वे तेरी बुद्धि की सुन्दरता के बिरुद्ध अपनी तलवार खींचेंगे और तेरी चमक अशुद्ध करेंगे। ८ वे तुझे गड़हे में उतारेंगे और तू उन की मृत्यु से मरेगा जो समुद्र के मध्य में जूझे जाते हैं। ९ क्या तू अपने घातक के आगे कहेगा कि मैं परमेश्वर हूं परन्तु तू अपने घातक के हाथ में मनुष्य होगा और सर्वशक्तिमान नहीं। १० तू उपरियों के हाथ से अखतनों की मृत्यु मरेगा क्योंकि प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं ने कहा है॥

११ फिर यह कहते हुए परमेश्वर का बचन मेरे पास पहुंचा। १२ कि हे मनुष्य के पुत्र तू सूर के राजा के बिषय में एक बिलाप उठाके उस्से कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि तू सब बस्तु की सिद्धता है बुद्धि की भरपूरी और सुन्दरता का अन्त। १३ ईश्वर के अदन की बारी में तू गया है हर एक मणि अर्थात् पद्मराग और फीरोज़ और हीरा और बैदूर्य्य और चंद्रकान्त और नीलमणि और मरकत और पन्ना और गोमेद और सोना तेरा ओढ़ना था और तू जिस दिन सृजा गया था उसी दिन तेरे तबले और बांसुरी के कार्य्यकारी तुझ में बनाये गये। १४ तू अभिषिक्त ढंपवैया करूब है और मैं ने तुझे यों किया है तू ईश्वर के पवित्र पर्बत के ऊपर था तू आग के पत्थरों के मध्य भ्रमता फिरता था। १५ अपनी उत्पत्ति के दिन से जब लों तुझ में बुराई न पाई गई तू अपनी चालों में सिद्ध था॥

१६ तेरे व्यापार की बहुताई से उन्हों ने तेरे मध्य को अंधेर से भरा है और तू ने पाप किया है इस लिये मैं तुझे ईश्वर के पर्बत में से अशुद्ध की नाईं त्यागूंगा और अरे ढंपवैये करूब मैं तुझे आग के

पत्थरों के मध्य में से नष्ट करूंगा । १७ तेरी सुन्दरता के कारण तेरा मन उभाड़ा गया है तू ने अपने तेज के लिये अपनी बुद्धि को बिगाड़ा है मैं तुझे भूमि पर फेंकूंगा मैं राजाओं के आगे तुझे धरूंगा १८ जिस्तें वे तुझे देखें । तू ने अपनी बुराई की अधिकाई से और अपने ब्यापार की बुराई से अपने पवित्रस्थानों को अशुद्ध किया है इस लिये मैं तेरे मध्य में से एक आग निकालूंगा जो तुझे भस्म करेगी और तेरे सारे देखवैयों की दृष्टि में मैं तुझे भूमि पर राख १९ करूंगा । लोगों में तेरे सारे जानकार तुझ से आश्चर्य्यित होंगे तू भय होगा और फिर कभी न होगा ॥

२० यह कहते हुए फिर परमेश्वर का २१ बचन मेरे पास पहुंचा । कि हे मनुष्य के पुत्र अपना रुख सैदा के बिरुद्ध कर २२ और उस के बिरुद्ध भविष्य कह । और बोल कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि अरे सैदा देख मैं तेरे बिरुद्ध हूं और मैं तेरे मध्य में महिमा पाऊंगा और जब मैं उस पर दण्ड देके उस में पवित्र माना जाऊंगा तब वे जानेंगे कि मैं २३ परमेश्वर हूं । और मैं उस में मरी और उस की सड़कों में लोहू भेजूंगा और उस के मध्य में घायल लोग चारों ओर तलवार से बिचारे जायेंगे और वे जानेंगे २४ कि मैं परमेश्वर हूं । और इसराएल के घराने के लिये चुभवैया कांटा न रहेगा और उस के निन्दकों में उस की चारों ओर उन के मध्य में कोई दुःखदाई कांटा न रहेगा और वे जानेंगे कि मैं प्रभु परमेश्वर हूं ॥

२५ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि जब मैं इसराएल के घराने को लोगों में से जहां वे बिथरे हैं बटोरूंगा और अन्यदेशियों की दृष्टि में पवित्र माना जाऊंगा तब वे अपने देश में रहेंगे जो मैं ने अपने दास यअकूब को दिया है । २६ और वे उस में चैन से रहेंगे और घर उठावेंगे और दाख की बारी लगावेंगे जब मैं उन की चारों ओर के निन्दकों पर न्याय दण्ड देऊंगा तब वे भरोसे से रहेंगे और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर उन का ईश्वर हूं ॥

उंतीसवां पर्ब्ब ।

१ दसवें बरस के दसवें मास की बारहवीं तिथि में यह कहते हुए परमेश्वर का बचन मेरे पास पहुंचा । २ हे मनुष्य के पुत्र मिस्र के राजा फिरऊन के बिरुद्ध अपना मुंह कर और उस के बिरुद्ध और सारे मिस्र के बिरुद्ध भविष्य कह ॥

३ बोल और कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देख मिस्र के राजा फिरऊन मैं तेरे बिरुद्ध हूं तू महा अजगर जो अपनी नदियों के मध्य में रहता है जिस ने कहा है कि मेरी नदी मेरी है और मैं ने उसे अपने ही लिये बनाया ४ है । परन्तु मैं तेरे गलफरे में कांटिया लगाऊंगा और तेरी नदियों की मछलियों को तेरे चोयों में चिपकाऊंगा और तेरी नदी के मध्य में से तुझे निकालूंगा और तेरी नदी की सारी मछलियां तेरे चोयों ५ में चिपकेंगी । और अरण्य में मैं तुझे और तेरी नदी की सारी मछलियों को छोड़ूंगा और तू खेतों पर गिरेगा और एकट्ठा न किया जायेगा न बटोरा जायेगा मैं ने तुझे बनपशु को और आकाश के पंछियों के आहार के लिये दिया ६ है । और मिस्र के सारे निवासी जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूं क्योंकि वे इसराएल के घराने के लिये नरकट के एक दण्ड ७ हुए हैं । जब उन्हों ने तुझे हाथ से पकड़ा तब तू ने तोड़के उन के कांधों को फाड़ा और जब वे तुझ पर ओठंगे तब भी तू ने तोड़के सारी कटि को

८ रोका। इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं तुझ पर तलवार लाऊंगा और तुझ में से मनुष्यों को और
९ पशुन को नष्ट करूंगा। और मिस्र देश उजाड़ और शून्य हो जायेगा और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूं, क्योंकि उस ने कहा कि नदी मेरी है और मैं ने उसे बनाया है॥
१० इस लिये देख मैं तेरे विरुद्ध और तेरी नदियों के विरुद्ध और मैं मिस्र देश को सयेनी के गुम्मट से कूश के सिवाने लों उजाड़ों का उजाड़ करूंगा।
११ किसी मनुष्य और किसी पशु का पांव उस में से न जायेगा और चालीस बरस
१२ लों उस में कोई न बसेगा। और मैं मिस्र देश को उजाड़ देशों के मध्य में उजाड़ करूंगा और उस के नगर उजाड़ नगरों में और चालीस बरस लों उजाड़ रहेंगे और मैं मिस्रियों को जातिगणों में बिथराऊंगा और उन्हें सारे देशों में छिन्न भिन्न करूंगा॥
१३ क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि चालीस बरस के अन्त में मैं मिस्रियों को लोगों में से जहां जहां वे छिन्न
१४ भिन्न हुए एकट्ठे करूंगा। और मैं मिस्र की बंधुआई को फेर लाऊंगा और उन्हें फतरूस देश में उन की जन्मभूमि में फेर लाऊंगा और वे वहां एक तुच्छ राज्य
१५ होंगे। वह राज्यों में सब से तुच्छ होगा और वह आप को फेर देशगणों पर न उभाड़ेगा और मैं उन्हें घटाऊंगा जिस्तें जातिगणों पर प्रभुता न करेंगे।
१६ जब वे उन के पीछे ताकेंगे तब वह फेर इसराएल के घराने का भरोसा न होगा जो उन को बुराइयों को चेत दिलाता है परन्तु वे जानेंगे कि मैं प्रभु परमेश्वर हूं॥
१७ और सत्ताईसवें बरस के पहिले मास की पहिली तिथि में ऐसा हुआ कि यह कहते हुए परमेश्वर का बचन मेरे पास पहुंचा॥
१८ हे मनुष्य के पुत्र बाबुल के राजा नबूखुदनजर ने सूर के विरुद्ध अपनी बड़ी सेना से बड़ी सेवा कराई हर एक सिर मुड़ा हुआ और हर एक कंधा छिल गया तथापि उस ने और उस की सेना ने सूर के लिये अपने विरुद्ध की सेवा
१९ के लिये कुछ प्रतिफल न पाया। इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं बाबुल के राजा नबूखुदनजर को मिस्र देश देऊंगा और वह उस की सारी मंडली को लेगा और उस की लूट को लूटेगा और उस के अहेर को अहेरेगा और वही उस की सेना का
२० प्रतिफल होगा। प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मैं उस के विरुद्ध उस की सेवा के लिये उस के प्रतिफल में उसे मिस्र देश देऊंगा। क्योंकि उन्हों ने मेरे लिये
२१ कार्य्य किया है। उस दिन मैं इसराएल के घराने के सींग को उभाडूंगा और उन के मध्य में तेरा मुंह खोल देऊंगा और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूं॥

तीसवां पर्ब्ब

१ यह कहते हुए फिर परमेश्वर का
२ बचन मेरे पास पहुंचा। हे मनुष्य के पुत्र भविष्य कहके प्रचार कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि तुम चिल्ला चिल्ला
३ कहो कि उस दिन पर संताप। क्योंकि वह दिन अर्थात् परमेश्वर का दिन एक घटा का दिन पास है वह अन्यदेशियों का समय होगा। और तलवार
४ मिस्र पर आवेगी और जब मिस्र में जूझे हुए गिरेंगे और वे उस की मंडली को ले जायेंगे और उस की नेवें तोड़ी जायेंगी
५ तब कूश पर बड़ी पीड़ा होगी। और कूश और फूत और लूद और सारे मिले जुले लोग और कूब और मिले हुए देश के सन्तान उस के साथ तलवार से गिरेंगे॥
६ परमेश्वर यों कहता है कि जो मिस्र

को संभालते हैं सो भी गिरेंगे और उस के पराक्रम का अहंकार उतर आवेगा प्रभु परमेश्वर कहता है कि वे मिज-दाल से सयेनी लों तलवार से गिरेंगे। ७ और वे उजाड़ देशों के मध्य में उजाड़ होंगे और उस के नगर उजाड़ नगरों के ८ मध्य में होंगे। और जब मैं मिस्र में आग लगाऊंगा और उस के सारे उपकारी चूर होंगे तब वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूं॥

९ उस दिन दूत मुझ में से जहाजों में निश्चिन्त कूशियों को डराने को निकलेंगे और उन पर मिस्र के दिन के समान बड़ी पीड़ा पड़ेगी क्योंकि देख वह आता है॥

१० प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मैं बाबुल के राजा नबूखुदनज़र के हाथ से मिस्र की सारी मंडली को भी मिटा ११ डालूंगा। वह और जातिगणों के भयानक लोग उस के साथ देश नष्ट करने को भेजे जायेंगे और वे मिस्र के विरुद्ध अपनी तलवार खींचेंगे और देश को १२ जूझे हुओं से भर देंगे। और मैं नदियों को सुखाऊंगा और दुष्टों के हाथ में देश बेचूंगा और मैं परदेशियों के हाथ से देश को और उस की भरपूरी को उजाड़ूंगा मैं ही परमेश्वर ने कहा है॥

१३ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मैं मूर्त्तिन को भी नष्ट करूंगा और नफ में से मूर्त्तिन को मिटा डालूंगा और फिर मिस्र देश का अध्यक्ष न होगा और मैं १४ मिस्र देश को डराऊंगा। और मैं फतरूस को उजाड़ूंगा और जुअन में आग लगाऊंगा और नो को दण्ड देऊंगा। १५ और मिस्र के गढ़ सीन पर अपना कोप उंडेलूंगा और नो की मंडली को काट १६ डालूंगा। और मैं मिस्र में आग लगाऊंगा और सीन को बड़ी पीड़ा होगी और नो टुकड़ा टुकड़ा किया जायेगा और नफ को प्रतिदिन दुःख होगा। अविन के और फिबसत के तरुण १७ तलवार से गिरेंगे और वे बंधुआई में जायेंगे। जब मैं वहां मिस्र के जूओं १८ को तोड़ूंगा और उस में उस के बल का अन्त करूंगा तब तिहफनिहीस में भी दिन अंधियारा होगा, वह जो है एक मेघ उस पर छा जायेगा और उस की बेटियां बंधुआई में जायेंगी। इस १९ रीति से मैं मिस्र को दण्ड देऊंगा और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूं॥

और ग्यारहवें बरस के पहिले मास की २० सातवीं तिथि में ऐसा हुआ कि परमेश्वर का बचन यह कहते हुए मेरे पास पहुंचा॥

हे मनुष्य के पुत्र मैं ने मिस्र के राजा २१ फिरऊन की भुजा तोड़ी है और देख तलवार धरने के लिये उसे चंगी करके दृढ़ करने को उस पर पट्टी लपेटके बांधी न जायेगी। इस लिये प्रभु परमे- २२ श्वर यों कहता है कि देख मैं मिस्र के राजा फिरऊन के विरुद्ध हूं और उस की बलवती और टूटी हुई भुजा को तोड़ूंगा और उस के हाथ से तलवार गिरा देऊंगा। और देशगणों में मैं २३ मिसियों को बिथराऊंगा और देशों में उन्हें छिन्न भिन्न करूंगा॥

और मैं बाबुल के राजा की भुजा २४ को बलवती करूंगा और अपनी तलवार उस के हाथ में देऊंगा परन्तु फिरऊन की भुजा तोड़ूंगा और वह उस के आगे माह घाव के कहरने से कहरेगा। परन्तु मैं बाबुल के राजा की भुजा को २५ बलवती करूंगा और फिरऊन की भुजा गिर पड़ेगी और जब मैं अपनी तलवार बाबुल के राजा के हाथ में देऊंगा और वह मिस्र देश पर उसे बढ़ावेगा तब वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूं। और मैं जातिगणों में मिसियों को २६ बिथराऊंगा और उन्हें देशों में छिन्न

भिन्न करूंगा और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूं॥

एकतीसवां पर्ब्ब

१ और ग्यारहवें बरस के तीसरे मास की पहिली तिथि में ऐसा हुआ कि परमेश्वर का बचन यह कहते हुए मेरे २ पास पहुंचा। हे मनुष्य के पुत्र मिस्र के राजा फ़िरऊन को और उस की मंडली को यह कह कि तू अपने महत्त्व में ३ किस के समान है। देख असूरी सुन्दर डालें रखते हुए छायावान और लुबनान का एक बड़ा देवदारुपेड़ था और उस ४ की फुनगी घनी डालों पर थी। पानियों ने उसे पाला और गहिराव ने अपनी नदियों से उस के झाड़ों की चारों ओर फिरते हुए उसे पोसा और उस की नालियां खेत के सारे पेड़ लों पहुंच ५ गईं। इस लिये उस की ऊंचाई खेत के सारे पेड़ों से बढ़ गई और उस की डालियां फूट फूटके पानियों की बहुताई ६ से लंबी लंबी हुईं। उस की डालों पर आकाश के सारे पंछियों ने बसेरा किया और उस की डालियों के तले चौगान के सारे बनपशु बच्चे जने और उस की छाया तले बड़े बड़े जातिगण बसे। ७ यहां लों कि उस की डालियों की लम्बाई में उस का महत्त्व सुन्दर था क्योंकि उस की जड़ बड़े बड़े पानियों ८ के लग थी। ईश्वर की बारी के देवदारुपेड़ उसे ढांप न सक्ते थे और सरोबृक्ष उस की डालों की नाईं न थे और अरमून का पेड़ उस की डालियों की नाईं न था उस की सुन्दरता में ईश्वर की बारी का कोई पेड़ उस के ९ तुल्य न था। मैं ने उस की डाली की बहुताई से उसे सुन्दर किया यहां लों कि ईश्वर की बारी अदन के सारे पेड़ों ने उस्से डाह किया॥

१० इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है इस कारण कि तू ने ऊंचाई में आप को उभाड़ा है और उस ने अपनी फुनगी घनी डालों में ऊपर किई और उस की ऊंचाई में उस का मन उभड़ा है। ११ इस लिये मैं ने उसे अन्यदेशी के एक पराक्रमी के हाथ में सौंपा है वह निश्चय उस्से व्यवहार करेगा मैं ने उस की दुष्टता के लिये उसे दूर किया है। १२ और जातिगणों के भयंकर परदेशियों ने उसे काटके छोड़ दिया है पर्बतों पर और सारी तराई में उस की डालियां गिरी हैं और उस की डालें देश की सारी नदियों के लग टूटी हैं और पृथिवी के सारे लोग उस की छाया तले से निकल गये और उसे छोड़ दिया॥

१३ उस के उजाड़ पर आकाश के सारे पंछी बसेंगे और सारे बनपशु उस की १४ डालियों पर रहेंगे। जिस्तें जल के लग के सारे पेड़ों में कोई अपनी ऊंचाई के लिये अहंकार न करे और अपनी फुनगी मोटी डालों में न उगावे और उन के सारे पेड़ अपनी ऊंचाई पर न ठहरें जो पानी सोखते हैं क्योंकि वे सब के सब पृथिवी के नीचे के स्थानों के लिये उन के संग जो गड़हे में उतरते हैं मनुष्यों के सन्तान के मध्य में मृत्यु के लिये सौंपे गये॥

१५ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि जिस दिन वह पाताल में उतरा मैं ने बिलाप करवाया मैं ने उस के लिये गहिराव को ढांपा और उस के बाढ़ों को रोका और बड़े बड़े पानी थम गये और मैं ने उस के लिये लुबनान को अंधियारा करवाया और उस के लिये चौगान के सारे पेड़ १६ मूर्छित हुए। जब मैं ने उसे उन के संग जो गड़हे में उतर पड़ते हैं पाताल में उतार दिया तब उस के गिरने के शब्द से मैं ने जातिगणों को कंपवाया और

अदन के सारे पेड़ लुबनान के अच्छे और चुने हुए सब जो पानी सोखते हैं पृथिवी के नीचे स्थानों में शान्ति पावेंगे। १७ वे भी उस के संग तलवार से जूझे हुए कने पाताल में उतर गये और उस की बांह अन्यदेशियों के मध्य में उस की छाया तले रहती थी ॥

१८ माहात्म्य में और प्रतिष्ठा में अदन के पेड़ों में से तू किस के तुल्य है तथापि अदन के पेड़ों के संग तू पृथिवी के नीचे स्थानों में उतारा जायेगा तू अखतनों के मध्य में तलवार से जूझे हुओं के संग पड़ा रहेगा प्रभु परमेश्वर कहता है कि फिरऊन और उस की सारी मंडली यह है ॥

बत्तीसवां पर्ब्ब ।

१ और बारहवें बरस के बारहवें मास की पहिली तिथि में परमेश्वर का बचन यह कहते हुए मेरे पास पहुंचा २ हे मनुष्य के पुत्र मिस्र के राजा फिरऊन के लिये एक बिलाप निकाल और उस्से कह कि तू जातिगणों के एक तरुण सिंह की नाईं और समुद्र में के एक कुंभीर की नाईं तू अपनी नदियों से निकला है और अपने पांव से पानी हंडोला है और उन की नदियों को गदला किया है ॥

३ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि इसी लिये मैं बहुत से लोगों की जथा के संग अपना जाल तुझ पर फैलाऊंगा और वे मेरे जाल में तुझे उठा लेंगे । ४ तब मैं तुझे भूमि पर छोड़ूंगा मैं तुझे चौगान में फेंक देऊंगा और तुझ पर सारे आकाश के पंछियों को बैठालूंगा और मैं पृथिवी के सारे पशुन को तुझ ५ से तृप्त करूंगा । और मैं तेरे मांस को पर्ब्बतों पर डालूंगा और तेरी ऊंचाई से ६ तराइयों को भर देऊंगा । और जिस देश में तू पैरता है उसे पहाड़ लों तेरे लोहू से सींचूंगा और नदियां तुझ से भर जायेंगी ॥

७ और जब मैं तुझे बुझाऊंगा तब मैं स्वर्ग को ढांपूंगा और उस के तारों को अंधियारा करूंगा मैं मेघ से सूर्य्य को ढांपूंगा और चन्द्रमा अपनी ज्योति न देगा । ८ ईश्वर परमेश्वर कहता है कि मैं स्वर्ग की ज्योतिन की ज्योति को तुझ पर अंधियारी करूंगा और तेरे देश को अंधियारा करूंगा । ९ और जब मैं तेरे बिनाश को जातिगणों में उन देशों में लाऊंगा जिन्हें तू ने नहीं जाना है तब मैं बहुत से लोगों को खिजाऊंगा । १० हां मैं तुझ से बहुत से लोगों को अचंभित करूंगा और जब मैं अपनी तलवार उन के आगे भांजूंगा तब उन के राजा तेरे लिये बहुत डर जायेंगे और वे तेरे गिराने के दिन हर एक जन अपने अपने प्राण के लिये पल पल थरथरायेगा ॥

११ क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि बाबुल के राजा की तलवार तुझ पर आवेगी । १२ बीरों की तलवारों से मैं तेरी मंडली अर्थात् देशगणों के सारे भयंकरों को गिरवाऊंगा और वे मिस्र का ऐश्वर्य्य लूटेंगे और उस की सारी मंडली नाश किई जायेगी । १३ और मैं बड़े बड़े पानियों के लग से उन के सारे पशुन को नष्ट करूंगा और मनुष्य का पांव और पशुन का खुर उन्हें फिर न मतावेगा । १४ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि तब मैं उन के पानियों को गहिरा करूंगा और उन की नदियों को तेल की नाईं बहाऊंगा । १५ जब मैं मिस्र देश को उजाड़ूंगा तब देश अपनी भरपूरी से उजड़ जायेगा और जब मैं उस के सारे निवासियों को मारूंगा तब वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूं ॥

१६ इस बिलाप से वे उस पर बिलाप करेंगे अन्यदेशियों की लड़कियां उस के बिषय में बिलाप करेंगी प्रभु परमेश्वर

कहता है कि वे उस के लिये विलाप करेंगी अर्थात् मिस्र और उस की मंडली के लिये ॥

१७ और बारहवें बरस में मास की पन्दरहवीं तिथि में भी यों हुआ कि परमेश्वर का बचन यह कहते हुए मेरे पास पहुंचा ॥

१८ हे मनुष्य के पुत्र मिस्र की मंडली के लिये बिलाप कर और उसे अर्थात् उसे और बिदित जातिगणों की लड़कियों को पृथिवी के नीचे के स्थानों में जो १९ गड़हे में उतरते हैं उतार दे । तू किस्से अधिक सुन्दर है उतर जा और अखतनों २० के साथ पड़ा रह । वे तलवार से जूझे हुओं के मध्य गिरेंगे वह तलवार को सौंपा गया है उसे और उस की सारी २१ मंडलियों को खींच ले । उस के सहायकों के साथ बीरों में का बलवंत पाताल के मध्य में से उसे कहेगा वे उतर गये वे तलवार से जूझे हुए अखतने पड़े हैं ॥

२२ असूर और उस की सारी जथा वहां है उस की समाधि उस के आसपास सब के सब तलवार से जूझे पड़े हैं । २३ जिन की समाधियां गड़हे के अलंगों में हैं और उस की जथा उस की समाधि के चारों ओर है वे सब के सब तलवार से मारे हुए जूझे हैं जिन्हों ने जीवतों के देश को डराया ॥

२४ वहां ऐलाम और उस की सारी मंडली जो उस की समाधिन की चारों ओर सब के सब तलवार से मारे हुए जूझ गये जो पृथिवी के नीचे के स्थानों में अखतने उतर गये हैं जिन्हों ने जीवतों के देश को डराया तद भी उन्हों ने गड़हे में के उतरवैयों के संग अपनी २५ लाज भोगी है । उन्हों ने जूझे हुओं के मध्य में उस की सारी मंडली के साथ उस के लिये एक बिछौना धरा है उस की समाधियां उस की चारों ओर हैं वे सब अखतनः तलवार से यद्यपि उन का भय जीवतों के देश में पड़ा तथापि उन्हों ने उन के साथ जो गड़हे में पड़ते हैं अपनी लाज भोगी वह जूझे हुए के मध्य में रक्खा गया है ॥

२६ वहां मसक और तूबल और उस की सारी मंडली उस की समाधियां उस की चारों ओर वे सब के सब अखतनः तलवार से जूझे हुए यद्यपि उन्हों ने जीवतों के देश को डराया है । और वे २७ मारे हुए अखतनः बीरों के साथ जो अपने संग्राम के हथियारों से जो पाताल में उतर पड़े हैं पड़े न रहेंगे और उन्हों ने अपनी अपनी तलवार अपने अपने सिर तले रक्खी है परन्तु उन की बुराई उन की हड्डियों पर लागी यद्यपि वे जीवतों के देश में बीरों के भय थे । २८ और तू अखतनों के मध्य में तोड़ा जायेगा और तलवार से जूझे हुओं के साथ पड़ा रहेगा ॥

२९ वहां अदूम और उस के राजा और उस के सारे अध्यक्ष जो अपने पराक्रम समेत तलवार से जूझे हुओं के लग रक्खे गये हैं वे अखतनों के और गड़हों के उतरवैयों के साथ पड़े रहेंगे ॥

३० वहां उत्तर के सारे अध्यक्ष और सारे सैदानी हैं जो जूझे हुओं के साथ उतर गये हैं अपने भय के साथ वे अपने पराक्रम से लज्जित हैं वे तलवार से जूझे हुए अखतनों के साथ पड़े हैं और वे गड़हे में के उतरवैयों के साथ अपनी लाज सहते हैं ॥

३१ प्रभु परमेश्वर कहता है कि फिरऊन उन्हें देखेगा और अपनी सारी मंडली पर शान्ति पावेगा अर्थात् फिरऊन और तलवार से जूझी हुई उस की सारी सेना । ३२ क्योंकि प्रभु परमेश्वर कहता है

कि जीवतों के देश को मैं ने डराया है और वह अर्थात् फिरऊन और उस की सारी मंडली तलवार से जूझे हुओं के साथ अख़तनों के मध्य में डाले जायेंगे ॥

तेंतीसवां पर्ब्ब ।

१ फिर यह कहते हुए परमेश्वर का २ बचन मेरे पास पहुंचा । हे मनुष्य के पुत्र अपने लोगों के संतानों से कह और उन से बोल कि जब मैं किसी देश पर तलवार लाऊं तो यदि उस देश के लोग अपने सिवानों के किसी मनुष्य को लेके ३ अपना रखवाल ठहरावें । तलवार को देश पर आते देखके यदि वह तुरही ४ फूंकके लोगों को चितावे । तब जो सुनते हुए तुरही का शब्द सुने और न चेते जो तलवार आवे और उसे ले जाये तब उस का लोहू उसी के सिर ५ पर होगा । उस ने तुरही का शब्द सुनके चेत न किया उसी का लोहू उसी पर होगा परन्तु जो चेतेगा सो अपना प्राण बचावेगा ॥

६ परन्तु यदि रखवाल उस तलवार को आते देखे और तुरही न फूंके और लोग चिताये न जायें तब यदि तलवार आवे और उन में से किसी को ले जाये तो वह अपनी बुराई में उठाया गया परन्तु उस के लोहू का लेखा मैं रखवाल के हाथ से लेऊंगा ॥

७ और हे मनुष्य के पुत्र मैं ने तुझ को इसराएल के घराने के कारण रखवाल ठहराया है इस लिये बचन मेरे मुंह से ८ सुन और मेरी ओर से उन्हें चिता । जब मैं दुष्ट से कहूं कि अरे दुष्ट तू अवश्य मरेगा यदि तू दुष्ट को उस की दुष्ट चाल से उसे न चितावे तो वह अपने अधर्म्म में मरेगा परन्तु मैं तेरे हाथ से ९ उस के लोहू का लेखा लेऊंगा । तिस पर भी यदि तू दुष्ट को उस की चाल से फिरने को चितावे जो वह अपनी चाल से न फिरे तो वह अपने अधर्म्म में मरेगा परन्तु तू ने अपने प्राण को बचाया है ॥

१० इस लिये हे मनुष्य के पुत्र इसराएल के घराने से कह कि तुम लोग यह कहके बोलते हो कि यदि हमारे अपराध और हमारे पाप हम पर होवें और हम उन में गले जायें फिर हम क्योंकर जीयें ॥

११ उन से कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि अपने जीवन सौंह दुष्टों की मृत्यु से मैं प्रसन्न नहीं परन्तु जिस्तें दुष्ट अपनी चाल से फिरे और जीये हे इसराएल के घराने फिरो अपने कुमार्गों से फिरो तुम लोग किस लिये मरोगे ॥

१२ इस लिये हे मनुष्य के पुत्र अपने लोगों के संतान से कह कि धर्म्मी का धर्म्म उस के अपराध के दिन में उसे न बचावेगा और दुष्ट की दुष्टता जो है जब वह अपनी दुष्टता से फिरे वह उस्से न गिरेगा और पाप करने के दिन में धर्म्मी अपने धर्म्म से न जीयेगा ॥

१३ जब मैं धर्म्मी से कहूं कि तू निश्चय जीयेगा यदि वह अपने ही धर्म्म पर भरोसा रक्खे और अधर्म्म करे तब उस का सारा धर्म्म स्मरण न किया जायेगा परन्तु वह अपने किये हुए अधर्म्म के लिये मरेगा ॥

१४ फिर जब मैं दुष्ट से कहूं कि तू निश्चय मरेगा यदि वह अपने पाप से १५ फिरे और न्याय और धर्म्म करे । यदि दुष्ट बंधक फेर देवे और बटमारी की वस्तु फेर देवे और अधर्म्म न करके जीवन की विधिन को पालन करे तब वह निश्चय जीयेगा और न मरेगा ।

१६ उस के किये हुए पाप उस के आगे दुहराये न जायेंगे उस ने धर्म्म और ठीक किया है वह निश्चय जीयेगा ॥

१७ तथापि तेरे लोगों के संतान कहते

हैं कि परमेश्वर का मार्ग सम नहीं परन्तु वे जो हैं उन की चाल सम नहीं। १८ जब धर्म्मी अपने धर्म्म से फिरके अधर्म्म १९ करे तब वह उसी से मरेगा। परन्तु यदि दुष्ट अपनी दुष्टता से फिरे और धर्म्म और ठीक करे तो वह उस्से जीयेगा॥

२० तथापि तुम लोग कहते हो कि परमेश्वर का मार्ग सम नहीं है इसराएल के घराने में तुम्में से हर एक का उस की चालों के समान बिचार करूंगा॥

२१ और हमारी बंधुआई के बारहवें बरस के दसवें मास की पांचवीं तिथि में यों हुआ कि यरूसलम से बचके एक जन ने मेरे पास आके कहा कि नगर मारा गया है॥

२२ और जो बच निकला था उस के आने से पहिले सांझ को परमेश्वर का हाथ मुझ पर पड़ा और जब ताईं वह बिहान को मेरे पास आया मेरे मुंह को खोला और मेरा मुंह खोला गया और २३ मैं फिर गूंगा न रहा। तब परमेश्वर का बचन यह कहते हुए मेरे पास २४ पहुंचा। हे मनुष्य के पुत्र इसराएल देश के उजाड़ों के निवासी कहते हैं कि अबिरहाम एक ही था और उस ने देश का अधिकार पाया परन्तु हम बहुत हैं और अधिकार के लिये देश हमें दिया गया है॥

२५ इस लिये उन से कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि तुम लोग लोहू समेत खाते हो और अपनी मूर्त्तिन की ओर आंखें उठाके लोहू बहाते हो और क्या तुम लोग देश के अधिकारी २६ होओगे। तुम अपनी अपनी तलवार से लैस होके घिनित कार्य्य करते हो और तुम्में से हर एक जन अपने परोसी की पत्नी को अशुद्ध करता है और क्या तुम लोग देश के अधिकारी होओगे॥

२७ तू उन से यों कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि अपने जीवन सोंह जो उजाड़ों में हैं सो तलवार से मारे पड़ेंगे और जो चौगान में हैं उन्हें भक्षने के लिये पशुन को देऊंगा और जो लोग गढ़ और खोह में होवें सो मरी से २८ मरेंगे। क्योंकि मैं देश को उजाड़ों का उजाड़ करूंगा और उस के बल का बिभव मिटाया जायेगा और इसराएल के पहाड़ उजाड़ होंगे कि कोई उस में २९ से न जायेगा। जब मैं उन के किये हुए सारे घिनितों के कारण उन के देश को अति उजाड़ करूंगा तब वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूं॥

३० और हे मनुष्य के पुत्र तेरे लोगों के सन्तान भीतों के लग और घरों के द्वारों पर अब भी तेरे बिरुद्ध कह रहे हैं और हर एक आपस में अपने अपने भाई को कहता है कि मैं बिन्ती करता हूं कि चलो परमेश्वर से निकले हुए बचन को ३१ सुनें। और लोगों के आने के समान वे तेरे पास आते हैं और मेरे लोगों की नाईं तेरे आगे बैठते हैं और तेरी बातें सुनते हैं परन्तु वे उन्हें न मानेंगे क्योंकि वे अपने मुंह से प्रेम दिखाते हैं परन्तु उन के मन उन के लोभ के पीछे चलते ३२ हैं। और देख तू उन के लिये अति प्रिय गान के समान है जिस का प्रेमी का गान है और अच्छी रीति से बजा सक्ता है क्योंकि वे तेरे बचन सुनते हैं ३३ परन्तु उन्हें नहीं मानते। और जब यह आवेगा देखो आवेगा तब वे जानेंगे कि एक भविष्यद्वक्ता उन में हुआ है॥

चौंतीसवां पर्ब्ब।

१ तब परमेश्वर का बचन यह कहते २ हुए मेरे पास पहुंचा। हे मनुष्य के पुत्र तू इसराएल के गड़रियों के बिरुद्ध भविष्य कह और उन के आगे भविष्य

प्रकार प्रभु परमेश्वर गड़रियों को यों कहता है कि इसराएल के गड़रियों पर संताप जो आप खाते हैं क्या गड़रियों को झुंड चराना न चाहिये ॥

३ तुम लोग चिकनाई खाते हो और रोम ओढ़ते हो और पले हुए को घात करते हो परन्तु झुंड को नहीं चराते।

४ तुम लोगों ने दुर्बलों को बल नहीं दिया है और न रोगी को चंगा किया न टूटे पर पट्टी बांधी न खेदे हुए को फेर लाये न खोये हुए को ढूंढ़ा परन्तु बरबस्ती से और क्रूरता से उन पर

५ प्रभुता किई। और बिन गड़रिये वे छिन्न भिन्न हुए और छिन्न भिन्न होके वे

६ सारे बनपशुन के आहार हुए। मेरी भेड़ें सारे पर्ब्बतों पर और हर एक ऊंची पहाड़ी पर भटक गईं हां मेरे झुंड सारी पृथिवी पर छिन्न भिन्न हुए और किसी ने उन्हें न खोजा और न ढूंढ़ा ॥

७ इस लिये हे गड़रियो परमेश्वर का

८ बचन सुनो। प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि अपने जीवन सोंह गड़रिया न होने के कारण मेरे झुंड अहेर हुए और झुंड हर एक बनपशु के लिये आहार हुआ और मेरे गड़रियों ने मेरे झुंड की खोज न किई परन्तु गड़रियों ने आप खाया पर मेरे झुंड को न चराया।

९ इस लिये हे गड़रियो परमेश्वर का

१० बचन सुनो। प्रभु परमेश्वर यों कहता है देख मैं गड़रियों के बिरुद्ध हूं और उन के हाथों से अपने झुंड का लेखा लेऊंगा और अपने झुंड उन से न चरवाऊंगा और फिर गड़रिये आप न खायेंगे क्योंकि मैं अपने झुंड को उन के मुंह से छुड़ाऊंगा जिस्तें उन का भोजन न होवें ॥

११ क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं ही अपनी भेड़ों को ढूंढ़के उन्हें खोज लेऊंगा।

१२ छिन्न भिन्न भेड़ों में होके के दिन झुंड के गड़रिये के खोजने के समान मैं अपनी भेड़ों को खोजूंगा और उन्हें सारे स्थानों से जहां जहां अंधियारे और मेघ के दिन में छिन्न भिन्न हुई हैं तैसा मैं खोज खोजके छुड़ाऊंगा।

१३ और मैं लोगों में से उन्हें निकाल लाऊंगा और देशों में से उन्हें बटोरूंगा और उन्हें उन्हीं के देश में लाऊंगा और उन्हें नदी के तीर इसराएल के पर्ब्बतों पर और देश के सारे निवासस्थानों में चराऊंगा।

१४ मैं उन्हें अच्छी चराई में चराऊंगा और इसराएल के ऊंचे पर्ब्बतों पर उन का बाड़ा होगा वे वहां अच्छे बाड़े में लेटेंगे और इसराएल के पहाड़ों पर पुष्ट चराई में चरेंगे।

१५ प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं अपने झुंड को चराऊंगा और उन्हें चैन दिलाऊंगा।

१६ मैं खोये हुए को ढूंढूंगा और खदेड़े हुए को फेर लाऊंगा और टूटे हुए पर पट्टी बांधूंगा और रोगी को बलवान करूंगा परन्तु पुष्ट और बलवान को नाश करूंगा मैं उन्हें न्याय से चराऊंगा ॥

१७ और तू हे मेरे झुंड प्रभु परमेश्वर यों कहता है देख मैं पशु पशु में और मेंढ़ों और बकरों में न्याय करता हूं।

१८ अच्छी चराई को चर लेना और अपनी रही हुई चराई को पांव से रौंद डालना और गहिरे पानियों को पीना और रहे हुए को गदला करना क्या तुम्हारे लिये सहज है।

१९ परन्तु जो तुम ने अपने पांवों से रौंदा है सो मेरे झुंड खाते हैं और जो तुम ने अपने पांवों से गदला किया है सो पीते हैं ॥

२० इस लिये प्रभु परमेश्वर उन से यों कहता है कि देख मैं ही मोटे और डांगर पशुन में न्याय करूंगा।

२१ क्योंकि तुम ने कांटे से और कन्धे से ठेला है

और अपने सींगों से सारे रोगियों को मार मार उन्हें छिन्न भिन्न किया है। २२ इस कारण मैं अपने झुंड को बचाऊंगा और वे फिर अहेर न होंगे और मैं पशु और पशु के मध्य में न्याय करूंगा॥

२३ और मैं उन पर एक गड़रिया ठह-राऊंगा और वह उन्हें चरावेगा अर्थात् मेरा सेवक दाऊद वही उन्हें चरावेगा और वह उन का गड़रिया हो जायेगा। २४ और मैं परमेश्वर उन का ईश्वर होऊंगा और मेरा दास दाऊद उन में अध्यक्ष २५ होगा मुझ परमेश्वर ने कहा है। और मैं उन से एक कुशल का नियम बांधूंगा और क्रूर पशुन को देश से दूर कराऊंगा और वे बन में चैन से रहेंगे और जंगल २६ में सोयेंगे। और मैं उन्हें अपने पहाड़ को चारों ओर के स्थानों को आशीषित करूंगा और ऋतु में मैं बरसाऊंगा वहां २७ आशीषों की वृष्टि होगी। और खेतों के पेड़ अपने फल फलेंगे और पृथिवी अपनी बढ़ती देगी और वे अपने देश में चैन से बसेंगे और जब मैं उन के जूए के बंधनों को तोड़ूंगा और उन के हाथ से जिन्हों ने अपनी सेवा उन से करवाई है उन्हें छुड़ाऊंगा तब वे २८ जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूं। और वे फिर अन्यदेशियों के अहेर न होंगे और बनपशु भी उन्हें फेर न भखेंगे परन्तु वे चैन से रहेंगे और कोई उन्हें न २९ डरावेगा। और मैं उन के लिये एक कीर्त्तिमान पेड़ उगाऊंगा और वे देश में भूख से फिर क्षीण न होंगे और फिर ३० अन्यदेशियों से लाज न उठावेंगे। प्रभु परमेश्वर यों कहता है यों वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर उन का ईश्वर उन के संग हूं और वे अर्थात् इसराएल के घराने मेरे लोग हैं॥

३१ और प्रभु परमेश्वर कहता है कि तुम मेरे झुंड मेरी चराई के झुंड मनुष्य हो और मैं तुम्हारा ईश्वर हूं॥

पैंतीसवां पर्व्व

१ और यह कहते हुए परमेश्वर का २ बचन मेरे पास पहुंचा। हे मनुष्य के पुत्र शईर पहाड़ के विरुद्ध अपना मुंह कर और उस के विरुद्ध भविष्य कह॥

३ और उस्से बोल कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देख हे शईर पहाड़ मैं तेरे विरुद्ध हूं और मैं अपना हाथ तेरे विरोध में बढ़ाऊंगा और तुझे उजाड़ ४ का उजाड़ करूंगा। मैं तेरे नगरों को उजाड़ूंगा और तू खंडहर हो जायेगा और तू जानेगा कि मैं ही परमेश्वर हूं। ५ इस कारण कि तू ने नित बैर रक्खा है और इसराएल की विपत्ति के समय में जब कि उन की बुराई हो चुकी तू ने उन के बालकों के लोहू को तलवार की धार से बहाया है॥

६ इस लिये प्रभु परमेश्वर कहता है कि अपने जीवन सोंह मैं तुझे लोहू के लिये सिद्ध करूंगा और लोहू तेरे पीछे पड़ेगा तू लोहू बहाने से नहीं घिनाया है इसी कारण लोहू तेरे पीछे पड़ेगा। ७ इस रीति से मैं शईर पर्व्वत को उजाड़ों का उजाड़ करूंगा और उस में से जो बाहर भीतर आता जाता है उसे मिटा ८ डालूंगा। और उस के पर्वतों को मैं उस के जूझे हुओं से भर देऊंगा तलवार से जूझे हुए तेरे सारे पहाड़ों में और तेरी तराइयों में और तेरी सारी नदियों ९ में पड़ेंगे। मैं तुझे नित का उजाड़ करूंगा और तेरे नगर न फिरेंगे और तुम लोग जानोगे कि मैं ही परमेश्वर हूं॥

१० यद्यपि परमेश्वर वहां था और तू ने कहा है कि ये दोनों जातिगण और ये दोनों देश मेरे होंगे और हम उसे बश ११ में करेंगे। इस लिये प्रभु परमेश्वर यों

कहता है कि अपने जीवन सौंह तेरी रिस के समान और तेरी डाह के समान जो तू ने उन के बिरुद्ध किया है मैं करूंगा और तेरा बिचार करने के पीछे मैं उन में आप को जनाऊंगा। १२ और तू जानेगा कि मैं परमेश्वर हूं मैं ने तेरी सारी अपनिन्दा जो तू ने इसराएल के पर्व्वतों के बिरुद्ध यह कहके कहा कि वे उजाड़ पड़े हैं वे हमारे भक्षण के लिये हमें दिये गये हैं। १३ इस रीति से तुम ने अपने मुंह से मेरे बिरुद्ध आप को बढ़ाया है और मेरे बिपरीत अपनी बात बढ़ाई है मैं ने सुना है॥

१४ प्रभु परमेश्वर यों कहता है जब सारी पृथिवी आनन्द करेगी तब मैं तुझे उजाड़ करूंगा। १५ जैसा तू ने इसराएल के घराने के अधिकार के उजाड़ होने के कारण आनन्द किया है तैसा मैं तुझ से करूंगा हे शईर पर्व्वत तू और सारा अदूम उजाड़ होगा अर्थात् उस का सब कुछ और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूं॥

छत्तीसवां पर्व्व।

१ और हे मनुष्य के पुत्र तू इसराएल के पर्व्वतों से भी भविष्य कहके बोल और कह कि हे इसराएल के पर्व्वतो परमेश्वर का बचन सुनो। २ प्रभु परमेश्वर यों कहता है इस कारण कि बैरी ने तुम्हारे बिरुद्ध कहा है अहा अर्थात् पुराने ऊंचे स्थान हमारे बश में हुए हैं। ३ इस लिये भविष्य कहके बोल कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि जिस्तें तुम लोग बचे हुए अन्यदेशियों के अधिकार हो जाओ और बड़बड़ियों की कथनी हो और लोगों के अपयश इस कारण कि उन्हों ने तुम्हें उजाड़ा है और तुम्हें चारों ओर निगल गये हैं। ४ इस कारण हे इसराएल के पर्व्वतो प्रभु परमेश्वर का बचन सुनो प्रभु परमेश्वर पहाड़ों को और टीलों को और नदियों को और तराइयों को और उजाड़ खंडहरों को और त्यक्त नगरों को जो चारों ओर के बचे हुए अन्यदेशियों के लिये एक अहेर और ठट्ठा हुए हैं यों कहता है। ५ इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि निश्चय मैं ने अपनी झल की आग से बचे हुए अन्यदेशियों के बिरुद्ध और सारे अदूमियों के बिरुद्ध जिन्हों ने अपने सारे अन्तःकरण के आनन्द से अहेर के लिये मन के बैर से मेरे देश को अपने बश के लिये ठहराया है॥

६ इस लिये इसराएल के देश के बिषय में भविष्य कह और पर्व्वतों को और टीलों को और नदियों को और तराइयों को कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है इस कारण कि तुम ने अन्यदेशियों की लाज सही है देख मैं ने अपनी झल में और अपने कोप में कहा है। ७ इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मैं ने अपना हाथ उठाया है निश्चय चारों ओर के अन्यदेशी अपनी लाज सहेंगे॥

८ परन्तु हे इसराएल के पर्व्वतो तुम अपनी डालियां निकालोगे और मेरे इसराएल लोगों के निमित्त अपना फल फलोगे क्योंकि आने में वे पास हैं। ९ क्योंकि देखो मैं तुम्हारे लिये हूं और तुम्हारी ओर फिरूंगा और तुम लोग जोते बोये जाओगे। १० और मैं तुम पर मनुष्यों को अर्थात् इसराएल के सारे घराने को बढ़ाऊंगा अर्थात् सभों को और नगर बसाये जायेंगे और खंडहर बनाये जायेंगे। ११ और मैं तुम्में मनुष्य को और पशुन को बढ़ाऊंगा वे बढ़के फल लावेंगे और मैं तुम्हें अगिले समय की नाईं स्थिर करूंगा और आरंभ से अधिक तुम्हारी भलाई करूंगा और तुम जानोगे कि मैं परमेश्वर हूं। १२ और मैं तुम पर मनुष्यों

को अर्थात् अपने इसराएल लोगों को बुलाऊंगा और वे तुझे अपना अधिकार करेंगे और तू उन का अधिकार होगा और फिर उन्हें मनुष्यरहित न करेगा॥
१३ प्रभु परमेश्वर यों कहता है इस कारण कि वे तुम से कहते हैं कि तू ने मनुष्यों को भक्षा है और तू ने अपनी
१४ जाति को शोक किया है। इस लिये प्रभु परमेश्वर कहता है कि तू मनुष्यों को फिर न भक्षेगा और अपने जातिगणों
१५ को फिर शोक न करेगा। प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं तुझ में अन्यदेशियों की लाज को फिर न सुनाऊंगा और तू फिर लोगों की निन्दा न सहेगा और फिर अपने जातिगणों को पतित न करावेगा॥
१६ फिर परमेश्वर का बचन यह कहते
१७ हुए मेरे पास पहुंचा। हे मनुष्य के पुत्र जब इसराएल के घराने अपने ही देश में रहते थे तब उन्हों ने अपनी ही चाल से और अपनी क्रिया से उसे अशुद्ध किया उन की चाल मेरे आगे अलग किई गई
१८ स्त्री की अशुद्धता की नाईं थी। और देश में उन के लोहू बहाने और अपनी मूर्त्तिन से उसे अशुद्ध करने के लिये मैं
१९ ने अपना कोप उन पर उंडेला। और मैं ने उन्हें अन्यदेशियों में छिन्न भिन्न किया और वे देशों में सर्वत्र बिथराये गये मैं ने उन की चाल के समान और उन की क्रिया के तुल्य उन का बिचार किया।
२० और जब उन्हों ने अन्यदेशियों में प्रवेश किया जहां जहां वे गये वहां वहां उन्हों ने मेरे पवित्र नाम को अशुद्ध किया जब उन्हों ने उन से कहा कि ये परमेश्वर के लोग और उस के देश से निकल गये।
२१ परन्तु मैं ने अपने पवित्र नाम के लिये उन पर मया किई जिसे इसराएल के घराने ने अन्यदेशियों में जा जा अशुद्ध किया था॥

२२ इस लिये इसराएल के घराने से कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि हे इसराएल के घराने मैं तुम्हारे कारण यह नहीं करता परन्तु अपने पवित्र नाम के लिये जो तुम ने अन्यदेशियों में
२३ जा जा अशुद्ध किया। और मैं अपने महत नाम को पवित्र करूंगा जो अन्यदेशियों में अशुद्ध किया गया जो तुम ने उन के मध्य में अशुद्ध किया प्रभु परमेश्वर कहता है कि जब मैं तुम्हें उन की आंखों के आगे पवित्र किया जाऊंगा तब अन्यदेशी जानेंगे कि मैं ही परमेश्वर हूं॥
२४ क्योंकि मैं तुम्हें अन्यदेशियों के मध्य में से लाऊंगा और सारे देशों में से तुम्हें एकट्ठा करूंगा और तुम्हें तुम्हारे ही देश
२५ में लाऊंगा। तब मैं निर्मल जल तुम पर छिड़कूंगा और तुम लोग पवित्र हो जाओगे और मैं तुम्हारी सारी मलीनता से और तुम्हारी सारी मूर्त्तिन से तुम्हें
२६ पवित्र करूंगा। और मैं तुम्हें एक नया मन भी देऊंगा और एक नया आत्मा तुम्में रक्खूंगा और तुम्हारे मांस में से मैं पथरैला मन निकाल लेऊंगा और तुम्हें
२७ मांस का मन देऊंगा। और मैं अपना आत्मा तुम्में देऊंगा और तुम्हें अपनी बिधिन पर चलाऊंगा और तुम मेरे न्यायों को पालन करोगे और उन्हें
२८ मानोगे। और जो देश मैं ने तुम्हारे पितरों को दिया तुम उस में रहोगे और मेरे लोग होओगे और मैं तुम्हारा ईश्वर
२९ हूंगा। और मैं तुम्हें तुम्हारी समस्त अशुद्धता से बचाऊंगा और अन्न को बुलाऊंगा और उसे बढ़ाऊंगा और तुम
३० पर अकाल न धरूंगा। और पेड़ का फल और खेत की बढ़ती को बढ़ाऊंगा जिस्तें तुम लोग अन्यदेशियों में फिर अकाल की निन्दा न पाओगे॥

३१ तब तुम लोग अपनी अपनी बुरी चालों को और अपनी कुक्रिया को स्मरण करोगे और अपनी ही दृष्टि में अपनी बुराइयों और अपनी घिनितों के लिये आप को घिनाओगे। ३२ प्रभु परमेश्वर कहता है कि तुम्हें जान पड़े कि मैं तुम्हारे कारण यह नहीं करता हूं हे इसराएल के घराने तुम अपनी अपनी चालों के लिये लज्जित होके घबरा जाओ॥

३३ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि जिस दिन मैं तुम्हारी सारी बुराइयों से तुम्हें पवित्र किये हूंगा मैं तुम्हें नगरों में भी बसाऊंगा और खंड़हर बनाये जायेंगे। ३४ और उजाड़ देश जोते जायेंगे यद्यपि सारे जवैयों की दृष्टि में उजाड़ पड़ा था॥

३५ और वे कहेंगे कि यह देश जो उजाड़ था अदन की बारी की नाईं हुआ है और खंड़हर और उजाड़ और नष्ट नगर घेरे हुए और बसे हुए हैं॥

३६ तब अन्यदेशी जो तुम्हारी चारों ओर छोड़े गये हैं जानेंगे कि मैं परमेश्वर खंड़हरों को बनाता हूं और उजाड़ों को बोता हूं मुझ परमेश्वर ने कहा है और करूंगा॥

३७ प्रभु परमेश्वर यों कहता है तथापि उन के लिये यह करने को मैं इसराएल के घराने से खोजा जाऊंगा झुंड की नाईं मैं उन्हें मनुष्यों से बढ़ाऊंगा। ३८ जैसा पवित्र वस्तु के झुंड अर्थात् उस के बड़े पर्ब्बों में यरूसलम के झुंड की नाईं तैसा उजाड़ नगर मनुष्यों के झुंड से भर जायेंगे और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूं॥

सैंतीसवां पर्ब्ब

१ परमेश्वर का हाथ मुझ पर पड़ा और मुझे परमेश्वर के आत्मा में बाहर ले गया और मुझे एक तराई के मध्य में उतार दिया जो हड्डियों से भरी थी। २ और मुझे उन के आस पास चारों ओर फिराया और क्या देखता हूं कि खुले चौगान में वे अति बहुत हैं और सो वे बहुत सूखी थीं॥

३ और उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र क्या ये हड्डियां जी सक्ती हैं तब मैं ने उत्तर दिया कि हे प्रभु परमेश्वर तू जानता है॥

४ फिर उस ने मुझ से कहा कि इन हड्डियों पर भविष्य कह और उन से बोल कि हे सूखी हड्डियो परमेश्वर का बचन सुनो। ५ प्रभु परमेश्वर इन हड्डियों से कहता है कि देखो मैं तुम्में स्वास प्रवेश कराऊंगा और तुम जीओगी। ६ और मैं तुम पर नस लाऊंगा और तुम पर मांस उभाड़ूंगा और तुम्हें चाम से ढांपूंगा और तुम्में स्वास डालूंगा और तुम जीओगी और तुम जानोगी कि मैं परमेश्वर हूं॥

७ सो आज्ञा के समान मैं ने भविष्य कहा और मेरे भविष्य कहते ही शब्द हुआ और देख कि हड़हड़ाहट और हड्डियां एकट्ठी आईं हड्डी अपनी हड्डी के पास। ८ और देखते ही क्या देखता हूं नस और मांस उन पर आये और चाम ने उन्हें ऊपर से ढांपा परन्तु उन में स्वास न था॥

९ तब उस ने मुझ से कहा कि पवन से भविष्य कह हे मनुष्य के पुत्र भविष्य प्रचार और पवन से कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि हे स्वास चारों पवनों से आ और इन जूझे हुओं पर बह जिस्तें वे जीयें॥

१० सो आज्ञा के समान मैं ने भविष्य कहा और स्वास उन में आया और वे जीये और एक अति बड़ी सेना अपने पांव के बल उठ खड़ी हुई॥

११ तब उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र ये हड्डियां इसराएल के सारे घराने हैं देखो वे कहते हैं कि हमारी हड्डियां झुरा गईं और हमारी आशा जाती रही हम अपने अपने ठिकाने से कट गये ॥

१२ इस लिये भविष्य प्रचार और उन से कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि हे मेरे लोगो देखो मैं तुम्हारी समाधिन को खोलूंगा और तुम्हारी समाधि से तुम्हें बाहर निकलवाऊंगा और तुम्हें १३ इसराएल के देश में लाऊंगा । और हे मेरे लोगो जब मैं ने तुम्हारी समाधि खोली है और तुम्हें तुम्हारी समाधिन से निकाल लाया हूं तब तुम लोग जानोगे १४ कि मैं परमेश्वर हूं । और मैं अपना आत्मा तुम्में डालूंगा और तुम जीओगे और मैं तुम्हें तुम्हारे ही देश में बसाऊंगा परमेश्वर कहता है तब तुम जानोगे कि मुझ परमेश्वर ने कहा और पूरा किया है ॥

१५ फिर यह कहते हुए परमेश्वर का १६ बचन मेरे पास पहुंचा । हे मनुष्य के पुत्र एक लकड़ी ले और यहूदाह के लिये और उस के संगी इसराएल के सन्तानों के लिये उस पर लिख तब दूसरी लकड़ी ले और यूसुफ के निमित्त इफरायम की लकड़ी और उस के संगी सारे इसराएल के घराने के लिये लिख । १७ और आपस में उन्हें जोड़के एक लकड़ी कर और वे तेरे हाथ में एक हो जायेंगी ॥

१८ और जब तेरे लोगों के सन्तान तुझ से यह कहके बोलें कि तू इस का अर्थ १९ हमें न बतावेगा । तब उन से कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मैं यूसुफ की लकड़ी को जो इफरायम के हाथ में है लेऊंगा और उस के संगी इसराएल की गोष्ठियों को भी लेऊंगा और उन्हें उस के साथ अर्थात् यहूदाह की लकड़ी के साथ रक्खूंगा और उन्हें एक लकड़ी बनाऊंगा और वे मेरे हाथ में एक होंगी । २० और तू जिन लकड़ियों पर लिखेगा सो उन को आंखों के आगे तेरे हाथ में होंगी ॥

२१ और उन से कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं इसराएल के सन्तानों को अन्यदेशियों में से जिधर वे गये हैं लेऊंगा और उन्हें हर एक ओर से बटोरूंगा और उन्हें उन्हीं के देश में २२ लाऊंगा । और मैं उन्हें इसराएल के देश के पर्वतों पर एक जाति बनाऊंगा और एक राजा उन सभों पर राजा होगा और वे फेर दो जातिगण न होंगे और वे फिर कभी दो राज्य में होके बिभाग न होंगे । २३ फिर वे अपनी मूर्त्तिन से और अपनी घिनित बस्तुन से और अपने समस्त अपराधों से आप को अशुद्ध न करेंगे परन्तु मैं उन्हें उन के सारे निवासों में से जिन में उन्हों ने पाप किया है उन्हें छुड़ाऊंगा और उन्हें पवित्र करूंगा सो वे मेरे लोग होंगे और मैं उन का ईश्वर हूंगा ॥

२४ और मेरा दास दाऊद उन पर राजा होगा और उन सभों का एक गड़रिया होगा और वे मेरे न्यायों पर चलेंगे और मेरी बिधिन को मानेंगे और उन्हें पालेंगे । २५ और वे उस देश में बसेंगे जो मैं ने अपने दास यअकूब को दिया है जिस में तुम्हारे पितरों ने बास किया और वे और उन के सन्तान और उन के सन्तानों के सन्तान सर्वदा उस में बास करेंगे और मेरा दास दाऊद सदा के लिये उन का राजा होगा ॥

२६ और मैं उन से एक कुशल का नियम बांधूंगा और वह उन से एक सनातन का नियम होगा और मैं उन्हें बसाऊंगा और बढ़ाऊंगा और सर्वदा अपना पवित्र-

२७ स्थान उन के मध्य में रक्खूंगा । मेरा तंबू भी उन के मध्य में होगा हां मैं उन का ईश्वर हूंगा और वे मेरे लोग २८ होंगे । और जब मेरा पवित्रस्थान सर्व्वदा उन के मध्य में होगा तब अन्यदेशी जानेंगे कि मैं ही परमेश्वर इसराएल को पवित्र करता हूं ॥

अठतीसवां पर्व्व ।

१ और यह कहते हुए परमेश्वर का २ बचन मेरे पास पहुंचा । हे मनुष्य के पुत्र माजूज के देश के जूज अर्थात् रूस और मसक और तूबाल के अध्यक्ष के विरुद्ध अपना मुंह कर और उस के विरुद्ध भविष्य कह ॥

३ और बोल कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि हे जूज रूस और मसक और तूबाल के अध्यक्ष देख मैं तेरे ४ विरुद्ध हूं । और मैं तुझे हटाऊंगा और तेरे गलफड़ों में कंटिया लगाऊंगा और मैं तुझे और तेरी सारी सेना को घोड़ों और घोड़चढ़ों को सब के सब सारे प्रकार से बिभूषित अर्थात् एक बड़ी जथा ढाल और फरी के साथ सब के ५ सब खड्गधारी निकाल लाऊंगा । फारस और कूश और फूट उन के साथ सब के ६ सब ढाल और टोप लिये हुए । जुम्र और उस की सारी जथाओं को और उत्तर दिशा से तजरमः के घराने और उस की सारी जथाओं को और तेरे साथ बहुत से लोगों को ॥

७ तू लैस रह और अपने लिये और अपनी सारी जथा जो तेरे पास बटुरी हैं लैस हो और तू उन के लिये पहरा ८ हो । बहुत दिन के पीछे तू दण्ड पा चुकेगा और तलवार से फेर लिये गये और बहुत से लोगों में से बटोरे गये देश में इसराएल के पर्व्वतों के विरुद्ध जो सदा उजड़े हुए हैं तू पिछले बरसों में आवेगा परन्तु वह जातिगणों से निकाला हुआ है और वे सब के सब चैन से रहेंगे । और तू चढ़ाई करके ९ आंधी की नाईं आवेगा देश को ढां लेने के लिये तू और तेरी सारी जथाएं और तेरे संग बहुत से लोग मेघ की नाईं होंगे ॥

प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि ऐसा १० भी होगा कि उसी समय में बहुत सी चिन्ता तेरे मन में आवेंगी और तू कुचिन्ता करेगा । और तू कहेगा कि ११ मैं भीतरहित देश के गांवों में चढ़ जाऊंगा मैं उन के पास जाऊंगा जो चैन से हैं और भरोसे से रहते हैं सब के सब भीतरहित बसते हैं और न अड़ंगे न फाटक रखते हैं । लूट लूटने १२ को और अहेर अहेरने को उजाड़ स्थानों पर और जातिगणों में से बटुरे हुए लोगों पर जिन्हों ने ढोर और संपत्ति प्राप्त किया है जो पृथिवी के मध्य में रहते हैं अपना हाथ फेरो । सिबः और १३ ददान और तरसीस के बैपारी उस के सारे तरुण सिंह सहित तुझ से कहेंगे कि क्या तू लूट लेने आया है क्या तू अहेर लेने को सोना चांदी लेने को और ढोर और संपत्ति और बड़ी लूट लेने को क्या तू ने अपनी जथा बटोरी है ॥

इस लिये हे मनुष्य के पुत्र जूज से १४ भविष्य कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है जब कि मेरे इसराएल लोग चैन से रहेंगे क्या तू न जानेगा । और तू उत्तर १५ दिशा में से अपने स्थान से और तेरे संग बहुत से लोग सब के सब घोड़ों पर चढ़े हुए एक बड़ी जथा और एक सामर्थी सेना आवेगी । और देश को १६ ढां लेने को तू मेघ की नाईं मेरे इसराएल लोगों के विरुद्ध चढ़ आवेगा यह पिछले दिनों में होगा और मैं तुझे अपने

देश में लाऊंगा जिस्तें हे जूज जब मैं तेरी आंखों के आगे तुझ में पवित्र हूंगा तो अन्यदेशी मुझे पहिचानेंगे ॥

१७ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि क्या तू वही है जिस के विषय में मैं ने पुरातन समय से अपने सेवक इसराएल के भविष्य-द्वक्तों के द्वारा से कहा है जिन्हों ने उन दिनों और बरसों में भविष्य कहा कि मैं

१८ तुझे उन के बिरुद्ध लाऊंगा । और प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि जब जूज इसराएल के देश के बिरुद्ध आवेगा उसी समय यों होगा कि मेरा मुंह कोपित

१९ होगा । क्योंकि अपनी झल में और अपने कोप की आग में मैं ने कहा है निश्चय उस दिन इसराएल के देश में एक बड़ी

२० थरथराहट होगी । यहां लों कि समुद्र की मछलियां और आकाश के पंछी और बनपशु और पृथिवी पर के सारे रेंगवैये और पृथिवी के सारे मनुष्य मेरे आगे से थरथरायेंगे और पर्व्वत गिराये जायेंगे और ऊंचे स्थान गिर पड़ेंगे और हर एक भीत

२१ भूमि पर गिरेगी । प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं उस के बिरुद्ध अपने सारे पर्व्वतों में एक तलवार मंगवाऊंगा और हर एक जन की तलवार उस के भाई

२२ के बिरुद्ध होगी । और मैं उस के बिरुद्ध मरी और लोहू से बिवाद करूंगा और मैं उस पर और उस की जथाओं पर और उस के संग के बहुत से लोगों पर उमड़ी हुई वृष्टि और बड़े बड़े ओले और आग और गंधक बरसाऊंगा ॥

२३ इसी रीति से मैं अपनी महिमा करूंगा और अपने को पवित्र करूंगा और मैं बहुत से जातिगणों की दृष्टि में पहिचाना जाऊंगा और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूं ॥

उंतालीसवां पर्व्व ।

१ और तू हे मनुष्य के पुत्र जूज के बिरुद्ध भविष्य प्रचारके कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि हे जूज रूस और मसक और तूबाल के अध्यक्ष देख

२ मैं तेरे बिरुद्ध हूं । और मैं तुझे हटा देऊंगा और केवल तेरा छठवां भाग छोडूंगा और तुझे उत्तर के अलंगों से लाऊंगा और तुझे इसराएल के पर्व्वतों

३ पर लाऊंगा । और तेरे धनुष को तेरे बायें हाथ से मार निकालूंगा और तेरे बाण को तेरे दहिने हाथ से गिराऊंगा ।

४ तू और तेरी सारी जथा और तेरे संग के लोग इसराएल के पर्व्वतों पर गिरेंगे मैं भक्षण के लिये हर प्रकार के फड़वैये पंछियों को और बनैले पशुन को देऊंगा ।

५ तू खुले चौगान पर गिरेगा क्योंकि प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं ने कहा है ॥

६ और मैं माजूज पर और उन पर जो टापुओं में निश्चिन्त रहते हैं एक आग भेजूंगा और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर

७ हूं । यों मैं अपने पवित्र नाम को अपने इसराएल लोगों के मध्य में जनाऊंगा और फिर अपना नाम अशुद्ध करने न देऊंगा और अन्यदेशी जानेंगे कि मैं ही परमेश्वर

८ इसराएल में धर्म्ममय हूं । प्रभु परमेश्वर कहता है कि देख वह आया है और हुआ है यही दिन है जिस के विषय में मैं ने कहा है ॥

९ और जो इसराएल के नगरों में रहते हैं सो निकल जायेंगे और क्या ढाल क्या फरी क्या हथियार क्या धनुष क्या बाण क्या बरछी क्या भाले वे उन्हें

१० सात बरस लों जलावेंगे । यहां लों कि वे खेत में से ईंधन न लावेंगे और बन में से लकड़ी न काटेंगे क्योंकि वे हथियारों की आग से जलावेंगे और प्रभु परमेश्वर कहता है कि वे अपने लुटवैयों को लूटेंगे और अपने चोरवैयों को चुरावेंगे ॥

११ और उस दिन ऐसा होगा कि मैं इसराएल में समुद्र की पूर्व्व और पथिकों की तराई में जूज को समाधिन का स्थान देऊंगा वह पथिकों की नाक बंद करेगा और वहां वे जूज को और उस की सारी मंडली को गाड़ेंगे और वे उस का नाम जूज की मंडली की तराई
१२ रक्खेंगे। और देश पवित्र करने के लिये इसराएल के घराने सात मास लों
१३ उन्हें गाड़ा करेंगे। हां देश के सारे लोग उन्हें गाड़ेंगे और प्रभु परमेश्वर कहता है कि जिस दिन में महिमा पाऊंगा सो उन के लिये कीर्त्तिमान
१४ होगा। और वे निरंतर कार्य्यकारी मनुष्यों को चुन लेंगे जो भूमि पर के बचे हुए पथिकों के संग मृतक करने को गाड़ने के लिये आरपार जायेंगे और
१५ सात मास के पीछे वे ढूंढ़ेंगे। और जब देश में के अवैये पथिक किसी मनुष्य के हाड़ देखेंगे तब वह उस के लग एक चिन्ह खड़ा करेगा जब लों गड़वैये उसे जूज की मंडली की तराई में न
१६ गाड़ें। और उस नगर का नाम मंडली भी होगा और इस रीति से वे देश को पवित्र करेंगे॥

१७ और हे मनुष्य के पुत्र प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि तू सारे पंक्षियों से और बन के हर एक पशुन से कह कि एकट्ठे हो और आओ चारों ओर से जो बलि मैं तुम्हारे लिये करता हूं उस बलि के लिये एकट्ठे होओ अर्थात् इसराएल के पर्व्वतों पर एक बड़ा बलि जिस्तें तुम लोग मांस खाओ और लोहू
१८ पीओ। तुम लोग बीरों का और पृथिवी के अध्यक्षों का और बसन के पले हुए मेढ़ों का और मेम्नों का और बड़ी बकरियों का और बैलों का मांस खाओ
१९ और लोहू पीओ। और तुम लोग चिकनाई से तृप्त होने लों खाओगे और मेरे बलि का लोहू जो मैं ने तुम्हारे लिये बलि किया है मतवाले होने लों
२० पीओगे। और प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि इस रीति से तुम मेरे मंच पर घोड़ों से और रथों से और बलवंत मनुष्यों से और सारे लड़ाकों से तृप्त होओगे॥

२१ और मैं अपना विभव अन्यदेशियों में स्थापन करूंगा और मेरे न्यायदण्ड को और मेरा हाथ जो मैं ने उन पर
२२ धरा है सारे अन्यदेशी देखेंगे। सो इसराएल के घराने उस दिन से आगे जानेंगे कि मैं परमेश्वर उन्हीं का
२३ ईश्वर हूं। और अन्यदेशी जानेंगे कि इसराएल के घराने अपने अधर्म के लिये बंधुआई में चले गये क्योंकि उन्हों ने मेरे विरुद्ध अपराध किया है इस लिये मैं ने अपना मुंह उन से छिपा लिया और उन्हें उन के बैरियों के हाथ सौंप दिया सो वे सब तलवार से मारे
२४ गये। उन की अपवित्रता के और उन के अपराधों के समान मैं ने उन से किया है और अपना मुंह उन की दृष्टि से छिपाया है॥

२५ इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि अब मैं यअकूब की बंधुआई को फेर लाऊंगा और इसराएल के सारे घराने पर दया करूंगा और अपने पवित्र
२६ नाम के लिये झल खाऊंगा। और वे अपनी लाज का बोझ उठायेंगे और अपने समस्त अपराध का जो उन्हों ने मेरे विरुद्ध किया जब वे चैन से अपने देश में रहेंगे और कोई डरवैया न होगा॥
२७ जब मैं उन्हें लोगों में से फेर लाऊंगा और उन के बैरियों के देशों में से उन्हें बटोरूंगा और बहुत देशगणों की दृष्टि में मैं उन में पवित्र किया जाऊंगा।

२८ तब वे जानेंगे कि मैं ही परमेश्वर उन का ईश्वर हूं जिस ने उन्हें अन्यदेशियों में बंधुआई में पहुंचाया परन्तु मैं ने उन्हें उन्हीं के देश में एकट्ठा किया और वहां फिर उन में से किसी को न २९ छोड़ा। और मैं अपने मुंह को उन से फिर न छिपाऊंगा क्योंकि प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं ने इसराएल के घराने पर अपना आत्मा उंडेला है॥

चालीसवां पर्ब्ब।

१ हमारी बंधुआई के पचीसवें बरस में बरस के आरंभ के मास की दसवीं तिथि में नगर के लिये जाने के चौदहवें बरस के उसी दिन परमेश्वर का हाथ मुझ पर पड़ा और मुझे वहां पहुंचाया। २ ईश्वरीय दर्शनों में उस ने मुझे इसराएल के देश में पहुंचाया और मुझे एक अति ऊंचे पर्बत पर बैठाया जिस के दक्खिन ओर एक नगर का ढांचा था॥

३ और वह ने मुझे वहां पहुंचाया और क्या देखता हूं कि सन की डोरी और नापने का नल हाथ में लिये हुए एक पुरुष फाटक पर खड़ा है जो पीतल की नाईं दिखाई देता था॥

४ और उस मनुष्य ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र अपनी आंखों से देख और अपने कानों से सुन और सब जो मैं तुझे दिखाऊं उन पर मन लगा क्योंकि तुझे दिखाने को मैं तुझे यहां लाया हूं सब जो तू देखता है इसराएल के घराने को बता॥

५ और क्या देखता हूं कि घर के बाहर बाहर चारों ओर एक भीत एक हाथ चार अंगुल के हाथ से छः हाथ का नापने का एक नल वह मनुष्य लिये हुए था सो उस ने उस बनावट की चौड़ाई को नापा एक नल और ऊंचाई एक नल॥

६ तब वह पूरब पलंग के फाटक पर आया और उस की सीढ़ी पर चढ़ा और उस फाटक की डेहली एक नल चौड़ी नापी और दूसरी डेहली एक नल चौड़ी। ७ और हर एक छोटी कोठरी एक एक नल लम्बी और एक एक नल चौड़ी और छोटी कोठरियों के मध्य पांच पांच हाथ और उसारे के फाटक की डेहली भीतर ८ भीतर एक नल। और उस ने उसारे का ९ फाटक भी एक नल नापा। तब उस ने फाटक के उसारे को आठ हाथ नापा और उस के खंभे दो हाथ और १० फाटक का उसारा भीतर था। और पूरब ओर के फाटक की छोटी कोठरियां तीन इधर तीन उधर थीं उन तीनों का एक ही नाप था और इधर उधर खंभों का एक ही नाप था। ११ और उस ने फाटक के प्रवेशस्थान की चौड़ाई दस हाथ और लम्बाई तेरह १२ हाथ नापी। और छोटी कोठरियों के आगे का अन्त हाथ भर इधर हाथ भर उधर और छोटी छोटी कोठरियां छः १३ हाथ इधर और छः हाथ उधर थीं। तब उस ने फाटक की छोटी कोठरी की छत से दूसरी कोठरी लों नापा उस की चौड़ाई पचीस हाथ थी द्वार के १४ साम्हे द्वार। और उस ने फाटक की चारों ओर आंगन के खंभे लों साठ १५ हाथ खंभे भी बनाये। और प्रवेश के फाटक के आगे से भीतर के फाटक के १६ आंगन लों पचास हाथ। और छोटी छोटी कोठरियों की ओर फाटक के भीतर के खंभों की चारों ओर खिड़कियां थीं और उसारे की भी और भीतर भीतर चारों ओर खिड़कियां थीं और हर एक खंभे पर ताड़-पेड़ थे॥

१७ फिर उस ने मुझे बाहर के आंगन में

पहुंचाया और क्या देखता हूं कि कोठरियां और चारों ओर आंगन के लिये गच थी और उस गच पर तीस कोठ-
१८ रियां। और फाटकों की लम्बाई के साम्ने फाटकों के लग की गच नीचे की गच
१९ थी। तब उस ने नीचे के फाटक के साम्ने से भीतर के आंगन के साम्ने लों पूरब ओर और उत्तर ओर बाहर बाहर चौड़ाई सौ हाथ नापी॥
२० फिर उस ने उत्तर के बाहरी आंगन के फाटक की लम्बाई और चौड़ाई
२१ नापी। और उस की छोटी कोठरियां तीन इस अलंग तीन उस अलंग थीं और उस के खंभे और उस के उसारे पहिले फाटक के नाप के समान थे उस की लम्बाई पचास हाथ और चौड़ाई पचीस
२२ हाथ। और उन की खिड़कियां और उन के उसारे और उन के ताड़पेड़ पूरब ओर के फाटक के नाप के समान थे और सात सीढ़ियों पर से उस पर चढ़ते थे और इस के उसारे उन के आगे थे।
२३ और भीतर के आंगन का फाटक पूरब ओर के और उत्तर ओर के फाटक के साम्ने था और फाटक से फाटक सौ हाथ के नाप का।
२४ तब उस ने मुझे दक्खिन की ओर पहुंचाया और क्या देखता हूं कि दक्खिन की ओर एक फाटक और उस ने उस के खंभे और उस के उसारे इन नापों के
२५ समान नापे। और उस में और उस के उसारे में चारों ओर उन खिड़कियों की नाईं खिड़कियां थीं लम्बाई पचास हाथ
२६ और चौड़ाई पचीस हाथ। और उस पर चढ़ने को सात सीढ़ियां थीं और उस के उसारे उन के आगे थे और उस के खंभों पर ताड़पेड़ थे एक इस अलंग और एक
२७ उस अलंग। और भीतर के आंगन की दक्खिन ओर एक फाटक था और उस में फाटक से फाटक लों दक्खिन ओर सौ हाथ नापा॥
२८ और वह दक्खिन फाटक से मुझे भीतर के आंगन में लाया और इन के नाप के समान उस ने दक्खिन के फाटक
२९ को नापा। और उस की छोटी कोठरियां और उस के खंभे और उस के उसारे इन नापों के समान थे और उस में और उस के उसारे में चारों ओर खिड़कियां थीं वह पचास हाथ लम्बा और पचीस
३० हाथ चौड़ा। और उसारा चारों ओर पचीस हाथ लम्बा और पांच हाथ चौड़ा।
३१ और उस के उसारे बाहर के आंगन की ओर थे और उस के खंभों पर ताड़पेड़ और उस की चढ़ाई की आठ सीढ़ियां थीं॥
३२ और वह मुझे पूरब ओर भीतर के आंगन में लाया और इन नापों के समान
३३ फाटक नापा। और उस की छोटी कोठरियां और खंभे और उसारे इन नापों के समान थे और उस में और उस के उसारे में चारों ओर खिड़कियां थीं वह पचास हाथ लम्बा और पचीस हाथ
३४ चौड़ा। और उस के उसारे बाहर के आंगन की ओर थे और उस के खंभे के ऊपर इधर उधर ताड़पेड़ और उस की चढ़ाई आठ सीढ़ी की थी॥
३५ और उस ने मुझे उत्तर के फाटक की ओर पहुंचाया और इन नापों के
३६ समान उसे नापा। उस की छोटी छोटी कोठरियां और उस के खंभे और उस के उसारे और उस की चारों ओर की खिड़कियां लम्बाई में पचास हाथ और
३७ चौड़ाई में पचीस हाथ। और उस के खंभे बाहर के आंगन की ओर थे और इधर उधर उस के खंभों पर ताड़पेड़ थे और उस की चढ़ाई आठ सीढ़ी की थी॥

३८ और कोठरियां और उन की पैठ उन के फाटकों के खंभे के लग थीं जहां वे बलिदान की भेंट धोते थे। ३९ और फाटक के उसारे में बलिदान की भेंट और पाप की भेंट और अपराध की भेंट बलि करने को दो मंच इस ४० अलंग दो मंच उस अलंग थे। और बाहर के अलंग उत्तर फाटक की पैठ को जाते जाते दो मंच थे और फाटक के उसारे के दूसरे अलंग दो मंच थे। ४१ फाटक के लग इस अलंग चार मंच और उस अलंग चार मंच थे आठ मंच ४२ जिन पर वे बलि करते थे। और बलिदान की भेंट के लिये खोदे हुए पत्थर के डेढ़ हाथ लम्बे और डेढ़ हाथ चौड़े और हाथ भर ऊंचे चार मंच थे जिन पर वे बलिदान की भेंट और ४३ बलि के हथियार धरते थे। और उन के भीतर भीतर चार अंगुल चौड़ी अंकड़ियां चारों ओर लगी थीं और मंचों पर भेंट का मांस था॥

४४ और भीतर के फाटक के बाहर भीतर के आंगन में जो उत्तर फाटक के अलंग में थीं गायकों की कोठरियां थीं और उन का मुंह दक्खिन की ओर और पूरब फाटक के अलंग एक जिस ४५ का मुंह उत्तर की ओर। तब उस ने मुझ से कहा कि यही दक्खिन ओर के मुंह की कोठरी घर के रखवाल ४६ याजकों के लिये है। और उत्तर ओर के मुंह की कोठरी यज्ञबेदी के रखवाल याजकों के लिये है ये सादूक के बेटे लावियों के बेटों में हैं जो सेवा के लिये परमेश्वर के पास आते हैं॥

४७ सो उस ने आंगन को सौ हाथ लम्बा नापा और सौ हाथ चौड़ा चौकोर और घर के आगे की बेदी॥

४८ फिर वह मुझे घर के उसारे में लाया और उसारे के खंभे को नापा पांच हाथ इधर और पांच हाथ उधर और फाटक की चौड़ाई इधर उधर तीन तीन हाथ। ४९ उसारे की लम्बाई बीस हाथ और चौड़ाई ग्यारह हाथ और उस की चढ़ाई की सीढ़ी पर से मुझे लाया और खंभों के इधर उधर खंभे थे॥

एकतालीसवां पर्ब्ब।

१ उस के पीछे वह मुझे मन्दिर में लाया और खंभों को नापा तंबू की चौड़ाई एक ओर छः हाथ और दूसरी ओर २ छः हाथ। और पैठ की चौड़ाई दस हाथ और द्वार के अलंग एक ओर पांच हाथ और दूसरी ओर पांच हाथ और उस ने उस की लम्बाई को चालीस हाथ नापा और उस की चौड़ाई बीस हाथ॥

३ तब उस ने भीतर जाके द्वार के खंभे को दो हाथ नापा और द्वार छः हाथ ४ और द्वार की चौड़ाई सात हाथ। वैसा उस ने उस की लम्बाई को बीस हाथ और मन्दिर के साम्ने की चौड़ाई को बीस हाथ नापा तब उस ने मुझ से कहा कि यही अति पवित्रस्थान है॥

५ तब उस ने घर की भीत छः हाथ नापी और अलंग की कोठरी की चौड़ाई घर की चारों ओर हर एक अलंग चार ६ हाथ। और अलंग की कोठरियां तीन थीं कोठरी पर कोठरी पांती में तीस और वे भीत के भीतर भीतर थीं जो घर के आसपास के अलंग की कोठरियों के लिये थीं जिस्तें वे दृढ़ होवें परन्तु घर ७ की भीत से वे मिली हुई न थीं। और वह अधिक चौड़ा किया गया था और घेरा ऊपर की आसपास की कोठरी लों था क्योंकि घर का घेरा ऊपर ऊपर घर की चारों ओर इस लिये घर की चौड़ाई ऊपर अधिक थी और नीचे से लेके मध्य ८ से ऊपर लों बढ़ गई। और मैं ने घर

की चारों ओर की ऊंचाई भी देखी अलंगों की कोठरियों की नेव छः बड़े बड़े हाथ के पूरे नल की थी॥
९ बाहर की कोठरी के अलंग के निमित्त भीत की चौड़ाई पांच हाथ और छूटा हुआ स्थान भीतर के अलंग की कोठ-
१० रियों के लिये था। और कोठरियों के बीच में घर के हर एक अलंग चारों
११ ओर बीस हाथ की चौड़ाई। और अलंग की कोठरियों के द्वार छूटे हुए स्थान की ओर थे एक द्वार उत्तर ओर और एक द्वार दक्खिन ओर और छूटे हुए स्थान की चौड़ाई चारों ओर पांच हाथ की थी॥
१२ अब पच्छिम ओर अन्त में अलग स्थान के आगे की जोड़ाई सत्तर हाथ चौड़ी थी और जोड़ाई की भीत चारों ओर पांच हाथ मोटी और उस की
१३ लम्बाई नब्बे हाथ थी। सो उस ने घर को सौ हाथ लम्बा नापा और अलग स्थान और जोड़ाई उस की भीतें सहित
१४ सौ हाथ लम्बी। और घर के मुंह की भी चौड़ाई पूरब ओर के अलग स्थान की सौ हाथ॥
१५ और पीछे के अलग स्थान के साम्ने जोड़ाई की लम्बाई को और ऊपर के इस अलंग और उस अलंग के उसारों को भीतर के मन्दिर और आंगन के उसारे समेत उस ने सौ हाथ नापे
१६ द्वार के उतरंगे और सकेत खिड़कियां और द्वार के साम्ने की तीनों अटारियों पर चारों ओर के उसारे लकड़ी से चारों ओर मढ़े हुए थे और भूमि से खिड़कियों लों और खिड़कियां ढांपी हुई थीं।
१७ द्वार के ऊपर लों अर्थात् घर के भीतर और बाहर लों चारों ओर की सारी भीतों के लग बाहर भीतर नाप नापके ऊंची हुई थीं॥
१८ और करोबियों से और ताड़पेड़ों से बना था ऐसा कि एक ताड़पेड़ एक एक करूब के बीच में था और हर
१९ एक करूब के दो दो मुंह थे। ऐसा कि एक अलंग ताड़पेड़ की ओर मनुष्य का मुंह था और दूसरे अलंग ताड़पेड़ की ओर युवा सिंह का मुंह घर की
२० चारों ओर ऐसा बना था। भूमि से द्वार के ऊपर लों और मन्दिर की भीत पर करोबीम और ताड़पेड़ बने थे।
२१ मन्दिर का खंभा और पवित्रस्थान के रूख चौरस लिये गये थे एक दूसरे के समान दिखाई देता था॥
२२ काठ की बेदी तीन हाथ ऊंची और उस की लम्बाई दो हाथ और उस के कोने और उस की लम्बाई और उस की भीतें काठ की थीं और उस ने मुझ से कहा कि यह परमेश्वर के आगे का मंच है॥
२३ और मन्दिर और पवित्रस्थान के दो
२४ द्वार थे। और एक एक द्वार के दो दो घूमने के पाट थे एक द्वार के लिये दो
२५ पाट और दूसरे के लिये दो। और जैसे भीतों पर बने थे तैसे मन्दिर के द्वारों पर करोबीम और ताड़पेड़ बने थे और बाहर के उसारे के रूख पर मोटी मोटी
२६ सिल्लियां थीं। और उसारे के अलंगों पर और घर के अलंगों की कोठरियों पर और मोटी मोटी सिल्लियों पर इस अलंग और उस अलंग सकेत सकेत खिड़कियां और ताड़पेड़ थे॥

बयालीसवां पर्ब्ब।

१ फिर वह मुझे बाहरी आंगन में उत्तर के मार्ग पर लाया और वह मुझे अलग स्थान के सन्मुख की कोठरी में जो उत्तर ओर की जोड़ाई के आगे थी
२ पहुंचाया। सौ हाथ लम्बाई के आगे उत्तर का द्वार था और उस की चौड़ाई
३ पचास हाथ। भीतर के आंगन के लिये बीस हाथ और बाहर के आंगन के लिये

मार्ग के आगे तेहरे ऊपरी उसारे थे। ४ और कोठरियों के साम्ने भीतर भीतर दस हाथ का चौड़ा एक मार्ग एक हाथ का एक पथ और उन के द्वार उत्तर ५ ओर थे। और ऊपरी कोठरियां उन से छोटी छोटी थीं क्योंकि ऊपरी उसारे इन्हों से और नीचे से और जोड़ाई के ६ बीच में से ऊंचे थे। क्योंकि वे तेहरे थे परन्तु आंगनों के खंभों की नाईं उन के खंभे न थे इस लिये जोड़ाई नीचे भूमि से और मध्य से सकेत थी॥

७ और कोठरियों के आगे के बाहरी आंगन की ओर ऊपर की कोठरी के आगे बाहर की भीत पचास हाथ लम्बी ८ थी। क्योंकि बाहरी आंगन की कोठरियों की लम्बाई पचास हाथ थी और देखो कि मन्दिर के साम्ने सौ हाथ॥

९ और बाहरी आंगन से जाने में उन कोठरियों में प्रवेश करने को पूरब ओर १० उन के नीचे पैठ थी। अलग स्थान के साम्ने और जोड़ाई के साम्ने कोठरियां पूरब ओर के आंगन की भीत की ११ मोटाई थीं। और उन के आगे का मार्ग उत्तर ओर की कोठरियों का सा दिखाई देता था जो उन के समान लम्बा चौड़ा और उन के सारे निकास उन के डौल और उन के द्वारों के समान १२ थे। और दक्खिन की कोठरी के द्वारों के समान मार्ग के सिरे पर एक द्वार अर्थात् पूरब ओर की भीत के साम्ने उन में जाने के मार्गों में एक द्वार था॥

१३ तब उस ने मुझ से कहा कि उत्तर की कोठरियां और दक्खिन की कोठरियां जो अलग स्थान के आगे हैं पवित्र कोठरियां हैं जहां याजक जो परमेश्वर के पास जाते हैं अति पवित्र वस्तु खायेंगे वे वहां अति पवित्र वस्तु और भोजन की भेंट और पाप की भेंट और अपराध की भेंट धरेंगे क्योंकि वह स्थान पवित्र है। जब याजक उस में प्रवेश १४ करें तब वे बाहरी आंगन में पवित्रस्थान से न जायें परन्तु वे अपनी सेवा के वस्त्र वहीं रक्खें इस लिये कि वे पवित्र हैं और वे दूसरा वस्त्र पहिनें और लोगों के लिये पास जावें॥

१५ सो जब वह भीतर के घर को नाप चुका तो मुझे उस फाटक की ओर लाया जिस का रुख पूरब ओर है और उसे चारों ओर नापा। उस ने नापने १६ के नल से पूरब अलंग पांच सौ नल चारों ओर नापे। उस ने नापने के नल १७ से उत्तर अलंग चारों ओर पांच सौ नल नापे। उस ने नापने के नल से दक्खिन १८ अलंग पांच सौ नल नापे। उस ने १९ पच्छिम ओर लौटके नापने के नल से पांच सौ नल नापे। उस ने उस के चारों २० अलंग नापे उस की चारों ओर एक भीत पांच सौ नल लम्बी और पांच सौ चौड़ी थी जिस्तें पवित्रस्थान को सामान्य स्थान से अलग करे॥

तेंतालीसवां पर्ब्ब।

१ और उस ने मुझे फाटक पर पहुंचाया अर्थात् पूरब मुंह के फाटक पर। और २ क्या देखता हूं कि इसराएल के ईश्वर का तेज पूरब ओर से आया और उस का शब्द बहुत पानियों के शब्द की नाईं और उस के तेज से पृथिवी चमक ३ उठी। और वह मेरे देखे हुए दर्शन की नाईं था अर्थात् मेरे देखे हुए उस दर्शन की नाईं जब मैं नगर को नाश करने को आया और दर्शन उस दर्शन की नाईं थे जो मैं ने किबार नदी के लग देखे थे और मैं औंधे मुंह गिरा। ४ और पूरब मुंह के फाटक की ओर से ५ परमेश्वर का तेज घर में आया। और आत्मा ने मुझे उठाके भीतरी आंगन

में पहुंचाया और क्या देखता हूं कि पर-
६ मेश्वर के तेज से घर भर गया। और घर के भीतर से मैं ने उस को अपने से कहते सुना और वह मनुष्य मेरे पास खड़ा था॥
७ और उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र इसराएल का घराना उन के राजा, अपने छिनालपन से अपने ऊंचे स्थानों में अपने राजा की लोथों में मेरे सिंहासन के स्थान और पांव के तलवों के स्थान को जहां मैं इसराएल के सन्तानों के मध्य में सदा बास करूंगा और मेरे पवित्र नाम को फिर अशुद्ध
८ न करेंगे। उन्हों ने अपनी डेहरी को मेरी डेहरियों के लग और अपने खंभे मेरे खंभों के लग खड़े करने से और मेरे और उन के बीच में भीत खड़ी करने से अपनी घिनित क्रिया से मेरे पवित्र नाम को अशुद्ध किया है इस लिये मैं ने अपनी रिस में उन्हें नष्ट किया।
९ अब वे अपने छिनालपने को और अपने राजाओं की लोथों को मुझ से दूर करें और मैं सर्वदा उन के मध्य में बास करूंगा॥
१० हे मनुष्य के पुत्र इसराएल के घराने को वह घर दिखा जिस्तें वे अपनी बुराइयों से लजायें और उस के अन्त
११ को नापें। और यदि वे अपने सारे किये हुए कार्य्य से लजायें तो उन्हें घर का डौल और उस का रूप और उस के बाहर भीतर आना जाना और उस की सारी बिधि और उस का सारा डौल और उस की सारी व्यवस्था दिखा और उसे उन की दृष्टि में लिख जिस्तें वे उस के सारे डौल को और उस की सारी बिधिन को पालन करें और उन्हें मानें॥
१२ घर की व्यवस्था यही है पर्बत की चोटी पर उस के चारों ओर सारे सिवाने अति पवित्र होंगे देख घर की व्यवस्था यही है॥

१३ और बेदी का नाप हाथ के समान यह है हाथ एक हाथ चार अंगुल का अर्थात् उस के बीचों बीच एक हाथ और उस की चौड़ाई एक हाथ और उस के कोर चारों ओर बित्ता भर के और बेदी के ऊपर का स्थान यह होगा।
१४ और भूमि पर से नीचे के ठहर लों दो हाथ और उस की चौड़ाई हाथ भर और छोटी ठहर से बड़ी ठहर लों चार
१५ हाथ और चौड़ाई हाथ भर। इसी रीति से बेदी चार हाथ होगी और
१६ बेदी के ऊपर चार सींग होंगे। और बेदी बारह हाथ लम्बी और बारह
१७ चौड़ी चौकोर होगी। और ठहर चौदह हाथ लम्बा और चौदह चौड़ा चौकोर और उस का कोर आधा हाथ और उस की पेंदी हाथ भर और उस की सीढ़ी पूरब ओर होगी॥
१८ और उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि जब कि उस पर बलिदान की भेंट चढ़ाने को और लोहू छिड़कने को उसे बनावेंगे तो बेदी की यह बिधि
१९ होगी। और प्रभु परमेश्वर कहता है कि तू याजक लावियों को जो सादूक के बंश के हों जो मेरी सेवा के लिये पास आते हैं पाप की भेंट के लिये
२० एक बछड़ा देना। और उस में का लोहू लेना और बेदी के चारों सींगों पर और ठहर के चारों कोनों पर और चारों ओर के कोर पर लगाना इस रीति से उसे पावन और शुद्ध करना।
२१ तू पाप की भेंट के बैल को भी लेना और वह उसे पवित्रस्थान के बाहर घर
२२ के ठहराये हुए स्थान में जलावे। और दूसरे दिन पाप की भेंट के लिये निर्दोष बकरियों का एक मेम्ना चढ़ाना और जैसा उन्हों ने बेदी को बैल से शुद्ध

२३ किया तैसा उसे शुद्ध करें। जब तू उसे पवित्र कर चुके तब निष्पय बछड़ा और निष्पय झुंड में का एक मेढ़ा
२४ चढ़ाना। और तू उन्हें परमेश्वर के आगे चढ़ा और याजक उन पर लोन छिड़कें और वे उन्हें बलिदान की भेंट के लिये परमेश्वर के निमित्त चढ़ावें।
२५ तू सात दिन लों प्रतिदिन पाप की भेंट के लिये एक एक बकरी सिद्ध करना और वे एक निर्दोष बछड़ा और झुंड में से एक निष्पय बकरा भी सिद्ध करें।
२६ वे सात दिन लों बेदी का पावन और शुद्ध करें और आप को पवित्र करें।
२७ और जब ये दिन बीतें तब ऐसा होगा कि आठवें दिन और आगे याजक तुम्हारे बलिदान की भेंटें और कुशल की भेंटें बेदी पर चढ़ावें और प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं तुम्हें ग्रहण करूंगा॥

चवालीसवां पर्ब्ब।

तब वह मुझे पूरब ओर के बाहर पवित्रस्थान के फाटक पर लाया और
२ वह बंद था। तब परमेश्वर ने मुझ से कहा कि यह फाटक बंद रहे यह न खोला जाये और न कोई इस में से प्रवेश करे क्योंकि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर इस में से भीतर गया है इस लिये
३ यह बंद रहेगा। यह राजा के लिये है परमेश्वर के आगे भोजन करने के निमित्त राजा उस में बैठेगा और वह उस फाटक के ओसारे के ओर से भीतर जायेगा और उस में से बाहर जायेगा॥

४ तब वह घर के आगे के उत्तर फाटक की ओर से मुझे लाया और मैं ने देखा तो क्या देखता हूं कि परमेश्वर के तेज से परमेश्वर का मन्दिर भर गया और
५ मैं औंधे मुंह गिरा। और परमेश्वर ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र जो कुछ मैं तुझे परमेश्वर के मन्दिर की सारी बिधिन के और सारी बिषय में कहूं तू उन पर अपना मन लगा और अपनी आंखों से देख और अपने कानों से सुन रख और मन्दिर की पैठ को और पवित्रस्थान के हर एक निकास को चीन्ह रख।
६ और इसराएल के इस दंगइत घराने से कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि हे इसराएल के घराने तुम्हारी सारी घिनित क्रिया तुम्हारे लिये बस होवें।
७ इस बात में कि तुम मेरे पवित्रस्थान में मेरे घर को अशुद्ध करने को मन के अखतन: और मांस के अखतन: उपरियों को लाये हो जब कि तुम लोग मेरी रोटी और चिकनाई और लोहू चढ़ाते हो और उन्हों ने मेरे नियम को अपने सारे घिनित कार्य्यों से भंग किया
८ है। और तुम ने मेरी पवित्र बस्तुन की रक्षा न किई परन्तु अपने लिये मेरे पवित्रस्थान में रखवालों को ठहराया है॥

९ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि कोई परदेशी मन का अखतन: और मांस का अखतन: कोई किसी परदेशी में से जो इसराएल के सन्तानों में का है मेरे
१० पवित्रस्थान में प्रवेश न करेंगे। और जब कि इसराएल भटक गये जो मुझ से अपनी मूर्त्तिन के पीछे भटक गये जो लावी मुझ से दूर गये हैं वे अपने अधर्म्म
११ को भोगेंगे। तथापि वे घर के फाटक पर रखवाली और घर की सेवा करने में मेरे पवित्रस्थान के सेवक होंगे वे लोगों के लिये बलिदान की भेंट और बलि को बधन करेंगे और उन की सेवा करने के लिये उन के आगे खड़े होंगे।
१२ प्रभु परमेश्वर कहता है इस कारण कि उन्हों ने उन की मूर्त्तिन के आगे उन की सेवा किई और इसराएल के घराने के अधर्म्म के लिये एक ठोकर थे इस लिये मैं ने अपना हाथ उन के बिरुद्ध

उठाया है और वे अपने अधर्म्म भोगेंगे । १३ और मेरे लिये याजक के पद की सेवा करने को वे पास न आवें और अति पवित्रस्थान में मेरी किसी पवित्र बस्तु के पास न आवें परन्तु वे अपनी लाज १४ और अपनी घिनित क्रिया भोगेंगे । परन्तु घर की सारी सेवा के लिये और उस में के सारे कार्य्य के लिये मैं उन्हें उस का रखवाल बनाऊंगा ॥

१५ परन्तु जब कि इसराएल के सन्तान मुझ से भटक गये तब सादूक के बेटे याजक लावी जो पवित्रस्थान की रक्षा करते थे वे सेवा के लिये मेरे पास आवेंगे प्रभु परमेश्वर कहता है कि चिक-नाई और लोहू चढ़ाने को वे मेरे आगे १६ खड़े होंगे । वे मेरे पवित्रस्थान में प्रवेश करेंगे और वे मेरी सेवा करने को मेरे मंच पर आवेंगे और मेरी आज्ञा की रक्षा १७ करेंगे । और जब वे भीतर के आंगन के फाटकों से प्रवेश करें तब ऐसा होगा कि वे सूती बस्त्र पहिरेंगे और जब लों भीतर के आंगन के फाटकों में वे भीतर सेवा करें तब लों उन पर १८ कुछ ऊन न होवे । वे सिर पर सूती बस्त्र की टोपी देवें और कटि पर सूती जांघिया पहिनें और जिस्से कि पसीना १९ निकले उसे न पहिनें । और जब वे बाहर आंगन में जायें अर्थात् लोगों के पास बाहरी आंगन के भीतर जायें तो जिस बस्त्र में उन्हों ने सेवा किई उन्हें उतारके पवित्र कोठरियों में रक्खें अरु और बस्त्र पहिनें परन्तु अपने बस्त्रों को २० पहिनके लोगों को पवित्र न करें । और वे अपने सिर न मुड़ावें और चोटी बढ़ने न देवें पर वे अपने सिर के बाल कत-२१ रावें । और जब वे भीतरी आंगन में जायें तो कोई याजक दाखरस न पीये । २२ और वे बिधवा को अथवा त्यक्त को अपनी पत्नी न करें परन्तु इसराएल के घराने के सन्तान की कन्या को अथवा उस बिधवा को जो आगे याजक से बियाही गई थी लेवें । और वे पवित्र २३ और अपवित्र बस्तु का भेद मेरे लोगों को सिखावें और अशुद्ध और शुद्ध का ब्यवरा उन्हें बतावें । और बिबाद में २४ वे न्यायी होवें और वे मेरे बिचार की नाईं बिचारें और मेरी सारी सभाओं में वे मेरी ब्यवस्था और बिधिन को पालन करें और मेरे बिश्रामों को पवित्र मानें । और वे अपने को अपवित्र करने को मृतक २५ के पास न जायें परन्तु पिता अथवा माता अथवा पुत्र अथवा पुत्री अथवा भाई अथवा अबियाहिता बहिन के लिये वे अपने को अशुद्ध करें । और उस के पवित्र २६ होने के पीछे वे उस के लिये सात दिन गिनें ॥

और प्रभु परमेश्वर कहता है कि २७ जिस दिन वह पवित्रस्थान में सेवा करने के लिये पवित्रस्थान के भीतरी आंगन में जाये तो वह अपने पाप की भेंट चढ़ावे । और वह उन के लिये अधिकार के लिये २८ होगा मैं ही उन का अधिकार हूं और इसराएल के मध्य तुम लोग उन्हें अधि-कार न देना क्योंकि मैं उन का अधिकार हूं । वे मांस की भेंट और पाप की भेंट २९ और अपराध की भेंट खायें और इसरा-एल में हर एक समर्प्पण किई हुई बस्तु उन की होगी । और सब बस्तु के पहिले ३० फल का श्रेष्ठ और तुम्हारी सारी रीति के अर्प्पण और सभों का हर एक अर्प्पण याजकों का होगा और तुम गूंधा हुआ पिसान का पहिला याजक को देओ जिस्तें वह तुम्हारे घरों पर आशीष पहुंचावे । जो कुछ आप से आप मर ३१ जाये अथवा फाड़ा जाये चाहे पंछी हो चाहे पशु याजक उसे न खाये ॥

पैंतालीसवां पर्व्व

और जब तुम लोग अधिकार के लिये चिट्ठी डालके देश को बांटो तब परमेश्वर के लिये एक नैवेद्य चढ़ाओ अर्थात् देश का पवित्र भाग उस की लम्बाई पचीस सहस्र नल की लम्बाई और चौड़ाई दस सहस्र यही उस के सारे सिवानों की चारों ओर पवित्र २ होगा। इस में से पवित्रस्थान के लिये लम्बाई में पांच सौ नल और चौड़ाई में पांच सौ चारों ओर चौकोर और उस के आसपास के लिये चारों ओर पचास ३ हाथ होवें। और इस नाप से तू पचीस सहस्र लम्बाई और दस सहस्र चौड़ाई नाप और वह पवित्रस्थान अति पवित्र ४ होगा। देश का पवित्र भाग पवित्र-स्थान के सेवक याजकों के लिये जो परमेश्वर की सेवा के लिये आवें वह उन के घरों के लिये एक स्थान और पवित्रस्थान के लिये पवित्रस्थान होगा॥

५ और घर के सेवक लावी भी अपने लिये पचीस सहस्र लम्बाई और दस सहस्र चौड़ाई बीस कोठरियों के अधि-कार के लिये पावें॥

६ और तुम लोग पांच सहस्र चौड़ा और पचीस सहस्र लम्बा पवित्र नैवेद्य के साम्ने नगर का अधिकार ठहराओ वह इसराएल के सारे घराने के लिये होगा॥

७ और पवित्र नैवेद्य के इधर उधर पूरब ओर से पूरब और पश्चिम ओर से पश्चिम और नगर के अधिकार के आगे और उस के आगे कि पवित्र नैवेद्य के इस अलंग और उस अलंग अध्यक्ष के लिये भाग होगा उस की लम्बाई पश्चिम सिवाने से पूरब सिवाने लों उस के भागों में से एक भाग के ८ साम्ने होगा। इसराएल के मध्य उस का अधिकार देश में होगा और मेरे अध्यक्ष मेरे लोगों को फेर न सतावेंगे और वे देश को इसराएल की गोष्ठियों के समान उन्हें देंगे॥

९ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि हे इसराएल के अध्यक्षो तुम्हारे लिये बस होवे प्रभु परमेश्वर कहता है कि अंधेर और लूट दूर करो और न्याय और धर्म्म करो मेरे लोगों में से अपना अपना दूर करना त्यागो। तुम खरी तौल और १० खरा इफाह और खरा बत्त रक्खो। ११ इफाह और बत्त एक ही नाप का होवे जिस्तें एक बत्त में होमर का दसवां भाग समावे और इफाह होमर का दसवां भाग उस की तौल होमर के १२ समान होवे। और शेकल बीस गिरह का होगा और बीस शेकल और पचीस शेकल और पंदरह शेकल तुम्हारा माने: होवे॥

१३ यह नैवेद्य चढ़ाओ अर्थात् एक होमर का इफाह का छठवां भाग गोहूं और एक होमर जव के इफाह का छठवां १४ भाग देना। और तेल की विधि का विषय एक बत्त तेल एक कोर के बत्त का दसवां भाग जो दस बत्त का होमर है क्योंकि दस बत्त का होमर होता है। १५ और प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि उन के लिये मिलाप करने को इसराएल के मोटे चराई के झुंड के दो सौ मेम्नों में से होम की भेंट के लिये और बलिदान की भेंट के लिये और कुशल की भेंटों के लिये एक १६ मेम्ना देओगे। देश के सारे लोग इसरा-एल में अध्यक्ष के लिये यही नैवेद्य देवें॥

१७ और पर्व्वों में अमावास्या और बिश्राम और इसराएल के घराने के सारे पर्व्वों में बलिदान की भेंट और होम की भेंट और पीने की भेंट अध्यक्ष के देने का काम होगा और इसराएल के घराने के लिये मेल करने को वह पाप की भेंट और

होम की भेंट और बलिदान की भेंट और कुशल की भेंट सिद्ध करे॥

१८ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि पहिले मास की पहिली तिथि में तू निष्पय एक बछड़ा लेना और पवित्र-
१९ स्थान को शुद्ध करना। और याजक पाप की भेंट के लोहू में से कुछ लेवे और घर के खंभों पर और बेदी के ठहर के चारों कोनों पर और भीतरी आंगन के
२० फाटक के खंभों पर लगावे। और वैसा ही तू मास की सातवीं तिथि में हर एक चूक करवैये और भोले के लिये करना और इसी रीति से घर से मिलाप कराओ॥

२१ पहिले मास की चौदहवीं तिथि में सात दिन पार जाने का पर्व्व रखना
२२ और अखमीरी रोटी खाई जाये। और उस दिन अध्यक्ष अपने लिये और देश के सारे लोगों के लिये पाप की भेंट के
२३ लिये एक बैल सिद्ध करे। और पर्व्व के सात दिन वह परमेश्वर के लिये एक बलिदान की भेंट निष्पय सात बैल और सात मेंढे सात दिन प्रतिदिन और पाप की भेंट के लिये बकरी का
२४ मेम्ना सिद्ध करे। और एक एक बैल के लिये होम की भेंट के लिये एक इफाह और एक मेंढे के लिये एक इफाह और एक इफाह के लिये एक हिन्न तेल
२५ सिद्ध करे। सातवें मास की पंदरहवीं तिथि में सात दिन के पर्व्व में पाप की भेंट के समान और बलिदान की भेंट के समान और होम की भेंट के समान और तेल के समान वह ऐसा ही करे॥

छियालीसवां पर्व्व।

१ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि भीतरी आंगन के पूरब का फाटक कामकाज के छः दिन बंद रहे परन्तु बिश्राम में खोला जाये और अमावास्या
२ को खोला जाये। और उसी फाटक के बाहर के ओसारे में मार्ग में से अध्यक्ष प्रवेश करेगा और फाटक के खंभे के पास खड़ा होगा और याजक उस के बलिदान की भेंट और कुशल की भेंट सिद्ध करे और वह उस फाटक की डेहरी के पास सेवा करे उस के पीछे वह बाहर जाये परन्तु जब लों सांझ न होवे तब
३ लों फाटक बंद न होवे। वैसा ही बिश्रामों में और अमावास्यों में देश के लोग फाटक के केवाड़े के पास परमेश्वर के आगे सेवा करें॥

४ और जो बलिदान की भेंट अध्यक्ष बिश्राम के दिन में परमेश्वर के निमित्त चढ़ावे सो निष्पय छः मेम्ने और निष्पय
५ एक मेंढा होवे। और होम की भेंट एक मेंढे के लिये एक इफाह और उस के हाथ लगने के समान मेम्नों के लिये होम की भेंट और एक एक इफाह के
६ लिये एक हिन्न तेल। और अमावास्या के दिन निष्पय एक बछवा और छः मेम्ने और एक मेंढा सब निष्पय चढ़ाये
७ जायें। और वह होम की एक भेंट सिद्ध करे एक बैल के लिये एक इफाह और मेंढा के लिये एक इफाह और मेम्नों के लिये जैसा उस के हाथ लगे और एक एक इफाह के लिये एक हिन्न तेल॥

८ और जब अध्यक्ष प्रवेश करे तब वह फाटक के ओसारे में होके प्रवेश करे
९ और उसी मार्ग से बाहर जाये। परन्तु जब देश के लोग बड़े पर्व्वों में परमेश्वर के आगे आवें तब जो जन सेवा करने के लिये उत्तर फाटक से प्रवेश करे सो दक्खिन फाटक से बाहर जाये और जो दक्खिन फाटक से प्रवेश करे सो उत्तर फाटक से बाहर जाये जो जिस फाटक से भीतर आवे सो उस में से बाहर न जाये परन्तु उस के साम्ने से

१० बाहर जाये। और अध्यक्ष उन के मध्य में जब वे भीतर आवें तो वह भीतर आये और जब वे बाहर जावें तब बाहर जावे॥

११ और पर्ब्बों में और उत्सवों में भोजन की भेंट बैल पीछे एक एफाह और मेंढा पीछे एक एफाह और मेम्नों के लिये जैसा उस के हाथ लगे और एक एक एफाह के साथ एक हिन्न तेल।

१२ सो जब अध्यक्ष परमेश्वर के निमित्त मनमन्ता बलिदान की भेंट और कुशल की भेंट सिद्ध करे तब पूरब ओर का फाटक उस के लिये खोला जाये और उस ने जैसा विश्राम में किया था तैसा अपने बलिदान की भेंट और कुशल की भेंटें सिद्ध करे तब वह बाहर जाये और उस के जाने के पीछे एक जन कोई फाटक बंद करे॥

१३ और तू परमेश्वर के निमित्त प्रतिदिन पहिले बरस का निश्चय एक मेम्ना बलिदान की भेंट के लिये सिद्ध करना

१४ हर बिहान को वैसा करना। और हर बिहान को उस के निमित्त होम की भेंट सिद्ध करना एफाह का छठवां भाग और चोखे पिसान में मिलाने को एक हिन्न तेल का तीसरा भाग यह सब परमेश्वर की नित्य की बिधि के

१५ लिये सदा के लिये होम की भेंट। यों वे मेम्ना को और होम की भेंट को और तेल को हर बिहान नित्य की भेंट के लिये सिद्ध करें॥

१६ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि यदि अध्यक्ष अपने किसी बेटे को कुछ दे तो उस का अधिकार उसी के बेटों का होगा उस अधिकार के वे अधिकारी

१७ होंगे। परन्तु यदि वह अपने दासों में से एक को अपने अधिकार में से कुछ दे डाले तो छुटकारे के बरस लों वह उस का होगा और उस के पीछे वह अध्यक्ष कने फिर जायेगा परन्तु उस का अधिकार उस के बेटों के लिये होगा।

१८ इस्से अधिक अध्यक्ष उन्हें उन के अधिकार में से बाहर करने को अंधेर करके लोगों का अधिकार न लेवे परन्तु वह अपने बेटों को अपने ही अधिकार में से देवे जिस्तें मेरे लोगों में से हर एक जन अपने अपने अधिकार से भिन्न भिन्न न होवे॥

१९ उस के पीछे वह मुझे फाटक के अलंग की पैठ में से याजकों की पवित्र कोठरियों में से लाया जो उत्तर की ओर थी और क्या देखता हूं कि पश्चिम

२० के दोनों अलंग स्थान हैं। तब उस ने मुझ से कहा कि यही स्थान है जहां याजक चूक की भेंट और पाप की भेंट उसिनें जहां वे होम की भेंट को भूनें जिस्तें वे लोगों को पवित्र करने को बाहर के आंगन में न ले जायें॥

२१ फिर वह मुझे बाहर के आंगन में लाया और आंगन के चारों कोनों के लग मुझे चलाया और क्या देखता हूं कि एक एक आंगन के कोनों में एक

२२ एक आंगन। आंगन के चारों कोनों में चालीस हाथ लम्बा और तीस हाथ चौड़ा आंगन से आंगन मिला हुआ उन

२३ के चारों कोने एक ही नाप के। और उन में चारों ओर एक पांती स्थान उन की चारों ओर चार और पांतियों के नीचे चारों ओर उसिन्ने के स्थान थे।

२४ तब उस ने मुझ से कहा कि यह उसिनवैयों के स्थान हैं जहां मन्दिर के सेवक लोगों के बलि को उसिनावेंगे॥

सैंतालीसवां पर्ब्ब

और वह मुझे फेर घर के द्वार पर लाया और क्या देखता हूं कि पूरब ओर से घर की डेहरी के नीचे से पानी

बहते हैं क्योंकि घर का साम्ना पूरब ओर था और पानी घर की दहिनी ओर के नीचे से वेदी के दक्खिन ओर से २ उतरे। फिर वह मुझे उत्तर के फाटक की ओर से बाहर लाया और मुझे बाहर के फाटक लों जो पूरब की ओर है ले गया और क्या देखता हूं कि दहिनी ओर से जल बहते हैं॥

३ और जब वह जन जिस के हाथ में डोरी थी पूरब ओर बाहर गया तो सहस्र हाथ नापा और मुझे पानी में से ४ लाया और पानी घुट्ठी भर थे। फिर उस ने एक सहस्र नापा और मुझे पानी में से लाया और पानी घुठने भर थे फिर उस ने एक सहस्र नापा और मुझे उस में से लाया और पानी कटि लों ५ थे। फिर उस ने एक सहस्र नापा और नदी थी जिस्से मैं पार न हो सका क्योंकि पानी उभड़े और पैरने के जल हुए एक नदी जिस्से पार न हो सक्ता था॥

६ और उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र तू ने देखा है तब वह ७ मुझे नदी के तीर फिरवा लाया। सो जब मैं फिरा तो क्या देखता हूं कि नदी के तीर इधर उधर बहुत से पेड़ ८ थे। तब उस ने मुझ से कहा कि ये जल पूरब देश की ओर बहते हैं और बन में उतरके समुद्र में जाते हैं और ९ जल को अच्छा करेंगे। फिर ऐसा होगा कि जहां कहीं ये दो नदियां बहेंगी हर एक जीवधारी जो उधर से चलते हैं जीयेंगे और इन पानियों के उधर जाने से बहुत ही मछलियां होंगी क्योंकि वे अच्छी होंगी और जहां कहीं नदी पहुंचती है तहां की हर एक १० वस्तु जीयेगी। और ऐसा होगा कि मछुवे उस पर ऐनजदी से ऐनइगलैम लों खड़े होंगे जाल फैलाने के लिये स्थान होंगे उन की मछलियां उन की रीति के समान महासागर की मछलियों की नाईं अति बहुत होंगी। ११ उस के दहले के स्थान और उस के दलदल चंगे न होंगे वे खारी के लिये होंगे। १२ और नदी के दोनों पार तीर पर भोजन के सारे पेड़ उगेंगे उन के पत्ते न मुरझायेंगे और उन के फल न मिटेंगे अपने अपने मास के समान नये फल लावेंगे क्योंकि उन के जल पवित्रस्थान में से निकले हैं और उस के फल भोजन के लिये और उस के पत्ते औषध के लिये होंगे॥

१३ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि यही सिवाना होगा जिस्से तुम लोग इसराएल की बारह गोष्ठी के समान देश के अधिकारी होगे यूसुफ के दो भाग होंगे। १४ और तुम लोग क्या एक क्या दूसरा उस के अधिकारी होगे जिस के विषय में मैं ने हाथ उठाके तुम्हारे पितरों को दिया है और यह देश अधिकार के लिये तुम्हारा होगा॥

१५ और उत्तर ओर के देश का सिवाना यही होगा खतलून के मार्ग महासमुद्र से जिस्से मनुष्य सिदाद को जाते हैं। १६ हमात और बिरोसाह और सिबरैम जो दमिश्क के और हमात के सिवानों के मध्य में है और हसीर हत्तिकून जो हौरान के सिवाने के लग है। १७ और समुद्र से सिवाने हसरऐनान दमिश्क के सिवाने और उत्तर की ओर उत्तर को और हमात का सिवाना यही उत्तर अलंग है। १८ और पूरब ओर तुम हौरान से और दमिश्क से और जिलिअद से और इसराएल के देश अर्दन के लग से सिवाने से पूरब समुद्र लों यही पूरब अलंग है। १९ और दक्खिन अलंग दक्खिन की ओर से तमर से बिवाद के पानी कादिस में और नदी से महासागर लों

यही उत्तर के अलंग उत्तर की ओर। २० और पश्चिम अलंग भी सिवाने से महासागर मनुष्य के हमात के सन्मुख आने लों यही पश्चिम अलंग होगा॥

२१ इसी रीति से इसराएल की गोष्ठियों के समान तुम अपने लिये देश बांटना। २२ और ऐसा होगा कि तुम लोग अपने लिये और परदेशियों के लिये जो तुम्हें निवास करते हैं जिन के बालक तुम्में उत्पन्न होंगे उस पर चिट्ठी डालके अधिकार के लिये बांट लेओ और वे इसराएल के सन्तानों में देश में उत्पन्न हुओं की नाईं होंगे वे इसराएल की गोष्ठियों में तुम्हारे साथ अधिकार पावेंगे। २३ और प्रभु परमेश्वर कहता है कि ऐसा होगा कि जिस गोष्ठी में परदेशी रहते हैं उस में तुम उन का अधिकार उन्हें देना॥

अठतालीसवां पर्ब्ब।

१ अब गोष्ठियों के नाम ये हैं उत्तर के अन्त से खतलून के मार्ग के सिवाने लों जैसा कि कोई हमात इसरऐनान को जाता है उस सिवाने लों और उत्तर की ओर दमिशक का सिवाना हमात के सिवाने लों दान का भाग होगा क्योंकि यही उस के पूरब और पश्चिम अलंग २ हैं। और दान के सिवाने के लग पूरब अलंग से पश्चिम अलंग यसर का भाग ३ होगा। और यसर के सिवाने के लग पूरब अलंग से पश्चिम अलंग लों नफ़४ताली का। और नफ़ताली के सिवाने के लग पूरब ओर से पश्चिम अलंग लों ५ मुनस्सी का। और मुनस्सी के सिवाने के लग पूरब अलंग से पश्चिम अलंग लों ६ इफ़रायम का। और इफ़रायम के सिवाने के लग पूरब अलंग से पश्चिम अलंग ७ लों रूबिन का। और रूबिन के सिवाने के लग पूरब अलंग से पश्चिम अलंग लों यहूदाह का॥

८ और यहूदाह के सिवाने के लग पूरब अलंग से पश्चिम अलंग लों उन की भेंट होगी जो वे पचीस सहस्र नल चौड़ाई में और लम्बाई में एक और भाग के समान पूरब अलंग से पश्चिम अलंग लों चढ़ावेंगे और पवित्रस्थान उस के मध्य में होगा। ९ परमेश्वर के लिये जो नैवेद्य तुम लोग चढ़ाओगे सो पचीस सहस्र नल लम्बाई में और दस सहस्र चौड़ाई में होगा। १० और उन के लिये अर्थात् याजकों के लिये यही पवित्र नैवेद्य होगा उत्तर ओर पचीस सहस्र लम्बाई और पश्चिम ओर दस सहस्र चौड़ाई और पूरब ओर दस सहस्र चौड़ाई और दक्खिन ओर पचीस सहस्र लम्बाई और उस के मध्य में परमेश्वर के लिये पवित्रस्थान होगा। ११ पवित्र किये गये सादूक के बेटे याजक के लिये होगा जिन्हों ने मेरी विधिन को पाला है और लावियों के समान भटक न गये जब कि इसराएल के सन्तान भटक गये थे। १२ और देश का नैवेद्य जो चढ़ाया जायेगा सो लावियों के सिवाने के लग उन के लिये एक अति बड़ी पवित्र वस्तु होगी॥

१३ और याजकों के सिवाने के साम्हे लावियों का पचीस सहस्र लम्बाई में और दस सहस्र चौड़ाई में और सारी लम्बाई पचीस सहस्र और चौड़ाई दस सहस्र होगी। १४ और वे उस में से कुछ न बेचें और न पलटें और देश का पहिला फल अलग न करें क्योंकि परमेश्वर के लिये पवित्र है॥

१५ और जो पांच सहस्र पचीस सहस्र के आगे चौड़ाई में बचा है सो नगर के रहने के और आसपास के गांवों के स्थानों के लिये आसपास का सामान्य स्थान होगा और नगर उसी के मध्य में होगा। १६ और यही उस के नाप होंगे

उत्तर अलंग साढ़े चार सहस्र और दक्खिन अलंग साढ़े चार सहस्र और पूरब अलंग साढ़े चार सहस्र और पच्छिम अलंग १७ साढ़े चार सहस्र। और नगर के आस-पास उत्तर की ओर अढ़ाई सौ और दक्खिन ओर अढ़ाई सौ और पच्छिम ओर अढ़ाई सौ होगा॥

१८ और पवित्र भाग के सन्मुख उबरे हुए की लम्बाई में पूरब ओर दस सहस्र और पच्छिम ओर दस सहस्र होगा और वह पवित्र नैवेद्य के सन्मुख होगा और उस की बढ़ती नगर के सेवकों के १९ भोजन के लिये होगी। और जो नगर की सेवा करते हैं सो इसराएल की सारी गोष्ठियों में से उस की सेवा करेंगे॥

२० वह सारा नैवेद्य पचीस सहस्र इधर और पचीस सहस्र उधर होगा और तुम उस पवित्र नैवेद्य को चौकोर नगर के २१ अधिकार के साथ चढ़ाना। और पवित्र नैवेद्य की इस अलंग और उस अलंग और पूरब सिवाने की ओर नैवेद्य का पचीस सहस्र के सन्मुख नगर के अधिकार और पच्छिम ओर पचीस सहस्र के सन्मुख पच्छिम सिवाने की ओर अध्यक्ष के भागों के सन्मुख बचे हुए अध्यक्ष का होगा और घर का पवित्र-२२ स्थान उस के मध्य में होगा। और लावियों के अधिकार से और नगर के अधिकार से और जो अध्यक्ष का है उस के मध्य में से यहूदाह के सिवाने के मध्य और बिनयमीन के सिवाने के मध्य अध्यक्ष के लिये होगा॥

२३ और उबरी हुई गोष्ठियां पूरब अलंग से पच्छिम अलंग बिनयमीन का भाग २४ होगा। और बिनयमीन के सिवाने के लग पूरब अलंग से पच्छिम अलंग लों २५ शमऊन का होगा। और शमऊन के सिवाने के लग पूरब अलंग से पच्छिम २६ अलंग लों इशकार का। और इशकार के सिवाने के लग पूरब अलंग से पच्छिम २७ अलंग लों जबुलून का। और जबुलून के सिवाने के लग पूरब अलंग से पच्छिम २८ अलंग लों जद का। और जद के सिवाने के लग दक्खिन अलंग की दक्खिन ओर और सिवाने तमर से झगड़े के जल कादिस में और नदी के महासागर लों होगा॥

२९ तुम इसी देश को इसराएल की गोष्ठियों के अधिकार के लिये चिट्ठी डालके बांटना और प्रभु परमेश्वर कहता है कि यही उन के भाग हैं॥

३० और उत्तर अलंग नगर के ये निकास ३१ साढ़े चार सहस्र नाप। और नगर के फाटक इसराएल की गोष्ठियों के नाम के समान होंगे उत्तर अलंग तीन फाटक रूबिन का एक फाटक और यहूदाह का एक फाटक और लावी का एक फाटक। ३२ और पूरब अलंग साढ़े चार सहस्र और तीन फाटक यूसुफ का एक फाटक बिनयमीन का एक फाटक दान का ३३ एक फाटक। दक्खिन अलंग साढ़े चार सहस्र नाप और तीन फाटक अर्थात् शमऊन का एक फाटक इशकार का एक फाटक जबुलून का एक फाटक। ३४ पच्छिम अलंग साढ़े चार सहस्र और उन के तीन फाटक जद का एक फाटक यसर का एक फाटक नफताली का एक ३५ फाटक। चारों ओर अठारह सहस्र नाप था और उस दिन से उस नगर का नाम होगा कि परमेश्वर वहां है॥

दानिएल भविष्यद्वक्ता की पुस्तक ।

पहिला पर्व्व ।

१ यहूदाह के राजा यहूयकीम के राज्य के तीसरे बरस बाबुल के राजा नबूखुदनज़र ने यरूसलम पर आके उसे घेर २ लिया । और प्रभु ने यहूदाह के राजा यहूयकीम को अपने मन्दिर के कितने पात्र समेत उस के हाथ में कर दिया जो वह शिनआर देश में अपने देव के मन्दिर में ले गया और उस ने उन पात्रों को अपने देव के मन्दिर के भंडार में पहुंचाया ॥

३ और राजा ने अपने नपुंसकों के प्रधान अश्पिनाज़ से कहा कि इसराएल के सन्तानों में से और राजा के वंशों में से ४ ला । अर्थात् लड़कों को जो निष्पाप और सुन्दर और सारी बुद्धि में चतुर और ज्ञान में निपुण और विद्या में प्रवीण हों जो राजभवन में खड़े होने को और कसदियों की विद्या और भाषा सिखलाने ५ के योग्य हों । और राजा ने अपने भोजन में से और दाखरस में से जो वह पीता था उन के लिये प्रतिदिन का भोजन ठहराया और तीन बरस लों उन का प्रतिपाल किया जिस्तें उस के पीछे वे राजा के आगे खड़े होवें ॥

६ सो उन में यहूदाह के सन्तान में से दानिएल और हननियाह और मीसाएल ७ और अज़रियाह थे । और नपुंसकों के प्रधान ने उन के और नाम रक्खे अर्थात् दानिएल का बेल्तशसर और हननियाह का सदरख और मीसाएल का मीशक और अज़रियाह का अबदनजू नाम रक्खा ॥

८ परन्तु दानिएल ने अपने मन में ठाना कि मैं अपने को राजा की रसोई के भाग से और उस के पान के दाखरस से अशुद्ध न करूंगा इस लिये उस ने नपुंसकों के प्रधान से चाहा कि मैं अपने को अशुद्ध न करूं । अब ईश्वर ९ ने दानिएल को नपुंसकों के प्रधान की दृष्टि में अनुग्रह और कोमल प्रेम दिया । तब नपुंसकों के प्रधान ने दानिएल से १० कहा कि मैं अपने प्रभु राजा से डरता हूं जिस ने तुम्हारे लिये खान पान ठहराया है वह किस लिये तुम्हारे मुंह को तुम्हारे संगियों के मुंह से मलीन देखे तब तुम राजा के आगे मेरे सिर को जोखिम में लाओगे ॥

तब दानिएल ने मलज़ार से कहा ११ जिसे नपुंसकों के प्रधान ने दानिएल और हननियाह और मीसाएल और अज़रियाह का करोड़ा किया था । कि १२ मैं तेरी बिनती करता हूं दस दिन लों अपने दासों को परख ले कि हमें खाने को तरकारी और पीने को जल दिला । तब हमारे रूप और उन लड़कों के रूप १३ जो राजा की रसोई से भाग खाते हैं तेरे आगे देखे जायें और जैसा तू देखे तैसा अपने सेवकों से कर । सो इस १४ बात में उस ने उन की मान लिई और दस दिन लों उन्हें परखा । और दस १५ दिन पीछे उन के रूप उन सब लड़कों के रूपों से जो राजा की रसोई से भाग खाते थे सुन्दर और पुष्ट देख पड़े । तब १६ मलज़ार ने उन के भोजन के भाग को और उन के पीने के दाखरस को ले लिया और उन्हें तरकारी दिई ॥

सो ईश्वर ने इन चार लड़कों को १७ ज्ञान और सारी विद्या और बुद्धि में पहुंच दिई और दानिएल को सारे दर्शनों और स्वप्नों में समझ दिई ॥

१८ जब कि वे दिन बीत गये जिन के विषय में राजा ने कहा था कि उन्हें भीतर लावें तब नपुंसकों का प्रधान उन्हें नबूखुदनजर के आगे ले गया।

१९ और राजा ने उन से बातचीत किई और उन सभों में से कोई दानिएल और हनानियाह और मीसाएल और अजरियाह के समान न पाया गया सो ये लोग

२० राजा के आगे खड़े रहने लगे। और समझ की और बुद्धि की सारी बातों में जो राजा ने उन से पूछीं तो उस ने उन्हें सारे टोनहों और गणितकारियों से जो उस के समस्त राज्य में थे दस गुणा भला पाया॥

२१ और दानिएल खोरस राजा के पहिले बरस लों जीता रहा॥

दूसरा पर्ब्ब।

१ और नबूखुदनजर के राज्य के दूसरे बरस में नबूखुदनजर ने ऐसे स्वप्न देखे जिन से उस का मन व्याकुल हुआ और

२ उस की नींद उस्से जाती रही। तब राजा ने सारे गणितकारियों और गुणियों और टोनहों और कसदियों को बुलाने की आज्ञा किई जिस्तें वे राजा के स्वप्नों को बतावें सो वे आये और राजा

३ के आगे खड़े हुए। तब राजा ने उन से कहा कि मैं ने एक स्वप्न देखा और उस स्वप्न के जानने को मेरा मन व्याकुल हुआ है॥

४ तब कसदियों ने अरामी बोली में राजा से कहा कि महाराज सदा जीते रहिये अपने दासों से स्वप्न कहिये और हम उस का अर्थ बतावेंगे॥

५ राजा ने उत्तर में कसदियों से कहा कि वस्तु मुझ से जाती रही जो यदि तुम लोग वह स्वप्न अर्थ सहित मुझ से न जनाओगे तो टुकड़े टुकड़े किये जाओगे और तुम्हारे घर घूरे किये जायेंगे। परन्तु यदि तुम लोग स्वप्न

६ और उस का अर्थ बताओगे तो मुझ से दान और प्रतिफल और बड़ी प्रतिष्ठा पाओगे इस लिये स्वप्न और उस का अर्थ मुझ से बताओ॥

७ उन्हों ने फिर उत्तर देके कहा कि राजा अपने दासों से अपना स्वप्न कहें और हम उस का अर्थ बतावेंगे॥

८ राजा ने उत्तर देके कहा कि मैं निश्चय जानता हूं कि तुम लोग समय लिया चाहते हो क्योंकि तुम देखते हो कि

९ वह वस्तु मुझ से जाती रही। परन्तु जो मेरे स्वप्न को मुझ से न बताओगे तो तुम्हारे लिये एक ही आज्ञा है क्योंकि तुम ने झूठी और सड़ी हुई बातें बना रक्खी हैं कि मेरे आगे कहो जब तांईं समय टल जावे सो मुझ से स्वप्न बताओ और मैं जानूंगा कि तुम उस का अर्थ बता सक्ते हो॥

१० कसदियों ने राजा के आगे उत्तर देके कहा कि पृथिवी में ऐसा तो एक मनुष्य भी नहीं जो राजा की बात बता सके क्योंकि न कोई राजा न प्रभु न आज्ञाकारी हुआ जिस ने ऐसी बातें किसी टोनहे अथवा गणितकारी अथवा

११ किसी कसदी से पूछी हों। और वह बात जो राजा पूछता है अति कठिन है और ईश्वरों को छोड़ जिन का बास शरीरों में नहीं कोई नहीं जो उसे राजा के आगे बता सके॥

१२ इस कारण राजा रिसियाके अत्यन्त कोपित हुआ और बाबुल के सारे बुद्धिमानों

१३ को नाश करने की आज्ञा किई। सो बुद्धिमानों को घात करने की आज्ञा निकली तब उन्हों ने दानिएल को और उस के संगियों को घात करने को ढूंढ़ा॥

१४ तब दानिएल ने मंत्र और बुद्धि से राजा की सेना के प्रधान अरयूक को

जो बाबुल के बुद्धिमानों को घात करने १५ के लिये निकला था उत्तर दिया। उस ने राजा की सेना के प्रधान अरयूक को उत्तर दिया और कहा कि राजा की ओर से आज्ञा ऐसी बेग क्यों निकली है तब अरयूक ने वह बात दानिएल १६ को बताई। और दानिएल ने भीतर जाके राजा से बिनती किई कि मुझे अवकाश मिले और मैं राजा को उस का अर्थ बताऊंगा॥

१७ उस के पीछे दानिएल ने अपने घर जाके अपने संगी हनानियाह और मीसा- १८ एल और अजरियाह से कहा। जिस्तें वे इस भेद के विषय में स्वर्ग के ईश्वर के आगे दया मांगें कि बाबुल के बुद्धि-मानों के साथ दानिएल और उस के संगी नाश न होवें॥

१९ तब वह भेद रात के दर्शन में दानि-एल पर खुला तब दानिएल ने स्वर्ग के ईश्वर का धन्य माना॥

२० दानिएल ने उत्तर दिया और कहा कि ईश्वर का नाम सर्वदा धन्य रहे क्योंकि बुद्धि और सामर्थ्य उसी की है। २१ और वह समयों और ऋतुन को पलटता है वह राजाओं को उठा देता है और राजाओं को बैठाता है वह बुद्धिमानों को बुद्धि और समझवैयों को समझ देता २२ है। वह गहिरी और गुप्त बस्तुन को प्रगट करता है वह जानता है कि अंधियारे में क्या है और उंजियाला २३ उस के पास रहता है। हे मेरे पितरों के ईश्वर मैं तेरा धन्य मानता हूं और तेरी स्तुति करता हूं कि तू ने मुझे बुद्धि और पराक्रम दिया है और जो बस्तु हम ने तुझ से चाही तू ने मुझे जनाई क्योंकि तू ने राजा की बात हम पर प्रगट किई॥

२४ इस लिये दानिएल अरयूक के पास गया जिसे राजा ने बाबुल के बुद्धिमानों को नाश करने को ठहराया था और उस्से यों कहा कि बाबुल के बुद्धिमानों को मत मारिये मुझे राजा के आगे ले चलिये और मैं राजा को उस का अर्थ बताऊंगा। तब अरयूक ने दानिएल २५ को राजा के आगे शीघ्र लाके यों बिनती किई कि मैं ने यहूदाह के बंधुओं के लड़कों में से एक को पाया जो राजा को उस का अर्थ बतावेगा॥

राजा ने दानिएल से जिस का नाम २६ बेलतशासर था उत्तर दिया और कहा क्या तू मुझ से उस स्वप्न को जो मैं ने देखा है और उस के अर्थ को बता सक्ता है॥

दानिएल ने राजा के सन्मुख उत्तर २७ दिया और कहा वह भेद जो राजा ने पूछा बुद्धिमान और गणितकारी और टोनहे और भविष्यकथक राजा को बता नहीं सक्ते। परन्तु स्वर्ग में एक ईश्वर २८ है जो भेद प्रगट करता है और उस ने राजा को वह बात जनाई है जो पिछले दिनों में होगी आप का स्वप्न और आप के बिछौने पर के सिर के दर्शन ये हैं। हे राजा तेरे बिछौने २९ पर चिन्ताएं तुझे आ गईं कि आगे को क्या होगा सो वह जो भेद प्रगट करता है तुझे जनावता है कि क्या कुछ होगा। परन्तु यह भेद मुझ पर खुला इस लिये ३० नहीं प्रगट हुआ कि और जीवधारियों से अधिक बुद्धि रखता हूं पर यह इस लिये है कि उस का अर्थ राजा को जनाया जाये और जिस्तें तू अपने मन की चिन्तों को जाने॥

हे राजा तू देखता था और एक ३१ बड़ी मूर्त्ति देखी यही उत्तम चमक की मदा मूर्त्ति तेरे आगे खड़ी हुई और उस की सूरत भयावनी थी। उस मूर्त्ति का ३२

सिर चोखे सोने का उस की छाती और भुजा चांदी की उस का पेट और उस ३३ की जांघें पीतल की। उस की टांगें लोहे की उस के पांव कुछ तो लोहे के ३४ और कुछ माटी के। तू देखता ही था कि एक पत्थर बिना हाथ से खोदा हुआ जो उस मूर्त्ति के लोहे और माटी के पांवों पर लगा और उन्हें टुकड़ा ३५ टुकड़ा किया। तब लोहा और माटी और पीतल और रूपा और सोना सब टुकड़े टुकड़े हो गये और खलिहान के धैती भूसे के समान हुए और पवन उन्हें यहां लों उड़ा ले गया कि उन के लिये स्थान न रहा और वह पत्थर जिस ने उस मूर्त्ति को मारा था एक बड़ा पर्बत बन गया और सारी पृथिवी को भर ३६ दिया। स्वप्न तो यह है और हम राजा के आगे उस का अर्थ बतावेंगे॥

३७ हे राजा तू राजाओं का राजा है क्योंकि स्वर्ग के ईश्वर ने तुझे एक राज्य और पराक्रम और बल और ऐश्वर्य्य दिया ३८ है। और जहां जहां मनुष्य के बंश बसते हैं जंगली पशुन को और आकाश के पक्षियों को उस ने तेरे हाथ में किया है और तुझे उन सभों पर आज्ञाकारी कर ३९ दिया है यह सोने का सिर तू है। और तेरे पीछे एक और राज्य तुझ से घाट उठेगा और एक तीसरा राज्य पीतल का जो सारी पृथिवी पर प्रभुता करेगा। ४० और चौथा राज्य लोहे के समान दृढ़ होगा और जिस रीति से कि लोहा तोड़ डालता है और सब को बश में करता है और जैसा कि लोहा सब बस्तुन को टुकड़े टुकड़े करता है वह टुकड़े टुकड़े ४१ करेगा और चूर करेगा। और जैसा कि तू ने देखा है कि पांव और अंगूठे कुछ तो कुम्हार की माटी के और कुछ लोहे के सो राज्य का बिभाग किया जायेगा परन्तु उस में लोहे का बल होगा और जैसा कि तू ने देखा कि लोहा माटी ४२ से मिला हुआ था। और पांव के अंगूठे कुछ लोहे के और कुछ माटी के सो वह राज्य कुछ तो दृढ़ और कुछ निर्बल ४३ होगा। और जैसा कि तू ने देखा कि लोहा माटी से मिला हुआ था वे अपने को मनुष्य के बंश से मिलावेंगे परन्तु वे आपस में मिले न रहेंगे जिस रीति ४४ से लोहा माटी से नहीं मिलता। और इन राजाओं के दिनों में स्वर्ग का ईश्वर एक राज्य स्थापित करेगा जो कभी नष्ट न होगा और उस का राज्य और लोगों पर न छोड़ा जायेगा परन्तु वह टुकड़ा टुकड़ा करेगा और इन राज्यों को भस्म करेगा और आप सर्बदा रहेगा। ४५ जैसा कि तू ने देखा कि पत्थर पहाड़ से बिना हाथ से खोदा हुआ और कि उस ने उस लोहे और पीतल और माटी और रूपे और सोने को टुकड़े टुकड़े किया सो महान ईश्वर ने राजा को वह बात जनाई जो इस के पीछे होगी और स्वप्न निश्चय है और उस का अर्थ सत्य॥

४६ तब राजा नबूखुदनजर मुंह के बल गिरा और दानिएल को दण्डवत किई और आज्ञा किई कि उस को भेंट और ४७ सुगंध चढ़ावें। राजा ने दानिएल को उत्तर दिया और कहा इस में कुछ सन्देह नहीं कि तुम्हारा ईश्वर ईश्वरों का ईश्वर और राजाओं का प्रभु है और भेदों का प्रगट करनेहारा है कि तू इस भेद को प्रगट कर सका॥

४८ तब राजा ने दानिएल को महान पुरुष किया और उसे बड़े बड़े दान दिये और उसे बाबुल के सारे प्रदेशों का आज्ञाकारी किया और बाबुल के समस्त बुद्धिमानों पर और अध्यक्षों पर

४९ प्रधान किया। तब दानिएल के बिनय करने से राजा ने सदरक और मीसक और अबदनजू को बाबुल के प्रदेश के कार्य्यों पर करोड़ा किया परन्तु दानिएल राजा की डेवढ़ी पर रहा॥

तीसरा पर्ब्ब।

१ नबूखुदनज़र राजा ने एक सोने की मूर्त्ति बनाई जिस की ऊंचाई साठ हाथ थी और उस की चौड़ाई छः हाथ उस ने उसे बाबुल के प्रदेश में दूरा के चौगान में स्थापित किया॥

तब नबूखुदनज़र राजा ने अध्यक्षों और प्रधानों और सेनापतिन और न्यायियों और भंडारियों और मंत्रियों और अक़लेदारों और प्रदेशों के सारे आज्ञाकारियों को एकट्ठा करने को भेजा कि उस मूर्त्ति की प्रतिष्ठा के लिये जिसे राजा नबूखुद-

३ नज़र ने स्थापित किया था आवें। तब प्रधान और अध्यक्ष और सेनापति और न्यायी और भंडारी और मंत्री और अक़लेदार और प्रदेशों के सारे आज्ञाकारी उस मूर्त्ति की प्रतिष्ठा के लिये जिसे नबूखुदनज़र राजा ने स्थापित किया था एकट्ठे हुए और उस मूर्त्ति के आगे जिसे नबूखुदनज़र राजा ने स्थापित किया था खड़े हुए॥

४ तब एक ढंढोरिये ने बड़े शब्द से पुकारा कि हे लोगो और जातियो और

५ भाषाओ तुम्हें आज्ञा होती है। कि जिस समय तुम लोग सींगा और बांसुरी और बीणा और भेरी और ढोल और सितार और हर एक प्रकार के बाजों का शब्द सुनो तुम औंधे गिरो और उस सोने की मूर्त्ति को जिसे नबूखुदनज़र राजा ने स्थापित किया है पूजा करो।

६ और जो कोई औंधा गिरके पूजा न करेगा उसी घड़ी वह आग के जलते

७ भट्ठे में डाला जायेगा। सो उसी घड़ी जब सब लोगों ने सींगा और बांसुरी और बीणा और भेरी और ढोल और हर एक प्रकार के बाजों का शब्द सुना सारे लोग और जाति और भाषा औंधे गिरे और उस सोने की मूर्त्ति को जिसे नबूखुदनज़र राजा ने स्थापित किया था पूजा किई॥

८ सो उस समय में कितने कसदी पास आये और यहूदियों पर दोष लगाया।

९ और नबूखुदनज़र राजा के आगे बिन्ती किई कि हे राजा सदा जीयो। हे राजा

१० तू ने आज्ञा किई कि हर एक मनुष्य जो सींगा और बांसुरी और बीणा और भेरी और ढोल और सितार और हर एक प्रकार के बाजों का शब्द सुने सो औंधे गिरके उस सोने की मूर्त्ति को पूजा करे।

११ और जो कोई औंधे गिरके पूजा न करेगा सो आग के जलते भट्ठे में डाला जायेगा।

१२ कितने यहूदी हैं जिन्हें तू ने बाबुल के प्रदेश के कार्य्यों पर करोड़ा किया है उन में सदरक और मीसक और अबदनजू हैं हे राजा ये मनुष्य तेरा आदर नहीं करते थे तेरे देव की सेवा नहीं करते और उस सोने की मूर्त्ति की पूजा जो तू ने स्थापित किया नहीं करते हैं॥

१३ तब नबूखुदनज़र ने कोप और क्रोध से आज्ञा किई कि सदरक और मीसक और अबदनजू को लावें तब वे इन मनुष्यों को राजा के आगे लाये। नबू-

१४ खुदनज़र ने उत्तर दिया और उन से कहा कि अरे सदरक और मीसक और अबदनजू क्या यह सच है कि तुम मेरे देवों की सेवा नहीं करते और उस सोने की मूर्त्ति को जिसे मैं ने स्थापित किया पूजा नहीं करते।

१५ सो यदि तुम सिद्ध रहो कि जिस घड़ी सींगा और बांसुरी और बीणा और भेरी और ढोल और सितार और हर एक प्रकार के बाजों का शब्द

सुनके औंधे गिरो और उस मूर्त्ति को जो मैं ने बनाई है पूजा करो तो भला है परन्तु यदि तुम पूजा न करोगे तो तुम उसी घड़ी आग के एक जलते भट्ठे में डाले जाओगे और वह कौन सा ईश्वर है जो तुम्हें मेरे हाथ से बचावेगा ॥

१६ सदरक और मीसक और अबदनजू ने उत्तर देके राजा से कहा कि हे नबूखुदनजर हम इस बिषय में तुझ से उत्तर

१७ देने में चिन्ता नहीं करते। यदि हो तो हमारा ईश्वर जिस की हम सेवा करते हैं हमें उस आग के जलते भट्ठे से बचा सक्ता है और हे राजा वही हमें तेरे हाथ से

१८ छुड़ावेगा। परन्तु यदि नहीं तो हे राजा तुझे जान पड़े कि हम तेरे देवों की सेवा न करेंगे और न उस सोने की मूर्त्ति की जिसे तू ने स्थापित किया है पूजा करेंगे ॥

१९ तब नबूखुदनजर कोपमय हुआ और उस के मुंह का रूप सदरक और मीसक और अबदनजू पर पलट गया और उस ने कहा और आज्ञा किई कि वे भट्ठे को उस परिमाण से जो उस का था

२० सात गुण अधिक धधका देवें। फिर उस ने अपनी सेना के शक्तिमान बलवानों को आज्ञा किई कि सदरक और मीसक और अबदनजू को बांधके जलते भट्ठे में डाल देवें ॥

२१ तब ये मनुष्य अपने अंगरखों और पायजामों और पगड़ियों और बस्त्रों के संग बांधे गये और जलते भट्ठे के मध्य

२२ में डाले गये। इस कारण कि राजा की आज्ञा आवश्यक थी और भट्ठा अत्यन्त तप्त था उस आग की लवर ने उन मनुष्यों को जिन्हों ने सदरक और मीसक और अबदनजू को उठाया था

२३ नाश किया। और ये तीन मनुष्य सदरक और मीसक और अबदनजू बंधे हुए उस आग के जलते भट्ठे के मध्य में गिर पड़े ॥

२४ तब नबूखुदनजर राजा आश्चर्य्यित हुआ और शीघ्रता से उठके बोला और अपने मंत्रियों से कहा क्या हम ने तीन जन को बांधके जलती आग के मध्य में नहीं डाला उन्हों ने राजा को उत्तर

२५ देके कहा कि सत्य है हे राजा। उस ने उत्तर दिया और कहा कि देखो मैं चार जन को छूटा हुआ आग के मध्य में फिरते देखता हूं और उन को कुछ हानि नहीं है और चौथे का डौल ईश्वर के पुत्र के ऐसा है ॥

२६ तब नबूखुदनजर जलते भट्ठे के द्वार पर आया और यों बोला और पुकारा कि हे सदरक और मीसक और अबदनजू अत्यन्त महान ईश्वर के सेवको बाहर निकलो और निकल आओ तब सदरक मीसक और अबदनजू आग के मध्य से

२७ निकल आये। और अध्यक्षों और प्रधानों और सेनापतिन और राजा के मंत्रियों ने एकट्ठे होते इन मनुष्यों को देखा जिन के शरीरों पर आग का कुछ पराक्रम न था और उन के सिर का एक बाल भी न झौंसा था और उन के बस्त्र न बदले थे और उन पर आग की बास न लगी थी ॥

२८ नबूखुदनजर ने उत्तर दिया और कहा कि सदरक और मीसक और अबदनजू का ईश्वर धन्य है जिस ने अपने दूत को भेजा और अपने सेवकों को जो उस पर भरोसा रखते थे बचाया और राजा की बात को पलट दिया और उन के शरीरों को यत्न से रक्खा कि वे अपने ही ईश्वर को छोड़ किसी देव की

२९ सेवा और पूजा न करें। सो मेरी आज्ञा यह है कि हर एक लोग और जाति और भाषा जो सदरक और मीसक और

अबदनजू के ईश्वर के विषय में कोई अनुचित बात कहेंगे उन के टुकड़े टुकड़े किये जायेंगे और उन के घर घूरे किये जायेंगे क्योंकि ऐसा कोई ईश्वर नहीं
३० जो इस रीति से बचा सके। तब राजा ने सदरक और मीसक और अबदनजू को बाबुल के प्रदेश में बढ़ाया॥

चौथा पर्ब्ब।

१ नबूखुदनजर राजा सारे लोगों और जातों और भाषाओं को जो सारी पृथिवी में बसते हैं यह कहता है कि
२ तुम पर अधिक कुशल होवे। मुझे अच्छा लगा कि उन चिन्हों और आश्चर्यों को जो महान ईश्वर ने मुझ
३ पर किया तुम्हें दिखाऊं। उस के लक्षण क्या ही बड़े और उस के आश्चर्य कैसे शक्तिमान उस का राज्य सनातन का राज्य और उस की प्रभुता पीढ़ी से पीढ़ी लों॥

४ मैं नबूखुदनजर अपने घर में चैन करता था और अपने राजभवन में
५ लहलहाता था। मैं ने एक स्वप्न देखा जिस ने मुझे डराया और बिछौने पर के सोच और सिर के दर्शनों से व्याकुल
६ हुआ। तब मैं ने आज्ञा किई कि बाबुल के सारे बुद्धिमानों को मेरे आगे लावें कि वे स्वप्न का अर्थ मुझे बतावें।
७ सो टोन्हे और गणितकारी और कसदी और भविष्यकथक आये और मैं ने उन के आगे स्वप्न कहा परन्तु उन्हों ने मुझ
८ से उस का अर्थ न बताया। परन्तु अन्त में दानिएल मेरे आगे आया जिस का नाम मेरे देव के नाम के समान बेलतासर था उस में पवित्र ईश्वरों का आत्मा है और उस के आगे मैं ने अपना स्वप्न कहा॥

९ हे बेलतासर टोन्हे के प्रधान मैं जानता हूं कि पवित्र ईश्वरों का आत्मा तुझ में है और कोई भेद तुझे व्याकुल नहीं करता उस स्वप्न का दर्शन जो मैं ने देखा है और उस का अर्थ मुझे बता।
१० सो मेरे बिछौने पर के सिर का दर्शन यह था मैं देखता था और क्या देखता हूं कि पृथिवी के मध्य में एक पेड़ है
११ जिस की ऊंचाई बड़ी थी। और वह पेड़ बढ़के पोढ़ हुआ और उस की ऊंचाई स्वर्ग लों पहुंची और उस की
१२ दृष्टि सारी पृथिवी के अन्त लों। उस के पत्ते सुन्दर थे और उस का फल बहुत और उस में सब के लिये भोजन था जंगली पशु उस के नीचे छाया पावते थे और आकाश के पंछी उस की डालों पर बसते थे और सारे जीवधारी उस्से
१३ भोजन पाते थे। मैं अपने बिछौने के सिर के दर्शन में क्या देखता हूं कि एक पहरू और एक धर्म्मी जन स्वर्ग से
१४ उतरा। वह पराक्रम से पुकारके यों बोला कि उस पेड़ को काट डालो और उस की डालियां छांटो उस के पत्ते झाड़ो और उस का फल बिथरा दो पशु उस के तले से जाते रहें और पक्षी
१५ उस की डालों पर से। तथापि उस की जड़ के खूंथ को पृथिवी में हां लोहे और पीतल के बंधन से खेत की कोमल घास में रहने दो और आकाश की ओस से भीगे और उस का भाग पशुन के संग पृथिवी की घास होवे।
१६ उस का मन मनुष्य के से पलट जाये और पशु का मन उसे दिया जाये और
१७ उस पर सात समय बीत जायें। सो पहरूओं की आज्ञा से यह बात है और पवित्र जनों की बात से यह वस्तु है जिस्ते जीवते जानें कि अत्यन्त महान मनुष्यन के राज्य में प्रभुता करता है और जिसे वह चाहता है उसे देता है और उस पर अत्यन्त निन्दित मनुष्यों

१८ को बेठाता है। मैं नबूखुदनजर राजा ने यह स्वप्न देखा है सो हे बेलतासर तू उस का अर्थ बर्णन कर क्योंकि मेरे राज्य के सारे बुद्धिमानों में सामर्थ्य नहीं कि मेरे आगे उस का अर्थ करें परन्तु तू सक्ता है क्योंकि पवित्र ईश्वरों का आत्मा तुझ में है॥

१९ तब दानिएल जिस का नाम बेलतासर था एक घड़ी भर आश्चर्य्यित हुआ और उस की चिन्तों ने उसे व्याकुल किया तब राजा बेलतासर से यह कहके बोला कि स्वप्न अथवा उस का अर्थ तुझे व्याकुल न करे बेलतासर ने उत्तर देके कहा मेरे प्रभु यह स्वप्न उन के लिये होवे जो तुझ से बैर रखते हैं और

२० उस का अर्थ तेरे शत्रुन पर। जो पेड़ तू ने देखा कि उगा और पोढ़ हुआ जिस की ऊंचाई स्वर्ग लों पहुंची और

२१ उस की दृष्टि सारी पृथिवी लों। जिस के पत्ते सुन्दर थे और जिस का फल बहुत जिस में सब के लिये भोजन था जिस के तले बनैले पशु रहते थे और जिस की डालों पर आकाश के पंछी

२२ बसेरा लेते थे। सो हे राजा तू है जो बढ़के पोढ़ हुआ है क्योंकि तेरी महिमा बढ़ गई और आकाश लों पहुंची और

२३ तेरा राज्य पृथिवी के अन्त लों है। और जैसा कि राजा ने एक पहरू और एक धर्म्मी को स्वर्ग से यह कहते हुए उतरते देखा कि उस पेड़ को काट डालो और उसे नाश करो तथापि जड़ों के खूंथ को पृथिवी में हां लोहे और पीतल के बंधन से खेत की कोमल घास में पड़ा रहने दो और आकाश की ओस से भीगे और उस का भाग बनैले पशुन के संग होवे यहां लों कि सात समय उस

२४ पर बीत जायें। सो हे राजा उस का अर्थ यह है और अत्यन्त महान की आज्ञा यह है जो मेरे प्रभु राजा पर

२५ आई है। सो वे तुझे मनुष्यों में से हांक देंगे और तेरा बसाव बनैले पशुन के संग होगा और वे तुझे बैलों की नाईं घास खिलावेंगे और आकाश की ओस से भिगावेंगे और सात समय तुझ पर बीतेंगे जब लों तू जाने कि अत्यन्त महान मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता है और उसे जिसे चाहता है देता है।

२६ और जैसा कि उन्हों ने उस पेड़ की जड़ों के खूंथ छोड़ने की आज्ञा किई तब तू जान जायेगा कि स्वर्गों का राज्य है तेरा राज्य तेरे लिये निश्चय

२७ बना रहेगा। सो हे राजा मेरा मंत्र मान लीजिये और अपने पापों को धर्म्म से और अपने कुकर्म्मों को कंगालों पर दया करने से दूर कीजिये क्या जाने तेरी कुशलता की बढ़ती होय॥

२८ सब कुछ नबूखुदनजर राजा पर

२९ पड़ीं। बारह मास के अन्त में वह बाबुल के राज्य के भवन पर फिरता

३० था। राजा बोला और कहा क्या यह वह महा बाबुल नहीं है जिसे मैं ने अपने पराक्रम के बल से और अपनी महिमा की प्रतिष्ठा के लिये राज्य के

३१ घर के लिये बनाया। राजा के मुंह में यह बात होते ही आकाशबाणी हुई कि हे राजा नबूखुदनजर तुझे कहा जाता

३२ है कि राज्य तुझ से जाता रहा। और वे तुझे मनुष्यों में से हांक देंगे और तेरा बसाव बनैले पशुन में होगा वे तुझे बैलों की नाईं घास खिलावेंगे और तुझ पर सात समय बीत जायेंगे यहां लों कि तू जाने कि अत्यन्त महान मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता है और जिसे चाहता है वह उसे देता है॥

उसी घड़ी नबूखुदनजर पर यह बात सम्पूर्ण हुई और वह मनुष्यों में से निकाला

गया और बैलों की नाईं घास खाने लगा और उस की देह आकाश की ओस से भीगने लगी यहां लों कि उस के बाल गिद्ध की नाईं बढ़े और उस के नह पंछियों के समान ॥

३४ और उन दिनों के पीछे मुझ नबूखुदनजर ने स्वर्ग की ओर आंख उठाई और मेरी बुद्धि फिर मुझे मिली और मैं ने अत्यन्त महान का धन्य माना और स्तुति और उस की प्रतिष्ठा किई जो सर्व्वदा लों जीता है जिस की प्रभुता सनातन की प्रभुता है और जिस का ३५ राज्य पीढ़ी से पीढ़ी लों। और पृथिवी के सारे बासी तुच्छ की नाईं गिने जाते और वह अपनी इच्छा के समान स्वर्ग की सेना में और पृथिवी के बासियों में करता है और कोई उस का हाथ रोक नहीं सक्ता अथवा उस्से कहे कि ३६ तू क्या करता है। उसी समय मेरा बिचार मुझ में फिर आया और मेरे राज्य के बिभव के लिये मेरी प्रतिष्ठा और बिभव मुझ में फिर आया और मेरे मंत्री और मेरे प्रधानों ने मुझे ढूंढ़ा और मैं अपने राज्य पर स्थिर हुआ और अत्युत्तम महिमा मेरे लिये अधिक हुई।

३७ अब मैं नबूखुदनजर धन्य मानता और स्तुति करता हूं और स्वर्ग के राजा की प्रतिष्ठा करता हूं उस के सारे कार्य्य सत्य और उस की चाल न्याय सहित हैं और जो अभिमान में चलते हैं उन्हें निन्दित कर सक्ता है ॥

पांचवां पर्व्व।

बेलशाजर राजा ने अपने सहस्र प्रधानों के लिये एक बड़ी जेवनार किई और उन सहस्रों के आगे दाखरस २ पीया। बेलशाजर ने जब दाखरस चीखा तो सोने चांदी के पात्रों को लाने की आज्ञा किई जिन्हें उस का पिता नबूखुदनजर यरूसलम के मन्दिर में से ले आया था जिस्तें राजा और उस के अध्यक्ष उस की स्त्रियां और उस की सुरैतिन उन में पीयें। तब वे ३ सोने के पात्रों को लाये जो ईश्वर के घर के मन्दिर से जो यरूसलम में है लाये गये थे और राजा ने और उस के अध्यक्षों ने और उस की स्त्रियों और सुरैतिनों ने उन में पीया। उन्हों ने ४ दाखरस पीया और सोने चांदी और पीतल और लोहे और काठ और पत्थर के देवों की स्तुति किई ॥

५ उसी घड़ी मनुष्य के हाथ की अंगुलियों ने निकलके राजभवन की भीत के गच पर जो दीपक के सन्मुख थी लिखा और राजा ने उस हाथ के भाग ६ को लिखते देखा। तब राजा की झलक बदल गई और उस की चिन्तों ने उसे व्याकुल किया यहां लों कि उस की कटि की गांठ गांठ ढीली हो गईं और उस के घुठने एक दूसरे से टक्कर ७ खाने लगे। राजा ने पराक्रम से पुकारा कि गणितकारी और कसदी और भविष्य-कथक लाये जायें राजा बाबुल के बुद्धिमानों से बोला और कहा कि जो कोई इस लिखे को पढ़ेगा और उस के अर्थ को मुझ से बतावेगा सो बैंजनी बस्त्र से पहिनाया जायेगा और उस के गले में सोने का हार डाला जायेगा ८ और राज्य में तीसरा आज्ञाकारी होगा। तब राजा के सारे बुद्धिमान आये परन्तु वे उस लिखे को न पढ़ सके न उस के ९ अर्थ राजा को बता सके। तब बेलशाजर राजा अत्यन्त व्याकुल हुआ और उस की झलक बदल गई और उस के प्रधान घबराये ॥

१० परन्तु राजा की बातों और प्रधानों की बातों के कारण से रानी भोजनभवन

में आई और यह कहके बोली कि हे राजा सर्व्वदा जीओ तेरी चिन्ताएं तुझे व्याकुल न करें और तेरा स्वरूप न
११ बदले। तेरे राज्य में एक मनुष्य है जिस में पवित्र देवों का आत्मा है और तेरे पिता के दिनों में ईश्वरीय बुद्धि के समान प्रकाश और बुद्धि और ज्ञान उस में पाये जाते थे जिसे नबूखुदनजर राजा तेरे पिता ने हां हे राजा तेरे पिता ने टोन्हों और गणितकारियों और कसदियों और भविष्यकथकों का प्रधान किया
१२ था। जैसा कि एक अत्युत्तम आत्मा और ज्ञान और बुद्धि और स्वप्नों के अर्थ कहने और कठिन बातों का बताने को और संदेहों के मिटाने को सामर्थ्य उसी दानिएल में पाई गई जिस का नाम राजा ने बेलत्शासर रक्खा अब दानिएल बुलाया जाये और वह अर्थ बतावेगा॥

१३ तब दानिएल राजा के आगे लाया गया और राजा दानिएल से यह कहके बोला क्या तू वही दानिएल है जो यहूदाह के बंधुओं के सन्तानों में से है जिसे मेरा पिता राजा यहूदाह से ले
१४ आया। और मैं ने तेरा समाचार सुना है कि देवों का आत्मा तुझ में है और प्रकाश और बुद्धि और अत्युत्तम ज्ञान
१५ तुझ में पाया जाता है। सो बुद्धिमान और गणक मेरे आगे लाये गये कि उस लिखे हुए को पढ़ें और उस के अर्थ मुझ से बतावें परन्तु उस के अर्थ न बता
१६ सके। और मैं ने तेरा समाचार सुना है कि तू अर्थों को कह सक्ता है और संदेह मिटा सक्ता है अब यदि तू उस लिखे को पढ़ सके और उस के अर्थ मुझ से बता सके तो तू लाल वस्त्र से पहिनाया जायेगा और तेरे गले में सोने का हार डाला जायेगा और राज्य में तीसरा आज्ञाकारी होगा॥

१७ तब दानिएल ने उत्तर देके राजा के आगे कहा कि तेरे दान तेरे पास रहें और अपना प्रतिफल दूसरे को दीजिये तथापि राजा के आगे इस लिखे हुए को पढूंगा और उस के अर्थ उसे
१८ बताऊंगा। हे राजा अत्यन्त महान ईश्वर ने तेरे पिता नबूखुदनजर को राज्य और महिमा और बिभव और
१९ प्रतिष्ठा दिई थी। और उस महिमा के कारण से जो उस ने उसे दिई थी सारे लोग और जाति और भाषा उस के आगे डरते और थर्थराते थे जिसे वह चाहता था उसे बध करता था और जिसे चाहता था उसे जीता छोड़ता था और जिसे चाहता था उसे बैठाता था और जिसे चाहता था उसे उतार देता
२० था। परन्तु जब अहंकार से उस का मन उभारा गया और उस का अन्तःकरण कठोर हुआ तब वह अपने राज्य के सिंहासन से उतारा गया और उस
२१ का बिभव ले लिया गया। और वह मनुष्य के पुत्रों में से निकाला गया और उस का मन पशु के मन की नाईं हो गया और उस का बसाव बनैले गदहों में हुआ और वे उसे बैलों की नाईं घास खिलाने लगे और उस की देह आकाश की ओस से भींग गई जब लों उस ने जाना कि अत्यन्त महान ईश्वर मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता है और जिसे चाहता है उसे उस
२२ पर ठहराता है। और हे बेलशाजर यद्यपि तू यह सब जानता था उस का पुत्र होके तू ने अपने मन को नम्र न
२३ किया। परन्तु तू ने स्वर्ग के प्रभु के सन्मुख अपने को उभाड़ा और वे उस के मन्दिर के पात्रों को तेरे आगे लाये और तू ने और तेरे प्रधानों ने तेरी पत्नियों और तेरी सुरैतिनों ने उन में

दाखरस पीया है और तू ने चांदी और सोने और पीतल और लोहे और काष्ठ और पत्थर के देवों की स्तुति किई जो न देखते हैं न सुनते हैं और न जानते हैं और तू ने उस ईश्वर की महिमा न किई जिस के हाथ में तेरा स्वास है २४ और तेरी सारी चाल हैं । तब उस की ओर से हाथ का भाग भेजा गया और यह लिखा हुआ लिखा गया ॥

२५ और यह वह लिखा हुआ है जो लिखा गया मीनी मीनी टेकल यूफार-२६ सिन । मीनी का यह अर्थ है कि ईश्वर ने तेरे राज्य को गिनती किई और उसे २७ समाप्त किया । टेकल कि तू तुला में २८ तौला गया और घाट ठहरा । यूफार-सिन कि तेरा राज्य बांटा गया और मादी और फारसी को दिया गया । २९ तब बेलशाजर ने आज्ञा किई और उन्हों ने दानिएल को लाल बस्त्र पहिनाया और सोने का हार उस के गले में डाला और उस के विषय में प्रचार करवाया कि वह राज्य का तीसरा आज्ञाकारी ३० होगा । उसी रात को कसदियों का ३१ राजा बेलशाजर मारा गया । अब बासठ बरस की बय में दारा ने जो मदयानी था इस राज्य को ले लिया ॥

छठवां पर्ब्ब ।

१ दारा की इच्छा हुई कि राज्य पर सारे राज्यों की प्रभुता के लिये एक सौ २ बीस अध्यक्षों को ठहरावे । और उन पर तीन प्रधान जिन में दानिएल श्रेष्ठ था कि अध्यक्ष उन्हें लेखा देवें जिस्तें ३ राजा घटी न उठावे । तब यह दानिएल सारे प्रधानों और अध्यक्षों पर बढ़ाया गया इस कारण कि एक अत्युत्तम आत्मा उस में था और राजा ने चाहा कि उसे सारे राज्य पर ठहरावे ॥

४ तब प्रधान और अध्यक्ष दानिएल के विरुद्ध राज्य के विषय में कोई कारण ढूंढ़ते थे परन्तु वे कोई दोष और कोई कारण न पा सके क्योंकि वह विश्वस्त था और उस में कुछ चूक और दोष न पाया गया । ५ तब इन मनुष्यों ने कहा कि हम दानिएल पर उस के ईश्वर की व्यवस्था के विषय को छोड़ कुछ दोष का कारण न पावेंगे ॥

६ तब ये प्रधान और अध्यक्ष राजा के आगे हुल्लड़ के संग आये और यों उस की बिन्ती किई कि दारा राजा सदा ७ लों जीवे । राज्य के सारे प्रधान और अध्यक्ष और कुंअर और मंत्री और सेनापतिन ने एकट्ठे होके एक मता किया है कि राजकीय बिधि ठहरावें और एक दृढ़ आज्ञा करें कि तुझे छोड़ जो कोई किसी ईश्वर से अथवा मनुष्य से तीस दिन लों कुछ मांगे हे राजा वह ८ सिंह की मांद में डाला जाये । अब हे राजा इस आज्ञा को दृढ़ कीजिये और लिखित पर नाम लिखिये जिस्तें मादी और फारसियों की व्यवस्था के समान ९ जो फिरती नहीं न पलटे । सो दारा राजा ने उस लिखित और आज्ञा पर नाम लिखा ॥

१० और जब दानिएल ने जाना कि उस लिखित पर चिन्ह हो गये तब वह अपने घर गया और उस के शयनस्थान के झरोखे यरूसलम की ओर खुले हुए थे और वह आगे की नाईं दिन भर में तीन बार घुठनों पर झुकता और प्रार्थना करता था और ईश्वर के आगे धन्य मानता था ॥

११ तब ये लोग एकट्ठे हुए और उन्हों ने दानिएल को प्रार्थना करते और अपने ईश्वर के आगे बिन्ती करते पाया । १२ तब वे पास आये और राजा के आगे राजा की आज्ञा के विषय में कहा कि

तू ने उस आज्ञा पर नहीं लिखा कि हर एक मनुष्य तुझे छोड़ जो किसी ईश्वर से अथवा मनुष्य से तीस दिन के भीतर हे राजा कुछ मांगे सो सिंहों की मांद में डाला जाये राजा ने उत्तर दिया और कहा कि यह बात सत्य है और मादी और फ़ारसियों की व्यवस्था के समान नहीं पलटती ॥

१३ तब उन्हों ने उत्तर दिया और राजा के आगे बिन्ती किई कि दानिएल जो यहूदाह के सन्तान के बंधुओं में से है हे राजा तुझे नहीं मानता और न तेरी आज्ञा को जिस पर तू ने लिखा परन्तु प्रतिदिन तीन बार प्रार्थना करता है । १४ तब राजा ये बातें सुनके अपने से अत्यन्त उदास हुआ और दानिएल को छुड़ाने का मन किया और सूर्य्य के अस्त लों उसे छुड़ाने का यत्न करता रहा ॥

१५ तब ये मनुष्य राजा के पास एकट्ठे हुए और राजा से कहा कि जान ले हे राजा कि मादी और फ़ारसियों का शास्त्र यह है कि जो आज्ञा और रीति १६ राजा ठहरावे पलटी न जाये । तब वे राजा की आज्ञा से दानिएल को लाये और उसे सिंहों की मांद में डाल दिया और राजा दानिएल को यह कहके बोला कि तेरा ईश्वर जिस की तू सदा सेवा करता है वही तुझे बचावेगा । १७ और एक पत्थर पहुंचाया जाके मांद के मुंह पर धरा गया और राजा ने अपनी छाप से और अपने प्रधानों की छाप से छाप किई जिस्तें ठहराई हुई बात दानिएल के विषय में पलटी न जाये । १८ तब राजा अपने भवन में गया और रात उपवास में काटी और खाना कोई उस के आगे न लाया और उस की नींद उस्से जाती रही ॥

१९ तब बिहान को बड़े तड़के राजा उठा और शीघ्रता से सिंहों की मांद पर गया । २० और जब वह मांद पर पहुंचा तब उस ने बिलाप के शब्द से दानिएल को पुकारा और राजा यह कहके दानिएल से बोला कि हे दानिएल जीवते ईश्वर के सेवक क्या तेरा ईश्वर जिस की तू सदा सेवा करता है सिंहों से तुझे बचा सक्ता है । २१ तब दानिएल ने राजा को उत्तर दिया कि हे राजा सदा जीओ । २२ मेरे ईश्वर ने अपना दूत भेजा और सिंहों के मुंह को बंद किया यहां लों कि उन्हों ने मुझे दुःख न दिया क्योंकि उस के आगे निर्दोषता मुझ में पाई गई और हे राजा मैं ने तेरा भी कुछ अपराध न किया । २३ तब राजा उस के लिये अत्यन्त आनन्दित हुआ और दानिएल को मांद में से निकालने की आज्ञा किई सो दानिएल मांद से निकाला गया और उस पर कुछ दुःख न पाया गया क्योंकि उस का बिश्वास ईश्वर पर था ॥

२४ तब राजा ने आज्ञा किई और वे दानिएल के दोषदायकों को लाये और उन्हें उन के बालकों और उन की स्त्रियों समेत सिंहों की मांद में डाला और सिंह उन पर प्रबल हुए यहां लों कि मांद के तले न पहुंचते ही सिंहों ने उन की हड्डियों को चकनाचूर किया ॥

२५ तब दारा राजा ने सारे लोगों और जातों और भाषाओं को जो सारी पृथिवी पर बसते थे यों लिखा कि तुम पर कुशल बढ़ता जाये । २६ मैं यह ठहराता हूं कि मेरे राज्य की हर एक प्रभुता में दानिएल के ईश्वर के आगे मनुष्य डरें और थरथरावें क्योंकि वह जीवता ईश्वर है और सर्वदा स्थिर है और उस के राज्य का नाश न होगा

और उस की प्रभुता अन्त लों होगी । २७ वह बचाता है और छुड़ाता है वह स्वर्ग और पृथिवी पर आश्चर्य्य और लक्षण दिखाता है उस ने दानिएल को सिंहों के वश से बचाया है ॥

२८ सो यह दानिएल दारा और फारसी खोरस के राज्य में भाग्यमान रहा ॥

सातवां पर्ब्ब ।

१ बाबुल के राजा बेलशाजर के पहिले बरस दानिएल ने अपने बिछौने पर के सिर के दर्शनों में एक स्वप्न देखा और उस ने उस स्वप्न को लिखा और उन बातों के मूल को बताया ॥

२ दानिएल बोला और कहा कि मैं ने रात को अपने दर्शन में देखा और क्या देखता हूं कि स्वर्ग के चार पवन चारों ओर से महा समुद्र पर चढ़ाई करने ३ लगे । और समुद्र से चार महा पशु उठे ४ जो एक दूसरे से भिन्न था । पहिला सिंह की नाईं और गिद्ध के से डैने रखता था मैं देखता ही था और उस के डैने उखड़ गये और वह पृथिवी से उठाया गया और मनुष्य के समान पांवों पर खड़ा किया गया और मनुष्य ५ का मन उसे दिया गया । और क्या देखता हूं कि एक दूसरा पशु भालू की नाईं एक ओर सीधा खड़ा हुआ और उस के मुंह में उस के दांतों के बीच तीन पसुली थीं और उन्हों ने उस्से कहा कि उठ ६ बहुत सा मांस भक्षण कर । उस के पीछे मैं ने देखा और देखो कि एक और चीते के समान उठा जिस की पीठ पर पक्षी के चार डैने थे इस पशु के भी चार ७ सिर थे और उसे प्रभुता दिई गई । इस के पीछे मैं ने रात के दर्शनों में देखा और क्या देखता हूं कि चौथा पशु भयानक और भयंकर और अत्यन्त बलवान और उस के दांत लोहे के बड़े बड़े थे उस ने भक्षण किया और टुकड़े टुकड़े किये और रहे हुए को अपने पांव तले लताड़ा और यह उन सब पशुन से जो उस के आगे थे भिन्न था और उस के ८ दस सींग थे । मैं ने उन सींगों को सोचा और क्या देखता हूं कि उन के मध्य में और एक छोटा सा सींग निकला जिस के आगे अगिले तीन सींग जड़ से उखड़ गये और क्या देखता हूं कि उस सींग में मनुष्य की सी आंखें थीं और एक मुंह जो बड़ी बड़ी बातें बोल रहा है ॥

९ मैं यहां लों देखता रहा कि सिंहासन रक्खे गये और दिनों का प्राचीन बैठा उस का पहिरावा पाला सा श्वेत था और उस के सिर का बाल चोखे ऊन की नाईं था और उस का सिंहासन आग की लवर और उस के चक्र जलती आग १० की नाईं थे । एक अग्नीय धारा निकली और उस के आगे से निकल आई सहस्र सहस्रों ने उस की सेवा किई दस सहस्र गुणे दस सहस्र उस के आगे खड़े थे न्याय हो रहा था और पुस्तकें खुली ११ थीं । तब मैं ने देखा कि बड़ी बातों के शब्द के कारण जिन्हें उस सींग ने कहीं मैं ने यहां लों देखा कि वह पशु मारा गया और उस की देह नाश हुई १२ और जलती लवर को दिई गई । और रहे हुए पशुन का बिषय यह है कि उन की प्रभुता लिई गई परन्तु कुछ काल और घड़ी लों उन्हें जीवन दिया गया ॥

१३ मैं ने रात्री के दर्शनों में देखा और क्या देखता हूं कि मनुष्य के पुत्र के समान आकाश के मेघों पर आया और दिनों के प्राचीन के पास पहुंचा वे उसे १४ उस के आगे ले आये । और उसे प्रभुता और बिभव और राज्य दिये गये कि सारे लोग और जाति और भाषा उस की सेवा करें उस की प्रभुता सर्बदा की प्रभुता है

और जाती न रहेगी और उस का राज्य नाश न होगा॥

१५ मैं दानिएल देह के मध्य में अपने मन में उदास हुआ और मेरे सिर के १६ दर्शनों ने मुझे व्याकुल किया। मैं ने उन में से जो निकट खड़े थे एक के पास आके सारा समाचार पूछा और उस ने मुझ से कहा और बातों का अर्थ १७ जनाया। ये चार बड़े पशु चार राजा १८ हैं जो पृथिवी से उठेंगे। परन्तु अत्यन्त महान के सिद्ध लोग राज्य ले लेंगे और राज्य को सर्व्वदा बश में रक्खेंगे अर्थात् सर्व्वदा और सर्व्वदा के लिये॥

१९ तब मैं ने चाहा कि चौथे पशु का समाचार जानूं जो औरों से भिन्न था और अत्यन्त भयानक था जिस के दांत लोहे के और नह पीतल के जिस ने भक्षण किया और टुकड़े टुकड़े किया और रहे २० हुए को पांवों तले लताड़ा। और उन दस सींगों का जो उस के सिर पर थे और उस एक का जो निकला और जिस के आगे तीन गिर गये हां उस सींग का जिस की आंखें थीं और एक मुंह था जो बड़ी बातें बोलता था और देखने में २१ अपने संगियों से अधिक बड़ा था। मैं ने देखा और उसी सींग ने सिद्धों के संग युद्ध किया और उन पर प्रबल हुआ। २२ यहां लों कि दिनों के प्राचीन को और अत्यन्त महान के सिद्धों को न्याय दिया गया और समय आ पहुंचा कि सिद्ध लोग राज्य के अधिकारी होवें॥

२३ वह यों बोला कि चौथा पशु पृथिवी पर चौथा राज्य होगा जो सारे राज्यों से भिन्न होगा और सारी पृथिवी को भक्षण करेगा और उसे लताड़ेगा और उसे २४ टुकड़ा टुकड़ा करेगा। और इस राज्य के दस सींग दस राजा हैं जो निकलेंगे और उन के पीछे एक और निकलेगा वह पहिले से भिन्न होगा और वह तीन राजाओं को बश में करेगा। और अत्यन्त २५ महान के बिरोध में बातें करेगा और अत्यन्त महान के सिद्धों को थकावेगा और समयों और व्यवस्थों को बदलने चाहेगा और वे उस के हाथ में एक समय और दो समय और आधे समय लों दिये जायेंगे। परन्तु न्याय की बैठक होगी २६ और वे भस्म करने और अन्त लों नाश करने को उस की प्रभुता को ले लेंगे। और राज्य और प्रभुता और राज्य का २७ महत्त्व सारे स्वर्ग के नीचे अत्यन्त महान के सिद्धों को दिया जायेगा जिस का राज्य सर्व्वदा का राज्य है और सारी प्रभुता उस की सेवा करेंगी और आज्ञा मानेंगी॥

यहां बात का अन्त है मैं दानिएल २८ अपने ध्यानों से बहुत व्याकुल हुआ और मेरा स्वरूप फिर गया पर मैं ने बात को मन में रख छोड़ा॥

आठवां पर्व्व।

बेलशाजर राजा के तीसरे बरस में १ मुझ दानिएल को पहिले दर्शन के पीछे एक दर्शन दिखाई दिया॥

और मैं ने दर्शन में देखा और ऐसा २ हुआ कि मैं ने देखा कि मैं शूशान भवन में था जो ऐलाम के प्रदेश में है और मैं ने दर्शन में देखा कि मैं ऊलाई की नदी के तीर था। तब मैं ने अपनी ३ आंखें उठाके देखा और क्या देखता हूं कि नदी के आगे एक मेंढा खड़ा है जिस के दो सींग थे और दोनों सींग बड़े थे परन्तु एक उन में से दूसरे से बड़ा था और बड़ा पीछे निकला। मैं ४ ने मेंढे को पश्चिम और उत्तर और दक्षिण दिशा को ठेलते देखा ऐसा कि कोई पशु उस के आगे खड़ा न हो सका और कोई उस के हाथ से छुड़ा न

करता था परन्तु वह अपनी इच्छा के समान करता था और महान हुआ॥

५ और सोचते सोचते क्या देखता हूं कि एक बकरा पच्छिम से सारी पृथिवी पर आया और पृथिवी को न छूता था और उस बकरे की दोनों आंखों के बीचों बीच एक दृष्टिमान सींग था।
६ और वह उस दो सींगे मेंढ़े के पास आया जिसे मैं ने नदी के आगे खड़ा देखा था और अपने पराक्रम के कोप
७ से उस पर लपका। और मैं ने उसे मेंढ़ा के पास आते देखा और वह उस के विरुद्ध क्रुद्ध हुआ और उस ने उस मेंढ़े को मारा और उस के दोनों सींग तोड़े और उस मेंढ़े में उस के आगे खड़ा रहने की कुछ सामर्थ्य न थी परन्तु उस ने उसे भूमि पर गिरा दिया और लताड़ा और कोई ऐसा न था कि उस मेंढ़े को
८ उस के हाथ से छुड़ा सके। सो वह बकरा बहुत बढ़ गया और जब वह बलवान हुआ तो उस का बड़ा सींग तोड़ा गया और उस की सन्ती स्वर्ग की पवन की चारों ओर से चार प्रसिद्ध
९ सींग निकले। और उन में से एक छोटा सींग निकला जो दक्खिन और पूरब और सुन्दर भूमि की ओर बहुत ही बढ़
१० गया। और वह स्वर्ग की सेना के विरुद्ध में बढ़ गया और उस ने सेना में से कितनों को और तारों को भूमि पर
११ गिरा दिया और उन्हें लताड़ा। हां उस ने सेना के अध्यक्ष के विरुद्ध में अपने को बढ़ाया और उस्से प्रतिदिन का बलिदान छुड़ाया गया और उस का
१२ पवित्रस्थान गिराया गया। और प्रतिदिन के बलिदान के विरुद्ध में उन के पाप के कारण सेना सौंपी गई और उस ने सच्चाई को भूमि पर डाल दिया और यही किया और भाग्यमान हुआ॥

१३ तब मैं ने एक साधु को कहते सुना और दूसरे साधु ने उस बोलनेवाले साधु से कहा कि पवित्रस्थान और सेना लताड़े जाने के लिये प्रतिदिन के बलिदान और उजाड़ करने की आज्ञा भंग के विषय का दर्शन कब लों दिया
१४ जायेगा। फिर उस ने मुझ से कहा कि दो सहस्र तीन सौ सांझ बिहान लों तब पवित्रस्थान निर्दोष ठहराया जायेगा॥

१५ और ऐसा हुआ कि मुझ दानिएल ने यह दर्शन देखा और उस का अर्थ ढूंढ़ा तब देखो मेरे साम्ने एक मनुष्य की नाईं
१६ दिखाई दिया। और मैं ने ऊलाई के मध्य में से एक मनुष्य का शब्द सुना जिस ने पुकारके कहा कि हे जबरएल
१७ दर्शन का अर्थ उसे समझा। सो जहां मैं खड़ा था वह पास आया और जब वह आया तब मैं डरा और मुंह के बल गिरा परन्तु उस ने मुझ से कहा हे मनुष्य के पुत्र समझ क्योंकि अन्त्य के
१८ समय में यह दर्शन होगा। सो जब वह मुझ से यह कह रहा था तब मैं औंधे मुंह भारी नींद में भूमि पर पड़ा था तब उस ने मुझे छूआ और सीधा
१९ खड़ा किया। और मुझ से कहा कि देख जो कुछ जलजलाहट के अन्त्य में होगा मैं तुझे जनाता हूं क्योंकि ठहराये हुए समय में अन्त्य होगा॥

२० यह दो सींगा मेंढ़ा जो तू ने देखा
२१ मादी और फारस के राजा हैं। और वह झबूआ बकरा यूनान का राजा है और वह बड़ा सींग जो उस की आंखों के
२२ बीच में है सो पहिला राजा है। अब वह टूटा हुआ होके जैसा कि उस की सन्ती चार निकले चार राज्य उस जाति से खड़े होंगे परन्तु उस के पराक्रम
२३ में नहीं। और उन के राज्य के अन्त्य समय में जब अपराधी समाप्त होंगे तब

एक राजा भयानक स्वरूपवान गुप्त
२४ बातों का समझवैया खड़ा होगा। और
उस का बड़ा पराक्रम होगा परन्तु
अपने ही बल से नहीं और वह आश्चर्य्य
से नाश करेगा और भाग्यमान होगा और
कार्य्य करेगा और बलवानों को और
पवित्र जनों के लोगों को नष्ट करेगा।
२५ और अपनी चतुराई से भी वह छल को
अपने हाथ में बढ़ावेगा और वह अपने
मन में अपने को बढ़ावेगा और भाग्य
से बहुतों को नाश करेगा वह राजाओं
के राजा के बिरोध में खड़ा होगा
परन्तु वह बिन हाथ से तोड़ा जायेगा।
२६ और बिहान और सांझ का दर्शन जो
कहा गया सत्य है से तू उस दर्शन को
बन्द कर क्योंकि बहुत दिन के लिये
होगा॥

२७ और मैं दानिएल मूर्छित हुआ और
कितने दिन लों रोगी रहा उस के पीछे
उठा और राजा का कार्य्य किया और
मैं उस दर्शन से अचंभित हुआ परन्तु
किसी ने उसे न समझा॥

नवां पर्ब्ब।

१ शेरशाह के बेटे दारा के पहिले
बरस में जो मादी के बंश से था और
कसदियों के राज्य का राजा हुआ।
२ उस के राज्य के पहिले बरस में मुझ
दानिएल ने पुस्तकों में उन बरसों की
गिन्ती को समझा जिन के बिषय में
परमेश्वर का बचन यरमियाह भवि-
ष्यद्वक्ता के पास पहुंचा था कि वह
यरूसलम के बिनाशों में सत्तर बरस
पूरा करेगा॥

३ और मैं ने प्रभु परमेश्वर की ओर
अपना मुंह फेरा कि ब्रत करके और
टाट ओर राख में प्रार्थना और बिन्ती
४ से ढूंढूं। और मैं ने परमेश्वर अपने
ईश्वर की प्रार्थना किई और पाप को
स्वीकार करके कहा कि हे प्रभु महान
और भयंकर ईश्वर जो अपने प्रेमियों
और आज्ञापालकों के लिये बाचा और
दया को रखता है। हम ने पाप किया ५
है और हम ने अपराध किया है और
हम ने दुष्टता किई है और हम तेरी
आज्ञाओं और तेरे न्यायों से अलग होके
फिर गये हैं। और हम ने तेरे भविष्य- ६
द्वक्ता सेवकों की बात जिन्हों ने तेरा
नाम लेके हमारे राजाओं और हमारे
अध्यक्षों और हमारे पितरों और देश के
सारे लोगों को सन्देश दिया न मानी।
हे प्रभु धर्म्म तेरा है परन्तु हमारे लिये ७
और यहूदाह के मनुष्यों के और यरूसलम
के बासियों और सारे इसराएल के लिये
जो पास और दूर हैं समस्त देशों में
जहां जहां तू ने उन्हें अपने बिरुद्ध पाप
करने के कारण से खदेड़ा है मुंह की
घबराहट है। हे प्रभु हमारे लिये और ८
हमारे राजाओं और हमारे अध्यक्षों और
हमारे पितरों के लिये मुंह की घबराहट
है इस कारण कि हम ने तेरे बिरुद्ध
पाप किया है। प्रभु हमारे ईश्वर की ९
दया और क्षमा हैं यद्यपि हम उस्से
फिर गये हैं। और हम ने परमेश्वर १०
अपने ईश्वर की व्यवस्था पर चलने को
जो उस ने अपने दास भविष्यद्वक्तों के
द्वारा हमारे आगे रक्खी उस का शब्द
न माना। हां तेरा शब्द न मान्ने को ११
सारे इसराएल ने फिर जाने से तेरी
व्यवस्था को उल्लंघन किया है इस
कारण यह साप हम पर और वह
किरिया जो ईश्वर के दास मूसा की
व्यवस्था में लिखी है आ पड़ी है क्योंकि
हम ने उस के बिरुद्ध पाप किया है।
और उस ने अपनी बातों को जो उस ने १२
हमारे और हमारे न्याय करवैये न्याइयों
के बिरुद्ध कही थीं हम पर यह बड़ी

बुराई लाके दृढ़ किया क्योंकि सारे स्वर्ग के तले ऐसा नहीं हुआ है जैसा
१२ कि यरूसलम पर बीता है। जैसा कि मूसा की व्यवस्था में लिखा है यह सब बुराई हम पर आ पड़ी है तिस पर भी अपने कुकर्म्मों से फिरने को और तेरी सच्चाई को समझने को हम ने परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे प्रार्थना न किई।
१४ इस लिये परमेश्वर ने हमारी बुराई पर चौकसी किई और उसे हम पर लाया क्योंकि परमेश्वर हमारा ईश्वर अपने सारे कार्य्यों में जो वह करता है धर्म्मी है क्योंकि हम ने उस का शब्द न
१५ माना। और अब हे प्रभु हमारे ईश्वर जो अपने लोगों को अपने हाथ के पराक्रम से मिस्र देश से बाहर निकाल लाया और अपना नाम किया जैसा कि आज के दिन है हम ने पाप किया है
१६ हम ने दुष्टता किई है। हे प्रभु मैं तेरी बिन्ती करता हूं तेरे सारे धर्म्म के समान तेरा क्रोध और तेरा कोप तेरे नगर यरूसलम से तेरे पवित्र पर्वत से फिर जाये क्योंकि हमारे पापों के कारण और हमारे पितरों के कुकर्म्मों के कारण से यरूसलम और तेरे लोग आसपास के
१७ सभों के लिये निन्दा हैं। सो अब हे हमारे ईश्वर अपने दास की प्रार्थना और उस की बिनतियां सुन और अपने रूप को अपने उजाड़ पवित्रस्थान पर
१८ प्रभु के लिये प्रकाश कर। हे मेरे ईश्वर अपना कान झुका और सुन अपनी आंखें खोल और हमारे उजाड़ों को और उस नगर को देख जिस पर तेरा नाम पुकारा जाता है क्योंकि हम अपने धर्म्मों के लिये नहीं परन्तु तेरी बड़ी दया के लिये अपनी बिन्ती तेरे आगे करते हैं।
१९ हे प्रभु सुन हे प्रभु क्षमा कर हे प्रभु कान धर और मान ले हे मेरे ईश्वर अपने ही कारण बिलंब मत कर क्योंकि तेरे नगर और तेरे लोग तेरे नाम से पुकारे जाते हैं॥

२० और मैं कहता और प्रार्थना करता और अपने पाप और अपने लोग इसराएल के पाप को मान लेता ही था और परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे अपने ईश्वर के पवित्र पहाड़ के लिये बिन्ती
२१ पहुंचाता था। हां मैं प्रार्थना में बोल रहा था इतने में वही जन अर्थात जब्रएल जिसे मैं ने आरम्भ के दर्शन में देखा था शीघ्रता से उड़ते हुए आया और उस ने सांझ की भेंट के समय में
२२ मुझे छुआ। और उस ने संदेश दिया और मुझ से बातें किईं और कहा कि हे दानिएल अब मैं तुझे ज्ञान में निपुण
२३ करने को निकल आया हूं। तेरी बिन्ती करने के आरम्भ में बचन निकला और मैं आया कि तुझे दिखाऊं क्योंकि तू अति प्रिय है सो तू इस बात को समझ ले और दर्शन को सोच॥

२४ तेरे लोगों पर और तेरे पवित्र नगर पर अपराध रोकने को और पापों पर छाप करने को और कुकर्म्म के लिये प्रायश्चित्त करने को और सर्व्वदा का धर्म्म लाने को और दर्शन और भविष्यद्वक्ता पर छाप करने को और अत्यन्त धर्म्ममय को अभिषेक करने को सत्तर
२५ सप्ताह ठहराये गये हैं। इस लिये जान ले और समझ कि आज्ञा के निकलने के आरम्भ से यरूसलम के फिर बनाने को मसीह राजा लों सात सप्ताह बासठ सप्ताह हैं और सड़क और दरार सकेती
२६ के दिनों में फिरके बनाये जायेंगे। और बासठ सप्ताह के पीछे मसीह मारा जायेगा और उस का कुछ नहीं और उस राजा के लोग जो आवेंगे उस नगर को और पवित्रस्थान को नाश करेंगे और

उस का अन्त बाढ़ से होगा और संग्राम के पीछे उजाड़ ठहराया गया है। २७ और वह नियम को बहुतों के संग एक सप्ताह में स्थिर करेगा और सप्ताह के मध्य में वह बलिदान और भेंट को उठा डालेगा और घिनित बस्तुन को सिरे पर समाप्त लों उसे उजाड़ेगा और ठहराया हुआ उजाड़ों पर बहाया जायेगा॥

दसवां पर्ब्ब।

१ फारस के राजा खोरस के तीसरे बरस दानिएल पर जिस का नाम बेलतासर था एक बात प्रगट हुई और वह बात सत्य परन्तु सकेतों का समय बड़ा था और उस ने उस बात को समझा और उस दर्शन का ज्ञान रखता था। २ मैं दानिएल उन दिनों में पूरे तीन सप्ताह लों बिलाप करता रहा। ३ मैं ने तीन सप्ताह बीतने लों बांछा की रोटी न खाई न मेरे मुंह में बोटी और मदिरा पड़ी और मैं ने अपने पर तेल न मला॥

४ और पहिले मास की चौबीसवीं तिथि में जिस समय में मैं महा नदी दिजल: के तीर पर था। ५ तब मैं ने आंख उठाके दृष्टि किई और क्या देखता हूं कि एक मनुष्य सूती बस्त्र पहिने हुए जिस की कटि पर ऊफाज के चोखे सोने का पटुका बंधा था। ६ उस की देह भी लहसनिया के समान और उस का मुंह बिजुली का सा और उस की आंखें आग के दीपकों की नाईं और उस की भुजा और उस के पांव चमकते पीतल के से थे और उस की बातों का शब्द एक मंडली के शब्द की नाईं। ७ और मुझ दानिएल ने अकेला यह दर्शन देखा क्योंकि जो मनुष्य मेरे संग थे उन्हों ने दर्शन न देखा परन्तु उन पर ऐसी कंप-कंपी पड़ी कि वे आप आप को छिपाने को भागे। ८ सो मैं अकेला रह गया और यह बड़ा दर्शन देखा और मुझ में शक्ति न रही क्योंकि मेरा स्वरूप बिगड़ने लों पलट गया और मुझ में बल न रहा। ९ तथापि मैं ने उस की बातों का शब्द सुना और जब मैं ने उस की बातों का शब्द सुना तब मैं मुंह के बल भारी नींद में था और मेरा मुंह भूमि की ओर॥

१० और देखो एक हाथ ने मुझे छूआ जिस ने मुझे मेरे घुठनों और हथेलियों पर उठाया। ११ और उस ने मुझ से कहा हे दानिएल अति प्रिय जन उन बातों को जो मैं तुझ से कहता हूं समझ ले और सीधा खड़ा हो जा क्योंकि मैं अब तेरे पास भेजा गया हूं और ज्यों उस ने मुझ से यह बात कही त्यों मैं कांपता हुआ खड़ा हो गया। १२ तब उस ने मुझ से कहा कि हे दानिएल मत डर क्योंकि पहिले ही दिन से जब तू ने अपना मन समझने पर और अपने ईश्वर के आगे अपने को ताड़ना करने पर लगाया तेरी बातें सुनी गईं और तेरी बातों के लिये मैं आया हूं। १३ परन्तु फारस के राज्य के राजा ने एक्कीस दिन लों मेरा साम्ना किया परन्तु देख मीकाएल जो श्रेष्ठ राजपुत्रों में से श्रेष्ठ है मेरी सहायता के लिये पहुंचा और वहां मैं फारस के राजाओं के संग रह गया। १४ अब जो कुछ तेरे लोगों पर पिछले दिनों में बीतेगा मैं तुझे समझाने को आया हूं क्योंकि यह दर्शन दिनों के लिये है॥

१५ और जब उस ने ऐसी बातें मुझ से कहीं तब मैं ने अपना मुंह भूमि की ओर किया और गूंगा हो गया। १६ और क्या देखता हूं कि मनुष्यों के पुत्रों की नाईं किसी ने मेरे होंठों को छूआ तब मैं ने अपना मुंह खोला और बोला और जो मेरे आगे खड़ा था उसे कहा कि हे

मेरे प्रभु इस दर्शन के कारण से मेरे शोक मुझ पर लौटे और मुझ में कुछ १७ बल न रहा । क्योंकि यह क्योंकर हो सक्ता है कि मेरे प्रभु का सेवक इस प्रभु से बार्त्ता करे क्योंकि मैं जो हूं मुझ में कुछ बल न रहा और न मुझ में स्वास रहा। ॥

१८ तब मनुष्य के स्वरूप की नाईं एक ने फिर आके मुझे छूके बल दिया । १९ और कहा कि हे अति प्रिय मनुष्य मत डर तुझ पर कुशल होवे बलवान हो हां बलवान हो और जब उस ने मुझ से यह कहा तब मैं ने बल पाया और कहा कि अब मेरा प्रभु कहे क्योंकि तू ही ने मुझे बल दिया है ॥

२० तब वह बोला क्या तू जानता है कि मैं तेरे पास किस लिये आया हूं और अब मैं फारस के राजा से लड़ने को फिर जाऊंगा और जब मैं चला जाऊंगा तो देख यूनान का अध्यक्ष २१ आवेगा । परन्तु मैं तुझे बता देता हूं कि सत्य लिखित में क्या लिखा है और ऐसा कोई नहीं कि इन बातों में अपने को मेरे संग बलवन्त करे परन्तु केवल तुम्हारा अध्यक्ष मीकाएल ॥

ग्यारहवां पर्ब्ब ।

१ दारा मादी के पहिले बरस में भी मैं उसे दृढ़ करने और बल देने को खड़ा हुआ ॥

२ और अब मैं तुझ से सत्य बताता हूं देख फारस में तीन राजा और भी उठेंगे और चौथा सभों से अधिक धनी होगा और वह अपने बल से और अपने धन से सब को यूनान के राज्य के विरुद्ध उभाड़ेगा ॥

३ फिर एक बलवान राजा खड़ा होगा और बड़ी प्रभुता से राज्य करेगा और ४ अपनी इच्छा के समान करेगा । और जब वह खड़ा होगा तब उस का राज्य तोड़ा जायेगा और स्वर्ग की चारों पवनों की ओर विभाग किया जायेगा और उस के वंश को न पहुंचेगा और न उस राज्य की नाईं जिस का वह प्रभु था क्योंकि उस का राज्य औरों के लिये उखाड़ा जायेगा ॥

५ और दक्खिन का राजा बलवान होगा और उस के राजपुत्रों में से बल में उस्से अधिक होगा और राज्य पावेगा और उस का राज्य बड़ा राज्य होगा । ६ और बरसों के अन्त में वे आपस में मिलेंगे क्योंकि दक्खिन के राजा की पुत्री उत्तर के राजा के पास कुछ ठहराने को आवेगी परन्तु वह भुजा का पराक्रम न रख सकेगी और न वह न उस की भुजा ठहरेगी परन्तु वह और वे जो उसे लाये थे और जिसे वह जनी और वह जिस ने उसे समय में बल दिया था सौंपी जायेगी । ७ परन्तु उस की जड़ की एक डाली में से उस के स्थान में खड़ा होगा जो सेना लेके आवेगा और उत्तर के राजा की कोट में प्रवेश करेगा और उन से विरोध करेगा और जीतेगा । ८ और उन के देवों और उन की मूर्त्ति को भी और उन के बहुमूल्य सोने चांदी के पात्र सहित बंधुआई में मिस्र में ले जायेगा और वह उत्तर के राजा से बरसों तक बना रहेगा । ९ सो दक्खिन का राजा उस के राज्य में आवेगा और अपने ही देश में लौटेगा । १० परन्तु उस के बेटे लड़ेंगे और बड़ी बड़ी सेना बटोरेंगे और निश्चय एक आवेगा और उमड़ेगा और बीत जायेगा तब वह फिर जायेगा और वे उस के गढ़ लों लड़ेंगे । ११ और दक्खिन का राजा क्रोध से उठेगा और निकलके उस्से लड़ेगा अर्थात् उत्तर के राजा से और वह एक

बड़ी मंडली सिद्ध करेगा परन्तु मंडली
१२ उस के हाथ में दिई जायेगी। और
जब वह उस मंडली को दूर करेगा
तब उस के मन में घमंड समावेगा और
वह दस सहस्रों को गिरावेगा परन्तु
१३ उस का बल अधिक न होगा। क्योंकि
उत्तर का राजा फिर आयेगा और एक
मंडली जो पहिले से अधिक होगी
लावेगा और समयों अर्थात् बरसों के
पीछे एक बड़ी सेना और बहुत धन ले
आवेगा।

१४ और उन दिनों में बहुतेरे दक्खिन
के राजा पर चढ़ाई करेंगे और बटमारों
के बालक दर्शन को स्थिर करने के
लिये आप को बढ़ावेंगे पर वे गिर
१५ जायेंगे। सो उत्तर का राजा आवेगा
और मोरचा बांधेगा और गढ़ के नगरों
को ले लेगा और दक्खिन की भुजा और
चुने हुए लोग उस के आगे न ठहरेंगे
और न साम्ना करने का बल रहेगा।
१६ परन्तु जो उस का साम्ना करेगा सो
अपनी इच्छा के समान करेगा और कोई
उस के आगे ठहर न सकेगा और वह
शुभ देश में खड़ा होगा जो उस के हाथ
१७ से अन्त पावेगा। और वह अपने सारे
राज्य के बल से और अपनी खराई से
प्रवेश करने के लिये मुंह फेरेगा वह यों
करेगा और वह स्त्रियों की पुत्री को
उजाड़ करने के लिये उसे देगा परन्तु
वह न ठहरेगी न उस के लिये होगा।
१८ तब वह टापुओं की ओर मुंह फेरेगा
और बहुतों को ले लेगा परन्तु अध्यक्ष
अपने लिये उस के निन्दित कार्य्य को
उठा डालेगा अपनी ही निन्दा को छोड़
१९ वह उसी पर फिरेगा। तब वह अपने
ही देश के गढ़ को अपना मुंह फेरेगा
परन्तु वह ठोकर खायेगा और गिर
पड़ेगा और पाया न जायेगा॥

२० और उस के स्थान पर एक और उठेगा
जो राज्य के विभव में करलेवैये को
भेजेगा परन्तु थोड़े दिनों में वह न तो
२१ क्रोधों से न संग्राम में नष्ट होगा। फिर
उस के स्थान में एक तुच्छ जन खड़ा
होगा जिसे वे राज्य की प्रतिष्ठा न देंगे
परन्तु वह मिलाप से आवेगा और लल्लो-
२२ पत्ती कहके राज्य को लेगा। और वे
उस के आगे बाढ़ की भुजा से उमड़
जायेंगे और टूट जायेंगे हां नियम का
२३ अध्यक्ष। और उस बाचा के पीछे जो
उस्से किई जायेगी वह छल से कार्य्य
करेगा क्योंकि वह चढ़ आवेगा और
थोड़े से लोगों के संग बल प्राप्त करेगा।
२४ वह कुशल से प्रदेश के अच्छे से अच्छे
स्थानों में प्रवेश करेगा और वह ऐसा
कुछ करेगा जो न उस के पितरों ने न
उस के पितामहों ने किया वह उन के
मध्य में अहेर और लूट और धन बिथ-
रावेगा हां वह एक समय के लिये दृढ़
गढ़ों को लेने पर अपनी चिन्ताओं को
२५ दौड़ावेगा। और वह अपने पराक्रम
और हियाव को दक्खिन के राजा पर
बड़ी सेना के संग बढ़ावेगा और दक्खिन
का राजा एक अत्यन्त और पराक्रमी
बड़ी सेना लेके संग्राम करने को निक-
लेगा परन्तु वह न ठहरेगा क्योंकि वे
२६ उस के विरुद्ध चिन्तायें दौड़ावेंगे। हां
वे जो उस के भोजन में से भाग खाते
हैं उसे मार लेंगे और उस की सेना उमड़
२७ जायेगी और बहुतेरे जूझ जायेंगे। और
इन दोनों राजाओं के मन नटखटी करने
में होंगे और एक मंच में झूठ बोलेंगे परन्तु
कार्य्य सिद्ध न होगा तथापि ठहराये हुए
२८ समय पर अन्त होगा। तब वह बड़े धन से
अपने देश को फिरेगा और उस का मन
पवित्र नियम से विरुद्ध होगा और वह कार्य्य
करेगा और अपने ही देश को फिर जायेगा॥

२९ ठहराये हुए समय में वह लौटेगा और दक्खिन की ओर आवेगा परन्तु अगले अथवा पिछले की नाईं न होगा। ३० और कित्ती के जहाज उस का साम्ना करेंगे सो वह उदास होगा और फिरेगा और पवित्र नियम से क्रुद्ध होगा सो ऐसा ही करेगा हां वह फिर आवेगा और उन के संग जो पवित्र नियम को त्याग करते हैं मेल करेगा। ३१ और सेना की भुजा उस की ओर खड़ी होगी और वे पवित्रस्थान की दृढ़ता को अशुद्ध करेंगे और प्रतिदिन के बलिदान को उठा देंगे और उस उजाड़क घिन को खड़ी करेंगे। ३२ और वह उन से जो नियम से दुष्टता करते हैं लल्लोपत्तो करके उन्हें भरमावेगा परन्तु वे लोग जो अपने ईश्वर को पहिचानते हैं दृढ़ होंगे और कार्य्य करेंगे। ३३ और जो लोगों में बुद्धिमान हैं सो बहुतों को उपदेश करेंगे तथापि वे बहुत दिन लों खड्ग से और लवर से और बंधुआई से और लूट से गिर जायेंगे। ३४ और जब वे गिर जायेंगे तब वे थोड़ी सी सहायता से सहायता पावेंगे परन्तु बहुतेरे लल्लोपत्तो से उन से पट्टो होंगे। ३५ और बुद्धिमानों में से कई एक गिरेंगे उन्हें परखने और शुद्ध करने और अन्त लों श्वेत करने को क्योंकि अब भी ठहराये हुए समय के लिये है॥

३६ और राजा अपनी इच्छा के समान करेगा और अपने को बढ़ावेगा और हर एक देव से आप को महिमा देगा और ईश्वरों के ईश्वर का साम्ना करके आश्चर्य्यित बातें कहेगा और जलजलाहट के पूरे होने लों वह भाग्यवान होगा क्योंकि जो ठहराया गया है सो किया ३७ जायेगा। और वह अपने पितरों के ईश्वर को और स्त्रियों की वांछा को और किसी ईश्वर को न समझेगा क्योंकि वह आप को सभों पर बढ़ावेगा। ३८ परन्तु गढ़ों के ईश्वर को उसी के आसन पर प्रतिष्ठा देगा हां वह एक देव को जिसे उस के पितरों ने न जाना सोना चांदी और बहुमूल्य मणि और सुन्दर बस्तुन से प्रतिष्ठा देगा। ३९ और वह गढ़ों के गढ़ों में उपरी देव के संग ऐसा कुछ करेगा जिसे वह मान लेगा उसे वह महिमा से बढ़ावेगा और वह उन से बहुतों पर प्रभुता करावेगा और मोल के लिये देश को बांटेगा॥

४० और अन्त समय में दक्खिन का राजा उसे ठेलेगा और उत्तर का राजा बवंडर की नाईं रथों और घोड़चढ़ों और बहुत से जहाजों को लेके उस के बिरुद्ध आवेगा और वह देशों में प्रवेश करेगा और उमड़ेगा और पार जायेगा। ४१ और वह शुभ भूमि में प्रवेश करेगा और बहुत गिराये जायेंगे परन्तु ये अर्थात् अदूम और मोआब और अमून के बंश के प्रधान उस के हाथ से बच जायेंगे। ४२ और वह अपने हाथ को देशों पर भी बढ़ावेगा और मिस्र की भूमि न बचेगी। ४३ परन्तु सोना चांदी और मिस्र की बहुमूल्य बस्तु के भंडार पर वह पराक्रम पावेगा और लबीयून और कूशी उस के डगों पर होंगे। ४४ परन्तु पूरब और उत्तर से संदेश उसे व्याकुल करेंगे इस लिये वह बड़े कोप से नाश करने को और बहुतों को सर्बथा उठा देने को निकलेगा। ४५ और वह अपने भवनों के तंबू को समुद्रों के बीच आनन्द के पहाड़ की पवित्रता में गाड़ेगा तथापि वह अपने अन्त को पहुंचेगा और उस का कोई सहायक न होगा॥

बारहवां पर्ब्ब।

१ और उसी समय मीकाएल खड़ा होगा वह महा प्रधान जो तेरे लोग

के बंश के लिये खड़ा होता है और ऐसा व्याकुल का समय होगा जैसा कभी न हुआ जब से लोग हुए उसी समय लों और उसी समय में तेरे लोग हर एक जन जो पुस्तक में लिखा हुआ पाया २ जायेगा छोड़ाया जायेगा। और उन में से बहुत जो पृथिवी की धूल में शयन करते हैं जाग उठेंगे कितने तो अनन्त जीवन के लिये और कितने लज्जा और ३ अनन्त निन्दा के लिये। और वे जो उपदेशक होंगे आकाश के ज्योतिमान की नाईं और वे जो बहुतों को धर्म्म की ओर फेरते हैं तारों की नाईं सनातन के लिये चमकेंगे॥

४ परन्तु तू हे दानिएल इन बातों को बन्द कर और पुस्तक पर अन्त के समय लों छाप कर बहुत से लोग इधर उधर दौड़ेंगे और ज्ञान बढ़ जायेगा॥

५ तब मैं दानिएल ने देखा और क्या देखता हूं कि दो और खड़े थे एक नदी के इस तीर और दूसरा नदी के उस ६ तीर पर। और एक ने सूती बस्त्र पहिने हुए पुरुष से जो नदी के पानियों पर था कहा कि इन आश्चर्य्यों का ७ अन्त कब लों। तब सूती बस्त्र पहिने हुए पुरुष को जो नदी के पानियों पर था जब उस ने अपना दहिना हाथ और अपना बायां हाथ स्वर्ग की ओर उठाये तब मैं ने सुना और जीवते ईश्वर की किरिया खाके कहा कि समय और समयों और आधे समय के लिये होगा और जब वह पवित्र लोगों के पराक्रम को बिथराने से संपूर्ण कर चुकेगा ये बातें समाप्त होंगी॥

८ और मैं ने सुना परन्तु न समझा तब मैं ने कहा कि हे मेरे प्रभु इन बातों ९ का अन्त क्या। और उस ने कहा कि दानिएल तू चला जा क्योंकि बातें बन्द और अन्त के समय लों छापी रहेंगी। १० बहुत से लोग पवित्र और श्वेत किये जायेंगे और परखे जायेंगे परन्तु दुष्ट दुष्टता करेंगे और सब दुष्ट न समझेंगे ११ परन्तु बुद्धिमान समझेंगे। और जिस समय से प्रतिदिन का बलिदान उठा दिया जायेगा और वह उजाड़क घिन स्थापित किई जायेगी सहस्र दो सौ १२ और नब्बे दिन होंगे। धन्य वह जो बाट जोहता है और एक सहस्र तीन १३ सौ पैंतीस दिन लों पहुंचता है। परन्तु अन्त लों तू चला जा क्योंकि तू बिश्राम करेगा और अपने भाग में अन्त के दिनों में उठ खड़ा होगा॥

हूसीअ भविष्यद्वक्ता की पुस्तक ।

पहिला पर्ब्ब ।

१ परमेश्वर का बचन जो यहूदाह के राजा उज्जियाह और यूताम और आखज और हिजकियाह के दिनों में और इसराएल के राजा यूआस के बेटे यरबिआम के दिनों में बिअरी के बेटे हूसीअ के पास पहुंचा ॥

२ हूसीअ के द्वारा से परमेश्वर के बचन का आरम्भ और परमेश्वर ने हूसीअ से कहा कि जा और अपने लिये एक व्यभिचार की स्त्री और व्यभिचार के बालकों को ले क्योंकि देश ने परमेश्वर से फिरके बड़ा व्यभिचार किया है॥

३ सो उस ने जाके दिबलाईम की बेटी जुमूर को लिया वह गर्भिणी हुई ४ और उस के लिये एक बेटा जनी । तब परमेश्वर ने उस्से कहा कि उस का नाम यजरअएल रख क्योंकि थोड़े समय में मैं यजरअएल के लोहू का पलटा याहू के घराने से लूंगा और इसराएल के घराने के राज्य को समाप्त करूंगा । ५ और उसी दिन ऐसा होगा कि मैं यजरअएल की तराई में इसराएल के धनुष को तोड़ूंगा ॥

६ और वह फिर गर्भिणी हुई और कन्या जनी और उस ने उस्से कहा कि उस का नाम लारहुम: रख क्योंकि मैं इसराएल के घराने पर अब और दया न करूंगा परन्तु निश्चय उन्हें उठाऊंगा । ७ पर मैं यहूदाह के घराने पर दया करूंगा और परमेश्वर उन के ईश्वर से उन्हें बचाऊंगा और धनुष अथवा तलवार अथवा युद्ध अथवा घोड़ों अथवा घोड़चढ़ों से उन्हें न बचाऊंगा ॥

८ और उस ने लारहुम: का दूध छोड़ाया तब वह फिर गर्भिणी हुई और बेटा जनी । ९ और उस ने कहा कि उस का नाम लाअम्मी रख क्योंकि तुम मेरे लोग नहीं हो और मैं तुम्हारा न हूंगा । १० तथापि इसराएल के सन्तान गिन्ती में समुद्र की बालू की नाईं होंगे जो नापी और गिनी नहीं जाती और ऐसा होगा कि जहां उन से कहा गया कि तुम मेरे लोग नहीं वहां उन से कहा जायेगा जीवते ईश्वर के सन्तान हो । ११ और यहूदाह के सन्तान और इसराएल के सन्तान बटोरे जायेंगे और अपने लिये एक प्रधान ठहरावेंगे और वे देश से निकल आवेंगे क्योंकि यजरअएल का दिन बड़ा होगा ॥

दूसरा पर्ब्ब ।

१ अपने भाइयों को अम्मी कहो और २ अपनी बहिनों को रहूम: । बिवाद कर अपनी माता से बिवाद कर क्योंकि वह मेरी पत्नी नहीं और न मैं उस का पति और वह अपनी बेश्याई अपनी दृष्टि से और अपना व्यभिचार अपने दोनों कुचों के मध्य से दूर करे । ३ न हो कि मैं उसे नग्न करूं और उसे ऐसा धरूं जैसा कि उस के जन्मदिन में और उसे अरण्य की नाईं बनाऊं और सूखी भूमि की नाईं करूं और तिरखा से मार डालूं । ४ और मैं उन के पुत्रों पर दया न करूंगा क्योंकि वे व्यभिचार के हैं । ५ क्योंकि उन की माता ने व्यभिचार किया और उन की जननी ने लाजकर्म्म किया क्योंकि उस ने कहा कि मैं अपने यारों के पीछे जाऊंगी जो मुझे अन्न और जल ऊन और सन तेल और मदिरा देते हैं ॥

६ इस लिये देख मैं तेरे मार्ग को कांटों से रोंदूंगा और भीत उठाऊंगा जिस्तें ७ वह अपने पैंडों को न पावे। और वह अपने यारों के पीछे पीछे पड़ेगी पर उन से न भेंटेगी और वह उन्हें खोजेगी पर न पावेगी तब वह कहेगी कि मैं अपने पहिले पति के पास लौट जाऊंगी क्योंकि अब से तब मेरा भला था॥

८ और उस ने न जाना कि मैं ने उसे अन्न और नया दाखरस और तेल दिया और उस का सोना चांदी बढ़ाया जिस्से ९ उन्हों ने बअल बनाया। इस लिये मैं लौटूंगा और उस के समय में अपने अन्न को और उस की ऋतु में अपने नये दाखरस को ले लूंगा और अपने ऊन और सन को जो उस की नग्नता १० ढांपने के लिये हुआ। और अब मैं उस के यारों की दृष्टि में उस की लज्जा प्रगट करूंगा और कोई उसे मेरे हाथ ११ से न छुड़ावेगा। और मैं उस का सारा हर्ष उस का पर्व्व उस की अमावास्या और उस का विश्राम और १२ उस के सारे उत्सव समाप्त करूंगा। और मैं उस के दाख को और उस के गूलर-पेड़ों को उजाड़ूंगा जिन के विषय में उस ने कहा कि यह मेरा भोगद्रव्य है जिसे मेरे यारों ने मुझे दिया है और मैं उन्हें जंगल बनाऊंगा और बनपशु १३ उन्हें खा जायेंगे। और मैं उस्से बअलों के दिनों का पलटा लूंगा जिन में उस ने उन के लिये सुगंध जलाया और आप को अपने नथ से और अपने आभूषण से संवारा और अपने यारों के पीछे गई और मुझे भूल गई परमेश्वर कहता है॥

१४ तिस पर भी देख मैं उसे फुसलाऊंगा और उसे अरण्य में लाऊंगा और उस्से १५ शान्तिबचन कहूंगा। और वहां से उस को दाख की बारी उसे दूंगा और अकूर की तराई आशा के द्वार के लिये तब वह युवा अवस्था के दिनों के समान गाया करेगी और उस दिन के समान जिस में वह मिस्र देश से निकल आई॥

१६ और उसी दिन ऐसा होगा परमेश्वर कहता है कि तू मुझे इशी कहेगी और कभू फिर मुझे बाअली न कहेगी। १७ क्योंकि मैं उस के मुंह से बअलों के नामों को दूर करूंगा और उन के नाम से वे फिर कभी पुकारे न जायेंगे। १८ और उसी दिन मैं उन के लिये चौगान के पशु के साथ और आकाश के पक्षियों के साथ और भूमि के रेंगनेवालों के साथ बाचा बांधूंगा और मैं पृथिवी पर से धनुष और तलवार और संग्राम को तोड़ूंगा और कुशल से उन्हें लेटाऊंगा। १९ और मैं तुझे सदा के लिये अपने साथ मंगनी करूंगा हां मैं धर्म्म और न्याय और प्रेम और दया से तुझे अपने साथ २० मंगनी करूंगा। हां मैं बिश्वासता से तुझे अपने साथ मंगनी करूंगा और तू परमेश्वर को जानेगी॥

२१ और उसी दिन ऐसा होगा परमेश्वर कहता है कि मैं उत्तर दूंगा मैं स्वर्गों को उत्तर दूंगा और वे पृथिवी को उत्तर २२ देंगे। और पृथिवी अन्न और नये दाखरस और तेल को उत्तर देगी और २३ वे यज़रअएल को उत्तर देंगे। और मैं उसे अपने लिये पृथिवी में बोऊंगा और लारुहम: पर दया करूंगा और लाअम्मी से कहूंगा कि तू मेरी जाति और वह कहेगा हे मेरे ईश्वर॥

तीसरा पर्व्व।

१ और परमेश्वर ने मुझ से कहा कि फिर जा और एक स्त्री से प्रेम कर पर जो एक मित्र से प्रियतम है और व्यभि-

चाहिती है जैसा कि परमेश्वर इसराएल के सन्तानों से प्रेम करता है जो उपरी देवताओं की ओर फिरते और दाख की २ टिकियां चाहते हैं। सो मैं ने उसे पन्द्रह रुपये और डेढ़ होमर जव से अपने लिये ३ मोल लिया। और मैं ने उस्से कहा कि तू बहुत दिनों तक मेरे लिये रहेगी तू व्यभिचार न करेगी न दूसरे पुरुष की हो जायेगी और मैं भी तेरे लिये यों हीं रहूंगा॥

४ क्योंकि इसराएल के सन्तान बिना राजा और बिना अध्यक्ष और बिना बलि और बिना मूरत और बिना अफ़ूद और बिना तराफ़ीम बहुत दिन लों रहेंगे। ५ उस के पीछे इसराएल के सन्तान लौटेंगे और परमेश्वर अपने ईश्वर को और दाऊद अपने राजा को खोजेंगे और अन्त समय में वे परमेश्वर और उस की भलाई से डरेंगे॥

चौथा पर्ब्ब।

१ हे इसराएल के सन्तानो परमेश्वर का बचन सुनो क्योंकि देश के बासियों से परमेश्वर का बिवाद है क्योंकि देश में न सत्य है और न दया और न ईश्वर २ की पहिचान है। किरिया और झूठ और घात और चोरी और व्यभिचार से वे फूट निकले और लोहू लोहू से पहुंच ३ गया। इस लिये देश बिलाप करेगा और उस में के सब निवासी चौगान के पशु और आकाश के पक्षी सहित कुम्हला जायेंगे और समुद्र की मछलियां भी लिई ४ जायेंगी। तथापि कोई बिवाद न करे और कोई डपट न देवे क्योंकि तेरे लोग उन के तुल्य हैं जो याजक से बिवाद ५ करते हैं। इस लिये तू दिन को गिरेगा और भविष्यद्वक्ता भी तेरे साथ रात को गिरेगा और मैं तेरी माता को नष्ट करूंगा॥

६ मेरे लोग अज्ञानता से नष्ट किये जाते हैं इस लिये कि तू ने ज्ञान को त्यागा है मैं भी तुझे याजक होने से त्यागूंगा और इस कारण कि तू ने अपने ईश्वर की व्यवस्था को बिसराया है मैं ७ भी तेरे सन्तानों को बिसराऊंगा। जिस रीति से वे बढ़े उस रीति से उन्हों ने मेरा अपराध किया इस लिये मैं उन के ८ ऐश्वर्य्य को लाज से पलटूंगा। वे मेरे लोगों के पाप के बलिदान को खाते हैं और उन की बुराई पर अपना मन ९ लगाते हैं। और जैसा लोग पर तैसा याजक पर होगा और मैं उन की चालों का पलटा उन्हें दूंगा और उन की १० किरियाओं के फल उन्हें दूंगा। और वे खावेंगे पर संतुष्ट न होंगे वे व्यभिचार करेंगे पर न बढ़ेंगे क्योंकि उन्हों ने परमेश्वर की सुरत को छोड़ दिया॥

११ व्यभिचार और दाखरस और नया १२ दाखरस मन को हर लेता है। मेरे लोग अपने काष्ठ की मूरत से मंत्र लेते और उन की लाठी उन को बता देती है क्योंकि व्यभिचार के मन ने उन्हें भटकाया है और व्यभिचार करके वे अपने ईश्वर के पीछे होने से फिर आये। १३ वे पर्बतों की चोटियों पर बलि चढ़ाते हैं और टीलों पर धूप जलाते हैं और बलूत और चनार और हरे बलूत के तले भी क्योंकि उन की छाया अच्छी है इस लिये तुम्हारी पत्रियां छिनाला करतीं और तुम्हारी पत्रियां व्यभिचार करती १४ हैं। जब तुम्हारी पत्रियां छिनाला करेंगी और तुम्हारी पत्रियां व्यभिचार करेंगी तब मैं उन को दण्ड न दूंगा क्योंकि वे छिनाला के संग एकान्त में जातीं और बेश्यों के संग बलि चढ़ातीं इसी लिये असमझ लोग गिराये जायेंगे॥

१५ हे इसराएल यद्यपि तू व्यभिचार

करे तथापि यहूदाह अपराध न करे और तुम गिलगाल में न आना और न बैतअवन को ऊपर जाना और किरिया न १६ खाना कि जीवते परमेश्वर सोंह। क्योंकि अड़नेवाली कलोर की नाईं इसराएल अड़ता है अब परमेश्वर उन्हें मेम्ने की नाईं फैलावस्थान में चरावेगा। १७ इफरायम मूरतों से मिल गया है उसे १८ रहने दे। जब वे दाखरस पी चुके तब व्यभिचार करते रहे उस के अध्यक्षों ने १९ लाज से प्रीति रक्खी है। पवन ने उन्हें अपने पंखों में बन्द कर रक्खा है और वे अपने बलिदानों से लज्जित होंगे॥

पांचवां पर्ब्ब।

१ हे याजको यह सुनो और हे इसराएल के घराने कान धरो और हे राजा के घराने कान लगाओ क्योंकि तुम्हारे बिरुद्ध बिचार हुआ है इस लिये कि तुम मिसफः में फंदा हुए और तबूर पर २ बिछाया हुआ जाल। और फिरे हुओं ने ढेर सा घात किया पर मैं उन सभों ३ को ताड़ना दूंगा। मैं इफरायम को जानता हूं और इसराएल मुझ से छिपा नहीं है क्योंकि अब हे इफरायम तू व्यभिचार करता है और इसराएल अशुद्ध ४ है। वे अपने कार्य्य नहीं सुधारते जो अपने ईश्वर की ओर फिरें क्योंकि उन के मध्य में व्यभिचार का आत्मा है और वे परमेश्वर को नहीं जानते॥

५ और इसराएल का अहंकार उस के मुंह के आगे साक्षी देता है और इसराएल और इफरायम अपनी अपनी बुराई से ठोकर खायेंगे यहूदाह भी उन के ६ साथ ठोकर खायेगा। वे अपने झुंड और ढोर लेके परमेश्वर को ढूंढ़ने आयेंगे पर उसे न पावेंगे वह उन से अलग ७ गया। उन्हों ने परमेश्वर से बिश्वासघात किया है क्योंकि उन्हों ने उपरी बालकों को जन्माया है अब एक मास उन्हें उन के भागों समेत खा जायेगा॥

८ जिबअः में सींगा बजाओ और रामः में तुरही बैतअवन में पुकारो कि हे ९ बिनयमीन वह तेरे पीछे है। ताड़ने के दिन में इफरायम उजाड़ होगा इसराएल की गोष्ठियों में मैं ने उस बात १० को जनाया जो निश्चय होगी। यहूदाह के अध्यक्ष उन की नाईं हैं जो सिवाने को सरकाते हैं मैं पानी के समान अपना कोप उन पर उंडेलूंगा॥

११ इफरायम दबा है न्याय से चकनाचूर है क्योंकि वह एक संग हुआ आज्ञा के १२ समान चला। इस लिये मैं इफरायम के लिये कीड़े की नाईं हूंगा और यहूदाह के घराने के लिये सड़ाहट की १३ नाईं। और इफरायम ने अपना रोग देखा और यहूदाह ने अपना घाव तब इफरायम असूर को गया और दुष्ट राजा को भेजा परन्तु वह तुम्हें चंगा न कर सकेगा और न तुम्हारा घाव भर देगा। १४ क्योंकि मैं इफरायम के लिये सिंह की नाईं हूंगा और यहूदाह के घराने के लिये युवा सिंह की नाईं मैं मैं ही फाड़ डालूंगा और जाऊंगा मैं ले जाऊंगा और १५ कोई न छोड़ावेगा। मैं जाके अपने स्थान को लौटूंगा जब लों वे दंड न पावें और मेरे मुंह को न निहारें वे अपने कष्ट में सबेरे मुझे ढूंढ़ेंगे॥

छठवां पर्ब्ब।

१ आओ हम परमेश्वर की ओर फिरें क्योंकि उस ने फाड़ा है और वही हमें चंगा करेगा उसी ने मारा है और वही २ हम पर पट्टी बांधेगा। वह दो दिन में हमें जिलावेगा तीसरे दिन हमें उठावेगा और हम उस की दृष्टि में ३ जीयेंगे। तब हम जानेंगे हम परमेश्वर के जान्ने को यत्न करेंगे उस का

निकलना बिहान की नाईं सिद्ध है और वह बर्षा की नाईं हमारे लिये आवेगा पिछली बर्षा की नाईं जो भूमि को सींचती है ॥

४ हे इफरायम मैं तुझ से क्या करूं हे यहूदाह मैं तुझ से क्या करूं क्योंकि तुम्हारी भलाई बिहान के मेघ की नाईं है और ओस की नाईं जो तड़के ५ जाती रहती । इस लिये मैं ने भविष्यद्वक्तों से उन्हें चीरा अपने मुंह के बचनों से उन्हें घात किया तेरे बिचार बिजली की नाईं निकले ॥

६ क्योंकि मैं ने भलाई चाही न बलि और ईश्वर का ज्ञान बलिदान की ७ भेंटों से अधिक । परन्तु उन्हों ने आदम की नाईं बाचा को तोड़ा है वहां उन्हों ने मुझ से बिश्वासघात किया । ८ जिलिअद कुकर्म्मों का नगर है डगों में ९ लोहू के चिन्ह हैं । जैसा डकैतों की जथा मनुष्यों का घात मे लगता वैसा याजकों का साझा है वे सिकम के मार्ग में घात करते हैं हां उन्हों १० ने ढीठ दुष्टता किई है । इसराएल के घर में मैं ने एक भयंकर बस्तु देखी है वहां इफरायम का छिनाला है इसराएल अशुद्ध है ॥

११ हे यहूदाह तेरे लिये भी कटनी ठहरी है जब मैं ने अपने लोगों की बंधुआई को पलट दिया ॥

सातवां पर्व्व

१ जब मैं ने इसराएल को चंगा किया तब इफरायम की बुराई और समरून के कुकर्म्म खुल गये क्योंकि उन्हों ने छल किया है और चोर भीतर आता है और डकैतों की जथा बाहर लूटती २ है । और उन्हों ने अपने मन में न कहा कि मैं ने उन की सारी दुष्टता को स्मरण किया अब उन के कर्म्म उन्हें घेर रखते और वे मेरे सन्मुख हैं । ३ वे अपनी दुष्टता से राजा को आनन्दित करते हैं और अपने मिथ्या बचन से ४ अध्यक्षों को । वे सब के सब ब्यभिचार करते हैं वे उस भट्ठी की नाईं हैं जो रोटीवाले से सुलगाई गई वह गूंधी के साने से उस के खमीर होने तक आग बारने से रह जाता है । ५ हमारे राजा के दिन में अध्यक्ष दाखरस के ताप से रोगित हुए उस ने निन्दकों के साथ अपना हाथ बढ़ाया । ६ क्योंकि वे समीप आते हैं जैसा कि उन का मन भट्ठी की भांति तप्त था पर वे घात में लगते हैं उन का रोटीवाला रात भर नींद में रहता है वह बिहान को आग की लवर की नाईं बरता है । ७ वे सब भट्ठी की नाईं तप्त हैं और अपने न्यायियों को खा जाते हैं उन के सारे राजा गिर पड़े उन में से कोई मेरी दोहाई नहीं करता ॥

८ इफरायम आप को जातिगणों में मिलाता है इफरायम बिन उलटी हुई चपाती है । ९ परदेशियों ने उस का बल भक्षण किया है और वह नहीं जानता हां जहां तहां उस पर पक्के बाल हैं और नहीं जानता । १० और इसराएल का अहंकार उस के मुंह के आगे साक्षी देता है तिस पर वे परमेश्वर अपने ईश्वर की ओर नहीं फिरते और इस सब के लिये उसे नहीं ढूंढ़ते । ११ इफरायम एक भोले पंडुक की नाईं है जिस को चेत नहीं वे मिस्र की दोहाई देते हैं वे असूर को जाते हैं । १२ जब वे जायेंगे तब मैं अपना जाल उन पर फैलाऊंगा आकाश के पंछी की नाईं मैं उन्हें उतारूंगा मैं उन की ताड़ना करूंगा जैसा कि उन की सभा में सुना गया ॥

१३ हाय उन पर क्योंकि वे मुझ से भाग गये हैं बिनाश उन पर क्योंकि

उन्हों ने मेरा अपराध किया है और मैं ने उन्हें छोड़ाया है तथापि वे मेरे
१४ विरुद्ध झूठ बोले । जब वे अपने अपने बिछौने पर चिल्लाते हैं तब वे अपने मन से मुझे नहीं पुकारते वे अन्न और दाखरस के लिये एकट्ठे आये और मुझ
१५ से फिर गये । और मैं ने उन को ताड़ना दिई और उन की भुजों को बल दिया तथापि उन्हों ने मेरे बिरुद्ध बुरी युक्ति
१६ बांधी है । वे फिरते हैं पर अत्यन्त महान की ओर नहीं वे छली धनुष के समान हैं उन के अध्यक्ष अपनी जीभ की तलवार से गिरेंगे मिस्र देश में यही उन की ठठोली होगी ॥

आठवां पर्ब्ब ।

१ तुरही तेरे तालू पर वह गिद्ध की नाईं परमेश्वर के घराने पर टूटता है क्योंकि वे मेरी बाचा से बाहर गये और मेरी व्यवस्था का उल्लंघन किया ।
२ वे मुझे पुकारेंगे कि हे मेरे ईश्वर हम
३ इसराएल तुझे पहिचानते हैं । जो भला है इसराएल ने त्याग किया बैरी उसे
४ खेदेगा । उन्हों ने राजाओं को ठहराया पर मेरी ओर से नहीं उन्हों ने अध्यक्षों को ठहराया पर मैं नहीं जानता अपने रूपे सोने से उन्हों ने मूर्त्तों को बनाया कि नष्ट किये जायें ॥

५ हे समरून तेरा बछड़ा घिनौना है मेरा कोप उन पर बरता है वे कब तक
६ शुद्ध न होंगे । क्योंकि वह इसराएल की ओर से है कारीगर ने उसे बनाया इस लिये वह ईश्वर नहीं है अवश्य समरून का बछड़ा टूक टूक किया जायेगा ।
७ क्योंकि उन्हों ने पवन बोया है इसी लिये वे बवंडर लवेंगे उस को टहनी नहीं उस के उगने से अन्न उत्पन्न न होगा यदि उस में कुछ उत्पन्न भी होवे
८ परदेशी उसे लील जायेंगे । इसराएल निगला गया अब वे जातिगणों में उस पात्र के समान हैं जिस्से प्रसन्नता नहीं
९ है । क्योंकि वे असूर को चढ़ गये अकेले बनैले गदहे की नाईं इफरायम
१० ने यारों को भोगद्रव्य दिया है । यद्यपि उन्हों ने जातिगणों में भोगद्रव्य दिया तथापि मैं अब उन्हें बटोरूंगा और थोड़ी बेर में अध्यक्षों के राजा के बोझ से वे कष्टित होंगे ॥

११ क्योंकि इफरायम ने पाप करने को बेदियां बढ़ाईं वे बेदियां उस के लिये
१२ पाप करने को हैं । मैं अपनी व्यवस्था की बड़ी बातें उस के लिये लिखता हूं पर वे उपरी बस्तु की नाईं गिनी गईं ।
१३ वे मेरी भेंट के बलिदानों के लिये मांस चढ़ाते और उसे खाते हैं परमेश्वर उन्हें ग्रहण नहीं करता अब वह उन की बुराई स्मरण करेगा और उन के पापों का पलटा देगा वे मिस्र को फिर
१४ जायेंगे । क्योंकि इसराएल ने अपने कर्त्ता को बिसराया और मन्दिरों को बनाया और यहूदाह ने बाढ़ित नगरों को बढ़ाया इस लिये मैं उस के नगरों पर आग भेजूंगा और वह उस के भवनों को भक्ष लेगी ॥

नवां पर्ब्ब ।

१ हे इसराएल जातिगणों की भांति मगनता के मारे आनन्दित मत हो क्योंकि तू छिनाला करके अपने ईश्वर से फिर गया तू ने हर एक खलियान पर खरची
२ से प्रीति रक्खी है । खलियान और कोल्हू उन्हें नहीं पालेंगे और नया दाख-
३ रस उन को धोखा देगा । वे परमेश्वर के देश में नहीं बसेंगे पर इफरायम मिस्र को फिर जायेंगे और असूर में अशुद्ध
४ बस्तु खायेंगे । वे परमेश्वर को दाख-रस नहीं तपावेंगे और उन के बलि उसे प्रसन्न न आवेंगे वे उन के लिये बिलाप

की रोटी की नाईं होंगे जितने उसे खाते हैं अशुद्ध होंगे क्योंकि उन की रोटी अपने लिये है वह परमेश्वर के घर में न आवेगी ॥

५ उत्सव के दिन और परमेश्वर के ६ पर्ब्ब के दिन में तुम क्या करोगे। क्योंकि देख वे बिनाश से चले जाते हैं मिस्र उन्हें बटोरेगा मम्फ उन को गाड़ेगा उन का भावता धन कंटकटारी का अधिकार होगा उन के तंबुओं में कांटे होंगे ॥

७ दण्ड के दिन आये पलटे के दिन आये तेरी बड़ी बुराई और तेरे बड़े बैर के लिये इसराएल जानेगा भविष्यद्वक्ता मूर्ख हैं और आत्मिक जन बावला।
८ इफरायम मेरे ईश्वर की बाट जोहता है भविष्यद्वक्ता अपने सारे मार्गों में ब्याधा का जाल है वह अपने ईश्वर के घर में खिझाने का कारण है।
९ जिबअः के दिनों की भांति वे अति बिगड़ गये वह उन की बुराई स्मरण करेगा वह उन के पापों का पलटा लेगा ॥

१० मैं ने इसराएल को अंगूरों की नाईं बन में पाया जैसा कि गूलर का पहिला पक्का हुआ फल अपनी पहिली ऋतु में वैसा तुम्हारे पितरों को देखा पर वे बअलफ़ूर के पास गये और उस लज्जित बस्तु के लिये आप को न्यारा किया और अपने प्रेम के समान घिनित हुए।
११ इफरायम के बिषय उन का ऐश्वर्य्य चिड़िया की भांति उड़ जायेगा जन्म
१२ और कोख और गर्भ न होगा। क्योंकि यदि वे अपने बालकों को पालें तथापि मैं मनुष्यों में उन्हें निर्बंश करूंगा क्योंकि हाय हाय उन पर जब मैं उन से जाता
१३ रहूंगा। मैं ने इफरायम को सूर की भांति बांछित स्थान में लगाया हुआ देखा इफरायम अपने बालकों को बधिक के लिये निकालेगा ॥

१४ हे परमेश्वर उन को तू क्या देगा उन्हें गिरानेवाले पेट और सूखा स्तन
१५ दे। उन की सारी बुराई जिलजाल में है अवश्य मैं ने वहां उन का बैर किया उन के कामों की बुराई के लिये मैं उन्हें अपने घर से खेदूंगा• मैं उन से फिर प्रीति न करूंगा उन के सारे अध्यक्ष
१६ उड़नेवाले हैं। इफरायम मारा हुआ है उन की जड़ सूख गई वे फल न लावेंगे हां यदि वे जनें तथापि मैं उन के गर्भ
१७ के प्रियतम को बध करूंगा। मेरा ईश्वर उन्हें त्यागेगा क्योंकि उन्हों ने उस की न सुनी और वे जातिगणों में भ्रमिक होंगे ॥

दसवां पर्ब्ब

१ इसराएल घनी लता है जिस में फल लगा उस ने अपने फल की बढ़ती के समान बेदियों को बढ़ाया अपने देश की सुघराई के समान उन्हों ने
२ सुघरी मूरतें बनाईं। उन का मन बट गया अब वे दोषी ठहराये जायेंगे वह उन की बेदियां ढायेगा वह उन की
३ मूरतें तोड़ेगा। क्योंकि अब वे कहेंगे कि हमारा कोई राजा नहीं है इसी लिये कि हम परमेश्वर से न डरें तो राजा हमारा क्या करेगा ॥

४ वे बातें बोलते किरिया खाते बाचा बांधते हैं और खेत की लकीरों में इन्द्रायण की नाईं दण्ड उगता है।
५ बैतअवन की बछियों के कारण समरून के निवासी डरेंगे क्योंकि उस के लोग उस पर शोक करेंगे और उस के पंडे उस के लिये उछलेंगे उस के बिभव के कारण क्योंकि वह उस्से जाता रहा।
६ वह भी असूर में दुष्ट राजा के भेंट के लिये पहुंचाया जावेगा इफरायम

लाज खायेगा और इसराएल अपने मंत्र
७ से लज्जित होगा। समरून का राजा
कट गया है वह जल के ऊपर फेन की
८ नाईं है। और आवन के ऊंचे स्थान
इसराएल का पाप नष्ट हो जायेंगे और
उन की बेदियों पर कांटे और ऊंट-
कटारे उगेंगे और वे पर्बतों से कहेंगे
कि हमें ढांपो और टीलों को कि हम
पर गिरो॥

९ हे इसराएल तू ने जिबअः के दिनों
से पाप किया है वहां वे रहते हैं क्या
जिबअः में वह संग्राम जो बुराई के
१० सन्तान पर है उन्हें न लेगा। मैं बहुत
चाहता कि उन को दण्ड दूं और जाति-
गण उन के बिरुद्ध बटोरे जायेंगे जब
वे अपनी दो बुराइयों के लिये दण्ड
११ पायेंगे। सो इफरायम सुधराई हुई
कलोर है जो अन्न काटने चाहती पर
मैं उस के अच्छे गले के समीप चलूंगा
मैं इफरायम को वाहन बनाऊंगा यहूदाह
हल जोतेगा और यअकूब उस का हेंगा
फेरेगा॥

१२ अपने लिये धर्म्म में बोओ भलाई में
लवो अनजार जोतो और परमेश्वर के
ढूंढने का समय है जब लों वह आवे और
१३ धर्म्म तुम को सिखावे। तुम ने दुष्टता
को जोता तुम ने बुराई को लवा तुम
ने झूठ का फल खाया क्योंकि तू ने
अपने मार्ग पर आसरा रक्खा अपने
१४ बलवानों की भीड़ पर। इस लिये तेरे
लोगों में हुल्लड़ मचेगा और तेरे सारे
गढ़ ढाये जायेंगे जैसा कि सलमन ने
युद्ध के दिन बैतअरबिएल को ढा दिया
माता अपने बालकों पर टूक टूक पटकी
१५ गई। तुम्हारी अति दुष्टता के कारण
वह तुम से बैतएल में ऐसा करेगा
बिहान को इसराएल का राजा निश्चय
मारा जायेगा॥

ग्यारहवां पर्ब्ब।

१ जब इसराएल लड़का था तब मैं ने
उसे प्यार किया और अपने पुत्र को मिस्र
२ से बुलाया। जितना उन्हों ने उन को
बुलाया वे उन से उतना दूर गये
उन्हों ने बअलों के लिये बलि चढ़ाया
और गढ़ी हुई मूरतों के आगे धूप
३ जलाया। मैं ने इफरायम के हाथ पकड़के
उन्हें चलने सिखाया पर उन्हों ने नहीं
४ जाना कि मैं ने उन्हें चंगा किया। मैं
ने मनुष्य की डोरियों से प्रेम के बंधनों
से उन्हें खींचा मैं उन का ऐसा हुआ
कि मैं ने उन के गले पर से जूआ उतारा
और उन्हें नेह से खिलाया॥

५ वह मिस्र देश को फिर न लौटेगा
पर असूरी उस का राजा होगा क्योंकि
उन्हों ने फिर आने को नाह किया।
६ और तलवार उस के नगरों पर पड़ी
रहेगी और उस की लाठियों को काटेगी
और उन मंत्रों के कारण उन्हें भक्ष लेगी।
७ और मेरे लोग मुझ से जाने पर अपना
मन लगाते हैं वे उन्हें अति महान की
ओर बुलाते हैं पर कोई उस की बड़ाई
नहीं करेगा॥

८ हे इफरायम मैं तुझे क्योंकर त्यागूं
हे इसराएल मैं तुझे क्योंकर सौंप दूं क्या
मैं तुझे अदमः की नाईं बनाऊं और तुझे
जिबोआम की नाईं ठहराऊं मेरा मन
मुझ में पलट गया मेरा स्नेह अति बढ़
९ गया। मैं अपने क्रोध के तपन के
समान न करूंगा मैं इफरायम को नाश
करने को न फिरूंगा क्योंकि मैं सर्व्व-
शक्तिमान हूं और मनुष्य नहीं तेरे मध्य
में धर्ममय और मैं कोप में न आऊंगा।
१० वे परमेश्वर के पीछे चलेंगे जब वह
सिंह की नाईं गर्जेगा जब वह गर्जेगा
११ तब बंश पश्चिम से फुरती करेंगे। वे
मिस्र से पंछी की नाईं फुरती करेंगे और

असूर देश से पंडुक की नाईं और मैं उन्हें उन के घरों में बसाऊंगा परमेश्वर कहता है॥

बारहवां पर्व्व।

१ इफरायम ने झूठ से और इसराएल के घराने ने छल से मुझे घेरा है और यहूदाह सर्व्वशक्तिमान के विषय में चंचल है हां उन पवित्र जनों के विषय में जो विश्वस्त हैं इफरायम पवन खाता है और पुर्वा पवन के पीछे जाता है प्रति-दिन वह झूठ और बटमारी को बढ़ाता है वे असूर से बाचा बांधते हैं और मिस्र २ में तेल पहुंचाया जाता है। यहूदाह से भी परमेश्वर का विवाद है और यअकूब को उस के चलनों के समान दण्ड देगा उस की क्रिया का प्रतिफल उसे देगा॥ ३ उस ने कोख में अपने भाई की एड़ी को धरा और अपने बल से ईश्वर ४ से मल्लयुद्ध किया। हां उस ने दूत से मल्लयुद्ध किया और प्रबल हुआ वह रोया और उस्से बिन्ती किई उस ने उसे बैतएल में पाया और वहां हमारे साथ ५ बार्त्ता किई। अर्थात् परमेश्वर जो सेनाओं का ईश्वर है यहोवाह उस का ६ स्मरण है। इस लिये तू अपने ईश्वर की ओर फिर कृपा और न्याय पालन कर और नित अपने ईश्वर की बाट जोह॥

७ कनआन के हाथ में छल की तुला ८ है वह ठगने को चाहता है। और इफरायम बोलता है कि निश्चय मैं धनवान हूं मैं ने अपने लिये संपत्ति प्राप्त किई है मेरी सारी कमाई में वे मुझ में अन्याय न पावेंगे जो पाप होवे। ९ तिस पर भी मैं मिस्र के देश से परमेश्वर तेरा ईश्वर हूं तेवहारों के दिनों की नाईं मैं फिर तुझे तंबुओं में १० बसाऊंगा। और मैं ने भविष्यद्वक्तों से बोल दिया और दर्शन बढ़ाया और भविष्यद्वक्तों के द्वारा से दृष्टान्तों को कहा। निश्चय जिलिअद में बुराई है ११ निश्चय वे झूठे हैं हां वे जिलजाल में बैलों को बलि करते हैं हां उन की वेदियां उन ढेरों की नाईं हैं जो खेत की रेघारियों पर हैं॥

और यअकूब अराम के देश को १२ भागा और इसराएल ने पत्नी के लिये सेवा किई और पत्नी के लिये भेड़ की रखवाली किई। और भविष्यद्वक्ता से १३ परमेश्वर इसराएल को मिस्र से बढ़ा लाया और भविष्यद्वक्ता से उस की रखवारी करवाई इस लिये उस का प्रभु उस का लोहू उसी पर धरेगा और उस की अपनिन्दा उसी पर फिरावेगा॥

तेरहवां पर्व्व।

जब इफरायम कंपित हो हो बोला तब वह इसराएल में बढ़ाया गया परन्तु जब उस ने बअल के विषय में अपराध किया तब वह मर गया। और अब वे पाप पर पाप करते जाते हैं वे अपने लिये अपने गुन के समान ढाली हुई मूरत अर्थात् प्रतिमा अपनी चांदी से बनाते हैं जो सब के सब कारीगरों के कार्य्य हैं वे उन के विषय में कहते हैं कि जो बलि चढ़ाते हैं सो बछियों को चूमें। इस लिये वे बिहान के मेघ २ की नाईं होंगे और ओस की नाईं जो तड़के जाती रहती है और खलियान के भूसे की नाईं जो बवंडर से उड़ाया हुआ है और धूंए की नाईं जो चूल्हे से निकलता है। पर मैं मिस्र के देश में ४ से परमेश्वर तेरा ईश्वर हूं मुझे छोड़ तू किसी ईश्वर को न जानेगा क्योंकि मुझे छोड़ कोई मुक्तिदायक नहीं है। मैं ने ५ तुझे अरण्य में बड़ी झुराहट के देश में

६ जाता । जैसी उन की चराई थी वैसा वे तृप्त हुए तृप्त होके उन के मन फूल गये इसी लिये उन्हों ने मुझे बिसराया । ७ इसी कारण मैं उन के लिये सिंह की नाईं हूंगा चीते की नाईं मार्ग में मैं ८ घात में लगा रहूंगा । बच्चा हेराये हुए भालू की नाईं मैं उन से भेंट करूंगा और उन के हृदय का अन्तर फाड़ूंगा और मैं वहां उन्हें सिंह की भांति भखूंगा बनपशु उन्हें फाड़ेगा ॥

९ हे इसराएल तू ने अपने को नाश किया पर मुझ से तेरी सहायता है । १० अब तेरा राजा कहां है जिस ने तुझे तेरे सारे नगरों में बचाया और तेरे न्याय कहां जिन के विषय में तू ने कहा कि ११ मुझे राजा और अध्यक्ष दे । मैं अपने क्रोध में एक राजा तुझे दूंगा और अपने कोप में उसे लूंगा ॥

१२ इफरायम की बुराई बन्द है उस १३ का पाप धरा हुआ है । पीड़ित स्त्री की पीड़ें उस पर आवेंगी वह निर्बुद्धि पुत्र है नहीं तो वह बालकों के फूट निकलने के स्थान में देर तक न १४ ठहरता । मैं पाताल के बश से उन्हें छुड़ाऊंगा मैं मृत्यु से उन्हें निस्तार करूंगा हे मृत्यु तेरी मरी कहां है पाताल तेरा नाश कहां पछताना मेरी आंखों से छिपेगा ॥

१५ यद्यपि वह अपने भाइयों से फलवंत है तथापि पुर्बा पवन आवेगी परमेश्वर की पवन बन से चढ़ेगी और उस का सोता सूख जायेगा और उस की बावी सुखाय जायेगी वह उस के सारे बांछित १६ पात्रों का भंडार लूटेगा । समरून दण्ड पावेगा क्योंकि वह अपने ईश्वर से फिर गया है वे तलवार से गिरेंगे उन के बालक पटके जायेंगे और उन की पेटवाली स्त्रियां चीरी जायेंगी ॥

चौदहवां पर्ब्ब ।

१ हे इसराएल परमेश्वर अपने ईश्वर की ओर फिर क्योंकि तू अपनी बुराई से गिर पड़ा है । २ तुम बातों को अपने साथ लेके परमेश्वर की ओर फिरो उस्से कहो कि सारी बुराई उठा डाल और नेह से हम को ग्रहण कर और हम अपने होंठ के बछड़ों को भेंट देंगे । ३ असूर हमें न बचावेगा हम घोड़ों पर न चढ़ेंगे और अपने हाथों की क्रिया को फिर न कहेंगे कि तुम हमारे देव हो क्योंकि अनाथ तुझ से दया पाते हैं ॥

४ मैं उन के फिर आने को चंगा करूंगा मैं उन्हें जी जान से प्यार करूंगा क्योंकि मेरा क्रोध उन से फिर गया । ५ मैं इसराएल के लिये ओस की नाईं हूंगा वह सोसन की नाईं बिकसेगा और लुबनान की भांति जड़ पकड़ेगा । ६ उस की टहनियां फैलेंगी और उस का विभव जलपाई की नाईं होगा और उस का गन्ध लुबनान की नाईं । ७ जो उस की छाया तले रहते हैं वे फिरेंगे वे अन्न की नाईं हरे होंगे और दाख की नाईं बढ़ेंगे और लुबनान के दाखरस की नाईं उस की चर्चा होगी । ८ इफरायम कहेगा कि मुझे फिर मूरतों से क्या काम है मैं ने उसे उत्तर दिया और उसे निहारूंगा मैं हरे सरो की नाईं हूं मुझ से तेरा फल पाया जाता है ॥

९ बुद्धिमान कौन है जो ये बातें समझे विवेकी कौन है जो इन को जाने क्योंकि परमेश्वर के मार्ग सीधे हैं और धर्म्मी उन में चलेंगे पर अपराधी उन में गिरेंगे ॥

यूएल भविष्यद्वक्ता की पुस्तक।

पहिला पर्ब्ब।

१ परमेश्वर का बचन जो फतूएल के बेटे यूएल के पास पहुंचा॥

२ हे बूढ़ो यह सुनो और देश के सारे निवासियो कान लगाओ क्या तुम्हारे दिनों में अथवा तुम्हारे पितरों के दिनों में ३ ऐसा कभी हुआ। उसे अपने बालकों से बर्णन करो और तुम्हारे बालक अपने बालकों से और उन के बालक अगिली ४ पीढ़ी से। कि जो कुछ काटनेवाली टिड्डी ने छोड़ा उसे बटोरी हुई टिड्डी ने खाया है और जो कुछ बटोरी हुई टिड्डी ने छोड़ा उसे चाटनेवाली टिड्डी ने खाया और जो कुछ चाटनेवाली टिड्डी ने छोड़ा उसे नाशक टिड्डी ने खाया॥

५ अरे मतवालो जागो और बिलाप करो अरे दाखरस के सारे पीनेहारो चिल्लाओ नये दाखरस के कारण क्योंकि ६ वह तुम्हारे मुंह से जाता रहा। क्योंकि एक जाति मेरे देश पर चढ़ आई वे बलवन्त और अगणित हैं उन के दांत सिंह के दांत हैं और उन की दाढ़ ७ के दांत सिंहनी के हैं। उन्हों ने मेरे दाख के बृक्ष को उखाड़ा और मेरे गूलर के पेड़ को तोड़ा उन्हों ने उसे सम्पूर्ण उज्जल किया और गिरा दिया उन्हों ने उस की डालियों को खेत किया॥

८ जिस भांति तरुणी अपने युवा पति के लिये टाट पहिने बिलाप करती है ९ उसी भांति बिलाप करो। परमेश्वर के घर से पिसान की भेंट और पीने की भेंट जाती रही याजक परमेश्वर के १० सेवक रोदन करते हैं। खेत उखाड़ा जाता है भूमि बिलाप करती है क्योंकि अन्न उखाड़ा गया नया दाखरस सूख गया तेल कुम्हला गया॥

११ हे किसानो लज्जित होओ हे दाख के मालियो गेहूं और जव के लिये चिल्लाओ १२ क्योंकि खेत की लवनी नष्ट हुई। दाख का बृक्ष सूख गया और गूलरपेड़ मुरझा गया अनार और ताड़ भी और सेव के पेड़ हां खेत के सारे पेड़ सूख गये निश्चय मनुष्य के पुत्रों से आनन्द जाता रहा॥

१३ हे याजको कटि बांधो और छाती पीटो हे बेदी के सेवको चिल्लाओ चलो मेरे ईश्वर के सेवको रात भर टाट ओढ़के पड़े रहो क्योंकि पिसान की भेंट और पीने की भेंट तुम्हारे ईश्वर के घर से १४ रुक गई। पवित्र ब्रत ठहराओ मनादी पुकारो प्राचीनों को और देश के सारे निवासियों को परमेश्वर अपने ईश्वर के घर में बटोरो और परमेश्वर की दोहाई दो॥

१५ हाय उस दिन के लिये क्योंकि परमेश्वर का दिन समीप है और वह सर्ब्बशक्तिमान की ओर से नाश की नाईं १६ आवेगा। क्या हमारी आंखों के साम्ने से भोजन कट नहीं गया आनन्द और मगनता हमारे परमेश्वर के घर से। १७ अपने ढेलों के नीचे बीज सड़ गया खलियान उजाड़ पड़े हैं खत्ते तोड़े हुए १८ हैं क्योंकि अन्न झुरा गया। पशु क्या ही कराहते हैं ढोर के लेहड़े क्या ही घबराये जाते हैं क्योंकि उन के लिये चराई नहीं १९ है हां भेड़ों के झुंड नष्ट हुए हैं। हे परमेश्वर मैं तेरी दोहाई देता हूं क्योंकि बन की चराई को आग ने भस्म किया और लवर ने चौगान के सारे पेड़ों को २० जला दिया। चौगान के पशु भी तेरी

बाट जोहते हैं क्योंकि नदियों के जल सूख गये और आग ने बन की चराइयों को भस्म किया॥

दूसरा पर्व्व।

१ सैहून में तुरही फूंको और मेरे पवित्र पहाड़ पर घोर घोर शब्द करो देश के सारे निवासी थर्थरावें क्योंकि परमेश्वर का दिन आता है हां समीप है। २ अंधियारा और धुमलाई का दिन मेघ और गाढ़े अंधकार का दिन जैसा भोर पर्वतों पर बिछी हुई एक बड़ी और बलवंत जाति सनातन से ऐसा कधी न हुआ और पीढ़ी पर पीढ़ी बरसों तक ३ ऐसा न होगा। उन के आगे आग भस्म करती है और उन के पीछे लवर जलाती है उन के आगे देश अदन की बारी की नाईं है और उन के पीछे उजाड़ अरण्य है हां उन से कुछ नहीं बचता॥

४ वे घोड़ों की नाईं दिखाई देते हैं ५ और घोड़चढ़ों की नाईं दौड़ेंगे। पर्वतों की चोटियों पर रथों के हड़हड़ाने की नाईं वे फांदेंगे आग की लवर के शब्द की नाईं जो खूंटी को भस्म करती है एक बलवंत जाति की नाईं जो संग्राम ६ के लिये पांती बांधते हैं। उन के आगे लोग पीड़ित होंगे सब के मुखों के रंग ७ बदल जायेंगे। वे वीरों की नाईं दौड़ेंगे योद्धाओं की नाईं वे भीत पर चढ़ जायेंगे हर एक अपने अपने मार्ग पर चलेगा और वे अपने पथों से न मुड़ेंगे। ८ एक दूसरे को न ठेलेगा हर एक अपने अपने पथ पर चलेगा और यदि खड्ग ९ पर गिरेंगे तौभी घाव न खायेंगे। वे नगर में इधर उधर दौड़ेंगे वे भीत पर दौड़ेंगे वे घरों पर चढ़ जायेंगे वे चोर १० की नाईं खिड़कियों में घुसेंगे। उन के आगे पृथिवी थर्थरा गई स्वर्ग कांप गये सूर्य्य और चन्द्रमा अंधियारे हो गये और तारों ने अपनी चमक खैंच लिई है। और परमेश्वर अपनी सेना के आगे ११ अपना शब्द उच्चारेगा क्योंकि उस की छावनी अति बड़ी है क्योंकि वह बलवन्त है जो अपने बचन को पूरा करता है क्योंकि परमेश्वर का दिन महान और अति भयंकर है और कौन उसे सह सकेगा॥

१२ तथापि अब भी परमेश्वर कहता है अपने सारे मन से मेरी ओर फिरो और व्रत और बिलाप और शोक से। और १३ अपने मनों को फाड़ो न कि अपने बस्त्रों को और परमेश्वर अपने ईश्वर की ओर फिरो क्योंकि वह कृपाल है और दयाल क्रोध में धीमा और नेह में बड़ा है और बुराई से पछताता है। क्या जानें वह १४ फिरे और पछतावे और अपने पीछे आशीष को छोड़े पिसान की भेंट और पीने की भेंट परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर के लिये॥

१५ सैहून में तुरही फूंको पवित्र व्रत को ठहराओ छुट्टी का दिन प्रचारो। लोगों को बटोरो मंडली को पवित्र १६ करो प्राचीनों को एकट्ठे करो बालकों और दूध पीवकों को बटोरो दुल्हा अपनी कोठरी से और दुल्हिन अपने एकान्त स्थान से निकल जाये। याजक १७ परमेश्वर के सेवक ओसारे और बेदी के मध्य में रोया करें और कहें कि हे परमेश्वर अपने लोगों को बचा ले और अपने अधिकार की निन्दा होने मत दे जिस्तें जातिगण उन पर राज्य न करें वे क्यों अन्यदेशियों में कहें कि उन का ईश्वर कहां है॥

१८ तब परमेश्वर अपने देश के लिये झल खायेगा और अपने लोगों पर मया करेगा। हां परमेश्वर उत्तर देके अपने १९

लोगों से कहेगा कि देखो मैं अन्न और नया दाखरस और तेल तुम्हारे पास भेजूंगा और तुम उन से तृप्त होओगे और मैं फिर जातिगणों में तुम्हारी निन्दा २० होने न दूंगा। पर मैं उस उत्तरहे को तुम से दूर करूंगा और सूखे और उजाड़ देश में खेदूंगा उस की अगाड़ी पूरब के समुद्र की ओर और उस की पिछाड़ी पच्छिम के समुद्र की ओर और उस की बास उठेगी और उस की दुर्गंध चढ़ेगी क्योंकि वह कार्य्य करने में बड़ा है॥

२१ हे देश मत डर आनन्द और मगन हो क्योंकि परमेश्वर कार्य्य करने में २२ बड़ा होगा। हे चौगान के पशुओ मत डरो क्योंकि अरण्य की चराइयां उगती हैं क्योंकि पेड़ अपना फल लाता है गूलरपेड़ और दाख अपना बल देते हैं। २३ और हे सैहून के सन्तानो मगन होओ और परमेश्वर अपने ईश्वर से आनन्द करो क्योंकि वह तुम्हें अगिला मेंह प्रतिमाण से देता है और झड़ी तुम पर उतारता अर्थात् आगे की नाईं अगिला २४ और पिछला मेंह। और खलियान अन्न से भरपूर होंगे और कोल्हू नये दाखरस २५ और तेल से छलक जायेंगे। और मैं उन बरसों को तुम्हें फेर दूंगा जिन्हें बटोरो हुई टिड्डी चाटनेवाली टिड्डी नाशक टिड्डी और काटनेवाली टिड्डी ने खाया अर्थात् मेरी वह बड़ी सेना जिसे मैं ने २६ तुम पर भेजा। और तुम बहुताई से खाओगे और तृप्त होगे और परमेश्वर अपने ईश्वर के नाम की स्तुति करोगे जिस ने तुम से आश्चर्यित व्यवहार किया और मेरे लोग कभी लज्जित न २७ होंगे। और तुम जानोगे कि मैं इसराएल के मध्य में हूं और कि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं और दूसरा कोई नहीं और मेरे लोग कभी लज्जित न होंगे॥

और इस के पीछे ऐसा होगा कि मैं २८ सारे मनुष्यों पर अपना आत्मा डालूंगा और तुम्हारे बेटे बेटियां भविष्य कहेंगी तुम्हारे पुरनिये स्वप्न निहारेंगे और तुम्हारे युवा दर्शन देखेंगे। और उन्हीं दिनों में २९ मैं अपने आत्मा को दासों और दासियों पर भी बरसाऊंगा। और मैं स्वर्ग और ३० पृथिवी पर आश्चर्य्य दिखाऊंगा लोहू और आग और धूंए के खंभे। सूर्य्य ३१ अंधियारा और चन्द्रमा लोहू हो जायेगा उस्से आगे कि परमेश्वर का बड़ा भयंकर दिन आवे॥

पर ऐसा होगा कि जो कोई परमेश्वर ३२ के नाम को दोहाई देगा सो बच जायेगा क्योंकि सैहून पर्वत पर और यरूसलम में बचाव होगा जैसा कि परमेश्वर ने कहा है और बचे हुओं में जिन्हें परमेश्वर बुलावेगा॥

तीसरा पर्ब्ब।

१ क्योंकि देख उन दिनों में और उसी समय को जब मैं यहूदाह और यरूसलम २ की बंधुआई को फेर लाऊंगा। तब मैं सारे जातिगणों को एकट्ठा करूंगा और उन्हें यहूसफत की तराई में उतार लाऊंगा और वहां उन पर न्याय करूंगा अपने लोगों के निमित्त और अपने अधिकार इसराएल के निमित्त जिन्हें उन्हों ने जातिगणों में छिन्न भिन्न किया ३ और मेरे देश को बांट लिया। हां उन्हों ने मेरे लोगों के लिये चिट्ठी डाली और वेश्या के लिये छोकरा दिया और मद्य पीने के लिये छोकड़ी बेची॥

४ फिर तुम को मुझ से क्या काम है हे सूर और सैदा और फिलिस्ती के सारे सिवाने क्या तुम मुझ को पलटा दोगे और जो दोगे तो मैं शीघ्र और झटपट

तुम्हारा पलटा तुम्हारे सिर पर ५ फिराऊंगा। क्योंकि तुम ने मेरा सोना चांदी ले लिया है और मेरी अच्छी मनभावनी वस्तों को अपने मन्दिरों में ६ ले गये हो। और तुम ने यहूदाह और यरूसलम के स्वामों को यूनानियों के सन्तानों के हाथ बेचा है जिस्तें उन्हें ७ उन के सिवानों से दूर करो। देखो जहां तुम ने उन्हें बेचा है वहां से मैं उन्हें उठा लूंगा और तुम्हारा पलटा ८ तुम्हारे सिर पर फिराऊंगा। और मैं तुम्हारे बेटे बेटियों को यहूदाह के सन्तानों के हाथ बेचूंगा और वे उन्हें सबाईयों के हाथ बेचेंगे जो दूर के जातिगण हैं क्योंकि परमेश्वर ने कहा है॥

९ जातिगणों में यह प्रचारो कि संग्राम सिद्ध करो बलवन्तों को उभाड़ो सारे योद्धा पास चले आवें वे चढ़ धावें। १० अपने हलों को तलवारों के लिये और अपने अपने हंसुओं को भालों के लिये तोड़ो दुर्बल कहे कि मैं बलवन्त हूं। ११ हे चारों ओर के जातिगणो शीघ्र करके चले आओ और अपने को एकट्ठे करो हे परमेश्वर तू अपने बलवन्तों को वहां १२ उतार। जातिगण उभाड़े जायें और यहूसफत की तराई में आवें क्योंकि मैं चारों ओर के सारे जातिगणों का न्याय करने को वहां बैठूंगा॥

१३ दरांती लगाओ क्योंकि लवनी पक गई है उतरो कि कोल्हू भरा है चहबच्चे छलकते हैं क्योंकि उन की दुष्टता बड़ी है। भीड़ पर भीड़ न्याय की तराई में १४ क्योंकि परमेश्वर का दिन समीप है न्याय की तराई में। सूर्य्य और चन्द्रमा १५ अंधियारे हो गये और तारों ने अपनी चमक खींच लिई है॥

१६ और परमेश्वर सैहून से गर्जेगा और यरूसलम से अपना शब्द उच्चारेगा और स्वर्ग और पृथिवी कांपेंगी परन्तु परमेश्वर अपने लोगों का आसा और इसराएल के सन्तानों का गढ़ होगा। १७ और तुम जानोगे कि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं जो अपने पवित्र पर्ब्बत सैहून में बास करता हूं तब यरूसलम पवित्र होगा और परदेशी उस में से फेर बीत न जायेंगे॥

१८ और उस दिन ऐसा होगा कि पर्ब्बत नया दाखरस टपकावेंगे और टीले दूध बहावेंगे और यहूदाह के सारे नाले जलमय होंगे और परमेश्वर के घर से एक सोता निकल आवेगा जो सत्तीम की तराई को सींचेगा॥

१९ मिस्र उजाड़ होगा और अदूम उजाड़ बन हो जायेगा उस अंधेर के कारण जो यहूदाह के सन्तानों ने किया कि उन के देश में निर्दोष लोहू बहाया। २० परन्तु यहूदाह सनातन लों और यरूसलम पीढ़ी से पीढ़ी लों बसा रहेगा। २१ और मैं उन का लोहू निर्दोष जानूंगा जिसे मैं ने निर्दोष न जाना और परमेश्वर सैहून में बास करेगा॥

अमूस भविष्यद्वक्ता की पुस्तक।

पहिला पर्ब्ब।

१ तकूअ के अहीरों में से अमूस के बचन जो, उस ने यहूदाह के राजा उज्जियाह के दिनों में और इसराएल के राजा यूआस के बेटे यरुबिआम के दिनों में इसराएल के बिषय में भुइंडोल के दो बरस आगे देखा॥

२ और उस ने कहा कि परमेश्वर सैहून से गर्जेगा और यरूसलम से अपना शब्द उच्चारेगा और गड़रियों के निवास बिलाप करेंगे और करमिल की चोटी सूख जायेगी॥

परमेश्वर यों कहता है कि दमिश्क के तीन हां चार अपराधों के लिये मैं उस का दण्ड न टालूंगा क्योंकि उन्हों ने जिलिअद को लोहे के मूसलों से ४ कूटा है। पर मैं हजाएल के घर पर एक आग भेजूंगा और वह बिनहदद ५ के भवनों को भस्म करेगी। मैं दमिश्क का अड़ भी तोड़ूंगा और अवन की तराई से निवासी को और अदन के घराने से राजदण्डधारी को काट डालूंगा और अराम के लोग कीर लों बंधुआई में जायेंगे परमेश्वर कहता है॥

६ परमेश्वर यों कहता है कि अज्जः के तीन हां चार अपराधों के लिये मैं उस का दण्ड न टालूंगा क्योंकि वे सारे बंधुओं को बंधुआई में ले गये कि ७ उन्हें अदूम को सौंपें। पर मैं अज्जः की भीत पर एक आग भेजूंगा और वह ८ उस के भवनों को भस्म करेगी। और मैं अशदूद से निवासी को और असकलून से राजदण्डधारी को काट डालूंगा और मैं अपना हाथ अकरून पर फेरूंगा और फिलिस्तियों के बचे हुए नष्ट होंगे प्रभु परमेश्वर कहता है॥

परमेश्वर यों कहता है कि सूर के तीन हां चार अपराधों के लिये मैं उस का दण्ड न टालूंगा क्योंकि उन्हों ने सारे बंधुओं को अदूम को सौंपा और भयबाद के नियम को स्मरण न किया। १० पर मैं सूर की भीत पर एक आग भेजूंगा और वह उस के भवनों को भस्म करेगी॥

११ परमेश्वर यों कहता है कि अदूम के तीन हां चार अपराधों के लिये मैं उस का दण्ड न टालूंगा क्योंकि उस ने तलवार से अपने भाई को खेदा और अपनी मया को छोड़ दिया और उस का क्रोध सदा फाड़ता रहा और उस ने अपना कोप नित रक्खा। १२ पर मैं तैमन पर एक आग भेजूंगा और वह बूसरः के भवनों को भस्म करेगी॥

१३ परमेश्वर यों कहता है कि अम्मून के तीन हां चार अपराधों के लिये मैं उस का दण्ड न टालूंगा क्योंकि उन्हों ने जिलिअद की गर्भिणी स्त्रियों को चीरा कि अपना सिवाना बढ़ावें। १४ पर मैं रब्बह की भीत पर एक आग बारूंगा और ललकारने के संग लड़ाई के दिन में और आंधी के संग बवंडर के दिन में वह उस के भवनों को भस्म करेगी। १५ और उन का राजा वह और उस के अध्यक्ष एकट्ठे बंधुआई में जायेंगे परमेश्वर कहता है॥

दूसरा पर्ब्ब

१ परमेश्वर यों कहता है कि मोआब के तीन अपराधों हां चार के लिये मैं उस का दण्ड न टालूंगा क्योंकि उस ने अदूम के राजा की हड्डियों को जलाके चूना बनाया। २ पर मैं मोआब पर एक

आग भेजूंगा और वह करयत के भवनों को भस्म करेगी और मोआब हुल्लड़ में ललकारने से और तुरही के शब्द से ३ मरेगा । और उस के मध्य में से मैं न्यायी को काट डालूंगा और उस के साथ उस के सारे अध्यक्षों को बध करूंगा परमेश्वर कहता है ॥

४ परमेश्वर यों कहता है कि यहूदाह के तीन अपराधों हां चार के लिये मैं उस का दण्ड न टालूंगा क्योंकि उन्हों ने परमेश्वर की व्यवस्था को तुच्छ जाना और उस की रीतों को न पाला और उन के झूठे देवों ने उन से भूल करवाई जिन के पीछे उन के पितर चलनेहारे ५ हुए । पर मैं यहूदाह पर एक आग भेजूंगा और वह यरूसलम के भवनों को भस्म करेगी ॥

६ परमेश्वर यों कहता है कि इसराएल के तीन अपराधों हां चार के लिये मैं उस का दण्ड न टालूंगा क्योंकि उन्हों ने चांदी के लिये धर्म्मी को और एक जोड़ा खरपिन के लिये दरिद्र को बेचा ७ है । जो हांपते हैं कि दरिद्रों के सिर पर पृथिवी की धूल धरें और दुखियों के मार्ग को भटकाते हैं और मनुष्य और उस का पिता एक ही कन्या के पास जाते हैं कि मेरे पवित्र नाम को अशुद्ध ८ करें । और हर बेदी के पास बन्धक के बस्त्रों पर लेटते हैं और अपने देवों के घर में दण्ड भरतियों का दाखरस पीते हैं ॥

९ तथापि मैं ने अमूरी को उन के आगे नष्ट किया जिस की ऊंचाई देवदारों की ऊंचाई के समान थी और जो बलूतों के समान बलवन्त था पर मैं ने उस का फल ऊपर से और उस की जड़ नीचे से १० नष्ट किई । मैं भी तुम्हें मिस्र के देश से चढ़ा लाया और चालीस बरस लों बन में तुम्हें लिये फिरा जिस्तें अमूरी का देश अधिकार के लिये देऊं । और मैं ११ ने तुम्हारे पुत्रों में से भविष्यद्वक्तों को और तुम्हारे तरुणों में से नसरानियों को उभाड़ा क्या यों नहीं है हे इसराएल के सन्तानो परमेश्वर कहता है । परन्तु तुम १२ ने नसरानियों को दाखरस पिलाया और भविष्यद्वक्तों को आज्ञा करके कहा कि भविष्य मत कहो ॥

देख मैं तुम्हें नीचे दबाऊंगा जैसा १३ पूलों से लदी हुई गाड़ी भूमि को दबाती है । तब बेगगामियों से भागना जाता १४ रहेगा और बलवान अपने बल को स्थिर न करेगा और न बीर अपना प्राण छोड़ावेगा । और धनुषधारी खड़ा न १५ रहेगा और बेग पग अपने को न बचावेगा और घोड़चढ़ा अपने प्राण को न छोड़ावेगा । और जो बीरों में से साहसी १६ है उसी दिन नंगा निकल भागेगा परमेश्वर कहता है ॥

तीसरा पर्ब्ब ।

हे इसराएल के सन्तानो इस बचन १ को सुनो जिसे परमेश्वर ने यह कहते हुए तुम्हारे बिरुद्ध बोल दिया हां उस सारे घराने के बिरुद्ध जिसे मैं मिस्र के देश से चढ़ा लाया ॥

पृथिवी के सारे घराने में से मैं ने २ केवल तुम्हीं को जाना है इसी लिये मैं तुम्हारी सब बुराइयों के लिये तुम को दण्ड दूंगा ॥

यदि मेल न होवे क्या दो एकट्ठे ३ चलेंगे । बिना अहेर सिंह क्या बन में ४ गर्जेगा और बिना पकड़े हुए क्या तरुण सिंह अपनी मांद में से शब्द करेगा । क्या पंछी पृथिवी पर जाल में बझेगा ५ जब उस के लिये फंदा नहीं है क्या जाल पृथिवी से उचकेगा जब कुछ पकड़ा नहीं जाता । क्या नगर में तुरही फूंकी ६

जायेगी और लोग न कांपेंगे क्या नगर में बिपत पड़ेगी बिना परमेश्वर के किये ७ हुए। क्योंकि प्रभु परमेश्वर कुछ न करेगा जो वह अपना भेद अपने सेवक भविष्यद्वक्तों पर प्रगट नहीं करता। ८ सिंह गर्जा है कौन न डरेगा प्रभु परमेश्वर बोला है कौन भविष्य न कहेगा॥

९ अशदूद के भवनों में और मिस्र देश के भवनों में प्रचारो और कहो कि अपने तईं समरून के पर्ब्बतों पर एकट्ठा करो और उस के भीतर बड़े हुल्लड़ों को और उस के मध्य में अंधकारों को १० देखो। क्योंकि परमेश्वर कहता है कि वे न्याय करना नहीं जानते जो उत्पात और लूट अपने भवनों में बटोरते हैं। ११ इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि एक बैरी देश के चौगिर्द होगा और वह तुझ में से तेरे बल को उतारेगा और तेरे भवन लूटे जायेंगे॥

१२ परमेश्वर यों कहता है कि जैसा गड़ेरिया सिंह के मुंह से दो टांग अथवा कान का एक टुकड़ा छुड़ा लेता है तैसा इसराएल के पुत्र छोड़ाये जायेंगे जो समरून में बिछौने के कोने में और दमिश्क में पलंग के कोने में बैठते हैं॥

१३ तुम सुनो और यअकूब के घराने में साक्षी दो प्रभु परमेश्वर सेनाओं का १४ ईश्वर कहता है। कि जिस दिन में इसराएल के अपराधों का पलटा उस्से लूंगा उसी दिन मैं बैतएल की बेदियों का पलटा भी लूंगा बेदी के सींग काटे १५ जायेंगे और भूमि पर गिरेंगे। और मैं ग्रीष्मगृह सहित शीतगृह को काटूंगा और हाथीदांत के घर बिनाश होंगे और बड़े बड़े घरों का अन्त होगा परमेश्वर कहता है॥

चौथा पर्ब्ब।

१ यह बचन सुनो हे बसन की गायो जो समरून के पर्ब्बत पर हैं जो कंगालों को सताती हैं जो दरिद्रों को चकनाचूर करती हैं जो अपने स्वामियों से कहती हैं कि लाओ हम पीयें॥

२ प्रभु परमेश्वर ने अपनी पवित्रता की किरिया खाई है कि देखो वे दिन तुम पर आवेंगे जिन में वे तुम को अंकड़ियों से और तुम्हारे सन्तानों को बनसियों से खींच ले जायेंगे। ३ और तुम दरारों से निकलोगी हर एक अपने अपने सन्मुख और तुम भवन में से फेंके जाओगी परमेश्वर कहता है॥

४ बैतएल में जाके अपराध करो जिलजाल में अपराध बढ़ाओ और हर बिहान को अपने अपने बलि और हर तीसरे बरस अपना दसवां भाग लाओ। ५ और खमीर के धन्यवाद की भेंट होम करो और मनमंता भेंटों को प्रचारो उन्हें बिदित करो क्योंकि यह तुम को प्रसन्न आता है हे इसराएल के सन्तानो प्रभु परमेश्वर कहता है॥

६ और मैं ने भी तुम्हारे सब नगरों में दांतों की फरकाई और तुम्हारे सब स्थानों में रोटी की कमी तुम को दिई तथापि तुम मेरी ओर नहीं फिरे परमेश्वर कहता है॥

७ और मैं ने भी लवनी के तीन मास आगे तुम से बृष्टि रोक रक्खी है और मैं ने एक नगर पर बरसाया और दूसरे नगर पर नहीं एक भाग पर बरसा और जिस भाग पर न बरसा वह सूख ८ गया। इस लिये दो तीन नगर एक नगर में गये कि जल पियें पर तृप्त न हुए तथापि वे मेरी ओर नहीं फिरे परमेश्वर कहता है॥

९ मैं ने तुम्हें झौंस और बहुत लंडे से मारा है तुम्हारी बारियों और दाख की बारियों और गूलरपेड़ और जलपाई के

पेड़ों को टिड्डी ने खाया है तथापि तुम मेरी ओर नहीं फिरे परमेश्वर कहता है॥

१० मैं ने मिस्र की भांति तुम पर मरी भेजी है मैं ने तुम्हारे तरुणों को तलवार से घात किया है और तुम्हारे घोड़ों को ले लिया और तुम्हारी छावनी की दुर्गंध तुम्हारे नथुनों में पहुंचाई तथापि तुम मेरी ओर नहीं फिरे परमेश्वर कहता है॥

११ मैं ने तुम में से उलट दिया जैसा कि ईश्वर ने सदूम और अमूर: को उलट दिया और तुम आग में की निकाली हुई लुकठी की नाईं हुए तथापि मेरी ओर नहीं फिरे परमेश्वर कहता है॥

१२ इस लिये हे इसराएल मैं तुझ से यों ही करूंगा पर इस लिये कि मैं तुझ से यों करूंगा हे इसराएल अपने ईश्वर से भेंट करने को सिद्ध हो। १३ क्योंकि देख वही है जिस ने पर्ब्बतों को बनाया और पवन को सृजा और मनुष्य को उस की चिन्ता बताता है जो बिहान को अंधियारा करता है और पृथिवी के ऊंचे स्थानों पर चलता है परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर उस का नाम है॥

पांचवां पर्ब्ब।

१ हे इसराएल के घराने यह बचन सुनो अर्थात् यह बिलाप जो मैं तेरे २ बिरुद्ध उच्चारता हूं। इसराएल की कुंवारी गिरी है वह फिर कभी न उठेगी वह अपनी भूमि पर पड़ी हुई है उस का कोई उठानेवाला नहीं है। ३ क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि जिस नगर से सहस्र निकल गये इसराएल के घराने के लिये सौ छोड़ेगा और जिस्से सौ निकल गये वह दस छोड़ेगा॥

४ क्योंकि परमेश्वर इसराएल के घराने से यों कहता है कि मुझे ढूंढो तो जीओगे। ५ पर बैतएल को मत ढूंढो और जिलजाल में प्रवेश न करो और बिअरसबअ: के पार न जाओ क्योंकि जिलजाल अवश्य बंधुआई में जायेगा और बैतएल बृथा में अवेगा। ६ परमेश्वर को ढूंढो तो जीओगे न हो कि वह यूसुफ के घराने पर आग की नाईं झपटे और भस्म करे और बैतएल में कोई बुझवैया न होवे॥

७ तुम जो बिचार को नागदौने से पलटते हो और धर्म्म को पृथिवी पर छोड़ते हो। ८ उसे ढूंढो जिस ने कृत्तिका को और मृगशिर को बनाया है और मृत्यु की छाया को बिहान से पलटा है और दिन को अंधेरी रात बनाता है जो समुद्र के जलों को बुलाता है और उन्हें पृथिवी पर उंडेलता है परमेश्वर उस का नाम है। ९ वह बलवंतों पर एका एकी उजाड़ लाता है और गढ़ पर उजाड़ पड़ता है॥

१० वे उस्से लाग रखते हैं जो फाटक में डांटता है और उस्से घिन खाते हैं जो खराई से बोलता है। ११ इस लिये कि तुम ने कंगाल को लताड़ा और उस से गेहूं का भाड़ा लेते हो तुम ने गढ़े हुए पत्थरों से घरों को बनाया पर उन में न बसोगे तुम ने दाख की मनभावती बारियों को लगाया है पर उन का दाखरस न पीओगे। १२ क्योंकि मैं जानता हूं कि तुम्हारे अपराध बहुत हैं और तुम्हारे पाप बड़े हैं जो धर्म्मियों को सताते और घूस लेते और फाटक में कंगालों को लौटा देते हो॥

१३ इस लिये उस समय में बुद्धिमान चुप रहेगा क्योंकि वह समय बुरा है। १४ तुम भलाई को ढूंढो बुराई को नहीं जिस्तें तुम जीओ और तुम्हारे कहने के समान परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर

१५ तुम्हारे साथ होगा । बुराई से घिनाओ और भलाई को चाहो और फाटक में न्याय का स्थान करो कदाचित् परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर यूसुफ के बचे हुओं पर दयाल होवे ॥

१६ इस लिये परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर जो प्रभु है यों कहता है कि सारे चौड़े स्थानों में विलाप होगा और सारी सड़कों में वे हाय हाय कहेंगे और वे किसान को शोक के लिये और रोदन करनेहारों को विलाप के लिये बुलावेंगे।

१७ और सारी दाख की बारियों में विलाप होगा क्योंकि मैं तुम्हारे मध्य में से जाऊंगा परमेश्वर कहता है ॥

१८ हाय तुम पर जो परमेश्वर के दिन को चाहते हो इस्से तुम से क्या परमेश्वर का दिन अंधियारा है और उंजि-

१९ याला नहीं । जैसा कि कोई सिंह से भागे और भालू उसे मिले अथवा घर में जाके अपने हाथ को भीत पर रक्खे

२० और उसे सांप डसे । क्या परमेश्वर का दिन अंधियारा न होगा और उंजियाला नहीं अति अंधियारा और उस में कुछ चमक नहीं ॥

२१ मैं तुम्हारे पर्ब्बों से लाग करता और घिन खाता हूं और तुम्हारी मंडलियों

२२ में सुबास न सूंघूंगा । क्योंकि यदि तुम मेरे लिये बलिदान की भेंटों को और अपने पिसान की भेंटों को चढ़ाओ तथापि मैं उन्हें ग्रहण न करूंगा और मैं तुम्हारे मोटे पशुओं की कुशल की

२३ भेंटों पर सुरत न करूंगा । तुम अपने रागों का शब्द मेरे आगे से दूर करो और तुम्हारी बीनों का सुर मैं न सुनूंगा।

२४ और न्याय पानियों की नाईं बहता रहे और धर्म्म बड़ी नदी की नाईं ॥

२५ हे इसराएल के घराने क्या तुम ने मेरे लिये चालीस बरस लों अरण्य में बलि और भेंट नहीं चढ़ाई ।

२६ तथापि तुम अपने राजा के तंबू को और अपनी मूरतों के कीयून को अपने देवता का तारा जिन्हें तुम ने अपने लिये बनाया

२७ उठाये फिरे । इस लिये मैं तुम्हें दमिश्क से परे बंधुआई में ले जाऊंगा। परमेश्वर कहता है जिस का नाम सेनाओं का ईश्वर है ॥

छठवां पर्व्व ।

१ हाय उन पर जो सैहून में कुशल से रहते हैं और समरून के पर्वत पर आशा रखते हैं आ जातिगणों के पहिली जाति के श्रेष्ठ हैं जिन कने इसराएल

२ के घराने आये हैं । तुम कलनः को पार जाके देखो और वहां से बड़ी हमात को जाओ तब फिलिस्तियों की गात में उतरो क्या वे इन राज्यों से भले हैं और उन का सिवाना तुम्हारे सिवाने से बड़ा है॥

३ हाय उन पर जो विपत्ति के दिन को दूर करते हैं और अंधेर के सिंहासन

४ को समीप करते हैं । जो हाथीदांत के पलंगों पर लेटते हैं और अपनी खाटों पर फैलते हैं जो झुंड में से मेम्नों को और स्थान के मध्य में से बछड़ों को

५ खा लेते हैं । जो बीन के ताल से गाते हैं और दाऊद की नाईं अपने लिये

६ गान के साजों को उपजाते हैं । जो कटोरों में दाखरस पीते हैं और अपने पर सब से उत्तम सुगंध मलते हैं पर यूसुफ के क्लेश के लिये शोकित नहीं

७ हैं । इस लिये वे बंधुओं के अगुए होके बंधुआई में जायेंगे और लेटनेहारों की आनन्द करनेहारी मंडली दूर किई जायेगी ॥

८ प्रभु परमेश्वर ने अपने से किरिया खाई है परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर यों कहता है कि मैं यअकूब के ऐश्वर्य्य से घिनाता हूं और उस के भवनों से

लाग करता हूं इस लिये मैं नगर को और जो कुछ कि उस में है सौंपूंगा॥

९ और ऐसा होगा कि यदि एक घर में दस जन बच गये तो वे मरेंगे। १० और मनुष्य का कुनबा वही जिस ने उसे जलाया है घर से उस की हड्डियों को निकालने के लिये उसे उठावेगा और उस्से जो घर के बीच में है कहेगा कि अब तक तेरे साथ कोई और है और वह कहेगा कि नहीं तब वह बोलेगा कि चुप रह क्योंकि परमेश्वर के नाम की चर्चा न करना॥

११ क्योंकि देख परमेश्वर ने आज्ञा किई और वह बड़े घर को दरारों से और छोटे घर को छेदों से मारेगा॥

१२ क्या चटान पर घोड़े दौड़ेंगे क्या वहां कोई बैलों से जोतेगा क्योंकि तुम ने न्याय को विष से और धर्म्म के फल १३ को नागदौने से पलटा है। तुम जो वृथा से आनन्दित हो और कहते हो कि क्या हम ने अपने लिये अपनी १४ सामर्थ्य से सींग नहीं लिये। क्योंकि देख हे इसराएल के घराने परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर यों कहता है कि मैं तुम्हारे बिरुद्ध एक जातिगण को उठाऊंगा और हमात की पैठ से बन की नदी लों वे तुम्हें सतावेंगे॥

सातवां पर्व्व।

१ प्रभु परमेश्वर ने मुझे यों दिखाया है और देख कि पिछली घास के उगने के आरंभ में उस ने टिड्डियों को बनाया और देख कि राजा के लवने २ के पीछे वह पिछली घास थी। और यों हुआ कि जब वे देश के सागपात को संपूर्ण खा चुके तब मैं ने कहा कि हे परमेश्वर प्रभु मैं बिन्ती करता हूं क्षमा कर यअकूब किस प्रकार से उठेगा ३ क्योंकि वह छोटा है। परमेश्वर इस्से पछताया ऐसा न होगा परमेश्वर ने कहा॥

४ प्रभु परमेश्वर ने मुझे यों दिखाया है और देख कि प्रभु परमेश्वर ने आग से बिचार करने को बुलाया और वह बड़ी गहिराई को खा गई और अधिकार को खा गई॥

५ तब मैं ने कहा कि हे प्रभु परमेश्वर मैं तेरी बिन्ती करता हूं कि थम जा यअकूब किस प्रकार से उठेगा क्योंकि ६ वह छोटा है। परमेश्वर इस्से पछताया यह भी नहीं होगा प्रभु परमेश्वर ने कहा॥

७ उस ने मुझे यों दिखाया और देख कि प्रभु साहूल से बनाई हुई एक भीत पर खड़ा था और साहूल उस के हाथ ८ में था। और परमेश्वर ने मुझ से कहा कि हे आमूस तू क्या देखता है और मैं ने कहा कि एक साहूल को तब प्रभु ने कहा कि देख मैं अपने लोग इसराएल के मध्य में एक साहूल को लगाऊंगा और मैं उन से फिर कभी न ९ बोलूंगा। और इसहाक के ऊंचे स्थान उजाड़े जायेंगे और इसराएल के पवित्र स्थान सुनसान किये जायेंगे और खड्ग से मैं यरुबिआम के घराने के बिरुद्ध उठूंगा॥

१० तब बैतएल के याजक अमसियाह ने इसराएल के राजा यरुबिआम को कहला भेजा कि इसराएल के घराने के मध्य में आमूस ने तेरे बिरुद्ध युक्ति बांधी है देश उस के सारे बचन को सह नहीं ११ सक्ता। क्योंकि आमूस ने यों कहा कि यरुबिआम खड्ग से मारा जायेगा और इसराएल अपने ही देश से निश्चय बंधुआई में जायेगा॥

१२ और अमसियाह ने आमूस से कहा कि हे दर्शी तू यहूदाह के देश को भाग जा और वहां रोटी खा और वहां १३ भविष्य कह। पर बैतएल में फिर कभी

भविष्य न कह क्योंकि वह राजा का पवित्र स्थान और राजा का भवन है॥

१४ तब अमूस ने उत्तर देके अमसियाह से कहा कि मैं न भविष्यद्वक्ता न भविष्यद्वक्ता का पुत्र था पर मैं अहीर १५ था और गूलरफल का बटोरवैया। और परमेश्वर ने मुझे झुंड के पीछे से लिया और परमेश्वर ने मुझ से कहा कि जा मेरे १६ लोग इसराएल से भविष्य कह। और अब तू परमेश्वर का बचन सुन तू कहता है कि इसराएल के बिरुद्ध भविष्य न कह और इज़हाक के घराने पर बचन न टपका॥

१७ इस लिये परमेश्वर यों कहता है कि तेरी पत्नी नगर में ब्यभिचार करेगी और तेरे बेटे बेटियां तलवार से गिरेंगी और तेरा देश डोरी से बांटा जायेगा और तू अशुद्ध देश में मरेगा और इसराएल अपने ही देश से निश्चय बंधुआई में जायेगा॥

आठवां पर्ब्ब।

१ प्रभु परमेश्वर ने मुझे यों दिखाया और देख कि एक टोकरी पक्के फल से २ भरी हुई है। और उस ने कहा कि हे अमूस तू क्या देखता है और मैं ने कहा कि एक टोकरी पक्के फल से भरी हुई तब परमेश्वर ने मुझ से कहा कि मेरे लोग इसराएल पर अन्त आया है मैं उन ३ से फिर कभी न बोलूंगा। और उसी दिन मन्दिर का गाना चिल्लाना होगा प्रभु परमेश्वर कहता है हर एक स्थान में बहुत सी लोथें हैं उन्हें डाल दो चुप रहो॥

४ इस बात को सुनो अरे जो दरिद्रों के पीछे हांपते हो कि देश के कंगालों ५ को नाश करो। जो कहते हो कि अमावास्या कब बीतेगी कि हम अन्न बेचें और बिश्राम का दिन कि हम गोहूं का गोला खोलें जो ऐफा को छोटा करते हो और शिकल को भारी करते हो कि छल से झूठा तुलों को बनाओ। ६ जिस्तें कंगालों को चांदी के लिये और दरिद्र को एक जोड़ा जूतों के लिये मोल लेओ और गोहूं की झाटों को बेचो॥

७ परमेश्वर ने यअकूब की उत्तमता की किरिया खाई है कि निश्चय मैं उन के किसी कार्य्य को कभी न भूलूंगा। ८ क्या इस लिये देश नहीं कांपेगा और उस का हर एक बासी बिलाप न करेगा और वह नदी की नाईं सर्वत्र उभड़ेगा और मिस्र की नदी की नाईं उभड़ेगा और घटेगा॥

९ और उस दिन में ऐसा होगा प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं मध्यान्ह में सूर्य्य को अस्त करूंगा और उंजियाले दिन में देश को अंधियारा करूंगा। १० और मैं तुम्हारे पर्ब्बों को बिलाप से और तुम्हारे रागों को हाहाकार से पलट दूंगा और हर एक कटि पर टाट बस्त्रों को और हर एक के सिर पर मुंडापन को लाऊंगा और मैं उसे एकलौते के बिलाप के समान बनाऊंगा और उस के अन्त को कड़ुवा दिन की नाईं॥

११ देख वे दिन आते हैं प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं देश पर अकाल भेजूंगा अन्न का अकाल नहीं और जल की तृषा नहीं परन्तु परमेश्वर के बचन सुन्ने का १२ अकाल। और वे समुद्र से समुद्र लों भ्रमेंगे और उत्तर से पूरब लों परमेश्वर का बचन सुन्ने के लिये इधर उधर दौड़ेंगे १३ पर उसे न पावेंगे। उस दिन में रूपवती कुमारियां और युवा पुरुष प्यास के मारे १४ मूर्छित होंगी। वे जो समरून के पाप की किरिया खाते हैं और कहते हैं कि हे दान तेरे देव के जीवन से और बिअर-सबः की रीति के जीवन से वे ही गिरेंगे और फिर कभी न उठेंगे॥

नवां पर्ब्ब।

१ मैं ने प्रभु को बेदी पर खड़ा हुआ

देखा और उस ने कहा कि खंभे के सिरे को मार कि चौखट हिल जावें और सभों के सिर को तोड़ डाल और मैं उन के बंश को तलवार से घात करूंगा भगवैया उन में से न भागेगा और निकलनेवाला उन में से बच न
२ निकलेगा । जो वे पाताल में सेंधें तो मेरा हाथ वहां से उन्हें पकड़ेगा और जो स्वर्ग लों चढ़ जावें तो वहां से मैं
३ उन्हें उतारूंगा । और यदि वे करमिल की चोटी पर आप को छिपावें तथापि मैं खोजके उन्हें वहां से निकालूंगा और यदि वे समुद्र की थाह में मेरे आगे से छिपें वहां मैं सर्प को आज्ञा दूंगा और
४ वह उन्हें डसेगा । और यदि वे अपने बैरियों के आगे बंधुआई में जायें वहां मैं तलवार को आज्ञा दूंगा और वह उन्हें नाश करेगी और मैं अपनी आंखें उन पर बुराई के लिये रक्खूंगा और भलाई के लिये नहीं ॥

क्योंकि प्रभु परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर वही है जो देश को छूता है और वह पिघलता है और उस के सारे बासी बिलाप करेंगे और वह नदी की नाईं सर्वत्र उभड़ेगा और मिस्र की नदी
६ की नाईं घटेगा । वह जो अपने ऊपरी कोठों को स्वर्ग में बनाता है और अपने गोल आकारों की नेव पृथिवी पर डालता है वह जो समुद्र के जलों को बुलाता है और उन्हें पृथिवी पर उंडेलता है परमेश्वर उस का नाम है ॥

हे इसराएल के सन्तानो क्या तुम मेरे लिये कूशियों के सन्तानों के समान नहीं हो परमेश्वर कहता है क्या मैं इसराएल को मिस्र देश से चढ़ा नहीं लाया और फिलिस्तियों को कफ़तूर से
८ और अमूरियों को कीर से । देख प्रभु परमेश्वर की आंखें इस पाप राज्य पर हैं और मैं पृथिवी पर से उसे नाश करूंगा तथापि मैं यअकूब के घराने को सर्वथा नाश न करूंगा परमेश्वर कहता है । क्योंकि देख मैं आज्ञा करूंगा और मैं इसराएल के घराने को सारे जातिगणों में चालूंगा जैसा कि कोई चलनी से चालता है और भूमि पर एक किनका न गिरेगा । परन्तु मेरे लोगों
१० के सारे पापी तलवार से मारे जायेंगे जो कहते हैं कि बुराई न तो पीछे से हम को पावेगी और न आगे से हम पर आवेगी ॥

११ उस दिन मैं दाऊद के गिरे हुए तंबू को खड़ा करूंगा और उस के दरारों को सुधारूंगा और मैं उस के उजाड़ों को उठाऊंगा और प्राचीन दिनों की नाईं उसे बनाऊंगा । जिस्तें वे अदूम के रहे
१२ हुए लोगों को और उन सारे जातिगणों को जिन पर मेरा नाम कहा जाता है अपने अधिकार में लेवें परमेश्वर कहता है जो इस का कर्त्ता है ॥

१३ देख वे दिन आते हैं परमेश्वर कहता है कि जोतवैया लवैया के समान बढ़ेगा और दाख का लताड़ू बिहन के बोवैये के समान और पर्वत मीठे दाख-रस को टपकावेंगे और सारे पहाड़ पिघलेंगे । और मैं अपने लोग इसराएल
१४ की बंधुआई को फेर लाऊंगा और वे उजाड़ नगरों को बनावेंगे और उन में बसेंगे और दाखों को लगावेंगे और उन का रस पियेंगे और वे बारियों को लगावेंगे और उन के फल खायेंगे । और
१५ मैं उन्हें उन के देश पर लगाऊंगा और वे अपने देश पर जिसे मैं ने उन्हें दिया फिर कभी उखाड़े न जायेंगे परमेश्वर तेरा ईश्वर कहता है ॥

अबदियाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक।

१ अबदियाह का दर्शन। प्रभु परमेश्वर अदूम के बिषय में यों कहता है कि हम ने परमेश्वर से एक चर्चा सुनी है और अन्यदेशियों में एक दूत भेजा गया है कि उठो और उस के बिरुद्ध संग्राम को चढ़ें॥

२ देख मैं ने तुझे अन्यदेशियों में छोटा ३ किया है तू अति निन्दित है। तेरे मन के घमंड ने तुझे बहकाया है हे तू जो पर्बत के गुफों में बसता है जिस का निवास ऊंचा है जो अपने मन में कहता है कि कौन मुझे भूमि पर उतारेगा। ४ यद्यपि तू आप को उकाब की नाईं उत्तुङ्ग करे और अपना बसेरा तारों में बनावे तथापि मैं तुझे वहां से उतारूंगा ५ परमेश्वर कहता है। यदि चोर तेरे पास आवें अथवा बटमार रात को तो तू कैसा नाश है क्या वे अघाये बिन न चोराते यदि दाख के बटोरवैये तेरे पास आते तो क्या वे बिनिया दाख न छोड़ जाते॥

६ एसौ की दशा कैसी चिताई गई उस के ढंके हुए स्थान खोजे गये। ७ तेरे सारे साथी लोगों ने तुझे सिवाने लों पहुंचाया तेरे मिलापी लोगों ने तुझे छला है और तुझ पर प्रबल हुए जिन्हों ने तेरी रोटी खाई उन्हों ने तेरे तले जाल बिछाया है उस में कुछ समझ नहीं॥

८ उसी दिन परमेश्वर कहता है क्या मैं बुद्धिमानों को अदूम से और ज्ञानियों को एसौ के पर्बत से न मिटाऊंगा। ९ और हे तैमन तेरे बीर घबरा जायेंगे जिस्तें एसौ के पर्बत से हर जीव बध से नष्ट किया जाय॥

१० उस अंधेर के लिये जो तू ने अपने भाई यअकूब से किया लाज तुझे छांपेगी और तू सदा लों नष्ट किया जायेगा। ११ जिस दिन तू साम्ने खड़ा हुआ जिस दिन में बिदेशी उस की सेनाओं को बंधुआई में ले गये और उपरी उस के फाटकों में पैठ गये और यरूसलम पर चिट्ठी डाली तू भी उन में से एक की नाईं था॥

१२ अपने भाई के दिन में जिस दिन वह परदेशी हो गया तुझ को दृष्टि करना न चाहिये न उन के नाश होने के दिन में यअकूब के सन्तानों पर आनन्द करना न कष्ट के दिन में तुझे १३ अहंकार से बोलना। मेरे लोगों को बिपत्ति के दिन में उन के फाटक से तुझे घुसना न चाहिये न उन की बिपत्ति के दिन में उन के क्लेश पर दृष्टि करना न उन को बिपत्ति के दिन में उन की १४ संपत्ति पर हाथ बढ़ाना। और चौराहे पर खड़े होके उस के बचे हुओं को काट डालना न चाहिये न कष्ट के दिन में उस के रहे हुओं को सौंप देना॥

१५ क्योंकि सारे जातिगणों पर परमेश्वर का दिन समीप है जैसा तू ने किया है तैसा तुझ पर किया जायेगा तेरी करनी १६ तेरे ही सीस पर पलटेगी। क्योंकि जिस भांति तुम ने मेरे पवित्र पर्बत पर पीया है तिसी भांति सारे जातिगण. . सदा पीयेंगे हां पीयेंगे और घूंट लेंगे और वे ऐसे होंगे जैसे कि न थे॥

१७ पर सैहून पर्बत पर बचे हुए होंगे और वह पवित्र होगा और यअकूब का घराना अपने अधिकारों को प्राप्त करेगा। १८ और यअकूब का घराना आग होगा और यूसुफ का घराना लवर और एसौ

का घराना भूसा होगा और वे उन्हें जारेंगे और उन्हें भस्म करेंगे और एसौ के घराने का कोई न बचेगा क्योंकि १९ परमेश्वर ने कहा है । और दक्खिन के लोग एसौ के पर्ब्बत को अधिकार में लावेंगे और चौगान के लोग फिलिस्तियों को और वे इफरायम के खेतों को और समरून के खेतों को अधिकार में लावेंगे और बिनयमीन जिलिअद को । और २० इसराएल के सन्तानों के बंधुओं की यह सेना जो कनआनियों में हैं सिफारद लों अधिकार में लावेंगे और यरूसलम के बंधुए जो सिफारद में हैं दक्खिन के नगरों को । और सैहून पहाड़ पर एसौ २१ पहाड़ के न्याय करने के लिये तारक चढ़ेंगे और राज्य परमेश्वर का होगा ॥

यूनः भविष्यद्वक्ता की पुस्तक ।

पहिला पर्ब्ब ।

१ और परमेश्वर का बचन यह कहता हुआ अमित्ते के बेटे यूनः के पास २ आया । कि उठ उस महा नगर नीनवः को जा और उस पर पुकार क्योंकि उन ३ की बुराई मेरे आगे पहुंची है । पर यूनः उठा कि परमेश्वर के सन्मुख से तरसीस को भागे और याफा में उतरा और एक जहाज को जो तरसीस को जाने पर था पाया और उस का भाड़ा देके उस पर चढ़ा जिस्तें परमेश्वर के सन्मुख से उन के संग तरसीस को जाये॥

४ परन्तु परमेश्वर ने समुद्र पर एक बड़ी बयार उतारी और समुद्र पर बड़ी आंधी चली यहां लों कि जहाज टूटने ५ पर था । तब डांड़ी डर गये और हर एक ने अपने अपने देव को पुकारा और जहाज हलुक करने को उन्हों ने उस में से सामग्री को समुद्र में डाल दिया पर यूनः नाव के अलंगों में उतर गया और लेटके भारी नींद में था ॥

६ तब जहाज का मांझी उस के पास गया और उस्से कहा कि यह क्या है कि तू भारी नींद में है उठ अपने ईश्वर को पुकार क्या जानें परमेश्वर हमारी सुधि लेवे जिस्तें हम नाश न होवें ॥

७ और वे आपस में कहने लगे कि आओ हम चिट्ठी डालें और जानें कि किस के कारण से यह बुराई हम पर पड़ी है और उन्हों ने चिट्ठी डाली और चिट्ठी यूनः के नाम पर निकली ॥

८ तब उन्हों ने उस्से कहा कि अब तू हम को बता कि किस कारण से यह बुराई हम पर पड़ी है तेरा उद्यम क्या है और तू कहां से आया है तेरा देश कौन सा है और तू किस जातिगण का है । और उस ने उन से कहा कि मैं इबरानी हूं और परमेश्वर स्वर्ग के ईश्वर से डरता हूं जो जल थल का सृजनहार है ॥

१० और वे मनुष्य अति डर गये और उसे कहने लगे कि यह तू ने क्या किया है क्योंकि उन्हों ने जाना कि वह परमेश्वर के सन्मुख से भागता था इस लिये कि उस ने उन से कहा था । तब ११

उन्हों ने उस्से कहा कि हम तुझ से क्या करें जिस्तें समुद्र हमारे लिये हलरे से थमे क्योंकि समुद्र आंधियाहा होता १२ चला जाता था। तब उस ने उन से कहा कि मुझे उठाके समुद्र में डाल दो और समुद्र तुम्हारे लिये हलरे से थम जायेगा क्योंकि मैं जानता हूं कि मेरे कारण से यह बड़ी आंधी तुम पर पड़ी है॥

१३ तथापि वे मनुष्य बड़े यत्न से खेवते गये कि तीर पर पहुंचें पर न सके क्योंकि उन के बिरुद्ध समुद्र आंधियाहा १४ होता गया। तब वे यह कहते हुए परमेश्वर को पुकारने लगे कि हे परमेश्वर हम बिन्ती करते हैं कि इस मनुष्य के प्राण के लिये हम नाश न होवें और निर्दोष रुधिर हम पर मत धर क्योंकि हे परमेश्वर जैसा तू ने चाहा वैसा तू १५ ने किया। और उन्हों ने यूनः को उठाके उसे समुद्र में डाल दिया और समुद्र १६ अपने हलरने से थम गया। तब वे मनुष्य परमेश्वर से अति डरे और परमेश्वर को बलि चढ़ाया और मानता मानी॥

१७ और परमेश्वर ने यूनः के लीलने को एक महा मच्छ ठहराया और यूनः तीन रात दिन मच्छ के उदर में रहा॥

दूसरा पर्ब्ब।

१ और मच्छ के उदर में से यूनः ने परमेश्वर अपने ईश्वर से प्रार्थना किई॥

२ और कहा कि मैं ने अपने कष्ट के मारे परमेश्वर को पुकारा और उस ने मेरा उत्तर दिया पाताल के भीतर से मैं चिल्लाया और तू ने मेरा शब्द सुना ३ है। और तू ने मुझे गहिराव में समुद्र के मध्य में डाला है और बाढ़ ने मुझे घेरा है तेरी सारी लहरें और तेरे ढेव ४ मेरे ऊपर से बीत गये। तब मैं ने कहा कि मैं तेरी दृष्टि से खेदा गया हूं तथापि मैं तेरे पवित्र मन्दिर की ओर ५ फिर ताकूंगा। प्राण लों जल मुझे लगता है रसातल मुझे घेर लेता है सेवार मेरे सिर पर लिपट जाता है। ६ मैं पर्ब्बतों के खोड़ों लों उतर जाता पृथिवी के अड़ंगे मुझ पर सदा के लिये मुंदे हैं पर हे परमेश्वर मेरे ईश्वर तू मेरे प्राण को गड़हे से निकाल लावेगा॥

७ जब मेरा प्राण मुझ में मूर्छित हुआ तब मैं ने परमेश्वर को स्मरण किया और मेरी प्रार्थना तेरे पवित्र मन्दिर में ८ तेरे पास पहुंची। जो झूठे वृथों को मानते हैं वह अपने दयाल को त्यागते ९ हैं। पर मैं धन्यबाद के शब्द से तुझ को बलि चढ़ाऊंगा जो मनौती मैं ने मानी उसे पूरी करूंगा बचाव परमेश्वर से है॥

१० और परमेश्वर ने मच्छ को आज्ञा दिई और उस ने यूनः को थल पर उगल दिया॥

तीसरा पर्ब्ब।

१ और परमेश्वर का बचन दूसरी बार यूनः के पास यह कहते हुए आया। २ उठ उस महा नगर नीनवः को जा और जो उपदेश मैं तुझ से कहूं उस को ३ प्रचार। और यूनः उठा और परमेश्वर के कहने के समान नीनवः को गया अब नीनवः ईश्वर के आगे तीन दिन ४ के मार्ग का एक महा नगर था। और यूनः एक दिन के मार्ग नगर में फिरने लगा और यह कहके प्रचारा कि और चालीस दिन में नीनवः उलटाया जायेगा॥

५ और नीनवः के लोगों ने ईश्वर की प्रतीति किई और ब्रत प्रचारा और उन ६ में बड़े से छोटे लों टाट पहिना। और

यह समाचार नीनवः के राजा के पास पहुंचा और वह अपने सिंहासन से उठा और अपना राजवस्त्र उतारके टाट ७ ओढ़ा और राख पर बैठ गया । और राजा और उस के महत जनों की आज्ञा से नीनवः में यह कहके प्रचारा गया कि न मनुष्य न ढोर न गाय न भेड़ कुछ ८ चक्खें न खावें और न जल पीवें । पर मनुष्य और ढोर टाट से ओढ़ाये जावें और बल से परमेश्वर की दोहाई देवें और हर एक अपने अपने कुमार्ग से और अपने अपने अन्धेर से जो उन के हाथों ९ में है फिर आये । क्या जाने ईश्वर फिरे और पछतावे और अपने क्रोध के ताप से फिर जाये कि हम नाश न होवें ॥

१० और ईश्वर ने उन के कार्य्यों को देखा कि वे अपने अपने कुमार्ग से फिरे और ईश्वर उस बुराई से पछताया जो उन पर लाने को उस ने कहा था और उस ने न किया ॥

चौथा पर्ब्ब ।

१ पर यूनः को यह अति बुरा समझ २ पड़ा और वह बर उठा । और यह कहते हुए उस ने परमेश्वर से प्रार्थना किई कि हे परमेश्वर में बिन्ती करता हूं क्या यह मेरा बचन न था जब मैं अपने देश में था इस लिये मैं आगे से तरसीस को भागा क्योंकि मैं जानता था कि तू कृपाल और दयाल ईश्वर है जो क्रोध में धीर और दया में बहुत और बुराई ३ से पछताता है । और अब हे परमेश्वर मैं बिन्ती करता हूं कि मेरे प्राण को मुझ से ले ले क्योंकि मेरे लिये मरना जीने से भला है ॥

४ और परमेश्वर ने उस्से कहा कि क्या तू भला करता है जो तू बर उठा है ॥

और यूनः नगर से निकल गया और नगर के पूरब ओर बैठ गया और वहां अपने लिये एक छप्पर बनाया और उस के नीचे छाया में बैठ गया जब लों देखे कि नगर पर क्या होगा । और परमेश्वर ईश्वर ने रेंड़ी का एक पेड़ ठहराया और उसे यूनः पर उगाया जिस्तें उस के सिर पर छाया करे और उसे उस के दुःख से बचावे और यूनः उस रेंड़ी के पेड़ के कारण अति आनन्द से आनन्दित हुआ ॥

पर दूसरे दिन जब भोर हुआ परमेश्वर ने एक कीड़ा ठहराया और उस ने उस रेंड़ी के पेड़ को डसा ऐसा कि झुरा गया । और जब सूर्य्य उदय हुआ तब ऐसा हुआ कि ईश्वर ने एक बड़ी पूरबी पवन ठहराई और यूनः के सिर पर घाम पड़ी और वह मूर्छित हुआ और अपने लिये मृत्यु मांगी और बोला कि मेरे लिये मरना जीने से भला है ॥

और ईश्वर ने यूनः से कहा क्या तू भला करता है जो उस रेंड़ी के पेड़ के लिये तू बर उठा है और उस ने कहा मैं भला करता हूं जो मरने लों बर उठा ॥

तब परमेश्वर ने कहा कि तू ने उस १० रेंड़ी के पेड़ के लिये चिन्ता किई जिस के लिये तू ने परिश्रम न किया और न उगाया जो रात ही में उगा और रात ही में नष्ट हुआ । और क्या मैं नीनवः ११ उस महा नगर की चिन्ता न करूंगा जिस में एक लाख बीस सहस प्राणी से ऊपर हैं जो अपने दहिने हाथ का बेवरा नहीं जानते और ढोर भी बहुत हैं ॥

मीकः भविष्यद्वक्ता की पुस्तक ।

पहिला पर्ब्ब ।

१ परमेश्वर का बचन जो यहूदाह के राजा यूताम और आखज और हिज़िल्कियाह के दिनों में मबरसती मीकः के पास आया जो उस ने समरून और यरूसलम के विषय में देखा ॥

२ सुनो हे सारे लोगो और कान धरो हे पृथिवी और उस की भरपूरी और प्रभु परमेश्वर तुम्हारे बिरुद्ध साक्षी देवे हां प्रभु अपने पवित्र मन्दिर से । ३ क्योंकि देखो परमेश्वर अपने स्थान से निकलता है और वह उतरेगा और पृथिवी के ऊंचे स्थानों पर पांव धरेगा । ४ और पर्बत उस के नीचे पिघल जायेंगे और तराई फट जायेंगी जैसा कि मोम आग से और जैसा कि जल कंदला से ढकेला जाता है ॥

५ यह सब यअकूब के अपराध के लिये और इसराएल के घराने के पापों के लिये है यअकूब का अपराध क्या है क्या समरून नहीं और यहूदाह के ऊंचे स्थान क्या हैं क्या यरूसलम नहीं। ६ इस लिये मैं समरून को खेत के एक ढेर की नाईं बनाऊंगा और लगाई हुई दाखबारी की नाईं और मैं उस के पत्थरों को तराई में ढुलकाऊंगा और उस की नेवों को उघाड़ूंगा । ७ और उस की सारी मूर्तें टुकड़े टुकड़े किई जायेंगी और उस की सारी खरचियां आग में जलाई जायेंगी और उस की सारी मूर्त्तों को मैं उजाड़ करूंगा क्योंकि उस ने बेश्या की खरची से बटोरा है और वे बेश्या की खरची के लिये फिर जायेंगे ॥

८ इस लिये मैं हाय हाय मारूंगा और बिलाप करूंगा मैं उघारा और नंगा फिरूंगा गीदड़ों की नाईं चिल्ला उठूंगा और शुतुरमुर्गों की नाईं कूकूंगा । क्योंकि उस का घाव असाध्य है कि वह यहूदाह को आया है वह मेरे लोगों के फाटक पर यरूसलम लों पहुंचा है ॥

१० तुम जअत में मत प्रचारो रो रो बिलाप न करो बैतअफ़र: में धूल में अपने को लोटाओ । ११ हे सफीर की निवासिनी नग्न और घबराई हुई चली जा ज़ानान की निवासिनी निकल नहीं जाती बैतुलअसल का कूढ़ना अपने टिकने का स्थान तुम से लेगा । १२ क्योंकि मुरात की निवासिनी अपनी संपत्ति के लिये लुटी जाती है क्योंकि परमेश्वर की ओर से बुराई यरूसलम के फाटक लों उतरी है । १३ हे लकीस की निवासिनी पवनगामी को रथ में जोतो वही सैहून की कन्या के लिये पाप का आरंभ था क्योंकि इसराएल के अपराध तुझी में पाये गये । १४ इस लिये तू मोरिसतजात का त्यागपत्र देगा अकज़ीब के घराने इसराएल के राजों के लिये झूठे ठहरेंगे । १५ मैं तुझ पर भी एक अधिकारी लाऊंगा हे मरीसः की निवासिनी वह अदूलाम को आवेगा जो इसराएल का प्रताप है । १६ गंजी हो जा और अपने प्यारे लड़कों के लिये अपना सिर मुंडा उकाब की नाईं अपनी गंज को बढ़ा क्योंकि वे तुझ से बंधुआई में गये हैं ॥

दूसरा पर्ब्ब

सन्ताप उन पर जो अधर्म्म की युक्ति करते हैं और अपने बिछौने पर बुराई की जुगत बांधते हैं और बिहान होते ही उसे किया करते हैं क्योंकि वह उन के हाथ के बस में है । और वे खेतों का लोभ करते हैं और अंधेर से

उन्हें बस में करते हैं और घरों का और उन्हें ले लेते हैं वे महाजन और उस घराने को सताते हैं हां मनुष्य और उस के अधिकार को ॥

३ इस लिये परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं इस कुटुम्ब पर बुराई की जुगत करता हूं कि जिस्से तुम अपने गले को न खींचोगे और तुम उत्तुङ्ग न चलोगे क्योंकि वह बुरा समय होगा । ४ उसी दिन कोई तुम्हारे बिषय में कहावत उठावेगा और यह कहते हुए हाय हाय से बिलाप करेगा कि हम सर्बथा नष्ट हुए हैं उस ने मेरे लोगों के भाग को पलट डाला है उस ने मुझ से कैसा ले लिया है एक धर्म्मत्यागी को उस ने हमारे खेतों को बिभाग किया । ५ इस लिये तेरे लिये कोई न होगा जो परमेश्वर की मंडली में चिट्ठी की रस्सी डाले ॥

६ भविष्य न कहो वे भविष्य कहेंगे जो ऐसी बातों का भविष्य न कहेंगे ७ निन्दा टल नहीं जाती । हे इसराएल के घराने ये कैसी बातें हैं क्या परमेश्वर का आत्मा सकेत है क्या यह उस के कार्य्य हैं क्या उस के लिये जो खराई ८ से चलता है मेरे बचन भले नहीं । पर सनातन से मेरे लोग बैरी की नाईं उठे हैं जो लोग कुशल से बीत जाते हैं जो लड़ाई से फिर आते हैं तुम उन पर से कुर्त्ते को चादर समेत उतार लेते हो । ९ तुम मेरे लोगों की स्त्रियों को उन के मनभावत घर से निकाल देते हो और उन के बालकों से मेरे बिभव को १० सर्बदा के लिये ले लेते हो । उठो और चलो क्योंकि यह तुम्हारा बिश्रामस्थान नहीं है कि अशुद्धता के कारण वह तुम्हें बिनाश करेगा हां महा नाश से ११ यदि कोई बौड़हा और मिथ्या मनुष्य झूठ कहे कि मैं दाखरस और तीक्ष्ण मदिरा का भविष्य कहूंगा तो वही इस लोग का भविष्यद्वक्ता होगा ॥

१२ हे यअकूब मैं निश्चय तेरे सब के सब बटोरूंगा मैं इसराएल के बचे हुओं को निश्चय एकट्ठा करूंगा मैं उन्हें बूसर: की भेड़ की नाईं एकट्ठा रक्खूंगा उस झुंड की नाईं जो अपनी चराई के मध्य में है मनुष्यों की बहुताई से वे १३ हुल्लड़ करेंगे । तोड़नेवाला उन के आगे आगे चढ़ जाता है वे तोड़ते हुए फाटक से बीत जाते और निकल जाते हैं और उन का राजा उन के आगे आगे चलता है अर्थात् परमेश्वर उन की अगुवाई में ॥

तीसरा पर्ब्ब

१ और मैं ने कहा कि हे यअकूब के अध्यक्षो और इसराएल के घराने के अगुओ मैं बिन्ती करता हूं कि सुनो क्या तुम को बिचार जानना नहीं । २ जो भलाई से बैर रखते हो और बुराई से प्रीति जो उन की खाल उन पर से उतारते हो और उन का मांस उन के ३ हाड़ों पर से । और जो मेरे लोगों का मांस खाते हैं और उन की खाल उन पर से खींच लेते हैं और उन के हाड़ों को टूक टूक करते हैं और उन्हें अलग कर देते हैं जैसा कि हांड़ी में और ४ जैसा कि मांस जो हंडा में है । तब वे परमेश्वर को दोहाई देंगे पर वह उन को न सुनेगा और वह उसी समय अपना मुंह उन से छिपावेगा क्योंकि उन्हों ने अपने कामों को बुरा किया ॥

५ परमेश्वर उन भविष्यद्वक्ताओं के बिषय में यों कहता है जो मेरे लोगों को भटकाते हैं जो अपने दांतों से काटते हैं और कुशल पुकारते हैं और जो कोई उन के मुंह में कुछ नहीं देते हैं और वे

६ उससे धर्म्मसंग्राम करेंगे । इसी लिये रात बिना दर्शन तुम पर होगी और अंधियारा बिना बने तुम पर होगा और भविष्यद्वक्तों पर सूर्य्य अस्त होगा और उन पर दिन अंधियारा हो जायेगा ।
७ तब दर्शनिक लज्जित होंगे और टोन्हे गड़बड़ा जायेंगे हां ये सब के सब अपना होंठ ढांपेंगे क्योंकि ईश्वर से
८ कुछ उत्तर नहीं है । पर निश्चय में पराक्रम से परमेश्वर के आत्मा से परिपूर्ण हूं हां न्याय और सामर्थ्य से कि यअकूब पर उस का अपराध और इसराएल पर उस का पाप प्रचारूं ॥

९ मैं बिन्ती करता हूं कि सुनो हे यअकूब के घराने के अध्यक्षो और इसराएल के घराने के अगुओ जो न्याय से घिनाते हो और सारे सुबिचार
१० को उलट देते हो । जो सैहून को लोहू से और यरूसलम को अनीति से बनाते
११ हो । उस के अध्यक्ष घूस के लिये बिचारते हैं और उस के याजक धनी के लिये सिखाते हैं उस के भविष्यद्वक्ते भी चांदी के लिये टोना करते हैं तथापि यह कहते हुए वे परमेश्वर पर टिकते हैं कि क्या परमेश्वर हमारे मध्य नहीं
१२ है बिपत्ति हम पर न आवेगी । निश्चय तुम्हारे कारण सैहून खेत की नाईं जोता जायेगा और यरूसलम ढेर ढेर बन जायेगा और मन्दिर का पहाड़ बन के ऊंचे स्थानों की नाईं ॥

चौथा पर्ब्ब ।

१ पर अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि परमेश्वर के घर का पहाड़ पहाड़ों की चोटी पर स्थिर होगा और वह सब टीलों से ऊंचा किया जायेगा और लोग
२ उस की ओर बहे जायेंगे । और बहुत जातिगण आवेंगे और कहेंगे कि चलो हम परमेश्वर के पहाड़ को चढ़ जायेंगे और यअकूब के ईश्वर के घर को जिस्तें वह हमें अपने मार्ग सिखावे और हम उस के पन्थों पर चलें क्योंकि सैहून से व्यवस्था निकलेगी और यरूसलम से पर-
३ मेश्वर का बचन । और वह बहुत से लोगों के मध्य में बिचार करेगा और दूर के बलवन्त जातिगणों को डांटेगा और वे अपनी तलवारों को तोड़के फार बनावेंगे और अपने भालों को हंसुवे जातिगण जातिगण पर तलवार नहीं उठावेंगे और वे फिर कभी संग्राम न सीखेंगे ।
४ और वे बैठेंगे हर एक अपने दाखलता के नीचे और अपने अपने गूलरपेड़ तले और उन्हें कोई न डरावेगा क्योंकि सेनाओं के परमेश्वर का मुखबचन है ।
५ क्योंकि सारे लोग हर एक अपने अपने देव के नाम से चलेंगे और हम परमेश्वर अपने ईश्वर के नाम से सदा सर्व्वदा लों चलेंगे ॥

६ उसी दिन में परमेश्वर कहता है मैं लंगड़ों को एकट्ठा करूंगा और निकाले हुओं को बटोरूंगा और उन्हें जिन को
७ मैं ने कष्ट दिया । और मैं लंगड़ों को उबरे हुए बनाऊंगा और दूर किये हुओं को बलवन्त जातिगण और अभी से सर्व्वदा लों परमेश्वर सैहून पहाड़ में उन पर राज्य करेगा ॥

८ और हे झुंड के गढ़ हे सैहून की कन्या के टीले तुझ को होगा हां अगिली प्रभुता आवेगी यरूसलम की कन्या का राज्य ॥

९ अब तू क्यों चिल्लाती है क्या तुझ में कोई राजा नहीं है क्या तेरा मंत्री नष्ट हुआ क्योंकि जन्नेवाली स्त्री की पीड़ें
१० तुझे लगी हैं । हे सैहून की पुत्री जन्नेवाली स्त्री की नाईं पीड़ें उठा और जन डाल क्योंकि अब तू नगर से बाहर जायेगी और चौगान में रहेगी हां तू

बाबुल को जायेगी वहां तू बचाव पावेगी वहां परमेश्वर तुझे तेरे बैरियों के हाथ से छोड़ावेगा ॥

११ और अब बहुत से जातिगण तेरे विरुद्ध एकट्ठे हैं जो कहते हैं कि वह अशुद्ध होवे और हमारी आंखें सैहून पर १२ लगें । पर वे लोग परमेश्वर की चिन्तों को नहीं जानते और उस का अभिप्राय नहीं समझते क्योंकि वह उन्हें गट्ठों की १३ नाईं खलिहान में बटोरेगा । हे सैहून की पुत्री उठके लताड़ क्योंकि मैं तेरे सींग को लोहा और तेरे खुरों को पीतल बनाऊंगा और तू बहुत जातिगणों को टुकड़ा टुकड़ा करेगी और उन की प्राप्ति परमेश्वर को और उन की संपत्ति समस्त पृथिवी के प्रभु को तू समर्पण करेगी ॥

पांचवां पर्ब्ब ।

१ हे जथान की पुत्री बहुताई से अब आप को एकट्ठी कर उन्हों ने हमें घेर रक्खा है उन्हों ने इसराएल के न्यायी को गाल पर छड़ी मारी है ॥

२ और तू हे बैतलहम इफ़रातह यद्यपि तू यहूदाह के सहस्रों में छोटा है तथापि तुझ में से मेरे लिये वह निकलेगा जो इसराएल में महीप होगा जिस का निकलना पुरातन से सनातन दिनों से होगा ॥

३ इस लिये वह उन्हें उस समय लों सौंपेगा जब कि जो जनती है जन डालेगी तब उस के भाइयों के उबरे हुए इसराएल के सन्तानों के पास ४ फिरेंगे । और वह खड़ा होगा और परमेश्वर के बल से चरावेगा हां परमेश्वर अपने ईश्वर के नाम की महिमा से और वे ठहरेंगे क्योंकि अब वह पृथिवी ५ के अन्तों लों महान होगा । और यह हमारा कुशल होगा और जब असूरी हमारे देश में आवेगा और हमारे भवनों में पांव रक्खेगा तब हम उस के विरुद्ध सात गड़रिये और आठ अध्यक्ष उठावेंगे । ६ और वे असूरी के देश को तलवार से उजाड़ करेंगे और निमरूद के देश को उस के पैठों लों और असूरी से बचाव होगा जब वह हमारे देश में आवेगा और हमारे सिवाने में अपना पांव रक्खेगा ॥

७ और यअक़ूब के उबरे हुए बहुत से जातिगणों के मध्य में ऐसे होंगे जैसी ओस परमेश्वर से और जैसी झड़ी घास पर जो मनुष्य के लिये नहीं ठहरती और मनुष्यों के सन्तानों के लिये नहीं रहती । ८ और यअक़ूब के उबरे हुए जातिगणों में बहुत से लोगों के मध्य में ऐसे होंगे जैसा सिंह बन के पशुओं में और जैसा युवा सिंह भेड़ के झुंडों में कि जब उन में से जाता है तब लताड़ता और फाड़ डालता है और कोई छोड़ानेवाला नहीं ९ है । तेरा हाथ तेरे बैरियों पर उत्तुङ्ग होगा और तेरे सारे शत्रु काटे जायेंगे ॥

१० और उसी दिन में ऐसा होगा परमेश्वर कहता है कि मैं तेरे मध्य में से तेरे घोड़ों को काट डालूंगा और तेरे ११ रथों को बिनाश करूंगा । और मैं तेरे देश के नगरों को काट डालूंगा और १२ तेरे सारे गढ़ों को ढाह दूंगा । और मैं तेरे हाथ में से उच्चाटनों को काट डालूंगा और तुझ में टोन्हे न होंगे । १३ और तेरी गढ़ी हुई मूरतों को और तेरी प्रतिमों को तेरे मध्य में से काट डालूंगा और तू अपने हाथों के कार्य्य को फिर १४ कभी न पूजेगा । और मैं तेरी असीरतों को तेरे मध्य में से उखाड़ डालूंगा और १५ तेरे नगरों को उजाड़ करूंगा । और मैं क्रोध और जलजलाहट से उन जातिगणों से पलटा लूंगा जिन्हों ने नहीं माना ॥

छठवां पर्ब्ब।

१ जो परमेश्वर कहता है सो सुनो अब उठ पर्वतों के आगे बिवाद कर और टीले तेरा शब्द सुनें॥

२ हे पर्वतो और पृथिवी की दृढ़ नेवो परमेश्वर का बिवाद सुनो क्योंकि परमेश्वर का बिवाद अपने लोगों से है और वह इसराएल से वादानुवाद करेगा॥

३ हे मेरी जाति मैं ने तुझ से क्या किया है और किस बात में मैं ने तुझे ४ थकाया है मुझ पर साक्षी दे। क्योंकि मैं तुझे मिस्र देश से चढ़ा लाया और बंधुओं के घर से तुझे छोड़ाया और मैं ने तेरे आगे मूसा और हारून और मिरयम को भेजा॥

५ हे मेरी जाति स्मरण कर कि मोआब के राजा बलक ने क्या परामर्श किया और बऊर के बेटे बलआम ने उसे क्या उत्तर दिया स्मरण कर कि क्या हुआ सत्तीम से जिलजाल लों जिस्तें परमेश्वर के धर्म्म को जाने॥

६ मैं क्या लेके परमेश्वर के समीप आऊं और महेश्वर के आगे दण्डवत करूं क्या मैं बलिदान की भेंटों और एक बरस के बछड़ों को लेके उस के आगे ७ आऊं। क्या परमेश्वर सहस्र मेंढ़ों से अथवा दस सहस्र नदी तेल से प्रसन्न होगा क्या मैं अपने पहिलौठे को अपने अपराध के लिये देऊं अपने कोख के फल को अपने प्राण के पाप के लिये॥

८ हे मनुष्य जो भला है परमेश्वर ने तुझे बताया है और परमेश्वर तुझ से और क्या चाहता है कि तू न्याय करे और दया से प्रीति रक्खे और अपने ईश्वर के साथ दीनताई से चले॥

९ परमेश्वर का शब्द नगर को पुकारता है और जो बुद्धिमान है उसे ठहराया १० है। क्या अब लों दुष्ट के घर में दुष्टता के भंडार हैं और हलुक शापित बटखरा है। क्या दुष्टता की तुला और छल के ११ बटखरे रखते हुए मैं पवित्र हूं। क्योंकि १२ उस के धनवान लोग लूटपाट से भरे हैं और उस के निवासी झूठ बोलते हैं और उन के मुंह में उन की जीभ छली है॥

१३ और मैं भी तुझे असाध्य से मारूंगा और तेरे पापों के कारण तुझे उजाड़ करूंगा। १४ तू खायेगा पर तृप्त न होगा और तेरे मध्य में उदासी होवेगी तू ले जायेगा पर न छोड़ावेगा और जो कुछ तू छोड़ावेगा मैं तलवार को सोंपूंगा। १५ तू बोवेगा पर न लवेगा तू जलपाई को रौंदेगा पर तेल से आप को न मलेगा और नये दाख को पर न पीयेगा। १६ क्योंकि उमरी की रीति चलाव हैं और अखिअब के घराने की सारी क्रिया और तुम उन के परामर्शों में चलते हो जिस्तें मैं तुझे उजाड़ के लिये बनाऊं और उस के निवासियों को फुफकार के लिये इस लिये तुम मेरे लोगों की निन्दा उठाओगे॥

सातवां पर्ब्ब।

हाय मुझ पर क्योंकि मैं ऐसा हूं जैसा कि जब लोग ग्रीष्म के फल बटोरते हैं जैसा कि जब दाख बीना गया खाने को कच्चा नहीं है अधपक्का गूलर नहीं है जिसे मेरा प्राण चाहता है। भला जीव देश में से नष्ट हुआ और मनुष्यों में कोई खरा नहीं है वे सब के सब लोहू के लिये घात में रहते हैं हर एक जन जाल से अपने अपने भाई को अहेर करता है। उन के हाथ बुराई करने को ठीक सिद्ध हैं राजपुत्र भेंट मांगता है न्यायी भी और महत जन अपने मन की तृष्णा उच्चारता है वे बुरा बंधन बांधते हैं। उन में से जो सब से भला है झड़बेरी की नाईं है

और जो सब से खरा है कांटोले बाड़े से चोखा है तेरे रखवालों का दिन हां तेरे पलटी का दिन आता है अब उन ५ की ब्याकुलता होगी। मित्र पर बिश्वास न करो प्रीतम पर भरोसा मत रक्खो उस्से जो तेरे गोद में लेटती है अपने ६ मुंह के किवाड़े बन्द रख। क्योंकि पुत्र पिता की निन्दा करता है और पुत्री अपनी माता के बिरुद्ध उठती है और पतोह अपनी सास के बिरुद्ध मनुष्य के शत्रु उस के घराने के लोग हैं॥

७ पर मैं परमेश्वर की ओर ताकूंगा मैं अपने मोक्ष के ईश्वर का मार्ग ताकूंगा मेरा ईश्वर मेरी सुनेगा॥

८ हे मेरे बैरी मुझ पर आनन्द मत कर यद्यपि मैं गिरा हूं तथापि मैं उठूंगा यद्यपि मैं अंधियारे में बैठा हूं तथापि परमेश्वर मेरे लिये उंजियाला होगा। ९ मैं परमेश्वर की जलजलाहट सहूंगा क्योंकि मैं ने उस के बिरुद्ध पाप किया है जब लों वह मेरे पद के लिये बिवाद न करे और मेरे लिये न्याय न करे वह मुझे उंजियाले में लावेगा और मैं उस १० का धर्म्म देखूंगा। तब मेरी शत्रुणी देखेगी और लाज उसे ढांपेगी जिस ने मुझ से कहा कि परमेश्वर तेरा ईश्वर कहां है मेरी आंखें उसे देखेंगी अब वह सड़क की कीच की नाईं लताड़ी जायेगी॥

११ जिस दिन तेरी भीतें बनाई जायेंगी उसी दिन तेरी आज्ञा दूर लों पहुंचेगी। १२ उसी दिन लोग तेरे पास आवेंगे असूर से मिस्र लों और मिस्र से नदी लों और समुद्र से समुद्र लों और पर्ब्बत से पर्ब्बत लों। तथापि देश उजाड़ होगा अपने १३ निवासियों के कारण उन की करनी के फल के लिये॥

१४ अपनी गोदी से अपने लोगों को चरा अपने अधिकार के झुंड को जो बन में एकान्त में रहते हैं करमिल के मध्य में उन्हें बसने और जिलिअद में पुरातन दिनों की नाईं चरने दे॥

१५ मिस्र देश से निकालने के दिनों की नाईं मैं उस को आश्चर्य्यित बस्तें दिखा- १६ ऊंगा। जातिगण देखेंगे और अपने सारे बल के लिये घबरा जायेंगे वे मुंह पर हाथ रक्खेंगे और उन के कान बहिरे १७ होंगे। वे सर्प की नाईं धूल चाटेंगे वे पृथिवी के रेंगवैये जन्तु की नाईं अपने छिपे हुए स्थानों से थर्थरावेंगे वे परमेश्वर हमारे ईश्वर की ओर धावेंगे और वे तुझ से डरेंगे॥

१८ तुझ सा ईश्वर कौन है जो बुराई को क्षमा करता है और अपने अधिकार के उबरे हुओं के अपराध से बीत जाता है वह अपना क्रोध सदा लों नहीं रखता १९ क्योंकि वह दया से आनन्दित है। वह लौटेगा वह हम पर कृपा करेगा वह हमारी बुराइयों को दबावेगा और तू उन के सारे पापों को समुद्र के गहिराव २० में डालेगा। तू यअकूब से सच्चाई और अबिरहाम पर दया करेगा जो तू ने पुरातन दिनों से हमारे पितरों से किरिया खाई थी॥

नहूम भविष्यद्वक्ता की पुस्तक।

पहिला पर्ब्ब।

१ नीनवः के विषय में भविष्यवाणी इलकूशी नहूम के दर्शन की पुस्तक॥

२ परमेश्वर ज्वलित और पलटा लेनेहारा ईश्वर है परमेश्वर पलटा लेता है और कोपमय है परमेश्वर अपने शत्रुओं से पलटा लेता है और अपने
३ बैरियों के लिये क्रोध रखता है। परमेश्वर क्रोध में धीमा है पर बल में महान वह पापिन को निष्पापी नहीं ठहरावेगा परमेश्वर का मार्ग बवंडर और आंधी में है और मेघ उस के
४ चरणों की धूल हैं। वह समुद्र को डांटता और उसे सुखाता है और वह सारी नदियों को सुखाता है बसन कुम्हलाता है और करमिल और लुबनान
५ का फूल कुम्हलाता है। उस्से पर्बत थर्थराते हैं और टीले पिघल जाते हैं और देश उस के सन्मुख उछलता है हां
६ जगत और उस के सारे निवासी। उस की जलजलाहट के आगे कौन खड़ा हो सक्ता है और उस के क्रोध की तपन में कौन ठहरता है उस का कोप आग की नाईं उंडेला जाता है और उस्से चटान ढाये जाते हैं॥

७ परमेश्वर भला है बिपत्ति के समय वह गढ़ के लिये है और वह उन्हें जानता है जो उस पर आसरा रखते
८ हैं। पर बाढ़ के रेले से वह उस के स्थान का अन्त करेगा और अंधियारा उस के बैरियों को खेदेगा॥

९ तुम परमेश्वर के बिरुद्ध क्या युक्ति बांधते हो वह अन्त करेगा बिपत्ति
१० दूसरी बेर न उठेगी। यद्यपि वे लिपटे हुए कांटों की नाईं हैं अपने मद से मतवाले हैं तथापि अति सूखी खूंटी की नाईं भस्म किये जायेंगे। तुझ से ११ कुमंत्री निकला जिस ने परमेश्वर के बिरुद्ध बुरी युक्ति बांधी है। परमेश्वर १२ यों कहता है यद्यपि वे कुशल से हैं और गिनती में ढेर तथापि वे इस रीति से काटे जायेंगे और वह लोप जायेगा यद्यपि मैं ने तुझे दुःख दिया तथापि मैं फिर तुझ को दुःख न दूंगा। क्योंकि १३ अब मैं तुझ पर से उस का जूआ तोड़ूंगा और तेरे बंधनों को झटक डालूंगा॥

१४ और परमेश्वर ने तेरे विषय में आज्ञा किई कि तेरे नाम से और कोई बोया न जायेगा मैं तेरे देवों के घर से खोदी हुई मूर्त्ति को और ढाली हुई मूर्त्ति को काट डालूंगा मैं उसे तेरी समाधि ठहराऊंगा क्योंकि तू नीच है॥

१५ उस के पांव पर्बतों पर देख जो मंगल समाचार लाता और कुशल प्रचारता है हे यहूदाह अपने पर्ब्ब रख अपनी मनौतियां पूरी कर क्योंकि वह दुष्ट तुझ से फिर बीत न जायेगा वह सर्बथा काट डाला जायेगा॥

दूसरा पर्ब्ब।

१ जो तितर बितर करता है सो तेरे सन्मुख चढ़ आया है गढ़ की रखवाली कर मार्ग अगोर कटि दृढ़ कर पराक्रम को अति स्थिर कर। क्योंकि इसराएल २ की उत्तमता की नाईं परमेश्वर यअकूब की उत्तमता को फेर लावेगा क्योंकि उजाड़ियों ने उन्हें उजाड़ा है और उन की डालियों को नष्ट किया है॥

३ उस के बलवंतों की ढाल लाल है और रक्त बस्त्र ओढ़े हैं उस के लैस होने के दिन में रथ कटार की आग

की नाईं चमकते हैं और भाले हिलाये
४ जाते हैं। सड़कों में रथ हौरा मचाते
हैं चौड़े स्थानों में वे धावा मारते हैं
वे दीयों की नाईं दिखाई देते हैं वे
बिजली की नाईं दौड़ते हैं ॥
५ वह अपने श्रेष्ठों का स्मरण करता
है वे अपने चलने में ठोकर खाते हैं वे
भीत की ओर फुरती करते हैं और आड़
६ सिद्ध किया जाता है। नदियों के
फाटक खुले हैं और भवन गल जाता है
७ जो निपट दृढ़ था। वह नंगी किई
जाती है वह बंधुआई में पहुंचाई जाती
है और उस की सखियां कपोत के शब्द
से कुकती हैं और वे अपनी छाती पीटें।
८ और प्राचीन दिनों से नीनव: जल के
सरोवर की नाईं हुआ पर वे भागते हैं
वे चिल्लाते हैं कि ठहरो ठहरो पर
कोई अपना मुंह नहीं फेरता ॥
९ चांदी की लूटो सोने की लूटो उस
१० के भंडार का अन्त नहीं है। सारे
वांछित पात्रों की बहुताई है वह छूछी
और शून्य और उजाड़ है और मन
पिघलता है और घुटने कांपते हैं और
सारी कटि में अति पीड़ा है और उन
सभों के मुखों का रंग बदल जाता है॥
११ सिंहनियों का निवास कहां है और
युवा सिंहों का भोजन स्थान कहां है
जहां सिंह और सिंहनी फिरते थे और
उस का बच्चा भी और कोई उन्हें न
१२ डराता था। सिंह ने अपने बच्चों के
लिये बिशेष फाड़ा और अपनी सिंहनियों
के लिये गला घोंटा और अपने मांदों
को अहेर से और अपने निवासों को
आखेट से भर दिया ॥
१३ देख मैं तेरे बिरुद्ध हूं सेनाओं का
परमेश्वर कहता है और मैं उस के रथों
को धूंवां में जलाऊंगा और तलवार तेरे
युवा सिंहों को खायेगी और मैं देश से
तेरा अहेर काट डालूंगा और तेरे दूतों
का शब्द फिर सुना न जायेगा ॥

तीसरा पर्व्व

१ हाय रुधिर के नगर पर वह छल
और अंधेर से सर्व्वत्र भरा है अहेर नहीं
२ सिधारता है। कोड़े का शब्द और
पहियों के खड़खड़ाने का शब्द घोड़ों
का टापना और रथों का उछलना।
३ घोड़चढ़ों का चढ़ना तलवार की चमक
और भाले की झलक जूझे हुओं की
मंडली और लोथों का ढेर उन के लोथों
का अन्त नहीं है वे उन के लोथों पर
ठोकर खाते हैं ॥
४ सुरूप छिनाल के छिनाले की बहुताई
के कारण जो मोहने में निपुण है जिस
ने जातिगणों को अपने छिनालपनों से
और गोत्रियों को अपने मोहने से बेचा
५ है। देख मैं तेरे बिरुद्ध हूं सेनाओं का
परमेश्वर कहता है और मैं तेरे मुंह से
तेरा अंचरा उघारूंगा और मैं जाति-
गणों को नंगापन और राज्यों को तेरी
६ लाज दिखाऊंगा। और मैं तुझ पर बिष्ठा
डालूंगा और तुझे तुच्छ करूंगा और तुझे
७ अंगूठा सा न ठहराऊंगा। और ऐसा
होगा कि हर एक जो तुझे देखेगा सो
तुझ से भागेगा और कहेगा कि नीनव:
उजाड़ हुआ है कौन उस के लिये कुढ़ेगा
मैं तेरे लिये कहां से शान्तिदायक
ढूंढ़ लाऊं ॥
८ क्या तू नोअमून से भला है जो
नदियों के मध्य में बसा था जल उस
की चारों ओर था जिस की आड़ समुद्र
था और उस की भीत समुद्र पर थी।
९ कूश और मिस्र उस का बल था और
वे अगणित थे फूत और लूबीम तेरे
१० सहायक थे। तिस पर वह बंधुआई के
लिये गई वह बंधुआई में गई उस के
बच्चे भी सारी गलियों के सिरे पर पटके

गये और उस के आदरमानों के लिये उन्हों ने चिट्ठियां डालीं और उस के सारे बली लोग सीकरों से जकड़े गये ॥

११ तू भी मदमाती होगी तू आप को छिपावेगी तू बैरियों से भी शरण ढूंढ़ेगी। १२ तेरे सारे गढ़ गूलरपेड़ की नाईं हैं जिस के अधपक्के फल हैं यदि हिलाये १३ जायें तो खवैये के मुंह में गिरेंगे। देख तेरे लोग तेरे मध्य में स्त्रियां हैं तेरे देश के फाटक तेरे बैरियों के लिये सर्वत्र खोले जायेंगे आग तेरे अड़ंगों को भस्म करेगी ॥

१४ घेरे के लिये जल भरो अपने गढ़ों को पोढ़ करो कीचड़ में पैठो और गारे १५ को लताड़ो पजावे को पोख करो। वहां आग तुझे भस्म करेगी तलवार तुझे काट डालेगी वह तुझे चाटनेवाली टिड्डी की नाईं खा लेगी जो तू अपने को टिड्डी की नाईं बढ़ावे जो तू अपने को बटोरी हुई टिड्डी की नाईं बढ़ावे। तू ने अपने बेपारियों को १६ आकाश के तारों से अधिक बढ़ाया चाटनेवाली टिड्डी चढ़ आई और उड़ गई। तेरे मुकुटधारी बटोरी हुई टिड्डी १७ की नाईं थे और तेरे अध्यक्ष सब से बड़ी टिड्डियों की नाईं थे जो ठंढे दिन में बाड़े में रहते हैं सूर्य्य उदय होते ही वे उड़ जाती हैं और उन का स्थान नहीं जाना जाता जहां टिकती हैं। हे १८ असूर के राजा तेरे गड़ेरिये सोते हैं तेरे कुलीन चैन से रहते हैं तेरे लोग पर्बतों पर बिथरे हैं और उन्हें बटोरने को कोई नहीं है। तेरे नाश का बन्ना नहीं १९ है तेरा घाव कड़ा है सब जो तेरा संदेश सुनेंगे तुझ पर ताली बजावेंगे क्योंकि किस पर तेरी दुष्टता सदा नहीं बीत गई ॥

हबक्कूक भविष्यद्वक्ता की पुस्तक।

पहिला पर्ब्ब ।

१ वह भविष्यबाणी जो हबक्कूक भवि- २ ष्यद्वक्ता ने देखी। हे परमेश्वर मैं कब तक पुकारूं और तू न सुने तेरे आगे अंधेर से दोहाई दूं और तू न बचावे। ३ तू क्योंकर मुझे बुराई देखने देता है तू क्यों अनीति पर दृष्टि करता है क्योंकि लूट और अंधेर मेरे आगे हैं और वे लोग हैं जो टंटा और बखेड़ा उठाते ४ हैं। इस लिये व्यवस्था ढीली हुई है और सत न्याय नहीं निकलता क्योंकि धर्म्मी को दुष्ट घेरते हैं इस लिये अनीति निकलती है ॥

जातिगणों के मध्य देखो और दृष्टि ५ करो बहुत आश्चर्य्य मानो क्योंकि मैं तुम्हारे दिनों में एक ऐसा कार्य्य करूंगा कि यद्यपि तुम्हें कहा जाये तथापि तुम प्रतीति न करोगे। क्योंकि देखो मैं ६ कसदियों को उठाऊंगा वे तीत मुख और फुरतीले जातिगण हैं जो पृथिवी की चौड़ाई पर से जायेंगे कि उन निवासस्थानों का अधिकार करें जो

७ उन के नहीं हैं। वे भयंकर और भयानक हैं उन का न्याय और उन की
८ उत्तमता आप ही से निकलती है। उन के घोड़े चीते से भी चालाक हैं और वे सांझ के हुंडारों से अधिक क्रूर हैं उन के घोड़चढ़े भी फैलते हैं हां उन के घोड़चढ़े दूर से आते हैं गिद्ध की नाईं उड़ते हैं जो भोजन को बेग
९ करते हैं। सब के सब अंधेर के लिये आते हैं उन के मुंह का दर्शन पुरवा पवन की नाईं है और वे बंधुओं को
१० बालू की नाईं बटोरते हैं। और वे राजाओं को चिढ़ाते हैं और महान उन के लिये स्वांग हैं वे हर एक गढ़हे से हंसते हैं और वे धूल ढेर करके उसे ले
११ लेते हैं। तब उन का मन नवीन हो जाता है और वे बीत जाते हैं और यह कहते हुए अपराध करते हैं कि क्या उस का बल उस के देवता से है॥

१२ हे परमेश्वर मेरे ईश्वर हे मेरे पवित्र क्या तू सनातन से नहीं है हम नहीं मरेंगे हे परमेश्वर तू ने उन्हें न्याय के लिये ठहराया है और हे चटान तू ने उन्हें ताड़ने के लिये दृढ़ किया है।
१३ तेरी आंखें पवित्र हैं कि तू बुराई को देख नहीं सक्ता और अनीति पर दृष्टि कर नहीं सक्ता फिर काहे को तू छलियों पर दृष्टि करता है और जब दुष्ट उसे निगलने पर है जो उस्से धर्म्मी है तू
१४ काहे को चुपका रहता है। और तू मनुष्यों को समुद्र की मछलियों की नाईं क्यों बनाता है रेंगवैयों की नाईं
१५ जिन का अगुवा नहीं है। वे उन सभों को बनसी से उठाते हैं वे उन्हें अपने जाल से पकड़ते और उन्हें अपने महाजाल में एकट्ठे करते हैं इस लिये
१६ वे आह्लादित और आनन्दित हैं। इस लिये वे अपने जाल को बलि चढ़ाते हैं और अपने महाजाल के लिये सुगंध जलाते हैं क्योंकि उन के द्वारा उन का भाग मोटा है और उन का भोजन
१७ बहुत है। क्या वे इस लिये अपने जाल को छूछा करेंगे और नित्य जातिगणों को बध करने से अलग न रहेंगे॥

दूसरा पर्ब्ब।

१ मैं अपने निहारस्थान पर खड़ा हूंगा और गढ़ पर ठहरूंगा और बाट जोहूंगा कि देखूं वह मुझे क्या कहेगा और अपने बिबाद में क्या उत्तर दूं॥

२ तब परमेश्वर ने उत्तर देके मुझ से कहा कि दर्शन को लिख और उसे पटियों पर उज्जल कर कि जो उसे पढ़े
३ सो दौड़े। क्योंकि ठहराये हुए समय के लिये दर्शन है परन्तु अन्त में शीघ्र करेगा और न छलेगा यद्यपि वह बिलम्ब करे तथापि उस की बाट जोह क्योंकि वह निश्चय आवेगा और बहुत बिलम्ब न करेगा॥

४ अभिमान को देख उस का प्राण उस में खड़ा नहीं है पर धर्म्मी उस के
५ बिश्वास से जीयेगा। तिस पर दाखरस छली है घमंडी मनुष्य अपने घर में नहीं रहता क्योंकि वह पाताल की नाईं अपनी बांछा को बढ़ाता है वह मृत्यु की नाईं है और तृप्त नहीं हो जाता पर सारे जातिगणों को अपनी ओर बटोरता है और सारे लोगों को अपने पास
६ एकट्ठा करता है। क्या ये सब के सब यह कहते हुए उस के बिरुद्ध एक दृष्टान्त और उस के बिरुद्ध एक ठठोली न उठावेंगे कि हाय उस पर जो उसे बटोरता है जो उस का नहीं है कब लों और अपने ऊपर गाढ़ी मिट्टी लादता है॥

७ क्या वे अचानक न उठेंगे जो तुझे डसेंगे और न जागेंगे जो तुझे सतावेंगे

८ और तू उन के लिये लूट होगा। क्योंकि तू ने बहुत से जातिगणों को लूट लिया लोगों के सारे बचे हुए तुझे लूट लेंगे मनुष्यों के लोहू के और देश और नगर और उस के सारे निवासियों पर अंधेर करने के कारण॥

९ हाय उस पर जो अपने घराने के लिये बुरी प्राप्ति को प्राप्त करता है कि अपने खोंते को उत्तुङ्ग बनावे जिस्तें वह १० बुराई के हाथ से बच जाये। बहुत जातिगणों के काट डालने से तू ने अपने घराने के लिये लाज की जुगुत किई और अपने विरुद्ध पाप किया। ११ क्योंकि भीत में से पत्थर पुकारेगा और लट्ठे में की जोड़ाई उसे उत्तर देगी॥

१२ हाय उस पर जो लोहू से बस्ती बनाता है और अनीति से नगर स्थिर १३ करता है। क्या यह सेनाओं के परमेश्वर की ओर से नहीं है कि लोग निराली आग के लिये परिश्रम करें और लोग निराले वैअर्थ के लिये आप को १४ थकावें। क्योंकि पृथिवी परमेश्वर के विभव के ज्ञान से भर जायेगी जैसा जल समुद्र को ढांपते हैं॥

१५ हाय उस पर जो अपने परोसी को मद्य पिलाता है जो अपनी कुप्पी से उन्हें लाता है और उसे मतवाला कर देता है जिस्तें उस की नग्नता देखे। १६ तू विभव की सन्ती लाज से भरा है तू भी पी और तेरी खलरी उघर जाये परमेश्वर के दहिने हाथ का कटोरा तुझ को फिरावेगा और तेरे विभव पर १७ अशुद्धता होगी। क्योंकि जो अंधेर लुबनान से किया गया वह तुझे ढांपेगा और जैसा पशुओं का नाश उन्हें डराता है वैसा मनुष्यों के लोहू के और देश और नगर और उस के सारे निवासियों पर अंधेर करने के कारण॥

खोदी हुई मूर्त्ति से क्या लाभ जो १८ उस के बनवैये ने उसे खोदा ढाली हुई मूर्त्ति और झूठ के उपदेशक से क्या लाभ जो उस के कार्य्य का कर्त्ता उस पर आसरा रखता है कि अपने लिये गूंगी मूरतें बनावे॥

हाय उस पर जो काठ को कहता १९ है कि जाग और मौन पत्थर को कि उठ वह सिखावे देख वह सोने चांदी से मढ़ा है और उस के मध्य में स्वास नहीं है। परन्तु परमेश्वर अपने पवित्र २० मन्दिर में है सारी पृथिवी उस के आगे चुपकी हो रही॥

तीसरा पर्व्व।

हबक्कूक भविष्यद्वक्ता की प्रार्थना १ सराहने के सुर से। हे परमेश्वर तेरी २ सुनाई हुई मैं ने सुनी और मैं डर गया हे परमेश्वर बरसों के मध्य अपने कार्य्य को फेर ला बरसों के मध्य उसे जना कोप में तू स्मरण कर। तैमन से ३ ईश्वर आया पवित्रमय फारान के पर्व्वत से सिलाह उस के विभव से स्वर्ग ढंप गया और पृथिवी उस की स्तुति से परिपूर्ण थी। उस की चमक भी ज्योति ४ की नाईं थी किरणें उस के हाथ से निकलीं पर वहां उस की ऐश्वर्य्यता का ढंकना था। मरी उस के आगे आगे ५ गई और अग्नि व्याधि उस के पीछे आई। वह खड़ा हुआ और पृथिवी ६ को डराया उस ने देखा और जातिगणों को थरथराया और पुरातन पर्व्वत बिथर गये सनातन के टीले झुक गये उस के पथ सनातन हैं॥

मैं ने कूशान के डेरों को कष्ट में ७ देखा और मिदियान के देश के ओझल कांप गये। हे परमेश्वर क्या तेरी ८ रिस नदियों पर थी क्या तेरा कोप नदियों पर था क्या तेरी जलाहट समुद्र

पर थो कि तू अपने घोड़ों पर बचाव ९ के रथों में चढ़ा । तेरा धनुष सर्ब्बथा उघर गया जैसा तू ने कहा हां गोष्ठियों से किरिया खाई सिलाह तू ने पृथिवी १० को नदियों से चीरा है । पर्ब्बतों ने तुझे देखा वे थरथराये जल की बाढ़ बीत गई गहिरावे ने अपना शब्द उच्चारा और अपने हाथों को उठाया । ११ सूर्य्य और चन्द्रमा अपने निवास में ठहर गये तेरे बाणों की ज्योति से जो चल निकले झलकते भाले की चमक से । १२ जलजलाहट से तू देश से सिधारा कोप १३ से तू ने जातिगणों को लताड़ा । तू अपने लोगों के बचाव के लिये निकला हां अपने अभिषिक्त के बचाव के लिये दुष्टों के घर में से तू ने सिर को कुचला चटान लों तू ने नेव को उघारा सिलाह ॥

१४ तू ने उस के अगुओं के सिर को उसी की बरछियों से छेदा वे मुझे बिथराने को बवंडर की नाईं धड़धड़ाये चुपके कंगालों को भक्षना यह उन का आनन्द था । तू अपने घोड़ों के संग १५ समुद्र से हां बड़े पानियों के हलरने से चला

१६ सुनते ही मेरी अंतड़ियां धड़क उठीं शब्द से मेरे होंठ कांपने लगे सड़ाहट मेरी हड्डियों में पैठ गई और मेरे घुठने थरथराने लगे पर मैं कष्ट के दिन में बिश्राम पाऊंगा जब वे ऊपर आवेंगे जो हम पर चढ़ाई करेंगे ॥

१७ यद्यपि गूलरपेड़ न फूले और दाख में फल न लगे जलपाई की खेती बेप्राप्त हो और खेत अनाज न दें गुंडरे में से झुंड कट जायें और थान में ढोर न होवें । तथापि मैं परमेश्वर से आह्ला- १८ दित हूंगा मैं अपनी मुक्ति के ईश्वर से आनन्द करूंगा । प्रभु परमेश्वर मेरा १९ बल है और वह मेरे पगों को हरिनियों का सा बनावेगा और मुझे मेरे ऊंचे स्थानों पर चलावेगा प्रधान बजनिये के लिये मेरी बीनों के संग ॥

सफनियाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक ।

पहिला पर्ब्ब ।

१ परमेश्वर का बचन जो यहूदाह के राजा अमून के बेटे यूसियाह के दिनों में सफनियाह पर आया जो हिजकियाह का बेटा अमरियाह का बेटा जिदल- याह का बेटा कूशी का बेटा था ॥

२ मैं देश पर से सब कुछ सर्ब्बथा नाश ३ करूंगा परमेश्वर कहता है । मैं मनुष्य और पशु को नाश करूंगा मैं आकाश के पंछियों को और समुद्र की मछलियों को और दुष्टों के संग ठोकरों को नाश करूंगा और मैं देश पर से मनुष्य को काट डालूंगा परमेश्वर कहता है । और ४ मैं यहूदाह पर और यरूसलम के सारे निवासियों पर अपना हाथ बढ़ाऊंगा और इस स्थान में से बअल के बचे हुओं को और याजकों के संग पंडों के नाम को काट डालूंगा । और उन को ५ भी जो कोठियों पर स्वर्ग की सेना को पूजते हैं और उन को जो परमेश्वर को

पूजते और उस्से किरिया खाते हैं और मिलकूम के नाम से किरिया खाते हैं। ६ और उन को भी जो परमेश्वर से फिर गये हैं और उन्हें जो परमेश्वर को नहीं ढूंढ़ते और उसे नहीं खोजते ॥

७ प्रभु परमेश्वर के आगे चुपका रह क्योंकि परमेश्वर का दिन आ पहुंचा इस लिये कि परमेश्वर ने बलि सिद्ध किया है उस ने अपने पाहुनों को पवित्र ८ किया है। और ऐसा होगा कि परमेश्वर के बलि के दिन में मैं अध्यक्षों को और राजपुत्रों को पलटा दूंगा और उन सभों ९ को जो उपरी वस्तु पहिने हैं। और मैं उसी दिन में उन सभों को पलटा दूंगा जो देहली के ऊपर से कूदते हैं और अपने प्रभु के घर को अन्धेर और छल से भरते हैं ॥

१० और उसी दिन में ऐसा होगा परमेश्वर कहता है कि मच्छफाटक से चिल्लाने का और दूसरे नगर से बिलाप का और टीलों से बड़े नाश का शब्द ११ होगा। हे मकतीस के निवासियो बिलाप करो क्योंकि सारे बेपारी नष्ट हुए वे सब जो चांदी से लदे हैं कट गये ॥

१२ और उसी समय यों होगा कि मैं यरूसलम को दीपकों से खोजूंगा और उन लोगों को पलटा दूंगा जो अपने तलछट पर जम गये हैं जो अपने मन में कहते हैं कि परमेश्वर न भला न बुरा करेगा। और उन की संपत्ति लूट के लिये और उन के घर उजाड़ के लिये होंगे और वे घर बनावेंगे पर उन में न बसेंगे और वे दाख की बारी लगावेंगे पर उन का रस न पीयेंगे ॥

परमेश्वर का बड़ा दिन समीप है और निकट दौड़ा आता है परमेश्वर के दिन का शब्द वहां बलवन्त जन धाड़ मारके चिल्लावेगा। वह दिन जलजलाहट का दिन है बिपत्ति और पीड़ा का दिन अंधियारे और धुंधलाई का दिन मेघों और गाढ़े अंधियारे का दिन। १६ बाड़ित नगरों पर और ऊंचे गुम्मटों पर तुरही और ललकारने का दिन। १७ और मैं मनुष्यों को कष्टित करूंगा और वे अन्धों की नाईं चलेंगे इस लिये कि वे परमेश्वर के अपराधी हैं और उन का लोहू धूल की नाईं उंडेला जायेगा और उन का मांस मल की नाईं। १८ हां परमेश्वर की जलजलाहट के दिन में न उन की चांदी न उन का सोना उन्हें छुड़ा सकेगा पर उस के झल की आग से सारा देश भस्म किया जायेगा क्योंकि वह अति शीघ्र देश के सारे बासियों का अन्त करेगा ॥

दूसरा पर्ब्ब

१ तुम अपने को एकट्ठा करो और एकट्ठे २ होओ हे अवांछित जातिगण। उस्से आगे कि आज्ञा जने दिन भूसे की नाईं बीत जाता परमेश्वर की रिस की तपन तुम पर आने से आगे परमेश्वर की रिस ३ का दिन तुम पर आने से आगे। परमेश्वर को खोजो हे देश के सारे नम्र लोगो जो उस की बिधिन को पालते हो और धर्म्म को ढूंढ़ो नम्रता को खोजो क्या जानें कि परमेश्वर के कोप के दिन में तुम छिपाये जाओ ॥

४ क्योंकि अज्जः त्यागा जायेगा और असकलून उजाड़ के लिये होगा वे मध्यान्ह में अशदूद को हांकेंगे और ५ अक्रून उखाड़ा जायेगा। हाय समुद्र के तीर के बासियों पर करीतियों के जातिगण पर परमेश्वर का बचन तुम्हारे बिरुद्ध है हे कनआन फिलिस्तियों के देश और मैं तुझे नष्ट करूंगा कि कोई निवासी न होगा। ६ और समुद्र तीर

चराई होगी जहां गड़ेरियों के लिये घहलचे और भेड़ों के लिये भोड़े होंगे । ७ और तू यहूदाह के घराने के बचे हुओं के लिये होगा वे उस में चराई करेंगे वे सांझ को असकलून के घरों में लेट रहेंगे क्योंकि परमेश्वर उन का ईश्वर उन से भेंट करेगा और उन की बंधुवाई को फिराबेगा ॥

८ मैं ने मोआब की निन्दा को और अम्मून के पुत्रों की गालियों को सुना जिन्हों ने मेरे लोगों की निन्दा किई और उन के सिवाने के विरुद्ध आप को ९ बढ़ाया । इस लिये सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर अपने जीवन सोंह कहता है कि निश्चय मोआब सदूम की नाईं और अम्मून के पुत्र अमूर: की नाईं होंगे हां कांटों का स्थान और लोन गड़हे और सदा उजाड़ मेरे लोगों के बचे हुए उन्हें लूटेंगे और मेरे लोगों के उबरे हुए उन्हें अधिकार में लावेंगे । १० यह उन के अहंकार के लिये होगा क्योंकि उन्हों ने परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर के लोगों की निन्दा किई और ११ उन के विरुद्ध आप को बढ़ाया । परमेश्वर उन पर भयानक होगा क्योंकि वह पृथिवी के सारे देवों को दुर्बल करेगा और जातिगणों के सारे टापू हर एक अपने अपने स्थान से उस को दण्डवत करेगा ॥

१२ तुम भी हे कूशियो मेरी तलवार से मारे जाओगे ॥

१३ और उत्तर के विरुद्ध अपना हाथ बढ़ावेगा और असूर को नष्ट करेगा और वह नीनव: को उजाड़ के लिये बनावेगा १४ अरण्य की नाईं सूखा । और उस के मध्य में झुंड और जातिगणों के सारे पशु लेट रहेंगे हां गरुड़ और साही उस के खंभों के सिरों पर बसेंगे खिड़कियों में शब्द गावेगा ओसारों में उजाड़ होगा क्योंकि देवदारु का कार्य्य उघारा जायेगा । यही आह्लादित नगर है जो १५ निश्चिन्त बैठा था जिस ने अपने मन में कहा कि मैं हूं और मेरे सिवा कोई और नहीं वह कैसा उजाड़ हो गया पशुओं के लेटने का स्थान जो कोई उस्से बीत जाता है फुफकारेगा और अपना हाथ हिलावेगा ॥

तीसरा पर्ब्ब ।

१ हाय उस हठमुष्ट और अशुद्ध उस २ उत्पाती नगर पर । उस ने शब्द को न माना उपदेश को ग्रहण न किया उस ने परमेश्वर पर भरोसा न रक्खा वह अपने ईश्वर के समीप न आई । ३ उस के मध्य उस के अध्यक्ष गरजवैये सिंह हैं उस के न्यायी सांझ के हुंडार हैं वे बिहान लों हड्डियों को नहीं छोड़ते । ४ उस के भविष्यद्वक्ते अभिमानी और विश्वासघातक जन हैं उस के याजकों ने पवित्रस्थान को अशुद्ध किया है उन्हों ने व्यवस्था को तोड़ डाला है ॥

५ परमेश्वर वही धर्म्मी उस के मध्य में है वह दुष्टता नहीं करता हर बिहान को अपना न्याय प्रकाश करता है वह चूकता नहीं पर दुष्ट लोग लाज नहीं ६ जानते । मैं ने जातिगणों को काट डाला उन के गुम्मट उजाड़ हुए मैं ने उन की सड़कों को नष्ट किया कि उन से कोई नहीं बीतता उन के नगर नाश किये गये कि कोई जन कोई निवासी नहीं । ७ मैं ने कहा कि केवल मुझ से डर शिक्षा ग्रहण कर कि उस का निवास काट डाला न जाये जैसा कि मैं ने उस पर ठहराया पर उन्हों ने तड़के उठके अपने कार्य्यों को बिगाड़ा ॥

८ तथापि मेरी बाट जोहो परमेश्वर कहता है जब लों कि मैं अहेर के लिये

न उठूं क्योंकि मैं ने ठाना कि जातिगणों को बटोरूं और राज्यों को इकट्ठा करूं जिस्तें अपनी जलजलाहट उन पर उंडेलूं अपने क्रोध की सारी तपन क्योंकि मेरे झल की आग से सारी पृथिवी भस्म किई जायेगी ॥

९ क्योंकि मैं उसी समय जातिगणों को पवित्र बोली फिर दूंगा जिस्तें वे सब के सब परमेश्वर के नाम की दोहाई देवें १० और एक साथ उस की सेवा करें। मेरे भक्त मेरे बिथरे हुओं की पुत्री कूश की नदियों के पार से मेरे लिये भेंट लावेंगे ॥

११ उसी दिन में तू अपने सारे कार्मों से लज्जित न होगा कि जिन से तू ने मेरा अपराध किया है क्योंकि तब मैं तेरे मध्य में से तेरे अहंकारी आनन्दितों को दूर करूंगा और तू फिर मेरे पवित्र पर्व्वत १२ पर आप को न फुलावेगा। और मैं तेरे मध्य में दीन और कंगाल लोग छोड़ूंगा और वे परमेश्वर के नाम पर १३ भरोसा रक्खेंगे। इसराएल के बचे हुए दुष्टता न करेंगे न झूठ बोलेंगे न उन के मुंह में छल की जीभ पाई जायेगी पर वे चराई करेंगे और लेटेंगे और कोई उन्हें न डरावेगा ॥

१४ हे सैहून की पुत्री धूम मचा हे इसराएल ललकार हे यरूसलम की पुत्री मगन हो और अपने सारे मन से आनन्दित हो। परमेश्वर ने तेरे विचारों को ले १५ लिया है उस ने तेरे बैरियों को निकाल दिया इसराएल का राजा परमेश्वर तेरे मध्य में है तू फिर बुराई नहीं देखेगा ॥

१६ उसी दिन में यरूसलम से कहा जायेगा कि मत डर और सैहून से कि तेरे हाथ ढीले न हों। परमेश्वर तेरा ईश्वर १७ जो तेरे मध्य में है वह सर्व्वशक्तिमान है वह बचावेगा वह आनन्दता से तुझ पर मगन होगा वह अपने प्रेम में चुपका रहेगा वह धूम मचाते तुझ पर आह्लादित होगा। मैं उन्हें बटोरूंगा जो १८ पवित्र मंडली के लिये शोकित हैं वे तुम्हें से थे जिन्हों ने उस की निन्दा उठाई। देख मैं उसी समय उन सभों १९ को मारूंगा जो जो तुझे सताते हैं और मैं लंगड़ाती हुई को बचाऊंगा और खेदी हुई को बटोरूंगा और मैं उन्हें हर देश में जहां वे लज्जित हुए हैं स्तुति और नाम के लिये ठहराऊंगा। जिस समय २० मैं उन्हें ठहराऊंगा मैं उसी समय तुम को फेर लाऊंगा हां पृथिवी के सारे जातिगणों के मध्य में तुम्हें नाम और स्तुति के लिये बनाऊंगा जब मैं तुम्हारी आंखों के आगे तुम्हारी बंधुआई फेर लाऊंगा परमेश्वर कहता है ॥

हज्जी भविष्यद्वक्ता की पुस्तक।

पहिला पर्व्व।

१ दारा राजा के दूसरे बरस में छठवें मास की पहिली तिथि में परमेश्वर का बचन हज्जी भविष्यद्वक्ता के द्वारा यहूदाह के अध्यक्ष सियालतिएल के बेटे जरुबाबुल के पास और प्रधान याजक यहूसदक के बेटे यहूसूअ के पास २ यह कहता हुआ पहुंचा। कि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि ये लोग कहते हैं समय नहीं पहुंचा परमेश्वर ३ के घर बनाने का समय। तब परमेश्वर का बचन हज्जी भविष्यद्वक्ता के द्वारा से यह कहता हुआ पहुंचा॥

४ कि क्या तुम्हारे लिये समय है जो आप मंगल के घरों में बसो और यह घर उजाड़ रहे॥

५ और अब सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि अपने मार्गों को बिचारो। ६ तुम ने बहुत बोया है पर थोड़ा सा प्राप्त किया तुम खाते हो पर तृप्त नहीं होते तुम पीते हो पर जी भरके नहीं तुम बस्त्र पहिनते हो पर उस्से कोई गरमाता नहीं और जो मजिमवारी कमाता है सो फटी थैली के लिये कमाता है॥

७ सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है ८ कि अपने मार्गों को बिचारो। पहाड़ पर चढ़कर लकड़ी लाओ और घर बनाओ और मैं उस्से प्रसन्न हूंगा और महिमा पाऊंगा परमेश्वर कहता है। ९ तुम ढेर का मार्ग ताकते थे पर देखो थोड़ा हुआ और जब घर में लाये तो मैं ने उस पर फूंक मारी सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि किस कारण मेरे घर के कारण जो उजाड़ है और तुम में से हर कोई अपने अपने घर को दौड़ता है। इस लिये तुम्हारे ऊपर १० आकाश ओस से रह गया और भूमि अपनी बढ़ती से रह गई। और मैं ने ११ भूमि और पर्व्वतों पर और अन्न और नये दाखरस पर और तेल और उस पर जो भूमि से उत्पन्न होता है और मनुष्य और पशु पर और हाथों के सारे परिश्रम पर फुराहट बुलाई॥

१२ तब सियालतिएल के बेटे जरुबाबुल ने और प्रधान याजक यहूसदक के बेटे ने और सारे बचे हुए लोगों ने परमेश्वर अपने ईश्वर के शब्द को और हज्जी भविष्यद्वक्ता की बातों को माना जैसा कि परमेश्वर उन के ईश्वर ने उसे भेजा था और लोग परमेश्वर के आगे डर गये॥

१३ तब परमेश्वर का सन्देशी हज्जी परमेश्वर के सन्देश से लोगों को यह कहके बोला कि मैं तुम्हारे संग हूं परमेश्वर कहता है॥

१४ और परमेश्वर ने यहूदाह के अध्यक्ष सियालतिएल के बेटे जरुबाबुल के मन को और प्रधान याजक यहूसदक के बेटे यहूसूअ के मन को और सारे बचे हुए लोगों के मन को उभाड़ा और उन्हों ने आके सेनाओं के परमेश्वर अपने ईश्वर के घर का कार्य्य किया। १५ दारा राजा के दूसरे बरस में छठवें मास की चौबीसवीं तिथि में॥

दूसरा पर्व्व।

१ सातवें मास की एक्कीसवीं तिथि में परमेश्वर का बचन यह कहते हुए हज्जी भविष्यद्वक्ता के द्वारा से पहुंचा। २ कि यहूदाह के अध्यक्ष सियालतिएल के बेटे जरुबाबुल से और प्रधान याजक

यहूसदक के बेटे यहूसूअ से और बचे हुए लोगों से कह ॥

३ कि तुम में कौन बचा है जिस ने इस घर को उस के अगिले बिभव में देखा था और अब उसे क्या देखते हो क्या उस की उपमा में तुम्हारी दृष्टि में तुच्छ नहीं ॥

४ पर हे जरुब्बाबुल बलवन्त हो परमेश्वर कहता है और हे प्रधान याजक यहूसदक के बेटे यहूसूअ बलवन्त हो और देश के सारे लोगो बलवन्त हो परमेश्वर कहता है और कार्य्य करो क्योंकि मैं तुम्हारे संग हूं सेनाओं का
५ परमेश्वर कहता है। उस बाचा के समान जो मैं ने तुम्हारे संग बांधी जिस समय तुम मिस्र देश से निकल आये और मेरा आत्मा तुम्हों में रहता है मत डरो ॥

६ क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि और एक बार तनिक में मैं स्वर्ग और पृथिवी को और समुद्र
७ और सूखी भूमि को हिलाऊंगा। और मैं सारे जातिगणों को हिलाऊंगा और सारे जातिगणों का बांछित आवेगा और मैं इस घर को बिभव से भर दूंगा
८ सेनाओं का परमेश्वर कहता है। चांदी मेरी है और सोना मेरा सेनाओं का
९ परमेश्वर कहता है। इस पहिले घर का बिभव अगिले से अधिक होगा सेनाओं का परमेश्वर कहता है और इस स्थान में मैं कुशल दूंगा सेनाओं का परमेश्वर कहता है ॥

१० दारा के दूसरे बरस में नवें मास की चौबीसवीं तिथि में परमेश्वर का बचन यह कहते हुए हज्जी भविष्यद्वक्ता के
११ द्वारा से पहुंचा। कि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि यह कहके ब्यवस्था के बिषय में याजकों से पूछो।
१२ यदि मनुष्य अपने बस्त्र के अंचल में पवित्र मांस ले जाये और अपने अंचल से रोटी अथवा लपसी अथवा दाखरस अथवा तेल अथवा किसी भांति के भोजन को छूवे क्या वह पवित्र होगा और याजकों ने उत्तर देके कहा कि
१३ नहीं। फिर हज्जी ने कहा कि यदि लोथ के छूने से कोई जन अशुद्ध होवे और इन में से किसी बस्तु को छूवे क्या वह अशुद्ध होगी और याजकों ने उत्तर देके कहा कि अशुद्ध होगी ॥

१४ तब हज्जी ने उत्तर देके कहा कि ऐसे ये लोग और ऐसे यह जातिगण मेरी दृष्टि में हैं परमेश्वर कहता है और वैसे उन के हाथों के सारे कार्य्य और
१५ जो उन्हों ने चढ़ाया सो अशुद्ध है। और अब मैं बिन्ती करता हूं कि बिचारो आज से और उस के आगे उस दिन से कि परमेश्वर के मन्दिर में पत्थर पर
१६ पत्थर रक्खा न गया था। उन दिनों से कि जब कोई बीस की ढेर पर आया तो दस पाया और जब कोई कोल्हू से पचास निकालने को आया तो बीस
१७ पाया। मैं ने तुम्हें झुलस और लेंढे और ओले से मारा तुम्हारे हाथों के सारे कार्य्यों में तथापि तुम मेरी ओर नहीं फिरे परमेश्वर कहता है ॥

१८ मैं बिन्ती करता हूं कि बिचारो आज से और उस के आगे से नवें मास की चौबीसवीं तिथि से अर्थात् जिस दिन से कि परमेश्वर के मन्दिर
१९ की नेव डाली गई बिचारो। क्या खलिहान में अब लों बीज है हां अब लों दाख और गूलर और अनार और जलपाई फल न लाये आज से मैं आशीष दूंगा ॥

२० और उसी महीने की चौबीसवीं तिथि में परमेश्वर का बचन दूसरी बार

यह कहते हुए हज्जी के पास पहुंचा। २१ कि यहूदाह के अध्यक्ष जरूबाबुल से बोल कि मैं स्वर्गों को और पृथिवी को हिलाऊंगा॥

२२ और मैं राजाओं के सिंहासन को उलट डालूंगा और जातिगणों के राज्यों के बल को नाश करूंगा और मैं रथों को उन के सारथियों समेत उलट डालूंगा और घोड़े चढ़वैयों समेत गिर पड़ेंगे हर एक अपने भाई की तलवार से। २३ सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि हे जरूबाबुल सियालतिएल के बेटे मेरे सेवक मैं उसी दिन तुझे लूंगा परमेश्वर कहता है और तुझे मुद्रा की भांति ठहराऊंगा क्योंकि मैं तुझ से प्रसन्न हूं सेनाओं का परमेश्वर कहता है॥

जकरियाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक।

पहिला पर्ब्ब।

१ दारा के दूसरे बरस के आठवें मास में परमेश्वर का बचन ईदू के बेटे बरकियाह के बेटे जकरियाह भविष्यद्वक्ता के पास यह कहते हुए आया॥

२ परमेश्वर तुम्हारे पितरों पर रिस से ३ रिसिआया। इस लिये उन से बोल कि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि मेरी ओर फिरो सेनाओं का परमेश्वर कहता है और मैं तुम्हारी ओर फिरूंगा ४ सेनाओं का परमेश्वर कहता है। अपने पितरों के समान मत हो जिन्हें पह कहके अगिले भविष्यद्वक्तों ने पुकारा था कि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि अपने बुरे मार्गों से और अपने बुरे व्यवहारों से फिरो परन्तु उन्हों ने मेरी न सुनी और न मानी परमेश्वर कहता है॥

५ तुम्हारे पितर कहां हैं और क्या ६ भविष्यद्वक्ता सदा जीते हैं। परन्तु जो और जो विधि मैं ने अपने सेवक भविष्यद्वक्तों को आज्ञा किई क्या उन्हों ने तुम्हारे पितरों को जा न लिया हो और वे फिरकर बोले कि जैसा सेनाओं के परमेश्वर ने हमारे मार्गों के और हमारे व्यवहारों के समान हम से करने को ठाना था तैसा उस ने हम से किया है॥

७ ग्यारहवें मास की चौबीसवीं तिथि में जो सिबात मास है दारा के दूसरे बरस में ईदू के बेटे बरकियाह के बेटे जकरियाह भविष्यद्वक्ता के पास परमेश्वर का बचन यह कहते हुए आया॥

८ कि रात को मैं ने देखा और क्या देखता हूं कि एक जन लाल घोड़े पर चढ़ा है और वह मेंहदियों के मध्य में खड़ा था जो ताल में थी और उस के पीछे लाल और धूमर और श्वेत घोड़े थे। ९ तब मैं ने कहा हे मेरे प्रभु ये क्या हैं फिर मेरे संवादी दूत ने मुझ से कहा कि मैं तुझे देखाऊंगा कि ये क्या हैं। १० और जो जन मेंहदियों के मध्य में खड़ा था उस ने उत्तर देके कहा कि ये वे हैं जिन्हें परमेश्वर ने पृथिवी का फेरा करने को भेजा है। ११ और उन्हों ने परमेश्वर के दूत को जो मेंहदियों के मध्य में खड़ा था उत्तर देके कहा कि

हम ने पृथिवी का फेरा किया और क्या देखता हूं कि सारी पृथिवी स्थिर और चैन से है ॥

१२ तब परमेश्वर के दूत ने उत्तर देके कहा कि हे सेनाओं के परमेश्वर तू यरूसलम पर और यहूदाह के नगरों पर जिन से तू सत्तर बरसों को रिसिआया कब लों दया न करेगा । १३ और परमेश्वर ने मेरे संवादी दूत को अच्छी बातों से और शान्ति की बातों से उत्तर दिया । १४ और मेरे संवादी दूत ने मुझ से कहा कि यह कहके पुकार कि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है मैं यरूसलम के लिये और सैहून के लिये बड़े झल से झलित हूं । १५ और मैं उन जातिगणों से अति रिसिआया हूं जो चैन से हैं क्योंकि मैं तनिक रिसिआया था और उन्हों ने बिपत्ति को बढ़ाया । १६ इस लिये परमेश्वर यों कहता है कि मैं दया से यरूसलम को फिर आया हूं उस में मेरा घर बनेगा सेनाओं का परमेश्वर कहता है और एक रस्सी यरूसलम पर फैलाई जायेगी । १७ फिर पुकारके कह कि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि मेरे नगर बढ़ती के मारे फिर फैल जायेंगे क्योंकि परमेश्वर फिर सैहून को शान्ति देगा और फिर यरूसलम को प्रसन्न करेगा ॥

१८ तब मैं ने अपनी आंखें उठाईं और देखा और क्या देखता हूं कि चार सींग । १९ और मैं ने अपने संवादी दूत से कहा कि ये क्या हैं और उस ने मुझ से कहा कि ये वे सींग हैं जिन्हों ने यहूदाह को और इसराएल को और यरूसलम को छिन्न भिन्न किया है । २० तब परमेश्वर ने मुझ को चार कार्य्यकारियों को दिखलाया । २१ तब मैं ने कहा कि ये क्या करने को आते हैं और वह यह कहके बोला कि ये वे सींग हैं जिन्हों ने यहूदाह को छिन्न भिन्न किया यहां लों कि किसी ने अपना सिर न उठाया पर ये आये हैं कि उन्हें डरावें और उन जातिगणों के सींगों को गिरा देवें जिन्हों ने यहूदाह के देश पर अपने सींग को उठाया कि उसे छिन्न करें ॥

दूसरा पर्ब्ब ।

१ फिर मैं ने अपनी आंखें उठाके देखा और क्या देखता हूं कि एक जन नापने की रस्सी हाथ में लिये हुए है । २ तब मैं ने कहा कि तू कहां जाता है और उस ने मुझ से कहा कि यरूसलम के नापने को देखने के लिये कि उस की चौड़ाई और उस की लम्बाई कितनी है । ३ और क्या देखता हूं कि मेरा संवादी दूत निकल चला और दूसरा दूत उस्से भेंट करने को गया । ४ और उस्से कहा कि दौड़ और यह कहके इस तरुण से बोल कि मनुष्यों और ढोर की बहुताई के कारण जो उस में हैं यरूसलम दिहात में बढ़के बसाया जायेगा । ५ और मैं उस के लिये चारों ओर आग की भीत हूंगा परमेश्वर कहता है और मैं उस के मध्य में बिभव हूंगा ॥

६ अहो अहो उत्तर देश से भागो परमेश्वर कहता है क्योंकि चारों पवनों की नाईं मैं ने तुम्हें बिथराया है परमेश्वर कहता है । ७ हे सैहून तू जो बाबुल की बेटी के संग रहती है अपने को छुड़ा । ८ क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि बिभव के पीछे उस ने मुझे उन जातिगणों के पास भेजा जिन्हों ने तुम्हें लूटा है क्योंकि जो तुम्हें छूता है सो उस की आंख की पुतली को छूता है । ९ क्योंकि देखो मैं अपना हाथ उन पर हिलाऊंगा और वे अपने दासों के लिये

लूट होंगे और तुम जानोगे कि सेनाओं के परमेश्वर ने मुझे भेजा है ॥

१० हे सैहून की पुत्री गा और आनन्द कर क्योंकि देख मैं आता हूं और तेरे मध्य में बसूंगा परमेश्वर कहता है। ११ और उसी दिन बहुत से अन्यदेशी परमेश्वर से मिल जायेंगे और वे मेरे लोग होंगे और मैं तेरे मध्य में बसूंगा और तू जानेगी कि सेनाओं के परमेश्वर ने मुझे १२ तेरे पास भेजा है। और परमेश्वर पवित्र देश में यहूदाह अपना भाग अधिकार के लिये रक्खेगा और फिर यरूसलम को प्रसन्न करेगा ॥

१३ हे सारे शरीर परमेश्वर के आगे चुपका रह क्योंकि वह अपने पवित्र निवास से उठा है ॥

तीसरा पर्ब्ब ।

१ और उस ने प्रधान याजक यहूसूअ को परमेश्वर के दूत के आगे खड़े होते और शैतान को उस के साम्हना करने को उस के दहिने हाथ की ओर खड़े होते मुझे दिखलाया ॥

२ और परमेश्वर ने शैतान से कहा कि अरे शैतान परमेश्वर तुझे दपटे हां वह परमेश्वर जिस ने यरूसलम को प्रसन्न किया तुझे दपटे क्या यह आग से निकाली हुई लुकठी नहीं है ॥

३ और यहूसूअ अशुद्ध बस्त्र पहिने हुए ४ दूत के आगे खड़ा था। और उस ने यह कहके अपने आगे के खड़े हुए लोगों से उत्तर देके कहा कि उस पर से अशुद्ध बस्त्र उतारो तब उस ने उस्से कहा कि देख मैं ने तेरे पाप को तुझ से छुड़ाया और तुझे सुन्दर बस्त्र पहि- ५ नाऊंगा। और उस ने कहा कि वे उस के सिर पर सुन्दर मुकुट रक्खें सो उन्हों ने उस के सिर पर सुन्दर मुकुट रक्खा और उसे बस्त्र पहिनाया और परमेश्वर का दूत उस के पास खड़ा रहा। और परमेश्वर के दूत ने यह ६ कहके यहूसूअ के आगे साक्षी दिई ॥

७ कि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि यदि तू मेरे मार्गों में चलेगा और मेरी बिधि को पालन करेगा तब तू मेरे घर का न्याय करेगा और मेरे आंगनों की रक्षा करेगा और उन में से जो पास खड़े हैं मैं तुझे अगुए दूंगा।

८ अब हे यहूसूअ प्रधान याजक सुन तू और तेरे संगी जो तेरे आगे बैठे हैं क्योंकि ये मनुष्य दृष्टान्त के लिये हैं क्योंकि देख मैं अपने सेवक डालो को प्रगट करूंगा। ९ क्योंकि उस पत्थर को जो मैं ने यहूसूअ के आगे रक्खा देखो उस एक ही पत्थर पर सात आंखें होंगी देख मैं उस के खोदाव को खोदूंगा सेनाओं का परमेश्वर कहता है और मैं इस देश की बुराई को एक ही दिन में दूर करूंगा ॥

१० उसी दिन सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि तुम एक दूसरे को दाख तले और गूलरपेड़ तले बुलाओगे ॥

चौथा पर्ब्ब ।

१ और मेरा संवादी दूत लौट आया और जैसा मनुष्य नींद से जगाया जाता है वैसा उस ने मुझे जगाया। २ और मुझ से कहा कि तू क्या देखता है और मैं ने कहा कि मैं ने दृष्टि किई और क्या देखता हूं कि एक सानहली दीअट और उस के सिर पर एक कटोरा और उस पर उस के सात दीपक और सातों दीपकों में जो उस के सिर पर थे सात नालियां। ३ और उस के समीप दो जलपाईपेड़ थे एक पेड़ कटोरे की दहिनी ओर और दूसरा उस की बाईं ओर ॥

४ तब मैं ने अपने संवादी दूत को

उत्तर देके कहा कि हे मेरे प्रभु ये क्या
५ हैं। तब मेरे संवादी दूत ने उत्तर देके
मुझ से कहा क्या तू नहीं जानता कि
ये क्या हैं और मैं ने कहा नहीं मेरे
६ प्रभु। तब उस ने मुझ से उत्तर देके
कहा कि जरुबाबुल के लिये परमेश्वर
का यह बचन है कि न बल से और न
पराक्रम से परन्तु मेरे आत्मा से सेनाओं
७ का परमेश्वर कहता है। हे महा पर्बत
तू क्या है जरुबाबुल के आगे तू चौगान
होगा और वही उस के सिरहाने के
पत्थर को अनुग्रह अनुग्रह उस के लिये
पुकारते हुए निकालेगा॥

८ फिर परमेश्वर का बचन यह कहते
९ हुए मेरे पास आया। कि जरुबाबुल के
हाथों ने इस घर की नेव डाली है उसी
के हाथ भी उसे पूरा करेंगे तब तू
जानेगा कि सेनाओं के परमेश्वर ने मुझे
१० तुम्हारे पास भेजा है। क्योंकि छोटी
बातों के दिन को कौन तुच्छ जानता
है कि परमेश्वर की वे सात आंखें जो
सारी पृथिवी पर इधर उधर दौड़ती हैं
आनन्द से जरुबाबुल के हाथ में साहुल
को देखती हैं॥

११ तब मैं ने उत्तर देके उस्से कहा कि
ये दोनों जलपाईपेड़ जो दीअट की
१२ दहिनी बाईं ओर हैं क्या हैं। और मैं
ने दूसरी बार उत्तर देके उस्से कहा कि
जलपाईपेड़ की दोनों डालियां जो दो
सोनहली नलियों में से सोना सा तेल
१३ अपने से उंडेलती हैं सो क्या हैं। और
उस ने उत्तर देके मुझ से कहा क्या तू
नहीं जानता कि ये क्या हैं और मैं ने
१४ कहा नहीं हे मेरे प्रभु। तब उस ने
कहा कि ये दो अभिषिक्त जन हैं जो
सारी पृथिवी के प्रभु के आगे खड़े हैं॥

पांचवां पर्ब्ब।

१ फिर मैं ने अपनी आंखें उठाईं और
देखा तो क्या देखता हूं कि एक उड़ता
२ हुआ खोंड़ा। और उस ने मुझ से कहा
कि तू क्या देखता है और मैं ने कहा
कि मैं एक उड़ता हुआ खोंड़ा देखता
हूं जिस की लम्बाई बीस हाथ और
चौड़ाई दस हाथ॥

३ और उस ने मुझ से कहा कि यही
स्राप है जो सारे देश पर निकलता है
क्योंकि उस के समान हर एक जो चोरी
करता है उस की एक ओर से मिट
जायेगा और उस के समान हर एक जो
किरिया खाता है उस की दूसरी ओर
से मिट जायेगा। मैं उसे निकालूंगा
सेनाओं का परमेश्वर कहता है और
वह चोर के घर में प्रवेश करेगा और
उस के घर में जो मेरे नाम से झूठी
किरिया खाता है और वह उस के घर
के मध्य में ठहरेगा और उसे उस के
लट्ठे और पत्थर समेत नाश करेगा॥

५ तब मेरा संवादी दूत निकला और
मुझ से कहा कि तू अपनी आंखें उठा
और देख कि यह क्या है जो निकल
६ जाता है। और मैं ने कहा कि यह
क्या है और वह बोला कि यह जो
निकलता है सो एफा है फिर उस ने
कहा कि सारे देश में यह उन का रूप है।
७ और क्या देखता हूं कि सीसे का एक गोल
टुकड़ा और एक स्त्री एफा के मध्य में
८ बैठी है। और उस ने कहा कि यही
दुष्टता है और उसे एफा के मध्य में डा
दिया और सीसे के भार को एफा के
मुंह पर धर दिया॥

९ तब मैं ने अपनी आंखें उठाके देखा
और क्या देखता हूं कि दो स्त्रियां
निकल आईं और उन के डैनों में पवन
था क्योंकि उन के डैने हाड़गिल के
डैनों की नाईं थे और उन्हों ने एफा
को आकाश और पृथिवी के अधर में

१० उठाया। तब मैं ने अपने संवादी दूत से कहा कि ऐफा को ये किधर ले जाती ११ हैं। और उस ने मुझ से कहा कि उस के लिये सिनआर देश में घर बनाने को और वह स्थिर होगा और वहां अपने आसन पर बैठाई जायेगी॥

छठवां पर्ब्ब।

१ फिर मैं ने मुंह मोड़ा और देखा तो क्या देखता हूं कि दो पर्बतों के मध्य से चार रथ निकल आये और ये पर्बत २ पीतल के पर्बत थे। पहिले रथ में लाल घोड़े थे और दूसरे रथ में काले ३ घोड़े। और तीसरे रथ में स्वेत घोड़े और चौथे रथ में बहुरङ्ग कबरे घोड़े ४ थे। तब मैं ने अपने संवादी दूत को उत्तर देके कहा कि हे मेरे प्रभु ये क्या ५ हैं। तब उस दूत ने उत्तर देके मुझ से कहा कि ये स्वर्ग के चार आत्मा हैं जो सारी पृथिवी के प्रभु के आगे खड़े ६ होने से निकलते हैं। और काले घोड़े जो उस में हैं उत्तर देश में जाते हैं और स्वेत उन के पीछे पीछे जाते हैं और बहुरङ्ग घोड़े दक्खिन देश को जाते ७ हैं। और कबरे निकलकर चाहते थे कि पृथिवी में इधर उधर फिरें और उस ने कहा कि जाओ पृथिवी के इधर उधर फिरो सो वे पृथिवी के इधर ८ उधर फिरे। फिर वह मुझ पर चिल्लाया और यह कहके बोला कि देख वे जो उत्तर देश को जाते हैं वे मेरे जी को ९ उत्तर देश में ठण्डा करते हैं। फिर यह कहते हुए परमेश्वर का बचन मेरे १० पास पहुंचा। कि तू बंधन से ले अर्थात् खुलदी और तूबियाह और यदैअयाह से जो बाबुल से आये हैं और उसी दिन जा और सफनियाह के बेटे यूसियाह के ११ घर में प्रवेश कर। और चांदी और सोना ले और मुकुट बना और प्रधान याजक यहूसदक के बेटे यहूसूअ के सिर पर रख॥

१२ और यह कहके उस्से बोल कि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि देख वह जन जिस का नाम डाली है वह अपने स्थान से पनपेगा और वही १३ परमेश्वर का मन्दिर बनावेगा। हां वही परमेश्वर का मन्दिर बनावेगा और वही महिमा पावेगा और अपने सिंहासन पर याजक होगा और कुशल का मंत्र इन दोनों के मध्य में होगा॥

१४ और वह मुकुट हिल्म और तूबियाह और यदैअयाह और सफनियाह के बेटे हन्न को परमेश्वर के मन्दिर में स्मरण १५ के लिये होगा। और वे जो दूर हैं सो आवेंगे और परमेश्वर के मन्दिर के बनाने में हाथ लगावेंगे और तुम जानोगे कि सेनाओं के परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है और यों होगा यदि तुम परमेश्वर अपने ईश्वर का शब्द ध्यान से मानोगे ॥

सातवां पर्ब्ब।

१ और दारा राजा के चौथे बरस में यों हुआ कि परमेश्वर का बचन नवें मास अर्थात् किसलू की चौथी तिथि २ में जकरियाह के पास पहुंचा। जब कि सराजुर और रजिम्मलिक और उन के जन ईश्वर के मन्दिर को भेजे गये कि ३ परमेश्वर के आगे बिन्ती करें। और कि सेनाओं के परमेश्वर के मन्दिर में के याजकों और भविष्यद्वक्तों से यह कहके बोले क्या मैं आप को इन बहुत बरसों के समान अलग करके पांचवें मास में बिलाप करूं।

४ तब सेनाओं के परमेश्वर का बचन ५ यह कहते हुए मेरे पास आया। कि देश के सारे लोगों से और याजकों से कह कि जब तुम लोगों ने इन सत्तर

बरस लों पांचवें और सातवें मास में व्रत और बिलाप किया तो क्या मेरे
६ लिये हां मेरे लिये व्रत किया। और जब तुम ने खाया और पीया तो क्या तुम ने अपने लिये न खाया और पीया।
७ क्या ये वे बातें नहीं हैं जो परमेश्वर ने अगिले भविष्यद्वक्तों के द्वारा से सुनाईं जिस समय कि यरूसलम और उस के आसपास के नगर बसे थे और बिश्राम थे जिस समय कि लोग दक्खिन के देश में और चौगान में बसते थे॥

८ फिर परमेश्वर का बचन यह कहते
९ हुए जकरियाह के पास पहुंचा। कि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है सत्य बिचार करो और हर कोई अपने भाई
१० पर दया और मया दिखावे। और बिधवा और अनाथ और परदेशी और कंगाल को न सताओ और कोई अपने मन में अपने भाई के बिरुद्ध बुरा न समझे॥

११ पर उन्हों ने मान्ने को नाह किया और अपना कंधा खींच लिया और अपने कानों को भारी किया जिस्तें वे न
१२ सुनें। हां उन्हों ने अपने मन को हीरे की नाईं कर दिया कि व्यवस्था को और उन बातों को न सुनें जिन्हें सेनाओं के परमेश्वर ने अगिले भविष्यद्वक्तों के द्वारा से अपने आत्मा से भेजा था इस लिये सेनाओं के परमेश्वर की ओर से
१३ बड़ा कोप हुआ। इस लिये यों हुआ कि जैसा उस ने पुकारा और उन्हों ने न माना तैसा वे पुकारेंगे और मैं न सुनूंगा सेनाओं का परमेश्वर कहता
१४ है। परन्तु मैं ने बवंडर से उन्हें सारे जातिगणों में छिन्न भिन्न किया जिन्हें वे न जानते थे और उन के पीछे देश उजाड़ हुआ कोई उस में से न जाता था न लौटता था क्योंकि उन्हों ने बांछित देश को उजाड़ बना रक्खा॥

आठवां पर्ब्ब।

१ फिर परमेश्वर का बचन यह कहते
२ हुए मेरे पास पहुंचा। कि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि मैं सैहून के लिये बड़े झल से झलित हुआ हूं हां मैं बड़े कोप से उस के लिये झलित हुआ हूं॥

३ परमेश्वर यों कहता है कि मैं सैहून को फिर लौटा हूं और यरूसलम के मध्य में बास करूंगा और यरूसलम सचाई का नगर और सेनाओं के परमेश्वर का पर्बत पवित्र पर्बत कहावेगा॥

४ सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि फिर बूढ़े और बुढ़ियां यरूसलम की सड़कों में बसेंगी और सब कोई बुढ़ापे के कारण अपने हाथ में लाठी पकड़ेंगे।
५ और नगर की सड़क लड़के लड़कियों से भर जायेंगी जो उस की सड़कों में खेलेंगे॥

६ सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि यद्यपि इन बचे हुए लोगों की आंखों में उन दिनों में अचंभा होवे तो क्या मेरी आंखों में अचंभा होगा सेनाओं का परमेश्वर कहता है॥

७ सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं उदय के देश से और अस्त के देश से अपने लोगों को बचाऊंगा।
८ और मैं उन्हें लाऊंगा और वे यरूसलम के मध्य में बास करेंगे और वे मेरे लोग होंगे और सचाई में और धर्म्म में मैं उन का ईश्वर हूंगा॥

९ सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि हे लोगो तुम जो इन दिनों में ये बातें उन भविष्यद्वक्तों के मुंह से सुनते थे जो उस दिन थे जब कि सेनाओं के परमेश्वर का घर अर्थात् मन्दिर की

नेव डाली गई जिस्तें वह बन जाये
१० अपने हाथों को दृढ़ करो। क्योंकि उन दिनों से आगे मनुष्यों को प्रतिफल न था न पशु के लिये प्रतिफल था और जो बाहर भीतर आता जाता था बिपत्ति के मारे उन्हें कुशल न था क्योंकि मैं ने हर एक जन को अपने अपने परोसी के बिरुद्ध किया था।
११ परन्तु मैं इन बचे हुए लोगों के लिये अगिले दिनों के समान न हूंगा सेनाओं
१२ का परमेश्वर कहता है। क्योंकि बीज कुशल से होगा और दाख फलेगा और भूमि अपनी बढ़ती देगी और आकाश ओस गिरावेगा और मैं इस जातिगण के बचे हुए लोगों को इन सारी बातों
१३ का अधिकारी बनाऊंगा। और यों होगा कि जैसा तुम लोग जातिगणों में साप हुए हो हे यहूदाह के घराने और हे इसराएल के घराने तैसा मैं तुम्हें बचाऊंगा और तुम आशीष होगे मत डरो अपने हाथों को दृढ़ करो॥
१४ क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि जैसा मैं ने तुम्हें दण्ड देने का मन किया जब तुम्हारे पुत्रों ने मुझे रिस दिलाया सेनाओं का परमेश्वर
१५ कहता है और मैं न पछताया। वैसा मैं ने इन दिनों में फिर मन किया कि यरूसलम पर और यहूदाह के घराने
१६ पर भलाई करूं तुम मत डरो। पर इन बातों को तुम्हें करना है कि हर एक अपने अपने पड़ोसी से सच कहे और अपने फाटकों में सत और कुशल का
१७ बिचार करे। और हर एक अपने अपने पड़ोसी के बिरुद्ध अपने अपने मन में बुराई न समझे और झूठ किरिया से प्रीति न रक्खे क्योंकि मैं इन सारी बातों से घिन करता हूं परमेश्वर कहता है॥

१८ फिर सेनाओं के परमेश्वर का बचन यह कहते हुए मेरे पास पहुंचा॥
१९ कि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि चौथे और पांचवें और सातवें और दसवें मास के ब्रत यहूदाह के घराने के लिये आनन्द और मगन के लिये अर्थात् आह्लाद के तेवहार होंगे इस लिये तुम सत और कुशल से प्रीति रक्खो॥
२० सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि ऐसा होगा कि बहुत से लोग और बहुत से नगरों के निवासी आवेंगे।
२१ और एक नगर के निवासी दूसरे नगर को यह कहके जायेंगे कि चलो हम परमेश्वर के आगे प्रार्थना करने को और सेनाओं के परमेश्वर को ढूंढ़ने को
२२ शीघ्र जायें मैं भी जाऊंगा। और बहुत से लोग और बलवन्त जातिगण सेनाओं के परमेश्वर को ढूंढ़ने को और परमेश्वर के आगे प्रार्थना करने को यरूसलम में आवेंगे॥
२३ सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि उन दिनों में ऐसा होगा कि जातिगणों की सारी भाषों में से दस जन पकड़ेंगे हां एक यहूदी जन के अंचल को यह कहके पकड़ेंगे कि हम तुम्हारे साथ जायेंगे क्योंकि हम ने सुना है कि ईश्वर तुम्हारे साथ है॥

नवां पर्ब्ब।

१ परमेश्वर के बचन की भविष्यद्वाणी जो हद्रक के देश पर है और दमिश्क उस का टिकाव है क्योंकि मनुष्य की आंख और इसराएल की सारी गोष्ठियों की आंख परमेश्वर की ओर लगेगी।
२ और हमात की आंख भी जो उस के समीप है और सूर और सैदा की यद्यपि
३ वह बहुत बुद्धिमान है। और सूर ने अपने लिये गढ़ बनाया और चांदी को

धूल की नाईं बटोरा है और चोखे सोने को सड़कों की कीच की नाईं॥

४ देखो प्रभु उसे निकालेगा और समुद्र में उस के बल को मारेगा और वह ५ आग से जलाई जायेगी। असकलून देखकर डरेगा और अज्जः अति पीड़ित होगा अकरून भी कि उस की आस टूटी अज्जः से राजा नष्ट होगा असक-६ लून बसाया न जायेगा। और उपरी जन अशदूद में रहेगा और फिलिस्तियों के ७ अहङ्कार को काट डालूंगा। और मैं उस के लोहू को उस के मुंह से और उस की घिनितों को उस के दांतों के मध्य में से दूर करूंगा और वह हां वही हमारे ईश्वर के लिये बच जायेगा और वह यहूदाह में अध्यक्ष के समान होगा ८ और अकरून यबूसी के समान। और मैं सेना के कारण जो बीत जायेगी और लौट जायेगी अपने मन्दिर का घेरा करूंगा और उन में से सताऊ फेर कभू न जायेगा क्योंकि मैं ने अब अपनी आंखों से देखा है॥

९ हे सैहून की पुत्री अति मगन हो हे यरूसलम की पुत्री ललकार देख तेरा राजा तेरे पास आता है वह धर्म्मी और मुक्तिदायक है दीन और गदहे पर चढ़ा १० है हां गदही के बच्चे पर। और मैं इफरायम से रथों को और यरूसलम से घोड़े को काट डालूंगा और संग्राम का धनुष काट डाला जायेगा और वह जातिगणों से कुशल की बात कहेगा और उस का राज समुद्र से समुद्र लों और नदी से पृथिवी के अन्त लों होगा॥

११ और तू जो है तेरी बाचा के लोहू से मैं तेरे बंधुओं को उस गड़हे से १२ निकाल लाऊंगा जहां पानी न था। हे आशा के बंधुओ गढ़ को लौटो मैं आज के दिन भी कहता हूं कि मैं दूना तुझे दूंगा। क्योंकि मैं ने यहूदाह को १३ अपने लिये झुकाया है और मैं ने धनुष को इफरायम से भर दिया है और तेरे बेटों को हे सैहून तेरे बेटों के बिरुद्ध हे यूनान उभारा और तुझे महावीर की तलवार की नाईं बनाया। और पर-१४ मेश्वर उन पर दिखलाई देगा और उस का बाण बिजली की नाईं निकल चलेगा और प्रभु परमेश्वर तुरही फूंकेगा और वह दक्खिन के बवंडरों में बीत जायेगा। सेनाओं का परमेश्वर उन की १५ रक्षा करेगा और वे अपने बैरियों को भक्षेंगे और ढेलवांस के पत्थरों को नाईं उन्हें दबावेंगे और वे पीयेंगे और मद्यप के समान ललकारेंगे और कटोरे की नाईं भर जायेंगे और बेदी के कोनों की नाईं। और उसी दिन परमेश्वर उन १६ का ईश्वर उन्हें अपने लोगों के झुंड की नाईं बचावेगा क्योंकि वे मुकुट के पत्थरों की नाईं होंगे जो उस के देश पर उठेंगे। क्योंकि उस की कृपा १७ क्याही बड़ी है और उस की सुन्दरता क्याही बड़ी है अन्न युवा पुरुषों को और नया दाखरस कुंआरियों को वृद्धि देगा॥

दसवां पर्ब्ब।

पिछले मेंह के समय में परमेश्वर १ से मेंह मांगो परमेश्वर बिजलियों को बनावेगा और उन्हें मेंह की झड़ियां देगा हर एक जन को खेत का सागपात। क्योंकि कुलपूज्यों ने मिथ्या कहा है २ और दैवज्ञों ने झूठ देखा है और झूठा स्वप्न कहा है उन्हों ने वृथा शान्ति दिई है इस लिये वे झुंड की नाईं भटके वे कष्टित हैं क्योंकि उन का कोई गड़ेरिया नहीं है। गड़ेरियों पर मेरा ३ क्रोध भड़का और मैं ने बकरों को दण्ड दिया परन्तु सेनाओं के परमेश्वर ने

अपने झुंड यहूदाह के घराने का प्रतिफल दिया और उन्हें संग्राम में अपने बिभव
४ के घोड़े की नाईं किया। उसी से कोने का पत्थर उसी से कील उसी से संग्राम का धनुष उसी से हर एक अध्यक्ष
५ निकल आयेगा। और वे महाबीरों की नाईं होंगे जो संग्राम में अपने बैरियों को सड़कों की कीचड़ की नाईं लताड़ते हैं और वे लड़ेंगे क्योंकि परमेश्वर उन के संग होगा और घोड़चढ़े घबरा जायेंगे॥

६ और मैं यहूदाह के घराने को बलवन्त करूंगा और यूसुफ के घराने को बचाऊंगा और मैं उन्हें बसाऊंगा क्योंकि मैं उन पर दया करता हूं और वे ऐसे होंगे जैसा कि मैं ने उन्हें नहीं निकाला क्योंकि मैं परमेश्वर उन का ईश्वर हूं
७ और मैं उन की सुनूंगा। और इफरायम महाबीर की नाईं होगा और उन का मन जैसा मद्य से मगन होगा और उन के पुत्र देखके मगन होंगे उन का मन
८ परमेश्वर में आह्लादित होगा। मैं उन के लिये सीटी बजाऊंगा और उन्हें बटोरूंगा क्योंकि मैं ने उन्हें छुड़ाया है और वे बढ़ जायेंगे जैसा वे बढ़ गये
९ थे। और मैं उन्हें जातिगणों में बिथराऊंगा और वे दूर देशों में मुझे स्मरण करेंगे और वे अपने लड़केबालों के संग
१० जीयेंगे और फिर लौटेंगे। और मैं उन्हें मिस्र देश से फेर लाऊंगा और असूर से उन्हें बटोरूंगा और मैं उन्हें जिलिअद और लुबनान के देश में लाऊंगा और
११ उन के लिये स्थान न होगा। और वह समुद्र अर्थात् सकेती में से बीत जायेगा और समुद्र की लहरों को मारेगा और नदी के सारे गहिराव सूख जायेंगे और असूर का अहंकार उतारा जायेगा और
१२ मिस्र का राजदण्ड जाता रहेगा। औ मैं उन को परमेश्वर में बलि दूंगा और वे उस के नाम में आया जाया करेंगे परमेश्वर कहता है॥

ग्यारहवां पर्ब्ब।

१ हे लुबनान अपने द्वारों को खोल जिस्तें आग तेरे देवदारों को भस्म
२ करे। हे सनोवर बिलाप करो क्योंकि देवदारु गिर पड़े हैं क्योंकि शोभित नष्ट हुए हैं हे बसन के बलूत बिलाप करो क्योंकि बाड़ित बन गिराया गया।
३ गड़रियों के बिलाप करने का शब्द है क्योंकि उन की शोभा नष्ट हुई युवा सिंहों के गरजने का शब्द है क्योंकि यरदन का अहंकार नष्ट हुआ॥

४ परमेश्वर मेरा ईश्वर यों कहता है
५ कि जूझ के झुंड को चरा। जिन के स्वामी उन्हें जूझ करते हैं और दोषी नहीं ठहरते और उन के बेचनेहारे कहते हैं कि धन्य परमेश्वर को क्योंकि मैं धनी हूं और उन के गड़रिये उन पर दया
६ नहीं करते। क्योंकि मैं देश के बासियों पर फिर दया न करूंगा परमेश्वर कहता देखो मैं हर एक जन को उस के संगी के और उस के राजा के हाथ में सौंपूंगा और वे देश को कुचल डालेंगे और मैं उन के हाथ से न छुड़ाऊंगा॥

७ सो मैं ने जूझ के झुंड को चराया झुंड के कंगालों के कारण और मैं ने दो लाठियों को लिया एक को मैं ने सुन्दर कहा और दूसरी को बंधन और मैं ने
८ झुंड को चराया। और मास भर में मैं ने उन तीन गड़रियों को नष्ट किया और मेरा प्राण उन से घिनाया और उन के प्राण ने भी मुझे त्यागा॥

९ तब मैं ने कहा कि मैं तुम्हें नहीं चराऊंगा जो मरता है सो मरे और जो नष्ट होता है सो नष्ट होवे और जो बच

रहे सो हर जन अपने संगी का मांस खाये॥

१० और मैं ने अपनी लाठी सुन्दर को लिया, और उसे तोड़ डाला कि मैं उस बाचा को तोड़ूं जो मैं ने सारे जातिगणों से बांधी।

११ और वह उसी दिन तोड़ी गई और झुंड के कंगालों ने जो मुझे देख रहे थे यों जाना कि यह परमेश्वर का बचन है॥

१२ तब मैं ने उन से कहा कि जो तुम्हारी दृष्टि में भला लगे तो मेरा प्रतिफल दो नहीं तो मत दो सो उन्हों ने तीस रुपये मेरा प्रतिफल तौल दिया।

१३ और परमेश्वर ने मुझ से कहा कि उन्हें कुम्हार के पास डाल दे उस भारी प्रतिफल को जो मैं उन से आंका गया और मैं ने उन तीस रुपैयों को लिया और उन्हें परमेश्वर के मन्दिर में कुम्हार कने डाल दिया॥

१४ फिर मैं ने दूसरी लाठी बंधन को तोड़ डाला जिस्तें बिरादरी को यहूदाह और इसराएल के मध्य से मिटाऊं॥

१५ फिर परमेश्वर ने मुझ से कहा कि निर्बुद्धि गड़ेरिये के हथियारों को अपने लिये ले॥

१६ क्योंकि देख मैं देश में एक गड़ेरिया को उठाऊंगा जो नष्ट किये गये का लेखा न लेगा और भटके हुए को न खोजेगा और घाव किये गये को चंगा न करेगा और खड़े हुए को न संभालेगा परन्तु वह मोटे का मांस खायेगा और उन के खुरों को तोड़ेगा॥

१७ हाय उस पाजी गड़ेरिया पर जो झुंड को त्यागता है उस की भुजा पर और उस की दहिनी आंख पर तलवार होगी उस की भुजा झुराते झुरा जायेगी और उस की दहिनी आंख अंधियारी होते अंधी हो जायेगी॥

बारहवां पर्ब्ब।

१ इसराएल पर परमेश्वर के बचन की भविष्यबाणी परमेश्वर कहता है जो आकाश को फैलाता है और पृथिवी की नेव डालता है और मनुष्य में उस के आत्मा को उत्पन्न करता है॥

२ देख मैं यरूसलम को आसपास के सारे जातिगणों के लिये थरथराहट का कटोरा बनाऊंगा और यहूदाह पर भी यरूसलम के घेरे जाने में ऐसा होगा।

३ और उसी दिन में ऐसा होगा कि मैं यरूसलम को सारे जातिगणों के लिये एक भारी पत्थर बनाऊंगा सब जो उसे उठावेंगे से, कटते कट जायेंगे और पृथिवी के सारे जातिगण उस के बिरुद्ध एकट्ठे होंगे॥

४ उसी दिन परमेश्वर कहता है मैं हर एक घोड़े को घबराहट से और उस के चढ़वैये को पागलपन से मारूंगा पर यहूदाह के घराने पर अपनी आंखें खोलूंगा और जातिगणों के हर एक घोड़े को अंधापन से मारूंगा।

५ और यहूदाह के अध्यक्ष अपने मन में कहेंगे कि यरूसलम के निवासी सेनाओं के परमेश्वर उन के ईश्वर में मेरे लिये बल है॥

६ उस दिन मैं यहूदाह के अध्यक्षों को लकड़ी में अंगेठी की नाईं बनाऊंगा और पूले में आग के दीपक की नाईं और वे दहिने बायें पर आसपास के सारे जातिगणों को भस्म करेंगे और यरूसलम अपनेही स्थान में अर्थात् यरूसलम में फिर बसाया जायेगा।

७ और परमेश्वर यहूदाह के तंबुओं को पहिले बचावेगा जिस्तें दाऊद के घराने का बिभव और यरूसलम के निवासियों का बिभव यहूदाह पर बढ़ न जावे॥

८ उसी दिन परमेश्वर यरूसलम के

निवासियों की रक्षा करेगा और उसी दिन जो उन में दुर्बल है सो दाऊद के समान होगा और दाऊद का घराना ईश्वर के समान हां उन के आगे पर-
९ मेश्वर के दूत के समान होगा । और उसी दिन यों होगा कि मैं सारे जातिगणों को जो यरूसलम के विरुद्ध आते
१० हैं नाश करने को ढूंढूंगा । और मैं दाऊद के घराने पर और यरूसलम के निवासियों पर कृपा और बिन्ती का आत्मा उंडेलूंगा और वे मुझ पर दृष्टि करेंगे जिसे उन्हों ने छेदा है और वे उस के लिये बिलाप करेंगे जैसा कोई एकलौते बेटे के लिये बिलाप करता है और उस के कारण ऐसी कड़ुवाहट में होंगे जैसा पहिलौठे के लिये कोई कड़ुवाहट में है ॥
११ उसी दिन यरूसलम में बड़ा बिलाप होगा हददरम्मान के बिलाप के समान
१२ मजिद्दोन की तराई में । और देश बिलाप करेगा हर घराना अलग दाऊद के घर का परिवार अलग और उन की पत्नियां अलग नातन के घर का परिवार अलग और उन की पत्नियां अलग ।
१३ लावी के घर का परिवार अलग और उन की पत्नियां अलग समऊन का परिवार अलग और उन की पत्नियां
१४ अलग । सारे बचे हुए परिवार हर एक परिवार अलग और उन की पत्नियां अलग ॥

तेरहवां पर्व्व ।

१ उसी दिन दाऊद के घराने के लिये और यरूसलम के निवासियों के लिये पाप और अशुद्धता के लिये एक सोता
२ खोला जायेगा । और उसी दिन यों होगा सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि मैं देश में से मूर्तों का नाम मिटा डालूंगा और वे फिर स्मरण न किये जायेंगे और मैं भविष्यद्वक्तों को और अशुद्ध आत्मा को देश में से निकाल
३ दूंगा । और यों होगा कि यदि कोई फिर भविष्य कहे तो उस के माता पिता उस के जननी जनक उसे कहेंगे कि तू न जीयेगा क्योंकि तू ने परमेश्वर के नाम से झूठ कहा है और उस के माता पिता उस के जननी जनक उस के भविष्य कहते ही उसे बध डालेंगे ॥
४ और उसी दिन ऐसा होगा कि भविष्यद्वक्ता के भविष्य कहते ही हर एक जन अपने अपने दर्शन से लज्जित होगा और छल के वस्त्र पहिनके फिर
५ छल न देंगे । पर वह कहेगा कि मैं भविष्यद्वक्ता नहीं हूं मैं किसान हूं क्योंकि तरुणाई से मैं दूसरे का दास हुआ हूं ।
६ और कोई उस्से पूछेगा कि तेरे हाथों में ये क्या घाव हैं तब वह कहेगा कि वे ही जिन से मैं अपने मित्रों के घर में मारा गया ॥
७ हे खड्ग तू मेरे चरवाहे पर और उस पुरुष पर जो मेरे समान का है जाग उठ सेनाओं का परमेश्वर कहता है चरवाहे को मार और भेड़ें छिन्न भिन्न होंगी और मैं अपना हाथ मेम्नों पर
८ फेरूंगा । और यों होगा परमेश्वर कहता है कि सारे देश में से दो भाग काटे जायेंगे और मरेंगे पर तीसरा भाग उस
९ में छोड़ा जायेगा । और मैं तीसरे भाग को आग में से लाऊंगा और उन्हें निर्मल करूंगा जैसी चांदी निर्मल होती है और मैं उन्हें परखूंगा जैसा सोना परखा जाता है वे मेरा नाम पुकारेंगे और मैं उन की सुनूंगा मैं कहूंगा कि वे मेरे लोग हैं और वे कहेंगे कि परमेश्वर मेरा ईश्वर है ॥

चौदहवां पर्व्व ।

देख परमेश्वर का दिन आता है और तेरी लूट तेरे मध्य में बांटी जायेगी ।

२ और मैं संग्राम के लिये यरूसलम के विरुद्ध सारे जातिगणों को बटोरूंगा और नगर लिया जायेगा और घर लूटे जायेंगे और स्त्रियां भ्रष्ट किई जायेंगी और आधा नगर बंधुआई को जायेगा पर बचे हुए लोग नगर से काटे न जायेंगे॥

३ तब परमेश्वर निकलेगा और उन जातिगणों से लड़ेगा जैसा वह संग्राम के दिन में लड़ा। ४ और उसी दिन उस के पांव जलपाई पहाड़ पर खड़े होंगे जो यरूसलम के साम्ने पूर्व ओर है और जलपाई पहाड़ बीचों बीच से पूर्व और पच्छिम को फट जायेगा और एक बड़ी तराई होगी और आधा पहाड़ उत्तर ओर और उस का आधा दक्खिन ओर ५ जायेगा। और पहाड़ों की तराई को तुम भागोगे क्योंकि पहाड़ों की तराई असल को पहुंचेगी और तुम ऐसा भागोगे जैसा भूईंडोल के आगे यहूदाह के राजा उज्जियाह के दिनों में भागे थे और परमेश्वर मेरा ईश्वर आता है और तेरे संग सारे सिद्ध॥

६ और उसी दिन ऐसा होगा कि ७ ज्योति अंधियारी न होगी। परन्तु वह एक दिन होगा जो परमेश्वर का जाना हुआ है न दिन न रात होगी पर यों होगा कि सांझ को उंजियाला होगा। ८ और उसी दिन ऐसा होगा कि यरूसलम में से अमृतजल निकलेगा उस का आधा अगिले समुद्र की ओर और उस का आधा पिछले समुद्र की ओर ग्रीष्म और ९ शीतकाल में होगा। और परमेश्वर सारी पृथिवी का राजा होगा उसी दिन परमेश्वर एक और उस का नाम एक १० होगा। सारा देश जिबअ से लेके रम्मान लों यरूसलम की दक्खिन ओर चौगान से बदला जायेगा और वह ऊंचा किया जायेगा और अपने ठिकाने में बसाया जायेगा बिनयमीन के फाटक से पहिले फाटक के स्थान लों और कोने के फाटक लों और हननिएल के गुम्मट से राजा के कोल्हुओं लों। ११ और मनुष्य उस में बसेंगे और साप न होगा और यरूसलम कुशल से बसाया जायेगा॥

१२ और वह मरी जिस्से परमेश्वर सारे जातिगणों को मारेगा जो यरूसलम से लड़े हैं सो यही है कि उन का मांस सड़ जायेगा जब वे अपने पांव पर खड़े हैं और उन की आंखें उन के नेत्रस्थानों में सड़ जायेंगी और उन की जीभ उन के मुंह में सड़ जायेगी। १३ और उसी दिन यों होगा कि परमेश्वर की ओर से उन के मध्य में बड़ी घबराहट आ पड़ेगी और वे एक दूसरे का हाथ पकड़ेंगे और एक का हाथ दूसरे के हाथ पर उठेगा। १४ और यहूदाह भी यरूसलम में लड़ेगा और सारे जातिगणों का धन जो चारों ओर है सोना और रूपा और वस्त्र बहुताई से बटोरा जायेगा। १५ और जैसी यह मरी है वैसीही वह मरी होगी जो घोड़ों पर और खच्चरों पर और ऊंटों पर और गदहों पर और सारे पशुओं पर पड़ेगी जो इन छावनियों में होंगे॥

१६ और ऐसा होगा कि सारे जातिगणों में जो यरूसलम के विरुद्ध आये हैं हर एक जो बचा है राजा को सेनाओं के परमेश्वर को पूजने के लिये और तंबुओं का पर्ब्ब मान्ने के लिये साल साल चढ़ जायेगा। १७ और यों होगा कि पृथिवी के घराने में से जो यरूसलम को न चढ़ेंगे कि राजा को सेनाओं के परमेश्वर को पूजें उन पर बर्षा न होगी। १८ और यदि मिसर का घराना न चढ़ जाये और न आवे तो उन पर न बरसेगा पर

उन पर वह मरी होगी जिस्से परमेश्वर उन जातिगणों को मारेगा जो चढ़ नहीं १९ आते कि तंबुओं का पर्ब्ब मानें । यही मिस्र का दण्ड होगा और सारे जातिगणों का दण्ड जो नहीं आते कि तंबुओं का पर्ब्ब मानें ॥

२० उसी दिन घोड़ों की घंटियों पर परमेश्वर के लिये पवित्रता होगी और परमेश्वर के घर के पात्र ऐसे होंगे जैसे वे पात्र जो बेदी के आगे हैं । हां २१ यरूसलम और यहूदाह का हर एक पात्र सेनाओं के परमेश्वर के लिये पवित्र होगा और सारे बलिदायक आवेंगे और उन में से लेंगे और उन में पकावेंगे और उसी दिन सेनाओं के परमेश्वर के घर में कोई कनआनी फिर न होगा ॥

मलाकी भविष्यद्वक्ता की पुस्तक ।

पहिला पर्ब्ब ।

१ मलाकी के द्वारा से इसराएल के लिये परमेश्वर के बचन की भविष्यवाणी ॥

२ परमेश्वर कहता है कि मैं ने तुम्हें प्यार किया है तथापि तुम कहते हो कि किस बात में तू ने हमें प्यार किया है क्या एसौ यअकूब का भाई न था परमेश्वर कहता है पर मैं ने यअकूब ३ को प्यार किया । और एसौ से बैर रक्खा और उस के पर्बतों को और उस के अधिकार को बन के गीदड़ों के लिये उजाड़ किया है ॥

४ इस कारण कि अदूम कहता है हम उजाड़े गये पर हम फिरके उजाड़ स्थानों को बनावेंगे सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि वे बनावेंगे पर मैं ढाऊंगा और वे दुष्टता के सिवाने और जिन लोगों से परमेश्वर सदा ५ क्रोधित है कहावेंगे । और तुम्हारी आंखें देखेंगी और तुम कहोगे कि परमेश्वर इसराएल के सिवाने पर महिमा पावे ॥

६ पुत्र अपने पिता की और सेवक अपने स्वामी की प्रतिष्ठा करता है सो जो मैं पिता हूं तो मेरी प्रतिष्ठा कहां और जो मैं स्वामी हूं तो मेरा डर कहां सेनाओं का परमेश्वर तुम्हें कहता है हे याजको जो मेरे नाम की निन्दा करते हो पर तुम कहते हो कि किस बात में हम ने तेरे नाम की ७ निन्दा किई । अशुद्ध भोजन मेरी बेदी पर चढ़ाते हो और कहते हो कि किस बात में हम ने तुझे अशुद्ध किया है इस में कि कहते हो परमेश्वर का ८ मंच तुच्छ है । सो जो तुम बलि के लिये अंधा चढ़ाओ क्या बुरा नहीं और जो तुम लंगड़ा और रोगी चढ़ाओ तो क्या बुरा नहीं उसे अपने अध्यक्ष को भेंट देओ क्या वह तुम से प्रसन्न होगा अथवा वह तुम्हें ग्रहण करेगा सेनाओं का परमेश्वर कहता है ॥

९ और अब सर्वशक्तिमान से प्रार्थना करो जिस्तें वह हम पर दयाल होवे यह तुम्हारे हाथ से होता है क्या वह तुम्हें ग्रहण करेगा सेनाओं का परमेश्वर

१० कहता है । तुम में से कौन है जो द्वारों को बन्द करेगा तुम मेरी बेदी पर आग अमोल्य नहीं बारते मैं तुम से प्रसन्न नहीं हूं सेनाओं का परमेश्वर कहता है और तुम्हारे हाथ से भेंट ११ ग्रहण न करूंगा । क्योंकि सूर्य्य के उदय से उस के अस्त लों मेरा नाम अन्यदेशियों में महान होगा और हर कहीं सुगंध और पवित्र भेंट मेरे नाम के लिये चढ़ाई जायेगी क्योंकि मेरा नाम अन्यदेशियों में महान होगा सेनाओं का परमेश्वर कहता है ॥

१२ पर तुम ने यह कहके उसे अशुद्ध किया है कि परमेश्वर का मंच अशुद्ध है और उस की प्राप्ति उस का भोजन १३ तुच्छ है । तुम ने यह भी कहा कि देख क्याही थकाव हैं और तुम ने उस को निन्दा किई सेनाओं का परमेश्वर कहता है और फाड़ा हुआ और लंगड़ा और रोगी लाये हो हां तुम ऐसी भेंट लाये हो क्या मैं तुम्हारे हाथ से उसे ग्रहण करूंगा परमेश्वर कहता है । १४ परन्तु उस छली पर साप हो जो अपने झुंड में नर रखता है और परमेश्वर के लिये मनौती मानता है और नकारा बलि चढ़ाता है क्योंकि मैं महाराज हूं सेनाओं का परमेश्वर कहता है और मेरा नाम जातिगणों में भयानक होगा ॥

दूसरा पर्ब्ब ।

१ और अब हे याजको यह आज्ञा २ तुम्हारे लिये है । यदि तुम न सुनो न मन लगाओ कि मेरे नाम की महिमा करो सेनाओं का परमेश्वर कहता है तो मैं साप तुम पर भेजूंगा मैं तुम्हारे आशीषों को सापूंगा हां मैं उसे साप चुका हूं इस लिये कि तुम मन नहीं ३ लगाते । देखो मैं तुम्हारे बीज को बिगाड़ूंगा और तुम्हारे मुंह पर मल बिथराऊंगा हां तुम्हारे पर्ब्बों का मल और कोई तुम्हें उस के संग ले जायेगा । ४ और तुम जानोगे कि मैं ने इस आज्ञा को तुम्हारे पास भेजा है क्योंकि लावी से मेरी बाचा ठहरी सेनाओं का परमेश्वर कहता है । ५ मेरी बाचा जीवन और कुशल की उस के संग थी और मैं ने उन्हें उसे दिया इस डर के लिये जिस्से वह मुझ से डरता था और मेरे मुंह के आगे बिस्मित था । ६ सत्यता की व्यवस्था उस के मुंह में थी और उस के होंठों में अधर्म्म न पाया गया वह कुशल और खराई से मेरे साथ चला और बहुतों को बुराई से फिराया । ७ क्योंकि अवश्य है कि याजक के होंठ में ज्ञान धरा रहे और लोग उस के मुंह से व्यवस्था को ढूंढ़ें इस लिये कि वह सेनाओं के परमेश्वर का प्रेरित है ॥

८ पर तुम मार्ग से मुड़े हो तुम ने बहुतों को व्यवस्था में ठोकर खिलाया तुम ने लावी की बाचा को बिगाड़ा है सेनाओं का परमेश्वर कहता है । ९ ऐसा कि तुम मेरे मार्गों पर नहीं चले हो और व्यवस्था में लोगों का पक्ष किया है इस लिये मैं ने भी तुम्हें सारे लोगों के आगे तुच्छ और निन्दित किया है ॥

१० क्या हम सभों का एकही पिता नहीं है क्या एकही सर्व्वशक्तिमान ने हम सभों को उत्पन्न नहीं किया फिर किस लिये हम अपने पितरों की बाचा को तोड़कर हर एक अपने भाई से छल करें ॥

११ यहूदाह ने छल किया है और इसराएल और यरूसलम में घिनित कार्य्य होता है क्योंकि जो परमेश्वर के लिये पवित्र था जिसे उस ने प्यार किया है यहूदाह ने उसे अशुद्ध किया

है और अपने देश की लड़कों को ब्याहा
१२ है। परमेश्वर उस जन को जो ऐसा
करता है क्या गुरु क्या चेला और उसे
जो सेनाओं के परमेश्वर के आगे भेंट
चढ़ाता है यअकूब के तंबुओं में से काट
१३ डालेगा। फिर यह भी तुम ने दो बेर
किया कि परमेश्वर की बेदी को
आंसुओं और रोदन और चिल्लाने से ढांपा
है यहां लों कि वह भेंट पर सुरत नहीं
लगाता और सुइच्छा से तुम्हारे हाथों से
ग्रहण नहीं करता॥

१४ तब भी तुम कहते हो किस लिये
इसी लिये कि परमेश्वर तेरे और तेरी
यवी के मध्य में साची था जिस्से तू ने
छल किया है तथापि वह तेरी संगिनी
१५ और तेरी बाचा की पत्नी थी। क्या उस
ने एकही नहीं बनाया तथापि उस के
पास आत्मा की बचती थी और काहे
को कि एक ईश्वरीय बंश को पावे
इस लिये तुम अपने आत्मा से चौकस
रहो कि अपनी तरुणाई की पत्नी से
१६ कोई बिश्वासघात न करे। क्योंकि
परमेश्वर इसराएल का ईश्वर कहता
है कि मैं परित्याग से घिन खाता हूं
और उस्से भी जो अन्धेर से अपने बस्त्र
को ढांपता है सेनाओं का परमेश्वर
कहता है इस लिये अपने आत्मा से
चौकस रहो कि बिश्वासघात न करो॥

१७ तुम ने अपनी बातों से परमेश्वर को
थकाया है पर तुम कहते हो कि किस
बात में हम ने उसे थकाया है इस में
जो तुम कहते हो कि हर एक जो
बुराई करता है परमेश्वर की दृष्टि में
भला है और वह ऐसों से प्रसन्न है
अथवा यह कि न्याय का ईश्वर कहां है॥

तीसरा पर्ब्ब

१ देख मैं अपने दूत को भेजूंगा और
वह मेरे आगे मार्ग को सिद्ध करेगा
और प्रभु जिसे तुम खोजते हो अचानक
अपने मन्दिर में आवेगा अर्थात् बाचा
का दूत जिस्से तुम प्रसन्न हो देख वह
आवेगा सेनाओं का परमेश्वर कहता
२ है। परन्तु उस के आने के दिन में
कौन ठहरेगा और जब वह दिखाई
देगा तब कौन खड़ा रहेगा क्योंकि
वह निर्मल करवैये की आग की नाईं
और धोबी के साबुन की नाईं है।
३ और वह चांदी के निर्मल और चोखा
करवैये की नाईं बैठेगा और वह लावी
के बेटों को पवित्र करेगा और वह उन्हें
सोने चांदी की नाईं निर्मल करेगा
और वे धर्म्म से परमेश्वर को भेंट
चढ़ावेंगे॥

४ तब यहूदाह और यरूसलम की भेंट
पुराने दिनों की नाईं और अगिले
बरसों की नाईं परमेश्वर को प्रसन्न
५ आवेगी। पर मैं न्याय के लिये तुम्हारे
पास आऊंगा और मैं टोन्हों पर और
व्यभिचारियों पर और झूठे किरियकों
पर और उन पर जो बनिहार और
बिधवा और अनाथ की बनी रोक
रखते हैं और यात्री को पद से फिराते
हैं और मुझ से नहीं डरते चटक साची
हूंगा सेनाओं का परमेश्वर कहता है।
६ क्योंकि मैं परमेश्वर हूं मैं नहीं पलटता
इस लिये हे यअकूब के पुत्रो तुम भस्म
नहीं हो॥

७ अपने पितरों के दिनों से तुम मेरी
बिधियों से फिर गये हो और उन्हें
पालन नहीं किया है मेरी ओर फिरो
और मैं तुम्हारी ओर फिरूंगा सेनाओं
का परमेश्वर कहता है परन्तु तुम
कहते हो कि किस बात में हम फिरें।
८ क्या कोई ईश्वर से चुरावेगा तथापि
तुम ने मुझ से चुराया परन्तु कहते हो
कि किस बात में हम ने तुझ से

९ चुराया है दहेकों और भेंटों में । तुम स्राप से स्रापित हो क्योंकि तुम ने हां इस सारे जातिगण ने मुझ से चुराया है ॥

१० तुम सारी दहेकों को भंडार में लाओ जिस्तें मेरे घर में भोजन होवे और अब इस्से मुझे परखो सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि मैं तुम्हारे लिये स्वर्ग की खिड़कियों को न खोलूं और तुम पर यहां लों आशीष बहाऊं कि रखने के लिये स्थान न होगा ।

११ और मैं तुम्हारे लिये भक्षक को डांटूंगा और वह तुम्हारी भूमि के फलों को नष्ट न करेगा और खेत में तुम्हारा दाख बांझ न होगा सेनाओं का परमेश्वर कहता है । १२ और सारे जातिगण तुम्हें धन्य कहेंगे क्योंकि तुम बांछित देश होगे सेनाओं का परमेश्वर कहता है ॥

१३ तुम्हारी बातें मेरे बिरुद्ध कड़ी हुईं परमेश्वर कहता है तथापि तुम कहते हो कि हम ने तेरे बिरुद्ध क्या कहा है ॥

१४ तुम ने कहा है कि परमेश्वर की सेवा बृथा है और क्या लाभ है कि हम उस की बिधिन को पालन करें और सेनाओं के परमेश्वर के आगे १५ उदासी से चलें । और अब हम अहङ्कारियों को धन्य कहते हैं हां दुष्टकारी बन गये हां जिन्हों ने ईश्वर को छोड़ा है वे बच निकले ॥

१६ तब जो परमेश्वर को डरते थे उन्हों ने आपस में बातें किईं और परमेश्वर ने कान धरके सुना और उन के लिये जो परमेश्वर से डरते थे और उस के नाम को ध्यान करते थे स्मरण की पुस्तक उस के आगे लिखी गई । १७ और जिस दिन मैं ने ठहराया सेनाओं का परमेश्वर कहता है वे मेरे लिये बिशेष भंडार होंगे और मैं उन पर कृपाल हूंगा जैसा मनुष्य अपने पुत्र पर कृपाल है जो उस की सेवा करता है । १८ तब तुम फिरोगे और धर्म्मी और दुष्ट के मध्य उस के मध्य जो ईश्वर की सेवा करता है और जो उस की सेवा नहीं करता तुम बेवरा जानोगे ॥

चौथा पर्ब्ब ।

१ क्योंकि देख वह दिन आता है जो भट्ठे की नाईं जलेगा और सारे अहङ्कारी और सारे दुष्टकारी भूसे होंगे और जो दिन आता है सो उन्हें जला देगा सेनाओं का परमेश्वर कहता है और उन को न जड़ न डाली छोड़ेगा ॥

२ परन्तु तुम्हारे लिये जो मेरे नाम से डरते हो धर्म्म का सूर्य्य उदय होगा और उस के डैनों के तले चङ्गाई होगी और तुम निकलोगे और थान के बछड़ों की नाईं बढ़ोगे । ३ और तुम दुष्टों को लताड़ोगे क्योंकि जिस दिन कि मैं यह करूंगा वे तुम्हारे पांव के तलवों के नीचे राख होंगे सेनाओं का परमेश्वर कहता है ॥

४ मेरे सेवक मूसा की ब्यवस्था को जो मैं ने सारे इसराएल के लिये होरिब में आज्ञा किई अर्थात् बिधिन और न्यायों को स्मरण करो ॥

५ देखो परमेश्वर के बड़े और भयङ्कर दिन के आने से आगे मैं इलियाह भविष्यद्वक्ता को तुम्हारे पास भेजूंगा । ६ और वह पित्रों के मन को पुत्रों की ओर और पुत्रों के मन को उन के पित्रों की ओर फेरेगा न हो कि मैं आऊं और देश को स्राप से नाश करूं ॥

धर्म्मपुस्तक का अन्त भाग।

अर्थात्

मत्ती औ मार्क औ लूक औ योहन रचित

प्रभु यीशु ख्रीष्ट का सुसमाचार।

और

प्रेरितों की क्रियाओं का वृत्तान्त।

और

धर्म्मोपदेश और भविष्यद्वाक्य की पत्रियां।

जो

यूनानी भाषा से हिन्दी में किये गये हैं।

THE

NEW TESTAMENT,

IN HINDI.

ALLAHABAD:

REPRINTED AT THE MISSION PRESS FROM THE BAPTIST MISSION PRESS EDITION (WITH ALTERATIONS) FOR THE NORTH INDIA BIBLE SOCIETY.

1892.

मत्ती रचित सुसमाचार ।

पहिला पर्व्व ।

१ इब्राहीम की सन्तान दाऊद के सन्तान यीशु खीष्ट की वंशावलि । २ इब्राहीम का पुत्र इसहाक इसहाक का पुत्र याकूब याकूब के पुत्र यिहूदा और ३ उस के भाई हुए । तामर से यिहूदा के पुत्र पेरस और जेरह हुए पेरस का पुत्र हिस्रोन हिस्रोन का पुत्र अराम । ४ अराम का पुत्र अम्मीनादब अम्मीनादब का पुत्र नहशोन नहशोन का पुत्र सल-५ मोन । राहब से सलमोन का पुत्र बोअस हुआ रूत से बोअस का पुत्र ओबेद ६ हुआ ओबेद का पुत्र यिशी । यिशी का पुत्र दाऊद राजा ऊरियाह की विधवा से दाऊद राजा का पुत्र सुलेमान हुआ । ७ सुलेमान का पुत्र रिहबिआम रिहबिआम का पुत्र अबियाह अबियाह का पुत्र ८ आसा । आसा का पुत्र यिहोशाफट यिहोशाफट का पुत्र यिहोराम यिहोराम ९ का सन्तान उज्जियाह । उज्जियाह का पुत्र योथम योथम का पुत्र आहज १० आहज का पुत्र हिजकियाह । हिज-कियाह का पुत्र मनस्सी मनस्सी का पुत्र आमोन आमोन का पुत्र योशियाह । ११ बाबुल नगर को जाने के समय में यो-शियाह के सन्तान यिकनियाह और उस १२ के भाई हुए । बाबुल को जाने के पीछे यिकनियाह का पुत्र शलतियेल शल-१३ तियेल का पुत्र जिरुब्बाबुल । जिरुब्बा-बुल का पुत्र अबीहूद अबीहूद का पुत्र इलियाकीम इलियाकीम का पुत्र १४ असोर । असोर का पुत्र सादोक सादोक का पुत्र आखीम आखीम का पुत्र इली-१५ हूद । इलीहूद का पुत्र इलियाजर इलियाजर का पुत्र मत्तान मत्तान का पुत्र याकूब । याकूब का पुत्र यूसफ १६ जो मरियम का स्वामी था जिस से यीशु जो खीष्ट कहावता है उत्पन्न हुआ । सो सब पीढ़ियां इब्राहीम से दाऊद १७ लों चौदह पीढ़ी और दाऊद से बाबुल को जाने लों चौदह पीढ़ी और बाबुल को जाने के समय से खीष्ट लों चौदह पीढ़ी थीं ॥

यीशु खीष्ट का जन्म इस रीति से १८ हुआ . उस की माता मरियम की यूसफ से मंगनी हुई थी पर उन के एकट्ठे होने के पहिले वह देख पड़ी कि पवित्र आत्मा से गर्भवती है । तब उस के १९ स्वामी यूसफ ने जो धर्म्मी मनुष्य था और उस पर प्रगट में कलंक लगाने नहीं चाहता था उसे चुपके से त्यागने की इच्छा किई । जब वह इन बातों २० की चिन्ता करता था देखो परमेश्वर के एक दूत ने स्वप्न में उसे दर्शन दे कहा हे दाऊद की सन्तान यूसफ तू अपनी स्त्री मरियम को अपने यहां लाने से मत डर क्योंकि उस को जो गर्भ रहा है सो पवित्र आत्मा से है । वह पुत्र जनेगी २१ और तू उस का नाम यीशु रखना क्योंकि वह अपने लोगों को उन के पापों से बचावेगा । यह सब इस लिये हुआ २२ कि जो वचन परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा से कहा था सो पूरा होवे : कि देखो कुंआरी गर्भवती होगी और २३ पुत्र जनेगी और वे उस का नाम इम्मा-नुएल रखेंगे जिस का अर्थ यह है ईश्वर हमारे संग । तब यूसफ ने नींद से उठके २४ जैसा परमेश्वर के दूत ने उसे आज्ञा दिई थी वैसा किया और अपनी स्त्री को अपने यहां लाया । परन्तु जब २५

लों वह अपना पहिलौठा पुत्र न जनी तब लों उस को न जाना और उस ने उस का नाम यीशु रखा ॥

दूसरा पर्व्व ।

१ हेरोद राजा के दिनों में जब यिहूदिया देश के बैतलहम नगर में यीशु का जन्म हुआ तब देखो पूर्व्व से कितने ज्योतिषी यिरूशलीम नगर में २ आये . और बोले यिहूदियों का राजा जिस का जन्म हुआ है कहां है क्योंकि हम ने पूर्व्व में उस का तारा देखा है और उस को प्रणाम करने आये हैं । ३ यह सुनके हेरोद राजा और उस के साथ सारे यिरूशलीम के निवासी घबरा ४ गये । और उस ने लोगों के सब प्रधान याजकों और अध्यापकों को एकट्ठे कर उन से पूछा खीष्ट कहां जन्मेगा । ५ उन्हों ने उस से कहा यिहूदिया के बैतलहम नगर में क्योंकि भविष्यद्वक्ता ६ के द्वारा यूं लिखा गया है . कि हे यिहूदा देश के बैतलहम तू किसी रीति से यिहूदा की राजधानियों में सब से छोटी नहीं है क्योंकि तुझ में से एक अधिपति निकलेगा जो मेरे इस्रायेली ७ लोग का चरवाहा होगा । तब हेरोद ने ज्योतिषियों को चुपके से बुलाके उन्हें यत्न से पूछा कि तारा किस समय ८ दिखाई दिया । और उस ने यह कहके उन्हें बैतलहम भेजा कि जाके उस बालक के विषय में यत्न से बूझो और जब उसे पाओ तब मुझे सन्देश देओ कि मैं भी जाके उस को प्रणाम करूं । ९ वे राजा की सुनके चले गये और देखो जो तारा उन्हों ने पूर्व्व में देखा था सो उन के आगे आगे चला यहां लों कि जहां बालक था उस स्थान के ऊपर १० पहुंचके ठहर गया । वे उस तारे को ११ देखके अत्यन्त आनन्दित हुए । और घर में पहुंचके उन्हों ने बालक को उस की माता मरियम के संग देखा और दण्डवत कर उसे प्रणाम किया और अपनी सम्पत्ति खोलके उस को सोना और लोबान और गन्धरस भेंट चढ़ाई । १२ और स्वप्न में ईश्वर से यह आज्ञा पाके कि हेरोद के पास मत फिर जाओ वे दूसरे मार्ग से अपने देश को चले गये ॥

१३ उन के जाने के पीछे देखो परमेश्वर के एक दूत ने स्वप्न में यूसफ को दर्शन दे कहा उठ बालक और उस की माता को लेके मिसर देश को भाग जा और जब लों मैं तुझे न कहूं तब लों वहीं रह क्योंकि हेरोद नाश करने के लिये बालक को ढूंढेगा । १४ वह उठ रात ही को बालक और उस की माता को लेके मिसर को चला गया . १५ और हेरोद के मरने लों वहीं रहा कि जो वचन परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा से कहा था कि मैं ने अपने पुत्र को मिसर में से बुलाया सो पूरा होवे ॥

१६ जब हेरोद ने देखा कि ज्योतिषियों ने मुझ से ठट्ठा किया है तब अति क्रोधित हुआ और लोगों को भेजके जिस समय को उस ने ज्योतिषियों से यत्न से पूछा था उस समय के अनुसार बैतलहम में और उस के सारे सिवानों में के सब बालकों को जो दो बरस के और दो बरस से छोटे थे मरवा डाला । १७ तब जो वचन यिरमियाह भविष्यद्वक्ता ने कहा था १८ सो पूरा हुआ . कि रामा नगर में एक शब्द अर्थात् हाहाकार और रोना और बड़ा बिलाप सुना गया राहेल अपने बालकों के लिये रोती थी और शान्त होने न चाहती थी क्योंकि वे नहीं हैं ॥

१९ हेरोद के मरने के पीछे देखो परमेश्वर के एक दूत ने मिसर में

२० यूसफ को स्वप्न में दर्शन दे कहा . उठ बालक और उस की माता को लेके इस्रायेल देश को जा क्योंकि जो लोग बालक का प्राण लेने चाहते थे सो मर गये हैं । २१ तब वह उठ बालक और उस की माता को लेके इस्रायेल देश में आया । २२ परन्तु जब उस ने सुना कि अर्खिलाव अपने पिता हेरोद के स्थान में यिहूदिया का राजा हुआ है तब वहां जाने से डरा और स्वप्न में ईश्वर से आज्ञा पाके गालील के सिवानों में गया . २३ और नासरत नाम एक नगर में आके बास किया कि जो बचन भविष्यद्वक्ताओं से कहा गया था कि वह नासरी कहावेगा सो पूरा होवे ॥

तीसरा

उन दिनों में योहन बपतिसमा देनेहारा आके यिहूदिया के जंगल में उपदेश करने लगा . २ और कहने लगा कि पश्चात्ताप करो क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है ॥ ३ यह वही है जिस के विषय में यिशैयाह भविष्यद्वक्ता ने कहा किसी का शब्द हुआ जो जंगल में पुकारता है कि परमेश्वर का पन्थ बनाओ उस के राजमार्ग सीधे करो । ४ इस योहन का वस्त्र ऊंट के रोम का था और उस की कटि में चमड़े का पटुका बंधा था और उस का भोजन टिड्डियां और बन मधु था । ५ तब यिरूशलीम के और सारे यिहूदिया के और यर्दन नदी के आसपास सारे देश के रहनेहारे उस पास निकल आये . ६ और अपने अपने पापों को मानके यर्दन में उस से बपतिसमा लिया ॥

७ जब उस ने बहुतेरे फरीशियों और सदूकियों को उस से बपतिसमा लेने को आते देखा तब उन से कहा हे सांपों के बंश किस ने तुम्हें आनेवाले क्रोध से भागने को चिताया है । ८ पश्चात्ताप के योग्य फल लाओ । ९ और अपने अपने मन में यह चिन्ता मत करो कि हमारा पिता इब्राहीम है क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि ईश्वर इन पत्थरों से इब्राहीम के लिये सन्तान उत्पन्न कर सकता है । १० और अब भी कुल्हाड़ी पेड़ों की जड़ पर लगी है इस लिये जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं फलता है सो काटा जाता और आग में डाला जाता है । ११ मैं तो तुम्हें पश्चात्ताप के लिये जल से बपतिसमा देता हूं परन्तु जो मेरे पीछे आता है सो मुझ से अधिक शक्तिमान है मैं उस की जूतियां उठाने के योग्य नहीं वह तुम्हें पवित्र आत्मा से और आग से बपतिसमा देगा । १२ उस का सूप उस के हाथ में है और वह अपना सारा खलिहान शुद्ध करेगा और अपने गेहूं को खत्ते में एकट्ठा करेगा परन्तु भूसी को उस आग से जो नहीं बुझती है जलावेगा ॥

१३ तब यीशु योहन से बपतिसमा लेने को उस पास गालील से यर्दन के तीर पर आया । १४ परन्तु योहन यह कहके उसे बर्जने लगा कि मुझे आप के हाथ से बपतिसमा लेना अवश्य है और क्या आप मेरे पास आते हैं । १५ यीशु ने उस को उत्तर दिया कि अब ऐसा होने दे क्योंकि इसी रीति से सब धर्म्म को पूरा करना हमें चाहिये . तब उस ने होने दिया । १६ यीशु बपतिसमा लेके तुरन्त जल से ऊपर आया और देखो उस के लिये स्वर्ग खुल गया और उस ने ईश्वर के आत्मा को कपोत की नाईं उतरते और अपने ऊपर आते देखा । १७ और देखो यह आकाशबाणी हुई कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिस से मैं अति प्रसन्न हूं ॥

चौथा पर्ब्ब ।

१ तब आत्मा यीशु को जंगल में ले गया कि शैतान से उस की परीक्षा किई
२ जाय । वह चालीस दिन और चालीस रात उपवास करके पीछे भूखा हुआ ।
३ तब परीक्षा करनेहारे ने उस पास आ कहा जो तू ईश्वर का पुत्र है तो कह दे कि ये पत्थर रोटियां बन जावें ।
४ उस ने उत्तर दिया कि लिखा है मनुष्य केवल रोटी से नहीं परन्तु हर एक बात से जो ईश्वर के मुख से निकलती
५ है जीयेगा । तब शैतान ने उस को पवित्र नगर में ले जाके मन्दिर के
६ कलश पर खड़ा किया, और उस से कहा जो तू ईश्वर का पुत्र है तो अपने को नीचे गिरा क्योंकि लिखा है कि वह तेरे विषय में अपने दूतों को आज्ञा देगा और वे तुझे हाथों हाथ उठा लेंगे न हो कि तेरे पांव में पत्थर पर चोट
७ लगे । यीशु ने उस से कहा फिर भी लिखा है कि तू परमेश्वर अपने ईश्वर
८ की परीक्षा मत कर । फिर शैतान ने उसे एक अति ऊंचे पर्ब्बत पर ले जाके उस को जगत के सब राज्य और उन
९ का विभव दिखाये, और उस से कहा जो तू दंडवत कर मुझे प्रणाम करे
१० तो मैं यह सब तुझे देऊंगा । तब यीशु ने उस से कहा हे शैतान दूर हो क्योंकि लिखा है कि तू परमेश्वर अपने ईश्वर को प्रणाम कर और केवल उसी की
११ सेवा कर । तब शैतान ने उस को छोड़ा और देखो स्वर्गदूतों ने आ उस की सेवा किई ॥

१२ जब यीशु ने सुना कि योहन बन्दीगृह में डाला गया तब गालील को
१३ चला गया । और नासरत नगर को छोड़के उस ने कफर्नाहुम नगर में जो समुद्र के तीर पर जिबुलून और नप्ताली के सिवानों में है जाके वास
१४ किया, कि जो वचन यिशैयाह भविष्यद्वक्ता से कहा गया था सो पूरा होवे,
१५ कि जिबुलून का देश और नप्ताली का देश समुद्र की ओर यर्दन के उस पार
१६ अन्यदेशियों का गालील, जो लोग अंधकार में बैठे थे उन्हों ने बड़ी ज्योति देखी और जो मृत्यु के देश और छाया में बैठे थे उन पर ज्योति उदय हुई ॥

१७ उस समय से यीशु उपदेश करने और यह कहने लगा कि पश्चात्ताप करो क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया
१८ है । यीशु ने गालील के समुद्र के तीर पर फिरते हुए दो भाइयों को अर्थात् शिमोन को जो पितर कहावता है और उस के भाई अन्द्रिय को समुद्र में जाल
१९ डालते देखा क्योंकि वे मछुवे थे । उस ने उन से कहा मेरे पीछे आओ मैं तुम
२० को मनुष्यों के मछुवे बनाऊंगा । वे तुरन्त जालों को छोड़के उस के पीछे
२१ हो लिये । वहां से आगे बढ़के उस ने और दो भाइयों को अर्थात् जब्दी के पुत्र याकूब और उस के भाई योहन को अपने पिता जब्दी के संग नाव पर अपने जाल सुधारते देखा और उन्हें
२२ बुलाया । और वे तुरन्त नाव को और अपने पिता को छोड़के उस के पीछे हो लिये ॥

२३ तब यीशु सारे गालील देश में उन की सभाओं में उपदेश करता हुआ और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता हुआ और लोगों में हर एक रोग और हर एक व्याधि को चंगा करता हुआ
२४ फिरा किया । उस की कीर्त्ति सब सुरिया देश में भी फैल गई और लोग सब रोगियों को जो नाना प्रकार के रोगों और पीड़ाओं से दुःखी थे और भूतग्रस्तों और मिर्गीहों और अर्द्धांगियों

को उस पास लाये और उस ने उन्हें २५ चंगा किया। और गालील और दिकापलि और यिरूशलीम और यिहूदिया से और यर्दन के उस पार से बहुत बहुत भीड़ उस के पीछे हो लिई॥

पांचवां पर्ब्ब।

१ यीशु भीड़ को देखके पर्ब्बत पर चढ़ गया और जब वह बैठा तब उस २ के शिष्य उस पास आये। और वह अपना मुंह खोलके उन्हें उपदेश देने लगा॥

३ धन्य वे जो मन में दीन हैं क्योंकि ४ स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। धन्य वे जो शोक करते हैं क्योंकि वे शांति ५ पावेंगे। धन्य वे जो नम्र हैं क्योंकि वे ६ पृथिवी के अधिकारी होंगे। धन्य वे जो धर्म्म के भूखे और प्यासे हैं क्योंकि ७ वे तृप्त किये जायेंगे। धन्य वे जो दयावन्त हैं क्योंकि उन पर दया किई ८ जायगी। धन्य वे जिन के मन शुद्ध हैं ९ क्योंकि वे ईश्वर को देखेंगे। धन्य वे जो मेल करवैये हैं क्योंकि वे ईश्वर के १० सन्तान कहावेंगे। धन्य वे जो धर्म्म के कारण सताये जाते हैं क्योंकि स्वर्ग का ११ राज्य उन्हीं का है। धन्य तुम हो जब मनुष्य मेरे लिये तुम्हारी निन्दा करें और तुम्हें सतावें और झूठ बोलते हुए तुम्हारे विरुद्ध सब प्रकार की बुरी बात कहें। १२ आनन्दित और आह्लादित होओ क्योंकि तुम स्वर्ग में बहुत फल पाओगे, उन्हों ने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुम से आगे थे इसी रीति से सताया॥

१३ तुम पृथिवी के लोण हो परन्तु यदि लोण का स्वाद बिगड़ जाय तो वह किस से लोणा किया जायगा, वह तब से किसी काम का नहीं केवल बाहर फेंके जाने और मनुष्यों के पांवों १४ से रौंदे जाने के योग्य है। तुम जगत के प्रकाश हो, जो नगर पहाड़ पर १५ बसा है सो छिप नहीं सकता। और लोग दीपक को बारके बर्त्तन के नीचे नहीं परन्तु दीवट पर रखते हैं और वह सभों को जो घर में हैं ज्योति देता है। १६ वैसे ही तुम्हारा प्रकाश मनुष्यों के आगे चमके इस लिये कि वे तुम्हारे भले कामों को देखके तुम्हारे स्वर्गवासी पिता का गुणानुवाद करें॥

१७ मत समझो कि मैं व्यवस्था अथवा भविष्यद्वक्ताओं का पुस्तक लोप करने को आया हूं मैं लोप करने को नहीं १८ परन्तु पूरा करने को आया हूं। क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं कि जब लों आकाश औ पृथिवी टल न जायें तब लों व्यवस्था से एक मात्रा अथवा एक बिन्दु बिना पूरा हुए नहीं टलेगा। १९ इस लिये जो कोई इन अति छोटी आज्ञाओं में से एक को लोप करे और लोगों को वैसेही सिखावे वह स्वर्ग के राज्य में सब से छोटा कहावेगा परन्तु जो कोई उन्हें पालन करे और सिखावे वह स्वर्ग के राज्य में बड़ा कहावेगा। २० मैं तुम से कहता हूं यदि तुम्हारा धर्म्म अध्यापकों और फरीशियों के धर्म्म से अधिक न होवे तो तुम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने न पाओगे॥

२१ तुम ने सुना है कि आगे के लोगों से कहा गया था कि नरहिंसा मत कर और जो कोई नरहिंसा करे सो बिचार २२ स्थान में दंड के योग्य होगा। परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि जो कोई अपने भाई से अकारण क्रोध करे सो बिचार स्थान में दंड के योग्य होगा और जो कोई अपने भाई से कहे कि रे तुच्छ सो न्याइयों की सभा में दंड के योग्य होगा और जो कोई कहे कि रे मूर्ख सो नरक की आग के दंड के योग्य होगा।

२३ सो यदि तू अपना चढ़ावा बेदी पर लावे और वहां स्मरण करे कि तेरे भाई के मन में तेरी ओर कुछ है तो अपना चढ़ावा वहां बेदी के साम्ने २४ छोड़के चला जा . पहिले अपने भाई से मिलाप कर तब आके अपना २५ चढ़ावा चढ़ा । जब लों तू अपने मुद्दई के संग मार्ग में है उस से बेग मिलाप कर ऐसा न हो कि मुद्दई तुझे न्यायी को सौंपे और न्यायी तुझे प्यादे को सौंपे २६ और तू बन्दीगृह में डाला जाय । मैं तुझ से सच कहता हूं कि जब लों तू कौड़ी कौड़ी भर न देवे तब लों वहां से छूटने न पावेगा ॥

२७ तुम ने सुना है कि आगे के लोगों से कहा गया था कि परस्त्रीगमन मत २८ कर । परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि जो कोई किसी स्त्री पर कुइच्छा से दृष्टि करे वह अपने मन में उस से २९ व्यभिचार कर चुका है । जो तेरी दहिनी आंख तुझे ठोकर खिलावे तो उसे निकालके फेंक दे क्योंकि तेरे लिये भला है कि तेरे अंगों में से एक अंग नाश होवे और तेरा सकल शरीर नरक ३० में न डाला जाय । और जो तेरा दहिना हाथ तुझे ठोकर खिलावे तो उसे काटके फेंक दे क्योंकि तेरे लिये भला है कि तेरे अंगों में से एक अंग नाश होवे और तेरा सकल शरीर नरक में न डाला जाय ॥

३१ यह भी कहा गया कि जो कोई अपनी स्त्री को त्यागे सो उस को ३२ त्यागपत्र देवे । परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि जो कोई व्यभिचार को छोड़ और किसी हेतु से अपनी स्त्री को त्यागे सो उस से व्यभिचार करवाता है और जो कोई उस त्यागी हुई से बिवाह करे सो परस्त्रीगमन करता है ॥

३३ फिर तुम ने सुना है कि आगे के लोगों से कहा गया था कि झूठी किरिया मत खा परन्तु परमेश्वर के लिये अपनी किरियाओं को पूरी कर । ३४ परन्तु मैं तुम से कहता हूं कोई किरिया मत खाओ न स्वर्ग की क्योंकि ३५ वह ईश्वर का सिंहासन है ; न धरती की क्योंकि वह उस के चरणों की पीढ़ी है न यिरूशलीम की क्योंकि वह ३६ महा राजा का नगर है । अपने सिर की भी किरिया मत खा क्योंकि तू एक बाल को उजला अथवा काला ३७ नहीं कर सकता है । परन्तु तुम्हारी बातचीत हां हां नहीं नहीं होवे . जो कुछ इन से अधिक है सो उस दुष्ट से होता है ॥

३८ तुम ने सुना है कि कहा गया था कि आंख के बदले आंख और दांत के ३९ बदले दांत । पर मैं तुम से कहता हूं बुरे का साम्ना मत करो परन्तु जो कोई तेरे दहिने गाल पर थपेड़ा मारे उस ४० की ओर दूसरा भी फेर दे । जो तुझ पर नालिश करके तेरा अंगा लेने चाहे ४१ उस को दोहर भी लेने दे । जो कोई तुझे आध कोश बेगारी ले जाय उस के ४२ संग कोश भर चला जा । जो तुझ से मांगे उस को दे और जो तुझ से ऋण लेने चाहे उस से मुंह मत मोड़ ॥

४३ तुम ने सुना है कि कहा गया था कि अपने पड़ोसी को प्यार कर और ४४ अपने बैरी से बैर कर । परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि अपने बैरियों को प्यार करो . जो तुम्हें स्राप देवें उन को आशीस देओ जो तुम से बैर करें उन से भलाई करो और जो तुम्हारा अपमान करें और तुम्हें सतावें उन के लिये ४५ प्रार्थना करो . जिस्तें तुम अपने स्वर्ग-बासी पिता के सन्तान होओ क्योंकि वह बुरे औ भले लोगों पर अपना सूर्य्य

उदय करता है और धर्म्मियों और
४६ अधर्म्मियों पर मेंह बरसाता है । जो
तुम उन से प्रेम करो जो तुम से प्रेम
करते हैं तो क्या फल पाओगे . क्या
कर उगाहनेहारे भी ऐसा नहीं करते
४७ हैं । और जो तुम केवल अपने भाइयों
को नमस्कार करो तो कौन सा बड़ा
काम करते हो . क्या कर उगाहनेहारे
४८ भी ऐसा नहीं करते हैं । सो जैसा
तुम्हारा स्वर्गबासी पिता सिद्ध है तैसे
तुम भी सिद्ध होओ ॥

छठवां पर्व्व ।

१ सचेत रहो कि तुम मनुष्यों को
दिखाने के लिये उन के आगे अपने
धर्म्म के कार्य्य न करो नहीं तो अपने
स्वर्गबासी पिता से कुछ फल न पाओगे ॥

२ इस लिये जब तू दान करे तब अपने
आगे तुरही मत बजवा जैसा कपटी
लोग सभा के घरों और मार्गों में करते
हैं कि मनुष्य उन की बड़ाई करें . मैं
तुम से सच कहता हूं वे अपना फल
३ पा चुके हैं । परन्तु जब तू दान करे
तब तेरा दहिना हाथ जो कुछ करे सो
४ तेरा बायां हाथ न जाने . कि तेरा दान
गुप्त में होय और तेरा पिता जो गुप्त में
देखता है आप ही तुझे प्रगट में फल
देगा ॥

५ जब तू प्रार्थना करे तब कपटियों
के समान मत हो क्योंकि मनुष्यों को
दिखाने के लिये सभा के घरों में और
सड़कों के कोनों में खड़े होके प्रार्थना
करना उन को प्रिय लगता है . मैं तुम
से सच कहता हूं वे अपना फल पा
६ चुके हैं । परन्तु जब तू प्रार्थना करे
तब अपनी कोठरी में जा और द्वार
मूंदके अपने पिता से जो गुप्त में है
प्रार्थना कर और तेरा पिता जो गुप्त में
देखता है तुझे प्रगट में फल देगा ।

७ प्रार्थना करने में देवपूजकों की नाईं
बहुत व्यर्थ बातें मत बोला करो क्योंकि
वे समझते हैं कि हमारे बहुत बोलने
८ से हमारी सुनी जायगी । सो तुम उन
के समान मत होओ क्योंकि तुम्हारे
मांगने के पहिले तुम्हारा पिता जानता
९ है तुम्हें क्या क्या आवश्यक है । तुम
इस रीति से प्रार्थना करो॰, हे हमारे
स्वर्गबासी पिता तेरा नाम पवित्र किया
१० जाय . तेरा राज्य आवे तेरी इच्छा
जैसे स्वर्ग में वैसे पृथिवी पर पूरी
११ होय . हमारी दिन भर की रोटी आज
१२ हमें दे . और जैसे हम अपने ऋणियों
को क्षमा करते हैं तैसे हमारे ऋणों को
१३ क्षमा कर . और हमें परीक्षा में मत डाल
परन्तु दुष्ट से बचा [क्योंकि राज्य और
पराक्रम और महिमा सदा तेरे हैं .
आमीन] ॥

१४ जो तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा
करो तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता तुम्हें
१५ भी क्षमा करेगा । परन्तु जो तुम मनुष्यों
के अपराध क्षमा न करो तो तुम्हारा
पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न
करेगा ॥

१६ जब तुम उपवास करो तब कपटियों
के समान उदासरूप मत होओ क्योंकि
वे अपने मुंह मलीन करते हैं कि मनुष्यों
को उपवासी दिखाई देवें . मैं तुम से
सच कहता हूं वे अपना फल पा चुके
१७ हैं । परन्तु जब तू उपवास करे तब
अपने सिर पर तेल मल और अपना मुंह
१८ धो . कि तू मनुष्यों को नहीं परन्तु
अपने पिता को जो गुप्त में है उपवासी
दिखाई देवे और तेरा पिता जो गुप्त
में देखता है तुझे प्रगट में फल देगा ॥

१९ अपने लिये पृथिवी पर धन का
संचय मत करो जहां कीड़ा और काई
बिगाड़ते हैं और जहां चोर सेंध देते

२० और चुराते हैं। परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन का संचय करो जहां न कीड़ा न काई बिगाड़ता है और जहां चोर न २१ सेंध देते न चुराते हैं। क्योंकि जहां तुम्हारा धन है तहां तुम्हारा मन भी २२ लगा रहेगा। शरीर का दीपक आंख है इस लिये यदि तेरी आंख निर्मल हो तो तेरा सकल शरीर उंजियाला होगा। २३ परन्तु यदि तेरी आंख बुरी हो तो तेरा सकल शरीर अंधियारा होगा. जो ज्योति तुझ में है सो यदि अंधकार है २४ तो वह अंधकार कैसा बड़ा है। कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता है क्योंकि वह एक से बैर करेगा और दूसरे को प्यार करेगा अथवा एक से लगा रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा. तुम ईश्वर और धन दोनों २५ की सेवा नहीं कर सकते हो। इस लिये मैं तुम से कहता हूं अपने प्राण के लिये चिन्ता मत करो कि हम क्या खायेंगे और क्या पीयेंगे और न अपने शरीर के लिये कि क्या पहिरेंगे. क्या भोजन से प्राण और वस्त्र से शरीर बड़ा २६ नहीं है। आकाश के पंछियों को देखो. वे न बोते हैं न लवते हैं न खत्तों में बटोरते हैं तौभी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उन को पालता है. क्या तुम उन से २७ बड़े नहीं हो। तुम में से कौन मनुष्य चिन्ता करने से अपनी आयु को डोड़ को एक हाथ भी बढ़ा सकता है। २८ और तुम वस्त्र के लिये क्यों चिन्ता करते हो. खेत के सोसन फूलों को देख लो वे कैसे बढ़ते हैं. वे न परि- २९ श्रम करते हैं न कातते हैं। परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि सुलेमान भी अपने सारे विभव में उन में से एक के तुल्य ३० विभूषित न था। यदि ईश्वर खेत की घास को जो आज है और कल चूल्हे में झोंकी जायगी ऐसी विभूषित करता है तो हे अल्प विश्वासियो क्या वह बहुत अधिक करके तुम्हें नहीं पहि- ३१ रावेगा। सो तुम यह चिन्ता मत करो कि हम क्या खायेंगे अथवा क्या पीयेंगे ३२ अथवा क्या पहिरेंगे। देवपूजक लोग इन सब वस्तुओं का खोज करते हैं और तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है कि तुम्हें इन सब वस्तुओं का प्रयोजन ३३ है। पहिले ईश्वर के राज्य और उस के धर्म्म का खोज करो तब यह सब वस्तु भी तुम्हें दिई जायेंगीं। ३४ सो कल के लिये चिन्ता मत करो क्योंकि कल अपनी वस्तुओं के लिये आप ही चिन्ता करेगा. हर एक दिन के लिये उसी दिन का दुःख बहुत है॥

सातवां पर्व्व।

१ दूसरों का विचार मत करो कि २ तुम्हारा विचार न किया जाय। क्योंकि जिस विचार से तुम विचार करते हो उसी से तुम्हारा विचार किया जायगा और जिस नाप से तुम नापते हो उसी से ३ तुम्हारे लिये नापा जायगा। जो तिनका तेरे भाई के नेत्र में है उसे तू क्यों देखता है और तेरे ही नेत्र में का लट्ठा ४ तुझे नहीं सूझता। अथवा तू अपने भाई से क्योंकर कहेगा रहिये मैं तेरे नेत्र से यह तिनका निकालूं और देख ५ तेरे ही नेत्र में लट्ठा है। हे कपटी पहिले अपने नेत्र से लट्ठा निकाल दे तब तू अपने भाई के नेत्र से तिनका निकालने को अच्छी रीति से देखेगा। ६ पवित्र वस्तु कुत्तों को मत देओ और अपने मोतियों को सूअरों के आगे मत फेंको ऐसा न हो कि वे उन्हें अपने पांवों से रौंदें और फिरके तुम को फाड़ डालें॥

७ मांगो तो तुम्हें दिया जायगा ढूंढ़ो

तो तुम पाओगे खटखटाओ तो तुम्हारे ८ लिये खोला जायगा। क्योंकि जो कोई मांगता है उसे मिलता है और जो ढूंढ़ता है सो पाता है और जो खटखटाता है ९ उस के लिये खोला जायगा। तुम में से कौन मनुष्य है कि यदि उस का पुत्र उस से रोटी मांगे तो उस को पत्थर १० देगा। और जो वह मछली मांगे तो क्या ११ वह उस को सांप देगा। सो यदि तुम बुरे होके अपने लड़कों को अच्छे दान देने जानते हो तो कितना अधिक करके तुम्हारा स्वर्गवासी पिता उन्हों को जो उस से मांगते हैं उत्तम वस्तु देगा। १२ जो कुछ तुम चाहते हो कि मनुष्य तुम से करें तुम भी उन से वैसा ही करो क्योंकि यही व्यवस्था औ भविष्यद्वक्ताओं के पुस्तक का सार है॥

१३ सकेत फाटक से प्रवेश करो क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और चाकर है वह मार्ग जो बिनाश को पहुंचाता है और १४ बहुत हैं जो उस से पैठते हैं। क्योंकि फाटक कैसा सकेत और वह मार्ग कैसा सकरा है जो जीवन को पहुंचाता है और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं॥

१५ झूठे भविष्यद्वक्ताओं से चौकस रहो जो भेड़ों के भेष में तुम्हारे पास आते हैं १६ परन्तु अन्तर में लुटेरू हुंड़ार हैं। तुम उन के फलों से उन्हें पहचानोगे. क्या मनुष्य कांटों के पेड़ से दाख अथवा १७ ऊंटकटारे से गूलर तोड़ते हैं। इसी रीति से हर एक अच्छा पेड़ अच्छा फल फलता है और निकम्मा पेड़ बुरा फल १८ फलता है। अच्छा पेड़ बुरा फल नहीं फल सकता है और न निकम्मा पेड़ १९ अच्छा फल फल सकता है। जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं फलता है सो काटा जाता और आग में डाला जाता है। २० सो तुम उन के फलों से उन्हें पहचानोगे॥

२१ हर एक जो मुझ से हे प्रभु हे प्रभु कहता है स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करेगा परन्तु वही जो मेरे स्वर्गवासी २२ पिता की इच्छा पर चलता है। उस दिन में बहुतेरे मुझ से कहेंगे हे प्रभु हे प्रभु क्या हम ने आप के नाम से भविष्यद्वाक्य नहीं कहा और आप के नाम से भूत नहीं निकाले और आप के नाम से बहुत आश्चर्य्य कर्म्म नहीं किये। २३ तब मैं उन से खोलके कहूंगा मैं ने तुम को कभी नहीं जाना हे कुकर्म्म करनेहारो मुझ से दूर होओ॥

२४ इस लिये जो कोई मेरी यह बातें सुनके उन्हें पालन करे मैं उस की उपमा एक बुद्धिमान मनुष्य से देऊंगा जिस ने अपना घर पत्थर पर बनाया। २५ और मेंह बरसा औ बाढ़ आई औ आंधी चली और उस घर पर लगी पर वह नहीं गिरा क्योंकि उस की नेव २६ पत्थर पर डाली गई थी। परन्तु जो कोई मेरी यह बातें सुनके उन्हें पालन न करे उस की उपमा एक निर्बुद्धि मनुष्य से दिई जायगी जिस ने अपना २७ घर बालू पर बनाया। और मेंह बरसा औ बाढ़ आई औ आंधी चली और उस घर पर लगी और वह गिरा और उस का बड़ा पतन हुआ॥

२८ जब यीशु यह बातें कह चुका तब लोग उस के उपदेश से अचंभित हुए। २९ क्योंकि उस ने अध्यापकों की रीति से नहीं परन्तु अधिकारी की रीति से उन्हें उपदेश दिया॥

आठवां पर्ब्ब।

१ जब यीशु उस पर्ब्बत से उतरा तब २ बड़ी भीड़ उस के पीछे हो लिई। और देखो एक कोढ़ी ने आ उस को प्रणाम कर कहा हे प्रभु जो आप चाहें तो ३ मुझे शुद्ध कर सकते हैं। यीशु ने हाथ

बढ़ा उसे छूके कहा मैं तो चाहता हूं शुद्ध हो जा . और उस का कोढ़ तुरन्त ४ शुद्ध हो गया । तब यीशु ने उस से कहा देख किसी से मत कह परन्तु जा अपने तईं याजक को दिखा और जो चढ़ावा मूसा ने ठहराया उसे लोगों पर साक्षी होने के लिये चढ़ा ॥

५ जब यीशु ने कफर्नाहूम में प्रवेश किया तब एक शतपति ने उस पास ६ आ उस से बिन्ती किई . कि हे प्रभु मेरा सेवक घर में अर्द्धांग रोग से अति ७ पीड़ित पड़ा है । यीशु ने उस से कहा ८ मैं आके उसे चंगा करूंगा । शतपति ने उत्तर दिया कि हे प्रभु मैं इस योग्य नहीं कि आप मेरे घर में आवें पर बचन मात्र भी कहिये तो मेरा सेवक ९ चंगा हो जायगा । क्योंकि मैं पराधीन मनुष्य हूं और योद्धा मेरे बश में हैं और मैं एक को कहता हूं जा तो वह जाता है और दूसरे को आ तो वह आता है और अपने दास को यह कर तो वह १० करता है । यह सुनके यीशु ने अचंभा किया और जो लोग उस के पीछे से आते थे उन से कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि मैं ने इस्रायेली लोगों में भी ऐसा बड़ा बिश्वास नहीं पाया है । ११ और मैं तुम से कहता हूं कि बहुतेरे लोग पूर्ब्ब और पश्चिम से आके इब्राहीम और इसहाक और याकूब के १२ साथ स्वर्ग के राज्य में बैठेंगे । परन्तु राज्य के सन्तान बाहर के अंधकार में डाले जायेंगे जहां रोना औ दांत पीसना १३ होगा । तब यीशु ने शतपति से कहा जाइये जैसा तू ने बिश्वास किया है वैसाही तुझे होवे और उस का सेवक उसी घड़ी चंगा हो गया ॥

१४ यीशु ने पितर के घर में आके उस की सास को पड़ी हुई और ज्वर से १५ पीड़ित देखा । उस ने उस का हाथ छूआ और ज्वर ने उस को छोड़ा और वह उठके उन की सेवा करने लगी ॥

१६ सांझ को लोग बहुत से भूतग्रस्तों को उस पास लाये और उस ने बचन ही से भूतों को निकाला और सब रोगियों १७ को चंगा किया . कि जो बचन यिशैयाह भविष्यद्वक्ता से कहा गया था कि उस ने हमारी दुर्बलताओं को ग्रहण किया और रोगों को उठा लिया सो पूरा होवे ॥

१८ यीशु ने अपने आसपास बड़ी भीड़ देखके उस पार जाने की आज्ञा किई । १९ और एक अध्यापक ने आ उस से कहा हे गुरु जहां जहां आप जायें तहां मैं २० आप के पीछे चलूंगा । यीशु ने उस से कहा लोमड़ियों को मांदें और आकाश के पंछियों को बसेरे हैं परन्तु मनुष्य के पुत्र को सिर रखने का स्थान नहीं है । २१ उस के शिष्यों में से दूसरे ने उस से कहा हे प्रभु मुझे पहिले जाके अपने पिता २२ को गाड़ने दीजिये । यीशु ने उस से कहा तू मेरे पीछे हो ले और मृतकों को अपने मृतकों को गाड़ने दे ॥

२३ जब वह नाव पर चढ़ा तब उस के शिष्य उस के पीछे हो लिये । २४ और देखो समुद्र में ऐसे बड़े हिलकोरे उठे कि नाव लहरों से ढंप जाती थी परन्तु वह सोता २५ था । तब उस के शिष्यों ने उस पास आके उसे जगाके कहा हे प्रभु हमें २६ बचाइये हम नष्ट होते हैं । उस ने उन से कहा हे अल्प बिश्वासियो क्यों डरते हो . तब उस ने उठके बयार और समुद्र को डांटा और बड़ा नीवा हो गया । २७ और वे लोग अचंभा करके बोले यह कैसा मनुष्य है कि बयार और समुद्र भी उस की आज्ञा मानते हैं ॥

२८ जब यीशु उस पार गिर्गाशियों के

देश में पहुंचा तब दो भूतग्रस्त मनुष्य कबरस्थान में से निकलते हुए उस से आ मिले जो यहां लों अति प्रचंड थे कि उस मार्ग से कोई नहीं जा सकता था। २९ और देखो उन्हों ने चिल्लाके कहा हे यीशु ईश्वर के पुत्र आप को हम से क्या काम. क्या आप समय के आगे हमें पीड़ा देने को यहां आये हैं। ३० बहुत से सूअरों का एक झुंड उन से कुछ दूर चरता था। ३१ सो भूतों ने उस से बिन्ती कर कहा जो आप हमें निकालते हैं तो सूअरों के झुंड में पैठने दीजिये। ३२ उस ने उन से कहा जाओ और वे निकलके सूअरों के झुंड में पैठे और देखो सूअरों का सारा झुंड कड़ाड़े पर से समुद्र में दौड़ गया और पानी में डूब मरा। ३३ पर चरवाहे भागे और नगर में जाके सब बातें और भूतग्रस्तों की कथा भी सुनाईं। ३४ और देखो सारे नगर के लोग यीशु से भेंट करने को निकले और उस को देखके बिन्ती किई कि हमारे सिवानों से निकल जाइये॥

नवां पर्व्व।

१ यीशु नाव पर चढ़के उस पार जाके अपने नगर में पहुंचा॥

२ देखो लोग एक अर्द्धांगी को खाट पर पड़े हुए उस पास लाये और यीशु ने उन्हों का बिश्वास देखके उस अर्द्धांगी से कहा हे पुत्र ढाढ़स कर तेरे पाप क्षमा किये गये हैं। ३ तब देखो कितने अध्यापकों ने अपने अपने मन में कहा यह तो ईश्वर की निन्दा करता है। ४ यीशु ने उन के मन की बातें जानके कहा तुम लोग अपने अपने मन में क्यों बुरी चिन्ता करते हो। ५ कौन बात सहज है यह कहना कि तेरे पाप क्षमा किये गये हैं अथवा यह कहना कि उठ और चल। ६ परन्तु जिस्तें तुम जानो कि मनुष्य के पुत्र को पृथिवी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है (तब उस ने उस अर्द्धांगी से कहा) उठ अपनी खाट उठाके अपने घर को जा। ७ वह उठके अपने घर को चला गया। ८ लोगों ने यह देखके अचंभा किया और ईश्वर की स्तुति किई जिस ने मनुष्यों को ऐसा अधिकार दिया॥

९ वहां से आगे बढ़के यीशु ने एक मनुष्य को कर उगाहने के स्थान में बैठे देखा जिस का नाम मत्ती था और उस से कहा मेरे पीछे आ. तब वह उठके उस के पीछे हो लिया। १० जब यीशु घर में भोजन पर बैठा तब देखो बहुत कर उगाहनेहारे और पापी लोग आ उस के और उस के शिष्यों के संग बैठ गये। ११ यह देखके फरीशियों ने उस के शिष्यों से कहा तुम्हारा गुरु कर उगाहनेहारों और पापियों के संग क्यों खाता है। १२ यीशु ने यह सुनके उन से कहा निरोगियों को वैद्य का प्रयोजन नहीं है परन्तु रोगियों को। १३ तुम जाके इस का अर्थ सीखो कि मैं दया को चाहता हूं बलिदान को नहीं. क्योंकि मैं धर्म्मियों को नहीं परन्तु पापियों को पश्चात्ताप के लिये बुलाने आया हूं॥

१४ तब योहन के शिष्यों ने उस पास आ कहा हम लोग और फरीशी लोग क्यों बार बार उपवास करते हैं परन्तु आप के शिष्य उपवास नहीं करते। १५ यीशु ने उन से कहा जब लों दूल्हा सखाओं के संग रहे तब लों क्या वे शोक कर सकते हैं. परन्तु वे दिन आवेंगे जिन में दूल्हा उन से अलग किया जायगा तब वे उपवास करेंगे। १६ कोई मनुष्य कोरे कपड़े का टुकड़ा पुराने बस्त्र में नहीं लगाता है क्योंकि वह टुकड़ा बस्त्र से कुछ और भी फाड़

लेता है और उस का फटा बढ़ जाता है । १७ और लोग नया दाख रस पुराने कुप्पों में नहीं भरते नहीं तो कुप्पे फट जाते हैं और दाख रस बह जाता है और कुप्पे नष्ट होते हैं . परन्तु नया दाख रस नये कुप्पों में भरते हैं और दोनों की रक्षा होती है ॥

१८ यीशु इन से यह बातें कहता ही था कि देखो एक अध्यक्ष ने आके उस को प्रणाम कर कहा मेरी बेटी अभी मर गई परन्तु आप आके अपना हाथ १९ उस पर रखिये तो वह जीयेगी । तब यीशु उठके अपने शिष्यों समेत उस के पीछे हो लिया ॥

२० और देखो एक स्त्री ने जिस का बारह बरस से लोहू बहता था पीछे से आ उस के वस्त्र के आंचल को छूआ । २१ क्योंकि उस ने अपने मन में कहा यदि मैं केवल उस के वस्त्र को छूओं तो २२ चंगी हो जाऊंगी । यीशु ने पीछे फिरके उसे देखके कहा हे पुत्री ढाढ़स कर तेरे बिश्वास ने तुझे चंगा किया है . सो वह स्त्री उसी घड़ी से चंगी हुई ॥

२३ यीशु ने उस अध्यक्ष के घर पर पहुंचके बजनियों को और बहुत लोगों २४ को धूम मचाते देखा . और उन से कहा अलग जाओ कन्या मरी नहीं पर सोती है . और वे उस का उपहास २५ करने लगे । परन्तु जब लोग बाहर किये गये तब उस ने भीतर जा कन्या २६ का हाथ पकड़ा और वह उठी । यह कीर्त्ति उस सारे देश में फैल गई ॥

२७ जब यीशु वहां से आगे बढ़ा तब दो अंधे पुकारते और यह कहते हुए उस के पीछे हो लिये कि हे दाऊद के २८ सन्तान हम पर दया कीजिये । जब वह घर में पहुंचा तब वे अंधे उस पास आये और यीशु ने उन से कहा क्या तुम बिश्वास करते हो कि मैं यह काम कर सकता हूं . वे उस से बोले २९ हां प्रभु । तब उस ने उन की आंखें छूके कहा तुम्हारे बिश्वास के समान ३० तुम को होवे । इस पर उन की आंखें खुल गईं और यीशु ने उन्हें चिताके कहा देखो कोई इस को न जाने । ३१ तौभी उन्हों ने बाहर जाके उस सारे देश में उस की कीर्त्ति फैलाई ॥

३२ जब वे बाहर जाते थे देखो लोग एक भूतग्रस्त गूंगे मनुष्य को यीशु पास ३३ लाये । जब भूत निकाला गया तब गूंगा बोलने लगा और लोगों ने अचंभा कर कहा इस्रायेल में ऐसा कभी न ३४ देखा गया । परन्तु फरीशियों ने कहा वह भूतों के प्रधान की सहायता से भूतों को निकालता है ॥

३५ तब यीशु सब नगरों और गांवों में उन की सभाओं में उपदेश करता हुआ और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता हुआ और लोगों में हर एक रोग और हर एक व्याधि को चंगा करता हुआ ३६ फिरा किया । जब उस ने बहुत लोगों को देखा तब उस को उन पर दया आई क्योंकि वे बिन रखवाले की भेड़ों की नाईं व्याकुल और छिन्नभिन्न किये ३७ हुए थे । तब उस ने अपने शिष्यों से कहा कटनी बहुत है परन्तु बनिहार ३८ थोड़े हैं । इस लिये कटनी के स्वामी से बिन्ती करो कि वह अपनी कटनी में बनिहारों को भेजे ॥

दसवां पर्व्व ।

१ यीशु ने अपने बारह शिष्यों को अपने पास बुलाके उन्हें अशुद्ध भूतों पर अधिकार दिया कि उन्हें निकालें और हर एक रोग और हर एक व्याधि २ को चंगा करें । बारह प्रेरितों के नाम ये हैं पहिला शिमोन जो पितर कहावता

है और उस का भाई अन्द्रिय . जबदी का पुत्र याकूब और उस का भाई
३ योहन . फिलिप और बर्थलमई . थोमा और मत्ती कर उगाहनेहारा . अलफई का पुत्र याकूब और लिब्बई जो थद्दई
४ कहावता है . शिमोन कानानी और यिहूदा इस्करियोती जिस ने उसे
५ पकड़वाया । इन बारहों को यीशु ने यह आज्ञा देके भेजा कि अन्यदेशियों की ओर मत जाओ और शोमिरोनियों
६ के किसी नगर में मत पैठो । परन्तु इस्रायेल के घराने की खोई हुई भेड़ों
७ के पास जाओ । और जाते हुए प्रचार कर कहो कि स्वर्ग का राज्य निकट
८ आया है । रोगियों को चंगा करो कोढ़ियों को शुद्ध करो मृतकों को जिलाओ भूतों को निकालो . तुम ने
९ सेंतमेंत पाया है सेंतमेंत देओ । अपने पटुकों में न सोना न रूपा न ताम्बा
१० रखो । मार्ग के लिये न झोली न दो अंगे न जूते न लाठी लेओ क्योंकि बनिहार अपने भोजन के योग्य है ।
११ जिस किसी नगर अथवा गांव में तुम प्रवेश करो बूझो उस में कौन योग्य है और जब लों वहां से न निकलो तब
१२ लों उस के यहां रहो । घर में प्रवेश
१३ करते हुए उस को आशीस देओ । जो वह घर योग्य होय तो तुम्हारा कल्याण उस पर पहुंचे परन्तु जो वह योग्य न होय तो तुम्हारा कल्याण तुम्हारे पास
१४ फिर आवे । और जो कोई तुम्हें ग्रहण न करे और तुम्हारी बातें न सुने उस के घर से अथवा उस नगर से निकलते हुए अपने पांवों की धूल झाड़ डालो ।
१५ मैं तुम से सच कहता हूं कि बिचार के दिन में उस नगर की दशा से सदोम और अमोरा के देश की दशा सहने योग्य होगी ॥

१६ देखो मैं तुम्हें भेड़ों के समान हुंडारों के बीच में भेजता हूं सो सांपों की नाईं बुद्धिमान और कपोतों की नाईं सूधे
१७ होओ । परन्तु मनुष्यों से चौकस रहो क्योंकि वे तुम्हें पंचायतों में सोंपेंगे और अपनी सभाओं में तुम्हें कोड़े मारेंगे ।
१८ तुम मेरे लिये अध्यक्षों और राजाओं के आगे उन पर और अन्यदेशियों पर साक्षी
१९ होने के लिये पहुंचाये जाओगे । परन्तु जब वे तुम्हें सोंपें तब किस रीति से अथवा क्या कहोगे इस की चिन्ता मत करो क्योंकि जो कुछ तुम को कहना होगा सो उसी घड़ी तुम्हें दिया जायगा ।
२० बोलनेहारे तो तुम नहीं हो परन्तु तुम्हारे पिता का आत्मा तुम में बोलता है ।
२१ भाई भाई को और पिता पुत्र को बध किये जाने को सोंपेंगे और लड़के माता पिता के बिरुद्ध उठके उन्हें घात कर-
२२ वायेंगे । मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे पर जो अन्त लों
२३ स्थिर रहे सोई त्राण पावेगा । जब वे तुम्हें एक नगर में सतावें तब दूसरे में भाग जाओ . मैं तुम से सत्य कहता हूं तुम इस्रायेल के सब नगरों में नहीं फिर चुकोगे कि उतने में मनुष्य का पुत्र
२४ आवेगा । शिष्य गुरु से बड़ा नहीं है और
२५ न दास अपने स्वामी से । यही बहुत है कि शिष्य अपने गुरु के तुल्य और दास अपने स्वामी के तुल्य होवे . जो उन्हों ने घर के स्वामी का नाम बालजिबूल रखा है तो वे कितना अधिक करके उस के घरवालों का वैसा नाम रखेंगे ।
२६ सो तुम उन से मत डरो क्योंकि कुछ छिपा नहीं है जो प्रगट न किया जायगा और न कुछ गुप्त है जो जाना न जायगा ।
२७ जो मैं तुम से अंधियारे में कहता हूं उसे उंजियाले में कहो और जो तुम कानों में सुनते हो उसे कोठों पर से

२८ प्रचार करो । उन से मत डरो जो शरीर को मार डालते हैं पर आत्मा को मार डालने नहीं सकते हैं परन्तु उसी से डरो जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नाश कर सकता है । २९ क्या एक पैसे में दो गौरैया नहीं बिकतीं तौभी तुम्हारे पिता बिना उन में से ३० एक भी भूमि पर नहीं गिरेगी । तुम्हारे सिर के बाल भी सब गिने हुए हैं । ३१ इस लिये मत डरो तुम बहुत गौरैयाओं ३२ से अधिक मोल के हो । जो कोई मनुष्यों के आगे मुझे मान लेगा उसे मैं भी अपने स्वर्गबासी पिता के आगे ३३ मान लेऊंगा । परन्तु जो कोई मनुष्यों के आगे मुझ से मुकरे उस से मैं भी अपने स्वर्गबासी पिता के आगे मुक- ३४ रूंगा । मत समझो कि मैं पृथिवी पर मिलाप करवाने को आया हूं मैं मिलाप करवाने को नहीं परन्तु खड्ग चलवाने ३५ को आया हूं । मैं मनुष्य को उस के पिता से और बेटी को उस की मां से और पतोह को उस की सास से अलग ३६ करने आया हूं । मनुष्य के घर ही के ३७ लोग उस के बैरी होंगे । जो माता अथवा पिता को मुझ से अधिक प्रेम करता है सो मेरे योग्य नहीं और जो पुत्र अथवा पुत्री को मुझ से अधिक ३८ प्रेम करता है सो मेरे योग्य नहीं । और जो अपना क्रूश लेके मेरे पीछे नहीं ३९ आता है सो मेरे योग्य नहीं । जो अपना प्राण पावे सो उसे खोवेगा और जो मेरे लिये अपना प्राण खोवे सो उसे पावेगा । ४० जो तुम्हें ग्रहण करता है सो मुझे ग्रहण करता है और जो मुझे ग्रहण करता है सो मेरे भेजनेहारे को ग्रहण करता है । ४१ जो भविष्यद्वक्ता के नाम से भविष्यद्वक्ता को ग्रहण करे सो भविष्यद्वक्ता का फल पावेगा और जो धर्म्मी के नाम से धर्म्मी को ग्रहण करे सो धर्म्मी का फल पावेगा । ४२ जो कोई इन छोटों में से एक को शिष्य के नाम से केवल एक कटोरा ठंढा पानी पिलावे मैं तुम से सच कहता हूं वह किसी रीति से अपना फल न खोवेगा ॥

एग्यारहवां पर्ब्ब ।

१ जब यीशु अपने बारह शिष्यों को आज्ञा दे चुका तब उन के नगरों में शिक्षा और उपदेश करने को वहां से चला ॥

२ योहन ने बन्दीगृह में खीष्ट के कार्य्यों का समाचार सुनके अपने शिष्यों में से दो जनों को उस से यह कहने को भेजा । ३ कि जो आनेवाला था सो क्या आप ही हैं अथवा हम दूसरे की बाट जोहें । ४ यीशु ने उन्हें उत्तर दिया कि जो कुछ तुम सुनते और देखते हो सो जाके योहन से कहो । ५ कि अंधे देखते हैं और लंगड़े चलते हैं कोढ़ी शुद्ध किये जाते हैं और बहिरे सुनते हैं मृतक जिलाये जाते हैं और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है । ६ और जो कोई मेरे बिषय में ठोकर न खावे सो धन्य है ॥

७ जब वे चले जाते थे तब यीशु योहन के बिषय में लोगों से कहने लगा तुम जंगल में क्या देखने को निकले क्या पवन से हिलते हुए नरकट को । ८ फिर तुम क्या देखने को निकले क्या सूक्ष्म वस्त्र पहिने हुए मनुष्य को । देखो जो सूक्ष्म वस्त्र पहिनते हैं सो राजाओं के घरों में हैं । ९ फिर तुम क्या देखने को निकले क्या भविष्यद्वक्ता को । हां मैं तुम से कहता हूं एक मनुष्य को जो भविष्यद्वक्ता से भी अधिक है । १० क्योंकि यह वही है जिस के बिषय में लिखा है कि देख मैं अपने दूत को तेरे आगे भेजता हूं जो तेरे आगे तेरा

११ पन्थ बनावेगा। मैं तुम से सच कहता हूं कि जो स्त्रियों से जन्मे हैं उन में से योहन बपतिसमा देनेहारे से बड़ा कोई प्रगट नहीं हुआ है परन्तु जो स्वर्ग के राज्य में अति छोटा है सो उस से बड़ा १२ है। योहन् बपतिसमा देनेहारे के दिनों से अब लों स्वर्ग के राज्य के लिये बरियाई किई जाती है और बरियार लोग १३ उसे ले लेते हैं। क्योंकि योहन लों सारे भविष्यद्वक्ताओं ने और व्यवस्था ने १४ भविष्यद्वाणी कही। और जो तुम इस बात को ग्रहण करोगे तो जानो कि एलियाह जो आनेवाला था सो यही १५ है। जिस को सुनने के कान हों सो सुने॥

१६ मैं इस समय के लोगों की उपमा किस से देऊंगा। वे बालकों के समान हैं जो बाजारों में बैठके अपने संगियों १७ को पुकारते. और कहते हैं हम ने तुम्हारे लिये बांसली बजाई और तुम न नाचे हम ने तुम्हारे लिये बिलाप किया और तुम ने छाती न पीटी। १८ क्योंकि योहन न खाता न पीता आया और वे कहते हैं उसे भूत लगा है। १९ मनुष्य का पुत्र खाता और पीता आया है और वे कहते हैं देखो पेटू और मद्यप मनुष्य कर उगाहनेहारों और पापियों का मित्र. परन्तु ज्ञान अपने सन्तानों से निर्दोष ठहराया गया है॥

२० तब वह उन नगरों को जिन्हों में उस के अधिक आश्चर्य्य कर्म्म किये गये उलहना देने लगा क्योंकि उन्हों ने २१ पश्चात्ताप नहीं किया। हाय तू कोराजीन. हाय तू बैतसैदा. जो आश्चर्य्य कर्म्म तुम्हों में किये गये हैं सो यदि सोर और सीदोन में किये जाते तो बहुत दिन बीते होते कि वे टाट पहिनके और राख में बैठके पश्चात्ताप करते। २२ परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि बिचार के दिन में तुम्हारी दशा से सोर और सीदोन की दशा सहने योग्य होगी। २३ और हे कफर्नाहूम जो स्वर्ग लों ऊंचा किया गया है तू नरक लों नीचा किया जायगा. जो आश्चर्य्य कर्म्म तुझ में किये गये हैं सो यदि सदोम में किये जाते तो वह आज लों बना रहता। २४ परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि बिचार के दिन में तेरी दशा से सदोम के देश की दशा सहने योग्य होगी॥

२५ इस पर उस समय में यीशु ने कहा हे पिता स्वर्ग और पृथिवी के प्रभु मैं तेरा धन्य मानता हूं कि तू ने इन बातों को ज्ञानवानों और बुद्धिमानों से गुप्त रखा है और उन्हें बालकों पर प्रगट किया है। २६ हां हे पिता क्योंकि तेरी दृष्टि में यही अच्छा लगा। २७ मेरे पिता ने मुझे सब कुछ सौंपा है और पुत्र को कोई नहीं जानता है केवल पिता और पिता को कोई नहीं जानता है केवल पुत्र और वही जिस पर पुत्र उसे प्रगट किया चाहे॥

२८ हे सब लोगो जो परिश्रम करते और बोझ से दबे हो मेरे पास आओ मैं तुम्हें बिश्राम देऊंगा। २९ मेरा जूआ अपने ऊपर लेओ और मुझ से सीखो क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं और तुम अपने मनों में बिश्राम पाओगे। ३० क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है॥

बारहवां पर्ब्ब।

१ उस समय में यीशु बिश्राम के दिन खेतों में होके गया और उस के शिष्य भूखे हो बालें तोड़ने और खाने लगे। २ फरीशियों ने यह देखके उस से कहा देखिये जो काम बिश्राम के दिन में करना उचित नहीं है सो आप के शिष्य

३ करते हैं। उस ने उन से कहा क्या तुम ने नहीं पढ़ा है कि दाऊद ने जब वह और उस के संगी लोग भूखे हुए तब
४ क्या किया, उस ने क्योंकर ईश्वर के घर में जाके भेंट की रोटियां खाईं जिन्हें खाना न उस को न उस के संगियों को परन्तु केवल याजकों को उचित था।
५ अथवा क्या तुम ने व्यवस्था में नहीं पढ़ा है कि मन्दिर में याजक लोग विश्राम के दिनों में विश्रामवार की विधि को लंघन करते हैं और निर्दोष
६ हैं। परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि यहां
७ एक है जो मन्दिर से भी बड़ा है। जो तुम इस का अर्थ जानते कि मैं दया को चाहता हूं बलिदान को नहीं तो तुम निर्दोषों को दोषी न ठहराते।
८ मनुष्य का पुत्र विश्रामवार का भी प्रभु है॥

९ वहां से जाके वह उन की सभा के
१० घर में आया। और देखो एक मनुष्य था जिस का हाथ सूख गया था और उन्हों ने उस पर दोष लगाने के लिये उस से पूछा क्या विश्राम के दिनों में
११ चंगा करना उचित है। उस ने उन से कहा तुम में से कौन मनुष्य होगा कि उस का एक भेड़ हो और जो वह विश्राम के दिन गड़हे में गिरे तो उसे
१२ पकड़के न निकालेगा। फिर मनुष्य भेड़ से कितना बड़ा है, इस लिये विश्राम के दिनों में भलाई करना उचित है।
१३ तब उस ने उस मनुष्य से कहा अपना हाथ बढ़ा, उस ने उस को बढ़ाया और वह फिर दूसरे हाथ की नाईं भला चंगा हो गया॥

१४ तब फरीशियों ने बाहर जाके यीशु के विरुद्ध आपस में विचार किया इस
१५ लिये कि उसे नाश करें। यह जानके यीशु वहां से चला गया और बड़ी भीड़ उस के पीछे हो लिई और उस ने उन
१६ सभों को चंगा किया, और उन्हें दृढ़ आज्ञा दिई कि मुझे प्रगट मत करो,
१७ कि जो वचन यिशैयाह भविष्यद्वक्ता से कहा गया था सो पूरा होवे, कि देखो
१८ मेरा सेवक जिसे मैं ने चुना है और मेरा प्रिय जिस से मेरा मन अति प्रसन्न है, मैं अपना आत्मा उस पर रखूंगा और वह अन्यदेशियों को सत्य व्यवस्था
१९ बतावेगा। वह न झगड़ेगा न धूम मचावेगा न सड़कों में कोई उस का
२० शब्द सुनेगा। वह जब लों सत्य व्यवस्था को प्रबल न करे तब लों कुचले हुए नरकट को न तोड़ेगा और धूआं
२१ देनेहारी बत्ती को न बुझावेगा। और अन्यदेशी लोग उस के नाम पर आशा रखेंगे॥

२२ तब लोग एक भूतग्रस्त अंधे और गूंगे मनुष्य को उस पास लाये और उस ने उसे चंगा किया यहां लों कि वह जो अंधा औ गूंगा था देखने औ बोलने
२३ लगा। इस पर सब लोग विस्मित होके बोले यह क्या दाऊद का सन्तान
२४ है। परन्तु फरीशियों ने यह सुनके कहा यह तो बालजिबूल नाम भूतों के प्रधान की सहायता बिना भूतों को
२५ नहीं निकालता है। यीशु ने उन के मन की बातें जानके उन से कहा जिस जिस राज्य में फूट पड़ी है वह राज्य उजड़ जाता है और कोई नगर अथवा घराना जिस में फूट पड़ी है नहीं
२६ ठहरेगा। और यदि शैतान शैतान को निकालता है तो उस में फूट पड़ी है फिर उस का राज्य क्योंकर ठहरेगा।
२७ और जो मैं बालजिबूल की सहायता से भूतों को निकालता हूं तो तुम्हारे सन्तान किस की सहायता से निकालते हैं, इस लिये वे तुम्हारे न्याय करनेहारे

२८ होंगे। परन्तु जो मैं ईश्वर के आत्मा की सहायता से भूतों को निकालता हूं तो निस्सन्देह ईश्वर का राज्य तुम्हारे २९ पास पहुंच चुका है। यदि बलवन्त को कोई पहिले न बांधे तो क्योंकर उस बलवन्त के घर में पैठके उस की सामग्री लूट सके. परन्तु उसे बांधके ३० उस के घर को लूटेगा। जो मेरे संग नहीं है सो मेरे बिरुद्ध है और जो मेरे संग नहीं बटोरता सो बिथराता है। ३१ इस लिये मैं तुम से कहता हूं कि सब प्रकार का पाप और निन्दा मनुष्यों के लिये क्षमा किया जायगा परन्तु पवित्र आत्मा की निन्दा मनुष्यों के लिये ३२ नहीं क्षमा किई जायगी। जो कोई मनुष्य के पुत्र के बिरोध में बात कहे वह उस के लिये क्षमा किई जायगी परन्तु जो कोई पवित्र आत्मा के बिरोध में कुछ कहे वह उस के लिये न इस लोक में न परलोक में क्षमा किया जायगा॥

३३ यदि पेड़ को अच्छा कहो तो उस के फल को भी अच्छा कहो अथवा पेड़ को निकम्मा कहो तो उस के फल को भी निकम्मा कहो क्योंकि फलही से ३४ पेड़ पहचाना जाता है। हे सांपों के बंश तुम बुरे होके अच्छी बातें क्योंकर कह सकते हो क्योंकि जो मन में भरा ३५ है उसी को मुंह बोलता है। भला मनुष्य मन के भले भंडार से भली बातें निकालता है और बुरा मनुष्य बुरे भंडार ३६ से बुरी बातें निकालता है। मैं तुम से कहता हूं कि मनुष्य जो जो अनर्थ बातें कहें बिचार के दिन में हर एक ३७ बात का लेखा देंगे। क्योंकि तू अपनी बातों से निर्दोष अथवा अपनी बातों से दोषी ठहराया जायगा॥

३८ इस पर कितने अध्यापकों और फरीशियों ने कहा हे गुरु हम आप से एक चिन्ह देखने चाहते हैं। उस ने ३९ उन्हें उत्तर दिया कि इस समय के दुष्ट और ब्यभिचारी लोग चिन्ह ढूंढ़ते हैं परन्तु कोई चिन्ह उन को नहीं दिया जायगा केवल यूनस भविष्यद्वक्ता का ४० चिन्ह। जिस रीति से यूनस तीन दिन और तीन रात मछली के पेट में था उसी रीति से मनुष्य का पुत्र तीन दिन और तीन रात पृथिवी के भीतर रहेगा। ४१ निनवीय लोग बिचार के दिन में इस समय के लोगों के संग खड़े हो उन्हें दोषी ठहरावेंगे क्योंकि इन्हों ने यूनस का उपदेश सुनके पश्चात्ताप किया और देखो यहां एक है जो यूनस से भी बड़ा ४२ है। दक्षिण की रानी बिचार के दिन में इस समय के लोगों के संग उठके उन्हें दोषी ठहरावेगी क्योंकि वह सुलेमान का ज्ञान सुनने को पृथिवी के अन्त से आई और देखो यहां एक है जो सुलेमान से भी बड़ा है॥

४३ जब अशुद्ध भूत मनुष्य से निकल जाता है तब सूखे स्थानों में बिश्राम ४४ ढूंढ़ता फिरता पर नहीं पाता है। तब वह कहता है कि मैं अपने घर में जहां से निकला फिर जाऊंगा और आके उसे सूना झाड़ा बुहारा सुथरा पाता है। ४५ तब वह जाके अपने से अधिक दुष्ट सात और भूतों को अपने संग ले आता है और वे भीतर पैठके वहां बास करते हैं और उस मनुष्य की पिछली दशा पहिली से बुरी होती है. इस समय के दुष्ट लोगों की दशा ऐसी होगी॥

४६ यीशु लोगों से बात करता ही था कि देखो उस की माता और उस के भाई बाहर खड़े हुए उस से बोलने ४७ चाहते थे। तब किसी ने उस से कहा देखिये आप की माता और आप के

भाई बाहर खड़े हुए आप से बोलने
४८ चाहते हैं। उस ने कहनेहारे को उत्तर
दिया कि मेरी माता कौन है और मेरे
४९ भाई कौन हैं। और अपने शिष्यों की
ओर अपना हाथ बढ़ाके उस ने कहा
५० देखो मेरी माता और मेरे भाई। क्यों-
कि जो कोई मेरे स्वर्गबासी पिता की
इच्छा पर चले वही मेरा भाई और
बहिन और माता है॥

तेरहवां पर्ब्ब।

१ उस दिन यीशु घर से निकलके
२ समुद्र के तीर पर बैठा। और ऐसी बड़ी
भीड़ उस पास एकट्ठी हुई कि वह
नाव पर चढ़के बैठा और सब लोग
३ तीर पर खड़े रहे। तब उस ने उन से
दृष्टान्तों में बहुत सी बातें कहीं कि
देखो एक बोनेहारा बीज बोने को
४ निकला। बोने में कितने बीज मार्ग
की ओर गिरे और पंछियों ने आके उन्हें
५ चुग लिया। कितने पत्थरैली भूमि पर
गिरे जहां उन को बहुत मिट्टी न मिली
और बहुत मिट्टी न मिलने से वे बेग
६ उगे। परन्तु सूर्य्य उदय होने पर वे
झुलस गये और जड़ न पकड़ने से सूख
७ गये। कितने कांटों के बीच में गिरे
और कांटों ने बढ़के उन को दबा डाला।
८ परन्तु कितने अच्छी भूमि पर गिरे और
फल फले कोई सौ गुणे कोई साठ गुणे
९ कोई तीस गुणे। जिस को सुनने के
कान हों सो सुने॥

१० तब शिष्यों ने उस पास आ उस से
कहा आप उन से दृष्टान्तों में क्यों
११ बोलते हैं। उस ने उन को उत्तर दिया
कि तुम को स्वर्ग के राज्य के भेद
जानने का अधिकार दिया गया है
परन्तु उन को नहीं दिया गया है।
१२ क्योंकि जो कोई रखता है उस को और
दिया जायगा और उस को बहुत होगा
परन्तु जो कोई नहीं रखता है उस से
जो कुछ उस के पास है सो भी ले
लिया जायगा। इस लिये मैं उन से १३
दृष्टान्तों में बोलता हूं क्योंकि वे देखते
हुए नहीं देखते हैं और सुनते हुए नहीं
सुनते और न बूझते हैं। और यिशैयाह १४
की यह भविष्यद्वाणी उन में पूरी होती
है कि तुम सुनते हुए सुनोगे परन्तु नहीं
बूझोगे और देखते हुए देखोगे पर तुम्हें
न सूझेगा। क्योंकि इन लोगों का मन १५
मोटा हो गया है और वे कानों से ऊंचा
सुनते हैं और अपने नेत्र मूंद लिये हैं
ऐसा न हो कि वे कभी नेत्रों से देखें
और कानों से सुनें और मन से समझें
और फिर जावें और मैं उन्हें चंगा करूं।
परन्तु धन्य तुम्हारे नेत्र कि वे देखते १६
हैं और तुम्हारे कान कि वे सुनते हैं।
क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं कि जो १७
तुम देखते हो उस को बहुतेरे भविष्य-
द्वक्ताओं और धर्म्मियों ने देखने चाहा
पर न देखा और जो तुम सुनते हो उस
को सुनने चाहा पर न सुना॥

सो तुम बोनेहारे के दृष्टान्त का १८
अर्थ सुनो। जो कोई राज्य का बचन १९
सुनके नहीं बूझता है उस के मन में जो
कुछ बोया गया था सो वह दुष्ट आके
छीन लेता है. यह वही है जिस में
बीज मार्ग की ओर बोया गया। जिस २०
में बीज पत्थरैली भूमि पर बोया गया
सो वही है जो बचन को सुनके तुरन्त
आनन्द से ग्रहण करता है। परन्तु उस २१
में जड़ न बंधने से वह थोड़ी बेर
ठहरता है और बचन के कारण क्लेश
अथवा उपद्रव होने पर तुरन्त ठोकर
खाता है। जिस में बीज कांटों के २२
बीच में बोया गया सो वही है जो
बचन सुनता है पर इस संसार की
चिन्ता और धन की माया बचन को

बढ़ाती है और वह निष्फल होता है।
२३ पर जिस में बीज अच्छी भूमि पर बोया गया सो वही है जो बचन सुनके बूझता है और वह तो फल देता है और कोई सौ गुणे कोई साठ गुणे कोई तीस गुणे फलता है॥

२४ उस ने उन्हें दूसरा दृष्टान्त दिया कि स्वर्ग के राज्य की उपमा एक मनुष्य से दिई जाती है जिस ने अपने खेत में
२५ अच्छा बीज बोया। परन्तु जब लोग सोये थे तब उस का बैरी आके गेहूं के बीच में जंगली बीज बोके चला गया।
२६ जब अंकुर निकले और बालें लगीं तब
२७ जंगली दाने भी दिखाई दिये। इस पर गृहस्थ के दासों ने आ उस से कहा हे स्वामी क्या आप ने अपने खेत में अच्छा बीज न बोया. फिर जंगली
२८ दाने उस में कहां से आये। उस ने उन से कहा किसी बैरी ने यह किया है. दासों ने उस से कहा आप की इच्छा होय तो हम जाके उन को
२९ बटोर लेवें। उस ने कहा सो नहीं न हो कि जंगली दाने बटोरने में उन के
३० संग गेहूं भी उखाड़ लेओ। कटनी लों दोनों को एक संग बढ़ने देओ और कटनी के समय में मैं काटनेहारों से कहूंगा पहिले जंगली दाने बटोरके जलाने के लिये उन के गट्ठे बांधो परन्तु गेहूं को मेरे खत्ते में एकट्ठा करो॥

३१ उस ने उन्हें एक और दृष्टान्त दिया कि स्वर्ग का राज्य राई के एक दाने की नाईं है जिसे किसी मनुष्य ने लेके
३२ अपने खेत में बोया। वह तो सब बीजों से छोटा है परन्तु जब बढ़ जाता तब साग पात से बड़ा होता है और ऐसा पेड़ हो जाता है कि आकाश के पंछी आके उस की डालियों पर बसेरा करते हैं। उस ने एक और दृष्टान्त उन से
३३ कहा कि स्वर्ग का राज्य खमीर की नाईं है जिस को किसी स्त्री ने लेके तीन पसेरी आटे में छिपा रखा यहां लों कि सब खमीर हो गया॥

३४ यह सब बातें यीशु ने दृष्टान्तों में लोगों से कहीं और बिना दृष्टान्त से उन को कुछ न कहा. कि॰ जो बचन
३५ भविष्यद्वक्ता से कहा गया था कि मैं दृष्टान्तों में अपना मुंह खोलूंगा जो बातें जगत की उत्पत्ति से गुप्त रहीं उन्हें बर्णन करूंगा सो पूरा होवे॥

३६ तब यीशु लोगों को बिदा कर घर में आया और उस के शिष्यों ने उस पास आ कहा खेत के जंगली दाने के दृष्टान्त का अर्थ हमें समझाइये। उस ने उन
३७ को उत्तर दिया कि जो अच्छा बीज
३८ बोता है सो मनुष्य का पुत्र है। खेत तो संसार है अच्छा बीज राज्य के सन्तान हैं और जंगली बीज दुष्ट के सन्तान हैं।
३९ जिस बैरी ने उन को बोया सो शैतान है कटनी जगत का अन्त है और काटने-
४० हारे स्वर्गदूत हैं। सो जैसे जंगली दाने बटोरे जाते और आग से जलाये जाते हैं वैसा ही इस जगत के अन्त में होगा।
४१ मनुष्य का पुत्र अपने दूतों को भेजेगा और वे उस के राज्य में से सब ठोकर के कारणों को और कुकर्म्म करनेहारों
४२ को बटोर लेंगे. और उन्हें आग के कुंड में डालेंगे जहां रोना और दांत
४३ पीसना होगा। तब धर्म्मी लोग अपने पिता के राज्य में सूर्य्य की नाईं चमकेंगे. जिस को सुनने के कान हों सो सुने॥

४४ फिर स्वर्ग का राज्य खेत में छिपाये हुए धन के समान है जिसे किसी मनुष्य ने पाके गुप्त रखा और वह उस के आनन्द के कारण जाके अपना सब कुछ बेचके
४५ उस खेत को मोल लेता है। फिर स्वर्ग

का राज्य एक ब्योपारी के समान है जो ४६ अच्छे मोतियों को ढूंढ़ता था । उस ने जब एक बड़े मोल का मोती पाया तब जाके अपना सब कुछ बेचके उसे मोल लिया ॥

४७ फिर स्वर्ग का राज्य महाजाल के समान है जो समुद्र में डाला गया और हर प्रकार की मछलियों को घेर ४८ लिया । जब वह भर गया तब लोग उस को तीर पर खींच लाये और बैठके अच्छी अच्छी को पात्रों में बटोरा और निकम्मी निकम्मी को फेंक दिया । ४९ जगत के अन्त में वैसा ही होगा . स्वर्गदूत आके दुष्टों को धर्म्मियों के बीच ५० में से अलग करेंगे . और उन्हें आग के कुंड में डालेंगे जहां रोना और दांत पीसना होगा ॥

५१ यीशु ने उन से कहा क्या तुम ने यह सब बातें समझीं . वे उस से बोले ५२ हां प्रभु । उस ने उन से कहा इस लिये हर एक अध्यापक जिस ने स्वर्ग के राज्य की शिक्षा पाई है गृहस्थ के समान है जो अपने भंडार से नई और पुरानी वस्तु निकालता है ॥

५३ जब यीशु ये सब दृष्टान्त कह चुका ५४ तब वहां से चला गया । और उस ने अपने देश में आ उन की सभा के घर में उन्हें ऐसा उपदेश दिया कि वे अचंभित हो बोले इस को यह ज्ञान और ये आश्चर्य्य कर्म्म कहां से हुए । ५५ यह क्या बढ़ई का पुत्र नहीं है . क्या उस की माता का नाम मरियम और उस के भाइयों के नाम याकूब और योशी और शिमोन और यिहूदा नहीं हैं । ५६ और क्या उस की सब बहिनें हमारे यहां नहीं हैं . फिर उस को यह सब ५७ कहां से हुआ । सो उन्हों ने उस के विषय में ठोकर खाई परन्तु यीशु ने उन से कहा भविष्यद्वक्ता अपना देश और अपना घर छोड़के और कहीं निरादर नहीं होता है । ५८ और उस ने वहां उन के अविश्वास के कारण बहुत आश्चर्य्य कर्म्म नहीं किये ॥

चौदहवां पर्व्व ।

१ उस समय में चौथाई के राजा हेरोद २ ने यीशु की कीर्त्ति सुनी . और अपने सेवकों से कहा यह तो योहन बपतिसमा देनेहारा है वह मृतकों में से जी उठा है इस लिये आश्चर्य्य कर्म्म उस से प्रगट होते हैं । ३ क्योंकि हेरोद ने अपने भाई फिलिप की स्त्री हेरोदिया के कारण योहन को पकड़के उसे बांधा था और बन्दीगृह में डाला था । ४ क्योंकि योहन ने उस से कहा था कि इस स्त्री को रखना तुझ को उचित नहीं है । ५ और वह उसे मार डालने चाहता था पर लोगों से डरा क्योंकि वे उसे भविष्यद्वक्ता जानते थे । ६ परन्तु हेरोद के जन्मदिन की सभा में हेरोदिया की पुत्री ने सभा में नाचकर हेरोद को प्रसन्न किया । ७ इस लिये उस ने किरिया खाके अंगीकार किया कि जो कुछ तू मांगे मैं तुझे देऊंगा । ८ वह अपनी माता की उस्काई हुई बोली योहन बपतिसमा देनेहारे का सिर यहां थाल में मुझे दीजिये । ९ तब राजा उदास हुआ परन्तु उस किरिया के और अपने संग बैठनेहारों के कारण उस ने देने की आज्ञा किई । १० और उस ने भेजकर बन्दीगृह में योहन का सिर कटवाया । ११ और उस का सिर थाल में कन्या को पहुंचा दिया गया और वह उस को अपनी मां के पास ले गई । १२ तब उस के शिष्यों ने आके उस की लोथ को उठाके गाड़ा और आके यीशु से इस का समाचार कहा ॥

१३ जब यीशु ने यह सुना तब नाव पर चढ़के वहां से किसी जंगली स्थान में एकान्त में गया और लोग यह सुनके नगरों में से पैदल उस के पीछे हो लिये। १४ यीशु ने निकलके बहुत लोगों को देखा और उन पर दया कर उन के रोगियों को चंगा किया॥

१५ जब सांझ हुई तब उस के शिष्यों ने उस पास आ कहा यह तो जंगली स्थान है और बेला अब बीत गई है लोगों को बिदा कीजिये कि वे बस्तियों में जाके अपने लिये भोजन मोल लेवें। १६ यीशु ने उन से कहा उन्हें जाने का प्रयोजन नहीं तुम उन्हें खाने को देओ। १७ उन्हों ने उस से कहा यहां हमारे पास केवल पांच रोटी और दो मछली हैं। १८ उस ने कहा उन को यहां मेरे पास १९ लाओ। तब उस ने लोगों को घास पर बैठने की आज्ञा दिई और उन पांच रोटियों और दो मछलियों को ले स्वर्ग की ओर देखके धन्यबाद किया और रोटियां तोड़के शिष्यों को दिईं और २० शिष्यों ने लोगों को दिईं। सो सब खाके तृप्त हुए और जो टुकड़े बच रहे उन्हों ने उन की बारह टोकरी भरी उठाईं। २१ जिन्हों ने खाया सो स्त्रियों और बालकों को छोड़ पांच सहस्र पुरुषों के अटकल थे॥

२२ तब यीशु ने तुरन्त अपने शिष्यों को दृढ़ आज्ञा दिई कि जब लों मैं लोगों को बिदा करूं तुम नाव पर चढ़के २३ मेरे आगे उस पार जाओ। वह लोगों को बिदा कर प्रार्थना करने को एकान्त में पर्व्वत पर चढ़ गया और सांझ को २४ वहां अकेला था। उस समय नाव समुद्र के बीच में लहरों से उछल रही थी २५ क्योंकि बयार सन्मुख की थी। रात के चौथे पहर में यीशु समुद्र पर चलते २६ हुए उन के पास गया। शिष्य लोग उस को समुद्र पर चलते देखके घबरा गये और बोले यह प्रेत है और डर के मारे चिल्लाये। २७ यीशु तुरन्त उन से बात करने लगा और कहा ढाढ़स बांधो मैं हूं डरो मत। २८ तब पितर ने उस को उत्तर दिया कि हे प्रभु यदि आप हो हैं तो मुझे अपने पास जल पर आने की आज्ञा दीजिये। २९ उस ने कहा आ, तब पितर नाव पर से उतरके यीशु पास जाने को जल पर चलने लगा। ३० परन्तु बयार को प्रचंड देखके वह डर गया और जब डूबने लगा तब चिल्लाके बोला हे प्रभु मुझे बचाइये। ३१ यीशु ने तुरन्त हाथ बढ़ाके उस को थांभ लिया और उस से कहा हे अल्प-बिश्वासी क्यों सन्देह किया। ३२ जब वे नाव पर चढ़े तब बयार थम गई। ३३ इस पर जो लोग नाव पर थे सो आके यीशु को प्रणाम करके बोले सचमुच आप ईश्वर के पुत्र हैं॥

३४ वे पार उतरके गिनेसरत देश में पहुंचे। ३५ और वहां के लोगों ने यीशु को चीन्हके आसपास के सारे देश में कहला भेजा और सब रोगियों को उस पास लाये, ३६ और उस से बिन्ती किई कि वे केवल उस के बस्त्र के आंचल को छूवें और जितनों ने छूआ सब चंगे किये गये॥

पन्द्रहवां पर्व्व।

१ तब यिरूशलीम के कितने अध्यापकों और फरीशियों ने यीशु पास आ कहा, २ आप के शिष्य लोग क्यों प्राचीनों के व्यवहार लंघन करते हैं क्योंकि जब वे रोटी खाते तब अपने हाथ नहीं धोते हैं। ३ उस ने उन को उत्तर दिया कि तुम भी क्यों अपने व्यवहारों के कारण ईश्वर की आज्ञा को लंघन करते हो। ४ क्योंकि ईश्वर ने आज्ञा

किई कि अपने माता पिता का आदर कर और जो कोई माता अथवा पिता की निन्दा करे सो मार डाला जाय । ५ परन्तु तुम कहते हो यदि कोई अपने माता अथवा पिता से कहे कि जो कुछ तुझ को मुझ से लाभ होता सो संकल्प किया गया है तो उस को अपनी माता अथवा अपने पिता का आदर करने का और कुछ प्रयोजन ६ नहीं । सो तुम ने अपने व्यवहारों के कारण ईश्वर की आज्ञा को उठा ७ दिया है । हे कपटियो यिशैयाह ने तुम्हारे विषय में यह भविष्यद्वाणी अच्छी ८ कही, कि ये लोग अपने मुंह से मेरे निकट आते हैं और होंठों से मेरा आदर करते हैं परन्तु उन का मन मुझ ९ से दूर रहता है । पर वे वृथा मेरी उपासना करते हैं क्योंकि मनुष्यों की आज्ञाओं को धर्म्मोपदेश ठहराके सिखाते हैं ॥

१० और उस ने लोगों को अपने पास बुलाके उन से कहा सुनो और बूझो । ११ जो मुंह में समाता है सो मनुष्य को अपवित्र नहीं करता है परन्तु जो मुंह से निकलता है सोई मनुष्य को १२ अपवित्र करता है । तब उस के शिष्यों ने आ उस से कहा क्या आप जानते हैं कि फरीशियों ने यह बचन १३ सुनके ठोकर खाई । उस ने उत्तर दिया कि हर एक गाछ जो मेरे स्वर्गीय पिता ने नहीं लगाया है उखाड़ा १४ जायगा । उन को रहने दो, वे अंधों के अंधे अगुवे हैं और अंधा यदि अंधे को मार्ग बतावे तो दोनों गड़हे में गिर १५ पड़ेंगे । तब पितर ने उस को उत्तर दिया कि इस दृष्टान्त का अर्थ हमें १६ समझाइये । यीशु ने कहा तुम भी क्या १७ अब लों निर्बुद्धि हो । क्या तुम अब लों नहीं बूझते हो कि जो कुछ मुंह में समाता सो पेट में जाता है और संडास १८ में फेंका जाता है । परन्तु जो कुछ मुंह से निकलता है सो मन से बाहर आता है और वही मनुष्य को अपवित्र करता १९ है । क्योंकि मन से नाना भांति की कुचिन्ता नरहिंसा परस्त्रीगमन व्यभिचार चोरी झूठी साक्षी और ईश्वर की २० निन्दा निकलती हैं । येही हैं जो मनुष्य को अपवित्र करती हैं परन्तु बिन धोये हाथों से भोजन करना मनुष्य को अपवित्र नहीं करता है ॥

२१ यीशु वहां से निकलके सोर और २२ सीदोन के सिवानों में गया । और देखो उन सिवानों में की एक कनानी स्त्री ने निकलकर पुकारके उस से कहा हे प्रभु दाऊद के सन्तान मुझ पर दया कीजिये मेरी बेटी भूत से अति पीड़ित २३ है । परन्तु उस ने उस को कुछ उत्तर न दिया और उस के शिष्यों ने आ उस से बिन्ती कर कहा इस को बिदा कीजिये क्योंकि वह हमारे पीछे पीछे २४ पुकारती है । उस ने उत्तर दिया कि इस्रायेल के घराने की खोई हुई भेड़ों को छोड़ मैं किसी के पास नहीं भेजा २५ गया हूं । तब स्त्री ने आ उस को प्रणाम कर कहा हे प्रभु मेरा उपकार २६ कीजिये । उस ने उत्तर दिया कि लड़कों की रोटी लेके कुत्तों के आगे २७ फेंकना अच्छा नहीं है । स्त्री ने कहा सच हे प्रभु तौभी कुत्ते जो चूरचार उन के स्वामियों की मेज से गिरते हैं सो २८ खाते हैं । तब यीशु ने उस को उत्तर दिया कि हे नारी तेरा बिश्वास बड़ा है जैसा तू चाहती है वैसाही तुझे होय, और उस की बेटी उसी घड़ी से चंगी हुई ॥

२९ यीशु वहां से जाके गालील के

समुद्र के निकट आया और पर्ब्बत पर ३० चढ़के वहां बैठा। और बड़ी बड़ी भीड़ अपने संग लंगड़ों अंधों गूंगों टुंडों और बहुत से औरों को लेके यीशु पास आई और उन्हें उस के चरणों पर डाला और ३१ उस ने उन्हें चंगा किया. यहां लों कि जब लोगों ने देखा कि गूंगे बोलते हैं टुंडे चंगे होते हैं लंगड़े चलते हैं और अंधे देखते हैं तब अचंभा करके इस्रायेल के ईश्वर की स्तुति किई॥

३२ तब यीशु ने अपने शिष्यों को अपने पास बुलाके कहा मुझे इन लोगों पर दया आती है क्योंकि वे तीन दिन से मेरे संग रहे हैं और उन के पास कुछ खाने को नहीं है और मैं उन को भोजन बिना बिदा करने नहीं चाहता हूं न हो कि मार्ग में उन का बल घट जाय। ३३ उस के शिष्यों ने उस से कहा हमें इस जंगल में कहां से इतनी रोटी मिलेगी कि हम इतनी बड़ी भीड़ को तृप्त ३४ करें। यीशु ने उन से कहा तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं. उन्हों ने कहा सात और थोड़ी सी छोटी मछलियां। ३५ तब उस ने लोगों को भूमि पर बैठने ३६ की आज्ञा दिई। और उस ने उन सात रोटियों को और मछलियों को लेके धन्य मानके तोड़ा और अपने शिष्यों को दिया और शिष्यों ने लोगों को ३७ दिया। सो सब खाके तृप्त हुए और जो टुकड़े बच रहे उन्हों ने उन के ३८ सात टोकरे भरे उठाये। जिन्हों ने खाया सो स्त्रियों और बालकों को छोड़ ३९ चार सहस्र पुरुष थे। तब यीशु लोगों को बिदा कर नाव पर चढ़के मगदला नगर के सिवानों में आया॥

सोलहवां पर्ब्ब

१ तब फरीशियों और सदूकियों ने यीशु पास आ उस की परीक्षा करने को उस से चाहा कि हमें आकाश का २ एक चिन्ह दिखाइये। उस ने उन को उत्तर दिया सांझ को तुम कहते हो कि फरछा होगा क्योंकि आकाश लाल है और भोर को कहते हो कि आज आंधी आवेगी क्योंकि आकाश लाल ३ और धूमला है। हे कपटियो तुम आकाश का रूप बूझ सकते हो क्या तुम समयों के चिन्ह नहीं बूझ सकते ४ हो। इस समय के दुष्ट और व्यभिचारी लोग चिन्ह ढूंढ़ते हैं परन्तु कोई चिन्ह उन को नहीं दिया जायगा केवल यूनस भविष्यद्वक्ता का चिन्ह. तब वह उन्हें छोड़के चला गया॥

५ उस के शिष्य लोग उस पार पहुंचके ६ रोटी लेना भूल गये। और यीशु ने उन से कहा देखो फरीशियों और ७ सदूकियों के खमीर से चौकस रहो। वे आपस में बिचार करने लगे यह इस लिये है कि हम ने रोटी न लिई। ८ यह जानके यीशु ने उन से कहा हे अल्पबिश्वासियो तुम रोटी न लेने के कारण क्यों आपस में बिचार करते ९ हो। क्या तुम अब लों नहीं बूझते हो और उन पांच सहस्र की पांच रोटी नहीं स्मरण करते हो और कितनी १० टोकरियां तुम ने उठाईं। और न उन चार सहस्र की सात रोटी और कितने ११ टोकरे तुम ने उठाये। तुम क्यों नहीं बूझते हो कि मैं ने तुम को फरीशियों और सदूकियों के खमीर से चौकस रहने को जो कहा सो रोटी के बिषय १२ में नहीं कहा। तब उन्हों ने बूझा कि उस ने रोटी के खमीर से नहीं परन्तु फरीशियों और सदूकियों की शिक्षा से चौकस रहने को कहा॥

१३ यीशु ने कैसरिया फिलिपी के सिवानों में आके अपने शिष्यों से पूछा कि

लोग क्या कहते हैं मैं मनुष्य का पुत्र १४ कौन हूं । उन्हों ने कहा कितने तो आप को योहन बपतिस्मा देनहारा कहते हैं कितने एलियाह कहते हैं और कितने यिरमियाह अथवा भविष्य- १५ द्वक्ताओं में से एक कहते हैं । उस ने उन से कहा तुम क्या कहते हो मैं कौन १६ हूं । शिमोन पितर ने उत्तर दिया कि आप जीवते ईश्वर के पुत्र

१७ यीशु ने उस को उत्तर दिया कि हे यूनस के पुत्र शिमोन तू धन्य है क्योंकि मांस औ लोहू ने नहीं परन्तु मेरे स्वर्ग- बासी पिता ने यह बात तुझ पर प्रगट १८ किई । और मैं भी तुझ से कहता हूं कि तू पितर है और मैं इसी पत्थर पर अपनी मंडली बनाऊंगा और परलोक १९ के फाटक उस पर प्रबल न होंगे । मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियां देऊंगा और जो कुछ तू पृथिवी पर बांधेगा सो स्वर्ग में बंधा हुआ होगा और जो कुछ तू पृथिवी पर खोलेगा सो स्वर्ग २० में खुला हुआ होगा । तब उस ने अपने शिष्यों को चिताया कि किसी से मत कहो कि मैं यीशु जो हूं सो ख्रीष्ट हूं ॥

२१ उस समय से यीशु अपने शिष्यों को बताने लगा कि मुझे अवश्य है कि यिरूशलीम में जाऊं और प्राचीनों और प्रधान याजकों और अध्यापकों से बहुत दुःख उठाऊं और मार डाला २२ जाऊं और तीसरे दिन जी उठूं । तब पितर उस लेके उस को डांटके कहने लगा कि हे प्रभु आप पर दया रहे यह २३ तो आप को कभी न होगा । उस ने मुंह फेरके पितर से कहा हे शैतान मेरे साम्हने से दूर हो तू मेरे लिये ठोकर है क्योंकि तुझे ईश्वर की बातों का नहीं परन्तु मनुष्यों की बातों का सोच रहता है ॥

२४ तब यीशु ने अपने शिष्यों से कहा यदि कोई मेरे पीछे आने चाहे तो अपनी इच्छा को मारे और अपना क्रूश २५ उठाके मेरे पीछे आवे । क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाने चाहे सो उसे खोवेगा परन्तु जो कोई मेरे लिये अपना प्राण २६ खोवे सो उसे पावेगा । यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपना प्राण गंवावे तो उस को क्या लाभ होगा . अथवा मनुष्य अपने प्राण की सन्ती क्या २७ देगा । मनुष्य का पुत्र अपने दूतों के संग अपने पिता के ऐश्वर्य्य में आवेगा और तब वह हर एक मनुष्य को उस २८ के कार्य्य के अनुसार फल देगा । मैं तुम से सच कहता हूं कि जो यहां खड़े हैं उन में से कोई कोई हैं कि जब लों मनुष्य के पुत्र को उस के राज्य में आते न देखें तब लों मृत्यु का स्वाद न चीखेंगे ॥

सत्रहवां पर्ब्ब

१ छः दिन के पीछे यीशु पितर और याकूब और उस के भाई योहन को लेके उन्हें किसी ऊंचे पर्ब्बत पर एकान्त २ में ले गया । और उन के आगे उस का रूप बदल गया और उस का मुंह सूर्य्य के तुल्य चमका और उस का बस्त्र ३ ज्योति की नाईं उजला हुआ । और देखो मूसा और एलियाह उस के संग ४ बात करते हुए उन को दिखाई दिये । इस पर पितर ने यीशु से कहा हे प्रभु हमारा यहां रहना अच्छा है . यदि आप की इच्छा होय तो हम तीन डेरे यहां बनावें एक आप के लिये एक मूसा के लिये और एक एलियाह के ५ लिये । वह बोलता ही था कि देखो एक ज्योतिमय मेघ ने उन्हें छा लिया और देखो उस मेघ से यह शब्द हुआ कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिस से मैं

६ अति प्रसन्न हूं उस को सुनो । शिष्य लोग यह सुनके औंधे मुंह गिरे और ७ निपट डर गये । यीशु ने उन पास आके उन्हें छूके कहा उठो डरो मत । ८ तब उन्हों ने अपनी आंखें उठाके यीशु को छोड़के और किसी को न ९ देखा । जब वे उस पर्ब्बत से उतरते थे तब यीशु ने उन को आज्ञा दिई कि जब लों मनुष्य का पुत्र मृतकों में से नहीं जी उठे तब लों इस दर्शन का समाचार किसी से मत कहो ॥

१० और उस के शिष्यों ने उस से पूछा फिर अध्यापक लोग क्यों कहते हैं कि एलियाह का पहिले आना होगा । ११ यीशु ने उन को उत्तर दिया कि सच है एलियाह पहिले आके सब कुछ १२ सुधारेगा । परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि एलियाह आ चुका है और उन्हों ने उस को नहीं चीन्हा परन्तु उस से जो कुछ चाहा सो किया . इस रीति से मनुष्य का पुत्र भी उन से दुःख १३ पावेगा । तब शिष्यों ने बूझा कि वह योहन बपतिसमा देनेहारे के विषय में हम से कहता है ॥

१४ जब वे लोगों के निकट पहुंचे तब किसी मनुष्य ने यीशु पास आ घुटने १५ टेकके उस से कहा . हे प्रभु मेरे पुत्र पर दया कीजिये वह मिर्गी के रोग से अति पीड़ित है कि बार बार आग में और बार बार पानी में गिर पड़ता १६ है । और मैं उस को आप के शिष्यों के पास लाया परन्तु वे उसे चंगा नहीं १७ कर सके । यीशु ने उत्तर दिया कि हे अबिश्वासी और हठीले लोगो मैं कब लों तुम्हारे संग रहूंगा और कब लों तुम्हारी सहूंगा . उस को यहां मेरे पास १८ लाओ । तब यीशु ने भूत को डांटा और वह उस में से निकला और लड़का उसी घड़ी से चंगा हुआ । तब शिष्यों ने निराले १९ में यीशु पास आ कहा हम उस भूत को क्यों नहीं निकाल सके । यीशु ने उन २० से कहा तुम्हारे अबिश्वास के कारण क्योंकि मैं तुम से सत्य कहता हूं यदि तुम को राई के एक दाने के तुल्य बिश्वास होय तो तुम इस पहाड़ से जो कहोगे कि यहां से वहां चला जा वह जायगा और कोई काम तुम से असाध्य नहीं होगा । तौभी जो इस २१ प्रकार के हैं सो प्रार्थना और उपवास बिना और किसी उपाय से निकाले नहीं जाते हैं ॥

जब वे गालील में फिरते थे तब यीशु २२ ने उन से कहा मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जायगा । वे उस को २३ मार डालेंगे और वह तीसरे दिन जी उठेगा . इस पर वे बहुत उदास हुए ॥

जब वे कफर्नाहुम में पहुंचे तब २४ मन्दिर का कर लेनेहारे पितर के पास आके बोले क्या तुम्हारा गुरु मन्दिर का कर नहीं देता है . उस ने कहा हां देता है । जब पितर घर में आया २५ तब यीशु ने उस के बोलने के पहिले उस से कहा हे शिमोन तू क्या समझता है . पृथिवी के राजा लोग कर अथवा खिराज किन से लेते हैं अपने सन्तानों से अथवा परायों से । पितर ने उस से २६ कहा परायों से . यीशु ने उस से कहा तब तो सन्तान बचे हुए हैं । तौभी २७ जिस्तें हम उन को ठोकर न खिलावें इस लिये तू समुद्र के तीर पर जाके बंसी डाल और जो मछली पहिले निकले उस को ले . तू उस का मुंह खोलने से एक रुपैया पावेगा उसी को लेके मेरे और अपने लिये उन्हें दे ॥

अठारहवां पर्ब्ब ।

उसी घड़ी शिष्यों ने यीशु पास आ १

कहा स्वर्ग के राज्य में बड़ा कौन है। २ यीशु ने एक बालक को अपने पास बुलाके उन के बीच में खड़ा किया . ३ और कहा मैं तुम्हें सच कहता हूं जो तुम मन न फिराओ और बालकों के समान न हो जाओ तो स्वर्ग के राज्य में ४ प्रवेश करने न पाओगे । जो कोई अपने को इस बालक के समान दीन करे ५ सोई स्वर्ग के राज्य में बड़ा है । और जो कोई मेरे नाम से एक ऐसे बालक को ग्रहण करे वह मुझे ग्रहण करता ६ है । परन्तु जो कोई इन छोटों में से जो मुझ पर विश्वास करते हैं एक को ठोकर खिलावे उस के लिये भला होता कि चक्की का पाट उस के गले में लटकाया जाता और वह समुद्र के गहिराव में डुबाया जाता ॥

७ ठोकरों के कारण हाय संसार . ठोकरें अवश्य लगेंगीं परन्तु हाय वह मनुष्य जिस के द्वारा से ठोकर लगती ८ है । जो तेरा हाथ अथवा तेरा पांव तुझे ठोकर खिलावे तो उसे काटके फेंक दे . लंगड़ा अथवा टुंडा होके जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है कि दो हाथ अथवा दो पांव रहते हुए तू अनन्त आग में डाला ९ जाय । और जो तेरी आंख तुझे ठोकर खिलावे तो उसे निकालके फेंक दे . काना होके जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है कि दो आंखें रहते हुए तू नरक की आग में डाला जाय । १० देखो कि तुम इन छोटों में से एक को तुच्छ न जानो क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि स्वर्ग में उन के दूत मेरे स्वर्गवासी पिता का मुंह नित्य देखते हैं ॥

११ मनुष्य का पुत्र खोये हुए को बचाने १२ आया है । तुम क्या समझते हो . जो किसी मनुष्य की सौ भेड़ होवें और उन में से एक भटक जाय तो क्या वह निन्नानवे को पहाड़ों पर छोड़के उस भटकी हुई को नहीं जाके ढूंढ़ता है । १३ और मैं तुम से सत्य कहता हूं यदि ऐसा हो कि वह उस को पावे तो जो निन्नानवे नहीं भटक गईं थीं उन से अधिक वह उस भेड़ के लिये आनन्द करता है । १४ ऐसा ही तुम्हारे स्वर्गवासी पिता की इच्छा नहीं है कि इन छोटों में से एक भी नाश होवे ॥

१५ यदि तेरा भाई तेरा अपराध करे तो जाके उस के संग एकान्त में उस को समझा दे . जो वह तेरी सुने तो तू ने अपने भाई को पाया है । १६ परन्तु जो वह न सुने तो एक अथवा दो जन को अपने संग ले जा कि दो अथवा तीन साक्षियों के मुंह से हर एक बात ठहराई जाय । १७ जो वह उन की न माने तो मंडली से कह दे परन्तु जो वह मंडली की भी न माने तो तेरे लेखे देवपूजक और कर उगाहनेहारा सा होय । १८ मैं तुम से सच कहता हूं जो कुछ तुम पृथिवी पर बांधोगे सो स्वर्ग में बंधा हुआ होगा और जो कुछ तुम पृथिवी पर खोलोगे सो स्वर्ग में खुला हुआ होगा । १९ फिर मैं तुम से कहता हूं यदि पृथिवी पर तुम में से दो मनुष्य जो कुछ मांगें उस बात के विषय में एक मन होवें तो वह उन के लिये मेरे स्वर्गवासी पिता की ओर से हो जायगी । २० क्योंकि जहां दो अथवा तीन मेरे नाम पर एकट्ठे होवें तहां मैं उन के बीच में हूं ॥

२१ तब पितर ने उस पास आ कहा हे प्रभु मेरा भाई कै बेर मेरा अपराध करे और मैं उस को क्षमा करूं . क्या सात बेर लों । २२ यीशु ने उस से कहा मैं तुझ से नहीं कहता हूं कि सात बेर लों परन्तु सत्तर गुणे सात बेर लों । २३ इस

लिये स्वर्ग के राज्य की उपमा एक राजा से दिई जाती है जिस ने अपने २४ दासों से लेखा लेने चाहा। जब वह लेखा लेने लगा तब एक जन जो दस सहस्र तोड़े धारता था उस के पास २५ पहुंचाया गया। जब कि भर देने को उस पास कुछ न था उस के स्वामी ने आज्ञा किई कि वह और उस की स्त्री और लड़के बाले और जो कुछ उस का था सब बेचा जाय और वह ऋण २६ भर दिया जाय। इस पर उस दास ने दंडवत कर उसे प्रणाम किया और कहा हे प्रभु मेरे बिषय में धीरज धरिये मैं २७ आप को सब भर देऊंगा। तब उस दास के स्वामी ने दया कर उसे छोड़ दिया और उस का ऋण क्षमा किया। २८ परन्तु उसी दास ने बाहर निकलके अपने संगी दासों में से एक को पाया जो उस की एक सौ सुकी धारता था और उस को पकड़के उस का गला दाबके कहा जो कुछ तू धारता है २९ मुझे दे। इस पर उस के संगी दास ने उस के पांवों पड़के उस से बिन्ती कर कहा मेरे बिषय में धीरज धरिये मैं ३० आप को सब भर देऊंगा। उस ने न माना परन्तु जाके उसे बन्दीगृह में डाला कि जब लों ऋण को भर न देवे तब लों ३१ वहीं रहे। उस के संगी दास लोग जो हुआ था सो देखके बहुत उदास हुए और जाके सब कुछ जो हुआ था अपने स्वामी ३२ को बताया। तब उस दास के स्वामी ने उस को अपने पास बुलाके उस से कहा हे दुष्ट दास तू ने जो मुझ से बिन्ती किई तो मैं ने तुझे वह सब ३३ ऋण क्षमा किया। सो जैसा मैं ने तुझ पर दया किई वैसा क्या तुझे भी अपने संगी दास पर दया करना उचित न ३४ था। और उस के स्वामी ने क्रोध कर उसे दंडकारकों के हाथ सौंप दिया कि जब लों वह उस का सब ऋण भर न देवे तब लों उन के हाथ में रहे। ३५ यूंही यदि तुम में से हर एक अपने अपने मन से अपने भाई के अपराध क्षमा न करे तो मेरा स्वर्गबासी पिता भी तुम से वैसा करेगा॥

उनीसवां पर्ब्ब।

१ अब यीशु यह बातें कह चुका तब गालील से जाके यर्दन के उस पार २ यिहूदिया के सिवानों में आया। और बड़ी बड़ी भीड़ उस के पीछे हो लिईं और उस ने उन्हें वहां चंगा किया। ३ तब फरीशियों ने उस पास आ उस की परीक्षा करने को उस से कहा क्या किसी कारण से अपनी स्त्री को त्यागना ४ मनुष्य को उचित है। उस ने उन को उत्तर दिया क्या तुम ने नहीं पढ़ा है कि सृजनहार ने आरंभ से नर और नारी करके मनुष्यों को उत्पन्न किया. ५ और कहा इस हेतु से मनुष्य अपने माता पिता को छोड़के अपनी स्त्री से मिला रहेगा और वे दोनों एक तन ६ होंगे। सो वे आगे दो नहीं पर एक तन हैं इस लिये जो कुछ ईश्वर ने जोड़ा है उस को मनुष्य अलग न करे। ७ उन्हों ने उस से कहा फिर मूसा ने क्यों त्यागपत्र देने और स्त्री को त्यागने की ८ आज्ञा किई। उस ने उन से कहा मूसा ने तुम्हारे मन की कठोरता के कारण तुम को अपनी अपनी स्त्रियां त्यागने दिया परन्तु आरंभ से ऐसा नहीं था। ९ और मैं तुम से कहता हूं कि जो कोई व्यभिचार को छोड़ और किसी हेतु से अपनी स्त्री को त्यागके दूसरी से बिवाह करे सो परस्त्रीगमन करता है और जो उस त्यागी हुई से बिवाह करे सो परस्त्रीगमन करता है। १० उस के

शिष्यों ने उस से कहा यदि पुरुष को स्त्री के संग इस प्रकार का सम्बन्ध है
११ तो बिवाह करना अच्छा नहीं है। उस ने उन से कहा सब लोग यह बचन ग्रहण नहीं कर सकते हैं केवल वे जिन
१२ को दिया गया है। क्योंकि कोई कोई नपुंसक हैं जो माता के गर्भ से ऐसे ही जन्मे और कोई कोई नपुंसक हैं जो मनुष्यों से नपुंसक किये गये हैं और कोई कोई नपुंसक हैं जिन्हों ने स्वर्ग के राज्य के लिये अपने को नपुंसक किये हैं. जो इस को ग्रहण कर सके सो ग्रहण करे॥

१३ तब लोग कितने बालकों को यीशु पास लाये कि वह उन पर हाथ रखके प्रार्थना करे परन्तु शिष्यों ने उन्हें
१४ डांटा। यीशु ने कहा बालकों को मेरे पास आने दो और उन्हें मत बर्जो क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों का है।
१५ और वह उन पर हाथ रखके वहां से चला गया॥

१६ और देखो एक मनुष्य ने उस पास आ उस से कहा हे उत्तम गुरु अनन्त जीवन पाने को मैं कौन सा उत्तम काम
१७ करूं। उस ने उस से कहा तू मुझे उत्तम क्यों कहता है. कोई उत्तम नहीं है केवल एक अर्थात ईश्वर. परन्तु जो तू जीवन में प्रवेश किया चाहता
१८ है तो आज्ञाओं को पालन कर। उस ने उस से कहा कौन कौन आज्ञा. यीशु ने कहा यह कि नरहिंसा मत कर परस्त्रीगमन मत कर चोरी मत कर
१९ झूठी साक्षी मत दे. अपने माता पिता का आदर कर और अपने पड़ोसी को
२० अपने समान प्रेम कर। उस जवान ने उस से कहा इन सभों को मैं ने अपने लड़कपन से पालन किया है मुझे अब
२१ क्या घटी है। यीशु ने उस से कहा जो तू सिद्ध हुआ चाहता है तो जा अपनी सम्पत्ति बेचके कंगालों को दे और तू स्वर्ग में धन पावेगा और आ
२२ मेरे पीछे हो ले। यह जवान यह बात सुनके उदास चला गया क्योंकि उस को बहुत धन था॥

२३ तब यीशु ने अपने शिष्यों से कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि धनवान को स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना
२४ कठिन होगा। फिर भी मैं तुम से कहता हूं कि ईश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के
२५ नाके में से जाना सहज है। यह सुनके उस के शिष्यों ने निपट अचंभित हो कहा तब तो किस का त्राण हो सकता
२६ है। यीशु ने उन पर दृष्टि कर उन से कहा मनुष्यों से यह अन्होना है परन्तु ईश्वर से सब कुछ हो सकता है॥

२७ तब पितर ने उस को उत्तर दिया कि देखिये हम लोग सब कुछ छोड़के आप के पीछे हो लिये हैं सो हमें क्या
२८ मिलेगा। यीशु ने उन से कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि नई सृष्टि में जब मनुष्य का पुत्र अपने ऐश्वर्य्य के सिंहासन पर बैठेगा तब तुम भी जो मेरे पीछे हो लिये हो बारह सिंहासनों पर बैठके इस्रायेल के बारह कुलों का न्याय
२९ करोगे। और जिस किसी ने मेरे नाम के लिये घरों वा भाइयों वा बहिनों वा पिता वा माता वा स्त्री वा लड़कों वा भूमि को त्यागा है सो सौ गुणा पावेगा और अनन्त जीवन का अधिकारी
३० होगा। परन्तु बहुतेरे जो अगले हैं पिछले होंगे और जो पिछले हैं अगले होंगे॥

बीसवां पर्व्व।

१ स्वर्ग का राज्य किसी गृहस्थ के समान है जो भोर को निकला कि अपने

दाख की बारी में बनिहारों को लगावे। २ और उस ने बनिहारों के साथ दिन भर की एक एक सूकी मजूरी ठहराके उन्हें ३ अपने दाख की बारी में भेजा। अब पहर एक दिन चढ़ा तब उस ने बाहर जाके औरों को चौक में बेकार खड़े ४ देखा. और उन से कहा तुम भी दाख की बारी में जाओ और जो कुछ उचित होय मैं तुम्हें देऊंगा. सो वे भी गये। ५ फिर उस ने दूसरे और तीसरे पहर के निकट बाहर जाके वैसा ही किया। ६ घड़ी एक दिन रहते उस ने बाहर जाके औरों को बेकार खड़े पाया और उन से कहा तुम क्यों यहां दिन भर बेकार ७ खड़े हो। उन्हों ने उस से कहा किसी ने हम को काम में नहीं लगाया है. उस ने उन्हें कहा तुम भी दाख की बारी में जाओ और जो कुछ उचित ८ होय सो पाओगे। जब सांझ हुई तब दाख की बारी के स्वामी ने अपने भंडारी से कहा बनिहारों को बुलाके पिछलों से आरंभ कर अगलों तक उन्हें ९ मजूरी दे। सो जो लोग घड़ी एक दिन रहते काम पर आये थे उन्हों ने आके १० एक एक सूकी पाई। तब अगले आये और समझा कि हम अधिक पावेंगे परन्तु ११ उन्हों ने भी एक एक सूकी पाई। इस को लेके वे उस गृहस्थ पर कुड़कुड़ाके १२ बोले. इन पिछलों ने एक ही घड़ी काम किया और आप ने उन को हमारे तुल्य किया है जिन्हों ने दिन भर का १३ भार और घाम सहा। उस ने उन में से एक को उत्तर दिया कि हे मित्र मैं तुझ से कुछ अनीति नहीं करता हूं. क्या तू ने मुझ से एक सूकी लेने को न १४ ठहराया। अपना ले और चला जा. मेरी इच्छा है कि जितना तुझ को १५ उतना इस पिछले को भी देऊं। क्या मुझे उचित नहीं कि अपने धन से जो चाहूं सो करूं. क्या तू मेरे भले होने के कारण बुरी दृष्टि से देखता है। १६ इस रीति से जो पिछले हैं सो अगले होंगे और जो अगले हैं सो पिछले होंगे क्योंकि बुलाये हुए बहुत हैं परन्तु चुने हुए थोड़े हैं॥

१७ यीशु ने यिरूशलीम को जाते हुए मार्ग में बारह शिष्यों को एकान्त में १८ ले जाके उन से कहा. देखो हम यिरूशलीम को जाते हैं और मनुष्य का पुत्र प्रधान याजकों और अध्यापकों के हाथ पकड़वाया जायगा और वे उस को बध १९ के योग्य ठहरावेंगे। और उस को अन्यदेशियों के हाथ सौंपेंगे कि वे उस से ठट्ठा करें और कोड़े मारें और क्रूश पर घात करें. परन्तु वह तीसरे दिन जी उठेगा॥

२० तब जबदी के पुत्रों की माता ने अपने पुत्रों के संग यीशु पास आ प्रणाम २१ कर उस से कुछ मांगा। उस ने उस से कहा तू क्या चाहती है. वह उस से बोली आप यह कहिये कि आप के राज्य में मेरे इन दो पुत्रों में से एक आप की दहिनी ओर और दूसरा बाईं २२ ओर बैठे। यीशु ने उत्तर दिया तुम नहीं बूझते कि क्या मांगते हो. जिस कटोरे से मैं पीने पर हूं क्या तुम उस से पी सकते हो और जो बपतिसमा मैं लेता हूं क्या तुम उसे ले सकते हो. उन्हों ने उस से कहा हम सकते हैं। २३ उस ने उन से कहा तुम मेरे कटोरे से तो पीओगे और जो बपतिसमा मैं लेता हूं उसे लेओगे परन्तु जिन्हों के लिये मेरे पिता से तैयार किया गया है उन्हें छोड़ और किसी को अपनी दहिनी और अपनी बाईं ओर बैठने देना मेरा अधिकार नहीं है॥

२४ यह सुनके दसों शिष्य उन दोनों
२५ भाइयों पर रिसिआये। यीशु ने उन को अपने पास बुलाके कहा तुम जानते हो कि अन्यदेशियों के अध्यक्ष लोग उन्हों पर प्रभुता करते हैं और जो बड़े हैं सो उन्हों पर अधिकार रखते हैं।
२६ परन्तु तुम्हों में ऐसा नहीं होगा पर जो कोई तुम्हों में बड़ा हुआ चाहे सो
२७ तुम्हारा सेवक होवे। और जो कोई तुम्हों में प्रधान हुआ चाहे सो तुम्हारा
२८ दास होवे। इसी रीति से मनुष्य का पुत्र सेवा करवाने को नहीं परन्तु सेवा करने को और बहुतों के उद्धार के दाम में अपना प्राण देने को आया है॥

२९ जब वे यिरीहो नगर से निकलते थे तब बहुत लोग यीशु के पीछे हो
३० लिये। और देखो दो अंधे जो मार्ग की ओर बैठे थे यह सुनके कि यीशु जाता है पुकारके बोले हे प्रभु दाऊद के
३१ सन्तान हम पर दया कीजिये। लोगों ने उन्हें डांटा कि वे चुप रहें परन्तु उन्हों ने अधिक पुकारा हे प्रभु दाऊद
३२ के सन्तान हम पर दया कीजिये। तब यीशु खड़ा रहा और उन को बुलाके कहा तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे
३३ लिये करूं। उन्हों ने उस से कहा हे
३४ प्रभु हमारी आंखें खुल जायें। यीशु ने दया कर उन की आंखें छूईं और वे तुरन्त आंखों से देखने लगे और उस के पीछे हो लिये॥

इक्कईसवां पर्ब्ब।

१ जब वे यिरूशलीम के निकट आये और जैतून पर्ब्बत के समीप बैतफगी गांव पास पहुंचे तब यीशु ने दो शिष्यों
२ को यह कहके भेजा, कि जो गांव तुम्हारे सन्मुख है उस में जाओ और तुम तुरन्त एक गदही को बंधी हुई और उस के साथ बच्चे को पाओगे उन्हें खोलके
३ मेरे पास लाओ। जो तुम से कोई कुछ कहे तो कहो कि प्रभु को इन का प्रयोजन है तब वह तुरन्त उन को
४ भेजेगा। यह सब इस लिये हुआ कि जो बचन भविष्यद्वक्ता से कहा गया था
५ सो पूरा होवे, कि सियोन की पुत्री से कहो देख तेरा राजा नम्र और गदहे पर हां लादू के बच्चे पर बैठा हुआ तेरे
६ पास आता है। सो शिष्यों ने जाके जैसा यीशु ने उन्हें आज्ञा दिई वैसा किया।
७ और वे उस गदही को और बच्चे को लाये और उन पर अपने कपड़े रखके
८ यीशु को उन पर बैठाया। और बहुतेरे लोगों ने अपने अपने कपड़े मार्ग में बिछाये और औरों ने वृक्षों से डालियां
९ काटके मार्ग में बिछाईं। और जो लोग आगे पीछे चलते थे उन्हों ने पुकारके कहा दाऊद के सन्तान की जय, धन्य वह जो परमेश्वर के नाम से आता है, सब से ऊंचे स्थान में जयजयकार होवे।
१० जब उस ने यिरूशलीम में प्रवेश किया तब सारे नगर के निवासी घबराके
११ बोले यह कौन है। लोगों ने कहा यह गालील के नासरत नगर का भविष्यद्वक्ता यीशु है॥

१२ यीशु ने ईश्वर के मन्दिर में जाके जो लोग मन्दिर में बेचते औ मोल लेते थे उन सभों को निकाल दिया और सर्राफों के पीढ़ों को और कपोतों के बेचनेहारों की चौकियों को उलट दिया,
१३ और उन से कहा लिखा है कि मेरा घर प्रार्थना का घर कहावेगा, परन्तु तुम ने उसे डाकूओं का खोह बनाया
१४ है। तब अन्धे और लंगड़े उस पास मन्दिर में आये और उस ने उन्हें चंगा
१५ किया। जब प्रधान याजकों और अध्यापकों ने इन आश्चर्य्य कर्म्मों को जो उस ने किये और लड़कों को जो मन्दिर

में दाऊद के सन्तान की जय पुकारते थे देखा तब उन्हों ने रिसियाके उस से कहा क्या तू सुनता कि ये क्या कहते १६ हैं । यीशु ने उन से कहा हां . क्या तुम ने कभी यह बचन नहीं पढ़ा कि बालकों और दूध पीनेहारे लड़कों के मुंह से तू १७ ने स्तुति करवाई है । तब वह उन्हें छोड़के नगर के बाहर बैथनिया को गया और वहां टिका ॥

१८ भोर को जब वह नगर को फिर आता था तब उस को भूख लगी । १९ और मार्ग में एक गूलर का वृक्ष देखके वह उस पास आया परन्तु उस में और कुछ न पाया केवल पत्ते और उस को कहा तुझ में फिर कभी फल न लगे . इस पर गूलर का वृक्ष तुरन्त सूख गया । २० यह देखके शिष्यों ने अचंभा कर कहा गूलर का वृक्ष क्या हीं शीघ्र सूख गया । २१ यीशु ने उन को उत्तर दिया कि मैं तुम से सच कहता हूं जो तुम बिश्वास करो और सन्देह न रखो तो जो इस गूलर के वृक्ष से किया गया है केवल इतना न करोगे परन्तु यदि इस पहाड़ से कहो कि उठ समुद्र में गिर पड़ तो वैसाही २२ होगा । और जो कुछ तुम बिश्वास करके प्रार्थना में मांगोगे सो पाओगे ॥

२३ जब वह मन्दिर में गया और उपदेश करता था तब लोगों के प्रधान याजकों और प्राचीनों ने उस पास आ कहा तुझे ये काम करने का कैसा अधिकार है और यह अधिकार किस ने तुझ को २४ दिया । यीशु ने उन को उत्तर दिया कि मैं भी तुम से एक बात पूछूंगा जो तुम मुझे उस का उत्तर देओ तो मैं भी तुम्हें बताऊंगा कि मुझे ये काम करने २५ का कैसा अधिकार है । योहन का बपतिसमा देना कहां से हुआ स्वर्ग की अथवा मनुष्यों की ओर से . तब वे आपस में बिचार करने लगे कि जो हम कहें स्वर्ग की ओर से तो वह हम से कहेगा फिर तुम ने उस का बिश्वास क्यों नहीं किया । २६ और जो हम कहें मनुष्यों की ओर से तो हमें लोगों का डर है क्योंकि सब लोग योहन को भविष्यद्वक्ता जानते हैं । २७ सो उन्हों ने यीशु को उत्तर दिया कि हम नहीं जानते . तब उस ने उन से कहा तो मैं भी तुम को नहीं बताता हूं कि मुझे ये काम करने का कैसा अधिकार है ॥

२८ तुम क्या समझते हो . किसी मनुष्य के दो पुत्र थे और उस ने पहिले के पास आ कहा हे पुत्र आज मेरी दाख की बारी में जाके काम कर । २९ उस ने उत्तर दिया मैं नहीं जाऊंगा परन्तु पीछे पछताके गया । ३० फिर उस ने दूसरे के पास आके वैसा ही कहा . उस ने उत्तर दिया हे प्रभु मैं जाता हूं परन्तु गया नहीं । ३१ इन दोनों में से किस ने पिता की इच्छा पूरी किई . वे उस से बोले पहिले ने . यीशु ने उन से कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि कर उगाहनेहारे और बेश्या तुम से आगे ईश्वर के राज्य में प्रवेश करते हैं । ३२ क्योंकि योहन धर्म्म के मार्ग से तुम्हारे पास आया और तुम ने उस का बिश्वास न किया परन्तु कर उगाहनेहारों और बेश्याओं ने उस का बिश्वास किया और तुम लोग यह देखके पीछे से भी नहीं पछताये कि उस का बिश्वास करते ॥

३३ एक और दृष्टान्त सुनो . एक गृहस्थ था जिस ने दाख की बारी लगाई और उस को चहुं ओर बेड़ दिया और उस में रस का कुंड खोदा और गढ़ बनाया और मालियों को उस का ठीका दे परदेश को चला गया । ३४ जब फल का

समय निकट आया तब उस ने अपने दासों को उस का फल लेने को मालियों ३५ के पास भेजा । परन्तु मालियों ने उस के दासों को लेके एक को मारा दूसरे को घात किया और तीसरे को पत्थर- ३६ वाह किया । फिर उस ने पहिले दासों से अधिक दूसरे दासों को भेजा और उन्हों ने उन से भी वैसा ही किया । ३७ सब के पीछे उस ने यह कहके अपने पुत्र को उन के पास भेजा कि वे मेरे ३८ पुत्र का आदर करेंगे । परन्तु मालियों ने उस के पुत्र को देखके आपस में कहा यह तो अधिकारी है आओ हम उसे मार डालें और उस का अधिकार ३९ ले लेवें । और उन्हों ने उसे लेके दाख की बारी से बाहर निकालके मार ४० डाला । इस लिये जब दाख की बारी का स्वामी आवेगा तब उन मालियों ४१ से क्या करेगा । उन्हों ने उस से कहा वह उन बुरे लोगों को बुरी रीति से नाश करेगा और दाख की बारी का ठीका दूसरे मालियों को देगा जो फलों को उन के समयों में उसे दिया करेंगे । ४२ यीशु ने उन से कहा क्या तुम ने कभी धर्म्मपुस्तक में यह बचन नहीं पढ़ा कि जिस पत्थर को थवइयों ने निकम्मा जाना वही कोने का सिरा हुआ है . यह परमेश्वर का कार्य्य है और हमारी ४३ दृष्टि में अद्भुत है । इस लिये मैं तुम से कहता हूं कि ईश्वर का राज्य तुम से ले लिया जायगा और और लोगों को दिया जायगा जो उस के फल दिया ४४ करेंगे । जो इस पत्थर पर गिरेगा सो चूर हो जायगा और जिस किसी पर वह गिरेगा उस को पीस डालेगा । ४५ प्रधान याजकों और फरीशियों ने उस के दृष्टान्तों को सुनके जाना कि वह हमारे ४६ विषय में बोलता है । और उन्हों ने उसे पकड़ने चाहा परन्तु लोगों से डरे क्योंकि वे उस को भविष्यद्वक्ता जानते थे ॥

बाईसवां पर्ब्ब ।

१ इस पर यीशु ने फिर उन से दृष्टान्तों में कहा . स्वर्ग के राज्य की उपमा २ एक राजा से दिई जाती है जो अपने पुत्र का बिवाह करता था । और उस ३ ने अपने दासों को भेजा कि नेवतहरियों को बिवाह के भोज में बुलावें परन्तु उन्हों ने आने न चाहा । फिर उस ने ४ दूसरे दासों को यह कहके भेजा कि नेवतहरियों से कहो देखो मैं ने अपना भोज तैयार किया है और मेरे बैल और मोटे पशु मारे गये हैं और सब कुछ तैयार है बिवाह के भोज में आओ । ५ परन्तु नेवतहरियों ने इस का कुछ सोच न किया पर कोई अपने खेत को और कोई अपने ब्योपार को चले गये । ६ औरों ने उस के दासों को पकड़के ७ दुर्दशा करके मार डाला । यह सुनके राजा ने क्रोध किया और अपनी सेना भेजके उन हत्यारों को नाश किया और उन ८ के नगर को फूंक दिया । तब उस ने अपने दासों से कहा बिवाह का भोज तो तैयार है परन्तु नेवतहरी योग्य ९ नहीं ठहरे । इस लिये चौराहों में जाके जितने लोग तुम्हें मिलें सभों को बिवाह १० के भोज में बुलाओ । सो उन दासों ने मार्गों में जाके क्या बुरे क्या भले जितने उन्हें मिले सभों को एकट्ठे किया और बिवाह का स्थान जेवन- ११ हारियों से भर गया । जब राजा जेवन- हारियों को देखने को भीतर आया तब उस ने वहां एक मनुष्य को देखा जो १२ बिवाहीय वस्त्र नहीं पहिने हुए था । उस ने उस से कहा हे मित्र तू यहां बिना बिवाहीय वस्त्र पहिने क्योंकर

भीतर आया . वह निरुत्तर हुआ
१३ तब राजा ने सेवकों से कहा इस के हाथ पांव बांधो और उस को ले जाके बाहर के अंधकार में डाल देओ जहां
१४ रोना और दांत पीसना होगा । क्योंकि बुलाये हुए बहुत हैं परन्तु चुने हुए थोड़े हैं ॥

१५ तब फरीशियों ने जाके आपस में बिचार किया इस लिये कि यीशु को
१६ बात में फंसावें । सो उन्हों ने अपने शिष्यों को हेरोदियों के संग उस पास यह कहने को भेजा कि हे गुरु हम जानते हैं कि आप सत्य हैं और ईश्वर का मार्ग सत्यता से बताते हैं और किसी का खटका नहीं रखते हैं क्योंकि आप मनुष्यों का मुंह देखके बात नहीं
१७ करते हैं । सो हम से कहिये आप क्या समझते हैं . कैसर को कर देना उचित
१८ है अथवा नहीं । यीशु ने उन की दुष्टता जानके कहा हे कपटियो मेरी परीक्षा
१९ क्यों करते हो । कर का मुद्रा मुझे दिखाओ . तब वे उस पास एक सूकी
२० लाये । उस ने उन से कहा यह मूर्त्ति
२१ और छाप किस की है । वे उस से बोले कैसर की . तब उस ने उन से कहा तो जो कैसर का है सो कैसर को देओ और जो ईश्वर का है सो ईश्वर को
२२ देओ । यह सुनके वे अचंभित हुए और उस को छोड़के चले गये ॥

२३ उसी दिन सदूकी लोग जो कहते हैं कि मृतकों का जी उठना नहीं होगा
२४ उस पास आये और उस से पूछा . कि हे गुरु मूसा ने कहा यदि कोई मनुष्य निःसन्तान मर जाय तो उस का भाई उस की स्त्री से बिवाह करे और अपने
२५ भाई के लिये वंश खड़ा करे । सो हमारे यहां सात भाई थे . पहिले भाई ने बिवाह किया और निःसन्तान मर जाने से अपनी स्त्री को अपने भाई के
२६ लिये छोड़ा । दूसरे और तीसरे भाई ने भी सातवें भाई तक वैसा ही किया । सब
२७ के पीछे स्त्री भी मर गई । सो मृतकों
२८ के जी उठने पर वह इन सातों में से किस की स्त्री होगी क्योंकि सभों ने
२९ उस से बिवाह किया । यीशु ने उन को उत्तर दिया कि तुम धर्म्मपुस्तक और ईश्वर की शक्ति न बूझके भूल में पड़े
३० हो । क्योंकि मृतकों के जी उठने पर वे न बिवाह करते न बिवाह दिये जाते हैं परन्तु स्वर्ग में ईश्वर के दूतों के
३१ समान हैं । मृतकों के जी उठने के विषय में क्या तुम ने यह बचन जो ईश्वर ने तुम से कहा नहीं पढ़ा है .
३२ कि मैं इब्राहीम का ईश्वर और इसहाक का ईश्वर और याकूब का ईश्वर हूं . ईश्वर मृतकों का नहीं परन्तु जीवतों
३३ का ईश्वर है । यह सुनकर लोग उस के उपदेश से अचंभित हुए ॥

३४ जब फरीशियों ने सुना कि यीशु ने सदूकियों को निरुत्तर किया तब वे
३५ एकट्ठे हुए । और उन में से एक ने जो व्यवस्थापक था उस की परीक्षा करने को
३६ उस से पूछा . हे गुरु व्यवस्था में बड़ी
३७ आज्ञा कौन है । यीशु ने उस से कहा तू परमेश्वर अपने ईश्वर को अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से और
३८ अपनी सारी बुद्धि से प्रेम कर । यही
३९ पहिली औ बड़ी आज्ञा है । और दूसरी उस के समान है अर्थात् तू अपने पड़ोसी
४० को अपने समान प्रेम कर । इन दो आज्ञाओं से सारी व्यवस्था औ भविष्यद्वक्ताओं का पुस्तक सम्बन्ध रखते हैं ॥

४१ फरीशियों के एकट्ठे होते हुए यीशु
४२ ने उन से पूछा . ख्रीष्ट के विषय में तुम क्या समझते हो वह किस का पुत्र है .
४३ वे उस से बोले दाऊद का । उस ने

उन से कहा तो दाऊद क्योंकर आत्मा की शिक्षा से उस को प्रभु कहता है, ४४ कि परमेश्वर ने मेरे प्रभु से कहा जब लों मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की पीढ़ी न बनाऊं तब लों तू मेरी दहिनी ओर ४५ बैठ। यदि दाऊद उसे प्रभु कहता है ४६ तो वह उस का पुत्र क्योंकर है। इस के उत्तर में कोई उस से एक बात नहीं बोल सका और उस दिन से किसी को फिर उस से कुछ पूछने का साहस न हुआ॥

तेईसवां पर्ब्ब।

१ तब यीशु ने लोगों से और अपने २ शिष्यों से कहा, अध्यापक और फरीशी ३ लोग मूसा के आसन पर बैठे हैं। इस लिये जो कुछ वे तुम्हें मानने को कहें सो मानो और पालन करो परन्तु उन के कर्म्मों के अनुसार मत करो क्योंकि ४ वे कहते हैं और करते नहीं। वे भारी बोझे बांधते हैं जिन को उठाना कठिन है और उन्हें मनुष्यों के कांधों पर धर देते हैं परन्तु उन्हें अपनी उंगली से ५ भी सरकाने नहीं चाहते हैं। वे मनुष्यों को दिखाने के लिये अपने सब कर्म्म ६ करते हैं। वे अपने यन्त्रों को चौड़े करते हैं और अपने बस्त्रों के आंचल ७ बढ़ाते हैं। जेवनारों में ऊंचे स्थान और सभा के घरों में ऊंचे आसन और बाजारों में नमस्कार और मनुष्यों से गुरु गुरु कहलाना उन को प्रिय लगते ८ हैं। परन्तु तुम गुरु मत कहलाओ क्योंकि तुम्हारा एक गुरु है अर्थात ९ ख्रीष्ट और तुम सब भाई हो। और पृथिवी पर किसी को अपना पिता मत कहो क्योंकि तुम्हारा एक पिता १० है अर्थात वही जो स्वर्ग में है। और गुरु भी मत कहलाओ क्योंकि तुम्हारा ११ एक गुरु है अर्थात ख्रीष्ट। जो तुम्हों में बड़ा हो सो तुम्हारा सेवक होगा। १२ जो कोई अपने को ऊंचा करे सो नीचा किया जायगा और जो कोई अपने को नीचा करे सो ऊंचा किया जायगा॥

१३ हाय तुम कपटी अध्यापको और फरीशियो तुम मनुष्यों पर स्वर्ग के राज्य का द्वार मून्दते हो, न आपही उस में प्रवेश करते हो और न प्रवेश करनेहारों को प्रवेश करने देते हो। १४ हाय तुम कपटी अध्यापको और फरीशियो तुम बिधवाओं के घर खा जाते हो और बहाना के लिये बड़ी बेर लों प्रार्थना करते हो इस लिये तुम १५ अधिक दंड पाओगे। हाय तुम कपटी अध्यापको और फरीशियो तुम एक जन को अपने मत में लाने को सारे जल औ थल में फिरा करते हो और जब वह मत में आया है तब उस को अपने १६ से दूना नरक के योग्य बनाते हो। हाय तुम अन्धे अगुवो जो कहते हो यदि कोई मन्दिर की किरिया खाय तो कुछ नहीं है परन्तु यदि कोई मन्दिर के सोने की किरिया खाय तो १७ ऋणी है। हे मूर्खो और अन्धो कौन बड़ा है वह सोना अथवा वह मन्दिर १८ जो सोने को पवित्र करता है। फिर कहते हो यदि कोई बेदी की किरिया खाय तो कुछ नहीं है परन्तु जो चढ़ावा बेदी पर है यदि कोई उस की किरिया १९ खाय तो ऋणी है। हे मूर्खो और अन्धो कौन बड़ा है वह चढ़ावा अथवा वह बेदी जो चढ़ावे को पवित्र करती २० है। इस लिये जो बेदी की किरिया खाता है सो उस की किरिया और जो कुछ उस पर है उस की भी किरिया २१ खाता है। और जो मन्दिर की किरिया खाता है सो उस की किरिया और जो उस में बास करता है उस की भी

२२ किरिया खाता है । और जो स्वर्ग की किरिया खाता है सो ईश्वर के सिंहासन की किरिया और जो उस पर बैठा है
२३ उस की भी किरिया खाता है । हाय तुम कपटी अध्यापको और फरीशियो तुम पोदीने और सोए और जीरे का दसवां अंश देते हो परन्तु तुम ने व्यवस्था की भारी बातों को अर्थात न्याय और दया और बिश्वास को छोड़ दिया है . इन्हें करना और उन्हें न
२४ छोड़ना उचित था । हे अन्धे अगुवो जो मच्छर को छान डालते हो और ऊंट
२५ को निगलते हो । हाय तुम कपटी अध्यापको और फरीशियो तुम कटोरे और थाल को बाहर बाहर शुद्ध करते हो परन्तु वे भीतर अन्धेर और अन्याय
२६ से भरे हैं । हे अन्धे फरीशी पहिले कटोरे और थाल के भीतर शुद्ध कर
२७ कि वे बाहर भी शुद्ध होवें । हाय तुम कपटी अध्यापको और फरीशियो तुम चूना फेरी हुई कबरों के समान हो जो बाहर से सुन्दर दिखाई देती हैं परन्तु भीतर मृतकों की हड्डियों से और सब
२८ प्रकार की मलिनता से भरी हैं । इसी रीति से तुम भी बाहर से मनुष्यों को धर्म्मी दिखाई देते हो परन्तु भीतर
२९ कपट और अधर्म्म से भरे हो । हाय तुम कपटी अध्यापको और फरीशियो तुम भविष्यद्वक्ताओं की कबरें बनाते हो और धर्म्मियों की कबरें संवारते हो .
३० और कहते हो यदि हम अपने पितरों के दिनों में होते तो भविष्यद्वक्ताओं का लोहू बहाने में उन के संगी न
३१ होते । इस से तुम अपने पर साक्षी देते हो कि तुम भविष्यद्वक्ताओं के घातकों
३२ के सन्तान हो । सो तुम अपने पितरों
३३ का नपुआ भरो । हे सांपो हे सर्पों के बंश तुम नरक के दंड से क्योंकर बचोगे ॥

३४ इस लिये देखो मैं तुम्हारे पास भविष्यद्वक्ताओं और बुद्धिमानों और अध्यापकों को भेजता हूं और तुम उन में से कितनों को मार डालोगे और क्रूश पर चढ़ाओगे और कितनों को अपनी सभाओं में कोड़े मारोगे और
३५ नगर नगर सताओगे . कि धर्म्मी हाबिल के लोहू से लेके बरखियाह के पुत्र जिखरियाह के लोहू तक जिसे तुम ने मन्दिर और बेदी के बीच में मार डाला जितने धर्म्मियों का लोहू पृथिवी पर बहाया जाता है सब तुम पर पड़े ।
३६ मैं तुम से सच कहता हूं यह सब बातें
३७ इसी समय के लोगों पर पड़ेंगी । हे यिरूशलीम यिरूशलीम जो भविष्यद्वक्ताओं को मार डालती है और जो तेरे पास भेजे गये हैं उन्हें पत्थरवाह करती है जैसे मुर्गी अपने बच्चों को पंखों के नीचे एकट्ठे करती है वैसे ही मैं ने कितनी बेर तेरे बालकों को एकट्ठे करने की इच्छा किई परन्तु तुम ने न
३८ चाहा । देखो तुम्हारा घर तुम्हारे लिये
३९ उजाड़ छोड़ा जाता है । क्योंकि मैं तुम से कहता हूं जब लों तुम न कहोगे धन्य वह जो परमेश्वर के नाम से आता है तब लों तुम मुझे अब से फिर न देखोगे ॥

चौबीसवां पर्ब्ब

१ जब यीशु मन्दिर से निकलके जाता था तब उस के शिष्य लोग उस को मन्दिर की रचना दिखाने को उस पास
२ आये । यीशु ने उन से कहा क्या तुम यह सब नहीं देखते हो . मैं तुम से सच कहता हूं यहां पत्थर पर पत्थर भी न छोड़ा जायगा जो गिराया न जायगा ॥

३ जब वह जैतून पर्ब्बत पर बैठा था तब शिष्यों ने निराले में उस पास आ कहा हमों से कहिये यह कब होगा

और आप के आने का और जगत के ४ अन्त का क्या चिन्ह होगा। यीशु ने उन को उत्तर दिया चौकस रहो कि ५ कोई तुम्हें न भरमावे। क्योंकि बहुत लोग मेरे नाम से आके कहेंगे मैं खीष्ट ६ हूं और बहुतों को भरमावेंगे। तुम लड़ाइयां और लड़ाइयों की चर्चा सुनोगे. देखो मत घबराओ क्योंकि इन सभों का होना अवश्य है परन्तु अन्त उस ७ समय में नहीं होगा। क्योंकि देश देशके और राज्य राज्यके बिरुद्ध उठेंगे और अनेक स्थानों में अकाल और मरियां और ८ भुईंडोल होंगे। यह सब दुःखों का आरंभ होगा॥

९ तब वे तुम्हें पकड़वायेंगे कि क्लेश पाओ और तुम्हें मार डालेंगे और मेरे नाम के कारण सब देशों के लोग तुम १० से बैर करेंगे। तब बहुतेरे ठोकर खायेंगे और एक दूसरे को पकड़वायगा और ११ एक दूसरे से बैर करेगा। और बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता प्रगट होके बहुतों को १२ भरमावेंगे। और अधर्म्म के बढ़ने से १३ बहुतों का प्रेम ठंडा हो जायगा। पर जो अन्त लों स्थिर रहे सोई त्राण १४ पावेगा। और राज्य का यह सुसमाचार सब देशों के लोगों पर साक्षी होने के लिये समस्त संसार में सुनाया जायगा. तब अन्त होगा॥

१५ सो जब तुम उस उजाड़नेहारी घिनित बस्तु को जिस की बात दानियेल भविष्यद्वक्ता से कही गई पवित्र स्थान में खड़े १६ होते देखो (जो पढ़े सो बूझे), तब जो यिहूदिया में हों सो पहाड़ों पर भागें। १७ जो कोठे पर हो सो अपने घर में से १८ कुछ लेने को न उतरे। और जो खेत में हो सो अपना बस्त्र लेने को पीछे न १९ फिरे। उन दिनों में हाय हाय गर्भ-२० वतियां और दूध पिलानेवालियां। परन्तु प्रार्थना करो कि तुम को जाड़े में अथवा बिश्रामवार में भागना न होवे। क्योंकि २१ उस समय में ऐसा महा क्लेश होगा जैसा जगत के आरंभ से अब तक न हुआ और कभी न होगा। जो वे दिन घटाये २२ न जाते तो कोई प्राणी न बचता परन्तु चुने हुए लोगों के कारण वे दिन घटाये जायेंगे॥

तब यदि कोई तुम से कहे देखो २३ खीष्ट यहां है अथवा वहां है तो प्रतीति मत करो। क्योंकि झूठे खीष्ट और झूठे २४ भविष्यद्वक्ता प्रगट होके ऐसे बड़े चिन्ह और अद्भुत काम दिखावेंगे कि जो हो सकता तो चुने हुए लोगों को भी भरमाते। देखो मैं ने आगे से तुम्हें कह २५ दिया है। इस लिये जो वे तुम से कहें २६ देखो जंगल में है तो बाहर मत जाओ अथवा देखो कोठरियों में है तो प्रतीति मत करो। क्योंकि जैसे बिजली पूर्ब्ब २७ से निकलती और पश्चिम लों चमकती है वैसा ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा। जहां कहीं लोथ होय तहां गिद्ध २८ एकट्ठे होंगे॥

उन दिनों के क्लेश के पीछे तुरन्त २९ सूर्य्य अंधियारा हो जायगा और चांद अपनी ज्योति न देगा तारे आकाश से गिर पड़ेंगे और आकाश की सेना डिग जायगी। तब मनुष्य के पुत्र का चिन्ह ३० आकाश में दिखाई देगा और तब पृथिवी के सब कुलों के लोग छाती पीटेंगे और मनुष्य के पुत्र को पराक्रम और बड़े ऐश्वर्य्य से आकाश के मेघों पर आते देखेंगे। और वह अपने दूतों ३१ को तुरही के महा शब्द सहित भेजेगा और वे आकाश के इस सिवाने से उस सिवाने तक चहुं दिशा से उस के चुने हुए लोगों को एकट्ठे करेंगे॥

गूलर के वृक्ष से दृष्टान्त सीखो. ३२

जब उस की डाली कोमल हो जाती और पत्ते निकल आते तब तुम जानते ३३ हो कि धूपकाला निकट है । इस रीति से जब तुम इन सब बातों को देखो तब जानो कि वह निकट है हां द्वार ३४ पर है । मैं तुम से सच कहता हूं कि जब लों यह सब बातें पूरी न हो जायें तब लों इस समय के लोग नहीं जाते ३५ रहेंगे । आकाश औ पृथिवी टल जायेंगे परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी ॥

३६ उस दिन और उस घड़ी के विषय में न कोई मनुष्य जानता है न स्वर्ग ३७ के दूत परन्तु केवल मेरा पिता । जैसे नूह के दिन हुए वैसा ही मनुष्य के ३८ पुत्र का आना भी होगा । जैसे जल-प्रलय के आगे के दिनों में लोग जिस दिन लों नूह जहाज पर न चढ़ा उसी दिन लों खाते औ पीते बिवाह करते ३९ औ बिवाह देते थे, और जब लों जल-प्रलय आके उन सभों को ले न गया तब लों उन्हें चेत न हुआ वैसा ही मनुष्य ४० के पुत्र का आना भी होगा । तब दो जन खेत में होंगे एक लिया जायगा ४१ और दूसरा छोड़ा जायगा । दो स्त्रियां चक्की पीसती रहेंगी एक लिई जायगी और दूसरी छोड़ी जायगी ॥

४२ इस लिये जागते रहो क्योंकि तुम नहीं जानते हो तुम्हारा प्रभु किस घड़ी ४३ आवेगा । पर यही जानते हो कि यदि घर का स्वामी जानता चोर किस पहर में आवेगा तो वह जागता रहता और ४४ अपने घर में सेंध पड़ने न देता । इस लिये तुम भी तैयार रहो क्योंकि जिस घड़ी का अनुमान तुम नहीं करते हो ४५ उसी घड़ी मनुष्य का पुत्र आवेगा । वह बिश्वासयोग्य और बुद्धिमान दास कौन है जिसे उस के स्वामी ने अपने परिवार पर प्रधान किया हो कि समय में उन्हें भोजन देवे । वह दास धन्य है ४६ जिसे उस का स्वामी आके ऐसा करते पावे । मैं तुम से सत्य कहता हूं वह ४७ उसे अपनी सब सम्पत्ति पर प्रधान करेगा । परन्तु जो वह दुष्ट दास अपने ४८ मन में कहे मेरा स्वामी आने में बिलम्ब करता है, और अपने संगी दासों को ४९ मारने और मतवाले लोगों के संग खाने पीने लगे, तो जिस दिन वह बाट ५० जोहता न रहे और जिस घड़ी का वह अनुमान न करे उसी में उस दास का स्वामी आवेगा, और उस को बड़ी ५१ ताड़ना देके कपटियों के संग उस का अंश देगा जहां रोना औ दांत पीसना होगा ॥

पच्चीसवां पर्ब्ब ।

तब स्वर्ग के राज्य की उपमा दस १ कुंवारियों से दिई जायगी जो अपनी मशालें लेके दूल्हे से मिलने को निकलीं । उन्हों में से पांच सुबुद्धि और पांच २ निर्बुद्धि थीं । जो निर्बुद्धि थीं उन्हों ने ३ अपनी मशालों को ले अपने संग तेल न लिया । परन्तु सुबुद्धियों ने अपनी ४ मशालों के संग अपने पात्रों में तेल लिया । दूल्हे के बिलम्ब करने से वे ५ सब ऊंघीं और सो गईं । आधी रात ६ को धूम मची कि देखो दूल्हा आता है उस से मिलने को निकलो । तब वे ७ सब कुंवारियां उठके अपनी मशालों को सजने लगीं । और निर्बुद्धियों ने सुबुद्धियों ८ से कहा अपने तेल में से कुछ हम को दीजिये क्योंकि हमारी मशालें बुझी जाती हैं । परन्तु सुबुद्धियों ने उत्तर दिया क्या ९ जानें हमारे और तुम्हारे लिये बस न होय सो अच्छा है कि तुम बेचनेहारों के पास जाके अपने लिये मोल लेओ । ज्यों वे मोल लेने को जाती थीं त्योंही १० दूल्हा आ पहुंचा और जो तैयार थीं सो

उस के संग बिवाह के घर में गईं और
११ द्वार मूंदा गया। पीछे दूसरी कुंवारियां
भी आके बोलीं हे प्रभु हे प्रभु हमारे
१२ लिये खोलिये। उस ने उत्तर दिया कि
मैं तुम से सच कहता हूं मैं तुम को
१३ नहीं जानता हूं। इस लिये जागते रहो
क्योंकि तुम न वह दिन न घड़ी जानते
हो जिस में मनुष्य का पुत्र आवेगा॥

१४ क्योंकि वह एक मनुष्य के समान है
जिस ने परदेश को जाते हुए अपने ही
दासों को बुलाके उन को अपना धन
१५ सौंपा। उस ने एक को पांच तोड़े दूसरे
को दो तीसरे को एक हर एक को
उस के सामर्थ्य के अनुसार दिया और
१६ तुरन्त परदेश को चला। तब जिस ने
पांच तोड़े पाये उस ने जाके उन से
ब्योपार कर पांच तोड़े और कमाये।
१७ इसी रीति से जिस ने दो पाये उस ने
१८ भी दो तोड़े और कमाये। परन्तु जिस
ने एक तोड़ा पाया उस ने जाके मिट्टी
में खोदके अपने स्वामी के रुपैये छिपा
१९ रखे। बहुत दिनों के पीछे उन दासों
का स्वामी आया और उन से लेखा
२० लेने लगा। तब जिस ने पांच तोड़े पाये
थे उस ने पांच तोड़े और लाके कहा हे
प्रभु आप ने मुझे पांच तोड़े सौंपे देखिये
मैं ने उन से पांच तोड़े और कमाये हैं।
२१ उस के स्वामी ने उस से कहा धन्य हे
उत्तम और बिश्वासयोग्य दास तू थोड़े
में बिश्वासयोग्य हुआ मैं तुझे बहुत पर
प्रधान करूंगा. अपने प्रभु के आनन्द में
२२ प्रवेश कर। जिस ने दो तोड़े पाये थे
उस ने भी आके कहा हे प्रभु आप ने
मुझे दो तोड़े सौंपे देखिये मैं ने उन से
२३ दो तोड़े और कमाये हैं। उस के स्वामी
ने उस से कहा धन्य हे उत्तम और
बिश्वासयोग्य दास तू थोड़े में बिश्वास-
योग्य हुआ मैं तुझे बहुत पर प्रधान
करूंगा. अपने प्रभु के आनन्द में प्रवेश
कर। तब जिस ने एक तोड़ा पाया था २४
उस ने आके कहा हे प्रभु मैं आप को
जानता था कि आप कठोर मनुष्य हैं
जहां आप ने नहीं बोया वहां लवते हैं
और जहां आप ने नहीं छींटा वहां से
एकट्ठा करते हैं। सो मैं डरा और जाके २५
आप का तोड़ा मिट्टी में छिपाया. देखिये
अपना ले लीजिये। उस के स्वामी ने २६
उसे उत्तर दिया कि हे दुष्ट और आलसी
दास तू जानता था कि जहां मैं ने नहीं
बोया वहां लवता हूं और जहां मैं ने
नहीं छींटा वहां से एकट्ठा करता हूं।
तो तुझे उचित था कि मेरे रुपैये महा- २७
जनों के हाथ सौंपता तब मैं आके अपना
धन ब्याज समेत पाता। इस लिये वह २८
तोड़ा उस से लेओ और जिस पास दस
तोड़े हैं उसे देओ। क्योंकि जो कोई २९
रखता है उस को और दिया जायगा
और उस को बहुत होगा परन्तु जो
नहीं रखता है उस से जो कुछ उस पास
है सो भी ले लिया जायगा। और उस ३०
निकम्मे दास को बाहर के अन्धकार
में डाल देओ जहां रोना और दांत
पीसना होगा॥

जब मनुष्य का पुत्र अपने ऐश्वर्य्य ३१
सहित आवेगा और सब पवित्र दूत
उस के साथ तब वह अपने ऐश्वर्य्य के
सिंहासन पर बैठेगा। और सब देशों ३२
के लोग उस के आगे एकट्ठे किये जायेंगे
और जैसा गड़ेरिया भेड़ों को बकरियों
से अलग करता है तैसा वह उन्हें एक
दूसरे से अलग करेगा। और वह भेड़ों ३३
को अपनी दहिनी ओर और बकरियों
को बाईं ओर खड़ा करेगा। तब ३४
राजा उन से जो उस की दहिनी ओर
हैं कहेगा हे मेरे पिता के धन्य लोगो
आओ जो राज्य जगत की उत्पत्ति से

तुम्हारे लिये तैयार किया गया है उस
३५ के अधिकारी होओ . क्योंकि मैं भूखा
था और तुम ने मुझे खाने को दिया मैं
प्यासा था और तुम ने मुझे पिलाया मैं
परदेशी था और तुम मुझे अपने घर में
३६ लाये . मैं नंगा था और तुम ने मुझे
पहिराया मैं रोगी था और तुम ने मेरी
सुध लिई मैं बन्दीगृह में था और तुम
३७ मेरे पास आये । तब धर्म्मी लोग उस
को उत्तर देंगे कि हे प्रभु हम ने कब
आप को भूखा देखा और खिलाया
३८ अथवा प्यासा और पिलाया । हम ने
कब आप को परदेशी देखा और अपने
घर में लाये अथवा नंगा और पहिराया ।
३९ और हम ने कब आप को रोगी अथवा
बन्दीगृह में देखा और आप के पास
४० गये । तब राजा उन्हें उत्तर देगा मैं
तुम से सच कहता हूं कि तुम ने मेरे
इन अति छोटे भाइयों में से एक से
जोई भर किया सो मुझ से किया ।
४१ तब वह उन से जो बाईं ओर हैं कहेगा
हे स्रापित लोगो मेरे पास से उस अनन्त
आग में जाओ जो शैतान और उस के
४२ दूतों के लिये तैयार किई गई है . क्योंकि
मैं भूखा था और तुम ने मुझे खाने को
नहीं दिया मैं प्यासा था और तुम ने
४३ मुझे नहीं पिलाया . मैं परदेशी था और
तुम मुझे अपने घर में नहीं लाये मैं
नंगा था और तुम ने मुझे नहीं पहिराया
मैं रोगी और बन्दीगृह में था और तुम
४४ ने मेरी सुध न लिई । तब वे भी उत्तर
देंगे कि हे प्रभु हम ने कब आप को
भूखा वा प्यासा वा परदेशी वा नंगा
वा रोगी वा बन्दीगृह में देखा और
४५ आप की सेवा न किई । तब वह उन्हें
उत्तर देगा मैं तुम से सच कहता हूं कि
तुम ने इन अति छोटों में से एक से
जोई भर नहीं किया सो मुझ से नहीं
किया । सो ये लोग अनन्त दंड में ४६
परन्तु धर्म्मी लोग अनन्त जीवन में
जा रहेंगे ॥

छब्बीसवां पर्ब्ब ।

जब यीशु यह सब बातें कह चुका १
तब अपने शिष्यों से कहा . तुम जानते २
हो कि दो दिन के पीछे निस्तारपर्ब्ब
होगा और मनुष्य का पुत्र क्रूश पर
चढ़ाये जाने को पकड़वाया जायगा । तब ३
लोगों के प्रधान याजक और अध्यापक और
प्राचीन लोग कियाफा नाम महायाजक के
घर में एकट्ठे हुए . और आपस में ४
बिचार किया कि यीशु को छल से
पकड़के मार डालें । परन्तु उन्हों ने ५
कहा पर्ब्ब में नहीं न हो कि लोगों में
हुल्लड़ होवे ॥

जब यीशु बैथनिया में शिमोन ६
कोढ़ी के घर में था . तब एक स्त्री ७
उजले पत्थर के पात्र में बहुत मोल
का सुगन्ध तेल लेके उस पास आई
और जब वह भोजन पर बैठा था तब
उस के सिर पर ढाला । यह देखके ८
उस के शिष्य रिसियाके बोले यह क्षय
क्यों हुआ । क्योंकि यह सुगन्ध तेल ९
बहुत दाम में बिक सकता और कंगालों
को दिया जा सकता । यीशु ने यह १०
जानके उन से कहा क्यों स्त्री को दुःख
देते हो . उस ने अच्छा काम मुझ से
किया है । कंगाल लोग तुम्हारे संग ११
सदा रहते हैं परन्तु मैं तुम्हारे संग सदा
नहीं रहूंगा । उस ने मेरे देह पर यह १२
सुगन्ध तेल जो ढाला है सो मेरे गाड़े
जाने के लिये किया है । मैं तुम से १३
सत्य कहता हूं सारे जगत में जहां कहीं
यह सुसमाचार सुनाया जाय तहां यह
भी जो इस ने किया है उस के स्मरण
के लिये कहा जायगा ॥

तब बारह शिष्यों में से यिहूदा १४

इस्करियोती नाम एक शिष्य प्रधान
१५ याजकों के पास गया . और कहा जो
मैं यीशु को आप लोगों के हाथ
पकड़वाऊं तो आप लोग मुझे क्या
देंगे . उन्हों ने उस को तीस रुपैये देने
१६ को ठहराया । सो वह उसी समय से
उस को पकड़वाने का अवसर
ढूंढ़ने लगा ॥

१७ अखमीरी रोटी के पर्ब्ब के पहिले
दिन शिष्य लोग यीशु पास आ उस से
बोले आप कहां चाहते हैं कि हम आप
के लिये निस्तारपर्ब्ब का भोजन खाने
१८ की तैयारी करें । उस ने कहा नगर में
अमुक मनुष्य के पास जाके उस से
कहो गुरु कहता है कि मेरा समय
निकट है मैं अपने शिष्यों के संग तेरे
यहां निस्तारपर्ब्ब का भोजन करूंगा ।
१९ सो शिष्यों ने जैसा यीशु ने उन्हें आज्ञा
दिई वैसा किया और निस्तारपर्ब्ब का
भोजन बनाया ॥

२० सांझ को यीशु बारह शिष्यों के संग
२१ भोजन पर बैठा । जब वे खाते थे तब
उस ने कहा मैं तुम से सच कहता हूं
कि तुम में से एक मुझे पकड़वायगा ।
२२ इस पर वे बहुत उदास हुए और हर
एक उस से कहने लगा हे प्रभु वह क्या
२३ मैं हूं । उस ने उत्तर दिया कि जो मेरे
संग थाली में हाथ डालता है सोई
२४ मुझे पकड़वायगा । मनुष्य का पुत्र
जैसा उस के विषय में लिखा है वैसा
ही जाता है परन्तु हाय वह मनुष्य
जिस से मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाता
है . जो उस मनुष्य का जन्म न होता
२५ तो उस के लिये भला होता । तब उस
के पकड़वानेहारे यिहूदा ने उत्तर दिया
कि हे गुरु वह क्या मैं हूं . यीशु उस
से बोला तू तो कह चुका ॥

२६ जब वे खाते थे तब यीशु ने रोटी
लेके धन्यवाद किया और उसे तोड़के
शिष्यों को दिया और कहा लेओ खाओ
२७ यह मेरा देह है । और उस ने कटोरा
लेके धन्य माना और उन को देके
२८ कहा तुम सब इस से पीओ । क्योंकि
यह मेरा लोहू अर्थात नये नियम का
लोहू है जो बहुतों के लिये पापमोचन
२९ के निमित्त बहाया जाता है । मैं तुम
से कहता हूं कि जिस दिन लों मैं
तुम्हारे संग अपने पिता के राज्य में उसे
नया न पीऊं उस दिन लों मैं अब से
३० यह दाख रस कभी न पीऊंगा । और
वे भजन गाके जैतून पर्ब्बत पर गये ॥

३१ तब यीशु ने उन से कहा तुम सब
इसी रात मेरे विषय में ठोकर खाओगे
क्योंकि लिखा है कि "मैं गड़ेरिये को
मारूंगा और झुंड की भेड़ें तितर बितर
३२ हो जायेंगी"। परन्तु मैं अपने जी उठने
के पीछे तुम्हारे आगे गालील को जाऊंगा ।
३३ पितर ने उस को उत्तर दिया यदि सब
आप के विषय में ठोकर खावें तौभी मैं
३४ कभी ठोकर न खाऊंगा । यीशु ने उस
से कहा मैं तुझे सत्य कहता हूं कि
इसी रात मुर्गे के बोलने से आगे तू
३५ तीन बार मुझ से मुकरेगा । पितर ने
उस से कहा जो आप के संग मुझे मरना
हो तौभी मैं आप से कभी न मुकरूंगा .
सब शिष्यों ने भी वैसा ही कहा ॥

३६ तब यीशु ने शिष्यों के संग गेत-
शिमनी नाम स्थान में आके उन से कहा
जब लों मैं वहां जाके प्रार्थना करूं तब
३७ लों तुम यहां बैठो । और वह पितर को
और जबदी के दोनों पुत्रों को अपने
संग ले गया और शोक करने और बहुत
३८ उदास होने लगा । तब उस ने उन से
कहा मेरा मन यहां लों अति उदास है
कि मैं मरने पर हूं . तुम यहां ठहरके
३९ मेरे संग जागते रहो । और थोड़ा आगे

बढ़के वह मुंह के बल गिरा और प्रार्थना किई कि हे मेरे पिता जो हो सके तो यह कटोरा मेरे पास से टल जाय तौभी जैसा मैं चाहता हूं वैसा न होय पर जैसा ४० तू चाहता है। तब उस ने शिष्यों के पास आ उन्हें सोते पाया और पितर से कहा सो तुम मेरे संग एक घड़ी नहीं ४१ जाग सके। जागते रहो और प्रार्थना करो कि तुम परीक्षा में न पड़ो . मन तो तैयार है परन्तु शरीर दुर्बल है। ४२ फिर उस ने दूसरी बेर जाके प्रार्थना किई कि हे मेरे पिता जो बिना पीने से यह कटोरा मेरे पास से नहीं टल सकता है तो तेरी इच्छा पूरी होय। ४३ तब उस ने आके उन्हें फिर सोते पाया क्योंकि उन की आंखें नींद से भरी थीं। ४४ उन को छोड़के उस ने फिर जाके तीसरी बेर वही बात कहके प्रार्थना किई। ४५ तब उस ने अपने शिष्यों के पास आ उन से कहा सो तुम सोते रहते और बिश्राम करते हो . देखो घड़ी आ पहुंची है और मनुष्य का पुत्र पापियों ४६ के हाथ में पकड़वाया जाता है। उठो चलें देखो जो मुझे पकड़वाता है सो निकट आया है॥

४७ वह बोलता ही था कि देखो यिहूदा जो बारह शिष्यों में से एक था आ पहुंचा और लोगों के प्रधान याजकों और प्राचीनों की ओर से बहुत लोग खड्ग और लाठियां लिये हुए उस के ४८ संग। यीशु के पकड़वानेहारे ने उन्हें यह पता दिया था कि जिस को मैं ४९ चूमूं वही है उस को पकड़ो। और वह तुरन्त यीशु पास आके बोला हे गुरु ५० प्रणाम और उस को चूमा। यीशु ने उस से कहा हे मित्र तू किस लिये आया है . तब उन्हों ने आके यीशु पर हाथ ५१ डालके उसे पकड़ा। इस पर देखो यीशु के संगियों में से एक ने हाथ बढ़ाके अपना खड्ग खींचके महायाजक के दास को मारा और उस का कान उड़ा दिया। ५२ तब यीशु ने उस से कहा अपना खड्ग फिर काठी में रख क्योंकि जो लोग खड्ग खींचते हैं सो सब खड्ग से नाश किये जायेंगे। ५३ क्या तू समझता है कि मैं अभी अपने पिता से बिन्ती नहीं कर सकता हूं और वह मेरे पास स्वर्गदूतों की बारह सेनाओं से अधिक पहुंचा न देगा। ५४ परन्तु तब धर्म्मपुस्तक में जो लिखा है कि ऐसा होना अवश्य है सो क्योंकर पूरा होय। ५५ उसी घड़ी यीशु ने लोगों से कहा क्या तुम मुझे पकड़ने को जैसे डाकू पर खड्ग और लाठियां लेके निकले हो . मैं मन्दिर में उपदेश करता हुआ प्रतिदिन तुम्हारे संग बैठता था और तुम ने मुझे नहीं पकड़ा। ५६ परन्तु यह सब इस लिये हुआ कि भविष्यद्वक्ताओं के पुस्तक की बातें पूरी होवें . तब सब शिष्य उसे छोड़के भागे॥

५७ जिन्हों ने यीशु को पकड़ा सो उस को कियाफा महायाजक के पास ले गये जहां अध्यापक और प्राचीन लोग एकट्ठे हुए। ५८ पितर दूर दूर उस के पीछे महायाजक के अंगने लों चला गया और भीतर जाके इस का अन्त देखने को प्यादों के संग बैठा। ५९ प्रधान याजकों और प्राचीनों ने और न्याइयों की सारी सभा ने यीशु को घात करवाने के लिये उस पर झूठी साक्षी ढूंढ़ी परन्तु न पाई। ६० बहुतेरे झूठे साक्षी तो आये तौभी उन्हों ने नहीं पाई। ६१ अन्त में दो झूठे साक्षी आके बोले इस ने कहा कि मैं ईश्वर का मन्दिर ढा सकता और उसे तीन दिन में फिर बना सकता हूं। ६२ तब महायाजक ने खड़ा हो यीशु से

कहा क्या तू कुछ उत्तर नहीं देता है . ये लोग तेरे बिरुद्ध क्या साक्षी देते हैं।
६३ परन्तु यीशु चुप रहा इस पर महायाजक ने उस से कहा मैं तुझे जीवते ईश्वर की किरिया देता हूं हमों से कह तू ईश्वर का पुत्र खीष्ट है कि नहीं।
६४ यीशु उस से बोला तू तो कह चुका और मैं यह भी तुम्हों से कहता हूं कि इस के पीछे तुम मनुष्य के पुत्र को सर्व्व-शक्तिमान की दहिनी ओर बैठे और आकाश के मेघों पर आते देखोगे।
६५ तब महायाजक ने अपने बस्त्र फाड़के कहा यह ईश्वर की निन्दा कर चुका है अब हमें साक्षियों का और क्या प्रयो-जन . देखो तुम ने अभी उस के मुख से
६६ ईश्वर की निन्दा सुनी है। तुम क्या बिचार करते हो . उन्हों ने उत्तर दिया
६७ वह बध के योग्य है। तब उन्हों ने उस के मुंह पर थूका और उसे घूसे मारे।
६८ औरों ने थपेड़े मारके कहा हे खीष्ट हम से भविष्यद्वाणी बोल किस ने तुझे मारा॥
६९ पितर बाहर अंगने में बैठा था और एक दासी उस पास आके बोली तू भी
७० यीशु गालीली के संग था। उस ने सभों के साम्हने मुकरके कहा मैं नहीं जानता
७१ तू क्या कहती है। जब वह बाहर डेवढ़ी में गया तब दूसरी दासी ने उसे देखके जो लोग वहां थे उन से कहा
७२ यह भी यीशु नासरी के संग था। उस ने किरिया खाके फिर मुकरा कि मैं
७३ उस मनुष्य को नहीं जानता हूं। थोड़ी बेर पीछे जो लोग वहां खड़े थे उन्हों ने पितर के पास आके उस से कहा तू भी सचमुच उन में से एक है क्योंकि तेरी बोली भी तुझे प्रगट करती है।
७४ तब वह धिक्कार देने और किरिया खाने लगा कि मैं उस मनुष्य को नहीं जानता
७५ हूं . और तुरन्त मुर्ग बोला। तब पितर ने यीशु का बचन जिस ने उस से कहा था कि मुर्ग के बोलने से आगे तू तीन बार मुझ से मुकरेगा स्मरण किया और बाहर निकलके बिलक बिलक रोया॥

सताईसवां पर्व्व।

१ जब भोर हुआ तब लोगों के सब प्रधान याजकों और प्राचीनों ने आपस में यीशु के बिरुद्ध बिचार किया कि
२ उसे घात करवावें। और उन्हों ने उसे बांधा और ले जाके पन्तिय पिलात अध्यक्ष को सौंप दिया॥
३ जब उस के पकड़वानेहारे यिहूदा ने देखा कि वह दंड के योग्य ठहराया गया तब वह पछताके उन तीस रुपैयों को प्रधान याजकों और प्राचीनों के पास
४ फेर लाया . और कहा मैं ने निर्दोषी लोहू पकड़वाने में पाप किया है . वे
५ बोले हमें क्या तूही जान। तब वह उन रुपैयों को मन्दिर में फेंकके चला गया और जाके अपने को फांसी दिई।
६ प्रधान याजकों ने रुपैये लेके कहा इन्हें मन्दिर के भंडार में डालना उचित नहीं
७ है क्योंकि यह लोहू का दाम है। सो उन्हों ने आपस में बिचार कर उन रुपैयों से परदेशियों को गाड़ने के लिये
८ कुम्हार का खेत मोल लिया। इस से वह खेत आज तक लोहू का खेत कहा-
९ वता है। तब जो बचन यिरमियाह भविष्यद्वक्ता से कहा गया था सो पूरा हुआ कि उन्हों ने वे तीस रुपैये हां इस्रायेल के सन्तानों से उस मुलाये हुए का दाम जिसे उन्हों ने मुलाया ले
१० लिया . और जैसे परमेश्वर ने मुझ को आज्ञा दिई तैसे उन्हें कुम्हार के खेत के दाम में दिया॥
११ यीशु अध्यक्ष के आगे खड़ा हुआ और अध्यक्ष ने उस से पूछा क्या तू यिहूदियों का राजा है . यीशु ने उस

१२ से कहा आप ही तो कहते हैं। जब प्रधान याजक और प्राचीन लोग उस पर दोष लगाते थे तब उस ने कुछ १३ उत्तर नहीं दिया। तब पिलात ने उस से कहा क्या तू नहीं सुनता कि ये लोग तेरे विरुद्ध कितनी साक्षी देते हैं। १४ परन्तु उस ने एक बात भी उस को उत्तर न दिया यहां लों कि अध्यक्ष ने १५ बहुत अचंभा किया। उस पर्ब्ब में अध्यक्ष की यह रीति थी कि एक बन्धुवे को जिसे लोग चाहते थे उन्हों १६ के लिये छोड़ देता था। उस समय में उन्हों का एक प्रसिद्ध बन्धुवा था जिस १७ का नाम बरब्बा था। सो जब वे एकट्ठे हुए तब पिलात ने उन से कहा तुम किस को चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये छोड़ देऊं बरब्बा को अथवा यीशु को १८ जो खीष्ट कहावता है। क्योंकि वह जानता था कि उन्हों ने उस को डाह १९ से पकड़वाया था। जब वह विचार आसन पर बैठा था तब उस की स्त्री ने उसे कहला भेजा कि आप उस धर्म्मी मनुष्य से कुछ काम न रखिये क्योंकि मैं ने आज स्वप्न में उस के कारण बहुत २० दुःख पाया है। प्रधान याजकों और प्राचीनों ने लोगों को समझाया कि वे बरब्बा को मांग लेवें और यीशु को नाश २१ करवावें। अध्यक्ष ने उन को उत्तर दिया कि इन दोनों में से तुम किस को चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये छोड़ २२ देऊं. वे बोले बरब्बा को। पिलात ने उन से कहा तो मैं यीशु से जो खीष्ट कहावता है क्या करूं. सभों ने उस से कहा वह क्रूश पर चढ़ाया जाय। २३ अध्यक्ष ने कहा क्यों उस ने कौन सी बुराई किई है. परन्तु उन्हों ने अधिक पुकारके कहा वह क्रूश पर चढ़ाया जाय॥

२४ जब पिलात ने देखा कि कुछ बन नहीं पड़ता पर और भी हुल्लड़ होता है तब उस ने जल लेके लोगों के साम्हने हाथ धोके कहा मैं इस धर्म्मी मनुष्य के लोहू से निर्दोष हूं तुम ही जानो। २५ सब लोगों ने उत्तर दिया कि उस का लोहू हम पर और हमारे सन्तानों पर होवे॥

२६ तब उस ने बरब्बा को उन्हों के लिये छोड़ दिया और यीशु को कोड़े मारके क्रूश पर चढ़ाये जाने को सौंप दिया। २७ तब अध्यक्ष के योद्धाओं ने यीशु को अध्यक्षभवन में ले जाके सारी पलटन उस पास एकट्ठी किई। २८ और उन्हों ने उस का वस्त्र उतारके उसे लाल बागा पहिराया. २९ और कांटों का मुकुट गून्थ के उस के सिर पर रखा और उस के दहिने हाथ में नरकट दिया और उस के आगे घुटने टेकके यह कहके उस से ठट्ठा किया कि हे यिहूदियों के राजा प्रणाम। ३० और उन्हों ने उस पर थूका और उस नरकट को ले उस के सिर पर मारा। ३१ जब वे उस से ठट्ठा कर चुके तब उस से वह बागा उतारके और उसी का वस्त्र उस को पहिराके उसे क्रूश पर चढ़ाने को ले गये। ३२ बाहर आते हुए उन्हों ने शिमोन नाम कुरीनी देश के एक मनुष्य को पाया और उसे बेगार पकड़ा कि उस का क्रूश ले चले॥

३३ जब वे एक स्थान पर जो गलगथा अर्थात खोपड़ी का स्थान कहावता है ३४ पहुंचे. तब उन्हों ने सिरके में पित्त मिलाके उसे पीने को दिया परन्तु उस ने चीखके पीने न चाहा। ३५ तब उन्हों ने उस को क्रूश पर चढ़ाया और चिट्ठियां डालके उस के वस्त्र बांट लिये कि जो वचन भविष्यद्वक्ता ने कहा था सो पूरा होवे कि उन्हों ने मेरे कपड़े आपस में बांट लिये और मेरे वस्त्र पर चिट्ठियां डालीं। ३६ तब उन्हों ने वहां बैठके उस

३७ का पहरा दिया । और उन्हों ने उस का दोषपत्र उस के सिर से ऊपर लगाया कि यह यिहूदियों का राजा यीशु है । ३८ तब दो डाकू एक दहिनी ओर और दूसरा बाईं ओर उस के संग क्रूशों पर चढ़ाये गये ॥

३९ जो लोग उधर से आते जाते थे उन्हों ने अपने सिर हिलाके और यह ४० कहके उस की निन्दा किई, कि हे मन्दिर के ढानेहारे और तीन दिन में बनानेहारे अपने को बचा, जो तू ईश्वर का पुत्र है तो क्रूश पर से उतर ४१ आ । इसी रीति से प्रधान याजकों ने भी अध्यापकों और प्राचीनों के संग ४२ ठट्ठा कर कहा, उस ने औरों को बचाया अपने को बचा नहीं सकता है, जो वह इस्रायेल का राजा है तो क्रूश पर से अब उतर आवे और हम उस का ४३ विश्वास करेंगे । वह ईश्वर पर भरोसा रखता है, यदि ईश्वर उसे चाहता है तो उस को अब बचावे क्योंकि उस ने ४४ कहा मैं ईश्वर का पुत्र हूं । जो डाकू उस के संग क्रूशों पर चढ़ाये गये उन्हों ने भी इसी रीति से उस की निन्दा किई ॥

४५ दो पहर से तीसरे पहर लों सारे ४६ देश में अंधकार हो गया । तीसरे पहर के निकट यीशु ने बड़े शब्द से पुकारके कहा एली एली लामा शबक्तनी अर्थात् हे मेरे ईश्वर हे मेरे ईश्वर तू ने ४७ क्यों मुझे त्यागा है । जो लोग वहां खड़े थे उन में से कितनों ने यह सुनके कहा वह एलियाह को बुलाता है । ४८ उन में से एक ने तुरन्त दौड़के इस्पंज लेके सिरके में भिंगाया और नल पर ४९ रखके उसे पीने को दिया । औरों ने कहा रहने दे हम देखें कि एलियाह उसे बचाने को आता है कि नहीं ॥

५० तब यीशु ने फिर बड़े शब्द से पुकारके प्राण त्यागा । और देखो ५१ मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे लों फटके दो भाग हो गया और धरती डोली ५२ और पर्ब्बत तड़क गये । और कबरें खुलीं और सोये हुए पवित्र लोगों की ५३ बहुत लोथें उठीं । और यीशु के जी उठने के पीछे वे कबरों में से निकलके पवित्र नगर में गये और बहुतेरों को ५४ दिखाई दिये । तब शतपति और वे लोग जो उस के संग यीशु का पहरा देते थे भुईंडोल और जो कुछ हुआ था सो देखके निपट डर गये और बोले सचमुच यह ईश्वर का पुत्र था ॥

५५ वहां बहुत सी स्त्रियां जो यीशु की सेवा करती हुई गालील से उस के पीछे आई थीं दूर से देखती रहीं । ५६ उन्हों में मरियम मगदलीनी और याकूब की औ योशी की माता मरियम और जबदी के पुत्रों की माता थीं ॥

५७ जब सांझ हुई तब यूसफ नाम अरिमथिया नगर का एक धनवान मनुष्य जो आप भी यीशु का शिष्य था आया । ५८ उस ने पिलात के पास जाके यीशु की लोथ मांगी, तब पिलात ने आज्ञा ५९ किई कि लोथ दिई जाय । यूसफ ने लोथ को ले उसे उजली चद्दर में लपेटा, ६० और उसे अपनी नई कबर में रखा जो उस ने पत्थर में खुदवाई थी और कबर के द्वार पर बड़ा पत्थर लुढ़काके चला ६१ गया । और मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम वहां कबर के साम्हने बैठी थीं ॥

६२ तैयारी के दिन के पीछे प्रधान याजक और फरीशी लोग अगले दिन पिलात ६३ के पास एकट्ठे हुए, और बोले हे प्रभु हमें चेत है कि उस भरमानेहारे ने अपने जीते जी कहा कि तीन दिन के पीछे ६४ मैं जी उठूंगा । सो आज्ञा कीजिये कि

तीसरे दिन लों कबर की रखवाली किई जाय न हो कि उस के शिष्य रात को आके उसे चुरा ले जावें और लोगों से कहें कि वह मृतकों में से जी उठा है . तब पिछली भूल पहिली से बुरी
६५ होगी । पिलात ने उन से कहा तुम्हारे पास पहरुए हैं जाओ अपने जानते भर
६६ रखवाली करो । सो उन्हों ने जाके पत्थर पर छाप देके पहरुए बैठाके कबर की रखवाली किई ॥

अठाईसवां पर्ब्ब ।

१ बिश्रामवार के पीछे अठवारे के पहिले दिन पह फटते मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम कबर को देखने आईं ।
२ और देखो बड़ा भुईंडोल हुआ कि परमेश्वर का एक दूत स्वर्ग से उतरा और आके कबर के द्वार पर से पत्थर लुढ़काके
३ उस पर बैठा । उस का रूप बिजली सा और उस का बस्त्र पाले की नाईं
४ उजला था । उस के डरके मारे पहरुए कांप गये और मृतकों के समान हुए ।
५ दूत ने स्त्रियों को उत्तर दिया कि तुम मत डरो मैं जानता हूं कि तुम यीशु को जो क्रूश पर घात किया गया ढूंढ़ती
६ हो । वह यहां नहीं है जैसे उस ने कहा वैसे जी उठा है . आओ यह स्थान
७ देखो जहां प्रभु पड़ा था । और शीघ्र जाके उस के शिष्यों से कहो कि वह मृतकों में से जी उठा है और देखो वह तुम्हारे आगे गालील को जाता है वहां उसे देखोगे . देखो मैं ने तुम से कहा
८ है । वे शीघ्र निकलके भय और बड़े आनन्द से उस के शिष्यों को सन्देश देने को कबर से दौड़ीं ॥

९ जब वे उस के शिष्यों को सन्देश देने को जाती थीं देखो यीशु उन से आ मिला और कहा कल्याण हो और उन्हों ने निकट आ उस के पांव पकड़के उस
१० को प्रणाम किया । तब यीशु ने उन से कहा मत डरो जाके मेरे भाइयों से कह दो कि वे गालील को जावें और वहां वे मुझे देखेंगे ॥

११ ज्यों स्त्रियां जाती थीं त्योंही देखो पहरुओं में से कोई कोई नगर में आये और सब कुछ जो हुआ था प्रधान
१२ याजकों से कह दिया । तब उन्हों ने प्राचीनों के संग एकट्ठे हो आपस में बिचार कर योद्धाओं को बहुत रुपैये
१३ देके कहा . तुम यह कहो कि रात को जब हम सोये थे तब उस के शिष्य
१४ आके उसे चुरा ले गये । जो यह बात अध्यक्ष के सुनने में आवे तो हम उस
१५ को समझाके तुम को बचा लेंगे । सो उन्हों ने रुपैये लेके जैसे सिखाये गये थे वैसाही किया और यह बात यिहूदियों में आज लों चलित है ॥

१६ ग्यारह शिष्य गालील में उस पर्ब्बत पर गये जो यीशु ने उन को बताया था ।
१७ और उन्हों ने उसे देखके उस को प्रणाम किया पर कितनों को सन्देह हुआ ।
१८ यीशु ने उन पास आ उन से कहा स्वर्ग में और पृथिवी पर समस्त अधिकार
१९ मुझ को दिया गया है । इस लिये तुम जाके सब देशों के लोगों को शिष्य करो और उन्हें पिता औ पुत्र औ पवित्र आत्मा
२० के नाम से बपतिसमा देओ . और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा किई हैं पालन करने को सिखाओ और देखो मैं जगत के अन्त लों सब दिन तुम्हारे संग हूं । आमीन ॥

मार्क रचित सुसमाचार।

पहिला पर्ब्ब।

१ ईश्वर के पुत्र यीशु खीष्ट के २ सुसमाचार का आरंभ। जैसे भविष्यद्वक्ताओं के पुस्तक में लिखा है कि देख मैं अपने दूत को तेरे आगे भेजता हूं जो तेरे आगे तेरा पन्थ बनायेगा। ३ किसी का शब्द हुआ जो जंगल में पुकारता है कि परमेश्वर का पन्थ बनाओ उस के राजमार्ग सीधे करो। ४ योहन ने जंगल में बपतिसमा दिया और पापमोचन के लिये पश्चात्ताप के ५ बपतिसमा का उपदेश किया। और सारे यिहूदिया देश के और यिरूशलीम नगर के रहनेहारे उस पास निकल आये और सभों ने अपने अपने पापों को मानके यर्दन नदी में उस से ६ बपतिसमा लिया। योहन ऊंट के रोम का वस्त्र और अपनी कटि में चमड़े का पटुका पहिनता था और टिड्डियां ७ औ बन मधु खाया करता था। उस ने प्रचार कर कहा मेरे पीछे वह आता है जो मुझ से अधिक शक्तिमान है मैं उस के जूतों का बन्ध झुकके खोलने ८ के योग्य नहीं हूं। मैं ने तुम्हें जल से बपतिसमा दिया है परन्तु वह तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिसमा देगा॥

९ उन दिनों में यीशु ने गालील देश के नासरत नगर से आके योहन से १० यर्दन में बपतिसमा लिया। और तुरन्त जल से ऊपर आते हुए उस ने स्वर्ग को खुले और आत्मा को कपोत की ११ नाईं अपने ऊपर उतरते देखा। और यह आकाशबाणी हुई कि तू मेरा प्रिय पुत्र है जिस से मैं अति प्रसन्न हूं॥

१२ तब आत्मा तुरन्त उस को जंगल में ले गया। वहां जंगल में चालीस १३ दिन शैतान से उस की परीक्षा किई गई और वह बनपशुओं के संग था और स्वर्गदूतों ने उस की सेवा किई॥

योहन के बन्दीगृह में डाले जाने १४ के पीछे यीशु ने गालील में आके ईश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार किया, और कहा समय पूरा हुआ है और १५ ईश्वर का राज्य निकट आया है पश्चात्ताप करो और सुसमाचार पर बिश्वास करो। गालील के समुद्र के १६ तीर पर फिरते हुए उस ने शिमोन को और उस के भाई अन्द्रिय को समुद्र में जाल डालते देखा क्योंकि वे मछुवे थे। यीशु ने उन से कहा मेरे पीछे आओ १७ मैं तुम को मनुष्यों के मछुवे बनाऊंगा। वे तुरन्त अपने जाल छोड़के उस के १८ पीछे हो लिये। वहां से थोड़ा आगे १९ बढ़के उस ने जबदी के पुत्र याकूब और उस के भाई योहन को देखा कि वे नाव पर जालों को सुधारते थे। उस २० ने तुरन्त उन्हें बुलाया और वे अपने पिता जबदी को मजूरों के संग नाव पर छोड़के उस के पीछे हो लिये॥

वे कफर्नाहूम नगर में आये और २१ यीशु ने तुरन्त बिश्राम के दिन सभा के घर में जाके उपदेश किया। लोग उस २२ के उपदेश से अचंभित हुए क्योंकि उस ने अध्यापकों की रीति से नहीं परन्तु अधिकारी की रीति से उन्हें उपदेश दिया। उन की सभा के घर में एक २३ मनुष्य था जिसे अशुद्ध भूत लगा था। उस ने चिल्लाके कहा हे यीशु नासरी २४ रहने दीजिये आप को हम से क्या काम, क्या आप हमें नाश करने आये

हैं . मैं आप को जानता हूं आप कौन
२५ हैं ईश्वर का पवित्र जन। यीशु ने उस
को डांटके कहा चुप रह और उस में
२६ से निकल आ। तब अशुद्ध भूत उस
मनुष्य को मरोड़के और बड़े शब्द से
२७ चिल्लाके उस में से निकल आया। इस
पर सब लोग ऐसे अचंभित हुए कि
आपस में बिचार करके बोले यह क्या
है . यह कौन सा नया उपदेश है कि
वह अधिकारी की रीति से अशुद्ध भूतों
को भी आज्ञा देता है और वे उस की
२८ आज्ञा मानते हैं। सो उस की कीर्त्ति
तुरन्त गालील के आसपास के सारे देश
में फैल गई॥

२९ सभा के घर से निकलके वे तुरन्त
याकूब और योहन के संग शिमोन और
३० अन्द्रिय के घर में आये। और शिमोन
की सास ज्वर से पीड़ित पड़ी थी और
उन्हों ने तुरन्त उस के विषय में उस से
३१ कहा। तब उस ने उस पास आ उस
का हाथ पकड़के उसे उठाया और ज्वर
ने तुरन्त उस को छोड़ा और वह उन
की सेवा करने लगी॥

३२ सांझ को जब सूर्य्य डूबा तब लोग
सब रोगियों को और भूतग्रस्तों को उस
३३ पास लाये। सारे नगर के लोग भी
३४ द्वार पर एकट्ठे हुए। और उस ने बहुतों
को जो नाना प्रकार के रोगों से दुःखी
थे चंगा किया और बहुत भूतों को
निकाला परन्तु भूतों को बोलने न दिया
क्योंकि वे उसे जानते थे॥

३५ भोर को कुछ रात रहते वह उठके
निकला और जंगली स्थान में जाके वहां
३६ प्रार्थना किई। तब शिमोन और जो
उस के संग थे सो उस के पीछे हो
३७ लिये . और उसे पाके उस से बोले सब लोग
३८ आप को ढूंढ़ते हैं। उस ने उन से कहा
आओ हम आसपास के नगरों में जायें
कि मैं वहां भी उपदेश करूं क्योंकि मैं
इसी लिये बाहर आया हूं। सो उस ३९
ने सारे गालील में उन की सभाओं में
उपदेश किया और भूतों को निकाला॥

४० एक कोढ़ी ने उस पास आ उस से
बिन्ती किई और उस के आगे घुटने
टेकके उस से कहा जो आप चाहें तो
मुझे शुद्ध कर सकते हैं। यीशु को दया ४१
आई और उस ने हाथ बढ़ा उसे छूके
उस से कहा मैं तो चाहता हूं शुद्ध हो
जा। उस के कहने पर उस का कोढ़ ४२
तुरन्त जाता रहा और वह शुद्ध हुआ।
तब उस ने उसे चिताके तुरन्त बिदा ४३
किया . और उस से कहा देख किसी ४४
से कुछ मत कह परन्तु जा अपने तईं
याजक को दिखा और अपने शुद्ध होने
के विषय में जो कुछ मूसा ने ठहराया
उसे लोगों पर साक्षी होने के लिये चढ़ा।
परन्तु वह बाहर जाके इस बात को ४५
बहुत सुनाने और प्रचार करने लगा यहां
लों कि यीशु फिर प्रगट होके नगर में
नहीं जा सका परन्तु बाहर जंगली
स्थानों में रहा और लोग चहुं ओर से
उस पास आये॥

दूसरा पर्ब्ब।

१ कई एक दिन के पीछे यीशु ने फिर
कफर्नाहूम में प्रवेश किया और सुना
२ गया कि वह घर में है। तुरन्त इतने
बहुत लोग एकट्ठे हुए कि वे न घर में
न द्वार के आसपास समा सके और उस
३ ने उन्हें बचन सुनाया। और लोग एक
अर्द्धांगी को चार मनुष्यों से उठवाके
४ उस पास ले आये। परन्तु जब वे भीड़
के कारण उस के निकट पहुंच न सके
तब जहां वह था वहां उन्हों ने छत
उधेड़के और कुछ खोलके उस खाट को
जिस पर अर्द्धांगी पड़ा था लटका
५ दिया। यीशु ने उन्हों का बिश्वास

देखके उस अर्द्धांगी से कहा हे पुत्र तेरे ५ पाप क्षमा किये गये हैं। और कितने अध्यापक वहां बैठे थे और अपने अपने ७ मन में बिचार करते थे, कि यह मनुष्य क्यों इस रीति से ईश्वर की निन्दा करता है, ईश्वर को छोड़ कौन पापों को ८ क्षमा कर सकता है। यीशु ने तुरन्त अपने आत्मा से जाना कि वे अपने अपने मन में ऐसा बिचार करते हैं और उन से कहा तुम लोग अपने अपने मन में ९ यह बिचार क्यों करते हो। कौन बात सहज है अर्द्धांगी से यह कहना कि तेरे पाप क्षमा किये गये हैं अथवा यह कहना कि उठ अपनी खाट उठाके चल। १० परन्तु जिस्तें तुम जानो कि मनुष्य के पुत्र को पृथिवी पर पाप क्षमा करने का ११ अधिकार है, (उस ने उस अर्द्धांगी से कहा) मैं तुझ से कहता हूं उठ अपनी १२ खाट उठाके अपने घर को जा। वह तुरन्त उठके खाट उठाके सभों के साम्ने चला गया यहां लों कि वे सब बिस्मित हुए और ईश्वर की स्तुति करके बोले हम ने ऐसा कभी नहीं देखा॥

१३ यीशु फिर बाहर समुद्र के तीर पर गया और सब लोग उस पास आये और १४ उस ने उन्हें उपदेश दिया। जाते हुए उस ने अलफई के पुत्र लेवी को कर उगाहने के स्थान में बैठे देखा और उस से कहा मेरे पीछे आ, तब वह उठके १५ उस के पीछे हो लिया। जब यीशु उस के घर में भोजन पर बैठा तब बहुत कर उगाहनेहारे और पापी लोग उस के और उस के शिष्यों के संग बैठ गये क्योंकि बहुत थे और वे उस के पीछे १६ हो लिये। अध्यापकों और फरीशियों ने उस को कर उगाहनेहारों और पापियों के संग खाते देखके उस के शिष्यों से कहा यह क्या है कि वह कर उगाहनेहारों और पापियों के संग खाता और पीता है। यीशु ने यह सुनके उन से १७ कहा निरोगियों को बैद्य का प्रयोजन नहीं है परन्तु रोगियों को, मैं धर्म्मियों को नहीं परन्तु पापियों को पश्चात्ताप के लिये बुलाने आया हूं॥

योहन के और फरीशियों के शिष्य १८ उपवास करते थे और उन्हों ने आ उस से कहा योहन के और फरीशियों के शिष्य क्यों उपवास करते हैं परन्तु आप के शिष्य उपवास नहीं करते। यीशु ने १९ उन से कहा जब दूल्हा सखाओं के संग है तब क्या वे उपवास कर सकते हैं, जब लों दूल्हा उन के संग रहे तब लों वे उपवास नहीं कर सकते हैं। परन्तु वे २० दिन आवेंगे जिन में दूल्हा उन से अलग किया जायगा तब वे उन दिनों में उपवास करेंगे। कोई मनुष्य कोरे कपड़े २१ का टुकड़ा पुराने बस्त्र में नहीं टांकता है नहीं तो वह नया टुकड़ा पुराने कपड़े से कुछ और भी फाड़ लेता है और उस का फटा बढ़ जाता है। और कोई २२ मनुष्य नया दाख रस पुराने कुप्पों में नहीं भरता है नहीं तो नया दाख रस कुप्पों को फाड़ता है और दाख रस बह जाता है और कुप्पे नष्ट होते हैं परन्तु नया दाख रस नये कुप्पों में भरा चाहिये॥

बिश्राम के दिन यीशु खेतों में होके २३ जाता था और उस के शिष्य जाते हुए बालें तोड़ने लगे। तब फरीशियों ने २४ उस से कहा देखिये बिश्राम के दिन में जो काम उचित नहीं है सो ये लोग क्यों करते हैं। उस ने उन से कहा क्या २५ तुम ने कभी नहीं पढ़ा कि जब दाऊद को प्रयोजन था और वह और उस के संगी लोग भूखे हुए तब उस ने क्या किया। उस ने क्योंकर अबियाथर २६

महायाजक के समय में ईश्वर के घर में जाके भेंट की रोटियां खाईं जिन्हें खाना और किसी को नहीं केवल याजकों को उचित है और अपने संगियों २७ को भी दिईं । और उस ने उन से कहा बिश्रामवार मनुष्य के लिये हुआ पर २८ मनुष्य बिश्रामवार के लिये नहीं । इस लिये मनुष्य का पुत्र बिश्रामवार का भी प्रभु है ॥

तीसरा पर्ब्ब ।

१ यीशु फिर सभा के घर में गया और वहां एक मनुष्य था जिस का हाथ २ सूख गया था । और लोग उस पर दोष लगाने के लिये उसे ताकते थे कि वह बिश्राम के दिन में उस को चंगा करेगा ३ कि नहीं । उस ने सूखे हाथवाले मनुष्य ४ से कहा बीच में खड़ा हो । तब उस ने उन्हों से कहा क्या बिश्राम के दिनों में भला करना अथवा बुरा करना प्राण को बचाना अथवा घात करना उचित ५ है . परन्तु वे चुप रहे । और उस ने उन के मन की कठोरता से उदास हो उन्हों पर क्रोध से चारों ओर दृष्टि किई और उस मनुष्य से कहा अपना हाथ बढ़ा . उस ने उस को बढ़ाया और उस का हाथ फिर दूसरे की नाईं भला चंगा हो गया ॥

६ तब फरीशियों ने बाहर जाके तुरन्त हेरोदियों के संग यीशु के बिरुद्ध आपस में बिचार किया इस लिये कि ७ उसे नाश करें । यीशु अपने शिष्यों के संग समुद्र के निकट गया और गालील और यिहूदिया और यिरूशलीम और इदोम से और यर्दन के उस पार से बड़ी ८ भीड़ उस के पीछे हो लिई । सोर और सीदोन के आसपास के लोगों ने भी जब सुना वह कैसे बड़े काम करता है तब उन में की एक बड़ी भीड़ उस पास आई । उस ने अपने शिष्यों से ९ कहा भीड़ के कारण एक नाव मेरे लिये लगी रहे न हो कि वे मुझे दबावें । क्योंकि उस ने बहुतों को १० चंगा किया यहां लों कि जितने रोगी थे उसे छूने को उस पर गिरे पड़ते थे । अशुद्ध भूतों ने भी जब उसे देखा ११ तब उस को दंडवत किई और पुकारके बोले आप ईश्वर के पुत्र हैं । और उस १२ ने उन को बहुत दृढ़ आज्ञा दिई कि मुझे प्रगट मत करो ॥

फिर उस ने पर्ब्बत पर चढ़के जिन्हें १३ चाहा उन्हें अपने पास बुलाया और वे उस पास गये । तब उस ने बारह जनों १४ को ठहराया कि वे उस के संग रहें . और कि वह उन्हें उपदेश करने को १५ और रोगों को चंगा करने और भूतों को निकालने का अधिकार रखने को भेजे . अर्थात शिमोन को जिस का १६ नाम उस ने पितर रखा . और जबदी १७ के पुत्र याकूब और याकूब के भाई योहन को जिन का नाम उस ने बनेर-गश अर्थात गर्जन के पुत्र रखा . और १८ अन्द्रिय और फिलिप और बर्थलमई और मत्ती और थोमा को और अलफई के पुत्र याकूब को और थद्दई को और शिमोन कानानी को . और यिहूदा १९ इस्करियोती को जिस ने उसे पकड़वाया . और वे घर में आये ॥

तब बहुत लोग फिर एकट्ठे हुए यहां २० लों कि वे रोटी खाने भी न सके । और २१ उस के कुटुम्ब यह सुनके उसे पकड़ने को निकल आये क्योंकि उन्हों ने कहा उस का चित्त ठिकाने नहीं है । तब २२ अध्यापक लोग जो यिरूशलीम से आये थे बोले कि उसे बालजिबूल लगा है और कि वह भूतों के प्रधान की सहा-यता से भूतों को निकालता है । उस ने २३

उन्हें अपने पास बुलाके दृष्टान्तों में उन से कहा शैतान क्योंकर शैतान को २४ निकाल सकता है । यदि किसी राज्य में फूट पड़ी होय तो वह राज्य नहीं २५ ठहर सकता है । और यदि किसी घराने में फूट पड़ी होय तो वह घराना नहीं २६ ठहर सकता है । और यदि शैतान अपने विरोध में उठके अलग बिलग हुआ है तो वह नहीं ठहर सकता है २७ पर उस का अन्त होता है । यदि बलवन्त को कोई पहिले न बांधे तो उस बलवन्त के घर में पैठके उस की सामग्री लूट नहीं सकता है . परन्तु उस बांधके उस के घर को लूटेगा । २८ मैं तुम से सत्य कहता हूं कि मनुष्यों के सन्तानों के सब पाप और सब निन्दा जिस से वे निन्दा करें क्षमा किई २९ जायगी । परन्तु जो कोई पवित्र आत्मा की निन्दा करे सो कभी नहीं क्षमा किया जायगा पर अनन्त दंड के योग्य ३० है । वे जो बोले कि उसे अशुद्ध भूत लगा है इसी लिये यीशु ने यह बात कही ॥

३१ सो उस के भाई और उस की माता आये और बाहर खड़े हो उस को बुलवा ३२ भेजा । बहुत लोग उस के आसपास बैठे थे और उन्हों ने उस से कहा देखिये आप की माता और आप के भाई ३३ बाहर आप को ढूंढ़ते हैं । उस ने उन को उत्तर दिया कि मेरी माता अथवा ३४ मेरे भाई कौन हैं । और जो लोग उस के आसपास बैठे थे उन पर चारों ओर दृष्टि कर उस ने कहा देखो मेरी माता ३५ और मेरे भाई । क्योंकि जो कोई ईश्वर की इच्छा पर चले वही मेरा भाई और मेरी बहिन और माता है ॥

चौथा पर्व्व ।

१ यीशु फिर समुद्र के तीर पर उपदेश करने लगा और ऐसी बड़ी भीड़ उस पास एकट्ठी हुई कि वह नाव पर चढ़के समुद्र पर बैठा और सब लोग २ समुद्र के निकट भूमि पर रहे । तब उस ने उन्हें दृष्टान्तों में बहुत सी बातें सिखाईं और अपने उपदेश में उन से ३ कहा . सुनो देखो एक बोनेहारा बीज ४ बोने को निकला । बीज बोने में कुछ मार्ग की ओर गिरा और आकाश के ५ पंछियों ने आके उसे चुग लिया । कुछ पत्थरैली भूमि पर गिरा जहां उस को बहुत मिट्टी न मिली और बहुत मिट्टी न मिलने से वह बेग उगा । परन्तु सूर्य्य उदय होने पर वह झुलस गया और ७ जड़ न पकड़ने से सूख गया । कुछ कांटों के बीच में गिरा और कांटों ने बढ़के उस को दबा डाला और उस ने ८ फल न दिया । परन्तु कुछ अच्छी भूमि पर गिरा और फल दिया जो उत्पन्न होके बढ़ता गया और कोई तीस गुणे ९ कोई साठ गुणे कोई सौ गुणे फल फला । और उस ने उन से कहा जिस को सुनने के कान हों सो सुने ॥

१० जब वह एकान्त में था तब जो लोग उस के समीप थे उन्हों ने बारह शिष्यों के साथ इस दृष्टान्त का अर्थ ११ उस से पूछा । उस ने उन से कहा तुम को ईश्वर के राज्य का भेद जानने का अधिकार दिया गया है परन्तु जो बाहर हैं उन्हों से सब बातें दृष्टान्तों में होती १२ हैं . इस लिये कि वे देखते हुए देखें और उन्हें न सूझे और सुनते हुए सुनें और न बूझें ऐसा न हो कि वे कभी फिर जावें और उन के पाप क्षमा किये जायें ॥

१३ फिर उस ने उन से कहा क्या तुम यह दृष्टान्त नहीं समझते हो तो सब १४ दृष्टान्त क्योंकर समझोगे । बोनेहारा १५ वह है जो बचन को बोता है । मार्ग

को ओर के जहां बचन बोया जाता है वे हैं कि जब वे सुनते हैं तब शैतान तुरन्त आके जो बचन उन के मन में बोया गया था उसे छीन लेता है। १६ वैसे ही जिन में बीज पत्थरैली भूमि पर बोया जाता है सो वे हैं कि जब बचन सुनते हैं तब तुरन्त आनन्द से १७ उस को ग्रहण करते हैं। परन्तु उन में जड़ न बंधने से वे थोड़ी बेर ठहरते हैं तब बचन के कारण क्लेश अथवा उपद्रव १८ होने पर तुरन्त ठोकर खाते हैं। जिन में बीज कांटों के बीच में बोया जाता है सो १९ वे हैं जो बचन सुनते हैं। पर इस संसार की चिन्ता और धन की माया और और वस्तुओं का लोभ उन में समाके बचन को दबाते हैं और वह २० निष्फल होता है। पर जिन में बीज अच्छी भूमि पर बोया गया सो वे हैं जो बचन सुनके ग्रहण करते हैं और फल फलते हैं कोई तीस गुणे कोई साठ गुणे कोई सौ गुणे॥

२१ और उस ने उन से कहा क्या दीपक को लाते हैं कि बर्त्तन के नीचे अथवा खाट के नीचे रखा जाय, क्या इस लिये २२ नहीं कि दीवट पर रखा जाय। कुछ गुप्त नहीं है जो प्रगट न किया जायगा और न कुछ छिपा था परन्तु इस लिये २३ कि प्रसिद्ध हो जावे। यदि किसी को २४ सुनने के कान हों तो सुने। फिर उस ने उन से कहा सचेत रहो तुम क्या सुनते हो, जिस नाप से तुम नापते हो उसी से तुम्हारे लिये नापा जायगा और तुम को जो सुनते हो अधिक दिया २५ जायगा। क्योंकि जो कोई रखता है उस को और दिया जायगा परन्तु जो नहीं रखता है उस से जो कुछ उस के पास है सो भी ले लिया जायगा॥

२६ फिर उस ने कहा ईश्वर का राज्य ऐसा है जैसा कि मनुष्य भूमि में बीज २७ बोय, और रात दिन सोय और उठे और वह बीज जन्मे और बढ़े पर किस २८ रीति से वह नहीं जानता है। क्योंकि पृथिवी आप से आप फल फलती है पहिले अंकुर तब बाल तब बाल में पक्का २९ दाना। परन्तु जब दाना पक चुका है तब वह तुरन्त हंसुआ लगाता है क्योंकि कटनी आ पहुंची है॥

३० फिर उस ने कहा हम ईश्वर के राज्य की उपमा किस से दें और किस ३१ दृष्टान्त से उसे बर्णन करें। वह राई के एक दाने की नाईं है कि जब भूमि में बोया जाता तब भूमि में के सब बीजों ३२ से छोटा है। परन्तु जब बोया जाता तब बढ़ता और सब साग पात से बड़ा हो जाता है और उस की ऐसी बड़ी डालियां निकलती हैं कि आकाश के पंछी उस की छाया में बसेरा कर सकते हैं॥

३३ ऐसे ऐसे बहुत दृष्टान्तों में यीशु ने लोगों को जैसा वे सुन सकते थे वैसा ३४ बचन सुनाया। परन्तु बिना दृष्टान्त से उस ने उन को कुछ न कहा और एकान्त में उस ने अपने शिष्यों को सब बातों का अर्थ बताया॥

३५ उसी दिन सांझ को उस ने उन से कहा कि आओ हम उस पार चलें। ३६ सो उन्हों ने लोगों को बिदा कर उसे नाव पर जैसा था वैसा चढ़ा लिया और कितनी और नावें भी उस के संग थीं। ३७ और बड़ी आंधी उठी और लहरें नाव पर ऐसी लगीं कि वह अब भर जाने लगी। ३८ परन्तु यीशु नाव की पिछली ओर तकिया दिये हुए सोता था और उन्हों ने उसे जगाके उस से कहा हे गुरु क्या आप को सोच नहीं कि हम नष्ट होते हैं। ३९ तब उस ने उठके बयार को डांटा और समुद्र से कहा चुप रह और थम जा और

बयार थम गई और बड़ा चैन हो गया।
४० और उस ने उन से कहा तुम क्यों ऐसे डरते हो तुम्हें बिश्वास क्यों नहीं है।
४१ परन्तु वे बहुत ही डर गये और आपस में बोले यह कौन है कि बयार और समुद्र भी उस की आज्ञा मानते हैं॥

पांचवां पर्ब्ब

१ वे समुद्र के उस पार गदेरियों के
२ देश में पहुंचे। जब यीशु नाव पर से उतरा तब एक मनुष्य जिसे अशुद्ध भूत लगा था कबरस्थान में से तुरन्त उस से
३ आ मिला। उस मनुष्य का बासा कबरस्थान में था और कोई उसे जंजीरों
४ से भी बांध नहीं सकता था। क्योंकि वह बहुत बार बेड़ियों और जंजीरों से बांधा गया था और उस ने जंजीरें तोड़ डालीं और बेड़ियां टुकड़े टुकड़े किईं और कोई उसे बश में नहीं कर
५ सकता था। वह सदा रात दिन पहाड़ों और कबरों में रहता था और चिल्लाता और अपने को पत्थरों से काटता था।
६ वह यीशु को दूर से देखके दौड़ा और
७ उस को प्रणाम किया. और बड़े शब्द से चिल्लाके कहा हे यीशु सर्ब्बप्रधान ईश्वर के पुत्र आप को मुझ से क्या काम. मैं आप को ईश्वर की किरिया देता हूं कि मुझे पीड़ा न दीजिये।
८ क्योंकि यीशु ने उस से कहा हे अशुद्ध
९ भूत इस मनुष्य से निकल आ। और उस ने उस से पूछा तेरा नाम क्या है. उस ने उत्तर दिया कि मेरा नाम सेना
१० है क्योंकि हम बहुत हैं। और उस ने यीशु से बहुत बिन्ती किई कि हमें
११ इस देश से बाहर न भेजिये। वहां पहाड़ों के निकट सूअरों का बड़ा झुंड
१२ चरता था। सो सब भूतों ने उस से बिन्ती कर कहा हमें सूअरों में भेजिये कि
१३ हम उन में पैठें। यीशु ने तुरन्त उन्हें जाने दिया और अशुद्ध भूत निकलके सूअरों में पैठे और झुंड जो दो सहस्र के अटकल थे कड़ाड़े पर से समुद्र में दौड़ गये और समुद्र में डूब मरे। पर सूअरों के चरवाहे भागे
१४ और नगर में और गांवों में इस का समाचार कहा और लोग बाहर निकले
१५ कि देखें क्या हुआ है। और यीशु पास आके वे उस भूतग्रस्त को जिसे भूतों की सेना लगी थी बैठे और बस्त्र पहिने
१६ और सुबुद्धि देखके डर गये। जिन लोगों ने देखा था उन्हों ने उन से कह दिया कि भूतग्रस्त मनुष्य को और सूअरों के बिषय में कैसा हुआ था।
१७ तब वे यीशु से बिन्ती करने लगे कि
१८ हमारे सिवानों से निकल जाइये। जब वह नाव पर चढ़ा तब जो मनुष्य आगे भूतग्रस्त था उस ने उस से बिन्ती किई
१९ कि मैं आप के संग रहूं। पर यीशु ने उसे नहीं रहने दिया परन्तु उस से कहा अपने घर को अपने कुटुम्बों के पास जाके उन्हों से कह दे कि परमेश्वर ने तुझ पर दया करके तेरे लिये
२० कैसे बड़े काम किये हैं। वह जाके दिकापोलि देश में प्रचार करने लगा कि यीशु ने उस के लिये कैसे बड़े काम किये थे और सभों ने अचंभा किया॥

२१ जब यीशु नाव पर फिर पार उतरा तब बहुत लोग उस पास एकट्ठे हुए
२२ और वह समुद्र के तीर पर था। और देखो सभा के अध्यक्षों में से याईर नाम एक अध्यक्ष आया और उसे देखके उस
२३ के पांवों पड़ा. और उस से बहुत बिन्ती कर कहा मेरी बेटी मरने पर है आप आके उस पर हाथ रखिये कि वह चंगी हो जाय तो वह जीयेगी।
२४ तब यीशु उस के संग गया और बड़ी भीड़ उस के पीछे हो लिई और उसे दबाती थी॥

२५ और एक स्त्री जिसे बारह बरस से
२६ लोहू बहने का रोग था . जो बहुत वैद्यों से बड़ा दुःख पाके अपना सब धन उठा चुकी थी और कुछ लाभ नहीं
२७ पाया परन्तु अधिक रोगी हुई . तिस का चर्चा सुनके उस भीड़ में पीछे से आ उस के बस्त्र को छूआ।
२८ क्योंकि उस ने कहा यदि मैं केवल उस के बस्त्र को छूओं तो चंगी हो जाऊंगी।
२९ और उस के लोहू का सोता तुरन्त सूख गया और उस ने अपने देह में जान लिया कि मैं उस रोग से चंगी हुई हूं।
३० यीशु ने तुरन्त अपने में जाना कि मुझ में से शक्ति निकली है और भीड़ में पीछे फिरके कहा किस ने मेरे बस्त्र को
३१ छूआ। उस के शिष्यों ने उस से कहा आप देखते हैं कि भीड़ आप को दबा रही है और आप कहते हैं किस ने मुझे
३२ छूआ। तब जिस ने यह काम किया था उसे देखने को यीशु ने चारों ओर दृष्टि
३३ किई। तब वह स्त्री जो उस पर हुआ था सो जानके डरती और कांपती हुई आई और उसे दंडवत कर उस से सच
३४ सच सब कुछ कह दिया। उस ने उस से कहा हे पुत्री तेरे बिश्वास ने तुझे चंगा किया है कुशल से जा और अपने रोग से चंगी रह॥

३५ वह बोलता ही था कि लोगों ने सभा के अध्यक्ष के घर से आ कहा आप की बेटी मर गई है आप गुरु को और
३६ दुःख क्यों देते हैं। जो बचन कहा जाता था उस को सुनके यीशु ने तुरन्त सभा के अध्यक्ष से कहा मत डर केवल
३७ बिश्वास कर। और उस ने पितर और याकूब और याकूब के भाई योहन को छोड़ और किसी को अपने संग जाने
३८ नहीं दिया। सभा के अध्यक्ष के घर पर पहुंचके उस ने धूमधाम अर्थात लोगों को बहुत रोते और चिल्लाते देखा।
३९ उस ने भीतर जाके उन से कहा क्यों धूम मचाते और रोते हो . कन्या मरी
४० नहीं पर सोती है। वे उस का उपहास करने लगे परन्तु उस ने सभों को बाहर किया और कन्या के माता पिता को और अपने संगियों को लेके जहां कन्या
४१ पड़ी थी वहां पैठा। और उस ने कन्या का हाथ पकड़के उस से कहा तालिथा कूमी अर्थात हे कन्या मैं तुझ से कहता
४२ हूं उठ। और कन्या तुरन्त उठी और फिरने लगी क्योंकि वह बारह बरस की थी . और वे अत्यन्त बिस्मित हुए।
४३ पर उस ने उन को दृढ़ आज्ञा दिई कि यह बात कोई न जाने और कहा कि कन्या को कुछ खाने को दिया जाय॥

छठवां पर्ब्ब।

१ यीशु वहां से जाके अपने देश में आया और उस के शिष्य उस के पीछे
२ हो लिये। बिश्राम के दिन वह सभा के घर में उपदेश करने लगा और बहुत लोग सुनके अचंभित हो बोले इस को यह बातें कहां से हुईं और यह कौन सा ज्ञान है जो उस को दिया गया है कि ऐसे आश्चर्य्य कर्म्म भी उस के हाथों से
३ किये जाते हैं। यह क्या बढ़ई नहीं है मरियम का पुत्र और याकूब और योशी और यिहूदा और शिमोन का भाई और क्या उस की बहिनें यहां हमारे पास नहीं हैं . सो उन्हों ने उस के बिषय
४ में ठोकर खाई। यीशु ने उन से कहा भविष्यद्वक्ता अपना देश और अपने कुटुम्ब और अपना घर छोड़के और
५ कहीं निरादर नहीं होता है। और वह वहां कोई आश्चर्य्य कर्म्म नहीं कर सका केवल थोड़े रोगियों पर हाथ रखके
६ उन्हें चंगा किया। और उस ने उन के अबिश्वास से अचंभा किया और

चहुं ओर के गांवों में उपदेश करता फिरा ॥

७ और वह बारह शिष्यों को अपने पास बुलाके उन्हें दो दो करके भेजने लगा और उन को अशुद्ध भूतों पर ८ अधिकार दिया । और उस ने उन्हें आज्ञा दिई कि मार्ग के लिये लाठी छोड़के और कुछ मत लेओ न झोली ९ न रोटी न पटुके में पैसे । परन्तु जूते १० पहिनो और दो अंगे मत पहिनो । और उस ने उन से कहा जहां कहीं तुम किसी घर में प्रवेश करो जब लों वहां से न निकलो तब लों उसी घर में रहो । ११ जो कोई तुम्हें ग्रहण न करें और तुम्हारी न सुनें वहां से निकलते हुए उन पर साक्षी होने के लिये अपने पांवों के नीचे की धूल झाड़ डालो . मैं तुम से सच कहता हूं कि बिचार के दिन में उस नगर की दशा से सदोम अथवा अमोरा १२ की दशा सहने योग्य होगी । सो उन्हों ने निकलके पश्चात्ताप करने का उपदेश १३ किया . और बहुतेरे भूतों को निकाला और बहुत रोगियों पर तेल मलके उन्हें चंगा किया ॥

१४ हेरोद राजा ने यीशु की कीर्त्ति सुनी क्योंकि उस का नाम प्रसिद्ध हुआ और उस ने कहा योहन बपतिसमा देनेहारा मृतकों में से जी उठा है इस लिये आश्चर्य्य कर्म्म १५ उस से प्रगट होते हैं । औरों ने कहा यह एलियाह है औरों ने कहा भविष्यद्वक्ता है अथवा भविष्यद्वक्ताओं में से एक १६ के समान है । परन्तु हेरोद ने सुनके कहा जिस योहन का मैं ने सिर कटवाया सोई है वह मृतकों में से जी १७ उठा है । क्योंकि हेरोद ने आप अपने भाई फिलिप की स्त्री हेरोदिया के कारण जिस से उस ने बिवाह किया था लोगों को भेजके योहन को पकड़ा था और उसे बन्दीगृह में बांधा था । १८ क्योंकि योहन ने हेरोद से कहा था कि अपने भाई की स्त्री को रखना तुझ को उचित नहीं है । १९ हेरोदिया भी उस से बैर रखती थी और उसे मार डालने चाहती थी पर नहीं सकती थी । २० क्योंकि हेरोद योहन को धर्म्मी और पवित्र पुरुष जानके उस से डरता था और उस की रक्षा करता था और उस की सुनके बहुत बातों पर चलता था और प्रसन्नता से उस की सुनता था । २१ परन्तु जब अवकाश का दिन हुआ कि हेरोद ने अपने जन्म दिन में अपने प्रधानों और सहस्रपतिओं और गालील के बड़े लोगों के लिये बियारी बनाई . २२ और जब हेरोदिया की पुत्री ने भीतर आ नाच कर हेरोद को और उस के संग बैठनेहारों को प्रसन्न किया तब राजा ने कन्या से कहा जो कुछ तेरी इच्छा होय सो मुझ से मांग और मैं तुझे देऊंगा । २३ और उस ने उस से किरिया खाई कि मेरे आधे राज्य लों जो कुछ तू मुझ से मांगे मैं तुझे देऊंगा । २४ उस ने बाहर जा अपनी माता से कहा मैं क्या मांगूंगी . वह बोली योहन बपतिसमा देनेहारे का सिर । २५ उस ने तुरन्त उतावली से राजा के पास भीतर आ बिन्ती कर कहा मैं चाहती हूं कि आप योहन बपतिसमा देनेहारे का सिर थाल में अभी मुझे दीजिये । २६ तब राजा अति उदास हुआ परन्तु उस किरिया के और अपने संग बैठनेहारों के कारण उसे टालने नहीं चाहा । २७ और राजा ने तुरन्त पहरुए को भेजकर योहन का सिर लाने की आज्ञा किई । २८ उस ने जाके बन्दीगृह में उस का सिर काटा और उस का सिर थाल में लाके कन्या को दिया और कन्या ने उसे अपनी मां को

२९ दिया। उस के शिष्य यह सुनके आये और उस की लोथ को उठाके कबर में रखा॥

३० प्रेरितों ने यीशु पास एकट्ठे हो उस से सब कुछ कह दिया उन्हों ने क्या क्या किया और क्या क्या सिखाया था।
३१ उस ने उन से कहा तुम आप एकान्त में किसी जंगली स्थान में आके थोड़ा बिश्राम करो . क्योंकि बहुत लोग आते जाते थे और उन्हें खाने का भी अव-
३२ काश न मिला। सो वे नाव पर चढ़के
३३ जंगली स्थान में एकान्त में गये। और लोगों ने उन को जाते देखा और बहुतों ने उसे चीन्हा और पैदल सब नगरों में से उधर दौड़े और उन के आगे बढ़के
३४ उस पास एकट्ठे हुए। यीशु ने निकलके बड़ी भीड़ को देखा और उस को उन पर दया आई क्योंकि वे बिन रखवाले की भेड़ों की नाईं थे और वह उन्हें बहुत सा उपदेश देने लगा॥

३५ जब अबेर हो गई तब उस के शिष्यों ने उस पास आ कहा यह तो जंगली
३६ स्थान है और अबेर हुई है। लोगों को बिदा कीजिये कि वे चारों ओर के गांवों और बस्तियों में जाके अपने लिये रोटी मोल लेवें क्योंकि उन के पास
३७ कुछ खाने को नहीं है। उस ने उन को उत्तर दिया कि तुम उन्हें खाने को देओ . उन्हों ने उस से कहा क्या हम जाके दो सौ सूकियों की रोटी मोल
३८ लेवें और उन्हें खाने को देवें। उस ने उन से कहा तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं जाके देखो . उन्हों ने बूझके कहा
३९ पांच और दो मछली। तब उस ने सब लोगों को हरी घास पर पांति पांति
४० बैठाने की आज्ञा उन्हें दिई। वे सौ सौ और पचास पचास करके पांति पांति
४१ बैठ गये। और उस ने उन पांच रोटियों और दो मछलियों को ले स्वर्ग की ओर देखके धन्यबाद किया और रोटियां तोड़के अपने शिष्यों को दिईं कि लोगों के आगे रखें और उन दो मछलियों को
४२ भी सभों में बांट दिया। सो सब खाके
४३ तृप्त हुए। और उन्हों ने रोटियों के टुकड़ों की और मछलियों की बारह
४४ टोकरी भरी उठाईं। जिन्हों ने रोटी खाई सो पांच सहस्र पुरुषों के अटकल थे॥

४५ तब यीशु ने तुरन्त अपने शिष्यों को दृढ़ आज्ञा दिई कि जब लों मैं लोगों को बिदा करूं तुम नाव पर चढ़के मेरे आगे उस पार बैतसैदा नगर को जाओ।
४६ वह उन्हें बिदा कर प्रार्थना करने को
४७ पर्ब्बत पर गया। सांझ को नाव समुद्र के बीच में थी और यीशु भूमि पर अकेला
४८ था। और उस ने शिष्यों को खेवने में व्याकुल देखा क्योंकि बयार उन के सन्मुख की थी और रात के चौथे पहर के निकट वह समुद्र पर चलते हुए उन के पास आया और उन के पास से होके
४९ निकला चाहता था। पर उन्हों ने उसे समुद्र पर चलते देखके समझा कि प्रेत है और चिल्लाये क्योंकि वे सब उसे देखके
५० घबरा गये। वह तुरन्त उन से बात करने लगा और उन से कहा ढाढ़स
५१ बांधो मैं हूं डरो मत। तब वह उन पास नाव पर चढ़ा और बयार थम गई और वे अपने अपने मन में अत्यन्त
५२ बिस्मित और अचंभित हुए। क्योंकि उन्हों का मन कठोर था इस लिये उन रोटियों के आश्चर्य्य कर्म्म से उन्हें ज्ञान न हुआ॥

५३ वे पार उतरके गिनेसरत देश में
५४ पहुंचे और लगान किया। जब वे नाव पर से उतरे तब लोगों ने तुरन्त
५५ यीशु को चीन्हा . और आसपास के सारे देश में दौड़के जहां सुना कि वह

जहां है तहां रोगियों को खाटों पर
५६ ले आने लगे। और जहां जहां उस ने
बस्तियों अथवा नगरों अथवा गांवों में
प्रवेश किया तहां उन्हों ने रोगियों को
बाजारों में रखके उस से बिन्ती किई
कि वे उस के वस्त्र के आंचल को भी
छूवें और जितनों ने उसे छूआ सब
चंगे हुए॥

सातवां पर्ब्ब

१ तब फरीशी लोग और कितने अध्या-
पक जो यिरूशलीम से आये थे यीशु
२ पास एकट्ठे हुए। उन्हों ने उस के
कितने शिष्यों को अशुद्ध अर्थात बिन
धोये हाथों से रोटी खाते देखके
३ दोष दिया। क्योंकि फरीशी और सब
यिहूदी लोग प्राचीनों के व्यवहार धारण
कर जब लों यत्न से हाथ न धोवें तब
४ लों नहीं खाते हैं। और बाजार से आके
जब लों स्नान न करें तब लों नहीं
खाते हैं और बहुत और बातें हैं जो
उन्हों ने मानने को ग्रहण किई हैं जैसे
कटोरों और बर्त्तनों और थालियों और
५ खाटों को धोना। सो उन फरीशियों
और अध्यापकों ने उस से पूछा कि आप
के शिष्य लोग क्यों प्राचीनों के व्यवहारों
पर नहीं चलते परन्तु बिन धोये हाथों
६ से रोटी खाते हैं। उस ने उन को
उत्तर दिया कि यिशैयाह ने तुम कप-
टियों के विषय में भविष्यद्वाणी अच्छी
कही जैसा लिखा है कि ये लोग होंठों
से मेरा आदर करते हैं परन्तु उन का
७ मन मुझ से दूर रहता है। पर वे वृथा
मेरी उपासना करते हैं क्योंकि मनुष्यों
की आज्ञाओं को धर्म्मोपदेश ठहराके
८ सिखाते हैं। क्योंकि तुम ईश्वर की
आज्ञा को छोड़के मनुष्यों के व्यवहार
धारण करते हो जैसे बर्त्तनों और कटोरों
को धोना . और ऐसे ऐसे बहुत और

काम भी करते हो। और उस ने उन ९
से कहा तुम अपने व्यवहार पालन करने
को ईश्वर की आज्ञा भली रीति से
टाल देते हो। क्योंकि मूसा ने कहा १०
अपनी माता और अपने पिता का आदर
कर और जो कोई माता अथवा पिता
की निन्दा करे सो मार डाला जाय।
परन्तु तुम कहते हो यदि मनुष्य अपने ११
माता अथवा पिता से कहे कि जो कुछ
तुझ को मुझ से लाभ होता सो कुर्बान
अर्थात संकल्प किया गया है तो बस।
और तुम उस को उस की माता अथवा १२
उस के पिता के लिये और कुछ करने
नहीं देते हो। सो तुम अपने व्यवहारों १३
से जिन्हें तुम ने ठहराया है ईश्वर के
बचन को उठा देते हो और ऐसे ऐसे
बहुत काम करते हो॥

और उस ने सब लोगों को अपने १४
पास बुलाके उन से कहा तुम सब मेरी
सुनो और बूझो। मनुष्य के बाहर से १५
जो उस में समाके ऐसा कुछ नहीं है जो
उस को अपवित्र कर सकता है परन्तु
जो कुछ उस में से निकलता है सोई है
जो मनुष्य को अपवित्र करता है। यदि १६
किसी को सुनने के कान हों तो सुने।
जब वह लोगों के पास से घर में आया १७
तब उस के शिष्यों ने इस दृष्टान्त के
विषय में उस से पूछा। उस ने उन से १८
कहा तुम भी क्या ऐसे निर्बुद्धि हो .
क्या तुम नहीं बूझते हो कि जो कुछ
बाहर से मनुष्य में समाता है सो उस
को अपवित्र नहीं कर सकता है।
क्योंकि वह उस के मन में नहीं परन्तु १९
पेट में समाता है और संडास में गिरता
है जिस से सब भोजन शुद्ध होता है।
फिर उस ने कहा जो मनुष्य में से २०
निकलता है सोई मनुष्य को अपवित्र
करता है। क्योंकि भीतर से मनुष्यों के २१

मन से नाना भांति की बुरी चिन्ता
२२ परस्त्रीगमन व्यभिचार नरहिंसा . चोरी
लोभ औ दुष्टता और छल लुचपन
कुदृष्टि ईश्वर की निन्दा अभिमान और
२३ अज्ञानता निकलती हैं । यह सब बुरी
बातें भीतर से निकलती हैं और मनुष्य
को अपवित्र करती हैं ॥

२४ यीशु वहां से उठके सोर और सीदोन
के सिवानों में गया और किसी घर में
प्रवेश करके चाहा कि कोई न जाने
२५ परन्तु वह छिप न सका । क्योंकि
सुरोफैनीकिया देश की एक यूनानीय
मत माननेवाली स्त्री जिस की बेटी
को अशुद्ध भूत लगा था उस का चर्चा
सुनके आई और उस के पांवों पड़ी .
२६ और उस से बिन्ती किई कि आप मेरी
२७ बेटी से भूत निकालिये । यीशु ने उस
से कहा लड़कों को पहिले तृप्त होने दे
क्योंकि लड़कों की रोटी लेके कुत्तों के
२८ आगे फेंकना अच्छा नहीं है । स्त्री ने
उस को उत्तर दिया कि सच है प्रभु
तौभी कुत्ते मेज के नीचे बालकों के
२९ चूरचार खाते हैं । उस ने उस से कहा
इस बात के कारण चली जा भूत तेरी
३० बेटी से निकल गया है । सो उस ने
अपने घर जाके भूत को निकला हुआ
और अपनी बेटी को खाट पर लेटी
हुई पाई ॥

३१ फिर वह सोर और सीदोन के
सिवानों से निकलके दिकापोलि के
सिवानों के बीच में होके गालील के
३२ समुद्र के निकट आया । और लोगों ने
एक बहिरे तोतले मनुष्य को उस पास
लाके उस से बिन्ती किई कि आप इस
३३ पर हाथ रखिये । उस ने उस को भीड़
में से एकान्त ले जाके अपनी उंगलियां
उस के कानों में डालीं और थूकके उस
३४ की जीभ छूई . और स्वर्ग की ओर
देखके लंबी सांस भरके उस से कहा
इप्फातह अर्थात खुल जा । और तुरन्त ३५
उस के कान खुल गये और उस की
जीभ का बंधन भी खुल गया और वह
शुद्ध रीति से बोलने लगा । तब यीशु ३६
ने उन्हें चिताया कि किसी से मत
कहो परन्तु जितना उस ने उन्हें चिताया
उतना उन्हों ने बहुत अधिक प्रचार
किया । और वे अत्यन्त अचंभित हो ३७
बोले उस ने सब कुछ अच्छा किया है
वह बहिरों को सुनने और गूंगों को
बोलने की शक्ति देता है ॥

आठवां पर्व्व ।

१ उन दिनों में जब बड़ी भीड़ हुई
और उन के पास कुछ खाने को नहीं
था तब यीशु ने अपने शिष्यों को अपने
२ पास बुलाके उन से कहा . मुझे इन लोगों
पर दया आती है क्योंकि वे तीन दिन
से मेरे संग रहे हैं और उन के पास
३ कुछ खाने को नहीं है । जो मैं उन्हें
भोजन बिना अपने अपने घर जाने को
बिदा करूं तो मार्ग में उन का बल
घट जायगा क्योंकि उन में से कोई
४ कोई दूर से आये हैं । उस के शिष्यों
ने उस को उत्तर दिया कि यहां जंगल
में कहां से कोई इन लोगों को रोटी
५ से तृप्त कर सके । उस ने उन से पूछा
तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं . उन्हों
६ ने कहा सात । तब उस ने लोगों को
भूमि पर बैठने की आज्ञा दिई और उन
सात रोटियों को लेके धन्य मानके
तोड़ा और अपने शिष्यों को दिया कि
उन के आगे रखें और शिष्यों ने लोगों
७ के आगे रखा । उन के पास थोड़ी सी
छोटी मछलियां भी थीं और उस ने धन्य-
वाद कर उन्हें भी लोगों के आगे रखने
८ की आज्ञा किई । सो वे खाके तृप्त
हुए और जो टुकड़े बच रहे उन्हों ने

९ उन के सात टोकरे उठाये । जिन्हों ने खाया सो चार सहस्र पुरुषों के अटकल थे और उस ने उन को बिदा किया ॥

१० तब वह तुरन्त अपने शिष्यों के संग नाव पर चढ़के दलमनूथा नगर के ११ सिवानों में आया । और फरीशी लोग निकल आये और उस से बिबाद करने लगे और उस को परीक्षा करने को उस १२ से आकाश का एक चिन्ह मांगा । उस ने अपने आत्मा में हाय मारके कहा इस समय के लोग क्यों चिन्ह ढूंढ़ते हैं . मैं तुम से सच कहता हूं कि इस समय के लोगों को कोई चिन्ह नहीं दिया १३ जायगा । और वह उन्हें छोड़के नाव पर फिर चढ़के उस पार चला गया ॥

१४ शिष्य लोग रोटी लेना भूल गये और नाव पर उन के साथ एक रोटी १५ से अधिक न थी । और उस ने उन्हें चिताया कि देखो फरीशियों के खमीर से और हेरोद के खमीर से चौकस १६ रहो । वे आपस में बिचार करने लगे यह इस लिये है कि हमारे पास रोटी १७ नहीं है । यह जानके यीशु ने उन से कहा तुम्हारे पास रोटी न होने के कारण तुम क्यों आपस में बिचार करते हो . क्या तुम अब लों नहीं बूझते और नहीं समझते हो . क्या तुम्हारा मन १८ अब लों कठोर है । आंखें रहते हुए क्या नहीं देखते हो और कान रहते हुए क्या नहीं सुनते हो और क्या स्मरण १९ नहीं करते हो । जब मैं ने पांच सहस्र के लिये पांच रोटी तोड़ीं तब तुम ने टुकड़ों की कितनी टोकरियां भरी उठाईं . उन्हों ने उस से कहा बारह । २० और जब चार सहस्र के लिये सात रोटी तब तुम ने टुकड़ों के कितने टोकरे २१ भरे उठाये . वे बोले सात । उस ने उन से कहा तुम क्यों नहीं समझते हो ॥

२२ तब वह बैतसैदा में आया और लोगों ने एक अन्धे को उस पास ला उस से बिन्ती किई कि उस को छूवे । २३ वह उस अन्धे का हाथ पकड़के उसे नगर के बाहर ले गया और उस के नेत्रों पर थूकके उस पर हाथ रखके उस से पूछा क्या तू कुछ देखता है । २४ उस ने नेत्र उठाके कहा मैं वृक्षों की २५ नाईं मनुष्यों को फिरते देखता हूं । तब उस ने फिर उस के नेत्रों पर हाथ रखके उस से नेत्र उठवाये और वह चंगा हो गया और सभों को फरछाई से २६ देखने लगा । और उस ने उसे यह कहके घर भेजा कि नगर में मत जा और नगर में किसी से मत कह ॥

२७ यीशु और उस के शिष्य कैसरिया फिलिपी के गांवों में निकल गये और मार्ग में उस ने अपने शिष्यों से पूछा कि २८ लोग क्या कहते हैं मैं कौन हूं । उन्हों ने उत्तर दिया कि वे आप को योहन बपतिसमा देनेहारा कहते हैं परन्तु कितने एलियाह कहते हैं और कितने भविष्यद्वक्ताओं में से एक कहते हैं । २९ उस ने उन से कहा तुम क्या कहते हो मैं कौन हूं . पितर ने उस को उत्तर ३० दिया कि आप ख्रीष्ट हैं । तब उस ने उन्हें दृढ़ आज्ञा दिई कि मेरे बिषय में किसी से मत कहो ॥

३१ और वह उन्हें बताने लगा कि मनुष्य के पुत्र को अवश्य है कि बहुत दुःख उठावे और प्राचीनों और प्रधान याजकों और अध्यापकों से तुच्छ किया जाय और मार डाला जाय और तीन दिन के पीछे ३२ जी उठे । उस ने यह बात खोलके कही और पितर उसे लेके उस को ३३ डांटने लगा । उस ने मुंह फेरके और अपने शिष्यों पर दृष्टि करके पितर को डांटा कि हे शैतान मेरे साम्हने से दूर

हो क्योंकि तुझे ईश्वर की बातों का नहीं परन्तु मनुष्यों की बातों का सोच रहता है ॥

३४ उस ने अपने शिष्यों के संग लोगों को अपने पास बुलाके उन से कहा जो कोई मेरे पीछे आने चाहे सो अपनी इच्छा को मारे और अपना क्रूश उठाके
३५ मेरे पीछे आवे। क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाने चाहे सो उसे खोवेगा परन्तु जो कोई मेरे और सुसमाचार के लिये अपना प्राण खोवे सो उसे बचा-
३६ वेगा। यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपना प्राण गंवावे तो उस
३७ को क्या लाभ होगा। अथवा मनुष्य
३८ अपने प्राण की सन्ती क्या देगा। जो कोई इस समय के व्यभिचारी और पापी लोगों के बीच में मुझ से और मेरी बातों से लजावे मनुष्य का पुत्र भी जब वह पवित्र दूतों के संग अपने पिता के ऐश्वर्य्य में आवेगा तब उस से लजावेगा ॥

नवां पर्व्व।

१ यीशु ने उन से कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि जो यहां खड़े हैं उन में से कोई कोई हैं कि जब लों ईश्वर का राज्य पराक्रम से आया हुआ न देखें तब लों मृत्यु का स्वाद न चीखेंगे ॥

२ छः दिन के पीछे यीशु पितर और याकूब और योहन को लेके उन्हें किसी ऊंचे पर्व्वत पर एकान्त में ले गया और उन के आगे उस का रूप बदल गया।
३ और उस का वस्त्र चमकने लगा और पाले की नाईं अति उजला हुआ जैसा कोई धोबी धरती पर उजला नहीं कर
४ सकता है। और मूसा के संग एलियाह उन को दिखाई दिया और वे यीशु के
५ संग बात करते थे। इस पर पितर ने यीशु से कहा हे गुरु हमारा यहां रहना अच्छा है, हम तीन डेरे बनावें एक आप के लिये एक मूसा के लिये और एक एलियाह के लिये।
६ वह नहीं जानता था कि क्या कहे क्योंकि वे बहुत डरते थे।
७ तब एक मेघ ने उन्हें छा लिया और उस मेघ से यह शब्द हुआ कि यह मेरा प्रिय पुत्र है उस की सुनो।
८ और उन्हों ने अचानक चारों ओर दृष्टि कर यीशु को छोड़के अपने संग और किसी को न देखा।
९ जब वे उस पर्व्वत से उतरते थे तब उस ने उन को आज्ञा दिई कि जब लों मनुष्य का पुत्र मृतकों में से नहीं जी उठे तब लों जो तुम ने देखा है सो किसी से मत कहो।
१० उन्हों ने यह बात अपने ही में रखके आपस में विचार किया कि मृतकों में से जी उठने का अर्थ क्या है ॥

११ और उन्हों ने उस से पूछा अध्यापक लोग क्यों कहते हैं कि एलियाह को पहिले आना होगा।
१२ उस ने उन को उत्तर दिया कि सच है एलियाह पहिले आके सब कुछ सुधारेगा, और मनुष्य के पुत्र के विषय में क्योंकर लिखा है कि वह बहुत दुःख उठावेगा और तुच्छ किया जायगा।
१३ परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि एलियाह भी आ चुका है और जैसा उस के विषय में लिखा है तैसा उन्हों ने उस से जो कुछ चाहा सो किया है ॥

१४ उस ने शिष्यों के पास आ बहुत लोगों को उन की चारों ओर और अध्यापकों को उन से विवाद करते हुए देखा।
१५ सब लोग उसे देखते ही बिस्मित हुए और उस की ओर दौड़के उसे प्रणाम किया।
१६ उस ने अध्यापकों से पूछा तुम इन से किस बात का विवाद करते हो।
१७ भीड़ में से एक ने उत्तर दिया कि हे गुरु मैं अपने पुत्र को जिसे गूंगा भूत लगा है आप के पास लाया हूं।
१८ भूत उसे जहां

पकड़ता है तहां पटकता है और वह
मुंह से फेन बहाता और अपने दांत
पीसता है और सूख जाता है और मैं ने
आप के शिष्यों से कहा कि उसे निकालें
१९ परन्तु वे नहीं सके । यीशु ने उत्तर दिया
कि हे अविश्वासी लोगो मैं कब लों
तुम्हारे संग रहूंगा और कब लों तुम्हारी
२० सहूंगा . उस को मेरे पास लाओ । वे
उस को उस पास लाये और जब उस ने
उसे देखा तब भूत ने तुरन्त उस को
मरोड़ा और वह भूमि पर गिरा और
मुंह से फेन बहाते हुए लोटने लगा ।
२१ यीशु ने उस के पिता से पूछा यह उस
को कितने दिनों से हुआ . उस ने कहा
२२ बालकपन से । भूत ने उसे नाश करने
को बार बार आग में और पानी में भी
गिराया है परन्तु जो आप कुछ कर सकें
तो हम पर दया करके हमारा उपकार
२३ कीजिये । यीशु ने उस से कहा जो तू
बिश्वास कर सके तो बिश्वास करने-
हारे के लिये सब कुछ हो सकता है ।
२४ तब बालक के पिता ने तुरन्त पुकारके
रो रोके कहा हे प्रभु मैं बिश्वास करता
हूं मेरे अविश्वास का उपकार कीजिये ।
२५ जब यीशु ने देखा कि बहुत लोग एकट्ठे
दौड़े आते हैं तब उस ने अशुद्ध भूत को
डांटके उस से कहा हे गूंगे बहिरे भूत
मैं तुझे आज्ञा देता हूं कि उस में से
निकल आ और उस में फिर कभी मत पैठ ।
२६ तब भूत चिल्लाके और बालक को बहुत
मरोड़के निकल आया और बालक मृतक
के समान हो गया यहां लों कि बहुतों
२७ ने कहा वह तो मर गया है । परन्तु
यीशु ने उस का हाथ पकड़के उसे उठाया
२८ और वह खड़ा हुआ । जब यीशु घर में
आया तब उस के शिष्यों ने निराले में
उस से पूछा हम उस भूत को क्यों नहीं
२९ निकाल सके । उस ने उन से कहा कि
जो इस प्रकार के हैं सो प्रार्थना और
उपवास बिना और किसी उपाय से निकाले
नहीं जा सकते हैं ॥

३० वे वहां से निकलके गालील में होके
गये और वह नहीं चाहता था कि कोई
३१ जाने । क्योंकि उस ने अपने शिष्यों को
उपदेश दे उन से कहा मनुष्य का पुत्र
मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जायगा
और वे उस को मार डालेंगे और वह
३२ मरके तीसरे दिन जी उठेगा । परन्तु
उन्हों ने यह बात नहीं समझी और उस
से पूछने को डरते थे ॥

३३ वह कफर्नाहूम में आया और घर में
पहुंचके शिष्यों से पूछा मार्ग में तुम
आपस में किस बात का बिचार करते
३४ थे । वे चुप रहे क्योंकि मार्ग में उन्हों
ने आपस में इसी का बिचार किया था
३५ कि हम में से बड़ा कौन है । तब उस
ने बैठके बारह शिष्यों को बुलाके उन
से कहा यदि कोई प्रधान हुआ चाहे
तो सभों से छोटा और सभों का सेवक
३६ होगा । और उस ने एक बालक को लेके
उन के बीच में खड़ा किया और उसे
३७ गोदी में ले उन से कहा . जो कोई मेरे
नाम से ऐसे बालकों में से एक को ग्रहण
करे वह मुझे ग्रहण करता है और जो
कोई मुझे ग्रहण करे वह मुझे नहीं
परन्तु मेरे भेजनेहारे को ग्रहण करता है ॥

३८ तब योहन ने उस को उत्तर दिया
कि हे गुरु हम ने किसी मनुष्य को जो
हमारे पीछे नहीं आता है आप के नाम
से भूतों को निकालते देखा और हम ने
उसे बर्जा क्योंकि वह हमारे पीछे नहीं
३९ आता है । यीशु ने कहा उस को मत
बर्जो क्योंकि कोई नहीं है जो मेरे नाम
से आश्चर्य्य कर्म्म करेगा और शीघ्र मेरी
४० निन्दा कर सकेगा । जो हमारे बिरुद्ध
४१ नहीं है सो हमारी ओर है । जो कोई

मेरे नाम से एक कटोरा पानी तुम को इस लिये पिलावे कि खीष्ट के हो मैं तुम से सच कहता हूं वह किसी रीति ४२ से अपना फल न खोवेगा । परन्तु जो कोई उन छोटों में से जो मुझ पर बिश्वास करते हैं एक को ठोकर खिलावे उस के लिये भला होता कि चक्की का पाट उस के गले में बांधा जाता और वह ४३ समुद्र में डाला जाता । जो तेरा हाथ तुझे ठोकर खिलावे तो उसे काट डाल . टुंडा होके जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है कि दो हाथ रहते हुए तू नरक में अर्थात न बुझनेहारी ४४ आग में जाय . जहां उन का कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती । ४५ और जो तेरा पांव तुझे ठोकर खिलावे तो उसे काट डाल . लंगड़ा होके जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है कि दो पांव रहते हुए तू नरक में अर्थात न बुझनेहारी आग में डाला ४६ जाय . जहां उन का कीड़ा नहीं मरता ४७ और आग नहीं बुझती । और जो तेरी आंख तुझे ठोकर खिलावे तो उसे निकाल डाल . काना होके ईश्वर के राज्य में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है कि दो आंखें रहते हुए तू नरक ४८ की आग में डाला जाय . जहां उन का कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती । ४९ क्योंकि हर एक जन आग से लोना किया जायगा और हर एक बलि ५० लोन से लोना किया जायगा । लोन अच्छा है परन्तु यदि लोन अलोना हो जाय तो किस से उस को स्वादित करोगे . अपने में लोन रखो और आपस में मिले रहो ॥

दसवां पर्ब्ब ।

१ यीशु वहां से उठके यर्दन के उस पार से होके यिहूदिया के सिवानों में आया और बहुत लोग फिर उस पास एकट्ठे आये और उस ने अपनी रीति पर २ उन्हों को फिर उपदेश दिया । तब फरीशियों ने उस पास आ उस को परीक्षा करने को उस से पूछा क्या अपनी स्त्री को त्यागना मनुष्य को ३ उचित है कि नहीं । उस ने उन को उत्तर दिया कि मूसा ने तुम को क्या ४ आज्ञा दिई । उन्हों ने कहा मूसा ने त्यागपत्र लिखने और स्त्री को त्यागने ५ दिया । यीशु ने उन्हें उत्तर दिया कि तुम्हारे मन की कठोरता के कारण उस ने यह आज्ञा तुम को लिख दिई । ६ परन्तु सृष्टि के आरंभ से ईश्वर ने नर और नारी करके मनुष्यों को उत्पन्न ७ किया । इस हेतु से मनुष्य अपने माता पिता को छोड़के अपनी स्त्री से मिला रहेगा और वे दोनों एक तन होंगे । ८ सो वे आगे दो नहीं पर एक तन हैं । ९ इस लिये जो कुछ ईश्वर ने जोड़ा है १० उस को मनुष्य अलग न करे । घर में उस के शिष्यों ने फिर इस बात के ११ बिषय में उस से पूछा । उस ने उन से कहा जो कोई अपनी स्त्री को त्यागके दूसरी से बिवाह करे सो उस के १२ बिरुद्ध परस्त्रीगमन करता है । और यदि स्त्री अपने स्वामी को त्यागके दूसरे से बिवाह करे तो वह व्यभिचार करती है ॥

१३ तब लोग कितने बालकों को यीशु पास लाये कि वह उन्हें छूवे परन्तु १४ शिष्यों ने लानेहारों को डांटा । यीशु ने यह देखके अप्रसन्न हो उन से कहा बालकों को मेरे पास आने दो और उन्हें मत बर्जो क्योंकि ईश्वर का राज्य ऐसों १५ का है । मैं तुम से सच कहता हूं कि जो कोई ईश्वर के राज्य को बालक की नाईं ग्रहण न करे वह उस में

१६ प्रवेश करने न पावेगा। तब उस ने उन्हें गोदी में लेके उन पर हाथ रखके उन्हें आशीस दिई॥

१७ जब वह मार्ग में जाता था तब एक मनुष्य उस की ओर दौड़ा और उस के आगे घुटने टेकके उस से पूछा हे उत्तम गुरु अनन्त जीवन का अधि-
१८ कारी होने को मैं क्या करूं। यीशु ने उस से कहा तू मुझे उत्तम क्यों कहता है. कोई उत्तम नहीं है केवल एक
१९ अर्थात ईश्वर। तू आज्ञाओं को जानता है कि परस्त्रीगमन मत कर नरहिंसा मत कर चोरी मत कर झूठी साक्षी मत दे ठगाई मत कर अपने
२० माता पिता का आदर कर। उस ने उस को उत्तर दिया कि हे गुरु इन सभों को मैं ने अपने लड़कपन से पालन
२१ किया है। यीशु ने उस पर दृष्टि कर उसे प्यार किया और उस से कहा तुझे एक बात की घटी है. जा जो कुछ तेरा है सो बेचके कंगालों को दे और तू स्वर्ग में धन पावेगा और आ क्रूश
२२ उठाके मेरे पीछे हो ले। वह इस बात से अप्रसन्न हो उदास चला गया क्योंकि उस को बहुत धन था॥

२३ यीशु ने चारों ओर दृष्टि कर अपने शिष्यों से कहा धनवानों को ईश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन
२४ होगा। शिष्य लोग उस की बातों से अचंभित हुए परन्तु यीशु ने फिर उन को उत्तर दिया कि हे बालको जो धन पर भरोसा रखते हैं उन्हों को ईश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन
२५ है। ईश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के नाके
२६ में से जाना सहज है। वे अत्यन्त अचंभित हो आपस में बोले तब तो
२७ किस का त्राण हो सकता है। यीशु ने उन पर दृष्टि कर कहा मनुष्यों से यह अनहोना है परन्तु ईश्वर से नहीं क्योंकि ईश्वर से सब कुछ हो सकता है॥

२८ पितर उस से कहने लगा कि देखिये हम लोग सब कुछ छोड़के आप
२९ के पीछे हो लिये हैं। यीशु ने उत्तर दिया मैं तुम से सच कहता हूं कि जिस ने मेरे और सुसमाचार के लिये घर वा भाइयों वा बहिनों वा पिता वा माता वा स्त्री वा लड़कों वा भूमि को
३० त्यागा हो. ऐसा कोई नहीं है जो अब इस समय में उपद्रव सहित सौ गुणे घरों और भाइयों और बहिनों और माताओं और लड़कों और भूमि को और परलोक में अनन्त जीवन न पावेगा।
३१ परन्तु बहुतेरे जो अगले हैं पिछले होंगे और जो पिछले हैं अगले होंगे॥

३२ वे यिरूशलीम को जाते हुए मार्ग में थे और यीशु उन के आगे आगे चलता था और वे अचंभित हुए और उस के पीछे चलते हुए डरते थे और वह फिर बारह शिष्यों को लेके जो कुछ उस पर होन्हार था सो उन से
३३ कहने लगा. कि देखो हम यिरूशलीम को जाते हैं और मनुष्य का पुत्र प्रधान याजकों और अध्यापकों के हाथ पकड़वाया जायगा और वे उस को बध के योग्य ठहराके अन्यदेशियों के हाथ
३४ सौंपेंगे। और वे उस से ठट्ठा करेंगे और कोड़े मारेंगे और उस पर थूकेंगे और उसे घात करेंगे और वह तीसरे दिन जी उठेगा॥

३५ तब जबदी के पुत्र याकूब और योहन ने यीशु पास आ कहा हे गुरु हम चाहते हैं कि जो कुछ हम मांगें
३६ सो आप हमारे लिये करें। उस ने उन से कहा तुम क्या चाहते हो कि मैं
३७ तुम्हारे लिये करूं। वे उस से बोले हमें

यह दीजिये कि आप के ऐश्वर्य्य में हम में से एक आप की दहिनी ओर और दूसरा आप की बाईं ओर बैठे। ३८ यीशु ने उन से कहा तुम नहीं बूझते कि क्या मांगते हो. जिस कटोरे से मैं पीता हूं क्या तुम उस से पी सकते हो और जो बपतिसमा मैं लेता हूं क्या ३९ तुम उसे ले सकते हो। उन्हों ने उस से कहा हम सकते हैं. यीशु ने उन से कहा जिस कटोरे से मैं पीता हूं उस से तुम तो पीओगे और जो बपतिसमा मैं ४० लेता हूं उसे लेओगे। परन्तु जिन्हों के लिये तैयार किया गया है उन्हें छोड़ और किसी को अपनी दहिनी अपनी बाईं ओर बैठने देना मेरा अधिकार नहीं है॥

४१ यह सुनके दसों शिष्य याकूब और ४२ योहन पर रिसियाने लगे। यीशु ने उन को अपने पास बुलाके उन से कहा तुम जानते हो कि जो अन्यदेशियों के अध्यक्ष समझे जाते सो, उन्हों पर प्रभुता करते हैं और उन में के बड़े लोग उन्हों पर अधिकार रखते हैं। ४३ परन्तु तुम्हों में ऐसा नहीं होगा पर जो कोई तुम्हों में बड़ा हुआ चाहे सो ४४ तुम्हारा सेवक होगा। और जो कोई तुम्हारा प्रधान हुआ चाहे सो सभों का ४५ दास होगा। क्योंकि मनुष्य का पुत्र भी सेवा करवाने को नहीं परन्तु सेवा करने को और बहुतों के उद्धार के दाम में अपना प्राण देने को आया है॥

४६ वे यिरीहो नगर में आये और जब वह और उस के शिष्य और बहुत लोग यिरीहो से निकलते थे तब तीमई का पुत्र बर्तीमई एक अंधा मनुष्य मार्ग की ४७ ओर बैठा भीख मांगता था। वह यह सुनके कि यीशु नासरी है पुकारने और कहने लगा कि हे दाऊद के सन्तान यीशु मुझ पर दया कीजिये। ४८ बहुत लोगों ने उसे डांटा कि वह चुप रहे परन्तु उस ने बहुत अधिक पुकारा हे दाऊद के सन्तान मुझ पर दया कीजिये। ४९ तब यीशु खड़ा रहा और उसे बुलाने को कहा और लोगों ने उस अंधे को बुलाके उस से कहा ढाढ़स कर उठ ५० वह तुझे बुलाता है। वह अपना कपड़ा फेंकके उठा और यीशु पास ५१ आया। इस पर यीशु ने उस से कहा तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये करूं. अंधा उस से बोला हे गुरु मैं ५२ अपनी दृष्टि पाऊं। यीशु ने उस से कहा चला जा तेरे बिश्वास ने तुझे चंगा किया है. और वह तुरन्त देखने लगा और मार्ग में यीशु के पीछे हो लिया॥

ग्यारहवां पर्व्व।

१ जब वे यिरूसलीम के निकट अर्थात् जैतून पर्व्वत के समीप बैतफगी और बैथनिया गांवों पास पहुंचे तब उस ने अपने शिष्यों में से दो को यह कहके २ भेजा. कि जो गांव तुम्हारे सन्मुख है उस में जाओ और उस में प्रवेश करते ही तुम एक गदही के बच्चे को जिस पर कभी कोई मनुष्य नहीं चढ़ा बंधे हुए ३ पाओगे उसे खोलके लाओ। जो तुम से कोई कहे तुम यह क्यों करते हो तो कहो कि प्रभु को इस का प्रयोजन है तब वह उसे तुरन्त यहां भेजेगा। ४ उन्हों ने जाके उस बच्चे को दो बाटों के सिरे पर द्वार के पास बाहर बंधे ५ हुए पाया और उस को खोलने लगे। तब जो लोग वहां खड़े थे उन में से कितनों ने उन से कहा तुम क्या करते ६ हो कि बच्चे को खोलते हो। उन्हों ने जैसा यीशु ने आज्ञा किई वैसा उन से कहा तब उन्हों ने उन्हें जाने दिया

७ और उन्हों ने बच्चे को यीशु पास लाके उस पर अपने कपड़े डाले और वह उस ८ पर बैठा। और बहुत लोगों ने अपने अपने कपड़े मार्ग में बिछाये और औरों ने वृक्षों से डालियां काटके मार्ग में ९ बिछाईं। और जो लोग आगे पीछे चलते थे उन्हों ने पुकारके कहा जय जय धन्य-वह जो परमेश्वर के नाम से १० आता है। धन्य हमारे पिता दाऊद का राज्य जो परमेश्वर के नाम से आता है, सब से ऊंचे स्थान में जयजयकार ११ होवे। यीशु ने यिरूशलीम में आ मन्दिर में प्रवेश किया और जब उस ने चारों ओर सब वस्तुओं पर दृष्टि किई और संध्याकाल आ चुका तब वह बारह शिष्यों के संग बैथनिया को निकल गया॥

१२ दूसरे दिन जब वे बैथनिया से निकलते थे तब उस को भूख लगी। १३ और वह पत्ते लगे हुए एक गूलर का वृक्ष दूर से देखके आया कि क्या जाने उस में कुछ पावे परन्तु उस पास आके और कुछ न पाया केवल पत्ते, गूलर १४ के पकने का समय नहीं था। इस पर यीशु ने उस वृक्ष को कहा कोई मनुष्य फिर कभी तुझ से फल न खावे, और उस के शिष्यों ने यह बात सुनी॥

१५ वे यिरूशलीम में आये और यीशु मन्दिर में जाके जो लोग मन्दिर में बेचते औ मोल लेते थे उन्हें निकालने लगा और सर्राफों के पीढ़ों को और कपोतों के बेचनेहारों की चौकियों को १६ उलट दिया, और किसी को मन्दिर के बीच से कोई पात्र ले जाने न १७ दिया। और उस ने उपदेश कर उन से कहा क्या नहीं लिखा है कि मेरा घर सब देशों के लोगों के लिये प्रार्थना का घर कहावेगा, परन्तु तुम ने उसे डाकुओं का खोह बनाया है। १८ यह सुनके अध्यापकों और प्रधान याजकों ने खोज किया कि उसे किस रीति से नाश करें क्योंकि वे उस से डरते थे इस लिये कि सब लोग उस के उपदेश से अचंभित होते थे। १९ जब सांझ हुई तब वह नगर से बाहर निकला॥

२० भोर को जब वे उधर से जाते थे तब उन्हों ने वह गूलर का वृक्ष जड़ से सूखा हुआ देखा। २१ पितर ने स्मरण कर यीशु से कहा हे गुरु देखिये यह गूलर का वृक्ष जिसे आप ने साप दिया सूख गया है। २२ यीशु ने उन को उत्तर दिया कि ईश्वर पर बिश्वास रखो। २३ क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं जो कोई इस पहाड़ से कहे कि उठ समुद्र में गिर पड़ और अपने मन में सन्देह न रखे परन्तु बिश्वास करे कि जो मैं कहता हूं सो हो जायगा उस के लिये जो कुछ वह कहेगा सो हो जायगा। २४ इस लिये मैं तुम से कहता हूं जो कुछ तुम प्रार्थना करके मांगो बिश्वास करो कि हम पावेंगे तो तुम्हें मिलेगा। २५ और जब तुम प्रार्थना करने को खड़े हो तब यदि तुम्हारे मन में किसी की ओर कुछ होय तो क्षमा करो इस लिये कि तुम्हारा स्वर्गबासी पिता भी तुम्हारे अपराध २६ क्षमा करे। परन्तु जो तुम क्षमा न करो तो तुम्हारा स्वर्गबासी पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा॥

२७ वे फिर यिरूशलीम में आये और जब यीशु मन्दिर में फिरता था तब प्रधान याजक और अध्यापक और प्राचीन लोग २८ उस पास आये, और उस से बोले तुझे ये काम करने का कैसा अधिकार है और ये काम करने को किस ने तुझ को २९ यह अधिकार दिया। यीशु ने उन को उत्तर दिया कि मैं भी तुम से एक बात

पूछूंगा . तुम मुझे उत्तर देओ तो मैं
तुम्हें बताऊंगा कि मुझे ये काम करने
३० का कैसा अधिकार है । योहन का
बपतिसमा देना क्या स्वर्ग की अथवा
मनुष्यों की ओर से हुआ मुझे उत्तर
३१ देओ । तब वे आपस में बिचार करने
लगे कि जो हम कहें स्वर्ग की ओर
से तो वह कहेगा फिर तुम ने उस का
३२ बिश्वास क्यों नहीं किया । परन्तु जो
हम कहें मनुष्यों की ओर से . तब
उन्हें लोगों का डर लगा क्योंकि सब
लोग योहन को जानते थे कि निश्चय वह
३३ भविष्यद्वक्ता था । सो उन्हों ने यीशु
को उत्तर दिया कि हम नहीं जानते .
यीशु ने उन्हें उत्तर दिया तो मैं भी तुम
को नहीं बताता हूं कि मुझे ये काम
करने का कैसा अधिकार है ॥

बारहवां पर्ब्ब ।

१ यीशु दृष्टान्तों में उन से कहने लगा
कि किसी मनुष्य ने दाख की बारी
लगाई और चहुं ओर बेड़ा दिया और
रस का कुंड खोदा और गढ़ बनाया
और मालियों को उस का ठीका दे पर-
२ देश को चला गया । समय में उस ने
मालियों के पास एक दास को भेजा
कि मालियों से दाख की बारी का
३ कुछ फल लेवे । परन्तु उन्हों ने उसे
लेके मारा और छूछे हाथ फेर दिया ।
४ फिर उस ने दूसरे दास को उन के पास
भेजा और उन्हों ने उसे पत्थरवाह कर
उस का सिर फोड़ा और उसे अपमान
५ करके फेर दिया । फिर उस ने तीसरे
को भेजा और उन्हों ने उसे मार डाला
और बहुत औरों से उन्हों ने वैसा ही
किया कितनों को मारा और कितनों
६ को घात किया । फिर उस का एक
ही पुत्र था जो उस का प्रिय था सो
सब के पीछे उस ने यह कहके उसे
भी उन के पास भेजा कि वे मेरे पुत्र
७ का आदर करेंगे । परन्तु उन मालियों
ने आपस में कहा यह तो अधिकारी
है आओ हम उसे मार डालें तब अधि-
८ कार हमारा होगा । और उन्हों ने उसे
लेके मार डाला और दाख की बारी
९ के बाहर फेंक दिया । इस लिये दाख
की बारी का स्वामी क्या करेगा . वह
आके उन मालियों को नाश करेगा और
दाख की बारी दूसरों के हाथ देगा ।
१० क्या तुम ने धर्म्मपुस्तक का यह बचन
नहीं पढ़ा है कि जिस पत्थर को थवइयों
ने निकम्मा जाना वही कोने का सिरा
११ हुआ है . यह परमेश्वर का कार्य्य है
१२ और हमारी दृष्टि में अद्भुत है । तब उन्हों
ने उसे पकड़ने चाहा क्योंकि जानते थे
कि उस ने हमारे बिरुद्ध यह दृष्टान्त
कहा परन्तु वे लोगों से डरे और उसे
छोड़के चले गये ॥

१३ तब उन्हों ने उसे बात में फंसाने
को कई एक फरीशियों और हेरोदियों
१४ को उस पास भेजा । वे आके उस से
बोले हे गुरु हम जानते हैं कि आप
सत्य हैं और किसी का खटका नहीं
रखते हैं क्योंकि आप मनुष्यों का मुंह
देखके बात नहीं करते हैं परन्तु ईश्वर
का मार्ग सत्यता से बताते हैं . क्या
कैसर को कर देना उचित है अथवा
१५ नहीं . हम देवें अथवा न देवें । उस ने
उन का कपट जानके उन से कहा मेरी
परीक्षा क्यों करते हो . एक सूकी मेरे
१६ पास लाओ कि मैं देखूं । वे लाये और
उस ने उन से कहा यह मूर्त्ति और छाप
किस की है . वे उस से बोले कैसर की ।
१७ यीशु ने उन को उत्तर दिया कि जो
कैसर का है सो कैसर को देओ और जो
ईश्वर का है सो ईश्वर को देओ . तब
वे उस से अचंभित हुए ॥

१८ सदूकी लोग भी जो कहते हैं कि मृतकों का जी उठना नहीं होगा उस १९ पास आये और उस से पूछा . कि हे गुरु मूसा ने हमारे लिये लिखा कि यदि किसी का भाई मर जाय और स्त्री को छोड़े और उस को सन्तान न हो तो उस का भाई उस की स्त्री से बिवाह करे और अपने भाई के लिये बंश खड़ा करे । २० सो सात भाई थे . २१ पहिला भाई बिवाह कर निःसन्तान मर गया । तब दूसरे भाई ने उस स्त्री से बिवाह किया और मर गया और उस को भी सन्तान न हुआ . और वैसेही तीसरे ने भी । २२ सातों ने उस से बिवाह किया पर किसी को सन्तान न हुआ . सब के पीछे स्त्री भी मर गई । २३ सो मृतकों के जी उठने पर जब वे सब उठेंगे तब वह उन में से किस की स्त्री होगी क्योंकि सातों ने उस से बिवाह किया । २४ यीशु ने उन को उत्तर दिया क्या तुम इसी कारण भूल में न पड़े हो कि धर्म्मपुस्तक और ईश्वर की शक्ति नहीं बूझते हो । २५ क्योंकि जब वे मृतकों में से जी उठें तब न बिवाह करते न बिवाह दिये जाते हैं परन्तु स्वर्ग में दूतों के समान हैं । २६ मृतकों के जी उठने के बिषय में क्या तुम ने मूसा के पुस्तक में झाड़ी की कथा में नहीं पढ़ा है कि ईश्वर ने उस से कहा मैं इब्राहीम का ईश्वर और इसहाक का ईश्वर और याकूब का ईश्वर हूं । २७ ईश्वर मृतकों का नहीं परन्तु जीवतों का ईश्वर है सो तुम बड़ी भूल में पड़े हो ॥

२८ अध्यापकों में से एक ने आ उन्हें बिबाद करते सुना और यह जानके कि यीशु ने उन्हें अच्छी रीति से उत्तर दिया उस से पूछा सब से बड़ी आज्ञा कौन है । २९ यीशु ने उसे उत्तर दिया सब आज्ञाओं में से यही बड़ी है कि हे इस्रायेल सुनो परमेश्वर हमारा ईश्वर एक ही परमेश्वर है । ३० और तू परमेश्वर अपने ईश्वर को अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से और अपनी सारी बुद्धि से और अपनी सारी शक्ति से प्रेम कर . यही सब से बड़ी आज्ञा है । ३१ और दूसरी उस के समान है सो यह है कि तू अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम कर . इन से और कोई आज्ञा बड़ी नहीं । ३२ उस अध्यापक ने उस से कहा अच्छा हे गुरु आप ने सत्य कहा है कि एक ही ईश्वर है और उसे छोड़ कोई दूसरा नहीं है । ३३ और उस को सारे मन से और सारी बुद्धि से और सारे प्राण से और सारी शक्ति से प्रेम करना और पड़ोसी को अपने समान प्रेम करना सारे होमों से और बलिदानों से अधिक है । ३४ जब यीशु ने देखा कि उस ने बुद्धि से उत्तर दिया था तब उस से कहा तू ईश्वर के राज्य से दूर नहीं है . और किसी को फिर उस से कुछ पूछने का साहस न हुआ ॥

३५ इस पर यीशु ने मन्दिर में उपदेश करते हुए कहा अध्यापक लोग क्योंकर कहते हैं कि ख्रीष्ट दाऊद का पुत्र है । ३६ दाऊद आप ही पवित्र आत्मा की शिक्षा से बोला कि परमेश्वर ने मेरे प्रभु से कहा जब लों मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की पीढ़ी न बनाऊं तब लों तू मेरी दहिनी ओर बैठ । ३७ दाऊद तो आप ही उसे प्रभु कहता है फिर वह उस का पुत्र कहां से है . भीड़ के अधिक लोग प्रसन्नता से उस की सुनते थे ॥

३८ उस ने अपने उपदेश में उन से कहा अध्यापकों से चौकस रहो जो लंबे बस्त्र पहिने हुए फिरने चाहते हैं . ३९ और

बाजारों में नमस्कार और सभा के घरों में ऊंचे आसन और जेवनारों में ऊंचे
४० स्थान भी चाहते हैं। वे बिधवाओं के घर खा जाते हैं और बहाना के लिये बड़ी बेर लों प्रार्थना करते हैं . वे अधिक दंड पावेंगे ॥

४१ यीशु भंडार के साम्हने बैठके देखता था कि लोग क्योंकर भंडार में रोकड़ डालते हैं और बहुत धनवानों ने बहुत
४२ कुछ डाला। और एक कंगाल बिधवा ने आके दो छदाम अर्थात आध पैसा
४३ डाला। तब उस ने अपने शिष्यों को अपने पास बुलाके उन से कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि जिन्हों ने भंडार में डाला है उन सभों से इस कंगाल
४४ बिधवा ने अधिक डाला है। क्योंकि सभों ने अपनी बढ़ती में से कुछ कुछ डाला है परन्तु इस ने अपनी घटती में से जो कुछ उस का था अर्थात अपनी सारी जीविका डाली है ॥

तेरहवां पर्ब्ब

१ जब यीशु मन्दिर में से निकलता था तब उस के शिष्यों में से एक ने उस से कहा हे गुरु देखिये कैसे पत्थर
२ और कैसी रचना है। यीशु ने उसे उत्तर दिया क्या तू यह बड़ी बड़ी रचना देखता है . पत्थर पर पत्थर भी न छोड़ा जायगा जो गिराया न जाय ॥

३ जब वह जैतून पर्ब्बत पर मन्दिर के साम्हे बैठा था तब पितर और याकूब और योहन और अन्द्रिय ने
४ निराले में उस से पूछा . कि हमों से कहिये यह कब होगा और यह सब बातें जिस समय में पूरी होंगी उस
५ समय का क्या चिन्ह होगा। यीशु उन्हें उत्तर दे कहने लगा चौकस रहो कि
६ कोई तुम्हें न भरमावे। क्योंकि बहुत लोग मेरे नाम से आके कहेंगे मैं वही हूं और बहुतों को भरमावेंगे।
७ जब तुम लड़ाइयां और लड़ाइयों की चर्चा सुनो तब मत घबराओ क्योंकि इन का होना अवश्य है परन्तु अन्त उस समय में नहीं होगा।
८ क्योंकि देश देश के और राज्य राज्य के बिरुद्ध उठेंगे और अनेक स्थानों में भुईंडोल होंगे और अकाल और हुल्लड़ होंगे . यह तो दुःखों का आरंभ होगा ॥

९ तुम अपने बिषय में चौकस रहो क्योंकि लोग तुम्हें पंचायतों में सौंपेंगे और तुम सभाओं में मारे जाओगे और मेरे लिये अध्यक्षों और राजाओं के आगे उन पर साक्षी होने के लिये खड़े किये
१० जाओगे। परन्तु अवश्य है कि पहिले सुसमाचार सब देशों के लोगों में
११ सुनाया जाय। जब वे तुम्हें ले जाके सौंप देवें तब क्या कहोगे इस की चिन्ता आगे से मत करो और न सोच करो परन्तु जो कुछ तुम्हें उसी घड़ी दिया जाय सोई कहो क्योंकि तुम नहीं परन्तु पवित्र आत्मा बोलनेहारा होगा।
१२ भाई भाई को और पिता पुत्र को बध किये जाने को सौंपेंगे और लड़के माता पिता के बिरुद्ध उठके उन्हें घात
१३ करवावेंगे। और मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे पर जो अन्त लों स्थिर रहे सोई त्राण पावेगा ॥

१४ जब तुम उस उजाड़नेहारी घिनित बस्तु को जिस की बात दानियेल भविष्यद्वक्ता ने कही जहां उचित नहीं तहां खड़े होते देखो (जो पढ़े सो बूझे) तब जो यिहूदिया में हों सो पहाड़ों पर
१५ भागें। जो कोठे पर हो सो न घर में उतरे और न अपने घर में से कुछ लेने को उस में पैठे।
१६ और जो खेत में हो सो अपना बस्त्र लेने को पीछे न फिरे।
१७ उन दिनों में हाय हाय गर्भवतियां और

१८ दूध पिलानेवालियों। परन्तु प्रार्थना करो कि तुम को जाड़े में भागना न
१९ होवे। क्योंकि उन दिनों में ऐसा क्लेश होगा जैसा उस सृष्टि के आरंभ से जो ईश्वर ने सृजी अब तक न हुआ और
२० कभी न होगा। यदि परमेश्वर उन दिनों को न घटाता तो कोई प्राणी न बचता परन्तु उन चुने हुए लोगों के कारण जिन को उस ने चुना है उस ने उन दिनों को घटाया है॥

२१ तब यदि कोई तुम से कहे देखो खीष्ट यहां है अथवा देखो वहां है तो
२२ प्रतीति मत करो। क्योंकि झूठे खीष्ट और झूठे भविष्यद्वक्ता प्रगट होके चिन्ह और अद्भुत काम दिखावेंगे इस लिये कि जो हो सके तो चुने हुए लोगों को
२३ भी भरमावें। पर तुम चौकस रहो देखो मैं ने आगे से तुम्हें सब बातें कह दिई हैं॥

२४ उन दिनों में उस क्लेश के पीछे सूर्य्य अंधियारा हो जायगा और चांद
२५ अपनी ज्योति न देगा। आकाश के तारे गिर पड़ेंगे और आकाश में की
२६ सेना डिग जायगी। तब लोग मनुष्य के पुत्र को बड़े पराक्रम और ऐश्वर्य्य से
२७ मेघों पर आते देखेंगे। और तब वह अपने दूतों को भेजेगा और पृथिवी के इस सिवाने से आकाश के उस सिवाने तक चहुं दिशा से अपने चुने हुए लोगों को एकट्ठे करेगा॥

२८ गूलर के वृक्ष से दृष्टान्त सीखो. जब उस की डाली कोमल हो जाती और पत्ते निकल आते तब तुम जानते
२९ हो कि धूपकाला निकट है। इस रीति से जब तुम यह बातें होते देखो तब जानो कि वह निकट है हां द्वार
३० पर है। मैं तुम से सच कहता हूं कि जब लों यह सब बातें पूरी न हो जायें तब लों इस समय के लोग नहीं जाते
३१ रहेंगे। आकाश और पृथिवी टल जायेंगे परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी॥

३२ उस दिन और उस घड़ी के विषय में न कोई मनुष्य जानता है न स्वर्गवासी दूतगण और न पुत्र परन्तु केवल
३३ पिता। देखो जागते रहो और प्रार्थना करो क्योंकि तुम नहीं जानते हो वह
३४ समय कब होगा। वह ऐसा है जैसे परदेश जानेवाले एक मनुष्य ने अपना घर छोड़ा और अपने दासों को अधिकार और हर एक को उस का काम दिया और द्वारपाल को जागते रहने की आज्ञा
३५ दिई। इस लिये जागते रहो क्योंकि तुम नहीं जानते हो घर का स्वामी कब आवेगा सांझ को अथवा आधी रात को अथवा मुर्गा बोलने के समय
३६ में अथवा भोर को। ऐसा न हो कि वह
३७ अचांचक आके तुम्हें सोते पावे। और जो मैं तुम से कहता हूं सो सभों से कहता हूं जागते रहो॥

चौदहवां पर्व्व।

१ निस्तार पर्व्व और अखमीरी रोटी का पर्व्व दो दिन के पीछे होनेवाला था और प्रधान याजक और अध्यापक लोग खोज करते थे कि यीशु को क्योंकर छल से पकड़के मार डालें। परन्तु
२ उन्हों ने कहा पर्व्व में नहीं न हो कि लोगों का हुल्लड़ होवे॥

३ जब वह बैथनिया में शिमोन कोढ़ी के घर में था और भोजन पर बैठा तब एक स्त्री उजले पत्थर के पात्र में जटामांसी का बहुमूल्य सुगन्ध तेल लेके आई और पात्र तोड़के उस के सिर
४ पर ढाला। कोई कोई अपने मन में रिसियाते थे और बोले सुगन्ध तेल
५ का यह नाश क्यों हुआ। क्योंकि वह तीन सौ सूकियों से अधिक दाम में

बिक सकता और कंगालों को दिया जा सकता, और वे उस स्त्री पर कुड़-
६ कुड़ाये। यीशु ने कहा उस को रहने दो क्यों उस को दुःख देते हो, उस ने अच्छा काम मुझ से किया है।
७ कंगाल लोग तुम्हारे संग सदा रहते हैं और तुम जब चाहो तब उन से भलाई कर सकते हो परन्तु मैं तुम्हारे संग
८ सदा नहीं रहूंगा। जो कुछ वह कर सकी सो किया है, उस ने मेरे गाड़े जाने के लिये आगे से मेरे देह पर
९ सुगन्ध तेल लगाया है। मैं तुम से सत्य कहता हूं सारे जगत में जहां कहीं यह सुसमाचार सुनाया जाय तहां यह भी जो इस ने किया है उस के स्मरण के लिये कहा जायगा॥

१० तब यिहूदा इस्करियोती जो बारह शिष्यों में से एक था प्रधान याजकों के पास गया इस लिये कि यीशु को उन्हों
११ के हाथ पकड़वाय। वे यह सुनके आनन्दित हुए और उस को रुपैये देने की प्रतिज्ञा किई और वह खोज करने लगा कि उसे क्योंकर अवसर पाके पकड़वाय॥

१२ अखमीरी रोटी के पर्ब्ब के पहिले दिन जिस में वे निस्तार पर्ब्ब का मेम्ना मारते थे यीशु के शिष्य लोग उस से बोले आप कहां चाहते हैं कि हम जाके तैयार करें कि आप निस्तार पर्ब्ब का
१३ भोजन खावें। उस ने अपने शिष्यों में से दो को यह कहके भेजा कि नगर में जाओ और एक मनुष्य जल का घड़ा उठाये हुए तुम्हें मिलेगा उस के पीछे
१४ हो लेओ। जिस घर में वह पैठे उस घर के स्वामी से कहो गुरु कहता है कि पाहुनशाला कहां है जिस में मैं अपने शिष्यों के संग निस्तार पर्ब्ब का
१५ भोजन खाऊं। वह तुम्हें एक सजी हुई और तैयार किई हुई बड़ी उपरौठी कोठरी दिखावेगा वहां हमारे लिये तैयार करो। तब उस के शिष्य लोग १६ चले और नगर में आके जैसा उस ने उन्हों से कहा तैसा पाया और निस्तार पर्ब्ब का भोजन बनाया॥

सांझ को यीशु बारह शिष्यों के संग १७ आया। जब वे भोजन पर बैठके १८ खाते थे तब यीशु ने कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि तुम में से एक जो मेरे संग खाता है मुझे पकड़वायगा। इस पर वे उदास होने और एक एक १९ करके उस से कहने लगे क्या मैं हूं और दूसरे ने कहा क्या मैं हूं। उस ने २० उन को उत्तर दिया कि बारहों में से एक जो मेरे संग थाली में हाथ डालता है सोई है। मनुष्य का पुत्र जैसा उस २१ के विषय में लिखा है वैसा ही जाता है परन्तु हाय वह मनुष्य जिस से मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाता है, जो उस मनुष्य का जन्म न होता तो उस के लिये भला होता॥

जब वे खाते थे तब यीशु ने रोटी २२ लेके धन्यबाद किया और उसे तोड़के उन को दिया और कहा लेओ खाओ यह मेरा देह है। और उस ने कटोरा २३ ले धन्य मानके उन्हें दिया और सभों ने उस से पीया। और उस ने उन से कहा २४ यह मेरा लोहू अर्थात नये नियम का लोहू है जो बहुतों के लिये बहाया जाता है। मैं तुम से सच कहता हूं कि जिस २५ दिन लों मैं ईश्वर के राज्य में उसे नया न पीऊं उस दिन लों मैं दाख रस फिर कभी न पीऊंगा। और वे भजन गाके २६ जैतून पर्ब्बत पर गये॥

तब यीशु ने उन से कहा तुम सब २७ इसी रात मेरे विषय में ठोकर खाओगे क्योंकि लिखा है कि मैं गड़ेरिये को

मारूंगा और भेड़ें तितर बितर हो
२८ जायेंगी । परन्तु मैं अपने जी उठने के
पीछे तुम्हारे आगे गालील को जाऊंगा ।
२९ पितर ने उस से कहा यदि सब ठोकर
खावें तौभी मैं नहीं ठोकर खाऊंगा ।
३० यीशु ने उस से कहा मैं तुझे सत्य कहता
हूं कि आज इसी रात मुर्ग के दो बार
बोलने से आगे तू तीन बार मुझ से
३१ मुकरेगा । उस ने और भी दृढ़ता से
कहा जो आप के संग मुझे मरना हो
तौभी मैं आप से कभी न मुकरूंगा .
सभों ने भी वैसा ही कहा ॥

३२ वे गेतशिमनी नाम स्थान में आये
और यीशु ने अपने शिष्यों से कहा जब
लों मैं प्रार्थना करूं तब लों तुम यहां
३३ बैठो । और वह पितर और याकूब और
योहन को अपने संग ले गया और व्या-
३४ कुल और बहुत उदास होने लगा । और
उस ने उन से कहा मेरा मन यहां लों
अति उदास है कि मैं मरने पर हूं .
३५ तुम यहां ठहरो और जागते रहो । और
थोड़ा आगे बढ़के वह भूमि पर गिरा
और प्रार्थना किई कि जो हो सके तो
३६ वह घड़ी उस से टल जाय । उस ने
कहा हे अब्बा हे पिता तुझ से सब
कुछ हो सकता है यह कटोरा मेरे पास
से टाल दे तौभी जो मैं चाहता हूं सो न
३७ होय पर जो तू चाहता है । तब उस
ने आ उन्हें सोते पाया और पितर से
कहा हे शिमोन सो तू सोता है क्या
३८ तू एक घड़ी नहीं जाग सका । जागते
रहो और प्रार्थना करो कि तुम परीक्षा
में न पड़ो . मन तो तैयार है परन्तु
३९ शरीर दुर्बल है । उस ने फिर जाके वही
४० बात कहके प्रार्थना किई । तब उस ने
लौटके उन्हें फिर सोते पाया क्योंकि
उन की आंखें नींद से भरी थीं . और
वे नहीं जानते थे कि उस को क्या
उत्तर देवें । और उस ने तीसरी बेर ४१
आ उन से कहा सो तुम सोते रहते
और बिश्राम करते हो . बहुत है घड़ी
आ पहुंची है देखो मनुष्य का पुत्र
पापियों के हाथ में पकड़वाया जाता
है । उठो चलें देखो जो मुझे पकड़वाता ४२
है सो निकट आया है ॥

वह बोलताही था कि यिहूदा जो ४३
बारह शिष्यों में से एक था तुरन्त आ
पहुंचा और प्रधान याजकों और अध्या-
पकों और प्राचीनों की ओर से बहुत
लोग खड्ग और लाठियां लिये हुए उस के
संग । यीशु के पकड़वानेहारे ने उन्हें ४४
यह पता दिया था कि जिस को मैं
चूमूं वही है उस को पकड़के यत्न से
ले जाओ । और वह आया और तुरन्त ४५
यीशु पास जाके कहा हे गुरु हे गुरु और
उस को चूमा । तब उन्हों ने उस पर ४६
अपने हाथ डालके उसे पकड़ा । जो ४७
लोग निकट खड़े थे उन में से एक ने
खड्ग खींचके महायाजक के दास को
मारा और उस का कान उड़ा दिया ।
इस पर यीशु ने लोगों से कहा क्या तुम ४८
मुझे पकड़ने को जैसे डाकू पर खड्ग और
लाठियां लेके निकले हो । मैं मन्दिर ४९
में उपदेश करता हुआ प्रतिदिन तुम्हारे
संग था और तुम ने मुझे नहीं पकड़ा .
परन्तु यह इस लिये है कि धर्म्मपुस्तक
की बातें पूरी होवें । तब सब शिष्य उसे ५०
छोड़के भागे ॥

और एक जवान जो देह पर चद्दर ओढ़े ५१
हुए था उस के पीछे हो लिया और
प्यादों ने उसे पकड़ा । वह चद्दर छोड़के ५२
उन से नंगा भागा ॥

वे यीशु को महायाजक के पास ले ५३
गये और सब प्रधान याजक और प्राचीन
और अध्यापक लोग उस पास एकट्ठे
हुए । पितर दूर दूर उस के पीछे महा- ५४

याजक के अंगने के भीतर लों चला गया और प्यादों के संग बैठके आग ५४ तापने लगा । ५५ प्रधान याजकों ने और न्याइयों की सारी सभा ने यीशु को घात करवाने के लिये उस पर साक्षी ढूंढ़ी परन्तु न पाई । ५६ क्योंकि बहुतों ने उस पर झूठी साक्षी दिई परन्तु उन की साक्षी एक समान न थी । ५७ तब कितनों ने खड़े हो उस पर यह झूठी साक्षी दिई . ५८ कि हमों ने इस को कहते सुना कि मैं यह हाथ का बनाया हुआ मन्दिर गिराऊंगा और तीन दिन में दूसरा बिन हाथ का बनाया हुआ मन्दिर उठाऊंगा । ५९ पर यूं भी उन की साक्षी एक समान न थी । ६० तब महायाजक ने बीच में खड़ा हो यीशु से पूछा क्या तू कुछ उत्तर नहीं देता है . ये लोग तेरे बिरुद्ध क्या साक्षी देते हैं । ६१ परन्तु वह चुप रहा और कुछ उत्तर न दिया . महायाजक ने उस से फिर पूछा और उस से कहा क्या तू उस परमधन्य का पुत्र खीष्ट है । ६२ यीशु ने कहा मैं हूं और तुम मनुष्य के पुत्र को सर्व्वशक्तिमान की दहिनी ओर बैठे और आकाश के मेघों पर आते देखोगे । ६३ तब महायाजक ने अपने वस्त्र फाड़के कहा अब हमें साक्षियों का और क्या प्रयोजन । ६४ ईश्वर की यह निन्दा तुम ने सुनी है तुम्हें क्या समझ पड़ता है . सभों ने उस को बध के योग्य ठहराया । ६५ तब कोई कोई उस पर थूकने लगे और उस का मुंह ढांपके उसे घूसे मारके उस से कहने लगे कि भविष्यद्वाणी बोल . प्यादों ने भी उसे थपेड़े मारे ॥

६६ जब पितर नीचे अंगने में था तब महायाजक की दासियों में से एक आई . ६७ और पितर को आग तापते देखके उस पर दृष्टि करके बोली तू भी यीशु नासरी के संग था । ६८ उस ने मुकरके कहा मैं नहीं जानता और नहीं बूझता तू क्या कहती है . तब वह बाहर डेवढ़ी में गया और मुर्गा बोला । ६९ दासी उसे फिर देखके जो लोग निकट खड़े थे उन से कहने लगी कि यह उन में से एक है . वह फिर मुकर गया । ७० फिर थोड़ी बेर पीछे जो लोग निकट खड़े थे उन्हों ने पितर से कहा तू सचमुच उन में से एक है क्योंकि तू गालीली भी है और तेरी बोली वैसी ही है । ७१ तब वह धिक्कार देने और किरिया खाने लगा कि मैं उस मनुष्य को जिस के विषय में बोलते हो नहीं जानता हूं । ७२ तब मुर्गा दूसरी बार बोला और जो बात यीशु ने उस से कही थी कि मुर्गा के दो बार बोलने से आगे तू तीन बार मुझ से मुकरेगा उस बात को पितर ने स्मरण किया और सोच करते हुए रोने लगा ॥

पन्द्रहवां पर्ब्ब ।

१ भोर को प्रधान याजकों ने प्राचीनों और अध्यापकों के संग बरन न्याइयों की सारी सभा ने तुरन्त आपस में बिचार कर यीशु को बांधा और उसे ले जाके पिलात को सौंप दिया । २ पिलात ने उस से पूछा क्या तू यिहूदियों का राजा है . उस ने उस को उत्तर दिया कि आप ही तो कहते हैं । ३ और प्रधान याजकों ने उस पर बहुत से दोष लगाये । ४ तब पिलात ने उस से फिर पूछा क्या तू कुछ उत्तर नहीं देता . देख वे तेरे बिरुद्ध कितनी साक्षी देते हैं । ५ परन्तु यीशु ने और कुछ उत्तर नहीं दिया यहां लों कि पिलात ने अचंभा किया । ६ उस पर्ब्ब में वह एक बन्धुवे को जिसे लोग मांगते थे उन्हों के लिये छोड़ देता था । ७ बरब्बा नाम एक मनुष्य अपने संगी राजद्रोहियों के साथ

जिन्हों ने बलवे में नरहिंसा किई थी
८ बंधा हुआ था । और लोग पुकारके
पिलात से मांगने लगे कि जैसा उन्हों
के लिये सदा करता था तैसा करे ।
९ पिलात ने उन को उत्तर दिया क्या तुम
चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये यिहू-
१० दियों के राजा को छोड़ देऊं । क्योंकि
वह जानता था कि प्रधान याजकों ने
११ उस को डाह से पकड़वाया था । परन्तु
प्रधान याजकों ने लोगों को उस्काया
इस लिये कि वह बरब्बा ही को उन
१२ के लिये छोड़ देवे । पिलात ने उत्तर
देके उन से फिर कहा तुम क्या चाहते
हो जिसे तुम यिहूदियों का राजा कहते
१३ हो उस से मैं क्या करूं । उन्हों ने फिर
पुकारा कि उसे क्रूश पर चढ़ाइये ।
१४ पिलात ने उन से कहा क्यों उस ने कौन
सी बुराई किई है . परन्तु उन्हों ने
बहुत अधिक पुकारा कि उसे क्रूश पर
चढ़ाइये ॥

१५ तब पिलात ने लोगों को सन्तुष्ट करने
की इच्छा कर बरब्बा को उन्हों के लिये
छोड़ दिया और यीशु को कोड़े मारके क्रूश
१६ पर चढ़ाये जाने को सौंप दिया । तब
योद्धाओं ने उसे घर के अर्थात् अध्यक्ष-
भवन के भीतर ले जाके सारी पलटन को
१७ एकट्ठे बुलाया । और उन्हों ने उसे बैंजनी
बस्त्र पहिराया और कांटों का मुकुट
१८ गून्थके उस के सिर पर रखा . और
उसे नमस्कार करने लगे कि हे यिहूदियों
१९ के राजा प्रणाम । और उन्हों ने नरकट
से उस के सिर पर मारा और उस पर
थूका और घुटने टेकके उस को प्रणाम
२० किया । जब वे उस से ठट्ठा कर चुके
तब उस से वह बैंजनी बस्त्र उतारके
और उस का निज बस्त्र उस को पहिराके
उसे क्रूश पर चढ़ाने को बाहर ले गये ।
२१ और उन्हों ने कुरीनी देश के एक मनुष्य
को अर्थात सिकन्दर और रूफ के पिता
शिमोन को जो गांव से आते हुए
उधर से जाता था बेगार पकड़ा कि
उस का क्रूश ले चले ॥

तब वे उसे गलगथा स्थान पर लाये २२
जिस का अर्थ यह है खोपड़ी का स्थान ।
और उन्हों ने दाख रस में मुर मिलाके २३
उसे पीने को दिया परन्तु उस ने न लिया ।
तब उन्हों ने उस को क्रूश पर चढ़ाया २४
और उस के कपड़ों पर चिट्ठियां डालके
कि कौन किस को लेगा उन्हें बांट लिया ।
एक पहर दिन चढ़ा था कि उन्हों ने २५
उस को क्रूश पर चढ़ाया । और उस का २६
यह दोषपत्र ऊपर लिखा गया कि यिहू-
दियों का राजा । उन्हों ने उस के संग २७
दो डाकूओं को एक को उस की दहिनी
ओर और दूसरे को बाईं ओर क्रूशों पर
चढ़ाया । तब धर्म्मपुस्तक का यह बचन २८
पूरा हुआ कि वह कुकर्म्मियों के संग
गिना गया ॥

जो लोग उधर से आते जाते थे २९
उन्हों ने अपने सिर हिलाके और यह
कहके उस की निन्दा किई . कि हा ३०
मन्दिर के ढानेहारे और तीन दिन में बना-
नेहारे अपने को बचा और क्रूश पर से उतर
आ । इसी रीति से प्रधान याजकों ने ३१
भी अध्यापकों के संग आपस में ठट्ठा
कर कहा उस ने औरों को बचाया अपने
को बचा नहीं सकता है । इस्रायेल ३२
का राजा खीष्ट क्रूश पर से अब उतर
आवे कि हम देखके बिश्वास करें .
जो उस के संग क्रूशों पर चढ़ाये गये
उन्हों ने भी उस की निन्दा किई ॥

जब दो पहर हुआ तब सारे देश ३३
में तीसरे पहर लों अंधकार हो गया ।
तीसरे पहर यीशु ने बड़े शब्द से पुकार- ३४
के कहा एलो एलो लामा शबक्तनी
अर्थात हे मेरे ईश्वर हे मेरे ईश्वर तू

३५ ने क्यों मुझे त्यागा है। जो लोग निकट खड़े थे उन में से कितनों ने यह सुनके कहा देखो वह एलियाह को बुलाता ३६ है। और एक ने दौड़के इस्पंज को सिरके में भिंगाया और नल पर रखके उसे पीने को दिया और कहा रहने दो हम देखें कि एलियाह उसे उतारने को आता है कि नहीं॥

३७ तब यीशु ने बड़े शब्द से पुकारके ३८ प्राण त्यागा। और मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे लों फटके दो भाग हो ३९ गया। जो शतपति उस के सन्मुख खड़ा था उस ने जब उसे यूं पुकारके प्राण त्यागते देखा तब कहा सचमुच यह मनुष्य ईश्वर का पुत्र था॥

४० कितनी स्त्रियां भी दूर से देखती रहीं जिन्हों में मरियम मगदलीनी और छोटे याकूब की और योशी की माता ४१ मरियम और शालोमी थीं। जब यीशु गालील में था तब ये उस के पीछे हो लेती थीं और उस की सेवा करती थीं. बहुत सी और स्त्रियां भी जो उस के संग यिरूशलीम में आईं वहां थीं॥

४२ यह दिन तैयारी का दिन था जो ४३ बिश्रामवार के एक दिन आगे है. इस लिये जब सांझ हुई तब अरिमथिया नगर का यूसफ एक आदरवन्त मन्त्री जो आप भी ईश्वर के राज्य की बाट जोहता था आया और साहस से पिलात के पास जाके यीशु की लोथ मांगी। ४४ पिलात ने अचंभा किया कि वह क्या मर गया है और शतपति को अपने पास बुलाके उस से पूछा क्या उस को मरे ४५ कुछ बेर हुई। शतपति से जानके उस ने ४६ यूसफ को लोथ दिई। यूसफ ने एक चद्दर मोल लेके यीशु को उतारके उस चद्दर में लपेटा और उसे एक कबर में जो पत्थर में खोदी हुई थी रखा और कबर के द्वार पर पत्थर लुढ़का दिया। मरियम मग- ४७ दलीनी और योशी की माता मरियम ने वह स्थान देखा जहां वह रखा गया॥

सोलहवां पर्व्व।

जब बिश्रामवार बीत गया तब १ मरियम मगदलीनी और याकूब की माता मरियम और शालोमी ने सुगन्ध मोल लिया कि आके यीशु को मलें। और २ अठवारे के पहिले दिन बड़ी भोर सूर्य्य उदय होते हुए वे कबर पर आईं। और ३ वे आपस में बोलीं कौन हमारे लिये कबर के द्वार पर से पत्थर लुढ़कावेगा। परन्तु उन्हों ने दृष्टि कर देखा कि पत्थर ४ लुढ़काया गया है. और वह बहुत बड़ा था। कबर के भीतर जाके उन्हों ५ ने उजले लंबे वस्त्र पहिने हुए एक जवान को दहिनी ओर बैठे देखा और चकित हुईं। उस ने उन से कहा ६ चकित मत होओ तुम यीशु नासरी को जो क्रूश पर घात किया गया हो. वह जी उठा है वह यहां नहीं है. देखो यही स्थान है जहां उन्हों ने उसे रखा। परन्तु जाके उस ७ के शिष्यों से और पितर से कहो कि वह तुम्हारे आगे गालील को जाता है. जैसे उस ने तुम से कहा वैसे तुम उसे वहां देखोगे। वे शीघ्र निकलके ८ कबर से भाग गईं और कम्पित और बिस्मित हुईं और किसी से कुछ न बोलीं क्योंकि वे डरती थीं॥

यीशु ने अठवारे के पहिले दिन ९ भोर को जी उठके पहिले मरियम मगदलीनी को जिस में से उस ने सात भूत निकाले थे दर्शन दिया। उस ने १० जाके उस के संगियों को जो शोक करते और रोते थे कह दिया। उन्हों ने जब ११ सुना कि वह जीता है और मरियम से देखा गया है तब प्रतीति न किई॥

१२ इस के पीछे उस ने उन में से दो को जो मार्ग में चलते और किसी गांव को जाते थे दूसरे रूप में दर्शन दिया। १३ उन्हों ने भी आके औरों से कह दिया परन्तु उन्हों ने उन की भी प्रतीति न किई॥

१४ पीछे उस ने ग्यारह शिष्यों को जब वे भोजन पर बैठे थे दर्शन दिया और उन के अविश्वास और मन की कठोरता पर उलहना दिया इस लिये कि जिन्हों ने उसे जी उठे हुए देखा था उन लोगों की उन्हों ने प्रतीति न किई। १५ और उस ने उन से कहा तुम सारे जगत में जाके हर एक मनुष्य को सुसमाचार १६ सुनाओ। जो बिश्वास करे और बपतिसमा लेवे सो त्राण पावेगा परन्तु जो बिश्वास न करे सो दंड के योग्य ठहराया जायगा। १७ और ये चिन्ह बिश्वास करनेहारों के संग प्रगट होंगे. वे मेरे नाम से भूतों को निकालेंगे वे नई नई भाषा बोलेंगे। १८ वे सांपों को उठा लेंगे और जो वे कुछ बिष पीवें तो उस से उन की कुछ हानि न होगी. वे रोगियों पर हाथ रखेंगे और वे चंगे हो जायेंगे॥

१९ सो प्रभु उन्हों से बोलने के पीछे स्वर्ग पर उठा लिया गया और ईश्वर की दहिनी ओर बैठा। २० और उन्हों ने निकलके सर्ब्बत्र उपदेश किया और प्रभु ने उन के संग कार्य्य किया और जो चिन्ह साथ में प्रगट होते थे उन्हों से बचन को दृढ़ किया। आमीन

लूक रचित सुसमाचार।

पहिला पर्ब्ब।

१ हे महामहिमन थियोफिल जो बातें हम लोगों में अति प्रमाण हैं उन बातों का बृत्तान्त जिस रीति से उन्हों ने जो आरंभ से साक्षी और बचन के २ सेवक थे हम लोगों को सौंपा, उसी रीति से लिखने को बहुतों ने हाथ ३ लगाया है. इस लिये मुझे भी जिस ने सब बातों को आदि से ठीक करके जांचा है अच्छा लगा कि एक ओर से ४ आप के पास लिखूं. इस लिये कि जिन बातों का उपदेश आप को दिया गया है आप उन बातों की दृढ़ता जानें॥

५ यिहूदिया देश के हेरोद राजा के दिनों में अबियाह की पारी में जिखरियाह नाम एक याजक था और उस की स्त्री जिस का नाम इलीशिबा था हारोन के बंश की थी। ६ वे दोनों ईश्वर के सन्मुख धर्म्मी थे और परमेश्वर की समस्त आज्ञाओं और बिधियों पर निर्दोष चलते थे। ७ उन को कोई लड़का न था क्योंकि इलीशिबा बांझ थी और वे दोनों बूढ़े थे। ८ जब जिखरियाह अपनी पारी की रीति पर ईश्वर के आगे याजक का काम करता था, ९ तब चिट्ठियां डालने से उस को याजकीय व्यवहार के अनुसार परमेश्वर के मन्दिर में जाके धूप जलाना पड़ा। १० धूप

जलाने के समय लोगों की सारी मंडली
११ बाहर प्रार्थना करती थी। तब परमे-
श्वर का एक दूत धूप की बेदी की
दहिनी ओर खड़ा हुआ उस को
१२ दिखाई दिया। जिखरियाह उसे देखके
१३ घबरा गया और उसे डर लगा। दूत
ने उस से कहा हे जिखरियाह मत डर
क्योंकि तेरी प्रार्थना सुनी गई है और
तेरी स्त्री इलीशिबा पुत्र जनेगी और तू
१४ उस का नाम योहन रखना। तुझे
आनन्द और आह्लाद होगा और बहुत
लोग उस के जन्मने से आनन्दित
१५ होंगे। क्योंकि वह परमेश्वर के सन्मुख
बड़ा होगा और न दाख रस न मद्य
पीयेगा और अपनी माता के गर्भ ही से
१६ पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होगा। और
वह इस्रायेल के सन्तानों में से बहुतों
को परमेश्वर उन के ईश्वर की ओर
१७ फिरावेगा। वह उस के आगे एलियाह
के आत्मा और सामर्थ्य से जायगा इस
लिये कि पितरों का मन लड़कों की
ओर फेर दे और आज्ञा लंघन करनेहारों
को धर्म्मियों के मत पर लावे और प्रभु
के लिये एक सजे हुए लोग को तैयार
१८ करे। तब जिखरियाह ने दूत से कहा
यह मैं किस रीति से जानूं क्योंकि मैं
बूढ़ा हूं और मेरी स्त्री भी बूढ़ी है।
१९ दूत ने उस को उत्तर दिया कि मैं
जब्रायेल हूं जो ईश्वर के साम्ने खड़ा
रहता हूं और मैं तुझ से बात करने और
तुझे यह सुसमाचार सुनाने को भेजा
२० गया हूं। और देख जिस दिन लों यह
सब पूरा न हो जाय उस दिन लों तू
गूंगा हो रहेगा और बोल न सकेगा
क्योंकि तू ने मेरी बातों पर जो अपने
समय में पूरी किई जायेंगीं बिश्वास
२१ नहीं किया। लोग जिखरियाह की बाट
देखते थे और अचंभा करते थे कि उस
ने मन्दिर में बिलंब किया। जब वह २२
बाहर आया तब उन्हों से बोल न सका
और उन्हों ने जाना कि उस ने मन्दिर
में कोई दर्शन पाया था और वह उन्हों
से सैन करने लगा और गूंगा रह गया।
जब उस की सेवा के दिन पूरे हुए तब २३
वह अपने घर गया। इन दिनों के पीछे २४
उस की स्त्री इलीशिबा गर्भवती हुई
और अपने को पांच मास यह कहके
छिपाया, कि मनुष्यों में मेरा अपमान २५
मिटाने को परमेश्वर ने इन दिनों में कृपा-
दृष्टि कर मुझ से ऐसा ब्यवहार किया है॥

छठवें मास में ईश्वर ने जब्रायेल २६
दूत को गालील देश के एक नगर में जो
नासरत कहावता है किसी कुंवारी के
पास भेजा, जिस की मंगनी यूसफ २७
नाम दाऊद के घराने के एक पुरुष से
हुई थी, उस कुंवारी का नाम मरियम
था। दूत ने घर में प्रवेश कर उस से २८
कहा हे अनुग्रहीत कल्याण परमेश्वर
तेरे संग है स्त्रियों में तू धन्य है।
मरियम उसे देखके उस के बचन से २९
घबरा गई और सोचने लगी कि यह
कैसा नमस्कार है। तब दूत ने उस से ३०
कहा हे मरियम मत डर क्योंकि ईश्वर
का अनुग्रह तुझ पर हुआ है। देख तू ३१
गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी और उस
का नाम तू यीशु रखना। वह महान ३२
होगा और सर्ब्बप्रधान का पुत्र कहावेगा
और परमेश्वर ईश्वर उस के पिता दाऊद
का सिंहासन उस को देगा। और वह ३३
याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा
और उस के राज्य का अन्त न होगा।
तब मरियम ने दूत से कहा यह किस ३४
रीति से होगा क्योंकि मैं पुरुष को नहीं
जानती हूं। दूत ने उस को उत्तर दिया ३५
कि पवित्र आत्मा तुझ पर आवेगा और
सर्ब्बप्रधान की शक्ति तुझ पर छाया

करेगी इस लिये वह पवित्र बालक
ईश्वर का पुत्र कहावेगा । और देख
तेरी कुटुंबिनी इलीशिबा को भी बुढ़ापे
में पुत्र का गर्भ रहा है और जो बांझ
कहावती थी उस का यह छठवां मास
३७ है। क्योंकि कोई बात ईश्वर से असाध्य
३८ नहीं है । मरियम ने कहा देखिये मैं
परमेश्वर की दासी मुझे आप के वचन
के अनुसार होय . तब दूत उस के पास
से चला गया ॥

३९ उन दिनों में मरियम उठके शीघ्र से
पर्व्वतीय देश में यिहूदा के एक नगर
४० को गई . और जिखरियाह के घर में
प्रवेश कर इलीशिबा को नमस्कार किया ।
४१ ज्योंही इलीशिबा ने मरियम का नमस्कार
सुना त्योंही बालक उस के गर्भ में
उछला और इलीशिबा पवित्र आत्मा से
४२ परिपूर्ण हुई । और उस ने बड़े शब्द से
बोलते हुए कहा तू स्त्रियों में धन्य है
४३ और तेरे गर्भ का फल धन्य है । और
यह मुझे कहां से हुआ कि मेरे प्रभु की
४४ माता मेरे पास आवे । देख ज्योंही तेरे
नमस्कार का शब्द मेरे कानों में पड़ा
त्योंही बालक मेरे गर्भ में आनन्द से
४५ उछला । और धन्य बिश्वास करनेहारी
कि परमेश्वर की ओर से जो बातें तुझ
से कही गई हैं सो पूरी किई जायेंगी ॥

४६ तब मरियम ने कहा मेरा प्राण पर-
४७ मेश्वर की महिमा करता है . और मेरा
आत्मा मेरे त्राणकर्त्ता ईश्वर से आनन्दित
४८ हुआ है । क्योंकि उस ने अपनी दासी
की दीनताई पर दृष्टि किई है देखो
अब से सब समयों के लोग मुझे धन्य
४९ कहेंगे । क्योंकि सर्व्वशक्तिमान ने मेरे
लिये महाकार्य्यों को किया है और उस
५० का नाम पवित्र है । उस की दया
उन्हों पर जो उस से डरते हैं पीढ़ी से
५१ पीढ़ी लों नित्य रहती है । उस ने
अपनी भुजा का बल दिखाया है उस ने
अभिमानियों को उन के मन के परा-
५२ मर्श में छिन्न भिन्न किया है । उस ने
बलवानों को सिंहासनों से उतारा और
५३ दीनों को ऊंचा किया है । उस ने भूखों
को उत्तम बस्तुओं से तृप्त किया और
धनवानों को छूछे हाथ फेर दिया है ।
५४ उस ने जैसे हमारे पितरों से कहा .
५५ तैसे सर्व्वदा इब्राहीम और उस के बंश
पर अपनी दया स्मरण करने के कारण
अपने सेवक इस्रायेल का उपकार किया
५६ है । मरियम तीन मास के अटकल
इलीशिबा के संग रही तब अपने घर
को लौटी ॥

५७ तब इलीशिबा के जनने का समय
५८ पूरा हुआ और वह पुत्र जनी । उस के
पड़ोसियों और कुटुंबों ने सुना कि
परमेश्वर ने उस पर बड़ी दया किई है
और उन्हों ने उस के संग आनन्द किया ।
५९ आठवें दिन वे बालक का खतना करने
को आये और उस के पिता के नाम पर
उस का नाम जिखरियाह रखने लगे ।
६० इस पर उस की माता ने कहा सो नहीं
परन्तु उस का नाम योहन रखा जायगा ।
६१ उन्हों ने उस से कहा आप के कुटुंबों
में से कोई नहीं है जो इस नाम से
६२ कहावता है । तब उन्हों ने उस के
पिता से सैन किया कि आप क्या चाहते
६३ हैं कि इस का नाम रखा जाय । उस
ने पटिया मंगाके यह लिखा कि उस का
नाम योहन है . इस से वे सब अचंभित
६४ हुए । तब उस का मुंह और उस की
जीभ तुरन्त खुल गये और वह बोलने
और ईश्वर का धन्यबाद करने लगा ।
६५ और उन्हों के आसपास के सब रहने-
हारों को भय हुआ और इन सब बातों
की चर्चा यिहूदिया के सारे पर्व्वतीय
६६ देश में होने लगी । और सब सुननेहारों

ने अपने अपने मन में सोच कर कहा यह कैसा बालक होगा . और परमेश्वर का हाथ उस के संग था ॥

६७ तब उस का पिता जिखरियाह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हुआ ६८ और यह भविष्यद्वाणी बोला . कि परमेश्वर इस्रायेल का ईश्वर धन्य होवे कि उस ने अपने लोगों पर दृष्टि ६९ कर उन्हों का उद्धार किया है . और जैसे उस ने अपने पवित्र भविष्यद्वक्ताओं के मुख से जो आदि से होते आये हैं ७० कहा . तैसे हमारे लिये अपने सेवक दाऊद के घराने में एक त्राण के सींग ७१ को . अर्थात हमारे शत्रुओं से और हमारे सब बैरियों के हाथ से एक ७२ बचानेहारे को प्रगट किया है . इस लिये कि वह हमारे पितरों के संग दया का व्यवहार करे और अपना ७३ पवित्र नियम स्मरण करे . अर्थात वह किरिया जो उस ने हमारे पिता ७४ इब्राहीम से खाई . कि हमें यह देवे कि हम अपने शत्रुओं के हाथ से बचके . ७५ निर्भय जीवन भर प्रतिदिन उस के सन्मुख पवित्रताई और धर्म्म से उस ७६ की सेवा करें । और तू हे बालक सर्व्वप्रधान का भविष्यद्वक्ता कहावेगा क्योंकि तू परमेश्वर के आगे जायगा ७७ कि उस के पंथ बनावे . अर्थात हमारे ईश्वर की महा करुणा से उस के लोगों को उन्हों के पापमोचन के द्वारा ७८ से निस्तार का ज्ञान देवे । उसी करुणा से सूर्य्य का उदय ऊपर से हमों ७९ पर प्रकाशित हुआ है . कि अंधकार में और मृत्यु की छाया में बैठनेहारों को ज्योति देवे और हमारे पांव कुशल के मार्ग पर सीधे चलावे ॥

८० और वह बालक बढ़ा और आत्मा में बलवन्त होता गया और इस्रायेली लोगों पर प्रगट होने के दिन लों जंगली स्थानों में रहा ॥

दूसरा पर्ब्ब

१ उन दिनों में अगस्त कैसर महाराजा की ओर से आज्ञा हुई कि उस के राज्य के सब लोगों के नाम लिखे २ जावें । कुरीनिय के सुरिया देश के अध्यक्ष होने के पहिले यह नाम लिखाई ३ हुई । और सब लोग नाम लिखाने को ४ अपने अपने नगर को गये । यूसफ भी इस लिये कि वह दाऊद के घराने औ ५ वंश का था . मरियम स्त्री के संग जिस से उस की मंगनी हुई थी नाम लिखाने को गालील देश के नासरत नगर से यिहूदिया में बैतलहम नाम दाऊद के नगर को गया . उस समय ६ मरियम गर्भवती थी । उन के वहां रहते उस के जनने के दिन पूरे हुए । ७ और वह अपना पहिलौठा पुत्र जनी और उस को कपड़े में लपेटके चरनी में रखा क्योंकि उन के लिये सराय में जगह न थी ॥

८ उस देश में कितने गड़ेरिये थे जो खेत में रहते थे और रात को अपने ९ झुंड का पहरा देते थे । और देखो परमेश्वर का एक दूत उन के पास आ खड़ा हुआ और परमेश्वर का तेज उन की चारों ओर चमका और वे १० बहुत डर गये । दूत ने उन से कहा मत डरो क्योंकि देखो मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूं जिस ११ से सब लोगों को आनन्द होगा . कि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिये एक त्राणकर्त्ता अर्थात खीष्ट प्रभु जन्मा १२ है । और तुम्हारे लिये यह पता होगा कि तुम एक बालक को कपड़े लपेटे हुए और चरनी में पड़े हुए १३ पाओगे । तब अचांचक स्वर्गीय सेना

में से बहुतेरे उस दूत के संग प्रगट हुए और ईश्वर की स्तुति करते हुए बोले. १४ सब से ऊंचे स्थान में ईश्वर का गुणानुवाद और पृथिवी पर शांति होय. १५ मनुष्यों पर प्रसन्नता है। ज्योंही दूतगण उन्हों के पास से स्वर्ग को गये त्योंही गड़ेरियों ने आपस में कहा आओ हम बैतलहम लों जाके यह बात जो हुई है जिसे परमेश्वर ने हमों को बताया १६ है देखें। और उन्हों ने शीघ्र जाके मरियम और यूसफ को और बालक को १७ चरनी में पड़े हुए पाया। इन्हें देखके उन्हों ने वह बात जो इस बालक के विषय में उन्हों से कही गई थी १८ प्रचार किई। और सब सुननेहारे उन बातों से जो गड़ेरियों ने उन से कहीं १९ अचंभित हुए। परन्तु मरियम ने इन सब बातों को अपने मन में रखा और २० उन्हें सोचती रही। तब गड़ेरिये जैसा उन्हों से कहा गया था तैसा ही सब बातें सुनके और देखके उन बातों के लिये ईश्वर का गुणानुवाद और स्तुति करते हुए लौट गये॥

२१ जब आठ दिन पूरे होने से बालक का खतना करना हुआ तब उस का नाम यीशु रखा गया कि वही नाम उस के गर्भ में पड़ने के आगे दूत से २२ रखा गया था। और जब मूसा की व्यवस्था के अनुसार उन के शुद्ध होने के दिन पूरे हुए तब वे बालक को २३ यिरूशलीम में ले गये. कि जैसा परमेश्वर की व्यवस्था में लिखा है कि हर एक पहिलौठा नर परमेश्वर के लिये पवित्र कहावेगा तैसा उसे पर- २४ मेश्वर के आगे धरें. और परमेश्वर की व्यवस्था की बात के अनुसार पंडुकों की जोड़ी अथवा कपोत के दो बच्चे बलिदान करें॥

२५ तब देखो यिरूशलीम में शिमियोन नाम एक मनुष्य था. वह मनुष्य धर्म्मी और भक्त था और इस्रायेल की शांति की बाट जोहता था और पवित्र २६ आत्मा उस पर था। पवित्र आत्मा से उस को प्रतिज्ञा दिई गई थी कि जब लों तू परमेश्वर के अभिषिक्त जन को न देखे तब लों मृत्यु को न देखेगा। २७ और वह आत्मा की शिक्षा से मन्दिर में आया और जब उस बालक अर्थात यीशु के माता पिता उस के विषय में व्यवस्था के व्यवहार के अनुसार करने २८ को उसे भीतर लाये. तब शिमियोन ने उस को अपनी गोदी में लेके ईश्वर २९ का धन्यवाद कर कहा. हे प्रभु अभी तू अपने बचन के अनुसार अपने दास ३० को कुशल से बिदा करता है. क्योंकि मेरी आंखों ने तेरे त्राणकर्त्ता को देखा ३१ है. जिसे तू ने सब देशों के लोगों के ३२ सन्मुख तैयार किया है. कि वह अन्यदेशियों को प्रकाश करने की ज्योति और तेरे इस्रायेली लोग का तेज होवे। ३३ यूसफ और यीशु की माता इन बातों से जो उस के विषय में कही गईं ३४ अचंभा करते थे। तब शिमियोन ने उन को आशीस देके उस की माता मरियम से कहा देख यह तो इस्रायेल में बहुतों के गिरने और फिर उठने का कारण होगा और एक चिन्ह जिस के विरुद्ध में बातें किई जायेंगीं. हां तेरा निज प्राण भी खड्ग से वारपार छिदेगा. ३५ इस से बहुत हृदयों के बिचार प्रगट किये जायेंगे॥

३६ और हन्ना नाम एक भविष्यद्वक्तिनी थी जो आशेर के कुल के पनूएल की पुत्री थी. वह बहुत बूढ़ी थी और अपने कुंवारपन से सात बरस स्वामी के संग ३७ रही थी। और वह बरस चौरासी एक

की बिधवा थी जो मन्दिर से बाहर न जाती थी परन्तु उपवास औ प्रार्थना से
३८ रात दिन सेवा करती थी। उस ने भी उसी घड़ी निकट आके परमेश्वर का धन्य माना और यिरूशलीम में जो लोग उद्धार की बाट देखते थे उन सभों से यीशु के विषय में बात किई॥

३९ जब वे परमेश्वर की व्यवस्था के अनुसार सब कुछ कर चुके तब गालील
४० को अपने नगर नासरत को लौटे। और बालक बढ़ा और आत्मा में बलवन्त और बुद्धि से परिपूर्ण होता गया और ईश्वर का अनुग्रह उस पर था॥

४१ उस के माता पिता बरस बरस निस्तार पर्ब्ब में यिरूशलीम को जाते थे।
४२ जब वह बारह बरस का हुआ तब वे पर्ब्ब की रीति पर यिरूशलीम को गये।
४३ और जब वे पर्ब्ब के दिनों को पूरा करके लौटने लगे तब वह लड़का यीशु यिरूशलीम में रह गया परन्तु यूसफ और उस की माता नहीं जानते थे।
४४ वे यह समझके कि वह संगवाले पथिकों के बीच में है एक दिन की बाट गये और अपने कुटुंबों और चिन्हारों के
४५ बीच में उस को ढूंढ़ने लगे। परन्तु जब उन्हों ने उस को न पाया तब उसे ढूंढ़ते हुए यिरूशलीम को फिर गये।
४६ तीन दिन के पीछे उन्हों ने उसे मन्दिर में पाया कि उपदेशकों के बीच में बैठा हुआ उन की सुनता और उन से प्रश्न
४७ करता था। और जो लोग उस की सुनते थे सो सब उस की बुद्धि और उस
४८ के उत्तरों से विस्मित हुए। और वे उसे देखके अचंभित हुए और उस की माता ने उस से कहा हे पुत्र हम से क्यों ऐसा किया. देख तेरा पिता और
४९ मैं कुढ़ते हुए तुझे ढूंढ़ते थे। उस ने उन से कहा तुम क्यों मुझे ढूंढ़ते थे. क्या नहीं जानते थे कि मुझे अपने पिता के विषयों में लगा रहना
५० है। परन्तु उन्हों ने यह बात जो उस
५१ ने उन से कही न समझी। तब वह उन के संग चला और नासरत में आया और उन के बश में रहा और उस की माता ने इन सब बातों को अपने मन
५२ में रखा। और यीशु की बुद्धि और डौल और उस पर ईश्वर का और मनुष्यों का अनुग्रह बढ़ता गया॥

तीसरा पर्ब्ब।

१ तिबरिय कैसर के राज्य के पन्द्रहवें बरस में जब पन्तिय पिलात यिहूदिया का अध्यक्ष था और हेरोद एक चौथाई अर्थात गालील का राजा और उस का भाई फिलिप एक चौथाई अर्थात इतूरिया और त्राखोनीतिया देशों का राजा और लुसानिय एक चौथाई अर्थात
२ अबिलीनी देश का राजा था. और जब हन्नस और कियाफा महायाजक थे तब ईश्वर का बचन जंगल में जिखरियाह
३ के पुत्र योहन पास आया। और वह यर्दन नदी के आसपास के सारे देश में आके पापमोचन के लिये पश्चात्ताप के बपतिसमा का उपदेश करने लगा।
४ जैसे यिशैयाह भविष्यद्वक्ता के कहे हुए पुस्तक में लिखा है कि किसी का शब्द हुआ जो जंगल में पुकारता है कि परमेश्वर का पन्थ बनाओ उस के राज-
५ मार्ग सीधे करो। हर एक नाला भरा जायगा और हर एक पर्ब्बत और टीला नीचा किया जायगा और टेढ़े पन्थ सीधे
६ और ऊंचनीच मार्ग चौरस बन जायेंगे। और सब प्राणी ईश्वर के त्राण को देखेंगे॥

७ तब बहुत लोग जो उस से बपतिसमा लेने को निकल आये उन्हों से योहन ने कहा हे सांपों के बंश किस

ने तुम्हें आनेवाले क्रोध से भागने को ८ चिताया है । पश्चात्ताप के योग्य फल लाओ और अपने अपने मन में मत कहने लगो कि हमारा पिता इब्राहीम है क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि ईश्वर इन पत्थरों से इब्राहीम के लिये ९ सन्तान उत्पन्न कर सकता है । और अब भी कुल्हाड़ी पेड़ों की जड़ पर लगी है इस लिये जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं फलता है सो काटा जाता १० और आग में डाला जाता है । तब लोगों ने उस से पूछा तो हम क्या ११ करें । उस ने उन्हें उत्तर दिया कि जिस पास दो अंगे हों सो जिस पास न हो उस के साथ बांट लेवे और जिस पास १२ भोजन होय सो भी वैसा ही करे । कर उगाहनेहारे भी बपतिसमा लेने को आये और उस से बोले हे गुरु हम क्या १३ करें । उस ने उन से कहा जो तुम्हें ठहराया गया है उस से अधिक मत १४ ले लो । योद्धाओं ने भी उस से पूछा हम क्या करें . उस ने उन से कहा किसी पर उपद्रव मत करो और न झूठे दोष लगाओ और अपने वेतन से सन्तुष्ट रहो ॥

१५ जब लोग आस देखते थे और सब अपने अपने मन में योहन के विषय में बिचार करते थे कि होय न होय यही १६ ख्रीष्ट है . तब योहन ने सभों को उत्तर दिया कि मैं तो तुम्हें जल से बपतिसमा देता हूं परन्तु वह आता है जो मुझ से अधिक शक्तिमान है मैं उस के जूतों का बंध खोलने के योग्य नहीं हूं वह तुम्हें पवित्र आत्मा से और १७ आग से बपतिसमा देगा । उस का सूप उस के हाथ में है और वह अपना सारा खलिहान शुद्ध करेगा और गेहूं को अपने खत्ते में एकट्ठा करेगा परन्तु भूसी को उस आग से जो नहीं बुझती है जलावेगा । १८ उस ने बहुत और बातों का भी उपदेश करके लोगों को सुसमाचार सुनाया ॥

१९ पर उस ने चौथाई के राजा हेरोद को उस के भाई फिलिप की स्त्री हेरोदिया के विषय में और सब कुकर्म्मों के विषय में जो उस ने किये थे उलहना दिया । २० इस लिये हेरोद ने उन सभों के उपरांत यह कुकर्म्म भी किया कि योहन को बन्दीगृह में मूंद रखा ॥

२१ सब लोगों के बपतिसमा लेने के पीछे जब यीशु ने भी बपतिसमा लिया था और प्रार्थना करता था तब स्वर्ग खुल गया । २२ और पवित्र आत्मा देही रूप में कपोत की नाईं उस पर उतरा और यह आकाशबाणी हुई कि तू मेरा प्रिय पुत्र है मैं तुझ से अति प्रसन्न हूं ॥

२३ और यीशु आप तीस बरस के अटकल होने लगा और लोगों की समझ में यूसफ का पुत्र था । २४ यूसफ एली का पुत्र था वह मत्तात का पुत्र वह लेवी का वह मलकि का वह यान्ना का वह यूसफ का . २५ वह मत्तथियाह का वह आमोस का वह नहूम का वह इसलि का वह नगई का . २६ वह माट का वह मत्तथियाह का वह शिमिई का वह यूसफ का वह यिहूदा का . २७ वह योहाना का वह रीसा का वह जिरुब्बाबुल का वह शलतियल का वह नेरि का . २८ वह मलकि का वह अद्दी का वह कोसम का वह इलमोदद का वह एर का . २९ वह योशी का वह इलियेजर का वह योरीम का वह मत्तात का वह लेवी का . ३० वह शिमियोन का वह यिहूदा का वह यूसफ का वह योनन का वह इलियाकीम का . ३१ वह मिलेआ का वह मैनन का वह मत्तथ का वह नाथन

३२ का वह दाऊद का . वह यिशी का
वह ओबेद का वह बोअस का वह
३३ सलमोन का वह नहशोन का . वह
अम्मीनादब का वह अराम का वह
हिस्रोन का वह पेरस का वह यिहूदा
३४ का . वह याकूब का वह इसहाक का
वह इब्राहीम का वह तेराह का वह
३५ नाहोर का . वह सिरूग का वह रिऊ
का वह पेलग का वह एबर का वह
३६ शेलह का . वह कैनन का वह अर्फक्-
सद का वह शेम का वह नूह का
३७ वह लमक का . वह मिथूशलह का
वह हनोक का वह येरद का वह
३८ महललेल का वह कैनन का . वह
इनोश का वह शेत का वह आदम का
वह ईश्वर का ॥

चौथा पर्ब्ब ।

१ यीशु पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो
यर्दन से फिरा और आत्मा की शिक्षा
२ से जंगल में गया । और चालीस दिन
शैतान से उस की परीक्षा किई गई और
उन दिनों में उस ने कुछ नहीं खाया
पर पीछे उन के पूरे होने पर भूखा
३ हुआ । तब शैतान ने उस से कहा जो
तू ईश्वर का पुत्र है तो इस पत्थर से
४ कह दे कि रोटी बन जाय । यीशु ने
उस को उत्तर दिया कि लिखा है
मनुष्य केवल रोटी से नहीं परन्तु ईश्वर
५ की हर एक बात से जीयेगा । तब
शैतान ने उसे एक ऊंचे पर्ब्बत पर ले
जाके उस को पल भर में जगत के
६ सब राज्य दिखाये । और शैतान ने उस
से कहा मैं यह सब अधिकार और
इन्हों का बिभव तुझे देऊंगा क्योंकि
वह मुझे सौंपा गया है और मैं उसे
जिस को चाहता हूं उस को देता हूं ।
७ इस लिये जो तू मुझे प्रणाम करे तो
८ सब तेरा होगा । यीशु ने उस को
उत्तर दिया कि हे शैतान मेरे साम्हने से
दूर हो क्योंकि लिखा है कि तू पर-
मेश्वर अपने ईश्वर को प्रणाम कर और
केवल उसी की सेवा कर । तब उस ने ९
उस को यिरूशलीम में ले जाके मन्दिर
के कलश पर खड़ा किया और उस से
कहा जो तू ईश्वर का पुत्र है तो अपने
को यहां से नीचे गिरा . क्योंकि लिखा १०
है कि वह तेरे विषय में अपने दूतों को
आज्ञा देगा कि वे तेरी रक्षा करें . और ११
वे तुझे हाथों हाथ उठा लेंगे न हो कि
तेरे पांव में पत्थर पर चोट लगे । यीशु १२
ने उस को उत्तर दिया यह भी कहा
गया है कि तू परमेश्वर अपने ईश्वर
की परीक्षा मत कर । जब शैतान सब १३
परीक्षा कर चुका तब कुछ समय के लिये
उस के पास से चला गया ॥

यीशु आत्मा की शक्ति से गालील १४
को फिर गया और उस की कीर्त्ति आस-
पास के सारे देश में फैल गई । और १५
उस ने उन की सभाओं में उपदेश किया
और सभों ने उस की बड़ाई किई ॥

तब वह नासरत को आया जहां १६
पाला गया था और अपनी रीति पर
बिश्राम के दिन सभा के घर में जाके
पढ़ने को खड़ा हुआ । यिशैयाह भविष्य- १७
द्वक्ता का पुस्तक उस को दिया गया
और उस ने पुस्तक खोलके वह स्थान
पाया जिस में लिखा था . कि पर- १८
मेश्व का आत्मा मुझ पर है इस लिये
कि उस ने मुझे अभिषेक किया है कि
कंगालों को सुसमाचार सुनाऊं . उस ने १९
मुझे भेजा है कि जिन के मन चूर हैं
उन्हें चंगा करूं और बंधुओं को छूटने
की और अंधों को दृष्टि पाने की वार्त्ता
सुनाऊं और पेरे हुओं का निस्तार करूं
और परमेश्वर के ग्राह्य बरस का प्रचार
करूं । तब वह पुस्तक लपेटके सेवक २०

के हाथ में देके बैठ गया और सभा में सब लोगों की आंखें उसे तक रहीं । २१ तब वह उन्हों से कहने लगा कि आज ही धर्म्मपुस्तक का यह बचन तुम्हारे २२ सुनने में पूरा हुआ है । और सभों ने उस को सराहा और जो अनुग्रह की बातें उस के मुख से निकलीं उन से अचंभा किया और कहा क्या यह यूसफ २३ का पुत्र नहीं है । उस ने उन्हों से कहा तुम अवश्य मुझ से यह दृष्टान्त कहोगे कि हे बैद्य अपने को चंगा कर . जो कुछ हमों ने सुना है कि कफर्नाहुम में किया गया सो यहां अपने देश में भी २४ कर । और उस ने कहा मैं तुम से सच कहता हूं कोई भविष्यद्वक्ता अपने देश २५ में ग्राह्य नहीं होता है । और मैं तुम से सत्य कहता हूं कि एलियाह के दिनों में जब आकाश साढ़े तीन बरस बन्द रहा यहां लों कि सारे देश में बड़ा अकाल पड़ा तब इस्रायेल में बहुत २६ बिधवा थीं । परन्तु एलियाह उन्हों में से किसी के पास नहीं भेजा गया केवल सीदोन देश के सारिफत नगर में एक २७ बिधवा के पास । और इलीशा भविष्यद्वक्ता के समय में इस्रायेल में बहुत कोढ़ी थे परन्तु उन्हों में से कोई शुद्ध नहीं किया गया केवल सुरिया देश का २८ नामान । यह बातें सुनके सब लोग २९ सभा में क्रोध से भर गये . और उठके उस को नगर से बाहर निकालके जिस पर्ब्बत पर उन का नगर बना हुआ था उस की चोटी पर ले चले कि उस को ३० नीचे गिरा देवें । परन्तु वह उन्हों के बीच में से होके निकला और चला गया ॥

३१ और उस ने गालील के कफर्नाहुम नगर में जाके बिश्राम के दिन लोगों ३२ को उपदेश दिया । वे उस के उपदेश से अचंभित हुए क्योंकि उस का बचन अधिकार सहित था । ३३ सभा के घर में एक मनुष्य था जिसे अशुद्ध भूत का आत्मा लगा था । ३४ उस ने बड़े शब्द से चिल्लाके कहा हे यीशु नासरी रहने दीजिये आप को हम से क्या काम . क्या आप हमें नाश करने आये हैं . मैं आप को जानता हूं आप कौन हैं ईश्वर के पवित्र जन । ३५ यीशु ने उस को डांटके कहा चुप रह और उस में से निकल आ . तब भूत उस मनुष्य को बीच में गिराके उस में से निकल आया और उस की कुछ हानि न किई । ३६ इस पर सभों को अचंभा हुआ और वे आपस में बात करके बोले यह कौन सी बात है कि वह प्रभाव और पराक्रम से अशुद्ध भूतों को आज्ञा देता है और वे निकल आते हैं । ३७ सो उस की कीर्त्ति आसपास के देश में सर्ब्बत्र फैल गई ॥

३८ सभा के घर में से उठके उस ने शिमोन के घर में प्रवेश किया और शिमोन की सास बड़े ज्वर से पीड़ित थी और उन्हों ने उस के लिये उस से बिन्ती किई । ३९ उस ने उस के निकट खड़ा हो ज्वर को डांटा और वह उसे छोड़ गया और वह तुरन्त उठके उन की सेवा करने लगी ॥

४० सूर्य्य डूबते हुए जिन्हों के पास दुःखी लोग नाना प्रकार के रोगों में पड़े थे वे सब उन्हें उस पास लाये और उस ने एक एक पर हाथ रखके उन्हें चंगा किया । ४१ भूत भी चिल्लाते और यह कहते हुए कि आप ईश्वर के पुत्र ख्रीष्ट हैं बहुतों में से निकले परन्तु उस ने उन्हें डांटा और बोलने न दिया क्योंकि वे जानते थे कि वह ख्रीष्ट है ॥

४२ बिहान हुए वह निकलके जंगली स्थान में गया और लोगों ने उस को

ढूंढ़ा और उस पास आके उसे रोकने लगे कि वह उन के पास से न जाय। ४३ परन्तु उस ने उन्हों से कहा मुझे और और नगरों में भी ईश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाना होगा क्योंकि मैं इसी ४४ लिये भेजा गया हूं। सो उस ने गालील की सभाओं में उपदेश किया॥

पांचवां पर्व्व।

१ एक दिन बहुत लोग ईश्वर का वचन सुनने को यीशु पर गिरे पड़ते थे और वह गिनेसरत की झील के पास २ खड़ा था। और उस ने दो नाव झील के तीर पर लगी देखीं और मछुवे उन ३ पर से उतरके जालों को धोते थे। उन नावों में से एक पर जो शिमोन की थी चढ़के उस ने उस से बिन्ती किई कि तीर से थोड़ी दूर ले जाय और उस ने बैठके नाव पर से लोगों को ४ उपदेश दिया। जब वह बात कर चुका तब शिमोन से कहा गहिरे में ले जा और मछलियां पकड़ने को अपने जालों ५ को डालो। शिमोन ने उस को उत्तर दिया कि हे गुरु हम ने सारी रात परिश्रम किया और कुछ नहीं पकड़ा तौभी आप की बात पर मैं जाल ६ डालूंगा। जब उन्हों ने ऐसा किया तब बहुत मछलियां बझाईं और उन ७ का जाल फटने लगा। इस पर उन्हों ने अपने साझियों को जो दूसरी नाव पर थे सैन किया कि वे आके उन की सहायता करें और उन्हों ने आके दोनों नाव ऐसी भरीं कि वे डूबने लगीं। ८ यह देखके शिमोन पितर यीशु के गोड़ों पर गिरा और कहा हे प्रभु मेरे पास से जाइये मैं पापी मनुष्य हूं। ९ क्योंकि वह और उस के सब संगी लोग इन मछलियों के बझ जाने से जो उन्हों ने पकड़ी थीं बिस्मित हुए। १० और वैसे ही जबदी के पुत्र याकूब और योहन भी जो शिमोन के साझी थे बिस्मित हुए, तब यीशु ने शिमोन से कहा मत डर अब से तू मनुष्यों को पकड़ेगा। ११ और वे नावों को तीर पर लाके सब कुछ छोड़के उस के पीछे हो लिये॥

१२ जब वह एक नगर में था तब देखो एक मनुष्य कोढ़ से भरा हुआ वहां था और वह यीशु को देखके मुंह के बल गिरा और उस से बिन्ती किई कि हे प्रभु जो आप चाहें तो मुझे शुद्ध १३ कर सकते हैं। उस ने हाथ बढ़ा उसे छूके कहा मैं तो चाहता हूं शुद्ध हो जा और उस का कोढ़ तुरन्त जाता १४ रहा। तब उस ने उसे आज्ञा दिई कि किसी से मत कह परन्तु जाके अपने तईं याजक को दिखा और अपने शुद्ध होने के विषय में को चढ़ावा जैसा मूसा ने आज्ञा दिई तैसा लोगों पर १५ साक्षी होने के लिये चढ़ा। परन्तु यीशु की कीर्त्ति अधिक फैल गई और बहुतेरे लोग सुनने को और उस से अपने रोगों १६ से चंगे किये जाने को एकट्ठे हुए। और उस ने जंगली स्थानों में अलग जाके प्रार्थना किई॥

१७ एक दिन वह उपदेश करता था और फरीशी और व्यवस्थापक लोग जो गालील और यिहूदिया के हर एक गांव से और यिरूशलीम से आये थे वहां बैठे थे और उन्हें चंगा करने को प्रभु १८ का सामर्थ्य प्रगट हुआ। और देखो लोग एक मनुष्य को जो अर्द्धांगी था खाट पर लाये और वे उस को भीतर ले जाने और यीशु के आगे रखने चाहते १९ थे। परन्तु जब भीड़ के कारण उसे भीतर ले जाने का कोई उपाय उन्हें न मिला तब उन्हों ने कोठे पर चढ़के उस को खाट समेत छत में से बीच में

२० यीशु के आगे उतार दिया। उस ने उन्हों का बिश्वास देखके उस से कहा हे मनुष्य तेरे पाप क्षमा किये गये हैं। २१ तब अध्यापक और फरीशी लोग बिचार करने लगे कि यह कौन है जो ईश्वर की निन्दा करता है, ईश्वर को छोड़ कौन पापों को क्षमा कर सकता है। २२ यीशु ने उन के मन की बातें जानके उन को उत्तर दिया कि तुम लोग अपने अपने मन में क्या क्या बिचार २३ करते हो। कौन बात सहज है यह कहना कि तेरे पाप क्षमा किये गये हैं अथवा यह कहना कि उठ और चल। २४ परन्तु जिस्तें तुम जानो कि मनुष्य के पुत्र को पृथिवी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है (उस ने उस अर्द्धांगी से कहा) मैं तुझ से कहता हूं उठ अपनी खाट उठाके अपने घर को २५ जा। वह तुरन्त उन्हों के साम्ने उठके जिस पर वह पड़ा था उस को उठाके ईश्वर की स्तुति करता हुआ अपने २६ घर को चला गया। तब सब लोग बिस्मित हुए और ईश्वर की स्तुति करने लगे और अति भयमान होके बोले हम ने आज अनोखी बातें देखी हैं॥

२७ इस के पीछे यीशु ने बाहर जाके लेवी नाम एक कर उगाहनेहारे को कर उगाहने के स्थान में बैठे देखा २८ और उस से कहा मेरे पीछे आ। वह सब कुछ छोड़के उठा और उस के पीछे २९ हो लिया। और लेवी ने अपने घर में उस के लिये बड़ा भोज बनाया और बहुत कर उगाहनेहारे और बहुत से और लोग थे जो उन के संग भोजन ३० पर बैठे। तब उन्हों के अध्यापक और फरीशी उस के शिष्यों पर कुड़कुड़ाके बोले तुम कर उगाहनेहारों और पापियों के संग क्यों खाते और पीते हो। ३१ यीशु ने उन को उत्तर दिया कि निरोगियों को बैद्य का प्रयोजन नहीं है परन्तु रोगियों को। ३२ मैं धर्म्मियों को नहीं परन्तु पापियों को पश्चात्ताप के लिये बुलाने आया हूं॥

३३ और उन्हों ने उस से कहा योहन के शिष्य क्यों बार बार उपवास और प्रार्थना करते हैं और वैसेही फरीशियों के शिष्य भी परन्तु आप के शिष्य खाते और पीते हैं। ३४ उस ने उन से कहा जब दूल्हा सखाओं के संग है तब क्या तुम उन से उपवास करवा सकते हो। ३५ परन्तु वे दिन आवेंगे जिन में दूल्हा उन से अलग किया जायगा तब वे उन दिनों में उपवास करेंगे। ३६ उस ने एक दृष्टान्त भी उन से कहा कि कोई मनुष्य नये कपड़े का टुकड़ा पुराने वस्त्र में नहीं लगाता है नहीं तो नया कपड़ा उसे फाड़ता है और नये कपड़े का टुकड़ा पुराने में मिलता भी नहीं। ३७ और कोई मनुष्य नया दाख रस पुराने कुप्पों में नहीं भरता है नहीं तो नया दाख रस कुप्पों को फाड़ेगा और वह आप बह जायगा और कुप्पे नष्ट होंगे। ३८ परन्तु नया दाख रस नये कुप्पों में भरा चाहिये तब दोनों की रक्षा होती है। ३९ कोई मनुष्य पुराना दाख रस पीके तुरन्त नया नहीं चाहता है क्योंकि वह कहता है पुराना ही अच्छा है॥

छठवां पर्ब्ब।

१ पर्ब्ब के दूसरे दिन के पीछे बिश्राम के दिन यीशु खेतों में होके जाता था और उस के शिष्य बालें तोड़के हाथों में मल मलके खाने लगे। २ तब कई एक फरीशियों ने उन से कहा जो काम बिश्राम के दिन में करना उचित नहीं है सो क्यों करते हो। ३ यीशु ने उन को उत्तर दिया क्या तुम ने यह नहीं पढ़ा

है कि दाऊद ने जब वह और उस के संगी लोग भूखे हुए तब क्या किया . ४ उस ने क्योंकर ईश्वर के घर में जाके भेंट की रोटियां लेके खाईं जिन्हें खाना और किसी को नहीं केवल याजकों को उचित है और अपने संगियों को भी ५ दिईं । और उस ने उन से कहा मनुष्य का पुत्र बिश्रामवार का भी प्रभु है ॥

६ दूसरे बिश्रामवार को भी वह सभा के घर में जाके उपदेश करने लगा और वहां एक मनुष्य था जिस का दहिना ७ हाथ सूख गया था । अध्यापक और फरीशी लोग उस में दोष ठहराने के लिये उसे ताकते थे कि वह बिश्राम के ८ दिन में चंगा करेगा कि नहीं । पर वह उन के मन की बातें जानता था और सूखे हाथवाले मनुष्य से कहा उठ बीच में खड़ा हो . वह उठके खड़ा ९ हुआ । तब यीशु ने उन्हों से कहा मैं तुम से एक बात पूछूंगा क्या बिश्राम के दिनों में भला करना अथवा बुरा करना प्राण को बचाना अथवा नाश १० करना उचित है । और उस ने उन सभों पर चारों ओर दृष्टि कर उस मनुष्य से कहा अपना हाथ बढ़ा . उस ने ऐसा किया और उस का हाथ फिर दूसरे ११ की नाईं भला चंगा हो गया । पर वे बड़े क्रोध से भर गये और आपस में बोले हम यीशु को क्या करें ॥

१२ उन दिनों में वह प्रार्थना करने को पर्व्वत पर गया और ईश्वर से प्रार्थना १३ करने में सारी रात बिताई । जब बिहान हुआ तब उस ने अपने शिष्यों को अपने पास बुलाके उन में से बारह जनों को चुना जिन का नाम उस ने १४ प्रेरित भी रखा . अर्थात शिमोन को जिस का नाम उस ने पितर भी रखा औ उस के भाई अन्द्रिय को और याकूब औ योहन को और फिलिप औ बर्थलमई १५ को . और मत्ती औ थोमा को और अलफई के पुत्र याकूब को औ शिमोन को १६ जो उद्योगी कहावता है . और याकूब के भाई यिहूदा को औ यिहूदा इस्करियोती को जो विश्वासघातक हुआ ॥

१७ तब वह उन के संग उतरके चौरस स्थान में खड़ा हुआ और उस के बहुत शिष्य भी थे और लोगों की बड़ी भीड़ सारे यिहूदिया से और यिरूशलीम से और सोर औ सीदोन के समुद्र के तीर से जो उस की सुनने को और अपने रोगों से चंगे किये जाने को आये थे . १८ और अशुद्ध भूतों के सताये हुए लोग १९ भी . और वे चंगे किये जाते थे । और सब लोग उसे छूने चाहते थे क्योंकि शक्ति उस से निकलती थी और सभों को चंगा करती थी ॥

२० तब उस ने अपने शिष्यों की ओर दृष्टि कर कहा धन्य तुम जो दीन हो क्योंकि ईश्वर का राज्य तुम्हारा है । २१ धन्य तुम जो अब भूखे हो क्योंकि तुम तृप्त किये जाओगे . धन्य तुम जो अब २२ रोते हो क्योंकि तुम हंसोगे । धन्य तुम हो जब मनुष्य तुम से बैर करें और जब वे मनुष्य के पुत्र के लिये तुम्हें अलग करें और तुम्हारी निन्दा करें और तुम्हारा २३ नाम दुष्ट सा दूर करें । उस दिन आनन्दित हो और उछलो क्योंकि देखो तुम स्वर्ग में बहुत फल पाओगे . उन के पितरों ने भविष्यद्वक्ताओं से वैसा ही २४ किया । परन्तु हाय तुम जो धनवान हो क्योंकि तुम अपनी शांति पा चुके २५ हो । हाय तुम जो भरपूर हो क्योंकि तुम भूखे होगे . हाय तुम जो अब हंसते हो क्योंकि तुम शोक करोगे और २६ रोओगे । हाय तुम लोग जब सब मनुष्य तुम्हारे विषय में भला कहें . उन

के पितरों ने झूठे भविष्यद्वक्ताओं से वैसा ही किया॥

२७ और भी मैं तुम्हों से जो सुनते हो कहता हूं कि अपने शत्रुओं को प्यार करो, जो तुम से बैर करें उन से भलाई
२८ करो। जो तुम्हें स्राप देवें उन को आशीस देओ और जो तुम्हारा अपमान करें उन
२९ के लिये प्रार्थना करो। जो तुझे एक गाल पर मारे उस की ओर दूसरा भी फेर दे और जो तेरा दोहर छीन लेवे
३० उस को अंगा भी लेने से मत बर्ज। जो कोई तुझ से मांगे उस को दे और जो तेरी बस्तु छीन लेवे उस से फिर मत
३१ मांग। और जैसा तुम चाहते हो कि मनुष्य तुम से करें तुम भी उन से वैसा
३२ ही करो। जो तुम उन से प्रेम करो जो तुम से प्रेम करते हैं तो तुम्हारी क्या बड़ाई क्योंकि पापी लोग भी अपने
३३ प्रेम करनेहारों से प्रेम करते हैं। और जो तुम उन से भलाई करो जो तुम से भलाई करते हैं तो तुम्हारी क्या बड़ाई क्योंकि पापी लोग भी ऐसा करते हैं।
३४ और जो तुम उन्हें ऋण देओ जिन से फिर पाने की आशा रखते हो तो तुम्हारी क्या बड़ाई क्योंकि पापी लोग भी पापियों को ऋण देते हैं कि उतना
३५ फिर पावें। परन्तु अपने शत्रुओं को प्यार करो औ भलाई करो और फिर पाने की आशा न रखके ऋण देओ और तुम बहुत फल पाओगे और सर्ब्ब-प्रधान के सन्तान होगे क्योंकि वह उन्हों पर जो धन्य नहीं मानते हैं और दुष्टों
३६ पर कृपाल है। सो जैसा तुम्हारा पिता दयावन्त है तैसे तुम भी दयावन्त होओ॥

३७ दूसरों का बिचार मत करो तो तुम्हारा बिचार न किया जायगा, दोषी मत ठहराओ तो तुम दोषी न ठहराये जाओगे, क्षमा करो तो तुम्हारी क्षमा
३८ किई जायगी। देओ तो तुम को दिया जायगा, लोग पूरा नाप दबाया और हिलाया हुआ और उभरता हुआ तुम्हारी गोद में देंगे क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जायगा।
३९ फिर उस ने उन से एक दृष्टान्त कहा क्या अन्धा अन्धे को मार्ग बता सकता है, क्या दोनों गड़हे में
४० नहीं गिरेंगे। शिष्य अपने गुरु से बड़ा नहीं है परन्तु जो कोई सिद्ध होवे सो
४१ अपने गुरु के समान होगा। जो तिनका तेरे भाई के नेत्र में है उसे तू क्यों देखता है और जो लट्ठा तेरे ही नेत्र में है सो
४२ तुझे नहीं सूझता। अथवा तू जो आप अपने नेत्र में का लट्ठा नहीं देखता है क्योंकर अपने भाई से कह सकता है कि हे भाई रहिये मैं यह तिनका जो तेरे नेत्र में है निकालूं, हे कपटी पहिले अपने नेत्र से लट्ठा निकाल दे तब जो तिनका तेरे भाई के नेत्र में है उसे निकालने को तू अच्छी रीति से देखेगा॥

४३ कोई अच्छा पेड़ नहीं है जो निकम्मा फल फले और कोई निकम्मा पेड़ नहीं
४४ है जो अच्छा फल फले। हर एक पेड़ अपने ही फल से पहचाना जाता है क्योंकि लोग कांटों के पेड़ से गूलर नहीं तोड़ते और न कटैले झूड़ से दाख
४५ तोड़ते हैं। भला मनुष्य अपने मन के भले भंडार से भली बात निकालता है और बुरा मनुष्य अपने मन के बुरे भंडार से बुरी बात निकालता है क्योंकि जो मन में भरा है सोई उस का मुंह बोलता है॥

४६ तुम मुझे हे प्रभु हे प्रभु क्यों पुकारते हो और जो मैं कहता हूं सो नहीं करते।
४७ जो कोई मेरे पास आके मेरी बातें सुनके उन्हें पालन करे मैं तुम्हें बताऊंगा

४८ वह किस के समान है। वह एक मनुष्य के समान है जो घर बनाता था और उस ने गहरे खोदके पत्थर पर नेव डाली और जब बाढ़ आई तब धारा उस घर पर लगी पर उसे हिला न सकी क्योंकि उस की नेव पत्थर पर डाली गई थी।
४९ परन्तु जो सुनके पालन न करे सो एक मनुष्य के समान है जिस ने मिट्टी पर बिना नेव का घर बनाया जिस पर धारा लगी और वह तुरन्त गिर पड़ा और उस घर का बड़ा बिनाश हुआ॥

सातवां पर्व्व।

१ जब यीशु लोगों को अपनी सब बातें सुना चुका तब कफर्नाहूम में प्रवेश
२ किया। और किसी शतपति का एक दास जो उस का प्रिय था रोगी हो
३ मरने पर था। शतपति ने यीशु की चर्चा सुनके यिहूदियों के कई एक प्राचीनों को उस से यह बिन्ती करने को उस पास भेजा कि आके मेरे दास को
४ चंगा कीजिये। उन्हों ने यीशु पास आके उस से बड़े यत्न से बिन्ती किई और कहा आप जिस के लिये यह काम
५ करेंगे सो इस के योग्य है। क्योंकि वह हमारे लोग से प्रेम करता है और उसी ने सभा का घर हमारे लिये बनाया।
६ तब यीशु उन के संग गया और वह घर से दूर न था कि शतपति ने उस पास मित्रों को भेजके उस से कहा हे प्रभु दुःख न उठाइये क्योंकि मैं इस योग्य नहीं कि आप मेरे घर में आवें।
७ इस लिये मैं ने अपने को आप के पास जाने के भी योग्य नहीं समझा परन्तु बचन कहिये तो मेरा सेवक चंगा हो
८ जायगा। क्योंकि मैं पराधीन मनुष्य हूं और योद्धा मेरे बश में हैं और मैं एक को कहता हूं जा तो वह जाता है और दूसरे को आ तो वह आता है और अपने दास को यह कर तो वह करता
९ है। यह सुनके यीशु ने उस मनुष्य पर अचंभा किया और मुंह फेरके जो बहुत लोग उस के पीछे से आते थे उन्हों से कहा मैं तुम से कहता हूं कि मैं ने इस्रायेली लोगों में भी ऐसा बड़ा बिश्वास
१० नहीं पाया है। और जो लोग भेजे गये उन्हों ने जब घर को लौटे तब उस रोगी दास को चंगा पाया॥

११ दूसरे दिन यीशु नाइन नाम एक नगर को जाता था और उस के अनेक शिष्य और बहुतेरे लोग उस के संग जाते
१२ थे। ज्योंहीं वह नगर के फाटक के पास पहुंचा त्योंही देखो लोग एक मृतक को बाहर ले जाते थे जो अपनी मां का एकलौता पुत्र था और वह बिधवा थी और नगर के बहुत लोग
१३ उस के संग थे। प्रभु ने उस को देखके उस पर दया किई और उस से कहा
१४ मत रो। तब उस ने निकट आके अर्थी को छूआ और उठानेहारे खड़े हुए और उस ने कहा हे जवान मैं तुझ
१५ से कहता हूं उठ। तब मृतक उठ बैठा और बोलने लगा और यीशु ने उसे उस
१६ की मां को सौंप दिया। इस से सभों को भय हुआ और वे ईश्वर की स्तुति करके बोले कि हमारे बीच में बड़ा भविष्यद्वक्ता प्रगट हुआ है और कि ईश्वर ने अपने लोगों पर दृष्टि किई है।
१७ और उस के विषय में यह बात सारे यिहूदिया में और आसपास के सारे देश में फैल गई॥

१८ योहन के शिष्यों ने इन सब बातों
१९ के विषय में योहन से कहा। तब उस ने अपने शिष्यों में से दो जनों को बुलाके यीशु पास यह कहने को भेजा कि जो आनेवाला था सो क्या आप ही हैं अथवा हम दूसरे की बाट जोहें।

२० उन मनुष्यों ने उस पास आ कहा योहन बपतिसमा देनेहारे ने हमें आप के पास यह कहने को भेजा है कि जो आनेवाला था सो क्या आप ही हैं अथवा हम दूसरे की बाट जोहें । २१ उसी घड़ी यीशु ने बहुतों को जो रोगों और पीड़ाओं और दुष्ट भूतों से दुःखी थे चंगा किया और बहुत से अन्धों को नेत्र दिये । २२ और उस ने उन्हों को उत्तर दिया कि जो कुछ तुम ने देखा और सुना है सो जाके योहन से कहो कि अन्धे देखते हैं लंगड़े चलते हैं कोढ़ी शुद्ध किये जाते हैं बहिरे सुनते हैं मृतक जिलाये जाते हैं और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है । २३ और जो कोई मेरे विषय में ठोकर न खावे सो धन्य है ॥

२४ जब योहन के दूत लोग चले गये तब यीशु योहन के विषय में लोगों से कहने लगा तुम जंगल में क्या देखने को निकले क्या पवन से हिलते हुए नरकट को । २५ फिर तुम क्या देखने को निकले क्या सूक्ष्म वस्त्र पहिने हुए मनुष्य को . देखो जो भड़कीला वस्त्र पहिनते और सुख से रहते हैं सो राजभवनों में हैं । २६ फिर तुम क्या देखने को निकले क्या भविष्यद्वक्ता को . हां मैं तुम से कहता हूं एक मनुष्य को जो भविष्यद्वक्ता से भी अधिक है । २७ यह वही है जिस के विषय में लिखा है कि देख मैं अपने दूत को तेरे आगे भेजता हूं जो तेरे आगे तेरा पन्थ बनावेगा । २८ मैं तुम से कहता हूं कि जो स्त्रियों से जन्मे हैं उन में से योहन बपतिसमा देनेहारे से बड़ा भविष्यद्वक्ता कोई नहीं है परन्तु जो ईश्वर के राज्य में अति छोटा है सो उस से बड़ा है । २९ और सब लोगों ने जिन्हों ने सुना और कर उगाहनेहारों ने योहन से बपतिसमा लेके ईश्वर को निर्दोष ठहराया । ३० परन्तु फरीशियों और व्यवस्था पढ़कों ने उस से बपतिसमा न लेके ईश्वर के अभिप्राय को अपने विषय में टाल दिया ॥

३१ तब प्रभु ने कहा मैं इस समय के लोगों की उपमा किस से देऊंगा वे किस के समान हैं । ३२ वे बालकों के समान हैं जो बाजार में बैठके एक दूसरे को पुकारके कहते हैं हम ने तुम्हारे लिये बांसली बजाई और तुम न नाचे हम ने तुम्हारे लिये बिलाप किया और तुम न रोये । ३३ क्योंकि योहन बपतिसमा देनेहारा न रोटी खाता न दाख रस पीता आया है और तुम कहते हो उसे भूत लगा है । ३४ मनुष्य का पुत्र खाता और पीता आया है और तुम कहते हो देखो पेटू मद्यप मनुष्य कर उगाहनेहारों और पापियों का मित्र । ३५ परन्तु ज्ञान अपने सब सन्तानों से निर्दोष ठहराया गया है ॥

३६ फरीशियों में से एक ने यीशु से बिन्ती किई कि मेरे संग भोजन कीजिये और वह फरीशी के घर में जाके भोजन पर बैठा । ३७ और देखो उस नगर की एक स्त्री जो पापिनी थी जब उस ने जाना कि वह फरीशी के घर में भोजन पर बैठा है तब उजले पत्थर के पात्र में सुगन्ध तेल लाई . ३८ और पीछे से उस के पांवों पास खड़ी हो रोते रोते उस के चरणों को आंसुओं से भिंगाने लगी और अपने सिर के बालों से पोंछा और उस के पांव चूमके उन पर सुगन्ध तेल मला । ३९ यह देखके फरीशी जिस ने यीशु को बुलाया था अपने मन में कहने लगा यह यदि भविष्यद्वक्ता होता तो जानता कि यह स्त्री जो उस को छूती है कौन और कैसी है क्योंकि वह पापिनी है । ४० यीशु ने उस को उत्तर दिया कि हे शिमोन

मैं तुझ से कुछ कहा चाहता हूं. वह
४१ बोला हे गुरु कहिये। किसी महाजन
के दो ऋणी थे एक पांच सौ सूकी
४२ धारता था और दूसरा पचास। जब
कि भर देने को उन्हों के पास कुछ न
था उस ने दोनों का क्षमा किया सो
कहिये उन में से कौन उस को अधिक
४३ प्यार करेगा। शिमोन ने उत्तर दिया
मैं समझता हूं कि वह जिस का उस
ने अधिक क्षमा किया. यीशु ने उस
से कहा तू ने ठीक बिचार किया है।
४४ और स्त्री की ओर फिरके उस ने शिमोन
से कहा तू इस स्त्री को देखता है.
मैं तेरे घर में आया तू ने मेरे पांवों
पर जल नहीं दिया परन्तु इस ने मेरे
चरणों को आंसूओं से भिंगाया और
४५ अपने सिर के बालों से पोंछा है। तू
ने मेरा चूमा नहीं लिया परन्तु यह
जब से मैं आया तब से मेरे पांवों को
४६ चूम रही है। तू ने मेरे सिर पर तेल
नहीं लगाया परन्तु इस ने मेरे पांवों
४७ पर सुगन्ध तेल मला है। इस लिये मैं
तुझ से कहता हूं कि उस के पाप जो
बहुत हैं क्षमा किये गये हैं. कि उस
ने तो बहुत प्रेम किया है परन्तु जिस
का थोड़ा क्षमा किया जाता है वह
४८ थोड़ा प्रेम करता है। और उस ने स्त्री
से कहा तेरे पाप क्षमा किये गये हैं।
४९ तब जो लोग उस के संग भोजन पर
बैठे थे सो अपने अपने मन में कहने
लगे यह कौन है जो पापों को भी क्षमा
५० करता है। परन्तु उस ने स्त्री से कहा
तेरे बिश्वास ने तुझे बचाया है कुशल
से चली जा॥

आठवां पर्व्व।

१ इस पीछे यीशु नगर नगर और गांव
गांव उपदेश करता हुआ और ईश्वर के
राज्य का सुसमाचार सुनाता हुआ फिरा
किया। और बारहों शिष्य उस के संग २
थे और कितनी स्त्रियां भी जो दुष्ट भूतों
से और रोगों से चंगी किई गई थीं
अर्थात मरियम जो मगदलीनी कहावती
है जिस में से सात भूत निकल गये थे.
और हेरोद के भंडारी कूजा की स्त्री ३
योहाना और सोसन्ना और बहुत सी और
स्त्रियां. ये तो अपनी सम्पत्ति से उस
की सेवा करती थीं॥

जब बड़ी भीड़ एकट्ठी होती थी ४
और नगर नगर के लोग उस पास आते
थे तब उस ने दृष्टान्त में कहा. एक ५
बोनेहारा अपना बीज बोने को निकला.
बीज बोने में कुछ मार्ग की ओर गिरा
और पांवों से रौंदा गया और आकाश
के पंछियों ने उसे चुग लिया। कुछ
पत्थर पर गिरा और उपजा परन्तु
तरावट न पाने से सूख गया। कुछ ७
कांटों के बीच में गिरा और कांटों ने
एक संग बढ़के उस को दबा डाला।
परन्तु कुछ अच्छी भूमि पर गिरा और ८
उपजा और सौ गुणा फल फला. यह बातें
कहके उस ने ऊंचे शब्द से कहा जिस
को सुनने के कान हों सो सुने॥

तब उस के शिष्यों ने उस से पूछा ९
इस दृष्टान्त का अर्थ क्या है। उस ने १०
कहा तुम को ईश्वर के राज्य के भेद
जानने का अधिकार दिया गया है परन्तु
और लोगों से दृष्टान्तों में बात होती है
इस लिये कि वे देखते हुए न देखें और
सुनते हुए न बूझें। इस दृष्टान्त का अर्थ ११
यह है. बीज तो ईश्वर का बचन है।
मार्ग की ओर के वे हैं जो सुनते हैं तब १२
शैतान आके उन के मन में से बचन
छीन लेता है ऐसा न हो कि वे बिश्वास
करके त्राण पावें। पत्थर पर के वे हैं १३
कि जब सुनते हैं तब आनन्द से बचन
को ग्रहण करते हैं परन्तु उन में जड़ न

बंधने से वे थोड़ी बेर लों बिश्वास करते हैं और परीक्षा के समय में बहक १४ जाते हैं। जो कांटों के बीच में गिरा सो वे हैं जो सुनते हैं पर अनेक चिन्ता और धन और जीवन के सुख बिलास से दबते दबते दबाये जाते और पक्के फल नहीं १५ फलते हैं। परन्तु अच्छी भूमि में का बीज वे हैं जो बचन सुनके भले और उत्तम मन में रखते हैं और धीरज से फल फलते हैं॥

१६ कोई मनुष्य दीपक को बारके बर्त्तन से नहीं ढांपता और न खाट के नीचे रखता है परन्तु दीवट पर रखता है कि जो भीतर आवें सो उंजियाला देखें। १७ कुछ गुप्त नहीं है जो प्रगट न होगा और न कुछ छिपा है जो जाना न १८ जायगा और प्रसिद्ध न होगा। इस लिये सचेत रहो तुम किस रीति से सुनते हो क्योंकि जो कोई रखता है उस को और दिया जायगा परन्तु जो कोई नहीं रखता है उस से जो कुछ वह समझता कि मेरे पास है सो भी ले लिया जायगा॥

१९ यीशु की माता और उस के भाई उस पास आये परन्तु भीड़ के कारण २० उस से भेंट नहीं कर सके। और कितनों ने उस से कह दिया कि आप की माता और आप के भाई बाहर खड़े हुए आप २१ को देखने चाहते हैं। उस ने उन को उत्तर दिया कि मेरी माता और मेरे भाई येही लोग हैं जो ईश्वर का बचन सुनके पालन करते हैं॥

२२ एक दिन वह और उस के शिष्य नाव पर चढ़े और उस ने उन से कहा कि आओ हम झील के उस पार चलें, २३ सो उन्हों ने खोल दिई। ज्यों वे जाते थे त्यों वह सो गया और झील पर आंधी उठी और उन की नाव भर आने २४ लगी और वे जोखिम में थे। तब उन्हों ने उस पास आके उसे जगाके कहा हे गुरु हे गुरु हम नष्ट होते हैं, तब उस ने उठके बयार को और जल के हिलकोरे को डांटा और वे थम गये और नीवा २५ हो गया। और उस ने उन से कहा तुम्हारा बिश्वास कहां है, परन्तु वे भयमान और अचंभित हो आपस में बोले यह कौन है जो बयार और जल को भी आज्ञा देता है और वे उस की आज्ञा मानते हैं॥

२६ वे गदेरियों के देश में जो गालील के २७ साम्ने उस पार है पहुंचे। जब यीशु तीर पर उतरा तब नगर का एक मनुष्य उस से आ मिला जिस को बहुत दिनों से भूत लगे थे और जो बस्त्र नहीं पहिनता न घर में रहता था परन्तु कबरस्थान में २८ रहता था। वह यीशु को देखके चिल्लाया और उस को दंडवत कर बड़े शब्द से कहा हे यीशु सर्व्वप्रधान ईश्वर के पुत्र आप को मुझ से क्या काम, मैं आप से बिन्ती करता हूं कि मुझे पीड़ा न २९ दीजिये। क्योंकि यीशु ने अशुद्ध भूत को उस मनुष्य से निकलने की आज्ञा दिई थी, उस भूत ने बहुत बार उसे पकड़ा था और वह जंजीरों और बेड़ियों से बंधा हुआ रखा जाता था परन्तु बंधनों को तोड़ देता था और भूत उसे ३० जंगल में खदेड़ता था। यीशु ने उस से पूछा तेरा नाम क्या है, उस ने कहा सेना, क्योंकि बहुत भूत उस में पैठ गये ३१ थे। और उन्हों ने उस से बिन्ती किई कि हमें अथाह कुंड में जाने की आज्ञा ३२ न दीजिये। वहां बहुत सूअरों का जो पहाड़ पर चरते थे एक झुंड था सो उन्हों ने उस से बिन्ती किई कि हमें उन्हों में पैठने दीजिये और उस ने उन्हें ३३ जाने दिया। तब भूत उस मनुष्य से निकलके सूअरों में पैठे और वह झुंड कड़ाड़े पर से झील में दौड़ गया और

३४ डूब मरा। यह जो हुआ था सो देखके चरवाहे भागे और जाके नगर में और
३५ गांवों में उस का समाचार कहा। और लोग यह जो हुआ था देखने को बाहर निकले और यीशु पास आके जिस मनुष्य से भूत निकले थे उस को यीशु के चरणों के पास वस्त्र पहिने और सुबुद्धि बैठे हुए
३६ पाके डर गये। जिन लोगों ने देखा था उन्हों ने उन से कह दिया कि वह भूत-ग्रस्त मनुष्य क्योंकर चंगा हो गया था।
३७ तब गदेरा के आसपास के सारे लोगों ने यीशु से बिन्ती किई कि हमारे यहां से चले जाइये क्योंकि उन्हें बड़ा डर लगा। सो वह नाव पर चढ़के लौट
३८ गया। जिस मनुष्य से भूत निकले थे उस ने उस से बिन्ती किई कि मैं आप के संग रहूं पर यीशु ने उसे बिदा किया।
३९ और कहा अपने घर को फिर जा और कह दे कि ईश्वर ने तेरे लिये कैसे बड़े काम किये हैं। उस ने जाके सारे नगर में प्रचार किया कि यीशु ने उस के लिये कैसे बड़े काम किये थे॥

४० जब यीशु लौट गया तब लोगों ने उसे ग्रहण किया क्योंकि वे सब उस की
४१ बाट जोहते थे। और देखो याईर नाम एक मनुष्य जो सभा का अध्यक्ष भी था आया और यीशु के पांवों पड़के उस से बिन्ती किई कि वह उस के घर जाय।
४२ क्योंकि उस की बारह बरस की एकलौती बेटी थी और वह मरने पर थी। जब यीशु जाता था तब भीड़ उसे दबाती थी॥

४३ और एक स्त्री जिसे बारह बरस से लोहू बहने का रोग था जो अपनी सारी जीविका बैद्यों के पीछे उठाके
४४ किसी से चंगी न हो सकी। तिस ने पीछे से आके उस के वस्त्र के आंचल को छूआ और उस के लोहू का बहना तुरन्त थम गया। यीशु ने कहा किस
४५ ने मुझे छूआ। जब सब मुकर गये तब पितर ने और उस के संगियों ने कहा हे गुरु लोग आप पर भीड़ लगाते और आप को दबाते हैं और आप कहते हैं किस ने मुझे छूआ। यीशु ने कहा
४६ किसी ने मुझे छूआ क्योंकि मैं जानता हूं कि मुझ में से शक्ति निकली है। जब
४७ स्त्री ने देखा कि मैं छिपी नहीं हूं तब कांपती हुई आई और उसे दंडवत कर सब लोगों के साम्ने उस को बताया कि उस ने किस कारण से उस को छूआ था और क्योंकर तुरन्त चंगी हुई थी।
४८ उस ने उस से कहा हे पुत्री ढाढ़स कर तेरे बिश्वास ने तुझे चंगा किया है कुशल से चली जा॥

४९ वह बोलता ही था कि किसी ने सभा के अध्यक्ष के घर से आ उस से कहा आप की बेटी मर गई है गुरु को
५० दुःख न दीजिये। यीशु ने यह सुनके उस को उत्तर दिया कि मत डर केवल बिश्वास कर तो वह चंगी हो जायगी।
५१ घर में आके उस ने पितर और याकूब और योहन और कन्या के माता पिता को छोड़ और किसी को भीतर जाने न
५२ दिया। सब लोग कन्या के लिये रोते और छाती पीटते थे परन्तु उस ने कहा मत रोओ वह मरी नहीं पर सोती है।
५३ वे यह जानके कि मर गई है उस का
५४ उपहास करने लगे। परन्तु उस ने सभों को बाहर निकाला और कन्या का हाथ पकड़के ऊंचे शब्द से कहा हे कन्या
५५ उठ। तब उस का प्राण फिर आया और वह तुरन्त उठी और उस ने आज्ञा किई कि उसे कुछ खाने को दिया जाय।
५६ उस के माता पिता बिस्मित हुए पर उस ने उन को आज्ञा दिई कि यह जो हुआ है किसी से मत कहो॥

नवां पर्ब्ब।

१ यीशु ने अपने बारह शिष्यों को एकट्ठे बुलाके उन्हें सब भूतों को निकालने का और रोगों को चंगा करने २ का सामर्थ्य और अधिकार दिया, और उन्हें ईश्वर के राज्य की कथा सुनाने और रोगियों को चंगा करने को भेजा। ३ और उस ने उन से कहा मार्ग के लिये कुछ मत लेओ न लाठी न झोली न रोटी न रुपैये और दो दो अंगे तुम्हारे ४ पास न होवें। जिस किसी घर में तुम प्रवेश करो उसी में रहो और वहीं से ५ निकल जाओ। जो कोई तुम्हें ग्रहण न करें उस नगर से निकलते हुए उन पर साक्षी होने के लिये अपने पांवों की ६ धूल भी झाड़ डालो। सो वे निकलके सर्ब्बत्र सुसमाचार सुनाते और लोगों को चंगा करते हुए गांव गांव फिरे॥

७ चौथाई का राजा हेरोद सब कुछ जो यीशु करता था सुनके दुबधा में पड़ा क्योंकि कितनों ने कहा योहन ८ मृतकों में से जी उठा है, और कितनों ने कि एलियाह दिखाई दिया है और औरों ने कि अगले भविष्यद्वक्ताओं में ९ से एक जी उठा है। और हेरोद ने कहा योहन का तो मैं ने सिर कटवाया परन्तु यह कौन है जिस के विषय में मैं ऐसी बातें सुनता हूं, और उस ने उसे देखने चाहा॥

१० प्रेरितों ने फिर आके जो कुछ उन्हों ने किया था सो यीशु को सुनाया और वह उन्हें संग लेके बैतसैदा नाम एक नगर के किसी जंगली स्थान में एकांत ११ में गया। लोग यह जानके उस के पीछे हो लिये और उस ने उन्हें ग्रहण कर ईश्वर के राज्य के विषय में उन से बातें किईं और जिन्हों को चंगा किये जाने का प्रयोजन था उन्हें चंगा किया॥

१२ जब दिन ढलने लगा तब बारह शिष्यों ने आ उस से कहा लोगों को बिदा कीजिये कि वे चारों ओर की बस्तियों और गांवों में जाके टिकें और भोजन पावें क्योंकि हम यहां जंगली १३ स्थान में हैं। उस ने उन से कहा तुम उन्हें खाने को देओ, वे बोले हमारे पास पांच रोटियों और दो मछलियों से अधिक कुछ नहीं है पर हां हम जाके इन सब लोगों के लिये भोजन मोल १४ लेवें तो होय। वे लोग पांच सहस्र पुरुषों के अटकल थे, उस ने अपने शिष्यों से कहा उन्हें पचास पचास करके १५ पांति पांति बैठाओ। उन्हों ने ऐसा १६ किया और सभों को बैठाया। तब उस ने उन पांच रोटियों और दो मछलियों को ले स्वर्ग की ओर देखके उन पर आशीस दिई और उन्हें तोड़के शिष्यों १७ को दिया कि लोगों के आगे रखें। सो सब खाके तृप्त हुए और जो टुकड़े उन्हों से बच रहे उन की बारह टोकरी उठाई गईं॥

१८ जब वह एकांत में प्रार्थना करता था और शिष्य लोग उस के संग थे तब उस ने उन से पूछा कि लोग क्या १९ कहते हैं मैं कौन हूं। उन्हों ने उत्तर दिया कि वे आप को योहन बपतिसमा देनेहारा कहते हैं परन्तु कितने एलियाह कहते हैं और कितने कहते हैं कि अगले भविष्यद्वक्ताओं में से कोई जी २० उठा है। उस ने उन से कहा तुम क्या कहते हो मैं कौन हूं, पितर ने उत्तर २१ दिया कि ईश्वर का अभिषिक्त जन। तब उस ने उन्हें दृढ़ता से आज्ञा दिई कि यह बात किसी से मत कहो। २२ और उस ने कहा मनुष्य के पुत्र को अवश्य है कि बहुत दुःख उठावे और प्राचीनों और प्रधान याजकों और अध्यापकों से

तुच्छ किया जाय और मार डाला जाय और तीसरे दिन जी उठे॥

२३ उस ने सभों से कहा यदि कोई मेरे पीछे आने चाहे तो अपनी इच्छा को मारे और प्रतिदिन अपना क्रूश २४ उठाके मेरे पीछे आवे। क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाने चाहे सो उसे खोवेगा परन्तु जो कोई मेरे लिये अपना २५ प्राण खोवे सो उसे बचावेगा। जो मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने को नाश करे अथवा गंवावे उस २६ को क्या लाभ होगा। जो कोई मुझ से और मेरी बातों से लजावे मनुष्य का पुत्र जब अपने और पिता के और पवित्र दूतों के ऐश्वर्य्य में आवेगा तब उस से २७ लजावेगा। मैं तुम से सच कहता हूं कि जो यहां खड़े हैं उन में से कोई कोई हैं कि जब लों ईश्वर का राज्य न देखें तब लों मृत्यु का स्वाद न चाखेंगे॥

२८ इन बातों से दिन आठ एक के पीछे यीशु पितर और योहन और याकूब को संग ले प्रार्थना करने को पर्व्वत पर २९ चढ़ गया। जब वह प्रार्थना करता था तब उस के मुंह का रूप और ही हो गया और उस का वस्त्र उजला हुआ ३० और चमकने लगा। और देखो दो मनुष्य अर्थात मूसा और एलियाह उस के संग ३१ बात करते थे। वे तेजोमय दिखाई दिये और उस की मृत्यु की जिसे वह यिरूशलीम में पूरी करने पर था बात ३२ करते थे। पितर और उस के संगियों की आंखें नींद से भरी थीं परन्तु वे जागते रहे और उस का ऐश्वर्य्य और उन दो मनुष्यों को जो उस के संग खड़े ३३ थे देखा। जब वे उस के पास से जाने लगे तब पितर ने यीशु से कहा हे गुरु हमारा यहां रहना अच्छा है. हम तीन डेरे बनावें एक आप के लिये एक मूसा के लिये और एक एलियाह के लिये. वह नहीं जानता था कि क्या कहता था। उस के यह कहते हुए ३४ एक मेघ ने आ उन्हें छा लिया और जब उन दोनों ने उस मेघ में प्रवेश किया तब वे डर गये। और उस मेघ ३५ से यह शब्द हुआ कि यह मेरा प्रिय पुत्र है उस की सुनो। यह शब्द होने ३६ के पीछे यीशु अकेला पाया गया और उन्हों ने चुप किया रखा और जो देखा था उस की कोई बात उन दिनों में किसी से न कही॥

दूसरे दिन जब वे उस पर्व्वत से ३७ उतरे तब बहुत लोग उस से आ मिले। और देखो भीड़ में से एक मनुष्य ने ३८ पुकारके कहा हे गुरु मैं आप से बिन्ती करता हूं कि मेरे पुत्र पर दृष्टि कीजिये क्योंकि वह मेरा एकलौता है। और ३९ देखिये एक भूत उसे पकड़ता है और वह अचांचक चिल्लाता है और भूत उसे ऐसा मरोड़ता कि वह मुंह से फेन बहाता है और उसे चूर कर कठिन से छोड़ता है। और मैं ने आप के शिष्यों ४० से बिन्ती किई कि उसे निकालें परन्तु वे नहीं सके। यीशु ने उत्तर दिया कि ४१ हे अविश्वासी और हठीले लोगो मैं कब लों तुम्हारे संग रहूंगा और तुम्हारी सहूंगा. अपने पुत्र को यहां ले आ। वह आता ही था कि भूत ने उसे ४२ पटकके मरोड़ा परन्तु यीशु ने अशुद्ध भूत को डांटके लड़के को चंगा किया और उसे उस के पिता को सौंप दिया। तब सब लोग ईश्वर की महाशक्ति से ४३ अचंभित हुए॥

जब समस्त लोग सब कामों से जो ४४ यीशु ने किये अचंभा करते थे तब उस ने अपने शिष्यों से कहा तुम इन बातों

को अपने कानों में रखो क्योंकि मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया
४५ जायगा। परन्तु उन्हों ने यह बात न समझी और वह उन से छिपी थी कि उन्हें बूझ न पड़े और वे इस बात के विषय में उस से पूछने को डरते थे॥

४६ उन्हों में यह बिचार होने लगा
४७ कि हम में से बड़ा कौन है। यीशु ने उन के मन का बिचार जानके एक बालक को लेके अपने पास खड़ा
४८ किया. और उन से कहा जो कोई मेरे नाम से इस बालक को ग्रहण करे वह मुझे ग्रहण करता है और जो कोई मुझे ग्रहण करे वह मेरे भेजनेहारे को ग्रहण करता है. जो तुम सभों में अति छोटा है वही बड़ा होगा॥

४९ तब योहन ने उत्तर दिया कि हे गुरु हम ने किसी मनुष्य को आप के नाम से भूतों को निकालते देखा और हम ने उसे बर्जा क्योंकि वह हमारे
५० संग नहीं चलता है। यीशु ने उस से कहा मत बर्जो क्योंकि जो हमारे बिरुद्ध नहीं है सो हमारी ओर है॥

५१ जब उस के उठाये जाने के दिन पहुंचे तब उस ने यिरूशलीम जाने को
५२ अपना मन दृढ़ किया। और उस ने दूतों को अपने आगे भेजा और उन्हों ने जाके उस के लिये तैयारी करने को शोमिरोनियों के एक गांव में प्रवेश
५३ किया। परन्तु उन लोगों ने उसे ग्रहण न किया क्योंकि वह यिरूशलीम की
५४ ओर जाने का मुंह किये था। यह देखके उस के शिष्य याकूब और योहन बोले हे प्रभु आप की इच्छा होय तो हम आग को आकाश से गिरने और उन्हें नाश करने की आज्ञा देवें जैसा
५५ एलियाह ने भी किया। परन्तु उस ने पीछे फिरके उन्हें डांटके कहा क्या तुम नहीं जानते हो तुम कैसे आत्मा
५६ के हो। मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के प्राण नाश करने को नहीं परन्तु बचाने को आया है. तब वे दूसरे गांव को चले गये॥

५७ जब वे मार्ग में जाते थे तब किसी मनुष्य ने यीशु से कहा हे प्रभु जहां जहां आप जायें तहां मैं आप के पीछे
५८ चलूंगा। यीशु ने उस से कहा लोमड़ियों को मांदें और आकाश के पंछियों को बसेरे हैं परन्तु मनुष्य के पुत्र को सिर
५९ रखने का स्थान नहीं है। उस ने दूसरे से कहा मेरे पीछे आ. उस ने कहा हे प्रभु मुझे पहिले जाके अपने पिता को
६० गाड़ने दीजिये। यीशु ने उस से कहा मृतकों को अपने मृतकों को गाड़ने दे परन्तु तू जाके ईश्वर के राज्य की
६१ कथा सुना। दूसरे ने भी कहा हे प्रभु मैं आप के पीछे चलूंगा परन्तु पहिले मुझे अपने घर के लोगों से बिदा होने
६२ दीजिये। यीशु ने उस से कहा अपना हाथ हल पर रखके जो कोई पीछे देखे सो ईश्वर के राज्य के योग्य नहीं है॥

दसवां पर्ब्ब।

१ इस के पीछे प्रभु ने सत्तर और शिष्यों को भी ठहराके उन्हें दो दो करके हर एक नगर और स्थान को जहां वह आप जाने पर था अपने आगे भेजा।
२ और उस ने उन से कहा कटनी बहुत है परन्तु बनिहार थोड़े हैं इस लिये कटनी के स्वामी से बिन्ती करो कि वह अपनी कटनी में बनिहारों को भेजे।
३ जाओ देखो मैं तुम्हें मेम्नों की नाईं
४ हुंड़ारों के बीच में भेजता हूं। न थैली न झोली न जूते ले जाओ और मार्ग में
५ किसी को नमस्कार मत करो। जिस किसी घर में तुम प्रवेश करो पहिले
६ कहो इस घर का कल्याण होय। यदि

यहां कोई कल्याण के योग्य हो तो तुम्हारा कल्याण उस पर ठहरेगा नहीं ७ तो तुम्हारे पास फिर आवेगा। जो कुछ उन्हों के यहां मिले सोई खाते और पीते हुए उसी घर में रहो क्योंकि बनिहार अपनी बनि के योग्य है. घर घर ८ मत फिरो। जिस किसी नगर में तुम प्रवेश करो और लोग तुम्हें ग्रहण करें वहां जो कुछ तुम्हारे आगे रखा जाय सो खाओ ९ और उस में के रोगियों को चंगा करो और लोगों से कहो कि ईश्वर का राज्य १० तुम्हारे निकट पहुंचा है। परन्तु जिस किसी नगर में प्रवेश करो और लोग तुम्हें ग्रहण न करें उस की सड़कों पर ११ जाके कहो. तुम्हारे नगर की धूल भी जो हमों पर लगी है हम तुम्हारे आगे पोंछ डालते हैं तौभी यह जानो कि ईश्वर का राज्य तुम्हारे निकट पहुंचा १२ है। मैं तुम से कहता हूं कि उस दिन में उस नगर की दशा से सदोम की दशा सहने योग्य होगी॥

१३ हाय तू कोराज़ीन. हाय तू बैतसैदा. जो आश्चर्य्य कर्म्म तुम्हों में किये गये हैं सो यदि सोर और सीदोन में किये जाते तो बहुत दिन बीते होते कि वे टाट पहिने राख में बैठके पश्चात्ताप १४ करते। परन्तु बिचार के दिन में तुम्हारी दशा से सोर और सीदोन की दशा सहने १५ योग्य होगी। और हे कफ़र्नाहूम जो स्वर्ग लों ऊंचा किया गया है तू नरक १६ लों नीचा किया जायगा। जो तुम्हारी सुनता है सो मेरी सुनता है और जो तुम्हें तुच्छ जानता है सो मुझे तुच्छ जानता है और जो मुझे तुच्छ जानता है सो मेरे भेजनेहारे को तुच्छ जानता है॥

१७ तब वे सत्तर शिष्य आनन्द से फिर आके बोले हे प्रभु आप के नाम से भूत १८ भी हमारे बश में हैं। उस ने उन से कहा मैं ने शैतान को बिजली की नाईं स्वर्ग से गिरते देखा। १९ देखो मैं तुम्हें सांपों और बिच्छूओं को रौंदने का और शत्रु के सारे पराक्रम पर सामर्थ्य देता हूं और किसी बस्तु से तुम्हें कुछ हानि न होगी। २० तौभी इस से आनन्द मत करो कि भूत तुम्हारे बश में हैं परन्तु इसी से आनन्द करो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं। २१ उसी घड़ी यीशु आत्मा में आनन्दित हुआ और कहा हे पिता स्वर्ग और पृथिवी के प्रभु मैं तेरा धन्य मानता हूं कि तू ने इन बातों को ज्ञानवानों और बुद्धिमानों से गुप्त रखा है और उन्हें बालकों पर प्रगट किया है. हां हे पिता क्योंकि तेरी दृष्टि में यही अच्छा लगा। २२ मेरे पिता ने मुझे सब कुछ सौंपा है और पुत्र कौन है सो कोई नहीं जानता केवल पिता और पिता कौन है सो कोई नहीं जानता केवल पुत्र और वही जिस पर पुत्र उसे प्रगट किया चाहे। २३ तब उस ने अपने शिष्यों की ओर फिरके निराले में कहा जो तुम देखते हो उसे जो नेत्र देखें सो धन्य हैं। २४ क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि जो तुम देखते हो उस को बहुतेरे भविष्यद्वक्ताओं और राजाओं ने देखने चाहा पर न देखा और जो तुम सुनते हो उस को सुनने चाहा पर न सुना॥

२५ देखो किसी व्यवस्थापक ने उठके उस की परीक्षा करने को कहा हे गुरु कौन काम करने से मैं अनन्त जीवन का अधिकारी होऊंगा। २६ उस ने उस से कहा व्यवस्था में क्या लिखा है. तू कैसे पढ़ता है। २७ उस ने उत्तर दिया कि तू परमेश्वर अपने ईश्वर को अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से और अपनी सारी शक्ति से और अपनी सारी बुद्धि से प्रेम कर और अपने पड़ोसी को

२८ अपने समान प्रेम कर। यीशु ने उस से कहा तू ने ठीक उत्तर दिया है, यह २९ कर तो तू जीयेगा। परन्तु उस ने अपने तईं धर्म्मी ठहराने की इच्छा कर यीशु ३० से कहा मेरा पड़ोसी कौन है। यीशु ने उत्तर दिया कि एक मनुष्य यिरूशलीम से यिरीहो को जाते हुए डाकुओं के हाथ में पड़ा जिन्हों ने उस के वस्त्र उतार लिये और उसे घायल कर अध- ३१ मूआ छोड़के चले गये। संयोग से कोई याजक उस मार्ग से जाता था परन्तु उसे ३२ देखके साम्हने से होके चला गया। इसी रीति से एक लेवीय भी जब उस स्थान पर पहुंचा तब आके उसे देखा और ३३ साम्हने से होके चला गया। परन्तु एक शोमिरोनी पथिक उस स्थान पर आया ३४ और उसे देखके दया किई, और उस पास जाके उस के घावों पर तेल और दाख रस डालके पट्टियां बांधीं और उसे अपने ही पशु पर बैठाके सराय में लाके ३५ उस की सेवा किई। बिहान हुए उस ने बाहर आ दो सूकी निकालके भठि-यारे को दिई और उस से कहा इस मनुष्य की सेवा कर और जो कुछ तेरा और लगेगा सो मैं जब फिर आऊंगा तब तुझे भर देऊंगा। सो तू क्या समझता है जो डाकुओं के हाथ में पड़ा उस का पड़ोसी इन तीनों में से कौन था। ३७ व्यवस्थापक ने कहा वह जिस ने उस पर दया किई, तब यीशु ने उस से कहा जा तू भी वैसाही कर॥

३८ उन्हों के जाते हुए उस ने किसी गांव में प्रवेश किया और मर्था नाम एक स्त्री ने अपने घर में उस की पहु- ३९ नई किई। उस की मरियम नाम एक बहिन थी जो यीशु के चरणों के पास बैठके उस का बचन सुनती थी। ४० परन्तु मर्था बहुत सेवकाई में बझी हुई थी और वह निकट आके बोली हे प्रभु क्या आप को सोच नहीं है कि मेरी बहिन ने मुझे अकेली सेवा करने को छोड़ी है, इस लिये उसे आज्ञा दीजिये कि मेरी सहायता करे। यीशु ने उस ४१ को उत्तर दिया हे मर्था हे मर्था तू बहुत बातों के लिये चिन्ता करती और घबराती है। परन्तु एक बात आवश्यक ४२ है, और मरियम ने उस उत्तम भाग को चुना है जो उस से नहीं लिया जायगा॥

ग्यारहवां पर्ब्ब।

जब यीशु एक स्थान में प्रार्थना करता था ज्यों उस ने समाप्ति किई त्यों उस के शिष्यों में से एक ने उस से कहा हे प्रभु जैसे योहन ने अपने शिष्यों को सिखाया तैसे आप हमें प्रार्थना करने को सिखाइये। उस ने उन से कहा जब २ तुम प्रार्थना करो तब कहो हे हमारे स्वर्गवासी पिता तेरा नाम पवित्र किया जाय तेरा राज्य आवे तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में वैसे पृथिवी पर पूरी होय। हमारी दिन भर की रोटी प्रतिदिन हमें ३ दे, और हमारे पापों को क्षमा कर ४ क्योंकि हम भी अपने हर एक ऋणी को क्षमा करते हैं और हमें परीक्षा में मत डाल परन्तु दुष्ट से बचा॥

और उस ने उन से कहा तुम में से ५ कौन है कि उस का एक मित्र होय और वह आधी रात को उस पास जाके उस से कहे कि हे मित्र मुझे तीन रोटी उधार दीजिये, क्योंकि एक पथिक मेरा ६ मित्र मुझ पास आया है और उस के आगे रखने को मेरे पास कुछ नहीं है, और वह भीतर से उत्तर देवे कि मुझे ७ दुःख न देना अब तो द्वार मूंदा गया है और मेरे बालक मेरे संग सोये हुए हैं मैं उठके तुझे नहीं दे सकता हूं। मैं तुम से कहता हूं जो वह इस लिये ८

नहीं उसे उठके देगा कि उस का मित्र है तौभी उस के लाज छोड़के मांगने के कारण उठके उस को जितना कुछ ९ आवश्यक हो उतना देगा । और मैं तुम्हों से कहता हूं कि मांगो तो तुम्हें दिया जायगा ढूंढ़ो तो तुम पाओगे खटखटाओ तो तुम्हारे लिये खोला १० जायगा । क्योंकि जो कोई मांगता है उसे मिलता है और जो ढूंढ़ता है सो पाता है और जो खटखटाता है उस के ११ लिये खोला जायगा । तुम में से कौन पिता होगा जिस से पुत्र रोटी मांगे क्या वह उस को पत्थर देगा, और जो वह मछली मांगे तो क्या वह मछली १२ की सन्ती उस को सांप देगा । अथवा जो वह अंडा मांगे तो क्या वह उस १३ को बिच्छू देगा । सो यदि तुम बुरे होके अपने लड़कों को अच्छे दान देने जानते हो तो कितना अधिक करके स्वर्गीय पिता उन्हों को जो उस से मांगते हैं पवित्र आत्मा देगा ॥

१४ यीशु एक भूत को जो गूंगा था निकालता था, जब भूत निकल गया तब वह गूंगा बोलने लगा और लोगों १५ ने अचंभा किया । परन्तु उन में से कोई कोई बोले यह तो बालजिबूल नाम भूतों के प्रधान की सहायता से भूतों को १६ निकालता है । औरों ने उस की परीक्षा करने को उस से आकाश का एक चिन्ह १७ मांगा । पर उस ने उन के मन की बातें जानके उन से कहा जिस जिस राज्य में फूट पड़ी है वह राज्य उजड़ जाता है और घर से घर जो बिगड़ता है सो १८ नाश होता है । और यदि शैतान में भी फूट पड़ी है तो उस का राज्य क्योंकर ठहरेगा, तुम लोग तो कहते हो कि मैं बालजिबूल की सहायता १९ से भूतों को निकालता हूं । पर यदि मैं बालजिबूल की सहायता से भूतों को निकालता हूं तो तुम्हारे सन्तान किस की सहायता से निकालते हैं, इस लिये वे तुम्हारे न्याय करनेहारे होंगे । २० परन्तु जो मैं ईश्वर की उंगली से भूतों को निकालता हूं तो अवश्य ईश्वर का २१ राज्य तुम्हारे पास पहुंच चुका है । जब हथियार बांधे हुए बलवन्त अपने घर की रखवाली करता है तब उस की २२ सम्पत्ति कुशल से रहती है । परन्तु जब वह जो उस से अधिक बलवन्त है उस पर आ पहुंचकर उसे जीतता है तब उस के सम्पूर्ण हथियार जिन पर वह भरोसा रखता था छीन लेता और उस का लूटा हुआ धन बांटता २३ है । जो मेरे संग नहीं है सो मेरे बिरुद्ध है और जो मेरे संग नहीं बटोरता सो बिथराता है ॥

२४ जब अशुद्ध भूत मनुष्य से निकल जाता है तब सूखे स्थानों में बिश्राम ढूंढ़ता फिरता है परन्तु जब नहीं पाता तब कहता है कि मैं अपने घर में जहां २५ से निकला फिर जाऊंगा । और वह आके २६ उसे झाड़ा बुहारा सुथरा पाता है । तब वह जाके अपने से अधिक दुष्ट सात और भूतों को ले आता है और वे भीतर पैठके वहां बास करते हैं और उस मनुष्य की पिछली दशा पहिली से बुरी होती है ॥

२७ वह यह बातें कहता ही था कि भीड़ में से किसी स्त्री ने ऊंचे शब्द से उस से कहा धन्य वह गर्भ जिस ने तुझे धारण किया और वे स्तन जो तू ने २८ पिये । उस ने कहा हां पर वेही धन्य हैं जो ईश्वर का बचन सुनके पालन करते हैं ॥

२९ जब बहुत लोगों की भीड़ एकट्ठी होने लगी तब वह कहने लगा कि इस समय के लोग दुष्ट हैं, वे चिन्ह ढूंढ़ते

हैं परन्तु कोई चिन्ह उन को नहीं दिया जायगा केवल यूनस भविष्यद्वक्ता का
३० चिन्ह। जैसा यूनस निनिवीय लोगों के लिये चिन्ह था वैसा ही मनुष्य का पुत्र इस समय के लोगों के लिये होगा।
३१ दक्षिण की रानी बिचार के दिन में इस समय के मनुष्यों के संग उठके उन्हें दोषी ठहरावेगी क्योंकि वह सुलेमान का ज्ञान सुनने को पृथिवी के अन्त से आई और देखो यहां एक है जो सुले-
३२ मान से भी बड़ा है। निनिवी के लोग बिचार के दिन में इस समय के लोगों के संग खड़े हो उन्हें दोषी ठहरावेंगे क्योंकि उन्हों ने यूनस का उपदेश सुनके पश्चात्ताप किया और देखो यहां एक है जो यूनस से भी बड़ा है॥

३३ कोई मनुष्य दीपक को बारके गुप्त में अथवा बर्त्तन के नीचे नहीं रखता है परन्तु दीवट पर कि जो भीतर आवें
३४ सो उजियाला देखें। शरीर का दीपक आंख है इस लिये जब तेरी आंख निर्मल है तब तेरा सकल शरीर भी उजियाला है परन्तु जब वह बुरी है तब तेरा
३५ शरीर भी अंधियारा है। सो देख ले कि जो ज्योति तुझ में है सो अंधकार
३६ न होवे। यदि तेरा सकल शरीर उजियाला हो और उस का कोई अंश अंधियारा न हो तो जैसा कि जब दीपक अपनी चमक से तुझे ज्योति देवे तैसा ही वह सब प्रकाशमान होगा॥

३७ जब यीशु बात करता था तब किसी फरीशी ने उस से बिन्ती किई कि मेरे यहां भोजन कीजिये और वह भीतर
३८ जाके भोजन पर बैठा। फरीशी ने जब देखा कि उस ने भोजन के पहिले नहीं
३९ धोया तब अचंभा किया। प्रभु ने उस से कहा अब तुम फरीशी लोग कटोरे और थाल को बाहर बाहर शुद्ध करते हो परन्तु तुम्हारा अन्तर अन्धेर और दुष्टता से भरा है। हे निर्बुद्धि लोगो
४० जिस ने बाहर को बनाया क्या उस ने
४१ भीतर को भी नहीं बनाया। परन्तु भीतरवाली बस्तुओं को दान करो तो देखो तुम्हारे लिये सब कुछ शुद्ध है।
४२ परन्तु हाय तुम फरीशियो तुम पोदीने और आरूदे का और सब भांति के साग-पात का दसवां अंश देते हो परन्तु न्याय को और ईश्वर के प्रेम को उल्लंघन करते हो. इन्हें करना और उन्हें न छोड़ना
४३ उचित था। हाय तुम फरीशियो तुम्हें सभा के घरों में ऊंचे आसन और बाजारों
४४ में नमस्कार प्रिय लगते हैं। हाय तुम कपटी अध्यापको और फरीशियो तुम उन कबरों के समान हो जो दिखाई नहीं देतीं और मनुष्य जो उन के ऊपर से चलते हैं नहीं जानते हैं॥

४५ तब व्यवस्थापकों में से किसी ने उस को उत्तर दिया कि हे गुरु यह बातें कहने से आप हमों की भी निन्दा
४६ करते हैं। उस ने कहा हाय तुम व्यवस्थापको भी तुम बोझे जिन को उठाना कठिन है मनुष्यों पर लादते हो परन्तु तुम आप उन बोझों को अपनी एक
४७ उंगली से नहीं छूते हो। हाय तुम लोग तुम भविष्यद्वक्ताओं की कबरें बनाते हो जिन्हें तुम्हारे पितरों ने मार डाला।
४८ सो तुम अपने पितरों के कामों पर साक्षी देते हो और उन में सम्मति देते हो क्योंकि उन्हों ने तो उन्हें मार डाला और तुम उन की कबरें बनाते हो।
४९ इस लिये ईश्वर के ज्ञान ने कहा है कि मैं उन्हों के पास भविष्यद्वक्ताओं और प्रेरितों को भेजूंगा और वे उन में से कितनों को मार डालेंगे और
५० सतावेंगे. कि हाबिल के लोहू से लेके जिखरियाह के लोहू तक जो वेदी और

मन्दिर के बीच में घात किया गया जितने भविष्यद्वक्ताओं का लोहू जगत की उत्पत्ति से बहाया जाता है सब का लेखा इस समय के लोगों से लिया ५१ जाय। हां मैं तुम से कहता हूं उस का लेखा इसी समय के लोगों से लिया ५२ जायगा। हाय तुम व्यवस्थापको तुम ने ज्ञान की कुंजी ले लिई है, तुम न आप ही प्रवेश नहीं किया है और प्रवेश करनेहारों को बर्जा है॥

५३ जब वह उन्हों से यह बातें कहता था तब अध्यापक और फरीशी लोग निपट बैर करने और बहुत बातों के ५४ विषय में उसे कहवाने लगे, और दांव ताकते हुए उस के मुंह से कुछ पकड़ने चाहते थे कि उस पर दोष लगावें॥

बारहवां पर्ब्ब।

१ उस समय में सहस्त्रों लोग एकट्ठे हुए यहां लों कि एक दूसरे पर गिरे पड़ते थे इस पर यीशु अपने शिष्यों से पहिले कहने लगा कि फरीशियों के खमीर से अर्थात कपट से चौकस रहो। २ कुछ छिपा नहीं है जो प्रगट न किया जायगा और न कुछ गुप्त है जो जाना ३ न जायगा। इस लिये जो कुछ तुम ने अंधियारे में कहा है सो उंजियाले में सुना जायगा और जो तुम ने कोठरियों में कानों में कहा है सो कोठों पर से ४ प्रचार किया जायगा। मैं तुम्हों से जो मेरे मित्र हो कहता हूं कि जो शरीर को मार डालते हैं परन्तु उस के पीछे और कुछ नहीं कर सकते हैं उन से मत ५ डरो। मैं तुम्हें बताऊंगा तुम किस से डरो, घात करने के पीछे नरक में डालने का जिस को अधिकार है उसी से डरो, हां मैं तुम से कहता हूं उसी ६ से डरो। क्या दो पैसे में पांच गौरैया नहीं बिकतीं तौभी ईश्वर उन में से एक को भी नहीं भूलता है। परन्तु ७ तुम्हारे सिर के बाल भी सब गिने हुए हैं इस लिये मत डरो तुम बहुत गौरैयाओं से अधिक मोल के हो। मैं ८ तुम से कहता हूं जो कोई मनुष्यों के आगे मुझे मान लेवे उसे मनुष्य का पुत्र भी ईश्वर के दूतों के आगे मान लेगा। परन्तु जो मनुष्यों के आगे मुझे नकारे ९ सो ईश्वर के दूतों के आगे नकारा जायगा। जो कोई मनुष्य के पुत्र के १० बिरोध में बात कहे वह उस के लिये क्षमा किई जायगी परन्तु जो पवित्र आत्मा की निन्दा करे वह उस के लिये नहीं क्षमा किई जायगी। जब लोग ११ तुम्हें सभाओं और अध्यक्षों और अधिकारियों के आगे ले जावें तब किस रीति से अथवा क्या उत्तर देओगे अथवा क्या कहोगे इस की चिन्ता मत करो। क्योंकि जो कुछ कहना उचित होगा १२ सो पवित्र आत्मा उसी घड़ी तुम्हें सिखावेगा॥

भीड़ में से किसी ने उस से कहा १३ हे गुरु मेरे भाई से कहिये कि पिता का धन मेरे संग बांट लेवे। उस ने उस से १४ कहा हे मनुष्य किस ने मुझे तुम्हों पर न्यायी अथवा बांटनेहारा ठहराया। और उस ने लोगों से कहा देखो लोभ १५ से बचे रहो क्योंकि किसी का धन बहुत होय तौभी उस का जीवन उस के धन से नहीं है। उस ने उन्हों से एक १६ दृष्टान्त भी कहा कि किसी धनवान मनुष्य की भूमि में बहुत कुछ उपजा। तब वह अपने मन में बिचार करने १७ लगा कि मैं क्या करूं क्योंकि मुझ को अपना अन्न रखने का स्थान नहीं है। और उस ने कहा मैं यही करूंगा मैं १८ अपनी बखारियां तोड़के बड़ी बड़ी बनाऊंगा और वहां अपना सब अन्न और

१९ अपनी सम्पत्ति रखूंगा । और मैं अपने मन से कहूंगा हे मन तेरे पास बहुत बरसों के लिये बहुत सम्पत्ति रखी हुई है विश्राम कर खा पी सुख से रह ।
२० परन्तु ईश्वर ने उस से कहा हे मूर्ख इसी रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जायगा तब जो कुछ तू ने एकट्ठा किया
२१ है सो किस का होगा । जो अपने लिये धन बटोरता है और ईश्वर की ओर धनी नहीं है सो ऐसा ही है ॥

२२ फिर उस ने अपने शिष्यों से कहा इस लिये मैं तुम से कहता हूं अपने प्राण के लिये चिन्ता मत करो कि हम क्या खायेंगे न शरीर के लिये कि क्या
२३ पहिरेंगे । भोजन से प्राण और वस्त्र से
२४ शरीर बड़ा है । कौओं को देख लो . वे न बोते हैं न लवते हैं उन को न भंडार न खत्ता है तौभी ईश्वर उन को पालता है . तुम पंछियों से कितने बड़े
२५ हो । तुम में से कौन मनुष्य चिन्ता करने से अपनी आयु की डीड़ को एक
२६ हाथ भी बढ़ा सकता है । सो यदि तुम अति छोटा काम भी नहीं कर सकते हो तो और बातों के लिये क्यों
२७ चिन्ता करते हो । सोसन फूलों को देख लो वे कैसे बढ़ते हैं . वे न परिश्रम करते हैं न कातते हैं परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि सुलेमान भी अपने सारे बिभव में उन में से एक के तुल्य बिभू-
२८ षित न था । यदि ईश्वर घास को जो आज खेत में है और कल चूल्हे में झोंकी जायगी ऐसी बिभूषित करता है तो हे अल्पबिश्वासियो कितना अधिक
२९ करके वह तुम्हें पहिरावेगा । तुम यह खोज मत करो कि हम क्या खायेंगे अथवा क्या पीयेंगे और न सन्देह करो ।
३० जगत के देवपूजक लोग इन सब वस्तुओं का खोज करते हैं और तुम्हारा पिता जानता है कि तुम्हें इन वस्तुओं का
३१ प्रयोजन है । परन्तु ईश्वर के राज्य का खोज करो तब यह सब वस्तु भी तुम्हें
३२ दिई जायेंगीं । हे छोटे झुंड मत डरो क्योंकि तुम्हारे पिता को तुम्हें राज्य देने
३३ में प्रसन्नता है । अपनी सम्पत्ति बेचके दान करो . अजर थैलियां और अक्षय धन अपने लिये स्वर्ग में एकट्ठा करो जहां चोर नहीं पहुंचता है और न कीड़ा
३४ बिगाड़ता है । क्योंकि जहां तुम्हारा धन है तहां तुम्हारा मन भी लगा रहेगा ॥

३५ तुम्हारी कमरें बंधी और दीपक जलते
३६ रहें । और तुम उन मनुष्यों के समान होओ जो अपने स्वामी की बाट देखते हैं कि वह बिवाह से कब लौटेगा इस लिये कि जब वह आके द्वार खटखटावे
३७ तब वे उस के लिये तुरन्त खोलें । वे दास धन्य हैं जिन्हें स्वामी आके जागते पावे . मैं तुम से सच कहता हूं वह कमर बांधके उन्हें भोजन पर बैठावेगा
३८ और आके उन की सेवा करेगा । जो वह दूसरे पहर आवे अथवा तीसरे पहर आवे और ऐसा ही पावे तो वे
३९ दास धन्य हैं । तुम यह जानते हो कि यदि घर का स्वामी जानता चोर किस घड़ी आवेगा तो वह जागता रहता और अपने घर में सेंध पड़ने न देता ।
४० इस लिये तुम भी तैयार रहो क्योंकि जिस घड़ी का अनुमान तुम नहीं करते हो उसी घड़ी मनुष्य का पुत्र आवेगा ।
४१ तब पितर ने उस से कहा हे प्रभु क्या आप हमीं से अथवा सब लोगों से भी
४२ यह दृष्टान्त कहते हैं । प्रभु ने कहा वह बिश्वासयोग्य और बुद्धिमान भंडारी कौन है जिसे स्वामी अपने परिवार पर प्रधान करेगा कि समय में उन्हें सीधा देवे ।
४३ वह दास धन्य है जिसे उस का स्वामी

४४ आके ऐसा करते पावे । मैं तुम से सच कहता हूं वह उसे अपनी सब सम्पत्ति ४५ पर प्रधान करेगा । परन्तु जो वह दास अपने मन में कहे कि मेरा स्वामी आने में बिलंब करता है और दासों और दासियों को मारने लगे और खाने पीने ४६ और मतवाला होने लगे , तो जिस दिन वह बाट जोहता न रहे और जिस घड़ी को वह अनुमान न करे उसी में उस दास का स्वामी आवेगा और उस को बड़ी ताड़ना देके अविश्वासियों के ४७ संग उस का अंश देगा । वह दास जो अपने स्वामी की इच्छा जानता था परन्तु तैयार न रहा और उस की इच्छा के समान न किया बहुत मार खायगा परन्तु जो नहीं जानता था और मार खाने के योग्य काम किया सो थोड़ी ४८ सी मार खायगा । और जिस किसी को बहुत दिया गया है उस से बहुत मांगा जायगा और जिस को लोगों ने बहुत सौंपा है उस से वे अधिक मांगेंगे ॥

४९ मैं पृथिवी पर आग लगाने आया हूं और मैं क्या चाहता हूं केवल यह ५० कि अभी सुलग जाती । मुझे एक बप-तिसमा लेना है और जब लों वह सम्पूर्ण न होय तब लों मैं कैसे सकेत ५१ में हूं । क्या तुम समझते हो कि मैं पृथिवी पर मिलाप करवाने आया हूं , मैं तुम से कहता हूं सो नहीं परन्तु फूट । ५२ क्योंकि अब से एक घर में पांच जन अलग अलग होंगे तीन दो के बिरुद्ध और दो तीन ५३ के बिरुद्ध । पिता पुत्र के बिरुद्ध और पुत्र पिता के बिरुद्ध मां बेटी के बिरुद्ध और बेटी मां के बिरुद्ध सास अपनी पतोहू के बिरुद्ध और पतोहू अपनी सास के बिरुद्ध अलग अलग होंगे ॥

५४ और भी उस ने लोगों से कहा जब तुम मेघ को पश्चिम से उठते देखते हो तब तुरन्त कहते हो कि झड़ी आती है और ऐसा होता है । ५५ और जब दक्षिण की बयार चलते देखते हो तब कहते हो कि घाम होगा और वह भी होता है । ५६ हे कपटियो तुम धरती और आकाश का रूप चीन्ह सकते हो परन्तु इस समय को क्योंकर नहीं चीन्हते हो । ५७ और जो उचित है उस को तुम आप ही से क्यों नहीं बिचार करते हो । ५८ जब तू अपने मुद्दई के संग अध्यक्ष के पास जाता है मार्ग ही में उस से छूटने का यत्न कर ऐसा न हो कि वह तुझे न्यायी के पास खींच ले जाय और न्यायी तुझे प्यादे को सौंपे और प्यादा तुझे बन्दीगृह में डाले । ५९ मैं तुझ से कहता हूं कि जब लों तू कौड़ी कौड़ी भर न देवे तब लों वहां से छूटने न पावेगा ॥

तेरहवां पर्व्व ।

१ उस समय में कितने लोग आ पहुंचे और उन गालीलियों के विषय में जिन का लोहू पिलात ने उन के बलिदानों के संग मिलाया था यीशु से बात करने लगे । २ उस ने उन्हें उत्तर दिया क्या तुम समझते हो कि ये गालीली लोग सब गालीलियों से अधिक पापी थे कि उन्हों पर ऐसी बिपत्ति पड़ी । ३ मैं तुम से कहता हूं सो नहीं परन्तु जो तुम पश्चात्ताप न करो तो तुम सब उसी रीति से नष्ट होगे । ४ अथवा क्या तुम समझते हो कि वे अठारह जन जिन्हों पर शीलोह में गुम्मट गिर पड़ा और उन्हें नाश किया सब मनुष्यों से जो यिरूशलीम में रहते थे अधिक अपराधी थे । ५ मैं तुम से कहता हूं सो नहीं परन्तु जो तुम पश्चात्ताप न करो तो तुम सब उसी रीति से नष्ट होगे ॥

६ उस ने यह दृष्टान्त भी कहा कि

किसी मनुष्य की दाख की बारी में एक गूलर का वृक्ष लगाया गया था और उस ने आके उस में फल ढूंढ़ा पर ७ न पाया। तब उस ने माली से कहा देख मैं तीन बरस से आके इस गूलर के वृक्ष में फल ढूंढ़ता हूं पर नहीं पाता हूं . उसे काट डाल वह भूमि को ८ क्यों निकम्मी करता है। माली ने उस को उत्तर दिया कि हे स्वामी उस को इस बरस भी रहने दीजिये जब लों मैं ९ उस का थाला खोदके खाद भरूं। तब जो उस में फल लगे तो भला . नहीं तो पीछे उसे कटवा डालिये॥

१० बिश्राम के दिन यीशु एक सभा के ११ घर में उपदेश करता था। और देखो एक स्त्री थी जिसे अठारह बरस से एक दुर्बल करनेवाला भूत लगा था और वह कुबड़ी थी और किसी रीति से अपने को सीधी न कर सकती थी। १२ यीशु ने उसे देखके अपने पास बुलाया और उस से कहा हे नारी तू अपनी १३ दुर्बलता से छुड़ाई गई है। तब उस ने उस पर हाथ रखा और वह तुरन्त सीधी हुई और ईश्वर की स्तुति करने १४ लगी। परन्तु यीशु ने बिश्राम के दिन में चंगा किया इस से सभा का अध्यक्ष रिसियाने लगा और उत्तर दे लोगों से कहा छः दिन हैं जिन में काम करना उचित है सो उन दिनों में आके चंगे किये जाओ और बिश्राम के दिन में १५ नहीं। प्रभु ने उस को उत्तर दिया कि हे कपटी क्या बिश्राम के दिन तुम्हों में से हर एक अपने बैल अथवा गदहे को थान से खोलके जल पिलाने को १६ नहीं ले जाता। और क्या उचित न था कि यह स्त्री जो इब्राहीम की पुत्री है जिसे शैतान ने देखो अठारह बरस से बांध रखा था बिश्राम के दिन में इस बंधन से खोली जाय। जब उस ने १७ यह बातें कहीं तब उस के सब बिरोधी लज्जित हुए और समस्त लोग सब प्रताप के कर्म्मों के लिये जो वह करता था आनन्दित हुए॥

फिर उस ने कहा ईश्वर का राज्य १८ किस के समान है और मैं उस की उपमा किस से देऊंगा। वह राई के एक दाने १९ की नाईं है जिसे किसी मनुष्य ने लेके अपनी बारी में बोया और वह बढ़ा और बड़ा पेड़ हो गया और आकाश के पंछियों ने उस की डालियों पर बसेरा किया। उस ने फिर कहा मैं ईश्वर के २० राज्य की उपमा किस से देऊंगा। वह २१ खमीर की नाईं है जिस को किसी स्त्री ने लेके तीन पसेरी आटे में छिपा रखा यहां लों कि सब खमीर हो गया॥

वह उपदेश करता हुआ नगर नगर २२ और गांव गांव होके यिरूशलीम की ओर जाता था। तब किसी ने उस से २३ कहा हे प्रभु क्या त्राण पानेहारे थोड़े हैं। उस ने उन्हों से कहा सकेत फाटक से २४ प्रवेश करने का साहस करो क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि बहुत लोग प्रवेश करने चाहेंगे और नहीं सकेंगे। जब घर २५ का स्वामी उठके द्वार मूंद चुकेगा और तुम बाहर खड़े हुए द्वार खटखटाने लगोगे और कहोगे हे प्रभु हे प्रभु हमारे लिये खोलिये और वह तुम्हें उत्तर देगा मैं तुम्हें नहीं जानता हूं तुम कहां के हो . तब तुम कहने लगोगे कि हम लोग २६ आप के साम्हने खाते औ पीते थे और आप ने हमारी सड़कों में उपदेश किया परन्तु वह कहेगा मैं तुम से कहता हूं २७ मैं तुम्हें नहीं जानता हूं तुम कहां के हो . हे कुकर्म्म करनेहारो तुम सब मुझ से दूर होओ। वहां रोना और दांत २८ पीसना होगा कि उस समय तुम इब्रा-

हीम और इसहाक और याकूब और सब भविष्यद्वक्ताओं को ईश्वर के राज्य में बैठे हुए और अपने को बाहर निकाले हुए देखोगे। २९ और लोग पूर्ब्ब और पश्चिम और उत्तर और दक्षिण से आके ईश्वर के राज्य में बैठेंगे। ३० और देखो कितने पिछले हैं जो अगले होंगे और कितने अगले हैं जो पिछले होंगे ॥

३१ उसी दिन कितने फरीशियों ने आके उस से कहा यहां से निकलके चला जा क्योंकि हेरोद तुझे मार डालने चाहता है। ३२ उस ने उन से कहा जाके उस लोमड़ी से कहो कि देखो मैं आज और कल भूतों को निकालता और रोगियों को चंगा करता हूं और तीसरे दिन सिद्ध होंगा। ३३ तौभी आज और कल और परसों फिरना मुझे अवश्य है क्योंकि हो नहीं सकता कि कोई भविष्यद्वक्ता यिरूशलीम के बाहर नाश किया जाय। ३४ हे यिरूशलीम यिरूशलीम जो भविष्यद्वक्ताओं को मार डालती है और जो तेरे पास भेजे गये हैं उन्हें पत्थरवाह करती है जैसे मुर्गी अपने बच्चों को पंखों के नीचे एकट्ठे करती है वैसे ही मैं ने कितनी बेर तेरे बालकों को एकट्ठे करने की इच्छा किई परन्तु तुम ने न चाहा। ३५ देखो तुम्हारा घर तुम्हारे लिये उजाड़ छोड़ा जाता है और मैं तुम से सच कहता हूं जिस समय में तुम कहोगे धन्य वह जो परमेश्वर के नाम से आता है वह समय जब लों न आवे तब लों तुम मुझे फिर न देखोगे ॥

चौदहवां पर्ब्ब

१ जब यीशु बिश्राम के दिन प्रधान फरीशियों में से किसी के घर में रोटी खाने को गया तब वे उस को ताकते थे। २ और देखो एक मनुष्य उस के साम्ने था जिसे जलंधर रोग था। ३ इस पर यीशु ने व्यवस्थापकों और फरीशियों से कहा क्या बिश्राम के दिन में चंगा करना उचित है. परन्तु वे चुप रहे। ४ तब उस ने उस मनुष्य को लेके चंगा करके बिदा किया. ५ और उन्हें उत्तर दिया कि तुम में से किस का गदहा अथवा बैल कूए में गिरेगा और वह तुरन्त बिश्राम के दिन में उसे न निकालेगा। ६ वे उस को इन बातों का उत्तर नहीं दे सके ॥

७ जब उस ने देखा कि नेवतहरी लोग क्योंकर ऊंचे स्थान चुन लेते हैं तब एक दृष्टान्त दे उन्हों से कहा. ८ जब कोई तुझे बिवाह के भोज में बुलावे तब ऊंच स्थान में मत बैठ ऐसा न हो कि उस ने तुझ से अधिक आदर के योग्य किसी को बुलाया हो. ९ और जिस ने तुझे और उसे नेवता दिया सो आके तुझ से कहे कि इस मनुष्य को स्थान दीजिये और तब तू लज्जित हो सब से नीचा स्थान लेने लगे। १० परन्तु जब तू बुलाया जाय तब सब से नीचे स्थान में जाके बैठ इस लिये कि जब वह जिस ने तुझे नेवता दिया है आवे तब तुझ से कहे हे मित्र और ऊपर आइये. तब तेरे संग बैठनेहारों के साम्ने तेरा आदर होगा। ११ क्योंकि जो कोई अपने को ऊंचा करे सो नीचा किया जायगा और जो अपने को नीचा करे सो ऊंचा किया जायगा ॥

१२ तब जिस ने उसे नेवता दिया था उस ने उस से भी कहा जब तू दिन का अथवा रात का भोजन बनावे तब अपने मित्रों वा अपने भाइयों वा अपने कुटुंबों वा धनवान पड़ोसियों को मत बुला ऐसा न हो कि वे भी इस के बदले तुझे नेवता देवें और यही तेरा प्रतिफल होय। १३ परन्तु जब तू भोज करे

तब कंगालों टुंडों लंगड़ों और अन्धों को
१४ बुला । और तू धन्य होगा क्योंकि वे
तुझे प्रतिफल नहीं दे सकते हैं परन्तु
धर्म्मियों के जी उठने पर प्रतिफल तुझ
को दिया जायगा ॥

१५ उस के संग बैठनेहारों में से एक
ने यह बातें सुनके उस से कहा धन्य
वह जो ईश्वर के राज्य में रोटी खायगा।
१६ उस ने उस से कहा किसी मनुष्य ने
बड़ी बियारी बनाई और बहुतों को
१७ बुलाया । बियारी के समय में उस ने
अपने दास के हाथ नेवतहरियों को
कहला भेजा कि आओ सब कुछ अब
१८ तैयार है । परन्तु वे सब एक मत होके
क्षमा मांगने लगे . पहिले ने उस दास
से कहा मैं ने कुछ भूमि मोल लिई है
और उसे जाके देखना मुझे अवश्य है
मैं तुझ से बिन्ती करता हूं मुझे क्षमा
१९ करवा । दूसरे ने कहा मैं ने पांच जोड़
बैल मोल लिये हैं और उन्हें परखने को
जाता हूं मैं तुझ से बिन्ती करता हूं
२० मुझे क्षमा करवा । तीसरे ने कहा मैं ने
बिवाह किया है इस लिये मैं नहीं आ
२१ सकता हूं । उस दास ने आके अपने
स्वामी को यह बातें सुनाईं तब घर
के स्वामी ने क्रोध कर अपने दास से
कहा नगर की सड़कों और गलियों में
शीघ्र जाके कंगालों औ टुंडों औ लंगड़ों
२२ और अन्धों को यहां ले आ । दास ने
फिर कहा हे स्वामी जैसे आप ने आज्ञा
दिई तैसे किया गया है और अब भी
२३ जगह है । स्वामी ने दास से कहा राज-
पथों में और गाछों के नीचे जाके लोगों
को बिन लाने से मत छोड़ कि मेरा
२४ घर भर जावे । क्योंकि मैं तुम से कहता
हूं कि उन नेवते हुए मनुष्यों में से कोई
मेरी बियारी न चीखेगा ॥

२५ बड़ी भीड़ यीशु के संग जाती थी
और उस ने पीछे फिरके उन्हों से कहा .
२६ यदि कोई मेरे पास आवे और अपनी
माता और पिता और स्त्री और लड़कों
और भाइयों और बहिनों को हां और
अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने तो
वह मेरा शिष्य नहीं हो सकता है ।
२७ और जो कोई अपना क्रूश उठाये हुए
मेरे पीछे न आवे वह मेरा शिष्य नहीं
२८ हो सकता है । तुम में से कौन है कि
गढ़ बनाने चाहता हो और पहिले
बैठके खर्च न जोड़े कि समाप्ति करने
२९ की बिसात मुझे है कि नहीं । ऐसा न
हो कि जब वह नेव डालके समाप्ति न
कर सके तब सब देखनेहारे उसे ठट्ठे
३० में उड़ाने लगें . और कहें यह मनुष्य
बनाने लगा परन्तु समाप्ति नहीं कर
३१ सका । अथवा कौन राजा है कि दूसरे
राजा से लड़ाई करने को जाता हो और
पहिले बैठके बिचार न करे कि जो
बीस सहस्र लेके मेरे बिरुद्ध आता है
मैं दस सहस्र लेके उस का साम्हना कर
३२ सकता हूं कि नहीं । और जो नहीं तो
उस के दूर रहते ही वह दूतों को
३३ भेजके मिलाप चाहता है । इसी रीति
से तुम्हों में से जो कोई अपना सर्वस्व
त्यागन न करे वह मेरा शिष्य नहीं
३४ हो सकता है । लोण अच्छा है परन्तु
यदि लोण का स्वाद बिगड़ जाय तो
वह किस से स्वादित किया जायगा ।
३५ वह न भूमि के न खाद के लिये काम
आता है . लोग उसे बाहर फेंकते हैं .
जिस को सुनने के कान हों सो सुने ॥

पन्द्रहवां पर्ब्ब ।

१ कर उगाहनेहारे और पापी लोग
सब यीशु पास आते थे कि उस की
२ सुनें । और फरीशी और अध्यापक
कुड़कुड़ाके कहने लगे यह तो पापियों
को ग्रहण करता और उन के संग खाता

३ है। तब उस ने उन्हों से यह दृष्टान्त
४ कहा. तुम में से कौन मनुष्य है कि
उस को सा भेड़ हों और उस ने उन में
से एक को खोया हो और वह निन्नानवे
को जंगल में न छोड़े और जब लों उस
खोई हुई को न पावे तब लों उस के
५ खोज में न जाय। और वह उसे पाके
आनन्द से अपने कांधों पर रखता है.
६ और घर में आके मित्रों औ पड़ोसियों
को एकट्ठे बुलाके उन्हों से कहता है
मेरे संग आनन्द करो कि मैं ने अपनी
७ खोई हुई भेड़ पाई है। मैं तुम से
कहता हूं कि इसी रीति से जिन्हें
पश्चात्ताप करने का प्रयोजन न होय
ऐसे निन्नानवे धर्म्मियों से अधिक एक
पापी के लिये जो पश्चात्ताप करे स्वर्ग
में आनन्द होगा॥

८ अथवा कौन स्त्री है कि उस को
दस सूकी हों और वह जो एक सूकी
खोवे तो दीपक बारके औ घर बुहारके
उसे जब लों न पावे तब लों यत्न से
९ न ढूंढे। और वह उसे पाके सखियों
औ पड़ोसिनियों को एकट्ठी बुलाके
कहती है मेरे संग आनन्द करो कि मैं
१० ने जो सूकी खोई थी सो पाई है। मैं
तुम से कहता हूं कि इसी रीति से एक
पापी के लिये जो पश्चात्ताप करता है
ईश्वर के दूतों में आनन्द होता है॥

११ फिर उस ने कहा किसी मनुष्य के
१२ दो पुत्र थे। उन में से छुटके ने पिता
से कहा हे पिता सम्पत्ति में से जो
मेरा अंश होय सो मुझे दीजिये. तब
उस ने उन को अपनी सम्पत्ति बांट
१३ दिई। बहुत दिन नहीं बीते कि छुटका
पुत्र सब कुछ एकट्ठा करके दूर देश
चला गया और वहां लुचपन में दिन
बिताते हुए अपनी सम्पत्ति उड़ा दिई।
१४ जब वह सब कुछ उठा चुका तब उस
देश में बड़ा अकाल पड़ा और वह
कंगाल हो गया। और वह जाके उस १५
देश के निवासियों में से एक के यहां
रहने लगा जिस ने उसे अपने खेतों में
सूअर चराने को भेजा। और वह उन १६
छीमियों से जिन्हें सूअर खाते थे अपना
पेट भरने चाहता था और कोई नहीं
उस को कुछ देता था। तब उसे चेत १७
हुआ और उस ने कहा मेरे पिता के
कितने मजूरों को भोजन से अधिक
रोटी होती है और मैं भूख से मरता
हूं। मैं उठके अपने पिता पास जाऊंगा १८
और उस से कहूंगा हे पिता मैं ने स्वर्ग
के बिरुद्ध और आप के साम्ने पाप किया
है। मैं फिर आप का पुत्र कहावने के १९
योग्य नहीं हूं मुझे अपने मजूरों में से
एक के समान कीजिये। तब वह उठके २०
अपने पिता पास चला पर वह दूर ही
था कि उस के पिता ने उसे देखके
दया किई और दौड़के उस के गले में
लिपटके उसे चूमा। पुत्र ने उस से २१
कहा हे पिता मैं ने स्वर्ग के बिरुद्ध
और आप के साम्ने पाप किया है और
फिर आप का पुत्र कहावने के योग्य
नहीं हूं। परन्तु पिता ने अपने दासों २२
से कहा सब से उत्तम बस्त्र निकालके
उसे पहिनाओ और उस के हाथ में
अंगूठी और पांवों में जूते पहिनाओ।
और मोटा बछड़ू लाके मारो और हम २३
खावें और आनन्द करें। क्योंकि यह २४
मेरा पुत्र मूआ था फिर जीआ है खो
गया था फिर मिला है. तब वे आनन्द
करने लगे। उस का जेठा पुत्र खेत में २५
था और जब वह आते हुए घर के
निकट पहुंचा तब बाजा और नाच का
शब्द सुना। और उस ने अपने सेवकों २६
में से एक को अपने पास बुलाके पूछा
यह क्या है। उस ने उस से कहा आप २७

का भाई आया है और आप के पिता ने मोटा बछड़ू मारा है इस लिये कि २८ उसे भला चंगा पाया है। परन्तु उस ने क्रोध किया और भीतर जाने न चाहा इस लिये उस का पिता बाहर २९ आ उसे मनाने लगा। उस ने पिता को उत्तर दिया कि देखिये मैं इतने बरसों से आप की सेवा करता हूं और कभी आप की आज्ञा को उल्लंघन न किया और आप ने मुझे कभी एक मेम्ना भी न दिया कि मैं अपने मित्रों के संग ३० आनन्द करता। परन्तु आप का यह पुत्र जो बेश्याओं के संग आप की सम्पत्ति खा गया है ज्योंही आया त्योंही आप ने उस के लिये मोटा ३१ बछड़ू मारा है। पिता ने उस से कहा हे पुत्र तू सदा मेरे संग है और जो ३२ कुछ मेरा है सो सब तेरा है। परन्तु आनन्द करना और हर्षित होना उचित था क्योंकि यह तेरा भाई मूआ था फिर जीआ है खो गया था फिर मिला है॥

सोलहवां पर्व्व।

१ यीशु ने अपने शिष्यों से भी कहा कोई धनवान मनुष्य था जिस का एक भंडारी था और यह दोष उस के आगे भंडारी पर लगाया गया कि वह आप २ की सम्पत्ति उड़ा देता है। उस ने उसे बुलाके उस से कहा यह क्या है जो मैं तेरे विषय में सुनता हूं. अपने भंडारपन का लेखा दे क्योंकि तू आगे को ३ भंडारी नहीं रह सकेगा। तब भंडारी ने अपने मन में कहा मैं क्या करूं कि मेरा स्वामी भंडारी का काम मुझ से छीन लेता है. मैं कोड़ नहीं सकता हूं और भीख मांगने से मुझे लाज आती ४ है। मैं जानता हूं मैं क्या करूंगा इस लिये कि जब मैं भंडारपन से छुड़ाया जाऊं तब लोग मुझे अपने घरों में ग्रहण करें। और उस ने अपने स्वामी के ५ ऋणियों में से एक एक को अपने पास बुलाके पहिले से कहा तू मेरे स्वामी का कितना धारता है। उस ने कहा ६ सौ मन तेल. वह उस से बोला अपना पत्र ले और बैठके शीघ्र पचास मन लिख। फिर दूसरे से कहा तू कितना धारता ७ है. उस ने कहा सौ मन गेहूं. वह उस से बोला अपना पत्र ले और अस्सी मन लिख। स्वामी ने उस अधर्म्मी ८ भंडारी को सराहा कि इस ने बुद्धि का काम किया है. क्योंकि इस संसार के सन्तान अपने समय के लोगों के विषय में ज्योति के सन्तानों से अधिक बुद्धिमान हैं। और मैं तुम्हों से कहता हूं कि ९ अधर्म्म के धन के द्वारा अपने लिये मित्र कर लो कि जब तुम छूट जाओ तब वे तुम्हें अनन्त निवासों में ग्रहण करें॥

जो अति थोड़े में विश्वासयोग्य है १० सो बहुत में भी विश्वासयोग्य है और जो अति थोड़े में अधर्म्मी है सो बहुत में भी अधर्म्मी है। इस लिये जो तुम ११ अधर्म्म के धन में विश्वासयोग्य न हुए हो तो सच्चा धन तुम्हें कौन सौंपेगा। और जो तुम पराये धन में विश्वासयोग्य १२ न हुए हो तो तुम्हारा धन तुम्हें कौन देगा। कोई सेवक दो स्वामियों की १३ सेवा नहीं कर सकता है क्योंकि वह एक से बैर करेगा और दूसरे को प्यार करेगा अथवा एक से लगा रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा. तुम ईश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते हो॥

फरीशियों ने भी जो लोभी थे यह १४ बातें सुनीं और उस का ठट्ठा किया उस ने उन्हों से कहा तुम तो मनुष्यों १५ के आगे अपने को धर्म्मी ठहराते हो

परन्तु ईश्वर तुम्हारे मन को जानता है . जो मनुष्यों के लेखे महान है सो ईश्वर
१६ के आगे घिनित है। व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता लोग योहन लों थे तब से ईश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाया जाता है और सब कोई उस में बरियाई
१७ से प्रवेश करते हैं। व्यवस्था के एक बिन्दु के लोप होने से आकाश औ
१८ पृथिवी का टल जाना सहज है। जो कोई अपनी स्त्री को त्यागके दूसरी से बिवाह करे सो परस्त्रीगमन करता है और जो स्त्री अपने स्वामी से त्यागी गई है उस से जो कोई बिवाह करे सो परस्त्रीगमन करता है॥

१९ एक धनवान मनुष्य था जो बैंजनी वस्त्र और मलमल पहिनता और प्रतिदिन
२० बिभव और सुख से रहता था। और इलियाजर नाम एक कंगाल उस की डेवढ़ी पर डाला गया था जो घावों से
२१ भरा हुआ था . और उन चूरचारों से जो धनवान की मेज से गिरते थे पेट भरने चाहता था और कुत्ते भी आके
२२ उस के घावों को चाटते थे। वह कंगाल मर गया और दूतों ने उस को इब्राहीम की गोद में पहुंचाया और वह धनवान भी मरा और गाड़ा गया।
२३ और परलोक में उस ने पीड़ा में पड़े हुए अपनी आंखें उठाईं और दूर से इब्राहीम को और उस की गोद में
२४ इलियाजर को देखा। तब वह पुकारके बोला हे पिता इब्राहीम मुझ पर दया करके इलियाजर को भेजिये कि अपनी उंगली का छोर पानी में डुबोके मेरी जीभ को ठंढी करे क्योंकि मैं
२५ इस ज्वाला में कलपता हूं। परन्तु इब्राहीम ने कहा हे पुत्र स्मरण कर कि तू अपने जीते जी अपनी सम्पत्ति पा चुका है और वैसा ही इलियाजर विपत्ति परन्तु अब वह शांति पाता है और तू कलपता है। और भी हमारे
२६ और तुम्हारे बीच में बड़ा अन्तर ठहराया गया है कि जो लोग इधर से उस पार तुम्हारे पास जाया चाहें सो नहीं जा सकें और न उधर के लोग
२७ इस पार हमारे पास आवें। उस ने कहा तब हे पिता मैं आप से बिन्ती करता हूं उसे मेरे पिता के घर भेजिये .
२८ क्योंकि मेरे पांच भाई हैं वह उन्हें साक्षी देवे ऐसा न हो कि वे भी इस पीड़ा
२९ के स्थान में आवें। इब्राहीम ने उस से कहा मूसा और भविष्यद्वक्ताओं के पुस्तक
३० उन के पास हैं वे उन की सुनें। वह बोला हे पिता इब्राहीम सो नहीं परन्तु यदि मृतकों में से कोई उन के पास
३१ जाय तो वे पश्चात्ताप करेंगे। उस ने उस से कहा जो वे मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की नहीं सुनते हैं तो यदि मृतकों में से कोई जी उठे तौभी नहीं मानेंगे॥

सत्रहवां पर्ब्ब।

१ यीशु ने शिष्यों से कहा ठोकरों का न लगना अन्होना है परन्तु हाय वह मनुष्य जिस के द्वारा से वे लगती हैं।
२ इन छोटों में से एक को ठोकर खिलाने से उस के लिये भला होता कि चक्की का पाट उस के गले में बांधा जाता और वह समुद्र में डाला जाता॥

३ अपने विषय में सचेत रहो . यदि तेरा भाई तेरा अपराध करे तो उस को समझा दे और यदि पछतावे तो उसे
४ क्षमा कर। जो वह दिन भर में सात बेर तेरा अपराध करे और सात बेर दिन भर में तेरी ओर फिरके कहे मैं
५ पछताता हूं तो उसे क्षमा कर। तब प्रेरितों ने प्रभु से कहा हमारा बिश्वास
६ बढ़ाइये। प्रभु ने कहा यदि तुम को

राई के एक दाने के तुल्य बिश्वास होता तो तुम इस गूलर के वृक्ष से जो कहते कि उखड़ जा और समुद्र में लग जा वह तुम्हारी आज्ञा मानता ॥

७ तुम में से कौन है कि उस का दास हल जोतता अथवा चरवाही करता हो और ज्यों ही वह खेत से आवे त्यों ही उस से कहेगा तुरन्त आ भोजन पर ८ बैठ । क्या वह उस से न कहेगा मेरी बियारी बनाके जब लों मैं खाऊं और पीऊं तब लों कमर बांधके मेरी सेवा कर और इस के पीछे तू खायगा और ९ पीयेगा । क्या उस दास का उस पर कुछ निहोरा हुआ कि उस ने वह काम किया जिस की आज्ञा उस को दिई १० गई . मैं ऐसा नहीं समझता हूं । इस रीति से तुम भी जब सब काम कर चुको जिस की आज्ञा तुम्हें दिई गई है तब कहो हम निकम्मे दास हैं कि जो हमें करना उचित था सोई भर किया है ॥

११ यीशु यिरूशलीम को जाते हुए शोमिरोन और गालील के बीच में से १२ होके जाता था । जब वह किसी गांव में प्रवेश करता था तब दस कोढ़ी उस १३ के सन्मुख आ दूर खड़े हुए । और वे ऊंचे शब्द से बोले हे यीशु गुरु हम पर १४ दया कीजिये । यह देखके उस ने उन्हों से कहा जाके अपने तईं याजकों को दिखाओ . जाते हुए वे शुद्ध किये गये १५ तब उन में से एक ने जब देखा कि मैं चंगा हुआ हूं बड़े शब्द से ईश्वर की १६ स्तुति करता हुआ फिर आया . और का धन्य मानते हुए उस के चरणों पर मुंह के बल गिरा . और वह शोमि-१७ रोनी था । इस पर यीशु ने कहा क्या दसों शुद्ध न किये गये तो नौ कहां हैं । १८ क्या इस अन्यदेशी को छोड़ कोई नहीं ठहरे जो ईश्वर की स्तुति करने को फिर आवे । १९ तब उस ने उस से कहा उठ चला जा तेरे बिश्वास ने तुझे बचाया ॥

२० जब फरीशियों ने उस से पूछा कि ईश्वर का राज्य कब आवेगा तब उस ने उन्हों को उत्तर दिया कि ईश्वर का राज्य प्रत्यक्ष रूप से नहीं आता है . २१ और न लोग कहेंगे देखो यहां है अथवा देखो वहां है क्योंकि देखो ईश्वर का राज्य तुम्हीं में है ॥

२२ उस ने शिष्यों से कहा वे दिन आवेंगे जिन में तुम मनुष्य के पुत्र के दिनों में से एक दिन देखने चाहोगे पर न देखोगे । २३ लोग तुम्हों से कहेंगे देखो यहां है अथवा देखो वहां है पर तुम मत जाओ और न उन के पीछे हो लेओ । २४ क्योंकि जैसे बिजली जो आकाश की एक ओर से चमकती है आकाश की दूसरी ओर तक ज्योति देती है वैसा ही मनुष्य का पुत्र भी अपने दिन में होगा । २५ परन्तु पहिले उस को अवश्य है कि बहुत दुःख उठावे और इस समय के लोगों से तुच्छ किया जाय । २६ जैसा नूह के दिनों में हुआ वैसा ही मनुष्य के पुत्र के दिनों में भी होगा । २७ जिस दिन लों नूह जहाज पर न चढ़ा उस दिन लों लोग खाते पीते बिवाह करते औ बिवाह दिये जाते थे . तब उस दिन जलप्रलय ने आके उन सभों को नाश किया । २८ और जिस रीति से लूत के दिनों में हुआ कि लोग खाते पीते मोल लेते बेचते बोते औ घर बनाते २९ थे . परन्तु जिस दिन लूत सदोम से निकला उस दिन आग और गन्धक आकाश से बरसी और उन सभों को नाश किया . ३० उसी रीति से मनुष्य के पुत्र के प्रगट होने के दिन में होगा । ३१ उस दिन में जो कोठे पर हो और उस की सामग्री घर में होय सो उसे लेने को न उतरे

और वैसे ही जो खेत में हो सो पीछे न ३२ फिरे। लूत की स्त्री को स्मरण करो। ३३ जो कोई अपना प्राण बचाने चाहे सो उसे खोवेगा और जो कोई उसे खोवे ३४ सो उस की रक्षा करेगा। मैं तुम से कहता हूं उस रात में दो मनुष्य एक खाट पर होंगे एक लिया जायगा और ३५ दूसरा छोड़ा जायगा। दो स्त्रियां एक संग चक्की पीसती रहेंगीं एक लिई ३६ जायगी और दूसरी छोड़ी जायगी। दो जन खेत में होंगे एक लिया जायगा ३७ और दूसरा छोड़ा जायगा। उन्हों ने उस को उत्तर दिया हे प्रभु कहां. उस ने उन से कहा जहां लोथ होय तहां गिद्ध एकट्ठे होंगे॥

अठारहवां पर्व्व।

१ नित्य प्रार्थना करने और साहस न छोड़ने की आवश्यकता के विषय में २ यीशु ने उन्हों से एक दृष्टान्त कहा. कि किसी नगर में एक बिचारकर्त्ता था जो न ईश्वर से डरता न मनुष्य को मानता ३ था। और उसी नगर में एक बिधवा थी जिस ने उस पास आ कहा मेरे ४ मुद्दई से मेरा पलटा लीजिये। उस ने कितनी बेर लों न माना परन्तु पीछे अपने मन में कहा यद्यपि मैं न ईश्वर से डरता न मनुष्य को मानता हूं. ५ तौभी यह बिधवा मुझे दुःख देती है इस कारण मैं उस का पलटा लेऊंगा ऐसा न हो कि नित्य नित्य आने से ६ वह मेरे मुंह में कालिख लगावे। तब प्रभु ने कहा सुनो यह अधर्म्मी बिचार-७ कर्त्ता क्या कहता है। और ईश्वर यद्यपि अपने चुने हुए लोगों के विषय में जो रात दिन उस पास पुकारते हैं धीरज धरे तौभी क्या वह उन का पलटा ८ न लेगा। मैं तुम से कहता हूं वह शीघ्र उन का पलटा लेगा तौभी मनुष्य का पुत्र जब आवेगा तब क्या पृथिवी पर बिश्वास पावेगा॥

९ और उस ने कितनों से जो अपने पर भरोसा रखते थे कि हम धर्म्मी हैं और औरों को तुच्छ जानते थे यह १० दृष्टान्त कहा। दो मनुष्य मन्दिर में प्रार्थना करने को गये एक फरीशी और ११ दूसरा कर उगाहनेहारा। फरीशी ने अलग खड़ा हो यह प्रार्थना किई कि हे ईश्वर मैं तेरा धन्य मानता हूं कि मैं और मनुष्यों के समान नहीं हूं जो उपद्रवी अन्यायी और परस्त्रीगामी हैं और न इस कर उगाहनेहारे के समान। १२ मैं अठवारे में दो बार उपवास करता हूं मैं अपनी सब कमाई का दसवां १३ अंश देता हूं। कर उगाहनेहारे ने दूर खड़ा हो स्वर्ग की ओर आंखें उठाने भी न चाहा परन्तु अपनी छाती पीटके कहा हे ईश्वर मुझ पापी पर दया १४ कर। मैं तुम से कहता हूं कि वह दूसरा नहीं पर यही मनुष्य धर्म्मी ठहराया हुआ अपने घर को गया क्योंकि जो कोई अपने को ऊंचा करे सो नीचा किया जायगा और जो अपने को नीचा करे सो ऊंचा किया जायगा॥

१५ लोग कितने बालकों को भी यीशु पास लाये कि वह उन्हें छूवे परन्तु १६ शिष्यों ने यह देखके उन्हें डांटा। यीशु ने बालकों को अपने पास बुलाके कहा बालकों को मेरे पास आने दो और उन्हें मत बर्जो क्योंकि ईश्वर का राज्य १७ ऐसों का है। मैं तुम से सच कहता हूं कि जो कोई ईश्वर के राज्य को बालक की नाईं ग्रहण न करे वह उस में प्रवेश करने न पावेगा॥

१८ किसी प्रधान ने उस से पूछा हे उत्तम गुरु कौन काम करने से मैं अनन्त जीवन का अधिकारी होंगा।

१९ यीशु ने उस से कहा तू मुझे उत्तम क्यों कहता है . कोई उत्तम नहीं है केवल २० एक अर्थात ईश्वर। तू आज्ञाओं को जानता है कि परस्त्रीगमन मत कर नरहिंसा मत कर चोरी मत कर झूठी साक्षी मत दे अपनी माता और अपने २१ पिता का आदर कर। उस ने कहा इन सभों को मैं ने अपने लड़कपन से २२ पालन किया है। यीशु ने यह सुनके उस से कहा तुझे अब भी एक बात की घटी है . जो कुछ तेरा है सो बेचके कंगालों को बांट दे और तू स्वर्ग में धन पावेगा और आ मेरे पीछे हो २३ ले। वह यह सुनके अति उदास हुआ क्योंकि वह बड़ा धनी था॥

२४ यीशु ने उसे अति उदास देखके कहा धनवानों को ईश्वर के राज्य में २५ प्रवेश करना कैसा कठिन होगा। ईश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के नाके में से जाना सहज २६ है। सुननेहारों ने कहा तब तो किस २७ का त्राण हो सकता है। उस ने कहा जो बातें मनुष्यों से अनहोनी हैं सो ईश्वर से हो सकती हैं॥

२८ पितर ने कहा देखिये हम लोग सब कुछ छोड़के आप के पीछे हो लिये २९ हैं। उस ने उन से कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि जिस ने ईश्वर के राज्य के लिये घर वा माता पिता वा भाइयों वा स्त्री वा लड़कों को त्यागा ३० हो . ऐसा कोई नहीं है जो इस समय में बहुत गुण अधिक और परलोक में अनन्त जीवन न पावेगा॥

३१ यीशु ने बारह शिष्यों को लेके उन से कहा देखो हम यिरूशलीम को जाते हैं और जो कुछ मनुष्य के पुत्र के विषय में भविष्यद्वक्ताओं से लिखा गया है सो ३२ सब पूरा किया जायगा। वह अन्यदेशियों के हाथ सौंपा जायगा और उस से ठट्ठा और अपमान किया जायगा और वे उस पर थूकेंगे . और उसे कोड़े ३३ मारके घात करेंगे और वह तीसरे दिन जी उठेगा। उन्हों ने इन बातों में से ३४ कोई बात न समझी और यह बात उन से गुप्त रही और जो कहा जाता था सो वे नहीं बूझते थे॥

३५ जब वह यिरीहो नगर के निकट आता था तब एक अन्धा मनुष्य मार्ग की ओर बैठा भीख मांगता था। जब ३६ उस ने सुना कि बहुत लोग साम्हे से जाते हैं तब पूछा यह क्या है। लोगों ३७ ने उस को बताया कि यीशु नासरी जाता है। तब उस ने पुकारके कहा ३८ हे यीशु दाऊद के सन्तान मुझ पर दया कीजिये। जो लोग आगे जाते थे उन्हों ३९ ने उसे डांटा कि वह चुप रहे परन्तु उस ने बहुत अधिक पुकारा हे दाऊद के सन्तान मुझ पर दया कीजिये। तब ४० यीशु खड़ा रहा और उसे अपने पास लाने की आज्ञा किई और जब वह निकट आया तब उस से पूछा . तू ४१ क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये करूं . वह बोला हे प्रभु मैं अपनी दृष्टि पाऊं। यीशु ने उस से कहा अपनी दृष्टि पा ४२ तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है। और वह तुरन्त देखने लगा और ईश्वर ४३ की स्तुति करता हुआ यीशु के पीछे हो लिया और सब लोगों ने देखके ईश्वर का धन्यवाद किया॥

उनीसवां पर्ब्ब।

१ यीशु यिरीहो में प्रवेश करके उस के बीच से होके जाता था। और देखो जक्कई २ नाम एक मनुष्य था जो कर उगाहनेहारों का प्रधान था और वह धनवान था। वह ३ यीशु को देखने चाहता था कि वह कैसा मनुष्य है परन्तु भीड़ के कारण नहीं सका

४ क्योंकि नाटा था। तब जिस मार्ग से यीशु आने पर था उस में वह आगे दौड़के उसे देखने को एक गूलर के ५ वृक्ष पर चढ़ा। जब यीशु उस स्थान पर पहुंचा तब ऊपर दृष्टि कर उसे देखा और उस से कहा हे जक्कई शीघ्र उतर आ क्योंकि आज मुझे तेरे घर में रहना ६ होगा। उस ने शीघ्र उतरके आनन्द ७ से उस की पहुनई किई। यह देखके सब लोग कुड़कुड़ाके बोले वह तो पापी मनुष्य के यहां पाहुन होने गया ८ है। जक्कई ने खड़ा हो प्रभु से कहा हे प्रभु देखिये मैं अपना आधा धन कंगालों को देता हूं और यदि झूठे दोष लगाके किसी से कुछ ले लिया है तो चौगुणा ९ फेर देता हूं। तब यीशु ने उस को कहा आज इस घराने का त्राण हुआ है इस लिये कि यह भी इब्राहीम का १० सन्तान है। क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोये हुए को ढूंढ़ने और बचाने आया है॥

११ जब लोग यह सुनते थे तब वह एक दृष्टान्त भी कहने लगा इस लिये कि वह यिरूशलीम के निकट था और वे समझते थे कि ईश्वर का राज्य तुरन्त १२ प्रगट होगा। उस ने कहा एक कुलीन मनुष्य दूर देश को जाता था कि राज- १३ पद पाके फिर आवे। और उस ने अपने दासों में से दस को बुलाके उन्हें दस मोहर देके उन से कहा जब लों मैं न १४ आऊं तब लों ब्योपार करो। परन्तु उस के नगर के निवासी उस से बैर रखते थे और उस के पीछे यह सन्देश भेजा कि हम नहीं चाहते हैं कि यह हमों १५ पर राज्य करे। जब वह राजपद पाके फिर आया तब उस ने उन दासों को जिन्हें रोकड़ दिई थी अपने पास बुलाने को आज्ञा किई जिस्तें वह जाने कि किस ने कौन सा ब्योपार किया है। तब पहिले ने आके कहा हे प्रभु आप १६ की मोहर से दस मोहर लाभ हुई। उस ने उस से कहा धन्य हे उत्तम दास १७ तू अति थोड़े में विश्वासयोग्य हुआ तू दस नगरों पर अधिकारी हो। दूसरे १८ ने आके कहा हे प्रभु आप की मोहर से पांच मोहर लाभ हुई। उस ने उस से १९ भी कहा तू भी पांच नगरों का प्रधान हो। तीसरे ने आके कहा हे प्रभु देखिये २० आप की मोहर जिसे मैं ने अंगोछे में धर रखा। क्योंकि मैं आप से डरता २१ था इस लिये कि आप कठोर मनुष्य हैं जो आप ने नहीं धरा सो उठा लेते हैं और जो आप ने नहीं बोया सो लवते हैं। उस ने उस से कहा हे दुष्ट दास २२ मैं तेरे ही मुंह से तुझे दोषी ठहराऊंगा. तू जानता था कि मैं कठोर मनुष्य हूं जो मैं ने नहीं धरा सो उठा लेता हूं और जो मैं ने नहीं बोया सो लवता हूं। तो तू ने मेरी रोकड़ कोठी में २३ क्यों नहीं दिई और मैं आके उसे ब्याज समेत ले लेता। तब जो लोग निकट २४ खड़े थे उस ने उन्हों से कहा वह मोहर उस से लेओ और जिस पास दस मोहर हैं उस को देओ। उन्हों ने उस से २५ कहा हे प्रभु उस पास दस मोहर हैं। मैं तुम से कहता हूं जो कोई रखता २६ है उस को और दिया जायगा परन्तु जो नहीं रखता है उस से जो कुछ उस पास है सो भी ले लिया जायगा। परन्तु मेरे उन बैरियों को जो नहीं २७ चाहते थे कि मैं उन्हों पर राज्य करूं यहां लाके मेरे साम्ने बध करो॥

जब यीशु यह बातें कह चुका तब २८ यिरूशलीम को जाते हुए आगे बढ़ा। और जब वह जैतून नाम पर्ब्बत के २९ निकट बैतफगी और बैथनिया गांवों पास पहुंचा तब उस ने अपने शिष्यों में

३० से दो को यह कहके भेजा . कि जो गांव सन्मुख है उस में जाओ और उस में प्रवेश करते हुए तुम एक गदही के बच्चे को जिस पर कभी कोई मनुष्य नहीं चढ़ा बंधे हुए पाओगे उसे खोलके ३१ लाओ । जो तुम से कोई पूछे तुम उसे क्यों खोलते हो तो उस से यूं कहो ३२ प्रभु को इस का प्रयोजन है । जो भेजे गये थे उन्हों ने जाके जैसा उस ने उन ३३ से कहा वैसा पाया । जब वे बच्चे को खोलते थे तब उस के स्वामियों ने उन से कहा तुम बच्चे को क्यों खोलते हो । ३४ उन्हों ने कहा प्रभु को इस का प्रयोजन ३५ है । सो वे बच्चे को यीशु पास लाये और अपने कपड़े उस पर डालके यीशु ३६ को बैठाया । ज्यों ज्यों वह आगे बढ़ा त्यों त्यों लोगों ने अपने अपने कपड़े ३७ मार्ग में बिछाये । जब वह निकट आया अर्थात जैतून पर्ब्बत के उतार लों पहुंचा तब शिष्यों की सारी मंडली आनन्दित हो सब आश्चर्य्य कर्म्मों के लिये जो उन्हों ने देखे थे बड़े शब्द से ३८ ईश्वर की स्तुति करने लगी . कि धन्य वह राजा जो परमेश्वर के नाम से आता है . स्वर्ग में शांति और सब से ३९ ऊंचे स्थान में गुणानुबाद होय । तब भीड़ में से कितने फरीशी लोग उस से बोले हे गुरु अपने शिष्यों को डांटिये । ४० उस ने उन्हें उत्तर दिया कि मैं तुम से कहता हूं जो ये लोग चुप रहें तो पत्थर पुकार उठेंगे ॥

४१ जब वह निकट आया तब नगर को ४२ देखके उस पर रोया . और कहा तू भी अपने कुशल की बातें हां अपने इस दिन में भी जो जानता . परन्तु अब वे तेरे ४३ नेत्रों से छिपी हैं । वे दिन तुझ पर आवेंगे कि तेरे शत्रु तुझ पर मोर्चा बांधेंगे और तुझे घेरेंगे और चारों ओर ४४ रोक रखेंगे . और तुझ को और तुझ में तेरे बालकों को मिट्टी में मिलावेंगे और तुझ में पत्थर पर पत्थर न छोड़ेंगे क्योंकि तू ने वह समय जिस में तुझ पर दृष्टि किई गई न जाना ॥

४५ तब वह मन्दिर में जाके जो लोग उस में बेचते औ मोल लेते थे उन्हें ४६ निकालने लगा . और उन से बोला लिखा है कि मेरा घर प्रार्थना का घर है . परन्तु तुम ने उसे डाकूओं का खोह बनाया है । ४७ वह मन्दिर में प्रतिदिन उपदेश करता था और प्रधान याजक और अध्यापक और लोगों के प्रधान उसे ४८ नाश करने चाहते थे . परन्तु नहीं जानते थे कि क्या करें क्योंकि सब लोग उस की सुनने को लौलीन थे ॥

बीसवां पर्ब्ब ।

१ उन दिनों में से एक दिन जब यीशु मन्दिर में लोगों को उपदेश देता और सुसमाचार सुनाता था तब प्रधान याजक और अध्यापक लोग प्राचीनों के संग २ निकट आये . और उस से बोले हम से कह तुझे ये काम करने का कैसा अधिकार है अथवा कौन है जिस ने तुझ ३ को यह अधिकार दिया । उस ने उन को उत्तर दिया कि मैं भी तुम से एक ४ बात पूछूंगा मुझे उत्तर देओ । योहन का बपतिसमा देना क्या स्वर्ग की अथवा मनुष्यों की ओर से हुआ । तब उन्हों ने आपस में बिचार किया कि जो हम कहें स्वर्ग की ओर से तो वह कहेगा फिर तुम ने उस का बिश्वास ६ क्यों नहीं किया । और जो हम कहें मनुष्यों की ओर से तो सब लोग हमें पत्थरवाह करेंगे क्योंकि वे निश्चय जानते हैं कि योहन भविष्यद्वक्ता था । ७ सो उन्हों ने उत्तर दिया कि हम नहीं ८ जानते वह कहां से हुआ । यीशु ने

उन से कहा तो मैं भी तुम को नहीं
बताता हूं कि मुझे ये काम करने का
कैसा अधिकार है ॥

९ तब वह लोगों से यह दृष्टान्त कहने
लगा कि किसी मनुष्य ने दाख की बारी
लगाई और मालियों को उस का ठीका
दे बहुत दिन लों परदेश को चला गया।
१० समय में उस ने मालियों के पास एक
दास को भेजा कि वे दाख की बारी
का कुछ फल उस को देवें परन्तु मालियों
ने उसे मारके छूछे हाथ फेर दिया।
११ फिर उस ने दूसरे दास को भेजा और
उन्हों ने उसे भी मारके और अपमान
१२ करके छूछे हाथ फेर दिया। फिर उस
ने तीसरे को भेजा और उन्हों ने उसे
१३ भी घायल करके निकाल दिया। तब
दाख की बारी के स्वामी ने कहा मैं
क्या करूं. मैं अपने प्रिय पुत्र को भेजूंगा
क्या जानें वे उसे देखके उस का आदर
१४ करेंगे। परन्तु माली लोग उसे देखके
आपस में बिचार करने लगे कि यह
तो अधिकारी है आओ हमें उसे मार
डालें कि अधिकार हमारा हो जाय।
१५ और उन्हों ने उसे दाख की बारी से
बाहर निकालके मार डाला. इस लिये
दाख की बारी का स्वामी उन्हों से
१६ क्या करेगा। वह आके इन मालियों
को नाश करेगा और दाख की बारी
दूसरों के हाथ देगा. यह सुनके उन्हों
१७ ने कहा ऐसा न होवे। उस ने उन्हों
पर दृष्टि कर कहा तो धर्म्मपुस्तक के
इस बचन का अर्थ क्या है कि जिस
पत्थर को थवइयों ने निकम्मा जाना
१८ वही कोने का सिरा हुआ है। जो
कोई उस पत्थर पर गिरेगा सो चूर
हो जायगा और जिस किसी पर वह
१९ गिरेगा उस को पीस डालेगा। प्रधान
याजकों और अध्यापकों ने उसी घड़ी
उस पर हाथ बढ़ाने चाहा क्योंकि
जानते थे कि उस ने हमारे बिरुद्ध यह
दृष्टान्त कहा परन्तु वे लोगों से डरे ॥

तब उन्हों ने दांव ताकके भेदियों २०
को भेजा जो छल से अपने को धर्म्मी
दिखावें इस लिये कि उस का बचन
पकड़ें और उसे देशाध्यक्ष के न्याय और
अधिकार में सौंप देवें। उन्हों ने उस २१
से पूछा कि हे गुरु हम जानते हैं कि
आप यथार्थ कहते और सिखाते हैं और
पक्षपात नहीं करते हैं परन्तु ईश्वर का
मार्ग सत्यता से बताते हैं। क्या कैसर २२
को कर देना हमें उचित है अथवा
नहीं। उस ने उन की चतुराई बूझके २३
उन से कहा मेरी परीक्षा क्यों करते
हो। एक सूकी मुझे दिखाओ. इस २४
पर किस की मूर्त्ति और छाप है. उन्हों
ने उत्तर दिया कैसर की। उस ने उन २५
से कहा तो जो कैसर का है सो कैसर
को देओ और जो ईश्वर का है सो
ईश्वर को देओ। वे लोगों के साम्ने २६
उस की बात पकड़ न सके और उस
के उत्तर से अचंभित हो चुप रहे ॥

सदूकी लोग भी जो कहते हैं कि २७
मृतकों का जी उठना नहीं होगा उन्हों
में से कितने उस पास आये और उस
से पूछा. कि हे गुरु मूसा ने हमारे २८
लिये लिखा कि यदि किसी का भाई
अपनी स्त्री के रहते हुए निःसन्तान मर
जाय तो उस का भाई उस स्त्री से
बिवाह करे और अपने भाई के लिये
बंश खड़ा करे। सो सात भाई थे. २९
पहिला भाई बिवाह कर निःसन्तान
मर गया। तब दूसरे भाई ने उस स्त्री ३०
से बिवाह किया और वह भी निःसन्तान
मर गया। तब तीसरे ने उस से बिवाह ३१
किया और वैसाही सातों भाइयों ने,
पर वे सब निःसन्तान मर गये। सब ३२

३३ के पीछे स्त्री भी मर गई । सो मृतकों के जी उठने पर वह उन में से किस की स्त्री होगी क्योंकि सातों ने उस से
३४ बिवाह किया । यीशु ने उन को उत्तर दिया कि इस लोक के सन्तान बिवाह
३५ करते और बिवाह दिये जाते हैं । परन्तु जो लोग उस लोक में पहुंचने और मृतकों में से जी उठने के योग्य गिने जाते वे न बिवाह करते न बिवाह
३६ दिये जाते हैं । और न वे फिर मर सकते हैं क्योंकि वे स्वर्गदूतों के समान हैं और जी उठने के सन्तान होने से
३७ ईश्वर के सन्तान हैं । और मृतक लोग जो जी उठते हैं यह बात मूसा ने भी झाड़ी की कथा में प्रगट किई है कि वह परमेश्वर को इब्राहीम का ईश्वर और इसहाक का ईश्वर और याकूब का
३८ ईश्वर कहता है । ईश्वर मृतकों का नहीं परन्तु जीवतों का ईश्वर है क्योंकि
३९ उस के लिये सब जीते हैं । अध्यापकों में से कितनों ने उत्तर दिया कि हे गुरु
४० आप ने अच्छा कहा है। और उन्हें फिर उस से कुछ पूछने का साहस न हुआ ॥

४१ तब उस ने उन से कहा लोग क्योंकर कहते हैं कि खीष्ट दाऊद का पुत्र
४२ है । दाऊद आप ही गीतों के पुस्तक में कहता है कि परमेश्वर ने मेरे प्रभु
४३ से कहा . जब लों मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की पीढ़ी न बनाऊं तब लों
४४ तू मेरी दहिनी ओर बैठ । दाऊद तो उसे प्रभु कहता है फिर वह उस का पुत्र क्योंकर है ॥

४५ जब सब लोग सुनते थे तब उस ने
४६ अपने शिष्यों से कहा . अध्यापकों से चौकस रहो जो लंबे बस्त्र पहिने हुए फिरने चाहते हैं और जिन को बाजारों में नमस्कार और सभा के घरों में ऊंचे आसन और जेवनारों में ऊंचे स्थान प्रिय लगते हैं । वे बिधवाओं के घर खा
४७ जाते हैं और बहाना के लिये बड़ी बेर लों प्रार्थना करते हैं . वे अधिक दंड पावेंगे ॥

एकईसवां पर्ब्ब

१ यीशु ने आंख उठाके धनवानों को अपने अपने दान भंडार में डालते देखा ।
२ और उस ने एक कंगाल बिधवा को भी उस में दो छदाम डालते देखा । तब
३ उस ने कहा मैं तुम से सच कहता हूं कि इस कंगाल बिधवा ने सभों से अधिक डाला है । क्योंकि इन सभों ने
४ अपनी बढ़ती में से ईश्वर को चढ़ाई हुई बस्तुओं में कुछ कुछ डाला है परन्तु इस ने अपनी घटती में से अपनी सारी जीविका डाली है ॥

५ जब कितने लोग मन्दिर के विषय में बोलते थे कि वह सुन्दर पत्थरों से और चढ़ाई हुई बस्तुओं से संवारा गया
६ है तब उस ने कहा . यह सब जो तुम देखते हो वे दिन आवेंगे जिन्हों में पत्थर पर पत्थर भी न छोड़ा जायगा जो गिराया न जायगा ॥

७ उन्हों ने उस से पूछा हे गुरु यह कब होगा और यह बातें जिस समय में हो जायेंगीं उस समय का क्या चिन्ह
८ होगा । उस ने कहा चौकस रहो कि भरमाये न जाओ क्योंकि बहुत लोग मेरे नाम से आके कहेंगे मैं वही हूं और समय निकट आया है . सो तुम उन के पीछे
९ मत जाओ । जब तुम लड़ाइयां और हुल्लड़ों की चर्चा सुनो तब मत घबराओ क्योंकि इन का पहिले होना अवश्य है
१० पर अन्त तुरन्त नहीं होगा । तब उस ने उन्हों से कहा देश देश के और राज्य राज्य के बिरुद्ध उठेंगे । और अनेक
११ स्थानों में बड़े भुईंडोल और अकाल और मरियां होंगीं और भयंकर लक्षण और

आकाश से बड़े बड़े चिन्ह प्रगट होंगे ॥

१२ परन्तु इन सभों के पहिले लोग तुम पर अपने हाथ बढ़ावेंगे और तुम्हें सतावेंगे और मेरे नाम के कारण सभा के घरों और बन्दीगृहों में रखवावेंगे और राजाओं और अध्यक्षों के आगे ले जावेंगे । १३ पर इस से तुम्हारे लिये साक्षी हो जायगी । १४ सो अपने अपने मन में ठहरा रखो कि हम उत्तर देने के लिये आगे से चिन्ता न करेंगे । १५ क्योंकि मैं तुम्हें ऐसा बचन और ज्ञान देऊंगा कि तुम्हारे सब बिरोधी उस का खंडन अथवा साम्हना नहीं कर सकेंगे । १६ तुम्हारे माता पिता और भाई और कुटुंब और मित्र लोग तुम्हें पकड़वा-येंगे और तुम में से कितनों को घात करवायेंगे । १७ और मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे । १८ परन्तु तुम्हारे सिर का एक बाल भी नष्ट न होगा । १९ अपनी धीरता से अपने प्राणों की रक्षा करो ॥

२० जब तुम यिरूशलीम को सेनाओं से घेरे हुए देखो तब जानो कि उस का उजड़ जाना निकट आया है । २१ तब जो यिहूदिया में हों सो पहाड़ों पर भागें । जो यिरूशलीम के बीच में हों सो निकल जावें और जो गांवों में हों सो उस में प्रवेश न करें । २२ क्योंकि येही दंड देने के दिन होंगे कि धर्म्मपुस्तक की सब बातें पूरी होवें । २३ उन दिनों में हाय हाय गर्भवतियां और दूध पिलानेवालियां क्योंकि देश में बड़ा क्लेश और इन लोगों पर क्रोध होगा । २४ वे खड्ग की धार से मारे पड़ेंगे और सब देशों के लोगों में बंधुवे किये जायेंगे और जब लों अन्य-देशियों का समय पूरा न होवे तब लों यिरूशलीम अन्यदेशियों से रौंदा जायगा ॥

२५ सूर्य्य और चांद और तारों में चिन्ह दिखाई देंगे और पृथिवी पर देश देशके लोगों को संकट औ घबराहट होगी और समुद्र औ लहरों का गर्जना होगा । २६ और संसार पर आनेहारी बातों के भय से और बाट देखने से मनुष्य मृतक के ऐसे हो जायेंगे क्योंकि आकाश की सेना डिग जायगी । २७ तब वे मनुष्य के पुत्र को पराक्रम और बड़े ऐश्वर्य्य से मेघ पर आते देखेंगे । २८ जब इन बातों का आरंभ होगा तब तुम सीधे होके अपने सिर उठाओ क्योंकि तुम्हारा उद्धार निकट आता है ॥

२९ उस ने उन्हों से एक दृष्टान्त भी कहा कि गूलर का वृक्ष और सब वृक्षों को देखो । ३० जब उन की कोंपलें निकलती हैं तब तुम देखकर आप ही जानते हो कि धूपकाला अब निकट है । ३१ इस रीति से जब तुम यह बातें होते देखो तब जानो कि ईश्वर का राज्य निकट है । ३२ मैं तुम से सच कहता हूं कि जब लों सब बातें पूरी न हो जायें तब लों इस समय के लोग नहीं जाते रहेंगे । ३३ आकाश और पृथिवी टल जायेंगे परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी ॥

३४ अपने विषय में सचेत रहो ऐसा न हो कि तुम्हारे मन अफराई और मत-वालपन और सांसारिक चिन्ताओं से भारी हो जावें और वह दिन तुम पर अचांचक आ पहुंचे । ३५ क्योंकि वह फंदे की नाईं सारी पृथिवी के सब रहनेहारों पर आवेगा । ३६ इस लिये जागते रहो और नित्य प्रार्थना करो कि तुम इन सब आनेहारी बातों से बचने के और मनुष्य के पुत्र के सन्मुख खड़े होने के योग्य गिने जाओ ॥

३७ यीशु दिन को मन्दिर में उपदेश करता था और रात को बाहर जाके

जैतून नाम पर्ब्बत पर टिकता था। ३८ और तड़के सब लोग उस की सुनने को मन्दिर में उस पास आते थे॥

बाईसवां पर्ब्ब।

१ अखमीरी रोटी का पर्ब्ब जो निस्तार २ पर्ब्ब कहावता है निकट आया। और प्रधान याजक और अध्यापक लोग खोज करते थे कि यीशु को क्योंकर मार डालें क्योंकि वे लोगों से डरते थे॥

३ तब शैतान ने यिहूदा में जो इस्करियोती कहावता है और बारह शिष्यों ४ में गिना जाता था प्रवेश किया। उस ने जाके प्रधान याजकों और पहरुओं के अध्यक्षों के संग बातचीत किई कि यीशु को क्योंकर उन्हों के हाथ पकड़- ५ वावे। वे आनन्दित हुए और रुपैये ६ देने को उस से नियम बांधा। वह अंगीकार करके उसे बिना हुल्लड़ के उन्हों के हाथ पकड़वाने का अवसर ढूंढ़ने लगा॥

७ तब अखमीरी रोटी के पर्ब्ब का दिन जिस में निस्तार पर्ब्ब का मेम्ना ८ मारना उचित था आ पहुंचा। और यीशु ने पितर और योहन को यह कहके भेजा कि जाके हमारे लिये निस्तार पर्ब्ब का भोजन बनाओ कि हम खायें। ९ वे उस से बोले आप कहां चाहते हैं १० कि हम बनावें। उस ने उन से कहा देखो जब तुम नगर में प्रवेश करो तब एक मनुष्य जल का घड़ा उठाये हुए तुम्हें मिलेगा, जिस घर में वह पैठे तुम उस के पीछे उस घर में जाओ। ११ और उस घर के स्वामी से कहो गुरु तुझ से कहता है कि पाहुनशाला कहां है जिस में मैं अपने शिष्यों के संग १२ निस्तार पर्ब्ब का भोजन खाऊं। वह तुम्हें एक सजी हुई बड़ी उपरौठी कोठरी दिखावेगा वहां तैयार करो। १३ उन्हों ने जाके जैसा उस ने उन्हों से कहा तैसा पाया और निस्तार पर्ब्ब का भोजन बनाया॥

१४ जब वह घड़ी पहुंची तब यीशु और बारहों प्रेरित उस के संग भोजन पर १५ बैठे। और उस ने उन से कहा मैं ने यह निस्तार पर्ब्ब का भोजन दुःख भोगने के पहिले तुम्हारे संग खाने की १६ बड़ी लालसा किई। क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि जब लों वह ईश्वर के राज्य में पूरा न होवे तब लों मैं उसे १७ फिर कभी न खाऊंगा। तब उस ने कटोरा ले धन्य मानके कहा इस को १८ लेओ और आपस में बांटो। क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि जब लों ईश्वर का राज्य न आवे तब लों मैं दाख रस कभी न पीऊंगा॥

१९ फिर उस ने रोटी लेके धन्य माना और उसे तोड़के उन को दिया और कहा यह मेरा देह है जो तुम्हारे लिये दिया जाता है, मेरे स्मरण के लिये २० यह किया करो। इसी रीति से उस ने बियारी के पीछे कटोरा भी देके कहा यह कटोरा मेरे लोहू पर जो तुम्हारे लिये बहाया जाता है नया नियम है॥

२१ परन्तु देखो मेरे पकड़वानेहारे का २२ हाथ मेरे संग मेज पर है। मनुष्य का पुत्र जैसा ठहराया गया है वैसा ही जाता है परन्तु हाय वह मनुष्य जिस २३ से वह पकड़वाया जाता है। तब वे आपस में बिचार करने लगे कि हम में से कौन है जो यह काम करेगा॥

२४ उन्हों में यह बिवाद भी हुआ कि उन में से कौन बड़ा समझा जाय। २५ यीशु ने उन से कहा अन्यदेशियों के राजा उन्हों पर प्रभुता करते हैं और उन्हों के अधिकारी लोग परोपकारी २६ कहावते हैं। परन्तु तुम ऐसे न होओ

पर जो तुम्हों में बड़ा है सो छोटे की नाईं होवे और जो प्रधान है सो सेवक
२७ की नाईं होवे। कौन बड़ा है भोजन पर बैठनेहारा अथवा सेवक, क्या भोजन पर बैठनेहारा बड़ा नहीं है, परन्तु मैं तुम्हारे बीच में सेवक की नाईं हूं।
२८ तुम ही हो जो मेरी परीक्षाओं में मेरे
२९ संग रहे हो। और जैसे मेरे पिता ने मेरे लिये राज्य ठहराया है तैसा मैं
३० तुम्हारे लिये ठहराता हूं, कि तुम मेरे राज्य में मेरी मेज पर खाओ और पीओ और सिंहासनों पर बैठके इस्रायेल के बारह कुलों का न्याय करो॥

३१ और प्रभु ने कहा हे शिमोन हे शिमोन देख शैतान ने तुम्हें मांग लिया है इस लिये कि गेहूं की नाईं तुम्हें
३२ फटके। परन्तु मैं ने तेरे लिये प्रार्थना किई है कि तेरा विश्वास घट न जाय और जब तू फिरे तब अपने भाइयों को
३३ स्थिर कर। उस ने उस से कहा हे प्रभु मैं आप के संग बंदीगृह में जाने को और मरने को तैयार हूं। उस ने कहा हे पितर मैं तुझ से कहता हूं कि आज ही जब लों तू तीन बार मुझे नकारके न कहे कि मैं उसे नहीं जानता हूं तब लों मुर्ग न बोलेगा॥

३५ और उस ने उन से कहा जब मैं ने तुम्हें बिन थैली औ बिन झोली औ बिन जूते भेजा तब क्या तुम को किसी वस्तु की घटी हुई, वे बोले किसू की
३६ नहीं। उस ने उन से कहा परन्तु अब जिस पास थैली हो सो उसे ले ले और वैसे ही झोली भी और जिस पास खड्ग न होय सो अपना वस्त्र बेचके एक
३७ को मोल लेवे। क्योंकि मैं तुम से कहता हूं अवश्य है कि धर्म्मपुस्तक का यह वचन भी कि वह कुकर्म्मियों के संग गिना गया मुझ पर पूरा किया जाय क्योंकि मेरे विषय में की बातें सम्पूर्ण होने पर हैं। तब वे बोले हे
३८ प्रभु देखिये यहां दो खड्ग हैं, उस ने उन से कहा बहुत है॥

३९ तब यीशु बाहर निकलके अपनी रीति के अनुसार जैतून पर्ब्बत पर गया और उस के शिष्य भी उस के पीछे हो लिये। उस स्थान में पहुंचके उस ने
४० उन से कहा प्रार्थना करो कि तुम परीक्षा में न पड़ो। और वह आप
४१ ढेला फेंकने के टप्पे भर उन से अलग गया और घुटने टेकके प्रार्थना किई, कि हे पिता जो तेरी इच्छा होय तो
४२ इस कटोरे को मेरे पास से टाल दे तौभी मेरी नहीं पर तेरी इच्छा पूरी हो जाय। तब एक दूत उसे सामर्थ्य देने को स्वर्ग
४३ से उस को दिखाई दिया। और उस
४४ ने बड़े संकट में होके अधिक दृढ़ता से प्रार्थना किई और उस का पसीना ऐसा हुआ जैसे लोहू के थक्के जो भूमि पर गिरें। तब वह प्रार्थना से उठा और
४५ अपने शिष्यों के पास आ उन्हें शोक के मारे सोते पाया, और उन से कहा
४६ क्यों सोते हो उठो प्रार्थना करो कि तुम परीक्षा में न पड़ो॥

४७ वह बोलता ही था कि देखो बहुत लोग आये और बारह शिष्यों में से एक शिष्य जिस का नाम यिहूदा था उन के आगे आगे चलता था और यीशु का चूमा लेने को उस पास आया। यीशु
४८ ने उस से कहा हे यिहूदा क्या तू मनुष्य के पुत्र को चूमा लेके पकड़वाता है। यीशु के संगियों ने जब देखा कि क्या
४९ होनेवाला है तब उस से कहा हे प्रभु, क्या हम खड्ग से मारें। और उन में से
५० एक ने महायाजक के दास को मारा और उस का दहिना कान उड़ा दिया। इस पर यीशु ने कहा यहां तक रहने
५१

दो . और उस दास का कान छूके उसे
५२ चंगा किया । तब यीशु ने प्रधान याजकों
और मन्दिर के पहरुओं के अध्यक्षों और
प्राचीनों से जो उस पास आये थे कहा
क्या तुम जैसे डाकू पर खड्ग और लाठियां
५३ लेके निकले हो । जब मैं मन्दिर में
प्रतिदिन तुम्हारे संग था तब तुम्हों ने
मुझ पर हाथ न बढ़ाये परन्तु यही
तुम्हारी घड़ी और अंधकार का परा-
क्रम है ॥

५४ वे उसे पकड़के ले चले और महा-
याजक के घर में लाये और पितर दूर
५५ दूर उस के पीछे हो लिया । जब वे
अंगने में आग सुलगाके एकट्ठे बैठे तब
पितर उन्हों के बीच में बैठ गया ।
५६ और एक दासी उसे आग के पास बैठे
देखके उस की ओर ताकके बोली
५७ यह भी उस के संग था । उस ने उसे
नकारके कहा हे नारी मैं उसे नहीं
५८ जानता हूं । थोड़ी बेर पीछे दूसरे ने
उसे देखके कहा तू भी उन में से एक
है . पितर ने कहा हे मनुष्य मैं नहीं
५९ हूं । घड़ी एक बीते दूसरे ने दृढ़ता से
कहा यह भी सचमुच उस के संग था
६० क्योंकि यह गालीली भी है । पितर ने
कहा हे मनुष्य मैं नहीं जानता तू क्या
कहता है . और तुरन्त ज्यों वह कह
६१ रहा त्यों मुर्ग बोला । तब प्रभु ने मुंह
फेरके पितर पर दृष्टि किई और पितर
ने प्रभु का बचन स्मरण किया कि उस
ने उस से कहा था मुर्ग के बोलने से
आगे तू तीन बार मुझ से मुकरेगा ।
६२ तब पितर बाहर निकलके बिलक
बिलक रोया ॥

६३ जो मनुष्य यीशु को धरे हुए थे वे
६४ उसे मारके ठट्ठा करने लगे . और उस
की आंखें ढांपके उस के मुंह पर थपेड़े
मारके उस से पूछा कि भविष्यद्वाणी
बोल किस ने तुझे मारा । और उन्हों ६५
ने बहुत सी और निन्दा की बातें उस
के बिरुद्ध में कहीं । ज्योंही बिहान ६६
हुआ त्योंही लोगों के प्राचीन और
प्रधान याजक और अध्यापक लोग एकट्ठे
हुए और उसे अपनी न्यायसभा में लाये
और बोले जो तू खीष्ट है तो हम से
कह । उस ने उन से कहा जो मैं तुम ६७
से कहूं तो तुम प्रतीति नहीं करोगे ।
और जो मैं कुछ पूछूं तो तुम न उत्तर ६८
देओगे न मुझे छोड़ोगे । अब से मनुष्य ६९
का पुत्र सर्व्वशक्तिमान ईश्वर की दहिनी
ओर बैठेगा । सभों ने कहा तो क्या तू ७०
ईश्वर का पुत्र है . उस ने उन्हों से
कहा तुम तो कहते हो कि मैं हूं ।
तब उन्हों ने कहा अब हमें साक्षी का ७१
और क्या प्रयोजन क्योंकि हम ने आप ही
उस के मुख से सुना है ॥

तेईसवां पर्व्व ।

तब सारा समाज उठके यीशु को १
पिलात के पास ले गया . और उस पर २
यह कहके दोष लगाने लगा कि हम ने
यही पाया है कि यह मनुष्य लोगों को
बहकाता है और अपने को खीष्ट राजा
कहके कैसर को कर देना बर्जता है ।
पिलात ने उस से पूछा क्या तू यिहूदियों ३
का राजा है . उस ने उस को उत्तर
दिया कि आप ही तो कहते हैं । तब ४
पिलात ने प्रधान याजकों और लोगों
से कहा मैं इस मनुष्य में कुछ दोष
नहीं पाता हूं । परन्तु उन्हों ने अधिक ५
दृढ़ताई से कहा वह गालील से लेके
यहां लों सारे यिहूदिया में उपदेश करके
लोगों को उसकाता है ॥

पिलात ने गालील का नाम सुनके ६
पूछा क्या यह मनुष्य गालीली है । जब ७
उस ने जाना कि वह हेरोद के राज्य
में का है तब उसे हेरोद के पास भेजा

कि वह भी उन दिनों में यिरूशलीम में था। ८ हेरोद यीशु को देखके अति आनन्दित हुआ क्योंकि वह बहुत दिन से उस को देखने चाहता था इस लिये कि उस के विषय में बहुत बातें सुनी थीं और उस का कुछ आश्चर्य्य कर्म्म देखने की उस को आशा हुई। ९ उस ने उस से बहुत बातें पूछीं परन्तु उस ने उस को कुछ उत्तर न दिया। १० और प्रधान याजकों और अध्यापकों ने खड़े हुए बड़ी धुन से उस पर दोष लगाये। ११ तब हेरोद ने अपनी सेना के संग उसे तुच्छ जानके ठट्ठा किया और भड़कीला बस्त्र पहिराके उसे पिलात के पास फेर भेजा। १२ उसी दिन पिलात और हेरोद जिन्हों के बीच में आगे से शत्रुता थी आपस में मित्र हो गये॥

१३ पिलात ने प्रधान याजकों और अध्यक्षों और लोगों को एकट्ठे बुलाके १४ उन्हों से कहा, तुम इस मनुष्य को लोगों का बहकानेहारा कहके मेरे पास लाये हो और देखो मैं ने तुम्हारे साम्हने बिचार किया है परन्तु जिन बातों में तुम इस मनुष्य पर दोष लगाते हो उन बातों के विषय में मैं ने उस में कुछ १५ दोष नहीं पाया है। न हेरोद ने पाया है क्योंकि मैं ने तुम्हें उस पास भेजा और देखो बध के योग्य कोई काम उस १६ से नहीं किया गया है। सो मैं उसे १७ कोड़े मारके छोड़ देऊंगा। पिलात को अवश्य भी था कि उस पर्व्व में एक मनुष्य को लोगों के लिये छोड़ देवे। १८ तब लोग सब मिलके चिल्लाये कि इस को ले जाइये और हमारे लिये बरब्बा १९ को छोड़ दीजिये। यही बरब्बा किसी बलवे के कारण जो नगर में हुआ था और नरहिंसा के कारण बन्दीगृह में २० डाला गया था। पिलात यीशु को छोड़ने की इच्छा कर लोगों से फिर बोला। २१ परन्तु उन्हों ने पुकारा कि उसे क्रूश पर चढ़ाइये क्रूश पर चढ़ाइये। २२ उस ने तीसरी बेर उन से कहा क्यों उस ने कौन सी बुराई किई है, मैं ने उस में बध के योग्य कोई दोष नहीं पाया है इस लिये मैं उसे कोड़े मारके छोड़ देऊंगा। २३ परन्तु वे ऊंचे ऊंचे शब्द से हठ करके मांगने लगे कि वह क्रूश पर चढ़ाया जाय और उन्हों के और प्रधान याजकों के शब्द प्रबल ठहरे। २४ सो पिलात ने आज्ञा दिई कि उन की बिन्ती के अनुसार किया जाय। २५ और उस ने उस मनुष्य को जो बलवे और नरहिंसा के कारण बन्दीगृह में डाला गया था जिसे वे मांगते थे उन के लिये छोड़ दिया और यीशु को उन की इच्छा पर सौंप दिया। २६ जब वे उसे ले जाते थे तब उन्हों ने शिमोन नाम कुरीनी देश के एक मनुष्य को जो गांव से आता था पकड़के उस पर क्रूश धर दिया कि उसे यीशु के पीछे ले चले॥

२७ लोगों की बड़ी भीड़ उस के पीछे हो लिई और बहुतेरी स्त्रियां भी जो उस के लिये छाती पीटतीं और बिलाप करती थीं। २८ यीशु ने उन्हों की ओर फिरके कहा हे यिरूशलीम की पुत्रियो मेरे लिये मत रोओ परन्तु अपने लिये और अपने बालकों के लिये रोओ। २९ क्योंकि देखो वे दिन आते हैं जिन्हों में लोग कहेंगे धन्य वे स्त्रियां जो बांझ हैं और वे गर्भ जिन्हों ने लड़के न जन्माये और वे स्तन जिन्हों ने दूध न पिलाया है। ३० तब वे पर्व्वतों से कहने लगेंगे कि हमों पर गिरो और टीलों से कि हमें ढांपो। ३१ क्योंकि जो वे हरे पेड़ से यह करते हैं तो सूखे से क्या किया जायगा। ३२ वे और दो मनुष्यों को

भी दो कुकर्म्मी थे यीशु के संग घात करने को ले चले ।

३३ जब वे उस स्थान पर जो खोपड़ी कहावता है पहुंचे तब उन्हों ने वहां उस को और उन कुकर्म्मियों को एक को दहिनी ओर और दूसरे को बाईं ३४ ओर क्रूशों पर चढ़ाया । तब यीशु ने कहा हे पिता उन्हें क्षमा कर क्योंकि वे नहीं जानते क्या करते हैं . और उन्हों ने चिट्ठियां डालके उस के कपड़े बांट लिये ॥

३५ लोग खड़े हुए देखते रहे और अध्यक्षों ने भी उन के संग ठट्ठा कर कहा उस ने औरों को बचाया जो वह ईश्वर का चुना हुआ जन ख्रीष्ट है तो ३६ अपने को बचावे । योद्धाओं ने भी उस से ठट्ठा करने को निकट आके उसे ३७ सिरका दिया . और कहा जो तू यिहूदियों का राजा है तो अपने को बचा । ३८ और उस के ऊपर में एक पत्र भी था जो यूनानीय औ रोमीय औ इब्रीय अक्षरों में लिखा हुआ था कि यह यिहूदियों का राजा है ॥

३९ जो कुकर्म्मी लटकाये गये थे उन में से एक ने उस की निन्दा कर कहा जो तू ख्रीष्ट है तो अपने को और हमों को ४० बचा । इस पर दूसरे ने उसे डांटके कहा क्या तू ईश्वर से कुछ डरता भी नहीं . तुझ पर तो वैसा ही दंड दिया ४१ जाता है । और हमों पर न्याय की रीति से दिया जाता क्योंकि हम अपने कर्म्मों के योग्य फल भोगते हैं परन्तु इस ने कोई अनुचित काम नहीं किया ४२ है । तब उस ने यीशु से कहा हे प्रभु जब आप अपने राज्य में आवें तब मेरी ४३ सुध लीजिये । यीशु ने उस से कहा मैं तुझ से सच कहता हूं कि आज ही तू मेरे संग स्वर्गलोक में होगा ॥

तब दो पहर के निकट हुआ तब ४४ सारे देश में तीसरे पहर लों अंधकार हो गया । सूर्य्य अंधियारा हो गया और ४५ मन्दिर का परदा बीच से फट गया । और यीशु ने बड़े शब्द से पुकारके कहा ४६ हे पिता मैं अपना आत्मा तेरे हाथ में सौंपता हूं और यह कहके प्राण त्यागा । जो हुआ था सो देखके शतपति ने ४७ ईश्वर का गुणानुवाद कर कहा निश्चय यह मनुष्य धर्म्मी था । और सब लोग ४८ जो यह देखने को एकट्ठे हुए थे जो कुछ हुआ था सो देखके अपनी अपनी छाती पीटते हुए फिर गये । और यीशु ४९ के सब चिन्हार और वे स्त्रियां जो गालील से उस के संग आई थीं दूर खड़े हो यह सब देखते रहे ॥

और देखो यूसफ नाम यिहूदियों के ५० अरिमथिया नगर का एक मनुष्य था जो मन्त्री था और उत्तम और धर्म्मी पुरुष होके दूसरे मन्त्रियों के बिचार और काम में नहीं मिला था । और वह आप ५१ भी ईश्वर के राज्य की बाट जोहता था । उस ने पिलात के पास जाके यीशु ५२ की लोथ मांग लिई । तब उस ने उसे ५३ उतारके चद्दर में लपेटा और एक कबर में रखा जो पत्थर में खोदी हुई थी जिस में कोई कभी नहीं रखा गया था । वह दिन तैयारी का दिन था और ५४ विश्रामवार समीप था । वे स्त्रियां भी ५५ जो गालील से उस के संग आई थीं पीछे हो लिईं और कबर को और उस की लोथ क्योंकर रखी गई उस को देख लिया । और उन्हों ने लौटके सुगन्ध ५६ द्रव्य और सुगन्ध तेल तैयार किया और आज्ञा के अनुसार विश्राम के दिन में विश्राम किया ॥

चौबीसवां पर्ब्ब ।

तब अठवारे के पहिले दिन बड़े १

भोर ये स्त्रियां और उन के संग कई
एक और स्त्रियां वह सुगन्ध जो उन्हों
ने तैयार किया था लेके कबर पर आईं ।
२ परन्तु उन्हों ने पत्थर को कबर के
३ साम्हने से लुढ़काया हुआ पाया . और
भीतर जाके प्रभु यीशु की लोथ न पाई ।
४ जब वे इस बात के विषय में दुबधा
कर रहीं तब देखो दो पुरुष चमकते
वस्त्र पहिने हुए उन के निकट खड़े
५ हो गये । जब वे डर गईं और धरती
की ओर मुंह झुकाये रहीं तब वे उन
से बोले तुम जीवते को मृतकों के बीच
६ में क्यों ढूंढ़ती हो । वह यहां नहीं है
परन्तु जी उठा है . स्मरण करो कि
उस ने गालील में रहते हुए तुम
७ कहा . अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र
पापी लोगों के हाथ में पकड़वाया जाय
और क्रूश पर घात किया जाय और
८ तीसरे दिन जी उठे । तब उन्हों ने
९ उस की बातों को स्मरण किया । और
कबर से लौटके उन्हों ने ग्यारह शिष्यों
को और और सभों को यह सब बातें
१० सुनाईं । मरियम मगदलीनी और योहाना
और याकूब की माता मरियम और उन
के संग की और स्त्रियां थीं जिन्हों ने
११ प्रेरितों से यह बातें कहीं । परन्तु उन
की बातें उन्हों के आगे कहानी सी
समझ पड़ीं और उन्हों ने उन की प्रतीति
१२ न किई । तब पितर उठके कबर पर
दौड़ गया और झुकके केवल चद्दर पड़ी
हुई देखी और जो हुआ था उस से अपने
मन में अचंभा करता हुआ चला गया ॥

१३ देखो उसी दिन उन में से दो जन
इम्माऊ नाम एक गांव को जो यिरूशलीम
से कोश चार एक पर था जाते थे ।
१४ और वे इन सब बातों पर जो हुई थीं
१५ आपस में बातचीत करते थे । ज्यों वे
बातचीत और बिचार कर रहे त्यों यीशु
आपही निकट आके उन के संग हो
१६ लिया । परन्तु उन की दृष्टि ऐसी रोकी
गई कि उन्हों ने उस को नहीं चीन्हा ।
१७ उस ने उन से कहा यह क्या बातें हैं
जिन पर तुम चलते हुए आपस में
बातचीत करते और उदास होते हो ।
१८ तब एक जन ने जिस का नाम क्लियोपा
था उत्तर देके उस से कहा क्या केवल
तू ही यिरूशलीम में डेरा करके वे बातें
जो उस में इन दिनों में हुई हैं नहीं
१९ जानता है । उस ने उन से कहा कौन
सी बातें . उन्हों ने उस से कहा यीशु
नासरी के विषय में जो भविष्यद्वक्ता
और ईश्वर के और सब लोगों के आगे
काम में और बचन में शक्तिमान पुरुष
२० था । क्योंकर हमारे प्रधान याजकों और
अध्यक्षों ने उसे सौंप दिया कि उस पर
बध किये जाने की आज्ञा दिई जाय
और उसे क्रूश पर घात किया है ।
२१ परन्तु हमें आशा थी कि वही है जो
इस्रायेल का उद्धार करेगा . और भी
जब से यह हुआ तब से आज उस को
२२ तीसरा दिन है । और हमों में से
कितनी स्त्रियों ने भी हमें बिस्मित
किया है कि वे भोर को कबर पर
२३ गईं . पर उस की लोथ न पाके फिर
आके बोलीं कि हम ने स्वर्गदूतों का
दर्शन भी पाया है जो कहते हैं कि
२४ वह जीता है । तब हमारे संगियों में
से कितने जन कबर पर गये और जैसा
स्त्रियों ने कहा तैसा ही पाया परन्तु
२५ उस को न देखा । तब यीशु ने उन से
कहा हे निर्बुद्धि और भविष्यद्वक्ताओं
की सब बातों पर बिश्वास करने में
२६ मन्दमति लोगो . क्या अवश्य न था
कि ख्रीष्ट यह दुःख उठाके अपने
२७ ऐश्वर्य्य में प्रवेश करे । तब उस ने मूसा
से और सब भविष्यद्वक्ताओं से आरंभ

कर सारे धर्म्मपुस्तक में अपने विषय में की बातों का अर्थ उन्हों को बताया। २८ इतने में वे उस गांव के पास पहुंचे जहां वे जाते थे और उस ने ऐसा २९ किया जैसा कि आगे जाता है। परन्तु उन्हों ने यह कहके उस को रोका कि हमारे संग रहिये क्योंकि सांझ हो चली और दिन ढल गया है, तब वह उन ३० के संग रहने को भीतर गया। जब वह उन के संग भोजन पर बैठा तब उस ने रोटी लेके धन्यबाद किया और उसे ३१ तोड़के उन को दिया। तब उन की दृष्टि खुल गई और उन्हों ने उस को चीन्हा और वह उन से अन्तर्द्धान हो ३२ गया। और उन्हों ने आपस में कहा जब वह मार्ग में हम से बात करता था और धर्म्मपुस्तक का अर्थ हमें बताता था तब क्या हमारा मन हम में ३३ न तपता था। वे उसी घड़ी उठके यिरूशलीम को लौट गये और ग्यारह शिष्यों को और उन के संगियों को एकट्ठे हुए और यह कहते हुए पाया, ३४ कि निश्चय प्रभु जी उठा है और शिमोन ३५ को दिखाई दिया है। तब उन दोनों ने कह सुनाया कि मार्ग में क्या हुआ था और यीशु क्योंकर रोटी तोड़ने में उन से पहचाना गया॥

३६ वे यह कहते ही थे कि यीशु आप ही उन के बीच में खड़ा हो उन से ३७ बोला तुम्हारा कल्याण होय। परन्तु वे ब्याकुल और भयमान हुए और समझा कि ३८ हम प्रेत को देखते हैं। उस ने उन से कहा क्यों ब्याकुल हो और तुम्हारे मन ३९ में सन्देह क्यों उत्पन्न होता है। मेरे हाथ और मेरे पांव देखो कि मैं आप ही हूं, मुझे टोओ और देख लो क्योंकि जैसे तुम मुझ में देखते हो तैसे प्रेत को हाड़ ४० मांस नहीं होते हैं। यह कहके उस ४१ ने अपने हाथ पांव उन्हें दिखाये। ज्यों वे मारे आनन्द के प्रतीति न करते थे और अचंभित हो रहे त्यों उस ने उन से कहा क्या तुम्हारे पास यहां कुछ ४२ भोजन है। उन्हों ने उस को कुछ भूनी ४३ मछली और मधु का छत्ता दिया। उस ४४ ने लेके उन के साम्हने खाया। और उस ने उन से कहा यही वे बातें हैं जो मैं ने तुम्हारे संग रहते हुए तुम से कहीं कि जो कुछ मेरे विषय में मूसा की ब्यवस्था में और भविष्यद्वक्ताओं और गीतों के पुस्तकों में लिखा है सब ४५ का पूरा होना अवश्य है। तब उस ने धर्म्मपुस्तक समझने को उन का ज्ञान ४६ खोला, और उन से कहा यूं लिखा है और इसी रीति से अवश्य था कि खीष्ट दुःख उठावे और तीसरे दिन मृतकों में ४७ से जी उठे, और यिरूशलीम से आरंभ कर सब देशों के लोगों में उस के नाम से पश्चात्ताप की और पापमोचन की ४८ कथा सुनाई जावे। तुम इन बातों के ४९ साक्षी हो। देखो मेरे पिता ने जिस की प्रतिज्ञा किई उस को मैं तुम्हों पर भेजता हूं और तुम जब लों ऊपर से शक्ति न पाओ तब लों यिरूशलीम नगर में रहो॥

५० तब वह उन्हें बैथनिया लों बाहर ले गया और अपने हाथ उठाके उन्हें ५१ आशीस दिई। उन्हें आशीस देते हुए वह उन से अलग हो गया और स्वर्ग ५२ पर उठा लिया गया। और वे उस को प्रणाम कर बड़े आनन्द से यिरूशलीम ५३ को लौट गये, और नित्य मन्दिर में ईश्वर की स्तुति और धन्यबाद किया करते थे। आमीन॥

योहन रचित सुसमाचार।

पहिला पर्व्व।

१ आदि में बचन था और बचन ईश्वर के संग था और बचन ईश्वर २ था। वह आदि में ईश्वर के संग था। ३ सब कुछ उस के द्वारा सृजा गया और जो सृजा गया है कुछ भी उस बिना ४ नहीं सृजा गया। उस में जीवन था और वह जीवन मनुष्यों का उजियाला ५ था। और वह उजियाला अंधकार में चमकता है और अंधकार ने उस को ग्रहण न किया॥

६ एक मनुष्य ईश्वर की ओर से भेजा ७ गया जिस का नाम योहन था। वह साक्षी के लिये आया कि उस उजियाले के विषय में साक्षी देवे इस लिये कि सब लोग उस के द्वारा से बिश्वास ८ करें। वह आप तो वह उजियाला न था परन्तु उस उजियाले के विषय में ९ साक्षी देने को आया। सच्चा उजियाला जो हर एक मनुष्य को उजियाला देता १० है जगत में आनेवाला था। वह जगत में था और जगत उस के द्वारा सृजा गया परन्तु जगत ने उस को नहीं ११ जाना। वह अपने निज देश में आया और उस के निज लोगों ने उसे ग्रहण १२ न किया। परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया उन्हों को अर्थात उस के नाम पर बिश्वास करनेहारों को उस ने ईश्वर के सन्तान होने का अधिकार १३ दिया। उन्हों का जन्म न लोहू से न शरीर की इच्छा से न मनुष्य की इच्छा १४ से परन्तु ईश्वर से हुआ। और बचन देहधारी हुआ और हमारे बीच में डेरा किया, और, हम ने उस की महिमा पिता के एकलौते की सी महिमा देखी. वह अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण था। १५ योहन ने उस के विषय में साक्षी दिई और पुकारके कहा यही था जिस के विषय में मैं ने कहा कि जो मेरे पीछे आता है सो मेरे आगे हुआ है क्योंकि वह मुझ से पहिले था। १६ उस की भरपूरी से हम सभों ने पाया है हां अनुग्रह पर अनुग्रह पाया है। १७ क्योंकि व्यवस्था मूसा के द्वारा से दिई गई अनुग्रह और सच्चाई यीशु खीष्ट के द्वारा से हुए। १८ किसी ने ईश्वर को कभी नहीं देखा है. एकलौता पुत्र जो पिता की गोद में है उसी ने उसे बर्णन किया॥

१९ योहन की साक्षी यह है कि जब यिहूदियों ने यिरूशलीम से याजकों और लेवीयों को उस से यह पूछने को भेजा कि तू कौन है. २० तब उस ने मान लिया और नहीं मुकर गया पर मान लिया कि मैं खीष्ट नहीं हूं। २१ तब उन्हों ने उस से पूछा तो कौन. क्या तू एलियाह है. उस ने कहा मैं नहीं हूं. क्या तू वह भविष्यद्वक्ता है. उस ने उत्तर दिया कि नहीं। २२ फिर उन्हों ने उस से कहा तू कौन है कि हम अपने भेजनेहारों को उत्तर देवें. तू अपने विषय में क्या कहता है। २३ उस ने कहा मैं किसी का शब्द हूं जो जंगल में पुकारता है कि परमेश्वर का पन्थ सीधा करो जैसा यिशैयाह भविष्यद्वक्ता ने कहा। २४ जो भेजे गये थे सो फरीशियों में से थे। २५ उन्हों ने उस से पूछ करके उस से कहा जो तू न खीष्ट और न एलियाह और न वह भविष्यद्वक्ता है तो क्यों बपतिसमा देता है। २६ योहन ने

उन को उत्तर दिया कि मैं तो जल से बपतिसमा देता हूं परन्तु तुम्हारे बीच में एक खड़ा है जिसे तुम नहीं जानते
२७ हो । वही है मेरे पीछे आनेवाला जो मेरे आगे हुआ है मैं उस की जूती का
२८ बन्ध खोलने के योग्य नहीं हूं । यह बातें यर्दन नदी के उस पार बैथाबरा गांव में हुईं जहां योहन बपतिसमा देता था ॥

२९ दूसरे दिन योहन ने यीशु को अपने पास आते देखा और कहा देखो ईश्वर का मेम्ना जो जगत के पाप को उठा
३० लेता है । यही है जिस के विषय में मैं ने कहा कि एक पुरुष मेरे पीछे आता है जो मेरे आगे हुआ है क्योंकि वह
३१ मुझ से पहिले था । मैं उसे नहीं चीन्हता था परन्तु जिस्तें वह इस्रायेली लोगों पर प्रगट किया जाय इसी लिये मैं जल से बपतिसमा देता हुआ आया
३२ हूं । और भी योहन ने साक्षी दिई कि मैं ने आत्मा को कपोत की नाईं स्वर्ग से उतरते देखा है और वह उस पर
३३ ठहर गया । और मैं उसे नहीं चीन्हता था परन्तु जिस ने मुझे जल से बपतिसमा देने को भेजा उसी ने मुझ से कहा जिस पर तू आत्मा को उतरते और उस पर ठहरते देखे वही तो पवित्र
३४ आत्मा से बपतिसमा देनेहारा है । और मैं ने देखके साक्षी दिई है कि यही ईश्वर का पुत्र है ॥

३५ दूसरे दिन फिर योहन और उस के
३६ शिष्यों में से दो जन खड़े थे । और ज्यों यीशु फिरता था त्यों वह उस पर दृष्टि करके बोला देखो ईश्वर का मेम्ना ।
३७ उन दो शिष्यों ने उस को बोलते सुना
३८ और यीशु के पीछे हो लिये । यीशु ने मुंह फेरके उन को पीछे आते देखके उन से कहा तुम क्या खोजते हो . उन्हों ने उस से कहा हे रब्बी अर्थात हे गुरु आप कहां रहते हैं ।
३९ उस ने उन से कहा आके देखो . उन्हों ने जाके देखा वह कहां रहता था और उस दिन उस के संग रहे कि दो घड़ी के अटकल दिन रहा था ।
४० जो दो जन योहन की सुनके यीशु के पीछे हो लिये उन में से एक तो शिमोन पितर का भाई अन्द्रिय था ।
४१ उस ने पहिले अपने निज भाई शिमोन को पाया और उस से कहा हम ने मसीह को अर्थात खीष्ट को पाया है ।
४२ तब वह उसे यीशु पास लाया और यीशु ने उस पर दृष्टि कर कहा तू यूनस का पुत्र शिमोन है तू कैफा अर्थात पितर कहावेगा ॥

४३ दूसरे दिन यीशु ने गालील देश को जाने की इच्छा किई और फिलिप को पाके उस से कहा मेरे पीछे आ ।
४४ फिलिप तो अन्द्रिय और पितर के नगर बैतसैदा का था ।
४५ फिलिप ने नथनेल को पाके उस से कहा जिस के विषय में मूसा ने व्यवस्था में और भविष्यद्वक्ताओं ने लिखा है उस को हम ने पाया है अर्थात यूसफ के पुत्र नासरत नगर के यीशु को ।
४६ नथनेल ने उस से कहा क्या कोई उत्तम वस्तु नासरत से उत्पन्न हो सकती है . फिलिप ने उस से कहा आके देखिये ।
४७ यीशु ने नथनेल को अपने पास आते देखा और उस के विषय में कहा देखो यह सचमुच इस्रायेली है जिस में कपट नहीं है ।
४८ नथनेल ने उस से कहा आप मुझे कहां से पहचानते हैं . यीशु ने उस को उत्तर दिया कि फिलिप के तुझे बुलाने के पहिले जब तू गूलर के वृक्ष तले था तब मैं ने तुझे देखा ।
४९ नथनेल ने उस को उत्तर दिया कि हे गुरु आप ईश्वर के पुत्र हैं आप इस्रायेल के राजा हैं ।
५० यीशु ने उस को

उत्तर दिया मैं ने जो तुझ से कहा कि मैं ने तुझे गूलर के वृक्ष तले देखा क्या तू इस लिये बिश्वास करता है . तू ५१ इन से बड़े काम देखेगा । फिर उस से कहा मैं तुम से सच सच कहता हूं इस के पीछे तुम स्वर्ग को खुला और ईश्वर के दूतों को मनुष्य के पुत्र के ऊपर से चढ़ते उतरते देखोगे ॥

दूसरा पर्ब्ब ।

१ तीसरे दिन गालील के काना नगर में एक बिवाह का भोज था और यीशु २ की माता वहां थी । यीशु भी और उस के शिष्य लोग उस बिवाह के भोज में ३ बुलाये गये । जब दाख रस घट गया तब यीशु की माता ने उस से कहा उन ४ के पास दाख रस नहीं है । यीशु ने उस से कहा हे नारी आप को मुझ से क्या काम . मेरा समय अब लों नहीं ५ पहुंचा है । उस की माता ने सेवकों से कहा जो कुछ वह तुम से कहे सो ६ करो । वहां पत्थर के छः मटके यिहूदियों के शुद्ध करने की रीति के अनुसार धरे थे जिन में डेढ़ डेढ़ अथवा दो दो ७ मन समाते थे । यीशु ने उन से कहा मटकों को जल से भर देओ . सो उन्हों ८ ने उन्हें मुंहामुंह भर दिया । तब उस ने उन से कहा अब उंडेलो और भोज के प्रधान के पास ले जाओ . वे ले ९ गये । जब भोज के प्रधान ने वह जल जो दाख रस बन गया था चीखा और वह नहीं जानता था कि वह कहां से आया परन्तु जिन सेवकों ने जल उंडेला था वे जानते थे तब भोज के प्रधान ने १० दूल्हे को बुलाया . और उस से कहा हर एक मनुष्य पहिले अच्छा दाख रस देता और जब लोग पीके छक जाते तब मध्यम देता है . तू ने अच्छा दाख रस ११ अब लों रखा है । यीशु ने गालील के काना नगर में आश्चर्य्य कर्म्मों का यह आरंभ किया और अपनी महिमा प्रगट किई और उस के शिष्यों ने उस पर बिश्वास किया ॥

१२ इस के पीछे वह और उस की माता और उस के भाई और उस के शिष्य लोग कफर्नाहूम नगर को गये परन्तु १३ वहां बहुत दिन न रहे । यिहूदियों का निस्तार पर्ब्ब निकट था और यीशु १४ यिरूशलीम को गया । और उस ने मन्दिर में गोरुओं औ भेड़ों औ कपोतों के बेचनेहारों को और सर्राफों को बैठे १५ हुए पाया । तब उस ने रस्सियों का कोड़ा बनाके उन सभों को भेड़ों औ गोरुओं समेत मन्दिर से निकाल दिया और सर्राफों के पैसे बिथराके पीढ़ों को उलट दिया . और कपोतों के १६ बेचनेहारों से कहा इन को यहां से ले जाओ मेरे पिता का घर ब्योपार का घर मत बनाओ । तब उस के शिष्यों १७ ने स्मरण किया कि लिखा है तेरे घर के विषय में की धुन मुझे खा जाती है ॥

१८ इस पर यिहूदियों ने उस से कहा तू जो यह करता है तो हमें कौन सा १९ चिन्ह दिखाता है । यीशु ने उन को उत्तर दिया कि इस मन्दिर को ढा दो और मैं उसे तीन दिन में उठाऊंगा । २० यिहूदियों ने कहा यह मन्दिर छयालीस बरस में बनाया गया और तू क्या तीन २१ दिन में इसे उठावेगा । परन्तु वह अपने देह के मन्दिर के विषय में २२ बोला । सो जब वह मृतकों में से जी उठा तब उस के शिष्यों ने स्मरण किया कि उस ने उन्हों से यह बात कही थी और उन्हों ने धर्म्मपुस्तक पर और उस बचन पर जो यीशु ने कहा था बिश्वास किया ॥

२३ जब वह निस्तार पर्ब्ब में यिरूशलीम

में था तब बहुत लोगों ने उस के आश्चर्य्य कर्म्मों को जो वह करता था देखके उस के नाम पर बिश्वास किया ।
२४ परन्तु यीशु ने अपने को उन्हों के हाथ नहीं सौंपा क्योंकि वह सभों को जानता
२५ था . और उसे प्रयोजन न था कि मनुष्य के विषय में साक्षी कोई देवे क्योंकि वह आप जानता था कि मनुष्य में क्या है ॥

तीसरा पर्ब्ब ।

१ फरीशियों में से निकोदीम नाम एक मनुष्य था जो यिहूदियों का एक प्रधान
२ था । वह रात को यीशु पास आया और उस से कहा हे गुरु हम जानते हैं कि आप ईश्वर की ओर से उपदेशक आये हैं क्योंकि कोई इन आश्चर्य्य कर्म्मों को जो आप करते हैं जो ईश्वर उस के संग न हो तो नहीं कर सकता
३ है । यीशु ने उस को उत्तर दिया कि मैं तुझ से सच सच कहता हूं कोई यदि फिरके न जन्मे तो ईश्वर का
४ राज्य नहीं देख सकता है । निकोदीम ने उस से कहा मनुष्य बूढ़ा होके क्योंकर जन्म ले सकता है . क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बेर
५ प्रवेश करके जन्म ले सकता है । यीशु ने उत्तर दिया कि मैं तुझ से सच सच कहता हूं कोई यदि जल और आत्मा से न जन्मे तो ईश्वर के राज्य में प्रवेश
६ नहीं कर सकता है । जो शरीर से जन्मा है सो शरीर है और जो आत्मा
७ से जन्मा है सो आत्मा है । अचंभा मत कर कि मैं ने तुझ से कहा तुम को फिरके जन्म लेना अवश्य है ।
८ पवन जहां चाहता है तहां बहता है और तू उस का शब्द सुनता है परन्तु नहीं जानता है वह कहां से आता और किधर को जाता है . जो कोई आत्मा से जन्मा है सो इसी रीति से है ॥

९ निकोदीम ने उस को उत्तर दिया कि यह बातें क्योंकर हो सकती हैं ।
१० यीशु ने उस को उत्तर दिया क्या तू इस्रायेली लोगों का उपदेशक है और यह
११ बातें नहीं जानता । मैं तुझ से सच सच कहता हूं हम जो जानते हैं सो कहते हैं और जो देखा है उस पर साक्षी देते हैं और तुम हमारी साक्षी ग्रहण नहीं
१२ करते हो । जो मैं ने तुम से पृथिवी पर की बातें कहीं और तुम प्रतीति नहीं करते हो तो यदि मैं तुम से स्वर्ग में की बातें कहूं तुम क्योंकर प्रतीति करोगे ।
१३ और कोई स्वर्ग पर नहीं चढ़ गया है केवल वह जो स्वर्ग से उतरा अर्थात
१४ मनुष्य का पुत्र जो स्वर्ग में है । जिस रीति से मूसा ने जंगल में सांप को ऊंचा किया उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य
१५ का पुत्र ऊंचा किया जाय . इस लिये कि जो कोई उस पर बिश्वास करे सो नाश न होय परन्तु अनन्त जीवन पावे ।
१६ क्योंकि ईश्वर ने जगत को ऐसा प्यार किया कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दिया कि जो कोई उस पर बिश्वास करे सो नाश न होय परन्तु अनन्त जीवन पावे ।
१७ ईश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इस लिये नहीं भेजा कि जगत को दंड के योग्य ठहरावे परन्तु इस लिये कि जगत
१८ उस के द्वारा त्राण पावे । जो उस पर बिश्वास करता है सो दंड के योग्य नहीं ठहराया जाता है परन्तु जो बिश्वास नहीं करता सो दंड के योग्य ठहर चुका है क्योंकि उस ने ईश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर बिश्वास नहीं किया
१९ है । और दंड के योग्य ठहराने का कारण यह है कि उजियाला जगत में आया है और मनुष्यों ने अंधियारे को उजियाले से अधिक प्यार किया क्योंकि
२० उन के काम बुरे थे । क्योंकि जो कोई

बुराई करता है सो उजियाले से घिन्न करता है और उजियाले के पास नहीं आता है न हो कि उस के कामों पर
२१ उलहना दिया जाय। परन्तु जो सच्चाई पर चलता है सो उजियाले के पास आता है इस लिये कि उस के काम प्रगट होवें कि ईश्वर की ओर से किये गये हैं॥

२२ इस के पीछे यीशु और उस के शिष्य यिहूदिया देश में आये और उस ने वहां उन के संग रहके बपतिसमा दिलाया।
२३ योहन भी शालीम के निकट ऐनन नाम स्थान में बपतिसमा देता था क्योंकि वहां बहुत जल था और लोग आके
२४ बपतिसमा लेते थे। क्योंकि योहन अब लों बन्दीगृह में नहीं डाला गया था॥

२५ योहन के शिष्यों और यिहूदियों में शुद्ध करने के विषय में बिवाद हुआ।
२६ और उन्हों ने योहन के पास आके उस से कहा हे गुरु जो यर्दन के उस पार आप के संग था जिस पर आप ने साक्षी दिई है देखिये वह बपतिसमा दिलाता है और सब लोग उस के पास जाते हैं।
२७ योहन ने उत्तर दिया यदि स्वर्ग से उस को न दिया जाय तो मनुष्य कुछ नहीं
२८ पा सकता है। तुम आप ही मेरे साक्षी हो कि मैं ने कहा मैं खीष्ट नहीं हूं पर
२९ उस के आगे भेजा गया हूं। दुल्हिन जिस की है सोई दूल्हा है परन्तु दूल्ह का मित्र जो खड़ा होके उस की सुनता है दूल्हे के शब्द से अति आनन्दित होता है.
३० मेरा यह आनन्द पूरा हुआ है। अवश्य
३१ है कि वह बढ़े और मैं घटूं। जो ऊपर से आता है सो सभों के ऊपर है. जो पृथिवी से है सो पृथिवी का है और पृथिवी की बातें कहता है. जो स्वर्ग
३२ से आता है सो सभों के ऊपर है। जो उस ने देखा और सुना है वह उस पर साक्षी देता है और कोई उस की साक्षी
३३ ग्रहण नहीं करता। जिस ने उस की साक्षी ग्रहण किई है सो इस बात पर
३४ छाप दे चुका कि ईश्वर सत्य है। इस लिये कि जिसे ईश्वर ने भेजा है सो ईश्वर की बातें कहता है क्योंकि ईश्वर उस को आत्मा नाप से नहीं देता है।
३५ पिता पुत्र को प्यार करता है और उस ने सब कुछ उस के हाथ में दिया है।
३६ जो पुत्र पर बिश्वास करता है उस को अनन्त जीवन है पर जो पुत्र को न माने सो जीवन को नहीं देखेगा परन्तु ईश्वर का क्रोध उस पर रहता है॥

चौथा पर्ब्ब।

१ जब प्रभु ने जाना कि फरीशियों ने सुना है कि यीशु योहन से अधिक शिष्य
२ करके उन्हें बपतिसमा देता है. तौभी यीशु आप नहीं परन्तु उस के शिष्य बपतिसमा
३ देते थे. तब वह यिहूदिया को छोड़के
४ फिर गालील को गया। और उस को शोमिरोन देश में से जाना अवश्य
५ हुआ। सो वह शिकर नाम शोमिरोन के एक नगर पर उस भूमि के निकट पहुंचा जिसे याकूब ने अपने पुत्र यूसफ
६ को दिया। और याकूब का कूआं वहां था सो यीशु मार्ग में चलने से थकित हो उस कूंए पर यूंही बैठ गया और दो
७ पहर के निकट था। एक शोमिरोनी स्त्री जल भरने को आई. यीशु ने उस
८ से कहा मुझे पीने को दीजिये। उस के शिष्य लोग भोजन मोल लेने को
९ नगर में गये थे। शोमिरोनी स्त्री ने उस से कहा आप यिहूदी होके मुझ से जो शोमिरोनी स्त्री हूं क्योंकर पीने को मांगते हैं क्योंकि यिहूदी लोग शोमिरोनियों के संग व्यवहार नहीं करते।
१० यीशु ने उस को उत्तर दिया जो तू ईश्वर के दान को जानती और वह

कौन है जो तुझ से कहता है मुझे पीने को दीजिये तो तू उस से मांगती और
११ वह तुझे अमृत जल देता। स्त्री ने उस से कहा हे प्रभु जल भरने को आप के पास कुछ नहीं है और कूआं गहिरा है तो वह अमृत जल आप को कहां से
१२ मिला है। क्या आप हमारे पिता याकूब से बड़े हैं जिस ने यह कूआं हमें दिया और आप ही अपने सन्तान और अपने ढोर समेत उस में से पिया।
१३ यीशु ने उस को उत्तर दिया कि जो कोई यह जल पीवे सो फिर पियासा
१४ होगा. पर जो कोई वह जल पीवे जो मैं उस को देऊंगा सो फिर कभी पियासा न होगा परन्तु जो जल मैं उसे देऊंगा सो उस में अनन्त जीवन लों उमंगनेहारे जल का सोता हो
१५ जायगा। स्त्री ने उस से कहा हे प्रभु वह जल मुझे दीजिये कि मैं पियासी न होऊं और न जल भरने को यहां आऊं।
१६ यीशु ने उस से कहा जा अपने स्वामी
१७ को बुलाके यहां आ। स्त्री ने उत्तर दिया कि मेरे तईं स्वामी नहीं है. यीशु उस से बोला तू ने अच्छा कहा
१८ कि मेरे तईं स्वामी नहीं है. क्योंकि तेरे पांच स्वामी हो चुके और अब जो तेरे संग रहता है सो तेरा स्वामी नहीं
१९ है. यह तू ने सच कहा है। स्त्री ने उस से कहा हे प्रभु मुझे सूझ पड़ता है
२० कि आप भविष्यद्वक्ता हैं। हमारे पितरों ने इसी पहाड़ पर भजन किया और आप लोग कहते हैं कि वह स्थान जहां भजन करना उचित है यिरूशलीम
२१ में है। यीशु ने उस से कहा हे नारी मेरी प्रतीति कर कि वह समय आता है जिस में तुम न इस पहाड़ पर और न यिरूशलीम में पिता का भजन
२२ करोगे। तुम लोग जिसे नहीं जानते हो उस का भजन करते हो हम लोग जिसे जानते हैं उस का भजन करते हैं क्योंकि त्राण यिहूदियों में से है।
२३ परन्तु वह समय आता है और अब है जिस में सच्चे भक्त आत्मा और सच्चाई से पिता का भजन करेंगे क्योंकि पिता ऐसे भजन करनेहारों को चाहता है।
२४ ईश्वर आत्मा है और अवश्य है कि उस का भजन करनेहारे आत्मा और
२५ सच्चाई से भजन करें। स्त्री ने उस से कहा मैं जानती हूं कि मसीह अर्थात ख्रीष्ट आता है. वह जब आवेगा तब
२६ हमें सब कुछ बतावेगा। यीशु ने उस से कहा मैं जो तुझ से बोलता हूं वही हूं॥

२७ इतने में उस के शिष्य आये और अचंभा किया कि वह स्त्री से बात करता है तौभी किसी ने नहीं कहा कि आप क्या चाहते हैं अथवा किस
२८ लिये उस से बात करते हैं। तब स्त्री ने अपना घड़ा छोड़ा और नगर में जाके
२९ लोगों से कहा. आओ, एक मनुष्य को देखो जिस ने सब कुछ जो मैं ने किया है मुझ से कहा है. यह क्या ख्रीष्ट है।
३० सो वे नगर से निकलके उस पास आये॥

३१ इस बीच में शिष्यों ने यीशु से बिन्ती
३२ किई कि हे गुरु खाइये। उस ने उन से कहा खाने को मेरे पास भोजन है
३३ जो तुम नहीं जानते हो। शिष्यों ने आपस में कहा क्या कोई उस पास
३४ कुछ खाने को लाया है। यीशु ने उन से कहा मेरा भोजन यह है कि अपने भेजनेहारे की इच्छा पर चलूं और उस
३५ का काम पूरा करूं। क्या तुम नहीं कहते हो कि अब भी चार मास हैं तब कटनी आवेगी. देखो मैं तुम से कहता हूं अपनी आंखें उठाके खेतों को देखो कि वे कटनी के लिये पक चुके हैं।

३६ और काटनेहारा बनि पाता और अनन्त
जीवन के लिये फल बटोरता है जिस्तें
बोनेहारा और काटनेहारा दोनों एक संग
३७ आनन्द करें । इस में वह बात सञ्चो है
कि एक बोता है और दूसरा काटता है ।
३८ जिस में तुम ने परिश्रम नहीं किया है
उस को मैं ने तुम्हें काटने को भेजा .
दूसरों ने परिश्रम किया है और तुम ने
उन के परिश्रम में प्रवेश किया है ॥
३९　उस नगर के शोमिरोनियों में से
बहुतों ने उस स्त्री के बचन के कारण
जिस ने साक्षी दिई कि उस ने सब कुछ
जो मैं ने किया है मुझ से कहा है यीशु
४० पर बिश्वास किया । इस लिये जब
शोमिरोनी लोग उस पास आये तब उस
से बिन्ती किई कि हमारे यहां रहिये .
४१ और वह वहां दो दिन रहा । और उस
के बचन के कारण बहुत अधिक लोगों
४२ ने बिश्वास किया . और उस स्त्री से
कहा हम अब तेरे बचन के कारण
बिश्वास नहीं करते हैं क्योंकि हम ने
आप ही सुना है और जानते हैं कि यह
सचमुच जगत का त्राणकर्त्ता खीष्ट है ॥
४३　दो दिन के पीछे यीशु वहां से
४४ निकलके गालील को गया । उस ने तो
आप ही साक्षी दिई कि भविष्यद्वक्ता
अपने निज देश में आदर नहीं पाता
४५ है । जब वह गालील में आया तब
गालीलियों ने उसे ग्रहण किया क्योंकि
जो कुछ उस ने यिरूशलीम में पर्व्व में
किया था उन्हों ने सब देखा था कि वे
४६ भी पर्व्व में गये थे । सो यीशु फिर
गालील के काना नगर में आया जहां
उस ने जल को दाख रस बनाया था .
और राजा के यहां का एक पुरुष था
जिस का पुत्र कफर्नाहुम में रोगी था ।
४७ उस ने जब सुना कि यीशु यिहूदिया से
गालील में आया है तब उस पास जाके
उस से बिन्ती किई कि आके मेरे पुत्र
को चंगा कीजिये . क्योंकि वह लड़का
मरने पर था । यीशु ने उस से कहा जो ४८
तुम चिन्ह और अद्भुत काम न देखो तो
बिश्वास नहीं करोगे । राजा के यहां ४९
के पुरुष ने उस से कहा हे प्रभु मेरे
बालक के मरने के आगे आइये । यीशु ५०
ने उस से कहा चला जा तेरा पुत्र जीता
है . उस मनुष्य ने उस बात पर जो
यीशु ने उस से कही बिश्वास किया और
चला गया । और वह जाता ही था कि ५१
उस के दास उस से आ मिले और सन्देश
दिया कि आप का लड़का जीता है ।
उस ने उन से पूछा किस घड़ी उस का ५२
जी हलका हुआ . उन्हों ने उस से कहा
कल एक घड़ी दिन झुकते ज्वर ने उस
को छोड़ा । सो पिता ने जाना कि उसी ५३
घड़ी में हुआ जिस घड़ी यीशु ने उस
से कहा तेरा पुत्र जीता है और उस ने
औ उस के सारे घराने ने बिश्वास किया ।
यह दूसरा आश्चर्य्य कर्म्म यीशु ने यिहू- ५४
दिया से गालील में आके किया ॥

पांचवां पर्व्व ।

इस के पीछे यिहूदियों का पर्व्व १
हुआ और यीशु यिरूशलीम को गया ।
यिरूशलीम में भेड़ी फाटक के पास एक २
कुंड है जो इब्रीय भाषा में बैथेसदा
कहावता है जिस के पांच ओसारे हैं ।
इन्हों में रोगियों अंधों लंगड़ों और सूखे ३
अंगवालों की बड़ी भीड़ पड़ी रहती थी
जो जल के हिलने की बाट देखते थे ।
क्योंकि समय के अनुसार एक स्वर्गदूत ४
उस कुंड में उतरके जल को हिलाता
था इस से जो कोई जल के हिलने के
पीछे उस में पहिले उतरता था कोई
भी रोग उस को लगा हो चंगा हो
जाता था । एक मनुष्य वहां था जो ५
अड़तीस बरस से रोगी था । यीशु ने ६

उसे पड़े हुए देखके और यह जानके कि उसे अब बहुत दिन हो चुके उस से कहा क्या तू चंगा होने चाहता है। ७ रोगी ने उस को उत्तर दिया कि हे प्रभु मेरा कोई मनुष्य नहीं है कि जब जल हिलाया जाय तब मुझे कुंड में उतारे और जब लों मैं जाता हूं दूसरा मुझ से आगे उतरता है। ८ यीशु ने उस से कहा उठ ९ अपनी खाट उठाके चल। वह मनुष्य तुरन्त चंगा हो गया और अपनी खाट उठाके चलने लगा पर उसी दिन १० विश्रामवार था। इस लिये यिहूदियों ने उस चंगा किये हुए मनुष्य से कहा यह विश्राम का दिन है खाट उठाना तुझे ११ उचित नहीं है। उस ने उन्हें उत्तर दिया कि जिस ने मुझे चंगा किया उसी ने मुझ से कहा अपनी खाट उठाके चल। १२ उन्हों ने उस से पूछा वह मनुष्य कौन है जिस ने तुझ से कहा अपनी खाट १३ उठाके चल। परन्तु वह चंगा किया हुआ मनुष्य नहीं जानता था वह कौन है क्योंकि उस स्थान में भीड़ होने से यीशु वहां से हट गया॥

१४ इस के पीछे यीशु ने उस को मन्दिर में पाके उस से कहा देख तू चंगा हुआ है फिर पाप मत कर न हो कि इस से बुरी कोई विपत्ति तुझ पर आवे। १५ उस मनुष्य ने जाके यिहूदियों से कह दिया कि जिस ने मुझे चंगा किया सो १६ यीशु है। इस कारण यिहूदियों ने यीशु को सताया और उसे मार डालने चाहा कि उस ने विश्राम के दिन में यह १७ काम किया था। यीशु ने उन को उत्तर दिया कि मेरा पिता अब लों काम १८ करता है मैं भी काम करता हूं। इस कारण यिहूदियों ने और भी उसे मार डालने चाहा कि उस ने न केवल विश्रामवार की विधि को लंघन किया परन्तु ईश्वर को अपना निज पिता कहके अपने को ईश्वर के तुल्य भी किया॥

१९ इस पर यीशु ने उन्हों से कहा मैं तुम से सच सच कहता हूं पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता है केवल जो कुछ वह पिता को करते देखे क्योंकि जो कुछ वह करता है उसे पुत्र भी वैसे ही २० करता है। क्योंकि पिता पुत्र को प्यार करता है और जो वह आप करता सो सब उस को बताता है और वह इन से बड़े काम उस को बतायेगा जिस्तें तुम २१ अचंभा करो। क्योंकि जैसा पिता मृतकों को उठाता और जिलाता है वैसा ही पुत्र भी जिन्हें चाहता है उन्हें जिलाता २२ है। और पिता किसी का विचार भी नहीं करता है परन्तु विचार करने का सब अधिकार पुत्र को दिया है इस लिये कि सब लोग जैसे पिता का आदर २३ करते हैं वैसे पुत्र का आदर करें। जो पुत्र का आदर नहीं करता है सो पिता का जिस ने उसे भेजा आदर नहीं २४ करता है। मैं तुम से सच सच कहता हूं जो मेरा वचन सुनके मेरे भेजनेहारे पर विश्वास करता है उस को अनन्त जीवन है और दंड की आज्ञा उस पर नहीं होती परन्तु वह मृत्यु से पार २५ होके जीवन में पहुंचा है। मैं तुम से सच सच कहता हूं वह समय आता है और अब है जिस में मृतक लोग ईश्वर के पुत्र का शब्द सुनेंगे और जो सुनेंगे २६ सो जीयेंगे। क्योंकि जैसा पिता आप ही से जीता है वैसा उस ने पुत्र को भी अधिकार दिया है कि आप ही से २७ जीवे. और उस को विचार करने का भी अधिकार दिया है क्योंकि वह २८ मनुष्य का पुत्र है। इस से अचंभा मत करो क्योंकि वह समय आता है जिस

में जो कबरों में हैं सो सब उस का
२९ शब्द सुनके निकलेंगे, जिन ने भलाई
करनेहारे जीवन के लिये जी उठेंगे
और बुराई करनेहारे दंड के लिये जी
उठेंगे ॥

३० मैं आप से कुछ नहीं कर सकता
हूं जैसा मैं सुनता हूं वैसा बिचार
करता हूं और मेरा बिचार यथार्थ है
क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं चाहता हूं
परन्तु पिता की इच्छा जिस ने मुझे
३१ भेजा । जो मैं अपने विषय में साक्षी
देता हूं तो मेरी साक्षी ठीक नहीं है ।
३२ दूसरा है जो मेरे विषय में साक्षी देता
है और मैं जानता हूं कि जो साक्षी वह
मेरे विषय में देता है सो साक्षी ठीक
३३ है । तुम ने योहन के पास भेजा और
३४ उस ने सत्य पर साक्षी दिई । मैं मनुष्य
से साक्षी नहीं लेता हूं परन्तु मैं यह
बातें कहता हूं इस लिये कि तुम त्राण
३५ पाओ । वह तो जलता और चमकता
हुआ दीपक था और तुम थोड़ी बेर
लों उस के उंजियाले में आनन्द करने
३६ को प्रसन्न थे । परन्तु योहन की साक्षी
से बड़ी साक्षी मेरे पास है क्योंकि जो
काम पिता ने मुझे पूरे करने को दिये
हैं अर्थात यें ही काम जो मैं करता हूं
मेरे विषय में साक्षी देते हैं कि पिता ने
३७ मुझे भेजा है । और पिता ने जिस ने
मुझे भेजा आप ही मेरे विषय में साक्षी
दिई है, तुम ने कभी उस का शब्द
न सुना है और उस का रूप न देखा
३८ है । और तुम उस का बचन अपने में
नहीं रखते हो कि जिसे उस ने भेजा
३९ उस का विश्वास नहीं करते हो । धर्म्म-
पुस्तक में ढूंढ़ो क्योंकि तुम समझते
हो कि उस में अनन्त जीवन तुम्हें
मिलता है और वही है जो मेरे विषय
४० में साक्षी देता है । परन्तु तुम जीवन
पाने को मेरे पास आने नहीं चाहते
४१ हो । मैं मनुष्यों से आदर नहीं लेता
४२ हूं । परन्तु मैं तुम्हें जानता हूं कि
४३ ईश्वर का प्रेम तुम में नहीं है । मैं
अपने पिता के नाम से आया हूं और
तुम मुझे ग्रहण नहीं करते हो, यदि
दूसरा अपने ही नाम से आवे तो उसे
४४ ग्रहण करोगे । तुम जो एक दूसरे से
आदर लेते हो और वह आदर जो
अद्वैत ईश्वर से है नहीं चाहते हो
४५ क्योंकर विश्वास कर सकते हो । मत
समझो कि मैं पिता के आगे तुम पर
दोष लगाऊंगा, तुम पर दोष लगाने-
हारा तो है अर्थात मूसा जिस पर तुम
४६ भरोसा रखते हो । क्योंकि जो तुम मूसा
का विश्वास करते तो मेरा विश्वास
करते इस लिये कि उस ने मेरे विषय
४७ में लिखा । परन्तु जो तुम उस के लिखे
पर विश्वास नहीं करते हो तो मेरे कहे
पर क्योंकर विश्वास करोगे ॥

छठवां पर्ब्ब ।

१ इस के पीछे यीशु गालील के समुद्र
अर्थात तिबिरिया के समुद्र के उस पार
२ गया । और बहुत लोग उस के पीछे हो
लिये इस कारण कि उन्हों ने उस के
आश्चर्य्य कर्म्मों को देखा जो वह रोगियों
३ पर करता था । तब यीशु पर्ब्बत पर
चढ़के अपने शिष्यों के संग वहां बैठा ।
४ और यिहूदियों का पर्ब्ब अर्थात निस्तार
५ पर्ब्ब निकट था । यीशु ने अपनी आंखें
उठाके बहुत लोगों को अपने पास
आते देखा और फिलिप से कहा हम
कहां से रोटी मोल लेवें कि ये लोग
६ खावें । उस ने उसे परखने को यह बात
कही क्योंकि जो वह करने पर था सो
७ आप जानता था । फिलिप ने उस को
उत्तर दिया कि दो सौ सूकियों की रोटी
उन के लिये इतनी भी न होगी कि

उन में से हर एक को थोड़ी थोड़ी मिले । ८ उस के शिष्यों में से एक ने अर्थात शिमोन पितर के भाई अन्द्रिय ने उस से कहा . ९ यहां एक छोकरा है जिस पास जव की पांच रोटी और दो मछली हैं परन्तु इतने लोगों के लिये ये क्या हैं । १० यीशु ने कहा उन मनुष्यों को बैठाओ . उस स्थान में बहुत घास थी सो पुरुष जो गिन्ती में पांच सहस्र के अटकल थे बैठ गये । ११ तब यीशु ने रोटियां ले धन्य मानके शिष्यों को बांट दिईं और शिष्यों ने बैठनेहारों को और वैसे ही मछलियों में से जितनी वे चाहते थे उतनी दिईं । १२ जब वे तृप्त हुए तब उस ने अपने शिष्यों से कहा बचे हुए टुकड़े बटोर लो कि कुछ खोया न जाय । १३ सो उन्हों ने बटोरा और जव की पांच रोटियों के जो टुकड़े खानेहारों से बच रहे उन से बारह टोकरी भरीं । १४ इन मनुष्यों ने यह आश्चर्य्य कर्म्म जो यीशु ने किया था देखके कहा यह सचमुच वह भविष्यद्वक्ता है जो जगत में आनेवाला था । १५ जब यीशु ने जाना कि वे मुझे राजा बनाने के लिये आके मुझे पकड़ेंगे तब वह फिर अकेला पर्व्वत पर गया ॥

१६ जब सांझ हुई तब उस के शिष्य लोग समुद्र के तीर पर गये . १७ और नाव पर चढ़के समुद्र के उस पार कफर्नाहुम को जाने लगे . और अंधियारा हुआ था और यीशु उन के पास नहीं आया था । १८ बड़ी बयार के बहने से समुद्र में लहरें भी उठती थीं । १९ जब वे ढेढ़ अथवा दो कोस खे गये थे तब उन्हों ने यीशु को समुद्र पर चलते और नाव के निकट आते देखा और डर गये । २० परन्तु उस ने उन से कहा मैं हूं डरो मत । २१ तब वे उसे नाव पर चढ़ा लेने को प्रसन्न थे और तुरन्त नाव उस तीर पर जहां वे जाते थे लग गई ॥

२२ दूसरे दिन जो लोग समुद्र के उस पार खड़े थे उन्हों ने जाना कि जिस नाव पर यीशु के शिष्य चढ़े उसे छोड़के और कोई नाव यहां नहीं थी और यीशु अपने शिष्यों के संग उस नाव पर नहीं चढ़ा पर केवल उस के शिष्य चले गये । २३ तौभी और नावें तिबिरिया नगर से उस स्थान के निकट आई थीं जहां उन्हों ने जब प्रभु ने धन्य माना था रोटी खाई । २४ सो जब लोगों ने देखा कि यीशु यहां नहीं है और न उस के शिष्य तब वे भी नावों पर चढ़के यीशु को ढूंढ़ते हुए कफर्नाहुम को आये । २५ और वे समुद्र के पार उसे पाके उस से बोले हे गुरु आप यहां कब आये । २६ यीशु ने उन्हें उत्तर दिया कि मैं तुम से सच सच कहता हूं तुम मुझे इस लिये नहीं ढूंढ़ते हो कि तुम ने आश्चर्य्य कर्म्मों को देखा परन्तु इस लिये कि उन रोटियों में से खाके तृप्त हुए ॥

२७ नाशमान भोजन के लिये परिश्रम मत करो परन्तु उस भोजन के लिये जो अनन्त जीवन लों रहता है जिसे मनुष्य का पुत्र तुम को देगा क्योंकि पिता ने अर्थात ईश्वर ने उसी पर छाप दिई है । २८ उन्हों ने उस से कहा ईश्वर के कार्य्य करने को हम क्या करें । २९ यीशु ने उन्हें उत्तर दिया ईश्वर का कार्य्य यह है कि जिसे उस ने भेजा है उस पर तुम विश्वास करो । ३० उन्हों ने उस से कहा आप कौन सा आश्चर्य्य कर्म्म करते हैं कि हम देखके आप का विश्वास करें . आप क्या करते हैं । ३१ हमारे पितरों ने जंगल में मन्ना खाया जैसा लिखा है कि उस ने उन्हें स्वर्ग की रोटी खाने को दिई । ३२ यीशु ने उन

से कहा मैं तुम से सच सच कहता हूं
मूसा ने तुम्हें स्वर्ग की रोटी न दिई
परन्तु मेरा पिता तुम्हें सच्ची स्वर्ग की
३३ रोटी देता है। क्योंकि ईश्वर की रोटी
वह है जो स्वर्ग से उतरती और जगत
३४ को जीवन देती है। उन्हों ने उस से
कहा हे प्रभु यही रोटी हमें नित्य
३५ दीजिये। यीशु ने उन से कहा जीवन
की रोटी मैं हूं, जो मेरे पास आवे सो
कभी भूखा न होगा और जो मुझ पर
विश्वास करे सो कभी पियासा न
३६ होगा। परन्तु मैं ने तुम से कहा कि
तुम मुझे देख भी चुके और विश्वास
३७ नहीं करते हो। सब जो पिता मुझ
को देता है मेरे पास आवेगा और जो
कोई मेरे पास आवे मैं उसे किसी
३८ रीति से दूर न करूंगा। क्योंकि मैं
अपनी इच्छा नहीं परन्तु अपने भेजने-
हारे की इच्छा पूरी करने को स्वर्ग से
३९ उतरा हूं। और पिता की इच्छा जिस
ने मुझे भेजा यह है कि जिन्हें उस ने
मुझ को दिया है उन में से मैं किसी
को न खोऊं परन्तु उन्हें पिछले दिन
४० में उठाऊं। मेरे भेजनेहारे की इच्छा
यह है कि जो कोई पुत्र को देखे
और उस पर विश्वास करे सो अनन्त
जीवन पावे और मैं उसे पिछले दिन में
उठाऊंगा॥

४१ तब यिहूदी लोग उस के विषय में
कुड़कुड़ाने लगे इस लिये कि उस ने
कहा जो रोटी स्वर्ग से उतरी सो मैं
४२ हूं। वे बोले क्या यह यूसफ का पुत्र
यीशु नहीं है जिस के माता और पिता
को हम जानते हैं, तो यह क्योंकर
कहता है कि मैं स्वर्ग से उतरा हूं।
४३ यीशु ने उन को उत्तर दिया कि आपस
४४ में मत कुड़कुड़ाओ। यदि पिता जिस
ने मुझे भेजा उसे न खींचे तो कोई मेरे
पास नहीं आ सकता है और उस को मैं
पिछले दिन में उठाऊंगा। भविष्यद्वक्ताओं ४५
के पुस्तक में लिखा है कि वे सब ईश्वर
के सिखाये हुए होंगे सो हर एक जिस
ने पिता से सुना और सीखा है मेरे पास
आता है। यह नहीं कि किसी ने पिता ४६
को देखा है, केवल जो ईश्वर की ओर
से है उसी ने पिता को देखा है। मैं तुम ४७
से सच सच कहता हूं जो कोई मुझ पर
विश्वास करता है उस को अनन्त जीवन
है। मैं जीवन की रोटी हूं। तुम्हारे ४८ ४९
पितरों ने जंगल में मन्ना खाया और मर
गये। यह वह रोटी है जो स्वर्ग से उतरती ५०
है कि जो उस में से खावे सो न मरे। मैं ५१
जीवती रोटी हूं जो स्वर्ग से उतरी,
यदि कोई यह रोटी खाय तो सदा लों
जीयेगा और जो रोटी मैं देऊंगा सो मेरा
मांस है जिसे मैं जगत के जीवन के लिये
देऊंगा। इस पर यिहूदी लोग आपस ५२
में विवाद करने लगे कि यह हमें क्योंकर
अपना मांस खाने को दे सकता है। यीशु ५३
ने उन से कहा मैं तुम से सच सच कहता
हूं जो तुम मनुष्य के पुत्र का मांस न
खाओ और उस का लोहू न पीओ तो
तुम में जीवन नहीं है। जो मेरा मांस ५४
खाता और मेरा लोहू पीता है उस को
अनन्त जीवन है और मैं उसे पिछले दिन
में उठाऊंगा। क्योंकि मेरा मांस सच्चा ५५
भोजन है और मेरा लोहू सच्चा पीने की
वस्तु है। जो मेरा मांस खाता और ५६
मेरा लोहू पीता है सो मुझ में रहता
है और मैं उस में रहता हूं। जैसा जीवते ५७
पिता ने मुझे भेजा और मैं पिता से जीता
हूं तैसा वह भी जो मुझे खाय मुझ से
जीयेगा। यह वह रोटी है जो स्वर्ग से ५८
उतरी, जैसा तुम्हारे पितरों ने मन्ना
खाया और मर गये वैसा नहीं, जो
यह रोटी खाय सो सदा लों जीयेगा।

५९ उस ने कफर्नाहुम में उपदेश करते हुए सभा के घर में यह बातें कहीं ॥

६० उस के शिष्यों में से बहुतों ने यह सुनके कहा यह बात कठिन है इसे ६१ कौन सुन सकता है । यीशु ने अपने मन में जाना कि उस के शिष्य इस बात के विषय में कुड़कुड़ाते हैं इस लिये उन से कहा क्या इस बात से ६२ तुम को ठोकर लगती है । यदि मनुष्य के पुत्र को जहां वह आगे था उस स्थान पर चढ़ते देखो तो क्या कहोगे । ६३ आत्मा तो जीवनदायक है शरीर से कुछ लाभ नहीं . जो बातें मैं तुम से बोलता हूं सो आत्मा हैं और जीवन ६४ हैं । परन्तु तुम्हों में से कितने हैं जो विश्वास नहीं करते हैं . यीशु तो आरंभ से जानता था कि वे कौन हैं जो विश्वास करनेहारे नहीं हैं और वह ६५ कौन है जो मुझे पकड़वायगा । और उस ने कहा इसी लिये मैं ने तुम से कहा है कि यदि मेरे पिता की ओर से उस को न दिया जाय तो कोई मेरे ६६ पास नहीं आ सकता है । इस समय से उस के शिष्यों में से बहुतेरे पीछे हटे और उस के संग और न चले । ६७ इस लिये यीशु ने उन बारह शिष्यों से कहा क्या तुम भी जाने चाहते हो । ६८ शिमोन पितर ने उस को उत्तर दिया कि हे प्रभु हम किस के पास जायें . आप के पास अनन्त जीवन की बातें ६९ हैं । और हम ने विश्वास किया और जान लिया है कि आप जीवते ईश्वर ७० के पुत्र खीष्ट हैं । यीशु ने उन को उत्तर दिया क्या मैं ने तुम बारहों को नहीं चुना और तुम में से एक तो शैतान ७१ है । वह शिमोन के पुत्र यिहूदा इस्करियोती के विषय में बोला क्योंकि वही उसे पकड़वाने पर था और वह बारह शिष्यों में से एक था ॥

सातवां पर्ब्ब ।

१ इस के पीछे यीशु गालील में फिरने लगा क्योंकि यिहूदी लोग उसे मार डालने चाहते थे इस लिये वह यिहूदिया में फिरने नहीं चाहता था । २ और यिहूदियों का पर्ब्ब अर्थात तंबूवास पर्ब्ब निकट था । ३ इस लिये उस के भाइयों ने उस से कहा यहां से निकलके यिहूदिया में जा कि तेरे शिष्य लोग भी तेरे काम जो तू करता है देखें । ४ क्योंकि कोई नहीं गुप्त में कुछ करता और आप ही प्रगट होने चाहता है . जो तू यह करता है तो अपने तईं जगत को दिखा । ५ क्योंकि उस के भाई भी उस पर विश्वास नहीं करते थे । ६ यीशु ने उन से कहा मेरा समय अब लों नहीं पहुंचा है परन्तु तुम्हारा समय नित्य बना है । ७ जगत तुम से बैर नहीं कर सकता है परन्तु वह मुझ से बैर करता है क्योंकि मैं उस के विषय में साक्षी देता हूं कि उस के काम बुरे हैं । ८ तुम इस पर्ब्ब में जाओ . मैं अभी इस पर्ब्ब में नहीं जाता हूं क्योंकि मेरा समय अब लों पूरा नहीं हुआ है । ९ यह उन से यह बातें कहके गालील में रह गया । १० परन्तु जब उस के भाई लोग चले गये तब वह आप भी प्रगट होके नहीं पर जैसा गुप्त होके पर्ब्ब में गया । ११ यिहूदी लोग पर्ब्ब में उसे ढूंढ़ते थे और बोले वह कहां है । १२ और लोग उस के विषय में बहुत बातें आपस में फुस-फुसाके कहते थे . कितनों ने कहा वह उत्तम मनुष्य है परन्तु औरों ने कहा सो नहीं पर वह लोगों को भरमाता है । १३ तौभी यिहूदियों के डर के मारे कोई उस के विषय में खोलके नहीं बोला ॥

१४ पर्ब्ब के बीचोंबीच यीशु मन्दिर में १५ जाके उपदेश करने लगा । यिहूदियों ने अचंभा कर कहा यह बिन सीखे क्योंकर १६ विद्या जानता है । यीशु ने उन को उत्तर दिया कि मेरा उपदेश मेरा नहीं १७ परन्तु मेरे भेजनेहारे का है । यदि कोई उस की इच्छा पर चला चाहे तो वह उपदेश के विषय में जानेगा कि वह ईश्वर की ओर से है अथवा मैं अपनी १८ ओर से कहता हूं । जो अपनी ओर से कहता है सो अपनी ही बड़ाई चाहता है परन्तु जो अपने भेजनेहारे की बड़ाई चाहता है सोई सत्य है और उस में १९ अधर्म्म नहीं है । क्या मूसा ने तुम्हें व्यवस्था न दिई, तौभी तुम में से कोई व्यवस्था पर नहीं चलता है, तुम क्यों २० मुझे मार डालने चाहते हो । लोगों ने उत्तर दिया कि तुझे भूत लगा है, २१ कौन तुझे मार डालने चाहता है । यीशु ने उन को उत्तर दिया कि मैं ने एक काम किया और तुम सब अचंभा करते २२ हो । मूसा ने तुम्हें खतने की आज्ञा दिई, इस कारण नहीं कि वह मूसा की ओर से है परन्तु पितरों की ओर से है, और तुम विश्राम के दिन में २३ मनुष्य का खतना करते हो । जो विश्राम के दिन में मनुष्य का खतना किया जाता है जिस्तें मूसा की व्यवस्था लंघन न होय तो तुम मुझ से क्यों इस लिये क्रोध करते हो कि मैं ने विश्राम के दिन में सम्पूर्ण एक मनुष्य को चंगा २४ किया । मुंह देखके विचार मत करो परन्तु यथार्थ विचार करो ॥

२५ तब यिरूशलीम के निवासियों में से कितने बोले क्या यह वह नहीं है जिसे २६ वे मार डालने चाहते हैं । और देखो वह खोलके बात करता है और वे उस से कुछ नहीं कहते, क्या प्रधानों ने निश्चय जान लिया है कि यह सच-मुच खीष्ट है । परन्तु इस मनुष्य को २७ हम जानते हैं कि वह कहां से है पर खीष्ट जब आवेगा तब कोई नहीं जानेगा कि वह कहां से है । यीशु ने मन्दिर २८ में उपदेश करते हुए पुकारके कहा तुम मुझे जानते और यह भी जानते हो कि मैं कहां से हूं, मैं तो आप से नहीं आया हूं परन्तु मेरा भेजनेहारा सत्य है जिसे तुम नहीं जानते हो । मैं २९ उसे जानता हूं क्योंकि मैं उस की ओर से हूं और उस ने मुझे भेजा है । इस ३० पर उन्हों ने उस को पकड़ने चाहा तौभी किसी ने उस पर हाथ न बढ़ाया क्योंकि उस का समय अब लों नहीं पहुंचा था । और लोगों में से बहुतों ने ३१ उस पर विश्वास किया और कहा खीष्ट जब आवेगा तब क्या इन आश्चर्य्य कर्म्मों से जो इस ने किये हैं अधिक करेगा ॥

फरीशियों ने लोगों को उस के ३२ विषय में यह बातें फुसफुसाके कहते सुना और फरीशियों और प्रधान याजकों ने प्यादों को उसे पकड़ने को भेजा । इस पर यीशु ने कहा मैं अब थोड़ी ३३ बेर तुम्हारे साथ रहता हूं तब अपने भेजनेहारे के पास जाता हूं । तुम मुझे ३४ ढूंढ़ोगे और न पाओगे और जहां मैं रहूंगा तहां तुम नहीं आ सकोगे । यिहूदियों ने आपस में कहा यह कहां ३५ जायगा कि हम उसे नहीं पावेंगे, क्या वह यूनानियों में के तितर बितर लोगों के पास जायगा और यूनानियों को उपदेश देगा । यह क्या बात है जो ३६ इस ने कही कि तुम मुझे ढूंढ़ोगे और न पाओगे और जहां मैं रहूंगा तहां तुम नहीं आ सकोगे ॥

पिछले दिन पर्ब्ब के बड़े दिन में ३७

यीशु ने खड़ा हो पुकारके कहा यदि कोई पियासा होवे तो मेरे पास आके ३८ पीवे । जो मुझ पर बिश्वास करे जैसा धर्म्मपुस्तक ने कहा तैसा उस के अन्तर ३९ से अमृत जल की नदियां बहेंगीं । उस ने यह बचन आत्मा के विषय में कहा जिसे उस पर बिश्वास करनेहारे पाने पर थे क्योंकि पवित्र आत्मा अब लों नहीं दिया गया था इस लिये कि यीशु की महिमा अब लों प्रगट न हुई ४० थी । लोगों में से बहुतों ने यह बचन सुनके कहा यह सचमुच वह भविष्यद्वक्ता ४१ है । औरों ने कहा यह खीष्ट है परन्तु औरों ने कहा क्या खीष्ट गालील में से ४२ आवेगा । क्या धर्म्मपुस्तक ने नहीं कहा कि खीष्ट दाऊद के बंश में और बैतलहम नगर से जहां दाऊद रहता ४३ था आवेगा । सो उस के कारण लोगों ४४ में बिभेद हुआ । उन में से कितने उस को पकड़ने चाहते थे परन्तु किसी ने उस पर हाथ न बढ़ाये ॥

४५ तब प्यादे लोग प्रधान याजकों और फरीशियों के पास आये और उन्हों ने उन से कहा तुम उसे क्यों नहीं लाये ४६ हो । प्यादों ने उत्तर दिया कि किसी मनुष्य ने कभी इस मनुष्य की नाई ४७ बात न किई । फरीशियों ने उन को उत्तर दिया क्या तुम भी भरमाये गये ४८ हो । क्या प्रधानों अथवा फरीशियों में से किसी ने उस पर बिश्वास किया ४९ है । परन्तु ये लोग जो व्यवस्था को ५० नहीं जानते हैं स्रापित हैं । निकोदीम जो रात को यीशु पास आया और आप इन में से एक था उन से बोला, ५१ हमारी व्यवस्था जब लों मनुष्य की न सुने और न जाने कि वह क्या करता है तब लों क्या उस को दोषी ठहराती ५२ है । उन्हों ने उसे उत्तर दिया क्या आप भी गालील के हैं, ढूंढ़के देखिये कि गालील में से भविष्यद्वक्ता प्रगट नहीं होता । ५३ तब सब कोई अपने अपने घर को गये ॥

आठवां पर्व्व ।

१ परन्तु यीशु जैतून पर्व्वत पर गया, २ और भोर को फिर मन्दिर में आया और सब लोग उस पास आये और वह बैठके उन्हें उपदेश देने लगा । ३ तब अध्यापकों और फरीशियों ने एक स्त्री को जो व्यभिचार में पकड़ी गई थी उस पास लाके बीच में खड़ी किई, ४ और उस से कहा हे गुरु यह स्त्री व्यभिचार कर्म्म करते ही पकड़ी गई । ५ व्यवस्था में मूसा ने हमें आज्ञा दिई कि ऐसी स्त्रियां पत्थरवाह किई जायें सो आप क्या कहते हैं । ६ उन्हों ने उस की परीक्षा करने को यह बात कही कि उस पर दोष लगाने का गौं मिले परन्तु यीशु नीचे झुकके उंगली से भूमि पर लिखने लगा । ७ जब वे उस से पूछते रहे तब उस ने उठके उन से कहा तुम्हों में से जो निष्पापी होय सो पहिले उस पर पत्थर फेंके । ८ और वह फिर नीचे झुकके भूमि पर लिखने लगा । ९ पर वे यह सुनके और अपने अपने मन से दोषी ठहरके बड़ों से लेके छोटों तक एक एक करके निकल गये और केवल यीशु रह गया और वह स्त्री बीच में खड़ी रही । १० यीशु ने उठके स्त्री को छोड़ और किसी को न देखके उस से कहा हे नारी वे तेरे दोषदायक कहां हैं, क्या किसी ने तुझ पर दंड की आज्ञा न दिई । ११ उस ने कहा हे प्रभु किसी ने नहीं, यीशु ने उस से कहा मैं भी तुझ पर दंड की आज्ञा नहीं देता हूं जा और फिर पाप मत कर ॥

१२ तब यीशु ने फिर लोगों से कहा मैं

जगत का प्रकाश हूं . जो मेरे पीछे आवे सो अंधकार में नहीं चलेगा परन्तु जीवन का उजियाला पावेगा । १३ फरीशियों ने उस से कहा तू अपने ही विषय में साक्षी देता है तेरी साक्षी ठीक नहीं है । १४ यीशु ने उन को उत्तर दिया कि जो मैं अपने विषय में साक्षी देता हूं तौभी मेरी साक्षी ठीक है क्योंकि मैं जानता हूं कि मैं कहां से आया हूं और कहां जाता हूं परन्तु तुम नहीं जानते हो कि मैं कहां से आता हूं और कहां जाता हूं । १५ तुम शरीर को देखके विचार करते हो मैं किसी का विचार नहीं करता हूं । १६ और जो मैं विचार करता हूं भी तो मेरा विचार ठीक है क्योंकि मैं अकेला नहीं हूं परन्तु मैं हूं और पिता है जिस ने मुझे भेजा । १७ तुम्हारी व्यवस्था में लिखा है कि दो जनों की साक्षी ठीक होती है । १८ एक मैं हूं जो अपने विषय में साक्षी देता हूं और पिता जिस ने मुझे भेजा मेरे विषय में साक्षी देता है । १९ तब उन्हों ने उस से कहा तेरा पिता कहां है . यीशु ने उत्तर दिया कि तुम न मुझे न मेरे पिता को जानते हो . जो मुझे जानते तो मेरे पिता को भी जानते । २० यह बातें यीशु ने मन्दिर में उपदेश करते हुए भंडारघर में कहीं और किसी ने उस को न पकड़ा क्योंकि उस का समय अब लों नहीं पहुंचा था ॥

२१ तब यीशु ने उन से फिर कहा मैं जाता हूं और तुम मुझे ढूंढोगे और अपने पाप में मरोगे . जहां मैं जाता हूं तहां २२ तुम नहीं आ सकते हो । इस पर यिहूदियों ने कहा क्या वह अपने को मार डालेगा कि वह कहता है जहां मैं जाता हूं तहां तुम नहीं आ सकते हो । २३ उस ने उन से कहा तुम नीचे के हो मैं ऊपर का हूं . तुम इस जगत के हो मैं इस जगत का नहीं हूं । २४ इस लिये मैं ने तुम से कहा कि तुम अपने पापों में मरोगे क्योंकि जो तुम विश्वास न करो कि मैं वही हूं तो अपने पापों में मरोगे । २५ उन्हों ने उस से कहा तू कौन है . यीशु ने उन से कहा पहिले जो मैं तुम से कहता हूं वह भी सुनो । २६ तुम्हारे विषय में मुझे बहुत कुछ कहना और विचार करना है परन्तु मेरा भेजनेहारा सत्य है और जो मैं ने उस से सुना है सोई जगत से कहता हूं । २७ वे नहीं जानते थे कि वह उन से पिता के विषय में बोलता था । २८ तब यीशु ने उन से कहा जब तुम मनुष्य के पुत्र को ऊंचा करोगे तब जानोगे कि मैं वही हूं और कि मैं आप से कुछ नहीं करता हूं परन्तु जैसे मेरे पिता ने मुझे सिखाया तैसे मैं यह बातें बोलता हूं । २९ और मेरा भेजनेहारा मेरे संग है . पिता ने मुझे अकेला नहीं छोड़ा है क्योंकि मैं सदा वही करता हूं जिस से वह प्रसन्न होता है । ३० उस के यह बातें बोलते ही बहुत लोगों ने उस पर विश्वास किया । ३१ तब यीशु ने उन यिहूदियों से जिन्हों ने उस पर विश्वास किया कहा जो तुम मेरे वचन में बने रहो तो सचमुच मेरे शिष्य हो । ३२ और तुम सत्य को जानोगे और सत्य के द्वारा से तुम्हारा उद्धार होगा ॥

३३ उन्हों ने उस को उत्तर दिया कि हम तो इब्राहीम के वंश हैं और कभी किसी के दास नहीं हुए हैं . तू क्योंकर कहता है कि तुम्हारा उद्धार होगा । ३४ यीशु ने उन को उत्तर दिया मैं तुम से सच सच कहता हूं कि जो कोई पाप करता है सो पाप का दास है । ३५ दास सदा घर में नहीं रहता है . पुत्र सदा रहता है । ३६ सो यदि पुत्र तुम्हारा उद्धार करे तो निश्चय तुम्हारा उद्धार होगा । ३७ मैं जानता हूं कि तुम इब्राहीम के वंश हो परन्तु

मेरा वचन तुम में नहीं समाता है इस लिये तुम मुझे मार डालने चाहते हो। ३८ मैं ने अपने पिता के पास जो देखा है सो कहता हूं और तुम ने अपने पिता के पास जो देखा है सो ३९ करते हो। उन्हों ने उस को उत्तर दिया कि हमारा पिता इब्राहीम है. यीशु ने उन से कहा जो तुम इब्राहीम के सन्तान होते तो इब्राहीम के कर्म्म ४० करते। परन्तु अब तुम मुझे अर्थात एक मनुष्य को जिस ने वह सत्य वचन जो मैं ने ईश्वर से सुना तुम से कहा है मार डालने चाहते हो. यह तो इब्रा- ४१ हीम ने नहीं किया। तुम अपने पिता के कर्म्म करते हो. उन्हों ने उस से कहा हम व्यभिचार से नहीं जन्मे हैं हमारा एक पिता है अर्थात ईश्वर। ४२ यीशु ने उन से कहा यदि ईश्वर तुम्हारा पिता होता तो तुम मुझे प्यार करते क्योंकि मैं ईश्वर की ओर से निकलके आया हूं. मैं आप से नहीं आया हूं ४३ परन्तु उस ने मुझे भेजा। तुम मेरी बात क्यों नहीं बूझते हो. इसी लिये कि मेरा ४४ वचन नहीं सुन सकते हो। तुम अपने पिता शैतान से हो और अपने पिता के अभिलाषों पर चला चाहते हो. वह आरंभ से मनुष्यघाती था और सच्चाई में स्थिर नहीं रहता क्योंकि सच्चाई उस में नहीं है. जब वह झूठ बोलता तब अपने स्वभाव ही से बोलता है क्योंकि वह झूठा और झूठ का पिता है। ४५ परन्तु मैं सत्य कहता हूं इसी लिये तुम ४६ मेरी प्रतीति नहीं करते हो। तुम में से कौन मुझे पापी ठहराता है. और जो मैं सत्य कहता हूं तो तुम क्यों मेरी प्रतीति ४७ नहीं करते हो। जो ईश्वर से है सो ईश्वर की बातें सुनता है. तुम ईश्वर से नहीं हो इस कारण नहीं सुनते हो॥

४८ तब यिहूदियों ने उस को उत्तर दिया क्या हम अच्छा नहीं कहते हैं कि तू शोमिरोनी है और भूत तुझे लगा है। ४९ यीशु ने उत्तर दिया कि मुझे भूत नहीं लगा है परन्तु मैं अपने पिता का सन्मान करता हूं और तुम मेरा अपमान करते ५० हो। पर मैं अपनी बड़ाई नहीं चाहता हूं. एक है जो चाहता और बिचार ५१ करता है। मैं तुम से सच सच कहता हूं यदि कोई मेरी बात को पालन करे ५२ तो वह कभी मृत्यु को न देखेगा। तब यिहूदियों ने उस से कहा अब हम जानते हैं कि भूत तुझे लगा है. इब्राहीम और भविष्यद्वक्ता लोग मर गये हैं और तू कहता है कि यदि कोई मेरी बात को पालन करे तो वह कभी मृत्यु का स्वाद ५३ न चीखेगा। क्या तू हमारे पिता इब्राहीम से जो मर गया है बड़ा है. भविष्यद्वक्ता लोग भी मर गये हैं. तू ५४ अपने तई क्या बनाता है। यीशु ने उत्तर दिया कि जो मैं अपनी बड़ाई करूं तो मेरी बड़ाई कुछ नहीं है. मेरी बड़ाई करनेहारा मेरा पिता है जिसे तुम कहते हो कि वह हमारा ईश्वर है। ५५ तौभी तुम उसे नहीं जानते हो परन्तु मैं उसे जानता हूं और जो मैं कहूं कि मैं उसे नहीं जानता हूं तो मैं तुम्हारे समान झूठा होगा परन्तु मैं उसे जानता और ५६ उस के वचन को पालन करता हूं। तुम्हारा पिता इब्राहीम मेरा दिन देखने को हर्षित होता था और उस ने देखा ५७ और आनन्द किया। यिहूदियों ने उस से कहा तू अब लों पचास बरस का नहीं है और क्या तू ने इब्राहीम को ५८ देखा है। यीशु ने उन से कहा मैं तुम से सच सच कहता हूं कि इब्राहीम के ५९ होने के पहिले से मैं हूं। तब उन्हों ने पत्थर उठाये कि उस पर फेंकें परन्तु

यीशु छिप गया और उन्हों के बीच में से होके मन्दिर से निकला और यूहीं चला गया ॥

नवां पर्ब्ब ।

१ जाते हुए यीशु ने एक मनुष्य को २ देखा जो जन्म का अंधा था । और उस के शिष्यों ने उस से पूछा हे गुरु किस ने पाप किया इस मनुष्य ने अथवा इस के माता पिता ने जो यह अंधा ३ जन्मा । यीशु ने उत्तर दिया कि न तो इस ने न इस के माता पिता ने पाप किया परन्तु यह इस लिये हुआ कि ईश्वर के काम उस में प्रगट किये ४ जायें । मुझे दिन रहते अपने भेजनेहारे के कामों को करना अवश्य है . रात आती है जिस में कोई नहीं काम कर ५ सकता है । जब लों मैं जगत में हूं ६ तब लों जगत का प्रकाश हूं । यह कहके उस ने भूमि पर थूका और उस थूक से मिट्टी सानी करके वह सानी ७ मिट्टी अंधे की आंखों पर लगाई . और उस से कहा जाके शीलोह के कुण्ड में धो जिस का अर्थ यह है भेजा हुआ . सो उस ने जाके धोया और देखते हुए आया ।

८ तब पड़ोसियों ने और जिन्हों ने आगे उसे अंधा देखा था उन्हों ने कहा क्या यह वह नहीं है जो बैठा भीख ९ मांगता था । कितनों ने कहा यह वही है औरों ने कहा यह उस की नाईं है १० वह आप बोला मैं वही हूं । तब उन्हों ने उस से कहा तेरी आंखें क्योंकर ११ खुलीं । उस ने उत्तर दिया कि यीशु नाम एक मनुष्य ने मिट्टी सानी करके मेरी आंखों पर लगाई और मुझ से कहा शीलोह के कुण्ड को जा और धो सो मैं ने जाके धोया और दृष्टि पाई । १२ उन्हों ने उस से कहा वह मनुष्य कहां है . उस ने कहा मैं नहीं जानता हूं ॥

१३ वे उस को जो आगे अंधा था १४ फरीशियों के पास लाये । जब यीशु ने मिट्टी सानी करके उस की आंखें खोलीं थीं तब विश्राम का दिन था । १५ सो फरीशियों ने भी फिर उस से पूछा तू ने किस रीति से दृष्टि पाई . वह उन से बोला उस ने सानी मिट्टी मेरी आंखों पर लगाई और मैं ने धोया और १६ देखता हूं । फरीशियों में से कितनों ने कहा यह मनुष्य ईश्वर की ओर से नहीं है क्योंकि वह विश्राम का दिन नहीं मानता है . औरों ने कहा पापी मनुष्य क्योंकर ऐसे आश्चर्य्य कर्म्म कर सकता है . और उन्हों में विभेद हुआ । १७ वे उस अंधे से फिर बोले उस ने जो तेरी आंखें खोलीं तो तू उस के विषय में क्या कहता है . उस ने कहा वह भविष्यद्वक्ता है ॥

१८ परन्तु यिहूदियों ने जब लों उस दृष्टि पाए हुए मनुष्य के माता पिता को नहीं बुलाया तब लों उस के विषय में प्रतीति न किई कि वह अंधा था १९ और दृष्टि पाई । और उन्हों ने उन से पूछा क्या यह तुम्हारा पुत्र है जिसे तुम कहते हो कि वह अंधा जन्मा . २० तो वह अब क्योंकर देखता है । उस के माता पिता ने उन को उत्तर दिया हम जानते हैं कि यह हमारा पुत्र है २१ और कि वह अंधा जन्मा । परन्तु वह अब क्योंकर देखता है सो हम नहीं जानते अथवा किस ने उस की आंखें खोलीं हम नहीं जानते हैं . वह सयाना है उसी से पूछिये वह अपने विषय में २२ आप कहेगा । यह बातें उस के माता पिता ने इस लिये कहीं कि वे यिहूदियों से डरते थे क्योंकि यिहूदी लोग आपस में ठहरा चुके थे कि यदि कोई यीशु को खीष्ट करके मान लेवे तो

२३ सभा में से निकाला जायगा । इस कारण उस के माता पिता ने कहा वह सयाना है उसी से पूछिये ॥

२४ तब उन्हों ने उस मनुष्य को जो अंधा था दूसरी बेर बुलाके उस से कहा ईश्वर का गुणानुवाद कर, हम जानते हैं कि यह मनुष्य पापी है । २५ उस ने उत्तर दिया वह पापी है कि नहीं सो मैं नहीं जानता हूं एक बात मैं जानता हूं कि मैं जो अंधा था अब २६ देखता हूं । उन्हों ने उस से फिर कहा उस ने तुझ से क्या किया, तेरी आंखें २७ किस रीति से खोलीं । उस ने उन को उत्तर दिया कि मैं आप लोगों से कह चुका हूं और आप लोगों ने नहीं सुना, किस लिये फिर सुना चाहते हैं, क्या आप लोग भी उस के शिष्य हुआ २८ चाहते हैं । तब उन्हों ने उस की निन्दा कर कहा तू उस का शिष्य है पर हम २९ मूसा के शिष्य हैं । हम जानते हैं कि ईश्वर ने मूसा से बातें किईं परन्तु इस को हम नहीं जानते कि कहां से ३० है । उस मनुष्य ने उन को उत्तर दिया इस में अचंभा है कि आप लोग नहीं जानते वह कहां से है और उस ने मेरी ३१ आंखें खोली हैं । हम जानते हैं कि ईश्वर पापियों की नहीं सुनता है परन्तु यदि कोई ईश्वर का उपासक होय और उस की इच्छा पर चले तो ३२ वह उस की सुनता है । यह कभी सुनने में नहीं आया कि किसी ने जन्म ३३ के अंधे की आंखें खोली हों । जो यह ईश्वर की ओर से न होता तो कुछ ३४ नहीं कर सकता । उन्हों ने उस को उत्तर दिया कि तू तो सम्पूर्ण पापों में जन्मा और क्या तू हमें सिखाता है, और उन्हों ने उसे बाहर निकाल दिया ॥

३५ यीशु ने सुना कि उन्हों ने उसे बाहर निकाल दिया था और उस को पा करके उस से कहा क्या तू ईश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है । ३६ उस ने उत्तर दिया कि हे प्रभु वह कौन है कि मैं उस पर विश्वास करूं । ३७ यीशु ने उस से कहा तू ने उसे देखा भी है और जो तेरे संग बात करता है वही है । ३८ उस ने कहा हे प्रभु मैं विश्वास करता हूं और उस को प्रणाम किया । ३९ तब यीशु ने कहा मैं इस जगत में विचार के लिये आया हूं कि जो नहीं देखते हैं सो देखें और जो देखते हैं सो अंधे हो जावें । ४० फरीशियों में से जो जन उस के संग थे सो यह सुनके उस से बोले क्या हम भी अंधे हैं । ४१ यीशु ने उन से कहा जो तुम अंधे होते तो तुम्हें पाप न होता परन्तु अब तुम कहते हो कि हम देखते हैं इस लिये तुम्हारा पाप बना रहा ॥

दसवां पर्व्व ।

१ मैं तुम से सच सच कहता हूं कि जो द्वार से भेड़शाले में नहीं पैठता परन्तु दूसरी ओर से चढ़ जाता है सो २ चोर औ डाकू है । जो द्वार से पैठता ३ है सो भेड़ों का रखवाला है । उस के लिये द्वारपाल खोल देता है और भेड़ें उस का शब्द सुनती हैं और वह अपनी भेड़ों का नाम ले ले बुलाता है और ४ उन्हें बाहर ले जाता है । और जब वह अपनी भेड़ें बाहर ले जाता है तब उन के आगे चलता है और भेड़ें उस के पीछे हो लेती हैं क्योंकि वे उस का ५ शब्द जानती हैं । परन्तु वे पराये के पीछे नहीं जायेंगी पर उस से भागेंगी क्योंकि वे परायों का शब्द नहीं जानती ६ हैं । यीशु ने उन से यह दृष्टान्त कहा परन्तु उन्हों ने न बूझा कि यह क्या ७ बातें हैं जो वह हम से कहता है । तब यीशु ने फिर उन से कहा मैं तुम से सच

सच कहता हूं कि मैं भेड़ों का द्वार हूं।
८ जितने मेरे आगे आये सो सब चोर और डाकू हैं परन्तु भेड़ों ने उन की न सुनी।
९ द्वार मैं हूं, यदि मुझ से से कोई प्रवेश करे तो त्राण पावेगा और भीतर बाहर आया जाया करेगा और चराई पावेगा।
१० चोर किसी और काम को नहीं केवल चोरी और घात और नाश करने को आता है, मैं आया हूं कि भेड़ें जीवन पावें
११ और अधिकाई से पावें। मैं अच्छा गड़ेरिया हूं, अच्छा गड़ेरिया भेड़ों के
१२ लिये अपना प्राण देता है। परन्तु मजूर जो गड़ेरिया नहीं है और भेड़ें उस के निज की नहीं हैं हुंड़ार को आते देखके भेड़ों को छोड़ देता और भाग जाता है और हुंड़ार भेड़ें पकड़के उन्हें तितर
१३ बितर करता है। मजूर भागता है क्योंकि वह मजूर है और भेड़ों की कुछ
१४ चिन्ता नहीं करता है। मैं अच्छा गड़ेरिया हूं और जैसा पिता मुझे जानता है और मैं पिता को जानता हूं वैसा मैं अपनी भेड़ों को जानता हूं और अपनी
१५ भेड़ों से जाना जाता हूं। और मैं भेड़ों
१६ के लिये अपना प्राण देता हूं। मेरी और भेड़ें हैं जो इस भेड़शाले की नहीं हैं, मुझे उन्हें को भी लाना होगा और वे मेरा शब्द सुनेंगी और एक झुंड और
१७ एक रखवाला होगा। पिता इस कारण से मुझे प्यार करता है कि मैं अपना प्राण देता हूं जिस्तें उसे फिर लेऊं।
१८ कोई उस को मुझ से नहीं लेता है परन्तु मैं आप से उसे देता हूं, उसे देने का मुझे अधिकार है और उसे फिर लेने का मुझे अधिकार है, यह आज्ञा मैं ने अपने पिता से पाई॥

१९ तब यिहूदियों में इन बातों के कारण
२० फिर विभेद हुआ। उन में से बहुतों ने कहा उस को भूत लगा है वह बौरहा है तुम उस की क्यों सुनते हो।
२१ औरों ने कहा यह बातें भूतग्रस्त की नहीं हैं, भूत क्या अंधों की आंखें खोल सकता है॥

२२ यिरूशलीम में स्थापनपर्ब्ब हुआ
२३ और जाड़े का समय था। और यीशु मन्दिर में सुलेमान के ओसारे में फिरता
२४ था। तब यिहूदियों ने उसे घेरके उस से कहा तू हमारे मन को कब लों दुबधा में रखेगा, जो तू ख्रीष्ट है तो
२५ हम से खोलके कह। यीशु ने उन्हें उत्तर दिया कि मैं ने तुम से कहा और तुम विश्वास नहीं करते हो, जो काम मैं अपने पिता के नाम से करता हूं वे ही मेरे विषय में साक्षी देते हैं।
२६ परन्तु तुम विश्वास नहीं करते हो क्योंकि तुम मेरी भेड़ों में से नहीं हो
२७ जैसा मैं ने तुम से कहा। मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं और मैं उन्हें जानता हूं
२८ और वे मेरे पीछे हो लेती हैं। और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूं और वे कभी नाश न होंगी और कोई उन्हें मेरे हाथ
२९ से छीन न लेगा। मेरा पिता जिस ने उन्हें मुझ को दिया है सभों से बड़ा है और कोई मेरे पिता के हाथ से छीन
३० नहीं सकता है। मैं और पिता एक
३१ हैं। तब यिहूदियों ने फिर उसे पत्थर-
३२ वाह करने को पत्थर उठाये। यीशु ने उन को उत्तर दिया कि मैं ने अपने पिता की ओर से बहुत से भले काम तुम्हें दिखाये हैं उन में से किस काम के
३३ लिये मुझे पत्थरवाह करते हो। यिहूदियों ने उस को उत्तर दिया कि भले काम के लिये हम तुझे पत्थरवाह नहीं करते हैं परन्तु ईश्वर की निन्दा के लिये और इस लिये कि तू मनुष्य होके
३४ अपने को ईश्वर बनाता है। यीशु ने उन्हें उत्तर दिया क्या तुम्हारी व्यवस्था

में नहीं लिखा है कि मैं ने कहा तुम
३५ ईश्वरगण हो । यदि उस ने उन को
ईश्वरगण कहा जिन के पास ईश्वर
का बचन पहुंचा और धर्म्मपुस्तक की
३६ बात लोप नहीं हो सकती है . तो जिसे
पिता ने पवित्र करके जगत में भेजा
है उस से क्या तुम कहते हो कि तू
ईश्वर की निन्दा करता है इस लिये
कि मैं ने कहा मैं ईश्वर का पुत्र हूं ।
३७ जो मैं अपने पिता के कार्य्य नहीं करता
३८ हूं तो मेरी प्रतीति मत करो । परन्तु
जो मैं करता हूं तो यदि मेरी प्रतीति
न करो तौभी उन कार्य्यों की प्रतीति
करो इस लिये कि तुम जानो और
बिश्वास करो कि पिता मुझ में है और
मैं उस में हूं ॥

३९ तब उन्हों ने फिर उसे पकड़ने चाहा
परन्तु वह उन के हाथ से निकल गया .
४० और फिर यर्दन के उस पार उस स्थान
पर गया जहां योहन पहिले बपतिसमा
४१ देता था और वहां रहा । और बहुत
लोग उस पास आये और बोले योहन
ने तो कोई आश्चर्य्य कर्म्म नहीं किया
परन्तु जो कुछ योहन ने इस के बिषय
४२ में कहा सो सब सच था । और वहां
बहुतों ने उस पर बिश्वास किया ॥

एग्यारहवां पर्ब्ब ।

१ इलियाजर नाम बैथनिया का
अर्थात मरियम और उस की बहिन
मर्था के गांव का एक मनुष्य रोगी
२ था । मरियम वही थी जिस ने प्रभु
पर सुगन्ध तेल लगाया और उस के
चरणों को अपने बालों से पोंछा और
उस का भाई इलियाजर था जो रोगी
३ था । सो दोनों बहिनों ने यीशु को
कहला भेजा कि हे प्रभु देखिये जिसे
४ आप प्यार करते हैं सो रोगी है । यह
सुनके यीशु ने कहा यह रोग मृत्यु के
लिये नहीं परन्तु ईश्वर की महिमा के
लिये है कि ईश्वर के पुत्र की महिमा
उस के द्वारा से प्रगट किई जाय ।
५ यीशु मर्था को और उस की बहिन को
और इलियाजर को प्यार करता था ॥

६ जब उस ने सुना कि इलियाजर
रोगी है तब जिस स्थान में वह था
७ उस स्थान में दो दिन और रहा । तब
इस के पीछे उस ने शिष्यों से कहा कि
आओ हम फिर यिहूदिया को चलें ।
८ शिष्यों ने उस से कहा हे गुरु यिहूदी
लोग अभी आप को पत्थरवाह किया
चाहते थे और आप क्या फिर वहां
९ जाते हैं । यीशु ने उत्तर दिया क्या दिन
की बारह घड़ी नहीं हैं . यदि कोई
दिन को चले तो ठोकर नहीं खाता
है क्योंकि वह इस जगत का उजियाला
१० देखता है । परन्तु यदि कोई रात को
चले तो ठोकर खाता है क्योंकि उजि-
११ याला उस में नहीं है । उस ने यह
बातें कहीं और इस के पीछे उन से
बोला हमारा मित्र इलियाजर सो गया
है परन्तु मैं उसे जगाने को जाता हूं ।
१२ उस के शिष्यों ने कहा हे प्रभु जो वह
सो गया है तो चंगा हो जायगा ।
१३ यीशु ने उस की मृत्यु के बिषय में
कहा परन्तु उन्हों ने समझा कि उस ने
नींद में सो जाने के बिषय में कहा ।
१४ तब यीशु ने उन से खोलके कहा इलि-
१५ याजर मर गया है । और तुम्हारे लिये
मैं आनन्द करता हूं कि मैं वहां नहीं
था जिस्तें तुम बिश्वास करो . परन्तु
१६ आओ हम उस पास चलें । तब थोमा
ने जो दिदुम कहावता है अपने संगी
शिष्यों से कहा कि आओ हम भी उस
१७ के संग मरने को जायें । सो जब यीशु
आया तब उस ने यही पाया कि इलि-
याजर को कबर में चार दिन हो चुके ॥

१८ बैथनिया यिरूशलीम के निकट अर्थात कोश एक दूर था । १९ और बहुत से यिहूदी लोग मर्था और मरियम के पास आये थे कि उन के भाई के विषय में उन को शांति देवें । २० सो मर्था ने जब सुना कि यीशु आता है तब जाके उस से भेंट किई परन्तु मरियम घर में बैठी रही । २१ मर्था ने यीशु से कहा हे प्रभु जो आप यहां होते तो मेरा भाई नहीं मरता । २२ परन्तु मैं जानती हूं कि अब भी जो कुछ आप ईश्वर से मांगें ईश्वर आप को देगा । २३ यीशु ने उस से कहा तेरा भाई जी उठेगा । २४ मर्था ने उस से कहा मैं जानती हूं कि पिछले दिन पुनरुत्थान में वह जी उठेगा । २५ यीशु ने उस से कहा मैं ही पुनरुत्थान और जीवन हूं . जो मुझ पर बिश्वास करे सो यदि मर जाय तौभी जीयेगा । २६ और जो कोई जीवता हो और मुझ पर बिश्वास करे सो कभी नहीं मरेगा . क्या तू इस बात का बिश्वास करती है । २७ वह उस से बोली हां प्रभु मैं ने बिश्वास किया है कि ईश्वर का पुत्र खीष्ट जो जगत में आनेवाला था सो आप ही हैं । २८ यह कहके वह चली गई और अपनी बहिन मरियम को चुपके से बुलाके कहा गुरु आये हैं और तुझे बुलाते हैं । २९ मरियम जब उस ने सुना तब शीघ्र उठके यीशु पास आई । ३० यीशु अब लों गांव में नहीं आया था परन्तु उसी स्थान में था जहां मर्था ने उस से भेंट किई । ३१ जो यिहूदी लोग मरियम के संग घर में थे और उस को शांति देते थे सो जब उसे देखा कि वह शीघ्र उठके बाहर गई तब यह कहके उस के पीछे हो लिये कि वह कबर पर जाती है कि वहां रोवे । ३२ जब मरियम जहां यीशु था तहां पहुंची तब उसे देखके उस के पांवों पड़ी और उस से बोली हे प्रभु जो आप यहां होते तो मेरा भाई नहीं मरता । ३३ जब यीशु ने उसे रोते हुए और जो यिहूदी लोग उस के संग आये उन्हें भी रोते हुए देखा तब आत्मा में बिकल हुआ और घबराया . ३४ और कहा तुम ने उसे कहां रखा है . वे उस से बोले हे प्रभु आके देखिये । ३५ यीशु रोया । ३६ तब यिहूदियों ने कहा देखो वह उसे कैसा प्यार करता था । ३७ परन्तु उन में से कितनों ने कहा क्या यह जिस ने अंधे की आंखें खोलीं यह भी न कर सकता कि यह मनुष्य नहीं मरता । ३८ यीशु अपने में फिर बिकल होके कबर पर आया . वह गुफा थी और एक पत्थर उस पर धरा था । ३९ यीशु ने कहा पत्थर को सरकाओ . उस मरे हुए की बहिन मर्था उस से बोली हे प्रभु वह तो अब गन्धाता है क्योंकि उस को चार दिन हुए हैं । ४० यीशु ने उस से कहा क्या मैं ने तुझ से न कहा कि जो तू बिश्वास करे तो ईश्वर की महिमा को देखेगी ।

४१ तब जहां वह मृतक पड़ा था वहां से उन्हों ने पत्थर को सरकाया और यीशु ने ऊपर दृष्टि कर कहा हे पिता मैं तेरा धन्य मानता हूं कि तू ने मेरी सुनी है । ४२ और मैं जानता था कि तू सदा मेरी सुनता है परन्तु जो बहुत लोग आसपास खड़े हैं उन के कारण मैं ने यह कहा कि वे बिश्वास करें कि तू ने मुझे भेजा । ४३ यह बातें कहके उस ने बड़े शब्द से पुकारा कि हे इलियाजर बाहर आ । ४४ तब वह मृतक जो हाथ पांव बांधे हुए बाहर आया और उस का मुंह अंगोछे में लपेटा हुआ था . यीशु ने उन से कहा उसे खोलो और जाने दो ।

४५ तब बहुत से यिहूदी लोगों ने जो मरियम के पास आये थे यह जो यीशु ने किया था देखके उस पर बिश्वास ४६ किया । परन्तु उन में से कितनों ने फरीशियों के पास जाके जो यीशु ने ४७ किया था सो उन्हों से कह दिया । इस पर प्रधान याजकों और फरीशियों ने सभा एकट्ठी करके कहा हम क्या करते हैं, यह मनुष्य तो बहुत आश्चर्य्य कर्म्म ४८ करता है । जो हम उसे यूं छोड़ देवें तो सब लोग उस पर बिश्वास करेंगे और रोमी लोग आके हमारे स्थान और ४९ लोग को भी उठा देंगे । तब उन में से कियाफा नाम एक जन जो उस बरस का महायाजक था उन से बोला तुम ५० लोग कुछ नहीं जानते हो, और यह बिचार भी नहीं करते हो कि हमारे लिये अच्छा है कि लोगों के लिये एक मनुष्य मरे और यह सम्पूर्ण लोग नाश ५१ न होवें । यह बात वह आप से नहीं बोला परन्तु उस बरस का महायाजक होके भविष्यद्वाक्य से कहा कि यीशु ५२ उन लोगों के लिये मरने पर था, और केवल उन लोगों के लिये नहीं परन्तु इस लिये भी कि ईश्वर के सन्तानों को जो तितर बितर हुए हैं एक में एकट्ठे ५३ करे । सो उसी दिन से उन्हों ने उसे घात करने को आपस में बिचार किया । ५४ इस लिये यीशु प्रगट होके यिहूदियों के बीच में और नहीं फिरा परन्तु वहां से जंगल के निकट के देश में इफ्रईम नाम एक नगर को गया और अपने ५५ शिष्यों के संग वहां रहा । यिहूदियों का निस्तार पर्ब्ब निकट था और बहुत लोग अपने तईं शुद्ध करने को निस्तार पर्ब्ब के आगे देश में से यिरूशलीम को ५६ गये । उन्हों ने यीशु को ढूंढ़ा और मन्दिर में खड़े हुए आपस में कहा तुम क्या समझते हो क्या वह पर्ब्ब में नहीं ५७ आवेगा । और प्रधान याजकों और फरीशियों ने भी आज्ञा दिई थी कि यदि कोई जाने कि यीशु कहां है तो बतावे इस लिये कि वे उसे पकड़ें ॥

बारहवां पर्ब्ब ।

१ निस्तार पर्ब्ब के छः दिन आगे यीशु बैथनिया में आया जहां इलियाजर था जो मर गया था जिसे उस ने मृतकों में २ से उठाया था । वहां उन्हों ने उस के लिये बियारी बनाई और मर्था ने सेवा किई और इलियाजर यीशु के संग बैठने- ३ हारों में से एक था । तब मरियम ने आध सेर जटामांसी का बहुमूल्य सुगन्ध तेल लेके यीशु के चरणों पर लगाया और उस के चरणों को अपने बालों से पोंछा और तेल के सुगन्ध से घर भर ४ गया । इस पर उस के शिष्यों में से शिमोन का पुत्र यिहूदा इस्करियोती नाम एक शिष्य जो उसे पकड़वाने पर था ५ बोला, यह सुगन्ध तेल क्यों नहीं तीन सौ सूकियों पर बेचा गया और कंगालों ६ को दिया गया । उस ने यह बात इस लिये नहीं बोला कि वह कंगालों की चिन्ता करता था परन्तु इस लिये कि वह चोर था और थैली रखता था और जो उस में डाला जाता सो उठा लेता ७ था । यीशु ने कहा स्त्री को रहने दे, उस ने मेरे गाड़े जाने के दिन के लिये ८ यह रखा है । कंगाल लोग तुम्हारे संग सदा रहते हैं परन्तु मैं तुम्हारे संग सदा नहीं रहूंगा ॥

९ यिहूदियों में से बहुत लोगों ने जाना कि यीशु वहां है और वे केवल यीशु के कारण नहीं परन्तु इलियाजर को देखने के लिये भी आये जिसे उस ने १० मृतकों में से उठाया था । तब प्रधान याजकों ने इलियाजर को भी मार डालने

११ का बिचार किया । क्योंकि बहुत यिहूदियों ने उस के कारण जाके यीशु पर बिश्वास किया ॥

१२ दूसरे दिन बहुत लोग जो पर्व्व में आये थे जब उन्हों ने सुना कि यीशु १३ यिरूशलीम में आता है . तब खजूरों के पत्ते लेके उस से मिलने को निकले और पुकारने लगे कि जय जय धन्य इस्रायेल का राजा जो परमेश्वर के नाम से आता १४ है । यीशु एक गदही के बच्चे को पाके १५ उस पर बैठा . जैसा लिखा है कि हे सियोन की पुत्री मत डर देख तेरा राजा गदही के बच्चे पर बैठा हुआ आता १६ है । यह बातें उस के शिष्यों ने पहिले नहीं समझीं परन्तु जब यीशु की महिमा प्रगट हुई तब उन्हों ने स्मरण किया कि यह बातें उस के विषय में लिखी हुई थीं और कि उन्हों ने उस से यह १७ किया था । जो लोग उस के संग थे उन्हों ने साक्षी दिई कि उस ने इलियाजर को कबर में से बुलाया और उस को १८ मृतकों में से उठाया । लोग इसी कारण उस से आ मिले भी कि उन्हों ने सुना कि उस ने यह आश्चर्य्य कर्म्म किया १९ था । तब फरीशियों ने आपस में कहा क्या तुम देखते हो कि तुम से कुछ बन नहीं पड़ता . देखो संसार उस के पीछे गया है ॥

२० जो लोग पर्व्व में भजन करने को आये उन्हों में से कितने यूनानी लोग २१ थे । उन्हों ने गालील के बैतसैदा नगर के रहनेहारे फिलिप के पास आके उस से बिन्ती किई कि हे प्रभु हम यीशु को २२ देखने चाहते हैं । फिलिप ने आके अन्द्रिय से कहा और फिर अन्द्रिय और २३ फिलिप ने यीशु से कहा । यीशु ने उन को उत्तर दिया कि मनुष्य के पुत्र की महिमा के प्रगट होने की घड़ी आ पहुंची है । २४ मैं तुम से सच सच कहता हूं यदि गेहूं का दाना भूमि में पड़के मर न जाय तो वह अकेला रहता है परन्तु जो मर जाय तो बहुत फल फलता है । २५ जो अपने प्राण को प्यार करे सो उसे खोवेगा और जो इस जगत में अपने प्राण को अप्रिय जाने सो अनन्त जीवन लों उस की रक्षा करेगा । २६ यदि कोई मेरी सेवा करे तो मेरे पीछे हो लेवे और जहां मैं रहूंगा तहां मेरा सेवक भी रहेगा . यदि कोई मेरी सेवा करे तो पिता उस का आदर करेगा । २७ अब मेरा मन व्याकुल हुआ है और मैं क्या कहूं . हे पिता मुझे इस घड़ी से बचा . परन्तु मैं इसी लिये इस घड़ी लों आया हूं । २८ हे पिता अपने नाम की महिमा प्रगट कर . तब यह आकाशबाणी हुई कि मैं ने उस की महिमा प्रगट किई है और फिर प्रगट करूंगा । २९ तब जो लोग खड़े हुए सुनते थे उन्हों ने कहा कि मेघ गर्जा . औरों ने कहा कोई स्वर्गदूत उस से बोला । ३० इस पर यीशु ने कहा यह शब्द मेरे लिये नहीं परन्तु तुम्हारे लिये हुआ । ३१ अब इस जगत का बिचार होता है . अब इस जगत का अध्यक्ष बाहर निकाला जायगा । ३२ और मैं यदि पृथिवी पर से ऊंचा किया जाऊं तो सभी को अपनी ओर खींचूंगा । ३३ यह कहने में उस ने पता दिया कि वह कैसी मृत्यु से मरने पर था । ३४ लोगों ने उस को उत्तर दिया कि हम ने व्यवस्था में से सुना है कि ख्रीष्ट सदा लों रहेगा . तू क्योंकर कहता है कि मनुष्य के पुत्र को ऊंचा किया जाना होगा . यह मनुष्य का पुत्र कौन है । ३५ यीशु ने उन से कहा उंजियाला अब थोड़ी बेर तुम्हारे साथ है . जब लों उंजियाला मिलता है तब लों चलो न हो कि अंधकार तुम्हें घेरे,

जो अंधकार में चलता है सो नहीं
३६ जानता मैं कहां जाता हूं । जब लों
उजियाला मिलता है उजियाले पर
बिश्वास करो कि तुम ज्योति के सन्तान
होओ . यह बातें कहके यीशु चला गया
और उन से छिपा रहा ॥

३७ परन्तु यद्यपि उस ने उन के साम्ने
इतने आश्चर्य्य कर्म्म किये थे तौभी
उन्हों ने उस पर बिश्वास न किया .
३८ कि यिशैयाह भविष्यद्वक्ता का बचन पूरा
होवे जो उस ने कहा कि हे परमेश्वर
किस ने हमारे समाचार का बिश्वास
किया है और परमेश्वर की भुजा किस
३९ पर प्रगट किई गई है । इस कारण वे
बिश्वास न कर सके क्योंकि यिशैयाह
४० ने फिर कहा . उस ने उन के नेत्र अंधे
और उन का मन कठोर किया है ऐसा
न हो कि वे नेत्रों से देखें और मन से बूझें
और फिर जावें और मैं उन्हें चंगा करूं ।
४१ जब यिशैयाह ने उस का ऐश्वर्य्य देखा
और उस के विषय में बोला तब उस
४२ ने यह बातें कहीं । पर तौभी प्रधानों
में से भी बहुतों ने उस पर बिश्वास
किया परन्तु फरीशियों के कारण नहीं
मान लिया न हो कि वे सभा में से
४३ निकाले जायें । क्योंकि मनुष्यों की प्रशंसा
उन को ईश्वर की प्रशंसा से अधिक
प्रिय लगती थी ॥

४४ यीशु ने पुकारके कहा जो मुझ पर
बिश्वास करता है सो मुझ पर नहीं
परन्तु मेरे भेजनेहारे पर बिश्वास करता
४५ है । और जो मुझे देखता है सो मेरे
४६ भेजनेहारे को देखता है । मैं जगत में
ज्योति सा आया हूं कि जो कोई मुझ
पर बिश्वास करे सो अंधकार में न रहे ।
४७ और यदि कोई मेरी बातें सुनके बिश्वास
न करे तो मैं उसे दंड के योग्य नहीं
ठहराता हूं क्योंकि मैं जगत को दंड
के योग्य ठहराने को नहीं परन्तु जगत
का त्राण करने को आया हूं । जो मुझे ४८
तुच्छ जाने और मेरी बातें ग्रहण न करे
एक उस को दंड के योग्य ठहरानेहारा
है . जो बचन मैं ने कहा है वही
पिछले दिन में उसे दंड के योग्य ठह-
रावेगा । क्योंकि मैं ने अपनी ओर से ४९
बात नहीं किई है परन्तु पिता ने जिस
ने मुझे भेजा आप ही मुझे आज्ञा दिई
है कि मैं क्या कहूं और क्या बोलूं । और ५०
मैं जानता हूं कि उस की आज्ञा अनन्त
जीवन है इस लिये मैं जो बोलता हूं
सो जैसा पिता ने मुझ से कहा है वैसा
ही बोलता हूं ॥

तेरहवां पर्व्व ।

निस्तार पर्व्व के आगे यीशु ने १
जाना कि मेरी घड़ी आ पहुंची है कि
मैं इस जगत में से पिता के पास जाऊं
और उस ने अपने निज लोगों को जो
जगत में थे प्यार करके उन्हें अन्त लों
प्यार किया । और बियारी के समय में २
जब शैतान शिमोन के पुत्र यिहूदा
इस्करियोती के मन में उसे पकड़वाने
का मन डाल चुका था . तब यीशु ३
यह जानके कि पिता ने सब कुछ मेरे
हाथों में दिया है और कि मैं ईश्वर की
ओर से निकल आया और ईश्वर के
पास जाता हूं . बियारी से उठा और ४
अपने कपड़े रख दिये और अंगोछा लेके
अपनी कमर बांधी । तब पात्र में जल ५
डालके वह शिष्यों के पांव धोने लगा
और जिस अंगोछे से उस की कमर
बंधी थी उस से पोंछने लगा । तब वह ६
शिमोन पितर के पास आया . उस ने
उस से कहा हे प्रभु क्या आप मेरे पांव
धोते हैं । यीशु ने उस को उत्तर दिया ७
कि जो मैं करता हूं सो तू अब नहीं
जानता है परन्तु इस के पीछे जानेगा

८ पितर ने उस से कहा आप मेरे पांव कभी न धोइयेगा . यीशु ने उस को उत्तर दिया कि जो मैं तुझे न धोऊं तो मेरे संग तेरा कुछ अंश नहीं है । ९ शिमोन पितर ने उस से कहा हे प्रभु केवल मेरे पांव नहीं परन्तु मेरे हाथ १० और सिर भी धोइये । यीशु ने उस से कहा जो नहाया है उस को पांव धोने बिना और कुछ आवश्यक नहीं है परन्तु वह सम्पूर्ण शुद्ध है और तुम लोग ११ शुद्ध हो परन्तु सब नहीं । वह तो अपने पकड़वानेहारे को जानता था इस लिये उस ने कहा तुम सब शुद्ध नहीं हो ॥

१२ जब उस ने उन के पांव धोके अपने कपड़े ले लिये थे तब फिर बैठके उन्हों से कहा क्या तुम जानते हो कि १३ मैं ने तुम से क्या किया है । तुम मुझे हे गुरु और हे प्रभु पुकारते हो और तुम अच्छा कहते हो क्योंकि मैं वही हूं । १४ सो यदि मैं ने प्रभु और गुरु होके तुम्हारे पांव धोये हैं तो तुम्हें भी एक दूसरे के १५ पांव धोना उचित है । क्योंकि मैं ने तुम को नमूना दिया है कि जैसा मैं ने तुम से किया है तुम भी वैसा करो । १६ मैं तुम से सच सच कहता हूं दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं और न प्रेरित १७ अपने भेजनेहारे से बड़ा है । जो तुम यह बातें जानते हो यदि उन पर चलो १८ तो धन्य हो । मैं तुम सभों के विषय में नहीं कहता हूं . जिन्हें मैं ने चुना है उन्हें मैं जानता हूं . परन्तु यह इस लिये है कि धर्म्मपुस्तक का वचन पूरा होवे कि जो मेरे संग रोटी खाता है उस ने मेरे विरुद्ध अपनी लात १९ उठाई है । मैं अब से इस के होने के आगे तुम से कहता हूं कि जब वह हो जाय तब तुम विश्वास करो कि मैं २० वही हूं । मैं तुम से सच सच कहता हूं कि जिस किसी को मैं भेजूं उस को जो ग्रहण करता है सो मुझे ग्रहण करता है और जो मुझे ग्रहण करता है सो मेरे भेजनेहारे को ग्रहण करता है ॥

२१ यह बातें कहके यीशु आत्मा में व्याकुल हुआ और साक्षी देके बोला मैं तुम से सच सच कहता हूं कि तुम में २२ से एक मुझे पकड़वायगा । इस पर शिष्य लोग यह सन्देह करते हुए कि वह किस के विषय में बोलता है एक २३ दूसरे की ओर ताकने लगे । परन्तु यीशु के शिष्यों में से एक जिसे यीशु प्यार करता था उस की गोद में बैठा २४ हुआ था । सो शिमोन पितर ने उस को सैन किया कि पूछिये कौन है जिस २५ के विषय में आप बोलते हैं । तब उस ने यीशु की छाती पर उठंगके उस से २६ कहा हे प्रभु कौन है । यीशु ने उत्तर दिया वही है जिस को मैं यह रोटी का टुकड़ा डुबोके देऊंगा . और उस ने टुकड़ा डुबोके शिमोन के पुत्र यिहूदा २७ इस्करियोती को दिया । उसी समय में टुकड़ा लेने के पीछे शैतान उस में पैठ गया . तब यीशु ने उस से कहा जो तू करता है सो बहुत शीघ्र कर । २८ परन्तु बैठनेहारों में से किसी ने न जाना कि उस ने किस कारण यह बात २९ उस से कही । क्योंकि यिहूदा थैली जो रखता था इस लिये कितनों ने समझा कि यीशु ने उस से कहा पर्ब्ब के लिये जो हमें आवश्यक है सो मोल ले अथवा ३० कंगालों को कुछ दे । सो टुकड़ा लेने के पीछे वह तुरन्त बाहर गया . उस समय रात थी ॥

३१ जब वह बाहर गया था तब यीशु ने कहा अब मनुष्य के पुत्र की महिमा प्रगट होती है और ईश्वर की महिमा

३२ उस के द्वारा प्रगट होती है । जो ईश्वर की महिमा उस के द्वारा प्रगट होती है तो ईश्वर भी अपनी ओर से उस की महिमा प्रगट करेगा और तुरन्त ३३ उसे प्रगट करेगा । हे बालको मैं अब थोड़ी बेर तुम्हारे साथ हूं. तुम मुझे ढूंढ़ोगे और जैसा मैं ने यिहूदियों से कहा कि जहां मैं जाता हूं तहां तुम नहीं आ सकते हो तैसा मैं अब तुम से ३४ भी कहता हूं । मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूं कि एक दूसरे को प्यार करो. जैसा मैं ने तुम्हें प्यार किया है तैसा ३५ तुम भी एक दूसरे को प्यार करो । जो तुम आपस में प्यार करो तो इसी से सब लोग जानेंगे कि तुम मेरे शिष्य हो ॥

३६ शिमोन पितर ने उस से कहा हे प्रभु आप कहां जाते हैं. यीशु ने उस को उत्तर दिया कि जहां मैं जाता हूं तहां तू अब मेरे पीछे नहीं आ सकता है परन्तु इस के उपरान्त तू मेरे पीछे ३७ आवेगा । पितर ने उस से कहा हे प्रभु मैं क्यों नहीं अब आप के पीछे आ सकता हूं. मैं आप के लिये अपना ३८ प्राण देऊंगा । यीशु ने उस को उत्तर दिया क्या तू मेरे लिये अपना प्राण देगा. मैं तुझ से सच सच कहता हूं कि जब लों तू तीन बार मुझ से न मुकरे तब लों मुर्ग न बोलेगा ॥

चौदहवां पर्व्व ।

१ तुम्हारा मन व्याकुल न होय. ईश्वर पर विश्वास करो और मुझ पर २ विश्वास करो । मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं नहीं तो मैं तुम से कहता. मैं तुम्हारे लिये स्थान ३ तैयार करने जाता हूं । और जो मैं जाके तुम्हारे लिये स्थान तैयार करूं तो फिर आके तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा कि ४ जहां मैं रहूं तहां तुम भी रहो । और मैं कहां जाता हूं सो तुम जानते हो और मार्ग को जानते हो ॥

५ थोमा ने उस से कहा हे प्रभु आप कहां जाते हैं सो हम नहीं जानते हैं और मार्ग को हम क्योंकर जान सकें । ६ यीशु ने उस से कहा मैं ही मार्ग और सत्य और जीवन हूं. बिना मेरे द्वारा से कोई पिता पास नहीं पहुंचता है । ७ जो तुम मुझे जानते तो मेरे पिता को भी जानते और अब से तुम उस को जानते हो और उस को देखा है ॥

८ फिलिप ने उस से कहा हे प्रभु पिता को हमें दिखाइये तो हमारे लिये यही बहुत है । ९ यीशु ने उस से कहा हे फिलिप मैं इतने दिन से तुम्हारे संग हूं और क्या तू ने मुझे नहीं जाना है. जिस ने मुझे देखा है उस ने पिता को देखा है और तू क्योंकर कहता है कि पिता को हमें दिखाइये । १० क्या तू प्रतीति नहीं करता है कि मैं पिता में हूं और पिता मुझ में है. जो बातें मैं तुम से कहता हूं सो अपनी ओर से नहीं कहता हूं परन्तु पिता जो मुझ में रहता है वही इन कामों को करता है । ११ मेरी ही प्रतीति करो कि मैं पिता में हूं और पिता मुझ में है नहीं तो कामों ही के कारण मेरी प्रतीति करो । १२ मैं तुम से सच सच कहता हूं कि जो मुझ पर विश्वास करे जो काम मैं करता हूं उन्हें वह भी करेगा और इन से बड़े काम करेगा क्योंकि मैं अपने पिता के पास जाता हूं । १३ और जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे सोई मैं करूंगा इस लिये कि पुत्र के द्वारा पिता की महिमा प्रगट होय । १४ जो तुम मेरे नाम से कुछ मांगो तो मैं उसे करूंगा ॥

१५ जो तुम मुझे प्यार करते हो तो मेरी आज्ञाओं को पालन करो । १६ और

मैं पिता से मांगूंगा और वह तुम्हें दूसरा शान्तिदाता देगा कि वह सदा तुम्हारे १७ संग रहे . अर्थात सत्यता का आत्मा जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता है क्योंकि वह उसे नहीं देखता है और न उसे जानता है . परन्तु तुम उसे जानते हो क्योंकि वह तुम्हारे संग रहता है १८ और तुम्हों में होगा । मैं तुम्हें अनाथ नहीं छोडूंगा मैं तुम्हारे पास आऊंगा । १९ अब थोड़ी बेर में संसार मुझे फिर नहीं देखेगा परन्तु तुम मुझे देखोगे क्योंकि २० मैं जीता हूं तुम भी जीओगे । उस दिन तुम जानोगे कि मैं अपने पिता में हूं और तुम मुझ में हो और मैं तुम में हूं । २१ जो मेरी आज्ञाओं को पाके उन्हें पालन करता है वही है जो मुझे प्यार करता है और जो मुझे प्यार करता है सो मेरे पिता का प्यारा होगा और मैं उसे प्यार करूंगा और अपने तई उस पर प्रगट करूंगा ॥

२२ तब इस्करियोती नहीं परन्तु दूसरे यिहूदा ने उस से कहा हे प्रभु आप किस लिये अपने तई हमों पर प्रगट २३ करेंगे और संसार पर नहीं । यीशु ने उस को उत्तर दिया यदि कोई मुझे प्यार करे तो मेरी बात को पालन करेगा और मेरा पिता उसे प्यार करेगा और हम उस पास आवेंगे और उस के २४ संग वास करेंगे । जो मुझे प्यार नहीं करता है सो मेरी बातें पालन नहीं करता है और जो बात तुम सुनते हो सो मेरी नहीं परन्तु पिता की है जिस २५ ने मुझे भेजा । यह बातें मैं ने तुम्हारे २६ संग रहते हुए तुम से कही हैं । परन्तु शान्तिदाता अर्थात पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा वह तुम्हें सब कुछ सिखावेगा और सब कुछ जो मैं ने तुम से कहा है तुम्हें स्मरण करावेगा । २७ मैं तुम्हें शान्ति दे जाता हूं मैं अपनी शान्ति तुम्हें देता हूं . जैसा जगत देता है तैसा मैं तुम्हें नहीं देता हूं . तुम्हारा मन व्याकुल न होय और डर न जाय । २८ तुम ने सुना कि मैं ने तुम से कहा मैं जाता हूं और तुम्हारे पास फिर आऊंगा . जो तुम मुझे प्यार करते तो मैं ने जो कहा कि मैं पिता पास जाता हूं इस से तुम आनन्द करते क्योंकि मेरा पिता २९ मुझ से बड़ा है । और मैं ने अब इस के होने के आगे तुम से कहा है कि जब हो जाय तब तुम विश्वास ३० करो । मैं तुम्हारे संग और बहुत बातें न करूंगा क्योंकि इस जगत का अध्यक्ष आता है और मुझ में उस का कुछ नहीं ३१ है । परन्तु यह इस लिये है कि जगत जाने कि मैं पिता को प्यार करता हूं और जैसा पिता ने मुझे आज्ञा दिई तैसा ही करता हूं . उठो हम यहां से चलें ॥

पन्द्रहवां पर्ब्ब ।

१ मैं सच्ची दाखलता हूं और मेरा २ पिता किसान है । मुझ में जो जो डाल नहीं फलती है वह उसे दूर करता है और जो जो डाल फलती है वह उसे शुद्ध करता है कि वह अधिक फल ३ फले । तुम तो उस वचन के गुण से जो मैं ने तुम से कहा है शुद्ध हो चुके । ४ तुम मुझ में रहो और मैं तुम में . जैसे डाल जो वह दाखलता में न रहे तो आप से फल नहीं फल सकती है तैसे तुम भी जो मुझ में न रहो तो नहीं ५ फल सकते हो । मैं दाखलता हूं तुम लोग डालें हो . जो मुझ में रहता है और मैं उस में सो बहुत फल फलता है क्योंकि मुझ से अलग तुम कुछ नहीं ६ कर सकते हो । यदि कोई मुझ में न रहे तो वह ऐसा फेंका जाता जैसे

डाल फेंकी जाती और सूख जाती और लोग ऐसी डालें बटोरके आग में डालते ७ हैं और वे जल जाती हैं। जो तुम मुझ में रहो और मेरी बातें तुम में रहें तो जो कुछ तुम्हारी इच्छा होय सो मांगो और वह तुम्हारे लिये हो जायगा। ८ तुम्हारे बहुत फल फलने में मेरे पिता की महिमा प्रगट होती है और तुम मेरे शिष्य होओगे॥

९ जैसा पिता ने मुझ से प्रेम किया है तैसा मैं ने तुम से प्रेम किया है, मेरे १० प्रेम में रहो। जैसे मैं ने अपने पिता की आज्ञाओं का पालन किया है और उस के प्रेम में रहता हूं तैसे तुम जो मेरी आज्ञाओं का पालन करो तो मेरे ११ प्रेम में रहोगे। मैं ने यह बातें तुम से इस लिये कही हैं कि मेरा आनन्द तुम्हों में रहे और तुम्हारा आनन्द सम्पूर्ण १२ हो जाय। यह मेरी आज्ञा है कि जैसा मैं ने तुम्हें प्यार किया है तैसा तुम एक १३ दूसरे को प्यार करो। इस से बड़ा प्रेम किसी का नहीं है कि कोई अपने मित्रों १४ के लिये अपना प्राण देवे। तुम यदि सब काम करो जो मैं तुम्हें आज्ञा देता १५ हूं तो मेरे मित्र हो। मैं आगे को तुम्हें दास नहीं कहता हूं क्योंकि दास नहीं जानता कि उस का स्वामी क्या करता है परन्तु मैं ने तुम्हें मित्र कहा है क्योंकि मैं ने जो अपने पिता से सुना है १६ सो सब तुम्हें बताया है। तुम ने मुझे नहीं चुना परन्तु मैं ने तुम्हें चुना और तुम्हें ठहराया कि तुम जाके फल फलो और तुम्हारा फल रहे और कि तुम मेरे नाम से जो कुछ पिता से मांगो वह तुम को देवे॥

१७ मैं तुम्हें इन बातों की आज्ञा देता हूं इस लिये कि तुम एक दूसरे को १८ प्यार करो। यदि संसार तुम से बैर करता है तुम जानते हो कि उन्हों ने तुम से पहिले मुझ से बैर किया। जो १९ तुम संसार के होते तो संसार अपनों को प्यार करता परन्तु तुम संसार के नहीं हो पर मैं ने तुम्हें संसार में से चुना है इसी लिये संसार तुम से बैर करता है। जो बचन मैं ने तुम से कहा २० कि दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं है सो स्मरण करो, जो उन्हों ने मुझे सताया है तो तुम्हें भी सतावेंगे जो मेरी बात को पालन किया है तो तुम्हारी भी पालन करेंगे। परन्तु वे २१ मेरे नाम के कारण तुम से यह सब करेंगे क्योंकि वे मेरे भेजनेहारे को नहीं जानते हैं॥

जो मैं न आता और उन से बात न २२ करता तो उन्हें पाप न होता परन्तु अब उन्हें उन के पाप के लिये कोई बहाना नहीं है। जो मुझ से बैर करता २३ है सो मेरे पिता से भी बैर करता है। जो मैं उन कामों को जो और किसी ने २४ नहीं किये हैं उन्हों में न किये होता तो उन्हें पाप न होता परन्तु अब उन्हों ने देखके भी मुझ से और मेरे पिता से भी बैर किया है। पर यह इस लिये है कि २५ जो बचन उन्हों की व्यवस्था में लिखा है कि उन्हों ने मुझ से अकारण बैर किया सो पूरा होवे। परन्तु शांतिदाता २६ जिसे मैं पिता की ओर से तुम्हारे पास भेजूंगा अर्थात सत्यता का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है जब आवेगा तब वह मेरे विषय में साक्षी देगा। और तुम भी साक्षी देओगे २७ क्योंकि तुम आरंभ से मेरे संग रहे हो॥

सोलहवां पर्ब्ब।

मैं ने तुम से यह बातें कही हैं कि १ तुम ठोकर न खाओ। वे तुम्हें सभा में २ से निकालेंगे हां वह समय आता है

जिस में जो कोई तुम्हें मार डालेगा सो समझेगा कि मैं ईश्वर की सेवा करता ३ हूं । और वे तुम से इस लिये यह करेंगे कि उन्हों ने न पिता को न मुझ को ४ जाना है । परन्तु मैं ने तुम से यह बातें कही हैं कि जब वह समय आवे तब तुम उन्हें स्मरण करो कि मैं ने तुम से कह दिया . और मैं तुम से यह बातें आरंभ से न बोला क्योंकि मैं तुम्हारे संग था ॥

५ पर अब मैं अपने भेजनेहारे के पास जाता हूं और तुम में से कोई नहीं मुझ से पूछता है कि आप कहां जाते हैं । ६ परन्तु मैं ने जो यह बातें तुम से कही हैं इस लिये तुम्हारे मन शोक से भर गये ७ हैं । तौभी मैं तुम से सच बात कहता हूं तुम्हारे लिये अच्छा है कि मैं जाऊं क्योंकि जो मैं न जाऊं तो शांतिदाता तुम्हारे पास नहीं आवेगा परन्तु जो मैं जाऊं तो उसे तुम्हारे पास भेजूंगा ॥

८ और वह आके जगत को पाप के विषय में और धर्म्म के विषय में और ९ विचार के विषय में समझावेगा । पाप के विषय में यह कि वे मुझ पर विश्वास १० नहीं करते हैं । धर्म्म के विषय में यह कि मैं अपने पिता पास जाता हूं और ११ तुम मुझे फिर नहीं देखोगे । विचार के विषय में यह कि इस जगत के अध्यक्ष १२ का विचार किया गया है । मुझे और भी बहुत कुछ तुम से कहना है परन्तु १३ तुम अब नहीं सह सकते हो । पर वह जब आवेगा अर्थात सत्यता का आत्मा तब तुम्हें सारी सच्चाई लों मार्ग बतावेगा क्योंकि वह अपनी ओर से नहीं कहेगा परन्तु जो कुछ सुनेगा सो कहेगा और वह आनेवाली बातें तुम से कह १४ देगा । वह मेरी महिमा प्रगट करेगा क्योंकि वह मेरी बातों में से लेके तुम से कह देगा । जो कुछ पिता का है १५ सो सब मेरा है इस लिये मैं ने कहा कि वह मेरी बात में से लेके तुम से कह देगा ॥

थोड़ी बेर में तुम मुझे नहीं देखोगे १६ और फिर थोड़ी बेर में मुझे देखोगे क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं । तब उस के शिष्यों में से कोई कोई १७ आपस में बोले यह क्या है जो वह हम से कहता है कि थोड़ी बेर में तुम मुझे नहीं देखोगे और फिर थोड़ी बेर में मुझे देखोगे . और यह कि मैं पिता के पास जाता हूं । सो उन्हों ने कहा यह थोड़ी १८ बेर की बात जो वह कहता है क्या है . हम नहीं जानते वह क्या कहता है । यीशु ने जाना कि वे मुझ से पूछा १९ चाहते हैं और उन से कहा मैं जो बोला कि थोड़ी बेर में तुम मुझे नहीं देखोगे और फिर थोड़ी बेर में मुझे देखोगे क्या तुम इस के विषय में आपस में विचार करते हो । मैं तुम से सच सच कहता २० हूं कि तुम रोओगे और विलाप करोगे परन्तु संसार आनन्दित होगा . तुम्हें शोक होगा परन्तु तुम्हारा शोक आनन्द हो जायगा । स्त्री को जनने में शोक २१ होता है क्योंकि उस का समय आ पहुंचा है परन्तु जब वह बालक जन चुकी तब जगत में एक मनुष्य के उत्पन्न होने के आनन्द के कारण अपने क्लेश को फिर स्मरण नहीं करती है । और तुम्हें तो २२ अभी शोक होता है परन्तु मैं तुम्हें फिर देखूंगा और तुम्हारा मन आनन्दित होगा और तुम्हारा आनन्द कोई तुम से छीन न लेगा । और उस दिन तुम २३ मुझ से कुछ नहीं पूछोगे . मैं तुम से सच सच कहता हूं जो कुछ तुम मेरे नाम से पिता से मांगोगे वह तुम को देगा । अब लों तुम ने मेरे नाम से कुछ २४

नहीं मांगा है . मांगो तो पाओगे कि २५ तुम्हारा आनन्द सम्पूर्ण होय । मैं ने यह बातें तुम से दृष्टान्तों में कही हैं परन्तु समय आता है जिस में मैं तुम से दृष्टान्तों में और नहीं कहूंगा परन्तु खोलके तुम्हें पिता के विषय में बता- २६ ऊंगा । उस दिन तुम मेरे नाम से मांगोगे और मैं तुम से नहीं कहता हूं कि मैं तुम्हारे लिये पिता से प्रार्थना २७ करूंगा । क्योंकि पिता आप ही तुम्हें प्यार करता है इस लिये कि तुम ने मुझे प्यार किया है और यह बिश्वास किया है कि मैं ईश्वर की ओर से २८ निकल आया । मैं पिता की ओर से निकलके जगत में आया हूं . फिर जगत २९ को छोड़के पिता पास जाता हूं । उस के शिष्यों ने उस से कहा देखिये अब तो आप खोलके कहते हैं और कुछ ३० दृष्टान्त नहीं कहते हैं । अब हमें ज्ञान हुआ कि आप सब कुछ जानते हैं और आप को प्रयोजन नहीं कि कोई आप से पूछे . इस से हम बिश्वास करते हैं कि आप ईश्वर की ओर से निकल ३१ आये । यीशु ने उन को उत्तर दिया क्या ३२ तुम अब बिश्वास करते हो । देखो समय आता है और अभी आया है जिस में तुम सब तितर बितर होके अपने अपने स्थान को जाओगे और मुझे अकेला छोड़ोगे . तौभी मैं अकेला नहीं ३३ हूं क्योंकि पिता मेरे संग है । मैं ने यह बातें तुम से कही हैं इस लिये कि मुझ में तुम को शांति होय . जगत में तुम्हें क्लेश होगा परन्तु ढाढ़स बांधो मैं ने जगत को जीता है ॥

सत्रहवां पर्ब्ब ।

१ यह बातें कहके यीशु ने अपनी आंखें स्वर्ग की ओर उठाईं और कहा हे पिता घड़ी आ पहुंची है . अपने पुत्र की महिमा प्रगट कर कि तेरा पुत्र भी तेरी महिमा प्रगट करे । २ क्योंकि तू ने उस को सब प्राणियों पर अधिकार दिया कि जिन्हें तू ने उस को दिया है उन सभों को वह अनन्त जीवन देवे । ३ और अनन्त जीवन यह है कि वे तुझ को जो अद्वैत सत्य ईश्वर है और यीशु खीष्ट को जिसे तू ने भेजा है पहचानें । ४ मैं ने पृथिवी पर तेरी महिमा प्रगट किई है . जो काम तू ने मुझे करने को दिया सो मैं ने पूरा किया है । ५ और अभी हे पिता तेरे संग जगत के होने के आगे जो मेरी महिमा थी उस महिमा से तू अपने संग मेरी महिमा प्रगट कर ॥

६ जिन मनुष्यों को तू ने जगत में से मुझ को दिया है उन्हों पर मैं ने तेरा नाम प्रगट किया है . वे तेरे थे और तू ने उन्हें मुझ को दिया और उन्हों ने तेरे बचन का पालन किया है । ७ अब उन्हों ने जान लिया है कि सब कुछ जो तू ने मुझ को दिया है तेरी ओर से है । ८ क्योंकि वह बातें जो तू ने मुझ को दिईं हैं मैं ने उन्हों को दिई हैं और उन्हों ने उन को ग्रहण किया है और निश्चय जान लिया है कि मैं तेरी ओर से निकल आया और बिश्वास किया है कि तू ने मुझे भेजा । ९ मैं उन्हों के लिये प्रार्थना करता हूं . मैं संसार के लिये नहीं परन्तु जिन्हें तू ने मुझ को दिया है उन्हीं के लिये प्रार्थना करता हूं क्योंकि वे तेरे हैं । १० और जो कुछ मेरा है सो सब तेरा है और जो तेरा है सो मेरा है और मेरी महिमा उन में प्रगट हुई है । ११ मैं अब जगत में नहीं रहूंगा परन्तु ये जगत में रहेंगे और मैं तेरे पास आता हूं . हे पवित्र पिता जिन्हें तू ने मुझ को दिया है उन को

अपने नाम में रक्षा कर कि जैसे हम
१२ एक हैं तैसे वे एक होवें । जब मैं उन के संग जगत में था तब मैं ने तेरे नाम में उन की रक्षा किई . जिन्हें तू ने मुझ को दिया है उन को मैं ने रक्षा किई और उन में से कोई नाश नहीं हुआ केवल विनाश का पुत्र जिस्तें
१३ धर्म्मपुस्तक का वचन पूरा होवे । अब मैं तेरे पास आता हूं और मैं जगत में यह बातें कहता हूं कि वे मेरा आनन्द
१४ अपने में सम्पूर्ण पावें । मैं ने तेरा वचन उन्हों को दिया है और संसार ने उन से बैर किया है क्योंकि जैसा मैं संसार का नहीं हूं तैसे वे संसार के
१५ नहीं हैं । मैं यह प्रार्थना नहीं करता हूं कि तू उन्हें जगत में से ले जा परन्तु यह कि तू उन्हें उस दुष्ट से बचा
१६ रख । जैसा मैं संसार का नहीं हूं तैसे
१७ वे संसार के नहीं हैं । अपनी सच्चाई से उन्हें पवित्र कर . तेरा वचन सच्चाई
१८ है । जैसे तू ने मुझे जगत में भेजा तैसे
१९ मैं ने उन्हें भी जगत में भेजा है । और उन के लिये मैं अपने को पवित्र करता हूं कि वे भी सच्चाई से पवित्र किये जावें ॥

२० और मैं केवल इन के लिये नहीं परन्तु उन के लिये भी जो इन के वचन के द्वारा से मुझ पर विश्वास करेंगे प्रार्थना करता हूं कि वे सब एक होवें .
२१ जैसा तू हे पिता मुझ में है और मैं तुझ में हूं तैसे वे भी हम में एक होवें इस लिये कि जगत विश्वास करे कि तू ने
२२ मुझे भेजा । और वह महिमा जो तू ने मुझ को दिई है मैं ने उन को दिई है कि जैसे हम एक हैं तैसे वे एक होवें .
२३ मैं उन में और तू मुझ में कि वे एक में सिद्ध होवें और कि जगत जाने कि तू ने मुझे भेजा और जैसा मुझे प्यार किया तैसा उन्हें प्यार किया है ।
२४ हे पिता मैं चाहता हूं कि जहां मैं रहूं तहां वे भी जिन्हें तू ने मुझ को दिया है मेरे संग रहें कि वे मेरी महिमा को देखें जो तू ने मुझ को दिई क्योंकि तू ने जगत की उत्पत्ति के आगे मुझे प्यार किया ।
२५ हे धर्म्मी पिता संसार तुझे नहीं जानता है परन्तु मैं तुझे जानता हूं और ये लोग जानते हैं कि तू ने मुझे भेजा ।
२६ और मैं ने तेरा नाम उन को जनाया है और जनाऊंगा कि वह प्यार जिस से तू ने मुझे प्यार किया उन में रहे और मैं उन में रहूं ॥

अठारहवां पर्ब्ब ।

१ यीशु यह बातें कहके अपने शिष्यों के संग किद्रोन नाले के उस पार निकल गया जहां एक बारी थी जिस में वह और उस के शिष्य गये ।
२ उस का पकड़वानेहारा यिहूदा भी वह स्थान जानता था क्योंकि यीशु बारंबार वहां अपने शिष्यों के संग एकट्ठा हुआ था ।
३ तब यिहूदा पलटन को और प्रधान याजकों और फरीशियों की ओर से प्यादों को लेके दीपकों और मशालों और हथियारों को लिये हुए वहां आया ।
४ सो यीशु सब बातें जो उस पर आनेवाली थीं जानके निकला और उन से कहा तुम किस को ढूंढ़ते हो ।
५ उन्हों ने उस को उत्तर दिया कि यीशु नासरी को . यीशु ने उन से कहा मैं हूं . और उस का पकड़वानेहारा यिहूदा भी उन के संग खड़ा था ।
६ ज्योंही उस ने उन से कहा मैं हूं त्योंही वे पीछे हटके भूमि पर गिर पड़े ।
७ तब उस ने फिर उन से पूछा तुम किस को ढूंढ़ते हो . वे बोले यीशु नासरी को ।
८ यीशु ने उत्तर दिया मैं ने तुम से कहा कि मैं हूं सो जो तुम मुझे ढूंढ़ते हो तो इन्हों को जाने देओ ।
९ यह इस लिये हुआ कि

जो बचन उस ने कहा था कि जिन्हें तू ने मुझ को दिया है उन में से मैं ने किसी १० को न खोया सो पूरा होवे। शिमोन पितर के पास खड्ग था सो उस ने उसे खींचके महायाजक के दास को मारा और उस का दहिना कान काट डाला. ११ उस दास का नाम मलख था। तब यीशु ने पितर से कहा अपना खड्ग काठी में रख. जो कटोरा पिता ने मुझ को दिया है क्या मैं उसे न पीऊं॥

१२ तब उस पलटन ने और सहस्रपति ने और यिहूदियों के प्यादों ने यीशु को १३ पकड़के बांधा. और पहिले उसे हन्नस के पास ले गये क्योंकि कियाफा जो उस बरस का महायाजक था उस का वह १४ ससुर था। कियाफा वह था जिस ने यिहूदियों को परामर्श दिया कि एक मनुष्य का हमारे लोगों के लिये मरना अच्छा है॥

१५ शिमोन पितर और दूसरा शिष्य यीशु के पीछे हो लिये. वह शिष्य महायाजक का जान पहचान था और यीशु के संग महायाजक के अंगने के भीतर १६ गया। परन्तु पितर बाहर द्वार पर खड़ा रहा सो दूसरा शिष्य जो महायाजक का जान पहचान था बाहर गया और द्वारपालिन से कहके पितर को भीतर ले १७ आया। वह दासी अर्थात द्वारपालिन पितर से बोली क्या तू भी इस मनुष्य के शिष्यों में से एक है. उस ने कहा १८ मैं नहीं हूं। दास और प्यादे लोग जाड़े के कारण कोयले की आग सुलगाके खड़े हुए तापते थे और पितर उन के संग खड़ा हो तापने लगा॥

१९ तब महायाजक ने यीशु से उस के शिष्यों के विषय में और उस के उप२० देश के विषय में पूछा। यीशु ने उस को उत्तर दिया कि मैं ने जगत से खोलके बातें किईं मैं ने सभा के घर में और मन्दिर में जहां यिहूदी लोग नित्य एकट्ठे होते हैं सदा उपदेश किया और गुप्त में कुछ नहीं कहा। २१ तू मुझ से क्यों पूछता है. जिन्हों ने सुना उन्हों से पूछ ले कि मैं ने उन से क्या कहा. देख वे जानते २२ हैं कि मैं ने क्या कहा। जब यीशु ने यह कहा तब प्यादों में से एक जो निकट खड़ा था उस को थपेड़ा मारके बोला क्या तू महायाजक को इस रीति से उत्तर २३ देता है। यीशु ने उसे उत्तर दिया यदि मैं ने बुरा कहा तो उस बुराई की साक्षी दे परन्तु यदि भला कहा तो मुझे क्यों २४ मारता है। हन्नस ने यीशु को बांधे हुए कियाफा महायाजक के पास भेजा॥

२५ शिमोन पितर खड़ा हुआ आग तापता था. तब उन्हों ने उस से कहा क्या तू भी उस के शिष्यों में से एक है. उस २६ ने मुकरके कहा मैं नहीं हूं। महायाजक के दासों में से एक दास जो उस मनुष्य का कुटुंब था जिस का कान पितर ने काट डाला बोला, क्या मैं ने तुझे बारी २७ में उस के संग न देखा। पितर फिर मुकर गया और तुरन्त मुर्ग बोला॥

२८ तब भोर हुआ और वे यीशु को कियाफा के पास से अध्यक्षभवन पर ले गये परन्तु वे आप अध्यक्षभवन के भीतर नहीं गये इस लिये कि अशुद्ध न होवें परन्तु निस्तार पर्ब्ब का भोजन खावें। २९ सो पिलात उन पास निकल आया और कहा तुम इस मनुष्य पर क्या दोष लगाते ३० हो। उन्हों ने उस को उत्तर दिया कि जो यह कुकर्म्मी न होता तो हम उसे ३१ आप के हाथ न सौंपते। पिलात ने उन से कहा तुम उस को लेओ और अपनी व्यवस्था के अनुसार उस का विचार करो. यिहूदियों ने उस से कहा किसी को बध करने का हमें अधिकार

३२ नहीं है । यह इस लिये हुआ कि यीशु का बचन जिसे कहने में उस ने पता दिया कि वह कैसी मृत्यु से मरने पर था पूरा होवे ॥

३३ तब पिलात फिर अध्यक्षभवन के भीतर गया और यीशु को बुलाके उस से कहा क्या तू यिहूदियों का राजा है । ३४ यीशु ने उस को उत्तर दिया क्या आप अपनी ओर से यह बात कहते हैं अथवा औरों ने मेरे विषय में आप से कही । ३५ पिलात ने उत्तर दिया क्या मैं यिहूदी हूं . तेरे ही लोगों ने और प्रधान याजकों ने तुझे मेरे हाथ में सौंपा . तू ने क्या ३६ किया है । यीशु ने उत्तर दिया कि मेरा राज्य इस जगत का नहीं है . जो मेरा राज्य इस जगत का होता तो मेरे सेवक लड़ते जिस्तें मैं यिहूदियों के हाथ में न सौंपा जाता . परन्तु अब मेरा राज्य ३७ यहां का नहीं है । पिलात ने उस से कहा फिर भी तू राजा है . यीशु ने उत्तर दिया कि आप ठीक कहते हैं क्योंकि मैं राजा हूं मैं ने इस लिये जन्म लिया है और इस लिये जगत में आया हूं कि सत्य पर साक्षी देऊं . जो कोई सत्य की ओर है सो मेरा शब्द ३८ सुनता है । पिलात ने उस से कहा सत्य क्या है और यह कहके फिर यिहूदियों के पास निकल गया और उन से कहा मैं उस में कुछ दोष नहीं पाता हूं । ३९ परन्तु तुम्हारी यह रीति है कि मैं निस्तार पर्ब्ब में तुम्हारे लिये एक जन को छोड़ देऊं सो क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये यिहूदियों के राजा को ४० छोड़ देऊं । तब सभों ने फिर पुकारा कि इस को नहीं परन्तु बरब्बा को . और बरब्बा डाकू था ॥

• उन्नीसवां पर्ब्ब ।

१ तब पिलात ने यीशु को लेके उसे कोड़े मारे । और योद्धाओं ने कांटों २ का मुकुट गूंथके उस के सिर पर रखा और उसे बैंजनी वस्त्र पहिराया . और कहा हे यिहूदियों के राजा प्रणाम ३ और उसे थपेड़े मारे ॥

४ तब पिलात ने फिर बाहर निकलके लोगों से कहा देखो मैं उसे तुम्हारे पास बाहर लाता हूं कि तुम जानो कि मैं उस में कुछ दोष नहीं पाता ५ हूं । सो यीशु कांटों का मुकुट और बैंजनी वस्त्र पहिने हुए बाहर निकला और उस ने उन्हों से कहा देखो यही ६ मनुष्य है । जब प्रधान याजकों और प्यादों ने उसे देखा तब उन्हों ने पुकारा कि उसे क्रूश पर चढ़ाइये क्रूश पर चढ़ाइये . पिलात ने उन से कहा तुम उसे लेके क्रूश पर चढ़ाओ क्योंकि मैं ७ उस में दोष नहीं पाता हूं । यिहूदियों ने उस को उत्तर दिया कि हमारी भी व्यवस्था है और हमारी व्यवस्था के अनुसार वह बध होने के योग्य है क्योंकि उस ने अपने को ईश्वर का ८ पुत्र कहा । जब पिलात ने यह बात ९ सुनी तब और भी डर गया . और फिर अध्यक्षभवन के भीतर गया और यीशु से बोला तू कहां से है . परन्तु यीशु १० ने उस को उत्तर न दिया । पिलात ने उस से कहा क्या तू मुझ से नहीं बोलता क्या तू नहीं जानता है कि तुझे क्रूश पर चढ़ाने का मुझ को अधिकार है और तुझे छोड़ देने का ११ मुझ को अधिकार है । यीशु ने उत्तर दिया जो आप को ऊपर से न दिया जाता तो आप को मुझ पर कुछ अधिकार न होता इस लिये जो मुझे आप के हाथ में पकड़वाता है उस १२ को अधिक पाप है । इस से पिलात ने उस को छोड़ देने चाहा परन्तु

यिहूदियों ने पुकारके कहा जो आप इस को छोड़ देवें तो आप कैसर के मित्र नहीं हैं . जो कोई अपने को राजा कहता है सो कैसर के बिरुद्ध

१३ बोलता है । यह बात सुनके पिलात यीशु को बाहर लाया और जो स्थान चबूतरा परन्तु इब्रीय भाषा में गब्बथा कहावता है उस स्थान में बिचार आसन

१४ पर बैठा । निस्तार पर्ब्ब की तैयारी का दिन और दो पहर के निकट था . तब उस ने यिहूदियों से कहा देखो

१५ तुम्हारा राजा । परन्तु उन्हों ने पुकारा कि ले जाओ ले जाओ उसे क्रूश पर चढ़ाओ . पिलात ने उन से कहा क्या मैं तुम्हारे राजा को क्रूश पर चढ़ाऊंगा . प्रधान याजकों ने उत्तर दिया कि कैसर को छोड़ हमारा कोई राजा नहीं है ।

१६ तब उस ने यीशु को क्रूश पर चढ़ाये जाने को उन्हों के हाथ सौंपा . तब वे उसे पकड़के ले गये ॥

१७ और यीशु अपना क्रूश उठाये हुए उस स्थान को जो खोपड़ी का स्थान कहावता और इब्रीय भाषा में गलगथा

१८ कहावता है निकल गया । वहां उन्हों ने उस को और उस के संग दो और मनुष्यों को क्रूशों पर चढ़ाया एक को इधर और एक को उधर और बीच में

१९ यीशु को । और पिलात ने दोषपत्र लिखके क्रूश पर लगाया और लिखी हुई बात यह थी यीशु नासरी यिहू-

२० दियों का राजा । यह दोषपत्र बहुत यिहूदियों ने पढ़ा क्योंकि वह स्थान जहां यीशु क्रूश पर चढ़ाया गया नगर के निकट था और पत्र इब्रीय औ यूनानीय औ रोमीय भाषा में लिखा

२१ हुआ था । तब यिहूदियों के प्रधान याजकों ने पिलात से कहा यिहूदियों का राजा मत लिखिये परन्तु यह कि उस ने कहा मैं यिहूदियों का राजा

२२ हूं । पिलात ने उत्तर दिया कि मैं ने जो लिखा है सो लिखा है ॥

२३ जब योद्धाओं ने यीशु को क्रूश पर चढ़ाया था तब उस के कपड़े लेके चार भाग किये हर एक योद्धा के लिये एक भाग . और अंगा भी लिया परन्तु अंगा बिन सीअन ऊपर से नीचे लों

२४ बिना हुआ था । इस लिये उन्हों ने आपस में कहा हम इस को न फाड़ें परन्तु उस पर चिट्ठियां डालें कि वह किस का होगा . जिस्तें धर्म्मपुस्तक का बचन पूरा होय कि उन्हों ने मेरे कपड़े आपस में बांट लिये और मेरे बस्त्र पर चिट्ठियां डालीं . सो योद्धाओं ने यह किया ॥

२५ परन्तु यीशु की माता और उस की माता की बहिन मरियम जो क्लियोपा की स्त्री थी और मरियम मगदलीनी

२६ उस के क्रूश के निकट खड़ी थीं । सो यीशु ने अपनी माता को और उस शिष्य को जिसे वह प्यार करता था उस के निकट खड़े हुए देखके अपनी माता

२७ से कहा हे नारी देखिये आप का पुत्र । तब उस ने उस शिष्य से कहा देख तेरी माता . और उस समय से उस शिष्य ने उस को अपने घर में ले लिया ॥

२८ इस के पीछे यीशु ने यह जानके कि अब सब कुछ हो चुका जिस्तें धर्म्मपुस्तक का बचन पूरा हो जाय

२९ इस लिये कहा मैं पियासा हूं । सिरके से भरा हुआ एक बर्त्तन धरा था सो उन्हों ने इस्पंज को सिरके में भिंगाके एसोब के नल पर रखके उस के मुंह

३० में लगाया । जब यीशु ने सिरका लिया था तब कहा पूरा हुआ है और सिर झुकाके प्राण त्यागा ॥

३१ यह दिन तैयारी का दिन था और

वह बिश्रामवार बड़ा दिन था इस कारण जिस्तें लोथें बिश्राम के दिन क्रूश पर न रहें यिहूदियों ने पिलात से बिन्ती किई कि उन की टांगें तोड़ी ३२ जायें और वे उतारे जायें। सो योद्धाओं ने आके पहिले की टांगें तोड़ीं तब दूसरे की भी जो यीशु के संग क्रूश पर ३३ चढ़ाये गये थे। परन्तु यीशु पास आके जब उन्हों ने देखा कि वह मर चुका ३४ है तब उस की टांगें न तोड़ीं। परन्तु योद्धाओं में से एक ने बर्छे से उस का पंजर बेधा और तुरन्त लोहू और पानी ३५ निकला। इस के देखनेहारे ने साक्षी दिई है और उस की साक्षी सत्य है और वह जानता है कि सत्य कहता है इस लिये कि तुम बिश्वास करो। ३६ क्योंकि यह बातें इस लिये हुईं कि धर्म्मपुस्तक का बचन पूरा होय कि उस की कोई हड्डी नहीं तोड़ी जायगी। ३७ और फिर धर्म्मपुस्तक का दूसरा एक बचन है कि जिसे उन्हों ने बेधा उस पर वे दृष्टि करेंगे॥

३८ इस के पीछे अरिमथिया नगर के यूसफ ने जो यीशु का शिष्य था परन्तु यिहूदियों के डर से इस को छिपाये रहता था पिलात से बिन्ती किई कि मैं यीशु की लोथ को ले जाऊं और पिलात ने आज्ञा दिई सो वह आके ३९ यीशु की लोथ ले गया। निकोदीम भी जो पहिले रात को यीशु पास आया था पचास सेर के अटकल मिलाये हुए गन्धरस और एलवा लेके आया। ४० तब उन्हों ने यीशु की लोथ को लिया और यिहूदियों के गाड़ने की रीति के अनुसार उसे सुगन्ध के संग चद्दर में ४१ लपेटा। उस स्थान पर जहां यीशु क्रूश पर चढ़ाया गया एक बारी थी और उस बारी में एक नई कबर जिस में कोई कभी नहीं रखा गया था। सो ४२ यिहूदियों की तैयारी के दिन के कारण उन्हों ने यीशु को वहां रखा क्योंकि वह कबर निकट थी॥

बीसवां पर्व्व।

१ अठवारे के पहिले दिन मरियम मगदलीनी भोर को अंधियारा रहते ही कबर पर आई और पत्थर को कबर से सरकाया हुआ देखा। २ तब वह दौड़ी और शिमोन पितर और दूसरे शिष्य के पास जिसे यीशु प्यार करता था आके उन से बोली वे प्रभु को कबर में से ले गये हैं और हम नहीं जानतीं कि उसे कहां रखा है। ३ तब पितर और वह दूसरा शिष्य निकलके कबर पर आये। ४ वे दोनों एक संग दौड़े और दूसरा शिष्य पितर से शीघ्र दौड़के आगे बढ़ा और कबर पर पहिले पहुंचा। ५ और उस ने झुकके चद्दर पड़ी हुई देखी तौभी वह भीतर नहीं गया। ६ तब शिमोन पितर उस के पीछे से आ पहुंचा और कबर के भीतर गया और चद्दर पड़ी हुई देखी, ७ और वह अंगोछा जो उस के सिर पर था चद्दर के संग पड़ा हुआ नहीं परन्तु अलग एक स्थान में लपेटा हुआ देखा। ८ तब दूसरा शिष्य भी जो कबरपर पहिले पहुंचा भीतर गया और देखके बिश्वास किया। ९ वे तो अब लों धर्म्मपुस्तक का बचन नहीं समझते थे कि उस को मृतकों में से जी उठना होगा॥

१० तब दोनों शिष्य फिर अपने घर चले गये। ११ परन्तु मरियम रोती हुई कबर के पास बाहर खड़ी रही और रोते रोते कबर की ओर झुकी, १२ और दो दूतों को उजला बस्त्र पहिने हुए देखा कि जहां यीशु की लोथ पड़ी थी तहां एक सिरहाने और दूसरा पैताने बैठा

१३ था। उन्हों ने उस से कहा हे नारी तू क्यों रोती है. वह उन से बोली वे मेरे प्रभु को ले गये हैं और मैं नहीं
१४ जानती कि उसे कहां रखा है। यह कहके उस ने पीछे फिरके यीशु को खड़े देखा और नहीं जानती थी कि यीशु है।
१५ यीशु ने उस से कहा हे नारी तू क्यों रोती है किस को ढूंढ़ती है. उस ने यह समझके कि माली है उस से कहा हे प्रभु जो आप ने उस को उठा लिया है तो मुझ से कहिये कि उसे कहां
१६ रखा है और मैं उसे ले जाऊंगी। यीशु ने उस से कहा हे मरियम. वह पीछे फिरके उस से बोली हे रब्बूनी अर्थात
१७ हे गुरु। यीशु ने उस से कहा मुझे मत छू क्योंकि मैं अब लों अपने पिता के पास नहीं चढ़ गया हूं परन्तु मेरे भाइयों के पास जाके उन से कह दे कि मैं अपने पिता औ तुम्हारे पिता और अपने ईश्वर औ तुम्हारे ईश्वर पास
१८ चढ़ जाता हूं। मरियम मगदलीनी ने जाके शिष्यों को सन्देश दिया कि मैं ने प्रभु को देखा है और उस ने मुझ से यह बातें कहीं॥

१९ अठवारे के उस पहिले दिन को सांझ होते हुए और जहां शिष्य लोग एकट्ठे हुए थे तहां द्वार यिहूदियों के डर के मारे बन्द होते हुए यीशु आया और बीच में खड़ा होके उन से कहा
२० तुम्हारा कल्याण होय। और यह कहके उस ने अपने हाथ और अपना पंजर उन को दिखाये. तब शिष्य लोग प्रभु
२१ को देखके आनन्दित हुए। यीशु ने फिर उन से कहा तुम्हारा कल्याण होय. जैसे पिता ने मुझे भेजा है तैसे मैं
२२ भी तुम्हें भेजता हूं। यह कहके उस ने फूंक दिया और उन से कहा पवित्र
२३ आत्मा लेओ। जिन्हों के पाप तुम क्षमा करो वे उन के लिये क्षमा किये जाते हैं. जिन्हों के तुम रखो वे रखे हुए हैं॥

२४ परन्तु बारहों में से एक जन अर्थात थोमा जो दिदुम कहावता है जब यीशु
२५ आया तब उन के संग नहीं था। सो दूसरे शिष्यों ने उस से कहा हम ने प्रभु को देखा है. उस ने उन से कहा जो मैं उस के हाथों में कीलों का चिन्ह न देखूं और कीलों के चिन्ह में अपनी उंगली न डालूं और उस के पंजर में अपना हाथ न डालूं तो मैं विश्वास न
२६ करूंगा। आठ दिन के पीछे उस के शिष्य लोग फिर घर के भीतर थे और थोमा उन के संग था. तब द्वार बन्द होते हुए यीशु आया और बीच में खड़ा
२७ होके कहा तुम्हारा कल्याण होय। तब उस ने थोमा से कहा अपनी उंगली यहां लाके मेरे हाथों को देख और अपना हाथ लाके मेरे पंजर में डाल और अविश्वासी नहीं, परन्तु विश्वासी हो।
२८ थोमा ने उस को उत्तर दिया कि हे
२९ मेरे प्रभु और मेरे ईश्वर। यीशु ने उस से कहा हे थोमा तू ने मुझे देखा है इस लिये विश्वास किया है. धन्य वे हैं जो बिन देखे विश्वास करें॥

३० यीशु ने अपने शिष्यों के आगे बहुत और आश्चर्य्य कर्म्म भी किये जो इस
३१ पुस्तक में नहीं लिखे हैं। परन्तु ये लिखे गये हैं इस लिये कि तुम विश्वास करो कि यीशु जो है सो ईश्वर का पुत्र खीष्ट है और कि विश्वास करने से तुम को उस के नाम से जीवन होय॥

इक्कैसवां पर्ब्ब।

१ इस के पीछे यीशु ने फिर अपने तईं तिबिरिया के समुद्र के तीर पर शिष्यों को दिखाया और इस रीति से दिखाया।
२ शिमोन पितर और थोमा जो दिदुम

कहावता है और गालील के काना नगर का नथनेल और जब्दी के दोनों पुत्र और उस के शिष्यों में से दो और जन ३ एक संग थे। शिमोन पितर ने उन से कहा मैं मछली पकड़ने को जाता हूं. वे उस से बोले हम भी तेरे संग आवेंगे. सो वे निकलके तुरन्त नाव पर चढ़े और उस रात कुछ नहीं पकड़ा। ४ जब भोर हुआ तब यीशु तीर पर खड़ा हुआ तौभी शिष्य लोग नहीं जानते थे कि यीशु है। ५ तब यीशु ने उन से कहा हे लड़को क्या तुम्हारे पास कुछ खाने को है. उन्हों ने उस को उत्तर दिया कि नहीं। ६ उस ने उन से कहा नाव की दहिनी ओर जाल डालो तो पाओगे. सो उन्हों ने डाला और अब मछलियों की भुंड के कारण वे उसे खींच न सके। ७ इस लिये वह शिष्य जिसे यीशु प्यार करता था पितर से बोला यह तो प्रभु है. शिमोन पितर ने जब सुना कि प्रभु है तब कमर में अंगरखा कस लिया क्योंकि वह नंगा था और समुद्र में कूद पड़ा। ८ परन्तु दूसरे शिष्य लोग नाव पर मछलियों का जाल घसीटते हुए चले आये क्योंकि वे तीर से दूर नहीं प्राय दो सौ हाथ पर थे। ९ जब वे तीर पर उतरे तब उन्हों ने कोयले की आग धरी हुई और मछली उस पर रखी हुई १० और रोटी देखी। यीशु ने उन से कहा जो मछलियां तुम ने अभी पकड़ी हैं ११ उन में से ले आओ। शिमोन पितर ने जाके जाल को जो एक सौ तिर्पन बड़ी मछलियों से भरा था तीर पर खींच लिया और इतनी होने से भी जाल नहीं १२ फटा। यीशु ने उन से कहा कि आओ भोजन करो. परन्तु शिष्यों में से किसी को साहस न हुआ कि उस से पूछे आप कौन हैं क्योंकि वे जानते थे कि प्रभु है। तब यीशु ने आके रोटी लेके उन १३ को दिई और वैसे ही मछली भी। यह १४ अब तीसरी बेर हुआ कि यीशु ने मृतकों में से उठके अपने शिष्यों को दर्शन दिया॥

जब भोजन करने के पीछे यीशु ने १५ शिमोन पितर से कहा हे यूनस के पुत्र शिमोन क्या तू मुझे इन्हों से अधिक प्यार करता है. वह उस से बोला हां प्रभु आप जानते हैं कि मैं आप को प्यार करता हूं. उस ने उस से कहा मेरे मेम्नों को चरा। उस ने फिर दूसरी १६ बेर उस से कहा हे यूनस के पुत्र शिमोन क्या तू मुझे प्यार करता है. वह उस से बोला हां प्रभु आप जानते हैं कि मैं आप को प्यार करता हूं. उस ने उस से कहा मेरी भेड़ों की रखवाली कर। उस ने तीसरी बेर उस से कहा हे यूनस १७ के पुत्र शिमोन क्या तू मुझे प्यार करता है. पितर उदास हुआ कि यीशु ने उस से तीसरी बेर कहा क्या तू मुझे प्यार करता है और उस से बोला हे प्रभु आप सब कुछ जानते हैं आप जानते हैं कि मैं आप को प्यार करता हूं. यीशु ने उस से कहा मेरी भेड़ों को चरा। मैं १८ तुझ से सच सच कहता हूं जब तू जवान था तब अपनी कमर बांधके जहां चाहता था वहां चलता था परन्तु जब तू बूढ़ा होगा तब अपने हाथ फैलावेगा और दूसरा तेरी कमर बांधके जहां तू न चाहे वहां तुझे ले जायगा। यह कहने में उस ने पता १९ दिया कि पितर कैसी मृत्यु से ईश्वर की महिमा प्रगट करेगा और यह कहके उस से बोला मेरे पीछे हो ले॥

पितर ने मुंह फेरके उस शिष्य को २० जिसे यीशु प्यार करता था और जिस ने बियारी में उस की छाती पर उठंगके कहा हे प्रभु आप का पकड़वानेहारा कौन है पीछे से आते देखा। उस को २१

देखके पितर ने यीशु से कहा हे प्रभु
२२ इस का क्या होगा । यीशु ने उस से
कहा जो मैं चाहूं कि वह मेरे आने
लों रहे तो तुझे क्या . तू मेरे पीछे हो
२३ ले । इस लिये भाइयों में यह बात फैल
गई कि वह शिष्य नहीं मरेगा . तौभी
यीशु ने यह नहीं कहा कि वह नहीं
मरेगा परन्तु यह कि जो मैं चाहूं कि
वह मेरे आने लों रहे तो तुझे क्या ॥

यह तो वह शिष्य है जो इन बातों २४
के विषय में साक्षी देता है और जिस
ने यह बातें लिखीं और हम जानते हैं
कि उस की साक्षी सत्य है । और बहुत २५
और काम भी हैं जो यीशु ने किये .
जो वे एक एक करके लिखे जाते तो
मुझे बूझ पड़ता है कि पुस्तकें जो
लिखे जाते जगत में भी न समाते ।
आमीन ॥

प्रेरितों की क्रियाओं का वृत्तान्त ।

पहिला पर्ब्ब ।

१ हे थियोफिल यह पहिला वृत्तान्त
मैं ने सब बातों के विषय में रचा जो
यीशु उस दिन लों करने और सिखाने
२ का आरंभ किये था . जिस दिन वह
पवित्र आत्मा के द्वारा से जिन प्रेरितों
को उस ने चुना था उन्हें आज्ञा दे
३ करके उठा लिया गया । और उस ने
उन्हें बहुतेरे अचल प्रमाणों से अपने
तईं दुःख भोगने के पीछे जीवता
दिखाया कि चालीस दिन लों वे उसे
देखा करते थे और वह ईश्वर के राज्य
के विषय में उन से बातें करता था ।
४ और जब वह उन के संग एकट्ठा हुआ
तब उन्हें आज्ञा दिई कि यिरूशलीम
को मत छोड़ जाओ परन्तु पिता की
जो प्रतिज्ञा तुम ने मुझ से सुनी है
५ उस की बाट जोहते रहो । क्योंकि
योहन ने तो जल से बपतिसमा दिया
परन्तु थोड़े दिनों के पीछे तुम्हें पवित्र
आत्मा से बपतिसमा दिया जायगा ।
६ सो उन्हों ने एकट्ठे होके उस से पूछा
कि हे प्रभु क्या आप इसी समय में
इस्रायेली लोगों को राज्य फेर देते हैं ।
७ उस ने उन से कहा जिन कालों अथवा
समयों को पिता ने अपने ही वश में
रखा है उन्हें जानने का अधिकार तुम्हें
८ नहीं है । परन्तु तुम पर पवित्र आत्मा
के आने से तुम सामर्थ्य पाओगे और
यिरूशलीम में और सारे यिहूदिया और
शोमिरोन देशों में और पृथिवी के अन्त
९ लों मेरे साक्षी होओगे । यह कहके
वह उन के देखते हुए ऊपर उठाया
गया और मेघ ने उसे उन की दृष्टि से
१० छिपा लिया । ज्योंही वे उस के जाते हुए
स्वर्ग की ओर ताकते रहे त्योंही देखो
दो पुरुष उजला वस्त्र पहिने हुए उन
११ के निकट खड़े हो गये . और कहा हे
गालीली लोगो तुम क्यों स्वर्ग की ओर
देखते हुए खड़े हो . यही यीशु जो
तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया
गया है जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग
को जाते देखा है उसी रीति से आवेगा ॥
१२ तब वे जैतून नाम पर्ब्बत से जो
यिरूशलीम के निकट अर्थात एक विश्राम-
वार की बाट भर दूर है यिरूशलीम को

१३ लौटे । और जब वे पहुंचे तब उपरौठी कोठरी में गये जहां वे अर्थात पितर औ याकूब औ योहन औ अन्द्रिय और फिलिप औ थोमा और बर्थलमई औ मत्ती और अलफई का पुत्र याकूब औ शिमोन ज्ञलोती और याकूब का भाई १४ यिहूदा रहते थे । ये सब एक चित्त होके स्त्रियों के और यीशु की माता मरियम के संग और उस के भाइयों के संग प्रार्थना और बिन्ती में लगे रहते थे ॥

१५ उन दिनों में पितर शिष्यों के बीच में खड़ा हुआ . एक सौ बीस जन के १६ अटकल एकट्ठे थे . और कहा हे भाइयो अवश्य था कि धर्म्मपुस्तक का यह बचन पूरा होय जो पवित्र आत्मा ने दाऊद के मुख से यिहूदा के विषय में जो यीशु के पकड़नेहारों का अगुआ था १७ आगे से कह दिया । क्योंकि वह हमारे संग गिना गया था और इस सेवकाई १८ का अधिकार पाया था । उस ने तो अधर्म्म की मजूरी से एक खेत मोल लिया और औंधे मुंह गिरके बीच से फट गया और उस की सब अन्तड़ियां निकल पड़ीं । १९ यह बात यिरूशलीम के सब निवासियों को जान पड़ी इस लिये वह खेत उन की भाषा में हकलदामा अर्थात लोहू २० का खेत कहलाया । गीतों के पुस्तक में लिखा है कि उस का घर उजाड़ होय और उस में कोई न बसे और कि उस का रखवाली का काम दूसरा लेवे । २१ इस लिये प्रभु यीशु योहन के बपतिसमा के समय से लेके उस दिन लों कि वह हमारे पास से उठा लिया गया जितने दिन हमारे बीच में आया जाया किया . २२ जो मनुष्य सब दिन हमारे संग रहे हैं उन्हों में से उचित है कि एक जन हमारे संग यीशु के जी उठने का साक्षी २३ होय । तब उन्हों ने दो को अर्थात यूसफ को जो बर्शबा कहावता है जिस का उपनाम युस्त था और मत्तियाह को खड़ा किया . और प्रार्थना करके २४ कहा हे प्रभु सभों के अन्तर्यामी इन दोनों में से एक को जिसे तू ने चुना है ठहरा २५ दे . कि वह इस सेवकाई और प्रेरिताई का अधिकार पावे जिस से यिहूदा पतित हुआ कि अपने निज स्थान को २६ जाय । तब उन्हों ने चिट्ठियां डालीं और चिट्ठी मत्तियाह के नाम पर निकली और वह एग्यारह प्रेरितों के संग गिना गया ॥

दूसरा पर्ब्ब ।

१ जब पेन्तिकोष्ट पर्ब्ब का दिन आ पहुंचा तब वे सब एक चित्त होकर २ एकट्ठे हुए थे । और अचांचक प्रबल बयार के चलने का सा स्वर्ग से एक शब्द हुआ जिस से सारा घर जहां वे ३ बैठे थे भर गया । और आग की सी जीभें अलग अलग होती हुईं उन्हें दिखाई दिईं और वह हर एक जन पर ४ ठहर गई । तब वे सब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हुए और जैसे आत्मा ने उन्हें बुलवाया तैसे आन आन बोलियां बोलने लगे ॥

५ यिरूशलीम में कितने भक्त यिहूदी लोग बास करते थे जो स्वर्ग के नीचे ६ के हर एक देश से आये थे । इस शब्द के होने पर बहुत लोग एकट्ठे हुए और घबरा गये क्योंकि उन्हों ने उन को हर एक अपनी ही भाषा में बोलते हुए सुना । ७ और वे सब विस्मित और अचंभित हो आपस में कहने लगे देखो ये सब जो ८ बोलते हैं क्या गालीली लोग नहीं हैं । फिर हम लोग क्योंकर हर एक अपने अपने जन्म देश की भाषा में सुनते हैं । ९ हम जो पर्थी और मादी और एलमी लोग और मिसपतामिया और यिहूदिया

औ कपदोकिया और पन्त औ आशिया .
१० और फ्रूगिया औ पंफुलिया और मिसर
औ कुरीनी के आसपास का लूबिया देश
इन सब देशों के निवासी और रोम नगर
से आये हुए लोग क्या यिहूदी क्या
११ यिहूदीय मतावलंबी . क्रीतीय भी औ
अरब लोग हैं उन्हें अपनी अपनी
बोलियों में ईश्वर के महाकार्य्यों की
१२ बात बोलते हुए सुनते हैं । सो वे सब
विस्मित हो दुबधा में पड़े और एक
दूसरे से कहने लगा इस का अर्थ क्या
१३ है । परन्तु और लोग ठट्ठे में कहने लगे
वे नई मदिरा से छकाछक हुए हैं ॥
१४ तब पितर ने एग्यारह शिष्यों के संग
खड़ा होके ऊंचे शब्द से उन्हें कहा हे
यिहूदियो और यिरूशलीम के सब निवा-
सियो इस बात को बूझ लो और मेरी
१५ बातों पर कान लगाओ । ये तो मत-
वाले नहीं हैं जैसा तुम समझते हो क्यों-
१६ कि पहर ही दिन चढ़ा है । परन्तु यह
वह बात है जो योएल भविष्यद्वक्ता से
१७ कही गई . कि ईश्वर कहता है पिछले
दिनों में ऐसा होगा कि मैं सब मनुष्यों
पर अपना आत्मा उंडेलूंगा और तुम्हारे
पुत्र और तुम्हारी पुत्रियां भविष्यद्वाक्य
कहेंगी और तुम्हारे जवान लोग दर्शन
देखेंगे और तुम्हारे वृद्ध लोग स्वप्न देखेंगे ।
१८ और भी मैं अपने दासों और अपनी
दासियों पर उन दिनों में अपना आत्मा
उंडेलूंगा और वे भविष्यद्वाक्य कहेंगे ।
१९ और मैं ऊपर आकाश में अद्भुत काम
और नीचे पृथिवी पर चिन्ह अर्थात
लोहू और आग और धूंए की भाफ
२० दिखाऊंगा । परमेश्वर के बड़े और
प्रसिद्ध दिन के आने के पहिले सूर्य्य
अंधियारा और चांद लोहू सा हो जायगा ।
२१ और जो कोई परमेश्वर के नाम की
प्रार्थना करेगा सो त्राण पावेगा ॥

हे इस्रायेली लोगो यह बातें सुनो . २२
यीशु नासरी एक मनुष्य जिस का प्रमाण
ईश्वर से आश्चर्य्य कर्म्मों और अद्भुत
कामों और चिन्हों से तुम्हें दिया गया
है जो ईश्वर ने तुम्हारे बीच में जैसा तुम
आप भी जानते हो उस के द्वारा से
किये . उसी को जब वह ईश्वर के स्थिर २३
मत और भविष्यत ज्ञान के अनुसार
सौंपा गया तुम ने लिया और अधर्म्मियों
के हाथों के द्वारा क्रूश पर ठोंकके मार
डाला । उसी को ईश्वर ने मृत्यु के २४
बंधन खोलके जिला उठाया क्योंकि
अन्होना था कि वह मृत्यु के बश में
रहे । क्योंकि दाऊद ने उस के विषय २५
में कहा मैं ने परमेश्वर को सदा अपने
साम्हने देखा कि वह मेरी दहिनी ओर
है जिस्तें मैं डिग न जाऊं । इस कारण २६
मेरा मन आनन्दित हुआ और मेरी जीभ
हर्षित हुई हां मेरा शरीर भी आशा में
विश्राम करेगा । क्योंकि तू मेरे प्राण २७
को परलोक में न छोड़ेगा और न अपने
पवित्र जन को सड़ने देगा । तू ने मुझे २८
जीवन का मार्ग बताया है तू मुझे अपने
सन्मुख आनन्द से परिपूर्ण करेगा ॥
हे भाइयो उस कुलपति दाऊद के २९
विषय में मैं तुम से खोलके कहूं . वह तो
मरा और गाड़ा भी गया और उस की
कबर आज लों हमारे बीच में है । सो ३०
भविष्यद्वक्ता होके और यह जानके कि
ईश्वर ने मुझ से किरिया खाई है कि
मैं शरीर के भाव से ख्रीष्ट को तेरे बंश
में से उत्पन्न करूंगा कि वह तेरे सिंहा-
सन पर बैठे . उस ने होनहार को आगे ३१
से देखके ख्रीष्ट के जी उठने के विषय
में कहा कि उस का प्राण परलोक में
नहीं छोड़ा गया और न उस का देह
सड़ गया । इसी यीशु को ईश्वर ने ३२
जिला उठाया और इस बात के हम

३३ सब साक्षी हैं। सो ईश्वर के दहिने हाथ ऊंचा पद प्राप्त करके और पवित्र आत्मा के विषय में जो कुछ प्रतिज्ञा किया गया सोई पिता से पाके उस ने यह जो तुम अब देखते और सुनते हो ३४ उंडेल दिया है। क्योंकि दाऊद स्वर्ग पर नहीं चढ़ गया परन्तु उस ने कहा ३५ कि परमेश्वर ने मेरे प्रभु से कहा, जब लों मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की पीढ़ी न बनाऊं तब लों तू मेरी दहिनी ३६ ओर बैठ। सो इस्रायेल का सारा घराना निश्चय जाने कि यह यीशु जिसे तुम ने क्रुश पर घात किया इसी को ईश्वर ने प्रभु और ख्रीष्ट ठहराया है॥

३७ तब सुननेहारों के मन छिद गये और वे पितर से और दूसरे प्रेरितों से बोले ३८ हे भाइयो हम क्या करें। पितर ने उन से कहा पश्चात्ताप करो और हर एक जन यीशु ख्रीष्ट के नाम से बपतिसमा लेओ कि तुम्हारा पापमोचन होय और ३९ तुम पवित्र आत्मा दान पाओगे। क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम्हों के लिये और तुम्हारे सन्तानों के लिये और दूर दूर के सब लोगों के लिये है जितनों को परमेश्वर हमारा ईश्वर अपने पास बुलावे। ४० बहुत और बातों से भी उस ने साक्षी और उपदेश दिया कि इस समय के टेढ़े लोगों से बच जाओ॥

४१ तब जिन्हों ने उस का बचन आनन्द से ग्रहण किया उन्हों ने बपतिसमा लिया और उस दिन तीन सहस्र जन के ४२ अटकल शिष्यों में मिल गये। और वे प्रेरितों के उपदेश में और संगति में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना में लगे ४३ रहते थे। और सब मनुष्यों को भय हुआ और बहुतेरे अद्भुत काम और चिन्ह ४४ प्रेरितों के द्वारा प्रगट होते थे। और सब विश्वास करनेहारे एकट्ठे थे और उन्हों की सब सम्पत्ति साझे की थी। ४५ और वे धन सम्पत्ति को बेचके जैसा जिस को प्रयोजन होता था तैसा सभों ४६ में बांट लेते थे। और वे प्रतिदिन मन्दिर में एक चित्त होके लगे रहते थे और घर घर रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मन की सिधाई से भोजन करते थे, ४७ और ईश्वर की स्तुति करते थे और सब लोगों का उन पर अनुग्रह था। और प्रभु त्राण पानेहारों को प्रतिदिन मंडली में मिलाता था॥

तीसरा पर्ब्ब।

१ तीसरे पहर प्रार्थना के समय में पितर और योहन एक संग मन्दिर को २ जाते थे। और लोग किसी मनुष्य को जो अपनी माता के गर्भ ही से लंगड़ा था लिये जाते थे जिस को वे प्रतिदिन मन्दिर के उस द्वार पर जो सुन्दर कहावता है रख देते थे कि वह मन्दिर ३ में जानेहारों से भीख मांगे। उस ने पितर और योहन को देखके कि मन्दिर में जाने पर हैं उन से भीख मांगी। ४ पितर ने योहन के संग उस की ओर ५ दृष्टि कर कहा हमारी ओर देख। सो वह उन से कुछ पाने की आशा करते हुए उन की ओर ताकने लगा। ६ परन्तु पितर ने कहा चांदी और सोना मेरे पास नहीं है परन्तु यह जो मेरे पास है मैं तुझे देता हूं यीशु ख्रीष्ट नासरी के नाम से उठ और चल। ७ तब उस ने उस का दहिना हाथ पकड़के उसे उठाया और तुरन्त उस के पांवों और घुट्ठियों में बल हुआ। ८ और वह उछलके खड़ा हुआ और फिरने लगा और फिरता और कूदता और ईश्वर की स्तुति करता हुआ उन के संग मन्दिर में प्रवेश किया॥

९ सब लोगों ने उसे फिरते और ईश्वर

१० की स्तुति करते हुए देखा . और उस को चीन्हा कि वही है जो मन्दिर के सुन्दर फाटक पर भीख के लिये बैठा रहता था और जो उस को हुआ था उस से वे अति अचंभित और बिस्मित
११ हुए । जिस समय वह लंगड़ा जो चंगा हुआ था पितर और योहन को पकड़े रहा सब लोग बहुत अचंभा करते हुए उस ओसारे में जो सुलेमान का कहावता है उन के पास दौड़े आये ॥

१२ यह देखके पितर ने लोगों से कहा हे इस्रायेली लोगो तुम इस मनुष्य से क्यों अचंभा करते हो अथवा हमारी ओर क्यों ऐसा ताकते हो कि जैसा हम ने अपनी ही शक्ति अथवा भक्ति से इस को चलने का सामर्थ्य दिया
१३ होता । इब्राहीम और इसहाक और याकूब के ईश्वर ने हमारे पितरों के ईश्वर ने अपने सेवक यीशु की महिमा प्रगट किई जिसे तुम ने पकड़वाया और उस को पिलात के सन्मुख नकारा जब कि उस ने उसे छोड़ देने को
१४ ठहराया था । परन्तु तुम ने उस पवित्र और धर्म्मी को नकारा और मांगा कि
१५ एक हत्यारा तुम्हें दिया जाय । और तुम ने जीवन के कर्त्ता को घात किया परन्तु ईश्वर ने उसे मृतकों में से उठाया और इस बात के हम साक्षी
१६ हैं । और उस के नाम के बिश्वास से उस के नाम ही ने इस मनुष्य को जिसे तुम देखते और जानते हो सामर्थ्य दिया है हां जो बिश्वास उस के द्वारा से है उसी से यह संपूर्ण आरोग्य तुम सभों के साम्ने इस को मिला है ॥

१७ और अब हे भाइयो मैं जानता हूं कि तुम्हों ने यह काम अज्ञानता से किया और वैसे तुम्हारे प्रधानों ने भी
१८ किया । परन्तु ईश्वर ने जो बातें उस ने अपने सब भविष्यद्वक्ताओं के मुख से आगे बताई थीं कि ख्रीष्ट दुःख भोगेगा वह बात इस रीति से पूरी किई ।
१९ इस लिये पश्चात्ताप करके फिर जाओ कि तुम्हारे पाप मिटाये जायें जिस्तें जीव को ठंढा होने का समय परमेश्वर
२० की ओर से आवे . और वह यीशु ख्रीष्ट को भेजे जिस का समाचार तुम्हें आगे
२१ से कहा गया है . जिसे अवश्य है कि स्वर्ग सब बातों के सुधारे जाने के उस समय लों ग्रहण करे जिस की कथा ईश्वर ने आदि से अपने पवित्र भविष्यद्वक्ताओं के मुख से कही है ॥

२२ मूसा ने पितरों से कहा परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हारे भाइयों में से मेरे समान एक भविष्यद्वक्ता को तुम्हारे लिये उठावेगा जो जो बातें वह तुम से कहे उन सब बातों में तुम उस की
२३ सुनो । परन्तु हर एक मनुष्य जो उस भविष्यद्वक्ता की न सुने लोगों में से
२४ नाश किया जायगा । और सब भविष्यद्वक्ताओं ने भी शमुएल से और उस के पीछे के भविष्यद्वक्ताओं से लेके जितनों ने बातें किईं इन दिनों का भी आगे
२५ से सन्देश दिया है । तुम भविष्यद्वक्ताओं के और उस नियम के सन्तान हो जो ईश्वर ने हमारे पितरों के संग बांधा कि उस ने इब्राहीम से कहा पृथिवी के सारे घराने तेरे बंश के द्वारा से
२६ आशीस पावेंगे । तुम्हारे पास ईश्वर ने अपने सेवक यीशु को उठाके पहिले भेजा जो तुम में से हर एक को तुम्हारे कुकर्म्मों से फिराने में तुम्हें आशीस देता था ॥

चौथा पर्व्व ।

१ जिस समय वे लोगों से कह रहे याजक लोग और मन्दिर के पहरुओं का अध्यक्ष और सदूकी लोग उन पर

२ चढ़ आये . कि वे अप्रसन्न होते थे इस
लिये कि वे लोगों को सिखाते थे और
मृतकों में से जी उठने की बात यीशु
३ के प्रमाण से प्रचार करते थे । और
उन्हों ने उन्हें पकड़के बिहान लों
बन्दीगृह में रखा क्योंकि सांझ हुई थी ।
४ परन्तु बचन् के सुननेहारों में से बहुतों
ने बिश्वास किया और उन मनुष्यों की
गिन्ती पांच सहस्र के अटकल हुई ॥
५ बिहान हुए लोगों के प्रधान और
६ प्राचीन और अध्यापक लोग . और हन्नस
महायाजक और कियाफा और योहन
और सिकन्दर और महायाजक के घराने
के जितने लोग थे वे सब यिरूशलीम
७ में एकट्ठे हुए । और उन्हों ने पितर
और योहन को बीच में खड़ा करके पूछा
तुम ने यह काम किस सामर्थ्य से अथवा
८ किस नाम से किया । तब पितर ने
पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो उन से
कहा हे लोगों के प्रधानो और इस्रायेल
९ के प्राचीनो . इस दुर्ब्बल मनुष्य पर जो
भलाई किई गई है यदि उस के विषय
में आज हम से पूछा जाता है कि वह
१० किस नाम से चंगा किया गया है . तो
आप लोग सब जानिये और समस्त
इस्रायेली लोग जानें कि यीशु ख्रीष्ट
नासरी के नाम से जिसे आप लोगों ने
क्रूश पर घात किया जिसे ईश्वर ने
मृतकों में से उठाया उसी से यह मनुष्य
आप लोगों के आगे चंगा खड़ा है ।
११ यही वह पत्थर है जिसे आप थवइयों
ने तुच्छ जाना जो कोने का सिरा हुआ
१२ है । और किसी दूसरे से त्राण नहीं है
क्योंकि स्वर्ग के नीचे दूसरा नाम नहीं
है जो मनुष्यों के बीच में दिया गया
है जिस से हमें त्राण पाना होगा ॥
१३ तब उन्हों ने पितर और योहन का
साहस देखके और यह जानके कि वे

बिद्याहीन और अज्ञान मनुष्य हैं अचंभा
किया और उन को चीन्हा कि वे यीशु के
संग थे । और उस चंगा किये हुए मनुष्य १४
को उन के संग खड़े देखके वे कोई
बात बिरोध में न कह सके । परन्तु १५
उन को सभा के बाहर जाने की आज्ञा
देके उन्हों ने आपस में बिचार किया .
कि हम इन मनुष्यों से क्या करें क्योंकि १६
एक प्रसिद्ध आश्चर्य्य कर्म्म उन्हों से हुआ
है यह बात यिरूशलीम के सब निवा-
सियों पर प्रगट है और हम नहीं मुकर
सकते हैं । परन्तु जिस्तें लोगों में अधिक १७
फैल न जाय आओ हम उन्हें बहुत
धमकावें कि वे इस नाम से फिर किसी
मनुष्य से बात न करें । और उन्हों ने १८
उन्हें बुलाके आज्ञा दिई कि यीशु के
नाम से कुछ भी मत बोलो और मत
सिखाओ । परन्तु पितर और योहन ने १९
उन को उत्तर दिया कि ईश्वर से अधिक
आप लोगों को मानना क्या ईश्वर के
आगे उचित है सो आप लोग बिचार
कीजिये । क्योंकि जो हम ने देखा और २०
सुना है उस को न कहना हम से नहीं
हो सकता है । तब उन्हों ने और धमकी २१
देके उन्हें छोड़ दिया कि उन्हें दंड देने
का लोगों के कारण कोई उपाय नहीं
मिलता था क्योंकि जो हुआ था उस
के लिये सब लोग ईश्वर का गुणानुबाद
करते थे । क्योंकि वह मनुष्य जिस पर २२
यह चंगा करने का आश्चर्य्य कर्म्म किया
गया था चालीस बरस के ऊपर का था ॥
वे छूटके अपने संगियों के पास २३
आये और जो कुछ प्रधान याजकों और
प्राचीनों ने उन से कहा था सो सुना
दिया । वे सुनके एक चित्त होकर २४
ऊंचा शब्द करके ईश्वर से बोले हे प्रभु
तू ईश्वर है जिस ने स्वर्ग और पृथिवी
और समुद्र और सब कुछ जो उन में है

२५ बनाया, जिस ने अपने सेवक दाऊद के मुख से कहा अन्यदेशियों ने क्यों कोप किया और लोगों ने क्यों व्यर्थ २६ चिन्ता किई। परमेश्वर के और उस के अभिषिक्त जन के विरुद्ध पृथिवी के राजा लोग खड़े हुए और अध्यक्ष २७ लोग एक संग एकट्ठे हुए। क्योंकि सचमुच तेरे पवित्र सेवक यीशु के विरुद्ध जिसे तू ने अभिषेक किया हेरोद और पन्तिय पिलात भी अन्यदेशियों और इस्रायेली लोगों के संग एकट्ठे हुए, २८ कि जो कुछ तेरे हाथ और तेरे मत ने आगे से ठहराया था कि हो जाय सोई २९ करें। और अब हे प्रभु उन की ३० धमकियों को देख, और चंगा करने के लिये और चिन्हों और अद्भुत कामों के तेरे पवित्र सेवक यीशु के नाम से किये जाने के लिये अपना हाथ बढ़ाने से अपने दासों को यह दीजिये कि ३१ तेरा बचन बड़े साहस से बोलें। जब उन्हों ने प्रार्थना किई थी तब वह स्थान जिस में वे एकट्ठे हुए थे हिल गया और वे सब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हुए और ईश्वर का बचन साहस से बोलने लगे॥

३२ विश्वासियों की मंडली का एक मन और एक जीव था और न कोई अपनी सम्पत्ति में से कोई बस्तु अपनी कहता था परन्तु उन्हों की सब सम्पत्ति ३३ साझे की थी। और प्रेरित लोग बड़े सामर्थ्य से प्रभु यीशु के जी उठने की साक्षी देते थे और उन सभों पर बड़ा ३४ अनुग्रह था। और न उन में से कोई दरिद्र था क्योंकि जो जो लोग भूमि अथवा घरों के अधिकारी थे सो उन्हें ३५ बेचते थे, और बेची हुई बस्तुओं का दाम लाके प्रेरितों के पांवों पर रखते थे और जैसा जिस को प्रयोजन होता था तैसा हर एक को बांटा जाता ३६ था। और योशी नाम कुप्रस टापू का एक लेवीय जिसे प्रेरितों ने बर्णबा अर्थात शान्ति का पुत्र कहा उस को ३७ कुछ भूमि थी। सो वह उसे बेचके रुपैयों को लाया और प्रेरितों के पांवों पर रखा॥

पांचवां पर्व्व।

१ परन्तु अननियाह नाम एक मनुष्य ने अपनी स्त्री सफीरा के संग से कुछ भूमि २ बेची, और दाम में से कुछ रख छोड़ा जो उस की स्त्री भी जानती थी और कुछ लाके प्रेरितों के पांवों पर रखा। ३ परन्तु पितर ने कहा हे अननियाह शैतान ने क्यों तेरे मन में यह मत दिया है कि तू पवित्र आत्मा से झूठ बोले और भूमि के दाम में से कुछ रख छोड़े। ४ जब लों वह रही क्या तेरी न रही और जब बिक गई क्या तेरे बश में न थी, यह क्या है कि तू ने यह बात अपने मन में रखी है, तू मनुष्यों से नहीं परन्तु ईश्वर से झूठ बोला है। ५ अननियाह यह बातें सुनते ही गिर पड़ा और प्राण छोड़ दिया और इन बातों के सब सुननेहारों को बड़ा भय हुआ। ६ और जवानों ने उठके उसे लपेटा और ७ बाहर ले जाके गाड़ा। पहर एक के पीछे उस की स्त्री यह जो हुआ था न ८ जानके भीतर आई। इस पर पितर ने उस से कहा मुझ से कह दे क्या तुम ने वह भूमि इतने ही में बेची, वह ९ बोली हां इतने में। तब पितर ने उस से कहा यह क्या है कि तुम दोनों ने परमेश्वर के आत्मा की परीक्षा करने को एक संग युक्ति बांधी है, देख तेरे स्वामी के गाड़नेहारों के पांव द्वार पर हैं और वे तुझे बाहर ले जायेंगे। १० तब वह तुरन्त उस के पांवों के पास

गिर पड़ी औ प्राण छोड़ दिया और जवानों ने भीतर आके उसे मरी हुई पाया और बाहर ले जाके उस के स्वामी
११ के पास गाड़ा। और सारी मंडली को और इन बातों के सब सुननेहारों को बड़ा भय हुआ॥

१२ प्रेरितों के हाथों से बहुत चिन्ह और अद्भुत काम लोगों के बीच में किये जाते थे और वे सब एक चित्त होके
१३ सुलेमान के ओसारे में थे। औरों में से किसी को उन के संग मिलने का साहस नहीं था परन्तु लोग उन की बड़ाई
१४ करते थे। और और भी बहुत लोग पुरुष और स्त्रियां भी विश्वास करके
१५ प्रभु से मिल जाते थे। इस से लोग रोगियों को बाहर सड़कों में लाके खाटों और खटोलों पर रखते थे कि जब पितर आवे तब उस की परछाईं भी
१६ उन में से किसी पर पड़े। आसपास के नगरों के लोग भी रोगियों को और अशुद्ध भूतों से सताये हुए लोगों को लिये हुए यिरूशलीम में एकट्ठे होते थे और वे सब चंगे किये जाते थे॥

१७ तब महायाजक उठा और उस के सब संगी जो सदूकियों का पंथ है और
१८ डाह से भर गये. और प्रेरितों को पकड़के उन्हें सामान्य बन्दीगृह में रखा।
१९ परन्तु परमेश्वर के एक दूत ने रात को बन्दीगृह के द्वार खोलके उन्हें बाहर
२० लाके कहा. जाओ और मन्दिर में खड़े होके इस जीवन की सारी बातें लोगों
२१ से कहो। यह सुनके उन्हों ने भोर को मन्दिर में प्रवेश किया और उपदेश करने लगे. तब महायाजक और उस के संगी लोग आये और न्यायियों की सभा को और इस्राएल के सन्तानों के सारे प्राचीनों को एकट्ठे बुलाया और प्यादों को बन्दीगृह में भेजा कि उन्हें
२२ लावें। प्यादों ने जब पहुंचे तब उन्हें बन्दीगृह में न पाया परन्तु लौटके
२३ सन्देश दिया. कि हम ने बन्दीगृह को बड़ी दृढ़ता से बन्द किये हुए और पहरुओं को बाहर द्वारों के साम्हने खड़े हुए पाया परन्तु जब खोला तब भीतर
२४ किसी को न पाया। जब महायाजक और मन्दिर के पहरुओं के अध्यक्ष और प्रधान याजकों ने यह बातें सुनीं तब वे उन्हों के विषय में दुबधा में पड़े कि
२५ यह क्या हुआ चाहता है। तब किसी ने आके उन्हें सन्देश दिया कि देखिये वे मनुष्य जिन को आप लोगों ने बन्दीगृह में रखा मन्दिर में खड़े हुए लोगों
२६ को उपदेश देते हैं। तब पहरुओं का अध्यक्ष प्यादों के संग जाके उन्हें ले आया परन्तु बरियाई से नहीं क्योंकि वे लोगों से डरते थे ऐसा न हो कि पत्थरवाह किये जायें॥

२७ उन्हों ने उन्हें लाके न्यायियों की सभा में खड़ा किया और महायाजक
२८ ने उन से पूछा. क्या हम ने तुम्हें दृढ़ आज्ञा न दिई कि इस नाम से उपदेश मत करो. तौभी देखो तुम ने यिरूशलीम को अपने उपदेश से भर दिया है और इस मनुष्य का लोहू हमों पर
२९ लाने चाहते हो। तब पितर ने और प्रेरितों ने उत्तर दिया कि मनुष्यों की आज्ञा से अधिक ईश्वर की आज्ञा को
३० मानना उचित है। हमारे पितरों के ईश्वर ने यीशु को जिसे आप लोगों ने काठ पर लटकाके घात किया जिला
३१ उठाया। उस को ईश्वर ने कर्त्ता औ त्राता का ऊंचा पद अपने दाहिने हाथ दिया है कि वह इस्राएली लोगों से पश्चात्ताप करवाके उन्हें पापमोचन
३२ देवे। और इन बातों में हम उस के साक्षी हैं और पवित्र आत्मा भी जिसे

ईश्वर ने अपने आज्ञाकारियों को दिया है साक्षी है ॥

यह सुनके वे उन को तीर सा लग गया और वे उन्हें मार डालने का

३४ बिचार करने लगे । परन्तु न्याइयों की सभा में गमलियेल नाम एक फरीशी जो व्यवस्थापक और सब लोगों में मर्य्यादिक था खड़ा हुआ और प्रेरितों को थोड़ी बेर बाहर करने की आज्ञा

३५ किई . और उन से कहा हे इस्रायेली मनुष्यो अपने विषय में सचेत रहो कि तुम इन मनुष्यों से क्या किया चाहते

३६ हो । क्योंकि इन दिनों के आगे थूदा यह कहता हुआ उठा कि मैं भी कोई हूं और लोग गिन्ती में चार सौ के अटकल उस के साथ लग गये परन्तु वह मारा गया और जितने लोग उस को मानते थे सब तितर बितर हुए

३७ और बिला गये । उस के पीछे नाम लिखाने के दिनों में यिहूदा गालीली उठा और बहुत लोगों को अपने पीछे बहका लिया . वह भी नष्ट हुआ और जितने लोग उस को मानते थे सब

३८ तितर बितर हुए । और अब मैं तुम्हों से कहता हूं इन मनुष्यों से हाथ उठाओ और उन्हें जाने दो क्योंकि यह बिचार अथवा यह काम यदि मनुष्यों की ओर से होय तो लोप हो जायगा ।

३९ परन्तु यदि ईश्वर से है तो तुम उसे लोप नहीं कर सकते हो . ऐसा न हो कि तुम ईश्वर से भी लड़नेहारे ठहरो ॥

४० तब उन्हों ने उस की मान लिई और प्रेरितों को बुलाके उन्हें कोड़े मारके आज्ञा दिई कि यीशु के नाम से बात मत करो . तब उन्हें छोड़

४१ दिया । सो वे इस बात से कि हम उस के नाम के लिये निन्दित होने के योग्य गिने गये आनन्द करते हुए न्याइयों की सभा के साम्हने से चले

४२ गये . और प्रतिदिन मन्दिर में और घर घर उपदेश करने और यीशु खीष्ट का सुसमाचार सुनाने से नहीं थंभे ॥

छठवां पर्व्व ।

१ उन दिनों में जब शिष्य बहुत होने लगे तब यूनानीय भाषा बोलनेहारे इब्रियों पर कुड़कुड़ाने लगे कि प्रतिदिन

२ की सेवकाई में हमारी बिधवाओं की सुध नहीं लिई जाती । तब बारह प्रेरितों ने शिष्यों की मंडली को अपने पास बुलाके कहा यह अच्छा नहीं लगता है कि हम लोग ईश्वर का बचन छोड़के खिलाने पिलाने की

३ सेवकाई में रहें । इस लिये हे भाइयो अपने में से सात सुख्यात मनुष्यों को जो पवित्र आत्मा से और बुद्धि से परिपूर्ण हों चुन लो कि हम उन को

४ इस काम पर नियुक्त करें । परन्तु हम तो प्रार्थना में और बचन की सेवकाई

५ में लगे रहेंगे । यह बात सारी मंडली को अच्छी लगी और उन्हों ने स्तिफान एक मनुष्य को जो बिश्वास से और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था और फिलिप और प्रखर और निकानर और तीमोन और पार्मिना और अन्तैखिया नगर के यिहूदीय मतावलंबी निकोलाव

६ को चुन लिया . और उन्हें प्रेरितों के आगे खड़ा किया और उन्हों ने प्रार्थना

७ करके उन पर हाथ रखे । और ईश्वर का बचन फैलता गया और यिरूशलीम में शिष्य लोग गिन्ती में बहुत बढ़ते गये और बहुतेरे याजक लोग बिश्वास के अधीन हुए ॥

८ स्तिफान बिश्वास और सामर्थ्य से पूर्ण होके बड़े बड़े अद्भुत और आश्चर्य्य

९ कर्म्म लोगों के बीच में करता था । तब उस सभा में से जो लिबर्तिनियों की

कहावती है और कुरीनीय औ सिकन्दरीय लोगों में से और किलिकिया औ आशिया देशों के लोगों में से कितने उठके
१० स्तिफान से विवाद करने लगे. परन्तु उस ज्ञान का और उस आत्मा का जिस करके वह बात करता था साम्हना नहीं कर सकते थे॥
११ तब उन्हों ने लोगों को उभाड़ा जो बोले हम ने उस को मूसा के और ईश्वर के विरोध में निन्दा की बातें
१२ बोलते सुना है। और लोगों औ प्राचीनों औ अध्यापकों को उसकाके वे चढ़ आये और उसे पकड़के न्याइयों की
१३ सभा में लाये. और झूठे साक्षियों को खड़ा किया जो बोले यह मनुष्य इस पवित्र स्थान के और व्यवस्था के विरोध में निन्दा की बातें बोलने से नहीं
१४ थंभता है। क्योंकि हम ने उसे कहते सुना है कि यह यीशु नासरी इस स्थान को ढायगा और जो व्यवहार मूसा ने हमें सौंप दिये उन्हें बदल डालेगा।
१५ तब सब लोगों ने जो सभा में बैठे थे उस की ओर ताकके उस का मुंह स्वर्गदूत के मुंह के ऐसा देखा॥

सातवां पर्ब्ब।

१ तब महायाजक ने कहा क्या यह
२ बातें यूंहीं हैं। स्तिफान ने कहा हे भाइयो और पितरो सुनो. हमारा पिता इब्राहीम हारान नगर में बसने के पहिले जब मिसपतामिया देश में था तब तेजो-मय ईश्वर ने उस को दर्शन दिया.
३ और उस से कहा तू अपने देश और अपने कुटुंबों में से निकलके जो देश
४ मैं तुझे दिखाऊं उसी में आ। तब उस ने कसदियों के देश से निकलके हारान में बास किया और वहां से उस के पिता के मरने के पीछे ईश्वर ने उस को इस देश में लाके बसाया जिस में आप लोग अब बसते हैं। और उस ने
५ इस देश में उस को कुछ अधिकार न दिया पैर रखने भर भूमि भी नहीं परन्तु उस को पुत्र न रहते ही उस को प्रतिज्ञा दिई कि मैं यह देश तुझ को और तेरे पीछे तेरे बंश को अधिकार के लिये देऊंगा। और ईश्वर ने यूं कहा
६ कि तेरे सन्तान पराये देश में बिदेशी होंगे और वे लोग उन्हें दास बनावेंगे और चार सौ बरस उन्हें दुःख देंगे।
७ और जिन लोगों के वे दास होंगे उन लोगों को (ईश्वर ने कहा) मैं बिचार करूंगा और इस के पीछे वे निकल आवेंगे और इसी स्थान में मेरी सेवा
८ करेंगे। और उस ने उस को खतने का नियम दिया और इस रीति से इसहाक उस से उत्पन्न हुआ और उस ने आठवें दिन उस का खतना किया और इसहाक ने याकूब को और याकूब ने बारह
९ कुलपतियों को। और कुलपतियों ने यूसफ से डाह करके उसे मिसर देश जानेहारों के हाथ बेचा परन्तु ईश्वर
१० उस के संग था. और उसे उस के सब क्लेशों से छुड़ाके मिसर के राजा फिरऊन के आगे अनुग्रह के योग्य और बुद्धिमान किया और उस ने उसे मिसर देश पर और अपने सारे घर पर प्रधान ठह-
११ राया। तब मिसर और कनान के सारे देश में अकाल और बड़ा क्लेश पड़ा और हमारे पितरों को अन्न नहीं मिलता
१२ था। परन्तु याकूब ने यह सुनके कि मिसर में अनाज है हमारे पितरों को
१३ पहिली बेर भेजा। और दूसरी बेर में यूसफ अपने भाइयों से पहचाना गया और यूसफ का घराना फिरऊन पर
१४ प्रगट हुआ। तब यूसफ ने अपने पिता याकूब को और अपने सब कुटुंबों को जो पचहत्तर जन थे बुलवा भेजा। वे
१५

याकूब मिसर को गया और वह आप १६ मरा और हमारे पितर लोग . और वे शिखिम नगर में पहुंचाये गये और उस कबर में रखे गये जिसे इब्राहीम ने चांदी देके शिखिम के पिता हमोर के सन्तानों से मोल लिया ॥

१७ परन्तु जो प्रतिज्ञा ईश्वर ने किरिया खाके इब्राहीम से किई थी उस का समय ज्योंही निकट आया त्योंही वे लोग मिसर में बढ़े और बहुत हो गये । १८ इतने में दूसरा राजा उठा जो यूसफ १९ को नहीं जानता था । उस ने हमारे लोगों से चतुराई करके हमारे पितरों के साथ ऐसी बुराई किई कि उन के बालकों को बाहर फिंकवाया कि वे २० जीते न रहें । उस समय में मूसा उत्पन्न हुआ जो परमसुन्दर था और वह अपने पिता के घर में तीन मास पाला २१ गया । जब वह बाहर फेंका गया तब फिरऊन की बेटी ने उसे उठा लिया और अपना पुत्र करके उसे पाला । २२ और मूसा को मिसरियों की सारी विद्या सिखाई गई और वह बातों और कामों २३ में सामर्थी था । जब वह चालीस बरस का हुआ तब उस के मन में आया कि अपने भाइयों को अर्थात इस्रायेल के २४ सन्तानों को देख लेवे । और उस ने एक पर अन्याय होते देखके रक्षा किई और मिसरी को मारके सताये हुए का २५ पलटा लिया । वह विचार करता था कि मेरे भाई समझेंगे कि ईश्वर मेरे हाथ से उन्हों का निस्तार करता है २६ परन्तु उन्हों ने नहीं समझा । अगले दिन वह उन्हें जब वे आपस में लड़ते थे दिखाई दिया और यह कहके उन्हें मिलाप करने को मनाया कि हे मनुष्यो तुम तो भाई हो एक दूसरे से क्यों २७ अन्याय करते हो । परन्तु जो अपने पड़ोसी से अन्याय करता था उस ने उस को हटाके कहा किस ने तुझे हमों पर अध्यक्ष और न्यायी ठहराया । २८ क्या जिस रीति से तू ने कल मिसरी को मार डाला तू मुझे मार डालने चाहता है । २९ इस बात पर मूसा भागा और मिदियान देश में परदेशी हुआ और वहां दो पुत्र उस को उत्पन्न हुए । ३० जब चालीस बरस बीत गये तब परमेश्वर के दूत ने सीनई पर्ब्बत के जंगल में उस को एक झाड़ी की आग की ज्वाला में दर्शन दिया । ३१ मूसा ने देखके उस दर्शन से अचंभा किया और जब वह दृष्टि करने को निकट आता था तब परमेश्वर का शब्द उस पास पहुंचा . ३२ कि मैं तेरे पितरों का ईश्वर अर्थात इब्राहीम का ईश्वर और इसहाक का ईश्वर और याकूब का ईश्वर हूं . तब मूसा कांपने लगा और दृष्टि करने का उसे साहस न रहा । ३३ तब परमेश्वर ने उस से कहा अपने पांवों की जूतियां खोल क्योंकि वह स्थान जिस पर तू खड़ा है पवित्र भूमि है । ३४ मैं ने दृष्टि करके अपने लोगों की जो मिसर में हैं दुर्दशा देखी है और उन का कहरना सुना है और उन्हें छुड़ाने को उतर आया हूं और अब आ मैं तुझे मिसर को भेजूंगा । ३५ यही मूसा जिसे उन्हों ने नकारके कहा किस ने तुझे अध्यक्ष और न्यायी ठहराया उसी को ईश्वर ने उस दूत के हाथ से जिस ने उस को झाड़ी में दर्शन दिया अध्यक्ष और निस्तारक करके भेजा । ३६ यही मिसर देश में और लाल समुद्र में और जंगल में चालीस बरस अद्भुत काम और चिन्ह दिखाके उन्हें निकाल लाया । ३७ यही वह मूसा है जिस ने इस्रायेल के सन्तानों से कहा परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हारे भाइयों

में से मेरे समान एक भविष्यद्वक्ता को तुम्हारे लिये उठावेगा तुम उस की
३८ सुनो। यही है जो जंगल में मंडली के बीच में उस दूत के संग जो सीनई पर्व्वत पर उस से बोला और हमारे पितरों के संग था और उस ने हमें देने
३९ के लिये जीवती बाणियां पाईं। पर हमारे पितरों ने उस के आज्ञाकारी होने की इच्छा न किई परन्तु उसे हटाके अपने मन में मिसर की ओर
४० फिरे, और हारोन से बोले हमारे लिये देवों को बनाइये जो हमारे आगे जायें क्योंकि यह मूसा जो हमें मिसर देश में से निकाल लाया उसे हम नहीं जानते क्या हुआ है॥

४१ उन दिनों में उन्हों ने बछड़ा बनाके उस मूर्त्ति के आगे बलि चढ़ाया और अपने हाथों के कामों से मगन होते
४२ थे। तब ईश्वर ने मुंह फेरके उन्हें आकाश की सेना पूजने को त्याग दिया जैसा भविष्यद्वक्ताओं के पुस्तक में लिखा है कि हे इस्रायेल के घराने क्या तुम ने चालीस बरस जंगल में मेरे आगे पशुमेध और बलि चढ़ाये।
४३ तौभी तुम ने मोलक का तंबू और अपने देवता रिंफन का तारा उठा लिया अर्थात उन आकारों को जो तुम ने पूजने को बनाये, और मैं तुम्हें बाबुल से और उधर ले जाके बसाऊंगा॥

४४ साक्षी का तंबू जंगल में हमारे पितरों के बीच में था जैसा उसी ने ठहराया जिस ने मूसा से कहा कि जो आकार तू ने देखा है उस के
४५ अनुसार उस को बना। और उस को हमारे पितर लोग यिहोशूआ के संग आगलों से पाके तब यहां लाये जब उन्हों ने उन अन्यदेशियों का अधिकार पाया जिन्हें ईश्वर ने हमारे पितरों के साम्ने से निकाल दिया, सोई दाऊद के
४६ दिनों तक हुआ जिस पर ईश्वर का अनुग्रह था और जिस ने मांगा कि मैं याकूब के ईश्वर के लिये डेरा ठह-
४७ राऊं। पर सुलेमान ने उस के लिये घर
४८ बनाया। परन्तु सर्व्वप्रधान जो है सो हाथ के बनाये हुए मन्दिरों में बास नहीं करता है जैसा भविष्यद्वक्ता ने
४९ कहा है, कि परमेश्वर कहता है स्वर्ग मेरा सिंहासन और पृथिवी मेरे चरणों की पीढ़ी है तुम मेरे लिये कैसा घर बनाओगे अथवा मेरे बिश्राम का कौन
५० सा स्थान है। क्या मेरे हाथ ने यह सब बस्तु नहीं बनाईं॥

५१ हे हठीले और मन और कानों के खतनाहीन लोगो तुम सदा पवित्र आत्मा का साम्हना करते हो, जैसा तुम्हारे पितरों ने तैसा तुम भी।
५२ भविष्यद्वक्ताओं में से तुम्हारे पितरों ने किस को नहीं सताया, और उन्हों ने उन्हें मार डाला जिन्हों ने उस धर्म्मी जन के आने का आगे से सन्देश दिया जिस के तुम अब पकड़वानेहारे और
५३ हत्यारे हुए हो, जिन्हों ने स्वर्गदूतों के द्वारा ठहराई हुई व्यवस्था पाई है तौभी पालन न किई॥

५४ यह बातें सुनने से उन के मन को तीर सा लग गया और वे स्तिफान पर
५५ दांत पीसने लगे। परन्तु उस ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो स्वर्ग की ओर ताकके ईश्वर की महिमा को और यीशु को ईश्वर की दहिनी ओर खड़े देखा,
५६ और कहा देखो मैं स्वर्ग को खुले और मनुष्य के पुत्र को ईश्वर की दहिनी
५७ ओर खड़े देखता हूं। तब उन्हों ने बड़े शब्द से चिल्लाके अपने कान बन्द किये और एक चित्त होके उस पर लपके,
५८ और उसे नगर के बाहर निकालके

पत्थरवाह करने लगे और साक्षियों ने अपने कपड़े शावल नाम एक जवान
५९ के पांवों पास उतार रखे। और उन्हों ने स्तिफान को पत्थरवाह किया जो यह कहके प्रार्थना करता था कि हे प्रभु यीशु मेरे आत्मा को ग्रहण कर।
६० और घुटने टेकके उस ने बड़े शब्द से पुकारा हे प्रभु यह पाप उन पर मत लगा और यह कहके सो गया॥

आठवां पर्व्व।

१ शावल स्तिफान के मारे जाने में सम्मति देता था. उस समय यिरूशलीम में की मंडली पर बड़ा उपद्रव हुआ और प्रेरितों को छोड़ वे सब यिहूदिया और शोमिरोन देशों में तितर बितर
२ हुए। भक्त लोगों ने स्तिफान को कबर में रखा और उस के लिये बड़ा विलाप
३ किया। शावल मंडली को नाश करता रहा कि घर घर घुसके पुरुषों और स्त्रियों को पकड़के बन्दीगृह में डालता था॥

४ जो तितर बितर हुए सो सुसमाचार
५ प्रचार करते हुए फिरा किये। और फिलिप ने शोमिरोन के एक नगर में जाके खीष्ट की कथा लोगों को सुनाई।
६ और जो बातें फिलिप ने कहीं उन्हों पर लोगों ने उन आश्चर्य्य कर्म्मों को जो वह करता था सुनने और देखने से एक
७ चित्त होके मन लगाया। क्योंकि बहुतों में से जिन्हें अशुद्ध भूत लगे थे वे भूत बड़े शब्द से पुकारते हुए निकले और बहुत अर्द्धांगी और लंगड़े लोग चंगे किये
८ गये। और उस नगर में बड़ा आनन्द हुआ॥

९ परन्तु उस नगर में आगे से शिमोन नाम एक मनुष्य था जो टोना करके शोमिरोन के लोगों को विस्मित करता था और अपने को कोई बड़ा पुरुष
१० कहता था। और छोटे से बड़े लों सब उस को मानके कहते थे कि यह मनुष्य ईश्वर की महा शक्ति ही है।
११ उस ने बहुत दिनों से उन्हें टोनों से विस्मित किया था इस लिये वे उस को मानते थे।
१२ परन्तु जब उन्हों ने फिलिप की जो ईश्वर के राज्य के और यीशु खीष्ट के नाम के विषय में का सुसमाचार सुनाता था विश्वास किया तब पुरुष और स्त्रियां भी बपतिसमा लेने लगीं।
१३ तब शिमोन ने आप भी विश्वास किया और बपतिसमा लेके फिलिप के संग लगा रहा और आश्चर्य्य कर्म्म और बड़े चिन्ह जो होते थे देखके विस्मित होता था॥

१४ जो प्रेरित यिरूशलीम में थे उन्हों ने जब सुना कि शोमिरोनियों ने ईश्वर का वचन ग्रहण किया है तब पितर और योहन को उन के पास भेजा।
१५ और उन्हों ने जाके उन के लिये प्रार्थना किई कि वे पवित्र आत्मा पावें।
१६ क्योंकि वह अब लों उन में से किसी पर नहीं पड़ा था केवल उन्हों ने प्रभु यीशु के नाम से बपतिसमा लिया था।
१७ तब उन्हों ने उन पर हाथ रखे और उन्हों ने पवित्र आत्मा पाया॥

१८ शिमोन यह देखके कि प्रेरितों के हाथों के रखने से पवित्र आत्मा दिया जाता है उन के पास रुपैये लाया.
१९ और कहा मुझ को भी यह अधिकार दीजिये कि जिस किसी पर मैं हाथ रखूं वह पवित्र आत्मा पावे।
२० परन्तु पितर ने उस से कहा तेरे रुपैये तेरे संग नष्ट होवें क्योंकि तू ने ईश्वर का दान रुपैयों से मोल लेने का विचार किया है।
२१ तुझे इस बात में न भाग न अधिकार है क्योंकि तेरा मन ईश्वर के आगे सीधा नहीं है।
२२ इस लिये अपनी इस बुराई से पश्चात्ताप करके ईश्वर से

प्रार्थना कर क्या जाने तेरे मन का बिचार २२ क्षमा किया जाय। क्योंकि मैं देखता हूं कि तू अति कड़वे पित्त में और २४ अधर्म्म के बंधन में पड़ा है। शिमोन ने उत्तर दिया कि आप लोग मेरे लिये प्रभु से प्रार्थना कीजिये कि जो बातें आप लोगों ने कही हैं उन में से कोई बात मुझ पर न पड़े॥

२५ सो वे साक्षी देके और प्रभु का बचन सुनाके यिरूशलीम को लौटे और उन्हों ने शोमिरोनियों के बहुत गांवों में २६ सुसमाचार प्रचार किया। परन्तु परमेश्वर के एक दूत ने फिलिप से कहा उठके दक्षिण को उस मार्ग पर जा जो यिरूशलीम से अज्जा नगर को जाता है २७ वह जंगल है। वह उठके गया और देखो कूश देश का एक मनुष्य था जो नपुंसक और कूशियों की रानी कन्दाकी का एक प्रधान और उस के सारे धन पर अध्यक्ष था और यिरूशलीम को भजन २८ करने को आया था। और वह लौटता था और अपने रथ पर बैठा हुआ यिशैयाह भविष्यद्वक्ता का पुस्तक पढ़ता २९ था। तब आत्मा ने फिलिप से कहा निकट जाके इस रथ से मिल जा। ३० फिलिप ने उस ओर दौड़के उस मनुष्य को यिशैयाह भविष्यद्वक्ता का पुस्तक पढ़ते हुए सुना और कहा क्या आप जो ३१ पढ़ते हैं उसे बूझते हैं। उस ने कहा यदि कोई मुझे न बतावे तो मैं क्योंकर बूझ सकूं. और उस ने फिलिप से बिन्ती ३२ किई कि चढ़के मेरे संग बैठिये। धर्म्मपुस्तक का अध्याय जो वह पढ़ता था यही था कि वह भेड़ की नाईं बध होने को पहुंचाया गया और जैसा मेम्ना अपने रोम कतरनेहारे के साम्हने अबोल है तैसा उस ने अपना मुंह न खोला। ३३ उस की दीनताई में उस का न्याय नहीं होने पाया और उस के समय के लोगों का बर्णन कौन करेगा क्योंकि उस का प्राण पृथिवी से उठाया गया। ३४ इस पर नपुंसक ने फिलिप से कहा मैं आप से बिन्ती करता हूं भविष्यद्वक्ता यह बात किस के विषय में कहता है अपने विषय में अथवा किसी दूसरे के विषय में। ३५ तब फिलिप ने अपना मुंह खोलके और धर्म्मपुस्तक के इस बचन से आरंभ करके यीशु का सुसमाचार उस को सुनाया। ३६ मार्ग में जाते जाते वे किसी पानी के पास पहुंचे और नपुंसक ने कहा देखिये जल है बपतिसमा लेने में मुझे क्या रोक है। ३७ [फिलिप ने कहा जो आप सारे मन से बिश्वास करते हैं तो हो सकता है. उस ने उत्तर दिया मैं बिश्वास करता हूं कि यीशु खीष्ट ईश्वर का पुत्र है।] ३८ तब उस ने रथ खड़ा करने की आज्ञा दिई और वे दोनों फिलिप और नपुंसक भी जल में उतरे और फिलिप ने उस को बपतिसमा दिया। ३९ जब वे जल में से ऊपर आये तब परमेश्वर का आत्मा फिलिप को ले गया और नपुंसक ने उसे फिर नहीं देखा क्योंकि वह अपने मार्ग पर आनन्द करता हुआ चला गया। ४० परन्तु फिलिप अस्दोद नगर में पाया गया और आगे बढ़के जब लों कैसरिया नगर में न पहुंचा सब नगरों में सुसमाचार सुनाता गया॥

नवां पर्व्व।

१ शावल जिस को अब लों प्रभु के शिष्यों को धमकाने और घात करने की सांस फूल रही थी महायाजक के पास २ गया. और उस से दमेसक नगर की सभाओं के नाम पर चिट्ठियां मांगीं इस लिये कि यदि कोई मिले क्या पुरुष क्या स्त्रियां जो उस पन्थ के हों तो उन्हें बांधे हुए यिरूशलीम को ले आवे।

३ परन्तु जाते हुए जब वह दमेसक के निकट पहुंचा तब अचांचक स्वर्ग से एक ज्योति उस की चारों ओर चमकी ।
४ और वह भूमि पर गिरा और एक शब्द सुना जो उस से बोला हे शावल हे
५ शावल तू मुझे क्यों सताता है । उस ने कहा हे प्रभु तू कौन है . प्रभु ने कहा मैं यीशु हूं जिसे तू सताता है पैनों पर
६ लात मारना तेरे लिये कठिन है । उस ने कंपित और अचंभित हो कहा हे प्रभु तू क्या चाहता है कि मैं करूं . प्रभु ने उस से कहा उठके नगर में जा और तुझ से कहा जायगा तुझे क्या
७ करना उचित है । और जो मनुष्य उस के संग जाते थे सो चुप खड़े थे कि वे शब्द तो सुनते थे पर किसी को नहीं
८ देखते थे । तब शावल भूमि से उठा परन्तु जब अपनी आंखें खोलीं तब किसी को न देख सका पर वे उस का हाथ पकड़के उसे दमेसक में लाये ।
९ और वह तीन दिन लों नहीं देख सकता था और न खाता न पीता था ॥

१० दमेसक में अननियाह नाम एक शिष्य था और प्रभु ने दर्शन में उस से कहा हे अननियाह . उस ने कहा हे
११ प्रभु देखिये मैं हूं । तब प्रभु ने उस से कहा उठके उस गली में जो सीधी कहावती है जा और यिहूदा के घर में शावल नाम तारस नगर के एक मनुष्य को ढूंढ़ क्योंकि देख वह प्रार्थना करता
१२ है . और उस ने दर्शन में यह देखा है कि अननियाह नाम एक मनुष्य ने भीतर आके उस पर हाथ रखा कि वह
१३ दृष्टि पावे । अननियाह ने उत्तर दिया कि हे प्रभु मैं ने बहुतों से इस मनुष्य के विषय में सुना है कि उस ने यिरूशलीम में तेरे पवित्र लोगों से कितनी बुराई
१४ किई है । और यहां उस को तेरे नाम की सब प्रार्थना करनेहारों को बांधने का प्रधान याजकों की ओर से अधिकार है ।
१५ प्रभु ने उस से कहा चला जा क्योंकि वह अन्यदेशियों और राजाओं और इस्रायेल के सन्तानों के आगे मेरा नाम पहुंचाने को मेरा एक चुना हुआ पात्र
१६ है । क्योंकि मैं उसे बताऊंगा कि मेरे नाम के लिये उस को कैसा बड़ा दुःख उठाना होगा ॥

१७ तब अननियाह ने जाके उस घर में प्रवेश किया और उस पर हाथ रखके कहा हे भाई शावल प्रभु ने अर्थात यीशु ने जिस ने उस मार्ग में जिस से तू आता था तुझ को दर्शन दिया मुझे भेजा है इस लिये कि तू दृष्टि पावे और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होवे ।
१८ और तुरन्त उस की आंखों से छिलके से गिर पड़े और वह तुरन्त देखने लगा और उठके बपतिसमा लिया और भोजन करके बल पाया ॥

१९ तब शावल कितने दिन दमेसक में
२० के शिष्यों के संग था । और वह तुरन्त सभाओं में यीशु की कथा सुनाने लगा
२१ कि वह ईश्वर का पुत्र है । और सब सुननेहारे विस्मित हो कहने लगे क्या यह वह नहीं है जिस ने यिरूशलीम में इस नाम की प्रार्थना करनेहारों को नाश किया और यहां इसी लिये आया था कि उन्हें बांधे हुए प्रधान याजकों
२२ के आगे पहुंचावे । परन्तु शावल और भी दृढ़ होता गया और यही ख्रीष्ट है इस बात का प्रमाण देके दमेसक में रहनेहारे यिहूदियों को व्याकुल किया ।
२३ जब बहुत दिन बीत गये तब यिहूदियों ने उसे मार डालने को आपस में
२४ विचार किया । परन्तु उन की कुमंत्रणा शावल को जान पड़ी . वे उसे मार डालने को रात और दिन फाटकों पर

२५ पहरा भी देते थे। परन्तु शिष्यों ने रात को उसे लेके टोकरे में लटकाके भीत पर से उतार दिया॥

२६ जब शावल यिरूशलीम में पहुंचा तब वह शिष्यों से मिल जाने चाहता था और वे सब उस से डरते थे क्योंकि वे उस के शिष्य होने की प्रतीति नहीं २७ करते थे। परन्तु बर्णबा उसे ले करके प्रेरितों के पास लाया और उन से कह दिया कि उस ने क्योंकर मार्ग में प्रभु को देखा था और प्रभु उस से बोला था और क्योंकर उस ने दमेसक में यीशु के नाम से खोलके बात किई थी। २८ तब वह यिरूशलीम में उन के संग आया जाया करने लगा और प्रभु यीशु के नाम से खोलके बात करने लगा। २९ उस ने यूनानीय भाषा बोलनेहारों से भी कथा और विवाद किया पर वे उसे ३० मार डालने का यत्न करने लगे। यह जानके भाई लोग उसे कैसरिया में लाये और तारस की ओर भेजा॥

३१ सो सारे यिहूदिया और गालील और शोमिरोन में मंडलियों को चैन होता था और वे सुधर जाती थीं और प्रभु के भय में और पवित्र आत्मा की शांति में ३२ चलती थीं और बढ़ती जाती थीं। तब पितर सब पवित्र लोगों में फिरते हुए उन्हों के पास भी आया जो लुद्दा नगर ३३ में बास करते थे। वहां उस ने ऐनिय नाम एक मनुष्य को पाया जो अर्द्धांगी था और आठ बरस से खाट पर पड़ा ३४ हुआ था। पितर ने उस से कहा हे ऐनिय यीशु खीष्ट तुझे चंगा करता है उठ और अपना बिछौना सुधार, तब ३५ वह तुरन्त उठा। और लुद्दा और शारोन के सब निवासियों ने उसे देखा और वे प्रभु की ओर फिरे॥

३६ याफो नगर में तबीथा अर्थात दर्का नाम एक शिष्या थी, वह सुकर्म्मों और दानों से जो वह करती थी पूर्ण थी। ३७ उन दिनों में वह रोगी हुई और मर गई और उन्हों ने उसे नहलाके उपरोठी कोठरी में रखा। ३८ और इस लिये कि लुद्दा याफो के निकट था शिष्यों ने यह सुनके कि पितर वहां है दो मनुष्यों को उस पास भेजके बिन्ती किई कि हमारे पास आने में बिलंब न कीजिये। ३९ तब पितर उठके उन के संग गया और जब वह पहुंचा तब वे उसे उस उपरोठी कोठरी में ले गये और सब बिधवाएं रोती हुई आर जो कुर्त्ते और अन्य दर्का उन के संग होते हुए बनाती थी उन्हें दिखाती हुईं उस पास खड़ी हुईं। ४० परन्तु पितर ने सभों को बाहर निकाला और घुटने टेकके प्रार्थना किई और लोथ की ओर फिरके कहा हे तबीथा उठ, तब उस ने अपनी आंखें खोलीं और पितर को देखके उठ बैठी। ४१ उस ने हाथ देके उस को उठाया और पवित्र लोगों और बिधवाओं को बुलाके उसे जीती दिखाई। ४२ यह बात सारे याफो में जान पड़ी और बहुत लोगों ने प्रभु पर बिश्वास किया। ४३ और पितर याफो में शिमोन नाम किसी चमार के यहां बहुत दिन रहा॥

दसवां पर्ब्ब।

१ कैसरिया में कर्णीलिय नाम एक मनुष्य था जो इतलीय नाम पलटन का २ एक शतपति था। वह भक्त जन था और अपने सारे घराने समेत ईश्वर से डरता था और लोगों को बहुत दान देता था और नित्य ईश्वर से प्रार्थना ३ करता था। उस ने दिन को तीसरे पहर के निकट दर्शन में प्रत्यक्ष देखा कि ईश्वर का एक दूत उस पास भीतर आया और उस से बोला हे कर्णीलिय।

४ उस ने उस की ओर ताकके और भयमान होके कहा हे प्रभु क्या है . उस ने उस से कहा तेरी प्रार्थनाएं और तेरे दान स्मरण के लिये ईश्वर के आगे ५ पहुंचे हैं। और अब मनुष्यों को याफो नगर भेजके शिमोन को जो पितर ६ कहावता है बुला। वह शिमोन नाम किसी चमार के यहां जिस का घर समुद्र के तीर पर है पाहुन है . जो कुछ तुझे करना उचित है सो वही तुझ ७ से कहेगा। जब वह दूत जो कर्णीलिय से बात करता था चला गया तब उस ने अपने सेवकों में से दो को और जो उस के यहां लगे रहते थे उन में से एक ८ भक्त योद्धा को बुलाया . और उन्हों को सब बातें सुनाके उन्हें याफो को भेजा॥

९ दूसरे दिन ज्योंही वे मार्ग में चलते थे और नगर के निकट पहुंचे त्योंही पितर दो पहर के निकट प्रार्थना करने १० को कोठे पर चढ़ा। तब वह बहुत भूखा हुआ और कुछ खाने चाहता था पर जिस समय वे तैयार करते थे वह ११ बेसुध हो गया। और उस ने स्वर्ग को खुले और बड़ी चद्दर की नाईं किसी पात्र को चार कोनों से बांधे हुए और पृथिवी की ओर लटकाये हुए अपनी १२ ओर उतरते देखा। उस में पृथिवी के सब चौपाये और बनपशु और रेंगनेहारे १३ जन्तु और आकाश के पंछी थे। और एक शब्द उस पास पहुंचा कि हे पितर १४ उठ मार और खा। पितर ने कहा हे प्रभु ऐसा न होवे क्योंकि मैं ने कभी कोई अपवित्र अथवा अशुद्ध बस्तु नहीं १५ खाई। और शब्द फिर दूसरी बेर उस पास पहुंचा कि जो कुछ ईश्वर ने शुद्ध किया है उस को तू अशुद्ध मत कह। १६ यह तीन बार हुआ तब वह पात्र फिर स्वर्ग पर उठा लिया गया॥

१७ जिस समय पितर अपने मन में दुबधा करता था कि यह दर्शन जो मैं ने देखा है क्या है देखो वे मनुष्य जो कर्णीलिय की ओर से भेजे गये थे शिमोन के घर का ठिकाना पा करके १८ डेवढ़ी पर खड़े हुए . और पुकारके पूछते थे क्या शिमोन जो पितर कहावता है यहां पाहुन है। १९ पितर उस दर्शन के बिषय में सोचता ही था कि आत्मा ने उस से कहा देख तीन मनुष्य २० तुझे ढूंढ़ते हैं। पर तू उठके उतर जा और उन के संग बेखटके चला जा २१ क्योंकि मैं ने उन्हें भेजा है। तब पितर ने उन मनुष्यों के पास जो कर्णीलिय की ओर से उस पास भेजे गये थे उतरके कहा देखो जिसे तुम ढूंढ़ते हो सो मैं २२ हूं तुम किस कारण से आये हो। वे बोले कर्णीलिय शतपति जो धर्म्मी मनुष्य और ईश्वर से डरनेहारा और सारे यिहूदी लोगों में सुख्यात है उस को एक पवित्र दूत से आज्ञा दिई गई कि आप को अपने घर में बुलाके आप से बातें सुने। २३ तब पितर ने उन्हें भीतर बुलाके उन की पहुनई किई और दूसरे दिन वह उन के संग गया और याफो के भाइयों में से कितने उस के साथ हो लिये॥

२४ दूसरे दिन उन्हों ने कैसरिया में प्रवेश किया और कर्णीलिय अपने कुटुंबों और प्रिय मित्रों को एकट्ठे बुलाके उन की बाट जोहता था। २५ जब पितर भीतर आता था तब कर्णीलिय उस से आ मिला और पांवों पड़के प्रणाम किया। २६ परन्तु पितर ने उस को उठाके कहा खड़ा २७ हो मैं आप भी मनुष्य हूं। और वह उस के संग बातचीत करता हुआ भीतर गया और बहुत लोगों को एकट्ठे पाया . २८ और उन से कहा तुम जानते हो कि अन्यदेशी की संगति करना अथवा उस

के यहां जाना यिहूदी मनुष्य को अनुचित है परन्तु ईश्वर ने मुझे बताया है कि न किसी मनुष्य को अपवित्र अथवा
२९ अशुद्ध मत कह। इस लिये मैं जो बुलाया गया तो इस के विरुद्ध कुछ न कहके चला आया सो मैं पूछता हूं कि तुम्हों ने किस बात के लिये मुझे बुलाया
३० है। कर्णीलिय ने कहा चार दिन हुए कि मैं इस घड़ी लों उपवास करता था और तीसरे पहर अपने घर में प्रार्थना करता था कि देखो एक पुरुष चमकता वस्त्र पहिने हुए मेरे आगे खड़ा हुआ.
३१ और बोला हे कर्णीलिय तेरी प्रार्थना सुनी गई है और तेरे दान ईश्वर के आगे
३२ स्मरण किये गये हैं। इस लिये याफो नगर भेजके शिमोन को जो पितर कहावता है बुला. वह समुद्र के तीर पर शिमोन चमार के घर में पाहुन है.
३३ वह आके तुझ से बात करेगा। तब मैं ने तुरन्त आप के पास भेजा और आप ने अच्छा किया जो आये हैं सो अब ईश्वर ने जो कुछ आप को आज्ञा दिई है सोई सुनने को हम सब यहां ईश्वर के साम्हने हैं॥

३४ तब पितर ने मुंह खोलके कहा मुझे सचमुच बूझ पड़ता है कि ईश्वर मुंह देखा विचार करनेहारा नहीं है।
३५ परन्तु हर एक देश के लोगों में जो उस से डरता है और धर्म्म के कार्य्य करता है सो उस से ग्रहण किया जाता
३६ है। उस ने यह वचन तुम्हों के पास भेजा है जो उस ने इस्रायेल के सन्तानों के पास भेजा अर्थात यीशु ख्रीष्ट के द्वारा से जो सभों का प्रभु है शांति का
३७ सुसमाचार सुनाया। तुम वह बात जानते हो जो उस बपतिसमा के पीछे जिस का योहन ने उपदेश किया गालील से आरंभ कर सारे यिहूदिया में फैल गई.
३८ अर्थात नासरत नगर के यीशु के विषय में क्योंकर ईश्वर ने उस को पवित्र आत्मा और सामर्थ्य से अभिषेक किया और वह भलाई करता और सभों को जो शैतान से पेरे जाते थे चंगा करता फिरा क्योंकि ईश्वर उस के संग था।
३९ और हम उन सब कामों के साक्षी हैं जो उस ने यिहूदियों के देश में और यिरूशलीम में भी किये जिसे लोगों ने काठ पर लटकाके मार डाला।
४० उस को ईश्वर ने तीसरे दिन जिला उठाया और उस को प्रगट होने दिया.
४१ सब लोगों के आगे नहीं परन्तु साक्षियों के आगे जिन्हें ईश्वर ने पहिले से ठहराया था अर्थात हमों के आगे जिन्हों ने उस के मृतकों में से जी उठने के पीछे उस के संग खाया और पीया।
४२ और उस ने हमों को आज्ञा दिई कि लोगों को उपदेश और साक्षी देओ कि वही है जिस को ईश्वर ने जीवतों और मृतकों का न्यायी ठहराया है।
४३ उस पर सारे भविष्यद्वक्ता साक्षी देते हैं कि जो कोई उस पर विश्वास करे सो उस के नाम के द्वारा पापमोचन पावेगा॥

४४ पितर यह बातें कहता ही था कि पवित्र आत्मा वचन के सब सुननेहारों पर पड़ा।
४५ और खतना किये हुए विश्वासी जितने पितर के संग आये थे विस्मित हुए कि अन्यदेशियों पर भी पवित्र आत्मा का दान उंडेला गया है।
४६ क्योंकि उन्हों ने उन्हें अनेक बोलियां बोलते और ईश्वर की महिमा करते सुना।
४७ इस पर पितर ने कहा क्या कोई जल को रोक सकता है कि इन लोगों को जिन्हों ने हमारी नाईं पवित्र आत्मा पाया है बपतिसमा न दिया जावे।
४८ और उस ने आज्ञा दिई कि उन्हें प्रभु के नाम से बपतिसमा दिया जाय. तब

उन्हों ने उस से कई एक दिन ठहर
जाने की बिन्ती किई ॥

एग्यारहवां पर्ब्ब ।

१ जो प्रेरित और भाई लोग यिहूदिया
में थे उन्हों ने सुना कि अन्यदेशियों ने
भी ईश्वर का बचन ग्रहण किया है ।
२ और जब पितर यिरूशलीम को गया
तब खतना किये हुए लोग उस से
३ विवाद करने लगे . और बोले तू ने
खतनाहीन लोगों के यहां जाके उन के
४ संग खाया । तब पितर ने आरंभ कर
५ एक ओर से उन्हें कह सुनाया . कि मैं
याफो नगर में प्रार्थना करता था और
बेसुध होके एक दर्शन अर्थात स्वर्ग पर
से चार कोनों से लटकाई हुई बड़ी
चद्दर की नाईं किसी पात्र को उतरते
देखा और वह मेरे पास लों आया ।
६ मैं ने उस की ओर ताकके देख लिया
और पृथिवी के चौपायों और बनपशुओं
और रेंगनेहारे जन्तुओं को और आकाश
७ के पंछियों को देखा . और एक शब्द सुना
जो मुझ से बोला हे पितर उठ मार और
८ खा । मैं ने कहा हे प्रभु ऐसा न होवे
क्योंकि कोई अपवित्र अथवा अशुद्ध वस्तु
९ मेरे मुंह में कभी नहीं गई । परन्तु शब्द ने
दूसरी बेर स्वर्ग में मुझे उत्तर दिया कि जो
कुछ ईश्वर ने शुद्ध किया है उस को तू
१० अशुद्ध मत कह । यह तीन बार हुआ
तब सब कुछ फिर स्वर्ग पर खींचा
११ गया । और देखो तुरन्त तीन मनुष्य जो
कैसरिया से मेरे पास भेजे गये थे जिस
१२ घर में मैं था उस घर पर आ पहुंचे । तब
आत्मा ने मुझ से उन के संग बेखटके
चले जाने को कहा और ये छः भाई भी
मेरे संग गये और हम ने उस मनुष्य के
१३ घर में प्रवेश किया । और उस ने हमें
बताया कि उस ने क्योंकर अपने घर
में एक दूत को खड़े हुए देखा था जो
उस से बोला कि मनुष्यों को याफो
नगर भेजके शिमोन को जो पितर
कहावता है बुला । वह तुझ से बातें १४
कहेगा जिन के द्वारा तू और तेरा सारा
घराना त्राण पावे । जब मैं बात करने १५
लगा तब पवित्र आत्मा जिस रीति
से आरंभ में हमों पर पड़ा उसी रीति से
उन्हों पर भी पड़ा । तब मैं ने प्रभु का १६
बचन स्मरण किया कि उस ने कहा
योहन ने जल से बपतिसमा दिया परन्तु
तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिसमा दिया
जायगा । सो जब कि ईश्वर ने प्रभु यीशु १७
खीष्ट पर विश्वास करनेहारों को जैसे
हमों को तैसे उन्हों को भी एक सा
दान दिया तो मैं कौन था कि मैं ईश्वर
को रोक सकता । वे यह सुनके चुप १८
हुए और यह कहके ईश्वर की स्तुति
करने लगे कि तब तो ईश्वर ने अन्य-
देशियों को भी पश्चात्ताप दान किया
है कि वे जीवें ॥

स्तिफान के कारण जो क्लेश हुआ १९
तिस के हेतु से जो लोग तितर बितर
हुए थे उन्हों ने फैनीकिया देश और
कुप्रस टापू और अन्तैखिया नगर लों
फिरते हुए किसी और को नहीं केवल
यिहूदियों को बचन सुनाया । परन्तु उन २०
में से कितने कुप्री और कुरीनीय मनुष्य
थे जो अन्तैखिया में आके यूनानियों से
बात करने और प्रभु यीशु का सुसमाचार
सुनाने लगे । और प्रभु का हाथ उन के २१
संग था और बहुत लोग विश्वास करके
प्रभु की ओर फिरे । तब उन के विषय २२
में यह बात यिरूशलीम में की मंडली
के कानों में पहुंची और उन्हों ने बर्णबा
को भेजा कि वह अन्तैखिया लों जाय ।
वह जब पहुंचा और ईश्वर के अनुग्रह २३
को देखा तब आनन्दित हुआ और सभों
को उपदेश दिया कि मन की अभिलाषा

२४ सहित प्रभु से मिले रहो । क्योंकि वह भला मनुष्य और पवित्र आत्मा और विश्वास से परिपूर्ण था . और बहुत २५ लोग प्रभु से मिल गये । तब बर्णबा शावल को ढूंढने के लिये तारस को २६ गया । और वह उस को पाके अन्तियखिया में लाया और वे दोनों जन बरस भर मंडली में एकट्ठे होते थे और बहुत लोगों को उपदेश देते थे और शिष्य लोग पहिले अन्तियखिया में ख्रीष्टियान कहलाये ॥

२७ उन दिनों में कई एक भविष्यद्वक्ता यिरूशलीम से अन्तियखिया में आये । २८ उन में से आगाब नाम एक जन ने उठके आत्मा की शिक्षा से बताया कि सारे संसार में बड़ा अकाल पड़ेगा और यह अकाल क्लौदिय कैसर के समय में २९ पड़ा । तब शिष्यों ने हर एक अपनी अपनी सम्पत्ति के अनुसार यिहूदिया में रहनेहारे भाइयों की सेवकाई के लिये ३० कुछ भेजने को ठहराया । और उन्हों ने यही किया अर्थात बर्णबा और शावल के हाथ प्राचीनों के पास कुछ भेजा ॥

बारहवां पर्व्व ।

१ उस समय हेरोद राजा ने मंडली के कई एक जनों को दुःख देने को उन २ पर हाथ बढ़ाये । उस ने योहन के भाई ३ याकूब को खड्ग से मार डाला । और जब उस ने देखा कि यिहूदी लोग इस से प्रसन्न होते हैं तब उस ने पितर को भी पकड़ा और अखमीरी रोटी के पर्व्व ४ के दिन थे । और उस ने उसे पकड़के बन्दीगृह में डाला और चार चार योद्धाओं के चार पहरों में सौंप दिया कि वे उस की रक्षा करें और उस को निस्तार पर्व्व के पीछे लोगों के आगे निकाल लाने की इच्छा करता था ॥

५ सो पितर बन्दीगृह में पहरे में रहता था परन्तु मंडली लौ लगाके उस के लिये ईश्वर से प्रार्थना करती थी । ६ और जब हेरोद उसे निकाल लाने पर था उसी रात पितर दो योद्धाओं के बीच में दो जंजीरों से बंधा हुआ सोता था और पहरुए द्वार के आगे बन्दीगृह की रक्षा करते थे । ७ और देखो परमेश्वर का एक दूत आ खड़ा हुआ और कोठरी में ज्योति चमकी और उस ने पितर के पंजर पर हाथ मारके उसे जगाके कहा शीघ्र उठ . तब उस की जंजीरें उस के ८ हाथों से गिर पड़ीं । दूत ने उस से कहा कमर बांध और अपने जूते पहिन ले और उस ने वैसा किया . तब उस ने कहा अपना वस्त्र ओढ़के मेरे पीछे हो ले । ९ और वह निकलके उस के पीछे चलने लगा और नहीं जानता था कि जो दूत से किया जाता है सो सत्य है परन्तु समझता था कि मैं दर्शन देखता हूं । १० परन्तु वे पहिले और दूसरे पहरे में से निकले और नगर में जाने के लोहे के फाटक पर पहुंचे जो आप से आप उन के लिये खुल गया और वे निकलके एक गली के अन्त लों बढ़े और तुरन्त दूत पितर के पास से चला गया । ११ तब पितर को चेत हुआ और उस ने कहा अब मैं निश्चय जानता हूं कि प्रभु ने अपना दूत भेजा है और मुझे हेरोद के हाथ से और सब बातों से जिन की आस यिहूदी लोग देखते थे छुड़ाया है ॥

१२ और यह जानके वह योहन जो मार्क कहावता है तिस की माता मरियम के घर पर आया जहां बहुत लोग एकट्ठे हुए प्रार्थना करते थे । १३ जब पितर डेवढ़ी के द्वार पर खटखटाया तब रोदा नाम एक दासी चुप चाप सुनने को आई । १४ और पितर का शब्द पहचानके उस ने आनन्द के

मारे द्वार न खोला परन्तु भीतर दौड़के बताया कि पितर द्वार पर खड़ा है ।
१५ उन्हों ने उस से कहा तू बौराही है परन्तु वह दृढ़ता से बोली कि ऐसा ही है . तब उन्हों ने कहा उस का दूत है ।
१६ परन्तु पितर खटखटाता रहा और वे द्वार खोलके उसे देखके बिस्मित हुए ।
१७ तब उस ने हाथ से उन्हें चुप रहने को सैन किया और उन से कहा कि प्रभु क्योंकर उस को बन्दीगृह में से बाहर लाया था और बोला यह बातें याकूब से और भाइयों से कह दीजियो तब निकलके दूसरे स्थान को गया ॥
१८ बिहान हुए योद्धाओं में बड़ी घबराहट होने लगी कि पितर क्या हुआ ।
१९ जब हेरोद ने उसे ढूंढ़ा और नहीं पाया तब पहरुओं को जांचके आज्ञा किई कि वे बध किये जायें . तब यिहूदिया से कैसरिया को गया और वहां रहा ॥
२० हेरोद को सोर और सीदोन के लोगों से लड़ने का मन था परन्तु वे एक चित्त होके उस पास आये और ब्लास्त को जो राजा के शयनस्थान का अध्यक्ष था मनाके मिलाप चाहा क्योंकि राजा के देश से उन के देश का
२१ पालन होता था । और ठहराये हुए दिन में हेरोद ने राजवस्त्र पहिनके सिंहासन पर बैठके उन्हों को कथा
२२ सुनाई । और लोग पुकार उठे कि ईश्वर का शब्द है मनुष्य का नहीं ।
२३ तब परमेश्वर के एक दूत ने तुरन्त उस को मारा क्योंकि उस ने ईश्वर की स्तुति न किई और कीड़े उस को खा गये और उस ने प्राण छोड़ दिया ।
२४ परन्तु ईश्वर का बचन अधिक अधिक फैलता गया ॥
२५ तब बर्णबा और शावल ने वह सेवकाई पूरी किई थी तब वे योहन को भी जो मार्क कहावता था संग लेके यिरूशलीम से लौटे ॥

तेरहवां पर्ब्ब ।

अन्तैखिया में की मंडली में कितने भविष्यद्वक्ता और उपदेशक थे अर्थात बर्णबा और शिमियोन जो निगर कहावता है और कुरीनीय लूकिय और चौथाई के राजा हेरोद का दूधभाई
२ मनहेम और शावल । जिस समय वे उपवास सहित प्रभु की सेवा करते थे पवित्र आत्मा ने कहा मैं ने बर्णबा और शावल को जिस काम के लिये बुलाया है उस काम के निमित्त उन्हें
३ मेरे लिये अलग करो । तब उन्हों ने उपवास और प्रार्थना करके और उन पर हाथ रखके उन्हें बिदा किया ॥
४ सो वे पवित्र आत्मा के भेजे हुए सिलूकिया नगर को गये और वहां से
५ जहाज पर कुप्रस टापू को चले । और सालामी नगर में पहुंचके उन्हों ने ईश्वर का बचन यिहूदियों की सभाओं में प्रचार किया और योहन भी सेवक
६ होके उन के संग था । और उन्हों ने उस टापू के बीच से पाफो नगर लों पहुंचके एक टोन्हे को पाया जो झूठा भविष्यद्वक्ता और यिहूदी था जिस का
७ नाम बरयीशु था । वह सर्ज्जिय पावल प्रधान के संग था जो बुद्धिमान पुरुष था . इस ने बर्णबा और शावल को अपने पास बुलाके ईश्वर का बचन
८ सुनने चाहा । परन्तु इलुमा टोन्हा कि उस के नाम का यही अर्थ है उन का साम्ना करके प्रधान को बिश्वास की
९ ओर से बहकाने चाहता था । तब शावल अर्थात पावल ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होके और उस की ओर
१० ताकके कहा . हे सारे कपट और सब

कुचाल से भरे हुए शैतान के पुत्र सकल धर्म्म के बैरी क्या तू प्रभु के सीधे मार्गों को टेढ़ा करना न छोड़ेगा। ११ अब देख प्रभु का हाथ तुझ पर है और तू कितने समय लों अंधा होगा और सूर्य्य को न देखेगा. तुरन्त धुंधलाई और अंधकार उस पर पड़ा और वह इधर उधर टटोलने लगा कि लोग उस का हाथ पकड़ें। १२ तब प्रधान ने जो हुआ था सो देखके प्रभु के उपदेश से अचंभित हो बिश्वास किया॥

१३ पावल और उस के संगी पाफो से जहाज खोलके पंफुलिया देश के पर्गा नगर में आये परन्तु योहन उन्हें छोड़के यिरूशलीम को लौट गया। १४ और पर्गा से आगे बढ़के वे पिसिदिया देश के अन्तीखिया नगर में पहुंचे और बिश्राम के दिन सभा के घर में प्रवेश करके बैठ गये। १५ और व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं के पुस्तक के पढ़े जाने के पीछे सभा के अध्यक्षों ने उन के पास कहला भेजा कि हे भाइयो यदि लोगों के लिये उपदेश की कोई बात आप लोगों के पास होय तो कहिये। १६ तब पावल ने खड़ा होके और हाथ से सैन करके कहा हे इस्रायेली लोगो और ईश्वर से डरनेहारो सुनो। १७ इन इस्रायेली लोगों के ईश्वर ने हमारे पितरों को चुन लिया और इन लोगों के मिसर देश में परदेशी होते हुए उन्हें ऊंच पद दिया और बलवन्त भुजा से उस देश में से निकाल लिया। १८ और उस ने चालीस एक बरस जंगल में उन का निर्बाह किया. १९ और कनान देश में सात राज्य के लोगों का नाश करके उन का देश चिट्ठियां डलवाके उन को बांट दिया। २० इस के पीछे उस ने साढ़े चार सौ बरस के अटकल शमुएल भविष्यद्वक्ता लों उन्हें न्याय करनेहारे दिये। २१ उस समय से उन्हों ने राजा चाहा और ईश्वर ने चालीस बरस लों बिन्यामीन के कुल के एक मनुष्य अर्थात कीश के पुत्र शावल को उन्हें दिया। २२ और उस को अलग करके उस ने उन्हों के लिये दाऊद को राजा होने को उठाया जिस के विषय में उस ने साक्षी देके कहा मैं ने यिशी का पुत्र दाऊद अपने मन के अनुसार एक मनुष्य पाया है जो मेरी सारी इच्छा को पूरी करेगा। २३ इसी के बंश में से ईश्वर ने प्रतिज्ञा के अनुसार इस्रायेल के लिये एक त्राणकर्त्ता अर्थात यीशु को उठाया। २४ पर उस के आने के आगे योहन ने सब इस्रायेली लोगों को पश्चात्ताप के बपतिसमा का उपदेश दिया। २५ और योहन जब अपनी दौड़ पूरी करता था तब बोला तुम क्या समझते हो मैं कौन हूं. मैं वह नहीं हूं परन्तु देखो मेरे पीछे एक आता है जिस के पांवों की जूती मैं खोलने के योग्य नहीं हूं॥

२६ हे भाइयो तुम जो इब्राहीम के बंश के सन्तान हो और तुम्हों में जो ईश्वर से डरनेहारे हो तुम्हारे पास इस त्राण की कथा भेजी गई है। २७ क्योंकि यिरूशलीम के निवासियों ने और उन के प्रधानों ने यीशु को न पहचानके उस का बिचार करने से भविष्यद्वक्ताओं की बातें भी जो हर एक बिश्रामवार पढ़ी जाती हैं पूरी किईं। २८ और उन्हों ने बध के योग्य कोई दोष उस में न पाया तौभी पिलात से बिन्ती किई कि वह घात किया जाय। २९ और जब उन्हों ने उस के विषय में लिखी हुई सब बातें पूरी किईं थीं तब उसे काठ पर से उतारके कबर में रखा। ३० परन्तु ईश्वर ने उसे मृतकों में से उठाया। ३१ और उस

ने बहुत दिन उन्हों को जो उस के संग गालील से यिरूशलीम में आये थे दर्शन दिया और वे लोगों के पास उस के ३२ साक्षी हैं। हम उस प्रतिज्ञा का जो पितरों से किई गई तुम्हें सुसमाचार ३३ सुनाते हैं, कि ईश्वर ने यीशु को उठाने में यह प्रतिज्ञा उन के सन्तानों के अर्थात हमों के लिये पूरी किई है जैसा दूसरे गीत में भी लिखा है कि तू मेरा पुत्र है मैं ने आज ही तुझे जन्म ३४ दिया है। और उस ने जो उस को मृतकों में से उठाया और वह कभी सड़ न जायगा इस लिये यूं कहा है कि मैं ने दाऊद पर जो अचल कृपा किई सो ३५ तुम पर करूंगा। इस लिये उस ने दूसरे एक गीत में भी कहा है कि तू अपने ३६ पवित्र जन को सड़ने न देगा। दाऊद तो ईश्वर की इच्छा से अपने समय के लोगों की सेवा करके सो गया और अपने पितरों में मिला और सड़ गया। ३७ परन्तु जिस को ईश्वर ने जिला उठाया ३८ वह नहीं सड़ गया। इस लिये हे भाइयो जानो कि इसी के द्वारा पाप-मोचन की कथा तुम को सुनाई जाती ३९ है। और इसी के हेतु से हर एक विश्वासी उन सब बातों से निर्दोष ठहराया जाता है जिन से तुम मूसा की व्यवस्था के हेतु ४० से निर्दोष नहीं ठहर सकते थे। इस लिये चौकस रहो कि जो भविष्यद्वक्ताओं के पुस्तक में कहा गया है सो तुम पर ४१ न पड़े, कि हे निन्दको देखो और अचंभित हो और लोप हो जाओ क्योंकि मैं तुम्हारे दिनों में एक काम करता हूं ऐसा काम कि यदि कोई तुम से उस का वर्णन करे तो तुम कभी प्रतीति न करोगे॥

४२ जब यिहूदी लोग सभा के घर में से निकलते थे तब अन्यदेशियों ने बिन्ती किई कि यह बातें अगले विश्रामवार हम से कही जायें। ४३ और जब सभा उठ गई तब यिहूदियों में से और भक्तिमान यिहूदीय मतावलंबियों में से बहुत लोग पावल और बर्णबा के पीछे हो लिये और उन्हों ने उन से बातें करके उन्हें समझाया कि ईश्वर के अनुग्रह में बने रहो॥

४४ अगले विश्रामवार नगर के प्राय सब लोग ईश्वर का बचन सुनने को एकट्ठे आये, ४५ परन्तु यिहूदी लोग भीड़ को देखके डाह से भर गये और विवाद औ निन्दा करते हुए पावल की बातों के विरुद्ध बोलने लगे। ४६ तब पावल और बर्णबा ने साहस करके कहा अवश्य था कि ईश्वर का बचन पहिले तुम्हीं से कहा जाय परन्तु जब कि तुम उसे दूर करते हो और अपने तईं अनन्त जीवन के अयोग्य ठहराते हो देखो हम अन्यदेशियों की ओर फिरते हैं। ४७ क्योंकि परमेश्वर ने हमें यूं ही आज्ञा दिई है कि मैं ने तुझे अन्यदेशियों की ज्योति ठहराई है कि तू पृथिवी के अन्त लों त्राणकर्त्ता होवे। ४८ तब अन्यदेशी लोग जो सुनते थे आनन्दित हुए और प्रभु के बचन की बड़ाई करने लगे और जितने लोग अनन्त जीवन के लिये ठहराये गये थे उन्हों ने विश्वास किया। ४९ तब प्रभु का बचन उस सारे देश में फैलने लगा। ५० परन्तु यिहूदियों ने भक्तिमती और कुलवन्ती स्त्रियों को और नगर के बड़े लोगों को उसकाया और पावल और बर्णबा पर उपद्रव करवाके उन्हें अपने सिवानों में से निकाल दिया। ५१ तब वे उन के विरुद्ध अपने पांवों की धूल झाड़के इकोनिया नगर में आये। ५२ और शिष्य लोग आनन्द से और पवित्र आत्मा से पूर्ण हुए॥

चौदहवां पर्ब्ब।

१ इकोनिया में उन्हों ने यिहूदियों के सभा के घर में एक संग प्रवेश किया और ऐसी बातें किईं कि यिहूदियों और यूनानियों में से भी बहुत लोगों ने २ बिश्वास किया। परन्तु न माननेहारे यिहूदियों ने अन्यदेशियों के मन भाइयों के बिरुद्ध उसकाये और बुरे कर दिये। ३ सो उन्हों ने प्रभु के भरोसे जो अपने अनुग्रह के बचन पर साक्षी देता था और उन के हाथों से चिन्ह और अद्भुत काम करवाता था साहस से बात करते ४ हुए बहुत दिन बिताये। और नगर के लोग विभिन्न हुए और कितने तो यिहूदियों के साथ और कितने प्रेरितों के ५ साथ थे। परन्तु जब अन्यदेशियों और यिहूदियों ने भी अपने प्रधानों के संग उन की दुर्दशा करने और उन्हें पत्थर-६ वाह करने को हुल्लड़ किया, तब वे जान गये और लुकाओनिया देश के लुस्त्रा और दर्बी नगरों में और आसपास के ७ देश में भाग गये, और वहीं सुसमाचार प्रचार करने लगे॥

८ लुस्त्रा में एक मनुष्य पांवों का निर्बल बैठा था जो अपनी माता के गर्भ ही से लंगड़ा था और कभी नहीं ९ चला था। वह पावल को बात करते सुनता था और उस ने उस की ओर ताकके देखा कि उस को चंगा किये १० जाने का बिश्वास है, और बड़े शब्द से कहा अपने पांवों पर सीधा खड़ा हो, तब वह कूदने और फिरने लगा॥

११ पावल ने जो किया था उसे देखके लोगों ने लुकाओनीय भाषा में ऊंचे शब्द से कहा देवगण मनुष्यों के समान १२ होके हमारे पास उतर आये हैं। और उन्हों ने बर्नबा को जूपितर और पावल को हर्मि कहा क्योंकि वह बात करने में मुख्य था। और जूपितर जो उन के १३ नगर के साम्हने था उस का याजक बैलों को और फूलों के हारों को फाटकों पर लाके लोगों के संग बलिदान किया चाहता था। परन्तु प्रेरितों ने अर्थात १४ बर्नबा और पावल ने यह सुनके अपने कपड़े फाड़े और लोगों की ओर लपक गये और पुकारके बोले, हे मनुष्यो १५ यह क्यों करते हो, हम भी तुम्हारे समान दुःख सुख भोगी मनुष्य हैं और तुम्हें सुसमाचार सुनाते हैं कि तुम इन व्यर्थ बिषयों से जीवते ईश्वर की ओर फिरो जिस ने स्वर्ग औ पृथिवी औ समुद्र और सब कुछ जो उन में है बनाया। उस ने बीती हुई पीढ़ियों में सब देशों १६ के लोगों को अपने अपने मार्गों में चलने दिया। तौभी उस ने अपने को १७ बिना साक्षी नहीं रख छोड़ा है कि वह भलाई किया करता और आकाश से बर्षा और फलवन्त ऋतु देके हमों के मन को भोजन और आनन्द से तृप्त किया करता है। यह कहने से उन्हों १८ ने लोगों को कठिनता से रोका कि वे उन के आगे बलिदान न करें॥

परन्तु कितने यिहूदियों ने अन्तैखिया १९ और इकोनिया से आके लोगों को मनाया और पावल को पत्थरवाह किया और यह समझके कि वह मर गया है उसे नगर के बाहर घसीट ले गये। परन्तु २० जब शिष्य लोग उस पास घिर आये तब उस ने उठके नगर में प्रवेश किया और दूसरे दिन बर्नबा के संग दर्बी को गया॥

जब उन्हों ने उस नगर के लोगों २१ को सुसमाचार सुनाया और बहुतों को शिष्य किया था तब वे लुस्त्रा और इकोनिया और अन्तैखिया को लौटे, और यह उपदेश करते हुए कि बिश्वास २२

में बने रहो और कि हमें बड़े क्लेश से ईश्वर के राज्य में प्रवेश करना होगा शिष्यों के मन को स्थिर करते गये । २३ और हर एक मंडली में प्राचीनों को चुन पर ठहराके उन्हों ने उपवास सहित प्रार्थना करके उन्हें प्रभु के हाथ सौंपा जिस पर उन्हों ने बिश्वास किया २४ था । और पिसिदिया से होके वे पंफु- २५ लिया में आये . और पर्गा में बचन २६ सुनाके आत्तालिया नगर को गये । और वहां से वे जहाज पर अन्तैखिया को चले जहां से वे उस काम के लिये जो उन्हों ने पूरा किया था ईश्वर के अनु- २७ ग्रह पर सौंपे गये थे । वहां पहुंचके और मंडली को एकट्ठी करके उन्हों ने बताया कि ईश्वर ने उन्हों के साथ कैसे बड़े काम किये थे और कि उस ने अन्यदेशियों के लिये बिश्वास का द्वार २८ खोला था । और उन्हों ने वहां शिष्यों के संग बहुत दिन बिताये ॥

पन्द्रहवां पर्ब्ब ।

१ कितने लोग यिहूदिया से आके भाइयों को उपदेश देने लगे कि जो मूसा की रीति के अनुसार तुम्हारा खतना न किया जाय तो तुम त्राण २ नहीं पा सकते हो । जब पावल और बर्णबा से और उन्हों से बहुत विवाद और विचार हुआ था तब भाइयों ने यह ठहराया कि पावल और बर्णबा और हम में से कितने और जन इस प्रश्न के विषय में यिरूशलीम को प्रेरितों ३ और प्राचीनों के पास जायें । सो मंडली से कुछ दूर पहुंचाये जाके वे फैनीकिया और शोमिरोन से होते हुए अन्यदेशियों के मन फेरने का समाचार कहते गये और सब भाइयों को बहुत ४ आनन्दित किया । जब वे यिरूशलीम में पहुंचे तब मंडली से और प्रेरितों और प्राचीनों ने उन्हें ग्रहण किया और उन्हों ने बताया कि ईश्वर ने उन्हों के साथ कैसे बड़े काम किये थे । ५ परन्तु फरीशियों के पंथ के लोगों में से कितने जिन्हों ने बिश्वास किया था उठके बोले उन्हें खतना करना और मूसा की व्यवस्था को पालन करने की आज्ञा देना उचित है ॥

६ तब प्रेरित और प्राचीन लोग इस बात का विचार करने को एकट्ठे हुए । ७ जब बहुत विवाद हुआ तब पितर ने उठके उन से कहा हे भाइयो तुम जानते हो कि बहुत दिन हुए ईश्वर ने हम में से चुन लिया कि मेरे मुंह से अन्यदेशी लोग सुसमाचार का बचन सुनके बिश्वास करें । ८ और अन्तर्यामी ईश्वर ने जैसा हम को वैसा उन को भी पवित्र आत्मा देके उन के लिये ९ साक्षी दिई . और बिश्वास से उन्हों के मन को शुद्ध करके हमों के और उन्हों के बीच में कुछ भेद न रखा । १० सो अब तुम क्यों ईश्वर की परीक्षा करते हो कि शिष्यों के गले पर जूआ रखो जिसे न हमारे पितर लोग न हम लोग उठा सके । ११ परन्तु जिस रीति से वे उसी रीति से हम भी प्रभु यीशु ख्रीष्ट के अनुग्रह से त्राण पाने को बिश्वास करते हैं ॥

१२ तब सारी सभा चुप हुई और बर्णबा और पावल की जो यह बताते थे कि ईश्वर ने उन के द्वारा कैसे बड़े चिन्ह और अद्भुत काम अन्यदेशियों के बीच में किये थे सुनती रही । १३ जब वे चुप हुए तब याकूब ने उत्तर दिया कि हे भाइयो मेरी सुन लीजिये । १४ शिमोन ने बताया है कि ईश्वर ने क्योंकर अन्यदेशियों पर पहिले दृष्टि किई कि उन में से अपने नाम के लिये एक लोग को ले लेवे । १५ और

इस से भविष्यद्वक्ताओं की बातें मिलती
१६ हैं जैसा लिखा है . कि परमेश्वर जो
यह सब करता है सो कहता है इस के
पीछे मैं फिरके दाऊद का गिरा हुआ
डेरा उठाऊंगा और उस के खंडहर बना-
१७ ऊंगा और उसे खड़ा करूंगा . इस लिये
कि वे मनुष्य जो रह गये हैं और सब
अन्यदेशी लोग जो मेरे नाम से पुकारे
१८ जाते हैं परमेश्वर को ढूंढें । ईश्वर
अपने सब कामों को आदि से जानता
१९ है । इस लिये मेरा विचार यह है कि
अन्यदेशियों में से जो लोग ईश्वर की
ओर फिरते हैं हम उन को दुःख न
२० देवें . परन्तु उन के पास लिखें कि वे
मूरतों की अशुद्ध वस्तुओं से और व्यभि-
चार से और गला घोंटे हुओं के मांस
२१ से और लोहू से परे रहें । क्योंकि पूर्व्व
के समय से मूसा के पुस्तक के नगर
नगर में प्रचार करनेहारे हैं और हर एक
विश्रामवार वह सभा के घरों में पढ़ा
जाता है ॥

२२ तब सारी मंडली सहित प्रेरितों
और प्राचीनों को अच्छा लगा कि अपने
में से मनुष्यों को चुनें अर्थात यिहूदा
को जो बर्सबा कहावता है और सीला
को जो भाइयों में बड़े मनुष्य थे और
उन्हें पावल और बर्णबा के संग अन्तै-
२३ खिया को भेजें . और उन के हाथ यहां
लिख भेजा कि प्रेरित औ प्राचीन औ
भाई लोग अन्तैखिया और सुरिया और
किलिकिया में के उन भाइयों को जो
२४ अन्यदेशियों में से हैं नमस्कार । हम ने
सुना है कि कितने लोगों ने हम में से
निकलके तुम्हें बातों से व्याकुल किया
है कि वे खतना करवाने को और
व्यवस्था को पालन करने को कहते हुए
तुम्हारे मन को चंचल करते हैं पर हम
२५ ने उन को आज्ञा न दिई । इस लिये
हम ने एक चित्त होके अच्छा जाना
है . कि मनुष्यों को चुनके अपने प्यारे २६
बर्णबा और पावल के संग जो ऐसे
मनुष्य हैं कि अपने प्राणों को हमारे
प्रभु यीशु खीष्ट के नाम के लिये सौंप
दिया है तुम्हारे पास भेजें । सो हम ने २७
यिहूदा और सीला को भेजा है जो आप
भी यही बातें मुखवचन से कह देवें ।
पवित्र आत्मा को और हम को अच्छा २८
लगा है कि तुम्हों पर इन आवश्यक
बातों से अधिक कोई भार न रखें .
अर्थात कि मूरतों के आगे बलि किये २९
हुओं से और लोहू से और गला घोंटे
हुओं के मांस से और व्यभिचार से परे
रहो . इन्हों से अपने को बचा रखने
से तुम भला करोगे . आगे शुभ ॥

सो वे बिदा होके अन्तैखिया में ३०
पहुंचे और लोगों को एकट्ठे करके वह
पत्र दिया । वे पढ़के उस शांति की ३१
बात से आनन्दित हुए । और यिहूदा ३२
और सीला ने जो आप भी भविष्यद्वक्ता
थे बहुत बातों से भाइयों को समझाके
स्थिर किया । और कुछ दिन रहके वे ३३
प्रेरितों के पास जाने को कुशल से
भाइयों से बिदा हुए । परन्तु सीला ने ३४
वहां रहना अच्छा जाना । और पावल ३५
और बर्णबा बहुत औरों के संग प्रभु के
वचन का उपदेश करते और सुसमाचार
सुनाते हुए अन्तैखिया में रहे ॥

कितने दिनों के पीछे पावल ने ३६
बर्णबा से कहा जिन नगरों में हम ने
प्रभु का वचन प्रचार किया आओ हम
हर एक नगर में फिरके अपने भाइयों
को देख लेवें कि वे कैसे हैं । तब ३७
बर्णबा ने योहन को जो मार्क कहावता
है संग लेने का विचार किया । परन्तु ३८
पावल ने उस को जो पंफुलिया से उन
के पास से चला गया और काम पर

उन के साथ न गया संग ले आना अच्छा
३९ नहीं समझा । सो ऐसा टंटा हुआ कि
वे एक दूसरे को छोड़ गये और बर्नबा
मार्क को लेके जहाज पर कुप्रस को
४० गया । परन्तु पावल ने सीला को चुन
लिया और भाइयों से ईश्वर के अनुग्रह
४१ पर सोंपा जाके निकला . और मंडलियों
को स्थिर करता हुआ सारे सुरिया और
किलिकिया में फिरा ॥

सोलहवां पर्ब्ब ।

१ तब पावल दर्बी और लुस्त्रा में
पहुंचा और देखो वहां तिमोथिय नाम
एक शिष्य था जो किसी बिश्वासी
यिहूदिनी का पुत्र था परन्तु उस का
२ पिता यूनानी था । और लुस्त्रा और
इकोनिया में के भाई लोग उस की
३ सुख्याति करते थे । पावल ने चाहा
कि यह मेरे संग जाय और जो यिहूदी
लोग उन स्थानों में थे उन के कारण
उसे लेके उस का खतना किया क्योंकि
वे सब उस के पिता को जानते थे कि
४ वह यूनानी था । परन्तु नगर नगर
जाते हुए उन्हों ने उन बिधियों को
जो यिरूशलीम में के प्रेरितों और प्राचीनों
से ठहराई गई थीं भाइयों को सोंप
५ दिया कि उन को पालन करें । सो
मंडलियां बिश्वास में स्थिर होती थीं
६ और प्रतिदिन गिन्ती में बढ़ती थीं । और
जब वे फ्रूगिया और गलातिया देशों में
फिर चुके और पवित्र आत्मा ने उन्हें
आशिया देश में बात सुनाने को बर्जा .
७ तब उन्हों ने मुसिया देश पर आके
बिथुनिया देश को जाने की चेष्टा किई
परन्तु आत्मा ने उन्हें जाने न दिया ।
८ और मुसिया से होके वे त्रोआ नगर में
आये ॥

९ रात को एक दर्शन पावल को
दिखाई दिया कि कोई माकिदोनी
पुरुष खड़ा हुआ उस से बिन्ती करके
कहता था कि उस पार माकिदोनिया
देश जाके हमारा उपकार कीजिये । जब १०
उस ने यह दर्शन देखा तब हम ने निश्चय
जाना कि प्रभु ने हमें उन लोगों के तईं
सुसमाचार सुनाने को बुलाया है इस लिये
हम ने तुरन्त माकिदोनिया को जाने
चाहा । सो त्रोआ से खोलके हम सा- ११
मोथ्राकी टापू को सीधे आये और दूसरे
दिन नियापलि नगर में पहुंचे । वहां १२
से हम फिलिपी नगर में आये जो माकि-
दोनिया के उस अंश का पहिला नगर
है और रोमियों की बस्ती है और हम
उस नगर में कुछ दिन रहे ॥

बिश्राम के दिन हम नगर के बाहर १३
नदी के तीर पर गये जहां प्रार्थना किई
जाती थी और बैठके स्त्रियों से जो
एकट्ठी हुई थीं बात करने लगे । और १४
लुदिया नाम थुआतीरा नगर की एक
स्त्री बैंजनी वस्त्र बेचनेहारी जो ईश्वर
की उपासना किया करती थी सुनती
थी और प्रभु ने उस का मन खोला कि
वह पावल की बातों पर चित्त लगावे ।
और जब उस ने और उस के घराने ने १५
बपतिसमा लिया था तब उस ने बिन्ती
किई कि यदि आप लोगों ने मुझे प्रभु
की बिश्वासिनी जान लिई है तो मेरे
घर में आके रहिये और वह हमें मनाके
ले गई ॥

जब हम प्रार्थना को जाते थे तब १६
एक दासी जिसे आगमबक्ता भूत लगा
था हम को मिली जो आगम के कहने
से अपने स्वामियों के लिये बहुत कमा
लाती थी । वह पावल के और हमारे १७
पीछे आके पुकारने लगी कि ये मनुष्य
सर्व्वप्रधान ईश्वर के दास हैं जो हमें
त्राण के मार्ग की कथा सुनाते हैं । उस १८
ने बहुत दिन यह किया परन्तु पावल

अप्रसन्न हुआ और मुंह फेरके उस भूत से कहा मैं तुझे यीशु खीष्ट के नाम से आज्ञा देता हूं कि उस में से निकल आ और वह उसी घड़ी निकल आया ॥

१९ जब उस के स्वामियों ने देखा कि हमारी कमाई की आशा गई है तब उन्हों ने पावल और सीला को पकड़के चौक में प्रधानों के पास खींच लिया . २० और उन्हें अध्यक्षों के पास लाके कहा ये मनुष्य जो यिहूदी हैं हमारे नगर २१ के लोगों को व्याकुल करते हैं . और व्यवहारों का प्रचार करते हैं जिन्हें ग्रहण करना अथवा मानना हमों को २२ जो रोमी हैं उचित नहीं है । तब लोग उन के विरुद्ध एकट्ठे चढ़ आये और अध्यक्षों ने उन के कपड़े फाड़ डाले और उन्हें २३ बेंत मारने की आज्ञा दिई . और उन्हें बहुत घायल करके बन्दीगृह में डाला और बन्दीगृह के रक्षक को उन्हें यत्न २४ से रखने की आज्ञा दिई । उस ने ऐसी आज्ञा पाके उन्हें भीतर की कोठरी में डाला और उन के पांव काठ में ठोंके ॥

२५ आधी रात को पावल और सीला प्रार्थना करते हुए ईश्वर का भजन गाते थे और बंधुए उन की सुनते थे । २६ तब अचांचक ऐसा बड़ा भुईंडोल हुआ कि बन्दीगृह की नेव हिलीं और तुरन्त सब द्वार खुल गये और सभों के बंधन २७ खुल पड़े । तब बन्दीगृह का रक्षक जागा और बन्दीगृह के द्वार खुले देखके खड्ग खींचा और अपने तई मार डालने पर था कि वह समझता था कि बंधुए २८ लोग भाग गये हैं । परन्तु पावल ने बड़े शब्द से पुकारके कहा अपने को कुछ दुःख न देना क्योंकि हम सब यहीं २९ हैं । तब वह दीपक मंगाके भीतर लपक गया और कांपित होके पावल ३० और सीला को दंडवत किई . और उन को बाहर लाके कहा हे प्रभुओ त्राण पाने को मुझे क्या करना होगा । उन्हों ३१ ने कहा प्रभु यीशु खीष्ट पर विश्वास कर तो तू और तेरा घराना त्राण पावेगा । और उन्हों ने उस को और ३२ सभों को जो उस के घर में थे प्रभु का बचन सुनाया । और रात को उसी घड़ी ३३ उस ने उन को लेके उन के घावों को धोया और उस ने और उस के सब लोगों ने तुरन्त बपतिसमा लिया । तब ३४ उस ने उन्हें अपने घर में लाके उन के आगे भोजन रखा और सारे घराने समेत ईश्वर पर विश्वास किये से आनन्दित हुआ ॥

३५ बिहान हुए अध्यक्षों ने प्यादों के हाथ कहला भेजा कि उन मनुष्यों को छोड़ देओ । तब बन्दीगृह के रक्षक ने ३६ यह बातें पावल से कह सुनाईं कि अध्यक्षों ने कहला भेजा है कि आप लोग छोड़ दिये जायें सो अब निकलके कुशल से जाइये । परन्तु पावल ने उन ३७ से कहा उन्हों ने हमें जो रोमी मनुष्य हैं दंड के योग्य ठहराये बिना लोगों के आगे मारा और बन्दीगृह में डाला और अब क्या चुपके से हमें निकाल देते हैं . सो नहीं परन्तु आप ही आके हमें बाहर ले जायें । प्यादों ने यह बातें ३८ अध्यक्षों से कह दिईं और वे यह सुनके कि रोमी हैं डर गये . और आके उन्हें ३९ मनाया और बाहर लाके बिन्ती किई कि नगर से निकल जाइये । वे बन्दीगृह ४० में से निकलके लुदिया के यहां गये और भाइयों को देखके उन्हें उपदेश देके चले गये ॥

सत्रहवां पर्ब्बे ।

१ अंफिपलि और अपल्लोनिया नगरों से होके वे थिसलोनिका नगर में आये जहां यिहूदियों की सभा का घर

२ था। और पावल अपनी रीति पर उन के यहां गया और तीन बिश्रामवार उन ३ से धर्म्मपुस्तक में से बातें किईं. और यही खोल देता और समझाता रहा कि खीष्ट को दुःख भोगना और मृतकों में से जी उठना आवश्यक था और कि यह यीशु जिस की कथा मैं तुम्हें सुनाता ४ हूं वही खीष्ट है। तब उन में से कितने जनों ने और भक्त यूनानियों में से बहुत लोगों ने और बहुत सी बड़ी बड़ी स्त्रियों ने मान लिया और पावल और ५ सीला से मिल गये। परन्तु न माननेहारे यिहूदियों ने डाह करके बाजारू लोगों में से कितने दुष्ट मनुष्यों को लिया और भीड़ लगाके नगर में धूम मचाई और यासोन के घर पर चढ़ाई करके पावल और सीला को लोगों के ६ पास लाने चाहा। और उन्हें न पाके वे यह पुकारते हुए यासोन को और कितने भाइयों को नगर के प्रधानों के आगे खींच लाये कि ये लोग जिन्हों ने जगत को उलटा पुलटा किया है ७ यहां भी आये हैं। और यासोन ने उन को पहुनई किई है और ये सब यह कहते हुए कि यीशु नाम दूसरा राजा है कैसर की आज्ञाओं के बिरुद्ध करते ८ हैं। सो उन्हों ने लोगों को और नगर के प्रधानों को जो यह बातें सुनते थे ९ व्याकुल किया। और उन्हों ने यासोन से और दूसरों से मुचलका लेके उन्हें छोड़ दिया॥

१० तब भाइयों ने तुरन्त रात को पावल और सीला को बिरैया नगर को भेजा और वे पहुंचके यिहूदियों की सभा ११ के घर में गये। ये तो थिसलोनिका में के यिहूदियों से सुशील थे और उन्हों ने सब भांति से तत्पर होके बचन को ग्रहण किया और प्रतिदिन धर्म्मपुस्तक में ढूंढ़ते रहे कि यह बातें यूंहीं हैं कि नहीं। सो उन में से बहुतों ने और १२ यूनानीय कुलवन्ती स्त्रियों में से और पुरुषों में से बहुतेरों ने बिश्वास किया। परन्तु जब थिसलोनिका के यिहूदियों १३ ने जाना कि पावल बिरैया में भी ईश्वर का बचन प्रचार करता है तब वे वहां भी आके लोगों को उसकाने लगे। तब भाइयों ने तुरन्त पावल को बिदा १४ किया कि वह समुद्र की ओर जावे परन्तु सीला और तिमोथिय वहां रह गये। पावल के पहुंचानेहारे उसे १५ आथीनी नगर तक लाये और सीला और तिमोथिय के लिये उस पास बहुत शीघ्र आने की आज्ञा लेके बिदा हुए॥

जब पावल आथीनी में उन की १६ बाट जोहता था तब नगर को मूरतों से भरे हुए देखने से उस का मन भीतर में उभड़ आया। सो वह सभा के घर १७ में यिहूदियों और भक्त लोगों से और प्रतिदिन चौक में जो लोग मिलते थे उन्हों से बातें करने लगा। तब इपि- १८ कूरीय और स्तोइकीय ज्ञानियों में से कितने उस से बिबाद करने लगे और कितने बोले यह बकवादी क्या कहने चाहता है पर औरों ने कहा वह ऊपरी देवताओं का प्रचारक सा देख पड़ता है. क्योंकि वह उन्हें यीशु का और जी उठने का सुसमाचार सुनाता था। तब १९ उन्हों ने उसे लेके अरेयोपाग नाम स्थान पर लाके कहा क्या हम जान सकते कि यह नया उपदेश जो तुझ से सुनाया जाता है क्या है। क्योंकि तू अनूठी २० बातें हमें सुनाता है सो हम जानने चाहते हैं कि इन का अर्थ क्या है। सब आथीनीय लोग और परदेशी जो २१ यहां रहते थे किसी और काम में नहीं

केवल नई नई बात के कहने अथवा सुनने में समय काटते थे ॥

२२ तब पावल ने अरियोपाग के बीच में खड़ा होके कहा हे आथीनीय लोगो मैं आप लोगों को सर्व्वथा बड़े देवपूजक २३ देखता हूं । क्योंकि जब मैं फिरते हुए आप लोगों की पूज्य वस्तुओं को देखता था तब एक ऐसी बेदी भी पाई जिस पर लिखा हुआ था कि अनजाने ईश्वर को . सो जिसे आप लोग बिन जाने पूजते हैं उसी की कथा मैं आप २४ लोगों को सुनाता हूं । ईश्वर जिस ने जगत और सब कुछ जो उस में है बनाया सो स्वर्ग और पृथिवी का प्रभु होके हाथ के बनाये हुए मन्दिरों में २५ वास नहीं करता है . और न किसी वस्तु का प्रयोजन रखने से मनुष्यों के हाथों की सेवा लेता है क्योंकि वह आप ही सभों को जीवन और श्वास २६ और सब कुछ देता है । उस ने एक ही लोहू से मनुष्यों के सब जातिगण सारी पृथिवी पर बसने को बनाये हैं और ठहराये हुए समयों को और उन के निवास के सिवानों को इस लिये बांधा २७ है . कि वे परमेश्वर को ढूंढ़ें क्या जाने उसे टटोलके पावें और तौभी वह हम २८ में से किसी से दूर नहीं है . क्योंकि हम उसी से जीते और फिरते और होते हैं जैसे आप लोगों के यहां के कितने कवियों ने भी कहा है कि हम तो उस २९ के वंश हैं । सो जो हम ईश्वर के वंश हैं तो यह समझना कि ईश्वरत्व सोने अथवा रूपे अथवा पत्थर के अर्थात मनुष्य की कारीगरी और कल्पना की गढ़ी हुई वस्तु के समान है हमें उचित ३० नहीं है । इस लिये ईश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके अभी सर्व्वत्र सब मनुष्यों को पश्चात्ताप करने की आज्ञा देता है । क्योंकि उस ३१ ने एक दिन ठहराया है जिस में वह उस मनुष्य के द्वारा जिसे उस ने नियुक्त किया है धर्म्म से जगत का न्याय करेगा और उस ने उस मनुष्य को मृतकों में से उठाके सभों को निश्चय कराया है ॥

मृतकों के जी उठने की बात सुनके ३२ कितने ठट्ठा करने लगे और कितने बोले हम इस के विषय में तुझ से फिर सुनेंगे । इस पर पावल उन के बीच में ३३ से चला गया । परन्तु कई एक मनुष्य ३४ उस से मिल गये और विश्वास किया जिन में दियोनुसिय अरियोपागी था और दामरी नाम एक स्त्री और उन के संग कितने और लोग ॥

अठारहवां पर्व्व ।

१ इस के पीछे पावल आथीनी से निकलके करिन्थ नगर में आया । और २ अकुला नाम पन्त देश का एक यिहूदी था जो उन दिनों में इतलिया देश से आया था इस लिये कि क्लौदिय ने सब यिहूदियों को रोम नगर से निकल जाने की आज्ञा दिई थी . पावल उस को और उस की स्त्री प्रिस्किल्ला को पाके उन के यहां गया । और उस का और ३ उन का एक ही उद्यम था इस लिये वह उन के यहां रहके कमाता था क्योंकि तम्बू बनाना उन का उद्यम था । परन्तु हर एक विश्रामवार वह सभा के ४ घर में बातें करके यिहूदियों और यूनानियों को भी समझाता था । जब सीला ५ और तिमोथिय माकिदोनिया से आये तब पावल आत्मा के वश में होके यिहूदियों को साक्षी देता था कि यीशु तो खीष्ट है । परन्तु जब वे विरोध और ६ निन्दा करने लगे तब उस ने कपड़े झाड़के उन से कहा तुम्हारा लोहू तुम्हारे

ही सिर पर होय . मैं निर्दोष हूं . अब से मैं अन्यदेशियों के पास जाऊंगा । ७ और वहां से जाके वह युस्त नाम ईश्वर के एक उपासक के घर में आया जिस का घर सभा के घर से लगा हुआ था । ८ तब सभा के अध्यक्ष क्रीस्प ने अपने सारे घराने समेत प्रभु पर बिश्वास किया और करिन्थियों में से बहुत लोग सुनके बिश्वास करते और बपतिसमा लेते थे । ९ और प्रभु ने रात को दर्शन के द्वारा पावल से कहा मत डर परन्तु बात कर १० और चुप मत रह । क्योंकि मैं तेरे संग हूं और कोई तुझ पर चढ़ाई न करेगा कि तुझे दुःख देवे क्योंकि इस नगर में ११ मेरे बहुत लोग हैं । सो वह उन्हों में ईश्वर का बचन सिखाते हुए डेढ़ बरस रहा ॥

१२ जब गालियो आखाया देश का प्रधान था तब यिहूदी लोग एक चित्त होकर पावल पर चढ़ाई करके उसे १३ बिचार आसन के आगे लाये . और बोले यह तो मनुष्यों को ब्यवस्था के बिपरीत रीति से ईश्वर की उपासना १४ करने को समझाता है । ज्योंहीं पावल मुंह खोलने पर था त्योंहीं गालियो ने यिहूदियों से कहा हे यिहूदियो जो यह कोई कुकर्म्म अथवा बुरी कुचाल होती तो उचित जानके मैं तुम्हारी सहता । १५ परन्तु जो यह बिबाद उपदेश के और नामों के और तुम्हारे यहां की ब्यवस्था के बिषय में है तो तुम हीं जानो क्योंकि मैं इन बातों का न्यायी होने नहीं चाहता १६ हूं । और उस ने उन्हें बिचार आसन के १७ आगे से खेदे दिया । तब सारे यूनानियों ने सभा के अध्यक्ष सोस्थिनी को पकड़के बिचार आसन के साम्ने मारा और गालियो ने इन बातों की कुछ चिन्ता न किई ॥

१८ पावल और भी बहुत दिन रहा तब भाइयों से बिदा होके जहाज पर सुरिया देश को गया और उस के संग प्रिस्कीला और अकूला . उस ने किंक्रिया नगर में अपना सिर मुंड़वाया क्योंकि उस ने मन्नत मानी थी । १९ और उस ने इफिस नगर में पहुंचके उन को वहां छोड़ा और आप ही सभा के घर में प्रवेश करके यिहूदियों से बातें किईं । २० जब उन्हों ने उस से बिन्ती किई कि हमारे संग कुछ दिन और रहिये तब उस ने न माना . २१ परन्तु यह कहके उन से बिदा हुआ कि आनेवाला पर्ब्ब यिरूशलीम में करना मुझे बहुत अवश्य है परन्तु ईश्वर चाहे तो मैं तुम्हारे पास फिर लौट आऊंगा । २२ तब उस ने इफिस से खोल दिया और कैसरिया में आया तब (यिरूशलीम को) जाके मंडली को नमस्कार किया और २३ अन्तैखिया को गया । फिर कुछ दिन रहके वह निकला और एक ओर से गलातिया और फ्रुगिया देशों में सब शिष्यों को स्थिर करता हुआ फिरा ॥

२४ अपल्लो नाम सिकन्दरिया नगर का एक यिहूदी जो सुवक्ता पुरुष और धर्म्म-पुस्तक में सामर्थी था इफिस में आया । २५ उस ने प्रभु के मार्ग की शिक्षा पाई थी और आत्मा में अनुरागी होके प्रभु के बिषय में की बातें यत्न से सुनाता और सिखाता था परन्तु केवल योहन के बपतिसमा की बात जानता था । २६ वह सभा के घर में साहस से बात करने लगा पर अकूला और प्रिस्कीला ने उस की सुनके उसे लिया और ईश्वर का मार्ग उस को और ठीक करके बताया । २७ और वह आखाया को जाने चाहता था सो भाइयों ने उसे ढाढ़स देके शिष्यों के पास लिखा कि वे उसे ग्रहण करें और उस ने पहुंचके अनुग्रह से जिन्हों ने

बिश्वास किया था उन्हों को बड़ी
२८ सहायता किई । क्योंकि यीशु जो खीष्ट
है यह बात धर्म्मपुस्तक के प्रमाणों से
बतलाके उस ने बड़े यत्न से लोगों के
आगे यिहूदियों को निरुत्तर किया ॥

उन्नीसवां पर्व्व ।

१ अपल्लो के करिन्थ में होते हुए
पावल ऊपर के सारे देश में फिरके इफिस
२ में आया . और कितने शिष्यों को पाके
उन से कहा क्या तुम ने बिश्वास करके
पवित्र आत्मा पाया . उन्हों ने उस से
कहा हम ने तो सुना भी नहीं कि पवित्र
३ आत्मा दिया जाता है । तब उस ने
उन से कहा तो तुम ने किस बात पर
बपतिसमा लिया . उन्हों ने कहा योहन
४ के बपतिसमा पर । पावल ने कहा
योहन ने पश्चात्ताप का बपतिसमा देके
अपने पीछे आनेवाले की पर बिश्वास
करने को लोगों से कहा अर्थात खीष्ट
५ यीशु पर । यह सुनके उन्हों ने प्रभु
६ यीशु के नाम से बपतिसमा लिया । और
जब पावल ने उन पर हाथ रखे तब
पवित्र आत्मा उन पर आया और वे
अनेक बोलियां बोलने और भविष्यद्वाक्य
७ कहने लगे । ये सब मनुष्य बारह
एक थे ॥

८ तब पावल सभा के घर में प्रवेश
करके साहस से बात करने लगा और
तीन मास ईश्वर के राज्य के विषय में
की बातें सुनाता और समझाता रहा ।
९ परन्तु जब कितने लोग कठोर हो गये
और नहीं मानते थे और लोगों के आगे
इस मार्ग की निन्दा करने लगे तब वह
उन के पास से चला गया और शिष्यों
को अलग करके तुरान नाम किसी
मनुष्य के विद्यालय में प्रतिदिन बातें
१० किईं । यह दो बरस होता रहा यहां
लों कि आशिया के निवासी यिहूदी
और यूनानी भी सभों ने प्रभु यीशु का
वचन सुना । और ईश्वर ने पावल के ११
हाथों से अनोखे आश्चर्य्य कर्म्म किये .
यहां लों कि उस के देह पर से अंगोछे १२
और रूमाल रोगियों के पास पहुंचाये
जाते थे और रोग उन से जाते रहते थे
और दुष्ट भूत उन में से निकल जाते थे ॥

तब यिहूदी लोगों में से जो इधर १३
उधर फिरा करते और भूत निकालने
का किरिया देते थे कितने जन उन्हों
पर जिन को दुष्ट भूत लगे थे प्रभु यीशु
का नाम यह कहके लेने लगे कि यीशु
जिसे पावल प्रचार करता है हम उसी
की तुम्हें किरिया देते हैं . स्कीवा नाम १४
एक यिहूदीय प्रधान याजक के सात
पुत्र थे जो यह करते थे । परन्तु दुष्ट १५
भूत ने उत्तर दिया कि यीशु को मैं
जानता हूं और पावल को पहचानता
हूं पर तुम कौन हो । और वह मनुष्य १६
जिसे दुष्ट भूत लगा था उन पर लपकके
और उन्हें बश में लाके उन पर ऐसा
प्रबल हुआ कि वे नंगे और घायल उस
घर में से भागे । और यह बात इफिस १७
के निवासी यिहूदी और यूनानी भी सब
जान गये और उन सभों को डर लगा
और प्रभु यीशु के नाम की महिमा किई
जाती थी । और जिन्हों ने बिश्वास १८
किया था उन्हों में से बहुतों ने आके
अपने काम मान लिये और बतलाये ।
टोना करनेहारों में से भी अनेकों ने १९
अपनी पोथियां एकट्ठी करके सभों के
साम्हने जला दिईं और उन्हों का दाम
जोड़ा गया तो पचास सहस्र रुपैये ठहरा ।
यूं पराक्रम से प्रभु का वचन फैला और २०
प्रबल हुआ ॥

जब यह बातें हो चुकीं तब पावल २१
ने आत्मा में माकिदोनिया और आखाया
के बीच से यिरूशलीम जाने को ठहराया

और कहा कि वहां जाने के पीछे मुझे
२२ रोम को भी देखना होगा । सो जो
उस की सेवा करते थे उन में से दो
को अर्थात तिमोथिय और इरास्त को
माकिदोनिया में भेजके वह आप हो
२३ आशिया में कुछ दिन रह गया । उस
समय इस मार्ग के विषय में बड़ा हुल्लड़
२४ हुआ । क्योंकि दीमीत्रिय नाम एक
सुनार-अर्तिमी के मन्दिर की चांदी की
मूरतें बनाने से कारीगरों को बहुत काम
२५ दिलाता था । उस ने उन्हों को और
ऐसी ऐसी वस्तुओं के कारीगरों को
एकट्ठे करके कहा हे मनुष्यो तुम जानते
हो कि इस काम से हमें को सम्पत्ति
२६ प्राप्त होती है । और तुम देखते और
सुनते हो कि इस पावल ने यह कहके
कि जो हाथों से बनाये जाते सो ईश्वर
नहीं हैं केवल इफिस के नहीं परन्तु
प्राय समस्त आशिया के बहुत लोगों
२७ को समझाके भरमाया है । और हमें
को केवल यह डर नहीं है कि यह
उद्यम निन्दित हो जाय परन्तु यह भी
कि बड़ी देवी अर्तिमी का मन्दिर
तुच्छ समझा जाय और उस की महिमा
जिसे समस्त आशिया और जगत पूजता
२८ है नष्ट हो जाय । वे यह सुनके और
क्रोध से पूर्ण होके पुकारने लगे इफि-
२९ सियों की अर्तिमी की जय । और सारे
नगर में बड़ी गड़बड़ाहट हुई और लोग
गायस और अरिस्तार्ख दो माकिदोनियों
को जो पावल के संगी पथिक थे
पकड़के एक चित्त होके रंगशाला में दौड़
३० गये । जब पावल ने लोगों के पास
भीतर जाने चाहा तब शिष्यों ने उस
३१ को जाने न दिया । आशिया के प्रधानों
में से भी कितनों ने जो उस के मित्र
थे उस पास भेजके उस से बिन्ती किई
कि रंगशाला में जाने की जोखिम मत
अपने पर उठाइये । सो कोई कुछ ३२
और कोई कुछ पुकारते थे क्योंकि सभा
घबराई हुई थी और अधिक लोग नहीं
जानते थे हम किस कारण एकट्ठे हुए
हैं । तब भीड़ में से कितनों ने सिकन्दर ३३
को जिसे यिहूदियों ने खड़ा किया था
आगे बढ़ाया और सिकन्दर हाथ से सैन
करके लोगों के आगे उत्तर दिया
चाहता था । परन्तु जब उन्हों ने जाना ३४
कि वह यिहूदी है सब के सब एक शब्द
से दो घड़ी के अटकल इफिसियों की
अर्तिमी की जय पुकारते रहे । तब ३५
नगर के लेखक ने लोगों को शांत करके
कहा हे इफिसी लोगो कौन मनुष्य
है जो नहीं जानता कि इफिसियों का
नगर बड़ी देवी अर्तिमी का और जू-
पितर की ओर से गिरी हुई मूर्ति का
टहलुआ है । सो जब कि इन बातों ३६
का खंडन नहीं हो सकता है उचित
है कि तुम शांत होओ और कोई काम
उताउली से न करो । क्योंकि तुम इन ३७
मनुष्यों को लाये हो जो न पवित्र वस्तुओं
के चोर न तुम्हारी देवी के निन्दक हैं ।
सो जो दीमीत्रिय को और उस के संग ३८
के कारीगरों को किसी से विवाद है
तो विचार के दिन होते हैं और प्रधान
लोग हैं वे एक दूसरे पर नालिश करें ।
परन्तु जो तुम दूसरी बातों के विषय ३९
में कुछ पूछते हो तो व्यवहारिक सभा
में निर्णय किया जायगा । क्योंकि जो ४०
आज हुई है उस के हेतु से हम पर
बलवे का दोष लगाये जाने का डर है
इस लिये कि कोई कारण नहीं है जिस
करके हम इस भीड़ का उत्तर दे सकेंगे ।
और यह कहके उस ने सभा को बिदा ४१
किया ॥

बीसवां पर्ब्ब ।

जब हुल्लड़ थम गया तब पावल १

शिष्यों को अपने पास बुलाके और गले लगाके माकिदोनिया जाने को चल
२ निकला । उस सारे देश में फिरके और बहुत बातों से उन्हें उपदेश देके वह
३ यूनान देश में आया । और तीन मास रहके जब वह जहाज पर सुरिया को जाने पर था यिहूदी लोग उस की घात में लगे इस लिये उस ने माकिदोनिया होके लौट जाने को ठहराया ।
४ बिरेया नगर का सोपातर और थिसलोनिकियों में से अरिस्तार्ख और सिकुन्द और दर्बी नगर का गायस और तिमोथिय और आशिया देश के तुखिक और त्रोफिम आशिया लों उस के संग हो
५ लिये । इन्हों ने आगे जाके त्रोआ में
६ हमों की बाट देखी । और हम लोग अखमीरी रोटी के पर्ब्ब के दिनों के पीछे जहाज पर फिलिपी से चले और पांच दिन में त्रोआ में उन के पास पहुंचे जहां हम सात दिन रहे ॥

७ अठवारे के पहिले दिन जब शिष्य लोग रोटी तोड़ने को एकट्ठे हुए तब पावल ने जो अगले दिन चले जाने पर था उन से बातें किईं और आधी रात
८ लों बात करता रहा । जिस उपरौठी कोठरी में वे एकट्ठे हुए थे उस में
९ बहुत दीपक बरते थे । और उतुख नाम एक जवान खिड़की पर बैठा हुआ भारी नींद में झुक रहा था और पावल के बहुत बेर लों बातें करते करते वह नींद से झुकके तीसरी अटारी पर से नीचे गिर पड़ा और मूआ उठाया गया ।
१० परन्तु पावल उतरके उस पर औंधे पड़ गया और उसे गोदी में लेके बोला मत धूम मचाओ क्योंकि उस का प्राण
११ उस में है । तब ऊपर जाके और रोटी तोड़के और खाके और बहुत बेर लों भोर तक बातचीत करके वह चला गया । और वे उस जवान को जीते ले १२ आये और बहुत शांति पाई ॥

तब हम लोग आगे से जहाज पर १३ चढ़के आसस नगर को गये वहां से हमें पावल को चढ़ा लेना था क्योंकि उस ने यूं ठहराया था इस लिये कि आप ही पैदल जानेवाला था । जब १४ वह आसस में हम से आ मिला तब हम उसे चढ़ाके मितुलीनी नगर में आये । और वहां से खोलके हम दूसरे १५ दिन खीयो टापू के साम्हने पहुंचे और अगले दिन सामो टापू में लगान किया फिर त्रोगुलिया नगर में रहके दूसरे दिन मिलीत नगर में आये । क्योंकि १६ पावल ने इफिस को एक ओर छोड़के जाना ठहराया इस लिये कि उस को आशिया में अबेर न लगे क्योंकि वह शीघ्र जाता था कि जो उस से बन पड़े तो पेन्तिकोष्ट पर्ब्ब के दिन लों यिरूशलीम में पहुंचे ॥

मिलीत से उस ने लोगों को इफिस १७ नगर भेजके मंडली के प्राचीनों को बुलाया । जब वे उस पास आये तब १८ उस ने उन से कहा तुम जानते हो कि पहिले दिन से जो मैं आशिया में पहुंचा मैं हर समय क्योंकर तुम्हारे संग में रहा . कि बड़ी दीनताई से १९ और बहुत रो रोके और उन परीक्षाओं में जो मुझ पर यिहूदियों की कुमंत्रणा से पड़ीं मैं प्रभु की सेवा करता रहा . और क्योंकर मैं ने लाभ की बातों में से २० कोई बात न रख छोड़ी जो तुम्हें न बताई और लोगों के आगे और घर घर तुम्हें न सिखाई . कि यिहूदियों और २१ यूनानियों को भी मैं साक्षी देके ईश्वर के आगे पश्चात्ताप करने की और हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट पर बिश्वास करने की बात कहता रहा । और अब देखो मैं २२

आत्मा से बंधा हुआ यिरूशलीम को जाता हूं और नहीं जानता हूं कि वहां २३ मुझ पर क्या पड़ेगा, केवल यही जानता हूं कि पवित्र आत्मा नगर नगर साक्षी देता है कि बंधन और क्लेश मेरे २४ लिये धरे हैं। परन्तु मैं किसी बात की चिन्ता नहीं करता हूं और न अपना प्राण इतना बहुमूल्य जानता हूं जितना आनन्द से अपनी दौड़ को और ईश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार पर साक्षी देने की सेवकाई को जो मैं ने प्रभु यीशु से पाई है पूरी करना बहुमूल्य २५ है। और अब देखो मैं जानता हूं कि तुम सब जिन्हों में मैं ईश्वर के राज्य की कथा सुनाता फिरा हूं मेरा मुंह २६ फिर नहीं देखोगे। इस लिये मैं आज के दिन ईश्वर को साक्षी रखके तुम से कहता हूं कि मैं सभों के लोहू से निर्दोष २७ हूं। क्योंकि मैं ने ईश्वर के सारे मत में से कोई बात न रख छोड़ी जो तुम्हें २८ न बताई। सो अपने विषय में और सारे झुंड के विषय में जिस के बीच में पवित्र आत्मा ने तुम्हें रखवाले ठहराये हैं सचेत रहो कि तुम ईश्वर की मंडली की रखवाली करो जिसे उस ने अपने २९ लोहू से मोल लिया है। क्योंकि मैं यह जानता हूं कि मेरे जाने के पीछे क्रूर हुंडार तुम्हों में प्रवेश करेंगे जो ३० झुंड को न छोड़ेंगे। तुम्हारे ही बीच में से भी मनुष्य उठेंगे जो शिष्यों को अपने पीछे खींच लेने को टेढ़ी बातें ३१ कहेंगे। इस लिये मैं ने जो तीन बरस रात और दिन रो रोके हर एक को सिखाना न छोड़ा यह स्मरण करते हुए ३२ जागते रहो। और अब हे भाइयो मैं तुम्हें ईश्वर को और उस के अनुग्रह के बचन को सौंप देता हूं जो तुम्हें सुधारने और सब पवित्र किये हुए लोगों के बीच में अधिकार देने सकता है। मैं ३३ ने किसी के रुपे अथवा सोने अथवा वस्त्र का लालच नहीं किया। तुम ३४ आप ही जानते हो कि इन हाथों ने मेरे प्रयोजन की और मेरे संगियों की टहल किई। मैं ने सब बातें तुम्हें ३५ बताईं कि इस रीति से परिश्रम करते हुए दुर्बलों का उपकार करना और प्रभु यीशु की बातें स्मरण करना चाहिये कि उस ने कहा लेने से देना अधिक धन्य है॥

यह बातें कहके उस ने अपने घुटने ३६ टेकके उन सभों के संग प्रार्थना किई। तब वे सब बहुत रोये और पावल के ३७ गले में लिपटके उसे चूमने लगे। वे ३८ सब से अधिक उस बात से शोक करते थे जो उस ने कही थी कि तुम मेरा मुंह फिर नहीं देखोगे, तब उन्हों ने उसे जहाज लों पहुंचाया॥

इक्कीसवां पर्ब्ब।

अब हम ने उन से अलग होके १ जहाज खोला तब सीधे सीधे कोस टापू को चले और दूसरे दिन रोद टापू को और वहां से पातारा नगर पर पहुंचे। और एक जहाज को जो फैनीकिया को २ जाता था पाके हम ने उस पर चढ़के खोल दिया। जब कुप्रस टापू देखने ३ में आया तब हम ने उसे बायें हाथ छोड़ा और सुरिया को जाके सोर नगर में लगान किया क्योंकि जहाज को बोझाई वहां उतारने पर थी। और ४ वहां के शिष्यों को पाके हम वहां सात दिन रहे, उन्हों ने आत्मा की शिक्षा से पावल से कहा यिरूशलीम को मत जाइये। जब हम उन दिनों को पूरे ५ कर चुके तब निकलके चलने लगे और सभों ने स्त्रियों और बालकों समेत हमें नगर के बाहर लों पहुंचाया और हमों

से तीर पर घुटने टेकके प्रार्थना किई। ६ तब एक दूसरे को गले लगाके हम तो जहाज पर चढ़े और वे अपने अपने घर लौटे॥

७ तब हम सोर से जलयात्रा पूरी करके तालिमाई नगर में पहुंचे और भाइयों को नमस्कार करके उन के संग एक ८ दिन रहे। दूसरे दिन हम जो पावल के संग के थे वहां से चलके कैसरिया में आये और फिलिप सुसमाचार प्रचारक के घर में जो सातों में से एक था प्रवेश ९ करके उस के यहां रहे। इस मनुष्य की चार कुंआरी पुत्रियां थीं जो भविष्यद्वाक्य कहा करती थीं॥

१० जब हम बहुत दिन रह चुके तब आगाब नाम एक भविष्यद्वक्ता यिहूदिया ११ से आया। उस ने हमारे पास आके और पावल का पटुका लेके और अपने हाथ और पांव बांधके बोला पवित्र आत्मा यह कहता है कि जिस मनुष्य का यह पटुका है उस को यिरूशलीम में यिहूदी लोग यूंहीं बांधेंगे और अन्यदेशियों के १२ हाथ सौंपेंगे। जब हम ने यह बातें सुनीं तब हम लोग और उस स्थान के रहनेहारे भी पावल से बिन्ती करने लगे कि यिरूशलीम को न जाइये। १३ परन्तु उस ने उत्तर दिया कि तुम क्या करते हो कि रोते और मेरा मन चूर करते हो. मैं तो प्रभु यीशु के नाम के लिये यिरूशलीम में केवल बांधे जाने को नहीं परन्तु मरने को भी तैयार हूं। १४ जब वह नहीं मानता था तब हम यह कहके चुप हुए कि प्रभु की इच्छा पूरी होवे॥

१५ इन दिनों के पीछे हम लोग बांध छांदके यिरूशलीम को जाने लगे। १६ कैसरिया के शिष्यों में से भी कितने हमारे संग हो लिये और मनासोन नाम कुप्रस के एक प्राचीन शिष्य के पास जिस के यहां हम पाहुन होवें हमें पहुंचाया। १७ जब हम यिरूशलीम में पहुंचे तब भाइयों ने हमें आनन्द से ग्रहण किया॥

१८ दूसरे दिन पावल हमारे संग याकूब के यहां गया और सब प्राचीन लोग १९ आये। तब उस ने उन को नमस्कार कर जो जो कर्म्म ईश्वर ने उस की सेवकाई के द्वारा से अन्यदेशियों में किये थे उन्हें एक एक करके वर्णन २० किया। उन्हों ने सुनके प्रभु की स्तुति किई और उस से कहा हे भाई आप देखते हैं कितने सहस्रों यिहूदियों ने विश्वास किया है और सब व्यवस्था २१ के लिये धुन लगाये हैं। और उन्हों ने आप के विषय में सुना है कि आप अन्यदेशियों के बीच में के सब यिहूदियों को तई मूसा को त्यागने को सिखाते हैं और कहते हैं कि अपने बालकों का खतना मत करो और न व्यवहारों पर २२ चलो। सो क्या है कि बहुत लोग निश्चय एकट्ठे होंगे क्योंकि वे सुनेंगे कि २३ आप आये हैं। इस लिये यह जो हम आप से कहते हैं कीजिये. हमारे यहां चार मनुष्य हैं जिन्हों ने मन्नत मानी है। २४ उन्हें लेके उन के संग अपने को शुद्ध कीजिये और उन के लिये खर्च दीजिये कि वे सिर मुंड़ावें तब सब लोग जानेंगे कि जो बातें हम ने इस के विषय में सुनी थीं सो कुछ नहीं है परन्तु यह आप भी व्यवस्था को पालन करते हुए २५ उस के अनुसार चलता है। परन्तु जिन अन्यदेशियों ने विश्वास किया है हम ने उन के विषय में यही ठहराके लिख भेजा कि वे ऐसी कोई बात न मानें केवल मूरतों के आगे बलि किये हुए से और लोहू से और गला घोंटे हुओं

के मांस से और व्यभिचार से बचे रहें ।
२६ तब पावल ने उन मनुष्यों को लेके दूसरे दिन उन के संग शुद्ध होके मन्दिर में प्रवेश किया और सन्देश दिया कि शुद्ध होने के दिन अर्थात उन में से हर एक के लिये चढ़ावा चढ़ाये जाने तक के दिन कब पूरे होंगे ॥

२७ जब वे सात दिन पूरे होने पर थे तब आशिया के यिहूदियों ने पावल को मन्दिर में देखके सब लोगों को उस्काया और उस पर हाथ डालके
२८ पुकारा . हे इस्रायेली लोगो सहायता करो यही वह मनुष्य है जो इन लोगों के और व्यवस्था के और इस स्थान के विरुद्ध सर्व्वत्र सब लोगों को उपदेश देता है . हां और उस ने यूनानियों को मन्दिर में लाके इस पवित्र स्थान को
२९ अपवित्र भी किया है । उन्हों ने तो इस के पहिले त्रोफिम इफिसी को पावल के संग नगर में देखा था और समझते थे कि वह उस को मन्दिर में लाया
३० था । तब सारे नगर में घबराहट हुई और लोग एकट्ठे दौड़े और पावल को पकड़के उसे मन्दिर के बाहर खींच लाये और तुरन्त द्वार मूंदे गये ॥

३१ जब वे उसे मार डालने चाहते थे तब पलटन के सहस्रपति को सन्देश पहुंचा कि सारे यिरूशलीम में घबराहट
३२ हुई है । तब वह तुरन्त योद्धाओं और शतपतियों को लेके उन पास दौड़ा और उन्हों ने सहस्रपति को और योद्धाओं को देखके पावल को मारना छोड़ दिया ।
३३ तब सहस्रपति ने निकट आके उसे लेके आज्ञा किई कि दो जंजीरों से बांधा जाय और पूछने लगा यह कौन है और
३४ क्या किया है । परन्तु भीड़ में कोई कुछ और कोई कुछ पुकारते थे और जब सहस्रपति हुल्लड़ के मारे निश्चय नहीं जान सकता था तब पावल को गढ़ में
३५ ले जाने की आज्ञा किई । जब वह सीढ़ी पर पहुंचा ऐसा हुआ कि भीड़ की बरियाई के कारण योद्धाओं ने उसे उठा
३६ लिया । क्योंकि लोगों की भीड़ उसे दूर कर पुकारती हुई पीछे आती थी ॥

३७ जब पावल गढ़ के भीतर पहुंचाये जाने पर था तब उस ने सहस्रपति से कहा जो आप से कुछ कहने की मुझे आज्ञा होय तो कहूं . उस ने कहा क्या
३८ तू यूनानीय भाषा जानता है । तो क्या तू वह मिसरी नहीं है जो इन दिनों के आगे बलवा करके कटारबन्ध लोगों में से चार सहस्र मनुष्यों को जंगल में ले
३९ गया । पावल ने कहा मैं तो तारस का एक यिहूदी मनुष्य हूं . किलिकिया के एक प्रसिद्ध नगर का निवासी हूं . और मैं आप से बिन्ती करता हूं कि मुझे
४० लोगों से बात करने दीजिये । जब उस ने आज्ञा दिई तब पावल ने सीढ़ी पर खड़ा होके लोगों को हाथ से सैन किया . जब वे बहुत चुप हुए तब उस ने इब्रीय भाषा में उन से बात किई ॥

बाईसवां पर्व्व ।

१ उस ने कहा हे भाइयो और पितरो मेरा उत्तर जो मैं आप लोगों के आगे
२ अब देता हूं सुनिये । वे यह सुनके कि वह हम से इब्रीय भाषा में बात करता
३ है और भी चुप हुए । तब उस ने कहा मैं तो यिहूदी मनुष्य हूं जो किलिकिया के तारस नगर में जन्मा पर इस नगर में पाला गया और गमलियेल के चरणों के पास पितरों की व्यवस्था की ठीक रीति पर सिखाया गया और जैसे आज तुम सब हो वैसा ही ईश्वर के लिये
४ धुन लगाये था । और मैं ने इस पन्थ के लोगों को मृत्यु लों सताया कि पुरुषों

और स्त्रियों को भी बांध बांधके बन्दीगृहों में डालता था। ५ इस में महायाजक और सब प्राचीन लोग मेरे साक्षी हैं जिन से मैं भाइयों के नाम पर चिट्ठियां पाके दमेसक को जाता था कि जो वहां थे उन्हें भी ताड़ना पाने को बांधे हुए यिरूशलीम में लाऊं। ६ परन्तु जब मैं जाता था और दमेसक के समीप पहुंचा तब दो पहर के निकट अचांचक बड़ी ज्योति स्वर्ग से मेरी चारों ओर चमकी। ७ और मैं भूमि पर गिरा और एक शब्द सुना जो मुझ से बोला हे शावल हे शावल तू मुझे क्यों सताता है। ८ मैं ने उत्तर दिया कि हे प्रभु तू कौन है, उस ने मुझ से कहा मैं यीशु नासरी हूं जिसे तू सताता है। ९ जो लोग मेरे संग थे उन्हों ने वह ज्योति देखी और डर गये परन्तु जो मुझ से बोलता था उस की बात न सुनी। १० तब मैं ने कहा हे प्रभु मैं क्या करूं, प्रभु ने मुझ से कहा उठके दमेसक को जा और जो जो काम करने को तुझे ठहराया गया है सब के विषय में वहां तुझ से कहा जायगा। ११ जब उस ज्योति के तेज के मारे मुझे नहीं सूझता था तब मैं अपने संगियों के हाथ पकड़े हुए दमेसक में आया। १२ और अनानियाह नाम व्यवस्था के अनुसार एक भक्त मनुष्य जो वहां के रहनेहारे सब यिहूदियों के यहां सुख्यात था मेरे पास आया, १३ और निकट खड़ा होके मुझ से कहा हे भाई शावल अपनी दृष्टि पा और उसी घड़ी मैं ने उस पर दृष्टि किई। १४ तब उस ने कहा हमारे पितरों के ईश्वर ने तुझे ठहराया है कि तू उस की इच्छा को जाने और उस धर्म्मी को देखे और उस के मुंह से बातें सुने। १५ क्योंकि जो बातें तू ने देखी और सुनी हैं उन के विषय में तू सब मनुष्यों के आगे उस का साक्षी होगा। १६ और अब तू क्यों बिलंब करता है, उठके बपतिसमा ले और प्रभु के नाम की प्रार्थना करके अपने पापों को धो डाल। १७ जब मैं यिरूशलीम को फिर आया और मन्दिर में प्रार्थना करता था त्योंही बेसुध हुआ, १८ और उस को देखा कि मुझ से बोलता था शीघ्रता करके यिरूशलीम से झट निकल जा क्योंकि वे मेरे विषय में तेरी साक्षी ग्रहण न करेंगे। १९ मैं ने कहा हे प्रभु वे जानते हैं कि तुझ पर बिश्वास करनेहारों को मैं बन्दीगृह में डालता और हर एक सभा में मारता था। २० और जब तेरे साक्षी स्तिफान का लोहू बहाया जाता था तब मैं भी आप निकट खड़ा था और उस के मारे जाने में सम्मति देता था और उस के घातकों के कपड़ों की रखवाली करता था। २१ तब उस ने मुझ से कहा चला जा क्योंकि मैं तुझे अन्यदेशियों के पास दूर भेजूंगा॥

२२ लोगों ने इस बात लों उस की सुनी तब ऊंचे शब्द से पुकारा कि ऐसे मनुष्य को पृथिवी पर से दूर कर कि उस का जीता रहना उचित न था। २३ जब वे चिल्लाते और कपड़े फेंकते और आकाश में धूल उड़ाते थे, २४ तब सहस्रपति ने उस को गढ़ में ले जाने की आज्ञा किई और कहा इसे कोड़े मारके जांचो कि मैं जानूं लोग किस कारण से उस के विरुद्ध ऐसा पुकारते हैं। २५ जब वे पावल को चमड़े के बंधों से बांधते थे तब उस ने शतपति से जो खड़ा था कहा क्या मनुष्य को जो रोमी है और दंड के योग्य नहीं ठहराया गया है कोड़े मारना तुम्हें उचित है। २६ शतपति ने यह सुनके सहस्रपति के पास जाके कह दिया कि देखिये आप क्या किया

२७ चाहते हैं यह मनुष्य तो रोमी है। तब सहस्रपति ने उस पास आके उस से कहा मुझ से कह क्या तू रोमी है, उस २८ ने कहा हां। सहस्रपति ने उत्तर दिया कि मैं ने यह रोम निवासी की पदवी बहुत रुपैयों पर मोल लिई, पावल ने २९ कहा परन्तु मैं ऐसा ही जन्मा। तब जो लोग उसे जांचने पर थे सो तुरन्त उस के पास से हट गये और सहस्रपति भी यह जानके कि रोमी है और मैं ने उसे बांधा है डर गया॥

३० और दूसरे दिन वह निश्चय जानने चाहता था कि उस पर यिहूदियों से क्यों दोष लगाया जाता है इस लिये उस को बंधनों से खोल दिया और प्रधान याजकों को और न्याइयों की सारी सभा को आने की आज्ञा दिई और पावल को लाके उन के आगे खड़ा किया॥

तेईसवां पर्व्व।

१ पावल ने न्याइयों की सभा की ओर ताकके कहा हे भाइयो मैं इस दिन लों सर्व्वथा ईश्वर के आगे शुद्ध मन से २ चला हूं। परन्तु अननियाह महायाजक ने उन लोगों को जो उस के निकट खड़े थे उस के मुंह में मारने की आज्ञा ३ दिई। तब पावल ने उस से कहा हे चूना फेरी हुई भीत ईश्वर तुझे मारेगा, क्या तू मुझे व्यवस्था के अनुसार बिचार करने को बैठा है और व्यवस्था को लंघन करता हुआ मुझे मारने की ४ आज्ञा देता। जो लोग निकट खड़े थे सो बोले क्या तू ईश्वर के महायाजक ५ की निन्दा करता है। पावल ने कहा हे भाइयो मैं नहीं जानता था कि यह महायाजक है, क्योंकि लिखा है अपने लोगों के प्रधान को बुरा मत ६ कह। तब पावल ने यह जानके कि एक भाग सदूकी और एक भाग फरीशी हैं सभा में पुकारा हे भाइयो मैं फरीशी और फरीशी का पुत्र हूं मृतकों की आशा और जी उठने के विषय में मेरा बिचार किया जाता है। ७ जब उस ने यह बात कही तब फरीशियों और सदूकियों में बिवाद हुआ और सभा बिभिन्न हुई। ८ क्योंकि सदूकी कहते हैं कि न मृतकों का जी उठना न दूत न आत्मा है परन्तु फरीशी दोनों को मानते हैं। ९ तब बड़ी धूम मची और जो अध्यापक फरीशियों के भाग के थे सो उठके लड़ते हुए कहने लगे कि हम लोग इस मनुष्य में कुछ बुराई नहीं पाते हैं परन्तु यदि कोई आत्मा अथवा दूत उस से बोला है तो हम ईश्वर से न लड़ें। १० जब बहुत बिवाद हुआ तब सहस्रपति को शंका हुई कि पावल उन से फाड़ न डाला जाय इस लिये पलटन को आज्ञा दिई कि जाके उस को उन के बीच में से छीनके गढ़ में लाओ॥

११ उस रात प्रभु ने उस के निकट खड़े हो कहा हे पावल ढाढ़स कर क्योंकि जैसा तू ने यिरूशलीम में मेरे विषय में की साक्षी दिई है तैसा ही तुझे रोम में भी साक्षी देना होगा॥

१२ बिहान हुए कितने यिहूदियों ने एका करके प्रण बांधा कि जब लों हम पावल को मार न डालें तब लों जो खायें अथवा पीयें तो हम धिक्कार हैं। १३ जिन्हों ने आपस में यह किरिया खाई थी सो चालीस जनों से अधिक थे। १४ वे प्रधान याजकों और प्राचीनों के पास आके बोले हम ने यह प्रण बांधा है कि जब लों हम पावल को मार न डालें तब लों यदि कुछ चाखें भी तो हम धिक्कार हैं। १५ इस लिये अब आप

लोग न्यायियों की सभा समेत सहस्रपति को समझाइये कि हम पावल के विषय में और बातें और ठीक करके निर्णय करेंगे सो आप उसे कल हमारे पास लाइये . परन्तु उस के पहुंचने के पहिले ही हम लोग उसे मार डालने को तैयार हैं ॥

१६ परन्तु पावल के भांजे ने उन का घात में लगना सुना और आके गढ़ में प्रवेश कर पावल को सन्देश दिया । १७ पावल ने शतपतियों में से एक को अपने पास बुलाके कहा इस जवान को सहस्रपति के पास ले जाइये क्योंकि १८ उस को उस से कुछ कहना है । सो उस ने उसे ले सहस्रपति के पास लाके कहा पावल बन्धुए ने मुझे अपने पास बुलाके बिन्ती किई कि इस जवान को सहस्रपति से कुछ कहना है उसे १९ आप पास ले आइये । सहस्रपति ने उस का हाथ पकड़के और एकान्त में जाके पूछा तुझ को जो मुझ से कहना है सो २० क्या है । उस ने कहा यिहूदियों ने आप से यही बिन्ती करने को आपस में ठहराया है कि हम पावल के विषय में कुछ बात और ठीक करके पूछेंगे सो आप उसे कल न्यायियों की सभा में २१ लाइये । परन्तु आप उन की न मानिये क्योंकि उन में से चालीस से अधिक मनुष्य उस की घात में लगे हैं जिन्हों ने यह प्रण बांधा है कि जब लों हम पावल को मार न डालें तब लों जो खायें अथवा पीयें तो हमें धिक्कार है और अब वे तैयार हैं और आप की प्रतिज्ञा की आस देख रहे हैं ॥

२२ सो सहस्रपति ने यह आज्ञा देके कि किसी से मत कह कि मैं ने यह बातें सहस्रपति को बताई हैं जवान को २३ बिदा किया । और शतपतियों में से दो को अपने पास बुलाके उन से कहा दो सौ योद्धाओं और सत्तर घुड़चढ़ों और दो सौ भालैतों को पहर रात बीते कैसरिया को जाने के लिये तैयार करो । २४ और वाहन तैयार करो कि वे पावल को बैठाके फीलिक्स अध्यक्ष के पास बचाके ले जावें ॥

२५ उस ने इस प्रकार की चिट्ठी भी २६ लिखी । क्लौदिय लुसिय महामहिमन २७ अध्यक्ष फीलिक्स को नमस्कार । इस मनुष्य को जो यिहूदियों से पकड़ा गया था और उन से मार डाले जाने पर था मैं ने यह सुनके कि यह रोमी है पलटन २८ के संग जा पहुंचके छुड़ाया । और मैं जानने चाहता था कि वे उस पर किस कारण से दोष लगाते हैं इस लिये उसे उन की न्यायियों की सभा में लाया । २९ तब मैं ने यह पाया कि उन की व्यवस्था के विवादों के विषय में उस पर दोष लगाया जाता है परन्तु बध किये जाने अथवा बांधे जाने के योग्य कोई ३० दोष उस में नहीं है । जब मुझे बताया गया कि यिहूदी लोग इस मनुष्य की घात में लगेंगे तब मैं ने तुरन्त उस को आप के पास भेजा और दोषदायकों को भी आज्ञा दिई कि उस के विरुद्ध जो बात होय उसे आप के आगे कहें . आगे शुभ ॥

३१ योद्धा लोग जैसे उन्हें आज्ञा दिई गई थी तैसे पावल को लेके रात ही ३२ को अन्तिपात्री नगर में लाये । दूसरे दिन वे गढ़ को लौटे और घुड़चढ़ों को ३३ उस के संग जाने दिया । उन्हों ने कैसरिया में पहुंचके और अध्यक्ष को चिट्ठी देके पावल को भी उस के आगे ३४ खड़ा किया । अध्यक्ष ने पढ़के पूछा यह कौन प्रदेश का है और जब जाना ३५ कि किलिकिया का है . तब कहा जब

तेरे दोषदायक भी आवें तब मैं तेरी सुनूंगा . और उस ने उसे हेरोद के राजभवन में पहरे में रखने की आज्ञा किई ॥

चौबीसवां पर्व्व

१ पांच दिन के पीछे अननियाह महायाजक प्राचीनों के और तर्तुल नाम किसी वक्ता के संग आया और उन्हों ने अध्यक्ष के आगे पावल पर नालिश २ किई । जब पावल बुलाया गया तब तर्तुल यह कहके उस पर दोष लगाने लगा कि हे महामहिमन फीलिक्स आप के द्वारा हमारा बहुत कल्याण जो होता है और आप की प्रवीणता से इस देश के लोगों के लिये कितने काम जो सुफल ३ होते हैं . इस को हम लोग सर्व्वथा और सर्व्वत्र बहुत धन्य मानके ग्रहण करते ४ हैं । परन्तु जिस्तें मेरी ओर से आप को अधिक विलंब न होय मैं बिन्ती करता हूं कि आप अपनी सुशीलता से हमारी ५ संक्षेप कथा सुन लीजिये । क्योंकि हम ने यही पाया है कि यह मनुष्य एक मरी के ऐसा है और जगत के सारे यिहूदियों में बलवा करनेहारा और नासरियों के ६ कुपन्थ का प्रधान । उस ने मन्दिर को भी अपवित्र करने की चेष्टा किई और हम ने उसे पकड़के अपनी व्यवस्था के ७ अनुसार बिचार करने चाहा । परन्तु लुसिय सहस्रपति ने आके बड़ी बरियाई से उस को हमारे हाथों से छीन लिया और उस के दोषदायकों को आप के ८ पास आने की आज्ञा दिई । उसी से आप पूछके इन सब बातों के विषय में जिन से हम उस पर दोष लगाते हैं ९ आप ही जान सकेंगे । यिहूदियों ने भी उस के संग लगके कहा यह बातें यूंहीं हैं ॥

१० तब पावल ने जब अध्यक्ष ने बोलने को सैन उस से किया तब उत्तर दिया कि मैं यह जानके कि आप बहुत बरसों से इस देश के लोगों के न्यायी हैं और ही साहस से अपने विषय में की बातों का उत्तर देता हूं । ११ क्योंकि आप जान सकते हैं कि जब से मैं यिरूशलीम में भजन करने को आया मुझे बारह दिन से अधिक नहीं हुए । १२ और उन्हों ने मुझे न मन्दिर में न सभा के घरों में न नगर में किसी से बिवाद करते हुए अथवा लोगों की भीड़ लगाते हुए पाया । १३ और न वे उन बातों को जिन के विषय में वे अब मुझ पर दोष लगाते हैं ठहरा सकते हैं । १४ परन्तु यह मैं आप के आगे मान लेता हूं कि जिस मार्ग को वे कुपन्थ कहते हैं उसी की रीति पर मैं अपने पितरों के ईश्वर की सेवा करता हूं और जो बातें व्यवस्था में और भविष्यद्वक्ताओं के पुस्तक में लिखी हैं उन सभों का बिश्वास करता हूं . १५ और ईश्वर से आशा रखता हूं जिसे ये भी आप रखते हैं कि धर्म्मी और अधर्म्मी भी सब मृतकों का जी उठना होगा । १६ इस से मैं आप भी साधना करता हूं कि ईश्वर की और मनुष्यों की ओर मेरा मन सदा निर्दोष रहे । १७ बहुत बरसों के पीछे मैं अपने लोगों को दान देने को और चढ़ावा चढ़ाने को आया । १८ इस में उन्हों ने नहीं पर आशिया के कितने यिहूदियों ने मुझे मन्दिर में शुद्ध किये हुए न भीड़ के संग और न धूमधाम के संग पाया । १९ उन को उचित था कि जो मेरे बिरुद्ध उन की कोई बात होय तो यहां आप के आगे होते और मुझ पर दोष लगाते । २० अथवा ये ही लोग आप ही कहें कि जब मैं न्याइयों की सभा के आगे खड़ा था तब उन्हों ने मुझ में

२१ कौन सा कुकर्म्म पाया . केवल इसी एक बात के विषय में जो मैं ने उन के बीच में खड़ा होके पुकारा कि मृतकों के जी उठने के विषय में मेरा विचार आज तुम से किया जाता है।

२२ यह बातें सुनके फीलिक्स ने जो इस मार्ग की बातें बहुत ठीक करके बूझता था उन्हें यह कहके टाल दिया कि जब लुसिय सहस्रपति आवे तब मैं तुम्हारे विषय में की बातें निर्णय करूंगा।

२३ और उस ने शतपति को आज्ञा दिई कि पावल की रक्षा कर पर उस को अवकाश दे और उस के मित्रों में से किसी को उस की सेवा करने से अथवा उस पास आने से मत रोक॥

२४ कितने दिनों के पीछे फीलिक्स अपनी स्त्री द्रुसिल्ला के संग जो यिहूदिनी थी आया और पावल को बुलवाके ख्रीष्ट पर विश्वास करने के विषय में उस की सुनी।

२५ और जब वह धर्म्म और संयम के और आनेवाले विचार के विषय में बातें करता था तब फीलिक्स ने भयमान होके उत्तर दिया कि अब तो जा और अवसर पाके मैं तुझे बुलाऊंगा।

२६ वह यह आशा भी रखता था कि पावल मुझे रुपैये देगा कि मैं उसे छोड़ देऊं इस लिये और भी बहुत बार उस को बुलवाके उस से बातचीत करता था।

२७ परन्तु जब दो बरस पूरे हुए तब पर्किय फीष्ट ने फीलिक्स का काम पाया और फीलिक्स यिहूदियों का मन रखने की इच्छा कर पावल को बंधा हुआ छोड़ गया॥

पचीसवां पर्ब्ब।

१ फीष्ट उस प्रदेश में पहुंचके तीन दिन के पीछे कैसरिया से यिरूशलीम को २ गया। तब महायाजकने और यिहूदियों के बड़े लोगों ने उस के आगे पावल ३ पर नालिश किई . और उस से बिन्ती कर उस के विरुद्ध यह अनुग्रह मांगा कि वह उसे यिरूशलीम में मंगवाय क्योंकि वे उसे मार्ग में मार डालने की घात लगाये हुए थे। ४ फीष्ट ने उत्तर दिया कि पावल कैसरिया में पहरे में रहता है और मैं आप वहां शीघ्र जाऊंगा। ५ फिर बोला तुम में से जो सामर्थी लोग हैं सो मेरे संग चलें और जो इस मनुष्य में कुछ दोष होय तो उस पर दोष लगावें॥

६ और उन के बीच में दस एक दिन रहके वह कैसरिया को गया और दूसरे दिन विचार आसन पर बैठके पावल को लाने की आज्ञा किई। ७ जब पावल आया तब जो यिहूदी लोग यिरूशलीम से आये थे उन्हों ने आसपास खड़े होके उस पर बहुत बहुत और भारी भारी दोष लगाये जिन का प्रमाण वे नहीं दे सकते थे। ८ परन्तु उस ने उत्तर दिया कि मैं ने न यिहूदियों की व्यवस्था के न मन्दिर के न कैसर के विरुद्ध कुछ अपराध किया है। ९ तब फीष्ट ने यिहूदियों का मन रखने की इच्छा कर पावल को उत्तर दिया क्या तू यिरूशलीम को जाके वहां मेरे आगे इन बातों के विषय में विचार किया जायगा। १० पावल ने कहा मैं कैसर के विचार आसन के आगे खड़ा हूं जहां उचित है कि मेरा विचार किया जाय . यिहूदियों का जैसा आप भी अच्छी रीति से जानते हैं मैं ने कुछ अपराध नहीं किया है। ११ क्योंकि जो मैं अपराधी हूं और बध के योग्य कुछ किया है तो मैं मृत्यु से छुड़ाया जाना नहीं मांगता हूं परन्तु जिन बातों से ये मुझ पर दोष लगाते हैं यदि उन में से कोई बात नहीं ठहरती है तो कोई मुझे उन्हों के हाथ नहीं सौंप सकता है . मैं कैसर की दोहाई देता हूं। १२ तब फीष्ट ने मंत्रियों

की सभा के संग बात करके उत्तर दिया क्या तू ने कैसर की दोहाई दिई है . तू कैसर के पास जायगा ॥

१३ जब कितने दिन बीत गये तब आग्रिपा राजा और बर्णीकी फीष्टु को नमस्कार करने को कैसरिया में आये । १४ और उन के बहुत दिन वहां रहते रहते फीष्टु ने पावल की कथा राजा को सुनाई कि एक मनुष्य है जिसे फीलिक्स बंध में छोड़ गया है । १५ उस पर जब मैं यिरूशलीम में था तब प्रधान याजकों ने और यिहूदियों के प्राचीनों ने नालिश किई और चाहा कि दंड की आज्ञा उस पर दिई जाय । १६ परन्तु मैं ने उन को उत्तर दिया रोमियों की यह रीति नहीं है कि जब लों वह जिस पर दोष लगाया जाता है अपने दोषदायकों के आम्ने साम्ने न हो और दोष के विषय में उत्तर देने का अवकाश न पाय तब लों किसी मनुष्य का नाश किये जाने के लिये सौंप देवें । १७ सो जब वे यहां एकट्ठे हुए तब मैं ने कुछ बिलंब न करके अगले दिन बिचार आसन पर बैठके उस मनुष्य को लाने की आज्ञा किई । १८ दोषदायकों ने उस के आसपास खड़े होके जैसे दोष मैं समझता था १९ वैसा कोई दोष नहीं लगाया । परन्तु अपनी पूजा के विषय में और किसी मरे हुए यीशु के विषय में जिसे पावल कहता था कि जीता है वे उस से २० कितने विवाद करते थे । मुझे इस विषय के विवाद में सन्देह था इस लिये मैं ने कहा क्या तू यिरूशलीम को जाके वहां इन बातों के विषय में २१ बिचार किया जायगा । परन्तु जब पावल ने दोहाई दे कहा मुझे अगस्त महाराजा से बिचार किये जाने को रखिये तब मैं ने आज्ञा दिई कि जब लों मैं उसे कैसर के पास न भेजूं तब लों उस की रक्षा किई जाय । २२ तब आग्रिपा ने फीष्टु से कहा मैं आप भी उस मनुष्य की सुनने से प्रसन्न होता . उस ने कहा आप कल उस की सुनेंगे ॥

२३ सो दूसरे दिन जब आग्रिपा और बर्णीकी ने बड़ी धूमधाम से आके सहस्रपतियों और नगर के श्रेष्ठ मनुष्यों के संग सभा स्थान में प्रवेश किया और फीष्टु ने आज्ञा किई तब वे पावल को ले आये । २४ और फीष्टु ने कहा हे राजा आग्रिपा और हे सब मनुष्यो जो यहां हमारे संग हो आप लोग इस को देखते हैं जिस के विषय में सारे यिहूदियों ने यिरूशलीम में और यहां भी मुझ से बिन्ती करके पुकारा है कि इस का और जीता रहना उचित नहीं है । २५ परन्तु यह जानके कि उस ने बध के योग्य कुछ नहीं किया है और कि उस ने आप अगस्त महाराजा की दोहाई दिई मैं ने उसे भेजने को ठहराया । २६ परन्तु मैं ने उस के विषय में कोई निश्चय की बात नहीं पाई है जो मैं महाराजा के पास लिखूं इस लिये मैं उसे आप लोगों के साम्ने और निज करके हे राजा आग्रिपा आप के साम्ने लाया हूं कि बिचार किये जाने के पीछे मुझे कुछ लिखने को मिले । २७ क्योंकि बन्धुए को भेजने में दोष जो उस पर लगाये गये हैं नहीं बताना मुझे असंगत देख पड़ता है ॥

छब्बीसवां पर्ब्ब ।

१ आग्रिपा ने पावल से कहा तुझे अपने विषय में बोलने की आज्ञा दिई जाती है . तब पावल हाथ बढ़ाके उत्तर देने लगा . २ कि हे राजा आग्रिपा जिन बातों से यिहूदी लोग मुझ पर दोष लगाते हैं उन सब बातों के विषय में मैं अपने को धन्य समझता हूं कि आज आप के

३ आगे उत्तर देऊंगा . निज करके इसी लिये कि आप यिहूदियों के बीच के सब व्यवहारों और विवादों को बूझते हैं . सो मैं आप से बिन्ती करता हूं ४ धीरज करके मेरी सुन लीजिये । लड़कपन से मेरी जैसी चाल चलन आरंभ से यिरूशलीम में मेरे लोगों के बीच में थी सो सब यिहूदी लोग जानते हैं । ५ वे जो साक्षी देने चाहते तो आदि से मुझे पहचानते हैं कि हमारे धर्म्म के सब से खरे पन्थ के अनुसार मैं फरीशी ६ की चाल चला । और अब जो प्रतिज्ञा ईश्वर ने पितरों से किई में उसी की आशा के विषय में विचार किये जाने ७ को खड़ा हूं . जिसे हमारे बारहों कुल रात दिन यत्न से सेवा करते हुए पाने की आशा रखते हैं . इसी आशा के विषय में हे राजा अग्रिपा यिहूदी लोग मुझ पर दोष लगाते हैं ॥

८ आप लोगों के यहां यह क्यों विश्वास के अयोग्य जाना जाता है कि ईश्वर ९ मृतकों को जिलाता । मैं ने तो अपने में समझा कि यीशु नासरी के नाम के विरुद्ध बहुत कुछ करना उचित है । १० और मैं ने यिरूशलीम में यही किया भी और प्रधान याजकों से अधिकार पाके पवित्र लोगों में से बहुतों को बन्दीगृहों में मूंद रखा और जब वे घात किये जाते थे तब मैं ने अपनी सम्मति दिई । ११ और समस्त सभा के घरों में मैं बार बार उन्हें ताड़ना देके यीशु की निन्दा करवाता था और उन पर अत्यन्त क्रोध से उन्मत्त होके बाहर के नगरों तक १२ भी सताता था । इस बीच में जब मैं प्रधान याजकों से अधिकार और आज्ञा १३ लेके दमेसक को जाता था . तब हे राजा मार्ग में दो पहर दिन को मैं ने स्वर्ग से सूर्य्य के तेज से अधिक एक ज्योति अपनी और अपने संग जानेहारों की चारों ओर चमकती हुई देखी । १४ और जब हम सब भूमि पर गिर पड़े तब मैं ने एक शब्द सुना जो मुझ से बोला और इब्रीय भाषा में कहा हे शावल हे शावल तू मुझे क्यों सताता है . पैनों पर लात मारना तेरे लिये कठिन है । १५ तब मैं ने कहा हे प्रभु तू कौन है . उस ने कहा मैं यीशु हूं जिसे तू सताता है । १६ परन्तु उठके अपने पांवों पर खड़ा हो क्योंकि मैं ने तुझे इसी लिये दर्शन दिया है कि उन बातों का जो तू ने देखी हैं और जिन में मैं तुझे दर्शन देऊंगा तुझे सेवक और साक्षी ठहराऊं । १७ और मैं तुझे तेरे लोगों से और अन्यदेशियों से बचाऊंगा जिन के पास मैं अब तुझे भेजता हूं . १८ कि तू उन की आंखें खोले इस लिये कि वे अंधियारे से उजियाले की ओर और शैतान के अधिकार से ईश्वर की ओर फिरें जिस्तें पापमोचन और उन लोगों में जो मुझ पर विश्वास करने से पवित्र किये गये हैं अधिकार पावें ॥

१९ सो हे राजा अग्रिपा मैं ने उस स्वर्गीय दर्शन की बात न टाली . २० परन्तु पहिले दमेसक और यिरूशलीम के निवासियों को तब यिहूदिया के सारे देश में और अन्यदेशियों को पश्चात्ताप करने का और ईश्वर की ओर फिरने का और पश्चात्ताप के योग्य काम करने का उपदेश दिया । २१ इन बातों के कारण यिहूदी लोग मुझे मन्दिर में पकड़के मार डालने की चेष्टा करते थे । २२ सो ईश्वर से सहायता पाके मैं छोटे और बड़े को साक्षी देता हुआ आज लों ठहरा हूं और उन बातों को छोड़ कुछ नहीं कहता हूं जो भविष्यद्वक्ताओं ने और मूसा ने भी कहा कि होनेवाली हैं . २३ अर्थात

खीष्ट को दुःख भोगना होगा और वही मृतकों में से पहिले उठके हमारे लोगों को और अन्यदेशियों को ज्योति की कथा सुनावेगा ॥

२४ जब वह यह उत्तर देता था तब फीष्टु ने बड़े शब्द से कहा हे पावल तू बौड़हा है बहुत विद्या तुझे बौड़हा २५ करती है। पर उस ने कहा हे महामहिमन फीष्टु मैं बौड़हा नहीं हूं परन्तु सच्चाई और बुद्धि की बातें कहता हूं। २६ इन बातों को राजा बूझता है जिस के आगे मैं खोलके बोलता हूं क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं कि इन बातों में से कोई बात उस से छिपी नहीं है कि यह तो कोने में नहीं किया गया है। २७ हे राजा अग्रिपा क्या आप भविष्यद्वक्ताओं का विश्वास करते हैं. मैं जानता हूं कि आप विश्वास करते हैं। २८ तब अग्रिपा ने पावल से कहा तू थोड़े में मुझे खीष्टियान होने को मनाता है। २९ पावल ने कहा ईश्वर से मेरी प्रार्थना यह है कि क्या थोड़े में क्या बहुत में केवल आप नहीं परन्तु सब लोग भी जो आज मेरी सुनते हैं इन बन्धनों को छोड़के ऐसे हो जायें जैसा मैं हूं ॥

३० जब उस ने यह कहा तब राजा और अध्यक्ष और बर्णीकी और उन के संग ३१ बैठनेहारे उठे. और अलग जाके आपस में बोले यह मनुष्य बध किये जाने अथवा बांधे जाने के योग्य कुछ ३२ नहीं करता है। तब अग्रिपा ने फीष्टु से कहा जो यह मनुष्य कैसर की दोहाई न दिये होता तो छोड़ा जा सकता ॥

सत्ताईसवां पर्व्व।

१ जब यह ठहराया गया कि हम जहाज पर इतालिया को जायें तब उन्हों ने पावल को और कितने और बन्धुओं को भी यूलिय नाम अगस्त की पलटन के एक शतपति के हाथ सौंप दिया। २ और आद्रामुत्तिया नगर के एक जहाज पर जो आशिया के तीर पर के स्थानों को जाता था चढ़के हम ने खोल दिया और अरिस्तार्ख नाम थिसलोनिका का एक माकिदोनी हमारे संग था। ३ दूसरे दिन हम ने सीदोन में लगान किया और यूलिय ने पावल के साथ प्रेम से व्यवहार करके उसे मित्रों के पास जाने और पाहुन होने दिया। ४ वहां से खोलके बयार के सन्मुख होने के कारण हम कुप्रस के नीचे से होके चले. ५ और किलिकिया और पंफुलिया के निकट के समुद्र में होके लुकिया देश के मुरा नगर पहुंचे। ६ वहां शतपति ने सिकन्दरिया के एक जहाज को जो इतालिया को जाता था पाके हमें उस पर चढ़ाया। ७ बहुत दिनों में हम धीरे धीरे चलके और बयार जो हमें चलने न देती थी इस लिये कठिनता से कनीद के सामे पहुंचके सलमोनी के सामे सामे क्रीती के नीचे चले. ८ और कठिनता से उस के पास से होते हुए शुभलंगरबारी नाम एक स्थान में पहुंचे जहां से लासिया नगर निकट था ॥

९ जब बहुत दिन बीत गये थे और जलयात्रा में जोखिम होती थी क्योंकि उपवास पर्व्व भी अब बीत चुका था १० तब पावल ने उन्हें समझाके कहा. हे मनुष्यो मुझे सूझ पड़ता है कि इस जलयात्रा में हानि और बहुत टूटी केवल बोझाई और जहाज की नहीं परन्तु हमारे प्राणों की भी हुआ चाहती है। ११ परन्तु शतपति ने पावल की बातों से अधिक मांझी की और जहाज के स्वामी की मान लिई। १२ और वह लंगरबारी जाड़ा का समय काटने को अच्छी न थी इस लिये बहुतेरों ने

परामर्श दिया कि वहां से भी खोलके जो किसी रीति से हो सके तो फैनीकी नाम क्रीती की एक लंगरबारी में जो दक्खिन पश्चिम और उत्तर पश्चिम की ओर खुलती है जा रहें और वहां जाड़े का समय काटें॥

१३ जब दक्खिन की बयार मन्द मन्द बहने लगी तब उन्हों ने यह समझके कि हमारा अभिप्राय सुफल हुआ है लंगर उठाया और तीर धरे धरे क्रीती १४ के पास से जाने लगे। परन्तु थोड़ी बेर में क्रीती पर से अति प्रचण्ड एक बयार उठी जो उरकुलुदन कहावती १५ है। यह जब जहाज पर लगी और वह बयार के साम्हे ठहर न सका तब हम ने उसे जाने दिया और उड़ाये हुए १६ चले गये। तब क्लौदा नाम एक छोटे टापू के तीरे से जाके हम कठिनता १७ से डोंगी को धर सके। उसे उठाके उन्हों ने अनेक उपाय करके जहाज को नीचे से बांधा और सुर्ती नाम बालू पर टिक जाने के भय से सम्भार गिराके १८ यूंहीं उड़ाये जाते थे। तब निपट बड़ी आंधी हम पर चलती थी इस लिये उन्हों ने दूसरे दिन कुछ बोझाई १९ फेंक दिई। और तीसरे दिन हम ने अपने हाथों से जहाज की सामग्री फेंक २० दिई। और जब बहुत दिनों तक न सूर्य्य न तारे दिखाई दिये और बड़ी आंधी चलती रही अन्त में हमारे बचने की सारी आशा जाती रही॥

२१ जब वे बहुत उपवास कर चुके तब पावल ने उन के बीच में खड़ा होके कहा हे मनुष्यो उचित था कि तुम मेरी बात मानते और क्रीती से न खोलते न यह हानि और टूटी उठाते। २२ पर अब मैं तुम से बिन्ती करता हूं कि ढाढ़स बांधो क्योंकि तुम्हों में से किसी के प्राण का नाश न होगा केवल जहाज का। २३ क्योंकि ईश्वर जिस का मैं हूं और जिस की सेवा करता हूं उस का एक दूत इसी रात मेरे निकट खड़ा हुआ. २४ और कहा हे पावल मत डर तुझे कैसर के आगे खड़ा होना अवश्य है और देख ईश्वर ने सभों को जो तेरे संग जलयात्रा करते हैं तुझे दिया है। २५ इस लिये हे मनुष्यो ढाढ़स बांधो क्योंकि मैं ईश्वर का बिश्वास करता हूं कि जिस रीति से मुझे कहा गया है उसी रीति से होगा। २६ परन्तु हमें किसी टापू पर पड़ना होगा॥

२७ जब चौदहवीं रात पहुंची ज्योंहीं हम आद्रिया समुद्र में इधर उधर उड़ाये जाते थे त्योंहीं आधी रात के निकट मल्लाहों ने जाना कि हम किसी देश के समीप पहुंचते हैं। २८ और थाह लेके उन्हों ने बीस पुरसे पाये और थोड़ा आगे बढ़के फिर थाह लेके पन्द्रह पुरसे पाये। २९ तब पत्थरैले स्थानों पर टिक जाने के डर से उन्हों ने जहाज की पिछाड़ी से चार लंगर डाले और भोर का होना मनाते रहे। ३० परन्तु जब मल्लाह लोग जहाज पर से भागने चाहते थे और गलही से लंगर डालने के बहाना से डोंगी समुद्र में उतार दिई. ३१ तब पावल ने शतपति से और योद्धाओं से कहा जो ये लोग जहाज पर न रहें तो तुम नहीं बच सकते हो। ३२ तब योद्धाओं ने डोंगी के रस्से काटके उसे गिरा दिया॥

३३ जब भोर होने पर थी तब पावल ने यह कहके सभों से भोजन करने की बिन्ती किई कि आज चौदह दिन हुए कि तुम लोग आस देखते हुए उपवासी रहते हो और कुछ भोजन न किया है। ३४ इस लिये मैं तुम से बिन्ती करता हूं

कि भोजन करो जिस से तुम्हारा बचाव होगा क्योंकि तुम में से किसी के सिर ३५ से एक बाल न गिरेगा । और यह बातें कहके औ रोटी लेके उस ने सभों के साम्ने ईश्वर का धन्य माना और तोड़के ३६ खाने लगा । तब उन सभों ने भी ढाढ़स ३७ बांधके भोजन किया । हम सब जो जहाज पर थे दो सौ छिहत्तर जन थे । ३८ भोजन से तृप्त होके उन्हों ने गेहूं को समुद्र में फेंकके जहाज को हलका किया ॥

३९ जब बिहान हुआ तब वे उस देश को नहीं चीन्हते थे परन्तु किसी खाल को देखा जिस का चौरस तीर था और बिचार किया कि जो हो सके तो इसी ४० पर जहाज को टिकावें । तब उन्हों ने लंगरों को काटके समुद्र में छोड़ दिया और उसी समय पतवारों के बंधन खोल दिये और बयार के सन्मुख पाल चढ़ाके ४१ तीर की ओर चले । परन्तु दो समुद्रों के संगम के स्थान में पड़के उन्हों ने जहाज को टिकाया और गलही तो गड़ गई और हिल न सकी परन्तु पिछाड़ी ४२ लहरों की बरियाई से टूट गई । तब योद्धाओं का यह परामर्श था कि बन्धुओं को मार डालें ऐसा न हो कि कोई ४३ पैरके निकल भागे । परन्तु शतपति ने पावल को बचाने की इच्छा से उन्हें उस मत से रोका और जो पैर सकते थे उन्हें आज्ञा दिई कि पहिले कूदके तीर ४४ पर निकल चलें, और दूसरों को कि कोई पटरों पर और कोई जहाज में की बस्तुओं पर निकल आयें, इस रीति से सब कोई तीर पर बच निकले ॥

अठाईसवां पर्व्व ।

१ जब वे बच गये तब जाना कि यह २ टापू मिलिता कहावता है । और उन जंगली लोगों ने हमों से अनोखा प्रेम किया क्योंकि मेंह के कारण जो पड़ता था और जाड़े के कारण उन्हों ने आग सुलगाके हम सभों को ग्रहण किया ॥

३ जब पावल ने बहुत सी लकड़ी बटोरके आग पर रखी तब एक सांप ने आंच से निकलके उस का हाथ धर ४ लिया । और जब उन जंगलियों ने सांप को उस के हाथ में लटकते हुए देखा तब आपस में कहा निश्चय यह मनुष्य हत्यारा है जिसे यद्यपि समुद्र से बच गया तौभी दंडदायक ने जीते रहने ५ नहीं दिया है । तब उस ने सांप को आग में झटक दिया और कुछ दुःख न ६ पाया । पर वे बाट देखते थे कि वह सूज जायगा अथवा अचांचक मरके गिर पड़ेगा परन्तु जब वे बहुत बेर लों बाट देखते रहे और देखा कि उस को कुछ नहीं बिगड़ता है तब और ही बिचार कर कहा यह तो देवता है ॥

७ उस स्थान के आसपास पबलिय नाम उस टापू के प्रधान की भूमि थी, उस ने हमें ग्रहण करके तीन दिन प्रीति-८ भाव से पहुनई किई । पबलिय का पिता ज्वर से और आंवलोहू से रोगी पड़ा था सो पावल ने उस पास घर में प्रवेश करके प्रार्थना किई और उस पर ९ हाथ रखके उसे चंगा किया । जब यह हुआ था तब दूसरे लोग भी जो उस टापू में रोगी थे आके चंगे किये १० गये । और उन्हों ने हम लोगों का बहुत आदर किया और जब हम खोलने पर थे तब जो कुछ आवश्यक था सो दे दिया ॥

११ तीन मास के पीछे हम लोग सिकन्दरिया के एक जहाज पर जिस ने उस टापू में जाड़े का समय काटा था जिस का चिन्ह दियस्कूरे था चल १२ निकले । सुराकूस नगर में लगान करके १३ हम तीन दिन रहे । वहां से हम घूमके रेगिया नगर पहुंचे और एक दिन

के पीछे दक्खिन की बयार जो उठी तो दूसरे दिन पुतियली नगर में आये। १४ वहां भाइयों को पाके हम उन के यहां सात दिन रहने को बुलाये गये और इस १५ रीति से रोम को चले। वहां से भाई लोग हमारा समाचार सुनके अप्पिय-चौक और तीन सराय लों हम से मिलने को निकल आये जिन्हें देखके पावल ने ईश्वर का धन्य मानके ढाढ़स बांधा॥

१६ जब हम रोम में पहुंचे तब शतपति ने बन्धुओं को सेनापति के हाथ सौंप दिया परन्तु पावल को एक योद्धा के संग जो उस की रक्षा करता था अकेला १७ रहने की आज्ञा हुई। तीन दिन के पीछे पावल ने यिहूदियों के बड़े बड़े लोगों को एकट्ठे बुलाया और जब वे एकट्ठे हुए तब उन से कहा हे भाइयो मैं ने हमारे लोगों के अथवा पितरों के व्यवहारों के विरुद्ध कुछ नहीं किया था तौभी बन्धुआ होके यिरूशलीम से १८ रोमियों के हाथ में सौंपा गया। उन्हों ने मुझे जांचके छोड़ देने चाहा क्योंकि मुझ में बध के योग्य कोई दोष न १९ था। परन्तु जब यिहूदी लोग इस के विरुद्ध बोलने लगे तब मुझे कैसर की दोहाई देना अवश्य हुआ पर यह नहीं कि मुझे अपने लोगों पर कोई दोष २० लगाना है। इस कारण से मैं ने आप लोगों को बुलाया कि आप लोगों को देखके बात करूं क्योंकि इस्रायेल की आशा के लिये मैं इस जंजीर से बन्धा २१ हुआ हूं। तब वे उस से बोले न हमों ने आप के विषय में यिहूदिया से चिट्ठियां पाईं न भाइयों में से किसी ने आके आप के विषय में बुरा कुछ २२ बताया अथवा कहा। परन्तु आप का मत क्या है सो हम आप से सुना चाहते हैं क्योंकि इस पन्थ के विषय में हम जानते हैं कि सर्व्वत्र इस के विरुद्ध में बातें किई जाती हैं। २३ सो उन्हों ने उस का एक दिन ठहराया और बहुत लोग बास पर उस पास आये जिन से वह ईश्वर के राज्य की साक्षी देता हुआ और यीशु के विषय में की बातें उन्हें मूसा की व्यवस्था से और भविष्यद्वक्ताओं के पुस्तक से भी समझाता हुआ भोर से सांझ लों चर्चा करता रहा। २४ तब कितनों ने उन बातों को मान लिया और कितनों ने प्रतीति न किई। २५ सो वे आपस में एक मन न होके जब पावल ने उन से एक बात कही थी तब बिदा हुए कि पवित्र आत्मा ने हमारे पितरों से यिशैयाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा से अच्छा कहा, २६ कि इन लोगों के पास जाके कह तुम सुनते हुए सुनोगे परन्तु नहीं बूझोगे और देखते हुए देखोगे पर तुम्हें न सूझेगा। २७ क्योंकि इन लोगों का मन मोटा हो गया है और वे कानों से ऊंचा सुनते हैं और अपने नेत्र मूंद लिये हैं ऐसा न हो कि वे कभी नेत्रों से देखें और कानों से सुनें और मन से समझें और फिर आवें और मैं उन्हें चंगा करूं। २८ सो तुम जानो कि ईश्वर के त्राण की कथा अन्यदेशियों के पास भेजी गई है और वे सुनेंगे। २९ जब वह यह बातें कह चुका तब यिहूदी लोग आपस में बहुत विवाद करते हुए चले गये॥

३० और पावल ने दो बरस भर अपने भाड़े के घर में रहके सभों को जो उस पास आते थे ग्रहण किया, ३१ और बिना रोक टोक बड़े साहस से ईश्वर के राज्य की कथा सुनाता और प्रभु यीशु खीष्ट के विषय में की बातें सिखाता रहा॥

रोमियों को पावल प्रेरित की पत्री।

पहिला पर्ब्ब ।

१ पावल जो यीशु खीष्ट का दास और बुलाया हुआ प्रेरित और ईश्वर के सुसमाचार के लिये अलग किया गया है, २ वह सुसमाचार जिस की प्रतिज्ञा उस ने अपने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा ३ धर्म्मपुस्तक में आगे से किई थी, अर्थात उस के पुत्र हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के विषय में का सुसमाचार जो शरीर के भाव से दाऊद के बंश में से उत्पन्न ४ हुआ, और पवित्रता के आत्मा के भाव से मृतकों के जी उठने से पराक्रम सहित ईश्वर का पुत्र ठहराया गया, ५ जिस से हम ने अनुग्रह और प्रेरिताई पाई है कि उस के नाम के कारण सब देशों के लोग विश्वास से आज्ञाकारी ६ हो जायें, जिन्हों में तुम भी यीशु खीष्ट ७ के बुलाये हुए हो, रोम के उन सब निवासियों को जो ईश्वर के प्यारे और बुलाये हुए पवित्र लोग हैं, तुम्हें हमारे पिता ईश्वर और प्रभु यीशु खीष्ट से अनुग्रह और शांति मिले ॥

८ पहिले मैं यीशु खीष्ट के द्वारा से तुम सभों के लिये अपने ईश्वर का धन्य मानता हूं कि तुम्हारे विश्वास का चर्चा सारे जगत में किया जाता है। ९ क्योंकि ईश्वर जिस की सेवा मैं अपने मन से उस के पुत्र के सुसमाचार में करता हूं मेरा साक्षी है कि मैं तुम्हें १० कैसे निरन्तर स्मरण करता हूं, और नित्य अपनी प्रार्थनाओं में बिन्ती करता हूं कि किसी रीति से अब भी तुम्हारे पास आने को मेरी यात्रा ईश्वर की ११ इच्छा से सुफल होय। क्योंकि मैं तुम्हें देखने को लालसा करता हूं कि मैं कोई आत्मिक बरदान तुम्हारे संग बांट लेऊं जिस्तें तुम स्थिर किये जाओ, १२ अर्थात कि मैं तुम्हों में अपने अपने परस्पर बिश्वास के द्वारा से तुम्हारे संग शांति पाऊं। १३ परन्तु हे भाइयो मैं नहीं चाहता हूं कि तुम इस से अनजान रहो कि मैं ने बहुत बार तुम्हारे पास आने का बिचार किया जिस्तें जैसा दूसरे अन्यदेशियों में तैसा तुम्हों में भी मेरा कुछ फल होवे परन्तु अब लों मैं रोका रहा ॥

१४ मैं यूनानियों औ अन्यभाषियों का और बुद्धिमानों औ निर्बुद्धियों का ऋणी हूं। १५ यूं मैं तुम्हें भी जो रोम में रहते हो सुसमाचार सुनाने को तैयार हूं। १६ क्योंकि मैं खीष्ट के सुसमाचार से नहीं लजाता हूं इस लिये कि हर एक बिश्वास करनेहारे के लिये पहिले यिहूदी फिर यूनानी के लिये वह त्राण के निमित्त ईश्वर का सामर्थ्य है। १७ क्योंकि उस में ईश्वर का धर्म्म बिश्वास से बिश्वास के लिये प्रगट किया जाता है जैसा लिखा है कि बिश्वास से धर्म्मी जन जीयेगा ॥

१८ जो मनुष्य सच्चाई को अधर्म्म से रोकते हैं उन की सारी अभक्ति और अधर्म्म पर ईश्वर का क्रोध स्वर्ग से प्रगट किया जाता है। १९ इस कारण कि ईश्वर के विषय का ज्ञान उन में प्रगट है क्योंकि ईश्वर ने उन पर प्रगट किया। २० क्योंकि जगत की सृष्टि से उस के अदृश्य गुण अर्थात उस के सनातन सामर्थ्य और ईश्वरत्व देखे जाते हैं क्योंकि वे उस के कार्य्यों से पहचाने जाते हैं यहां लों कि वे मनुष्य निरुत्तर

२१ हैं। इस कारण कि उन्हों ने ईश्वर को जानके न ईश्वर के योग्य गुणानुवाद किया न धन्य माना परन्तु अनर्थक बाद बिवाद करने लगे और उन का निर्बुद्धि २२ मन अंधियारा हो गया। वे अपने को २३ ज्ञानी कहके मूर्ख बन गये. और अबि-नाशी ईश्वर की महिमा को नाशमान मनुष्य और पंछियों और चौपायों और रेंगनेहारे जन्तुओं की मूर्त्ति की समानता से बदल डाला॥

२४ इस कारण ईश्वर ने उन्हें उन के मन के अभिलाषों के अनुसार अशुद्धता के लिये त्याग दिया कि वे आपस में २५ अपने शरीरों का अनादर करें. जिन्हों ने ईश्वर की सच्चाई को झूठ से बदल डाला और सृष्टि की पूजा और सेवा सृजनहार की पूजा और सेवा से अधिक किई जो सर्व्वदा धन्य है. आमीन। २६ इस हेतु से ईश्वर ने उन्हें नीच काम-नाओं के बश में त्याग दिया कि उन की स्त्रियों ने भी स्वाभाविक ब्यवहार को उस से जो स्वभाव के बिरुद्ध है २७ बदल डाला। वैसे ही पुरुष भी स्त्री के संग स्वाभाविक ब्यवहार छोड़के अपनी कामुकता में एक दूसरे की ओर जलने लगे और पुरुषों के साथ पुरुष निर्लज्ज कर्म्म करते थे और अपने भ्रम का फल जो उचित था अपने में भोगते २८ थे। और ईश्वर को चित्त में रखना जब कि उन्हें अच्छा न लगा इस लिये ईश्वर ने उन्हें निकृष्ट मन के बश में त्याग २९ दिया कि वे अनुचित कर्म्म करें. और सारे अधर्म्म औ ब्यभिचार औ दुष्टता औ लोभ औ बुराई से भरे हुए और डाह औ नरहिंसा औ बैर औ छल औ ३० दुर्भाव से भरपूर हों. और फुसफुसिये अपवादी ईश्वरद्रोही निन्दक अभिमानी दंभी बुरी बातों के बनानेहारे माता पिता की आज्ञा लंघन करनेहारे. ३१ निर्बुद्धि झूठे मयारहित क्षमारहित औ ३२ निर्दय होवें. जो ईश्वर की बिधि जानते हैं कि ऐसे ऐसे काम करनेहारे मृत्यु के योग्य हैं तौभी न केवल उन कामों को करते हैं परन्तु करनेहारों से प्रसन्न भी होते हैं॥

दूसरा

१ सो हे मनुष्य तू कोई हो जो दूसरों का बिचार करता हो तू निरुत्तर है. जिस बात में तू दूसरे का बिचार करता है उसी बात में अपने को दोषी ठहराता है क्योंकि तू जो बिचार करता है आप २ ही वे ही काम करता है। पर हम जानते हैं कि ऐसे ऐसे काम करनेहारों पर ईश्वर की दंड की आज्ञा यथार्थ ३ है। और हे मनुष्य जो ऐसे ऐसे काम करनेहारों का बिचार करता और आप ही वे ही काम करता है क्या तू यही समझता कि मैं तो ईश्वर की दंड की आज्ञा से ४ बचूंगा। अथवा क्या तू उस की कृपा औ सहनशीलता औ धीरज के धन को तुच्छ जानता है और यह नहीं बूझता है कि ईश्वर की कृपा तुझे पश्चात्ताप ५ करने को सिखाती है. परन्तु अपनी कठोरता और निःपश्चात्तापी मन के हेतु से अपने लिये क्रोध के दिन लों हां ईश्वर के यथार्थ बिचार के प्रगट होने के दिन लों क्रोध का संचय करता ६ है। वह हर एक मनुष्य को उस के ७ कर्म्मों के अनुसार फल देगा। जो सुकर्म्म में स्थिर रहने से महिमा और आदर और अमरता ढूंढ़ते हैं उन्हें वह अनन्त जीवन ८ देगा। परन्तु जो बिबादी हैं और सत्य को नहीं मानते पर अधर्म्म को मानते ९ हैं उन पर कोप औ क्रोध पड़ेगा। हर एक मनुष्य के प्राण पर जो बुरा करता है क्लेश और संकट पड़ेगा पहिले यिहूदी १० फिर यूनानी के। पर हर एक को जो

भला करता है महिमा और आदर और कल्याण होगा पहिले यिहूदी फिर यूनानी ११ को । क्योंकि ईश्वर के यहां पक्षपात नहीं है ॥

१२ क्योंकि जितने लोगों ने बिना व्यवस्था पाप किया है सो बिना व्यवस्था नाश भी होंगे और जितने लोगों ने व्यवस्था पाके पाप किया है सो व्यवस्था के द्वारा १३ से दंड के योग्य ठहराये जायेंगे । क्योंकि व्यवस्था के सुननेहारे ईश्वर के यहां धर्म्मी नहीं हैं परन्तु व्यवस्था पर चलने- १४ हारे धर्म्मी ठहराये जायेंगे । फिर जब अन्यदेशी लोग जिन के पास व्यवस्था नहीं है स्वभाव से व्यवस्था की बातों पर चलते हैं तब यद्यपि व्यवस्था उन के पास नहीं है तौभी वे अपने लिये १५ आप ही व्यवस्था हैं । वे व्यवस्था का कार्य्य अपने अपने हृदय में लिखा हुआ दिखाते हैं और उन का मन भी साक्षी देता है और उन की चिन्ताएं परस्पर दोष लगातीं अथवा दोष का उत्तर देती १६ हैं । यह उस दिन होगा जिस दिन ईश्वर मेरे सुसमाचार के अनुसार यीशु खीष्ट के द्वारा से मनुष्यों की गुप्त बातों का विचार करेगा ॥

१७ देख तू यिहूदी कहावता है और व्यवस्था पर भरोसा रखता है और ईश्वर १८ के विषय में घमंड करता है . और उस की इच्छा को जानता है और व्यवस्था की शिक्षा पाके विशेष्य बातों को परखता १९ है . और अपने पर भरोसा रखता है कि मैं अन्धों का अगुवा और अन्धकार २० में रहनेहारों का प्रकाश . और निर्बुद्धियों का शिक्षक और बालकों का उपदेशक हूं और ज्ञान और सच्चाई का रूप मुझे २१ व्यवस्था में मिला है । सो क्या तू जो दूसरे को सिखाता है अपने को नहीं सिखाता है . क्या तू जो चोरी न करने का उपदेश देता है आप ही चोरी करता है । क्या तू जो परस्त्रीगमन न २२ करने को कहता है आप ही परस्त्री- गमन करता है . क्या तू जो मूरतों से घिन करता है पवित्र वस्तु चुराता है । २३ क्या तू जो व्यवस्था के विषय में घमंड करता है व्यवस्था को लंघन करने से २४ ईश्वर का अनादर करता है । क्योंकि जैसा लिखा है तैसा ईश्वर का नाम तुम्हारे कारण अन्यदेशियों में निन्दित होता है ॥

२५ जो तू व्यवस्था पर चले तो खतने से लाभ है परन्तु जो तू व्यवस्था को लंघन किया करे तो तेरा खतना अखतना हो २६ गया है । सो यदि खतनाहीन मनुष्य व्यवस्था की विधियों का पालन करे तो क्या उस का अखतना खतना न गिना २७ जायगा । और जो मनुष्य प्रकृति से खतनाहीन होके व्यवस्था को पूरी करे सो क्या तुझे जो लेख और खतना पाके व्यवस्था को लंघन किया करता है दोषी न २८ ठहरावेगा । क्योंकि जो प्रगट में यिहूदी है सो यिहूदी नहीं और खतना जो प्रगट में अर्थात देह में है सो खतना नहीं । २९ परन्तु यिहूदी वह है जो गुप्त में यिहूदी है और मन का खतना जो लेख से नहीं पर आत्मा से है सोई खतना है . ऐसे यिहूदी की प्रशंसा मनुष्यों की नहीं पर ईश्वर की ओर से है ॥

तीसरा पर्ब्ब ।

१ तो यिहूदी की क्या श्रेष्ठता हुई २ अथवा खतने का क्या लाभ हुआ । सब प्रकार से बहुत कुछ . पहिले यह कि ईश्वर की बाणियां उन के हाथ सौंपी ३ गईं । जो कितनों ने विश्वास न किया तो क्या हुआ . क्या उन का अविश्वास ईश्वर के विश्वास को व्यर्थ ठहरा- ४ वेगा । ऐसा न हो . ईश्वर सच्चा पर

हर एक मनुष्य झूठा होय जैसा लिखा है कि जिस्तें तू अपनी बातों में निर्दोष ठहराया जाय और तेरा बिचार किये जाने में तू जय पावे ॥

५ परन्तु यदि हमारा अधर्म्म ईश्वर के धर्म्म पर प्रमाण देता है तो हम क्या कहें, क्या ईश्वर जो क्रोध करता है अन्यायी है, इस को मैं मनुष्य की ६ रीति पर कहता हूं। ऐसा न हो, नहीं तो ईश्वर क्योंकर जगत का ७ बिचार करेगा। परन्तु यदि ईश्वर की सच्चाई उस की महिमा के लिये मेरी झुठाई के हेतु से अधिक करके प्रगट हुई तो मैं क्यों अब भी पापी की नाईं ८ दंड के योग्य ठहराया जाता हूं। तो क्या यह भी न कहा जाय जैसा हमारी निन्दा किई जाती है और जैसा कितने लोग बोलते कि हम कहते हैं कि आओ हम बुराई करें जिस्तें भलाई निकले, ऐसों पर दंड की आज्ञा यथार्थ है ॥

९ तो क्या, क्या हम उन से अच्छे हैं, कभी नहीं क्योंकि हम प्रमाण दे चुके हैं कि यिहूदी और यूनानी भी १० सब पाप के बश में हैं, जैसा लिखा है कि कोई धर्म्मी जन नहीं है एक ११ भी नहीं, कोई बूझनेहारा नहीं कोई १२ ईश्वर का ढूंढनेहारा नहीं। सब लोग भटक गये हैं वे सब एक संग निकम्मे हुए हैं कोई भलाई करनेहारा नहीं १३ एक भी नहीं है। उन का गला खुली हुई कबर है उन्हों ने अपनी जीभों से छल किया है सांपों का बिष उन के १४ होंठों के नीचे है, और उन का मुंह १५ स्राप और कड़वाहट से भरा है। उन के पांव लोहू बहाने को फुर्तीले हैं। १६ उन के मार्गों में नाश और क्लेश है, १७ और उन्हों ने कुशल का मार्ग नहीं जाना है। उन के नेत्रों के आगे ईश्वर १८ का कुछ भय नहीं है ॥

हम जानते हैं कि व्यवस्था जो कुछ १९ कहती है सो उन के लिये कहती है जो व्यवस्था के अधीन हैं इस लिये कि हर एक मुंह बन्द किया जाय और सारा संसार ईश्वर के आगे दंड के योग्य ठहरे। इस कारण कि व्यवस्था २० के कर्म्मों से कोई प्राणी उस के आगे धर्म्मी नहीं ठहराया जायगा क्योंकि व्यवस्था के द्वारा पाप की पहचान होती है ॥

पर अब व्यवस्था से न्यारे ईश्वर २१ का धर्म्म प्रगट हुआ है जिस पर व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता लोग साक्षी देते हैं। और यह ईश्वर का धर्म्म यीशु ख्रीष्ट २२ पर बिश्वास करने से सभों के लिये और सभों पर है जो बिश्वास करते हैं क्योंकि कुछ भेद नहीं है। क्योंकि सभों ने २३ पाप किया है और ईश्वर की प्रशंसा योग्य नहीं होते हैं, पर उस के अनुग्रह २४ से उस उद्धार के द्वारा जो ख्रीष्ट यीशु में है सेंतमेंत धर्म्मी ठहराये जाते हैं। उस को ईश्वर ने प्रायश्चित्त स्थापन २५ किया कि बिश्वास के द्वारा उस के लोहू से प्रायश्चित्त होय जिस्तें आगे किये हुए पापों से ईश्वर की सहनशीलता से आनाकानी जो किई गई तिस के कारण वह अपना धर्म्म प्रगट करे, हां इस वर्त्तमान समय में अपना २६ धर्म्म प्रगट करे यहां लों कि यीशु के बिश्वास के अवलंबों को धर्म्मी ठहराने में भी धर्म्मी ठहरे ॥

तो यह घमंड करना कहां रहा, २७ वह वर्ज्जित हुआ, कौन व्यवस्था के द्वारा से, क्या कर्म्मों की, नहीं परन्तु बिश्वास की व्यवस्था के द्वारा से। इस लिये हम यह सिद्धान्त करते हैं कि २८

बिना व्यवस्था के कर्म्मों से मनुष्य बिश्वास से धर्म्मी ठहराया जाता है । २९ क्या ईश्वर केवल यिहूदियों का ईश्वर है . क्या अन्यदेशियों का नहीं . हां ३० अन्यदेशियों का भी है । क्योंकि एक ही ईश्वर है जो खतना किये हुओं को बिश्वास से और खतनाहीनों को बिश्वास ३१ के द्वारा से धर्म्मी ठहरावेगा । तो क्या हम बिश्वास के द्वारा व्यवस्था को व्यर्थ ठहराते हैं . ऐसा न हो परन्तु व्यवस्था को स्थापन करते हैं ॥

चौथा पर्ब्ब ।

१ तो हम क्या कहें कि हमारे पिता इब्राहीम ने शरीर के अनुसार पाया है । २ यदि इब्राहीम कर्म्मों के हेतु से धर्म्मी ठहराया गया तो उसे बड़ाई करने को ३ जगह है । परन्तु ईश्वर के आगे नहीं है क्योंकि धर्म्मपुस्तक क्या कहता है . इब्राहीम ने ईश्वर का बिश्वास किया और यह उस के लिये धर्म्म गिना गया । ४ अब कार्य्य करनेहारे को मजूरी देना अनुग्रह की बात नहीं परन्तु ऋण की ५ बात गिना जाता है । परन्तु जो कार्य्य नहीं करता पर भक्तिहीन के धर्म्मी ठहरानेहारे पर बिश्वास करता है उस के लिये उस का बिश्वास धर्म्म गिना ६ जाता है । जैसा दाऊद भी उस मनुष्य की धन्यता जिस को ईश्वर बिना कर्म्मों से धर्म्मी ठहराये बखानता है . ७ कि धन्य वे जिन के कुकर्म्म क्षमा किये ८ गये और जिन के पाप ढांपे गये . धन्य वह मनुष्य जिसे परमेश्वर पापी न गिने ॥

९ तो यह धन्यता क्या खतना किये हुए लोगों ही के लिये है अथवा खतना-हीन लोगों के लिये भी है . क्योंकि हम कहते हैं कि इब्राहीम के लिये बिश्वास १० धर्म्म गिना गया । तो वह क्योंकर उस के लिये गिना गया . जब वह खतना किया हुआ था अथवा जब खतनाहीन था . जब खतना किया हुआ था सो नहीं परन्तु जब खतनाहीन था । ११ और उस ने खतने का चिन्ह पाया कि जो बिश्वास उस ने खतनाहीन दशा में किया था उस बिश्वास के धर्म्म की छाप होवे जिस्तें जो लोग खतनाहीन दशा में बिश्वास करते हैं वह उन सभों का पिता होय कि वे भी धर्म्मी ठहराये जायें . १२ और जो लोग न केवल खतना किये हुए हैं परन्तु हमारे पिता इब्रा-हीम के उस बिश्वास की लीक पर चलनेहारे भी हैं जो उस ने खतनाहीन दशा में किया था उन लोगों के लिये खतना किये हुओं का पिता ठहरे ॥

१३ क्योंकि यह प्रतिज्ञा कि इब्राहीम जगत का अधिकारी होगा न उस को न उस के वंश को व्यवस्था के द्वारा से मिली परन्तु बिश्वास के धर्म्म के द्वारा से । १४ क्योंकि यदि व्यवस्था के अवलंबी अधिकारी हैं तो बिश्वास व्यर्थ और प्रतिज्ञा निष्फल ठहराई गई है । १५ व्यवस्था तो क्रोध उपजाती है क्योंकि जहां व्यवस्था नहीं है तहां उल्लंघन भी नहीं । १६ इस कारण प्रतिज्ञा बिश्वास से हुई कि अनुग्रह की रीति पर होय इस लिये कि सारे वंश के लिये दृढ़ होय केवल उस के लिये नहीं जो व्यवस्था के अव-लंबी हैं परन्तु उस के लिये भी जो इब्रा-हीम के से बिश्वास के अवलंबी हैं । १७ वह तो उस के आगे जिस का उस ने बिश्वास किया अर्थात् ईश्वर के आगे जो मृतकों को जिलाता है और जो बातें नहीं हैं उन का नाम ऐसा लेता कि जैसा वे हैं हम सभों का पिता है जैसा लिखा है कि मैं ने तुझे बहुत देशों के लोगों का पिता ठहराया है ॥

१८ उस ने जहां आशा न रहते पड़ती थी तहां आशा रखके विश्वास किया इस लिये कि जो कहा गया था कि तेरा वंश इस रीति से होगा उस के अनुसार वह बहुत देशों के लोगों का पिता
१९ होय । और विश्वास में दुर्ब्बल न होके उस ने यद्यपि सौ एक बरस का था तौभी न अपने शरीर को जो अब मृतक सा हुआ था और न सार: के गर्भ की
२० मृतक की सी दशा को सोचा । उस ने ईश्वर की प्रतिज्ञा पर अविश्वास से सन्देह किया सो नहीं परन्तु विश्वास में दृढ़ होके ईश्वर की महिमा प्रगट
२१ किई . और निश्चय जाना कि जिस बात की उस ने प्रतिज्ञा किई है उसे
२२ करने को भी सामर्थ्य है । इस हेतु से यह उस के लिये धर्म्म गिना गया ॥
२३ पर न केवल उस के कारण लिखा
२४ गया कि उस के लिये गिना गया . परन्तु हमारे कारण भी जिन के लिये गिना जायगा अर्थात हमारे कारण जो उस पर विश्वास करते हैं जिस ने हमारे
२५ प्रभु यीशु को मृतकों में से उठाया . जो हमारे अपराधों के लिये पकड़वाया गया और हमारे धर्म्मी ठहराये जाने के लिये उठाया गया ॥

पांचवां पर्व्व ।

१ सो जब कि हम विश्वास से धर्म्मी ठहराये गये हैं तो हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के द्वारा हमें ईश्वर से मिलाप है ।
२ और भी उस के द्वारा हम ने इस अनुग्रह में जिस में स्थिर हैं विश्वास से पहुंचने का अधिकार पाया है और ईश्वर की महिमा की आशा के विषय
३ में बड़ाई करते हैं । और केवल यह नहीं परन्तु हम क्लेशों के विषय में भी बड़ाई करते हैं क्योंकि जानते हैं कि
४ क्लेश से धीरज . और धीरज से खरा निकलना और खरे निकलने से आशा
५ उत्पन्न होती है । और आशा लज्जित नहीं करती है क्योंकि पवित्र आत्मा के द्वारा से जो हमें दिया गया ईश्वर का प्रेम हमारे मन में उंडेला गया है ।
६ क्योंकि जब हम निर्ब्बल हो रहे थे तब ही खीष्ट समय पर भक्तिहीनों के लिये
७ मरा । धर्म्मी जन के लिये कोई मरे यह दुर्लभ है पर हां भले मनुष्य के लिये क्या जाने किसी को मरने का भी
८ साहस होय । परन्तु ईश्वर हमारी ओर अपने प्रेम का माहात्म्य यूं दिखाता है कि जब हम पापी हो रहे थे तब ही
९ खीष्ट हमारे लिये मरा । सो जब कि हम अब उस के लोहू के गुण से धर्म्मी ठहराये गये हैं तो बहुत अधिक करके हम उस के द्वारा क्रोध से बचेंगे ।
१० क्योंकि यदि हम जब शत्रु थे तब ईश्वर से उस के पुत्र की मृत्यु के द्वारा से मिलाये गये हैं तो बहुत अधिक करके हम मिलाये जाके उस के जीवन के
११ द्वारा त्राण पावेंगे । और केवल यह नहीं परन्तु हम अपने प्रभु यीशु खीष्ट के द्वारा से जिस के द्वारा हम ने अब मिलाप पाया है ईश्वर के विषय में भी बड़ाई करते हैं ॥
१२ इस लिये यह ऐसा है जैसा एक मनुष्य के द्वारा से पाप जगत में आया और पाप के द्वारा मृत्यु आई और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों पर बीती
१३ क्योंकि सभों ने पाप किया । क्योंकि व्यवस्था लों पाप जगत में था पर जहां व्यवस्था नहीं है तहां पाप नहीं
१४ गिना जाता । तौभी आदम से मूसा लों मृत्यु ने उन लोगों पर भी राज्य किया जिन्हों ने आदम के अपराध के समान पाप नहीं किया था . यह आदम
१५ उस आनेवाले का चिन्ह है । परन्तु

जैसा यह अपराध है तैसा यह बरदान भी है सो नहीं क्योंकि यदि एक मनुष्य के अपराध से बहुत लोग मूए तो बहुत अधिक करके ईश्वर का अनुग्रह और वह दान एक मनुष्य के अर्थात यीशु ख्रीष्ट के अनुग्रह से बहुत लोगों पर अधिकाई से हुआ। १६ और जैसा वह दंड जो एक के द्वारा से हुआ जिस ने पाप किया तैसा यह दान नहीं है क्योंकि निर्णय से एक अपराध के कारण दंड की आज्ञा हुई परन्तु बरदान से बहुत अपराधों से निर्दोष ठहराये जाने का फल हुआ। १७ क्योंकि यदि एक मनुष्य के अपराध से मृत्यु ने उस एक के द्वारा से राज्य किया तो बहुत अधिक करके जो लोग अनुग्रह की और धर्म्म के दान की अधिकाई पाते हैं सो एक मनुष्य के अर्थात यीशु ख्रीष्ट के द्वारा से जीवन में राज्य करेंगे। १८ इस लिये जैसा एक अपराध सब मनुष्यों के लिये दंड की आज्ञा का कारण हुआ तैसा एक धर्म्म भी सब मनुष्यों के लिये धर्म्मी ठहराये जाने का कारण हुआ जिस से जीवन होय। १९ क्योंकि जैसा एक मनुष्य के आज्ञा लंघन करने से बहुत लोग पापी बनाये गये तैसा एक मनुष्य के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्म्मी बनाये जायेंगे। २० पर व्यवस्था का भी प्रवेश हुआ कि अपराध बहुत होय परन्तु जहां पाप बहुत हुआ तहां अनुग्रह बहुत अधिक हुआ, २१ कि जैसा पाप ने मृत्यु में राज्य किया तैसा हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट के द्वारा अनुग्रह भी अनन्त जीवन के लिये धर्म्म के द्वारा से राज्य करे॥

छठवां पर्व्व।

१ तो हम क्या कहें, क्या हम पाप २ में रहें जिस्तें अनुग्रह बहुत होय। ऐसा न हो, हम जो पाप के लिये मूए हैं क्योंकर अब उस में जीयेंगे॥

३ क्या तुम नहीं जानते हो कि हम में से जितनों ने ख्रीष्ट यीशु का बपतिसमा लिया उस की मृत्यु का बपतिसमा लिया। ४ सो उस की मृत्यु का बपतिसमा लेने से हम उस के संग गाड़े गये कि जैसे ख्रीष्ट पिता के ऐश्वर्य्य से मृतकों में से उठाया गया तैसे हम भी जीवन की सी नई चाल चलें। ५ क्योंकि यदि हम उस की मृत्यु की समानता से उस के संयुक्त हुए हैं तो निश्चय उस के जी उठने की समानता में भी संयुक्त होंगे। ६ क्योंकि यही जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उस के संग क्रूश पर चढ़ाया गया इस लिये कि पाप का शरीर नाश किया जाय जिस्तें हम फिर पाप के दास न होवें। ७ क्योंकि जो मूआ है सो पाप से छुड़ाया गया है। ८ और यदि हम ख्रीष्ट के संग मूए हैं तो बिश्वास करते हैं कि उस के संग जीयेंगे भी। ९ क्योंकि जानते हैं कि ख्रीष्ट मृतकों में से उठके फिर नहीं मरता है, उस पर फिर मृत्यु की प्रभुता नहीं है। १० क्योंकि वह जो मरा तो पाप के लिये एक ही बेर मरा पर वह जीता है तो ईश्वर के लिये जीता है। ११ इस रीति से तुम भी अपने को समझो कि हम पाप के लिये तो मृतक हैं परन्तु हमारे प्रभु ख्रीष्ट यीशु में ईश्वर के लिये जीवते हैं॥

१२ सो पाप तुम्हारे मरनहार शरीर में राज्य न करे कि तुम उस के अभिलाषों में पाप के आज्ञाकारी होओ। १३ और न अपने अंगों को अधर्म्म के हथियार करके पाप को सौंप देओ परन्तु जैसे मृतकों में से जी गये हो तैसे अपने को ईश्वर को सौंप देओ और अपने अंगों को ईश्वर के लिये धर्म्म के हथियार

१४ करके सौंपो। क्योंकि तुम पर पाप की प्रभुता न होगी इस लिये कि तुम व्यवस्था के अधीन नहीं परन्तु अनुग्रह के अधीन हो॥

१५ तो क्या, क्या हम पाप किया करें इस लिये कि हम व्यवस्था के अधीन नहीं परन्तु अनुग्रह के अधीन हैं. १६ ऐसा न हो। क्या तुम नहीं जानते हो कि तुम आज्ञा मानने के लिये जिस के यहां अपने को दास करके सौंप देते हो उसी के दास हो जिस की आज्ञा मानते हो चाहे मृत्यु के लिये पाप के दास चाहे धर्म्म के लिये आज्ञापालन १७ के दास। पर ईश्वर का धन्यवाद होय कि तुम पाप के दास तो थे परन्तु तुम जिस उपदेश के सांचे में ढाले गये मन से उस के आज्ञाकारी १८ हुए। और मैं तुम्हारे शरीर की दुर्बलता के कारण मनुष्य की रीति पर कहता हूं कि तुम पाप से उद्धार पाके धर्म्म के १९ दास बने हो। जैसे तुम ने अपने अंगों को अधर्म्म के लिये अशुद्धता और अधर्म्म के दास करके अर्पण किया तैसे अब अपने अंगों को पवित्रता के लिये धर्म्म २० के दास करके अर्पण करो। जब तुम पाप के दास थे तब धर्म्म से निर्बन्ध २१ थे। सो उस समय में तुम क्या फल फलते थे. वे कर्म्म जिन से तुम अब लजाते हो क्योंकि उन का अन्त मृत्यु २२ है। पर अब पाप से उद्धार पाके और ईश्वर के दास बनके तुम पवित्रता के लिये फल फलते हो और उस का अन्त २३ अनन्त जीवन है। क्योंकि पाप की मजूरी मृत्यु है परन्तु ईश्वर का वरदान हमारे प्रभु खीष्ट यीशु में अनन्त जीवन है॥

सातवां पर्व्व।

१ हे भाइयो क्या तुम नहीं जानते हो। क्योंकि मैं व्यवस्था के जाननेहारों से बोलता हूं कि जब लों मनुष्य जीता रहे तब लों व्यवस्था की उस पर २ प्रभुता है। क्योंकि विवाहिता स्त्री अपने जीवते स्वामी के संग व्यवस्था से बंधी है परन्तु यदि स्वामी मर जाय तो वह स्वामी की व्यवस्था से ३ छूट गई। इस लिये यदि स्वामी के जीते जी वह दूसरे स्वामी की हो जाय तो व्यभिचारिणी कहावेगी परन्तु यदि स्वामी मर जाय तो वह उस व्यवस्था से निर्बन्ध हुई यहां लों कि दूसरे स्वामी की हो जाने से भी वह व्यभिचारिणी नहीं। ४ इस लिये हे मेरे भाइयो तुम भी खीष्ट के देह के द्वारा से व्यवस्था के लिये मर गये कि तुम दूसरे के हो जाओ अर्थात उसी के जो मृतकों में से जी उठा इस लिये कि ५ हम ईश्वर के लिये फल फलें। क्योंकि जब हम शारीरिक दशा में थे तब पापों के अभिलाष जो व्यवस्था के द्वारा से थे हमारे अंगों में कार्य्य करवाते थे जिस्तें मृत्यु के लिये फल फलें। ६ परन्तु अभी हम जिस में बंधे थे उस के लिये मृतक होके व्यवस्था से छूट गये हैं यहां लों कि लेख की पुरानी रीति पर नहीं परन्तु आत्मा की नई रीति पर सेवा करते हैं॥

७ तो हम क्या कहें. क्या व्यवस्था पाप है. ऐसा न हो परन्तु बिना व्यवस्था के द्वारा से मैं पाप को न पहचानता हां व्यवस्था जो न कहती कि लालच मत कर तो मैं लालच को न जानता। ८ परन्तु पाप ने अवसर पाके आज्ञा के द्वारा सब प्रकार का लालच मुझ में उपजाया क्योंकि बिना व्यवस्था पाप ९ मृतक है। मैं तो व्यवस्था बिना आगे जीवता था परन्तु जब आज्ञा आई तब पाप जी गया और मैं मूआ। १० और

वही आज्ञा जो जीवन के लिये थी मेरे ११ लिये मृत्यु का कारण ठहरी। क्योंकि पाप ने अवसर पाके आज्ञा के द्वारा मुझे ठगा और उस के द्वारा मुझे मार १२ डाला। सो व्यवस्था पवित्र है और आज्ञा पवित्र और यथार्थ और उत्तम है॥

१३ तो क्या वह उत्तम वस्तु मेरे लिये मृत्यु हुई. ऐसा न हो परन्तु पाप जिस्तें वह पाप सा दिखाई देवे उस उत्तम वस्तु के द्वारा से मेरे लिये मृत्यु का जन्मानेहारा हुआ इस लिये कि पाप आज्ञा के द्वारा से अत्यन्त पापमय हो १४ जाय। क्योंकि हम जानते हैं कि व्यवस्था आत्मिक है परन्तु मैं शारीरिक और पाप १५ के हाथ बिका हूं। क्योंकि जो मैं करता हूं उस को नहीं समझता हूं क्योंकि जो मैं चाहता हूं सोई नहीं करता हूं परन्तु जिस से घिनाता हूं सोई करता हूं। १६ पर यदि मैं जो नहीं चाहता हूं सोई करता हूं तो मैं व्यवस्था को मान लेता १७ हूं कि अच्छी है। सो अब तो मैं नहीं उसे करता हूं परन्तु पाप जो मुझ में बसता १८ है। क्योंकि मैं जानता हूं कि कोई उत्तम वस्तु मुझ में अर्थात मेरे शरीर में नहीं बसती है क्योंकि चाहना तो मेरे संग है परन्तु अच्छी करनी मुझे नहीं १९ मिलती है। क्योंकि वह अच्छा काम जो मैं चाहता हूं मैं नहीं करता हूं परन्तु जो बुरा काम नहीं चाहता हूं २० सोई करता हूं। पर यदि मैं जो नहीं चाहता हूं सोई करता हूं तो अब मैं नहीं उसे करता हूं परन्तु पाप जो मुझ २१ में बसता है। सो मैं यह व्यवस्था पाता हूं कि जब मैं अच्छा काम किया चाहता २२ हूं तब बुरा काम मेरे संग है। क्योंकि मैं भीतरी मनुष्यत्व के भाव से ईश्वर २३ की व्यवस्था से प्रसन्न हूं। परन्तु मैं अपने अंगों में दूसरी व्यवस्था देखता हूं जो मेरी बुद्धि की व्यवस्था से लड़ती है और मुझे पाप की व्यवस्था के, जो मेरे अंगों में है बन्धन में डालती है। २४ अभागा मनुष्य जो मैं हूं मुझे इस मृत्यु २५ के देह से कौन बचावेगा। मैं ईश्वर का धन्य मानता हूं कि हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के द्वारा से वही बचानेहारा है. सो मैं आप बुद्धि से तो ईश्वर की व्यवस्था की सेवा परन्तु शरीर से पाप की व्यवस्था की सेवा करता हूं॥

आठवां पर्ब्ब।

१ सो अब जो लोग खीष्ट यीशु में हैं अर्थात शरीर के अनुसार नहीं परन्तु आत्मा के अनुसार चलते हैं उन पर २ कोई दंड की आज्ञा नहीं है। क्योंकि जीवन के आत्मा की व्यवस्था ने खीष्ट यीशु में मुझे पाप की और मृत्यु की ३ व्यवस्था से निर्बन्ध किया है। क्योंकि जो व्यवस्था से अनहोना था इस लिये कि शरीर के द्वारा से वह दुर्ब्बल थी उस को ईश्वर ने किया अर्थात अपने ही पुत्र को पाप के शरीर की समानता में और पाप के कारण भेजके शरीर में ४ पाप पर दंड की आज्ञा दिई. इस लिये कि व्यवस्था की विधि हमों में जो शरीर के अनुसार नहीं परन्तु आत्मा के अनुसार चलते हैं पूरी किई जाय॥

५ जो शरीर के अनुसारी हैं सो शरीर की बातों पर मन लगाते हैं पर जो आत्मा के अनुसारी हैं सो आत्मा की ६ बातों पर मन लगाते हैं। शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और कल्याण ७ है। इस कारण कि शरीर पर मन लगाना ईश्वर से शत्रुता करना है क्योंकि वह मन ईश्वर की व्यवस्था के वश में नहीं होता है क्योंकि हो ८ नहीं सकता है। और जो शारीरिक

दशा में हैं सो ईश्वर को प्रसन्न नहीं
९ कर सकते हैं। पर जब कि ईश्वर का
आत्मा तुम में बसता है तो तुम
शारीरिक दशा में नहीं परन्तु आत्मिक
दशा में हो . यदि किसी में खीष्ट का
आत्मा नहीं है तो वह उस का जन
१० नहीं है। परन्तु यदि खीष्ट तुम में है
तो देह पाप के कारण मृतक है पर
११ आत्मा धर्म्म के कारण जीवन है। और
जिस ने यीशु को मृतकों में से उठाया
उस का आत्मा यदि तुम में बसता है
तो जिस ने खीष्ट को मृतकों में से
उठाया सो तुम्हारे मरनहार देहों को
भी अपने आत्मा के कारण जो तुम में
बसता है जिलावेगा॥

१२ इस लिये हे भाइयो हम शरीर के
ऋणी नहीं हैं कि शरीर के अनुसार
१३ दिन काटें। क्योंकि यदि तुम शरीर के
अनुसार दिन काटो तो मरोगे परन्तु
यदि आत्मा से देह की क्रियाओं को
१४ मारो तो जीओगे। क्योंकि जितने लोग
ईश्वर के आत्मा के चलाये चलते हैं
१५ वेही ईश्वर के पुत्र हैं। क्योंकि तुम ने
दासत्व का आत्मा नहीं पाया है कि
फिर भयमान होओ परन्तु लेपालकपन
का आत्मा पाया है जिस से हम हे
अब्बा अर्थात हे पिता पुकारते हैं।
१६ आत्मा आप ही हमारे आत्मा के संग
साक्षी देता है कि हम ईश्वर के सन्तान
१७ हैं। और यदि सन्तान हैं तो अधिकारी
भी हैं हां ईश्वर के अधिकारी और
खीष्ट के संगी अधिकारी हैं कि हम तो
उस के संग दुःख उठाते हैं जिस्तें उस
के संग महिमा भी पावें॥

१८ क्योंकि मैं समझता हूं कि इस
वर्त्तमान समय के दुःख उस महिमा के
आगे जो हमों में प्रगट किई जायगी
१९ कुछ गिनने के योग्य नहीं हैं। क्योंकि
सृष्टि की प्रत्याशा ईश्वर के सन्तानों
के प्रगट होने की बाट जोहती है।
२० क्योंकि सृष्टि अपनी इच्छा से नहीं परन्तु
अधीन करनेहारे की ओर से व्यर्थता
के अधीन इस आशा से किई गई.
२१ कि सृष्टि भी आप ही बिनाश के
दासत्व से उद्धार पाके ईश्वर के सन्तानों
की महिमा की निर्बन्धता प्राप्त करेगी।
२२ क्योंकि हम जानते हैं कि सारी सृष्टि
अब लों एक संग कहरती और पीड़ा पाती
२३ है। और केवल यह नहीं पर हम लोग
भी इस लिये कि हमारे पास आत्मा का
पहिला फल है आप ही अपने में कहरते
हैं और लेपालकपन की अर्थात अपने
२४ देह के उद्धार की बाट जोहते हैं। क्यों-
कि आशा से हमारा त्राण हुआ परन्तु
जो आशा देखने में आती है सो आशा
नहीं है क्योंकि जो कुछ कोई देखता है
वह उस की आशा भी क्यों रखता है।
२५ परन्तु यदि हम जो नहीं देखते हैं उस
की आशा रखते हैं तो धीरज से उस
की बाट जोहते हैं॥

२६ इस रीति से पवित्र आत्मा भी हमारी
दुर्बलताओं में सहायता करता है क्योंकि
हम नहीं जानते हैं कौन सी प्रार्थना
किस रीति से किया चाहिये परन्तु आत्मा
आप ही अकथ्य हाय मार मारके
२७ हमारे लिये बिन्ती करता है। और
हृदयों का जांचनेहारा जानता है कि
आत्मा की मनसा क्या है कि वह पवित्र
लोगों के लिये ईश्वर की इच्छा के समान
बिन्ती करता है॥

२८ और हम जानते हैं कि जो लोग
ईश्वर को प्यार करते हैं उन के लिये
सब बातें मिलके भलाई ही का कार्य्य
करती हैं अर्थात उन के लिये जो उस
की इच्छा के समान बुलाये हुए हैं।
२९ क्योंकि जिन्हें उस ने आगे से जाना

उन्हें उस ने अपने पुत्र के रूप के सदृश होने को आगे से ठहराया जिस्तें वह
३० बहुत भाइयों में पहिलौठा होवे । फिर जिन्हें उस ने आगे से ठहराया उन्हें बुलाया भी और जिन्हें बुलाया उन्हें धर्म्मी ठहराया भी और जिन्हें धर्म्मी ठहराया उन्हें महिमा भी दिई ॥

३१ तो हम इन बातों पर क्या कहें . यदि ईश्वर हमारी ओर है तो हमारे
३२ विरुद्ध कौन होगा । जिस ने अपने निज पुत्र को न रख छोड़ा परन्तु उसे हम सभों के लिये सौंप दिया सो उस के संग हमें और सब कुछ क्योंकर न
३३ देगा । ईश्वर के चुने हुए लोगों पर दोष कौन लगावेगा . क्या ईश्वर जो
३४ धर्म्मी ठहरानेहारा है । दंड की आज्ञा देनेहारा कौन होगा . क्या खीष्ट जो मरा हां जो जी भी उठा जो ईश्वर की दहिनी ओर भी है जो हमारे लिये
३५ बिन्ती भी करता है । कौन हमें खीष्ट के प्रेम से अलग करेगा . क्या क्लेश वा संकट वा उपद्रव वा अकाल वा नंगाई
३६ वा जोखिम वा खड्ग । जैसा लिखा है कि तेरे लिये हम दिन भर घात किये जाते हैं हम बध होनेवाली भेड़ों की
३७ नाईं गिने गये हैं । नहीं पर इन सब बातों में हम उस के द्वारा से जिस ने हमें प्यार किया है जयवन्त से भी
३८ अधिक हैं । क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं कि न मृत्यु न जीवन न दूतगण न प्रधानता न पराक्रम न वर्त्तमान न
३९ भविष्य . न ऊंचाई न गहिराई न और कोई सृष्टि हमें ईश्वर के प्रेम से जो हमारे प्रभु खीष्ट यीशु में है अलग कर सकेगी ॥

नवां पर्व्व ।

१ मैं खीष्ट में सत्य कहता हूं मैं झूठ नहीं बोलता हूं और मेरा मन भी पवित्र आत्मा में मेरा साक्षी है . कि
२ मुझे बड़ा शोक और मेरे मन को निरन्तर खेद रहता है । क्योंकि मैं आप
३ प्रार्थना कर सकता कि अपने भाइयों के लिये जो शरीर के भाव से मेरे कुटुंब हैं मैं खीष्ट से स्रापित होता
४ वे इस्रायेली लोग हैं और लेपालकपन और तेज और नियम और व्यवस्था का निरूपण और सेवकाई और प्रतिज्ञाएं उन
५ की हैं । पितर लोग भी उन्हीं के हैं और उन में से शरीर के भाव से खीष्ट हुआ जो सर्व्वप्रधान ईश्वर सर्व्वदा धन्य है . आमीन ॥

६ पर ऐसा नहीं है कि ईश्वर का वचन टल गया है क्योंकि सब लोग इस्रायेली नहीं जो इस्रायेल से जन्मे
७ हैं . और न इस लिये कि इब्राहीम के वंश हैं वे सब उस के सन्तान हैं परन्तु (लिखा है) इसहाक से जो हो सो तेरा
८ वंश कहावेगा । अर्थात शरीर के जो सन्तान सो ईश्वर के सन्तान नहीं हैं परन्तु प्रतिज्ञा के सन्तान वंश गिने
९ जाते हैं । क्योंकि यह वचन प्रतिज्ञा का था कि इस समय के अनुसार मैं
१० आऊंगा और सारः को पुत्र होगा । और केवल यह नहीं परन्तु जब रिबका भी एक से अर्थात हमारे पिता इसहाक से
११ गर्भवती हुई . और बालक नहीं जन्मे थे और न कुछ भला अथवा बुरा किया था तब ही उस से कहा गया कि
१२ बड़का छुटके का दास होगा . इस लिये कि ईश्वर की मनसा जो उस के चुन लेने के अनुसार है कर्म्मों के हेतु से नहीं परन्तु बुलानेहारे की ओर से बनी
१३ रहे । जैसा लिखा है कि मैं ने याकूब को प्यार किया परन्तु एसौ को अप्रिय जाना ॥

१४ तो हम क्या कहें . क्या ईश्वर के
१५ यहां अन्याय है . ऐसा न हो । क्योंकि

वह मूसा से कहता है मैं जिस किसी पर दया करूं उस पर दया करूंगा और जिस किसी पर कृपा करूं उस पर कृपा करूंगा। १६ सो यह न तो चाहनेहारे का न तो दौड़नेहारे का परन्तु दया करनेहारे ईश्वर का काम है। १७ क्योंकि धर्म्मपुस्तक फिरऊन से कहता है कि मैं ने तुझे इसी बात के लिये उठाया कि तुझ में अपना पराक्रम दिखाऊं और कि मेरा नाम सारी पृथिवी में प्रचार किया जाय। १८ सो वह जिस पर दया किया चाहता है उस पर दया करता है परन्तु जिसे कठोर किया चाहता है उसे कठोर करता है। १९ सो तू मुझ से कहेगा वह फिर दोष क्यों देता है क्योंकि कौन उस की इच्छा का साम्ना करता है। २० हां पर हे मनुष्य तू कौन है जो ईश्वर से विवाद करता है, क्या गढ़ी हुई वस्तु गढ़नेहारे से कहेगी तू ने मुझे इस रीति से क्यों बनाया। २१ अथवा क्या कुम्हार को मिट्टी पर अधिकार नहीं है कि एक ही पिंड में से एक पात्र को आदर के लिये और दूसरे को अनादर के लिये बनावे। २२ और यदि ईश्वर ने अपना क्रोध दिखाने को और अपना सामर्थ्य प्रगट करने की इच्छा से क्रोध के पात्रों को जो विनाश के योग्य किये गये थे बड़े धीरज से सहा, २३ और दया के पात्रों पर जिन्हें उस ने महिमा के लिये आगे से तैयार किया अपनी महिमा के धन को प्रगट करने की इच्छा किई तो तू कौन है २४ जो विवाद करे। इन्हीं को उस ने बुलाया भी अर्थात हमों को जो केवल यिहूदियों में से नहीं परन्तु अन्यदेशियों में से भी हैं। २५ जैसा वह होशेया के पुस्तक में भी कहता है कि जो मेरे लोग न थे उन्हें मैं अपने लोग कहूंगा और जो प्यारी न थी उसे प्यारी कहूंगा। २६ और जिस स्थान में लोगों से कहा गया कि तुम मेरे लोग नहीं हो वहां वे जीवते ईश्वर के सन्तान कहावेंगे। २७ परन्तु यिशैयाह इस्रायेल के विषय में पुकारता है यद्यपि इस्रायेल के सन्तानों की गिन्ती समुद्र के बालू की नाईं हो तौभी जो बच रहेंगे उन्हीं की रक्षा होगी। २८ क्योंकि परमेश्वर बात को पूरी करनेवाला और धर्म्म से शीघ्र निबाहनेवाला है कि वह देश में बात को शीघ्र समाप्त करेगा। २९ जैसा यिशैयाह ने आगे भी कहा था कि यदि सेनाओं का प्रभु हमारे लिये वंश न छोड़ देता तो हम सदोम की नाईं हो जाते और अमोरा के समान किये जाते॥

३० तो हम क्या कहें, यह कि अन्यदेशियों ने जो धर्म्म का पीछा नहीं करते थे धर्म्म को अर्थात उस धर्म्म को जो विश्वास से है प्राप्त किया, ३१ परन्तु इस्रायेली लोग धर्म्म की व्यवस्था का पीछा करते हुए धर्म्म की व्यवस्था को नहीं पहुंचे। ३२ किस लिये, इस लिये कि वे विश्वास से नहीं परन्तु जैसे व्यवस्था के कर्म्मों से उस का पीछा करते थे कि उन्हों ने उस ठेस के पत्थर पर ठोकर खाई, ३३ जैसा लिखा है देखो मैं सियोन में एक ठेस का पत्थर और ठोकर की चटान रखता हूं और जो कोई उस पर विश्वास करे सो लज्जित न होगा॥

दसवां पर्ब्ब।

१ हे भाइयो इस्रायेल के लिये मेरे मन की इच्छा और मेरी प्रार्थना जो मैं ईश्वर से करता हूं उन के त्राण के लिये है। २ क्योंकि मैं उन पर साक्षी देता हूं कि उन को ईश्वर के लिये धुन रहती है परन्तु ज्ञान की रीति से नहीं। ३ क्योंकि

वे ईश्वर के धर्म्म को न चीन्हके पर अपना ही धर्म्म स्थापन करने का यत्न करके ईश्वर के धर्म्म के अधीन नहीं हुए ॥

४ क्योंकि धर्म्म के निमित्त हर एक बिश्वास करनेहारे के लिये खीष्ट व्य-
५ वस्था का अन्त है । क्योंकि मूसा उस धर्म्म के विषय में जो व्यवस्था से है लिखता है कि जो मनुष्य यह बातें
६ पालन करे सो उन से जीयेगा । परन्तु जो धर्म्म बिश्वास से है सो यूं कहता है कि अपने मन में मत कह कौन स्वर्ग पर चढ़ेगा . यह तो खीष्ट को उतार
७ लाने के लिये होता . अथवा कौन पाताल में उतरेगा . यह तो खीष्ट को मृतकों में से ऊपर लाने के लिये होता ।
८ फिर क्या कहता है . परन्तु बचन तेरे निकट तेरे मुंह में और तेरे मन में है . यह तो बिश्वास का बचन है जो हम
९ प्रचार करते हैं . कि यदि तू अपने मुंह से प्रभु यीशु को मान लेवे और अपने मन से बिश्वास करे कि ईश्वर ने उस को मृतकों में से उठाया तो तू त्राण
१० पावेगा । क्योंकि मन से धर्म्म के लिये बिश्वास किया जाता है और मुंह से त्राण के लिये मान लिया जाता है ।
११ क्योंकि धर्म्मपुस्तक कहता है कि जो कोई उस पर बिश्वास करे सो लज्जित
१२ न होगा । यिहूदी और यूनानी में कुछ भेद भी नहीं है क्योंकि सभों का एक ही प्रभु है जो सभों के लिये जो उस से
१३ प्रार्थना करते हैं धनी है । क्योंकि जो कोई परमेश्वर के नाम की प्रार्थना करेगा सो त्राण पावेगा ॥

१४ फिर जिस पर लोगों ने बिश्वास नहीं किया उस से वे क्योंकर प्रार्थना करें और जिस की उन्हों ने सुनी नहीं उस पर वे क्योंकर बिश्वास करें और
१५ उपदेशक बिना वे क्योंकर सुनें । और वे जो भेजे न जायें तो क्योंकर उपदेश करें जैसा लिखा है कि जो कुशल का सुसमाचार सुनाते हैं अर्थात भली बातों का सुसमाचार प्रचार करते हैं उन के पांव
१६ कैसे सुन्दर हैं । परन्तु सब लोगों ने उस सुसमाचार को नहीं माना क्योंकि यिशैयाह कहता है हे परमेश्वर किस ने हमारे
१७ समाचार का बिश्वास किया है । सो बिश्वास समाचार से और समाचार ईश्वर के बचन के द्वारा से आता है ।
१८ पर मैं कहता हूं क्या उन्हों ने नहीं सुना . हां बरन (लिखा है) उन का शब्द सारी पृथिवी पर और उन की बातें जगत के
१९ सिवानों तक निकल गईं । पर मैं कहता हूं क्या इस्रायेली लोग नहीं जानते थे . पहिले मूसा कहता है मैं उन्हों पर जो एक लोग नहीं हैं तुम से डाह करवाऊंगा मैं एक निर्बुद्धि लोग पर तुम से
२० क्रोध करवाऊंगा । परन्तु यिशैयाह साहस करके कहता है कि जो मुझे नहीं ढूंढ़ते थे उन से मैं पाया गया जो मुझे नहीं
२१ पूछते थे उन पर मैं प्रगट हुआ । परन्तु इस्रायेली लोगों को वह कहता है मैं ने सारे दिन अपने हाथ एक आज्ञालंघन और बिवाद करनेहारे लोग की ओर पसारे ॥

ग्यारहवां पर्ब्ब ।

१ तो मैं कहता हूं क्या ईश्वर ने अपने लोगों को त्याग दिया है . ऐसा न हो क्योंकि मैं भी इस्रायेली जन इब्राहीम के बंश से और बिन्यामीन के
२ कुल का हूं । ईश्वर ने अपने लोगों को जिन्हें उस ने आगे से जाना त्याग नहीं दिया है . क्या तुम नहीं जानते हो कि धर्म्मपुस्तक एलियाह की कथा में क्या कहता है कि वह इस्रायेल के
३ बिरुद्ध ईश्वर से बिन्ती करता है . कि हे परमेश्वर उन्हों ने तेरे भविष्यद्व-क्ताओं को घात किया है और तेरी

खंभियों को खोद डाला है और मैं ही अकेला छूट गया हूं और वे मेरा प्राण लेने चाहते हैं। ४ परन्तु ईश्वर की वाणी उस से क्या कहती है. मैं ने अपने लिये सात सहस्र मनुष्यों को रख छोड़ा है जिन्हों ने बाअल के आगे घुटना नहीं टेका है। ५ सो इस रीति से इस वर्त्तमान समय में भी अनुग्रह से चुने हुए कितने लोग बच रहे हैं। ६ जो यह अनुग्रह से हुआ है तो फिर कर्म्मों से नहीं है नहीं तो अनुग्रह अब अनुग्रह नहीं है. पर यदि कर्म्मों से हुआ है तो फिर अनुग्रह नहीं है नहीं तो कर्म्म अब कर्म्म नहीं है। ७ तो क्या है. इस्रायेली लोग जिस को ढूंढते हैं उस को उन्हों ने प्राप्त नहीं किया है परन्तु चुने हुओं ने प्राप्त किया है और दूसरे लोग कठोर किये गये हैं। ८ जैसा लिखा है कि ईश्वर ने उन्हें आज के दिन लों जड़ता का आत्मा हां आंखें जो न देखें और कान जो न सुनें दिये हैं। ९ और दाऊद कहता है उन की मेज उन के लिये फंदा और जाल और ठोकर का कारण और प्रतिफल हो जाय। १० उन की आंखों पर अन्धेरा छा जाय कि वे न देखें और तू उन की पीठ को नित्य झुका दे॥

११ तो मैं कहता हूं क्या उन्हों ने इस लिये ठोकर खाई कि गिर पड़ें. ऐसा न हो परन्तु उन के गिरने के हेतु से अन्यदेशियों को त्राण हुआ है कि उन से डाह करवाय। १२ परन्तु यदि उन के गिरने से जगत् का धन और उन की हानि से अन्यदेशियों का धन हुआ तो उन की भरपूरी से वह धन कितना अधिक करके होगा। १३ मैं तुम अन्यदेशियों से कहता हूं. जब कि मैं अन्यदेशियों के लिये प्रेरित हूं मैं अपनी सेवकाई की बड़ाई करता हूं. १४ कि किसी रीति से मैं उन में से जो मेरे शरीर के हैं डाह करवाके उन में से कई एक को भी बचाऊं। १५ क्योंकि यदि उन के त्याग दिये जाने से जगत् का मिलाप हुआ तो उन के ग्रहण किये जाने से क्या होगा. क्या मृतकों में से जीवन नहीं। १६ यदि पहिला फल पवित्र है तो पिंड भी पवित्र है और यदि जड़ पवित्र है तो डालियां भी पवित्र हैं। १७ परन्तु यदि डालियों में से कितनी तोड़ डाली गईं और तू जंगली जलपाई होके उन्हों में साटा गया है और जलपाई के वृक्ष की जड़ और तेल का भागी हुआ है तो डालियों के विरुद्ध घमंड मत कर। १८ परन्तु जो तू घमंड करे तौभी तू जड़ का आधार नहीं परन्तु जड़ तेरा आधार है। १९ फिर तू कहेगा डालियां तोड़ डाली गईं कि मैं साटा जाऊं। २० अच्छा वे अविश्वास के हेतु से तोड़ डाली गईं पर तू विश्वास से खड़ा है. अभिमानी मत हो परन्तु भय कर। २१ क्योंकि यदि ईश्वर ने स्वाभाविक डालियां न छोड़ीं तो ऐसा न हो कि तुझे भी न छोड़े। २२ सो ईश्वर की कृपा और कड़ाई को देख. जो गिर पड़े उन पर कड़ाई परन्तु तुझ पर जो तू उस की कृपा में बना रहे तो कृपा. नहीं तो तू भी काट डाला जायगा। २३ और वे भी जो अविश्वास में न रहें तो साटे जायेंगे क्योंकि ईश्वर उन्हें फिर साट सकता है। २४ क्योंकि यदि तू उस जलपाई के वृक्ष से जो स्वभाव से जंगली है काटा गया और स्वभाव के विरुद्ध अच्छी जलपाई के वृक्ष में साटा गया तो कितना अधिक करके ये जो स्वाभाविक डालियां हैं अपने ही जलपाई के वृक्ष में साटे जायेंगे॥

२५ और हे भाइयो मैं नहीं चाहता हूं कि तुम इस भेद से अनजान रहो ऐसा न हो कि अपने लेखे बुद्धिमान होओ अर्थात कि जब लों अन्यदेशियों की सम्पूर्ण संख्या प्रवेश न करे तब लों कुछ कुछ इस्रायेलियों की कठोरता रहेगी । २६ और तब सारा इस्रायेल त्राण पावेगा जैसा लिखा है कि त्राणदाता सियोन से आवेगा और अधर्म्मीपन को याकूब २७ से अलग करेगा । जब मैं उन के पापों को दूर करूंगा तब उन से यही मेरी २८ और से नियम होगा । वे सुसमाचार के भाव से तुम्हारे कारण बैरी हैं परन्तु चुन लिये जाने के भाव से पितरों के २९ कारण प्यारे हैं । क्योंकि ईश्वर अपने बरदानों से और बुलाहट से कभी पछ-३० तानेवाला नहीं । क्योंकि जैसे तुम ने आगे ईश्वर की आज्ञा लंघन किई परन्तु अभी उन के आज्ञा उल्लंघन के ३१ हेतु से तुम पर दया किई गई है, तैसे इन्हों ने भी अब आज्ञा लंघन किई है कि तुम पर जो दया किई जाती है उस के हेतु से उन पर भी दया किई ३२ जाय । क्योंकि ईश्वर ने सभों को आज्ञा उल्लंघन में बन्द कर रखा इस लिये कि सभों पर दया करे ॥

३३ आहा ईश्वर के धन और बुद्धि और ज्ञान की गंभीरता, उस के बिचार कैसे अथाह और उस के मार्ग कैसे ३४ अगम्य हैं । क्योंकि परमेश्वर का मन किस ने जाना अथवा उस का मंत्री ३५ कौन हुआ । अथवा किस ने उस को पहिले दिया और उस का प्रतिफल उस को ३६ दिया जायगा । क्योंकि उस से और उस के द्वारा और उस के लिये सब कुछ है, उस का गुणानुवाद सर्व्वदा होय, आमीन ॥

बारहवां पर्ब्ब ।

१ सो हे भाइयो मैं तुम से ईश्वर की दया के कारण बिन्ती करता हूं कि अपने शरीरों को जीवता और पवित्र और ईश्वर की प्रसन्नता योग्य बलिदान करके चढ़ाओ कि यह तुम्हारी मानसिक २ सेवा है । और इस संसार की रीति पर मत चला करो परन्तु तुम्हारे मन के नये होने से तुम्हारी चाल.चलन बदली जाय जिस्तें तुम परखो कि ईश्वर की इच्छा अर्थात उत्तम और प्रसन्नता योग्य ३ और पूरा कार्य्य क्या है । क्योंकि जो अनुग्रह मुझे दिया गया है उस से मैं तुम में के हर एक जन से कहता हूं कि जो मन रखना उचित है उस से ऊंचा मन न रखे परन्तु ऐसा मन रखे कि ईश्वर ने हर एक को बिश्वास का जो परिमाण बांट दिया है उस के अनुसार ४ उस का सुबुद्धि मन होय । क्योंकि जैसा हमें एक देह में बहुत अंग हैं परन्तु ५ सब अंगों का एक ही काम नहीं है, तैसा हम जो बहुत हैं खीष्ट में एक देह हैं और पृथक करके एक दूसरे के अंग ६ हैं । और जो अनुग्रह हमें दिया गया है जब कि उस के अनुसार भिन्न भिन्न बरदान हमें मिले हैं सो यदि भविष्य-द्वाणी का दान हो तो हम बिश्वास के ७ परिमाण के अनुसार बोलें, अथवा सेवकाई का दान हो तो सेवकाई में लगे रहें, अथवा जो सिखानेहारा हो ८ सो शिक्षा में लगा रहे, अथवा जो उपदेशक हो सो उपदेश में लगा रहे, जो बांट देवे सो सीधाई से बांटे, जो अध्यक्षता करे सो यत्न से करे, जो दया करे सो हर्ष से करे ॥

९ प्रेम निष्कपट होय, बुराई से घिन १० करो भलाई में लगे रहो । भ्रातीय प्रेम से एक दूसरे पर मया रखो, परस्पर आदर करने में एक दूसरे से बढ़ चलो । ११ यत्न करने में आलसी मत हो, आत्मा

में अनुरागी हो, प्रभु की सेवा किया १२ करो । आशा से आनन्दित हो, क्लेश में स्थिर रहो, प्रार्थना में लगे रहो । १३ पवित्र लोगों को जो आवश्यक हो उस में उन की सहायता करो, अतिथि १४ सेवा की चेष्टा करो । अपने सतानेहारों को आशीस देओ, आशीस देओ, स्राप १५ मत देओ । आनन्द करनेहारों के संग आनन्द करो और रोनेहारों के संग रोओ । १६ एक दूसरे की ओर एक सां मन रखो, ऊंचा मन मत रखो परन्तु दीनों से संगति रखो, अपने लेखे बुद्धिमान मत होओ । १७ किसी से बुराई के बदले बुराई मत करो, जो बातें सब मनुष्यों के आगे १८ भली हैं उन की चिन्ता किया करो । यदि हो सके तुम तो अपनी ओर से सब मनुष्यों १९ के संग मिले रहो । हे प्यारो अपना पलटा मत लेओ परन्तु क्रोध को ठांव देओ क्योंकि लिखा है पलटा लेना मेरा काम है, परमेश्वर कहता है मैं प्रति- २० फल देऊंगा । इस लिये यदि तेरा शत्रु भूखा हो तो उसे खिला यदि प्यासा हो तो उसे पिला क्योंकि यह करने से तू उस के सिर पर आग के अंगारों की २१ ढेरी लगायेगा । बुराई से मत हार जा परन्तु भलाई से बुराई को जीत ले ॥

तेरहवां पर्ब्ब ।

१ हर एक मनुष्य प्रधान अधिकारियों के अधीन होय क्योंकि कोई अधिकार नहीं है जो ईश्वर की ओर से न हो पर जो अधिकार हैं सो ईश्वर से ठहराये २ हुए हैं । इस से जो अधिकार का विरोध करता है सो ईश्वर की विधि का साम्हना करता है और साम्हना करनेहारे अपने लिये ३ दंड पावेंगे । क्योंकि अध्यक्ष लोग भले कामों से नहीं परन्तु बुरे कामों से डरानेहारे हैं, क्या तू अधिकारी से निडर रहा चाहता है, भला काम कर तो उस से तेरी सराहना होगी क्योंकि वह तेरी भलाई के लिये ईश्वर का सेवक है । परन्तु जो तू बुरा काम करे तो ४ भय कर क्योंकि वह खड्ग को वृथा नहीं बांधता है इस लिये कि वह ईश्वर का सेवक अर्थात कुकर्मी पर क्रोध पहुंचाने को दंडकारक है । इस ५ लिये अधीन होना केवल उस क्रोध के कारण नहीं परन्तु विवेक के कारण भी अवश्य है । इस हेतु से कर भी देओ ६ क्योंकि वे ईश्वर के सेवक हैं जो इसी बात में लगे रहते हैं । सो सभों को ७ जो जो कुछ देना उचित है सो सो देओ जिसे कर देना हो उसे कर देओ जिसे महसूल देना हो उसे महसूल देओ जिस से भय करना हो उस से भय करो जिस का आदर करना हो उस का आदर करो ॥

किसी का कुछ ऋण मत धारो ८ केवल एक दूसरे को प्यार करने का ऋण क्योंकि जो दूसरे को प्यार करता है उस ने व्यवस्था पूरी किई है । क्योंकि ९ यह कि परस्त्रीगमन मत कर नरहिंसा मत कर चोरी मत कर झूठी साक्षी मत दे लालच मत कर और कोई दूसरी आज्ञा यदि होय तो इस बात में अर्थात तू अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम कर सब का संग्रह है । प्रेम पड़ोसी की १० कुछ बुराई नहीं करता है इस लिये प्रेम करना व्यवस्था को पूरा करना है ॥

यह इस लिये भी किया चाहिये कि ११ तुम समय को जानते हो कि नींद से हमारे जागने का समय अब हुआ है क्योंकि जिस समय में हम ने विश्वास किया उस समय से अब हमारा त्राण अधिक निकट है । रात बहुत गई है १२ और दिन निकट आया है इस लिये हम अन्धकार के कामों को उतारके ज्योति

१३ को झिलम पहिन लें। जैसा दिन को चाहिये तैसा हम शुभ रीति से चलें. लीला क्रीड़ा औ मतवालपन में अथवा व्यभिचार औ लुचपन में अथवा बैर औ
१४ डाह में न चलें। परन्तु प्रभु यीशु खीष्ट को पहिन लो और शरीर के लिये उस के अभिलाषों को पूरा करने की चिन्ता मत करो॥

चौदहवां पर्ब्ब।

१ जो बिश्वास में दुर्ब्बल है उसे अपनी संगति में ले लेओ पर उस के मत का
२ बिचार करने को नहीं। एक जन बिश्वास करता है कि सब कुछ खाना उचित है परन्तु जो दुर्ब्बल है सो सागपात खाता
३ है। जो खाता है सो न खानेहारे को तुच्छ न जाने और जो नहीं खाता है सो खानेहारे को दोषी न ठहरावे क्यों-कि ईश्वर ने उस को ग्रहण किया है।
४ तू कौन है जो पराये सेवक को दोषी ठहराता है. वह अपने ही स्वामी के आगे खड़ा होता है अथवा गिरता है. परन्तु वह खड़ा रहेगा क्योंकि ईश्वर
५ उसे खड़ा रख सकता है। एक जन एक दिन को दूसरे दिन से बड़ा जानता है दूसरा जन हर एक दिन को एक सा जानता है. हर एक जन अपने ही मन में निश्चय कर लेवे॥

६ जो दिन को मानता है सो प्रभु के लिये मानता है और जो दिन को नहीं मानता है सो प्रभु के लिये नहीं मानता है. जो खाता है सो प्रभु के लिये खाता है क्योंकि वह ईश्वर का धन्य मानता है और जो नहीं खाता है सो प्रभु के लिये नहीं खाता है और ईश्वर का
७ धन्य मानता है। क्योंकि हम में से कोई अपने लिये नहीं जीता है और
८ कोई अपने लिये नहीं मरता है। क्यों-कि यदि हम जीवें तो प्रभु के लिये जीते हैं और यदि मरें तो प्रभु के लिये मरते हैं सो यदि हम जीवें अथवा यदि मरें तो
९ प्रभु के हैं। क्योंकि इसी बात के लिये खीष्ट मरा और उठा और फिरके जीया भी कि वह मृतकों औ जीवतों का भी
१० प्रभु होवे। तू अपने भाई को क्यों दोषी ठहराता है अथवा तू भी अपने भाई को क्यों तुच्छ जानता है क्योंकि हम सब खीष्ट के बिचार आसन के आगे खड़े
११ होंगे। क्योंकि लिखा है कि परमेश्वर कहता है जो मैं जीता हूं तो मेरे आगे हर एक घुटना झुकेगा और हर एक
१२ जीभ ईश्वर के आगे मान लेगी। सो हम में से हर एक ईश्वर को अपना अपना लेखा देगा॥

१३ सो हम अब फिर एक दूसरे को दोषी न ठहरावें परन्तु तुम यही ठहराओ कि भाई के आगे हम ठेस अथवा ठोकर
१४ का कारण न रखेंगे। मैं जानता हूं और प्रभु यीशु से मुझे निश्चय हुआ है कि कोई वस्तु आप से अशुद्ध नहीं है केवल जो जिस वस्तु को अशुद्ध जानता है
१५ उस के लिये वह अशुद्ध है। यदि तेरे भोजन के कारण तेरा भाई उदास होता है तो तू अब प्रेम की रीति से नहीं चलता है. जिस के लिये खीष्ट मूआ उस को तू अपने भोजन के द्वारा से नाश मत कर॥

१६ सो तुम्हारी भलाई की निन्दा न
१७ किई जाय। क्योंकि ईश्वर का राज्य खाना पीना नहीं है परन्तु धर्म्म और मिलाप और आनन्द जो पवित्र आत्मा
१८ से है। क्योंकि जो इन बातों में खीष्ट की सेवा करता है सो ईश्वर को भावता और मनुष्यों के यहां भला ठहराया जाता
१९ है। इस लिये हम मिलाप की बातों और एक दूसरे के सुधारने की बातों
२० की चेष्टा करें। भोजन के हेतु ईश्वर

का काम नाश मत कर . सब कुछ शुद्ध तो है परन्तु जो मनुष्य खाने से ठोकर
२१ खिलाता है उस के लिये बुरा है । अच्छा यह है कि तू न मांस खाय न दाख रस पीये न कोई काम करे जिस से तेरा भाई ठेस अथवा ठोकर खाता है अथवा दुर्ब्बल होता है ॥

२२ क्या तुझे विश्वास है . उसे ईश्वर के आगे अपने मन में रख . धन्य वह है कि जो बात उसे अच्छी देख पड़ती है उस में अपने को दोषी नहीं ठहराता
२३ है । परन्तु जो सन्देह करता है सो यदि खाय तो दंड के योग्य ठहरा है क्योंकि वह विश्वास का काम नहीं करता है . परन्तु जो जो काम विश्वास का नहीं है सो पाप है ॥

पन्द्रहवां पर्ब्ब ।

१ हमें जो बलवन्त हैं उचित है कि निर्ब्बलों की दुर्ब्बलताओं को सहें और
२ अपने ही को प्रसन्न न करें । हम में से हर एक जन पड़ोसी की भलाई के लिये उसे सुधारने के निमित्त प्रसन्न करे ।
३ क्योंकि खीष्ट ने भी अपने ही को प्रसन्न न किया परन्तु जैसा लिखा है तेरे निन्दकों की निन्दा की बातें मुझ पर
४ आ पड़ीं । क्योंकि जो कुछ आगे लिखा गया सो हमारी शिक्षा के लिये लिखा गया कि धीरता के और शांति के द्वारा जो धर्म्मपुस्तक से होती है हमें आशा होय ।
५ और धीरता और शांति का ईश्वर तुम्हें खीष्ट यीशु के अनुसार आपस में एक सा
६ मन रखने का दान देवे . जिस्तें तुम एक चित्त होके एक मुंह से हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के पिता ईश्वर का गुणानु-
७ वाद करो । इस कारण ईश्वर की महिमा के लिये जैसा खीष्ट ने तुम्हें ग्रहण किया तैसे तुम भी एक दूसरे को ग्रहण करो ॥

८ मैं कहता हूं कि जो प्रतिज्ञाएं पितरों से किई गईं उन्हें दृढ़ करने को यीशु खीष्ट ईश्वर की सच्चाई के लिये खतना किये हुए लोगों का सेवक
९ हुआ । पर अन्यदेशी लोग भी दया के कारण ईश्वर का गुणानुवाद करें जैसा लिखा है इस कारण मैं अन्यदेशियों में तेरा धन्य मानूंगा और तेरे नाम की गीत गाऊंगा । और फिर कहता है हे
१० अन्यदेशियो उस के लोगों के संग आनन्द
११ करो । और फिर हे सब अन्यदेशियो परमेश्वर की स्तुति करो और हे सब लोगो उसे सराहो । और फिर यिशैयाह
१२ कहता है यिशी की एक मूल होगा और अन्यदेशियों का प्रधान होने को एक उठेगा उस पर अन्यदेशी लोग
१३ आशा रखेंगे । आशा का ईश्वर तुम्हें विश्वास करने में सब्बे आनन्द और शांति से परिपूर्ण करे कि पवित्र आत्मा के सामर्थ्य से तुम्हें अधिक करके आशा होय ॥

१४ हे मेरे भाइयो मैं आप भी तुम्हारे विषय में निश्चय जानता हूं कि तुम भी आप ही भलाई से भरपूर और सारे ज्ञान से परिपूर्ण हो और एक दूसरे को
१५ चिता सकते हो । परन्तु हे भाइयो मैं ने तुम्हें चेत दिलाते हुए तुम्हारे पास कहीं कहीं बहुत साहस से जो लिखा है यह उस अनुग्रह के कारण हुआ जो
१६ ईश्वर ने मुझे दिया है . इस लिये कि मैं अन्यदेशियों के लिये यीशु खीष्ट का सेवक होऊं और ईश्वर के सुसमाचार का याजकीय कर्म्म करूं जिस्तें अन्यदेशियों का चढ़ाया जाना पवित्र आत्मा से पवित्र किया जाके ग्राह्य होय ॥

१७ सो उन बातों में जो ईश्वर से संबन्ध रखती हैं मुझे खीष्ट यीशु में बड़ाई करने
१८ का हेतु मिलता है । क्योंकि जो काम

खीष्ट ने मेरे द्वारा से नहीं किये उन में से मैं किसी काम के विषय में बात करने का साहस न करूंगा परन्तु उन कामों के विषय में कहूंगा जो उस ने मेरे द्वारा से अन्यदेशियों की अधीनता के लिये वचन औ कर्म्म से और चिन्हों औ अद्भुत कामों के सामर्थ्य से और ईश्वर के आत्मा की शक्ति से किये १९ हैं . यहां लों कि यिरूशलीम और चारों ओर के देश से लेके इल्लुरिया देश लों मैं ने खीष्ट के सुसमाचार का सम्पूर्ण २० प्रचार किया है । परन्तु मैं सुसमाचार को इस रीति से सुनाने की चेष्टा करता था अर्थात कि जहां खीष्ट का नाम लिया गया तहां न सुनाऊं ऐसा न हो २१ कि पराई नेव पर घर बनाऊं . परन्तु ऐसा सुनाऊं जैसा लिखा है कि जिन्हें उस का समाचार नहीं कहा गया थे देखेंगे और जिन्हों ने नहीं सुना है वे समझेंगे ॥

२२ इसी हेतु से मैं तुम्हारे पास आने से २३ बहुत बार रुक गया । परन्तु अब मुझे इस ओर के देशों में और स्थान नहीं रहा है और बहुत बरसों से मुझे तुम्हारे २४ पास आने की लालसा है . इस लिये मैं जब कभी इस्पानिया देश को जाऊं तब तुम्हारे पास आऊंगा क्योंकि मैं आशा रखता हूं कि तुम्हारे पास से जाते हुए तुम्हें देखूं और जब मैं पहिले तुम से कुछ कुछ तृप्त हुआ हूं तब तुम से कुछ दूर उधर पहुंचाया जाऊं । २५ परन्तु अभी मैं पवित्र लोगों की सेवा करने के लिये यिरूशलीम को जाता हूं । २६ क्योंकि माकिदोनिया और आखाया के लोगों को इच्छा हुई कि यिरूशलीम के पवित्र लोगों में जो कंगाल हैं उन की २७ कुछ सहायता करें । उन की इच्छा हुई और वे उन के ऋणी भी हैं क्योंकि यदि अन्यदेशी लोग उन की आत्मिक वस्तुओं में भागी हुए तो उन्हें उचित है कि शारीरिक वस्तुओं में उन की भी सेवा करें । सो जब मैं यह कार्य्य २८ पूरा कर चुकूं और उन के लिये इस फल पर छाप दे चुकूं तब तुम्हारे पास से होके इस्पानिया को जाऊंगा । और २९ मैं जानता हूं कि तुम्हारे पास जब मैं आऊं तब खीष्ट के सुसमाचार की आशीस की भरपूरी से आऊंगा ॥

और हे भाइयो हमारे प्रभु यीशु ३० खीष्ट के कारण और पवित्र आत्मा के प्रेम के कारण मैं तुम से बिन्ती करता हूं कि ईश्वर से मेरे लिये प्रार्थना करने में मेरे संग परिश्रम करो . कि मैं ३१ यिहूदिया में के अविश्वासियों से बचूं और कि यिरूशलीम के लिये जो मेरी सेवकाई है सो पवित्र लोगों को भावे . जिस्तें मैं ईश्वर की इच्छा से तुम्हारे ३२ पास आनन्द से आऊं और तुम्हारे संग विश्राम करूं शांति का ईश्वर तुम ३३ सभों के संग होवे . आमीन ॥

सोलहवां पर्ब्ब ।

मैं तुम्हारे पास हमारी बहिन फैबी को जो किंक्रिया में की मंडली की सेवकी है सराहता हूं . १ जिस्तें तुम उसे प्रभु में जैसा पवित्र २ लोगों के योग्य है वैसा ग्रहण करो और जिस किसी बात में उस को तुम से प्रयोजन होय उस के सहायक होओ क्योंकि वह भी बहुत लोगों की और मेरी भी उपकारिणी हुई है ।

प्रिस्कीला और अकुला को जो खीष्ट ३ यीशु में मेरे सहकर्म्मी हैं नमस्कार । उन्हों ने मेरे प्राण के लिये अपना ही ४ गला धर दिया जिन का केवल मैं नहीं परन्तु अन्यदेशियों की सारी मंडलियां भी धन्य मानती हैं । उन के घर में ५

की मंडली को भी नमस्कार . इपेनित मेरे प्यारे को जो ख्रीष्ट के लिये आशिया
५ का पहिला फल है नमस्कार । मरियम को जिस ने हमारे लिये बहुत परिश्रम
७ किया नमस्कार । अन्द्रोनिक और यूनिय मेरे कुटुंबों और मेरे संगी बन्धुओं को जो प्रेरितों में प्रसिद्ध हैं और मुझ से पहिले ख्रीष्ट में हुए थे नमस्कार ।
८ अम्पलिय प्रभु में मेरे प्यारे को नमस्कार ।
९ उर्ब्बान ख्रीष्ट में हमारे सहकर्म्मी को और स्ताखु मेरे प्यारे को नमस्कार ।
१० आपिल्लि को जो ख्रीष्ट में जांचा हुआ है नमस्कार . अरिस्तबूल के घराने के
११ लोगों को नमस्कार । हेरोदियोन मेरे कुटुंब को नमस्कार . नार्किस के घराने के जो लोग प्रभु में हैं उन्हों को
१२ नमस्कार । त्रुफेना और त्रुफोसा को जिन्हों ने प्रभु में परिश्रम किया नमस्कार . प्यारी पर्सी को जिस ने प्रभु में बहुत परिश्रम किया नमस्कार ।
१३ रूफ को जो प्रभु में चुना हुआ है और उस की और मेरी माता को नमस्कार ।
१४ असुंक्रित और फिलगोन और हर्मा और पात्रोबा और हर्मी को और उन के संग
१५ के भाइयों को नमस्कार । फिललोग और यूलिया को और नीरिय और उस की बहिन को और उलुम्पा को और उन के संग के सब पवित्र लोगों को नमस्कार ।
१६ एक दूसरे को पवित्र चूमा लेके नमस्कार करो . तुम को ख्रीष्ट की मंडलियों की ओर से नमस्कार ॥

१७ हे भाइयो मैं तुम से बिन्ती करता हूं कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत जो तुम ने पाई है नाना भांति के बिरोध और ठोकर डालते हैं उन्हें देख
१८ रखो और उन से फिर जाओ । क्योंकि ऐसे लोग हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट की नहीं परन्तु अपने पेट की सेवा करते हैं और चिकनी और मीठी बातों से सूधे लोगों
१९ के मन को धोखा देते हैं । तुम्हारे आज्ञापालन का चर्चा सब लोगों में फैल गया है इस से मैं तुम्हारे विषय में आनन्द करता हूं परन्तु मैं चाहता हूं कि तुम भलाई के लिये बुद्धिमान
२० पर बुराई के लिये सूधे होओ । शान्ति का ईश्वर शैतान को शीघ्र तुम्हारे पांओं तले कुचलेगा . हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट का अनुग्रह तुम्हारे संग होय ॥

२१ तिमोथिय मेरे सहकर्म्मी का और लूकिय और यासोन और सोसिपातर मेरे
२२ कुटुंबों का तुम से नमस्कार । मुझ तर्तिय पत्र' के लिखनेहारे का प्रभु में
२३ तुम से नमस्कार । गायस मेरे और सारी मंडली के आतिथ्यकारी का तुम से नमस्कार . इरास्त जो नगर का भंडारी है और भाई क्वार्त का
२४ तुम से नमस्कार । हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट का अनुग्रह तुम सभों के संग होय . आमीन ॥

२५ जो मेरे सुसमाचार के अनुसार और यीशु ख्रीष्ट के विषय के उपदेश के अनुसार अर्थात उस भेद के प्रकाश के
२६ अनुसार तुम्हें स्थिर कर सकता है . जो भेद सनातन से गुप्त रखा गया था परन्तु अब प्रगट किया गया है और सनातन ईश्वर की आज्ञा से भविष्यद्वक्ताओं के पुस्तक के द्वारा सब देशों के लोगों को बताया गया है कि वे विश्वास से आज्ञाकारी
२७ हो जायें . उस को अर्थात अद्वैत बुद्धिमान ईश्वर को यीशु ख्रीष्ट के द्वारा से धन्य हो जिस का गुणानुवाद सर्व्वदा होय । आमीन ॥

करिन्थियों को पावल प्रेरित की पहिली पत्री।

पहिला पर्ब्ब ।

१ पावल जो ईश्वर की इच्छा से यीशु खीष्ट का बुलाया हुआ प्रेरित है और २ भाई सोस्थिनी . ईश्वर की मंडली को जो करिन्थ में है जो खीष्ट यीशु में पवित्र किये हुए और बुलाये हुए पवित्र लोग हैं उन सभों के संग जो हर स्थान में हमारे हां उन के और हमारे भी प्रभु यीशु खीष्ट के नाम की प्रार्थना करते ३ हैं . तुम्हें हमारे पिता ईश्वर और प्रभु यीशु खीष्ट से अनुग्रह और शान्ति मिले ॥

४ मैं सदा तुम्हारे विषय में अपने ईश्वर का धन्य मानता हूं इस लिये कि ईश्वर का यह अनुग्रह तुम्हें खीष्ट यीशु में दिया ५ गया . कि उस में तुम हर बात में अर्थात सारे बचन और सारे ज्ञान में ६ धनवान किये गये . जैसा खीष्ट के विषय की साक्षी तुम्हों में दृढ़ हुई . ७ यहां लों कि किसी बरदान में तुम्हें घटी नहीं है और तुम हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के प्रकाश की बाट जोहते हो । ८ वह तुम्हें अन्त लों भी दृढ़ करेगा ऐसा कि तुम हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के दिन ९ में निर्दोष होगे । ईश्वर विश्वासयोग्य है जिस से तुम उस के पुत्र हमारे प्रभु यीशु खीष्ट की संगति में बुलाये गये ॥

१० हे भाइयो मैं तुम से हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के नाम के कारण बिन्ती करता हूं कि तुम सब एक ही प्रकार की बात बोलो और तुम्हों में विभेद न होवे परन्तु एक ही मन और एक ही बिचार से ११ मिले होओ । क्योंकि हे मेरे भाइयो क्लोई के घराने के लोगों से मुझ पर तुम्हारे विषय में प्रगट किया गया है कि १२ तुम्हों में बैर विरोध हैं . और मैं यह कहता हूं कि तुम सब यूं बोलते हो कोई कि मैं पावल का हूं कोई कि मैं अपल्लो का कोई कि मैं कैफा का कोई कि मैं खीष्ट का हूं । १३ क्या खीष्ट विभाग किया गया है . क्या पावल तुम्हारे लिये क्रूश पर घात किया गया अथवा क्या तुम्हें पावल के नाम से बपतिसमा दिया गया । १४ मैं ईश्वर का धन्य मानता हूं कि क्रिस्प और गायस को छोड़के मैं ने तुम में से किसी को बपतिसमा नहीं दिया . १५ ऐसा न हो कि कोई कहे कि मैं ने अपने नाम से बपतिसमा दिया । १६ और मैं ने स्तिफान के घराने को भी बपतिसमा दिया . आगे मैं नहीं जानता हूं कि मैं ने और किसी को बपतिसमा दिया । १७ क्योंकि खीष्ट ने मुझे बपतिसमा देने को नहीं परन्तु सुसमाचार सुनाने को भेजा पर कथा के ज्ञान के अनुसार नहीं जिस्तें ऐसा न हो कि खीष्ट का क्रूश व्यर्थ ठहरे ॥

१८ क्योंकि क्रूश की कथा उन्हें जो नाश होते हैं मूर्खता है परन्तु हम जो त्राण पाते हैं ईश्वर का सामर्थ्य है । १९ क्योंकि लिखा है कि मैं ज्ञानवानों के ज्ञान को नाश करूंगा और बुद्धिमानों की बुद्धि को तुच्छ कर देऊंगा । २० ज्ञानवान कहां है . अध्यापक कहां . इस संसार का विवादी कहां . क्या ईश्वर ने इस जगत के ज्ञान को मूर्खता न बनाई है । २१ क्योंकि जब कि ईश्वर के ज्ञान से यूं हुआ कि जगत ने ज्ञान के द्वारा से ईश्वर को न जाना तो ईश्वर की इच्छा हुई कि उपदेश की मूर्खता के द्वारा से बिश्वास करनेहारों को बचावे । २२ यिहूदी लोग तो चिन्ह मांगते हैं और

२३ यूनानी लोग भी ज्ञान ढूंढ़ते हैं, परन्तु हम लोग क्रूश पर मारे गये खीष्ट का उपदेश करते हैं जो यिहूदियों को ठोकर का कारण और यूनानियों को २४ मूर्खता है, परन्तु उन्हीं को हां यिहूदियों को और यूनानियों को भी जो बुलाये हुए हैं ईश्वर का सामर्थ्य और ईश्वर की ज्ञानरूपी खीष्ट है। २५ क्योंकि ईश्वर की मूर्खता मनुष्यों से अधिक ज्ञानवान है और ईश्वर की दुर्बलता मनुष्यों से अधिक शक्तिमान है॥

२६ क्योंकि हे भाइयो तुम अपनी बुलाहट को देखते हो कि न तुम में शरीर के अनुसार बहुत ज्ञानवान न बहुत २७ सामर्थी न बहुत कुलीन हैं। परन्तु ईश्वर ने जगत के मूर्खों को चुना है कि ज्ञानवानों को लज्जित करे और जगत के दुर्बलों को ईश्वर ने चुना है कि शक्तिमानों को लज्जित करे। २८ और जगत के अधमों और तुच्छों को हां उन्हें जो नहीं हैं ईश्वर ने चुना है २९ कि उन्हें जो हैं लोप करे, जिस्तें कोई प्राणी ईश्वर के आगे घमंड न करे। ३० उसी से तुम खीष्ट यीशु में हुए हो जो ईश्वर की ओर से हमों का ज्ञान औ धर्म्म औ पवित्रता औ उद्धार हुआ है, ३१ जिस्तें जैसा लिखा है जो बड़ाई करे सो परमेश्वर के विषय में बड़ाई करे॥

दूसरा पर्व्व।

१ हे भाइयो मैं जब तुम्हारे पास आया तब वचन अथवा ज्ञान की उत्तमता से तुम्हें ईश्वर की साक्षी सुनाता हुआ २ नहीं आया। क्योंकि मैं ने यही ठहराया कि तुम्हों में और किसी बात को न जानूं केवल यीशु खीष्ट को हां क्रूश पर ३ मारे गये खीष्ट को। और मैं दुर्बलता और भय के साथ और बहुत कांपता हुआ तुम्हारे यहां रहा। ४ और मेरा वचन और मेरा उपदेश मनुष्यों के ज्ञान की मनानेवाली बातों से नहीं परन्तु आत्मा और सामर्थ्य के प्रमाण से था, ५ जिस्तें तुम्हारा विश्वास मनुष्यों के ज्ञान पर नहीं परन्तु ईश्वर के सामर्थ्य पर होवे॥

६ तौभी हम सिद्ध लोगों में ज्ञान सुनाते हैं पर इस संसार का अथवा इस संसार के लोप होनेहारे प्रधानों का ज्ञान नहीं। ७ परन्तु हम एक भेद में ईश्वर का गुप्त ज्ञान जिसे ईश्वर ने सनातन से हमारी महिमा के लिये ठहराया सुनाते हैं, ८ जिसे इस संसार के प्रधानों में से किसी ने न जाना क्योंकि जो वे उसे जानते तो तेजोमय प्रभु को क्रूश पर घात न करते। ९ परन्तु जैसा लिखा है जो आंख ने नहीं देखा और कान ने नहीं सुना है और जो मनुष्य के हृदय में नहीं समाया है वही है जो ईश्वर ने उन के लिये जो उसे प्यार करते हैं तैयार किया है। १० परन्तु ईश्वर ने उसे अपने आत्मा से हमों पर प्रगट किया है क्योंकि आत्मा सब बातें हां ईश्वर की गंभीर बातें भी जांचता है। ११ क्योंकि मनुष्यों में से कौन है जो मनुष्य की बातें जानता है केवल मनुष्य का आत्मा जो उस में है, वैसे ही ईश्वर की बातें भी कोई नहीं जानता है केवल ईश्वर का आत्मा। १२ परन्तु हम ने संसार का आत्मा नहीं पाया है परन्तु वह आत्मा जो ईश्वर की ओर से है इस लिये कि हम उन बातों को जानें जो ईश्वर ने हमें दिई हैं, १३ जो हम मनुष्यों के ज्ञान की सिखाई हुई बातों में नहीं परन्तु पवित्र आत्मा की सिखाई हुई बातों में आत्मिक बातें आत्मिक बातों से मिला मिलाके सुनाते हैं। १४ परन्तु प्राणिक मनुष्य ईश्वर के

आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता है क्योंकि वे उस के लेखे मूर्खता हैं और वह उन्हें नहीं जान सकता है क्योंकि उन का बिचार आत्मिक रीति से

१५ किया जाता है । आत्मिक जन सब कुछ बिचार करता है परन्तु वह आप किसी से बिचार नहीं किया जाता

१६ है । क्योंकि परमेश्वर का मन किस ने जाना है जो उसे सिखावे . परन्तु हम को खीष्ट का मन है ॥

तीसरा पर्व्व ।

१ हे भाइयो मैं तुम से जैसा आत्मिक लोगों से तैसा नहीं बात कर सका परन्तु जैसा शारीरिक लोगों से हां जैसा उन्हों

२ से जो खीष्ट में बालक हैं । मैं ने तुम्हें दूध पिलाया अन्न न खिलाया क्योंकि तुम तब लों नहीं खा सकते थे बरन अब लों भी नहीं खा सकते हो क्योंकि

३ अब लों शारीरिक हो । क्योंकि जब कि तुम्हों में डाह और बैर और बिरोध हैं तो क्या तुम शारीरिक नहीं हो और मनुष्य की रीति पर नहीं चलते हो ।

४ क्योंकि जब एक कहता है मैं पावल का हूं और दूसरा मैं अपल्लो का हूं तो क्या तुम शारीरिक नहीं हो ॥

५ तो पावल कौन है और अपल्लो कौन है . केवल सेवक लोग जिन के द्वारा जैसा प्रभु ने हर एक को दिया

६ तैसा तुम ने बिश्वास किया । मैं ने लगाया अपल्लो ने सींचा परन्तु ईश्वर

७ ने बढ़ाया । सो न तो लगानेहारा कुछ है और न सींचनेहारा परन्तु ईश्वर जो

८ बढ़ानेहारा है । लगानेहारा और सींचनेहारा दोनों एक हैं परन्तु हर एक जन अपने ही परिश्रम के अनुसार अपनी

९ ही बनि पावेगा । क्योंकि हम ईश्वर के सहकर्म्मी हैं . तुम ईश्वर की खेती ईश्वर की रचना हो ॥

१० ईश्वर के अनुग्रह के अनुसार जो मुझे दिया गया मैं ने ज्ञानवान थवई की नाईं नेव डाली है और दूसरा मनुष्य उस पर घर बनाता है . परन्तु हर एक मनुष्य सचेत रहे कि वह किस रीति से उस पर बनाता है ।

११ क्योंकि जो नेव पड़ी है अर्थात यीशु खीष्ट उसे छोड़के दूसरी नेव कोई नहीं डाल सकता है ।

१२ परन्तु यदि कोई इस नेव पर सोना वा रूपा वा बहुमूल्य पत्थर वा काठ वा घास वा फूस बनावे

१३ तो हर एक का काम प्रगट हो जायगा क्योंकि वही दिन उसे प्रगट करेगा इस लिये कि आग सहित प्रकाश होता है और हर एक का काम कैसा है सो वह आग परखेगी ।

१४ यदि किसी का काम जो उस ने बनाया है ठहरे तो वह

१५ मजूरी पावेगा । यदि किसी का काम जल जाय तो उसे टूटी लगेगी परन्तु वह आप बचेगा -- ऐसा जैसा आग के बीच से होके कोई बचे ॥

१६ क्या तुम नहीं जानते हो कि तुम ईश्वर के मन्दिर हो और ईश्वर का

१७ आत्मा तुम में बसता है । यदि कोई मनुष्य ईश्वर के मन्दिर को नाश करे तो ईश्वर उस को नाश करेगा क्योंकि ईश्वर का मन्दिर पवित्र है और वह मन्दिर तुम हो ॥

१८ कोई अपने को छल न देवे . यदि कोई इस संसार में अपने को तुम्हों में ज्ञानी समझे तो मूर्ख बने जिस्तें ज्ञानी

१९ हो जाय । क्योंकि इस जगत का ज्ञान ईश्वर के यहां मूर्खता है क्योंकि लिखा है वह ज्ञानियों को उन की चतुराई

२० में पकड़नेहारा है । और फिर परमेश्वर ज्ञानियों की चिन्ताएं जानता है कि

२१ वे व्यर्थ हैं । सो मनुष्यों के विषय में कोई घमंड न करे क्योंकि सब कुछ

२२ तुम्हारा है । क्या पावल क्या अपल्लो
क्या कैफा क्या जगत क्या जीवन क्या
मरण क्या वर्त्तमान क्या भविष्य सब
२३ कुछ तुम्हारा है । और तुम खीष्ट के हो
और खीष्ट ईश्वर का है ॥

चौथा पर्ब्ब ।

१ यूंही मनुष्य हमें खीष्ट के सेवक और
ईश्वर के भेदों के भंडारी करके जानें ।
२ फिर भंडारियों में लोग यह चाहते हैं
कि मनुष्य विश्वास योग्य पाया जाय ।
३ परन्तु मेरे लेखे अति छोटी बात है कि
मेरा विचार तुम्हों से अथवा मनुष्य के
न्याय से किया जाय हां मैं अपना
४ विचार भी नहीं करता हूं । क्योंकि
मेरे जानते में कुछ मुझ से नहीं हुआ
परन्तु इस से मैं निर्दोष नहीं ठहरा हूं
५ पर मेरा विचार करनेहारा प्रभु है । सो
जब लों प्रभु न आवे समय के आगे
किसी बात का विचार मत करो, वही
तो अन्धकार की गुप्त बातें ज्योति में
दिखावेगा और हृदयों के परामर्शों को
प्रगट करेगा और तब ईश्वर की ओर
से हर एक की सराहना होगी ॥

६ इन बातों को हे भाइयो तुम्हारे
कारण मैं ने अपने पर और अपल्लो पर
दृष्टान्त सा लगाया है इस लिये कि
हमों से तुम यह सीखो कि जो लिखा
हुआ है उस से अधिक ऊंचा मन न
रखो जिस्तें तुम एक दूसरे के पक्ष में
और मनुष्य के विरुद्ध फूल न जाओ ।
७ क्योंकि कौन तुझे भिन्न करता है, और
तेरे पास क्या है जो तू ने दूसरे से
नहीं पाया है, और यदि तू ने दूसरे
से पाया है तो क्यों ऐसा घमंड करता
८ है कि मानो दूसरे से नहीं पाया । तुम
तो तृप्त हो चुके तुम धनी हो चुके तुम
ने हमारे बिना राज्य किया है हां मैं
चाहता हूं कि तुम राज्य करते जिस्तें
हम भी तुम्हारे संग राज्य करें । क्योंकि ९
मैं समझता हूं कि ईश्वर ने सब के
पीछे हम प्रेरितों को जैसे मृत्यु के लिये
ठहराये हुओं को प्रत्यक्ष दिखाया है
क्योंकि हम जगत के हां दूतों और
मनुष्यों के आगे लीला के ऐसे बने हैं ।
हम खीष्ट के कारण मूर्ख हैं पर तुम १०
खीष्ट में बुद्धिमान हो, हम दुर्बल हैं
पर तुम बलवन्त हो, तुम मर्य्यादिक
हो पर हम निरादर हैं । इस घड़ी लों ११
हम भूखे और प्यासे और नंगे भी रहते
हैं और घूंसे मारे जाते और डांवाडोल
रहते हैं और अपने ही हाथों से कमाने
में परिश्रम करते हैं । हम अपमान १२
किये जाने पर आशीष देते हैं सताये
जाने पर सह लेते हैं निन्दित होने पर
बिन्ती करते हैं । हम अब लों जगत १३
का कूड़ा हां सब वस्तुओं का खुरचन
के ऐसे बने हैं ॥

मैं यह बातें तुम्हें लज्जित करने १४
को नहीं लिखता हूं परन्तु अपने प्यारे
बालकों की नाईं तुम्हें चिताता हूं ।
क्योंकि तुम्हें खीष्ट में यदि दस सहस्र १५
शिक्षक हों तौभी बहुत पिता नहीं हैं
क्योंकि खीष्ट यीशु में सुसमाचार के
द्वारा तुम मेरे ही पुत्र हो । सो मैं तुम १६
से बिन्ती करता हूं तुम मेरी सी चाल
चलो । इस हेतु से मैं ने तिमोथिय को १७
जो प्रभु में मेरा प्यारा और विश्वास-
योग्य पुत्र है तुम्हारे पास भेजा है और
खीष्ट में जो मेरे मार्ग हैं उन्हें वह जैसा
मैं सर्व्वत्र हर एक मंडली में उपदेश
करता हूं तैसा तुम्हें चेत दिलावेगा ।
कितने लोग फूल गये हैं मानो कि मैं १८
तुम्हारे पास नहीं आनेवाला हूं । परन्तु १९
जो प्रभु की इच्छा होय तो मैं शीघ्र
तुम्हारे पास आऊंगा और इन फूले हुए
लोगों का वचन नहीं परन्तु सामर्थ्य

२० कुछ लेऊंगा । क्योंकि ईश्वर का राज्य
बचन में नहीं परन्तु सामर्थ्य में है ।
२१ तुम क्या चाहते हो . मैं छड़ी लेके
अथवा प्रेम से और नम्रता के आत्मा से
तुम्हारे पास आऊं ॥

पांचवां पर्ब्ब ।

१ यह सर्ब्बत्र सुनने में आता है कि
तुम्हों में व्यभिचार है और ऐसा व्यभि-
चार कि उस का चर्चा देवपूजकों में भी
नहीं होता है कि कोई मनुष्य अपने
२ पिता की स्त्री से बिवाह करे । और
तुम फूल गये हो यह नहीं कि शोक
किया जिस्ते यह काम करनेहारा तुम्हारे
३ बीच में से निकाला जाता । मैं तो
शरीर में दूर परन्तु आत्मा में साक्षात
होके जिस ने यह काम इस रीति से
किया है उस का बिचार जैसा साक्षात
४ में कर चुका हूं . कि हमारे प्रभु यीशु
ख्रीष्ट के नाम से जब तुम और मेरा
आत्मा हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट के सामर्थ्य
५ सहित एकट्ठे हुए हैं . तब ऐसा जन
शरीर के बिनाश के लिये शैतान को
सौंपा जाय जिस्ते आत्मा प्रभु यीशु के
दिन में त्राण पावे ॥

६ तुम्हारा घमंड करना अच्छा नहीं है .
क्या तुम नहीं जानते हो कि थोड़ा सा
खमीर सारे पिंड को खमीर कर डालता
७ है । सो पुराना खमीर सब का सब
निकालो कि जैसे तुम अखमीरी हो
तैसे नया पिंड होओ क्योंकि हमारा
निस्तार पर्ब्ब का मेम्ना अर्थात ख्रीष्ट
८ हमारे लिये बलि दिया गया है । सो
हम पर्ब्ब को न तो पुराने खमीर से
और न बुराई औ दुष्टता के खमीर से
परन्तु सीधाई औ सच्चाई के अखमीरी
भाव से रखें ॥

९ मैं ने तुम्हारे पास पत्री में लिखा
कि व्यभिचारियों की संगति मत करो ।
१० यह नहीं कि तुम इस जगत के व्यभि-
चारियों वा लोभियों वा उपद्रवियों वा
मूर्त्तिपूजकों की सर्ब्बथा संगति न करो
नहीं तो तुम्हें जगत में से निकल जाना
११ अवश्य होता । सो मैं ने तुम्हारे पास
यही लिखा कि यदि कोई जो भाई
कहलाता है व्यभिचारी वा लोभी वा
मूर्त्तिपूजक वा निन्दक वा मद्यप वा
उपद्रवी होय तो उस की संगति मत
करो बरन ऐसे मनुष्य के संग खाओ
१२ भी नहीं । क्योंकि मुझे बाहरवालों का
बिचार करने से क्या काम . क्या तुम
भीतरवालों का बिचार नहीं करते हो ।
१३ पर बाहरवालों का बिचार ईश्वर
करता है . फिर उस कुकर्म्मी को अपने
में से निकाल देओ ॥

छठवां पर्ब्ब ।

१ तुम में से जो किसी जन को दूसरे
से बिवाद होय तो क्या उसे अधर्म्मियों
के आगे नालिश करने का साहस होता
है और पवित्र लोगों के आगे नहीं ।
२ क्या तुम नहीं जानते हो कि पवित्र
लोग जगत का बिचार करेंगे और यदि
जगत का बिचार तुम से किया जाता
है तो क्या तुम सब से छोटी बातों का
निर्णय करने के अयोग्य हो । क्या तुम
३ नहीं जानते हो कि सांसारिक बातें
पीछे रहें हम तो स्वर्गदूतों का
बिचार करेंगे । सो यदि तुम्हें सांसारिक
४ बातों का निर्णय करना होय तो जो
मंडली में कुछ नहीं गिने जाते हैं उन्हीं
को बैठाओ । मैं तुम्हारी लज्जा निमित्त
५ कहता हूं . क्या ऐसा है कि तुम्हों में
एक भी ज्ञानी नहीं है जो अपने भाइयों
के बीच में बिचार कर सकेगा । परन्तु
६ भाई भाई पर नालिश करता है और
सो भी अबिश्वासियों के आगे भी । सो
७ तुम्हों में निश्चय दोष हुआ है कि तुम्हों

में आपस में विवाद होते हैं . क्यों नहीं बरन अन्याय सहते हो . क्यों नहीं ८ बरन ठगाई सहते हो। परन्तु तुम अन्याय करते और ठगते हो हां भाइयों से भी यह करते हो। क्या तुम नहीं जानते हो कि अन्यायी लोग ईश्वर के राज्य के अधिकारी न होंगे॥

१० धोखा मत खाओ . न व्यभिचारी न मूर्त्तिपूजक न परस्त्रीगामी न लुच्चे न पुरुषगामी न चोर न लोभी न मद्यप न निन्दक न उपद्रवी लोग ईश्वर के ११ राज्य के अधिकारी होंगे। और तुम में से कितने लोग ऐसे थे परन्तु तुम ने अपने को धोया परन्तु तुम पवित्र किये गये परन्तु तुम प्रभु यीशु के नाम से और हमारे ईश्वर के आत्मा से धर्म्मी ठहराये गये॥

१२ सब कुछ मेरे लिये उचित है परन्तु सब कुछ लाभ का नहीं है . सब कुछ मेरे लिये उचित है परन्तु मैं किसी १३ बात के अधीन नहीं होंगा। भोजन पेट के लिये और पेट भोजन के लिये है परन्तु ईश्वर इस को और उस को दोनों को लय करेगा . पर देह व्यभिचार के लिये नहीं है परन्तु प्रभु के १४ लिये और प्रभु देह के लिये है। और ईश्वर ने अपने सामर्थ्य से प्रभु को जिला उठाया और हमें भी जिला १५ उठावेगा। क्या तुम नहीं जानते हो कि तुम्हारे देह ख्रीष्ट के अंग हैं . सो क्या मैं ख्रीष्ट के अंग ले करके उन्हें वेश्या के अंग बनाऊं . ऐसा न हो। १६ क्या तुम नहीं जानते हो कि जो वेश्या से मिल जाता है सो एक देह होता है क्योंकि कहा है वे दोनों एक तन १७ होंगे। परन्तु जो प्रभु से मिल जाता है १८ सो एक आत्मा होता है। व्यभिचार से बचे रहो . हर एक पाप जो मनुष्य करता है देह के बाहर है परन्तु व्यभिचार करनेहारा अपने ही देह के विरुद्ध पाप करता है। १९ क्या तुम नहीं जानते हो कि पवित्र आत्मा जो तुम में है जो तुम्हें ईश्वर की ओर से मिला है तुम्हारा देह उसी पवित्र आत्मा का मन्दिर है और तुम अपने नहीं हो। २० क्योंकि तुम दाम देके मोल लिये गये हो सो अपने देह में और अपने आत्मा में जो ईश्वर के हैं ईश्वर की महिमा प्रगट करो॥

सातवां पर्ब्ब।

१ जो बातें तुम ने मेरे पास लिखीं उन के विषय में मैं कहता हूं मनुष्य के लिये अच्छा है कि स्त्री को न छूवे। २ परन्तु व्यभिचार कर्म्मों के कारण हर एक मनुष्य की अपनी ही स्त्री होय और हर एक स्त्री का अपना ही स्वामी होय। ३ पुरुष अपनी स्त्री से जो स्नेह उचित है सो किया करे और वैसे ही स्त्री भी अपने स्वामी से। ४ स्त्री को अपने देह पर अधिकार नहीं पर उस के स्वामी को अधिकार है और वैसे ही पुरुष को भी अपने देह पर अधिकार नहीं पर उस की स्त्री को अधिकार है। ५ तुम एक दूसरे से मत अलग रहो केवल तुम्हें उपवास औ प्रार्थना के लिये अवकाश मिलने के कारण जो दोनों की सम्मति से तुम कुछ दिन अलग रहो तो रहो और फिर एकट्ठे हो जिस्तें शैतान तुम्हारे असंयम के कारण तुम्हारी परीक्षा न करे। ६ परन्तु मैं जो यह कहता हूं सो अनुमति देता हूं आज्ञा नहीं करता हूं। ७ मैं तो चाहता हूं कि सब मनुष्य ऐसे होवें जैसा मैं आप ही हूं परन्तु हर एक ने ईश्वर की ओर से अपना अपना वरदान पाया है किसी ने इस प्रकार का किसी ने उस प्रकार

८ को । पर मैं अविवाहितों से और विधवाओं से कहता हूं कि यदि वे जैसा मैं हूं तैसे रहें तो उन के लिये ९ अच्छा है । परन्तु जो वे असंयमी होवें तो विवाह करें क्योंकि विवाह करना १० जलते रहने से अच्छा है । विवाहितों को मैं नहीं परन्तु प्रभु आज्ञा देता है कि स्त्री अपने स्वामी से अलग न ११ होय । पर जो वह अलग भी होय तो अविवाहिता रहे अथवा अपने स्वामी से मिल जाय . और पुरुष अपनी स्त्री को न त्यागे ॥

१२ दूसरों से प्रभु नहीं परन्तु मैं कहता हूं यदि किसी भाई की अविश्वासिनी स्त्री होय और वह स्त्री उस के संग रहने को प्रसन्न होय तो वह उसे न १३ त्यागे । और जिस स्त्री का अविश्वासी स्वामी होय और वह स्वामी उस के संग रहने को प्रसन्न होय वह उसे न १४ त्यागे । क्योंकि वह अविश्वासी पुरुष अपनी स्त्री के कारण पवित्र किया गया है और वह अविश्वासिनी स्त्री अपने स्वामी के कारण पवित्र किई गई है नहीं तो तुम्हारे लड़के अशुद्ध १५ होते पर अब तो वे पवित्र हैं । परन्तु जो वह अविश्वासी जन अलग होता है तो अलग होय . ऐसी दशा में भाई अथवा बहिन बंधा हुआ नहीं है . परन्तु ईश्वर ने हमें मिलाप के लिये १६ बुलाया है । क्योंकि हे स्त्री तू क्या जानती है कि तू अपने स्वामी को बचावेगी कि नहीं अथवा हे पुरुष तू क्या जानता है कि तू अपनी स्त्री को बचावेगा कि नहीं ॥

१७ परन्तु जैसा ईश्वर ने हर एक को बांट दिया है जैसा प्रभु ने हर एक को बुलाया है तैसा ही वह चले . और मैं सब मंडलियों में यूंहीं आज्ञा देता हूं । १८ कोई खतना किया हुआ बुलाया गया हो तो खतनाहीन सा न बने . कोई खतनाहीन बुलाया गया हो तो खतना न १९ किया जाय । खतना कुछ नहीं है और खतनाहीन होना कुछ नहीं है परन्तु ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करना सार २० है । हर एक जन जिस दशा में बुलाया २१ गया उसी में रहे । क्या तू दास होके बुलाया गया . चिन्ता मत कर पर यदि तेरा उद्धार हो भी सकता है २२ तो बरन उस को भोग कर । क्योंकि जो दास प्रभु में बुलाया गया है सो प्रभु का निर्बन्ध किया हुआ है और वैसे ही निर्बन्ध जो बुलाया गया है सो ख्रीष्ट २३ का दास है । तुम दाम देके मोल लिये गये हो . मनुष्यों के दास मत बनो । २४ हे भाइयो हर एक जन जिस दशा में बुलाया गया ईश्वर के आगे उसी में बना रहे ॥

२५ कुंआरियों के विषय में प्रभु की कोई आज्ञा मुझे नहीं मिली है परन्तु जैसा प्रभु ने मुझ पर दया किई है कि मैं विश्वासयोग्य होऊं तैसा मैं परामर्श देता २६ हूं । सो मैं विचार करता हूं कि वर्त्तमान क्लेश के कारण यही अच्छा है अर्थात मनुष्य को वैसे ही रहना अच्छा २७ है । क्या तू स्त्री के संग बंधा है . छूटने का यत्न मत कर . क्या तू स्त्री से छूटा है . स्त्री की इच्छा मत कर । २८ तौभी जो तू विवाह करे तो तूने पाप नहीं किया और यदि कुंआरी विवाह करे तो उस ने पाप नहीं किया पर ऐसों को शरीर में क्लेश होगा . परन्तु मैं तुम पर भार नहीं देता हूं ॥

२९ हे भाइयो मैं यह कहता हूं कि अब तो समय संक्षेप किया गया है इस लिये कि जिन्हें स्त्रियां हैं सो ऐसे होवें जैसे ३० उन्हें स्त्रियां नहीं . और रोनेहारे भी

ऐसे हों जैसे नहीं रोते और आनन्द करनेहारे ऐसे हों जैसे आनन्द नहीं करते और मोल लेनेहारे ऐसे हों जैसे नहीं
३१ रखते . और इस संसार के भोग करनेहारे ऐसे हों जैसे अतिभोग नहीं करते क्योंकि इस संसार का रूप बीतता जाता है॥

३२ मैं चाहता हूं कि तुम्हें चिन्ता न हो . अबिवाहित पुरुष प्रभु की बातों की चिन्ता करता है कि प्रभु को क्योंकर
३३ प्रसन्न करे। परन्तु बिवाहित पुरुष संसार की बातों की चिन्ता करता है कि अपनी स्त्री को क्योंकर प्रसन्न करे।
३४ जोरू और कुंआरी में भी भेद है . अबिवाहिता नारी प्रभु की बातों की चिन्ता करती है कि वह देह और आत्मा में भी पवित्र होवे परन्तु बिवाहिता नारी संसार की बातों की चिन्ता करती है कि अपने स्वामी को क्योंकर प्रसन्न करे।
३५ पर मैं यह बात तुम्हारे ही लाभ के लिये कहता हूं अर्थात मैं जो तुम पर फंदा डालूं इस लिये नहीं परन्तु तुम्हारे शुभचाल चलने और दुचित्त न होके प्रभु में लौलीन रहने के लिये कहता हूं।
३६ परन्तु यदि कोई समझे कि मैं अपनी कन्या से अशुभ काम करता हूं जो वह स्यानी हो और ऐसा होना अवश्य है तो वह जो चाहता है सो करे उसे पाप
३७ नहीं है . वे बिवाह करें। पर जो मन में दृढ़ रहता है और उस को आवश्यक नहीं पर अपनी इच्छा के विषय में अधिकार है और यह बात अपने मन में ठहराई है कि अपनी कन्या को रख
३८ वह अच्छा करता है। इस लिये जो बिवाह देता है सो अच्छा करता है और जो बिवाह नहीं देता है सो भी और अच्छा करता है॥

३९ स्त्री जब लों उस का स्वामी जीता रहे तब लों व्यवस्था से बंधी है परन्तु यदि उस का स्वामी मर जाय तो वह निर्बन्ध है कि जिस से चाहे उस से
४० ब्याही जाय . पर केवल प्रभु में। परन्तु जो वह वैसी ही रहे तो मेरे बिचार में और भी धन्य है और मैं समझता हूं कि ईश्वर का आत्मा मुझ में भी है॥

आठवां पर्ब्ब।

१ मूरतों के आगे बलि किई हुई वस्तुओं के विषय में मैं कहता हूं . हम जानते हैं कि हम सभों को ज्ञान है . ज्ञान फुलाता है परन्तु प्रेम सुधारता
२ है। यदि कोई समझे कि मैं कुछ जानता हूं तो जैसा जानना उचित है
३ तैसा अब लों कुछ नहीं जानता है। परन्तु यदि कोई जन ईश्वर को प्यार करता है तो वही ईश्वर से जाना जाता है॥

४ सो मूरतों के आगे बलि किई हुई वस्तुओं के खाने के विषय में मैं कहता हूं . हम जानते हैं कि मूर्त्ति जगत में कुछ नहीं है और कि एक ईश्वर को छोड़के कोई दूसरा ईश्वर नहीं है।
५ क्योंकि यद्यपि क्या आकाश में क्या पृथिवी पर कितने हैं जो ईश्वर कहलाते हैं जैसा बहुत से देव और बहुत
६ से प्रभु हैं . तौभी हमारे लिये एक ईश्वर पिता है जिस से सब कुछ है और हम उस के लिये हैं और एक प्रभु यीशु खीष्ट है जिस के द्वारा से सब कुछ है और हम उस के द्वारा से हैं॥

७ परन्तु सभों में यह ज्ञान नहीं है पर कितने लोग अब लों मूर्त्ति जानके मूर्त्ति के आगे बलि किई हुई वस्तु मानके उस वस्तु को खाते हैं और उन का मन दुर्ब्बल होके अशुद्ध किया जाता है।
८ भोजन तो हमें ईश्वर के निकट नहीं पहुंचाता है क्योंकि यदि हम खावें तो

हमें कुछ बढ़ती नहीं और यदि नहीं खावें
९ तो कुछ घटती भी नहीं । परन्तु सचेत
रहो ऐसा न हो कि तुम्हारा यह अधि-
कार कहीं दुर्ब्बलों के लिये ठोकर का
१० कारण हो जाय । क्योंकि यदि कोई
तुझे जिस को ज्ञान है मूर्त्ति के मन्दिर
में भोजन पर बैठे देखे तो क्या इस
लिये कि वह दुर्ब्बल है उस का मन
मूर्त्ति के आगे बलि किई हुई बस्तु
११ खाने को दृढ़ न किया जायगा । और
क्या वह दुर्ब्बल भाई जिस के लिये
खीष्ट मूआ तेरे ज्ञान के हेतु नाश न
१२ होगा । परन्तु इस रीति से भाइयों का
अपराध करने से और उन के दुर्ब्बल
मन को चोट देने से तुम खीष्ट का अप-
१३ राध करते हो । इस कारण यदि भोजन
मेरे भाई को ठोकर खिलाता हो तो
मैं कभी किसी रीति से मांस न खाऊंगा
न हो कि मैं अपने भाई को ठोकर
खिलाऊं ॥

नवां पर्व्व ।

१ क्या मैं प्रेरित नहीं हूं . क्या मैं
निर्ब्बन्ध नहीं हूं . क्या मैं ने हमारे प्रभु
यीशु खीष्ट को नहीं देखा है . क्या तुम
२ प्रभु में मेरे कृत नहीं हो । जो मैं औरों
के लिये प्रेरित नहीं हूं तौभी तुम्हारे
लिये तो हूं क्योंकि तुम प्रभु में मेरी
३ प्रेरिताई की छाप हो । जो मुझे जांचते
हैं उन के लिये यही मेरा उत्तर है ।
४ क्या हमें खाने और पीने का अधिकार
५ नहीं है । क्या जैसा दूसरे प्रेरितों और
प्रभु के भाइयों को और कैफा को तैसा
हम को भी अधिकार नहीं है कि एक
धर्म्मबहिन से बिवाह करके उसे लिये
६ फिरें । अथवा क्या केवल मुझ को और
बर्णबा को अधिकार नहीं है कि कमाई
करना छोड़ें । कौन कभी अपने ही खर्च
से योद्धापन किया करता है . कौन
दाख की बारी लगाता है और उस का
कुछ फल नहीं खाता है . अथवा कौन
भेड़ों के झुंड की रखवाली करता है
और झुंड का कुछ दूध नहीं खाता है ।
८ क्या मैं यह बातें मनुष्य की रीति पर
बोलता हूं . क्या व्यवस्था भी यह बातें
९ नहीं कहती है । क्योंकि मूसा की व्यव-
स्था में लिखा है कि दावनेहारे बैल का
मुंह मत बांध . क्या ईश्वर बैलों की
१० चिन्ता करता है । अथवा क्या वह निज
करके हमारे कारण कहता है . हमारे
ही कारण लिखा गया कि उचित है
कि हल जोतनेहारा आशा से हल जोते
और दावनेहारा भागी होने की आशा
११ से दावनी करे । यदि हम ने तुम्हारे
लिये आत्मिक बस्तु बोई हैं तो हम
जो तुम्हारी शारीरिक बस्तु लवें क्या
१२ यह बड़ी बात है । यदि दूसरे जन तुम
पर इस अधिकार के भागी हैं तो क्या
हम अधिक करके नहीं हैं . परन्तु हम
यह अधिकार काम में न लाये पर सब
कुछ सहते हैं जिस्तें खीष्ट के सुसमाचार
१३ की कुछ रोक न करें । क्या तुम नहीं
जानते हो कि जो लोग याजकीय कर्म्म
करते हैं सो मन्दिर में से खाते हैं और
जो लोग बेदी की सेवा करते हैं सो
१४ बेदी के संभागी होते हैं । यूंही प्रभु
ने भी जो लोग सुसमाचार सुनाते हैं
उन के लिये ठहराया है कि सुसमाचार
से उन की जीविका होय ॥

१५ परन्तु मैं इन बातों में से कोई बात
काम में नहीं लाया और मैं ने तो यह
बातें इस लिये नहीं लिखीं कि मेरे
विषय में यूंही किया जाय क्योंकि मरना
मेरे लिये इस से भला है कि कोई मेरा
१६ बड़ाई करना व्यर्थ ठहरावे । क्योंकि
जो मैं सुसमाचार प्रचार करूं तो इस से
कुछ मेरी बड़ाई नहीं है क्योंकि मुझे

अवश्य पड़ता है और जो मैं सुसमाचार १६ प्रचार न करूं तो मुझे सन्ताप है। क्योंकि जो मैं अपनी इच्छा से यह करता हूं तो मजूरी मुझे मिलती है पर जो अनिच्छा से तो भंडारीपन मुझे सौंपा गया है। १८ सो मेरी कौन सी मजूरी है, यह कि सुसमाचार प्रचार करने में मैं खीष्ट का सुसमाचार सेंत का ठहराऊं यहां लों कि सुसमाचार में जो मेरा अधिकार है १९ उस का मैं अति भोग न करूं। क्योंकि सभों से निर्बन्ध होके मैं ने अपने को सभों का दास बनाया कि मैं अधिक २० लोगों को प्राप्त करूं। और यिहूदियों के लिये मैं यिहूदी सा बना कि यिहूदियों को प्राप्त करूं, जो लोग व्यवस्था के अधीन हैं उन के लिये मैं व्यवस्था के अधीन के ऐसा बना कि उन्हें जो व्यवस्था के अधीन हैं प्राप्त करूं। २१ व्यवस्थाहीनों के लिये मैं जो ईश्वर की व्यवस्था से हीन नहीं परन्तु खीष्ट की व्यवस्था के अधीन हूं व्यवस्थाहीन सा बना कि व्यवस्थाहीनों को प्राप्त करूं। २२ मैं दुर्ब्बलों के लिये दुर्ब्बल सा बना कि दुर्ब्बलों को प्राप्त करूं, मैं सभों के लिये सब कुछ बना हूं कि मैं अवश्य कई २३ एक को बचाऊं। और यही मैं सुसमाचार के कारण करता हूं कि मैं उस का भागी हो जाऊं॥

२४ क्या तुम नहीं जानते हो कि अखाड़े में दौड़नेहारे सब ही दौड़ते हैं परन्तु जीतने का फल एक ही पाता है, तुम २५ ऐसे ही दौड़ो कि तुम प्राप्त करो। और हर एक लड़नेहारा सब बातों में संयमी रहता है, सो वे तो नाशमान मुकुट परन्तु हम लोग अविनाशी मुकुट लेने २६ को ऐसे रहते हैं। मैं भी तो ऐसा दौड़ता हूं जैसा बिन दुबधा से दौड़ता मैं ऐसा नहीं मुष्टि लड़ता हूं जैसा बयार को पीटता हुआ लड़ता। परन्तु मैं अपने २७ देह को ताड़ना करके वश में लाता हूं ऐसा न हो कि मैं औरों को उपदेश देके आप ही किसी रीति से निकृष्ट बनूं॥

दसवां पर्व्व।

१ हे भाइयो मैं नहीं चाहता हूं कि तुम इस से अनजान रहो कि हमारे पितर लोग सब मेघ के नीचे थे और २ सब समुद्र के बीच में से गये। और सभों को मेघ में और समुद्र में मूसा के ३ सम्बन्ध का बपतिसमा दिया गया। और सभों ने एक ही आत्मिक भोजन खाया। ४ और सभों ने एक ही आत्मिक पानी पिया क्योंकि वे उस आत्मिक पर्व्वत में जो उन के पीछे पीछे चलता था पीते थे और वह पर्व्वत खीष्ट था। ५ परन्तु ईश्वर उन में के अधिक लोगों से प्रसन्न नहीं था क्योंकि वे जंगल में ६ मारे पड़े। यह बातें हमारे लिये दृष्टान्त हुईं इस लिये कि जैसे उन्हों ने लालच किया तैसे हम लोग बुरी वस्तुओं के ७ लालची न होवें। और न तुम मूर्त्ति-पूजक होओ जैसे उन्हों में से कितने थे जैसा लिखा है लोग खाने और पीने को ८ बैठे और खेलने को उठे। और न हम व्यभिचार करें जैसा उन्हों में से कितनों ने व्यभिचार किया और एक दिन में ९ तेईस सहस्र गिरे। और न हम खीष्ट की परीक्षा करें जैसा उन्हों में से कितनों ने परीक्षा किई और सांपों से नाश किये १० गये। और न कुड़कुड़ाओ जैसा उन्हों में से कितने कुड़कुड़ाये और नाशक से ११ नाश किये गये। पर यह सब बातें जो उन पर पड़ीं दृष्टान्त थीं और वे हमारी चितावनी के कारण लिखी गईं जिन के आगे जगत के अन्त समय पहुंचे हैं। १२ इस लिये जो समझता है कि मैं खड़ा १३ हूं सो सचेत रहे कि गिर न पड़े। तुम

पर कोई परीक्षा नहीं पड़ी है केवल ऐसी जैसी मनुष्य को हुआ करती है और ईश्वर बिश्वासयोग्य है जो तुम्हें तुम्हारे सामर्थ्य के बाहर परीक्षित होने न देगा परन्तु परीक्षा के साथ निकास भी करेगा १४ कि तुम सह सको । इस कारण हे मेरे प्यारो मूर्त्तिपूजा से बचे रहो ॥

१५ मैं जैसा बुद्धिमानों से बोलता हूं. जो मैं कहता हूं उसे तुम बिचार करो। १६ वह धन्यवाद का कटोरा जिस के ऊपर हम धन्यवाद करते हैं क्या ख्रीष्ट के लोहू की संगति नहीं है. वह रोटी जिसे हम तोड़ते हैं क्या ख्रीष्ट के देह १७ की संगति नहीं है । एक रोटी है इस लिये हम जो बहुत हैं एक देह हैं क्योंकि हम सब उस एक रोटी के भागी १८ होते हैं । शारीरिक इस्रायेल को देखो. क्या बलिदानों के खानेहारे बेदी के १९ साझी नहीं हैं । तो मैं क्या कहता हूं. क्या यह कि मूर्त्ति कुछ है अथवा कि २० मूर्त्ति के आगे का बलिदान कुछ है। नहीं पर यह कि देवपूजक लोग जो कुछ बलिदान करते हैं सो ईश्वर के आगे नहीं पर भूतों के आगे बलिदान करते हैं और मैं नहीं चाहता हूं कि तुम भूतों २१ के साझी हो जाओ । तुम प्रभु के कटोरे और भूतों के कटोरे दोनों से नहीं पी सकते हो. तुम प्रभु की मेज और भूतों की मेज दोनों के भागी नहीं हो सकते २२ हो । अथवा क्या हम प्रभु को छेड़ते हैं. क्या हम उस से अधिक शक्तिमान हैं ॥

२३ सब कुछ मेरे लिये उचित है परन्तु सब कुछ लाभ का नहीं है. सब कुछ मेरे लिये उचित है परन्तु सब कुछ नहीं २४ सुधारता है । कोई अपना लाभ न ढूंढे परन्तु हर एक जन दूसरे का लाभ २५ ढूंढे । जो कुछ मांस की हाट में बिकता है सो खाओ और बिबेक के कारण कुछ मत पूछो. २६ क्योंकि पृथिवी और उस की सारी सम्पत्ति परमेश्वर की है । २७ और यदि अबिश्वासियों में से कोई तुम्हें नेवता देवे और तुम्हें जाने की इच्छा होय तो जो कुछ तुम्हारे आगे रखा जाय सो खाओ और बिबेक के कारण कुछ मत पूछो । २८ परन्तु यदि कोई तुम से कहे यह तो मूर्त्ति के आगे बलि किया हुआ है तो उसी बतानेहारे के कारण और बिबेक के कारण मत खाओ (क्योंकि पृथिवी और उस की सारी सम्पत्ति परमेश्वर की है) । २९ बिबेक जो मैं कहता हूं सो अपना नहीं परन्तु उस दूसरे का क्योंकि मेरी निर्बन्धता क्यों दूसरे के बिबेक से बिचार ३० किई जाती है । जो मैं धन्यवाद करके भागी होता हूं तो जिस के ऊपर मैं धन्य मानता हूं उस के लिये मेरी ३१ निन्दा क्यों होती है । सो तुम जो खाओ अथवा पीओ अथवा कोई काम करो तो सब कुछ ईश्वर की महिमा ३२ के लिये करो । न यिहूदियों न यूनानियों को न ईश्वर की मंडली को ठोकर ३३ खिलाओ. जैसा मैं भी सब बातों में सभों को प्रसन्न करता हूं और अपना लाभ नहीं परन्तु बहुतों का लाभ ढूंढता हूं कि वे त्राण पावें ॥

ग्यारहवां पर्ब्ब ।

१ तुम मेरी सी चाल चलो जैसा मैं ख्रीष्ट की सी चाल चलता हूं ॥

२ हे भाइयो मैं तुम्हें सराहता हूं कि सब बातों में तुम मुझे स्मरण करते हो और व्यवहारों को जैसा मैं ने तुम्हें ३ ठहरा दिया तैसा ही धारण करते हो । पर मैं चाहता हूं कि तुम जान लेओ कि ख्रीष्ट हर एक पुरुष का सिर है और पुरुष स्त्री का सिर है और ख्रीष्ट ४ का सिर ईश्वर है । हर एक पुरुष जो

सिर पर कुछ ओढ़े हुए प्रार्थना करता अथवा भविष्यद्वाक्य कहता है अपने ५ सिर का अपमान करता है । परन्तु हर एक स्त्री जो उघाड़े सिर प्रार्थना करती अथवा भविष्यद्वाक्य कहती है अपने सिर का अपमान करती है क्योंकि यह ६ मूंड़ी हुई से कुछ भिन्न नहीं है । यदि स्त्री सिर न ढांके तो बाल भी कटवावे परन्तु यदि बाल कटवाना अथवा मुंड़वाना स्त्री को लज्जा है तो सिर ७ ढांके । क्योंकि पुरुष को तो सिर ढांकना उचित नहीं है क्योंकि वह ईश्वर का रूप और महिमा है परन्तु ८ स्त्री पुरुष की महिमा है । क्योंकि पुरुष स्त्री से नहीं हुआ परन्तु स्त्री ९ पुरुष से हुई । और पुरुष स्त्री के लिये नहीं सृजा गया परन्तु स्त्री पुरुष के १० लिये सृजी गई । इसी लिये दूतों के कारण स्त्री को उचित है कि अधिकार ११ अपने सिर पर रखे । तौभी प्रभु में न तो पुरुष बिना स्त्री के और न स्त्री १२ बिना पुरुष के है । क्योंकि जैसा स्त्री पुरुष से है तैसा पुरुष स्त्री के द्वारा से १३ है परन्तु सब कुछ ईश्वर से है । तुम अपने अपने मन में बिचार करो . क्या उघाड़े सिर ईश्वर से प्रार्थना करना १४ स्त्री को सोहता है । अथवा क्या प्रकृति आप ही तुम्हें नहीं सिखाती है कि यदि पुरुष लंबा बाल रखे तो उस १५ का अनादर है । परन्तु यदि स्त्री लंबा बाल रखे तो उस का आदर है क्योंकि बाल उस को ओढ़नी के लिये दिया १६ गया है । परन्तु यदि कोई जन विवादी देख पड़े तो न हमारी न ईश्वर की मंडलियों की ऐसी रीति है ॥

१७ परन्तु यह आज्ञा देने में मैं तुम्हें नहीं सराहता हूं कि तुम्हारे एकट्ठे होने से भलाई नहीं परन्तु हानि होती है । क्योंकि पहिले मैं सुनता हूं कि जब १८ तुम मंडली में एकट्ठे होते हो तब तुम्हों में अनेक बिभेद होते हैं और मैं कुछ कुछ प्रतीति करता हूं । क्योंकि १९ कुपन्थ भी तुम्हों में अवश्य होंगे इस लिये कि जो लोग खरे हैं सो तुम्हों में प्रगट हो जायें । सो तुम जो एक २० स्थान में एकट्ठे होते हो तो प्रभु भोज खाने के लिये नहीं है । क्योंकि खाने २१ में हर एक पहिले अपना अपना भोज खा लेता है और एक तो भूखा है दूसरा मतवाला है । क्या खाने और पीने के २२ लिये तुम्हें घर नहीं हैं अथवा क्या तुम ईश्वर की मंडली को तुच्छ जानते हो और जिन्हें नहीं है उन्हें लज्जित करते हो . मैं तुम से क्या कहूं . क्या इस बात में तुम्हें सराहूं . मैं नहीं सराहता हूं ॥

क्योंकि मैं ने प्रभु से यह पाया जो २३ मैं ने तुम्हें भी सौंप दिया कि प्रभु यीशु ने जिस रात वह पकड़वाया गया उसी रात को रोटी लिई . और धन्य मानके २४ उसे तोड़ा और कहा लेओ खाओ यह मेरा देह है जो तुम्हारे लिये तोड़ा जाता है . मेरे स्मरण के लिये यह किया करो । इसी रीति से उस ने २५ बियारी के पीछे कटोरा भी लेके कहा यह कटोरा मेरे लोहू पर नया नियम है . जब जब तुम इसे पीओ तब मेरे स्मरण के लिये यह किया करो ॥

क्योंकि जब जब तुम यह रोटी २६ खाओ और यह कटोरा पीओ तब प्रभु की मृत्यु को जब लों वह न आवे प्रचार करते हो । इस लिये जो कोई अनुचित २७ रीति से यह रोटी खावे अथवा प्रभु का कटोरा पीवे सो प्रभु के देह और लोहू के दंड के योग्य होगा । परन्तु २८ मनुष्य अपने को परखे और इस रीति से यह रोटी खावे और इस कटोरे से

२९ पीवे । क्योंकि जो अनुचित रीति से खाता और पीता है सो जब कि प्रभु के देह का विशेष नहीं मानता है तो खाने औ पीने से अपने पर दंड लाता है । ३० इस हेतु से तुम्हों में बहुत जन दुर्बल औ रोगी हैं और बहुत से सोते हैं । ३१ क्योंकि जो हम अपना अपना विचार करते तो हमारा विचार नहीं किया जाता । ३२ परन्तु हमारा विचार जो किया जाता है तो प्रभु से हम ताड़ना किये जाते हैं इस लिये कि संसार के संग दंड के योग्य न ठहराये जावें । ३३ इस लिये हे मेरे भाइयो जब तुम खाने को एकट्ठे होओ तब एक दूसरे के लिये ठहरो । ३४ परन्तु यदि कोई भूखा होय तो घर में खाय जिस्तें एकट्ठे होने से तुम्हारा दंड न होवे . और जो कुछ रह गया है जब कभी मैं तुम्हारे पास आऊं तब उस के विषय में आज्ञा देऊंगा ॥

बारहवां पर्व्व ।

१ हे भाइयो मैं नहीं चाहता हूं कि तुम आत्मिक विषयों में अनजान रहो । २ तुम जानते हो कि तुम देवपूजक थे और जैसे जैसे सिखाये जाते थे तैसे तैसे गूंगी मूरतों की ओर भटक जाते थे । ३ इस कारण मैं तुम्हें बताता हूं कि कोई जो ईश्वर के आत्मा से बोलता है यीशु को स्रापित नहीं कहता है और कोई यीशु को प्रभु नहीं कह सकता है केवल पवित्र आत्मा से ॥

४ बरदान तो बंटे हुए हैं परन्तु आत्मा एक ही है । ५ और सेवकाइयां बंटी हुई हैं परन्तु प्रभु एक ही है । ६ और कार्य्य बंटे हुए हैं परन्तु ईश्वर एक ही है जो सभों में ये सब कार्य्य करवाता है ॥

७ परन्तु एक एक मनुष्य को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है जिस्तें लाभ होय । ८ क्योंकि एक को आत्मा के द्वारा से बुद्धि की बात दिई जाती है और दूसरे को उसी आत्मा के अनुसार ज्ञान की बात . ९ और दूसरे को उसी आत्मा से बिश्वास और दूसरे को उसी आत्मा से चंगा करने के बरदान . १० फिर दूसरे को आश्चर्य्य कर्म्म करने की शक्ति और दूसरे को भविष्यद्वाक्य बोलने की और दूसरे को आत्माओं को पहचानने की और दूसरे को अनेक प्रकार की भाषा बोलने की और दूसरे को भाषाओं का अर्थ लगाने की शक्ति दिई जाती है । ११ परन्तु ये सब कार्य्य वही एक आत्मा करवाता है और अपनी इच्छा के अनुसार हर एक मनुष्य को पृथक पृथक करके बांट देता है ॥

१२ क्योंकि जैसे देह तो एक है और उस के अंग बहुत से हैं परन्तु उस एक देह के सब अंग यद्यपि बहुत से हैं तौभी एक ही देह हैं तैसे ही खीष्ट भी है । १३ क्योंकि हम लोग क्या यिहूदी क्या यूनानी क्या दास क्या निर्बन्ध सभों ने एक देह होने को एक आत्मा से बपतिसमा लिया और सब एक आत्मा पिलाये गये । १४ क्योंकि देह एक ही अंग नहीं है परन्तु बहुत से अंग । १५ यदि पांव कहे मैं हाथ नहीं हूं इस लिये मैं देह का अंग नहीं हूं तो क्या वह इस कारण से देह का अंग नहीं है । १६ और यदि कान कहे मैं आंख नहीं हूं इस लिये मैं देह का अंग नहीं हूं तो क्या वह इस कारण से देह का अंग नहीं है । १७ जो सारा देह आंख ही होता तो सुनना कहां . जो सारा देह कान ही होता तो सूंघना कहां । १८ परन्तु अब तो ईश्वर ने अंगों को और उन में से एक एक को देह में अपनी इच्छा के अनुसार रखा है । १९ परन्तु यदि सब

अंग एक ही अंग होते तो देह कहां २० होता। पर अब बहुत से अंग हैं २१ परन्तु एक ही देह। आंख हाथ से नहीं कह सकती है कि मुझे तेरा कुछ प्रयोजन नहीं और फिर सिर पांवों से नहीं कह सकता है कि मुझे तुम्हारा २२ कुछ प्रयोजन नहीं। परन्तु देह के जो अंग अति दुर्ब्बल देख पड़ते हैं सो २३ बहुत अधिक करके आवश्यक हैं। और देह के जिन अंगों को हम अति निरादर समझते हैं उन पर हम बहुत अधिक आदर रखते हैं और हमारे शोभाहीन अंग बहुत अधिक शोभाय- २४ मान किये जाते हैं। पर हमारे शोभायमान अंगों को इस का कुछ प्रयोजन नहीं है परन्तु ईश्वर ने देह को मिला लिया है और जिस अंग को घटी थी उस को बहुत अधिक आदर दिया २५ है. कि देह में विभेद न होय परन्तु अंग एक दूसरे के लिये एक समान २६ चिन्ता करें। और यदि एक अंग दुःख पाता है तो सब अंग उस के साथ दुःख पाते हैं अथवा यदि एक अंग की बड़ाई किई जाती है तो सब अंग उस २७ के साथ आनन्द करते हैं। सो तुम लोग खीष्ट के देह हो और पृथक पृथक करके उस के अंग हो॥

२८ और ईश्वर ने कितनों को मंडली में रखा है पहिले प्रेरितों को दूसरे भविष्यद्वक्ताओं को तीसरे उपदेशकों को तब आश्चर्य्य कर्म्मों को तब चंगा करने के बरदानों को और उपकारों को और प्रधानताओं को और अनेक प्रकार २९ की भाषाओं को। क्या सब प्रेरित हैं. क्या सब भविष्यद्वक्ता हैं. क्या सब उपदेशक हैं. क्या सब आश्चर्य्य कर्म्म ३० करनेहारे हैं। क्या सभों को चंगा करने के बरदान मिले हैं. क्या सब अनेक भाषा बोलते हैं. क्या सब अर्थ लगाते हैं। परन्तु अच्छे अच्छे बरदानों की ३१ अभिलाषा करो और मैं तुम्हें और भी एक श्रेष्ठ मार्ग बताता हूं॥

तेरहवां पर्ब्ब।

१ जो मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की बोलियां बोलूं पर मुझ में प्रेम न हो तो मैं ठनठनाता पीतल अथवा झंझनाती झांझ हूं। २ और जो मैं भविष्यद्वाणी बोल सकूं और सब भेदों को और सब ज्ञान को समझूं और जो मुझे सम्पूर्ण विश्वास होय यहां लों कि मैं पहाड़ों को टाल देऊं पर मुझ में प्रेम न हो तो मैं कुछ नहीं हूं। ३ और जो मैं अपनी सारी सम्पत्ति कंगालों को खिलाऊं और जो मैं जलाये जाने को अपना देह सौंप देऊं पर मुझ में प्रेम न हो तो मुझे कुछ लाभ नहीं है॥

४ प्रेम धीरजवन्त और कृपाल है. प्रेम डाह नहीं करता है. प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता है और फूल नहीं जाता ५ है। वह अनरीति नहीं चलता है वह आपस्वार्थी नहीं है वह खिजलाया नहीं जाता है वह बुराई की चिन्ता नहीं ६ करता है। वह अधर्म्म से आनन्दित नहीं होता है परन्तु सच्चाई पर आनन्द ७ करता है। वह सब बातें सहता है सब बातों का विश्वास करता है सब बातों की आशा रखता है सब बातों में स्थिर रहता है॥

८ प्रेम कभी नहीं टल जाता है परन्तु जो भविष्यद्वाणियां हों तो वे लोप होंगी अथवा बोलियां हों तो उन का अन्त लगेगा अथवा ज्ञान हो तो वह ९ लोप होगा। क्योंकि हम अंश मात्र जानते हैं और अंश मात्र भविष्यद्वाणी १० कहते हैं। परन्तु जब वह जो सम्पूर्ण है आवेगा तब यह जो अंश मात्र है

२ खड़े भी रहते हो . जिस के द्वारा जो तुम उस बचन को जिस करके मैं ने तुम्हें सुसमाचार सुनाया धारण करते हो तो तुम्हारा त्राण भी होता है . नहीं तो तुम ने वृथा बिश्वास किया ३ है । क्योंकि सब से बड़ी बातों में मैं ने यही तुम्हें सौंप दिई जो मैं ने ग्रहण भी किई थी कि खीष्ट धर्म्मपुस्तक के अनु-४ सार हमारे पापों के लिये मरा . और कि वह गाड़ा गया और कि धर्म्मपुस्तक के अनुसार वह तीसरे दिन जी उठा . ५ और कि वह कैफा को तब बारहों शिष्यों ६ को दिखाई दिया । तब वह एक ही बेर में पांच सौ से अधिक भाइयों को दिखाई दिया जिन में से अधिक भाई अब लों बने रहे परन्तु कितने सो भी गये ७ हैं । तब वह याकूब को फिर सब प्रेरितों ८ को दिखाई दिया । और सब के पीछे वह मुझ को भी जैसे असमय के जन्मे ९ हुए को दिखाई दिया । क्योंकि मैं प्रेरितों में सब से छोटा हूं और प्रेरित कहलाने के योग्य नहीं हूं इस कारण कि मैं ने ईश्वर की मंडली को सताया । १० परन्तु मैं जो कुछ हूं सो ईश्वर के अनुग्रह से हूं और उस का अनुग्रह जो मुझ पर हुआ सो व्यर्थ नहीं हुआ परन्तु मैं ने उन सभों से अधिक करके परिश्रम किया तौभी मैं ने नहीं परन्तु ईश्वर के अनुग्रह ने जो मेरे संग था परिश्रम ११ किया । सो क्या मैं क्या वे हम यूंहीं उपदेश करते हैं और तुम ने यूंहीं बिश्वास किया ॥

१२ परन्तु जो खीष्ट की यह कथा सुनाई जाती है कि वह मृतकों में से जी उठा है तो तुम में से कई एक जन क्योंकर कहते हैं कि मृतकों का पुनरुत्थान १३ नहीं है । यदि मृतकों का पुनरुत्थान नहीं है तो खीष्ट भी नहीं जी उठा है । १४ और जो खीष्ट नहीं जी उठा है तो हमारा उपदेश व्यर्थ है और तुम्हारा १५ बिश्वास भी व्यर्थ है । और हम ईश्वर के विषय में झूठे साक्षी भी ठहरते हैं क्योंकि हम ने ईश्वर पर साक्षी दिई कि उस ने खीष्ट को जिला उठाया पर यदि मृतक नहीं जी उठते हैं तो उस १६ ने उस को नहीं उठाया । क्योंकि यदि मृतक नहीं जी उठते हैं तो खीष्ट भी १७ नहीं जी उठा है । और जो खीष्ट नहीं जी उठा है तो तुम्हारा बिश्वास व्यर्थ है . तुम अब लों अपने पापों में पड़े १८ हो । तब वे भी जो खीष्ट में सो गये १९ हैं नष्ट हुए हैं । जो खीष्ट पर केवल इसी जीवन लों हमारी आशा है तो सब मनुष्यों से हम लोग अधिक अभागे हैं ॥

२० पर अब तो खीष्ट मृतकों में से जी उठा है और उन्हों का जो सो गये हैं २१ पहिला फल हुआ है । क्योंकि जब कि मनुष्य के द्वारा से मृत्यु हुई मनुष्य के द्वारा से मृतकों का पुनरुत्थान भी होगा । २२ क्योंकि जैसा आदम में सब लोग मरते हैं तैसा ही खीष्ट में सब लोग जिलाये २३ जायेंगे । परन्तु हर एक अपने अपने पद के अनुसार जिलाया जायगा खीष्ट पहिला फल तब खीष्ट के लोग उस के २४ आने पर । पीछे अन्त होगा जब वह राज्य को ईश्वर अर्थात पिता के हाथ सौंपेगा जब वह सारी प्रधानता और सारा अधिकार औ पराक्रम लोप करेगा तब २५ अन्त होगा । क्योंकि जब लों वह सब शत्रुओं को अपने चरणों तले न कर ले तब लों राज्य करना उस को अवश्य २६ है । पिछला शत्रु जो लोप किया जायगा २७ मृत्यु है । क्योंकि (लिखा है) उस ने सब कुछ उस के चरणों तले करके उस २८ के अधीन किया . परन्तु जब वह कहेगा कि सब कुछ अधीन किया गया है तब

प्रगट है कि जिस ने सब कुछ उस के अधीन किया वह आप नहीं अधीन हुआ । २८ और जब सब कुछ उस के अधीन किया जायगा तब पुत्र आप भी उस के अधीन होगा जिस ने सब कुछ उस के अधीन किया जिस्तें ईश्वर सभों में सब कुछ २९ होय । नहीं तो जो मृतकों के लिये बप-तिसमा लेते हैं सो क्या करेंगे . यदि मृतक निश्चय नहीं जी उठते हैं तो वे क्यों मृतकों के लिये बपतिसमा लेते हैं । ३० हम भी क्यों हर घड़ी जोखिम में रहते ३१ हैं । तुम्हारे विषय में ख्रीष्ट यीशु हमारे प्रभु में जो बड़ाई मैं करता हूं उस बड़ाई की सोंह मैं प्रतिदिन मरता हूं । ३२ जो मनुष्य की रीति पर मैं इफिस में बनपशुओं से लड़ा तो मुझे क्या लाभ हुआ . यदि मृतक नहीं जी उठते हैं तो आओ हम खावें पीवें कि ३३ बिहान मर जायेंगे । धोखा मत खाओ . बुरी संगति अच्छी चाल को बिगाड़ती ३४ है । धर्म्म के लिये जाग उठो और पाप मत करो क्योंकि कितने हैं जो ईश्वर को नहीं जानते हैं . मैं तुम्हारी लज्जा निमित्त कहता हूं ॥

३५ परन्तु कोई कहेगा मृतक लोग किस रीति से जी उठते हैं और कैसा ३६ देह धारके आते हैं । हे मूर्ख जो कुछ तू बोता है सो यदि मर न जाय तो ३७ जिलाया नहीं जाता है । और तू जो कुछ बोता है वह मूर्त्ति जो हो जायगी नहीं बोता है परन्तु निरा एक दाना चाहे गेहूं का चाहे और किसी अनाज ३८ का । परन्तु ईश्वर अपनी इच्छा के अनुसार उस को मूर्त्ति कर देता है और हर एक बीज को अपनी अपनी मूर्त्ति । ३९ हर एक शरीर एक ही प्रकार का शरीर नहीं है परन्तु मनुष्यों का शरीर और है पशुओं का शरीर और है मछलियों का और है पंछियों का और है । स्वर्ग ४० में के देह भी हैं और पृथिवी पर के देह हैं परन्तु स्वर्ग में के देहों का तेज और है और पृथिवी पर के देहों का ४१ और है । सूर्य्य का तेज और है चन्द्रमा का तेज और है और तारों का तेज और है क्योंकि तेज में एक तारा दूसरे तारे ४२ से भिन्न है । वैसे ही मृतकों का पुन-रुत्थान भी होगा . वह नाशमान बोया जाता है अविनाशी उठाया जाता है ४३ वह अनादर सहित बोया जाता है तेज सहित उठाया जाता है . दुर्ब्बलता सहित बोया जाता है सामर्थ्य सहित ४४ उठाया जाता है । वह प्राणिक देह बोया जाता है आत्मिक देह उठाया जाता है . एक प्राणिक देह है और एक ४५ आत्मिक देह है । यूं लिखा भी है कि पहिला मनुष्य आदम जीवता प्राणी हुआ . पिछला आदम जीवनदायक ४६ आत्मा है । पर जो आत्मिक है सोई पहिला नहीं है परन्तु वह जो प्राणिक ४७ है तब वह जो आत्मिक है । पहिला मनुष्य पृथिवी से मिट्टी का था . दूसरा ४८ मनुष्य स्वर्ग से प्रभु है । वह मिट्टी का जैसा था वैसे वे भी हैं जो मिट्टी के हैं और वह स्वर्गवासी जैसा है वैसे वे भी ४९ हैं जो स्वर्गवासी हैं । और जैसे हम ने उस का रूप जो मिट्टी का था धारण किया है तैसे उस स्वर्गवासी का रूप ५० भी धारण करेंगे । पर हे भाइयो मैं यह कहता हूं कि मांस औ लोहू ईश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं हो सकते हैं और न विनाश अविनाश का अधिकारी ५१ होता है । देखो मैं तुम्हें एक भेद बताता हूं कि हम सब नहीं सो जायेंगे परन्तु हम सब पिछली तुरही के समय क्षण भर में पलक मारते ही बदले जायेंगे । ५२ क्योंकि तुरही फूंकी जायगी और मृतक

अविनाशी उठाये जायेंगे और हम लोग
५३ बदले जायेंगे । क्योंकि अवश्य है कि
यह नाशमान अविनाश को पहिन लेवे
और यह मरनहार अमरता को पहिन
५४ लेवे । और जब यह नाशमान अविनाश
को पहिन लेगा और यह मरनहार
अमरता को पहिन लेगा तब वह बचन
जो लिखा हुआ है कि जय में मृत्यु
निगली गई पूरा हो जायगा ॥
५५ हे मृत्यु तेरा डंक कहां . हे परलोक
५६ तेरी जय कहां । मृत्यु का डंक पाप है
५७ और पाप का बल व्यवस्था है । परन्तु
ईश्वर का धन्यवाद होय जो हमारे
प्रभु यीशु खीष्ट के द्वारा से हमें जयवन्त
५८ करता है । सो हे मेरे प्यारे भाइयो दृढ़
और अचल रहो और यह जानके कि प्रभु
में तुम्हारा परिश्रम व्यर्थ नहीं है प्रभु के
काम में सदा बढ़ते जाओ ॥

सोलहवां पर्ब्ब ।

१ उस चन्दे के विषय में जो पवित्र लोगों
के लिये ठहराया गया है जैसा मैं ने
गलातिया की मंडलियों को आज्ञा
२ दिई तैसा तुम भी करो । हर अठवारे
के पहिले दिन तुम में से हर एक
मनुष्य जो कुछ उस की सम्पत्ति में
बढ़ती दिई जाय सोई अपने पास एकट्ठा
कर रखे ऐसा न हो कि जब मैं आऊं
३ तब चन्दे उगाहे जायें । और जब मैं
पहुंचूंगा तब जो कोई तुम्हें अच्छे देख
पड़ें उन्हें मैं चिट्ठियां देके भेजूंगा कि
तुम्हारा दान यिरूशलीम को ले जायें ।
४ पर जो मेरा भी जाना उचित होय तो
वे मेरे संग जायेंगे ॥
५ जब मैं माकिदोनिया से होके निकल
६ चुकूं तब तुम्हारे पास आऊंगा । क्योंकि
मैं माकिदोनिया से होके निकलता हूं
पर क्या जाने तुम्हारे यहां ठहरूंगा
बरन जाड़े का समय भी काटूंगा कि

तुम जिधर कहीं मेरा जाना होय उधर
७ मुझे कुछ दूर लों पहुंचाओ । क्योंकि
मैं तुम्हें अब मार्ग में चलते चलते
देखने नहीं चाहता हूं पर आशा
रखता हूं कि यदि प्रभु ऐसा होने देवे
तो कुछ दिन तुम्हारे यहां ठहर जाऊं ।
८ परन्तु पेन्तिकोष्ट लों मैं इफिस में
९ रहूंगा । क्योंकि एक बड़ा और कार्य्य
योग्य द्वार मेरे लिये खुला है और बहुत
से विरोधी हैं ॥
१० यदि तिमोथिय आवे तो देखो कि
वह तुम्हारे यहां निर्भय रहे क्योंकि
जैसा मैं प्रभु का कार्य्य करता हूं तैसा
११ वह भी करता है । सो कोई उस तुच्छ
न जाने परन्तु उस को कुशल से आगे
पहुंचाओ कि वह मेरे पास आवे
क्योंकि मैं भाइयों के संग उस की
१२ बाट देखता हूं । भाई अपल्लो के
विषय में यह है कि मैं ने उस से
बहुत बिन्ती किई कि भाइयों के संग
तुम्हारे पास [illegible] पर उस की इस
समय में जाने की कुछ भी इच्छा
न थी परन्तु जब अवसर पावेगा तब
जायगा ॥
१३ जागते रहो . विश्वास में दृढ़ रहो .
पुरुषार्थ करो . बलवन्त होओ ।
१४ तुम्हारे सब कर्म्म प्रेम से किये जायें ।
१५ और हे भाइयो मैं तुम से यह बिन्ती
करता हूं . तुम स्तिफान के घराने को
जानते हो कि आखाया का पहिला
फल है और उन्हों ने अपने तईं पवित्र
लोगों की सेवकाई के लिये ठहराया
१६ है । तुम ऐसों के और हर एक मनुष्य
के आधीन हो जो सहकर्म्मी औ परिश्रम
१७ करनेहारा है । स्तिफान और फर्तूनात
और आखायिक के आने से मैं आनन्दित
हूं कि उन्हों ने तुम्हारी घटी को पूरी
१८ किई है । क्योंकि उन्हों ने मेरे और

तुम्हारे मन को सुख दिया है इस लिये ऐसों को मानो ॥

१९ आशिया की मंडलियों की ओर से तुम को नमस्कार . अकूला और प्रिस्कीला का और उन के घर में की मंडली का तुम से प्रभु में बहुत बहुत २० नमस्कार । सब भाई लोगों का तुम से नमस्कार . एक दूसरे को पवित्र चूमा लेके नमस्कार करो । मुझ पावल का २१ अपने हाथ का लिखा हुआ नमस्कार । यदि कोई प्रभु यीशु खीष्ट को प्यार न २२ करे तो स्रापित होय . मारानाथा (अर्थात प्रभु आता है) । प्रभु यीशु २३ खीष्ट का अनुग्रह तुम्हारे संग होय । खीष्ट यीशु में मेरा प्रेम तुम सभों के २४ संग होय । आमीन ॥

करिन्थियों का पावल प्रेरित की दूसरी पत्री।

पहिला पर्ब्ब ।

१ पावल जो ईश्वर की इच्छा से यीशु खीष्ट का प्रेरित है और भाई तिमोथिय ईश्वर की मंडली को जो करिन्थ में है उन सब पवित्र लोगों के संग जो सारे २ आखाया देश में हैं . तुम्हें हमारे पिता ईश्वर और प्रभु यीशु खीष्ट से अनुग्रह और शांति मिले ॥

३ हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के पिता ईश्वर का जो दया का पिता और समस्त शांति का ईश्वर है धन्यवाद होय . ४ जो हमें हमारे सारे क्लेश में शांति देता है इस लिये कि हम उन्हें जो किसी प्रकार के क्लेश में हैं उस शांति से शांति दे सकें जिस करके हम आप ईश्वर से ५ शांति पाते हैं । क्योंकि जैसा खीष्ट के दुःख हमों में बहुत होते हैं तैसा हमारी शांति भी खीष्ट के द्वारा से बहुत होती ६ है । परन्तु हम यदि क्लेश पाते हैं तो यह तुम्हारी शांति औ निस्तार के लिये है जो इन्हीं दुःखों में जिन्हें हम भी उठाते हैं स्थिर रहने में गुण करता है . अथवा यदि शांति पाते हैं तो यह तुम्हारी शांति औ निस्तार के लिये है । ७ और तुम्हारे विषय में हमारी आशा दृढ़ है क्योंकि जानते हैं कि तुम जैसे दुःखों के तैसे शांति के भी भागी हो ॥

८ हे भाइयो हम नहीं चाहते हैं कि तुम हमारे उस क्लेश के विषय में अनजान रहो जो आशिया में हम को हुआ कि सामर्थ्य से अधिक हम पर अत्यन्त भार पड़ा यहां लों कि प्राण बचाने का भी हमें उपाय न रहा । ९ वरन हम आप मृत्यु की आज्ञा अपने में पा चुके थे कि हमारा भरोसा अपने पर न होय परन्तु ईश्वर पर जो मृतकों को जिलाता है । १० उस ने हमें ऐसी बड़ी मृत्यु से बचाया और बचाता है . उस पर हम ने आशा रखी है कि वह फिर भी बचावेगा . ११ कि तुम भी हमारे लिये प्रार्थना करके सहायता करोगे जिस्तें जो वरदान बहुतों के द्वारा से हमें मिलेगा उस के कारण बहुत लोग हमारे लिये धन्यवाद करें ॥

१२ क्योंकि हमारी बड़ाई यह है अर्थात हमारे मन की साक्षी कि जगत में पर

और भी तुम्हारे यहां हमारा व्यवहार ईश्वर के योग्य की सीधाई औ सच्चाई सहित शारीरिक ज्ञान के अनुसार नहीं परन्तु ईश्वर के अनुग्रह के अनुसार
१३ था । क्योंकि हम तुम्हारे पास और कुछ नहीं लिखते हैं केवल वह जो तुम पढ़ते अथवा मानते भी हो और मुझे भरोसा है कि अन्त लों भी मानोगे ।
१४ जैसा तुम ने कुछ कुछ हमों को भी माना है कि जिस रीति से प्रभु यीशु के दिन में तुम हमारे लिये बड़ाई करने के हेतु हो उसी रीति से तुम्हारे लिये
१५ हम भी हैं । और इस भरोसे से मैं चाहता था कि पहिले तुम्हारे पास आऊं जिस्तें तुम्हें दूसरा वर दान मिले ।
१६ और तुम्हारे पास से होके माकिदोनिया को जाऊं और फिर माकिदोनिया से तुम्हारे पास आऊं और तुम्हों से यिहूदिया की ओर कुछ दूर लों पहुंचाया
१७ जाऊं । सो इस का विचार करने में क्या मैं ने हलकाई किई अथवा मैं जो विचार करता हूं क्या शरीर के अनुसार विचार करता हूं कि मेरी बात में हां
१८ हां और नहीं नहीं होवे । ईश्वर विश्वासयोग्य साक्षी है कि हमारा वचन जो तुम से कहा गया हां औ नहीं न
१९ था । क्योंकि ईश्वर का पुत्र यीशु खीष्ट जिस का हमारे द्वारा अर्थात मेरे औ सीला के औ तिमोथिय के द्वारा तुम्हारे बीच में प्रचार हुआ हां औ नहीं न
२० था पर उस में हां ही था । क्योंकि ईश्वर की प्रतिज्ञाएं जितनी हों उसी में हां और उसी में आमीन हैं जिस्तें हमारे द्वारा ईश्वर की महिमा प्रगट
२१ होय । और जो हमें तुम्हारे संग खीष्ट में दृढ़ करता है और जिस ने हमें
२२ अभिषेक किया है सो ईश्वर है । जिस ने हम पर छाप भी दिई है और हम लोगों के मन में पवित्र आत्मा का बयाना दिया है ।
२३ परन्तु मैं ईश्वर को अपने प्राण पर साक्षी करता हूं कि मैं ने तुम पर दया किई जो अब लों करिन्थ नहीं गया ।
२४ यह नहीं कि हम तुम पर विश्वास के विषय में प्रभुताई करनेहारे हैं परन्तु तुम्हारे आनन्द के सहायक हैं क्योंकि तुम विश्वास से खड़े हो ॥

दूसरा पर्ब्ब ।

१ परन्तु मैं ने अपने लिये तुम्हारे विषय में यही ठहराया कि मैं फिर उन के पास उदास होके न आऊंगा ।
२ क्योंकि जो मैं तुम्हें उदास करूं तो फिर मुझे आनन्दित करनेहारा कौन है केवल वह जो मुझ से उदास किया जाता है ।
३ और मैं ने यही बात तुम्हारे पास इस लिये लिखी कि आने पर मुझे उन की ओर से शोक न होय जिन की ओर से उचित था कि मैं आनन्दित होता क्योंकि मैं तुम सभों का भरोसा रखता हूं कि मेरा आनन्द तुम सभों का आनन्द है ।
४ बड़े क्लेश और मन के कष्ट से मैं ने बहुत रो रोके तुम्हारे पास लिखा इस लिये नहीं कि तुम्हें शोक होय पर इस लिये कि तुम उस प्रेम को जान लेओ जो मैं तुम्हारी ओर बहुत अधिक करके रखता हूं ॥

५ परन्तु किसी ने यदि शोक दिलाया है तो मुझे नहीं पर मैं बहुत भार न देऊं इस लिये कहता हूं कुछ कुछ तुम सभों को शोक दिलाया है ।
६ ऐसे जन के लिये यह दंड जो आपयों में से
७ अधिक लोगों ने दिया बहुत है । इस लिये इस के विरुद्ध तुम्हें और भी चाहिये कि उसे क्षमा करो और शांति देओ न हो कि ऐसा मनुष्य अत्यन्त शोक में डूब जाय ।
८ इस कारण मैं तुम से बिन्ती

करता हूं कि उस को अपने प्रेम का ९ प्रमाण देओ। क्योंकि मैं ने इस हेतु से लिखा भी कि तुम्हारी परीक्षा लेके जानूं कि तुम सब बातों में आज्ञाकारी होते १० हो कि नहीं। जिस का तुम कुछ क्षमा करते हो मैं भी क्षमा करता हूं क्योंकि मैं ने भी यदि कुछ क्षमा किया है तो जिस को क्षमा किया है उस को तुम्हारे कारण खीष्ट के साक्षात क्षमा किया है. ११ कि शैतान का हम पर दांव न चले क्योंकि हम उस की जुगतों से अज्ञान नहीं हैं॥

१२ जब मैं खीष्ट का सुसमाचार प्रचार करने को त्रोआ में आया और प्रभु के काम का एक द्वार मेरे लिये खुला था. १३ तब मैं ने अपने भाई तीतस को जो नहीं पाया तो मेरे मन को चैन न मिला परन्तु उन से बिदा होके मैं माकिदोनिया को गया॥

१४ परन्तु ईश्वर का धन्यवाद होय जो सदा खीष्ट में हमारी जय करवाता है और उस के ज्ञान का सुगन्ध हमारे द्वारा १५ से हर स्थान में फैलाता है। क्योंकि हम ईश्वर को उन में जो त्राण पाते हैं और उन में भी जो नाश होते हैं खीष्ट १६ के सुगन्ध हैं. उन को हम मृत्यु के लिये मृत्यु के गन्ध हैं पर उन को जीवन के लिये जीवन के गन्ध हैं. १७ और इस काम के योग्य कौन है। क्योंकि हम उन बहुतों के समान नहीं हैं जो ईश्वर के बचन में मिलावट करनेहारे हैं परन्तु जैसे सच्चाई से बोलनेहारे परन्तु जैसे ईश्वर की ओर से बोलनेहारे तैसे ईश्वर के सन्मुख खीष्ट की रीति बोलते हैं॥

तीसरा पर्ब्ब।

१ क्या हम फिर अपनी प्रशंसा करने लगे हैं अथवा जैसा कितनों को तैसा क्या हमों को भी प्रशंसा की पत्रियां तुम्हारे पास लाने का अथवा तुम्हारे पास से ले जाने का प्रयोजन है। २ तुम हमारी पत्री हो जो हमारे हृदय में लिखी गई है और सब मनुष्यों से पहचानी और पढ़ी जाती है। ३ क्योंकि तुम प्रत्यक्ष देख पड़ते हो कि खीष्ट की पत्री हो जिस के विषय में हम ने सेवकाई किई और जो सियाही से नहीं परन्तु जीवते ईश्वर के आत्मा से पत्थर की पटियाओं पर नहीं परन्तु हृदय की मांसरूपी पटरियों पर लिखी गई है॥

४ हमें ईश्वर की ओर खीष्ट के द्वारा ५ से ऐसा ही भरोसा है. यह नहीं कि हम जैसे अपनी ओर से किसी बात का बिचार आप से करने के योग्य हैं परन्तु हमारी योग्यता ईश्वर से होती ६ है. जिस ने हमें नये नियम के सेवक होने के योग्य भी किया लेख के सेवक नहीं परन्तु आत्मा के क्योंकि लेख मारता है परन्तु आत्मा जिलाता है॥

७ और यदि मृत्यु की सेवकाई जो लेखों में थी और पत्थरों में खोदी हुई थी तेजोमय हुई यहां लों कि मूसा के मुंह के तेज के कारण जो लोप होनेहारा भी था इस्रायेल के सन्तान उस के मुंह पर दृष्टि नहीं कर सकते थे. ८ तो आत्मा की सेवकाई और भी ९ तेजोमय क्यों न होगी। क्योंकि यदि दंड की आज्ञा की सेवकाई एक तेज थी तो बहुत अधिक करके धर्म्म की १० सेवकाई तेज में उस से श्रेष्ठ है। और जो तेजोमय कहा गया था सो भी इस करके अर्थात इस अधिक तेज के ११ कारण कुछ तेजोमय न ठहरा। क्योंकि यदि वह जो लोप होनेहारा था तेजयुक्त था तो बहुत अधिक करके यह जो बना रहेगा तेजोमय है॥

१२ सो ऐसी आशा रखने से हम बहुत खोलके बात करते हैं . १३ और ऐसे नहीं जैसा मूसा अपने मुंह पर परदा डालता था कि इस्रायेल के सन्तान उस लोप होनेहारे विषय के अन्त पर दृष्टि न करें । १४ बरन उन की बुद्धि मन्द हुई क्योंकि आज लों पुराने नियम के पढ़ने में वही परदा पड़ा रहता है और नहीं खुलता है कि वह खीष्ट में लोप किया जाता है । १५ पर आज लों जब मूसा का पुस्तक पढ़ा जाता है उन के हृदय पर परदा पड़ा है । १६ परन्तु जब वह प्रभु की ओर फिरेगा तब वह परदा उठाया जायगा । १७ प्रभु तो आत्मा है और जहां प्रभु का आत्मा है तहां निर्बन्धता है । १८ और हम सब उघाड़े मुंह प्रभु का तेज जैसे दर्पण में देखते हुए मानो प्रभु अर्थात आत्मा के गुण से तेज पर तेज प्राप्त कर उसी रूप में बदलते जाते हैं ।

चौथा पर्ब्ब ।

१ इस कारण जब कि उस दया के अनुसार जो हम पर किई गई यह सेवकाई हमें मिली है हम कातर नहीं होते हैं . २ पर लज्जा के गुप्त कामों को त्यागके न चतुराई से चलते हैं न ईश्वर के बचन में मिलावट करते हैं परन्तु सत्य को प्रगट करने से हर एक मनुष्य के विवेक को ईश्वर के आगे अपने विषय में प्रमाण देते हैं । ३ पर हमारा सुसमाचार यदि गुप्त भी है तो उन्हीं पर गुप्त है जो नाश होते हैं . ४ जिन्हों में देख पड़ता है कि इस संसार के ईश्वर ने अविश्वासियों की बुद्धि अन्धी किई है कि खीष्ट जो ईश्वर की प्रतिमा है तिस के तेज के सुसमाचार की ज्योति उन पर प्रकाश न होय । ५ क्योंकि हम अपने को नहीं परन्तु खीष्ट यीशु को प्रभु करके प्रचार करते हैं और अपने को यीशु के कारण तुम्हारे दास कहते हैं । ६ क्योंकि ईश्वर जिस ने आज्ञा किई कि अन्धकार में से ज्योति चमके वही है जो हम लोगों के हृदय में चमका कि ईश्वर का जो तेज यीशु खीष्ट के मुंह पर है उस तेज के ज्ञान की ज्योति प्रकाश होय ।

७ परन्तु यह सम्पत्ति हमें मिट्टी के बर्त्तनों में मिली है कि सामर्थ्य की अधिकाई ईश्वर की ठहरे और हमारी ओर से नहीं । ८ हम सर्व्वथा क्लेश पाते हैं पर सकेते में नहीं हैं . ९ दुबधा में हैं पर निरुपाय नहीं . सताये जाते हैं पर त्यागे नहीं जाते . गिराये जाते हैं पर नाश नहीं होते । १० हम नित्य प्रभु यीशु का मरण देह में लिये फिरते हैं कि यीशु का जीवन भी हमारे देह में प्रगट किया जाय । ११ क्योंकि हम जो जीते हैं सदा यीशु के कारण मृत्यु भोगने को सांपे जाते हैं कि यीशु का जीवन भी हमारे मरनहार शरीर में प्रगट किया जाय । १२ सो मृत्यु हमों में परन्तु जीवन तुम्हों में कार्य्य करता है ।

१३ परन्तु विश्वास का वही आत्मा जैसा लिखा है मैं ने विश्वास किया इस लिये बोला जब कि हमें मिला है हम भी विश्वास करते हैं इस लिये बोलते भी हैं . १४ क्योंकि जानते हैं कि जिस ने प्रभु यीशु को जिला उठाया सो हमें भी यीशु के द्वारा जिलाके तुम्हारे संग अपने आगे खड़ा करेगा । १५ क्योंकि सब कुछ तुम्हारे लिये है जिस्तें अनुग्रह बहुत होके ईश्वर की महिमा के लिये बहुत लोगों के धन्यवाद के हेतु से बढ़ता जाय । १६ इस लिये हम कातर नहीं होते हैं परन्तु जो हमारा बाहरी मनुष्यत्व नाश भी होता है तौभी भीतरी मनुष्यत्व दिन पर दिन नया

१७ होता जाता है । क्योंकि हमारे क्लेश का क्षण भर का हलका बोझ हमारे लिये महिमा का अनन्त भार अधिक १८ से अधिक करके उत्पन्न करता है . कि हम तो दृश्य विषयों को नहीं परन्तु अदृश्य विषयों को देखा करते हैं क्योंकि दृश्य विषय अनित्य हैं परन्तु अदृश्य विषय नित्य हैं ॥

पांचवां पर्व्व ।

५ हम जानते हैं कि जो हमारा पृथिवी पर का डेरा सा घर गिराया जाय तो ईश्वर से एक भवन हमें मिला है जो बिन हाथ का बनाया हुआ नित्यस्थायी २ घर स्वर्ग में है । क्योंकि हम डेरे में हम कहरते भी हैं और अपना वह वासा जो स्वर्गीय है ऊपर से पहिनने की ३ लालसा करते हैं । जो ऐसा हो ठहरे कि पहिने हुए हम नंगे नहीं पाये ४ जायेंगे । हां हम जो इस डेरे में हैं बोझ से दबे हुए कहरते हैं क्योंकि हम उतारने को नहीं परन्तु ऊपर से पहिनने की इच्छा करते हैं कि जीवन से यह ५ मरनहार निगला जाय । और जिस ने हमें इसी बात के लिये तैयार किया है सो ईश्वर है जिस ने हमें पवित्र आत्मा ६ का बयाना भी दिया है । सो हम सदा ढाढ़स बांधते हैं और यह जानते हैं कि जब लों देह में रहते हैं तब लों प्रभु से ७ अलग होते हैं । क्योंकि हम रूप देखने से नहीं परन्तु विश्वास से चलते हैं । ८ इस लिये हम साहस करते हैं और यही अधिक चाहते हैं कि देह से अलग होके प्रभु के संग रहें ॥

९ इस कारण हम चाहे संग रहते हुए चाहे अलग होते हुए उस को प्रसन्नता १० योग्य होने की चेष्टा करते हैं । क्योंकि हम सभों को खीष्ट के विचार आसन के आगे प्रगट किया जाना अवश्य है जिस्तें हर एक जन क्या भला काम क्या बुरा जो कुछ किया हो उस के अनुसार देह के द्वारा किये हुए का फल पावे । ११ सो प्रभु का भय मानके हम मनुष्यों को समझाते हैं पर ईश्वर के आगे हम प्रगट होते हैं और मुझे भरोसा है कि तुम्हारे भी मन में भी प्रगट हुए हैं । १२ क्योंकि हम तुम्हारे पास फिर अपनी प्रशंसा करते हैं सो नहीं परन्तु तुम्हें हमारे विषय में बड़ाई करने का कारण देते हैं कि जो लोग हृदय पर नहीं परन्तु रूप पर घमंड करते हैं उन के विरुद्ध बड़ाई करने की जगह तुम्हें १३ मिले । क्योंकि हम चाहे बेसुध हों तो ईश्वर के लिये बेसुध हैं चाहे सुबुद्धि हों तो तुम्हारे लिये सुबुद्धि हैं ॥

१४ खीष्ट का प्रेम हमें वश कर लेता है क्योंकि हम ने यह विचार किया कि यदि सभों के लिये एक मरा तो वे सब १५ मरे . और वह सभों के लिये इस कारण मरा कि जो जीवते हैं सो अब अपने लिये न जीवें परन्तु उस के लिये जो उन के निमित्त मरा और जी उठा ॥ १६ सो हम अब से किसी को शरीर के अनुसार करके नहीं समझते हैं और यदि हम खीष्ट को शरीर के अनुसार करके समझते भी थे तौभी अब उस को नहीं १७ ऐसा समझते हैं । सो यदि कोई खीष्ट में होय तो नई सृष्टि है . पिछली बातें बीत गई हैं देखो सब बातें नई हुई हैं ॥

१८ और सब बातें ईश्वर की ओर से हैं जिस ने यीशु खीष्ट के द्वारा हमें अपने साथ मिला लिया और मिलाप की सेवकाई हमें दिई . १९ अर्थात कि ईश्वर जगत के लोगों के अपराध उन पर न लगाके खीष्ट में जगत को अपने साथ मिला लेता था और मिलाप का वचन २० हमीं को सौंप दिया । सो हम खीष्ट

की सन्ती दूत हैं मानो ईश्वर हमारे द्वारा उपदेश करता है . हम खीष्ट की सन्ती बिन्ती करते हैं ईश्वर से मिलाये २१ जाओ । क्योंकि जो पाप से अनजान था उस को उस ने हमारे लिये पाप बनाया कि उस में हम ईश्वर के धर्म्म बनें ॥

छठवां पर्ब्ब ।

१ सो हम जो सहकर्म्मी हैं उपदेश करते हैं कि ईश्वर के अनुग्रह को वृथा २ ग्रहण न करो । क्योंकि वह कहता है मैं ने शुभ काल में तेरी सुनी और निस्तार के दिन में तेरा उपकार किया . देखो अभी वह शुभ काल है देखो अभी ३ वह निस्तार का दिन है । हम किसी बात से कुछ ठोकर नहीं खिलाते हैं कि इस सेवकाई पर दोष न लगाया जाय . ४ परन्तु जैसे ईश्वर के सेवक तैसे हर बात से अपने लिये प्रमाण देते हैं अर्थात बहुत धीरता से क्लेशों में दरिद्रता में ५ संकटों में . मार खाने में बन्दीगृहों में हुल्लड़ों में परिश्रम में जागते रहने में ६ उपवास करने में . शुद्धता से ज्ञान से धीरज से कृपालुता से पवित्र आत्मा ७ से निष्कपट प्रेम से । सत्य के वचन से ईश्वर के सामर्थ्य से दहिने औ बायें ८ धर्म्म के हथियारों से . आदर औ निरादर से अपयश औ सुयश से कि भरमानेहारों ९ के ऐसे हैं तौभी सच्चे हैं . अनजाने हुओं के ऐसे हैं तौभी जाने जाते हैं मरते हुओं के ऐसे हैं और देखो जीवते हैं ताड़ना किये हुओं के ऐसे हैं और घात १० नहीं किये जाते हैं . उदासों के ऐसे हैं परन्तु सदा आनन्द करते हैं कंगालों के ऐसे हैं परन्तु बहुतों को धनवान करते हैं ऐसे हैं जैसा हमारे पास कुछ नहीं है तौभी सब कुछ रखते हैं ॥

११ हे करिन्थियो हमारा मुंह तुम्हारी ओर खुला है हमारा हृदय बिस्तारित हुआ है । तुम्हें हमों में सकेता नहीं १२ है परन्तु तुम्हारे ही अन्तःकरण में तुम्हें सकेता है । पर मैं तुम को जैसा अपने १३ लड़कों को इस का वैसा ही बदला बताता हूं कि तुम भी बिस्तारित होओ । मत अविश्वासियों के संग १४ असमान जुए में जुते जाओ क्योंकि धर्म्म और अधर्म्म का कौन सा साझा है और अन्धकार के साथ ज्योति की कौन संगति । और बिलयाल के संग खीष्ट १५ की कौन सम्मति है अथवा अविश्वासी के साथ विश्वासी का कौन सा भाग । और मूरतों के संग ईश्वर के मन्दिर का १६ कौन सा सम्बन्ध है क्योंकि तुम तो जीवते ईश्वर के मन्दिर हो जैसा ईश्वर ने कहा मैं उन में बसूंगा और उन में फिरूंगा और मैं उन का ईश्वर होगा . और वे मेरे लोग होंगे । इस लिये पर- १७ मेश्वर कहता है उन के बीच में से निकलो और अलग होओ और अशुद्ध वस्तु को मत छूओ तो मैं तुम्हें ग्रहण करूंगा . और मैं तुम्हारा पिता होगा १८ और तुम मेरे पुत्र और पुत्रियां होगे सर्व्वशक्तिमान परमेश्वर कहता है ॥

सातवां पर्ब्ब ।

सो हे प्यारो जब कि यह प्रतिज्ञाएं १ हमें मिली हैं आओ हम अपने को शरीर और आत्मा की सब मलीनता से शुद्ध करें और ईश्वर का भय रखते हुए सम्पूर्ण पवित्रता को प्राप्त करें ॥

हमें ग्रहण करो हम ने न किसी से २ अन्याय किया न किसी को बिगाड़ा न किसी को ठगा । मैं दोषी ठहराने को ३ नहीं कहता हूं क्योंकि मैं ने आगे से कहा है कि तुम हमारे मन में हो ऐसा कि हम तुम्हारे संग मरने और तुम्हारे संग जीने को तैयार हैं । तुम्हारी ओर ४

मेरा साहस बहुत है तुम्हारे विषय में मुझे बड़ाई करने की जगह बहुत है हमारे सब क्लेश के विषय में मैं शांति से भर गया हूं और अधिक से अधिक आनन्द करता हूं॥

५ क्योंकि जब हम माकिदोनिया में आये तब भी हमारे शरीर को कुछ चैन नहीं मिला पर हम समस्त प्रकार से क्लेश पाते थे. बाहर से युद्ध भीतर से ६ भय था। परन्तु दीनों को शांति देनेहारे ने अर्थात ईश्वर ने तीतस के आने से हमों ७ को शांति दिई. और केवल उस के आने से नहीं पर उस शांति से भी जिस करके उस ने तुम्हारी लालसा औ तुम्हारे बिलाप औ मेरे लिये तुम्हारे अनुराग का समाचार हम से कहते हुए तुम्हारे विषय में शांति पाई यहां लों कि मैं अधिक आनन्दित हुआ॥

८ क्योंकि जो मैं ने उस पत्री से तुम्हें शोक दिलाया तौभी मैं यद्यपि पछताता था अब नहीं पछताता हूं. मैं देखता हूं कि उस पत्री ने यदि केवल थोड़ी बेर लों तौभी तुम्हें शोक तो ९ दिलाया। अभी मैं आनन्द करता हूं इस लिये नहीं कि तुम ने शोक किया परन्तु इस लिये कि शोक करने से पश्चात्ताप किया क्योंकि तुम्हारा शोक ईश्वर की इच्छा के अनुसार था जिस्तें तुम्हें हमारी ओर से किसी बात में हानि १० न होय। क्योंकि जो शोक ईश्वर की इच्छा के अनुसार है उस से वह पश्चात्ताप उत्पन्न होता है जिस करके त्राण है और जिस से किसी को नहीं पछताना है. परन्तु संसार के शोक से ११ मृत्यु उत्पन्न होती है। क्योंकि अपना यही ईश्वर की इच्छा के अनुसार शोक दिलाया जाना देखो कि उस से कितना यत्न हां उत्तर देने की कितनी चिन्ता हां कितनी रिस हां कितना भय हां कितनी लालसा हां कितना अनुराग हां दंड देने का कितना बिचार तुम में उत्पन्न हुआ. तुम ने समस्त प्रकार से अपने लिये इस बात में निर्दोष होने का प्रमाण दिया है। सो मैं ने जो १२ तुम्हारे पास लिखा तौभी न तो उस के कारण लिखा जिस ने अपराध किया न उस के कारण जिस का अपराध किया गया परन्तु इस कारण कि हमारे लिये जो तुम्हारा यत्न है सो तुम्हों में ईश्वर के सन्मुख प्रगट किया जाय॥

इस कारण से हम ने तुम्हारी शांति १३ से शांति पाई और बहुत अधिक करके तीतस के आनन्द से और भी आनन्दित हुए क्योंकि उस के मन को तुम सभों की ओर से सुख दिया गया है। क्यों- १४ कि यदि मैं ने उस के आगे तुम्हारे विषय में कुछ बड़ाई किई है तो लज्जित नहीं किया गया हूं परन्तु जैसा हम ने तुम से सब बातें सच्चाई से कहीं तैसा हमारा तीतस के आगे बड़ाई करना भी सत्य हुआ है। और वह जो तुम १५ सभों के आज्ञा पालन को स्मरण करता है कि तुम ने क्योंकर डरते और कांपते हुए उस को ग्रहण किया तो बहुत अधिक करके तुम पर स्नेह करता है। मैं आनन्द करता हूं कि तुम्हारी ओर १६ से मुझे समस्त प्रकार से ढाढ़स बन्धता है॥

आठवां पर्ब्ब।

हे भाइयो हम तुम्हें ईश्वर का वह १ अनुग्रह बताते हैं जो माकिदोनिया की मंडलियों में दिया गया है. कि क्लेश २ की बड़ी परीक्षा में उन के आनन्द की अधिकाई और उन की महा दरिद्रता इन दोनों के बढ़ जाने से उन की उदारता का धन प्रगट हुआ। क्योंकि मैं साक्षी ३ देता हूं कि वे अपने सामर्थ्य भर और

सामर्थ्य से अधिक आप ही से तैयार ४ थे . और हमें बहुत मनाके बिन्ती करते थे कि हम उस दान को और पवित्र लोगों के लिये जो सेवकाई तिस की ५ संगति को ग्रहण करें . और जैसा हम ने आशा रखी थी तैसा नहीं परन्तु उन्हों ने अपने तईं पहिले प्रभु को तब ईश्वर ६ की इच्छा से हमों को दिया . यहां लों कि हम ने तीतस से बिन्ती किई कि जैसा उस ने आगे आरंभ किया था तैसा तुम्हों में इस अनुग्रह के कर्म्म को समाप्त भी कर ले ॥

७ परन्तु जैसे हर एक बात में अर्थात बिश्वास में औ बचन में औ ज्ञान में औ सारे यत्न में औ हमारी ओर तुम्हारे प्रेम में तुम्हारी बढ़ती होती है तैसे इस अनुग्रह के कर्म्म में भी तुम्हारी बढ़ती ८ होय । मैं आज्ञा की रीति पर नहीं परन्तु औरों के यत्न करने के कारण और तुम्हारे प्रेम की सच्चाई को परखने के ९ लिये कहता हूं । क्योंकि तुम हमारे प्रभु यीशु खीष्ट का अनुग्रह जानते हो कि वह जो धनी था तुम्हारे कारण दरिद्र हुआ कि उस की दरिद्रता के १० द्वारा तुम धनी होओ । और इस बात में मैं परामर्श देता हूं क्योंकि यह तुम्हारे लिये अच्छा है जो बरस दिन से केवल करने का नहीं परन्तु चाहने का भी ११ आरंभ आगे से कर चुके । सो अब करने को भी समाप्त करो कि जैसा चाहने को तुम्हारे मन की तैयारी थी वैसा तुम्हारी सम्पत्ति के समान तुम्हारा समाप्त करना १२ भी होवे । क्योंकि यदि आगे से मन की तैयारी होती है तो जो जिस के पास नहीं है उस के अनुसार नहीं परन्तु जो जिस के पास है उस के अनुसार वह १३ ग्राह्य है । यह इस लिये नहीं है कि औरों को चैन और तुम को क्लेश मिले . परन्तु समता से इस बर्त्तमान समय में १४ तुम्हारी बढ़ती उन्हों की घटती में काम आवे इस लिये कि उन की बढ़ती भी तुम्हारी घटती में काम आवे जिस्तें समता होय . जैसा लिखा है जिस ने १५ बहुत संचय किया उस का कुछ उभरा नहीं और जिस ने थोड़ा संचय किया उस का कुछ घटा नहीं ॥

और ईश्वर का धन्यवाद होय जो १६ तुम्हारे लिये वही यत्न तीतस के हृदय में देता है . कि उस ने वह बिन्ती ग्रहण १७ किई बरन अति यत्नवान होके वह अपनी इच्छा से तुम्हारे पास गया है । और हम ने उस के संग उस भाई को १८ भेजा है जिस की प्रशंसा सुसमाचार के विषय में सब मंडलियों में होती है । और केवल इतना नहीं परन्तु वह मंड- १९ लियों से ठहराया भी गया कि इस अनुग्रह के कर्म्म के लिये जिस की सेव-काई हम से किई जाती है हमारे संग चले जिस्तें प्रभु की महिमा और तुम्हारे मन की तैयारी प्रगट किई जाय । हम २० इस बात में चौकस रहते हैं कि इस अधिकाई के विषय में जिस की सेव-काई हम से किई जाती है कोई हम पर दोष न लगावे । क्योंकि जो बातें २१ केवल प्रभु के आगे नहीं परन्तु मनुष्यों के आगे भी भली हैं हम उन की चिन्ता करते हैं । और हम ने उन के संग अपने २२ भाई को भेजा है जिस को हम ने बार-बार बहुत बातों में परखके यत्नवान पाया है पर अब तुम पर जो बड़ा भरोसा है उस के कारण बहुत अधिक यत्नवान पाया है । यदि तीतस की पूछी २३ जाय तो वह मेरा साथी और तुम्हारे लिये सहकर्म्मी है अथवा हमारे भाई लोग हों तो वे मंडलियों के दूत और खीष्ट की महिमा हैं । सो उन्हें मंडलियों २४

के सन्मुख अपने प्रेम का और तुम्हारे विषय में हमारे बड़ाई करने का प्रमाण दिखाओ ॥

नवां पर्व्व ।

१ पवित्र लोगों के लिये जो सेवकाई तिस के विषय में तुम्हारे पास लिखना २ मुझे अवश्य नहीं है। क्योंकि मैं तुम्हारे मन की तैयारी को जानता हूं जिस के लिये मैं तुम्हारे विषय में माकिदोनियों के आगे बड़ाई करता हूं कि आखाया के लोग बरस दिन से तैयार हुए हैं और तुम्हारे अनुराग ने बहुतों को ३ उसकाया है। परन्तु मैं ने भाइयों को इस लिये भेजा है कि तुम्हारे विषय में जो हम ने बड़ाई किई है सो इस बात में व्यर्थ न ठहरे अर्थात कि जैसा मैं ने कहा तैसे तुम तैयार हो ४ रहो. ऐसा न हो कि यदि कोई माकिदोनी लोग मेरे संग आके तुम्हें तैयार न पावें तो क्या जानें इस निर्भय बड़ाई करने में हम न कहें तुम लज्जित ५ होओ पर हम ही लज्जित होवें। इस लिये मैं ने भाइयों से बिन्ती करना अवश्य समझा कि वे आगे से तुम्हारे पास जावें और तुम्हारी उदारता का फल जिस का सन्देश आगे दिया गया था आगे से सिद्ध करें कि यह लोभ के नहीं परन्तु उदारता के फल के ऐसा तैयार होवे ॥

६ परन्तु यह है कि जो थुड़ता से बोता है सो थुड़ता से लवेगा भी और जो उदारता से बोता है सो उदारता ७ से लवेगा भी। हर एक जन जैसा मन में ठाने तैसा दान करे कुढ़ कुढ़के अथवा दबाव से न देवे क्योंकि ईश्वर हर्ष से देनेहारे को प्यार करता है। ८ और ईश्वर सब प्रकार का अनुग्रह तुम्हें अधिकाई से दे सकता है जिस्तें हर बात में और हर समय में सब कुछ जो अवश्य होय तुम्हारे पास रहे और तुम्हें हर एक अच्छे काम के लिये बहुत सामर्थ्य होय। जैसा लिखा है उस ने बिथराया उस ने कंगालों को दिया उस का धर्म्म सदा लों रहता है। जो १० बोनेहारे को बीज और भोजन के लिये रोटी देनेहारा है सो तुम्हें देवे और तुम्हारा बीज फलवन्त करे और तुम्हारे धर्म्म के फलों को अधिक करे. कि ११ तुम हर बात में सब प्रकार की उदारता के लिये जो हमारे द्वारा ईश्वर का धन्यवाद करवाती है धनवान किये जाओ। क्योंकि इस उपकार की १२ सेवकाई न केवल पवित्र लोगों की घटियों को पूरी करती है परन्तु ईश्वर के बहुत धन्यवादों के द्वारा से उभरती भी है। क्योंकि वे इस सेवकाई से १३ प्रमाण लेके तुम जो खीष्ट के सुसमाचार के अधीन होने का अंगीकार करते हो उस अधीनता के लिये और उन की और सभों की सहायता करने में तुम्हारी उदारता के लिये ईश्वर का गुणानुवाद करते हैं। और ईश्वर का अत्यन्त १४ अनुग्रह जो तुम पर है उस के कारण तुम्हारी लालसा करते हुए तुम्हारे लिये प्रार्थना करने से भी ईश्वर की महिमा प्रगट करते हैं। ईश्वर का उस के १५ अकथ्य दान के लिये धन्यवाद होवे ॥

दसवां पर्व्व ।

मैं वही पावल जो तुम्हारे साम्हे १ तुम्हों में दीन हूं परन्तु तुम्हारे पीछे तुम्हारी ओर साहस करता हूं तुम से खीष्ट की नम्रता और कोमलता के कारण बिन्ती करता हूं। मैं यह बिन्ती २ करता हूं कि तुम्हारे साम्हे मुझे उस दृढ़ता से साहस करना न पड़े जिस से मैं कितनों पर जो हमों को शरीर के

अनुसार चलनेहारे समझते हैं साहस
३ करने का बिचार करता हूं। क्योंकि यद्यपि हम शरीर में चलते फिरते हैं तौभी शरीर के अनुसार नहीं लड़ते हैं।
४ क्योंकि हमारे युद्ध के हथियार शारीरिक नहीं परन्तु गढ़ों को तोड़ने के लिये
५ ईश्वर के कारण सामर्थी हैं। हम तर्कों को और हर एक ऊंची बात को जो ईश्वर के ज्ञान के बिरुद्ध उठती है खंडन करते हैं और हर एक भावना को खीष्ट की आज्ञाकारी करने के लिये
६ बन्दी कर लेते हैं, और तैयार रहते हैं कि जब तुम्हारा आज्ञापालन पूरा हो जाय तब हर एक आज्ञालंघन का दंड देवें॥

७ क्या तुम जो कुछ सन्मुख है उसी को देखते हो, यदि कोई अपने में भरोसा रखता है कि वह खीष्ट का है तो आप ही फिर यह समझे कि जैसा वह खीष्ट का है तैसे हम लोग
८ भी खीष्ट के हैं। क्योंकि जो मैं हमारे उस अधिकार के विषय में जिसे प्रभु ने तुम्हें नाश करने के लिये नहीं परन्तु सुधारने के लिये हमें दिया है कुछ अधिक करके भी बड़ाई
९ करूं तो लज्जित न होगा। पर यह न होवे कि मैं ऐसा देख पड़ूं कि तुम्हें
१० पत्रियों से डराता हूं। क्योंकि वह कहता है उस की पत्रियां तो भारी और प्रबल हैं परन्तु साक्षात में उस का देह दुर्ब्बल और उस का वचन तुच्छ है।
११ ऐसा मनुष्य यह समझे कि हम लोग तुम्हारे पीछे पत्रियों के द्वारा वचन में जैसे हैं तुम्हारे साम्हे भी कर्म्म में वैसे ही होंगे॥

१२ क्योंकि हमें साहस नहीं है कि जो लोग अपनी प्रशंसा करते हैं उन में से कितनों के संग अपने को गिनें अथवा अपने को उन से मिलाके देखें परन्तु वे अपने को अपने से आप मापते हुए और अपने को अपने से मिलाके देखते हुए ज्ञान प्राप्त नहीं करते हैं।
१३ हम तो परिमाण के बाहर बड़ाई नहीं करेंगे परन्तु जो परिमाणदण्ड ईश्वर ने हमें बांट दिया है कि तुम्हों तक भी पहुंचे उस के नाप के अनुसार बड़ाई करेंगे।
१४ क्योंकि हम तुम्हों तक नहीं पहुंचते परन्तु अपने को सिवाने के बाहर पसारते हैं ऐसा नहीं है क्योंकि खीष्ट का सुसमाचार प्रचार करने में हम तुम्हों तक भी पहुंच चुके हैं।
१५ और हम परिमाण के बाहर दूसरों के परिश्रम के विषय में बड़ाई नहीं करते हैं परन्तु हमें भरोसा है कि ज्यों ज्यों तुम्हारा बिश्वास बढ़ जाय त्यों त्यों हम अपने परिमाण के अनुसार तुम्हारे द्वारा अधिक अधिक बढ़ाये जायेंगे,
१६ कि हम तुम्हारे देश से आगे बढ़के सुसमाचार प्रचार करें और यह नहीं कि हम दूसरों के परिमाण के भीतर तैयार किई हुई
१७ वस्तुओं के विषय में बड़ाई करें। पर जो बड़ाई करे सो प्रभु के विषय में
१८ बड़ाई करे। क्योंकि जो अपनी प्रशंसा करता है सो नहीं परन्तु जिस की प्रशंसा प्रभु करता है वही ग्रहणयोग्य ठहरता है॥

ग्यारहवां पर्व्व।

१ मैं चाहता हूं कि तुम मेरी अज्ञानता में थोड़ा सा मेरी सह लेते, हां मेरी सह
२ भी लेओ। क्योंकि मैं ईश्वर के लिये तुम्हारे विषय में धुन लगाये रहता हूं इस लिये कि मैं ने एक ही पुरुष से तुम्हारी बात लगाई है कि तुम्हें पवित्र कुंआरी की नाईं खीष्ट को सौंप
३ देऊं। परन्तु मैं डरता हूं कि जैसे सांप ने अपनी चतुराई से हव्वा को ठगा

तैसे तुम्हारे मन उस सीधाई से जो ख्रीष्ट की ओर है कहीं भ्रष्ट न किये जायें।
४ यदि वह जो तुम्हारे पास आता है दूसरे यीशु को प्रचार करता है जिसे हम ने प्रचार नहीं किया अथवा और आत्मा तुम्हें मिलता है जो तुम्हें नहीं मिला था अथवा और सुसमाचार जिसे तुम ने ग्रहण नहीं किया था तो तुम
५ भली रीति से सह लेते। मैं तो समझता हूं कि मैं किसी बात में उन अत्यन्त
६ बड़े प्रेरितों से घट नहीं हूं। यदि मैं बचन में अनाड़ी हूं तौभी ज्ञान में नहीं परन्तु हम हर बात में सभों के आगे तुम पर प्रगट किये गये॥

७ मैं जो अपने को नीचा करता था कि तुम ऊंचे किये जाओ क्या इस में मैं ने पाप किया, क्योंकि मैं ने सेंतमेंत
८ ईश्वर का सुसमाचार तुम्हें सुनाया। मैं ने और मंडलियों को लूट लिया कि तुम्हारी सेवा के लिये मैं ने उन से
९ मजूरी लिई। और जब मैं तुम्हारे संग था और मुझे घटी हुई तब मैं ने किसी पर भार नहीं दिया क्योंकि भाइयों ने माकिदोनिया से आके मेरी घटी को पूरी किई और मैं ने सर्व्वथा अपने को तुम पर भार होने से बचा रखा और
१० बचा रखूंगा। जो ख्रीष्ट की सच्चाई मुझ में है तो मेरे विषय में यह बड़ाई आखाया देश में नहीं बन्द किई जायगी।
११ किस कारण, क्या इस लिये कि मैं तुम्हें प्यार नहीं करता हूं, ईश्वर
१२ जानता है। पर मैं जो करता हूं सोई करूंगा कि जो लोग दांव ढूंढ़ते हैं उन्हें मैं दांव पाने न देऊं कि जिस बात में वे घमंड करते हैं उस में वे हमारे ही समान ठहरें॥

१३ क्योंकि ऐसे लोग झूठे प्रेरित हैं छल का कार्य्य करनेहारे ख्रीष्ट के प्रेरितों का रूप धरनेहारे। और यह कुछ अचंभे की
१४ बात नहीं क्योंकि शैतान आप भी
१५ ज्योति के दूत का रूप धरता है। सो यदि उस के सेवक भी धर्म्म के सेवकों का सा रूप धरें तो कुछ बड़ी बात नहीं है, पर उन का अन्त उन के कर्म्मों के अनुसार होगा॥

१६ मैं फिर कहता हूं कोई मुझे मूर्ख न समझे और नहीं तो यदि मूर्ख जानके तौभी मुझे ग्रहण करो कि थोड़ा सा मैं
१७ भी बड़ाई करूं। मैं जो बोलता हूं उस को प्रभु की आज्ञा के अनुसार नहीं परन्तु इस निर्भय बड़ाई करने में जैसे
१८ मूर्खता से बोलता हूं। जब कि बहुत लोग शरीर के अनुसार बड़ाई करते हैं
१९ मैं भी बड़ाई करूंगा। तुम तो बुद्धिमान होके आनन्द से मूर्खों की सह लेते
२० हो। क्योंकि यदि कोई तुम्हें दास बनाता है यदि कोई खा जाता है यदि कोई ले लेता है यदि कोई अपना बड़ापन करता है यदि कोई तुम्हारे मुंह पर थपेड़ा मारता है तो तुम सह
२१ लेते हो। इस अनादर की रीति पर मैं कहता हूं मानो कि हम दुर्ब्बल थे, परन्तु जिस बात में कोई साहस करता है मैं मूर्खता से कहता हूं मैं भी साहस करता हूं॥

२२ क्या वे इब्री लोग हैं, मैं भी हूं, क्या वे इस्रायेली हैं, मैं भी हूं, क्या वे
२३ इब्राहीम के वंश हैं, मैं भी हूं। क्या वे ख्रीष्ट के सेवक हैं, मैं बुद्धिहीन सा बोलता हूं उन से बढ़कर मैं बहुत अधिक परिश्रम करने से औ अत्यन्त मार खाने से औ बन्दीगृह में बहुत अधिक पड़ने से औ मृत्यु लों बारंबार पहुंचने से ख्रीष्ट का सेवक ठहरा।
२४ पांच बार मैं ने यिहूदियों के हाथ से
२५ उन्तालीस उन्तालीस कोड़े खाये। तीन

बार मैं ने बेंत खाई एक बार पत्थरवाह किया गया तीन बार जहाज जिन पर मैं चढ़ा था टूट गये एक रात २६ दिन मैं ने समुद्र में काटा । नदियों की अनेक जोखिम डाकूओं की अनेक जोखिम अपने लोगों से अनेक जोखिम अन्यदेशियों से अनेक जोखिम नगर में अनेक जोखिम जंगल में अनेक जोखिम समुद्र में अनेक जोखिम झूठे भाइयों में अनेक जोखिम इन सब जोखिमों सहित २७ बार बार यात्रा करने से . और परिश्रम औ क्लेश से बार बार जागते रहने से भूख औ प्यास से बार बार उपवास करने से जाड़े औ नंगाई से मैं ख्रीष्ट २८ का सेवक ठहरा । और और बातों को छोड़के यह भीड़ जो प्रतिदिन मुझ पर पड़ती है अर्थात सब मंडलियों की २९ चिन्ता । कौन दुर्ब्बल है और मैं दुर्ब्बल नहीं हूं . कौन ठोकर खाता है और मैं ३० नहीं जलता हूं । यदि बड़ाई करना अवश्य है तो मैं अपनी दुर्ब्बलता की ३१ बातों पर बड़ाई करूंगा । हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट का पिता ईश्वर जो सर्व्वदा धन्य है जानता है कि मैं झूठ नहीं ३२ बोलता हूं । दमेसक में अरिता राजा की ओर से जो अध्यक्ष था सो मुझे पकड़ने की इच्छा से दमेसकियों के ३३ नगर पर पहरा दिलाता था । और मैं खिड़की से टोकरे में भीत पर से लटकाया गया और उस के हाथ से बच निकला ॥

बारहवां पर्व्व ।

१ बड़ाई करना मेरे लिये अच्छा तो नहीं है . मैं प्रभु के दर्शनों और प्रकाशों २ का वर्णन करूंगा । मैं ख्रीष्ट में एक मनुष्य को जानता हूं कि चौदह बरस हुए क्या देह सहित मैं नहीं जानता हूं क्या देह रहित मैं नहीं जानता हूं ईश्वर जानता है ऐसा मनुष्य तीसरे स्वर्ग लों उठा लिया गया । ३ मैं ऐसे मनुष्य को जानता हूं क्या देह सहित क्या देह रहित मैं नहीं जानता हूं ईश्वर जानता है . ४ कि स्वर्गलोक पर उठा लिया गया और अकथ्य बातें सुनीं जिन के बोलने का सामर्थ्य मनुष्य को नहीं है । ५ ऐसे मनुष्य के विषय में मैं बड़ाई करूंगा परन्तु अपने विषय में बड़ाई न करूंगा केवल अपनी दुर्ब्बलताओं पर । ६ क्योंकि यदि मैं बड़ाई करने की इच्छा करूंगा तो मूर्ख न होंगा क्योंकि सत्य बोलूंगा परन्तु मैं रुक जाता हूं ऐसा न हो कि कोई जो कुछ वह देखता है कि मैं हूं अथवा मुझ से सुनता है उस से मुझ को कुछ बड़ा समझे । ७ और जिन्हें मैं प्रकाशों की अधिकाई से अभिमानी न हो जाऊं इस लिये शरीर में एक कांटा मानो मुझे घूसे मारने को शैतान का एक दूत मुझे दिया गया कि मैं अभिमानी न हो जाऊं । ८ इस बात पर मैं ने प्रभु से तीन बार बिन्ती किई कि मुझ से यह दूर किया जाय । ९ और उस ने मुझ से कहा मेरा अनुग्रह तेरे लिये बस है क्योंकि मेरा सामर्थ्य दुर्ब्बलता में सिद्ध होता है . सो मैं अति आनन्द से अपनी दुर्ब्बलताओं ही के विषय में बड़ाई करूंगा कि ख्रीष्ट का सामर्थ्य मुझ पर आ बसे । १० इस कारण मैं ख्रीष्ट के लिये दुर्ब्बलताओं में औ निन्दाओं में औ दरिद्रता में औ उपद्रवों में औ संकटों में प्रसन्न हूं क्योंकि जब मैं दुर्ब्बल हूं तब बलवन्त हूं ॥

११ मैं बड़ाई करने में मूर्ख बना हूं तुम ने मुझ से ऐसा करवाया है . उचित था कि मेरी प्रशंसा तुम्हीं से किई जाती क्योंकि यद्यपि मैं कुछ नहीं हूं तौभी उन अत्यन्त बड़े प्रेरितों से किसी बात में घट नहीं था । १२ प्रेरित के लक्षण तुम्हारे

बीच में सब प्रकार के धीरज सहित चिन्हों और अद्भुत कामों और आश्चर्य्य कर्म्मों से दिखाये गये । १३ कौन सी बात थी जिस में तुम और और मंडलियों से घट थे केवल यह कि मैं ने आप ही तुम पर भार नहीं दिया . मेरी यह अनीति क्षमा कीजिये । १४ देखो मैं तीसरी बार तुम्हारे पास आने को तैयार हूं और मैं तुम पर भार न दूंगा क्योंकि मैं तुम्हारी सम्पत्ति को नहीं पर तुम ही को चाहता हूं क्योंकि उचित नहीं है कि लड़के माता पिता के लिये पर माता पिता लड़कों के लिये संचय करें । १५ परन्तु यद्यपि मैं जितना तुम्हें अधिक प्यार करता हूं उतना थोड़ा प्यारा हूं तौभी मैं अति आनन्द से तुम्हारे प्राणों के लिये खर्च करूंगा और खर्च किया जाऊंगा ॥

१६ सो ऐसा होय मैं ने तुम पर बोझ नहीं डाला . तौभी [कहते हैं कि] मैं ने चतुर होके तुम्हें छल से पकड़ा । १७ क्या जिन्हें मैं ने तुम्हारे पास भेजा उन में से किसी के द्वारा से मैं ने लोभ कर कुछ तुम से लिया । १८ मैं ने तीतस से बिन्ती किई और भाई को उस के संग भेजा . क्या तीतस ने लोभ कर कुछ तुम से लिया . क्या हम एक ही आत्मा से न चले . क्या एक ही लीक पर न चले ॥

१९ फिर क्या तुम समझते हो कि हम तुम्हारे साम्हे अपना उत्तर देते हैं . हम तो ईश्वर के साम्हे ख्रीष्ट में बोलते हैं पर हे प्यारो सब बातें तुम्हारे सुधारने के लिये बोलते हैं । २० क्योंकि मैं डरता हूं ऐसा न हो कि क्या जाने मैं आके तुम्हें न ऐसे पाऊं जैसे मैं चाहता हूं और मैं तुम से ऐसा पाया जाऊं जैसा तुम नहीं चाहते हो . कि क्या जाने नाना भांति के बैर डाह क्रोध विवाद दुर्वचन फुसफुसाहट अभिमान और बखेड़े होवें । २१ और मेरा ईश्वर कहीं मुझे फिर आने पर तुम्हारे यहां हेठा करे और मैं उन्हों में से बहुतों के लिये शोक करूं जिन्हों ने आगे पाप किया था और उस अशुद्ध कर्म्म और व्यभिचार और लुचपन से जो उन्हों ने किये थे पश्चात्ताप नहीं किया है ॥

तेरहवां पर्ब्ब ।

१ यह तीसरी बार मैं तुम्हारे पास आता हूं . दो और तीन साक्षियों के मुंह से हर एक बात ठहराई जायगी । २ मैं पहिले कह चुका और जैसा तुम्हारे साम्हे दूसरी बेर आगे से कहता हूं और तुम्हारी पीठ के पीछे उन लोगों के पास जिन्हों ने आगे पाप किया था और और सब लोगों के पास अब लिखता हूं कि जो मैं फिर तुम्हारे पास आऊं तो नहीं छोड़ूंगा । ३ तुम तो ख्रीष्ट के मुझ में बोलने का प्रमाण ढूंढ़ते हो जो तुम्हारी ओर दुर्ब्बल नहीं है परन्तु तुम्हों में सामर्थी है । ४ क्योंकि यद्यपि वह दुर्ब्बलता से क्रुश पर घात किया गया तौभी ईश्वर के सामर्थ्य से जीता है . हम भी उस में दुर्ब्बल हैं परन्तु तुम्हारी ओर ईश्वर के सामर्थ्य से उस के संग जीयेंगे । ५ अपने को परखो कि बिश्वास में हो कि नहीं अपने को जांचो . अथवा क्या तुम अपने को नहीं पहचानते हो कि यीशु ख्रीष्ट तुम्हों में है नहीं तो तुम निकृष्ट हो । ६ पर मेरा भरोसा है कि तुम जानोगे कि हम निकृष्ट नहीं हैं । ७ परन्तु मैं ईश्वर से यह प्रार्थना करता हूं कि तुम कोई कुकर्म्म न करो इस लिये नहीं कि हम खरे देख पड़ें परन्तु इस लिये कि तुम सुकर्म्म करो . हम चाहे निकृष्ट के ऐसे होवें तो होवें । ८ क्योंकि हम सत्य के विरुद्ध कुछ नहीं कर सकते हैं परन्तु

९ सत्य के निमित्त । जब हम दुर्ब्बल हैं पर तुम बलवन्त हो तब हम आनन्द करते हैं और हम इस बात की प्रार्थना भी करते हैं अर्थात तुम्हारे सिद्ध होने १० को । इस कारण मैं तुम्हारे पीछे यह बातें लिखता हूं कि तुम्हारे साम्ने मुझे उस अधिकार के अनुसार जिसे प्रभु ने नाश करने के लिये नहीं परन्तु सुधारने के लिये मुझे दिया है कड़ाई से कुछ करना न पड़े ॥

११ अन्त में हे भाइयो यह कहता हूं कि आनन्दित रहो सुधर जाओ शांत होओ एक ही मन रखो मिले रहो और प्रेम औ शांति का ईश्वर तुम्हारे १२ संग होगा । एक दूसरे को पवित्र चूमा १३ लेके नमस्कार करो । सब पवित्र लोगों १४ का तुम से नमस्कार । प्रभु यीशु खीष्ट का अनुग्रह और ईश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की संगति तुम सभों के साथ रहे । आमीन ॥

गलातियों को पावल प्रेरित की पत्री ।

पहिला पर्ब्ब ।

१ पावल जो न मनुष्यों की ओर से और न मनुष्य के द्वारा से परन्तु यीशु खीष्ट के द्वारा से और ईश्वर पिता के द्वारा से जिस ने उस को मृतकों में से २ उठाया प्रेरित है . और सब भाई लोग जो मेरे संग हैं गलातिया की मंडलियों ३ को : तुम्हें अनुग्रह और शांति ईश्वर पिता और हमारे प्रभु यीशु खीष्ट से ४ मिले . जिस ने अपने को हमारे पापों के लिये दिया कि हमें इस वर्त्तमान बुरे संसार से बचावे हमारे पिता ईश्वर ५ की इच्छा के अनुसार . जिस का गुणानुवाद सदा सर्व्वदा होवे . आमीन ॥

६ मैं अचंभा करता हूं कि जिस ने तुम्हें खीष्ट के अनुग्रह के द्वारा बुलाया उस से तुम ऐसे शीघ्र और ही सुसमाचार ७ की ओर फिरे जाते हो । और वह तो दूसरा सुसमाचार नहीं है पर केवल कितने लोग हैं जो तुम्हें व्याकुल करते हैं और खीष्ट के सुसमाचार को बदल ८ डालने चाहते हैं । परन्तु यदि हम भी अथवा स्वर्ग से एक दूत भी उस सुसमाचार से भिन्न जो हम ने तुम को सुनाया दूसरा सुसमाचार तुम्हें सुनावे ९ तो स्रापित होवे । जैसा हम ने पहिले कहा है तैसा मैं अब भी फिर कहता हूं कि जिसे को तुम ने ग्रहण किया उस से भिन्न यदि कोई तुम्हें दूसरा सुसमाचार सुनाता है तो स्रापित होवे । १० क्योंकि मैं अब क्या मनुष्यों को अथवा ईश्वर को मनाता हूं . अथवा क्या मैं मनुष्यों को प्रसन्न करने चाहता हूं . जो मैं अब भी मनुष्यों को प्रसन्न करता तो खीष्ट का दास न होता ॥

११ हे भाइयो मैं उस सुसमाचार के विषय में जो मैं ने प्रचार किया तुम्हें जनाता हूं कि वह मनुष्य के मत के १२ अनुसार नहीं है । क्योंकि मैं ने भी उस को मनुष्य की ओर से नहीं पाया और न मैं सिखाया गया परन्तु यीशु खीष्ट के प्रकाश करने के द्वारा से पाया ॥

१३ क्योंकि यिहूदीय मत में मेरी जैसी चाल चलन आगे थी सो तुम ने सुनी

है कि मैं ईश्वर की मंडली को अत्यन्त सताता था और उसे नाश करता था . १४ और अपने देश के बहुत लोगों से जो मेरी वयस के थे यिहूदीय मत में अधिक बढ़ गया कि मैं अपने पुर्खों के व्यवहारों के विषय में बहुत अधिक १५ धुन लगाये था । परन्तु ईश्वर को जिस ने मुझे मेरी माता के गर्भ ही से अलग किया और अपने अनुग्रह से १६ बुलाया जब इच्छा हुई . कि मुझ में अपने पुत्र को प्रगट करे जिस्तें मैं अन्यदेशियों में उस का सुसमाचार प्रचार करूं तब तुरन्त मैं ने मांस औ १७ लोहू के संग परामर्श न किया . और न यिरूशलीम को उन के पास गया जो मेरे आगे प्रेरित थे परन्तु अरब देश को चला गया और फिर दमिसक को १८ लौटा । तब तीन बरस के पीछे मैं पितर से भेंट करने को यिरूशलीम गया और उस के यहां पन्द्रह दिन रहा । १९ परन्तु प्रेरितों में से मैं ने और किसी को नहीं देखा केवल प्रभु के भाई २० याकूब को । मैं तुम्हारे पास जो बातें लिखता हूं देखो ईश्वर के साम्हे मैं कहता हूं कि मैं झूठ नहीं बोलता २१ हूं । तिस के पीछे मैं सुरिया और २२ किलिकिया देशों में गया । पर यिहूदिया की मंडलियों को जो खीष्ट में थीं मेरे रूप का परिचय नहीं हुआ २३ था । वे केवल सुनते थे कि जो हमें आगे सताता था सो जिस विश्वास को आगे नाश करता था उसी का २४ अब सुसमाचार प्रचार करता है । और मेरे विषय में उन्हों ने ईश्वर का गुणानुवाद किया ॥

दूसरा पर्व्व ।

१ तब चौदह बरस के पीछे मैं बर्णबा के साथ फिर यिरूशलीम को गया और तीतस को भी अपने संग ले गया । मैं २ प्रकाश के अनुसार गया और जो सुसमाचार मैं अन्यदेशियों में प्रचार करता हूं उस को मैं ने उन्हें सुनाया पर जो बड़े समझे जाते थे उन्हें एकान्त में सुनाया जिस्तें न हो कि मैं किसी रीति से वृथा दौड़ता हूं अथवा दौड़ा था । परन्तु ३ तीतस भी जो मेरे संग था यद्यपि यूनानी था तौभी उस के खतना किये जाने की आज्ञा न दिई गई । और यह उन ४ झूठे भाइयों के कारण हुआ जो चोरी से भीतर ले लिये गये थे और हमें बंध में डालने के लिये हमारी निर्बन्धता को जो खीष्ट यीशु में हमें मिली है देख लेने को छिपके घुस आये थे । उन के ५ वश में हम एक घड़ी भी अधीन नहीं रहे इस लिये कि सुसमाचार की सच्चाई तुम्हारे पास बनी रहे । फिर जो लोग ६ कुछ बड़े समझे जाते थे वे जैसे थे तैसे थे मुझे कुछ काम नहीं ईश्वर किसी मनुष्य का पक्षपात नहीं करता है उन से मैं ने कुछ नहीं पाया क्योंकि जो लोग बड़े समझे जाते थे उन्हों ने मुझे कुछ नहीं बताया । परन्तु इस के विरुद्ध ७ जब याकूब और कैफा और योहन ने जो खंभे समझे जाते थे देखा कि जैसा खतना किये हुओं के लिये सुसमाचार पितर को सौंपा गया तैसा खतनाहीनों के लिये मुझे सौंपा गया . क्योंकि जिस ८ ने पितर से खतना किये हुओं में की प्रेरिताई का कार्य्य करवाया तिस ने मुझ से भी अन्यदेशियों में कार्य्य करवाया . ९ और जब उन्हों ने उस अनुग्रह को जो मुझे दिया गया था जान लिया तब उन्हों ने मुझ को और बर्णबा को संगति के दहिने हाथ दिये इस कारण कि हम अन्यदेशियों के पास और वे आप खतना किये हुओं के पास जावें । केवल

चाहा कि हम कंगालों की सुध लेवें और यही काम करने में मैं ने तो यत्न भी किया ॥

११ परन्तु जब पितर अन्तैखिया में आया तब मैं ने साक्षात उस का साम्ना किया इस लिये कि दोषी ठहराया गया १२ था । क्योंकि कितने लोगों के याकूब के पास से आने के पहिले वह अन्यदेशियों के साथ खाता था परन्तु जब वे आये तब खतना किये हुए लोगों के डर के मारे हटके अपने को अलग १३ रखता था । और उस के संग दूसरे यिहूदियों ने भी कपट किया यहां लों कि बर्नबा भी उन के कपट से बहकाया १४ गया । परन्तु जब मैं ने देखा कि वे सुसमाचार की सच्चाई पर सीधे नहीं चलते हैं तब मैं ने सभों के साम्ने पितर से कहा कि जो तू यिहूदी होके अन्यदेशियों की रीति पर चलता है और यिहूदीय मत पर नहीं तो तू अन्यदेशियों को यिहूदीय मत पर क्यों चलाता है । १५ हम जो जन्म के यिहूदी हैं और अन्य- १६ देशियों में के पापी लोग नहीं, यह जानके कि मनुष्य व्यवस्था के कर्म्मों से नहीं पर केवल यीशु ख्रीष्ट के बिश्वास के द्वारा से धर्म्मी ठहराया जाता है हम ने भी ख्रीष्ट यीशु पर बिश्वास किया कि हम व्यवस्था के कर्म्मों से नहीं पर ख्रीष्ट के बिश्वास से धर्म्मी ठहरें इस कारण कि व्यवस्था के कर्म्मों से कोई प्राणी धर्म्मी नहीं ठहराया जायगा । १७ परन्तु यदि ख्रीष्ट में धर्म्मी ठहराये जाने का यत्न करने से हम आप भी पापी ठहरे तो क्या ख्रीष्ट पाप का सेवक है, १८ ऐसा न हो । क्योंकि जो वस्तु मैं ने गिराई थी यदि उसी को फिर बनाता हूं तो अपने पर प्रमाण देता हूं कि १९ अपराधी हूं । मैं तो व्यवस्था के द्वारा से व्यवस्था के लिये मरा कि ईश्वर के लिये जीऊं । मैं ख्रीष्ट के संग क्रूश पर २० चढ़ाया गया हूं तौभी जीता हूं, अब तो मैं आप नहीं पर ख्रीष्ट मुझ में जीता है और मैं शरीर में अब जो जीता हूं सो ईश्वर के पुत्र के बिश्वास से जीता हूं जिस ने मुझे प्यार किया और मेरे लिये अपने को सौंप दिया । मैं ईश्वर २१ के अनुग्रह को व्यर्थ नहीं करता हूं क्योंकि यदि व्यवस्था के द्वारा से धर्म्म होता है तो ख्रीष्ट अकारण मूआ ॥

तीसरा पर्ब्ब ।

१ हे निर्बुद्धि गलातियो किस ने तुम्हें मोह लिया है कि तुम लोग सत्य को न मानो जिन के आगे यीशु ख्रीष्ट क्रूश पर चढ़ाया हुआ साक्षात तुम्हारे बीच में प्रगट किया गया । मैं तुम से केवल २ यही सुनने चाहता हूं कि तुम ने आत्मा को क्या व्यवस्था के कर्म्मों के हेतु से अथवा बिश्वास के समाचार के हेतु से पाया । क्या तुम ऐसे निर्बुद्धि हो, क्या ३ आत्मा से आरंभ करके तुम अब शरीर से सिद्ध किये जाते हो । क्या तुम ने ४ इतना दुःख वृथा उठाया, जो ऐसा ठहरे कि वृथा ही उठाया ॥

५ जो तुम्हें आत्मा दान करता और तुम्हों में आश्चर्य्य कर्म्म करवाता है सो क्या व्यवस्था के कर्म्मों के हेतु से अथवा बिश्वास के समाचार के हेतु से ऐसा करता है । जैसे इब्राहीम ने ईश्वर का ६ बिश्वास किया और यह उस के लिये धर्म्म गिना गया । सो यह जानो कि ७ जो बिश्वास के अवलम्बी हैं सोई इब्राहीम के सन्तान हैं । फिर ईश्वर जो ८ बिश्वास से अन्यदेशियों को धर्म्मी ठहराता है यह आगे से देखके धर्म्मपुस्तक ने इब्राहीम को आगे से सुसमाचार सुनाया कि तुझ में सब देशों के

९ लोग आशीस पावेंगे। सो वे जो बिश्वास के अवलम्बी हैं बिश्वासी इब्राहीम के संग आशीस पाते हैं॥

१० क्योंकि जितने लोग व्यवस्था के कर्म्मों के अवलम्बी हैं वे सब स्रापित हैं क्योंकि लिखा है हर एक जन जो व्यवस्था के पुस्तक में लिखी हुई सब बातें पालन करने को उन में बना नहीं ११ रहता है स्रापित है। परन्तु व्यवस्था के द्वारा से ईश्वर के यहां कोई नहीं धर्म्मी ठहरता है यह बात प्रगट है क्योंकि बिश्वास से धर्म्मी जन जीयेगा। १२ पर व्यवस्था बिश्वास संबन्धी नहीं है परन्तु जो मनुष्य यह बातें पालन करे १३ सो उन से जीयेगा। खीष्ट ने दाम देके हमें व्यवस्था के स्राप से छुड़ाया कि वह हमारे लिये स्रापित बना क्योंकि लिखा है हर एक जन जो काठ पर लटकाया १४ जाता है स्रापित है। यह इस लिये हुआ कि इब्राहीम की आशीस खीष्ट यीशु में अन्यदेशियों पर पहुंचे और कि जो कुछ आत्मा के विषय में प्रतिज्ञा किया गया सो बिश्वास के द्वारा से हमें मिले॥

१५ हे भाइयो मैं मनुष्य की रीति पर कहता हूं कि मनुष्य के नियम को भी जो दृढ़ किया गया है कोई टाल नहीं देता है और न उस में मिला देता है। १६ फिर प्रतिज्ञाएं इब्राहीम को और उस के वंश को दिई गई. वह नहीं कहता है वंशों को जैसे बहुतों के विषय में परन्तु जैसे एक के विषय में और तेरे १७ वंश को. सोई खीष्ट है। पर मैं यह कहता हूं कि जो नियम ईश्वर ने खीष्ट के लिये आगे से दृढ़ किया था उस को व्यवस्था जो चार सौ तीस बरस पीछे हुई नहीं उठा देती है ऐसा कि प्रतिज्ञा १८ को व्यर्थ कर दे। क्योंकि यदि अधिकार व्यवस्था से होता है तो फिर प्रतिज्ञा से नहीं है. परन्तु ईश्वर ने उसे इब्राहीम को प्रतिज्ञा के द्वारा से दिया है॥

१९ तो व्यवस्था क्या करती है. जब लों वह वंश जिस को प्रतिज्ञा दिई गई थी न आया तब लों अपराधों के कारण वह भी दिई गई और वह दूतों के द्वारा मध्यस्थ के हाथ में नियुक्त किई गई। २० मध्यस्थ एक का नहीं होता है २१ परन्तु ईश्वर एक है। तो क्या व्यवस्था ईश्वर की प्रतिज्ञाओं के विरुद्ध है. ऐसा न हो क्योंकि यदि ऐसी व्यवस्था दिई जाती कि जिलाने सकती तो निश्चय करके धर्म्म व्यवस्था से होता। २२ परन्तु धर्म्मपुस्तक ने सभों को पाप तले बन्द कर रखा इस लिये कि यीशु खीष्ट के बिश्वास का फल जिस की प्रतिज्ञा किई गई बिश्वास करनेहारों को दिया २३ जाये। परन्तु बिश्वास के आने के पहिले हम बिश्वास के लिये जो प्रगट होने पर था व्यवस्था के पहरे में बन्द २४ किये हुए रहते थे। सो व्यवस्था हमारी शिक्षक हुई है कि खीष्ट लों पहुंचावे जिस्ते हम बिश्वास से धर्म्मी ठहराये जावें॥

२५ परन्तु बिश्वास जो आ चुका है तो अब हम शिक्षक के बश में नहीं हैं। २६ क्योंकि खीष्ट यीशु पर बिश्वास करने के द्वारा से तुम सब ईश्वर के सन्तान हो। २७ क्योंकि जितनों ने खीष्ट में बपतिसमा लिया उन्हों ने खीष्ट को पहिन लिया। २८ उस में न यिहूदी न यूनानी है उस में न दास न निर्बन्ध है उस में नर और नारी नहीं है क्योंकि तुम सब खीष्ट यीशु में एक हो। २९ पर जो तुम खीष्ट के हो तो इब्राहीम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार अधिकारी हो॥

चौथा पर्व्व ।

१ पर मैं कहता हूं कि अधिकारी जब लों बालक है तब लों यद्यपि सब वस्तुओं का स्वामी है तौभी दास से २ कुछ भिन्न नहीं है, परन्तु पिता के ठहराये हुए समय लों रक्षकों और ३ भंडारियों के बश में है। वैसे ही हम भी जब बालक थे तब संसार की आदिशिक्षा के बश में दास बने हुए ४ थे। परन्तु जब समय की पूर्णता पहुंची तब ईश्वर ने अपने पुत्र को भेजा जो स्त्री से जन्मा और व्यवस्था के बश में ५ उत्पन्न हुआ, इस लिये कि दाम देके उन्हें जो व्यवस्था के बश में हैं छुड़ावे जिस्तें लेपालकों का पद हमें मिले। ६ और तुम जो पुत्र हो इस कारण ईश्वर ने अपने पुत्र के आत्मा को जो हे अब्बा अर्थात हे पिता पुकारता है ७ तुम्हारे हृदय में भेजा है। सो तू अब दास नहीं परन्तु पुत्र है और यदि पुत्र है तो ख्रीष्ट के द्वारा से ईश्वर का अधिकारी भी है॥

भला तब तो तुम ईश्वर को न जानके उन्हों के दास थे जो स्वभाव ९ से ईश्वर नहीं हैं, परन्तु अब तुम ईश्वर को जानके पर और भी ईश्वर से जाने जाके क्योंकर फिर उस दुर्ब्बल और फलहीन आदिशिक्षा की ओर मुंह फेरते हो जिस के तुम फिर नये सिर से १० दास हुआ चाहते हो। तुम दिनों औ मासों औ समयों औ बरसों को मानते ११ हो। मैं तुम्हारे विषय में डरता हूं कि क्या जानें मैं ने वृथा तुम्हारे लिये १२ परिश्रम किया है। हे भाइयो मैं तुम से बिन्ती करता हूं तुम मेरे समान हो जाओ क्योंकि मैं भी तुम्हारे समान हुआ हूं, तुम से मेरी कुछ हानि नहीं १३ हुई। पर तुम जानते हो कि पहिले मैं ने शरीर की दुर्ब्बलता के कारण तुम्हें सुसमाचार सुनाया। और मेरी १४ परीक्षा को जो मेरे शरीर में थी तुम ने तुच्छ नहीं जाना न घिन्न किया परन्तु जैसे ईश्वर के दूत को जैसे ख्रीष्ट यीशु को तैसे ही मुझ को ग्रहण किया। तो १५ वह तुम्हारी धन्यता कैसी थी, क्योंकि मैं तुम्हारा साक्षी हूं कि जो हो सकता तो तुम अपनी अपनी आंखें निकालके मुझ को देते। सो क्या तुम से सत्य १६ बोलने से मैं तुम्हारा बैरी हुआ हूं। वे भली रीति से तुम्हारे अभिलाषी १७ नहीं होते हैं परन्तु तुम्हें निकलवाया चाहते हैं जिस्तें तुम उन के अभिलाषी होओ। पर अच्छा है कि भली बात १८ में तुम्हारी अभिलाषा जिस समय मैं तुम्हारे संग रहूं केवल उसी समय किई जाय सो नहीं परन्तु सदा किई जाय। हे मेरे बालको जिन के लिये जब लों १९ तुम्हों में ख्रीष्ट का रूप न बन जाय तब लों मैं ।५॰ प्रसव की सी पीड़ उठाता हूं, मैं चाहता कि अब तुम्हारे २० संग होता और अपनी बोली बदलता क्योंकि तुम्हारे विषय में मुझे सन्देह होता है॥

तुम जो व्यवस्था के बश में हुआ २१ चाहते हो मुझ से कहो क्या तुम व्यवस्था को नहीं सुनते हो। क्योंकि २२ लिखा है कि इब्राहीम के दो पुत्र हुए एक तो दासी से और एक तो निर्बन्ध स्त्री से। परन्तु जो दासी से हुआ सो शरीर २३ के अनुसार जन्मा पर जो निर्बन्ध स्त्री से हुआ सो प्रतिज्ञा के द्वारा से जन्मा। यह बातें दृष्टान्त के लिये कही जाती २४ हैं क्योंकि यह स्त्रियां दो नियम हैं एक तो सीनई पर्व्वत से जो दास होने के लिये लड़के जनता है सोई हाजिरा है। क्योंकि हाजिरा का अर्थ अरब में २५

सीनई पर्ब्बत है और वह यिरूशलीम के तुल्य जो अब है गिनी जाती है और अपने बालकों समेत दासी होती है ।
२६ परन्तु ऊपर की यिरूशलीम निर्बन्ध है और वह हम सभों की माता है ।
२७ क्योंकि लिखा है कि हे बांझ जो नहीं जनती है आनन्दित हो तू जो प्रसव की पीड़ नहीं उठाती है ऊंचे शब्द से पुकार क्योंकि जिस स्त्री का स्वामी है उस के लड़कों से अनाथ के लड़के और
२८ भी बहुत हैं । पर हे भाइयो हम लोग इसहाक की रीति पर प्रतिज्ञा के
२९ सन्तान हैं । परन्तु जैसा उस समय में जो शरीर के अनुसार जन्मा सो उस को जो आत्मा के अनुसार जन्मा सताता था वैसा ही अब भी होता
३० है । परन्तु धर्म्मपुस्तक क्या कहता है . दासी को और उस के पुत्र को निकाल दे क्योंकि दासी का पुत्र निर्बन्ध स्त्री के पुत्र के संग अधिकारी न
३१ होगा । सो हे भाइयो हम दासी के नहीं परन्तु निर्बन्ध स्त्री के सन्तान हैं ।

पांचवां पर्ब्ब ।

१ सो उस निर्बन्धता में जिस करके खीष्ट ने हमें निर्बन्ध किया है दृढ़ रहो और दासत्व के जूए में फिर मत जोते
२ जाओ । देखो मैं पावल तुम से कहता हूं कि जो तुम्हारा खतना किया जाय तो खीष्ट से तुम्हें कुछ लाभ न होगा ।
३ फिर भी मैं साक्षी देता हूं हर एक मनुष्य से जिस का खतना किया जाता है कहता हूं कि सारी व्यवस्था को पूरी करना
४ उस को अवश्य है । तुम में से जो जो व्यवस्था के अनुसार धर्म्मी ठहराये जाते हो सो खीष्ट से भ्रष्ट हुए हो . तुम
५ अनुग्रह से पतित हुए हो । क्योंकि पवित्र आत्मा से हम लोग विश्वास से धर्म्म की आशा की बाट जोहते हैं ।
६ क्योंकि खीष्ट यीशु में न खतना न खतनाहीन होना कुछ काम आता है परन्तु विश्वास जो प्रेम के द्वारा से कार्य्यकारी होता है ।
७ तुम भली रीति से दौड़ते थे . किस ने तुम्हें रोका कि सत्य को न
८ मानो । यह मनावना तुम्हारे बुलानेहारे
९ की ओर से नहीं है । थोड़ा सा खमीर सारे पिंड को खमीर कर डालता है ।
१० मैं प्रभु पर तुम्हारे विषय में भरोसा रखता हूं कि तुम्हारी कोई दूसरी मति न होगी पर जो तुम्हें व्याकुल करता है कोई हो वह उस का दंड भोगेगा ।
११ पर हे भाइयो जो मैं अब भी खतने का उपदेश करता हूं तो क्यों फिर सताया जाता हूं . तब क्रूश की ठोकर तो जाती
१२ रही । मैं चाहता हूं कि जो तुम्हें गड़बड़ाते हैं सो अपने ही को काट डालते ।
१३ क्योंकि हे भाइयो तुम लोग निर्बन्ध होने को बुलाये गये केवल इस निर्बन्धता से शरीर के लिये गौं मत पकड़ो परन्तु प्रेम से एक दूसरे के दास बनो ।
१४ क्योंकि सारी व्यवस्था एक ही बात में पूरी होती है अर्थात इस में कि तू अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम कर ।
१५ परन्तु जो तुम एक दूसरे को दांत से काटो और खा जाओ तो चौकस रहो कि एक दूसरे से नाश न किये जाओ ।
१६ पर मैं कहता हूं आत्मा के अनुसार चलो तो तुम शरीर की लालसा किसी
१७ रीति से पूरी न करोगे । क्योंकि शरीर की लालसा आत्मा के विरुद्ध और आत्मा की शरीर के विरुद्ध होती है और ये दोनों परस्पर विरोध करते हैं इस लिये कि तुम जो करने चाहो उसे करने न
१८ पाओ । परन्तु जो तुम आत्मा के चलाये चलते हो तो व्यवस्था के बश में नहीं
१९ हो । शरीर के कर्म्म प्रगट हैं सो ये हैं

परस्त्रीगमन व्यभिचार अशुद्धता लुचपन. २० मूर्त्तिपूजा टोना और नाना भांति के शत्रुता और डाह क्रोध बिवाद बिरोध कुपन्थ. २१ डाह नरहिंसा मतवालपन और लीला क्रीड़ा और इन के ऐसे और और कर्म्म. इन के विषय में मैं तुम को आगे से कहता हूं जैसा मैं ने आगे भी कहा था कि ऐसे ऐसे काम करनेहारे ईश्वर के २२ राज्य के अधिकारी न होंगे। परन्तु आत्मा का फल यह है प्रेम आनन्द मिलाप धीरज कृपा भलाई विश्वास २३ नम्रता और संयम. कोई व्यवस्था ऐसे २४ ऐसे कामों के बिरुद्ध नहीं है। जो खीष्ट के लोग हैं उन्हों ने शरीर को उस के रोगों और अभिलाषों समेत क्रूश २५ पर चढ़ाया है। जो हम आत्मा के अनुसार जीते हैं तो आत्मा के अनुसार २६ चलें भी। हम घमंडी न हो जावें जो एक दूसरे को छेड़ें और एक दूसरे से डाह करें॥

छठवां पर्ब्ब ।

१ हे भाइयो यदि मनुष्य किसी अपराध में पकड़ा भी जावे तौभी तुम जो आत्मिक हो नम्रता संयुक्त आत्मा से ऐसे मनुष्य को सुधारो और तू अपने को देख रख कि तू भी परीक्षा में न २ पड़े। एक दूसरे के भार उठाओ और इस रीति से खीष्ट की व्यवस्था को पूरी ३ करो। क्योंकि यदि कोई जो कुछ नहीं है समझता है कि मैं कुछ हूं तो अपने ४ को धोखा देता है। परन्तु हर एक जन अपने काम को जांचे और तब दूसरे के विषय में नहीं पर केवल अपने विषय में उस को बड़ाई करने की जगह ५ होगी। क्योंकि हर एक जन अपना ही ६ बोझ उठावेगा। जो वचन की शिक्षा पाता है सो समस्त अच्छी वस्तुओं में ७ सिखानेहारे की सहायता करे। धोखा मत खाओ ईश्वर से ठट्ठा नहीं किया जाता है क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है उस को लवेगा भी। क्योंकि जो अपने शरीर के लिये बोता है सो शरीर से बिनाश लवेगा परन्तु जो आत्मा के लिये बोता है सो आत्मा से अनन्त जीवन लवेगा। पर सुकर्म्म करने में हम कातर न होवें क्योंकि जो हमारा बल न घटे तो ठीक समय में लवेंगे। इस लिये जैसा हमें अव- १० सर मिलता है हम सब लोगों से पर निज करके बिश्वास के घराने से भलाई करें

११ देखो मैं ने कैसी बड़ी पत्री तुम्हारे १२ पास अपने हाथ से लिखी है। जितने लोग शरीर में अच्छा रूप दिखाने चाहते हैं वे ही तुम्हारे खतना किये जाने की दृढ़ आज्ञा देते हैं केवल इसी लिये कि वे खीष्ट के क्रूश के कारण सताये न १३ जावें। क्योंकि वे भी जिन का खतना किया जाता है आप व्यवस्था को पालन नहीं करते हैं परन्तु तुम्हारे खतना किये जाने की इच्छा इस लिये करते हैं कि तुम्हारे शरीर के विषय में बड़ाई करें। १४ पर मुझ से ऐसा न होवे कि किसी और बात के विषय में बड़ाई करूं केवल हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के क्रूश के विषय में जिस के द्वारा से जगत मेरे लेखे क्रूश पर चढ़ाया गया है और मैं जगत के १५ लेखे। क्योंकि खीष्ट यीशु में न खतना न खतनाहीन होना कुछ है परन्तु नई १६ सृष्टि। और जितने लोग इस विधि से चलेंगे उन्हों पर और ईश्वर के इस्राएली १७ लोगों पर कल्याण और दया होवे। अब से कोई मुझे दुःख न देवे क्योंकि मैं प्रभु यीशु के चिन्ह अपने देह में लिये १८ फिरता हूं। हे भाइयो हमारे प्रभु यीशु खीष्ट का अनुग्रह तुम्हारे आत्मा के संग होवे। आमीन॥

इफिसियों को पावल प्रेरित की पत्री।

पहिला पर्ब्ब ।

१ पावल जो ईश्वर की इच्छा से यीशु खीष्ट का प्रेरित है उन पवित्र और खीष्ट यीशु में विश्वासी लोगों को जो इफिस में हैं २ तुम्हें हमारे पिता ईश्वर और प्रभु यीशु खीष्ट से अनुग्रह और शांति मिले॥

३ हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के पिता ईश्वर का धन्यवाद होय जिस ने खीष्ट में हमों को स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आत्मिक आशीस से आशीस दिई है . ४ जैसा उस ने उस में जगत की उत्पत्ति के आगे हमें चुन लिया कि हम प्रेम से उस के सन्मुख पवित्र औ निर्दोष होवें . ५ और अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार हमें आगे से ठहराया कि यीशु खीष्ट के द्वारा से हम उस के लेपालक होवें . ६ इस लिये कि उस के अनुग्रह की महिमा की स्तुति किई जाय जिस करके उस ने हमें उस प्यारे में अनुग्रह पात्र ७ किया . जिस में उस के लोहू के द्वारा से हमें उद्धार अर्थात अपराधों का मोचन ईश्वर के अनुग्रह के धन के अनु- ८ सार मिलता है । और उस ने समस्त ज्ञान औ बुद्धि सहित हम पर यह अनु- ९ ग्रह अधिकाई से किया . कि उस ने अपनी इच्छा का भेद अपनी उस सुमति के. अनुसार हमें बताया जो उस ने समयों की पूर्णता का कार्य्य निबाहने १० निमित्त अपने में ठानी थी . अर्थात कि जो कुछ स्वर्ग में है और जो कुछ पृथिवी पर है सब कुछ वह खीष्ट में ११ संयुक्त करेगा . हां उसी में जिस में हम उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कार्य्य करता है आगे से ठहराये जाके अधिकार के लिये चुने गये थे . १२ इस लिये कि उस की महिमा की स्तुति हमारे द्वारा से किई जाय जिन्हों ने आगे खीष्ट पर भरोसा रखा था . १३ जिस पर तुम ने भी सत्यता का बचन अर्थात अपने त्राण का सुसमाचार सुनके भरोसा रखा और जिस में तुम ने विश्वास करके प्रतिज्ञा के आत्मा अर्थात पवित्र आत्मा की छाप भी पाई . १४ जो मोल लिये हुओं के उद्धार लों हमारे अधिकार का बयाना है इस कारण कि ईश्वर की महिमा की स्तुति किई जाय॥

१५ इस कारण से मैं भी प्रभु यीशु पर जो विश्वास और सब पवित्र लोगों से जो प्रेम तुम्हों में है इन का समाचार सुनके . १६ तुम्हारे लिये धन्य मानना नहीं छोड़ता हूं और अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें स्मरण करता हूं . १७ कि हमारे प्रभु यीशु खीष्ट का ईश्वर जो तेजस्वी पिता है तुम्हें अपनी पहचान में ज्ञान औ प्रकाश का आत्मा देवे . १८ और तुम्हारे मन के नेत्र प्रकाशित होवें जिस्तें तुम जानो कि उस की बुलाहट की आशा क्या है और पवित्र लोगों में उस के अधिकार की महिमा का धन क्या है . १९ और हमारी ओर जो विश्वास करते हैं उस के सामर्थ्य की अत्यन्त अधिकाई क्या है . २० सोई उस की शक्ति के प्रभाव के उस कार्य्य के अनुसार है जो उस ने खीष्ट के विषय में किया कि उस को मृतकों में से उठाया . २१ और स्वर्गीय स्थानों में समस्त प्रधानता और अधिकार और पराक्रम और प्रभुता के ऊपर और हर एक नाम के ऊपर जो न केवल इस लोक में परन्तु परलोक में भी लिया जाता है अपने दहिने हाथ बैठाया . २२ और सब कुछ उस

के चरणों के नीचे अधीन किया और उसे मंडली को सब बस्तुओं पर सिर २३ बना करके दिया . जो मंडली उस का देह है अर्थात उस की जो सभों में सब कुछ भरता है भरपूरी है ॥

दूसरा पर्व्व ।

१ तुम्हें भी ईश्वर ने जिलाया जो अपराधों और पापों के कारण मृतक २ थे . जिन पापों में तुम आगे इस संसार की रीति के अनुसार हां आकाश के अधिकार के अर्थात उस आत्मा के अध्यक्ष के अनुसार चले जो आत्मा अब भी आज्ञा लंघन करनेहारों में कार्य्य ३ करवाता है . जिन के बीच में हम सब भी आगे शरीर और भावनाओं की इच्छायें पूरी करते हुए अपने शरीर के अभिलाषों की चाल चले और और लोगों के समान स्वभाव ही से क्रोध के ४ सन्तान थे । परन्तु ईश्वर ने जो दया के धन का धनी है अपने उस बड़े प्रेम के कारण जिस करके उस ने हम ५ से प्रेम किया . जब हम अपराधों के कारण मृतक थे तब ही हमें ख्रीष्ट के संग जिलाया कि अनुग्रह से तुम्हारा ६ त्राण हुआ है . और संग ही उठाया और ख्रीष्ट यीशु में संग ही स्वर्गीय ७ स्थानों में बैठाया . इस लिये कि ख्रीष्ट यीशु में हम पर कृपा करने में वह आनेहारे समयों में अपने अनुग्रह का ८ अत्यन्त धन दिखावे । क्योंकि अनुग्रह से बिश्वास के द्वारा तुम्हारा त्राण हुआ है और यह तुम्हारी ओर से नहीं ९ हुआ ईश्वर का दान है । यह कर्म्मों से नहीं हुआ न हो कि कोई घमंड १० करे । क्योंकि हम उस के बनाये हुए हैं जो ख्रीष्ट यीशु में अच्छे कर्म्मों के लिये सृजे गये जिन्हें ईश्वर ने आगे से ठहराया कि हम उन में चलें ॥

११ इस लिये स्मरण करो कि पूर्व्व समय में तुम जो शरीर में अन्यदेशी हो और जो लोग शरीर में हाथ के किये हुए खतने से खतनावाले कहावते हैं उन से खतनाहीन कहे जाते हो . १२ तुम लोग उस समय में ख्रीष्ट से अलग थे और इस्रायेल की प्रजा के पद से निआरे किये हुए थे और प्रतिज्ञा के नियमों के भागी न थे और जगत में १३ आशाहीन और ईश्वररहित थे । पर अब तो ख्रीष्ट यीशु में तुम जो आगे दूर थे ख्रीष्ट के लोहू के द्वारा निकट १४ किये गये हो । क्योंकि वही हमारा मिलाप है जिस ने दोनों को एक किया और बकाव की बिचली भीत १५ गिराई . और बिधि संबन्धी आज्ञाओं की व्यवस्था का लोप करके अपने शरीर में शत्रुता मिटा दिई जिस्ते वह अपने में दो से एक नया पुरुष उत्पन्न १६ करके मिलाप करे . और शत्रुता को क्रूश पर नाश करके उस क्रूश के द्वारा दोनों को एक देह में ईश्वर से मिलावे । १७ और उस ने आके तुम्हें जो दूर थे और उन्हें जो निकट थे मिलाप का सुसमाचार १८ सुनाया । क्योंकि उस के द्वारा हम दोनों का एक आत्मा में पिता के पास १९ पहुंचने का अधिकार मिलता है । इस लिये तुम अब ऊपरी और बिदेशी नहीं हो परन्तु पवित्र लोगों के संगी पुरवासी २० और ईश्वर के घराने के हो . और प्रेरितों औ भविष्यद्वक्ताओं की नेव पर निर्म्माण किये गये हो जिस के कोने का २१ पत्थर यीशु ख्रीष्ट आप ही है . जिस में सारी रचना एक संग जुटके प्रभु में २२ पवित्र मन्दिर बनती जाती है . जिस में तुम भी आत्मा के द्वारा ईश्वर का बासा होने को एक संग निर्म्माण किये जाते हो ॥

तीसरा पर्ब्ब ।

१ इसी के कारण मैं पावल जो तुम अन्यदेशियों के लिये खीष्ट यीशु के २ कारण बंधुआ हूं . जो कि ईश्वर का जो अनुग्रह तुम्हारे लिये मुझे दिया गया उस के भंडारीपन का समाचार ३ तुम ने सुना . अर्थात कि प्रकाश से उस ने मुझे भेद बताया जैसा मैं आगे ४ संक्षेप करके लिख चुका हूं . जिस से तुम जब पढ़ो तब खीष्ट के भेद में ५ मेरा ज्ञान बूझ सकते हो . जो भेद और और समयों में मनुष्यों के सन्तानों को ऐसा नहीं बताया गया था जैसा अब वह आत्मा से ईश्वर के पवित्र प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं पर प्रगट ६ किया गया है . अर्थात कि खीष्ट में सुसमाचार के द्वारा से अन्यदेशी लोग संगी अधिकारी और एक ही देह के और ईश्वर की प्रतिज्ञा के सम्भागी ७ हैं । और मैं ईश्वर के अनुग्रह के दान के अनुसार जो मुझे उस के सामर्थ्य के कार्य्य के अनुसार दिया गया उस ८ सुसमाचार का सेवक हुआ । मुझे जो सब पवित्र लोगों में से अति छोटे से भी छोटा हूं यह अनुग्रह दिया गया कि मैं अन्यदेशियों में खीष्ट के अगम्य धन ९ का सुसमाचार प्रचार करूं . और सभों पर प्रकाशित करूं कि उस भेद का निबाहना क्या है जो ईश्वर में आदि से गुप्त था जिस ने यीशु खीष्ट के द्वारा १० सब कुछ सृजा . इस लिये कि अब स्वर्गीय स्थानों में के प्रधानों और अधिकारियों पर मंडली के द्वारा से ईश्वर की नाना प्रकार की बुद्धि प्रगट किई ११ जाय . उस सनातन इच्छा के अनुसार जो उस ने खीष्ट यीशु हमारे प्रभु में १२ पूरी किई . जिस में हमों को साहस और निश्चय से निकट आने का अधिकार उस के विश्वास के द्वारा से मिलते हैं । इस लिये मैं बिन्ती करता १३ हूं कि जो अनेक क्लेश तुम्हारे लिये मुझे होते हैं इन में कातर न होओ कि यह तुम्हारा आदर है ॥

मैं इसी के कारण हमारे प्रभु यीशु १४ खीष्ट के पिता के आगे अपने घुटने टेकता हूं . जिस से क्या स्वर्ग में क्या १५ पृथिवी पर सारे घराने का नाम रखा जाता है . कि वह तुम्हें अपनी महिमा १६ के धन के अनुसार यह देवे कि तुम उस के आत्मा के द्वारा से अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ्य पाके बलवन्त होओ . कि खीष्ट विश्वास के द्वारा से १७ तुम्हारे हृदय में बसे और प्रेम में तुम्हारी जड़ बन्धी हुई और नेव डाली हुई होय . जिस्तें यह चौड़ाई औ लंबाई १८ औ गहिराई और ऊंचाई क्या है इस को तुम सब पवित्र लोगों के साथ बूझने की शक्ति पाओ . और खीष्ट के १९ प्रेम को जानो जो ज्ञान से बढ़के है इस लिये कि तुम ईश्वर की सारी पूर्णता लों पूरे किये जाओ ॥

उस को जो उस सामर्थ्य के अनुसार २० जो हमों में कार्य्य करता है सब बातों से अधिक हां हम जो कुछ मांगते अथवा बूझते हैं उस से अत्यन्त अधिक कर सकता है . उसी का गुणा- २१ नुवाद खीष्ट यीशु के द्वारा मंडली में पीढ़ी पीढ़ी नित्य सर्व्वदा होवे . आमीन ॥

चौथा पर्ब्ब ।

सो मैं जो प्रभु के लिये बंधुआ हूं १ तुम से बिन्ती करता हूं कि जिस बुला- हट से तुम बुलाये गये उस के योग्य चाल चलो . अर्थात सारी दीनता औ २ नम्रता सहित और धीरज सहित प्रेम से एक दूसरे की सह लेओ . और मिलाप ३

के बंध में आत्मा की एकता की रक्षा करने का यत्न करो ॥

४ जैसे तुम अपनी बुलाहट की एक ही आशा में बुलाये गये तैसे ही एक देह ५ है और एक आत्मा . एक प्रभु एक ६ बिश्वास एक बपतिसमा . एक ईश्वर और सभों का पिता जो सभों पर और सभों के मध्य में और तुम सभों में है ॥

७ परन्तु अनुग्रह हम में से हर एक को ख्रीष्ट के दान के परिमाण से दिया ८ गया । इस लिये वह कहता है कि वह ऊंचे पर चढ़ा और बंधुओं को बांध ले ९ गया और मनुष्यों को दान दिये । इस बात का कि चढ़ा क्या अभिप्राय है . यही कि वह पहिले पृथिवी के निचले १० स्थानों में उतरा भी था । जो उतर गया सोई है जो सब स्वर्गों से ऊपर चढ़ भी गया कि सब कुछ पूर्ण करे । ११ और उस ने ये दान दिये अर्थात जब लों हम सब लोग बिश्वास की और ईश्वर के पुत्र के ज्ञान की एकता लों न पहुंचें और एक पूरा मनुष्य न हो जावें और ख्रीष्ट की पूर्णता की डौल के १२ परिमाण लों न बढ़ें . तब लों उस ने पवित्र लोगों को पूर्णता के कारण सेवकाई के कर्म्म के लिये औ ख्रीष्ट के १३ देह के सुधारने के लिये . कितनों को प्रेरित करके औ कितनों को भविष्यद्वक्ता करके औ कितनों को सुसमाचार प्रचारक करके औ कितनों को रखवाले १४ और उपदेशक करके दिया . इस लिये कि हम अब बालक न रहें जो मनुष्यों की ठगविद्या के और भ्रम की जुगतें बांधने की चतुराई के द्वारा उपदेश की हर एक बयार से लहराते और इधर १५ उधर फिराये जाते हों . परन्तु प्रेम में सत्यता से चलते हुए सब बातों में उस के संग बढ़ते जायें जो सिर है अर्थात १६ ख्रीष्ट . जिस से सारा देह एक संग जुटके और एक संग गठके हर एक परस्पर उपकारी गांठ के द्वारा से उस कार्य्य के अनुसार जो हर एक अंश के परिमाण से उस में किया जाता है देह को बढ़ाता है कि वह प्रेम में अपने को सुधारे ॥

१७ सो मैं यह कहता हूं और प्रभु के साक्षात उपदेश करता हूं कि तुम लोग अब फिर ऐसे न चलो जैसे और और अन्यदेशी लोग अपने मन की अनर्थ १८ रीति पर चलते हैं . कि उस अज्ञानता के कारण जो उन में है और उन के मन की कठोरता के कारण उन की बुद्धि अंधियारी हुई है और वे ईश्वर १९ के जीवन से नियारे किये हुए हैं . और उन्हों ने खेद रहित होके अपने तईं लुचपन को सौंप दिया है कि सब प्रकार का अशुद्ध कर्म्म लालसा से किया २० करें । परन्तु तुम ने ख्रीष्ट को इस रीति २१ से नहीं सीख लिया है . जो ऐसा है कि तुम ने उसी की सुनी और उसी में २२ सिखाये गये जैसा यीशु में सच्चाई है . कि अगली चाल चलन के विषय में पुराने मनुष्यत्व को जो भरमानेहारी कामनाओं के अनुसार भ्रष्ट होता जाता है उतार २३ रखो . और अपने मन के आत्मिक २४ स्वभाव से नये होते जाओ . और नये मनुष्यत्व को पहिन लेओ जो ईश्वर के समान सत्यानुसारी धर्म्म और पवित्रता में सृजा गया ॥

२५ इस कारण झूठ को दूर करके हर एक अपने पड़ोसी के साथ सत्य बोला करो क्योंकि हम लोग एक दूसरे के अंग २६ हैं । क्रोध करो पर पाप मत करो . २७ सूर्य्य तुम्हारे कोप पर अस्त न होवे . और २८ न शैतान को ठांव देओ । चोरी करनेहारा अब चोरी न करे बरन हाथों से

भला कार्य्य करने में परिश्रम करे इस लिये कि जिसे प्रयोजन हो उसे बांट २९ देने को कुछ उस पास होवे । कोई अशुद्ध बचन तुम्हारे मुंह से न निकले परन्तु जहां जैसा आवश्यक है तहां जो बचन सुधारने के लिये अच्छा हो सोई मुंह से निकले कि उस से सुननेहारों ३० को अनुग्रह मिले । और ईश्वर के पवित्र आत्मा को जिस से तुम पर उद्धार के दिन के लिये छाप दिई गई ३१ उदास मत करो । सब प्रकार की कड़वाहट औ कोप औ क्रोध औ कलह औ निन्दा समस्त बैरभाव समेत ३२ तुम से दूर किई जाय । और आपस में कृपाल औ करुणामय होओ और जैसे ईश्वर ने खीष्ट में तुम्हें क्षमा किया तैसे तुम भी एक दूसरे को क्षमा करो ॥

पांचवां पर्व्व ।

१ सो प्यारे बालकों की नाईं ईश्वर २ के अनुगामी होओ . और प्रेम में चलो जैसे खीष्ट ने भी हम से प्रेम किया और हमारे लिये अपने को ईश्वर के आगे चढ़ावा और बलिदान करके सुगन्ध की बास के लिये सौंप दिया ॥

३ और जैसा कि पवित्र लोगों के योग्य है तैसा व्यभिचार का और सब प्रकार के अशुद्ध कर्म्म का अथवा लोभ का नाम भी तुम्हों में न लिया जाय ४ और न निर्लज्जता का न मूढ़ता की बातचीत का अथवा ठट्ठे का नाम कि यह बातें सोहतीं नहीं परन्तु धन्यवाद ५ ही सुना जाय । क्योंकि तुम यह जानते हो कि किसी व्यभिचारी का अथवा अशुद्ध जन का अथवा लोभी मनुष्य का जो मूर्त्तिपूजक है खीष्ट और ईश्वर के ६ राज्य में अधिकार नहीं है । कोई तुम्हें अनर्थक बातों से धोखा न देवे क्योंकि इन कर्म्मों के कारण ईश्वर का क्रोध आज्ञा लंघन करनेहारों पर पड़ता है । सो तुम उन के संगी भागी मत ७ होओ ॥

८ क्योंकि तुम आगे अन्धकार थे पर अब प्रभु में उजियाले हो . ज्योति के सन्तानों की नाईं चलो । ९ क्योंकि सब प्रकार की भलाई औ धर्म्म औ सत्यता में आत्मा का फल होता है । १० और परखो कि प्रभु को क्या भावता है । ११ और अंधकार के निष्फल कार्य्यों में भागी मत होओ परन्तु और भी उन पर दोष देओ । १२ क्योंकि जो कर्म्म गुप्त में उन से किये जाते हैं उन्हें कहना भी लाज की बात है । १३ परन्तु सब कर्म्म जब उन पर दोष दिया जाता है तब ज्योति से प्रगट किये जाते हैं क्योंकि जो कुछ प्रगट किया जाता है सो उजियाला होता है । १४ इस कारण वह कहता है हे सोनेहारे जाग और मृतकों में से उठ और खीष्ट तुझे ज्योति देगा ॥

१५ सो चौकस रहो कि तुम क्योंकर पथ से चलते हो . निर्बुद्धियों की नाईं नहीं परन्तु बुद्धिमानों की नाईं चलो । १६ और अपने लिये समय का लाभ करो १७ क्योंकि ये दिन बुरे हैं । इस कारण से अज्ञान मत होओ परन्तु समझते रहो १८ कि प्रभु की इच्छा क्या है । और दाख रस से मतवाले मत होओ जिस में लुच-पन होता है परन्तु आत्मा से परिपूर्ण १९ होओ । और गीतों और भजनों और आत्मिक गानों में एक दूसरे से बातें करो और अपने अपने मन में प्रभु के २० आगे गान और कीर्त्तन करो । और सदा सब बातों के लिये हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के नाम से ईश्वर पिता का धन्य मानो । २१ और ईश्वर के भय से एक दूसरे के अधीन होओ ॥

२२ हे स्त्रियो जैसे प्रभु के तैसे अपने

२३ अपने स्वामी के अधीन रहो । क्योंकि जैसा खीष्ट मंडली का सिर है तैसा
२४ पुरुष भी स्त्री का सिर है । वह तो देह का त्राणकर्त्ता है तौभी जैसे मंडली खीष्ट के अधीन रहती है वैसे स्त्रियां भी हर बात में अपने अपने स्वामी
२५ के अधीन रहें । हे पुरुषो अपनी अपनी स्त्री को ऐसा प्यार करो जैसा खीष्ट ने भी मंडली को प्यार किया और अपने को उस के लिये सौंप दिया .
२६ कि उस को वचन के द्वारा जल के
२७ स्नान से शुद्ध कर पवित्र करे . जिस्तें वह उसे अपने आगे मर्य्यादिक मंडली खड़ा करे जिस में कलंक अथवा झुरी अथवा ऐसी कोई वस्तु भी न होय परन्तु जिस्तें पवित्र औ निर्दोष होय ।
२८ यूं ही उचित है कि पुरुष अपनी अपनी स्त्री को अपने अपने देह के समान प्यार करें . जो अपनी स्त्री को प्यार करता है सो अपने को प्यार करता
२९ है । क्योंकि किसी ने कभी अपने शरीर से बैर नहीं किया परन्तु उस को ऐसा पालता और पोसता है जैसा प्रभु भी मंडली को पालता पोसता
३० है । क्योंकि हम उस के देह के अंग हैं अर्थात उस के मांस में के और उस
३१ की हड्डियों में के हैं । इस हेतु से मनुष्य अपने माता पिता को छोड़के अपनी स्त्री से मिला रहेगा और वे
३२ दोनों एक तन होंगे । यह भेद बड़ा है परन्तु मैं तो खीष्ट के और मंडली के
३३ विषय में कहता हूं । पर तुम भी एक एक करके हर एक अपनी अपनी स्त्री को अपने समान प्यार करो और स्त्री को उचित है कि स्वामी का भय माने ॥

छठवां पर्व्व ।

१ हे लड़को प्रभु में अपने अपने माता पिता की आज्ञा मानो क्योंकि यह
२ उचित है । अपनी माता और पिता का आदर कर कि यह प्रतिज्ञा सहित
३ पहिली आज्ञा है . जिस्तें तेरा भला हो और तू भूमि पर बहुत दिन जीवे ।
४ और हे पितायो अपने अपने लड़कों से क्रोध मत करवाओ परन्तु प्रभु की शिक्षा और चितावनी सहित उन का प्रतिपालन करो ॥

५ हे दासो जो लोग शरीर के अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं डरते और कांपते हुए अपने मन की सीधाई से जैसे खीष्ट की तैसे
६ उन की आज्ञा मानो । और मनुष्यों को प्रसन्न करनेहारों की नाईं मुंह देखी सेवा मत करो परन्तु खीष्ट के दासों की नाईं अन्तःकरण से ईश्वर की इच्छा
७ पर चलो . और सुमति से सेवा करो मानो तुम मनुष्यों की नहीं परन्तु प्रभु
८ की सेवा करते हो . क्योंकि जानते हो कि जो कुछ हर एक मनुष्य भला करेगा इसी का फल वह चाहे दास हो चाहे
९ निर्बन्ध हो प्रभु से पावेगा । और हे स्वामियो तुम उन्हों से वैसा ही करो और धमकी मत दिया करो क्योंकि जानते हो कि स्वर्ग में तुम्हारा भी स्वामी है और उस के यहां पक्षपात नहीं है ॥

१० अन्त में हे मेरे भाइयो यह कहता हूं कि प्रभु में और उस की शक्ति के
११ प्रभाव में बलवन्त हो रहो । ईश्वर के सम्पूर्ण हथियार बांध लेओ जिस्तें तुम शैतान की जुगतों के साम्हने खड़े
१२ रह सको । क्योंकि हमारा यह युद्ध लोहू औ मांस से नहीं है परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से और इस संसार के अंधकार के महाराजाओं से और आकाश में की दुष्टता की आत्मिक
१३ सेना से । इस कारण से ईश्वर के सम्पूर्ण हथियार ले लेओ कि तुम बुर

दिन में साम्हना कर सको और सब
१४ कुछ पूरा करके खड़े रह सको। सो अपनी कमर सञ्चाई से कसके और धर्म्म
१५ की झिलम पहिनके, और पांवों में मिलाप के सुसमाचार की तैयारी के
१६ जूते पहिनके खड़े रहो। और सभों के ऊपर विश्वास की ढाल लेओ जिस से तुम उस दुष्ट के सब अग्निबाणों को
१७ बुझा सकोगे। और त्राण का टोप लेओ और आत्मा का खड्ग जो ईश्वर
१८ का वचन है। और सब प्रकार की प्रार्थना और बिन्ती से हर समय आत्मा में प्रार्थना किया करो और इसी के निमित्त समस्त स्थिरता सहित और सब पवित्र लोगों के लिये बिन्ती करते हुए
१९ जागते रहो। और मेरे लिये भी बिन्ती करो कि मुझे अपना मुंह खोलने के समय बोलने का सामर्थ्य दिया जाय कि मैं साहस से सुसमाचार का भेद बताऊं जिस के लिये मैं जंजीर से बंधा
२० हुआ दूत हूं, और कि मैं उस के विषय में साहस से बात करूं जैसा मुझे बोलना उचित है॥

२१ परन्तु इस लिये कि तुम भी मेरी दशा जानो कि मैं कैसा रहता हूं तुखिक जो प्यारा भाई और प्रभु में विश्वासयोग्य सेवक है तुम्हें सब बातें
२२ बतावेगा, कि मैं ने उसे इसी के निमित्त तुम्हारे पास भेजा है कि तुम हमारे विषय में की बातें जानो और वह तुम्हारे मन को शांति देवे॥

२३ भाइयों को ईश्वर पिता से और प्रभु यीशु खीष्ट से शांति और प्रेम
२४ विश्वास सहित मिले। जो हमारे प्रभु यीशु खीष्ट से अक्षय प्रेम रखते हैं उन सभों पर अनुग्रह होवे। आमीन॥

फिलिपीयों को पावल प्रेरित की पत्री।

पहिला पर्ब्ब।

१ पावल और तिमोथिय जो यीशु खीष्ट के दास हैं फिलिपी में जितने लोग खीष्ट यीशु में पवित्र लोग हैं उन सभों
२ को मंडली के रखवालों और सेवकों समेत, तुम्हें हमारे पिता ईश्वर और प्रभु यीशु खीष्ट से अनुग्रह और शांति मिले॥

३ मैं जब जब तुम्हें स्मरण करता हूं तब अपने ईश्वर का धन्य मानता हूं,
४ और तुम ने पहिले दिन से लेके अब लों सुसमाचार के लिये जो सहायता
५ किई है, उस से आनन्द करता हुआ नित्य अपनी हर एक प्रार्थना में तुम सभों के लिये बिन्ती करता हूं।
६ और इसी बात का मुझे भरोसा है कि जिस ने तुम्हों में अच्छा काम आरंभ किया है सो यीशु खीष्ट के दिन लों उसे पूरा
७ करेगा। जैसे तुम सभों के लिये यह सोचना मुझे उचित है इस कारण कि मेरे बंधनों में और सुसमाचार के लिये उत्तर और प्रमाण देने में मैं तुम्हें मन में रखता हूं कि तुम सब मेरे संग
८ अनुग्रह के भागी हो। क्योंकि ईश्वर मेरा साक्षी है कि यीशु खीष्ट की सी करुणा से मैं क्योंकर तुम सभों की
९ लालसा करता हूं। और मैं यही प्रार्थना करता हूं कि तुम्हारा प्रेम ज्ञान और

सब प्रकार के बिबेक सहित अब भी १० अधिक अधिक बढ़ता जाय , यहां लों कि तुम बिशेष्य बातों को परखो जिस्तें तुम ख्रीष्ट के दिन लों निष्कपट ११ रहो और ठोकर न खाओ , और धर्म्म के फलों से परिपूर्ण होओ जिन से यीशु ख्रीष्ट के द्वारा ईश्वर की महिमा और स्तुति होती है ॥

१२ पर हे भाइयो मैं चाहता हूं कि तुम यह जानो कि मेरी जो दशा हुई है उस से सुसमाचार की बढ़ती ही १३ निकली है , यहां लों कि सारे राज-भवन में और और सब लोगों पर मेरे बंधन प्रगट हुए हैं कि ख्रीष्ट के लिये १४ हैं , और जो प्रभु में भाई लोग हैं उन में से बहुतेरे मेरे बंधनों से भरोसा पाके बहुत अधिक करके बचन को निर्भय बोलने का साहस करते हैं । १५ कितने लोग डाह और बैर के कारण भी और कितने सुमति के कारण भी १६ ख्रीष्ट का प्रचार करते हैं । वे तो सरलता से नहीं पर बिरोध से ख्रीष्ट की कथा सुनाते हैं और समझते हैं कि हम पावल के बंधनों में उसे क्लेश भी १७ देंगे । परन्तु ये तो यह जानके कि पावल सुसमाचार के लिये उत्तर देने को ठहराया गया है प्रेम से सुनाते १८ हैं । तो क्या हुआ , तौभी हर एक रीति से चाहे बहाना से चाहे सच्चाई से ख्रीष्ट की कथा सुनाई जाती है और मैं इस से आनन्द करता हूं और आनन्द करूंगा भी ॥

१९ क्योंकि मैं जानता हूं कि इसी से तुम्हारी प्रार्थना के द्वारा और यीशु ख्रीष्ट के आत्मा के दान के द्वारा मेरा प्रत्याशा और भरोसे के अनुसार मेरा २० निस्तार हो जायगा , अर्थात यह भरोसा कि मैं किसी बात में लज्जित न होंगा परन्तु ख्रीष्ट की महिमा सब प्रकार के साहस के साथ जैसा हर समय में तैसा अब भी मेरे देह में चाहे जीवन के द्वारा चाहे मृत्यु के द्वारा प्रगट किई जायगी । क्योंकि मेरे लिये २१ जीना ख्रीष्ट है और मरना लाभ है । परन्तु यदि शरीर में जीना है यह मेरे २२ लिये कार्य्य का फल है और मैं नहीं जानता हूं मैं क्या चुन लेऊंगा । क्योंकि २३ मैं इन दो बातों के सकेत में हूं कि मुझे उठ जाने और ख्रीष्ट के संग रहने का अभिलाष है क्योंकि यह और ही बहुत अच्छा है । परन्तु शरीर में रहना २४ तुम्हारे कारण अधिक आवश्यक है । और मुझे इस बात का निश्चय होने २५ से मैं जानता हूं कि मैं रहूंगा और बिश्वास में तुम्हारी बढ़ती और आनन्द के लिये तुम सभों के संग ठहर जाऊंगा , इस लिये कि मेरे फिर तुम्हारे पास २६ आने के द्वारा से मेरे बिषय में ख्रीष्ट यीशु में बड़ाई करने का हेतु तुम्हें अधिक होवे ॥

केवल तुम्हारा आचरण ख्रीष्ट के २७ सुसमाचार के योग्य होवे कि मैं चाहे आके तुम्हें देखूं चाहे तुम से दूर रहूं तुम्हारे बिषय में यह बात सुनूं कि तुम एक ही आत्मा में दृढ़ रहते हो और एक मन से सुसमाचार के बिश्वास के लिये मिलके साहस करते हो , और २८ बिरोधियों से तुम्हें किसी बात में डर नहीं लगता है जो उन के लिये तो बिनाश का प्रमाण परन्तु तुम्हारे लिये निस्तार का प्रमाण है और यह ईश्वर की ओर से है । क्योंकि ख्रीष्ट के लिये २९ यह बरदान तुम्हें दिया गया कि न केवल उस पर बिश्वास करो पर उस के लिये दुःख भी उठाओ , कि ३० तुम्हारी जैसी ही लड़ाई है जैसी तुम

ने मुझ में देखी और अब सुनते हो कि मुझ में है ॥

दूसरा पर्ब्ब ।

१ सो यदि ख्रीष्ट में कुछ शांति यदि प्रेम से कुछ समाधान यदि कुछ आत्मा की संगति यदि कुछ करुणा औ दया २ होय, तो मेरे आनन्द को पूरा करो कि तुम एकसां मन रखो और तुम्हारा एक ही प्रेम एक ही चित्त एक ही मन ३ होय। तुम्हारा कुछ विरोध का अथवा घमंड का मत न होय परन्तु दीनता से एक दूसरे को अपने से बड़ा समझो। ४ हर एक अपने अपने विषयों को न देखा करे परन्तु हर एक दूसरों के भी देख लेवे ॥

५ तुम्हों में यही मन होय जो ख्रीष्ट ६ यीशु में भी था, जिस ने ईश्वर के रूप में होके ईश्वर के तुल्य होना ७ लूटना न समझा, परन्तु अपने तई हीन करके दास का रूप धारण किया ८ और मनुष्यों के समान बना, और मनुष्य के भेष में दिखाई दे अपने को दीन किया और मृत्यु लों हां क्रूश ९ की मृत्यु लों आज्ञाकारी रहा। इस कारण ईश्वर ने उस को बहुत ऊंचा भी किया और उस को वह नाम दिया १० जो सब नामों से ऊंचा है, इस लिये कि जो स्वर्ग में और जो पृथिवी पर और जो पृथिवी के नीचे हैं उन सभों का हर एक घुटना यीशु के नाम से ११ झुकाया जाय, और हर एक जीभ से मान लिया जाय कि यीशु ख्रीष्ट ही प्रभु है जिस्तें ईश्वर पिता का गुणानुवाद होय ॥

१२ सो हे मेरे प्यारो जैसे तुम सदा आज्ञाकारी हुए तैसे अब मैं तुम्हारे संग हूं केवल उस समय में नहीं परन्तु मैं जो अभी तुम से दूर हूं बहुत अधिक करके इस समय में डरते और कांपते हुए अपने त्राण का कार्य्य निबाहो, १३ क्योंकि ईश्वर ही है जो अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हों से इच्छा और कार्य्य भी १४ करवाता है। सब काम बिना कुड़कुड़ाने और बिना विवाद से किया १५ करो, जिस्तें तुम निर्दोष और सूधे बनो और टेढ़े और हठीले लोग के बीच में ईश्वर के निष्कलंक पुत्र होओ, १६ जिन्हों के बीच में तुम जीवन का वचन लिये हुए जगत में ज्योतिधारियों की नाईं चमकते हो कि मुझे ख्रीष्ट के दिन में बड़ाई करने का हेतु होय कि मैं न वृथा दौड़ा न वृथा परिश्रम १७ किया। पर जो मैं तुम्हारे विश्वास के बलिदान और सेवकाई पर ढाला जाता हूं तौभी मैं आनन्दित हूं और तुम सभों के संग आनन्द करता हूं। १८ इसी हां तुम भी आनन्दित होओ और मेरे संग आनन्द करो ॥

१९ परन्तु मुझे प्रभु यीशु में भरोसा है कि मैं तिमोथिय को शीघ्र तुम्हारे पास भेजूंगा जिस्तें मैं भी तुम्हारी दशा २० जानके ढाढ़स पाऊं। क्योंकि मेरे पास कोई नहीं है जिस का मेरे ऐसा मन है जो सच्चाई से तुम्हारे विषय में २१ चिन्ता करेगा। क्योंकि सब अपने ही अपने ही लिये यत्न करते हैं ख्रीष्ट यीशु २२ के लिये नहीं। परन्तु उस को तुम परखके जान चुके हो कि जैसा पुत्र पिता के संग तैसे उस ने मेरे संग २३ सुसमाचार के लिये सेवा किई। सो मुझे भरोसा है कि ज्यों हीं मुझे देख पड़ेगा कि मेरी क्या दशा होगी त्यों २४ हीं मैं उसी को तुरन्त भेजूंगा। पर मैं प्रभु में भरोसा रखता हूं कि मैं भी आप ही शीघ्र आऊंगा ॥

२५ परन्तु मैं ने इपाफ्रदीत को जो मेरा

भाई और सहकर्म्मी और संगी योद्धा पर तुम्हारा दूत और आवश्यक बातों में मेरी सेवा करनेहारा है तुम्हारे पास
२६ भेजना अवश्य समझा । क्योंकि वह तुम सभों की लालसा करता था और बहुत उदास हुआ इस लिये कि तुम ने सुना था कि वह रोगी हुआ था ।
२७ और वह रोगी तो हुआ यहां लों कि मरने के निकट था परन्तु ईश्वर ने उस पर दया किई और केवल उस पर नहीं परन्तु मुझ पर भी कि मुझे शोक पर
२८ शोक न होवे । सो मैं ने उस को और भी यत्न से भेजा कि तुम उसे फिर देखके आनन्दित होओ और मेरा शोक
२९ घटे । सो उसे प्रभु में सब प्रकार के आनन्द से ग्रहण करो और ऐसे जनों
३० को आदरयोग्य समझो । क्योंकि खीष्ट के कार्य्य निमित्त वह अपने प्राण पर जोखिम उठाके मरने के निकट पहुंचा इस लिये कि मेरी सेवा करने में तुम्हारी घटी को पूरी करे ॥

तीसरा पर्ब्ब ।

१ अन्त में हे मेरे भाइयो यह कहता हूं कि प्रभु में आनन्दित रहो . वही बातें तुम्हार पास फिर लिखने से मुझे कुछ दुःख नहीं है और तुम्हें बचाव है ।
२ कुत्तों से चौकस रहो दुष्ट कर्म्मकारियों से चौकस रहो काटे हुओं से चौकस
३ रहो । क्योंकि खतना किये हुए हम हैं जो आत्मा से ईश्वर की सेवा करते हैं और खीष्ट यीशु के विषय में बड़ाई करते हैं और भरोसा शरीर पर नहीं रखते
४ हैं । पर मुझे तो शरीर पर भी भरोसा है . यदि और कोई शरीर पर भरोसा रखना उचित जानता है मैं और भी .
५ कि आठवें दिन का खतना किया हुआ इस्रायेल के वंश का बिन्यामीन के कुल का इब्रियों में से इब्री हूं व्यवस्था को कहो तो फरीशी .
६ उद्योग को कहो तो मंडली का सतानेहारा व्यवस्था में की धर्म्म को कहो तो निर्दोष हुआ ।
७ परन्तु जो जो बातें मेरे लेखे लाभ थीं उन्हें मैं ने खीष्ट के कारण हानि समझी है ।
८ हां सचमुच अपने प्रभु खीष्ट यीशु के ज्ञान की श्रेष्ठता के कारण मैं सब बातें हानि समझता भी हूं और उस के कारण मैं ने सब वस्तुओं की हानि उठाई और उन्हें कूड़ा सा जानता हूं कि मैं खीष्ट को प्राप्त करूं .
९ और उस में पाया जाऊं ऐसा कि मेरा अपना धर्म्म जो व्यवस्था से है सो नहीं परन्तु वह धर्म्म जो खीष्ट के विश्वास के द्वारा से है अर्थात धर्म्म जो विश्वास के कारण ईश्वर से है मुझे होय .
१० जिस्तें मैं खीष्ट को और उस के जी उठने की शक्ति को और उस के दुःखों की संगति को जानूं और उस की मृत्यु के सदृश किया जाऊं .
११ जो मैं किसी रीति से मृतकों के जी उठने का भागी होऊं ।
१२ यह नहीं कि मैं पा चुका हूं अथवा सिद्ध हो चुका हूं परन्तु मैं पीछा करता हूं कि कहीं उस को पकड़ लेऊं जिस के निमित्त मैं भी खीष्ट यीशु से पकड़ा गया ॥
१३ हे भाइयो मैं नहीं समझता हूं कि मैं ने पकड़ लिया है परन्तु एक काम मैं करता हूं कि पीछे की बातें तो भूलता जाता पर आगे की बातों की ओर झपटता जाता हूं .
१४ और ऊपर की बुलाहट जो खीष्ट यीशु में ईश्वर की ओर से है झंडा देखता हुआ उस बुलाहट के जयफल का पीछा करता हूं ।
१५ सो हम में से जितने सिद्ध हैं यही मन रखें और यदि किसी बात में तुम्हें और ही मन होय तो ईश्वर यह भी तुम पर प्रगट करेगा ।
१६ तौभी जहां लों हम पहुंचे हैं एक ही विधि से

चलना और एक ही मन रखना चाहिये ॥

१७ हे भाइयो तुम मिलके मेरी सी चाल चलो और उन्हें देखते रहो जो ऐसे चलते हैं जैसे हम तुम्हारे लिये १८ दृष्टान्त हैं। क्योंकि बहुत लोग चलते हैं जिन के विषय में मैं ने बार बार तुम से कहा है और अब रोता हुआ भी कहता हूं कि वे ख्रीष्ट के क्रूश के १९ बैरी हैं, जिन का अन्त विनाश है जिन का ईश्वर पेट है जो अपनी लज्जा पर बड़ाई करते हैं और पृथिवी पर की वस्तुओं पर मन लगाते हैं। २० क्योंकि हम तो स्वर्ग की प्रजा हैं जहां से हम त्राणकर्त्ता की अर्थात प्रभु यीशु २१ ख्रीष्ट की बाट भी जोहते हैं, जो उस कार्य्य के अनुसार जिस करके वह सब वस्तुओं को अपने वश में कर सकता है हमारी दीनताई के देह का रूप बदल डालेगा कि वह उस के ऐश्वर्य्य के देह के सदृश हो जाय ॥

चौथा पर्व्व।

१ सो हे मेरे प्यारे और अभिलषित भाइयो मेरे आनन्द और मुकुट यूंहीं हे प्यारो प्रभु में दृढ़ रहो ॥

२ मैं यूओदिया से बिन्ती करता हूं और सन्तुखी से बिन्ती करता हूं कि वे प्रभु ३ में एकसां मन रखें। और हे सच्चे संघाती मैं तुझ से भी बिन्ती करता हूं इन स्त्रियों की सहायता कर जिन्हों ने क्लीमी के साथ भी और मेरे और और सहकर्म्मियों के साथ जिन के नाम जीवन के पुस्तक में हैं मेरे संग सुसमाचार के विषय में मिलके साहस किया ॥

४ प्रभु में सदा आनन्द करो, मैं फिर ५ कहूंगा आनन्द करो। तुम्हारी मृदुता सब मनुष्यों पर प्रगट होवे, प्रभु निकट ६ है। किसी बात में चिन्ता मत करो परन्तु हर एक बात में धन्यवाद के साथ प्रार्थना से और बिन्ती से तुम्हारे निवेदन ईश्वर को जनाये जायें। ७ और ईश्वर की शांति जो समस्त ज्ञान से ऊंची है ख्रीष्ट यीशु में तुम लोगों के हृदय और तुम लोगों के मन की रक्षा करेगी। ८ अन्त में हे भाइयो यह कहता हूं कि जो जो बातें सत्य हैं जो जो आदरयोग्य हैं जो जो यथार्थ हैं जो जो शुद्ध हैं जो जो सुहावनी हैं जो जो सुख्यात हैं कोई गुण जो होय और कोई यश जो होय उन्हीं बातों की चिन्ता करो। ९ जो तुम ने सीखीं भी और ग्रहण किईं और सुनीं और मुझ में देखीं वही बातें किया करो, और शांति का ईश्वर तुम्हारे संग होगा ॥

१० मैं ने प्रभु में बड़ा आनन्द किया कि मेरे लिये सोच करने में तुम अब भी फिर पनपे और इस बात का तुम सोच करते भी थे पर तुम्हें अवसर न ११ था। यह नहीं कि मैं दरिद्रता के विषय में कहता हूं क्योंकि मैं ने सीख लिया है कि जिस दशा में हूं उस में सन्तोष १२ करूं। मैं दीन होने जानता हूं मैं उभरने भी जानता हूं मैं सर्व्वत्र और सब बातों में तृप्त होने को और भूखा रहने को भी उभरने को और दरिद्र होने को भी १३ सिखाया गया हूं। मैं ख्रीष्ट में जो मुझे सामर्थ्य देता है सब कुछ कर सकता १४ हूं। तौभी तुम ने भला किया जो मेरे १५ क्लेश में मेरी सहायता किई। और हे फिलिपीयो तुम यह भी जानो कि सुसमाचार के आरंभ में जब मैं माकिदोनिया से निकला तब देने लेने के विषय में किसी मंडली ने मेरी सहायता न किई १६ पर केवल तुम ही ने। क्योंकि थिसलोनिका में भी तुम ने एक बेर और दो बेर भी जो मुझे आवश्यक था सो भेजा।

१७ यह नहीं कि मैं दान चाहता हूं पर मैं वह फल चाहता हूं जिस से तुम्हारे १८ निमित्त अधिक लाभ होवे । पर मैं सब कुछ पा चुका हूं और मुझे बहुत है . जो तुम्हारी ओर से आया मानो सुगन्ध मानो ग्राह्य बलिदान जो ईश्वर को भावता है सोई इपाफ्रदीत के हाथ १९ पाके मैं भरपूर हूं । और मेरा ईश्वर अपने धन के अनुसार महिमा सहित ख्रीष्ट यीशु में सब कुछ जो तुम्हें आवश्यक हो भरपूर करके देगा । हमारे २० पिता ईश्वर का गुणानुवाद सदा सर्व्वदा होय . आमीन ॥

ख्रीष्ट यीशु में हर एक पवित्र जन २१ को नमस्कार . मेरे संग के भाई लोगों का तुम से नमस्कार । सब पवित्र लोगों २२ का निज करके उन्हों का जो कैसर के घराने के हैं तुम से नमस्कार । हमारे २३ प्रभु यीशु ख्रीष्ट का अनुग्रह तुम सभों के संग होवे । आमीन ॥

कलस्सीयों को पावल प्रेरित की पत्री ।

पहिला पर्व्व ।

१ पावल जो ईश्वर की इच्छा से यीशु ख्रीष्ट का प्रेरित है और भाई तिमोथिय कलस्सी में के पवित्र लोगों और ख्रीष्ट २ में विश्वासी भाइयों को . तुम्हें हमारे पिता ईश्वर और प्रभु यीशु ख्रीष्ट से अनुग्रह और शान्ति मिले ॥

३ हम नित्य तुम्हारे लिये प्रार्थना करते हुए अपने प्रभु यीशु ख्रीष्ट के पिता ४ ईश्वर का धन्य मानते हैं . कि हम ने ख्रीष्ट यीशु पर तुम्हारे विश्वास का और उस प्रेम का समाचार पाया है जो सब पवित्र लोगों से उस आशा के कारण ५ रखते हो . जो आशा तुम्हारे लिये स्वर्ग में धरी है जिस की कथा तुम ने आगे सुसमाचार की सत्यता के वचन में सुनी . ६ वह सुसमाचार जो तुम्हारे पास भी जैसा सारे जगत में पहुंचा है और फल लाता और बढ़ता है जैसा तुम में भी उस दिन से फलता है जिस दिन से तुम ने सुना और सत्यता से ईश्वर का अनुग्रह जाना . ७ जैसे तुम ने हमारे प्यारे संगी दास इपाफ्रा से सीखा जो तुम्हारे लिये ख्रीष्ट का विश्वासयोग्य सेवक है . और जिस ८ ने तुम्हारा प्रेम जो आत्मा से है हमें बताया ॥

९ इस कारण से हम भी जिस दिन से हम ने सुना उस दिन से तुम्हारे लिये प्रार्थना करना और यह मांगना नहीं छोड़ते हैं कि तुम सारे ज्ञान और आत्मिक बुद्धि सहित ईश्वर की इच्छा की पहचान से परिपूर्ण होओ . जिस्तें तुम प्रभु १० के योग्य चाल चलो ऐसा कि सब प्रकार से प्रसन्नता होय और हर एक अच्छे काम में फलवान होओ और ईश्वर की पहचान में बढ़ते जाओ . और समस्त ११ बल से उस की महिमा के प्रभाव के अनुसार बलवन्त किये जाओ यहां लों कि आनन्द से सकल स्थिरता और धीरज दिखाओ . और कि तुम पिता १२ का धन्य मानो जिस ने हमें पवित्र लोगों का अधिकार जो ज्योति में है उस अधिकार के अंश के योग्य किया . १३ और हमें अंधकार के वश से छुड़ाके

अपने प्रियतम पुत्र के राज्य में लाया . १४ जिस में उस के लोहू के द्वारा हमें उद्धार अर्थात पापमोचन मिलता है ॥

१५ वह तो अदृश्य ईश्वर की प्रतिमा और १६ सारी सृष्टि पर पहिलौठा है . क्योंकि उस से सब कुछ सृजा गया वह जो स्वर्ग में है और वह जो पृथिवी पर है दृश्य और अदृश्य क्या सिंहासन क्या प्रभुतायें क्या प्रधानतायें क्या अधिकार सब कुछ उस के द्वारा से और उस के लिये सृजा गया १७ है । और वही सब के आगे है और सब १८ कुछ उसी से बना रहता है । और वही देह का अर्थात मंडली का सिर है कि वह आदि है और मृतकों में से पहिलौठा जिस्तें सब बातों में वही प्रधान १९ होय । क्योंकि ईश्वर की इच्छा थी कि २० उस में समस्त पूर्णता वास करे . और कि उस के क्रूश के लोहू के द्वारा से मिलाप करके उसी के द्वारा सब कुछ चाहे वह जो पृथिवी पर है चाहे वह जो स्वर्ग में है अपने से मिलाये ॥

२१ और तुम्हें जो आगे निपारे किये हुए थे और अपनी बुद्धि से बुरे कर्म्मों में रहके बैरी थे उस ने अभी उस के मांस के देह में मृत्यु के द्वारा से मिला २२ लिया है . कि तुम्हें अपने सन्मुख पवित्र और निष्कलंक और निर्दोष खड़ा करे . २३ जो ऐसा हो है कि तुम विश्वास में नेव दिये हुए दृढ़ रहते हो और सुसमाचार जो तुम ने सुना उस की आशा से हटाये नहीं जाते . वह सुसमाचार जो आकाश के नीचे की सारी सृष्टि में प्रचार किया गया जिस का मैं पावल सेवक बना ॥

२४ और मैं अब उन दुःखों में जो मैं तुम्हारे लिये उठाता हूं आनन्द करता हूं और ख्रीष्ट के क्लेशों की जो घटी है सो उस के देह के लिये अर्थात मंडली के लिये अपने शरीर में पूरी करता हूं । २५ उस मंडली का मैं ईश्वर के भंडारीपन के अनुसार जो तुम्हारे लिये मुझे दिया गया सेवक बना कि ईश्वर के वचन २६ का सम्पूर्ण प्रचार करूं . अर्थात उस भेद का जो आदि से और पीढ़ी पीढ़ी गुप्त रहा परन्तु अब उस के पवित्र लोगों २७ पर प्रगट किया गया है . जिन्हें ईश्वर ने बताने चाहा कि अन्यदेशियों में इस भेद की महिमा का धन क्या है अर्थात तुम्हों में ख्रीष्ट जो महिमा की आशा २८ है . जिसे हम प्रचार करते हैं और हर एक मनुष्य को चिताते हैं और समस्त ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं जिस्तें हर एक मनुष्य को ख्रीष्ट यीशु में २९ सिद्ध करके आगे खड़ा करें । और इस के लिये मैं उस के उस कार्य्य के अनुसार जो मुझ में सामर्थ्य सहित गुण करता है उद्योग करके परिश्रम भी करता हूं ॥

दूसरा पर्व्व ।

१ क्योंकि मैं चाहता हूं कि तुम जानो कि तुम्हारे और उन के जो लाओदिकिया में हैं और जितनों ने शरीर में मेरा मुंह नहीं देखा है सभों के विषय में मेरा २ कितना बड़ा उद्योग होता है . इस लिये कि उन के मन शांत होवें और वे प्रेम में गठ जावें जिस्तें वे ज्ञान के निश्चय का सारा धन प्राप्त करें और ईश्वर पिता का और ख्रीष्ट का भेद ३ पहचानें . जिस में बुद्धि और ज्ञान का गुप्त सम्पत्ति सब की सब धरी है ॥

४ मैं यह कहता हूं न हो कि कोई तुम्हें फुसलाऊ बातों से धोखा देवे । ५ क्योंकि जो मैं शरीर में तुम से दूर रहता हूं तौभी आत्मा में तुम्हारे संग हूं और आनन्द से तुम्हारी रीति विधि और ख्रीष्ट पर तुम्हारे विश्वास की स्थिरता ६ देखता हूं । सो तुम ने ख्रीष्ट यीशु को

प्रभु करके जैसे ग्रहण किया वैसे उसी
७ में चलो । और उस में तुम्हारी जड़ बंधी
हुई होय और तुम बनते जाओ और
बिश्वास में जैसे तुम सिखाये गये वैसे
दृढ़ होते जाओ और धन्यबाद करते हुए
उस में बढ़ते जाओ ॥

८ चौकस रहो कि कोई ऐसा न हो जो
तुम्हें उस तत्वज्ञान और व्यर्थ धोखे के
द्वारा से धर ले जाय जो मनुष्यों के
परम्पराई मत के अनुसार और संसार
की आदिशिक्षा के अनुसार है पर खीष्ट
९ के अनुसार नहीं है । क्योंकि उस में
ईश्वरत्व की सारी पूर्णता सदेह बास
१० करती है । और उस में तुम परिपूर्ण
हुए हो जो समस्त प्रधानता और अधि-
११ कार का सिर है . जिस में तुम ने बिन
हाथ का किया हुआ खतना भी अर्थात
शारीरिक पापों के देह के उतारने में
१२ खीष्ट का खतना पाया . और बपतिसमा
लेने में उस के संग गाड़े गये और उसी
में ईश्वर के कार्य्य के बिश्वास के द्वारा
जिस ने उस को मृतकों में से उठाया संग हो
१३ उठाये भी गये । और तुम्हें जो अपराधों
में और अपने शरीर की खतनाहीनता
में मृतक थे उस ने उस के संग जिलाया
कि उस ने तुम्हारे सब अपराधों को
१४ क्षमा किया . और विधियों का लेख जो
हमारे बिरुद्ध और हम से बिपरीत था
मिटा डाला और उस को कीलों से क्रूश
१५ पर ठोंकके मध्य में से उठा दिया है . और
प्रधानताओं और अधिकारों की सज्जा
उतारके क्रूश पर उन पर जयजयकार
करके उन्हें प्रगट में दिखाया ॥

१६ इस लिये खाने में अथवा पीने में
अथवा पर्ब्ब या नये चान्द के दिन या
बिश्राम के दिनों के विषय में कोई
१७ तुम्हारा बिचार न करे . कि यह बातें
आनेहारी बातों की छाया हैं परन्तु देह
का है । कोई जो अपनी इच्छा १८
से दीनताई और दूतों की पूजा करने-
हारा होय तुम्हारा प्रतिफल हरण न
करे जो उन बातों में जिन्हें नहीं देखा
है घुस जाता है और अपने शारीरिक
ज्ञान से वृथा फुलाया जाता है . और १९
सिर को धारण नहीं करता है जिस से
सारा देह गांठों और बंधों से उपकार
पाके और एक संग गठके ईश्वर के
बढ़ाव से बढ़ जाता है । जो तुम खीष्ट २०
के संग संसार की आदिशिक्षा की ओर
मर गये तो क्यों जैसे संसार में जीते
हुए उन विधियों के बश में हो जो
मनुष्यों की आज्ञाओं और शिक्षाओं के
अनुसार हैं . कि मत छू और न चीख २१
और न हाथ लगा . बस्तुएं जो काम २२
में लाने से सब नाश होनेहारी हैं । ऐसी २३
विधियां निज इच्छा के अनुसार की
भक्ति से और दीनता से और देह को
कष्ट देने से ज्ञान का नाम तो पाती हैं
पर वे कुछ भी आदर के योग्य नहीं केवल
शारीरिक स्वभाव को तृप्त करने के
लिये हैं ॥

तीसरा पर्ब्ब ।

सो जो तुम खीष्ट के संग जी उठे १
तो ऊपर की बस्तुओं को खोज करो
जहां खीष्ट ईश्वर के दहिने हाथ बैठा
हुआ है । पृथिवी पर की बस्तुओं पर २
नहीं परन्तु ऊपर की बस्तुओं पर मन
लगाओ । क्योंकि तुम तो मूए और ३
तुम्हारा जीवन खीष्ट के संग ईश्वर में
छिपाया गया है । जब खीष्ट जो हमारा ४
जीवन है प्रगट होगा तब तुम भी उस
के संग महिमा सहित प्रगट किये
जाओगे ॥

इस लिये अपने अंगों को जो पृथिवी ५
पर हैं व्यभिचार औ अशुद्धता औ कामना
औ कुइच्छा को और लोभ को जो

५ मूर्त्तिपूजा है मार डालो . कि इन के कारण ईश्वर का क्रोध आज्ञा लंघन
६ करनेहारों पर पड़ता है . जिन्हों के
७ बीच में आगे जब तुम इन में जीते थे
८ तब तुम भी चलते थे । पर अब तुम भी इन सब बातों को क्रोध औ कोप औ बैरभाव को औ निन्दा औ गाली
९ को अपने मुंह से दूर करो । एक दूसरे से झूठ मत बोलो कि तुम ने पुराने मनुष्यत्व को उस की क्रियाओं समेत
१० उतार डाला है . और नये को पहिन लिया है जो अपने सृजनहार के रूप के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने को नया होता
११ जाता है । उस में यूनानी और यिहूदी खतना किया हुआ और खतनाहीन अन्यभाषिया स्कूथी दास औ निर्बन्ध नहीं है परन्तु ख्रीष्ट सब कुछ और सभों में है ॥

१२ सो ईश्वर के चुने हुए पवित्र और प्यारे लोगों की नाईं बड़ी करुणा औ कृपालुता औ दीनता औ नम्रता औ
१३ धीरज पहिन लेओ . और एक दूसरे की सह लेओ और यदि किसी को किसी पर दोष देने का हेतु होय तो एक दूसरे को क्षमा करो . जैसे ख्रीष्ट ने तुम्हें क्षमा किया तैसे तुम भी करो ।
१४ पर इन सभों के ऊपर प्रेम को पहिन
१५ लेओ जो सिद्धता का बंध है । और ईश्वर की शांति जिस के लिये तुम एक देह में बुलाये भी गये तुम्हारे हृदय में प्रबल होय और धन्य माना करो ।
१६ ख्रीष्ट का वचन तुम्हों में अधिकाई से बसे और गीतों और भजनों और आत्मिक गानों में समस्त ज्ञान सहित एक दूसरे को सिखाओ और चिताओ और अनुग्रह सहित अपने अपने मन में प्रभु के आगे
१७ गान करो । और वचन से अथवा कर्म से जो कुछ तुम करो सब काम प्रभु यीशु के नाम से करो और उस के द्वारा से ईश्वर पिता का धन्य मानो ॥

१८ हे स्त्रियो जैसा प्रभु में सोहता है तैसा अपने अपने स्वामी के अधीन
१९ रहो । हे पुरुषो अपनी अपनी स्त्री को प्यार करो और उन की ओर कड़वे मत होओ ॥

२० हे लड़को सब बातों में अपने अपने माता पिता की आज्ञा मानो क्योंकि
२१ यह प्रभु को भावता है । हे पिताओ अपने अपने लड़कों को मत खिझाओ न हो कि वे उदास होवें ॥

२२ हे दासो जो लोग शरीर के अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं मनुष्यों को प्रसन्न करनेहारों की नाईं मुंह देखी सेवा से नहीं परन्तु मन की सीधाई से ईश्वर से डरते हुए सब बातों में उन
२३ की आज्ञा मानो । और जो कुछ तुम करो सब कुछ जैसे मनुष्यों के लिये सो नहीं परन्तु जैसे प्रभु के लिये अन्तःकरण
२४ से करो . क्योंकि जानते हो कि प्रभु से तुम अधिकार का प्रतिफल पाओगे क्योंकि तुम प्रभु ख्रीष्ट के दास हो ।
२५ परन्तु अनीति करनेहारा जो अनीति उस ने किई है तिस का फल पावेगा और पक्षपात नहीं है ॥

चौथा पर्ब्ब ।

१ हे स्वामियो अपने अपने दासों से न्याययुक्त और यथार्थ व्यवहार करो क्योंकि जानते हो कि तुम्हारा भी स्वर्ग में स्वामी है ॥

२ प्रार्थना में लगे रहो और धन्यवाद
३ के साथ उस में जागते रहो । और इस के संग हमारे लिये भी प्रार्थना करो कि ईश्वर हमारे लिये बात करने का ऐसा द्वार खोल दे कि हम ख्रीष्ट का भेद जिस के कारण मैं बांधा भी गया
४ हूं खोल देवें . जिस्तें मैं जैसा मुझे

बोलना उचित है वैसा ही उसे प्रगट
५ करूं । बाहरवालों की ओर बुद्धि से
चलो और अपने लिये समय का लाभ
६ करो । तुम्हारा बचन सदा अनुग्रह
सहित और लोन से स्वादित होय
जिस्तें तुम जानो कि हर एक को किस
रीति से उत्तर देना तुम्हें उचित है ॥

७ तुखिक जो प्यारा भाई और
बिश्वासयोग्य सेवक और प्रभु में मेरा
संगी दास है मेरा सब समाचार तुम्हें
८ सुनावेगा . कि मैं ने उसे इसी के
निमित्त तुम्हारे पास भेजा है कि वह
तुम्हारे विषय में की बातें जाने और
९ तुम्हारे मन को शांति देवे । उसे मैं ने
उनीसिम के संग जो बिश्वासयोग्य और
प्यारा भाई और तुम्हों में का है भेजा
है . वे यहां का सब समाचार तुम्हें
सुनावेंगे ॥

१० अरिस्तार्ख जो मेरा संगी बंधुआ है
और मार्क जो बर्णबा का भाई लगता
है जिस के विषय में तुम ने आज्ञा पाई .
जो वह तुम्हारे पास आवे तो उसे
११ ग्रहण करो . और यीशु जो युस्त कहा-
वता है इन तीनों का तुम से नमस्कार .
खतना किये हुए लोगों में से केवल येही
ईश्वर के राज्य के लिये मेरे सहकर्म्मी
हैं जिन से मुझे शांति हुई है । इपाफ्रा १२
जो तुम्हों में से एक खीष्ट का दास है
तुम से नमस्कार कहता है और सदा
तुम्हारे लिये प्रार्थनाओं में उद्योग करता
है कि तुम ईश्वर की सारी इच्छा में
सिद्ध और परिपूर्ण बने रहो । क्योंकि १३
मैं उस का साक्षी हूं कि तुम्हारे लिये
और उन के लिये जो लाओदिकेया में
हैं और उन के लिये जो हियरापलि में
हैं उस का बड़ा अनुराग है । लूक का १४
जो प्यारा वैद्य है और दीमा का तुम से
नमस्कार । लाओदिकेया में के भाइयों १५
को और नुम्फा को और उस के घर में
की मंडली को नमस्कार । और जब १६
यह पत्री तुम्हारे यहां पढ़ लिई जाय
तब ऐसा करो कि लाओदिकियों की
मंडली में भी पढ़ी जाय और कि तुम
भी लाओदिकेया की पत्री पढ़ो । और १७
अर्खिप से कहो जो सेवकाई तू ने प्रभु
में पाई है उसे देखता रह कि तू उसे
पूरी करे । मुझ पावल का अपने हाथ १८
का लिखा हुआ नमस्कार . मेरे बंधनों
की सुध लेओ . अनुग्रह तुम्हारे संग
होवे । आमीन ॥

थिसलोनिकियों को पावल प्रेरित की पहिली पत्री ।

पहिला पर्व्व ।

१ पावल और सीला और तिमोथिय
थिसलोनिकियों की मंडली को जो
ईश्वर पिता और प्रभु यीशु खीष्ट में
है . तुम्हें हमारे पिता ईश्वर और प्रभु
यीशु खीष्ट से अनुग्रह और शांति
मिले ॥

हम अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें स्मरण २
करते हुए नित्य तुम सभों के विषय में
ईश्वर का धन्य मानते हैं . क्योंकि हम ३

अपने पिता ईश्वर के आगे तुम्हारे बिश्वास के कार्य्य और प्रेम के परिश्रम को और हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट में आशा की धीरता को निरन्तर स्मरण
४ करते हैं। और हे भाइयो ईश्वर के प्यारो हम तुम्हारा चुन लिया जाना
५ जानते हैं। क्योंकि हमारा सुसमाचार केवल बचन में नहीं परन्तु सामर्थ्य में भी और पवित्र आत्मा से और बड़े निश्चय से तुम्हारे पास पहुंचा जैसा तुम जानते हो कि तुम्हारे कारण हम तुम्हों
६ में कैसे बने। और तुम लोग बड़े क्लेश के बीच में पवित्र आत्मा के आनन्द से बचन को ग्रहण करके हमों के और
७ प्रभु के अनुगामी बने, यहां लों कि माकिदोनिया और आखाया में के सब बिश्वासियों के लिये तुम दृष्टान्त हुए।
८ क्योंकि न केवल माकिदोनिया और आखाया में तुम्हारी ओर से प्रभु के बचन का ध्वनि फैल गया परन्तु हर एक स्थान में भी तुम्हारे बिश्वास की जो ईश्वर पर है चर्चा हो गई है यहां लों कि हमें कुछ बोलने का
९ प्रयोजन नहीं है। क्योंकि वे आप ही हमारे विषय में बताते हैं कि तुम्हारे पास हमारा आना किस प्रकार का था और तुम क्योंकर मूरतों से ईश्वर की ओर फिरे जिस्तें जीवते और सत्य
१० ईश्वर की सेवा करो, और स्वर्ग से उस के पुत्र की जिसे उस ने मृतकों में से उठाया बाट देखो अर्थात यीशु की जो हमें आनेवाले क्रोध से बचानेहारा है॥

दूसरा पर्ब्ब।

१ हे भाइयो तुम्हारे पास हमारे आने के विषय में तुम आप ही जानते हो
२ कि वह व्यर्थ नहीं था। परन्तु आगे फिलिपी में जैसा तुम जानते हो दुःख पाके और दुर्दशा भोगके हम ने ईश्वर का सुसमाचार बहुत रगड़े झगड़े में तुम्हें सुनाने को अपने ईश्वर से साहस
३ पाया। क्योंकि हमारा उपदेश न भ्रम से और न अशुद्धता से और न छल के
४ साथ है, परन्तु जैसा ईश्वर को अच्छा देख पड़ा है कि सुसमाचार हमें सौंपा जाय तैसा हम बोलते हैं अर्थात जैसे मनुष्यों को प्रसन्न करते हुए सो नहीं परन्तु ईश्वर को जो हमों के मन को
५ जांचता है। क्योंकि हम न तो कभी लल्लोपत्तो की बात किया करते थे जैसा तुम जानते हो और न लोभ के लिये बहाना करते थे ईश्वर साक्षी
६ है। और यद्यपि हम ख्रीष्ट के प्रेरित होके मर्य्यादा ले सकते तौभी हम मनुष्यों से चाहे तुम्हों से चाहे दूसरों
७ से आदर नहीं चाहते थे। परन्तु तुम्हारे बीच में हम ऐसे कोमल बने जैसी माता अपने बालकों को दूध पिला
८ पालती है। वैसे ही हम तुम्हों से स्नेह करते हुए तुम्हें केवल ईश्वर का सुसमाचार नहीं परन्तु अपना अपना प्राण भी बांट देने को प्रसन्न थे इस लिये कि हमारे तुम प्यारे बन गये।
९ क्योंकि हे भाइयो तुम हमारे परिश्रम और क्लेश को स्मरण करते हो कि तुम में से किसी पर भार न देने के लिये हम ने रात औ दिन कमाते हुए तुम्हों में ईश्वर का सुसमाचार प्रचार किया।
१० तुम लोग साक्षी हो और ईश्वर भी कि तुम्हों के आगे जो बिश्वासी हो हम कैसी पवित्रता औ धर्म्म औ
११ निर्दोषता से चले। जैसे तुम जानते हो कि जैसा पिता अपने लड़कों को तैसे हम तुम्हों में से एक एक को क्योंकर उपदेश औ शांति औ साक्षी
१२ देते थे, जिस्तें तुम ईश्वर के योग्य

तुम आप ठीक करके जानते हो कि जैसा रात को चोर तैसा ही प्रभु का दिन आता है। ३ क्योंकि जब लोग कहेंगे कुशल है और कुछ भय नहीं तब जैसी गर्भवती पर प्रसव की पीड़ तैसा उन पर बिनाश अचांचक आ पड़ेगा और वे किसी रीति से नहीं बचेंगे। ४ पर हे भाइयो तुम तो अंधकार में नहीं हो कि तुम पर वह दिन चोर की नाईं ५ आ पड़े। तुम सब ज्योति के सन्तान और दिन के सन्तान हो, हम न रात के न ६ अंधकार के हैं। इस लिये हम औरों के समान सोवें सो नहीं परन्तु जागें ७ और सचेत रहें। क्योंकि सोनेहारे रात को सोते हैं और मतवाले लोग रात को ८ मतवाले होते हैं। पर हम जो दिन के हैं तो बिश्वास और प्रेम की झिलम और टोप अर्थात त्राण की आशा पहिनके ९ सचेत रहें। क्योंकि ईश्वर ने हमें क्रोध के लिये नहीं पर हमें लिये ठहराया कि हम अपने प्रभु यीशु ख्रीष्ट के १० द्वारा से त्राण प्राप्त करें, जो हमारे लिये मरा कि हम चाहे जागें चाहे ११ सोवें एक संग उस के साथ जीवें। इस कारण एक दूसरे को शांति देओ और एक दूसरे को सुधारो जैसे तुम करते भी हो॥

१२ हे भाइयो हम तुम से बिन्ती करते हैं कि जो तुम्हों में परिश्रम करते हैं और प्रभु में तुम पर अध्यक्षता करते हैं और तुम्हें चिताते हैं उन्हें पहचान रखो, १३ और उन के काम के कारण उन्हें अत्यन्त प्रेम के योग्य समझो, आपस में मिले रहो॥

१४ और हे भाइयो हम तुम से बिन्ती करते हैं अनरीति से चलनेहारों को चिताओ कायरों को शांति देओ दुर्बलों को संभालो सभों की ओर धीरजवन्त होओ। १५ देखो कि कोई किसी से बुराई के बदले बुराई न करे परन्तु सदा एक दूसरे की ओर और सभों की ओर भी भलाई की चेष्टा करो। १६ सदा आनन्दित रहो। १७ निरन्तर प्रार्थना करो। १८ हर बात में धन्य मानो क्योंकि तुम्हारे विषय में यही ख्रीष्ट यीशु में ईश्वर की इच्छा है। १९ आत्मा को निर्बुत मत करो। २० भविष्यद्वाणियों तुच्छ मत जानो। २१ सब बातें जांचो अच्छी को धर लेओ। २२ सब प्रकार की बुराई से परे रहो। २३ शांति का ईश्वर आप ही तुम्हें सम्पूर्ण पवित्र करे और तुम्हारा सम्पूर्ण आत्मा और प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट के आने पर निर्दोष रखा जाय। २४ तुम्हारा बुलानेहारा बिश्वासयोग्य है और वही यह करेगा॥

२५ हे भाइयो हमारे लिये प्रार्थना करो। २६ सब भाइयों को पवित्र चूमा लेके नमस्कार करो। २७ मैं तुम्हें प्रभु की किरिया देता हूं कि यह पत्री सब पवित्र भाइयों को पढ़के सुनाई जाय। २८ हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट का अनुग्रह तुम्हारे संग होवे। आमीन॥

थिसलोनिकियों को पावल प्रेरित की दूसरी पत्री।

पहिला पर्ब्ब।

१ पावल और सीला और तिमोथिय थिसलोनिकियों की मंडली को जो हमारे पिता ईश्वर और प्रभु यीशु ख्रीष्ट
२ में है. तुम्हें हमारे पिता ईश्वर और प्रभु यीशु ख्रीष्ट से अनुग्रह और शांति मिले॥

३ हे भाइयो तुम्हारे विषय में नित्य ईश्वर का धन्य मानना हमें उचित है जैसा योग्य है क्योंकि तुम्हारा विश्वास बहुत बढ़ता है और एक दूसरे की ओर तुम सभों में से हर एक का प्रेम अधिक
४ होता जाता है. यहां लों कि सब उपद्रवों में जो तुम पर पड़ते हैं और क्लेशों में जो तुम सहते हो तुम्हारा जो धीरज और विश्वास है उस के लिये हम आप ही ईश्वर की मंडलियों में तुम्हारे विषय में बड़ाई करते हैं॥
५ यह तो ईश्वर के यथार्थ विचार का प्रमाण है जिस्तें तुम ईश्वर के राज्य के योग्य गिने जाओ जिस के लिये तुम
६ दुःख भी उठाते हो। क्योंकि यह तो ईश्वर के न्याय के अनुसार है कि जो तुम्हें क्लेश देते हैं उन्हें प्रतिफल में क्लेश
७ देवे. और तुम्हें जो क्लेश पाते हो हमारे संग उस समय में चैन देवे जिस समय प्रभु यीशु स्वर्ग से अपने सामर्थ्य के दूतों के संग धधकती आग में प्रगट
८ होगा. और जो लोग ईश्वर को नहीं जानते हैं और जो लोग हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट के सुसमाचार को नहीं मानते हैं
९ उन्हें दंड देगा. कि वे तो प्रभु के सन्मुख से और उस की शक्ति के तेज की ओर से उस दिन अनन्त विनाश का
१० दंड पावेंगे. जिस दिन वह अपने पवित्र लोगों में तेजोमय और सब विश्वास करनेहारों में आश्चर्य दिखाई देने को आवेगा. कि हम ने तुम को जो साक्षी दिई उस पर विश्वास तो किया गया॥
११ इस निमित्त हम नित्य तुम्हारे विषय में प्रार्थना भी करते हैं कि हमारा ईश्वर तुम्हें इस बुलाहट के योग्य समझे और भलाई की सारी सुइच्छा को और विश्वास के कार्य्य को सामर्थ्य सहित
१२ पूरा करे. जिस्तें तुम्हों में हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट के नाम की महिमा और उस में तुम्हारी महिमा हमारे ईश्वर के और प्रभु यीशु ख्रीष्ट के अनुग्रह के समान प्रगट किई जाय॥

दूसरा पर्ब्ब।

१ पर हे भाइयो हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट के आने के और हमों के उस पास एकट्ठे होने के विषय में हम तुम से बिन्ती
२ करते हैं. कि अपना अपना मन शीघ्र डिगाने न देओ और आत्मा के द्वारा अथवा बचन के द्वारा अथवा पत्री के द्वारा जैसे हमारी ओर से होते घबरा न जाओ कि मानो ख्रीष्ट का दिन आ
३ पहुंचा है। कोई तुम्हें किसी रीति से न छले क्योंकि जब लों धर्म्मत्याग न हो लेवे और वह पापपुरुष अर्थात
४ विनाश का पुत्र. जो विरोध करनेहारा और सब पर जो ईश्वर अथवा पूज्य कहावता है अपने को ऊंचा करनेहारा है यहां लों कि वह ईश्वर के मन्दिर में ईश्वर की नाईं बैठके अपने को

ईश्वर करके दिखावे प्रगट न होय तब ५ लों वह दिन नहीं पहुंचेगा । क्या तुम्हें सुरत नहीं कि जब मैं तुम्हारे यहां था तब भी मैं ने यह बातें तुम से कहीं । ६ और अब तुम उस वस्तु को जानते हो जो इस लिये रोकती है कि वह अपने ७ ही समय में प्रगट होवे। क्योंकि अधर्म्म का भेद अब भी कार्य्य करता है पर केवल जब लों वह जो अभी रोकता है ८ टल न जावे । और तब वह अधर्म्मी प्रगट होगा जिसे प्रभु अपने मुंह के पवन से नाश करेगा और अपने आने ९ के प्रकाश से लोप करेगा . अर्थात वह अधर्म्मी जिस का आना शैतान के कार्य्य के अनुसार झूठ के सब प्रकार के सामर्थ्य और चिन्हों और अद्भुत कामों के साथ . १० और उन्हों में जो नष्ट होते हैं अधर्म्म के सब प्रकार के छल के साथ है इस कारण कि उन्हों ने सच्चाई के प्रेम को नहीं ग्रहण किया कि उन का त्राण ११ होता । और इस कारण से ईश्वर उन पर भ्रांति की प्रबलता भेजेगा कि वे १२ झूठ का विश्वास करें . जिस्तें सब लोग जिन्हों ने सच्चाई का विश्वास न किया परन्तु अधर्म्म से प्रसन्न हुए दंड के योग्य ठहरें ॥

१३ पर हे भाइयो प्रभु के प्यारो तुम्हारे विषय में नित्य ईश्वर का धन्य मानना हमें उचित है कि ईश्वर ने आदि से तुम्हें आत्मा की पवित्रता और सच्चाई के विश्वास के द्वारा त्राण पाने को १४ चुन लिया . और इस के लिये तुम्हें हमारे सुसमाचार के द्वारा से बुलाया जिस्तें तुम हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट की १५ महिमा को प्राप्त करो । इस लिये हे भाइयो दृढ़ रहो और जो बातें तुम ने हमारे चाहे वचन के द्वारा चाहे पत्री के द्वारा सीखीं उन्हें धारण करो । १६ हमारा प्रभु यीशु ख्रीष्ट आप ही और हमारा पिता ईश्वर जिस ने हमें प्यार किया और अनुग्रह से अनन्त शांति और अच्छी आशा दिई है . १७ तुम्हारे मन को शांति देवे और तुम्हें हर एक अच्छे वचन और कर्म्म में स्थिर करे ॥

तीसरा पर्ब्ब ।

१ अन्त में हे भाइयो यह कहता हूं कि हमारे लिये प्रार्थना करो कि प्रभु का वचन जैसा तुम्हारे यहां फैलता है तैसा ही शीघ्र फैले और तेजोमय ठहरे . २ और कि हम अविचारी और दुष्ट मनुष्यों से बच जायें क्योंकि विश्वास सभों को नहीं है । ३ परन्तु प्रभु विश्वासयोग्य है जो तुम्हें स्थिर करेगा और दुष्ट से बचाये रहेगा । ४ और हम प्रभु में तुम्हारे विषय में भरोसा रखते हैं कि जो कुछ हम तुम्हें आज्ञा देते हैं उसे तुम करते हो और करोगे भी । ५ प्रभु तो ईश्वर के प्रेम की ओर और ख्रीष्ट के धीरज की ओर तुम्हारे मन की अगुआई करे ॥

६ हे भाइयो हम तुम्हें अपने प्रभु यीशु ख्रीष्ट के नाम से आज्ञा देते हैं कि हर एक भाई से जो अनरीति से चलता है और जो शिक्षा उस ने हम से पाई उस के अनुसार नहीं चलता है अलग हो जाओ । ७ क्योंकि तुम आप जानते हो कि किस रीति से हमारे अनुगामी होना उचित है क्योंकि हम तुम्हों में अनरीति से नहीं चले . ८ और सेंत की रोटी किसी के यहां से न खाई परन्तु परिश्रम और क्लेश से रात ओ दिन कमाते थे कि तुम में से किसी पर भार न देवें । ९ यह नहीं कि हमें अधिकार नहीं है परन्तु इस लिये कि अपने को तुम्हारे कारण दृष्टान्त कर देवें जिस्तें तुम हमारे अनुगामी होओ । १० क्योंकि जब हम तुम्हारे यहां थे तब

भी यह आज्ञा तुम्हें देते थे कि यदि कोई कमाने नहीं चाहता है तो खाना ११ भी न खाय । क्योंकि हम सुनते हैं कि कितने लोग तुम्हों में अनरीति से चलते हैं और कुछ कमाते नहीं परन्तु औरों के काम में हाथ डालते हैं । १२ ऐसों को हम आज्ञा देते हैं और अपने प्रभु यीशु ख्रीष्ट की ओर से उपदेश करते हैं कि वे चैन से कमाके अपनी १३ ही रोटी खाया करें । और तुम हे भाइयो सुकर्म्म करने में कातर मत १४ होओ । यदि कोई इस पत्री में की हमारी बचन नहीं मानता है उसे चीन्ह रखो और उस की संगति मत करो जिस्तें वह लज्जित होय । १५ तौभी उसे बैरी सा मत समझो परन्तु भाई जानके चिताओ ॥

१६ शांति का प्रभु आप ही नित्य तुम्हें सर्व्वथा शांति देवे . प्रभु तुम सभों के संग होवे । १७ मुझ पावल का अपने हाथ का लिखा हुआ नमस्कार जो हर एक पत्री में चिन्ह है . मैं यूंही लिखता हूं । १८ हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट का अनुग्रह तुम सभों के संग होवे । आमीन ॥

तिमोथिय को पावल प्रेरित की पहिली पत्री ।

पहिला पर्ब्ब ।

१ पावल जो हमारे त्राणकर्त्ता ईश्वर की ओर हमारी आशा प्रभु यीशु ख्रीष्ट की आज्ञा के अनुसार यीशु ख्रीष्ट का प्रेरित है विश्वास में अपने सच्चे पुत्र २ तिमोथिय को . तुझे हमारे पिता ईश्वर और हमारे प्रभु ख्रीष्ट यीशु से अनुग्रह और दया और शांति मिले ॥

३ जैसे मैं ने माकिदोनिया को जाते हुए तुझ से बिन्ती किई [तैसे फिर कहता हूं] कि इफिस में रहियो जिस्तें तू कितनों को आज्ञा देवे कि आन ४ आन उपदेश मत किया करो . और कहानियों पर और अनन्त वंशावलियों पर मन मत लगाओ जिन से ईश्वर के भंडारीपन का जो विश्वास के विषय में है निर्बाह नहीं होता है परन्तु और ५ भी विवाद उत्पन्न होते हैं । धर्म्माज्ञा का अन्त वह प्रेम है जो शुद्ध मन से और अच्छे विवेक से और निष्कपट विश्वास से होता है . ६ जिन से कितने लोग भटकके बकवाद की ओर फिर गये हैं . ७ जो व्यवस्थापक हुआ चाहते हैं परन्तु न वह बातें बूझते जो वे कहते हैं और न यह जानते हैं कि कौन सी बातों के विषय में दृढ़ता से बोलते हैं । ८ पर हम जानते हैं कि व्यवस्था यदि कोई उस को विधि के अनुसार यह जानके काम में लावे तो अच्छी है . ९ कि व्यवस्था धर्म्मी जन के लिये नहीं ठहराई गई है परन्तु अधर्म्मी औ निरंकुश लोगों के लिये भक्तिहीनों औ पापियों के लिये अपवित्र और अशुद्ध लोगों के लिये पितृघातकों औ मातृघातकों के लिये . १० मनुष्यघातकों व्यभिचारियों पुरुषगामियों मनुष्यविक्रयियों झूठों और झूठी किरिया खानेहारों के लिये है और यदि दूसरा कोई कर्म्म हो जो खरे उपदेश के विरुद्ध है तो उस के लिये भी है . ११ परमधन्य ईश्वर की

महिमा के सुसमाचार के अनुसार जो मुझे सौंपा गया ॥

१२ और मैं ख्रीष्ट यीशु हमारे प्रभु का जिस ने मुझे सामर्थ्य दिया धन्य मानता हूं कि उस ने मुझे विश्वासयोग्य समझा १३ और सेवकाई के लिये ठहराया, जो आगे निन्दक और सतानेहारा और उपद्रवी था परन्तु मुझ पर दया किई गई क्योंकि मैं ने अविश्वासता में अज्ञानता से ऐसा १४ किया। और हमारे प्रभु का अनुग्रह विश्वास के साथ और प्रेम के साथ जो ख्रीष्ट यीशु में है बहुत अधिकाई से १५ हुआ। यह वचन विश्वासयोग्य और सर्व्वथा ग्रहण योग्य है कि ख्रीष्ट यीशु पापियों को बचाने के लिये जगत में आया जिन्हों में मैं सब से बड़ा हूं। १६ परन्तु मुझ पर इसी कारण से दया किई गई कि मुझ में सब से अधिक करके यीशु ख्रीष्ट समस्त धीरज दिखावे कि यह उन लोगों के लिये जो उस पर अनन्त जीवन के लिये विश्वास करने- १७ वाले थे एक नमूना होवे। सनातन काल के अविनाशी और अदृश्य राजा को अर्थात अद्वैत बुद्धिमान ईश्वर को सदा सर्व्वदा प्रतिष्ठा और गुणानुवाद होवे, आमीन ॥

१८ यह आज्ञा हे पुत्र तिमोथिय मैं उन भविष्यद्वाणियों के अनुसार जो तेरे विषय में आगे से किई गईं तुझे सौंप देता हूं कि तू उन्हों की सहायता से १९ अच्छी लड़ाई का योद्धा होय, और विश्वास को और अच्छे विवेक को रख जिसे त्यागने से कितनों के विश्वास २० का जहाज मारा गया। इन्हों में से हुमिनई और सिकन्दर हैं जिन्हें मैं ने शैतान को सौंप दिया कि वे ताड़ना पाके सीखें कि निन्दा न करें ॥

दूसरा पर्व्व ।

१ सो मैं सब से पहिले यह उपदेश करता हूं कि बिन्ती और प्रार्थना और निवेदन और धन्यवाद सब मनुष्यों के २ लिये किये जावें, राजाओं के लिये भी और सभों के लिये जिन का ऊंचा पद है इस लिये कि हम विश्राम और चैन से सारी भक्ति और गंभीरता में अपना अपना जन्म बितावें। ३ क्योंकि यह हमारे त्राणकर्त्ता ईश्वर को अच्छा लगता और भावता है, ४ जिस की इच्छा यह है कि सब मनुष्य त्राण पावें और सत्य के ज्ञान लों पहुंचें, ५ क्योंकि एक ही ईश्वर है और ईश्वर और मनुष्यों का एक ही मध्यस्थ है अर्थात ख्रीष्ट यीशु जो मनुष्य है, ६ जिस ने सभों के उद्धार के दाम में अपने को दिया। ७ यही उपयुक्त समय में की साक्षी है जिस के लिये मैं प्रचारक और प्रेरित और विश्वास और सच्चाई में अन्यदेशियों का उपदेशक ठहराया गया, मैं ख्रीष्ट में सत्य कहता हूं मैं झूठ नहीं बोलता हूं ॥

८ सो मैं चाहता हूं कि हर स्थान में पुरुष लोग बिना क्रोध और बिना विवाद पवित्र हाथों को उठाके प्रार्थना करें। ९ इसी रीति से मैं चाहता हूं कि स्त्रियां भी संकोच और संयम के साथ अपने तईं उस पहिरावन से जो उन के योग्य है संवारें गून्थे हुए बाल वा सोने वा मोतियों से वा बहुमूल्य वस्त्र से नहीं परन्तु अच्छे कर्म्मों से, १० कि यही उन स्त्रियों को जो ईश्वर की उपासना की प्रतिज्ञा करती हैं सोहता है। ११ स्त्री चुपचाप सकल अधीनता से सीख लेवे। १२ परन्तु मैं स्त्री को उपदेश करने अथवा पुरुष पर अधिकार रखने की नहीं परन्तु चुपचाप रहने की आज्ञा देता हूं। १३ क्योंकि आदम पहिले बनाया

१४ गया सो छला । और आदम नहीं छला गया परन्तु स्त्री छली गई और १५ अपराधिनी हुई । तौभी जो वे संयम सहित बिश्वास और प्रेम और पवित्रता में रहें तो लड़के जनने में त्राण पायेंगी ॥

तीसरा पर्ब्ब ।

१ यह बचन बिश्वासयोग्य है कि यदि कोई मंडली के रखवाले का काम लेने चाहता है तो अच्छे काम की लालसा २ करता है । सो उचित है कि रखवाला निर्दोष और एक ही स्त्री का स्वामी सचेत औ संयमी और सुशील और अतिथिसेवक औ सिखाने में निपुण होय . ३ मद्यपान में आसक्त नहीं और न मारकहा न नीच कमाई करनेहारा परन्तु मृदुभाव ४ मिलनसार औ निर्लोभी . जो अपने ही घर की अच्छी रीति से अध्यक्षता करता हो और लड़कों को सारी गंभीरता से ५ आधीन रखता हो । पर यदि कोई अपने ही घर की अध्यक्षता करने न जानता हो तो क्योंकर ईश्वर की मंडली ६ की रखवाली करेगा । फिर नवशिष्य न होय ऐसा न हो कि अभिमान से फूलके ७ शैतान के दंड में पड़े । और भी उस को उचित है कि बाहरवालों के यहां सुख्यात होवे ऐसा न हो कि निन्दित हो जाय और शैतान के फंदे में पड़े ॥

८ वैसे ही मंडली के सेवकों को उचित है कि गंभीर होवें दोरंगी नहीं न बहुत मद्य की चाह करनेहारे न नीच कमाई ९ करनेहारे . परन्तु बिश्वास का भेद शुद्ध १० बिबेक से रखनेहारे हों । पर ये लोग पहिले परखे भी जावें तब जो निर्दोष ११ निकलें तो सेवक का काम करें . इसी रीति से स्त्रियों को उचित है कि गंभीर होवें और दोष लगानेवालियां नहीं परन्तु सचेत और सब बातों में बिश्वासयोग्य । १२ सेवक लोग एक एक स्त्री के स्वामी और लड़कों की और अपने अपने घर की अच्छी रीति से अध्यक्षता करनेहारे हों । १३ क्योंकि जिन्हों ने सेवक का काम अच्छी रीति से किया है वे अपने लिये अच्छा पद प्राप्त करते हैं और उस बिश्वास में जो खीष्ट यीशु पर है बड़ा साहस पाते हैं ॥

१४ मैं तेरे पास बहुत शीघ्र आने की आशा रखके भी यह बातें तेरे पास लिखता हूं । १५ पर इस लिये लिखता हूं कि जो मैं बिलम्ब करूं तौभी तू जाने कि ईश्वर के घर में जो जीवते ईश्वर की मंडली और सत्य का खंभा औ नेव है कैसी चाल चलना उचित है । १६ और यह बात सब मानते हैं कि भक्ति का भेद बड़ा है कि ईश्वर शरीर में प्रगट हुआ आत्मा से निर्दोष ठहराया गया स्वर्गदूतों को दिखाई दिया अन्य अन्य देशियों में प्रचार किया गया जगत में उस पर बिश्वास किया गया वह महिमा में उठा लिया गया ॥

चौथा पर्ब्ब ।

१ पवित्र आत्मा स्पष्टता से कहता है कि इस के पीछे कितने लोग बिश्वास से बहक जायेंगे और भरमानेहारे आत्माओं पर और भूतों की शिक्षाओं पर मन लगायेंगे . २ उन झूठ बोलनेहारों के कपट के अनुसार जिन का निज मन दागा हुआ होगा . ३ जो बिवाह करने से बर्जेंगे और खाने की बस्तुओं से परे रहने की आज्ञा देंगे जिन्हें ईश्वर ने इस लिये सृजा कि बिश्वासी लोग और सत्य के माननेहारे उन्हें धन्यबाद के संग भोग करें । ४ क्योंकि ईश्वर की सृजी हुई हर एक बस्तु अच्छी है और कोई बस्तु जो धन्यबाद के संग ग्रहण किये जाय फेंकने के योग्य नहीं है । ५ क्योंकि

वह ईश्वर के बचन के और प्रार्थना के द्वारा पवित्र किई जाती है ॥

६ भाइयों को इन बातों का स्मरण करवाने से तू यीशु ख्रीष्ट का अच्छा सेवक ठहरेगा जिस का बिश्वास की और उस अच्छी शिक्षा की बातों में जो तू ने प्राप्त किई हैं अभ्यास होता है । ७ परन्तु अशुद्ध और बुढ़िया की सी कहानियों से अलग रह पर भक्ति के लिये ८ अपनी साधना कर । क्योंकि देह की साधना कुछ थोड़े के लिये फलदाई है परन्तु भक्ति सब बातों के लिये फलदाई है कि उस को अब के जीवन की और ९ आनेवाले की भी प्रतिज्ञा है । यह बचन बिश्वासयोग्य और सर्ब्बथा ग्रहणयोग्य १० है । क्योंकि हम इस के निमित्त परिश्रम करते हैं और निन्दित भी होते हैं कि हम ने जीवते ईश्वर पर भरोसा रखा है जो सब मनुष्यों का निज करके ११ बिश्वासियों का बचानेहारा है । इन बातों की आज्ञा और शिक्षा किया कर ॥

१२ कोई तेरी जवानी को तुच्छ न जाने परन्तु बचन में चलन में प्रेम में आत्मा में बिश्वास में और पवित्रता में तू बिश्वासियों के लिये दृष्टान्त बन जा । १३ जब लों मैं न आऊं तब लों पढ़ने में उपदेश में और शिक्षा में मन लगा । १४ उस बरदान से जो तुझ में है जो भविष्यद्वाणी के द्वारा प्राचीन लोगों के हाथ रखने के साथ तुझे दिया गया १५ निश्चिन्त न रहना । इन बातों की चिन्ता कर इन में लगा रह कि तेरी १६ बढ़ती सभों में प्रगट होवे । अपने विषय में और शिक्षा के विषय में सचेत रह कि तू उन में बना रह क्योंकि यह करने में तू अपने को और अपने सुननेहारों को भी बचावेगा ॥

पांचवां पर्ब्ब ।

१ बूढ़े को मत डपट परन्तु उस को जैसे पिता जानके उपदेश दे और जवानों २ को जैसे भाइयों को . बुढ़ियाओं को जैसे माताओं को और युवतियों को जैसे बहिनों को सारी पवित्रता से उपदेश ३ दे । बिधवाओं का जो सचमुच बिधवा ४ हैं आदर कर । परन्तु जो किसी बिधवा के लड़के अथवा नाती पोते हों तो वे लोग पहिले अपने ही घर का सन्मान करने और अपने पितरों का प्रतिफल देने को सीखें क्योंकि यह ईश्वर को ५ अच्छा लगता और भावता है । जो सचमुच बिधवा और अकेली छोड़ी हुई है सो ईश्वर पर भरोसा रखती है और रात दिन बिन्ती में प्रार्थना में लगी ६ रहती है । परन्तु जो भोग बिलास में रहती है सो जीते जी मर गई है । ७ और इन बातों की आज्ञा दिया कर ८ इस लिये कि वे निर्दोष होवें । परन्तु यदि कोई जन अपने कुटुंब के और निज करके अपने घराने के लिये चिन्ता न करे तो वह बिश्वास से मुकर गया है और अबिश्वासी से भी बुरा है । ९ बिधवा वही गिनी जाय जिस की बयस साठ बरस के नीचे न हो जो एक ही स्वामी की स्त्री हुई हो . १० जो सुकर्म्मों के विषय में सुख्यात हो यदि उस ने लड़कों को पाला हो यदि अतिथिसेवा किई हो यदि पवित्र लोगों के पांवों को धोया हो यदि दुःखियों का उपकार किया हो यदि हर एक अच्छे काम की चेष्टा किई हो तो गिन्ती में आवे । ११ परन्तु जवान बिधवाओं को अलग कर क्योंकि जब वे ख्रीष्ट के बिरुद्ध सुख बिलास की इच्छा करती हैं तब बिवाह करने चाहती हैं . १२ और दंड के योग्य होती हैं क्योंकि उन्हों ने अपने पहिले

१३ बिश्वास को तुच्छ जाना है । और इस के संग वे बेकार रहने और घर घर फिरने को सीखती हैं और केवल बेकार रहने नहीं परन्तु बकवादी होने और पराये काम में हाथ डालने और अनुचित १४ बातें बोलने को सीखती हैं । इस लिये मैं चाहता हूं कि जवान बिधवाएं बिवाह करें और लड़के जनें और घरबारी करें और किसी बिरोधी को निन्दा के १५ कारण कुछ अवसर न देवें । क्योंकि अब भी कितनी तो बहकके शैतान १६ के पीछे हो लिई हैं । जो किसी बिश्वासी अथवा बिश्वासिनी के यहां बिधवाएं हों तो वही उन का उपकार करे और मंडली पर भार न दिया जाय जिस्तें वह उन्हों का जो सचमुच बिधवा हैं उपकार करे ॥

१७ जिन प्राचीनों ने अच्छी रीति से अध्यक्षता किई है सो दूने आदर के योग्य समझे जायें निज करके वे जो उपदेश और शिक्षा में परिश्रम करते हैं । १८ क्योंकि धर्म्मपुस्तक कहता है कि दावनेहारे बैल का मुंह मत बांध और कि बनिहार अपनी बनि के योग्य है । १९ प्राचीन के बिरुद्ध दो अथवा तीन साक्षियों की साक्षी बिना अपवाद को २० ग्रहण न करना । पाप करनेहारों को सभों के आगे समझा दे इस लिये कि २१ और लोग भी डर जायें । मैं ईश्वर के और प्रभु यीशु ख्रीष्ट के और चुने हुए दूतों के आगे दृढ़ आज्ञा देता हूं कि तू मन की गांठ न बांधके इन बातों का पालन करे और कोई काम पक्षपात २२ की रीति से न करे । किसी पर हाथ शीघ्र न रखना और न दूसरों के पापों में भागी होना : अपने को पवित्र रख । २३ अब जल मत पिया कर परन्तु अपने उदर के और अपने बारम्बार के रोगों के कारण थोड़ा सा दाख रस लिया कर । २४ कितने मनुष्यों के पाप प्रत्यक्ष हैं और बिचारित होने को आगे ही चलते हैं परन्तु कितनों के वे पीछे भी हो लेते हैं । २५ वैसे ही कितनों के सुकर्म्म भी प्रत्यक्ष हैं और जो और प्रकार के हैं सो छिप नहीं सकते हैं ॥

छठवां पर्व्व ।

१ जितने दास जूए के नीचे हैं वे अपने अपने स्वामी को सारे आदर के योग्य समझें जिस्तें ईश्वर के नाम की और धर्म्मोपदेश की निन्दा न किई जाय । २ और जिन्हों के स्वामी बिश्वासी जन हों सो उन्हें इस लिये कि भाई हैं तुच्छ न जानें परन्तु और भी उन की सेवा करें क्योंकि वे जो इस भलाई के भागी होते हैं बिश्वासी और प्यारे हैं . इन बातों की शिक्षा और उपदेश किया कर ॥

३ यदि कोई जन आन उपदेश करता है और खरी बातों को अर्थात हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट की बातों को और उस शिक्षा को जो भक्ति के अनुसार है ४ नहीं मानता है . तो वह अभिमान से फूल गया है और कुछ नहीं जानता है परन्तु उसे बिबादों का और शब्दों के झगड़ों का रोग है जिन से डाह और निन्दा की बातें और दूसरों की ओर ५ बुरे सन्देह . और उन मनुष्यों के व्यर्थ रगड़े झगड़े उत्पन्न होते हैं जिन के मन बिगड़े हैं और जिन से सच्चाई हरी गई है जो समझते हैं कि कमाई ही भक्ति है . ऐसे लोगों से अलग रहना ॥

६ पर सन्तोषयुक्त भक्ति बड़ी कमाई है । ७ क्योंकि हम जगत में कुछ नहीं लाये और प्रगट है कि हम कुछ ले जाने भी नहीं सकते हैं । ८ और भोजन और वस्त्र जो हमें मिला करें तो इन्हीं

९ से सन्तुष्ट रहना चाहिये । परन्तु जो लोग धनी होने चाहते हैं सो परीक्षा और फंदे में और बहुतेरे बुद्धिहीन और हानिकारी अभिलाषों में फंसते हैं जो मनुष्यों को बिनाश और बिध्वंस में १० डुबा देते हैं । क्योंकि धन का लोभ सब बुराइयों का मूल है उसे प्राप्त करने की चेष्टा करते हुए कितने लोग बिश्वास से भरमाये गये हैं और अपने को बहुत खेदों से वारपार छेदा है ॥

११ परन्तु हे ईश्वर के जन तू इन बातों से बचा रह और धर्म्म औ भक्ति औ बिश्वास औ प्रेम औ धीरज औ १२ नम्रता की चेष्टा कर । बिश्वास की अच्छी लड़ाई लड़ और अनन्त जीवन को धर ले जिस के लिये तू बुलाया भी गया और बहुत साक्षियों के आगे अच्छा १३ अंगीकार किया । मैं तुझे ईश्वर के आगे जो सभों को जिलाता है और स्नीष्ट यीशु के आगे जिस ने पन्तिय पिलात के साम्हने अच्छे अंगीकार की १४ साक्षी दिई आज्ञा देता हूं . कि तू इस आज्ञा को निष्खोट औ निर्दोष हमारे प्रभु यीशु स्नीष्ट के प्रकाश लों १५ पालन कर . जिसे वह अपने ही समयों में दिखावेगा जो परमधन्य और अद्वैत पराक्रमी और राज्य करनेहारों का राजा औ प्रभुता करनेहारों का प्रभु है . १६ और अमरता केवल उसी की है और वह अगम्य ज्योति में बास करता है और उस को मनुष्यों में से किसी ने नहीं देखा है और न कोई देख सकता है . उस को प्रतिष्ठा और अनन्त पराक्रम होय . आमीन ॥

१७ जो लोग इस संसार में धनी हैं उन्हें आज्ञा दे कि वे अभिमानी न होवें और धन की चंचलता पर भरोसा न रखें परन्तु जीवते ईश्वर पर जो सुखप्राप्ति के लिये हमें सब कुछ धनी १८ की रीति से देता है . और कि वे भलाई करें और अच्छे कामों के धनवान होवें और उदार औ परोपकारी हों . १९ और भविष्यत्काल के लिये अच्छी नेव अपने लिये जुगा रखें जिस्तें अनन्त जीवन को धर लेवें ॥

२० हे तिमोथिय इस थाती की रक्षा कर और अशुद्ध बकवादों से और जो झुठाई से ज्ञान कहावता है उस की २१ बिरुद्ध बातों से परे रह . कि इस ज्ञान की प्रतिज्ञा करते हुए कितने लोग बिश्वास के विषय में भटक गये हैं . तेरे संग अनुग्रह होय । आमीन ॥

तिमोथिय को पावल प्रेरित की दूसरी पत्री ।

पहिला पर्व्व ।

१ पावल जो उस जीवन की प्रतिज्ञा के अनुसार जो स्नीष्ट यीशु में है ईश्वर की इच्छा से यीशु स्नीष्ट का प्रेरित है . २ मेरे प्यारे पुत्र तिमोथिय को ईश्वर पिता से और हमारे प्रभु स्नीष्ट यीशु से अनुग्रह और दया और शांति मिले ॥

३ मैं ईश्वर का धन्य मानता हूं जिस की सेवा मैं अपने पितरों की रीति पर शुद्ध मन से करता हूं कि रात दिन मुझे मेरी प्रार्थनाओं में तेरे विषय में सेव निरन्तर चेत रहता है । ४ और तेरे आंसुओं को स्मरण करके मैं तुझे देखने की लालसा करता हूं जिस्तें आनन्द से

५ परिपूर्ण होऊं। क्योंकि उस निष्कपट
बिश्वास को मुझे स्मरण पहुंचा है जो
तुझ में है जो पहिले तेरी नानी लोईस
में और तेरी माता उनीकी में बसता
था और मुझे निश्चय हुआ है कि तुझ
में भी बसता है॥

६ इस कारण से मैं तुझे चेत दिलाता
हूं कि ईश्वर के बरदान को जो मेरे
हाथों के रखने के द्वारा से तुझ में है जगा
७ दे। क्योंकि ईश्वर ने हमें कादराई का
नहीं परन्तु सामर्थ्य और प्रेम और प्रबोध
८ का आत्मा दिया है। इस लिये तू न
हमारे प्रभु की साक्षी से और न मुझ से
जो उस का बंधुआ हूं लज्जित हो
परन्तु सुसमाचार के लिये मेरे संग ईश्वर
की शक्ति की सहायता से दुःख उठा.
९ जिस ने हमें बचाया और उस पवित्र
बुलाहट से बुलाया जो हमारे कर्म्मों के
अनुसार नहीं परन्तु उसी की इच्छा और
उस अनुग्रह के अनुसार थी जो खीष्ट
यीशु में सनातन से हमें दिया गया.
१० परन्तु अभी हमारे त्राणकर्त्ता यीशु खीष्ट
के प्रकाश के द्वारा प्रगट किया गया है
जिस ने मृत्यु का क्षय किया परन्तु
जीवन और अमरता को उस सुसमाचार
११ के द्वारा से प्रकाशित किया. जिस के
लिये मैं प्रचारक और प्रेरित और अन्य-
देशियों का उपदेशक ठहराया गया।
१२ इस कारण से मैं इन दुःखों को भी
भोगता हूं परन्तु मैं नहीं लजाता हूं
क्योंकि मैं उसे जानता हूं जिस का
मैं ने बिश्वास किया है और मुझे
निश्चय हुआ है कि वह उस दिन के
लिये मेरी थाती की रक्षा करने का
१३ सामर्थ्य रखता है। जो बातें तू ने मुझ
से सुनीं सोई बिश्वास और प्रेम से जो
खीष्ट यीशु से होते हैं तेरे लिये खरी
१४ बातों का नमूना होवें। पवित्र आत्मा
के द्वारा जो हम में बसता है इस अच्छी
थाती की रक्षा कर॥

१५ तू यही जानता है कि वे सब जो
आशिया में हैं जिन में फूगोल और
हर्मोगिनिस हैं मुझ से फिर गये।
१६ उनेसिफर के घराने पर प्रभु दया करे
क्योंकि उस ने बहुत बार मेरे जीव को
ठंढा किया और मेरी जंजीर से नहीं
१७ लजाया. परन्तु जब रोम में था तब बड़े
१८ यत्न से मुझे ढूंढ़ा और पाया। प्रभु उस
को यह देवे कि उस दिन में उस पर
प्रभु से दया किई जाय. इफिस में भी
उस ने कितनी सेवकाई किई सो तू
बहुत अच्छी रीति से जानता है॥

दूसरा पर्ब्ब।

१ सो हे मेरे पुत्र तू उस अनुग्रह से
जो खीष्ट यीशु में है बलवन्त हो। और
२ जो बातें तू ने बहुत साक्षियों के आगे
मुझ से सुनीं उन्हें बिश्वासयोग्य मनुष्यों
को सौंप दे जो दूसरों को भी सिखाने
३ के योग्य होवें। सो तू यीशु खीष्ट के
अच्छे योद्धा की नाईं दुःख सह ले।
४ जो कोई युद्ध करता है सो अपने को
जीविका के ब्योपारों में नहीं उलझाता
है इस लिये कि अपने भरती करनेहारे
५ को प्रसन्न करे। और यदि कोई मल्लयुद्ध
भी करे जो वह बिधि के अनुसार
मल्लयुद्ध न करे तो उसे मुकुट नहीं दिया
६ जाता है। उचित है कि पहिले वह
गृहस्थ जो परिश्रम करता है फलों का
७ अंश पावे। जो मैं कहता हूं उसे बूझ
ले क्योंकि प्रभु तुझे सब बातों में ज्ञान
देगा॥

८ स्मरण कर कि यीशु खीष्ट जो दाऊद
के बंश से था मेरे सुसमाचार के
अनुसार मृतकों में से जी उठा है।
९ उस सुसमाचार के लिये मैं कुकर्म्मी की
नाईं बन्धों लों दुःख उठाता हूं कि

बांधा भी गया हूं परन्तु ईश्वर का
१० बचन बंधा नहीं है । मैं इस लिये चुने
हुए लोगों के कारण सब बातों में
धीरज धरे रहता हूं कि अनन्त महिमा
सहित वह त्राण जो खीष्ट यीशु में है
११ उन्हें भी मिले । यह बचन बिश्वास-
योग्य है कि जो हम उस के संग मूए
१२ तो उस के संग जीयेंगे भी । जो हम
धीरज धरे रहें तो उस के संग राज्य
भी करेंगे . जो हम उस से मुकर जायें
तो वह भी हम से मुकर जायगा ।
१३ जो हम अबिश्वासी होयें वह बिश्वास-
योग्य रहता है वह अपने को आप
नहीं नकार सकता है ॥

१४ इन बातों का उन्हें स्मरण करवा
और प्रभु के आगे दृढ़ आज्ञा दे कि
वे शब्दों के झगड़े न किया करें जिन
से कुछ लाभ नहीं होता पर सुननेहारे
१५ बहकाये जाते हैं । अपने तईं ईश्वर
के आगे ग्रहणयोग्य और ऐसा कार्य्यकारी
जो लज्जित न होय और सत्य के बचन
का यथार्थ बिभाग करवैया ठहराने
१६ का यत्न कर । परन्तु अशुद्ध बकवादों
से बचा रह क्योंकि ऐसे बकवादी अधिक
१७ अभक्ति में बढ़ते जायेंगे । और उन का
बचन सड़े घाव की नाईं फैलता
१८ जायगा । उन्हों में हुमिनई और फिलीत
हैं जो सत्य के बिषय में भटक गये हैं
और कहते हैं कि पुनरुत्थान हो चुका
है और कितनों के बिश्वास को उलट
१९ देते हैं । तौभी ईश्वर की दृढ़ नेव
बनी रहती है जिस पर यह छाप है
कि प्रभु उन्हें जो उस के हैं जानता है
और यह कि हर एक जन जो खीष्ट का
नाम लेता है कुकर्म्म से अलग रहे ।
२० बड़े घर में केवल सोने और चांदी के
बर्त्तन नहीं परन्तु काठ और मिट्टी के
बर्त्तन भी हैं और कोई कोई आदर के
कोई कोई अनादर के हैं । सो यदि २१
कोई अपने को इन से शुद्ध करे तो
वह आदर का बर्त्तन होगा जो पवित्र
किया गया है और स्वामी के बड़े काम
आता है और हर एक अच्छे कर्म्म के
लिये तैयार किया गया है । पर जवानी २२
की अभिलाषाओं से बचा रह परन्तु
धर्म्म औ बिश्वास औ प्रेम और जो
लोग शुद्ध मन से प्रभु की प्रार्थना करते
हैं उन्हों के संग मिलाप की चेष्टा कर ।
पर मूढ़ता और अविद्या के बिवादों २३
को अलग कर क्योंकि तू जानता है
कि उन से झगड़े उत्पन्न होते हैं । और २४
प्रभु के दास को उचित नहीं है कि
झगड़ा करे परन्तु सभों की ओर कोमल
और सिखाने में निपुण और सहनशील
होय . और बिरोधियों को नम्रता से २५
समझावे क्या जाने ईश्वर उन्हें पश्चा-
त्ताप दान करे कि वे सत्य को पहचानें .
और जिन्हें शैतान ने अपनी इच्छा २६
निमित्त बझाया था उस के फंद में से
सचेत होके निकलें ॥

तीसरा पर्व्व ।

१ पर यह जान ले कि पिछले दिनों
२ में कठिन समय आ पड़ेंगे । क्योंकि
मनुष्य आपस्वार्थी लोभी दंभी अभिमानी
निन्दक माता पिता की आज्ञा लंघन
३ करनेहारे कृतघ्नी अपवित्र . मयारहित
क्षमारहित दोष लगानेहारे असंयमी कठोर
४ मन के बैरी . बिश्वासघातक उतावले
घमंड से फूले हुए और ईश्वर से अधिक
सुखबिलास ही को प्रिय जाननेहारे
५ होंगे . जो भक्ति का रूप धारण करेंगे
परन्तु उस की शक्ति से मुकरेंगे . इन्हों
६ से परे रह । क्योंकि इन्हों में से वे हैं जो
घर घर घुसके उन ओछी स्त्रियों को
बश कर लेते हैं जो पापों से लदी हैं
और नाना प्रकार की अभिलाषाओं के

७ बझाये चलती हैं . जो सदा सीखती हैं परन्तु कभी सत्य के ज्ञान लों नहीं
८ पहुंच सकतीं हैं। जिस रीति से यान्नी और याम्ब्री ने मूसा का साम्हा किया उसी रीति से ये मनुष्य भी जिन के मन बिगड़े हैं और जो बिश्वास के बिषय में निकृष्ट
९ हैं सत्य का साम्हा करते हैं। परन्तु वे अधिक नहीं बढ़ेंगे क्योंकि जैसे उन दोनों की अज्ञानता सभों पर प्रगट हो गई वैसे इन लोगों की भी हो जायगी॥
१० परन्तु तू ने मेरा उपदेश औ आचरण औ मनसा औ बिश्वास औ धीरज औ
११ प्रेम औ स्थिरता . और मेरा अनेक बार सताया जाना औ दुःख उठाना अच्छी रीति से जानता है कि मुझ पर अन्तीखिया में और इकोनिया में और लुस्त्रा में कैसा बातें बीतीं मैं ने कैसे बड़े उपद्रव सहे पर प्रभु ने मुझे सभों से उबारा।
१२ और सब लोग जो ख्रीष्ट यीशु में भक्ताई से जन्म बिताने चाहते हैं सताये जायेंगे।
१३ परन्तु दुष्ट मनुष्य और बहकानेहारे धोखा देते हुए और धोखा खाते हुए अधिक बुरी दशा लों बढ़ते जायेंगे॥
१४ पर तू ने जिन बातों को सीखा और निश्चय जाना है उन में बना रह क्योंकि
१५ तू जानता है कि किस से सीखा . और कि बालकपन से धर्म्मपुस्तक तेरा जाना हुआ है जो बिश्वास के द्वारा जो ख्रीष्ट यीशु में है तुझे त्राण निमित्त बुद्धिमान
१६ कर सकता है। सारा धर्म्मपुस्तक ईश्वर की प्रेरणा से रचा गया और उपदेश के लिये औ समझाने के लिये औ सुधारने के लिये औ धर्म्म की शिक्षा के लिये
१७ फलदाई है . जिस्तें ईश्वर का जन सिद्ध अर्थात हर एक उत्तम कर्म्म के लिये सिद्ध किया हुआ होय॥

चौथा पर्ब्ब।

१ सो मैं ईश्वर के आगे और प्रभु यीशु ख्रीष्ट के आगे जो अपने प्रगट होने और अपने राज्य करने पर जीवतों और मृतकों का बिचार करेगा दृढ़ आज्ञा
२ देता हूं . बचन को प्रचार कर समय और असमय तत्पर रह सब प्रकार के धीरज और शिक्षा सहित समझा और
३ डांट और उपदेश कर। क्योंकि समय आवेगा जिस में लोग खरे उपदेश को न सहेंगे परन्तु अपनी ही अभिलाषाओं के अनुसार अपने लिये उपदेशकों का ढेर लगावेंगे क्योंकि उन के कान खुर-
४ खुरावेंगे . और वे सच्चाई से कान फेरेंगे पर कहानियों की ओर फिर जावेंगे।
५ परन्तु तू सब बातों में सचेत रह दुःख सह ले सुसमाचार प्रचारक का कार्य्य कर अपनी सेवकाई को सम्पूर्ण कर।
६ क्योंकि मैं अब भी ढाला जाता हूं और मेरे बिदा होने का समय आ पहुंचा
७ है। मैं अच्छी लड़ाई लड़ चुका हूं मैं ने अपनी दौड़ पूरी किई है मैं ने
८ बिश्वास को पालन किया है। अब तो मेरे लिये वह धर्म्म का मुकुट धरा है जिसे प्रभु जो धर्म्मी बिचारकर्त्ता है उस दिन मुझे देगा और केवल मुझे नहीं पर उन सभों को भी जिन्हों ने उस को प्रगट होना प्रिय जाना है॥
९ मेरे पास शीघ्र आने का यत्न कर।
१० क्योंकि दीमा ने इस संसार को प्रिय जानके मुझे छोड़ा है और थिसलोनिका को गया है क्रीस्की गलातिया को और
११ तीतस दलमातिया को गया है। केवल लूक मेरे साथ है . मार्क को लेके अपने संग ला क्योंकि वह सेवकाई के लिये
१२ मेरे बहुत काम आता है। परन्तु तुखिक को मैं ने इफिस को भेजा।
१३ उस लबादे को जो मैं त्रोआ में कार्प के यहां छोड़ आया और पुस्तकों को निज करके चर्म्मपत्रों को जब तू आवे

१४ साथ ले आ । सिकन्दर ठठेरे ने मुझ से बहुत बुराइयां किईं . प्रभु उस के कर्म्मों के अनुसार उस को फल देवे ।
१५ और तू भी उस से बचा रह क्योंकि उस ने हमारी बातों का बहुत ही बिरोध
१६ किया है । मेरे पहिली बेर उत्तर देने में कोई मेरे संग नहीं रहा परन्तु सभों ने मुझे छोड़ा . इस का उन पर दोष
१७ न लगाया जाय । परन्तु प्रभु मेरे निकट खड़ा हुआ और मुझे सामर्थ्य दिया जिस्तें मेरे द्वारा से उपदेश सम्पूर्ण सुनाया जाय और सब अन्यदेशी लोग सुनें और मैं सिंह के मुख से बचाया
१८ गया । और प्रभु मुझे हर एक बुरे कर्म्म से बचावेगा और अपने स्वर्गीय राज्य के लिये मेरी रक्षा करेगा . उस का गुणानुवाद सदा सर्व्वदा होय . आमीन ॥
१९ प्रिस्कीला और अकूला को और उनीसिफर के घराने को नमस्कार ।
२० इरास्त करिन्थ में रह गया और त्रोफिम रोगी था उसे मैं ने मिलीत में छोड़ा ।
२१ जाड़े के पहिले आने का यत्न कर . उबूल और पूदी और लीनस और क्लौदिया और सब भाई लोगों का तुझे नमस्कार ।
२२ प्रभु यीशु खीष्ट तेरे आत्मा के संग होय . अनुग्रह तुम्हों के संग होवे । आमीन ॥

तीतस को पावल प्रेरित की पत्री ।

पहिला पर्ब्ब ।

१ पावल जो ईश्वर का दास और ईश्वर के चुने हुए लोगों के बिश्वास के बिषय में और जो सत्य बचन भक्ति के समान है उस सत्य बचन के ज्ञान के बिषय में अनन्त जीवन की आशा
२ से यीशु खीष्ट का प्रेरित है . कि उस जीवन की प्रतिज्ञा ईश्वर ने जो झूठ बोल नहीं सकता है सनातन से किई .
३ परन्तु उपयुक्त समय में अपने बचन को उपदेश के द्वारा जो हमारे त्राणकर्त्ता ईश्वर की आज्ञा के अनुसार मुझे
४ सौंपा गया प्रगट किया . तीतस को जो साधारण बिश्वास के अनुसार मेरा सच्चा पुत्र है ईश्वर पिता और हमारे त्राणकर्त्ता प्रभु यीशु खीष्ट से अनुग्रह और दया और शांति मिले ॥
५ मैं ने इसी कारण तुझे क्रीती में छोड़ा कि जो बातें रह गईं तू उन्हें सुधारता जाय और नगर नगर प्राचीनों को नियुक्त करे जैसे मैं ने तुझे आज्ञा
६ दिई . कि यदि कोई निर्दोष और एक ही स्त्री का स्वामी होय और उस को बिश्वासी लड़के हों जिन्हें लुचपन का दोष नहीं है और जो निरंकुश नहीं हैं
७ तो वही नियुक्त किया जाय । क्योंकि उचित है कि मंडली का रखवाला जो ईश्वर का भंडारी सा है निर्दोष होय और न हठी न क्रोधी न मद्यपान में आसक्त न मरकहा न नीच कमाई
८ करनेहारा हो . परन्तु अतिथिसेवक औ भले का प्रेमी औ सुबुद्धि औ धर्म्मी औ पवित्र औ संयमी होय . और बिश्वास-
९ योग्य बचन को जो धर्म्मोपदेश के अनुसार है धरे रहे जिस्तें वह खरी शिक्षा से उपदेश करने का और बिबादियों को समझाने का भी सामर्थ्य रखे ॥
१० क्योंकि बहुतेरे निरंकुश बकवादी

और धोखा देनेहारे हैं निज करके ११ खतना किये हुए लोग . जिन का मुंह बन्द करना अवश्य है जो नीच कमाई के कारण अनुचित बातों का उपदेश करते हुए घरों के घराने बिगाड़ते १२ हैं । उन में से एक जन उन के निज की एक भविष्यद्वक्ता बोला क्रीतीय लोग सदा झूठे औ दुष्ट पशु औ निकम्मे १३ पेटपोसू हैं । यह साक्षी सत्य है इस हेतु से उन्हें कड़ाई से समझा दे जिस्तें १४ वे बिश्वास में निरखोट रहें . और यिहूदीय कहानियों में और उन मनुष्यों की आज्ञाओं में जो सत्य से फिर जाते १५ हैं मन न लगावें । शुद्ध लोगों के लिये सब कुछ शुद्ध है परन्तु अशुद्ध और अविश्वासी लोगों के लिये कुछ नहीं शुद्ध है परन्तु उन्हों का मन और विवेक १६ भी अशुद्ध हुआ है । वे ईश्वर को जानने का अंगीकार करते हैं परन्तु अपने कर्म्मों से उस से मुकर जाते हैं कि वे घिनौने और आज्ञा लंघन करनेहारे और हर एक अच्छे कर्म्म के लिये निकृष्ट हैं ॥

दूसरा पर्व्व ।

१ परन्तु तू वह बातें कहा कर जो २ खरे उपदेश के योग्य हैं । बूढ़ों से कह कि सचेत औ गंभीर औ संयमी होवें और बिश्वास औ प्रेम औ धीरज में ३ निरखोट रहें । वैसे ही बूढ़ियाओं से कह कि उन का आचरण पवित्र लोगों के ऐसा होय और न दोष लगानेवालियां न बहुत मद्यपान के बश में होवें पर अच्छी बातों की शिक्षा देनेवालियां . ४ इस लिये कि वे जवान स्त्रियों को सचेत करें कि वे अपने अपने स्वामी ५ औ लड़कों से प्रेम करनेवालियां . औ संयमी औ पतिव्रता औ घर में रहनेवाली औ भली होवें और अपने अपने स्वामी के अधीन रहें जिस्तें ईश्वर के बचन की निन्दा न किई जावे । वैसे ६ ही जवानों को संयमी रहने का उपदेश दे । और सब बातों में अपने तई अच्छे ७ कर्म्मों का दृष्टान्त दिखा और उपदेश में निर्बिकारता औ गंभीरता औ शुद्धता सहित . खरा औ निर्दोष बचन प्रचार ८ कर कि बिरोधी हमों पर कोई बुराई लगाने का गौं न पाके लज्जित होय ॥

९ दासों को उपदेश दे कि अपने अपने स्वामी के अधीन रहें और सब बातों में प्रसन्नता योग्य होवें और फिरके उत्तर न देवें . और न चोरी करें परन्तु १० सब प्रकार की अच्छी सचोटी दिखावें जिस्तें वे सब बातों में हमारे त्राणकर्त्ता ईश्वर के उपदेश की शोभा देवें । क्योंकि ईश्वर का त्राणकारी अनुग्रह ११ सब मनुष्यों पर प्रगट हुआ है . और १२ हमें शिक्षा देता है इस लिये कि हम अभक्ति से और सांसारिक अभिलाषाओं से मन फेरके इस जगत में संयम औ न्याय औ भक्ति से जन्म बितावें . और १३ अपनी सुखदाई आशा की और महा ईश्वर और अपने त्राणकर्त्ता यीशु ख्रीष्ट के ऐश्वर्य्य के प्रकाश की बाट जोहते रहें . जिस ने अपने तई हमारे लिये १४ दिया कि सब अधर्म्म से हमारा उद्धार करे और अपने लिये एक निज लोग को शुद्ध करे जो अच्छे कर्म्मों के उद्योगी होवें । यह बातें कहा कर और उपदेश १५ कर और दृढ़ आज्ञा करके समझा दे . कोई तुझे तुच्छ न जाने ॥

तीसरा पर्व्व ।

लोगों को स्मरण करवा कि वे प्रधानों १ और अधिकारियों के अधीन और आज्ञाकारी होवें और हर एक अच्छे कर्म्म के लिये तैयार रहें . और किसी की निन्दा २

न करें परन्तु मिलनसार औ मृदुभाव हों और सब मनुष्यों की ओर समस्त ३ प्रकार की नम्रता दिखावें । क्योंकि हम लोग भी आगे निर्बुद्धि और आज्ञालंघन करनेहारे थे और भरमाये जाते थे और नाना प्रकार के अभिलाष और सुख बिलास के दास बने रहते थे और बैर-भाव और डाह में समय बिताते थे और ४ घिनौने और आपस के बैरी थे । परन्तु जब हमारे त्राणकर्त्ता ईश्वर की कृपा और मनुष्यों पर उस की प्रीति प्रगट ५ हुई . तब धर्म्म के कार्य्यों से जो हम ने किये सो नहीं परन्तु अपनी दया के अनुसार नये जन्म के स्नान के द्वारा और पवित्र आत्मा से नये किये जाने के ६ द्वारा उस ने हमें बचाया . जिस आत्मा को उस ने हमारे त्राणकर्त्ता यीशु ख्रीष्ट के द्वारा हमों पर अधिकाई से उंडेला . ७ इस लिये कि हम उस के अनुग्रह से धर्म्मी ठहराये जाके अनन्त जीवन की आशा के अनुसार अधिकारी बन जावें । ८ यह बचन विश्वासयोग्य है और मैं चाहता हूं कि इन बातों के विषय में तू दृढ़ता से बोले इस लिये कि जिन लोगों ने ईश्वर का बिश्वास किया है सो अच्छे अच्छे कर्म्म किया करने के सोच में रहें . यही बातें उत्तम और मनुष्यों के लिये फलदाई हैं ।

परन्तु मूढ़ता के विवादों से और बंशावलियों से और बैर विरोध से और व्यवस्था के विषय में के झगड़ों से बचा रह क्योंकि वे निष्फल और व्यर्थ हैं । १० पाखंडी मनुष्य को एक बेर बरन दो ११ बेर चिताने के पीछे अलग कर । क्योंकि तू जानता है कि ऐसा मनुष्य भटकाया गया है और पाप करता है और अपने को आप दोषी ठहराता है । १२ जब मैं आर्त्तिमा अथवा तुखिक को तेरे पास भेजूं तब निकोपोलि में मेरे पास आने का यत्न कर क्योंकि मैं ने जाड़े का समय वहीं काटने को ठहराया है । १३ जीनस व्यवस्थापक को और अपल्लो को बड़े यत्न से आगे पहुंचा कि उन्हें किसी १४ वस्तु की घटी न होय । और हमारे लोग भी जिन जिन वस्तुओं का अवश्य प्रयोजन हो उन के लिये अच्छे अच्छे कार्य्य किया करने को सीखें कि वे १५ निष्फल न होवें । सब लोगों जो मेरे संग हैं तुझ से नमस्कार . जो लोग बिश्वास के कारण हमें प्यार करते हैं उन को नमस्कार . अनुग्रह तुम सभों के संग होवे । आमीन ॥

फिलीमोन को पावल प्रेरित की पत्री ।

---

१ पावल जो ख्रीष्ट यीशु के कारण बंधुआ है और भाई तिमोथिय प्यारे फिलीमोन को जो हमारा सहकर्म्मी २ भी है , और प्यारी आप्फिया को और हमारे संगी योद्धा आर्खिप को और आप ३ के घर में की मंडली को . आप लोगों को हमारे पिता ईश्वर, और प्रभु यीशु ख्रीष्ट से अनुग्रह और शांति मिले ।

४ मैं आप के प्रेम और बिश्वास का जो आप प्रभु यीशु पर और सब पवित्र लोगों से रखते हैं समाचार सुनके , ५ अपने ईश्वर का धन्य मानता हूं और

नित्य अपनी प्रार्थनाओं में आप को ६ स्मरण करता हूं . कि हम लोगों में जो समस्त भलाई खीष्ट यीशु के लिये होती है इस बात के ज्ञान से वह सहायता जो आप विश्वास से किया ७ करते हैं सुफल हो जाय । क्योंकि आप के प्रेम से हमें बहुत आनन्द और शांति मिलती है इस लिये कि हे भाई आप के द्वारा पवित्र लोगों के अन्तःकरण को सुख दिया गया है ॥

८ इस कारण जो बात सोहती है उस की यद्यपि आप को आज्ञा देने का मुझे खीष्ट में बहुत साहस है . ९ तौभी मैं प्रेम के कारण बरन बिन्ती ही करता हूं क्योंकि मैं ऐसा हूं मानो बूढ़ा पावल और अब यीशु खीष्ट के १० कारण बंधुआ भी हूं । मैं अपने पुत्र के लिये जिसे मैं ने बंधन में रहते हुए जन्माया है आप से बिन्ती करता हूं ११ अर्थात उनीसिम के . जो पहिले आप के कुछ काम का न था परन्तु अब आप १२ के और मेरे बड़े काम का है । उस को मैं ने लौटा दिया है और आप उस को मेरा अन्तःकरण सा जानके ग्रहण १३ कीजिये । उसे मैं अपने पास रखा चाहता था इस लिये कि सुसमाचार के बंधनों में वह आप के बदले मेरी १४ सेवा करे । परन्तु मैं ने आप की सम्मति बिना कुछ करने की इच्छा न किई जिस्ते आप की कृपा जैसे दबाव से न हो पर आप की इच्छा के अनुसार १५ होय । क्योंकि क्या जाने वह इसी के कारण कुछ दिन अलग हुआ कि सदा आप का हो जावे . पर अब तो दास १६ की नाईं नहीं परन्तु दास से बढ़के अर्थात प्यारा भाई होय निज करके मेरा पर कितना अधिक करके क्या शरीर में क्या प्रभु में आप ही का प्यारा । इस लिये १७ जो आप मुझे सम्भागी समझते हैं तो जैसे मुझ को तैसे उस को ग्रहण कीजिये । और जो उस से आप की १८ कुछ हानि हुई अथवा वह आप का कुछ धारता हो तो इस को मेरे नाम पर लिखिये । मुझ पावल ने अपने १९ हाथ से लिखा है मैं भर देऊंगा जिस्ते मुझे आप से यह कहना न पड़े कि अपने तईं भी मुझे देना आप को उचित है । हां हे भाई आप से प्रभु में २० मुझे आनन्द पहुंचे प्रभु में मेरे अन्तःकरण को सुख दीजिये । आप के २१ आज्ञाकारी होने का भरोसा रखके मैं ने आप के पास लिखा है क्योंकि जानता हूं कि जो मैं कहता हूं उस से भी आप अधिक करेंगे । और भी मेरे २२ लिये बासा तैयार कीजिये क्योंकि मुझे आशा है कि आप लोगों की प्रार्थनाओं के द्वारा मैं आप लोगों को दे दिया जाऊंगा ॥

इपाफ्रा जो खीष्ट यीशु के कारण २३ मेरा संगी बंधुआ है . और मार्क और २४ अरिस्तार्ख और दीमा और लूक जो मेरे सहकर्म्मी हैं इन्हों का आप को नमस्कार । हमारे प्रभु यीशु खीष्ट का अनुग्रह आप २५ लोगों के आत्मा के संग होय । आमीन ॥

इब्रियों को (पावल प्रेरित की) पत्री।

पहिला पर्ब्ब।

१ ईश्वर ने पूर्ब्बकाल में समय समय और नाना प्रकार से भविष्यद्वक्ताओं के २ द्वारा पितरों से बातें कर, इन पिछले दिनों में हमों से पुत्र के द्वारा बातें किईं जिसे उस ने सब वस्तुओं का अधिकारी ठहराया जिस के द्वारा उस ३ ने सारे जगत को सृजा भी, जो उस की महिमा का तेज और उस के तत्त्व की मुद्रा और अपनी शक्ति के वचन से सब वस्तुओं का संभालनेहारा होके अपने ही द्वारा से हमारे पापों का परिशोधन कर ऊंचे स्थानों में की महिमा ४ के दहिने हाथ जा बैठा, और जितने भर उस ने स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ नाम पाया है उतने भर उन से बड़ा हुआ॥

५ क्योंकि दूतों में से ईश्वर ने किस से कभी कहा तू मेरा पुत्र है मैं ने आज ही तुझे जन्माया है और फिर कि मैं उस का पिता होऊंगा और वह मेरा पुत्र ६ होगा। और जब वह फिर पहिलौठे को संसार में लावे वह कहता है ईश्वर के सब दूतगण उस को प्रणाम करें। ७ दूतों के विषय में वह कहता है जो अपने दूतों को पवन और अपने सेवकों ८ को आग की ज्वाला बनाता है। परन्तु पुत्र से कि हे ईश्वर तेरा सिंहासन सर्ब्बदा लों है तेरे राज्य का राजदंड ९ सीधाई का राजदंड है। तू ने धर्म्म को प्रिय जाना और कुकर्म्म से घिन्न किई इस कारण ईश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे तेरे संगियों से अधिक करके आनन्द १० के तेल से अभिषेक किया। और यह कि हे प्रभु आदि में तू ने पृथिवी की नेव डाली और स्वर्ग तेरे हाथों के कार्य्य हैं। ११ वे नाश होंगे परन्तु तू बना रहता है और वस्त्र की नाईं वे सब १२ पुराने हो जायेंगे। और तू उन्हें चद्दर की नाईं लपेटेगा और वे बदल जायेंगे परन्तु तू एकसां रहता है और तेरे बरस नहीं घटेंगे। १३ और दूतों में से उस ने किस से कभी कहा है जब लों मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की पीढ़ी न बनाऊं तब लों तू मेरी दहिनी ओर १४ बैठ। क्या वे सब सेवा करनेहारे आत्मा नहीं हैं जो त्राण पानेवाले लोगों के निमित्त सेवकाई के लिये भेजे जाते हैं॥

दूसरा पर्ब्ब।

१ इस कारण अवश्य है कि हम लोग उन बातों पर जो हम ने सुनी हैं बहुत अधिक करके मन लगावें ऐसा न हो २ कि भूल जावें। क्योंकि यदि वह वचन जो दूतों के द्वारा से कहा गया दृढ़ हुआ और हर एक अपराध और आज्ञा-३ लंघन का यथार्थ प्रतिफल मिला, तो हम लोग ऐसे बड़े त्राण से निश्चिन्त रहके क्योंकर बचेंगे अर्थात इस त्राण से जो प्रभु के द्वारा प्रचारित होने लगा और हमों के पास सुननेहारों से दृढ़ ४ किया गया, जिन के संग ईश्वर भी चिन्हों और अद्भुत कामों से भी और नाना प्रकार के आश्चर्य्य कर्म्मों से और अपनी इच्छा के अनुसार पवित्र आत्मा के दानों के बांटने से साक्षी देता था॥

५ क्योंकि उस ने इस होनेहार जगत को जिस के विषय में हम बोलते हैं ६ दूतों के अधीन नहीं किया। परन्तु किसी ने कहीं साक्षी दिई कि मनुष्य क्या है कि तू उस की सुध लेता है अथवा मनुष्य का पुत्र क्या है कि तू

७ उस पर दृष्टि करता है । तू ने उस को कुछ थोड़ा सा दूतों से छोटा किया तू ने उसे महिमा और आदर का मुकुट पहिनाया और उस को अपने हाथों के कार्य्यों पर प्रधान किया तू ने सब कुछ उस के चरणों के नीचे अधीन किया ।
८ सब कुछ उस के अधीन करने से उस ने कुछ भी रख न छोड़ा जो उस के अधीन नहीं हुआ . तौभी हम अब लों नहीं देखते हैं कि सब कुछ उस के अधीन
९ किया गया है । परन्तु हम यह देखते हैं कि उस को जो कुछ थोड़ा सा दूतों से छोटा किया गया था अर्थात यीशु को मृत्यु भोगने के कारण महिमा और आदर का मुकुट पहिनाया गया है इस लिये कि वह ईश्वर के अनुग्रह से सब के लिये मृत्यु का स्वाद चीखे ॥
१० क्योंकि जिस के कारण सब कुछ है और जिस के द्वारा सब कुछ है उस को यह योग्य था कि बहुत पुत्रों को महिमा लों पहुंचाने में उन के त्राण के कर्त्ता को दुःख भोगने के द्वारा
११ सिद्ध करे । क्योंकि पवित्र करनेहारा और वे भी जो पवित्र किये जाते हैं सब एक ही से हैं और इस कारण से वह उन्हें भाई कहने से नहीं लजाता
१२ है । वह कहता है मैं तेरा नाम अपने भाइयों को सुनाऊंगा सभा के बीच में
१३ मैं तेरा भजन गाऊंगा । और फिर कि मैं उस पर भरोसा रखूंगा और फिर कि देख मैं और लड़के जो ईश्वर ने मुझे
१४ दिये । इस लिये जब कि लड़के मांस और लोहू के भागी हुए हैं वह आप भी वैसे ही इन का भागी हुआ इस लिये कि मृत्यु के द्वारा उस को जिसे मृत्यु का सामर्थ्य था अर्थात शैतान
१५ को नाश करे ॥ और जितने लोग मृत्यु के भय से जीवन भर दासत्व में फंसे हुए थे उन्हें छुड़ावे । क्योंकि वह तो
१६ दूतों को नहीं थांभता है परन्तु इब्राहीम के वंश को थांभता है । इस कारण
१७ उस को अवश्य था कि सब बातों में भाइयों के समान हो जावे जिस्तें वह उन बातों में जो ईश्वर से सम्बन्ध रखती हैं दयालु और विश्वासयोग्य महायाजक बने कि लोगों के पापों के
१८ लिये प्रायश्चित्त करे । क्योंकि जिस जिस बात में उस ने परीक्षा में पड़के दुःख पाया है उस उस बात में वह उन की जिन की परीक्षा किई जाती है सहायता कर सकता है ॥

तीसरा पर्व्व ।

१ इस कारण हे पवित्र भाइयो जो स्वर्गीय बुलाहट में सम्भागी हो हमारे अंगीकार किये हुए मत के प्रेरित औ
२ महायाजक खीष्ट यीशु को देख लेओ . जो अपने ठहरानेहारे के विश्वासयोग्य है जैसा मूसा भी उस के सारे घर में
३ विश्वासयोग्य था । क्योंकि यह तो उतने भर मूसा से अधिक बड़ाई के योग्य समझा गया है जितने भर घर के आदर से घर के बनानेहारे का आदर
४ अधिक होता है । क्योंकि हर एक घर किसी का तो बनाया हुआ है परन्तु जिस ने सब कुछ बनाया सो ईश्वर है ।
५ और मूसा तो जो बातें कही जाने पर थीं उन की साक्षी के लिये सेवक की नाईं उस के सारे घर में विश्वासयोग्य
६ था । परन्तु खीष्ट पुत्र की नाईं उस के घर का अध्यक्ष होकर विश्वासयोग्य है और हम लोग यदि साहस को और आशा की बड़ाई को अन्त लों दृढ़ थांभे रहें तो उस के घर हैं ॥
७ इस लिये जैसे पवित्र आत्मा कहता है कि आज जो तुम उस का शब्द सुनो .
८ तो अपने मन कठोर मत करो जैसे खिझाव

में और परीक्षा के दिन जंगल में हुआ . ९ जहां तुम्हारे पितरों ने मेरी परीक्षा लिई और मुझे जांचा और चालीस बरस मेरे १० कामों को देखा . इस कारण मैं उस समय के लोगों से उदास हुआ और बोला उन के मन सदा भटकते हैं और उन्हों ने मेरे मार्गों को नहीं जाना है . ११ सो मैं ने क्रोध कर किरिया खाई कि वे १२ मेरे बिश्राम में प्रवेश न करेंगे . तैसे हे भाइयो चौकस रहो कि जीवते ईश्वर को त्यागने में अविश्वास का बुरा मन १३ तुम्हों में से किसी में न ठहरे । परन्तु जब लों आज कहावता है प्रतिदिन एक दूसरे को समझाओ ऐसा न हो कि तुम में से कोई जन पाप के छल से कठोर १४ हो जाय । क्योंकि हम जो भरोसे के आरंभ को अन्त लों दृढ़ थांभे रहें तब १५ तो ख्रीष्ट में सम्भागी हुए हैं . जैसे उस वाक्य में है कि आज जो तुम उस का शब्द सुनो तो अपने मन कठोर मत १६ करो जैसे चिढ़ाव में हुआ । क्योंकि किन लोगों ने सुनके चिढ़ाया . क्या उन सब लोगों ने नहीं जो मूसा के द्वारा मिसर १७ से निकले । और वह किन लोगों से चालीस बरस उदास हुआ . क्या उन लोगों से नहीं जिन्हों ने पाप किया जिन की १८ लोथें जंगल में गिरीं । और किन लोगों से उस ने किरिया खाई कि तुम मेरे बिश्राम में प्रवेश न करोगे केवल आज्ञा- १९ लंघन करनेहारों से । सो हम देखते हैं कि वे अविश्वास के कारण प्रवेश नहीं कर सके ॥

चौथा पर्व्व ।

१ इस लिये हमों को डरना चाहिये न हो कि यद्यपि ईश्वर के बिश्राम में प्रवेश करने की प्रतिज्ञा रह गई है तौभी तुम्हों में से कोई जन ऐसा देख २ पड़े कि उस में नहीं पहुंचा है । क्योंकि जैसे उन्हों को तैसे हमों को भी सुसमाचार सुनाया गया है परन्तु समाचार के वचन से जो सुननेहारों के बिश्वास से नहीं मिलाया गया कुछ लाभ ३ न हुआ । क्योंकि हम लोग जिन्हों ने बिश्वास किया है बिश्राम में प्रवेश करते हैं . उस के विषय में यद्यपि सब के कार्य्य जगत की उत्पत्ति से बन चुके थे तौभी उस ने कहा है सो मैं ने क्रोध कर किरिया खाई कि वे मेरे ४ बिश्राम में प्रवेश न करेंगे । क्योंकि सातवें दिन के विषय में उस ने कहीं यूं कहा है और ईश्वर ने सातवें दिन अपने सब कार्य्यों से बिश्राम किया । ५ तौभी इस ठौर फिर कहा है वे मेरे ६ बिश्राम में प्रवेश न करेंगे । सो जब कि कितनों को उस में प्रवेश करना रह गया है और जिन्हों को उस का सुसमाचार पहिले सुनाया गया उन्हों ने आज्ञालंघन के कारण प्रवेश न किया . ७ और फिर वह आज कहके किसी दिन का ठिकाना देके इतने दिनों के पीछे दाऊद के द्वारा बोलता है जैसे कहा गया है आज जो तुम उस का शब्द सुनो तो अपने मन कठोर मत ८ करो . परन्तु जो यिहोशूआ ने उन्हें बिश्राम दिया होता तो ईश्वर पीछे ९ दूसरे दिन की बात न करता . तो जाने कि ईश्वर के लोगों के लिये बिश्रामवार का एक बिश्राम रह गया १० है । क्योंकि जिस ने उस के बिश्राम में प्रवेश किया है जैसे ईश्वर ने अपने ही कार्य्यों से तैसे उस ने भी अपने ११ कार्य्यों से बिश्राम किया है । सो हम लोग उस बिश्राम में प्रवेश करने का यत्न करें ऐसा न हो कि कोई जन आज्ञालंघन के उसी दृष्टान्त के समान १२ पतित होय । क्योंकि ईश्वर का वचन

जीवता औ प्रबल और हर एक दोधारे खड्ग से भी चोखा है और वारपार छेदनेहारा है यहां लों कि जीव और आत्मा को और गांठ गांठ औ गूदे गूदे को अलग अलग करे और हृदय की चिन्ताओं और भावनाओं का
१३ बिचार करनेहारा है। और कोई सृजी हुई वस्तु उस के आगे गुप्त नहीं है परन्तु जिस से हमें काम है उस के नेत्रों के आगे सब कुछ नंगा और खुला हुआ है।
१४ सो जब कि हमारा एक बड़ा महायाजक है जो स्वर्ग होके गया है अर्थात ईश्वर का पुत्र यीशु आओ हम अपने अंगीकार किये हुए मत को धरे
१५ रहें। क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं है जो हमारी दुर्ब्बलताओं के दुःख को बूझ न सके परन्तु बिना पाप वह हमारे समान सब बातों में
१६ परीक्षित हुआ है। इस लिये हम लोग अनुग्रह के सिंहासन के पास साहस से आवें कि दया हम पर किई जाय और हम समय योग्य सहायता के लिये अनुग्रह पावें।

पांचवां पर्व्व।

१ क्योंकि हर एक महायाजक मनुष्यों में से लिया जाके मनुष्यों के लिये उन बातों के विषय में जो ईश्वर से सम्बन्ध रखती हैं ठहराया जाता है कि चढ़ावों को और पापों के निमित्त
२ बलिदानों को चढ़ावे। और वह अज्ञानों और भूलनेहारों की ओर दयाशील हो सकता है क्योंकि वह आप भी दुर्ब्बलता
३ से घेरा हुआ है। और इस के कारण उसे अवश्य है कि जैसे लोगों के लिये वैसे अपने लिये भी पापों के निमित्त
४ चढ़ाया करे। और यह आदर कोई अपने लिये नहीं लेता है परन्तु जो हारोन की नाईं ईश्वर से बुलाया
५ जाता है सो लेता है। वैसे ही खीष्ट ने भी महायाजक बनने को अपनी बड़ाई न किई परन्तु जो उस से बोला तू मेरा पुत्र है मैं ने आज ही तुझे जन्माया है उसी ने उस की बड़ाई
६ किई। जैसे वह दूसरे ठौर में भी कहता है तू मलकीसिदक की पदवी
७ पर सदा लों याजक है। उस ने अपने शरीर के दिनों में ऊंचे शब्द से पुकार पुकारके औ रो रोके उस से जो उसे मृत्यु से बचा सकता था बिन्ती और निवेदन किये और उस भय के निमित्त
८ सुना गया। और यद्यपि पुत्र था तौभी जिन दुःखों को भोगा उन से आज्ञा
९ मानना सीखा। और सिद्ध बनके उन सभों के लिये जो उस के आज्ञाकारी होते हैं अनन्त त्राण का कर्त्ता हुआ।
१० और ईश्वर से मलकीसिदक की पदवी पर का महायाजक कहा गया॥
११ इस पुरुष के विषय में हमें बहुत बचन कहना है जिस का अर्थ बताना भी कठिन है क्योंकि तुम सुनने में
१२ आलसी हुए हो। क्योंकि यद्यपि इतने समय के बीतने से तुम्हें उचित था कि शिक्षक होते तौभी तुम्हों को फिर आवश्यक है कि कोई तुम्हें सिखावे कि ईश्वर की बाणियों की आदिशिक्षा क्या है और ऐसे हुए हो कि तुम्हें अन्न का नहीं परन्तु दूध का प्रयोजन है।
१३ क्योंकि जो कोई दूध ही पीता है उस को धर्म्म के बचन का परिचय नहीं है
१४ क्योंकि बालक है। परन्तु अन्न उन के लिये है जो सयाने हुए हैं जिन के ज्ञानेन्द्रिय अभ्यास के कारण भले औ बुरे के बिचार के लिये साधे हुए हैं॥

छठवां पर्व्व।

१ इस कारण खीष्ट के आदि बचन

को छोड़के हम सिद्धता की ओर बढ़ते २ जावें . और यह नहीं कि मृतवत कर्म्मों से पश्चात्ताप करने को और ईश्वर पर बिश्वास करने को और बपतिसमों के उपदेश की और हाथ रखने को और मृतकों के जी उठने को और अनन्त ३ दंड की नेव फिरके डालें । हां जो ईश्वर यूं करने देवे तो हम यही करेंगे । ४ क्योंकि जिन्हों ने एक बेर ज्योति पाई और स्वर्गीय दान का स्वाद चीखा और ५ पवित्र आत्मा के भागी हुए . और ईश्वर के भले बचन का औ होनेहार ६ जगत की शक्ति का स्वाद चीखा . और पतित हुए हैं उन लोगों को पश्चात्ताप के निमित्त फिरके नये करना अन्होना है क्योंकि वे ईश्वर के पुत्र को अपने लिये फिर क्रूश पर चढ़ाते और प्रगट ७ में उस पर कलंक लगाते हैं । क्योंकि जिस भूमि ने वह बर्षा जो उस पर बारंबार पड़ती है पिई है और जिन लोगों के कारण वह जोती बोई जाती है उन लोगों के योग्य सागपात उपजाती है सो ईश्वर से आशीष पाती है । ८ परन्तु जो वह कांटे और ऊंटकटारे उपजाती है तो निकृष्ट है और स्रापित होने के निकट है जिस का अन्त यह ९ है कि जलाई जाय । परन्तु हे प्यारो यद्यपि हम यूं बोलते हैं तौभी तुम्हारे बिषय में हमें अच्छी ही बातों और त्राण संयुक्त बातों का भरोसा है । १० क्योंकि ईश्वर अन्यायी नहीं है कि तुम्हारे कार्य्य को और उस के नाम पर जो प्रेम तुम ने दिखाया उस प्रेम के परिश्रम को भूल जावे कि तुम ने पवित्र लोगों की सेवा किई और करते हो । ११ परन्तु हम चाहते हैं कि तुम्हों में से हर एक जन अन्त लों आशा के निश्चय १२ के लिये वही यत्न दिखावा करे . कि तुम आलसी नहीं परन्तु जो लोग बिश्वास और धीरज के द्वारा प्रतिज्ञाओं के अधिकारी होते हैं उन्हीं के अनुगामी बनो ॥

१३ क्योंकि ईश्वर ने इब्राहीम को प्रतिज्ञा देके जब कि अपने से किसी बड़े की किरिया नहीं खा सकता था अपनी ही किरिया खाके कहा . १४ निश्चय में तुझे बहुत आशीष देऊंगा और तुझे बहुत बढ़ाऊंगा । १५ और इस रीति से इब्राहीम ने धीरज धरके प्रतिज्ञा प्राप्त किई । १६ क्योंकि मनुष्य तो अपने से बड़े की किरिया खाते हैं और किरिया दृढ़ता के लिये उन के समस्त बिबाद का अन्त है । १७ इस लिये ईश्वर प्रतिज्ञा के अधिकारियों पर अपने मत की अटलता को बहुत ही प्रगट करने की इच्छा कर किरिया के द्वारा मध्यस्थ हुआ . १८ कि दो अटल बिषयों के द्वारा जिन में ईश्वर का झूठ बोलना अन्होना है दृढ़ शांति हम लोगों को मिले जो साम्हने रक्खी हुई आशा धर लेने को भाग आये हैं । १९ वह आशा हमारे लिये प्राण का लंगर सा होती है जो अटल औ दृढ़ है और परदे के भीतर लों प्रवेश करता है . २० जहां हमारे लिये अगुआ होके यीशु ने प्रवेश किया है जो मलकीसिदक की पदवी पर सदा लों महायाजक बना है ॥

सातवां पर्ब्ब ।

१ यह मलकीसिदक शालीम का राजा और सर्व्वप्रधान ईश्वर का याजक जो इब्राहीम से जब वह राजाओं को मारने से लौटता था आ मिला और उस को २ आशीष दिई . जिस को इब्राहीम ने सब बस्तुओं में से दसवां अंश भी दिया जो पहिले अपने नाम के अर्थ से धर्म्म का राजा है और फिर शालीम का राजा

३ भी अर्थात शांति का राजा है . जिस का न पिता न माता न वंशावलि है जिस के न दिनों का आदि न जीवन का अन्त है परन्तु ईश्वर के पुत्र के समान किया गया है नित्य याजक बना रहता है ॥

४ फिर देखो यह कैसा बड़ा पुरुष था जिस को इब्राहीम कुलपति ने लूट में ५ से दसवां अंश भी दिया। लेवी के सन्तानों में से जो लोग याजकीय पद पाते हैं उन्हें तो व्यवस्था के अनुसार लोगों से अर्थात अपने भाइयों से यद्यपि वे इब्राहीम के वंश से जन्मे हैं दसवां अंश ६ लेने की आज्ञा होती है। परन्तु इस ने जो उन की वंशावलि में का नहीं है इब्राहीम से दसवां अंश लिया है और उस को जिसे प्रतिज्ञाएं मिलीं आशीष ७ दिई है। पर अखंडनीय बात है कि छोटे को बड़े से आशीष दिई जाती ८ है। और यहां मनुष्य जो मरते हैं दसवां अंश लेते हैं परन्तु वहां वह लेता है जिस के विषय में साक्षी दिई जाती है ९ कि वह जीता है। और यह भी कह सकते कि इब्राहीम के द्वारा लेवी से भी जो दसवां अंश लेनेहारा है दसवां अंश १० लिया गया है। क्योंकि जिस समय मलकीसिदक उस के पिता से आ मिला उस समय लेवी अपने पिता के देह में था ॥

११ सो यदि लेवीय याजकता के द्वारा जिस के संयोग से लोगों को व्यवस्था दिई गई थी सिद्धता हुई होती तो और क्या प्रयोजन था कि दूसरा याजक मलकीसिदक की पदवी पर खड़ा होय और हारोन की पदवी का न कहावे। १२ क्योंकि याजकता जो बदली जाती है तो अवश्य करके व्यवस्था की भी बदली १३ जाती है। जिस के विषय में यह बातें कही जातीं वो दूसरे कुल में का है जिस में से किसी मनुष्य ने वेदी की सेवा नहीं किई है। क्योंकि प्रत्यक्ष है १४ कि हमारा प्रभु यिहूदा के कुल से उदय हुआ है जिस से मूसा ने याजकता के विषय में कुछ नहीं कहा। और यह १५ बात और भी बहुत प्रगट इस से होती है कि मलकीसिदक के समान दूसरा याजक खड़ा है, जो शारीरिक आज्ञा १६ की व्यवस्था के अनुसार नहीं परन्तु अविनाशी जीवन की शक्ति के अनुसार बन गया है। क्योंकि ईश्वर साक्षी देता १७ है कि तू मलकीसिदक की पदवी पर सदा लों याजक है। सो अगली आज्ञा १८ की दुर्ब्बलता और निष्फलता के कारण उस का तो लोप होता है इस लिये कि व्यवस्था ने किसी बात को सिद्ध नहीं १९ किया। परन्तु एक उत्तम आशा का स्थापन होता है जिस के द्वारा हम ईश्वर के निकट पहुंचते हैं ॥

२० और वे लोग बिना किरिया याजक बन गये हैं परन्तु यह तो किरिया के अनुसार उस से बना है जो उस से कहता है परमेश्वर ने किरिया खाई है और नहीं पछताएगा तू मलकीसिदक की पदवी पर सदा लों याजक है। २१ सो जब कि यीशु किरिया बिना २२ याजक नहीं हुआ है, वह उतने भर २३ उत्तम नियम का जामिन हुआ है। और वे तो बहुत से याजक बन गये हैं इस कारण कि मृत्यु उन्हें रहने नहीं देती २४ है, परन्तु यह सदा लों रहता है इस कारण उस की याजकता अटल है। २५ इस लिये जो लोग उस के द्वारा ईश्वर के पास आते हैं वह उन का त्राण अत्यन्त लों कर सकता है क्योंकि वह उन के लिये बिन्ती करने को सदा जीता २६ है। क्योंकि ऐसा महायाजक हमारे योग्य

था जो पवित्र औ सूधा औ निर्म्मल औ पापियों से अलग और स्वर्गों से भी ऊंचा २७ किया हुआ है . जिसे प्रतिदिन प्रयोजन नहीं है कि प्रधान याजकों की नाईं पहिले अपने ही पापों के लिये तब लोगों के पापों के लिये बलि चढ़ावे क्योंकि इस को वह एक ही बेर कर २८ चुका कि अपने तईं चढ़ाया । क्योंकि व्यवस्था मनुष्यों को जिन्हें दुर्ब्बलता है प्रधान याजक ठहराती है परन्तु जो किरिया व्यवस्था के पीछे खाई गई उस की बात पुत्र को जो सर्ब्बदा सिद्ध किया गया है ठहराती है ॥

आठवां पर्ब्ब ।

१ जो बातें कही जाती हैं उन में सार बात यह है कि हमारा ऐसा महायाजक है कि स्वर्ग में महिमा के सिंहासन के दहिने हाथ जा बैठा . २ और पवित्र स्थान का और उस सच्चे तंबू का सेवक हुआ जिसे किसी मनुष्य ने नहीं परन्तु परमेश्वर ने खड़ा किया । ३ क्योंकि हर एक प्रधान याजक चढ़ावे और बलिदान चढ़ाने के लिये ठहराया जाता है इस कारण अवश्य है कि इसी के पास भी चढ़ाने के लिये कुछ ४ होय । फिर याजक तो हैं जो व्यवस्था के अनुसार चढ़ावे चढ़ाते हैं और स्वर्ग में की वस्तुओं के प्रतिरूप औ परछाईं की सेवा करते हैं जैसे मूसा को जब वह तंबू बनाने पर था आज्ञा दिई गई अर्थात ईश्वर ने कहा देख जो आकार तुझे पहाड़ पर दिखाया गया उस के ५ अनुसार सब कुछ बना । इस लिये जो वह पृथिवी पर होता तो याजक नहीं ६ होता । परन्तु अब जैसे वह और उत्तम नियम का मध्यस्थ है जो और उत्तम प्रतिज्ञाओं पर स्थापन किया गया है तैसी श्रेष्ठ सेवकाई भी उसे मिली है ॥

७ क्योंकि जो वह पहिला नियम निर्दोष होता तो दूसरे के लिये जगह न ढूंढ़ी जाती । ८ परन्तु वह उन पर दोष देके बोलता है कि परमेश्वर कहता है देखो वे दिन आते हैं कि मैं इस्रायेल के घराने के संग और यिहूदा के घराने के संग नया नियम स्थापन करूंगा । ९ जो नियम मैं ने उन के पितरों के संग उस दिन बांधा जिस दिन उन्हें मिसर देश में से निकाल लाने को उन का हाथ थांभा उस नियम के अनुसार नहीं क्योंकि वे मेरे नियम पर नहीं ठहरे और मैं ने उन की सुध न लिई परमेश्वर कहता है । १० परन्तु यही नियम है जो मैं उन दिनों के पीछे इस्रायेल के घराने के संग बांधूंगा परमेश्वर कहता है मैं अपनी व्यवस्था को उन के मन में डालूंगा और उसे उन के हृदय में लिखूंगा और मैं उन का ईश्वर होंगा और वे मेरे लोग होंगे । ११ और वे हर एक अपने पड़ोसी को और हर एक अपने भाई को यह कहके न सिखावेंगे कि परमेश्वर को पहचान क्योंकि उन में के छोटे से बड़े लों सब मुझे जानेंगे । १२ क्योंकि मैं उन के अधर्म्म के विषय में दया करूंगा और उन के पापों को और उन के कुकर्म्मों को फिर कभी स्मरण न करूंगा ॥

१३ नया नियम कहने से उस ने पहिला नियम पुराना ठहराया है पर जो पुराना और जीर्ण होता जाता है सो लोप होने के निकट है ॥

नवां पर्ब्ब ।

१ सो उस पहिले नियम के संग में भी सेवकाई की विधियां और सांसारिक पवित्र स्थान था । २ क्योंकि तंबू बनाया गया अगला तंबू जिस में दीवट और

मेज और रोटी की भेंट थी जो पवित्र ३ स्थान कहावता है । और दूसरे परदे के पीछे वह तंबू जो पवित्रों में से ४ पवित्र स्थान कहावता है . जिस में सोने की धूपदानी थी और नियम का सन्दूक जो चारों ओर सोने से मढ़ा हुआ था और उस में सोने की कलसी जिस में मन्ना था और हारोन की छड़ी जिस की कोंपलें निकलीं और नियम की दोनों ५ पटियाएं । और उस के ऊपर दोनों तेजस्वी किरूब थे जो दया के आसन को छाये थे . इन्हों के विषय में पृथक पृथक बात करने का अभी समय नहीं है ॥

६ यह सब वस्तु जो इस रीति से बनाई गई हैं तो अगले तंबू में याजक लोग नित्य प्रवेश कर सेवा किया करते ७ हैं । परन्तु दूसरे में केवल महायाजक बरस भर में एक बेर जाता है और लोहू बिना नहीं जाता है जिसे अपने लिये और लोगों की अज्ञानताओं के लिये ८ चढ़ाता है । इस से पवित्र आत्मा यही बताता है कि जब लों अगला तंबू स्थापित रहता तब लों पवित्र स्थान ९ का मार्ग प्रगट नहीं हुआ । और यह तो वर्तमान समय के लिये दृष्टान्त है जिस में चढ़ावे और बलिदान चढ़ाये जाते हैं जो सेवा करनेहारे के मन को १० सिद्ध नहीं कर सकते हैं । केवल खाने और पीने की वस्तुओं और नाना स्नानों और शरीर की विधियों के सम्बन्ध में यह बातें सुधर जाने के ११ समय लों ठहराई हुई हैं । परन्तु खीष्ट जब होनेहार उत्तम विषयों का महायाजक होके आया तब उस ने और भी बड़े और सिद्ध तंबू में से जो हाथ का बनाया हुआ नहीं अर्थात इस सृष्टि का १२ नहीं है . और बकरों और बछड़ों के लोहू के द्वारा नहीं परन्तु अपने ही लोहू के द्वारा से एक ही बेर पवित्र स्थान में प्रवेश किया और अनन्त उद्धार प्राप्त किया । क्योंकि यदि बैलों और १३ बकरों का लोहू और बछिया की राख जो अपवित्र लोगों पर छिड़की जाती शरीर की शुद्धता के लिये पवित्र करती है . तो कितना अधिक करके खीष्ट १४ का लोहू जिस ने सनातन आत्मा के द्वारा अपने तई ईश्वर के आगे निष्कलंक चढ़ाया तुम्हारे मन को मृतक कर्म्मों से शुद्ध करेगा कि तुम जीवते ईश्वर की सेवा करो ॥

और इसी के कारण वह नये नियम १५ का मध्यस्थ है जिस्तें पहिले नियम के सम्बन्धी अपराधों के उद्धार के लिये मृत्यु भोग किये जाने से बुलाये हुए लोग अनन्त अधिकार की प्रतिज्ञा को प्राप्त करें । क्योंकि जहां मरणोपरान्त १६ दान का नियम है तहां नियम के बांधनेहारे की मृत्यु का अनुमान अवश्य है । क्योंकि ऐसा नियम लोगों के मरने पर १७ दृढ़ होता है नहीं तो जब लों उस का बांधनेहारा जीता है तब लों नियम कभी काम नहीं आता है । इस लिये १८ वह पहिला नियम भी लोहू बिना नहीं स्थापन किया गया है । क्योंकि जब मूसा १९ व्यवस्था के अनुसार हर एक आज्ञा सब लोगों से कह चुका तब उस ने जल और लाल ऊन और एसोब के संग बछड़ों और बकरों का लोहू लेके पुस्तक ही पर और सब लोगों पर भी छिड़का . और कहा यह उस नियम का लोहू है २० जिसे ईश्वर ने तुम्हारे विषय में आज्ञा करके ठहराया है । और उस ने तंबू पर २१ भी और सेवा की सब सामग्री पर उसी रीति से लोहू छिड़का । और व्यवस्था २२ के अनुसार प्राय सब वस्तु लोहू के द्वारा

शुद्ध किई जाती हैं और बिना लोहू बहाये पापमोचन नहीं होता है ॥

२३ सो अवश्य था कि स्वर्ग में की बस्तुओं के प्रतिरूप इन्हों से शुद्ध किये जायें परन्तु स्वर्ग में की बस्तु आप ही इन्हों से उत्तम बलिदानों से शुद्ध किई जायें। २४ क्योंकि ख्रीष्ट ने हाथ के बनाये हुए पवित्र स्थान में जो सच्चे का दृष्टान्त है प्रवेश नहीं किया परन्तु स्वर्ग ही में प्रवेश किया कि हमारे लिये अब ईश्वर के सन्मुख दिखाई देवे . २५ पर इस लिये नहीं कि जैसा महायाजक बरस बरस दूसरे का लोहू लिये हुए पवित्र स्थान में प्रवेश करता है तैसा वह अपने को बार बार चढ़ावे . २६ नहीं तो जगत की उत्पत्ति से लेके उस को बहुत बेर दुःख भोगना पड़ता . परन्तु अब जगत के अन्त में वह एक बेर अपने ही बलिदान के द्वारा पाप को दूर करने के लिये प्रगट हुआ है। २७ और जैसे मनुष्यों के लिये एक बेर मरना और उस के पीछे बिचार ठहराया हुआ है . २८ वैसे ही ख्रीष्ट बहुतों के पापों को उठा लेने के लिये एक बेर चढ़ाया गया और जो लोग उस की बाट जोहते हैं उन को त्राण के लिये दूसरी बेर बिना पाप से दिखाई देगा ॥

दसवां पर्ब्ब ।

१ व्यवस्था में तो होनेहार उत्तम बिषयों की परछाईंमात्र है पर उन बिषयों का स्वरूप नहीं इस लिये वह बरस बरस एक ही प्रकार के बलिदानों के सदा चढ़ाये जाने से कभी उन्हें जो निकट आते हैं सिद्ध नहीं कर सकती है। २ नहीं तो क्या उन्हों का चढ़ाया जाना बन्द न हो जाता इस कारण कि सेवा करनेहारों को जो एक बेर शुद्ध किये गये थे फिर पापी होने का कुछ बोध न रहता। ३ पर उन्हों में बरस बरस पापों का स्मरण हुआ करता है। ४ क्योंकि अनहोना है कि बैलों और बकरों का लोहू पापों को दूर करे। ५ इस कारण ख्रीष्ट जगत में आते हुए कहता है तू ने बलिदान और चढ़ावे को न चाहा परन्तु मेरे लिये देह सिद्ध किया। ६ तू होमों से और पाप निमित्त के बलियों से प्रसन्न न हुआ। ७ तब मैं ने कहा देख मैं आता हूं धर्म्मपुस्तक में मेरे विषय में लिखा भी है जिस्तें हे ईश्वर तेरी इच्छा पूरी करूं। ८ ऊपर उस ने कहा है बलिदान और चढ़ावे को और होमों और पाप निमित्त के बलियों को तू ने न चाहा और न उन से प्रसन्न हुआ अर्थात उन से जो व्यवस्था के अनुसार चढ़ाये जाते हैं। ९ तब कहा है देख मैं, आता हूं जिस्तें हे ईश्वर तेरी इच्छा पूरी करूं . वह पहिले को उठा देता है इस लिये कि दूसरे को स्थापन करे। १० उसी इच्छा के अनुसार हम लोग यीशु ख्रीष्ट के देह के एक ही बेर चढ़ाये जाने के द्वारा पवित्र किये गये हैं ॥

११ और हर एक याजक खड़ा होके प्रतिदिन सेवकाई करता है और एक ही प्रकार के बलिदानों को जो पापों को कभी मिटा नहीं सकते हैं बारंबार चढ़ाता है। १२ परन्तु वह तो पापों के लिये एक ही बलिदान चढ़ाके ईश्वर के दहिने हाथ सदा बैठ गया . १३ और अब से जब लों उस के शत्रु उस के चरणों की पीढ़ी न बनाये जायें तब लों बाट जोहता रहता है। १४ क्योंकि एक ही चढ़ावे से उस ने उन्हें जो पवित्र किये जाते हैं सदा सिद्ध किया है ॥

१५ और पवित्र आत्मा भी हमें साक्षी देता है क्योंकि उस ने पहिले कहा

१६ था . यही नियम है जो मैं उन दिनों
के पीछे उन के संग बांधूंगा परमेश्वर
कहता है मैं अपनी व्यवस्था को उन
के हृदय में डालूंगा और उसे उन के
१७ मन में लिखूंगा . [तब पीछे कहा] मैं
उन के पापों को और उन के कुकर्म्मों
१८ को फिर कभी स्मरण न करूंगा। पर
जहां इन का मोचन हुआ तहां फिर
पापों के लिये चढ़ावा न रहा ॥

१९ सो हे भाइयो जब कि यीशु के
लोहू के द्वारा से हमें पवित्र स्थान में
प्रवेश करने को साहस मिलता है .
२० और हमारे लिये परदे में से अर्थात उस
के शरीर में से नया और जीवता मार्ग
है जो उस ने हमारे लिये स्थापन किया .
२१ और हमारा महायाजक है जो ईश्वर
२२ के घर का अध्यक्ष है . तो आओ बुरे
मन से शुद्ध होने को हृदय पर छिड़काव
किये हुए और देह शुद्ध जल से नहलाये
हुए हम लोग विश्वास के निश्चय के
२३ साथ सच्चे मन से निकट आवें . और
आशा के अंगीकार को दृढ़ कर थांभ
रखें क्योंकि जिस ने प्रतिज्ञा किई है
२४ वह विश्वासयोग्य है . और प्रेम औ
सुकर्म्मों में उस्काने के लिये एक दूसरे
२५ की चिन्ता किया करें . और जैसे कितनों
की रीति है तैसे आपस में एकट्ठे होना
न छोड़ें परन्तु एक दूसरे को समझावें .
और जितने भर उस दिन को निकट
आते देखो उतने अधिक करके यह
किया करो ॥

२६ क्योंकि जो हम सत्य का ज्ञान प्राप्त
करने के पीछे जान बूझके पाप किया
करें तो पापों के लिये फिर कोई बलि-
२७ दान नहीं . परन्तु दंड का भयंकर बाट
जोहना और विरोधियों को भक्षण करने-
२८ वाली आग की ज्वलन रह गया। जिस
ने मूसा की व्यवस्था को तुच्छ जाना है
कोई हो वह दो अथवा तीन साक्षियों
की साक्षी पर दया से वर्जित होके मर
जाता है। तो क्या समझते हो कितने २९
और भी भारी दंड के योग्य वह गिना
जायगा जिस ने ईश्वर के पुत्र को पांवों
तले रौंदा है और नियम के लोहू को
जिस से वह पवित्र किया गया था
अपवित्र जाना है और अनुग्रह के आत्मा
का अपमान किया है। क्योंकि हम ३०
उसे जानते हैं जिस ने कहा कि पलटा
लेना मेरा काम है परमेश्वर कहता है
मैं प्रतिफल देऊंगा और फिर कि परमे-
श्वर अपने लोगों का विचार करेगा।
जीवते ईश्वर के हाथों में पड़ना भयं- ३१
कर बात है ॥

परन्तु अगले दिनों को स्मरण करो ३२
जिन में तुम ज्योति पाके दुःखों के बड़े
युद्ध में स्थिर रहे , कुछ यह कि निन्दाओं ३३
और क्लेशों से तुम लीला के ऐसे बनाये
जाते थे कुछ यह कि जिन के इस रीति
से दिन कटते थे उन के संग तुम भागी
हुए। क्योंकि तुम मेरे बंधनों के दुःख ३४
में भी दुःखी हुए और यह जानके कि
स्वर्ग में हमारे लिये श्रेष्ठ और अक्षय
सम्पत्ति है तुम ने अपनी सम्पत्ति का
लूटा जाना आनन्द से ग्रहण किया। सो ३५
अपने साहस को जिस का बड़ा प्रति-
फल होता है मत त्याग देओ। क्योंकि ३६
तुम्हें स्थिरता का प्रयोजन है इस लिये
कि ईश्वर की इच्छा पूरी करके तुम
प्रतिज्ञा का फल पाओ। क्योंकि थोड़ी ३७
ऐसी बेर में वह जो आनेवाला है
आवेगा और विलम्ब न करेगा। विश्वास ३८
से धर्म्मी जन जीयेगा परन्तु जो वह हट
जाय तो मेरा मन उस से प्रसन्न नहीं।
पर हम लोग हट जानेवाले नहीं हैं जिस ३९
से विनाश होता परन्तु विश्वास करनेहारे
हैं जिस से आत्मा की रक्षा होती ॥

ग्यारहवां पर्ब्ब ।

१ विश्वास जिन बातों की आशा रखी जाती उन बातों का निश्चय और अनदेखी बातों का प्रमाण है ।

२ इसी के विषय में प्राचीन लोग ३ सुख्यात हुए । विश्वास से हम बूझते हैं कि सारा जगत ईश्वर के बचन से रचा गया यहां लों कि जो देखा जाता है सो उस से जो दिखाई देता है नहीं ४ बनाया गया है । विश्वास से हाबिल ने ईश्वर के आगे काइन से बड़ा बलिदान चढ़ाया और उस के द्वारा उस पर साक्षी दिई गई कि धर्म्मी जन है क्योंकि ईश्वर ने आप ही उस के चढ़ावों पर साक्षी दिई और उसी के द्वारा वह मूए पर भी अब लों बोलता है । ५ विश्वास से हनोक उठा लिया गया कि मृत्यु को न देखे और नहीं मिला क्योंकि ईश्वर ने उस को उठा लिया था क्योंकि उस पर साक्षी दिई गई है कि उठा लिये जाने के पहिले उस ने ईश्वर को ६ प्रसन्न किया था । परन्तु विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना असाध्य है क्योंकि अवश्य है कि जो ईश्वर के पास आवे सो विश्वास करे कि वह है और कि वह उन्हें जो उसे ढूंढ़ते हैं प्रतिफल ७ देनेहारा है । विश्वास से नूह को बातें उस समय में देख नहीं पड़ती थीं उन के विषय में ईश्वर से चिताया जाके डर गया और अपने घराने की रक्षा के लिये जहाज बनाया और उस के द्वारा से उस ने संसार को दोषी ठहराया और उस धर्म्म का अधिकारी हुआ जो विश्वास से होता है ।

८ विश्वास से इब्राहीम जब बुलाया गया तब आज्ञाकारी होके निकला कि उस स्थान को जाय जिसे वह अधिकार के लिये पाने पर था और मैं किधर जाता हूं यह न जानके निकल चला । ९ विश्वास से वह प्रतिज्ञा के देश में जैसे पराये देश में बिदेशी रहा और इसहाक और याकूब के साथ जो उसी प्रतिज्ञा के संगी अधिकारी थे तम्बूओं में बास किया । १० क्योंकि वह उस नगर की बाट जोहता था जिस की नेवें हैं जिस का रचनेहारा और बनानेहारा ईश्वर है । ११ विश्वास से सारः ने भी गर्भ धारण करने की शक्ति पाई और बयस के व्यतीत होने पर भी बालक जनी क्योंकि उस ने उस को जिस ने प्रतिज्ञा किई थी विश्वासयोग्य समझा । १२ इस कारण एक ही जन से जो मृतक सा भी हो गया था लोग इतने जन्मे जितने आकाश के तारे हैं और जैसे समुद्र के तीर पर का बालू जो अगणित है । १३ ये सब विश्वास ही में मरे कि उन्हों ने प्रतिज्ञाओं का फल नहीं पाया परन्तु उसे दूर से देखा और निश्चय कर लिया और प्रणाम किया और मान लिया कि हम पृथिवी पर ऊपरी और परदेशी हैं । १४ क्योंकि जो लोग ऐसी बातें कहते हैं सो प्रगट करते हैं कि देश ढूंढ़ते हैं । १५ और जो वे उस देश को जिस से निकल आये थे स्मरण करते तो उन्हें लौट जाने का अवसर मिलता । १६ पर अब वे और उत्तम अर्थात स्वर्गीय देश पहुंचने की चेष्टा करते हैं इस लिये ईश्वर उन का ईश्वर कहलाने में उन से लजाता नहीं क्योंकि उस ने उन के लिये नगर तैयार किया है । १७ विश्वास से इब्राहीम ने जब उस की परीक्षा लिई गई तब इसहाक को चढ़ाया । १८ जिस ने प्रतिज्ञाओं को पाया था और जिस को कहा गया था कि इसहाक से जो हो सो तेरा वंश कहावेगा सोई अपने एकलौते को

१९ बचाता था। क्योंकि उस ने विचार किया कि ईश्वर मृतकों में से भी उठा सकता है जिन में से उस ने दृष्टान्त में
२० उसे पाया भी। विश्वास से इसहाक ने याकूब और एसौ को आनेवाली बातों के विषय में आशीस दिई।
२१ विश्वास से याकूब ने जब वह मरने पर था यूसफ के दोनों पुत्रों में से एक एक को आशीस दिई और अपनी लाठी के सिरे पर उठंगके प्रणाम किया।
२२ विश्वास से यूसफ ने जब वह मरने पर था इस्रायेल के सन्तानों की यात्रा की चर्चा किया और अपनी हड्डियों के विषय में आज्ञा किई॥

२३ विश्वास से मूसा जब उत्पन्न हुआ तब उस के माता पिता ने उसे तीन मास छिपा रखा क्योंकि उन्हों ने देखा कि बालक सुन्दर है और वे राजा की
२४ आज्ञा से न डरे। विश्वास से मूसा जब सयाना हुआ तब फिरऊन की बेटी
२५ का पुत्र कहलाने से मुकर गया। क्योंकि उस ने पाप का अनित्य सुखभोग भोगना नहीं परन्तु ईश्वर के लोगों के संग
२६ दुःखित होना चुन लिया। और उस ने ख्रीष्ट के कारण निन्दित होना मिसर में की सम्पत्ति से बड़ा धन समझा क्योंकि उस की दृष्टि प्रतिफल की ओर लगी
२७ रही। विश्वास से वह मिसर को छोड़ गया और राजा के क्रोध से नहीं डरा क्योंकि वह जैसा अदृश्य पर दृष्टि करता
२८ हुआ दृढ़ रहा। विश्वास से उस ने निस्तार पर्व्व को और लोहू छिड़कने की विधि को माना ऐसा न हो कि पहिलौठों का नाश करनेहारा इस्रायेली
२९ लोगों को छूए। विश्वास से वे लाल समुद्र के पार जैसे सूखी भूमि पर होके उतरे जिस के पार उतरने का यत्न करने
३० में मिसरी लोग डूब गये। विश्वास से यिरीहो की भीतें जब सात दिन घेरी
३१ गई थीं तब गिर पड़ीं। विश्वास से राहब वेश्या अविश्वासियों के संग नष्ट न हुई इस लिये कि भेदियों को कुशल से ग्रहण किया॥

३२ और मैं आगे क्या कहूं, क्योंकि गिदियोन का और बाराक औ शमशोन का और यिप्ताह का और दाऊद औ शमुएल का और भविष्यद्वक्ताओं का वर्णन करने को मुझे समय न मिलेगा।
३३ इन्हों ने विश्वास के द्वारा राज्यों को जीत लिया धर्म्म का कार्य्य किया प्रतिज्ञाओं को प्राप्त किया सिंहों के मुंह
३४ बन्द किये, आग की शक्ति निवृत्त किई खड्ग की धार से बच निकले दुर्ब्बलता से बलवन्त किये गये युद्ध में प्रबल हो गये और परायों की सेनाओं
३५ को हटाया। स्त्रियों ने पुनरुत्थान के द्वारा से अपने मृतकों को फिर पाया पर और लोग मार खाते खाते मर गये और उद्धार ग्रहण न किया इस लिये
३६ कि और उत्तम पुनरुत्थान को पहुंचें। दूसरों की ठट्ठों और कोड़ों की हां और भी बन्धनों की और बन्दीगृह की
३७ परीक्षा हुई। वे पत्थरवाह किये गये वे आरे से चीरे गये उन की परीक्षा किई गई वे खड्ग से मारे गये वे कंगाल औ क्लेशित औ दुःखी हो भेड़ों को और बकरियों की खालें ओढ़े हुए
३८ इधर उधर फिरते रहे, और जंगलों औ पर्व्वतों औ गुफाओं में औ पृथिवी के दरारों में भरमते फिरे, संसार उन
३९ के योग्य न था। और इन सभों ने विश्वास के द्वारा सुख्यात होके प्रतिज्ञा
४० का फल नहीं पाया। क्योंकि ईश्वर ने हमारे लिये किसी उत्तम बात की तैयारी किई इस लिये कि वे हमारे बिना सिद्ध न होवें॥

बारहवां पर्ब्ब ।

१ इस कारण हम लोग भी जब कि साक्षियों के ऐसे बड़े मेघ से घेरे हुए हैं हर एक बोझ को और पाप को जो हमें सहज ही उलझाता है दूर करके वह दौड़ जो हमारे आगे धरी है २ धीरज से दौड़ें . और बिश्वास के कर्त्ता और सिद्ध करनेहारे की अर्थात यीशु की ओर ताकें जिस ने उस आनन्द के लिये जो उस के आगे धरा था क्रूश को सह लिया और लज्जा को तुच्छ जाना और ईश्वर के सिंहासन के ३ दहिने हाथ जा बैठा है । उस को सोचो जिस ने अपने बिरुद्ध पापियों का इतना बिबाद सह लिया जिस्तें तुम थक न जाओ और अपने अपने मन का साहस न छोड़ो ॥

४ अब लों तुम्हों ने पाप से लड़ते हुए लोहू बहाने तक साम्हना नहीं ५ किया है । और तुम उस उपदेश को भूल गये हो जो तुम से जैसे पुत्रों से बातें करता है कि हे मेरे पुत्र परमेश्वर की ताड़ना को हलकी बात मत जान और जब वह तुझे डांटे तब साहस ६ मत छोड़ । क्योंकि परमेश्वर जिसे प्यार करता है उस को ताड़ना करता है और हर एक पुत्र को जिसे ग्रहण ७ करता है कोड़े मारता है । जो तुम ताड़ना सह लेओ तो ईश्वर तुम से जैसे पुत्रों से व्यवहार करता है क्योंकि कौन सा पुत्र है जिस को ताड़ना ८ पिता नहीं करता है । परन्तु यदि ताड़ना जिस के भागी सब कोई हुए हैं तुम पर नहीं होती तो तुम पुत्र नहीं परन्तु व्यभिचार के सन्तान हो । ९ फिर हमारे देह के पिता भी हमारी ताड़ना किया करते थे और हम उन का आदर करते थे क्या हम बहुत अधिक करके आत्माओं के पिता के अधीन न होंगे और जीयेंगे । क्योंकि १० वे तो थोड़े दिन के लिये जैसे अच्छा जानते थे तैसे ताड़ना करते थे परन्तु यह तो हमारे लाभ के निमित्त करता है इस लिये कि हम उस की पवित्रता के भागी होवें । कोई ताड़ना वर्त्तमान ११ समय में आनन्द की बात नहीं देख पड़ती है परन्तु शोक की बात तौभी पीछे वह उन्हें जो उस के द्वारा साधे गये हैं धर्म्म का शान्तिदाई फल देती है ॥

इस लिये अबल हाथों को और १२ निर्ब्बल घुटनों को दृढ़ करो । और १३ अपने पांवों के लिये सीधे मार्ग बनाओ कि जो लंगड़ा है सो बहकाया न जाय परन्तु और भी चंगा किया जाय । सभों १४ के संग मिलाप की चेष्टा करो और पवित्रता की जिस बिना कोई प्रभु को न देखेगा । और देख लेओ ऐसा न हो १५ कि कोई ईश्वर के अनुग्रह से रहित होय अथवा कोई कड़वाहट की जड़ उगी और क्लेश देवे और उस के द्वारा से बहुत लोग अशुद्ध होवें । ऐसा न हो १६ कि कोई जन व्यभिचारी वा एसौ की नाईं अपवित्र होय जिस ने एक बेर के भोजन पर अपने पहिलौठेपन को बेच डाला । क्योंकि तुम जानते हो कि जब १७ वह पीछे आशीष पाने की इच्छा करता भी था तब अयोग्य गिना गया क्योंकि यद्यपि उस ने रो रोके उसे ढूंढ़ा तौभी पश्चात्ताप की जगह न पाई ॥

तुम तो उस पर्ब्बत के पास नहीं १८ आये हो जो छूआ जाता और आग से जल उठा और न घोर मेघ और अंधकार और आंधी के पास . और न तुरही के १९ ध्वनि और बातों के शब्द के पास जिस के सुननेहारों ने बिन्ती किई कि और कुछ भी बात हम से न किई जाय ।

२० क्योंकि वे उस आज्ञा को नहीं सह सकते थे कि यदि पशु भी पर्व्वत को छूवे तो पत्थरवाह किया जायगा अथवा २१ बर्छी से बेधा जायगा। और वह दर्शन ऐसा भयंकर था कि मूसा बोला मैं २२ बहुत भयमान और कम्पित हूं। परन्तु तुम सियोन पर्व्वत के पास और जीवते ईश्वर के नगर स्वर्गीय यिरूशलीम के २३ पास आये हो, और स्वर्गदूतों की सभा के पास जो सहस्रों हैं और पहिलौठों की मंडली के पास जिन के नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं और ईश्वर के पास जो सभों का विचारकर्त्ता है और सिद्ध किये हुए धर्म्मियों के २४ आत्माओं के पास, और नये नियम के मध्यस्थ यीशु के पास और छिड़काव के लोहू के पास जो हाबिल से अच्छी बातें बोलता है।

२५ देखो बोलनेहारे से मुंह मत फेरो क्योंकि यदि वे लोग जब पृथिवी पर आज्ञा देनेहारे से मुंह फेरा तब नहीं बचे तो बहुत अधिक करके हम लोग जो स्वर्ग से बोलनेहारे से फिर जायें तो २६ नहीं बचेंगे। उस के शब्द ने तब पृथिवी को डुलाया परन्तु अब उस ने प्रतिज्ञा किई है कि फिर एक बेर मैं केवल पृथिवी को नहीं परन्तु आकाश २७ को भी डुलाऊंगा। यह बात कि फिर एक बेर यही प्रगट करती है कि जो वस्तु डुलाई जाती हैं सो सृजी हुई वस्तुओं की नाईं बदली जायेंगी इस लिये कि जो वस्तु डुलाई नहीं जातीं २८ सो बनी रहें। इस कारण हम लोग जो न डोलनेवाला राज्य पाते हैं अनुग्रह धारण करें जिस के द्वारा हम सन्मान और भक्ति सहित ईश्वर की सेवा उस २९ को प्रसन्नता के योग्य करें। क्योंकि हमारा ईश्वर भस्म करनेहारी अग्नि है।

तेरहवां पर्व्व।

१ भ्रातृीय प्रेम बना रहे। २ अतिथिसेवा को मत भूल जाओ क्योंकि इस के द्वारा कितनों ने बिन जाने स्वर्गदूतों की पहुनई किई है। ३ बन्धुओं को जैसे कि उन के संग बंधे हुए होते और दुःखित लोगों को जैसे कि आप भी शरीर में रहते हो स्मरण करो। ४ विवाह सभों में आदरयोग्य और बिछौना शुद्ध रहे परन्तु ईश्वर व्यभिचारियों और परस्त्रीगामियों का विचार करेगा। ५ तुम्हारी रीति व्यवहार लोभरहित होवे और जो तुम्हारे पास है उस में सन्तुष्ट रहो क्योंकि उसी ने कहा है मैं तुझे कभी नहीं छोड़ूंगा और न कभी तुझे त्यागूंगा, ६ यहां लों कि हम ढाढ़स बांधके कहते हैं कि परमेश्वर मेरा सहायक है और मैं नहीं डरूंगा, मनुष्य मेरा क्या करेगा। ७ अपने प्रधानों को जिन्हों ने ईश्वर का वचन तुम से कहा है स्मरण करो और ध्यान से उन की चाल चलन का अन्त देखके उन के विश्वास के अनुगामी होओ। ८ यीशु खीष्ट कल और आज और सर्व्वदा एकसां है। ९ नाना प्रकार की और ऊपरी शिक्षाओं से मत भरमाये जाओ क्योंकि अच्छा है कि मन अनुग्रह से दृढ़ किया जाय खाने की वस्तुओं से नहीं जिन से उन लोगों को जो उन की विधि पर चले कुछ लाभ नहीं हुआ। १० हमारी एक वेदी है जिस से खाने का अधिकार उन लोगों को नहीं है जो तम्बू की सेवा करते हैं। ११ क्योंकि जिन पशुओं का लोहू महायाजक पाप के निमित्त पवित्र स्थान में ले जाता है उन के देह छावनी के बाहर जलाये जाते हैं। १२ इस कारण यीशु ने भी इस लिये कि लोगों को अपने ही लोहू के द्वारा पवित्र करे फाटक के बाहर दुःख भोगा। १३ सो हम

लोग उस की निन्दा सहते हुए छावनी
१४ के बाहर उस पास निकल जावें। क्यों-
कि यहां हमारा कोई ठहरनेहारा नगर
नहीं है परन्तु हम उस होनेहार नगर
१५ को ढूंढ़ते हैं। इस लिये यीशु के द्वारा
हम सदा ईश्वर के आगे स्तुति का
बलिदान अर्थात उस के नाम का धन्य
माननेहारे होंठों का फल चढ़ाया करें।
१६ परन्तु भलाई और सहायता करने को
मत भूल जाओ क्योंकि ईश्वर ऐसे बलि-
१७ दानों से प्रसन्न होता है। अपने प्रधानों
की मानो और उन के आधीन होओ
क्योंकि वे जैसे कि लेखा देंगे तैसे
तुम्हारे प्राणों के लिये चौकी देते हैं
इस लिये कि वे इस को आनन्द से करें
और कहर कहरके नहीं क्योंकि यह
१८ तुम्हारे लिये निष्फल है। हमारे लिये
प्रार्थना करो क्योंकि हम भरोसा रखते
हैं कि हमारा अच्छा बिबेक है और
हम लोग सभों में अच्छी चाल चला
१९ चाहते हैं। और मैं बहुत अधिक बिन्ती
करता हूं कि यही करो इस लिये कि
मैं और भी शीघ्र तुम्हें फेर दिया जाऊं ॥

२० शांति का ईश्वर जिस ने हमारे प्रभु
यीशु को जो सनातन नियम का लोहू
लिये हुए भेड़ों का बड़ा गड़ेरिया है
२१ मृतकों में से उठाया, तुम्हें हर एक
अच्छे कर्म्म में सिद्ध करे कि उस की
इच्छा पर चलो और जो उस को भावता
है उसे तुम्हों में यीशु ख्रीष्ट के द्वारा
उत्पन्न करे जिस का गुणानुवाद सदा
२२ सर्व्वदा होवे, आमीन। और हे भाइयो
मैं तुम से बिन्ती करता हूं उपदेश की
बचन सह लेओ क्योंकि मैं ने संक्षेप से
२३ तुम्हारे पास लिखा है। यह जानो कि
भाई तिमोथिय छूट गया है, जो वह
शीघ्र आवे तो उस के संग में तुम्हें
२४ देखूंगा। अपने सब प्रधानों को और
सब पवित्र लोगों को नमस्कार करो,
इतालिया के जो लोग हैं उन का तुम से
२५ नमस्कार। अनुग्रह तुम सभों के संग
होवे। आमीन ॥

याकूब प्रेरित की पत्री ।

पहिला पर्ब्ब ।

१ याकूब जो ईश्वर का और प्रभु यीशु ख्रीष्ट का दास है बारहों कुलों को जो तितर बितर रहते हैं, आनन्द रहो ॥

२ हे मेरे भाइयो जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो उसे सब्ब
३ आनन्द समझो, क्योंकि जानते हो कि तुम्हारे बिश्वास के परखे जाने से
४ धीरज उत्पन्न होता है। परन्तु धीरज का काम सिद्ध होवे जिस्तें तुम सिद्ध
और पूरे होओ और किसी बात में तुम्हारी घटी न होय। परन्तु यदि
५ तुम में से किसी को बुद्धि की घटी होय तो ईश्वर से मांगे जो सभों को उदारता से देता है और उलहना नहीं देता और उस को दिई जायगी।
६ परन्तु बिश्वास से मांगे और कुछ सन्देह न रखे क्योंकि जो सन्देह रखता है सो समुद्र की लहर के समान है जो बयार से चलाई जाती और उछाली
७ जाती है। वह मनुष्य न समझे कि मैं

८ प्रभु से कुछ पाऊंगा । दुचित्ता मनुष्य ९ अपने सब मार्गों में चंचल है । दीन भाई अपने ऊंचे पद पर बड़ाई करे । १० परन्तु धनवान अपने नीचे पद पर बड़ाई करता है क्योंकि वह घास के ११ फूल की नाईं जाता रहेगा । क्योंकि सूर्य्य ज्योंहीं घाम सहित उदय होता त्योंही घास को सुखाता है और उस का फूल झड़ जाता है और उस के रूप की शोभा नष्ट होती है, वैसे ही धनवान १२ भी अपने पथ ही में मुरझायगा । जो मनुष्य परीक्षा में स्थिर रहता है सो धन्य है क्योंकि वह खरा निकलके जीवन का मुकुट पावेगा जिस की प्रतिज्ञा प्रभु ने उन्हें जो उस को १३ प्यार करते हैं दिई है । कोई जन परीक्षित होने पर यह न कहे कि ईश्वर से मेरी परीक्षा किई जाती है क्योंकि ईश्वर बुरी बातों से परीक्षित होता नहीं और वह किसी की ऐसी १४ परीक्षा नहीं करता है । परन्तु हर कोई जब अपनी ही अभिलाषा से खींचा और फुसलाया जाता है तब १५ परीक्षा में पड़ता है । फिर अभिलाषा को जब गर्भ रहता है तब वह कुक्रिया जनती है और कुक्रिया जब समाप्त होती तब मृत्यु को उत्पन्न करती है ॥

१६ हे मेरे प्यारे भाइयो धोखा मत १७ खाओ । हर एक अच्छा दानकर्म्म और हर एक सिद्ध दान ऊपर से उतरता है अर्थात ज्योतियों के पिता से जिस में न अदल बदल न फेर फार की छाया १८ है । अपनी ही इच्छा से उस ने हमें सत्यता के वचन के द्वारा उत्पन्न किया इस लिये कि हम उस की सृष्टी हुई वस्तुओं के पहिले फल के ऐसे होवें । १९ सो हे मेरे प्यारे भाइयो हर एक मनुष्य सुनने के लिये शीघ्रता करे पर बोलने में बिलम्ब करे औ क्रोध में बिलम्ब करे । २० क्योंकि मनुष्य का क्रोध ईश्वर के धर्म्म को नहीं निबाहता है । २१ इस कारण सब अशुद्धता को और बैरभाव की अधिकाई को दूर करके नम्रता से इस रोपे हुए वचन को ग्रहण करो जो तुम्हारे प्राणों को बचा सकता है । २२ परन्तु वचन पर चलनेहारे होओ और केवल सुननेहारे नहीं जो अपने को २३ धोखा देओ । क्योंकि यदि कोई वचन का सुननेहारा है और उस पर चलनेहारा नहीं तो वह एक मनुष्य के समान है जो अपना स्वाभाविक मुंह दर्पण में २४ देखता है । क्योंकि वह अपने को ज्यों ही देखता त्यों चला जाता और तुरन्त २५ भूल जाता है कि मैं कैसा था । परन्तु जो जन सिद्ध व्यवस्था को जो निर्बन्धता की है झुक झुकके देखता है और ठहर जाता है वह जो ऐसा सुननेहारा नहीं कि भूल जाय परन्तु कार्य्य करनेहारा है सो वही अपनी करणी में धन्य होगा । २६ यदि तुम्हों में कोई जो अपनी जीभ पर बाग नहीं लगाता है परन्तु अपने मन को धोखा देता है अपने को धर्म्माचारी समझता है तो इस का २७ धर्म्माचार व्यर्थ है । ईश्वर पिता के यहां शुद्ध और निर्मल धर्म्माचार यह है अर्थात माता पिताहीन लड़कों के और विधवाओं के क्लेश में उन की सुध लेना और अपने तईं संसार से निष्कलंक रखना ॥

दूसरा पर्ब्ब ।

१ हे मेरे भाइयो हमारे तेजोमय प्रभु यीशु ख्रीष्ट के विश्वास में पक्षपात मत २ किया करो । क्योंकि यदि एक पुरुष सोने के छल्ले और भड़कीला वस्त्र पहिने हुए तुम्हारी सभा में आवे और एक

कंगाल मनुष्य भी मैला वस्त्र पहिने ३ हुए आवे . और तुम उस भड़कीला वस्त्र पहिने हुए पर दृष्टि करके उस से कहा आप यहां अच्छी रीति से बैठिये और उस कंगाल से कहा तू वहां खड़ा रह अथवा यहां मेरे पांवों की पीढ़ी के ४ नीचे बैठ . तो क्या तुम ने अपने मन में भेद न माना और कुविचार से न्याय ५ करनेहारे न हुए । हे मेरे प्यारे भाइयो सुनो क्या ईश्वर ने इस जगत के कंगालों को नहीं चुना है कि विश्वास में धनी और उस राज्य के अधिकारी होवें जिस की प्रतिज्ञा उस ने उन्हें जो उस को ६ प्यार करते हैं दिई है । परन्तु तुम ने उस कंगाल का अपमान किया . क्या धनी लोग तुम्हें नहीं पेरते हैं और क्या वेही तुम्हें विचार आसनों के आगे नहीं ७ खींचते हैं । जिस नाम से तुम पुकारे जाते हो- क्या वे उस उत्तम नाम की निन्दा ८ नहीं करते हैं । जो तुम धर्म्मपुस्तक के इस वचन के अनुसार कि तू अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम कर सबसुच राज-व्यवस्था पूरी करते हो तो अच्छा करते ९ हो । परन्तु जो तुम पक्षपात करते हो तो पापकर्म्म करते हो और व्यवस्था से १० अपराधी ठहराये जाते हो । क्योंकि जो कोई सारी व्यवस्था को पालन करे पर एक बात में चूके वह सब बातों ११ के दंड के योग्य हो चुका । क्योंकि जिस ने कहा परस्त्रीगमन मत कर उस ने यह भी कहा कि नरहिंसा मत कर . सो जो तू परस्त्रीगमन न करे परन्तु नरहिंसा करे तो व्यवस्था का अपराधी १२ हो चुका । तुम ऐसे बोलो और ऐसा काम करो जैसा तुम को चाहिये जिन का विचार निर्बन्धता की व्यवस्था के १३ द्वारा किया जायगा । क्योंकि जिस ने दया न किई उस का विचार बिना दया के किया जायगा और दया न्याय पर जयजयकार करती है ॥

१४ हे मेरे भाइयो यदि कोई कहे मुझे विश्वास है पर कर्म्म उस में नहीं होवें तो क्या लाभ है . क्या वह विश्वास से उस का त्राण हो सकता १५ है । यदि कोई भाई अथवा बहिन नंगे हों और उन्हें प्रतिदिन के भोजन की घटी १६ होय . और तुम में से कोई उन से कहे कुशल से जाओ तुम्हें जाड़ा न लगे तुम तृप्त रहो परन्तु तुम जो वस्तु देह के लिये अवश्य हैं सो उन को न देओ १७ तो क्या लाभ है । वैसे ही विश्वास भी जो कर्म्म सहित न होवे तो आप १८ ही मृतक है । बरन कोई कहेगा तुझे विश्वास है और मुझ में कर्म्म होते हैं तू अपने कर्म्म बिना अपना विश्वास मुझे दिखा और मैं अपना विश्वास १९ अपने कर्म्मों से तुझे दिखाऊंगा । तू विश्वास करता है कि एक ईश्वर है . तू अच्छा करता है . भूत भी विश्वास २० करते और थरथराते हैं । पर हे निर्बुद्धि मनुष्य क्या तू जानने चाहता है कि २१ कर्म्म बिना विश्वास मृतक है । क्या हमारा पिता इब्राहीम जब उस ने अपने पुत्र इसहाक को वेदी पर चढ़ाया २२ कर्म्मों से धर्म्मी न ठहरा । तू देखता है कि विश्वास उस के कर्म्मों के साथ कार्य्य करता था और कर्म्मों से विश्वास २३ सिद्ध किया गया । और धर्म्मपुस्तक का यह वचन कि इब्राहीम ने ईश्वर का विश्वास किया और यह उस के लिये धर्म्म गिना गया पूरा हुआ और २४ वह ईश्वर का मित्र कहलाया । सो तुम देखते हो कि मनुष्य केवल विश्वास से नहीं परन्तु कर्म्मों से भी धर्म्मी २५ ठहराया जाता है । वैसे ही राहब वेश्या भी जब उस ने दूतों को पहनई

फिरे और उन्हें दूसरे मार्ग से बिदा किया।
२६ क्या कर्म्मों से धर्म्मी न ठहरी। क्योंकि जैसा देह आत्मा बिना मृतक है वैसा विश्वास भी कर्म्म बिना मृतक है॥

तीसरा पर्व्व।

१ हे मेरे भाइयो बहुतेरे उपदेशक मत बनो क्योंकि जानते हो कि हम अधिक
२ दंड पावेंगे। क्योंकि हम सब बहुत बार चूकते हैं, यदि कोई बचन में नहीं चूकता है तो वही सिद्ध मनुष्य है जो सारे देह पर भी बाग लगाने
३ का सामर्थ्य रखता है। देखो घोड़ों के मुंह में हम लगाम देते हैं इस लिये कि वे हमें मानें और हम उन का सारा
४ देह फेरते हैं। देखो जहाज भी जो इतने बड़े हैं और प्रचंड बयारों से उड़ाये जाते हैं बहुत छोटी पतवार से जिधर कहीं मांझी का मन चाहता हो उधर
५ फेरे जाते हैं। वैसे ही जीभ भी छोटा अंग है और बड़ी गालफटाकी करती है, देखो थोड़ी आग कितने बड़े बन को
६ फूंकती है। और यह अधर्म्म का लोक अर्थात जीभ एक आग है, हमारे अंगों में जीभ है जो सारे देह को कलंकी करनेहारी और भवचक्र में आग लगानेहारी ठहरती है और उस में आग लगाने-
७ हारा नरक है। क्योंकि बनपशुओं और पंछियों और रेंगनेहारे जन्तुओं और जलचरों की भी हर एक जाति मनुष्य जाति के बश में किई जाती है और
८ किई गई है। परन्तु जीभ को मनुष्यों में से कोई बश में नहीं कर सकता है, वह निरंकुश दुष्ट है वह मारक बिष से
९ भरी है। उस से हम ईश्वर पिता का धन्यबाद करते हैं और उसी से मनुष्यों को जो ईश्वर के समान बने हैं स्राप
१० देते हैं। एक ही मुख से धन्यबाद और स्राप दोनों निकलते हैं, हे मेरे भाइयो इन बातों का ऐसा होना उचित नहीं
११ है। क्या सोते के एक ही मुंह से मीठा
१२ और तीता दोनों बहते हैं। क्या गूलर के बृक्ष में मेरे भाइयो जलपाई के फल अथवा दाख की लता में गूलर के फल लग सकते हैं, वैसे ही किसी सोते से खारा और मीठा दोनों प्रकार का जल नहीं निकल सकता है॥

१३ तुम्हों में ज्ञानवान और बूझनेहारा कौन है, सो अपनी अच्छी चाल चलन से ज्ञान की नम्रता सहित अपने कार्य्य
१४ दिखावे। परन्तु जो तुम अपने अपने मन में कड़वी डाह और बैर रखते हो तो सच्चाई के बिरुद्ध घमंड मत करो
१५ और झूठ मत बोलो। यह ज्ञान ऊपर से उतरता नहीं परन्तु सांसारिक और
१६ शारीरिक और शैतानी है। क्योंकि जहां डाह और बैर है तहां बखेड़ा और हर
१७ एक बुरा कर्म्म होता है। परन्तु जो ज्ञान ऊपर से है सो पहिले तो पवित्र है फिर मिलनसार मृदुभाव और कोमल और दया से और अच्छे फलों से परिपूर्ण
१८ पक्षपात रहित और निष्कपट है। और धर्म्म का फल मेल करवैयों से मिलाप में बोया जाता है॥

चौथा पर्व्व।

१ तुम्हों में लड़ाई झगड़े कहां से होते, क्या यहां से नहीं अर्थात तुम्हारे सुखाभिलाषों से जो तुम्हारे अंगों में
२ लड़ते हैं। तुम लालसा रखते हो और तुम्हें मिलता नहीं तुम नरहिंसा और डाह करते हो और प्राप्त नहीं कर सकते तुम झगड़ा और लड़ाई करते हो परन्तु तुम्हें मिलता नहीं इस लिये कि
३ तुम नहीं मांगते हो। तुम मांगते हो और पाते नहीं इस लिये कि बुरी रीति से मांगते हो जिस्तें अपने सुखबिलास
४ में उड़ा देओ। हे व्यभिचारियो और

व्यभिचारिणियो क्या तुम नहीं जानते हो कि संसार की मित्रता ईश्वर की शत्रुता है . सो जो कोई संसार का मित्र हुआ चाहता है वह ईश्वर का शत्रु ठहरता ५ है । अथवा क्या तुम समझते हो कि धर्म्मपुस्तक वृथा कहता है . क्या वह आत्मा जो हमों में बसा है यहां लों ६ स्नेह करता है कि डाह भी करे । बरन वह अधिक अनुग्रह देता है इस कारण कहता है ईश्वर अभिमानियों से विरोध करता है परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता ७ है । इस लिये ईश्वर के अधीन होओ . शैतान का साम्हना करो तो वह तुम ८ से भागेगा । ईश्वर के निकट आओ तो वह तुम्हारे निकट आवेगा . हे पापियो अपने हाथ शुद्ध करो और हे दुचित्ते लोगो अपने मन पवित्र करो । ९ दुःखी होओ और शोक करो और रोओ . तुम्हारी हंसी शोक हो जाय और तुम्हारा १० आनन्द उदासी बने । प्रभु के सन्मुख दीन बनो तो वह तुम्हें ऊंचे करेगा ॥

११ हे भाइयो एक दूसरे पर अपवाद मत लगाओ . जो भाई पर अपवाद लगाता और अपने भाई का विचार करता है सो व्यवस्था पर अपवाद लगाता और व्यवस्था का विचार करता है . परन्तु जो तू व्यवस्था का विचार करता है तो तू व्यवस्था पर चलनेहारा १२ नहीं परन्तु विचारकर्त्ता है । एक व्यवस्थाकारक और विचारकर्त्ता है अर्थात वही जिसे बचाने और नाश करने का सामर्थ्य है . तू कौन है जो दूसरे का विचार करता है ॥

१३ अब आओ तुम जो कहते हो कि आज वा कल हम उस नगर में जायेंगे और वहां एक बरस बितायेंगे और लेन १४ देन कर कमायेंगे । पर तुम तो कल की बात नहीं जानते हो क्योंकि तुम्हारा जीवन कैसा है . वह भाफ है जो थोड़ी बेर दिखाई देती है फिर लोप हो जाती १५ है । इस के बदले तुम्हें यह कहना था कि प्रभु चाहे तो हम जीयेंगे और यह १६ अथवा वह करेंगे । पर अब तुम अपनी गलफटाकियों पर बड़ाई करते हो . ऐसी १७ ऐसी बड़ाई सब बुरी है । सो जो भला करने जानता है और करता नहीं उस को पाप होता है ॥

पांचवां पर्ब्ब ।

१ अब आओ हे धनवान लोगो अपने पर आनेवाले क्लेशों के लिये चिल्ला २ चिल्ला रोओ । तुम्हारा धन सड़ गया है और तुम्हारे वस्त्रों को कीड़े खा ३ गये हैं । तुम्हारे सोने और रूपे में काई लग गई है और उन की काई तुम्हों पर साक्षी होगी और आग की नाईं तुम्हारा मांस खायगी . तुम ने पिछले ४ दिनों में धन बटोरा है । देखो जिन बनिहारों ने तुम्हारे खेतों को लवनी किई उन की बनि जो तुम ने ठग लिई है पुकारती है और लवनेहारों की दोहाई सेनाओं के परमेश्वर के कानों ५ में पहुंची है । तुम पृथिवी पर सुख में और विलास में रहे तुम ने जैसे बध के दिन हो में अपने मन को सन्तुष्ट किया ६ है । तुम ने धर्म्मी को दोषी ठहराके मार डाला है . वह तुम्हारा साम्हना नहीं करता है ॥

७ सो हे भाइयो प्रभु के आने लों धीरज धरो . देखो गृहस्थ पृथिवी के बहुमूल्य फल की बाट जोहता है और जब लों वह पहिली और पिछली बर्षा न पावे तब लों उस के लिये धीरज ८ धरता है । तुम भी धीरज धरो अपने मन को स्थिर करो क्योंकि प्रभु का ९ आना निकट है । हे भाइयो एक दूसरे के विरुद्ध मत कुड़कुड़ाओ इस लिये

कि दोषी न ठहरो . देखो बिचारकर्त्ता १० द्वार के आगे खड़ा है । हे मेरे भाइयो भविष्यद्वक्ताओं को जिन्हों ने प्रभु के नाम से बातें किईं दुःखभोग और धीरज ११ का नमूना समझ लेओ । देखो जो स्थिर रहते हैं उन्हें हम धन्य कहते हैं . तुम ने ऐयूब की स्थिरता की सुनी है और प्रभु की अन्त देखा है कि प्रभु बहुत करुणामय और दयावन्त है । १२ परन्तु सब से पहिले हे मेरे भाइयो किरिया मत खाओ न स्वर्ग की न धरती की न और कोई किरिया परन्तु तुम्हारा हां हां होवे और नहीं नहीं होवे जिस्तें तुम दंड के योग्य न ठहरो ॥

१३ क्या तुम्हों में कोई दुःख पाता है . तो प्रार्थना करे . क्या कोई हर्षित १४ है . तो भजन गावे । क्या तुम्हों में कोई रोगी है . तो मंडली के प्राचीनों को अपने पास बुलावे और वे प्रभु के नाम से उस पर तेल मलके उस के १५ लिये प्रार्थना करें । और विश्वास की प्रार्थना रोगी को बचावेगी और प्रभु उस को उठावेगा और जो उस ने पाप भी किये हों तो उस को क्षमा किई जायगी । एक दूसरे के आगे अपने १६ अपने अपराधों को मान लेओ और एक दूसरे के लिये प्रार्थना करो जिस्तें चंगे हो जाओ . धर्म्मी जन की प्रार्थना कार्य्यकारी होके बहुत सफल होती है । एलियाह हमारे समान दुःख सुख १७ भोगी मनुष्य था और प्रार्थना में उस ने प्रार्थना किई कि मेंह न बरसे और भूमि पर साढ़े तीन बरस मेंह न बरसा । और उस ने फिर प्रार्थना किई १८ तो आकाश ने बर्षा दिई और भूमि ने अपना फल उपजाया ॥

हे भाइयो जो तुम्हों में कोई सच्चाई १९ से भरमाया जाय और कोई उस को फेर लेवे . तो जान जाय कि जो जन २० पापी को उस के मार्ग के भ्रमण से फेर लेवे सो एक प्राण को मृत्यु से बचावेगा और बहुत पापों को ढांपेगा ॥

पितर प्रेरित की पहिली पत्री ।

पहिला पर्ब्ब ।

१ पितर जो यीशु खीष्ट का प्रेरित है पन्त और गलातिया और कपदोकिया और आशिया और बिथुनिया देशों में २ बिथरे हुए परदेशियों को . जो ईश्वर पिता के भविष्यत ज्ञान के अनुसार आत्मा की पवित्रता के द्वारा आज्ञा-पालन और यीशु खीष्ट के लोहू के छिड़काव के लिये चुने हुए हैं . तुम्हें बहुत बहुत अनुग्रह और शांति मिले ॥

३ हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के पिता ईश्वर का धन्यवाद होय जिस ने अपनी बड़ी दया के अनुसार हमों को नया जन्म दिया कि हमें यीशु खीष्ट के मृतकों में से जी उठने के द्वारा जीवती आशा मिले . और वह अधिकार मिले जो ४ अविनाशी और निर्मल और अजर है और स्वर्ग में तुम्हारे लिये रखा हुआ है . जिन की रक्षा ईश्वर की शक्ति ५ से विश्वास के द्वारा किई जाती है जिस्तें तुम वह त्राण जो पिछले समय में प्रगट किये जाने को तैयार है प्राप्त करो ॥

६ इस से तुम आह्लादित होते हो पर अब थोड़ी बेर लों यदि आवश्यक है तो नाना प्रकार की परीक्षाओं से उदास ७ हुए हो, इस लिये कि तुम्हारे बिश्वास की परीक्षा सोने से जो नाशमान है पर आग से परखा जाता है अति बहुमूल्य होके यीशु ख्रीष्ट के प्रगट होने पर प्रशंसा और आदर और महिमा का हेतु ८ पाई जाय। उस यीशु को तुम बिन देखे प्यार करते हो और उस पर यद्यपि उसे अब नहीं देखते हो तौभी बिश्वास करके अकथ्य और महिमा संयुक्त आनन्द ९ से आह्लादित होते हो, और अपने बिश्वास का अन्त अर्थात अपने अपने आत्मा का त्राण पाते हो॥

१० उस त्राण के विषय में भविष्यद्वक्ताओं ने जिन्हों ने इस अनुग्रह के विषय में जो तुम पर किया जाता है भविष्य-द्वाणी कही बहुत ढूंढ़ा और खोज बिचार ११ किया। वे ढूंढ़ते थे कि ख्रीष्ट का आत्मा जो उन में रहता है जब वह ख्रीष्ट के दुःखों पर और उन के पीछे की महिमा पर आगे से साक्षी देता है तब १२ कौन और कैसा समय बताता है। और उन पर प्रगट किया गया कि वे अपने लिये नहीं परन्तु हमारे लिये उन बातों की सेवकाई करते थे जिन्हें जिन लोगों ने स्वर्ग से भेजे हुए पवित्र आत्मा के द्वारा तुम्हें सुसमाचार सुनाया उन्हों ने अभी तुम से कह दिया है और इन बातों को स्वर्गदूत झुक झुकके देखने की इच्छा रखते हैं॥

१३ इस कारण अपने अपने मन की मानो कमर बांधके सचेत रहो और जो अनुग्रह यीशु ख्रीष्ट के प्रगट होने पर तुम्हें मिलनेवाला है उस की पूरी आशा १४ रखो। आज्ञाकारी लोगों की नाईं अपनी अज्ञानता में की अगली अभिलाषाओं की रीति पर मत चला करो, १५ परन्तु उस परमपवित्र के समान जिस ने तुम को बुलाया तुम भी आप सारी चाल चलन में पवित्र बनो। १६ क्योंकि लिखा है पवित्र होओ क्योंकि मैं पवित्र हूं। १७ और जो तुम उसे जो बिना पक्षपात हर एक के कर्म्म के अनुसार बिचार करने-हारा है पिता करके पुकारते हो तो अपने परदेशी होने का समय भय से बिताओ। १८ क्योंकि जानते हो कि तुम ने पितरों की ठहराई हुई अपनी व्यर्थ चाल चलन से जो उद्धार पाया सो नाश-मान बस्तुओं के अर्थात रूपे अथवा सोने के द्वारा नहीं, १९ परन्तु निष्कलंक और निर्खोट मेम्ने सरीखे ख्रीष्ट के बहुमूल्य लोहू के द्वारा से पाया, २० जो जगत की उत्पत्ति के आगे से ठहराया गया था परन्तु पिछले समय पर तुम्हारे कारण प्रगट किया गया, २१ जो उस के द्वारा से ईश्वर पर बिश्वास करते हो जिस ने उस मृतकों में से उठाया और उस को महिमा दिई यहां लों कि तुम्हारा बिश्वास और भरोसा ईश्वर पर है॥

२२ तुम ने निष्कपट भ्रातीय प्रेम के निमित्त जो अपने अपने हृदय को सत्य के आज्ञाकारी होने में आत्मा के द्वारा पवित्र किया है तो शुद्ध मन से एक दूसरे से अतिशय प्रेम करो। २३ क्योंकि तुम ने नाशमान नहीं परन्तु अबिनाशी बीज से ईश्वर के जीवते और सदा लों ठहरनेहारे बचन के द्वारा नया जन्म पाया है। २४ क्योंकि हर एक प्राणी घास की नाईं और मनुष्य का सारा बिभव घास के फूल की नाईं है। २५ घास सूख जाती है और उस का फूल झड़ जाता है परन्तु प्रभु का बचन सदा लों ठहरता है और यही बचन है जो सुसमाचार से तुम्हें सुनाया गया॥

दूसरा पर्व्व ।

१ इस लिये सब बैरभाव और सब छल और समस्त प्रकार का कपट और २ डाह और दुर्व्वचन दूर करके . नये जन्मे बालकों की नाईं वचन के निराले दूध की लालसा करो कि ३ उस के द्वारा तुम बढ़ जाओ . कि तुम ने तो चीख लिया है कि प्रभु कृपालु है ॥

४ उस के पास अर्थात उस जीवते पत्थर के पास जो मनुष्यों से तो निकम्मा जाना गया है परन्तु ईश्वर के आगे चुना हुआ और बहुमूल्य है आके . ५ तुम भी आप जीवते पत्थरों की नाईं आत्मिक घर और याजकों का पवित्र समाज बनते जाते हो जिस्तें आत्मिक बलिदानों को जो यीशु खीष्ट के द्वारा ६ ईश्वर को भावते हैं चढ़ाओ । इस कारण धर्म्मपुस्तक में भी मिलता है कि देखो मैं सियोन में कोने के सिरे का चुना हुआ और बहुमूल्य पत्थर रखता हूं और जो उस पर विश्वास करे सो किसी रीति से लज्जित न होगा । ७ सो यह बहुमूल्यता तुम्हारे हेतु है जो विश्वास करते हो परन्तु जो नहीं मानते हैं उन्हें वही पत्थर जिसे थवइयों ने निकम्मा जाना कोने का सिरा और ठेस का पत्थर और ठोकर की चटान ८ हुआ है . कि वे तो वचन को न मानके ठोकर खाते हैं और इस के लिये ९ वे ठहराये भी गये । परन्तु तुम लोग चुना हुआ वंश और राजपदधारी याजकों का समाज और पवित्र लोग और निज प्रजा हो इस लिये कि जिस ने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया उस के गुण तुम १० प्रचार करो . जो आगे प्रजा न थे परन्तु अभी ईश्वर की प्रजा हो जिन पर दया नहीं किई गई थी परन्तु अभी दया किई गई है ॥

११ हे प्यारो मैं बिन्ती करता हूं विदेशियों और उपरियों की नाईं शारीरिक अभिलाषों से जो आत्मा के विरुद्ध लड़ते हैं परे रहो । १२ अन्यदेशियों में तुम्हारी चाल चलन भली होवे इस लिये कि जिस बात में वे तुम पर जैसे कुकर्म्मियों पर अपवाद लगाते हैं उसी में वे तुम्हारे भले कर्म्मों को देखके जिस दिन ईश्वर दृष्टि करे उस दिन उन कर्म्मों के कारण उस का गुणानुवाद करें । १३ प्रभु के कारण मनुष्यों के ठहराये हुए हर एक पद के अधीन होओ । १४ चाहे राजा हो तो उसे प्रधान जानके चाहे अध्यक्ष लोग हों तो यह जानके कि वे उस के द्वारा कुकर्म्मियों के दंड के लिये परन्तु सुकर्म्मियों की प्रशंसा के लिये भेजे जाते हैं दोनों के अधीन होओ । १५ क्योंकि ईश्वर की इच्छा यही है कि तुम सुकर्म्म करने से निर्बुद्धि मनुष्यों की अज्ञानता को निरुत्तर करो । १६ निर्बन्धों की नाईं चलो पर जैसे अपनी निर्बन्धता से बुराई को आड़ करते हुए ऐसे नहीं परन्तु ईश्वर के दासों की नाईं चलो । १७ सभों का आदर करो भाइयों को प्यार करो ईश्वर से डरो राजा का आदर करो ॥

१८ हे सेवको समस्त भय सहित स्वामियों के अधीन रहो केवल भलों और मृदुभावों के नहीं परन्तु कुटिलों के भी । १९ क्योंकि यदि कोई अन्याय से दुःख उठाता हुआ ईश्वर की इच्छा के विवेक के कारण शोक सह लेता है २० तो यह प्रशंसा के योग्य है । क्योंकि यदि अपराध करने से तुम घूसे खाओ और धीरज धरो तो कौन सा यश है परन्तु यदि सुकर्म्म करने से तुम दुःख

उठाओ और धीरज धरो तो यह ईश्वर २१ के आगे प्रशंसा के योग्य है । तुम इसी के लिये बुलाये भी गये क्योंकि ख्रीष्ट ने भी हमारे लिये दुःख भोगा और हमारे लिये नमूना छोड़ गया कि तुम २२ उस की लीक पर हो लेओ । उस ने पाप नहीं किया और न उस के मुंह में २३ छल पाया गया । वह निन्दित होके उस के बदले निन्दा न करता था और दुःख उठाके धमकी न देता था परन्तु जो धर्म्म से विचार करनेहारा है उसी २४ के हाथ अपने को सौंपता था । उस ने आप हमारे पापों को अपने देह में काठ पर उठा लिया जिस्तें हम लोग पापों के लिये मर करके धर्म्म के लिये जीवें और उसी के मार खाने से तुम चंगे किये २५ गये । क्योंकि तुम भटकी हुई भेड़ों की नाईं थे पर अब अपने प्राणों के गड़ेरिये औ रखवाले के पास फिर आये हो ॥

तीसरा पर्ब्ब ।

१ वैसे ही हे स्त्रियो अपने अपने स्वामी के अधीन रहो इस लिये कि यदि कोई कोई बचन को न मानें तौभी बचन बिना अपनी अपनी स्त्री की २ चाल चलन के द्वारा . तुम्हारी भय सहित पवित्र चाल चलन देखके प्राप्त ३ किये जावें । तुम्हारा सिंगार बाल गून्धने का और सोना पहरने का अथवा वस्त्र पहिनने का बाहरी सिंगार न ४ होवे । परन्तु हृदय का गुप्त मनुष्यत्व उस नम्र और शान्त आत्मा के अविनाशी आभूषण सहित जो ईश्वर के आगे बहुमूल्य है तुम्हारा सिंगार होवे । ५ क्योंकि ऐसे ही पवित्र स्त्रियां भी जो ईश्वर पर भरोसा रखती थीं आगे अपना सिंगार करती थीं कि वे अपने अपने स्वामी के अधीन रहती थीं । ६ जैसे सारः ने इब्राहीम की आज्ञा मानी और उसे प्रभु कहती थी जिस की तुम लोग जो सुकर्म्म करो और किसी प्रकार की घबराहट से न डरो तो बेटियां हुई हो । ७ वैसे ही हे पुरुषो ज्ञान की रीति से स्त्री के संग जैसे अपने से निर्बल पात्र के संग बास करो और जब कि वे भी जीवन के अनुग्रह की संगी अधिकारिणियां हैं तो उन का आदर करो जिस्तें तुम्हारी प्रार्थनाओं की रोक न होय ॥

८ अन्त में यह कि तुम सब एक मन और परदुःख के बूझनेहारे और भाइयों के प्रेमी और करुणामय और हितकारी ९ होओ । और बुराई के बदले बुराई अथवा निन्दा के बदले निन्दा मत करो परन्तु इस के विपरीत आशीष देओ क्योंकि जानते हो कि तुम इसी के लिये बुलाये गये जिस्तें आशीष के १० अधिकारी होओ । क्योंकि जो जीवन की प्रीति रखने और अच्छे दिन देखने चाहे सो अपनी जीभ को बुराई से और अपने होठों को छल की बातें करने से ११ रोके । वह बुराई से फिर जावे और भलाई करे वह मिलाप को चाहे और १२ उस की चेष्टा करे । क्योंकि परमेश्वर के नेत्र धार्म्मियों की ओर और उस के कान उन की प्रार्थना की ओर लगे हैं परन्तु परमेश्वर कुकर्म्म करनेहारों से बिमुख है ॥

१३ और जो तुम भले के अनुगामी होओ तो तुम्हारी बुराई करनेहारा कौन १४ होगा । परन्तु जो तुम धर्म्म के कारण दुःख उठाओ भी तो धन्य हो पर उन के भय से भयमान मत हो और न १५ घबराओ । परन्तु परमेश्वर ईश्वर को अपने अपने मन में पवित्र मानो . और जो कोई तुम से उस आशा के विषय में जो तुम में है कुछ बात पूछे उस को नम्रता और भय सहित उत्तर देने को १६ सदा तैयार रहो । और शुद्ध मन रखो

इस लिये कि जो लोग तुम्हारी खीष्ट्रानुसारी अच्छी चाल चलन की निन्दा करें सो जिस बात में तुम पर जैसे कुकर्म्मियों पर अपवाद लगावें उसी में लज्जित होवें। १७ क्योंकि यदि ईश्वर की इच्छा यूं होय तो सुकर्म्म करते हुए दुःख उठाना कुकर्म्म करते हुए दुःख उठाने से अच्छा है॥

१८ क्योंकि खीष्ट ने भी अर्थात अधर्म्मियों के लिये धर्म्मी ने एक बेर पापों के कारण दुःख उठाया जिस्तें हमें ईश्वर के पास पहुंचावे कि वह शरीर में तो घात किया गया परन्तु आत्मा में १९ जिलाया गया। उसी में उस ने बन्दीगृह में के आत्माओं को भी जाके उपदेश २० दिया, जिन्हों ने अगले समय में न माना जिस समय ईश्वर का धीरज नूह के दिनों में जब लों जहाज बनता था जिस में थोड़े अर्थात आठ प्राणी जल के द्वारा बच गये तब लों बाट २१ जोहता रहा। इस दृष्टान्त का आशय बपतिसमा जो शरीर के मैल का दूर करना नहीं परन्तु ईश्वर के पास शुद्ध मन का अंगीकार है अभी हमों को भी यीशु खीष्ट के जी उठने के द्वारा बचाता २२ है, जो स्वर्ग पर जाके ईश्वर के दहिने हाथ रहता है और दूतगण और अधिकारी और पराक्रमी उस के अधीन किये गये हैं॥

चौथा पर्ब्ब ।

१ सो जब कि खीष्ट ने हमारे लिये शरीर में दुःख उठाया और जब कि जिस ने शरीर में दुःख उठाया है वह पाप से रोका गया है तुम भी उसी २ मनसा का हथियार बांधो, जिस्तें शरीर में का जो समय रह गया है उसे तुम अब मनुष्यों के अभिलाषों के नहीं परन्तु ईश्वर की इच्छा के अनुसार ३ बिताओ। क्योंकि हमारे जीवन का जो समय बीत गया है सो नाना भांति के लुचपन औ कामाभिलाष औ मतवालपन औ लीला क्रीड़ा औ मद्यपान औ धर्म्मविरुद्ध मूर्त्तिपूजा में चलते चलते देवपूजकों की इच्छा पूरी करने को बहुत हुआ है। ४ इस से वे लोग जब तुम उन के संग लुचपन के उसी अत्याचार में नहीं दौड़ते हो तब अचंभा ५ मानते और निन्दा करते हैं। पर वे उस को जो जीवतों औ मृतकों का ६ विचार करने को तैयार है लेखा देंगे। क्योंकि इसी के लिये मृतकों को भी सुसमाचार सुनाया गया कि शरीर में तो मनुष्यों के अनुसार उन का विचार किया जाय परन्तु आत्मा में वे ईश्वर के अनुसार जीवें॥

७ परन्तु सब बातों का अंत निकट आया है इस लिये सुबुद्धि होके प्रार्थना ८ के लिये सचेत रहो। और सब से अधिक करके एक दूसरे से अतिशय प्रेम रखो क्योंकि प्रेम बहुत पापों को ९ ढांपेगा। बिना कुड़कुड़ाये एक दूसरे १० की अतिथिसेवा किया करो। जैसे जैसे हर एक ने बरदान पाया है वैसे ईश्वर के नाना प्रकार के अनुग्रह के भले भंडारियों की नाईं एक दूसरे के ११ लिये उसी बरदान की सेवकाई करो। यदि कोई बात करे तो ईश्वर की बाणियों की नाईं बात करे यदि कोई सेवकाई करे तो जैसे उस शक्ति से जो ईश्वर देता है करे जिस्तें सब बातों में ईश्वर की महिमा यीशु खीष्ट के द्वारा प्रगट किई जावे जिस की महिमा औ पराक्रम सदा सर्व्वदा रहता है, आमीन॥

१२ हे प्यारो जो ज्वलन तुम्हारे बीच में तुम्हारी परीक्षा के लिये होता है उस से अचंभा मत करो जैसे कि कोई १३ अचंभे की बात तुम पर बीतती हो। परन्तु जितने तुम खीष्ट के दुःखों के

सम्भागी होते हो उतने आनन्द करो जिस्तें उस की महिमा के प्रगट होने पर भी तुम आनन्दित और आह्लादित
१४ होओ । जो तुम ख्रीष्ट के नाम के लिये निन्दित होते हो तो धन्य हो क्योंकि महिमा का और ईश्वर का आत्मा तुम पर ठहरता है . उन की ओर से तो उस की निन्दा होती है परन्तु तुम्हारी ओर से उस की महिमा प्रगट होती
१५ है । तुम में से कोई जन हत्यारा अथवा चोर अथवा कुकर्म्मी होने से अथवा पराये काम में हाथ डालने से दुःख न
१६ पावे । परन्तु यदि ख्रीष्टियान होने से कोई दुःख पावे तो लज्जित न होवे परन्तु इस बात में ईश्वर का गुणानुवाद
१७ करे । क्योंकि यही समय है कि दंड ईश्वर के घर से आरंभ होवे पर यदि पहिले हमों से आरंभ होता है तो जो लोग ईश्वर के सुसमाचार को नहीं मानते हैं उन का अन्त क्या होगा ।
१८ और यदि धर्म्मी कठिनता से त्राण पाता है तो भक्तिहीन और पापी कहां दिखाई
१९ देगा । इस कारण जो लोग ईश्वर की इच्छा के अनुसार दुःख उठाते हैं सो सुकर्म्म करते हुए अपने अपने प्राण को उस के हाथ जैसे विश्वासयोग्य सृजनहार के हाथ सौंप देवें ॥

पांचवां पर्व्व ।

१ मैं जो संगी प्राचीन और ख्रीष्ट के दुःखों का साक्षी और जो महिमा प्रगट होने पर है उस का सम्भागी भी हूं प्राचीनों से जो तुम्हारे बीच में हैं बिन्ती
२ करता हूं . ईश्वर के झुंड की जो तुम में है चरवाही करो और दबाव से नहीं पर अपनी सम्मति से और न नीच कमाई
३ के लिये पर मन की इच्छा से . और न जैसे अपने अपने अधिकार पर प्रभुता करते हुए परन्तु झुंड के लिये दृष्टान्त
४ होते हुए रखवाली करो । और प्रधान रखवाले के प्रगट होने पर तुम महिमा
५ का अक्षय मुकुट पाओगे । वैसे ही हे जवानो प्राचीनों के अधीन होओ . हां तुम सब एक दूसरे के अधीन होके दीनता को पहिन लेओ क्योंकि ईश्वर अभिमानियों से विरोध करता है परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है ॥

६ इस लिये ईश्वर के पराक्रमी हाथ के नीचे दीन होओ जिस्तें वह समय पर तुम्हें
७ ऊंचा करे । अपनी सारी चिन्ता उस पर डालो क्योंकि वह तुम्हारे लिये सोच करता
८ है । सचेत रहो जागते रहो क्योंकि तुम्हारा बैरी शैतान गर्जते हुए सिंह की नाईं ढूंढ़ता फिरता है कि किस को निगल
९ जाय । विश्वास में दृढ़ होके उस का साम्हना करो क्योंकि जानते हो कि तुम्हारे भाई लोगों पर जो संसार में हैं दुःखों की ऐसी ही दशा पूरी किई जाती है ॥

१० सारे अनुग्रह का ईश्वर जिस ने हमें ख्रीष्ट यीशु में बुलाया कि हम थोड़ा सा दुःख उठाके उस की अनन्त महिमा में प्रवेश करें आप ही तुम्हें सुधारे और स्थिर करे और बल देवे और नेव पर दृढ़
११ करे । उसी की महिमा और पराक्रम सदा सर्व्वदा रहे . आमीन ॥

१२ सीला के हाथ जिसे मैं समझता हूं कि तुम्हारा विश्वासयोग्य भाई है मैं ने थोड़ी बातों में लिखा है और उपदेश और साक्षी देता हूं कि ईश्वर का सच्चा अनुग्रह जिस में तुम स्थिर हो यही है ।
१३ तुम्हारे संग की चुनी हुई जो बाबुल में है और मेरा पुत्र मार्क इन दोनों का तुम
१४ से नमस्कार । प्रेम का चूमा लेके एक दूसरे को नमस्कार करो . तुम सभों को जो ख्रीष्ट यीशु में हो शांति होवे । आमीन ॥

पितर प्रेरित की दूसरी पत्री ।

पहिला पर्ब्ब ।

१ शिमोन पितर जो यीशु खीष्ट का दास और प्रेरित है उन लोगों को जिन्हों ने हमारे ईश्वर और त्राणकर्त्ता यीशु खीष्ट के धर्म्म में हमारे तुल्य बहुमूल्य २ बिश्वास प्राप्त किया है . तुम्हें ईश्वर के और हमारे प्रभु यीशु के ज्ञान के द्वारा बहुत बहुत अनुग्रह और शांति मिले ॥

३ जैसे कि उस के ईश्वरीय सामर्थ्य ने सब कुछ जो जीवन और भक्ति से सम्बन्ध रखता है हमें उसी के ज्ञान के द्वारा दिया है जिस ने हमें अपने ऐश्वर्य्य ४ और शुभगुण के अनुसार बुलाया . जिन के अनुसार उस ने हमें अत्यन्त बड़ी और बहुमूल्य प्रतिज्ञाएं दिई हैं इस लिये कि इन के द्वारा तुम लोग जो नष्टता कामाभिलाष के द्वारा जगत में है उस से बचके ईश्वरीय स्वभाव के ५ भागी हो जाओ । और इसी कारण भी तुम सब प्रकार का यत्न करके अपने बिश्वास में शुभगुण और शुभगुण में ६ ज्ञान . और ज्ञान में संयम और संयम ७ में धीरज और धीरज में भक्ति . और भक्ति में भ्रातीय प्रेम और भ्रातीय प्रेम ८ में प्यार संयुक्त करो । क्योंकि यह बातें जब तुम में होतीं और बढ़तीं जातीं तब तुम्हें ऐसे बनातीं हैं कि हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के ज्ञान के लिये तुम न ९ निकम्मे न निष्फल हो । क्योंकि जिस पास यह बातें नहीं हैं वह अन्धा है और धुंधला देखता है और अपने अगले पापों से अपना शुद्ध किया जाना भूल १० गया है । इस कारण हे भाइयो और भी अपने बुलाये जाने और चुन लिये जाने को दृढ़ करने का यत्न करो क्योंकि जो तुम ये कर्म्म करो तो कभी किसी रीति ११ से ठोकर न खाओगे । क्योंकि इस प्रकार से तुम्हें हमारे प्रभु और त्राणकर्त्ता यीशु खीष्ट के अनन्त राज्य में प्रवेश करने का अधिकार अधिकाई से दिया जायगा ॥

१२ इस लिये यद्यपि तुम यह बातें जानते हो और जो सत्य बचन तुम्हारे पास है उस में स्थिर किये गये हो तौभी मैं इन बातों के विषय में तुम्हें नित्य चेत दिलाने में निश्चिन्त न रहूंगा । १३ पर मैं समझता हूं कि जब लों मैं इस डेरे में हूं तब लों स्मरण करवाने से तुम्हें सचेत करना मुझे उचित है । १४ क्योंकि जानता हूं कि जैसा हमारे प्रभु यीशु खीष्ट ने मुझे बताया तैसा मेरे डेरे के गिराये जाने का समय निकट है । १५ पर मैं यत्न करूंगा कि मेरी मृत्यु के पीछे भी तुम्हें इन बातों का स्मरण करने का उपाय नित्य रहे ॥

१६ क्योंकि हम ने तुम्हें हमारे प्रभु यीशु खीष्ट के सामर्थ्य का और आने का समाचार मिथ्या से रची हुई कहानियों के अनुसार जो सुनाया सो नहीं परन्तु हम उस की महिमा के प्रत्यक्ष साक्षी १७ हुए थे । क्योंकि उस ने ईश्वर पिता से आदर और महिमा पाई कि प्रतापमय तेज से उस को ऐसा शब्द सुनाया गया कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिस से मैं १८ अति प्रसन्न हूं । और यह शब्द स्वर्ग से सुनाया हुआ हम ने पवित्र पर्ब्बत में १९ उस के संग होते हुए सुन लिया । और भविष्यद्वक्ताओं का बचन हमारे निकट और भी दृढ़ है . तुम जो उस पर जैसे दीपक पर जो अंधियारे स्थान में

चमकता है जब लों पह न फटे और भोर का तारा तुम्हारे हृदय में न उगे तब लों मन लगाते हो तो अच्छा करते हो । २० पर यही पहिले जानो कि धर्म्मपुस्तक की कोई भविष्यद्वाणी किसी के अपने ही व्याख्यान से नहीं होती है । २१ क्योंकि भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं आई परन्तु ईश्वर के पवित्र जन पवित्र आत्मा के बुलवाये हुए बोले ॥

दूसरा पर्ब्ब ।

१ परन्तु झूठे भविष्यद्वक्ता भी लोगों में हुए जैसे कि तुम में भी झूठे उपदेशक होंगे जो विनाश के कुपन्थों को छिपके चलावेंगे और प्रभु से जिस ने उन्हें मोल लिया मुकरेंगे और अपने ऊपर शीघ्र २ विनाश लावेंगे । और बहुतेरे उन के लुचपन का पीछा करेंगे जिन के कारण सत्य के मार्ग की निन्दा किई जायगी । ३ और लोभ से वे तुम्हें बनाई हुई बातों से बेच खावेंगे पर पूर्व्वकाल से उन का दंड आलस नहीं करता और उन का विनाश ऊंघता नहीं ॥

४ क्योंकि यदि ईश्वर ने दूतों को जिन्हों ने पाप किया न छोड़ा परन्तु पाताल में डालके अंधकार की जंजीरों में सौंप दिया जहां वे विचार के लिये ५ रखे जाते हैं . और प्राचीन जगत को न छोड़ा वरन भक्तिहीनों के जगत पर जलप्रलय लाया परन्तु धर्म्म के प्रचारक नूह को लगाके आठ जनों की रक्षा ६ किई . और सदोम और अमोरा के नगरों को भस्म करके विध्वंस का दंड दिया और उन्हें पीछे आनेवाले भक्तिहीनों के लिये दृष्टान्त ठहराया है . ७ और धर्म्मी लूत को जो अधर्म्मियों के लुचपन के चलन से अति दुःखी होता ८ था बचाया . क्योंकि वह धर्म्मी जन उन के बीच में बास करता हुआ देखने और सुनने से प्रतिदिन अपने धर्म्मी प्राण को उन के दुष्ट कर्म्मों से पीड़ित करता था . तो परमेश्वर भक्तों को ९ परीक्षा में से बचाने और अधर्म्मियों को दंड की दशा में विचार के दिन लों रखने जानता है . निज करके उन १० लोगों को जो शरीर के अनुसार अशुद्धता के अभिलाष से चलते हैं और प्रभुता को तुच्छ जानते हैं . वे ढीठ औ हठी हैं और महत पदों की निन्दा करने से नहीं डरते हैं । तौभी दूतगण ११ जो शक्ति औ पराक्रम में बड़े हैं उन के विरुद्ध परमेश्वर के आगे निन्दायुक्त विचार नहीं सुनाते हैं । परन्तु ये लोग १२ स्वभाववश अचैतन्य पशुओं की नाईं जो पकड़े जाने और नाश होने को उत्पन्न हुए हैं जिन बातों में अज्ञान हैं उन्हीं में निन्दा करते हैं और अपनी भ्रष्टता में सत्यानाश होंगे और अधर्म्म का फल पावेंगे । वे दिन भर के विषय- १३ भोग को सुख समझते हैं वे कलंक और खोट रूपी हैं वे तुम्हारे संग भोज में जेवते हुए अपने छलों से सुख भोग करते हैं । उन के नेत्र व्यभिचारिणी से १४ भरे रहते हैं और पाप से रोके नहीं जा सकते हैं वे अस्थिर प्राणों को फुसलाते हैं उन का मन लोभ लालच में साधा हुआ है वे स्राप के सन्तान हैं । वे १५ सीधे मार्ग को छोड़के भटक गये हैं और बिओर के पुत्र बलाम के मार्ग पर हो लिये हैं जिस ने अधर्म्म की मजूरी को प्रिय जाना । परन्तु उस के अपराध १६ के लिये उसे उलहना दिया गया . अबोल गदहे ने मनुष्य की बोली से बोलके भविष्यद्वक्ता की मूर्खता को रोका ॥

ये लोग निर्जल कूएं और आंधी के १७ उड़ाये हुए मेघ हैं . उन के लिये सदा

१८ का घोर अन्धकार रखा गया है। क्योंकि वे व्यर्थ गालफटाकी की बातें करते हुए शरीर के अभिलाषों से लुचपनों के द्वारा उन लोगों को फुसलाते हैं जो भ्रांति की चाल चलनेहारों से सचमुच १९ बच निकले थे। वे उन्हें निर्बन्ध होने की प्रतिज्ञा देते हैं पर आप ही नष्टता के दास हैं क्योंकि जिस से कोई हार गया है उस का वह दास भी बन गया है॥

२० यदि वे प्रभु और त्राणकर्त्ता यीशु खीष्ट के ज्ञान के द्वारा संसार की नाना प्रकार की अशुद्धता से बच निकले परन्तु फिर उस में फंसके हार गये हैं तो उन की पिछली दशा पहिली से २१ बुरी हुई है। क्योंकि धर्म्म के मार्ग को जानके भी उस पवित्र आज्ञा से जो उन्हें सौंपी गई फिर जाने से उस मार्ग को न जानना ही उन के लिये २२ भला होता। पर उस सच्चे दृष्टान्त की बात उन में पूरी हुई है कि कुत्ता अपनी ही छांट की ओर धोई हुई सूअरी कीचड़ में लोटने को फिर गई॥

तीसरा पर्ब्ब।

१ यह दूसरी पत्री हे प्यारो मैं अब तुम्हारे पास लिखता हूं और दोनों में मैं स्मरण करवाने से तुम्हारे निष्कपट २ मन को सचेत करता हूं. जिस्तें तुम उन बातों को जो पवित्र भविष्यद्वक्ताओं ने आगे से कही थीं और हम प्रेरितों की आज्ञा को जो प्रभु और त्राणकर्त्ता ३ की आज्ञा है स्मरण करो। पर यही पहिले जानो कि पिछले दिनों में निन्दक लोग आवेंगे जो अपने ही अभिलाषों के ४ अनुसार चलेंगे. और कहेंगे उस के आने की प्रतिज्ञा कहां है क्योंकि जब से पितर लोग सो गये सब कुछ सृष्टि ५ के आरंभ से यूंही बना रहता है। क्योंकि यह बात उन ने उन की इच्छा ही से छिपी रहती है कि ईश्वर के बचन से आकाश पूर्व्वकाल से था और पृथिवी भी जो जल में से और जल के द्वारा से ६ बनी. जिन के द्वारा जगत जो तब ७ था जल में डूबके नष्ट हुआ। परन्तु आकाश औ पृथिवी जो अब हैं उसी बचन से धरे हुए हैं और भक्तिहीन मनुष्यों के बिचार और बिनाश के दिन लों आग के लिये रखे जाते हैं॥

८ परन्तु हे प्यारो यह एक बात तुम से छिपी न रहे कि प्रभु के यहां एक दिन सहस्र बरस के तुल्य और सहस्र ९ बरस एक दिन के तुल्य है। प्रभु प्रतिज्ञा के विषय में बिलम्ब नहीं करता है जैसा कितने लोग बिलम्ब समझते हैं परन्तु हमारे कारण धीरज धरता है और नहीं चाहता है कि कोई नष्ट होवे परन्तु सब लोग पश्चात्ताप को पहुंचें। १० पर जैसा रात को चोर आता है तैसा प्रभु का दिन आवेगा जिस में आकाश हड़हड़ाहट से जाता रहेगा और तत्त्व अति तप्त हो गल जायेंगे और पृथिवी ११ और उस में के कार्य्य जल जायेंगे। सो जब कि यह सब बस्तु गल जानेवाली हैं तुम्हें पवित्र चाल चलन और भक्ति में कैसे मनुष्य होना और किस रीति से ईश्वर के दिन की बाट जोहना और उस के शीघ्र आने की चेष्टा करना १२ उचित है. जिस दिन के कारण आकाश ज्वलित हो गल जायगा और तत्त्व अति १३ तप्त हो पिघल जायेंगे। परन्तु उस की प्रतिज्ञा के अनुसार हम नये आकाश और नई पृथिवी की आस देखते हैं जिन में धर्म्म बास करेगा॥

१४ इस लिये हे प्यारो तुम जो इन बातों की आस देखते हो तो यत्न करो कि तुम कुशल से उस के आगे निष्कलंक औ निर्दोष ठहरो। और हमारे प्रभु के १५

धीरज को त्राण समझो जैसे हमारे प्रिय भाई पावल ने भी उस ज्ञान के अनुसार जो उसे दिया गया तुम्हारे पास लिखा। १६ वैसे ही उस ने सब पत्रियों में भी लिखा है और उन में इन बातों के विषय में कहा है जिन में से कितनी बातें गूढ़ हैं जिन का अनसिख और अस्थिर लोग जैसे धर्म्मपुस्तक की और और बातों का भी विपरीत अर्थ लगाके उन्हें अपने ही विनाश का कारण बनाते हैं। १७ सो हे प्यारो तुम लोग इस को आगे से जानके अपने तई बचाये रहो ऐसा न हो कि अधर्म्मियों के भ्रम से बहकाये जाके अपनी स्थिरता से पतित होओ। १८ परन्तु हमारे प्रभु और त्राणकर्त्ता यीशु खीष्ट के अनुग्रह और ज्ञान में बढ़ते जाओ. उस का गुणानुवाद अभी और सदा काल लों भी होय। आमीन ॥

योहन प्रेरित की पहिली पत्री।

पहिला पर्व्व।

१ जो आदि से था जो हम ने जीवन के वचन के विषय में सुना है जो अपने नेत्रों से देखा है जिस पर हम ने दृष्टि २ किई और हमारे हाथों ने छूआ. कि वह जीवन प्रगट हुआ और हम ने देखा है और साक्षी देते हैं और तुम्हें उस सनातन जीवन का समाचार सुनाते हैं जो पिता के संग था और हमों पर ३ प्रगट हुआ. जो हम ने देखा और सुना है उस का समाचार तुम्हें सुनाते हैं इस लिये कि हमारे साथ तुम्हारी संगति होय और हमारी यह संगति पिता के साथ और उस के पुत्र यीशु खीष्ट के ४ साथ है। और यह बातें हम तुम्हारे पास इस लिये लिखते हैं कि तुम्हारा आनन्द पूरा होय ॥

५ जो समाचार हम ने उस से सुना है और तुम्हें सुनाते हैं सो यह है कि ईश्वर ज्योति है और उस में कुछ भी ६ अन्धकार नहीं है। जो हम कहें कि उस के साथ हमारी संगति है और हम अंधियारे में चलें तो झूठ बोलते हैं और सच्चाई पर नहीं चलते हैं। ७ परन्तु जैसा वह ज्योति में है वैसे ही जो हम ज्योति में चलें तो एक दूसरे से संगति रखते हैं और उस के पुत्र यीशु खीष्ट का लोहू हमें सब पाप से शुद्ध करता है। ८ जो हम कहें कि हम में कुछ पाप नहीं है तो अपने को धोखा देते हैं और सच्चाई हम में नहीं है। ९ जो हम अपने पापों को मान लेवें तो वह हमारे पापों को क्षमा करने को और हमें सब अधर्म्म से शुद्ध करने को विश्वासयोग्य और धर्म्मी है। १० जो हम कहें कि हम ने पाप नहीं किया है तो उस को झूठा बनाते हैं और उस का वचन हम में नहीं है ॥

दूसरा पर्व्व।

१ हे मेरे बालको मैं यह बातें तुम्हारे पास लिखता हूं जिस्तें तुम पाप न करो और यदि कोई पाप करे तो पिता के पास हमारा एक सहायक है अर्थात २ धार्म्मिक यीशु खीष्ट। और वही हमारे पापों के लिये प्रायश्चित्त है और केवल हमारे नहीं परन्तु सारे जगत के पापों के लिये भी ॥

३ और हम लोग जो उस की आज्ञाओं को पालन करें तो इसी से जानते कि ४ उस को पहचानते हैं। जो कहता है मैं उसे पहचानता हूं और उस की आज्ञाओं को नहीं पालन करता है सो झूठा है और उस में सच्चाई नहीं है। ५ परन्तु जो कोई उस के वचन को पालन करे उस में सचमुच ईश्वर का प्रेम सिद्ध किया गया है. इस से हम जानते हैं ६ कि हम उस में हैं। जो कहता है मैं उस में रहता हूं उसे उचित है कि आप भी वैसा ही चले जैसा वह चला॥

७ हे भाइयो मैं तुम्हारे पास नई आज्ञा नहीं लिखता हूं परन्तु पुरानी आज्ञा जो आरंभ से तुम्हारे पास थी. पुरानी आज्ञा वह वचन है जिसे तुम ने आरंभ ८ से सुना। फिर मैं तुम्हारे पास नई आज्ञा लिखता हूं और यह तो उस में और तुम में सत्य है क्योंकि अंधकार बीता जाता है और सच्चा उजियाला ९ अभी चमकता है। जो कहता है मैं उजियाले में हूं और अपने भाई से बैर रखता है सो अब लों अंधकार में है। १० जो अपने भाई को प्यार करता है सो उजियाले में रहता है और ठोकर खाने ११ का कारण उस में नहीं है। पर जो अपने भाई से बैर रखता है सो अंधकार में है और अंधकार में चलता है और नहीं जानता मैं कहां जाता हूं क्योंकि अंधकार ने उस की आंखें अंधी किई हैं॥

१२ हे बालको मैं तुम्हारे पास लिखता हूं इस लिये कि तुम्हारे पाप उस के १३ नाम के कारण क्षमा किये गये हैं। हे पितरो मैं तुम्हारे पास लिखता हूं इस लिये कि तुम उसे जो आदि से है जानते हो. हे जवानो मैं तुम्हारे पास लिखता हूं इस लिये कि तुम ने उस दुष्ट पर जय किया है. हे लड़को मैं तुम्हारे पास लिखता हूं इस लिये कि तुम पिता को जानते हो। हे पितरो १४ मैं ने तुम्हारे पास लिखा है इस लिये कि तुम उसे जो आदि से है जानते हो. हे जवानो मैं ने तुम्हारे पास लिखा है इस लिये कि तुम बलवन्त हो और ईश्वर का वचन तुम में रहता है और तुम ने उस दुष्ट पर जय किया है॥

न तो संसार से न संसार में की १५ वस्तुओं से प्रीति रखो. यदि कोई संसार से प्रीति रखता है तो पिता का प्रेम उस में नहीं है। क्योंकि जो कुछ १६ संसार में है अर्थात शरीर का अभिलाष और नेत्रों का अभिलाष और जीविका का घमंड सो पिता की ओर से नहीं है परन्तु संसार की ओर से है। और १७ संसार और उस का अभिलाष बीता जाता है परन्तु जो ईश्वर की इच्छा पर चलता है सो सदा लों ठहरता है॥

हे लड़को यह पिछला समय है और १८ जैसा तुम ने सुना कि ख्रीष्टविरोधी आता है तैसे अब भी बहुत से ख्रीष्ट-विरोधी हुए हैं जिस से हम जानते हैं कि पिछला समय है। वे हमों में से १९ निकल गये परन्तु हम में के नहीं थे क्योंकि जो वे हम में के होते तो हमारे संग रहते परन्तु वे निकल गये जिस्तें प्रगट होवे कि सब हम में के नहीं हैं। पर तुम्हारा तो उस परम- २० पवित्र से अभिषेक हुआ है और तुम सब कुछ जानते हो। मैं ने तुम्हारे २१ पास इस लिये नहीं लिखा है कि तुम सत्य को नहीं जानते हो परन्तु इस लिये कि उसे जानते हो और कि कोई झूठ सत्य में से नहीं है। झूठा कौन २२ है केवल वह जो मुकरके कहता है कि यीशु जो है सो ख्रीष्ट नहीं है. वही

खीष्टविरोधी है जो पिता से और पुत्र से
२३ मुकरता है। जो कोई पुत्र से मुकरता है पिता भी उस का नहीं है. जो पुत्र को मान लेता है पिता भी उस का है॥

२४ सो जो कुछ तुम ने आरंभ से सुना वह तुम में रहे. जो तुम ने आरंभ से सुना सो यदि तुम में रहे तो तुम भी
२५ पुत्र में और पिता में रहोगे। और प्रतिज्ञा जो उस ने हम से किई है यह
२६ है अर्थात अनन्त जीवन। यह बातें मैं ने तुम्हारे पास तुम्हारे भरमानेहारों के
२७ विषय में लिखी हैं। और तुम ने जो अभिषेक उस से पाया है सो तुम में रहता है और तुम्हें प्रयोजन नहीं कि कोई तुम्हें सिखावे परन्तु जैसा वही अभिषेक तुम्हें सब बातों के विषय में शिक्षा देता है और सत्य है और झूठ नहीं है और जैसा उस ने तुम्हें सिखाया
२८ है तैसे तुम उस में रहो। और अब हे बालको उस में रहो कि जब वह प्रगट होय तब हमें साहस हो और हम उस के आने पर उस के आगे से लज्जित
२९ होके न जावें। जो तुम जानो कि वह धर्म्मी है तो जानते हो कि जो कोई धर्म्म का कार्य्य करता है सो उस से उत्पन्न हुआ है॥

तीसरा पर्व्व।

१ देखो पिता ने हमों पर कैसा प्रेम किया है कि हम ईश्वर के सन्तान कहावें. इस कारण संसार हमें नहीं पहचानता है क्योंकि उस को नहीं
२ पहचाना। हे प्यारो अभी हम ईश्वर के सन्तान हैं और अब लों यह नहीं प्रगट हुआ कि हम क्या होंगे परन्तु जानते हैं कि जो प्रगट होय तो हम उस के समान होंगे क्योंकि हम को
३ जैसा वह है तैसा देखेंगे। और जो कोई उस पर यह आशा रखता है सो जैसा वह पवित्र है तैसा ही अपने को पवित्र करता है।
४ जो कोई पाप करता है सो व्यवस्थालंघन भी करता है और पाप तो व्यवस्थालंघन है।
५ और तुम जानते हो कि वह तो हम लिये प्रगट हुआ कि हमारे पापों को उठा लेवे और उस में पाप नहीं है।
६ जो कोई उस में रहता है सो पाप नहीं करता है. जो कोई पाप करता है उस ने न उस को देखा है न उस को जाना है॥

७ हे बालको कोई तुम्हें न भरमावे. जैसा वह धर्म्मी है तैसा वह जो धर्म्म का कार्य्य करता है धर्म्मी है.
८ जो पाप करता है सो शैतान से है क्योंकि शैतान आरंभ से पाप करता है. ईश्वर का पुत्र इसी लिये प्रगट हुआ कि शैतान के कामों को लोप करे।
९ जो कोई ईश्वर से उत्पन्न हुआ है सो पाप नहीं करता है क्योंकि उस का बीज उस में रहता है और वह पाप नहीं कर सकता है क्योंकि ईश्वर से उत्पन्न हुआ है।
१० इसी से ईश्वर के सन्तान और शैतान के सन्तान प्रगट होते हैं. जो कोई धर्म्म का कार्य्य नहीं करता है सो ईश्वर से नहीं है और न वह जो अपने भाई को प्यार नहीं करता है।
११ क्योंकि यही समाचार है जो तुम ने आरंभ से सुना कि हम एक दूसरे को प्यार करें।
१२ ऐसा नहीं जैसा काइन उस दुष्ट से था और अपने भाई को बध किया. और उस को किस कारण बध किया. इस कारण कि उस के अपने कार्य्य बुरे थे परन्तु उस के भाई के कार्य्य धर्म्म के थे।
१३ हे मेरे भाइयो यदि संसार तुम से बैर करता है तो अचंभा मत करो॥

१४ हम लोग जानते हैं कि हम मृत्यु

से पार होके जीवन में पहुंचे हैं क्योंकि भाइयों को प्यार करते हैं . जो भाई को प्यार नहीं करता है सो मृत्यु में रहता है । १५ जो कोई अपने भाई से बैर रखता है सो मनुष्यघाती है और तुम जानते हो कि किसी मनुष्यघाती में अनन्त जीवन नहीं रहता है । १६ हम इसी से प्रेम को समझते हैं कि उस ने हमारे लिये अपना प्राण दिया और हमें उचित है कि भाइयों के लिये प्राण देवें । १७ परन्तु जिस किसी के पास संसार की जीविका हो जो वह अपने भाई को देखे कि उसे प्रयोजन है और उस से अपना अन्तःकरण कठोर करे तो उस में क्योंकर ईश्वर का प्रेम रहता है । १८ हे मेरे बालको हम बात से अथवा जीभ से नहीं परन्तु कार्य्य से और सच्चाई से प्रेम करें । १९ और इसी से हम जानते हैं कि हम सच्चाई के हैं और उस के आगे अपने अपने मन को समझायेंगे । २० क्योंकि जो हमारा मन हमें दोष देवे तो जानते हैं कि ईश्वर हमारे मन से बड़ा है और सब कुछ जानता है । २१ हे प्यारो जो हमारा मन हमें दोष न देवे तो हमें ईश्वर के सन्मुख साहस है । २२ और हम जो कुछ मांगते हैं उस से पाते हैं क्योंकि उस की आज्ञाओं को पालन करते हैं और वे ही काम करते हैं जिन से वह प्रसन्न होता है । २३ और उस की आज्ञा यह है कि हम उस के पुत्र यीशु खीष्ट के नाम पर बिश्वास करें और जैसा उस ने हमें आज्ञा दिई तैसा एक दूसरे को प्यार करें । २४ और जो उस की आज्ञाओं को पालन करता है सो उस में रहता है और वह उस में और इसी से हम जानते हैं कि वह हमों में रहता है अर्थात उस आत्मा से जो उस ने हमें दिया है ॥

चौथा पर्ब्ब ।

१ हे प्यारो हर एक आत्मा का बिश्वास मत करो परन्तु आत्माओं को परखो कि वे ईश्वर की ओर से हैं कि नहीं क्योंकि बहुत झूठे भविष्यद्वक्ता जगत में निकल आये हैं । २ इसी से तुम ईश्वर का आत्मा पहचानते हो . हर एक आत्मा जो मान लेता है कि यीशु खीष्ट शरीर में आया है ईश्वर की ओर से है । ३ और जो आत्मा नहीं मान लेता है कि यीशु खीष्ट शरीर में आया है ईश्वर की ओर से नहीं है और यही तो खीष्टविरोधी का आत्मा है जिसे तुम ने सुना है कि आता है और अब भी वह जगत में है । ४ हे बालको तुम तो ईश्वर के हो और तुम ने उन पर जय किया है क्योंकि जो तुम में है सो उस से जो संसार में है बड़ा है । ५ वे तो संसार के हैं इस कारण वे संसार की बातें बोलते हैं और संसार उन की सुनता है । ६ हम तो ईश्वर के हैं . जो ईश्वर को जानता है सो हमारी सुनता है . जो ईश्वर का नहीं है सो हमारी नहीं सुनता . इस से हम सच्चाई का आत्मा और भ्रांति का आत्मा पहचानते हैं ॥

७ हे प्यारो हम एक दूसरे को प्यार करें क्योंकि प्रेम ईश्वर से है और जो कोई प्रेम करता है सो ईश्वर से उत्पन्न हुआ है और ईश्वर को जानता है । ८ जो प्रेम नहीं करता है उस ने ईश्वर को नहीं जाना क्योंकि ईश्वर प्रेम है । ९ इसी में ईश्वर का प्रेम हमारी ओर प्रगट हुआ कि ईश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है जिस्तें हम लोग उस के द्वारा से जीवें । १० इसी में प्रेम है यह नहीं कि हम ने ईश्वर को प्यार किया परन्तु यह कि उस ने हमें

प्यार किया और अपने पुत्र को हमारे पापों के लिये प्रायश्चित्त होने को भेज ११ दिया। हे प्यारो यदि ईश्वर ने इस रीति से हमें प्यार किया तो उचित है कि हम भी एक दूसरे को प्यार करें॥

१२ किसी ने ईश्वर को कभी नहीं देखा है. जो हम एक दूसरे को प्यार करें तो ईश्वर हम में रहता है और उस का प्रेम हम में सिद्ध किया हुआ १३ है। इसी से हम जानते हैं कि हम उस में रहते हैं और वह हम में कि उस १४ ने अपने आत्मा में से हमें दिया है। और हम ने देखा है और साक्षी देते हैं कि पिता ने पुत्र को भेजा है कि जगत का १५ त्राणकर्त्ता होवे। जो कोई मान लेता है कि यीशु ईश्वर का पुत्र है ईश्वर उस में रहता है और वह ईश्वर में। १६ और हमारी ओर जो ईश्वर का प्रेम है उस को हम ने जान लिया है और उस की प्रतीति किई है. ईश्वर प्रेम है और जो प्रेम में रहता है सो ईश्वर में १७ रहता है और ईश्वर उस में। इसी से प्रेम हमों में सिद्ध किया गया है जिस्तें हमें विचार के दिन में साहस होवे कि जैसा वह है हम भी इस संसार में १८ वैसे ही हैं। प्रेम में भय नहीं है परन्तु पूरा प्रेम भय को बाहर निकालता है क्योंकि जहां भय तहां दंड है. जो भय करता है सो प्रेम में १९ सिद्ध नहीं हुआ है। हम उस को प्यार करते हैं क्योंकि पहिले उस ने हमें २० प्यार किया। यदि कोई कहे मैं ईश्वर को प्यार करता हूं और अपने भाई से बैर रखे तो झूठा है क्योंकि जो अपने भाई को जिसे देखा है प्यार नहीं करता है सो ईश्वर को जिसे नहीं देखा है क्योंकर प्यार कर सकता है। २१ और इस से यह आज्ञा हमें मिली है कि जो ईश्वर को प्यार करता है सो अपने भाई को भी प्यार करे॥

पांचवां पर्व्व।

१ जो कोई विश्वास करता है कि यीशु जो है सो ख्रीष्ट है वह ईश्वर से उत्पन्न हुआ है और जो कोई उत्पन्न करनेहारे को प्यार करता है सो उसे भी प्यार करता है जो उस से उत्पन्न २ हुआ है। इस से हम जानते हैं कि जब हम ईश्वर को प्यार करते हैं और उस की आज्ञाओं को पालन करते हैं तब ईश्वर के सन्तानों को प्यार करते ३ हैं। क्योंकि ईश्वर का प्रेम यह है कि हम उस की आज्ञाओं को पालन करें और उस की आज्ञाएं भारी नहीं ४ हैं। क्योंकि जो कुछ ईश्वर से उत्पन्न हुआ है सो संसार पर जय करता है और वह जय जिस ने संसार पर जय पाया है यह है अर्थात हमारा विश्वास। ५ संसार पर जय करनेहारा कौन है केवल वह जो विश्वास करता है कि यीशु ईश्वर का पुत्र है॥

६ जो जल और लोहू के द्वारा से आया सो यह है अर्थात यीशु ख्रीष्ट. वह केवल जल से नहीं परन्तु जल से और लोहू से आया. और आत्मा है जो साक्षी देता है क्योंकि आत्मा सत्य है। ७ क्योंकि तीन हैं जो [स्वर्ग में साक्षी देते हैं पिता और वचन और पवित्र आत्मा ८ और ये तीनों एक हैं। और तीन हैं जो पृथिवी पर] साक्षी देते हैं आत्मा और जल और लोहू और तीनों एक में मिलते ९ हैं। जो हम मनुष्यों की साक्षी को ग्रहण करते हैं तो ईश्वर की साक्षी उस से बड़ी है क्योंकि यह ईश्वर की साक्षी है जो उस ने अपने पुत्र के विषय में दिई १० है। जो ईश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है सो अपने ही में साक्षी रखता

है . जो ईश्वर का बिश्वास नहीं करता है उस को झूठा बनाया है क्योंकि उस साक्षी पर बिश्वास नहीं किया है जो ईश्वर ने अपने पुत्र के बिषय में दिई है। ११ और साक्षी यह है कि ईश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है और यह १२ जीवन उस के पुत्र में है। पुत्र जिस का है उस को जीवन है . ईश्वर का पुत्र जिस का नहीं है उस को जीवन १३ नहीं है। यह बातें मैं ने तुम्हारे पास जो ईश्वर के पुत्र के नाम पर बिश्वास करते हो इस लिये लिखी हैं कि तुम जानो कि तुम को अनन्त जीवन है और जिस्तें तुम ईश्वर के पुत्र के नाम पर बिश्वास रखो ॥

१४ और जो साहस हम को उस के यहां होता है सो यह है कि जो हम लोग उस की इच्छा के अनुसार कुछ मांगें १५ तो वह हमारी सुनता है। और जो हम जानते हैं कि जो कुछ हम मांगें वह हमारी सुनता है तो जानते हैं कि मांगी हुई बस्तु जो हम ने उस से मांगी हैं हमें मिली हैं। यदि कोई अपने भाई १६ को ऐसा पाप करते देखे जो मृत्युजनक पाप नहीं है तो वह बिन्ती करेगा और जो पाप मृत्युजनक नहीं है ऐसा पाप करनेहारों के लिये वह उसे जीवन देगा . मृत्युजनक पाप भी होता है उस के बिषय में मैं नहीं कहता हूं कि वह मांगे। सब अधर्म्म पाप है और ऐसा १७ पाप भी है जो मृत्युजनक नहीं है ॥

हम जानते हैं कि जो कोई ईश्वर १८ से उत्पन्न हुआ है सो पाप नहीं करता है परन्तु जो ईश्वर से उत्पन्न हुआ सो अपने तईं बचा रखता है और वह दुष्ट उसे नहीं छूता है। हम जानते हैं कि १९ हम ईश्वर से हैं और सारा संसार उस दुष्ट के बश में पड़ा है। और हम जानते २० हैं कि ईश्वर का पुत्र आया है और हमें बुद्धि दिई है कि हम सत्य को पहचानें और हम उस सत्य में उस के पुत्र यीशु खीष्ट में रहते हैं . यह तो सत्य ईश्वर और अनन्त जीवन है। हे बालको २१ अपने तईं मूरतों से बचाओ। आमीन ॥

योहन प्रेरित की दूसरी पत्री।

प्राचीन पुरुष चुनी हुई कुरिया को और उस के लड़कों को जिन्हें मैं सच्चाई में प्यार करता हूं . और केवल मैं नहीं परन्तु सब लोग भी जो सच्चाई को जानते हैं उस सच्चाई के कारण प्यार करते हैं जो हमों में रहती है और हमारे साथ सदा लों रहेगी। अनुग्रह और दया और शांति ईश्वर पिता की ओर से और पिता के पुत्र प्रभु यीशु खीष्ट की ओर से सच्चाई और प्रेम के द्वारा आप लोगों के संग होय ॥

मैं ने बहुत आनन्द किया कि आप ४ के लड़कों में से मैं ने कितनों को जैसे हम ने पिता से आज्ञा पाई तैसे ही सच्चाई पर चलते हुए पाया है। और ५ अब हे कुरिया मैं जैसा नई आज्ञा लिखता हुआ तैसा नहीं परन्तु जो आज्ञा हमें आरंभ से मिली उसी को

आप के पास लिखता हुआ आप से बिन्ती करता हूं कि हम एक दूसरे को ६ प्यार करें। और प्यार यही है कि हम उस की आज्ञाओं के अनुसार चलें. यही आज्ञा है जैसी तुम ने आरंभ से ७ सुनी जिस्तें तुम उस पर चलो। क्योंकि बहुत भरमानेहारे जगत में आये हैं जो नहीं मान लेते हैं कि यीशु खीष्ट शरीर में आया. यह भरमानेहारा और खीष्ट-८ बिरोधी है। अपने विषय में चौकस रहिये कि जो कर्म्म हम ने किये उन्हें ९ न खोवें परन्तु पूरा फल पावें। जो कोई अपराधी होता है और खीष्ट की शिक्षा में नहीं रहता है ईश्वर उस का नहीं है. जो खीष्ट की शिक्षा में रहता है पिता और पुत्र दोनों उसी के हैं। यदि १० कोई आप लोगों के पास आके यह शिक्षा नहीं लाता है तो उसे घर में ग्रहण न कीजिये और उस से कल्याण होय न कहिये। क्योंकि जो उस से ११ कल्याण होय कहता है सो उस के बुरे कर्म्मों में भागी होता है॥

मुझे बहुत कुछ आप लोगों के पास १२ लिखना है पर मुझे कागज और सियाही के द्वारा लिखने की इच्छा न थी परन्तु आशा है कि मैं आप लोगों के पास आऊं और सन्मुख होके बात करूं जिस्तें हमारा आनन्द पूरा होय। आप की १३ चुनी हुई बहिन के लड़कों का आप से नमस्कार। आमीन॥

योहन प्रेरित की तीसरी पत्री।

१ प्राचीन पुरुष प्यारे गायस को जिसे मैं सच्चाई से प्यार करता हूं॥

२ हे प्यारे मेरी प्रार्थना है कि जैसे आप का प्राण कुशल क्षेम से रहता है तैसे सब बातों में आप कुशल क्षेम से रहें ३ और भले चंगे हों। क्योंकि भाई लोग जो आये और आप की सच्चाई की जैसे आप सच्चाई पर चलते हैं साक्षी दिई ४ तो मैं ने बहुत आनन्द किया। मुझे इस से बड़ा कोई आनन्द नहीं है कि मैं सुनूं कि मेरे लड़के सच्चाई पर चलते ५ हैं। हे प्यारे आप भाइयों के लिये और अतिथियों के लिये जो कुछ करते हैं सो ६ बिश्वासी की रीति से करते हैं। इन्हों ने मंडली के आगे आप के प्रेम की साक्षी दिई. जो आप ईश्वर के योग्य व्यवहार करके उन्हें आगे पहुंचावें तो भला करेंगे। क्योंकि वे उस के नाम ७ पर निकले हैं और देवपूजकों से कुछ नहीं लेते हैं। इस लिये हमें उचित ८ है कि ऐसों को ग्रहण करें जिस्तें हम सच्चाई के लिये सहकर्म्मी हो जावें॥

मैं ने मंडली के पास लिखा परन्तु ९ दियोत्रिफी जो उन में प्रधान होने की इच्छा रखता है हमें ग्रहण नहीं करता है। इस कारण मैं जो आऊं तो उस १० के कर्म्मों को जो यह करता है स्मरण कराऊंगा कि बुरी बातों से हमारे बिरुद्ध बकता है और इन पर सन्तोष न करके यह आप ही भाइयों को ग्रहण नहीं करता है और उन्हें जो ग्रहण किया चाहते हैं बर्जता है और मंडली में से निकालता है। हे प्यारे ११

बुराई के नहीं परन्तु भलाई के अनुगामी हूजिये, जो भला करता है सो ईश्वर से है परन्तु जो बुरा करता है उस ने १२ ईश्वर को नहीं देखा है। दीमीत्रिय के लिये सब लोगों ने और सच्चाई ने आप ही साक्षी दिई है बरन हम भी साक्षी देते हैं और आप लोग जानते हैं कि हमारी साक्षी सत्य है॥

मुझे बहुत कुछ लिखना था पर मैं १३ आप के पास सियाही और कलम के द्वारा लिखने नहीं चाहता हूं। परन्तु १४ मुझे आशा है कि शीघ्र आप को देखूं तब हम सन्मुख होके बात करेंगे। आप का कल्याण होय. मित्र लोगों १५ का आप से नमस्कार. नाम ले ले मित्रों से नमस्कार कहिये॥

यिहूदा की पत्री।

१ यिहूदा जो यीशु ख्रीष्ट का दास और याकूब का भाई है बुलाये हुए लोगों को जो ईश्वर पिता से पवित्र किये हुए और यीशु ख्रीष्ट के लिये रक्षा किये हुए २ हैं. तुम्हें बहुत बहुत दया और शांति और प्रेम पहुंचे॥

३ हे प्यारो मैं साधारण त्राण के विषय में तुम्हारे पास लिखने का सब प्रकार का यत्न जो करने लगा तो मुझे आवश्यक हुआ कि तुम्हारे पास लिखके उस विश्वास के लिये जो पवित्र लोगों को एक ही बेर सौंपा गया साहस करने ४ का उपदेश करूं। क्योंकि कितने मनुष्य जो पूर्व्वकाल से इस दंड के योग्य लिखे गये थे छिपके घुस आये हैं जो भक्तिहीन हैं और हमारे ईश्वर के अनुग्रह को लुचपन की ओर फेर देते हैं और अद्वैत स्वामी ईश्वर और हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट से मुकर जाते हैं॥

५ पर यद्यपि तुम ने इस को एक बेर जाना था तौभी मैं तुम्हें स्मरण करवाने चाहता हूं कि प्रभु ने लोगों को मिसर देश से बचाके फिर जिन्हों ने विश्वास न किया उन्हें नाश किया। उन दूतों ६ को भी जिन्हों ने अपने प्रथम पद को न रखा परन्तु अपने निज निवास को छोड़ दिया उस ने उस बड़े दिन के विचार के लिये अंधकार में सदा के बन्धनों में रखा है। जैसे सदोम और ७ अमोरा और उन के आसपास के नगर इन्हों की भी रीति पर व्यभिचार करके और पराये शरीर के पीछे जाके दृष्टान्त ठहराये गये हैं कि अनन्त आग का दंड भोगते हैं॥

तौभी उसी रीति से ये लोग भी ८ स्वप्नदर्शी हो शरीर को अशुद्ध करते हैं और प्रभुता को तुच्छ जानते हैं और महत पदों की निन्दा करते हैं। परन्तु ९ प्रधान दूत मीखायेल जब शैतान से मूसा के देह के विषय में वाद विवाद करता था तब उस पर निन्दासंयुक्त विचार करने का साहस न किया परन्तु कहा परमेश्वर तुझे डांटे। पर ये लोग १० जिन जिन बातों को नहीं जानते हैं उन की निन्दा करते हैं परन्तु जिन जिन बातों को अचेतन्य पशुओं की

नाईं स्वभाव ही से जानते हैं उन
११ में भ्रष्ट होते हैं । उन पर सन्ताप कि
वे काइन के मार्ग पर चले हैं और
मजूरी के लिये बलाम की भूल में ढल
गये हैं और कोरह के बिवाद में नाश
१२ हुए हैं । तुम्हारे प्रेम के भोजों में ये
लोग समुद्र में छिपे हुए पर्वत सरीखे
हैं कि वे तुम्हारे संग निर्भय जेवते हुए
अपने तईं पालते हैं वे निर्जल मेघ हैं
जो बयारों से इधर उधर उड़ाये जाते
हैं पतझड़ के निष्फल पेड़ जो दो दो
१३ बेर मरे हैं और उखाड़े गये हैं . समुद्र
की प्रचंड लहरें जो अपनी लज्जा का
फेन निकालती हैं भरमते हुए तारे जिन
के लिये सदा का घोर अन्धकार रखा
१४ गया है । और हनोक ने भी जो आदम
से सातवां था इन्हीं का भविष्यद्वाक्य
कहा कि देखो परमेश्वर अपने सहस्रों
१५ पवित्रों के बीच में आया . कि सभों
का बिचार करे और उन में के सब भक्ति-
हीन लोगों को उन के सब अभक्ति के
कर्म्मों के विषय में जो उन्हों ने भक्ति-
हीन होके किये हैं और उन सब कठोर
बातों के विषय में जो भक्तिहीन पापियों
ने उस के विरुद्ध कही हैं दोषी ठहराये ।
१६ ये तो कुड़कुड़ानेहारे अपने भाग्य के
दुखनेहारे और अपने अभिलाषों के अनु-
सार चलनेहारे हैं और उन का मुंह
गलफटाकी की बातें बोलता है और वे
लाभ के निमित्त मुंह देखी बड़ाई किया
करते हैं ॥

पर हे प्यारो तुम उन बातों को १७
स्मरण करो जो हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट
के प्रेरितों ने आगे से कही हैं . कि वे १८
तुम से बोले कि पिछले समय में निन्दक
लोग होंगे जो अपने अभक्ति के अभि-
लाषों के अनुसार चलेंगे । ये तो वे हैं १९
जो अपने तईं अलग करते हैं शारीरिक
लोग जिन्हें आत्मा नहीं है ॥

परन्तु हे प्यारो तुम लोग अपने अति २०
पवित्र बिश्वास के द्वारा अपने तईं
सुधारते हुए पवित्र आत्मा की सहायता
से प्रार्थना करते हुए . अपने को ईश्वर २१
के प्रेम में रखो और अनन्त जीवन के
लिये हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्ट की दया की
आस देखो । और भेद करते हुए कितनों २२
पर तो दया करो । पर कितनों को २३
आग में से छीनके उस वस्त्र से भी जो
शरीर से कलंकी किया गया है घिन्न
करके डरते हुए बचाओ ॥

जो तुम्हें ठोकर से बचाये हुए रख २४
सकता है और अपनी महिमा के सन्मुख
आह्लाद सहित निर्दोष खड़ा कर सकता
है . उस को अर्थात अद्वैत बुद्धिमान २५
ईश्वर हमारे त्राणकर्त्ता को ऐश्वर्य्य
और महिमा और पराक्रम और अधिकार
अभी और सर्व्वदा लों भी होवे ।
आमीन ॥

योहन का प्रकाशित वाक्य ।

पहिला पर्व्व ।

१ यीशु ख्रीष्ट का प्रकाशित वाक्य जो ईश्वर ने उसे दिया कि वह अपने दासों को वह बातें जिन का शीघ्र पूरा होना अवश्य है दिखावे और उस ने अपने दूत के हाथ भेजके उसे अपने २ दास योहन को बताया . जिस ने ईश्वर के वचन और यीशु ख्रीष्ट की साक्षी पर अर्थात जो कुछ उस ने देखा उस ३ पर साक्षी दिई । जो इस भविष्यद्वाक्य की बातें पढ़ता है और जो सुनते और इस में की लिखी हुई बातों को पालन करते हैं सो धन्य क्योंकि समय निकट है ॥

४ योहन आशिया में की सात मण्डलियों को . अनुग्रह और शांति उस से जो है और जो था और जो आनेवाला है और सात आत्माओं से जो उस के सिंहासन के आगे हैं . और यीशु ख्रीष्ट ५ से तुम्हें मिले . जो विश्वासयोग्य साक्षी और मृतकों में से पहिलौठा और पृथिवी ६ के राजाओं का अध्यक्ष वही है । जिस ने हमें प्यार कर अपने लोहू में हमारे पापों को धो डाला और हमें अपने पिता ईश्वर के यहां राजा और याजक बनाया उसी की महिमा और पराक्रम ७ सदा सर्व्वदा रहे . आमीन । देखो वह मेघों पर आता है और हर एक आंख उसे देखेगी हां जिन्हों ने उसे बेधा वे भी उसे देखेंगे और पृथिवी के सब कुल उस के लिये छाती पीटेंगे . ऐसा होय ८ आमीन । परमेश्वर ईश्वर वह जो है और जो था और जो आनेवाला है जो सर्व्वशक्तिमान है कहता है मैं ही अलफा और ओमिगा आदि और अन्त हूं ॥

९ मैं योहन जो तुम्हारा भाई और यीशु ख्रीष्ट के क्लेश और राज्य और धीरज में सहभागी हूं ईश्वर के वचन के कारण और यीशु ख्रीष्ट की साक्षी के कारण पत्मो नाम टापू में था । मैं १० प्रभु के दिन आत्मा में था और अपने पीछे तुरही का सा बड़ा शब्द यह कहते ११ सुना . कि मैं ही अलफा और ओमिगा पहिला और पिछला हूं और जो तू देखता है उसे पत्र में लिख और आशिया में की सात मण्डलियों के पास भेज अर्थात इफिस को और स्मुर्णा को और पर्गाम को और थुआतीरा को और सार्दी को और फिलादिलफिया को और लाओदिकेया को ॥

१२ और जिस शब्द ने मेरे संग बातें किईं उसे देखने को मैं पीछे फिरा और पीछे फिरके मैं ने सात सोने की दीवट १३ देखीं । और उन सात दीवटों के बीच में मनुष्य के पुत्र के समान एक पुरुष को देखा जो पांवों तक का वस्त्र पहिने और छाती पर सुनहला पटुका बांधे हुए १४ था । उस के सिर और बाल श्वेत ऊन के ऐसे और पाले के ऐसे उजले हैं और उस के नेत्र अग्नि की ज्वाला की नाईं १५ हैं । और उस के पांव उत्तम पीतल के समान भट्ठी में दहकाये हुए से हैं और उस का शब्द बहुत जल के शब्द की १६ नाईं है । और वह अपने दहिने हाथ में सात तारे लिये हुए है और उस के मुख से चोखा दोधारा खड्ग निकलता है और उस का मुंह ऐसा है जैसा सूर्य्य १७ अपने पराक्रम से चमकता है । और जब मैं ने उसे देखा तब मृतक की नाईं उस के पांवों पास गिर पड़ा और उस

ने अपना दहिना हाथ मुझ पर रखके मुझ से कहा मत डर मैं ही पहिला और १८ पिछला और जीवता हूं। और मैं मूआ था और देख मैं सदा सर्व्वदा जीवता हूं. आमीन. और मृत्यु और परलोक १९ की कुंजियां मेरे पास हैं। इस लिये जो कुछ तू ने देखा है और जो कुछ होता है और जो कुछ इस के पीछे होनेवाला २० है सो लिख. अर्थात सात तारों का भेद जो तू ने मेरे दहिने हाथ में देखे और वे सात सोने की दीवटें. सात तारे सातों मंडलियों के दूत हैं और सात दीवट जो तू ने देखीं सातों मंडली हैं॥

दूसरा पर्व्व।

१ इफिस में की मंडली के दूत के पास लिख. जो सातों तारे अपने दहिने हाथ में धरे रहता है जो सातों सोने की दीवटों के बीच में फिरता है २ सो यही कहता है। मैं तेरे कार्य्यों को और तेरे परिश्रम को और तेरे धीरज को जानता हूं और यह कि तू बुरे लोगों को नहीं सह सकता है और जो लोग अपने तई प्रेरित कहते हैं पर नहीं हैं उन्हें तू ने परखा और उन्हें झूठे पाया। ३ और तू ने सह लिया और धीरज रखता है और मेरे नाम के कारण परिश्रम ४ किया है और नहीं थक गया है। परन्तु मेरे मन में तेरी ओर यह है कि तू ने ५ अपना पहिला प्रेम छोड़ दिया है। सो चेत कर कि तू कहां से गिरा है और पश्चात्ताप कर और पहिले कार्य्यों को कर नहीं तो मैं शीघ्र तेरे पास आता हूं और जो तू पश्चात्ताप न करे तो मैं तेरी दीवट को उस के स्थान से हटा ६ देऊंगा। पर तुझे इतना तो है कि तू निकोलावियों के कर्म्मों से घिन्न करता है जिन से मैं भी घिन्न करता हूं। ७ जिस का कान हो सो सुने कि आत्मा मंडलियों से क्या कहता है. जो जय करे उस को मैं जीवन के वृक्ष में से जो ईश्वर के स्वर्गलोक में है खाने को देऊंगा॥

८ और स्मुर्णा में की मंडली के दूत के पास लिख. जो पहिला और पिछला है जो मूआ था और जी गया सो यही ९ कहता है। मैं तेरे कार्य्यों को और क्लेश को और दरिद्रता को जानता हूं तौभी तू धनी है और जो लोग अपने तई यिहूदी कहते हैं और नहीं हैं परन्तु शैतान की सभा हैं उन की निन्दा १० को जानता हूं। जो दुःख तू भोगेगा उस से कुछ मत डर देख शैतान तुम में से कितनों को बन्दीगृह में डालेगा कि तुम्हारी परीक्षा किई जाय और तुम्हें दस दिन लों क्लेश होगा. तू मृत्यु लों विश्वासयोग्य रह और मैं तुझे ११ जीवन का मुकुट देऊंगा। जिस का कान हो सो सुने कि आत्मा मंडलियों से क्या कहता है. जो जय करे दूसरी मृत्यु से उस को कुछ हानि नहीं होगी॥

१२ और पर्गाम में की मंडली के दूत के पास लिख. जिस पास खड्ग है जो दोधारा और चोखा है सो यही कहता १३ है। मैं तेरे कार्य्यों को जानता हूं और तू कहां बास करता है अर्थात जहां शैतान का सिंहासन है और तू मेरे नाम को धरे रहता है और मेरे विश्वास से उन दिनों में भी नहीं मुकर गया जिन में आन्तिपा मेरा विश्वासयोग्य साक्षी था जो तुम्हों में जहां शैतान बास करता है तहां घात किया गया। १४ परन्तु मेरे मन में तेरी ओर कुछ थोड़ी सी बातें हैं कि वहां तेरे पास कितने हैं जो बलाम की शिक्षा को धारण करते हैं जिस ने बालाक को सिखा दिई कि इस्रायेल के सन्तानों के आगे

ठोकर का कारण डाले जिस्तें वे मूर्त्ति के आगे के बलिदान खायें और व्यभिचार करें। १५ वैसे ही तेरे पास भी कितने हैं जो निकोलायियों की शिक्षा को धारण करते हैं जिस बात से मैं घिन्न करता हूं। १६ पश्चात्ताप कर नहीं तो मैं शीघ्र तेरे पास आता हूं और अपने मुख के खड्ग से उन के साथ लड़ूंगा। १७ जिस का कान हो सो सुने कि आत्मा मंडलियों से क्या कहता है. जो जय करे उस को मैं गुप्त मन्ना में से खाने को देऊंगा और उस को एक श्वेत पत्थर देऊंगा और उस पत्थर पर एक नया नाम लिखा हुआ है जिसे कोई नहीं जानता है केवल वह जो उसे पाता है॥

१८ और थुआतीरा में की मंडली के दूत के पास लिख. ईश्वर का पुत्र जिस के नेत्र आग की ज्वाला की नाईं और उस के पांव उत्तम पीतल के समान हैं यही कहता है। १९ मैं तेरे कार्य्यों को और प्रेम को और सेवकाई को और विश्वास को और तेरे धीरज को जानता हूं और यह कि तेरे पिछले कार्य्य पहिलों से अधिक हैं। २० परन्तु मेरे मन में तेरी ओर यह है कि तू उस स्त्री ईज़िबेल को जो अपने तईं भविष्यद्वक्तृ कहती है मेरे दासों को सिखाने और भरमाने देता है जिस्तें वे व्यभिचार करें और मूर्त्ति के आगे के बलिदान खायें। २१ और मैं ने उस को समय दिया कि वह पश्चात्ताप करे पर वह अपने व्यभिचार से पश्चात्ताप करने नहीं चाहती है। २२ देख मैं उसे खाट पर डालता हूं और जो उस के संग व्यभिचार करते हैं जो वे अपने कर्म्मों से पश्चात्ताप न करें तो बड़े क्लेश में डालूंगा। २३ और मैं उस के लड़कों को मार डालूंगा और सब मंडलियां जानेंगीं कि मैं ही हूं जो संक को और हृदयों को जांचता हूं और मैं तुम में से हर एक को तुम्हारे कर्म्मों के अनुसार देऊंगा। २४ पर मैं तुम्हों से अर्थात् थुआतीरा में के और और लोगों से जितने इस शिक्षा को नहीं रखते हैं और जिन्हों ने शैतान की गंभीर बातों को जैसा वे कहते हैं नहीं जाना है कहता हूं कि मैं तुम पर और कुछ भार न डालूंगा। २५ परन्तु जो तुम्हारे पास है उसे जब लों मैं न आऊं तब लों धरे रहो। २६ और जो जय करे और मेरे कार्य्यों को अन्त लों पालन करे उस को मैं अन्यदेशियों पर अधिकार देऊंगा। २७ और जैसा मैं ने अपने पिता से पाया है तैसा वह भी लोहे का दंड लेके उन की चरवाही करेगा जैसे मिट्टी के बर्त्तन चूर किये जाते हैं। २८ और मैं उसे भोर का तारा देऊंगा। २९ जिस का कान हो सो सुने कि आत्मा मंडलियों से क्या कहता है॥

तीसरा पर्व्व।

१ और सार्दी में की मंडली के दूत के पास लिख. जिस पास ईश्वर के सातों आत्मा हैं और सातों तारे सो यही कहता है. मैं तेरे कार्य्यों को जानता हूं कि तू जीने का नाम रखता है और मृतक है। २ जाग उठ और जो रह गया है और मरा चाहता है उसे स्थिर कर क्योंकि मैं ने तेरे कार्य्यों को ईश्वर के आगे पूर्ण नहीं पाया है। ३ सो चेत कर कि तू ने कैसा ग्रहण किया और सुना है और उसे पालन करके पश्चात्ताप कर. सो जो तू न जागे तो मैं चोर की नाईं तुझ पर आ पड़ूंगा और तू कुछ नहीं जानेगा कि मैं कौन सी घड़ी तुझ पर आ पड़ूंगा। ४ परन्तु तेरे पास सार्दी में भी

थोड़े से नाम हैं जिन्हों ने अपना अपना वस्त्र अशुद्ध नहीं किया और वे उजला पहिने हुए मेरे संग फिरेंगे क्योंकि वे ५ योग्य हैं । जो जय करे उसे उजला वस्त्र पहिनाया जायगा और मैं उस का नाम जीवन के पुस्तक में से किसी रीति से न मिटाऊंगा पर उस का नाम अपने पिता के आगे और उस के दूतों के ६ आगे मान लेऊंगा । जिस का कान हो सो सुने कि आत्मा मंडलियों से क्या कहता है ॥

७ और फिलादिलफिया में की मंडली के दूत के पास लिख . जो पवित्र है जो सत्य है जिस पास दाऊद की कुंजी है जो खोलता है और कोई बन्द नहीं करता और बन्द करता है और कोई ८ नहीं खोलता सो यही कहता है । मैं तेरे कार्य्यों को जानता हूं . देख मैं ने तेरे आगे खुला हुआ द्वार रख दिया है जिसे कोई नहीं बन्द कर सकता है क्योंकि तेरा सामर्थ्य थोड़ा सा है और तू ने मेरे बचन को पालन किया है और ९ मेरे नाम से नहीं मुकर गया है । देख मैं शैतान की सभा में से अर्थात जो लोग अपने तईं यिहूदी कहते हैं और नहीं हैं परन्तु झूठ बोलते हैं उन में से कितनों को सौंप देता हूं देख मैं उन से ऐसा करूंगा कि वे आके तेरे पांवों के आगे प्रणाम करेंगे और जान लेंगे कि १० मैं ने तुझे प्यार किया है । तू ने मेरे धीरज के बचन को पालन किया इस लिये मैं भी तुझे उस परीक्षा के समय से बचा रखूंगा जो सारे संसार पर आनेवाला है कि पृथिवी के निवासियों ११ की परीक्षा करे । देख मैं शीघ्र आता हूं . जो तेरे पास है उसे धरे रह कि १२ कोई तेरा मुकुट न ले ले । जो जय करे उसे मैं अपने ईश्वर के मन्दिर में खंभा बनाऊंगा और वह फिर कभी बाहर न निकलेगा और मैं अपने ईश्वर का नाम और अपने ईश्वर के नगर का नाम अर्थात नई यिरूशलीम का जो स्वर्ग में से मेरे ईश्वर के पास से उतरती है और अपना नया नाम उस पर लिखूंगा । जिस का कान हो सो सुने १३ कि आत्मा मंडलियों से क्या कहता है ॥

और लाओदिकिया में की मंडली के १४ दूत के पास लिख . जो आमीन है जो विश्वासयोग्य और सच्चा साक्षी है जो ईश्वर की सृष्टि का आदि है सो यही कहता है । मैं तेरे कार्य्यों को १५ जानता हूं कि तू न ठंढा है न तप्त है . मैं चाहता हूं कि तू ठंढा अथवा तप्त होता । सो इस लिये कि तू गुन- १६ गुना है और न ठंढा न तप्त है मैं तुझे अपने मुंह में से उगल डालूंगा । तू जो १७ कहता है कि मैं धनी हूं और धनवान हुआ हूं और मुझे किसी वस्तु का प्रयोजन नहीं है और नहीं जानता है कि तू ही दीनहीन और अभागा है और कंगाल और अन्धा और नंगा है . इसी लिये मैं तुझे परामर्श देता हूं कि १८ आग में ताया हुआ सोना मुझ से मोल ले जिस्तें तू धनवान होए और उजला वस्त्र जिस्तें तू पहिन लेवे और तेरी नंगाई की लज्जा न प्रगट किई जाय और अपनी आंखों पर लगाने के लिये अंजन ले जिस्तें तू देखे । मैं जिन जिन १९ लोगों को प्यार करता हूं उन को उलहना और ताड़ना करता हूं इस लिये उद्योगी हो और पश्चात्ताप कर । देख २० मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूं . यदि कोई मेरा शब्द सुनके द्वार खोले तो मैं उस पास भीतर आऊंगा और उस के संग बियारी खाऊंगा और वह मेरे संग खायगा । जो जय करे उसे मैं २१

अपने संग अपने सिंहासन पर बैठने देऊंगा जैसा मैं ने भी जय किया और अपने पिता के संग उस के सिंहासन पर बैठा । २२ जिस का कान हो सो सुने कि आत्मा मंडलियों से क्या कहता है ॥

चौथा पर्व्व ।

१ इस के पीछे मैं ने दृष्टि किई और देखो स्वर्ग में एक द्वार खुला हुआ है और वह पहिला शब्द जो मैं ने सुना अर्थात मेरे संग बात करनेहारी तुरही का सा शब्द यह कहता है कि इधर ऊपर आ और मैं वह बातें जिन का इस पीछे पूरा होना अवश्य है तुझे २ दिखाऊंगा । और तुरन्त मैं आत्मा में हुआ और देखा एक सिंहासन स्वर्ग में धरा था और सिंहासन पर एक बैठा ३ है । और जो बैठा है सो देखने में सूर्य्यकान्त मणि और माणिक्य की नाईं है और सिंहासन की चहुंओर मेघधनुष है जो देखने में मरकत की नाईं है । ४ और उस सिंहासन की चहुंओर चौबीस सिंहासन हैं और इन सिंहासनों पर मैं ने चौबीस प्राचीनों को बैठे देखा जो उजला वस्त्र पहिने हुए और अपने अपने सिर पर सोने के मुकुट दिये हुए थे । ५ और सिंहासन में से बिजुलियां और गर्जन और शब्द निकलते हैं और सात अग्निदीपक सिंहासन के आगे जलते हैं ६ जो ईश्वर के सातों आत्मा हैं । और सिंहासन के आगे कांच का समुद्र है जो स्फटिक की नाईं है और सिंहासन के बीच में और सिंहासन के आसपास चार प्राणी हैं जो आगे और पीछे नेत्रों ७ से भरे हैं । और पहिला प्राणी सिंह के समान और दूसरा प्राणी बछड़े के समान है और तीसरे प्राणी को मनुष्य का सा मुंह है और चौथा प्राणी उड़ते हुए गिद्ध ८ के समान है । और चारों प्राणियों में से एक एक को छः छः पंख हैं और चहुंओर और भीतर वे नेत्रों से भरे हैं और वे रात दिन विश्राम न लेके कहते हैं पवित्र पवित्र पवित्र परमेश्वर ईश्वर सर्व्वशक्तिमान जो था और जो है और जो आनेवाला है । ९ और जब जब वे प्राणी उस को जो सिंहासन पर बैठा है जो सदा सर्व्वदा जीवता है महिमा औ आदर औ धन्यवाद करते हैं, १० तब तब चौबीसों प्राचीन सिंहासन पर बैठनेहारे के आगे गिर पड़ते हैं और उस को जो सदा सर्व्वदा जीवता है प्रणाम करते हैं और अपने अपने मुकुट सिंहासन के आगे डालके कहते हैं, ११ हे परमेश्वर हमारे ईश्वर तू महिमा औ आदर औ सामर्थ्य लेने के योग्य है क्योंकि तू ने सब वस्तु सृजीं और तेरी इच्छा के कारण वे हुईं और सृजी गईं ॥

पांचवां पर्व्व ।

१ और मैं ने सिंहासन पर बैठनेहारे के दहिने हाथ में एक पुस्तक देखा जो भीतर और पीठ पर लिखा हुआ था और सात छापों से उस पर छाप दिये हुए थी । २ और मैं ने एक पराक्रमी दूत को देखा कि बड़े शब्द से प्रचार करता है यह पुस्तक खोलने और उस की छापें तोड़ने के योग्य कौन है । ३ और न स्वर्ग में न पृथिवी पर न पृथिवी के नीचे कोई वह पुस्तक खोलने अथवा उसे देखने सकता था । ४ और मैं बहुत रोने लगा इस लिये कि पुस्तक खोलने और पढ़ने अथवा उसे देखने के योग्य कोई नहीं मिला । ५ और प्राचीनों में से एक ने मुझ से कहा मत रो देख वह सिंह जो यिहूदा के कुल में से है जो दाऊद का मूल है पुस्तक खोलने और उस की सात छापें तोड़ने के लिये जयवन्त हुआ है ॥

६ और मैं ने दृष्टि किई और देखो सिंहासन के और चारों प्राणियों के बीच में और प्राचीनों के बीच में एक मेम्ना, जैसा बध किया हुआ खड़ा है जिस के सात सींग और सात नेत्र हैं जो सारी पृथिवी में भेजे हुए ईश्वर के ७ सातों आत्मा हैं । और उस ने आके वह पुस्तक सिंहासन पर बैठनेहारे के ८ दहिने हाथ से ले लिया । और जब उस ने पुस्तक लिया तब चारों प्राणी और चौबीसों प्राचीन मेम्ने के आगे गिर पड़े और हर एक के पास बीना थी और धूप से भरे हुए सोने के पियाले जो ९ पवित्र लोगों की प्रार्थनाएं हैं । और वे नया गीत गाते हैं कि तू पुस्तक लेने और उस की छापें खोलने के योग्य है क्योंकि तू बध किया गया और तू ने अपने लोहू से हमें हर एक कुल और भाषा और लोग और देश में से ईश्वर १० के लिये मोल लिया . और हमें हमारे ईश्वर के यहां राजा और याजक बनाया ११ और हम पृथिवी पर राज्य करेंगे । और मैं ने दृष्टि किई और सिंहासन की और प्राणियों की और प्राचीनों की चहुंओर बहुत दूतों का शब्द सुना और वे गिन्ती में लाखों लाख और सहस्रों सहस्र थे । १२ और वे बड़े शब्द से कहते थे मेम्ना जो बध किया गया सामर्थ्य औ धन औ बुद्धि औ शक्ति औ आदर औ महिमा १३ औ धन्यवाद लेने के योग्य है । और हर एक सृजी हुई वस्तु को जो स्वर्ग में और पृथिवी पर और पृथिवी के नीचे और समुद्र पर है और सब कुछ जो उन में है मैं ने कहते सुना कि उस को जो सिंहासन पर बैठा है और मेम्ने को धन्यवाद औ आदर औ महिमा १४ औ पराक्रम सदा सर्व्वदा रहे । और चारों प्राणी आमीन बोले और चौबीसों प्राचीनों ने गिरके उस को जो सदा सर्व्वदा जीवता है प्रणाम किया ॥

छठवां पर्व्व

१ और जब मेम्ने ने छापों में से एक को खोला तब मैं ने दृष्टि किई और चारों प्राणियों में से एक को जैसे मेघ गर्जने के शब्द को यह कहते सुना कि २ आ और देख । और मैं ने दृष्टि किई और देखो एक श्वेत घोड़ा है और जो उस पर बैठा है उस पास धनुष है और उसे मुकुट दिया गया और वह जय करता हुआ और जय करने को निकला ॥

३ और जब उस ने दूसरी छाप खोली तब मैं ने दूसरे प्राणी को यह कहते ४ सुना कि आ और देख । और दूसरा घोड़ा जो लाल था निकला और जो उस पर बैठा था उस को यह दिया गया कि पृथिवी पर से मेल उठा देवे और कि लोग एक दूसरे को बध करें और एक बड़ा खड्ग उस को दिया गया ॥

५ और जब उस ने तीसरी छाप खोली तब मैं ने तीसरे प्राणी को यह कहते सुना कि आ और देख . और मैं ने दृष्टि किई और देखो एक काला घोड़ा है और जो उस पर बैठा है जो अपने हाथ ६ में तुला लिये हुए है । और मैं ने चारों प्राणियों के बीच में से एक शब्द यह कहते सुना कि सूकी का सेर भर गेहूं और सूकी का तीन सेर जव और तेल औ दाख रस की हानि न करना ॥

७ और जब उस ने चौथी छाप खोली तब मैं ने चौथे प्राणी का शब्द यह ८ कहते सुना कि आ और देख । और मैं ने दृष्टि किई और देखो एक पीला सा घोड़ा है और जो उस पर बैठा है उस का नाम मृत्यु है और परलोक उस के संग हो लेता है और उन्हें पृथिवी की

एक चौथाई पर अधिकार दिया गया कि खड्ग से और अकाल से और मरी से और पृथिवी के बनपशुओं के द्वारा से मार डालें ॥

९ और जब उस ने पांचवीं छाप खोली तब जो लोग ईश्वर के बचन के कारण और उस साक्षी के कारण जो उन के पास थी बध किये गये थे उन के प्राणों १० को मैं ने बेदी के नीचे देखा । और वे बड़े शब्द से पुकारते थे कि हे स्वामी पवित्र और सत्य कब लों तू न्याय नहीं करता है और पृथिवी के निवासियों से हमारे लोहू का पलटा नहीं लेता है । ११ और हर एक को उजला वस्त्र दिया गया और उन से कहा गया कि जब लों तुम्हारे संगी दास भी और तुम्हारे भाई जो तुम्हारी नाईं बध किये जाने पर हैं पूरे न हों तब लों और थोड़ी बेर बिश्राम करो ॥

१२ और जब उस ने छठवीं छाप खोली तब मैं ने दृष्टि किई और देखो बड़ा भुईंडोल हुआ और सूर्य्य कम्मल की नाईं काला हुआ और चांद लोहू की नाईं १३ हुआ । और जैसे बड़ी बयार से हिलाये जाने पर गूलर के वृक्ष से उस के कच्चे गूलर झड़ते हैं तैसे आकाश के तारे १४ पृथिवी पर गिर पड़े । और आकाश पत्र की नाईं जो लपेटा जाता है अलग हो गया और सब पर्ब्बत और टापू अपने १५ अपने स्थान से हट गये । और पृथिवी के राजाओं और प्रधानों औ धनवानों औ सहस्रपतियों औ सामर्थी लोगों ने और हर एक दास ने औ हर एक निर्बन्ध ने अपने अपने को खोहों में और पर्ब्बतों के पत्थरों १६ के बीच में छिपाया . और पर्ब्बतों और पत्थरों से बोले हम पर गिरो और हमें सिंहासन पर बैठनेहारे के सन्मुख से १७ और मेम्ने के क्रोध से छिपाओ । क्योंकि उस के क्रोध का बड़ा दिन आ पहुंचा है और कौन ठहर सकता है ॥

सातवां पर्ब्ब ।

१ और इस के पीछे मैं ने चार दूतों को देखा कि पृथिवी के चारों कोनों पर खड़े हो पृथिवी की चारों बयारों को थांभे हैं जिस्तें बयार पृथिवी पर अथवा समुद्र पर अथवा किसी पेड़ पर न बहे । २ और मैं ने दूसरे दूत को सूर्य्योदय के स्थान से चढ़ते देखा जिस पास जीवते ईश्वर की छाप थी और उस ने बड़े शब्द से उन चार दूतों से जिन्हें पृथिवी और समुद्र की हानि करने का अधिकार दिया गया पुकारके ३ कहा . जब लों हम अपने ईश्वर के दासों के माथे पर छाप न देवें तब लों पृथिवी को अथवा समुद्र को अथवा पेड़ों को हानि मत करो । ४ और जिन पर छाप दिई गई मैं ने उन की संख्या सुनी . इस्रायेल के सन्तानों के समस्त कुल में से एक लाख चवालीस सहस्र पर छाप दिई गई । ५ यिहूदा के कुल में से बारह सहस्र पर छाप दिई गई . रूबेन के कुल में से बारह सहस्र पर . गाद के कुल में से बारह सहस्र पर । ६ आशेर के कुल में से बारह सहस्र पर . नप्ताली के कुल में से बारह सहस्र पर . मनस्सी के कुल में से बारह सहस्र पर । ७ शिमियोन के कुल में से बारह सहस्र पर . लेवी के कुल में से बारह सहस्र पर . इस्साखर के कुल में से बारह सहस्र पर । ८ जिबूलून के कुल में से बारह सहस्र पर . यूसफ के कुल में से बारह सहस्र पर . बिन्यामीन के कुल में से बारह सहस्र पर छाप दिई गई ॥

इस के पीछे मैं ने दृष्टि किई और देखो सब देशों और कुलों और लोगों और भाषाओं में से बहुत लोग जिन्हें

कोई नहीं गिन सकता था सिंहासन के आगे और मेम्ने के आगे खड़े हैं जो उजले वस्त्र पहिने हुए और अपने अपने हाथ
१० में खजूर के पत्ते लिये हुए हैं। और वे बड़े शब्द से पुकारके कहते हैं त्राण के लिये हमारे ईश्वर की जो सिंहासन पर बैठा है और मेम्ने की जय जय
११ होय। और सब दूतगण सिंहासन की और प्राचीनों की और चारों प्राणियों की चहुंओर खड़े हुए और सिंहासन के आगे अपने अपने मुंह के बल गिरे और ईश्वर को प्रणाम किया. और
१२ बोले आमीन. हमारे ईश्वर का धन्यवाद औ महिमा औ बुद्धि औ प्रशंसा औ आदर औ सामर्थ्य औ पराक्रम सदा सर्व्वदा रहे. आमीन॥
१३ इस पर प्राचीनों में से एक ने मुझ से कहा ये जो उजले वस्त्र पहिने
१४ हुए हैं कौन हैं और कहां से आये। मैं ने उस से कहा हे प्रभु आप ही जानते हैं. वह मुझ से बोला ये वे हैं जो बड़े क्लेश में से आते हैं और अपने अपने वस्त्रों को मेम्ने के लोहू में धोके उजला
१५ किया। इस कारण वे ईश्वर के सिंहासन के आगे हैं और उस के मन्दिर में रात और दिन उस की सेवा करते हैं और सिंहासन पर बैठनेहारा उन के
१६ ऊपर डेरा देगा। वे फिर भूखे न होंगे और न फिर प्यासे होंगे और न उन
१७ पर धूप न कोई तपन पड़ेगी। क्योंकि मेम्ना जो सिंहासन के बीच में है उन की चरवाही करेगा और उन्हें जल के जीवते सोतों पर लिवा ले जायगा और ईश्वर उन की आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा॥

आठवां पर्व्व।

१ और जब उस ने सातवीं छाप खोली तब स्वर्ग में आध घड़ी के अटकल निःशब्दता हो गई। और मैं ने उन
२ सात दूतों को जो ईश्वर के आगे खड़े रहते हैं देखा और उन्हें सात तुरही
३ दिई गईं। और दूसरा दूत आके वेदी के निकट खड़ा हुआ जिस पास सोने की धूपदानी थी और उस को बहुत धूप दिया गया जिस्तें वह उस को सोने की वेदी पर जो सिंहासन के आगे है सब पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं
४ के संग मिलावे। और धूप का धूआं पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं के संग दूत के हाथ में से ईश्वर के आगे चढ़
५ गया। और दूत ने वह धूपदानी लेके उस में वेदी की आग भरके उसे पृथिवी पर डाला और शब्द और गर्जन
६ और बिजलियां और भुईंडोल हुए। और उन सात दूतों ने जिन पास सातों तुरहियां थीं फूंकने को अपने तईं तैयार किया॥

७ पहिले दूत ने तुरही फूंकी और लोहू से मिले हुए ओले और आग हुए और वे पृथिवी पर डाले गये और पृथिवी की एक तिहाई जल गई और पेड़ों की एक तिहाई जल गई और सब हरी घास जल गई॥

८ और दूसरे दूत ने तुरही फूंकी और आग से जलता हुआ एक बड़ा पहाड़ सा कुछ समुद्र में डाला गया और समुद्र
९ की एक तिहाई लोहू हो गई। और समुद्र में की सृजी हुई वस्तुओं की एक तिहाई जिन्हें जीव था मर गई और जहाजों की एक तिहाई नाश हुई॥

१० और तीसरे दूत ने तुरही फूंकी और एक बड़ा तारा जो मशाल की नाईं जलता था स्वर्ग से गिरा और नदियों की एक तिहाई पर और जल के सोतों
११ पर पड़ा। और उस तारे का नाम

नागदौना कहावता है और एक तिहाई जल नागदौना सा हो गया और बहुतेरे मनुष्य उस जल के कारण मर गये क्योंकि वह कड़ुआ किया गया ॥

१२ और चौथे दूत ने तुरही फूंकी और सूर्य्य की एक तिहाई और चांद की एक तिहाई और तारों की एक तिहाई मारी गई जिस्तें उन की एक तिहाई अंधियारी हो जाय और दिन की एक तिहाई लों दिन प्रकाश न होय और वैसे ही रात ॥

१३ और मैं ने दृष्टि किई और एक दूत को सुना जो आकाश के बीच में से उड़ता हुआ बड़े शब्द से कहता था कि जो तीन दूत फूंकने पर हैं उन की तुरही के शब्दों के कारण जो रह गये हैं पृथिवी के निवासियों पर सन्ताप सन्ताप सन्ताप होगा ॥

नवां पर्ब्ब ।

१ और पांचवें दूत ने तुरही फूंकी और मैं ने एक तारे को देखा जो स्वर्ग में से पृथिवी पर गिरा हुआ था और अथाह कुंड के कूप की कुंजी उस को २ दिई गई । और उस ने अथाह कुंड का कूप खोला और कूप में से बड़ी भट्ठी के धूंए की नाईं धूआं उठा और सूर्य्य और आकाश कूप के धूंए से अंधियारे ३ हुए । और उस धूंए में से टिड्डियां पृथिवी पर निकल गईं और जैसा पृथिवी के बिच्छूओं को अधिकार होता है तैसा ४ उन्हें अधिकार दिया गया । और उन से कहा गया कि न पृथिवी की घास को न किसी हरियाली को न किसी पेड़ को हानि करो परन्तु केवल उन मनुष्यों को जिन के माथे पर ईश्वर ५ की छाप नहीं है । और उन्हें यह दिया गया कि वे उन्हें मार न डालें परन्तु पांच मास उन्हें पीड़ा दिई जाय और बिच्छू जब मनुष्य को मारता है तब उस की पीड़ा जैसी होती है तैसी ही उन की पीड़ा थी । ६ और उन दिनों में वे मनुष्य मृत्यु को ढूंढ़ेंगे और उसे न पावेंगे और मरने की अभिलाषा करेंगे और मृत्यु उन से भागेगी । ७ और उन टिड्डियों के आकार युद्ध के लिये तैयार किये हुए घोड़ों के समान थे और उन के सिरों पर जैसे मुकुट थे जो सोने की नाईं थे और उन के मुंह मनुष्यों के मुंह के ऐसे थे । ८ और उन्हें स्त्रियों के बाल की नाईं बाल था और उन के दांत सिंहों के से थे । ९ और उन्हें लोहे की झिलम की नाईं झिलम थी और उन के पंखों का शब्द बहुत घोड़ों के रथों के शब्द के ऐसा था जो युद्ध को दौड़ते हों । १० और उन्हें पूंछें थीं जो बिच्छूओं के समान थीं और उन की पूंछों में डंक थे और पांच मास मनुष्यों को दुःख देने का उन्हें अधिकार था । ११ और उन पर एक राजा है अर्थात अथाह कुंड का दूत जिस का नाम इब्रीय भाषा में अबद्दोन है और यूनानीय में उस का नाम अपलुयोन है । १२ पहिला सन्ताप बीत गया है देखो इस पीछे दो सन्ताप और आते हैं ॥

१३ और छठवें दूत ने तुरही फूंकी और जो सोने की बेदी ईश्वर के आगे है उस के चारों सींगों में से मैं ने एक शब्द सुना, १४ जो छठवें दूत से जिस पास तुरही थी बोला उन चार दूतों को जो बड़ी नदी फुरात पर बन्धे हैं खोल दे । १५ और वे चार दूत खोल दिये गये जो उस घड़ी और दिन और मास और बरस के लिये तैयार किये गये थे कि वे मनुष्यों की एक तिहाई को मार डालें । १६ और घुड़चढ़ों की सेनाओं की संख्या बीस करोड़ थी और मैं ने उन की संख्या

१७ सुनी । और मैं ने दर्शन में उन घोड़ों को यूं देखा और उन्हें जो उन पर चढ़े हुए थे कि उन्हें आग की सी और धूम्रकान्त की सी और गन्धक की सी झिलम थी और घोड़ों के सिर सिंहों के सिरों की नाईं हैं और उन के मुंह में से आग और धूआं और गन्धक निकलते १८ हैं । इन तीनों से अर्थात आग से और धूंए से और गन्धक से जो उन के मुंह से निकलते हैं मनुष्यों की एक तिहाई १९ मार डाली गई । क्योंकि घोड़ों का सामर्थ्य उन के मुंह में और उन की पूंछों में है क्योंकि उन की पूंछें सांपों के समान हैं कि उन के सिर होते हैं २० और इन से वे दुःख देते हैं । और जो मनुष्य रह गये जो इन विपतों में नहीं मार डाले गये उन्हों ने अपने हाथों के कार्य्यों से पश्चात्ताप भी नहीं किया जिस्तें भूतों की और सोने और चान्दी और पीतल और पत्थर और काठ की मूरतों की पूजा न करें जो न देखने न सुनने २१ न फिरने सकती हैं । और न उन्हों ने अपनी नरहिंसाओं से न अपने टोनों से न अपने व्यभिचार से न अपनी चोरियों से पश्चात्ताप किया ॥

दसवां पर्व्व ।

१ और मैं ने दूसरे पराक्रमी दूत को स्वर्ग से उतरते देखा जो मेघ को ओढ़े था और उस के सिर पर मेघधनुष था और उस का मुंह सूर्य्य की नाईं और उस के पांव आग के खंभों के ऐसे २ थे । और वह एक छोटी पोथी खुली हुई अपने हाथ में लिये था और उस ने अपना दहिना पांव समुद्र पर और ३ बायां पृथिवी पर रखा, और जैसा सिंह गर्जता है तैसा बड़े शब्द से पुकारा और जब उस ने पुकारा तब सात मेघ गर्जनों ने अपने अपने शब्द उच्चारण किये । ४ और जब उन सात गर्जनों ने अपने अपने शब्द उच्चारण किये तब मैं लिखने पर था और मैं ने स्वर्ग से एक शब्द सुना जो मुझ से बोला जो बातें उन सात गर्जनों ने कहीं उन पर छाप दे और उन्हें मत लिख । ५ और उस दूत ने जिसे मैं ने समुद्र पर और पृथिवी पर खड़े देखा अपना हाथ स्वर्ग की ओर उठाया, ६ और जो सदा सर्व्वदा जीवता है जिस ने स्वर्ग और जो कुछ उस में है और पृथिवी और जो कुछ उस में है और समुद्र और जो कुछ उस में है सृजा उसी की किरिया खाई कि अब लों विलम्ब ७ न होगा, परन्तु सातवें दूत के शब्द के दिनों में जब वह तुरही फूंकने पर होय तब ईश्वर का भेद पूरा हो जायगा जैसा उस ने अपने दासों को अर्थात भविष्यद्वक्ताओं को इस का सुसमाचार सुनाया ॥

८ और जो शब्द मैं ने स्वर्ग से सुना था वह फिर मेरे संग बात करने लगा और बोला जा जो दूत समुद्र पर और पृथिवी पर खड़ा है उस के हाथ में की खुली हुई छोटी पोथी ले ले । ९ और मैं ने दूत के पास जाके उस से कहा यह छोटी पोथी मुझे दीजिये, और उस ने मुझ से कहा इसे लेके खा जा और वह तेरे पेट को कड़वा करेगी परन्तु तेरे मुंह में मधु सी मीठी लगेगी । १० और मैं ने छोटी पोथी दूत के हाथ से ले लिई और उसे खा गया और वह मेरे मुंह में मधु सी मीठी लगी और जब मैं ने उसे खाया था तब मेरा पेट ११ कड़वा हुआ । और वह मुझ से बोला तुझे फिर लोगों और देशों और भाषाओं और बहुत राजाओं के विषय में भविष्यद्वाक्य कहना होगा ॥

ग्यारहवां पर्ब्ब।

१ और लग्गी के समान एक नरकट मुझे दिया गया और कहा गया कि उठ ईश्वर के मन्दिर को और बेदी को और उस में के भजन करनेहारों को नाप। २ और मन्दिर के बाहर के आंगन को बाहिर रख और उसे मत नाप क्योंकि वह अन्यदेशियों को दिया गया है और वे बयालीस मास लों पवित्र नगर को रौंदेंगे। ३ और मैं अपने दो साक्षियों को यह देऊंगा कि टाट पहिने हुए एक सहस्र दो सौ साठ दिन भविष्यद्वाक्य कहा करें। ४ ये ही वे दो जलपाई के वृक्ष और दो दीवट हैं जो पृथिवी के प्रभु के सन्मुख ५ खड़े रहते हैं। और यदि कोई उन को दुःख दिया चाहे तो आग उन के मुंह से निकलती है और उन के शत्रुओं को भस्म करती है और यदि कोई उन को दुःख दिया चाहे तो अवश्य है कि वह ६ इस रीति से मार डाला जाय। इन्हें अधिकार है कि आकाश को बन्द करें जिस्तें उन की भविष्यद्वाणी के दिनों में मेंह न बरसे और इन्हें सब जल पर अधिकार है कि उसे लोहू बनावें और जब जब चाहें तब तब पृथिवी को हर प्रकार की विपत्ति से मारें। और जब वे अपनी साक्षी दे चुकेंगे तब वह पशु जो अथाह कुंड में से उठता है उन से युद्ध करेगा और उन्हें जीतेगा और उन्हें ८ मार डालेगा। और उन की लोथें उस बड़े नगर की सड़क पर पड़ी रहेंगी जो आत्मिक रीति से सदोम और मिसर कहावता है जहां उन का प्रभु भी क्रूश ९ पर चढ़ाया गया। और सब लोगों और कुलों और भाषाओं और देशों में से लोग उन की लोथें साढ़े तीन दिन लों देखेंगे और उन की लोथें कबरों में रखी जाने १० न देंगे। और पृथिवी के निवासी उन पर आनन्द करेंगे और मगन होंगे और एक दूसरे के पास भेंट भेजेंगे क्योंकि इन दो भविष्यद्वक्ताओं ने पृथिवी के निवासियों को पीड़ा दिई थी। ११ और साढ़े तीन दिन के पीछे ईश्वर की ओर से जीवन के आत्मा ने उन में प्रवेश किया और वे अपने पांवों पर खड़े हुए और उन के देखनेहारों को बड़ा डर लगा। १२ और उन्हों ने स्वर्ग से बड़ा शब्द सुना जो उन से बोला इधर ऊपर आओ और वे मेघ में स्वर्ग पर चढ़ गये और उन के शत्रुओं ने उन्हें देखा। १३ और उसी घड़ी बड़ा भुईंडोल हुआ और नगर का दसवां अंश गिर पड़ा और उस भुईंडोल में सात सहस्र मनुष्य मारे गये और जो रह गये सो भयमान हुए और स्वर्ग के ईश्वर का गुणानुवाद किया। १४ दूसरा सन्ताप बीत गया है देखो तीसरा सन्ताप शीघ्र आता है॥

१५ और सातवें दूत ने तुरही फूंकी और स्वर्ग में बड़े बड़े शब्द हुए कि जगत का राज्य हमारे प्रभु का और उस के अभिषिक्त जन का हुआ है और वह सदा सर्व्वदा राज्य करेगा। १६ और चौबीसों प्राचीन जो ईश्वर के सन्मुख अपने अपने सिंहासन पर बैठते हैं अपने अपने मुंह के बल गिरे और ईश्वर को प्रणाम करके १७ बोले. हे परमेश्वर ईश्वर सर्व्वशक्तिमान जो है और जो था और जो आनेवाला है हम तेरा धन्य मानते हैं कि तू ने अपना बड़ा सामर्थ्य लेके राज्य किया है। १८ और अन्यदेशी लोग क्रुद्ध हुए और तेरा क्रोध आ पड़ा और मृतकों का समय पहुंचा कि उन का विचार किया जाय और कि तू अपने दासों अर्थात भविष्यद्वक्ताओं को और पवित्र लोगों को और छोटों और बड़ों को जो तेरे नाम से डरते हैं प्रतिफल देवे और

पृथिवी के नाश करनेहारों को नाश १९ करे । और स्वर्ग में ईश्वर का मन्दिर खोला गया और उस के नियम का सन्दूक उस के मन्दिर में दिखाई दिया और बिजुलियां और शब्द और गर्जन और भुईंडोल हुए और बड़े ओले पड़े ॥

बारहवां पर्ब्ब

१ और एक बड़ा आश्चर्य्य स्वर्ग में दिखाई दिया अर्थात एक स्त्री जो सूर्य्य पहिने है और चांद उस के पांवों तले है और उस के सिर पर बारह २ तारों का मुकुट है । और वह गर्भवती होके चिल्लाती है क्योंकि प्रसव की पीड़ उसे लगी है और वह जनने को पीड़ित ३ है । और दूसरा आश्चर्य्य स्वर्ग में दिखाई दिया और देखो एक बड़ा लाल अजगर है जिस के सात सिर और दस सींग हैं और उस के सिरों पर ४ सात राजमुकुट हैं । और उस की पूंछ ने आकाश के तारों की एक तिहाई को खींचके उन्हें पृथिवी पर डाला और वह अजगर उस स्त्री के साम्हने जो जना चाहती थी खड़ा हुआ इस लिये कि जब वह जने तब उस के ५ बालक को खा जाय । और वह एक बेटा जनी जो लोहे का दंड लेके सब देशों के लोगों की चरवाही करने पर है और उस का बालक ईश्वर के पास और उस के सिंहासन के पास उठा ६ लिया गया । और वह स्त्री जंगल को भाग गई जहां उस का एक स्थान है जो ईश्वर से तैयार किया गया है जिस्तें वे उसे वहां एक सहस्र दो सौ साठ दिन लों पालें ॥

७ और स्वर्ग में युद्ध हुआ मीखायेल और उस के दूत अजगर से लड़े और ८ अजगर और उस के दूत लड़े . और प्रबल न हुए और स्वर्ग में उन्हें जगह और न मिली । और वह बड़ा अजगर गिराया गया हां वह प्राचीन सांप जो दियाबल और शैतान कहावता है जो सारे संसार का भरमानेहारा है पृथिवी पर गिराया गया और उस के दूत उस के संग गिराये गये । और मैं ने एक १० बड़ा शब्द सुना जो स्वर्ग में बोला अभी हमारे ईश्वर का त्राण और पराक्रम और राज्य और उस के अभिषिक्त जन का अधिकार हुआ है क्योंकि हमारे भाइयों का दोषदायक जो रात दिन हमारे ईश्वर के आगे उन पर दोष लगाता था गिराया गया है । और ११ उन्हों ने मेम्ने के लोहू के कारण और अपनी साक्षी के बचन के कारण उस पर जय किया और उन्हों ने मृत्यु लों अपने प्राणों को प्रिय न जाना । इस १२ कारण से हे स्वर्ग और उस में वास करनेहारो आनन्द करो . हाय पृथिवी और समुद्र के निवासियो क्योंकि शैतान तुम पास उतरा है और यह जानके कि मेरा समय थोड़ा है बड़ा क्रोध किये है ॥

और जब अजगर ने देखा कि मैं १३ पृथिवी पर गिराया गया हूं तब उस ने उस स्त्री को जो बेटा जनी थी सताया । और बड़े गिद्ध के दो पंख १४ स्त्री को दिये गये इस लिये कि वह जंगल को अपने स्थान को उड़ जाये जहां वह एक समय और दो समय और आधे समय लों सांप की दृष्टि से छिपी हुई पाली जाती है । और सांप ने १५ अपने मुंह में से स्त्री के पीछे नदी की नाईं जल बहाया कि उसे नदी से बहा देवे । और पृथिवी ने स्त्री का उपकार १६ किया और पृथिवी ने अपना मुंह खोलके उस नदी को जो अजगर ने अपने मुंह में से बहाई थी पी लिया । और अजगर १७

स्त्री से क्रुद्ध हुआ और उस के वंश के जो लोग रह गये जो ईश्वर की आज्ञाओं को पालन करते और यीशु खीष्ट की साक्षी रखते हैं उन से युद्ध करने को चला गया ॥

तेरहवां पर्व्व ।

१ और मैं समुद्र के बालू पर खड़ा हुआ और एक पशु को समुद्र में से उठते देखा जिस के सात सिर और दस सींग थे और उस के सींगों पर दस राजमुकुट और उस के सिरों पर ईश्वर २ की निन्दा का नाम । और जो पशु मैं ने देखा सो चीते की नाईं था और उस के पांव भालू के से थे और उस का मुंह सिंह के मुंह के ऐसा था और अजगर ने अपना सामर्थ्य और अपना सिंहासन और बड़ा अधिकार उस को दिया । ३ और मैं ने उस के सिरों में से एक को देखा मानो ऐसा घायल किया गया है कि मरने पर है फिर उस का प्राणहारक घाव चंगा किया गया और सारी पृथिवी के लोग उस पशु के पीछे अचंभा करते ४ गये । और उन्हों ने अजगर की पूजा किई जिस ने पशु को अधिकार दिया और पशु की पूजा किई और कहा इस पशु के समान कौन है, कौन उस से ५ लड़ सकता है । और उस को बड़ी बड़ी बातें और निन्दा की बातें बोलनेहारा मुंह दिया गया और बयालीस मास लों युद्ध करने का अधिकार उसे दिया गया । ६ और उस ने ईश्वर के विरुद्ध निन्दा करने को अपना मुंह खोला कि उस के नाम की और उस के तम्बू की और स्वर्ग में वास करनेहारों की निन्दा करे । ७ और उस को यह दिया गया कि पवित्र लोगों से युद्ध करे और उन पर जय करे और हर एक कुल और भाषा और देश ८ पर उस को अधिकार दिया गया । और पृथिवी के सब निवासी लोग जिन के नाम जगत की उत्पत्ति से घात किये हुए मेम्ने के जीवन के पुस्तक में नहीं लिखे गये हैं उस की पूजा करेंगे । ९ यदि किसी का कान होय तो सुने । १० यदि कोई बन्धुओं को घेर लेता है तो वही बन्धुआई में जाता है यदि कोई खड्ग से मार डाले तो अवश्य है कि वही खड्ग से मार डाला जाय, यहीं पवित्र लोगों का धीरज और विश्वास है ॥

११ और मैं ने दूसरे पशु को पृथिवी में से उठते देखा और उसे मेम्ने की नाईं दो सींग थे और वह अजगर की नाईं बोलता था । १२ और वह उस पहिले पशु के सन्मुख उस का सारा अधिकार रखता है और पृथिवी से और उस के निवासियों से उस पहिले पशु की जिस का प्राणहारक घाव चंगा किया गया पूजा करवाता है । १३ और वह बड़े बड़े आश्चर्य्य कर्म्म करता है यहां लों कि मनुष्यों के साम्हने स्वर्ग में से पृथिवी पर आग भी उतारता है । १४ और उन आश्चर्य्य कर्म्मों के कारण जिन्हें पशु के सन्मुख करने का अधिकार उसे दिया गया वह पृथिवी के निवासियों को भरमाता है और पृथिवी के निवासियों से कहता है कि जिस पशु को खड्ग का घाव लगा और वह जी गया उस के लिये मूर्त्ति बनाओ । १५ और उस को यह दिया गया कि पशु की मूर्त्ति को प्राण देवे जिस्तें पशु की मूर्त्ति बात भी करे और जितने लोग पशु की मूर्त्ति की पूजा न करें उन्हें मार डलवावे । १६ और छोटे औ बड़े और धनी औ कंगाल और निर्बन्ध औ दास सब लोगों से वह ऐसा करता है कि उन के दहिने हाथ पर अथवा उन के माथे पर एक छापा दिया जाय, १७ और कि कोई मोल लेने अथवा बेचने न

सके केवल वह जो यह छापा अथवा पशु का नाम अथवा उस के नाम की १८ संख्या रखता हो । यहीं ज्ञान है, जिसे बुद्धि होय सो पशु की संख्या को जोड़ती करे क्योंकि वह मनुष्य की भी संख्या है और उस की संख्या छः सौ छियासठ है ॥

चौदहवां पर्व्व ।

१ और मैं ने दृष्टि किई और देखो मेम्ना सियोन पर्व्वत पर खड़ा है और उस के संग एक लाख चवालीस सहस्र जन जिन के माथे पर उस का नाम और उस के पिता का नाम लिखा है । २ और मैं ने स्वर्ग से एक शब्द सुना जो बहुत जल के शब्द के ऐसा और बड़े गर्जन के शब्द के ऐसा था और वह शब्द जो मैं ने सुना बीन बजानेहारों का सा था जो अपनी अपनी बीन ३ बजाते हैं । और वे सिंहासन के आगे और चारों प्राणियों के और प्राचीनों के आगे जैसा एक नया गीत गाते हैं और वह गीत कोई नहीं सीख सकता था केवल वे एक लाख चवालीस सहस्र जन जो पृथिवी से मोल लिये गये थे । ४ ये वे हैं जो स्त्रियों के संग अशुद्ध न हुए क्योंकि वे कुमार हैं, ये वे हैं कि जहां कहीं मेम्ना जाता है वे उस के पीछे हो लेते हैं, ये तो ईश्वर के और मेम्ने के लिये एक पहिला फल मनुष्यों ५ में से मोल लिये गये । और उन के मुंह में झूठ नहीं पाया गया क्योंकि वे ईश्वर के सिंहासन के आगे निर्दोष हैं ।

६ और मैं ने दूसरे दूत को आकाश के बीच में से उड़ते देखा जिस पास सनातन सुसमाचार था कि वह पृथिवी के निवासियों को और हर एक देश और कुल और भाषा और लोग को ७ सुसमाचार सुनावे । और वह बड़े शब्द से बोलता था कि ईश्वर से डरो और उस का गुणानुवाद करो क्योंकि उस के विचार करने का समय पहुंचा है और जिस ने स्वर्ग और पृथिवी और समुद्र और जल के सोते बनाये उस को प्रणाम करो ॥

और दूसरा दूत यह कहता हुआ पीछे हो लिया कि गिर गई बाबुल [illegible] बड़ी नगरी गिर गई है क्योंकि उस ने सब देशों के लोगों को अपने व्यभिचार के कारण जो कोप होता है तिस की मदिरा पिलाई है ॥

९ और तीसरा दूत बड़े शब्द से यह कहता हुआ उन के पीछे हो लिया कि यदि कोई उस पशु की और उस की मूर्त्ति की पूजा करे और अपने माथे पर अथवा अपने हाथ पर छापा लेवे, १० तो वह भी ईश्वर के कोप की मदिरा जो उस के क्रोध के कटोरे में निराली ढाली गई है पीयेगा और पवित्र दूतों के साम्हने और मेम्ने के साम्हने आग और गन्धक में पीड़ित किया जायगा । ११ और उन की पीड़ा का धूआं सदा सर्व्वदा उठता है और न दिन न रात विश्राम उन को है जो पशु की और उस की मूर्त्ति की पूजा करते हैं और जो कोई उस के नाम का छापा लेता है । १२ यहीं पवित्र लोगों का धीरज है जो ईश्वर की आज्ञाओं को और यीशु के विश्वास को पालन करते हैं ॥

१३ और मैं ने स्वर्ग से एक शब्द सुना जो मुझ से बोला यह लिख कि अब से जो प्रभु में मरते हैं सो मृतक धन्य हैं, आत्मा कहता है हां कि वे अपने परिश्रम से विश्राम करेंगे परन्तु उन के कार्य्य उन के संग हो लेते हैं ॥

१४ और मैं ने दृष्टि किई और देखो एक उजला मेघ है और उस मेघ पर मनुष्य के पुत्र के समान एक बैठा है जो अपने

और सोने का मुकुट और अपने हाथ में चोखा हंसुआ लिये हुए है। और दूसरा दूत मन्दिर में से निकला और बड़े शब्द से पुकारके उस से जो मेघ पर बैठा था बोला अपना हंसुआ लगाके लवनी कर क्योंकि तेरे लिये लवने का समय पहुंचा है इस लिये कि पृथिवी
१६ की खेती पक सूकी है। और जो मेघ पर बैठा था उस ने पृथिवी पर अपना हंसुआ लगाया और पृथिवी की लवनी किई गई ॥

१७ और दूसरा दूत स्वर्ग में के मन्दिर में से निकला और उस पास भी चोखा
१८ हंसुआ था। और दूसरा दूत जिसे आग पर अधिकार था बेदी में से निकला और जिस पास चोखा हंसुआ था उस से बड़े शब्द से पुकारकर बोला अपना चोखा हंसुआ लगा और पृथिवी की दाख लता के गुच्छे काट ले क्योंकि उस के
१९ दाख पक गये हैं। और दूत ने पृथिवी पर अपना हंसुआ लगाया और पृथिवी की दाख लता का फल काट लिया और उसे ईश्वर के क्रोध के बड़े रस
२० के कुंड में डाला। और रस के कुंड का रौंदन नगर के बाहर किया गया और रस के कुंड में से घोड़ों की लगाम तक लोहू एक सौ कोश तक बह निकला ॥

पन्द्रहवां पर्व्व।

१ और मैं ने स्वर्ग में दूसरा एक चिन्ह बड़ा और अद्भुत देखा अर्थात सात दूत जिन के पास सात विपत्तियां थीं जो पिछली थीं क्योंकि उन्हीं में ईश्वर का कोप पूरा किया गया ॥

२ और मैं ने जैसा एक आग से मिले हुए कांच के समुद्र को और पशु पर और उस की मूर्त्ति पर और उस के छाप पर और उस के नाम की संख्या पर जय करनेहारों को उस कांच के समुद्र के निकट ईश्वर की बीनें लिये हुए खड़े
३ देखा। और वे ईश्वर के दास मूसा का गीत और मेम्ने का गीत गाते हैं कि हे सर्व्वशक्तिमान ईश्वर परमेश्वर तेरे कार्य्य बड़े और अद्भुत हैं. हे पवित्र लोगों के राजा तेरे मार्ग यथार्थ और सत्य हैं।
४ हे परमेश्वर कौन तुझ से नहीं डरेगा और तेरे नाम की स्तुति नहीं करेगा. क्योंकि केवल तू ही पवित्र है और सब देशों के लोग आके तेरे आगे प्रणाम करेंगे क्योंकि तेरे विचार प्रगट किये गये हैं ॥

५ और इस के पीछे मैं ने दृष्टि किई और देखो स्वर्ग में साक्षी के तम्बू का
६ मन्दिर खोला गया। और सातों दूत जिन पास सातों विपत्तें थीं शुद्ध और चमकता हुआ वस्त्र पहिने हुए और छातों पर सुनहले पटुके बांधे हुए मन्दिर
७ में से निकले। और चारों प्राणियों में से एक ने उन सात दूतों को ईश्वर के जो सदा सर्व्वदा जीवता है कोप से
८ भरे हुए सात सोने के पियाले दिये। और ईश्वर की महिमा से और उस के सामर्थ्य से मन्दिर धूंए से भर गया और जब लों उन सात दूतों की सातों विपत्तें समाप्त न हुईं तब लों कोई मन्दिर में प्रवेश न कर सका ॥

सोलहवां पर्व्व।

१ और मैं ने मन्दिर में से एक बड़ा शब्द सुना जो उन सात दूतों से बोला जाओ और ईश्वर के कोप के सात पियाले पृथिवी पर उंडेलो ॥

२ और पहिले ने जाके अपना पियाला पृथिवी पर उंडेला और उन मनुष्यों को जिन पर पशु की छापा था और जो उस की मूर्त्ति की पूजा करते थे बुरा और दुःखदाई घाव हुआ ॥

३ और दूसरे दूत ने अपना पियाला समुद्र पर उंडेला और वह मृतक का सा लोहू हो गया और समुद्र में हर एक जीवता प्राणी मर गया ॥

४ और तीसरे दूत ने अपना पियाला नदियों पर और जल के सोतों पर ५ उंडेला और वे लोहू हो गये । और मैं ने जल के दूत को यह कहते सुना कि हे परमेश्वर जो है और जो था और जो पवित्र है तू धर्म्मी है कि तू ६ ने यह न्याय किया है । क्योंकि उन्हों ने पवित्र लोगों और भविष्यद्वक्ताओं का लोहू बहाया और तू ने उन्हें लोहू पीने को दिया है क्योंकि वे इस योग्य ७ हैं । और मैं ने बेदी में से यह शब्द सुना कि हां हे सर्व्वशक्तिमान ईश्वर परमेश्वर तेरे बिचार सच्चे और यथार्थ हैं ॥

८ और चौथे दूत ने अपना पियाला सूर्य्य पर उंडेला और मनुष्यों को आग से झुलसाने का अधिकार उसे दिया ९ गया । और मनुष्य बड़ी तपन से झुलसाये गये और ईश्वर के नाम की निन्दा किई जिसे इन बिपतों पर अधिकार है और उस का गुणानुवाद करने के लिये पश्चात्ताप न किया ॥

१० और पांचवें दूत ने अपना पियाला पशु के सिंहासन पर उंडेला और उस का राज्य अंधियारा हो गया और लोगों ने क्लेश के मारे अपनी अपनी जीभ ११ चबाई । और उन्हों ने अपने क्लेशों के कारण और अपने घावों के कारण स्वर्ग के ईश्वर की निन्दा किई और अपने अपने कर्म्मों से पश्चात्ताप न किया ॥

१२ और छठवें दूत ने अपना पियाला बड़ी नदी फुरात पर उंडेला और उस का जल सूख गया जिस्तें सूर्य्योदय की दिशा के राजाओं का मार्ग तैयार किया १३ जाय । और मैं ने अजगर के मुंह में से और पशु के मुंह में से और झूठे भविष्यद्वक्ता के मुंह में से निकले हुए तीन अशुद्ध आत्माओं को देखा जो मेंडकों १४ की नाईं थे । क्योंकि वे भूतों के आत्मा हैं जो आश्चर्य्य कर्म्म करते हैं और जो सारे संसार के राजाओं के पास जाते हैं कि उन्हें सर्व्वशक्तिमान ईश्वर के उस बड़े दिन के युद्ध के लिये एकट्ठे १५ करें । देखो मैं चोर की नाईं आता हूं . धन्य वह जो जागता रहे और अपने वस्त्र की रक्षा करे जिस्तें वह नंगा न फिरे और लोग उस की लज्जा न देखें । १६ और उन्हों ने उन्हें उस स्थान पर एकट्ठे किया जो इब्रीय भाषा में हर्मगिद्दो कहावता है ॥

१७ और सातवें दूत ने अपना पियाला आकाश में उंडेला और स्वर्ग॰के मन्दिर में से अर्थात सिंहासन से एक बड़ा १८ शब्द निकला कि हो चुका । और शब्द और गर्जन और बिजलियां हुईं और बड़ा भुईंडोल हुआ ऐसा कि जब से मनुष्य पृथिवी पर हुए तब से ऐसा और इतना १९ बड़ा भुईंडोल न हुआ । और वह बड़ा नगर तीन खंड हो गया और देश देश के नगर गिर पड़े और ईश्वर ने बड़ी बाबुल को स्मरण किया कि अपने क्रोध की जलजलाहट की मदिरा का कटोरा २० उसे देवे । और हर एक टापू भाग गया २१ और कोई पर्ब्बत न मिले । और बड़े ओले जैसे मन मन भर के स्वर्ग से मनुष्यों पर पड़े और ओलों की बिपत्ति के कारण मनुष्यों ने ईश्वर की निन्दा किई क्योंकि उस से निपट बड़ी बिपत्ति हुई ॥

सत्रहवां पर्ब्ब ।

१ और जिन सात दूतों के पास वे

सात पियाले थे उन में से एक ने आके मेरे संग बात कर मुझ से कहा आ मैं तुझे उस बड़ी बेश्या का दंड दिखाऊंगा २ जो बहुत जल पर बैठी है . जिस के संग पृथिवी के राजाओं ने व्यभिचार किया है और पृथिवी के निवासी लोग उसी के व्यभिचार की मदिरा से मतवाले ३ हुए हैं । और वह आत्मा में मुझे जंगल में ले गया और मैं ने एक स्त्री को देखा कि लाल पशु पर बैठी थी जो ईश्वर की निन्दा के नामों से भरा था और जिस के सात सिर और दस सींग थे । ४ और वह स्त्री बैंजनी और लाल वस्त्र पहिने थी और सोने और बहुमूल्य पत्थर और मोतियों से विभूषित थी और उस के हाथ में एक सोने का कटोरा था जो घिनित वस्तुओं से और उस के व्यभिचार की अशुद्ध वस्तुओं से भरा ५ था । और उस के माथे पर एक नाम लिखा था अर्थात भेद . बड़ी बाबुल . पृथिवी की बेश्याओं और घिनित वस्तुओं ६ की माता । और मैं ने उस स्त्री को पवित्र लोगों के लोहू से और यीशु के साक्षियों के लोहू से मतवाली देखा और उसे देखके मैं ने बड़ा आश्चर्य करके अचंभा किया ॥

७ और दूत ने मुझ से कहा तू ने क्यों अचंभा किया . मैं स्त्री का और उस पशु का भेद जो उस का वाहन है जिस के सात सिर और दस सींग हैं ८ तुझ से कहूंगा । जो पशु तू ने देखा सो था और नहीं है और अथाह कुंड में से उठने और विनाश को पहुंचने पर है और पृथिवी के निवासी लोग जिन के नाम जगत की उत्पत्ति से जीवन के पुस्तक में नहीं लिखे गये हैं पशु को देखके कि वह था और नहीं है और ९ आवेगा अचंभा करेंगे । यहीं वह मन है जिसे बुद्धि है . वे सात सिर सात पर्व्वत हैं जिन पर स्त्री बैठी है । और १० सात राजा हैं पांच गिर गये हैं और एक है और दूसरा अब लों नहीं आया है और जब आवेगा तब उसे थोड़ी बेर रहने होगा । और वह पशु ११ जो था और नहीं है आप भी आठवां है और सातों में से है और विनाश को पहुंचता है । और जो दस सींग तू ने १२ देखे सो दस राजा हैं जिन्हों ने अब लों राज्य नहीं पाया है परन्तु पशु के संग एक घड़ी राजाओं की नाईं अधिकार पाते हैं । इन्हों का एक ही परामर्श है १३ और वे अपना अपना सामर्थ्य और अधिकार पशु को देंगे । वे तो मेम्ने से १४ युद्ध करेंगे और मेम्ना उन पर जय करेगा क्योंकि वह प्रभुओं का प्रभु और राजाओं का राजा है और जो उस के संग हैं सो बुलाये हुए और चुने हुए और विश्वास-योग्य हैं । फिर मुझ से बोला जो जल १५ तू ने देखा जहां बेश्या बैठी है सो बहुत बहुत लोग और देश और भाषा हैं । और वे दस सींग जो तू ने देखे १६ और पशु येही बेश्या से बैर करेंगे और उसे उजाड़ेंगे और नंगी करेंगे और उस का मांस खायेंगे और उसे आग में जलायेंगे । क्योंकि ईश्वर ने उन के १७ मन में यह दिया है कि वे उस का परामर्श पूरा करें और एक परामर्श रखें और जब लों ईश्वर के वचन पूरे न होवें तब लों अपना अपना राज्य पशु को देवें । और जो स्त्री तू ने देखी सो १८ वह बड़ी नगरी है जो पृथिवी के राजाओं पर राज्य करती है ॥

अठारहवां पर्ब्ब ।

१ और इस के पीछे मैं ने एक दूत को स्वर्ग से उतरते देखा जिस का बड़ा अधिकार था और पृथिवी उस

२ के तेज से प्रकाशमान हुई । और उस ने पराक्रम से बड़े शब्द से पुकारा कि गिर गई बड़ी बाबुल गिर गई है और भूतों का निवास और हर एक अशुद्ध आत्मा का बन्दीगृह और हर एक अशुद्ध और घिनित पंछी का ३ पिंजरा हुई है । क्योंकि सब देशों के लोगों ने उस के व्यभिचार के कारण जो कोप होता है तिस की मदिरा पिई है और पृथिवी के राजाओं ने उस के संग व्यभिचार किया है और पृथिवी के व्योपारी लोग उस के सुख बिलास की बहुताई से धनवान हुए हैं ॥

४ और मैं ने स्वर्ग से दूसरा शब्द सुना कि हे मेरे लोगो उस में से निकल आओ कि तुम उस के पापों में भागी न होओ और कि उस की बिपतों में ५ से कुछ तुम पर न पड़े । क्योंकि उस के पाप स्वर्ग लों पहुंचे हैं और ईश्वर ने उस के कुकर्म्मों को स्मरण किया ६ है । जैसा उस ने तुम्हें दिया है तैसा उस को भर देओ और उस के कर्म्मों के अनुसार दूना उसे दे देओ, जिस कटोरे में उस ने भर दिया उसी में उस ७ के लिये दूना भर देओ । जितनी उस ने अपनी बड़ाई किई और सुख बिलास किया उतनी उस को पीड़ा और शोक देओ क्योंकि वह अपने मन में कहती है मैं रानी हो बैठी हूं और बिधवा नहीं हूं और शोक किसी रीति से न ८ देखूंगी । इस कारण एक ही दिन में उस की बिपतें आ पड़ेंगी अर्थात मृत्यु और शोक और अकाल और वह आग में जलाई जायगी क्योंकि परमेश्वर ईश्वर जो उस का बिचारकर्त्ता है ९ शक्तिमान है । और पृथिवी के राजा लोग जिन्हों ने उस के संग व्यभिचार और सुख बिलास किया जब उस के जलने का धूआं देखेंगे तब उस के लिये रोयेंगे और छाती पीटेंगे, और १० उस की पीड़ा के डर के मारे दूर खड़े हो कहेंगे हाय हाय हे बड़ी नगरी बाबुल हे दृढ़ नगरी कि एक ही घड़ी में तेरा बिचार आ पड़ा है । और ११ पृथिवी के व्योपारी लोग उस पर रोयेंगे औ कलपेंगे क्योंकि अब तो कोई उन के जहाजों की बोझाई नहीं मोल लेगा, अर्थात सोने औ रूपे औ १२ बहुमूल्य पत्थर औ मोती औ मलमल औ बैंजनी वस्त्र औ पाटम्बर औ लाल वस्त्र की बोझाई और हर प्रकार का सुगन्ध काठ और हर प्रकार का हाथीदांत का पात्र और बहुमूल्य काठ के औ पीतल औ लोहे औ मरमर के सब भांति के पात्र, और दारचीनी औ १३ इलायची औ धूप औ सुगन्ध तेल औ लोबान औ मदिरा औ तेल औ चोखा पिसान औ गेहूं औ ढोर औ भेड़ और घोड़ों औ रथों औ दासों की बोझाई और मनुष्यों के प्राण । और तेरे प्राण १४ के बांछित फल तेरे पास से जाते रहे और सब चिकनी और भड़कीली वस्तु तेरे पास से नष्ट हुई हैं और तू उन्हें फिर कभी न पायेगा । इन वस्तुओं १५ के व्योपारी लोग जो उन से धनवान हो गये उस की पीड़ा के डर के मारे दूर खड़े होंगे और रोते औ कलपते हुए कहेंगे, हाय हाय यह बड़ी नगरी जो १६ मलमल और बैंजनी औ लाल वस्त्र पहिने थी और सोने और बहुमूल्य पत्थर और मोतियों से बिभूषित थी कि एक ही घड़ी में इतना बड़ा धन बिनाश गया है । और हर एक मांझी और १७ जहाजों पर के सब लोग और मल्लाह लोग और जितने लोग समुद्र पर कमाते हैं सब दूर खड़े हुए, और उस के १८

जलने का धूंआ देखते हुए पुकारके बोले कौन नगर इस बड़ी नगरी के
१९ समान है । और उन्हों ने अपने अपने सिर पर धूल डाली और रोते औ कलपते हुए पुकारके बोले हाय हाय यह बड़ी नगरी जिस के द्वारा सब लोग जिन के समुद्र में जहाज थे उस के बहुमूल्य द्रव्य से धनवान हो गये कि एक ही घड़ी में वह उजड़ गई
२० है । हे स्वर्ग और हे पवित्र प्रेरितो और भविष्यद्वक्ता लोगो इस पर आनन्द करो क्योंकि ईश्वर ने तुम्हारे लिये उस से पलटा लिया है ॥
२१ और एक पराक्रमी दूत ने बड़े चक्की के पाट की नाईं एक पत्थर को लेके समुद्र में डाला और कहा यों बरियाई से बड़ी नगरी बाबुल गिराई जायगी और फिर कभी न मिलेगी ।
२२ और बीन बजानेहारों और बजनियों और बंशी बजानेहारों और तुरही फूंकनेहारों का शब्द फिर कभी तुझ में सुनो न जायगा और किसी उद्यम का कोई कारीगर फिर कभी तुझ में न मिलेगा और चक्की के चलने का शब्द फिर कभी तुझ में सुना न जायगा ।
२३ और दीपक की ज्योति फिर कभी तुझ में न चमकेगी और दूल्ह औ दुल्हिन का शब्द फिर कभी तुझ में सुना न जायगा क्योंकि तेरे ब्यापारी लोग पृथिवी के प्रधान थे इस लिये कि तेरे टोने से सब देशों के लोग भरमाये
२४ गये । और भविष्यद्वक्ताओं और पवित्र लोगों का लोहू और जो जो लोग पृथिवी पर बध किये गये थे सभों का लोहू उसी में पाया गया ॥

उन्नीसवां पर्ब्ब ।

१ और इस के पीछे मैं ने स्वर्ग में बहुत लोगों का बड़ा शब्द सुना कि हालिलूयाह परमेश्वर हमारे ईश्वर को त्राण के लिये जय जय औ महिमा औ
२ आदर औ सामर्थ्य होय । इस लिये कि उस के बिचार सच्चे और यथार्थ हैं क्योंकि उस ने बड़ी बेश्या का जो अपने ब्यभिचार से पृथिवी को भ्रष्ट करती थी बिचार किया है और अपने दासों के लोहू का पलटा उस से लिया है ।
३ और वे दूसरी बार हालिलूयाह बोले
४ और उस का धूआं सदा सर्व्वदा लों उठता है । और चौबीसों प्राचीन और चारों प्राणी गिर पड़े और ईश्वर को जो सिंहासन पर बैठा है प्रणाम करके
५ बोले आमीन हालिलूयाह । और एक शब्द सिंहासन से निकला कि हे हमारे ईश्वर के सब दासो और उस से डरनेहारो क्या छोटे क्या बड़े सब उस की स्तुति
६ करो । और मैं ने जैसे बहुत लोगों का शब्द और जैसे बहुत जल का शब्द और जैसे प्रचंड गर्जनों का शब्द वैसा शब्द सुना कि हालिलूयाह परमेश्वर ईश्वर सर्व्व-
७ शक्तिमान ने राज्य लिया है । आओ हम आनन्दित और आह्लादित होवें और उस का गुणानुवाद करें क्योंकि मेम्ने का बिवाह आ पहुंचा है और उस
८ की स्त्री ने अपने को तैयार किया है । और उस को यह दिया गया कि शुद्ध और उजली मलमल पहिने क्योंकि वह
९ मलमल पवित्र लोगों का धर्म्म है । और वह मुझ से बोला यह लिख कि धन्य वे जो मेम्ने के बिवाह के भोज में बुलाये गये हैं . फिर मुझ से बोला ये बचन
१० ईश्वर के सत्य बचन हैं । और मैं उस को प्रणाम करने के लिये उस के चरणों के आगे गिर पड़ा और उस ने मुझ से कहा देख ऐसा मत कर मैं तेरा और तेरे भाइयों का जिन पास यीशु की साक्षी है संगी दास हूं . ईश्वर को प्रणाम

कर क्योंकि यीशु की साक्षी भविष्यद्वाणी का आत्मा है॥

११ और मैं ने स्वर्ग को खुले देखा और देखो एक श्वेत घोड़ा है और जो उस पर बैठा है सो विश्वासयोग्य और सत्य कहावता है और वह धर्म्म से विचार
१२ और युद्ध करता है। उस के नेत्र आग की ज्वाला की नाईं हैं और उस के सिर पर बहुत से राजमुकुट हैं और उस का एक नाम लिखा है जिसे और कोई नहीं
१३ केवल वही आप जानता है। और वह लोहू में डुबाया हुआ वस्त्र पहिने है और उस का नाम यूं कहावता है कि
१४ ईश्वर का वचन। और स्वर्ग में की सेना श्वेत घोड़ों पर चढ़े हुए उजली और शुद्ध मलमल पहिने हुए उस के पीछे
१५ हो लेती थी। और उस के मुंह से चोखा खड्ग निकलता है कि उस से वह देशों के लोगों को मारे और वही लोहे का दंड लेके उन की चरवाही करेगा और वही सर्व्वशक्तिमान ईश्वर के क्रोध की जलजलाहट की मदिरा के
१६ कुंड में रौंदन करता है। और उस के वस्त्र पर और जांघ पर उस का यह नाम लिखा है कि राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु॥

१७ और मैं ने एक दूत को सूर्य्य में खड़े हुए देखा और उस ने बड़े शब्द से पुकारके सब पंछियों से जो आकाश के बीच में से उड़ते हैं कहा आओ ईश्वर की बड़ी बियारी के लिये एकट्ठे होओ.
१८ जिस्तें तुम राजाओं का मांस और सहस्रपतियों का मांस और पराक्रमी पुरुषों का मांस और घोड़ों का और उन पर चढ़नेहारों का मांस और क्या निर्बन्ध क्या दास क्या छोटे क्या बड़े सब लोगों
१९ का मांस खाओ। और मैं ने पशु को और पृथिवी के राजाओं को और उन की सेनाओं को घोड़े पर चढ़नेहारे से और उस की सेना से युद्ध करने को एकट्ठे
२० किये हुए देखा। और पशु पकड़ा गया और उस के संग वह झूठा भविष्यद्वक्ता जिस ने उस के सन्मुख आश्चर्य्य कर्म्म किये जिन के द्वारा उस ने उन लोगों को भरमाया जिन्हों ने पशु की छापा लिई थी और जो उस की मूर्त्ति की पूजा करते थे. ये दोनों जीते जी उस आग की झील में जो गन्धक से जलती है डाले
२१ गये। और जो लोग रह गये सो घोड़े पर चढ़नेहारे के खड्ग से जो उस के मुंह से निकलता है मार डाले गये और सब पंछी उन के मांस से तृप्त हुए॥

बीसवां पर्ब्ब।

१ और मैं ने एक दूत को स्वर्ग से उतरते देखा जिस पास अथाह कुंड की कुंजी थी और उस के हाथ में
२ बड़ी जंजीर थी। और उस ने अजगर को अर्थात प्राचीन सांप को जो दियाबल और शैतान है पकड़के उसे सहस्र
३ बरस लों बांध रखा. और उस को अथाह कुंड में डाला और बन्द करके उस के ऊपर छाप दिई जिस्तें वह जब लों सहस्र बरस पूरे न हो जायें लों फिर देशों के लोगों को न भरमावे और इस पीछे उस को थोड़ी बेर लों छूट जाना होगा॥

४ और मैं ने सिंहासनों को देखा और उन पर लोग बैठे थे और उन लोगों को विचार करने का अधिकार दिया गया और जिन लोगों के सिर यीशु की साक्षी के कारण और ईश्वर के वचन के कारण काटे गये थे और जिन्हों ने न पशु की न उस की मूर्त्ति की पूजा किई और अपने अपने माथे पर और अपने अपने हाथ पर छापा न लिया मैं ने उन के प्राणों को देखा और वे जी गये और

ख्रीष्ट के संग सहस्र बरस राज्य किया । ५ परन्तु और सब मृतक लोग जब लों सहस्र बरस पूरे न हुए तब लों नहीं जी गये . यह तो पहिला पुनरुत्थान ६ है । जो पहिले पुनरुत्थान का भागी है सो धन्य और पवित्र है . इन्हों पर दूसरी मृत्यु का कुछ अधिकार नहीं है परन्तु वे ईश्वर के और ख्रीष्ट के याजक होंगे और सहस्र बरस उस के संग राज्य करेंगे ॥

७ और जब सहस्र बरस पूरे होंगे तब शैतान अपने बन्दीगृह से छूट जायगा . ८ और बाहर निकलके पृथिवी के चारों कोनों के लोगों को अर्थात जूज और माजूज को जिन की संख्या समुद्र के बालू की नाईं होगी भरमाने को निकलेगा कि उन्हें ९ युद्ध के लिये एकट्ठे करे । और वे पृथिवी की चौड़ाई पर चढ़ आये और पवित्र लोगों की छावनी और प्रिय नगर को घेर लिया और ईश्वर की ओर से आग स्वर्ग से उतरी और १० उन्हें भस्म किया । और उन का भरमानेहारा शैतान आग और गन्धक की झील में जिस में पशु और झूठा भविष्यद्वक्ता हैं डाला गया और वे रात दिन सदा सर्व्वदा पीड़ित किये जायेंगे ॥

११ और मैं ने एक बड़े श्वेत सिंहासन को और उस पर बैठनेहारे को देखा जिस के सन्मुख से पृथिवी और आकाश भाग गये और उन के लिये जगह न मिली । १२ और मैं ने क्या छोटे क्या बड़े सब मृतकों को ईश्वर के आगे खड़े देखा और पुस्तक खोले गये और दूसरा पुस्तक अर्थात जीवन का पुस्तक खोला गया और पुस्तकों में लिखी हुई बातों से मृतकों का बिचार उन के कर्म्मों के अनुसार १३ किया गया । और समुद्र ने उन मृतकों को जो उस में थे दे दिया और मृत्यु और परलोक ने उन मृतकों को जो उन में थे दे दिया और उन में से हर एक का बिचार उस के कर्म्मों के अनुसार किया गया । और मृत्यु और पर- १४ लोक आग की झील में डाले गये . यह तो दूसरी मृत्यु है । और जिस १५ किसी का नाम जीवन के पुस्तक में लिखा हुआ न मिला वह आग की झील में डाला गया ॥

इक्कीसवां पर्ब्ब ।

और मैं ने नये आकाश और नई १ पृथिवी को देखा क्योंकि पहिला आकाश और पहिली पृथिवी जाते रहे और समुद्र और न था । और मुझ २ योहन ने पवित्र नगर नई यिरूशलीम को जैसा दुल्हिन जो अपने स्वामी के लिये सिंगार किई हुई है वैसी तैयार किई हुई स्वर्ग से ईश्वर के पास से उतरते देखा । और मैं ने स्वर्ग से एक ३ बड़ा शब्द सुना कि देखो ईश्वर का डेरा मनुष्यों के साथ है और वह उन के संग बास करेगा और वे उस के लोग होंगे और ईश्वर आप उन के साथ उन का ईश्वर होगा । और ४ ईश्वर उन की आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा और मृत्यु और न होगी और न शोक न बिलाप न क्लेश और होगा क्योंकि अगली बातें जाती रहीं हैं । और सिंहासन पर बैठनेहारे ने कहा ५ देखो मैं सब कुछ नया करता हूं . फिर मुझ से बोला लिख ले क्योंकि ये बचन सत्य और बिश्वासयोग्य हैं । और उस ६ ने मुझ से कहा हो चुका . मैं अलफा और ओमिगा आदि और अन्त हूं . जो प्यासा है उस को मैं जीवन के जल के सोते में से सेंतमेंत देऊंगा । जो जय करे सो सब बस्तुओं का ७

अधिकारी होगा और मैं उस का ईश्वर
८ होंगा और वह मेरा पुत्र होगा । परन्तु
भयमानों और अविश्वासियों और घिनौनों
और हत्यारों और व्यभिचारियों और
टोन्हों और मूर्त्तिपूजकों और सब झूठे
लोगों का भाग उन्हें उस झील में
मिलेगा जो आग और गन्धक से जलती
है . यही दूसरी मृत्यु है ॥

और जिन सात दूतों के पास सात
पिछली विपतों से भरे हुए सातों पियाले
थे उन में से एक मेरे पास आया और
मेरे संग बात करके बोला कि आ मैं
दुल्हिन को अर्थात मेम्ने की स्त्री को
१० तुझे दिखाऊंगा । और वह मुझे आत्मा
में एक बड़े और ऊंचे पर्व्वत पर ले
गया और वह नगर पवित्र यिरूशलीम
को मुझे दिखाया कि स्वर्ग से ईश्वर के
११ पास से उतरता है । और ईश्वर का
तेज उस में है और उस की ज्योति
अत्यन्त मोल के पत्थर की नाईं अर्थात
स्फटिक सरीखे सूर्य्यकान्त मणि की नाईं
१२ है । और उस की बड़ी और ऊंची भीत
है और उस के बारह फाटक हैं और
उन फाटकों पर बारह दूत हैं और नाम
उन पर लिखे हैं अर्थात इस्रायेल के
सन्तानों के बारह कुलों के नाम ।
१३ पूर्ब्ब की ओर तीन फाटक उत्तर की
ओर तीन फाटक दक्षिण की ओर तीन
फाटक और पश्चिम की ओर तीन
१४ फाटक हैं । और नगर की भीत की
बारह नेव हैं और उन पर मेम्ने के बारह
१५ प्रेरितों के नाम । और जो मेरे संग बात
करता था उस पास एक सोने का नल
था जिस्तें वह नगर को और उस के
फाटकों को और उस की भीत को
१६ नापे । और नगर चौखूंटा बना है और
जितनी उस की चौड़ाई उतनी उस की
लंबाई भी है और उस ने उस नल से
नगर को नापा कि साढ़े सात सौ कोश
का है . उस की लंबाई और चौड़ाई
और ऊंचाई एक समान है । और १७
उस ने उस की भीत को मनुष्य के
अर्थात दूत के नाप से नापा कि एक
सौ चवालीस हाथ की है । और उस १८
की भीत की जोड़ाई सूर्य्यकान्त की
थी और नगर निर्म्मल सोने का था जो
निर्म्मल कांच के समान था । और नगर १९
की भीत की नेवें हर एक बहुमूल्य
पत्थर से संवारी हुईं थीं पहिली नेव
सूर्य्यकान्त की थी दूसरी नीलमणि की
तीसरी लालड़ी की चौथी मरकत की .
पांचवीं गोमेदक की छठवीं माणिक्य २०
की सातवीं पीतमणि की आठवीं पेरोज
की नवीं पुखराज की दसवीं लहसनिये
की ग्यारहवीं धूम्रकान्त की बारहवीं
मर्टीष की । और बारह फाटक बारह २१
मोती थे एक एक मोती से एक एक
फाटक बना था और नगर की सड़क
स्वच्छ कांच के ऐसे निर्म्मल सोने की
थी । और मैं ने उस में मन्दिर न देखा २२
क्योंकि परमेश्वर ईश्वर सर्व्वशक्तिमान
और मेम्ना उस का मन्दिर है । और नगर २३
को सूर्य्य अथवा चन्द्रमा का प्रयोजन
नहीं कि वे उस में चमकें क्योंकि ईश्वर
के तेज ने उस ज्योति दिई और मेम्ना
उस का दीपक है । और देशों के लोग २४
जो त्राण पाते हैं उस की ज्योति
में फिरेंगे और पृथिवी के राजा लोग
अपना अपना विभव और मर्य्यादा उस
में लावेंगे । और उस के फाटक दिन २५
को कभी बन्द न किये जायेंगे क्योंकि
वहां रात न होगी । और वे देशों के २६
लोगों का विभव और मर्य्यादा उस में
लावेंगे । और कोई अपवित्र वस्तु २७
अथवा घिनित कर्म्म करनेहारा अथवा
झूठ पर चलनेहारा उस में किसी रीति

मे प्रवेश न करेगा परन्तु केवल वे लोग जिन के नाम मेम्ने के जीवन के पुस्तक में लिखे हुए हैं ॥

बाईसवां पर्ब्ब ।

१ और उस ने मुझे जीवन के जल की निर्म्मल नदी स्फटिक की नाईं स्वच्छ दिखाई कि ईश्वर के और मेम्ने के २ सिंहासन से निकलती है । नगर की सड़क और उस नदी के बीच में इस पार और उस पार जीवन का वृक्ष है जो एक एक मास के अनुसार अपना फल देके बारह फल फलता है और वृक्ष के पत्ते देशों के लोगों को चंगा करने के ३ लिये हैं । और अब कोई स्राप न होगा और ईश्वर का और मेम्ने का सिंहासन उस में होगा और उस के दास उस की ४ सेवा करेंगे, और उस का मुंह देखेंगे और उस का नाम उन के माथे पर ५ होगा । और वहां रात न होगी और उन्हें दीपक का अथवा सूर्य्य की ज्योति का प्रयोजन नहीं क्योंकि परमेश्वर ईश्वर उन्हें ज्योति देता और वे सदा सर्व्वदा राज्य करेंगे ॥

६ और उस ने मुझ से कहा, ये बचन विश्वासयोग्य और सत्य हैं और पवित्र भविष्यद्वक्ताओं के ईश्वर परमेश्वर ने अपने दूत को भेजा है जिस्तें यह बातें जिन का शीघ्र पूरा होना अवश्य है ७ अपने दासों को दिखावे । देख मैं शीघ्र आता हूं, धन्य वह जो इस पुस्तक के भविष्यद्वाक्य की बातें पालन करता है ॥

८ और मैं योहन जो हूं सोई यह बातें देखता और सुनता था और जब मैं ने सुना और देखा तब जो दूत मुझे यह बातें दिखाता था मैं उस के चरणों के आगे प्रणाम करने को गिर पड़ा । और उस ने मुझ से कहा देख ऐसा मत कर क्योंकि मैं तेरा और भविष्यद्वक्ताओं का जो तेरे भाई हैं और इस पुस्तक की बातें पालन करनेहारों का संगी दास हूं, ईश्वर को प्रणाम कर ॥

१० और उस ने मुझ से कहा इस पुस्तक के भविष्यद्वाक्य की बातों पर छाप मत दे क्योंकि समय निकट है । ११ जो अन्याय करता है सो अब भी अन्याय करता रहे और जो अशुद्ध है सो अब भी अशुद्ध रहे और धर्म्मी जन अब भी धर्म्मी रहे और पवित्र जन अब भी पवित्र रहे । १२ देख मैं शीघ्र आता हूं और मेरा प्रतिफल मेरे साथ है जिस्तें हर एक को जैसा उस का कार्य्य ठहरेगा वैसा फल देऊं । १३ मैं अलफा और ओमिगा आदि और अन्त पहिला और पिछला हूं । १४ धन्य वे जो उस की आज्ञाओं पर चलते हैं कि उन्हें जीवन के वृक्ष का अधिकार मिले और वे फाटकों से होके नगर में प्रवेश करें । १५ परन्तु बाहर कुत्ते और टोन्हे और व्यभिचारी और हत्यारे और मूर्त्ति-पूजक हैं और हर एक जन जो झूठ को प्रिय जानता और उस पर चलता है । १६ मुझ यीशु ने अपने दूत को भेजा है कि तुम्हें मण्डलियों में इन बातों की साक्षी देवे, मैं दाऊद का मूल और वंश और भोर का उज्ज्वल तारा हूं । १७ और आत्मा और दुल्हिन कहते हैं आ और जो सुने सो कहे आ और जो प्यासा हो सो आवे और जो चाहे सो जीवन का जल सेंतमेंत लेवे ॥

१८ मैं हर एक को जो इस पुस्तक के भविष्यद्वाक्य की बातें सुनता है साक्षी देता हूं कि यदि कोई इन बातों पर कुछ बढ़ावे तो ईश्वर उन विपतों को जो इस पुस्तक में लिखी हैं उस पर बढ़ावेगा । १९ और यदि कोई इस

भविष्यद्वाक्य के पुस्तक की बातों में से कुछ उठा लेवे तो ईश्वर जीवन के पुस्तक में से और पवित्र नगर में से और उन बातों में से जो इस पुस्तक में लिखी हैं उस का भाग उठा लेगा॥

जो इन बातों की साक्षी देता है सो २० कहता है हां मैं शीघ्र आता हूं. आमीन हे प्रभु यीशु आ। हमारे प्रभु यीशु खीष्ट २१ का अनुग्रह तुम सभों के संग होवे। आमीन॥